







॥ ओ३म् ॥

प्रियं मां कृणु देवेषु प्रियं राजंसु मा कृणु ।

प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शुद्र उतार्य ॥ १ ॥

अथर्व० का० १६ सू० ६२ म० १ ॥

प्रिय मोहि करौ देव, तथा राज समाज में ।

प्रिय सब दृष्टि वाले, औ शुद्र और अर्य में

अथर्ववेदभाष्यम्

विंशं काण्डम् ।

आर्यभाषायामनुवाद-भावार्थादिसहितं
संस्कृते व्याकरणनिरुक्तादिप्रमाणसमन्वितं च ।श्रीमद्राजाधिराजप्रथितमहागुणमहिमधीरवीरचिरप्रतापि श्री
सयाजीरावगायकवाडाधिष्ठित बड़ोदेपुरीगतश्रावणमास-

दक्षिणापरीक्षायाम् ऋक्सामाथर्ववेदभाष्येषु

लब्धदक्षिणेन

श्री परिडत क्षेमकरणदासत्रिवेदिना

निर्मितं प्रकाशितं च ।

Make me beloved among the Gods,
beloved among the Princes, make
Me dear to every one who sees,
to Sudra and to Aryanman.

Griffith's Trans. Atharva 19 : 62 : 1.

अथ ग्रन्थः परिडत काशीनाथ वाजपेयिप्रबन्धेन

प्रयागनगरे ओंकारयन्त्रालये मुद्रितः ।

सर्वाधिकारः स्वाधीन एव भाष्यकारेण रक्षितः ।

प्रथमावृत्तौ

संवत् १९७७ वि०

मूल्यम् ७।

१००० पुस्तकानि

सन् १९२० ई०

॥ ओ३म् ॥

“वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है” ॥

आनन्दसमाचार ।

१—अथर्ववेदभाष्यम्—जिन वेदों की महिमा सब बड़े ऋषि, मुनि और योगी आये हैं और विदेशी विद्वान् जिनका अर्थ खोजने में लग रहे हैं। वे अब तक संस्कृत में हों के कारण बड़े कठिन थे। ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद का अर्थ तो भाषा में हो चुका था परन्तु अथर्ववेद का अर्थ अभी तक नागरी भाषा में न था। और संस्कृत में भी श्री सां भाष्य पूरा नहीं है। अब परमात्मा की कृपा से अथर्ववेद का भाष्य भी नागरी भाषा (हिन्दी) और संस्कृत में वेद, निघण्टु, निरुक्त, व्याकरणादि सत्य शास्त्रों के प्रमाणों सहित, प्रयत्न निवासी पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी ने संवत् १९६६ वि० में आरंभ करके संवत् १९७७ वि० श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त और पंजाब प्रान्त तथा विद्वान् ग्राहक महाशयों गुण ग्राहकता से पूरा कर लिया।

२—भाष्य का क्रम इस प्रकार । १—सूक्त के देवता, छन्द, उपदेश, २—सस्वर मूल ३—सस्वर पदपाठ, ४—मन्त्रों के शब्दों को कोष्ठ में देकर सान्वय भाषार्थ, ५—भावार्थ, ६—आशयक टिप्पणी, पाठान्तर, अनुरूप पाठादि, ७—प्रत्येक पृष्ठ में लाइन देकर सन्देह निवृत्ति लिये शब्दों और क्रियाओं की व्याकरण निरुक्तादि प्रमाणों से सिद्धि ।

३—इस वेद में २० छोटे बड़े काण्ड हैं, एक एक काण्ड का भावपूर्ण सन्निवृत्ति पुरुषों समझने योग्य अति सरल हिन्दी और संस्कृत भाष्य अल्प मूल्य में छपकर उपस्थित है। वेदों श्रीमान् राजे, महाराजे, सेठ, साहूकार, विद्वान् और सर्व साधारण स्त्री पुरुष स्वाध्याय, पुराण काल्यों और पारितोषिकों के लिये भाष्य मंगार्वे और जगत्पिता परमात्मा के पारमार्थिक आसांसारिक उपदेश, ब्रह्मविद्या, वैद्यकविद्या, शिल्पविद्या, राजविद्यादि अनेक विद्याओं का तजानकर आनन्द भोगें, छुपाई उत्तम और कागज़ बढ़िया रायल अठपेजी है।

स्थायी ग्राहकों में नाम लिखाने वाले सज्जन २० सैकड़ा छोड़कर पुस्तक वी० पी० वा नगद दाम पर पाते हैं। डाकव्यय ग्राहक देते हैं।

काण्ड	१ भूमिका सहित		२	३	४	५	६	७	८	९	१०	
मूल्य	१।)		२।-)	१।।-)	२)	१।।।=)	३)	२।)	२)	२।)	२।।)	
काण्ड	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	मन्त्र सूची	पद सूची	योग
मूल्य	२=)	१।।=)	१।)	१-)	१।-)	१।।=)	२।=)	३।)	७।)			४२)

भाष्य सब छप गया, मन्त्र सूची छप रही है, पद सूची छपने में है। पुराने जिनके पास सब काण्ड नहीं पहुंचे, और नये ग्राहक भाष्य शीघ्र मंगार्वे पुस्तक थोड़े र पैसे बड़े ग्रन्थ का फिर छपना कठिन है।

हवनमन्त्राः—धर्म शिक्षा का उपकारी पुस्तक—चारों वेदों के संगृहीत मन्त्र ईश्वर स्तुति, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, हवनमन्त्र, वामदेव्यगान सरल भाषा में शब्दार्थ सहित संशोधित बढ़िया रायल अठपेजी पृष्ठ ६०, मूल्य १।)॥

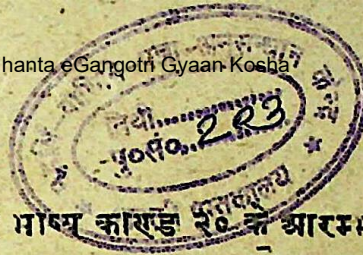
रुद्राध्यायः—प्रसिद्ध यजुर्वेद अध्याय १६ (नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः) ब्रह्मनिरूपक अर्थ संस्कृत, भाषा और अंग्रेजी में बढ़िया रायल अठपेजी, पृष्ठ १४८ मूल्य १।)॥

रुद्राध्यायः—मूलमात्र बढ़िया रायल अठपेजी, पृष्ठ १४ मूल्य १।)॥

वेदविद्यार्ये—कांगड़ी गुरुकुल में व्याख्यान दिया था। वेदों में विमान, नौका, शस्त्र निर्माण, व्यापार, गृहस्थ, अतिथि, सभा, ब्रह्मचर्यादि का वर्णन मूल्य -)॥

पता—पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी

२० अक्टूबर १९२० ।



सूचना—सूची १ और २ अथर्ववेद भाष्य काण्ड २० के आरम्भ में लगाएँ ॥

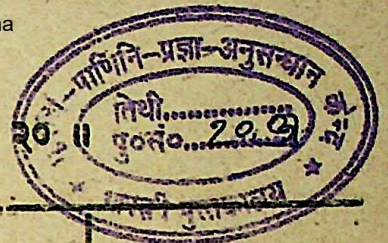
१—सूक्त विवरण अथर्ववेद काण्ड २० ॥

सूक्त	सूक्त के प्रथम पद	देवता	उपदेश	छन्द
१	इन्द्र त्वा वृषभं	इन्द्र आदि	राजा और प्रजा	गायत्री आदि
२	मरुतः पोत्रात्	मरुत आदि	विद्वान् लोग	गायत्री आदि
३	आ याहि सुषुमा	इन्द्र	राजा और प्रजा	गायत्री
४	आ नो याहि	इन्द्र	महौषधियां	गायत्री आदि
५	अथमु त्वा विचर्षणे	इन्द्र	सोम रंस सेवन	गायत्री आदि
६	इन्द्र त्वा वृषभं	इन्द्र	राजा और प्रजा	गायत्री आदि
७	उद् घेदमि श्रुता	इन्द्र	सेनापति	गायत्री आदि
८	एवा पाहि प्रलया	इन्द्र	मनुष्य कर्तव्य	त्रिष्टुप् आदि
९	तं वो दस्ममृतीषहं	इन्द्र	ईश्वर उपासना	बृहती आदि
१०	उदु त्मे मधुमत्तमा	इन्द्र	ईश्वर उपासना	बृहती आदि
११	इन्द्रः पूर्भिदा	इन्द्र	राजा और प्रजा	त्रिष्टुप् आदि
१२	उदु ब्रह्माण्यैरन	इन्द्र	सेनापति कर्तव्य	पङ्क्तिः आदि
१३	इन्द्रश्च सोमं	इन्द्र आदि	राजा और विद्वान्	त्रिष्टुप् आदि
१४	चयमु त्वामपूर्व्य	इन्द्र	राजा और प्रजा	उष्णिक् आदि
१५	प्र मंहिष्ठाय बृहते	इन्द्र	सभाध्यक्ष	जगती आदि
१६	उदप्रुतो न वयो	वृहस्पति	विद्वान् लोग	त्रिष्टुप् आदि
१७	अच्छा म इन्द्रं	इन्द्र आदि	राजा और प्रजा	जगती आदि
१८	चयमु त्वा तदि	इन्द्र	राजा और प्रजा	गायत्री आदि
१९	वार्त्रहत्याय शवसे	इन्द्र	राजा और प्रजा	गायत्री आदि
२०	शुष्मिन्तमं न ऊतये	इन्द्र	राजा और प्रजा	गायत्री आदि
२१	न्यू ३ पु वाचं प्र	इन्द्र	मनुष्य कर्तव्य	जगती आदि
२२	अमि त्वा वृषभा	इन्द्र	राजा और प्रजा	गायत्री आदि
२३	आ तू न इन्द्र	इन्द्र	राजा और प्रजा	गायत्री आदि
२४	उप नः सुतमा	इन्द्र	विद्वान् लोग	गायत्री आदि
२५	अश्वावति प्रथमो	इन्द्र	विद्वान् लोग	जगती आदि
२६	योगे योगे तव	इन्द्र	सेनाध्यक्ष आदि	गायत्री आदि
२७	यदिन्द्राहं यथा	इन्द्र	राजा के लक्षण	गायत्री आदि
२८	व्यश्नतरिक्षमति	इन्द्र	राजा के लक्षण	गायत्री आदि
२९	त्वं हि स्तोमवर्धन	इन्द्र	राजा के धर्म	गायत्री आदि
३०	प्र ते महे विदथे	इन्द्र	बल पराक्रम	जगती आदि

१—सूक्त विवरण अथर्ववेद भाष्य काण्ड २० ॥

सूक्त	सूक्त के प्रथम पद	देवता	उपदेश	छन्द
३१	ता वज्रिणां मन्दिनं	इन्द्र	पुरुषार्थ	जगती आदि
३२	आरोदसी हर्य	इन्द्र	राजा के कर्तव्य	त्रिष्टुप् आदि
३३	अण्णु धूनस्य हरिवः	इन्द्र	राजा के धर्म	त्रिष्टुप् आदि
३४	यो जात एव प्रथमो	इन्द्र	परमेश्वर गुण	त्रिष्टुप् आदि
३५	अस्मा इदु प्र तवसे	इन्द्र	सभापति	त्रिष्टुप् आदि
३६	य एक इद् धव्य	इन्द्र	मनुष्य कर्तव्य	पङ्क्ति आदि
३७	यस्तिग्मशृङ्गो	इन्द्र	राजा और प्रजा	त्रिष्टुप् आदि
३८	आ याहि सुषुमा	इन्द्र	राजा और प्रजा	गायत्री आदि
३९	इन्द्रं वो विश्वतस्परि	इन्द्र	परमेश्वर उपासना	गायत्री आदि
४०	इन्द्रेण सं हि दक्षसे	मरुत आदि	राजा और प्रजा	गायत्री आदि
४१	इन्द्रो दधीचो अथ	इन्द्र	राजा के कर्तव्य	गायत्री
४२	वाचमष्टापदीमहं	इन्द्र	मनुष्य कर्तव्य	गायत्री
४३	भिन्धि विश्वा अप	इन्द्र	राजा के धर्म	गायत्री
४४	प्र सभ्राजं क्षर्षणी	इन्द्र	राजा और प्रजा	गायत्री आदि
४५	अयमु ते समतसि	इन्द्र	सभापति कर्तव्य	गायत्री आदि
४६	प्रणेतारं वस्यो	इन्द्र	सेनापति लक्षण	गायत्री
४७	तमिन्द्रं वाजयामसि	इन्द्र	राजा प्रजा आदि	गायत्री आदि
४८	अभि त्वा वर्चसा	इन्द्र आदि	परमात्मा और जीवात्मा	गायत्री आदि
४९	यच्छक्रा वाचमा	इन्द्र	ईश्वर उपासना	गायत्री आदि
५०	कक्षव्यो अतसीनां	इन्द्र	परमेश्वर मदिमा	अनुष्टुप् आदि
५१	अभि प्र वः सुराध	इन्द्र	परमेश्वर उपासना	बृहती आदि
५२	वयं घ त्वा सुतावन्त	इन्द्र	परमेश्वर उपासना	बृहती
५३	क ई वेद सुते	इन्द्र	सेनापति	बृहती
५४	विश्वाः पृतना	इन्द्र	राजा और प्रजा	जगती आदि
५५	तमिन्द्रं जोहवीमि	इन्द्र	राजा के कर्तव्य	जगती आदि
५६	इन्द्रो मदाय वावृधे	इन्द्र	सभापति लक्षण	पङ्क्तिः आदि
५७	सुरूपकतुमुतये	इन्द्र	मनुष्य कर्तव्य	गायत्री आदि
५८	आयन्त इव सूर्य	इन्द्र आदि	ईश्वर विषय	बृहती आदि
५९	उदुत्ये मधुमत्तमा	इन्द्र	ईश्वर, राजा, प्रजा	बृहती आदि
६०	एवा ह्यसि वीरयु	इन्द्र	मनुष्य कर्तव्य	गायत्री आदि
६१	तं ते मदं गृणीमसि	इन्द्र	परमेश्वर गुण	उष्णिक् आदि
६२	वयमु त्वामपूर्व्य	इन्द्र	राजा, प्रजा आदि	उष्णिक् आदि
६३	इमा नु कं भुवना	इन्द्र आदि	राजा, प्रजा आदि	पङ्क्ति आदि

१-सूक्त विवरण अथर्ववेद कार्ड २०



सूक्त	सूक्त के प्रथम पद	देवता	उपदेश	छन्द
६४	एन्द्र नो गधि	इन्द्र	परमात्मा के गुण	उष्णिक् आदि
६५	एतो न्विन्द्रं स्तवाम	इन्द्र	परमेश्वर गुण	गायत्री आदि
६६	स्तुहीन्द्रं व्यश्ववद	इन्द्र	ऐश्वर्यवान् पुरुष	उष्णिक् आदि
६७	वनोति हि सुन्वन	इन्द्र आदि	मनुष्य कर्तव्य	अष्टि आदि
६८	सुरूपकृन्तुमृतये	इन्द्र	मनुष्य कर्तव्य	गायत्री आदि
६९	स या नो योग	इन्द्र आदि	पराक्रमी मनुष्य	गायत्री आदि
७०	वीलु चिदरुज	मरुत आदि	राजा और प्रजा आदि	गायत्री आदि
७१	महाँ इन्द्रः परश्च	इन्द्र	मनुष्य कर्तव्य	गायत्री आदि
७२	विश्वेषु हि त्वा	इन्द्र	परमेश्वर उपासना	अष्टि आदि
७३	तुभ्येदिमा सवता	इन्द्र	सेनापति लक्षण	अनुष्टुप् आदि
७४	यच्चिद्धि सत्य सोम	इन्द्र	राजा और प्रजा	पङ्क्ति आदि
७५	वि त्वा ततस्ते मिथुना	इन्द्र	परमेश्वर उपासना	अष्टि आदि
७६	वने न वा यो न्यधा	इन्द्र	राजा के कर्तव्य	त्रिष्टुप् आदि
७७	आ सत्यो यातु मधुवाँ	इन्द्र	राजा के धर्म	त्रिष्टुप् आदि
७८	तद्द्वो गाय सुते	इन्द्र	राजा और प्रजा	गायत्री
७९	इन्द्र क्रतुं न आ भर	इन्द्र	राजा के कर्तव्य	बृहती आदि
८०	इन्द्र ज्येष्ठं न आ	इन्द्र	राजा के कर्तव्य	बृहती आदि
८१	यद्वाव इन्द्र ते	इन्द्र	परमात्मा के गुण	बृहती आदि
८२	यदिन्द्र यावतस्त्व	इन्द्र	राजपुरुष और प्रजा	बृहती आदि
८३	इन्द्र त्रिधातु शरणं	इन्द्र	राजा के कर्तव्य	बृहती आदि
८४	इन्द्रा याहि चित्र	इन्द्र	सभापति कर्तव्य	गायत्री आदि
८५	मा चिदन्यद्, विशंसत	इन्द्र	परमेश्वर गुण	बृहती आदि
८६	ब्रह्मणा ते ब्रह्म युजा	इन्द्र	मनुष्य कर्तव्य	त्रिष्टुप्
८७	अध्वर्यवोऽरुणं	इन्द्र आदि	पुरुषार्थी लक्षण	त्रिष्टुप् आदि
८८	यस्तस्तस्म सहसा	बृहस्पति	विद्वानों के कर्तव्य	त्रिष्टुप् आदि
८९	अस्तेव सु प्रतरं	इन्द्र	मनुष्य कर्तव्य	त्रिष्टुप् आदि
९०	यो अद्रिभित् प्रथमजा	बृहस्पति	राजा के लक्षण	त्रिष्टुप्
९१	इमां धियं सप्त	बृहस्पति	परमात्मा के गुण	त्रिष्टुप्
९२	अभि प्र गोपतिं	इन्द्र	राजा प्रजा आदि	गायत्री आदि
९३	उत् त्वा मन्दन्तु	इन्द्र	परमेश्वर उपासना	गायत्री आदि
९४	आयात्विन्द्रः स्वपति	इन्द्र	राजा और प्रजा	त्रिष्टुप् आदि
९५	त्रिकद्रुकेषु महिषो	इन्द्र	राजा के कर्तव्य	अष्टि आदि
९६	तीव्रस्याभिवयवसो	इन्द्र आदि	राजा के कर्तव्य	त्रिष्टुप् आदि

१-सूक्त विवरण अथर्ववेद काण्ड २० ॥

सूक्त	सूक्त के प्रथम पद	देवता	उपदेश	छन्द
६७	वयमेनमिदा ह्यो	इन्द्र	वीर लक्षण	बृहती आदि
६८	त्वामिद्धि हवामहे	इन्द्र	राजा के धर्म	अनुष्टुप् आदि
६९	अभि त्वा पूर्वपीतय	इन्द्र	परमेश्वर गुण	बृहती आदि
१००	अथा हीन्द्र गिर्वण	इन्द्र	राजा और प्रजा	उष्णिक् आदि
१०१	अग्निं दूतं वृणीमहे	अग्नि	भैतिक अग्नि	गायत्री आदि
१०२	ईलेन्यो नमस्य	अग्नि	परमेश्वर गुण	गायत्री आदि
१०३	अग्निमीलिष्वामसे	अग्नि	परमेश्वर गुण	बृहती आदि
१०४	इमा उ त्वा पुरुवसो	इन्द्र	परमेश्वर गुण	बृहती आदि
१०५	त्वमिन्द्र प्रतृति	इन्द्र	परमेश्वर गुण	अनुष्टुप् आदि
१०६	तव त्यदिन्द्रियं बृहत्	इन्द्र	परमेश्वर गुण	उष्णिक् आदि
१०७	समस्य मन्यवे	इन्द्र आदि	परमेश्वर गुण	गायत्री आदि
१०८	त्वं न इन्द्रा भरँ	इन्द्र	परमेश्वर प्रार्थना	उष्णिक् आदि
१०९	स्वादेरित्था	इन्द्र	सभापति आदि	पथ्या पङ्क्ति
११०	इन्द्राय मद्रुवे	इन्द्र	विद्वान् के कर्तव्य	गायत्री
१११	यत् सोममिन्द्र	इन्द्र	मनुष्य कर्तव्य	उष्णिक्
११२	यद्य कच्च वृत्रह	इन्द्र	मनुष्य कर्तव्य	गायत्री
११३	उभयं श्रणवच्च च न	इन्द्र	राजा के धर्म	बृहती
११४	अभ्रातृव्यो अना	इन्द्र	परमेश्वर गुण	उष्णिक् आदि
११५	अहमिद्धि पितु	इन्द्र	परमेश्वर गुण	गायत्री
११६	मा भूम निष्या	इन्द्र	राजा के कर्तव्य	बृहती
११७	पिबा सोममिन्द्र	इन्द्र	राजा के कर्तव्य	पङ्क्ति आदि
११८	शङ्ख्यु ३ पु शचीपत	इन्द्र	परमेश्वर उपासना	बृहती आदि
११९	अस्तावि मन्म	इन्द्र	परमेश्वर स्तुति	बृहती आदि
१२०	यदिन्द्र प्रागपा	इन्द्र	परमेश्वर गुण	अनुष्टुप् आदि
१२१	अभि त्वा शूर नोनु	इन्द्र	परमेश्वर गुण	बृहती आदि
१२२	रेवतीर्नः सधमाद	इन्द्र	सभापति लक्षण	गायत्री
१२३	तत् सूर्यस्य देवत्वं	सूर्य	सूर्य का काम	त्रिष्टुप्
१२४	कया नश्चित्र आ भुव	इन्द्र आदि	राजा और प्रजा	गायत्री आदि
१२५	अपेन्द्र प्राचो मघव	इन्द्र आदि	राजा के धर्म	त्रिष्टुप्
१२६	वि हि सोतोरसृक्षत	इन्द्र	गृहस्थ कर्तव्य	पङ्क्ति
१२७	इदं जना उप श्रुत	प्रजापति, इन्द्र	राजा के धर्म	बृहती आदि
१२८	यः सभेयो विदथ्यः	प्रजापति, इन्द्र	मनुष्य कर्तव्य	अनुष्टुप्
१२९	एवा अश्वा आसवन्ते	प्रजापति	मनुष्य के प्रयत्न	गायत्री आदि

१-सूक्त विवरण अथर्ववेद काण्ड १०

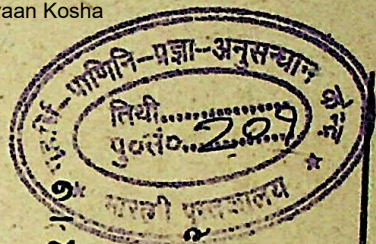


सूक्त	सूक्त के प्रथम पद	देवता	उपदेश	छन्द
१३०	को अर्य बहुलि	प्रजापति	मनुष्य के पुरुषार्थ	पङ्क्ति आदि
१३१	आमिनोनिति भद्यते	प्रजापति	ऐश्वर्य प्राप्ति	गायत्री आदि
१३२	आदलावुकमेककम्	प्रजापति	परमात्मा के गुण	गायत्री आदि
१३३	विततौ किरणौ द्वौ	कुमारी	स्त्रियों के कर्तव्य	अनुष्टुप्
१३४	इहेत्थ प्रागपाग	प्रजापति	बुद्धि बढ़ाना	पङ्क्ति
१३५	भुगित्यभिगतः	प्रजापति, इन्द्र	मनुष्य कर्तव्य	अनुष्टुप् आदि
१३६	यदस्या अंहुभेद्यः	प्रजापति	राजा और प्रजा	अनुष्टुप् आदि
१३७	यद्ध प्राचीरजगन्ता	अलक्ष्मी आदि	राजा और प्रजा	अनुष्टुप् आदि
१३८	महाँ इन्द्रो य ओजसा	इन्द्र	राजा और प्रजा	गायत्री
१३९	आ नूनमश्विना	अश्विनौ	गुरु जन	बृहती आदि
१४०	यन्नासत्या भुरग्य	अश्विनौ	दिन राति	बृहती आदि
१४१	यातं छर्दिष्पा उत नः	अश्विनौ	दिन राति	गायत्री आदि
१४२	अभुत्स्यु प्र देव्या	अश्विनौ	दिन राति	अनुष्टुप् आदि
१४३	तं वां रथं वयम	अश्विनौ	राजा और मन्त्री	त्रिष्टुप् आदि



२-अथर्ववेद काण्ड २० के मन्त्र अन्य वेदों में सम्पूर्ण वा कुछ भेद से ॥

मन्त्र संख्या	मन्त्र	अथर्ववेद (काण्ड २०) सूक्त, मन्त्र	अथर्ववेद (अन्यत्र) काण्ड, सूक्त, मन्त्र	ऋग्वेद, मण्डल, सूक्त, मन्त्र	यजुर्वेद अध्याय, मन्त्र	सामवेद पूर्वार्चिक, उत्तरार्चिक आदि
१	इन्द्र त्वा	१।१	२०।६।१	३।४०।१		
२	मरुतो यस्य	१।२		१।८६।१	८।३१	
३	उक्षात्राय	१।३	३।२१।६	८।४३।११		
४	मरुतः पोत्रात्	२।१		१।१५।२		
५-७	आ याहि	३।१-३	२०।३८।१-३; ४७।७-६	८।१७।१-३		७०।१।१।६; म० १ पू० २।१०।७७
८-१०	आ नो याहि	४।१-३		८।१७।४-६		
११-१७	अयमु त्वा	५।१-७		८।१७।६-१३		५-७; ७०।१।२।५ म० ५, पू० २।७।५
१८-२६	इन्द्र त्वा वृष	६।१-६	म० १, २०।१।१	३।४०।१-६		
२७	इन्द्र क्रतुविदं	६।२	२०।७।४			
२८	गिर्वणः पाहि	६।६				पू० ३।१।२
२९	अर्वावतो न	६।८				
३०-३२	उद्देदमि	७।१-३	२०।२०।४; ५७।८	८।६३।१-३		म० १; पू० २।४।१ म० १-३; ७०।६।३।४
३३	इन्द्र क्रतुविदं	७।४				
३४	एवा पाहि प्रल	८।१	२०।६।२	६।१७।३।		



३५	अवालेहि	८।२		१।१०४।६			
३६	आपूर्णा अस्य	८।३		३।३२।१५			
३७, ३८	तं वा दस्ममृती	६।१-२	म० १-४; २०।	८।८८।१-२	म० १; २६।११	म० १, २; ७०१।१।१३	
३९, ४०	तत् त्वा यामि	६।३-४	४६।४-७	८।३।६-१०		म० १; पू० ३।५।४	
४१, ४२	उदुत्ये मधुम	१०।१-२	२०।५६।१-२	८।३।१५-१६		७०६।१।६ म० १; पू० ३।६।६	
४३-५३	इन्द्रः पूर्वमिदति	११।१-११		३।३४।१-११			
५४	इन्द्रो वृत्रमवृ	११।३		१४बार ३।सू०३०-	३३।२६		
५५	शुनं हुवेम मघ	११।११		३६ आदि			
५६-६१	उदुग्रहाण्यै	१२।१-६		७।२३।१-६	३३।१८		
६२	आपश्चित्	१२।४			२०।५४		
६३	एवेदिन्द्रं वृष	१२।६		५।४०।४			
६४	ऋजीषो वज्री	१२।७		४।५०।१०			
६५	इन्द्रश्च सोमं	१३।१		१।८५।६			
६६	आ वो वहन्तु	१३।२		१।६४।१			
६७	इमं स्तोम मर्हते	१३।३		३।६।६			
६८	प्रेमिरगते सरथं	१३।४		८।२१।१-२		पू० १।७।४; ७०४।१।७	
६९-७०	वयसु त्वाम	१४।१-२	म० १-४; २०।			म० १; पू० ५।२।१०	
			६२।१-४			म० १-२; ७०१।१।२३	
७१-७२	यो न हृदविदं	१४।३-४		१।८।२।६-१०		म० ३; ७०५।२।२	
७३-७८	म मंहिष्ठाय	१५।१-६		१।५७।१-६			
७९	इमे त इन्द्र ते वयं	१५।४	पू० ४।६।३			पू० ४।६।३	

२ अथर्ववेद काण्ड २० के मन्त्र अन्य वेदों में सम्पूर्ण वा कुछ भेद से

मन्त्र संख्या	मन्त्र	अथर्ववेद (काण्ड २०) सूक्त, मन्त्र	अथर्ववेद (अन्यत्र) काण्ड, सूक्त, मन्त्र	ऋग्वेद, सूक्त, मन्त्र	यजुर्वेद अध्याय, मन्त्र	सामवेद पुरांचिक, उत्तरांचिक आदि
८०-६१	उग्र पुतो त वयो	१६।१-१२		१०।६८।१-१२		
६२-१०२	अच्छ म इन्द्र मलयः	१७।१-११		१०।४३।१-११		
१०३	गोमिष्टरेमामतिं	१७।१०	७।५०।७; म० १०-११; २०। ८६।१०-११; २०। ६४।१०, ११			
१०४	बृहस्पतिर्नः परि	१७।११	७।५१।१			
१०५	बृहस्पते युत्र	१७।१२	२०।८७।७	७।६७।१०		
१०६-१०८	वयमु त्वा	१८।१-३		८।२।१६-१८		७०१।२।३ म० १; पू० २।७।६,
१०९-१११	वयमिन्द्र त्वा	१८।४-६		७।३१।४-६		म० ४; पू० २।४।८
११२-११८	वागंहत्याय	१९।१-७		३।३७।१-७		
११९-१२२	शुभिन्तम न	२०।१-४	म० १-७; २०। ५७।४-१० २०।६।८	३।३७।८-११	म० १; १३।६८	
१२३	अर्वावतो न आग	२०।४				म० ५; पू० ३।१।७
१२४-२६	इन्द्रो अङ्ग महद् भय	२०।५-७		२।४१।१०-१२		
१२७-३७	न्ययूषु बान्ध प्रमहे	२१।१-११		१।५३।१-११		
१३८-४०	अभि त्वा वृषभा	२२।१-३		८।४५।२२-२४		७०१।२।७ म० १; पू० २।७।७

१५१-४३	अभि प्र गोपति	२२। ४-६	२०। ६२। १-३	८। ६६। ४-६	७०७। १। १ म० १, पू० २। ८। ४
१५४-५२	आ तू न इन्द्र	२३। १-६		३। ४१। १-६	
१५३-६१	उप नः सुतमा	२४। १-६		३। ४२। १-६	
१६२-६७	अशवावति प्रथमो	२५। १-६		१। ८३। १-६	
१६८	प्रोत्रां पीति	२५। ७	२०। ३३। २	१०। १०४। ३	
१६६	योगे योगे	२६। १	१६। २४। ७		
१७०-७१	आ धा गमद् यदि	२६। २३		१। ३०। ८-६	७०१। २। ११
१७२-७४	युखन्ति ब्रह्म	२६। ४-६	२०। ४७। १०-१२	१। ६। १-३	७०६। ३। १४
१७५	केतुं कृण्वन्	२६। ६			
१७६-८१	यदिन्द्राहं यथा	२७। १-६		८। १४। १-६	म० १-३; ७०२। ६। ६ म० १; पू० २। ३। ७
१८२	यन्न इन्द्रमवधं	२७। ५			पू० २। ३। ७। ७। ७०८। १। ६
१८३-८६	व्यन्तरिक्षमतिर	२८। १-४	२०। ३६। २-५	८। १४। ७-१०	म० १, २; ७०८। १। ६
१८७-८१	त्वं हि स्तोम	२८। १-५		८। १४। ११-१५	
१८२	अपां केनेन नमु	२८। ३			पू० ३। २। ८
१८३-८७	प्र ते महे चिद्	२८। ३			
१८८-०२	ता वज्रिण	३०। १-५		१०। ६६। १-५	
२०३-०५	आ रोदसी	३१। १-५		१०। ६६। ६-१०	
२०६-०८	अप्सु धूतस्य	३२। १-३		१०। ६६। ११-१३	
२०६	प्रोत्रां पीति वृष्ण	३२। १-३	२०। २५। ७	१०। १०४। २-४	
२१०-२४	यो जात एव	३३। २		२। १२। १-१५	
२१५-४०	अस्मा इदु प्र	३४। १-११		१। ६१। १-१६	
		३५। १-१६			

२ अथर्ववेद काण्ड २० के सन्त्र अन्य वेदों में सम्पूर्ण वा कुछ भेद से ॥

मन्त्र संख्या	मन्त्र	अथर्ववेद, (काण्ड २०) सूक्त, मन्त्र	अथर्ववेद, (अ-यत्र) काण्ड, सूक्त, मन्त्र	ऋग्वेद, मण्डल, सूक्त, मन्त्र	यजुर्वेद, अध्याय, मन्त्र	सामवेद, पूर्वार्चिक, उत्तरार्चिक, आदि
२४१-५१	य एक इन्द्रोय	३६। १-११		६। २२। १-११		
२५२-६२	यस्तिममृङ्गा	३७। १-११		७। १६। १-११		
२६३-६५	आ याहि सुषुमा	३८। १-३	२०। ३। १-३; ४७। ७-८			
२६६-६८	इन्द्रमिदं गाथि	३८। ४-६	२०। ४७। ४-६; ५	१। ७। १-३		७०२। १। ८; म० ४; पू० ३। १। ५
२६९	इन्द्रं वो विश्वत	३९। १	२०। ७०। १६	१। ७। १०		७०८। १। २
२७०-५३	व्यश्नन्तरिक्षम्	३९। २-५	२०। २८। १-४			म० १; ७०२। २। ७
२७४-७५	इन्द्रेण सं हि हन्तसे	४०। १-२	२०। ७०। ३-४	१। ६। ७-८		७०२। २। ७
२७६	आद्रुह स्वधाम	४०। ३	२०। ६६। १२	१। ६। ४		७०३। १। ८; म० १; पू० २। १। ५; म० ३; पू० २। १। ३
२७७-७९	इन्द्रो दधीचो	४१। १-३		१। ८४। १३-१५		७०३। २। ६
२८०-८२	वाचमष्टाषदी	४२। १-३		८। ७६। १२, ११, १०		७०४। १। ८; म० १; पू० २। १। ५; म० २; पू० ३। १। ३
२८३-८५	मिन्धि विश्वा	४३। १-३		८। ४५। ४०-४२		म० १; पू० २। ५। १०
२८६-८८	म सन्नाजं	४४। १-३		८। १६। १-४		७०७। ३। १५ म० १; पू० २। ६। ६
२८९-९१	अयमु ते समत	४५। १-३		१। ३८। ४-६		
२९२-९४	प्रणेतारं वस्यो	४६। १-३		८। १६। १०-१२		
२९५-९७	तमिन्द्रं वाज	४७। १-३	२०। १३७। १२-१४	८। ६३। ७-८		७०५। १। १० म० १; पू० २। ३। ५
२९८-३००	इन्द्रमिदं गाथिनो	४७। ४-६	२०। ३८। ४-६; ७०।			

३०१-०३	आ याहि सुष्ठु	४७। ७८	७-८	२०। ३। १-३, ३-८।	१-३	२०। ३। १-३, ३-८।	३३। ४२	७०२। १। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३०४-०६	युञ्जन्ति ब्रह्म	४७। १०-१२	६-११	२०। २६। ४-६, ६-८।	१-३	२०। २६। ४-६, ६-८।	३३। ४२	७०२। २। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३०७-१५	उडुत्यं जातवेद	४७। १३-२१	१३। २। १३-२४	१३। २। १३-२४	१३। २। १३-२४	१३। २। १३-२४	३३। ४२	७०२। ३। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३१६-१८	आयं गौः	४८। ४-६	४-६	४। ३१। १-३	४-६	४। ३१। १-३	३३। ४२	७०२। ४। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३१८-२२	तं वो दसम	४८। ४-७	४-७	४। ३१। १-३	४-७	४। ३१। १-३	३३। ४२	७०२। ५। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३२३-२४	कन्नव्यो अत	५०। १-२	१-२	५०। १। १-२	१-२	५०। १। १-२	३३। ४२	७०२। ६। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३२५-२६	अभि प्र वः सु	५१। १-२	१-२	५१। १। १-२	१-२	५१। १। १-२	३३। ४२	७०२। ७। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३२७-२८	प्र सु श्रुतं	५१। ३-४	३-४	५१। ३। ३-४	३-४	५१। ३। ३-४	३३। ४२	७०२। ८। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३२८-३१	वयं घ त्वा	५२। १-३	१-३	५२। १। १-३	१-३	५२। १। १-३	३३। ४२	७०२। ९। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३३२-३४	क ई वेद सुते	५३। १-३	१-३	५३। १। १-३	१-३	५३। १। १-३	३३। ४२	७०२। १०। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३३५-३७	विश्वाः पृतना	५४। १-३	१-३	५४। १। १-३	१-३	५४। १। १-३	३३। ४२	७०२। ११। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३३८-४०	तमिन्द्रं जोहवीमि	५५। १-३	१-३	५५। १। १-३	१-३	५५। १। १-३	३३। ४२	७०२। १२। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३४१-४६	इन्द्रो मदाय	५६। १-६	१-६	५६। १। १-६	१-६	५६। १। १-६	३३। ४२	७०२। १३। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३४७-४८	सुरूपकृत्सु	५७। १-३	१-३	५७। १। १-३	१-३	५७। १। १-३	३३। ४२	७०२। १४। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३५०-५६	शुमिन्तमं न	५७। ४-१०	४-१०	५७। ४। ४-१०	४-१०	५७। ४। ४-१०	३३। ४२	७०२। १५। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३५७-५८	क ई वेद सुते	५७। ११-१३	११-१३	५७। ११। ११-१३	११-१३	५७। ११। ११-१३	३३। ४२	७०२। १६। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३६०-६२	वयं घ त्वा	५७। १४-१६	१४-१६	५७। १४। १४-१६	१४-१६	५७। १४। १४-१६	३३। ४२	७०२। १७। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३६३-६४	आयन्त इव	५८। १-२	१-२	५८। १। १-२	१-२	५८। १। १-२	३३। ४२	७०२। १८। १३, म० १-पू० ३। ५। ३
३६५-६६	वर्णमहौ असि	५८। ३-४	३-४	५८। ३। ३-४	३-४	५८। ३। ३-४	३३। ४२	७०२। १९। १३, म० १-पू० ३। ५। ३

२ अथर्ववेद काण्ड २० के मन्त्र अन्य वेदों में सम्पूर्ण वा कुछ भेद से ॥

मन्त्र संख्या	मन्त्र	अथर्ववेद, (काण्ड २०) सूक्त, मन्त्र	अथर्ववेद, (अन्यत्र) काण्ड, सूक्त, मन्त्र	ऋग्वेद, मण्डल, सूक्त, मन्त्र	यजुर्वेद, अध्याय, मन्त्र	सामवेद, पूर्वार्चिक, उत्तरार्चिक आदि
३६७-६८	उदित्ये मधु	५६। १-२	२०। १०। १-२	७। ३२। १२-१३		७० २। १। १८ म० १ पू० १। ४। १०
३६८-७०	उदिन्वस्य	५६। ३-४		८। ६२। २८-३०		
३७१-७३	एवा ह्यसि वी	६०। १-३		१। ८। ८-१०		७० २। २। १८ म० १ पू० ३। ४। १०
३७४-७६	एवा ह्यस्य	६०। ४-६	२०। ७१। ४-६	८। १५। ४-६		म० १ पू० ४। १०। ३
३७७-७९	तं ते मदं	६१। १-३	२०। ६२। ८-१०	८। १५। १-३		
३८०-८२	तम्वभि प्र गायत	६१। ४-६	२०। १४। १-४	८। ६८। १-३		७० ३। २। २२ म० ५ पू० ४। १०८
३८३-८६	ययमु स्वाम	६२। १-४	२०। ६१। ४-६		२५। ४६	
३८७-८९	इन्द्राय साम	६२। ५-७	२०। १२४। ४-६	१०। १५७। १-५		७० ५। २। २२ म० ७ पू० ४। १०। ६
३९०-९२	तम्वभि प्रगा	६२। ८-१०	२०। १२४। ४-६	१। ८४। ७-६		म० ७ पू० ५। १। ४
३९३-९५	इमा तु कं भुव	६३। १-३	२०। १२४। ४-६	८। १२। १-३		७० ५। १। १६ म० १ पू० ५। १। ३
३९६-९८	य एक इद्दुवि	६३। ४-६		८। ६८। ४-६		७०८। २। १० म० ४ पू० ४। १०। ५
३९९-४०१	य इन्द्र सोम	६३। ७-९		८। २४। १६-१८		म० १ पू० ४। १०। ७
४०२-४०४	इन्द्र नो गधि	६४। १-३		८। २४। १६-१८		
४०५-४०७	एतु मध्वो म	६४। ४-६		८। २४। १६-१८		
४०८-४१०	एतो निवन्द्रं	६५। १-३		८। २४। १६-१८		
४११-४१३	स्तुहीन्द्रं व्य	६६। १-३		८। २४। १६-१८		
४१४	वनेति हि सु	६७। १		१। १३३। ७		

४१५	मो षु वो अस्म	६७।२	१।१३६।८	१५।४७	पू० ५।८।६७०६।१।१८
४१६	अग्निं होतारं	६७।३	१।१२७।१		
४१७-१६	यज्ञैः संमिश्रलाः	६७।४-६	२।३६।४, ५		
४२०-२२	सुरूपकृतु	६८।१-३	१।४।४-१०		
४२३-२६	परिहि विप्र	६८।४-१०	१।५।१-२		
४३०-३१	आ त्वेतानि	६८।११-१२	१।५।३-१०		
४३२-३६	स या नो योस	६९।१-८			७०१।२।१० म०१११ पू०२।७।१०
४४०-४२	युञ्जन्ति ब्रह्म	६९।९-११			म० १ ७० १।२।१०
४४३	आदह स्वधामनु	६९।१२	१।६५-१०		म० १ ७० २।२।७
४४४-४६	वीलु चिदाह	७०।१-६			
४५०-५१	इन्द्रं ण सं हि	७०।३-४			
४५२-५४	इन्द्रमिदं गोवि	७०।७-८			
४५५-६१	इन्द्रं वाजिषु	७०।१०-१६	१।७।४-१०		म० १० पू० ६।११।४ ७० २।१।८
४६२	इन्द्रं वयं महा	७०।११			पू० २।४।६
४६३	स नो वृषन्	७०।१२			७० ८।१।२
४६४	वृषा यूयेव	७०।१४			७० ८।१।२
४६५	इन्द्रं वो विश्व	७०।१६			
४६६-६८	इन्द्रं सानसि	७०।१७-२०	१।८।५-१०		म० १७ पू० २।४।५
४७०-७५	महो इन्द्रः परश्व	७१।१-६			म० १ पू० २।८।२
४७६-७८	यवा ह्यससू	७१।४-६			

२-अथर्ववेद काण्ड २० के मन्त्र अन्य वेदों में सम्पूर्ण वा कुछ भेद से ॥

मन्त्र संख्या	मन्त्र	अथर्व वेद, (काण्ड २०) सूक्त, मन्त्र	अथर्व वेद, (अन्यत्र) काण्ड, सूक्त, मन्त्र	ऋग्वेद, मण्डल, सूक्त, मन्त्र	यजुर्वेद, अध्याय, मन्त्र	सामवेद, पुर्वार्चिक, उत्तरार्चिक आदि
४७६-८८	इन्द्रं हि मत्स्य	७१।७-१६		१।६।१-१०	म० ७; ३३।२५	म० ७ पू० २।६।६
४८६-६१	विश्वेषु हि त्वा	७२।१-३		१।१३।२, ३, ६		
४६२	त्रि त्वा ततस्ते	७२।२	२०।७५।१			
४६३-६४	तुभ्येदिमा सवना	७३।१-२		७।२२।७-८		
४६५	म वो महे महि	७३।३		७।३१।१०		
४६६-६८	यदा वज्रं हिर	७३।४-७		१०।१३।३-५		
४६६-७५	यच्चिद्धि सत्य	७४।१-७		१।२६।१-७		
५०६-०८	वि त्वा ततस्ते	७५।१-३	म० १; २०।७२।२	१।१३१।३-५		
५०६-१६	वने न वायो	७६।१-८		१०।२६।१-८		
५१७-२४	आ सत्यो यातु	७७।१-८		४।१६।१-८		
५२५-२७	तद् वो गाय	७८।१-३		६।४५।२२-२४		उ० ८।२।४ म० १ पू० २।३।१
५२८	इन्द्रं क्रतुं न आ	७९।१	१८।३।६७			
६५२	मा नो अनाता	७९।२		७।३०।२७		उ० ६।३।६
५३०-३१	इन्द्रं ज्येष्ठं	८०।१-२		६।४६।५-६		म० १ पू० ६।१०।१
५३२-३३	यद् धाव इन्द्र	८१।१-२	२०।६२।२०-२१	८।७०।५-६		उ० २।२।११।म० १ पू० ६।६
५३४-३५	यदिन्द्रं यावत्	८२।१-२		७।३२।१८-१९		उ० ६।३।६ म० १ पू० ४।२।८
५३६-३७	इन्द्रं त्रिधातु	८३।१-२		६।४६।६-१०		म० १ पू० ३।८।४

५३८-४०	इन्द्र याहि	८४। १-३	१। ६। ४-६	२०। ८७-८६	३०। ४। २। ५
५४१-४४	मा चिद्वन्द्वं वि	८५। १-४	८। १। १-४		म० १-२ उ० ६। १। ५ म० १ पू० ३। ५। १०
५४५	ब्रह्मणा ते ब्रह्म	८६। १	३। ३५। ४		
५४६-५२	अध्वर्युषो ऽरुणं	८७। १-७	७। ६८। १-७		
५५३	बृहस्पते युव	८७। ७			
५५४-५६	यस्नस्तम्भ	८८। १-६	४। ५०। १-६		
५६०-७०	अस्तं व सु प्रतरं	८९। १-११	१०। ४२। १-११		
५७१-७२	उत प्रहामति	८९। ६-१०			
५७३-७४	गोमिष्टरेमा	८९। १०-११	७। ५०। ६-७		
			२०। १७। १०-११		
५७३			६४। १०-११		
५७५	बृहस्पतिर्नः परि	८९। ११	७। ५१। १		
५७६-७८	यो अद्रिमिन् प्र	९०। १-३	६। ७३। १-३		
५७६-६०	इमां धियं सप्त	९१। १-१२	१०। ६७। १-१२		
५६१-०५	अग्निं प्र गोपतिं	९२। १-१५	८। ६८। ४-१८		
५०६	अर्चत प्रार्चत	९२। ५			
५०७-१२	यो रीजा चर्ष	९२। १६-२१	८। ७०। १-६		पू० ४। ८। ३
			म० १६-१७। २०। १		म० १६-१७। ३०। ३। १। १५
			१०५। ४-५		म० १६। पू० ३। ६। १
६१३-१४	न किण्टं कर्मणा	९२। १८-१९			३०। ४। २। ८। ५ म० १८ पू० ३। ६। १
६१५-१६	यद् वाव इन्द्र	९२। २०-२१	२०। ८१। १-२		
६१७-१६	उत् त्वा मन्दन्तु	९३। १-३			
६२०-२४	ईडुखयन्ती	९३। ४-८	८। ६४। १-३		३०। ६। १। ३ म० १ पू० ३। १। १
६२५-३५	आ या विन्द्रः	९४। १-११	१०। १५३। १-५		म० ४ पू० २। ६। १
			१०। ४४। १-११		

२—अथर्ववेद काण्ड २० के मन्त्र अन्य वेदों में सम्पूर्ण वा कुछ भेद से ॥

मन्त्र संख्या	मन्त्र	अथर्ववेद, (काण्ड २०) सूक्त, मन्त्र	अथर्ववेद, (अन्यत्र) काण्ड, सूक्त, मन्त्र	ऋग्वेद, मण्डल, सूक्त, मन्त्र	यजुर्वेद, अध्याय, मन्त्र	सामवेद, पूर्वाचिक, उत्तराचिक आदि
६३६-३७	गोभिर्गरेमा	६४। १०-११	२०। १७। १०-११			
६३८	त्रिकहुकेषु	६५। १		२। २२। १		पू० ५। ८। १; उ० ६। ३। २०
६३६-४१	प्रोष्वस्मै पुरो	६५। २-४		१०। १३३। १-३		उ० ६। १। १४
६४२-४६	तीव्रस्याभि	६६। १-५		१०। १६०। १-५		
६४७-५०	सुञ्चामि त्वा	६६। ६-६	३। ११। १-४			
६५१	आहावमविदं	६६। १०	८। १। ३०			
६५२-५७	ब्रह्मणाग्निः	६६। ११-१६		१०। १६२। १-६		
६५८-६४	अग्नीभ्यां ते	६६। १७-२३	२। ३३। १-७			
६६५	अपेक्षि मनस	६६। २४		१०। १६४। १		उ० ८। २। १३ म० १ पू० ३। ८। १०
६६६-६८	वयमेनमिदा	६७। १-३		८। ६६। ७-६	२७। ३७-३८	उ० २। १। १२; म० १ पू० ३। ५। २
६६६-७०	त्वाभिद्धि हवा	६८। १-२		६। ४६। १-२		उ० ७। ३। १ म० १ पू० ३। ७। ४
६७१-७२	अग्नि त्वा पूर्वं	६८। १-२		८। ३। ७-८		उ० १। १। २३ म० १ पू० ५। २। ८
६७३-७५	अथा हीन्द्र	१००। १-३		८। ६८। ७-६		उ० २। १। ६ म० १ पू० १। १। ३
६७६-७८	अग्निं दूतं वृ	१०१। १-३		१। १२। १-३		उ० ७। २। २
६७६-८१	ईलेन्या नमस्य	१०२। १-३		२। २७। १३-१५		पू० १। ५। ६
६८२	अग्निमीलित्वा	१०३। १		८। ७१। १४		

(२७)

६८३-८४	अग्न आ हाहा	१०३।२-३	८।६।१-२	३३।८१-८३	७०७।२।७
६८५-८६	हमी उ त्वा पु	१०४।१-२	८।३।३-४		७०७।३।१८।म०१पू०३।६।८
६८७-८८	आ नो विश्वास्तु	१०४।३-४	८।६०।१-२	म१-२;३३।	७०७।१।२।म०१पू०३।८।७
६८९-६९	ऋमिन्द्र प्रतृति	१०५।१-३	८।६६।५-७	६६-६७	७०८।१।८।म०१पू०४।२।६
६९२	इत ऊती वो	१०५।३			पू०३।१०।१
६९३-६९४	यो राजा जर्ष	१०५।४-५			
६९५-६९७	तव त्यदिन्द्रियं	१०६।१-३	८।१५।७-६		७०८।१।११
६९८-७००	समस्य मन्यवे	१०७।१-३	८।६।४६		७०८।१।१३;म१पू०२।५।३
७०१,७०६	तदिदास भुवनेषु	१०७।४-१२			
७१०-१११	चित्रं देवानां	१०७।१३-१४	५।२।१-६		
७१२	सूर्यो देवीमुखसं	१०७।१५	१।११५।२		
७१३-११५	त्वं न इन्द्र-मरु	१०८।१-३	८।६८।१०-१२		७०४।२।१३;म०१पू०२।२।७
७१६-११८	स्वादोरित्या वि	१०८।१-३	१।८४।१०-१२		७०३।२।१।१५;म०१पू०५।३।१
७१९-२१	इन्द्राय मद्रुवने	११०।१-३	८।६२।१६-२१		७०१।२।४;म०१पू०२।७।४
७२२-२४	यत् सोममिन्द्र	१११।१-३	८।१२।१६-१८		पू०७।१०।४
७२५-२७	यद्रथ कच्च/वृ	११२।१-३	८।६३।४-६	म०११;३३;३५	म०१पू०२।४।२
७२८	ये सोमासः परा	११२।३			७०४।२।११
७२९-३०	उभयं शृणवच्	११३।१-२	८।६१।१-२		७०५।१।१४;म०१पू०३।१०।८
७३१-३२	अम्रावय्या अना	११४।१-२	८।२१।१३-१४		७०६।२।१४;म०१पू०५।२।१
७३३-३५	अहमिद्वि पितृ	११५।१-३	८।६।१०-१२		७०७।१।५;म०१पू०२।६।८
७३६-३७	मा भूय निष्ठया	०१६।१-२	८।१।१३-१४		

२—अथर्ववेद काण्ड २० के मन्त्र अन्य वेदों में सम्पूर्ण वा कुछ भेद से ॥

मन्त्र संख्या	मन्त्र	अथर्ववेद, (काण्ड २०) सूक्त, मन्त्र	अथर्ववेद, (अन्यत्र) काण्ड, सूक्त, मन्त्र	ऋग्वेद, मण्डल, सूक्त, मन्त्र	यजुर्वेद, अध्याय, मन्त्र	सामवेद, पूर्वार्चिक, उत्तरार्चिक आदि
७३८-४०	पिबा सोममिन्द्र	११७। १-३		७। २२। १-३		७०३। १। १३ म० १ पू० ५। ६। ८
७४१-४२	शग्य ३ पु	११८। १-२		८। ६१। ५-६		७०७। ३। ३ म१ पू० ३। ७। १
७४३-४४	इन्द्रमिद्र देवता	११८। ३-४		८। ३। ५-६		७०७। ३। ८; म० ३ पू० ३। ६। ७
७४५	अस्तावि मन्म	११९। १		८। ५२। ६		७०८। २। ७
७४६	तुरगयवो मधु	११९। २		८। ५१। १०		७०७। ३। १६
७४७-४८	यदिन्द्र प्रागपा	१२०। १-२		८। ४। १-२		७०५। १। १३ म० १ पू० ३। ६। ७
७४९-५०	अभि त्वा शूर नो	१२१। १-२		७। ३२। २२-२३	२७। ३५-३६	७०१। १। ११; म० १ पू० ३। ६। ७
७५१-५३	रेवतीर्नः संघमा	१२२। १-३		१। ३०। १३-१५		७०१। १। ११; म० १ पू० ३। ६। ७
७५४-५५	तत् सूर्यस्य दे	१२३। १-२		१। ११५। ४-५		७०४। ३। १४ म० १ पू० २। ६। ८
७५६-५८	कया नश्चित्र	१२४। १-३		४। ३१। १-३	२७। ३४-४१; ३६। ४-६	७०१। १। १२; म० १ पू० २। ६। ७
७५८-६१	इमा तु कं सुवना	१२४। ४-६	२०। ६३। १-३			
७६२-६८	अपेन्द्र प्राचो	१२५। १-७		१०। ११३। १-७		
७६९	कुविदङ्ग यव	१२५। २			१०। ३२; १६। ६; २३। ३८ १०। ३३-३४; २०। ७६-७७	
७७०-७१	युवं सुरामम	१२५। ४-५				

(१८)

७७२-७३	इन्द्रा सुत्रामा	१२५।६-७	७।६१-६२	१०।८६।१-२३	२३।२८	
७७४-६६	वि हि सोतोरसु	१२६।१-२३			२३।२६	
७६७	यदस्या अहुमे	१३६।४		१०।१५५।४		५०४।७।७
७६८	यद् देवासो लला	१३६।४		१०।१०१।१२		३०३।२।।१५ म०४ ५०६।६।३
७६९	यस्य प्राचीरज	१३७।१		४।३६।६		म०७ ५०४।४।१ म०१० ५०४।४।४
८००	कपुन्नरः कपुय	१३७।२		८।६६।१३-१७		
८०१	दधिक्रावणो अका	१३७।३			२३।३२	
८०२-०४	सुतासो मधुमत्त	१३७।४-६				
८०५-०६	अव द्रप्सो अशु	१३७।७-११				
८१०-१२	तमिन्द्र चाजयाम	१३७।१२-१४	२०।४७।१-३			
८१३-१५	महौ इन्द्रो य ओजसा	१३८।१-३		८।६।१-३		
८१६-२०	आ नूनमश्विना	१३८।१-५		८।६।१-५		
८२१-२५	यज्ञासन्त्या भुर	१४०।१-५		८।६।६-१०		
८२६-३०	यातं छुर्दिष्या	१४१।१-५		८।६।११-१५		
८३१-३६	अमुत्स्यु प्र दे	१४२।१-६		८।६।१६-२१		
८३७-४३	तं वा रथं वयम	१४३।१-७		४।४४।१-७		
८४४	इवेह यद् वां	१४३।७		४।४३।७		
८४५	मधुमतीरोषधी	१४३।८		४।५७।३		
८४६	पनाय्यं तदश्विना	१४३।९		८।५७।३		

सू० १ [५८८] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(३,८१३)

॥ ओ३म् ॥

अथर्ववेदः ॥

विंशं काण्डम् ॥

प्रथमोऽनुवाकः ॥

सूक्तम् १ ॥

मन्त्राः १—३ ॥ १ इन्द्रः ; २ मरुतः ; ३ अग्निदेवता ॥ १, २ गायत्री, ३ निचृद् गायत्री छन्दः ॥

राजप्रजाकर्तव्योपदेशः—राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

इन्द्र त्वा वृषभं वयं सुते सोमं हवामहे ।

स पाहि मध्वो अन्धसः ॥ १ ॥

इन्द्र । त्वा । वृषभम् । वयम् । सुते । सोमं । हवामहे ॥

सः । पाहि । मध्वः । अन्धसः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [अत्यन्त ऐश्वर्य वाले राजन्] (वृषभम्) बलिष्ठ (त्वा) तुझ को (सुते) सिद्ध किये हुये (सोमे) ऐश्वर्य वा ओषधियों के समूह में (वयम्) हम (हवामहे) बुलाते हैं । (सः) सो तू

१—(इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् (त्वा) त्वाम् (वृषभम्) बलिष्ठम् (वयम्) प्रजाजनाः (सुते) निष्पन्ने । सिद्धे (सोमे) ऐश्वर्य ओषधिगणे वा (हवामहे) आह्वयामः (सः) स त्वम् (पाहि) रक्षां कुरु (मध्वः) मधुरगुण-

(मन्त्रः) मधुर गुण से युक्त (अन्धसः) अन्न को (पाहि) रक्षा कर ॥ १ ॥

भावार्थ—प्रजाजन सत्कार के साथ ऐश्वर्य देकर धर्मात्मा राजा से अपनी रक्षा करावें, जैसे सद्बैद्य उत्तम ओषधियों से रोगी को अच्छा करता है । १ यह मन्त्र ऋग्वेद में है—३ । ४० । १ और आगे है—अथ० २० । सूक्त ६ । म० १ ॥

मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः ।

स सुगोपातमो जनः ॥ २ ॥

मरुतः । यस्य । हि । क्षये । पाथ । दिवः । वि-महसुः ॥

सः । सु-गोपातमः । जनः ॥ २ ॥

भावार्थ—(विमहसः) हे विविध पूजनीय (मरुतः) शूर विद्वानो ! (यस्य) जिस [राजा] के (क्षये) ऐश्वर्य में (दिवः) उत्तम व्यवहारों की (पाथ) तुम रक्षा करते हो, (सः हि) वही (सुगोपातमः) अच्छे प्रकार पृथिवी का अत्यन्त पालने वाला (जनः) पुरुष है ॥ २ ॥

भावार्थ—विद्वान् प्रजागण बुद्धिमान् राजा का सहाय करके परस्पर ऐश्वर्य बढ़ावें, जिससे वह सर्वथा प्रजा की रक्षा कर सके ॥ २ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—१ । ८६ । १ और यजु० ८ । ३१ ॥

उक्षान्नाय वृशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे ।

स्तोमैर्विधेमुग्रये ॥ ३ ॥

उक्ष-अन्नाय । वृश-अन्नाय । सोम-पृष्ठाय । वेधसे ॥

स्तोमैः । विधेमु । अग्रये ॥ ३ ॥

युक्तस्य (अन्धसः) अन्नस्य-निघ० २ । ७ ॥

२—(मरुतः) हे शूरविद्वांसः (यस्य) राज्ञः (हि) खलु (क्षये) क्षि निवासगत्योः, ऐश्वर्ये च-अच् । ऐश्वर्ये (पाथ) साहितिको दीर्घः । रक्षथ (दिवः) दिव्यव्यवहारान् (विमहसः) हे विविधपूजनीयाः (सः) स राजा (सुगोपातमः) अतिशयेन सुष्ठु पृथिवीरक्षकः (जनः) पुरुषः ॥

भाषार्थ—(उक्ताज्ञाय) प्रबलों के अन्न दाता (वशाज्ञाय) वशी भूत [निर्बल प्रजाओं] के अन्न दाता, (सोमपृष्ठाय) ऐश्वर्य के सींचने वाले (वेधसे) बुद्धिमान् (अग्नये) अग्नि [समान तेजस्वी राजा] की (स्तोमैः) स्तुति योग्य कर्मों से (विधेम) हम पूजा करें ॥ ३ ॥

भावार्थ—जिस प्रकार राजा अपने पराक्रम और धर्म नीति से प्रजा का उपकार करे, वैसे ही प्रजागण योग्य रीति से राजा की सेवा करते रहें ॥३॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—८ । ४३ । ११ और कुछ भेद से पहिले आचुका है—अ० ३ । २१ । ६ ॥

सूक्तम् २ ॥

१—४ ॥ १ मरुतः ; २ अग्निः ; ३ ब्रह्मा ; ४ द्रविणोदा देवता ॥ १, २ आर्ची गायत्री , ३ साम्नी पङ्क्तिः ; ४ आच्युष्णिक् ॥

विदुषां व्यवहारोपदेशः—विद्वानों के व्यवहार का उपदेश ॥

मरुतः पोत्रात् सुष्टुभः स्वर्कादुतुना सोमं पिबतु ॥ १ ॥

मरुतः । पोत्रात् । सु-स्तुभः । सु-अर्कात् । अ-तुना ।

सोमंम् । पिबतु ॥ १ ॥

भाषार्थ—(मरुतः) शूर विद्वान् लोग (सुष्टुभः) बड़े स्तुति योग्य, (स्वर्कात्) बड़े पूजनीय (पोत्रात्) पवित्र व्यवहार से (अतुना) अतु के

३—(उक्ताज्ञाय) अ० ३ । २१ । ६ । । श्वन्नुक्तनूपन० । उ० १ । १५६ । उक्त सेचने वृद्धौ च—कनिन् । उक्ता महन्नाम—निघ० ३ । ३ । उक्तभ्यो महद्भ्यः प्रबलेभ्योऽन्नं यस्मात् तस्मै । प्रबलानां भोजनदात्रे (वशाज्ञाय) वशिरण्योरु-पसंख्यानम् । वा० पा० ३ । ३ । ५८ । वश स्पृहायाम् , अप्, टाप् । वशाभ्यो वशीभूताभ्यः प्रजाभ्योऽन्नं यस्यात् तस्मै । निर्बलप्रजानां भोजनदात्रे (सोमपृष्ठाय) पृष्ठु सेचने—यक् । ऐश्वर्यस्य सेचकाय वर्धकाय (वेधसे) मेधाविने—निघ० ३ । १५ (स्तोमैः) स्तुत्यकर्मभिः (विधेम) परिचरेम (अग्नये) अग्निवत्तेज-स्विने राज्ञे ॥

१—(मरुतः) शूरविद्वांसः (पोत्रात्) सर्वधातुभ्यः घृन् । उ० ४ । १५६ । पूष् शोधने—घृन् । पवित्रव्यवहारात् (सुष्टुभः) स्तोमतिरर्चतिर्मा—निघ० ३ । १४, क्तिप् । बहुस्तुतियोभ्यात् (स्वर्कात्) बहुपूजनीयात् (अतुना) अतुना

अनुसार (सोमम्) उत्तम ओषधियों के रस को (पिबतु) पीवें ॥ १ ॥

भाषार्थ—मनुष्य उत्तम व्यवहारों से उत्तम ओषधि आदि का सेवन करके सदा सुख बढ़ावें ॥ १ ॥

यह मन्त्र कुछ भेद से ऋग्वेद में है— १ । १५ । २ ॥

अग्निराग्नीध्रात् सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु ॥ २ ॥

अग्निः । आग्नीध्रात् । सु-स्तुभः । सु-अर्कात् । ऋतुना ।
सोमम् । पिबतु ॥ २ ॥

भाषार्थ—(अग्निः) अग्नि [समान तेजस्वी पुरुष] (सुष्टुभः) बड़े स्तुति योग्य, (स्वर्कात्) बड़े पूजनीय (आग्नीध्रात्) अग्नि की प्रकाश विद्या को आभय में रखने वाले व्यवहार से (ऋतुना) ऋतु के साथ (सोमम्) उत्तम ओषधियों के रस को (पिबतु) पीवे ॥ २ ॥

भाषार्थ—मनुष्य उत्तम अग्नि विद्या के उपयोग से सदा सुख सामग्री बढ़ावे ॥ २ ॥

इन्द्रो ब्रह्मा ब्राह्मणात् सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु ॥ ३ ॥

इन्द्रः । ब्रह्मा । ब्राह्मणात् । सु-स्तुभः । सु-अर्कात् । ऋतुना ।
सोमम् । पिबतु ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) परम ऐश्वर्य वाला (ब्रह्मा) ब्रह्मा [वेदज्ञाता पुरुष] (सुष्टुभः) बड़े स्तुति योग्य, (स्वर्कात्) बड़े पूजनीय (ब्राह्मणात्)

सह । ऋतुमनुसृत्येत्यर्थः (सोमम्) सदोषधिरसम् (पिबतु) बहुवचनस्यैकवचनम् । पिबन्तु ॥

२—(अग्निः) अग्निवत्तेजस्वी पुरुषः (आग्नीध्रात्) अग्नि + इन्धी दीप्तौ-क्लिप्, नलोपः । अग्नीधः शरणे रञ् भं च । वा० पा० ४ । ३ । १२० । अग्नीध्-रञ्, भत्वाञ् जश् । अग्नीत् अग्निदीपनं यस्य शरण आभये तस्मात् । अग्निप्रकाशविद्याशरणयुक्तव्यवहारात् । शिष्टं पूर्ववत् ॥

३—(इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् (ब्रह्मा) वेदज्ञाता पुरुषः (ब्राह्मणात्)

ब्राह्मण [वेदोक्त ज्ञान] से (ऋतुना) ऋतु के अनुसार (सोमम्) उत्तम ओषधियों के रस को (पिबतु) पीवे ॥ ३ ॥

भावार्थ—वेदज्ञानी पुरुष वेदज्ञान से सदा सुख प्राप्त करे ॥ ३ ॥

देवो द्रविणोदाः पोत्रात् सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु ॥४

देवः । द्रविणः-दाः । पोत्रात् । सु-स्तुभः । सु-श्रुकात् ।

ऋतुना । सोमम् । पिबतु ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(देवः) विद्वान् (द्रविणोदाः) धन वा बल का दाता पुरुष, (सुष्टुभः) बड़े स्तुति योग्य, (स्वर्कात्) बड़े पूजनीय (पोत्रात्) पवित्र व्यवहार से (ऋतुना) ऋतु के अनुसार (सोमम्) उत्तम ओषधियों के रस को (पिबतु) पीवे ॥ ४ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग सुपात्रों को योग्य दान देकर सुख को प्राप्त हों ॥ ४ ॥

सूक्तम् ३ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥

राजप्रजाकर्तव्योपदेशः—राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबामि इमम् ।

एदं बर्हिः सुदो मम ॥ १ ॥

आ । याहि । सुषुमा । हि । ते । इन्द्र । सोमम् । पिब ।

इमम् ॥ आ । इदम् । बर्हिः । सुदुः । मम ॥ १ ॥

वेदोक्तज्ञानात् । शिष्टं पूर्ववत् ॥

४—(देवः) विद्वान् (द्रविणोदाः) द्रविणशब्दस्य सकार उपजनः, ददातेरसुनि बाहुलकादाकारलोपः । द्रविणोदाः कस्माद्धनं द्रविणमुच्यते यदेन-
दमिद्रवन्ति बलं वा द्रविणं यदेनेनामिद्रवन्ति तस्य दाता द्रविणोदाः—निरु-
८ । १ । धनस्य बलस्य वा दाता । अन्यत् पूर्ववत् ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (आ याहि) तू आ, (हि) क्योंकि (ते) तेरे लिये (सोमम्) सोम [उत्तम ओषधियों का रस] (सुषुम्) हम ने सिद्ध किया है, (इमम्) इस [रस] को (पिब) पी, (मम) मेरे (इदम्) इस (बर्हिः) उत्तम आसन पर (आ सदः) बैठ ॥ १ ॥

भाषार्थ—लोग विद्वान् सद्बुद्ध के सिद्ध किये हुये महौषधियों के रस से राजा को स्वस्थ बलवान् रख कर राजसिंहासन पर सुशोभित करें ॥ १ ॥

यह तुच ऋग्वेद में है—८ । १७ । १—३ । और सामवेद—४० । १ । १ । तुच १, मन्त्र १ सामवेद—५० । २ । १० । ७ तथा आगे है—अ० २० । ३८ । १—३ और ४७ । ७—६ ॥

आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना ।

उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥ २ ॥

आ । त्वा । ब्रह्म-युजा । हरी इति । वहताम् । इन्द्र । केशिना ॥ उप । ब्रह्माणि । नः । शृणु ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (ब्रह्मयुजा) धन के लिये जोड़े गये, (केशिना) सुन्दर केश [कन्धे आदि के वालों] वाले (हरी) रथ ले चलने वाले दो घोड़े [के समान बल और पराक्रम] (त्वा) तुम को (आ) सब ओर (वहताम्) ले चलें । (नः) हमारे (ब्रह्माणि)

१—(आ याहि) आगच्छ (सुषुम्) पुञ् अभिषवे—लिट्, छान्दसं रूपम्, साहितिको दीर्घः । वयमभिषुतवन्तः । निष्पादितवन्तः (हि) यस्मात् कारणात् (ते) तुभ्यम् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवन् राजन् (सोमम्) सदोषधिरसम् (पिब) पानं कुरु (इमम्) रसम् (इदम्) आस्तीर्णम् (बर्हिः) प्रवृद्धासनम् (आ सदः) लेटि, अडागमे, इतश्च लोपे च कृते रूपम् । निषीद ॥

२—(आ) समन्तात् (त्वा) त्वाम् (ब्रह्मयुजा) ब्रह्म धननाम—निघ० २ । १० । ब्रह्मणे धनाय युज्यमानौ (हरी) रथस्य होरकावश्वाविव बलपराक्रमौ (वहताम्) प्रापयताम् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवन् राजन् (केशिना) प्रशस्त-केशयुक्तौ एकन्धादिचिक्कणवालोपेतौ (उप) पूजयाम् (ब्रह्माणि) वेदज्ञानानि

वेदज्ञानों को (उप) आदर से (शृणु)-तू सुन ॥ २ ॥

भावार्थ—जैसे उत्तम बलवान् घोड़े रथ को ठिकाने पर पहुँचाते हैं, वैसे ही राजा वेदोक्त मार्ग पर चक्र कर अपने बल और पराक्रम से राज्य भार उठाकर प्रजा पालन करे ॥ २ ॥

इस मन्त्र का मिलान करो—दयानन्दभाष्य यजु० ८। ३४, ३५ और अथ० २०। २६। २ ॥

ब्रह्माणस्तवा वयं यजा सोमपामिन्द्र सोमिनः ।

सुतावन्तो हवामहे ॥ ३ ॥

ब्रह्माणः । त्वा । वयम् । युजा । सोम-पाम् । इन्द्र ।

सोमिनः ॥ सुत-वन्तः । हवामहे ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (सोमपाम्) ऐश्वर्य के रक्षक (त्वा) तुझ को (युजा) मित्रता के साथ (ब्रह्माणः) वेद जानने वाले, (सोमिनः) ऐश्वर्य वाले, (सुतवन्तः) उत्तम पुत्रादि [सन्तानों] वाले (वयम्) हम (हवामहे) बुलाते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—जिस राजा के सुप्रबन्ध से प्रजागण ज्ञानवान्, धनवान् और सुशिक्षित सन्तान वाले होवें, उसको मित्र जान कर सदा स्मरण करें ॥ ३ ॥

सूक्तम् ४ ॥

१—३॥ इन्द्रो देवता ॥ १ गायत्री; २, ३ निचृद् गायत्री ॥

महौषधिरसपानोपदेशः—महौषधियों के रसपान का उपदेश ॥

आ नो याहि सुतावन्तोऽस्माकं सुष्टुतीरुप ।

(नः) अस्माकम् (शृणु) आकर्ण्य ॥

३—(ब्रह्माणः) वेदज्ञानारः (त्वा) त्वाम् (वयम्) प्रजागणाः (युजा) सम्पदादिकिप् । संयोगेन । मित्रभावेन (सोमपाम्) ऐश्वर्यरक्षकम्—दयानन्द-भाष्ये, यजु० ८। ३४ (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवन् राजन् (सोमिनः) ऐश्वर्यवन्तः (सुतवन्तः) सुशिक्षितसन्तानयुक्ताः (हवामहे) आह्वयामः ॥

पिब॑ सु शिप्रि॒न्नन्ध॑सः ॥ १ ॥

आ । नः । याहि । सुत-व॑तः । अस्माक॑म् । सु-स्तु॑तीः ।

उप॑ ॥ पिब॑ । सु । शिप्रिन् । अन्ध॑सः ॥ १ ॥

भाषार्थ—[हे इन्द्र राजन् !] (अस्माकम्) हमारी (सुष्टुतीः) सुन्दर स्तुतियों को (उप=उपेत्य) प्राप्त होकर (सुतवतः) उत्तम पुत्र आदि [सन्तानों] वाले (नः) हम लोगों को (आ याहि) आकर प्राप्त हो । (सुशिप्रिन्) हे डढ़ जाबड़े वाले ! (अन्धसः) इस अन्न रस का (सु) भले प्रकार (पिब) पान कर ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्य सुन्दर महौषधियों के रस के सेवन से दृष्ट पुष्ट होवें ॥ १ ॥

यह त्व ऋग्वेद में है—८ । १७ । ४—६ ॥

आ ते॑ सिञ्चामि कुक्ष्योरनु॑ गात्रा वि धा॑वतु ।

गुभा॑य जिह्वा॒या मधु॑ ॥ २ ॥

आ । ते । सिञ्चामि । कुक्ष्योः । अनु॑ । गात्रा । वि ।

धा॑वतु ॥ गुभा॑य । जिह्वा॒या । मधु॑ ॥ २ ॥

भाषार्थ—[हे राजन् !] (ते) तेरी (कुक्ष्योः) दोनों कोखों में (मधु) मधुर पान को (आ) भली भाँति (सिञ्चामि) मैं सींचता हूँ, वह (गात्रा अनु)

१—(आ) आगत्य (नः) अस्मान् (याहि) प्राप्नुहि (सुतवतः) उत्तमसन्तानयुक्तान् (अस्माकम्) (सुष्टुतीः) शोभनाः स्तुतीः (उप) उपेत्य (पिब) पानं कुरु (सु) सुष्टु (शिप्रिन्) स्फायितश्चिवञ्चि० । उ० २ । १३ । शिञ् निशाने छेदने—रक् पुक् च, यद्वा सृष्ट् गतौ—रक्, सृशब्दस्य शिभावः । शिप्रे हनू नासिके वा—निरु० ६ । १७ । हे डढ़हनूयुक्त (अन्धसः) अन्नरसस्य ॥

२—(आ) समन्तात् (ते) तव (सिञ्चामि) अवनयामि । पूरयामि (कुक्ष्योः) सव्यदक्षिणपार्श्वयोः (अनु) प्रति (गात्रा) अङ्गानि (वि) विविधम् ।

सू० ५ [५८३] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(३,८७१.)

[तेरे] अङ्गों में (वि धावतु) दौड़ने लगे, [इय को] (जिह्वा) जीम से (गृभाय) ग्रहण कर ॥ २ ॥

भावार्थ—सद्वैद्य रुधिरसंचारक ओषधियों का सेवन कराके मनुष्यों को पुष्ट रक्खें ॥ २ ॥

स्वादुष्टे अस्तु संसुदे मधुमान् तन्वे ३ तव ।

सोमः शमस्तु ते हृदे ॥ ३ ॥

स्वादुः । ते । अस्तु । संसुदे । मधु-मान् । तन्वे । तव ॥

सोमः । शम् । अस्तु । ते । हृदे ॥ ३ ॥

भाषार्थ—[हे राजन् !] (सोमः) सोम [उत्तम ओषधियों का रस] (ते) तेरे (संसुदे) स्वीकार करने के लिये (स्वादुः) स्वादु [रोचक] और (तव) तेरे (तन्वे) शरीर के लिये (मधुमान्) मधुर रस वाला (अस्तु) होवे और (ते) तेरे (हृदे) हृदय के लिये (शम्) शान्तिकारक (अस्तु) होवे ॥ ३ ॥

भावार्थ—मनुष्य ऐसी उत्तम ओषधियों का रस सेवन करें जो जाने में स्वादिष्ट हों, शरीर को पुष्ट और हृदय को शान्त करें ॥ ३ ॥

सूक्तम् ५ ॥

मन्त्राः १—७ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, २, ६ गायत्री; ३—५, ७ निचृद् गायत्री छन्दः ॥

सोमसेवनोपदेशः—सोम रस के सेवन का उपदेश ॥

सर्वत्र (धावतु) प्रवहतु (गृभाय) शनः शायजादेशः, हस्य भः । गृहाण (जिह्वा) रसनया (मधु) मधुरपानम् ॥

३—(स्वादुः) रोचकः (ते) तव (अस्तु) (संसुदे) पूर आभुति-
हृत्योः—किप्, छान्दसो ह्रस्वः, आभुतिरङ्गीकारः । सम्यक् स्वीकरणाय (मधु-
मान्) माधुर्योपेतः (तन्वे) शरीराय (तव) (सोमः) सदौषधिरसः (तन्वे)
शरीराय (शम्) सुखकरः (अस्तु) (ते) तव (हृदे) हृदयाय ॥

(३, ८७२)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ५ [५८३]

अयमु त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः ।

प्र सोमं इन्द्र सर्पतु ॥ १ ॥

अयम् । ऊं इति । त्वा । वि-चर्ष-णे । जनीः-इव । अभि ।

सम्-वृतः ॥ प्र । सोमः । इन्द्र । सर्प-तु ॥ १ ॥

भाषार्थ—(विचर्षणे) हे दूरदर्शी (इन्द्र) इन्द्र ! [परम पेश्वर्य वाले पुरुष] (अयम् उ) यही (अभि) सब प्रकार (संवृतः) यथाविधि स्वीकार किया हुआ (सोमः) सोम [महौषधियों का रस], (जनीः इव) कुलस्त्रियों के समान, (त्वा) तुझको (प्र) अच्छे प्रकार (सर्पतु) प्राप्त होवे ॥ १ ॥

भावार्थ—जैसे कुलस्त्रियां अपने सन्तान आदि का हित करती हैं, वैसे ही सद्गुणों का सिद्ध किया हुआ महौषधियों का रस सुखदायक होता है ॥१॥

मन्त्र १-७ ऋग्वेद में हैं—८ । १७ । ६-१३ ॥

तुवि-ग्रीवो वुपोदरः सुबाहु रन्ध्रसो मदं ।

इन्द्रो वृचाणि जिघ्रते ॥ २ ॥

तुवि-ग्रीवः । वुपा-उदरः । सु-बाहुः । अन्ध्रसः । मदं ॥

इन्द्रः । वृचाणि । जिघ्रते ॥ २ ॥

भाषार्थ—(तुविग्रीवः) दढ़ गले वाला, (वुपोदरः) चर्बी से युक्त पेट वाला, (सुबाहुः) बलवान् भुजाओं वाला (इन्द्रः) इन्द्र [परम पेश्वर्य

१—(अयम्) (उ) एव (त्वा) त्वाम् (विचर्षणे) कृषेरादेश्च चः ।
उ० २ । १०४ । वि + कृष विलेखने—अनि, कस्य चः । विचर्षणिः पश्यतिकर्मा—
निघ० ३ । ११ । हे विविधं द्रष्टुं । दूरदर्शिन (जनीः) जनयः । कुलस्त्रियः (इव)
। यथा (अभि) अभितः । सर्वप्रकारेण (संवृतः) सम्यक् स्वीकृतः (प्र) प्रकर्षेण
(सोमः) महौषधिरसः (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् पुरुष (सर्पतु) प्राप्नोतु ॥

२—(तुविग्रीवः) दढ़कण्ठः (वुपोदरः) वपा वसा मेद उदरे यस्य सः
(सुबाहुः) प्रभूतबलभुक्तः (अन्ध्रसः) अन्तरलस्य (मदं) हर्षं (इन्द्रः) परमै-

वाला पुरुष] (अन्धसः) अन्न रस के (मदे) आनन्द में (वृत्राणि) बैरियों को (जिघ्रते) मारे ॥ २ ॥

भावार्थ—मनुष्य उत्तम ओषधियों के यथावत् सेवन से पुष्ट और बलवान् होकर शत्रुओं का नाश करे ॥ २ ॥

इन्द्रं प्रेहि पुरस्त्वं विश्वस्येशान् ओजसा ।

वृत्राणि वृत्रहं जहि ॥ ३ ॥

इन्द्रं । प्र । इहि । पुरः । त्वम् । विश्वस्य । ईशानः ।

ओजसा ॥ वृत्राणि । वृत्र-हन् । जहि ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [परम पेश्वर्य वाले राजन् !] (ओजसा) अपने बल से (विश्वस्य) सब का (ईशानः) स्वामी (त्वम्) तू (पुरः) सामने से (प्र इहि) आगे बढ़ । (वृत्रहन्) हे बैरियों के नाश करने वाले ! (वृत्राणि) बैरियों को (जहि) नाश कर ॥ ३ ॥

भावार्थ—मनुष्य महाबली होकर आगे बढ़ता हुआ सब विघ्नों को मिटावे ॥ ३ ॥

दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो येन वसुं प्रयच्छसि ।

यजमानाय सुन्वते ॥ ४ ॥

दीर्घः । ते । अस्तु । अङ्कुशः । येन । वसुं । प्र-यच्छसि ।

यजमानाय । सुन्वते ॥ ४ ॥

श्वर्यवान् पुरुषः (वृत्राणि) शत्रून् (जिघ्रते) हन्तेलेंद्र । लेटोऽडाटौ । पा० ३ । ४ । ६४ । अडागमः, शपः श्लुः । बहुलं छन्दसि । पा० ७ । ४ । ७८ । अभ्यासस्य इत्स्वम् । हन्यात् । मारयेत् ॥

३—(इन्द्र) (प्र) प्रकर्षेण (इहि) गच्छ (पुरः) अग्रतः (त्वम्) (विश्वस्य) सर्वस्य (ईशानः) स्वामी (ओजसा) स्वबलेन (वृत्राणि) शत्रून् (वृत्रहन्) हे शत्रुनाशक (जहि) नाशय ॥

भाषार्थ—[हे शूर !] (ते) तेरा (अङ्कुशः) अङ्कुश [दण्डसाधन] (दीर्घः) लम्बा (अस्तु) होवे, (येन) जिस के कारण से (सुन्वते) तत्त्व रस निचोड़ने वाले (यजमानाय) यजमान [दाता पुरुष] को (वसु) धन (प्रयच्छसि) तू देता है ॥ ४ ॥

भावार्थ—राजा दुष्टों के दण्ड देने में निष्पक्ष और प्रचण्ड होकर सज्जनों का मान बढ़ावे ॥ ४ ॥

अयं तं इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि ।

एहीमस्य द्रवा पिब ॥ ५ ॥

अयम् । ते । इन्द्र । सोमः । नि-पूतः । अधि । बर्हिषि ॥

आ । इहि । ईम् । अस्य । द्रव । पिब ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [परम पेश्वर्य वाले राजन् !] (ते) तेरे लिये (अयम्) यह (निपूतः) छाना हुआ (सोमः) सोम [महौषधियों का रस] (बर्हिषि अधि) बढ़िया आसन के ऊपर [है] । (आ इहि) तू आ, (ईम्) अब (द्रव) दौड़ और (अस्य) इस का (पिब) पान कर ॥ ५ ॥

भावार्थ—उत्तम सोम रस उत्तम आसन पर बैठ कर रुचि से पीना चाहिये ॥ ५ ॥

यह मन्त्र सामवेद में है—पू० २। ७। ५ और मन्त्र ५-७ सामवेद में हैं—उ० १। २। तृच ५ ॥

शाचिगो शाचिपूजनायं रणाय ते सुतः ।

आखण्डलु म हूयसे ॥ ६ ॥

४—(दीर्घः) आयतः । विस्तृतः (ते) तव (अस्तु) (अङ्कुशः) वक्राग्रो लौहास्त्रभेदः । दण्डसाधनम् (येन) कारणेन (वसु) धनम् (प्रयच्छसि) ददासि (यजमानाय) दानिने पुरुषाय (सुन्वते) तत्त्वरसं निष्पादयते ॥

५—(अयम्) (ते) तुभ्यम् (इन्द्र) (सोमः) सद्यौषधिरसः (निपूतः) नितरां शोधितः (अधि) उपरि (बर्हिषि) प्रवृद्धासने (इहि) आगच्छ (ईम्) इदानीम् (अस्य) सोमस्य (द्रव) त्वरया आगच्छ (पिब) पानं कुरु ॥

शाचिगो इति शाचि-गो । शाचि-पूजन । अयम् । रणाय ।
ते । सुतः ॥ आखण्डल । प्र । ह्यसे ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(शाचिगो) हे स्पष्ट वाणियों वाले ! (शाचिपूजन) हे प्रसिद्ध सत्कार वाले ! (अयम्) यह [सोमरस] (ते) तेरे लिये (रणाय) रण जीतने को (सुतः) सिद्ध किया गया है । (आखण्डल) हे [शत्रुओं के] खण्ड खण्ड करने वाले ! (प्र ह्यसे) तू आवाहन किया जाता है ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्य सत्यवक्ता, सत्य कीर्ति वाले पुरुष का सत्कार उत्तम पदार्थों से करें ॥ ६ ॥

यस्ते शृङ्गवृषो नपात् प्रणपात् कुण्डपाय्यः ।

न्यस्मिन् दध्ना आ मनः ॥ ७ ॥

यः । ते । शृङ्ग-वृषः । नपात् । प्रनपादिति प्र-नपात् ।

कुण्ड-पाय्यः ॥ नि । अस्मिन् । दध्ने । आ । मनः ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(शृङ्गवृषः) हे तेज की वृष्टि करने वाले [शूर पुरुष] के (नपात्) न गिराने वाले [राजन् !] (ते) तेरा (यः) जो (प्रणपात्) अतिशय करके न गिराने वाला (कुण्डपाय्यः) रक्षा करने वाले [सोमरस]

६—(शाचिगो) वसिष्ठपियजि० । उ० ४ । १२५ । शच व्यक्तायां वाचि-
इञ् । गौरिति वाङ्नाम—निघ० १ । ११ । शाचयः स्पष्टा गावो यस्य स
शाचिगुः । हे स्पष्टवाक् (शाचिपूजन) हे प्रख्यातसत्कार (अयम्) सोमरसः
(रणाय) रणं युद्धं जेतुम् (ते) तुभ्यम् (सुतः) संस्कृतः (आखण्डल)
मङ्गेरलच् । उ० ५ । ७० । आङ् + खण्डि भेदने-अलच् । हे शत्रूणां सर्वथा खण्ड-
यितः (प्र) प्रकर्षेण (ह्यसे) आहूतोऽसि ॥

७—(यः) (ते) तव (शृङ्गवृषः) शृणातेर्ह्रस्वश्च । उ० १ । १२६ । शृ
हिंसायाम्—गन्, जुडागम् + वृषु सेचने-क्प् । शृङ्गाणि ज्वलतो नाम-निघ०
१ । १७ । शृङ्गस्य तेजसो वर्षकस्य शूरस्य (नपात्) हे न पातयितः । रक्षक
(शृङ्गवृषो नपात्) सुबामन्त्रिते पराङ्गवत् स्वरे । पा० २ । १ । २ । इतिष्ठ्य-
न्तस्य शृङ्गवृदशब्दस्य पराङ्गवद् भावेनामन्त्रितानुप्रवेशात् समुदायस्याष्टमिकं
सर्वाजुदात्तत्वं (प्रणपात्) प्रकर्षेण न पातयिता रक्षिता (कुण्ड-

पीने का व्यवहार है । (अस्मिन्) उस में (मनः) मन को (नि) निरन्तर (आ दध्ने) मैं धारण करता हूँ ॥ ७ ॥

भावार्थ—जो राजा शूर वीर लोगों का उत्साह देने वाला और सोम यज्ञ करके अन्न आदि से प्रजा की रक्षा करे, विद्वान् जन उस राजा के उत्तम कामों से प्रसन्न हों ॥ ७ ॥

सूक्तम् ६ ॥

१—६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १—४, ६—६ गायत्री ; ५ निचृद् गायत्री ॥

राजप्रजाविषयोपदेशः - राजा और प्रजा के विषय का उपदेश ॥

इन्द्र ! त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे ।

स पाहि मध्वो अन्धसः ॥ १ ॥

इन्द्र ! त्वा । वृषभम् । वयम् । सुते । सोमे । हवामहे ॥

सः । पाहि । मध्वः । अन्धसः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [अत्यन्त पेश्वर्य वाले राजन्] (वृषभम्) बलिष्ठ (त्वा) तुझ को (सुते) सिद्ध किये हुये (सोमे) सोम [पेश्वर्य वा ओषधियों के समूह] में (वयम्) हम (हवामहे) बुलाते हैं । (सः) सो तू (मध्वः) मधुरगुण से युक्त (अन्धसः) अन्न की (पाहि) रक्षा कर ॥ १ ॥

भावार्थ—प्रजाजन सत्कार के साथ पेश्वर्य देकर धर्मात्मा राजा से अपनी रक्षा करावें, जैसे सदैव उत्तम ओषधियों से रोगी को अच्छा करता है ॥ १ ॥

पाय्यः) कुडि रक्षणे-अच् । क्रतौ कुण्डपाय्यसंचाय्यौ । पा० ३ । १ । १३० ।
कुण्ड + पा पाने—यत्, युगागमः । कुण्डो रक्षकः सोमः पातव्यो यस्मिन् स
व्यवहारः । क्रतुः कर्मनाम-निघ० २ । १ (नि) नितराम् (अस्मिन्) कुण्ड-
पाय्ये व्यवहारे (आ दध्ने) बहुलं छन्दसि । पा० ७ । १ । ८ । इति रुडागमः ।
अदमादधे । समन्ताद् दधामि धारयामि ॥

१—अयं मन्त्रो व्याख्यातः—अ० २० । १ । १ ॥

सू० ६ [५८४] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(३,८९९)

यह मन्त्र आचुका है—अ० २०।१।१। यह सूक्त ऋग्वेद में है—३।
४०।१—६ ॥

इन्द्रं क्रतुविदं सुतं सोमं हर्यं पुरुष्टुत ।

पिब वृषस्व तातृपिम् ॥ २ ॥

इन्द्रं । क्रतु-विदंस । सुतम् । सोमम् । हर्यं । पुरु-स्तुत ॥

पिब । आ । वृषस्व । ततृपिम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(पुरुष्टुत) हे बहुतों से बड़ाई किये गये (इन्द्र) इन्द्र !
[बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (क्रतुविदम्) बुद्धि के प्राप्त कराने वाले, (ततृपिम्)
तृप्त करने वाले, (सुतम्) सिद्ध किये हुये (सोमम्) सोम [महौषधियों के
रस] की (हर्यं) इच्छा कर, (पिब) पी (आ) और (वृषस्व) बलवान् हो॥२॥

भावार्थ—राजा बल और बुद्धि बढ़ाने वाले खान पान के भोजन से
तृप्त होकर स्वस्थ रहे ॥ २ ॥

यह मन्त्र आगे है—अ० २०।७।४ ॥

इन्द्र प्र णो धितवानं युञ्ज विश्वेभिर्देवेभिः ।

तिर स्तवान विशपते ॥ ३ ॥

इन्द्रं । प्र । नः । धित-वानम् । युञ्जम् । विश्वेभिः । देवेभिः ॥

तिर । स्तवान् । विशपते ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(स्तवान) हे बड़ाई किये गये ! (विशपते) हे प्रजापालक !

२—(इन्द्र) हे परमेश्वर्यवान् राजन् (क्रतुविदम्) प्रज्ञाप्रापकम् (सुतम्)

संस्कृतम् (सोमम्) महौषधिरन्मम् (हर्यं) कामयस्व (पुरुष्टुत) हे बहुभिः

प्रशंसित (पिब) (आ) समुच्चये (वृषस्व) बलिष्ठो भव (ततृपिम्)

किकिनाबुत्सर्गश्छन्दसि सदादिभ्यो दर्शनात् । वा० पा० ३।२।१७१। तुष

प्रीणने—किन्, साहितिको दीर्घः । तर्पकम् । प्रीणयितारम् ॥

२—(इन्द्र) (प्र तिर) वर्धय (नः) अस्मभ्यम् (धितवानम्) धि

(३, ८७८)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ६ [५८४]

(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (विश्वेभिः) सब (देवेभिः) विद्वानों के साथ (नः) हमारे लिये (धितवानम्) सेवनीय धन धारण कराने वाले (यज्ञम्) यज्ञ [विद्वानों के सत्कार, सत्संग और दान] को (प्रतिर) बढ़ा ॥ ३ ॥

भावार्थ—प्रजापालक राजा विद्वानों के साथ विद्या आदि श्रेष्ठ कर्मों की उन्नति कर के प्रजा का पेश्वर्य बढ़ावे ॥ २ ॥

इन्द्र सोमाः सुता इमे तव प्र यन्ति सत्पते ।

क्षयं चन्द्रासु इन्द्रवः ॥ ४ ॥

इन्द्र ! सोमाः । सुताः । इमे । तव । प्र । यन्ति । सत्-पते ॥

क्षयम् । चन्द्रासः । इन्द्रवः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(सत्पते) हे सत्पुरुषों के पालन करने वाले (इन्द्र) इन्द्र ! [सम्पूर्ण पेश्वर्य वाले राजन्] (इमे) यह (चन्द्रासः) आनन्द कारक, (इन्द्रवः) गीले [रसीले], (सुताः) सिद्ध किये हुये (सोमाः) सोम [महौषधियों के रस] (तव) तेरे (क्षयम्) रहने के स्थान को (प्रयन्ति) पहुँचते हैं ४

भावार्थ—राजा विद्वानों द्वारा उत्तम उपयोगी पदार्थों का संग्रह करके प्रजा को पाले ॥ ४ ॥

धृतौ-क+वन सेवने—घञ् । धितो धृतो वानः सेवनीयं धनं यस्मात् तम् (यज्ञम्) देवपूजासंगतिकरणदानव्यवहारम् (विश्वेभिः) सर्वैः (देवेभिः) विद्वद्भिः (स्तवान्) ष्टुञ् स्तुतौ—शानच्, छान्दसं रूपम्, कर्मणि कर्तृप्रत्ययः । हे स्तूयमान (विश्वपते) हे प्रजापालक ॥

४—(इन्द्र) (सोमाः) महौषधिरसाः (सुताः) संस्कृताः (इमे) (तव) (प्र) प्रकर्षेण (यन्ति) प्राप्नुवन्ति (सत्पते) सतां सत्पुरुषाणां पालक (क्षयम्) निवासस्थानम् (चन्द्रासः) चदि आह्लादने दीप्तौ च—रक्, असु-गागमः । आह्लादकाः (इन्द्रवः) उन्देरिचवादेः । उ० १ । १२ । इन्दी क्रोदने—उप्रत्ययः, उकारश्च इकारः । क्रियाः । सजलाः । रसान्तकाः ॥

दुधिष्वा जुठरे सुतं सोममिन्द्र वरेण्यम् ।

तव द्युक्षासु इन्द्रवः ॥ ५ ॥

दुधिष्व । जुठरे । सुतम् । सोमम् । इन्द्र । वरेण्यम् ॥

तव । द्युक्षासः । इन्द्रवः ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [संपूर्ण पेश्वर्य वाले राजन्] (वरेण्यम्) अङ्गीकार करने योग्य (सुतम्) सिद्ध किये हुये (सोमम्) सोम [अन्न आदि मद्यौषधियों के रस] को (जुठरे) पेट में (दुधिष्व) धर, (द्युक्षासः) व्यवहार में रहने वाले (इन्द्रवः) रसोले पदार्थ (तव) तेरे [ही हैं] ॥ ५ ॥

भावार्थ—राजा आदि श्रेष्ठ जन उत्तम पदार्थों के सेवन से बल और बुद्धि बढ़ावें ॥ ५ ॥

गिर्वैणः प्राहि नः सुतं मधोधाराभिरज्यसे ।

इन्द्र त्वादातुमिद् यशः ॥ ६ ॥

गिर्वैणः । प्राहि । नः । सुतम् । मधोः । धाराभिः । अज्यसे ॥

इन्द्र । त्वा-दातम् । इत् । यशः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(गिर्वैणः) हे वाणियों से सेवने योग्य ! (नः) हमारे (सुतम्) पेश्वर्य की (प्राहि) रक्षा कर, (मधोः) मधुर रस को (धाराभिः) धाराओं करके (अज्यसे) तू प्राप्त किया जाता है । (इन्द्र) हे इन्द्र ! [परम पेश्वर्य

५ —(दुधिष्व) दधाते लोट्, सांहितिको दीर्घः । धत्स्व । धरस्व (जुठरे) उदरे (सुतम्) संस्कृतम् (सोमम्) अन्नादिमद्यौषधिरसम् (इन्द्र) (वरेण्यम्) अ० ७ । १४ । ४ । वृज् वरणे-परय । स्वीकरणीयम् (तव) तवैव (द्युक्षासः) दिव् + क्षि निवासगत्योः-ङप्रत्ययः, असुगागमः । दिवि व्यवहारे निवासशीलाः (इन्द्रवः) म० ४ । सजलाः । रसात्मकाः पदार्थाः ॥

६ —(गिर्वैणः) गृ शब्दे—किप् + वत संभक्तौ-असुन् । गिर्वैणा देवो भवति गीर्भिरेन वनयन्ति—निरु० ६ । १४ । हे गीर्भिर्वाणीभिः सेवनीय (प्राहि) रक्ष (नः) अस्माकम् (सुतम्) पु पेश्वर्ये-क्त । पेश्वर्यम् (मधोः) मधुररसस्य (धाराभिः) प्रवाहैः (अज्यसे) प्राप्यसे (इन्द्र) (त्वादातम्) त्वा + दातः

(३,८८०)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ६ [५८४]

वाले राजन्] (त्वादातम्) तेरा दिया हुआ [वा शोध्वा हुआ] (इत्) ही (यशः) [हमारा] यश है ॥ ६ ॥

भावार्थ—प्रजागण धर्मात्मा राजा का यथा योग्य धनादि से सत्कार करके अपना पेश्वर्य और यश बढ़ावें ॥ ६ ॥

यह मन्त्र सामवेद में भी है—पू० ३।१।२ ॥

अभि द्युम्नानि वुनिन् इन्द्रं सचन्ते अक्षिता ।

पीत्वी सोमस्य ववृधे ॥ ७ ॥

अभि । द्युम्नानि । वुनिनः । इन्द्रम् । सचन्ते । अक्षिता ॥

पीत्वी । सोमस्य । ववृधे ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(वुनिनः) सेवक लोग (अक्षिता) न घटने वाले (द्युम्नानि) धनों [वा यशों] को (अभि=अभिलष्य) देखकर (इन्द्रम्) [बड़े पेश्वर्य वाले राजा] से (सचन्ते) मिलते हैं । वह (सोमस्य) सोम [अन्न आदि महौषधियों का रस] (पीत्वी) पीकर (ववृधे) बढ़ा है ॥ ७ ॥

भावार्थ—जो पराक्रमी धर्मात्मा राजा अक्षय धन और कीर्ति प्राप्त करता है, प्रजागण उससे प्रीति करते हैं ॥ ७ ॥

क, छान्दसं रूपम्, यद्वा दैप् शोधने-क । त्वादातम्=त्वया दातव्यम्—निरु० ४।४। त्वया दत्तं शोधितं विशदीकृतं वा (इत्) एव (यशः) अस्माकं कीर्तिः ॥

७—(अभि) अभिलष्य (द्युम्नानि) धापृवस्यज्यतिभ्यो नः । उ० ३।६। द्युत दीप्तौ-नप्रत्ययः, तकारस्य मकारः । द्युम्नं धननाम-निघ० २।१०। द्युम्नं द्योततेर्यशो वाञ्छं, वा-निरु० ५।५। धनानि । यशांसि (वुनिनः) वन संभक्तौ-अच् । अत इनिठनौ । पा० ५।२।११५। वन-इनि । संभजमानाः । सेवकाः (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं राजानम् (सचन्ते) षच् समवाये । संगच्छन्ते (अक्षिता) अक्षीणानि (पीत्वी) स्नात्वाद्यश्च । पा० ७।१।४६। इति त्वीभावः । पीत्वा । पानं कृत्वा (सोमस्य) अन्नादिमहौषधिरसस्य (ववृधे) प्रवृद्धो बभूव ॥

अर्वावितो नु आ गहि परावतश्च वृत्रहन् ।

इमा जुषस्व नो गिरः ॥ ८ ॥

अर्वा-वतः । नुः । आ । गहि । परा-वतः । च । वृत्र-हन् ॥

इमाः । जुषस्व । नुः । गिरः ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(वृत्रहन्) हे धन के पाने वाले ! (अर्वावतः) समीप देश से (च) और (परावतः) दूर देश से (नः) हम में (आ गहि) आ । और (नः) हमारी (इमाः) इन (गिरः) वाणियों का (जुषस्व) सेवन कर ॥ ८ ॥

भावार्थ—राजा धनवान् होकर समीप और दूर से प्रजा की पुकार सुनकर सदा रक्षा करे ॥ ८ ॥

इस मन्त्र का पूर्वार्ध कुछ भेद से आगे है—अ० २०।२०।४ और ५७।८ ॥

यदन्तरा परावतमर्वावितं च हुयसे ।

इन्द्रेह तत् आ गहि ॥ ८ ॥

यत् । अन्तरा । परा-वतम् । अर्वा-वतम् । च । हुयसे ॥

इन्द्र । इह । ततः । आ । गहि ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (यत्) जब कि (परावतम्) दूर देश (च) और (अर्वावतम्) समीप देश के (अन्तरा) बीच में (हुयसे) तू पुकारा जाता है, (ततः) इस लिये (इह) यहां पर

८—(अर्वावतः) अर्वाचीनात् । समीपदेशात् (नः) अस्मान् (आ गहि) आगच्छ (परावतः) दूरदेशात् (च) समुच्चये (वृत्रहन्) वृत्रं धननाम-निघ० २।१०। हन हिंसागत्योः—किप् । यो वृत्रं धनं हन्ति प्राप्नोति स वृत्रहा तरसम्बुद्धौ (इमाः) उच्चार्यमाणाः (जुषस्व) सेवस्य (नः) अस्माकम् (गिरः) वाचः ॥

४—(यत्) यदा (अन्तरा) मध्ये । अन्तरान्तरेण युक्ते । पा० २।३। ४। इति द्वितीया (परावतम्) दूरदेशम् (अर्वावतम्) समीपदेशम् (च) (हुयसे) आहूतो भवसि (इन्द्र) (इह) अत्र (ततः) तस्मात् कारणात् (आ

(आ गहि) तू आ ॥ ६ ॥

भावार्थ—जो न्यायी राजा योग्य अधिकारियों द्वारा सब स्थान में प्रजा को पाले, सब लोग उस से प्रीति करें ॥ ६ ॥

सूक्तम् ७ ॥

१—४ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ विराडाषीं गायत्री; २, ३ निचद् गायत्री; ४ गायत्री ॥

सेनापतिलक्षणोपदेशः—सेनापति के लक्षणों का उपदेश ॥

उद्धेदुभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम् ।

अस्तारमेषि सूर्य ॥ १ ॥

उद् । घृ । इत् । अभि । श्रुत-मघम् । वृषभम् । नर्य-अपसम् ॥

अस्तारम् । एषि । सूर्य ॥ १ ॥

भाषार्थ—(सूर्य) हे सूर्य ! [सर्वव्यापक वा सर्वप्रेरक परमेश्वर] (श्रुतमघम्) विख्यात धन वाले, (वृषभम्) बलवान्, (नर्यापसम्) मनुष्यों के हितकारी कर्म वाले, (अस्तारम् अभि) शत्रुओं के गिराने वाले पुरुष को (इत्) ही (घ) निश्चय करके (उद् एषि) तू उदय होता है ॥ १ ॥

भावार्थ—परमपिता जगदीश्वर पुरुषार्थी सर्वहितकारी शूर पुरुष का सदा सहाय करता है ॥ १ ॥

गहि) आगच्छ ॥

१—(उद् एषि) ऊर्ध्वं गच्छसि (घ) अवश्यम् (इत्) एव (अभि) प्रति (श्रुतमघम्) प्रख्यातधनयुक्तम् (वृषभम्) बलवन्तम् (नर्यापसम्) अपः कर्मनाम-निघ० २ । १ । तस्मै हितम् । पा० ५ । १ । ५ । इति नर-यत् । नरेभ्यो हितकर्माणम् (अस्तारम्) असु क्षेपणे—तुन् । रधादिभ्यश्च । पा० ७ । २ । ४ । इति इङ्विकल्पः । शत्रूणां निरसितारम् । क्षेतारम् (सूर्य) स्र गतौ यद्वा पू प्रेरणे यद्वा, सु + ईर गतौ—क्यप् । सूर्यः सतेर्वा सुवतेर्वा स्वीर्यतेर्वा—निघ० १२ । १४ । हे सर्वव्यापक सर्वप्रेरक वा परमेश्वर ॥

मन्त्र १—३ ऋग्वेद में हैं—= १. ६३ [सायणभाष्य ८२] । १-३ । मन्त्र १
साम० पू० २ । ४ । १, मन्त्र १-३ साम० उ० ६ । ३ । तृच ४ ॥

नव॒ यो न॑व॒तिं पुरो॑ बि॒भेद॑ बा॒ह्वाज॑सा ।

अहि॑ च वृ॒त्रहा॑व॒धीत् ॥ २ ॥

नव॑ । यः । न॒व॒तिस् । पुरः॑ । बि॒भेद॑ । बा॒हु-ओ॒जसा ॥

अहि॑स् । च । वृ॒त्र-हा । अ॒व॒धीत् ॥ २ ॥

स न॒ इन्द्रः॑ शि॒वः सखा॑श्वा॒वृह॑ गो॒मृद् यव॑मत् ॥

उ॒रुधा॑रेव दो॒हते ॥ ३ ॥

सः । नः । इन्द्रः॑ । शि॒वः । सखा॑ । अ॒श्व-वत् । गो-म॑त् ।

यव॑-मत् ॥ उ॒रुधा॑रा-इव । दो॒हते ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(यः) जिस (वृत्रहा) शत्रुनाशक [सेनापति] ने (बाह्वा-
जसा) अपने बाहु बल से (नव नवतिम्) नौ नव्वे [$8 + 80 = 88$ अथवा $8 \times 80 = 640$, अर्थात् असंख्य] (पुरः) दुर्गों को (बिभेद) तोड़ा है (च) और
(अहिम्) सर्प [सर्प समान हिंसक शत्रु] को (अवधीत्) मारा ॥ २ ॥

(सः) वह (शिवः) सुखदायक (सखा) मित्र (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े
पेश्वर्य वाला सेनापति] (उरुधारा इव) बहुत दूध वाली [गौ] के समान
(नः) हमारे लिये (अश्ववत्) उत्तम घोड़ों वाला, (गोमत्) उत्तम गौओं

२—(यः) इन्द्रः (नव नवतिम्) नव च नवतिं च, यद्वा नवगुणितां
नवतिं दशोत्तराणि अष्टाशतानि एतत् संख्याकाः । असंख्याः (पुरः) दुर्गाणि (बिभेद)
मिन्नवान् (बाह्वाजसा) भुजबलेन (अहिम्) आडिं अहिनिभ्यां ह्रस्वश्च । उ०
४ । १३८ । आड् + हन हिंसागत्योः—इण् स च डित् । आहन्तरं सर्पमिव हिंसकं
शत्रुम् (च) (वृत्रहा) शत्रुहन्ता (अवधीत्) हतवान् ॥

३—(सः) पूर्वोक्तः (नः) अस्मभ्यम् (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् सेनापतिः
(शिवः) सुखप्रदः (सखा) मित्रभूतः (अश्ववत्) उत्तमाश्वैर्युक्तम् (गोमत्)
उत्तमगोभिर्दपेतम् (यवमत्) उत्तमान्धुकं धनम् (उरुधारा) प्रभूतक्षीरधारा-

वाला और (यवमत्) उत्तम अन्न वाला [धन] (दोहते) दुहे [पूर्ण करे] ॥३॥

भाषार्थ—जो शूर सेनापति अनेक अधर्मी दुष्टों को नाश करे, वही प्रजा को धनवान् करता है ॥ २, ३ ॥

मन्त्र २ का मिलान करो—ऋक्० १। ८४। १३ ॥

इन्द्रं क्रतुविदं सुतं सोमं हर्यं पुरुष्टुत ।

पिब वृषस्व तातृपिम् ॥ ४ ॥

इन्द्रं । क्रतु-विदम् । सुतम् । सोमम् । हर्यं । पुरु-स्तुत ॥

पिब । आ । वृषस्व । तातृपिम् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(पुरुष्टुत) हे बहुतों से बड़ाई किये गये (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले सेनापति] (क्रतुविदम्) बुद्धि प्राप्त कराने वाले, (तत्पिम्) तृप्त कराने वाले, (सुतम्) सिद्ध किये हुये (सोमम्) सोम [महौषधियों के रस] की (हर्यं) इच्छा कर, (पिब) पी (आ) और (वृषस्व) बलवान् हो ॥ ४ ॥

भाषार्थ—सेनापति बल और बुद्धि बढ़ाने वाले खान पान के भोजन से तृप्त रह कर स्वस्थ रहे ॥ ४ ॥

यह मन्त्र आ चुका है—ऋ० २०। ६। २ ॥

सूक्तम् ८ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत् त्रिष्टुप् ॥

मनुष्यकर्तव्योपदेशः—मनुष्य के कर्तव्य का उपदेश ॥

एवा पाहि प्रत्नथा मन्दतु त्वा शुधि ब्रह्म वावृधस्वोत गीर्भिः ।

आविःसूर्यं कृणुहि पीपिहीषो जृहि शत्रूँ रभि गा इन्द्र तृन्धि १

एव । पाहि । प्रत्न-था । मन्दतु । त्वा । शुधि । ब्रह्म ।

युक्ता गाः (इव) यथा (दोहते) लेटि, अडागमः । पूरयेत् ॥

४—अयं मन्त्रो व्याख्यातः—ऋ० २०। ६। २ ॥

वृधस्व । उत । गीः-भिः ॥ अविः । सूर्यम् । कृणुहि ।
पीपिहि । इषः । जुहि । शत्रून् । अभि । गाः । इन्द्र ।
तुन्धि ॥ १ ॥

भावार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले पुरुष] (प्रजया) पहिले के समान (एव) ही [हमारी] (पाहि) रक्षा कर, (ब्रह्म) ईश्वर वा वेद (त्वा) तुझे (मन्दतु) हर्षित करे, [उसे] (श्रुधि) सुन (उत) और (गीर्भिः) वेद वाणियों से (वृधस्व) बढ़ । (सूर्यम्) सूर्य [सूर्य समान विद्या प्रकाश] को (अविः कृणु) प्रकट कर, (इषः) अन्नों को (पीपिहि) प्राप्त हो, (शत्रून्) शत्रुओं को (जुहि) मार और [उसकी] (गाः) वाणियों को (अभि) सर्वथा (तुन्धि) मिटा दे ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्य ईश्वर और वेद में भ्रष्टा कर के विद्य । और पुरुषार्थ द्वारा अन्न आदि से परिपूर्ण होकर शत्रुओं का नाश कर उनकी कुमर्यादाओं को हटावे ॥ १ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—६ १७।३ ॥

अर्वाङ्गेहि सोमकामं त्वाहुरयं सुतस्तस्य पिबामदीय ।
उरुव्यचा जुठर आ वृषस्व पितेव नः शृणुहि हुयमानः ॥ २ ॥
अर्वाङ् । आ । इहि । सोम-कामम् । त्वा । आहः । अयम् ।

१—(एव) अवधारणे (पाहि) रक्ष, अस्मान् (प्रजया) प्रजपूर्व विश्वेमात्थाल् छन्दसि । पा० ५ । ३ । १११ । इवार्थे थाल्प्रत्ययः । पूर्वं यथा- (मन्दतु) आमोदयतु । हर्षयतु (त्वा) त्वाम् (श्रुधि) शृणु (ब्रह्म) परमेश्वरो वेदो वा (वृधस्व) शपः श्लुः । वर्धस्व (उत) अपिच (गीर्भिः) वेदवाणीभिः (अविः) प्राकट्ये (सूर्यम्) सूर्यवद् विद्याप्रकाशम् (कृणुहि) कुरु (पीपिहि) पि गतौ—शपः श्लुः । तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घश्च । प्राप्नुहि (इषः) अन्नानि (जुहि) नाशय (शत्रून्) (अभि) सर्वथा (गाः) शत्रूणां वाचः (इन्द्र) हे परमेश्वर्यवन् पुरुष (तुन्धि) उत्तुर् हिंसानादरयोः । हिन्धि । नाशय ॥

सुतः । तस्य । पिब । मदाय ॥ उरु-व्यचाः । जठरे । आ ।
वृषस्व । पिता-इव । नः । शृणुहि । हूयमानः ॥ २ ॥

भाषार्थ—[हे सभाध्यक्ष !] (अर्वाङ्) सामने (आ इहि) आ,
(त्वा) तुझ को (सोमकामम्) ऐश्वर्य चाहने वाला (आहुः) वे कहते हैं,
(अयम्) यह (सुतः) सिद्ध किया हुआ [सोमरस] है, (मदाय) हर्ष के
लिये (तस्य) उस का (पिब) पान कर । (उरुःपचाः) बड़े सत्कार वाला
तू (जठरे) अपने पेट में [उसे] (आ वृषस्व) सौंच ले, [(पिता इव) पिता
के समान (हूयमानः) दुकारा गया तू (नः) हमारी [बात] (शृणुहि)
सुन ॥ २ ॥

भावार्थ—प्रजागण सभापति आदि महापुरुषों को पिता के समान
उत्तम पदार्थों और दित वचनों से प्रसन्न रखें और प्रदान पुरुष भी प्रजाजनों
को पुत्र के समान पालें ॥ २ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—१ । १०४ । ६ ॥

आपूर्णो अस्य कुलशः स्वाहा सेक्तेव कोशं सिंसिचे पिवधै ।
समु म्रिया आववृत्रन् मदाय प्रदक्षिणिदुभि सोमासु इन्द्रम् ॥३॥
आ-पूर्णः । अस्य । कुलशः । स्वाहा । सेक्ता-इव । कोशम् ।
सिंसिचे । पिवधै ॥ समु । जं इति । म्रियाः । आ । अव-
वृत्रन् । मदाय । प्र-दक्षिणित् । अभि । सोमासः । इन्द्रम् ॥

भाषार्थ—(अस्य) इस [महा पुरुष] का (कुलशः) कलस (आपूर्णः)

२—(अर्वाङ्) अभिमुखः (आ इहि) आगच्छ (सोमकामम्) ऐश्वर्य
कामयमानम् (त्वा) त्वाम् (आहुः) कथयन्ति विद्वांसः (अयम्) (सुतः)
निष्पादितः सोमरसः (तस्य) (पिब) पानं कुरु (मदाय) हर्षाय (उरुव्यचाः)
उरु + वि + अश्च गतिपूजनयोः—असुन् । उरु बहुविधं व्यचो विज्ञानं पूजनं
सत्करणं वा यस्य सः (जठरे) उदरे (आ) समन्तात् (वृषस्व) सिञ्चस्व (पिता)
(इव) यथा (नः) अस्माकं वार्ताम् (शृणुहि) शृणु (हूयमानः) कृताह्वानः ॥

३—(आपूर्णः) समन्तात् पूरितः (अस्य) इन्द्रस्य (कुलशः) कुम्भः

सू० ट [५८७]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(३,८८७)

मुंहामुंह भरा है, (स्वाहा) सुक्तर वाणी के साथ (सेका इव) भरने वाले के समान मैत्रे (कोशम्) वर्तन को (पिबध्यै) पीने के लिये (सिसिचे) भरा है । (प्रियाः) पियारे (प्रदक्षिणित्) दाहिनी ओर को प्राप्त होने वाले (सोमासः) सोम [महौषधियों के रस] (मदाय) हर्ष के लिये (इन्द्रम् अभि) इन्द्र [परम ऐश्वर्य वाले प्रधान] को (उ) ही (सम्) यथाविधि (आ) सब ओर (अववृत्रन्) वर्तमान हुये हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—विद्वान् सद्बुद्ध उत्तम उत्तम अन्न आदि ओषधियों के रस से आदर करके प्रधान पुरुष को हृष्ट पुष्ट रक्खें ॥ ३ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है ३।३२।१५ ॥

सूक्तम् ट ॥

१—४ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ पथ्यावृहती; २, ४ सतः पङ्क्तिः; ३ निचृद्-वृहती छन्दः ।

ईश्वरोपासनोपदेशः—ईश्वर को उपासना का उपदेश ॥

तं वो दुस्मसृतीषहं वसोर्मन्वानमन्धसः ।

अभि वृत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥ १ ॥

तम् । वुः । दुस्मस् । वृत्ति-सहम् । वसोः । मन्वानम् ।

अन्धसः ॥ अभि । वृत्सम् । न । स्वसरेषु । धेनवः । इन्द्रम् ।

गीः-भिः । नवामहे ॥ १ ॥

(स्वाहा) सुवाण्या (सेका) पूरकः (इव) यथा (कोशम्) पात्रम् (सिसिचे) विच क्षरणे—लिट् । अहं सिकवानहिम (पिबध्यै) तुमर्थे सेसेचसे० । पा० ३ । ४ । ६ । पा पात्रे—शच्यैन्, शित्वात् पिबादेशः, नित्वादाद्युदात्तः । पानं कर्तुम् (सम्) सम्यक् (उ) अवधारणे (प्रियाः) कमनीयाः (आ) समन्तात् (अव-वृत्रन्) वृत्तु वर्तने—लङ्, परस्मैपदम्, शपः श्लुः, रुडागमः । वर्तमाना अभवन् (मदाय) हर्षाय (प्रदक्षिणित्) प्रदक्षिण + इण् गतौ—क्लिप् । शकन्धादित्वात् परकपम् । सुपां सुलुक्० । पा० ७ । १ । ३६ । इति जसः सुः । प्रदक्षिणेतः । दक्षिणपार्श्वं गन्तारः (अभि) प्रति (सोमासः) महौषधिरसाः (इन्द्रम्) पर-मैश्वर्यन्तं प्रधानम् ॥

(६, ८८८)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ८ [५८७]

भाषार्थ—[हे मनुष्यो !] (वः) तुम्हारे लिये (तम्) उस (दस्मम्) दर्शनीय, (ऋतीषहम्) शत्रुओं के हराने वाले, (वसोः) धन से और (अन्धसः) अज्ञ से (मन्दानम्) आनन्द देने वाले (इन्द्रम्) इन्द्र [परम ऐश्वर्य वाले परमात्मा] को (गीर्भिः) वाणियों से (अभि) सब प्रकार (नवामहे) हम सराहते हैं, (न) जैसे (धेनवः) गौयें (स्वसरेषु) घरों में [वर्तमान] (वत्सम्) बकुड़े को [हिङ्कारती हैं] ॥ १ ॥

भावार्थ—जो परमात्मा अनेक धन और अज्ञ आदि देकर हमें तृप्त करता है, उसे ऐसी प्रीति से हम स्मरण करें, जैसे गौयें दोहने के समय घर में बन्धे छोटे बच्चों को पुकारती हैं ॥ १ ॥

मन्त्र १, २ ऋग्वेद में हैं—८। ८८ [सायणभाष्य ७७] । १, २, साम० उ० १। १। १३, मन्त्र १ यजु० २६। ११ और साम० पू० ३। ५। ४ और मन्त्र १—४ आगे हैं—अ० २०। ४४। ४—७ ॥

व्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुहुभोजसम् ।

सुमन्तं वाजं शुतिनं सहस्रिणं मधू गोमन्तमीमहे ॥ २ ॥

व्युक्षम् । सु-दानुम् । तविषीभिः । आ-वृतम् । गिरिम् । न । पुहु-भोजसम् ॥ सु-मन्तम् । वाजम् । शुतिनम् । सहस्रिणम् । मधू । गो-मन्तम् । ई-महे ॥ २ ॥

१—(तम्) प्रसिद्धम् (वः) शुष्मदर्थम् (दस्मम्) इषियुधीन्धिदसि० । उ० १। १४५ । दस दर्शनसंदर्शनयोः—मक् । दर्शनीयम् (ऋतीषहम्) सांहितिको दीर्घः । ऋतयो बाधकाः शत्रवः, तेषामभिभवितारम् (वसोः) वसुनः । धनात् (मन्दानम्) सम्यानञ् स्तुवः । उ० २। ६० । यदि स्तुतिमोदमदादिषु—आनञ् । आमोदयितारम् (अन्धसः) अज्ञात् (अभि) सर्वतः (वत्सम्) शिशुम् (न) इव (स्वसरेषु) स्व—सु गतौ—पचाद्यच् । स्वेन आत्मना सरन्ति गच्छन्ति यत्र । स्वसराणि गृह्णाम—निघ० ३। ४ । गृहेषु । गोष्ठेषु (धेनवः) गावः (गीर्भिः) वाणीभिः (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवर्तं परमात्मनम् (नवामहे) ए स्तुता—छद् । स्तुमः ॥

भाषार्थ—(द्युत्तम्) व्यवहारों में गति वाले, (सुदानुम्) बड़े दानी, (तविषीभिः) सेनाओं से (आवृतम्) भरपूर (गिरिम्) मेघ के समान (पुरुभोजसम्) बहुत पालन करने वाले, (क्षुमन्तम्) अन्न वाले, (वाजम्) बल वाले, (शतिनम्) सैकड़ों उत्तम पदार्थों वाले (सहस्रिणम्) सहस्रों श्रेष्ठ गुण वाले, (गोमन्तम्) उत्तम गौओं वाले [शूर पुरुष] को (मत्तु) शीघ्र [इन्द्र परमात्मा से] (ईमहे) हम मांगते हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमात्मा से प्रार्थना कर के प्रयत्न करें कि वे अपने सन्तानों, अधिकारियों और प्रजाजनों सहित शूरवीर होकर व्यवहार कुशल होवें ॥ २ ॥

तत् त्वां यामि सुवीर्यं तद् ब्रह्म पूर्वचित्तये ।

येना यतिभ्यो भृगवे धने हिते येन प्रस्कण्वमाविंथ ॥ ३ ॥

तत् । त्वा । यामि । सु-वीर्यम् । तत् । ब्रह्म । पूर्व-चित्तये ॥

येन । यति-भ्यः । भृगवे । धने । हिते । येन । प्रस्कण्वम् ॥

आविंथ ॥ ३ ॥

भाषार्थ—[हे परमात्मन् !] (त्वा) तुझ से (तत्) वह (सुवीर्यम्)

२—(द्युत्तम्) दिव्य व्यवहारे—डिवि + क्षि निवासगत्योः—ङप्रत्ययः । द्युषु व्यवहारेषु गन्तारम् (सुदानुम्) महादानिनम् (तविषीभिः) तु वृद्धौ पूर्तौ च-टिषन्, डीप् । तविषी बलनाम—निघ० २ । ६ । बलैः । सेनाभिः (आवृतम्) आच्छादितम् । प्रपूर्णम् (गिरिम्) गिरिर्मेघनाम—निघ० १ । १० । मेघम् (न) इव (पुरुभोजसम्) बहुपालकम् (क्षुमन्तम्) आङ्परयोः स्निग्धभ्यां ङिच् । उ० १ । ३३ । दु दु शब्दे, क्षि निवासगत्योः, ऐश्वर्ये च—कुप्रत्ययः स च ङित् । क्षु अन्ननाम—निघ० २ । ७ । अन्नवन्तम् (वाजम्) अर्श आद्यच् । वाजवन्तम् । बलवन्तम् (शतिनम्) असंख्यश्रेष्ठपदार्थयुक्तम् (सहस्रिणम्) तपः-सहस्राभ्यां चिनीनी । पा० ५ । २ । १०२ । सहस्र—इति । असंख्य-श्रेष्ठगुणोपेतम् (मत्तु) शीघ्रम् (गोमन्तम्) प्रशस्तगोभिर्युक्तम् (ईमहे) याचामहे—निघ० ३ । १६ ॥

३—(तत्) तादृक् (त्वा) त्वाम् (यामि) अथापि वर्षलोपो भवति कक्षा यामीति—निघ० २ । १ । याचामि । याचे (सुवीर्यम्) महद्वीरत्वम्

बड़ा वीरत्व और (तत्) वह (ब्रह्मा) बढ़ता हुआ अन्न (पूर्वचित्तये) पहिले ज्ञान के लिए (यासि) मैं मांगता हूं । (येन) जिस [वीरत्व और अन्न] से (धने हिते) धन के स्थापित होने पर (यतिभ्यः) यतियों [यत्नशीलों] के लिये (भृगवे=भृगुम्) परिपक्व ज्ञानी को और (येन) जिस से (प्रस्कणवम्) बड़े बुद्धिमान् पुरुष को (आविथ) तू ने बताया है ॥ ३ ॥

भाषार्थ—मनुष्यों को परमात्मा की उपासना कर के पुरुषार्थ के साथ प्रथम धेयी के पराक्रमी, अन्नवान् और धनी होना चाहिये, जिसके अनुकरण से प्रयत्नशील पुरुष सुरक्षित रहें ॥ ३ ॥

मन्त्र ३, ४ ऋग्वेद में है — ८ । ३ । ६, १० ॥

येना समुद्रमसृजो महीरुपस्तदिन्द्र वृष्णि ते शवः ।

सद्यः सो अस्य महिमा न संनश्ये यं क्षोणीरनुचक्रुदे ॥ ४ ॥

येन । समुद्रम् । असृजः । महीः । अपः । तत् । इन्द्र । वृष्णि । ते । शवः ॥ सद्यः । सः । अस्य । महिमा । न । सं-
नश्ये । यम् । क्षोणीः । अनु-चक्रुदे ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(येन) जिस [बल] से (समुद्रम्) समुद्र में (महीः) शक्तिशाली (अपः) जलों को (असृजः) तू ने उत्पन्न किया है, (इन्द्र) हे इन्द्र ! [परम ऐश्वर्यवान् जगदीश्वर] (तत्) वह (ते) तेरा (वृष्णि) परा-

(तत्) (ब्रह्मा) प्रबुद्धम् अन्नम्—निघ० २ । ७ (पूर्वचित्तये) चित्ती संज्ञाने-क्तिन् प्रथमज्ञानाय (येन) सुवीर्येण ब्रह्मणा च (यतिभ्यः) सर्वधातुभ्य इन् । ३० ४ । ११८ । यती प्रयत्ने-इन् । प्रयत्नशीलेभ्यः (भृगवे) प्रथिभ्रदिभ्रस्त्रां सम्प्रसारणं सलोपश्च । ३० १ । २८ । असृज पाके-कु । द्वितीयार्थे चतुर्थी । भृगुम् । परिपक्व-ज्ञानिनम् (धने) (हिते) स्थापिते (येन) (प्रस्कणवम्) प्रकृष्टश्चासौ कणवो मेधावी च तं यथा दयानन्दभाष्ये, ऋ० १ । ४४ । ६ (आविथ) अव-रक्षणे-लिट् । त्वं ररक्षिथ ॥

४—(येन) शवसा । बलेन (समुद्रम्) जलौघम् (असृजः) त्वं सृष्टवान् (महीः) महतीः । शक्तिशालिनीः (अपः) जलानि (तत्) तावक् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् जगदीश्वर (वृष्णि) पराक्रमयुक्तम् (ते) तव (शवः) बलम्

क्रम युक्त (शवः) बल है । (सद्यः) अब भी (अस्य) उस [परमात्मा] की (सः) वह (महिमा) महिमा [हम से] (न) नहीं (संनशे) पाने योग्य है, (यम्) जिस [परमात्मा] को (क्षोणीः) लोकों ने (अनुचक्रदे) निरन्तर पुकारा है ॥ ४ ॥

भावार्थ—जिस परमात्मा ने मेघ मण्डल में और पृथिवी पर जल आदि पदार्थ और सब लोकों को उत्पन्न कर के अपने वश में रक्खा है, उसकी महिमा की सीमा को सृष्टि में कोई भी नहीं पा सकता है ॥ ४ ॥

सूक्तम् १० ॥

१—२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ पथ्या बृहती; २ निचृदार्षी पङ्क्तिः ॥

ईश्वरोपासनोद्देशः—ईश्वर की उपासना का उपदेश ॥

उदु त्ये मधुमत्तमा गिरु स्तोमास ईरते ।

सुत्राजितो धनुसा अक्षितोतयो वाजुयन्तो रथा इव ॥ १ ॥

उत् । ऊं इति । त्ये । मधुमत्-तमाः । गिरः । स्तोमासः ।

ईरते ॥ सुत्राजितः । धनु-साः । अक्षित-ऊतयः । वाजु-यन्तः ।

रथाः-इव ॥ १ ॥

भाषार्थ—(त्ये) वे (मधुमत्तमाः) अतिमधुर (स्तोमासः) स्तोत्र (उ) और (गिरः) वाणियां (उत् ईरते) ऊंची जाती हैं । (इव) जैसे

(सद्यः) इदानीमपि (सः) (अस्य) इन्द्रस्य । परमेश्वरस्य (महिमा) महत्त्वम् (न) निषेधे (संनशे) नशत्, व्याप्तिकर्मा—निघ० २ । १८ । कृत्यार्थे तवैकेनकेन्यत्वनः । पा० ३ । ४ । १४ । नश व्याप्तौ—केनप्रत्ययः । सम्यक् प्रापणीयः (यम्) इन्द्रम् (क्षोणीः) वीज्याञ्चरिभ्योनिः । उ० ४ । ४८ । दुःक्षु शब्दे—नि, डीष् । क्षोणी पृथिवीनाम्—निघ० १ । १ । क्षोण्यः । पृथिव्यः । लोकाः (अनुचक्रदे) निरन्तरं क्रन्दन्ति स्म ॥

१—(उत्) ऊर्ध्वम् (उ) चार्थे (त्ये) ते (मधुमत्तमाः) अतिशयेन मधुराः (गिरः) वाणयः (स्तोमासः) स्तोत्राणि (ईरते) गच्छन्ति (सुत्राजितः) सत्रा सत्यनाम्—निघ० ३ । १० । सत्रा सत्येन जेतारः (धनुसाः) जनसन्तान-

(सत्राजितः) सत्य से जीतने वाले, (धनसाः) धन देने वाले, (अक्षितोत्थः) अक्षय रक्षा करने वाले, (वाजयन्तः) बल प्रकट करते हुये (रथाः) रथ [आगे बढ़ते हैं] ॥ १ ॥

भावार्थ—जैसे शूर वीरों के रथ रण क्षेत्र में विजय पाने के लिये उमंग से चलते हैं, वैसे ही मनुष्य दोषों और दुष्टों को वश में करने के लिये परमात्मा की स्तुति को बड़े आनन्द से किया करें ॥ १ ॥

मन्त्र १, २ ऋग्वेद में हैं—८।३।१५, १६, साम ० उ० ६।१।६ और आगे हैं—अ० २०।५६।१, २ तथा म० १ साम० पू० ३।६।६ में भी है ॥

कण्वा इव भृगवः सूर्या इव विश्वमिद् धीतमानशुः ।

इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन् ॥ २ ॥

कण्वाः-इव । भृगवः । सूर्याः-इव । विश्वम् । इत् । धीतम् । आनशुः ॥ इन्द्रम् । स्तोमेभिः । महयन्तः । आयवः । प्रियमेधासः । अस्वरन् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(कण्वाः इव) बुद्धिमानों के समान और (सूर्याः इव) सूर्यों के समान [तेजस्वी], (भृगवः) परिपक्व ज्ञान वाले, (महयन्तः) पूजते हुये, (प्रियमेधासः) यज्ञ को प्रिय जानने वाले (आयवः) मनुष्यों ने (विश्वम्) व्यापक, (धीतम्) ध्यान किये गये (इन्द्रम्) इन्द्र [परमात्मा] को (इत्)

क्रमगमो विट् । पा० ३।२।६७। षण् संभक्तौ—विट् । विड्वनोरनुनासिकस्यात् । पा० ६।४।४१। इत्यात्वम् । धनानां संभक्ताः । धनप्रदाः (अक्षितोत्थः) अक्षीणरक्षणाः (वाजयन्त) वाज—क्यच्, शतृ । वाजं बलमिच्छन्तः (रथाः) युद्धयानानि (इव) यथा ॥

२—(कण्वाः) मेधाविनः (इव) यथा (भृगवः) सू० ६।३। परिपक्वज्ञानिनः (सूर्याः) प्रकाशमानाः सूर्यलोकाः (इव) यथा (विश्वम्) व्यापकम् (इत्) एव (धीतम्) ध्यातम् (आनशुः) प्रापुः (इन्द्रम्) परमात्मानम् (स्तोमेभिः) स्तोत्रैः (महयन्तः) पूजयन्तः (आयवः) मनुष्याः—निघ० ३।३ (प्रियमेधासः) मिधु मेधु संगमे हिंसामेधयोश्च-प्रज्ञ, असृक् च । मेधो यज्ञ-

सू० ११ [५८८] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥ (३, ८८१)

ही (स्तोमैभिः) स्तोत्रों से (आनयुः) पाया है और (अस्वरन्) उच्चारण है ॥ २ ॥

भावार्थ—मनुष्य बुद्धिमानों और सूर्यों के समान प्रतापी हो कर परमात्मा के गुणों को गाते हुये आत्मोन्नति करें ॥ २ ॥

सूक्तम् ११ ॥

१—११ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, २, ११ त्रिष्टुप्; ३, ६, ६ विराडापी त्रिष्टुप् ४, ५, ७, १० निचृत् त्रिष्टुप्; = भूरिक् पङ्क्तिः ॥

राजप्रजाकर्तव्योपदेशः— राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

इन्द्रः पूभिर्दातिरुद्दासमुक्तेर्विद्वद्वसुर्दयमानो वि शत्रून् ।
ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधानो भूरिदात्र आपृणद् रोदसी उभे ॥ १ ॥
इन्द्रः । पुः-भित् । आ । अतिरत् । दासम् । अर्कैः । विदत्-
वसुः । दयमानः । वि । शत्रून् ॥ ब्रह्म-जूतः । तन्वा । वावृ-
धानः । भूरि-दात्रः । आ । अपृणत् । रोदसी इति । उभे इति १

भाषार्थ—(विद्वद्वसुः) ज्ञानी श्रेष्ठ पुरुषों से युक्त (पूभिर्त्) [शत्रु-
ओं के] गढ़ों को तोड़ने वाले, (शत्रून्) वैरियों को (वि) विविध प्रकार
(दयमानः) मास्ते हुये (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले राजा] ने (अर्कैः)
पूजनीय विचारों से (दासम्) दास [सेवक] को (आ अतिरत्) बढ़ाया है ।

नाम—निघ ० ३ । १७ । मेधा यज्ञाः प्रिया येषां ते (अस्वरन्) शब्दम् अकुर्वन् ।
उच्चारितवन्तः ॥

१—(इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् राजा (पूभिर्त्) शत्रूणां पुरां दुर्गाणां भेत्ता
(आ अतिरत्) प्रावर्धयत् (दासम्) दास दाने—घञ् । सेवकम् (अर्कैः)
अर्चनीयैर्मन्त्रैर्विचारैः (विद्वद्वसुः) विद्वद् ज्ञाने शत्रु । विदन्तो जानन्तो वसवः
श्रेष्ठपुरुषा यस्य सः (दयमानः) दय दानगतिरक्षणहिंसादानेषु—शानच् ।
विद्वद्वसुर्दयमानो विशत्रूनिति हिंसाकर्मा—निरु० ४ । १७ । हिंसन् । नाशयन्
(वि) विविधम् (शत्रून्) (ब्रह्मजूतः) ब्रह्मभिर्महाविद्वद्भिः प्रेरितः (तन्वा)

(३, ८८४)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ११ [५८८]

(ब्रह्मजुतः) ब्रह्माओं [महाविद्वानों] से प्रेरणा किये गये, (तन्वा) उपकार शक्ति से (वावृधानः) बढ़ते हुये, (भूरिदात्रः) बहुत से अस्त्र शस्त्र वाले [शस्त्र] ने (उभे) दोनों (रोदसी) आकाश और भूमि को (आ) भले प्रकार (अपृणात्) तृप्त किया है ॥ १ ॥

भावार्थ—जिस राजा की समा में विद्वान् लोग सम्प्रति दाता होते हैं, वह राजा शत्रुओं का नाश और प्रजा का पालन कर के विज्ञान द्वारा पृथिवी और आकाश को वश में करके संसार को सुखी करता है ॥ १ ॥

यह पूरा सूक्त ऋग्वेद में है—३ । ३४ । १—११ ॥

मुखस्य ते तविषस्य प्र जुतिमियमि वाचममृताय भूषन् ।
इन्द्रं क्षितीनामसि मानुषीणां विशां दैवीनामुत पूर्वयावा ॥२॥
मुखस्य । ते । तविषस्य । प्र । जुतिम् । इयमि । वाचम् ।
अमृताय । भूषन् ॥ इन्द्रं । क्षितीनाम् । असि । मानुषीणाम् ।
विशाम् । दैवीनाम् । उत । पूर्व-यावा ॥ २ ॥

भाषार्थ—(अमृताय) अविनाशी सुख के लिये (वाचम्) अपनी वाणी को (भूषन्) शोभित करता हुआ मैं (ते) तेरे (तविषस्य) बड़े (मुखस्य) यज्ञ के (जुतिम्) वेग को (प्र इयमि) प्राप्त होता हूँ । (इन्द्र) हे इन्द्र ! [महाप्रतापी राजन्] तू (क्षितीनाम्) भूमियों का (उत) और (मानुषीणाम्)

उपकृत्या (वावृधानः) वर्धमानः (भूरिदात्रः) दादिभ्यश्छन्दसि । उ० ४ । १७० । दाप् लवने—त्रन् । भूरीणि बहूनि दात्राणिच्छेदनसाधनानि शस्त्रास्त्राणि यस्य सः । प्रभूतायुषः (आ) समन्तात् (अपृणत्) पृण प्रीणने—लङ् । तर्पितवान् (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ । आकाशभूमी (उभे) द्वे ॥

२—(मुखस्य) यज्ञस्व—निघ० ३ । १७ (ते) तव (तविषस्य) महतः निघ० ३ । ३ (प्र) प्रकर्षेण (जुतिम्) वेगम् (इयमि) प्राप्नोमि (वाचम्) स्ववाणीम् (अमृताय) अविनाशिने सुखाय (भूषन्) अलंकुर्वन् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् (क्षितीनाम्) पृथिवीनाम्—निघ० १ । १ (असि) (मानुषीणाम्)

मनुष्य सम्बन्धी (दैवीनाम्) उत्तम गुण वाली (विशाम्) प्रजाओं का (पूर्व-यावा) अग्रगामी (असि) है ॥ २ ॥

भावार्थ—प्रजाजनों को चाहिये कि धर्मज्ञ राजा की आज्ञा का पालन करते रहें, कि जिस से वह सब खेती आदि पदार्थों और मनुष्यों की रक्षा कर सके ॥ २ ॥

इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः प्र मायिनाममिनाद् वर्पणीतिः ।
अहन् व्यंसमशधृग् वनेषुआविर्धेना अकृणोद् राम्याणाम् ॥३॥
इन्द्रः । वृत्रम् । अवृणोत् । शर्ध-नीतिः । प्र । मायिनाम् ।
अमिनात् । वर्प-नीतिः ॥ अहन् । वि-असम् । उशधक् ।
वनेषु । आविः । धेनाः । अकृणोत् । राम्याणाम् ॥ ३ ॥

भावार्थ—(शर्धनीतिः) सेना के नायक (इन्द्रः) इन्द्र [प्र तापी राजा] ने (वृत्रम्) शत्रु को (अवृणोत्) घेर लिया, (मायिनाम्) कपटी लोगों का (वर्पनीतिः) कपटी नेता (प्र अमिनात्) अत्यन्त घबराया । (उशधक्) हिंसकों के जलाने वाले ने (वनेषु) बनों में [छिपे] (व्यंसम्) विविध पीड़ा देने वाले को (अहन्) मारा, और (राम्याणाम्) आनन्द देने वाले

मनुष्यसम्बन्धिनीनाम् (विशाम्) प्रजानाम् (दैवीनाम्) दिव्यगुणयुक्तानाम् (उत) अपि च (पूर्वयावा) या गतिप्रापणयोः—वनिप् । अग्रगामी ॥

३—(इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् राजा (वृत्रम्) शत्रुम् (अवृणोत्) आच्छादितवान् (शर्धनीतिः) शर्धतिरुत्साहार्थः—घञ् + णीञ् प्रापणे—किच् । शर्धो-बलनाम—निघ० २ । ६ । बलस्य सैन्यस्य नायकः (प्र) प्रकर्षेण (मायिनाम्) कपटिनाम् (अमिनात्) मीञ् हिंसायाम्—लङ् । कर्तृप्रयोगः कर्मण्यर्थे । हिंसितो दुःखितोऽभूत् (वर्पनीतिः) अस्पशिरुपशष्प० । उ० ३ । २८ । वृञ् आच्छादने—पप्रत्ययः + णीञ् प्रापणे—किच् । वर्प आवरकः कपटी नीतिर्नेता (अहन्) अवधीत् (व्यंसम्) अमेः सन् । उ० ५ । २१ । अम पीडने—सन् । विविधपीडकम् (उशधक्) उष वधे—क + दह दाहे—किप्, पस्य शः । हिंसकानां दाहकः (वनेषु) जङ्गलेषु (आविः) प्राकट्ये (धेनाः) वाचः (अकृणोत्) कृवि हिंसाकरणयोः—लङ् । अकरोत् (राम्याणाम्) अहलोपर्यत् । पा०

पुरुषों की (घेनाः) वाणियों को (आविः अकृणोत्) प्रकट किया ॥ ३ ॥

भाषार्थ—जब शूर सेनापति दुष्टों को मारकर प्रजा को सुखी करता है, तब लोग आनन्द मनाते हुये विविध प्रकार उन्नति करते हैं ॥ ३ ॥

बह मन्त्र यजुर्वेद में भी है—३३ । २६ ॥

इन्द्रः स्वर्षा जनयन्नहानि जिगायोऽशिग्भिः पृतना अभिष्टिः ।
प्रारोचयन्मनवे केतुमह्नामविन्दुज्ज्योतिर्बृहते रणाय ॥ ४ ॥

इन्द्रः । स्वः-साः । जनयन् । अहानि । जिगाय । उशिक्-
भिः । पृतनाः । अभिष्टिः ॥ प्र । अरोचयत् । मनवे । केतुम् ।
अह्नाम् । अविन्दत् । ज्योतिः । बृहते । रणाय ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(अहानि) दिनों [दिनों के कर्मों] को (जनयन्) प्रकट करते हुये, (स्वर्षाः) सुख देने वाले (अभिष्टिः) सब ओर मेल करने वाले, (इन्द्रः) इन्द्र [तेजस्वी सेनापति] ने (उशिग्भिः) प्रीति युक्त बुद्धिमानों के साथ (पृतनाः) सङ्ग्रामों को (जिगाय) जीता है । उसने (मनवे) मनन करने वाले मनुष्य के लिये (अह्नाम्) दिनों के (केतुम्) ज्ञान को (प्र अरोचयत्) प्रकाशित कर दिया है और (बृहते) बड़े (रणाय) रण के जीतने के लिये (ज्योतिः) तेज (अविन्दत्) पाया है ॥ ४ ॥

३ । १ । १२४ । रमु कीडायाम्, एयथाद् एयत् । कृत्षल्युटो बहुलम् । पा० ३ । ३ ।
११३ । इति कर्तृप्रत्ययः । रमयन्ति आनन्दयन्ति तेषाम्—दयानन्दभाष्ये, यजु०
३३ । २६ । रमयितृणां रामाणाम् आनन्दयितृणां पुरुषाणाम् ॥

४—(इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् सेनापतिः (स्वर्षाः) अ० ५ । २ । ८ । स्वः+
षण् हाने—विट्, आत्वं षत्वं च । सुखस्व दाता (जनयन्) प्रकटयन् (अहानि)
दिनानि । दिनकर्माणि (जिगाय) जि जये—लिट् । जितवान् (उशिग्भिः)
वशैः कित् । उ० २ । ७१ । वश कान्तौ—इजिप्रत्ययः । उशिजो मेधाविनाम—निघ०
३ । १५ । कामयमानैर्मैधाविभिः (पृतनाः) सङ्ग्रामान्—निघ० २ । १७ (अभिष्टिः)
यज संगतिकरणे—क्तिन् । अभितः संगतिकर्ता (प्र) प्रकर्षेण (अरोचयत्) अदी-
पयत् (मनवे) मननशीलाय मनुष्याय (केतुम्) प्रज्ञाम् (अह्नाम्) दिनानाम्
(अविन्दत्) अलभत (ज्योतिः) तेजः (बृहते) महते (रणाय) रणं सङ्ग्रामं जेतुम् ॥

भावार्थ—शूर सेनापति दुष्टों की बुराई और शिष्टों की भलाई जताकर शत्रुओं का नाश करे और न्याय की पताका फैलाकर प्रजा को कष्ट से छुड़ावे ॥ ४ ॥

इन्द्रस्तुजो बर्हणा आ विवेश नृवद् दधानो नर्या पुरुणि ।

अचेतयद् धियं इमा जरित्रे प्रेमं वर्णमतिरच्छुक्रमासाम् ॥५॥

इन्द्रः । तुजः । बर्हणाः । आ । विवेश । नृ-वत् । दधानः ।

नर्या । पुरुणि ॥ अचेतयत् । धियः । इमाः । जरित्रे । प्र ।

इमम् । वर्णम् । अतिरत् । शुक्रम् । आसाम् ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(नृवत्) नरों [नेताओं के समान] (पुरुणि) बहुत से (नर्या) नरों के योग्य कर्मों को (दधानः) धारण करते हुये (इन्द्रः) इन्द्र [महाप्रतापी राजा] ने (बर्हणाः) बढ़ती हुयी (तुजः) सताने वाली सेनाओं में (आ विवेश) प्रवेश किया । (इमाः) इन (धियः) बुद्धियों को (जरित्रे) स्तुति करने वाले के लिये (अचेतयत्) चेताया, और (आसाम्) इन [प्रजाओं] के बीच (इमम्) इस (शुक्रम्) शुद्ध (वर्णम्) स्वीकार करने योग्य यश को (प्र अतिरत्) बढ़ाया ॥ ५ ॥

भावार्थ—जो शूर सेनापति आगे बढ़ती हुयी शत्रु सेना में घुसकर सङ्ग्राम जीतता है, वही संसार में कीर्ति पाता है ॥ ५ ॥

मुहो मुहानि पनयन्त्यस्येन्द्रस्य कर्म मुकृता पुरुणि ।

वृजनेन वृजिनान्त्सं पिपेव मायाभिर्दस्यैरुभिभूत्योजाः ॥ ६ ॥

५—(इन्द्रः) महाप्रतापी राजा (तुजः) तुज हिंसायाम्—किप् । हिंसिकाः शत्रुसेनाः (बर्हणाः) बृह बृहौ—युच् । वर्धमानाः (आ विवेश) प्रविष्टवान् (नृवत्) नेतृवत् (दधानः) धारयन् (नर्या) तत्र साधुः । पा० ४। ४। ६८ । नर—यत् । नरयोग्यानि कर्माणि (पुरुणि) बहूनि (अचेतयत्) अज्ञापयत् (धियः) द्यौ चिन्तायाम्—किप् । प्रज्ञाः (जरित्रे) स्तोत्रे (इमम्) (वर्णम्) स्वीकरणीयं यशः (प्र अतिरत्) प्रावर्धयत् (शुक्रम्) शुद्धम् (आसाम्) प्रजानां मध्ये ॥

महः । महानि । पनयन्ति । अस्य । इन्द्रस्य । कर्म । सु-
कृता । पुरुणि ॥ वृजनेन । वृजिनान् । सस्र । पिपेष ।
मायाभिः । दस्यून् । अभिभूति-ओजाः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(महः) महान् लोग (अस्य) इस (इन्द्रस्य) इन्द्र [महा-
प्रतापी राजा] के (सुकृता) धर्म से किये हुये (पुरुणि) बहुत से (महानि)
महान् [पूजनीय] (कर्म) कर्मों को (पनयन्ति) सराहते हैं । (अभि-
भूत्योजाः) हरा देने वाले बल से युक्त [शूर] ने (वृजिनान्) पापी (दस्यून्)
साहसी चोरों को (वृजनेन) बल के साथ (मायाभिः) बुद्धियों से (सं पि-
पेष) पीस डाला ॥ ६ ॥

भावार्थ—जिस प्रतापी धर्मात्मा राजा की कीर्ति को बड़े बड़े लोग
गाते हों, वह राजा अपनी कीर्ति स्थिर रखने के लिये दुराचारियों का नाश
कर के प्रजा को सुखी रखे ॥ ६ ॥

युधेन्द्रो महा वरिवश्चकार देवेभ्यः सत्पतिश्चर्षणिमाः ।
विवस्वतुः सद्ने अस्य तानि विमा उक्थेभिः कुवयो गृणन्ति०
युधा । इन्द्रः । महा । वरिवः । चुकार । देवेभ्यः । सत्-
पतिः । चर्षणि-माः ॥ विवस्वतः । सद्ने । अस्य । तानि ।

६—(महः) मह पूजायाम्—क्विप् । महान्तः पुरुषाः (महानि) मह
पूजायाम्—अप् । महान्ति (पनयन्ति) छान्दसो ह्रस्वः । पनायन्ति । स्तुवन्ति
(अस्य) प्रसिद्धस्य (इन्द्रस्य) महातेजस्विनः पुरुषस्य (कर्म) कर्माणि
(सुकृता) धर्मेण सम्पादितानि (पुरुणि) बहूनि (वृजनेन) कृपवृजिभन्दि-
निधाजः क्युः । उ० २ । ८१ । वृजी वर्जने—क्यु । बलेन—निघ० २ । ६ (वृजि-
नान्) वृजेः किञ्च । उ० २ । ४७ । वृजी वर्जने—इनच् । वृजिन—अर्श
आद्यच् । वृजनं पापं तद्वतः । पापिनः पुरुषान् (सं पिपेष) पिप्पलु संचूर्णने—
लिट् । सम्यक् चूर्णीचकार (मायाभिः) प्रज्ञाभिः—निघ० ३ । ६ (दस्यून्)
साहसिकान् । उत्कोचकान् । चोरान् (अभिभूत्योजाः) अभिभूति पराजयकर-
भोजो बलं यस्य सः ॥

विप्राः । उक्थेभिः । कवयः । गृणन्ति ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(सत्पतिः) सत् पुरुषों के पालने वाले, (चर्षणिप्राः) मनुष्यों के मनोरथ पूरण करने वाले (इन्द्रः) इन्द्र [महाप्रतापी पुरुष] ने (युधा) युद्ध के साथ (महा) अपनी महिमा से (देवेभ्यः) विद्वानों के लिये (वरिवः) सेवनीय धन (चकार) किया है । (विवस्वतः) (विविध निवासों वाले [धनी मनुष्य] के (सद्ने) घर में (अस्य) इस [पुरुष] के (तानि) उन [कर्मों] को (विप्राः) बुद्धिमान् (कवयः) ज्ञानी पुरुष (उक्थेभिः) अपने वचनों से (गृणन्ति) सराहते हैं ॥ ७ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य परोपकारी होकर बड़े कष्ट उठाकर सत्पुरुषों का पालन करते हैं, वे ही संसार में बड़े गिने जाते और कीर्तिमान् होते हैं ॥ ७ ॥

सुत्रासाहं वरेण्यं सहोदां सुसुवांसं स्वरूपश्च देवीः ।

सुसान यः पृथिवीं व्यामुतेसामिन्द्रं मदन्त्यनु धीरणासः ॥ ८ ॥

सुत्रा-सहम् । वरेण्यम् । सहुः-दाम् । सुसु-वांसम् । स्वः ।

अपः । च । देवीः ॥ सुसान । यः । पृथिवीम् । व्याम् । उत ।

इमाम् । इन्द्रम् । मदन्ति । अनु । धी-रणासः ॥ ८ ॥

७—(युधा) युद्धेन (इन्द्रः) महातेजस्वी पुरुषः (महा) धापवस्य-ज्यतिभ्यो नः । उ० ३ । ६ । मह पूजायाम्—नप्रत्ययः । महिम्ना (वरिवः) वृज्वरणे यङ्लुकि, असुन् । ऋतश्च । पा० ७ । ४ । ६२ । अभ्यासस्य रिगा-गमः, टिलोपः । वरिवो धननाम—निघ० २ । १० । वरणीयं धनम् (चकार) उत्पादयामास (देवेभ्यः) विदुषामर्थम् (सत्पतिः) सतां पालकः (चर्षणिप्राः) प्रा पूरणे—विच् । मनुष्याणां मनोरथपूरकः (विवस्वतः) वि+वस निवासे—क्विप्, मनुप् । विवस्वन्तो मनुष्यनाम—निघ० २ । ३ । बहुनिवासयुक्तस्य धनिनः पुरुषस्य (सद्ने) गृहे (अस्य) इन्द्रस्य (तानि) प्रसिद्धानि कर्माणि (विप्राः) मेधाविनः (उक्थेभिः) स्ववचनैः (कवयः) विद्वांसः (गृणन्ति) स्तुवन्ति ॥

भाषार्थ—(यः) जिस [वीर] ने (इमाम्) इस (पृथिवीम्) पृथिवी (उत) और (घाम्) आकाश को (ससान) सेवा है, [उस] (सत्रासाहम्) सत्त्वों के सहने वाले, (वरेण्यम्) स्वीकार करने योग्य, (सहोदाम्) बल के देने वाले, (स्वः) सुख (च) और (देवीः) उत्तम (अपः) प्राणों के (ससवांसम्) दान करने वाले, (इन्द्रम्) इन्द्र [महाप्रतापी वीर] के (अनु) पीछे (धीरणासः) उत्तम बुद्धियों के लिये युद्ध करने वाले लोग (मदन्ति) सुख पाते हैं ॥ ८ ॥

भावार्थ—जो विद्वान् पुरुष पृथिवी और आकाश के पदार्थों से विद्या द्वारा उपयोग लेता है, उसी सत्यवादी र. के पीछे चलकर सब सत्यकर्मी वीर लोग आनन्द पाते हैं ॥ ८ ॥

सुसानात्थौ उत सूर्यं सुसानेन्द्रः ससान पुरुभोजसं गाम् ।
हिरण्ययमुतभोगं ससान हृत्वी दस्युन् प्रार्यं वर्णमावत् ॥ ८ ॥
सुसान । अत्यान् । उत । सूर्यम् । सुसान । इन्द्रः । सुसान ।
पुरु-भोजसम् । गाम् ॥ हिरण्ययम् । उत । भोगम् । सुसान ।
हृत्वी । दस्युन् । प्र । आर्यम् । वर्णम् । आवत् ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [महाप्रतापी पुरुष] ने (अत्यान्) घोड़ों को

८—(सत्रासाहम्) यः सत्रा सत्यानि सहते तम् (वरेण्यम्) स्वीकरणीयम् (सहोदाम्) बलस्य दातारम् (ससवांसम्) षण्णु दाने—कसु । दत्तवन्तम् (स्वः) सुखम् (अपः) प्राणान् (च) (देवीः) दिव्याः (ससान) षण्णु सम्भक्तौ—लिट् । सेवितवान् । उपयुक्तवान् (यः) इन्द्रः (पृथिवीम्) भूमिम् । भूमिस्थपदार्थानित्यर्थः (घाम्) आकाशम् । आकाशस्थपदार्थानित्यर्थः (उत) अपि च (इमाम्) दृश्यमानाम् (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं पुरुषम् (मदन्ति) हृष्यन्ति (अनु) अनुसृत्य (धीरणासः) धीः प्रज्ञानाम—निघ० ३ । ६ । रणः संग्रामनाम—निघ० २ । १७ । असुगागमः । धीभ्यः प्रशस्तप्रज्ञाभ्यो रणः सङ्ग्रामो येषां ते ॥

९—(ससान) म० ८ । सेवितवान् । उपयुक्तवान् (अत्यान्) अत्याद-

(ससान) सेवा है (उत) और (सूर्यम्) सूर्य [समान प्रतापी वीर] को (ससान) सेवा है, (पुरुभोजसम्) बहुत पालन करने वाली (गाम्) पृथिवी [वा गौ] को (ससान) सेवा है । (हिरण्यम्) सुवर्ण (उत) और (भोगम्) भोग [उत्तम पदार्थों के उपयोग] को (ससान) सेवा है, (दस्यून्) साहसी चोरों को (हत्वी) मारकर (वर्णम्) स्वोक्तार करने योग्य (आर्यम्) आर्य [श्रेष्ठ धर्मात्मा पुरुष] की (प्र आवत्) रक्षा की है ॥ ६ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य उत्तम घोड़ों, श्रेष्ठ वीर पुरुषों, राज्य, सुवर्ण आदि धन, और अन्न आदि भोगों के रखने में समर्थ होता है, वही दुष्टों का नाश कर शिष्टों की रक्षा करता है ॥ ६ ॥

इन्द्र ओषधीरसनेादहानि वनस्पतीं रसनोदन्तरिक्षम् ।

बिभेदं वलं नुनुदे विवाचोऽथाभवद् दमिताभिक्रतूनाम् ॥१०॥

इन्द्रः । ओषधीः । असनेात् । अहानि । वनस्पतीन् । अस-
नेात् । अन्तरिक्षम् ॥ बिभेदं । वलम् । नुनुदे । वि-वाचः ।

अथ । अभुवत् । दमिता । अभि-क्रतूनाम् ॥ १० ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [महाप्रतापी पुरुष] ने (अहानि) दिनों को और (ओषधीः) ओषधियों [सोम अन्न आदि] को (असनेात्) सेवा है, (वनस्पतीन्) वनस्पतियों [पीपल आदि] और (अन्तरिक्षम्) आकाश

यश्च । उ०४ । ११२ । अत सातत्यगमने—यक् । अत्योऽश्वनाम—निघ० १ । १४ । अश्वान् (उत) अपि च (सूर्यम्) सूर्यमिव प्रतापिनं वीरम् (ससान) (इन्द्रः) महाप्रतापी पुरुषः (ससान) (पुरुभोजसम्) बहुपालयित्रीम् (गाम्) भूमिं धेनुं वा (हिरण्यम्) सुवर्णादिधनम् (उत) (भोगम्) उत्तमपदार्थोपयोगम् (हत्वी) स्नात्वादिदयश्च । पा ० ७ । १ । ४६ । इति ईकारः । हत्वा (दस्यून्) साहसिकान् । चोरान् (प्र) प्रकर्षेण (आर्यम्) श्रेष्ठं धार्मिकम् (वर्णम्) वरणीयम् (आवत्) अव रक्षणे—अङ् । अरक्षत् ॥

१०—(इन्द्रः) महाप्रतापी पुरुषः (ओषधीः) सोमान्नादिपदार्थान् (असनेात्) षण् संभक्तौ—लङ् । सेवितवान् (अहानि) दिनानि (वनस्पतीन्) पिपलादिवृक्षान् (असनेात्) सेवितवान् (अन्तरिक्षम्) आकाशम् (बिभेद)

को (असनोत्) सेवा है । उसने (वलम्) घेरने वाले शत्रु को (बिभेद) छिन्न भिन्न किया और (विवाचः) विरुद्ध बोलने वालों को (उनुदे) निकाल दिया (अथ) फिर (अभिक्रतूनाम्) विरुद्ध कर्म वालों [अभिमानी दुष्टों] का (दमिता) दमन करने वाला (अभवत्) हुआ है ॥ १० ॥

भावार्थ—राजा को योग्य है कि सदा समय पर ध्यान रखकर पृथिवी और आकाश के पदार्थों को उपयोगी करके विरोधी दुष्टों को निकाल देवे ॥१०

शुनं हुवेम मघवान्मिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमुतये समत्सु घ्नन्त वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥११
शुनम् । हुवेम् । मघ-वानम् । इन्द्रम् । अस्मिन् । भरे ।
नृ-तमम् । वाज-सातौ ॥ शृण्वन्तम् । उग्रम् । ऊतये । समत्-
सु । घ्नन्तम् । वृत्राणि । सम्-जितम् । धनानाम् ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(शुनम्) सुख देने वाले (मघवानम्) बड़े धनी, (अस्मिन्) इस (भरे) युद्ध के बीच (वाजसातौ) अन्न के पाने में (नृतमम्) बड़े नेता, (शृण्वन्तम्) सुनने वाले, (उग्रम्) तेजस्वी, (समत्सु) संङ्ग्रामों में (वृत्राणि) शत्रुओं को (घ्नन्तम्) मारने वाले, (धनानाम्) धनों के (संजितम्) जीत लेने वाले (इन्द्रम्) इन्द्र [महाप्रतापी जन] को (ऊतये) रक्षा के लिये (हुवेम)

भिन्नवान् (वलम्) वल संवरणे—अच् । आवरकं दैत्यम् (उनुदे) शुद्ध प्रेरणे—
लिट् । निराचकार (विवाचः) विरुद्धवाग्युक्तान् (अथ) अपि च (अभवत्)
(दमिता) दमु उपशमे—तृच् । नियन्ता (अभिक्रतूनाम्) अभि आभिमुख्येन
क्रतवः कर्माणि येषां तेषाम् । विरुद्धकर्मणाम् । अभिमानिनां दुष्टानाम् ॥

११—(शुनम्) सुखप्रदम् (हुवेम) आह्वयेम (मघवानम्) महाधनितम्
(इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं पुरुषम् (अस्मिन्) वर्तमाने (भरे) संग्रामे—निघ०
२॥ १७ (नृतमम्) अतिशयेन नेतारम् (वाजसातौ) अन्नस्य लाभे (शृण्वन्तम्)
ओतारम् (उग्रम्) प्रचण्डम् (ऊतये) अवनाय । रक्षणाय (समत्सु) सम् +
अद् भक्षण्ये, यद्धा, सम् + मदी हर्षे—किप् । समदः समदो वाक्तेः सम्मदो वा
मदतेः—निरु० ६।१७ । संग्रामेषु—निघ० २।१७ (घ्नन्तम्) नाशयन्तम् (वृत्राणि)

सू० १२ [६००]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(३, ८०३)

हम बुलावें ॥ ११ ॥

भावार्थ—प्रजागण न्यायकारी, प्रतापी, शत्रुनाशक, शूर राजा का सदा आदर करें ॥ ११ ॥

यह मन्त्र कुछ भेद से सामवेद में है—उ० ४।४।७। और बिना भेद ऋग्वेद में चौदह [१४] बार है—म० ३। सू० ३०, ३१, ३२, ३४, ३५, ३६, ३८, ३९, ४३, ४८, ४९, ५०, म० १०। सू० ८६, १०४ के अन्त में ॥

सूक्तम् १२ ॥

१—७ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ६ भुरिगोर्षी पङ्क्तिः; २, ३ विराट् त्रिष्टुप्; ४ स्वराडावी पङ्क्तिः; ५ निचृत् त्रिष्टुप् ७ त्रिष्टुप् ॥

सेनापतिकर्तव्योपदेशः—सेनापति के कर्तव्य का उपदेश ॥

उद ब्रह्माण्यैरत अवस्येन्द्रं समर्थं महया वसिष्ठ ।

आ यो विश्वानि शर्वसा ततानोपश्रोता सु ईवतो वचांसि ॥ १ ॥

उत् । ऊँ इति । ब्रह्माणि । ऐरुत् । अवस्या । इन्द्रम् । स-

मर्थे । महय । वसिष्ठ ॥ आ । यः । विश्वानि । शर्वसा ।

ततानं । उप-श्रोता । मे । ईवतः । वचांसि ॥ १ ॥

भावार्थ—(अवस्या) यश के लिये हितकारा (ब्रह्माणि) वेदज्ञानों को (उ) ही (उत् परत) उन [विद्वानों] ने उच्चारण किया है, (वसिष्ठ) हे अतिश्रेष्ठ ! (इन्द्रम्) इन्द्र [महाप्रतापी सेनापति] को (समर्थे) युद्ध में (महय) पूज । (यः) जिस (उपश्रोता) आदर से सुनने वाले [शूर] ने

शत्रून् (संजितम्) सम्यग् जेतारम् (धनानाम्) सुवर्णादीनाम् ॥

१—(उत् परत) ईर गतौ—लङ् । ते विद्वांस उदीरितवन्तः । उच्चारितवन्तः (उ) एव (ब्रह्माणि) वेदज्ञानानि (अवस्या) अवस्—यत् । अवो-धनम्—निघ० २।१०। अवसे यशसे हितानि (इन्द्रम्) महाप्रतापिनं सेनापतिम् (समर्थे) मर्यो मनुष्यनाम—निघ० २।३। सह शब्दस्य समावः । समर्थे संग्रामनाम—निघ० २।१७। मर्योर्मनुष्यैः सह वर्तमाने युद्धे (महय) पूजय (वसिष्ठ) वसु—इष्टन् । हे अतिशयेन वसो श्रेष्ठ (आ) समन्तात् (यः)

(ईवतः) उद्योगी (मे) मेरे (विश्वानि) सब (वचांसि) वचनों को (शक्सा) बल के साथ (आ) अच्छे प्रकार (ततान) फैलाया है ॥ १ ॥

भवार्थ—विद्वान् लोग उपदेश करें कि सब श्रेष्ठ पुरुष शूरावीर धर्मात्मा जन का सत्कार करें, जिस से वह उद्योगी पुरुषों की शिक्षा को संसार में फैलावे ॥ १ ॥

मन्त्र १—६ ऋग्वेद में हैं—७।२३।१—६ ॥

अयामि घोष इन्द्र देवजामिरिरुज्यन्तु यच्छुरुधो विवाचि ।
नहि स्वमायुश्चिकित्ते जनेषु तानीदं ह्यस्यति पर्ष्यस्मान् ॥२॥
अयामि । घोषः । इन्द्र । देव-जामिः । इरुज्यन्त । यत् ।
शुरुधः । वि-वाचि ॥ नहि । स्वम् । आयुः । चिकित्ते ।
जनेषु । तानि । इत् । अंहसि । अति । पर्षि । अस्मान् ॥२॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [महाप्रतापी वीर] (देवजामिः) विद्वानों को प्राप्त होने वाला (घोषः) शब्द (अयामि) ऊंचा किया गया है, (यत्) जिस [शब्द] को (शुरुधः) शीघ्र रोकने वाले पुरुष (विवाचि) विविध वाणियों से युक्त व्यवहार [वा संग्राम] में (इरुज्यन्त) सेवते हैं । (स्वम्) अपने (आयुः) जीवन काल को (जनेषु) मनुष्यों में (नहि) किसी ने नहीं

इन्द्रः सेनापतिः (विश्वानि) सर्वाणि (शक्सा) बलेन (ततान) विस्तार-यामास (उपश्रोता) आदरेण श्रवणकर्ता (मे) मम (ईवतः) ईङ् गतौ—क्लिप्, ईर्गतिः—मतुप् । गतियुक्तस्य । उद्योगिनः पुरुषस्य (वचांसि) वचनानि ॥

२—(अयामि) यमु उपरमे कर्मणि लुङ् । उद्यतः । उच्चैर्गतः (घोषः) शब्दः (इन्द्र) हे महाप्रतापिन वीर (देवजामिः) वसिष्ठपियजि० । ३० ४ । १२५ । जमु अदने गतौ च—इङ् । जमतिर्गतिकर्मा—निघ० २ । १४ । यो देवान् विदुषः पुरुषान् जमति प्राप्नोति सः (इरुज्यन्त) लटि रूपम् । इरुज्यतिः परिचरण—कर्मा—निघ० ३ । ५ । इरुज्यन्ति । सेवन्ते (यत्) यं घोषम् (शुरुधः) शु गतौ—ङु + रुधिर आवरणे—क्लिप् । शवतिर्गतिकर्मा—निघ० २ । १४, परिचरण-कर्मा—निघ० ३ । ५ । आशु इति च शु इति च क्षिप्रनामनी भवतः—निरु० ६ । १ । शीघ्रोद्धनशीलाः (विवाचि) विषाक् संग्रामनाम—निघ० २ । १७ । विविधवाणीयुक्ते व्यवहारे संग्रामे वा (नहि) न कोऽपि (स्वम्) स्वकीयम्

(चिकिते) जाना है, (तानि) उन (अंहांसि) पापों को (इत्) ही (अति) लांघ कर (अस्मान्) हमें (पर्षि) पाल ॥ २ ॥

भाषार्थ—मनुष्य वेद वचनों को भली भांति मानता हुआ और मृत्यु को सदा अपने पाँच जानता हुआ पापों को छोड़ धर्म करने में शीघ्रता करता रहे ॥ २ ॥

युजे रथं गवेषणं हरिभ्यामुप ब्रह्माणि जुजुषाणमस्थुः ।

वि बाधिष्टु स्य रोदसी महित्वेन्द्रो वृत्रायप्रती जघन्वान् ॥
युजे । रथम् । गो-एषणम् । हरि-भ्याम् । उप । ब्रह्माणि ।
जुजुषाणम् । अस्थुः ॥ वि । बाधिष्टु । स्यः । रोदसी इति ।
महि-त्वा । इन्द्रः । वृत्राणि । अप्रति । जघन्वान् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(गवेषणम्) भूमि प्राप्त कराने द्वारे (रथम्) रथ को (हरि-भ्याम्) दो घोड़ों से (युजे=युयुजे) उस [सेनापति] ने जोता, (जुजुषाणम्) उस हर्ष करते हुये को (ब्रह्माणि) अनेक धन (उप अस्थुः) उपस्थित हुये । (स्यः) उस (इन्द्रः) इन्द्र [महाप्रतापी सेनापति] ने (वृत्राणि) शत्रु-दलों को (अप्रति) बिना रोक (जघन्वान्) मार डाल कर (महित्वा) अपने महत्त्व से (रोदसी) दोनों आकाश और भूमि को (वि) विविध प्रकार (बाधिष्टु) बिलोया [मथा] है ॥ ३ ॥

(आयुः) जीवनकालम् (चिकिते) कित ज्ञाने—लिट् । ज्ञातवान् (जनेषु) मनुष्येषु (तानि) प्रसिद्धानि (इत्) एव (अंहांसि) पापानि (अति) अतीत्य उल्लङ्घ्य (पर्षि) पृ पालनपूरणयोः—लेट् । पालय (अस्मान्) ॥

३—(युजे) युजिर् योगे—लिट् । स युयुजे । योजितवान् (रथम्) यानम् (गवेषणम्) गां भूमिं प्रापकम् (हरिभ्याम्) शत्रुनाशनप्रजापालनरूपाभ्यां तुरङ्गाभ्याम् (उप अस्थुः) उग्रतिष्ठन्ते सेवन्ते स्म (ब्रह्माणि) धनानि (जुजुषाणम्) जुष तर्के, जुषी प्रीतिसेवनयोः—कानच् । दृश्यन्तं सेनापतिम् (वि) विविधम् (बाधिष्टु) अबाधिष्टु । बिलोडितवान् (स्यः) सः (रोदसी) आकाशभूमी (महित्वा) महत्त्वेन (इन्द्रः) महाप्रतापी सेनापतिः (वृत्राणि) शत्रुसैन्यानि (अप्रति) यथा भवति तथा । प्रातिकूल्यस्य विघ्नस्य राहित्येन (जघन्वान्) हन हिंसागण्योः—कसु । नाशितवान् ॥

भावाय—जो राजा दो घोड़ों के समान वर्तमान शत्रु के नाश और प्रजा के पालनरूप गुणों से राज्य को चलाता है, वह निर्विघ्न होकर भूमि और आकाश के पदार्थों से उपकार लेता है ॥ ३ ॥

आपश्चित् पिप्यु स्तर्यो न गावो नक्षत्रं जरितारस्त
इन्द्र । याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छा त्वं हि धीभिर्दयसे
वि वाजान् ॥ ४ ॥

आपः । चित् । पिप्युः । स्तर्यः । न । गावः । नक्षत्रम् । ऋतम् ।
जरितारः । ते । इन्द्र ॥ याहि । वायुः । न । नियुतः ।
नः । अच्छ । त्वम् । हि । धीभिः । दयसे । वि । वाजान् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [महाप्रतापी सेनापति] (स्तर्यः) फैले
हुये (आपः चित्) जलों के समान और (गावः न) किरणों के समान (ते)
तेरे (जरितारः) स्तुति करने वाले (पिप्युः) बड़े हैं, और (ऋतम्) सत्य को
(नक्षत्रम्) प्राप्त हुये हैं । (वायुः न) पवन के समान (नियुतः) वेग आदि गुणों
को, (त्वम्) तू (अच्छ) अच्छे प्रकार से (नः) हमें (याहि) प्राप्त हो, (हि)
क्योंकि (धीभिः) अपनी बुद्धियों वा कर्मों से (वाजान्) विज्ञानियों पर (वि)
विविध प्रकार (दयसे) तू दया करता है ॥ ४ ॥

भावाय—जो पुरुष फैलते हुये जल और किरणों के समान बढ़कर

४—(आपः) जलानि (चित्) उपमार्थे—निरु० १।४ । (पिप्युः) ओ
प्यायी वृद्धौ—लिट् । अभिवृद्धा बभूवुः (स्तर्यः) अवितृस्तृतन्त्रिभ्य ईः । उ०
३ । १५८ । स्तृज् आच्छादने—ईप्रत्ययः । विस्तारशीलाः (न) इव—निरु० १।४ ।
(गावः) किरणाः (नक्षत्रम्) गतौ—लङ्, अडभावः । प्राप्तवन्तः (ऋतम्)
सत्यम् (जरितारः) स्तोतारः (ते) तव (इन्द्र) महाप्रतापिन् सेनापते
(याहि) प्राप्नुहि (वायुः) पवनः (न) इव (नियुतः) नि + यु मिश्रणामिश्र-
णयोः—क्विप् । नियुतो वायोरादिष्टोपयोजनानि—निघ० १ । १५ । वेगादिगुणान्
(नः) अस्मान् (अच्छ) सुष्ठु (त्वम्) (हि) यतः (धीभिः) प्रज्ञाभिः कर्म-
भिर्वा (दयसे) दय दानगतिरक्षणहिंसादानेषु । दयां करोषि (वि) विविधम्,
(वाजान्) विज्ञानवतः ॥

सू० १२ [६००]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(३,८०९)

उपकारी होवें, महासेनापति वायु के समान शीघ्रता करके उन उपकारी सज्जनों को सन्तुष्ट करे ॥ ४ ॥

यह मन्त्र यजुर्वेद में भी है—३३।१८ ॥

ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु शुष्मिणं तुविराधसं जरित्रे ।

एको देवत्रा दयसे हि मर्तान् अस्मिन् शूरु सवने मादयस्व ॥ ५ ॥

ते । त्वा । मदाः । इन्द्र । मादयन्तु । शुष्मिणम् । तुवि-राध-

सम् । जरित्रे ॥ एकः । देव-त्रा । दयसे । हि । मर्तान् ।

अस्मिन् । शूरु । सवने । मादयस्व ॥ ५ ॥

भावार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [महाप्रतापी सेनापति] (ते) वे (मदाः) आनन्द करते हुये वीर (शुष्मिणम्) महाबली और (तुविराधसम्) बड़े धनी (त्वा) तुझको (जरित्रे) स्तुति करने वाले के लिये (मादयन्तु) हर्षित करें । (देवत्रा) विद्वानों में (एकः हि) अकेला ही तू (मर्तान्) मनुष्यों पर (दयसे) दया करता है, (शूर) हे शूर ! (अस्मिन्) इस (सवने) प्रेरणा में [सब को] (मादयस्व) आनन्दित कर ॥ ५ ॥

भावार्थ—सब सैन्यदल अपने पराक्रमों से मुख्य सेनापति को प्रसन्न करें और वह सेनापति भी उन सबों पर पूर्ण दया करे, जिस से शत्रुओं का नाश और प्रजा की रक्षा होवे ॥ ५ ॥

एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्युक्तैः । स न
स्तुतो वीरवद् धातु गोमद् युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥६॥
एव । इत् । इन्द्रम् । वृषणम् । वज्र-बाहुम् । वसिष्ठासः ।

५—(ते) प्रसिद्धाः (त्वा) त्वाम् (मदाः) आनन्दयुक्ताः सुभटाः—
दयानन्दभाष्ये, ऋ० ७।२३।५ (इन्द्र) (मादयन्तु) हर्षयन्तु (शुष्मिणम्)
बलिष्ठम् (तुविराधसम्) बहुधनयुक्तम् (जरित्रे) स्तोत्रे (एकः) अद्वितीयः
(देवत्रा) विद्वत्सु (दयसे) म० ४। दयां करोषि (हि) एव (मर्तान्)
मनुष्यान् (अस्मिन्) वर्तमाने (शूर) निर्भय (सवने) प्रेरणे (मादयस्व)
आनन्दयस्व सर्वानिति शेषः ॥

अभि । अर्चन्ति । अर्कैः ॥ सः । नः । स्तुतः । वीर-वत् ।
धातु । गो-मत् । यूयम् ॥ पातु । स्वस्ति-भिः । सदा । नः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(एव इत्) इस प्रकार से ही (वसिष्ठासः) अत्यन्त वसु
[श्रेष्ठ विद्वान् लोग] (वृषणम्) बलवान्, (वज्रबाहुम्) वज्र [शस्त्र अस्त्रों]
को भुजा पर रखने वाले (इन्द्रम्) इन्द्र [महाप्रतापी सेनापति] को
(अर्कैः) पूजनीय विचारों से (अभि अर्चन्ति) यथावत् पूजते हैं । (स्तुतः)
स्तुति किया गया (सः) वह (नः) हमारे लिये (वीरवत्) वीरों से युक्त
(गोमत्) उत्तम गौओं वाले [राज्य] को (धातु) धारण करे, [हे वीरो !]
(यूयम्) तुम सब (स्वस्तिभिः) सुखों से (सदा) सदा (नः) हमें (पात)
रक्षित रक्खो ॥ ६ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग विजयी सेनापति को सदा प्रसन्न रक्खें और
ऐसा प्रबन्ध होवे कि सब लोग शस्त्र अस्त्र विद्या में निपुण होकर राज्य की
रक्षा करें ॥ ६ ॥

यह मन्त्र यजुर्वेद में भी है—२०।५४। और चौथा पाद आगे है—
अथ० २०।१७।१२; ३७।११; ८७।७ ॥

ऋजीषी वृज्री वृषभस्तुराषाट्शुष्मी राजा वृत्रहा सोमपावा ।
युक्त्वा हरिभ्यामुप यासदुर्वाङ् माध्यदिने सर्वने मत्सुदिन्द्रः ॥ ७ ॥
ऋजीषी । वृज्री । वृषभः । तुराषाट् । शुष्मी । राजा ।
वृत्र-हा । सोम-पावा ॥ युक्त्वा । हरि-भ्याम् । उप । यासत् ।
अर्वाङ् । माध्यदिने । सर्वने । मत्सुत् । इन्द्रः ॥ ७ ॥

६—(एव) एवम् (इत्) अपि (इन्द्रम्) महाप्रतापिनं सेनापतिम्
(वृषणम्) बलवन्तम् (वज्रबाहुम्) शस्त्रास्त्रपाणिम् (वसिष्ठासः) वसु—
इष्टन्, असुक् । अतिशयेन वसवः श्रेष्ठविद्वांसः (अभि) सर्वतः (अर्चन्ति)
सत्कुर्वन्ति (अर्कैः) सुविचारैः (सः) (नः) अस्मान् (स्तुतः) प्रशंसितः
(वीरवत्) वीरैर्युक्तम् (धातु) दधातु (गोमत्) प्रशस्तधेनुभिर्युक्तं राज्यम्
(यूयम्) (पात) रक्षत (स्वस्तिभिः) सुखैः (सदा) (नः) अस्मान् ॥

सू० १३ [६०१] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥ (३, ८०८)

भाषार्थ—(ऋजीषी) महाधनी, (वज्री) वज्र धारी [शस्त्र अस्त्रों वाला], (वृषभः) बलवान्, (तुराषाद्) हिंसक शत्रुओं का हराने वाला, (शुष्मी) बलवान् सेना वाला, (राजा) राजा, (वृत्रहा) बैरियों का मारने वाला, (सोमपावा) सोम [महौषधियों के रस] का पीने वाला (इन्द्रः) इन्द्र [महाप्रतापी सेनापति] (हरिभ्याम्) दो घोड़ों से [रथ को] (युक्त्वा) जोत कर (अर्वाङ्) सामने (उप यासत्) आवे और (माध्यन्दिने) मध्याह्न में (सवने) यज्ञ के बीच (मत्सत्) आनन्द पावे ॥ ७ ॥

भावार्थ—राजा महाधनी, प्रतापी, शस्त्रअस्त्रधारी होकर शत्रुओं का नाश कर के प्रजा की रक्षा करे और दोपहर दिन के समान लोगों में आनन्द का प्रकाश करे ॥ ७ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—५।४०।४ ॥

सूक्तम् १३ ॥

१—४ ॥ १ इन्द्रावृहस्पती देवते; २ मरुतो देवताः; ३, ४ अग्निदेवता ॥ १ भुरिक् त्रिष्टुप्; २ जगती; ३ निचृज् जगती; ४ त्रिष्टुप् ॥

राजविद्वद्गुणोपदेशः—राजा और विद्वानों के गुणों का उपदेश ॥

इन्द्रश्च सोमं पिबतं बृहस्पतेऽस्मिन् युञ्जे मन्दसाना वृषणवसू ।
आ वां विशुन्तिवन्देवः स्वाभुवेऽस्मे रुयिं सर्ववीरं नि यच्छतम् १
इन्द्रः । च । सोमम् । पिबतम् । बृहस्पते । अस्मिन् । युञ्जे ।

७—(ऋजीषी) अर्जैर्ऋज च । ३० ४ । २८ । अर्ज अर्जने—ईषन्, कित्, ऋजादेशश्च । ऋजीषं धनमस्यास्तीति—इति । महाधनी (वज्री) शस्त्रास्त्र-भृत् (वृषभः) बलिष्ठः (तुराषाद्) तुर हिंसाग्याम्—क + षह अभिभवे—एव, अन्येषामपि दृश्यते । पा० ६ । ३ । १३७ । इति दीर्घः । तुराणां हिंसक-शत्रूणामभिभवना (शुष्मी) शुष्मं बलिष्ठं सैन्यं विद्यते यस्य सः (राजा) शासकः (वृत्रहा) शत्रुहन्ता (सोमपावा) श्रेष्ठौषधिरसस्य पानकर्ता (युक्त्वा) योजयित्वा (हरिभ्याम्) अश्वाभ्याम् (उप यासत्) आगच्छेत् (अर्वाङ्) अभिमुखः (माध्यन्दिने) मध्याह्ने (सवने) यज्ञमध्ये (मत्सत्) आनन्देत् (इन्द्रः) महाप्रतापी सेनापतिः ॥

(३,८१०)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० १३ [६०१]

मन्दसाना । वृषण-वसू इति वृषण-वसू ॥ आ । वाम् ।
विशन्तु । इन्द्रवः । सु-आभुवः । अस्मे इति । रयिम् ।
सर्व-वीरम् । नि । यच्छतम् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(बृहस्पते) हे बृहस्पति ! [बड़ी वेदवाणी के रत्नक विद्वान्]
(च) और (इन्द्रः) हे इन्द्र ! [अत्यन्त पेश्वर्य वाले राजन्] (मन्दसानौ)
आनन्द देने वाले, (वृषणवसू) बलवान् वीरों को निवास कराने वाले तुम
दोनों (सोमम्) सोम [उत्तम ओषधियों के रस] को (अस्मिन्) इस (यज्ञे)
यज्ञ [राज्यपालन व्यवहार] में (पिबतम्) पीओ । (स्वाभुवः) अच्छे
प्रकार सब ओर होने वाले (इन्द्रवः) पेश्वर्य (वाम्) तुम दोनों में (आ
विशन्तु) प्रवेश करें, (अस्मे) हम को (सर्ववीरम्) सब को वीर बनाने
वाला (रयिम्) धन (नि) नियम पूर्वक (यच्छतम्) तुम दोनों दो ॥ १ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग और राजा राज्य के पालन और प्रजा के धन-
वान् बनाने में आनन्द पावें ॥ १ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—४। ५०। १० ॥

आ वो वहन्तु सप्तयो रघुष्यदो रघुपत्वानुः प्रजिगात बाहुभिः ।
सीदता बृहिरुरु वः सदस्कृतं सादयध्वं मरुतो मध्वो अन्धसः २
आ । वः । वहन्तु । सप्तयः । रघु-स्यदः । रघु-पत्वानः । प्र
जिगात । बाहु-भिः ॥ सीदत । आ । बृहिः । उरु । वः ।

१—(इन्द्रः) हे परमेश्वर्यवान् राजन् (च) (सोमम्) सदोषधिरसम्
(पिबतम्) (बृहस्पते) हे बृहत्या वेदवाण्या रत्नक विद्वान् (अस्मिन्) (यज्ञे)
पूजनोये राज्यपालनव्यवहारे (मन्दसानौ) अ० १४। २। ६। मदि आमोद-
स्तुतिदीप्त्यादिषु—असानच् आमोदयितारौ (वृषणवसू) यौ वृष्णो बलवतः
वीरान् वासयनस्तौ (वाम्) युवाम् (आविशन्तु) प्रविशन्तु । प्राप्नुवन्तु
(इन्द्रवः) पेश्वर्याणि (स्वाभुवः) सुष्ठु सर्वतो भवन्तः (अस्मे) अस्मभ्यम्
(रयिम्) धनम् (सर्ववीरम्) सर्वे वीरा यस्मात्तम् (नि) नियमेन (यच्छ-
तम्) दत्तम् ॥

सू० १३ [६०१] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(३,८११)

सदः । कृतम् । मादयध्वम् । मरुतुः । मध्वः । अन्धसः ॥२॥

भाषार्थ—(मरुतः) हे विद्वान् शूरो ! (वः) तुम को (रघुष्यदः) शीघ्रगामी (सप्तयः) घोड़े (आ) सब ओर (वहन्तु) ले चलें, (रघुपत्वानः) शीघ्रगामी तुम (बाहुभिः) भुजाओं [हस्तक्रियाओं] से (प्र जिगात) आगे बढ़ो । और (उरु) चौड़े (बर्हिः) आकाश में (आ सीदत) आओ जाओ, (वः) तुम्हारे लिये (सदः) स्थान (कृतम्) बनाया गया है, (मध्वः) मधुर (अन्धसः) अन्न से (मादयध्वम्) [सब को] तृप्त करो ॥ २ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग क्रियाकुशल होकर शिल्पविद्या से यान विमान आदि द्वारा जल थल और आकाश में जाना आना करके अन्न आदि उत्तम पदार्थों की प्राप्ति से सब को प्रसन्न करें । मरुत् लोगों के विषय में—अथ० १ । २० । १ देखो ॥ २ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है— १ । ८५ । ६ ॥

इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया ।
भुद्रा हि नः प्रमतिरस्य सं सद्यग्ने सुख्ये मा रिषामा वयं तवा
इमम् । स्तोमम् । अर्हते । जात-वेदसे । रथम्-इव । सम् ।
महेम । मनीषया ॥ भुद्रा-हि । नः । प्र-मतिः । अस्य ।

२—(आ) समन्तात् (वः) युष्मान् (वहन्तु) नयन्तु (सप्तयः) वसेस्तिः । उ० ४ । १८० । षप समवाये-तिप्रत्ययः, यद्वा सृण्व गतौ-तिप्रत्यये गुणे च रेफलोपः । सप्तेः सरणस्य-निरु० ६ । ३ । अश्वाः—निघ० १ । १४ (रघुष्यदः) रघि गतौ-उप्रत्ययो नकारलोपश्च + स्यन्दू प्रस्रवणे—किप् । रघु शीघ्रं स्यन्दमाना वेगेन गच्छन्तः (रघुपत्वानः) अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते । पा० ३ । २ । ७५ । रघु + पत्त्व गतौ—वनिप् । रघु शीघ्रं पतन्तो गच्छन्तो यूयम् (प्र) प्रकर्षेण (जिगात) गा स्तुतौ जुहोत्यादिकः । जिगातीति गतिकर्मा—निघ० २ । १४ । गच्छत (बाहुभिः) भुजैः । हस्तक्रियाभिः (आसीदत) गमनागमनं कुर्वत (बर्हिः) अन्तरिक्षम्-निघ० १ । ३ (उरु) विस्तीर्णम् (वः) युष्मभ्यम् (सदः) स्थानम् (कृतम्) रचितम् (मादयध्वम्) तर्पयत सर्वान् (मरुतः) अ० १ । २० । १ । हे विद्वांसः शूराः (मध्वः) मधुरात् (अन्धसः) अन्नात् ॥

(३, ६१२)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० १३ [६०१]

सुम्-सदि । अग्ने । सुख्ये । मा । रिषाम् । वयम् । तव ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(अर्हते) योग्य, (जातवेदसे) उत्पन्न पदार्थों के जानने हारे [पुरुष] के लिये (इमम्) इस (स्तोमम्) गुणकीर्तन को (रथम् इव) रथ के समान (मनीषया) बुद्धि से (सम्) यथावत् (महेम) हम बढ़ावें । (हि) क्योंकि (अस्य) इस [विद्वान्] की (प्रमतिः) उत्तम समझ (संसदि) सभा के बीच (नः) हमारे लिये (भद्रा) कल्याण करने वाली है । (अग्ने) हे अग्नि ! [तेजस्वी विद्वान्] (ते) तेरी (सुख्ये) मित्रता में (वयम्) हम (मा रिषाम्) न दुखी होवें ॥ ३ ॥

भावार्थ—जैसे उत्तम बने हुये यान विमान आदि की चाल और योग्यता से उपकार लेकर मनुष्य गुण गाते हैं, वैसे ही लोग विज्ञान के आविष्कार करने वाले विद्वान् के गुणों से उपकार लेकर सुख प्राप्त करें ॥ ३ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—१ । ६४ । १ और सामवेद पू० १ । ७ । ४ तथा ऋ० ४ । १ । ७ ॥

ऐभिर्ग्रे सुरथं याह्यर्वाङ् नानारथं वा विभवो ह्यश्वाः ।

पत्नीवत्स्त्रिशतं त्रींश्च देवाननुष्वधमा वह मादयस्व ॥ ४ ॥

आ । एभिः । अग्ने । सु-रथम् । याहि । अर्वाङ् । नाना-
रथम् । वा । वि-भवः । हि । अश्वाः ॥ पत्नी-वतः । त्रि-श-
तम् । त्रीन् । च । देवान् । अनु-स्वधम् । आ । वह ।
मादयस्व ॥ ४ ॥

३—(इमम्) प्रत्यक्षम् (स्तोमम्) गुणकीर्तनम् (अर्हते) योग्याय (जातवेदसे) जातानामुत्पन्नानां वेदित्रे (रथम्) रमणसाधनं विमानादियानम् (इव) यथा (सम्) सम्यक् (महेम) पूजयेम । सत्कुर्याम । (मनीषया) प्रज्ञया (भद्रा) कल्याणकारिणी (हि) यतः (नः) अस्मभ्यम् (प्रमतिः) प्रकृष्टा बुद्धिः (अस्य) विदुषः पुरुषस्य (संसदि) परिषदि । सभायाम् (अग्ने) हे तेजस्विन् विद्वन् (सुख्ये) मित्रभावे (मा रिषाम्) हिंसिता मा भूम (वयम्) (तव) ॥

भाषार्थ—(अग्ने) हे अग्नि ! [तेजस्वी विद्वान्] (एभिः) इन [घोड़ों] से (सरथम्) एक से रथों वाले (वा) और (नानारथम्) नाना प्रकार के रथों वाले [मार्ग] को (अर्वाङ्) सामने होकर (आ याहि) आ, (हि) क्योंकि [तेरे] (अश्वाः) घोड़े (विभवः) प्रबल हैं । और (पत्नीवतः) पालनशक्तियों [सूक्ष्म अवस्थाओं] से युक्त (त्रिंशतम्) तीस (च) और (त्रीन्) तीन [तेतीस अर्थात् आठ वसु आदि] (देवान्) दिव्य पदार्थों को (अनुष्वधम्) अन्न के लिये (आ) यथावत् (वह) प्राप्त हो, और [सब को] (मादयस्व) हर्षित कर ॥ ४ ॥

भावार्थ—तेतीस देवता वा दिव्य पदार्थ यह हैं—अग्नि पृथिवी आदि आठ वसु, प्राण, अपान आदि ग्यारह रुद्र, चैत्र आदि बारह आदित्य वा महीने, एक इन्द्र वा बिजुली, एक प्रजापति वा यज्ञ—देखो अथर्ववेद—६। १३६। १। भाव यह है कि विज्ञानी शिल्पी पुरुष इन तेतीस दिव्य पदार्थों के बाहिरी आकार और भीतरी सूक्ष्म शक्तियों को भली भाँति समझ कर अद्भुत यान विमान आदि बनाकर संसार को सुख पहुँचावें ॥ ४ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—३। ६। ६ ॥

इति प्रथमोऽनुवाकः ॥

४—(आ याहि) आगच्छ (एभिः) अश्वैः (अग्ने) हे तेजस्विन् विद्वन् (सरथम्) समानस्यच्छन्दस्यमूर्द्धप्रभृत्युदकेषु । पा० ६। ३। ८४। समानस्य सभावः । समानाः सदृशा रथा यस्मिंस्तं मार्गम् (अर्वाङ्) अभिमुखः (नानारथम्) बहुविधा रथा यस्मिंस्तं मार्गम् (वा) समुच्चये (विभवः) प्रभवः । प्रबलाः (हि) यतः (अश्वाः) तुरङ्गाः (पत्नीवतः) पालनशक्तिभिः सूक्ष्मावस्थाभिर्युक्तान् (त्रिंशतम्) (त्रीन्) (च) (देवान्) अ० ६। १३६। १। अष्टवस्वादीन् दिव्यपदार्थान् (अनुष्वधम्) स्वधेत्यजनाम—निघ० २। ७। स्वधाम् अन्नम् अनुलक्ष्य (आ) यथावत् (वह) प्राप्नुहि (मादयस्व) आनन्दय सर्वान् ॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः ॥

सूक्तम् १४ ॥

१—४ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ विराडाष्युष्णिक्; २ भुरिगार्षी बृहती; ३ ककु-
बुष्णिक्; ४ विराडाषी पङ्क्तिः ॥

राजप्रजाकर्तव्योपदेशः— राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

वयम् त्वामपूव्यं स्थूरं न कच्चिद् भरन्तोऽवस्यवः ।

वाजे चित्रं हवामहे ॥ १ ॥

वयम् । ऊँ इति । त्वाम् । अपूव्यम् । स्थूरम् । न । कत् ।

चित् । भरन्तः । अवस्यवः ॥ वाजे । चित्रम् । हवामहे ॥ १ ॥

भाषार्थ—(अपूव्य) हे अनुपम ! [राजन्] (कत् चित्) कुछ भी
(स्थूरम्) स्थिर (न) नहीं (भरन्तः) रक्खे हुये, (अवस्यवः) रक्षा चाहने
वाले (वयम्) हम (वाजे) संग्राम के बीच (चित्रम्) विचित्र स्वभाव
वाले (त्वाम्) तुम्हें (उ) ही (हवामहे) बुलाते हैं ॥ १ ॥

भावार्थ—जब दुष्ट चोर डाकू लोग अत्यन्त सतावें, प्रजागण वीर
राजा की शरण ले कर रक्षा करें ॥ १ ॥

मन्त्र १, २ ऋग्वेद में हैं—८।२१।१, २। मन्त्र १ सामवेद में है—
पू० ५।२।१० तथा मन्त्र १, २ उ० १।१।२२ और मन्त्र १—४ आगे हैं—
अथ० २०।६२।१—४ ॥

१—(वयम्) प्रजाः (उ) अवधारणे (त्वाम्) (अपूव्य) स्वार्थे
यत् । नास्ति पूर्वः श्रेष्ठो यस्मात् सः, अपूर्वः, अपूव्यः । हे अनुपम (स्थूरम्)
स्थः किञ्च । उ० ५।४।१० गतिनिवृत्तौ—ऊरन्, कित् । स्थिरम् (न)
निषेधे (कच्चित्) किमपि (भरन्तः) धरन्तः (अवस्यवः) अवस—क्यच्,
उ । रक्षाकामाः (वाजे) संग्रामे—निघ० २।१७ (चित्रम्) अद्भुतस्वभावम्
(हवामहे) आह्वयामः ॥

उप त्वा कर्मन्तये स नो युवोग्रश्चक्राम यो धृषत् ।
त्वामिद्व्यवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम् ॥ २ ॥

उप । त्वा । कर्मन् । ऊतये । सः । नः । युवा । उग्रः ।
चक्राम । यः । धृषत् ॥ त्वाम् । इत् । हि । अवितारम् ।
ववृमहे । सखायः । इन्द्र । सानसिम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(कर्मन्) कर्म के बीच (नः) हमारी (ऊतये) रक्षा के
लिये (सः) उस (यः) जिस (युवा) स्वभाव से बलवान्, (उग्रः) तेजस्वी
और (धृषत्) निर्भय पुरुष ने (चक्राम) पैर बढ़ाया है, (इन्द्र) हे इन्द्र !
[महाप्रतापी राजन्] (अवितारम्) उस रक्षक और (सानसिम्) दानी
(त्वा) तुझ को, (त्वाम्) तुझ को (हि) ही (इत्) अवश्य (सखायः)
हम मित्र लोग (उप) आदर से (ववृमहे) चुनते हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—जो पुरुष प्रजा रक्षण में बड़ा पराक्रमी हो, प्रजागण सब
लोगों में से उसी को राजा बनावें ॥ २ ॥

यो न इदमिदं परा प्र वस्य आनिनाय तमु व स्तुषे ।
सखाय इन्द्रमृतये ॥ ३ ॥

यः । नः । इदम्-इदम् । पुरा । प्र । वस्यः । आ-निनाय ।
तम् । ऊ-इति । वः । स्तुषे ॥ सखायः । इन्द्रम् । ऊतये ॥ ३ ॥

२-- (उप) आदरेण (त्वा) त्वाम् (कर्मन्) कर्मणि । व्यवहारे (ऊतये)
रक्षायै (सः) (नः) अस्माकम् (युवा) निसर्गबलवान् (उग्रः) प्रचण्डः
(चक्राम) क्रमु पादविक्षेपे—लिट् । अग्रे जगाम (यः) (धृषत्) संश्रुत्-
तृपद्भवेइत् । उ० २ । ८५ । जि धृषा प्रागल्भ्ये—अतिप्रत्ययः । प्रागल्भः ।
निर्भयः (त्वाम्) (इत्) एव (हि) (अवितारम्) रक्षकम् (ववृमहे)
वृणीमहे । स्वीकुर्मः (सखायः) मित्रभूता वयम् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान्
(सानसिम्) सानसिवर्णसिपर्णसि० । उ० ४ । १०७ । षण् दाने—असि, उपधा-
वृजिः । दातारम् ॥

भाषार्थ—(यः) जो [पराक्रमी] (नः) हमारे लिये (इदमिदम्) इस-इस (वस्यः) उत्तम वस्तु को (पुरा) पहिले (प्र) अच्छे प्रकार (आनिनाय) लाया है, (तम् उ) उस ही (इन्द्रम्) इन्द्र [महाप्रतापी वीर] को, (सखायः) हे मित्रो ! (वः) तुम्हारी (ऊतये) रक्षा के लिये (स्तुषे) मैं सराहता हूँ ॥ ३ ॥

भावार्थ—जो पुरुष पहिले से ही धीर वीर होवे, लोग उस की बड़ाई करके गुण ग्रहण करें ॥ ३ ॥

मन्त्र ३, ४ ऋग्वेद में है—८ । २१ । ६, १० । मन्त्र ३ सामवेद में है—७० ५ । २ । २ ॥

हर्यश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं स हि ष्मा यो अमन्दत ।
आ तु नः स वयति गव्यमश्व्यं स्तोतृभ्यो मुचवा शुतम् ॥४॥
हरि-अश्वम् । सत्-पतिम् । चर्ष-णि-सहम् । सः । हि । स्म ।
यः । अमन्दत ॥ आ । तु । नः । सः । वयति । गव्यम् ।
अश्वम् । स्तोतृ-भ्यः । मुच-वा । शुतम् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(सः) वह (हि) ही (स्म) अवश्य [मनुष्य है], (यः) जिस ने (हर्यश्वम्) ले चलने वाले घोड़ों से युक्त, (सत्पतिम्) सत्पुरुषों के रक्षक, (चर्षणीसहम्) मनुष्यों को नियम में रखने वाले [राजा] को

३—(यः) पराक्रमी (नः) अस्मभ्यम् (इदमिदम्) बहुनिर्दिष्टम् (पुरा) अग्रे (प्र) प्रकर्षेण (वस्यः) वसु—ईयसुन्, ईकारलोपः । वसीयः प्रशस्तं वस्तु (आनिनाय) आनीतवान् (तम्) (उ) अवधारणे (वः) युष्माकम् (स्तुषे) लङर्थे लेडुत्तमैकवचने । सिब् बहुलं लेटि । पा० ३ । १ । ३४ । इति सिप् । स्तुवे । स्तौमि (सखायः) हे सुहृदः (इन्द्रम्) महाप्रतापिनं वीरम् (ऊतये) रक्षायै ॥

४—(हर्यश्वम्) हरयो हरणशीला अश्वा यस्य तम् । शीघ्रगामितुरङ्गवन्तम् (सत्पतिम्) सतां कर्मभ्रेष्ठानां पालकम् (चर्षणीसहम्) चर्षणीनां मनुष्याणां सोढारम् अभिभवितारं नियन्तारम् (सः) हि (स्म) अवश्यम् (यः) पुरुषः (अमन्दत) महि स्तुतिमोदमदस्वप्रकान्तिगतिषु-लङ् ।

सू० १५ [६०३]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(३, ८१७)

(अमन्दत) प्रसन्न किया है । (सः) वह (मघवा) महाधनी (तु) तौ (नः) हम (स्तोतृभ्यः) स्तुति करने वालों को (शतम्) सौ [बहुत] (गव्यम्) गौओं का समूह और (अश्व्यम्) घोड़ों का समूह (आ वयति) लाता है ॥ ४ ॥

भावार्थ—सब प्रजागण आज्ञा मानकर शूर धर्मात्मा राजा को प्रसन्न रखें, जिस से वह उत्तम प्रबन्ध के साथ प्रजा का ऐश्वर्य बढ़ावे ॥ ४ ॥

सूक्तम् १५ ॥

१—६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, २, ४ जगती; ३, ५ निचृज्जगती; ५ भुरिगार्धी त्रिष्टुप् ॥

समाध्यक्षगुणोपदेशः—समाध्यक्ष के गुणों का उपदेश ॥

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्रये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे ।
अपामिव प्रवृणो यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम् ॥ १
प्र । मंहिष्ठाय । बृहते । बृहत्-रये । सत्य-शुष्माय । तवसे ।
मतिम् । भरे ॥ अपास्-इव । प्रवृणो । यस्य । दुः-धरम् ।
राधः । विश्व-आयु । शवसे । अप-वृतम् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(मंहिष्ठाय) अत्यन्त दानी, (बृहते) महागुणी, (बृहद्रये) महाधनी, (सत्यशुष्माय) सच्चे बलवान् [समाध्यक्ष] के लिये (तवसे) बल पाने को (मतिम्) बुद्धि (प्र) उत्तम रीति से (भरे) मैं

आमोदितवान् । तर्पितवान्, (आ वयति) वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्यसन-खादनेषु—लट्, छान्दसः शप् । आगमयति । प्रापयति (तु) अवधारणे । नियोगे (नः) अस्मभ्यम् (सः) (गव्यम्) गोसमूहम् (अश्व्यम्) अश्वसमूहम् (स्तोतृभ्यः) (मघवा) महाधनी (शतम्) बहु ॥

१—(प्र) प्रकर्षेण (मंहिष्ठाय) मंहतेर्दानकर्मा—निघ० ३ । २० । महि वृक्षौ दाने च—तृच्, मंहित्—इष्टन्, तृलोपः । दातृनमाय (बृहते) गुणो-मंहते (बृहद्रये) रैशब्दस्य ऐकारस्य एकारः । प्रभूतधनाय (सत्यशुष्माय) अवितथबलाय (तवसे) अ० ४ । २२ । ३ । बलप्राप्तये (मतिम्) बुद्धिम् (भरे)

(३, ८१८)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० १५ [६०३]

धारण करता हूँ । (प्रवणे) ढालू स्थान में (अपाम् इव) जलों के [प्रवाह के] समान, (यस्य) जिस [सभाध्यक्ष] का (दुर्धरम्) बेरोक, (विश्वायु) सब को जीवन देने वाला (राधः) धन (शवसे) बल के लिये (अपावृतम्) फैला हुआ है ॥ १ ॥

भावार्थ—जो सभाध्यक्ष सुपात्रों को दान देकर प्रजा को सुशिक्षित बलवान् बनाता है, उसके उपकारों की महिमा ऐसी सुखदायक होती है, जैसे जल ढालू स्थानों में बह कर खेती आदि बढ़ाकर आनन्द देता है ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—१।५७।१—६ ॥

अध ते विश्वमनु हासदिष्ट्य आपो निम्नेव सवना हविष्मतः ।
यत् पर्वते न समशीत हर्यत इन्द्रस्य वज्रः इनयिता हिरण्ययः २
अध । ते । विश्वसु । अनु । ह । असत् । इष्टये । आपः ।
निम्ना-इव । सवना । हविष्मतः ॥ यत् । पर्वते । न । सम-
शीत । हर्यतः । इन्द्रस्य । वज्रः । इनयिता । हिरण्ययः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(अध) फिर (विश्वम्) सब जगत् (हविष्मतः) दान योग्य पदार्थों वाले (ते) तेरे (सवना अनु) पेश्वर्यों के पीछे (इष्टये) अभीष्ट सिद्धि के लिये (ह) निश्चय करके (असत्) होवे, (आपः) जल (निम्ना-इव) जैसे नीचे स्थानों के [पीछे बह चलते हैं] । (यत्) जब (इन्द्रस्य) इन्द्र [अत्यन्त पेश्वर्य वाले सभाध्यक्ष] का (हर्यतः) कर्मनीय, (इनयिता) चूर चूर

अहं धरे (अपाम्) जलानां प्रवाहः (इव) यथा (प्रवणे) अवततदेशे (यस्य) सभाध्यक्षस्य (दुर्धरम्) दुःखेन धरणीयं निवारणीयम् (राधः) धनम् (विश्वायु) विश्वस्मै सर्वस्मै आयुर्जीवनं यस्मात् तत् (शवसे) बललाभाय (अपावृतम्) छान्दसो दीर्घः । अपगनावरणं व्यावृतं वर्तते ॥

२—(अध) अथ । अनन्तरम् (विश्वम्) सर्व जगत् (अनु) अनुसृत्य (ह) निश्चयेन (असत्) भवेत् (इष्टये) अभीष्टसिद्धये (आपः) जलानि (निम्ना) निम्नानि स्थलानि अनुसृत्य (इव) यथा (सवना) पेश्वर्याणि (हविष्मतः) हवींषि दानयोग्यानि वस्तूनि यस्य (यत्) यदा (पर्वते) शैले (न) यथा (समशीत) शीङ्खन्ने—लङ् । गुणाभावः । अशेत । सम्यग् वर्तमानोऽभूत् (हर्यतः) कर्मनीयः (इन्द्रस्य) परमेश्वर्यवतः सभाध्यक्षस्य (वज्रः)

करने वाला, (हिरण्ययः) तेजोमय (वज्रः) वज्र [हथियारों का मुण्ड]
(पर्वते न) जैसे पहाड़ पर, (सम्—अशीत) वर्तमान हुआ है ॥ २ ॥

भावार्थ—जैसे जल ऊंचे स्थान से नीचे स्थान में फैलकर संसार का
उपकार करता है, वैसे ही राजा धन का संग्रह करके प्रजा पालन करे, और
शत्रुओं के मारने में ऐसा दृढ़ उपाय करे, जैसे पहाड़ काटने के लिये दृढ़ हथियार
आवश्यक होते हैं ॥ २ ॥

अस्मै भीमाय नमसा समध्वर उषो न शुभ्रे आ भूर पनी-
यसे । यस्य धाम अवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो
नार्यसे ॥ ३ ॥

अस्मै । भीमाय । नमसा । सम् । अध्वरे । उषः । न ।
शुभ्रे । आ । भूर । पनीयसे ॥ यस्य । धाम । अवसे । नाम ।
इन्द्रियम् । ज्योतिः । अकारि । हरितः । न । अर्यसे ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(शुभ्रे) हे चमकीली (उषः) उषा ! [प्रभात वेला के
समान सुखदायक पुरुष] (न) अब (अस्मै) इस (भीमाय) भीम [भयङ्कर],
(पनीयसे) अत्यन्त व्यवहार कुशल [समाध्यक्ष] के लिये (अध्वरे) हिंसा
रहित कर्म में (नमसा) सत्कार के साथ (सम्) अच्छे प्रकार (आ भर)
भरपूर हो । (यस्य) जिस [समाध्यक्ष] का (धाम) धाम [न्यायालय आदि

आयुधसमूहः (शनयिता) शनय हिसायाम्—तुन, नित्वादाद्युदात्तः । हिसिता ।
संपेष्टा (हिरण्ययः) तेजोमयः ॥

३—(अस्मै) प्रसिद्धाय (भीमाय) भयङ्कराय (नमसा) सत्कारेण
(सम्) सम्यक् (अध्वरे) हिंसारहिते कर्मणि (उषः) पादादित्वाद् निघाता-
भावः । हे प्रभातवेले (न) सम्प्रति—निरु० ७ । ३१ (शुभ्रे) स्फायितञ्चि० ।
७० २ । १३ । शुभ दीप्तौ—रक् टाप् । हे दीप्यमाने (आ) समन्तात् (भर)
धृतः पूरितो भव (पनीयसे) पन व्यवहारे स्तुतौ च—तृच्, ईयसुन्, तृलोपः ।
अत्यन्तव्यवहारकुशलाय समाध्यक्षाय (यस्य) समाध्यक्षस्य (धाम) न्या-

स्थान], (नाम) नाम [यश], (इन्द्रियम्) ऐश्वर्य और (ज्योतिः) प्रताप (भवसे) अन्न के लिये (अकारि) बनाया गया है, (हरितः न) जैसे दिशायाँ (अयसे) चलने के लिये [बनी] हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—जैसे प्रातःकाल में अन्धकार के नाश से आनन्द होता है, वैसे ही मनुष्य योग्य सभाध्यक्ष के सत्कार करने में सुखी होवे, और वह भी अपना सर्वस्व प्रजा को सुख देने में सब ओर लगावे ॥ ३ ॥

इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टु ये त्वारभ्य चरामसि प्रभुवसो ।
नहि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सचत् क्षोणीरिव प्रति नो हर्य-
तद् वचः ॥ ४ ॥

इमे । ते । इन्द्र । ते । वयम् । पुरु-स्तुतु । ये । त्वा । आ-
रभ्य । चरामसि । प्रभुवसो इति प्रभु-वसो ॥ नहि । त्वत् ।
अन्यः । गिर्व-णः । गिरः । सचत् । क्षोणीः-इव । प्रति ।
नः । हर्य- । तत् । वचः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(पुरुष्टुत) हे बहुत स्तुति किये गये ! (प्रभुवसो) हे अधिक धन वाले (इन्द्र) इन्द्र ! [महाप्रतापी राजन्] (इमे) यह लोग और (ते) वे लोग (वयम्) हम सब (ते) तेरे हैं, (ये) जो हम (त्वा आरभ्य) तेरा सहारा लेकर (चरामसि) विचरते हैं । (गिर्वणः) हे स्तुतियों से सेवने

यात्रयादि स्थानम् (भवसे) अन्नलाभाय (नाम) यशः (इन्द्रियम्) इन्द्रियं धननाम—निघ० २ । १० । इन्द्रलिङ्गम् । ऐश्वर्यम् (ज्योतिः) प्रतापः (अकारि) कृतम् (हरितः) हरितो दिङ्नाम—निघ० १ । ६ । दिशः (न) इव (अयसे) अय गतौ—असुन् । गमनाय ॥

४—(इमे) समीपवर्तिनः (ते) तव (इन्द्र) हे महाप्रतापिन् राजन् (ते) दूरवर्तिनः पुरुषाः (वयम्) सर्वे (पुरुष्टुत) हे बहुप्रकारं स्तुत (ये) (त्वा) त्वाम् (आरभ्य) आभित्य (चरामसि) विचरामः (प्रभुवसो) हे प्रभूतधन (नहि) निषेधे (त्वत्) तव सकाशात् (अन्यः) भिन्नपुरुषः

सू० १५ [६०३] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(३, ८२१)

योग्य ! (त्वत्) तुझ से (अन्यः) दूसरा पुरुष (गिरः) [हमारी]
वाणियों को (नहि) नहीं (सघत्) सह सकता, (क्षोणीः इव) पृथिवियों के
समान तू (नः) हमारे (तत्) उस (वचः) वचन में (प्रति) निश्चय करके
(हर्य) प्रीति कर ॥ ४ ॥

भावार्थ—मनुष्यों के बीच अद्वितीय पराक्रमी धर्मज्ञ राजा निकटवर्ती
और दूरवर्ती प्रजा की पुकार सुनकर रक्षा करे, जैसे पृथिवी सब उत्पन्न मात्र
की रक्षा करती है ॥ ४ ॥

यह मन्त्र सामवेद में भी है—पू० ४। ६। ३ ॥

भूरि त इन्द्र वीर्यं तव स्मस्यस्य स्तोतुर्मघवन् काममा पृण ।
अनु ते द्यौर्बृहती वीर्यं मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे ॥५॥
भूरि । ते । इन्द्र । वीर्यम् । तव । स्मसि । अस्य । स्तोतुः ।
मघवन् । कामम् । आ । पृण ॥ अनु । ते । द्यौः । बृहती ।
वीर्यम् । ममे । इयम् । च । ते । पृथिवी । नेमे । ओजसे ॥५॥

भावार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [महाप्रतापी राजन्] (ते) तेरा
(वीर्यम्) पराक्रम (भूरि) बहुत है, हम (ते) तेरे [प्रजा] (स्मसि) हैं,
(मघवन्) हे महाधनी ! (अस्य) इस (स्तोतुः) स्तुति करने वालों की
(कामम्) कामना को (आ) सब ओर से (पृण) तृप्त कर । (ते) तेरे
(वीर्यम् अनु) पराक्रम के पीछे (बृहती) बड़ा (द्यौः) आकाश (ममे) नापा

(गिर्वणः) गृ शब्दे—किप्+सर्वधातुभ्योऽसुन् । उ० ४। १८६ । वन संभक्तौ—
असुन् । गिर्वणा देवो भवति गीर्भिरेनं वनयन्ति—निरु० ६। १४ । हे गीर्भिः
स्तुतिभिर्वननीय सेवनीय (गिरः) वाणीः (सघत्) सहेलेंटि, अहागमः, इस्य
घः । सहेत । स्वीकुर्यात् (क्षोणीः) पृथिव्यः (इव) यथा (प्रति) निश्चयेन
(नः) अस्माकम् (हर्य) कामयस्व (तत्) । (वचः) वचनम् ॥

५—(भूरि) बहुत (ते) तव (इन्द्र) हे प्रतापिन् राजन् (वीर्यम्) पराक्रमः
(ते) तव (स्मसि) अयं प्रजाः स्मः (अस्य) (स्तोतुः) गुणप्रकाशकस्य
(मघवन्) हे बहुधन (कामम्) अभिलाषम् (पृण) पृण प्रीणने । तर्पय
(अनु) अनुसृत्य (ते) तव (द्यौः) आकाशः (बृहती) महती (वीर्यम्)
पराक्रमम् (ममे) माङ् माने शब्दे च—लिट् । परिमिता बभूव (इयम्)

गया है, (च) और (ते) तेरे (ओजसे) बल के लिये (इयम्) यह (पृथिवी) पृथिवी (नेमे) झुकी है ॥ ५ ॥

भाषार्थ—जो विद्वानी राजा प्रजा को प्रसन्न रखकर विद्वानों का उचित सत्कार करता है, वह वायु विमान आदि से आकाश को, तथा स्थल और जल यान आदि से पृथिवी को वश में कर के राज्य की उन्नति करता है ॥ ५ ॥

त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामरुं वज्रेण वज्रिन् पर्वशश्चकर्तिथ । अवा-
सृजो निवृताः सर्तुवा अपः सृजा विश्वं दधिषे केवलं सहः ६
त्वम् । तम् । इन्द्र । पर्वतम् । महाम् । उरुम् । वज्रेण ॥
वज्रिन् । पूर्व-शः । चकर्तिथ ॥ अव । असृजः । नि-वृताः ।
सर्तुवै । अपः । सृजा । विश्वम् । दधिषे । केवलम् । सहः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(वज्रिन्) हे वज्रधारी (इन्द्र) इन्द्र ! [महाप्रतापी राजन्] (त्वम्) तू ने (तम्) उस (महाम्) बड़े, (उरुम्) चौड़े (पर्वतम्) पहाड़ को (वज्रेण) वज्र [हथियारों के झुण्ड] से (पर्वशः) टुकड़े टुकड़े करके (चकर्तिथ) काट डाला है । और (निवृतः) रोके हुये (अपः) जलों को (सर्तुवै) बहने के लिये (अव असृजः) छोड़ दिया है, (सृजा) सत्य रूप से (विश्वम्) सम्पूर्ण, (केवलम्) असाधारण (सहः) बल को (दधिषे) तू ने धारण किया है ॥ ६ ॥

दृश्यमाना (च) (ते) तव (पृथिवी) भूमिः (नेमे) एव प्रहृत्वे—लिट् ।
प्रह्वी नम्रा बभूव (ओजसे) बलाय ॥

६—(त्वम्) (तम्) प्रसिद्धम् (इन्द्र) महाप्रतापिन् राजन् (पर्वतम्) शैलम् (महाम्) नेकारतकारयोर्लोपः । महान्तम् (उरुम्) विस्तीर्णम् (वज्रेण) आयुधसमूहेन (वज्रिन्) हे शस्त्रास्त्रधारिन् (पर्वशः) खण्डशः (चकर्तिथ) कृती छेदने—लिट् । छिन्नवानसि (अवासृजः) मुक्तवानसि (निवृताः) निवारिताः । निरुद्धाः (सर्तुवै) सरतेः कृत्यार्थे तवैप्रत्ययः । सरणाय । वहनाय (अपः) जलानि (सृजा) सत्यरूपेण (विश्वम्) सर्वम् (दधिषे) धारितवानसि (केवलम्) असाधारणम् (सहः) बलम् ॥

सू० १६ [६०४]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(३, ८२३)

भावार्थ—जो वीर पराक्रमी राजा पहाड़ों को काटकर वहां पर एकत्र हुये जल को पृथिवी पर लाकर खेती आदि में उपयुक्त करे वह संसार के बीच कीर्तिमान् होवे ॥ ६ ॥

सूक्तम् १६ ॥

१—१२ ॥ बृहस्पतिर्देवता ॥ १, ३, ५, ६ निचृत् त्रिष्टुप्; २, ६—८, १०,

११ त्रिष्टुप्; ४ भुरिगार्षी त्रिष्टुप्; १२ विराट् त्रिष्टुप् ॥

विद्वद्गुणोपदेशः—विद्वानों के गुणों का उपदेश ॥

उदुमुतो न वयो रक्षमाणा वावदतो अभ्रियस्येव घोषाः ।

गिरिभ्रजो नोर्मयो मदन्तो बृहस्पतिमभ्यर्कं अनावन् ॥१॥

उदु-मुतः । न । वयः । रक्षमाणाः । वावदतः । अभ्रियस्य-इव ।

घोषाः ॥ गिरि-भ्रजः । न । ऊर्मयः । । मदन्तः । बृहस्पतिम् ।

अभि । अर्काः । अनावन् ॥ १ ॥

भावार्थ—(उदुमुतः) जल को प्राप्त हुये, (रक्षमाणाः) अपनी रक्षा करते हुये (वयः न) पक्षियों के समान, (वावदतः) बार बार गरजते हुये (अभ्रियस्य) बादल के (घोषाः इव) शब्दों के समान, (गिरिभ्रजः) पहाड़ों से गिरते हुये, (मदन्तः) तृप्त करते हुये (ऊर्मयः न) जल के प्रवाहों के समान, (अर्काः) पूजनीय पण्डितों ने (बृहस्पतिम्) बृहस्पति [बड़ी वेदवाणी के रक्षक महाविद्वान्] को (अभि) सब ओर से (अनावन्) सराहा है ॥ १ ॥

भावार्थ—जैसे पक्षीगण जलाशय में पान स्नान करके तृप्त होते, जैसे

१—(उदुमुतः) मुझ् गतौ—किप् । उदकं प्राप्ताः (न) यथा (वयः) पक्षिणः (रक्षमाणाः) आत्मानं पालयन्तः (वावदतः) वदेर्यङ्लुकि शतृ । पुनः पुनः शब्दायमानस्य (अभ्रियस्य) स्वार्थे घप्रत्ययः । अभ्रस्य मेघस्य—निघ० १ । १० (इव) यथा (घोषाः) ध्वनयः (गिरिभ्रजः) भ्रशु अधःपतने—किप् । शस्य जः । शैलेभ्यः सकाशादधःपतन्तः (न) यथा (ऊर्मयः) जलप्रवाहाः (मदन्तः) तर्पयन्तः (बृहस्पतिम्) बृहत्या वेदवाण्या रक्षकं विद्वांसम् (अभि) सर्वतः (अर्काः) पूजनीयाः पण्डिताः (अनावन्) एण् स्तुतौ—लङ्, क्वाङ्सः शप् । अस्तुवन् ॥

बरसते हुये मेघ अपनी गर्जन से प्रसन्न करते हैं, और जैसे पहाड़ों से बहती हुई नदियां अन्न आदि उत्पन्न करती हैं, वैसे ही बुद्धिमान लोग वेदाभ्यासी पुरुष के गुणों को गाकर, आनन्द बढ़ाते हैं ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—१०। ६८। १—१२ ॥

सं गोभिराङ्गिरसो नक्षमाणो भग इवेदर्यमणं निनाय । जने मित्रो न दम्पती अनक्ति बृहस्पते वाजयाशूरिवाजौ ॥ २ ॥

सम् । गोभिः । आङ्गिरसः । नक्षमाणः । भगः-इव । इत् । अर्यमणम् । निनाय ॥ जने । मित्रः । न । दम्पती इति वस्पती । अनक्ति । बृहस्पते । वाजय । आशून्-इव । आजौ ॥ २

भाषार्थ—(आङ्गिरसः) विज्ञान वाला पुरुष, (भगः इव) पेश्वर्यवान् के समान (अर्यमणम्) श्रेष्ठों के मान करने वाले जन को (इत्) ही (नक्षमाणः) पाता हुआ (गोभिः) वाणियों से (सम्) यथावत् (निनाय) लाया है । (जने) मनुष्यों में (मित्रः न) मित्र के समान वह (दम्पती) दोनों स्त्री पुरुष को (अनक्ति) शोभायमान करता है, (बृहस्पते) हे बृहस्पति ! [वेदवाणी के रक्षक] (आजौ) सङ्ग्राम में (आशून् इव) घोड़ों के समान (वाजय) [हमें] वेग वाला कर ॥ २ ॥

भावार्थ—जैसे विज्ञानी पुरुष विद्वानों को पाकर गृहस्थियों को गुणी बनाते आये हैं, और जैसे संग्राम वा झुड़दौड़ के लिये घोड़े शीघ्रगामी होते हैं,

२—(सम्) सम्यक् (गोभिः) वाग्भिः (आङ्गिरसः) अङ्गिरस्—अण् । अङ्गिरो विज्ञानं यस्यास्तीति स महाविद्वान् (नक्षमाणः) प्राप्नुवन् (भगः) पेश्वर्यवान् (इव) यथा (इत्) एव (अर्यमणम्) अ० १। ११। १। अर्य+माङ् माने—कनिन् । अर्याणां श्रेष्ठानां मानकर्तारम् (निनाय) आनीतवान् (जने) मनुष्यसमूहे (मित्रः) सुहृत् (न) इव (दम्पती) जायापती (अनक्ति) अञ्जू व्यक्त्यादिषु । शोभायमानौ करोति (बृहस्पते) हे बृहस्पति वेदवाण्या रक्षक (वाजय) वेगयुक्तान् कुरु अस्मान् (आशून्) व्यापकान् अश्वान् (इव) यथा (आजौ) अज्यतिस्थानं च । ३०४। १३१। अज गतिक्षेपणयोः—इण् । सङ्ग्रामे—निघ० २। १७ ॥

सू० १६ [६०४]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(३, ८२५)

वैसे ही मनुष्य विद्वानों के सत्संग से धर्म में शीघ्रकारी होवें ॥ २ ॥

साध्वर्या अतिथिनीरिषिरा स्पार्हाः सुवर्णा अनवद्यरूपाः ।
बृहस्पतिः पर्वतेभ्यो वितूर्या निर्गा ऊपे यवमिव स्थिविभ्यः ॥ ३ ॥
साधु-अर्याः । अतिथिनीः । इषिराः । स्पार्हाः । सु-वर्णाः ।
अनवद्य-रूपाः ॥ बृहस्पतिः । पर्वतेभ्यः । वि-तूर्य । निः ।
गाः । ऊपे । यवम्-इव । स्थिवि-भ्यः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(साध्वर्याः) साधुओं से पाने योग्य, (अतिथिनीः) अतिथियों को प्राप्त कराने वाली, (इषिराः) वेग वाली, (स्पार्हाः) चाहने योग्य (सुवर्णाः) सुन्दर रीति से स्वीकार योग्य, (अनवद्यरूपाः) अनिन्दित स्वभाव वाली (गाः) वाणियों को (बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़ी वेदवाणी के रक्षक महाविद्वान्] ने (वितूर्य) शीघ्रता करके (पर्वतेभ्यः) पर्वतों [के समान ढड़-चित्तों] के लिये, (स्थिविभ्यः) कोठियों [के भरने] के लिये (यवम् इव) जैसे अन्न को, (निः ऊपे) फैलाया है ॥ ३ ॥

भाषार्थ—विद्वान् लोग उत्तम वेदवाणियों का प्रचार करके सब को ऐसा प्रसन्न करें, जैसे किसान लोग बीज बोकर अधिक अन्न प्राप्त करके आनन्दित होते हैं ॥ ३ ॥

आप्पुषायन् मधुन ऋतस्य योनिमवक्षिपन्नर्क उत्कामिव द्योः ।
बृहस्पतिरुद्धरुन्नश्मने गा भूम्या उद्नेव वि त्वचं बिभेद ॥ ४ ॥
आ-प्पुषायन् । मधुना । ऋतस्य । योनिम् । अव-क्षिपन् ।

३—(साध्वर्याः) साधुभिः सज्जनैः प्राप्तव्याः (अतिथिनीः) अतिथि + णीञ् प्रापणे—किप् । अतिथिनां प्रापयित्रीः (इषिराः) वेगशीलाः (स्पार्हाः) तस्येदम् । पा० ४ । ३ । १२० । स्पृहा—अण । स्पृहणीयाः । कमनीयाः (सुवर्णाः) सुष्ठु वरणीयाः (अनवद्यरूपाः) अनिन्दितस्वभावाः (बृहस्पतिः) (पर्वतेभ्यः) शैलतुल्यढड़स्वभावानां हिताय (वितूर्य) वि + तुर त्वरणे—ल्यप् । विविधवेगं कृत्वा (निः) निश्चयेन (ऊपे) डुवप बीजसन्ताने-लिट् । विस्तारितवान् (यवम्) अन्नम् (इव) यथा (स्थिविभ्यः) स्थवयः शूकुलाः, तान् भर्तुं पूरयितुम् ॥

अर्कः। उल्काम्-इव। द्योः॥ बृहस्पतिः। उद्धरन्। अश्मनः।
गाः। भूम्याः। उद्गना-इव। वि। त्वचम्। बिभेद् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(मधुना) ज्ञान के साथ (ऋतस्य) सत्य के (योनिम्) घर [वेद] को (आप्रुषायन्) सब प्रकार सींचते हुये और (द्योः) आकाश से (उल्काम् इव) उल्का [गिरते हुये चमकते तारे] के समान (अवक्षिपन्) फैलाते हुये और (उद्धरन्) ऊंचे धरते हुये, (अर्कः) पूजनीय (बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़ी वेदविद्या के रत्नक महाविद्वान्] ने (अश्मनः) व्यापक [परमात्मा] की (गाः) वाणियों को (वि बिभेद) फैलाया है, (उद्गना इव) जैसे जल से (भूम्याः) भूमि की (त्वचम्) त्वचा को [फैलाते हैं] ॥ ४ ॥

भावार्थ—महाविद्वान् पुरुष विचार के साथ वेदविद्या को बढ़ावे और आकाश से गिरते चमकते तारे के समान प्रकाशमान करे और उच्चभाव के साथ उसे विविध प्रकार फैलावे जैसे पृथिवी जल से फैलकर उपकारी होती है ४

अपु ज्योतिषा तमो अन्तरिक्षादुद्गनः शीपालमिव वात आजत्।
बृहस्पतिरनुमृश्या वलस्याभ्रमिव वात आ चक्र आ गाः ॥ ५ ॥
अप। ज्योतिषा। तमः। अन्तरिक्षात्। उद्गनः। शीपालम्-
इव। वातः। आजत् ॥ बृहस्पतिः। अनु-मृश्य। वलस्य।
अभ्रम्-इव। वातः। आ। चक्रे। आ। गाः ॥ ५ ॥

४—(आप्रुषायन्) पुष स्नेहनसेचनपूरणेषु—शत्, विकरणस्य शायजा-
वेशः। सर्वतः सिञ्चन् (मधुना) फलिपाटिनमिमनिजनां०। उ० १। १८। मन
ज्ञाने—उप्रत्ययः, नस्य धः। ज्ञानेन (ऋतस्य) सत्यस्य (योनिम्) गृहम्।
वेदम् (अवक्षिपन्) विस्तारयन् (अर्कः) पूजनीयः (उल्काम्) रेखाकारे गग-
नात् पतत्तेजःपुञ्जम् (इव) यथा (द्योः) आकाशात् (बृहस्पतिः) (उद्धरन्)
ऊर्ध्वं स्थापयन् (अश्मनः) अशिशकिभ्यां छन्दसि। उ० ४। १४७। अशू
व्याप्तौ—मनिन्। व्यापकस्य परमेश्वरस्य (गाः) वाणीः (भूम्याः) पृथिव्याः
(उद्गना) उदकेन (इव) यथा (त्वचम्) उपरिदेशम् (वि बिभेद) विस्तार-
यामास ॥

भाषार्थ—[जैसे सूर्य] (ज्योतिषा) ज्योति के साथ (अन्तरिक्षात्) आकाश से (तमः) अन्धकार को, और (इव) जैसे (वातः) पवन (उद्गनः) जल पर से (शीपालम्) सेवार घास को, और (इव) जैसे (वातः) पवन (अग्नम्) बादल को, [वैसे ही] (बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़ी वेदविद्या के रक्षक महाविद्वान्] ने (अनुमृश्य) बार बार विचारकर (वलस्य) हिंसक असुर को (अप आजत्) निकाल दिया है, (आ) और (गाः) वेदवाणियों को (आ चक्रे) स्वीकार किया है ॥ ५ ॥

भावार्थ—जैसे सूर्य अन्धकार को, और जैसे पवन सेवार, कमल आदि, और मेघ को हटा देता है, वैसे ही विद्वान् पुरुष दुराचारियों को हटाकर वेद को आज्ञा का पालन करे ॥ ५ ॥

यदा वलस्य पीयतो जसुं भेद् बृहस्पतिरग्नितापोभिरुक्तेः ।
दुद्धिर्न जिह्वा परिविष्टमाददाविर्निधीरकृणोदुस्त्रियाणाम् ॥६॥

यदा । वलस्य । पीयतः । जसुम् । भेत् । बृहस्पतिः । अग्नि-
तपः-भिः । अर्कैः ॥ दुत्-भिः । न । जिह्वा । परि-विष्टम् ।
आदत् । आविः । नि-धीन् । अकृणोत् । उस्त्रियाणाम् ॥६॥

भाषार्थ—(यदा) जब (बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़ी वेदवाणी के रक्षक महाविद्वान्] ने (अग्नितापोभिः) अग्नि समान तेज वाले (अर्कैः)

५—(अप) दूरीकरणे (ज्योतिषा) प्रकाशेन सह (तमः) अन्धकारम् (अन्तरिक्षात्) आकाशात् सूर्यो यथा (उद्गनः) उदकात् (शीपालम्) शीङो धुक्लक्वलज्वालयनः । उ० ४ । ३८ । शीङ् स्वप्ने — वालन्, स च कित्, वस्य पः । शैवालम् । उदके लताकपमुत्पन्नं तृणविशेषम् । जलनीलीम् (इव) यथा (वातः) पवनः (आजत्) अज गतिक्षेपणयोः—लङ् । अगमयत (बृहस्पतिः) बृहत्या वेदवाण्या रक्षक (अनुमृश्य) निरन्तरं विचार्य (वलस्य) द्वितीतार्थे षष्ठी । हिंसकं दैत्यम् (अग्नम्) मेघम् (इव) (वातः) (आ) समुच्चये (आ चक्रे) स्वीकृतवान् (गाः) वेदवाणीः ॥

६—(यदा) यस्मिन् काले (वलस्य) दुष्टस्य । दैत्यस्य (पीयतः) हिंसकस्य (जसुम्) जनु नाडने हिंसायां च—उप्रत्ययः । आयुधम् (भेत्) अमेत् ।

पूजनीय परिणितों के साथ (पीयतः) हिंसक (चलस्य) असुर के (जसुम्) हथियार को (भेत्) ताड़ डाला, (न) जैसे (दद्भिः) दातों से (परिविष्टम्) घेरे हुये [भोजन] को (जिह्वा) जीभ ने (आदत्) खाया हो, और (उस्त्रियाणाम्) निवास करने वाली [प्रजाओं] के (निधीन्) निधियों [सुवर्ण आदि के कोशों] को (आविः अकृणोत्) खोल दिया ॥ ६ ॥

भावार्थ—जैसे जीभ दांतों से घेरे हुये अन्न को खाकर सब अङ्गों को पुष्ट करती है, वैसेही विद्वान् पुरुष प्रतापी शूर युद्धपरिणितों के साथ दुष्टों को मारकर प्रजा के धनों को बढ़ाकर राज्य में उन्नति करे ॥ ६ ॥

बृहस्पतिरमत् हि त्यदासां नाम स्वरीणां सद्ने गुहा यत् ।
आण्डेव भित्त्वा शकुनस्य गर्भमुदुस्त्रियाः पर्वतस्य तमनाजत् ७

बृहस्पतिः । अमत् । हि । त्यत् । आसाम् । नाम । स्वरीणाम् ।
सद्ने । गुहा । यत् ॥ आण्डा-इव । भित्त्वा । शकुनस्य ।
गर्भम् । उत् । उस्त्रियाः । पर्वतस्य । तमना । आजत् ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़ी वेदवाणी के रक्षक महा-विद्वान्] ने (हि) ही (आसाम्) इन (स्वरीणाम्) शब्द करती हुई [वेदवाणियों] के (त्यत्) उस (नाम) यश को (अमत्) जाना है, (यत्) जो (गुहा) हृदय के भीतर (सद्ने) घर में है । (इव) जैसे (आण्डा) अण्डों को

अभिनत् (बृहस्पतिः) (अग्नितपाभिः) अग्निवत्तेजस्विभिः (अकैः) पूजनीयैः परिणितैः सह (दद्भिः) दन्तशब्दस्य दद्भावः । दन्तः (न) यथा (जिह्वा) रसना (परिविष्टम्) विषल व्याप्तौ—क । वेष्टितम् । परिगृहीतं भोजनम् (आदत्) अद भक्षणे—लङ् । अभक्षयत् (आविरकृणोत्) स्पष्टोक्तवान् (निधीन्) सुवर्णादिकोशान् (उस्त्रियाणाम्) स्फायितञ्जिवञ्जिव० । उ० २ । १३ । वसं निवासे—रक्, स्वार्थे घप्रत्ययः, टाप् । निवासशोत्वानां प्रजानाम् ॥

७—(बृहस्पतिः) बृहत्या वेदवाण्या रक्षकः (अमत्) मनु अवबोधने—लुङ् । ज्ञातवान् (हि) निश्चयेन (त्यत्) प्रसिद्धम् (आसाम्) प्रसिद्धानाम् (नाम) यशः । कीर्तिम् (स्वरीणाम्) अवितृस्तृतन्त्रिभ्य ईः । उ० ३ । १५८ । स्तु शब्दोपतापयोः—ईप्रत्ययः । शब्दायमानानां वेदवाणीनाम् (सद्ने)

(भित्त्वा) तोड़कर (शकुनस्य) पत्नी के (गर्भम्) बच्चे को, [वैसे ही] उस [महाविद्वान्] ने (उस्त्रियाः) निवास करने वाली [प्रजाओं] को (पर्वतस्य) पर्वत [समान दृढ़ स्वभाव वाले मनुष्य] के (त्मना) आत्मा से (उत् आजत्) उदय किया है ॥ ७ ॥

भावार्थ—विद्वान् पुरुष अपने हृदय में प्रातर्वेदवाणियों के गुणों को जानकर संसार में इस प्रकार प्रकट करे, जैसे अण्डों के पककर फूटने पर पक्षियों के बच्चे निकलते हैं ॥ ७ ॥

मन्त्र ७ और ८ का पाठ ऋग्वेद, निरु० १० । १२, तथा अथर्ववेद संहिता गवर्नमेन्ट बुकडिपो बम्बई, और प० सेवकलाल कृष्णदास बम्बई के पुस्तकों के अनुसार लिया है, वैदिक यन्त्रालय अजमेर के पुस्तक का पाठ विचारणीय है कि कदापि छपने में मन्त्र का अङ्क [७] चौथे पाद पर लगने के स्थान पर दूसरे पाद पर लग गया है, क्योंकि उस में मन्त्र ७ दो पाद का और मन्त्र ८ छह पाद का छपा है ॥

अशनापिनद्धं मधु पर्यपश्यन्मत्स्यं न दीन उदनि क्षियन्तम् ।
निष्टज्जभार चमसं न वृक्षाद् बृहस्पतिर्विरुवेणा विकृत्य ॥८॥

अशना । अपि-नद्धम् । मधु । परि । अपश्यत् । मत्स्यम् ।
न । दीने । उदनि । क्षियन्तम् ॥ निः । तत् । जभार । चम-
सम् । न । वृक्षात् । बृहस्पतिः । वि-रुवेणा । वि-कृत्य ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़ी वेदवाणी के रत्नक महा-विद्वान्] ने (अशना) फैले हुये [अज्ञान] से (अपिनद्धम्) ढके हुये (मधु)

गृहे (गुहा) गुहायाम् । हृदये (यत्) (आण्डा) अण्डानि (भित्त्वा)
विदार्य (शकुनस्य) पक्षिणः (गर्भम्) बालकम् (उत्) ऊर्ध्वम् (उस्त्रियाः)
म० ६ । निवासशीलाः प्रजाः (पर्वतस्य) शैलतुल्यदृढ़स्वभावस्य पुरुषस्य
(त्मना) आत्मना (आजत्) म० ५ । अगमयत् ॥

८—(अशना) अश्मना । व्यापकेन अज्ञानेन (अपिनद्धम्) पिहितम्
(मधु) म० ४ । ज्ञानम् (परि) सर्वतः (अपश्यत्) अद्राक्षीत् (मत्स्यम्) जल-

ज्ञान को, (दीने) थोड़े (उदनि) जल में (क्षियन्तम्) रहती हुई (मत्स्यम् न) मछली के समान, (परि) सब ओर से (अगश्यत्) देखा, और (वृक्षात्) वृक्ष से (चमसम् न) अन्न के समान, (तत्) उस [ज्ञान] को (विरवेण) विशेष ध्वनि के साथ (विकृत्य) हल चल करके (निः जभार) बाहिर लाया ॥ ८ ॥

भावार्थ—विद्वान् पुरुष जब संसार में अज्ञान के कारण से ज्ञान के फैलाव में ऐसी रोक देखे जैसे मछली थोड़े जल में नहीं चल फिर सकती है, वह पुरुष विशेष प्रयत्न कर के ज्ञान का विस्तार करे जैसे वृक्ष से अन्न अर्थात् फल लेकर उपकार करते हैं ॥ ८ ॥

मन्त्र ७ की टिप्पणी देखो ॥

षोषामविन्दुत् स स्वः१ः सो अग्निं सो अर्केण वि बबाधे
तमांसि । बृहस्पतिर्गोवपुषी वृलस्य निर्मुज्जानं न पर्वणो
जभार ॥ ८ ॥

सः । उषाम् । अविन्दुत् । सः । स्वः१ रिति स्वः । सः ।
अग्निम् । सः । अर्केण । वि । बबाधे । तमांसि ॥ बृहस्पतिः ।
गो-वपुषः । वृलस्य । निः । मुज्जानम् । न । पर्वणः । जभारु । ८ ।

भाषार्थ—(सः) उस (बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़ी वेदविद्या के रक्षक महाविद्वान्] ने (उषाम्) उषा [प्रभात वेला के समान प्रकाशवती बुद्धि] को, (सः) उस ने (स्वः) सुख को, (सः) उस ने

जन्तुविशेषम् (न) यथा (दीने) क्षीणे । अल्पे (उदनि) उदके (क्षियन्तम्) निवसन्तम् (निर्जभार) निर्जहार । बहिश्चकार (चमसम्) अन्नम् । फलम् (न) यथा (वृक्षात्) तरुसकाशत् (बृहस्पतिः) महाविद्वान् पुरुषः (विरवेण) विशेषध्वनिना (विकृत्य) विकारं गत्वा ॥

६—(सः) पूर्वोक्तः (उषाम्) उष दाहे—क, टाप् । (प्रभातवेलावत् प्रकाशवती बुद्धिम् (अविन्दत्) विद्वत् लाभे—लङ् । अलभत (सः) (स्वः) सुखम् (सः) (अग्निम्) अग्निवत्प्रतापम् (सः) (अर्केण) पूजनीयेन विचा-

(अग्निम्) अग्नि [समान तेज] को (अविन्दत्) पाया है, (सः) उस ने (अर्केण) पूजनीय विचार से (तमांसि) अन्धकारों को (वि. बबाधे) हटा दिया है। उस ने (गोवपुषः) वज्र समान दृढ़ शरीर वाले (वलस्य) हिंसक असुर के (पर्वणः) जोड़ से (मज्जानम्) मींग को (न) अब (निः जभार) निकाल डाला है ॥ ६ ॥

भावार्थ—विद्वान् पुरुष उत्तम बुद्धि प्राप्त करके सुख के साथ तेजस्वी होकर अज्ञान का नाश कर दुष्टों को मिटावे ॥ ६ ॥

हिमेव पर्णा मुषिता वनानि बृहस्पतिना कृपयद् वलो गाः ।
अननुकृत्यम् पुनश्चकार यात् सूर्यामासा मिथ उच्चरातः ॥ १० ॥
हिमा-इव । पर्णा । मुषिता । वनानि । बृहस्पतिना । अकृ-
पयत् । वलः । गाः ॥ अननु-कृत्यम् । अपुनरिति । चकार ।
यात् । सूर्यामासा । मिथः । उत्-चरातः ॥ १० ॥

भावार्थ—(हिमा इव) जैसे हिम [महाशीत] से (मुषिता) उजाड़े गये (पर्णा) पत्तों को (वनानि) वृक्ष, [वैसेही] (बृहस्पतिना) बृहस्पति [महाविद्वान्] के कारण से (वलः) हिंसक दुष्ट ने (गाः) वेदवाणियों को (अकृपयत्) माना । (अननुकृत्यम्) दूसरों से न करने योग्य, (अपुनः)

रेण (वि) विशेषेण (बबाधे) बाधितवान् । निराचकार (तमांसि) अन्ध-
कारान् (बृहस्पतिः) बृहत्या वेदवाण्याः रक्षकः (गोवपुषः) गौर्वज्रः । वज्रतुल्य-
दृढशरीरस्य (निः) बहिर्भावे (मज्जानम्) अ० १ । ११ । ४ । अस्थिसारम्
(न) संप्रति (पर्वणः) सन्धिप्रदेशात् (जभार) जहार । निनाय ॥

१०—(हिमा) हिमेन । महाशीतेन (इव) यथा (पर्णा) पर्णानि ।
वृक्षपत्राणि (मुषिता) मुषितानि । नाशितानि (वनानि) वृक्षाः (बृहस्पतिना)
महाविदुषः पुरुषस्य कारणेन (अकृपयत्) कृप चिन्तने—लज् । अचिन्त—
यत् । कल्पितवान् (वलः) हिंसको दुष्टः (गाः) वेदवाणीः (अननुकृत्यम्)
साहितिको दीर्घः । अननुकरणीयम् । अन्यैः कर्तुम् अशक्यम् (अपुनः) प्रात-
तेररन् । उ० ५ । ५६ । पन स्तुतौ—अरन्, अस्य उत्त्वम् । नास्ति पुनः स्तुत्यं

सब से बढ़कर कर्म (चकार) उस [महाविद्वान्] ने किया है, (यात्)
जैसे (सूर्यामाना) सूर्य और चन्द्रमा (मिथः) आपस में (उच्चरातः) उत्त-
मता से चलते हैं ॥ १० ॥

भावार्थ—जैसे जाड़े के मारे वृक्ष सूख जाते हैं, वैसे ही विद्वान् पुरुष
वेदवाणी के प्रभाव से दुष्टों को मार कर अनुपम कर्म करता हुआ सूर्य और
चन्द्रमा के समान सन्मार्ग पर चलता रहे ॥ १० ॥

अभि श्यावं न कृशनेभिरश्वं नक्षत्रेभिः पितरो द्यामपिंशन् ।
रात्र्यां तमो अदधुज्योतिरहन् बृहस्पतिभिर्नदद्रि विदद् गाः ११ ।
अभि । श्यावम् । न । कृशनेभिः । अश्वम् । नक्षत्रेभिः ।
पितरः । द्याम् । अपिंशन् ॥ रात्र्याम् । तमः । अदधुः ।
ज्योतिः । अहन् । बृहस्पतिः । भिनत् । अद्रिम् । विदत् । गाः । ११ ।

भाषार्थ—(कृशनेभिः) सुवर्णों से (न) जैसे (श्यावम्) शीघ्रगामी
(अश्वम्) घोड़े को, [वैसे ही] (पितरः) पालने वाले [ईश्वर नियमों] ने
(नक्षत्रेभिः) तारों से (द्याम्) आकाश को (अभि) सब ओर से (अपिंशन्)
संजाया है। और (रात्र्याम्) रात्रि में (तमः) अन्धकार को और (अहन्)
दिन में (ज्योतिः) प्रकाश को (अदधुः) रक्खा है, [उसी प्रकार] बृहस्पतिः)

यस्मात् तत् । अत्यन्तस्तुत्यं कर्म (चकार) कृतवान् (यात् , छान्दसो दीर्घः ।
यत् । यथा (सूर्यामासा) माङ् माने असुन् । मस्यते परिमीयते स्वकलावृद्धि-
हानिभ्यामिति माश्चन्द्रमाः । सूर्याचन्द्रमसौ (मिथः) परस्परम् (उच्चरातः)
उत्तमतया चरतः, गच्छतः ॥

११—(अभि) सर्वतः (श्यावम्) अ० ५ । ५ । ८ । श्यैङ् गतौ-वप्रत्ययः ।
शीघ्रगामिनम् (न) यथा (कृशनेभिः) कृपवृजिमन्दिनिधाजः क्युः । ३० २ ।
८ १ । कृश तनूकरणे—क्यु । कृशनैः सुवर्णालङ्कारैः—निघ० १ । २ (अश्वम्)
तुरङ्गम् (नक्षत्रेभिः) तारागणैः (पितरः) पालकाः परमेश्वरनियमाः (द्याम्)
आकाशम् (अपिंशन्) पिश अवयवे दीपनायां च—लङ् । अदीपयन् । अलम-
कुर्वन् (रात्र्याम्) निशि (तमः) अन्धकारम् (अदधुः) धारितवन्तः (ज्योतिः)

बृहस्पति [बड़ी वेदवाणी के रक्षक महाविद्वान्] ने (अद्रिप्) पहाड़ [के समान भारी अज्ञान] को (भिनत्) तोड़ डाला और (गाः) वेद वाणियों को (विदत्) प्राप्त करागा है ॥ ११ ॥

भाषार्थ—जैसे नक्षत्र, दिन, रात्रि आदि ईश्वर के अटल नियमों पर चरते हैं, विद्वान् जन दृढ़ चित्त से अज्ञान मिटा कर अचल वेदवाणी को फैलावे ॥ ११ ॥

बृहस्पतिः नमो अभियाय यः पूर्वीरन्वानो नवीति । बृहस्पतिः
स हि गोभिः सो अश्वैः स वीरेभिः स नृभिर्नो वयो धात् ॥ ११
इदम् । अकर्म । नमः । अभियाय । यः । पूर्वीः । अनु ।
आ-नो नवीति ॥ बृहस्पतिः । सः । हि । गोभिः । सः ।
अश्वैः । सः । वीरेभिः । सः । नृभिः । नुः । वयः । धात् ॥ १२

भाषार्थ—(इदम्) यह (नमः) नमस्कार (अभियाय) गति में रहने वाले [पुरुषार्थी मनुष्य] को (अकर्म) हम ने किया है, (यः) जो [विद्वान्] (पूर्वीः) पहिली [वेदवाणियों] को (अनु) लगातार (आनो नवीति) सब ओर सराहता रहता है । (सः हि) वही (बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़ी वेद-विद्या का रक्षक महाविद्वान्] (गोभिः) गौओं के साथ, (सः) वही (अश्वैः)

प्रकाशम् (अहन्) अहि । दिने (बृहस्पतिः) महाविद्वान् पुरुषः (भिनत्) अभिनत् । विदारितवान् (अद्रिम्) शैलतुल्यदृढाज्ञानम् (विदत्) विद्वल लाभे—लुब् । अन्तर्गतैर्यथः । अविदत् । प्रापितवान् (गाः) वेदवाणीः ॥

१२—(इदम्) (अकर्म) अकार्षम् । वयं कृतवन्तः (अभियाय) नन्दि-अहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः । पा० ३।१।१३ । अग्न गतौ—पचायच् । अग्न मेघः—निघ० १।१० । समुद्राभ्राद् घः । पा० ४।४।११ ८ । अग्न—घप्रत्ययो भवार्थे । अग्न गतौ भवाय वर्तमानाय । पुरुषार्थिने (यः) विद्वान् (पूर्वीः) आद्या वेदवाणीः (अनु) निरन्तरम् (आनो नवीति) एव स्तुतौ यङ्लुकि । समन्ताद्-अत्यर्थं नौति स्तौति (बृहस्पतिः) बृहत्या वेदवाण्या रक्षको महा-विद्वान् (सः) (हि) एव (गोभिः) धेनुभिः (सः) (अश्वैः) तुरङ्गैः (सः)

बोहों के साथ, (सः) वही (वीरेभिः) वीरों के साथ, (सः) वही (नृभिः) नेता लोगों के साथ (नः) हमें (वयः) अन्न (धात्) देवे ॥ १२ ॥

भावार्थ—सब लोग उस महाविद्वान् का सदा सत्कार करें जो सदा वेदवाणियों का गुण गाकर मनुष्यों को सम्पत्तियों, वीरों और पराक्रमियों से युक्त करके पुष्कल अन्न प्राप्त करावे ॥ १२ ॥

सूक्तम् १७ ॥

१—१२ ॥ १—११ इन्द्रः ; १२ इन्द्रावृहस्पती देवते ॥ १, ६ निचृजगती; २, ११ त्रिष्टुप्; ३, ६ जगती; ४ विराड् जगती; ५, ७, ८ विराडार्षी जगती; १०, १२ निचृत् त्रिष्टुप् ॥

राजप्रजाकर्तव्योपदेशः—राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

अच्छा म इन्द्रं मृतयः स्वर्विदः सुध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषता
परि ष्वजन्ते जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं सुधवानमृतये १
अच्छ । मे । इन्द्रम् । मृतयः । स्वः-विदः । सुध्रीचीः ।
विश्वाः । उशतीः । अनुषत् ॥ परि । स्वजन्ते । जनयः ।
यथा । पतिम् । मर्यम् । न । शुन्ध्युम् । सुध-वानम् । ऊतये १

भाषार्थ—(स्वर्विदः) सुख पहुंचाने वालो, (सध्रीचीः) आपस में मिली हुयी, (उशतीः) कामना करती हुयी, (विश्वाः) सब (मे) मेरी (मतयः) बुद्धियों ने (इन्द्रम्) इन्द्र [महाप्रतापी राजा] को (अच्छ) अच्छे प्रकार से (अनुषत) सराहा है और (ऊतये) रक्षा के लिये [ऐसे, उसे]

(वीरेभिः) वीरैः (सः) (नृभिः) नेतृभिः (नः) अस्मभ्यम् (वयः) वि गतिव्या-
प्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु, यद्वा वय गतौ असुन् । अन्नम्—निघ० २। ७
(धात्) दध्यात् ॥

१—(अच्छ) सुष्ठु (मे) मम (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं राजानम्
(मतयः) बुद्धयः (स्वर्विदः) सुखस्य लभयिष्यः (सध्रीचीः) अञ्चु गति-
पूजनयोः—किन्, डीप् । सहाञ्जनाः । परस्परं संगताः (विश्वाः) सर्वाः
(उशतीः) कामयमानाः (अनुषत) णु स्तुतौ—लुङ् । आत्मनेपदत्वम् उकरस्य
दीर्घत्वं च छान्दसम् । अस्तुघ्न (पार) सर्वतः (स्वजन्ते) आलिङ्गन्ति । वेष्टन्ते

(परि ष्वजन्ते) सब ओर घेरती हैं, (यथा) जैसे (जनयः) पत्नियां (पतिम्)
[अपने अपने] पति को, और (न) जैसे (शुन्ध्युम्) शुद्ध आचार वाले,
(मघवानम्) महाधनी (मर्यम्) मनुष्य को [लोग घेरते हैं] ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को योग्य है कि धर्मात्मा पराक्रमी मनुष्य का
आश्रय लेकर रक्षा करें, जैसे स्त्रियां अपने पतियों का, और सब लोग सदाचारी
कमाऊ जन का आश्रय लेते हैं ॥ १ ॥

मन्त्र १—११ ऋग्वेद में हैं—१०।४३।१—११ ॥

न घा त्वद्रिगप वेति मे मनस्त्वे इत् कामं पुरुहूत शिश्रय ।
राजैव दस्म नि षुदोऽधि बर्हिष्यस्मिन्त्सु सोमैऽवपानमस्तु ते २
न । घृ । त्वद्रिक् । अप । वेति । मे । मनः । त्वे इति । इत् ।
कामम् । पुरु-हूत् । शिश्रय ॥ राजा-इव । दस्म । नि ।
सुदुः । अधि । बर्हिषि । अस्मिन् । सु । सोमै । अव-पानम् ।
अस्तु । ते ॥ २ ॥

भाषार्थ—(पुरुहूत) हे बहुत प्रकार से बुलाये गये ! (त्वद्रिक्)
तेरी ओर गया हुआ (मे) मेरा (मनः) मन (न घ) न कभी (अप वेति)
भटकता है, (त्वे) तुझमें (इत्) ही (कामम्) [अपनी] आशा को (शिश्रय)
मैंने ठहराया है। (दस्म) हे दर्शनीय ! (राजा इव) राजा के समान (बर्हिषि)

(जनयः) पत्न्यः (यथा) (पतिम्) स्वस्वभर्तारम् (मर्यम्) मनुष्यम् (न) यथा
(शुन्ध्युम्) अ० १३ । २ । २४ । शुन्ध विशुद्धौ—युच् । शुद्धाचारवन्तम् (मघवा-
नम्) महाधनिनम् (ऊतये) रक्षणाय ॥

२—(न घ) न कदापि (त्वद्रिक्) युष्मद् + अञ्चु गतिपूजनयोः—किन् ।
विष्वग्देवयोश्च ढेरद्व्यञ्चतावप्रत्यये । पा० ६ । ३ । ४२ । इति सर्वनाम्नः ढेः अद्रि
इत्यादेशः । अचः । पा० ६ । ४ । १३८ । लुप्तनकारस्याञ्चतेर्भस्य अकारस्य लोपः ।
त्वां गच्छत् (अप वेति) अपगच्छति (मे) मम (मनः) चित्तम् (त्वे) शे इत्या-
देशः । त्वयि (इत्) एव (कामम्) आशाम् (पुरुहूत) हे बहुविधाहूत (शिश्रय)
अञ्जु सेवायाम्—तिद् । अहमाश्रितवान् स्थापितवानस्मि (राजा) (इव)

उत्तम आसन पर (अधि) अधिकार पूर्वक (नि षदः) तू बैठ, और (अस्मिन्) इस (सोमे) पेश्वर्य में (ते) तेरा (अवपानम्) निश्चित रक्षा कर्म (सु) सुन्दर रीति से (अस्तु) होवे ॥ २ ॥

भावार्थ—प्रजागण पूर्ण । राजभक्ति से उचित उपहार देकर धर्मात्मा राजा को प्रसन्न रखे ॥ २ ॥

विषुवृदिन्द्रो अमतेरुत क्षुधः स इद्रायो मघवा वस्व ईशते ।
तस्येदिमे प्रवणे सुप्त सिन्धवो वयो वर्धन्ति वृषभस्य शुष्मिणः ३
विषु-वृत् । इन्द्रः । अमतेः । उत । क्षुधः । सः । इत् । रायः ।
मघ-वा । वस्वः । ईशते ॥ तस्य । इत् । इमे । प्रवणे । सुप्त ।
सिन्धवः । वयः । वर्धन्ति । वृषभस्य । शुष्मिणः ॥ ३ ॥

भावार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [महाप्रतापी राजा] (अमतेः) कंगाल का (उत) और (क्षुधः) भूख का (विषुवृत्) सर्वथा हटाने वाला है, (सः इत्) वही (मघवा) महाधनी (रायः) धनका और (वस्वः) वस्तु का (ईशते) स्वामी है । (तस्य इत्) उसी हा (वृषभस्य) श्रेष्ठ (शुष्मिणः) महाबली के (प्रवणे) सेवनीय लंबे राज्य में (इमे) यह (सप्त सिन्धवः) बहते हुये सात

(दसम्) इषियुधीन्धिदसि ० । उ० ४ । १४५ । दसु उपक्षये, यद्वा, दस दसि दर्शनसन्दशनयोः—मक् । हे दर्शनीय (नि षदः) लेटि रूपम् । निषीद (अधि) अधिकारपूर्वकम् (बर्हिषि) उत्तमासने (अस्मिन्) (सु) सुष्ठु (सोमे) पेश्वर्ये (अवपानम्) निश्चितरक्षणम् (अस्तु) (ते) तव ॥

३—(विषुवृत्) विषु + वृत्तु वर्तने—किप् । सर्वथा निवर्तयिता (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् (अमतेः) अमेरतिः । उ० ४ । ५६ । अम पीडने—अति । दारिद्र्यस्य (क्षुधः) बुभुक्षायाः (सः) (इत्) एव (रायः) धनस्य (मघवा) महाधनी (वस्वः) वस्तुनः । वस्तुनः (ईशते) छान्दसः शप् । ईष्टे । ईश्वरो भवति (तस्य) (इत्) (इमे) प्रत्यक्षाः (प्रवणे) वन समकौ—अच् । सेवनीये । आयते दीर्घे राज्ये (सप्त) सप्तसंख्याकानि शीर्षणानि च्छिद्राणि । कर्षा-विमौनासिके चक्षणी मुखम्—अथर्व० १० । २ । ६ (सिन्धवः) स्यन्दमानानि

समुद्ररूपछेद [हमारे दो कान दो नथने, दो आखें और एक मुख अथर्व० १० । २ । ६] (वयः) अन्न को (वर्धन्ति) बढ़ाते हैं ॥ ३ ॥

भाषार्थ—धार्मिक प्रतापी, धनी राजा की सुनीति से प्रजागण जितेन्द्रिय होकर विद्यावृद्धि करके धनवान् और अन्नवान् हों ॥ ३ ॥

वये॑ न वृ॒क्षं सु॑प॒लाश॑मास॑द॒न्त्सोमा॑सु इन्द्रं॑ म॒न्दिन॑श्चमु॒षदः॑ ।
प्रै॒षाम॑नीकं॒ शव॑सा द॒विद्यु॑तद् वि॒दत् स्व॑र्॒मन॑वे ज्योति॒रार्य॑सु ॥ ४

वयः॑ । न । वृ॒क्षम् । सु॒-प॒ला॒शम् । आ । अ॒स॒द॒न् । सोमा॑सः ।
इन्द्रं॑ । म॒न्दिनः॑ । च॒मू॒-स॒दः ॥ प्र । ए॒षाम् । अ॒नीकम् ।
शव॑सा । द॒विद्यु॑तत् । वि॒दत् । स्वः॑ । म॒न॒वे । ज्योतिः॑ ।
आ॒र्य॑सु ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(वयः न) जैसे पक्षी गण (सुपलाशम्) सुन्दर पत्तों वाले (वृक्षम्) वृक्ष को, [वैसे ही] (मन्दिनः) आनन्द देने वाले, (चमूषदः) सेनाओं में ठहरने वाले (सोमासः) ऐश्वर्यवान् पुरुष (इन्द्रम्) इन्द्र [महा-प्रतापी सेनापति] को (आ असदन्) आकर प्राप्त हुये हैं । (शवसा) बल के साथ (एषाम्) इन [ऐश्वर्यवानों] के (दविद्युतत्) अत्यन्त चमकते हुये (अनीकम्) सेनादल ने (मनवे) मनुष्य के लिये (आर्यम्) उत्तम (स्वः)

समुद्ररूपाणि चिद्द्राणि (वयः) अन्नम् (वर्धन्ति) वर्धयन्ति (वृषभस्य) श्रेष्ठस्य (शुष्मिणः) महाबलवतः ॥

४—(वयः) पक्षिणः (न) यथा (वृक्षम्) (सुपलाशम्) सुपल्ववितम् (आ) आगत्य (असदन्) प्राप्नुवन् (सोमासः) ऐश्वर्यवन्तः पुरुषाः (इन्द्रम्) महाप्रतापिनं राजानम् (मन्दिनः) प्रजोरिनिः । पा० ३ । २ । १५६ । मदि स्तुति-मोदमदस्वप्नकान्तिातिषु—इनि प्रत्ययो बाहुलकात् । आनन्दयितारः (चमूषदः) चमूषु सेनासु सीदन्ति तिष्ठन्ति ये ते (प्र) प्रकर्षेण (एषाम्) ऐश्वर्यवताम् (अनीकम्) अन्न प्राणने—ईकन् । सैन्यम् (शवसा) बलेन (दविद्युतत्) दाध-तिर्दधर्ति० । पा० ७ । ४ । ६५ । द्युत दीप्तौ—यङ्लुकि शतरि रूपसिद्धिः । भृशं दीप्यमानम् (विदत्) अविदत् । अलभत (स्वः) सुखम् (मनवे) मनुष्याय

सुख और (ज्योतिः) तेज को (प्र) अच्छे प्रकार (विदत्) पाया है ॥ ४ ॥

भावार्थ—जैसे सुन्दर फल पुष्प और छाया वाले वृक्ष पर पक्षी आकर रहते हैं, वैसे ही तीक्ष्ण हथियार वाले धीर वीर लोग महाप्रतापी राजा का आश्रय लेकर प्रजा को सुख देते और प्रकाश का मार्ग खोलते हैं ॥ ४ ॥

कृतं न श्वघ्नी वि चिनोति देवने संवर्गं यन्मघवा सूर्यं
जयत् । न तत् ते अन्यो अनु वीर्यं शक्नु पुराणो मघवन् नीत
नूतनः ॥ ५ ॥

कृतम् । न । श्व-घ्नी । वि । चिनोति । देवने । सु-वर्गम् ।
यत् । मघ-वा । सूर्यम् । जयत् ॥ न । तत् । ते । अन्यः ।
अनु । वीर्यम् । शक्नु । न । पुराणः । मघ-वन् । न । उत ।
नूतनः ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(न) जैसे (श्वघ्नी) धन नाश करने वाला जुआरी (कृतम्) जीते धनको (देवने) जुये में (वि चिनोति) बटोर लेता है, [वैसे ही] (यत्) जब (मघवा) महाधनी [राजा] (सूर्यम्सूर्यस्य) प्रेरणा करने वाले [प्रधान] के (संवर्गम्) रोकने वाले [शत्रु] को (जयत्) जीतता है, (तत्) तब (मघवन्) हे महाधनी ! [राजन्] (अन्यः) कोई दूसरा (ते) तेरे (वीर्यम्) वीरपन को (न) नहीं (अनु शक्नु) पा सकता है, (न) न

(ज्योतिः) तेजः (आर्यम्) श्रेष्ठम् ॥

५—(कृतम्) द्यूते प्राप्तं धनम् (न) यथा (श्वघ्नी) स्व + हन हिंसा-
गत्योः—घञर्थे कप्रत्ययः । अत इनिठनौ । पा ०.५ । २ । ११५ । इनिप्रत्ययः,
सकारस्य शः । श्वघ्नी कितवो भवति स्वं पुनराश्रितं भवति—निरु० ५ । २२ ।
स्वस्य धनस्य नाशकः । कितवः । द्यूतकारकः (वि चिनोति) विविधं संगृह्णाति
(देवने) द्यूते (संवर्गम्) वृज्जी वर्जने—घञ्, कुत्वम् । संवर्जयितारम् (यत्)
यदा (मघवा) महाधनी (सूर्यम्) पण्ड्यर्थे द्वितीया । सूर्यस्य । प्रेरकप्रधानस्य
(जयत्) जयति (न) निषेधे (तत्) तदा (ते) तव (अन्यः) इतरः (वीर्यम्)
वीरत्वम् (अनु शक्नु) अनुकर्त्तुं शक्नोति (न) निषेधे (पुराणः) प्राचीनः

तौ (पुत्राणः) कोई प्राचीन (उत) और (न) न (नूतनः) कोई नवीन जन ॥५॥

भावार्थ—वीर राजा अनुपम पराक्रम के साथ संग्राम में शत्रुओं को
को जीत कर प्रजा का पलन करे ॥ ५ ॥

विंशंविंशं मघवा पर्यशायत जनानां धेना अवचाकशद् वृषा ।
यस्याहं शुक्रः सवनेषु रणयति स तीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः ॥
विंशस्-विंशस् । मघ-वा । परि । अशायत । जनानाम् ।
धेनाः । अव-चाकशत् । वृषा ॥ यस्य । अहं । शुक्रः । सव-
नेषु । रणयति । सः । तीव्रैः । सोमैः । सहते । पृतन्यतः ॥६॥

भावार्थ—(मघवा) महाधनी, (वृषा) बलवान् [सेनापति] (जना-
नाम्) मनुष्यों की (धेनाः) वाणियों को (अवचाकशत्) ध्यान से देखता
हुआ (विंशंविंशम्) मनुष्य मनुष्य को (परि अशायत) पहुँचा है । (शक्रः)
शक्तिमान् [सेनापति] (यस्य अहं) जिसके ही (सवनेषु) यज्ञों के बीच
(रणयति) पहुँचता है, (सः) वह [मनुष्य] (तीव्रैः) पौष्टिक (सोमैः)
सोमों [ऐश्वर्यों वा महौषधियों के रसों] से (पृतन्यतः) सेना चढ़ाने वाले
[शत्रुओं] को (सहते) हराता है ॥ ६ ॥

भावार्थ—चतुर सेनापति समस्त प्रजा की पुकार सुनकर ऐसे ऐसे उत्तम
उपाय करे जिससे प्रजागण ऐश्वर्यवान् और बलवान् होकर शत्रुओं को जीते ६

(मघवन्) हे महाधनिन् (न) निषेधे (उत) अपि च (नूतनः) आधुनिकः ॥

६—(विंशंविंशम्) मनुष्यं मनुष्यम् (मघवा) महाधनी सेनापतिः
(परि अशायत) शीङ् शयने णिचि—लङ् । प्राप्तवान् (जनानाम्) मनुष्या-
णाम् (धेनाः) वाणीः—निघ० १ । ११ (अवचाकशत्) अ० ६ । ८० । १ । अवे +
काशृ दीप्तौ यङ्लुकि शतृ । भृशं पश्यन्—निघ० ३ । ११ (वृषा) महाबली
(यस्य) पुरुषस्य (अहं) एवं (शक्रः) शक्तिमान् (सवनेषु) यज्ञेषु (रणयति)
रण गतौ शब्दे च दिवादिः । गच्छति । प्राप्नोति (सः) मनुष्यः (तीव्रैः) तीव्र
स्थौल्ये—रक् । स्थूलैः । पौष्टिकैः (सोमैः) ऐश्वर्यैः । सौधधिरसैः (सहते)
अभिभवति (पृतन्यतः) पृतनं सेनामात्मन इच्छतः शत्रून् ॥

आपो न सिन्धुमभि यत् समक्षरुन्त्सोमासु इन्द्रं कुल्या इव
हृदम् । वर्धन्ति विप्रा सहो अस्य सादने यवं न वृष्टिर्दिव्येन
दानुना ॥ ७ ॥

आपः । न । सिन्धुम् । अभि । यत् । सुम्-अक्षरन् । सोमासः ।
इन्द्रम् । कुल्याः-इव । हृदम् ॥ वर्धन्ति । विप्राः । सहः ।
अस्य । सदाने । यवम् । न । वृष्टिः । दिव्येन । दानुना ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(न) जैसे (आपः) नदियां (सिन्धुम् अभि) समुद्र को
और (इव) जैसे (कुल्याः) नाले (हृदम्) भील को [मिल कर बह जाते
हैं], वैसे ही (यत्) जब (सोमासः) सोम [पेश्वर्य] (इन्द्रम्) इन्द्र
[महाप्रतापी पुरुष] को (समक्षरन्) मिल कर बह आये हैं, [तब] (विप्राः)
बुद्धिमान् लोग (अस्य) इस [शूर] की (महः) बड़ाई को (सदाने) समाज
के बीच (वर्धन्ति) बढ़ाते हैं, (न) जैसे (यवम्) अन्न को (वृष्टिः) बरसा
(दिव्येन) दिव्य आकाश से आये (दानुना) जलदान से [बढ़ाती है] ॥ ७ ॥

भावार्थ—जो महाप्रतापी राजा सब प्रकार से पेश्वर्यवान् हो, विद्वान्
लोग उसके गुणों की प्रशंसा कर के उन्नति करें ॥ ७ ॥

वृषा न क्रुद्धः पतयद् रजःस्वा यो अर्यपत्नीरकृणोदिमा अपः ।
स सुन्वते मघवा जीरदानवेऽविन्दुज्ज्योतिर्मनवे हविष्मते ॥
वृषा । न । क्रुद्धः । पतयत् । रजः-सु । आ । यः । अर्य-पत्नीः ।

७ (आपः) जलवत्यो नद्यः (न) यथा (सिन्धुम्) समुद्रम् (अभि)
प्रति (यत्) यदा (समक्षरन्) मिलित्वा बहन्ति स्म (सोमासः) पेश्वर्याणि
(इन्द्रम्) महाप्रतापिनं पुरुषम् (कुल्याः) अल्पाः सरितः (इव) (हृदम्)
जलाशयम् (वर्धन्ति) वर्धयन्ति (विप्राः) मेधाविनः (महः) मह पूजायाम्—
असुन । महत्त्वम् (अस्य) शूरस्य (सदाने) समाजे (यवम्) अन्नम् (न)
यथा (वृष्टिः) जलवर्षणम् (दिव्येन) दिवि आकाशे भवेन (दानुना)
दाभाभ्यां तु । ३० ३ । ३२ । ददातेः—तु । जलदानेन ॥

अकृ॑णोत् । इ॒माः । अ॒पः ॥ सः । सु॒न्व॒ते । म॒घ॒वा । जी॒र॒-
दा॒नवे । अ॒वि॒न्दत् । ज्यो॒तिः । म॒न॒वे । ह॒वि॒ष्म॒ते ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(क्रुद्धः) क्रुद्ध (वृषा न) बैल के समान, (यः) जो [सेनापति] (रजःसु) देशों में (आ पतयत्) झपट पड़ता है, और [जिस ने] (इमाः) इन (अपः) प्रजाओं को (अर्यपत्नीः) स्वामी से रक्षित (अकृणोत्) किया है । (सः) उस (मघवा) महाधनी [सेनापति] ने (सुन्वते) तत्त्व निचोड़ने वाले, (जीरदानवे) शीघ्रदानी और (हविष्मते) ग्राह्य पदार्थों वाले, (मनवे) मननशील पुरुष के लिये (ज्योतिः) प्रकाश को (अविन्दत्) पाया है ॥ ८ ॥

भावार्थ—पराक्रमी सेनापति शत्रुओं को यथावत् दण्ड देकर प्रजा की रक्षा करे और राजभक्तों को यथोचित ऊँचा करके प्रतापी बनावे ॥ ८ ॥
उज्जा॑यतां॒ पर॒शुज्यो॑तिषा॒ सह॒ भुया॑ ऋ॒तस्य॑ सु॒दुघा॑ पु॒राण॑वत् ।
वि रो॑चताम॒रुषो॑ भानु॒ना शु॒चिः स्व॑र्णं शु॒क्रं शु॑शुचीत्
सत्प॑तिः ॥ ९ ॥

उत् । जा॒य॒ता॒म् । प॒र॒शुः । ज्यो॒तिषा॑ । सह॒ । भुयाः॑ । ऋ॒तस्य॑ ।
सु॒दुघा॑ । पु॒रा॒ण॒वत् ॥ वि । रो॒च॒ता॒म् । अ॒रुषः॑ । भानु॒ना ।
शु॒चिः । स्वः॑ । न । शु॒क्रम् । शु॒शुची॑त् । सत्प॑तिः ॥ ९ ॥

भाषार्थ—(परशुः) फरसा [कुल्हाड़ा] । (ज्योतिषा सह) प्रकाश के

८—(वृषा) बलीवर्दः (न) यथा (क्रुद्धः) कुपितः (पतयत्) पतयति पतति शीघ्रं धावति (रजःसु) देशेषु (आ) समन्तात् (यः) सेनापतिः (अर्यपत्नीः) अर्येण स्वामिना पालिताः (अकृणोत्) अकरोत् (इमाः) दृश्यमानाः (अपः) प्राप्ताः प्रजाः (सः) (सुन्वते) तत्त्वस्य निष्पादयित्रे (मघवा) महाधनी (जीरदानवे) अ० ७ । १८ । २ । शीघ्रदानिने (अविन्दत्) अलभत (ज्योतिः) प्रकाशम् (मनवे) मननवते पुरुषाय (हविष्मते) ग्राह्य पदार्थयुकाय ॥

९—(उत्) ऊर्ध्वम् (जायताम्) प्रादुर्भवतु (परशुः) कुठारः । वज्रः

साथ (उत् जायताम्) ऊंचा होवे, (ऋतस्य) सत्य की (सुदुघा) अच्छे प्रकार पूर्ण करने हारी [वेदवाणी] (पुराणवत्) पहिले के समान (भूयाः) वर्तमान होवे । (अरुषः) गतिमान्, (शुचिः) शुद्धाचारी, (सत्पतिः) सत्पुरुषों का रक्षक पुरुष (भानुना) अपने प्रकाश से (वि) विविध प्रकार (रोचताम्) प्रिय होवे, और (शुक्रम्) निर्मल (स्वः न) सूर्य के समान (शुशुचीत) चमकता रहे ॥ ६ ॥

भावार्थ—जब शूर सेनापति अपने उज्ज्वल तीक्ष्ण हथियारों से शत्रुओं को मारकर सत्य की स्थापना करता है, तब वह अपने उपकारों से सूर्य समान प्रतापी होकर सब को प्रिय लगता है ॥ ६ ॥

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।

वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम ॥ १० ॥

गोभिः । तरेम् । अमतिम् । दुः-एवाम् । यवेन । क्षुधम् ।

पुरु-हूत । विश्वाम् ॥ वयम् । राज-भिः । प्रथमाः । धनानि ।

अस्माकेन । वृजनेन । जुयेम् ॥ १० ॥

भाषार्थ—(पुरुहूत) हे बहुतों से बुलाये गये ! [राजन्] (गोभिः) विद्याओं से (दुरेवाम्) दुर्गति वाली (अमतिम्) कुमति [वा कङ्काली] को और (यवेन) अन्न से (विश्वाम्) सब (क्षुधम्) भूख को (तरेम) हम हटावें । (वयम्) हम (राजभिः) राजाओं के साथ (प्रथमाः) प्रथम श्रेणी

(ज्योतिषा) प्रकाशेन (सह) (भूयाः) प्रथमस्य मध्यमपुरुषः । भूयात् (ऋतस्य) सत्यस्य (सुदुघा) दुह प्रपूरणे-कप्, टाप्, हस्य घः । सुष्ठु पूरयित्री वेदवाणी (पुराणवत्) पूर्वं यथा (वि) विविधम् (रोचताम्) रोचकः प्रियो भवतु (अरुषः) अ० ३ । ३ । २ । पूनहिकलिभ्य उषच् । उ० ४ । ७५ । ऋ गति-प्रापणयोः—उषच् । गतिशीलः (भानुना) स्वप्रकाशेन (शुचिः) शुद्धाचारी (स्वः) आदित्यः (न) यथा (शुक्रम्) शुक्लम् । निर्मलम् (शुशुचीत) शुच शोके—लिङि शपः श्लुः । दीप्यताम् (सत्पतिः) सत्पुरुषाणां पालकः ॥

१०—अयं मन्त्रो भेदेन गतः—अ० ७ । ५० । ७ (गोभिः) विद्याभिः (तरेम) अमिभवेभ (अमतिम्) म० ३ । दुर्बुद्धिम् । दारिद्र्यम् (यवेन) अन्नेन (क्षुधम्) बुभुक्षाम् (पुरुहूत) हे बहुभिराहूत (विश्वाम्) सर्वाम् (वयम्) (राजभिः)

वाले होकर (धनानि) अनेक धनों को (अस्माकेन) अपने (वृजनेन) बल से (जयेम) जीतें ॥ १० ॥

भावार्थ—मनुष्य प्रयत्न करके विद्याओं द्वारा कुमति और निर्धनता हटाकर भोजन पदार्थ प्राप्त करें और अपने भुजबल से महाधनी होकर राजाओं के साथ प्रथम श्रेणी वाले हों ॥ १० ॥

यह मन्त्र कुछ भेद से ऊपर आ चुका है—अ० ७।५०।७। और मन्त्र १०,११ आगे हैं—२०।८४।१०,११ तथा २०।६४।१०,११ ॥

बृहस्पतिर्नः परि पातु पृश्नादुतोत्तरस्मादधरादघायोः । इन्द्रः
पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ॥ ११ ॥
बृहस्पतिः । नः । परि । पातु । पृश्नात् । उत । उत्-तरस्मात् ।
अधरात् । अघ-योः ॥ इन्द्रः । पुरस्तात् । उत । मध्यतः ।
नः । सखा । सखि-भ्यः । वरिवः । कृणोतु ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़े शूरों का रक्षक सेनापति]
(नः) हमें (पश्चात्) पीछे से (उत्तरस्मात्) ऊपर से (उत) और (अधरात्)
नीचे से (अघायोः) बुरा चीतने वाले शत्रु से (परि पातु) सब प्रकार बचावे ।
(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला राजा] (पुरस्तात्) आगे से (उत) और
(मध्यतः) मध्य से (नः) हमारे लिये (वरिवः) सेवनीय धन (कृणोतु) करे,
(सखा) [जैसे] मित्र (सखिभ्यः) मित्रों के लिये [करता है] ॥ ११

भावार्थ—मनुष्य वीरों में महावीर और प्रतापियों में महाप्रतापी होकर दुष्टों से प्रजा की सदा रक्षा करें ॥ ११ ॥

यह मन्त्र कुछ भेद से ऊपर आ चुका है—अ० ७।५१।१, मन्त्र १० की भी टिप्पणी देखो ॥

बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्यैशाये उत पार्थिवस्य ।

नृपैः (प्रथमाः) मुख्याः (धनानि) (अस्माकेन) अ० ४।३३।३। आस्माकेन ।
आत्मीयेन (वृजनेन) बलेन (जयेम) जयेन प्रामुयाम ॥

११—(वरिवः) अ० २०।११।७। बहुवरणीयं धनम् । अन्यत् पूर्ववत्—
अ० ७।५१।१ ॥

धुत्तं रुयिं स्तुवते कीरये चिद्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । १२ ।
 बृहस्पते । युवम् । इन्द्रः । च । वस्वः । दिव्यस्य । ईशाये
 इति । उत । पार्थिवस्य ॥ धुत्तम् । रुयिम् । स्तुवते । कीरये ।
 चित् । यूयम् । पात । स्वस्ति-भिः । सदा । नः ॥ १२ ॥

भाषार्थ—(बृहस्पते) हे बृहस्पति ! [बड़ी वेदवाणी के रक्षक विद्वान्]
 (च) और (इन्द्रः) हे इन्द्र ! [महाप्रतापी राजन्] (युवम्) तुम दोनों
 (दिव्यस्य) आकाश के (उत) और (पार्थिवस्य) पृथिवी के (वस्वः)
 धन के (ईशाये) स्वामी हो । (स्तुवते) स्तुति करते हुये (कीरये) विद्वान्
 को (रुयिम्) धन (चित्) अवश्य (धत्तम्) तुम दोनों दो, [हे वीरो !]
 (यूयम्) तुम सब (स्वस्तिभिः) सुखों के साथ (सदा) सदा (नः) हमें
 (पात) रक्षित रखो ॥ १२ ॥

भावार्थ—विद्वान् मन्त्री और पराक्रमी राजा और सब शूर पुरुष आका-
 शस्थ वायु वृष्टि आदि, और पृथिवीस्थ अन्न सुवर्ण आदि का सुप्रबन्ध करके
 प्रजा की रक्षा करें ॥ १२ ॥

ग्रह मन्त्र ऋग्वेद में है—७ । ६७ । १० और आगे है अथ० २० । ८७ । ७
 और चौथा पाद ऊपर आचुका है—२० । १२ । ६ और आगे है—२० । ३७ । ११ ॥

इति द्वितीयोऽनुवाकः ॥

१२—(बृहस्पते) हे बृहस्पति वेदवाण्या रक्षक विद्वान् (युवम्) युवाम् (इन्द्रः)
 हे महाप्रतापिन् राजन् (च) (वस्वः) वसुनः । धनस्य (दिव्यस्य) दिवि आकाशे
 भवस्य (ईशाये) स्वामिनौ भवथः (उत) अपिच (पार्थिवस्य) पृथिव्यां भवस्य
 (धत्तम्) दत्तम् (रुयिम्) धनम् (स्तुवते) स्तोत्रं कुर्वते (कीरये) कृगृशृपृ० ।
 उ० ४ । १४३ । कृ क्षेपे-इप्रत्ययः, दीर्घश्छान्दसः, षष्ठा कील बन्धने-इन्, लस्य रः ।
 कीरिः स्तोत्रनाम-निघ० ३ । १६ । किरति वाचा प्रेरयति स किरिः तस्मै विदुषे
 (चित्) अवश्यम् । अन्यद् गतम्—अ० २० । १२ । ६ ॥

अथ तृतीयोऽनुवाकः ॥

सूक्तम् १८ [सूक्तानि १८-२१ प्रथमः पर्यायः] ॥

१-६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १-३ गायत्री; ४, ५ आचर्युष्णिक्; ६ निचृद् गायत्री ॥

राजप्रजाकर्तव्योपदेशः—राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

वयम् त्वा तदिदं त्वा इन्द्र त्वायन्तः सखायः ।

कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥ १ ॥

वयम् । जं इति । त्वा । तदित्-अर्थाः । इन्द्र । त्वा-यन्तः ।

सखायः ॥ कण्वाः । उक्थेभिः । जरन्ते ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [परम पेश्वर्य वाले राजन्] (तदिदं) उस तुझ से प्रयोजन रखने वाले [तेरे ही भक्त], (त्वायन्तः) तुझे चाहते हुये, (सखायः) मित्र, (कण्वाः) बुद्धिमान् लोग (वयम्) हम (त्वा) तुझको (उ) ही (उक्थेभिः) अपने वचनों से (जरन्ते = जरामहे) सराहते हैं ॥ १ ॥

भावार्थ—विद्वान् प्रजागण धर्मात्मा राजा से कृतज्ञ होकर गुणों का ग्रहण करें ॥ १ ॥

मन्त्र १-३ ऋग्वेद में हैं—८ । २ । १६-१८ और सामवेद में हैं—३० । १ । २ । तुच ३, तथा मन्त्र १ सामवेद में है—पू० २ । ७ । ३ ॥

न घेमुन्यदा पपन वज्रिन्पसो नविष्टौ ।

तवेदु स्तोमं चिकेत ॥ २ ॥

न । घ । ई । अन्यत् । आ । पपन । वज्रिन् । अपसः ।

नविष्टौ ॥ तव । इत् । जं इति । स्तोमम् । चिकेत ॥ २ ॥

१—(वयम्) प्रजागणाः (उ) एव (त्वा) त्वाम् (तदिदं) स त्वमेव अर्थः प्रयोजन येषां तादृशाः । तवैव भक्ताः (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् (त्वा-यन्तः) त्वामात्मन इच्छन्तः (सखायः) सखिभूताः (कण्वाः) मेघाविनः (उक्थेभिः) कथनीयवचनैः (जरन्ते) उत्तमस्य प्रथमपुरुषः । जरामहे । स्तुमः ॥

भाषार्थ—(वज्रिन्) हे वज्रधारी राजन् ! (नविष्टौ) स्तुति की इच्छा में (अपसः) [तेरे] कर्म से (अन्यत्) दूसरे [कर्म] को (न घ ईम्) कभी भी नहीं (आ पपन) मैंने सराहा है । (तव इत् उ) तेरे ही (स्तोमम्) स्तुति योग्य व्यवहार को (चिकेत) मैंने जाना है ॥ २ ॥

भावार्थ—प्रजागण स्तुति योग्य उपकारी कामों में प्रतापी धर्मात्मा राजा से सहायता लेते रहें ॥ २ ॥

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति ।

यन्ति प्रमादमत्तन्द्राः ॥ ३ ॥

इच्छन्ति । देवाः । सुन्वन्तम् । न । स्वप्नाय । स्पृहयन्ति ॥
यन्ति । प्र-मादम् । अत्तन्द्राः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(देवाः) विद्वान् लोग (सुन्वन्तम्) तत्त्व को निचोड़ने वाले को (इच्छन्ति) चाहते हैं, (स्वप्नाय) निद्रा को (न) नहीं (स्पृहयन्ति) चाहते हैं, और (अत्तन्द्राः) निरालसी होकर (प्रमादम्) भूल वाले को (यन्ति) दण्ड देते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—दूरदर्शी विद्वान् पुरुष कर्म कुशल चौकन्ने लोगों से प्रसन्न रहें और ढिल्लर निकम्मों को दण्ड दें ॥ ३ ॥

२—(न) निषेधे (घ) अवश्यम् (ईम्) एव (अन्यत्) भिन्नम् (आ) समन्तात् (पपन) पन स्तुतौ—एलि लिटि रूपम् । स्तुतवानस्मि (वज्रिन्) हे वज्रधारिन् (अपसः) कर्मणः सकाशात् (नविष्टौ) एव स्तुतौ—अप् + इष इच्छायाम्—किन् । शकन्वादित्वात् पररूपम् । नवस्य स्तुतेः इष्टौ इच्छायाम् (तव) (इत्) एव (उ) अवधारणे (स्तोमम्) स्तुत्यं व्यवहारम् (चिकेत) कित ज्ञाने—लिट् । अहं ज्ञातवानस्मि ॥

३—(इच्छन्ति) कामयन्ते (देवाः) विद्वांसः (सुन्वन्तम्) तत्त्वस्य निष्पादकम् (न) निषेधे (स्वप्नाय) स्पृहेरीप्सितः । पा० १ । ४ । ३६ । इति कर्मणि चतुर्थी । स्वप्नम् । आलस्यम् (स्पृहयन्ति) इच्छन्ति (यन्ति) यम नियमते, अदादित्वं बहुवचनस्यैकवचनत्वं च छान्दसम् । यमयन्ति । नियमयन्ति । दण्डयन्ति (प्रमादम्) अर्श आद्यच् । प्रमादिनम् । अनवधानत्वम् (अत्तन्द्राः) अनलसाः ॥

वृ॒यमिन्द्र॑ त्वा॒यवेऽभि॑ प्र नो॒नुमो॑ वृषन् ।

वि॒द्धी त्व॑स्य नो॒ वसो॑ ॥ ४ ॥

वृ॒यम् । इन्द्र॑ । त्वा-यवः॑ । अ॒भि । प्र । नो॒नुमः॑ । वृषन् ॥

वि॒द्धि । तु । अ॒स्य । नः॑ । व॒सो इति॑ ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(वृषन्) हे महाबली ! (इन्द्र) इन्द्र [मन्वाप्रतापी राजन्]
(त्वायवः) तुझे चाहते हुये (वयम्) हम (अभि) सब ओर को (प्र) अच्छे
प्रकार (नोनुमः) सराहते हैं । (वसो) हे बसाने वाले ! (नः) हमारे (अस्य)
इस [कर्म] का (तु) शीघ्र (विद्धि) ज्ञान कर ॥ ४ ॥

भावार्थ—जिस प्रकार प्रजागण धर्मात्मा राजा से प्रीति करें, वैसेही
राजा भी धार्मिक प्रजा को चाहे ॥ ४ ॥

मन्त्र ४—६ ऋग्वेद में हैं—७ । ३१ । ४—६ और मन्त्र ४ सामवेद में है—
पू० २ । ४ । ८ ॥

मा नो॒ नि॒दे च॒ वक्त॑वेऽर्यो॑ र॒न्धी॒ररा॑व्यो ।

त्वे अ॒पि क्र॑तुर्म॒म ॥ ५ ॥

मा । नः॑ । नि॒दे । च॒ । वक्त॑वे । अ॒र्यः । र॒न्धीः । अ॒रा॒व्यो ॥

त्वे इति॑ । अ॒पि । क्र॑तुः । म॒म ॥ ५ ॥

भाषार्थ—[हे राजन् !] (अर्यः) स्वामी तू (नः) हमको (निदे)

४—(वयम्) (इन्द्र) (त्वायवः) मृगखादयश्च । उ० १ । ३७ । युष्मत्+
या प्रापणे-कुप्रत्ययः । यद्वा । सुप आत्मनः क्यच् । पा० ३ । १ । ८ । युष्मत्-
क्यच्, उप्रत्ययः । प्रत्ययोत्तरपदयोश्च । पा० ७ । १२ । ६८ । मपर्यन्तस्य
त्वादेशः । त्वदित्यत्र तलोपः, अकारदीर्घत्वं च छान्दसम् । त्वां प्राप्ताः ।
त्वां कामयमानाः (अभि) सर्वतः (प्र) प्रकर्षेण (नोनुमः) गु स्तुतौ—यङ्लुक् ।
भृशं स्तुमः (वृषन्) हे बलवन् (विद्धि) ज्ञानं कुरु (तु) शीघ्रम् (अस्य)
कर्मणः (नः) अस्माकम् (वसो) हे वासयितः ॥

५—(मा) निषेधे (नः) अस्मान् (निदे) निन्दकाय (च) (वक्तवे)
सितनिगमि० । उ० १ । ६६ । षच परिभाषणे—तुन् । पुरुषभाषिणे । वक्तवा-

निन्दक के, (च) और (वक्तवे) वक्तादी (अरावणे) अदानी पुरुष के (मा रन्धीः) वश में मत कर । (त्वे) तुझ में (अपि) ही (मम) मेरी (क्रतुः) बुद्धि है ॥ ५ ॥

भावार्थ—राजा प्रजा में श्रेष्ठ कर्मों का प्रचार करे और गुणों में दोष लगाने वाले निन्दकों को हटावे ॥ ५ ॥

त्वं वर्मासि सुप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन् ।

त्वया प्रति ब्रुवे युजा ॥ ६ ॥

त्वम् । वर्म । असि । सु-प्रथः । पुरः-योधः । च । वृत्र-हन् ॥

त्वया । प्रति । ब्रुवे । युजा ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(वृत्रहन्) हे दुष्टनाशक ! (त्वम्) तू (सप्रथः) चौड़े (वर्म) कवच [के समान] (च) और (पुरोयोधः) सामने से युद्ध करने वाला (असि) है । (त्वया युजा) तुझ मिलनसार के साथ [बैरियों को] (प्रति ब्रुवे) मैं ललकारता हूँ ॥ ६ ॥

भावार्थ—धर्मात्मा वीर राजा के साथ होकर प्रजागण शत्रुओं को मारेंद ॥

सूक्तम् १८ ॥

१—७ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ३, ७ निचृद् गायत्री; २, ४—६ गायत्री ॥

राजप्रजागुणोपदेशः—राजा और प्रजा के गुणों का उपदेश ॥

वार्त्तिहत्यायु शर्वसे पृतनासाहाय च । इन्द्र त्वा वर्तयामसि ॥ १ ॥

वार्त्ति-हत्याय । शर्वसे । पृतना-सहाय । च ॥ इन्द्र । त्वा ।

आ । वर्तयामसि ॥ १ ॥

दिने (अर्यः) स्वामी त्वम् (मा रन्धीः) रघु हिंसापाकयोः—लुङ् । रघिजमो-रचि । पा० ७ । १ । ६१ । इति नुमागमः । रघ्यतिर्विशगमनेऽपि—निरु० १० । ४० । मा नाशय । मा वशीकुरु (अरावणे) रा दाने—वनिप् । अदानिने (त्वे) त्वयि (अपि) एव (क्रतुः) प्रज्ञा (मम) ॥

६—(त्वम्) (वर्म) कवचमिव (असि) (सप्रथः) सविस्तारम् (पुरोः युधः) इ. प्रतो योद्धा (च) (वृत्रहन्) हे दुष्टनाशक (त्वया) (प्रति ब्रुवे) प्रत्यक्षं प्रतिकूलं वा कथयामि भर्त्सयामि (युजा) संगन्त्रा । मित्रेण ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [परम पेश्वर्य वाले सेनापति] (वार्त्रह-
त्याय) बैरियों के मारने वाले (च) और (पृतनाषाह्याय) सङ्ग्राम में हराने
वाले (शवसे) बल के लिये (त्वा) तुझ को (आ वर्तयामसि) हम अपनी
ओर घुमाते हैं ॥ १ ॥

भावार्थ—युद्ध कुशल सेनापति सेनाजनों को उत्साही करके शत्रुओं
को जीते ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेदमें है—३। ३७। १—७ और मन्त्र १ यजुर्वेद में है—१८। ६८ ॥

अर्वाचीनं सु ते मन उत चक्षुः शतक्रतो ।

इन्द्रं कृण्वन्तु वाघतः ॥ २ ॥

अर्वाचीनम् । सु । ते । मनः । उत । चक्षुः । शतक्रतो इति
शत-क्रतो ॥ इन्द्रं । कृण्वन्तु । वाघतः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(शतक्रतो) हे सैकड़ों कर्मों वा बुद्धियों वाले (इन्द्र) इन्द्र !
[परम पेश्वर्यवान् राजन्] (वाघतः) निबाहने वाले बुद्धिमान् लोग (ते)
तेरे (मनः) मन (उत) और (चक्षुः) नेत्र को (अर्वाचीनम्) हमारी ओर
आने वाला (सु) आदर के साथ (कृण्वन्तु) करें ॥ २ ॥

भावार्थ—बुद्धिमान् लोग चतुर पुरुषार्थी राजा को प्रजा पालन आदि
शुभ गुणों में प्रवृत्त करते रहें ॥ २ ॥

१—(वार्त्रहत्याय) तस्येदम् । पा० ४ । ३ । १२० । इत्यण् । शत्रुहनननिमि-
त्ताय (शवसे) बलाय (पृतनाषाह्याय) शकिसहोश्च । पा० ३ । १ । ६६ । षह
अभिभवे—यत्, षत्वं दीर्घत्वं च । सङ्ग्रामे पराभवसमर्थाय (च) (इन्द्र) हे
परमेश्वर्यवान् सेनापते (त्वा) त्वाम् (आ वर्तयामसि) आवर्तयामः । अभिमुखं
कुर्मः ॥

२—(अर्वाचीनम्) अस्मदभिमुखीगतम् (सु) पूजायाम् (ते) तव
(मनः) चित्तम् (उत) अपि च (चक्षुः) नेत्रम् (शतक्रतो) क्रतुः कर्मनाम-
निघ० २ । १ । प्रज्ञानाम ३ । ६ । हे बहुकर्मन् । हे बहुप्रज्ञ (इन्द्रः) (कृण्वन्तु)
कुर्वन्तु (वाघतः) संश्वत्पद्वेहत् । उ० २ । ८५ । वह प्रापणे—अतिप्रत्ययः,
उपधावृद्धिर्हस्य घः । निर्वाहकाः । मेधाघिनः—निघ० ३ । १५ ॥

नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे ।

इन्द्राभिमातिषाह्ये ॥ ३ ॥

नामानि । ते । शतक्रतो इति शत-क्रतो । विश्वाभिः । गीः-
भिः । ईमहे ॥ इन्द्र । अभिमाति-सह्ये ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(शतक्रतो) हे सैकड़ों कर्मों वा बुद्धियों वाले (इन्द्र) इन्द्र !
[परम ऐश्वर्यवाले राजन्] (ते) तेरे (नामानि) नामों को (विश्वाभिः)
सम्पूर्ण (गीर्भिः) स्तुतियों के साथ (अभिमानिषाह्ये) अभिमानी शत्रुओं
के हराने में (ईमहे) हम मांगते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—जो राजा अपने गुणों से नरपति अर्थात् मनुष्यों का पालने
वाला, और भूपाल अर्थात् भूमि की रक्षा करने वाला इत्यादि नामों वाला होवे,
वही शत्रुओं पर विजय पाता है ॥ ३ ॥

पुरुष्टुतस्य धामभिः शतेन महयामसि ।

इन्द्रस्य चर्षणीधृतः ॥ ४ ॥

पुरु-स्तुतस्य । धाम-भिः । शतेन । महयामसि ॥

इन्द्रस्य । चर्षणि-धृतः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(शतेन) असंख्य (धामभिः) प्रभावों से (पुरुष्टुतस्य)
बहुतों करके बड़ाई किये गये और (चर्षणिधृतः) मनुष्यों के पोषण करने वाले
(इन्द्रस्य) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले राजा] का (महयामसि) हम सत्कार
करते हैं ॥ ४ ॥

३—(नामानि) नरपतिभूपालादिसंज्ञाः (ते) तव (शतक्रतो) बहुकर्मन् ।
बहुप्रज्ञ (विश्वाभिः) सर्वाभिः (गीर्भिः) । स्तुतयो गिरो गृणातेः—निरु० १ ।
१० । स्तुतिभिः (ईमहे) याचामहे (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवन् राजन् (अभिमाति-
षाह्ये) अभिमातीनाम् , अभिमानिनां शत्रूणां सह्ये सहने पराजये ॥

४—(पुरुष्टुतस्य) बहुभिः स्तुतस्य (धामभिः) धारणसामर्थ्यैः ।
प्रभावैः (शतेन) असंख्यैः (महयामसि) पूजनं सत्कारं कुर्मः (इन्द्रस्य)
परमैश्वर्यवतो राज्ञः (चर्षणिधृतः) चर्षणीनां मनुष्याणां धारकस्य पोषकस्य ॥

भावार्थ—राजा और प्रजा परस्पर उन्नति करके सुख बढ़ावें ॥ ४ ॥

इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहुतमुप ब्रुवे । भरेषु वाजसातये ॥ ५ ॥
इन्द्रम् । वृत्राय । हन्तवे । पुरु-हुतम् । उप । ब्रुवे ॥ भरेषु ।
वाज-सातये ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(पुरुहुतम्) बहुतों से पुकारे गये (इन्द्रम्) इन्द्र [परम
पेश्वर्य वाले राजा] को (वृत्राय हन्तवे) शत्रु के मारने के लिये (भरेषु)
संग्रामों में (वाजसातये) धनों के पाने को (उप) समीप में (ब्रुवे) मैं
कहता हूँ ॥ ५ ॥

भावार्थ—सङ्ग्राम प्रवृत्त होने पर सब योधा लोग और सेनाध्यक्ष
पुरुष प्रयत्न करें कि शत्रुओं को हराकर सब प्रकार विजय होवे ॥ ५ ॥

वाजेषु ससहिर्भव त्वामीमहे शतक्रतो ।

इन्द्रं वृत्राय हन्तवे ॥ ६ ॥

वाजेषु । ससहिः । भव । त्वाम् । ईमहे । शतक्रतो इति
शतक्रतो ॥ इन्द्र । वृत्राय । हन्तवे ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(शतक्रतो) हे सैकड़ों कर्मों वा बुद्धियों वाले (इन्द्र) इन्द्र !
[बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] तू (वाजेषु) सङ्ग्रामों में (ससहिः) विजयी
(भव) हो, (त्वा) तुझ से (वृत्राय हन्तवे) शत्रु को मारने के लिये (ईमहे)
हम प्रार्थना करते हैं ॥ ६ ॥

भावार्थ—सब योधाजन प्रधान सेनापति की आज्ञा से अपने अपने पद
पर स्थिर रहकर शत्रुओं को जीतें ॥ ६ ॥

५—(इन्द्रम्) परमैश्वर्ययुक्तं राजानम् (वृत्राय) वृत्रं शत्रुम् (हन्तवे)
तवेन प्रत्ययः । हन्तुम् (पुरुहुतम्) बहुभिर्गुह्यतम् (उप) समीपे (ब्रुवे)
कथयामि (भरेषु) सङ्ग्रामेषु (वाजसातये) धनानां लाभाय ॥

६—(वाजेषु) सङ्ग्रामेषु (ससहिः) सह अभिभवे-किप्रत्ययः । अभि-
भविता । विजयी (भव) (त्वाम्) (ईमहे) प्रार्थयामहे (शतक्रतो) हे बहु-
कर्मन् । बहुप्रश्न (इन्द्र) (वृत्राय) शत्रुम् (हन्तवे) म० ५ । हन्तुम् ॥

द्युम्नेषु पृतनाज्ये पृतसुतूषु अवःसु च ।

इन्द्र साहवाभिमातिषु ॥ ७ ॥

द्युम्नेषु । पृतनाज्ये । पृतसुतूषु । अवः-सु । च ॥ इन्द्र ।

साहव । अभि-मातिषु ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (पृतनाज्ये) सेनाओं के चलने स्थान रणक्षेत्र में (पृतसुतूषु) सेनाओं में मारने वाले शूरों के बीच, (द्युम्नेषु) चमकने वाले धनों के बीच (च) और (अवःसु) कीर्तियों के बीच (अभिमातिषु) अभिमानी बैरियों पर (साहव) जय पा ॥ ७ ॥

भावार्थ—प्रतापी सेनापति सङ्ग्राम जीतकर शूर योधाओं समेत बहुत साधन और यश प्राप्त करके विजय की धोषणा करे ॥ ७ ॥

सूक्तम् २० ॥

१—७ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १—३, ५, ६ गायत्री ; ४ अनुष्टुप् ; ७ निचृद् गायत्री ॥

राजप्रजाधर्मोपदेशः—राजा और प्रजा के धर्म का उपदेश ॥

शुष्मिन्तमं न जुतये द्युम्निनं पाहि जागृविम् ।

इन्द्र सोमं शतक्रतो ॥ १ ॥

शुष्मिन्-तमम् । नुः । जुतये । द्युम्निनम् । पाहि । जागृविम् ॥

इन्द्र । सोमम् । शतक्रतो इति शत-क्रतो ॥ १ ॥

७—(द्युम्नेषु) द्योतमानेषु धनेषु (पृतनाज्ये) अघ्न्यादयश्च । उ० ४ । ११२ । पृतना + अज गतिक्षेपणयोः—यक्प्रत्ययः । पृतनानां सेनानाम्, अजनं गमनं यत्र । रणक्षेत्रे (पृतसुतूषु) तुर हिंसायाम्—क्विप् । मांसपृतनासानूनां मांसपृतस्नवो वाच्याः । वा० पा० ६ । १ । ६३ । इति पृतना शब्दस्य पृत, अलुक् समासः । पृतसु पृतनासु सेनासु तूषु हिंसकेषु शूरेषु (अवःसु) कीर्तिषु (च) (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् (साहव) वह मर्षणे—लोड्, शपो लुक्, ढत्वकुत्वे, छान्दसो दीर्घः । सहस्व । अभिभव । विजय (अभिमातिषु) अभिमातिषु । शत्रुषु ॥

भाषार्थ—(शतक्रतो) हे सैकड़ों कर्मों वा बुद्धियों वाले (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (नः) हमारी (ऊतये) रक्षा के लिये (शुष्मिन्तमम्) अत्यन्त बलवान्, (द्युम्निनम्) अत्यन्त धनी वा यशस्वी और (जागृविम्) जागने वाले [चौकस] पुरुष की और (सोमम्) ऐश्वर्य की (पाहि) रक्षा कर ॥ १ ॥

भावार्थ—राजा धर्मात्मा शूर वीरों की और सबके ऐश्वर्य की यथावत् रक्षा करके प्रजा का पालन करे ॥ १ ॥

मन्त्र १—४ ऋग्वेद में हैं—३। ३७। ८—११ और पूरा सूक्त आगे है—
अथर्व० २०। ५७। ४—१० ॥

इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनैषु पञ्चसु ।

इन्द्र तानि तु आ वृणे ॥ २ ॥

इन्द्रियाणि । शतक्रतो इति शत-क्रतो । या । ते । जनैषु ।
पञ्च-सु ॥ इन्द्र । तानि । ते । आ । वृणे ॥ २ ॥

भाषार्थ—(शतक्रतो) हे सैकड़ों कर्मों वा बुद्धियों वाले (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (या) जो (ते) तेरे (इन्द्रियाणि) इन्द्र [ऐश्वर्य-वान्] के चिह्न धनादि (पञ्चसु जनैषु) पञ्च [मुख्य] लोगों में हैं । (ते) तेरे (तानि) उन [चिह्नों] को (आ) सब प्रकार (वृणे) मैं स्वीकार करता हूँ ॥ २ ॥

१—(शुष्मिन्तमम्) नादृघस्य । पा० ८ । २ । १७ । इति जुडागमः । अति-
शयेन बलवन्तम् (नः) अस्माकम् (ऊतये) रक्षायै (द्युम्निनम्) धनिनम् ।
यशस्विनम् (पाहि) (जागृविम्) जगृहस्तृजागृभ्यः किन् । उ० ४ । ५४ ।
जागृ निद्राक्षये—किन् । जागरूकम् । साधधानम् (इन्द्र) (सोमम्) ऐश्वर्यम्
(शतक्रतो) हे बहुकर्मन् । बहुप्रज्ञ ॥

२—(इन्द्रियाणि) इन्द्रियं धननाम—निघ० २ । १० । इन्द्रस्य परमैश्वर्यवतः
पुरुषस्य लिङ्गानि धनादीनि (शतक्रतो) म० १ (या) यानि (ते) तव (जनैषु)
पुरुषेषु (पञ्चसु) पञ्च व्यक्तीकरणे—कनिन् । प्रधानेषु (इन्द्र) (तानि)
लिङ्गानि (ते) तव (आ) समन्तात् (वृणे) स्वीकरोमि ॥

भावार्थ—बुद्धिमान् धार्मिक राजा बड़े बड़े अधिकारियों का आदर करके प्रजा की रक्षा करे ॥ २ ॥

अगन्निन्द्र अवो बृहद् द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम् ।

उत् ते शुष्मं तिरामसि ॥ ३ ॥

अगन् । इन्द्र । अवः । बृहत् । द्युम्नम् । दधिष्व । दुष्टरम् ॥

उत् । ते । शुष्मम् । तिरामसि ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (बृहत्) बड़ा (अवः) अन्न [हमको] (अगन्) प्राप्त हुआ है, (दुष्टरम्) दुस्तर [अजेय] (द्युम्नम्) चमकने वाले यश को (दधिष्व) तू धारण कर । (ते) तेरे (शुष्मम्) बल को (उत् तिरामसि) हम बढ़ाते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—जिस राजा के कारण बहुत अन्न आदि पदार्थ मिलें, प्रजागण उसके बल बढ़ाने में सदा प्रयत्न करें ॥ ३ ॥

अर्वावतो नु आ गुह्यथो शक्र परावतः ।

उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रे ह तत् आ गहि ॥ ४ ॥

अर्वा-वतः । नुः । आ । गुहि । अथो इति । शक्र । परावतः ॥

ऊँ इति । लोकः । यः । ते । अद्रि-वः । इन्द्र । इह ।

ततः । आ । गुहि ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(शक्र) हे समर्थ ! (अर्वावतः) समीप से (अथो) और

३—(अगन्) अ० २ । ४ । ३ । गमेर्लुङि छान्दसं रूपम् । अगमत् । प्राप्नोत्—अस्मानिति शेषः (अवः) अन्नम् (बृहत्) महत् (द्युम्नम्) धापृवस्य-ज्यतिभ्यो नः । उ० ३ । ६ । द्युत दीप्तौ—नप्रत्ययः, तकारस्य मः । द्युम्नं द्योतते र्यशो वाऽन्नं वा—निरु० ५ । ५ । द्योतमानं यशः (दधिष्व) धर (दुष्टरम्) दुःखेन तरणीयं जेयम् (ते) तव (शुष्मम्) बलम् (उत् तिरामसि) प्रवर्धयामः ॥

४—(अर्वावतः) समीपात् (नः) अस्मान् (आ गहि) आगच्छ । प्राप्नुहि (अथो) अपि च (शक्र) हे शक्तिमन् (परावतः) दूरात् (उ) चार्थे (लोकः)

(परावतः) दूर से (नः) हमें (आ गहि) प्राप्त हो, (अद्रिवः) हे वज्रधारी
(इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (उ) और (यः) जो (ते) तेरा
(लोकः) स्थान है, (ततः) वहां से (इह) यहां पर (आ गहि) तू आ ॥ ४ ॥

भावार्थ—राजा अधिकारियों द्वारा समीप और दूर से प्रजा की सुधि
रक्खे और उनको आप भी जाकर देखा करे ॥ ४ ॥

इस मन्त्र का पूर्वार्द्ध कुछ भेद से आ चुका है—अ० २० । ६ । ८ ।

इन्द्रो अङ्ग महद् भुयम्भी षदप चुच्यवत् ।

स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥ ५ ॥

इन्द्रः । अङ्ग । महत् । भुयम् । अम्भि । सत् । अप । चुच्यवत् ॥

सः । हि । स्थिरः । वि-चर्षणिः ॥ ५ ॥

भावार्थ—(अङ्ग) हे विद्वान् । (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले राजा]
ने (महत्) बड़े और (अम्भि) सब ओर से (सत्) वर्तमान (भुयम्) भय को
(अप चुच्यवत्) हटा दिया है । (सः हि) वही (स्थिरः) दृढ़ और (विच-
र्षणिः) विशेष देखने वाला है ॥ ५ ॥

भावार्थ—राजा दृढ़स्वभाव और सावधान रहकर दुष्टों से प्रजा की
रक्षा करे ॥ ५ ॥

मन्त्र ५—७ ऋग्वेद में हैं—२ । ४१ । १०—१२ और मन्त्र ५ सामवेद में
हैं—पू० ३ । १ । ७ ॥

स्थानम् (यः) (ते) तव (अद्रिवः) अदिशदिभूयुभिभ्यः क्रिन् । उ० ४ । ६५ ।
अद् भक्षणे—क्रिन् । मतुवसो रु सम्बुद्धौ छन्दसि । पा० ८ । ३ । १ । इति
रुत्वम् । अद्रिवः=अद्रिवन्, अद्रिराहणात्येनेनापि वाक्तेः स्यात्—निरु० ४ । ४ ।
अत्ति शत्रून् भक्षयतीति, अद्रिर्वज्रस्तद्वन् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन्
(इह) अत्र (ततः) तस्मात् स्थानात् (आ गहि) आगच्छ ॥

५—(इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् राजा (अङ्ग) सम्बोधने (महत्) अधिकम्
(अम्भि) सर्वतः (सत्) अस भुवि—शतृ । भवत् । वर्तमानम् (अप) दूरे
(चुच्यवत्) व्युङ् गतौ—लुङि णिलोपे, उपधाह्रस्वत्वम्, अहभावः । अपसा-
रितवान् (सः) (हि) एव (स्थिरः) दृढ़ः (विचर्षणिः) विशेषेण द्रष्टा—निघ०
३ । ११ ॥

इन्द्रश्च मृलयति नो न नः पश्चादुघं नशत् ।

भद्रं भवाति नः पुरः ॥ ६ ॥

इन्द्रः । च । मृलयति । नः । न । नः । पश्चात् । अघम् ।

नशत् ॥ भद्रम् । भवाति । नः । पुरः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला राजा] (च) निश्चय करके (नः) हमें (मृलयति) सुखी करे, (अघम्) पाप (नः) हमको (पश्चात्) पीछे (न) न (नशत्) नाश करे । (भद्रम्) कल्याण (नः) हमारे लिये (पुरस्तात्) आगे (भवाति) होवे ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को योग्य है कि धर्मात्मा राजा के प्रबन्ध में रहकर पापों से बचकर सुख भोगें ॥ ६ ॥

इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं कर्तुः ।

जेता शत्रून् विचर्षणिः ॥ ७ ॥

इन्द्रः । आशाभ्यः । परि । सर्वाभ्यः । अभयम् । कर्तुः ॥

जेता । शत्रून् । वि-चर्षणिः ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला राजा] (सर्वाभ्यः) सब (आशाभ्यः) आशाओं [गहरी इच्छाओं] के लिये (अभयम्) अभय (परि) सब ओर से (कर्तुः) करे । वह (शत्रून् जेता) शत्रुओं को जीतने वाला और

६—(इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् राजा (च) अवधारणे (मृलयति) इस लः । मृलयति सुखयेत् (नः) अस्मान् (न) निषेधे (नः) अस्मान् (पश्चात्) पश्चात् काले (अघम्) पापम् (नशत्) नाशयेत् (भद्रम्) कल्याणम् (भवाति) भूयात् (नः) अस्मभ्यम् (पुरः) पुरस्तात् (अग्रे) ॥

७—(इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् राजा (आशाभ्यः) अभिलाषाणां सिद्धये (परि) सर्वतः (सर्वाभ्यः) (अभयम्) भयरोहित्यम् (कर्तुः) कुर्यात् (जेता) न लोकाभ्यनिष्ठास्त्वर्थतृणाम् । पा० २।३ । ६६ । इति तृहन्तत्वात् षष्ठ्यभावः ।

(विचर्षणिः) विशेष देखने वाला है ॥ ७ ॥

भावार्थ—राजा अपने न्याययुक्त प्रबन्ध से विघ्नों को हटाकर प्रजा की उन्नति की गहरी इच्छाओं को पूरा करे ॥ ७ ॥

सूक्तम् २१ ॥

१—११ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ३ निवृज्जगती; २ भुरिग् जगती; ४ जगती; ५—७ विण्डार्षी जगती; ८ त्रिष्टुप्; ९ आर्षी त्रिष्टुप्; १० भुरिक् त्रिष्टुप्; ११ सतः पङ्क्तिः ॥

मनुष्यकर्तव्योपदेशः—मनुष्यों के कर्तव्य का उपदेश ॥

न्यु^३षु वाचं प्र मुहे भिरामहे गिर इन्द्राय सदनं विवस्वतः ।
नू चिद्धिरत्नं ससतामिवाविदुर्न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते ॥१॥
नि । जं इति । सु । वाचम् । प्र । मुहे । भिरामहे । गिरः ।
इन्द्राय । सदनं । विवस्वतः ॥ नु । चित् । हि । रत्नम् ।
ससताम्-इव । अविदत् । न । दुः-स्तुतिः । द्रविणः-देषु ।
शस्यते ॥ १ ॥

भाषार्थ—(मुहे) पूजनीय (इन्द्राय) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] के लिये (सु) सुन्दर लक्षण वाली (वाचम्) वाणी और (गिरः) स्तुतियों को (विवस्वतः) विविध निवास वाले [धनी पुरुष] के (सदनं) घर पर (नि उ) निश्चय करके ही (प्र भिरामहे) हम धारण करते हैं । (हि) क्योंकि (ससताम्)

विजयन् (शत्रून्) (विचर्षणिः) म० ५ । विशेषद्रष्टा ॥

१—(नि) निश्चयेन (उ) एव (सु) शोभनाम् (वाचम्) वाणीम् (प्र) प्रकर्षेण (मुहे) महते । पूजनीयाय (भिरामहे) धरामहे (गिरः) स्तुतीः निरु० १ । १० (इन्द्राय) परमैश्वर्यवते पुरुषाय (सदनं) गृहे (विवस्वतः) अ० २० । ११ । ७ । बहुनिवासयुक्तस्य धनिनः पुरुषस्य (नु) शीघ्रम् (चित्) निश्चयेन (हि) यस्मात् कारणात् (रत्नम्) रमणीयं सुवर्णादिधनम् (ससताम्) स्वपतां पुरुषाणाम् (इव) अवधारणे (अविदत्) अलमत स चोरादिकः

सोते हुये मनुष्यों के (इव) ही (रत्नम्) रत्न [रमणीय धन] को (जु) शीघ्र (चित्) निश्चय करके (अविदत्) उस [चोर आदि] ने ले लिया है, (द्रविणोदेषु) धन देनेवाले पुरुषों में (दुष्टुतिः) दुष्ट स्तुति (न शस्यते) श्रेष्ठ नहीं होती है ॥१॥

भावार्थ—धर्मात्मा लोगों की स्तुति बड़े लोगों में होती है, आलसी निकम्मों के धन को चोर आदि ले जाते हैं, विद्वानों को श्रेष्ठों की बड़ाई ही सदा करनी चाहिये ॥ १ ॥

यह पूरा सूक्त ऋग्वेद में है—१।५३।१—११ ॥

दुरो अश्वस्य दुर इन्द्र गोर्षि दुरो यवस्य वसुन इन्द्रपतिः ।
शिक्षानुरः प्रदिवो अकामकर्शनः सखा सखिभ्यस्तमिदं गृणी-
मसि ॥ २ ॥

दुरः । अश्वस्य । दुरः । इन्द्र । गोः । असि । दुरः । यवस्य ।
वसुनः । इन्द्रः । पतिः ॥ शिक्षा-नुरः । प्र-दिवः । अकाम-
कर्शनः । सखा । सखि-भ्यः । तस् । इदम् । गृणीमसि ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] तू (अश्वस्य) घोड़े का (दुरः) देने वाला, (गोः) गौ [वा भूमि] का (दुरः) देनेवाला, (यवस्य) अन्न का (दुरः) देनेवाला, (वसुनः) धन का (इन्द्रः) स्वामी और (पतिः) रत्नक, (प्रदिवः) उत्तम व्यवहार की (शिक्षानुरः) शिक्षा पढ़ाने वाला,

(न) निषेधे (दुष्टुतिः) दुः स्तुतिः । दुष्टा स्तुतिः । असमीचीना प्रशंसा (द्रविणोदेषु) अ० २० । २ । ४ । इदक्षिभ्यामिनन् । उ० २ । ५० । इन्द्र गतौ—
इन्द्र + ददातेः—कप्रत्ययः, पूर्वपदस्य सकार उपजनः । द्रविणं धननाम—निघ० २ । १० । धनदातृषु (शस्यते) प्रशस्ता भवति ॥

२—(दुरः) मद्गुरादयश्च । उ० १ । ४१ । इ दाञ् दाने—उरच्, कित्वा-
दाकारलोपः । दाता (अश्वस्य) तुरङ्गस्य (दुरः) (गोः) गवादिपशोः पृथिव्या
वा (असि) (दुरः) (यवस्य) अन्नस्य (वसुनः) धनस्य (इन्द्रः) इण-
सिञ्जिदीङुष्यविभ्यो नक् । उ० ३ । २ । इण गतौ—नक्प्रत्ययः । इन्द्र ईश्वरनाम—
निघ० २ । २२ । स्वामी (पतिः) रत्नकः (शिक्षानुरः) नृ नये—अच् । शिक्षा-
प्रापकः । विद्यादाता (प्रदिवः) दिव्य व्यवहारे—किप् । प्रकृष्टव्यवहारस्य । प्रदिवः

सू० २१ [६०८]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(३, ८५८)

(अकामकर्मतः) अकामियों [आलसियों] का दुबला करने वाला, और (सखिभ्यः) मित्रों के लिये (सखा) मित्र (असि) है, (तम्) उस, तुम्ह को (इदम्) यह [वचन] (गृणीमसि) हम बोलते हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—राजा का कर्तव्य है कि प्रजा को उत्तम शिक्षा द्वारा उद्यमी बनाकर सब प्रकार सुखी रखे और आलसी दुष्टों को दण्ड देता रहे ॥ २ ॥

शचीव इन्द्र पुरुकृद् द्युमत्तस् तवेदिदमभितश्चेकिते वसु ।
अतः संगृभ्याभिभूत आ भर मा त्वायतो जरितुः कामसूनयोः ३
शची-वः । इन्द्र । पुरु-कृत् । द्युमत्-तस् । तव । इत् । इदम् ।
अभितः । चेकिते । वसु ॥ अतः । सु-गृभ्य । अभि-भूते ।
आ । भर । मा । त्वा-यतः । जरितुः । कामस् । सु-नयोः ॥ ३

भावार्थ—(शचीवः) हैं उत्तम बुद्धि वाले, (पुरुकृत्) बहुत कर्मों वाले, (द्युमत्तम्) अत्यन्त प्रकाश वाले (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (तव इत्) तेरा ही (इदम्) यह (वसु) धन (अभितः) सब ओर से (चेकिते) जाना गया है । (अतः) इस कारण से, (अभिभूते) हे विजयी ! (संगृभ्य) संग्रह करके (आ भर) तू लाकर भर, (त्वायतः) तेरी चाह करते

पुराणनाम-निघ० ३ । २९ (अकामकर्मतः) कृश तनूकरणे—ल्यु । योऽकामान् अलसान् कृशति तनूकरोतीति सः । अलसानां दुर्बलीकर्ता (सखा) सुहृत् (सखिभ्यः) सुहृदामर्थम् (तम्) तादृशं त्वाम् (इदम्) वचनम् (गृणीमसि) गृ शब्दे । उच्चारयामः ॥

३—(शचीवः) शची-मतुप् । छन्दसीरः । पा० ८ । २ । १५ । मतुपो मस्य वः । मतुवसो रु सम्बुद्धौ छन्दसि । पा० ८ । ३ । १ । इति रुत्वम् । शची कर्मनाम-निघ० २ । १ । प्रज्ञानाम-निघ० ३ । ६ । हे प्रशस्तप्रज्ञावन् (इन्द्र) परमेश्वर्य-वन् राजन् (पुरुकृत्) पुरुषां बहूनां कर्मणां कर्तः (द्युमत्तम्) अतिशयेन प्रकाश-युक्त (तव) (इदम्) उपस्थितम् (अभि) सर्वतः (चेकिते) कित ज्ञाने—लिट् । ज्ञातं वर्तते (वसु) धनम् (अतः) अस्मात् कारणात् (संगृभ्य) संगृह्य (अभिभूते) हे अभिमनितः । विनयिन (आ) आनीय (भर) धर (मा) निषेधे

(३,८६०)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० २१ [६०८]

हुये (जरितुः) स्तुति करने वाले की (कामम्) आशा को (मा ऊनयीः) मत घटा ॥ ३ ॥

भावार्थ—जो राजा राज्य के सब पदार्थों पर दृष्टि रखकर और उनका सुप्रयोग करके प्रजा की इष्ट सिद्धि करता है, वही प्रशंसनीय होता है ॥ ३ ॥

एभिर्द्युभिः सुमना एभिरिन्दुभिर्निरुन्धानो अमतिं गोभि-
रश्विना । इन्द्रेण दस्युं दुरयन्तु इन्दुभिर्युतद्वेषसुः समिषा
रभेमहि ॥ ४ ॥

एभिः । द्यु-भिः । सु-मनाः । एभिः । इन्दु-भिः । नि-रुन्धानः ।
अमतिम् । गोभिः । अश्विना ॥ इन्द्रेण । दस्युम् । दुरयन्तः ।
इन्दु-भिः । युत-द्वेषसः । समु । इषा । रभेमहि ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(एभिः) इन (द्युभिः) तेजों से और (एभिः) इन (इन्दुभिः) पेश्वयों से (सुमनाः) प्रसन्न मन वाला, और (गोभिः) गौओं से और (अश्विना) घोड़ों से (अमतिम्) दरिद्रता को (निरुन्धानः) रोकने वाला, वह है । (इन्द्रेण) उस इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले राजा] के साथ (इन्दुभिः) पेश्वयों के द्वारा (दस्युम्) डाकू को (दुरयन्तः) दर डालने वाले और (युतद्वेषसः) द्वेष से अलग रहने वाले हम (इषा) अन्न के साथ (सं रभेमहि)

(त्वायतः) : त्वां कामयमानस्य (जरितुः) स्तोतुः (कामम्) अभिलाषम्
(ऊनयीः) ऊन परिहाणे—लुङ् । ऊनयेः ॥

४- (एभिः) प्रत्यक्षैः (द्युभिः) तेजोभिः (सुमनाः) प्रसन्नचित्तः (एभिः)
(इन्दुभिः) पेश्वर्यैः (निरुन्धानः) रुधिर आवरणे—शानच् । निवर्तयन् (अम-
तिम्) पीडकम् । दारिद्र्यम् (गोभिः) धेनुभिः (अश्विना) अश्व-इनि । सुपां सुलुक् ०
पा० ७ । १ । ३६ । तृतीयाबहुवचनस्य आकारः । अश्वो मार्गव्याप्तिर्यस्यास्तीति
अश्वी, यद्वा स्वार्थे इनिः । अश्वैः । तुरङ्गैः (इन्द्रेण) परमैश्वर्यवता राज्ञा
(दस्युम्) बलात्कारेण परस्वहर्तारम् (दुरयन्तः) विदारयन्तः । नाशयन्तः
(इन्दुभिः) पेश्वर्यैर्द्वारा (युतद्वेषसः) यु मिश्रणामिश्रणयोः—क्त । युतानि
पृथग्भूतानि द्वेषांसि शत्रुकर्माणि येषां ते (इषा) अन्नेन (सं रभेमहि) सं-

संयुक्त होवें ॥ ४ ॥

भावार्थ—तेजस्वी, परम ऐश्वर्यवान्, न्यायकारी राजा की सुनीति से दुराचारियों का नाश होकर प्रजा के धन धान्य की बढ़ती होती है ॥ ४ ॥

समिन्द्र राया समिषा रभेमहि सं वाजेभिः पुरुचन्द्रैरभिद्युभिः।
सं देव्या प्रमत्या वीरशुष्मया गोअग्रयाश्ववत्या रभेमहि ॥५

सम् । इन्द्र । राया । सम् । इषा । रभेमहि । सम् । वाजेभिः ।
पुरु-चन्द्रैः । अभिद्यु-भिः ॥ सम् । देव्या । प्र-मत्या । वीर-
शुष्मया । गो-अग्रया । अश्व-वत्या । रभेमहि ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजा वा परमात्मा] हम (राया) सम्पत्ति से (सम्) संयुक्त, (इषा) अन्न से (सम्) संयुक्त, और (पुरुचन्द्रैः) बहुत सुवर्ण आदि वाले तथा (अभिद्युभिः) सब ओर से व्यवहार वाले (वाजेभिः) विज्ञानों [वा बलों] से (सं रभेमहि) संयुक्त होवें । और (देव्या) दिव्य गुण वाली, (वीरशुष्मया) वीरों को बल देने वाली, (गोअग्रया) श्रेष्ठ गौओं वा देशों वाली और (अश्ववत्या) वेग युक्त घोड़ों वाली (प्रमत्या) उत्तम बुद्धि से (सं रभेमहि) हम संयुक्त होवें ॥ ५ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमेश्वर की भक्ति और न्यायी राजा की सुनीति से अनेक प्रकार विज्ञानी और बलवान् होकर श्रेष्ठ बुद्धि के साथ उन्नति करते रहें ॥ ५ ॥

रब्धाः संगता भवेम ॥

५—(सम्) सम्भूय (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् परमात्मन् वा (राया) सम्पत्त्या (इषा) अन्नेन (सं रभेमहि) संगता भवेम (सम्) (वाजेभिः) विज्ञानैः बलैः (पुरुचन्द्रैः) चन्द्रं हिरण्यनाम-निघ० १। २। बहुसुवर्णादियुक्तैः (अभिद्युभिः) सर्वतो व्यवहारोपेतैः (सम्) (देव्या) दिव्यगुणवत्या (प्रमत्या) प्रकृष्टबुद्ध्या (वीरशुष्मया) वीरेभ्यः शुष्मं बलं यस्याः सकाशात् तथा (गोअग्रया) सर्वत्र विभाषा गोः । पा० ६। १। १२२। इति प्रकृतिभावः । गावो धेनवः पृथिवीदेशा वाऽग्रा श्रेष्ठा यस्यां तथा (अश्ववत्या) वेगयुक्तनुरङ्गवत्या (सं रभेमहि) ॥

ते त्वा मदा असदुन् तानि वृषण्या ते सोमासो वृत्रहत्येषु
सत्पते । यत् कारवे दश वृत्राण्यप्रति बर्हिष्मते नि सहस्राणि
बर्हयः ॥ ६ ॥

ते । त्वा । मदाः । असदुन् । तानि । वृषण्या । ते । सोमासः ।
वृत्र-हत्येषु । सत्-पते ॥ यत् । कारवे । दश । वृत्राणि ।
अप्रति । बर्हिष्मते । नि । सहस्राणि । बर्हयः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(सत्पते) हे सत्पुरुषों के रक्षक ! [सेनापति] (ते)
उन (मदाः) आनन्द देने वाले शूरों ने, (तानि) उन (वृषण्या) वीरों के योग्य
कर्मों ने और (ते) उन (सोमासः) ऐश्वर्यों ने (वृत्रहत्येषु) बैरियों के मारने
वाले संग्रामों में (त्वा) तुझ को (असदुन्) प्रसन्न किया है, (यत्) जब
(बर्हिष्मते) विज्ञानी (कारवे) कर्म कर्ता के लिये (दश सहस्राणि) दस सहस्र
[असंख्य] (वृत्राणि) शत्रुदलों को (अप्रति) बिना रोक (नि बर्हयः) तू ने
मार डाला है ॥ ६ ॥

भावार्थ—धार्मिक राजा सज्जनों की रक्षा के लिये दुष्टों का नाश करके
आनन्द के साथ वैभव बढ़ावे । ६ ॥

युधा युधमुप चेदेषि धृषणुया पुरा पुरं समिदं हंस्योजसा ।
नम्या यदिन्द्र सख्या परावति निबर्हये नमुचिं नाम मायिनम् ७

६—(ते) प्रसिद्धाः (त्वा) त्वाम् (मदाः) आनन्दयितारः शूराः
(असदुन्) हर्षितवन्तः (तानि) प्रसिद्धानि (वृषण्या) वृषन्-यत् । शैलीपः ।
वृषणः इन्द्रस्य वीरस्य योग्यानि क्रमाणि (ते) प्रसिद्धाः (सोमासः)
ऐश्वर्याणि (वृत्रहत्येषु) वृत्राणां शत्रूणां हत्या हरणं देषु तेषु संग्रामेषु (सत्पते)
हे सत्पुरुषाणां रक्षक (यत्) यदा (कारवे) कृवापा० । उ० १। १। करोतेः—उण् ।
कर्मकर्त्रे (दश सहस्राणि) असंख्यातानि (वृत्राणि) शत्रुसैन्यानि (अप्रति)
अ० २०। १२। ३। यथा तथा, प्रातिकूल्यस्य विघ्नस्य राहित्येन (बर्हिष्मते) विज्ञान-
वते (नि बर्हयः) बर्ह प्राधान्ये हिंसादिषु च-लङ्, अडभावश्छान्दसः । निबर्हय-
तिर्बलकर्मा-निघ० २। १६ । नितरामवधोः ॥

सू० २१ [६०८]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(३,८६३)

युधा । युधम् । उप । घ । इत् । एषि । धृष्णु-या । पुरा ।
 पुरम् । सम् । इदम् । हंसि । ओजसा ॥ नम्या । यत् ।
 इन्द्र । सख्या । पुरा-वति । नि-बर्हयः । नमुचिम् । नाम ।
 मायिनम् ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले सेनापति] (युधा)
 एक युद्ध से (युधम्) दूसरे युद्ध को (घ) निश्चय करके (इत्) अवश्य
 (धृष्णुया) निर्भयता से (उप एषि) तू चला चलता है, और (इदम्)
 अब (पुरा) एक गढ़ के साथ (पुरम्) दूसरे गढ़ को (ओजसा) बल से
 (सं हंसि) तू नष्ट कर देता है । (यत्) क्योंकि (नम्या) नम्र [आज्ञाकारी]
 (सख्या) मित्र के साथ (परावति) दूर देश में (नमुचिम्) न छुटने योग्य
 [दण्डनीय] (नाम) प्रसिद्ध (मायिनम्) छली पुरुष को (निबर्हयः) तू ने
 मार डाला है ॥ ७ ॥

भावार्थ—राजा विनीति आज्ञाकारी मित्रों के साथ कपटी शत्रुओं को
 और उनके दुर्गों को नाश करके सुख से राज्य करे ॥ ७ ॥

त्वं करञ्जमुत पुण्यं वधीस्तेजिष्ठयातिथिगवस्य वर्तनी ।
 त्वं श्रुता वङ्गदस्याभिनुत् पुरोऽनानुदः परिषूता ऋजिश्वना ८

७—(युधा) युद्धेन (युधम्) युद्धम् (उप) समीपे (घ) निश्चयेन
 (इत्) एव (एषि) गच्छसि । प्राप्नोषि (धृष्णुया) त्रसिगृधिधृषिन्निपेः कृः । पा०
 ३।२।१४०। इति जि धृषा प्रागल्भ्ये-कृ। सुपां सुलुक्०। पा०७।१।३६। विभक्ते-
 र्वाजादेशः । धृष्णुना । धर्षकेण प्रगल्भेन कर्मणा (पुरा) शत्रुदुर्गेण (पुरम्)
 शत्रुदुर्गम् (सम्) सम्यक् (इदम्) इदानीम् (हंसि) नाशयसि (ओजसा)
 बलेन (नम्या) एव प्रह्वत्वे—यत्, विभक्तेराकारः । नम्येन । नम्रेण । विनीतेन
 (यत्) यदा (इन्द्र) हे परमेश्वर्यवान् सेनापते (सख्या) मित्रेण (परावति)
 दूरदेशे (निबर्हयः) म० ६ । नितरां नाशितवानसि (नमुचिम्) भुजेः किञ्च ।
 उ०४।१४२। मुच्छ मोचने—इप्रत्ययः कित् । न आण्णपाङ्गवेदाना० । पा०६।३।७५।
 इति नम्रः प्रकृतिभावः । अमोचनीयम् । दण्डनीयम् (नाम) प्रसिद्धम् (मायि-
 नम्) छलिनम् ॥

त्वम् । करञ्जम् । उत । पर्णयम् । वधीः । तेजिष्ठया । अति-
थि-ग्वस्य । वर्तनी ॥ त्वम् । शता । वङ्गदस्य । अभिनत् ।
पुरः । अननु-दः । परि-सूताः । ऋजिश्वना ॥ ८ ॥

भाषार्थ—[हे राजन् !] (त्वम्) तू ने (करञ्जम्) हिंसक (उत)
और (पर्णयम्) पालन वस्तुओं को लेने वाले [चोर] को (अतिथिग्वस्य)
अतिथियों को प्राप्त होने वाले पुरुष के (तेजिष्ठया) अत्यन्त तेजस्वी (वर्तनी)
मार्ग से (वधीः) मारा है । (त्वम्) तू ने (वङ्गदस्य) मार्ग तोड़ने वाले
(अननुदः) अनुकूल न वर्तने वाले दुष्ट के (ऋजिश्वना) सरलस्वभाव पुरुषों
के बढ़ाने वाले [आप] करके (परिषूताः) घेरे हुये (शता) सैकड़ों (पुरः)
दुर्गों को (अभिनत्) तोड़ा है ॥ ८ ॥

८—(त्वम्) (करञ्जम्) कृ हिंसने—अञ्जन् औणादिक, प्रत्ययः । कृणाति हिन-
स्तोति करञ्जस्तम् । हिंसकम् (उत) अपि च (पर्णयम्) धापृवस्यज्यतिभ्यो
नः । उ० ३ । ६ । पृ पालनपूरणयोः—नप्रत्ययः+या प्रापणे—कप्रत्ययः । पर्णानां
पालनवस्तूनां यातारं ग्रहीतारं चोरम् (वधीः) हन्तेर्लुङि वधादेशोऽडभावश्च ।
अवधीः । हतवानसि (तेजिष्ठया) तेजस्विन्—इष्टन् । विभ्तोर्लुक् । पा० ५।३ ।
६५। इति विनो लुक् । अतिशयेन तेजस्विन्या (अतिथिग्वस्य) अतिथि+
गमेः—औणादिको ड्वप्रत्ययः । अतिथीनां विदुषां पुरुषाणां प्रापकस्य (वर्तनी)
वृत्तु वर्तने—ल्युट्, डीप् । सुपां सुलुक् । पा० ७। १।३६ । इति विभक्तेः पूर्वसवर्ण-
दीर्घः । वर्तन्या पथा (त्वम्) (शता) शतानि (वङ्गदस्य) दिवेर्ऋ । उ०
२।६६। वगि गतौ—ऋप्रत्ययः+दो अवखण्डने—कप्रत्ययः । यो वङ्गद मार्गान्
घति खण्डयतीति तस्य । सन्मार्गभेदकस्य (अभिनत्) भिदिर् विदारणे—
लङ् सिपि । इतश्च । पा० ३ । ४ । १०० । इकारलोपः । हल्ङ्याब्भ्यो० । पा०
६ । १ । ६८ । इति सकारलोपः । दश्च । पा० ८ । २ । ७५ । इति रुत्वदकारयो-
र्विकल्पः । अभिनः । त्वं भिन्नवानसि (पुरः) शत्रुदुर्गान् (अननुदः) अननु +
ददातेः—क्लिप् । योऽनुकूलं न ददाति तस्य (परिषूताः) पू प्रेरणे—क्त । पस्विष्ठिताः
(ऋजिश्वना) इगुपधात् कित् । उ० ४ । १२० । ऋज अर्जवे—इन्, स च
कित् । श्वन्नुक्त्तपूषन्० । उ० १।१५६। दु ओश्च गतिवृद्धयोः—कनिन् । ऋजीनां
सरलस्वभावानां वर्धकेन त्वया ॥

सू० २१ [६०८]

विंशं कारडम् ॥ २० ॥

(३,८६५)

भावार्थ—परोपकारी विद्वान् अतिथियों का सत्कार करने वाला राजा धार्मिक रीति से उपद्रवी दुष्टों का नाश करता रहे ॥ ८ ॥

त्वमेतां जनुराज्ञो द्विर्दशबन्धुना सुश्रवसोपजग्मुषः । षष्टिं
सहस्रा नवतिं नव श्रुतो नि चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक् ॥ ८ ॥

त्वम् । एतान् । जनु-राज्ञः । द्विः । दश । अबन्धुना । सु-
श्रवसा । उप-जग्मुषः ॥ षष्टिम् । सहस्रा । नवतिम् । नव ।
श्रुतः । नि । चक्रेण । रथ्या । दुः-पदा । अवृणक् ॥ ८ ॥

भाषार्थ—[हे राजन् !] (अबन्धुना) बन्धुहीन और (सुश्रवसा)
बड़ी कीर्ति वाले पुरुष के साथ, (श्रुतः) विख्यात (त्वम्) तू ने (एतान्) इन
(द्विःदश) दो बार दश [बीस] (जनराज्ञः) नीच लोगों के राजाओं को और
(षष्टिम् सहस्रा) साठ सहस्र (नव नवतिम्) नौ नब्बे [६ + ६० = ६६
अथवा ६ × ६० = ८१० अर्थात् ६००, ६६ अथवा ६०, ८१०] (उपजग्मुषः)
[उनके] साथियों को (दुष्पदा) न पकड़ने योग्य [अति शीघ्रगामी]
(रथ्या) रथ के पहिये के समान (चक्रेण) चक्र [हथियार विशेष] से
(नि अवृणक्) उलट पलट कर दिया है ॥ ८ ॥

भावार्थ—प्रतापी बलवान् राजा शरणागत अनाथों और धार्मिक
प्रसिद्ध पुरुषों की रक्षा करके बीसियों प्रधान शत्रुओं और उनकी सहस्रों

६—(त्वम्) (एतान्) उपस्थितान् (जनराज्ञः) जनानां पामराणां
शासकान् (द्विर्दश) द्विगुणितान् दश । विंशतिसंख्याकान् (सुश्रवसा) बहुकी-
र्तिमता (उपजग्मुषः) गमेर्लिटः कसुः । उपगतान् । सहचरान् (षष्टिम्)
(सहस्रा) सहस्राणि (नवतिम् नव) नवोत्तरनवतिसंख्याकान्, यद्वा नवगुणित-
नवतिसंख्याकान् (श्रुतः) प्रख्यातः (नि) नीचैः (चक्रेण) आयुधविशेषेण
(रथ्या) रथाद् यत् । पा० ४ । ३ । १२१ । रथ—यत् । सुपां सुलुक् ० । पा०
७ । १ । ३६ । विभक्ते राकारः । रथस्येदं चक्रं तेन । रथाङ्गविशेषेण (दुष्पदा)
ईषद्दुःसुषु० । पा० ३ । ३ । १२६ । दुर् + पद गतौ—खल् । दुष्प्राप्तेण ।
अतिशीघ्रगामिना (अवृणक्) वृत्ती वर्जने—लङि मध्यमैकवचनम् । अत्र-
र्जयः । अनाशयः ॥

सेनाओं को अपने चक्र आदि हथियारों से उखाड़ दे, जैसे वेग चलने वाले रथ के पहियों से भूमि उखड़ जाती है । ॥ ६ ॥

त्वमाविथ सुश्रवसं तवोतिभिस्तव त्रामभिरिन्द्र तूर्वयाणम् ।
त्वमस्मै कुत्समतिथिग्वमायुं महे राज्ञे यूने अरन्धनायः ॥१०॥
त्वम् । आविथ । सु-श्रवसम् । तव । ऊ-ति-भिः । तव । त्राम-
भिः । इन्द्र । तूर्वयाणम् ॥ त्वम् । अस्मै । कुत्सम् । अतिथि-
ग्वम् । आयुम् । महे । राज्ञे । यूने । अरन्धनायः ॥ १० ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [वड़े ऐश्वर्यवान् सेनापति] (त्वम्)
तू ने (सुश्रवसम्) बड़ी कीर्ति वाले, (तूर्वयाणम्) शत्रुओं को मारने वाले
शूरों के चलाने वाले वीर को (तव) अपनी (ऊतिभिः) रक्षाओं के साथ
और (तव) अपने (त्रामभिः) पालन साधनों के साथ (आविथ) बचाया
है । (त्वम्) तू (अस्मै) इस (महे) पूजनीय, (यूने) स्वभाव से बलवान्
(राज्ञे) राजा के लिये (कुत्सम्) मिलत्रसार ऋषि, (अतिथिग्वम्) अति-
थियों को प्राप्त होने वाले (आयुम्) चलते हुये मनुष्य को (अरन्धनायः) पूरे
धनी के समान आचरण करता रहे ॥ १० ॥

१०—(त्वम्) (आविथ) ररक्षिथ (सुश्रवसम्) बहुकीर्तिमन्तं युद्ध-
परिडतम् (तव) स्वकीयाभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः (तव) स्वकीयैः
(त्रामभिः) त्रैङ् पालने—मनिन् । पालनसाधनैः (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान्
सेनापते (तूर्वयाणम्) तुर्वी हिंसायाम्—अचं + या गतौ—ल्युट् । तूर्वाणां
शत्रुहिंसकानां शूराणां यानं गमनं यस्मात्तत् वीरम् (त्वम्) (अस्मै) युध्य-
मानाय (कुत्सम्) अ० ४ । २६ । ५ । कुस संश्लेषणे—सप्रत्ययः । सस्य तः ।
संगतिशीलम् ऋषिम् (अतिथिग्वम्) म० ८ । अतिथीनां विदुषां प्रापकम्
(आयुम्) छन्दसीणः । उ० १ । २ । इण् गतौ—उण् । आयवे मनुष्यनाम—
निघ० २ । ३ । गतिशीलं मनुष्यम् (महे) पूजनीयाय (राज्ञे) प्रधानशास-
काय (यूने) निसर्गबलवते (अरन्धनायः) अरन्धन—कयङ्, लिङ्गिरूपम् ।
अरमलं धनं यस्य स इवाचरेः ॥

भावार्थ—राजपुरुष सेनापति लोग अपने-राजा के बचाने के लिये युद्ध परिडित उपकारी वीरों की सदा रक्षा करते रहें ॥ १० ॥

य उद्बुचीन्द्र देवगोपाः सखायस्ते शिवतमा असाम ।

त्वां स्तोषाम् त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतुरं दधानाः ॥११॥

ये । उद्बु-चि । इन्द्र । देव-गोपाः । सखायः । ते । शिव-
तमाः । असाम ॥ त्वाम् । स्तोषाम् । त्वया । सु-वीराः ।
द्राघीयः । आयुः । प्र-तुरम् । दधानाः ॥ ११ ॥

भावार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (उद्बुचि)
उत्तम स्तुति के बीच (देवगोपाः) विद्वानों से रक्षा किये गये (ये) जो हम
(ते) तेरे (सखायः) मित्र होकर (शिवतमाः) अत्यन्त आनन्द युक्त
(असाम) होवें । (त्वया) तेरे साथ (सुवीराः) बड़े वीरों वाले और
(द्राघीयः) अधिक लम्बे और (प्रतुरम्) अधिक श्रेष्ठ (आयुः) जीवन को
(दधानाः) रखते हुये वे हम (त्वाम्) तुम्हें (स्तोषाम्) सराहते रहें ॥ ११ ॥

भावार्थ—राजा और प्रजा आपस में प्रीति करके प्रयत्न करें कि सब
मनुष्य पुरुषार्थी वीर होकर सुख के साथ पूर्ण आयु भोगें ॥ ११ ॥

इति तृतीयेऽनुवाके प्रथमः पर्यायः ॥

सूक्तम् २२ ॥ [सूक्तानि २२-२५ द्वितीयः पर्यायः ॥]

१—६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ४, ५ निचृद् गायत्री; २, ३, ६ गायत्री ॥

राजप्रजाधर्मोपदेशः—राजा और प्रजा के धर्म का उपदेश ॥

११—(ये) वयम् (उद्बुचि) अ० ६ । ४८ । १ । उत्तमायां स्तुतौ
(इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् (देवगोपाः) विद्वद्भिः पालिताः (सखायः)
सुहृदः सन्तः (ते) तव (शिवतमाः) अतिशयेन कल्याणयुक्ताः (असाम)
अस भुवि—लोटे । भवाम् (त्वाम्) (स्तोषाम्) स्तौतेर्लोटे सिबा-
गमश्छान्दसः । वयं स्तवाम् (त्वया) (सुवीराः) श्रेष्ठवीरोपेताः (द्राघीयः)
दीर्घतरम् (आयुः) जीवनम् (प्रतुरम्) प्रकृष्टतरम् (दधानाः) धरन्तः ॥

अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये ।

तुम्पा व्यश्नुही मदम् ॥ १ ॥

अभि । त्वा । वृषभ । सुते । सुतम् । सृजामि । पीतये ॥

तुम्प । वि । अश्नुहि । मदम् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(वृषभ) हे वीर ! (सुते) निचोड़ने पर (सुतम्) निचोड़े हुये [सोम रस] को (पीतये) पीने के लिये (त्वा अभि) तुझे (सृजामि) मैं देता हूं । (तुम्प) तू तृप्त हो और (मदम्) आनन्द को (वि अश्नुहि) प्राप्त हो ॥ १ ॥

भाषार्थ—जैसे राजा सद् वैद्यों द्वारा सोम आदि उत्तम ओषधियों के सेवन से प्रसन्न रहे, वैसे ही मनुष्य वेद आदि सत्य शास्त्रों का तत्त्व ग्रहण कर के आनन्द पावे ॥ १ ॥

मन्त्र १—३ । ऋग्वेद में हैं—८ । ४५ । २२—२४ तथा सामवेद में हैं—
उ० १ । २ तृच ७ तथा मन्त्र १ सामवेद में है—पू० २ । ७ । ७ ॥

मा त्वा मुरा अविष्यवो मोपहस्वान् आ दभन् ।

माकीं ब्रह्मद्विषो वनः ॥ २ ॥

मा । त्वा । मुराः । अविष्यवः । मा । उप-हस्वानः । आ ।

दभन् ॥ माकीम् । ब्रह्म-द्विषः । वनः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(त्वा) तू को (मा) न तौ (मुराः) मूढ़ (अविष्यवः) हिंसा चाहने वाले और (मा) न (उपहस्वानः) ठट्ठा करने वाले लोग

१—(अभि) प्रति (त्वा) त्वाम् (वृषभ) हे वीर । हे इन्द्र (सुते) अभिषुते । संस्कृते (सुतम्) अभिषुतं संस्कृतं सोमम् (सृजामि) त्यजामि । ददामि (पीतये) पानाय (तुम्प) तुम्प तृप्तौ । तृप्तो भव (वि) विविधम् (अश्नुहि) अश्नु व्याप्तौ—परस्मैपदम् । अश्नुष्व । प्राप्नुहि (मदम्) हर्षम् ॥

२—(मा) निषेधे (त्वा) त्वाम् (मुराः) मूढाः—निरु० ६ । ८ (अविष्यवः) अ० ११ । २ । २ । अव हिंसायाम्—इति, कयञ्, उपस्थयः । पर-हिंसेच्छवः (मा) निषेधे (उपहस्वानः) उप+हसतेः—वनिप । उपहास-

सू० २२ [६१०] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(३, ८६६)

(आ दभन्) कभी दबावें । तू (ब्रह्मद्विषः) वेद के बैरियों को (माकीम्) मत (वनः) सेवन कर ॥ २ ॥

भावार्थ—विद्वान् राजा सदा श्रेष्ठ कर्म करे, जिस से कोई दुष्ट उसका उपहास आदि न कर सके ॥ २ ॥

इह त्वा गोपरीणसा मुहे मन्दन्तु राधसे ।

सरो गौरो यथा पिब ॥ ३ ॥

इह । त्वा । गो-परीणसा । मुहे । मन्दन्तु । राधसे ॥

सरः । गौरः । यथा । पिब ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(इह) यहां पर (त्वा) तुझ को (गोपरीणसा) भूमि की प्राप्ति से (मुहे) बड़े (राधसे) धन के लिये (मन्दन्तु) लोग प्रसन्न करें । तू [आनन्द रस को] (पिब) पी, (यथा) जैसे (गौरः) गौर हरिण (सरः) जल [पीता है] ॥ ३ ॥

भावार्थ—राजा राज्य पाकर प्रजा जनों को उन्नति के साथ प्रसन्न करके प्रसन्न होवे, जैसे प्यासा हरिण जल पी कर आनन्द पाता है ॥ ३ ॥

अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे ।

सुनुं सुत्यस्य सत्पतिम् ॥ ४ ॥

अभि । प्र । गो-पतिम् । गिरा । इन्द्रम् । अर्च । यथा ।

विदे ॥ सुनुम् । सुत्यस्य । सत्-पतिम् ॥ ४ ॥

कर्तारः (आ) समन्तात् (दभन्) दम्भु दम्भे—लुङ् । हिंसन्तु (माकीम्) निषेधे । मा शब्दार्थे (ब्रह्मद्विषः) वेदद्वेष्टृन् (वनः) वन संभक्तौ—लङ् । भजेथाः ॥

३—(इह) अत्र राज्ये (त्वा) त्वाम् (गोपरीणसा) णस कौटिल्ये गतौ च—किप् । नसत इति गतिकर्मा—निघ० २ । १४ । भूमिप्राप्त्या (मुहे) पूजनीयाय । महुते (राधसे) धनाय (सरः) जलम् (गौरः) गौरमृगः (यथा) (पिब) आनन्द रसस्य पानं कुरु ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्य !] (गोपतिम्) पृथिवी के पालक, (सत्यस्य) सत्य के (सूनुम्) प्रेरक, (सत्पतिम्) सत्पुरुषों के रक्षक (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले राजा] को, (यथा) जैसा (विदे) वह है, (गिरा) स्तुति के साथ (अभि) सब ओर से (प्र) अच्छे प्रकार (अर्च) तू पूज ॥ ४ ॥

भावार्थ—जैसे राजा उत्तम गुण वाला हो, वैसे ही मनुष्यों को उसकी यथार्थ बड़ाई करनी चाहिये ॥ ४ ॥

मन्त्र ४—६ ऋग्वेद में हैं—८। ६६ [सायणभाष्य ५८]। ४—६ और सामवेद में हैं—३० ७। १। तृच १ और मन्त्र १ सामवेद में है—५० २। ८। ४। तीनों मन्त्र आगे हैं—अथर्व० २०। ६२। १—३ ॥

आ हरयः ससृजिरेरुषीरधि बृर्हिषि ।

यत्राभि संनवामहे ॥ ५ ॥

आ । हरयः । ससृजिरे । अरुषीः । अधि । बृर्हिषि ॥

यत्र । अभि । सम्-नवामहे ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(हरयः) दुख हरने वाले मनुष्य (अरुषीः) गति शील [उद्योगी] प्रजाओं को (बृर्हिषि) बढ़ती के स्थान में (अधि) अधिकार पूर्वक (आ ससृजिरे) लाये हैं, (यत्र) जहां पर [तुझ राजा को] (अभि) सब ओर से (संनवामहे) हम मिलकर सराहते हैं ॥ ५ ॥

४—(अभि) सर्वतः (प्र) प्रकर्षेण (गोपतिम्) भूपालम् (गिरा) स्तुत्या (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं राजानम् (अर्च) पूजय (विदे) विद सत्तायाम्, लङर्थे लिट्, छान्दसं रूपम् । विविदे । विद्यते स इन्द्रः (सूनुम्) अ० ६। १। २। षू प्रेरणे—नु । प्रेरकम् । प्रचारकम् (सत्यस्य) यथार्थज्ञानस्य (सत्पतिम्) सत्पुरुषाणां रक्षकम् ॥

५—(हरयः) हरयो मनुष्यनाम—निघ० २। ३। दुःखहर्तारो विद्वांसः (आ ससृजिरे) सृज विसर्गे—लिट्, रुडागमः । आ ससृजिरे । आनीतवन्तः (अरुषीः) अ० २०। १७। ६। ऋ गतौ—उषच्, ङीष् । गतिशीलाः । उद्योगिनीः प्रजाः (अधि) अधिकारपूर्वकम् (बृर्हिषि) बृह बृद्धौ—इसुन् । वृद्धि-स्थाने (यत्र) यस्मिन् स्थाने (अभि) सर्वतः (संनवामहे) एव स्तुतौ । राजानं वयं मिलित्वा स्तुमः ॥

भावार्थ—जिस राजा की सुनीति से विद्या द्वारा उन्नति होवे, प्रजा सहित विद्वान् जन उसके गुणों का गान करें ॥ ५ ॥

इन्द्राय गावः आशिरं दुदुहे वज्रिणे मधु ।

यत् सीमुपहरे विदत् ॥ ६ ॥

इन्द्राय । गावः । आ-शिरम् । दुदुहे । वज्रिणे । मधु ॥

यत् । सीम् । उप-हरे । विदत् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(वज्रिणे) वज्रधारी (इन्द्राय) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले राजा] के लिये (गावः) वेदवाणियों ने (आशिरम्) सेवने वा पकाने योग्य पदार्थ [दूध, दही, घी आदि] को और (मधु) मधुविद्या [यथार्थ ज्ञान] को (दुदुहे) भर दिया है । (यत्) जब कि उसने [उन वेदवाणियों] को (उपहरे) अपने पास (सीम्) सब प्रकार (विदत्) पाया ॥ ६ ॥

भावार्थ—ऐश्वर्यवान् पुरुष वेदवाणियों से सुशिक्षित होकर दूध आदि भोग्य पदार्थ प्राप्त करके यथार्थ ज्ञान बढ़ावे ॥ ६ ॥

सूक्तम् २३ ॥

१—६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १—७, ६ गायत्री ; ८ निचृद् गायत्री छन्दः ॥

राजप्रजाकर्तव्योपदेशः—राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

६—(इन्द्राय) परमैश्वर्यवते राज्ञे (गावः) वेदवाणयः (आशिरम्) अपस्पृधेथामानृचु० । पा० ६ । १ । ३६ । आङ् + श्रिञ् सेवायां श्रीञ् पाके वा—किप्, धातोः शिर इत्यादेशः । यद्वा । अशेर्नित् । उ० १ । ५२ । आङ् + अश भोजने अश व्याप्तौ वा—किरन् नित् । आशीराश्रयणाद् वाश्रयणाद् वा, अथे-यमितराशीराशास्तेः—निरु० ६ । ८ । आश्रययोग्यं परिपाकयोग्यं वा दुग्ध-दधिघृतादिपदार्थम् (दुदुहे) दुह । प्रपूरणे लिटि रुट् । दुदुहिरे । पूरितवत्पः (वज्रिणे) वज्रधारिणे (मधु) मधुविद्याम् । यथार्थज्ञानम् (यत्) यदा (सीम्) अवितृस्तृ० तु० ३ । १५६ । षिञ् बन्धने—ईप्रत्ययः । सीमिति परिग्रहार्थीयो वा पदपूरणो वा सर्वत इति वा—निरु० १ । ७ । सर्वतः (उपहरे) उप + हृव् कौटिल्ये—अप् । निक्टे । युद्धे (विदत्) विद्वत् लामे—लुङ् । प्राप्तवान् स इन्द्र-स्ता वाणीः ॥

आ तू न इन्द्र मद्रयग्धुवानः सोमपीतये ।

हरिभ्यां याह्यद्रिवः ॥ १ ॥

आ । तु । नः । इन्द्र । मद्रयक् । हुवानः । सोम-पीतये ॥

हरि-भ्याम् । याहि । अद्रि-वः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(अद्रिवः) हे वज्रधारी (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (सोमपीतये) पदार्थों की रक्षा के लिये (हुवानः) बुलाया गया, (मद्रयक्) मुझ को प्राप्त होता हुआ तू (हरिभ्याम्) दो घोड़ों [के समान व्यापक बल और पराक्रम] से (नः) हम को (तु) शीघ्र (आ याहि) प्राप्त हो ॥ १ ॥

भावार्थ—राजा अपनी प्रजा के पदार्थों की रक्षा के लिये बल और पराक्रम के साथ शीघ्र उपाय करे ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—३ । ४१ । १—६ ॥

सुतो होता न ऋत्विग्यस्तिस्तुरे बृहिरानुषक् ।

अयुञ्जन् प्रातरद्रयः ॥ २ ॥

सुतः । होता । नः । ऋत्विग्यः । तिस्तुरे । बृहिः । आनुषक् ॥

अयुञ्जन् । प्रातः । अद्रयः ॥ २ ॥

१—(आ याहि) आगच्छ (तु) शीघ्रम् (नः) अस्मान् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवन् राजन् (मद्रयक्) ऋत्विग्यदधृक्० । पा० ३ । २ । ५६ । अस्मत् + अञ्चु गतिपूजनयोः—किन् । प्रत्ययोत्तरपदयोश्च । पा० ७ । २ । ६८ । अस्मच्छब्दस्यैकवचने मपर्यन्तस्य म इत्यादेशः । विष्वग्देवयोश्च ढेरद्रयश्चतावप्रत्यये । पा० ६ । ३ । ६२ । इति टेः अद्रि इत्यादेशः । माम् अञ्चति प्राप्नोति यः सः (हुवानः) हूयमानः (सोमपीतये) अ० १७ । १ । १० । सोमानां पदार्थानां पीती रक्षणं यस्मिन् व्यवहारे तस्मिन्—दयानन्दभाष्य ऋक्० १ । २१ । ३ (हरिभ्याम्) अश्वसदृशाभ्यां व्यापकाभ्यां बलपराक्रमाभ्याम् (अद्रिवः) अ० २० । २० । ४ । हे वज्रिन् ॥

भाषार्थ—(नः) हमारा (होता) ग्रहण करने वाला, (ऋत्विजः) सब ऋतुओं में प्राप्त होने वाला [राजा] (सत्तः) बैठा है, (बर्हिः) उत्तम आसन (आनुषक्) निरन्तर [यथाविधि] (तिस्तिरे) बिछाया गया है, (अद्रयः) मेघ [के समान उपकारी पुरुष] (प्रातः) प्रातः काल में (अयुजन्) जुड़ गये हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग एकत्र होकर प्रजापति के राजा का उत्तम आसन आदि से सत्कार कर के हित के लिये निवेदन करें ॥ २ ॥

इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्तु आ बर्हिः सीद ।

वीहि शूर पुरोलाशम् ॥ ३ ॥

इमा । ब्रह्म । ब्रह्म-वाहः । क्रियन्ते । आ । बर्हिः । सीदु ॥

वीहि । शूर । पुरोलाशम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(ब्रह्मवाहः) हे अन्न पहुंचाने वाले ! (इमा) यह (ब्रह्म) वेद ज्ञान (क्रियन्ते) किये जाते हैं, (बर्हिः) उत्तम आसन पर (आ सीद) बैठ । (शूर) हे शूर ! [दुष्ट नाशक] (पुरोलाशम्) अच्छे वने हुए अन्न का

२—(सत्तः) षट्सु विशरणगत्यवसादनेषु—क । निषण्णोऽस्ति (होता) आदाता (नः) अस्माकम् (ऋत्विजः) अ० ३ । २० । १ । सर्वकालेषु प्राप्तः (तिस्तिरे) स्तृज् आच्छादने—कर्मणि लिट् । ऋत इदूधातोः । पा० ७ । १ । १०० । इति इत्वम्, द्विर्वचनम् । शपूर्वाः स्त्रयः । पा० ७ । ४ । ६१ । इति तकारस्य शेषः । लिटस्तत्कयोरेशिरेच् । पा० ३ । ४ । ८२ । इति एश् इत्यादेशः । आच्छादितं बभूव (बर्हिः) उत्तममासनम् (आनुषक्) अ० ४ । ३२ । १ । निरन्तरम् । यथाविधि (अयुजन्) संगता अभूवन् (प्रातः) प्रातःकाले (अद्रयः) अद्रिर्मेघनाम—निघ० १ । १० । मेघा इवोपकारिणः पुरुषाः ॥

३—(इमा) इमानि (ब्रह्म) ब्रह्माणि । वेदज्ञानानि (ब्रह्मवाहः) वसे-
रित् । उ० ४ । २१८ । वह प्रापणे—असुन् णित् । ब्रह्म अन्ननाम—निघ० २ । ७ ।
हे अन्न प्रापक । अन्नदातः (क्रियन्ते) अनुष्ठायन्ते (बर्हिः) उत्तमासनम्
(आसीद) उपविश (वीहि) भक्षय (शूर) हे दुष्टनाशक (पुरोलाशम्)

(वीहि) भोजन कर ॥ ३ ॥

भावार्थ—प्रजागण अन्नदाता राजा को उत्तम आसन पर बैठा कर और उत्तम पदार्थ भेंट कर के वेद अनुकूल निवेदन करें ॥ ३ ॥

रुरन्धि सवनेषु ण एषु स्तोमेषु वृत्रहन् ।

उक्थेष्विन्द्र गिर्वणः ॥ ४ ॥

रुरन्धि । सवनेषु । नः । एषु । स्तोमेषु । वृत्र-हन् ॥

उक्थेषु । इन्द्र । गिर्वणः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(वृत्रहन्) हे धन रखने वाले ! (गिर्वणः) हे स्तुतियों से सेवनीय (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (एषु) इन (सवनेषु) ऐश्वर्यों में, (स्तोमेषु) यज्ञादियों में और (उक्थेषु) वचनों में (नः) हमें (रुरन्धि) रमा ॥ ४ ॥

भावार्थ—राजा प्रयत्न करे कि सब लोग मन, वचन, कर्म से पुरुषार्थ करके सुखी रहे ॥ ४ ॥

मतयः सोमपामुरुं रिहन्ति शवसुस्पतिम् ।

इन्द्रं वृत्सं न मातरः ॥ ५ ॥

मतयः । सोम-पाम् । उरुम् । रिहन्ति । शवसः । पतिम् ॥

इन्द्रम् । वृत्सम् । न । मातरः ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(मतयः) बुद्धिमान् लोग (सोमपाम्) ऐश्वर्य के रक्षक

अ० ८ । ८ । २२ । सुसंस्कृतमन्त्रम् ॥

४—(रुरन्धि) रमतेर्लोटि शपः श्लुः, हेर्धिः, अन्तर्गतण्यर्थः । रमय (सवनेषु) ऐश्वर्येषु (नः) अस्मान् (एषु) (स्तोमेषु) प्रशंसासु (वृत्रहन्) वृत्रं धन नाम—निघ० २ । १० । हन्तिर्गतिकर्मा—निघ० २ । १४ । हे धनप्रापक (उक्थेषु) वचनेषु (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् (गिर्वणः) अ० २० । १५ । ४ । हे स्तुतिभिः सेवनीय ॥

५—(मतयः) मेधाविनः—निघ० ३ । १५ । (सोमपाम्) ऐश्वर्यरक्षकम्

(उरुम्) महान्, (शवसः) बल के (पतिम्) पालने वाले (इन्द्रम्) इन्द्र
[बड़े ऐश्वर्यवान् राजा] को (रिहन्ति) प्यार करते हैं; (न) जैसे (मातरः)
मातायें [गौर्यें] (वत्सम्) बछड़े को ॥ ५ ॥

भावार्थ—जैसे गौर्यें अपने बछड़ों से प्रीति करती हैं, वैसे ही बुद्धि-
मान् लोग न्यायकारी राजा से प्रीति करें ॥ ५ ॥

स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे ।

न स्तोतारं निदे करः ॥ ६ ॥

सः । मन्दस्व । हि । अन्धसः । राधसे । तन्वा । महे ॥

न । स्तोतारम् । निदे । करः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—[हे राजन् !] (सः) सो तू (हि) ही (तन्वा) अपने
शरीर के साथ (महे) बड़े (राधसे) धन के लिये (अन्धसः) अन्ध से
(मन्दस्व) आनन्द कर, और (स्तोतारम्) स्तुति करने वाले विद्वान् को
(निदे) निन्दा के लिये (न) मत (करः) कर ॥ ६ ॥

भावार्थ—शरीर और आत्मा की उन्नति चाहने वाला पुरुष विद्वानों
की निन्दा कभी न करे ॥ ६ ॥

वृयमिन्द्र त्वाययौ हविष्मन्तो जरामहे ।

उत त्वमस्मयुर्वसो ॥ ७ ॥

वृयम् । इन्द्र । त्वा-ययः । हविष्मन्तः । जरामहे ॥

उत । त्वम् । अस्म-युः । वसो इति ॥ ७ ॥

(उरुम्) महान्तम् (रिहन्ति) रिहतिरर्चतिकर्मा—निघ० ३। १४। कामयन्ते
(शवसः) बलस्य (पतिम्) पालकम् (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं राजानम्
(वत्सम्) गोशिशुम् (न) इव (मातरः) जनन्यो गावः ॥

६—(सः) स त्वम् (मन्दस्व) आनन्द (हि) अवश्यम् (अन्धसः)
अज्ञात् (राधसे) संसाधकाय धनाय (तन्वा) शरीरेण (महे) महते (न)
निषेधे (स्तोतारम्) स्तावकं विद्वांसम् (निदे) निदि कुत्सायाम्—किप्,
उभभावः । निन्दायै (करः) करोतेल्लेटि, अडागमः । कुर्याः ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] (त्वायवः) तुझे चाहने वाले (उत) और (हविष्मन्तः) देने योग्य वस्तुओं वाले (वयम्) हम [तुम्हें को] (जरामहे) सराहते हैं । (वसो) हे वसु ! [श्रेष्ठ वा निवास कराने वाले] (त्वम्) तू (अस्मयुः) हमें चाहने वाला है ॥ ७ ॥

भावार्थ—राजा और प्रजा प्रीति कर के उन्नति के साथ सुखी रहें ॥ ७ ॥

मारे अस्मद् वि मुमुचो हरिप्रियार्वाङ् याहि ।

इन्द्र स्वधावो मत्स्वेह ॥ ८ ॥

मा । आरे । अस्मत् । वि । मुमुचुः । हरि-प्रिय । अर्वाङ् ।

याहि ॥ इन्द्र । स्वधा-वः । मत्स्व । इह ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(हरिप्रिय) हे मनुष्यों के प्रिय ! [अपने को] (अस्मत्) हम से (आरे) दूर (मा वि मुमुचः) कभी न छोड़, (अर्वाङ्) इधर चलता हुआ (याहि) चल । (स्वधावः) हे बहुत अन्न वाले (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (इह) यहां (मत्स्व) आनन्द कर ॥ ८ ॥

७—(वयम्) (इन्द्र) हैं परमैश्वर्यवान् राजन् (त्वायवः) सुप आत्मनः क्यच् । पा० ३ । १ । ८ । युष्मद्—क्यच् । प्रत्ययेत्तरपदयोश्च । पा० ७ । २ । ६८ । मपर्यन्तस्य त्वादेशः । कयाच्छन्दसि । पा० ३ । २ । १७० । इति उप्रत्ययः । त्वां कामयमानाः (हविष्मन्तः) दातव्यवस्तूपेताः (जरामहे) स्तुमः—त्वाम् (उत) अपि च (त्वम्) (अस्मयुः) अस्मद्—क्यचि उप्रत्ययो दकारलोप-श्छान्दसः । अस्मान् कामयमानः (वसो) हे श्रेष्ठ । निवासयितः ॥

८—(मा) निषेधे (आरे) दूरे (अस्मत्) अस्मत्तः (वि) वियुज्य (मुमुचः) मुचल मोक्षणे एयन्तस्य छान्दसे लुङि चङि रूपम्, अभ्यासस्य दीर्घाभावः, माङ्योगेऽङभावः । मोचय—आत्मानम् (हरिप्रिय) हरयो मनुष्य—नाम—निघ० २ । ३ । हरीणां मनुष्याणां प्रिय हितकर (अर्वाङ्) अभिमुखं गच्छन् (याहि) गच्छ (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् (स्वधावः) बहन्नवन (मत्स्व) आनन्द (इह) अत्र ॥

भावार्थ—जहां पर राजा और प्रजा प्रीति के साथ रहते हैं और कोई किसी को नहीं छोड़ते, उस राज्य में अन्न आदि बढ़ते रहते हैं ॥ ८ ॥

अर्वाञ्चं त्वा सुखे रथे वहतामिन्द्र केशिना ।

घृतस्नू बर्हिः आसदे ॥ ८ ॥

अर्वाञ्चम् । त्वा । सु-खे । रथे । वहताम् । इन्द्र । केशिना ॥

घृतस्नु इति घृत-स्नू । बर्हिः । आ-सदे ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (सुखे) सुख देने वाले [सब ओर चलने वाले] (रथे) रथ में (आसदे) बैठने के लिये (केशिना) प्रकाश [अग्नि] वाले और (घृतस्नू) जल को भाप से टपकाने वाले [दो पदार्थ] (अर्वाञ्चम्) नीचे चलते हुये (त्वा) तुझ को (बर्हिः) आकाश में (वहताम्) पहुंचावें ॥ ८ ॥

भावार्थ—विद्वान् राजा विद्वानी शिल्पियों द्वारा अग्नि और जल से चलने वाले विमान को पृथिवी से आकाश में और आकाश से पृथिवी पर जाने के लिये बनवावे ॥ ८ ॥

सूक्तम् २४ ॥

१—६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ४—७ गायत्री; २, ३, ८, ६ निचृद् गायत्री ॥

विद्वद्गुणोपदेशः—विद्वानों के गुणों का उपदेश ॥

उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिरम् ।

६—(अर्वाञ्चम्) अधोगच्छन्तम् (त्वा) त्वाम् (सुखे) सुखकरे सर्वदिक्षु गमनशीले (रथे) रमणीये याने विमाने (वहताम्) द्विकर्मकः । प्रापयताम् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् (केशिना) अ० ६ । १० । २६ । काश्ट दीप्तौ—अच् घञ् वा, इति, काशी सन् केशी । केशी केशा रश्मयस्तैस्त-द्वान् भवति काशनाद् वा प्रकाशनाद् वा—निर० १२ । २५ । प्रकाशवन्तौ । अग्नि-युक्तौ (घृतस्नू) घृतम् उदकनाम—निघ० १ । १२ । षण् प्रस्रवणे—किप् । घृतस्य जलस्य स्तु वाष्पेण स्रवणं ययोस्तौ पदार्थौ (बर्हिः) अन्तरिक्षं प्रति—निघ० १ । ३ (आसदे) कृत्यार्थे तवैकेन केन्यत्वनः । पा० ३ । ४ । १४ । सीदतेः केन-प्रत्ययः कृत्यार्थे । आसादनाय । उपवेशनाय ॥

हरिभ्यां यस्ते अस्मयुः ॥ १ ॥

उप॑ । नुः । सुतस् । आ । ग॒हि । सोम॑स् । इन्द्र॑ ।
गो-आ॑शिरस् ॥ हरि॑-भ्यास् । यः । ते । अ॒स्म-युः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले विद्वान्] (नः) हमारे (सुतम्) सिद्ध किये हुये, (गवाशिरम्) पृथिवी पर फैले हुये (सोमम्) पेश्वर्य को (उप) समीप में (आ गहि) सब ओर से प्राप्त हो, (यः) जो (ते) तेरा [पेश्वर्य] (हरिभ्याम्) दो घोड़ों [के समान व्यापक बल और पराक्रम] से (अस्मयुः) हमें चाहने वाला है ॥ १ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग पृथिवी के सब वैभवों को एक दूसरे के लिये उपयोगी बनावें ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—३। ४२। १—६ ॥

तमिन्द्र॑ मद॒मा ग॑हि ब॒र्हि॒ष्ठां ग्राव॑भिः सुतस् ।

कुवि॑न्नुव॒स्य तृ॒ष्णवः॑ ॥ २ ॥

तस् । इन्द्र॑ । मद॑स् । आ । ग॒हि । ब॒र्हिः-स्थास् । ग्राव॑-भिः ।

सुतस् ॥ कुवि॑त् । नु । अ॒स्य । तृ॒ष्णवः॑ ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले विद्वान्] तू (ग्रावभिः) पण्डितों करके (सुतम्) सिद्ध किये हुये, (बर्हिष्ठां) उत्तम आसन पर

१—(उप) समीपे (नः) अस्माकम् (सुतम्) संस्कृतम् (आ) समन्तात् (गहि) प्राप्नुहि (सोमम्) पेश्वर्यम् (इन्द्र) हे परमेश्वर्यतन् विद्वान् (गवाशिरम्) अ० २० । २२ । ६ । अशेर्नित् । उ० १ । ५२ । गो + आङ् + अश् व्याप्तौ—किन् । पृथिव्यां व्याप्तम् (हरिभ्याम्) । अ० २० । २३ । १ । अश्वसदृशाभ्यां व्यापकाभ्यां बलपराक्रमाभ्याम् (यः) सोमः । पेश्वर्यम् (ते) तव (अस्मयुः) अ० २० । २३ । ७ । अस्मान् कामयमानः ॥

२—(तम्) प्रसिद्धम् (इन्द्र) (मदम्) मदी हर्षे—अच् । कल्याणकरे पदार्थम् (आ) समन्तात् (गहि) प्राप्नुहि (बर्हिष्ठां) बर्हिस् + ष्ठा गति-

रक्खे हुये (तम्) उस (मदम्) कल्याणकारक पदार्थ को (तु) शीघ्र (आ) सब प्रकार (गहि) प्राप्त हो, वे [परिडत लोग] (कुवित्) बहुत प्रकार से (अस्य) इस [कल्याण कारक पदार्थ] का (तृणवः) हर्ष पाने वाले हैं ॥२॥

भावार्थ—विद्वान् लोग प्रीति के साथ एक दूसरे को उत्तम पदार्थों का दान कर के आनन्द पावें ॥ २ ॥

इन्द्रमि॒त्था गि॒रो म॑मा॒च्छागु॑रिषि॒ता इ॒तः ।

आ॒वृ॒ते सोम॑पी॒तये ॥ ३ ॥

इन्द्र॑म् । इ॒त्था । गि॒रः । म॑म । अ॒च्छ । अ॒गुः । इ॒षि॒ताः ।

इ॒तः ॥ आ॒वृ॒ते । सोम॑-पी॒तये ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(इत्था) इस प्रकार से (मम) मेरी (इषिताः) प्रेरणा की गयीं (गिरः) वाणियां (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] को (सोमपीतये) सोमरस [उत्तम ओषधि] पीने के लिये (आवृते) घूमने को (अच्छ) अच्छे प्रकार (इतः) यहां से (अगुः) गयीं हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग विद्वानों का सत्कार उत्तम रीति से करते रहें ॥ ३ ॥

इन्द्रं॑ सोम॑स्य पी॒तये स्तोमै॑रि॒ह ह॑वामहे ।

उ॒क्थेभिः॑ कु॒वि॒दाग॑मत् ॥ ४ ॥

निवृत्तौ—क्विप् । बर्हिषि उत्तमासने स्थितम् (आवमिः) अ० ३ । १० । ५ । गृ विज्ञापने स्तुतौ च—कनिप् । शास्त्रविज्ञापकैः परिडतैः (सुतम्) संस्कृतम् (कुवित्) बहुनाम-निघ० ३ । १ । बहुप्रकारेण (तु) क्षिप्रम् (अस्य) कल्याणकरस्य पदार्थस्य (तृणवः) त्रसिगृधिधृषिदिपेः क्नुः । पा० ३ । २ । १४० । तृप प्रीणने—क्नु । तृप्तिशीलाः ॥

३—(इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं पुरुषम् (इत्था) अनेन प्रकारेण (गिरः) वाणयः (मम) (अच्छ) सुरीत्या (अगुः) इण् गतौ—लुङ् । अगमन् । प्राप्ताः (इषिताः) प्रेरिताः (इतः) अस्मात् स्थानात् (आवृते) वृत्तु वर्तने-सम्पदादिः (क्विप् । आवर्तनाय । अगमनाय (सोमपीतये) महौषधिरसस्य पानाय ॥

इन्द्रम् । सोमस्य । पीतये । स्तोमैः । इह । हवामहे ॥
उक्थेभिः । कुवित् । आ-गमत् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले पुरुष] को (सोमस्य) सोमरस [महौषधि] के (पीतये) पीने के लिये (स्तोमैः) स्तुतियों के साथ (इह) यहां (हवामहे) हम बुलाते हैं । वह (उक्थेभिः) अपने उपदेशों के साथ (कुवित्) बहुत बार (आगमत्) आवे ॥ ४ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग विद्वानों के बुलाने से प्रसन्न होकर जाया आया करें ॥ ४ ॥

इन्द्र सोमाः सुता इमे तान् दधिष्व शतक्रतो ।
जुठरे वाजिनीवसो ॥ ५ ॥

इन्द्र । सोमाः । सुताः । इमे । तान् । दधिष्व । शतक्रतो
इति शत-क्रतो ॥ जुठरे । वाजिनीवसो इति वाजिनी-वसो ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(शतक्रतो) हे सैकड़ों कर्मों वा बुद्धियों वाले, (वाजिनी-वसो) अन्नयुक्त क्रियाओं में वसाने वाले ! (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले पुरुष] (जुठरे) प्रसिद्ध हुये जगत् में (इमे) यह (सोमाः) पदार्थ (सुताः) उत्पन्न हुये हैं, (तान्) उनको (दधिष्व) धारण कर ॥ ५ ॥

४—(इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं पुरुषम् (सोमस्य) महौषधिरसस्य (पीतये) पीनाय (स्तोमैः) स्तोत्रैः (इह) अत्र (हवामहे) आह्वयामः (उक्थेभिः) कथनीयोपदेशैः (कुवित्) म० २ । बहुवारम् (आगमत्) गमेल्लेखि अडागमः । आगच्छेत् ॥

५—(इन्द्र] हे परमैश्वर्यवन् (सोमाः) पदार्थाः (सुताः) निष्पन्नाः (इमे) दृश्यमानाः (तान्) (दधिष्व) धत्स्व । धर (शतक्रतो) हे बहुकर्मन् । बहुप्रसन्न (जुठरे) जनेररष्ट च । उ० ५ । ३८ । जनी प्रादुर्भावे—अरप्रत्ययः, उश्चान्तादेशः । प्रादुर्भूते जगति । जातेऽस्मिन् जगति दयानन्दभाष्ये (वाजिनीवसो) वाजोऽन्नम्—निघ० २ । ७ । तस्माद्—इति, डीप् । हे अन्नयुक्तासु क्रियासु वासयितः ॥

भाषार्थ—मनुष्य सृष्टि के पदार्थों की विद्या जानकर ऐश्वर्यवान् होवे ॥ ५ ॥

विद्वा हि त्वा धनंजयं वाजेषु दधृषं कवे ।

अधा ते सुम्नमीमहे ॥ ६ ॥

विद्वा । हि । त्वा । धनम्-जयम् । वाजेषु । दधृषम् । कवे ॥

अध । ते । सुम्नम् । ईमहे ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(कवे) हे विद्वान् ! (त्वा) तुझ को (हि) ही (धनंजयम्) धन जीतने वाला और (वाजेषु) सङ्ग्रामों में (दधृषम्) अत्यन्त निर्भय (विद्वा) हम जानते हैं । (अध) इस लिये (ते) तेरे लिये (सुम्नम्) सुख की (ईमहे) हम प्रार्थना करते हैं ॥ ६ ॥

भाषार्थ—जो मनुष्य धनी, शूर और परोपकारी होवे, उसके लिये सुख पहुँचाने को सब प्रयत्न करे ॥ ६ ॥

इममिन्द्र गवाशिरं यवाशिरं च नः पिब ।

आगत्या वृषभिः सुतम् ॥ ७ ॥

इमम् । इन्द्र । गो-आशिरम् । यव-आशिरम् । च । नः ।

पिब ॥ आ-गत्य । वृष-भिः । सुतम् ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] (नः) हमारे (इमम्) इस (वृषभिः) बलवानों करके (सुतम्) सिद्ध किये गये (गवाशिरम्) पृथिवी पर फैले हुये (च) और (यवाशिरम्) अन्न के भोजन वाले

६—(विद्वा) वयं जानीमः (हि) एव (त्वा) त्वाम् (धनंजयम्) अ० ३ । १४ । २ । धनस्य जेतारम् (वाजेषु) सङ्ग्रामेषु (दधृषम्) जि धृषा प्रागल्भ्यै यङ्लुकि पचाद्यच् । अतिप्रगल्भम् (कवे) हे मेधाविन्—निध० ३ । १५ (अध) अथ । अतः (ते) तुभ्यम् (सुम्नम्) सुखम् (ईमहे) याचामहे ॥

७—(इमम्) (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् (गवाशिरम्) म० १ । पृथिव्यां व्याप्तम् (यवाशिरम्) अशेर्नित् । उ० १ । ५२ । यव + आङ् + अश भोजने—किरन् । अन्नभोजनयुक्तं पदार्थम् (च) (नः) अस्माकम् (पिब) (आगत्य)

पदार्थ को (आगत्य) आकर (पिब) पी ॥ ७ ॥

भावार्थ—मनुष्य संसार के बीच उत्तम पदार्थों का भोजन पान कर के बलवान् होवें ॥ ७ ॥

तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्थे ३ सोमं चोदामि पीतये ।

एष ररन्तु ते हृदि ॥ ८ ॥

तुभ्यं । इत् । इन्द्र । स्वे । ओक्थे । सोमम् । चोदामि ।

पीतये ॥ एषः । ररन्तु । ते । हृदि ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले जन] (तुभ्य) तेरे लिये (इत्) ही (स्वे) अपने (ओक्थे) घर में (पीतये) पीने को (सोमम्) सोमरस [महौषधि] (चोदयामि) भेजता हूं । (एषः) यह (ते) तेरे (हृदि) हृदय में (ररन्तु) अत्यन्त रमे ॥ ८ ॥

भावार्थ—मनुष्य उत्तम उत्तम पदार्थों को रुचि के साथ खावें जिससे हृदय में उत्तम रस उत्पन्न होकर सब शरीर में फैले और बल बढ़े ॥ ८ ॥

त्वां सुतस्य पीतये मृत्नमिन्द्र हवामहे ।

कुशिकासो अवस्यवः ॥ ९ ॥

त्वाम् । सुतस्य । पीतये । मृत्नम् । इन्द्र । हवामहे ॥

कुशिकासः । अवस्यवः ॥ ९ ॥

अस्मान् प्राप्य (वृषभिः) बलवद्भिः (सुतम्) साधितम् ॥

८—(तुभ्य) सुपां सुलुक्० । पा० ७ । १ । ३६ । विभक्तेर्लुक् । तुभ्यम् (इत्) एव (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् (स्वे) स्वकीये (ओक्थे) ऋहलोऽर्थत् । पा० ३ । १ । १२४ । उच समवाये—एयत् कुत्वं च । ओक्थे । गृहे (सोमम्) महौषधिरसम् (चोदामि) प्रेरयामि (पीतये) पानाय (एषः) सोमः (ररन्तु) रसु क्रीडायाम्—यङ्लुकि लोट्, नुमभावश्छान्दसः साहितिको दीर्घः । भृशं रमताम् (ते) तव (हृदि) हृदये ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] (त्वां प्रज्ञम्) तुम्हें पुराने को (सुतस्य) सिद्ध किये हुये रस के (पीतये) पीने के लिये (कुशिकासः) मिलने वाले, (अवस्यवः) रक्षा चाहने वाले हम (हवामहे) बुलाते हैं ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्य अनुभवी पुराने बुद्धिमानों से आदर करके शिक्षा लेवें ॥ ६ ॥

सूक्तम् २५ ॥

१—७॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ३—५ निचृज् जगती ; २ जगती ; ६ आर्षी त्रिष्टुप् ; ७ विराडार्षी त्रिष्टुप् ॥

विद्वत्कर्तव्योपदेशः—विद्वानों के कर्तव्य का उपदेश ॥

अश्वावति प्रथमो गोषु गच्छति सुप्रवीरिन्द्र मर्त्यस्तवो-
तिभिः । तमित् पुणसि वसुना भवीयसा सिन्धुमापो यथा-
भितो विचेतसः ॥ १ ॥

अश्व-वति । प्रथमः । गोषु । गच्छति । सुप्र-वीरिन्द्र । मर्त्यः । तव । ऊ-ति-भिः ॥ तम् । इत् । पुणसि । वसुना । भवीयसा । सिन्धुम् । आपः । यथा । अभितः । वि-चेतसः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमेश्वर वा राजन्] (मर्त्यः) मनुष्य (तव) तेरी (ऊतिभिः) रक्षाओं से (अश्वावति) उत्तम

६—(त्वाम्) (सुतस्य) संस्कृतस्य रसस्य (पीतये) पानाय (प्रज्ञम्) नश्च पुराणे प्रात् । वा० पा० ५ । ४ । २५ । प्र—ज्ञप्रत्ययः । पुराणम्—निघ० ३ । २७ । अनुभविपुरुषम् (इन्द्र) (हवामहे) आह्वयामः (कुशिकासः) वृश्चिकृष्योः किकन् । उ० २ । ४० । कुश संश्लेषणे—किकन्, असुगागमः । कुशिको राजा बभूव क्रोशतेः शब्दकर्मणः क्रंशतेर्वा स्यात् प्रकाशयतिकर्मणः साधुविक्रोशयितार्थानामिति । वा—निरु० २ । २५ । संगन्तारो वयम् (अव-स्यवः) अ० २० । १४ । १ । रक्षाकामाः ॥

१—(अश्वावति) मन्त्रे सोमाश्वे० । पा० ६ । ३ । १३१ । इति दीर्घः । श्रेष्ठाश्वैर्युक्ते सैन्ये (प्रथमः) मुख्यः (गोषु) भूमिदेशेषु (गच्छति) चक्षति (प्रावीः) अविदुस्तत्तन्निश्चय ईः । उ० ३ । १५८ । अव रक्षणे—ईप्रत्ययः । सुरक्षकः

घोड़ों वाले [सेनादल] में (प्रथमः) पहिला [प्रधान] (प्रावीः) बड़ा रत्नक होकर (गोषु) भूमियों पर (गच्छति) चलता है । (तम् इत्) उसको ही (भवीयसा) अति अधिक (वसुना) धन से (पृणक्षि) तू भर देता है, (यथा) जैसे (अभितः) सब ओर से (विचेतसः) विविध प्रकार जाने गये (आपः) जल समूह (सिन्धुम्) समुद्र को [भरते हैं] ॥ १ ॥

भावार्थ—जो राजा और सेनापति आदि कार्यकर्ता परमेश्वर में विश्वास करके एक दूसरे को रक्षा और सत्कार करते हैं, वे सब देशों में विजयी होकर बहुत धनी होते हैं ॥ १ ॥

मन्त्र १—६ ऋग्वेद में हैं—१ । ८३ । १—६ ॥

आपो न देवीरुपं यन्ति होत्रियमुवः पश्यन्ति विततं यथा रजः । प्राचैर्देवासुः प्र णयन्ति देवयुं ब्रह्मप्रियं जोषयन्ते वरा इव ॥ २ ॥

आपः । न । देवीः । उप । यन्ति । होत्रियम् । अत्रः । पश्यन्ति । वि-ततम् । यथा । रजः ॥ प्राचैः । देवासुः । प्र । नयन्ति । देव-युम् । ब्रह्म-प्रियम् । जोषयन्ते । वराः-इव ॥ २ ॥

भाषार्थ—(आपः न) व्याप्त जलों के समान [उपकारी] (देवासुः) विद्वान् लोग (देवीः) दिव्य गुण वाली [विद्याओं] को (उप) आदर से (यन्ति) पाते हैं, और (होत्रियम्) देने लेने योग्य (अत्रः) रक्षा को (यथा

(इन्द्र) हे परमैश्वर्यवन् परमेश्वर राजन् वा (मर्त्यः) मनुष्यः (तव) (ऊतिभिः) रक्षाभिः (तम्) मनुष्यम् (इत्) एव (पृणक्षि) पृची सम्पर्कें । संयोजयसि । पूरयसि (वसुना) धनेन (भवीयसा) भवितु—ईयसुन् । तुरि-ष्टेमेयःसु । पा० ६ । ४ । १५४ । इति तुलोपः । अत्यधिकेन । भूयसा (सिन्धुम्) समुद्रम् (आपः) जलानि (यथा) येन प्रकारेण (अभितः) सर्वतः (विचेतसः) विविधानि चेतांसि ज्ञानानि यासां ताः । विविधज्ञातव्याः ॥

२—(आपः) व्याप्तानि जलानि (न) यथा (देवीः) दिव्यगुणवतीः सुविद्याः (उप) पूजायाम् (यन्ति) प्राप्नुवन्ति (होत्रियम्) हुयामाश्रुम-सिन्धुयन् । उ० ४ । १६८ । हु दानादानादनेषु—त्रन् । तस्येदम् । पा० ४ । ३ ।

रजः) रज [धूलि] के समान (विततम्) फैला हुआ (पश्यन्ति) देखते हैं ।
और (वराः इव) श्रेष्ठ पुरुषों के समान वे (प्राचैः) पुराने व्यवहारों के साथ
(देवयुम्) उत्तम गुण चाहने वाले, (ब्रह्मप्रियम्) ईश्वर और वेद में प्रीति
करने वाले पुरुष को (प्रणयन्ति) आगे बढ़ाते हैं और (जोषयन्ते) सेवा
करते हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग उत्तम उत्तम विद्यायें प्राप्त करके संसार के
प्रत्येक पदार्थ से उपकार लेते हैं और श्रेष्ठ धर्मात्मा ईश्वरभक्त को अगुआ
बनाकर उसकी आज्ञा में चलते हैं ॥ २ ॥

अधि द्वयोरदधा उक्थ्यं वचो यतस्तुचा मिथुना या
सुपर्यतः । असंयत्तो ब्रूते ते स्तेति पुष्यति भुद्रा शुक्तिर्यज-
मानाय सुन्वते ॥ ३ ॥

अधि । द्वयोः । अदधाः । उक्थ्यम् । वचः । यत-स्तुचा ।
मिथुना । या । सुपर्यतः ॥ असंयत्तः । ब्रूते । ते । स्तेति ।
पुष्यति । भुद्रा । शुक्तिः । यजमानाय । सुन्वते ॥ ३ ॥

भाषार्थ—[हे विद्वान् !] (द्वयोः अधि) उन दोनों के ऊपर (उक्-
थ्यम्) बड़ाई के योग्य (वचः) वचन को (अदधाः) तू ने धारण किया है,
(या) जो (यतस्तुचा) चमचा [भोजन साधन] लिये हुये (मिथुना) दोनों

१२० । होत्र—घप्रत्ययः । होत्राणामिदम् । दानव्यादातव्यम् (अवः) रक्षणम्
(पश्यन्ति) प्रेक्षन्ते (विततम्) विस्तृतम् (यथा) येन प्रकारेण (प्राचैः)
प्र + अञ्चते—घञर्थे कप्रत्ययः । प्राचीनैर्व्यवहारैः (देवासः) विद्वांसः (प्र)
प्रकर्षेण । अग्रे (नयन्ति) प्रापयन्ति (देवयुम्) देव—क्यच्, उ । देवान् दिव्य-
गुणान् कामयमानम् (ब्रह्मप्रियम्) ईश्वरो वेदो वा प्रियो यस्य तम् (जोषयन्ते)
जुषी प्रीतिसेवनयोः—स्वार्थे णिच् । सेवन्ते (वराः) श्रेष्ठाः पुरुषाः (इव) यथा ।

३—(अधि) उपरि (द्वयोः) स्त्रीपुरुषयोः (अदधाः) धारितवानसि
(उक्थ्यम्) कथनीयं स्तुत्यम् (वचः) वचनम् (यतस्तुचा) यमु उपरमे—
क्त । चिक् च । उ० २ । ६२ । स्तु गतौ—चिक् । यता नियताः स्तुचः चमसा
भोजनसाधनानि याभ्यां तौ (मिथुना) क्षुर्धापशिर्मिथिभ्यः कित् । उ० ३ ।

मिलनसार स्त्री पुरुष (सपर्यतः) सेवा करते हैं । वह [स्त्री वा पुरुष] (ते) तेरे (व्रते) नियम में (असंयत्तः) बे रोक [स्वतन्त्र] होकर (क्षेति) रहता है और (पुष्यति) पुष्ट होता है , (भद्रा) कल्याण करने हारी (शक्तिः) शक्ति (यजमामाय) यजमान [सत्कार, संगति और दान करने हारे] (सुन्वते) ऐश्वर्यवान् पुरुष के लिये [होती है] ॥ ३ ॥

भाष्यार्थ—सब स्त्री पुरुष विद्वानों के उपदेश और मार्ग पर चलकर स्वाधीनता के साथ भोजन आदि से आप सुख पाते और सब को सुख देते हैं ॥ ३ ॥
 आदङ्गिराः प्रथमं दधिरे वयं दुग्ध-अग्नयः शम्या ये सुकृत्यया ।
 सर्वं पुणोः समविन्दन्तु भोजनमश्ववन्तु गोमन्तुमा पशुं नरः ४
 आत् । अङ्गिराः । प्रथमम् । दधिरे । वयः । दुग्ध-अग्नयः ।
 शम्या । ये । सु-कृत्यया ॥ सर्वम् । पुणोः । सम् । अविन्दन्तु ।
 भोजनम् । अश्व-वन्तम् । गो-मन्तम् । आ । पशुम् । नरः ४ ॥

भाष्यार्थ—(ये) जिन (इन्द्राग्नयः) अग्नि के प्रकाश करने वाले (अङ्गिराः) अङ्गिराओं [ज्ञानी ऋषियों] ने (प्रथमम्) श्रेष्ठ (वयः) जीवन को (सुकृत्यया) सुन्दर रीति से करने योग्य (शम्या) शान्तिदायक कर्म से (दधिरे) धारण किया था, (आत्) तब ही (नरः) उन नेताओं ने (पुणोः)

५५ । मिथु मेथु संगमे वधे मेधायां च—उनन्, कित् । मिलितौ स्त्रीपुरुषौ (या) यौ (सपर्यतः) सपर पूजायाम्—कण्ड्वादित्वाद् यक् । सपर्यतिः परिचरणकर्मा—निघ० ३ । ५ । परिचरतः । सेवेते (असंयत्तः) । नञ् + सम् + यती प्रयत्ने—क्त । अनायत्तः । अवशीभूतः । स्वतन्त्रः (व्रते) नियमे (ते) तव (क्षेति) क्षि निवासगत्योः विकरणस्य लुक् । क्षियति । निवसति (पुष्यति) पुष्टो भवति (भद्रा) कल्याणी (शक्तिः) समर्थता (यजमानाय) पूजासंगति-दात्रशीलाय (सुन्वते) पु ऐश्वर्ये—शत्, स्वादित्वाद् छान्दसम् । ऐश्वर्यवते ॥

४—(आत्) अनन्तरम् (अङ्गिराः) अ० १६ । ३४ । ५ । अग्नि गतौ—किरच् नित् । विद्वानिनः । ऋषयः (प्रथमम्) श्रेष्ठम् (दधिरे) (धारितवन्तः (वयः) जीवनम् (इन्द्राग्नयः) प्रकाशिताग्नयः । अग्निविद्याकुशलाः (शम्या) शमु उपशमे—इन्, डीप् । शान्तिप्रदेन कर्मणा—निघ० २ । १ (ये) (सुकृत्यया)

उद्यम से (सर्वम्) सब (भोजनम्) भोजन [पालन साधन धन अन्न आदि],
(अश्वावन्तम्) उत्तम घोड़ों वाले (आ) और (गोमन्तम्) उत्तम गौओं
वाले (पशुम्) पशु समूह को (सम्) अच्छे प्रकार (अविन्दन्ते) पाया है ॥४॥

भावार्थ—जो अग्नि विद्या में कुशल, पुरुषार्थी, विज्ञानी लोग धार्मिक
कर्म कर के उत्तम जीवन बनाते हैं, वे ही उद्योग कर के सब प्रकार से सुख
पाते हैं ॥ ४ ॥

युच्चैरथर्वा प्रथमः पथस्तते ततःसूर्यो व्रतपा वेन आजनि । आ
गा आजदुशना काव्यः सचा यमस्य जातममृतं यजामहे ॥५॥
युच्चैः । अथर्वा । प्रथमः । पथः । तते । ततः । सूर्यः । व्रत-
पाः । वेनः । आ । अजनि ॥ आ । गाः । आजत् । उशना ।
काव्यः । सचा । यमस्य । जातम् । अमृतम् । यजामहे ॥ ५ ॥

भावार्थ—(प्रथमः) सब से पहिले वर्तमान (अथर्वा) निश्चल
परमात्मा ने (यच्चैः) संगति कर्मों [परमाणुओं के मेलों] से (पथः) मार्गों
को (तते) फैलाया, (ततः) फिर (व्रतपाः) नियम पालने वाला, (वेनः)
पियारा (सूर्यः) सूर्य लोक (आ) सब ओर (अजनि) प्रकट हुआ । (उशना)

शोभनकर्तव्ययुक्तया (सर्वम्) (पथेः) पथ व्यवहारे स्तुतौ च—इन् । उद्यो-
गात् (सम्) सम्यक् (अविन्दन्त) अलभन्त (भोजनम्) धननाम—निघ० २।
१०। भोजनसाधनं धनान्नादिकम् (अश्वावन्तम्) म०१। प्रशस्ततुरङ्गयुक्तम् (गोम-
न्तम्) उत्तमधेनुयुक्तम् (आ) समुच्चये (पशुम्) पशुसमूहम् (नरः) नेतारः॥

५—(यच्चैः) संगतिकरणैः । परमाणूनां संगमैः (अथर्वा) अ० ४। १।
७। नञ् + थर्व चरणे = गतौ—वनिप्, वलोपः । निश्चलः परमेश्वरः (प्रथमः)
सर्वेषामादिः (पथः) मार्गान् (तते) तत्तु विस्तारे—लिट्, छान्दसं रूपम् ।
तेने । विस्तारितवान् (सूर्यः) सवितृलोकः (व्रतपाः) नियमपालकः (वेनः)
कमनीयः (आ) समन्तात् (अजनि) जनी प्रादुर्भावे—लुङ् । प्रादुरभूत् (आ)
समन्तात् (गाः) गमनशीलान् पृथिव्यादिलोकान् (आजत्) अज गतिक्षेप-
णयोः—लङ् । प्रक्षिप्तवान् । आकर्षणे धारितवान् (उशना) वशोः कृत्ति । ८०

पियारे, (काव्यः) बड़ाई योग्य उस [सूर्य] ने (गाः) पृथिवियों [चलते हुये लोकों] को (आ) सब ओर (आजत्) खींचा है, (यमस्य) उस नियम कर्ता परमेश्वर के (सचा) मेल से (जातम्) उत्पन्न हुये (अमृतम्) अमरण [मोक्ष सुख वा जीवन सामर्थ्य] को (यजामहे) हम पाते हैं ॥ ५ ॥

भाषार्थ—जिस परमात्मा ने आकाश, सूर्य, पृथिवी आदि लोक बना कर हमें जीवन दिया है, उस बड़े जगदीश्वर की उपासना से विद्वान् लोग आत्मिक बल बढ़ाकर मोक्ष सुख भोगें ॥ ५ ॥

ब॒र्हिर्वा॑ यत् स्व॑प॒त्याय॑ वृ॒ज्यते॑ऽर्कः॑ वा॒ श्लोक॑मा॒घोष॑ते दि॒वि ।
ग्रा॒वा यत्र॑ व॒दति॑ का॒रुक्॒यः १॒ स्तस्ये॑दिन्द्रो॒ अभि॑पित्वेषु॑
र॒ण्यति॑ ॥ ६ ॥

ब॒र्हिः । वा॒ । यत् । सु॒-अ॒प॒त्याय॑ । वृ॒ज्यते॑ । अ॒र्कः । वा॒ ।
श्लो॒कम् । आ॒-घोष॑ते । दि॒वि ॥ ग्रा॒वा । यत्र॑ । व॒दति॑ ।
का॒रुः । उ॒क्थ्यः॑ । तस्य॑ । इत् । इन्द्रः॑ । अ॒भि-पि॒त्वेषु॑ । र॒ण्यति॑ ६

भाषार्थ—(यत्) जब (बर्हिः) उत्तम आसन (स्वपत्याय) गुणी सन्तान के लिये (वा) विचार पूर्वक (वृज्यते) छोड़ा जाता है, (वा) अथवा (अर्कः) पूजनीय विद्वान् (श्लोकम्) अपनी वाणी को (दिवि) व्यवहार के

४ । २३६ । वश कान्तौ—कसि, सम्प्रसारणं च । ऋदुशनस् पुरुदंशोऽनेहसां च । पा० ७ । १ । ६४ । अनङ् आदेशः । सर्वनामस्थाने चा० । पा० ६ । ४ । ८ । उपधादीर्घः । इलङ्याभ्यो० । पा० ६ । १ । ६८ । सुलोपः । नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । पा० ८ । २ । ७ । नलोपः । कमनीयः (काव्यः) अ० ४ । १ । ६ । कवृ स्तुतौ-ण्यत् । स्तुत्यः सूर्यः (सचा) षच समवाये—क्विप् । सम्मेलनेन (यमस्य) सर्वनियन्तुः परमेश्वरस्य (जातम्) उत्पन्नम् । प्रसिद्धम् (अमृतम्) अमरणम् । मोक्षसुखं जीवनसामर्थ्यं वा (यजामहे) संगच्छामहे । प्राप्नुमः ॥

६—(बर्हिः) उत्तमासनम् (वा) वेति विचारणार्थं—निरु० १ । ४ । विचारपूर्वकम् (यत्) यदा (स्वपत्याय) गुणिने सन्तानाय (वृज्यते) वृजी वर्जने । त्यज्यते । दीयते (अर्कः) पूजनीयः परिहृतः (वा) अथवा (श्लोकम्) वाणीम् (आघोषते) शुष्प विशब्दने । उच्चारयति (दिवि) व्यवहारे (ग्रावा)

बीच (आघोषते) कह सुनाता है । और (यत्र) जहां (ग्रावा) मेघ [के समान उपकारी], (उक्थ्यः) प्रशंसनीय (कारुः) शिल्पी विद्वान् (वदति) बोलता है, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला पुरुष] (तस्य) इस [सब] के (इत्) ही (अभिपित्वेषु) सङ्ग्रामों में (रणयति) आनन्द पाता है ॥ ६ ॥

भावार्थ—जिस स्थान में विद्वान् गुणी सन्तानों का आदर होता है और जहां पर बड़े विज्ञानी शिल्पी लोग उत्तम उत्तम विद्याओं का आविष्कार करते हैं, वहां पर सब प्राणियों को सुख मिलता है ॥ ६ ॥

प्राग्नां पीतिं वृष्णं इयमि सुत्यां प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम् ।
इन्द्र धेनाभिरिह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्यां गृणानः ॥
प्र । उग्राम् । पीतिम् । वृष्णे । इयमि । सुत्याम् । प्र-यै ।
सुतस्य । हरि-अश्व । तुभ्यम् ॥ इन्द्र । धेनाभिः । इह ।
मादयस्व । धीभिः । विश्वाभिः । शच्यां । गृणानः ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(हर्यश्व) हे वायु समान फुरतीले घोड़ों वाले ! (वृष्णे तुभ्यम्) तुझ महाबली को (प्रयै) आगे चलने के लिये (सुतस्य) निचोड़ [सिद्धान्त] का (उग्राम्) तीव्र, (सत्याम्) सत्यगुण वाला (पीतिम्) घूंट (प्र इयमि) आगे रखता हूं । (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले विद्वान्]

मेघनाम—निघ० १ । १० । मेघ इवोपकारी (यत्र) यस्मिन् देशे (वदति) उपदिशति (कारुः) शिल्पकर्ता विद्वान् (उक्थ्यः) प्रशंसनीयः (तस्य) पूर्वोक्तस्य सर्वस्य (इत्) एव (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् पुरुषः (अभिपित्वेषु) जनिदाच्यु० । ७० ४ । १०४ । पि गतौ—त्वन् प्रत्ययः । अभिप्राप्तिषु । संगमेषु (रणयति) रमु क्रीडायाम्—छान्दसः श्यन् परस्मैपदं मकारस्य नत्वं च । रमते । आनन्दितो भवति ॥

७—(उग्राम्) तीव्राम् (पीतिम्) पानम् (वृष्णे) महाबलवते (प्र इयमि) अ गतौ जुहोत्यादिः । प्रेरयामि । अग्रे धरामि (सत्याम्) यथार्थगुणयुक्तम् (प्रयै) प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै । पा० ३ । ४ । १० । प्र + या गतिप्रापणयोः—कैप्रत्ययः, तुमर्थे । प्रयातुम् । अग्रे गन्तुम् (सुतस्य) (संस्कृतस्य) सिद्धान्तस्य (हर्यश्व) अ० ५ । ३ । ८ । इज् प्रापणस्वीकारस्त्येयनाशनेषु—इन् + अश्

(धेनाभिः) वेदवाणियों द्वारा (इह) यहां पर (विश्वाभिः) समस्त (धीभिः) बुद्धियों से और (शच्या) कर्म से (गृणानः) उपदेश करता हुआ तू (माद-यस्व) आनन्द दे ॥ ७ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य फुरतीली सेना वाला ज्ञानवान् और बलवान् हो, सब लोग आदर करके उस बुद्धिमान् कर्मकुशल की वैदिक शिक्षाओं से आनन्द पावें ॥ ७ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—१० । १०४ । ३ और आगे है—अ० २० । ३३ । ३ ॥

इति तृतीयेऽनुवाके द्वितीयः पर्यायः ॥

सूक्तम् २६ ॥ [सूक्तानि २६-३३ तृतीयः पर्यायः ॥]

१-६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, २, ४, ६ गायत्री; ३ निचृद् गायत्री; ५ विराड् गायत्री ॥

१-३ सेनाध्यक्षलक्षणोपदेशः—१-३ सेनाध्यक्ष के लक्षण का उपदेश; ४-६ परमेश्वरगुणोपदेशः—४-६ परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

योगेयोगे त्वस्तरं वाजेवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमुतये ॥१॥
योगे-योगे । त्वः-तरम् । वाजे-वाजे । हवामहे ॥ सखायः ।
इन्द्रम् । ऊतये ॥ १ ॥

भाषार्थ—(योगेयोगे) अवसर अवसर पर और (वाजेवाजे) सङ्ग्राम सङ्ग्राम के बीच (त्वस्तरम्) अधिक बलवान् (इन्द्रम्) इन्द्र [परम-पेश्वर्यवान् पुरुष] को (ऊतये) रक्षा के लिये (सखायः) मित्र लोग हम (हवामहे) पुकारते हैं ॥ १ ॥

व्याप्तौ—कन् । हरी इन्द्रस्य—निघ० २ । १ । । हरिर्वायुः । हे हरिर्भिर्वायुत-ल्यैः शीघ्रगामिभिस्तुरङ्गैर्युक्त (तुभ्यम्) (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् विद्वन् (धेनाभिः) धेट इच्च । उ० ३ । ११ । धेट् पाने—नप्रत्ययः, टाप् । धेना वाङ्ताम—निघ० १ । ११ । वेदवाणीभिः (इह) अत्र (मादयस्व) आनन्दय (धीभिः) प्रज्ञाभिः (विश्वाभिः) सर्वाभिः (शच्या) अ० ५ । ११ । ८ । शच व्यक्तायां वाचि—इन्, डीष् । कर्मणा—निघ० २ । १ (गृणानः) उपदिशंस्त्वम् ॥

१-अयं मन्त्रो व्याख्यातः—अ० १४ । २४ । ७ ॥

भावार्थ—सब प्रजागण विद्वान् पुरुषार्थी राजा के साथ मित्रता करके शत्रु से अपनी रक्षा का उपाय करें ॥ १ ॥

यह मन्त्र ऊार आचुका है—अ० १६। २४। ७ ॥

आ घा गमुद् यदि अवंत्सहस्रिणीभिरुतिभिः ।

वाजैभिरुप नो हवस् ॥ २ ॥

आ । घ । गमुत् । यदि । अवंत् । सहस्रिणीभिः । ऊतिभिः ॥

वाजैभिः । उप । नः । हवस् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(यदि) जो वह (आ गमत्) आवे, (घ) तो वह (सहस्रिणीभिः) सहस्रों उत्तम पदार्थ पहुंचानेवाली (ऊतिभिः) रक्षाओं से (वाजैभिः) अन्नों के साथ (नः) हमारी (हवस्) पुकार को (उप) आदर से (अवंत्) सुने ॥ २ ॥

भावार्थ—सेनाध्यक्ष को चाहिये कि दूरदर्शी होकर आवश्यक अन्न आदि पदार्थों का संग्रह करके सब की यथावत् रक्षा करे ॥ २

मन्त्र २, ३ ऋग्वेद में है— १। ३०। ८, ९, और सामवेद में है—३०। १। २।

तृच ११ ॥

अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रति नरस् ।

यं ते पूर्व पिता हुवे ॥ ३ ॥

अनु । प्रत्नस्य । ओकसः । हुवे । तुवि-प्रतिस् । नरस् ॥ यस् ।

ते । पूर्वस् । पिता । हुवे ॥ ३ ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्य !] (प्रत्नस्य) पुराने (ओकसः) घर के

२—(आ गमत्) गमेलेंटि अडागमः । आगच्छेत् (यदि) चेत् (अवंत्) शृणोतेलेंटि अडागमः । शृणुयात् (सहस्रिणीभिः) प्रशंसार्थ इति । सहस्राणि प्रशस्तानि पदार्थप्रापणानि यासु ताभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः (वाजैभिः) अन्नैः (उप) पूजायाम् (नः) अस्माकम् (हवस्) आह्वानम् ॥

३—(अनु) निरन्तरम् (प्रत्नस्य) अ० २०। २४। ६। प्राचीनस्य (ओकसः) गृहस्य (हुवे) द्वेष स्पर्धायां शब्दे च— लटि छाः सं रूपम् । अहं द्वेषे । आह्वानमि

[उत्पन्न हुये] (तुविप्रतिम्) बहुत पदार्थों के प्रत्यक्ष पहुंचाने जाने (नरम्) पुरुष को (अनु हुवे) मैं पुनारतारहताहूं, (यम्) जिन [पुरुष] को (पूर्वम्) पहिले काल में (ते) तेरा (पिता) पिता (हुवे) बुनाना था ॥ ३ ॥

भावार्थ—जो को प्रतिष्ठित घराने का पुरुष अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाकर उपकार करे, उस को लोग आदर करके बुलावें ॥ ३ ॥

४—६ । परमेश्वरगुणोपदेशः । ४—६ परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

युञ्जन्ति ब्रध्मरुषं चरन्तं परि तस्थुषः ।

रोचन्ते रोचना दिवि ॥ ४ ॥

युञ्जन्ति । ब्रध्मम् । अरुषम् । चरन्तम् । परि । तस्थुषः ॥

रोचन्ते । रोचना । दिवि ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(तस्थुषः) मनुष्यादि प्राणियों और लोकों में (परि) सब ओर से (चरन्तम्) व्यापे हुये, (ब्रध्मम्) महान् (अरुषम्) हिंसा रहित [परमात्मा] को (रोचना) प्रकाशमान पदार्थ (दिवि) व्यवहार के बीच (युञ्जन्ति) ध्यान में रखते और (रोचन्ते) प्रकाशित होते हैं ॥ ४ ॥

भावार्थ—परमाणुओं से लेकर सूर्य आदि लोक और सब प्राणी सर्व-व्यापक, सर्वनियन्ता परात्मा की आज्ञा को मानते हैं, उसी की उपासना से मनुष्य पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करके आत्मा की उन्नति करें ॥ ४ ॥

(तुविप्रतिम्) विनाऽपिप्रत्ययेन पूर्वोत्तरगद्योर्विभाषा लोपो वक्तव्यः । वा० पा० ५ । ३ । ८३ । इति गमयितृ शब्दस्य लोपः । तुवोनां बहूनां पदार्थानां प्रति-गमयितारं प्रत्यक्षेण प्रापकम् (नरम्) नेतारम् (यम्) समाध्यक्षम् (ते) तव (पूर्वम्) पूर्वकाले (पिता) जनकः (हुवे) हवे—लिटि छान्दसं रूपम् । जुहुवे । आहूतवान् ॥

४—(युञ्जन्ति) युज समाधौ । ध्यायन्ति (ब्रध्मम्) अ० ७ । २२ । २ । महान्तम्—निघ० ३ । ३ (अरुषम्) रुष हिंसायाम्—कप्रत्ययः । अहिं-सकम् (चरन्तम्) व्याप्युवन्तम् (परि) सर्वतः (तस्थुषः) तिष्ठतेः क्वसुः शसि रूपम् । तस्थुष इति मनुष्यनाम—निघ० २ । ३ । मनुष्यादिप्राणिनो लोकाश्च (रोचन्ते) प्रकाशन्ते (रोचना) रुच दीप्तावभिप्रीतौ च—युच्, शेलौ । रोचनानि । प्रकाशमानानि वस्तूनि (दिवि) व्यवहारे ॥

मन्त्र ४—६ ऋग्वेद में हैं—१। ६। १—३, सामवेद में—३० ६। ३। त्व
१४ और आगे हैं—म० २०। ४७। १०—१२ तथा ६९। ६—११। मन्त्र ४, ५
यजुर्वेद में हैं—२३। ५, ६ और मन्त्र ४ महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादि भाष्य-
भूमिका उपासना विषय में व्याख्यात है ॥

युज्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे ।

शोणा धृष्ण नृवाहसा ॥ ५ ॥

युज्जन्ति । अस्य । काम्या । हरी इति । वि-पक्षसा । रथे ॥

शोणा । धृष्ण इति । नृ-वाहसा ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(अस्य) इस [परमात्मा—म० ४] के (काम्या) चाहने
योग्य, (विपक्षसा) विविध प्रकार ग्रहण करने वाले, (शोणा) व्यापक,
(धृष्ण) निर्भय, (नृवाहसा) नेताओं [दूसरों के चलाने वाले सूर्य आदि
लोकों] के चलाने वाले (हरी) दोनों धारण आकर्षण गुणों का (रथे) रम-
णीय जगत् के बीच (युज्जन्ति)वे [प्रकाशमान पदार्थ—म० ४] ध्यान में रखते हैं ॥

भावार्थ—जिस परमात्मा के धारण आकर्षण सामर्थ्य में सूर्य आदि
पिण्ड ठहर कर अन्य लोकों और प्राणियों को चलाते हैं, मनुष्य उन सब
पदार्थों से उपकार लेकर उस ईश्वर को धन्यवाद दें ॥ ५ ॥

केतुं कुरुवन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे ।

समुषद्भिरजायथाः ॥ ६ ॥

५—(युज्जन्ति) समाधौ कुर्वन्ति तानि रोचनानि—म० ४ (अस्य)
परमेश्वरस्य—म० ४ (काम्या) कसु कान्तौ—एषत् । सुपां सुलुक्० । पा० ७।
१। ३६ । इत्यत्र सर्वत्र विभक्तेराकारः । कमनीयौ (हरी) हरणशीणलौ धारणा-
कर्षणगुणौ (विपक्षसा) पक्ष परिग्रहे—असुन् । विविधग्रहणशीलौ (रथे)
रमणीये जगति (शोणा) शोणं वर्णगत्योः—घञ् । व्यापकौ । (धृष्ण) अधिष्ठा-
प्रागल्भ्ये—क्त् । धर्षकौ । निर्भयौ (नृवाहसा) बहिर्वाधाभ्यश्छिन्नसि ।
उ० ४। २२१ । वह प्रापणे—असुन् णित् । नृणां नेतृणां सूर्यादिलोकानां गमयि-
तारौ ॥

केतुम् । कृण्वन् । अकेतवे । पेशः । मर्याः । अपेशसे ॥

सम् । उषद्भिः । अजायथाः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(मर्याः) हे मनुष्यो ! (अकेतवे) अज्ञान हटाने के लिये (केतुम्) ज्ञान को और (अपेशसे) निर्धनता मिटाने के लिये (पेशः) सुवर्ण आदि धन को (कृण्वन्) उत्पन्न करता हुआ वह [परमात्मा—मन्त्र० ५, ६] (उषद्भिः) प्रकाशमान गुणों के साथ (सम्) अच्छे प्रकार (अजायथाः) प्रकट हुआ है ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्य प्रयत्न करके परमात्मा को विचारते हुये सृष्टि के पदार्थों से उपकार लेकर ज्ञानी और धनी होवें ॥ ६ ॥

यह मन्त्र यजुर्वेद में भी है—२६ । ३७ और महर्षि दयानन्दकृत ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका पृष्ठ ३०७ ग्रन्थप्रामाण्याप्रामाण्य विषय में भी व्याख्यात है ॥

सूक्तम् २७ ॥

१—६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ विराडर्षी गायत्री; २, ४, ५ निचृद् गायत्री; ३, ६ गायत्री ॥

राजलक्षणोपदेशः—राजा के लक्षणों का उपदेश ।

यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत् ।

स्तोता मे गोषखा स्यात् ॥ १ ॥

यत् । इन्द्र । अहम् । यथा । त्वम् । ईशीय । वस्वः । इत् ॥

स्तोता । मे । गो-सखा । स्यात् ॥ १ ॥

६—(केतुम्) केतुरिति प्रज्ञानाम—निघ० ३ । ६ । प्रज्ञानम् (कृण्वन्) कृवि हिंसाकरणयोः—शतृ । कुर्वन् सन् सः परमेश्वरः—म० ५, ६ (अकेतवे) क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः । पा० २ । ३ । १४ । इति तुमुनः कर्मणि चतुर्थी । अज्ञानं नाशयितुम् (पेशः) पिश गतौ—अवयवे दीपनायां च—असुन् । पेश इति हिरण्यनाम—निघ० १ । २ । पेश इति रूपनाम पिंशतेर्विपिशितं भवति निघ० १ । ११ । सुवर्णादिधनं रूपं वा (मर्याः) मनुष्याः (अपेशसे) निर्धनतां नाशयितुम् (सम्) सम्यक् (उषद्भिः) उष दाहे—शतृ, । प्रकाशमानैर्गुणैः (अजायथाः) प्रथमपुरुषस्य मध्यमपुरुषः । अजायत । प्रादुरभवत् ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (यत्) जब (यथा) जैसे जैसे (एकः) अद्वितीय (त्वम्) तू (इत्) ही (मे) मेरा [स्वामी हो जाऊं], (अहम्) मैं (वस्वः) धर्म का (ईशीय) स्वामी हो जाऊं, और (स्तोता) गुणों का व्याख्यान करने वाला [प्रत्येक पुरुष] (गोसखा) पृथिवी [अर्थात् तेरे राज्य] का मित्र (स्यात्) हो जावे ॥ १ ॥

भावार्थ—अद्वितीय प्रतापी राजा विद्वान् गुणी पुरुषों का आदर करता रहे, जिस से सब लोग राज्य की वृद्धि में लगे रहें ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—८। १४। १—६ मन्त्र १—३ सामवेद में हैं—उ० २। ६। तृच ६, और मन्त्र १ सामवेद में है—पू० २। ३। ७ ॥

शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे ।

यदुहं गोपतिः स्याम् ॥ २ ॥

शिक्षेयम् । अस्मै । दित्सेयम् । शची-पते । मनीषिणे ॥

यत् । अहम् । गो-पतिः । स्याम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(शचीपते) हे बुद्धि के स्वामी ! [राजन्] (अस्मै) इस (मनीषिणे) बुद्धिमान् [ब्रह्मचारी] को (शिक्षेयम्) मैं शिक्षा करूँ और (दित्सेयम्) दान दूँ, (यत्) जो (अहम्) मैं (गोपतिः) विद्या का स्वामी (स्याम्) हो जाऊँ ॥ २ ॥

भावार्थ—बुद्धिमान् राजा आदि धनी लोग प्रबन्ध करें कि ब्रह्मचारी लोग निश्चिन्त होकर उत्तम शिक्षकों से उत्तम विद्या पावें ॥ २ ॥

१—(यत्) यदा (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् (अहम्) (यथा) येन येन प्रकारेण (त्वम्) ईशिषे—इति शेषः (ईशीय) ईश्वरः स्वामी स्याम् (वस्वः) धनस्य (इत्) एव (एकः) अद्वितीयः (स्तोता) गुणानां व्याख्याता (मे) मम् (गोसखा) गोः पृथिव्यास्तवराज्यस्य मित्रभूतः (स्यात्) भवेत् ॥

२—(शिक्षेयम्) शिक्षां दद्याम् (अस्मै) उपस्थिताय (दित्सेयम्) दा दाने—सन् प्रत्ययः । दातुमिच्छेयम् (शचीपते) अ० ३। १०। १२। शच व्यक्तायां वाचि—इन्, डीष् । शची प्रज्ञानाम—निघ० ३। ६। हे बुद्धिस्वामिन् (मनीषिणे) बुद्धिमते ब्रह्मचारिणे (यत्) यदि (अहम्) पुरुषः (गोपतिः) गोविधायः स्वामी (स्याम्) भवेयम् ॥

धेनुष्ट इन्द्र सुनृता यजमानाय सुन्वते ।

गामश्वं पिप्युषी दुहे ॥ ३ ॥

धेनुः । ते । इन्द्र । सुनृता । यजमानाय । सुन्वते ॥

गाम् । अश्वम् । पिप्युषी । दुहे ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] (ते) तेरी (धेनुः) वाणी (सुनृता) प्यारी और सच्ची और (पिप्युषी) बढ़ती करने वाली होकर (सुन्वते) तत्त्व निचोड़ने वाले (यजमानाय) यजमान [विद्वानों का सत्कार, सत्संग और विद्या आदि दान करने वाले] के लिये (गाम्) भूमि, विद्या वा गौओं और (अश्वम्) घोड़ों को (दुहे) भर पूर करती है ॥३॥

भावार्थ—सत्यवादी ऐश्वर्यवान् राजा सत्कार करके विद्वानों की उन्नति करके राज्य की उन्नति करे ॥ ३ ॥

न ते वर्तास्तु राधसु इन्द्र देवो न मर्त्यः ।

यद् दित्संसि स्तुतो मघम् ॥ ४ ॥

न । ते । वर्ता । अस्तु । राधसः । इन्द्र । देवः । न । मर्त्यः ॥

यत् । दित्संसि । स्तुतः । मघम् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन] (ते) तेरे (राधसः) ऐश्वर्य का (वर्ता) रोकने वाला, (न) न तौ (देवः) विद्वान् पुरुष और (न) न (मर्त्यः) सामान्य पुरुष (अस्तु) है, (यत्) जब कि

३—(धेनुः) वाक् - निघ० १ । ११ (ते) तव (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन (सुनृता) अ० ३ । १२ । २ प्रियसत्यात्मिका (यजमानाय) देवपूजा-संगतिकरणविद्यादिदानकारकाय (सुन्वते) तत्त्वनिष्पादनं कुर्वते (गाम्) भूमिं विद्यां गोसमूहं वा (अश्वम्) अश्वसमूहम् (पिप्युषी) ओ प्यायी वृद्धौ, कसु, डीप् । वर्धयित्री (दुहे) तलोपः । दुग्धे । प्रपूरयति ॥

४—(न) निषेधे (ते) तव (वर्ता) निवारकः (अस्तु) (राधसः) ऐश्वर्यस्य (इन्द्र) (देवः) विद्वान् पुरुषः (न) निषेधे (मर्त्यः) सामान्यो मनुष्यः (यत्)

(स्तुतः) स्तुति किया गया तू (मघम्) धन (दित्ससि) देना चाहता है ॥ ४ ॥

भावार्थ—राजा अपने उत्तम गुणों से अनुपम होकर सुपात्रों को दान देकर उन्नति करे ॥ ४ ॥

युञ्ज इन्द्रमवर्धयद् यद् भूमिं व्यवर्तयत् ।

चक्राण ओपशं दिवि ॥ ५ ॥

युञ्जः । इन्द्रम् । अवर्धयत् । यत् । भूमिम् । वि । अवर्तयत् ॥

चक्राणः । ओपशम् । दिवि ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(युञ्जः) युञ्ज [विद्वानों के सत्कार, सत्संग और विद्या आदि दान] ने (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] को (अवर्धयत्) बढ़ाया है, (यत्) जब कि (दिवि) व्यवहार के बीच (ओपशम्) पूरा उद्योग (चक्राणः) कर चुकते हुये उसने (भूमिम्) भूमि को (वि अवर्तयत्) व्याख्यात किया है ॥ ५ ॥

भावार्थ—जब मनुष्य पृथिवी पर प्रत्येक काम को योग्यता से करता है, तब वह उन्नति करके कीर्ति पाता है ॥ ५ ॥

यह मन्त्र सामवेद में है पू० २ । ३ । ७ तथा उ० ८ । १ । ६ ॥

वुवृधुनस्य ते वुयं विश्वा धनानि जिग्युषः ।

जुतिमिन्द्रा वृणीमहे ॥ ६ ॥

वुवृधुनस्य । ते । वुयम् । विश्वा । धनानि । जिग्युषः ॥

जुतिम् । इन्द्र । आ । वृणीमहे ॥ ६ ॥

यदा (दित्ससि) दातुमिच्छसि (स्तुतः) (मघम्) मंहनीयं धनम् ॥

५—(युञ्जः) देवपूजासंगतिकरणविद्यादिदानव्यवहारः (इन्द्रम्) पर-
मैश्वर्यवन्तं पुरुषम् (अवर्धयत्) वर्धितवान् (यत्) यदा (भूमिम्) (वि अव-
र्तयत्) विवृतां व्याख्यातां कृतवान् (चक्राणः) करोते—कानच् । कृतवान् सन्
(ओपशम्) अ० ६ । १३८ । १ । आङ् + उप + शीङ् शयने—ड । ओपशः =
उपशयः = उपयोक्तृ । समन्तादुपयोगम् (दिवि) व्यवहारे ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (ववृधानस्य) बढ़ते हुये और (विश्वा) सब (धनानि) धनों को (जिग्युषः) जीत चुकने वाले (ते) तेरी (ऊतिम्) रक्षा को (वयम्) हम (आ) सब ओर से (वृणीमहे) मांगते हैं ॥ ६ ॥

भावार्थ—जब राजा पराक्रमी और धनी होता है, तब प्रजागण सुरक्षित रह कर उस राज्य की वृद्धि चाहते हैं ॥ ६ ॥

सूक्तम् २८ ॥

१—४ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृद् गायत्री; २—४ गायत्री ॥

परमेश्वरोपसनो पदेशः—परमेश्वर की उपासना का उपदेश ॥

व्यं१न्तरिक्षमतिरुन्मदे सोमस्य रोचना ।

इन्द्रो यदभिनद् वलम् ॥ १ ॥

वि । अन्तरिक्षम् । अतिरुत् । मदे । सोमस्य । रोचना ॥

इन्द्रः । यत् । अभिनत् । वलम् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] ने (सोमस्य) ऐश्वर्य के (मदे) आनन्द में (रोचना) प्रीति के साथ (अन्तरिक्षम्) आकाश को (वि अतिरुत्) पार किया है, (यत्) जब कि उस ने (वलम्) हिंसक [विघ्न] को (अभिनत्) तोड़ डाला ॥ १ ॥

भावार्थ—सब से महान और पूजनीय परमेश्वर की उपासना से सब मनुष्य उन्नति करें ॥ १ ॥

६—(ववृधानस्य) वर्धमानस्य (ते) तव (वयम्) प्रजाजनाः (विश्वा) सर्वाणि (धनानि) (जिग्युषः) जि जये—कसु । जितवतः (ऊतिम्) रक्षाम् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् (आ) समन्तात् (वृणीमहे) याचामहे ॥

१—(वि) विविधम् (अन्तरिक्षम्) आकाशम् (अतिरुत्) पारं कृतवान् (मदे) आनन्दे (सोमस्य) ऐश्वर्यस्य (रोचना) विभक्तेराकारः । रोचनया । प्रीत्या (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् परमात्मा (यत्) यदा (अभिनत्) व्यहारयत् (वलम्) हिंसकं विघ्नम् ॥

सू० २८ [६१६]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(३,८८८)

यह सूक्त ऋग्वेद में है—८। १४। ७—१० और आगे है—अ० २०।
३६। २—५। मन्त्र १, २ सामवेद में है—उ० ८। १। तृच ६॥

उद्गा आजुदङ्गिरोभ्य आविष्कृणवन् गुहा सुतीः ।

अर्वाञ्च नुनुदे वलम् ॥ २ ॥

उत् । गाः । आजुत् । अङ्गिरः-भ्यः । आविः । कृणवन् ।
गुहा । सुतीः ॥ अर्वाञ्चम् । नुनुदे । वलम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(गुहा) गुहा [गुप्त अवस्था] में (सुतीः) वर्तमान
(गाः) वाणियों को (आविः कृणवन्) प्रकट करते हुये उस [परमेश्वर] ने
(अङ्गिरोभ्यः) विज्ञानो पुरुषों के लिये (उत् आजन्) ऊँचा पहुँचाया और
(वलम्) हिंसक [विघ्न] को (अर्वाञ्चम्) नीचे (नुनुदे) हटाया है ॥ २ ॥

भावार्थ—प्रलय के पीछे परमात्मा ने वेदों का उपदेश करके हमारे
सब विघ्न मिटाये हैं ॥ २ ॥

इन्द्रेण रोचना दिवो दृह्णानि दृंहितानि च ।

स्थिराणि न पराणुदे ॥ ३ ॥

इन्द्रेण । रोचना । दिवः । दृह्णानि । दृंहितानि । च ॥

स्थिराणि । न । परा-नुदे ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रेण) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले परमात्मा] करके
(दिवः) व्यवहार के (स्थिराणि) ठहाराऊँ (रोचना) प्रकाश (न पराणुदे)

२—(उत्) ऊर्ध्वम् (गाः) वाणीः । विद्याः (आजत्) अज गतिशेष-
णयोः—सङ् । अगमयत् (अङ्गिरोभ्यः) अ० २। १२। ४ । विज्ञानिभ्यः (आवि-
ष्कृणवन्) प्रकटयन् (गुहा) गुहायाम् । गुप्तावस्थायाम् (सुतीः) विद्यमानाः
(अर्वाञ्चम्) अधोगतम् (नुनुदे) प्रेरितवान् (वलम्) हिंसकं विघ्नम् ॥

३—(इन्द्रेण) परमैश्वर्यवता परमात्मना (रोचना) रोचनानि ।
प्रकाशाः (दिवः) व्यवहारस्य (दृह्णानि) दृह वृद्धौ—क । दृढीकृतानि
(दृंहितानि) दृहि वृद्धौ—क । वर्धितानि । विस्तारितानि (च) (स्थिराणि)

(४,०००)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० २८ [६१७]

न हटने के लिये (दृह्लानि) पके किये गये (च) और (दंडितानि) बढ़ाये गये [फैलाये गये] हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—परमात्मा ने अपने अटल नियमों से सब संसार को सुख दिया है ॥ ३ ॥

अपामूर्मिर्मदन्निव स्तोम इन्द्राजिरायते ।

वि ते मदा अराजिषुः ॥ ४ ॥

अपाम् । ऊर्मिः । मदन्-इव । स्तोमः । इन्द्र । अजिर-यते ॥

वि । ते । मदाः । अराजिषुः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (ते) तेरी (स्तोमः) बढ़ाई (अपाम्) जलों की (मदन्)-हर्ष बढ़ाने वाली (ऊर्मिः इव) लहर के समान (अजिरायते) वेग से चलती है, और (मदाः) आनन्द (वि अराजिषुः) विराजते हैं [विविध प्रकार ऐश्वर्य बढ़ाते हैं] ॥ ४ ॥

भावार्थ—न्यायकारी जगदीश्वर की उत्तम नीति को मानकर सब लोग आनन्द पाकर शीघ्र ऐश्वर्य बढ़ावें ॥ ४ ॥

सूक्तम् २८ ॥

१—५ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ विराडाशी गायत्री; २—४ गायत्री; ५ निचृद् गायत्री ॥

राजधर्मोपदेशः—राजा के धर्म का उपदेश ॥

स्थितिशीलानि (न) निषेधे (पराणुदे) परा + णुद् प्रेरणे—क्विप् । परानोदनाय । दूरे प्रेरणाय ॥

४—(अपाम्) जलानाम् (ऊर्मिः) तरङ्गः (मदन्) आनन्दयन् (इव) यथा (स्तोमः) स्तुतिः (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवन् (अजिरायते) अजिरशि-शिरशिथिल० उ०१ । ५३ । अज गतिक्षेपणयोः—किरच् । अजिरं क्षिप्रनाम—निघ० २ । १५ । तत्करोतीत्युपसंख्यानं सूत्रयत्याद्यर्थम् । वा० पा० । ३ । १ । २६ । अजिर—णिच्, सांहितिको दीर्घः । अजिरं क्षिप्रं करोति । शीघ्रं गच्छति (वि) विविधम् (ते) तर्ष (मदाः) आनन्दाः (अराजिषुः) लङ्घ्ये लुङ् । राजतीति ऐश्वर्यकर्मा—निघ० २ । २१ । ऐश्वर्यं वर्धयन्ति । शोभन्ते ॥

सू० २८ [६१७] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,००१)

त्वं हि स्तोमवर्धन इन्द्रास्युक्थवर्धनः ।

स्तोतृणामुत भद्रकृत् ॥ १ ॥

त्वम् । हि । स्तोम-वर्धनः । इन्द्र । असि । उक्थ-वर्धनः ॥

स्तोतृणाम् । उत । भद्र-कृत् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (त्वम्) तू (हि) ही (स्तोमवर्धनः) स्तुतियों से बढ़ाने योग्य और (उक्थवर्धनः) यथार्थ वचनों से सराहने योग्य (उत) और (स्तोतृणाम्) गुण व्याख्या-ताओं का (भद्रकृत्) कल्याण करने वाला (असि) है ॥ १ ॥

भावार्थ—राजा ऐसा उत्तम गुणी और पराक्रमी होवे कि सब लोग उसके गुणों से सुखी होवें ॥-१ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—= । १४ । ११—१५ ॥

इन्द्रमित् केशिना हरी सोमपेयाय वक्षतः ।

उप यज्ञं सुरार्धसम् ॥ २ ॥

इन्द्रम् । इत् । केशिनी । हरी इति । सोम-पेयाय । वक्षतः ॥

उप । यज्ञम् । सु-रार्धसम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(केशिना) सुन्दर केशों [कंधे आदि के बालों] वाले (हरी) रथ ले चलने वाले दो घोड़े [के समान बल और पराक्रम] (सुरार्ध-

१—(त्वम्) (हि) एव (स्तोमवर्धनः) कृत्यल्युटो बहुलम् । पा० ३ । ३ । ११३ । स्तोम + वृधु वर्धने-अर्हाथे ल्युट् । स्तुतिभिर्वर्द्धनीयः (इन्द्र) हे पर-मैश्वर्यवन् राजन् (असि) (उक्थवर्धनः) ल्युट् पूर्ववत् । यथार्थवचनैर्वर्धनीयः (स्तोतृणाम्) गुणव्याख्यातृणाम् (उत) अपि च (भद्रकृत्) कल्याणस्य कर्ता ॥

२—(इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं पुरुषम् । (इत्) एव (केशिना) प्रशस्त-के शयुक्तौ । स्कन्धादिचिकण्वालोपेतौ (हरी) रथस्य वाहकावश्वाविव बल-

सम्) महाधनी (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले पुरुष] के (इत्) ही (सोमपेयाय) पेश्वर्य की रक्षा के लिये (यज्ञम् उप) यज्ञ [पूजनीय व्यवहार] की ओर (वक्षतः) लावें ॥ २ ॥

भावार्थ—मनुष्य उत्तम उत्साही पुरुष का श्रेष्ठ वस्तुओं से आदर करके उसके योग्य प्रबन्ध से सुखी होवें ॥ २ ॥

इस मन्त्र का मिलान करो—अ० २०।३।२ ॥

अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः ।

विश्वा यदजय स्पृधः ॥ ३ ॥

अपाम् । फेनेन । नमुचेः । शिरः । इन्द्र । उत् । अवर्तयः ॥

विश्वाः । यत् । अजयः । स्पृधः ॥ ३ ॥

भावार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले सेनापति] (अपाम्) जलों के (फेनेन) फेन [भाग के समान हलके तीक्ष्ण शस्त्र विशेष] से (नमुचेः) न छुटने योग्य [दण्डनीय पापी] के (शिरः) शिर को (उत् अवर्तयः) तू ने उछाल दिया है, (यत्) जब कि (विश्वाः) सब (स्पृधः) झगड़ने वाली सेनाओं को (अजयः) तू ने जीता है ॥ ३ ॥

भावार्थ—सेनापति पानी के भाग के समान हलके तीक्ष्ण चक्र आदि हथियारों से शत्रु का शिर काटकर उसकी सेना को जीते ॥ ३ ॥

यह मन्त्र यजुर्वेद में भी है—१६।७१ तथा सामवेद—पू० ३।२।८

पराक्रमौ (सोमपेयाय) अत्रो यत् पा० ३।१।६७। सोम+पा रक्षणे-यत् । ईक्षति । पा० ६।४।६५ । आकारस्य ईकारः । पेश्वर्यस्य रक्षणाय (वक्षतः) वह प्रापणे—लेट् । वहताम् । प्रापयताम् (उप) प्रति (यज्ञम्) पूजनीय व्यवहारम् (सुराधसम्) बहुधनवन्तम् ॥

३—(अपाम्) जलानाम् (फेनेन) फेनबहुधुतीक्ष्णशस्त्रविशेषेण (नमुचेः) अ० २०।२१ ७ । अमोचनीयस्य दण्डनीयस्य पापिनः (शिरः) (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् सेनापते (उदवर्तयः) ऊर्ध्वं गमितवानसि (विश्वाः) सर्वाः (यत्) यदा (अजयः) जितवानसि (स्पृधः) स्पर्ध संघर्षे—किपे, रफस्य ऋकारः अकारलोपश्च । स्पर्धमानाः । युध्यमानाः शत्रुसेनाः ॥

सू० २८ [६१७] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,००३)

मायाभिरुत्सिप्तुं सत् इन्द्र द्यामारुरुक्षतः ।

अव दस्यूँ रधूनुथाः ॥ ४ ॥

मायाभिः । उत्-सिप्तुसतः । इन्द्र । द्याम् । आ-रुरुक्षतः ॥

अव । दस्यून् । अधूनुथाः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले सेनापति] (उत्सि-
सुप्ततः उछलते हुये और (द्याम्) आकाश को (आरुरुक्षतः) चढ़ते हुये
(दस्यून्) डाकुओं को तू ने (मायाभिः) अपनी बुद्धियों से (अव अधू-
नुथाः) ओंघा गिरा दिया है ॥ ४ ॥

भावार्थ—जो शत्रु लोग विमान आदि से आकाश में चढ़ कर
उपद्रव मचावें, युद्ध कुशल सेनापति विमान आदि में चढ़ कर उन्हें
गिरावे ॥ ४ ॥

असुन्वामिन्द्र संसदं विषूचीं व्यनाशयः ।

सोमपा उत्तरो भवन् ॥ ५ ॥

असुन्वाम् । इन्द्र । सम्-सदम् । विषूचीम् । वि । अनाशयः ॥

सोम-पाः । उत्-तरः । भवन् ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले सेनापति] (सोमपाः)
ऐश्वर्य का रक्षक और (उत्तरः) बड़ा विजयी (भवन्) हो कर तूने (असुन्वाम्)

४—(मायाभिः) प्रज्ञाभिः (उत्सिप्तुसतः) सुप्लु गतौ—सनि शत्रु ।
उत्सर्पणेच्छन् । ऊर्ध्वगमनेच्छन् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् सेनापते (द्याम्)
आकाशम् (आरुरुक्षतः) रह प्रादुर्भावे—सनि शत्रु । आरोहणेच्छन् (अव)
अधोमुखम् (दस्यून्) उपक्षेप्तुन् । दुष्टान् । चौरान् (अधूनुथाः) धूञ्
कम्पने—लङ् । कम्पितवान् प्रेरितवानसि ॥

५—(असुन्वाम्) पुञ् अमिषवे—शानच्, स्वादिभ्यः श्रुः, ततश्चाप्, अमि
कृते नकारलोपः । असुन्वानाम् । अमिषवं बलिं राजप्राणं भागं न ददामीम्
(इन्द्र) (संसदम्) जनसंहतिम् (विषूचीम्) नानागतिम् (वि) विशेषेण (अना-

भेद न देती हुई (विषूचीम्) इतर वितर चलती हुयी (संसदम्) भीड़ का (वि अनाशयः) विनाश कर दिया है ॥ ५ ॥

भावार्थ—विजयी सेनापति कट्टर लुटेरे शत्रुओं का नाश करके ऐश्वर्य बढ़ावे ॥ ५ ॥

सूक्तम् ३० ॥

१—५॥ इन्द्रो देवता ॥ १ जगती; २—४ निचृज्जगती; ५ आर्षी त्रिष्टप् ॥

बलपराक्रमोपदेशः—बल और पराक्रम का उपदेश ॥

प्र ते महे विदथे शंसिषं हरी प्र ते वन्वे वनुषो हर्यतं
मदम् । घृतं न यो हरिभिश्चारु सेचतु आ त्वा विशन्तु हरि-
वर्षसं गिरः ॥ १ ॥

प्र । ते । महे । विदथे । शंसिषम् । हरी इति । ते । वन्वे ।
वनुषः । हर्यतम् । मदम् ॥ घृतम् । न । यः । हरि-भिः ।
चारु । सेचते । आ । त्वा । विशन्तु । हरि-वर्षसम् । गिरः ॥ १ ॥

भाषार्थ—[हे शूर !] (महे) बड़े (विदथे) समाज के बीच (ते)
तेरे (हरी) दुख हरने वाले दोनों बल और पराक्रम की (प्र शंसिषम्) मैं
प्रशंसा करता हूँ, और (वनुषः ते) तुझ शूर के (हर्यतम्) कामना योग्य
(मदम्) आनन्द को (प्र वन्वे) मांगता हूँ । (यः) जो आप (हरिभिः) वीर

शयः) नाशितवानसि (सोमपाः) ऐश्वर्यरत्नकः (उत्तरः) उत् + तृ अभिभवे-
अप् । उत्कर्षेण विजयी (भवन्) सन् ॥

१—(प्र) (ते) तव (महे) मह पूजायाम्—यज्ञर्थे क । महति (विदथे)
अ० १ । १३ । ४ । विद ज्ञाने—अथप्रत्ययः । समाजे (शंसिषम्) शंसु स्तुतौ—
लङ्थे लुङ्, अडभावः । स्तौमि (हरी) दुःखहरणशीलौ बलपराक्रमौ (प्र
(ते) तव (वन्वे) वनु याचने-लट् । अहं याचे (वनुषः) जनेरुसि । उ० २ ।
११५ । वन हिंसायाम्—उसि । शत्रुहिंसकस्य शूरस्य (हर्यतम्) भृमृदशि-
यजि० । उ० ३ । ११० । हर्य कान्तौ—अतच् । कमनोयम् (मदम्)
आनन्दम् (घृतम्) उद्कम् (न) इव (यः) भवान् (हरिभिः)

सू० ३० [६१८]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,००५)

पुरुषों के साथ (घृतम् न) जल के समान (चारु) रमणीय धन को (सेचते)
बरसाते हैं, (हरिवर्षसम्) सिंहरूप (त्वा) उस तुझ में (गिरः) स्तुतियां
(आ) सब ओर से (विशन्तु) प्रवेश करें ॥ १ ॥

भावार्थ—बली, पराक्रमी, धनी दानी पुरुष संसार में बड़ाई पाता है ॥ १

यह सूक्त ऋग्वेद में है—१० । ६६ । १—५ ।

इस सूक्त का मिलान करो ऋग्वेद—म० ३ । सू० ४३ ॥

हरिं हि योनिमुभि ये समस्वरन् हिन्वन्तो हरी दिव्यं यथा
सदः । आ यं पृणन्ति हरिभिर्न धेनव इन्द्राय शुषं हरिवन्त-
मर्चत ॥ २ ॥

हरिम् । हि । योनिम् । अभि । ये । सम्-अस्वरन् । हिन्वन्तः ।
हरी इति । दिव्यम् । यथा । सदः ॥ आ । यम् । पृणन्ति ।
हरि-भिः । न । धेनवः । इन्द्राय । शुषम् । हरि-वन्तम् ।
अर्चतु ॥ २ ॥

भाषार्थ—(हरी) दुःख हरने वाले दोनों बल और पराक्रम को (हिन्व-
न्तः) बढ़ाते हुये (ये) जो लोग (दिव्यम्) दिव्य गुण वाले (सदः यथा)
समाज के समान (हरिम्) दुःख मिटाने वाले [सेनापति] को (हि) निश्चय
करके (योनिम् अभि) न्याय घर में (समस्वरन्) अच्छे प्रकार सराहते हैं,

वीरमनुष्यैः (चारु) रमणीयं धनम् (सेचते) सिञ्चति । वर्षयति (आ)
समन्तात् (त्वा) त्वाम् (विशन्तु) प्रविशन्तु । प्राप्नुवन्तु (हरिवर्षसम्) वृद्ध-
शीर्ष्मण्यं रूपस्वाङ्गयोः पुट् च । ३० ४ । २०१ । वृद्धवरणे-असुन् पुट् च । वर्षो
रूपनाम—निघ० ३ । ७ । हरेः सिंहस्य रूपमिव रूपं यस्य तम् । महाबलवन्तम्
(गिरः) स्तुतयः ॥

२—(हरिम्) दुःखहर्तारं सेनापतिम् (हि) निश्चयेन (योनिम्)
न्यायगृहम् (अभि) प्रति (ये) पुरुषाः (समस्वरन्) स्तु शब्दोपताययोः—
लङ्थे लङ् । सम्यक् स्तुवन्ति (हिन्वन्तः) हि गतिवृद्धयोः—शतृ । यर्थयन्तः
(हरी) दुःखहर्तारौ बलपराक्रमौ (दिव्यम्) उत्तमगुणविशिष्टम् (यथा)

(४,००६)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ३० [६१८]

और (यम्) जिस [सेनापति] को (हरिभिः) शूर पुरुषों सहित (धेनवः
न) गौओं के समान [जो] (आ) सब ओर से (पृणन्ति) तृप्त करते हैं,
(इन्द्राय) ऐश्वर्य के लिये (शूषम्) सुखसे (हरिवन्तम्) उस शूर पुरुषों वाले
[सेनापति को (अर्चत) तुम पूजो ॥ २ ॥

भावार्थ—प्रजागण न्यायकारी वीर राजा को शूर विद्वानों के सहित
प्रसन्न करके आनन्दित रहें ॥ २ ॥

सो अस्य वज्रो हरितो य आयुसो हरिर्निकामो हरिरा गभ-
स्त्योः । द्युम्नी सुश्रिमो हरिमन्युसायक इन्द्रे नि रूपा
हरिता मिमिक्षिरे ॥ ३ ॥

सः । अस्य । वज्रः । हरितः । यः । आयुसः । हरिः । नि-
कामः । हरिः । आ । गभस्त्योः ॥ द्युम्नी । सु-श्रिमः । हरि-
मन्यु-सायकः । इन्द्रे । नि । रूपा । हरिता । मिमिक्षिरे ॥३॥

भाषार्थ—(अस्य) इस [सेनापति] का (सः) वह (हरितः)
शत्रुनाशक, (आयसः) लोहे का बना (वज्रः) इज्र [शस्त्र] है, (यः) जो
(गभस्त्योः) दोनों भुजाओं पर (निकामः) बड़ा प्रिय, (हरिः) सिंह [के
समान] (आ) और (हरिः) सूर्य [के समान] (द्युम्नी) तेजस्वी, (सुश्रिमः)

(सदः) समाजः (आ) समन्नात् (यम्) सेनापतिम् (पृणन्ति) पृण तर्पणे ।
तर्पयन्ति (हरिभिः) शूरमनुष्यैः सह (न) यथा (धेनवः) गावः (इन्द्राय)
ऐश्वर्याय (शूषम्) शूषं सुखनाम—निघ० ३ । ६ । सुखेन (हरिवन्तम्) शूरपुरुषै
शुक्तम् (अर्चत) पूजयत ॥

३—(सः) प्रसिद्धः (अस्य) सेनापतेः (वज्रः) दण्डशस्त्रम् (हरितः)
हृश्याभ्यामितन् । उ० ३ । ६३ । हृन् नाशने—इतन् । शत्रुनाशकः (यः) वज्रः
(आयसः) लोहनिर्मितः (हरिः) सिंह इव (निकामः) नितरां कमनीयः
प्रियः (हरिः) सूर्य इव (आ) समुच्चये (गभस्त्योः) गम्यते ज्ञायते इति गः
विषयः, गभ-ड, तं बभस्वि भास्वपति दीपयतीति । क्तिच्कौ च । पा० १।३।७।
भस दीप्तौ—क्तिच् । गभस्ती बाहुनाम—निघ० २।४। भुजयोः (द्युम्नी) अ०

सू० ३० [६१८ | विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,००७)

बहुन काटने वाला [बड़ा कंटीला वा दन्तीला] और (हरिमन्युसायकः) सर्प [के समान शत्रु] के क्रोध का नाश करने वाला है। (इन्द्रे) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले सेनापति] में (हरिता) स्वीकार करने योग्य (रूपा) रूप [सुन्दरपन] (नि) दृढ़ करके (मिमिक्षिरे) सींचे गये हैं ॥ ३ ॥

भाषार्थ—सेनापति दृढ़ तीक्ष्ण हथियारों से शत्रुओं का नाश करके अपने उच्चम गुणों से प्रजा का पालन करे ॥ ३ ॥

दिवि न केतुरधि धायि हर्यतो विव्यचद् वज्रो हरितो न
रंहा । तुददहिं हरिशिप्रो य आयुसः सुहस्रशोका अभ-
वद्धरिभुरः ॥ ४ ॥

दिवि । न । केतुः । अधि । धायि । हर्यतः । विव्यचत् ।
वज्रः । हरितः । न । रंहा ॥ तुदत् । अहिम् । हरि-शिप्रः ।
यः । आयुसः । सुहस्र-शोकाः । अभवत् । हरिम्-भुरः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(न) जैसे (हर्यतः) रमणीक (केतुः) प्रकाश (दिवि) आकाश में (अधि) ऊपर (धायि) रक्खा गया है, (वज्रः) वह वज्रधारी (रंहा) वेग के साथ (हरितः न) सिंह के समान (विव्यचत्) व्याप गया,

६।३५।३। द्युत दीप्तौ-नप्रत्ययः, कित्, तस्य मः, द्युम्न-इति । दीप्तिमान् (सुशिप्रः)
अ०२०।४।१। शिञ् निशाने छेदने-रक् पुक् च । बहुच्छेदकः । बहुकण्टकः । बहुदन्तः
(हरिमन्युसायकः) हरः सर्पस्यैव शत्रोः क्रोधस्य नाशकः (इन्द्रे) परमैश्व-
र्यवति सेनापतौ (नि) नितराम् (रूपा) सौन्दर्याणि (हरिता) ह्य स्वीकारे-
इतन् । स्वीकरणीयानि (मिमिक्षिरे) मिदं सेचने-सन्-कर्मणि लङर्थे लिट् ।
मेदुं सेकुम् इष्टानि भवन्ति । सिकानि सन्ति ॥

४—(दिवि) प्रकाशे (न) यथा (केतुः) प्रज्ञापकः प्रकाशः (अधि)
उपरि (धायि) अधायि । निहितो वर्तते (हर्यतः) कमनीयः (विव्यचत्)
व्यच व्याजीकरणे, वेदे व्याप्तौ—ण्विलुङ्, अडभावः । व्याप्नोत् (वज्रः) अर्श
आद्यच् । वज्रवान् (हरितः) सिंहः (न) इव (रंहा) रंहणेन वेगेन (तुदत्)
अतुदत् । हिंसितवान् (अहिम्) आहन्तारं सर्पमिव शत्रुम् (हरिशिप्रः) स्फा-

और (आयसः) लोहे के बने हुये [अति दृढ़], (हरिशिखः) सिंह के समान मुख वाले (यः) जिस ने (अहिम्) सर्प [समान शत्रु] को (तुदत्) छेदा, है, वह (सहस्रशोकाः) सहस्रों प्रकाश वाला होकर (हरिंभरः) मनुष्यों का पालने वाला (अभवत्) हुआ है ॥ ४ ॥

भावार्थ—तेजस्वी न्यायकारी राजा दुष्ट पापियों को शोध दण्ड देकर अनेक प्रकार से प्रजा का पालन करे ॥ ४ ॥

त्वंत्वंमह्यथा उपस्तुतः पूर्वैभिरिन्द्र हरिकेश यज्वभिः । त्वं
ह्यसि तव विश्वमुक्थ्यं ससामि राधो हरिजात ह्यतम् ॥५॥

त्वम्-त्वंम् । अह्यथाः । उप-स्तुतः । पूर्वैभिः । इन्द्र । हरि-
के-श । यज्व-भिः ॥ त्वम् । ह्यसि । तव । विश्वम् ।
उक्थ्यम् । असामि । राधः । हरि-जात । ह्यतम् ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(हरिकेश) हे सूर्य समान तेज वाले (इन्द्र)
इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (पूर्वैभिः) समस्त (यज्वभिः)
यज्ञ करने वालों करके (उपस्तुतः) आदर से स्तुति किया गया (त्वं-
त्वम्) तू ही तू (अह्यथाः) प्रिय हुआ है । (हरिजात) हे मनुष्यों में

यितश्चिञ्चि० उ० २।१३। शिञ् निशाने छेदने—रक्, पुक् च । शिप्रेहनूनासिके
वा—निरु० ६।१७। हरेः सिंहस्य मुखमिव मुखं यस्य सः (यः) (आयसः)
लोहनिर्मितः । अतिदृढः (सहस्रशोकाः) गति नारकोपपदयोः पूर्वपदप्रकृति-
स्वरत्वं च । उ० ४।२२७। सहस्र + ई शुचिर् पूतीभावे—असि । सहस्रप्रकाशः
(अभवत्) (हरिंभरः) संज्ञायां भृतृवृजि० पा० ३।२४६। हरि + भृञ् भरणे-
नच्, मुमागमः । हरयो मनुष्याः निघ० ३।२। मनुष्याणां पोषकः ॥

५—(त्वंत्वम्) त्वमेव (अह्यथाः) अकामयथाः । प्रियोऽभवः (उपस्तुतः)
आदरेण प्रशंसितः (पूर्वैभिः) समस्तैः (इन्द्र) हे परमेश्वर्यवान् राजन् (हरिकेश)
केशा रश्मयः ... काशताद् वा प्रकाशताद् वा—निरु० १२। २५ । हे सूर्यवत्
प्रकाशवान् (यज्वभिः) सुयजोर्ध्वनिप् । पा० ३। २। १०३। यज देवपूजाविधु
र्ध्वनिप् । यज्ञकर्तृभिः (त्वम्) (ह्यसि) कामयसे (तव) (विश्वम्) सर्वम्

प्रसिद्ध ! (त्वम्) तू (हर्यसि) प्रीति करता है, (विश्वम्) सब (उक्थ्यम्) बड़ाई योग्य वस्तु और (असामि) न समाप्त होने वाला [अनन्त] (हर्यतम्) चाहने योग्य (राधः) धन (तव) तेरा है ॥ ५ ॥

भावार्थ—शुभ गुणों के कारण जिस राज से सब विद्वान् प्रीति करते हैं और जो सबसे प्रीति करता है, उसके राज्य में बहुत सम्पत्ति और धन होता है ॥

सूक्तम् ॥ ३१ ॥

१—५ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ विराडापी जगती; २, ३ जगती; ४, ५ निचृज् जगती ॥

पुरुषार्थकरणोपदेशः—पुरुषार्थ करने का उपदेश ॥

ता वृज्जिणं मन्दिनं स्तोम्यं मदं इन्द्रं रथे वहतो हर्यता हरीं ।
पुरुषयस्मै सर्वनानि हर्यतु इन्द्राय सोमा हरयो दधन्विरे ॥१॥
ता । वृज्जिणम् । मन्दिनम् । स्तोम्यम् । मदं । इन्द्रम् । रथे ।
वहतः । हर्यता । हरी इति ॥ पुरुणि । अस्मै । सर्वनानि ।
हर्यते । इन्द्राय । सोमाः । हरयः । दधन्विरे ॥ १ ॥

भाषार्थ—(ता) वे दोनों (हर्यता) प्यारे (हरी) दुख हरने वाले दोनों बल और पराक्रम (वृज्जिणम्) वज्रधारी, (मन्दिनम्) आनन्दकारी, (स्तोम्यम्) स्तुति योग्य (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] को (मदं) सुख के लिये (रथे) रमण साधन जगत् में (वहतः) ले चलते हैं ।

(उक्थ्यम्) प्रशस्यम् (असामि) भुवः कित् । उ० ४ । ४५ । षो अन्तर्कर्मणि—
मिप्रत्ययः । असामि सामिप्रतिषिद्धं सामि स्यतेः ... अमुसमाप्तम्—निरु०
६ । २३ । असमाप्तम् । अनन्तम् (राधः) धनम् (हरिजात) हे हरिषु मनुष्येषु
प्रसिद्ध (हर्यतम्) कमनीयम् ॥

१—(ता) तौ प्रसिद्धौ (वृज्जिणम्) वज्रधारिणम् (मन्दिनम्) अ०
२० । १७ । ४ । मोदयितारम् (स्तोम्यम्) स्तुतियोग्यम् (मदं) आनन्दाय
(इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं पुरुषम् (रथे) रमणसाधने जगति (वहतः)
प्रापयतः । गमयतः (हर्यता) हर्य कान्तौ—अतच् । हर्यतौ कमनीयौ (हरी)
दुःखहर्तारौ बलपराक्रमौ (पुरुणि) बहूनि (अस्मै) (सर्वनानि) ऐश्वर्याणि

(सोमाः) शान्त स्वभाव वाले (हरयः) मनुष्यों ने (अस्रवै) इस (हर्यते) प्यारे (इन्द्राय) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] के लिये (पुरुणि) बहुत से (सवनानि) ऐश्वर्य (दधन्विरे) प्राप्त किये हैं ॥ १ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य धर्म के साथ बल और पराक्रम करके संसार को आनन्द देता है, सब लोग मान आदर करके उस का ऐश्वर्य बढ़ाते हैं ॥१॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—१०। ६६। ६—१० ॥

अरं कामाय हरयो दधन्विरे स्थिराय हिन्वन् हरयो हरी तुरा।
अर्वद्विभिर्यो हरिभिर्जोषमीयते सो अस्य कामं हरिवन्तमानशेर
अरम् । कामाय । हरयः । दधन्विरे । स्थिराय । हिन्वन् ।
हरयः । हरी इति । तुरा ॥ अर्वत्-भिः । यः । हरि-भिः ।
जोषम् । ईयते । सः । अस्य । कामम् । हरि-वन्तम् ।
आनुश्चे ॥ २ ॥

भाषार्थ—(हरयः) सिंह [समान बलवान्] (हरयः) दुःख हरने वाले मनुष्यों ने (कामाय) कामना पूरी करने के लिये (तुरा) शीघ्रकारी (हरी) दुःख हरने वाले दोनों बल और पराक्रम को (स्थिराय) दृढ़ स्वभाव वाले [सेनापति] के निमित्त (अरम्) पूरा पूरा (दधन्विरे) प्राप्त किया और (हिन्वन्) बढ़ाया है । (यः) जो मनुष्य (अर्वद्विभिः) घोड़ों [के समान

(हर्यते) वर्तमाने पृषद्वृहन् महज्० । उ० २ । ८४ । हर्य कान्तौ—अति-प्रत्ययः । कमनीयाय (इन्द्राय) परमैश्वर्यवते पुरुषाय (सोमाः) शान्तस्व-भावाः (हरयः) मनुष्याः (दधन्विरे) घवि गतौ—लिट्, , आत्मनेपदम् । प्राप्तवन्तः ॥

२—(अरम्) अलम् । पर्याप्तम् (कामाय) कामनां पूरयितुम् (हरयः) सिंहसमाना बलवन्तः (दधन्विरे) म० १ । प्राप्तवन्तः (स्थिराय) दृढाय सेनापतये (हिन्वन्) हि गतिवृद्धयोः—लङ् । वर्द्धितवन्तः (हरयः) दुःख-हर्तारो मनुष्याः (हरी) दुःखहर्तारौ बलपराक्रमौ (तुरा) वेगे—क । वेग-वन्तौ (अर्वद्विभिः) अरण्यद्विभिः अश्वतुत्यैवैगवद्विभिः (यः) (हरिभिः) दुःख-

शीघ्रगामी] (हरिभिः) दुख हरने वाले मनुष्यों के साथ (जोषम्) प्रीति (ईयते) प्राप्त करता है, (सः) उस ने ही (हरिवन्तम्) श्रेष्ठ मनुष्यों वाली (अस्य) अपनी (कामम्) कामना को (आनशे) फैलाया है ॥ ३ ॥

भावार्थ—जहां पर विद्वान् लोग राजा के लिये बल और पराक्रम करते हैं और राजा विद्वानों से प्रीति करता है, वहां सब उत्तम कामनायें पूरी होकर आनन्द बढ़ता है ॥ २ ॥

हरिश्मशारुर्हरिकेश आयसस्तुर्दुरस्पेये यो हरिपा अवर्धत ।
अर्वद्भिर्यो हरिभिर्वाजिनीवसुरति विश्वा दुरिता पारिषद्धरीः
हरि-श्मशारुः । हरि-केशः । आयसः । तुरु-पेये । यः । हरि-
पाः । अवर्धत ॥ अर्वत्-भिः । यः । हरि-भिः । वाजिनी-वसुः ।
अति । विश्वा । दुः-द्रुता । पारिषत् । हरी इति ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(हरिश्मशारुः) सिंह के शरीर को छेदने वाला, (हरिकेशः) सूर्य समान तेज वाला, (आयसः) लोहे का बना हुआ [अति दृढ़] (यः) जो (हरिपाः) मनुष्यों का रक्षक [सेनापति] (तुरस्पेये) शीघ्र रक्षा करने में (अवर्धत) बढ़ा है, और (यः) जो (अर्वद्भिः) छोड़ो [के समान शीघ्रगामी] (हरिभिः) दुख हरने वाले मनुष्यों के साथ (वाजिनीवसुः) अन्न युक्त

हर्तुभिर्मनुष्यैः सह (जोषम्) प्रीतिम् (ईयते) गच्छति । प्राप्नोति (सः) सेनापतिः (अस्य) स्वकीयस्य (कामम्) अभिलाषाम् (हरिवन्तम्) श्रेष्ठ-पुरुषैर्युक्तम् (आनशे) अश्व व्याप्तौ—लिट् । व्याप्तवान् । विस्तारितवान् ॥

३—(हरिश्मशारुः) हज्ज नाशने—इन् + शीङ् स्वप्ने—मनिन्, डिच्च + ओरश्चलः । उ० १ । ५ । ६ शृ हिंसायाम्—उण् । श्म शरीरम्—निरु० ३ । ५ । हरेः सिंहस्य श्मनः शरीरस्य शारुःछेदकः (हरिकेशः) सूर्यवत् इकाशमानः (आयसः) लोहनिर्मितः । अतिदृढः (तुरस्पेये) भूरजिभ्यां कित् । उ० । ४ । २१७ । तुर वेगे—असुन्, कित् । अचो यत् । पा० ३ । १ । ६७ । पा रक्षणे—यत् । ईद्यति । पा० ६ । ४ । ६५ । आकारस्य ईकारः । तुरसा वेगेन रक्षणे (यः) सेनापतिः (हरिपाः) हरीणां मनुष्याणां रक्षकः (अवर्धत) वर्द्धितवान् (अर्वद्भिः) म० २ । अश्वतुर्धैवेगवद्भिः (यः) (हरिभिः) म० २ (वाजिनी-

क्रियाओं में बसने वाला है, वह (विश्वा) सब (दुरिता) विघ्नों को (अति) लांघकर (हरी) दुःख हरने वाले दोनों बल और पराक्रम को (पारिषत्) भरपूर करे ॥ ३ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य अति बलवान् और तेजस्वी होकर कष्ट से प्रजा की रक्षा करता है और सत्कार पूर्वक शूर वीर विद्वानों को अन्न आदि देता है, वही अपने बल और पराक्रम से कीर्ति पाता है ॥ ३ ॥

स्रुवेव यस्य हरिणी विपेततुः शिमे वाजाय हरिणी दविध्वतः।
प्र यत् कृते चमसे मर्मजद्दधरी पीत्वा मदस्य हर्य तस्यान्धसः४
स्रुवा-इव । यस्य । हरिणी इति । वि-पेततुः । शिमे इति ।
वाजाय । हरिणी इति । दविध्वतः ॥ प्र । यत् । कृते ।
चमसे । मर्मजत् । हरी इति । पीत्वा । मदस्य । हर्य तस्य ।
अन्धसः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(वाजाय) अन्न के लिये (यस्य) जिस [सेतापति] के (हरिणी) स्वीकार करने योग्य (शिमे) दोनों जाबड़े (स्रुवा इव) दो चम-चाओं के समान (विपेततुः) विविध प्रकार चलते हैं, [उसके राज्य में] (हरिणी) सुख हरने वाली [अविद्या और कुनीति] दोनों (दविध्वतः) सर्वथा मिट जाती हैं । (यत्) क्योंकि वह (चमसे कृते) भोजन सिद्ध होने

वसुः) वाजिनीषु अन्नयुक्तासु क्रियासु निवासशीलः (अति) अतीत्य (विश्वा) सर्वाणि (दुरिता) विघ्नान् (पारिषत्) पृ पूरणे-णिच्, लट् । पूरयेत् (हरी) दुःखहर्तारौ बलपराक्रमौ ॥

४—(स्रुवा) स्रुवौ । चमसौ (इव) यथा (यस्य) सेनापतेः) (हरिणी) हज् स्वीकारे—इनच्, उ० २ । ४६ । स्वीकरणीये (विपेततुः) लङर्थे लिट् । विविधं पततश्चलतः (शिमे) अथर्व—२० । ४ । १ । शिज् निशाने छेदने—रक् पुक्च, टाप् । शिमे हनू नासिके वा—निरु० ६ । १७ । हनू (वाजाय) अन्नाय (हरिणी) हज् नाशने—इनच् । सुखनाशिके अविद्याकुनीती (दविध्वतः) दा धर्तधर्तति० । पा० ७ । ४ । ६५ । ध्व कौटिल्ये यङ्लुकि लट् द्विवचनान्तः ।

सू० ३१ [६१ः]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,०१३)

पर (मदस्य) आनन्द दायक, (हर्यतस्य) कामना योग्य (अन्ध सः) अन्न का (पीत्वा) पान कर के (हरी) बल और पराक्रम दोनों को (प) अन्न के प्रकार (मर्मजत्) शुद्ध करता है ॥ ४ ॥

भाषार्थ—जैसे अन्न खाने से भूख मिटती है और खुरा से अग्नि में घी डालने से धुआँ नष्ट हो जाना है, वैसे हो जो राजा विद्या और सुनीति के फैलाने से अविद्या और कुनीति मिटाता है, वह अन्न के भोजन से बल और पराक्रम बढ़ाता है ॥ ४ ॥

उत स्म सद्यं हर्यतस्य पस्त्योऽरत्यो न वाजं हरिवां अचिक्रदत् । मही चिद्धि धिषणाहर्यदोजसा बृहद् वयो दधिषे हर्यतश्चिदा ॥ ५ ॥

उत । स्म । सद्यं । हर्यतस्य । पस्त्योः । अत्यः । न । वाजम् । हरि-वान् । अचिक्रदत् ॥ मही । चित् । हि । धिषणा । अह-र्यत् । ओजसा । बृहत् । वयः । दधिषे । हर्यतः । चित् । आ॥५॥

भाषार्थ—(हर्यतस्य) कामना योग्य [उस पूर्वोक्त पुरुष] का (सद्य) घर (उत स्म) अवश्य ही (पस्त्योः) आकाश और पृथिवी में [हुआ है] और (हरिवान्) उत्तम पुरुषों वाले [उस पुरुष] ने (अत्यः न) घोड़े के समान (वाजम्) अन्न को (अचिक्रदत्) पुकारा है—(मही) पूत्र-

ध्वरति वधकर्मा—निघ० २ । १६ । सर्वथा विनश्यतः (प्र) प्रकर्षेण (यत्) यतः (कृते) संस्कृते (चमसे) भोजने (मर्मजत्) मृजु शुद्धो - लट् । माष्टिं । शोधयति (हरी) दुःखहर्तारौ बलपराक्रमौ (पीत्वा) पानं कृत्वा (मदस्य) आनन्दकस्य (हर्यतस्य) कमनीयस्य (अन्धसः) अन्नस्य ॥

५—(उत) अवश्यम् (स्म) एव (सद्य) गृहम् (हर्यतस्य) कमनीयस्य (पस्त्योः) जनेर्यक् । उ० ४ । १११ । पस वाधे ग्रन्थे च—यक् तुगा-गमः । पस्त्यं गृहनाम—निघ० ३ । ४ । द्यावापृथिव्योर्मध्ये (अत्यः) अ० २० । ११ । ६ । अश्वः (न) यथा (वाजम्) अन्नम् (हरिवान्) हरयो मनुष्यनाम—निघ० २ । ३ । उत्तम मनुष्योपेतः (अचिक्रदत्) अ० ३ । ३ । १ । कवि

नोय (धिषणा) वेदवाणी ने (चित्) अवश्य (हि) ही (ओजसा) बल के साथ [यह] (अह्यत्) कामना की है । [इसी से] (हर्यतः) कामना योग्य तू ने (चित्) भी (बृहत्) बड़े (वयः) जीवन को (आ) सब ओर से (दधिषे) धारण किया है ॥ ५ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य पूर्वोक्त प्रकार से वेदवाणी को मानकर बलवान् और पराक्रमी होता है, वही आकाश और भूमि पर राज्य करके बहुत अन्न प्राप्त करता है, वैसा ही प्रत्येक मनुष्य को अपना जीवन बनाना चाहिये ॥ ५ ॥

सूक्तम् ॥ ३२ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृदार्षी त्रिष्टुप् ; २, ३ त्रिष्टुप् ॥

राजकर्तव्योपदेशः—राजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

आ रोदसी हर्यमाणो महित्वा नव्यनव्यं हर्यसि मन्मनु म्रियम् ।

प्र पुस्त्यससुर हर्यतं गोराविष्कृधि हरये सूर्याय ॥ १ ॥

आ । रोदसी इति । हर्यमाणः । महि-त्वा । नव्यसु-नव्यम् ।

हर्यसि । मन्म । नु । म्रियम् ॥ प्र । पुस्त्यम् । असुर ।

हर्यतम् । गोः । आविः । कृधि । हरये । सूर्याय ॥ १ ॥

भावार्थ—[हे शूर !] (महित्वा) अपने महत्त्व से (रोदसी) आकाश और भूमि को (आ हर्यमाणः) प्राप्त कर लेता हुआ तू (नव्यनव्यम्)

आह्वाने—एयन्ताल् लुङ्, नुमभावः । आहूतवान् (मही) पूजनीया (चित्) अवश्यम् (हि) (धिषणा) धृषेर्धिष च सञ्ज्ञायाम् । उ० २ । ८२ । इति जिधृषा प्रागल्भ्ये—क्यु, धिषादेश्च । यद्वा, धिष शब्दे—क्यु, टाप्, धिषणा वाङ्नाम—निघ० १ । ११ । वेदवाणी (अह्यत्) अकामयत (ओजसा) बलन (बृहत्) महत् (वयः) जीवनम् (दधिषे) दधातेः—लिट् । त्वं धारितवानसि (हर्यतः) कमनीयः (चित्) अपि (आ) समन्तात् ॥

१—(आ) समन्तात् (रोदसी) अ० ४ । १ । ४ । रुधेः—असुन् धस्य दः, डीप् । विभक्तेः पूर्व सवर्णदीर्घः । सर्वभूतरोधयित्री द्यावापृथिव्यौ—निघ० ३ । ३० (हर्यमाणः) हर्य गतिकान्त्योः—शानच् । प्राप्नुवन् (महित्वा)

नवे नवे (प्रियम्) प्रिय (मन्म) ज्ञान को (नु) संग्रह (हर्यसि) पाता है ।
(असुर) हे बुद्धिमान् ! (गोः) विद्या के (हर्यन्तम्) पाने योग्य (पस्त्यम्)
घर को (हरये) दुःख हरने वाले (सूर्याय) सूर्य [के नमान प्रेरक विद्वान्]
के लिये (प्र) अच्छे प्रकार (आविः कृधिः) प्रकट कर ॥ १ ॥

भाषार्थ—राजा को चाहिये कि पूर्ण विद्वान् होकर प्रकाश और
भूमि के तत्त्वों को जानकर नवीन नवीन विद्याओं के आविष्कार करे और
विद्वान् आचार्य और ब्रह्मचारियों के लिये विद्यामन्दिर आदि स्थान
बनावे ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—१०।६६।११—१३ ॥

आ त्वा हर्यन्तं प्रयुजो जनानां रथे वहन्तु हरिशिप्रमिन्द्र ।
पिब यथा प्रतिभृतस्य सध्वो हर्यन् युजं सधुसादे दशोणिम् ॥
आ । त्वा । हर्यन्तम् । प्र-युजः । जनानाम् । रथे । वहन्तु ।
हरि-शिप्रम् । इन्द्र ॥ पिब । यथा । प्रति-भृतस्य । सध्वः ।
हर्यन् । युजम् । सधु-सादे । दश-ओणिम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] (जनानाम्)
मनुष्यों की (प्रयुजः) प्रार्थनायें (हरिशिप्रम्) सिंह के समान मुख वाले
(हर्यन्तम्) कामना योग्य (त्वा) तुझ को (रथे) रथ पर (आ वहन्तु)
लावें । (यथा) जिससे (सधुसादे) उत्सव के बीच (दशोणिम्) दस

मेहत्वेन (नव्यन्वयम्) नवीन नवीनम् (हर्यसि) प्राप्ताधि (मन्म) मन
ज्ञाने—मनिन् । ज्ञानम् (नु) क्षिप्रम् (प्रियम्) हितकरम् (पस्त्यम्) अ० २० ।
३१ । ५ । गृहम् (असुर) असुरिणि प्रज्ञानामास्यत्यनर्थान्—निरु० १० । ३४ ।
रो सत्वर्तीयः । हे प्रज्ञावन् (हर्यन्तम्) प्रापणीयम् (गोः) विद्यायाः (आविष्कृधिः)
प्रकटीकुरु (हरये) दुःखनाशकाय (सूर्याय) सूर्यवत् प्रेरकाय विदुषे ॥

२—(आ वहन्तु) आनयन्तु (त्वा) त्वाम् (हर्यन्तम्) कमनीयम्
(प्रयुजः) युजिर् योगे—क्षिप् । प्रयोजनाः । प्रार्थनाः (जनानाम्) मनुष्या-
णाम् (रथे) रमणसाधने यात्रे (हरिशिप्रम्) अ० २० । ३० । ४ सिंहसमान-
मुखयुक्तम् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवन् पुरुष (पिब) पानं कुरु (यथा) येन

दिशाओं में क्लेश मिटाने वाले (यज्ञम्) यज्ञ [पूजनीय व्यवहार] को (हर्यन्) चाहता हुआ तू (प्रतिभृतस्य) प्रत्यक्ष रखे हुये (मध्वः) ज्ञान का (पिव) पान करे ॥ २ ॥

भावार्थ—राजा सभा के बीच प्रजा की पार्थनाओं को सुन कर उनके दुखों को मिटाकर राज्य की उन्नति का विचार करे ॥ २ ॥

अपाः पूर्वेषां हरिवः सुतानामथो इदं सवनं केवलं ते । समृद्धि
सोमं मधुमन्तमिन्द्र सुत्रा वृषं जुठर आ वृषस्व ॥ ३ ॥

अपाः । पूर्वेषाम् । हरि-वः । सुतानाम् । अथो इति । इदम् ।
सवनम् । केवलम् । ते ॥ समृद्धि । सोमम् । मधु-मन्तम् ।
इन्द्र । सुत्रा । वृषन् । जुठरे । आ । वृषस्व ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(हरिवः) हे उत्तम मनुष्यों वाले ! [राजन्] तू ने (पूर्वेषाम्) पहिले महारमाओं के (सुतानाम्) निचेड़ों [सिद्धान्तों] का (अपाः) पान किया है, (अथो) इसी लिये (इदम्) यह (सवनम्) ऐश्वर्य (केवलम्) केवल (ते) तेरा है । (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (मधुमन्तम्) ज्ञानयुक्त (सोमम्) ऐश्वर्य को (समृद्धि) तृप्त कर और (वृषन्) हे बलवान् ! (सत्रा) सत्य रीति से (जुठरे) प्रसिद्ध हुये जगत् के

प्रकारेण (प्रतिभृतस्य) प्रत्यक्षभृतस्य (मध्वः) मधुनः । ज्ञानस्य (हर्यन्) कामर्यमानः (यज्ञम्) पूजनीय व्यवहारम् (सधमादे) सहमोदस्थाने । उत्सवे (दशोणिम्) सर्वधातुभ्य इन् । ३० ४ । ११८ । दश + ओण् अपनयने—इन्, पृषोदरादिरुपम् । दशसु दिक्षु क्लेशानामपनेतारं नाशयितारम् ॥

३—(अपाः) पीतवानसि (पूर्वेषाम्) पूर्वमहात्मनाम् (हरिवः) अ० २० । ३१ । ५ । हे श्रेष्ठमनुष्ययुक्त (सुतानाम्) निष्पादितानां सिद्धान्ता-
नाम् (अथो) अपि च (इदम्) दृश्यमानम् (सवनम्) ऐश्वर्यम् (केवलम्) असाधारणम् ॥ विशेषम् (ते) तव (समृद्धि) मदो आमोदे—शपःश्लुः । हर्षः । तर्पय (सोमम्) ऐश्वर्यम् (मधुमन्तम्) ज्ञानयुक्तम् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् (सत्रा) निघ० ३ । १० । सत्येन (वृषन्) हे महाबलवान्

बीच (आ) सब ओर से (वृषस्व) बरसा ॥ ३ ॥

भावार्थ—राजा पूर्व महात्माओं के सिद्धान्तों पर चल कर पेश्वर्य प्राप्त करे और उस का सत् प्रयोग करके संसार को सुख देवे ॥ ३ ॥

सूक्तम् ३३ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ त्रिष्टुप्; २, ३ विराडाक्षी त्रिष्टुप् ॥

राजधर्मोपदेशः—राजा के धर्म का उपदेश ॥

अप्सु धूतस्य हरिवः पिबेह नृभिः सुतस्य जठरं पृणस्व ।

मिमिक्षुर्मद्रय इन्द्र तुभ्यं तेभिर्वर्धस्व मदमुक्यवाहः ॥ १ ॥

अप्-सु । धूतस्य । हरि-वः । पिबे । इह । नृ-भिः । सुतस्य ।

जठरम् । पृणस्व ॥ मिमिक्षुः । यम् । अद्रयः । इन्द्र ।

तुभ्यम् । तेभिः । वर्धस्व । मदम् । उक्य-वाहः ॥ १ ॥

भावार्थ—(हरिवः) हे श्रेष्ठ मनुष्यों वाले ! (अप्सु) प्रजाओं के बीच (नृभिः) नरों [नेताओं] करके (धूतस्य) शोधे हुये, (सुतस्य) निचोड़ [सिद्धान्त] का (इह) यहां पर (पिबे) पान कर और (जठरम्) प्रसिद्ध हुये जगत् को (पृणस्व) सन्तुष्ट कर । (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले पुरुष] (अद्रयः) मेघों [के समान उपकारी पुरुषों] ने (तुभ्यम्) तेरे लिये (यम्) जिस [आनन्द] को (मिमिक्षुः) सींचना चाहा है, (उक्यवाहः)

(जठरे) अ० २० । २४ । ५ । प्रादुर्भूते जगति (आ) समन्तात् (वृषस्व) वर्षय ॥

१—(अप्सु) आपः, आप्ताः प्रजाः, इयानन्दभाष्ये—६ । २७ । प्रजासु (धूतस्य) धातु गतिशुद्ध्योः—क । छान्दसं रूपम् । धूतस्य । शोधितस्य (हरिवः) हे श्रेष्ठमनुष्ययुक्त (पिबे) पानं कुरु (इह) अत्र (नृभिः) नेतृभिः सह (सुतस्य) अभिषुतस्य शोधितस्य सिद्धान्तस्य (जठरम्) अ० २० । २४ । ५ । प्रादुर्भूतं संसारम् (पृणस्व) तर्पय (मिमिक्षुः) मिह सेचने—सन्, लिट् मेढुं सेक्तुमैच्छन् (यम्) आनन्दम् (अद्रयः) अद्रिर्मेघनाम—निघ० १ । १० । मेघसमानोपकारिणः पुरुषाः (इन्द्र) हे परमेश्वर्यवान् राजन् (तुभ्यम्) (तेभिः) तैः पुरुषैः (वर्धस्व) वर्धय (मदम्) आनन्दम् (उक्यवाहः)

हे बचनों पर चलने वाल ! [सत्यवादी] (तेभिः) उन [पुरुषों] के साथ (मदम्) उस आनन्द को (वर्धस्व) तू बढ़ा ॥ १ ॥

भावार्थ—जो राजा विद्वानों के संशोधित निद्धान्तों को मानकर प्रजा को प्रसन्न रखता है, प्रजा भी उसे आनन्द देती है ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—१० । १०४ । २—४ ॥

प्रोग्रां पीतिं वृष्णं इयमि सुत्यां प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम् ।
इन्द्र धेनाभिरुह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्या गृणानः ॥ २ ॥
प्र । उग्राम् । पीतिम् । वृष्णं । इयमि । सुत्याम् । प्र-यै ।
सुतस्य । हरि-अश्व । तुभ्यम् ॥ इन्द्र । धेनाभिः । इह ।
मादयस्व । धीभिः । विश्वाभिः । शच्या । गृणानः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(हर्यश्व) हे वायु समान फुरतीले घोड़ों वाले ! (वृष्णे तुभ्यम्) तुझ महाबली को (प्रयै) आगे चलने के लिये (सुतस्य) निचोड़ [सिद्धान्त] का (उग्राम्) तीव्र, (सत्यम्) सत्यगुण वाला (पीतिम्) घूंट प्र इयमि आगे रखता हूँ । (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले विद्वान्] (धेनाभिः) वेदवाणियों द्वारा (इह) यहां पर (विश्वाभिः) समस्त (धीभिः) बुद्धियों से और (शच्या) कर्म से (गृणानः) उपदेश करता हुआ तू (मादयस्व) आनन्द दे ॥ २ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य फुरतीली सेना वाला ज्ञानवान् और बलवान् हो, सब लोग आदर करके उस बुद्धिमान् कर्मकुशल की वैदिक शिक्षाओं से आनन्द पावें ॥ २ ॥

यह मन्त्र ऊपर आ चुका है—अ० । २० । २५ । ७ ॥

ऊती शचीवस्तव वीर्येण वयो दधाना उशिज ऋतुज्ञाः ।
प्रजावदिन्द्र मनुषो दुरीणे तस्युर्गृणन्तः सध्माद्यासः ॥ ३ ॥

गतिकारकोपपदयोः पूर्वपदकृतिस्वरत्वं च । ३०४ । २२७ । उक्थ+वह प्रापणे-
असि, णित् । हे उक्थेसु वज्रोसु ब्रह्मशील । सत्यवादिन् ॥

३—अयं मन्त्रो व्याख्यातः—अ० २० । २५ । ७ ॥

ऊ॒ती । शु॒ची-वुः । तव॑ । वी॒र्येण॑ । वयः॑ । द॒धानाः॑ । उ॒शिजः॑ ।
 ऋ॒तु-ज्ञाः॑ ॥ प्र॒जा-वत् । इ॒न्द्र । मनु॑षः । दुरो॑णे । त॒स्थुः ।
 गृ॒णन्तः॑ । सु॒ध-मा॒द्यासः॑ ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(शचीवः) हे बुद्धिमान् (इन्द्र) इन्द्र । [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] (तव) तेरी (ऊती) रक्षा से और (वीर्येण) वीरता से (प्रजावत्) उत्तम प्रजा वाले (वयः) जीवन को (दधानाः) धारण करते हुये, (उशिजः) प्रीति युक्त बुद्धिमान् (ऋतज्ञाः) सत्य शास्त्र जानने वाले (मनुषः) मननशील मनुष्य (दुरोणे) घर के बीच (गृणन्तः) गुण बखानते हुये (सधमाद्यासः) मिलकर आनन्द मनाते हुये (तस्थुः) ठहरते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—बुद्धिमान् जिनन्द्रिय प्रधान पुरुष अपनी नीति कुशलता से ऐसा प्रबन्ध करे कि सब मनुष्य विद्वान् होकर उत्तम सन्तान और भृत्य आदि सहित आनन्द से रहें ॥ ३ ॥

॥ इति तृतीयेऽनुवाके तृतीयः पर्यायः ॥

॥ इति तृतीयेऽनुवाकः ॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः ॥

सूक्तम् ३४ ॥

१—१८ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १—४. १३—१५, १८ त्रिष्टुप्; ५; १२ आर्षी त्रिष्टुप्; ६—८, ११, १७ निचृत् त्रिष्टुप्; ६ भुरिक् त्रिष्टुप्; १० विराडाः आर्षी त्रिष्टुप्; १६ आर्षी पङ्क्तिः ॥

परमेश्वरगुणोपदेशः—परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

३—(ऊती) ऊत्या । रक्षणेन (शचीवः) अ० २० । २१ । ३ । हे प्रशस्त-प्रज्ञावन् (तव) (वीर्येण) वीरकर्मणा (वयः) जीवनम् (दधानाः) धारयन्तः (उशिजः) अ० २० । ११ । ४ । कामयमाना मेधाविनः (ऋतज्ञाः) सत्यशास्त्रस्य ज्ञातारः (प्रजावत्) उत्तमप्रजायुक्तम् (इन्द्र) (मनुषः) जनेरसि । उ० २ । ११५ । मन ज्ञाने—उसि । मननशीला मनुष्याः (दुरोणे) अ० ५ । २ । ६ । गृहे—निघ० ३ । ४ (तस्थुः) लडर्थे लिट् । तिष्ठन्ति (गृणन्तः) स्तुवन्तः । गुणान् विज्ञापयन्तः (सधमाद्यासः) मद हर्षे—एयत् । सह हृष्यन्तः ॥

यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत् ।
यस्य शुष्माद् रोदसी अभ्यसेतां नृमणस्य मुहा स जनासु
इन्द्रः ॥ १ ॥

यः । जातः । एव । प्रथमः । मनस्वान् । देवः । देवान् ।
क्रतुना । पुरि-अभूषत् ॥ यस्य । शुष्मात् । रोदसी इति ।
अभ्यसेताम् । नृमणस्य । मुहा । सः । जनासुः । इन्द्रः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(जातः एव) प्रकट होते ही (यः) जिस (प्रथमः) पहिले
(मनस्वान्) मननशील (देवः) प्रकाशमान [परमेश्वर] ने (केतुना) अपनी
बुद्धि से (देवान्) चलते हुये [पृथिवी आदि लोकों] को (पर्यभूषत्) सब ओर
सजाया है । (यस्य) जिसके (शुष्मात्) बल से (नृमणस्य) मनुष्यों को
झुकाने वाले सामर्थ्य की (महुना) महिमा के कारण (रोदसी) दोनों आकाश
और भूमि (अभ्यसेताम्) भय को प्राप्त हुये हैं, (जनासुः) हे मनुष्यो ! (सः)
वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ १ ॥

भावार्थ—जिस अनादि पुरुष ने अपने अनन्त ज्ञान और सामर्थ्य से
पृथिवी आदि लोकों को रचकर नियम में रक्खा है, उस परमेश्वर के गुण
विचार कर मनुष्य अपना सामर्थ्य बढ़ावें ॥ १ ॥

१—(यः) इन्द्रः (जातः) प्रकटः सन् (एव) (प्रथमः) आदिमः
(मनस्वान्) मननवान् (देवः) प्रकाशमानः परमेश्वरः (देवान्) दिव्य गतौ—
पचांघच् । गच्छतः पृथिव्यादिलोकान् (क्रतुना) प्रज्ञया—निघ० ३ । ६
(पर्यभूषत्) भूष अलङ्कारे लङ् । परितो भूषितवान् (यस्य) (शुष्मात्)
बलात् (रोदसी) अ० ४ । १ । ४ । द्यावापृथिव्यौ (अभ्यसेताम्) भ्यस भये-
लङ् । अविभीताम्—निरु० १० । १० (नृमणस्य) अ० ४ । २४ । ३ । नृ + णम
प्रह्वत्वे शब्दे च—पचांघच्, आद्यन्त विपर्ययोऽलोपश्च । नृन् शत्रुभूतान् नमयति
प्रह्वीकरोतीति नृमणं बलम्—निघ० २ । ६ । मनुष्याणां नमयितुः सामर्थ्यस्य
(महुना) महिम्ना (सः) पूर्वोक्तः (जनासुः) हे मनुष्याः (इन्द्रः) परमैश्वर्य-
वान् परमेश्वरः ॥

सू० ३४ [६२२] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,०२१) .

यह सूक्त मन्त्र १२, १६ और १७ को छोड़ कर ऋग्वेद में है—
२। १२। १—१५ ॥

यः पृथिवीं व्यथमानामद्वहत् यः पर्वतान् प्रकुपितान् अरम्णात् ।
यो अन्तरिक्षं विमुमे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात् स जनासु
इन्द्रः ॥ २ ॥

यः । पृथिवीम् । व्यथमानाम् । अद्वहत् । यः । पर्वतान् । प्र-
कुपितान् । अरम्णात् ॥ यः । अन्तरिक्षम् । वि-मुमे । वरीयः ।
यः । द्याम् । अस्तभ्नात् । सः । जनासुः । इन्द्रः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(यः) जिस [परमेश्वर] ने (व्यथमानाम्) चलती
हुई (पृथिवीम्) पृथिवी को (अद्वहत्) ढढ़ किया है, (यः) जिस ने
(प्रकुपितान्) कोप करते हुये (पर्वतान्) मेवों को (अरम्णात्) उहराया है ।
(यः) जिस ने (वरीयः) अधिक चौड़े (अन्तरिक्षम्) आकाश को (विमुमे) नाप
डाला है, (यः) जिस ने (द्याम्) सूर्य को (अस्तभ्नात्) खम्मे समान खड़ा किया
है, (जनासुः) हे मनुष्यो! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्यवाला
परमेश्वर] है ॥ २ ॥

भावार्थ—जो परमात्मा सूर्य के आकर्षण से पृथिवी को उहराता,
किरणों से खींचे हुये पानी को बरसाना, और आकाश के बीच सूर्य को खम्मे
के समान बनाकर अनेक लोकों को उसके आकर्षण में सब और घुमाना, है, उस
परमेश्वर की उपासना से आत्मबल बढ़ाओ ॥ २ ॥

यो हत्वाहिमरिणात् सुप्तं सिन्धुन् यो गा उदाजदपथा वलस्ये ।

२—(यः) परमेश्वरः (पृथिवीम्) विस्तीर्णां भूमिम् (व्यथमानाम्) चलन्तीम्
(अद्वहत्) ढढ़ीकृतवान् । सूर्यस्याकर्षणे धृतवान् (यः) पर्वतान्) मेघान् (प्रकुपि-
तान्) प्रकुपितान् (अरम्णात्) रमु क्रीडायाम् शनाप्रत्ययः, अन्तर्गतार्थः । स्थापित-
वान् सूर्याकर्षणे (यः) (अन्तरिक्षम्) आकाशम्) (विमुमे) माड् माने—लिट् ।
विशेषणं मानं कृतवान् (वरीयः) उरुतरम् (यः) (द्याम्) सूर्यमण्डलम् (अस्तभ्नात्)
स्तम्भं यथा स्थापितवान् । अन्यद् गतम् ॥

यो अश्मनोरुन्तरग्निं जुजानं संवृक् समत्सु स जनसु इन्द्रः ३
 यः । हत्वा । अहिम् । अरिणात् । सप्त । सिन्धून् । यः । गाः ।
 उत्-आजत् । अप-धा । वलस्य ॥ यः । अश्मनोः । अन्तः ।
 अग्निम् । जुजानं । सुम्-वृक् । समत्-सु । सः । जुनासुः ।
 इन्द्रः ॥ ३ ॥

भाष्यार्थ—(यः) जिस [परमेश्वर] ने (अहिम्) सब ओर चलने वाले
 मेघ में (हत्वा) व्यापकर (सप्त) सात (सिन्धून्) बहने हुये समुद्रों [अर्थात्
 भूरभुवः आदि सात अवस्था वाले सब लोकों] को अरिणात् चलाया है, (वलस्य)
 बल [सामर्थ्य] के (अपधा) हर्ष से धारण करने वाले यः) जिसने गाः) पृथि-
 वियों को (उदाजत्) उत्तमता से चलाया है । (समत्सु, संग्रामों के बीच (संवृक्)
 शत्रुओं के रोकने वाले (यः) जिसने (अश्मनोः) दो व्यापक मेघों वा पत्थरों के
 (अन्तः) बीच (अग्निम्) अग्नि [बिजुनी] को (जुजान) उत्पन्न किया है, (जनासः)
 हे मनुष्यो ! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ ३ ॥

भाष्यार्थ—भूर, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्य, सात लोक संसार की
 अवस्था विशेष हैं । परमेश्वर मेघ आदि पदार्थों और सात अवस्था वाले
 समस्त संसार में व्याप कर पृथिवी आदि लोकों को आकर्षण में रखकर, मेघ

३—(यः) इन्द्रः (हत्वा) हन हिंसागत्यः । गत्वा । व्याप्य (अहिम्) अहि
 अहिनिभ्यां ह्रस्वश्चः । उ० ४ । १३८ आङ्+हन हिंसागत्योः—इण्, डित् ।
 आहन्तारम् । समन्ताद्, गन्तारं मेघम्—निघ० १।१० (अरिणात्) री गतिरेषणयोः—
 लङ् । अगमयत् (सप्त) सप्तसंख्याकान् (सिन्धून्) स्यन्दमानान् लमुद्रान् इव
 भूभुवः स्वर्महो जनस्तपः सत्यमिति सप्तलोकान् संसारस्य अवस्थाविशेषान्
 (यः) (गाः) पृथिवीः (उदाजत्) अज गतिक्षेपणयोः— लङ् । उत्तमतया चालित-
 वान् (अपधा) आतश्चोप सर्गे । पा० ३ । १ । १३६ । अप+दधातेः— कप्रत्ययः ।
 सुपां सुवृक् । पा० ७ । १ । ३६ । विभक्तोर्डा । अपधः । हर्षेण धारकः वलस्य) साम-
 र्थ्यस्य (यः) (अश्मनोः) व्यापकयो मेघयोः पाषाणयोर्वा अन्तः) मध्ये (अग्निम्)
 विद्युत् (जुजान) उत्पादयामास (संवृक्) वृजि धर्जने—किप् । संवर्जकः । शत्रूणां
 निवारकः (समत्सु) अ० २० । ११ । ११ । सङ्ग्रामेषु । अन्यद् गतम् ॥

पाषाण आदि सब वस्तुओं में विजुको धारण कस्के परमाणुओं के संयोग यियोग से अनन्त रचना करता है, उस को जानकर मनुष्य वृद्धि करें ॥ ३ ॥

इस मन्त्र का मिलान करो—अथर्व—२० । ६१ । १२ ॥

येनेमा विश्वा च्यव'ना कृतानि यो दासं वर्णमधरं गुहाकः ।
श्वघ्नीव यो जिगीवां लक्षमाद'दुर्यः पुष्टानि स जनासु इन्द्रः ४
येन । इमा । विश्वा । च्यव'ना । कृतानि । यः । दासंम् ।
वर्णंम् । अधरम् । गुहा । अकुरित्यकः ॥ श्वघ्नी-इव । यः ।
जिगीवान् । लक्षम् । आदत् । अर्यः । पुष्टानि । सः ।
जनासुः । इन्द्रः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(येन) जिस [परमेश्वर] करके (इमा) यह (विश्वा) सब (च्यवना) चलते हुये लोक (कृतानि) बनाये गये हैं, (यः) जिसने (दासम्) देने योग्य (वर्णम्) रूप को (गुहा) गुहा[गुप्त-अवस्था] में (अधरम्) नीचे (अकः) किया है । (यः) जो, (इव) जैसे (श्वघ्नी) वृद्धि पाने वाला (जिगीवान्) विजयी पुरुष (लक्षम्) लक्ष्य [जीते पदार्थ] को, (अर्यः) बैरो के (पुष्टानि) बढ़े हुये धनों को (आदत्) ले लेता है, (जनासः) हे मनुष्यो ! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ ४ ॥

४—(येन) परमेश्वरेण (इमा) इमानि दृश्यमानानि (विश्वा) सर्वाणि (च्यवना) च्युङ् गतौ—त्युट् । शेलुक् । गच्छन्ति जगन्ति । लोकान् (कृतानि) रचितानि (यः) (दासम्) दातव्यम् (वर्णम्) रूपम् (अधरम्) निम्नम् (गुहा) गुहायाम् । गुप्तावस्थायाम् (अकः) करोतेर्लुङ् छान्दसं रूपम् । अकार्षीत् (श्वघ्नी) अ० २० । १७ । ५ । श्वन्नुत्तन्पूषन्० । उ० १ । १५६ । दुम्रो शिव गतिवृद्ध्योः—कनिन्+हन हिंसागत्योः—घञर्थे कप्रत्ययः । श्वघ्न-इनि । शुनो वृद्धेर्घः प्राप्तिर्यस्य सः । वृद्धिं गतः (इव) यथा (यः) (जिगीवान्) जि जये क्वसु, छान्दसो दीर्घः । विजयी पुरुषः (लक्षम्) लक्ष्यम् । जितपदार्थम् (आदत्) आदत्ते (अर्यः) षष्ठ्यैकवचने छान्दसो यणादेशः । अरेः । शत्रोः (पुष्टानि) समृद्धानि धनानि । अन्यद् गतम् ॥

भाषार्थ—जो सब घूमते हुये लोकों को बनाता है और पदार्थों के रूपों को बीज के भीतर छिपा रखता है और जो दुष्टों को दण्ड देता है, मनुष्य उस परमेश्वर के गुणों को ग्रहण करे ॥ ४ ॥

यं स्मा पृच्छन्ति कुहु सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम् ।
 सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति अस्मै धत्त स जनास इन्द्रः ५
 यम् । स्म । पृच्छन्ति । कुह । सः । इति । घोरम् । उत ।
 ईम् । आहुः । न । एषः । अस्ति । इति । एनम् ॥ सः ।
 अर्यः । पुष्टीः । विजः-इव । आ । मिनाति । अत् । अस्मै ।
 धत्त । सः । जनासः । इन्द्रः ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(यम्) जिस (घोरम्) भयानक को [कोई कोई] (सः) वह (स्म) निश्चय करके (कुह) कहां है, (इति) ऐसा (पृच्छन्ति) पूछते हैं, (उत) और [कोई कोई] (एनम्) इसको, (एषः) वह (अस्ति ईम्) है ही (न) नहीं, (इति) ऐसा (आहुः) कहते हैं । (सः) वह (विजः) विवेकी (इव) ही (अर्यः) बैरी के (पुष्टीः) बड़े हुये धनों को (आ) सब ओर से (मिनाति) नष्ट करता है, (अस्मै) उसके लिये तुम (अत्) सत्य [अद्वा] (धत्त) धारण करो, (जनासः) हे मनुष्यो ! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ ५ ॥

५—(यम्) (स्म) एव (पृच्छन्ति) जिज्ञासन्ते (कुह) क (सः) (इति) अनेन प्रकारेण । (सेति) सोऽपि लोपे चेत् पादपूरणम् । पा० ६।१। १३४। इति सोर्लोपे गुणः । (घोरम्) भयङ्करं परमेश्वरम् (उत) अपि च (ईम्) सर्वतः । निश्चयेन (आहुः) कथयन्ति (न) निषेधे (एषः) (अस्ति) वर्तते (इति) (एनम्) इन्द्रम् (सः) (अर्यः) म० ४ । अर्यः (पुष्टीः) पोषणानि धनानि (विजः) विजिर् पृथग्भावे—रूपत्ययः । विवेकी (इव) एवार्थे (आ) समन्तात् (मिनाति) मीड् हिंसायाम् । मीनाते—निगमे । पा० ७। ३। ८१ । इति ह्रस्वः । नाशयति (अत्) सत्यम् । अद्वाप् (अस्मै) (धत्त) धरत । अन्यद् गतम् ॥

भावार्थ—जिस परमात्मा की विवेचना मनुष्य अनेक प्रकार करते हैं, और जो सब का आधार है, वही परमेश्वर सब का उपास्य देव है ॥ ५ ॥

यो रुध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः ।
युक्तग्रावणो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनासु इन्द्रः ॥ ६ ॥
यः । रुध्रस्य । चोदिताः । यः । कृशस्य । यः । ब्रह्मणः ।
नाधमानस्य । कीरेः ॥ युक्त-ग्रावणः । यः । अविता । सु-
शिप्रः । सुत-सोमस्य । सः । जनासुः । इन्द्रः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(यः) जो [परमेश्वर] (रुध्रस्य) धनी का, और (यः) जो (कृशस्य) दुर्बल का, (यः) जो (नाधमानस्य) पेश्वर्य वाले, (कीरेः) गुणों के व्याख्याता (ब्रह्मणः) ब्रह्मा [ब्रह्मज्ञानी] का (चोदिता) आगे बढ़ाने वाला है । (यः) जो (युक्तग्रावणः) योगाभ्यासी परिणत का और (सुतसोमस्य) मोक्ष पा लेने वाले का (सुशिप्रः) बड़ा सेवनीय (अविता) रक्षक है, (जनासुः) हे मनुष्यो ! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्य उस परमात्मा की उपासना से सदा उत्तम कर्म करें, जो सब को श्रेष्ठ कर्म द्वारा उन्नति के लिये आज्ञा देता है ॥ ६ ॥

यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे

६—(यः) परमेश्वरः (रुध्रस्य) स्फायितञ्जिवञ्जि० । उ० २ । १३ ।
रध हिंसासंराद्धयोः—रक् । समृद्धस्य । धनिकस्य (चोदिता) प्रेरकः
(यः) (कृशस्य) दुर्बलस्य (यः) (ब्रह्मणः) वेदज्ञानिनः पुरुषस्य (नाध-
मानस्य) नाधृ याञ्जोपतापैश्वर्याशीःषु—शानच् । पेश्वर्ययुक्तस्य (कीरेः) अ०
२० । १७ । १२ । गुणव्याख्यातुः (युक्तग्रावणः) युज समाधौ—क्त । अन्ये-
भ्येऽपि दृश्यन्ते । पा० ३ । २ । ७५ । गृ शब्दे विज्ञापे स्तुतौ च—कनिप् ।
अभ्यस्तयोगस्य परिणतस्य (यः) (अविता) रक्षकः (सुशिप्रः) स्फायित-
ञ्जिवञ्जि० । उ० २ । १३ । शेषे सेवायाम्—रक्, पृषोदरादि त्वाद् रूपसिद्धिः ।
सुसेवनीयः (सुतसोमस्य) पु गतौ प्रसवैश्वर्ययोश्च—क्त, सोमो मोक्षः ।
प्राप्तमोक्षस्य । अन्यत् गतम् ॥

रथासः । यः सूर्यं य उषसं जुजानु यो अपां नेता स जनासु
इन्द्रः ॥ ७ ॥

यस्य । अश्वासः । प्र-दिशि । यस्य । गावः । यस्य । ग्रामाः ।
यस्य । विश्वे । रथासः ॥ यः । सूर्यम् । यः । उषसम् । जुजान् ।
यः । अपाम् । नेता । सः । जुनासुः । इन्द्रः ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(यस्य) जिसकी (प्रदिशि) बड़ी आज्ञा में (अश्वासः)
घाड़े, (यस्य) जिसकी [आज्ञा में] (गावः) गाय बैल आदि पशु, (यस्य)
जिसकी [आज्ञा में] (ग्रामाः) गाम [मनुष्य समूह] और (यस्य) जिसकी
[आज्ञा में] (विश्वे) सब (रथासः) विहार कराने वाले पदार्थ हैं ।
(यः) जिस ने (सूर्यम्) सूर्य को, (यः) जिस ने (उषसम्) प्रभात वेला को
(जुजान) उत्पन्न किया है, और (यः) जो (अपाम्) जलों का (नेता)
पहुँचाने वाला है, (जनासः) हे मनुष्यो ! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र
[बड़े ऐश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ ७ ॥

भावार्थ—जिस परमात्मा के अनन्त सामर्थ्य से सब उपकारी जीव
और पदार्थ उत्पन्न हुये हैं, उस जगदीश्वर की उपासना करके मनुष्य उपकार
करें ॥ ७ ॥

यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभया अमित्राः । सुमानं
चिद्रथमातस्युवांसा नाना हवेते स जनासु इन्द्रः ॥ ८ ॥

यम् । क्रन्दसी इति । संयती इति । सुम-यती । विह्वयेते इति
वि-ह्वयेते । परे । अवर । उभयाः । अमित्राः ॥ सुमानम् ।

७—(यस्य) परमेश्वरस्य (अश्वासः) तुरङ्गाः (प्रदिशि) प्रकृष्टाया—
माज्ञायाम् (यस्य) (गावः) धेनुवृषभादयः पशवः (यस्य) (ग्रामाः) मनुष्य—
समूहाः (यस्य) (विश्वे) (रथासः) विहारसाधनाः पदार्थाः (यः)
(सूर्यम्) सवितृ मण्डलम् (यः) (उषसम्) प्रत्यूषकालम् (जुजान) उत्पा-
दितवान् (यः) (अपाम्) जलानाम् (नेता) प्रापकः । अन्यद् गतम् ॥

चित् । रथम् । आतस्थि-वांसा । नाना । हवेते इति । सः ।

जुनासुः । इन्द्रः ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(यम्) जिसको (संयती) आपस में जुटी हुयी (क्रन्दसी) ललकारती हुयी दो सेनायें (विह्वयेते) विविध प्रकार पुकारती हैं, (परे) ऊंचे [जीतने वाले] और (अवरे) नीचे [हारने वाले] (उभयाः) दोनों पक्ष (अमित्राः) शत्रुदल [पुकारते हैं] । और [जिसको] (समानम्) एक (चित्) ही (रथम्) रथ में (आतस्थिवांसा) चढ़े हुये दोनों [योधा और सारथी] (नाना) बहुत प्रकार से (हवेते) बुलाते हैं, (जनासुः) हे मनुष्यो ! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ ८ ॥

भावार्थ—जिस इष्टदेव परमात्मा का स्मरण करके सब मनुष्य उत्साही होकर आगे बढ़ते हैं, उसकी उपासना सबको करनी चाहिये ॥ ८ ॥

यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते ।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत् स जनासु
इन्द्रः ॥ ८ ॥

यस्मात् । न । ऋते । वि-जयन्ते । जनासः । यम् । युध्यमानाः ।
अवसे । हवन्ते ॥ यः । विश्वस्य । प्रति-मानम् । बभूव ।
यः । अच्युत-च्युत् । सः । जुनासुः । इन्द्रः ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(यस्मात् ऋते) जिस के बिना (जनासः) मनुष्य (न)

८—(यम्) परमेश्वरम् (क्रन्दसी) अ० २ । ४ । ३ । कवि आह्वाने—असुन्, ङीप् पूर्वसवर्णादीर्घः । क्रन्दस्यौ । आह्वयन्त्यौ द्वे सेने (संयती) इण् गतौ-शतृ । संगच्छमाने (विह्वयेते) विविधमाह्वयतः प्रतिभटान् (परे) प्रकृष्टाः । जनारः (अवरे) निकृष्टाः । पराजिताः (उभयाः) उभयपक्षाः (अमित्राः) शत्रवः (समानम्) एकम् (चित्) एव (रथम्) यानम् (आतस्थिवांसा) अधितिष्ठन्तौ (नाना) अनेकधा (हवेते) आह्वयतः । अन्यद् गतम् ॥

९—(यस्मात्) परमेश्वरात् (न) निषेधे (ऋते) बिना (विजयन्ते)

रथासः । यः सूर्यं य उषसं जुजानु यो अपां नेता स जनासु
इन्द्रः ॥ ७ ॥

यस्य । अश्वासः । प्र-दिशि । यस्य । गावः । यस्य । ग्रामाः ।
यस्य । विश्वे । रथासः ॥ यः । सूर्यम् । यः । उषसम् । जुजानु ।
यः । अपासु । नेता । सः । जुनासुः । इन्द्रः ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(यस्य) जिसकी (प्रदिशि) बड़ी आज्ञा में (अश्वासः)
घांड़े, (यस्य) जिसकी [आज्ञा में] (गावः) गाय बैल आदि पशु, (यस्य)
जिसकी [आज्ञा में] (ग्रामाः) गाम [मनुष्य समूह] और (यस्य) जिसकी
[आज्ञा में] (विश्वे) सब (रथासः) विहार कराने वाले पदार्थ हैं ।
(यः) जिस ने (सूर्यम्) सूर्य को, (यः) जिस ने (उषसम्) प्रभात वेला को
(जुजानु) उत्पन्न किया है, और (यः) जो (अपाम्) जलों का (नेता)
पहुँचाने वाला है, (जनासः) हे मनुष्यो ! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र
[बड़े ऐश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ ७ ॥

भावार्थ—जिस परमात्मा के अनन्त सामर्थ्य से सब उपकारी जीव
और पदार्थ उत्पन्न हुये हैं, उस जगदीश्वर की उपासना करके मनुष्य उपकार
करें ॥ ७ ॥

यं क्रन्दसी संयुती विह्वयेते परेऽवर उभयां अमित्राः । सुमानं
चिद्रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनासु इन्द्रः ॥ ८ ॥

यम् । क्रन्दसी इति । संयुती इति । सुसंयुती । विह्वयेते इति
विह्वयेते । परे । अवरे । उभयाः । अमित्राः ॥ सुमानम् ।

७—(यस्य) परमेश्वरस्य (अश्वासः) तुरङ्गाः (प्रदिशि) प्रकृष्टाया—
माज्ञायाम् (यस्य) (गावः) धेनुवृषभादयः पशवः (यस्य) (ग्रामाः) मनुष्य—
समूहाः (यस्य) (विश्वे) (रथासः) विहारसाधनाः पदार्थाः (यः)
(सूर्यम्) सवितुर्मण्डलम् (यः) (उषसम्) प्रत्यूषकालम् (जुजानु) उत्पा-
दितवान् (यः) (अपाम्) जलानाम् (नेता) प्रापकः । अन्यद् गतम् ॥

चित् । रथम् । आतस्थि-वांसा । नाना । हवेते इति । सः ।
जुनासुः । इन्द्रः ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(यम्) जिसको (संयती) आपस में जुटी हुयी (क्रन्दसी) ललकारती हुयी दो सेनायें (विह्वयेते) विविध प्रकार पुकारती हैं, (परे) ऊंचे [जीतने वाले] और (अवरे) नीचे [हारने वाले] (उभयाः) दोनों पक्ष (अमित्राः) शत्रुदल [पुकारते हैं] । और [जिसको] (समानम्) एक (चित्) ही (रथम्) रथ में (आतस्थिवांसा) चढ़े हुये दोनों [योधा और सारथी] (नाना) बहुत प्रकार से (हवेते) बुलाते हैं, (जनासः) हे मनुष्यो ! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ ८ ॥

भावार्थ—जिस इष्टदेव परमात्मा का स्मरण करके सब मनुष्य उत्साही होकर आगे बढ़ते हैं, उसकी उपासना सबको करनी चाहिये ॥ ८ ॥

यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते ।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत् स जनासु
इन्द्रः ॥ ८ ॥

यस्मात् । न । ऋते । वि-जयन्ते । जनासः । यम् । युध्यमानाः ।
अवसे । हवन्ते ॥ यः । विश्वस्य । प्रति-मानम् । बभूव ।
यः । अच्युत-च्युत् । सः । जुनासुः । इन्द्रः ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(यस्मात् ऋते) जिस के बिना (जनासः) मनुष्य (न)

८—(यम्) परमेश्वरम् (क्रन्दसी) अ०२ । ४ । ३ । कवि आह्वाने—असुन्, डीप् पूर्वसवर्णादीर्घः । क्रन्दस्यौ । आह्वयन्त्यौ द्वे सेने (संयती) इण् गतौ-शतृ । संगच्छमाने (विह्वयेते) विविधमाह्वयतः प्रतिभटान् (परे) प्रकृष्टाः । जनारः (अवरे) निकृष्टाः । पराजिताः (उभयाः) उभयपक्षाः (अमित्राः) शत्रवः (समानम्) एकम् (चित्) एव (रथम्) यानम् (आतस्थिवांसा) अधितिष्ठन्तौ (नाना) अनेकधा (हवेते) आह्वयतः । अन्यद् गतम् ॥

९—(यस्मात्) परमेश्वरात् (न) निषेधे (ऋते) बिना (विजयन्ते)

नहीं (विजयन्ते) विजय पाते हैं, (यम्) जिसको (युध्यमानाः) लड़ते हुये लोग (अवसे) रक्षा के लिये (हवन्ते) पुकारते हैं। (यः) जो (विश्वस्य) संसार का (प्रतिमानम्) प्रत्यक्ष नापने का साधन और (यः) जो (अच्युत-च्युत्) नहीं हिलने वालों का हिलाने वाला (बभूव) है, (जनासः) हे मनुष्यो ! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ ६ ॥

भावार्थ—जिस जगदीश्वर की उपासना से ही मनुष्य युद्ध में जय पाते हैं, जो सब संसार को ठीक ठीक जानता और जो अत्यन्त से अत्यन्त दृढ़ स्वभाव वालों को वश में रखता है, उसकी उपासना सब करें ॥ ६ ॥

यः शश्वंतो महीने दधानानमन्यमानान् शर्वा जुघान । यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्यो हुन्ता स जनासु इन्द्रः ॥ १० ॥

यः । शश्वतः । महि । एनः । दधानान् । अमन्यमानान् ।

शुर्वा । जुघान ॥ यः । शर्धते । न । अनु-ददाति । शृध्याम् ।

यः । दस्योः । हुन्ता । सः । जनासुः । इन्द्रः ॥ १० ॥

भाषार्थ—(यः) जिस ने (महि) बड़े (एनः) पाप को (दधानान्) धारण करने वाले (शश्वतः) बहुत से (अमन्यमानान्) अज्ञानियों को (शर्वा) शासनरूपी वज्र से (जुघान) मारा है। (यः) जो (शर्धते) अपमान करने वाले को (शृध्याम्) उत्साह (न) नहीं (अनुददाति) कभी देता है, और (यः)

विजयं प्राप्नुवन्ति (जनासः) मनुष्याः (यम्) (युध्यमानाः) युद्धं कुर्वाणाः (अवसे) रक्षणाय (हवन्ते) आह्वयन्ति (यः) (विश्वस्य) संसारस्य (प्रतिमानम्) प्रत्यक्षमानसाधनम् (बभूव) लडर्थे लिट् । भवति (यः) (अच्युतच्युत्) अच्युतानाम्, अच्योवयितव्यानां स्थावरादीनां च्यावयिता प्रेरयिता । अन्यद् गतम् ॥

१०—(यः) परमेश्वरः (शश्वतः) बहून्—निघ० ३ । १ (महि) महत् (एनः) पापम् (दधानान्) धरतः (अमन्यमानाम्) अज्ञानिनः । शठान् (शर्वा) दुष्टाभावाः । शरणा । शासनरूपवज्रेण (जुघान) नाशितवान् (यः) (शर्धते) शत्रु शब्दकुत्सायाम्, अपमाने उत्साहे च—शत्रु । अपमानं कुर्वते (न) निषेधे (अनुददाति) आनुकूल्येन प्रयच्छति (शृध्याम्) शत्रु उत्साहे—क्यप । शर्धो

जो (दस्योः) डाकू का (हन्ता) मारने वाला है, (जनासः) हे मनुष्यो ! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ १० ॥

भाषार्थ—जो परमात्मा पापियों, निन्दकों और डाकुओं को बिना दण्ड दिये नहीं छोड़ता, अर्थात् दण्डनीय को दण्ड ही देता है, उसी को न्यायकारी जगदीश्वर जानो ॥ १० ॥

यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत् ।
 ओजायमानं यो अहिं जुघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः ॥११
 यः । शम्बरम् । पर्वतेषु । क्षियन्तम् । चत्वारिंश्याम् ।
 शरदि । अनु-अविन्दत् ॥ ओजायमानम् । यः । अहिम् ।
 जुघानं । दानुम् । शयानम् । सः । जनासुः । इन्द्रः ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(यः) जिस ने (पर्वतेषु) वादलों में (क्षियन्तम्) रहते हुये (शम्बरम्) चलने वाले पानो को (चत्वारिंश्याम्) भित्ता नाश करने वाले (शरदि) वर्ष में (अन्वविन्दत्) निरन्तर पहुंचाया है । (यः) जिसने (ओजायमानम्) अत्यन्त बल करते हुये, (दानुम्) छेदने वाले, (शयानम्) पड़े हुये (अहिम्) सब ओर से नाश करने वाले [विघ्न] को (जघान) नष्ट किया है,

बलनाम—निघ० २।६। उत्साहम् (यः) (दस्योः) परपदार्थापहारकस्य (हन्ता) घातकः । अन्यद् गतम् ॥

११—(यः) इन्द्रः परमेश्वरः (शम्बरम्) कोरन् । उ० ४।१५। शम्बरं सम्बन्धने गतौ च-अरन्, यद्वा शम्+वृञ् वरणे-अप्, वस्य बः । शम्बरं मेघः—निघ० १।१०। शम्बरमुदकम्—१।१२। शम्बरं बलम् २।६। गतिशीलं जलम् (पर्वतेषु) मेघेषु (क्षियन्तम्) निवसन्तम् (चत्वारिंश्याम्) अशुप्रविलटि० । उ० १।१५। चत याचने-कन्, टाप्+रिश् हिंसोयाम्-क, गौरादित्वाद् डीष्, छान्दसो जुम् । चत्वाया भित्ताया रिश्यां नाशिकायाम् (शरदि) वटसरे (अन्वविन्दत्) अन्तर्गतण्यर्थः । निरन्तरं प्रापितवान् (ओजायमानम्) कर्तुः क्यङ् सलोपश्च । पा० ३।१।११। ओजस्-क्यङ् ओजसोऽप् सरसो नित्यमितरेषां विभाषया । घा० पा० ३।१।११। सकारलोपः । ओजो बलम्, सद्बदाचरन्तम् । अतिशयितबल-शुक्लम् (यः) (अहिम्) म० ३। आहन्तारं समन्ताद् नाशयितारं विघ्नम् (जघान)

(जतोसः) हे मनुष्यो ! (मः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ ११ ॥

भावार्थ—जो परमात्मा सुखा के समय अकाल में मेह बरसाकर अन्न उत्पन्न करता और क्लेशों का नाश करके शारीरिक और आत्मिक सुख पहुंचाता है, उसी की उपासना किया करो ॥ ११ ॥

यः शम्बरं पुर्यतरुत् कसीभिर्योऽचारुकास्नापिबत् सुतस्य । अन्त-
गिरौ यजमानं बहुं जनं यस्मिन्नासूच्छत् स जनासु इन्द्रः ॥ १२

[सूचना—मन्त्र १२, १६, १७ ऋग्वेद आदि अन्य वेदों में नहीं हैं, और इन का पदपाठ गवर्नमेन्ट बुकडिगो बम्बई के पुस्तक में भी नहीं दिया । हम स्वामी विश्वेश्वरानन्द नित्यानन्द कृत पदसूत्री से संग्रह कर के स्वरों को यथा-सम्भव शोधकर यहां लिखते हैं, बुद्धिमान् जन विचार लेवें]

यः । शम्बरम् । परि । अतरुत् । कसीभिः । यः । अचारु ।
कास्ना । अपिबत् । सुतस्य ॥ अन्तः । गिरौ । यजमानम् ।
बहुम् । जनम् । यस्मिन् । आसूच्छत् । सः । जनासुः ।
इन्द्रः ॥ १२ ॥

भाषार्थ—(यः) जिसने (शम्बरम्) मेघ [के समान उपकारी पुरुष] को (कसीभिः) ज्ञानों के साथ (परि) सबप्रकार (अतरत्) तराया है, (यः) जिस (अचारु) अचालु [निश्चल] ने (कास्ना) प्रकाश के साथ (सुतस्य) तत्त्व का (अपिबत्) पान कराया है । और [जिसने] (यस्मिन्) जिस (गिरौ अन्तः)

नाशितवान् (दानुम्) दाभाभ्यां जुः । उ० ३ । ३२ । दाप् लवने-नु । छेत्तारम् (शयानत्) कृतशयनमिव वर्तमानम् । अन्यद् गतम् ॥

१२--(यः) इन्द्रः (शम्बरम्) म० ११ । मेघमिवोपकारिणम् (परि) सर्वतः (अतरत्) तृ तरणे—लङ् । पारं कृतवान् (कसीभिः) अचितृस्तृतन—विभ्य ईः । उ० ३ । १५८ । कस गतिशासनयोः—ईप्रत्ययः । कसतोति गति-कर्मा—निघ० २ । १४ । ज्ञानैः (यः) (अचारु) चर गतौ—उण् । विभक्तैर्लुक् । अचारुः । अचालुः । निश्चलः (कास्ना) रास्नासास्ना० । उ० ३ । १५ कास्य शब्दे दीप्ता च-नप्रत्ययः, दाप्, विभक्तेराकारः । कास्तया दीप्त्या (अपिबत्) अन्तर्गत-

तत्त्व ज्ञान के भीतर (बहुम्) बहुत से (यजमानम्) यज्ञ करने वाले (जनम्) लोगों को (आमूर्छन्) सब प्रकार बढ़ाया है, (जनासः) हे मनुष्यो (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ १२ ॥

भावार्थ—परमात्मा उपकारी ज्ञानी पुरुषों को दुख से पार करता और वैदिक तत्त्वों पर चलने वालों को बढ़ाता है, हम उस परमेश्वर की भक्ति करें ॥ १२ ॥

यः सप्त-रश्मि-वृषभस्तु-विष्मान्वासु-जन् सतवे सप्त सिन्धून् ।
यै रौहिणमस्फुरद् वज्रबाहुव्यामिरोहन्तं स जनासु इन्द्रः ॥ १३ ॥
यः । सप्त-रश्मिः । वृषभः । तु-विष्मान् । अवा-असृजत् ।
सतवे । सप्त । सिन्धून् ॥ यः । रौहिणम् । अस्फुरत् । वज्र-
बाहुः । व्याम् । आ-रोहन्तम् । सः । जनासुः । इन्द्रः ॥ १३ ॥

भाषार्थ—(सप्तरश्मिः) सात प्रकार की [शुक्ल, नील, पीत, रक्त, हरित, कपिश और चित्र] किरणों वाले सूर्य के समान (यः) जिस (वृषभः) सुख की वरसा करने वाले, (तुविष्मान्) बलवान् ने (सप्त) सात (सिन्धून्) बहते हुये समुद्रों [के समान भूर् आदि सात लोकों] को (सतवे) चलने के लिये (अवासृजत्) धिमुक्त किया है । और (यः) जिस (वज्रबाहुः) वज्र

एवार्थः । पानमकारयत् (सुतस्य) निष्पादितस्य तत्त्वस्य (अन्तः) मध्ये (गिरौ) कृगुशृपु० । उ० ४ । १४३ । गृ विज्ञापने—इप्रत्ययः । तत्त्वज्ञाने (यजमानम्) (बहुम्) बहुसंख्याकम् (जनम्) मनुष्यसमूहम् (यस्मिन्) ज्ञाने (आमूर्छन्) आङ्+मूर्छा मोहसमुद्धाययोः—लङ् । समन्ताद् वर्धितवान् । अन्यद् गतम् ॥

१३—(यः) इन्द्रः (सप्तरश्मिः) अ० ६ । ५ । १५ । सप्त आदित्यरश्मयः निर० ४ । २६ । शुक्लनीलपीतादिवर्णाः सप्तकिरणाः सन्ति यस्य सः । सूर्यलोक इव । (वृषभः) सुखस्य वर्षिता (तुविष्मान्) बलवान् (अवासृजत्) विमुक्तवान् (सतवे) गन्तुम् (सप्त) (सिन्धून्) म० ३ । स्यन्दमानान् समुद्रान् इव भूरादिसप्तलोकान्, संसारस्यावस्थाविशेषान् (यः) (रौहिणम्) रहेश्वर ।

समान भुजाओं वाले [दृढ़ शरीर वाले वीर सदृश] ने (घाम्) आकाश को (आरोहन्तम्) चढ़ते हुये (रौहिणम्) उपजाने वाले बादल को (अस्फुरत्) घुमड़ाया है [घेरा करके चलाया है], (जनासः) हे मनुष्यो ! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ १३ ॥

भावार्थ—भूर् आदि लोकों के लिये मन्त्र ३ का भावार्थ देखो। जैसे सूर्य अपनी परिधि के लोकों को आकर्षण में रखकर ठहराता है, वैसे ही परमेश्वर सूर्य आदि लोकों को नियम में रखकर चलाता है, और अनावृष्टि हटाकर मेघ बरसा कर अन्न आदि उत्पन्न करता है, हे मनुष्यो ! उस परमेश्वर की आज्ञा में चलो ॥ १३ ॥

द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते ।
यः सोमपा निचितो वज्रबाहुयो वज्रहस्तः स जनासु इन्द्रः ॥ १४
द्यावा । चित् । अस्मै । पृथिवी इति । नमेते इति । शुष्मात् ।
चित् । अस्य । पर्वताः । भयन्ते ॥ यः । सोम-पाः । नि-चितः ।
वज्रबाहुः । यः । वज्र-हस्तः । सः । जनासुः । इन्द्रः ॥ १४ ॥

भावार्थ—(द्यावा पृथिवी) आकाश और भूमि (चित्) भी (अस्मै) इस [परमेश्वर] के लिये (नमेते) झुकते हैं, (अस्य) इस के (शुष्मात्) बल से (चित्) ही (पर्वताः) मेघ (भयन्ते) डरते हैं । (यः) जो (निचितः) भर पूर, (सोमपाः) ऐश्वर्य का रत्नक, (वज्रबाहुः) वज्रसमान भुजाओं वाला

४०२ । ५५ । रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च—इनन्, प्रज्ञादि-वाद्यन् । रौहिणो मेघनाम—निघ० १ । १० । उत्पादनशीलं मेघम् (अस्फुरत्) स्फुर संचलने । संचालितवान् (वज्रबाहुः) वज्रवत् सारभूताभ्यां बाहुभ्यामुपेतः शूरपुरुष इव (घाम्) आकाशम् (आरोहन्तम्) अधितिष्ठन्तम् । अन्यद् गतम् ॥

१४—(द्यावा पृथिवी) छान्दसं व्यवधानम् । आकाशभूमिलोकौ (चित्) अपि (अस्मै) परमेश्वराय (नमेते) प्रह्वीभवतः (शुष्मात्) बलात् (चित्) एव (अस्य) परमेश्वरस्य (पर्वताः) मेघाः (भयन्ते) छान्दसः शप् आत्मने पदं च । विभ्यति (यः) (सोमपाः) ऐश्वर्यरत्नकः—दयानन्दम ये, यलु०

[दृढ़ शरीर वाले वीर सदृश] है और (यः) जो (वज्रहस्तः) वज्रहाथ में रखने वाले [दृढ़ हथियार वाले शूर सदृश] है, (जनासः) हे मनुष्यो ! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ १४ ॥

भाषार्थ—जिस परमात्मा के नियम में सब बड़े बड़े और छोटे छोटे पदार्थ रहते हैं, वही महाबली हमारे ऐश्वर्य का रक्षक है, उसकी शरण में रहकर हम अपना कर्तव्य करें ॥ १४ ॥

यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमुती ।
यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनासु इन्द्रः ॥ १५ ॥

यः । सुन्वन्तम् । अवति । यः । पचन्तम् । यः । शंसन्तम् ।
यः । शशमानम् । ऊती ॥ यस्य । ब्रह्म । वर्धनम् । यस्य ।
सोमः । यस्य । इदम् । राधः । सः । जनासुः । इन्द्रः ॥ १५ ॥

भाषार्थ—(यः) जो [परमेश्वर] (सुन्वन्तम्) तत्त्व निचोड़ते हुये को, (यः) जो (पचन्तम्) पके करते हुये को, (यः) जो (शंसन्तम्) गुण बखानते हुये को, (यः) जो (शशमानम्) उद्योग करते हुये को (ऊती) अपनी रक्षा से (अवति) पालता है । (यस्य) जिसका (ब्रह्म) वेद, (यस्य) जिसका (सोमः) मोक्ष और (यस्य) जिसका (इदम्) यह (राधः) धन (वर्धनम्) वृद्धिरूप है, (जनासः) हे मनुष्यो ! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ १५ ॥

८ । ३४ (निचितः) चिञ् चयने—क्त । नितरां राशीकृतः । पूरितः (वज्रबाहुः) म० १३ (यः) वज्रहस्तः) वज्रो दृढशस्त्रं हस्तयोर्यस्य स शूर इव । अन्यद् गतम् ॥

१५—(यः) परमेश्वरः (सुन्वन्तम्) तत्त्वं निष्पादयन्तम् (अवति) पालयति (यः) (पचन्तम्) परिपक्वं कुर्वन्तम् (यः) (शंसन्तम्) गुणान् वर्णयन्तम् (यः) (शशमानम्) शश मुतगतौ-शानच् । उद्योगं कुर्वन्तम् (ऊती) रक्षया (यस्य) (ब्रह्म) वेदः (वर्धनम्) वृद्धिरूपम् (यस्य) (सोमः) मोक्षः (यस्य) (इदम्) (राधः) धनम् । अन्यद् गतम् ॥

भावार्थ—जो परमात्मा वेद द्वारा सब मनुष्यों को तत्त्वदर्शी बनाने का उपदेश करता है, और संसार के सब पदार्थ जिसका ऐश्वर्य प्रकाशित करते हैं, उसका ध्यान करके सब लोग उन्नति करें ॥ १५ ॥

जातो व्यख्यत् पित्रोरुपस्थे भुवो न वेद जनितुः परस्य ।
स्तुविष्यमाणो नो यो अस्मद् ब्रूता देवानां स जनासु इन्द्रः १६
[सूचना-पद पाठ के लिये सूचना मन्त्र १२ देखो ।]

जातः । वि । अख्यत् । पित्रोः । उपस्थे । भुवः । न । वेद ।
जनितुः । परस्य ॥ स्तुविष्यमाणः । नो इति । यः । अस्मत् ।
ब्रूता । देवानां । सः । जनासुः । इन्द्रः ॥ १६ ॥

भाषार्थ—(यः) जो (जातः) प्रकट होकर (पित्रोः) [हमारे] माता पिता के (उपस्थे) समीप में (वि अख्यत्) व्याख्यात हुआ है, और (परस्य) [अपने से] दूसरे (जनितुः) जनक और (भुवः) जननी को (न) नहीं (वेद) जानता है, और (देवानाम्) विद्वानों का (स्तुविष्यमाणः) स्तुति किया गया [जो] (नो) अभी ही (अस्मत्) हमारे (ब्रूता) कर्मों को [जानता है], (जनासुः) हे मनुष्यो ! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ १६ ॥

भावार्थ—जो अनादि होने से हमारे पूर्वजों का पूर्वज है, और अजन्मा होने से जिसके माता पिता नहीं हैं, और सर्वज्ञ होने से सब के कर्मों को जानता है, हम उस जगदीश्वर को उपासना करके अपनी सामर्थ्य बढ़ावें ॥ १६ ॥

१६—(जातः) प्रकटः सन् (वि अख्यत्) वि अख्यातोऽभवत् (पित्रोः) अस्माकं मातापित्रोः (उपस्थे) समीपे (भुवः) भू सत्तायाम्—किप् । भवन्ति उत्पद्यन्ते सन्ताना यस्यां सा भूः । द्वितीयार्थे पृष्ठी । भुवम् । जननीम् (न) निषेधे (वेद) जानाति (जनितुः) जनितारम् । जनकम् (परस्य) परम् । स्वस्माद् भिन्नम् (स्तुविष्यमाणः) लुटः सद् वा । पा० ३।३।१४। ण्डुञ् स्तुतौ—लुटः शानच्, कर्मणि प्रयोगः । स्तूयमानः (नो) न—उ । न इति सम्प्रत्यर्थे—निरु० ७।३१ । उ पचार्थे । इदानीमेव (यः) परमेश्वरः (अस्मत्) षष्ठ्यर्थे पञ्चमी । अस्माकम् (ब्रूता) ब्रूतानि । षमणि—विच० २।१ (देवानाम्) विदुषां मध्ये । अन्यत् पूर्ववत् ॥

यः सोम॑कामो ह॒र्यश्वः॑ सूरि॒र्यस्मा॑द् रेज॑न्ते भुव॑नानि विश्वा ।
यो जु॒घान॑ शम्बरं॑ यश्च शु॒ष्णं॑ य एक॑वीरः स ज॑नासु इन्द्रः॑ ॥१०

[सूचना-पद पाठ के लिये सूचना मन्त्र १२ देखो ।]

यः । सोम॑-कामः । हरि॑-अश्वः । सूरिः । यस्मा॑त् । रेज॑न्ते ।
भुव॑नानि । विश्वा ॥ यः । जु॒घान॑ । शम्बर॑म् । यः । च ।
शु॒ष्णम् । यः । एक॑-वीरः । सः । जु॒नासुः । इन्द्रः॑ ॥ १० ॥

भाषार्थ—(यः) जो [परमेश्वर] (सोमकामः) पेश्वर्य चाहने वाला,
(हर्यश्वः) मनुष्यों में व्यापक, (सूरिः) प्रेरक, विद्वान् है, (यस्मात्) जिससे
(विश्वा) सब (भुवनानि) लोक (रेजन्ते) थरथराते हैं । (यः) जो (शम्बरम्) मेघ
में (च) और (यः) जो (शुष्णम्) सूर्य में (जघान) व्यापा है, (यः) जो
(एकवीरः) एकवीर [अकेला शूर] है, (जनासः) हे मनुष्यो ! (सः) वह
(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला परमेश्वर] है ॥ १० ॥

भावार्थ—सर्वव्यापक सर्वज्ञ परमात्मा परम पेश्वर्यवान् होकर सब
को पेश्वर्यवान् बनाता है और जो एकवीर होकर सब संसार को नियम में
रखता है, उस इष्ट देव की महिमा विचार कर हम पेश्वर्य बढ़ावें ॥ १० ॥

यः सु॑न्वते पच॑ते दु॒ध्न आ चि॒द् वाजं॑ दर्द॑षि॒ स किला॑सि स॒त्यः ।
व॒यं तं॑ इन्द्र॒ विश्व॑हं प्रि॒यासः॑ सु॒वीरा॑सो वि॒दय॑सा व॒देम ॥१८

१०—(यः) परमेश्वरः (सोमकामः) पेश्वर्य कामयमानः (हर्यश्वः)

हरयो मनुष्याः—निघ० २।३+अश्व व्याप्तौ-कन् । मनुष्येषु व्यापकः (सूरिः) अ०
२।१।४। धू प्रेरणे—क्रि० उ० ४। ६४। प्रेरको विद्वान् (यस्मात्) परमेश्वरात् (रेज-
न्ते) रेजत इति भयवेपनयोः—निरु० ३।२१। कम्पन्ते (भुवनानि) लोकाः (विश्वा)
सर्वाणि (यः) (जघान) हन हिंसागत्योः—लिट् । जगाम । व्याप्तवान्
(शम्बरम्) म० १२ । मेघम्—निघ० १। १० (यः) (च) (शुष्णम्) तृषिश्च-
पिरसिभ्यः कित् । उ० ३। १२ । शुष शोषे—नप्रत्ययः कित् । रसशोषकं सूर्यम्
(यः) (एकवीरः) अ० १६। १३। २। अद्वितीयशूरः । अयद् गतम् ॥

यः । सुन्वते । पचते । दुध्रः । आ । चित् । वाजम् । दर्दरिषि ।
 सः । किल । असि । सत्यः ॥ वयम् । ते । इन्द्र । विश्वह ।
 प्रियासः । सु-वीरासः । विदथम् । आ । वदेम ॥ १८ ॥

भाषार्थ—(यः) जो तू (दुध्रः) पूर्ण होकर (चित्) ही (सुन्वते)
 तत्त्व निचोड़ते हुये और (पचते) परिपक्व करते हुये के लिये (वाजम्) अन्न
 [वा बल] (आ दर्दरिषि) फाड़ कर देता है, (सः) सो तू (किल) निश्चय
 करके (सत्यः) सच्चा (असि) है । (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले
 परमेश्वर] (वयम्) हम (ते) तेरे (प्रियासः) प्यारे हो कर (सुवीरासः)
 सुन्दर वीरों वाले (विश्वह) सब दिनों (विदथम्) ज्ञान का (आ) सब ओर
 (वदेम) उपदेश करें ॥ १८ ॥

भाषार्थ—परिपूर्ण सत्यस्वरूप परमात्मा ईतत्त्वदर्शी परिपक्व ज्ञानियों
 को धनवान् और बलवान् करता है, उसी के गुणों को विचार कर हम उत्तम
 वीरों वाले होयें ॥ १८ ॥

सूक्तम् ३५ ॥

१—१६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, १६ विराडाधीं त्रिष्टुप्; २, ७, ६ निचृत्
 त्रिष्टुप्; ३, ५, १५ विराट् पङ्क्तिः; ४, १० पङ्क्तिः; ६, १२ आधीं पङ्क्तिः; ८,
 ११ भुरिक् पङ्क्तिः; १३ निचृदाधीं पङ्क्तिः; १४ विराट् त्रिष्टुप् ॥

सभापतिलक्षणोपदेशः—सभापति के लक्षणों का उपदेश ॥

अस्मा इदु प्र तुवसे तुराय प्रयो न हर्मि स्तोमं माहिनाथ ।

१८—(यः) परमेश्वरः (सुन्वते) तत्त्वं निष्पादयते (पचते) परि-
 पक्वं कुर्वते (दुध्रः) स्फायितश्चिषश्चि० । उ० २ । १३ । दुह प्रपूरणे-रक्, हस्ये
 षः । पूर्णः सन् (आ) समन्तात् (चित्) अपि (वाजम्) अन्नम् । बलम्
 (दर्दरिषि) वृ विदारणे—यङ्लुकि लट् । भृशं विदणालि । अत्यन्तं ददासि (सः)
 (किल) निश्चयेन (असि) (सत्यः) यथार्थस्वरूपः (वयम्) (ते) तत्र (इन्द्र)
 हे परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (विश्वह) अकारलोपो विभक्तोलुक् च । विश्वेषु
 अहःसु दिनेषु (प्रियासः) प्रियाः सन्तः (सुवीरासः) शोभनवीरोपेताः (विद-
 थम्) ज्ञानम् (आ) समन्तात् (वदेम) उपदिशेम ॥

ऋचीषमायाध्रिगव ओहमिन्द्राय ब्रह्माणि राततमा ॥ १ ॥

अस्मै । इत् । ऊं इति । प्र । तवसे । तुराय । प्रयः । न ।
हर्मि । स्तोमम् । माहिनाय ॥ ऋचीषमाय । अध्रि-गवे ।
ओहम् । इन्द्राय । ब्रह्माणि । रात-तमा ॥ १ ॥

भाषार्थ—(अस्मै) इस [संसार] के हित के लिये (इत्) ही (उ)
विचार पूर्वक (तवसे) बल के निमित्त, (तुराय) फुरतीले, (माहिनाय)
पूजनीय, (ऋचीषमाय) स्तुति के समान गुण वाले, (अध्रिगवे) बेरोक गति
वाले, (इन्द्राय) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले सभापति] के लिये (स्तोमम्)
स्तुति को, (ओहम्) पूरे विचार को और (राततमा) अत्यन्त देने योग्य
(ब्रह्माणि) धनों को (प्रयः न) तृप्ति करने वाले अन्न के समान (प्र हर्मि) मैं
आगे लाता हूँ ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि पूजनीय, उत्तम गुण वाले, अति
बुद्धिमान् राजा आदि प्रधान पुरुषों का धन आदि से सत्कार करें और प्रधान

१—(अस्मै) परिदृश्यमानस्य संसारस्य हिताय (इत्) एव (उ)
वितर्के । विचारे (प्र) (तवसे) अ० ४ । ३२ । ३ । बलार्थम् (तुराय) तुर त्वरणे-
कप्रत्ययः । वेगवते (प्रयः) सर्वधातुभ्य असुन् । उ० ४ । १८६ । प्रीञ् तर्पणे—
असुन् । प्रीतिकरम् अन्नम्—निघ० २ । ७ (न) यथा (हर्मि) शपो लुक् ।
हरामि । नयामि (स्तोमम्) स्तुतिम् (माहिनाय) महेरिण च । उ० २ ।
५६ । मह पूजायाम्—इनण् । पूजनीयाय (ऋचीषमाय) इगुपधात् कित् । उ०
४ । १२० । ऋच स्तुतौ—इन, कित् ऊष्+षम अवैकल्ये—अच् । ऋचीषम
ऋचा समः—निरु० ६ । २३ । ऋचा स्तुत्या तुल्याय । स्तुतितुल्यगुणवते (अध्रि-
गवे) भुजेः कित्च । उ० ४ । १४२ । नञ्+धृञ् धारणे—इप्रत्ययः कित् । गो-
क्षियोरुपसर्जनस्य । पा० १ । २ । ४८ । इति ह्रस्वः । अध्रिगुः, अधृतगमनः,
इन्द्रोऽप्यध्रिगुरुच्यते—निरु० ५ । ११ । अध्रिः अधृतोऽन्येनानिवारितो गौर्ग—
मनं यस्य तस्मै । अनिवारितगतये (ओहम्) आ+ऊह वितर्के—घञ् । पूर्ण-
विचारम् (इन्द्राय) परमैश्वर्यवते सेनापतये (ब्रह्माणि) प्रवृद्धानि धनानि
निघ० २ । १० (राततमा) रा दाने —क्त, तमप् । अतिशयेन दातव्यानि ॥

लोग भी इसी प्रकार उनका आदर करें ॥ १ ॥

यह सूक्त—ऋग्वेद में है—१।६१।१—१६ ॥

अस्मा इदु प्रथं इव प्र यंसि भरास्याङ्गुषं बाधे सुवृत्ति ।
इन्द्राय हृदा मनसा मनीषा प्रत्नाय पत्ये धियो मर्जयन्त ॥२॥
अस्मै । इत् । ऊं । इति । प्रयः-इव । प्र । यंसि । भरामि ।
आङ्गुषम् । बाधे । सु-वृत्ति ॥ इन्द्राय । हृदा । मनसा ।
मनीषा । प्रत्नाय । पत्ये । धियः । मर्जयन्तु ॥ २ ॥

भाषार्थ—[हे विद्वान् !] (अस्मै) इस [संसार के हित के लिये (इत्) ही (उ) विचार पूर्वक, (प्रयः इव) तृप्ति करने वाले अन्न, के समान- (आङ्गुषम्) प्राप्ति योग्य स्तुति को (प्र यंसि) तू देता है और (बाधे) बाधा रोकने के लिये (सुवृत्ति) सुन्दर ग्रहण करने योग्य कर्म को (भरामि) मैं पुष्ट करता हूँ । (प्रत्नाय) प्राचीन (पत्ये) स्वामी, (इन्द्राय) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले सभापति] के लिये (हृदा) हृदय से, (मनसा) मनन से और (मनीषा) बुद्धि से (धियः) कर्मों को (मर्जयन्त) मनुष्य शुद्ध करें ॥ २ ॥

भावार्थ—सब मनुष्य मिलकर परस्पर हितके लिये सुपरीक्षित विद्वान् उपकारी पुरुष को सभापति बनाकर उसके लिये प्रिय आचरण करें ॥ २ ॥

अस्मा इदु त्यमुपमं स्वर्षा भरास्याङ्गुषमास्थेन ।

२—(अस्मै) संसारहिताय (इत्) एव (उ) वितर्के (प्रयः) म० १ ।
प्रोतिकरमन्नम् (इव) यथा (प्र यंसि) यमु उपरमे-शपो लुक् । प्रयच्छसि ।
ददासि हे विद्वान् (भरामि) पुष्णामि (आङ्गुषम्) पीयेरुषन् । उ० ४ । ७६ ।
आङ् + अङ्ग गतौ-ऊषन् । आङ्गुष स्तोम आघोषः-निरु० ५ । ११ । प्रापणीय
स्तोमम् (बाधे) बाधु विलोडने-किप् । क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्था-
नितः । पा० २ । ३ । १४ । इति तुमुनः कर्मणि चतुर्थी । बाधं बाधां व्यथां निवार-
यितुम् (सुवृत्ति) सु + वृक् आदाने-क्तिन् । सुष्ठु प्राह्य कर्म (इन्द्राय) म० १
(हृदा) हृदयेन (मनसा) मननेन (मनीषा) विभक्तेर्डा । मनीषया बुद्ध्या
(प्रत्नाय) प्राचीनाय (पत्ये) स्वामिने (धियः) कर्माणि-निघ० २ । १ (मर्जयन्त)
मृज् शुद्धौ-तोडये लङ् अङ्भावश्च । मर्जयन्तु शोधयन्तु ॥

सू० ३५ [६२३] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,०३८)

मंहिष्ठमच्छोक्तिभिर्मतीनां सुवृत्तिभिः सुरिं वावृधध्यै ॥ ३ ॥
 अस्मै । इत् । ऊं इति । त्यम् । उप-मम् । स्वः-सास् ।
 भरामि । आङ्गुषम् । आस्येन ॥ मंहिष्ठम् । अच्छोक्ति-भिः ।
 मतीनाम् । सुवृत्ति-भिः । सुरिम् । ववृधध्यै ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(अस्मै) इस [संसार] के हित के लिये (इत्) हो (उ)
 विचार पूर्वक (त्यम्) उस (उपमम्) उपमा योग्य, (स्वर्षाम्) सुख देने
 वाली, (आङ्गुषम्) प्राप्ति योग्य स्तुति को (आस्येन) [अपने] मुख से
 (मतीनाम्) बुद्धिमानों में (अच्छोक्तिभिः) अच्छे वचनों वाली (सुवृत्तिभिः)
 सुन्दर ग्रहण योग्य क्रियाओं के साथ (मंहिष्ठम्) उस अत्यन्त उदार, (सुरिम्)
 प्रेरक विद्वान् के (ववृधध्यै) बढ़ाने के लिये (भरामि) मैं धारण करता
 हूँ ॥ ३ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य अपने शुभ लक्षणों से सब में श्रेष्ठ गुणी विद्वान्
 हो, उस को आदर पूर्वक सभापति बनावें ॥ ३ ॥

अस्मा इदु स्तोमं सं हिनोमि रथं न तष्टेव तत्सिनाय ।
 गिरश्च गिर्वाहसे सुवृत्तोन्द्राय विश्वमिन्वं मेधिराय ॥ ४ ॥
 अस्मै । इत् । ऊं इति । स्तोमम् । सम् । हिनोमि ।
 रथम् । न । तष्टा-इव । तत्-सिनाय ॥ गिरः । च । गिर्वा-
 हसे । सु-वृत्ति । इन्द्राय । विश्वम्-इन्वम् । मेधिराय ॥ ४ ॥

३—(अस्मै) (इत्) (उ) म० १ (त्यम्) तम् (उपमम्) उष्टान्त-
 योग्यम् (स्वर्षाम्) अ० ५ । २ । ८ । स्वः + षणु दाते—विट् । सुखस्य दाता-
 रम् (भरामि) धरामि (आङ्गुषम्) म० २ । प्रापणीयं स्तोमम् (मंहिष्ठम्)
 अ० २० । १५ । १ दातृतमम् (अच्छोक्तिभिः) श्रेष्ठवचनयुक्तभिः (मतीनाम्)
 मेधाविनाम्—निघ० ३ । १ (सुवृत्तिभिः) म० २ । सुष्ठु प्राप्ताभिः क्रियाभिः
 (सुरिम्) अ० २ । ११ । ४ । प्रेरकं विद्वान्म (ववृधध्यै) तुमर्थे सेसेनसे० ।
 पा० ३ । ४ । ६ । वृधु वृद्धौ—कथ्यैप्रत्ययः, अन्तर्गतएवर्थः, कित्वाद् गुणाभावः,
 द्विर्भावश्चान्दसः । वर्धयितुम् । स्तोमम् ॥

(४,०४०)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ३५ [६२३]

भाषार्थ—(अस्मै) इस [संसार] के हित के लिये (इत्) ही (उ) विचार पूर्वक (गिराहसे) विद्याओं के पहुँचाने वाले, (मेधिराय) बुद्धिमान् (इन्द्राय) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले सभापति] के लिये (सुवृत्ति) सुन्दर ग्रहण करने योग्य क्रियाओं के साथ (विश्वमिन्वम्) सब में फैलने वाली (स्तोमम्) स्तुति योग्य व्यवहार (च) और (गिरः) वेदवाणियों को (सम्) यथा-वत् (हिनोमि) मैं बढ़ाता हूँ, (रथम्) रथ को (तष्टा इव) जैसे विश्वकर्मा [बड़ा जाती बढ़ई] (न) अब (तत्सिनाय) उस [रथ] से अन्न के लिये बढ़ाता है] ॥ ४ ॥

भाषार्थ—जैसे विद्वान् शिल्पी कला यन्त्र लगाकर सुन्दर रथ बना-कर उस से अन्न आदि पदार्थ प्राप्त करता कराता है। वैसे ही मनुष्य बुद्धि-मान् पुरुष से आदर के साथ उत्तम गुण ग्रहण करके आनन्द पावे ॥ ४ ॥

अस्मा इदु सप्तिमिव अवस्येन्द्रायाकं जुहुः१ समञ्जे ।

वीरं दानौकसं वुन्दध्वै पुरां गुतअवसं दुर्माणम् ॥ ५ ॥

अस्मै । इत् । ऊं इति । सप्तिम्-इव । अवस्या । इन्द्राय ।
अर्कम् । जुहा । सम् । अञ्जे ॥ वीरम् । दान-औकसम् ।

४—(अस्मै) संसारहिताय (इत्) एव (उ) वितर्क (स्तोमम्) स्तुत्य व्यवहारम् (सम्) सम्यक् (हिनोमि) हि गतिबुद्धयोः । वर्धयामि । स्तोमि (रथम्) रमणीयं यानम् (न) सम्प्रति (तष्टा) तद् तनूकरणे—तन्, ऊदित्वापक्षे इडभाषः । तक्षकः । विश्वकर्मा । शिल्पी (इव) यथा (तत्सिनाय) इण्सिञ्जि० । उ० ३।२। विञ् बन्धने—नक् । सिनमजं भवति सिनाति भूतानि—निरु० ५।५। तेन रथेन सिनस्य अन्नस्य प्राप्तये (गिरः) वेदवाणीः (च) (गिराहसे) सर्वधातुभ्य असुन् । उ० ४।१८६। गिर्+बह प्रापणे—असुन्, धातोर्दीर्घश्चान्दसः । गिरां विद्यानां प्रापकाय (सुवृत्ति) म० २। सु+वृक् आदाने—किन् । विभक्ते लुक् । सुष्ठु प्राप्ताभिः क्रियाभिः (इन्द्राय) परमैश्वर्यवते सभापतये (विश्वमिन्वम्) इवि व्याप्तो-पचायच्, विभक्त्यलुक् । सर्वव्यापकम् (मेधिराय) मेधारथाभ्यामिरनिरौ वक्तव्यौ । क० पा० ५।२। १०६। मेधा—हरन् । मेधाविने ॥

बुन्दध्यै । पुराम् । गुर्त-अवसम् । दुर्माणम् ॥ ५ ॥

भाषार्य—(अस्मै) इस [संसार] के हित के लिये (इत्) ही (उ) विचार पूर्वक (इन्द्राय) पेश्वर्य के अर्थ (भवस्या) कीर्ति की इच्छा से (जुहा) देने लेने वाली क्रिया के साथ (सप्तिम् इव) जैसे फुरतीले घोड़े को [वैसे] (अर्कम्) पूजनीय (वीरम्) वीर, (दानौकसम्) दान के घर [बड़े दानो], (गुर्तभवसम्) उद्यम युक्त यश वाले, (पुराम्) शत्रुओं के गढ़ों के (दुर्माणम्) ढाने वाले [सभापति] को (बुन्दध्यै) सत्कार करने के लिये (सम्) अच्छे प्रकार (अञ्जे) मैं चाहता हूँ ॥ ५ ॥

भाषार्य—जैसे फुरतीले घोड़े को घड़ने और रथ आदि ले चलाने के लिये चाहते हैं, वैसे ही मनुष्य शुभ गुण वाले महा कीर्तिमान् पुरुषार्थी जन को संसार के हित के लिये आदर से चाहते हैं ॥ ५ ॥

अस्मा इदु त्वष्टा तसुद् वज्रं स्वपस्तमं स्वयं रणाय ।
वृत्रस्य चिद् विदद् येन मम तुजघ्नीशानस्तुजता कियेधाः ॥६॥

५—(अस्मै) संसारहिताय (इत्) एव (उ) वितर्क (सप्तिम्) वसेस्तिः । उ० ४ । १८० । इति षण् समवाये-ति । सप्तिरिति अश्वनाम—निघ० १ । १४ । शोघगा मिनम् अश्वम् (इव) यथा (भवस्या) सुप आत्मनः ण्यच् । पा० ३ । १ । ८ । भवस्—ण्यच् । तस्मात् अपत्ययः, टाप् । तृतीयायां ङादेशः । कीर्तीच्छया (इन्द्राय) परमैश्वर्यप्राप्तये (अर्कम्) अर्चनीयम् (जुहा) अ० १८ । ४ । ५ । इ दानादानादनेषु—किप्, तृतीयैकवचनम् । दाना-दानक्रियया (सम्) सम्यक् (अञ्जे) अञ्जु व्यक्तिप्रक्षयकाम्तिगतिषु—आत्मनेपदं छान्दसम् । अहं कामये (वीरम्) शूरम् (दानौकसम्) दानस्वयम् । महादानिनम् (बुन्दध्यै) तुमर्थे सेसेनसे० । पा० ३ । ४ । ६ । वदि अभिवादनस्तुत्योः—कध्यै । वन्दितुम् । सत्कर्तुम् (पुराम्) शत्रूणां पुराणां दुर्गाणाम् (गुर्तभवसम्) नसत्तनिषत्ताऽनुसप्तर्तुर्तुर्गतानिच्छन्दसि । पा० ८ । २ । ६१ । गुरी उद्यमने—क, नत्वाभावः । गुर्णम् उद्योगयुक्तं भवो यशो यस्य तम् (दुर्माणम्) सर्वधातुभ्यो मनिन् । उ० ४ । १४५ । इ विदारणे—मनिन् । विदारयितारम् ॥

अस्मै । इत् । ऊं इति । त्वष्टा । तक्षत् । वज्रम् । स्वपः-
तमम् । स्वयम् । रणाय ॥ वृत्रस्य । चित् । विदत् । येन ।
मर्म । तुजन् । ईशानः । तुजता । कियेधाः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(अस्मै) इस [संसार] के हित के लिये (इत्) ही
(उ) विचारपूर्वक (त्वष्टा) सूक्ष्म करने वाले [सूक्ष्मदर्शी विश्वकर्मा सभा-
पति] ने (स्वपस्तमम्) अत्यन्त सुन्दर रीति से काम सिद्ध करने वाला,
(स्वयम्) सुख देने वाला (वज्रम्) वज्र [विजुली आदि शस्त्र] (रणाय)
रण जीतने को (तक्षत्) तीक्ष्ण किया है । (तुजता येन) जिस काटने वाले
[वज्र] से (वृत्रस्य) बैरी के (मर्म) मर्म [जीवन स्थान] को (चित्) ही
(तुजन्) छेद कर (ईशानः) ऐश्वर्यवान्, (कियेधाः) कितने [अर्थात्
बड़े बल] के धारण करने वाले [उस सभापति] ने (विदत्) पाया है ॥ ६ ॥

भाषार्थ—सभापति राजा तीक्ष्ण तीक्ष्ण अस्त्र शस्त्रों से शत्रुओं को
वध देकर प्रजा को आनन्द देवे ॥ ६ ॥

इस मन्त्र का मिलान करो—अ० २ । ५ । ६ ॥

अस्येदुं मातुःसवनेषु सुद्यो महःपितुं पपिवां चार्वाङ्गा । मुषायद्
विष्णुः पचुतं सहीयान् विध्यद् वराहं त्रिरो अद्रिमस्ता ॥७॥

६—(अस्मै) संसारहिताय (इत्) एव (उ) वितर्के (त्वष्टा) अ० २ ।
५ । ६ । त्वक्ष् तनूकरणे—तृन् । व्यवहाराणां तनूकर्ता सूक्ष्मदर्शी विश्वकर्मा
(तक्षत्) तक्ष् तनूकरणे—लङ् । प्रतक्षत् । तीक्ष्णमकरोत् (वज्रम्) विद्युदादि-
शस्त्रसमूहम् (स्वपस्तमम्) अपः कर्मनाम—निघ० २ । १ । सुष्ठु अपांसि
कर्माणि यस्मात् तम् (स्वयम्) अ० २ । ५ । ६ । स्वः—यत् । सुखे साधुम्
(रणाय) रणं युद्धं जेतुम् (वृत्रस्य) शत्रोः (चित्) एव (विदत्) विदूष
लाभे—लुङ् । अविदत् । लब्धवान् (येन) वज्रेण (मर्म) अ० ५ । ८ । ६ ।
सन्धिस्थानं जीवस्थानम् (तुजन्) तुज हिंसायाम्—शतृ, शपि प्राप्ते
छान्दसः शः । हिंसन् (ईशानः) ऐश्वर्यवान् (तुजता) छेदकेन (कियेधाः)
कियत् + दधातेर्विच्, कियतः किये भावः । कियेधाः कियद्वा इति वा क्रममा-
णधा इति वा—निघ० ६ । २० । कियतो महतो बलस्य धारकः ॥

ब्रू० ३५ [६२३] विंश कार्डस ॥ २० ॥

(४,०४३)

अस्य । इत् । जं इति । मातुः । सवनेषु । सद्यः । महः ।
पितुम् । पपि-वान् । चारु । अन्ना ॥ मुषायत् । विष्णुः ।
पचतम् । सहीयान् । विध्यत् । वराहम् । तिरः । अद्रिम् ।
अस्ता ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(अस्य) इस [जगत्] के (इत्) ही (उ) विचारपूर्वक
(महः) बड़े (मातुः) निर्माता [बनाने वाले परमेश्वर] के (सवनेषु) पेश्वर्यों
में (सद्यः) तुरन्त (चारु) सुन्दर (पितुम्) पीने योग्य रस को और (अन्ना)
अन्नो को (पपिवान्) खाने पीने वाला, (पचतम्) परिपक्व [बैरी के अन्न
वा धन] को (मुषायत्) लूटता हुआ, (विष्णुः) विद्याओं में व्यापक, (सही-
यान्) विजयी, (अद्रिम्) वज्र का (अस्ता) चलाने वाला [सेनापति]
(वराहम्) वराह [सूअर के समान अच्छे पदार्थ नाश करने वाले शत्रु] को

७—(अस्य) संसारस्य (इत्) एव (उ) धितर्के (मातुः) निर्मातुः ।
रक्षकस्य परमेश्वरस्य (सवनेषु) पेश्वर्येषु (सद्यः) समाने दिने । इदानीम्
(महः) मह पूजायाम्—विद् । महतः । पूजनीयस्य (पितुम्) अ० ४ । ६ । ३
पा पाने रक्षणे वा—तुप्रत्ययो धातोः पिभावः । पितुरित्यन्नाम पातेर्वा पिबते-
र्वा प्यायतेर्वा—निर० ६ । २४ । पानीयं रसम् (पपिवान्) अ० ७ । ४७ । ३ ।
पिबतेः कसु । पीतवान् । खादितवान् (चारु) विभक्तैर्लुक् । सुन्दरम् (अन्ना)
अन्नानि (मुषायत्) मुष स्तेये—घञर्थे कविधानम् । मुष आत्मनः कथञ् ।
पा० ३ । १ । ६ । मुष-कथञ् । नञ्छन्दस्यपुत्रस्य । पा० ७ । ४ । ३५ । ईत्ववद्
दीर्घस्यापि प्रतिषेधे छान्दसो दीर्घः । अस्मात् कथजन्तात् शब्द, नुमभावः ।
आत्मनः स्तेयमिच्छन् अपहरन् (विष्णुः) विद्यासु व्यापनशीलः (पचतम्)
भृमृदशिवजिपर्विपच्यमि० । उ० ३ । ११० । पचतेः—अतच् । शत्रूणां परि-
पक्वमन्नं धनं वा (सहीयान्) सोढु—ईयसुन् । अतिशयेन अभिभविता,
विजेता (विध्यत्) विध्यति । ताडयति (वराहम्) वृज्-वरणे—अप् अन्ये-
ष्वपि दृश्यते । पा० ३ । २ । १०१ । वर+आङ्+इङ् नाशने वा हन हिंसा-
गतयोः—उप्रत्ययः । वरस्य उःकृष्टस्य पदार्थस्य आहतरिम् आहन्तारं नाश-
यितारं शूकरमिव शत्रुम् । वराहो मेघो भवति वराहार, ...अयमपीतरो वराह
एतस्मादेव । ब्रूति मूलमिति, वरं वरं वृषां ब्रूतीति वा, ... अक्षिरसोऽपि वाराहा

(तिरः) आर पार (विध्यत्) छेदता है ॥ ७ ॥

भावार्थ—जो परमेश्वर के बनाये ऐश्वर्ययुक्त पदार्थों का ठीक ठीक उपयोग कर के जङ्गली सूअर के समान उपद्रवी शत्रुओं का नाश करे, वही पुण्य सभापति सेनापति होवे ॥ ७ ॥

अस्मा इदु ग्राश्चिद् देवपत्नीरिन्द्रायार्कमहिहत्यं ऊवुः ।
परि व्यावापृथिवी जम् उर्वी नास्य ते महिमानं परि ष्टः ॥८॥
अस्मै । इत् । ऊं इति । ग्राः । चित् । देव-पत्नीः । इन्द्राय ।
अर्कम् । अहि-हत्यै । ऊवुरित्स्वुः ॥ परि । व्यावापृथिवी
इति । जम् । उर्वी इति । न । अस्य । ते इति । महिमा-
नम् । परि । स्तु इति स्तः ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(अस्मै) इस [संसार] के हित के लिये (इत्) ही
(उ) विचारपूर्वक (देवपत्नीः) विद्वानों से पालने योग्य (ग्राः) वेद-
वाणियों ने (चित्) भी (अहिहत्ये) सब ओर से नाश करने वाले [विष्णु]
के मिटने पर (इन्द्राय) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] के लिये (अर्कम्)
पूजनीय व्यवहार को (ऊवुः) बुना है [फैलाया है] । उस [परमात्मा]
ने (उर्वी) चौड़े (व्यावापृथिवी) सूर्य और पृथिवी को (परि) सब ओर से

उच्यन्ते—निक० ५ । ४ (तिरः) तिरस्कृत्य (अद्रिम्) षजुम् (अस्ता)
असु क्षेपणे-तृत्, इडभावः । नलोकाव्ययनिष्ठा० । पा० २ । ३ । ६६ । पष्ठी-
प्रतिषेधः । प्रक्षेप्ता ॥

८—(अस्मै) संसारहिताय (इत्) एव (उ) वितर्के (ग्राः) अ०
७ । ४६ । २ । गमेर्नप्रत्ययः, डाप्, टिलोपः । ग्रा वाङ्नाम—निघ० १ । ११ ।
वेदवाण्यः (चित्) अपि (देवपत्नीः) विद्वद्भिः पालनीयाः (इन्द्राय)
परमैश्वर्यवते परमात्मने (अर्कम्) अर्चनम् । पूजनम् (अहिहत्ये) अहेराहन्तुः
समस्ताद् नाशकस्य विष्णुस्य हत्यायां नाशने (ऊवुः) वेम् तन्तुसन्ताने—लिट् ।
विस्तारयामासुः अतश्चत (परि) सर्वतः (व्यावापृथिवी) सूर्यभूलोकी (जम्)

(जज्ञे) ग्रहण किया है, (ते) वे दोनों (अस्य) इस [परमात्मा] की (महिमानम्) महिमा को (न) नहीं (परि अस्तः) पहुंच सकते हैं ॥ ८ ॥

भाषार्थ—जैसे सब से बड़े परमात्मा ने प्रलय के अन्धकार आदि क्लेश मिटाकर सूर्य पृथिवी आदि लोक रच कर वेदद्वारा अपनी महिमा फैलायी है, वैसे ही सभापति आदि पुरुष कठिनाइयों को भेलकर सब को आनन्द देवें ॥ ८ ॥

अस्येदेव प्र रिरिचे महित्वं दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात् ।
स्वरालिन्दो दम् आ विश्वगूर्तः स्वरिरमन्त्रो ववक्षे रणाय ॥८॥
अस्य । इत् । एव । प्र । रिरिचे । महि-त्वम् । दिवः ।
पृथिव्याः । परि । अन्तरिक्षात् ॥ स्व-राट् । इन्द्रः । दमे ।
आ । विश्व-गूर्तः । सु-अरिः । अमन्त्रः । ववक्षे । रणाय ॥८॥

भाषार्थ—(अस्य) इस [परमेश्वर] का (इत्) ही (महित्वम्) महत्त्व (एव) निश्चय करके (दिवः) सूर्य से, (पृथिव्याः) पृथिवी से और (अन्तरिक्षात्) आकाश से (परि) सब प्रकार (प्र रिरिचे) अधिक बढ़ा है । (स्वराट्) स्वयं राजा, (विश्वगूर्तः) सब को डचम में लगाने वाला, (स्वरिः)

हजो लिट् । इत्य भः । जहे । गृहीतवान् (उर्वी) विस्तृते (न) निबेधे (अस्य) परमेश्वरस्य (ते) हमे (महिमानम्) महत्त्वम् (परि अस्तः) पराभवतः । प्राप्नुतः ॥

१—(अस्य) सर्वत्र व्यापकस्य परमेश्वरस्य (इत्) एव (एव) निश्चयेन (प्र) प्रकषेण (रिरिचे) रिरिचि विरेचने—लिट् । अधिकं बभूव (महित्वम्) महत्त्वम् (दिवः) सूर्यलोकात् (पृथिव्याः) भूलोकात् (परि) सर्वतः (अन्तरिक्षात्) आकाशात् (स्वराट्) राज्ञ दीप्तो ऐश्वर्ये च—किप् । स्वयं राजा शासकः (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् परमात्मा (दमे) दम् उपशमे—घञ् । शासने (विश्वगूर्तः) गूणी डचमे—क । न सत्तनिषत्ताऽनुत्त प्रतूर्तसूर्तगूर्तानिच्छन्दसि । पा० ८ । २ । ११ । निष्ठान्तवाभावः । विश्वं सर्वं जगद् गूर्णम् डचतम् डचमे कृतं येन सः (स्वरिः)

(४,०४६)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ३५ [६२३]

बड़ा प्रेरक, (अमत्रः) ज्ञानवान् (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला परमात्मा]
(दमे) शासन के बीच (रणाय) रण मिटाने के लिये (आ ववक्षे) कोधित
हुआ है ॥ ६ ॥

भाषार्थ—जैसे परमात्मा सब से बड़ा होकर सूर्य आदि सब बड़ों
से बड़ों को शासन में रखता है, वैसे ही सब से अधिक गुणी पुरुष प्रधान
हो कर प्रजा का पालन करे ॥ ६ ॥

अस्येदेव शर्वसा शुषन्तं वि वृश्चद् वज्रेण वृत्रमिन्द्रः ।
गा न ब्राणा अवनीरमुञ्चद्भि अर्षो दावने सचेताः ॥ १० ॥

अस्य । इत् । एव । शर्वसा । शुषन्तम् । वि । वृश्चत् ।
वज्रेण । वृत्रम् । इन्द्रः ॥ गाः । न । ब्राणाः । अवनीः ।
अमुञ्चत् । अभि । अर्षः । दावने । स-चेताः ॥ १० ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले सेनापति] ने (अस्य)
इस [परमेश्वर] के (इत् एव) ही (शर्वसा) बल से (शुषन्तम्) सुखाने वाले
(वृत्रम्) बैरी को (वज्रेण) वज्र [बिजुली आदि शस्त्र] द्वारा (वि वृश्चत्)
छेद डाला । और (भवः प्रभि) कीर्ति के निमित्त (दावने) सुख दान के लिये
(सचेताः) चित्त वाला होकर (ब्राणाः) घिरी हुयी (अवनीः) रक्षा योग्य

इप्रत्ययः । सुप्रेरकः (अमत्रः) अमित्रक्षिपजि० । उ० ३ । १०५ । अम गत्यादिषु
अम्रन् । ज्ञानवान् (ववक्षे) वक्ष रोषसंघातयोः—लिट्, आत्मनेपदं छान्दसम् ।
रोषं चकार (रणाय) रणं युद्धं नाशयितुम् ॥

१०—(अस्य) परमेश्वरस्य (इत् एव) (शर्वसा) बलेन (शुषन्तम्)
शुष शोषणे—श्यनि प्राप्ते शः । शुष्यन्तम् । शोषकम् (वि) विविधम् (वृश्चत्)
अच्छिन्नत् (वज्रेण) विद्युदादिशस्त्रेण (वृत्रम्) आवरकं शत्रुम् (इन्द्रः) परमै-
श्वर्यवान् सेनापतिः (गाः) धेनूः (न) इव (ब्राणाः) वृज् वरणे—कर्मणि
शानच्, यको लुक्, गुणाभावे यणादेशः । आवृताः (अवनीः) अर्त्तिसृष्टभन्व-
श्यवितृभ्योऽनिः । उ० २ । १०२ । अथ रक्षणगतिकान्तिप्रीतितृष्यव-
गमप्रवेशप्रवणस्वास्वर्थयाचनक्रियेरुद्धादीन्वशात्तयाजिज्ञान हिंसादानभागवृत्तिषु

भूमियों को (गाः न) गौओं के समान (अमुञ्चत्) छुड़ाया ॥ १० ॥

भावार्थ—राजा परमेश्वर का आश्रय लेकर दुःखदायी शत्रुओं का नाश करके प्रजा को कष्ट से छुड़ाकर और कीर्ति पाकर सुख का दान करे, जैसे ग्वाला गौओं को बन्धन से खोलकर सुखी करके बन में चराता है ॥ १० ॥

अस्येदु त्वेषसा रन्तु सिन्धवः परि यद् वज्रेण सीमयच्छत् ।

ईशानकृद् दाशुषे दशस्यन् तुर्वीतये गाधं तुर्वणिः कः ॥ ११ ॥

अस्य । इत् । ऊं । इति । त्वेषसा । रन्तु । सिन्धवः । परि ।

यत् । वज्रेण । सीम् । अयच्छत् ॥ ईशान-कृत् । दाशुषे ।

दशस्यन् । तुर्वीतये । गाधम् । तुर्वणिः । कुरिति कः ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(अस्य) इस [सभापति] के (इत्) हो (उ) निश्चय करके (त्वेषसा) तेज [पराक्रम] से (सिन्धवः) नदियां [नाले बरहा आदि] (रन्तु) रमे हैं [बहे हैं], (यत्) क्योंकि उस ने (वज्रेण) वज्र [बिजुली फड़ुआ आदि शस्त्रों] से (सीम्) बन्ध [बांध आदि] को (परि) सब ओर से (यच्छत्) बांधा है ! (दाशुषे) दानी मनुष्य को (ईशानकृत्) ऐश्वर्यवान् करने वाले, (दशस्यन्) कवच [रक्षासाधन] के समान काम करते हुये, (तुर्वणिः) शीघ्रता सेवन करने वाले [समाध्यक्ष] ने (तुर्वीतये) शीघ्रता

—अनिप्रत्ययः । भूमिदेशान् (अमुञ्चत्) अमोचयत् (अभि) अभिलक्ष्य (श्रवः) कीर्तिम् (दावने) आतो मनिनकनिव्वनिपश्च । पा० ३ । २ । ७४ । ददातेर्व-निप्, अल्लोपाभावश्छान्दसः । सुखदानाय (सचेताः) चेतसा ज्ञानेन सह वर्तमानः ॥

११—(अस्य) सभाध्यक्षस्य (इत् उ) अवधारणे (त्वेषसा) तेजसा । पराक्रमेण (रन्तु) रमु क्रीडायाम्-लङि शपोलुक् । अरमन्त (सिन्धवः) मद्यः (परि) सर्वतः (यत्) यतः (वज्रेण) विद्युदादिभूखननशस्त्रेण (सीम्) अ० २० । २२ । ६ । विज् बन्धने-ईप्रत्ययः । बन्धम् (अयच्छत्) यमु उपरमे—लङ् । नियमितवान् । अवरुद्धवान् (ईशानकृत्) ऐश्वर्ययुक्तस्य कर्ता (दाशुषे) दानिने मनुष्याय (दशस्यन्) दंश दंशने—अनुन, सच कित् । उपमानादाचारे । पा० ३ । १ । १० । दशसू-त्यच्, शतृ । दशः कवच इवाचरन् (तुर्वीतये) । तुर दैगे-किप् + वी गतौ-किन् । तुरा शीघ्रकारिणां गतये गमनाय (गाधम्) गाधु

(४,०४८)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ३५ [६२३]

करने वालों के चलने के लिये (गांध्रम्) उथले स्थान [घाटि आदि] को (कः) बनाया है ॥ १ ॥

भाष्यार्थ—प्रधान राजा, को चाहिये कि पहाड़ों से बड़े बड़े नाले काट-कर पृथिवी पर जल लाकर खेती आदि करावे, और यात्रियों के लिये सेतु [पुल]-घाट आदि बनावे ॥ ११ ॥

अस्मा इदु प्र भरा तूतुजानो वृत्राय वज्रुमीशानः कियेधाः ।
गोर्व पर्व वि रंदा तिरश्चेष्ट्यन्नर्णस्य पां चरध्वै ॥ १२ ॥

अस्मै । इत् । ऊं इति । प्र । भर । तूतुजानः । वृत्राय ।
वज्रम् । ईशानः । कियेधाः ॥ गोः । न । पर्व । वि । रंदा ।
तिरश्चा । इष्ट्यन् । अर्णसि । अपाश्च । चरध्वै ॥ १२ ॥

भाष्यार्थ—(अस्मै) इस [संसार] के निमित्त (इत्) ही (उ) विचार पूर्वक (तूतुजानः) शीघ्रता करता हुआ, (ईशानः) पेश्वर्यवान्, (कियेधाः) कितने [अर्थात् बड़े बल] का धारण करने वाला तू (वृत्राय) वैरी के लिये (वज्रम्) वज्र [बिजुली आदि शस्त्र] को (प्र) अच्छे प्रकार (भर) धारण कर । और (तिरश्चा) तिरछी चाल के साथ (अर्णसि) अपनी चालों को (इष्ट्यन्) चलता हुआ तू (अपाश्च) प्रजाओं के (चरध्वै) चलने के लिये (पर्व)

प्रतिष्ठापयामि—घञ् । नलस्पर्शस्थानम् । अवतरणस्थानम् (तुर्वणिः) तुर + वन संभक्तौ—इन् । शीघ्रत्वस्य वेवस्य संभक्ता (कः) करोतेर्तुङ्ङ्ङान्दसं रूपम् । अकार्षीत् ॥

१२—(अस्मै) संसारहिताय (इत्) एव (उ) वितर्कै (प्र) प्रकर्षेण (भर) धर (तूतुजानः) तु त्वं हिंसाबलादाननिकेतनेषु—कानच् । तुजा-दीनां दीर्घोऽभ्यासस्य । पा० १ । १ । ७ । इति दीर्घः । तूतुजानः क्षिप्रनाम-निघ० २ । १५ । त्वरमाणः (ईशानः) पेश्वर्यवान् (कियेधाः) म० ६ । कियतो महतो बलस्य धारकः (गोः) पृथिव्याः (न) इव (पर्व) पर्वणि (वि) विविधम् (रंदा) रंदा विलेखने । विदारय (तिरश्चा) अतिवृद्धिः ० । पा० ३ । २ । ५६ । तिरश्च + अण् गतिपूजनयोः—किन् । तिर्यग्गत्या (इष्ट्यन्) गच्छन् (अर्णसि) उदके उदच । उ० ४ । १७७ । अ गतिप्रापणयोः—अणुन् उदच । गमनाति

[बैरी के] जोड़ों को (विरद) चीर डाल, (गोः न) जैसे भूमि के [जोड़ों को किसान चीरते हैं] ॥ १२ ॥

भाषार्थ—जैसे किसान पृथिवी को जोतकर, घास मादि काट कर एक-सा करके अन्न उत्पन्न कर सुख देते हैं, वैसे ही सभाध्वज राजा शत्रुओं को विघ्न भिन्न कर के प्रजा को सुखी करे ॥ १२ ॥

अस्येदु म ब्रूहि पुर्व्याणि तुरस्य कर्माणि नव्य उक्थैः । युधे यदिष्णान आयुधान्यृघायमाणो निरिणाति शत्रून् ॥ १३ ॥

अस्य । इत् । ऊ० इति । म । ब्रूहि । पुर्व्याणि । तुरस्य । कर्माणि । नव्यः । उक्थैः ॥ युधे । यत् । इष्णानः । आयुधानि । नृघायमाणः । नि-रिणाति । शत्रून् ॥ १३ ॥

भाषार्थ—(अस्य) उस (इत्) ही (उ) विचारपूर्वक (तुरस्य) शीघ्रता करने वाले [सभापति] के (पुर्व्याणि) पहिले किये हुये (कर्माणि) कामों को (म) अच्छे प्रकार (ब्रूहि) तू कह, (उक्थैः) कहने योग्य वचनों से (नव्यः) स्तुति योग्य होकर, (युधे) युद्ध के लिये (आयुधानि) हथियारों को (इष्णानः) बार बार चलाता हुआ और (नृघायमाणः) बढ़ता हुआ [बे रोक चलता हुआ] (यत्) जो [सभापति]

(अपाम्) आपः, आप्ताः प्रजाः—दयानन्दभाष्ये यजु० ३ । २७ । प्रजानाम् (चरथ्यै) तुमथे सेसेन से० । पा० ३ । ४ । ६ । चरतेः—अथैप्रत्ययः । चरितुम् । गन्तुम् ॥

१३—(अस्य) सभापतेः (इत्) (उ) (म) प्रकर्षेण (ब्रूहि) कथय (पुर्व्याणि) पूर्व्य पुराणनाम—निघ० ३ । २७ । पुराणानि (तुरस्य) तुरमाणास्व (कर्माणि) वीरकर्माणि (नव्यः) अ० २ । ५ । २ । अचो यत् । पा० ३ । १ । ६७ । ए स्तुतौ-यत् । स्तुत्यः (उक्थैः) पातृतुदिबचि० । उ० २ । ७ । वच परिमाणये थक् । वक्तुं योग्यैर्वचनैः (युधे) युद्धाय (यत्) यः सेनापतिः (इष्णानः) इष आभीक्ष्ये—शानच् । वारं वारं प्रेरयन् (आयुधानि) शस्त्राणि (नृघायमाणः) इगुपधवाप्रीकिरः कः । पा० ३ । १ । ११५ । नृघु बृद्धौ-क, घस्व घः । लोहितादिडाज्भ्यः कथच् । पा० ३ । १ । १३ । नृघ—भवत्यर्थे—कथच्, शानच् । नृघ आघो बृद्धो भवतीति । प्रवर्धमानः । अप्रतिहतमतिः (निरिणाति) री गति-

(शत्रून्) वैरियों को (निरिणति) मारता जाता है ॥ १३ ॥

भाषार्थ—जो सभाध्यक्ष सेनापति शत्रु अस्त्र विद्या में चतुर और विजयी शूर होवे, विद्वान् लोग उसके विद्या, विनय, वीरता आदि गुणों की बढ़ाई करके उसका मान और उल्लास बढ़ावे ॥ १३ ॥

अस्येदु भिया गिरयश्च दृह्ला द्यावा च भूमौ जुनुषस्तुजेते ।
उपो वेनस्य जोगुवान ओणिं सुव्यो भुवद् वीर्याय नोधाः ॥ १४ ॥

अस्य । इत् । जं इति । भिया । गिरयः । च । दृह्लाः ।
द्यावा । च । भूमौ । जुनुषः । तुजेते इति ॥ उपो इति ।
वेनस्य । जोगुवानः । ओणिम् । सुव्यः । भुवत् । वीर्याय ।
नोधाः ॥ १४ ॥

भाषार्थ—(अस्य) इस (जुनुषः) उत्पन्न करने वाले [परमेश्वर]
के (इत्) ही (उ) निश्चय करके (भिया) भय से (गिरयः) पहाड़ (च)
भी (दृह्लाः) दृढ़ हैं, (च) और (द्यावा भूमौ) सूर्य और भूमि (तुजेते) बलवान् हैं ।
(वेनस्य) प्यारे [वा बुद्धिमान् परमेश्वर] के (ओणिम्) दुख मिटाने का

रक्षणयोः शना । प्वादीनां ह्रस्वः । पा० ७ । ३ । ८० । इति ह्रस्वः । निरन्तरं
हिनस्ति (शत्रून्) वैरिणो दुष्टान् ॥

१४—(अस्य) सर्वत्र वर्तमानस्य (इत्) एव (उ) निश्चयेन (भिया)
भयेन (गिरयः) पर्वताः) (च) अपि (दृह्लाः) स्थिराः सन्ति (द्यावा भूमौ)
दिवो द्यावा । पा० ६ । ३ । २५ । दिव्शब्दस्य द्यावा इत्यादेशः । सुपां सुलुक्० ।
पा० ७ । १ । ३५ । विभक्तेर्डा आदेशः, देवता द्वन्द्वे च । पा० ६ । २ । १४१ । इत्युभ-
यपदप्रकृतिस्वरत्वम्, अत्वम् पदपाठे विचारणीयम्, चकारेण व्यवधानं सांहि-
तिकम् । द्यावाभूमौ । सूर्यपृथिव्यौ (च) समुच्चये (जुनुषः) जनेरुसि । उ०
२ । ११५ । जन जनने—उसि । जनयितुः परमेश्वरस्य (तुजेते) तुज हिंसाबला-
दाननिकेतनेषु-लद्, चुरादिस्थाने तुदादित्वम् । तोजयतः । बलवत्यौ भवतः
(उपो) समीप एव (वेनस्य) अ० २ । १ । १ । कमनीयस्य । मेधाविनः पर-
मेश्वरस्य (जोगुवानः) शुद्ध अव्यक्ते शब्दे यङ्लुकि शानच् । भृशं कथयन्

(जोगुवानः) बार बार कहता हुआ (नोधाः) नेताओं [वस्तुतियों] का धारण करने वाला [सभापति] (सद्यः) तुरन्त (वीर्याय) पराक्रम सिद्ध करने के लिये (उपो) समीप ही (भुवत्) होवे ॥ १४ ॥

भाषार्थ—जो परमात्मा अपने अनन्त सामर्थ्य से सब लोकों को नियम पूर्वक अपने अपने काम के लिये समर्थ बनाता है, सभाध्यक्ष आदि उस जगदीश्वर का आश्रय लेकर अपना सामर्थ्य बढ़ावे ॥ १४ ॥

अस्मो इदु त्यदनुं दाय्येषामेको यद् वव्ने भूरेशानः ।

मैतंशं सूर्यं पस्पृधानं सौवश्ये सुष्विमावदिन्द्रः ॥ १५ ॥

अस्मै । इत् । ऊं इति । त्यत् । अनुं । दायि । एषाम् ।

एकः । यत् । वव्ने । भूरैः । ईशानः ॥ प्र । एतंशम् । सूर्यं ।

पस्पृधानम् । सौवश्ये । सुस्विम् । आवत् । इन्द्रः ॥ १५ ॥

भाषार्थ—(अस्मै) उस [मनुष्य] को (इत्) ही (उ) निश्चय कर के (त्यत्) वह [वस्तु] (अनु) निरन्तर (दायि) दी गयी है, (यत्) जो [वस्तु] (एषाम्) इन [मनुष्यों] के बीच (एकः) अकेले (भूरैः) बहुत

(ओणिम्) अ० ७। १४। १। ओणु अपनयने—इन् । दुःखस्य अपनयनं नाशनम् (सद्यः) शीघ्रम् (भुवत्) भवेत् (वीर्याय) पराक्रमसम्पादनाय (नोधाः) गमेडों । उ० २। ६७। णीञ् प्रापणे, यद्वा णु स्तुतौ—डोप्रत्ययः । गतिकारकोपपदयोः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वं च । उ० ४। २२७। नो+डुधाञ् धारणपोषणयोः असि । नोधा ऋषिर्भवति नवनं दधाति—निरु० ४। १६। नेतृणां स्तुतीनां वा धारकः ॥

१५—(अस्मै) तस्मै मनुष्याय (इत्) एव (उ) निश्चयेन (त्यत्) तद् वस्तु (अनु) निरन्तरम् (दायि) अदायि । दत्तमस्ति (एषाम्) मनुष्याणां मध्ये (एकः) असहायः । केवलः (यत्) वस्तु (वव्ने) वनु याचने—लिट्, उपधासोपः । ववने । ययाचे (भूरैः) प्रभूतस्य राज्यस्य (ईशानः) अधिपतिः (प्र) प्रकर्षेण (एतंशम्) इणस्तश्नतशसुनौ । उ० ३। १४६ इण् गतौ—तशञ् । एतशः, अश्वनाम—निघ० १। १७। गमनशीलम् । ब्राह्मणम् । ब्राह्मणानि सभा-

[रात्र्य] के (ईशानः) स्वामी ने (वध्ने) मांगी है । (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े
ऐश्वर्यवाले परमेश्वर] ने (सौवश्ये) फुरतीले घोड़ों वाले संग्राम के बीच
(सूर्ये) सूर्य के प्रकाश में [जैसे स्पष्ट रीति से] (पस्पृधानम्) भगड़ते हुये
(सुष्विम्) ऐश्वर्यवान् (पतशम्) ब्राह्मण [ब्रह्मज्ञानी सभापति] को (प्र) अच्छे
प्रकार (आवत्) बचाया है ॥ १५ ॥

भाषार्थ—जो आत्मविश्वासी मनुष्य शुद्ध अन्तःकरण से दुष्टों को
जीतने में प्रयत्न करता है, परमात्मा अवश्य उसकी रक्षा करता है ॥ १५ ॥

एवा ते हारियोजना सुवृत्तीन्द्र ब्रह्माणि गोतमासो अक्रन् ।
एषु विश्वपेशसु धियं धाः प्रातर्मसू धियावसुर्जगम्यात् ॥ १६ ॥

एव । ते । हारि-योजन् । सु-वृत्ति । इन्द्र । ब्रह्माणि ।
गोतमासः । अक्रन् ॥ आ । एषु । विश्व-पेशसु । धियंसु ।
धाः । प्रातः । मसू । धिया-वसुः । जुगम्यात् ॥ १६ ॥

भाषार्थ—(हारियोजन) हे घोड़ों के जोतने वाले ! (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े
ऐश्वर्यवाले पुरुष] (ते) तेरे लिये (एव) ही (गोतमासः) अत्यन्त ज्ञानी

पतिम् (सूर्ये) सूर्यप्रकाशे यथा । अतिस्पष्टरीत्या (पस्पृधानम्) स्पर्ध संघर्ष-
कान्तम् । शपूर्वाः क्षयः । पा० ७ । ४ । ६१ इत्यभ्यासस्य प्रकारः शिष्यते, धात्व-
कारस्य लोपो रेफस्य सम्प्रसारणं च पृषोदरादित्वात् । स्वर्धमानम् । मत्सरं
कुर्वन्तम् (सौवश्ये) गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च । पा० ५ । ४ । १२४ ।
स्वश्व-व्यञ् । नश्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामैच् । पा० ७ । ३ । ३ ।
वकारात् पूर्वम् औकारागमः । शोभना वेगवन्तोऽश्वास्तुरङ्गाः स्वश्वाः, तेषां
कर्मणि । वेगवदश्वयुक्ते सङ्ग्रामे (सुष्विम्) किकिनामुत्सर्गश्छन्दसि सदादि-
भ्यो दर्शनात् । वा० । पा० ३ । २ । १७१ । शु प्रसवैश्वर्ययोः—किन्, यणादेशः उव-
कादेशाभावश्छान्दसः । ऐश्वर्यवन्तम् (आवत्) अरत्तत् (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान्
परमात्मा ॥

१६—(एव) निश्चयेन (ते) तुभ्यम् (हारियोजन) वसिष्ठपिबजि० ।
४० ४ । १२५ । हञ् प्रापणे-इञ् + युजिर् योग-स्यु । हे हारीणां हरीणाम् अश्वानां
प्राजक (सुवृत्ति) म० २ । विभक्त्युक् । सुवृत्तीनि । सुप्राह्माणि (इन्द्र) हे

[ऋषियों] ने (सुवृत्ति) अच्छे प्रकार प्रदण करने योग्य (ब्रह्माणि) वेदज्ञानों को (अकन्) किया है [बताया है] । (धियावसुः) बुद्धि और कर्म के साथ रहने वाला त् (एषु) इन [ज्ञानों] में (विश्वपेशसम्) सब रूपों वाली (धियम्) निश्चल बुद्धि को (आ) सब ओर से (धाः) धारण कर और (प्रातः) प्रातःकाल (मक्षु) शीघ्र (जगम्यात्) [उस बुद्धि को] प्राप्त हो ॥ १६ ॥

भाष्यार्थ—विद्वान् पुरुष सभापति आदि को सदा वेदशास्त्रों का उपदेश करें और प्रधान आदि जन अन्तःकरण से ग्रहण कर के परोपकार करते रहें ॥ १६ ॥

सूक्तम् ३६ ॥

१—११ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ७ भूरिक् पङ्क्तिः ; २, ४, ५ त्रिष्टुप् ; ३ स्वरान्धर्षी पङ्क्तिः ; ६, विराट् त्रिष्टुप् ; ६, ११ तिष्ठत् त्रिष्टुप् ; १० आर्षी पङ्क्तिः ॥

मनुष्यकर्तव्योपदेशः—मनुष्य के कर्तव्य का उपदेश ॥

य एक इद्वयैश्चर्षणीनामिन्द्रं तं गीर्भिरुभ्यर्च आभिः । यः पत्यते वृषभो वृष्ययावान्तुत्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान् ॥ १ ॥
यः । एकः । इत् । हव्यैः । चर्षणीनाम् । इन्द्रम् । तम् । गीः-भिः । आभिः । अर्च । आभिः ॥ यः । पत्यते । वृषभः । वृष्यय-वान् । सुत्यः । सत्वा । पुरु-मायः । सहस्वान् ॥ १ ॥

परमैश्वर्यवान् पुरुष (ब्रह्माणि) वेदज्ञानानि (गोतमासः) गमेर्दोः । ३० २ । ६७ । गम्लु गतो यद्वा नै गानै—डो प्रत्ययः, तमप्, असुक् च । गौरिति स्तोत्र नाम—निघ० ३ । १६ । अतिशयेन ज्ञानिनः । महर्षयः (अकन्) अ० : । २६ । ७ । करीतेर्लुङ् छान्दसं रूपम् । अकार्षुः (आ) तमस्तात् (एषु) ब्रह्मसु । वेदज्ञानेषु (विश्वपेशसम्) सर्वरूपोपेताम् (धियम्) धारणावतीं प्रज्ञाम् (धाः) दधाते-र्लुङ् लोट्ये । धेहि । धर (प्रातः) प्रातःकाले (मक्षु) शीघ्रम् (धियावसुः) प्रज्ञाकर्मभ्यां सह निवासी (जगम्यात्) अ० ७ । ०६ । २ । गमेः शपः श्लुः, विशिक्तिङ् मध्यप्रपुरुषस्य प्रथमः । गम्याः । प्राप्याः ॥

भाषार्थ—(तम्) उस (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] को (आभिः) इन (गीर्भिः) वाणियों से (अभि) सब प्रकार (अर्चै) मैं पूजता हूं । (यः) जो (एकः) अकेला (इत्) ही (चर्षणीनाम्) मनुष्यों के बीच (हव्यः) ग्रहण करने योग्य है और (यः) जो (वृषभः) श्रेष्ठ, (वृषयवान्) पराक्रम वाला, (सत्यः) सच्चा, (सत्वा) वीर, (पुरुमायः) बहुत बुद्धि वाला और (सहस्वान्) महाबलवान् (पत्यते) स्वामी है ॥ १ ॥

भावार्थ—सब मनुष्यों को सर्वशक्तिमान्, महापराक्रमी जगदीश्वर की उपासना करके श्रेष्ठ गुणी होना चाहिये ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—६। २२। १—११ ॥

तस्मिं नुः पूर्वे पितरो नवग्वाः सुप्त विप्रासो अभि वाजयन्तः ।
नृक्षद्दुभं ततुरिं पर्वतेष्ठामद्रौघवाचं मुतिभिः शविष्ठम् ॥ २ ॥
तस्मिं । ऊं इति । नुः । पूर्वे । पितरः । नवग्वाः । सुप्त ।
विप्रासः । अभि । वाजयन्तः ॥ नृक्षद्दुभम् । ततुरिम् ।
पूर्वते-स्थाम् । अद्रौघ-वाचम् । मुति-भिः । शविष्ठम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(नवग्वाः) स्तुति योग्य चरित्र वाले, (सप्त) सात (विप्रासः) [त्वचा, नेत्र, कान, जिह्वा, नाक, मन, और बुद्धि] व्यापन शील

१—(यः) परमेश्वरः (एकः) अद्वितीयः (इत्) एव (हव्यः) हु आदाने—यत् । ग्राह्यः (चर्षणीनाम्) मनुष्याणां मध्ये (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं परमात्मानम् (तम्) (गीर्भिः) वाग्भिः । स्तुतिभिः (अभि) सर्वतः (अर्चै) पूजयामि (आभिः) (यः) (पत्यते) यद्वृत्तान्तित्यम् । पा० ८ । १ । ६६ । इति निघातप्रतिषेधः । ईष्टे । स्वामी भवति (वृषभः) श्रेष्ठः (वृषयवान्) अ० ४ । ४ । ४ । वृषन्—यत्, मतुप् । पराक्रमयुक्त (सत्यः) यथार्थस्वभावः (सत्वा) अ० ५ । २० । ८ षड्बु विशरणगत्यवसादनेषु—कतिप्, दस्य तः । वीरः (पुरुमायः) माया प्रज्ञानाम्—निघ० ३ । ६ । षड्बुप्रज्ञः (सहस्वान्) महाबलवान् ॥

२—(तम्) प्रसिद्धम् (उ) एव (पूर्वे) प्राचीनाः (पितरः) पालक-सनाः विद्वांसः (नवग्वाः) अ० १४ । १ । ५६ । एतुतौ—अप् + गस्त्वं गतौ-

इन्द्रियों के समान (नः) हमारे (पूर्वे) पहिले (पितरः) पितृजन (तम्) उस (उ) ही (नक्षद्दामम्) व्याप्त दोषों के नाश करने वाले, (ततुरिम्) दुष्टों से तारने वाले, (पर्वतेष्ठाम्) मेघ में वर्तमान [बिजुली के समान शुद्ध स्वरूप], (अद्रोघवाचम्) द्रोह रहित वाणी वाले, (मतिभिः) बुद्धियों के साथ (शविष्ठम्) अत्यन्त बली [परमात्मा] को (अभि) सब ओर से (वाजयन्तः) जताते हुये हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—जिस अनादि अनन्त परमात्मा की उपासना योगी जन सदा करते हैं, उसका ध्यान करके सब मनुष्य आनन्द पावें ॥ २ ॥

तस्मीमह इन्द्रमस्य रायः पुरुवीरस्य नृवतः पुरुक्षोः । यो अस्कृधोयुरजरः स्वर्वान् तस्मा भर हरिवो मादुयध्यै ॥ ३ ॥

तम् । ईमहे । इन्द्रम् । अस्य । रायः । पुरु-वीरस्य । नृवतः । पुरु-क्षोः ॥ यः । अस्कृधोयुः । अजरः । स्वः-वान् । तम् । आ । भुर । हरि-वः । मादुयध्यै ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(तम्) उस (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा]

इवप्रत्ययः । स्तोतव्यचरित्राः (सप्त) सप्तसंख्याकाः (विप्रासः) विप्राणां व्यापनकर्मणामिन्द्रियाणाम्—निरु० १४ । १३ । व्यापनकर्माणीन्द्रियाणि यथा । त्वक्चक्षुःश्रवणरसनाघ्राणमनोबुद्धयः । सप्त ऋषयः—अ० ४ । ११ । ६ (अभि) सर्वतः (वाजयन्तः) ज्ञापयन्तः सन्ति (नक्षद्दामम्) नक्षतिर्व्याप्तिकर्मा—निघ० २ । १८—शत्रु, दध्नोतीति वधकर्मा—निघ० २ । १६ । नक्षत् + दम्मु दम्भे हनने—अण्, नलोपश्छान्दसः । व्याप्नुवतां दोषाणां नाशकम् (ततुरिम्) आदृगमहनजनः किकिनौ लिट् च । पा० ३ । २ । १७१ । तृ सवनतरणयोः, अन्तर्गतणर्थः—किन् । बहुलं छन्दसि । पा० ७ । १ । १०३ । इत्युत्वम् । दुःखेभ्यस्तारयितारम् (पर्वतेष्ठाम्) पर्वते मेघे स्थितां विद्युतमिव शुद्धस्वरूपम्—इति दयानन्दभाष्ये (अद्रोघवाचम्) अ० ६ । १ । २ । द्रोहरहितवाग्युक्तम् । कल्याणवाणीम् (मतिभिः) बुद्धिभिः (शविष्ठम्) अतिशयेन बलवन्तम् ॥

३—(तम्) (ईमहे) याचनां कुर्मः (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं परमात्मानम् (अस्य) (रायः) धनस्य (पुरुवीरस्य) बहुवीरप्रापकस्य (नृवतः)

से (अस्य) इस (पुरुवीरस्य) बहुत वीरों के प्राप्त कराने वाले, (नृवतः) श्रेष्ठ मनुष्यों वाले, (पुरुक्षोः) बहुत ऐश्वर्य वा अन्न वाले (रायः) धन की (ईमहे) हम मांग करते हैं । और (यः) जो [परमात्मा] (अस्कृधोयुः) अपनी छोटाई न चाहने वाला, (अजरः) निर्वल न होने वाला, (स्वर्वान्) बहुत सुख वाला है, (हरिवः) हे उत्तम मनुष्यों वाले ! [विद्वान् पुरुष] तू (मादयधै) आनन्दित करने के लिये (तम्) उस [परमात्मा] को (आ) सब प्रकार (भर) धारण कर ॥ ३ ॥

भावार्थ—सब मनुष्य विज्ञान और ऐश्वर्य आदि बढ़ाने के लिये परमात्मा से प्रार्थना करके सदा प्रयत्न करें ॥ ३ ॥

तन्नो वि वोचो यदि ते पुरा चिजजरितार आनुशुः सुमनसिन्द्र ।
कस्ते भागः किं वयो दुध्र खिद्वः पुरुहूत पुरुवसोऽसुरघ्नः ॥४॥
तत् । नः । वि । वोचुः । यदि । ते । पुरा । चित् । जरितारः ।
आनुशुः । सुमनम् । इन्द्र ॥ कः । ते । भागः । किम् । वयः ।

श्रेष्ठनृभिर्युक्तस्य (पुरुक्षोः) आज्ञापरयोः खनिशृभ्यां डिच्च । उ० १ । ३३ ।
इ तु शब्दे, क्षि निवासगत्योः, ऐश्वर्यं च—कु-प्रत्ययः, सचडित् । तु अन्ननाम-
निघ० २ । ७ । बह्वैश्वर्ययुक्तस्य । बहुलोपेतस्य (यः) परमात्मा (अस्कृधोयुः)
पृभिदिव्यधिगृधिधृषिहृषिभ्यः । उ० १ । २३ । कृती छेदने—कु, तकारस्य धः ।
कधु ह्रस्वनाम—निघ० ३ । २ । सुप आत्मनः क्यच् । पा० ३ । १ । ८ । अकधु-
क्यच् । कयाच्छन्दसि । पा० ३ । २ । १७० । उप्रत्ययः, यद्वा, मृगयवाद्यश्च ।
उ० १ । ३७ । अकधु+या प्रापणे—कु । सकार उपजनः, धुशब्दस्य धोभावः ।
अस्कृधोयुरकध्वायुः कृध्विति ह्रस्वनाम निकृत्तं भवति—निरु० ३ । ३ । य
आत्मनः कधु ह्रस्वत्वं नेच्छतीति—दयानन्दभाष्ये—ऋक्० ६ । ६७ । ११ (अजरः)
जरारहितः । अनिर्बलः । हृढः (स्वर्वान्) सुखवान् (तम्) परमात्मानम् (आ)
समन्तात् (भर) धर (हरिवः) हरयो मनुष्याः—निघ० २ । ३ । हे प्रशस्त—
मनुष्ययुक्त (मादयधै) तुमर्थे सेसेनसे० । पा० ३ । ४ । ४ । मादयतेः—अध्वै
प्रत्ययः । मादयितुमानन्दयितुम् ॥

दुध । खिद्वः । पुरु-हूत । पुरुवसो इति पुरु-वसो ।

असुर-घ्नः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [वड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] (तत्) यह बात (नः) हल को (वि) विशेष करके (वोचः) तू बता—(यदि) यदि (ते) तेरे (जरितारः) गुण वखानने वालों ने (पुरा चित्) पहिले भी (सुम्नम्) सुख को (आनयुः) पाया है । (दुध) हे पूर्ण ! (खिद्वः) हे शत्रुओं के खेद देने वाले ! (पुरुहूत) हे बहुतों से बुलाये गये ! (पुरुवसो) हे बहुत धन वाले (ते) तेरा (कः) कौन सा (असुरघ्नः) असुरों [दुष्टों का] नाश करने वाला (भागः) भाग है और (किम्) कौन (वयः) जीवन है ॥ ४ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों के उपदेशों को ग्रहण करके सदा सुख प्राप्त करें ॥ ४ ॥

तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं रथे ष्ठामिन्द्रं वेपी वक्त्रो यस्य नू गीः ।
तुविश्राभं तुविकुर्मिं रभोदां गा तुमिषे नक्षते तुम्रमच्छ ॥ ५ ॥
तम् । पृच्छन्ती । वज्र-हस्तम् । रथे-स्याम् । इन्द्रम् । वेपी ।
वक्त्रो । यस्य । नु । गीः ॥ तुवि-श्राभम् । तुवि-कुर्मिम् ।
रभुः-दाम् । गा-तुम् । इषे । नक्षते । तुम्रम् । अच्छ ॥ ५ ॥

४—(तत्) वक्ष्यमाणम् (नः) अस्मान् (वि) विशेषेण (वोचः) लोडर्थे लुङ् । ब्रूहि (यदि) (ते) तव (पुरा) पूर्वम् (चित्) अपि (जरितारः) गुणस्तोतारः (आनयुः) अश्व व्याप्तौ—लिट् । प्रापुः (सुम्नम्) सुखम् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् पुरुष (कः) (ते) तव (भागः) अंशः (किम्) (वयः) जीवनम् (दुधू) अ० २० । ३४ । १८ । हे पूर्ण (खिद्वः) खिद्व दैन्ये, अन्तर्गतार्थः—कसु । वस्वेकाजाद्वयसाम् । पा० ७ । २ । ६७ । इडभावः । द्विर्वचन-प्रकरणे छन्दसि वेति वक्तव्यम् । वा० पा० ६ । १ । ८ । इत्यनभ्यासः । मतुवसो रु सम्बुद्धौ छन्दसि । पा० ८ । ३ । १ । इति क्त्वम् । आमन्त्रितनिघातः । हे शत्रूणां खेदयितः (पुरुहूत) हे बहुभिराहूत (पुरुवसो) हे बहुधन (असुरघ्नः) कप्र-करणे मूलविभुजादिभ्य उपसंख्यानम् । वा० पा० ३ । २ । ५ । असुर+हन द्विं सागतयोः— कप्रःपयः । दुष्टानां हन्ता नाशकः ॥

भाषार्थ—(यस्य) जिस [पुरुष] की (गीः) वाणी (जु) निश्चय करके (वेपी) हिलने वाली [वे रोक चलने वाली] और (वकरी) बोलने की शक्ति वाली है, (तम्) उस (वज्रहस्तम्) वज्र [हथियार] हाथ में रखने वाले (रथेष्ठाम्) रथ में बैठे हुये, (तुविग्राभम्) बहुतों को सहारा देने वाले, (तुविकूर्मिम्) बहुत से काम करने वाले, (रभोदाम्) वेगयुक्त बल देने वाले, (गातुम्) वेदों के गाने वाले, (तुम्रम्) विघ्नों के मिटाने वाले (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] को (इषे) अन्न आदि के लिये (पृच्छन्ती) पूछती हुयी [स्त्री] (अच्छ) अच्छे प्रकार (नक्षते) प्राप्त होती है ॥ ५ ॥

भाषार्थ—ब्रह्मचारिणी कन्या भली भांति निश्चय करके शुभ गुण वाले ऐश्वर्यवान् पुरुष को विवाह के लिये स्वीकार करे ॥ ५ ॥

अथा हु त्वं सायया वावृधानं मुनोजुवा स्वतवः पर्वतेन ।
अच्युता चिद् वीलिता स्वोजी रुजो वि दृह्ला धृषुता
विरग्निन् ॥ ६ ॥

५—(तम्) पुरुषम् (पृच्छन्ती) जिज्ञासमाना (वज्रहस्तम्) आयुधपाणिम् (रथेष्ठाम्) रथारूढम् (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं पुरुषम् (वेपी) वेपु कम्पने पचाद्यच् । गौरादित्वाद् डीष् । कम्पनशीला । चेष्टायमाना (वकरी) वचेर्वनिप् । वनो र च । पा० ४ । १ । ७ । डीब्रेफौ । यद्वा, कृगृशृ दृम्यो वः । उ० १ । १५५ । वचेर्वप्रत्ययः, रो मत्वर्थे, डीप् । न्यङ्कादीनां च । पा० ७ । ३ । ५३ । इति बाह्वलकात् कुत्वम् । वचनशक्तिमती (यस्य) पुरुषस्य (जु) निश्चयेन (गीः) वाक् (तुविग्राभम्) ग्रह उपादाने-अण् हस्य भः । बहूनां ग्रहीतारं सहायकम् (तुविकूर्मिम्) अर्त्तेकृच्च । उ० ४ । ४४ । डु कृञ् करणे-मिप्रत्ययः ऊच्च । बहुकर्माणम् (रभोदाम्) रभसो वेगयुक्तबलस्य दातारम् (गातुम्) कमिमनि-जनिगाभायाहिभ्यश्च । उ० १ । ७३ । वेदानां गायनं गायकम् (इषे) अन्नाद्याय-द्यानन्दभाष्ये—ऋक्० ६ । २२ । ५ (नक्षते) प्राप्नोति । नक्षतिर्गतिकर्मा-निघ० २ । १४ (तुम्रम्) तुमिराहननार्थः—सायणभाष्ये—ऋक्० ३ । ५० । १ । सुप्रधान्गुधिभ्यः क्रन् । उ० २ । २४ । इति क्रन् प्रत्ययः । विघ्नानां नाशकम् (अच्छ) सुष्ठु ॥

अया । हु । त्यम् । मायया । वृधुधानम् । मनुः-जुवा । स्व-तवः ।
पर्वतेन ॥ अच्युता । चित् । वीलिता । सु-ओजः । रुजः ।
वि । दृहृह्ला । धृषता । विरप्तिशुन् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(स्वतवः) हे अपने बल वाले ! (स्वोजः) हे बड़े पराक्रम वाले ! (विरप्तिशुन्) हे महागुणी पुरुष ! (अया) इस (हु) ही (मायया) [अपनी] बुद्धि और (मनोजुवा) मन के समान वेग के साथ (पर्वतेन) पहाड़ [के तुल्य दृढ़ हथियार] से और (धृषता) ढीठपन से (त्यम्) उस (वृधुधानम्) बढ़ते हुये [बैरी] को और (अच्युता) न हिलने वाले, और (वीलिता) ठहराऊ और (दृह्ला) दृढ़ [पदार्थों] को (चित्) भी (विरुजः) दू ने चूर चूर कर दिया है ॥ ६ ॥

भावार्थ—जो स्त्री पुरुष बड़े बड़े विघ्नों और कष्टों को सह सकें, वे ही गृह स्थाश्रम आदि बड़े बड़े काम चला सकते हैं ॥ ६ ॥

तं वो धिया नव्यस्या शविष्ठं प्रत्नं प्रत्नवत् परितंसुयध्यै । स
नो वक्षदनिमानः सुवह्नेन्द्रो विश्वान्यति दुर्गहाणि ॥ ७ ॥

तम् । वः । धिया । नव्यस्या । शविष्ठम् । प्रत्नम् । प्रत्न-वत् ।
परि-तंसुयध्यै ॥ सः । नः । वक्षत् । अति-मानः । सु-वह्ना ।
इन्द्रः । विश्वानि । अति । दुः-गहानि ॥ ७ ॥

६—(अया) अनया (हु) एव (त्यम्) तम् (मायया) प्रज्ञया (वृधु-
धानम्) वर्धमानम् (मनोजुवा) जु गतौ-किप् । मनोवद् वेगेन (स्वतवः) तवो-
बलम्—निघ० २ । ६ । हे स्वकीयबलयुक्त (पर्वतेन) शैलतुल्यदृढ़शस्त्रेण
(अच्युता) अच्युङ् गतौ—क । अचेष्टायमानानि (चित्) अपि (वीलिता)
वीलयतिः संस्तम्भकर्मा—निरु० ५ । १६ । संस्तम्भितानि । स्थिराणि (स्वोजः)
हे महापराक्रमिन् (रुजः) अरुजः । भगवानसि (वि) विशेषेण (दृह्ला)
दृढानि वस्तूनि (धृषता) संश्चत्पद्वेदत् । उ० २ । ८५ । नि धृषा प्रागल्भ्ये-
अति प्रत्ययः । प्रागल्भ्येन (विरप्तिशुन्) अ० ५ । २६ । १३ । हे महागुणिन् ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्यो !] (वः) तुम्हारे लिये (तम्) उस (शविष्ठम्) अत्यन्त बली और (प्रत्नम्) पुराने [अनुभवी पुरुष] को (नव्यस्या) अधिक नवीन (धिया) बुद्धि वा कर्म से (प्रत्नवत्) पुराने लोगों के समान (परितंसयध्वै) हम शोभायमान करें । (सः) वह (अनिमानः) बिना परिमाण वाला, (सुवह्ना) बड़ा नायक (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला पुरुष] (विश्वानि) सब (दुर्गहानि) अत्यन्त कठिन स्थानों को (अति) पार करके (नः) हम को (वक्षत्) चलावे ॥ ७ ॥

भावार्थ—जो पुरुष सब मनुष्यों के बीच अनुपम, बलवान्, बुद्धिमान्, परोपकारी होवे, उसी को विद्वान् लोग अपना प्रधान बनावें ॥ ७ ॥

आ जनाय द्रुह्वणे पार्थिवानि दिव्यानि दीपयैऽन्तरिक्षा । तपः
वृषन् विश्वतः शोचिषा तान् ब्रह्मद्विषे शोचय क्षामपश्च ॥८
आ । जनाय । द्रुह्वणे । पार्थिवानि । दिव्यानि । दीपयः ।
अन्तरिक्षा ॥ तपः । वृषन् । विश्वतः । शोचिषा । तान् ।
ब्रह्म-द्विषे । शोचय । क्षाम् । अपः । च ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(वृषन्) हे बलिष्ठ ! [पुरुष] (दिव्यानि) श्रेष्ठ गुण वाले (पार्थिवानि) पृथिवी पर उत्पन्न हुये और (अन्तरिक्षा) आकाश वाले पदार्थों

७—(तम्) (वः) युष्मभ्यम् (धिया) प्रज्ञया कर्मणा वा (नव्यस्या) नव-ईयसुन्, ईकारलोपः, ङीप् नवीयस्या । नवतरया (शविष्ठम्) अतिशयेन बलवन्तम् (प्रत्नम्) प्राचीनम् । अनुभविनं पुरुषम् (प्रत्नवत्) पुराणाः पुरुषो यथा (परितंसयध्वै) तिङां तिङो भवन्ति । वा० पा० ७ । १ । ३६ । तसि अलङ्करणे-तुमर्थे अध्वैप्रत्ययो लिङर्थे । अलङ्कुर्याम (सः) (नः) अस्मान् (वक्षत्) वहतेलैट् । वहेत् । नयेत् (अनिमानः) अपरिमाणाः (सुवह्ना) सर्वधातभ्यो मनिन् । उ० ४ । १४५ । वह प्रापणे—मनिन् । सुष्ठु वोढा । महानायकः (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् पुरुषः (विश्वानि) सर्वाणि (अति) अतीत्य । उल्लङ्घ्य (दुर्गहानि) गह गहने दुर्गमने-अच् । दुर्गमानि । अतिकठिनानि वस्तूनि ॥

८—(आ) समन्तात् (जनाय) पुरुषाय (द्रुह्वणे) अ० ४ । २६ । १ । द्रुह जिघांसायाम्-कनिप् श्लोभे (पार्थिवानि) पृथिव्यां भवानि (दिव्यानि)

को (आ) सब ओर से (दीपयः) प्रकाशित कर, और (तान्) हिंसक चोरों को (शोचिषा) तेज से (विश्वतः) सब प्रकार (तप) तपादे, और (ब्रह्मद्विषे) ईश्वर और वेद के द्वेषी, (दुह्वणे) अनिष्ट चाहने वाले (जनाय) जनके लिये (क्षाम्) पृथिवी (च) और (अयः) जलों को (शोचय) शोकयुक्त कर ॥ ८ ॥

भाषार्थ—विद्वान् लोग पृथिवी आदि पदार्थों के तत्त्वज्ञान को फैलाकर दुष्टों को सन्ताप और सत्पुरुषों को आनन्द देवें ॥ ८ ॥

भुवो जनस्य दिव्यस्य राजा पार्थिवस्य जगत्स्त्वेषसंदृक् ।
धिष्व वज्रं दक्षिण इन्द्र हस्ते विश्वा अजुर्य दयसे वि मायाः ८
भुवः । जनस्य । दिव्यस्य । राजा । पार्थिवस्य । जगत्तः ।
त्वेष-संदृक् ॥ धिष्व । वज्रम् । दक्षिणे । इन्द्र । हस्ते ।
विश्वाः । अजुर्य । दयसे । वि । मायाः ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(त्वेषसंदृक्) हे प्रकाश के दिखाने वाले ! तू (दिव्यस्य) कामना योग्य (जनस्य) मनुष्य का और (पार्थिवस्य) पृथिवी पर हुये (जगतः) संसार का (राजा) राजा (भुवः) है । (अजुर्य) हे जरा रहित [प्रबल] (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (दक्षिणे) दाहिने (हस्ते) हाथमें (वज्रम्) वज्र [हथियार] (धिष्व) धारण कर । और

दिव्यगुणयुक्तानि (दीपयः) अदीपयः—लोडर्थे लङ् । प्रकाशय (अन्तरिक्षा) अर्श आद्यच् । अन्तरिक्षसम्बन्धीनि वस्तूनि (तप) दह (वृषन्) हे बलिष्ठ (विश्वतः) सर्वतः (शोचिषा) तेजसा (तान्) तर्द हिंसायाम्—डप्रत्ययः । चोरान् (ब्रह्मद्विषे) ईश्वरवेदयोर्द्वेष्टे (शोचय) शोकं प्रापय (क्षाम्) पृथिवीम् (अयः) जलानि (च) ॥

६—(भुवः) छान्दसं रूपम् । भवसि (जनस्य) पुरुषस्य (दिव्यस्य) कमनीयस्य (राजा) (पार्थिवस्य) पृथिव्यां भवस्य (जगतः) संसारस्य (त्वेषसंदृक्) हे प्रकाशस्य सम्यग् दर्शयितः (धिष्व) सुधितवसुधित नेम-धित धिष्वधिषीय च । पा० ७ । ४ । ५५ । दधातेः इत्वत् । धत्स्व । धर (वज्रम्) शस्त्रम् (दक्षिणे) (इन्द्र) (हस्ते) (विश्वाः) सर्वाः (अजुर्य) अ० ५ । १ । ४ । जूरी हिंसावयोहान्योः—यक् । हे जरारहित प्रबल (दयसे) दय दानादिषु ।

(विश्वाः) समस्त (मायाः) बुद्धियों को (वि) विशेष करके (दयसे) दे ॥६॥

भावार्थ—वही मनुष्य राजा होना चाहिये जो शरीर और आत्मा से प्रबल होकर संसार की रक्षा और विद्याओं का प्रचार करे ॥ ६ ॥

आ संयतमिन्द्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्नाम् ।

यया दासान्यार्याणि वृत्रा करौ वज्रिन् सुतुका नाहुषाणि ॥१०॥

आ । संय-यतम् । इन्द्र । नः । स्वस्तिम् । शत्रु-तूर्याय ।

बृहतीम् । अमृध्नाम् ॥ यया । दासानि । आर्याणि । वृत्रा ।

करः । वज्रिन् । सु-तुका । नाहुषाणि ॥ १० ॥

भावार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (नः) हमारे लिये (शत्रुतूर्याय) शत्रुओं के मारने को (संयतम्) बहुत दृढ़, (बृहतीम्) बढ़ती हुयी, (अमृध्नाम्) अक्षय (स्वस्तिम्) सुख सामग्री (आ) सब ओर से (करः) तू कर । (यया) जिस [सुख सामग्री] से (वज्रिन्) हे वज्र-धारी ! (दासानि) शत्रु के कुल (आर्याणि) द्विजकुल [होवें] और (नाहुषाणि) मनुष्यों के (वृत्राणि) धन (सुतुका) बहुत बढ़ने वाले [होवें] ॥१०॥

भावार्थ—राजा लिखादान और सत्य उपदेश से शत्रुओं को भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य बनाकर शत्रुओं के नाश के लिये मनुष्यों में धन और सुख की वृद्धि करे ॥ १० ॥

तोड्ये लद् । देहि (वि) विशेषेण (मायाः) प्रज्ञाः ॥

१०—(आ) समन्तात् (संयतम्) यम नियमने—किप् तुक् च । सम्यग् नियमिताम् । सुदढाम् (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् राजन् (नः) अस्मभ्यम् (स्वस्तिम्) सुसत्ताम् । सुखसामग्रीम् (शत्रुतूर्याय) तूरी गतिस्वरणहिंसनयोः—कयप् । शत्रूणां हिंसनाय (बृहतीम्) महतीम् (अमृध्नाम्) स्फायितश्चिवञ्चि० । उ० २ । १३ । मृधु आर्दीभावे हिंसायां च—रक्, याप् । अहिंसिताम् । अक्षीणाम् । (यया) स्वस्त्या (दासानि) शत्रुकुलानि (आर्याणि) द्विजकुलानि (वृत्राणि) धनानि (करः) कुरु (वज्रिन्) शस्त्रधारिन् (सुतुका) सवृभृशुषिमुषिभ्यः कक् । उ० ३ । ४१ । तु गतिवृद्धि-हिंसासु—रक् । सुवर्धकानि (नाहुषाणि) मनुष्यसम्बन्धीनि ॥

स नो नियुद्भिः पुरुहूत वेधो विश्ववाराभिरा गहि प्रयज्यो ।
 न या अदेवो वरते न देव आभिर्याहि तूयमा मद्र्यद्रिक् ॥११
 सः । नः । नियुत्-भिः । पुरु-हुत । वेधः । विश्व-वाराभिः ।
 आ । गहि । प्रयज्यो इति प्र-यज्यो ॥ न । याः । अदेवः ।
 वरते । न । देवः । आ । आभिः । याहि । तूयम् । आ ।
 मद्र्यद्रिक् ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(पुरुहूत) हे बहुतों से पुकारे गये । (वेधः) हे बुद्धिमान् ।
 (प्रयज्यो) हे अच्छे प्रकार यज्ञ करने वाले । (सः) वह तू (नः) हम को
 (विश्ववाराभिः) सब से स्वीकार करने योग्य (नियुद्भिः) निश्चित मिलने
 और विछुड़ने की रीतों से (आ गहि) प्राप्त हो । (याः) जिन [मिलने
 विछुड़ने की रीतों] को (अदेवः) अविद्वान् जन (देवः न) विद्वान् के समान
 (न) नहीं (आ) अच्छे प्रकार (वरते) मानता है, (आभिः) उन [रीतों]
 के साथ (मद्र्यद्रिक्) मेरी ओर दृष्टि करता हुआ तू (तूयम्) शीघ्र (आ
 याहि) आ ॥ ११ ॥

भावार्थ—राजा उत्तम उत्तम रीतों को स्वीकार कर के विद्वानों से
 स्वीकार करावे, क्योंकि मूर्ख जन उत्तम बातों को तुरन्त ठीक नहीं समझते ॥११॥

११—(सः) स त्वम् (नः) अस्मान् (नियुद्भिः) यु मिश्रणामिश्र-
 णयोः—किप् । निश्चितसंयोगवियोगरीतिभिः (पुरुहूत) हे बहुमिराहूत
 (वेधः) मेधाविन् । (विश्ववाराभिः) सर्वैः स्वीकरणीयाभिः (आगहि)
 प्राप्नुहि (प्रयज्यो) यजिमनिशुन्धि० । उ० ३ । २० । यज्ञ देवपूजासंगतिकरण—
 दानेषु—युच् । हे प्रकर्षेण यज्ञकर्तः (न) निषेधे (याः) नियुतः (अदेवः)
 अविद्वान् (वरते) वृज्-वरणे, भ्वादिः । स्वीकरोति (न) यथा (देवः)
 विद्वान् (आ समन्तात् (आभिः) नियुद्भिः (याहि) गच्छ (तूयम्) अघ्न्याद-
 यश्च । उ० ४ । ११२ । तद्यतेवृद्धिकर्मणः—निरु० ६ । २५—यक्, छान्दसो
 दीर्घः । शीघ्रम्—निघ० २ । १५ (मद्र्यद्रिक्) मद्र्यच्—अथर्व० २० । २३ । १+
 हरिर् प्रेक्षणे—किप्, पृषोदशादिरूपम् । मद्रिमिकडहिः सन् ॥

दूक्तसु ३७ ॥

१—११ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १; ५ त्रिष्टुप्; २ आर्षी पङ्क्तिः; ३, ६ निचृत् त्रिष्टुप्; ४ पङ्क्तिः; ७, ८, १० विराडार्षी त्रिष्टुप्; ८ भुरिगार्षी पङ्क्तिः; ११ भुरिक् पङ्क्तिः ॥

राजाप्रजाधर्मोपदेशः—राजा और प्रजा के धर्म का उपदेश ॥

यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो न भीम एकः कृष्टीश्च्यवयति प्र विश्वाः ।
यः शश्वतो अदाशुषो गयस्य प्रयन्तासि सुष्वितराय वेदः ॥१
यः । तिग्म-शृङ्गः । वृषभः । न । भीमः । एकः । कृष्टीः ।
च्यवयति । प्र । विश्वाः ॥ यः । शश्वतः । अदाशुषः । गयस्य ।
प्र-यन्ता । असि । सुष्वितराय । वेदः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(एकः) अकेला [वही] (विश्वा) सब (कृष्टीः) मनुष्य प्रजाओं को (प्र) अच्छे प्रकार (च्यवयति) चलाता है, (यः) जो (तिग्म-शृङ्गः न) तीखी किरणों वाले सूर्य के समान (भीमः) भयङ्कर और (वृषभः) बरसा करने वाला है । और (यः) जो (शश्वतः) निरन्तर (अदाशुषः) न देने वाले के (गयस्य) घर का (वेदः) धन (सुष्वितराय) अधिक ऐश्वर्य वाले व्यवहार के लिये (प्रयन्ता) देने वाला (असि) है ॥ १ ॥

भावार्थ—जैसे सूर्य अपने ताप से जल खींच बरसा करके उपकार करता है, वैसे ही राजा कुदानी वा कंजूलों से धन लेकर विद्या आदि शुभ कर्मों में लगावे ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—७ । १६ । १—११ ॥

१—(यः) पुरुषः (तिग्मशृङ्गः) तिग्मानि तेजःस्वीनि शृङ्गानि किरणा यस्य स सूर्यः (वृषभः) वृष्टकरः (न) इव (भीमः) भयङ्करः (एकः) अद्वितीयः (कृष्टीः) मनुष्यप्रजाः (च्यवयति) चालयति (प्र) प्रकर्षेण (विश्वाः) सर्वाः (यः) (शश्वतः) निरन्तरस्य । संदा वर्तमानस्य (अदाशुषः) अदातुः पुरुषस्य (गयस्य) गृहस्य (प्रयन्ता) नियमयिता । प्रदाता (असि) अस्ति (सुष्वितराय) अ० २० । ३५ । १५ । अधिकैश्वर्यवते व्यवहाराय (वेदः) धनम्—निघ० २ । १० ॥

त्वं ह त्वदिन्द्र कुत्समावः शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्थे । दासं
यच्छुष्णं कुर्यात् न्यस्मा अरन्धय आर्जुनेयाय शिक्षन् ॥ २ ॥

त्वम् । ह । त्यत् । इन्द्र । कुत्सम् । आवः । शुश्रूषमाणः ।
तन्वा । सु-सुर्थे ॥ दासम् । यत् । शुष्णम् । कुर्यात् । नि ।
अस्मै । अरन्धयः । आर्जुनेयाय । शिक्षन् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (शुश्रूषमाणः)
सुनने की इच्छा करते हुये [वा सेवो करते हुये] (त्वम्) तू ने (ह) ही (त्यत्)
तब (कुत्सम्) मिलनसार ऋषि [वा वज्रधारी शूर] को (तन्वा) शरीर से
(समर्थे) सङ्ग्राम में (आवः) बचाया है । (यत्) जब कि (दासम्) नाश
करने वाले, (शुष्णम्) सुखाने वाले, (कुर्यात्) अन्नों के बिगाड़ देने वाले
[बैरी] को (अस्मै) उस (आर्जुनेयाय) विद्या प्राप्ति कराने वाली [विदुषी-
स्त्री] के पुत्र के लिये (शिक्षन्) शिक्षा देते हुये तू ने (नि अरन्धयः) वश में
कर लिया है ॥ २ ॥

भावार्थ—जो राजा प्राजा की पुकार सुनता और विद्वानों का सत्कार
करता है और शत्रुओं का नाश करके विद्या फैलाता है, वह स्थिर ऐश्वर्य को
प्राप्त होता है ॥ २ ॥

२—(त्वम्) (ह) निश्चयेन (त्यत्) तदा (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान्
राजन् (कुत्सम्) अ० २० । २१ । १० । संगतिशीलम् । ऋषिम् । कुत्सो वज्रनाम-
निघ० २ । २० । अर्शआद्यच् । वज्रधारिणम् (आवः) अरन्धः (शुश्रूषमाणः)
श्रोतुमिच्छन् । सेवां कुर्यात् (तन्वा) शरीरेण (समर्थे) मर्या मनुष्यनाम-
निघ० २ । ३ । मनुष्यैर्युक्ते सङ्ग्रामे (दासम्) वसु उपलभ्ये—घञ् । नाशायिता-
रम् (यत्) यदा (शुष्णम्) शोषकम् (कुर्यात्) कु कुत्सिता नाशिता यदा
अन्नानि येन तं शत्रुम् (नि) निरन्तरम् (अस्मै) (अरन्धयः) अ० १० । ४ । १० ।
वशीकृतवानसि (आर्जुनेयाय) अर्जेर्णिलुक् च । उ० ३ । ५८ । अर्जं संचये—णिच्-
उनन् ऐश्च लुक्, गौरादित्वाद् डीष् । स्त्रीभ्यो ढक् । पा० ४ । १ । १२० । अर्जुनी-
ढक् । अर्जयति विद्याः सा अर्जुनी । अर्जुन्या विदुष्याः पुत्राय (शिक्षन्)
शिक्षां कुर्वन् ॥

त्वं धृष्णो धृषता वीतहव्यं प्रावो विश्वाभिरुतिभिः सुदासम्
प्र पौरकुत्सिं त्रसदस्युमावः क्षेत्रसाता वृत्रहत्येषु पुरुम् ॥ ३ ॥
त्वम् । धृष्णो इति । धृषता । वीत-हव्यम् । प्र । आवः ।
विश्वाभिः । ऊति-भिः । सु-दासम् ॥ प्र । पौर-कुत्सिम् ।
त्रसदस्युम् । आवः । क्षेत्र-साता । वृत्र-हत्येषु । पुरुम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(धृष्णो) हे निडर पुरुष ! (त्वम्) तू ने (धृषता) निडर-
पन से (विश्वाभिः) सब (ऊतिभिः) रक्षाओं के साथ (वीतहव्यम्) पाने
योग्य पदार्थ के पाने वाले, (सुदासम्) बड़े दाता को (प्र) अच्छे प्रकार (आवः)
बचाया है । और (पौरकुत्सिम्) बहुत वज्र आदि हथियारों के जानने वाले
के सन्तान, (त्रसदस्युम्) डाकुओं के डराने वाले (पुरुम्) मनुष्य को (क्षेत्र-
साता) रणक्षेत्र के विभाग में (वृत्रहत्येषु) शत्रुओं के मारने वाले सङ्ग्रामों के
बीच (प्र) अच्छे प्रकार (आवः) तृप्त किया है ॥ ३ ॥

भावार्थ—राजा लोग सङ्ग्राम में शत्रुओं को जीतने वाले, शस्त्र विद्या
में चतुर वीरों का सत्कार करके सुखी हों ॥ ३ ॥

त्वं नृभिर्नृमणो देववीतौ भूरीणि वृत्रा हर्षश्व हंसि ।

त्वं नि दस्युं चुसुरिं धुनिं चास्वापयो दूभीतये सुहन्तु ॥४॥

३—(त्वम्) (धृष्णो) अ० १ । १३ । ४ । जिधृषा प्रागल्भ्ये—कृत् । हे
निर्मय (धृषता) अ० २० । ३६ । ६ । प्रागल्भ्येन (वीतहव्यम्) अ० ६ । १३७ । १ ।
प्राप्तप्राप्तव्यपदार्थम् (प्र) प्रकर्षेण (आवः) रक्षितवानसि (विश्वाभिः)
सर्वाभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः (सुदासम्) बहुदातारम् (प्र) (पौरकुत्सिम्)
अत इम् । पा० ४ । १ । ६५ । पुरुकुत्स-इम् । पुरुकुत्सस्य बहुवज्रादिशस्त्रास्त्र
विदः पुरुषस्य सन्तानम् (त्रसदस्युम्) त्रसी उद्देगे—अच् । त्रसा उद्देविना
भयभीता दस्यवः साहसिका यस्मात् तम् (आवः) अव तृप्तौ । तर्पितवानसि
(क्षेत्रसाता) क्षेत्रसातौ । रणक्षेत्रविभागे (वृत्रहत्येषु) अ० २० । २१ । ६ ।
शत्रुहनेषु सङ्ग्रामेषु (पुरुम्) पृथिव्यधि० । उ० १ । २३ । पूरी आप्यायने-
कृ । मनुष्यम्-निघ० २ । ३ ॥

त्वम् । नृ-भिः । नृ-मनः । देव-वीतौ । भूरीणि । वृत्रा ।
हरि-श्व । हंसि ॥ त्वम् । नि । दस्युम् । चुमुरिम् ।
धुनिम् । च । अस्वापयः । दभीतये । सु-हन्तु ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(नृमणः) हे नरों के समान मन वाले ! (हर्यश्व) हे वायु
समान फुरतीले घोड़ों वाले ! (त्वम्) तू (नृभिः) नरों के साथ (देववीतौ)
दिव्यगुणों की प्राप्ति में (भूरीणि) बहुत (वृत्राणि) धनों को (हंसि) पाता
है । (च) और (त्वम्) तू ने (चुमुरिम्) हिंसाकारी, (धुनिम्) कंपाने वाले
(दस्युम्) डाकू को (दभीतये) शासन के लिये (सुहन्तु) अच्छे प्रकार मारने
वाले हथियार से (नि) नीचे (अस्वापयः) सुलाया है ॥ ४ ॥

भावार्थ—राजा धन आदि पदार्थ प्राप्त कर के वीर सेनाध्यक्षों के साथ
शत्रुओं का नाश करके प्रजा पालन करे ॥ ४ ॥

तव च्यौत्नानि वज्रहस्त तानि नव यत् पुरो नवतिं च सुद्यः ।

निवेशने शततुमाविवेषीरहं च वृत्रं नमुचिमुतोहन् ॥ ५ ॥

तव । च्यौत्नानि । वज्र-हस्त । तानि । नव । यत् । पुरः ।

नवतिम् । च । सुद्यः ॥ नि-वेशने । शत-तुमा । अविवेषीः ।

अहन् । च । वृत्रम् । नमुचिम् । उत । अहन् ॥ ५ ॥

४—(त्वम्) (नृभिः) नेतृभिः (नृमणः) अ० १६।३। ५। ने-
तृतुल्यमनस्क (देववीतौ) दिव्यगुणानां प्राप्तौ (भूरीणि) बहूनि (वृत्राणि)
धनानि—निघ० २। १० (हर्यश्व) अ० २०। २५। ७। हे हरिमिर्वायुतुल्यैः
शीघ्रगाभिभिस्तुरङ्गै युक्त (हंसि) गच्छसि । प्राप्नोषि (त्वम्) (नि) नीचैः
(दस्युम्) साहसिकम् (चुमुरिम्) चुबि वक्त्रसंयोगे हिंसायां च—उरिन्,
बलोपः । हिंसकम् (धुनिम्) स्रवृषिभ्यां कित् । उ० ४। ४६ । धुम् कम्पने—
निप्रत्ययः कित् । कम्पयितारम् (च) (अस्वापयः) स्वापितवानसि । नाशित-
वानसि (दभीतये) वसेस्तिः । उ० ४। १८० । दभ प्रेरणे—तिप्रत्ययः, ईकार
उपजनः । प्ररणाय । शासनाय (सुहन्तु) विभक्तुर्लूक् । सुहन्तुना । सुहननसा-
धनेन शस्त्रेण ॥

भाषार्थ—(वज्रहस्त) हे हाथों में वज्र रखने वाले ! (ते) तेरे (तानि) वे (च्यौत्तानि) बल हैं, (यत्) कि (सद्यः) तुरन्त (नव) नव (च) और (नवतिम्) नब्बे [निन्नावे] (पुरः) नगरों में और (निवेशने) छावनी के बीच (शततमा) सौवें [नगर] में (अविवेधीः) तू व्याप गया है, (च) और (वृत्रम्) रोकने वाले शत्रु को (अहन्) तू ने मारा है (उत) और (नमुचिम्) न छोड़ने योग्य डाकू को (अहन्) मारा है ॥ ५ ॥

भावार्थ—राजा अपनी उत्तम सेना के द्वारा बैरी के सब नगरों और राजधानी को अधीन कर के शत्रुओं को मारे ॥ ५ ॥

सना ता त इन्द्र भोजनानि रातहव्याय दाशुषे सुदासे । वृष्णे
ते हरी वृषणा युनजिम् व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाकु वाजस् ॥ ६ ॥
सना । ता । ते । इन्द्र । भोजनानि । रात-हव्याय । दाशुषे ।
सु-दासे ॥ वृष्णे । ते । हरी इति । वृषणा । युनजिम् ।
व्यन्तु । ब्रह्माणि । पुरु-शाकु । वाजस् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (ता) वे (ते) तेरे (भोजनानि) पालन साधन (रातहव्याय) पाने योग्य पदार्थ के

५—(तव) (च्यौत्तानि) जनिदाच्युस्त्वृ० । उ० ४ । १०४ । च्युङ्
गतौ—त्नण्प्रत्ययः । बलानि—निघ० २ । ६ (वज्रहस्त) हे शस्त्रपाणे (तानि)
प्रसिद्धानि (नवनवतिम्) एकोनशतसंख्याकाः (पुरः) नगर्यः (च) (सद्यः)
शीघ्रम् (निवेशने) निवेशे । सेनास्थितिस्थाने (शततमा) नित्यं शतादिमासार्धं
पा० ५ । २ । ५७ । डटस्तमडागमः । शततमीम् । शतसंख्यापूरिकां पुरीम्
(अविवेधीः) विष्ल व्याप्तौ—यङ्लुगन्ताल् लुङि । व्याप्तवानसि (अहन्)
मध्यमपुरुषस्यप्रथमपुरुषः । अहः । हतवानसि (च) (वृत्रम्) आवरकं
शत्रुम् (नमुचिम्) अ० २० । २१ । ७ । अमोचनीयम् । दण्डनीयम् (उत) अपि
च (अहन्) हतवानसि ॥

६—(सना) षण् संभक्तौ—अप् । सनानि सनातनानि । विभजनीयानि
(ता) प्रसिद्धानि (ते) तव (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् (भोजनानि)

पाने वाले, (सुदासे) बड़े उदार (दाशुषे) दाता के लिये (सना) सेवनीय हैं ।
(पुरुशाक) हे महाबली ! (वृष्णे ते) तुझ बलवान् के लिये (वृषणा) दो
बलवान् (हरी) घोड़ों [के समान बल और पराक्रम] को (युनज्मि) मैं
जोड़ता हूँ, वे [प्रजा जन-] (ब्रह्माणि) अनेक धनों को और (वाजम्) बल
को (व्यन्तु) प्राप्त होवें ॥ ६ ॥

भावार्थ—राजा लोग कर देने वाले राज भक्तों का पालन करके बल
और पराक्रम के साथ प्रजाजनो की सब प्रकार उन्नति करें ॥ ६ ॥

मा ते अस्यां सहसावन् परिष्ठावघायं भूम हरिवः परादै ।
त्रायस्व नोऽवृकेभिर्वरूथैस्तव प्रियासः सुरिषु स्याम ॥ ७ ॥

मा । ते । अस्याम् । सहसा-वन् । परिष्ठौ । अघायं । भूम ।
हरि-वः । परा-दै ॥ त्रायस्व । नः । अवृकेभिः । वरूथैः ।
तव । प्रियासः । सुरिषु । स्याम ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(सहसावन्) हे बहुत बल वाले ! (हरिवः) हे प्रशंसनीय
मनुष्यों वाले ! [राजन्] (ते) तेरी (अस्याम्) इस (परिष्ठौ) सब ओर
से इष्ट सिद्धि में (परादै) छोड़ने योग्य (अघायं) पाप करने के लिये (मा
भूम) हम न होवें । (नः) हम को (अवृकेभिः) चोर न होने वाले (वरूथैः)

पालनसाधनानि (रातहव्य) रा दातादानयोः—क । प्राप्तप्राप्तव्यपदार्थाय (दाशुषे)
दात्रे (सुदासे) दास्य दाने—विट् । महादानिने । उदाराय (वृष्णे) बलवते
(हरी) अश्वसमानौ बलपराक्रमौ (वृषणा) बलवन्तौ (युनज्मि) योजयामि
(व्यन्तु) अ० ७ । ४६ । २ । वी गत्यादिषु । प्राप्नुवन्तु (ब्रह्माणि) धनानि
(पुरुशाक) शक्ल शक्तौ—घञ् । हे बहुशक्तिमन् (वाजम्) बलम् ॥

७—(मा) निषेधे (ते) तव (अस्याम्) उपस्थितायाम् (सहसावन्)
मध्ये तृतीयाविभक्तिश्छान्दसो । हे सहस्वन् । बहुबलयुक्त (परिष्ठौ)
शकन्वादित्वात् पररूपम् । परित इष्टसिद्धौ (अघायं) पापकरणाय (भूम)
भवेम (हरिवः) अ० २० । ३१ । ५ । प्रशस्तमनुष्ययुक्त (परादै) प्रयै रोहिष्यै
अव्यथिष्यै । पा० ३ । ४ । १० । परा + ददातेः—कै प्रत्ययस्तुमर्थे । परादानाय

श्रेष्ठों के द्वारा (त्रायस्व) बचा, (सूरिषु) प्रेरक नेताओं के बीच हम लोग (ते) तेरे (प्रियासः) प्यारे [प्रसन्न करने वाले] (स्याम) होवें ॥ ७ ॥

भाषार्थ—जैसे प्रजागण धर्मात्मा राजा की उन्नति के लिये प्रयत्न करें, वैसे ही वह भी उत्तम उत्तम विद्याओं और बड़े बड़े अधिकारों के देने से प्रजा को प्रसन्न करे ॥ ७ ॥

प्रियासु इत् ते मघवन्नुभिष्टौ नरौ मदेम शरणे सखायः ।
नि तुर्वशं नि याद्वं शिशीह्यतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन् ॥ ८ ॥
प्रियासः॥ इत् । ते मघ-वन् । उभिष्टौ । नरः॥ मदेम । शरणे ।
सखायः ॥ नि । तुर्वशम् । नि । याद्वम् । शिशीहि । अति-
थि-ग्वाय । शंस्यम् । करिष्यन् ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(मघवन्) हे महाधनी ! (अभिष्टौ) सब प्रकार इष्ट-
सिद्धि में (नरः) हम नेता लोग (ते इत्) तेरे ही (प्रियासः) प्यारे
(सखायः) मित्र होकर (शरणे) शरण में [रह कर] (मदेम) प्रसन्न होवें ।
(शंस्यम्) बड़ाई योग्य कर्म (करिष्यन्) करता हुआ तू (तुर्वशम्) हिंसकों
को वश में करने वाले (याद्वम्) प्रयत्नशील मनुष्य को (अतिथिग्वाय) अतिथियों

त्यागाय । त्यक्तव्याय—इति दयानन्दभाष्ये (त्रायस्व) पाहि (नः) अस्मान्
(अवृकेभिः) अचोरैः (वरूथै) वरैः । श्रेष्ठैः (तव) (प्रियासः) प्रीताः
(सूरिषु) प्रेरकेषु नेतृषु (स्याम) भवेम ॥

८—(प्रियासः) प्रीताः (इत्) एव (ते) तव (मघवन्) महाधनिन्
(अभिष्टौ) पररूपम् । अभित इष्टसिद्धौ (नरः) नेतारः (मदेम) आनन्देम
(शरणे) शरणागतपालने कर्मणि (सखायः) सुहृदः सन्तः (नि) निश्चयेन
(तुर्वशम्) तुर तुर त्वरणहिंसनयोः—किप् + वशिरणयो रूपसंख्यानम् । वा०
पा० ३ । ३ । ५८ । वश कान्तौ—अप् । तुरां हिंसकानां वशयितारम् (नि)
नित्यम् (याद्वम्) इण्शिभ्यां वन् । उ० १ । १५२ । यती प्रयत्ने वा यत ताडने-
वन्, णित्, तस्य दः । यद्वे मनुष्यनाम—निघ० २ । ३ । प्रयत्नवन्तं
मनुष्यम् (शिशीहि) अ० ५ । २ । ७ । शो तनूकरणे—श्यनः श्लुः, लोट् ।
बहुलं छन्दसि । पा० ७ । ४ । ७८ । अभ्यासस्य इत्वम् । ई हल्यघोः । पा० ६ ।

[विद्वानां] की प्राप्ति के लिये (नि) निश्चय करके (नि) नित्य (शिशीहि) तीक्ष्ण कर ॥ ८ ॥

भाषार्थ—राजा अपनी और प्रजा की बढ़ती के लिये शान्ति स्थापित कर के सब को प्रसन्न रखे, जिससे विद्वान् लोग बे रोक आ जाकर उन्नति का उपदेश करते रहें ॥ ८ ॥

सुद्यश्चिन्नु ते मघवन्नुभिष्टौ नरः शंसन्त्युक्थशासं उक्था ।

ये ते हवेभिर्वि पृणीरदाशन्नस्मान् वृणीष्व युज्याय तस्मै ॥८॥

सुद्यः । चित् । नु । ते । मघ-वन् । अभिष्टौ । नरः ।

शंसन्ति । उक्थ-शासः । उक्था ॥ ये । ते । हवेभिः । वि ।

पृणीन् । अदाशन् । अस्मान् । वृणीष्व । युज्याय । तस्मै ॥८॥

भाषार्थ—(मघवन्) हे बड़े पूजनीय ! (ये) जो (उक्थशासः) प्रशंसनीय अर्थों का उपदेश करने वाले (नरः) नर [नेता लोग] (ते) तेरी (अभिष्टौ) सब प्रकार दृष्ट सिद्धि में (सद्यः) शीघ्र (चित्) ही (नु) निश्चय कर के (उक्था) कहने योग्य वचनों को (शंसन्ति) कहते हैं । और (ते) तेरे (हवेभिः) बुलावों से (पृणीन्) व्यवहारों का (वि) विविध प्रकार (अदाशन्) दान करते हैं, [उन] (अस्मान्) हम को (तस्मै) उस (युज्याय) योग्य व्यवहार के लिये (वृणीष्व) तू स्वीकार कर ॥ ८ ॥

४।११३। आत ईत्वम् । तीक्ष्णीकुरु (अतिथिगवाय) अ० २०।२१। ८।
अतिथीनां विदुषां गमनाय (शंस्यम्) प्रशंसनीयं कर्म (करिष्यन्)
कुर्वन् ॥

६—(सद्यः) शीघ्रम् (चित्) अपि (नु) निश्चयेन (ते) तव (मघवन्) हे महापूज्य (अभिष्टौ) अभीष्टसिद्धौ (नरः) नेतारः (शंसन्ति) कथयन्ति (उक्थशासः) उक्थानां प्रशंसनीयार्थानां वक्तारः (उक्था) कथनीयानि वचनानि (ये) (ते) तव (हवेभिः) आह्वानैः (वि) विविधम् (पृणीन्) व्यवहारान् (अदाशन्) लड्यै लड् । ददति (अस्मान्) (तान्) तथाविधान् (वृणीष्व) स्वीकुरु (युज्याय) युजिर् योगे—क्यप् । योग्य-व्यवहाराय (तस्मै) ॥

भावार्थ—जो मनुष्य राज्य की भलाई का उपदेश करें और अवसर होने पर उत्तम उपाय करें, राजा उनका सदा सन्मान करे ॥ ६ ॥

एते स्तोमा नरां नृ॑तस् तुभ्य॑मस्मद्द्र॒व्यञ्चो॑ दद॑तो मु॒घानि॑ ।
तेषा॑मिन्द्र वृ॒त्रह॑त्यै शि॒वो भूः॑ सखा॑ च शू॒रोऽवि॑ता च॒ नृणा॑म् १०
एते । स्तोमाः । न॒रास् । नृ-त॒स् । तुभ्य॑स् । अस्मद्द्र॒व्यञ्चः॑ ।
दद॑तः । मु॒घानि॑ ॥ तेषा॑म् । इन्द्र॑ । वृ॒त्र-ह॑त्यै । शि॒वः । भूः ।
सखा॑ । च । शू॒रः । अ॒वि॒ता । च । नृ॒णास् ॥ १० ॥

भाषार्थ—(नराम्) नरों के बीच (नृतम) हे बड़े नर ! [नेता]
(एते) यह (अस्मद्रव्यञ्चः) हमको मिलने वाले (स्तोमाः) प्रशंसनीय
विद्वान् लोग (तुभ्यम्) तेरे लिये (मघानि) धनों को (ददतः) देते हुये हैं । (इन्द्र)
हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन् !] (वृत्रहत्ये) शत्रुओं के मारने वाले
संग्राम में (तेषाम्) उन (नृणाम्) नरों का (शिवः) मङ्गलकारी (सखा)
मित्र (च च) और (शूरः) शूर (अविता) रक्षक (भूः) तू हो ॥ १० ॥

भावार्थ—राजा विद्वानों द्वारा धन आदि बढ़ाकर शत्रुओं का नाश
कर के प्रजा की रक्षा करे ॥ १० ॥

नू इन्द्र॑ शूर॒ स्तव॑मान ऊ॒ती ब्र॒ह्म॑जु॒तस्तु॒न्वा वावृ॑धस्व । उप॑
ने॒ा वाजा॑न् मि॒मीह्यु॒प स्ती॑न् यु॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॑ सदा॑ नः ११

१०—(एते) (स्तोमाः) प्रशंसनीयाः पुरुषाः (नराम्) नृ नये—घिट् ।
नेतृणां मध्ये (नृतम) नयतेर्ङिञ्च । उ० २ । १०० । णीञ् प्रापणे—अप्रत्ययो-
ङित्, तमप् । हे अतिशयेन नायक (तुभ्यम्) (अस्मद्रव्यञ्चः) अस्मद् + अञ्चु
गतिपूजनयोः—किन् । विष्वग्देवयोश्च ढेरद्रव्यञ्चतावप्रत्यये । पा० ६ । ३ ।
६२ । अस्मद् शब्दस्य ढेरद्वि । अस्मान् अञ्चन्तः प्राप्नुवन्तः (ददतः)
प्रयच्छन्तः सन्ति (मघानि) धनानि (तेषाम्) हे परमैश्वर्ययन् राजन् (वृत्र-
हत्ये) वृत्राणां शत्रूणां हत्या हननं यस्मिंस्तस्मिन्, सङ्ग्रामे (शिवः) मङ्गल-
कारी (भूः) अभूः । भव (सखा) सुहृत् (च) (शूरः) निर्भयः (अविता)
रक्षकः (च) (नृणाम्) नेतृणाम् ॥

नु । इन्द्र । शूर । स्तवमानः । ऊती । ब्रह्म-जूतः । तन्वा ।
 ववृधस्व ॥ उप । नः । वाजान् । मिमीहि । उप । स्तीन् ।
 यूयम् । पात । स्वस्ति-भिः । सदा । नः ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(शूर) हे शूर (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्]
 (नु) शीघ्र (स्तवमानः) उत्साह देता हुआ और (ब्रह्मजूतः) धन वा अन्न को
 प्राप्त होता हुआ तू (ऊती) रक्षा के साथ (तन्वा) शरीर से (ववृधस्व)
 अत्यन्त बढ़ । (नः) हमारे (वाजान्) बलों को और (स्तीन्) घरों को (उप)
 आदर से (उप मिमीहि) उपमा योग्य [बढ़ाई योग्य] कर । [हे वीरो !]
 (यूयम्) तुम सब (स्वस्तिभिः) सुखों के साथ (सदा) सदा (नः) हमें
 (पात) रक्षित रखो ॥ ११ ॥

भावार्थ—राजा वीर पुरुषों को उत्साह देकर उनकी और अपनी वृद्धि
 करे और सब लोग उत्तम गुणों से उपमा योग्य प्रशंसनीय होकर परस्पर रक्षा
 करें ॥ ११ ॥

इस मन्त्र का चौथा पाद आ चुका है—अ० २० । १२ । ६; और १७ । १२,
 और आगे है—२० । ८७ । ७ ॥

इति चतुर्थोऽनुवाकः ॥

अथ पञ्चमोऽनुवाकः ॥

सूक्तम् ३८ ॥

११—(नु) शीघ्रम् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् (शूर) निर्भय (स्त-
 वमानः) स्तुवन् । उत्साहयन् (ऊती) रक्षया (ब्रह्मजूतः) ब्रह्म धनम् अन्नं वा
 जूतः प्राप्तः (उप) पूजायाम् (तन्वा) शरीरेण (ववृधस्व) भृशं वर्धस्व (नः)
 अस्माकम् (वाजान्) पराक्रमान् (उप मिमीहि) माङ्ग माने शब्दे च । मृगा-
 मित् । । पा० ७ । ४ । ७६ । अभ्यासस्य इत्वम् । ई हल्यघोः । पा० ६ । ४ । ११३ ।
 इति आत ईत्वम् । मिमिष्व । उपमितान् उपमायोग्यान् स्तुत्यान् कुरु (स्तीन्)
 अच इः । उ० ४ । १३६ । ष्टै वेष्टने-इप्रत्ययः । गृहान् । अन्यत् पूर्ववत्—अ० २० ।
 १२ । ६ ॥

१—६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १—४, ६ गायत्री; ५ निचृद् गायत्री ॥

राजप्रजाकर्तव्योपदेशः—राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबो इमम् ।

एदं बर्हिः सदो मम ॥ १ ॥

आ । याहि । सुषुमा । हि । ते । इन्द्र । सोमम् । पिब ।

इमम् ॥ आ । इदम् । बर्हिः । सुदुः । मम ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (आ याहि) तू आ, (हि) क्योंकि (ते) तेरे लिये (सोमम्) सोम [उत्तम ओषधियों का रस] (सुषुमा) हम ने सिद्ध किया है, (इमम्) इस [रस] को (पिब) पी, (मम) मेरे (इदम्) इस (बर्हिः) उत्तम आसन पर (आ सदः) बैठ ॥१॥

भावार्थ—लोग विद्वान् सद्बुद्ध के सिद्ध किये हुये महौषधियों के रस से राजा को स्वस्थ बलवान् रखकर राजसिंहासन पर सुशोभित करें ॥ १ ॥

मन्त्र १—३ आ चुके हैं—अ० २० । ३ । १—३ और आगे हैं—अ० २० । ४७ । ७—६ ॥

आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना ।

उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥ २ ॥

आ । त्वा । ब्रह्म-युजा । हरी इति । वहताम् । इन्द्र ।
केशिना ॥ उप । ब्रह्माणि । नः । शृणु ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (ब्रह्मयुजा) धन के लिये जोड़े गये, (केशिना) सुन्दर केशों [कन्धे आदि के वालों] वाले (हरी) रथ ले चलने वाले दो घोड़ों [के समान बल और पराक्रम] (त्वा) तुझ को (आ) सब ओर (वहताम्) ले चलें । (नः) हमारे (ब्रह्माणि) वेदज्ञानों को (उप) आदर से (शृणु) तू सुन ॥ २ ॥

मन्त्राः १—३ व्याख्याताः—अ० २० । ३ । १—३ ॥

भावार्थ—जैसे उत्तम बलवान् घोड़े रथ को ठिकाने पर पहुँचाते हैं, वैसे ही राजा वेदोक्त मार्ग पर चल कर अपने बल और पराक्रम से राज्य भार उठा कर प्रजापालन करे ॥ २ ॥

ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः ।

सुतावन्तो हवामहे ॥ ३ ॥

ब्रह्माणः । त्वा । वयम् । युजा । सोम-पाम् । इन्द्र । सोमिनः ॥

सुत-वन्तः । हवामहे ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (सोमपाम्) पेश्वर्य के रक्षक (त्वा) तुझ को (युजा) मित्रता के साथ (ब्रह्माणः) वेद जानने वाले, (सोमिनः) पेश्वर्य वाले, (सुतवन्तः) उत्तम पुत्र आदि सन्तानों वाले (वयम्) हम (हवामहे) बुलाते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—जिस राजा के सुप्रबन्ध से प्रजागण ज्ञानवान् धनवान् और सुशिक्षित सन्तान वाले होवें, उसको मित्र जान कर सदा स्मरण करें ॥ ३ ॥

इन्द्रमिद् गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः ।

इन्द्रं वाणीरनूषत ॥ ४ ॥

इन्द्रम् । इत् । गाथिनः । बृहत् । इन्द्रम् । अर्केभिः । अर्किणः ॥

इन्द्रम् । वाणीः । अनुषत् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(गाथिनः) गाने वालों और (अर्किणः) विचार करने वालों ने (अर्केभिः) पूजनीय विचारों से (इन्द्रम्) सूर्य [के समान प्रतापी], (इन्द्रम्) वायु [के समान फुरतीले] (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले राजा] को और (वाणीः) वाणियों [वेदवचनों] को (इत्) निश्चय कर के

४—(इन्द्रम्) सूर्यमिव प्रतापिनम् (इत्) निश्चयेन (गाथिनः) उषि-
कुषिगर्त्तिभ्यस्थन् । उ० २ । ४ । गायतेः—थन्प्रत्ययः, टाप् । ग्रीह्यादिभ्यश्च ।
पा० ५ । २ । ११६ । गाथा—इति । गानशीलाः (बृहत्) यथा भवति तथा ।
बृहद्भावेन । (इन्द्रम्) वायुमिव शीघ्रगामिनम् । उद्योगिनम् (अर्केभिः)
अ० ३ । ३ । २ । पूजनीयविचारैः (अर्किणः) विचारयन्तः (इन्द्रम्) पर-

(वृहत्) बड़े ढंग से (अनुषत्) सराहा है ॥ ४ ॥

भावार्थ—मनुष्य सुनीतिज्ञ, प्रतापी, उद्योगी राजा के व्यवहारों और परमेश्वर की दी हुई वेदवाणी के गुणों को विचार कर सब के सुख के लिये यथावत् उपाय करें ॥ ४ ॥

मन्त्र ४—६ ऋग्वेद में हैं—१।७।१-३, सामवेद—३०२।१।८ और आगे हैं—अ० २०।४७।४—६ तथा ७०।७—६ और मन्त्र ४ सामवेद—पू० ३।१।५ ॥

इन्द्र इद्ध्ययोः सचा संमिश्रल आ वचोयुजा ।

इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ ५ ॥

इन्द्रः। इत् । हर्योः । सचा । सम्-मिश्रलः। आ । वचः-युजा ॥

इन्द्रः । वज्री । हि-रण्ययः ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(वज्री) वज्रधारी, (हिरण्ययः) तेजोमय (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला राजा] (इत्) ही (इन्द्रः) वायु [के समान] (सचा) नित्य मिले हुये (हर्योः) दोनों संयोग वियोग गुणों का (संमिश्रलः) यथावत् मिलाने वाला (आ) और (वचोयुजा) वचन का योग्य बनाने वाला है ॥ ५ ॥

भावार्थ—जैसे पवन के आने जाने से पदार्थों में चलने, फिरने, ठहरने का और जीभ में बोलने का सामर्थ्य होता है, वैसे ही दण्डदाता प्रतापी

मैश्वर्यवन्तं राजानम् (वाणीः) वेदचतुष्टयीः (अनुषत्) अ० २०।१७।१। स्तुतवन्तः ॥

५—(इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् राजा (इत्) सब (हर्योः) हज् स्वीकार-प्रापणयोः—इन् । संयोगवियोगयोः (सचा) षच् समवाये—किप्, विभक्ते-राकारः । समवेतयोः (संमिश्रलः) सम् + मिश्रयते—वज् । कपिलादीनां संज्ञा-छन्दसोर्वा० । वा० पा० ८ । २ । १८ । रेफस्य लत्वम् । सर्वतो मिश्रयिता (आ) चार्थे (वचोयुजा) युजिर् योगे—किन्, विभक्तेराकारः । वचसो वच-नस्य योजयिता (इन्द्रः) वायुर्वि (वज्री) वज्रधारी (हिरण्ययः) तेजोमयः ॥

राजा के न्याय से सब लोगों में शुभ गुणों का संयोग और दोषों का वियोग होकर वाणी में सत्यता होती है ॥ ५ ॥

इन्द्रो दीर्घाय चक्षसु आ सूर्य रोहयद् दिवि ।

वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥ ६ ॥

इन्द्रः । दीर्घाय । चक्षसे । आ । सूर्यम् । रोहयत् । दिवि ॥

वि । गोभिः । अद्रिम् । ऐरयत् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] ने (दीर्घाय) दूर तक (चक्षसे) देखने ने लिये (दिवि) व्यवहार [वा आकाश] के बीच (गोभिः) वेदवाणियों द्वारा [वा किरणों और जलों द्वारा] (सूर्यम्) सूर्य [के समान प्रेरक] और (अद्रिम्) मेघ [के समान उपकारी पुरुष] को (आ रोहयत्) ऊँचा किया और (वि) विविध प्रकार (ऐरयत्) चलाया है ॥६॥

भावार्थ—जैसे परमेश्वर के नियम से सूर्य आकाश में चलकर ताप आदि गुणों से अनेक लोकों को धारण करता और किरणों द्वारा जल खींच कर फिर बरसाकर उपकार करता है, वैसे ही दूरदर्शी राजा अपने प्रताप और उत्तम व्यवहार से सब प्रजा को नियम में रखे और कर लेकर उनका प्रतिपालन करे ॥ ६ ॥

सूक्तम् ३६ ॥

१—५ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ , २ निचूड़ गायत्री; ३—५ गायत्री ॥

परमेश्वरोपासनापदेशः—परमेश्वर की उपासना का उपदेश ॥

इन्द्रं वो विश्वतुस्परि हवामहे जनैभ्यः ।

अस्माकमस्तु केवलः ॥ १ ॥

६—(इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् परमात्मा (दीर्घाय) विस्तृताय (सूर्यम्) सूर्यलोकम् । सूर्यवत्प्रेरकम् (आरोहयत्) अधिष्ठापितवान् (दिवि) व्यवहारे । आकाशे (वि) विविधम् (गोभिः) वेदवाणीभिः । किरणैः । जलैः (अद्रिम्) मेघम् मेघतुल्योपकारिणम् (ऐरयत्) ईर गतो कल्पने च—णिव, लङ् । शेरितवान् ॥

इन्द्रम् । वः । विश्वतः । परि । हवामहे । जनेभ्यः ॥
अस्माकम् । अस्तु । केवलः ॥ १ ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्यो !] (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्यवान् पर-
मात्मा] को (वः) तुम्हारे लिये और (विश्वतः) सब (जनेभ्यः) प्राणियों
के लिये (परि) सब प्रकार (हवामहे) हम बुलाते हैं । वह (अस्माकम्)
हमारा (केवलः) सेवनीय (अस्तु) होवे ॥ १ ॥

भावार्थ—सब मनुष्य सर्वहितकारी जगदीश्वर की आज्ञा में रहकर
आनन्द पावें ॥ १ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—१ । ७ । १०, सामवेद—उ० ६ । १ । २ और
आगे है—अ० २० । ७० । १६ ॥

व्य१न्तरिक्षमतिरुन्मदे सोमस्य रोचना ।

इन्द्रो यदभिनद् वलम् ॥ २ ॥

वि । अन्तरिक्षम् । अतिरुत् । मदे । सोमस्य । रोचना ॥

इन्द्रः । यत् । अभिनत् । वलम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] ने (सोमस्य)
ऐश्वर्य के (मदे) आनन्द में (रोचना) प्रीति के साथ (अन्तरिक्षम्) आकाश
को (वि अतिरुत्) पार किया है, (यत्) जब कि उस ने (वलम्) हिंसक [विघ्न]
को (अभिनत्) तोड़ डाला ॥ २ ॥

भावार्थ—सब से महान् और पूजनीय परमात्मा की उपासना से सब
मनुष्य उन्नति करें ॥ २ ॥

मन्त्र २—५ आचुके हैं—अ० २० । २८ । १—४ ॥

१—(इन्द्रम्) परमेश्वर्यवन्तं परमात्मानम् (वः) युष्मभ्यम् (विश्वतः)
सर्वेभ्यः । सर्वेषां हिताय (परि) सर्वतः (हवामहे) आह्वयामः (जनेभ्यः)
प्रादुर्भूतानां प्राणिनां हिताय (अस्माकम्) मनुष्याणाम् (अस्तु) (केवलः) केव
सेवने—कलच् । सेवनीयः ॥

मन्त्राः २—५ व्याख्याताः—अ० २० । २८ । १—४ ॥

उद् गा अजुदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन् गुहा सुतोः । अर्वाञ्च
नुनुदे वलम् ॥ ३ ॥

उत् । गाः । अजुत् । अङ्गिरः-भ्यः । आविः । कृण्वन् । गुहा ।
सुतोः ॥ अर्वाञ्चम् । नुनुदे । वलम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(गुहा) गुहा [गुप्त अवस्था] में (सुतोः) वर्तमान
(गाः) वाणिज्यों के (आविः कृण्वन्) प्रकट करते हुये उस [परमेश्वर] ने
(अङ्गिरोभ्यः) विज्ञानी पुरुषों के लिये (उत् अजुत्) ऊंचा पहुँचाया और
(वलम्) हिंसक [विघ्न] को (अर्वाञ्चम्) नीचे (नुनुदे) हटाया ॥ ३ ॥

भावार्थ—प्रलय के पीछे परमात्मा ने वेदों का उपदेश कर के हमारे
सब विघ्न मिटाये हैं ॥ ३ ॥

इन्द्रेण रोचना दिवो दृह्लानि दृंहितानि च । स्थिराणि न
पराणुदे ॥ ४ ॥

इन्द्रेण । रोचना । दिवः । दृह्लानि । दृंहितानि । च ॥
स्थिराणि । न । परा-णुदे ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रेण) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] कर के
(दिवः) व्यवहार के (स्थिराणि) ठहराऊ (रोचना) प्रकाश (न पराणुदे)
न हटने के लिये (दृह्लानि) पकड़े किये गये (च) और (दृंहितानि) बढ़ाये
गये [फैलाये गये हैं] ॥ ४ ॥

भावार्थ—परमात्मा ने अपने अटल नियमों से सब संसार को सुख
दिया है ॥ ४ ॥

अपामुर्मिर्मदन्निवु स्तोमं इन्द्राजिरायते ।

वि ते मदा अराजिषुः ॥ ५ ॥

अपाम् । ऊर्मिः । मदन्-इव । स्तोमः । इन्द्र । अजिरायते ॥

वि । ते । मदाः । अराजिषुः ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (ते) तेरी (स्तोमः) बड़ाई (अपाम्) जलों की (मदन्) हर्ष बढ़ाने वाली (ऊर्मिः) हव) लहर के समान (अजिरायते) वेग से चलती है, और (मदः) आनन्द (वि अराजिपुः) विराजते हैं [विविध प्रकार ऐश्वर्य बढ़ाते हैं] ॥ ५ ॥

भावार्थ—न्यायकारी परमात्मा की उत्तम नीति का मानकर सब लोग आनन्द पाकर शीघ्र ऐश्वर्य बढ़ावें ॥ ५ ॥

सूक्तम् ४० ॥

१—३ ॥ १ मरुत इन्द्रश्च ; २, ३ मरुतो देवताः ॥ १ घायत्री ; २, ३ निचृद् गायत्री ॥

राजप्रजाधर्मोपदेशः—राजा और प्रजा के धर्म का उपदेश ॥

इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अविभ्युषा ।

सुन्दू समानवर्चसा ॥ १ ॥

इन्द्रेण । सम् । हि । दृक्षसे । सुम्-जग्मानः । अविभ्युषा ॥

सुन्दू इति । समान-वर्चसा ॥ १ ॥

भाषार्थ—[हे प्रजागण !] (अविभ्युषा) निडर (इन्द्रेण) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले राजा] के साथ (हि) ही (संजग्मानः) मिलता हुआ तू (सम्) अच्छे प्रकार (दृक्षसे) दिखाई देता है । (समानवर्चसा) एक से तेज के साथ (सुन्दू) तुम दोनों [राजा और प्रजा] आनन्द देने वाले हो ॥ १ ॥

भावार्थ—जिस राज्य में प्रजागण राजा से और राजा प्रजा से प्रसन्न रहते हैं, वही राज्य विद्या और धन में उन्नति करता है ॥ १ ॥

(मरुतः) अर्थात् मनुष्य वा प्रजागण देवता हैं, इसके लिये (मरुतः)

१—(इन्द्रेण) परमैश्वर्यवता राजा (सम्) सम्यक् (दृक्षसे) दृशेलें । त्वं दृश्येथाः (संजग्मानः) गमेः कानच् । संगच्छामनः (अविभ्युषा) जिमी भये-कसु । निर्भयेण (सुन्दू) भृमृशीङ् । उ० १ । ७ । मदि स्तुतिमोदमद-स्वप्रकाशितगतिषु—उपस्थयः । आनन्दकौ (समानवर्चसा) समानेन तेजसा ॥

अतिवृज्—निघ० ३ । १८; पद नाम—निघ० ५ । ५ और अथर्व० १ । २० । १
भी देखो ॥

मन्त्र १, २ ऋग्वेद में हैं—१ । ६ । ७, ८ और आगे हैं—अ० २० । ७० ।
३, ४; मन्त्र १ सामवेद में है—उ० २ । २ । ७ ॥

अनवद्यौरभिद्युभिर्मखः सह'स्वदर्चति । गणैरिन्द्र'स्य काम्यैः२
अनवद्यैः । अभिद्यु-भिः । मखः । सह'स्वत् । अर्च'ति ॥
गणैः । इन्द्र'स्य । काम्यैः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(अनवद्यैः) निर्दोष, (अभिद्युभिः) सब ओर से प्रकाश-
मान और (काम्यैः) प्रीति के योग्य (गणैः) गणों [प्रजागणों] के साथ
(इन्द्रस्य) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले राजा] का (मखः) यज्ञ [राज्य व्यवहार]
(सहस्वत्) अति दृढ़ता से (अर्चति) सत्कार पाता है ॥ २ ॥

भावार्थ—सब राज काज उत्तम विद्वान् लोगों के मेल से अच्छे
प्रकार सिद्ध होते हैं ॥ २ ॥

आदह' स्वधामनु पुन'र्गर्भ'त्वमैरिरे । दधाना नाम युजियम् ॥
आत् । अह' । स्वधाम् । अनु' । पुनः । गर्भ'-त्वम् ।
आ-ई'रिरे ॥ दधानाः । नाम' । युजियम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(आत्) फिर (अह) अवश्य (स्वधाम अनु) अपनी

२—(अनवद्यैः) निर्दोषैः (अभिद्युभिः) अभितः प्रकाशमानैः (मखः)
मख गतौ—घप्रत्ययः । यज्ञः—निघ० ३ । १७ । राज्यव्यवहारः (सहस्वत्)
यथास्यास्तथा । बलवत्त्वेन । अतिदृढत्वेन (अर्चति) अर्च्यते । सत्क्रियते
(गणैः) प्रजाजनैः (इन्द्रस्य) परमैश्वर्यवतो राज्ञः (काम्यैः) कमेर्णिङ् ।
पा० ३ । १ । ३० । कमु कान्तौ—णिङ् । अचोयत् । पा० ३ । १ । १७ । कामि-
यत् । कामयितव्यैः । प्रीतियोग्यैः ॥

३—(आत्) अनन्तरम् (अह) वितिग्रहे—निघ० १ । १२ । अवश्यम्
(स्वधाम्) स्वधारणशक्तिम् (अनु) अनुसृत्य (पुनः) अवधारणे (गर्भत्वम्)

धारण शक्ति के पीछे (यज्ञियम्) सत्कार योग्य (नाम) नाम [यश] को (दधानाः) धारण करते हुये लांगों ने (पुनः) निश्चय कर के (गभत्वम्) गर्भपन [सारपन, बड़े पद] को (परिरं) सब प्रकार से पाया है ॥ ३ ॥

भाष्यार्थ—जहां पर पूर्वोक्त प्रकार से न्याययुक्त स्वतन्त्रता के साथ लोग कार्य करते हैं, वहां पर सब पुरुष बढ़ाई पाते हैं ॥ ३ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—१।६।४; सामवेद उ० २।२।७ और आगे है—अथ० २०।६६।१२ ॥

सूक्तसू ४१ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ निचृद् गायत्री छन्दः ॥

राजकुस्योपदेशः—राजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

इन्द्रो दधीचो अस्यभिर्बृत्रायप्रतिष्कृतः। जुघानं नवतीर्नव॥१
इन्द्रः। दधीचः। अस्य-भिः। बृत्रायि। अप्रति-स्कृतः॥
जुघानं। नवतीः। नव॥ १ ॥

भाष्यार्थ—(अप्रतिष्कृतः) वे रोक गति वाले (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े वेश्वर्य वाले सेनापति] ने (दधीचः) पोषण प्राप्त कराने वाले पुरुष की

अ० ३।१०।१२। अर्त्तिगृभ्यां भन्। उ० ३।१५२। गृ शब्दे, विज्ञापने, स्तुती निगरणे च—भन्। गर्भो गृमेर्गुणात्यर्थे गिरत्यनर्थानिति वा—निरु० १०।२३। गुणातिरर्त्तिकर्मा—निघ० ३।१४। गर्भभावम्। स्तुत्यं पदम् (परिरं) आ+ईर गतौ—क्षिप्तो अस्य इरच्। समन्तात् प्राप्तवन्तः (दधानाः) धारयन्तः पुरुषाः (नाम) यशः। कीर्तिम् (यज्ञियम्) यज्ञार्हम्। पूजनीयम् ॥

१—(इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् सेनापतिः (दधीचः) भाषायां धाञ्कृञ्—सृजनिगमिनमिभ्यः किकिनी क्त्वाभौ। वा० पा० ३।२।१७१। दधाते—कि प्रत्ययः, यद्वा सर्वधातुभ्य इन्। उ० ४।११८। दध दाने धारणे च—इन्। अत्विग्दधृक्क्षगृदिगुण्णगड्डुयुजिमुञ्जां च। पा० ३।२।५६। दधि+अञ्चु गतिपूजनयोः अन्तर्गतव्यर्थः—किन्। दधिं पोषणम् अञ्चयति प्रापयातीति दध्यङ् तस्य। पोषणं प्राप्तरय पुरषस्य। दध्यङ् इत्युक्तो ध्यानमिति वा प्रत्यक्-मश्मिन् ध्यानमिति वा—निरु० १२।६३ (अश्मिभिः) अस्मिन् अञ्जिभ्यां क्त्वाभन्।

(अस्थमिः) गतियों से (नव नवतीः) नौ नव्वे [$६ \times ६० = ८१०$ अर्थात् बहुत से] (वृत्राणि) रोकने वाले शत्रुओं को (जघान) मारा है ॥ १ ॥

भावार्थ—प्रतापी राजा प्रजापोषक वीरों के समान अनेक उपाय कर के शत्रुओं को मारे ॥ १ ॥

यह तुच ऋग्वेद में है—१।८४।१३—१५; सामवेद—उ० ३।१।तुच ८, मन्त्र १ साम० पू० २।६।५। और मन्त्र ३ पू० २।६।३ ॥

इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम् । तद् विदच्छर्य-
णावति ॥ २ ॥

इच्छन् । अश्वस्य । यत् । शिरः । पर्वतेषु । अप-श्रितम् ॥
तत् । विदत् । शर्यणावति ॥ २ ॥

भावार्थ—(अश्वस्य) काम में व्यापने वाले बलवान् पुरुष का (यत्) जो (शिरः) शिर [मस्तक वा विचार सामर्थ्य] (पर्वतेषु) मेघों [के सामान उपकारी मनुष्यों] में (अपश्रितम्) आश्रित है, (तत्) उस [विचार सामर्थ्य] को (इच्छन्) चाहते हुये पुरुष ने (शर्यणावति) तीर चक्राने के स्थान संग्राम में (विदत्) पाया है ॥ २ ॥

उ० ३।१५४। अस भुवि, गतिदीप्त्यादानेषु, यद्वा असु क्षेपणे-कथिन् । छन्द-
स्यपि दृश्यते । पा० ७।१।७६। अनङ्गादेशः । गतिभिः । उपायैः (वृत्राणि)
आवरकान् शत्रून् (अप्रतिष्कृतः) स्कुञ् आप्रवणे आगमने—क्त । अप्रतिष्कृतो-
ऽप्रतिष्कृतोऽप्रतिस्खलितो वा—निरु० ६।१६। अप्रतिगतः । अनिरुद्धः
(जघान) नाशितवान् (नव नवतीः) नववारं नवतीः । दशोत्तराण्यष्टशतानि ।
बहुसंख्याकानि ॥

२—(इच्छन्) कामयमानः (अश्वस्य) कर्मसु व्यापकस्य बलवतः
पुरुषस्य (यत्) (शिरः) मस्तकसामर्थ्यम् । विचारशक्तिम् (पर्वतेषु)
मेघेषु । मेघानुरूपनवीरकारिषु मनुष्येषु (अपश्रितम्) आश्रितम्
(तत्) मस्तकसामर्थ्यम् । विदत् । अविदत् । प्राप्तवान् (शर्यणावति)
मध्वादिभ्यश्च । पा० ४।२॥ ८६। शर्यण—यत् । शर्याण शर्यण शर्याण, शर्यणा
इति रूपद्वयं पृषोदरादित्वात् शराणां तीराणां यानेन गमनेन युक्ते सङ्ग्रामे ॥

भाषार्थ—जो पुरुष विद्वानों के समान अपनी विचार सामर्थ्य बढ़ाना चाहे, वह परिश्रम के साथ ऐसा प्रयत्न करे जैसे शूर सेनापति सङ्ग्राम में प्रयत्न करता है ॥ २ ॥

अत्राह गोरमन्वतु नाम त्वष्टुः रपीच्यम् । इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥ ३ ॥

अत्र । अह । गोः । अमन्वतु । नाम । त्वष्टुः । अपीच्यम् ॥
इत्था । चन्द्रमसः । गृहे ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(अत्र) यहां [राज्य व्यवहार में] (अह) निश्चय करके (गोः) पृथिवी के, (इत्था) इसी प्रकार (चन्द्रमसः) चन्द्रमा के (गृहे) घर [लोक] में (त्वष्टुः) छेदन करने वाले सूर्य के (अपीच्यम्) भीतर रखे हुये (नाम) भुक्ता [आकर्षण] को (अमन्वत) इन्होंने जाना है ॥ ३ ॥

भाषार्थ—जैसे ईश्वर के नियम से सूर्य अपने प्रकाश और आकर्षण द्वारा पृथिवी और चन्द्र आदि लोकों को उन के मार्ग में हट रखता है, वैसे ही राजा अपनी सुनीति से प्रजा को धर्म में लगावे ॥ ३ ॥

यह मन्त्र निरुक्त ४ । २५ में भी व्याख्यात है ॥

सूक्तम् ४२ ॥

१—३॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥

मनुष्यकृत्योपदेशः—मनुष्य के कर्तव्य का उपदेश ॥

वाचमृष्टापदीमहं नवसक्तिमृत्स्पृशम् । इन्द्रात् परि तन्वमे ॥ १ ॥

३—(अत्र) राज्यव्यवहारे (अह) निश्चयेन (गोः) पृथिव्याः (अमन्वत) मनु अवबोधने—लङ् । अजानन् ते विद्वांसः (नाम) नामन्-सीमन्व्योमन्० । उ० ४ । १५१ । नमतेः—मनिन् धातोर्मलोपो दीर्घश्च, नाम उक्कनाम—निघ० १ । १२ । नमनम् । आकर्षणम् (त्वष्टुः) छेदकस्य सूर्यस्य (अपीच्यम्) आ० १८ । १ । ३६ । अपि + अञ्जतेः—किन्, यत् । अन्तर्हितम्—निघ० ३ । २५ । (इत्था) अनेन प्रकारेण (चन्द्रमसः) चन्द्रस्य (गृहे) लोके ॥

वाचम् । अष्टा-पदीम् । अहम् । नव-सक्तिम् । ऋत-स्पृशम् ॥
इन्द्रात् । परि । तन्वम् । ममे ॥ १ ॥

भाषार्थ—(अष्टापदीम्) आठ पद [छोटाई, हलकाई प्राप्ति, स्वतन्त्रता, बड़ाई, ईश्वरपन, जितेन्द्रियता और सत्य सङ्कल्प, आठ ऐश्वर्य] प्राप्त कराने वाली, (नवसक्तिम्) नौ [मन बुद्धि सहित दो कान, दो नथने, दो आँखें और एक मुख] से प्राप्ति योग्य, (ऋतस्पृशम्) सत्य नियम की प्राप्ति कराने वाली, (तन्वम्) विस्तीर्ण [वा सूक्ष्म] (वाचम्) वेदवाणी को (इन्द्रात्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] से (अहम्) मैं ने (परि ममे) नापा है ॥ १ ॥

भावार्थ—परमात्मा ने अपनी वेदवाणी सब के हित के लिये दी है, उसके द्वारा मनुष्य इन्द्रियों की स्वस्थता से [अणिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं महिमा तथा । ईशित्वं च वशित्वं च तथा कामावसायिता ॥१॥] यह आठ ऐश्वर्य पाता है । हमलोग उचित प्रबन्ध से इसे विचार कर अपना जीवन सुधारें ॥१॥

इस मन्त्र का मिलान करो—अथर्व० १३।१।४२। यह सूक्त ऋग्वेद में है—४।७६ [सायणभाष्य ६५] । १२, ११, १० और कुछ भेद से सामवेद—४०३।२।तृच ६ ॥

अनु त्वा रोदसी उभे क्रक्षमाणमकृपेताम् । इन्द्र यद्
दस्युहाभवः ॥ २ ॥

अनु । त्वा । रोदसी इति । उभे इति । क्रक्षमाणम् ।
अकृपेताम् ॥ इन्द्र । इन्द्र । यत् । दुस्यु-हा । अभवः ॥ २ ॥

१—(वाचम्) वेदवाणीम् (अष्टापदीम्) अ० १३।१।४२। अणिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं महिमा तथा । ईशित्वं च वशित्वं च तथा कामावसायिता ॥ १ ॥ इत्यष्टैश्वर्याणि पदानि प्राप्तव्यानि यया ताम् (अहम्) उपासकः (नवसक्तिम्) सक् सक्ति गतौ-किन् । मनोबुद्धिसहितैः सप्तशीर्षण्य-क्लिष्टैः प्राप्तव्याम् । नवपदीम्—अ० १३।१।४२ (ऋतस्पृशम्) ऋतस्य सत्यनियमस्य स्पर्शयित्रीं प्रापयित्रीम् (इन्द्रात्) परमैश्वर्ययुक्तात् परमेश्वरात् (तन्वम्) विस्तृतां सूक्ष्मां वा (परि ममे) परिमापितवानस्मि । सर्वतो ज्ञात-वानस्मि ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले परमात्मन्] (कक्ष-
माणम्) आकर्षण करते हुये [वश में करते हुये] (त्वा अनु) तेरे पीछे (उभे)
दोनों (रोदसी) आकाश और भूमि (अकृपेताम्) समर्थ हुये हैं, (यत्)
जबकि तू (दस्युहा) शत्रुओं [विघ्नों] का नाश करने वाला (अभवः)
हुआ ॥ २ ॥

भावार्थ—परमेश्वर ने अन्नकार आदि विघ्नों को हटा कर वायु, जल,
अन्न आदि पदार्थ उत्पन्न कर के सब लोकों को धारण किया है, वैसे ही मनुष्य
अविद्या मिटाकर परस्पर रक्षा करें ॥ २ ॥

उत्तिष्ठन्नोजसा सह प्रीत्वी शिमे अवेपयः । सोममिन्द्र चसू
सुतम् ॥ ३ ॥

उत्-तिष्ठत् । ओजसा । सह । प्रीत्वी । शिमे इति । अवेपयः ॥
सोमम् । इन्द्र । चसू इति । सुतम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले मनुष्य] (ओजसा
सह) पराक्रम के साथ (उत्तिष्ठन्) उठते हुये तू ने (चसू) चमचे में (सुतम्)
सिद्ध किया हुआ (सोमम्) सोम [अन्न आदि महौषधियों का रस] (प्रीत्वी)
पीकर (शिमे) दोनों जावड़ों को (अवेपयः) हिलाया है ॥ ३ ॥

२—(अनु) अनुसृत्य (त्वा) त्वाम् (रोदसी) आकाशभूमी (उभे)
(कक्षमाणम्) कृष विलेखने आकर्षणे—लट् । स्यतासी ललुटोः । पा० ३ । १ ।
३३ । इति स्य । लट् सद्वा । पा० ३ । ३ । १४ । लट् शानच्, यकारलोपश्छा-
न्दसः । कक्षमाणम् । आकर्षन्तम् वशे कुर्वन्तम् (अकृपेताम्) कृपू सामर्थ्ये-
लङ् । समर्थेऽभवताम् (इन्द्र) हे परमेश्वर्यवान् परमात्मन् (यत्) यदा
(दस्युहा) शत्रूणां विघ्नानां नाशकः (अभवः) ॥

३—(उत्तिष्ठन्) ऊर्ध्वं गच्छन् (ओजसा) बलेन (सह) (प्रीत्वी)
अ० २० । ६ । ७ । प्रीत्वा (शिमे) अ० २० । ३१ । ४ । इन् (अवेपयः) अकम्पयः
चालितवानासि (सोमम्) अन्नादिमहौषधिरसम् (चसू) सुपां सुलुक्० ।
पा० ७ । १ । ३६ । सप्तम्याः पूर्वसर्वाः । चम्बाम् । भोजनपात्रे । चमसे
(सुतम्) संस्कृतम् ॥

भावार्थ—जैसे प्राणी दांतों को चलाकर अन्न आदि खा आनन्द पाते हैं, वैसे ही मनुष्य बल पराक्रम कर के अभीष्ट फल प्राप्त करें ॥ ३ ॥

सूक्तम् ४३ ॥

१—६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥

राजधर्मोपदेशः—राजा के धर्म का उपदेश ॥

भिन्धि विश्वा अप ह्विषः परि बाधौ जुही मृधः । वसु
स्पृहं तदा भर ॥ १ ॥

भिन्धि । विश्वाः । अप । ह्विषः । परि । बाधः । जुहि ।
मृधः ॥ वसु । स्पृहम् । तत् । आ । भर ॥ १ ॥

भाषार्थ—[हे राजन् !] (विश्वाः) सब (द्विषः) द्वेष करने वाली सेनाओं में (अप भिन्धि) फूट डाल दे, और (बाधः) रोक डालने वाले (मृधः) संग्रामों को (परि) सब ओर से (जुहि) मिटा दे (तत्) उस (स्पृहम्) चाहने योग्य (वसु) धन को (आ भर) ले आ ॥ १ ॥

भावार्थ—राजा धर्मात्माओं की रक्षा के लिये शत्रुओं में फूट डालकर उन का नाश करे और उनका धन लेकर विद्यादान आदि धर्म कार्य में लगावे ॥ १ ॥

यह तृच् ऋग्वेद में है—८ । ४५ । ४०—४२; सामवेद—३० ४ । १ । तृच्
८ । मन्त्र १—साम० पू० २ । ४ । १० और मन्त्र २ पू० ३ । २ । ३ ॥

यद् वीलाविन्द्र यत् स्थिरे यत् पशनि पराभृतम् । वसु
स्पृहं तदा भर ॥ २ ॥

यत् । वीलौ । इन्द्र । यत् । स्थिरे । यत् । पशनि । परा-

१—(भिन्धि) भेदेन कुरु (विश्वाः) सर्वाः (अप) पृथग्भावे (द्विषः)
द्वेषीः सेनाः (परि) सर्वतः (बाधः) बाधु विलोडने—किप् । बाधिकाः
(जुहि) नाशय (मृधः) सङ्ग्रामान् (वसु) धनम् (स्पृहम्) अ० २० । १६ ।
३ । कमनीयम् (तत्) (आ भर) आहर । प्रायय ॥

भृतम् । ० ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (यत्) जो [धन] (वीलौ) बल [वा. सेना] में (यत्) जो [धन] (स्थिरे) दृढ़ स्थान में और (यत्) जो [धन] (पर्शानि) मेघ [बरसा] में (पराभृतम्) धरा हुआ है, (तत्) उस (स्पर्हम्) चाहने योग्य (वसु) धन को (आ भर) ले आ ॥ २ ॥

भावार्थ—राजा को योग्य है कि शत्रुओं ने जो धन सेना में, दृढ़ कोश में, और जो जल आदि स्थान में रक्खा हो, उस सब को ले लेवे ॥ २ ॥

यस्य ते विश्वमानुषो भूरैर्दत्तस्य वेदति । वसुं स्पर्हं तदा भर ॥ ३ ॥

यस्य । ते । विश्व-मानुषः । भूरैः । दत्तस्य । वेदति ॥ वसुं । स्पर्हं । तत् । आ । भर ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(विश्वमानुषः) संसार का प्रत्येक मनुष्य (यस्य ते) जिस तेरे (भूरैः) बड़े (दत्तस्य) दान का (वेदति) ज्ञान करे, (तत्) उस (स्पर्हम्) चाहने योग्य (वसु) धन को (आ भर) ले आ ॥ ३ ॥

भावार्थ—राजा को ऐसा दान करना चाहिये जिस से समस्त संसार का उपकार होवे ॥ ३ ॥

१—(यत्) धनम् (वीलौ) भृमृशीङ् ० । उ० १ । ७ । वीलयतिः संस्तम्भकर्मा—निरु० ५ । १६—उप्रत्ययः । वीलु बलनाम—निघ० २ । ६ । बले । सैन्ये (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् (यत्) (स्थिरे) दृढ़स्थाने (यत्) (पर्शानि) अ० ८ । ४ । ५ । परि + शृ हिंसायाम्—आनच्, डित्, परे रिकार-लोपः । पर्शानो मेघः—टिप्पणी, निघ० १ । १० । मेघे । वर्षाजले (पराभृतम्) न्यस्तम् । अन्यत् पूर्ववत् ॥

३—(यस्य) (ते) तव (विश्वमानुषः) विश्वस्य संसारस्य प्रत्येक-मनुष्यः (भूरैः) प्रभूतस्य (दत्तस्य) दानस्य (वेदति) लेटि रूपम् । ज्ञानं कुर्यात् । अन्यत् पूर्ववत् ॥

सूक्तम् ४४ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ गायत्री; २, ३ निचूद् गायत्री ॥

राजप्रजाकृत्योपदेशः—राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

प्र सुम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोतु नव्यं गीर्भिः । नरं नृषाहं
मंहिष्ठम् ॥ १ ॥

प्र । सुस्-राजस् । चर्षणीनाम् । इन्द्रम् । स्तोतु । नव्यम् ।
गीः-भिः ॥ नरम् । न-सहम् । मंहिष्ठम् ॥ १ ॥

भाषार्थ—[हे विद्वानो !] (चर्षणीनाम्) मनुष्यों के (सम्राजम्)
सम्राट् [राजाधिराज] , (नव्यम्) स्तुति योग्य, (नरम्) नेता, (नृषहम्)
नेताओं को वश में रखने वाले, (मंहिष्ठम्) अत्यन्त दानी (इन्द्रम्) इन्द्र
[बड़े पेश्वर्य वाले राजा] को (गीर्भिः) वाणियों से (प्र) अच्छे प्रकार
(स्तोत) सराहों ॥ १ ॥

भावार्थ—विद्वान् प्रजागण अभिनन्दन आदि से उदार चित्त राजा के
बड़े बड़े उपकारी कामों की प्रशंसा करके सत्कार करें ॥ १ ॥

यह तृच ऋग्वेद में है—८ । १६ । १—३ । मन्त्र १ सामवेद—पृ० २ ।
५ । १० ॥

यस्मिन्नुकथानि रणयन्ति विश्वानि च अवुस्या । अपामवो
न समुद्रे ॥ २ ॥

यस्मिन् । उकथानि । रणयन्ति । विश्वानि । च । अवुस्या ॥
अपाम् । अवः । न । समुद्रे ॥ २ ॥

तं सुष्टुत्या विवासे ज्येष्ठुराजं भरे कृत्तुम् । महो वाजिनं

१—(प्र) प्रकर्षेण (सम्राजम्) राजराजेश्वरम् (चर्षणीनाम्) मनुष्या-
णाम् (इन्द्रम्) परमेश्वर्यवन्तं राजानम् (स्तोत) स्तुत (नव्यम्) स्तुत्यम्
(गीर्भिः) वाणीभिः (नरम्) नेतारम् (नृषहम्) नेतृणामभिभवितारं वश-
यितारम् (मंहिष्ठम्) क० २० । १५ । १ । उदारतमम् ॥

सुनिभ्यः ॥ ३ ॥

तम् । सु-स्तुत्या । आ । विवासे । ज्येष्ठ-राजम् । भरे ।

कृत्तुम् ॥ महः । वाजिनम् । सुनि-भ्यः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(यस्मिन्) जिस [पुरुष] में (विश्वानि) सब (उक्त्यानि) कहने योग्य वचन (च) और (भवस्या) धन के लिये हितकारी कर्म (रण्यन्ति) पहुँचते हैं, (न) जैसे (समुद्रे) समुद्र में (अपाम्) जलों की (अवः) गति [पहुँचती है] ॥ २ ॥ (तम्) उस (ज्येष्ठराजम्) सब से बड़े राजा, (भरे) सङ्ग्राम में (कृत्तुम्) काम करने वाले, (वाजिनम्) महाबलवान् [पुरुष] की, (महः) महत्त्व के (सुनिभ्यः) दानों के लिये, (सुस्तुत्या) सुन्दर स्तुति के साथ (आ) सब प्रकार (विवासे) मैं सेवा करता हूँ ॥ ३ ॥

भाषार्थ—जैसे नदियाँ समुद्र में जाकर विश्राम पाती हैं, वैसे ही विद्वान् लोग पराक्रमी राजा के पास पहुँचकर अपना गुण प्रकाशित कर के सुख पावें ॥ २, ३ ॥

सूक्तम् ४५ ॥

१-३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ३ गायत्री ; २ निचृद् गायत्री ॥

समाध्यक्षकृत्योपदेशः—समापति के कर्तव्य का उपदेश ॥

अयमु ते समंतसि कुपोत इव गर्भ धिस् । वचुस्तच्चिन्न श्रीहसे १

२—(यस्मिन्) पुरुषे (उक्त्यानि) वक्तव्यानि वचनानि (रण्यन्ति) अ० २० । १७ । ६ । गच्छन्ति (विश्वानि) सर्वाणि (च) (भवस्या) अ० २० । १२ । १ । धनाय हितानि कर्माणि (अपाम्) जलानाम् (अवः) अव गतौ—असुन् । गमनम् (न) यथा (समुद्रे) उदधौ ॥

३—(तम्) (सुस्तुत्या) शोभनया स्तुत्या (आ) समन्तात् (विवासे) विवासतिः परिचरणकर्मा—निघ० ३ । ५ । परिचरामि (ज्येष्ठराजम्) प्रश-स्यतमं राजानम् (भरे) सङ्ग्रामे (कृत्तुम्) कृहनिभ्यां कृत्तु । उ० ३ । ३० । करोतेः—कृत्तु । कार्यकर्तारम् (महः) मह पूजायाम्—किप् । महत्त्वस्य (वाजिनम्) महाबलिनम् (सुनिभ्यः) दानेभ्यः ॥

अयम् । जं इति । ते । सम् । अतसि । कपोतः-इव ।
गर्भ-धिम् ॥ वचः । तत् । चित् । नः । ओहसे ॥ १ ॥

भाषार्थ—[हे सेनापति !] (अयम्) यह [प्रजा जन] (ते उ)
तेरा ही है, तू [उस प्रजा जन से] (सम् अतसि) सदा मिलता रहता है,
(इव) जैसे (कपोतः) कबूतर (गर्भधिम्) गर्भ रखने वाली कबूतरी से
[पालने को मिलता है], (तत्) इस लिये तू (चित्) ही (नः) हमारे
(वचः) वचन को (ओहसे) सब प्रकार विचारता है ॥ १ ॥

भावार्थ—जब कबूतरी अण्डे सेवती और बच्चे देती है, कबूतर बड़े
प्रेम से उसको चारा लाकर खिलाता है, इसी प्रकार राजा सुनीति से प्रजा
का पालन करे और उन की पुकार सुने ॥ १ ॥

यह तृच ऋग्वेद में है —१ । ३० । ४—१ ; सामवेद—७० ७ । ३ । तृच
१५, तथा मन्त्र १-साम० पू० २ । ६ । ६ ॥

स्तोत्रं राधानां पते गिर्वाहो वीरु यस्य ते । विभूतिरस्तु
सुनृता ॥ २ ॥

स्तोत्रम् । राधानाम् । पते । गिर्वाहः । वीरु । यस्य । ते ॥
वि-भूतिः । अस्तु । सुनृता ॥ २ ॥

भाषार्थ—(राधानां पते) हे धनों के स्वामी ! (गिर्वाहः) हे विद्याओं
के पहुँचाने वाले ! (वीर) हे वीर ! (यस्य ते) जिस तेरी (स्तोत्रम्) स्तुति
है, [उस तेरी] (विभूतिः) विभूति [पेश्वर्य] (सुनृता) प्यारी और सच्ची

१—(अयम्) प्रजाजनः (उ) एव (ते) तव (सम्) (अतसि)
सततं संगच्छसे (कपोतः) पारावतः (इव) यथा (गर्भधिम्) गर्भ+
धधातेः—कि प्रत्ययः । गर्भधारिणीं कपोतीम् (वचः) वचनम् (तत्) तस्मात्
कारणात् (चित्) एव (नः) अस्माकम् (ओहसे) आ+ऊह वितर्के । सम-
न्ताद् विचारयसि ॥

२—(स्तोत्रम्) स्तुतिम् (राधानाम्) धनानाम् (पते) पालक
(गिर्वाहः) अ० २ । ३५ । ४ । हे गिरां विद्यानां प्रापक (वीर) हे निर्भय
(यस्य) (ते) तव (विभूतिः) पेश्वर्यम् (अस्तु) (सुनृता) अ० ३ । १२ । २ ।

वाणी (अस्तु) होवे ॥ २ ॥

भावार्थ—प्रधान पुरुष अनेक धनों को प्राप्त होकर उत्तम कर्मों से अपनी स्तुति बढ़ावे और हितकारी सच्ची बात बोलने को ही अपना पेश्वर्य समझे ॥ २ ॥

ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन् वाजे शतक्रतो । समन्येषु
ब्रवावहै ॥ ३ ॥

ऊर्ध्वः । तिष्ठ । नः । ऊतये । अस्मिन् । वाजे । शतक्रतो
इति शत-क्रतो ॥ सम् । अन्येषु । ब्रवावहै ॥ ३ ॥

भावार्थ—(शतक्रतो) हे सैकड़ों कर्मों वा बुद्धियों वाले (नः) हमारी (ऊतये) रक्षा के लिये (अस्मिन्) इस (वाजे) सङ्ग्राम में (ऊर्ध्वः) ऊपर (तिष्ठ) ठहर, (अन्येषु) दूसरे कामों पर (सम्) मिलकर (ब्रवावहै) हम दोनों बात करें ॥ ३ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग प्रजापालक सेनापति से बात चीत करके कर्तव्य को करते हुये और अकर्तव्य को छोड़ते हुये युद्ध में विजय प्राप्त करें ॥ ३ ॥

सूक्तम् ४६ ॥

१--३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥

सेनापतिलक्षणोपदेशः—सेनापति के लक्षण का उपदेश ॥

प्रणेतारं वस्ये अच्छा कर्तारं ज्योतिः सुमत्सु । सुसुह्रांसं
युधामित्रान् ॥ १ ॥

प्र-णेतारम् । वस्यः । अच्छ । कर्तारम् । ज्योतिः । सुमत्-सु ।
सु-सु-ह्रांसम् । युधा । मित्रान् ॥ १ ॥

प्रियसत्यात्मिका वाक् ॥

३—(ऊर्ध्वः) उन्नतः (तिष्ठ) (नः) अस्माकम् (ऊतये) रक्षायै (अस्मिन्) (वाजे) संग्रामे (शतक्रतो) बहुकर्मन् । बहुप्रज्ञ (सम्) मिलित्वा (अन्येषु) युद्धाद्भिन्नविषयेषु (ब्रवावहै) आवां विचारयाव ॥

भाषार्थ—(वस्यः) श्रेष्ठ धन की ओर (प्रणेतारम्) ले चलने वाले (समत्सु) संग्रामों में (ज्योतिः) प्रकाश (कर्तारम्) करने वाले (युधा) युद्ध से (अभित्रान्) पीड़ा देने वाले बैरियों को (ससह्वांसम्) हराने वाले [सेनापति] को (अच्छ) पाकर [हम बतें] ॥ १ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य प्रजा को धन प्राप्त करावे और संग्रामों में बैरियों को जीते, वह सेनापति होवे ॥ १ ॥

यह तुच ऋग्वेद में है—४ । १६ । १०-१२ ॥

स नः पप्रिः पारयाति स्वस्ति नावा पुरुहुतः । इन्द्रो विश्वा
अति द्विषः ॥ २ ॥

सः । नः । पप्रिः । पारयाति । स्वस्ति । नावा । पुरु-हुतः ॥
इन्द्रः । विश्वाः । अति । द्विषः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(सः) वह (पप्रिः) पूरण करने वाला, (पुरुहुतः) बहुत पुकारा गया, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला सेनापति] (विश्वाः) सब (द्विषः) द्वेष करने वाली सेनाओं को (अति) लांघ कर (नः) हम को (स्वस्ति) आनन्द के साथ (नावा) नाव से (पारयाति) पार लगावे ॥ २ ॥

भावार्थ—युद्ध कुशल सेनापति शत्रुओं को मार कर प्रजा को कष्ट से छुड़ावे, जैसे नाव से समुद्र पार करते हैं ॥ २ ॥

१—(प्रणेतारम्) प्रापयितारम् (वस्यः) अ० २० । १४ । ३ । प्रशस्य धनम् (अच्छ) अच्छाभेराप्तुमिति शाकपूणिः—निरु० ५ । २८ । प्राप्य (कर्तारम्) कारकम् (ज्योतिः) प्रकाशम् (समत्सु) सङ्ग्रामेषु (ससह्वांसम्) सह अभिभवे—कसु, अभ्यासस्य दीर्घश्छान्दसः । अभिभवितारम् (युधा) युद्धेन (अभित्रान्) पीडकान् । शत्रून् ॥

२—(सः) (नः) अस्मान् (पप्रिः) अ० १२ । २ । ४७ । प्रा प्रणेतारम्—किन् । प्राता । प्रायिता (पारयाति) लेटि रूपम् । पारयेत् (स्वस्ति) क्षेमेण (नावा) नौकया (पुरुहुतः) बहुविधाहुतः (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् सेनापतिः (विश्वाः) सर्वाः (अति) अतीत्य । उदज्जघ्प (द्विषः) द्वेषीः सेनाः ॥

स त्वं न इन्द्र वाजैर्भिर्दशस्य च गातुया च । अच्छा च नः
सुम्नं नेषि ॥ ३ ॥

सः । त्वम् । नः । इन्द्र । वाजैभिः । दशस्य । च । गा-तु-या ।
च ॥ अच्छ । च । नः । सुम्नम् । नेषि ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(सः त्वम्) सो तू, (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले
सेनापति] (नः) हमारे लिये (वाजैभिः) पराक्रमों के साथ (दशस्य)
कवच के समान काम कर, (च च) और (गातुया) मार्ग बता, (च) और
(अच्छ) अच्छे प्रकार (नः) हमें (सुम्नम्) सुख की ओर (नेषि) ले
चल ॥ ३ ॥

भावार्थ—राजा पराक्रम कर के प्रजा को अनेक प्रकार से सुख
पाने के ढंग बतावे ॥ ३ ॥

सूक्तम् ४७ ॥

१-२१ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १-१०, १२-२१ गायत्री; ११ विराड् गायत्री, ॥

१-६ राजप्रजकर्तव्योपदेशः—राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

तमिन्द्र वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे । स वृषा वृषभो
भुवत् ॥ १ ॥

तम् । इन्द्रम् । वाजयामसि । महे । वृत्राय । हन्तवे ॥ सः ।
वृषा । वृषभः । भुवत् ॥ १ ॥

३—(सः) तादृशः (त्वम्) (नः) अस्मभ्यम् (इन्द्र) सेनापते
(वाजैभिः) सङ्ग्रामैः (दशस्य) अ० २०। ३५। ११। दशः कवच इवाचर
(च) (गातुया) छन्दसि परेच्छायामपि । वा० पा० ३। १। ८। गातु—क्यच् ।
छान्दसो दीर्घः, ऋग्वेदे [गातुय] इति पदपाठः । मार्गम् इच्छ (च) (अच्छ)
सुष्ठु (च) (नः) अस्मान् (सुम्नम्) सुखं प्रति (नेषि) शपोलुक् । नयसि ।
नय । प्रायश्च ॥

भाषार्थ—(तम्) उस (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले राजा] को (महे) बड़े (वृत्राय) रोकने वाले वैरी के (हन्तवे) मारने को (वाज-यामसि) हम बलवान् करते हैं [उत्साही बनाने हैं], (सः) वह (वृषा) पराक्रमी (वृषभः) श्रेष्ठ वीर (भुवत्) होवे ॥ १ ॥

भावार्थ—प्रजागण राजा को शत्रुओं के मारने के लिये सहाय करें, और राजा भी प्रजा की भलाई के लिये प्रयत्न करे ॥ १ ॥

मन्त्र १—३ ऋग्वेद में हैं—८। ४३ [सायणभाष्य ८२] । ७—६; कुछ भेद से सामवेद—उ० ५। १। तृच १०। मन्त्र १ पू० २। ३। ५ और यह तृच आगे है—अथ० २०। १३७। १२—१४ ॥

इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स मदे हितः । द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः ॥ २ ॥

इन्द्रः । सः । दामने । कृतः । ओजिष्ठः । सः । मदे । हितः ॥
द्युम्नी । श्लोकी । सः । सोम्यः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला राजा] (दामने) दान करने के लिये और (सः) वह (मदे) आनन्द देने के लिये (ओजिष्ठः) महाबली और (हितः) हितकारी (कृतः) बनाया गया है, (सः) वह (द्युम्नी) अन्न वाला और (श्लोकी) कीर्ति वाला पुरुष (सोम्यः) पेश्वर्य के योग्य है ॥ २ ॥

१—(तम्) प्रसिद्धम् (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं राजानम् (वाजयामसि) बलवन्तं कुर्मः । उत्साहयामः (महे) द्वितीयार्थे चतुर्थी । महान्तम् (वृत्राय) आवरकं, शत्रुम् (हन्तवे) मारयितुम् (सः) (वृषा) पराक्रमी (वृषभः) श्रेष्ठो वीरः (भुवत्) भवेत् ॥

२—(इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् राजा (सः) (दामने) सर्वधातुभ्यो मन्त्रिन् । उ० ४। १४५ । ददाते—मन्त्रिन् । दानाय (कृतः) स्वीकृतः (ओजिष्ठः) ओजस्वितमः (सः) (मदे) आनन्ददानाय (हितः) हितकरः (द्युम्नी) अन्नवान् (श्लोकी) कीर्तिमान् (सः) (सोम्यः) पेश्वर्ययोग्यः ॥

भाष्यार्थ—प्रजागण प्रतापी, गुणी पुरुष को इस लिये राजा बनावें कि वह प्रजा के उपकार के लिये दान कर के प्रयत्न करे और अन्न आदि पदार्थ बढ़ा कर कीर्ति पावे ॥ २ ॥

गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः । ववक्ष ऋष्वो
अस्तृतः ॥ ३ ॥

गिरा । वज्रः । न । सम्-भृतः । स-बलः । अनप-च्युतः ॥
ववक्षे । ऋष्वः । अस्तृतः ॥ ३ ॥

भाष्यार्थ—(गिरा) वाणी से (संभृतः) पुष्ट किया गया, (सबलः) सबल, (अनपच्युतः) न गिरने योग्य, (ऋष्वः) गति वाला, और (अस्तृतः) बे रोक सेनापति (वज्रः न) विजुली के समान (ववक्षे) रिस होवे ॥ ३ ॥

भाष्यार्थ—जो मनुष्य अपनी बात में सच्चा, महाबली हो, वह सेनानी होकर शत्रुओं पर विजुली के समान क्रोध करे ॥ ३ ॥

इन्द्रमिद् गाथिनो बहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः । इन्द्रं वाणी-
रनूषत ॥ ४ ॥

इन्द्रम् । इत् । गाथिनः । बृहत् । इन्द्रम् । अर्केभिः ।
अर्किणः ॥ इन्द्रम् । वाणीः । अनुषतु ॥ ४ ॥

भाष्यार्थ—(गाथिनः) गाने वालों और (अर्किणः) विचार करने वालों ने (अर्केभिः) पूजनीय विचारों से (इन्द्रम्) सूर्य [के समान प्रतापी], (इन्द्रम्) वायु के समान फुरतीले (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले राजा] को और (वाणीः) वाणियों [वेदवचनों] को (इत्) निश्चय करके (बृहत्) बड़े ढंग से (अनुषत) सराहा है ॥ ४ ॥

३—(गिरा) वाण्या (वज्रः) विद्युत् (न) यथा (संभृतः) सम्यक् पोषितः (सबलः) बलसहितः (अनपच्युतः) परैरपरिच्युतः । अनभिगतः (ववक्षे) अ० २० । ३५ । ६ । लेडर्थे लिट् । रोषं कुर्यात् (ऋष्वः) अश्व-मुषिजिदि० । उ० १ । १५१ । ऋषी गतौ—कन् । गतिमान् । महान्—निघ० ३ । ३ (अस्तृतः) अहिसितः । अनिवारितः ॥

४—६ । एते मन्त्रा व्याख्याताः—अ० २० । ३८ । ४—६ ॥

भावार्थ—मनुष्य सुनीतिज्ञ, प्रतापी, उद्योगी राजा के और परमेश्वर की दी हुई वेदवाणी के गुणों को विचार कर सब के सुख के लिये यथावत् उपाय करें ॥ ४ ॥

मन्त्र ४-६ आ चुके हैं—अ०२० । ३८ । ४—६ और आगे हैं—२० । ७० ।

७-६ ॥

इन्द्र इन्द्रधर्योः सचा संमिश्र आ वचोयुजा । इन्द्रो वज्री
हिरण्ययः ॥ ५ ॥

इन्द्रः । इत् । हर्योः । सचा । सम्-मिश्रः । आ । वचः-युजा ॥
इन्द्रः । वज्री । हिरण्ययः ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(वज्री) वज्रधारी, (हिरण्ययः) तेजोमय (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला राजा] (इत्) ही (इन्द्रः) वायु [के समान] (सचा) नित्य मिले हुये (हर्योः) दोनों संयोग वियोग गुणों का (संमिश्रः) यथावत् मिलाने वाला (आ) और (वचोयुजा) वचन का योग्य बनाने वाला है ॥ ५ ॥

भावार्थ—जैसे पवन के आने जाने से पदार्थों में चलने, फिरने, ठहरने का और जीभ में बोलने का सामर्थ्य होता है, वैसे ही दण्डदाता प्रतापी राजा के न्याय से सब लोगों में शुभ गुणों का संयोग और दोषों का वियोग होकर वाणी में सत्यता होती है ॥ ५ ॥

इन्द्रो दीर्घायि चक्षसु आ सूर्य रोहयद् दिवि । वि गोभिर-
द्रिमैरयत् ॥ ६ ॥

इन्द्रः । दीर्घायि । चक्षसे । आ । सूर्यम् । रोहयत् । दिवि ॥
वि । गोभिः । अद्रिम् । ऐरयत् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले परमात्मा] ने (दीर्घायि) दूर तक (चक्षसे) देखने के लिये (दिवि) व्यवहार [वा आकाश] के बीच (गोभिः) वेदवाणियों द्वारा [वा किरणों वा जलों द्वारा] (सूर्यम्) सूर्य [के समान प्रेरक] और (अद्रिम्) मेघ [के समान उपकारी पुरुष] को (आ रोहयत्) ऊँचा किया और (वि) विविध प्रकार (ऐरयत्) चलाया है ॥ ६ ॥

भाषार्थ—जैसे परमेश्वर के नियम से सूर्य आकाश में चलकर ताप आदि गुणों से अनेक लोकों को धारण करता और किरणों द्वारा जल खींचकर फिर बरसाकर उपकार करता है, वैसे ही दूरदर्शी राजा अपने प्रताप और उत्तम व्यवहार से सब प्रजा को नियम में रखे और कर लेकर उनका प्रतिपालन करे ॥ ६ ॥

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबाम् इमम् । एदं बर्हिः
सदो मम ॥ ७ ॥

आ । याहि । सुषुम । हि । ते । इन्द्र । सोमम् । पिब ।
इमम् ॥ आ । इदम् । बर्हिः । सदः । मम ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (आ याहि) तू आ, (हि) क्योंकि (ते) तेरे लिये (सोमम्) सोम [उत्तम ओषधियों का रस] (सुषुम) हम ने सिद्ध किया है, (इमम्) इस [रस] को (पिब) पी, (मम्) मेरे (इदम्) इस (बर्हिः) उत्तम आसन पर (आ सदः) बैठ ॥ ७ ॥

भाषार्थ—लोग विद्वान् सद्बैद्य के सिद्ध किये हुये महौषधियों के रस से राजा को स्वस्थ बलवान् रखकर राज सिंहासन पर सुशोभित करें ॥ ७ ॥

मन्त्र ७-४ आ चुके हैं—अ० २० । ३ । १—३ तथा ३८ । १—३ ॥

आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना । उप ब्रह्माणि
नः शृणु ॥ ८ ॥

आ । त्वा । ब्रह्म-युजा । हरी इति । वहताम् । इन्द्र ।
केशिना ॥ उप । ब्रह्माणि । नः । शृणु ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (ब्रह्मयुजा) धन के लिये जोड़े गये, (केशिना) सुन्दर केशों [कन्धे आदि के बालों] वाले (हरी) रथ ले चलने वाले दो घोड़ों [के समान बल और पराक्रम] (त्वा) तुझको (आ) सब ओर (वहताम्) ले चलें । (नः) हमारे (ब्रह्माणि) वेद ज्ञानों को (उप) आदर से (शृणु) तू सुन ॥ ८ ॥

भावार्थ—जैसे उत्तम बलवान् घोड़े रथ को ठिकाने पर पहुंचाते हैं, वैसे ही राजा वेदोक्त मार्ग पर चलकर अपने बल और पराक्रम से राज्यभार उठाकर प्रजा पालन करे ॥ ८ ॥

ब्रह्माणस्तवा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः । सुतावन्तो हवामहे ॥ ८ ॥

ब्रह्माणः । त्वा । वयम् । युजा । सोम-पास् । इन्द्र । सोमिनः । सुत-वन्तः । हवामहे ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (सोमपाम्) ऐश्वर्य के रक्षक (त्वा) तुझ को (युजा) मित्रता के साथ (ब्रह्माणः) वेद जानने वाले, (सोमिनः) ऐश्वर्य वाले, (सुतवन्तः) उत्तम पुत्र आदि सन्तानों वाले (वयम्) हम (हवामहे) बुलाते हैं ॥ ८ ॥

भावार्थ—जिस राजा के सुप्रबन्ध से प्रजागण ज्ञानवान्, धनवान्, और सुशिक्षित सन्तान वाले होवें, उस को मित्र जानकर सदा स्मरण करें ॥ ८ ॥

मन्त्राः १०-१२ परमेश्वर गुणोपदेशः—१०-१२ परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि ॥ १० ॥

युञ्जन्ति । ब्रध्नम् । अरुषम् । चरन्तम् । परि । तस्थुषः ॥ रोचन्ते । रोचना । दिवि ॥ १० ॥

भाषार्थ—(तस्थुषः) मनुष्य आदि प्राणियों और लोकों में (परि) सब ओर से (चरन्तम्) व्यापे हुये, (ब्रध्नम्) महान् (अरुषम्) हिंसारहित [परमात्मा] को (रोचना) प्रकाशमान पदार्थ (दिवि) व्यवहार के बीच (युञ्जन्ति) ध्यान में रखते और (रोचन्ते) प्रकाशित होते हैं ॥ १० ॥

भावार्थ—परमाणुओं से लेकर सूर्य आदि लोक और सब प्राणी सर्व-

व्यापक, सर्वनियन्ता परमेश्वर की आज्ञा को मानते हैं, उसी की उपासना से मनुष्य पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करके आत्मा की उन्नति करें ॥ १० ॥

मन्त्र १०—१२ आनुके हैं—अ० २० । २६ । ४—६ और आगे हैं—२० । ६६ । ६—११ ॥

युज्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे । शोणा धृष्णू
नृवाहसा ॥ ११ ॥

युज्जन्ति । अस्य । काम्या । हरी इति । वि-पक्षसा । रथे ॥
शोणा । धृष्णू इति । नृ-वाहसा ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(अस्य) इस [परमात्मा—मन्त्र १०] के (काम्या) चाहने योग्य, (विपक्षसा) विविध प्रकार ग्रहण करने वाले, (शोणा) व्यापक (धृष्णू) निर्भय, (नृवाहसा) नेताओं [दूसरों के चलाने वाले सूर्य आदि लोकों] के चलाने वाले (हरी) दोनों धारण आकर्षण गुणों को (रथे) रमणीय जगत् के बीच (युज्जन्ति) वे [प्रकाशमान पदार्थ—मन्त्र १०] ध्यान में रखते हैं ॥ ११ ॥

भावार्थ—जिस परमात्मा के धारण आकर्षण सामर्थ्य में सूर्य आदि पिण्ड ठहर कर अन्य लोकों और प्राणियों को चलाते हैं, मनुष्य उन सब पदार्थों से उपकार ले कर उस ईश्वर को धन्यवाद दें ॥ ११ ॥

केतुं कृणवन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः १२
केतुम् । कृणवन् । अकेतवे । पेशः । मर्याः । अपेशसे ॥
सम् । उषत्-भिः । अजायथाः ॥ १२ ॥

भाषार्थ—(मर्याः) हे मनुष्यो ! (अकेतवे) अज्ञान हटाने के लिये (केतुम्) ज्ञान को और (अपेशसे) निर्धनता मिटाने के लिये (पेशः) सुवर्ण आदि धन को (कृणवन्) उत्पन्न करता हुआ वह [परमात्मा—मन्त्र १०, ११] (उषद्भिः) प्रकाशमान गुणों के साथ (सम्) अच्छे प्रकार (अजायथाः) प्रकट हुआ है ॥ १२ ॥

भावार्थ—मनुष्य प्रयत्न करके परमात्मा को विचारते हुये सृष्टि

के पदार्थों से उपकार लेकर ज्ञानी और धनी होंगे ॥ १२ ॥

मन्त्राः १३—२१ आद्यात्मोपदेशः ॥ १३—२१ परमात्मा और जीवात्मा के विषय का उपदेश ॥

उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् १३
उत् । ऊँ इति । त्यम् । जात-वेदसम् । देवम् । वहन्ति ।
केतवः ॥ दृशे । विश्वाय । सूर्यम् ॥ १३ ॥

भाषार्थ—(केतवः) किरणों (त्यम्) उस (जातवेदसम्) उत्पन्न पदार्थों को प्राप्त करने वाले, (देवम्) चलते हुये (सूर्यम्) रविमण्डल को (विश्वाय दृशे) सब के देखने के लिये (उ) अवश्य (उत् वहन्ति) ऊपर ले चलती हैं ॥ १३ ॥

भावार्थ—जिस प्रकार सूर्य किरणों के आकर्षण से ऊँचा होकर सब पदार्थों को प्रकट करता है, वैसे ही मनुष्य विद्या और धर्म से उन्नति करके सब का उपकार करे ॥ १३ ॥

मन्त्र १३—२१ आ चुके हैं—अ० १३ । २ । १६—२४ ॥

अप त्ये त्वायवो यथा नक्षत्रा यन्त्युक्तुभिः । सूराय
विश्वचक्षसे ॥ १४ ॥

अप । त्ये । त्वायवः । यथा । नक्षत्रा । यन्ति । अक्तु-भिः ॥
सूराय । विश्व-चक्षसे ॥ १४ ॥

भाषार्थ—(विश्वचक्षसे) सब के दिखाने वाले (सूराय) सूर्य के लिये (अक्तुभिः) रात्रियों के साथ (नक्षत्रा) तारा गण (अप यन्ति) भाग जाते हैं, (यथा) जैसे (त्ये) वे (त्वायवः) चोर [भाग जाते हैं] ॥ १४ ॥

भावार्थ—सूर्य के प्रकाश से रात्रि का अन्धकार मिट जाता है, मन्द चमकने वाले नक्षत्र छिप जाते हैं, और चोर लोग भाग जाते हैं, वैसेही वेद विज्ञान फैलने से अधर्म का नाश और धर्म की वृद्धि होती है ॥ १४ ॥

१३—२१ पठे मन्त्रा व्याख्याताः—अ० १३ । २ । १६—२४ ॥

अदृशन्नस्य केतवो वि रुशमयो जना अनु । आजन्तो अग्नये
यथा ॥ १५ ॥

अदृशन् । अस्य । केतवः । वि । रुशमयः । जनान् । अनु ॥
आजन्तः । अग्नयः । यथा ॥ १५ ॥

भाषार्थ—(अस्य) इस [सूर्य] की (केतवः) जताने वाली
(रुशमयः) किरणें (जनान् अनु) प्राणियों में (वि) विविध प्रकार से
(अदृशन्) देखी गयी हैं, (यथा) जैसे (आजन्तः) दहकते हुये (अग्नयः)
अंगारे ॥ १५ ॥

भावार्थ—जैसे सूर्य की किरणें धूप, बिजुली और अग्नि के रूप से
संसार में फैलती हैं, वैसेही सब मनुष्य शुभ गुण कर्म और स्वभाव से प्रकाश-
मान होकर आत्मा और समाज की उन्नति करें ॥ १५ ॥

तुरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य । विश्वमा भासि
रोचन ॥ १६ ॥

तुरणिः । विश्व-दर्शतः । ज्योतिः-कृत् । असि । सूर्य ॥
विश्वम् । आ । भासि । रोचन् ॥ १६ ॥

भाषार्थ—(सूर्य) हे सूर्य ! तू (तुरणिः) अन्धकार से पार करने वाला,
(विश्वदर्शतः) सब का दिखाने वाला, (ज्योतिष्कृत्) [चन्द्र आदि में]
प्रकाश करने वाला (असि) है । (रोचन) हे चमकने वाले ! तू (विश्वम्)
सब को (आ) भले प्रकार (भासि) चमकाता है ॥ १६ ॥

भावार्थ—जैसे यह सूर्य अग्नि, बिजुली, चन्द्रमा, नक्षत्र आदि पर अपना
प्रकाश डाल कर उन्हें चमकीला बनाता है, वैसे ही परमात्मा अपने सामर्थ्य से
सब सूर्य आदि को रचता है और वैसे ही विद्वान् लोग विद्या के प्रकाश से संसार
को आनन्द देते हैं ॥ १६ ॥

प्रत्यङ् देवानां विश्वः प्रत्यङ्ङुदैषि मानुषीः । प्रत्यङ् विश्वं
स्वर्दृशे ॥ १७ ॥

प्रत्यङ् । देवानाम् । विशः । प्रत्यङ् । उत् । एषि । मानुषीः॥
प्रत्यङ् । विश्वम् । स्वः । दृशे ॥ १७ ॥

भाषार्थ—[हे सूर्य !] (देवानाम्) गति शील [चन्द्र आदि लोकों] की (विशः) प्रजाओं को (प्रत्यङ्) सन्मुख होकर, (मानुषीः) मानुषों [मनुष्य सम्बन्धी पार्थिव प्रजाओं] को (प्रत्यङ्) सन्मुख हो कर और (विश्वम्) सब जगत् को (प्रत्यङ्) सन्मुख होकर (स्वः) सुख से (दृशे) देखने के लिये (उत्) ऊँचा होकर (एहि) तू प्राप्त होता है ॥ १७ ॥

भावार्थ—सूर्य गोल आकार बहुत बड़ा पिण्ड है, इस लिये वह सब लोकों के सन्मुख दीखता है, और सब लोक उस के आकर्षण प्रकाशन आदि से सुख पाते हैं, ऐसे ही परमात्मा के सर्वव्यापी और सर्व शक्तिमान होने से उसके नियम पर चलकर सब सुखी रहते हैं ॥ १७ ॥

येन पावकु चक्षसा भुरग्यन्तं जनां अनु । त्वं वरुण पश्यसि १८
येन । पावकु । चक्षसा । भुरग्यन्तम् । जनान् । अनु ॥ त्वम् ।
वरुण । पश्यसि ॥ १८ ॥

वि द्यामेषु रजस्पृष्टवहुर्मिमानो अक्तुभिः । पश्यं जन्मानि
सूर्य ॥ १९ ॥

वि । द्याम् । एषि । रजः । पृथु । अहः । मिमानः । अक्तुभिः ॥
पश्यन् । जन्मानि । सूर्य ॥ १९ ॥

भाषार्थ—(पावकु) हे पवित्र करने वाले ! (वरुण) हे उत्तम गुण वाले ! [सूर्य रविमण्डल] (येन) जिस (चक्षसा) प्रकाश से (भुरग्यन्तम्) धारण और पोषण करते हुये [पराक्रम] को (जनान् अनु) उत्पन्न प्राणियों में (त्वम्) तू (पश्यसि) दिखाता है ॥ १८ ॥ [उस प्रकाश से] (सूर्य) हे सूर्य ! [रविमण्डल] (अहः) दिन को (अक्तुभिः) रात्रियों के साथ (मिमानः) बनाता हुआ और (जन्मानि) उत्पन्न वस्तुओं को (पश्यन्) दिखाता हुआ तू (द्याम्) आकाश में (पृथु) फैले हुये (रजः) लोक को (विं) विविध प्रकार (एषि) प्राप्त होता है ॥ १९ ॥

भावार्थ—जैसे सूर्य अपने प्रकाश से वृष्टि आदि द्वारा अपने घेरे के सब प्राणियों और लोकों को धात्वा पोषण करना है, वैसे ही मनुष्य सर्वोपरि विराजमान परमात्मा के ज्ञान से परस्पर सहायक होकर सुखी होंगे ॥ १८, १९ ॥

सुप्त त्वा हुरितो रथे वहन्ति देव सूर्य । शोचिष्केशं
विचक्षणम् ॥ २० ॥

सुप्त । त्वा । हुरितः । रथे । वहन्ति । देव । सूर्य ॥ शोचिः-
केशम् । वि-चक्षणम् ॥ २० ॥

भाषार्थ—(देव) हे चलने वाले (सूर्य) सूर्य ! [रविमण्डल] (सप्त) सात [शुक्ल, नील, पीत, रक्त, हरित, कपिश, चित्र वर्ण वाली] (हरितः) आकर्षक किरणें (शोचिष्केशम्) पवित्र प्रकाश वाले (विचक्षणम्) विविध प्रकार दिखाने वाले (त्वा) तुझ को (रथे) रथ [गमन विधान] में (वहन्ति) ले चलती हैं ॥ २० ॥

भावार्थ—यह प्रकाशमान सूर्य लोक शुक्ल, नील, पीत आदि सात किरणों द्वारा अपनी धुरी पर अपने घेरे में घूमता है। इस नियम का बनाने वाला वह परमेश्वर है ॥ २० ॥

अयुक्त सुप्त शुन्ध्युवः सूर्यो रथस्य नृपत्यः । ताभिर्याति
स्वयुक्तिभिः ॥ २१ ॥

अयुक्त । सुप्त । शुन्ध्युवः । सूर्यः । रथस्य । नृपत्यः ॥ ताभिः ॥
याति । स्वयुक्ति-भिः ॥ २१ ॥

भाषार्थ—(सूर्य) सूर्य [लोक प्रेरक रविमण्डल] ने (रथस्य) रथ [अपने चलने के विधान] की (नृपत्यः) न गिराने वाली (सप्त) सात [शुक्ल, नील, पीत आदि-मन्त्र २०] (शुन्ध्युवः) शुद्ध किरणों को (अयुक्त) जोड़ा है। (ताभिः) उन (स्वयुक्तिभिः) धन से संयोग वाली [किरणों] के साथ (याति) वह चलता है ॥ २१ ॥

भावार्थ—जो सूर्य अपनी परिधि के लोकों को अपने आकर्षण में रख-कर घुमाता है और जिस की किरणों रौंगों को हटा कर प्रकाश और वृष्टि आदि

से संसार को धनी बनाती हैं, उस सूर्य को जगदीश्वर परमात्मा ने बनाया है ॥ २१ ॥

सूक्तम् ४८ ॥

१—६॥ १—३ इन्द्रः, ४—६ सर्पराक्षी सूर्यो वा देवता ॥ १, ४—६ गायत्री ; २, ३ निचृद् गायत्री ॥

१—३ आध्यात्मोपदेशः—१—३ परमात्मा और जीवात्मा के विषय का उपदेश ॥

अभि त्वा वर्चसा गिरः सिञ्चन्तीराचरणयवः । अभि वृत्सं
न धेनवः ॥ १ ॥

[सूचना—मन्त्र १—३ ऋग्वेद आदि अन्य वेदों में नहीं हैं; और इनका पद पाठ भी गवर्तमेन्ट बुकडिपो बम्बई के पुस्तक में नहीं है। हम स्वामी विश्वेश्वरानन्द नित्यानन्द कृत पद सूची से संग्रह करके यहां लिखते हैं, बुद्धिमान् जन विचार लें। सूचना अथ० २०। ३४। १२ भी देखें।]

अभि । त्वा । वर्चसा । गिरः । सिञ्चन्तीः । आचरणयवः ॥
अभि । वृत्सम् । न । धेनवः ॥ १ ॥

भावार्थ—[हे परमेश्वर !] (आचरणयवः) सब ओर चलती हुई (गिरः) वाणियां (त्वा) तुझ को (वर्चसा) प्रकाश के साथ (अभि) सब प्रकार (सिञ्चन्तीः) सींचती हुई [हैं] । (न) जैसे (धेनवः) दुधेल गायें (वृत्सम्) [अपने] बच्चे को (अभि) सब प्रकार [सींचती हैं] ॥ १ ॥

भावार्थ—सब मनुष्य प्रकाश स्वरूप परमात्मा की अनन्य भक्ति करके आनन्द पावें, जैसे गौयें अपने तुरन्त उत्पन्न हुये बच्चों से प्रीति करके सुखी होती हैं ॥ १ ॥

१—(अभि) सर्वतः (त्वा) (वर्चसा) तेजसा (गिरः) वाचः (सिञ्चन्तीः) सिञ्चन्त्यः । वर्धयन्त्यः (आचरणयवः) यजिमनिशुन्धि० । उ० ३ । २० । आ + चरण गतौ—युच् । समःताद् गतिशीलाः (अभि) (वृत्सम्) शिशुम् (न) यथा (धेनवः) दोग्ध्रयो गावः ॥

(४,१०६)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ४८ [६३५]

ता अर्षन्ति शुभ्रियः पृञ्चन्तीर्वर्चसा प्रियः । जातं जात्रीर्यथा
हृदा ॥ २ ॥

[सूचना—पद पाठ के लिये—मन्त्र १ देखो] ॥

ताः । अर्षन्ति । शुभ्रियः । पृञ्चन्तीः । वर्चसा । प्रियः ॥
जातम् । जात्रीः । यथा । हृदा ॥ २ ॥

भाषार्थ—(शुभ्रियः) शुद्ध (प्रियः) प्रीति करती हुई (ताः) वे
[वाणियाँ—मन्त्र १] (वर्चसा) प्रकाश के साथ (पृञ्चन्तीः) छूती हुई
[तुभको—मन्त्र १] (अर्षन्ति) ग्रहण करती हैं । (यथा जैसे (जात्रीः)
मातायें (जातम्) जने हुये बच्चों को (हृदा) हृदय से [ग्रहण करती हैं] ॥ २ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को एकाग्र चित्त होकर परमात्मा की उपासना
ऐसी रीति से करनी चाहिये, जैसे माता तुरन्त जनमे बालक से प्रीति करती
है ॥ २ ॥

वज्रापवसाध्यः कीर्तिर्म्रियमाणसावहन् । मह्यसायुर्धृतं पयः ॥ ३ ॥

[सूचना—पदपाठ के लिये—मन्त्र १ देखो] ॥

वज्रापवसाध्यः । कीर्तिः । म्रियमाणस् । सावहन् ॥ मह्यस् ।
आयुः । धृतस् । पयः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(वज्रापवसाध्यः) शस्त्रों के शोधने वाले [उजले शस्त्र

२—(ताः) गिरः—म० १ (अर्षन्ति) ऋषी गतौ । प्राप्नुवन्ति । ग्रहणन्ति
(शुभ्रियः) अदिशदिभूशुभिभ्यः क्तिन् । उ० ४ । ६५ । शुभ शोभायायाम्—क्तिन्,
ङीप् । शुद्धाः (पृञ्चन्तीः) सम्पर्कं कुर्वन्त्यः (वर्चसा) तेजसा (प्रियः) प्रीज्-
तर्पणे कान्तौ च—क्तिप् । तर्पयिज्यः (जातम्) उत्पन्नं सन्तानम् (जात्रीः)
सर्वधातुभ्यः घृन् । उ० ४ । १५६ । जन जनने—घृन्, ङीष् । जनयिज्यः । जनन्यः
(यथा) (हृदा) हृदयेन ॥

३—(वज्रापवसाध्यः) वज्र + आ + पूज शोधने—अप् । ऋहलौण्यत् ।
पा० ३ । १ । १२४ । साध संहि क्री-रयत् । कृत्यत्पुटो बहुलम् । पा० ३ । ३ ।

वालों] की सिद्धि करने वाला, (कीर्तिः) कीर्तिरूप [बड़े ही यश वाला, परमेश्वर] (मह्यम्) मेरे लिये (ध्रियमाणम्) नष्ट होते हुये (आयुः) जीवन, (घृतम्) घी [वा जल] और (पयः) दूध [वा अन्न] को (आवहन्) यथावत् लाता हुआ है ॥ ३ ॥

भावार्थ—जब हम किसी विपत्ति से निर्बल होकर अति दुःखी होवें, तब हम उस जगत् पालक परमात्मा का आश्रय लेकर शस्त्र आदि कर्तव्य ठीक करके कार्य सिद्धि करें ॥ ३ ॥

सूचना—पं० सेवक लाल कृष्ण दास, परिशोधित संहिता के अनुसार इस मन्त्र का यह पाठ है—

उग्राय यशसो धियः कीर्तिमिन्द्रियमा वहान् ।

मह्यमायुर्घृतं पयः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(यशसः) यशस्वी [परमेश्वर] (उग्राय मह्यम्) मुझ तेजस्वी के लिये (धियः) बुद्धियाँ (कीर्तिम्) कीर्ति [बड़ाई], (इन्द्रियम्) ऐश्वर्य, (आयुः) जीवन, (घृतम्) घी [वा जल] (पयः) दूध [वा अन्न] (आ) अच्छे प्रकार (वहान्) लावे ॥ ३ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमेश्वर का आश्रय लेकर उत्तम विद्यायें पाकर आवश्यकीय पदार्थ पावे ॥ ३ ॥

मन्त्र ४—६ सूर्यस्य भूमेर्वा गुणोपदेशः—सूर्य वा भूमिके गुणों का उपदेश ॥

११३ । इति कर्तरि प्रत्ययः । साध्याः साधनात्-निरु० ८ । ४० । वज्राणां शस्त्राणाम् । आपवानां संशोधकानां साध्यः साधकः सिद्धिकर्ता (कीर्तिः) यशोरूपः परमेश्वरः (ध्रियमाणम्) विनश्यमानम् (आवहन्) आ समन्ताद् वहन् प्रापयन् वर्तते (मह्यम्) उपासकाय (आयुः) जीवनम् (घृतम्) अज्यं जलं वा (पयः) दुग्धमन्नं वा ॥

३—(उग्राय) तेजस्विने (यशसः) अर्शआद्यच् । यशस्वी परमात्मा (धियः) प्रज्ञाः (कीर्तिम्) यशः (इन्द्रियम्) ऐश्वर्यम् (आ) समन्तात् (वहान्) लेट् । वहेत् । प्रापयेत् (मह्यम्) उपासकाय । अन्यत् पूर्ववत् ॥

आयं गौः पृश्निरऋसीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च
प्रयन्तस्वः ॥ ४ ॥

आ । अयम् । गौः । पृश्निः । अऋसीत् । असदत् । मातरम् ।
पुरः ॥ पितरम् । च । प्र-यन् । स्वः ॥ ४ ॥

भाष्यार्थ—(अयम्) यह (गौः) चलने वा चलाने वाला, (पृश्निः) रसों-वा प्रकाश का छूने वाला सूर्य (आ अऋसीत्) घूमता हुआ है, (च) और (पितरम्) पालन करने वाले (स्वः) आकाश में (प्रयन्) चलता हुआ (पुरः) सन्मुख होकर (मातरम्) सब की बनाने वाली पृथिवी माता को (असदत्) व्यापा है ॥ ४ ॥

भावार्थ—यह सूर्य अन्तरिक्ष में घूमकर आकर्षण, वृष्टि आदि व्या-
पारों से पृथिवी आदि लोकों का उपकार करता है ॥ ४ ॥

मन्त्र ४—६ आचुके हैं—अ० ६ । ३१ । १—३, वहां सविस्तार अर्थ
देखो ॥

अन्तश्चरति रोचुना अस्य प्राणादपानतः । व्यख्यन्महिषः
स्वः ॥ ५ ॥

अन्तः । चरति । रोचुना । अस्य । प्राणात् । अपानतः ॥
वि । अख्यत् । महिषः । स्वः ॥ ५ ॥

भाष्यार्थ—(प्राणात्) भीतर के श्वास के पीछे (अपानतः) बाहर
को श्वास निकालते हुये (अस्य) इस [सूर्य] की (रोचुना) रोचक
ज्योति (अन्तः) [जगत् के] भीतर (चरति) चलती है, और वह (महिषः)
बड़ा सूर्य (स्वः) आकाश को (वि) विविध प्रकार (अख्यत्) प्रकाशित
करता है ॥ ५ ॥

भावार्थ—जैसे सब प्राणी श्वास प्रश्वास से जीवित रहकर
चेष्टा करते हैं, वैसे ही सूर्य प्रकाश का ग्रहण और त्याग करके लोकों को
प्रकाशित करता है ॥ ५ ॥

४—६ । एते मन्त्रा व्याख्याताः—अ० ६ । ३१ । १—३ ॥

त्रिंशद् धामा वि राजति वाक् पतुङ्गे अशिश्नियत् । प्रति
वस्तोरहद्युभिः ॥ ६ ॥

त्रिंशत् । धाम । वि । राजति । वाक् । पतुङ्गः । अशिश्नियत् ॥
प्रति । वस्तोः । अहः । व्यु-भिः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(पतङ्गः) चलने वाला वापेश्वर्यवाला सूर्य (त्रिंशद् धामा)
तीस धामों पर [दिन रात्रि के तीस मुहूर्तों पर] (वस्तोः, अहः) दिन दिन
(व्युभिः) अपनी किरणों और गतियों के साथ (प्रति) प्रत्यक्ष रूप से (वि)
विविध प्रकार (राजति) राज करता वा चमकता है, (वाक्) इस वचन ने
[उस सूर्य में] (अशिश्नियत्) आश्रय लिया है ॥ ६ ॥

भावार्थ—यह बात स्वयं सिद्ध है कि यह सूर्य सर्वदा सब ओर
चमकता रहकर अपनी परिधि के सब लोकों को गमन, आकर्षण, विकर्षण,
वृष्टि, शीत, ताप आदि द्वारा स्थिर रखता है ॥ ६ ॥

शुक्तम् ४८ ॥

१—७ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १—३ गायत्री; ४ पथ्या बृहती; ५, ७ सतः
पङ्क्तिः ; ६ निचृद् बृहती छन्दः ॥

ईश्वरोपासनोपदेशः—ईश्वर की उपासना का उपदेश ॥

यच्छुक्रा वाचुमारुहन्तर्हि सं सिषासथः । सं देवा अमदन्
वृषा ॥ १ ॥

[सूचना—मन्त्र १—३ ऋग्वेद आदि अन्य वेदों में नहीं हैं, और इन
का पदपाठ भी गवर्नमेन्ट बुकडिपो बम्बई के पुस्तक में नहीं है, आगे
सूचना—शुक्त ४८ मन्त्र १—३ देखो ॥]

यत् । शुक्राः । वाचुस् । आरुहन् । अन्तर्हिम् । सिषासथः ॥
सम् । देवाः । अमदन् । वृषा ॥ १ ॥

भाषार्थ—(यत्) जब (वृषा) बलवान् परमेश्वर (सिषासथः)

१—(यत्) यदा (शुक्राः) समर्थाः (वाचः) वाणीम् (आरुहन्)

दानको इच्छा करने वाला [इन्द्रा], [तव] (शक्राः) समर्थ (देवाः)
विद्वानों ने (वाचम्) वाणी [वेद वाणी] को (अन्तरिक्षम्) हृदय आकाश में
(आरुहन्) बोया और (सम्) ठीक रीति से (अमदन्) आनन्द पाया ॥ १ ॥

भाषार्थ—परमात्मा को दी हुयी वेदवाणी को पाकर विद्वान् लोग
समर्थ होकर आनन्द पावें ॥ १ ॥

सूचना—पं० सेवक लाल कृष्णदास परिशोधित संहिता में इस
मन्त्र का यह पाठ है—

यच्चक्रं वाच आरुहन् नन्तरिक्षं सिषासतीः ।

सं देवो अमदुद् वृषा ॥ १ ॥

भाषार्थ—(यत्) जब (अन्तरिक्षम्) हृदय आकाश को (सिषासतीः)
सेवने की इच्छा करती हुई (वाचः) वाणियां (शक्रम्) समर्थ [जीव] को
(आरुहन्) प्रकट हुई, [तव] (देवः) विजय चाहने वाले (वृषा) बलवान्
पुरुष ने (सम्) ठीक ठीक (अमदत्) आनन्द पाया ॥ १ ॥

भाषार्थ—जब मनुष्य हृदय के भाव प्रकट करने के लिये परमेश्वर
नियम से बोलने की शक्ति पाता है, तब वह व्यवहारों की सिद्धि करके सुखी
होता है ॥ १ ॥

शुक्रो वाचमधृष्टायारुवाचो अधृष्टुहि । मंहिष्ठु आ मदुर्दिवि

[सूचना—पदपाठ के लिये मन्त्र १ देखो] ॥

शुक्रः । वाचम् । अधृष्टाय । उरुवाचः । अधृष्टुहि ॥

बीजवत् स्थापितवन्तः (अन्तरिक्षम्) हृदयाकाशं प्रति (सिषासथः) शीङ्-
शपिरुगमि० । उ० ३ । ११३ । षणु दाने—सन्नि अथप्रत्ययः । दानेच्छुकः—आप्तीत्
इति शेषः (सम्) सम्यक् (देवाः) विद्वान्सः (अमदन्) आनन्दं प्राप्नुवन्
(वृषा) बलिष्ठः परमेश्वरः ॥

१—(यत्) यदा (शक्रम्) समर्थ जीवम् (वाचः) वाणयः (आरुहन्)
प्रादुरभवन् (अन्तरिक्षम्) हृदयाकाशम् (सिषासतीः) षणु सम्भक्तौ, सन्,
शत्, डीप् । सेवितुमिच्छन्त्यः (सम्) सम्यक् (देवः) विजिगीषुः (अमदत्)
हर्षं प्राप्नोत् (वृषा) बलवान् पुरुषः ॥

मंहिष्ठः । आ । मदद्दिवि ॥ २ ॥

भाषार्थ—[हे विद्वान् !] (शक्रः) शक्तिमान् तू (उरुवाचः) बहुत बड़ी वाणी वाले [परमेश्वर] की (वाचम्) वाणी को (अधृष्टाय) डरे हुये पुरुष के लिये (अधृष्टुहि) मत शक्तिहीन कर । वह [परमेश्वर] (मदद्दिवि) दीनता जीतने में (आ) सब ओर से (मंहिष्ठः) अत्यन्त उदार है ॥ २ ॥

भावार्थ—विद्वान् पुरुष दीन होत पुरुषों के सुधार के लिये संकोच छोड़ कर शक्तिमती वेदवाणी का उपदेश करें, क्योंकि परमात्मा उद्योगी के लिये महादानी है ॥ २ ॥

सूचना—पं० सेवक लाल कृष्णादास परिशोधित संहिता में इस मन्त्र का यह पाठ है—

शक्रं वाचाभिष्टुहि घोरं वाचाभिष्टुहि ।

मंहिष्ठ आ मदद्दिवि ॥ २ ॥

भाषार्थ—[हे विद्वान् !] (वाचा) वाणी से (शक्रम्) शक्तिमान् [परमेश्वर] की (अभिष्टुहि) सब ओर से बड़ाई कर, (वाचा) वाणी । से (घोरम्) भयङ्कर [विघ्ननाशक] की (अभिष्टुहि) सब प्रकार स्तुति कर । (मंहिष्ठः) वह अत्यन्त उदार (दिवि) जीतने की इच्छा में (आ) सब ओर से (मदत्) आनन्द दाता है ॥ २ ॥

२—(शक्रः) शक्तिमांस्त्वम् (वाचम्) वाणीम् (अधृष्टाय) अधृष्टाय प्रागल्भ्ये—क । अप्रागल्भ्याय । भयभीताय (उरुवाचः) विस्तीर्णवाणीयुक्तस्य परमेश्वरस्य (अधृष्टुहि) नञ् + धृष शक्तिबन्धे—लोट् । नञ् । पा० २ । २ । ६ । इति नञ् तत्पुरुषसमासः । नञो नलोपस्तिङित्त्वे । वा० । पा० २ । २ । ६ । तिङ्ङा सह समासे नञो नलोपः । शक्तिहीनां मा कुरु (मंहिष्ठः) अतिशयेन दाता (आ) समन्तात् (मदद्दिवि) प्रातस्तेष्वम् । उ० ५ । ५६ । मदी हर्षग्लेपनयोः—अरन्, ग्लेपनं, दैन्यम् + दिवु विजिगीषायाम्—डिवि । दैन्यस्य विजिगीषायाम् ॥

२—(शक्रम्) शक्तिमन्तं परमात्मानम् (वाचा) वाण्या (अभिष्टुहि) सर्वतः प्रशंस (घोरम्) भयङ्करम् । विघ्ननाशकम् (वाचा) (अभिष्टुहि) (मंहिष्ठः) अतिशयेन दाता (आ) समन्तात् मदत् सर्वचतुर्पद्वेहत् । उ० २ । ८५ । मदी तर्पणे—अतिप्रत्ययः । आनन्दयिता (दिवि) विजिगीषायाम् ॥

भावार्थ—मनुष्य अनेक विचारों प्राप्त कर के जगदीश्वर परमात्मा के गुणों का ग्रहण करके संसार में विजयी होकर सुख पावे ॥ २ ॥

शुक्रो वाचमधृष्णुहि धामधर्मन् वि राजति । विमदन्
बुहिरासरन् ॥ ३ ॥

[सूचना—पदपाठ के लिये मन्त्र १ देखो] ॥

शुक्रः । वाचम् । अधृष्णुहि । धाम । धर्मन् । वि । राजति ॥
विमदन् । बुहिः । आसरन् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्य !] (शक्रः) शक्तिमान् तू (वाचम्) वाणी [वेदवाणी] को (अधृष्णुहि) मत शक्तिहीन कर, वह [परमात्मा] (विमदन्) विशेष रीति से आनन्द करता हुआ, (बुहिः) उत्तम आसन (आसरन्) पाता हुआ (धाम) धाम धाम [जगह जगह] और (धर्मन्) धर्म धर्म [प्रत्येक धारण करने योग्य कर्तव्य व्यवहार] में (वि राजति) विराजता है ॥ ३ ॥

भावार्थ—समर्थ विद्वान् पुरुष वेदवाणी के उपदेश से शक्ति बढ़ावे, वह आनन्द स्वरूप परमात्मा अन्तर्यामी होकर सब को शक्ति देता है ॥ ३ ॥

सूचना—प० सेवकलाल कृष्णदास परिशोधित संहिता में इस मन्त्र का यह पाठ है—

शुक्रं वाचाभि ष्टुहि धामन्धामन् विराजति ।
विमदन् बुहिरा सन् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्य !] (वाचा) वाणी से (शक्रम्) शक्तिमान् [परमेश्वर] की (अभि ष्टुहि) सब ओर से बढ़ाई कर, वह [परमात्मा] (विमदन्)

३—(शक्रः) शक्तिमास्त्वम् (वाचम्) वेदवाणीम् (अधृष्णुहि) म० २ । शक्तिहीनां मा कुरु (धाम) धाम्नि धाम्नि । प्रत्येकस्थाने (धर्मन्) धर्मणि धर्मणि । प्रत्येकधारणीये कर्तव्ये व्यवहारे (वि) विविधम् (राजति) शोभते (विमदन्) विशेषेण हृष्यन् (बुहिः) उत्तमासनम् (आसरन्) प्राप्नुवन् ॥

३—(शक्रम्) शक्तिमन्तं परमात्मानम् (वाचा) (अभि ष्टुहि) (धाम)

विशेष रीति से आनन्द करता हुआ (बहिः) उत्तम आसन पर (आ सदन) बैठा हुआ (धामन् धामन्) धाम धाम [जगह जगह] में (वि राजति) विराजता है ॥ ३ ॥

भावार्थ—मनुष्य घट घट वाली परमात्मा को सदा ध्यान रख कर अपनी अवस्था सुधारता रहे ॥ ३ ॥

तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः । अभि वृत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवासहे ॥ ४ ॥

तम् । वः । दस्मम् । ऋति-सहम् । वसोः । मन्दानम् । अन्धसः ॥ अभि । वृत्सम् । न । स्वसरेषु । धेनवः । इन्द्रम् । गीः-भिः । नवासहे ॥ ४ ॥

भावार्थ—[हे मनुष्यो !] (वः) तुझारे लिये (तम्) उस (दस्मम्) दर्शनीय, (ऋतिषहम्) शत्रुओं के हराने वाले, (वसोः) धन से और (अन्धसः) अज्ञ से (मन्दमानम्) आनन्द देने वाले (इन्द्रम्) इन्द्र [परम ऐश्वर्य वाले परमात्मा] को (गीर्भिः) वाणियों से (अभि) सब प्रकार (नवासहे) हम सराहते हैं, (न) जैसे (धेनवः) गौयें, (स्वसरेषु) घरों में [वर्तमान] (वृत्सम्) बछड़े को [हिङ्गुकारती हैं] ॥ ४ ॥

भावार्थ—जो परमात्मा अनेक धन और अन्न आदि देकर हमें तृप्त करता है, उसे ऐसी प्रीति से हम स्मरण करें, जैसे गौयें दोहने के समय घर में बंधे छोटे बच्चों को पुकारती हैं ॥ ४ ॥

मन्त्र ४-७ ऊपर आचुके हैं—अ० २० । ६ । १—४ ॥

द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुंरुभोजसम् । सुमन्तं वाजं शुतिनं सहस्रिणं मधू गोमन्तमीमहे ॥ ५ ॥

धामन्) । धामनि धामनि । प्रत्येकस्थाने (वि) विशेषेण (राजति) शोभते (विमदन्) विशेषेण हृष्यन् (बहिः) उत्तमासनम् (आ सदन) आतिष्ठन् ॥

४-७ । पते मन्त्रा व्याख्याताः—अ० २० । ६ । १—४ ॥

द्युसम् । सु-दानुम् । तविषीभिः । आ-वृतम् । गिरिम् । न ।
 पुरु-भोजसम् ॥ सु-मन्तम् । वाजम् । श्रुतिनम् । सहस्त्रिणम् ।
 मक्षु । गो-मन्तम् । ईमहे ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(द्युसम्) व्यवहारों में गति वाले, (सुदानुम्) बड़े दानी,
 (तविषीभिः) सेनाओं से (आवृतम्) भरपूर, (गिरिम् न) मेष के समान
 (पुरुभोजसम्) बहुत पालन करने वाले, (सुमन्तम्) अन्न वाले, (वाजम्)
 बल वाले, (श्रुतिनम्) सैकड़ों उत्तम पदार्थों वाले, (सहस्त्रिणम्) सहस्रों
 श्रेष्ठ गुण वाले, (गोमन्तम्) उत्तम गौओं वाला [शूर पुरुष] को (मक्षु)
 शीघ्र [इन्द्र परमात्मा से] (ईमहे) हम मांगते हैं ॥ ५ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमात्मा से प्रार्थना करके प्रयत्न करें कि वे अपने
 सन्तानों अधिकारियों और प्रजाजनों सहित शूर वीर होकर व्यवहार कुशल
 हों ॥ ५ ॥

तत् त्वा यामि सुवीर्यं तद् ब्रह्म पूर्वचित्तये । येन यतिभ्यो
 भृगवे धने हि ते येन प्रस्कण्वमाविथ ॥ ६ ॥

तत् । त्वा । यामि । सु-वीर्यम् । तत् । ब्रह्म । पूर्व-चित्तये ॥
 येन । यति-भ्यः । भृगवे । धने । हि ते । येन । प्रस्कण्वम् ।
 आविथ ॥ ६ ॥

भाषार्थ—[हे परमात्मन् !] (त्वा) तुझ से (तत्) वह (सुवीर्यम्)
 बड़ा वीरत्व और (तत्) वह (ब्रह्म) बढ़ता हुआ अन्न (पूर्वचित्तये) पहिले
 ज्ञान के लिये (यामि) मैं मांगता हूँ । (येन) जिस [वीरत्व और अन्न] से
 (धने हि ते) धन के स्थापित होने पर (यतिभ्यः) यतियों [यत्नशीलों]
 के लिये (भृगवे=भृगुम्) परिपक्व ज्ञानी को और (येन) जिस से (प्रस्कण्वम्)
 बड़े बुद्धिमान् पुरुष को (आविथ) तू ने बचाया है ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को परमात्मा की उपासना कर के पुरुषार्थ के साथ
 पराक्रमी, अन्नवान् और धनी होना चाहिये, जिसके अनुकरण से प्रयत्न शील
 पुरुष सुरक्षित रहें ॥ ६ ॥

येनां समुद्रमसृजो महीरुपस्तदिन्द्र वृष्णि ते शवः । सद्यः सो
अस्य महिमा न संनश्चे यं क्षोणीरनुचक्रदे ॥ ७ ॥

येन । समुद्रम् । असृजः । महीः । अपः । तत् । इन्द्र ।
वृष्णि । ते । शवः ॥ सद्यः । सः । अस्य । महिमा । न ।
सम्-नश्चे । यम् । क्षोणीः । अनु-चक्रदे ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(येन) जिस [बल] से (समुद्रम्) समुद्र में (महीः)
शक्ति वाले (अपः) जलों को (असृजः) तू ने उत्पन्न किया है, (इन्द्र)
हे इन्द्र ! [परम ऐश्वर्यवान् जगदीश्वर] (तत्) वह (ते) तेरा (वृष्णि)
पराक्रम युक्त (शवः) बल है । (सद्यः) अभी (अस्य) उस [परमात्मा] की
(सः) वह (महिमा) महिमा [हम से] (न) नहीं (संनश्चे) पाने योग्य
है, (यम्) जिस [परमात्मा] को (क्षोणीः) लोकों ने (अनुचक्रदे)
निरन्तर पुकारा है ॥ ७ ॥

भावार्थ—जिस परमात्मा ने मेघमण्डल में और पृथिवी पर
जलादि पदार्थ और सब लोकों को उत्पन्न करके अपने वश में रक्खा है,
उस की महिमा की सीमा को सृष्टि में कोई भी नहीं पा सकता ॥ ७ ॥

सूक्तम् ५० ॥

१—२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ आर्ष्यनुष्टुप्, २ सतः पङ्क्तिः ॥

परमेश्वरस्य महिमोपदेशः—परमेश्वर की महिमा का उपदेश ॥

कन्न व्यो अतुसीनां तुरो गुणीतु मर्त्यैः । नही न्वस्य महिमा-
नमिन्द्रियं स्वर्गुणान्तं आनुशुः ॥ १ ॥

कत् । नव्यैः । अतुसीनाम् । तुरः । गुणीतु । मर्त्यैः ॥ नहि ।
नु । अस्य । महिमानम् । इन्द्रियम् । स्वः । गुणान्तः ।
आनुशुः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(अतस्तीनाम्) सदा चलती हुई [सृष्टियों] के (तुरः) वेग देने वाले [परमात्मा] के (नव्यः) अधिक नवीन कर्म को (मर्त्यः) मनुष्य (कत्) कैसे (गृणीत) बता सके ? (जु) क्या (अस्य) उस की (महिमानम्) महिमा और (इन्द्रियम्) इन्द्रपन [परम ऐश्वर्य] को (गृणन्तः) वर्णन करते हुये पुरुषों ने (स्वः) आनन्द (नहि) नहीं (आनशुः) पाया है ॥ १ ॥

भाषार्थ—यद्यपि अल्पज्ञ मनुष्य सब सृष्टियों के चलाने वाले जगदीश्वर के अनन्त गुणों को नहीं जान सकता, तो भी वह उसको महिमा और परम ऐश्वर्य को विचारते विचारते और पुरुषार्थ करते करते अवश्य आनन्द पाया है ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—८। ३। १३, १४ ॥

कदु^१ स्तुवन्त^१ ऋतयन्त^१ देवतु ऋषिः^१ को विप्र^१ ओहते^१ । कुदा^१ हव^१ मघवन्निन्द्र^१ सुन्वतः^१ कदु^१ स्तुवत^१ आ ग^१मः ॥ २ ॥

कत् । ऊं इति । स्तुवन्तः । ऋतु-यन्तु । देवता । ऋषिः ।
कः । विप्रः । ओहते ॥ कुदा । हवम् । मघ-वन् । इन्द्र ।
सुन्वतः । कत् । ऊं इति । स्तुवतः । आ । गमः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(कत् उ) कैसे ही (स्तुवन्तः) स्तुति करने वाले लोगों ने

१—(कत्) कथम् (नव्यः) अ० २०। ३६। ७ । नवीयः । नवतरं कर्म (अतस्तीनाम्) अत्यविचमितमि० । उ० ३ । ११७ । अत सातत्यगमने—असच्, गौरादित्वाद् डीष् । संततगामिनीनां सृष्टीनाम् (तुरः) तुर वेगे—क्लिप् । प्रेरकस्य परमेश्वरस्य (गृणीत) गृ विज्ञापे—लिङ् । गारयेत् । वर्णयेत् (मर्त्यः) मनुष्यः (नहि) न कदापि (जु) प्रश्ने (अस्य) परमेश्वरस्य (महिमानम्) महत्त्वम् (इन्द्रियम्) इन्द्रलिङ्गम् । परमैश्वर्यम् (स्वः) सुखम् (गृणन्तः) स्तुवन्तो जनाः (आनशुः) अश्नोतेर्लिटि परस्मैपदं छान्दसम् । प्रापुः ॥

२—(कत्) कथम् (उ) पद्य (स्तुवन्तः) स्तुतिं कुर्वन्तः (ऋतयन्त) सुप आत्मनः वयच् । पा० ३ । १ । ८ । ऋत—वयच्, आत्मनेपदत्वम्, ईत्वं दीर्घा-

(ऋतयन्त) सत्य धर्म को चाहा है ? (देवता) विद्वानों में (कः) कौन (ऋषिः) ऋषि [धर्म का साक्षात् करने वाला], (विप्रः) बुद्धिमान् पुरुष (ओदते) सब प्रकार से विचार करे ? (मघवन्) हे अति पूजनीय ! (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले परमात्मन्] (सुन्वतः) तत्त्व निबोधने वाले, (स्तुवतः) स्तुति करने वाले को (हवम्) पुकार को (कदा) कब और (कत्) कैसे (उ) निश्चय कर के (आ) सब प्रकार से (गमः) तू पहुंचा है ॥ २ ॥

भावार्थ—जब ऋषि महात्मा भी परमात्मा को ठीक ठीक नहीं पहुंचते, तौ हम अत्यन्त होकर उस तक कैसे पहुंचे ? हम ऐसी शक्का करने लगते हैं । परन्तु परमात्मा अपनी शक्तिमत्ता से अपने भक्तों की पुकार सदा सुनता है, यह सोच कर हम अवश्य उसके लिये पुरुषार्थ करें ॥ २ ॥

भगवान् यास्कमुनि ने कहा है—धर्म के साक्षात् करने वाले ऋषि हुये, उन्होंने ने झोटों, धर्म के साक्षात् न करने वालों को उपदेश द्वारा मन्त्र दिये थे—निरु० १। २० ॥

सूक्तम् ५१ ॥

१—४ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ पथ्या बृहती; २ आर्षी पङ्क्तिः ३ निचृत् पथ्या बृहती; ४ सतः पङ्क्तिः ॥

परमेश्वरोपासनोपदेशः—परमेश्वर की उपासना का उपदेश ॥

अभि प्र वः सुरार्धसुमिन्द्रमर्च यथा विदे । यो जस्तिवृभ्यो मघवा पुरुवसुः सुहस्त्रेणैव शिस्तिति ॥ १ ॥

भावोऽहभावश्च च्छान्दसः । अतीयन् । ऋतंसत्यधर्ममैच्छन् (देवता) देवतासु । विद्वत्सु (ऋषिः) मन्त्रार्थद्रष्टा । ऋषिर्दर्शनात्—निरु० १। ११ । साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुस्तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रा-न्तसम्प्रादुः—निरु० १। २० (कः) (विप्रः) मेधावी (ओदते) समन्ताद्बृहते तर्कयति (कदा) कस्मिन् काले (हवम्) आह्वानम् (मघवन्) हे बहुपूजनीय (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (सुन्वतः) तत्त्वरसं संस्कुर्वतः (कत्) कथम् (उ) एव (स्तुवतः) स्तुतिं कुर्वतः पुरुषस्य (आ) समन्तात् (गमः) अगमः । प्राप्तवानसि ॥

अभि । प्र । वः । सु-राधंसम् । इन्द्रम् । अर्च । यथा ।
विदे ॥ यः । जरितृभ्यः । मघवा । पुरु-वसुः । सहस्रेण-इव ।
शिक्षति ॥ १ ॥

भाषार्थ—[हे विद्वान् !] (सुराधंसम्) सुन्दर धनों के देने वाले
(इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमेश्वर] को (अभि) सब ओर से (प्र)
अच्छे प्रकार (वः) स्वीकार कर और (यथा) जैसा (विदे) वह है
[वैसा उसे] (अर्च) पूज । (यः) जो (मघवा) पूजनीय, (पुरुवसुः) बड़ा
धनी [परमेश्वर] (जरितृभ्यः) स्तुति करने वालों को (सहस्रेण इव)
सहस्र प्रकार से (शिक्षति) देता है ॥ १ ॥

भावार्थ—जिस परमात्मा ने हमें अनेक सुख दिये हैं, उस के गुणों को
मनुष्य यथावत् जानकर उसकी सदा उपासना करे ॥ १ ॥

मन्त्र १, २ ऋग्वेद में हैं—८ । ४६ । १, २ [सायणभाष्य परिशिष्ट,
वालखिल्य १ । १, २] । सामवेद—उ० २ । १ । १३ तथा मन्त्र १ पू० ३ । ५ । ३ ॥

शुतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे ।

गिरेरिव प्रा रसा अस्य पिन्विरे दन्नाणि पुरुभोजसः ॥ २ ॥

शुतानीका-इव । प्र । जिगाति । धृष्णु-या । हन्ति । वृत्राणि

दाशुषे ॥ गिरेः-इव । प्र । रसाः । अस्य । पिन्विरे । दन्नाणि ।

पुरु-भोजसः ॥ २ ॥

१—(अभि) सर्वतः (प्र) प्रकर्षेण (वः) वृज् वरणे स्वीकरणे—
लोडर्थे लुङ् । मन्त्रे घस० । पा० २ । ४ । ८० । च्लेलुक् । बहुलं छन्दस्य-
माङ्गयोगेऽपि । पा० ६ । ४ । ७५ । अङभावः । वृणु । स्वीकुरु (सुराधंसम्)
सु शोभनानि राधांसि धनानि यस्मात् तम् । बहुधनदातारम् (इन्द्रम्)
परमैश्वर्यवन्तं परमात्मानम् (अर्च) पूजय (यथा) येन प्रकारेण (विदे)
अ० २० । २२ । ४ । विद्यते सः (यः) परमेश्वरः (जरितृभ्यः) स्तोतृभ्यः
(मघवा) पूजनीयः (पुरुवसुः) प्रभूतधनः (सहस्रेण) बहुप्रकारेण (इव)
पादपूरणः (शिक्षति) ददाति—निघ्न० ३ । २० ॥

सू० ५१ [६८३]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,११८)

भाषार्थ—(शतानीका इव) सैकड़ों सेना वाले [सेनापति] के समान (धृष्णुया) निर्भय [परमेश्वर] (प्र जिगाति) आगे बढ़ता है और (वृत्राणि) शत्रुओं को (दाशुषे) दाता [आत्मदानी उपासक] के लिये (हन्ति) मारता है । (गिरेः) पहाड़ से (रसाः इव) जलों के समान (अस्य) इस (पुरुभोजसः) बहुत भोजन वाले [परमेश्वर] के (दत्राणि) दानों को (प्र पिन्विरे) सींचते रहते हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमात्मा में आत्म समर्पण कर के धन धान्य आदि बढ़ा कर आनन्द भोगें ॥ २ ॥

प्र सु श्रुतं सुरार्धसमर्चा शक्रमभिष्टये । यः सुन्वते स्तुवते काम्यं
वसुं सुहस्रेणैव मंहते ॥ ३ ॥

प्र । सु । श्रुतम् । सु-रार्धसम् । अर्चम् । शक्रम् । अभिष्टये ॥ यः ।
सुन्वते । स्तुवते । काम्यम् । वसुं । सुहस्रेण-इव । मंहते ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(सु श्रुतम्) बड़े विख्यात, (सुरार्धसम्) सुन्दर धनो के देने वाले, (शक्रम्) शक्तिमान् [परमेश्वर] को (अभिष्टये) अभीष्ट सिद्ध के लिये (प्र अर्चम्) अच्छे प्रकार पूज । (यः) जो [परमात्मा] (सुन्वते)

२—(शतानीका) विभक्तेराकारः । शतान्यनेकानि सेनादलानि यस्य स शतानीकः सेनापतिः (इव) यथा (प्र) (जिगाति) गच्छति—निघ० २ । १४ (धृष्णुया) सुपां सुलुक् । पा० ७ । १ । ३६ । विभक्तेर्याच । धृष्णुः । निर्भयः परमेश्वरः (हन्ति) नाशयति (वृत्राणि) आवरकान् । शत्रून् (दाशुषे) आत्मसमर्पकाय जनाय (गिरेः) पर्वतात् (इव) यथा (प्र) (रसाः) जलानि (अस्य) (पिन्विरे) पिवि प्रीणते सेचने च—लङर्थे लिट् । सिञ्चन्ति (दत्राणि) अमिचिमिशसिभ्यः क्त्रः । उ० ४ । १६४ । डु दाञ् दाने—क्त्र । दो दद् घोः । पा० ५ । ४ । ४६ । इति दद्भावः, यद्वा । दद् दाने—क्त्र । दानानि (पुरुभोजसः) बहुभोजनयुक्तस्य ॥

३—(प्र) प्रकर्षेण (सु) सुष्ठु (श्रुतम्) विख्यातम् (सुरार्धसम्) म० १ । बहुधनदातारम् (अर्चम्) (शक्रम्) शक्तिमन्तम् (अभिष्टये) अभीष्ट-सिद्धये (यः) परमेश्वरः (सुन्वते) तत्त्वं संस्कुर्वते (स्तुवते) स्तुतिं कुर्वते

तत्त्व निचोड़ने वाले, (स्तुवते) स्तुति करने वाले को (काम्यम्) मन भावना (वसु) धन (सहस्रेण इव) सहस्र प्रकार से (मंहते) देता है ॥ ३ ॥

भावार्थ—परमात्मा अपने अनन्त भण्डार से अपने सेवकों की कामनायें पूरी करता है ॥ ३ ॥

मन्त्र ३, ४ ऋग्वेद में है—८ । ५० । १, २ [साधणभाष्य परिशिष्ट, बालकिल्य] । १, २ ॥

शतानीका हेतयो अस्य दुष्टरा इन्द्रस्य समिषो महीः ।

गिरिर्न भुजमा मघवत्सु पिन्वते यदी सुता अमन्दिषुः ॥ ४ ॥

शत-अनीकाः । हेतयः । अस्य । दुस्तराः । इन्द्रस्य । सम-इषः ।

महीः ॥ गिरिः । न । भुजमा । मघवत्-सु । पिन्वते ।

यत् । ईम् । सुताः । अमन्दिषुः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(अस्य) इस (इन्द्रस्य) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] की (महीः) पूजनीय (समिषः) यथावत् इच्छायें (शतानीकाः) सैकड़ों सेना दलों में वर्तमान (हेतयः) वाणों के समान (दुष्टराः) दुस्तर [अजेय] हैं । (गिरिः न) मेघ के समान, वह [परमात्मा] (भुजमा) भोग्य पदार्थों को (मघवत्सु) गति वालों पर (पिन्वते) सींचता है, (यत्) जबकि (सुताः) पुत्र [के समान उपासक] (ईम्) प्राप्ति योग्य [परमेश्वर] को (अमन्दिषुः) प्रसन्न कर चुकें ॥ ४ ॥

(काम्यम्) कमनीयम् । मनोहरम् । (वसु) धनम् । (सहस्रेण इव) म० १ (मंहते) ददाति—निघ० ३ । २० ॥

४—(शतानीकाः) शतेषु सैन्येषु वर्तमाना यथा (हेतयः) वाणाः (अस्य) (दुष्टराः) दुःस्त्रेण तरणीयाः । अजेयाः (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (समिषः) सम्यग् इच्छाः (महीः) महत्यः (गिरिः) मेघः—निघ० १ । १० (न) यथा (भुजमा) इषियुधीन्धि० । उ० १ । १४५ । भुज पालनाभ्यवहारयोः—मक् । भुज्मानि । भोग्यवस्तूनि (मघवत्सु) मघ मघी गतौ आरम्भे च—अच् । गतिमत्सु । उद्योगिषु (पिन्वते) सिञ्चति (यत्) यदा (ईम्) ई गतिकाभ्यादिषु—किप् । प्राप्तव्यं परमेश्वरम् (सुताः) पुत्रा इवोपसकाः (अमन्दिषुः) प्रसन्नं कृतवन्तः ॥

भावार्थ—परमात्मा की अनन्त शक्तियां दुष्टों वा दोषों को इस प्रकार नाश करती हैं, जैसे बड़े सेनापति के हथियार। और जो उद्योगी उपासक उसकी आज्ञा मानते हैं, उन को वह मेह के समान अवश्य अत्यन्त सुख देता है ॥ ४ ॥

सूक्तम् ५२ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ पथ्या बृहती ॥

परमात्मोपासनोपदेशः—परमात्मा की उपासना का उपदेश ॥

वयं घं त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तवर्हिषः ।

पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते ॥ १ ॥

वयम् । घ । त्वा । सुत-वन्तः । आपः । न वृक्त-वर्हिषः ॥

पवित्रस्य । प्र-स्रवणेषु । वृत्र-हन् । परि । स्तोतारः । आसते ॥

भाषार्थ—(वृत्रहन्) हे शत्रुनाशक ! [परमात्मन्] (सुतवन्तः) तत्त्व के धारण करने वाले, (वृक्तवर्हिषः) हिंसा त्यागने वाले [अथवा वृद्धि पाने वाले विद्वान्], (स्तोतारः) स्तुति करने वाले (वयम्) हम लोग (घ) निश्चय करके (त्वाम्) तुझ को (परि आसते) सेवते हैं, (पवित्रस्य) शुद्ध स्थान के (प्रस्रवणेषु) झरनों में (आपः न) जैसे जल [ठहरते हैं] ॥ १ ॥

भावार्थ—तत्त्वग्राही विद्वान् लोग उस परमात्मा के ही ध्यान में शान्ति पाते हैं, जैसे बहता हुआ पानी शुद्ध चौरस स्थान में आकर ठहर जाता है ॥ १ ॥

यह तृच ऋग्वेद में है—८ । ३३ । १-३ ; सामवेद उ० २ । २ । तृच १२ और आगे है—अथर्व० २० । ५७ । १४-१६, तथा मन्त्र १ साम० पू० ३ । ७ । ६ ॥

१—(वयम्) उपासकाः (घ) एव (त्वा) त्वाम् (सुतवन्तः) तत्त्वस्य धारकाः (आपः) जलानि (न) यथा (वृक्तवर्हिषः) वृत्रा वृजने-क्त । श्वीदितो निष्ठायाम्-इत् प्रतिषेधः । बृहेर्नलोपश्च । उ० २ । १०६ । बर्हि परिभाषणहिंसाच्छादनेषु-इति यद्वा वृक्त आदाने—क्त + बृहि वृद्धौ-इति, नलोपः । त्यक्तहिंसाः । प्राप्तवृद्धयः । ऋत्विजः-निघ० ३ । १८ (पवित्रस्य) शुद्धदेशस्य (प्रस्रवणेषु) निर्भरेषु (वृत्रहन्) हे शत्रुनाशक (परि) सर्वतः (स्तोतारः) स्तावकाः (परि आसते) उत्तमपुरुषस्य प्रथमपुरुषः । उपास्महे । सेवामहे ॥

स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः ।

कदा सुतं तृषाण ओक् आ गम इन्द्र स्वब्दीव वंसगः ॥२॥

स्वरन्ति । त्वा । सुते । नरः । वसो इति । निरेके । उक्थिनः ॥

कदा । सुतम् । तृषाणाः । ओकः । आ । गमः । इन्द्र ।

स्वब्दी-इव । वंसगः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(वसो) हे श्रेष्ठ । [परमात्मन्] (उक्थिनः) कहने योग्य वचनों वाले (नरः) नर [नेता लोग] (निरेके) निःशङ्क स्थान में (सुते) सार पदार्थ के निमित्त (त्वा) तुझ को (स्वरन्ति) पुकारते हैं—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले परमात्मन्] (कदा) कब (तृषाणः) प्यासे [के समान] तू (सुतम्) पुत्र को (ओकः) घर में (आ गमः) प्राप्त होगा, (स्वब्दी इव) जैसे सुन्दर जल देने वाला मेघ (वंसगः) सेवनीय पदार्थों का प्राप्त कराने वाला [होता है] ॥ २ ॥

भावार्थ—जब मनुष्य सार पदार्थ पाने के लिये परमात्मा की भक्ति निर्भय होकर करता है, परमात्मा उस को इस प्रकार चाहता है जैसे प्यासा जल को, और जगदीश्वर इस प्रकार उस का उपकार करता है, जैसे सूखा के पीछे मेघ आनन्द देता है ॥ २ ॥

कयवैमिधृष्णावा धुषद् वाजं दर्षि सहस्त्रिणाम् ।

पिशङ्गरूपं मघवन् विचर्षणे मुसू गोमन्तमीमहे ॥ ३ ॥

२—(स्वरन्ति) शब्दायन्ते । आह्वयन्ति (त्वा) त्वाम् (सुते) सार-पदार्थनिमित्ते (नरः) मनुष्याः (वसो) हे श्रेष्ठ (निरेके) रेक शङ्कायाम्—अच् । निःशङ्कस्थाने (उक्थिनः) वक्तव्यवचनोपेताः (कदा) (सुतम्) पुत्रम् (तृषाणः) युधिबुधिदशः किञ्च । उ० २ । ६० । अत्र तृषा पिपासा-याम्—आनच्, कित् । पिपासुरिव (ओकः) गृहम् (आ गमः) आगच्छेः (इन्द्र) हे परमेश्वर्यवन् परमात्मन् (स्वब्दी) सु + अप् + ददातेः—क, स्वप्—इति । सु शोभनानाम् अपां जलानां दानवान् मेघः (इव) यथा (वंसगः) अ० १८ । ३ । ३६ । वन संमत्—संप्रत्ययः + गमयतेर्दः । सेवनीय-पदार्थानां प्रापयिता ॥

कण्वेभिः । धृष्णो इति । आ । धृषत् । वाजम् । दर्षि ।
सहस्त्रिणम् ॥ पिशङ्ग-रूपम् । मघ-वन् । वि-चर्षणे । मन्तु ।
गो-मन्तम् । ई-महे ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(धृष्णो) हे निर्भय ! [परमात्मन्] (धृषत्) डढ़ता से
(कण्वेभिः) बुद्धिमानों करके [किये हुये] (सहस्त्रिणम्) सहस्रों आनन्द
वाले (वाजम्) वेग का (आ दर्षि) तू आदर करता है । (मघवन्) हे धन
वाले ! (विचर्षणे) हे दूरदर्शी ! (पिशङ्गरूपम्) अवयवों को रूप देने वाले,
(गोमन्तम्) वेदवाणी वाले [तुम्हें] से (मन्तु) शीघ्र (ईमहे) हम प्रार्थना
करते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—वह परमात्मा परमाणुओं से सूर्य आदि बड़े बड़े लोकों क
बनाने वाला है, उस निर्भय की उपासना से मनुष्य धर्मात्मा होकर निर्भय
होवे ॥ ३ ॥

सूक्तम् ५३ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ पथ्या बृहती छन्दः ॥

सेनानीलक्षणोपदेशः—सेना पति के लक्षणों का उपदेश ॥

क ई वेद सुते सचा पिबन्तं कद् वयो दधे ।

अयं यः पुरो विभिनत्योजसा मन्दानः शिष्यन्धंसः ॥ १ ॥

कः । ईम् । वेद् । सुते । सचा । पिबन्तम् । कत् । वयः ।

दधे ॥ अयम् । यः । पुरः । वि-भिनत्ति । ओजसा । मन्दानः ।

३—(कण्वेभिः) मेधाविभिः (धृष्णो) हे प्रगल्भ (आ) (धृषत्) वर्तमाने
पृषद्बृहन्महजगच्छतृवच्च । ३० १ । ८४ । निधृषा प्रागल्भ्ये—अति, विभक्ते-
र्लुक् । निर्भयत्वेन (वाजम्) वेगम् । पौषम् (दर्षि) डड़ आदरे—तद्, अदादित्थं
छान्दसम् । आद्रियसे । सत्कारेण गृह्णासि (सहस्त्रिणम्) सहस्रहर्षोपेतम् (पिशङ्ग-
रूपम् अ० ६ । ४ । २२ । पिश अवयवे—अङ्गच्+रूप रूपकरणे—अच् ।
अवयवानां रूपकर्तारम् (मघवन्) हे धनवन् (विचर्षणे) अ० २० । ५ । १ ।
हे बृहदशिन (मन्तु) शीघ्रम् (गोमन्तम्) वेदवाणीयुक्तम् (ईमहे) याचामहे ॥

शिप्री । अन्धसः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(कः) कौन (सचा) नित्य मेल के साथ (सुते) तत्त्व रस (पिबन्तम्) पीते हुये (ईम्) प्राप्ति योग्य [सेनापति] को (वेद) जानता है? (कत्) कितना (वयः) जीवन सामर्थ्य [पराक्रम] (दधे) वह रखता है? (अयम्) यह (यः) जो (शिप्री) दृढ़ जावड़े वाला, (अन्धसः) अन्न का (मन्दानः) आनन्द देने वाला [वीर] (ओजसा) बल से (पुरः) दुर्गों को (विभिनत्ति) तोड़ देता है ॥ १ ॥

भावार्थ—जिस पराक्रमी पुरुष के शरीर बल और बुद्धिबल की थाह सामान्य मनुष्य नहीं जानते, वह नीतिज्ञ अन्न आदि पदार्थ एकत्र करके वैरियों को जीतता है ॥ १ ॥

यह तृच ऋग्वेद में है—८। ३३। ७—६, सामवेद—३० ८। २। तृच १५, अग्ने है—अथ० २। ५७। ११—१३, मन्त्र १ सामवेद—पू० ४। १। ५ ॥

दाना मृगो न वारुणः पुरुत्रा चरथं दधे ।

नकिष्ट्वा नि यंसुदा सुते गमो मुहांश्चरस्योजसा ॥ २ ॥

दाना । मृगः । न । वारुणः । पुरु-त्रा । चरथंश्च । दधे ॥

नकिः । त्वा । नि । यस्मत् । आ । सुते । गमः । मुहान् ।

चरसि । ओजसा ॥ २ ॥

भाषार्थ—(न) जैसे (मृगः) जंगली (वारुणः) हाथी (दाना) मद के कारण (पुरुत्रा) बहुत प्रकार से (चरथम्) अपट (दधे) लगाता है ।

१—(कः) सामान्यपुरुषः (ईम्) प्राप्तव्यं सेनापतिम् (वेद) वेत्ति (सुते) सुतम् । तत्स्वरसम् (सचा) समवायेन । नित्यसम्बन्धेन (पिबन्तम्) (कत्) कियत् परिमाणम् (वयः) जीवनसामर्थ्यम् । पराक्रमम् (दधे) लङ्थे लिट् । धारयति (अयम्) (यः) (पुरः) नगराणि । दुर्गाणि (विभिनत्ति) विशेषेण छिनत्ति (ओजसा) बलेन (मन्दानः) अ० २० । ६ । १ । आमोदयिता (शिप्री) अ० २० । ४ । १ । दृढहनुः (अन्धसः) अन्नस्य ॥

२—(दाना) दानेन । मदजलेन (मृगः) वनचरः (न) यथा (वारुणः) गजः (पुरुत्रा) बहुप्रकारेण (चरथम्) शीङ्शपिरुगमि । ३० ३ । ११३ । चरतेः—

[वैसे ही] (नकिः) कोई नहीं (त्वा) तुझे (नि यमत्) रोक सकता,
(सुते) तत्त्व रस को (आ गमः) तू प्राप्त हो, (महान्) महान् होकर तू
(ओजसा) बल के साथ (चरसि) विचरता है ॥ २ ॥

भाषार्थ—जैसे बन का मदमत्त हाथी सब ओर बेरोक घूम कर उपद्रव
मचाता है, वैसे ही नीतिज्ञ सेनापति तत्त्व विचार कर शत्रुओं को शीघ्र
दबावे ॥ २ ॥

यउग्रः सन्ननिष्ठृत स्थिरो रणाय संस्कृतः ।

यदि स्तोतुर्मघवा शृणवद्भवं नेन्द्रो योषत्या गमत् ॥ ३ ॥

यः । उग्रः । । सन् । अनिः-स्तृतः । स्थिरः । रणाय । संस्कृतः ॥

यदि । स्तोतुः । मघ-वा । शृणवत् । हवम् । न । इन्द्रः ।

योषति । आ । ग-मत् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(यः) जो [वीर] (उग्रः) प्रचण्ड, (अनिष्ठृतः) कभी
न हराया गया, (स्थिरः) दृढ़ (सन्) होकर (रणाय) रण के लिये
(संस्कृतः) संस्कार किये हुये है । (यदि) [यदि (मघवा) वह महाधनी
(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला सेनापति] (स्तोतुः) स्तुति करने वाले की
(हवम्) पुकार (शृणवत्) सुने, [तौ] (न योषति) वह अलग न रहे,
[किन्तु] (आ गमत्) आता रहे ॥ ३ ॥

अथप्रत्ययः । संचरणम् (दधे) धरति (नकिः) न कोऽपि (त्वा) त्वाम्
(नि यमत्) नियच्छति (आ) (सुते) तत्त्वरसम् (गमः) प्राप्नुहि (महान्)
(चरसि) (ओजसा) ॥

३—(यः) वीरः (उग्रः) प्रचण्डः (सन्) भवन् (अनिष्ठृतः) अ+
निः+स्तृञ् आच्छादने हिंसायां च—क । स्तृणातिर्वधकर्मा—निधः ० २ । १६ । न
कदापि हिंसितः (स्थिरः) दृढ़ः (रणाय) युद्धाय (संस्कृतः) कृतसंस्कारः ।
सन्नद्धः (यदि) सम्भावनायाम् (स्तोतुः) (मघवा) महाधनी (शृणवत्)
शृणुयात् (हवम्) आह्वानम् (न) निषेधे (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् सेनापतिः
(योषति) यु मिश्रणमिश्रणयोः—लेट् । पृथग् भवेत् (आगमन्) आगच्छेत् ॥

भावार्थ—प्रतापी अजेय, युद्ध कुशल सेनापति प्रजा की पुकार को सदा ध्यान देकर सुनता रहे ॥ ३ ॥

सूक्तम् ५४ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ स्वराड् जगती; २, ३ निचृद् बृहती ॥

राजप्रजाधर्मोपदेशः—राजा और प्रजा के धर्म का उपदेश ॥

विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरं सजुस्ततस्तुरिन्द्रं जजनुश्च
राजसे । क्रत्वा वरिष्ठं वरं आमुर्मुतोग्रमोजिष्ठं तवसं
तरस्विनम् ॥ १ ॥

विश्वाः । पृतनाः । अभि-भूतरम् । नरम् । स-जूः । ततस्तुः ।
इन्द्रम् । जजनुः । च । राजसे ॥ क्रत्वा । वरिष्ठम् । वरं ।
आ-मुर्मुम् । उत । उग्रम् । ओजिष्ठम् । तवसम् ।
तरस्विनम् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(विश्वाः) सद्य (पृतनाः) सङ्ग्रामों के (अभिभूतरम्)
अत्यन्त मिटाने वाले, (क्रत्वा) अपनी बुद्धि से (वरे) श्रेष्ठ व्यवहार में
(वरिष्ठम्) अति श्रेष्ठ, (आमुर्मुम्) शत्रुओं के घेर लेने [वा मार डालने]
वाले, (उग्रम्) प्रचण्ड (ओजिष्ठम्) अत्यन्त पराक्रमी, (तवसम्) महाबली
(उत) और (तरस्विनम्) बड़े उत्साही (नरम्) नर को (राजसे)
राज्य के लिये (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला राजा] को (सजूः) मिलकर

१—(विश्वाः) सर्वाः (पृतनाः) सङ्ग्रामान् (अभिभूतरम्) अभि-
भवते—किप्, तरप् । अत्यर्थम् अभिभवितारं नाशयितारम् (नरम्) नेतारम्
(सजूः) संगत्य (ततस्तुः) तदतिः करोति कर्मा-निरु० ४ । १६ । कृतवन्तः
(इन्द्रम्) परमैश्वर्यवान्तं राजानम् (जजनुः) जनी प्रादुभावे-लिट् । प्रादुष्कृत-
वन्तः (च) (राजसे) राज्ञो दीप्तौ ऐश्वर्यं च—असुन् । राज्याय (क्रत्वा)
कतुना । प्रहया-निघ० ३ । ६ । (वरिष्ठम्) श्रेष्ठतमम् (वरे) श्रेष्ठव्यवहारे
(आमुर्मुम्) भुजेः क्तिच् । उ० ४ । १४ २ । आ+मुर संवेष्टने यद्वा मृ हिंसायाम्-
इप्रत्ययः, कित् । उदोष्ठ्यपूर्वस्य । पा० ७ । १ । १०२ । इत्युत्वम् । आभिमुख्येन

(ततजुः) उन्होंने ने [प्रजाजनों ने] बनाया (च) और (जजनुः) प्रसिद्ध किया है ॥ १ ॥

भावार्थ—प्रजागणों को उचित है कि जो मनुष्य सब में श्रेष्ठ गुणी प्रतापी होवे, उसी को सब मिलकर रक्षा के लिये राजा बनावें ॥ १ ॥

यह तुच ऋग्वेद में है—८ । ६७ [सायणभाष्य ८६] । १०—१२ । कुछ भेद से सामवेद—उ० ३ । १ । तुच १४ । तथा म० १—पू० ४ । ६ । १ ॥

समी^१ रेभासो^२ अस्वरुन्निन्द्रं^३ सोमस्य^४ पीतये^५ ।

स्वर्पतिं^६ यदी^७ वृधे^८ धृतव्रतो^९ होजसा^{१०} समुतिभिः^{११} ॥ २ ॥

सम् । ईम् । रेभासः । अस्वरुन् । इन्द्रम् । सोमस्य । पीतये ॥
स्वः-पतिम् । यत् । ईम् । वृधे । धृत-व्रतः । हि । ओजसा ।
सम् । ऊति-भिः ॥ २ ॥

भावार्थ—(रेभासः) पुकारने वाले [प्रजागण] (सोमस्य) तत्त्व रस के (पीतये) पीने के लिये (यत्) जब (ईम् ईम्) अवश्य प्राप्ति के योग्य (स्वर्पतिम्) सुखके रक्षक (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] को (सम्) मिलकर (अस्वरुन्) पुकारने लगे, [तब] (वृधे) बढ़ती के लिये (धृतव्रतः) नियम धारण करने वाला [वह पुरुष] (हि) निश्चय करके (ओजसा) बल से और (ऊतिभिः) रक्षाओं से (सम्) मित्रकर [उन्हें पुकारने लगा] ॥ २ ॥

वेष्टयितारं मारयितारं वा शत्रूणाम् (उत) अपि च (उग्रम्) प्रचण्डम् (ओजिष्ठम्) ओजस्वितमम् (तवसम्) आशङ्गाद्यच् । बलवन्तम् (तरस्विनम्) वेशवन्तम् । परमोत्साहिनम् ॥

२—(सम्) संगत्य (ईम्) प्राप्तव्यम् (रेभासः) रेभृ शब्दे-अच् असुक् च । शब्दायमानाः प्रजाजनाः (अस्वरुन्) अशब्दयन् । आहुतवन्तः (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं पुरुषम् (सोमस्य) तत्त्वरसस्य (पीतये) पानाय (स्वर्पतिम्) सुखस्य रक्षकम् (यत्) यदा (ईम्) वीप्सायां द्विर्वचनम् । प्राप्तव्यमेव (वृधे) वृद्धये (धृतव्रतः) स्वीकृतनियमः (हि) निश्चययेन (ओजसा) बलेन (सम्) संगत्य (ऊतिभिः) रक्षाभिः ॥

भावार्थ—प्रजागण अपनी रक्षा के लिये राजा की सहायता चाहें, और राजा राज्य की रक्षा के लिये उन से सहायता ले, इस प्रकार राजा और प्रजा परस्पर प्रीति करके आनन्द भोगें ॥ २ ॥

नेमिं नमन्ति चक्षसा मेषं विप्रा अभिस्वरा ।

सुदीतयो वो अद्रुहोऽपि कर्णे तरस्विनः समृक्मभिः ॥ ३ ॥

नेमिम् । नमन्ति । चक्षसा । मेषम् । विप्राः । अभि-स्वरा ।

सु-दीतयः । वः । अद्रुहः । अपि । कर्णे । तरस्विनः ।

सम् । अक्र-भिः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्यो !] (विप्राः) बुद्धिमान् (सुदीतयः) बहुत प्रकाश वाले, (अद्रुहः) द्रोह न करने वाले, (तरस्विनः) बड़े उत्साह वाले पुरुष (वः) तुम्हारे लिये (कर्णे) कान में (अपि) ही (अभिस्वरा) सब प्रकार से वाणी के साथ (अक्रभिः) स्तुतिवाले कर्मों द्वारा (नेमिम्) नेता (मेषम्) सुख से सींचने वाले [वीर] को (चक्षसा) दर्शन के साथ (सम्) मिलकर (नमन्ति) झुकते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—उत्साही बुद्धिमान् लोग प्रजा के सुख के लिये राजा को सुन्दर नियमों और सत्कार के साथ धर्मपथ का निवेदन करें ॥ ३ ॥

सूक्तम् ५५ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ अतिजगती; २ विराट् पथ्या बृहती; ३ निचृत्पथ्या बृहती ॥

राजकृत्योपदेशः—राजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

३—(नेमिम्) नियोगिः । उ० ४ । ४३ । शीज् प्रापणे—मि । नेतारम् (नमन्ति) नमस्कुर्वन्ति (चक्षसा) दर्शनेन (मेषम्) मिष सेचने—अच् । सुखस्य सेकारम् (विप्राः) मेधाविनः (अभिस्वरा) स्तु शब्दोपतापयोः—विट् । अभिस्वरेण । सर्वतः शब्देन (सुदीतयाः) पलोपः । शोभनदीप्तयः (वः) शुष्मभ्यम् (अद्रुहः) अद्रोघधारः (अपि) (कर्णे) श्रोत्रे (तरस्विनः) उत्साहिनः (सम्) संगत्य (अक्रभिः) अ० १८ । १ । ४७ । अच् स्तुतौ—किप् । मरथे—चनिप् । स्तुतिमबुभिः कर्मभिः ॥

तस्मिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सुत्रा दधानमप्रतिष्कृतं
शवांसि । मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्तद् राये नो विश्वा
सुपथा कृणोतु वज्री ॥ १ ॥

तम् । इन्द्रम् । जोहवीमि । मघ-वानम् । उग्रम् । सुत्रा ।
दधानम् । अप्रति-स्कृतम् । शवांसि ॥ मंहिष्ठः । गीः-भिः ।
आ । च । यज्ञियः । ववर्तत् । राये । नः । विश्वा । सु-पथा ।
कृणोतु । वज्री ॥ १ ॥

भाषार्थ—(मघवानम्) अत्यन्त धनी, (उग्रम्) प्रचण्ड, (सुत्रा)
सच्चे (शवांसि) बलों के (दधानम्) धारण करने वाले (अप्रतिष्कृतम्) बे
रोक गति वाले (तम्) उस (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले राजा] को
(जोहवीमि) मैं बार बार पुकारता हूँ । (मंहिष्ठः) वह अत्यन्त उदार (यज्ञियः)
पूजा योग्य (च) और (वज्री) वज्रधारी [शस्त्र अस्त्र वाला] (गीर्भिः)
हमारी वाणियों से (नः) हम को (राये) धन के लिये (आ) सब प्रकार
(ववर्तत्) वर्तमान करे, और (विश्वा) सब कर्मों को (सुपथा) सुन्दर
मार्ग वाला (कृणोतु) बनावे ॥ १ ॥

भाषार्थ—राजा प्रजा की पुकार सुनकर उन्हें सुमार्ग में चलाकर धन
प्राप्त करावे ॥ १ ॥

यह त्वच ऋग्वेद में है—= । ६७ [सायणभाष्य ८६] । १३, १, २, मन्त्र
१ सामवेद—पू० ५ । ८ । ४ और मन्त्र २ पू० ३ । ७ । २ ॥

१—(तम्) प्रसिद्धम् (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं राजानम् (जोहवीमि)
अ० २ । १२ । ३ । ह्येञ् आह्वाने, यङ्लुगन्तात्— लट् । पुनः पुनराह्वयामि (मघ-
वानम्) बहुधनवन्तम् (उग्रम्) प्रचण्डम् (सुत्रा) सत्यानि (दधानम्) धारयन्तम्
(अप्रतिष्कृतम्) अ० २० । ४१ । १ । अप्रतिगतम् (शवांसि) बलानि (मंहिष्ठः)
दातृतमः (गीर्भिः) अस्माकं वाणीभिः (आ) समन्तात् (च) (यज्ञियः)
पूजार्हः (ववर्तत्) वर्ततेत्यन्तरस्य चङि रूपं लिङ्ङर्थे । वर्तयेत् (राये) धनार्थ
(नः) अस्मान् (विश्वा) सर्वाणि कर्माणि (सुपथा) सुपथानि । सुमार्गयुक्तानि
(कृणोतु) करोतु (वज्री) शस्त्रास्त्रधारकः ॥

या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वा असुरेभ्यः ।

स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः ॥ २ ॥

याः । इन्द्र । भुजः । आ । अभरः । स्वः-वान् । असुरेभ्यः ॥

स्तोतारम् । इत् । मघ-वन् । अस्य । वर्धय । ये । च ।

त्वे इति । वृक्त-बर्हिषः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (स्वर्वान्) आनन्द युक्त तू (याः) जिन (भुजः) भोग सामग्रियों को (असुरेभ्यः) दुष्ट मनुष्यों से (आ अभरः) लाया है, (मघवन्) हे बड़े धनी ! (अस्य) उस अपने (स्तोतारम्) स्तुति करने वाले को (इत्) अवश्य (वर्धय) बढ़ा (च) और [उन्हें भी], (ये) जो (त्वे) तुझ में (वृक्तबर्हिषः) वृद्धि पाने वाले हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—राजा दुष्टों का धन हरण करके शिष्टों का पालन करे ॥ २ ॥

यमिन्द्र दधिषे त्वमश्वं गां भागमन्ययम् ।

यजमाने सुन्वति दक्षिणावति तस्मिन् तं धेहि मा पुणौ ॥३॥

यम् । इन्द्र । दधिषे । त्वम् । अश्वम् । गाम् । भागम् ।

अन्ययम् ॥ यजमाने । सुन्वति । दक्षिणा-वति । तस्मिन् ।

तम् । धेहि । मा । पुणौ ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (यम्) जिस

२—(याः) (इन्द्र) हे परमेश्वर्यवान् राजन् (भुजः) भोग्यसामग्रीः (आ अभरः) आहृतवानसि (स्वर्वान्) सुखवांस्त्वम् (असुरेभ्यः) सुरविरोधिभ्यो दुष्टेभ्यः सकाशात् (स्तोतारम्) (इत्) एव (मघवन्) हे धनवान् (अस्य) तादृशस्य त्वदीयस्य स्वकीयस्य (वर्धय) वृद्धिमन्तं कुरु (ये) (च) (त्वे) त्वयि राजनि (वृक्तबर्हिषः) अ० २० । ५२ । १ । प्राप्त वृद्धयः ॥

३—(यम्) भागम् (इन्द्र) हे परमेश्वर्यवान् राजन् (दधिषे) लक्ष्ये

(अश्वम्) घोड़े को, (गाम्) गौ को और (अव्ययम्) अक्षय (भागम्) सेवनीय धन को (त्वम्) तू (दधिपे) धारण करता है, (तम्) उसको (तस्मिन्) उस (सुन्वति) तत्त्व लिचोड़ने वाले, (दक्षिणावति) दक्षिणा [प्रतिष्ठा के दान] वाले (यजमाने) यजमान [यज्ञ श्रेष्ठ कर्म करने वाले] में (धेहि) धारण कर और (पणौ) कुव्यवहारी में (मा) नहीं ॥ ३ ॥

भाषार्थ—राजा को योग्य है कि अवसर विचार कर घोड़े, गौयें, सुवर्ण आदि धन दक्षिणा देकर सुपात्रों का सम्मान करे ॥ ३ ॥

सूक्तम् ५६ ॥

१—६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, २, ४, ६ विराट् पङ्क्तिः; ३ निचृत् पङ्क्तिः; ५ विराडाषी पङ्क्तिः ॥

सभापतिलक्षणोपदेशः—सभापति के लक्षण का उपदेश ॥

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।

तस्मिन्सुहृत्स्वाजिषुतेमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत् ॥१॥

इन्द्रः । मदाय । वावृधे । शवसे । वृत्रहा । नृ-भिः ॥ तम् ।

इत् । सुहृत्-सु । आजिषु । उत । ईम् । अर्भे । हवामहे ।

सः । वाजेषु । प्र । नः । अविषत् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(वृत्रहा) रोकने वाले शत्रुओं का नाश करनेवाला (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला सभापति] (मदाय) आनन्द और (शवसे) बल के लिये (नृभिः) नरों [नेताओं] के साथ (वावृधे) बढ़ा है । (तम् ईम्)

लिट् । धत्से । धरसि (त्वम्) (अश्वम्) गाम् धेनुम् (भागम्) सेवनीय धनम् (अव्ययम्) अक्षयम् (यजमाने) श्रेष्ठकर्मकर्तारि (सुन्वति) तत्त्वरसं संस्कुर्वणे (दक्षिणावति) प्रतिष्ठाधनयुक्ते (तस्मिन्) (तम्) (भागम्) (धेहि) धारय (मा) निषेधे (पणौ) कुव्यवहारिणे असुरे ॥

१—(इन्द्रः) परमेश्वर्यवान् सभाध्यक्षः (मदाय) आनन्दाय (वावृधे) लिटि रूपम् । इन्द्रो बभूव (शवसे) दत्ताय (वृत्रहा) आदरकाणां शत्रूणां नाशकः (नृभिः) नेतृभिः पुरुषैः (तम्) सेनापतिम् (इत्) एव (सुहृत्सु)

उस प्राप्ति योग्य को (इत्) ही (महत्सु) बड़े (आजिषु) संग्रामों में (उत) और (अर्भे) छोटे [संग्राम] में (हवामहे) हम बुलाते हैं, (सः) वह (वाजेषु) संङ्ग्रामों में (नः) हमें (प्र) अच्छे प्रकार (अविषत्) बचावे ॥ १ ॥

भाषार्थ—जो मनुष्य प्रजा की भलाई के लिये पराक्रम करके शत्रुओं को मारे, उसी हितैषी को सेनापति बनाना चाहिये ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—१। ८१। १—३, ७—६। तृच १ कुक्कु मेद से सामवेद में है—उ० ३। २। तृच १४, मन्त्र १, पू० ५। ३। ३ ॥

असि हि वीरु सेन्योऽसि भूरि परादुदिः । असि दुभ्रस्य चित् वृधो यजमानाय शिक्षसि सन्वते भूरि ते वसु ॥ २ ॥

असि । हि । वीरु । सेन्यः । असि । भूरि । परा-दुदिः ॥
असि । दुभ्रस्य । चित् । वृधः । यजमानाय । शिक्षसि ।
सन्वते । भूरि । ते । वसु ॥ २ ॥

भाषार्थ—(वीर) हे वीर तू (हि) ही (सेन्यः) सेनाओं का हितकारी (असि) है, (भूरि) बहुत प्रकार से (परादुदिः) शत्रुओं का पकड़ने वाला (असि) है। तू (दुभ्रस्य) छोटे पुरुष का (चित्) अवश्य (वृधः) बढ़ाने वाला (असि) है, तू (सन्वते) तत्त्व निचाड़ने वाले (यजमानाय)

महाप्रबलेषु (आजिषु) अ० २। १४। ६। संग्रामेषु (उत) अपि (ईम्) प्राप्तव्यम् (अर्भे) अल्पे संग्रामे (हवामहे) आह्वयामः (सः) सेनापतिः (वाजेषु) संग्रामेषु (प्र) (नः) अस्मान् (अविषत्) अव रक्षणे—लेट्, इकारलोपः सिप् च इडागमश्च । रक्षेत् ॥

२—(असि) (हि) (वीर) (सेन्यः) सेनाभ्यो हितः (असि) (भूरि) बहु (परादुदिः) पर + आङ् + डु दाञ् दाने—किप्रत्ययः । पराञ्छुन्नादाता ग्रहीता (असि) (दुभ्रस्य) अल्पस्य पुरुषस्य (चित्) एव (वृधः) वृधेरन्तर्गतयन्तात्—कप्रत्ययः । वर्धयिता (यजमानाय) श्रेष्ठकर्मकारकाय (शिक्षसि) ददासि—निघ० ३। २० (सन्वते) तत्त्वं संस्कुर्वते (भूरि) बहु

यजमान को (ते) अपना (भूरि) बहुत (वसु) धन (शिन्तसि) देता है ॥ २ ॥

भावार्थ—वीर सेना हितकारी योग्य छोटे अधिकारियों को बढ़ाकर श्रेष्ठों को मान करे ॥ २ ॥

यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धना । युक्ष्वा मदच्युता
हरी कं हनः कं वसौ दधोऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः ॥ ३ ॥

यत् । उत्-ईरते । आजयः । धृष्णवे । धीयते । धना ॥
युक्ष्वा । मद-च्युता । हरी इति । कम् । हनः । कम् ।
वसौ । दधुः । अस्मान् । इन्द्र । वसौ । दधुः ॥ ३ ॥

भावार्थ—(यत्) जब (आजयः) सङ्ग्राम (उदीरते) उठते हैं,
(धृष्णवे) निर्भय पुरुष के लिये (धना) धन (धीयते) धरा जाता है ।
(मदच्युता) आनन्द देने वाले (हरी) दो घोड़ों [के समान बल और
पराक्रम] को (युक्ष्वा) जोड़, (कम्) किस [शत्रु] को (हनः) तू मारेगा ?
(कम्) किस [मित्र] को (वसौ) धन के बीच (दधः) तू रखेगा ?
(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले सेनापति] (अस्मान्) हमें तू (वसौ)
धन में (दधः) रख ॥ ३ ॥

भावार्थ—विजय पाने पर वीर पुरुष धन पाता है, यह विचार कर
राजा बल और पराक्रम से युद्ध सामग्री एकत्र करके शत्रुओं को मारता हुआ
और मित्रों का सत्कार करता हुआ प्रजा की उन्नति करे ॥ ३ ॥

(ते) त्वदीयम् । स्वकीयम् (वसु) धनम् ॥

३—(यत्) यदा (उदीरते) उद्गच्छन्ति (आजयः) संग्रामाः
(धृष्णवे) प्रगल्भाय (धीयते) धियते (धना) विभक्तेराकारः । धनम्
(युक्ष्वा) सांहितिको दीर्घः । युजिर् योगे—लोड्, अन्तर्गतएयर्थः । योजय
(मदच्युता) मदस्य हर्षस्य चयावयितारौ प्रापयितारौ (हरी) अश्वाविवबल-
पराक्रमौ (कम्) शत्रुम् (हनः) हन्तेलेंट् । हन्याः (कम्) सुहृदम् (वसौ)
वसुनि । धने । (दधः) दध धारणे—लेट् । दध्याः (अस्मान्) (इन्द्र) पर-
मैश्वर्यवान् सेनापते (वसौ) धने (दधः) स्थापय ॥

मदेमदे हि नो दुदिर्युथा गवामृजुऋतुः । सं गृभाय पुरु
शुतोभयाहस्त्या वसुं शिशिहि राय आ भर ॥ ४ ॥

मदे-मदे । हि । नः । दुदिः । युथा । गवाम् । ऋजु-ऋतुः ॥
सम् । गृभाय । पुरु । शुता । उभयाहस्त्या । वसुं ।
शिशिहि । रायः । आ । भर ॥ ४ ॥

भाष्यार्थ—(ऋजुऋतुः) सच्ची बुद्धि वा कर्म वाला तू (मदेमदे)
आनन्द आनन्द पर (हि) निश्चय करके (नः) हम को (गवाम्) गो आदि
पशुओं के (युथा) समूहों का (दुदिः) देने वाला है, (उभयाहस्त्या) दोनों
हाथों से (पुरु) बहुत (शता) सैकड़ों (वसु) धनों को (सं गृभाय) संग्रह
कर, (शिशिहि) तीक्ष्ण हो और (रायः) धनों को (आ) सब ओर से
(भर) भर ॥ ४ ॥

भावार्थ—बुद्धिमान् राजा आनन्द के प्रत्येक अवसर पर योग्य पुरुषों
का सत्कार करे और उचित व्यय करने के लिये सदा धन का संग्रह करता
रहे ॥ ४ ॥

मादयस्व सुते सचा श्वसे शूर राधसे । विद्महि त्वा
पुरुवसुमुप कामान्तसमुज्महेऽथा नोऽविता भव ॥ ५ ॥
मादयस्व । सुते । सचा । श्वसे । शूर । राधसे ॥ विद्महि ।

४—(मदेमदे) प्रत्येकद्वारवसरे (हि) निश्चयेन (नः) अस्मभ्यम्
(दुदिः) दुदाञ् दाने-किप्रत्ययः । दाता (युथा) युथानि । समूहान् (गवाम्)
गवादिपशूनाम् (ऋजुऋतुः) सरलबुद्धिः । सत्यकर्मा (संगृभाय) सम्यग्
गृहाण (पुरु) बहूनि (शता) शतानि (उभयाहस्त्या) विभक्तेर्द्व्याजादेशः,
छान्दसो दीर्घः । उभाभ्यां हस्ताभ्याम् (वसु) वसूनि । धनानि (शिशिहि)
शो तनूकरणे, विकरणस्य श्लुः, अभ्यासस्य इत्वम् । ई हत्यघोः । पा० ६ । ४ ।
११३ । इति धातोरीत्वम् । श्व । तीक्ष्णीभव । उद्यतो भव (रायः) धनानि
(आ) समन्तोत् (भर) धेहि ॥

सू. ५६ [६४४] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,१३५)

हि । त्वा । पुरु-वसुम् । उप । कामान् । सुसृजमहे । अथ ।
नः । अविता । भव ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(शूर) हे शूर ! (सुते) उत्पन्न जगत् में (सचा) नित्य
मेल के साथ (शत्रुसे) बल के लिये और (राधसे) धन के लिये (मादयस्व)
आनन्द दे । (त्वा) तुझ को (हि) निश्चय करके (पुरुवसुम्) बहुतां में श्रेष्ठ
(विद्म) हम जानते हैं, और (कामान्) मनोरथों को (उप) समीप से
(ससृजमहे) हम निश्चय करते हैं, (अथ) इस लिये तू (नः) हमारा (अविता)
रक्षक (भव) हो ॥ ५ ॥

भाषार्थ—बल और धन की वृद्धि के लिये शूर सेनापति के आश्रय से
मनोरथ सिद्ध करके रक्षा करे ॥ ५ ॥

सुते तं इन्द्र जन्तवो विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् । अन्तर्हि ख्यो
जनानामुर्यो वेदो अदाशुषां तेषां नो वेदु आ भर ॥ ६ ॥

सुते । ते । इन्द्र । जन्तवः । विश्वम् । पुष्यन्ति । वार्यम् ॥
अन्तः । हि । ख्यः । जनानाम् । अर्यः । वेदः । अदाशुषाम् ।
तेषाम् । नः । वेदः । आ । भु ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (ते) तेरे
लिये (एते) यह (जन्तवः) लोग (विश्वम्) सब (वार्यम्) स्वीकार योग्य

५—(मादयस्व) आनन्दय (सुते) उत्पन्ने जगति (सचा) समवायेन ।
नित्यसंबन्धेन (शत्रुसे) बलाय (शूर) हे शत्रुनिवारक (राधसे) धनाय
(विद्म) जानीमः (हि) अवधारणे (त्वा) त्वाम् (पुरुवसुम्) बहुषु श्रेष्ठम्
(उप) समीपे (कामान्) मनोरथान् (ससृजमहे) सृज विसर्गे, विकरणस्थ
श्लुः । निष्पादयामः । साधयामः (अथ) अनन्तरम् (नः) अस्माकम् (अविता)
अवतेस्तुच् । रक्षकः (भव) ॥

६—(एते) उपस्थिताः (ते) तुभ्यम् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन्
(जन्तवः) जीवाः जनाः (विश्वम्) सर्वम् (पुष्यन्ति) वर्धयन्ति (वार्यम्)

पदार्थ को (पुण्यन्ति) पुष्ट करते हैं । (अर्यः) स्वामी तू (तेषाम्) उन (जनानाम्) मनुष्यों के (अन्तः) बीच (हि) निश्चय करके (अदाशुषाम्) अदानी लोगों की (वेदः) समझ को (खयः) देख और (नः) हमारे लिये (वेदः) ज्ञान को (आ) सब प्रकार (भर) प्राप्त करा ॥ ६ ॥

भाष्यार्थ—जैसे प्रजागण श्रेष्ठ पदार्थों के दान से राजभक्ति करें, वैसे ही राजा अदाताओं से प्रजा की रक्षा करके विज्ञान की वृद्धि करे ॥ ६ ॥

सूक्तम् ५७ ॥

१-१३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, २, ४-६, ८, ९ गायत्री; ३ विराडाक्षी गायत्री; ७ अनुष्टुप्; १० निचृद् गायत्री; ११-१६ पथ्या बृहती ॥

१-१० मनुष्यकर्तव्योपदेशः— १-१० मनुष्य के कर्तव्य का उपदेश ॥

सुरूपकृत्नुमुतये सुदुधामिव गोदुहे । जुहुमसि द्यविद्यवि ॥१॥
सुरूप-कृत्नुम् । ऊतये । सुदुधाम्-इव । गो-दुहे ॥ जुहुमसि ।
द्यवि-द्यवि ॥ १ ॥

भाष्यार्थ—(सुरूपकृत्नुम्) सुन्दर स्वभावों के बनाने वाले [राजा] को (ऊतये) रक्षा के लिये (द्यविद्यवि) दिन दिन (जुहुमसि) हम बुलाते हैं, (इव)

स्वीकार्य पदार्थम् (अन्तः) मध्ये (हि) अवश्यम् (खयः) खया प्रकथने दर्शने च लोडर्थे लुङ् । पश्य (जनानाम्) जन्तूनाम् । जीवानाम् (अर्यः) स्वामी (वेदः) बोधम् (अदाशुषाम्) अदातृणाम् (तेषाम्) पूर्वोक्तानां जन्तूनाम् (नः) अस्मभ्यम् (वेदः) विज्ञानम् (आ) समन्तात् (भर) प्रापय ॥

१—(सुरूपकृत्नुम्) कृहनिभ्यां कृत्नुः । उ० ३ । ३० । करोतेः—कृत्नु । शौभनस्वभावानां कर्तारम् (ऊतये) रक्षायै (सुदुधाम्) अ० ७ । ७३ । ७ । एतद्वोन्धी नाम् (इव) यथा (गोदुहे) सत्सूद्विष इह दुह० । पा० ३ । २ । ६१ । गो + दुह प्रपूरणे—क्लिप् । गोदोन्धे । दुग्धादिकमिच्छवे (जुहुमसि) ह्वयतेल्लेद शपः श्लुः । अभ्यस्तस्य च । पा० ६ । १ । ३३ । इति अभ्यस्ती भविष्यतो ह्वयतेः सम्प्रसारणम् । सम्प्रसारणाच्च । पा० ६ । १ । १०८ । इति परपूर्वत्वम् । हलः । पा० ६ । ४ । २ । इति । दीर्घः । श्लौ । पा० ६ । १ । १७ । द्विर्वचनम् । इहवः ।

जैसे (सुदुधाम्) बड़ी दुधेल गौ को (गोदुहे) गौ दोहने वाले के लिये ॥ १ ॥

भावार्थ—जैसे दुधेल गौ को दूध दोहने के लिये प्रीति से बुलाते हैं, वैसे ही प्रजागण विद्या आदि शुभ गुणों के बढ़ाने वाले राजा का आश्रय लेकर उन्नति करें ॥ १ ॥

म० १—३ आग्नेय में है—१।४।१—३ और आगे है अ० २०।६६।

१—३ ॥

उप॑ नुः सव॑ना ग॑हि सोम॑स्य सोमपाः॑ पिब॑ । गो॒दा इह॑
रेव॑तो मदः॑ ॥ २ ॥

उप॑ । नुः । सव॑ना । आ । ग॑हि । सोम॑स्य । सोम॒-पाः ।
पिब॑ ॥ गो॒-दाः । इत् । रेव॑तः । मदः॑ ॥ २ ॥

भावार्थ—(सोमपाः) हे ऐश्वर्य के रक्षक ! [राजन्] (नः) हमारे लिये (सवना) ऐश्वर्य युक्त पदार्थों को (उप) समीप से (आ गहि) तु प्राप्त हो और (सोमस्य) सोम [तत्त्व रस] का (पिब) पानकर, (रेवतः) धनवान् पुरुष का (मदः) हर्ष (इत्) ही (गोदाः) दृष्टि का देने वाला है ॥ २ ॥

भावार्थ—राजा ऐश्वर्यवान् और दूरदर्शी होकर प्रसन्नता पूर्वक प्रजा को ज्ञानवान् बनावे ॥ २ ॥

अथा॑ ते अ॒न्त॑मानां वि॒द्याम् सु॒मती॑नाम् । मा नो॑ अ॒ति ह्य॒
आ ग॑हि ॥ ३ ॥

पा० ७।४।५६। इति अभ्यासस्य ह्रस्वः । श्रुत्वजश्त्वे । इदन्तोमसि । पा० ७।१।४६। इति इकारागमः । जुहमः । आह्वयामः (यधिद्यधि) दिने दिने निघ० १।६॥

२—(उप) समीपे (नः) अस्मभ्यम् (सवना) ऐश्वर्ययुक्तानि वस्तूनि (आ) समन्तात् (गहि) गच्छ । प्राप्नुहि (सोमस्य) तत्त्वरसस्य (सोमपाः) हे ऐश्वर्यरक्षक (पिब) पानं कुरु (गोदाः) किप् च । पा० ३।२।७६। गो + ददातेः—किप् । गोदृष्टेर्दाता (इत्) एव (रेवतः) धनवतः पुरुषस्य (मदः) हर्षः ॥

अथ । ते । अन्तमानाम् । विद्याम् । सु-सुतीनाम् ॥ सा ।
नः । अति । ख्यः । आ । गृहि ॥ ३ ॥

भाषार्थ—[हे राजन् !] (अथ) और (ते) तेरी । (अन्तमानाम्)
अत्यन्त समीप रहने वाली (सुसुतीनाम्) सुन्दर बुद्धियों का (विद्याम्) हम
ज्ञान करें । तू (नः) हमें (अति) छोड़कर (मा ख्यः) मत बोल, (आ गृहि)
तू आ ॥ ३ ॥

भाषार्थ—जब राजा पूर्ण प्रीति से प्रजा पालन करता है, प्रजागण उस
की धार्मिक नीतियों से लाभ उठाकर उस से प्रीति करते हैं ॥ ३ ॥

शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युस्मिनं पाहि जागृविम् । इन्द्रं सोमं
शतक्रतो ॥ ४ ॥

शुष्मिन्-तमम् । नः । ऊतये । द्युस्मिनम् । पाहि । जागृ-
विम् ॥ इन्द्रं । सोमम् । शतक्रतो इति शत-क्रतो ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(शतक्रतो) हे सैकड़ों कर्मों वा बुद्धियों वाले (इन्द्र) इन्द्र !
[बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (नः) हमारी (ऊतये) रक्षा के लिये (शुष्मिन्त-
मम्) अत्यन्त बलवान्, (द्युस्मिनम्) अत्यन्त धनी वा यशस्वी और (जागृ-
विम्) जागने वाले [चौकस] पुरुष की और (सोमम्) पेश्वर्य की (पाहि)
रक्षा कर ॥ ४ ॥

भाषार्थ—राजा धर्मात्मा शूर वीरों की और सब के पेश्वर्य की यथावत्

३—(अथ) अनन्तरम् (ते) तव (अन्तमानाम्) अन्तः सामीप्यम् ।
अत इतिष्ठनौ । पा० ५ । २ । ११५ । इति अन्त-टन् प्रत्ययः । ततोऽतिशायिने
तमम् । पृषोदरादित्वात् तिवशब्दस्य लोपः । अन्तमानाम्, अन्तिकनाम-निघ०
२ । १६ । अन्तिकतमानाम् । अतिशयेन समीपस्थानाम् (विद्याम्) वेत्तेर्लिङ् ।
ज्ञानं कुर्याम (मा) निषेधे (नः) अस्मान् (अति) इतीत्य । उल्लङ्घ्य
(ख्यः) यथा प्रकथने लुङ् । माङ् दोर्गेऽङ्भाषः । प्रकथय (आ गृहि) आगच्छ ॥

४—१० पते मन्त्रा व्याख्याताः—अ० २० । २० । १—७ ॥

सू० ५७ [६४५] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,१३८)

रक्षा कर के प्रजा का पालन करे ॥ ४ ॥

मन्त्र ४—१० आ चुके हैं—अ० २० । २० । १—७ ।

इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनैषु पञ्चसु । इन्द्र तानि त
आ वृणो ॥ ५ ॥इन्द्रियाणि । शतक्रतो इति शत-क्रतो । या । ते । जनैषु ।
पञ्च-सु ॥ इन्द्र । तानि । ते । आ । वृणो ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(शतक्रतो) हे सैकड़ों कर्मों वा बुद्धियों वाले (इन्द्र) इन्द्र !
[बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (या) जो (ते) तेरे (इन्द्रियाणि) इन्द्र [पेश्व-
र्यवान्] के चिह्न धनादि (पञ्चसु जनेषु) पंच [मुख्य] लोगों में हैं । (ते)
तेरे (तानि) उन [चिह्नों] को (आ) सब प्रकार (वृणो) मैं स्वीकार करता
हूँ ॥ ५ ॥

भावार्थ—बुद्धिमान् धार्मिक राजा बड़े बड़े अधिकारियों का आदर
करके प्रजा की रक्षा करे ॥ ५ ॥

अगन्निन्द्र अवो बृहद् द्युम्नं दधिष्व दुस्तरम् । उत ते शुष्मं
तिरामसि ॥ ६ ॥अगन् । इन्द्र । अवः । बृहत् । द्युम्नम् । दधिष्व । दुस्तरम् ॥
उत् । ते । शुष्मम् । तिरामसि ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (बृहत्) बड़ा
(अवः) अन्न [हमको] (अगन्) प्राप्त हुआ है, (दुस्तरम्) दुस्तर [अजेय]
(द्युम्नम्) चमकने वाले यश को (दधिष्व) तू धारण कर, (ते) तेरे (शुष्मम्)
बल को (उत् तिरामसि) हम बढ़ाते हैं ॥ ६ ॥

भावार्थ—जिस राजा के कारण बहुत अन्न आदि पदार्थ मिलें, प्रजागण
उस के बल बढ़ाने में सदा प्रयत्न करें ॥ ६ ॥

अर्वावतो न आ गृह्यथो अक्र परावतः । उ लोको यस्तै
अद्रिषु इन्द्रे ह तत् आ गृहि ॥ ७ ॥

अर्वा-वतः । नः । आ । गृहि । अथो इति । शुक्र । परा-
वतः ॥ ऊं इति । लोकः । यः । ते । अद्रि-वः । इन्द्र ।
इह । ततः । आ । गृहि ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(शक्र) हे समर्थ ! (अर्वावतः) समीप से (अथो) और
(परावतः) दूर से (नः) हमें, (आ गृहि) प्राप्त हो, (अद्रिवः) हे वज्रधारी
(इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (उ) और (यः) जो (ते) तेरा
(लोकः) स्थान है, (ततः) वहां से (इह) यहां पर (आ गृहि) तू आ ॥ ७ ॥

भावार्थ—राजा अधिकारियों द्वारा समीप और दूर से प्रजा की सुधि
रखले और उनको आप भी जा कर देखा करे ॥ ७ ॥

इन्द्रो अङ्ग महत् भुयम्भी षदप चुच्यवत् । स हि स्थिरो
विचर्षणिः ॥ ८ ॥

इन्द्रः । अङ्ग । महत् । भुयम् । अमि । सत् । अप । चुच्य-
वत् ॥ सः । हि । स्थिरः । वि-चर्षणिः ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(अङ्ग) हे विद्वान् ! (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले
राजा] ने (महत्) बड़े और (अमि) सब ओर से (सत्) वर्तमान (भुयम्)
भय को (अव चुच्यवत्) हटा दिया है । (सः हि) वही (स्थिरः) दृढ़ और
(विचर्षणिः) विशेष देखने वाला है ॥ ८ ॥

भावार्थ—राजा दृढ़स्वभाव और सावधान रहकर दुष्टों से प्रजा की
रक्षा करे ॥ ८ ॥

इन्द्रश्च मूलयाति नो न नः पुश्चादुचं नश्यत् । भुद्रं भवाति
नः पुरः ॥ ९ ॥

इन्द्रः । च । मूलयाति । नः । न । नः । पुश्चात् । अघम् ।
नश्यत् ॥ भुद्रम् । भुवाति । नः । पुरः ॥ ९ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला राजा] (च) निश्चय
करके (नः) हमें (मूलयाति) सु की वारे, (अघम्) पाप (नः) हम को

(पश्चात्) पीछे (न) न (नशत्) नाश करे । (भद्रम्) कल्याण (नः) हमारे लिये (पुरस्तात्) आगे (भवति) होवे ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को योग्य है कि धर्मात्मा राजा के प्रबन्ध में रहकर पापों से बच कर सुख भोगें ॥ ६ ॥

इन्द्र आशाभ्युपरि सर्वाभ्यो अभयं कर्तु । जेतु शत्रून् विचर्षणिः ॥ १० ॥

इन्द्रः । आशाभ्यः । परि । सर्वाभ्यः । अभयम् । कर्तु ॥
जेतु । शत्रून् । विचर्षणिः ॥ १० ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला राजा] (सर्वाभ्यः) सब (आशाभ्यः) आशाओं [गहरी इच्छाओं] के लिये (अभयम्) अभय (परि) सब ओर से (कर्तु) करे । वह (शत्रून् जेतु) शत्रुओं को जीतने वाला और (विचर्षणिः) विशेष देखने वाला है ॥ १० ॥

भावार्थ—राजा अपने न्याय युक्त प्रबन्ध से विघ्नों को हटाकर प्रजा की उन्नति की गहरी इच्छाओं को पूरा करे ॥ १० ॥

मन्त्राः ११—१३ सेनानीलक्षणोपदेशः—मन्त्र ११—१३ सेनापति के लक्षणों का उपदेश ॥

क ई वेद सुते सचा पिबन्तं कद् वयो दधे । अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः ॥ ११ ॥

कः । ईम् । वेद । सुते । सचा । पिबन्तम् । कद् । वयः । दधे ॥ अयम् । यः । पुरः । वि-भिनत्ति । ओजसा । मन्दानः । शिप्री । अन्धसः ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(कः) कौन (सचा) नित्य मेल के साथ (सुते) नश्वरस (पिबन्तम्) पीते हुये (ईम्) प्राप्ति योग्य [सेनापति] को (वेद) जानता है ? (कद्) कितना (वयः) जीवन सामर्थ्य [पराक्रम] (दधे) वह रखता है ? (अयम्) यह (यः) जो (शिप्री) दृढ़ जाबड़े वाला, (अन्धसः) अन्ध

का (मन्दानः) आनन्द देते वाला [वीर] (ओजसा) बल से (पुरः) दुर्गों को (विभिन्नं) तोड़ देता है ॥ ११ ॥

भावार्थ—जिस पराक्रमी पुरुष के शरीर बल और बुद्धिबल की थाह सामान्य पुरुष नहीं जानते, वह नीतिज्ञ अन्न आदि पदार्थ एकत्र कर के बैरियों को जीतता है ॥ ११ ॥

मन्त्र ११—१३ आचुके हैं—अ० २० । ५३ । १—३ ॥

दाना मृगो न वारुणः पुरुत्रा चरथं दधे । नकिंष्ट्वा नि
यमदा सुते गमो महान्श्वरस्योजसा ॥ १२ ॥

दाना । मृगः । न । वारुणः । पुरुत्रा । चरथम् । दधे ॥
नकिः । त्वा । नि । यमत् । आ । सुते । गमः । महान् ।
चरसि । । ओजसा ॥ १२ ॥

भाषार्थ—(न) जैसे (मृगः) जंगली (वारुणः) हाथी (दाना) मद के कारण (पुरुत्रा) बहुत प्रकार से (चरथम्) ऋग्वेद (दधे) लगाता है । [वैसे ही] (नकिः) कोई नहीं (त्वा) तुझे (नि यमन्) रोक सकता, (सुते) तत्परस को (आ गमः) तू प्राप्त ही, (महान्) महान् होकर तू (ओजसा) बल के साथ (चरसि) विचरता है ॥ १२ ॥

भावार्थ—जैसे बन का मदमत्त हाथी सब ओर बे रोक घूमकर उपद्रव मचाता है, वैसे ही नीतिज्ञ सेनापति तत्पर विचार कर शत्रुओं को शीघ्र दबावे ॥ १२ ॥

य उग्रः सन्नेनिष्टृत स्थिरो रणाय संस्कृतः । यदि स्तोतु-
र्मघवा शृणवद्वं नेन्द्रो योषुत्या गमत् ॥ १३ ॥

यः । उग्रः । सन् । अग्निः-स्तृतः । स्थिरः । रणाय । संस्कृतः ॥
यदि । स्तोतुः । मघवा । शृणवत् । हवम् । न । इन्द्रः ।
योषुति । आ । गमत् ॥ १३ ॥

११—१३ पदेमन्त्रा व्याख्याताः—अ० २० । ५३ । १—३ ॥

भाषार्थ—(यः) जो [वीर] (उग्रः) प्रचण्ड, (अनिष्टृतः) कभी न हराया गया, (स्थिरः) दृढ़ (सन्) होकर (रणाय) रण के लिये (संस्कृतः) संस्कार किये हुये है। (यदि) यदि (मग्नवा) वह महाधनी (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला सेनापति] (स्तोतुः) स्तुति करने वाले की (हवम्) पुकार (शृणवत्) सुने, [तौ] (न योषति) वह अलग न रहे, [किन्तु] (आ गमत्) आता रहे ॥ १३ ॥

भावार्थ—प्रतापी, अजेय, युद्ध कुशल सेनापति प्रजा की पुकार को सदा ध्यान देकर सुनता रहे ॥ १३ ॥

मन्त्राः १४—१६ परमात्मोपासनोपदेशः । मन्त्र १४—१६ परमात्मा की उपासना का उपदेश ॥

वयं च त्वा सुतावन्तु आपो न वृक्तवर्हिषः । पुवित्रस्य प्रस्र-
वणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते ॥ १४ ॥

वयम् । च । त्वा । सुत-वन्तः । आपः । न वृक्त-वर्हिषः ॥
पुवित्रस्य । प्र-स्रवणेषु । वृत्र-हन् । परि । स्तोतारः ।
आसते ॥ १४ ॥

भाषार्थ—(वृत्रहन्) हे-शत्रुनाशक ! [परमात्मन्] (सुतवन्तः) तत्त्व के धारण करने वाले, (वृक्तवर्हिषः) हिंसा त्यागने वाले [अथवा वृद्धि पाने वाले विद्वान्], (स्तोतारः) स्तुति करने वाले (वयम्) हम लोग (च) निश्चय करके (त्वा) तुझ को (परि आसते) सेवते हैं, (पुवित्रस्य) शुद्ध स्थान के (प्रस्रवणेषु) झरनों में (आपः न) जैसे जल [उधरते हैं] ॥ १४ ॥

भावार्थ—तत्त्वग्राही विद्वान् लोग उस परमात्मा के ही ध्यान में शान्ति पाते हैं, जैसे बहता हुआ पानी शुद्ध चौरस स्थान में आकर उधर जाता है ॥ १४ ॥

मन्त्र १४—१६ आशुके है—अ० २० । ५२ । १—३ ॥

स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः । कुदा सुतं

१४—१६ । एते मन्त्रा व्याख्याताः—अ० २० । ५२ । १—३ ॥

तृषाण ओकु आ ग'म इन्द्र स्वव्दीव वंस'गः ॥ १५ ॥

स्वरन्ति । त्वा । सुते । नरः । वसो इति । निरेके ।
उक्थिनः ॥ कदा । सुतम् । तृषाणः । ओकः । आ । ग'मः ।
इन्द्र । स्वव्दी-व । वंस'गः ॥ १५ ॥

भाषार्थ—(वसो) हे श्रेष्ठ ! [परमात्मन्] (उक्थिनः) कहने योग्य
वचनों वाले (नरः) नर [नेता लोग] (निरेके) निःशंक स्थान में (सुते)
सार पदार्थ के निमित्त (त्वा) तुझ को (स्वरन्ति) पुकारते हैं—(इन्द्र) हे
इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (कदा) कब (तृषाणः) प्यासे [के
समान] तू (सुतम्) पुत्र को (ओकः) घर में (आ ग'मः) प्राप्त होगा, (स्वव्दी-
व) जैसे सुन्दर जल देने वाला मेघ (वंस'गः) सेवनीय पदार्थों का प्राप्त
कराने वाला [होता है] ॥ १५ ॥

भाषार्थ—जब मनुष्य सार पदार्थ पाने के लिये परमात्मा की भक्ति
निर्भर्य होकर करता है, परमात्मा उसको इस प्रकार चाहता है जैसे प्यासा
जल को, और इस प्रकार उसका उपकार करता है, जैसे सूजा के पोछे मेघ
आनन्द देता है ॥ १५ ॥

कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद् वाजं दर्षि सहस्रिणाम् । पिशङ्गरूपं
मघवन् विचर्षणे मधु गोमन्तमीमहे ॥ १६ ॥

कण्वेभिः । धृष्णो इति । आ । धृषत् । वाजम् । दर्षि ।
सहस्रिणाम् ॥ पिशङ्ग-रूपम् । मघ-वन् । वि-चर्षणे । मधु ।
गोमन्तम् । ई'महे ॥ १६ ॥

भाषार्थ—(धृष्णो) हे निर्भर्य ! [परमात्मन्] (धृषत्) दृढ़ता से
(कण्वेभिः) बुद्धिमानों करके [किये हुये] (सहस्रिणाम्) सहस्रों आनन्द
वाले (वाजम्) वेग का (आ दर्षि) तू आदर करता है, (मघवन्) हे धन
वाले ! (विचर्षणे) हे दूरदर्शी ! (पिशङ्गरूपम्) अवयवों को रूप देने वाले,
(गोमन्तम्) वेदवाणी वाले [तुझ] से (मधु) शीघ्र (ई'महे) हम प्रार्थना
करते हैं ॥ १६ ॥

भावार्थ—वह परमात्मा परमाणुओं से सूर्य आदि बड़े बड़े लोकों का बनाने वाला है, उस निर्भय की उपासना से मनुष्य धर्मात्मा होकर निर्भय होवे ॥ १६ ॥

सूक्तम् ५८ ॥

१—४॥ १, २ इन्द्रः, ३, ४ सूर्यो देवता ॥ १, ३ निवृत्पथ्या बृहती, २ सतः पङ्क्तिः, ४ भुरिगार्षी बृहती ॥

ईश्वरविषयोपदेशः—ईश्वर विषय का उपदेश ॥

आयन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत । वसूनि जाते जन-
मान् ओजसा प्रति भागं न दीधिम ॥ १ ॥

आयन्तः—इव । सूर्यम् । विश्वा । इत् । इन्द्रस्य । भक्षत ॥
वसूनि । जाते । जनमाने । ओजसा । प्रति । भागम् । न ।
दीधिम ॥ १ ॥

भावार्थ—[हे मनुष्यों !] (सूर्यम्) सूर्य [रवि] का (आयन्तः इव) आश्रय करते हुये [किरणों] के समान (इन्द्रस्य) इन्द्र [परम पेश्वर्यवान् परमात्मा] के (ओजसा) सामर्थ्य से (विश्वा) सब (इत्) ही (वसूनि) वस्तुओं को (भक्षत) भोगों, [उन को] (जाते) उत्पन्न हुये और (जनमाने) उत्पन्न होने वाले जगत् में (भागम् न) अपने भाग के समान (प्रति) प्रत्यक्ष रूप से (दीधिम) हम प्रकाशित करें ॥ १ ॥

भावार्थ—जैसे किरणें सूर्य के आश्रय से रहती हैं, वैसे ही परमात्मा का आश्रय लेकर संसार के पदार्थों से उपकार लेते हुये हम आगे होने वालों

१ (आयन्तः) शिञ् सेवायाम्—शतृ । गुणे प्राप्ते छान्दसी वृद्धिः ।
आयन्तः । आश्रयन्तः किरणाः (इव) यथा (सूर्यम्) रविमण्डलम् (विश्वा) सर्वाणि
(इत्) एव (इन्द्रस्य) परमैश्वर्यवतः परमात्मनः (भक्षत) भक्षयते—लोभः ।
भक्षयत । सेवध्वम् (वसूनि) वस्तूनि (जाते) उत्पन्ने (जनमाने) छान्दसं रूपम् ।
जनिष्यमाणे । उत्पत्त्यमाने जगति (ओजसा) सामर्थ्येन (प्रति) प्रत्यक्षेण
(भागम्) सेवनीयमंशम् (न) इव (दीधिम) दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः ।
छान्दसं परस्मैपदम्, अन्तर्गतण्यर्थः । प्रकाशयेम ॥

के लिये पिता के धन के समान अपना कर्म छोड़ जावे ॥ १ ॥

मन्त्र १, २ ऋग्वेद में हैं—८। ६६ [सायणुमाध ८८]। ३, ४; सामवेद—

उ० ५। २। १४, म० १—पू० ३। ८। ५ तथा यजुर्वेद—३३। ४१ ॥

अनर्शरातिं वसुदामुपं स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातयः । सो
अस्य कामं विधतो न रोषति मनो दानाय चोदयन् ॥ २ ॥

अनर्श-रातिम् । वसु-दाम् । उपं । स्तुहि । भद्राः । इन्द्रस्य ।
रातयः ॥ सः । अस्य । कामम् । विधतः । न । रोषति ।
मनः । दानाय । चोदयन् ॥ २ ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्य !] (अनर्शरातिम्) निर्दोष दानी, (वसुदाम्)
धन देने वाले [परमात्मा] की (उप) आदर पूर्वक (स्तुहि) स्तुति कर, (इन्द्रस्य)
इस इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले परमेश्वर] के (रातयः) दान (भद्राः) कल्याण
कारी हैं । (सः) वह [परमात्मा] (विधतः) सेवक के (मनः) मन को
(दानाय) दान के लिये (चोदयन्) बढ़ाता हुआ (अस्य) उसकी (कामम्)
इच्छा को (न) नहीं (रोषति) नष्ट करता है ॥ २ ॥

भाषार्थ—मनुष्य परमात्मा के अक्षय भण्डार से अनन्त दानों को पाकर
सदा उपकार में लगावे ॥ २ ॥

मयमहाँ अशि सूर्य बडादित्य म्हाँ अशि । महस्ते सुतो
महिमा पनस्यतेऽद्वा देव म्हाँ अशि ॥ ३ ॥

बट् । मुहान् । अशि । सूर्य । बट् । आदित्य । मुहान् ।

२—(अनर्शरातिम्) ऋश हिंसायाम्—अच, सौत्रो धातुः । अनर्शरातिमन-
शलीलदानमश्लीलं पापकमश्रिमद् विषमम्—निरु० ६। २३। निर्दोषदानम्
(वसुदाम्) धनस्य दातारम् (उप) पूजायाम् (स्तुहि) प्रशंस (भद्राः)
कल्याणयः (इन्द्रस्य) परमैश्वर्यवतः परमैश्वरस्य (रातयः) दानाति (सः)
परमात्मा (अस्य) उपासकस्य (कामम्) मनोरथम् (विधतः) परिचरतः
पुरुषस्य (न) निषेधे (रोषति) दिनस्ति । नाशयति (मनः) अन्तःकरणम्
(दानाय) (चोदयन्) प्रेरयन् सन् ॥

असि महः । ते । सतः । महिमा । पनस्यते । अद्वा ।
देव । महान् । असि ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(सूर्य) हे चराचर के प्रेरक [परमेश्वर] तू (बट्) सत्य सत्य (महान्) बड़ा (असि) है, (आदित्य) हे अविनाशी ! तू (बट्) ठीक ठीक (महान्) महान् [पूजनीय] (असि) है । (ते) तुझ (महः) महान्, (सतः) सत्य स्वरूप की (महिमा) महिमा (पनस्यते) स्तुति की जाती है, (देव) हे दिव्य गुण वाले तू (अद्वा) निश्चय करके (महान्) महान् (असि) है ॥ ३ ॥

भाषार्थ—जिस परमात्मा की महिमा सब सृष्टि के पदार्थ जताते हैं, सब मनुष्य उसकी उपासना करके अपनी उन्नति करें ॥ ३ ॥

मन्त्र ३ कुछ भेद से आचुका है—अ० १३। २। २६। मन्त्र ३, ४ ऋग्वेद में हैं—८। १०१ [सोयणभाष्य ६०]। ११, १२; यजुर्वेद ३३। ३६, ४०। और सामवेद—३० ६। १। ६ ॥

बट् सूर्य अवसा मुहाँ असि सुत्रा देव मुहाँ असि । मुहा
देवानामसुर्यैः पुरोहितो विभु- ज्योतिरदाभ्यम् ॥ ४ ॥

बट् । सूर्य । अवसा । महान् । असि । सुत्रा । देव । महान् ।
असि ॥ मुहा । देवानाम् । असुर्यैः । पुरः-हितः । वि-भु ।
ज्योतिः । अदाभ्यम् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(सूर्य) हे सूर्य ! [सूर्य के समान सब के प्रकाशक परमेश्वर]
तू (अवसा) यश वा धन से (बट्) सचमुच (महान्) बड़ा (असि) है,

३—(बट्) सत्यम् (महान्) विशालः (असि) (सूर्य) हे चराचर—
प्रेरक (बट्) (आदित्य) हे अविनाशिस्वरूप (महान्) पूजनीयः (असि)
(महः) महतः (ते) तव (सतः) सत्यस्वरूपस्य (पनस्यते) स्तूयते (अद्वा)
सत्यम् (देव) हे दिव्यगुणविशिष्ट (महान्) (असि) ॥

४—(बट्) सत्यम् (सूर्य) हे सवितृवत् स्वप्रकाशक (अवसा)
यशसा धनेन वा (महान्) (असि) (मुहा) महिना । महत्वेन (देवानाम्)

(देव) हे सुखदाता तू (सत्रा) सचमुच (महान्) बड़ा (असि) है । (देवानाम्) चलने चाले लोकों के बीच (महा) अपनी बड़ाई से तू (असुर्यः) प्राणियों वा बुद्धि वालों का हितकारी (पुरोहितः) पुरोहित [अगुआ] और (विभु) व्यापक (अदाभ्यम्) न दबने योग्य (ज्योतिः) ज्योति है ॥ ४ ॥

भावार्थ—जो प्रकाशस्वरूप, सब का पुरोहित अर्थात् मुखिया होकर सब प्राणियों का हित करता है, मनुष्य उसकी आराधना कर के आत्मबल बढ़ावे ॥ ४ ॥

सूक्तसु ५८ ॥

मन्त्राः १—४ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ पथ्या बृहती; २, ४ निचृदार्षी पङ्क्तिः; ३ निचृदार्षी बृहता ॥

१—२ ईश्वरोपासनोपदेशः—१—२ ईश्वर की उपासना का उपदेश ॥

उदु त्थे मधुमत्तमा गिरु स्तोमास ईरते । सुत्राजितो धनसा
अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव ॥ १ ॥

उत् । ऊं इति । त्थे । मधुमत्-तमाः । गिरः । स्तोमासः ।
ईरते ॥ सुत्रा-जितः । धनसाः । अक्षित-ऊतयः । वाज-यन्तः ।
रथाः-इव ॥ १ ॥

भाषार्थ—(त्थे) वे (मधुमत्तमाः) अतिमधुर (स्तोमासः) स्तोत्र (उ) और (गिरः) वाणियां (उत् ईरते) ऊंची जाती हैं । (इव) जैसे (सत्राजितः) सत्य से जीतने वाले, (धनसाः) धन देने वाले, (अक्षितोतयः) अक्षय रक्षा करने वाले, (वाजयन्तः) बल प्रकट करते हुये (रथाः) रथ [आगे बढ़ते हैं] ॥ १ ॥

गतिशीलानां लोकानां मध्ये (असुर्यः) असुः प्राणः । प्रज्ञानाम—निघ० ३ । ६, रोमत्वर्थीयः, यत् हितार्थे । असुरत्वं प्रज्ञावत्त्वं वानवत्त्वं वा—निरु० १० । ३४ । प्राणिभ्यो बुद्धिमद्भ्यो वा हितकरः (पुरोहितः) अ० ३ । १६ । १ । पुरस्+डुधाञ् धारण पोषणयोः—क्त । अग्ने धृतः स्थापितः । प्रधानः (विभु) व्यापकम् (ज्योतिः) प्रकाशस्वरूपम् (अदाभ्यम्) अहिसनीयम् ।

भाषार्थ—जैसे शूर वीरों के रथ रणक्षेत्र में विजय पाने के लिये उमंग से चलते हैं, वैसे ही मनुष्य दोनों और दुष्टों को वश में करने के लिये परमात्मा की स्तुति को किया करें ॥ १ ॥

मन्त्र १,२ आचुके हैं—अ० २० । १० । १—२ ॥

करवा इत् भृगवः सूर्या इत् विरमिद्रोतमानशुः । इन्द्रं
स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन् ॥ २ ॥

करवाः-इव । भृगवः । सूर्या-इव । विश्वम् । इत् । धीतम् ।
आनशुः ॥ इन्द्रम् । स्तोमेभिः । महयन्तः । आयवः । प्रिय-
मेधासः । अस्वरन् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(करवाः इव) बुद्धिमानों के समान, और (सूर्याः इव)
सूर्यों के समान [तेजस्वी], (भृगवः) परिपक्व ज्ञान वाले, (महयन्तः) पूजते
हुये, (प्रियमेधासः) यज्ञ को प्रिय जानने वाले (आयवः) मनुष्यों ने (विश्वम्)
व्यापक, (धीतम्) ध्यान किये गये (इन्द्रम्) इन्द्र [परमात्मा] का (इत्)
ही (स्तोमेभिः) स्तोत्रों से (आनशुः) पाया है और (अस्वरन्) उच्चारण
है ॥ २ ॥

भाषार्थ—मनुष्य बुद्धिमानों और सूर्यों के समान प्रतापी होकर पर-
मात्मा के गुणों को गाते हुये आत्मोन्नति करें ॥ २ ॥

३—४ राजप्रजाकर्तव्योपदेशः—३—४ राजा और प्रजा के कर्तव्य का
उपदेश ॥

उदिन्वस्य रिच्युतेशो धनं न जिग्युषः । य इन्द्रो हरि-
वान् दभन्ति तं रिपो दक्षं दधाति सोमिनि ॥ ३ ॥

उत् । इत् । नु । अस्य । रिच्युते । अंशः । धनम् । न ।
जिग्युषः ॥ यः । इन्द्रः । हरि-वान् । न । दभन्ति । तम् ।
रिपः । दक्षम् । दधाति । सोमिनि ॥ ३ ॥

१—२ ॥ मन्त्रौ व्याख्यातौ अ० २० । १० । १—२ ॥

भाषार्थ—(अस्य) उस [राजा] का (इत्) ही (अंशः) भाग (जिग्युषः) विजयी वीर के (धनं न) धन के समान (नु) शीघ्र (उत् रिच्यते) बढ़ता जाता है, (यः) जो (हरिवान्) श्रेष्ठ मनुष्यों वाला (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला राजा] (सोमिनि) तत्त्व रख वाले व्यवहार में (दत्तम्) बल को (दधाति) लगाता है, और (तम्) उस [राजा] को (रिपः) बैरी लोग (न) नहीं (दमन्ति) सताते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—जो राजा अपने बल को श्रेष्ठ व्यवहारों में लगाता है, वह राज्य में उन्नति कर के प्रतिष्ठा पाता है ॥ ३ ॥

मन्त्र ३, ४ ऋग्वेद में हैं—७।३२।१२, १३ ॥

मन्त्रमखर्वं सुधितं सुपेशसं दधात यज्ञियेष्व ।

पूर्वीश्च न प्रसितयस्तरन्ति तं य इन्द्रे कर्मणा भुवत् ॥ ४ ॥

मन्त्रम् । अखर्वम् । सु-धितम् । सु-पेशसम् । दधात । यज्ञियेषु । आ ॥ पूर्वीः । च न । प्र-सितयः । तरन्ति । तम् । यः । इन्द्रे । कर्मणा । भुवत् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्यों !] (अखर्वम्) अनर्चि [धार्मिक], (सुधितम्) अच्छे प्रकार व्यवस्था किये गये, (सुपेशसम्) बहुत सोना आदि धन करने वाले (मन्त्रम्) मन्त्र [मन्तव्य विचार] को (यज्ञियेषु) पूजा योग्य व्यवहारों में

३—(उत्) आधिक्ये (इत्) एव (नु) क्षिप्रम् (अस्य) राज्ञः (रिच्यते) अधिको भवति (अंशः) भागः (धनम्) (न) इव (जिग्युषः) जि जये—कसु । जयशीलस्य (यः) (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् राजा (हरिवान्) प्रशस्तमनुष्यैर्युक्तः (न) निषेधे (दमन्ति) हिंसन्ति (तम्) राजानम् (रिपः) रिपवः । शत्रवः (दत्तम्) बलम् (दधाति) धरति (सोमिनि) तत्त्वरसवति व्यवहारे ॥

४—(मन्त्रम्) मन्तव्यं विचारम् (अखर्वम्) सर्वगतौ दपेच—अर्चम् । अनीचम् । धार्मिकम् (सुधितम्) दधातेः—क । सुविहितम् । सुष्ठु व्यवस्था—पितम् (सुपेशसम्) पेशो हिरण्यनाम—निघ० १ । २ । सुपेशांसि शोभनानि

सू० ६० [६४८]

विंशं कार्डम् ॥ २० ॥

(४,१५१)

(आ) सब ओर से (दधात) धारण करो । (पूर्वीः) प्राचीन (चन) ही (प्रसितयः) उत्तम प्रबन्ध (तम्) उस मनुष्य को (तरन्ति) पार लगाते हैं, (यः) जो पुरुष (इन्द्रे) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले राजा] के निमित्त (कर्मणा) क्रिया के साथ (भुवत्) होवे ॥ ४ ॥

भावार्थ— राजा और विद्वान् जन मिलकर गूढ़ विचारों के साथ सर्व-हितकारी काम करके आपस में प्रीति बढ़ावे ॥ ४ ॥

सूक्तम्- ६० -॥

१—६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ विराडापी गायत्री; २, ५ गायत्री; ३, ४ निचृद् गायत्री; ६ वर्धमाना गायत्री ॥

मनुष्यकर्तव्योपदेशः—मनुष्य के कर्तव्य का उपदेश ॥

एवा ह्यसि वीर्युरेवा शूर उत स्थिरः । एवा ते राध्यं मनः १
एव । हि । असि । वीर-युः । एव । शूरः । उत । स्थिरः ॥
एव । ते । राध्यम् । मनः ॥ १ ॥

भाषार्थ—[हे पुरुष !] तू (एव) निश्चय करके (हि) ही (वीर्युः) वीरों का चाहने वाला, (एव) निश्चय करके (शूरः) शूर (उत) और (स्थिरः) दृढ़ (असि) है, (एव) निश्चय करके (ते) तेरा (मनः) मन [विचार सामर्थ्य] (राध्यम्) बढ़ाई योग्य है ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्य धार्मिक सत्य सङ्कल्पों की पूर्ति के लिये सदा दृढ़ प्रयत्न करे ॥ १ ॥

मन्त्र १—३ ऋग्वेद में हैं—८ । ६२ [सायण भाष्य ८१] । २८—३०, सामवेद—७० २ । १ । तृच १८; मन्त्र १—पू० ३ । ४ । १० ॥

सुवर्णादिधनानि -यस्मात् तम् (दधात) धत्त (यज्ञियेषु) पूजाहोमेषु व्यव-
हारेषु (आ) समन्तात् (पूर्वीः) प्राचीनाः (चन) अपि (प्रसितयः) उत्तम-
प्रबन्धाः (तरन्ति) पारयन्ति (तम्) पुरुषम् (यः) (इन्द्रे) ऐश्वर्यवति
राजनि निमित्ते (कर्मणा) सत्क्रियया (भुवत्) भवेत् ॥

१—((एव) निश्चयेन (हि) अवधारणे (असि) (वीर्युः) वीर—
क्यच् । उपत्ययः वीरान् कामयमानः (एव) (शूरः) (उत) अपि (स्थिरः)
दृढ़ः (एव) (ते) तव (राध्यम्) माराधनयोग्यम् (मनः) मनसामर्थ्यम् ॥

एवा रातिस्तुवीमघु विश्वेभिर्धायि धातृभिः । अधा चिदिन्द्र मे सचा ॥ २ ॥

एव । रातिः । तुवि-मघु । विश्वेभिः । धायि । धातृ-भिः ॥
अध । चित् । इन्द्र । मे । सचा ॥ २ ॥

भाष्यार्थ—(तुविमघ) हे बहुत धन वाले ! (रातिः) [तेरा] दान (एव) निश्चय करके (विश्वेभिः) सब (धातृभिः) कर्मधारियों कर के (धायि) धारण किया गया है, (अध) सो, (इन्द्र) हे इन्द्र । [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] (मे) मेरे लिये (चित्) भी (सचा) नित्य मेल से [रह] ॥ २ ॥

भावार्थ—वीर पुरुष बहुत धन को एकत्र करके अपने कर्मकारियों को सदा प्रसन्न रखे ॥ २ ॥

मो शु ब्रह्मोव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते । मत्स्वो सुतस्य गोमतः ॥ ३ ॥

मो इति । सु । ब्रह्मा-इव । तन्द्रयुः । भुवः । वाजानाम् ।
पुते ॥ मत्स्व । सुतस्य । गो-मतः ॥ ३ ॥

भाष्यार्थ—(वाजानां पते) हे अज्ञों के रक्षक ! (ब्रह्मा इव) ब्रह्मा [वेदज्ञाता] के समान [होकर] तू (तन्द्रयुः) आलसी (मो शु भुवः) कभी भी मत हो, (गोमतः) वेदवाणी से युक्त (सुतस्य) तत्त्व रस का (मत्स्व) आनन्द भोग ॥ ३ ॥

२—(एव) निश्चयेन (रातिः) दानम् (तुविमघ) हे बहुधनवान् (विश्वेभिः) सर्वैः (धायि) अधायि । धार्यते (धातृभिः) कर्मधारकैः (अध) अनन्तरम् (चित्) एव (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् पुरुष (मे) मह्यम् (सचा) समवायेन—वर्तस्वेति शेषः ॥

३—(मो) नैव (सु) (ब्रह्मा) वेदज्ञाता (इव) यथा (तन्द्रयुः) तद्वि अवसादे मोहे च—घञ्, ण्यच्—उ । तन्द्रम् आलस्यमिच्छन् । आलस्ययुक्तं (भुवः) भूयाः (वाजानाम्) अज्ञानाम् (पते) रक्षक (मत्स्व) हर्षं प्राप्नुहि (सुतस्य) तत्त्वरसस्य (गोमतः) वेदवाणीयुक्तस्य ॥

भावार्थ—मनुष्य विद्वानों के समान निरालसी होकर तत्त्वज्ञान के अभ्यास से सुखी होवे ॥ ३ ॥

एवा ह्यस्य सुनृता विरुण्शी गोमती मही । पक्वा शाखा न दाशुषे ॥ ४ ॥

एव । हि । अस्य । सुनृता । वि-रुण्शी । गो-मती । मही ॥
पक्वा । शाखा । न । दाशुषे ॥ ४ ॥

भावार्थ—(अस्य) उस [सभापति] की (सुनृता) अन्नवाली क्रिया (एव) निश्चय करके (हि) ही (विरुण्शी) स्पष्ट वाणी वाली, (गोमती) श्रेष्ठ दृष्टि वाली, (मही) सत्कार योग्य, (पक्वा) पररिपक्व [फल फूल वाली] (शाखा न) शाखा के समान (दाशुषे) आत्मदानी पुरुष के लिये [होवे] ॥ ४ ॥

भावार्थ—राजा आदि सभापति दूरदर्शी होकर अन्न आदि पदार्थों से हितैषी सुपात्रों का सत्कार कर के सुखी करें, जैसे फल फूल वाले वृक्ष आनन्द देते हैं ॥ ४ ॥

मन्त्र ४—६ ऋग्वेद में है—१ । ८ । ८—१० । और आगे हैं, २० । ७१ ।
४—६ ॥

एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते । सुद्यश्चित् सन्ति दाशुषे ॥ ५ ॥

एव । हि । ते । वि-भूतयः । ऊतयः । इन्द्र । मा-वते ॥
सुद्यः । चित् । सन्ति । दाशुषे ॥ ५ ॥

४—(एव) निश्चयेन (हि) अवधारणे (अस्य) सभापतेः (सुनृता) सुनृतेत्यन्ननाम—निघ० २ । ७ । अन्नवती क्रिया (विरुण्शी) अ० ५ । २६ । १३ । वि + रप् व्यक्तायां वाचि—किप् शप्त्ययो मत्वर्थे, डीष् । स्पष्टवाग्वाती (गोमती) श्रेष्ठदृष्टियुक्ता (मही) महती । पूज्या (पक्वा) फलपुष्पयुक्ता (शाखा) वृक्षावयवः (न) इव (दाशुषे) आत्मदानिने । भकाय ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (एव) निश्चय करके (हि) ही (ते) तेरे (विभूतयः) अनेक ऐश्वर्य (मावते) मेरे नृत्य (दाशुषे) आत्मदानी के लिये (सद्यः चित्) तुरन्त ही (ऊतयः) रक्षासाधन (सन्ति) होते हैं ॥ ५ ॥

भाषार्थ—राजा अपना ऐश्वर्य श्रेष्ठ उपकारी पुरुषों की रक्षा में लगाता रहे ॥ ५ ॥

ए॒वा ह्य॑स्य॒ काम्या॑ स्तोमं॑ उ॒क्त्यं च॑ शंस्यो॑ । इन्द्रा॑य सोम॑-
पीतये ॥ ६ ॥

ए॒व । हि॑ । अ॒स्य॒ । काम्या॑ । स्तोमः॑ । उ॒क्त्यम् । च॒ । शंस्यो॑ ॥
इन्द्रा॑य । सोम॑-पीतये ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(एव) निश्चय करके (हि) ही (अस्य) उस [सभापति] के (काम्या) मनोहर और (शंस्यो) प्रशंसनीय (स्तोमः) उत्तम गुण (च) और (उक्त्यम्) कहने योग्य कर्म (इन्द्राय) ऐश्वर्यवान् पुरुष के लिये (सोमपीतये) तत्त्वरस पीने के निमित्त [हैं] ॥ ६ ॥

भाषार्थ—उत्तम गुणी पुरुष को सभापति बनाकर सब मनुष्य ऐश्वर्य वाले और तत्त्वज्ञान वाले हों ॥ ६ ॥

५—(एव) निश्चयेन (हि) अवधारणे (ते) तव (विभूतयः) विविधैश्वर्याणि (ऊतयः) रक्षासाधनानि (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् राजन् (मावते) वतुपप्रकरणे युष्मदस्मद्भ्यां छन्दसि सादृश्य उपसंख्यानम् । वा० पा० ५ । २ । ३६ । अस्मद्—वतुप सादृश्ये । आ सर्वनाम्नः । पा० ६ । ३ । ६१ । इत्याकारादेशः । मत्सदृशाय (सद्यः) शीघ्रम् (चित्) एव (सन्ति) भवन्ति (दाशुषे) आत्मदानिने ॥

६—(एव) निश्चयेन (हि) अवधारणे (अस्य) सभापतेः (काम्या) सुपां सुलुक्० । पा० ७ । १ । ३६ । इति द्विचचनस्य आकारः । कमनीये (स्तोमः) स्तुत्यगुणः (उक्त्यम्) वक्तव्यं कर्म (च) (शंस्यो) पूर्ववद् आकारः । प्रशंसनीये (इन्द्राय) ऐश्वर्यवते पुरुषाय (सोमपीतये) तत्त्वरसपानाय ॥

सूक्तम् ६१ ॥

१—६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ उष्णिक; २—६ निचृदुष्णिक ॥

परमेश्वरगुणोपदेशः—परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृत्सु ससहिम् । उ लोककृत्सु-
अद्रिवो हरिश्चियम् ॥ १ ॥

तम् । ते । मदम् । गृणीमसि । वृषणम् । पृत्-सु । ससहिम् ॥
जं इति । लोक-कृत्सुम् । अद्रि-वः । हरि-श्चियम् ॥ १ ॥

भावार्थ—(अद्रिवः) हे मेघों के धारण करने वाले ! [परमेश्वर]
(ते) तेरे (तम्) उस (वृषणम्) महाबल वाले, (पृत्सु) सङ्ग्रामों में (सस-
हिम्) विजय करने वाले, (लोककृत्सुम्) लोकों के बनाने वाले (उ) और
(हरिश्चियम्) मनुष्यों में श्री [सेवनीय सम्पत्ति वा शोभा] देने वाले (मदम्)
आनन्द की (गृणीमसि) हम स्तुति करते हैं ॥ १ ॥

भावार्थ—पृथिवी आदि सब लोकों के रचने वाले, मनुष्यों को सब में
श्रेष्ठ बनाने वाले न्यायकारी परमेश्वर की स्तुति से हम समर्थ होकर आनन्द
बढ़ावें ॥ १ ॥

मन्त्र १—३ ऋग्वेद में हैं—८।१५।४—६, सामवेद—उ० २।२।
तृच १८; मन्त्र १—पू० ४।१०।३ ॥

येन ज्योतीष्यायवे मनवे च विवेदिय । मुन्दानो अस्य
बर्हिषो वि राजसि ॥ २ ॥

१—(तम्) प्रसिद्धम् (ते) तव (मदम्) आनन्दम् (गृणीमसि)
मस इकारानमः । गृणीमः । स्तुमः (वृषणम्) महाबलवन्तम् (पृत्सु) सङ्ग्राम-
मेषु (ससहिम्) अ० ३।१८।५ । अभिभवितारम् । विजयितारम् (उ) च
(लोककृत्सुम्) कृहनिभ्यां कृत्सुः । उ० ३।३० । करोतेः कृत्सु । लोकानां कर्ता-
रम् (अद्रिवः) हे मेघधारिन् (हरिश्चियम्) हरिषु मनुष्येषु श्रीः श्रेयणीया
सेव्या सम्पत्तिः शोभा वा यस्मात् तम् ॥

येन । ज्योतींषि । आयवे । मनवे । च । विवेदिथ ॥ मन्दानः ।
अस्य । बर्हिषः । वि । राजसि ॥ २ ॥

भाषार्थ—[हे परमेश्वर !] (येन) जिस [यज्ञ] के द्वारा (आयवे)
गतिशील [उद्योगी] (च) और (मनवे) मननशील मनुष्य के लिये (ज्यो-
तीषि) ज्योतियों को (विवेदिथ) तू ने प्राप्त कराया है, (मन्दानः) आनन्द
करता हुआ तू (अस्य) उस (बर्हिषः) बड़े हुये यज्ञ [संसार] की (वि)
विशेष कर के (राजसि) राजा है ॥ २ ॥

भावार्थ—जिस परमात्मा ने संसार के बीच, सूर्य, अग्नि, बिजुली,
वायु आदि रचकर पुरुषार्थी विचारवान् पुरुष के लिये पेश्वर्य पाने के अनन्त
साधन दिये हैं, वही परमेश्वर सब सृष्टि का स्वामी है ॥ २ ॥

तद्व्या चित्त उक्थिनोऽनुं वृषन्ति पूर्वथा । वृषपत्नीरूपो जया
दिवेदिवे ॥ ३ ॥

तत् । अद्य । चित् । ते । उक्थिनः । अनुं । वृषन्ति । पूर्व-था ॥
वृष-पत्नीः । अपः । जय । दिवे-दिवे ॥ ३ ॥

भाषार्थ—[हे परमेश्वर !] (ते) तेरे (तत्) उस [सामर्थ्य] को
(उक्थिनः) कहने योग्य के कहने हारे पुरुष (अद्यचित्) अब भी (पूर्वथा)
पहिले के समान (अनु) लगातार (वृषन्ति) गाते हैं । [जिस सामर्थ्य से]

२—(येन) बर्हिषा । यज्ञेन (ज्योतींषि) सूर्याग्निविद्युद्वाय्वादीन्
(आयवे) छन्दसीणः उ० १ । २ । इण् । गतौ-उण् । गतिशीलाय (मनवे) मनन-
शीलाय मनुष्याय (च) (विवेदिथ) विदून् लामे-लिट् । प्रापितवानसि (मन्दा-
नः) अ० २० । ६ । १ । आमोदयितारम् (अस्य) प्रसिद्धस्य (बर्हिषः) प्रबुद्धस्य
यज्ञस्य (वि) विशेषेण (राजसि) ईशिषे ॥

३—(तत्) सामर्थ्यम् (अद्य) इदानीम् (चित्) अपि (ते) तब
(उक्थिनः) वक्तव्यस्य वक्तारः (अनु) निरन्तरम् (वृषन्ति) प्रशंसन्ति
(पूर्वथा) पूर्वकाले यथा (वृषपत्नीः) वृषा बलवान् परमात्मा पत्नी रक्षको

(वृषपत्नीः) बलवान् [तुभ्य परमात्मा] से रक्षा की हुई (अपः) प्रजाओं (को) (दिवेदिवे) दिन दिन (जय) तू जीतता है ॥ ३ ॥

भावार्थ—विज्ञानी सूक्ष्मदर्शी लोग परमात्मा की उस शक्ति को देखकर समर्थ होते हैं, जिस शक्ति से वह सब सृष्टि को रचकर सदा अपने वश में रखता है ॥ ३ ॥

तम्भुभि प्र गायत पुरुहुतं पुरुष्टुतम् । इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा
विवासत ॥ ४ ॥

तम् । ऊं इति । अम्भि । प्र । गायत । पुरु-हुतम् । पुरु-
स्तुतम् ॥ इन्द्रम् । गीः-भिः । तविषम् । आ । विवासतं ॥ ४ ॥

भावार्थ—[हे विद्वानो !] (तम् उ) उस ही (पुरुहुतम्) बहुत पुराने हुये, (पुरुष्टुतम्) बहुत बढ़ाई किये हुये, (तविषम्) महान् (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] को (अम्भि) सब ओर से (प्र) भले प्रकार (गायत) गाओ, और (गीर्भिः) वाणियों से (आ) सब प्रकार (विवासत) सत्कार करो ॥ ४ ॥

भावार्थ—हे मनुष्यो ! वह परमात्मा सब से बड़ा है, उसी के गुणों को हृदय में धारण कर के आत्मबल बढ़ाओ ॥ ४ ॥

मन्त्र ४—६ ऋग्वेद में है—८ । १५ । १—३ और आगे हैं—अ० २० । ६२ । ८—१० और मन्त्र १ सामवेद में है—पू० ४ । १० । ३ ॥

यस्य द्विर्वहसो बृहत् सहो दाधाः रोदसी । गिरीरञ्जो
अपः स्ववृषत्वना ॥ ५ ॥

यासां ताः (अपः) प्रजाः (जय) लड़ें लौट । जयसि । वशकरोंषि (दिवे-
दिवे) प्रतिदिनम् ॥

५—(तम्) प्रसिद्धम् (उ) एव (अम्भि) सर्वतः (प्र) प्रकर्षण
(गायत) स्तुत (पुरुहुतम्) बहुविधाकृतम् (पुरुष्टुतम्) बहुप्रशंसितम्
(इन्द्रम्) परमैश्वर्यवान् परमात्मानम् (गीर्भिः) वाणीभिः (तविषम्)
महान्तम् (आ) समस्तम् (विवासत) परिचरत । सेव्यम्—तिब० ३ । ५ ॥

यस्य । द्वि-बर्हसः । बृहत् । सहः । दाधार । रोदसी इति ॥

गिरीन् । अजान् । अपः । स्वः । वृष-त्वना ॥ ५ ॥

स राजसि पुरुष्टुतुं एकौ वृत्राणि जिघ्रसे । इन्द्र जैत्रा अव-
स्या च यन्तवे ॥ ६ ॥

सः । राजसि । पुरु-स्तुतु । एकः । वृत्राणि । जिघ्रसे ॥ इन्द्र ।
जैत्रा । अवस्या । च । यन्तवे ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(द्विबर्हसः) दोनों विद्या और पुरुषार्थ में बढ़े हुये (यस्य)
जिस [परमात्मा] के (बृहत्) बड़े (सहः) सामर्थ्य ने (रोदसी) सूर्य और
भूमि, (अजान्) शीघ्रगामी (गिरीन्) मेघों, (अपः) जलों [समुद्र आदि]
और (स्वः) प्रकाश को (वृषत्वना) बल के साथ (दाधार) धारण किया
है ॥ ५ ॥ (पुरुष्टुत) हे बहुत स्तुति किये हुये (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य
वाले परमात्मन्] (सः) सो (एकः) अकेला तू (जैत्रा) जीतने वालों के
योग्य धनों (च) और (अवस्या) यश के लिये हितकारी कर्मों को (यन्तवे)
नियम में रखने के लिये, (राजसि) राज्य करता है, और (वृत्राणि) रोकने
वाले विघ्नों को (जिघ्रसे) मिटाता है ॥ ६ ॥

५—(यस्य) परमात्मनः (द्विबर्हसः) गतिकारकोपपदयोः पूर्वपद-
प्रकृतिस्वरत्वं । च । उ० ४ । २२७ । द्वि + बर्हः प्राधान्ये—असि । द्वयोर्विद्या-
पुरुषार्थयोः परिवृद्धस्य (बृहत्) महत् (सहः) सामर्थ्यम् (दाधार) धारित-
वान् (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (गिरीन्) मेघान् (अजान्) स्फायितञ्चि-
वञ्चिशकिः । उ० १ । १३ । अज गतिकोपपदयोः—रक्, वीभावाभावः ।
क्षिप्रान्—निघ० २ । १५ । शीघ्रगमनान् (अपः) जलानि समुद्रादीनि (स्वः)
प्रकाशम् (वृषत्वना) वृषत्वेन । वीर्येण ॥ ५ ॥

६—(सः) तादृशस्त्वम् (राजसि) ईशिवे (पुरुष्टुत) बहुष्टुत (एकः)
अद्वितीयः (वृत्राणि) आवरकान् । विघ्नान् (जिघ्रसे) हंसि । नाशयसि
(इन्द्र) हे परमेश्वर्यवान् परमात्मन् (जैत्रा) जेतु—अण् । जेतृणां योग्यानि
धर्माणि (अवस्या) अ० २० । १२ । १ । यशसे हितानि कर्माणि (च)
(यन्तवे) यन्तुं नियन्तुं वशीकृतुम् ॥

भावार्थ—अकेला महाविद्वान् और महापुरुषार्थी परमात्मा सब को परस्पर श्रारण आकर्षण से चलाना हुआ अपने विश्वासी भक्तों को उनके पुरुषार्थ के अनुसार धन और कीर्ति देता है ॥ ५, ६ ॥

सूक्तम् ६२ ॥

१—१० ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ६, ७ विराडाप्युष्णिक्; २ भुरिगार्धी बृहती; ३, ४ ककुबुष्णिक्; ४ विराडार्गी पङ्क्ति; ८—१० निचृदुष्णिक् ॥

१—४ राजप्रजाकर्तव्योपदेशः—१—४ राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

वयम् त्वामपूर्य स्थुरं न कच्चिद् भरन्तोऽवस्यवः । वाजं चित्रं हवामहे ॥ १ ॥

वयम् । ज इति । त्वाम् । अपूर्य । स्थुरम् । न । कत् । चित् । भरन्तः । अवस्यवः ॥ वाजं । चित्रम् । हवामहे ॥ १ ॥

भावार्थ—(अपूर्य) हे अनुपम ! [राजन्] (कत् चित्) कुछ भी (स्थुरम्) स्थिर (न) नहीं (भरन्तः) रखते हुये, (अवस्यवः) रक्षा चाहने वाले (वयम्) हम (वाजं) सङ्ग्राम के बीच (चित्रम्) विचित्र स्वभाव वाले (त्वाम्) तुझ को (उ) ही (हवामहे) बुलाते हैं ॥ १ ॥

भावार्थ—जब दुष्ट चोर डाकू लोग अत्यन्त सतावें, प्रजागण वीर राजा की शरण लेकर रक्षा करें ॥ १ ॥

मन्त्र १—४ आ चुके हैं—अथर्व० २० । १४ । १—४ ॥

उप त्वा कर्मव्रुतये स नो युवोग्रश्चक्राम यो धुषत् ।

त्वामिद्विधितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानुसिम् ॥ २ ॥

उप । त्वा । कर्मन् । व्रुतये । सः । नः । युवा । उग्रः ।

चक्राम् । यः । धुषत् ॥ त्वाम् । इत् । हि । अवितारम् ।

ववृमहे । सखायः । इन्द्र । सानुसिम् ॥ २ ॥

१—४ । एते मन्त्रा व्याख्याताः—म० २० । १४ । १—४ ॥

भाषार्थ—(कर्मन्) कर्म के बीच (नः) हमारी (ऊतये) रक्षा के लिये (सः) उस (यः) जिस (युवां) स्वभाव से बलवान्, (उग्रः) तेजस्वी और (धृषत्) निर्भय पुरुष ने (चक्राम) पैर बढ़ाया है, (इन्द्र) हे इन्द्र ! [महाप्रतापी राजन्] (अवितारम्) उस रक्षक और (सानसिम्) क्षाणी (त्वा) तुझ को, (त्वाम्) तुझ को (हि) ही (इत्) अवश्य (सखायः) हम मित्र लोग (वप) आदर से (ववृमहे) चुनते हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—जो पुरुष प्रजारक्षण में बड़ा पराक्रमी हो, प्रजागण सब लोगों में से उसी को राजा बनावें ॥ २ ॥

यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तसु वस्तुषे ।

सखायि इन्द्रमुतये ॥ ३ ॥

यः । नः । इदम्-इदम् । पुरा । प्र । वस्यः । आ-निनाय ।
तसु । ऊं इति । वः । स्तुषे ॥ सखायः । इन्द्रम् । ऊतये ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(यः) जो [पराक्रमी] (नः) हमारे लिये (इदमिदम्) इस—इस (वस्यः) उत्तम वस्तु को (प्र) अच्छे प्रकार (आनिनाय) लाया है, (तम् उ) उस ही (इन्द्रम्) इन्द्र [महाप्रतापी वीर] को, (सखायः) हे मित्रों ! (वः) तुम्हारी (ऊतये) रक्षा के लिये (स्तुषे) मैं सराहता हूँ ॥ ३ ॥

भावार्थ—जो पुरुष पहले ही से धीर वीर होवे, लोग उसकी बड़ाई कर के गुण ग्रहण करें ॥ ३ ॥

हर्यश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं स हि ऽमा यो अमन्दत । आ
तु नः स वयति गव्यमश्वयं स्तोतृभ्यो मघवा शुतम् ॥ ४ ॥

हरि-अश्वम् । सत्-पतिम् । चर्षणि-सहम् । सः । हि । स्म ।
यः । अमन्दत ॥ आ । तु । नः । सः । वयति । गव्यम् ।
अश्वम् । स्तोतृ-भ्यः । मघ-वा । शुतम् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(सः) वह (हि) ही (स्म) अवश्य [मनुष्य है], (यः) जिस ने (हर्यश्वम्) छे खलने वाले घोड़ों से शुक्र, (सत्पतिम्)

सत्पुरुषों के रक्षक, (चर्षणीसहम्) मनुष्यों को नियम में रखने वाले [राजा] को (अमन्दत) प्रसन्न किया है । (सः) वह (मघवा) महाधनी (तु) तौ (नः) हम (स्तोतृभ्यः) स्तुति करने वालों को (शतम्) सौ [बहुत] (गव्यम्) गौओं का समूह और (अश्व्यम्) घोड़ों का समूह (आ वयति) लाता है ॥ ४ ॥

भावार्थ—सब प्रजागण आज्ञा मानकर शूर धर्मात्मा राजा को प्रसन्न रखें, जिस से वह उत्तम प्रबन्ध के साथ प्रजा का ऐश्वर्य बढ़ावे ॥ ४ ॥

मन्त्राः ५—१० परमेश्वर गुणोपदेशः—मन्त्र ५—१० परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

इन्द्राय सामं गायतु विप्राय बृहते बृहत् । धर्मकृते विपु-
श्चिते पुनस्यवे ॥ ५ ॥

इन्द्राय । सामं । गायतु । विप्राय । बृहते । बृहत् ॥
धर्म-कृते । विपुः-चिते । पुनस्यवे ॥ ५ ॥

भावार्थ—[हे मनुष्यो !] (विप्राय) बुद्धिमान्, (बृहते) महान्, (धर्मकृते) धर्म [धारण योग्य नियम] के बनाने वाले, (विपश्चिते) विशेष महाज्ञानी, (पुनस्यवे) सब के लिये व्यवहार चाहने वाले, (इन्द्राय) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले जगदीश्वर] के लिये (बृहत्) बड़े (सामं) साम [दुःख-नाशक मोक्षज्ञान] का (गायतु) तुम गान करो ॥ ५ ॥

भावार्थ—मनुष्य वेदद्वारा धर्म विधान पर चलकर परमात्मा की उपासना से बुद्धिमान् और व्यवहार कुशल होकर मोक्ष सुख प्राप्त करें ॥ ५ ॥

मन्त्र ५—७ ऋग्वेद में हैं—८ । ६८ [सायण भाष्य ८७] । १-३ । साम-वेद—३० ३ । २ । तृच २२, मन्त्र ५, पू० ४ । १० । ८ ॥

५— (इन्द्राय) परमैश्वर्यवते जगदीश्वराय (सामं) अ० ७ । ५४ । १ । दुःखनाशकं मोक्षज्ञानम् (गायतु) पठत (विप्राय) मेधाविने (बृहते) महत् (बृहत्) महत् (धर्मकृते) धर्मस्य धारणीयनियमस्य कर्त्रे (विपश्चिते) अ० ६ । ५२ । ३ । वि+प्र+चिती संज्ञाने—क्विप् । विशेषमहाज्ञानिने (पुनस्यवे) पुन स्तुतौ व्यवहारे च अयन्-कयन्-उ । सर्वेभ्यो व्यवहारमिच्छते ॥

त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः । विश्वकर्मा विश्वदेवो
महान् असि ॥ ६ ॥

त्वम् । इन्द्र । अभि-भूः । असि । त्वम् । सूर्यम् । अरोचयः ॥
विश्व-कर्मा । विश्व-देवः । महान् । असि ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले परमात्मन्] (त्वम्) तू
(अभिभूः) विजयी (असि) है, (त्वम्) तू ने (सूर्यम्) सूर्य को (अरोचयः)
चमक दी है । तू (विश्वकर्मा) विश्वकर्मा [सब का बनाने वाला], (विश्व-
देवः) विश्वदेव [सब का पूजनीय] और (महान्) महान् [अति प्रबल]
(असि) है ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्य उस महाबली परमात्मा की उपासना से अपने आत्मा
को बलवान् करें ॥ ६ ॥

विभ्राजं ज्योतिषा स्वः अगच्छो रोचनं दिवः । देवास्त
इन्द्रं सुखाय येमिरे ॥ ७ ॥

वि-भ्राजन् । ज्योतिषा । स्वः । अगच्छः । रोचनम् । दिवः ॥
देवाः । ते । इन्द्र । सुखाय । येमिरे ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले परमात्मन्] (ज्योतिषा)
अपनी ज्योति से (विभ्राजन्) चमकता हुआ तू (दिवः) सूर्य के (रोचनम्)
चमकाने वाले (स्वः) अपने आनन्द स्वरूप को (अगच्छः) प्राप्त हुआ है,

६—(त्वम्) (इन्द्र) परमेश्वर्यवान् परमात्मन् (अभिभूः) अभिभविता ।
विजेता (असि) (त्वम्) (सूर्यम्) रश्मिरश्मि (अरोचयः) ऊदीपयः
(विश्वकर्मा) सर्वस्य कर्ता (विश्वदेवः) रुद्धैः रतुत्यः (महान्) अतिप्रबलः
(असि) ॥

७—(विभ्राजन्) विविधं उवाचमानः (ज्योतिषा) रश्मिजला (दिवः)
रश्मीयं सूर्यस्वरूपम् (अगच्छः) प्राप्तावस्थिति (रोचनम्) प्रकाशकम् (दिवः)
सूर्यम् (देवाः) विद्वांसः (ते) इन्द्र (इन्द्र) हे परमेश्वर्यवान् परमात्मन्

सू० ६२ [६५०] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४, १६३)

(देवाः) विद्वानों ने (ते) तेरी (सख्याय) मित्रता के लिये (येमिरे) उद्योग किया है ॥ ७ ॥

भावार्थ—जो प्रकाश स्वरूप परमात्मा अपनी महिमा से प्रत्येक वस्तु में चमकता है, उसकी उपासना से हम अपने आत्मा में प्रकाश करें ॥ ७ ॥

तम्बुभिः प्र गायत पुरुहुतं पुरुष्टुतम् । इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत ॥ ८ ॥

तम् । जं इति । अभि । प्र । गा-यत । पुरु-हुतम् । पुरु-स्तुतम् ॥ इन्द्रम् । गीः-भिः । तविषम् । आ । विवासत ॥ ८ ॥

भावार्थ—[हे विद्वानों !] (तम् उ) उस ही (पुरुहुतम्) बहुत पुकारे हुये, (पुरुष्टुतम्) बहुत बढ़ाई किये हुये, (तविषम्) महान् (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] को (अभि) सब ओर से (प्र) भले प्रकार (गायत) गाओ, और (गीर्भिः) वाणियों से (आ) सब प्रकार (विवासत) सत्कार करो ॥ ८ ॥

भावार्थ—हे मनुष्यो ! वह परमात्मा सब से बड़ा है, उसी के गुणों को हृदय में धारण करके आत्मबल बढ़ाओ ॥ ८ ॥

मन्त्र ८—१० आचके हैं— अ० २० । ६१ । ४—६ ॥

यस्य द्विविहसो बृहत् सहो दाधार रोदसी । गिरीरज्रां अयः स्ववृषत्वना ॥ ९ ॥

यस्य । द्वि-वहसः । बृहत् । सहः । दाधार । रोदसी इति ॥ गिरीन् । अज्रान् । अयः । स्वः । वृष-त्वना ॥ ९ ॥

स राजसि पुरुष्टुतं सकौ दृष्टाणि किङ्से । इन्द्रं जैत्रा इन्द्र-स्यां च यन्तवे ॥ १० ॥

(सख्याय) मित्रताय (येमिरे) नियमितवन्तः । उद्यतवन्तः ॥

८—१० । पठे मन्त्रा व्यापिताः—२०२० । ६१ । ४—६ ॥

सः । राजसि । पुरु-स्तुत । एकः । वृत्राणि । जिघ्रसे ॥
इन्द्र । जैत्रा । अवस्या । च । यन्तवे ॥ १० ॥

भाषार्थ— (द्विवर्हसः) दोनों विद्या और पुरुषार्थ में बड़े हुये (यस्य) जिस [परमात्मा] के (बृहत्) बड़े (सहः) सामर्थ्य ने (रोदसी) सूर्य और भूमि, (अज्ज्ञान) शीघ्रगामी (गिरीन्) मैघों, (अपः) जलों [समुद्र आदि] और (स्वः) प्रकाश को (वृषत्पना) बल के साथ (दाधार) धारण किया है ॥६॥ (पुरुष्टुत) हे बहुत स्तुति किये हुये (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन] (सः) सो (एकः) अकेला तू (जैत्रा) जीतने वालों के योग्य धनों (च) और (अवस्या) यश के लिये हितकारी कर्मों को (यन्तवे) नियम में रखने में लिये (राजसि) राज्य करता है, और (वृत्राणि) रोकने वाले विघ्नों को (जिघ्रसे) मिटाता है ॥ १० ॥

भावार्थ—अकेला महाविद्वान् और महापुरुषार्थी परमात्मा सब को परस्पर धारण आकर्षण से चलाता हुआ अपने विश्वासी भक्तों को उनके पुरुषार्थ के अनुसार धन और कीर्ति देता है ॥ ६, १० ॥

सूक्तम् ६३ ॥

१—६ ॥ १—३ इन्द्रो विश्वेदेवाश्च देवताः; ४—६ इन्द्रो देवता ॥

१—विराट् पङ्क्तिः; २, ३ निचृत् त्रिष्टुप्; ४—६, ६ उष्णिक्; ७, ८ निचृदुष्णिक् ॥

१—६ राजप्रजाधर्मोपदेशः—१६, राजा और प्रजा के धर्म का उपदेश ॥

इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रेशु विश्वे च देवाः । यज्ञं च
नस्तुन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह चीकलपाति ॥ १ ॥

इमा । नु । कम् । भुवना । सीषधाम् । इन्द्रः । च । विश्वे ।
च । देवाः ॥ यज्ञम् । च । नः । तुन्वंम् । च । प्र-जाम् ।
च । आदित्यैः । इन्द्रः । सह । चीकलपाति ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इमा) यह (भुवना) उत्पन्न पदार्थ, (च) और (इन्द्रः)

१—(इमा) इमानि (नु) निप्रम् (कम्) सुखम् (भुवना) उत्पन्नानि

इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला सभापति] (च) और (विश्वे) सब (देवाः) विद्वान् लोग हम (तु) शीघ्र (कम्) सुख को (सीसधाम) सिद्ध करें । (आदित्यैः सह) अखण्ड व्रतधारी विद्वानों के साथ (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला सभापति] (नः) हमारे (यज्ञम्) यज्ञ [मेल मिलाप आदि] (च) और (तन्वम्) शरीर- (च) और (प्रजाम्) प्रजा [सन्तान आदि] को (च) भी (चीकूलपाति) समर्थ करे ॥ १ ॥

भाषार्थ—सभापति राजा और सभासद लोग संसार के सब पदार्थों से उपकार लेकर सब की यथावत् रक्षा करें ॥ १ ॥

मन्त्र १—३ पूर्वार्ध कुछ भेद से ऋग्वेद में है—१० । १५७ । १—५ यजुर्वेद—२५ । ४६ सामवेद—७० ४ । १ । तृच २३ । मन्त्र ३ उत्तरार्द्ध ऋग्वेद में है—६ । १७ । १५ और सामवेद—५० ५ । ७ । ८; मन्त्र १—३ आगे हैं—अ० २० । १२४ । ४—६ ॥

आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्माकं भूत्वविता तनूनाम् ।
हुत्वाय देवा असुरान् यदायन् देवा देत्वमभिरक्षमाणाः ॥२॥
आदित्यैः । इन्द्रः । स-गणः । मरुत्-भिः । अस्माकम् ।
भुत्तु । अविता । तनूनाम् ॥ हुत्वाय । देवाः । असुरान् ।
यत् । आयन् । देवाः । देव-त्वम् । अभि-रक्षमाणाः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(सगणः) गणों [सुभट वीरों] के साथ वर्तमान (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला सभापति] (आदित्यैः) अखण्ड व्रतधारी (मरुद्भिः) शूर मनुष्यों के साथ (अस्माकम्) हमारे (तनूनाम्) शरीरों का (अविता)

भूतजातानि (सीसधाम) साधयेम (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् सभापतिः (च) (विश्वे) सर्वे (च) (देवाः) विद्वांसः सभासदः (यज्ञम्) संगतिकरण-व्यवहारम् (च) (नः) अस्माकम् (तन्वम्) शरीरम् (च) (प्रजाम्) सन्तानादि-रूपाम् (च) (आदित्यैः) अखण्डव्रतिभिः विद्वद्भिः (इन्द्रः) (सह) (चीकूल-पाति) कृपू सामर्थ्यै—लेट् । कल्पयेत् समर्थयेत् ॥

२—(आदित्यैः) अखण्डव्रतिभिः (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान्, सभापतिः (सगणः) गणैः सुभटवीरैः सह वर्तमानः (मरुद्भिः) शूरमनुष्यैः (अस्माकम्) (भूत्तु) भवतु (अविता) रक्षकः (तनूनाम्) शरीराणाम् (हुत्वाय) कवालयपोः

रक्षक (भूत) होवे । (यत्) क्योंकि (असुरान्) असुरों [दुराचारियों] को (हत्वा) मारकर (देवाः) विजय चाहने वाले, (अभिरक्षमाणाः) सब ओर से रक्षा करते हुये (देवाः) विद्वानों ने (देवत्वम्) देवतापन [उत्तमपद] (आयन्) पाया है ॥ २ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य शूर वीर विद्वानों के साथ प्रजा की रक्षा कर सके, वही अपने उत्तम कर्मों के कारण उत्तमपद सम्भारित्व आदि के योग्य होवे ॥ २ ॥

प्रत्यञ्चमर्कमनयं शचीभिरादित् स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ।

अथा वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥ ३ ॥

प्रत्यञ्चम् । अर्कम् । अनयन् । शचीभिः । आत् । इत् ।

स्वधाम् । इषिराम् । परि । अपश्यन् ॥ अथा । वाजम् ।

देव-हितम् । सनेम् । मदेम । शत-हिमाः । सु-वीराः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(प्रत्यञ्चम्) प्रत्यक्ष पाने योग्य (अर्कम्) पूजनीय व्यवहार को (शचीभिः) अपने कर्मों से (अनयन्) उन [विद्वानों] ने प्राप्त कराया है, और (आत् इत्) तभी (इषिराम्) चलाने वाली (स्वधाम्) आत्म धारण शक्ति को (परि) सब ओर (अपश्यन्) देखा है । (अथा) इसी [नीति] से (शतहिमाः) सौ वर्षों जीते हुये (सुवीराः) उत्तम वीरों वाले हम (देवहितम्) विद्वानों के हितकारी (वाजम्) विज्ञान को (सनेम) देवें और (मदेम)

प्रयोग श्रृङ्गान्दसः । इत्वा । नाशयित्वा (देवाः) विजिगीषवः (असुरान्) सुर-विरोधिनः । दुराचारिणः पुरुषान् (यत्) यतः (आयन्) इण गतौ—लङ् ॥ अगच्छन् । प्राप्नुवन् (देवाः) विद्वांसः (देवत्वम्) दिव्यपदम् (अभिरक्ष-माणाः) सर्वतो रक्षन्तः ॥

३—(प्रत्यञ्चम्) प्रत्यक्षेण गन्तव्यं प्रापणीयम् (अर्कम्) अर्चनीयं व्यव-हारम् (अनयन्) प्रापयन् ते विद्वांसः (शचीभिः) स्वकर्मभिः (आत्) अन्-तरम् (इत्) एव (स्वधाम्) आत्मधारणशक्तिम् (इषिराम्) अ० ५। १। ६। नगयित्रीम् (परि) सर्वतः (अपश्यन्) अवलोकितवन्तः (अथा) अनया नीत्या (वाजम्) विज्ञानम् (देवहितम्) विद्वद्भ्यो हितकारिणम् (सनेम) विभजेम । दद्याम (मदेम) आनन्देम् (शतहिमाः) शतवर्षजीविनः (सुवीराः)

सू० ६३ [६११] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,१६७)

आनन्द करें ॥ ३ ॥

भावार्थ—जैसे विद्वान् लोग अपने उत्तम कर्मों से संसार का उपकार करते रहे हैं, वैसे ही हम श्रेष्ठ ज्ञान की प्राप्ति से मनुष्यों को वीर बनाकर आनन्द देवें ॥ ३ ॥

य एक इह विद्यते वसु मर्तीय दाशुषे । ईशानो अप्रतिष्कृत
इन्द्रो अङ्ग ॥ ४ ॥

यः । एकः । इत् । वि-द्यते । वसु । मर्तीय । दाशुषे ॥
ईशानः । अप्रति-स्कृतः । इन्द्रः । अङ्ग ॥ ४ ॥

भावार्थ—(यः) जो (एकः) अकेला (इत्) ही (दाशुषे) दाता (मर्तीय) मनुष्य के लिये (वसु) धन (विद्यते) बहुत प्रकार देता है, (अङ्ग) हे मित्र ! वह (ईशानः) समर्थ, (अप्रतिष्कृतः) वे रोक गतिवाला (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला सभापति] होता है ॥ ४ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य सब में बड़ा उत्साही निर्भय शूर पुरुष हो, वही सभापति राजा होवे ॥ ४ ॥

मन्त्र ४—६ ऋग्वेद में है—१। ८४। ७—६; सामवेद—३० ५। २।
तुच २२; मन्त्र ७ साम०—पू० ४। १०। ६ ॥

कुदा मर्तिसराधसं पुदा क्षुम्पमिव स्फुरत् । कुदा नः शुश्रुह
गिरु इन्द्रो अङ्ग ॥ ५ ॥

कुदा । मर्तिसृ । सराधसं । पुदा । क्षुम्पम्-इव । स्फुरत् ॥
कुदा । नः । शुश्रुह । गिरः । इन्द्रः । अङ्ग ॥ ५ ॥

उत्तमवीरोपेताः ॥

४—(यः) पुरुषः (एकः) अद्वितीयः (इत्) एव (विद्यते) विविधं
ददाति (वसु) धनम् (मर्तीय) मनुष्याय (दाशुषे) दात्रे (ईशानः) समर्थः
(अप्रतिष्कृतः) अ० २०। ४१। १। अप्रतिगतः (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् सभा-
पतिः (अङ्ग) हे मित्र ॥

भाषार्थ—(अङ्ग) हे मित्र ! (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले समापति आप] (कदा) कब (अराधसम्) आराधना न करने वाले (मर्तम्) मनुष्य को (पदा) पाँच से (जुष्म इव) खुम्मी [गली लकड़ी से उगे हुये कुशाकार छोटे पौधे] के समान (स्फुरत्) नष्ट करेंगे और (कदा) कब (नः) हमारी (गिरः) वाणियों को (शुश्रवत्) सुनेंगे ॥ ५ ॥

भाषार्थ—समापति दुःखित प्रजा की पुनार सुनकर अनाज्ञाकारी दुष्ट को इस प्रकार गिरा देवे, जैसे खुम्मी वृक्ष पाँच से कुचल जाता है ॥ ५ ॥

यह मन्त्र निरुक्त में व्याख्यात है—५ । १६-१७ ॥

यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतान् आविवासति । उग्रं तत् पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग ॥ ६ ॥

यः । चित् । हि । त्वा । बहु-भ्यः । आ । सुत-वान् । आविवासति ॥ उग्रम् । तत् । पत्यते । शवः । इन्द्रः । अङ्ग ॥ ६ ॥

भाषार्थ—[हे प्रजागण !] (बहुभ्यः) बहुतों में से (यः चित् हि) जो कोई भी (सुतवान्) तत्वरस वाला [मनुष्य] (त्वा) तुम्हो (आ) निश्चय करके (आविवासति) भले प्रकार सेवा करता है, (तत्) उसी से (अङ्ग) हे मित्र ! (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला समापति] (उग्रम्) भारी (शवः) बल (पत्यते) पाता है ॥ ६ ॥

५—(कदा) कस्मिन् काले (मर्तम्) मनुष्यम् (अराधसम्) अना-
राधयन्तम्—निरु० ५ । १७ (पदा) पादेन (जुष्मम्) गलितकाष्ठोत्पन्नजुद्ध-
वृक्षम् । अहिङ्गत्रकम्—निरु० ५ । १६ (इव) यथा (स्फुरत्) स्फुरतिर्वधकर्मा—
निघ० ३ । १६ । अवस्फुरिष्यति । वधिष्यति (कदा) (नः) अस्माकम्
(शुश्रवत्) श्रोष्यति—निरु० ५ । १७ (गिरः) वाणीः (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान्
समाध्यक्षो भवान् (अङ्ग) हे मित्र ॥

६—(यः चित्) यः कश्चित् (हि) एव (त्वा) त्वाम् । प्रजागणम्
(बहुभ्यः) बहुमनुष्येभ्यः सकाशात् (आ) अवधारणे (सुतवान्) तत्वरसेन
युक्तः (आविवासति) समन्तात् परिचरति (उग्रम्) प्रचण्डम् (तत्)
तस्मात् कारणात् (पत्यते) प्राप्नोति (शवः) बलम् (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान्
समापतिः (अङ्ग) हे मित्र ॥

भाषार्थ—जो मनुष्य प्रजा की सेवा करता है, वही बलवान् होकर
पेश्वर्य प्राप्त करता है ॥ ६ ॥

७—६ परमेश्वरगुणोपदेशः—७-६ परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति । येना हंसि न्य१-
त्तिणं तमीमहे ॥ ७ ॥

यः । इन्द्र । सोम-पातमः । मदः । शविष्ठ । चेतति ॥ येन ।
हंसि । नि । अत्तिणम् । तम् । ईमहे ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(शविष्ठ) हे महाबली ! (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले
परमात्मन्] [तेरा] (यः) जो (सोमपातमः) पेश्वर्य का अत्यन्त रक्षक
(मदः) आनन्द (चेतति) चेताने वाला है, और (येन) जिस [आनन्द]
से (अत्तिणम्) खाऊ [स्वार्थी दुर्जन] को (नि हंसि) तू मार गिराता है,
(तम्) उस [आनन्द] को (ईमहे) हम मांगते हैं ॥ ७ ॥

भाषार्थ—जो परमात्मा स्वार्थी दुष्टों को दण्ड देकर श्रेष्ठों को सुख देता
है, उस की उपासना सदा करनी चाहिये ॥ ७ ॥

मन्त्र ७—६ ऋग्वेद में हैं—८ । १२ । १—३ । मन्त्र ७ साम०—पू० ५ ।

१ । ४ ॥

येना दशग्वमग्निं वेपयन्तं स्वर्णरम् । येना समुद्रमाविष्या
तमीमहे ॥ ८ ॥

येन । दश-ग्वम् । अग्नि-गुम् । वेपयन्तम् । स्वः-नरम् ॥

येन । समुद्रम् । आविष्य । तम् । ईमहे ॥ ८ ॥

भाषार्थ—[हे परमात्मन् !] (येन) जिस [नियम] से (दशग्वम्)

७—(यः) (इन्द्र) हे परमेश्वर्यवान् परमात्मन् (सोमपातमः) पेश्वर्य-
स्य रक्षितृतमः (मदः) आनन्दः (शविष्ठ) हे शवस्वितम । बलवत्तम (चेतति)
चेतयिता भवति (येन) मदेन (हंसि) नाशयसि (नि) नितराम् (अत्तिणम्)
अक्षारम् । स्वार्थिनम् (तम्) मदम् (ईमहे) याचामहे ॥

८—(येन) नियमेन (दशग्वम्) दश + ग्वम् गतौ-इवप्रत्ययः । दशविषु

इस दिशाओं में जाने वाले, (अधीगुम्) वे रोक गति वाले, (वेपयन्तम्) [बैरियों को] कंपाते हुये, (स्वर्णरम्) सुख पहुंचाने वाले [वीर] को और (येन) जिस [नियम] से (समुद्रम्) समुद्र के समान [गम्भीर पुरुष] को (आदिथ) तू ने बताया है, (तम्) उस [नियम] को (ईमहे) हम मांगते हैं ॥ ६ ॥

भावार्थ—जो आनन्दस्वरूप जगदीश्वर पुरुषार्थियों को सदा सहाय देता है, उसी की उपासना से पुरुषार्थ करके हम सुखी होवें ॥ ६ ॥

येन सिन्धुं महीरपो रथान् इव प्रचोदयः । पन्थामृतस्य यातवे तमीमहे ॥ ६ ॥

येन । सिन्धुम् । महीः । अपः । रथान्-इव । प्र-चोदयः ॥
पन्थाम् । मृतस्य । यातवे । तम् । ईमहे ॥ ६ ॥

भावार्थ—[हे जगदीश्वर !] (येन) जिस [नियम] से (सिन्धुम्) समुद्र में (महीः) भारी (अपः) जलों को (रथान् इव) रथों के समान (प्रचोदयः) तू ने चलाया है, (मृतस्य) सत्य के (पन्थाम्) मार्ग पर (यातवे) चलाने के लिये (तम्) उस [नियम] को (ईमहे) हम मांगते हैं ॥ ६ ॥

भावार्थ—जिस प्रकार नियम से परमात्मा अन्तरिक्ष और पृथिवी के समुद्र में जगत् के उपकार के लिये जल भरता और रीता करता है, वैसे ही परमेश्वर की उपासना के साथ हम नियम पूर्वक पुरुषार्थी होकर उपकार करें ॥ ६ ॥

गन्तारम् (अधीगुम्) अ० २० । ३५ । १ । अधृतगमनम् । अनिवारितगतिम् (वेपयन्तम्) शत्रून् कम्पयन्तम् (स्वर्णरम्) सुखस्य नेतारं प्रापयितारम् (येन) नियमेन (समुद्रम्) समुद्रमिव गम्भीरं पुरुषम् (आदिथ) त्वं ररक्षिथ (तम्) नियमम् (ईमहे) याचामहे ॥

६—(येन) नियमेन (सिन्धुम्) अन्तरिक्षपृथिवीस्थसमुद्रं प्रति (महीः) महतीः (अपः) जलानि (रथान्) (इव) यथा (प्रचोदयः) लुब्धकम् । प्रेरितवानसि (पन्थाम्) पन्थानम् (मृतस्य) सरयस्य (यातवे) यातुम् । गन्तुम् । अन्यत् पूर्ववत् ॥

सूक्तम् ६४ ॥

१—६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ३, ५, ६, विराडाप्युष्णिक्; २, ४ उष्णिक् ॥
परमात्मगुणोपदेशः—परमात्मा के गुणों का उपदेश ॥

इन्द्रो नो गधि प्रियः सत्राजिदगोह्यः । गिरिर्न विश्वतस्पृथुः
पतिर्दिवः ॥ १ ॥

आ । इन्द्र । नः । गधि । प्रियः । सत्रा-जित् । अगोह्यः ॥
गिरिः । न । विश्वतः । पृथुः । पतिः । दिवः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (प्रियः)
प्यारा, (सत्राजित्) सत्य से जीतने वाला, (अगोह्यः) न छिपने वाला तू
(नः) हमको (आ) सब ओर से (गधि) प्राप्त हो, तू (गिरिः न) मेह के
समान (विश्वतः) सब ओर से (पृथुः) फैला हुआ, (दिवः) प्राप्ति योग्य
सुख का (पतिः) स्वामी है ॥ १ ॥

भावार्थ—सर्वहितकारी, सर्वनियन्ता, सर्वव्यापक परमात्मा की उपा-
सना से मनुष्य आनन्द प्राप्त करें ॥ १ ॥

मन्त्र १—३ ऋग्वेद में हैं—८ । ६८ [सायण भाष्य ८७] । ४—६, साम-
वेद—७० ५ । १ । तृच १६; मन्त्र १—साम०—पू० ५ । १ । ३ ॥

अभि हि सत्य सोमपा उभे बभूयु रोदसी । इन्द्रासि सुन्वतो
वृधः पतिर्दिवः ॥ २ ॥

अभि । हि । सत्य । सोम-पाः । उभे इति । बभूयु । रोदसी
इति ॥ इन्द्र । असि । सुन्व-तः । वृधः । पतिः । दिवः ॥ २ ॥

१—(आ) समन्तात् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (नः)
अस्मान् (गधि) गहि । गच्छ । प्राप्नुहि (प्रियः) हितकरः (सत्राजित्)
सत्येन जेता (अगोह्यः) अरोपनीयः । सुप्रकटः (गिरिः) मेघः (न) इव
(विश्वतः) सर्वतः (पृथुः) विरलतः (पतिः) स्वामी (दिवः) स्वर्गस्थ ।
सुखस्य ॥

भाषार्थ—(सत्य) हे सत्य स्वरूप ! (सोमपाः) हे ऐश्वर्य रक्षक ! (हि) निश्चय कर के (उभे) दोनों (रोदसी) सूर्य और भूमि को (अभि बभूथ) तू ने वश में किया है, (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्यवान् परमात्मन्] तू (सुन्वतः) तत्त्व रस निचोड़ने वाले पुरुष का (वृधः) बढ़ाने वाला, (दिवः) सुख का (पतिः) स्वामी (असि) है ॥ २ ॥

भावार्थ—सूर्य और पृथिवी आदि लोकों के रचने वाले परमात्मा की उपासना से हम तत्त्व ज्ञान प्राप्त कर के वृद्धि करें ॥ २ ॥

त्वम् हि शश्वतीनामिन्द्रं दुर्ता पुरामसि । हुन्ता दस्योर्मनो-
वृधः पतिर्दिवः ॥ ३ ॥

त्वम् । हि । शश्वतीनाम् । इन्द्रं । दुर्ता । पुराम् । असि ॥
हुन्ता । दस्योः । मनोः । वृधः । पतिः । दिवः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (त्वम्) तू (हि) हा [शत्रुओं की] (शश्वतीनाम्) सब (पुराम्) नगरियों का (दुर्ता) तोड़ने वाला, (दस्योः) डाकू का (हुन्ता) मारने वाला और (मनोः) छानी का (वृधः) बढ़ाने वाला, (दिवः) सुख का (पतिः) स्वामी (असि) है ॥ ३ ॥

भावार्थ—परमात्मा सब विघ्नों को मिटा कर अपने भक्तों की उन्नति कर के सुख देता है ॥ ३ ॥

२—(अभि बभूथ) अभिबभूविथ । अभिभूतवानसि (हि) निश्चयेन (सत्य) हे अविनाशिस्वरूप (सोमपाः) हे ऐश्वर्यरक्षक (उभे) द्वे (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (असि) भवसि (सुन्वतः) तत्त्वरसं संस्कुर्वतः पुरुषस्य (वृधः) वर्धयिता । अन्यद् गतम् ॥

३—(त्वम्) (हि) एव (शश्वतीनाम्) बह्वीनाम् । सर्वासाम् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (दुर्ता) विद्विरयिता (पुराम्) शत्रुनगरीणाम् (असि) (हुन्ता) घातकः (दस्योः) परधनापहतुः (मनोः) मननशीलस्य । अश्वत् पूर्ववत् ॥

एतु मध्वो मुदिन्तरं सिञ्च वाध्वर्यो अन्धसः। एवा हि वीर
स्तवते सुदावृधः ॥ ४ ॥

आ । इत् । ऊ । इति । मध्वः । मुदिन्-तरम् । सिञ्च । वा ।
अध्वर्यो इति । अन्धसः ॥ एव । हि । वीरः । स्तवते ।
सुदा-वृधः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(अध्वर्यो) हे हिंसा न चाहने वाले पुरुष ! (मध्वः)
ज्ञान [मधु विद्या] के (वा) और (अन्धसः) अन्न के (मुदिन्तरम्) अधिक
आनन्द देने वाले रस को (इत् उ) अवश्य ही (आ) सब ओर (सिञ्च)
सींच, (सुदावृधः) सदा बढ़ाने वाला (वीरः) वीर (एव) इन प्रकार (हि)
ही (स्तवते) स्तुति किया जाता है ॥ ४ ॥

भाषार्थ—विद्वान् पुरुष हिंसा कर्म छोड़ कर विद्या और अन्न आदि
की प्राप्ति के तत्त्व सिद्धान्तों का प्रकाश करके वीरों के समान कीर्ति पावे ॥

मन्त्र ४—६ ऋग्वेद में हैं—८। २४। १६—१८; कुछ भेद से सामवेद—
उ० ८। २। १। त्व १०; मन्त्र ४—साम०—पू० ४। १०। ५ ॥

इन्द्रं स्थातर्हरीणां नकिंष्टे पुर्व्यस्तुतिम् । उदानंश्च शर्वसा न
भुन्दता ॥ ५ ॥

इन्द्र । स्थातः । हरीणां । नकिः । ते । पुर्व्य-स्तुतिम् ॥
उत् । आनंश्च । शर्वसा । न । भुन्दता ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(हरीणाम्) दुःख हरने वाले मनुष्यों में (स्थातः) ठह-

४—(आ) समन्तात् (इत्) अवश्यम् (उ) अवधारणे (मध्वः)
मधुनः । निश्चितज्ञानस्य (मुदिन्तरम्) नाद् यस्य । पा० ८। २। १७। इति
तरपो लुडागमः । मादयितृतरं रसम् (सिञ्च) सिकं कुरु (वा) चार्थे
(अध्वर्यो) अ० १८। ४। १५ । हे अहिंसामिच्छुक (एव) एवम् (हि)
निश्चयेन (वीरः) शूरः (स्तवते) स्तूयते (सुदावृधः) सर्वदा वर्धयिता ॥

५—(इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् परममन् (स्थातः) हे स्थितिशील (हरीणाम्)

रने वाले (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (ते) तेरी (पूर्णस्तुतिम्) प्राचीन बड़ाई को (नकिः) न किसी ने (शक्ता) अपने बल से और (न) न (भन्दता) शुभ कर्म से (उत् आनंश) पाया है ॥ ५ ॥

भावार्थ—संसार के बीच एक परमात्मा ही सर्वशक्तिमान् और सर्व-दुःखनाशक है, उसी के उपासना से मनुष्य उपकार शक्ति बढ़ावे ॥ ५ ॥

तं वो वाजानां पतिमहमहि अवस्यवः । अप्रायुभिर् यज्ञेभिर्वा-
वृधेन्यम् ॥ ६ ॥

तम् । वः । वाजानाम् । पतिम् । अहमहि । अवस्यवः ॥
अप्रायु-भिः । यज्ञेभिः । वृधेन्यम् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्यो !] (वः) तुम्हारे लिये (तम्) उस (वाजा-
नाम्) बलों के (पतिम्) स्वामी, (अप्रायुभिः) बिना भूल (यज्ञेभिः) पूजनीय
व्यवहारों से (वृधेन्यम्) बढ़ाने वाले [परमात्मा] को (अवस्यवः) कीर्ति
चाहने वाले हम लोगों ने (अहमहि) पुकारा है ॥ ६ ॥

भावार्थ—हे मनुष्यो ! सब बलों के दाता, सदा उपकार कर के बढ़ाने
वाले परमात्मा की आराधना से हम सामर्थ्य बढ़ा कर कीर्ति पावें ॥ ६ ॥

हरयो मनुष्यनाम—निघ० २ । ३ । दुःखहर्तृणां मनुष्याणां मध्ये (नकिः) नक-
श्चिदपि (ते) तब (पूर्णस्तुतिम्) पूर्ण पुराणनाम—घि० ३ । २७ । प्राचीन-
प्रशंसाम् (उत्) (आनंश) अशु व्यासौ—लिट् । प्राप्तवान् (शक्ता) स्वबलेन
(न) निषेधे (भन्दता) भदि कल्याणे सुखेच—युच्, विभक्तेराकारः ।
शुभकर्मणा ॥

६—(तम्) प्रसिद्धम् (वः) शुभमर्थम् (वाजानाम्) बलानाम् (पतिम्)
स्वामिनम् (अहमहि) हयतेर्लुङ् । वयमाहुतवन्तः (अवस्यवः) कीर्तिकामाः
(अप्रायुभिः) न + प्र + आङ् + युञ् बन्धने, यद्वा सुङ् निङ्ङने —डु ।
निर्वन्धैः । निरालसैः । अप्रमादिभिः (यज्ञेभिः) पूजनीयव्यवहारैः (वृ-
धेन्यम्) वृत्रहण्यः । उ० ३ । ६८ । वृधु वद्धौ—एण्यः, सच कित् द्वित्वं च,
अन्तर्गतण्यर्थः । वर्धयितारम् ॥

सूक्तम् ६५ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ आर्षी गायत्री; २ निचृदुष्णिक; ३ विराडा—
प्युष्णिक ॥

परमेश्वरगुणोपदेशः—परमेश्वर के गुणों का उपदेश

एतो न्विन्द्रं स्तवाम् सखायु स्तोम्यं नरम् । कृष्टीर्यो विश्वा
अभ्यस्त्येक इत् ॥ १ ॥

एतो इति । नु । इन्द्रम् । स्तवाम् । सखायः । स्तोम्यम् ।
नरम् ॥ कृष्टीः । यः । विश्वाः । अभि । अस्ति । एकः । इत् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(सखायः) हे मित्रो ! (नु) शीघ्र (एतो) आओ भी,
(स्तोम्यम्) स्तुति योग्य, (नरम्) नेता [प्रेरक] (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े
पेश्वर्य वाले परमात्मा] की (स्तवाम्) हम स्तुति करें, (यः) जो (एकः)
अकेला (इत्) ही (विश्वाः) सब (कृष्टीः) मनुष्यों को (अभि अस्ति) वश
में रखता है ॥ १ ॥

भावार्थ—हम सब मिलकर सर्वशक्तिमान् परमात्मा की स्तुति करके
आनन्द पावें ॥ १ ॥

मन्त्र १—३ अग्वेद में हैं—गत सूक्त से आगे, ८ । २४ । १४—२१ । म०
१ साम०—पृ० ४ । १० । ७ ॥

अगौरुधाय गुविषे द्युक्षाय दस्म्यं वचः । घृतात् स्वादीये
मधुनश्च वोचत ॥ २ ॥

अगौरुधाय । गो-इषे । द्युक्षाय । दस्म्यम् । वचः ॥ घृतात् ।
स्वादीयः । मधुनः । च । वोचत् ॥ २ ॥

१—(एतो) आ, इत, व । आगच्छतैव (नु) क्षिप्रम् । (इन्द्रम्) पर-
मेश्वरम् (स्तवाम्) प्रशंसाय (सखायः) हे सुहृदः (स्तोम्यम्) स्तुतियोग्यम्
(नरम्) नेतारम् । प्रेरकम् (कृष्टीः) मनुष्यप्रजाः (विश्वाः) सर्वाः (यः)
(अभि अस्ति) अभिभवति । वशीकरोति (एकः) असहायः (इत्) एव ॥

यस्यामितानि वीर्या॑ न राधः पर्येतवे० । ज्योतिर्न विश्व-
मभ्यस्ति दक्षिणा ॥ ३ ॥

यस्य॑ । अमितानि । वीर्या॑ । न । राधः । परि-स्तवे ॥ ज्योतिः ।
न । विश्वम् । अभि । अस्ति । दक्षिणा ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(अगोरुधाय) दृष्टि को न रोकने वाले, (गविषे) स्तोताओं
[गुण व्याख्याताओं] का चाहने वाले, (द्युत्थाय) व्यवहारों में गति वाले
[उस परमेश्वर] के लिये (घृतात्) घृत से (च) और (मधुनः) मधु [रस
विशेष] से (स्वादीयः) अधिक स्वादु और (दस्म्यम्) दर्शनीय [विचारणीय]
(वचः) वचन (वोचत) तुम बोलो ॥ २ ॥ (यस्य) जिस [परमात्मा] के
(वीर्या) वीर कर्म (अमितानि) वे नाप हैं, [जिसका] (राधः) धन (पर्येतवे)
पार पाने योग्य (न) नहीं है, और [जिसकी] (दक्षिणा) दक्षिणा [दान-
शक्ति], (ज्योतिः न) प्रकाश के समान (विश्वम् अभि) सब पर फैलकर
(अस्ति) वर्तमान है ॥ ३ ॥

भावार्थ—हे मनुष्यो ! तुम परमेश्वर की स्तुति नञ्जता पूर्वक करके
अपना सामर्थ्य बढ़ाओ, वह जगदीश्वर अनन्तबली, अनन्त धनी और अनन्त
दानी है ॥ २, ३ ॥

२—(अगोरुधाय) गमेडों । उ० २ । ६७ । गच्छतेडों, रुधिर आवरणे—
कप्रत्ययः । अदृष्टिरोधकास्य (गविषे) गो + इषु इच्छायाप्-क्विप् । गौः
स्तोतृनाम-निध- ३ । १६ । स्तोतृन् इच्छवे (द्युत्थाय) अ० २० । ६ । २ ।
व्यवहाररेषु गतिशीलाय (दस्म्यम्) अ० २० । १७ । २ । दस्म—यत् । दर्शनार्हम् ।
विचारणीयम् (वचः) वचनम् (घृतात्) आज्यात् (स्वादीयः) स्वादुतरम्
(मधुनः) रसविशेषात् (च) (वोचत) लोडर्थे लुङ्, अडभावः । श्रुते ॥

३—(यस्य) इन्द्रस्य । परमेश्वरस्य (अमितानि) परिमाणरहितानि
(वीर्या) वीरकर्माणि (न) निषेधे (राधः) धनम् (पर्येतवे) इण् गतो-
तवेन् । परिगन्तुं प्राप्तुं शक्यम् (ज्योतिः) तेजः (न) यथा (विश्वम्) सर्व जगत्
(अभि) अभीक्ष्य । व्याप्य (अस्ति) वर्तते (दक्षिणा) दानशक्तिः ॥

सूक्तसु ६६ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ विराडुष्णिक्; २ निचदुष्णिक्; ३ आस्युष्णिक् ॥

पेश्वर्यवतः पुरुषस्य लक्षणोपदेशः—पेश्वर्यवान् पुरुष के लक्षणों का उपदेश ॥

स्तुहीन्द्रं वयश्च वदन्मिं वाजिनं यमम् । अर्यो गयं मंहमानं
वि दाशुषे ॥ १ ॥

स्तुहि । इन्द्रम् । वयश्च-वत् । अनूर्मिम् । वाजिनम् । यमम् ॥
अर्यः । गयम् । मंहमानम् । वि । दाशुषे ॥ १ ॥

भाषार्थ—[हे विद्वान् !] (वयश्च वत्) विविध वेग वाले पुरुष के समान (अनूर्मिम्) बिना पीड़ाओं वाले, (वाजिनम्) पराक्रमी, (यमम्) न्यायकारी (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले पुरुष] की (स्तुहि) स्तुति कर। (अर्यः) स्वामी (दाशुषे) आत्मदानी भक्त के लिये (वि) विविध प्रकार (मंहमानम्) बढ़ते हुये (गयम्) धन सदृश है ॥ १ ॥

भावार्थ—जो पुरुष पराक्रम करके भूख आदि पीड़ाओं से बचा रहता है, उस के गुणों को ग्रहण कर के मनुष्य सुखी होवें। विद्वानों ने छह पीड़ायें मानी हैं, जिन से बचने का मनुष्य उपाय करता रहे—[बुभुक्षा च पिपासा च प्राणस्य, मनसः स्मृतौ । शोकमोहौ शरीरस्य जरा मृत्युः षड्रमयः ॥ १ ॥] प्राण की भूख और प्यास, मन की शोक और मोह, शरीर की जरा और मृत्यु, यह छह पीड़ायें कही गयी हैं ॥ १ ॥

यदं तु च ऋग्वेद में है—गतं सूक्तं से आगे, ८ । २४ । २२-२४ ॥

१—(स्तुहि) प्रशंस (इन्द्रम्) परमेश्वर्यवन्तं पुरुषम् (वयश्च वत्)
वि + अश् व्यसौ-कन्; सादृश्ये वतिः । विविधवेगवान् पुरुष इव (अनूर्मिम्)
ऊर्मिभिर्बुभुक्षापिपासादिषट्पीडाभोरदितम् (वाजिनम्) पराक्रमिणम्
(यमम्) न्यायिनम् (अर्यः) स्वामी (गयम्) धनरूपम् (मंहमानम्) महि-
बुद्धौ-शान्तम् । वर्धमानमम् (वि) विविधम् (दाशुषे) आत्मदानीने ।
भकांष ॥

एषा नूनमुप स्तुहि वैयश्व दशुमं नवम् । सुविद्वांसं चर्कृत्य
चुरणीनाम् ॥ २ ॥

एष । नूनम् । उप । स्तुहि । वैयश्व । दशुमम् । नवम् ॥
सु-विद्वांसम् । चर्कृत्यम् । चुरणीनाम् ॥ २ ॥

भाष्यार्थ—(वैयश्व) हे विविध वेग वाले पुरुष ! (दशमम्) प्रकाशमान
[अथवा जीवन के दसवें काल तक] (नवम्) स्तुतियोग्य [वा नवीन अर्थात्
बलवान्], (सुविद्वांसम्) बड़े विद्वान् और (चुरणीनाम्) चलने वाले मनुष्यों
में (चर्कृत्यम्) अत्यन्त करने योग्य कर्मों में चतुर की (एष) निश्चय करके
(नूनम्) अवश्य (उप) आदर से (स्तुहि) तू स्तुति कर ॥ २ ॥

भावार्थ—जो पुरुष बड़े प्रतापी, जीवन के सौ वर्ष में से नब्बे वर्ष के
ऊपर भी अर्थात् अन्त काल तक आत्मिक और शारीरिक बल वाले कर्मकुशल
वीर हों, उनके गुणों को सब मनुष्य प्रहण करें ॥ २ ॥

वेत्सा हि निःश्वतीनां वज्रहस्त परिवृजम् । अहरहः शुन्ध्युः
परिपदामिव ॥ ३ ॥

वेत्स । हि । निः-श्वतीनाम् । वज्र-हस्त । परि-वृजम् ॥

२—(एष) निश्चयेन (नूनम्) अवश्यम् (उप) पूजायाम् (स्तुहि)
प्रशंस (वैयश्व) वि+अश्व—अण् । न खाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामैच् ।
पा० ७ । ३ । ३ । इति ऐकारागमः । अश्वो वेगः । हे विविधवेगवान् पुरुष
(दशमम्) प्रथेरमच् । उ० ५ । ६८ । दशि भाषायां दीप्तौ च-अमच्, नकारलोपः ।
दीप्यमानम् । यद्वा दशानां पूरणः, ङटि मुडागमः । पुरुषाणां शतायुष्यनियमात्
तस्यायुषो दशधा विभागे नवत्वाधिकायामवस्थायां वर्तमानम् । अतिवृद्धा-
वस्थापर्यन्तम् (नवम्) स्तुत्यम् । नवीनं बलवान्तम् (सुविद्वांसम्) अतिशयेन
कानिन्तम् (चर्कृत्यम्) अ० ६ । ६८ । १ । यङ्लुगन्तात् करोतेः—क, ततः
साधये—यत् । चर्कृत्येषु अतिशयेन कर्तव्येषु कर्मसु कुशलम् (चुरणीनाम्)
अतिशृणु । उ० २ । १०२ । चर गतिमकृणायोः—अनि । चरणीनां गमन
शीलानां मनुष्याणाम् ॥

सू० ६७ [६५५] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,१७८)

अहः-अहः । शुन्ध्युः । परिपदाम्-इव ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(वज्रहस्त) हे वज्र हाथ में रखने वाले ! (हि) निश्चय करके (परिपदाम्) विपत्तियों के (शुन्ध्युः इव) शोधने वाले के समान (अहरहः) दिन दिन (निर्ऋतीनाम्) महाविपत्तियों के (परिवृजम्) रोकने को (वेत्थ) तू जानता है ॥ ३ ॥

भाषार्थ—जो मनुष्य शूर पराक्रमियों के समान विघ्नों को हटाकर प्रजा की रक्षा करे, उसका सब लोग आदर करें ॥ ३ ॥

इति पञ्चमोऽनुवाकः ॥

अथ षष्ठोऽनुवाकः

सूक्तम् ६७ ॥

१—७ ॥ १ इन्द्रः, २ मरुतः, ३ अग्निः, ४ मरुतो माधवश्च, ५ अग्निः शुचिश्च, ६ इन्द्रो नभश्च, ७ द्रविणोदाश्च देवताः ॥ १ विराडष्टिः, २ सुराडत्यष्टिः, ३ अष्टिः, ४ जगती, ५ सुराडार्षी त्रिष्टुप्, ६ भुरिक् त्रिष्टुप्, ७ आर्षी जगती ॥

मनुष्यकर्तव्योपदेशः—मनुष्य के कर्तव्य का उपदेश ॥

वृनोति हि सुन्वन् क्षयं परीणसः सुन्वानो हि ष्मा यजुत्यवृ
द्विषो देवानामवृ द्विषः । सुन्वान इत् सिषासति सुहस्र
वाज्यवृतः । सुन्वानायेन्द्रो ददात्याभुव रयिं ददात्याभुवम् ॥१॥

वृनोति । हि । सुन्वन् । क्षयम् । परीणसः । सुन्वानः । हि ।
स्म । यजति । अव । द्विषः । देवानाम् । अव । द्विषः ॥

३—(वेत्थ) सांहितिको दीर्घः । वेत्सि । जानासि (हि) एव (निर्ऋतीनाम्) अ० २ । १० । १ । कृच्छ्रापत्तीनाम् निरु० २ । ७ (वज्रहस्त) हे वज्र-पाणे (परिवृजम्) वृजी वर्जने—घमर्थे क । परिवर्जनम् । निवारणम् (अहरहः) दिनां दिनम् (शुन्ध्युः) अ० २० । १६ । १ । शोधकः (परिपदाम्) विपदाम् । विपत्तीनाम् (इव) यथा ॥

सुन्वा॒नः । इत् । सि॒सा॒स॒ति । स॒ह॒स्रा । वा॒जी । अ॒वृ॒तः ॥
 सुन्वा॒नाय॑ । इन्द्रः । द॒दा॒ति । आ॒भुव॑म् । रु॒यिम् ।
 द॒दा॒ति । आ॒भुव॑म् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(सुन्वन्) तत्त्व निकालता हुआ पुरुष (हि) ही (परीणसः)
 पाने योग्य धन के (क्षयम्) घर को (वनोति) सेवता है [भोगता है],
 (सुन्वानः) तत्त्व निकालता हुआ पुरुष (हि) ही (स्म) अवश्य (द्विषः)
 बैरियों को (अव यजति) दूर करता है, (देवानाम्) विद्वानों के (द्विषः)
 बैरियों को (अव) दूर [करता है], (सुन्वानः) तत्त्व रस निकालता हुआ
 पुरुष (इत्) हो (वाजी) पराक्रमी और (अवृतः) बे रोक होकर (सहस्रा)
 सैकड़ों सुख (सिसासति) देना चाहता है । (सुन्वानाय) तत्त्व निकालते हुये
 पुरुष को (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला परमात्मा] (आभुवम्) सब ओर
 से पाने योग्य (रुयिम्) धन (ददाति) देता है, (आभुवम्) सब ओर से रहने
 योग्य [धन] (ददाति) देता है ॥ ६ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य विद्याओं का सार ग्रहण कर के शत्रुओं को मारता

१—(वनोति) छान्दसं परस्मैपदम् । वनुते । सेवते (हि) निश्चयेन
 (सुन्वन्) पुञ् अमिषवे—शतृ । तत्त्वरसं निष्पादयन् (क्षयम्) गृहम् (परी-
 णसः) परि + णस कौटिल्ये गतौ प्राप्तौ च—क्लिप् । नसतेर्गतिकर्मा—निघ०
 २ । १४ । नसतिरामोतिकर्मा वा नमतिकर्मा वा—निघ० ७ । १७ । परितः प्राप-
 णीयस्य धनस्य (सुन्वानः) पुञ् अमिषवे—शानच् विद्यानां तत्त्वरसं निष्पाद-
 यन् (हि) एव (स्म) अवश्यम् (अव यजति) अवयजनं दूरीकरणम्—दया-
 नन्दभाष्ये, यजु० ८ । १३ । दूरीकरोति (द्विषः) द्वेषन् । शत्रून् (देवानाम्)
 विदुषाम् (अव) दूरे (द्विषः) (सुन्वानः) (इत्) एव (सिसासति) पणु
 दाने—सन् । सनितुं दातुमिच्छति (सहस्रा) सहस्राणि सुखानि (वाजी)
 पराक्रमी (अवृतः) अनिवारितः (सुन्वानाय) तत्त्वरसं निष्पादयते (इन्द्रः)
 परमैश्वर्यवान् परमात्मा (ददाति) प्रयच्छति (आभुवम्) आङ् + भू प्राप्तौ—
 धनार्थे कप्रत्ययः । समस्तात् प्रापणीयम् (रुयिम्) धनम् (ददाति) (आभुवम्)
 भू संसाधाम्—धनार्थे क । सर्वतो भवनशीलम् ॥

है, वही वीर सब को सुख देता और परमात्मा का प्रीति पात्र होता है ॥ १ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—१ । १३३ । ७ ॥

मो षु वो अस्मदुभि तानि पौस्या सना भूवन् द्युम्नानि
मोत जारिषुरस्मत् पुरोत जारिषुः । यद् व'चित्रं युगेयुगे
नव्यं घोषादमर्त्यम् । अस्मासु तन्मैरुतो यच्च दुष्टरं दिधृता
यच्च दुष्टरम् ॥ २ ॥

मो इति । सु । वः । अस्मत् । अभि । तानि । पौस्या ।
सना । भूवन् । द्युम्नानि । मा । उत । जारिषुः । अस्मत् ।
पुरा । उत । जारिषुः ॥ यत् । वः । चित्रम् । युगे-युगे ।
नव्यम् । घोषात् । अमर्त्यम् ॥ अस्मासु । तत् । मरुतः ।
यत् । च । दुष्टरम् । दिधृत । यत् । च । दुष्टरम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(मरुतः) हे शत्रुओं के मारने वाले वीरो ! (अस्मत्) हम
पर से (वः) तुम्हारे (तानि) वे (सना) सनातन [वा सेवनीय] (पौस्या)
मनुष्य कर्म [वा बल] (मो षु अभि भूवन्) कभी भी न हट जावें, (उत)
और [तुम्हारे] (द्युम्नानि) चमकते हुये यश वा धन (मा जारिषुः) कभी न
घटें, (उत) और (अस्मत्) हम से (पुरा) आगे को (जारिषुः) बढ़ाई योग्य हों।
और (यत्) जो (वः) तुम्हारा (चित्रम्) विचित्र [अद्भुत] कर्म (युगे युगे)

२—(मो) नैव (सु) सुष्ठु (वः) युष्माकम् (अस्मत्) अस्मत्तः (अभि)
अभिभवे (तानि) प्रसिद्धानि (पौस्या) गुणवचनब्राह्मणा दिभ्यः कर्मणि च ।
पा० ५ । १ । १२४ । पुंस्-प्यञ्, ब्राह्मणादेराकृतिगणत्वात् । पुसां कर्माणि ।
बलानि—निघ० २ । ६ (सना) सनातनानि । सेवनीयानि (भूवन्) अडभावः ।
अभूवन् । भवन्तु (द्युम्नानि) अ० ६ । ३५ । ३ । द्योतमानानि यशसि धनानि
वा (मा) निषेधे (उत) अपि (जारिषुः) जू वयोहानौ, अडभावः । अजारिषुः
जरन्तु । जीर्णानि क्षीणानि भवन्तु (अस्मत्) अस्माकं सकाशात् (पुरा) अत्र-
काले (उत) (जारिषुः) जू स्तुतौ । स्तुत्यानि भवन्तु (यत्) कर्म (वः) युष्माकम्
(चित्रम्) अद्भुतम् (युगेयुगे) समये समये । सर्वदा (नव्यम्) स्तुत्यम् ।

युग युग में [समय समय पर] (घोषात्) घोषणा देने से (नव्यम्) स्तुति योग्य [जा नवीन] और (अमर्त्यम्) मनुष्यों में दुर्लभ है, (च) और (यत्) जो कुङ्कु (दुस्तरम्) पाने में कठिन (च) और (यत्) जो कुङ्कु (दुस्तरम्) पाने में कठिन है, (तत्) उस को (अस्मासु) हम में (दिधृत) धारण करो ॥ ३ ॥

भाषार्थ—मनुष्यों को सदा आपस में मिल कर बल; यश और धन बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिये ॥ २ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—१। १३४। ८ ॥

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुं सुनुं सहस्रं जातवेदसं
विप्रं न जातवेदसम् । य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या
कृपा । घृतस्य विभ्राष्टिमनु वष्टि शोचिषा जुहानस्य सुर्षिषः ॥ ३ ॥
अग्निम् । होतारम् । मन्ये । दास्वन्तम् । वसुम् । सुनुम् ।
सहस्रः । जात-वेदसम् । विप्रम् । न । जात-वेदसम् ॥ यः ।
ऊर्ध्वया । सु-अध्वरः । । देवः । देवाच्या । कृपा ॥ घृतस्य ।
वि-भ्राष्टिम् । अनु । वष्टि । शोचिषा । आ जुहानस्य ।
सुर्षिषः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(होतारम्) प्रदण करने वाले, (दास्वन्तम्) दान करने वाले, (वसुम्) श्रेष्ठ गुण वाले, (सहस्रः) बलवान् पुरुष के (सुनुम्) पुत्र, (जातवेदासम्) प्रसिद्ध विद्या वाले (विप्रम् न) बुद्धिमान् के समान (जातवेद-

नूतनम्—निघ० ३। १८ (घोषात्) घुषिर् शब्दे घञ् । घोषणायाः । व्यापनार्थ-मुच्चैः शब्दकारणात् (अमर्त्यम् ' अमरणधर्मकम् । मर्त्येषु दुर्लभम् । नाशरहितम् (अस्मासु) (तत्) (मरुतः) हे शत्रुनाशका वीराः (यत्) यत् किञ्चित् (च) (दुस्तरम्) दुःखेन तरितुं प्राप्तुं योग्यम् (दिधृत) शयः श्लुः, अभ्यासस्य इत्वं अ क्वाद्दसम्, सांहितिको दीर्घः । धरत । स्थापयत (यत्) (च) (दुस्तरम्) ॥

३—(अग्निम्) अग्निबद् वर्तमानम् (होतारम्) प्रदीतारम् (मन्ये) जानामि (दास्वन्तम्) दातारम् (वसुम्) श्रेष्ठगुणवन्तम् (सुनुम्) पुत्रम् (सहस्रः) मनुष्योत्तमः । सहस्वतः । बलवतः (जातवेदसम्) प्रसिद्धविद्यम्

सू० ६७ [६५५] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४, १८३)

सग्) प्रसिद्ध विद्या वाले विद्वान् को (अग्निम्) उस अग्नि के समान (मन्ये) में मानता हूँ । (यः) जो (देवः) प्रकाशमान, (स्वध्वरः) अच्छे प्रकार हिंसा रहित यज्ञ का साधने वाला [अग्नि] (ऊर्ध्वया) ऊंची (देवाच्या) गतिशील [वायु आदि देवताओं] को पहुँचाने वाली (कृपा) शक्ति के साथ (आजुह्वनस्य) होमे हुये और (सर्पिषः) पिघले हुये (घृतस्य) घी की (शोचिषा) शुद्धि से (विभ्राष्टिम्) विविध प्रकाश को (अनु) लगातार (वष्टि) चाहता है ॥ ३ ॥

भावार्थ—विद्वान् पुरुष विद्या प्राप्त कर के संसार में ऐसा उपकारी होवे, जैसे अग्नि घृत आदि से प्रज्वलित होकर वायु जल आदि को शुद्ध करके और सूर्य पार्थिव रस खींच कर वृष्टि द्वारा उपयोगी होता है ॥ ३ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—१। १२७। १; यजुर्वेद—१५। ४७; कुछ भेद से सामवेद—पू० ५। ८। ६ और उ० ६। १। १८ ॥

युज्ञैः संमिश्रलाः पृषतीभिर्ऋष्टिभिर्यामं कुभ्रासो अञ्जिषु
प्रिया उत । आसद्या बर्हिभैरतस्य सुनवः पोत्रादा सोमं
पिबता दिवो नरः ॥ ४ ॥

युज्ञैः । सम्-मिश्रलाः । पृषतीभिः । ऋष्टि-भिः । यामन् ।
शुभ्रासः । अञ्जिषु । प्रियाः । उत ॥ आ-सद्या । बर्हिः ।
भरतस्य । सुनवः । पोत्रात् । आ । सोमम् । पिबतु ।
दिवः । नरः ॥ ४ ॥

(विप्रम्) मेधाविनम् (न) इव (जातवेदसम्) प्रसिद्धविद्यम् (यः) अग्निः (ऊर्ध्वया) उन्नतया (स्वध्वरः) हिंसारहितस्य यज्ञस्य सुष्ठु साधकः (देवः) प्रकाशमानः (देवाच्या) देवान् गतिशीलान् वाय्यादीन् अञ्जति प्राप्नोतीति देवा-
ची तथा (कृपा) कृपू सामर्थ्ये—किप् । शक्या । (घृतस्य) आज्यस्य (विभ्रा-
ष्टिम्) भ्राज—किन् । विविधां दीप्तिम् (अनु) निरन्तरम् (वष्टि) काम-
यते (शोचिषा) ईशुचिर् शौचे क्लृप्ते च—इति । प्रभया (आजुह्वानस्य)
समन्ताद्बुधयमानस्य (सर्पिषः) सरणशीलस्य । प्रवीभूतस्य ॥

भाषार्थ—(भरतस्य सूनवः) हे धारण करने वाले पुरुष के पुत्रो ! (दिवः) हे विजय चाहने वाले (नरः) नरो ! [नेता लोगो] (यज्ञैः) पूजनीय व्यवहारों से, (पृषतीभिः) सेचन क्रियाओं से और (ऋष्टिभिः) दो धारा तलवारों से (संमिश्रताः) अच्छे प्रकार मिले हुये [सजे हुये], (उत) और (यामन्) प्राप्त हुये समय पर (अजिषु) कामना योग्य कर्मों में (शुभ्रासः) शोभायमान (प्रियाः) प्यारे तुम (बर्हिः) उत्तम आसन (आसद्य) पा कर (पोत्रात्) पवित्र आचरण से (सोमम्) सोम [तत्त्व रस] को (आ) भले प्रकार (पिबत) पीओ ॥ ४ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को योग्य है कि उत्तम घरानों में उत्पन्न होकर अपने पराक्रम युक्त पवित्र कर्मों से तत्त्व को ग्रहण करके आनन्द पावे ॥ ४ ॥

मन्त्र ४—६ ऋग्वेद में हैं—२। ३६। २, ४, ५ ॥

आ वसि देवां इह विम् यक्षि चोशन् होतुर्नि षट्वा योनिषु
त्रिषु । प्रति वीहि प्रस्थितं सोम्यं मधु पिबाग्नीध्रात् तव
भागस्य तृणुहि ॥ ५ ॥

आ । वसि । देवान् । इह । विम् । यक्षि । च । उशन् । होतुः ।

४—(यज्ञैः) पूजनीयव्यवहारैः (संमिश्रताः) अ० २० । ३८ । ५ । मिश्रयते—घञ् भावे । सर्वतो मिश्रिताः सज्जीकृताः (पृषतीभिः) अ० १३ । १ । २१ । पृषु सेचने—अति, डीष् । सेचनक्रियाभिः (ऋष्टिभिः) अ० ४ । ३ । ७ । ऋषी गतौ—किन् । उभयतो धारयुक्तैः खड्गैः (यामन्) यामनि । प्राप्ते काले (शुभ्रासः) शुभ्राः शोभमानाः (अजिषु) खनिकष्यज्यसि० । उ० ४ । १४० । अञ्जू व्यक्तिप्राज्ञणकान्तिगतिषु—इप्रत्ययः । कमनीयेषु कर्मसु (प्रियाः) प्रीतिकराः (उत) अपि (आसद्य) प्राप्य (बर्हिः) उत्तमासनम् (भरतस्य) भृमृदशियजि० । उ० । ३ । ११० । दुभृञ् धारणपोषणयोः—अतच् । धारकस्य पुरुषस्य (सूनवः) पुत्राः (पोत्रात्) अ० २० । २ । १ । पवित्रव्यवहारात् (आ) समन्तात् (सोमम्) तत्त्व रसम् (पिबत) पानं कुरुत । अनुभवत (दिवः) विष्णु विजिगीषायाम्—किप् । हे जिगीषवः (नरः) नेतारः पुरुषाः ॥

नि । सृद् । योनिषु । त्रिषु ॥ प्रति । वीहि । प्र-स्थितम् ।
 सोम्यम् । मधु । पिब । आग्नीध्रात् । तव । भागस्य ।
 तृप्नुहि ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(विप्र) हे बुद्धिमान् ! (होतः) हे दाता ! (इह) यहां पर
 (देवान्) दिव्य गुणों को (आ) अच्छे प्रकार (वक्षि) तू कहता है (च)
 और (यक्षि) तू देता है, सो (उशन्) कामना करता हुआ तू (त्रिषु) तीन
 [कर्म, उपासना, ज्ञान] (योनिषु) निमित्तों में (नि) निरन्तर (सद्)
 स्थिर हो । (प्रस्थितम्) उपस्थित किये हुये (सोम्यम्) सोम [तत्त्व रस]
 से युक्त (मधु) निश्चित ज्ञान को (प्रति) प्रतिज्ञा पूर्वक (वीहि) प्राप्त हो,
 और (पिब) पान कर, और (आग्नीध्रात्) अग्नि की प्रकाश विद्या को
 आश्रय में रखने वाले व्यवहार से (तव) अपने (भागस्य) भाग की (तृप्नुहि)
 तृप्ति कर ॥ ५ ॥

भाषार्थ—मनुष्य कर्म उपासना और ज्ञान के साथ तत्त्व रस का
 ग्रहण करके पुण्यपूर्ण होकर तृप्त होवे ॥ ५ ॥

एष स्य ते तुन्वो नृम्णवर्धनः सह ओजः प्रदिवि बाहोर्हितः ।
 तुभ्य सुतो मघवन् तुभ्यमाभृतस्त्वमस्य ब्राह्मणादा तृपत्
 पिब ॥ ६ ॥

एषः । स्यः । ते । तुन्वः । नृम्ण-वर्धनः । सहः । ओजः । प्र-

५—(आ) समन्तात् (वक्षि) वच परिभाषणे—लट् । कथयसि
 (देवान्) दिव्यगुणान् (इह) अत्र (विप्र) मेधाविन् (यक्षि) यजसि ।
 ददासि (च) (उशन्) कामयमानः (होतः) हे दातः (नि) नितराम् (सद्)
 तिष्ठ (योनिषु) निमित्तेषु (त्रिषु) कर्मोपासनाज्ञानेषु (प्रति) प्रतिज्ञया
 (वीहि) वी गतौ—लोट् । प्राप्नुहि (प्रस्थितम्) उपस्थितम् (सोम्यम्)
 सोमेन तत्त्वरसेन युक्तम् (मधु) मधुविद्याम् । निश्चितज्ञानम् (पिब) अनु-
 भव (आग्नीध्रात्) अ० २० । २ । २ । अग्नि प्रकाशविद्याशरणयुक्तव्यवहारात्
 (तव) स्वकीयस्य (भागस्य) अंशस्य (तृप्नुहि) तृप्तिं कर ॥

दिवि । बाहोः । हितः ॥ तुभ्यम् । सुतः । मघ-वन् । तुभ्यम् ।
आ-भृतः । त्वम् । अस्य । ब्राह्मणात् । आ । तृपत् । पिब ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(एषः स्यः) यही (नृम्णवर्धनः) धन का बढ़ाने वाला
[तत्त्व रस] (ते) तेरे (तन्वः) शरीर का (सहः) बल और (ओजः)
पराक्रम होकर (प्रदिवि) उत्तम व्यवहार के बीच (बाहोः) तेरी दोनों भुजाओं
पर (हितः) धरा गया है । (मघवन्) हे बड़े धनी ! (तुभ्यम्) तेरे लिये
(सुतः) सिद्ध किया हुआ [तत्त्व रस] (तुभ्यम्) तुझ को (आभृतः) धारण
किया गया है, (त्वम्) तू (ब्राह्मणात्) ब्रह्म [परमेश्वर] के ज्ञान से (आ)
भले प्रकार (तृपत्) तृप्त होता हुआ (अस्य) इस [तत्त्व रस] का (पिब)
पान कर ॥ ६ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग पराक्रमी व्यवहार कुशल मनुष्य को परमेश्व-
रीय ज्ञान का उपदेश करके धन आदि की बढ़ती के लिये उत्साही करें ॥ ६ ॥

यसु पूर्वमहुवे तस्मिदं हुवे सेदु हव्यो दृदियो नाम पर्यते ।
अध्वर्युभिः प्रस्थितं सोम्यं मधुं पोत्रात् सोमं द्रविणोदः
पिबं ऋतुभिः ॥ ७ ॥

यम् । जं इति । पूर्वम् । अहुवे । तस् । इदम् । हुवे ।
सः । इत् । जं इति । हव्यः । दृदिः । यः । नाम । पर्यते ॥
अध्वर्युभिः । प्र-स्थितम् । सोम्यम् । मधुं । पोत्रात् । सोमम् ।
द्रविणः-दः । पिबं । ऋतु-भिः ॥ ७ ॥

६—(एषः स्यः) स एव (ते) तव (तन्वः) शरीरस्य (नृम्णवर्धनः)
अ० ४ । २४ । ३ । धनवर्धकः (सहः) बलम् (ओजः) पराक्रमः (प्रदिवि)
दिव्य व्यवहारे—किप् । उत्तमव्यवहारे (बाहोः) भुजयोः (हितः) धृतः (तुभ्यम्)
(सुतः) संस्कृतस्तरवरसः (मघवन्) हे धनवन् (तुभ्यम्) (आभृतः)
समन्ताद् धारितः (त्वम्) (अस्य) तत्त्व रसस्य (ब्राह्मणात्) ब्रह्मणः परमेश्व-
रस्य ज्ञानात् (आ) समन्तात् (तृपत्) तृप्यन् सन् (पिब) पानं कुरु ॥

सू० ६८ [६५६] विशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४, १८७)

भाषार्थ—(यम्) जिस [पराक्रमी] को (उ) ही (पूर्वम्) पहिले (अहुवे) मैं ने ग्रहण किया था, (तम्) उस [पुरुष] को (इदम्) अब (हुवे) मैं ग्रहण करता हूं, (सः इत्) वही (उ) निश्चय करके (हव्यः) ग्रहण करने योग्य है, (यः) जो (ददिः) दाता (नाम) नाम [होकर] (पत्यते) स्वामी होता है । (द्रविणोदः) हे धन देने वाले (पोत्रात्) पवित्र व्यवहार से (अश्वयुभिः) हिंसा न चाहने वाले पुरुषों करके (प्रस्थितम्) उपस्थित किये हुये (सोम्यम्) पेश्वर्य के लिये हितकारी (मधु) निश्चित ज्ञान को और (सोमम्) सोम [तत्त्वरस] को (श्रुतुभिः) श्रुतुओं के साथ (पिब) तू पी ॥ ७ ॥

भाषार्थ—विद्वान् पुरुष सुपरीक्षित गुणी पराक्रमी मनुष्य को सदा उत्तम व्यवहारों के लिये नियुक्त करें ॥ ७ ॥

सूक्तम् ६८ ॥

१—१२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, २, ४—६ गायत्री; ३, ११ विराडार्षी गायत्री; १० निचृद् गायत्री; १२ आभ्युष्णिकच्छन्दः ॥

मनुष्यकर्तव्योपदेशः—मनुष्य के कर्तव्य का उपदेश ॥

सुरूपकृत्स्नमुतये सुदुघामिव गोदुहे । जुहुमसि द्यविद्यवि ॥१॥
सुरूप-कृत्स्नम् । ऊतये । सुदुघाम्-इव । गो-दुहे ॥ जुहुमसि ।
द्यवि-द्यवि ॥ १ ॥

७—(यम्) पराक्रमिणम् (उ) एव (पूर्वम्) पूर्वकाले (अहुवे) इ दानादानयोः— लङ् शपः लुक् । गृहीतवानस्मि (तम्) (इदम्) इदानीम् (हुवे) इ दानादानयोः । गृह्णामि (सः) (इत्) एव (उ) निश्चयेन (हव्यः) ग्रहीतुमर्हः (ददिः) दाता (यः) पुरुषः (नाम) प्रसिद्धौ (पत्यते) ईष्टे (अश्वयुभिः) हिंसामनिच्छुभिः पुरुषैः (प्रस्थितम्) उपस्थितम् (सोम्यम्) पेश्वर्याय हितम् (मधु) निश्चितज्ञानम् (पोत्रात्) पवित्रव्यवहारात् (सोमम्) तत्त्वरसम् (द्रविणोदः) अ० २० । २ । ४ । हे धनप्रद (पिब) अनुभव (श्रुतुभिः) ॥

भाषार्थ—(सुरुपकृत्तम्) सुन्दर स्वभावों के बनाने वाले [राजा] को (ऊतये) रक्षा के लिये (चविचवि) दिन दिन (जुहमसि) हम बुलाते हैं, (इव) जैसे (सुदुघाम्) बड़ी दुधेल गौ को (गोदुहे) गौ दोहने वाले के लिये ॥ १ ॥

भाषार्थ—जैसे दुधेल गौ को दूध दोहने के लिये प्रीति से बुलाते हैं, वैसे ही प्रजागण विद्या आदि शुभ गुणों के बढ़ाने वाले राजा का आश्रय लेकर उन्नति करें ॥ १ ॥

मन्त्र १—३ आचुके हैं—अ० २० । ५७ । १—३ ॥

उपः नः सव॒ना ग॑हि॒ सोम॑स्य सोम॒पाः पि॑ब । गो॒दा इ॒ह
रेव॑तो म॒दः ॥ २ ॥

उप॑ । नः॑ । सव॑ना । आ॑ । ग॒हि॒ । सोम॑स्य । सोम॒-पाः॑ ।
पि॑ब ॥ गो॒-दाः॑ । इत् । रेव॑तः । म॒दः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(सोमपाः) हे पेश्वर्य के रक्षक ! [राजन्] (नः) हमारे लिये (सवना) पेश्वर्य-युक्त पदार्थों को (उप) समीप से (आ गहि) तू प्राप्त हो और (सोमस्य) सोम [तत्त्व रस] का (पिब) पान कर, (रेवतः) धनवान् पुरुष का (मदः) इर्ष्य (इत्) ही (गोदाः) दृष्टि का देने वाला है ॥ २ ॥

भाषार्थ—राजा पेश्वर्यवान् और दूरदर्शी होकर प्रसन्नता पूर्वक प्रजा को ज्ञानवान् बनावे ॥ २ ॥

अथा॑ ते अ॒न्त॑मा॒नां वि॒द्याम् सु॒मती॑नाम् । सा नो अ॒ति ख॒य
आ ग॑हि ॥ ३ ॥

अथ॑ । ते॑ । अ॒न्त॑मा॒नाम् । वि॒द्याम् । सु॒-मती॑नाम् ॥ सा ।
नः॑ । अ॒ति॑ । ख॒यः । आ॑ । ग॒हि ॥ ३ ॥

भाषार्थ—[हे राजन् !] (अथ) और (ते) तेरी (अन्तमानाम्)

१—३ ॥ पते मन्त्रा व्याख्याताः—अ० २० । ५७ । १—३ ॥

सू० ६८ [६५६] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,१८६)

अत्यन्त समीप रहने वाली (सुमतीनाम्) सुन्दर बुद्धियों का (विद्याम्) हम ज्ञान करें। तू (नः) हमें (अति) छोड़कर (मा ख्यः) मत बोल, (आ गहि) तू आ ॥ ३ ॥

भावार्थ—जब राजा पूर्ण रीति से प्रजा पालन करता है, प्रजागण उस की धार्मिक नीतियों से लाभ उठाकर उस से प्रीति करते हैं ॥ ३ ॥

परैहि विग्रमस्तृतमिन्द्रं पृच्छा विपश्चितम् । यस्ते सखिभ्य आ वरम् ॥ ४ ॥

परा । इहि । विग्रम् । अस्तृतम् । इन्द्रम् । पृच्छ । विपुः-चितम् ॥ यः । ते । सखि-भ्यः । आ वरम् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—[हे जिज्ञासु ।] तू (परा) समीप (इहि) जा, और (विग्रम्) बुद्धिमान्, (अस्तृतम्) अजेय, (विपश्चितम्) आप्त विद्वान्, (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले मनुष्य] से (पृच्छ) पूछ, (यः) जो [मनुष्य] (ते) तेरे (सखिभ्यः) मित्रों के लिये (आ) सब प्रकार (वरम्) श्रेष्ठ [मित्र] है ॥ ४ ॥

भावार्थ—मनुष्यो को चाहिये कि आप्त विद्वानों से प्रश्नोत्तर के साथ शङ्का निवृत्ति कर के सत्य का ग्रहण करें ॥ ४ ॥

मन्त्र ४—१० ऋग्वेद में हैं—१।४।४—१० ॥

उत ब्रुवन्तु ने निदो निरुन्यतश्चिदारत । दधाना इन्द्र इद् दुर्वः ॥ ५ ॥

४—(परा) समीपे (इहि) गच्छ (विग्रम्) अन्येष्वपि दृश्यते । पा० ३।२।१०१। ग्रह उपादाने—इप्रत्ययः । विविधं गृह्णात्यर्थान् यः स विग्रः । वेगो वक्तव्यः । वा० पा० ५।४।११६। इति विपूर्वकनासिकाशब्दस्य प्रःसमासान्तादेशः । एष कौटिल्ये—एबुल् । विगता नासिका कुटिलता यस्य सः । विग्र इति मेधाविनाम—निघ० ३।१५। मेधाविनम् (अस्तृतम्) अहिंसितम् । अजेयम् (इन्द्रम्) परमैश्वर्ययुक्तं मनुष्यम् (पृच्छ) जिज्ञासस्व । प्रश्नं कुरु (विपश्चितम्) आप्तं विद्वांसम् (यः) विद्वान् (ते) तव (सखिभ्यः) मित्राणां दिनाय (आ) समन्तात् (वरम्) श्रेष्ठं मित्रम् ॥

उत । ब्रुवन्तु । नः । निदः । निः । अन्यतः । चित् । आरत ॥
दधानाः । इन्द्रे । इत् । दुवः ॥ ५ ॥

भाष्यार्थ—(इन्द्रे) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] में (इत्) ही (दुवः) सेवा को (दधानाः) धारण करते हुये पुष्य (उत) निश्चय कर के (नः) हमारे (निदः) निन्दकों से (ब्रुवन्तु) कहें—“(अन्यतः) दूसरे देश को (चित्) अवश्य (निः आरत) तुम निकल जाओ” ॥ ५ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमात्मा में दृढ़ विश्वास कर के दुराचारियों को दण्ड देकर देश से निकाल दें ॥ ५ ॥

उत नः सुभगाँ अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः । स्यामेहिन्द्रस्य शर्मणि ॥ ६ ॥

उत । नः । सु-भगान् । अरिः । वोचेयुः । दस्म । कृष्टयः ॥
स्यामः । इत् । इन्द्रस्य । शर्मणि ॥ ६ ॥

भाष्यार्थ—(दस्म) हे दर्शनीय ! [परमात्मन्] (अरिः = अरयः) प्रेरण करने वाले [वा बैरी] (कृष्टयः) मनुष्य (उत) भी (नः) हम को (सुभगान्) बड़े ऐश्वर्य वाला (वोचेयुः) कहें, [तौ भी] (इन्द्रस्य) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य

५—(उत) निश्चयेन (ब्रुवन्तु) कथयन्तु (नः) अस्माकम् (निदः) यदि कुत्सायाम्—किप्, तुमभावः । निन्दकान् (निः) बहिर्भावे (अन्यतः) इतराभ्योऽपि दृश्यते । पा० । ५ । ३ । १४ । द्वितीयार्थे तसिल् । अन्यं देशम् (चित्) अवश्यम् (आरत) श्रु गतौ—लुङ् लोट् । गच्छत यूयम् (दधानाः) दधातेः शानच् । धारयन्तः (इन्द्रे) परमैश्वर्ययुक्ते परमेश्वरे (इत्) एव (दुवः) दुवस् परिचरणोपतापयोः—किप् । दुवस्यतिः परिचरण—कर्मा—निघ० २ । ५ । परिचर्याम् ॥

६—(उत) अपि च (नः) अस्मान् (सुभगान्) बह्वैश्वर्योपेतान् (अरिः) अच इः । उ० ४ । १३६ । श्रु गतिप्रापणयोः—इप्रत्ययः । बहुवचनस्यैकवचनम् । अरयः प्रेरकाः । नायकाः । शत्रवः (वोचेयुः) वच् परिभाषणे-आशीर्लिङ् प्रथमस्य बहुवचने । लिङ्पाशिष्यङ् । पा० ३ । १ । ८६ । इति विकरणस्थान्यङ् प्रत्ययः । वच् उम् । पा० ७ । ४ । २० । उमागमः । उर्यासुः । उपदिश्यासुः (दस्म)

सू० ६८ [६५६] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥ (४, १८९)

वाले परमात्मा] को (इत्) हो (शर्मणि) शरण में (स्याम) हम रहें ॥ ६ ॥

भावार्थ—चाहे मनुष्य ऐसे बड़े हो जावें कि बड़े बड़े लोग और बैरी लोग भी उन्हें बड़ा जानें, तो भी वे अभिमान छोड़कर परमेश्वर की शरण में रहकर उन्नति करें ॥ ६ ॥

एमाशुमाशवे भर यज्ञश्रियं नृमादनम् । पतयन्मन्दयत्सखम् ७
आ । ईम् । आशुम् । आशवे । भर । यज्ञ-श्रियम् ।
नृ-मादनम् ॥ पतयत् । मन्दयत्-सखम् ॥ ७ ॥

भाषार्थ—[हे इन्द्र परमेश्वर !] (आशवे) वेग वाले [रथ आदि] के लिये (यज्ञश्रियम्) यज्ञ [संगतिकरण] से लक्ष्मी बढ़ाने वाले, (नृमादनम्) मनुष्यों को आनन्द देने वाले (आशुम्) वेग आदि गुण वाले [अग्नि, वायु आदि] पदार्थ और (ईम्) प्राप्ति योग्य जल को और (पतयत्) स्वामिपन देने वाले, (मन्दयत्सखम्) मित्रों को आनन्द देने वाले धन को (आ) सब प्रकार (भर) भर दे ॥ ७ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को उचित है कि अग्नि वायु जल आदि पदार्थों से विज्ञान द्वारा उपकार लेकर सुखी हों ॥ ७ ॥

अस्य पीत्वा शतक्रतो घ्नो वृत्राणामभवः । प्रावो वाजेषु
वाजिनम् ॥ ८ ॥

अ० २० । १७ । २ । हे दर्शनीय (कृष्यः) अ० ३ । २४ । ३ । मनुष्याः (स्याम) भवेम (इत्) एव (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (शर्मणि) सुखे । शरणे ॥

७—(आ) समन्तात् (ईम्) प्राप्तव्यं जलम्—निघ० १ । १२ । (आशुम्) कृपापा० । उ० १ । १ अशूङ् व्याप्तौ—उण् । वेगादिगुणवन्तमग्निवायवादिपदार्थ-समूहम् (आशवे) वेगादिगुणयुक्तरथादिहिताय (भर) देहि (यज्ञश्रियम्) संगतिकरणेन लक्ष्मीदातारम् (नृमादनम्) नृणां मनुष्याणां हर्षहेतुम् (पत-यत्) तत् करोति तदाचष्टे । वा० पा० ३ । १ । २६ । पति-णिच् ततः शत । पतिवसम्पादकम् (मन्दयत्सखम्) मन्दयन्तः सखायो यस्मिंस्तद्धनम् ॥

अस्य । पीत्वा । शतक्रतो इति शत-क्रतो । घनः । वृत्राणाम् ।
अभवः । प्र ॥ आवः । वाजेषु । वाजिनम् ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(शतक्रतो) हे सैकड़ों कर्मों वाले ! [वीर पुरुष] (अस्य)
इस [तत्त्व रस] का (पीत्वा) पान कर के तू (वृत्राणाम्) रोकने वाले शत्रुओं
का (घनः) मारने वाला (अभवः) हुआ है और (वाजेषु) सङ्ग्रामों में
(वाजिनम्) पराक्रमी वीर को (प्र) अच्छे प्रकार (आवः) तू ने बचाया है ॥ ८ ॥

भाषार्थ—जो वीर पुरुष वेदविद्या का रस चखता रहता है, वह
परमेश्वर की कृपा से शत्रुओं को मारकर अपने वीर लोगों की रक्षा करता
है ॥ ८ ॥

तं त्वा वाजेषु वाजिनं वाजयामः शतक्रतो । धनानामिन्द्र
सातये ॥ ८ ॥

तम् । त्वा । वाजेषु । वाजिनम् । वाजयामः । शतक्रतो
इति शत-क्रतो ॥ धनानाम् । इन्द्र । सातये ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(शतक्रतो) हे सैकड़ों [असंख्य] वस्तुओं में बुद्धि वाले
(इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले जगदीश्वर] (वाजेषु) सङ्ग्रामों के बीच
(वाजिनम्) महाबलवान् (तम्) उस (त्वा) तुझ को (धनानाम्) धनों के
(सातये) भोगने के लिये (वाजयामः) हम प्राप्त होते हैं ॥ ८ ॥

८—(अस्य) सोमस्य । तत्त्वसस्य (पीत्वा) पानं कृत्वा (शतक्रतो)
हे बहुकर्मन् (घनः) मूर्तों घनः । पा० ३ । ३ । ७७ । हन्तेरप् मूर्तिभिन्नार्थेऽपि ।
हन्ता । घातुकः (वृत्राणाम्) आवरकाणां शत्रूणाम् (अभवः) (प्र) प्रकर्षण
(आवः) रक्षितवानसि (वाजेषु) सङ्ग्रामेषु (वाजिनम्) पराक्रमिणं
पुरुषम् ॥

८—(तम्) तादृशम् (त्वा) त्वाम् (वाजेषु) सङ्ग्रामेषु (वाजिनम्)
महाबलवन्तम् (वाजयामः) वज गतौ, चुरादिः । प्राप्नुमः (शतक्रतो) शते-
ष्वसंख्यातेषु वस्तुषु क्रतुः प्रज्ञा यस्य तत्सम्बुद्धौ (धनानाम्) (इन्द्र) पर-
मैश्वर्यवन् परमात्मन् (सातये) सेवनाय । लाभाय ॥

सू० ६८ [६५६] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४, १८३)

भावार्थ—मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा पालन से जितेन्द्रिय बलवान् होकर सब विघ्न हटाकर सुख भोगें ॥ ६ ॥

यो राये३ वनिर्महान्तुपारः सुन्वतः सखा । तस्मा इन्द्राय गायत ॥ १० ॥

यः । रायः । अवनिः । महान् । सु-पारः । सुन्वतः । सखा ॥ तस्मै । इन्द्राय । गायतु ॥ १० ॥

भाषार्थ—(यः) जो [परमेश्वर] (रायः) धन का (अवनिः) रक्षक वा स्वामी (महान्) [बड़ा गुणी वा बली], (सुपारः) भले प्रकार पार लगाने वाला, (सुन्वतः) तत्त्वरस निकालने वाले पुरुष का (सखा) मित्र है, [हे मनुष्यो !] (तस्मै) उस (इन्द्राय) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमेश्वर] के लिये (गायत) तुम गान करो ॥ १० ॥

भावार्थ—मनुष्य जगदीश्वर परमात्मा की उपासना से तत्त्व का ग्रहण करके पुरुषार्थ से धर्म का सेवक करें ॥ १० ॥

आ त्वेता नि षीदुतेन्द्रमभि प्र गायत । सखायुस्तोमवाहसः११
आ । तु । आ । इतु । नि । षीदुतु । इन्द्रम् । अभि । प्र ।
गायतु ॥ सखायः । स्तोम-वाहसः ॥ ११ ॥

पुरुतमं पुरुणामीशानं वार्याणाम् । इन्द्रं सोमे सचा सुते १२
पुरुतमम् । पुरुणाम् । ईशानम् । वार्याणाम् । इन्द्रम् । सोमे । सचा । सुते ॥ १२ ॥

भाषार्थ—(स्तोमवाहसः) हे बड़ाई के प्राप्त कराने वाले (सखायः)

१०—(यः) परमेश्वरः (रायः) धनस्य (अवनिः) अ० २० । ३५ ।
१० । रक्षकः । स्वामी (महान्) गुणेन बलेन वाधिकः (सुपारः) पार कर्म-समाप्तौ—पचाद्यच् । सुष्ठु पारयिता (सुन्वतः) तत्त्वरसं निष्पादयतः पुरुषस्य (सखा) प्रियः (तस्मै) (इन्द्राय) परमैश्वर्यवते जगदीश्वराय (गायत) गानं कुरुत ॥

११—(आ इत) आनिष्कृत (तु) शीघ्रम् (आ) समुच्चये (नि षीदत)

४, १८४)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ६८ [६५७]

मित्रो । (तु) शीघ्र (आ इत) आओ, (आ) और (नि षीदत) बैठो, और (पुरुषाम्) गलन करने वालों के (पुरुतमम्) अत्यन्त पालन करने वाले, (वार्याणाम्) श्रेष्ठ पदार्थों वा धनों के (ईशानम्) स्वामी (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले], (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमेश्वर] को (सचा) सचा मेल के साथ (सोमे) सोम [तत्त्वरस] (सुते) सिद्ध होने पर (अभि) सब ओर से (प्र) अच्छे प्रकार (गायत) गावो ॥ ११, १२ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग परस्पर उपकार के लिये धैर्य और प्रीति के साथ परमात्मा के गुणों के विचार से निश्चित सिद्धान्त करके ऐश्वर्य बढ़ावे ॥ ११, १२ ॥

मन्त्र ११, १२ ऋग्वेद में हैं—१।५।१, २ सामवेद—उ० १।२।१०
मन्त्र ११ साम०—पू० २।७।१० ॥

सूक्तम् ६८ ॥

१—१२ ॥ १—११ इन्द्रः, १२ महतो देवताः ॥ १, ३—५, ७, १२ निचृद् गायत्री; २, ८, ६, ११ गायत्री; ६ पाद निचृद् गायत्री; १० विराड् गायत्री ॥

१—८ पराक्रमिलक्षणोपदेशः—१—८ पराक्रमी मनुष्य के लक्षणों का उपदेश ॥

स चा नेा योग आ भुवत् स राये स पुरंध्याम् । गमुद्
वाजैभिरा स नः ॥ १ ॥

उपविशत (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं परमात्मानम् (अभि) सर्वतः (प्र) प्रकर्षेण (गायत) स्तुत (सखायः) हे सुहृदः (स्तोमवाहसः) अर्त्तिस्तुसुहु० उ० १।१४०। स्तोतेर्मन् । वहिहाधाङ्गभ्यश्छन्दसि । उ० ४।२२१। वह प्रापणे-अमुन् स च णित् । स्तुतिप्रापकाः ॥

१२—(पुरुतमम्) पृथिव्यधि० । उ० १।२३। पृ पालनपूरणयोः—ऊ । उदोष्ठ्यपूर्वस्य । पा० ७।१। १०२। इत्युत्त्वम्, अतिशयने तमप् । अतिशयेन पालकम् (पुरुषाम्) पालकानाम् (ईशानम्) स्वामिनम् (वार्याणाम्) ऋह-कोष्यत् । पा० ३।१। १२४। वृड् सम्भक्तौ वृज् वरणे वा-एयत् वरणीयानां श्रेष्ठानां पदार्थानां धनानां वा (इन्द्रम्) वीप्सायां द्विर्वचनम् । परमात्मानम् (सोमे) तत्त्वरसे (सचा) समवायेन (सुते) संस्कृते ॥

सू० ६८ [६५७] विंश काण्डम् ॥ २० ॥ (४,१८५)

सः । घृ । नः । योगे । आ । भुवत् । सः । राये । सः ।
पुरं-ध्यम् ॥ गमत् । वाजेभिः । आ । सः । नः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(सः घ) [वही परमात्मा वा पुरुषार्थी मनुष्य] (नः) हमारे (योगे) मेल में, (सः सः) वही (राये) हमारे धन के लिये (पुरंध्याम्) नगरों के धारण करने वाली बुद्धि में (आ) सब प्रकार (भुवत्) होवे । (सः) वही (वाजेभिः) अर्धों वा बलों के साथ (नः) हम को (आ गमत्) सब प्रकार प्राप्त होवे ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमात्मा की उपासना से और आप्त पुरुषार्थी विद्वानों के सत्संग से बुद्धि को उत्तम बनाकर बल और धन की वृद्धि करे ॥ १ ॥

मन्त्र १—= ऋग्वेद में हैं—१।५।३—१०; मन्त्र १ सामवेद—उ० १।

२।१० ॥

यस्य संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु शत्रवः । तस्मा इन्द्राय
गायत ॥ २ ॥

यस्य । सम-स्थे । न । वृण्वते । हरी इति । समत्-सु ।
शत्रवः ॥ तस्मै । इन्द्राय । गायत ॥ २ ॥

भाषार्थ—(संस्थे) संस्था [न्यायव्यवस्था] में (यस्य) जिस [वीर] के (हरी) पदार्थों के पड़ुंचाने वाले बल और पराक्रम को (समत्सु)

१—(सः) इन्द्रः परमेश्वरः पुरुषार्थी मनुष्यो वा (घ) एव (नः) अस्माकम् (योगे) संयोगे (आ) समन्तात् (भुवत्) आशिषि लिङि छान्दस-
रूपम् । भूयात् (सः) (राये) धनलाभाय (सः) (पुरंध्याम्) अ० १६।१०।
२ । पुरां नगराणां धारिका बुद्धिः (गमत्) गमेर्लेटि शपो लुक्, अडागमः, यद्वा
लिङर्थे लुङ् अडभावः । गच्छेत् प्राप्नुयात् (वाजेभिः) अर्धैर्बलैर्वा सह (आ)
सर्वतः (सः) (नः) अस्मान् ॥ १ ॥

२—(यस्य) पुरुषस्य (संस्थे) आतश्चोपसर्गे । पा० ३।१।१३६।

सम् + 'टा' गतिनिवृत्तौ क संस्थायां । न्यायव्यवस्थायाम् (त)

(४, १८६)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ६८ [६५७]

संग्रामों के बीच (शत्रवः) वैरी लोग (न) नहीं (वृणुते) ढकते हैं, (तस्मै) उस (इन्द्राय) इन्द्र [महाप्रतापी मनुष्य] के लिये (गायत) तुम गान करो ॥ २ ॥

भावार्थ—जो पुरुष न्यायकारी, दृढस्वभाव, पराक्रमी होवे, उस के गुणों के सब लोग ग्रहण करें ॥ २ ॥

सुतपावने सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये । सोमासो
दध्याशिरः ॥ ३ ॥

सुत-पावने । सुताः । इमे । शुचयः । यन्ति । वीतये ॥
सोमासः । दधि-आशिरः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(सुतपावने) ऐश्वर्य के रक्षक मनुष्य को (वीतये) भोग के लिये (इमे) यह (सुताः) निचोड़े हुये (शुचयः) शुद्ध (दध्याशिरः) पोषक पदार्थों के यथावत् सेवन [वा परिपक्व अर्थात् दृढ] करने वाले (सोमासः) सोम रस [तत्त्व वा अमृत रस] (यन्ति) पहुंचते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य अपने और प्रजा के ऐश्वर्य की रक्षा कर सकता है, वही संसार में वृद्धिकारक सिद्धान्तों को दृढ जमाता है ॥ ३ ॥

निषेधे (वृणुते) आच्छादयन्ति (हरी) पदार्थानां हरणशीलौ बलपराक्रमौ (समत्सु) सङ्ग्रामेषु (शत्रवः) अमित्राः (तस्मै) तादृशाय (इन्द्राय) महाप्रतापिने मनुष्याय (गायत) गानं कुरुत ॥

३—(सुतपावने) षु ऐश्वर्ये—क्त । आतो मनिक्कनिव्वनिपञ्च । पा० ३ । २ । ७४ । सुत + पा रक्षणे वनिप् । ऐश्वर्याणां रक्षकाय (सुताः) निष्पादिताः (इमे) शुचयः) पवित्राः (यन्ति) गच्छन्ति । प्राप्नुवन्ति (वीतये) वी गति व्याप्तिप्रजनकान्त्यसनस्वादनेषु—क्तिन् । भोगाय (सोमासः) तरव-रसाः । अमृतरसाः (दध्याशिरः) आद्यगमहनजनः किकिनौ लिट् च । पा० ३ । २ । १७१ । दुधाञ् धारणपोषणयोः—क्तिन् । दधति पुष्णन्तीति दधयः । अपस्पृधेयामाञ् चु० । पा० ६ । १ । ३६ । आङ् + श्रिञ् सेवायां श्रीञ् पा केवा—क्विप्, धातोः शिर् इत्यादेशः । आशीराभयणाद्वाभ्रपणाद् वा, अथेय-मितराशीराशास्तेः—निर० ६ । ८ । पोषकपदार्थानाममाभ्रयदातारः परि-पक्वकर्तारो वा ॥

सू० ६८ [६५७]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,१८७)

त्वं सुतस्य^१ पीतये^२ सुद्यो^३ वृद्धो^४ अजायथाः^५ । इन्द्र ज्यैष्ठ्याय^६
सुक्रतो ॥ ४ ॥

त्वम् । सुतस्य^१ । पीतये^२ । सुद्यः^३ । वृद्धः^४ । अजायथाः^५ ॥
इन्द्र^६ । ज्यैष्ठ्याय^६ । सुक्रतो इति सु-क्रतो ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(सुक्रतो) हे श्रेष्ठ कर्म और बुद्धि वाले (इन्द्र) इन्द्र !
[बड़े प्रतापी मनुष्य] (त्वम्) तू (सद्यः) शीघ्र (सुतस्य) तत्त्वरस के
(पीतये) पीने के लिये और (ज्यैष्ठ्याय) प्रधानपन के लिये (वृद्धः) बुद्धि
युक्त परिणत (अजायथाः) हुआ है ॥ ४ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य तीव्र बुद्धि होकर शीघ्र तत्त्व को ग्रहण करते
हैं, वे ही संसार में बड़े पद के योग्य होते हैं ॥ ४ ॥

आ त्वा विशन्त्वाशवः^१ सोमास इन्द्र^२ गिर्वणः^३ । शं ते सन्तु^४
प्रचेतसे ॥ ५ ॥

आ । त्वा । विशन्तु । आशवः । सोमासः । इन्द्र । गिर्वणः ॥
शम् । ते । सन्तु । प्र-चेतसे ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(गिर्वणः) हे स्तुतियों से सेवनीय (इन्द्र) इन्द्र ! [महा-
प्रतापी मनुष्य] (आशवः) वेग गुण वाले (सोमासः) सोम रस (त्वा)
तुझ में (आ) सब ओर से (विशन्तु) प्रवेश करें और (प्रचेतसे ते) तुझ
दूरदर्शी के लिये (शम्) सुखदायक (सन्तु) होवे ॥ ५ ॥

४—(त्वम्) (सुतस्य) निष्पादितस्य तत्त्वरसस्य (पीतये) पानाय ।
ग्रहणाय (सद्यः) शीघ्रम् (वृद्धः) बुद्धियुक्तः परिणतः (अजायथाः)
प्रसिद्धोऽभवः (इन्द्र) महाप्रतापिन् मनुष्य (ज्यैष्ठ्याय) गुणवचनब्राह्म-
णादिभ्यः कर्मणि च । पा० ५ । १ । १२४ । ज्येष्ठ—प्यञ् । प्रधानत्वप्राप्तये
(सुक्रतो) श्रेष्ठकर्मबुद्धियुक्त ॥

५—(आ) सर्वतः (त्वा) त्वाम् (विशन्तु) प्रविशन्तु । व्याप्नुवन्तु
(आशवः) वेगगुणयुक्ताः (सोमासः) तत्त्वरसाः (इन्द्र) महाप्रतापिन् मनुष्य
(गिर्वणः) अ० २० । ६ । ६ । स्तुतिभिः सेवनीय (शम्) सुखप्रदाः (ते)
तुभ्यम् (सन्तु) (प्रचेतसे) प्रकृष्टज्ञानिने दूरदर्शिने ॥

भावार्थ—मनुष्य तत्रबुद्धि होकर शीघ्र गुणकारी सिद्धान्तों का ग्रहण कर के सुखी होवे ॥ ५ ॥

त्वां स्तोमा अवीवृधन् त्वामुक्था शतक्रतो । त्वां वर्धन्तु
नो गिरः ॥ ६ ॥

त्वाम् । स्तोमाः । अवीवृधन् । त्वाम् । उक्था । शतक्रतो
इति शत-क्रतो ॥ त्वाम् । वर्धन्तु । नः । गिरः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(शतक्रतो) हे सैकड़ों व्यवहारों में बुद्धि वाले मनुष्य
(त्वाम्) तुझ को (स्तोमाः) बड़ाई योग्य गुणों ने और (त्वाम्) तुझ को
(उक्था) कहने योग्य कर्मों ने (अवीवृधन्) बढ़ाया है । (त्वाम्) तुझ को
(नः) हमारी (गिरः) स्तुतियां (वर्धन्तु) बढ़ावे ॥ ६ ॥

भावार्थ—श्रेष्ठ कर्मी मनुष्य सदा विद्वानों के सासंग से उपकार
शक्ति बढ़ाते रहें ॥ ६ ॥

अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्रिणम् । यस्मिन्
विश्वानि पौंस्या ॥ ७ ॥

अक्षित-ऊतिः । सनेत् । इमम् । वाजम् । इन्द्रः । सहस्रिणम् ॥
यस्मिन् । विश्वानि । पौंस्या ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(अक्षितोतिः) अक्षय रक्षा वा ज्ञाः वाला (इन्द्रः इन्द्र
[महाप्रतापी मनुष्य] (इमम्) उस (सहस्रिणम्) सहस्रों सुख वाले

६—(त्वाम्) (स्तोमाः) स्तुत्यगुणाः (अवीवृधन्) वृधु वृद्धौ
रायन्ताल्लुङ् । वर्धितवन्तः (त्वाम्) (उक्था) पातृतुदिवचि० । उ० २ । ७ ।
वच परिभाषणे—थक् । वक्तव्यानि प्रशंसनीयानि कर्माणि (शतक्रतो) बहुव्य-
वहारेषु बुद्धियुक्त (त्वाम्) (वर्धन्तु) अन्तर्गतएवर्थः । वर्धयन्तु (नः)
अस्माकम् (गिरः) स्तुतयः ॥

७—(अक्षितोतिः) अक्षीणा वर्धमाना ऊती रक्षा ज्ञानं वा यस्य सः
(सनेत्) पण संभक्तौ—विधिलिङ् । सेवेत (इमम्) वक्ष्यमाणम् (वाजम्)
विज्ञानम् (इन्द्रः) महाप्रतापी मनुष्यः (सहस्रिणम्) अ० २० । ९ । २ ।

अ० ६८ [६५७]

विंश काण्डम् ॥ २० ॥

(४,१८८)

(वाजम्) ज्ञान का (सनेत्) सेवन करे, (यस्मिन्) जिस में (विश्वानि) सब (पौंस्या) मनुष्य कर्म [वा बल] हैं ॥ ७ ॥

भावार्थ—मनुष्य प्रतापी होकर सर्वोपकारी कार्य कर के सुखी होवे ॥ अ०

मा नेा मर्ता अभि द्रुहन् तनूनामिन्द्र गिर्वणः । ईशानो
यवया वृधम् ॥ ८ ॥

मा । नः । मर्ताः । अभि । द्रुहन् । तनूनाम् । इन्द्र ।

गिर्वणः ॥ ईशानः । यवय । वृधम् ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(गिर्वणः) हे स्तुतियों से सेवनीय (इन्द्र) इन्द्र । [महा-
प्रतापी मनुष्य] (मर्ताः) मनुष्य (नः) हमारी (तनूनाम्) उपकार
क्रियाओं का (मा अभि द्रुहन्) कभी द्रोह न करें । तू (ईशानः) स्वामी होकर
(वृधम्) उन के वृद्ध [हनन व्यवहार] को (यवय) हटा ॥ ८ ॥

भावार्थ—बुद्धिमान् प्रतापी मनुष्य ऐसा प्रयत्न करे कि सब लोग वैर
छोड़ कर परस्पर उपकारी होकर सुखी होवें ॥ ८ ॥

मन्त्राः ६—११ परमेश्वरगुणोपदेशः—६—११ परमेश्वर के गुणों का
उपदेश ॥

युञ्जन्ति ब्रह्ममरुषं चरन्तं परि तस्युषः । रोचन्ते रोचना
दिवि ॥ ९ ॥

असंख्यसुखयुक्तम् (यस्मिन्) ज्ञाने (विश्वानि) सर्वाणि (पौंस्या) अ० २० ।
६७ । २ । मनुष्यकर्माणि । बलानि ॥

८—(मा) निषेधे (नः) अस्माकम् (मर्ताः) मनुष्याः (अभि)
सर्वतः (द्रुहन्) द्रुह जिघांसायाम्—जुड़, अडभावः, छान्दसः शविकरणः ।
द्रोहं कुर्वन्तु (तनूनाम्) कृषिचर्मितानि० । ३०. १ । ८० तनु विस्तारे अक्षौप-
करणयोश्च—ऊपत्ययः । उपकारक्रियाणाम् (इन्द्र) महाप्रतापिन् मनुष्य
(गिर्वणः) म० ५ । स्तुतिभिः सेवनीय (ईशानः) समर्थः (यवय) प्रातिपदि
काद्रुधात्वर्थे बहुलमिष्टवृद्ध । इति वार्तिनकेन यवशब्दाद् धात्वर्थे—णिच्,
टलोपः । पृथक् कुरु (वृधम्) हन हिंसागत्योः—अप् । हननव्यवहारम् ॥

युज्जन्ति । ब्रध्मम् । अरुषम् । चरन्तम् । परि । तस्थुषः ॥
रोचन्ते । रोचना । दिवि ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(तस्थुषः) मनुष्य आदि प्राणियों और लोकों में (परि) सब ओर से (चरन्तम्) व्यापे हुये, (ब्रध्मम्) महान् (अरुषम्) हिंसा रहित [परमात्मा] को (रोचना) प्रकाशमान पदार्थ (दिवि) व्यवहार के बीच (युज्जन्ति) ध्यान में रखते और (रोचन्ते) प्रकाशित होते हैं ॥ ६ ॥

भावार्थ—परमाणुओं से लेकर सूर्य आदि लोक और सब प्राणी सर्व-व्यापक, सर्वनियन्ता परमात्मा की आज्ञा को मानते हैं, उसी की उपासना से मनुष्य पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करके आत्मा की उन्नति करें ॥ ६ ॥

मन्त्र ६—११ आ चुके हैं—अ० २० । २६ । ४—६ तथा ४७ । १०—१२ ॥

युज्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे । शोणा धृष्ण
नुवाहसा ॥ १० ॥

युज्जन्ति । अस्य । काम्या । हरी इति । वि-पक्षसा । रथे ।
शोणा । धृष्ण इति । नु-वाहसा ॥ १० ॥

भाषार्थ—(अस्य) इस [परमात्मा—म० ६] के (काम्या) चाहने योग्य, (विपक्षसा) विविध प्रकार ग्रहण करने वाले, (शोणा) व्यापक, (धृष्ण) निर्भय, (नुवाहसा) नेताओं [दूसरों के चलाने वाले सूर्य आदि लोकों] के चलाने वाले (हरी) दोनों धारण आकर्षण गुणों को (रथे) रमणीय जगत् के बीच (युज्जन्ति) वे [प्रकाशमान पदार्थ—म० ६] ध्यान में रखते हैं ॥ १० ॥

भावार्थ—जिस परमात्मा के धारण आकर्षण सामर्थ्य में सूर्य आदि पिण्ड भन्व लोकों और प्राणियों को चलाते हैं, मनुष्य उन सब पदार्थों से उपकार लेकर इस ईश्वर को धन्यवाद दे ॥ १० ॥

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजाययाः ११

६—११ ॥ एते मन्त्रा गताः—अ० २० । २६ । ४—६ तथा ४७ । १०—

१२ ॥

सू० ७० [६५८]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,२०१)

केतुम् । कृण्वन् । अकेतवे । पेशः । मर्याः । अपेशसे ॥ सम् ।
उषत्-भिः । अजायथाः ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(मर्याः) हे मनुष्यों ! (अकेतवे) अज्ञान हटाने के लिये (केतुम्) ज्ञान को और (अपेशसे) निर्धनता मिटाने के लिये (पेशः) सुवर्ण आदि धन को (कृण्वन्) उत्पन्न करता हुआ वह [परमात्मा-म० ६, १०] (उषद्भिः) प्रकाशमान गुणों के साथ (सम्) अच्छे प्रकार (अजायथाः) प्रकट हुआ है ॥ ११ ॥

भावार्थ—मनुष्य प्रयत्न करके परमात्मा को विचारते हुये सृष्टि के पदार्थों से उपकार लेकर ज्ञानी और धनी होवे ॥ ११ ॥

मन्त्र १२ राजप्रजाधर्मोपदेशः—मन्त्र १२ राजा और प्रजा के धर्म का उपदेश ॥

आदहं स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमैरिरे । दधाना नाम यज्ञियम् १२
आत् । अहं । स्वधाम् । अनु । धुनः । गर्भ-त्वम् ।
आ-ईरिरे ॥ दधानाः । नाम । यज्ञियम् ॥ १२ ॥

भाषार्थ—(आत्) फिर (अहं) अवश्य (स्वधाम् अनु) अपनी धारण शक्ति के पीछे (यज्ञियम्) सत्कार योग्य (नाम) नाम [यश] का (दधानाः) धारण करते हुये लोगों ने (पुनः) निश्चय कर के (गर्भत्वम्) गर्भपन [सोरपन, बड़े पद] को (एरिरे) सब प्रकार से पाया है ॥ १२ ॥

भावार्थ—जहां पर पूर्वोक्त प्रकार से न्याय युक्त स्वतन्त्रता के साथ लोग कार्य करते हैं, वहां पर सब पुरुष बड़ाई पाते हैं ॥ १२ ॥

यह मन्त्र, आ चुका है—अ० २० । ४० । ३ ॥

सूक्तम् ७० ॥

१—२० ॥ १, ३ मरुत इन्द्रश्च; २, ४, ५ मरुतः; ६—२० इन्द्रो देवता ॥
१—३, ५—७; ६, ११—१३, १६, २० गायत्री; ४, ८, १०, १४, १६, १७, निचृद् गायत्री; १५ पाद् निचृद् गायत्री; १८ विराद् गायत्री छन्दः ॥

१—६ । राजप्रजाधर्मोपदेशः—१—६ राजा और प्रजा के धर्म का उपदेश ॥

१२—अयं मन्त्रो व्याख्यातः—अ० २० । ४० । ३ ॥

वीलु चिदारुजलुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः । अविन्द उस्त्रिया
अनु ॥ १ ॥

वीलु । चित् । आरुजलु-भिः । गुहा । चित् । इन्द्र । वह्निभिः ॥
अविन्दः । उस्त्रियाः । अनु ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [महाप्रतापी मनुष्य] (गुहा) गुहा
[गुप्त स्थान] में (चित्) भी [शत्रुओं के] (वीलु) दड़ गड़ को, (आरुजलु
भिः) तोड़ डालने वाले (वह्निभिः) अग्निगों [आग्नेय शस्त्रों] से (चित्)
निश्चय करके (उस्त्रियाः अनु) निवास करने वाली प्रजाओं के पीछे
(अविन्दः) तू ने पाया है ॥ ११ ॥

भावार्थ—प्रतापी वीर मनुष्य आग्नेय शस्त्र धारण तोप भुषणही आदि से
गुप्त स्थानों में छिपे वैरियों को नष्ट करके प्रजा की रक्षा करें ॥ १ ॥

मन्त्र १—६ ऋग्वेद में है—१ । ६ । ५—१०, मन्त्र १ सामवेद—उ० २ । २ । ७ ॥

देवयन्तो यथा मृत्तिमच्छा विदद् वंसु गिरः । महामनुषत
श्रुतम् ॥ २ ॥

देव-यन्तः । यथा । मृत्तिम् । अच्छा । विदत्-वंसुम् । गिरः ।
महाम् । अनुषत् । श्रुतम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(देवयन्तः) विजय चाहने वाले (गिरः) विद्वान् लोगों ने

१—(वीलु) वीलयतिः संस्तम्भकर्मा—निरु० ५ । १७ । भृमृशीङ् तृ० ।
उ० १ । ७ । उपत्ययः । वीलु बलनाम—निघ० २ । ६ । दड़स्थानम् । दुर्गम्
(चित्) अपि (आरुजलुभिः) कूहनिभ्यां क्लृः । उ० ३ । ३० । आङ् + रुजो
भङ्गे—कल्लुप्रत्ययः अकारसहितः । समन्ताद् भङ्गद्विभिः । सम्भङ्गजनशीलैः
(गुहा) गुहायाम् । गुप्तस्थाने (चित्) निश्चयेन (इन्द्र) महाप्रतापिन् मनुष्य
(वह्निभिः) वह्निभिश्चु० । उ० ४ । ५१ । वह प्रापणे-नि । वोढृभिः । नेतृभिः
पुरुषैः (अविन्दः) विदुस्त्वत्तामे-लङ् । लब्धवानसि (उस्त्रियाः) अथ० २० ।
१६ । ७ । निवासशीलाः प्रजाः (अनु) अनुलक्ष्य ॥

२—(देवयन्तः) दिव्य विजिगीषायाम् सुरादिः—शतृ । यद्वा देव-व्यय,

(यथा) जैसे (विद्वद्वसुम्) बनों के प्रसिद्ध करने वाले (मतिम्) बुद्धिमान की, [वैसे ही] (महाम्) महान् और (भुतम्) विख्यात पुरुष की (अञ्ज) अञ्जे प्रकार (अनुषत्) स्तुति की है ॥ २ ॥

भाषार्थ—विजयी विद्वान् लोग अनुभवो प्रसिद्ध पुरुषों से उत्तम गुण प्रदण करते रहें ॥ २ ॥

इन्द्रेण स हि दृक्षसे संजग्मानो अविभ्युषा । मन्दू समान-
वर्चसा ॥ ३ ॥

इन्द्रेण । सम् । हि । दृक्षसे । सम्-जग्मानः । अविभ्युषा ॥
मन्दू इति । समान-वर्चसा ॥ ३ ॥

भाषार्थ—[हे प्रजागण !] (अविभ्युषा) निहर् (इन्द्रेण) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले राजा] के साथ (हि) ही (संजग्मानः) मिलता हुआ व (सम्) अञ्जे प्रकार (दृक्षसे) दिखाई देता है । (समानवर्चसा) एक से तेज के साथ (मन्दू) तुम दोनों [राजा और प्रजा] आनन्द देने वाले हो ॥ ३ ॥

भाषार्थ—जिस राज्य में प्रजागण राजा से और राजा प्रजा से प्रसन्न रहते हैं, वही राज्य विद्या और धन में उन्नति करता है ॥ ३ ॥

मन्त्र ३, ४ आचुके हैं—अथ० २० । ४० । १, २ ॥

अनुवद्यैरभिद्युभिर्मुखः सहस्वदर्चति । गुणैरिन्द्रस्य काम्यैः ४
अनुवद्यैः । अभिद्युभिः । मुखः । सहस्वत् । अर्चति ॥
गुणैः । इन्द्रस्य । काम्यैः ॥ ४ ॥

शतृ । विजिगीषमाणाः । विजयमिच्छन्तः (यथा) येन प्रकारेण (मतिम्) कि अकौ च संज्ञायाम् । पा० ३ । ३ । १७४ । मन जाने किच् । मतयो मेधाविनाम निघ० ३ । १५ । मेधाविनम् (अञ्ज) उत्तमरीत्या (विद्वद्वसुम्) विद्व जाने-
शतृ । विद्वन्ति जानन्ति वसूनि धनानि यस्मात् तम् (गिरः) गृ विज्ञापे स्तुतौ च—किप् । विद्वांसः (महाम्) नकारतकारतोपः । महान्तम् (अनुषत्)
अथ० २० १७ । १ । स्तुतवन्तः (भुतम्) विख्यातम् ॥

३, ४—मन्त्रो व्याख्यातो अथ० २० । ४० । १-२ ॥

भाषार्थ—(अनवद्यैः) निर्दोष, (अभिद्युभिः) सब ओर से प्रकाशमान और (काम्यैः) प्रीति के योग्य (गणैः) गणों [प्रजागणों] के साथ (इन्द्रस्य) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले राजा] का (मखः) यज्ञ [राज्य व्यवहार] (सहस्रत्) अति बड़ता से (अर्चति) सत्कार पाता है ॥ ४ ॥

भावार्थ—सब राजाकाज उत्तम विद्वान् लोगों के मेल से अच्छे प्रकार सिद्ध होते हैं ॥ ४ ॥

अतः परिज्मन्ना गहि दिवो वा रोचनादधि । सम्स्मि-
नृञ्जते गिरः ॥ ५ ॥

अतः । परि-ज्मन् । आ । गहि । दिवः । वा । रोचनात् ।
अधि ॥ सम् । अस्मिन् । नृञ्जते । गिरः ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(अतः) इस लिये, (परिज्मन्) हे सर्वत्र गति वाले शूर ! (दिवः) विजय की इच्छा से (वा) और (रोचनात्) प्रीति भाव से (अधि) ऊपर (आ गहि) आ, (अस्मिन्) इस [वचन] में (गिरः) हमारी स्तुतियां (सम्) ठीक ठीक (नृञ्जते) सिद्ध होती हैं ॥ ५ ॥

भावार्थ—पूर्वोक्त प्रकारसे आवश्यकता जताकर श्रेष्ठ प्रजागण धीर धीर पुरुष को उत्तम कर्मों में प्रवृत्त करें ॥ ५ ॥

इतो वा सातिमीमहे दिवो वा पार्थिवादधि । इन्द्रं मही
वा रजसः ॥ ६ ॥

इतः । वा । सातिस् । ईमहे । दिवः । वा । पार्थिवात् ।

५—(अतः) अस्मात् पूर्वोक्तात् कारणात् (परिज्मन्) अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते । पा० ३ । २ । ७५ । परि + अज गतिक्षेपेणयोः—मनिन्, अकारलोपः । हे सर्वतो गतिशील (आ गहि) आगच्छ (दिवः) दिवु विजिगीषायाम्—किप् । विजयेच्छायाः सकाशात् (वा) चार्थे (रोचनात्) रुच दीप्तावभिप्रीतौ च युच् । प्रीतिभावात् (अधि) उपरि (सम्) सम्यक् (अस्मिन्) वचसि (नृञ्जते) नृञ्जतिः प्रसाधनकर्मा—निरु० ६ । २१ । प्रकर्षेण सिध्यन्ति (गिरः) स्तुतयः—निरु० १ । १० ॥

अधि ॥ इन्द्रम् । महः । वा । रजसः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(इतः) इस लिये (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े प्रतापी मनुष्य] के द्वारा (दिवः) प्रकाश से (वा) और (पार्थिवात्) पृथिवी के संगयोग से (वा) और (महः) बड़े (रजसः) जल [अथवा वायु मण्डल] से (वा) निश्चय करके (सातिम्) दान [उपकार] को (अधि) अधिकार पूर्वक (ईमहे) हम मांगते हैं ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को उचित है कि पूर्वोक्त प्रकार से विचार पूर्वक बड़े बड़े विद्वानों द्वारा विद्या ग्रहण कर के संसार के सब अग्नि आदि पदार्थों से उपकार लेकर उन्नति करें ॥ ६ ॥

इन्द्रमिह गा यिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरुर्किणः । इन्द्रं वाणी-
रनूषत ॥ ७ ॥

इन्द्रम् । इत् । गा यिनः । बृहत् । इन्द्रम् । अर्केभिः ।
अर्किणः ॥ इन्द्रम् । वाणीः । अनुषतु ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(गा यिनः) गाने वालों और (अर्किणः) विचार करने वालों ने (अर्केभिः) पूजनीय विचारों से (इन्द्रम्) सूर्य [के समान प्रतापी], (इन्द्रम्) वायु [के समान फुरतीले] (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले राजा] को और (वाणीः) वाणियों [वेदवचनों] को (इत्) निश्चय करके (बृहत्) बड़े ढंग से (अनुषत सराहा है ॥ ७ ॥

भावार्थ—मनुष्य सुनीतिज्ञ प्रतापी, उद्योगी राजा के और परमेश्वर

६—(इतः) अस्मात् पूर्वोक्तात् कारणात् (वा) च (सातिम्) ऊतियूति-
जूतिसातिहेति० पा० ३ । ३ । ६७ । षणु दाने—किन् । दानम् । उपकारम् (ईमहे)
ईङ् गतौ शपो लुकि श्यनभावः । याचामहे—निघ० ३ । १६ (दिवः) प्रकाशात्
(वा) च (पार्थिवात्) सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणजौ । पा० ५ । १ । ४१ । पृथिवी
अञ् प्रत्ययः संयोगविषये । पृथिवीसंयोगात् (अधि) अधिकारपूर्वकम्
(इन्द्रम्) महाप्रतापिनं मनुष्यम् (महः) महतः (वा) अवधारणे (रजसः)
उदकं रज उच्यते—निरु० ४ । १६ । जलात् । अन्तरिक्षात् । वायुमण्डलात् ॥

७—६ । एते मन्त्रा गताः—अथ० २० । ३८ । ४—इति ४७ । ४—६ ॥

की दो हुई वेदवाणी के गुणों को विचारकर सब के सुख के लिये यथावत् उपाय करें ॥ ७ ॥

मन्त्र ७—६ आचुके हैं—अथ० २० । ३८ । ४—६ तथा ४७ । ४—६ ॥

इन्द्र इद्ध्ययोः सचा संमिश्र आ वचोयुजा । इन्द्रो वज्री
हिरण्ययः ॥ ८ ॥

इन्द्रः । इत् । हयोः । सचा । सम्-मिश्रः । आ । वचुः-
युजा ॥ इन्द्रः । वज्री । हि-रण्ययः ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(वज्री) वज्रधारी, (हिरण्ययः) तेजोमय (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला राजा] (इत्) ही (इन्द्रः) वायु [के समान] (सचा) नित्य मिले हुये (हयोः) दोनों संयोग वियोग गुणों का (संमिश्रः) यथावत् मिलाने वाला (आ) और (वचोयुजा) वचन का योग्य बनाने वाला है ॥ ८ ॥

भाषार्थ—जैसे पवन के आने जाने से पदार्थों में चलने, फिरने, ठहरने का और जीभ में बोलने का सामर्थ्य होता है, वैसे ही दण्ड दाता प्रतापी राजा के न्याय से सब लोगों में शुभ गुणों का संयोग और दोषों का वियोग होकर वाणी में सत्यता होती है ॥ ८ ॥

इन्द्रो दीर्घाय चक्षु आ सूर्य रोहयद् दिवि । वि गोभिरद्रि-
मेरयत् ॥ ९ ॥

इन्द्रः । दीर्घाय । चक्षुसे । आ । सूर्यम् । रोहयत् । दिवि ॥
वि । गोभिः । अद्रिम् । ऐरयत् ॥ ९ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले परमात्मा] ने (दीर्घाय) दूर तक (चक्षुसे) देखने के लिये (दिवि) व्यवहार [वा आकाश] के बीच (गोभिः) वेद वाणियों द्वारा [वा किरणों वा जलों द्वारा] (सूर्यम्) सूर्य [के समान प्रेरक] और (अद्रिम्) मेघ [के समान उपकारी पुरुष] को (आ रोहयत्) ऊंचा किया और (वि) विविध प्रकार (ऐरयत्) चलाया है ॥ ९ ॥

भाषार्थ—जैसे परमेश्वर के निबम से सूर्य आकाश में चलकर तापि

आदि गुणों से अनेक लोकों को धारण करता और किरणों द्वारा जल खींचकर फिर धरसाकर उपकार करता है, वैसे ही दूर दर्शी राजा अपने प्रताप और उत्तम व्यवहारों से सब प्रजा को नियम में रखे और का लेंकर उनका प्रति-पालन करे ॥ ६ ॥

म० १०—२० । परमेश्वरापासनापदेशः—म० १०—२० । परमेश्वर की उपासना का उपदेश ॥

इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च । उग्र उग्राभिरुतिभिः १०
इन्द्र । वाजेषु । नः । अत्र । सहस्र-प्रधनेषु । च ॥ उग्रः ।
उग्राभिः । ऊति-भिः ॥ १० ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [परमेश्वर्य वाले परमात्मन्] (उग्रः) उग्र [प्रचण्ड] तू (वाजेषु) पराक्रमों के बीच (च) और (सहस्रप्रधनेषु) सहस्रों बड़े धन वाले व्यवहारों में (उग्राभिः) उग्र [दृढ़] (ऊतिभिः) रक्षा साधनों के साथ (नः) हमें (अत्र) बचा ॥ १० ॥

भावार्थ—परमात्मा की प्रार्थना करके वीर पुरुष पराक्रमी और धनी होकर प्रजा का पालन करे ॥ १० ॥

मन्त्र १०—१६ ऋग्वेद में है—१ । ७ । ३—१०; म० १० सामवेद—पू० ६ । ११ । ४ तथा—उ० २ । १ । ८ ॥

इन्द्र वयं महाधुन इन्द्रमर्भे हवामहे । युजं वृत्रेषु वृजिणम् ११
इन्द्रम् । वयम् । महा-धुने । इन्द्रम् । अर्भे । हवामहे ॥
युजम् । वृत्रेषु । वृजिणम् ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(वयम्) हम (अर्भे) चलते हुये (महाधुने) बहुत धन

१०—(इन्द्र) परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (वाजेषु) पराक्रमेषु (नः) अस्मान् (अत्र) रक्ष (सहस्रप्रधनेषु) असंख्यप्रकृष्टधनयुक्तेषु व्यवहारेषु (च) समुच्चये (उग्रः) प्रचण्डः (उग्राभिः) प्रचण्डाभिः । दृढाभिः (ऊतिभिः) रक्षासाधनैः ॥

११—(इन्द्रम्) परमैश्वर्यवान्तं जगदीश्वरम् (वयम्) (महाधुने) महा-

प्राप्त कराने वाले संग्राम में [अथवा बहुत धन में] (युजम्) सहायकारी और (वृत्रेषु) रोकने वाले शत्रुओं पर (वज्रिणम्) वज्र धारी (इन्द्रम्) इन्द्र [परम पेश्वर्य वाले जगदीश्वर] को, (इन्द्रम्) इन्द्र [परम पेश्वर्य वाले जगदीश्वर] को (हवामहे) बुलाते हैं ॥ ११ ॥

भावार्थ—युद्धों में तथा बहुत धन में वीर पुरुष—“हे इन्द्र जगदीश्वर ! हे इन्द्र जगदीश्वर”—ऐसा स्मरण करके अपना बल बढ़ावे और प्रयत्न करके शत्रुओं को हटावे ॥ ११ ॥

यह मन्त्र सामवेद में भी है—पू० २।४।६ ॥

स नो वृषन्मुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि । अस्मभ्यमप्रतिष्कृतः १२
सः । नः । वषन् । अमुम् । चरुम् । सत्रा-दावन् । अप ।
वृधि ॥ अस्मभ्यम् । अप्रति-स्कृतः ॥ १२ ॥

भाषार्थ—(वृषन्) हे सुख बरसाने वाले ! (सत्रादावन्) हे सत्य ज्ञान देने वाले परमेश्वर ! (अप्रतिष्कृतः) वे रोक गति वाला (सः) सो तू (नः) हमारे लिये, (अस्मभ्यम्) हमारे लिये (अमुम्) उस (चरुम्) मेघ के समान ज्ञान को (अप वृधि) खोल दे ॥ १२

धने संग्रामनाम—निघ० २।१७। प्रभूतधननिमित्ते संग्रामे । यद्वा, महच्च तद् धनं च । प्रभूते धने (इन्द्रम्) परमेश्वर्यवन्तं जगदीश्वरम् (अर्भे) अर्त्त-गृभ्यां भन् । उ० ३।१५२। ऋ गतौ—भन् । गतिशीले (हवामहे) आह्वयामहे (युजम्) युजिर् योगे, युज समाधौ च—क्विप् । सहायकम् (वृत्रेषु) आवरकेषु शत्रुषु (वज्रिणम्) दण्डधारिणम् ॥

१२—(सः) परमेश्वरः (नः) अस्मभ्यम् (वृषन्) हे सुखवर्षक (अमुम्) प्रसिद्धम् (चरुम्) भृशशीङ् तृचरि० । उ० १।७। चर गतिमन्त्र-णयोः—उप्रत्ययः । चरुर्मेघनाम निघ० १।१०। मेघमिवोपकारकं ज्ञानम् (सत्रादावन्) सत्रा सत्यनाम—निघ० ३।१०। आतो मतिन्कनिब्वनिपश्च । पा० ३।२।७२। ददातेर्वनिप् । हे सत्यज्ञानस्य दातः (अप वृधि) वृत्र अच्छा-दने—लोद् । बहुलं छन्दसि । पा० २।४।७३। श्नोर्लुक् श्रुशृणुपृरुवृभ्यश्च-न्दसि । पा० ६।४।१०२। इति हेर्धिः । उत्पाटय । उद्घाटय (अस्मभ्यम्) (अप्रतिष्कृतः) अथ० २०।४१।१। अप्रतिगतः ॥

भावार्थ—मनुष्य ईश्वर से मेघ समान उपकारी सत्यज्ञान को प्राप्त कर के सुखी होवे ॥ १२ ॥

यह मन्त्र सामवेद में है— उ० ८।१।२ ॥

तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः । न विन्दे
अस्य सुष्टुतिम् ॥ १३ ॥

तञ्जे-तुञ्जे । ये । उत्-तरे । स्तोमाः । इन्द्रस्य । वज्रिणः ॥
न । विन्दे । अस्य । सु-स्तुतिम् ॥ १३ ॥

भाषार्थ—(वज्रिणः) अत्यन्त पराक्रम वाले (इन्द्रस्य) इन्द्र [परम-
पेश्वर्य वाले जगदीश्वर] के (तुञ्जेतुञ्जे) दान दान में (ये) जो (उत्तरे)
उत्तम उत्तम (स्तोमाः) स्तोत्र हैं, [उन से] (अस्य) उस की (सुष्टुतिम्) सुन्दर
स्तुति (न विन्दे) मैं नहीं पाता हूँ ॥ १३ ॥

भावार्थ—परमात्मा ने प्राणियों के सुख के लिये अनन्त पदार्थ दिये
हैं, अलग मनुष्य उन की गणना करके उसकी स्तुति नहीं कर सकता ॥ १३ ॥

वृषा युथेव वंसंगः कृष्टीरियुर्थोजसा । ईशानो अप्रतिष्कृतः १४
वृषा । युथा-इव । वंसंगः । कृष्टीः । इयुर्ति । ओजसा ॥
ईशानः । अप्रति-स्कृतः ॥ १४ ॥

भाषार्थ—(वृषा) बलवान् बैल (युथा इव) जैसे अपने भुगर्भों को,
[वैसे ही] (वंसंगः) सेवनीय पदार्थों का पहुँचाने वाला, (अप्रतिष्कृतः)

१३ (तुञ्जेतुञ्जे) तुजि हिंसायां पालने च—भावे घञ् । तुजस्तुञ्जेतुञ्जे-
कर्मणः—निरु० ६।१७ । दाने दाने—निरु० ६।१८ (ये) (उत्तरे) उत्कृष्टाः
(स्तोमाः) स्तोत्राणि (इन्द्रस्य) परमेश्वर्यवतो जगदीश्वरस्य (वज्रिणः)
वीर्यवतः । प्रशस्तपराक्रमिणः (न) निषेधे (विन्दे) विदुः लामे—लद्,
दकारस्य धकारः । विन्दे । विन्दामि । प्राप्नोमि (अस्य) परमेश्वरस्य (सुष्टु-
तिम्) शोभनां स्तुतिम् ॥

१४—(वृषा) वीर्यवान् बलीवर्धः (युगा) तिथपृष्ठगूथयूथप्रोथाः । उ० २ ।

१२ । यु मिश्रणमिश्रणयोः—थक् । सजातीयसमुदायान् (इव) यथा (वंसंगः)

वे रोक गति वाला (ईशानः) परमेश्वर (ओजसा) अपने बल से (कृष्टीः) मनुष्यों को (इयर्ति) प्राप्त होता है ॥ १३ ॥

भाष्यार्थ—जैसे बलवान् बैल अपने भुण्ड को बश में रखता है, वैसे ही परमात्मा सब में व्यापकर मनुष्य आदि प्राणियों को अपने नियम में रखता है ॥ १३ ॥

यह मन्त्र सामवेद में भी है—उ० ८।१।२ ॥

य एकं चर्षणीनां वसूनामिरुज्यति । इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम् १५
यः । एकः । चर्षणीनाम् । वसूनाम् । इरुज्यति ॥ इन्द्रः ।
पञ्च । क्षितीनाम् ॥ १५ ॥

भाष्यार्थ—(यः) जो (एकः) अकेला (चर्षणीनाम्) चलने वाले मनुष्यों और (वसूनाम्) श्रेष्ठ गुणों का (इरुज्यति) स्वामी है, (इन्द्रः) वही इन्द्र [परम ऐश्वर्यवान् जगदीश्वर] (पञ्च) पांच [पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश] से सम्बन्ध वाले (क्षितीनाम्) चलते हुये लोकों का [स्वामी है] ॥ १५ ॥

भाष्यार्थ—परमात्मा सब प्राणियों, सब श्रेष्ठ गुणों और सब लोकों का स्वामी है, मनुष्य उसकी भक्ति से अपना सामर्थ्य बढ़ावे ॥ १५ ॥

अ० १८।३।३६। सेवनीयपदार्थानां प्रापयिता (कृष्टीः) अ० ३।२४।३। मनुष्यान्-निघ० २।३ (इयर्ति) ऋ गतौ—लट् शपः श्लुः । प्राप्नोति (ओजसा) बलेन (ईशानः) ईश ऐश्वर्यं—शानच् । परमेश्वरः (अप्रतिष्कृतः) म० १२। अप्रतिगतः ॥

१५—(यः) परमेश्वरः (एकः) अद्वितीयः (चर्षणीनाम्) अ० १।५।४। चर्षणीनाम् मनुष्याणाम्—निघ० २।३ (वसूनाम्) श्रेष्ठगुणानाम् (इरुज्यति) इरज ईर्ष्यायाम्, कण्वादिः । इरुज्यतिरैश्वर्यकर्म—निघ० २।२१। ईष्टे (इन्द्रः) स परमेश्वरः (पञ्च) शप्यशृभ्यां तुट् च । उ० १।१५७। पचि व्यक्तीकरणे—कनिन् । पृथिवीजलतेजोवाय्वाकाशपञ्चभूतसम्बद्धानाम् (क्षितीनाम्) क्षि निवासगत्योः—किन् । क्षितिः पृथिवीनाम्—निघ० १।१। गतिशीलानां लोकानाम् ॥

इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनैभ्यः । अस्माकमस्तु
केवलः ॥ १६ ॥

इन्द्रम् । वः । विश्वतः । परि । हवामहे । जनैभ्यः ॥
अस्माकम् । अस्तु । केवलः ॥ १६ ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्यो !] (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े पेश्वर्यवान् परमात्मा]
को (वः) तुम्हारे लिये और (विश्वतः) सब (जनैभ्यः) प्राणियों के लिये (परि)
सब प्रकार (हवामहे) हम बुलाते हैं । वह (अस्माकम्) हमारा (केवलः)
सेवनीय (अस्तु) होवे ॥ १६ ॥

भावार्थ—सब मनुष्य सर्वहितकारी जगदीश्वर की आज्ञा में रह कर
आनन्द पावें ॥ १६ ॥

यह मन्त्र आचुका है—अ० २० । ३६ । १ ॥

इन्द्रं सानुसिं रुयिं सजित्वानं सदासहम् । वर्षिष्ठमुतये भर १७
आ । इन्द्र । सानुसिम् । रुयिम् । स-जित्वानम् ॥

सदास-हम् ॥ वर्षिष्ठम् । ऊतये । भर ॥ १७ ॥

नि येन मुष्टिहृत्यया नि वृत्रा रुणधामहै । त्वोतासो न्यर्वता १८
नि । येन । मुष्टि-हृत्यया । नि । वृत्रा । रुणधामहै ॥

त्वा-ऊतासः । नि । अर्वता ॥ १८ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [परम पेश्वर्य वाले जगदीश्वर]
(सानुसिम्) सेवनीय, (सजित्वानम्) जीतने वालों के साथ वर्तमान,
(सदासहम्) सदा वैरियों के हराने वाले, (वर्षिष्ठम्) अत्यन्त बड़े हुये

१६—अयं मन्त्रो व्याख्यातः—अ० २० । ३६ । १ ॥

१७—(आ) समन्तात् (इन्द्र) परमेश्वर्यवान् जगदीश्वर (सानुसिम्)
अ० २० । १४ । २ । षण् संभक्तौ—असिप्रत्ययः । सेवनीयम् (रीयम्) धनम्
(सजित्वानम्) अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते । पा० ३ । २ । ७५ । जि जये—कनिष्,
स हरय सभावः । जित्वभिर्जेतुभिः सह वर्तमानम् (सदासहम्) सर्वदा शत्रूणा-

(रयिम्) उस धन को (उतये) हमारी रक्षा के लिये (आ) सब ओर से (भर) भर ॥ १७ ॥ (येन) जिस [धन] के द्वारा (मुष्टिहत्यया) मुष्टियों की मार [बाहुयुद्ध] से और (अर्वता) घुड़चढ़े दल से (वृत्रा) शत्रुओं को (त्वोतासः) तुझ से रक्षा किये गये हम (नि) निश्चय करके (नि) नित्य (नि रुणधामहै) रोकते रहें ॥ १८ ॥

भावार्थ—सब मनुष्य परमेश्वर का आश्रय लेकर पुरुषार्थ के साथ विद्याओं द्वारा धन बढ़ावें और शरीर और बुद्धिबल तथा अश्व आदि सेना को दृढ़ करके शत्रुओं को जीते ॥ १७, १८ ॥

मन्त्र १७-२० ऋग्वेद में हैं—१।८।१—४; मन्त्र १७ साम०—पू० २।४।५ ॥

इन्द्र त्वोतासु आ वयं वज्रं घना ददीमहि । जयेम स युधि स्पृधः ॥ १८ ॥

इन्द्र । त्वा-उतासः । आ । वयम् । वज्रम् । घना । ददीमहि ॥ जयेम । सम् । युधि । स्पृधः ॥ १८ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्यवाले परमात्मन्] (त्वोतासः) तुझ से रक्षा किये गये (वयम्) हम (वज्रम्) वज्र [बिजुली और अग्नि के शस्त्रों] और (घना) घनों [मारने के तलवार आदि हथियारों] को (आ ददी-

मभिभवितारम् (वर्षिष्ठम्) अ० ४।६।४ । वृद्ध—इष्टम् । अतिशयेन वृद्धम् (उतये) रक्षायै (भर) धर ॥

१८—(नि) निश्चयेन (येन) धनेन (मुष्टिहत्यया) हनस्त च । पा० ३।१।१०८ । मुष्टि + हन हिंसागत्योः—क्यप् । मुष्टिप्रहारेण । बाहुयुद्धेन (नि) नितराम् (वृत्रा) शत्रून् (रुणधामहै) निरुणधाम । निरुद्धान् कर-धाम (त्वोतासः) त्वया उता रक्षिताः (नि) निश्चयेन (अर्वता) अश्व-दलेन ॥

१९—(इन्द्र) परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (त्वोतासः) त्वया रक्षिताः (वयम्) धार्मिकाः (वज्रम्) विद्युद्ग्निशस्त्रास्त्रसमूहम् (घना) दृढ़ानि युद्धसाधनानि कौहसुदृगरज्ज्वादीनि (आ ददीमहि) गृहणीयाम (जयेम)

सू० ७१ [६५८] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,२१३)

महि) ग्रहण करें और (युधि) युद्ध में (स्पृधः) ललकारते हुये शत्रुओं को (सम्) ठीक ठीक (जयेम) जीतें ॥ १६ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमात्मा की शरण में रहकर वीर सेना और पुष्कल युद्ध सामग्री लेकर शत्रुओं को हरावे ॥ १६ ॥

वयं शूरैर्भिरस्तृभिरिन्द्र त्वया युजा वयम् । ससह्याम
पृतन्यतः ॥ २० ॥

वयम् । शूरैर्भिः । अस्तृ-भिः । इन्द्र । त्वया । युजा । वयम् ॥
ससह्याम । पृतन्यतः ॥ २० ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [परम पेश्वर्य वाले जगदीश्वर] (वयम्) हम, (वयम्) हम (युजा त्वया) तुम्हें सहायक के साथ (अस्तृभिः) हथियार चलाने वाले (शूरैर्भिः) शूरों के द्वारा (पृतन्यतः) सेना चढ़ाने वाले बैरियों को (ससह्याम) हरा दें ॥ २० ॥

भावार्थ—मनुष्य परमेश्वर में दृढ़ विश्वास करके धर्मयुद्ध में युद्ध कुशल शूरों द्वारा बैरियों को जीत कर प्रजा पालन करें ॥

सूक्तम् ७१ ॥

१—१६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १-४, ७, ६, ११—१३, १६ निचृद् गायत्री;
२, ३, ५, ८, १०. १४, १५ गायत्री; ६ वर्धमाना गायत्री ॥

मनुष्यकर्तव्योपदेशः—मनुष्य के कर्तव्य का उपदेशा ॥

अभिभवेम (सम्) सम्यक् (युधि) युद्धे (स्पृधः) स्पर्ध संघर्षे—किप् । बहुलं छन्दसि । पा० ६ । १ । ३४ । रेफस्य सम्प्रसारणमल्लोपश्च । स्पर्धमानान् । युद्धाय शब्दमानान् शत्रून् ॥

२०—(वयम्) सेनापतयः (शूरैर्भिः) शूरैः । वीरैः (अस्तृभिः) शस्त्रा-
स्त्रप्रक्षेपणदलैः (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् जगदीश्वर (त्वया) (युजा) सामार्थ्य-
संयोजकेन । सहायकेन (वयम्) वीरपलायां द्विर्वचनम् (ससह्याम) बहु
मर्षणे यङ्लुकि लिङि रूपम् । पुनः पुनः सहेमहि जयेम (पृतन्यतः अ० १ । २१
२ । आत्मनः पृतनां सेनामिच्छतः शत्रून् ॥

मुहौ इन्द्रः पुरश्च नु महित्वमस्तु वज्रिणे । द्यौर्न प्रथिना
शवः ॥ १ ॥

मुहान् । इन्द्रः । पुरः । च । नु । महि-त्वम् । अस्तु ।
वज्रिणे ॥ द्यौः । न । प्रथिना । शवः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(महान्) महान् (च) और (परः) श्रेष्ठ (इन्द्रः) इन्द्र
[बड़े ऐश्वर्य वाला परमेश्वर] (प्रथिना) फैलाव से (द्यौः न) सूर्य के प्रकाश
के समान है, (नु) इस लिये (वज्रिणे) उस महापराक्रमी [परमेश्वर] के
लिये (महित्वम्) महत्व और (शवः) बल (अस्तु) होवे ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्य सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर को धन्यवाद देते हुये विद्याओं
द्वारा अपना ऐश्वर्य और बल बढ़ावें ॥ १ ॥

मन्त्र १—६ ऋग्वेद में हैं—२।८।५—१० और म० १—साम०—पू०
२।८।२ ॥

सुमोहे वा य आशतु नरस्तुल्यस्य सनितौ । विप्रसो वा
धियायवः ॥ २ ॥

सुम्-ओहे । वा । ये । आशत । नरः । तुल्यस्य । सनितौ ॥
विप्रसः । वा । धिया-यवः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(ये) ओ (नरः) नर [नेता लोग] (सुमोहे) सङ्ग्राम

१—(महान्) शुभगुणैः पूजनीयः (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् जगदीश्वरः
(परः) उत्कृष्टः (च) (नु) अस्मात् कारणात् (महित्वम्) सर्वधातुभ्य
इन् । उ० ४ । १८ । मह पूजायाम्—इन्, भावे त्वप्रत्ययः । महत्वम् (अस्तु)
(वज्रिणे) तस्मै महापराक्रमिणे परमेश्वराय (द्यौः) सूर्यप्रकाशः (न)
यथा (प्रथिना) पृथु—इमनिच्, मकारलोपः । प्रथिम्ना । विस्तारेण (शवः)
बलम् ॥

२—(सुमोहे) सम् + उहिर् अर्द्धने—घञ् । संग्रामे—निघ० २ । १७
(वा) चार्थे (ये)—(आशत) अश व्याप्तौ—लुङ्, क्तलोपः, आडागमः ।

में (वा) और (तोकस्य) सन्तान के (सनितौ) सेवन [पोषण, अध्यापन आदि] में (आशत) लगे हैं, वे (विप्रासः) विद्वान् (वा) और (धियायवः) बुद्धि की कामना वाले हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—मनुष्य साङ्गमिक नीति से प्रजा की रक्षा और सामान्य प्रबन्ध से विद्या की वृद्धि करें ॥ २ ॥

यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते । उर्वीरापो न काकुदः ॥ ३ ॥

यः । कुक्षिः । सोम-पातमः । समुद्रः-इव । पिन्वते ॥ उर्वीः । आपः । न । काकुदः ॥ ३ ॥

सुवा ह्यस्य सुनृता विरुण्शी गोमती मुही । पुक्का शाखा न दाशुषे ॥ ४ ॥

सुव । हि । अस्य । सुनृता । वि-रुण्शी । गो-मती । मुही ॥ पुक्का । शाखा । न । दाशुषे ॥ ४ ॥

भावार्थ—(यः) जो (कुक्षिः) तत्त्व रस निकालने वाला, (सोमपातमः) पेशवर्ष का अत्यन्त रत्नक मनुष्य (समुद्रः इव) समुद्र के समान (उर्वीः) भूमियों को और (काकुदः न) वेद वाणी जानने वाले के समान

व्याप्ता अभवन् (नरः) नेतारः (तोकस्य) अ० १।१३।२। तु वृद्धौ पूर्तौ च—कप्रत्ययः । सन्तानस्य—निघ० २। २ (सनितौ) षण् सम्भक्तौ—किन् । तितुत्रेष्वग्रदीनामिति वक्तव्यम् । वा० पा० ७।२।६। इडागमः । सेवने । पोषणाध्यापनादौ (विप्रासः) विप्राः । मेधाविनः (वा) चार्थे (धियायवः) धि धारणे—कप्रत्ययः, टाप् । धीयते धार्यते सा धिया प्रज्ञा, ततः क्यच्, उपत्ययः । बुद्धिकामाः ॥

३—(यः) पुरुषः (कुक्षिः) सुषिकुषि शुषिभ्यः क्सिः । उ० ३। १५५ । कुष निष्कर्षे—क्सि । तत्त्वनिष्कर्षकः (सोमपातमः) अतिशयेनैश्वर्यरक्षकः (समुद्रः) उदधिः (इव) यथा (पिन्वते) लिञ्जति (उर्वीः) पृथिवीः (आपः)

(आपः) शुभ कर्म को (पिब्वते) सींचता है ॥ ३ ॥ (अस्य) उस [मनुष्य] की (सूनृता) अन्न वाली क्रिया (एव) निश्चय कर के (हि) ही (विरप्शी) स्पष्ट वाणी वाली, (गोमती) श्रेष्ठ दृष्टि वाली, (मही) सत्कार योग्य, (पक्वा) परिपक्व [फल फूल वाली] (शाखा न) शाखा के समान (दाशुषे) आत्मदानी पुरुष के लिये [होवे ॥ ४ ॥

भावार्थ—विज्ञानी, पेश्वर्यवान् दूरदर्शी सत्यवादी पुरुष ही प्रजा रक्षक होता है ॥ ३, ४ ॥

म० ४—६ आ चुके हैं अ० २० । ६० । ४—६

एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते । सुद्यश्चित् सन्ति दाशुषे ॥ ५ ॥

एव । हि । ते । वि-भूतयः । ऊतयः । इन्द्र । मा-वते ॥
सुद्यः । चित् । सन्ति । दाशुषे ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (एव) निश्चय कर के (हि) ही (ते) तेरे (विभूतयः) अनेक पेश्वर्य (मावते) मेरे तुल्य (दाशुषे) आत्मदानी के लिये (सद्यः चित्) तुरन्त ही (ऊतयः) रक्षा साधन (सन्ति) होते हैं ॥ ५ ॥

भावार्थ—राजा अपना पेश्वर्य श्रेष्ठ उपकारी पुरुषों की रक्षा में लगाता रहे ॥ ५ ॥

एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च संत्यता । इन्द्राय सोमपीतये ॥ ६ ॥

आपः कर्माख्याया ह्रस्वो नुद् च वा । उ० ४ । २०८ । आप्रं तेः—असुन् । शुभ-कर्म (न) यथा (काकुदः) सम्पदादिभ्यः क्तिप् । वा० पा० ३ । ३ । ६४ । कै शब्दे—क्तिप्+कु शब्दे—क्तिप्, तुगागमः, तकारस्य दः । कां शब्दनं कैति भवति सा काकुत् । काकुत् इति षाङ्नाम—निघ० १ । ११ तदधीते तद् वेद । पा० ४ । २ । ५४ । काकुद्-अण् । वेदवाणीवेत्ता ॥

४—६ । एते मन्त्रा व्याख्याताः—अ० २० । ६० । ४—६ ॥

एव । हि । अस्य । काम्या । स्तोमः । उक्थम् । च । शंस्या ॥
इन्द्राय । सोम-पीतये ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(एव) निश्चय करके (हि) हो (अस्य) उस [सभापति] के (काम्या) मनोर और (शंस्या) प्रशंसनीय (स्तोमः) उत्तम गुण (च) और (उक्थम्) कहने योग्य कर्म (इन्द्राय) ऐश्वर्यवान् पुरुष के लिये (सोम-पीतये) सोम रस पीने के निमित्त [हैं] ॥ ६ ॥

भावार्थ—उत्तम गुणी पुरुष को सभापति बनाकर सब मनुष्य ऐश्वर्य वाले और तत्त्वज्ञान वाले हों ॥ ६ ॥

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः । मुहौ अभिष्टि-
रोजसा ॥ ७ ॥

इन्द्र । आ । इहि । मत्सि । अन्धसः । विश्वेभिः ।
सोमपर्व-भिः ॥ मुहान् । अभिष्टिः । ओजसा ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [परमऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (आ इहि) तू प्राप्त हो, और (विश्वेभिः) सब (सोमपर्वभिः) ऐश्वर्य के उत्सवों के साथ (अन्धसः) अन्न से (मत्सि) तृप्त कर, तू (ओजसा) बल से (मुहान्) महान् और (अभिष्टिः) सब प्रकार पूजनीय है ॥ ७ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमात्मा की सहाय लेकर आपस में मिलकर विद्या द्वारा ऐश्वर्य बढ़ाने और अन्न आदि पदार्थ प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करें ॥ ७ ॥

मन्त्र ७—१६ ऋग्वेद में हैं—१।६।१—१०, मन्त्र ७ यजुर्वेद ३३।२५ और सामवेद—पू० २।६।६ ॥

७—(इन्द्र) परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (आ) समन्तात् (इहि) प्राप्नुहि (मत्सि) शयनो लुक् । मादयस्व । हर्षाय (अन्धसः) अन्नात् (विश्वेभिः) सर्वैः (सोमपर्वभिः) अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते । पा० ३।२।७५। सोम + पुपाकनपूरणयोः—वनिप् । सोमस्य ऐश्वर्यस्य पर्वभिरुत्सवैः (मुहान्) उत्कृष्टः (अभिष्टिः) यजेः—किन्, यद्वा इष गतौ—किन् । एमन्नादिषु कृन्वति परकृपं वक्तव्यम् । वा० पा० ६।१।४४। इति परकृपम् । सर्वतः पूजनीयः (ओजसा) बलान् ॥

एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने । चक्रिं विश्वानि
चक्रये ॥ ८ ॥

आ । ईम् । एनम् । सृजत । सुते । मन्दिम् । इन्द्राय ।
मन्दिने ॥ चक्रिम् । विश्वानि । चक्रये ॥ ८ ॥

भाषार्थ—[हे विद्वानो !] (सुते) उत्पन्न जगत् में (मन्दिम्) आनन्द
बढ़ाने वाले, (चक्रिम्) कार्य सिद्ध करने वाले (एनम्) इस (ईम्) प्राप्ति
योग्य बोध को (मन्दिने) गतिशील, (विश्वानि) सब कर्मों के (चक्रये)
कर चुकने वाले (इन्द्राय) इन्द्र [परम ऐश्वर्य, वाले मनुष्य के लिये (आ)
सब प्रकार (सृजत) उत्पन्न करो ॥ ८ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग शिल्प विद्या से लेकर मोक्ष पर्यन्त ज्ञान का
उपदेश करके सब मनुष्यों को कर्मवीर बनावें ॥ ८ ॥

मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभि स्तोमैभिर्विश्वचर्षणे । सचैषु
सर्वनेष्वा ॥ ८ ॥

मत्स्व । सु-शिप्र । मन्दि-भिः । स्तोमैभिः । विश्व-चर्षणे ॥
सचा । एषु । सर्वनेषु । आ ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(सुशिप्र) हे बड़े ज्ञानी ! (विश्वचर्षणे) हे सब गतिशील

८—(आ) समन्तात् (ईम्) प्राप्तव्यं बोधम् (एनम्) प्रसिद्धम् (सृजत)
उत्पादयत । सम्पादयत (सुते) उत्पन्ने जगति (मन्दिम्) खनिकष्यज्यसि वसि०—
७० ४ । १४० । मदि स्तुतिमोदमदखन्तकान्तिगतिषु—इप्रत्ययः । आनन्दयि-
तारम् (इन्द्राय) परमैश्वर्यवते मनुष्याय (मन्दिने) अ० २० । १७ । ४ । मोद-
यित्रे (चक्रिम्) आद्वगमहनजनः किकिनौ लिट् च । पा० ३ । २ । १७१ । डुकृञ्
करणे—किन्प्रत्ययः । कार्यकर्तारम् (विश्वानि) सर्वाणि कर्माणि अस्य चक्रये
इति कृदन्तेन योगेऽपि । नलोकाव्ययनिष्ठास्त्वर्थतृणाम् । पा० २ । ३ । ६६ ।
किकिनौ लिट् चेति किकिनोर्लङ्घवद्भावेन षष्ठीनिषेधे द्वितीया (चक्रये)
करोतेः किन् पूर्ववत् । कृतवते ॥

६—(मत्स्व) हर्षय (सुशिप्र) अ० २० । ४ । १ । सृष्ट गतौ-रक

मनुष्यों के स्वामी ! [वा सब के देखने वाले परमेश्वर] (मन्दिभिः) हर्ष देने वाले (स्तोमेभिः) स्तुति योग्य व्यवहारों के साथ (सचा) सदा मेल से (पशु) इन (सवनेषु) ऐश्वर्य वाले पदार्थों में (आ) अच्छे प्रकार (मत्स्व) आनन्दित कर ॥ ६ ॥

भावार्थ—सर्वज्ञ सर्वदर्शक परमेश्वर के गुणों को धारण करके मनुष्य दूरदर्शी और पुरुषार्थी होकर सब को सुखी करें ॥ ६ ॥

असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत । अजोषा वृषभं पतिम् ॥ १० ॥

असृग्रम् । इन्द्र । ते । गिरः । प्रति । त्वाम् । उत् । अहासत ॥ अजोषाः । वृषभम् । पतिम् ॥ १० ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र । [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (ते) तेरी (अजोषाः) अत्यन्त प्रीति करने वाली [जिन से अधिक हितकारी दूसरा नहीं वे] (गिरः) वेदवाणियां (असृग्रम्) गति देने वाले, (वृषभम्) सुखों के बरसाने वाले [वा बलवान्] (पतिं त्वाम्) तुझ स्वामी को (प्रति) प्रत्यक्ष करके (उत् अहासत) ऊंची गयी हैं ॥ १० ॥

सृशब्दस्य शिभावः । सृपः सर्पणादिदमपीतरत् सृपमेतस्मादेव सर्पिर्वा तैलं वा.....सुशिप्रमेतेन व्याख्यातम्—निरु० ६ । १७ ॥ हे बहुज्ञानयुक्त [मन्दिभिः] म० ८ । हर्षयितृभिः (स्तोमेभिः) स्तुत्यव्यवहारैः (विश्वचर्षणे) चषणयो मनुष्यनाम—निघ० २ । ३ । सर्वे चरणशीला मनुष्या यस्य तत्सम्बुद्धौ । हे सर्व-मनुष्यस्वामिन् । हे सर्वदर्शक—निघ० ३ । ११ (सचा) समवायेन (पशु) प्रत्यक्षेषु (सवनेषु) ऐश्वर्ययुक्तेषु पदार्थेषु (आ) समन्तात् ॥

१०—(असृग्रम्) अस गतिदीप्त्यादानेषु—ऋजिप्रत्ययः + रा दाने—क । गतिदातारम् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यधन् परमात्मन् (ते) तव (गिरः) वेद-वाण्यः (प्रति) प्रत्यक्षेण (त्वाम्) परमेश्वरम् (उत्) उत्कर्षेण (अहासत) ओहाङ् गतौ—लुङ् । प्राप्नुवन् (अजोषाः) जुषी प्रीतिसेवनयोः—घञ्, टाप्-नास्ति अधिकप्रीतिकरा यस्याः सकाशात् सा अजोषा, यथा अनुत्तमः, अनुदारः, अमूलः इत्यादिपदानि । अत्यन्तहितकारिण्यः (वृषभम्) सुखवर्षकम् (पतिम्) स्वामिनम् ॥

भावार्थ—परमात्मा के प्रकाशित अनन्त हितकारी वेदों के विचार कर विद्वान् लोग उस को अद्वितीय अनन्त सापथ्य वाला जानकर सदा पुरुषार्थ, करें ॥ १० ॥

सं चोदय चित्रसुर्वाग् राधे इन्द्र वरेण्यम् । असुदित ते विभु प्रभु ॥ ११ ॥

सम् । चोदय । चित्रम् । अर्वाक् । राधः । इन्द्र । वरेण्यम् ॥
असत् । इत् । ते । वि-भु । प्र-भु ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [परम पेश्वर्य वाले जगदीश्वर] (चित्रम्) अद्भुत, (वरेण्यम्) अतिश्रेष्ठ (राधः) सिद्धि करने वाले धन का (अर्वाक्) सम्मुख (सम्) ठीक ठीक (चोदय) भेज, (ते) तेरा (इत्) ही (विभु) व्यापक और (प्रभु) प्रबल सामर्थ्य (असत्) है ॥ ११ ॥

भावार्थ—मनुष्य पुरुषार्थ करके परमात्मा के अनन्त भण्डार से विचित्र पदार्थों को प्राप्त करके इष्ट सिद्धि करें ॥ ११ ॥

अस्मान्तु तत्र चोदयेन्द्र राये रभस्वतः । तुविद्युम्न यशस्वतः ॥ १२ ॥

अस्मान् । सु । तत्र । चोदय । इन्द्र । राये । रभस्वतः ॥
तुवि-द्युम्न । यशस्वतः ॥ १२ ॥

भाषार्थ—(तुविद्युम्न) हे अत्यन्त धन वाले (इन्द्र) इन्द्र ! [परम

११—(सम्) सम्यक् (चोदय) प्रेरय । प्रापय (चित्रम्) अद्भुतम् (अर्वाक्) अभिमुखम् (राधः) सिद्धिकरं धनम् (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् जगदीश्वर (वरेण्यम्) वृज् परयः । उ० ३ । ६८ । वृज् वरणे-परय । अति-श्रेष्ठम् (असत्) लड्यो लेट । अस्ति (इत्) एव (ते) तव (विभु) व्यापकम् (प्रभु) प्रबलं सामर्थ्यम् ॥

१२—(अस्मान्) धार्मिकान् (सु) सुष्ठु (तत्र) प्रसिद्धे श्रेष्ठकर्मणि

पेश्वर्य वाले परमात्मन् (राये) धन के लिये (रभस्वतः) उपाय सोच कर आरम्भ करने वाले, (यशस्वतः) यश रखने वाले (अस्मान्) हम को (तत्र) वहां [श्रेष्ठ कर्म में] (सु) अच्छे प्रकार (चेदय) पहुंचा ॥ १२ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमात्मा में विश्वास करके पहिले से विचार कर कार्य सिद्ध करें और कीर्तिमान हों ॥ १२ ॥

सं गोम'दिन्द्रु वाजवदुस्मे पृथु अवी बृहत् । विश्वायुर्धे-
ह्यक्षितम् ॥ १३ ॥

सम् । गो-म'त् । इन्द्रु । वाज-वत् । अस्मे इति । पृथु ।
अवः । बृहत् ॥ विश्व-आयुः । धेहि । अक्षितम् ॥ १३ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले परमेश्वर] (अस्मे) हम को (गोमत्) बहुत भूमि वाला, (वाजवत्) बहुत अन्न वाला, (पृथु) फैला हुआ, (बृहत्) बढ़ता हुआ, (विश्वायुः) पूरे जीवन तक रहने वाला, (अक्षितम्) अक्षय [न घटने वाला] (अवः) सुनने योग्य यश वा धन (सम्) अच्छे प्रकार (धेहि) दे ॥ १३ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि परमात्मा की भक्ति के साथ ब्रह्मचर्य से विद्या प्राप्त करें और बहुत यश और धन पाकर चक्रवर्ती राजा होकर संसार को सुख दें और आप सुखी हों ॥ १३ ॥

अस्मे धेहि अवी बृहद् व्यम्नं सहस्रसातमम् । इन्द्र ता
रुचिनीरिषः ॥ १४ ॥

(चेदय) प्रेरय (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (राये) धनाय (रभस्वतः) रभ रभस्ये=कार्योपक्रमे—असुन्, मनुप् । उपायज्ञानपूर्वकारम्भयुक्तान् (तुविद्युम्न) बहुधनिन् (यशस्वतः) कीर्तिमतः ॥

१३—(सम्) सम्यक् (गोमत्) बहुभूमियुक्तम् (इन्द्र) परमेश्वर (वाजवत्) बहन्नवत् (अस्मे) अस्मभ्यम् (पृथु) विस्तृतम् (अवः) अवणीयं यशो धनं वा (बृहत्) वर्धमानम् (विश्वायुः) सर्वजीवनपर्याप्तम् (धेहि) देहि (अक्षितम्) अक्षीणम् । हानिरहितम् ॥

अस्मे इति । धेहि । अत्रः । बृहत् । द्युम्नम् ।

सहस्र-सातमम् ॥ इन्द्र । ताः । रुथिनीः । इषः ॥ १४ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले जगदीश्वर] (अस्मे) हम को (बृहत्) बढ़ता हुआ (अत्रः) सुनने योग्य धन और (सहस्रसातमम्) सहस्रों सुखों का देने वाला (द्युम्नम्) चमकता हुआ यश और (ताः) वे [प्रसिद्ध] (रुथिनीः) रथों [यान विमान आदि] वाली (इषः) चलती हुयी सेनाये (धेहि) दे ॥ १४ ॥

भाषार्थ—मनुष्य परमात्मा की प्रार्थना पूर्वक बहुत धन, कीर्ति और सेना के संग्रह से शत्रुओं का नाश करके सुख को प्राप्त होवे ॥ १४ ॥

वसोरिन्द्रं वसुपतिं ग्रीर्भिर्गुणन्तं ऋग्मियम् । होमं गन्तारमुतये ॥ १५ ॥

वसोः । इन्द्रम् । वसु-पतिम् । ग्रीः-भिः । गुणन्तः । ऋग्मियम् ॥ होमं । गन्तारम् । ऊतये ॥ १५ ॥

भाषार्थ—(ग्रीर्भिः) वेद वाणियों से (गुणन्तः) स्तुति करते हुये हम (वसुपतिम्) वसुओं [अग्नि, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य वा सूर्य-लोक, द्यौ वा आकाश, चन्द्रलोक और तारागणों] के स्वामी, (ऋग्मियम्)

१४—(अस्मे) अस्मभ्यम् (धेहि) देहि (अत्रः) श्रवणीयं धनम् (बृहत्) वर्धमानम् (द्युम्नम्) अ० ६ । ३५ । ३ । द्योतमानं यशः (सहस्र-सातमम्) जनसनखनक्रमगमो विट् । पा० ३ । २ । ६७ । षण् दाने-विट् । विड्वनोरनुनासिकस्यात् । पा० ६ । ४ । ४१ । नकारस्य आकारः, ततस्तमप् । अतिशयेन सहस्रसुखप्रदम् (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् जगदीश्वर (ताः) प्रसिद्धाः (रुथिनीः) बहुयानविमानादियुक्ताः (इषः) इष् गतौ—क्विप् । गतिशीलाः सेनाः ॥

१५—(वसोः) अष्टगुणस्य (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं परमेश्वरम् (वसुपतिम्) अष्टवसूनामग्निपृथिव्यादीनां स्वामिनम् । अग्निश्च पृथिवी च वायुश्चान्तरिक्षं चादित्यश्चद्यौश्च चन्द्रमाश्च नक्षत्राणि चैते वसवः—दयानन्द भाष्ये, ऋक्० १ । ४ । ४ (ग्रीर्भिः) वेदवाणीभिः (गुणन्तः) स्तुवन्तः (ऋग्-

स्तुति योग्य, (गन्त०) ज्ञान वाले (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले पर-
मेश्वर] को (वसोः) श्रेष्ठ गुण की (ऊतये) रक्षा के लिये (होम)
बुलाते हैं ॥ १५ ॥

भावार्थ—मनुष्य सब पेश्वर्य के दाता और न्यायकारी परमात्मा की
प्रार्थना और उत्तम गुणों की धारणा से राज्य लक्ष्मी को प्राप्त होकर उन्नति
करें ॥ १५ ॥

सुतेसुते न्योक्तसे बृहद् बृहत् अरिः । इन्द्राय शुषमर्चति ॥ १६ ॥
सुते-सुते । नि-ओक्तसे । बृहत् । बृहते । आ । इत् । अरिः ॥
इन्द्राय । शुषम् । अर्चति ॥ १६ ॥

भाषार्थ—(अरिः) शत्रु (इत्) भी (सुतेसुते) उत्पन्न हुये उत्पन्न
हुये पदार्थ में (न्योक्तसे) निश्चित स्थान वाले, (बृहते) महान् (इन्द्राय)
इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले परमात्मा] के (बृहत्) बड़े हुये (शुषम्) बल को
(आ) सब प्रकार (अर्चति) पूजना है ॥ १६ ॥

मियम्) अर्चिस्तुतुडु० । उ० १ । १४० । अच स्तुतौ-मक्, कुत्वं जश्त्वं च,
अग्मः स्तुतिः, तदर्हति अग्मियः । पात्राद्बंश्च । पा० ५ । १ । ६८ । अर्हार्थे-घन्,
यद्वा बाहुलकात् घच । अग्मियमृगमन्तमिति वार्चनीयमिति वा पूजनीयमिति
घा-निरु० ७ । २६ । स्तुतियोग्यम् (होम) होज् स्पर्धायां शब्दे च - लट् ।
बहुल छन्दसि । पा० २ । ४ । ७३ । शपो लुक् । छन्दस्युभयथा । ३ । ४ । ११७ ।
उभयसंज्ञात्वे गुणसम्प्रसारणे, सकारलोपश्छान्दसः । आह्वयामः (गन्तारम्)
गच्छतेः—तृन् । आतारम् (ऊतये) इच्छायै ॥

१६—(सुतेसुते) उत्पन्न उत्पन्ने पदार्थे (न्योक्तसे) अञ्ज्यलियुजि-
भृजिभ्यः कुश्च । उ० ४ । २१६ । उच समवाये—असुन्, न्यङ्कादित्वात्
कुत्वम् । ओरु इति निवासनामोच्यते—निरु० ३ । ३ । षष्ठ्यर्थे चतुर्थी वक्त-
व्या । वा० पा० २ । ३ । ६२ निश्चितनिवासयुक्तस्य (बृहत्) वर्धमानम्
(बृहते) महतः (आ) समन्तात् (इत्) एव (अरिः) शत्रुः (इन्द्राय)
परमेश्वर्यवतः परमेश्वरस्य (शुषम्) पीयेरुषन् । उ० ४ । ७६ । शुष शोषणे-
ऊषन् इति । शत्रुशोषकं वृत्तम् निरु० २ । ६० (अत्र) पूजति ॥

भाष्यार्थ—संसार में विचित्र पदार्थों की रचना और गुण देखकर वेद विरोधी नास्तिक भी परमात्मा के सामर्थ्य को मानकर उस की शरण लेता है ॥ १६ ॥

इति षष्ठोऽनुवाकः ॥

अथ सप्तमोऽनुवाकः ॥

सूक्तम् ७२ ॥

१-३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृदत्यष्टिः; २, ३ भुरिगष्टिशुन्दः ॥

परमेश्वरोपासनापदेशः—परमेश्वर की उपासना का उपदेश ॥

विश्वेषु हि त्वा सर्वनेषु तुज्जते समानमेकं वृषमन्यवः
पृथक् स्वः सनिष्यवः पृथक् । तं त्वा नावं न पुर्षणि शुष-
स्यं धुरि धीमहि । इन्द्रं न युञ्जैश्चितयन्त आयव स्तोमैभि-
रिन्द्रमायवः ॥ १ ॥

विश्वेषु । हि । त्वा । सर्वनेषु । तुज्जते । समानम् । एकम् ।
वृष-मन्यवः । पृथक् । स्वः । रिति स्वः । सनिष्यवः । पृथक् ॥
तम् । त्वा । नावम् । न । पुर्षणिम् । शुषस्यं । धुरि ।
धीमहि ॥ इन्द्रम् । न । युञ्जैः । चितयन्तः । आयवः ।
स्तोमैभिः । इन्द्रम् । आयवः ॥ १ ॥

भाष्यार्थ—[हे परमेश्वर !] (विश्वेषु) सब (हि) ही (सर्वनेषु)
पेश्वर्य युक्त पदार्थों में (समानम्) एक रस व्यापक, (एकम्) एक, (स्वः)
सुखस्वरूप (त्वा) तुझको (वृषमन्यवः) बलवान् के समान तेज वाले, और

१—(विश्वेषु) सर्वेषु (हि) निश्चयेन (त्वा) त्वाम् (सर्वनेषु) पेश्वर्य-
युक्तेषु पदार्थेषु (तुज्जते) तुजि हिंसाबलादाननिकेतनेषु—लट् । गृह्णन्ति
(समानम्) एकरसव्यापकम् (एकम्) अद्वितीयम् (वृषमन्यवः) यजि-
मति शुक्तिः । ४० ३ । २० । मन जाने दीतौ च—युच् । मभ्युर्मन्वतेदीति कर्मचः

(सन्निध्यवः) देने योग्य धन को चाहने वाले पुरुष (पृथक् पृथक्) अलग अलग (तुज्जते) ग्रहण करते हैं । (नावम् न) नाव के सामान (पर्षणिम्) पार लगाने वाले (तम्) उस (त्वा) तुभ्य (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले परमात्मा], (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले परमात्मा] को (शूषस्य) बल की (धुरि) धुरी [धारण शक्ति] में (यज्ञैः) यज्ञों [भेष्ट व्यवहारों] से और (स्तोमेभिः) प्रशंसनीय गुणों से (चित्तयन्तः) चिन्तन करते हुये (आयवः) पुरुषार्थ (आयवः न) मनुष्यों के समान (धीमहि) हम धारण करें ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्य विद्वान् पुरुषार्थी लोगों के समान आनन्द स्वरूप सर्वशक्तिमान् परमेश्वर का सदा स्मरण करके अपना बल बढ़ाने के लिये प्रयत्न करें ॥ १ ॥

यह तुच्छ ऋग्वेद में है—१ । १३१ । २, ३, ६ ॥

वि त्वा ततस्त्रे मिथुना अ० व० स्यवौ ब्रुजस्य सुता गव्यस्य निः-
सृजुः सक्षान्त इन्द्र निःसृजः । यह ग० व० यन्ता इवा जना स्व-
१ र्यन्ता सुसूहसि । आविष्करिक्नु वृषणं सचाभुवं वज्रमि-

क्रोधकर्मणो वधकर्मणो वा—नि० १० । २६ । वृषस्य बलवतः पुरुषस्य तेज इव तेजो येषां ते (पृथक्) भिन्नप्रकारेण (स्वः) सुखस्वरूपम् (सन्निध्यवः) सर्वधातुभ्य इन् । उ० ४ । ११८ । वृष दाने—इन् । सुप आत्मनः—क्यच् । पा० ३ । १ । ८ । सनि—क्यच् । सर्वप्रातिपदिकानां क्यचि लालसायां सुगसुको । वा० पा० ७ । १ । सुगागमः । क्यच्छन्दसि । पा० ३ । २ । १७० । उपत्ययः । दातव्य-धनमिच्छवः (पृथक्) (तम्) तावशम् (त्वा) त्वाम् (नावम्) नौकाम् (न) इव (पर्षणिम्) अर्त्तिस्त्रु० । उ० २ । १०२ । प० पालनपूरणयोः—अनिप्रत्ययः सुगागमः । पारयितारम् (शूषस्य) बलस्य (धुरि) धृज् धारणे—किप् । बहुलं छन्दसि । पा० ७ । १ । १०३ । इति उरोदेशः । यानमुक्ते । धारणशक्तौ (धीमहि) वधातेः—क्लिङ् । धरेम (इन्द्रम्) परमेश्वरम् (न) इव (यज्ञैः) भेष्टव्यवहारैः (चित्तयन्तः) चित्ती संज्ञाने—णिच्, शट् । गुणामावः । चेतयन्तः । स्मरन्तः (आयवः) छन्दसीणः । । उ० १ । २ । इण् गतौ—उण् । गतिमन्तः पुरुषार्थिनः (स्तोमेभिः) प्रशंसनीयगुणैः (इन्द्रम्) परमेश्वरम् (आयवः) मनुष्याः—नि० २ । ३ ॥

न्द्र सचाभुवम् ॥ २ ॥

वि । त्वा । तत्तस्त्रे । मिथुनाः । अवस्यवः । ब्रजस्य । साता ।
गव्यस्य । निः-सृजः । सक्षन्तः । इन्द्र । निः-सृजः ॥ यत् ।
गुव्यन्ता । द्वा । जना । स्वः । यन्ता । सुस-ऊर्हसि ॥
आविः । करिक्तत् । वृषणम् । सचा-भुवम् । वज्रम् । इन्द्र ।
सचा-भुवम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र !) हे इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले जगदीश्वर] (ब्रजस्य)
मार्ग के (साता) पाने में (अवस्यवः) रक्षा चाहने वाले (सक्षन्तः) गतिशील,
(गव्यस्य) भूमि के लिये हित के (निःसृजः) नित्य उत्पन्न करने वाले और
(निःसृजः) निरन्तर देने वाले (मिथुनाः) स्त्री पुत्रों के समूहों ने (त्वा)
तुझको [तेरे गुणों को] (वि) विविध प्रकार (तत्तस्त्रे) फैलाया है । (यत्)
क्योंकि, (इन्द्र) हे इन्द्र ! [परमात्मन्] (वृषणम्) बलवान्, (सचाभुवम्)
नित्य मेल से रहने वाले, (सचाभुवम्) सेचन [वृद्धि] के साथ वर्तमान्)
(वज्रम्) वज्र [बरह्मगुण] को (आविः करिक्तत्) प्रकट करता हुआ तू
(गव्यन्ता) वाणी [विद्या] को चाहने वाले, (स्वः) सुख को (यन्ता) प्राप्त

२—(वि) विविधम् (त्वा) त्वाम् । तव गुणम् (तत्तस्त्रे) तसु उपलब्धे
उन्क्षेपे च—लिट् । इर्यो रे । पा० ६ । ४ । ७६ । इति रेभावः । उत्क्षिप्तवन्तः ।
विस्तातिवन्तः (मिथुनाः) स्त्रीपुरुषसमूहाः (अवस्यवः) अ० २० । १४ ।
१ । रक्षाकामाः (ब्रजस्य) ब्रज गनौ + ब्रज्ये क । मार्गस्य (साता) विभक्ते-
र्डा । सानौ । लाभे (गव्यस्य) गव्ये पृथिव्यै हितस्य (निःसृजः) सृज विसर्गे-
किप् । नितरां स्रष्टागो निष्ठादयितारः (सक्षन्तः) सक्षतिर्गतिकर्मा—निघ०
२ । १४ । नैहको धातुः—शत् । गच्छन्तः (इन्द्र) परमात्मन् (निःसृजः)
निरन्तरदातारः (यत्) यतः (गव्यन्ता) गो—क्यच्, शत् । गां वाणीं
विद्यामिच्छन्तौ (द्वा) द्वौ । जना) जनौ । स्त्रीपुरुषौ (स्वः) मुखम् (यन्ता)
यन्तौ । प्राप्नुवन्तौ (समूहसि) ऊरु वितर्क । सम्यक् चेतयसि (आविः)
प्राकट्ये (करिक्तम्) करोतेर्यङ्लुकि शत् । भृशं कुर्वन् (वृषणम्) बलवन्तम्
(सचाभुवम्) षव समवाये सेचने च—किप् + भू सत्तायाम्—किप् । समवा-

होने वाले (द्वा) दोनों (जना) जनों [स्त्री पुरुषों] को (समूहसि) पथावत् चेताता है ॥ २ ॥

भावार्थ—जो स्त्री पुरुष सबके सुख के लिये राज्य आदि प्राप्त करके शिष्ट सुखदायक, दुष्ट विनाशक परमात्मा की भक्ति करते हैं, उनके वह जग-दीश्वर उन्नति के लिये सदा उत्साह देता है ॥ १ ॥

यह मन्त्र आगे है—अथ० २० । ७५ । १॥

उतो नो अस्या उषसो जुषेत ह्यर्कस्य बोधि हविषो हवी-
मभिः स्वर्षाता हवीमभिः । यदिन्द्र हन्तवे मृधो वृषा वज्रि-
चिकेतसि । आ मे अस्य वेधसो नवीयसो मन्म शुधि-
नवीयसः ॥ ३ ॥

उतो इति । नः । अस्याः । उषसः । जुषेत । हि । अर्कस्य ।
बोधि । हविषः । हवीमभिः । स्वः-साता । हवीमभिः ॥
यत् । इन्द्र । हन्तवे । मृधः । वृषा । वज्रिन् । चिकेतसि ॥
आ । मे । अस्य । वेधसः । नवीयसः । मन्म । शुधि ।
नवीयसः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(नः) हमारे बीच में (उतो) निश्चय करके ही वह [जिज्ञासु पुरुष] (अस्याः) इस (उषसः) उषा [प्रभात वेला] का (जुषेत) सेवन करे और (हवीमभिः) ग्रहण करने योग्य व्यवहारों और (हवीमभिः) देने योग्य पदार्थों से (हि) ही (स्वर्षाता) सुख के सेवन में

येन वर्तमानम् (वज्रम्) दण्डगुणम् (इन्द्र) परमात्मन् (सचाशुवम्) सेव-
नेन वर्धनेन सह वर्तमानम्

३—(उतो) निश्चयेनैव (नः) अस्माकं मध्ये (अस्याः) इत्यमा-
नायाः (उषसः) प्रभातवेलायाः (जुषेत) सेवेत । सेवनं कुर्यात् (हि) अ-
धारणे (अर्कस्य) पूजनीयस्य परमात्मनः (बोधि) बुध अवगमने—तिष्ठये
सुक् प्रथमपुरुषस्यैकवचनम् । बोधं कुर्यात् (हविषः) आदानस्य । ग्रहणस्य
(हवीमभिः) आयेयोऽपि दृश्यन्ते । पा० ३ । २ । ७५ । इ दानादानयोः—

(अर्कस्य) पूजनीय परमात्मा के (हविषः) ग्रहण का (बोधि) बोध करे ।
 (यत्) क्योंकि (वज्रिन्) हे दण्ड दाता (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले
 परमात्मन्] (वृषा) सुखों का बरसाने वाला महा बलवान् तू (मृधः)
 हिंसक बैरियों के (हन्तवे) मारने का (चिकेतसि) जानता है, [इस लिये]
 (मे) मुझ (नवीयसः) अधिक नवीन [अभ्यासी ब्रह्मचारी] और (अस्य)
 उस (नवीयसः) अधिक श्रुति योग्य (वेधसः) बुद्धिमान् [आचार्य] के
 (मन्म) मनन योग्य कथन को (आ) अच्छे प्रकार (भुधि) सुन ॥ ३ ॥

भावार्थ—जैसे प्रातःकाल में प्रकाश बढ़ता जाता है, वैसे ही मनुष्य
 उत्तम उत्तम व्यवहारों के लेने देने से परमात्मा की भक्ति बढ़ावे, वह जग-
 दीश्वर विघ्ननाशक है, उस की उपासना नवीन अभ्यासी ब्रह्मचारी और
 सुबोध आचार्य आदि सब लोग करते रहें ॥ ३ ॥

सूक्तम् ७३ ॥

१—६ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृदार्प्यनुष्टुप्; २ विराडार्प्यनुष्टुप्; ३
 भुरिगार्प्यनुष्टुप्; ४ निचृज्जगती; ५, ६ निचृदार्पी त्रिष्टुप् ॥

सेनापतिलक्षणोपदेशः—सेनापति के लक्षण का उपदेश ॥

तुभ्येदिमा सर्वना शूर विश्वा तुभ्यं ब्रह्माणि वर्धना कृणोमि ।
 त्वं नृभिर्हव्यो विश्वधासि ॥ १ ॥

तुभ्यं । इत् । इमा । सर्वना । शूर । विश्वा । तुभ्यं ।
 ब्रह्माणि । वर्धना । कृणोमि । त्वम् । नृ-भिः । हव्यः ।
 विश्वधा । असि ॥ १ ॥

मनिन्, ईडागमः । ग्राह्यव्यवहारैः (स्वर्षाता) विभक्तोडा । सुखस्य सेवने
 (हवीमभिः) दातव्यपदार्थैः (यत्) यतः (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् परमात्मन्
 (हन्तवे) तवेन् प्रत्ययः । हन्तुं नाशयितुम् (मृधः) हिंसकान् शत्रून् (वृषा)
 सुखस्य वर्षकः । वलिष्ठः (वज्रिन्) हे दण्डदातः (चिकेतसि) कित जाने,
 जौहोत्यादिकः, लेटि अडागमः । जानासि (आ) समन्तात् (मे) मम (अस्य)
 तस्य (वेधसः) मेधाविनः (नवीयसः) नव-ईयसुन् । नवीनतरस्य । अभ्या-
 सिनो ब्रह्मचारिणः (मन्म) मननीयं कथनम् (भुधि) शृणु (नवीयसः)
 नवतरस्य । श्रुत्यतरस्य । सुबोधाचार्यस्य ॥

भाषार्थ—(शूर) हे शूर ! [निर्भय मनुष्य] (तुभ्य) तेरे लिये (इत्) ही (इमा) इन (विश्वा) सब (सवना) पेश्वर्य युक्त वस्तुओं को और (तुभ्यम्) तेरे लिये (वर्धना) वृद्धि करने वाले (ब्रह्माणि) धनों वा अश्वों को (कृणोमि) मैं करता हूँ । (त्वम्) तू (नृभिः) नेता मनुष्यों से (विश्वधा) सब प्रकार (हव्यः) ग्रहण करने योग्य (असि) है ॥ १ ॥

भाषार्थ—चतुर सेनापति, सब अधिकारियों की यथा योग्य पालना करता रहे, जिस से वे लोग सेवा करने में सदा प्रसन्न रहें ॥ १ ॥

मन्त्र १, २ ऋग्वेद में हैं—७।२२।७, ८ ॥

नू चित्ते ते मन्यमानस्य दुस्मोदश्नुवन्ति महिमानमुग्र ।

न वीर्यमिन्द्र ते न राधः ॥ २ ॥

नु । चित् । नु । ते । मन्यमानस्य । दुस्म । उत् । अश्नुवन्ति ।
महिमानम् । उग्र । न । वीर्यम् । इन्द्र । ते । न । राधः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(दस्म) हे दर्शनीय ! (उग्र) हे तेजस्वी (इन्द्र) इन्द्र ! [राजन्]
(मन्यमानस्य ते) तुझ महाज्ञानी की (न) न;तौ (महिमानम्) महिमा को
और (न) न (ते) तेरे (वीर्यम्) पराक्रम और (राधः) धन को वे [अन्य-
पुरुष] (नु चित्) कभी भी (नु) किसी प्रकार (उत्) अधिकता से (अश्नु-
वन्ति) पहुँचते हैं ॥ २ ॥

१—(तुभ्य) तुभ्यम् (इत्) एव (इमा) इमानि (सवना) पेश्वर्य-
युक्तानि वस्तूनि (शूर) निर्भय मनुष्य (विश्वा) सर्वाणि (तुभ्यम्) (ब्रह्माणि)
धनानि अस्त्रानि वा (वर्धना) । उन्नतिकराणि (कृणोमि) करोमि (त्वम्)
(नृभिः) नेतृभिः पुरुषैः (हव्यः) ग्रहणीयः (विश्वधा) सर्वप्रकारेण (असि) ॥

२—(नु चित्) कदापि (नु) निश्चयेन (ते) तव (मन्यमानस्य) मन
ज्ञाने—ज्ञानच् । विदुषः पुरुषस्य (दस्म) अ० २० । १७ । २ । हे दर्शनीय (उत्)
आधिक्ये (अश्नुवन्ति) प्राप्नुवन्ति (महिमानम्) महत्त्वम् (उग्र) तेजस्विन्
(न) निषेधे (वीर्यम्) पराक्रमम् (इन्द्र) परमैश्वर्ययुक्त राजन् (ते) तव
(न) निषेधे (राधः) धनम् ॥

भाष्यार्थ—जो मनुष्य महिमा और विद्या आदि शुभ गुणों, पराक्रम और धन में अधिक होवे, वह सभापति राजा होवे ॥ २ ॥

प्र वो महे महिवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम् ।
विशः पूर्वीः प्र चरा चर्षणिप्राः ॥ ३ ॥

प्र । वः । महे । महि-वृधे । भरध्वम् । प्र-चेतसे । प्र । सु-
मतिम् । कृणुध्वम् ॥ विशः । पूर्वीः । प्र । चर । चर्षणि-प्राः ॥

भाष्यार्थ—[हे विद्वानो !] (वः) अपने लिये (महे) महान् (महि-
वृधे) बड़ों के बढ़ाने वाले, (प्रचेतसे) उत्तम ज्ञानी [दूरदर्शी राजा] के लिये
(सुमतिम्) सुन्दर मति को (प्र) अच्छे प्रकार (भरध्वम्) धारण करो और
(प्र) सामने (कृणुध्वम्) करो । [हे सभापते !] (चर्षणिप्राः) मनुष्यों के
मनोरथ पूरा करने वाला तू (पूर्वीः) प्राचीन (विशः) प्रजाओं को (प्र चर)
फैला ॥ ३ ॥

भाष्यार्थ—विद्वान् लोग चतुर नीतिज्ञ सभापति के आश्रय से अपनी
उन्नति करें और सभापति उन लोगों के मेल से अपना और प्रजा का ऐश्वर्य
बढ़ावे ॥ ३ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—७ । ३१ । १० ॥

युदा वज्रं हिरण्यमिदया रथं हरी यमस्य वहतो वि
सुरभिः । आ तिष्ठति मघवा सनश्रुत इन्द्रो वाजस्य दीर्घ-
अवसुस्पतिः ॥ ४

युदा । वज्रम् । हिरण्यम् । इत् । अयम् । रथम् । हरी इति ।

३—(प्र) प्रकर्षेण (वः) युष्मभ्यम् । स्वीक्रियार्थम् (महे) महते
(महिवृधे) महीनां महतां वर्धकाय (भरध्वम्) धारयत (प्रचेतसे) प्रकृष्ट-
ज्ञानाय । दूरदर्शिने (प्र) (सुमतिम्) शोभनां बुद्धिम् (कृणुध्वम्) कुरुत
(विशः) प्रजाः (पूर्वीः) प्राचीनाः पितापितामहादिभ्यः प्राप्ताः (प्र चर) प्रसारय
(चर्षणिप्राः) अ० २० । ११ । ७ । मनुष्यणां मनोरथपूरकः ॥

सू० ७३ [६६१]

विंश काण्डम् ॥ २० ॥

(४,२३१)

यम् । अस्य । वहतः । वि । सुरि-भिः ॥ आ । तिष्ठति ।
मघ-वा । सन-भुतः । इन्द्रः । वाजस्य । दीर्घ-श्रवसः । पतिः ॥

भाषार्थ—(यदा) जब (अस्य) इस [सेनापति] के (यम्) जिस (हिरण्यम्) तेजोमय (वज्रम्) वज्र [वण्ड] (अथ) और (रथम्) रथ [राज्यव्यवहार] को (हरी) दो घोड़े [के समान बल और पराक्रम] (सुरिभिः) प्रेरक विद्वानों के साथ (इत्) ही (वि) (विविध प्रकार (वहतः) ले चलते हैं । [तब उस पर] (मघवा) महाधनी, (सनभुतः) दान के लिये प्रसिद्ध, (दीर्घश्रवसः) बहुत यश वाले (वाजस्य) पराक्रम का (पतिः) स्वामी (इन्द्रः) इन्द्र [महाप्रतापी सेनापति] (आ तिष्ठति) ऊंचा बैठता है ॥ ४ ॥

भावार्थ—जब राजा विद्वानों से मिलकर धर्मयुक्त नीति के साथ राज्य को चलाता है, वह प्रजापालक महाधनी होकर बड़ी कीर्ति पाता है ॥ ४ ॥

मन्त्र ४—६ ऋग्वेद में हैं—१० । २३ । ३—४ ॥

सो चित्तु वष्टिर्युय्यास्वा सचा इन्द्रः शमश्रूणि हरिताभि
मुष्णुते । अवं वेति सुक्षयं सुते मधूदिदधूनीति वातो यथा
वनम् ॥ ५ ॥

सो इति । चित् । नु । वृष्टिः । युय्या । स्वा । सचा । इन्द्रः ।
शमश्रूणि । हरिता । अभि । मुष्णुते ॥ अवं । वेति ।

४—(यदा) यस्मिन् काले (वज्रम्) वण्डम् (हिरण्यम्) तेजोमय (इत्) एव (अथ) अनन्तरम् (रथम्) रथमिव रमणीय राज्यव्यवहारम् (हरी) अश्वाविव बलपराक्रमौ (यम्) वज्रं रथं वा (अस्य) सेनापतेः (वहतः) नयतः (वि) विविधम् (सुरिभिः) अ० २० । ३४ । १७ । प्रेरकैर्विद्वद्भिः (आ तिष्ठति) आरोहति । उपरि वर्तते (मघवा) महाधनी (सनभुतः) षण्णु दाने—अच् । दानाय प्रसिद्धः (इन्द्रः) महाप्रतापी सेनापतिः (वाजस्य) पराक्रमस्य (दीर्घश्रवसः) बहुकीर्तियुक्तस्य (पतिः) स्वामी ॥

(४,२३२)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ७३ [६६१]

सु-क्षयम् । सुते । मधु । उत् । इत् । धूनोति । वातः । यथा ।
वनम् ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(सो) वही (इन्द्रः) इन्द्र [बड़ा ऐश्वर्यवान् पुरुष] (वृष्टिः)
चित्) वृष्टि के समान (नु) निश्चय करके (सच्चा) नित्य मेल के साथ
(स्वा) अपने (हरिता) स्वीकार करने योग्य (यूथ्या) समुदायों को (श्म-
श्रूणि) अपने शरीर में आश्रित अङ्गों [के समान] (अभि) सब प्रकार (प्रुण्णते)
सींचता है । और वह (सुते) उत्पन्न जगत् में (सुक्षयम् बड़े ऐश्वर्य वाले
(मधु) निश्चित ज्ञान [मधु विद्या] को (इत्) अवश्य (अव वेति) पा लेता
है और [पापों को] (उत्) (धूनोति) उखाड़ कर हिला देता है, (यथा)
जैसे (वातः) पवन (वनम्) वन को ॥ ५ ॥

भावार्थ—वृष्टि के समान जो मनुष्य शरीर के अङ्गों के तुल्य प्रिय
अपने लोगों पर उपकार करता है, वह संसार में ऐश्वर्य युक्त ज्ञान प्राप्त करके
पापों को हटाकर आनन्द पाता है ॥ ५ ॥

यो वाचा विवाचो मृध्रवाचः पुरु सुहस्ताशिवा जुघान । तत्त-
दिदस्य पौंस्य गृणीमसि पितेव यस्तविषीं वावृधे शवः ॥ ६ ॥
यः । वाचा । वि-वाचः । मृध्र-वाचः । पुरु । सुहस्ता । अशिवा ।

५—(सो) स एव (चित्) उपमार्थे (नु) निश्चयेन (वृष्टिः) जलवर्षा
(यूथ्या) स्वार्थे यत् । यूथानि । सजातीयसमुदायान् (स्वा) स्वकीयानि
(सच्चा) समवायेन (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् मनुष्यः (श्मश्रूणि) अ० ५ । १६ ।
१४ । शीङ्, शयने-मनिन्, डित् + श्रिज् सेवायाम्—डुन् । श्म शरीरम्...श्मश्रु
लोम श्मनि श्रितं भवति—निरु० ३ । ५ । शरीरे श्रितान्यङ्गानि यथा (हरिता)
अ० २० । ३० । ३ । स्वीकरणीयानि (अभि) सर्वतः (प्रुण्णते) प्रुष स्नेहन-
सेचनपूरणेषु—लट् । सिञ्चति । वर्धयति (अव वेति) वी गत्यादिषु । अधिग-
च्छति । प्राप्नोति (सुक्षयम्) क्षि ऐश्वर्ये—अच् । बह्वैश्वर्ययुक्तम् (सुते)
उत्पन्ने जगति (मधु) निश्चितं ज्ञानम् । मधुविद्याम् (उत्) उत्कृष्य (इत्)
एव (धूनोति) कम्पयति पापानि (वातः) वायुः (यथा) (वनम्) वृक्षसमू-
हम् ॥

जघानं ॥ तत्-तत् । इत् । अस्य । पौंस्यम् । गृणीमसि ।
पिता-इव । यः । तविषीम् । वृवृधे । शवः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(यः) जिस [शूर] ने (वाचा) [अपनी सत्य] वाणी से (विवाचः) विरुद्ध बोलने वाले, (मृध्रवाचः) हिंसक वाणी वाले के (पुरु) बहुत (सहस्रा) सहस्रों (अशिवा) क्रूर कर्मों को (जघान) नष्ट किया है और (यः) जिस [शूर] ने (पिता इव) पिता के समान (तविषीम्) हमारी शक्ति और (शवः) पराक्रम को (वृवृधे) बढ़ाया है, (अस्य) उस के (तत्तत्) उस उस (इत्) ही (पौंस्यम्) मनुष्यपन [वा बल] की (गृणीमसि) हम बढ़ाई करते हैं ॥ ६ ॥

भावार्थ—जो वीर पुरुष दुराचारियों का नाश करके प्रजा को कष्ट से छुड़ाता है, प्रजागण उस गुणवान् पुरुष को ही मुखिया बनाकर प्रीति करते हैं ६

सूक्तम् ७४ ॥

१—७ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ४, ५ तिचृत् पथ्या पङ्क्तिः, २, ३, ६, ७ विराडाशी पङ्क्तिः ॥

राजप्रजाधर्मोपदेशः—राजा और प्रजा के धर्म का उपदेश ॥

यच्चिद्भूधे सत्य सोमपा अनाशस्ता इव स्मसि । आ तू न
इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ १ ॥

यत् । चित् । हि । सत्य । सोम-पाः । अनाशस्ताः-इव ।
स्मसि ॥ आ । तु । नः । इन्द्र । शंसय । गोषु । अश्वेषु ।
शुभिषु । सहस्रेषु । तुवि-मघ ॥ १ ॥

६—(यः) वीरः (वाचा) सत्यवाण्या (विवाचः) विरुद्धवाणीयुक्त-
स्य (मृध्रवाचः) हिंसकवाणीयुक्तस्य (पुरु) बहूनि (सहस्रा) सहस्राणि
(अशिवा) अमद्राणि । क्रूरकर्मणि (जघान) नाशितवान् (तत्तत्) सुप्रसिद्धम्
(इत्) एव (अस्य) शूरस्य (पौंस्यम्) अ० २० ४ ६७ । २ । पुंसः कर्म । बलम्
(गृणीमसि) वयं स्तुमः (पिता) (इव) (यः) शूरः (तविषीम्) अ० २० ।
६ । २ । शक्तिम् (वृवृधे) वर्धितवान् (शवः) बलम् ॥

भाषार्थ—(सत्य) हे सच्चे ! [सत्यवादी, सत्यगुणी] (सोमपाः) हे सोम [तत्त्व रस] पीने वाले ! [वा ऐश्वर्य के रक्षक राजन्] (यत् चित्) जो कभी (हि) भी (अनाशास्ताः इव) निन्दनीय कर्म वालों के समान (स्मसि) हम होंगे । (तुविमघ) हे महाधनी (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े प्रतापी राजन्] (तु) निश्चय करके (नः) हम को (सहस्रेषु) सहस्रों (शुभिषु) शुभ गुण वाले (गोषु) विद्वानों और (अश्वेषु) कामों में व्यापक बलवानों में (आ) सब ओर से (शंसय) बढ़ाई वाला कर ॥ १ ॥

भावार्थ—यदि धार्मिक लोगों से किसी कारण विशेष से अपराध हो जावे, नीतिज्ञ राजा यथायोग्य बर्ताव करके उन भूले भटकों को फिर सुमार्ग पर लावे ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—१। २६। १—७ ॥

शिप्रिन् वाजानां पते शचीवस्तव दंसना । आ तू ॥ २ ॥

शिप्रिन् । वाजानाम् । पते । शची-वः । तव । दंसना । ०॥२॥

भाषार्थ—(शिप्रिन्) हे बड़े शानी ! [वा दृढ़ जाबड़े आदि अज्ञों वाले] (वाजानां पते) हे अज्ञों के स्वामी ! (शचीवः) हे उत्तम कर्म वाले ! [राजन्] (तव) तेरी ही (दंसना) दर्शनीय क्रिया है । (तुविमघ) हे महा-

१—(यत् चित्) यद्यपि (हि) एव (सत्य) हे यथार्थवादिन् । यथार्थ गुणिन् (सोमपाः) हे तत्त्वरसस्य पानकर्तः । ऐश्वर्यरक्षक (अनाशास्ताः) अप्रशस्ताः । निन्दनीयकर्माणः (इव) यथा (स्मसि) भवामः (आ) समन्तात् (तु) निश्चयेन (नः) अस्मान् (इन्द्र) महाप्रतापिन् राजन् (शंसय) प्रशस्तान् कुरु (गोषु) गौः स्तोतृनाम्—निघ० ३। १६। स्तोतृषु । विद्वत्सु (अश्वेषु) कर्मसु व्यापकेषु । बलवत्सु (शुभिषु) अदिशदिभूशुभिभ्यः क्रिन् । उ० ४। १५ । शुभ दीप्तौ—क्रिन् । शुभगुणयुक्तेषु (सहस्रेषु) बहुषु (तुविमघ) हे बहुधनवन् ॥

२—(शिप्रिन्) अ० २०। ४। १। हे बहुशानिन् । हे दृढ़हनुयुक् । हे दृढाङ्ग (वाजानाम्) अज्ञानाम् (पते) स्वामिन् (शचीवः) अ० २० २१। ३। हे प्रशस्तकर्मन् (तव) (दंसना) एवासभ्रन्थो युच् । पा० ३। ३। १०७।

धनी (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े प्रतापी राजन्] [मन्त्र १] ॥ २ ॥

भाषार्थ—बलवान् राजा बड़ा ज्ञानी, धनी और सत्कर्मों होकर प्रजा पालन करे ॥ २ ॥

नि स्वापया मिथुदृशा सुस्तामबुध्यमाने । आ तू ॥ ३ ॥

नि । स्वापय । मिथु-दृशा । सुस्ताम् । अबुध्यमाने इति ॥ ३ ॥

भाषार्थ—[हे राजन्] (मिथुदृशा) दोनों हिंसा दिखाने वाले [शरीर और मन] को (नि स्वापय) सुला दे, (अबुध्यमाने) बिना जगे हुये वे दोनों (सस्ताम्) सो जावें । (तुविमघ) हे महाधनी (इन्द्र) इन्द्र ! [मन्त्र १] ॥ ३ ॥

भाषार्थ—राजा अपने सुप्रबन्ध से सब प्रजा को सुबोध और निरा-लसी बनावे ॥ ३ ॥

सुसन्तु त्या अरातयो बोधन्तु शूर रातयः । आ तू ० ॥ ४ ॥

सुसन्तु । त्याः । अरातयः । बोधन्तु । शूर । रातयः । ० ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(शूर) हे शूर ! [निर्भय] (त्याः) वे (अरातयः) दान न करने वाली शत्रु प्रजायें (ससन्तु) सो जावे, और (रातयः) दानी लोग (बोधन्तु) जागते रहें । (तुविमघ) हे महाधनी (इन्द्र) इन्द्र ! [मन्त्र १] ॥ ४ ॥

भाषार्थ—राजा अपने पराक्रम से दुष्टों को शिर न उठाने दे और धर्मात्मा दाता लोगों को उत्साही करे ॥ ४ ॥

वसि दर्शनसंदशनयोर्भाषायां च—णिवि युच्, टाप् । दर्शनीयक्रिया वर्तते । अन्यत् पूर्ववत् ॥

३—(निस्वापय) नितरां सुप्ते कुठ (मिथुदृशा) पमिदिव्यधि० । उ० १ । २३ । मिथु मेधाहिंसनयोः—कु + दृशे—किप् । सुपां सुलुक्० । पा० ७ । १ । ३६ । विमक्तेराकारः । द्वे हिंसादर्शके शरीरमनसी (सस्ताम्) यस्य स्वप्ने । शयाताम् (अबुध्यमाने) । अजागरिते । निद्रां प्राप्ते । अन्यद् गतम् ॥

४—(ससन्तु) शेरताम् (त्याः) ताः (अरातयः) अदानशीलाः शत्रु-प्रजाः (बोधन्तु) जाग्रतु (शूर) हे वीर (रातयः) दातारः । अन्यद् गतम् ॥

समिन्द्र गर्दभं मृण नुवन्तं पापयामुया । आ तू ० ॥ ५ ॥

सम् । इन्द्र । गर्दभम् । मृण । नुवन्तस् । पापया ।
अमुया । ० ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े प्रतापी राजन्] (अमुया) उस
(पापया) पाप क्रिया के साथ (नुवन्तम्) स्तुति करते हुये (गर्दभम्) गदहे
के [समान व्यर्थ रेंकने वाले निन्दक पुरुष] को (सम् मृण) मार डाल ।
(तुविमघ) हे महाधनी (इन्द्र) इन्द्र ! [मन्त्र १] ॥ ५ ॥

भावार्थ—राजा गदहे के समान कटुवाची, मिथ्याभाषी दुर्जन को
कुशिक्षा फैलाने से रोके ॥ ५ ॥

पताति कुण्डुणाच्या दूरं वातो वनादधि । आ तू ० ॥ ६ ॥

पताति । कुण्डुणाच्या । दूरम् । वातः । वनात् । अधि । ० ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(कुण्डु णाच्या) रक्षा पहुंचाने वाली क्रिया के साथ (दूरम्)
दूर तक (वनात् अधि) वन [उपवन वाटिका आदि] के ऊपर होता हुआ
(वातः) पवन (पताति) चला करे । (तुविमघ) हे महाधनी (इन्द्र) इन्द्र ...
... [मन्त्र १] ॥ ६ ॥

भावार्थ—राजा वन, उपवन, वाटिका आदि से प्रजा का स्वास्थ्य
बढ़ावे ॥ ६ ॥

५—(सम्) सम्यक् (इन्द्र) महाप्रतापिन् राजन् (गर्दभम्) कृ शृशलि-
कलिगर्दिभ्योऽभच् । उ० ३ । १२२ । गर्द शब्द—अभच् । खरमिव कटुभाषि-
णम् (मृण) मारय (नुवन्तम्) स्तुवन्तम् (पापया) पापक्रियया (अमुया)
अनया प्रसिद्धया । अन्यद् गतम् ॥

६—(पताति) लेटि आडागमः । गच्छेत् । वहेत् (कुण्डुणाच्या)
दिवेभ्यः । उ० २ । ६६ । कुडि दाहे वैकल्ये रक्षणे च—अप्रत्ययः । कर्मण्यण् ।
पा० ३ । २ । १ । कुण्डु + णच् गतौ—अण् डीप्, क्षकारस्य चकारः । रक्षाप्रापि-
कया क्रियया (दूरम्) विप्रकृष्टदेशम् (वातः) वायुः (वनात्) वृक्षसमूहात्
(अधि) उपरि गच्छन् । अन्यद् गतम् ॥

सर्वं परिक्रोशं जहि जुम्भया कृकदाश्वम् । आ तू न इन्द्र
शंसय गोष्वश्वेषु शुभिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ७ ॥

सर्वम् । परि-क्रोशम् । जहि । जुम्भय । कृकदाश्वम् ॥ आ ।
तु । नः । इन्द्र । शंसय । गोषु । अश्वेषु । शुभिषु ।
सहस्रेषु । तुवि-मघ ॥ ७ ॥

भाषार्थ—[हे राजन् !] (सर्वम्) प्रत्येक (परिक्रोशम्) निन्दक,
(कृकदाश्वम्) कष्ट देने वाले को (जहि) पहुँच और (जुम्भय) मार डाल ।
(तुविमघ) हे महाधनी (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े प्रतापी राजन्] (तु) निश्चय
करके (नः) हम को (सहस्रेषु) सहस्रों (शुभिषु) शुभ गुण वाले (गोषु)
विद्वानों और (अश्वेषु) कामों में व्यापक बलवानों में (आ) सब ओर से
(शंसय) बड़ाई वाला कर ॥ ७ ॥

भावार्थ—राजा गुणों में दोष लगाने वाले कुचाली हिसकों को नष्ट
करके प्रजा जो सब प्रकार सुखी रखे ॥ ७ ॥

सूक्तम् ७५ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ३ भुरिगष्टिः, २ सुराडष्टिः ॥

परमेश्वरोपासनोद्देशः—परमेश्वर की उपासना का उपदेश ॥

वि त्वा ततस्ते मिथुना अंवस्यवो ब्रजस्य साता गव्यस्य निः-
सृजुः सक्षन्त इन्द्र निःसृजः । यद् गव्यन्ता द्वा जना स्व-
र्यन्ता सुसूहसि । आविष्करिद् वृषेण सचाभुवं वज्रमिन्द्र
सचाभुवम् ॥ १ ॥

७—(सर्वम्) प्रत्येकम् (परिक्रोशम्) कुश आह्वाने शब्दे च—पचायच् ।
परिक्रोशकम् । निन्दकम् (जहि) हन हिं जागत्योः । गच्छ । प्राप्नुहि (जुम्भय)
मारय (कृकदाश्वम्) सवृभूशुषिमुषिम्यः कक् । उ० ३ । ४१ । कञ् हिं ला-
याम्—कक् । कवायाञि० । उ० १ । १ । दाश्च दाने—उण् । अमि यणादेशः ।
पीडादातारम् । अन्यद् गतम् ॥

वि । त्वा । ततस्त्रे । मिथुनाः । अवस्यवः । ब्रजस्य । साता ।
 गव्यस्य । निः-सृजः । सक्षन्तः । इन्द्र । निः-सृजः ॥ यत् ।
 गव्यन्ता । द्वा । जना । स्वः । यन्ता । सुस्-ऊहसि ॥
 आविः । करिक्तत् । वृषणम् । सुचा-भुवम् । वज्रम् । इन्द्र ।
 सुचा-भुवम् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले जगदीश्वर] (ब्रजस्य) मार्ग
 के (साता) पाने में (अवस्यवः) रक्षा चाहने वाले, (सक्षन्तः) गतिशील,
 (गव्यस्य) भूमि के लिये हित के (निःसृजः) नित्य उत्पन्न करने वाले और
 (निःसृजः) निरन्तर देने वाले (मिथुनाः) स्त्री पुरुषों के समूहों ने (त्वा)
 तुझ को [तेरे गुणों को] (वि) विविध प्रकार (ततस्त्रे) फैलाया है । (यत्)
 क्योंकि, (इन्द्र) हे इन्द्र ! [परमात्मन्] (वृषणम्) बलवान्, (सचाभुवम्)
 नित्य मेल से रहने वाले, (सचाभुवम्) सेवन [वृद्धि] के साथ वर्तमान
 (वज्रम्) वज्र [दण्डगुण] को (आविः करिक्तत्) प्रकट करता हुआ तू
 (गव्यन्ता) वाणी [विद्या] को चाहने वाले, (स्वः) सुख को (यन्ता)
 प्राप्त होने वाले (द्वा) दोनों (जना) जनों [स्त्री पुरुषों] को (समूहसि)
 यथावत् चेताता है ॥ १ ॥

भावार्थ—जो स्त्री पुरुष सब के सुख के लिये राज्य आदि प्राप्त करके
 शिष्टसुखदायक, दुष्टविनाशक परमात्मा की भक्ति करते हैं, उन को वह जग-
 दीश्वर उन्नति के लिये सदा उत्साह देता है ॥ १ ॥

यह त्वच अथर्ववेद में है—१ । १३१ । ३—५ । मन्त्र १ आचुका है—अथ०
 २० । ७२ । २ ॥

विदुष्टे अस्य वीर्यस्य पुरवः पुरो यदिन्द्र शरदीरुवातिरः
 सासहानो अवातिरः । शासुस्तमिन्द्र मर्त्यमयंज्युं शवसस्पते ।
 महीममुष्णाः पृथिवीमिमा अपो मन्दसान इमा अपः ॥२॥
 विदुः । ते । अस्य । वीर्यस्य । पुरवः । पुरः । यत् । इन्द्र । शरदीः ।
 अव-अतिरः । सुसहानः । अव-अतिरः ॥ शासः । तस् ।

सू० ७५ [६६३] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,२३८)

इन्द्र । मर्त्यम् । अयज्युम् । शवसुः । पते ॥ महीम् । अमु-
ष्णाः । पृथिवीम् । इमाः । अपः । मन्दसानः । इमाः । अपः ॥ २॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमेश्वर] (पूरवः)
मनुष्य (ते) तेरे (अस्य) उस (वीर्यस्य) सामर्थ्य का (विदुः) ज्ञान
रखते हैं, (यत्) जिस [सामर्थ्य] से (सप्तहानः) जीतते हुये तू ने
(शारदीः) वर्ष भर में उत्पन्न होने वाली (पुरः) पालन सामग्रियों को
(अवातिरः) उतारा है, (अवातिरः) उतारा है, (शवसःपते) हे बल
के स्वामी (इन्द्र) इन्द्र ! [परमेश्वर] (तम्) उस (अयज्युम्) यज्ञ के
न करने वाले (मर्त्यम्) मनुष्य को (शासः) तू ने शासन में किया है, और
(मन्दसानः) आनन्द करते हुये तू ने (महीम्) बड़ी (पृथिवीम्) पृथिवी से
(इमाः) इन [यज्ञ न करने वाली] (अपः) प्रजाओं को, (इमाः) इन
(अपः) प्रजाओं को (अमुष्णाः) लूटा है ॥ २ ॥

२—(विदुः) विदन्ति । ज्ञानं कुर्वन्ति (ते) तव (अस्य) प्रसिद्धस्य
(वीर्यस्य) सामर्थ्यस्य (पूरवः) भृशतोऽ० । उ० १ । ७ । पूरी आप्यायने—
उप्रत्ययः । पूरवः पूरयितव्या मनुष्याः—निरु० ७ । २३ । मनुष्याः—निघ० २ । ३
(पुरः) पृ पालनपूरणयोः—किप् । उदात्तत्वं पूर्वस्य । पा० ७ । १ । १०२ ।
इत्युत्त्वम् । पालनसामग्रीः (यत्) येन सामर्थ्येन (इन्द्र) परमैश्वर्यवन् पर-
मात्मन् (शारदीः) शरद्—अण्, डीप् । शरदि संवत्सरे भवाः (अवातिरः)
अवतारितवानसि । दत्तवानसि (सप्तहानः) सहतेर्यङ्नुगन्ताच् चानश् ।
अभिभवन् । विजयन् (अवातिरः) दत्तवानसि (शासः) शासु अनुशिष्टौ—
लुङ्, छान्दसं रूपम् । शासितवानसि । निगृहीतवानसि (तम्) (इन्द्र)
(मर्त्यम्) मनुष्यम् (अयज्युम्) यजिमनिशुन्धि० । उ० ३ । २० । यजेः—युच् ।
अयष्टारम् । यज्ञविघातकम् (शवसः) बलस्य (पते) स्वामिन् (महीम्)
महतीम् (अमुष्णाः) मुष स्तेये—लङ् । अग्रहतवानसि । दुह्याच् च्छण्डश्छि-
प्रच्छिच्चिब्रूशासुजिमथ्मुषाम् । कारिका, पा० १ । ४ । ५१ । इति मुष्णातेर्वि-
कर्मकत्वात् पृथिवीमित्यस्य, अप इति अस्य पदस्य च कर्मकत्वं (पृथिवीम्)
भूमिम् । भूमेःसकाशात् (इमाः) दृश्यमानाः (अपः) प्रजाः (मन्दसानः)
दृश्यन्त्वम् (इमाः) (अपः) प्रजाः ॥

भावार्थ—परमात्मा अपने सामर्थ्य से अनन्त पदार्थ उत्पन्न करके सब का सदा पालन करता है, और अनाज्ञाकारी दूयों को अवश्य दण्ड देता है ॥ २ ॥

आदित् ते अस्य वीर्यस्य चर्किरन्मदेषु वृषन्नुशिजो यदाविथ
सखीयुतो यदाविथ । चुकर्थ कारमभ्यः पृतनासु प्रवन्तवे ।
ते अन्यामन्यां नृद्यं सनिष्णत अवस्यन्तः सनिष्णत ॥ ३ ॥
आत् । इत् । ते । अस्य । वीर्यस्य । चर्किरन् । मदेषु ।
वृषन् । उशिजः । यत् । आविथ । सखि-युतः । यत् ।
आविथ ॥ चुकर्थ । कारम् । अभ्यः । पृतनासु । प्र-वन्तवे ॥
ते । अन्याम्-अन्याम् । नृद्यम् । सनिष्णतु । अवस्यन्तः ।
सनिष्णतु ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(वृषन्) हे महाबली ! [परमेश्वर] (आत्) इस लिये
(इत्) ही (ते) तेरे (अस्य) उस (वीर्यस्य) सामर्थ्य को (चर्किरन्)
उन्हां ने [मनुष्यों ने] बार बार जाना है, (यत्) जिस [सामर्थ्य] से (मदेषु)
आनन्दों के बीच (उशिजः) शुभ गुण चाहने वाले बुद्धिमानों को (आविथ)
तू ने बचाया है, (यत्) जिस [सामर्थ्य] से (सखियतः) तुझे मित्र के समान

३—(आत्) अतः (इत्) एव (ते) तव (अस्य) द्वितीयार्थे षष्ठी ।
तत् । वक्ष्यमाणम् (वीर्यस्य) सामर्थ्यम् (चर्किरन्) कृ विज्ञेये हिंसायां
विज्ञाने च, यङ्लुगन्तात् लङ्, अङभावः । ज्ञातवन्तः (मदेषु) हर्षेषु (वृषन्)
बलिष्ठ । परमात्मन् (उशिजः) अ० २० । ११ । ४ । शुभगुणान् कामयमानान्
मेधाविनः (यत्) येन वीर्येण (आविथ) रक्षितवानसि (सखियतः) उप-
मानादाचारे । पा० ३ । १ । १० । सखि—क्यच्, शतृ । न च्छन्दस्यपुत्रस्य ।
पा० ७ । ४ । ३५ । इति दीर्घनिषेधः त्वां सखायमिवाचरतः पुरुषान् (यत्)
येन (आविथ) रक्षितवानसि (चुकर्थ) कृतवानसि (कारम्) करोतः—घञ् ।
दत्तम् (अभ्यः) पूर्वोक्तेभ्यः (पृतनासु) वीपतिभ्यां तनन् । उ० ३ । १५ ।
पृङ् व्यायामे—तत्, कित्, टाप् । पृतनाः, मनुष्यनाम—निघ० २ । ३ ।

समझने हुये लोगों को (आविध) तू ने बचाया है। और (पश्यः) इन [लोगों] के लिये (पूतनासु) मनुष्यों में (प्रवन्तवे) सेवन करने को (कारम्) यत्न (चकर्त्त) तू ने किया है, (अवश्यन्तः) कीर्ति चाहने वाले (ते) वे (अन्यापन्याम्) अलग, अलग (नद्यम्) पूजने योग्य किया को (सन्निष्णत) सेवन करें, (सन्निष्णत) सेवन करें ॥ ३ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग परमात्मा के सामर्थ्य का अनेक प्रकार अनुभव करके आपस में मिलकर तथा पृथक् पृथक् भी शुभ गुणों की प्राप्ति से सामर्थ्य बढ़ावें ॥ ३ ॥

सूक्तम् ७६ ॥

१—८ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ विराडाषीं त्रिष्टुप्, २, ४—६ निचृत् त्रिष्टुप्, ३, ७, ८ विराट् त्रिष्टुप् ॥

राजर्तव्योपदेशः—राजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

वने न वा यो न्य'धायि चाक्रं छुचिर्वा' स्तोमो भुरणावजीगः।
यस्येदिन्द्रः पुरुदिनेषु होता नृणां नर्यो नृतमः क्षुपावान् ॥१॥
वने । वा । यः । नि । अधायि । चाक्रन् । शुचिः । वाम् ।
स्तोमः । भुरणौ । अजीगरिति ॥ यस्य । इत् । इन्द्रः ।
पुरु-दिनेषु । होता । नृणाम् । नर्यैः । नृ-तमः । क्षुपा-वान् ॥१॥

मनुष्येषु (प्रवन्तवे) तुमर्थे तवेन् । प्रकर्षणं वनितुं सेवितुम् (ते) पूर्वोक्तः (अन्यामान्याम्) भिन्नां भिन्नान् (नद्यम्) एव अव्यक्ते शब्दे स्तुतौ च—पचायच् डीप् । नदतिरर्चतिकर्मा—निघ० ३ । १४ । नदः स्तोतृनाम्—निघ० ३ । १६ । नदीम् । पूजनीयां क्रियाम् (सन्निष्णत) षण् सम्भक्तौ—लेट् । सिब्वहुलं लेटि । पा० ३ । १ । ३४ । इति सिप् । इट् श्नाप्रत्ययश्च । आत्मने-देवततः । पा० ७ । १ । ५ । इति भक्ष्य अदादेशे । श्नाभ्यस्नयोरातः । पा० ६ । ४ । ११२ इत्याकारलोपः । टेरेन्वाभावः । संभजेयुः । सेवन्ताम् (अवश्यन्तः) अवस्—त्यच्, शत् । कीर्तिमिच्छन्तः (सन्निष्णत) सेव वाम् ॥

भाषार्थ—(वने) वृक्ष पर (न) जैसे (चाकन्) प्रीति करने वाला (वा, यः=वायः) पत्नी का बच्चा (नि अधायि) रक्खा जाता है, [वैसे ही (भुरणौ) हे दोनों पोषको ! [माता पिताओ] (शुचिः) पवित्र (स्तोमः) बड़ाई योग्य गुण ने (वाम्) तुम दोनों को (अजीगः) ग्रहण किया है । (यस्य) जिस [बड़ाई योग्य गुण] का (इत्) ही (होता) ग्रहण करने वाला (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला पुरुष] (पुरुदिनेषु) बहुत दिनों के भीतर (नृणाम्) नेताओं का (नृतमः) सब से बड़ा नेता, (नर्यः) मनुष्यों का हितकारी, (क्षपावान्) श्रेष्ठ रात्रियों वाला है ॥ १ ॥

भावार्थ—जैसे चिड़िया चिरौटा बच्चे को घोंसले में धर कर पुष्ट और समर्थ करते हैं, वैसे ही स्त्री पुरुष खदा दिन रात उत्तम गुण ग्रहण करके अपने को और अपने सन्तानों को मुख्य कार्य कर्ता बनावे ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—१० । २६ । १—८ ॥

हम ने (वा, यः) दो पदों के स्थान पर (वायः) एक पद मानकर अर्थ किया है । भगवान् यास्कमुनि ने इस मन्त्र पर—निरुक्त ६ । २८ । में

१—(वने) वनावयवे वृक्षे (न) यथा (वा, यः=वायः) चातेडिञ्च । ड० ४ । १३४ । वा गनौ—इण्, डित् । वि—अण् अपठ्यार्थे । पक्षिशावकः । वन इव वायो वेः पुत्रश्चायन्निति वा कामयमान इति वा । वेतिचय इति च चकार शाकल्यः । उदात्तं त्वेवमारख्यातमभविष्यदसुसमाप्तश्चार्थः—निरु० ६ । २८ (नि अधायि) निहितः । धृतः (चाकन्) कनी दोषिकान्तिगतिषु, पङ्क्तु-गन्तात्—किप् । उत्सककमनाः (शुचिः) पवित्रः (वाम्) युवां द्वौ (स्तोमः) स्तुत्यगुणः (भुरणौ) भुरण धारणपोषणयोः—पचाद्यच् । हे भर्तारौ माना-पितौ (अजीगः) जिगर्ति नैरुक्धातुः, यद्वा गृ निगरणे—लङ्, लिपि, इतश्चलोपे, रात्सस्य । पा० ८ । २ । २४ । सलोपः, रेफस्य विसर्जनीयः । प्रथमपुरुषस्य मध्यमः । गृहीतवान् प्राप्तवान् । अजीगः.....अगारीर्जः । तिर्गिरतिकर्मा वा गृणातिकर्मा वा गृह्णातिकर्मा वा—निरु० ६ । ८ (यस्य) स्तोमस्य (इत्) एव (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् पुरुषः (पुरुदिनेषु) बहुदिवसेषु (होता) ग्रहीता (नृणाम्) नेतृणाम् । शूराणां मध्ये (नर्यः) नृभ्यो हितः (नृतमः) नेतृतमः । शूरतमः (क्षपावान्) क्षप प्रेरणे—अच्, टाप् । प्रशस्त-रात्रिमान् ॥

लिखा है—(वा और यः) शाकल्य ने [पद विभाग] किया है, किन्तु ऐसा होने पर आखपात उदात्त होता और अर्थ भी पूरा न होता—अर्थान्-जो (वा और यः) पदकार शाकल्य ऋषि ने पद विभाग किया है, वह दो पद होता तो [यद्वृत्तान्नित्यम् । पा० ८ । १ । ६९] इस सूत्र से (अध्यायि) किया पद उदात्त होता, किन्तु वह अनुदात्त है, और (वा) का अर्थ कुछ न बनता और वृत्त पर क्या रक्खा हुआ है, यह आकांक्षा बनी रहनी । इस से (वा । यः ।) दो पद भूल से हैं. (वायः) ऐसा एक पद ठीक है । सायणाचार्य और त्रिफिथ-महाशय ने भी (वायः) ही माना है ॥

प्र ते अस्या उषसः प्रापरस्या नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम् ।
अनु त्रिशोकः शतमावहृन् कुत्सेन रथो यो असत् ससवान् ॥२॥
प्र । ते । अस्याः । उषसः । प्र । अपरस्याः । नृतौ । स्याम ।
नृतमस्य । नृणाम् ॥ अनु । त्रि-शोकः । शतम् । आ । अव-
हत् । नृन् । कुत्सेन । रथः । यः । असत् । सस-वान् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(अस्याः) इस और (अपरस्याः) दूसरी [आने वाली] (उषसः) उषा [प्रभात वेला] के (नृतौ) नृत्य [चेष्टा] में (नृणाम्) नेताओं के (नृतमस्य ते) तुझ सब से बड़े नेता के [भक्त रह कर] (प्र प्र) बहुत उत्तम (स्याम) हम होवें । (यः) जो (त्रिशोकः) तीन प्रकार [बिजुली, सूर्य और अग्नि] के प्रकाश वाला (रथः) रथ (असत् होवे, वह [रथ] (ससवान्) सेवन करता हुआ (शतम्) सो (नृन्) नेता पुरुषों के

२—(प्र प्र) अतिशयेन प्रकृष्टाः (ते) तव (अस्याः) वर्तमानायः (उषसः) प्रभातवेलायाः (अपरस्याः) अन्यस्याः । आगामिन्याः (नृतौ) इगुपधात् कित् । उ० ४ । १२० । नृती गात्रविज्ञेपे—इन्, कित् । नर्तने । चेष्टने (स्याम) भवेम (नृतमस्य) नेतृतमस्य (नृणाम्) नेतृणां मध्ये (अनु) आनुकूल्येन (त्रिशोकः) ई शुचिर् क्लेदने शौचे च—घञ् । त्रयाणां सूर्यविद्युदग्नीनां शोकः प्रकाशो यस्मिन् सः (शतम्) (आ अवहत्) लिङ्ये लङ् । आवहेत् (नृन्) नेतृन् पुरुषान् (कुत्सेन) अ० ४ । २६ । ५ । कुल संश्लेषणे—सप्रत्ययः । ऋषिः कुत्सो भवति कर्ता स्तोमानाम्—निर० ३ । ११ । संगतिशीलेन ऋषिणा

(कुत्सेन) मित्रन चार ऋषि [सेनापति] के साथ (अनु) अनुकूल रीति से (आ अवहत्) लावे ॥ २ ॥

भावार्थ—जैसे प्रभात वेला सूर्य द्वारा प्रकाश करती हुयी चली चलती है, वैसे ही मनुष्य अत्यन्त ज्ञानी पुरुष के आश्रय से विजुली, सूर्य और अग्नि आदि 'दार्थों' के द्वारा यान विज्ञान आदि बनाकर कार्य सिद्ध करें ॥ २ ॥

कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो भुद् दुरो गिरौ अभि उग्रो वि धाव ।
कद् वाहो अर्वाक् मा मनीषा आ त्वा शक्यामुपमं राधे
अन्नैः ॥ ३ ॥

कः । ते । मदः । इन्द्र । रन्त्यः । भूत् । दुरः । गिरः ।
अभि । उग्रः । वि । धाव् ॥ कत् । वाहः । अर्वाक् । उप ।
मा । मनीषा । आ । त्वा । शक्याम् । उप-मम् । राधः ।
अन्नैः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [महाप्रतापी राजन्] (कः) कौन सा (ते) तेरा (मदः) हर्ष (रन्त्यः [हमारे लिये] आनन्द दायक (भूत्) होंवे, (उग्रः) तेजस्वी तू (गिरः) स्तुतियों को (अभि) प्राप्त होकर (दुरः) [हमारे] द्वारों पर (वि धाव) दौड़ता आ । (कत्) कव (वाहः) वाहन [घोड़ा रथ आदि] (मनीषा) बुद्धि के साथ (मा उप) मेरे समीप (अर्वाक्) सामने [होवे], और (उपमम्) समीपस्थ (त्वा) तुझ को (आ) प्राप्त

सेनापतिना (रथः) यानभेदः (यः) रथः (असत्) भवेत् (ससवान्) षण् संभक्तौ—कसु । सेवमानः ॥

३—(कः) (ते) तव (मदः) हर्षः (इन्द्र) महाप्रतापिन् राजन् (रन्त्यः) वसेस्ति । उ० ४ । १८० । रमु कीडायाम्—तिप्रत्ययः । हितार्थं यत् । रन्त्ये रमणाय हितः । रमयिता । प्रीतिकरः (भूत्) भवेत् (दुरः) अस्नाकं द्वाराणि (गिरः) स्तुतीः (अभि) अभिगत्य । प्राप्य (उग्रः) तेजस्वी (वि) विविधम् (धाव) ध-बु गतिशुद्ध्योः । शीघ्रमागच्छ (कत्) कदा (वाहः) वाहकः । अश्वरथादिकः (अर्वाक्) अभिमुखः (उप) उपेत्य

होकर (अन्नैः) अन्नो के सहित (राधः) धन (शत्याम्) पाने को समर्थ हो जाऊँ ॥ ३ ॥

भावार्थ—प्रजागण पुरुषार्थी धार्मिक राजा को आदर पूर्वक निमन्त्रण कर के उन्नति के उपायों का विचार करें ॥ ३ ॥

कदुं द्युम्नमिन्द्र त्वावतो नृन् कया धिया करसे कनु
आगन् । मित्रो न सत्य उरुगाय भृत्या अन्ने समस्य यदसन्म-
नीषाः ॥ ४ ॥

कत् । ऊं इति । द्युम्नम् । इन्द्र । त्वा-वतः । नृन् । कया ।
धिया । करसे । कत् । नः । आ । अगन् ॥ मित्रः । न ।
सत्यः । उरु-गाय । भृत्यै । अन्ने । समस्य । यत् । असन् ।
मनीषाः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (त्वावतः)
तुझ जैसे का (द्युम्नम्) यश (नृन्) नेनाओं में (कत् उ) किस को है, (कया
धिया) किस बुद्धि के साथ (करसे) तू कर्तव्य करेगा, (उरुगाय , हे बहुत
कीर्ति वाले ! (कत्) कैसे (नः) हम को (सत्यः) सच्चे (मित्रः न) मित्र के
समान, (भृत्यै) पालने के लिये (आ अगन्) तू प्राप्त हुआ है, (यत्) क्योंकि
(अन्ने) अन्न में (समस्य) सब की (मनीषाः) बुद्धियाँ (असन्) रहती हैं ॥४॥

(मा) माम् (मनीषा) प्रज्ञया (आ) आगत्य । प्राप्य (त्वा) त्वाम्
(शक्याम्) प्राप्नुं शक्याम् (उपमम्) समीपस्थम् (राधः) धनम् (अन्नैः)
अदनीयपदार्थैः ॥

४—(कत्) कस्मै मनुष्याय (उ) एव (द्युम्नम्) अ० ६ । ३५ । ३ ।
द्योतमानं यशः (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् राजन् (त्वावतः) त्वत्सदृशस्य (नृन्)
सप्तम्यर्थे द्वितीया । नेतृषु (कया) कीदृश्या (धिया) प्रज्ञया (करसे) करोते-
ल्लेद् । कर्तव्यं करिष्यसि (कत्) कथम् (नः) अस्मान् (आ अगन्) प्राप्तवा-
नसि (मित्रः) सखा (न) यथा (सत्यः) सत्यशीलः (उरुगाय) अ० २ ।
१२ । १ । बहुकीर्ते (भृत्यै) भरणाय । पोषणाय (अन्ने) (समस्य) सर्वस्य
(यत्) यतः (असन्) लेद् । भवन्ति (मनीषाः) बुद्धयः ॥

भावार्थ—मनुष्य संसार में अत्यन्त कीर्ति पाकर अपना पुरुषार्थ सिद्ध करने के लिये प्रजा की रक्षा का विचार सच्चे हृदय से करता रहे ॥ ४ ॥

प्रेरय सूर्यो अर्थं न पारं ये अस्य कामं जनिधा इव गमन् ।
गिरश्च ये ते तु विजात पूर्वो नर इन्द्र प्रतिशिक्षन्त्यनैः ॥ ५ ॥

प्र । ईरय । सूरः । अर्थम् । न । पारम् । ये । अस्य ।
कामम् । जनिधाः-इव । गमन् ॥ गिरः । च । ये । ते । तुवि-
जात । पूर्वीः । नरः । इन्द्र । प्रति-शिक्षन्ति । अनैः ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(तुविजात) हे बहुत प्रकार से प्रसिद्ध (इन्द्र) इन्द्र !
[बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (सूरः न) सूर्य के समान तू [उन को] (अर्थम्)
पाने योग्य (पारम्) पार की ओर (प्र ईरय) आगे बढ़ा (ये) जो
(जनिधाः इव) वीरों को उत्पन्न करने वाली पत्नियों के धारण करने वाले के
समान (अस्य) उस [तेरे] (कामम्) मनोरथ को (गमन्) प्राप्त होते हैं,
(च) और (ये) जो (नरः) नेता लोग (ते) तेरे लिये (पूर्वीः) सनातन
(गिरः) वाणियों [विद्याओं] को (अनैः) अर्न्नों के साथ (प्रतिशिक्षन्ति)
समर्पण करते हैं ॥ ५ ॥

भावार्थ—जैसे मनुष्य वीरसू पत्नी का प्रयत्न पूर्वक आदर करते हैं,
वैसी ही राजा हितैषी नेता पुरुषों की उन्नति में तत्पर रहे ॥ ५ ॥

५—(प्र) प्रकर्षण (ईरय) गमय (सूरः) सुसूधाजगृधिभ्यः क्रन् ।
उ० २ । २४ । षू प्रेरणे—क्रन् । सूर्यः (अर्थम्) उषिकुषिगर्तिभ्यस्थन् । उ० २ ।
४ । अग्तौ—थन् । अरणीयं प्रापणीयम् (न) यथा (पारम्) परतीगम् (ये)
पुरुषाः (अस्य) त्वदीयस्य (कामम्) मनोरथम् (जनिधाः) अ० २ । ३० ।
५ । जनि + दधातेः—क्विप् । जनीनां वीरपुत्रजनयित्रीणां पत्नीनां धर्तारः (इव)
यथा (गमन्) अगमन् । प्राप्नुवन्ति (गिरः) वाणीः । विद्याः (च) (ये)
(ते) तुभ्यम् (तुविजात) बहुप्रसिद्ध (पूर्वीः) सनातनीः (नरः) नेतारः
(इन्द्र) परमैश्वर्यवान् राजन् (प्रतिशिक्षन्ति) शिक्षतिर्दानकर्मा—निघ० ३ ।
२० । प्रत्यक्षं ददति । समर्पयन्ति (अनैः) ॥

साञ्जेनु ते सुमिते इन्द्र पूर्वी द्यौर्मज्जमना पृथिवी काव्येन ।
 वराय ते घृतवन्तः सुतासुः स्वादान् भवन्तु पीतये मधूनि ॥६॥
 साञ्जे इति । नु । ते । सुमिते इति सु-मिते । इन्द्र । पूर्वी
 इति । द्यौः । मज्जमना । पृथिवी । काव्येन ॥ वराय । ते ।
 घृत-वन्तः । सुतासुः । स्वादान् । भवन्तु । पीतये । मधूनि ॥६॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (नु)
 निश्चय करके (ते) तेरी (साञ्जे) दो मात्रायें [उपाय शक्तियां] (सुमिते)
 अच्छे प्रकार नापी गयीं [जानी गयीं], (पूर्वी) सनातनी हैं किन्तु
 (मज्जमना) अपने बल से और (काव्येन) बुद्धिमत्ता से (द्यौः) चमकते हुये
 सूर्य [के समान] और (पृथिवी) फैली हुई पृथिवी [के समान] हैं । (ते)
 तेरे (वराय) वर [इष्टफल] के लिये (घृतवन्तः) प्रकाशमान (सुतासुः)
 निचोढ़े हुये तस्व रस हैं (मधूनि) निश्चित ज्ञान रस (पीतये) पीने के लिये
 (स्वादमन्) स्वादिष्ट (भवन्तु) होवें ॥ ६ ॥

भाषार्थ—जो मनुष्य दो उपायों अर्थात् पराक्रम और बुद्धि से सूर्य
 और भूमि के समान उपकारी होता है, उस की इष्ट सिद्धि के लिये संसार के
 सब पदार्थ उपयोगी होते हैं ॥ ६ ॥

आ मध्वो अस्मा अस्मिन्नममिन्द्राय पुणं स हि सुत्यराधाः ।
 स वावृधे वरिमन्ना पृथिव्या अभि क्रत्वा नर्यः पौंस्यैश्च ॥७॥

६—(साञ्जे) हुयामाभसिभ्यस्त्रन् । उ० ४ । १६८ । माङ् माने—अन् ।
 द्वे मानकङ्गौ यत्नशक्ती (नु) निश्चयेन (ते) तव (सुमिते) सुपरिमिते
 (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् राजन् (पूर्वी) सनातन्यौ (द्यौः) द्योतमानः सूर्यो यथा
 (मज्जमना) अ० १३ । १ । १४ । शोधकेन धत्तेन (पृथिवी) विस्तृता भूमि
 र्यथा (काव्येन) कविकर्मणा । बुद्धिमत्तया (वराय) इष्टफलप्राप्तये (ते)
 तव (घृतवन्तः) दीप्तिमन्तः (सुतासुः) निष्पादितास्तस्वरसाः (स्वादमन्)
 सातिभ्यां मनिन्मनिणौ । उ० ४ । १५३ । स्वद् स्वाद् वा आस्वाद्ने—मनिण ,
 विभक्तोर्लुक् । स्वादूमानि । स्वादिष्टानि (भवन्तु) (पीतये) पानाय । ग्रह-
 णाय (मधूनि) निश्चितज्ञानानि ॥

आ । मध्वः । अस्मै । असिचन् । अमत्रम् । इन्द्राय ।
 पूर्णम् । सः । हि । सत्य-राधाः ॥ सः । ववृधे । वरिमन् ।
 आ । पृथिव्याः । अभि । क्रत्वा । नर्यः । पौंस्यैः । च ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(अस्मै) इस (इन्द्राय) इन्द्र [परम ऐश्वर्य वाले मनुष्य]
 के लिये (मध्वः) मधुर रस [उत्तम ज्ञान] का (पूर्णम्) पूरा (अमत्रम्)
 पात्र (आ) सब ओर से (असिचन्) उन्होंने ने [विद्वानों ने] लींचा है, (हि)
 क्योंकि (सः) वह (सत्यराधाः) सत्ये साधक धन वाला है । (सः) वह
 (नर्यः) नरों का हितकारी (पृथिव्याः) पृथिवी के (वरिमन्) फैलाव में
 (क्रत्वा) अपनी बुद्धि से (च) और (पौंस्यैः) मनुष्य कर्मों से (अभि)
 सब प्रकार (आ) पूरा पूरा (ववृधे) बढ़ा है ॥ ७ ॥

भाषार्थ—विद्वानों का सिद्धान्त है कि पराक्रमी मनुष्य पूरा शान्ति
 होकर अपनी बुद्धि और कर्मों से परोपकार करता हुआ अभीष्ट वर अर्थात्
 मोक्ष सुख पाता है ॥ ७ ॥

यानुलिन्द्रः पृतनाः स्वोजा अस्मै यतन्ते सुख्याय पूर्वीः ।
 आ स्मा रयं न पृतनासु तिष्ठ यं भद्रया सुमत्या चोदयासे ॥८
 वि । आनुत् । इन्द्रः । पृतनाः । सु-ओजाः । आ । अस्मै ।
 यतन्ते । सुख्याय । पूर्वीः ॥ आ । स्म । रयम् । न । पृत-
 नासु । तिष्ठ । यम् । भद्रया । सु-मत्या । चोदयासे ॥ ८ ॥

७—(आ) समन्तात् (मध्वः) मधुनः । मधुररसस्य । उत्तमज्ञानस्य
 (अस्मै) (असिचन्) असिञ्चन् । सिक्तवन्तः (अमत्रम्) पात्रम् (इन्द्राय)
 परमैश्वर्यवते मनुष्याय (पूर्णम्) (सः) (हि) यस्मात् कारणात् (सत्य-
 राधाः) सत्यं राधः साधकं धनं यस्य सः (सः) (ववृधे) वृद्धिं चकार (वरि-
 मन्) वरिमनि । उरुत्वे । विस्तारे (आ) समन्तात् (पृथिव्याः) भूमेः
 (अभि) सर्वतः (क्रत्वा) क्रतुना । प्रव्या (नर्यः) नृभ्यो हितः (पौंस्यैः)
 अ० २० । ६७ । २ । मनुष्यकर्मभिः (च) ॥

भाषार्थ—(स्वोजाः) सुन्दर यत्न वाला (इन्द्रः) इन्द्र [परम ऐश्वर्य वाला पुरुष] (पृतनाः) मनुष्यों में (वि आनट्) फैल गया है, (अस्मै) इस की (सन्ध्याय) मित्रता के लिये (पूर्वीः) सब [मनुष्य] (आ यतन्ते) बखल करते रहते हैं । [हे राजन् !] (न) अब (पृतनासु) मनुष्यों के बीच (स्म) अवश्य (रथम्) रथ पर (आतिष्ठ) तू चढ़, (यम्) जिस [रथ] को (भद्रया) कल्याणी (सुमत्या) सुमति के साथ (चोदयासे) तू खलावेगा ॥ ८ ॥

भाषार्थ—जो धर्मात्मा पुरुष सब में प्रबल और सुबोध होता है, सब मनुष्य उसके मित्र बन जाते हैं और वह तभी रथ रूपी राजकाज आवि व्यवहार को उत्तम रीति से खलाता है ॥ ८ ॥

सूक्तम् ७७ ॥

१—८ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ४, ६ निचृत् त्रिष्टुप्, २ निचृत् पङ्क्तिः, ३, ५ त्रिष्टुप्, ७, ८ विराट् त्रिष्टुप् ॥

राजधर्मोपदेशः—राजा के धर्म का उपदेश ॥

आ सृत्यो यातु मृचवाँ ऋजीषी द्रव्रन्त्वस्य हरय उप नः ।
तस्मा इदन्धः सुषुमा सुदक्षमिहाभिपित्वं कर्तते गृणानः ॥१॥
आ । सृत्यः । यातु । मृच-वान् । ऋजीषी । द्रवन्तु । अस्य ।
हरयः । उप । नः ॥ तस्मै । इत् । अन्धः । सुषुम् ।
सु-दक्षम् । इह । अभि-पित्वम् । कर्तते । गृणानः ॥ १ ॥

८—(वि आनट्) व्याप्नोति (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् पुरुषः (पृतनाः) मनुष्यान्—निघ० २ । ३ (स्वोजाः) शोभनबलः (आ) समन्तात् (अस्मै) षष्ठ्यर्थे चतुर्थी । अस्य । इन्द्रस्य (यतन्ते) यत्नं कुर्वन्ति (सन्ध्याय) सखित्वाय मित्रभावाय (पूर्वीः) समस्ता मनुष्यप्रजाः (स्म) अवश्यम् (रथम्) रथ-रूपं राज्यव्यवहारम् (न) सम्प्रति (पृतनासु) मनुष्येषु (आ तिष्ठ) आरोह (यम्) रथम् (भद्रया) कल्याणया (सुमत्या) शोभनया बुद्ध्या (चोदयासे) लेटि रूपम् । चोदयेः । प्रेरयेः ॥

भाषार्थ—(सत्यः) सचचा [सत्यवादी, सत्यकर्मी], (मघवान्) महाधनी, (ऋजीषी) सरल स्वभाव वाला [राजा] (आ यातु) आवे, और (अस्य) इस [राजा] के (हरयः) मनुष्य (नः) हमारे (उपद्रवन्तु) पास आवे । (तस्मै) उस के लिये (इत्) ही (सुदक्षम्) सुन्दर बल वाला (अन्धः) अज्ञ (सुष्ठुम्) हमने लिख किया है, (गृणानः) उपदेश करता हुआ वह (इह) यहां (अभिपित्वम्) मेल मिलाप (करते) करे ॥ १ ॥

भावार्थ—राजा और राजा के पुरुष धर्मात्मा होकर प्रेम से प्रजा का पालन करें, और प्रजागण भी पेश्वर्य बढ़ाकर उस से प्रीति करें ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है— ४। १६। १—८ ॥

अथ स्य शूराध्वनो नान्तेऽस्मिन् नो ऋद्य सर्वने सुन्दध्यै ।

शंसात्युक्थमुशनैव वेधाश्चिकितुषे असुर्याय मन्म ॥ २ ॥

अव । स्य । शूर । अध्वनः । न । अन्ते । अस्मिन् । नः ।

अद्य । सर्वने । सुन्दध्यै ॥ शंसाति । उक्थस् । उशनै-इव ।

वेधाः । चिकितुषे । असुर्याय । मन्म ॥ २ ॥

भाषार्थ—(शूर) हे शूर । [राजन्] (अध) अब (अस्मिन्) इस (अन्ते) पास वाले (सर्वने) पेश्वर्य में (सुन्दध्यै) आनन्द करने के लिये (नः)

१—(आ.यातु) आगच्छतु (सत्यः) सत्यवादी । सत्यकर्मी (मघवान्) धनवान् (ऋजीषी) अर्जोऽर्ज च । उ० ४ । २८ । अर्ज संचये—ईषन्, कित्, ऋजादेशः, यद्वा, ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु ईषन्, कित्, ऋजीष—इनि । ऋजुस्वभावः । सरलस्वभावः (द्रवन्तु) गच्छन्तु (अस्य) राज्ञः (हरयः) मनुष्याः (उप) (नः) अस्मान् (तस्मै) राज्ञे (इत्) एव (अन्धः) अज्ञम् (सुष्ठुम्) अ० २० । ३ । १ । वयं निष्पादितवन्तः (सुदक्षम्) शोभनबलयुक्तम् (इह) (अभिपित्वम्) अ० २० । २५ । ६ । संगमम् (करते) कुर्यात् (गृणानः) उपदिशन् ॥

२—(अव स्य) ओ अन्तर्कर्मणि—लोट् । विनाशय (शूर) हे निर्भय राजन् (अध्वनः) मार्गान् (न) निषेधे (अन्ते) समीपस्थे (अस्मिन्) (नः)

हमारे (अध्वनः) मार्गों को (न) मत (अवश्य) शिष्ट कर । (उशना इव)
 जानने योग्य पुरुष के समान (वेधाः) बुद्धिमान पुरुष (चिकितुषे) ज्ञानवान्
 (असुर्याय) प्राणियों के हितकारी के लिये (उक्तम्) कहने योग्य कर्म और
 (मन्म) मनन योग्य ज्ञान को (शंसति) कहे ॥ २ ॥

भावार्थ—राजा ऐसा उपाय करे कि सब लोग वे रोक स्वतन्त्र होकर
 संसार के पदार्थों से उन्नति करें और विद्वान् लोग मिलकर प्राणियों के हित के
 लिये विचार करते रहें ॥ २ ॥

कविर्न निग्रयं विदयानि साधन् वृषा यत् सेकं विपिपानो
 अर्चात् । दिव इत्या जीजनत् सुप्त कारूनह्वा चिच्चक्रुर्व-
 युना गुणन्तः ॥ ३ ॥

कविः । न । निग्रयम् । विदयानि । साधन् । वृषा । यत् ।
 सेकम् । वि-पिपानः । अर्चात् ॥ दिवः । इत्या । जीजनत् ।
 सुप्त । कारुन् । अह्वा । चित् । चक्रुः । वयुना । गुणन्तः ॥३॥

भाषार्थ—(कविः न) जैसे बुद्धिमान पुरुष (विदयानि) जानने योग्य
 कर्मों का (साधन्) सिद्ध करता हुआ (निग्रयम्) गूढ़ अर्थ को, [वैसे ही]
 (यत्) जो (वृषा) सुखों का बरसाने वाला बलवान् [राजा] (सेकम्)
 सिञ्चन [वृद्धि के प्रयत्न] को (विपिपानः) विशेष करके रक्षा करता हुआ

अस्माकम् (अद्य) इदानीम् (सवने) ऐश्वर्य (मन्दधै) तुममें सेसेनसे-
 असेन० । पा० ३ । ४ । ६ । मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु—अध्यैप्रत्ययः
 मन्दितुमानन्दितुम् (शंसति) कथयेत् (उक्तम्) वक्तव्यं प्रशंसनीयं कर्म
 (उशना) अ० २० । २५ । ५ । कमनीयः पुरुषः (इव) यथा (वेधाः) मेधावी
 (चिकितुषे) अ० ४ । ३० । २ । कित ज्ञाने—कस्य । ज्ञानिने (असुर्याय) अ० २० ।
 ५८ । ४ । प्राणिभ्यो हितकराय (मन्म) मननीयं ज्ञानम् ॥

३—(कविः) मेधावी (न) यथा (निग्रयम्) अ० ६ । १० । १५ । निर् +
 णीञ् प्राण्ये—यक्, टिलोपो रेफलोपश्च । अस्तर्हितं गूढमर्थम् (विदयानि)
 ज्ञातव्यानि कर्माणि (साधन्) साधयन् (वृषा) सुखानां वर्षकः । वसिष्ठः
 (यत्) यः (सेकम्) सिञ्चनम् । वृद्धिप्रयत्नम् (विपिपानः) पा रक्षणे-कानच ।

(अर्चात्) सत्कार करे, वह (इत्या) इस प्रकार से (सप्त) सात (कारुन्) काम करने वालों [अर्थात् त्वचा, नेत्र, कान, जिह्वा, नाक, मन और बुद्धि, अथवा दो कान, दो नथने, दो आंखें और एक मुख, इन सात] को (विषः) व्यवहार, कुशल (जीजनत्) । उपदेश करे, (चित्) जैसे (गृणन्तः) उपदेश करते हुये पुरुषों ने (अह्ना) दिन के साथ (वयुनानि) जानने योग्य कर्मों को (चक्रुः) किया है ॥ ३ ॥

भाषार्थ—जो राजा बुद्धिमानों के समान गूढ़ विचार वाला और बुद्धि करने वाला होता है, वह सब के शरीर और बुद्धि को व्यवहार कुशल करके पहिले महात्माओं के सदृश अद्भुत कर्मों को दिन के प्रकाश के समान प्रकट करता है ॥ ३ ॥

मन्त्र में (कारु) पद अष्टाविंशति वाचक है । यजुर्वेद ३४ । ५५ का वचन है, (सप्त अष्टयः प्रतिहिताः शरीरे) शरीर में सात अष्टाविंशति रक्खे हुये हैं । [सप्त अष्टयः षड्विंशत्याणि विद्यासप्तमी] सात अष्टाविंशति इन्द्रिया और सातवीं विद्या [बुद्धि] है—निरु० १२ । ३७ (कः सप्त खानि विस्ततर्द शीर्षणि । कर्णा विमो नासिके चक्षणी मुखम्) कर्ता ने [मनुष्य के] मस्तक में सात गोलक खोरे, यहाँ दो कान, दोनों नथने, दोनों आंखें और एक मुख—अथ० १० । २ । ६ ॥

स्वर्ग्यद् वेदि सुदृशीकमर्कर्महि ज्योतीं । रुचुर्यद् वस्तोः । अन्धा तमसि दुधिता विचक्षे नृभ्यश्चकार नृतमो अभिष्टौ ४
स्वः । यत् । वेदि । सु-दृशीकम् । अर्कः । महि । ज्योतिः । रुचुः । यत् । हु । वस्तोः ॥ अन्धा । तमसि । दुधिता । वि-चक्षे । नृ-भ्यः । चकार । नृ-तमः । अभिष्टौ ॥ ४ ॥

विशेषण रक्षन् (अर्चात्) सत्कुर्यात् (विषः) विषु व्यवहारे—किप् । व्यवहार-कुशलान् (इत्या) अनेन प्रकारेण (जीजनत्) लिङ्ये । लिङ् । अजीजनत् । जनयेत् (सप्त) सप्तसंख्याकान् (कारुन्) कृषाया० । उ० १ । १ । करोते—उण् । कार्यकर्तृन् सप्तअष्टीन् । अ० ४ । ११ । ६ । सप्त होतृन् । अ० ४ । २४ । ३ (अह्ना) दिवसेन (चित्) यथा (चक्रुः) कृतवन्तः (वयुनानि) अ० २ । २८ । २ । ज्ञातव्यानि कर्माणि (गृणन्तः) उपदिशन्तः ॥

भाषार्थ—(यन्) जो। (अकैः) पूजनीय विचारों से (सुदृशीकम्) उत्तम प्रकार से देखने योग्य, (महि) बड़ा (ज्योतिः) प्रकाशमय (स्वः) सुख (वेदि) जाना गया है, और (यत्) जिस [सुख] से (ह) निश्चय करके (वस्तुः) दिन [के समान] (वरुचुः) वे [विद्वान् जन] प्रकाशित हुये हैं। [उस सुख के लिये] (नृत्तमः) सब से बड़े नेता पुरुष ने (अभिष्टौ) सब प्रकार मिलाप में (नृभ्यः) नेता लोगों के निमित्त (विचक्षे) विशेष करके देखने के अर्थ (अग्धा) भारी (तमांसि) अन्धकारों को (बुधिता) नष्ट (चकार) किया है ॥ ४ ॥

भाषार्थ—जिस सुख को महात्मा लोगों ने बड़े विचारों से अनुभव करके हृदय का आवरण हटाया है, उस सुख को सुनीतिज्ञ राजा सूर्य के प्रकाश के समान विद्वानों में बढ़ाकर प्रजा पातन करे ॥ ४ ॥

ब्रुवन् हन्द्रो अमितमृजीषु१ भे आ पंमौ रोदंषी महित्वा ।
अतश्चिदस्य महिमा वि रेच्यभि यो विश्वा भुवना बभूव ॥५॥
ब्रुवन्ते । हन्द्रः । अमितम् । मृजीषो । उभे इति । आ । पंमौ ।
रोदंषी । इति । महि-त्वा ॥ अतः । चित् । अस्य । महिमा ।
वि । रेचि । अभि । यः । विश्वा । भुवना । बभूव ॥ ५ ॥

४—(स्वः) सुखम् (यत्) (वेदि) अवेदि । ज्ञातम् (सुदृशीकम्) मृष्टः कीकच्कणौ । उ० ४ । २४ । हरोः—कीकच् । सुष्ठु दर्शनीयम् (अकैः) पूजनीयविचारैः (महि) महत् (ज्योतिः) प्रकाशमयम् (वरुचुः) दीप्तियुक्ता । बभूवुः, ते विद्वांसः (यत्) येन सुखेन (ह) निश्चयेन (वस्तुः) दिनम् । दिनप्रकाशो यथा (अग्धा) अन्धानि । निविडानि (तमांसि) अन्धकारान् (बुधिता) बुद्धिर् अर्द्धे—क, हस्य धः । बुधितानि । नाशितानि (विचक्षे) चक्षिष् व्यकायां वाचि दर्शने च—क्षिप् । विशेषेण दर्शनाय (नृभ्यः) नेतृभ्यः (चकार) कृतवान् (नृत्तमः) अतिशयेन नेता (अभिष्टौ) यजेः किन् । सर्वतः संगतौ ॥

भाषार्थ—(ऋजीषी) सरल स्वभाव वाले (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेशव्यं
जाले जगदीश्वर] ने (अमितम्) बेनाप सामर्थ्य को (घवत्ते) पाया है, और
(महित्वा) अपनी महिमा से (उभे) दोनों (रोदसी) सूर्य और भूमि को (आ)
।सब प्रकार (पगौ) भर दिया है । (अतः) इस कारण से (चित्) ही (अस्य)
इस [जगदीश्वर] की (महिमा) महिमा (वि) विशेष करके (रेचि) अधिक
हुई है, (यः) जो (विश्वा) सब (भुवना) लोकों में (अभि बभूव) व्यापक
हुआ है ॥ ५ ॥

भाषार्थ—जो परमात्मा अपने अतोल बल से अनन्त संसार को
धारण कर रहा है, उसी के गुण जानकर मनुष्य अपना सामर्थ्य बढ़ावे ॥ ५ ॥

विश्वानि शुक्रो नर्याणि विद्वान्पो रिरेश्च सखिभिर्निकामैः ।
अश्मानं चिद् ये विभिदुर्वचोभिर्ब्रजं गोमन्तमुशिजो विवव्रुः ॥
विश्वानि । शुक्रः । नर्याणि । विद्वान् । अपः । रिरेश्च ।
सखि-भिः । नि-कामैः ॥ अश्मानम् । चित् । ये । विभिदुः ।
वचः-भिः । ब्रजम् । गो-मन्तम् । उशिजः । वि । वव्रुरिति
वव्रुः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(विद्वान्) विद्वान् (शक्रः) शक्ति वाले [इन्द्र मनुष्य] ने

५—(घवत्ते) बहतेर्लिङ्गार्थे, लेट् । सिव्वहुलं लेटि । पा० ३ । १ । ३४
इति सिप् । बहुलं छन्दसि । पा० २ । ४ । ७६ । इति शपःश्लुः । ढत्वकत्वष-
त्वानि । लोपस्त आत्मने पदेषु । पा० ७ । १ । ४२ । इति तलोपः । बहते, गति-
कर्मा-निघ० २ । १४ । उवाङ् । प्राप (इन्द्रः) परमैश्वर्ययुक्तो जगदीश्वरः (अमि-
तम्) अपरिमितं सामर्थ्यम् (ऋजीषी) म० १ । सरलस्वभावः (उभे) द्वे (आ)
समन्तात् (पगौ) पूरितवान् (रोदसी) सूर्यभूमी (महित्वा) महत्वेन (अतः)
अस्मात् कारणात् (चित्) एव (महिमा) (अस्य) ईश्वरस्य (वि) विशेषेण
(रेचि) अरेचि । अधिकोऽभवत् (अभि) अभीत्य । व्याप्य (यः) ईश्वरः
(विश्वा) सर्वाणि (भुवना) भुवनानि (बभूव) ॥

६—(विश्वानि) सर्वाणि (शक्रः) शक्तिमान् राजा (नर्याणि)

(निकामैः) निश्चित कामना वाले (सखिभिः) मित्रों के साथ (विश्वानि) सब (नर्याणि) नेताओं के हितकारी (अपः) कर्मों को (रिरिच) फैलाया है । (ये) जिन [बुद्धिमानों] ने (वचोभिः) अपने वचनों से (अश्मानम्) व्यापक विघ्न [अथवा मेघ के समान अन्धकार फैलाने वाले शत्रु] को (चित्) निश्चय कर के (बिभिदुः) तोड़ा फोड़ा है, (उशिजः) उन बुद्धिमानों ने (गोमन्तम्) वेदवाणी वाले (व्रजम्) मार्ग को (वि ववुः) खोल दिया है ॥ ६ ॥

भावार्थ—राजा को योग्य है कि सत्यवादी पराक्रमी मित्रों के साथ अज्ञान का नाश कर के विद्या की वृद्धि से प्रजा पालन करे ॥ ६ ॥

अपी वृत्रं वृत्रिवांसं पराहन् प्रावत् ते वज्रं पृथिवी सचेताः ।
अपांसि समुद्रियाण्यैनोः पतिर्भवं श्वसा शूर धृष्णो ॥ ७ ॥
अपः । वृत्रम् । वृत्रि-वांसम् । परा । अहन् । प्र । आवत् ।
ते । वज्रम् । पृथिवी । स-चेताः ॥ प्र । अपांसि । समुद्रि-
याणि । ऐ-नोः । पतिः । भवन् । श्वसा । शूर । धृष्णो इति०

भावार्थ—(धृष्णो) हे साहसी (शूर) शूर पुरुष ! (श्वसा) बल के साथ (पतिः) स्वामी (भवन्) होते हुये तू ने (अपः) कर्म के (वृत्रिवांसम्) रोकने वाले (वृत्रम्) अन्धकार को (परा अहन्) मार फेंका है, (सचेताः)

नेतृभ्यो हितानि (विद्वान्) (अपः) बहुवचनस्यैकवचनम् ॥ अपांसि कर्माणि (रिरिच) रिचिर् विरेचने । व्यक्तीकृतवान् (सखिभिः) मित्रैः (निकामैः) निश्चितकामनायुक्तैः (अश्मानम्) व्यापकं विघ्नम् । मेघमिवान्धकारकरं शत्रुम् (चित्) निश्चयेन (ये) मेधाविनः (बिभिदुः) द्विभक्तिं कृतवन्तः (वचोभिः) वचनैः (व्रजम्) मार्गम् (गोमन्तम्) वेदवाणीयुक्तम् (उशिजः) शुभगुणान् कामयमाना मेधाविनः (वि ववुः) विवृतं व्यक्तं कृतवन्तः ॥

७—(अपः) कर्म-निघ० २।१ (वृत्रम्) अन्धकारम् (वृत्रिवांसम्) धृष्टेतेः—कष्ट । आवरकम् (परा) दूरे (अहन्) मध्यमपुरुषस्य प्रथमः । अहः । नाशितवानसि (प्र) प्रकर्षेण (आवत्) अव रक्षणादानादिषु—लङ् । गृहीतवती (ते) तव (वज्रम्) दण्डम् । शासनम् (पृथिवी) (सचेतः)

सञ्ज्ञेत (पृथिवी) भूमि ने (ते) तेरे (वज्रम्) वज्र [शासन] को (प्र) अच्छे प्रकार (आवत्) माना है, और तू ने (समुद्रियाणि) समुद्र के योग्य (अर्णांसि) बहते हुये जलों को (प्र) आगे को (ऐनोः) चलाया है ॥ ७ ॥

भाषार्थ—पुरुषार्थी राजा कर्म प्रधान होकर प्रजा को शासन में रखे और खेती आदि सीखने के लिये नदी नालों को पहाड़ों से समुद्र तक पहुंचावे ॥ ७ ॥

अपो यदद्रि पुरुहूत ददराविभुवत् सुरमा पुर्व्यं ते । स न
नेता वाजमा दर्षि भूरि गोत्रा रुजन्नङ्गिरोभिर्गुणानः ॥ ८ ॥

अपः । यत् । अद्रिम् । पुरु-हुत् । ददः । आविः । भुवत् ।
सुरमा । पुर्व्यम् । ते ॥ सः । नः । नेता । वाजम् । आ ।
दर्षि । भूरिम् । गोत्रा । रुजन् । अङ्गिरः-भिः । गुणानः ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(पुरुहूत) हे बहुतों से बुलाये गये [राजन् !] (यत्) जब तू (अपः) जलों को (अद्रिम्) पहाड़ से (ददः) तोड़े, [तब] (ते) तेरी (सुरमा) चलने योग्य सरल नीति (पुर्व्यम्) सनातन व्यवहार को (आविः भुवत्) प्रकट करे । (सः) सो तू (नः) हमारा (नेता) नेता होकर, (गोत्रा) पहाड़ों को [मार्ग के लिये] (रुजन्) तोड़ता हुआ और

चेतनावती (प्र) प्रकर्षण (अर्णांसि) गतिमन्ति जलानि (समुद्रियाणि) समुद्रार्धाणि (ऐनोः) इण् गतौ, अन्तर्गतयर्थः—लङ्, आडागमो वृद्धिश्च, क्षान्वत्तः श्रुः । अममयः । प्रेरितवानसि (पतिः) स्वामी (भवन्) सन् (शवसा) बलेन (शूर) वीर (धृष्णो) दृढ़ात्मन् ॥

—(अपः) जलानि (यत्) यदा (अद्रिम्) अद्रिसकाशात् पर्वतात् (पुरुहूत) हे बहुभिराहूत (ददः) दृ विदारणे—लुङ् लिङर्थे । विदारयेः (आविः) प्राकट्ये (भुवत्) अन्तर्गतयर्थः । भावयेत् । कुर्यात् (सुरमा) अ० ६ । ४ । १३ । सृ गतौ—अमप्रत्ययः, टाप् । सुरमा पदनाम—निघ० ५ । ५ । सरणीया । प्राप्तव्या सरला नीतिः (पुर्व्यम्) पुराणं व्यवहारम् (ते) तव (सः) स त्वम् (नः) अस्माकम् (नेता) नायकः (वाजम्) बलम् (आ दर्षि)

सू० ७८ [६६६]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,३५७)

(अङ्गिरोमिः) विद्वानों के साथ (गृणानः) उपदेश करता हुआ (भूरिम्) बहुत (वाजम्) पराक्रम को (आदर्षि) आदर करे ॥ ८ ॥

भाषार्थ—जब राजा उत्तम नीति से पहाड़ों से नदी नाले निकाल कर प्रजा को खेती शिल्प आदि व्यवहारों से प्रसन्न रखता है, वह विद्वानों के साथ आने जाने के लिये मार्गों को खोल कर आदर के साथ सामर्थ्य बढ़ाता है ॥ ८ ॥

सूक्तम् ७८ ॥

१-३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥

राजप्रजावर्तनोपदेशः—राजा और प्रजा के वर्ताव का उपदेश ॥

तद् वीं गाय सुते सचा पुरुहुताय सत्त्वेने । शं यद् गवे न
शाकिने ॥ १ ॥

तत् । वः । गाय । सुते । सचा । पुरु-हुताय । सत्त्वेने ॥ शम् ।
यत् । गवे । न । शाकिने ॥ १ ॥

भाषार्थ—[हे विद्वानों !] (वः) अरने लिये (सुते) उत्पन्न संसार के बीच (सचा) नित्य मिश्राप के साथ (पुरुहुताय) बहुतों से बुलाये गये, (शाकिने) शक्तिमान् (सत्त्वेने) वीर राजा के लिये (तत्) उस कर्म को (गाय) तुम गाओ, (यत्) जो (न) अब (गवे) भूमि के लिये (शम्) सुखदायक [होवे] ॥ १ ॥

भाषार्थ—विद्वान् लोग पुरुषार्थी राजा का उत्साह सर्वहितकारी काम करने के लिये बढ़ाते रहें ॥ १ ॥

अ० २० । ५२ । ३ । लोट्यं लट् । आद्रियस्व (भूरिम्) प्रभूतम् (गोत्रा) गोत्रान् । शीलान् (रजन्) भञ्जन् (अङ्गिरोमिः) विद्वद्भिः (गृणानः) उपदिशन् ॥

१—(तत्) प्रसिद्धं कर्म (वः) युष्मभ्यम् (गाय) गायत यूयम् (सुते) उत्पन्ने जगति (सचा) नित्यसम्बन्धेन (पुरुहुताय) बहुविधाहृताय (सत्त्वेने) अ० ५ । २० । ८ । वीराय राज्ञे (शम्) सुखप्रदम् (यत्) कर्म (गवे) भूमौ (न) सम्प्रति (शाकिने) शक्तिमते ॥

(४, २५८)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ७८ [६६६]

यह तृच ऋग्वेद में है—६। ४५। २२—२४ सामवेद—३० ८। २। तृच
४। मन्त्र १ साम० पू० २। ३। १॥

न घ्रा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमंतः । यत् सीमुप
अवद् गिरः ॥ २ ॥

न । घ्रा । वसुः । नि । यमते । दानम् । वाजस्य । गो-मंतः ॥
यत् । सीम् । उप । अवत् । गिरः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(वसुः) बसाने वाला राजा (गोमंतः) उत्तम विद्या से युक्त
(वाजस्य) बल के (दानम्) दान को (न घ्रा) कभी नहीं (नि यमते) रोके,
(यत्) जब कि वह (गिरः) हमारी वाणियों को (सीम्) सब प्रकार (उप
अवत्) सुन लेवे ॥ २ ॥

भावार्थ—राजा प्रजा के क्लेशों को ध्यान में रखकर उत्तम विद्या
देकर उन का बल बढ़ावे ॥ २ ॥

कुवित्सस्य प्र हि ब्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत् । शुचीभिरपं
नो वरत् ॥ ३ ॥

कुवित्सस्य । प्र । हि । ब्रजम् । गो-मन्तम् । दस्यु-हा ।
गमत् ॥ शुचीभिः । अपः । नः । वरत् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(दस्युहा) डाकुओं का मारने वाला राजा (कुवित्सस्य)
बहुत दानी पुरुष के (हि) ही (गोमन्तम्) उत्तम विद्याओं से युक्त (ब्रजम्)

२—(न) निषेधे (घ्रा) एव (वसुः) वासिनिता (नि) नितराम् (यमते)
बमु उपरमे । उपरतं निरुद्धं कुर्यात् (दानम्) (वाजस्य) बलस्य (गोमंतः)
प्रशस्तिविद्यायुक्तस्य (यत्) यदा (सीम्) सर्वतः (उप) समीपे (अवत्)
शृणुयात् (गिरः) वाणीः ॥

३—(कुवित्सस्य) कुवित् बहुनाम्—निघ० २। १, षण्णु दाने—उप्रत्ययः ।
बहुदानशीलस्य (प्र) प्रकर्षेण (हि) एव (ब्रजम्) मार्गम् (गोमन्तम्)

मार्ग पर (प्र) अच्छे प्रकार (गमत्) चले और (शचीभिः) बुद्धियों वा कर्मों के साथ (नः) हम को (अप) आनन्द से (वरत्) स्वीकार करे ॥ ३ ॥

भावार्थ—राजा दानी विद्वानों को नीति को मानकर श्रेष्ठों की सदा रक्षा करे ॥ ३ ॥

सूक्तम् ७८ ॥

१—२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ पथ्या बृहती; २ खराडार्षी बृहती ॥

राजकर्तव्योपदेशः—राजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

इन्द्रं क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा । शिक्षां चो
अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥ १ ॥

इन्द्र । क्रतुम् । नः । आ । भर । पिता । पुत्रेभ्यः । यथा ॥
शिक्षा । नः । अस्मिन् । पुरु-हुत । यामनि । जीवाः ।
ज्योतिः । अशीमहि ॥ १ ॥

भावार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [परम पेश्वर्य वाले राजन्] तू (नः) हमारे लिये (क्रतुम्) बुद्धि (आ भर) भर दे, (यथा) जैसे (पिता) पिता (पुत्रेभ्यः) पुत्रों [सन्तानों] के लिये । (पुरुहूत) हे बहुत प्रकार बुलाये गये [राजन् !] (अस्मिन्) इस (यामनि) समय वा मार्ग में (नः) हमें (शिक्षा) शिक्षा दे, [जिस से] (जीवाः) हम जीव लोग (ज्योतिः) प्रकाश को (अशीमहि) पावें ॥ १ ॥

भावार्थ—राजा उत्तम उत्तम विद्यालय, शिल्पालय आदि जोलकर प्रजा का हित करे जैसे पिता सन्तानों का हित करता है, जिस से लोग अज्ञानके अन्धकार से छुट कर ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त हों ॥ १ ॥

मन्त्र १ आ चुका है—अ० १८ । ३ । ६७ ॥

प्रशस्तविद्यामिर्युक्तम् (वस्युहा) वस्युनां दुष्टचोराणां नाशकः (गमत्) गच्छेत् (शचीभिः) प्रज्ञाभिः कर्मभिर्वा (अप) आनन्दे (नः) अस्मान् (वरत्) वृणुयात् । स्वीकुर्यात् ॥

१—अयं मन्त्रो व्याख्यातः—अ० १८ । ३ । ६७ ॥

मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्ये^१ माशिवासो अवं क्रमुः ।

त्वया वयं प्रवतुः शश्वतीरपोऽति शूर तरामसि ॥ २ ॥

मा । नुः । अज्ञाताः । वृजनाः । दुः-आध्यः । मा । अशि-
वासः । अवं । क्रमुः ॥ त्वया । वयम् । प्र-वतः । शश्वतीः ।
अपः । अति । शूर । तरामसि ॥ २ ॥

भाषार्थ—(नः) हम को (मा) न तो (अज्ञाताः) अनजाने हुये
(वृजनाः) पापी, (दुराध्यः) दुष्ट बुद्धि वाले, और (मा) न (अशिवासः)
अकल्याणकारी लोग (अवं क्रमुः) उल्लंघन करें । (शूर) हे शूर (त्वया)
तेरे साथ (वयम्) हम (प्रवतः) नीचे देशों [खाई, सुरङ्ग आदि] और
(शश्वतीः) बढ़ते हुये (अपः) जलों को (अति) लांघ कर (तरामसि) पार
हो जावें ॥ २ ॥

भाषार्थ—राजा ऐसा प्रबन्धे करे कि गुप्त दुराचारी लोग प्रजा को न
सतावें और नौका, यान, विमान आदि से अपने लोग कठिन मार्गों को सुख से
पार करें ॥ २ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—७ । ३२ । २७; सामवेद—४० ६ । ३ । ६ ॥

सूक्तम् ८० ॥

१—२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ विराट् पथ्या बृहती; २ ब्राह्मी गायत्री छन्दः ॥

राजकर्तव्योपदेशः—राजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

२—(मा) निषेधे (नः) अस्मान् (अज्ञाताः) अविदिताः । गुप्ताः
(वृजनाः) पापिनः (दुराध्यः) दुर्+आङ्+ध्यै चिन्तायाम्—किप् । दुरा-
ध्यः । दुष्टमिप्रायाः (मा) निषेधे (अशिवासः) अकल्याणकराः (अवं क्रमुः)
अवक्रम्यन्तु । उल्लङ्घयन्तु (त्वया) (वयम्) (प्रवतः) निम्नान् देशान्
(शश्वतीः) वर्तमाने पृथ्द्वृहन्महज्जगच्छतुवच्च । ३० २ । ८४ । दुष्टो शिव
गतिवृक्षयोः—अति, अभ्यासवकारलोपे इकारस्य अकोरः । वर्धमानाः ।
बढ़ीः—निघ० ३ । १ (अपः) जलानि (अति) अतीत्य (शूर) निर्भय (तरामसि)
उल्लङ्घयेमहि ॥

इन्द्र ज्येष्ठं न आ भरँ ओजिष्ठं पपुरि अवः ।

येनेमे चित्र वज्रहस्त रोदसी ओमे सुशिप्र माः ॥ १ ॥

इन्द्र । ज्येष्ठम् । नः । आ । भर । ओजिष्ठम् । पपुरि ।

अवः ॥ येन । इमे इति । चित्र । वज्र-हस्त । रोदसी इति ।

आ । उमे इति । सु-शिप्र । माः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [वड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (नः) हमारे लिये (ज्येष्ठम्) अति श्रेष्ठ, (ओजिष्ठम्) अत्यन्त बल देने वाला, (पपुरि) पालन करने वाला (अवः) यश (आ) सब ओर से (भर) धारण कर (येन) जिस [यश] से, (चित्र) हे अद्भुत स्वभाव वाले, (वज्रहस्त) हे वज्र हाथ में रखने वाले ! (सुशिप्र) हे दृढ़ जायड़ों वाले ! (इमे) इन (उमे) दोनों (रोदसी) अन्तरिक्ष और भूमि को (आ माः) तू ने भर दिया है ॥ १ ॥

भावार्थ—दृढ़ स्वभाव और दृढ़ शरीर वाला राजा आकाश और भूमि पर चलने के लिये उपाय करके यशस्वी होवे ॥ १ ॥

मन्त्र १, २ ऋग्वेद में हैं—६ । ४६ । ५, ६, मन्त्र १ सामवेद—पृ० ३ । १० । १ ॥

त्वामुग्रमवसे चर्षणीसहं राजन् देवेषु हूमहे । विश्वा सु नो
विधुरा पिबुना वसोऽमित्रान् सुषहान् कृधि ॥ २ ॥

त्वाम् । उग्रम् । अवसे । चर्ष-णि-सहम् । राजन् । देवेषु ।

हूमहे ॥ विश्वा । सु । नः । विधुरा । पिबुना । वसो इति ।

१—(इन्द्र) परमैश्वर्यवान् राजन् (ज्येष्ठम्) अतिशयेन प्रशस्तम् (नः) अस्मभ्यम् (आ) समन्तात् (भर) धर (ओजिष्ठम्) अतिशयेन बलप्रदम् (पपुरि) आदगमहन० । पा० ३ । २ । १७१ । पृ० पालनपूरणयोः—किम् । उदो-ष्ठपूर्वस्य । पा० ७ । १ । १०२ । इत्युत्वम् । पालकम् । पोषकम् (अवः) यशः (येन) यशसा (इमे) दृश्यमाने (चित्र) अद्भुतस्वभाव (वज्रहस्त) शस्त्रास्त्रपाणे (रोदसी) अन्तरिक्षभूमी (आ) (उमे) (सुशिप्र) दृढ़हानो (माः) पूरितवानसि ॥

अमित्रान् । सु-सहान् । कृधि ॥ २ ॥

भाष्यार्थ—(राजन्) हे राजन् ! (देवेषु) विद्वानों में (अवसे) रक्षा के लिये (उग्रम्) तेजस्वी, (चर्षणिसहम्) मनुष्यों के वश में रखने वाले (त्वाम्) तुझ को (ह्रमहे) हम पुकारते हैं । (वसो) हे बसाने वाले ! (नः) हमारे (विश्वा) सब (विश्वरा) क्लेशों को (पिबन्ना) खण्डन योग्य और (अमित्रान्) वैरियों को (सुसहान्) सहज में हारने योग्य (सु) सर्वथा (कृधि) कर ॥ २ ॥

भावार्थ—राजा सदा ऐसा उपाय करे कि जिससे प्रजा के सब बाहिरी और भीतरी क्लेश दूर हों ॥ २ ॥

सूक्तम् ८१ ॥

१—२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ विराडार्षी बृहती; २ निचृत् सतः पङ्क्तिः ॥

परमात्मगुणोपदेशः—परमात्मा के गुणों का उपदेश ॥

यद् द्यावं इन्द्र ते श्रुतं श्रुतं भूमीरुत स्युः ।

न त्वा वज्रिन्सुहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥ १ ॥

यत् । द्यावं । इन्द्र । ते । श्रुतम् । भूमीः । उत । स्युरिति स्युः ॥ न । त्वा । वज्रिन् । सुहस्रम् । सूर्याः । अनु । न । जातम् । अष्ट । रोदसी इति ॥ १ ॥

२—(त्वाम्) (उग्रम्) तेजस्विनम् (अवसे) रक्षणाय (चर्षणिसहम्) मनुष्याणां सोढारम् । अभिमवितारं वशीकर्तारम् (राजन्) ऐश्वर्यवान् (देवेषु) विद्वत्सु (ह्रमहे) आह्वयामः (विश्वा) सर्वाणि (सु) सर्वथा (नः) अस्माकम् (विश्वरा) अ० ७ । ६५ । १ । व्यथ ताडने—उरच्, कित् । व्यथनानि । क्लेशान् (पिबन्ना) कृपवृजिमन्दिनिधाजः क्युः । उ० २ । ८१ । अपि + दाप् लवने दो अवलण्डने वा क्यु । आतो लोप इटि च । पा० ६ । ४ । ६४ । आकारलोपः, बकारोपजनः । अपिबन्नानि । अबखण्डनीयानि (वसो) हे वासयितः (अमित्रान्) यन्त्र (सुसहान्) सुखेन अभिमवनीयान् (कृधि) कुरु ॥

सू० ८१ [६६८] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥ (४, २६३)

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (यत्) जो (शतम्) सौ (द्यावः) अन्तरिक्ष [वायु लोक], (उत) और (शतम्) सौ (भूमीः) भूमि लोक (ते) तेरे [सामने] (स्युः) होवें, [नतौ वे सब] और (न) न (सहस्रम्) सहस्र (सूर्याः) सूर्य लोक और (रोदसी) दोनों अन्तरिक्ष और भूमि लोक [मिल कर] और (न) न (जातम्) उत्पन्न हुआ जगत्, (वज्रिन्) हे दण्डधारी ! [परमात्मन्] (त्वा) तुझ को (अनु) निरन्तर (अष्ट) पा सकते हैं ॥ १ ॥

भावार्थ—सब असंख्य लोक और पदार्थ अलग अलग होकर अथवा सब मिलकर परमात्मा की महिमा का पार नहीं पा सकते ॥ १ ॥

यह दोनों मन्त्र ऋग्वेद में हैं—८।७० [सायणभाष्य ५६] । ५, ६।
सामवेद—३० २। २। ११; और आगे है—अथ० २०। ६२। २०, २१। मन्त्र १
सा०—पू० २। ६। ६ ॥

कठोपनिषद् का वचन है—बदली ५ श्लोक १५ [न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः । तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति] उस पर न सूर्य चमकता है, न चन्द्रमा और तारे, न ये विजुलियां चमकती हैं, [फिर] यह अग्नि कहां, उसे ही चमकते हुये के पीछे सब चमकता है, उस की चमक से यह सब विविध प्रकार चमकता है ॥

आ पमाथ महिना वृषण्या वृषन् विश्वा शविष्ठ शवसा ।
अस्माँ अंव मघवन् गोमति ब्रुजे वज्रि चित्राभिरुतिभिः ॥२॥
आ । पमाथ । महिना । वृषण्या । वृषन् । विश्वा । शविष्ठ ।

१—(यत्) यदि (द्यावः) अन्तरिक्षलोकाः । वायुलोकाः (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (ते) तवाग्रे (शतम्) बहुसंख्याकाः (शतम्) (भूमीः) भूमयः (उत) अपि च (स्युः) अवेयुः (न) निषेधे (त्वा) त्वाम् (वज्रिन्) दण्डधारिन् । शासनकर्तः परमात्मन् (सहस्रम्) अगणिताः (सूर्याः) सूर्यलोकाः (अनु) निरन्तरम् (न) निषेधे (जातम्) उत्पन्नं जगत् (अष्ट) अष्ट आप्तौ—लुङ्, अडभावः, बहुवचनस्यैकवचनम् । आष्ट । आक्षतम् । व्याप्तवन्तः (रोदसी) अन्तरिक्षभूमी ॥

(४,२६४)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ८२ [६७०]

शवसा ॥ अस्मान् । अव । सुघ-वुन् । गो-मति । ब्रजे ।
वज्रिन् । चित्राभिः । ऊति-भिः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(वृषन्) हे शूर ! (शविष्ठ) हे अत्यन्त बली ! [परमात्मन्]
(महिना) अपने बड़े (शवसा) बल से (विश्वा) सब (वृषया) शूर के
योध्य बलों को (आ) सब ओर से (पप्राथ) तू ने भर दिया है । (मघवन्)
हे महाधनी ! (वज्रिन्) हे दण्डधारी ! [शासक परमेश्वर] (गोमति) उत्तम
विद्या वाले (ब्रजे) मार्ग में (चित्राभिः) विचित्र (ऊतिभिः) रक्षाओं से
(अस्मान्) हमें (अव) बचा ॥ २ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि परमात्मा से प्रार्थना करके संसार
के सब पदार्थों से उपकार लेकर यथावत् पालन करें ॥ २ ॥

सूक्तम् ८२ ॥

१-२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृदुपरिष्ठाद् बृहती; २ निचृदार्षी पङ्क्तिः ॥

राजप्रजाजनकर्तव्योपदेशः—राज पुरुषों और प्रजा जनों के कर्तव्य का
उपदेश ॥

यदिन्द्र यावत्तुस्त्वमेतावद्ब्रह्मीशीय । स्तोतारमिद् दिधिषेय
रदावसो न पापत्वाय रासीय ॥ १ ॥

यत् । इन्द्र । यावतः । त्वम् । एतावत् । अहम् । ईशीय ॥
स्तोतारम् । इत् । दिधिषेय । रदवसो इति रद-वसो । न ।
पाप-त्वाय । रासीय ॥ १ ॥

भाषार्थ—(रदवसो) हे धनों के खोदने वाले ! (इन्द्र) हे इन्द्र !

२—(आ) समन्तात् (पप्राथ) प्रा—लिङ् । पूरितवानसि (महिना)
महता (वृषया) अ० । ४ । ४ । ४ । वृष्णे बलवते हितानि बलानि (वृषन्) हे
शूर (विश्वा) सर्वाणि (शविष्ठ) बलिष्ठ (शवसा) बलेन (अस्मान्) (अव)
रक्ष (मघवन्) धनवन् (गोमति) प्रशस्तविद्यायुक्ते (ब्रजे) मार्गें (वज्रिन्)
दण्डधारिन् शासक (चित्राभिः) अद्भुताभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः ॥

१—(यत्) यावता धनेन (इन्द्र) परमैश्वर्यवन् राजन् (यावतः)

[बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (त्वम्) तू (वावतः) जितने धन का [स्वामी है,
[उस में से] (अहम्) मैं (पतावत्) इतने का (ईशीय) स्वामी हो जाऊँ,
(यत्) जितने से (स्तोतारम्) गुण व्याख्याता [विद्वान्] को (इत्) अवश्य
(दिधिषेय) पोषण करूँ और (पापत्वाय) पाप होने के लिये [उसको] (न)
न (रासीय) दूँ ॥ १ ॥

भावार्थ—राजा प्रजा परस्पर ऐसी प्रीति रखें कि सब लोग विद्वान्
होवें और पदार्थों के गुण जानकर धर्म से एक दूसरे का पालन करें और कभी
पाप कर्म न करें ॥ १ ॥

दोनों मन्त्र ऋग्वेद में हैं—७।३२।१८, १६।साम० ७० ६।२।६,
मन्त्र १ साम०—पू० ४।२।८ ॥

शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद्विदे । नहि
त्वदन्यन्मघवन् न आप्यं वस्यो अस्ति पिता चुन ॥ २ ॥

शिक्षेयम् । इत् । मुहु-यते । दिवे-दिवे । रायः । आ ।
कुहचिद्-विदे ॥ नहि । त्वत् । अन्यत् । मघ-वन् । नुः ।
आप्यम् । वस्यः । अस्ति । पिता । चुन ॥ २ ॥

भावार्थ—(मघवन्) हे महाधनी ! [राजन्] (महयते) सत्कार
करने वाले (कुहचिद्विदे) कहीं भी विद्यमान पुरुष के लिये (इत्) अवश्य
(रायः) धनों को (दिवेदिवे) दिन दिन (आ) सब प्रकार से (शिक्षेयम्)

यत्परिमाणस्य धनस्य (त्वम्) ईशिषे इति शेषः, तस्मात् इति च (पतावत्)
षष्ठ्या लुक् । पतावतो धनस्य (अहम्) (ईशीय) ईश्वरः स्वामी भवेयम्
(स्तोतारम्) गुणव्याख्यातारं तिङ्शंसम् (इत्) अवश्यम् (दिधिषेय) धि
धारणे-सन्, विधिलिङ् आत्मनेपदं छान्दसम् । धर्तुमिच्छेयम् । धरेयम्
(रदवसो) रद विलेखने-अच् । रदति उत्खनति घसूनि धनानि यस्तत्-
सम्बुद्धौ (न) निषेधे (पापत्वाय) पापस्य भावाय (रासीय) दद्याम् ॥

२—(शिक्षेयम्) शिक्षतिर्दानकर्मा-निघ० ३।२०।दद्याम् (इत्) अवश्यम्
(महयते) पूजयते । सत्कुर्वते (दिवेदिवे) प्रतिदिनम् (रायः) धनानि (आ)
समन्तात् (कुहचिद्विदे) विद् सत्तायाम्-क्विप् । कापि विद्यामानाय जनाय

मैं दूँ, (त्वत्) तुझ से (अन्यत्) दूसरा (नः) हमारा (आप्यम्) पाने योग्य (वस्यः) श्रेष्ठ वस्तु और (पिता) पिता (चन) भी (नहि) नहीं (अस्ति) है ॥ २ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग सब स्थानों के सुपात्रों को धन देकर विद्यावृद्धि करें और पूरे राजभक्त होकर सर्वहितकारी कर्म करते रहें ॥ २ ॥

सूक्तम् ८३ ॥

१-२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ विराडाग्नी वृद्धती; २ आर्षी पङ्क्तिः ॥

राजकर्तव्योपदेशः—राजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

इन्द्रं त्रिधातुं शरणं त्रिवरूथं स्वस्तिमत् । कुर्दियच्छ मघ-
वद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिव्युभ्यः ॥ १ ॥

इन्द्रं । त्रि-धातुं । शरणम् । त्रि-वरूथम् । स्वस्ति-मत् ॥
कुर्दिः । यच्छ । मघवत्-भ्यः । च । मह्यम् । च । यावय ।
दिव्युम् । उभ्यः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (त्रिधातु)
तीन [सोना, चांदी, लोहे] धातुओं वाला, (त्रिवरूथम्) तीन [शीत, ताप
और वर्षा ऋतुओं] में उत्तम, (शरणम्) शरण [आश्रय] के योग्य और
(स्वस्तिमत्) बहुत सुख वाला (कुर्दिः) घर (मघवद्भ्यः) धन वालों को
(च) और (मह्यम्) मुझ को [अर्थात् एक एक को] (यच्छ) दे, (च)

(नहि) (त्वत्) त्वत्तः (अन्यत्) भिन्नं वस्तु (मघवन्) धनवन् (नः)
अस्माकम् (आप्यम्) प्रापणीयम् (वस्यः) वसीयः । वसुतरम् ॥ श्रेष्ठतरम् (अस्ति)
(पिता) पालयिता (चन) अपि ॥

१—(इन्द्र) परमैश्वर्यवान् राजन् (त्रिधातु) त्रिभिः सुवर्णरजतलोह-
धातुभिर्युक्तम् (शरणम्) आश्रययोग्यम् (त्रिवरूथम्) जवृज्ज्यामूथन् । ७०
२ । ६ । वृज् वरणे—ऊथन् । त्रिषु शीततापवर्षास्तु वरणीयमुत्तमम् (स्वस्तिमत्)
बहुसुखयुक्तम् (कुर्दिः) अर्चिशुचिदुसपिष्ट दिग्धादिभ्य इतिः । २ । १०८ । कुर्दं
सन्दीपने वमने च—इति । गृहम्—निघ० ३ । ४ (यच्छ) देहि । (मघवद्भ्यः)
धनयुक्तेभ्यः (च) (मह्यम्) राजभक्ताय (च) (यावय) संयोजय (दिव्यम्)

और (एभ्यः) इन सब के लिये (दिद्युम्) प्रकाश को (यवय) संयुक्त कर ॥ १ ॥

भावार्थ—राजा का कर्तव्य है कि मनुष्यों के निवास स्थान और सभा स्थान आदि ऐसे उत्तम बनवावे कि जिन में सब को मिलकर और प्रत्येक पुरुष को आवश्यक पदार्थ सुरक्षित रहने से सब ऋतुओं में सुख मिले और स्वास्थ्य बढ़ने से धन की वृद्धि होवे ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—६। ४६। ४, १०। मन्त्र १ सामवेद—पू० ३। ८। ४ ॥

ये गव्यता मनसा शत्रुमादभुरभिप्रघ्नन्ति धृष्णुया ।

अध स्म नो मघवन्निन्द्र गिर्वणस्तनुपा अन्तमो भव ॥ २ ॥

ये । गव्यता । मनसा । शत्रुम् । आ-दभुः । अभि-प्रघ्नन्ति ।

धृष्णु-या ॥ अध । स्म । नः । मघ-वन् । इन्द्र । गिर्व-णः ।

तनु-पाः । अन्तमः । भव ॥ २ ॥

भाषार्थ—(ये) जो (धृष्णुया) निर्भय मनुष्य (गव्यता) भूमि चाहने वाले (मनसा) मन से (शत्रुम्) वैरी को (अभिप्रघ्नन्ति) घेर लेते हैं और (आदभुः) मार डालते हैं, (मघवन्) हे महाधनी ! (गिर्वणः) हे स्तुतियों से सेवनीय (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (अध स्म) अवश्य ही (नः) हमारे (तनुपाः) शरीरों का रक्षक और (अन्तमः) अत्यन्त समीप वाला (भव) हो ॥ २ ॥

भावार्थ—जो शूर वीर पुरुष राज्य की वृद्धि चाहने वाले शत्रु नाशक होवें, राजा उनके विश्वास से प्रजा पालन करे ॥ २ ॥

अ० १ । २ । ३ । द्युत दीप्तौ—किप्, तलोपः । प्रकाशम् (एभ्यः) सर्वेभ्यः ॥

२—(ये) जनाः (गव्यता) गो—गव्यम्, शत्रु । गां भूमिमिच्छतां (मनसा) चित्तेन (शत्रुम्) (आदभुः) लडर्थे लिट् । आदभुः । समन्ताद् धिंसन्ति (अभिप्रघ्नन्ति) हन हिंसागत्योः । सर्वतः प्रगच्छन्ति । प्राप्नुवन्ति (धृष्णुया) सुपां सुलुक्० । पा० ७। १। ३६ । विभक्त्याच् । धृष्णवः । प्रगल्भाः (अध) अवश्यम् (स्म) एव (नः) अस्माकम् (मघवन्) हे बहुधनयुक्त (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् राजन् (गिर्वणः) हे स्तुतिभिः सेवनीय (तनुपाः) शरीराणां रक्षकः (अन्तमः) अतिक्रान्तमः । अतिसमीपस्थः (भव) ॥

(४, २६८)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ८४ [६७२]

सूक्तम् ८४ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृद् गायत्री; २, ३ गायत्री छन्दः ॥

सभापतिकर्तव्योपदेशः—सभापति के कर्तव्य का उपदेश ॥

इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः । अरवीभिस्तना
पुतासः ॥ १ ॥इन्द्र । आ । याहि । चित्रभानो इति चित्र-भानो । सुताः ।
इमे । त्वा-यवः ॥ अरवीभिः । तना । पुतासः ॥ १ ॥भाषार्थ—(चित्रभानो) हे विचित्र प्रकाश वाले (इन्द्र) इन्द्र !
[बड़े ऐश्वर्य वाले सभापति] (आ याहि) तू आ, (इमे) यह (त्वायवः) तुझ
को मिलने वाले [वा तुझे चाहने वाले], (अरवीभिः) सूक्ष्म क्रियाओं से
(पुतासः) शोधे हुये, (तना) विस्तृत धन वाले (सुताः) सिद्ध किये हुये
तत्त्व रस हैं ॥ १ ॥भावार्थ—मनुष्य सभापति की आज्ञा में रहकर विज्ञान युक्त क्रियाओं
से उत्तम उत्तम पदार्थ सिद्ध करें ॥ १ ॥यह तुव ऋग्वेद—१ । ३ । ४—६ । यजुर्वेद २० । ८७—८८ । सामवेद—
३० ४ । २ । तुव ५ ॥इन्द्रा याहि धियेषितो विमंजुतः सुतावतः । उप ब्रह्माणि
वाघतः ॥ २ ॥० धिया । इषितः । विमं-जुतः । सुत-वतः ॥ उप । ब्रह्माणि ।
वाघतः ॥ २ ॥१—(इन्द्र) परमैश्वर्यवान् सभापते (आ याहि) आगच्छ (चित्रभानो)
अद्भुतदीप्ते (सुताः) निष्पादिततत्त्वरसाः (इमे) दृश्यमानाः (त्वायवः)
अ० २० । १८ । ४ । त्वां प्राप्ताः । त्वां कामयमानाः (अरवीभिः) अणुशब्दः
सूक्ष्मवाचकः । वेतो गुणवचनात् । पा० ४ । १ । ४४ । अनेन जीवि प्राप्ते ह्यन्वसो
जीन्, नित्वादाद्युदात्तः । सूक्ष्माभिः क्रियाभिः (तना) धननाम—निघ०
२ । १० । विमकोराकारः । विस्तृतधनयुक्तः (पुतासः) शोधिताः ॥

सू० ८४ [६७२] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥ (४,२६८)

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले सभापति] (धिया) कर्म से (इषितः) बढ़ाया गया, और (विप्रजुतः) बुद्धिमानों से वेगवान् किया गया तू (सुतवतः) सिद्ध किये हुये तत्त्व रस वाले (वाघतः) बुद्धिमान् पुरुषों को और (ब्रह्माणि) धनों को (उप=उपेत्य) प्राप्त होकर (आ याहि) आ ॥ २ ॥

भावार्थ—मनुष्य को चाहिये कि अपने उत्तम कर्म और विद्वानों की शिक्षा से विज्ञानी बुद्धिमानों के साथ धन की वृद्धि करे ॥ २ ॥

इन्द्रा याहि तूतुजान् उप ब्रह्माणि हरिवः । सुते दधिष्व नृचनः ॥ ३ ॥

इन्द्र । आ । याहि । तूतुजानः । उप । ब्रह्माणि । हरि-वः ॥ सुते । दधिष्व । नः । चनः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(हरिवः) हे उत्तम मनुष्यों वाले (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (तूतुजानः) शीघ्रता करता हुआ तू (ब्रह्माणि) धनों को (उप) प्राप्त होकर (आ याहि) आ । और (सुते) सिद्ध किये हुये तत्त्व रस में (नः) हमारे लिये (चनः) अन्न को (दधिष्व) धारण कर ॥ ३ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य उत्तम विद्वानों के साथ रहकर धर्म से धन

२—(इन्द्र) (आ याहि) (धिया) कर्मणा—निघ० २।१ (इषितः) प्रेरितः (विप्रजुतः) जू इति सौत्रो धातुः गतौ—क० । मेधाविभिः प्रेरिते वेगयुक्तः कृतः (सुतवतः) निष्पादिततत्त्वरसयुक्तान् (उप), उपेत्य (ब्रह्माणि) धनानि (वाघतः) आ० २० । १९ । २ । मेधाविनः पुरुषान्—निघ० ३ । १५ ॥

३—(इन्द्र) (आ याहि) (तूतुजानः) अ० २० । ३५ । १२ । त्वर-माणः (उप) उपेत्य (ब्रह्माणि) धनानि (हरिवः) हे प्रशस्तमनुष्ययुक्त (सुते) निष्पादिते तत्त्वरसे (दधिष्व) अ० २० । ६ । ५ । धत्स्व । धारय (नः) अस्मान् (चनः) चायतेरन्ने ह्रस्वश्च । उ० ४ । २०० । चायृ पूजादौ—असुन् चकाराद् नुडागमो यलोपो ह्रस्वश्च । चन इत्यञ्जनाम निरु० ६ । १६ । अक्षम्—निघ० ४ । ३ ॥

(४,२७०)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ८५ [६७३]

प्राप्त करते हैं, वे ही दूसरों को ज्ञानी और धनी बनाकर यश पाते हैं ॥ ३ ॥

सूक्तम् ८५ ॥

१-४ ॥ इन्द्रो देवता । १ उपरिष्ठाद् बृहती; २ निचृदार्षी पङ्क्तिः; ३ विराट् पथ्या बृहती; ४ स्वराडार्षी बृहती ॥

परमेश्वरगुणोपदेशः—परमेश्वर के गुणों का उद्देशः ॥

मा चिदुन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत ।

इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुःकथा च शंसत ॥ १ ॥

मा । चित् । अन्यत् । वि । शंसत । सखायः । मा । रिषण्यत् ॥

इन्द्रम् । इत् । स्तोत । वृषणम् । सचा । सुते । मुहुः ।

उक्था । च । शंसत ॥ १ ॥

अवक्रुक्षिणं वृषभं यथाजुरं गां न चर्षणीसहम् ।

विद्वेषणं सुवननोभयंकरं मंहिष्ठमुभयाविनम् ॥ २ ॥

अव-क्रुक्षिणम् । वृषभम् । यथा । अजुरम् । गाम् । न ।

चर्षणि-सहम् ॥ वि-द्वेषणम् । सुम्-वनना । उभयम्-

करम् । मंहिष्ठम् । उभयाविनम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(सखायः) हे मित्रो ! (अन्यत् चित्) और कुछ भी (मा वि शंसत) मत बोलो, और (मा रिषण्यत) मत दुखी हो (च) और (सुते) सिद्ध किये हुये तत्त्व रस के बीच (मुहुः) बार बार (उक्था) कहने योग्य वचनों को (शंसत) कहे, [अर्थात्] (वृषणम्) महाबलवान्, (वृषभं यथा) जल बरसाने वाले मेघ के समान (अवक्रुक्षिणम्) कष्ट हटाने वाले, और (गाम् न) [रसों को चलाते वाले और आकाश में चलने वाले] सूर्य के समान

१—(मा) निषेधे (चित्) अपि (अन्यत्) मित्रं वस्तु (वि) विविधम् (शंसत) उच्चारयत (सखायः) हे सुहृदः (मा) निषेधे (रिषण्यत) रिषण हिंसायां दैन्ये च—यक् कण्ठ्वादेराकृतिगणत्वात् । हिंसिता दुःखिता भवत (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं परमात्मानम् (इत्) एव (स्तोत) स्तुत यूपम्

(अञ्जुरम्) सब के चलाने वाले, (चर्षणिसहम्) मनुष्यों के वश में रखने वाले, (विद्वेषणम्) निग्रह [ताड़ना] और (संवनना) अनुग्रह [पोषण], (उभयंकरम्) दोनों के करने वाले, (उभयाविनम्) दोनों [स्थावर और जङ्गम] के रक्षक, (मंहिष्ठम्) अत्यन्त दानी (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] की (इत्) ही (सचा) मिला करके (स्तोत) स्तुति करो ॥ १, २ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि परमात्मा को छोड़कर किसी दूसरे को बड़ा जानकर अपनी अवनति न करें, सदा उसी ही विपत्ति नाशक, सर्वपोषक के गुणों को ग्रहण करके आनन्द पावें ॥ १, २ ॥

भगवान् यास्क मुनि ने कहा है—गौ सूर्य है वह रस्सों को चलाता है, अन्तरिक्ष में चलता है—निरुक्त २।१४।

यह सूक्त ऋग्विद में है—८।१।१—४। मन्त्र १, २ सामवेद—७० ६। १।५, मन्त्र १—पू० ३।५।१० ॥

यच्चिद्धि त्वा जना इमे नाना हवन्त ऊतये ।

अस्माकं ब्रह्मेदमिन्द्र भूतु तेऽहु विरवा च वर्धनम् ॥ ३ ॥

(वृषणम्) बलवन्तम् (सचा) समवायेन संधीभूय (सुते) निष्पादिते तस्व-
रसे (मुहुः) पुनःपुनः (उक्था) कथनीयानि वचनीयानि (च) (शंसत) कथयत ॥

२—(अवक्रक्षिणम्) अव रक्षणहिंसादिषु—अच् । वृत्तवदिवचि० । ७०
३ । ६२ । कृष । विलेखने—सप्रप्रत्ययः । अनुदात्तस्य चर्तुपधस्यान्यतरस्याम् ।
पा० ६ । १ । ५४ । अमागमः । अत इनिठनौ । पा० ५ । २ । ११५ अव + कृञ—
इति । अवस्य दुःखस्य विलेखकं बहिष्कर्तारम् (वृषभम्) वृषभो वर्षिताऽपाम्—
निरु० ४ । ८ । जलवर्षकं मेघम् (यथा) (अञ्जुरम्) मन्दिवाशिमयि० । ७०१ ।
३८ । अज गतिक्षेपणयोः—उरच् । सर्वप्रेरकम् (गाम्) गमेः—डो प्रत्ययः ।
गौरादित्यो भवति गमयति रसात्, गच्छत्यन्तरिक्षे—निरु० २ । १४ । आदि-
त्यम् (न) यथा (चर्षणिसहम्) मनुष्याणां । पक्षीकर्तारम् (विद्वेषणम्) वैरि-
भावम् । निग्रहम् । दण्डदानम् (संवनना) संवननम् । सम्यक् सेवनम् ।
अनुग्रहम् । पोषणम् (उभयंकरम्) उभयोर्विद्वेषणसंवननयोः कर्तारम् (मंहि-
ष्ठम्) दातृत्वम् (उभयाविनम्) अ० ५ । २५ । ६ । उभय + अव रक्षणे—इति ।
उभयोः स्थावरजङ्गमयो रक्षकम् ॥

यत् । चित् । हि । त्वा । जनाः । इमे । नाना । हवन्ते ।
 ऊतये ॥ अस्माकम् । ब्रह्म । इदम् । इन्द्र । भूतु । ते ।
 अहा । विश्वा । च । वर्धनम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(यत्) क्योंकि (चित्) निश्चय करके (हि) ही (त्वा)
 तुझ को (इमे) यह (जनाः) मनुष्य (नाना) नाना प्रकार से (ऊतये) रक्षा के
 लिये (हवन्ते) पुकारते हैं—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्यवाले जगदीश्वर]
 (इदम्) अब (अस्माकम्) हमारे (ब्रह्म) धन (भूतु) होवे (ते) तेरी
 (विश्वा अहा) सब दिनों (च) ही (वर्धनम्) बढ़ती है ॥ ३ ॥

भाषार्थ—सब प्राणी परमात्मा की प्रार्थना करके अपनी रक्षा करते हैं,
 हम भी निरन्तर भक्ति करके उसके अनन्त कोश से पुरुषार्थ पूर्वक धन आदि
 प्राप्त करके अपनी वृद्धि करें ॥ ३ ॥

वि तर्तूर्यन्ते मघवन् विपश्चितोऽर्यो विपो जनानाम् ।

उप क्रमस्व पुरुषमा भर् वाजं नेदिष्ठमुतये ॥ ४ ॥

वि । तर्तूर्यन्ते । मघ-वन् । विपः-चितः । अर्यः । विपः ।
 जनानाम् ॥ उप । क्रमस्व । पुरु-रूपम् । आ । भर् ।
 वाजम् । नेदिष्ठम् । ऊतये ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(मघवन्) हे महाधनी ! [परमेश्वर] (विपश्चितः)
 बड़े ज्ञानी (विपः) प्रेरक बुद्धिमान् लोग (जनानाम्) मनुष्यों के बीच (अर्यः =

३—(यत्) यतः (चित्) निश्चयेन (हि) (त्वा) (जनाः) मनुष्याः
 (इमे) वर्तमानाः (नाना) विविधम् (हवन्ते) आह्वयन्ति (ऊतये) रक्षणाय
 (अस्माकम्) (ब्रह्म) धनम् (इदम्) इदानीम् (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् जगदी-
 श्वर (भूतु) भवतु (ते) तव (अहा) दिनानि (विश्वा) सर्वाणि (च)
 अवधारणे (वर्धनम्) वृद्धिः ॥

४—(वि) विविधम् (तर्तूर्यन्ते) तु अभिमवे यङ्लुकि क्वाप्सं रूपम् ।
 तातिरसि । भृशं तरन्ति अभिमवन्ति (मघवन्) हे धनवान् परमेश्वर (विप-

अरीन्) वैरियों को (वि) विविध प्रकार (तत्पर्यन्ते) बार बार हरते हैं ।
 (उप क्रमस्व) तू [हमें] पराक्रमी कर, और (ऊतये) तृप्ति के लिये (पुरुष-
 पम्) बहुत प्रकार वाले (वाजम्) बल को (नेदिष्ठम्) अति समीप (आ)
 सब प्रकार से (भर) भर ॥ ४ ॥

भाषार्थ—सब मनुष्य बुद्धिमानों के समान परमात्मा को हृदय में
 धारण करके पराक्रम के साथ वैरियों को जीतें ॥ ४ ॥

सूक्तम् ८६ ॥

१ ॥ इन्द्रो देवता ॥ त्रिष्टुप् छन्दः ॥

मनुष्यकर्तव्योपदेशः—मनुष्य के कर्तव्य का उपदेश ॥

ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनजिम् हरी सखाया सधमादे आशू ।
 स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन् प्रजानन् विद्वान् उप याहि
 सोमम् ॥ १ ॥

ब्रह्मणा । ते । ब्रह्म-युजा । युन-जिम् । हरी इति । सखाया ।
 सध-मादे । आशू इति ॥ स्थिरम् । रथम् । सु-खम् । इन्द्र ।
 अधि-तिष्ठन् । प्र-जानन् । विद्वान् । उप । याहि । सोमम् १-

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले मनुष्य] (ते) तेरे
 लिये (ब्रह्मणा) अन्न के साथ (ब्रह्मयुजा) धन के संग्रह करने वाले, (आशू)
 शीघ्र चलने वाले, (हरी) दोनों जल और अग्नि को (सखाया) दो मित्रों

श्चितः) बहुज्ञानिनः (अर्यः) द्वितीयायाः प्रथमा यणादेशश्च । अरयः । अरीन्
 (विपः) विप क्षेपे—किप् । विपो मेधाविनाम—निध० ३ । १५ । प्रेरका
 मेधाविनः (जनानाम्) मनुष्याणां मध्ये (उप क्रमस्व) पराक्रमयुक्तान् कुरु
 (पुरुषपम्) बहुविधम् (आ) समन्तात् (भर) भर (वाजम्) बलम् (नेदि-
 ष्ठम्) अन्तिक—इष्टम् । अतिसमीपम् (ऊतये) तर्पणाय ॥

१—(ब्रह्मणा) अन्नेन (ते) तुभ्यम् (ब्रह्मयुजा) धनस्य संयोजको संग्रा-
 हकौ (युनजिम्) संयोजयामि (हरी) जलाग्नी (सखाया) सुहृदाविव (सधमादे)
 समानस्थाने (आशू) शीघ्रगामिनौ (स्थिरम्) दृढम् (रथम्) यानविमान-

के तुल्य (सधमादे) चौरस स्थान में (युनजिम) में संयुक्त करता हूं, (स्थिरम्) दृढ़, (सुखम्) सुख देने वाले [इन्द्रियों के लिये अच्छे हितकारी] (रथम्) रथ पर (अधितिष्ठन्) चढ़ता हुआ, (प्रजानन्) बड़ा चतुर (विद्वान्) विद्वान् तू (सोमम्) ऐश्वर्य को (उप याहि) प्राप्त हो ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि जल अग्नि आदि पदार्थों के द्वारा रथों अर्थात् यान विमानों को चलाकर देश देशान्तरों में जाकर विद्या और धर्म से ऐश्वर्य बढ़ावें ॥ १ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—३। ३५। ४ और इस का अर्थ महर्षि दयानन्द के भाष्य के आधार पर किया गया है। निरुक्त ३। १३ में (सुख) शब्द का अर्थ [अच्छा हितकारी इन्द्रियों के लिये] है ॥

सूक्तम् ८७ ॥

१—७ ॥ १—६ इन्द्रः ; ७ इन्द्रावृहस्पती देवते ॥ १, २, ६, ७ निचृत् त्रिष्टुप् ; ३ विराट् त्रिष्टुप् ४, ५ त्रिष्टुप् ॥

पुरुषार्थिलक्षणोपदेशः—पुरुषार्थी के लक्षण का उपदेश ॥

अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धम् अंशुं जुहोत न वृषभाय क्षितीनाम् । गीराद् वेदीयां अवपानमिन्द्रो विश्वाहेद्याति सुतसोममिच्छन् ॥ १ ॥

अध्वर्यवः । अरुणम् । दुग्धम् । अंशुम् । जुहोत न । वृषभाय । क्षितीनाम् ॥ गीरात् । वेदीयान् । अव-पानम् । इन्द्रः । विश्वाहा । इत् । याति । सुत-सोमम् । इच्छन् ॥ १ ॥

भावार्थ—(अध्वर्यवः) हे हिंसा न चाहने वाले - पुरुषो ! (अरुणम्) प्राप्ति योग्य, (दुग्धम्) पूरे किये हुये (अंशुम्) भाग को (क्षितीनाम्)

समूहम् (सुखम्) सुखं कस्मात् सुहितं खेभ्यः खं पुनः जनतेः—निरु० ३। १३। इन्द्रियेभ्यो हितं सुखप्रदम् (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् मनुष्य (अधितिष्ठन्) आरोहम् (प्रजानन्) बहुबुध्यमानः (विद्वान्) (उप) (याहि) प्राप्नुहि (सोमम्) ऐश्वर्यम् ॥

१—(अध्वर्यवः) अ० ७। ७३। ५। अहिंसामिच्छवः । याजकाः (अरुणम्) ऋ गतिप्रापणयोः—उनन् । प्रापणीयम् (दुग्धम्) प्रपूर्णम् (अंशुम्)

मनुष्यों में (वृषभाय) बलवान् के लिये (जुहोतन) दान करो। (अवपानम्) रक्षा साधन को (गौरात्) गौर [हरिण विशेष] से (वेदीयान्) अधिक जानने वाला (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला पुरुष] (विश्वाहा) सब दिनों (इत्) ही (सुतसोमम्) तत्त्व रस सिद्ध करने वाले पुरुष को (इच्छन्) चाहता हुआ (याति) चलता है ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि बलवान् पुरुष को आदर पूर्वक ग्रहण करें, वह चतुर मनुष्य रक्षा साधनों को औरों से अधिक जानता है, जैसे हरिण व्याधाओं से बचने के उपाय को जानता है ॥१॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—७।४८।१—७

यद् दधिषे प्रदिवि चारुं दिवेदिवे पीतिमिदस्य वसि । उत
हुदोत मनसा जुषाण उशन्निन्द्र प्रस्थितान् पाहि सोमान् ॥२
यत् । दधिषे । प्र-दिवि । चारुं । अन्नम् । दिवे-दिवे । पीतिम् ।
इत् । अस्य । वसि ॥ उत । हुदा । उत । मनसा । जुषाणः ।
उशन् । इन्द्र । प्र-स्थितान् । पाहि । सोमान् ॥ २ ॥

भावार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र । [बड़े पेश्वर्य वाले पुरुष] (यत्) जिस (चारु) उत्तम (अन्नम्) अन्न को (प्रदिवि) पिछले समय में (दधिषे)

अंश विभाजने-कु । विभागम् (जुहोतन) दत्त (वृषभाय) श्रेष्ठाय बलयुक्ताय (क्षितीनाम्) क्षितियों मनुष्यनाम—निघ० २।३। मनुष्याणां मध्ये (गौरात्) अज्जेन्द्राप्र०।उ० २।२८। गुड् अव्यक्तशब्दे—रन् । यद्वा । हलश्च । पा० ३।३।१२१। गुरी उद्यमने—घञ्, वृद्धिः पृषोदरादित्वात् । हरिणविशेषात् (वेदीयान्) तुश्छन्दसि । पा० ५।३। ५४। वेत्—ईयसुन् । तुरिष्ठेमेयः सुः । पा० ६।४। १५४। तुलोपः । वेत्तरः । विद्वत्तरः (अवपानम्) रक्षासाधनम् (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् पुरुषः (विश्वाहा) विश्वाम्यहानि (इत्) एव (याति) गच्छति (सुतसोमम्) सुतः संस्कृतः सोमस्तत्त्वरसो येन तम् (इच्छन्) कामयमानः ॥

२—(यत्) (दधिषे) धारितवानसि (प्रदिवि) प्रगते दिने काले (चारु) मनोहरम् (अन्नम्) भक्षणीयं पदार्थम् (दिवेदिवे) प्रतिदिनम्

तू ने धारण किया था, (अस्य) उस [अन्न] के (पीतिम्) पान वा भोग को (दिवेदिवे) प्रतिदिन (इत्) हो (वत्ति) तू उपदेश करता है, (उत) और (हृदा) हृदय से (उत) और (मनसा) मनन से (पस्थितान्) उपस्थित (सोमान्) पेश्वर्ययुक्त पदार्थों को (जुषाणः) सेवन करता हुआ और (उशन) चाहता हुआ तू (पाहि) रक्षित कर ॥ २ ॥

भाष्यार्थ—मनुष्य उसमें ज्ञान और पदार्थों को प्राप्त होकर सब के सुख के लिये प्रयत्न करे ॥ २ ॥

जुज्ञानः सोमं सहसे पपाथ प्र ते माता महिमानमुवाच ।

इन्द्रं पप्राथोर्वीः अन्तरिक्षं युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ ॥ ३ ॥

जुज्ञानः । सोमम् । सहसे । पपाथ । प्र । ते । माता ।

महिमानम् । उवाच ॥ आ । इन्द्र । पप्राथ । उरु ।

अन्तरिक्षम् । युधा । देवेभ्यः । वरिवः । चकर्थ ॥ ३ ॥

भाष्यार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले मनुष्य] (जज्ञानः) उत्पन्न होते हुये तू ने (सोमम्) सोम [तत्त्व रस] को (सहसे) बल के लिये (पपाथ) पान किया है और (ते) तेरी (माता) ने [तेरे] (महिमानम्) महत्त्व को (प्र) अच्छे प्रकार (उवाच) कहा है । तू ने (उरु) विशाल (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष को (आ) सब ओर से (पप्राथ) भर दिया और

(पीतिम्) पानं भोगं वा (इत्) एव (अस्य) अन्नस्य (वत्ति) वच्च परिभाषणे—लट् । उपविशसि (उत) अपि च (हृदा) हृदयेन (उत) (मनसा) मननेन (जुषाणः) सेवमानः (उशन) कामयमानः (इन्द्र) परमेश्वर्यवन् पुरुष (पस्थितान्) उपस्थितान् (पाहि) रक्ष (सोमान्) पेश्वर्ययुक्तान् पदार्थान् ॥

३—(जज्ञानः) जायमानः (सोमम्) तत्त्वरसम् (सहसे) बलाय (पपाथ) पा पाने रक्षणे च—लिट् । पीतवानसि (प्र) प्रकर्षेण (ते) तव (माता) माननीया जननी (महिमानम्) तव भाविमहत्त्वम् (उवाच) कथयामास (आ) सम्भवात् (इन्द्र) परमेश्वर्यवन् मनुष्य (पप्राथ) प्रापूरणे—लिट् । पूरितवानसि (उरु) विशतुतम् (अन्तरिक्षम्) अवकाशम् (युधा) युद्धेन (देवेभ्यः)

(युधा) युद्ध से (देवेभ्यः) विद्वानों के लिये (वरिवः) सेवनीय धन (चक्रथ) उत्पन्न किया है ॥ ३ ॥

भावार्थ—पहिले ही पहिले मात्र उत्तम शिक्षा से मनुष्य में उत्तम संस्कार उत्पन्न करे, तब वह मनुष्य विद्वान् बलवान् और धनवान् होकर संसार में कीर्ति पाता है ॥ ३ ॥

यद् योधयाः सहतो मन्यमानान् साक्षात् तान् बाहुभिः शाश-
दानान् । यद्वा नृभिर्वृत इन्द्राभियुध्यास्तं त्वयाजिं सौश्र-
वञ्चं जयेम ॥ ४ ॥

यत् । योधयाः । सहतः । मन्यमानान् । साक्षात् । तान् । बाहु-
भिः । शाशदानान् ॥ यत् । वा । नृ-भिः । वृतः । इन्द्र ।
अभि-युध्याः । तम् । त्वया । आजिम् । सौश्रव-सम् । जयेम ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [महाप्रतापी शूर] (यत्) जो तू
(महतः मन्यमानान्) अपने को बड़े मानने वालों से [हमको] (योधयाः)
लड़ावे, (तान्) उन (शाशदानान्) तीक्ष्ण स्वभाव वालों को (बाहुभिः)
अपनी भुजाओं से (साक्षात्) हम हरावें । (यत् वा) अथवा (नृभिः)
नरों से (वृतः) अङ्गीकार किया हुआ (अभियुध्याः) तू युद्ध करे, (त्वया)
तेरे साथ [होकर] (तम्) उस (सौश्रवसम्) बड़े यश वा अन्न देने

विद्वद्भ्यः (वरिवः) अ० २० । ११ । ७ । वरणीयं धनम् (चक्रथ) कृत-
वानसि ॥

४—(यत्) यदि (योधयाः) योधये । युद्धं कारये—अस्मान् (महतः)
पूजनीयान् (मन्यमानान्) जानतः पुरुषान् (साक्षात्) सहैम । अभिभवेम
(तान्) (बाहुभिः) भुजैः (शाशदानान्) अ० १ । १० । १ । शङ्ख-शातने—
यङ्लुकि शानच् । तीक्ष्णस्वभावान् (यत् वा) यद्वा । अथवा (नृभिः) नेतृभिः
(वृतः) स्वीकृतः (इन्द्र) महाप्रतापिन् शूर (अभियुध्याः) अभियुध्येयाः (तम्)
प्रसिद्धम् (त्वया) शूरेण सह (आजिम्) सङ्ग्रामम् (सौश्रवसम्) शोभनस्य

घाले (अजिम्) सङ्ग्राम को (जयेम) हम जीतें ॥ ४ ॥

भावार्थ—मनुष्य सत्य सङ्कल्प के साथ आप कर्म कुशल हो कर और दूसरा को कर्म कुशल बनाकर संसार में विजय प्राप्त करें ॥ ४ ॥

इन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्र नूतना मघवा या चकार ।
यदेददेवी रसहिष्ट माया अथाभवत् केवलः सोमो अस्य ॥ ५ ॥

प्र । इन्द्रस्य । वोचम् । प्रथमा । कृतानि । प्र । नूतना ।
मघवा । या । चकार ॥ यदा । इत् । अदेवीः । असहिष्ट ।
मायाः । अथ । अभवत् । केवलः । सोमः । अस्य ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रस्य) इन्द्र [महाप्रतापी वीर] के (प्रथमा) पहिले और (नूतना) नवीन (कृतानि) कर्मों को, (या) जो (मघवा) उस महाधनी ने (चकार) किये हैं, (प्र प्र) बहुत अच्छे प्रकार (वोचम्) मैं कहूँ । (यदा) जब (इत्) ही (अदेवीः) अदेवी [विद्वानों के विरुद्ध, आसुरी] (मायाः) मायाओं [छल कपट क्रियाओं] को (असहिष्ट) उस ने जीत लिया है, (अथ) तब ही (सोमः) सोम [अमृत रस अर्थात् मोक्ष सुख] (अस्य) उस [पुरुषार्थी] का (केवलः) सेवनीय (अभवत्) हुआ है ॥ ५ ॥

भावार्थ—जब मनुष्य प्राचीन और नवीन विद्वानों ने सिद्धान्तों के विचार कर दुष्कर्मों का नाश करता है, तब वह मोक्ष सुख पाता है ॥ ५ ॥

तवेदं विश्वमभितः पश्यै १ यत् पश्यसि चक्षुसा सूर्यस्य ।
गवामसि गोपतिरेकं इन्द्र भक्षीमहि ते पूयतस्य वस्वः ॥ ६ ॥

अवसो यशसोऽज्ञस्य वा हेतुम् (जयेम) ॥

५—(प्र प्र) अतिप्रकर्षेण (इन्द्रस्य) महाप्रतापिनो वीरस्य (वोचम्) कथयानि (प्रथमा) प्रथमानि । पुरातनानि (कृतानि) कर्माणि (नूतना) नूतनानि । नवीनानि (मघवा) धनवान् (या) यानि कर्माणि (चकार) कृतवान् (यदा) (इत्) एव (अदेवीः) विदुषां विरुद्धाः । आसुरीः (असहिष्ट) अभ्यभूत् (मायाः) छलकपटक्रियाः (अथ) अनन्तरमेव (अभवत्) (केवलः) सेवनीयः (सोमः) अमृतरसः । मोक्षानन्दः (अस्य) वीरस्य ॥

तव । इदम् । विश्वम् । अभितः । पशुव्यम् । यत् । पश्यसि ।
चक्षसा । सूर्यस्य ॥ गवाम् । असि । गो-पतिः । एकः । इन्द्र ।
भक्षीमहि । ते । प्र-यतस्य । वस्वः ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः—(इद्र) हे इन्द्र ! [महाप्रतापी मनुष्य] (इदम्) यह
(विश्वम्) सब (पशव्यम्) पशुओं [दोपाये और चौपाये जीवों] के लिये
हित कर्म (तव) तेरा है, (यत्) जिस को (सूर्यस्य) सूर्य की (चक्षसा)
दृष्टि से (अभितः) सब ओर को (पश्यसि) तू देखता है । (एकः) अकेला
तू (गवाम्) विद्वानों की (गोपतिः) विद्याओं का रक्षक (असि) है, (ते)
तेरे (प्रयतस्य) उत्तम नियम वाले (वस्वः) धन का (भक्षीमहि) हम सेवन
करें ॥ ६ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य सूर्य के समान सब ओर को दूरदर्शी होकर सब
हितकारी होता है, वही विद्या के प्रचार से विद्वानों को सुख देता है ॥ ६ ॥

बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्यैशाये उत पार्थिवस्य ।
धृत्तं रुयिं स्तुवते कीरयै चिद् युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥७॥
बृहस्पते । युवम् । इन्द्रः । च । वस्वः । दिव्यस्य । ईशाये
इति । उत । पार्थिवस्य ॥ धृत्तम् । रुयिम् । स्तुवते । कीरयै ।
चित् । युयम् । पातु । स्वस्ति-भिः । सदा । नः ॥ ७ ॥

भाष्यार्थ—(बृहस्पते) हे बृहस्पति ! [बड़ी वेदवाणी के रक्षक

६—(तव) (इदम्) दृश्यमानम् (विश्वम्) सर्वम् (अभितः) सर्वतः
(पशव्यम्) पशुभ्यो द्विपचतुष्टयभ्यो जीवेभ्यो हितं कर्म (यत्) (पश्यसि)
निरीक्षसे (चक्षसा) दृष्ट्या (सूर्यस्य) प्रेरकस्यादित्यस्य (गवाम्) गौः
स्तोतृनाम्—निघ० ३ । १६ । विदुषाम् (असि) (गोपतिः) गवां विद्यानां
रक्षकः (एकः) अद्वितीयः (इन्द्र) महाप्रतापिन् मनुष्य (भक्षीमहि) अ० १६ ।
८ । ५ । भजेमहि, सेविषीमहि (ते) तन (प्रयतस्य) यम—क । प्रकृष्टनियम-
युक्तस्य (वस्वः) वसुनः । धनस्य ॥

७—अयं मन्त्रो गतः—अ० २० । १७ । १२ ॥

विद्वान्] (च) और (इन्द्रः) हे इन्द्र ! [महाप्रतापी राजन्) (युवम्) तुम दोनों (दिव्यस्य) आकाश के (उत) और (पार्थिवस्य) पृथिवी के (वस्वः) धन के (ईशाथे) स्वामी हो । (स्तुवते) स्तुति करते हुये (कीरये) विद्वान् को (रयिम्) धन (चित्) अवश्य (धत्तम्) तुम दोनों दो, [हे वीरो !] (यूयम्) तुम सब (स्वस्तिभिः) सुखों के साथ (सदा) सदा (नः) हमें (पात) रक्षित रखो ॥ ७ ॥

भावार्थ—विद्वान् मन्त्री और पराक्रमी राजा और सब शूर पुरुष आकाशस्थ वायु वृष्टि आदि, और पृथिवीस्थ अन्न सुवर्ण आदि का सुप्रबन्ध करके प्रजा की रक्षा करें ॥ ७ ॥

यह मन्त्र आ चुका है—अ० २० । १७ । १२ और चौथे पाद के लिये देखो—अ० २० । ३७ । ११ ॥

सूक्तम् ८८ ॥

१—६ ॥ बृहस्पतिर्देवता ॥ १—३, ६ निचृत् त्रिष्टुप् ; ४ विराडापी त्रिष्टुप् ; ५ त्रिष्टुप् ॥

विद्वत्कर्तव्योपदेशः—विद्वानों के कर्तव्य का उपदेश ॥

यस्तुस्तम्भ सहसा वि जमो अन्तान् बृहस्पतिस्त्रिषधस्यो रवेण । तं प्रत्नासु ऋषयो दीध्यानाः पुरो विप्रा दधिरे मन्द्र-जिह्वम् ॥ १ ॥

यः । तुस्तम्भ । सहसा । वि । जमः । अन्तान् । बृहस्पतिः । त्रि-षधस्यः । रवेण ॥ तम् । प्रत्नासः । ऋषयः । दीध्यानाः । पुरः । विप्राः । दधिरे । मन्द्र-जिह्वम् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(यः) जिस (त्रिषधस्यः) तीन [कर्म, उपासना, ज्ञान] के साथ स्थित (बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़ी वेदविद्याओं के रक्षक पुरुष] ने

१—(यः) विद्वान् (तस्तम्भ) इदीकृतवान् (सहसा) बलेन (वि) विविधम् (जमः) जमतिर्गतिकर्मा—निघ० २ । १४ । श्वश्रुत्तन्पूषन्सोहन । उ० १ । १५४ । जमु अदने गतौ च—कनिन्, अकारलोपः । डाबुभाभ्यामन्यत

सू० ८८ [६७६]

विंश' काण्डम् ॥ २० ॥

(४,२८१)

(सहसा) अपने बल से और (रवेण) उपदेश से (जमः) पृथिवी के (अन्तान्) अन्तों [सीमाओं] को (वि) विविध प्रकार (तस्तम्भ) दृढ़ किया है । (तम्) उस (मन्द्रजिह्वम्) आनन्द देने वाली जिह्वा वाले विद्वान् को (प्रत्नासः) प्राचीन, (दीध्यानाः) प्रकाशमान [तेजस्वी], (विप्राः) बुद्धिमान् (ऋषयः) ऋषियों [वेदों के अर्थ जानने वालों] ने (पुरः) आगे (दधिरे) धरा है ॥ १ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य कर्म, उपासना, ज्ञान में तत्पर होकर पृथिवी भर को आनन्द देता है, ऋषि लोग उस सत्यवादी को मुखिया करते हैं ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—४।५०।१—६ ॥

धुनेतयः सुप्रकेतं मदन्तो बृहस्पते अभि ये नस्ततस्त्रे ।

पृषन्तं सुप्रमदब्धसुर्व बृहस्पते रक्षतादस्य योनिम् ॥ २ ॥

धुन-इतयः । सु-प्रकेतम् । मदन्तः । बृहस्पते । अभि ।

ये । नुः । ततस्त्रे ॥ पृषन्तम् । सुप्रम् । अदब्धम् । ऊर्वम् ।

बृहस्पते । रक्षतात् । अस्य । योनिम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(बृहस्पते) हे बृहस्पति !] बड़ी विद्याओं के रक्षक] (ये) जिन (धुनेतयः) शीघ्र गति वाले, (सुप्रकेतम्) सुन्दर ज्ञान से (मदन्तः) प्रसन्न होते हुये [विद्वानों ने] (नः) हम को (अभि) सब ओर (ततस्त्रे)

स्याम् । पा० ४ । १ । १३ । इति डाप् । उमा पृथिवीनाम—निघ० १ । १—निरु० १२ । ४३ । आतो धातोः । पा० ६ । ४ । १४० । इत्यत्र आत इति योगविभागादाकारलोपः । पृथिव्याः (अन्तान्) सीमाः । दिग्देशान् (बृहस्पतिः) बृहतीनां विद्यानां पालकः पुरुषः (त्रिषधस्थः) त्रिभिः कर्मोपासनाज्ञानैः सह स्थितः (रवेण) उपदेशेन (तम्) (प्रत्नासः) प्राचीनाः (ऋषयः) वेदार्थवेत्तारः (दीध्यानाः) अ० २ । ३४ । ३ । दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः—शानच् । दीप्यमानाः (पुरः) पुरस्तात् । अग्रे (विप्राः) मेधाविनः (दधिरे) धारितवन्तः (मन्द्र-जिह्वम्) आनन्दप्रदजिह्वायुक्तम् ॥

२—(धुनेतयः) तृप्तिशुषिरसिभ्यः कित् । उ० ३ । १२ । धुज् कम्पने नप्रत्ययः, कित् + इण् गतौ कित् । शीघ्रगतयः (सुप्रकेतम्) यथा तथा । ओभनेन ज्ञानेन (मदन्तः) हृष्यन्तः (बृहस्पते) महतीनां विद्यानां रक्षक

(४, २८२)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ८८ [६७६]

फैलाया है [प्रसिद्ध किया है] । (बृहस्पते) हे बृहस्पति ! [बड़े गुणों के स्वामी] (पृषन्तम्) सींचने वाले, (सुप्रम्) ज्ञान वाले, (अदब्धम्) नष्ट न किये हुये, (ऊर्वम्) दोषनाशक (अस्थ) उन [विद्वानों] के (योनिम्) कारण [वेदशास्त्र] को (रक्षतात्) तू रक्षित रख ॥ २ ॥

भाष्यार्थ—जिस वेदज्ञान में महोत्तमा लोग मग्न होकर दूसरों को सुख पहुंचाते हैं, विद्वान् लोग उस वेद की रक्षा कर के अर्थात् आज्ञा में चलकर आनन्द पावें ॥ २ ॥

बृहस्पते या परमा परावत् आ त ऋतस्पृशो निषेदुः ।
तुभ्यं खाता अवता अद्रिदुग्धा सध्वं श्रुतन्त्यभितो विरुण्णम् ।
बृहस्पते । या । परमा । परा-वत् । अतः । आ । ते ।
ऋत-स्पृशः । नि । षेदुः ॥ तुभ्यम् । खाताः । अवताः ।
अद्रि-दुग्धाः । सध्वः । श्रुतन्ति । अभितः । वि-रुण्णम् ॥३॥

भाष्यार्थ—(बृहस्पते) हे बृहस्पति ! [बड़ी विद्याओं के रक्षक] (या) जो (ते) तेरी (परमा) उत्तम नीति (परावत्) उत्तम विद्या वाले राज्य में है, [उस नीति में] (ऋतस्पृशः) सत्य का स्पर्श करने वाले लोग (आ) सब ओर से (नि षेदुः) बैठे हैं, (अतः) इस लिये (अद्रिदुग्धाः)

(अभिम्) सर्वतः (ये) विद्वांसः (नः) अस्मान् (ततस्ते) अ० १० । ७२ । २ । विस्तारितवन्तः । प्रदिष्टान् कृतवन्तः (पृषन्तम्) सिञ्चन्तम् (सुप्रम्) स्फायितञ्जिवश्च ० । ३० २ । १३ । सृष्ट गतौ—रक् । ज्ञानवन्तम् (अदब्धम्) अहिंसितम् । अनाशितम् (ऊर्वम्) उर्वी हिंसायाम्—पचायच् । दोषनाशकम् (बृहस्पते) वृतां गुणानां स्वामिन् (रक्षतात्) रक्ष (अस्थ) बहुवचनस्यै-ववचनम् । एषां विदुषाम् (योनिम्) कारणं वेदशास्त्रम् ॥

३—(बृहस्पते) बृहतीनां विद्यानां रक्षक (या) (परमा) उत्कृष्टा नीतिः (परावत्) परावति । अकृष्टविद्यायुक्ते राज्ये (अतः) अस्मात् कारणात् (आ) रमन्तात् (ते) तव (ऋतस्पृशः) सत्यस्य स्पर्शनशीलाः पुरुषाः (नि षेदुः) निरुण्ण भवति (दुग्धम्) (खाताः) निखाताः (अवताः)

मेघ से भरे गये, (खाताः) खोदे गये, (मध्वः) मीठे [मीठे जल वाले]
(अघताः) कुप (तुभ्यम्) तेरे लिये (विरग्णम्) महान् संसार को (अभितः)
सब ओर से (श्चोतन्ति सींचते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—चतुर राजा की सुन्दर नीति से विद्वान् लोग संसार को
इस प्रकार आनन्द पहुँचाते हैं, जैसे मेघ के जल कृप आदि द्वारा उपकार
करते हैं ॥ ३ ॥

बृहस्पतिः प्रथमं जायमानो मुहो ज्योतिषः परमे व्योमन् ।
सप्तास्यस्तुविजातो रवेण वि सुप्तं रश्मि रधमत् तमांसि ॥ ४ ॥
बृहस्पतिः । प्रथमम् । जायमानः । मुहः । ज्योतिषः ।
परमे । वि-व्योमन् ॥ सुप्त-आस्यः । तुवि-जातः । रवेण ।
वि । सुप्त-रश्मिः । अधमत् । तमांसि ॥ ४ ॥

भाषार्थ(बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़ी विद्याओं के रत्नक पुरुष] ने
(महः) बड़े (ज्योतिषः) तेज के (परमे) उत्तम (व्योमन्) विविध प्रकार
रक्षणीय स्थान में (प्रथमम्) पहिले पदपर (जायमानः) प्रकट होते हुये
(तुविजातः) बहुत प्रसिद्ध होकर (रवेण) अपने उपदेश से (सप्तास्यः) सात
मुख वाले अग्नि और (सप्तरश्मिः) सात किरणों वाले सूर्य के समान
(तमांसि) अन्धकारों को (वि अधमत्) बाहिर हटाया है ॥ ४ ॥

भृमुदशियजि० । उ० ३ । ११० । अथ गतिरक्षणादिषु—अतच् । कृपाः—निघ०
३ । २३ (अद्रिदुग्धाः) मेघेन पूरिताः (मध्वः) मध्वः । मधुरजलयुक्ताः
(श्चोतन्ति) सिञ्चन्ति (अभितः) सर्वतः (विरग्णम्) महान्तं संसारम् ॥

४—(बृहस्पतिः) बृहतीनां विद्यानां रत्नक (प्रथमम्) प्रधाने पदे (जाय-
मानः) प्रादुर्भवन् (महः) महतः (ज्योतिषः) प्रकाशस्य (परमे) उत्कृष्टे
(व्योमन्) अ० ५ । १७ । ६ । विविधरक्षणीये स्थाने (सप्तास्यः) सप्त ज्वाला
आस्थानि यस्य सः काली कराह्यादिजिह्वायुक्तोऽग्निर्यथा—सुरङ्कोपनिषदि—
१ । २ । ४ (तुविजातः) बहुप्रसिद्धः (रवेण) उपदेशेन (वि) बहिर्भावे
(सप्तरश्मिः) शृङ्गनीलपीतादिकिरणयुक्तः सूर्यो यथा (अधमत्) धमतिर्गति-
वर्मा—निघ० २ । १४ । अगमयत् (तमांसि) अन्धकारान् ॥

भावार्थ—जैसे अग्नि सात प्रकार की ज्वालाओं से और सूर्य सात प्रकार की किरणों से अन्धकार हटाकर पदार्थों को दिखाते हैं, वैसे ही विद्वान् लोग पांच ज्ञानेन्द्रिय मन और आत्मा से विद्यायें ग्रहण करके अज्ञान हटाकर विद्या का प्रकाश करें ॥ ४ ॥

अग्नि के सात मुख वा जिह्वायें अर्थात् ज्वालायें ये हैं—मुरङकोपनिषद्, मुरङक १ खण्ड ४ श्लोक ४ [काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूमवर्णा । स्फुलिङ्गिनी विश्वरूपी च देवी लेलायमाना इति सप्त जिह्वाः ॥] काले वर्ण वाली, कराली, मन का सा वेग रखने वाली, रक्त वर्ण वाली, जो गहरे धुये के वर्ण वाली है, त्रिनगरियों वाली और चमकती हुई झिलमिलती हुई सब रंगों अर्थात् रंगों वाली, यह [अग्नि की] सात जिह्वाये हैं ॥

सूर्य के सात किरणों इस प्रकार हैं—शुक्ल, नील, पीत, रक्त, हरित, कपिश और चित्रवर्ण ॥

स सुष्टुभा स ऋक्ता गणेन वलं कुरोज फलिगं रवेण ।
बृहस्पतिरुस्त्रिया हव्यसूदः कनिक्रदद् वावशतीरुदाजत् ॥५॥
सः । सु-स्तुभा । सः । ऋक्ता । गणेन । वलम् । कुरोज ।
फलि-गम् । रवेण ॥ बृहस्पतिः । उस्त्रियाः । हव्य-सूदः ।
कनिक्रदत् । वावशतीः । उत् । आजत् ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(सः सः) उसी ही [वीर पुरुष] ने (सुष्टुभा) बड़ी स्तुति वाले (ऋक्ता) पूजनीय वाणी वाले (गणेन) समुदाय के साथ (फलिगम्) फूट डालने वाले [वा मेघ के समान अंधकार के फैलाने वाले] (वलम्) हिंसक बैरी को (रवेण) शब्द [धर्म धोषणा]

५—(सः सः) स एव (सुष्टुभा) स्तोमतिरर्चतिकर्मा—निघ० ३ । १४—क्लिप् । शोमनस्तुतिमता (ऋक्ता) ऋच स्तुतौ—क्लिप्, मनुप्, मस्य वः । अयरमयादीनि छन्दसि । पा० १ । ४ । २० । पदत्वात् कुर्व भत्वाज् जश्वाभावः । ऋग् वाङ् नाम—निघ० १ । ११ । पूजनीयवाणीयुक्तेन (गणेन) समुदायेन (वलम्) हिंसकं शत्रुम् (कुरोज) बभञ्ज (फलिगम्) सर्वधातुभ्य इन् । उ० ४ । ११८ । जि पला दिश्रणे—इन् + रमेर्ङः, अन्तर्गतस्यर्थः ।

(सरोज) भङ्ग किया है । (हव्यसूरः) देने वा लेने योग्य पदार्थों की प्रतिष्ठा करने वाले, (कनिकदत्) बल से पुकारते हुये (बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़ी विद्याओं के रक्षक मनुष्य] ने (वावशतीः) अत्यन्त कामना करती हुयी (उस्त्रियाः) रहने वाली प्रजाओं को (उत् आजत्) ऊंचा किया है ॥ ५ ॥

भावार्थ—विद्वान् सभापति राजा अज्ञान फैलाने वाले शत्रुओं का नाश करके विद्या और धन की वृद्धि से प्रजा का पालन करे ॥ ५ ॥

ए॒वा पि॒त्रे वि॒श्वदे॒वाय॒ वृ॒ष्णे य॒ज्ञैर्वि॒धेम॒ नम॑सा ह॒विर्भिः ।
बृ॒हस्प॑ते सु॒प्रजा वी॒रव॑न्तो व॒यं स्या॑म॒ पत॑यो र॒यीणाम् ॥ ६ ॥
ए॒व । पि॒त्रे । वि॒श्व-दे॒वाय । वृ॒ष्णे । य॒ज्ञैः । वि॒धेम॒ । नम॑सा ।
ह॒विः-भिः ॥ बृ॒हस्प॑ते । सु-प्र॒जाः । वी॒र-व॑न्तः । व॒यम् ।
स्या॑म॒ । पत॑यः । र॒यीणाम् ॥ ६ ॥

भावार्थ—(विश्वदेवाय) सबों से स्तुति योग्य, (वृष्णे) बलवान् (पित्रे) पिता [के समान पालन करने वाले पुरुष को (एव) निश्चय्य करके (नमसा) अन्न के साथ (यज्ञैः) मेल मिलापों और (हविर्भिः) देने योग्य पदार्थों से (विधेम) हम सेवा करें । (बृहस्पते) हे बृहस्पति ! [बड़ी विद्याओं के रक्षक पुरुष] (सुप्रजाः) श्रेष्ठ प्रजाओं वाले और (वीरवन्तः)

फलिगो मेघनाम—निघ० १ । १० । मेघस्य प्रापकम् । मेघमिवान्धकारस्य प्रसारकम् (रवेण) शब्देन । धर्मघोषणया (बृहस्पतिः) बृहतीनां विद्यानां रक्षकः (उस्त्रियाः) अ० २० । १६ । ६ । निवासशोभाः प्रजाः (हव्यसूरः) वृद्ध क्षरणे, अङ्गीकारे, प्रतिष्ठायां मारणे च—अच् । हव्यानां दातव्यप्राप्त्यपदार्थानां प्रतिष्ठाकरः (कनिकदत्) अ० २ । ३० । ५ । भृशमाह्वयन्तम् (वावशतीः) वश कान्तौ यङलुकि—शतृ, डीप् । भृशं—कामयमानाः (उत्) उपरिभागे (आजत्) अ० २० । १६ । ५ । अगमयत् ॥

६—(एव) निश्चयेन (पित्रे) पितृवत्पालकाय (विश्वदेवाय) सर्वेषां सुत्याय (वृष्णे) बलवते (यज्ञैः) संगतिकरणैः (विधेम) परिचरंम (नमसा) अन्नेन सह (हविर्भिः) दातव्यपदार्थैः (बृहस्पते) बृहतीनां विद्यानां रक्षक (सुप्रजाः) श्रेष्ठप्रजावन्तः (वीरवन्तः) वीरपुरुषयुक्ताः (वयम्)

वीर पुरुषों वाले होकर (वयम्) हम (रयीणाम्) अनेक धनों के (पतयः) स्वामी (स्याम) होंगे ॥ ६ ॥

भावार्थ—प्रजागण प्रजा पालक नीतिज्ञ सभापति राजा का यथावत् आदर करके धनी और बलवान् होंगे ॥ ६ ॥

सूक्तम् पद ॥

१—११ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ३, ७, ८, ११ त्रिष्टुप्; २, ५ निचृत् त्रिष्टुप्; ४, ६ विराट् त्रिष्टुप्; ९ अग्निरिष्टुप्; १० निचृदापी त्रिष्टुप् ॥

मनुष्यकर्तव्योपदेशः—मनुष्य के कर्तव्य का उपदेश ॥

अस्तैव सु प्रतरं लायस्यन् भूषन्निव प्र भर स्तोममस्मै ।
वाचा विप्रास्तरत् वाचमुर्यो नि रमय जरितः सोम इन्द्रम् ।
अस्ता-इव । सु । प्र-तरम् । लायम् । अस्थन् । भूषन्-इव ।
प्र । भर । स्तोमम् । अस्मै ॥ वाचा । वि-प्राः । तरत् ।
वाचम् । अर्यः । नि । रमय । जरितरिति । सोमै । इन्द्रम् ॥

भावार्थ—(जरितः) हे स्तोता विद्वान् ! (प्रतरम्) अधिक उत्तम (लायम्) हृदयवेधी तीर को (सु) अच्छे प्रकार (अस्थन्) छोड़ते हुये (अस्ता इव) धनुर्धारी के समान तू (अस्मै) इस [शूर] के लिये (स्तोमम्) स्तुति को (भूषन् इव) सजाता हुआ जैसे (प्र भर) आगे धर, और (इन्द्रम्) इन्द्र [महाप्रतापी मनुष्य] को (सोमे) तत्त्व रस में (नि) निरन्तर (रमय) आनन्द दे, (विप्राः) हे बुद्धिमानो ! (वाचा) [अपनी सत्य] वाणी से (अर्यः)

(स्याम) (पतयः) स्वामिनः (रयीणाम्) अनेकधनानाम्) ॥

१—(अस्तौ) वाणक्षेता । धानुष्कः (इव) यथा (सु) सुष्ठु (प्रतरम्) प्रकृष्टतरम् (लायम्) लोड प्रलेपणे—घृञ् । संश्लेषिणं हृदयवेधिनं शरम् (अस्थन्) क्षिपन् (भूषन्) अलंकुर्वन् (इव) यथा (प्र भर) अग्रे धर (स्तोमम्) स्तुतिम् (अस्मै) इन्द्राय (वाचा) स्वसत्यवाण्या (विप्राः) हे मेधाविनः (तरत्) अभिभवत (वाचम्) मिथ्यावाणीम् (अर्यः) अरे शत्रोः (नि) नितराम (रमय) आनन्दय (जरितः) हे स्तोतः (सोमे) तत्त्वरसे

वैरी की (वाचम्) [असत्य] वाणी को (तरत) तुम दबाओ ॥ १ ॥

भावार्थ—जैसे उत्तम धनुर्धारी प्रेम से कार्य सिद्धि के लिये अपने अच्छे बाण को छोड़ता है, वैसे ही विद्वान् लोग पृथक् पृथक् होकर तथा सब मिलकर प्रीति के साथ प्रतापी वीर के उत्तम गुणों को जानकर तत्त्व की ओर प्रवृत्त करें और मिथ्यावादी वैरी को हराकर आनन्द भोगें ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—१०।४२।१--११ ॥

दोहेन॑ गामुप॑ शिक्षा॑ सखायं॑ प्र बोधय॑ जरित॑जरि॑मिन्द्र॑म् ।
कोशं॑ न पु॒र्णं वसु॑ना न्यृष्ट॑मा च्यव॑य मघ॑देयाय॑ शूर॑म् ॥२॥
दोहे॑न । गाम् । उप॑ । शिक्ष॑ । सखायम् । प्र । बोधय॑ ।
जरि॑तः । जारम् । इन्द्र॑म् ॥ कोश॑म् । न । पु॒र्णम् । वसु॑ना ।
नि-ऋ॑ष्टम् । आ । च्यव॑य । मघ॑-देयाय॑ । शूर॑म् ॥ २ ॥

भावार्थ—(जरितः) हे स्तुति करने वाले विद्वान् ! (दोहेन) दूध दोहने के लिये (गाम्) गाय को [जैसे, वैसे] (जारम्) स्तुति योग्य (सखायम्) मित्र (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े प्रतापी पुरुष] को (उप शिक्ष) तू ग्रहण कर और (प्र) अच्छे प्रकार (बोधय) जगा (वसुना) धन से (पूर्णम्) भरे हुये (कोशं न) कोश [धनागार] के समान (न्यृष्टम्) निश्चय को प्राप्त हुये (शूरम्) शूर को (मघदेयाय) पूजनीय पक्षार्थ के दान के लिये (आ च्यवय) आगे बढ़ा ॥ २ ॥

भावार्थ—जैसे अन्न आदि देकर प्रीति के साथ गाय से दूध लेते हैं, वैसे

(इन्द्रम्) महाप्रतापिनं मनुष्यम् ॥

२—(दोहेन) दुग्धदोहनार्थम् (गाम्) धेनुम् (उप शिक्ष) शिक्षति-
र्दानकर्मा—निघ० ३।२०। उप पूर्वक आदाने । गृहाण (सखायम्) प्रियम्
(प्र बोधय) प्रबुद्धं जाग्रतं कुरु (जरितः) हे स्तोतः (जारम्) जू स्तुतौ—घञ्,
अर्शआद्यच् । स्तुतियोग्यम् (इन्द्रम्) महाप्रतापिनं पुरुषम् (कोशम्) धना-
गारम् (न) यथा (पूर्णम्) पूरितम् (वसुना) धनेन (न्यृष्टम्) ऋषी गतौ—
क् । निश्चयगतम् (आ) अभिमुखम् (च्यवय) गमय (मघदेयाय) पूजनीय-
पदार्थस्य दानाय (शूरम्) वीरम् ॥

मनुष्य आदर सत्कार के साथ कर्मवीर पुरुष से पूजनीय व्यवहार की शिक्षा ग्रहण करें ॥ २ ॥

किमुङ्ग त्वा मघवन् भोजमाहुः शिश्रीहि मा शिशुयं त्वा
शृणोमि । अप्रस्वती मम धीरस्तु शक्र वसुविदं भगमिन्द्रा
भरा नः ॥ ३ ॥

किम् । अङ्ग । त्वा । मघ-वन् । भोजम् । आहुः । शिश्रीहि ।
मा । शिशुयम् । त्वा । शृणोमि ॥ अप्रस्वती । मम । धीः ।
अस्तु । शक्र । वसु-विदम् । भगम् । इन्द्र । आ । भर । नः ३

भाषार्थ—(अङ्ग) हे (मघवन्) धन वाले [पुरुष !] (किम्)
किस लिये (त्वा) तुझ को (भोजम्) पालन करने वाला (आहुः) वे
[विद्वान्] कहते हैं ? (मा) मुझ को (शिश्रीहि) सचेत कर, (त्वा) तुझ
को (शिशुयम्) उद्योगी (शृणोमि) मैं सुनता हूँ । (शक्र) हे शक्तिमान् !
(मम) मेरी (धीः) बुद्धि (अप्रस्वती) कर्म वाली (अस्तु) होवे, (इन्द्र)
हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] (नः) हमारे लिये (वसुविदम्) धन
पहुँचाने वाला (भगम्) ऐश्वर्य (आ) सब ओर से (भर) भर ॥ ३ ॥

भाषार्थ—कीर्तिमान् प्रधान पुरुष ऐसा प्रयत्न करे कि सब लोग बुद्धि-
मान् होकर कर्मवीर हों ॥ ३ ॥

त्वां जना ममसुत्येष्टिर्विन्द्र संतस्थाना वि ह्वयन्ते समीके । अत्रा

३—(किम्) किमर्थम् (अङ्ग) सम्बोधने (त्वा) त्वाम् (मघवन्) धन-
धन् (भोजम्) पालकम् (आहुः) कथयन्ति विद्वांसः (शिश्रीहि) अ० २० । ३७ ।
८ । तीक्ष्णिकुरु । सचेतसं कुरु (मा) माम् (शिशुयम्) वलिमलितनिभ्यः
कयन् । उ० ४ । ६६ । शश सुतगतौ—कयन्, अकारस्य इकारः । उद्योगितम्
(त्वा) (शृणोमि) (अप्रस्वती) कर्मवती (मम) (धीः) प्रज्ञा (अस्तु)
(शक्र) हे शक्तिमान् (वसुविदम्) धनस्य लम्भकम् (भगम्) ऐश्वर्यम्
(इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् पुरुष (आ) समन्तात् (भर) भर (नः)
अस्मभ्यम् ॥

सू० ८८ [६७७] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,२८६)

युजं कृणुते यो ह विष्माञ्जासुन्वता सुख्यं वष्टि शूरः ॥ ४ ॥

त्वाम् । जनाः । मम-सत्येषु । इन्द्र । सुम्-तस्थानाः । वि ।

ह्वयन्ते । सुम्-ई के ॥ अत्र । युजम् । कृणुते । यः । ह-विष्मान् ।

न । असुन्वत । सुख्यम् । वष्टि । शूरः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] (ममसत्येषु) अपने अपने उद्देश्य को सत्य मानने वाले सङ्ग्रामों के बीच (समीके) मिड़ के (संतस्थानाः) सजकर खड़े हुये (जनाः) लोग (त्वाम्) तुझ को (वि) विविधप्रकार (ह्वयन्ते) पुकारते हैं । (अत्र) यहाँ पर (शूरः) शूर पुरुष [उस मनुष्य को] (युजम्) साथी (कृणुते) बनाता है, (यः) जो (हविष्मान्) भक्ति वाला है, और (असुन्वता) तत्त्वरस के न निकालने वाले के साथ (सुख्यम्) मित्रता (न) नहीं (वष्टि) चाहता है ॥ ४ ॥

भावार्थ—जहाँ पर दो पक्ष वाले आपस में अपने अपने उद्देश्य के लिये लड़ते हों, बुद्धिमान् पुरुष मध्यस्थ होकर भ्रमार्त्मा का सहाय करे ॥ ४ ॥

पदपाठ के (असुन्वत) पद में भूल दीखती है, ऋग्वेद का (असुन्वता) पद पाठ संहिता के अनुकूल है, उसी के अनुसार हमने अर्थ किया है ॥

धनं न स्पन्दं बहुलं यो अस्मै तीव्रान्तसोमं आसुनोति
प्रयस्वान् । तस्मै अत्रन्सुतुकान् मातरहो नि स्वष्टान् युवति

४—(त्वाम्) (जनाः) (ममसत्येषु) ममप्रयोजनं सत्यम्—इति ब्रुवाणा योद्धारः सन्ति यत्र । ममसत्यं संग्राम नाम—निघ० २ । १७ । सङ्ग्रामेषु (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् पुरुषः (संतस्थानाः) तिष्ठते—कानच् । सभ्यक् तिष्ठन्तः (वि) विविधम् (ह्वयन्ते) आह्वयन्ति (समीके) अलीकादयश्च । उ० ४ । २५ । सम्+इण गतौ—ईकच् । धातुलोपः । सङ्गमे । संग्रामे—निघ० २ । १७ । (अत्र) अस्मिन् विषये (युजम्) सखायम् (कृणुते) कुरुते (यः) पुरुषः (हविष्मान्) भक्तिमान् (न) निषेधे (असुन्वत) असुन्वता—ऋग्वेदपद-पाठो यथा । तत्त्वरसं निष्पादयता (सुख्यम्) सखित्वम् (वष्टि) कामयते (शूरः) निर्भयः ॥

हन्ति वृत्रम् ॥ ५ ॥

धनम् । न । स्पन्दम् । बहुलम् । यः । अस्मै । तीव्रान् ।
सोमान् । आ-सुनोति । प्रयस्वान् ॥ तस्मै । शत्रून् ।
सु-तुकान् । प्रातः । अहः । नि । सु-अष्टान् । युवति । हन्ति ।
वृत्रम् ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(यः) जो (प्रयस्वान्) अन्न वाला पुरुष (अस्मै) इस [वीर] को (बहुलम्) बहुत से (स्पन्दम्) शीघ्र प्राप्त होने वाले (धनम् न) धन के समान (तीव्रान्) तीव्र (सोमान्) सोम [तत्त्व रसों] को (आसुनोति) सिद्ध करता है । (तस्मै) उस [पुरुष] के लिये (सुतुकान्) बड़े हिंसक, (खष्टान्) तीक्ष्ण शस्त्रों वाले (शत्रून्) वैरियों को (अहः) दिन के (प्रातः) प्रातः काल में [अर्थात् प्रकाश रूप से] (नि युवति) वह [वीर] हटा देता है और (वृत्रम्) धन को (हन्ति) प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

भाषार्थ—जैसे प्रजागण धन, मन और विद्याबल से प्रधान पुरुष की सहायता करें, वह वीर-भी उसी प्रकार दुष्टों से प्रजा की रक्षा करे ॥ ५ ॥

यस्मिन् वयं दधिमा शंसमिन्द्रे यः शिष्याय मधवा काम-
सुस्मे । आराचिषु वन् भयतामस्य शत्रुर्न्यस्मै दुस्ना जन्या
नमन्ताम् ॥ ६ ॥

५—(धनम्) (न) यथा (स्पन्दम्) स्फाणितश्चिबज्जिब० । उ० २ । १३ ।
स्पदि किञ्चिच्चलने गतौ च-रक् । स्पन्दनशीलम् । शीघ्रं प्रापणीयम् (बहुलम्)
प्रभूतम् (यः) पुरुषः (अस्मै) वीराय (तीव्रान्) (सोमान्) तत्त्वरसान्
(आसुनोति) निष्पादयति । संस्करोति (प्रयस्वान्) अन्नवान्—निघ० २ । ७
(तस्मै) पुरुषाय (शत्रून्) (सुतुकान्) सवृभूशुषिमुषिभ्यः कक् । उ० ३ । ४१ ।
तु गतिवृद्धिहिंसासु—कक् । बहुहिंसकान् (प्रातः) प्रभातकाले यथा (अहः)
दिनस्य (नि) नितराम् (खष्टान्) अमिचिमिशसिभ्यः क्वः । उ० ४ । १६४ ।
अश्व व्यासौ—क्व, टाप । सुष्ठु अष्टास्ताडन्यो येषां तान् । तीक्ष्णायुधान् (युवति)
पृथक् करोति (हन्ति) गच्छति—निघ० २ । १४ । प्राप्नोति (वृत्रम्) धनम्—
निघ० २ । १० ॥

यस्मिन् । वयम् । दधिम । शंसम् । इन्द्रे । यः । शिश्राय ।
 मधवा । कामम् । अस्मे इति ॥ आरात् । चित् । सन् ।
 भयताम् । अस्य । शत्रुः । नि । अस्मै । द्युम्ना । जन्या ।
 नमन्ताम् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(यस्मिन्) जिस (इन्द्रे) इन्द्र [बड़े प्रतापी वीर] में
 (शंसम्) अपनी इच्छा को (वयम्) हम ने (दधिम) रक्खा था और (यः)
 जिस (मधवा) धनवान् ने (अस्मे) हम में (कामम्) अपनी कामना को
 (शिश्राय) आश्रय दिया था । (आरात्) दूर (चित्) भी (सन्) रहता
 हुआ (शत्रुः) शत्रु (अस्य) उस का (भयताम्) भय माने, और (अस्मै) उस
 के लिये (जन्या) लोगों के हितकारी (द्युम्नानि) प्रकाशमान यश (नि)
 नित्य (नमन्ताम्) नमते रहें ॥ ६ ॥

भावार्थ—जहां पर प्रजागण और प्रधान वीर पुरुष परस्पर हित के
 लिये प्रयत्न करते हैं, वहां पर शत्रु लोग दुराचार नहीं करते, और सब लोग
 उन्नति करके यशस्वी होते हैं ॥ ६ ॥

आराच्छत्रुसप बाधस्व दूरमुग्रो यः शम्बः पुरुहूत तेन ।
 अस्मे धेहि यवम् ह गोमदिन्द्र कुधी धियं जरित्रे वाज-
 रत्नाम् ॥ ७ ॥

आरात् । शत्रुम् । अप । बाधस्व । दूरम् । उग्रः । यः ।

६—(यस्मिन्) (वयम्) प्रजागणाः (दधिम) धृतवन्तः (शंसम्)
 शक्ति इच्छायाम्—यज्ञ । आशंसाम् । आकाङ्क्षाम् (इन्द्रे) परमप्रतापिनि वीरे
 (यः) (शिश्राय) आश्रितवान् । स्थापितवान् (मधवा) धनवान् (कामम्)
 अभिलाषम् (अस्मे) अस्मासु (आरात्) दूरे (चित्) अपि (सन्) भवन्
 (भयताम्) विभेत्तु । भयं प्राप्नोतु (अस्य) वीरस्य (शत्रुः) (नि) नितराम्
 (अस्मै) वीराय (द्युम्ना) द्योतमानानि यशसि (जन्या) जनहितानि
 (नमन्ताम्) प्रवीभवन्तु ॥

शम्बः । पुरु-हूत । तेन ॥ अस्मे इति । धेहि । यव-मत् ।
गो-मत् । इन्द्र । कृधि । धियम् । जरित्रे । वाज-रत्नाम् ॥७॥

भाषार्थ—(पुरुहूत) हे बहुत प्रकार बुलाये गये ! [वीर] (यः) जो
(शम्बः) तेरा वज्र (उग्रः) प्रचण्ड है, (तेन) उस से (शत्रुम्) शत्रु को
(आरात्) दूर से (दूरम्) दूर (अप बाधस्व) हटा दे । (इन्द्र) हे इन्द्र !
[बड़े प्रतापी वीर] (अस्मे) हम को (यवमत्) अन्न वाला (गौमत्) विद्याओं
और गौओं वाला धन (धेहि) दे और (जरित्रे) स्तोता [गुण प्रसिद्ध करने
वाले] के लिये (धियम्) बुद्धि को (वाजरत्नाम्) बलों और सुवर्ण आदि
रत्नों वाली (कृधि) कर ॥ ७ ॥

भाषार्थ—वीर प्रधान पुरुष अपने प्रचण्ड दण्डदान से शत्रुओं को
हटाकर प्रजागणों को विद्या द्वारा पराक्रमी और धनाढ्य बनावे ॥ ७ ॥

प्र यस्मन्तवृषसुवासो अगमन् तीव्राः सोमा बहुलान्तासु
इन्द्रम् । नाह दासानं मघवा नि यंसु नि सुन्वते वहति
भूरि वामम् ॥ ८ ॥

प्र । यस् । अन्तः । वृष-सुवासः । अगमन् । तीव्राः । सोमाः ।
बहुल-अन्तासः । इन्द्रम् ॥ न । अह । दासानम् । मघ-वा ।
नि । यंसुत् । नि । सुन्वते । वहति । भूरि । वामम् ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(यस्) जिस (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े प्रतापी मनुष्य] को

७—(आरात्) दूरात् (शत्रुम्) (अप बाधस्व) अपगमय (दूरम्)
(उग्रः) प्रचण्डः (यः) (शम्बः) अ० ६ । २ । ६ । शम्ब इति वज्रनाम, शमयतेर्वा
शाततेर्वा—निर० ५ । २४ । वज्रः (पुरुहूत) हे बहुविधाहूत (तेन) वज्रेण
(अस्मे) अस्मभ्यम् (धेहि) देहि (यवमत्) अन्नयुक्तम् (गौमत्) गोभि—
र्विद्याभिर्धेनुभिश्च युक्तं धनम् (इन्द्र) हे महाप्रतापिन् वीर (कृधि) कुरु (धियम्)
प्रज्ञाम् (जरित्रे) स्तोत्रे (वाजरत्नाम्) वाजैर्बलैः सुवर्णादिरत्नैश्च युक्ताम् ॥

८—(प्र) प्रकर्षेण (यस्) (अन्तः) मध्ये । हृदये (वृषसुवासः)

(वृषसवासः) बलवानों को ऐश्वर्य देने वाले, (तीव्राः) तीक्ष्ण स्वभाव वाले और (बहुलान्तासः) बहुत ज्ञान को अन्त [सिद्धान्त] में रखने वाले (सोमाः) सोम [तत्त्वरस] (अन्तः) भीतर [हृदय में] (प्र अगमन्) प्राप्त हो गये हैं । (मघना) वह धनवान् पुरुष (अह) निश्चय करके (दामानम्) दान को (न) नहीं (नि यंसत्) रोक सकता है वह (सुन्वते) तत्त्वरस निचोड़ने वाले को (भूरि) बहुत (वामम्) उत्तम धन (नि) नित्य (वहति) पहुंचाता है ॥ ८ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य निश्चित सिद्धान्तों पर दृढ़ होकर चले, उस वीर से दूसरे विद्वान् शिक्षा लेकर बहुत धन प्राप्त करें ॥ ८ ॥

उत प्रहामतिदीवा जयति कृतमिव श्वघ्नी वि चिनीति काले ।
यो देवकामो न धनं रुणद्धि समित् तं रायः सृजति स्वधाभिः ८
उत । प्र-हाम् । अति-दीवा । जयति । कृतम्-इव । श्व-
घ्नी । वि । चिनीति । काले ॥ यः । देव-कामः । न । धनम् ।
रुणद्धि । सम् । इत् । तम् । रायः । सृजति । स्वधाभिः ॥ ८ ॥

भावार्थ—(उत) और (अतिदीवा) बड़ा व्यवहार कुशल पुरुष (प्रहाम्) उपद्रवी पुरुष को (जयति) जीत लेता है, (श्वघ्नी) धन नाश करने वाला ज्वारी (काले) [हार के] समय पर (इव) ही (कृतम्) अपने काम का (वि चिनीति) विवेक करता है । (यः) जो (देवकामः) शुभ गुणों का चाहने वाला (धनम्) धन को [शुभ काम में] (न) नहीं (रुणद्धि) रोकता है, (रायः) अनेक धन (तम्) उसको (इत्) ही (स्वधाभिः) आत्म

वृषभ्यो बलवद्भ्यः सवाः ऐश्वर्याणि येभ्यः सकाशात् ते तथाभूताः (अगमन्) प्राप्तवन्तः (तीव्राः) तीक्ष्णाः (सोमाः) तत्त्वरसाः (बहुलान्तासः) बहुत बहुज्ञानम् अन्ते सिद्धान्ते येषां ते (इन्द्रम्) महाप्रतापिनं पुरुषम् (न) निषेधे (अह) एव (दामानम्) ददाते—मनिन् । दानम् (मघना) धनवान् (नि) (यंसत्) यमु उपरमे—लेट् । उपरतं निरुद्धं कुर्यात् (नि) नित्यम् (सुन्वते) तत्त्वं निष्पादयते पुरुषाय (वहति) प्रापयति (भूरि) प्रभूतम् (वामम्) वननीयं धनम् ॥

मन्त्रौ ६, १० व्याख्यातौ—अ० ७ । ५० । ६, ७ ॥

धारण शक्तियों के साथ (सम् सृजति) मिलते हैं ॥ ६ ॥

भावार्थ—प्रतापी पुरुष दुष्ट को जीतकर उसे उसके दोष का निश्चय करा देता है, शुभ गुण चाहने वाला उदारचित्त मनुष्य अनेक धन और आत्म-बल पाता है ॥ ६ ॥

मन्त्र ६, १० आ चुके हैं—अ० ७।५०।६।७ ॥

गोभिष्टुरेसामतिं दुरेवां यवेन वा क्षुधं पुरुहूत विश्वे ।

वयं राजसु प्रथमा धनान्यरिष्टासो वृजुनीभिर्जयेम ॥ १० ॥

गोभिः । तुरेम् । अमतिम् । दुः-स्वाम् । यवेन । वा । क्षुधम् ।
पुरु-हूत । विश्वे ॥ वयम् । राज-सु । प्रथमाः । धनानि ।
अरिष्टासः । वृजुनीभिः । जयेम् ॥ १० ॥

भाषार्थ—(पुरुहूत) हे बहुत बुराये गये राजन् ! (विश्वे) हम सब लोग (गोभिः) विद्याओं से (दुरेवाम्) दुर्मति वाली (अमतिम्) कुमति को (तरेम्) हटावें, (वा) जैसे (यवेन) जौ आदि अन्न से (क्षुधम्) भूख को । (वयम्) हम लोग (राजसु) राजाओं के बीच (प्रथमाः) पहिले और (अरिष्टासः) अजेय होकर (वृजुनीभिः) अनेक वर्जन शक्तियों से (धनानि) अनेक धनों को (जयेम) जीतें ॥ १० ॥

भावार्थ—मनुष्य विद्याओं द्वारा कुमति हटाकर प्रशंसनीय गुण प्राप्त करके अनेक धन प्राप्त करें ॥ १० ॥

मन्त्र १० कुछे भेद से और मन्त्र ११ आ चुके हैं—अ० २०।१७।१०,११ और आगे हैं—अ० २०।६४।१०,११। मन्त्र १० की टिप्पणी देखो ॥

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघ्रायोः । इन्द्रः
पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु ॥ ११ ॥

बृहस्पतिः । नः । परि । पातु । पश्चात् । उत्त । उत्-तरस्मात् ।
अधरात् । अघ-योः ॥ इन्द्रः । पुरस्तात् । उत्त । मध्यतः ।
नः । सखा । सखि-भ्यः । वरीयः । कृणोतु ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़े शूरो का रक्षक सेनापति]
(नः) हमें (पश्चात्) पीछे से, (उत्तरस्मात्) ऊपर से (उत) और (अध-
रात्) नीचे से (अघातोः) बुरा चीतने वाले शत्रु से (परि पातु) सब प्रकार
बचावे । (इन्द्रः) इन्द्र [वह बड़े पेश्वर्य वाला राजा] (पुरस्तात्) आगे से
(उत) और (मध्यतः) मध्य से (नः) हमारे लिये (वरीयः) विस्तीर्ण स्थान
(कृणोतु) करे, (सखा) जैसे मित्र (सखिभ्यः) मित्रों के लिये [करता है] ॥११॥

भाषार्थ—प्रमुख्य वीरों में महावीर और प्रतापियों में महाप्रतापी होकर
दुष्टों से प्रजा की रक्षा करे ॥

यह मन्त्र आचुका है—अ० ७।५१।१। मन्त्र १०, ११ की टिप्पणों भी
ऊपर देखो ॥

सूक्तम् ८० ॥

१—३ ॥ बृहस्पतिर्देवता ॥ त्रिष्टुप् छन्दः ॥

राजलक्षणोपदेशः—राजा के लक्षण का उपदेश ॥

यो अद्रिभित् प्रथमजा ऋतवा बृहस्पतिराङ्गिरसो हवि-
ष्मान् । द्बिबर्हजमा प्राचर्म सत् पिता न आ रोदसी वृषभो
रौरवीति ॥ १ ॥

यः । अद्रि-भित् । प्रथम-जाः । ऋत-वा । बृहस्पतिः ।
आङ्गिरसः । हविष्मान् ॥ द्बिबर्ह-जमा । प्राचर्म-सत् ।
पिता । नः । आ । रोदसी इति । वृषभः । रौरवीति ॥ १ ॥

भाषार्थ—(यः) जो (अद्रिभित्) पहाड़ों को तोड़ने वाला, (प्रथ-
मजाः) मुख्य पद पर प्रकट होने वाला, (ऋतवा) सत्यवान्, (आङ्गिरसः)
विद्वान् पुरुष का पुत्र (हविष्मान्) देने लेने योग्य पदार्थों वाला (बृहस्पतिः)

११—अयं मन्त्रो व्याख्यातः—अ० ७।५१।१ ॥

१—(यः) (अद्रिभित्) शैलानां छेत्ता (प्रथमजाः) मुख्यपदे प्रादु-
र्भूतः (ऋतवा) ऋत—मत्वर्ये वनिप् । सत्यवान् (बृहस्पतिः) बृहद्वीनां
विद्वानां रक्षको राजा (आङ्गिरसः) अङ्गिरसो विदुषः पुरुषस्य पुत्रः (हविष्मान्)

बृहस्पति [बड़ी विद्याओं का रक्षक राजा] है, वह (द्विबर्हज्मा) दोनों [विद्या और पुरुषार्थ] से प्रधानता पाने वाला, (प्राधर्मसत्) अच्छे प्रकार सब ओर से प्रताप का सेवन करने वाला (नः) हमारा (पिता) पालने वाला है, [जैसे] (वृषभः) जल बरसाने वाला मेघ (रोदसी) आकाश और पृथिवी में (आ) व्यापकर (रोरवीति) बल से गरजता है ॥ १ ॥

भाषार्थ—राजा को चाहिये कि पहाड़ आदि कठिन स्थानों में मार्ग करके प्रजा का पालन करे, जैसे मेघ गर्जन के साथ वृष्टि करके संसार का उपकार करता है ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—६।७३।१—३। चौथा पाद साञ्जुका है—
अ० १८।३।६॥

जनाय चित् य ईवते उ लोकं बृहस्पतिर्देवहूती चकार । अन्
वृत्राणि वि पुरी ददरीति जयं शत्रूँरमित्रान् पृत्सु सहन् ॥२
जनाय । चित् । यः । ईवते । ज इति । लोकम् । बृहस्पतिः ।
देव-हूती । चकार ॥ अन् । वृत्राणि । वि । पुरी । ददरीति ।
जयन् । शत्रून् । मित्रान् । पृत्-सु । सहन् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(यः) जिस (बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़ी विद्याओं के

[दातव्यग्राह्यपदार्थयुक्तः (द्विबर्हज्मा) बर्ह प्राधान्ये—वज् । जमतिर्गति—
कर्मा—निय० २ । १४ । श्वन्नुत्तनपूषन्सीहन्० । उ० १ । १५४ । जमु गतौ—
कनिन्, अकारलोपः । द्वाभ्यां विद्यापुरुषार्थाभ्यां बर्ह प्राधान्यं जमति
प्राप्नोति यः सः (प्राधर्मसत्) प्र + आ + धर्म + ण सम्भक्तौ-क्विप् । गमादीना-
मिति वक्तव्यम् । वा० पा० ६ । ४ । ४० । अनुनासिकलोपः । ह्रस्वस्य पिति
कृति तुक् । पा० ६ । १ । ७१ । तुगागमः । प्रकर्षेण समन्तात् प्रतापस्य सेवन-
कर्ता (पिता) पालकः) (नः) अस्माकम् (आ) व्याप्य (रोदसी) द्यावा-
पृथिव्यौ (वृषभः) वर्षिताऽपाम्—निरु० ४ । ८ । मेघः (रोरवीति) भृशं
रौति । अभिगर्जति ॥

२—(जनाय) (चित्) अवश्यम् (यः) (ईवते) गतिमते (उ) एव

सू० ६० [६७८] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥ (४,२८९)

रत्नकोराजा] ने (चित् उ) अवश्य ही (ईवते) गतिमान् (जनाय) मनुष्य के लिये (देवहूतौ) विद्वानों के बुलावे में (लोकम्) दर्शनीय स्थान (चकार) किया है वह (वृत्राणि) धनों को (धन) पाता हुआ और (अमित्रान्) सताने वाले (शत्रून्) वैरियों को (पृत्सु) सङ्ग्रामों में (जयेन्) जीतता हुआ और (सहन्) हराता हुआ (पुरः) [उनके] दुर्गों को (वि-दर्दरीति) तोड़ डालता है ॥ २ ॥

भावार्थ—जो बीर राजा विद्वान् उद्योगी जनों का आदर करता है, वह धनवान् होकर और शत्रुओं को जीतकर प्रजा को पालता है ॥ २ ॥

बृहस्पतिः समजयद् वसूनि महो वृजान् गोमतो देव एषः ।
अपः सिषासन्तस्वप्नप्रतीतो बृहस्पतिर्हन्त्यमित्रं सुकैः ॥ ३ ॥

बृहस्पतिः । सम् । अजयत् । वसूनि । महः । वृजान् ।
गो-मतः । देवः । एषः ॥ अपः । सिषासन् । स्वः । अप्रति-इतः ।
बृहस्पतिः । हन्ति । अमित्रम् । सुकैः ॥ ३ ॥

भावार्थ—(देवः) विजय चाहने वाले (एषः) इस (बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़ी विद्याओं के रत्नक पुरुष] ने (वसूनि) धनों को और (महः) बड़े, (गोमतः) विद्याओं से युक्त (वृजान्) मार्गों को (समजयत्) जीत लिया है, (अपः) कर्म और (स्वः) सुख को (सिषासन्) पूरे करने की

(लोकम्) दर्शनीयं स्थानम् (बृहस्पतिः) बृहतीनां विद्यानां पालकः (देवहूतौ) देवानामाह्वाने (चकार) कृतवान् (धन) गच्छन् । प्रामुवन् (वृत्राणि) धनानि (वि) विशेषेण (पुरः) शत्रूणां नगराणि । दुर्गाणि (दर्दरीति) भृशं विहणाति (जयेन्) (शत्रून्) (अमित्रान्) अम पीडने—इवन् । पीडकान् (पृत्सु) पृतनास्तु । संग्रामेषु (सहन्) अभिभवन् ॥

३—(बृहस्पतिः) बृहतीनां विद्यानां रत्नको राजा (सम्) सम्यक् (अजयत्) जयेन प्राप्तवान् (वसूनि) धनानि (महः) महतः । विशालान् (वृजान्) मार्गान् (गोमतः) विद्यायुक्तान् (देवः) विजिगीषुः (एषः) प्रत्यक्षः (अपः) कर्म (सिषासन्) जो अन्तर्कर्मणि—सनि, शत्रु । समाप्तिं

(४,२८८)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ८१ [६७८]

इच्छा करता हुआ, (अप्रतीतः) वे- रोक (बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़ी विद्याया का रक्षक राजा] (अकैः) वज्रों [शस्त्रों] से (अमित्रम्) सताने वाले को (हन्ति) नाश करता है ॥ ३ ॥

भावार्थ—जो विजय चाहने वाला पुरुष धन और विद्याओं को बढ़ा लेता है, वह अपने सुकर्म से दुष्टों को हराकर आनन्द पाता है ॥ ३ ॥

इति सप्तमोऽनुवाकः ॥

अथाष्टमोऽनुवाकः ॥

सूक्तम् ८१ ॥

१—१२ ॥ बृहस्पतिर्देवता ॥ १ विराट् त्रिष्टुप् ; २—७, ११ निचृत् त्रिष्टुप् ; ८—१०, १२ त्रिष्टुप् ॥

परमात्मगुणोपदेशः—परमात्मा के गुणों के उपदेश ॥

इमां धियं सुप्तशीर्ष्णीं पिता न ऋतप्रजातां बृहतीमविन्दत् ।
तुरीयं स्विज्जनयद् विश्वजन्योऽयास्य उक्थमिन्द्राय शंसन् १
इमाम् । धियम् । सुप्त-शीर्ष्णीम् । पिता । नः । ऋत-प्रजाताम् ।
बृहतीम् । अविन्दत् ॥ तुरीयम् । स्वित् । जुनयत् ।
विश्व-जन्यः । अयास्यः । उक्थम् । इन्द्राय । शंसन् ॥ १ ॥

भावार्थ—(नः) हमारे (पिता) पिता [मनुष्य] ने (ऋतप्रजाताम्) सत्य [अविनाशी परमात्मा] से उत्पन्न हुई (सप्तशीर्ष्णीम्) [दोकान, दो नथने, दो आखें, और एक मुख—अ० १० । २ । ६] सात गोलकों में शिर [आश्रय]

कर्तुमिच्छन् (स्वः) सुखम् (अप्रतीतः) अप्रतिगतः (बृहस्पतिः) (हन्ति) नाशयति (अमित्रम्) पीडकं पुरुषम् (अकैः) अर्को वज्रनाभ—निघ० २ । २० । वज्रैः । शस्त्रैः ॥

१—(इमाम्) प्रत्यक्षाम् (धियम्) प्रज्ञाम् (सप्तशीर्ष्णीम्) शीर्षश्चन्द्रसि । पा० । ६ । १ । ६० । शीर्षजति शब्दान्तरं शिरःशब्देन समानार्थम्, ऊप । कर्णौ नासिके चक्षुणी मुखम्—अ० १० । २ । ६ । इति सप्तसु विप्रेष

रखने वाली, (इमाम्) इस (बृहतीम्) बड़ी (धियम्) बुद्धि को (अविन्दत्) पाया है । और (विश्वजन्यः) उस सब मनुष्यों के हितकारी, (अयास्यः) शुभ कर्मों में स्थिति रखने वाले मनुष्य ने (इन्द्राय) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले जगदीश्वर] की (स्वित्) ही (शंसन्) स्तुति करते हुये (तुरीयम्) बल युक्त (उक्थम्) वचन को (जनयत्) प्रकट किया है ॥ १ ॥

भावार्थ—परमात्मा की जिस सत्य वेदवाणी को पूर्वज लोग परम्परा से परीक्षा करके ग्रहण करते आये हैं, विद्वान् लोग उसी वेदवाणी पर चलकर परमेश्वर की स्तुति करते हुये अपने आत्मा को बढ़ावें ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—१० । ६७ । १—१२ ॥

ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्याना दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः ।
विप्रं पदमङ्गिरसो दधाना युञ्जस्य धाम प्रथमं मनन्त ॥ २ ॥

ऋतम् । शंसन्तः । ऋजु । दीध्यानाः । दिवः । पुत्रासः ।
असुरस्य । वीराः ॥ विप्रम् । पदम् । अङ्गिरसः । दधानाः ।
युञ्जस्य । धाम । प्रथमम् । मनन्त ॥ २ ॥

भावार्थ—(ऋतम्) सत्य ज्ञान की (शंसन्तः) स्तुति करते हुये, (ऋजु) ठीक ठीक (दीध्यानाः) ध्यान करते हुये, (दिवः) विजय चाहने वाले (असुरस्य) बुद्धिमान् पुरुष के (वीराः) वीर (पुत्रासः) पुत्र (विप्रम्)

शिर आश्रयो यस्यास्ताम् (पिता) जनकः (नः) अस्माकम् (ऋतप्रजाताम्) सत्यात् परमेश्वरात् प्रादुर्भूताम् (बृहतीम्) महतीम् (अविन्दत्) लब्धवान् (तुरीयम्) तुर वेगे—क । घञ्छौ च । पा० ४ । ४ । ११७ । तुरं-छप्रत्ययः, तत्र भव इत्यर्थे । बलयुक्तम् (स्वित्) अवधारणे (जनयत्) अजनयत् । प्रकटीकृतवान् (विश्वजन्यः) सर्वजनहितः पुरुषः (अयास्यः) इण् गतौ—अच् + आस उपवेशने क्यप्, टाप् । अयेषु शुभकर्मसु आस्या स्थितिर्यस्य सः (उक्थम्) वचनम् (इन्द्राय) परमैश्वर्यवते जगदीश्वराय (शंसन्) स्तुतिं कुर्वन् ॥

२—(ऋतम्) सत्यज्ञानम् (शंसन्तः) स्तुवन्तः (ऋजु) सरलम् । यथार्थम् (दीध्यानाः) धौ चिन्तायाम्—कानच् । तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य । पा० ६ । १ । ७ । इति दीर्घः । आयातः (दिवः) विजिगीषोः (पुत्रासः) पुत्राः

विविध प्रकार पूर्ण (पदम्) पद [पाने योग्य वस्तु] को (दधानाः) धारण करते हुये (अङ्गिरसः) ज्ञानी ऋषियों ने (यज्ञस्य) पूजनीय व्यवहार के (प्रथमम्) मुख्य (धाम) स्थान [परब्रह्म] को (मनन्त) पूजा है ॥ २ ॥

भाषार्थ—सत्यग्राही ऋषि महात्मा लोग माता पिता आदि विद्वानों से उत्तम शिक्षा पाकर परब्रह्म परमात्मा के ज्ञान में लवलीन होकर आत्मा की उन्नति करते हैं ॥ २ ॥

हंसैरिव सखिभिर्वावदद्विरश्मन्मयानि नह'ना व्यस्यन् ।
बृहस्पतिरभिकनिक्रदद् गा उत प्रास्तौदुच्च विद्वां अंगायत् ३
हंसैः-इव । सखि-भिः । वावदत्-भिः । अश्मन्-मयानि ।
नह'ना । वि-अस्यन् ॥ बृहस्पतिः । अभि-कनिक्रदत् । गाः ।
उत । प्र । अस्तौत् । उत । च । विद्वान् । अंगायत् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(हंसैः-इव) हंसों के समान [विवेकी] (वावदद्भिः) स्पष्ट बोलते हुये (सखिभिः) मित्र पुरुषों द्वारा (अश्मन्मयानि) व्याप्ति वाले (नह'ना) बन्धनों [कठिन विद्वां] को (व्यस्यन्) हटाते हुये, (अभिकनिक्रदत्) सब ओर उपदेश करते हुये (विद्वान्) विद्वान् (बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़े विद्वानों के स्वामी परमात्मा] ने (गाः) वेदवाणियों को (प्र अस्तौत्)

(असुरस्य) प्रज्ञायुक्तस्य (वीराः) विक्रान्ताः (विप्रम्) विविधपूरकम् (पदम्) प्रापणीयं वस्तु (अङ्गिरसः) ज्ञानिनः । ऋषयः (दधानाः) धारयन्तः (यज्ञस्य) पूजनीयव्यवहारस्य (धाम) धारकं स्थानम् (प्रथमम्) मुख्यम् (मनन्त) मन्यते रर्चति कर्मा—निघ० १ । ४ । अमनन्त । अस्तुवन्त ॥

३—(हंसैरिव) हंसिपक्षिवद्विवेकिभिः (सखिभिः) मित्रैः (वावदद्भिः) वद व्यक्तायां वाचि—यङ्लुकि शतृ । स्पष्टं कथयद्भिः (अश्मन्मयानि) अशू व्याप्तौ—मनिन् । व्याप्तिमन्ति (नह'ना) बन्धनानि । विघ्नकर्माणि (व्यस्यन्) विक्षिपन् । शिथिलयन् (बृहस्पतिः) बृहतां ब्रह्माण्डानां रक्षकः (अभिकनिक्रदत्) क्रदि आह्वने रोदने च—यङ्लुकि, शतृ । अभिमुख्येन भृशमुपविशन् (गाः) वेदवाणीः (उत) अपि (प्र अस्तौत्) प्रस्तुतवान् (उत)

प्रस्तुत किया है [सामने रक्ता है] (उत् च) और भी (उत् अगायत्) ऊंचा गाया है ॥ ३ ॥

भावार्थ—जिस पक्षपात रहित परमात्मा ने प्रलय के भारी अन्धकार को मिटाकर विवेकी प्यारे भक्तभूषणियों द्वारा संसार के सुख के लिये वेदों को प्रकाशित किया है, उस जगदीश्वर को उपासना से अपने आत्मा में सब लोग प्रकाश करें ॥ ३ ॥

अवो द्वाभ्यां पुर एकया गा गुहा तिष्ठन्तीरनु तस्य सेतौ ।
बृहस्पतिस्तमसि ज्योतिरिच्छन्नुदुस्मा आकुर्वि हि तिस्र
आवः ॥ ४ ॥

अवः । द्वाभ्याम् । पुरः । एकया । गाः । गुहा । तिष्ठन्तीः ।
अनु तस्य । सेतौ ॥ बृहस्पतिः । तमसि । ज्योतिः । इच्छन् ।
उत् । उस्माः । आ । अकः । वि । हि । तिस्रः । आवरित्यावः ४

भावार्थ—(तमसि) अन्धकार के बीच (ज्योतिः) प्रकाश (इच्छन्) चाहता हुआ (बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़े ब्रह्माण्डों का स्वामी परमेश्वर] (द्वाभ्याम्) दोनों [प्रलय और सृष्टि की अवस्थाओं] से और (एकया) एक [स्थिति की अवस्था] से (अनु तस्य) असत्य [अज्ञान] के (सेतौ) बन्धन में (गुहा) गुहा [गुप्त वा अज्ञान दशा] के बीच (अवः) नीचे और (परः) ऊपर (तिष्ठन्तीः) ठहरी हुई (गाः) वेदवाणियों को और (तिस्रः) तीनों (तिस्राः) [सूर्य, अग्नि और बिजुली रूप] प्रकाशों को (हि) निश्चय करके

उच्चैः (चः) (विद्वान्) (अगायत्) उपविष्टवान् ॥

४—(अवः) अवस्तात् । नीचैः (द्वाभ्याम्) द्वित्वयुक्ताभ्यां प्रलयसृष्टय-
वस्थाभ्याम् (परः) परस्तात् । उच्चैः (एकया) एकत्वयुक्तया स्थित्यवस्थया
(गाः) वेदवाणीः (गुहा) गुहायाम् । अज्ञातदशायाम् (तिष्ठन्तीः) वर्तमानाः
(अनु तस्य) असत्यस्य । अज्ञानस्य (सेतौ) बन्धे (बृहस्पतिः) बृहतां ब्रह्मा-
ण्डानां स्वामी परमेश्वरः (तमसि) अन्धकारे । प्रलये (ज्योतिः) प्रकाशम्
(इच्छन्) कामयमानः (उत्) उत्तमत्तया (उस्माः) वस निवासे-रक् । उस्मा
रश्मिनाम्-निघ० १ । ५ । सूर्याग्निविद्युदप्रकाशान् (आ अकः) आकारे

(उत्) उत्तम रीति से (आ अकः) आकार में लाया और (वि आवः) प्रकट किया ॥ ४ ॥

भाष्यार्थ—जो पदार्थ प्रलय, सृष्टि और स्थिति के अनादि चक्र से प्रलय की अवस्था में सूक्ष्म रूप से रहते हैं, वे परमात्मा की इच्छा से आकार पाकर संसार में प्रकट होते हैं ॥ ४ ॥

विभिद्या पुरं शयथे अपाचीं निस्त्रीणि साकमुदधेरकृन्तत् ।

बृहस्पतिरुषसं सूर्यं गामर्कं विवेद स्तनयन्निव द्यौः ॥ ५ ॥

वि-भिद्यं । पुरंस् । शयथा । ईम् । अपाचीम् । निः । त्रीणि ।

साकम् । उदधेः । अकृन्तत् ॥ बृहस्पतिः । उषसम् ।

सूर्यम् । गाम् । अर्कम् । विवेद । स्तनयन्-इव । द्यौः ॥ ५ ॥

भाष्यार्थ—(बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़े ब्रह्माण्डों के स्वामी परमेश्वर] ने (शयथा) सोती हुयी (अपाचीम्) ओंघे मुख वाली (ईम्) प्राप्त हुई (पुरम्) पूर्ति [वा नगरी] को (विभिद्य) तोड़ डालकर (त्रीणि) तीनों [धामों] अर्थात् स्थान, नाम, और जाति जैसे मनुष्य पशु आदि—निरु० ६। २८] को (साकम्) एक साथ (उदधेः) जल वाले समुद्र से (निः अकृन्तन्) झाँट लिया, (द्यौः) उस प्रकाशमान [परमात्मा] ने (स्तनयन् इव) गरजते हुये बादल के समान

कृतवान् (हि) निश्चयेन (तिष्ठः) त्रिसंख्याकाः (वि आवः) वृणोतेर्लुङि मन्त्रे असेति च्लेर्लुक् । बहुलं छन्दसीत्यङागमः । विवृत्तवान् । प्रकाशितवान् ॥

५—(विभिद्य) विदार्य (पुरम्) पूर्ति नगरीं वा (शयथा) शीङ्शपि-रुगमि० । उ० ३। ११३ । शीङ्शयने—अथप्रत्ययः । विभक्तोऽकारः । शयथाम् । शयनयुक्ताम् (ईम्) प्राप्ताम् (अपाचीम्) पराङ्मुखीम् (निः) मृथग्भावे (त्रीणि) धामानि त्रयाणि भवन्ति स्थानानि नामानि जगद्गानीनि—निरु० ६। २८ (साकम्) युगपत् (उदधेः) जलाधारात् । समुद्रात् (अकृन्तत्) छिन्नवान् । निर्गमितवान् (बृहस्पतिः) बृहतां ब्रह्माण्डानां रक्षकः परमेश्वरः (उषसम्) उषः किञ्च । उ० ४ । २३४ । उष दाहे—अलि कित् । दाहकम् (सूर्यम्) आदित्य-मण्डलम् (गाम्) पृथिवीम् (अर्कम्) अर्कं तापे स्तुतौच—घञ् । अन्नम्—निरु०

सू० ८१ [६७८] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥ (४,३०३)

होकर (उषसम्) तपाने वाले (सूर्यम्) सूर्य को, (गाम्) भूमि को और (अर्कम्) उष्णता देने वाले अन्न को (विवेद) जताया है ॥ ५ ॥

भाषार्थ—जो पदार्थ परमाणु रूप से प्रलय के बीच बीजरूप में गड़बड़ पड़े थे, उन को परमात्मा ने जल द्वारा आकार युक्त कर के सूर्य, पृथिवी, अन्न आदि उत्पन्न किये हैं ॥ ५ ॥

इन्द्रो बलं रक्षितारं दुधानां करेणैव वि चकर्तु रवेण ।
स्वेदाज्जिभिराशिरमिच्छमानोऽरोदयत् पुणिमा गा अमु-
ष्णात् ॥ ६ ॥

इन्द्रः । बलम् । रक्षितारम् । दुधानाम् । करेण-इव । वि ।
चकर्तु । रवेण ॥ स्वेदाज्जि-भिः । आ-शिरम् । इच्छमानः ।
अरोदयत् । पुणिम् । आ । गाः । अमुष्णात् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमेश्वर] ने (दुधानाम्)
पूर्तियों के (रक्षितारम्) रखलेने वाले [रोकने वाले] (बलम्) हिंसक [विघ्न]
को (करेण इव) हाथ से जैसे [वैसे] (रवेण) अपने शब्द [वेद] से
(वि चकर्त) काट डाला है । और (स्वेदाज्जिभिः) मोक्ष के प्रकट करने वाले
व्यवहारों से (आशिरम्) परिपक्वता को (इच्छमानः) चाहते हुये उस ने

५ । ४ (विवेद) विज्ञापितवान् (स्तनयन्) गर्जयन् मेघः (इव) यथा (द्यौः)
प्रकाशमानः परमेश्वरः ॥

६—(इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् परमेश्वरः (बलम्) हिंसकं विघ्नम् (रक्षि-
तारम्) रक्षकम् । निरोधकमित्यर्थः (दुधानाम्) दुह प्रपूरणे-रूप, टाप । पूर-
यित्रीणां शक्तीनाम् (करेण) हस्तेन (इव) यथा (वि) विविधम् (चकर्त)
कृती छेदने—लिट् । चिच्छेद (रवेण) शब्देन वेदेन (स्वेदाज्जिभिः) अश्विदा
स्नेहनमोचनमोहनेषु अव्यक्तशब्दे गात्रप्रक्षरणे च—अञ् + अञ् व्यक्तिसंज्ञ-
कान्तिगतिषु-इन् । मोचनस्य मोक्षस्य व्यक्तीकरणव्यवहारैः (आशिरम्) अ-
२० । २२ । ६ । आङ् + श्रीञ् पाके—किप्, शिर् इत्यादेशः । परिपक्वत्वम्
(इच्छमानः) कोमयमानः (अरोदयत्) रोदनं कारितवान् (पुणिम्) कुव्यव-

(४,३०४)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ८१ [६७८]

(पणिम्) कुन्यवहारी पुरुष को (अरोदयत्) रुलाया है और (गाः) प्रकाशों को [उस से] (आ) सर्वथा (अमुष्णात्) छीन लिया है ॥ ६ ॥

भाषार्थ—यहां (इन्द्र) शब्द (बृहस्पति) अर्थात् परमात्मा का वाचक है । परमात्मा वेदद्वारा मोक्षमार्ग बताकर सुखों के रोकने वाले विघ्नों को मिटाता है और अधर्मी पापियों को घोर अन्धकार में डालता है ॥ ६ ॥

स ई सत्येभिः सखिभिः शुचिर्द्रुगोधायसु वि धनसैरददः ।

ब्रह्मणस्पतिर्वृषभिर्वराहैर्धर्मस्वेदेभिर्द्रविणं व्यानत् ॥ ७ ॥

सः । ईम् । सत्येभिः । सखि-भिः । शुचत्-भिः । गो-धायसम् ।

वि । धन-सैः । अदद रित्यददः ॥ ब्रह्मणः । पतिः । वृष-भिः ।

वराहैः । धर्म-स्वेदेभिः । द्रविणम् । वि । आनत् ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(सः) उस (ब्रह्मणः) ब्रह्माण्ड के (पतिः) स्वामी [पर-मेश्वर] ने (सत्येभिः) सत्य (सखिभिः) मित्ररूप, (शुचिर्द्रुभिः) प्रकाशमान, (धनसैः) धन देने वाले, (वृषभिः) बलवान्, (वराहैः) उत्तम आहार [भोजनादि] देने वाले, (धर्मस्वेदेभिः) ताप और भाप रखने वाले गुणों से (ईम्) प्राप्त हुये (गोधायसम्) वज्र रखने वाले [शत्रु] को (अददः) फाड़ डाला और (द्रविणम्) धन को (वि आनत्) प्राप्त किया है ॥ ७ ॥

हारिणं पुरुषम् (आ) समन्तात् (गाः) रश्मीन् । प्रकाशान् (अमुष्णात्) अपहतवान् ॥

७—(सः) (ईम्) प्राप्तम् (सत्येभिः) सत्यशीलैः (सखिभिः) मित्र-भूतैः (शुचिर्द्रुभिः) दीप्समानैः (गोधायसम्) गतिकारकोपपदयोः पूर्वपद प्रकृतिस्वरत्वञ्च । ७० ४ । २२७ । गो + दधाते—असि, गित् । गोर्वज्रस्य धारकं गजम् (धनसैः) षण्णु दाने—उ । धनदातृभिः (अददः) दृ विदारणे—यङलुगन्ताल्लङि रूपम् । भृशं विदारितवान् (ब्रह्मणः) प्रवृद्धस्य ब्रह्माण्डस्य (पतिः) स्वामी (वृषभिः) बलवद्भिः (वराहैः) अ० ८ । ७ । २३ । अन्त्ये-ष्वपि दृश्यते । पा० ३ । २ । १०१ । वर + आङ् + हृन् हरणे—उप्रत्ययः । वरः श्रेष्ठ आहारो भोजनादिकं येभ्यस्तैः । वराहारदातृभिः (धर्मस्वेदेभिः) धर्म-स्तापः स्वदो वाष्पश्च येभ्यस्तादृशगुणैः (द्रविणम्) धनम् (वि) विविधम् (आनत्) अ० १८ । ३ । ३५ । आनत् । आनयत् ।

भाषार्थ—परमात्मा अपने सत्य आदि गुणों से सब क्लेशों को दूर
कर हमें धन आदि देकर आनन्द देता है ॥ ७ ॥

ते सत्येन मनसा गोपति गा इयानास इषणयन्त धीभिः ।
बृहस्पतिर्मिथोऽवद्यपेभिरुदुस्त्रिया असृजत स्वयुग्भिः ॥ ८ ॥
ते । सत्येन । मनसा । गो-पतिम् । गाः । इयानासः । इष-
णयन्तु । धीभिः ॥ बृहस्पतिः । मिथः-अवद्यपेभिः । उत् ।
उस्त्रियाः । असृजत । स्वयुक्-भिः ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(सत्येन) सच्चे (मनसा) मन से (धीभिः) कर्मों द्वारा
(गाः) वेद वाणियों को (इयानासः) पा लेने वाले (ते) उन [विद्वानों] ने
(गोपतिम्) वेद वाणी के स्वामी [परमात्मा] को (इषणयन्त) खोजा है, [कि]
(बृहस्पतिः) उस बृहस्पति [बड़े ब्रह्माण्डों के स्वामी परमात्मा] ने (उस्त्रियाः)
निवास करने वाली प्रजाओं को (मिथोऽवद्यपेभिः) आपस में पाप से बचाने
वाले (स्वयुग्भिः) आत्मा के साथी कर्मों से (उत्) उत्तम रीति पर (अस-
जत) सृजा है ॥ ८ ॥

भाषार्थ—विद्वान् लोग वेदवाणी द्वारा उत्तम उत्तम कर्म करके परमा-
त्मा को खोजते हैं कि उसने मनुष्य आदि सृष्टि को उनके पूर्व जन्मों के कर्म
फलों के अनुसार उत्पन्न किया है ॥ ८ ॥

तं वर्धयन्तो सतिभिः शिवाभिः सिंहमिव नानदतं सुधस्यै ।
बृहस्पतिं वृषणं शूरं वातौ भरभरे अनु मदेम जिष्णुम् ॥ ९ ॥

८—(ते) विद्वान्सः (सत्येन) यथार्थेन (मनसा) चित्तेन (गोपतिम्)
वेदवाणीस्वामिनम् (गाः) वेदवाणीः (इयानासः) इण् गतौ—कानच्, असृक्
च । प्राप्तवन्तः (इषणयन्त) इषु इच्छायाम्-क्यु । तत् करोति तदाचष्टे । वा०
पा० ३ । १ । २६ । इषण—णिच्, लङ्, अडभावः । इषणमिच्छां कृतवन्तः (धीभिः)
कर्मभिः (बृहस्पतिः) बृहतां ब्रह्माण्डानां स्वामी (मिथोऽवद्यपेभिः) पातैः
कप्रत्ययः । मिथः परस्परम् अवद्याद् निन्द्यात् पापाद् रक्तकैः (उत्) उत्तमतया
(उस्त्रियाः) अ० २० । १६ । ६ । निवासशीलाः प्रजाः (असृजत) अजनयत्
(स्वयुग्भिः) युजिश् योगे—किप् । स्वेन आत्मना सह युक्तैः कर्मभिः ॥

(४,३०६)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ८१ [६७८]

तस् । वर्धयन्सः । मति-भिः । शिवाभिः । सिंहस्-इव ।
नानदतस् । सध-स्थे ॥ बृहस्पतिस् । वृषणस् । शूर-सातौ ।
भरै-भरे । अनु । मदेम् । जिष्णुम् ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(शिवाभिः) कल्याणी (मतिभिः) बुद्धियों के साथ (नान-
दतम्) बल से दहाड़ते हुये (सिंहम् इव) सिंह के समान (वृषणम्) बल-
वान् (जिष्णुम्) विजयी (तम्) उस (बृहस्पतिम्) बृहस्पति [बड़े ब्रह्मा-
ण्डों के स्वामी परमेश्वर] को (सधस्थे) समा स्थान में (वर्धयन्तः)
बढ़ाते हुये हम (शूरसातौ) शूरों करके सेवने योग्य (भरेभरे) सङ्ग्राम
सङ्ग्राम में (अनु मदेम्) आनन्द पाते रहें ॥ ८ ॥

भावार्थ—मनुष्य आपस में मिलकर परमात्मा के गुणों को निश्चय
करके आत्मा की उन्नति करते हुये आनन्द पावें ॥ ८ ॥

यदा वाजसस नह् विश्वरूपमाद्यामरुस्तदुत्तराणि सद्यः । बृह-
स्पतिं वृषणं वर्धयन्तो नाना सन्तो विभ्रतो ज्योतिरासा १०
यदा । वाजस् । असनत् । विश्व-रूपम् । आ । द्याम् ।
अरुहात् । उत्-तराणि । सद्यः ॥ बृहस्पतिस् । वृषणम् ।
वर्धयन्तः । नाना । सन्तः । विभ्रतः । ज्योतिः । आसा ॥ १० ॥

भाषार्थ—(यदा) जब उस [परमात्मा] ने (विश्वरूपम्) सब
संसार में रूप करने वाले (वाजम्) बल को (असनत्) सेवन किया, और (द्याम्)

८—(तम्) प्रसिद्धम् (वर्धयन्तः) स्तुवन्तः (मतिभिः) बुद्धिभिः
(शिवाभिः) कल्याणीभिः (सिंहम्) (इव) (नानदतम्) भृशं शब्दायमानम्
(सधस्थे) समास्थाने (बृहस्पतिम्) बृहतां ब्रह्माण्डानां स्वामिनम् (वृषणम्)
बलवन्तम् (शूरसातौ) शूरैः संभजनीये (भरेभरे) रणे रणे (अनु) निरन्त-
रम् (मदेम्) हृष्येम् (जिष्णुम्) विजेतारम् ॥

१०—(यदा) (वाजम्) बलम् (असनत्) सेवितवान् (विश्वरूपम्)
सर्वस्मिन् संसारे रूपं यस्मात् तम् (द्याम्) प्रकाशमानं सूर्यम् (आ अरुहात्)

चमकते हुये सूर्य को और (उत्तराणि) अधिक उत्तम (सद्म) लोकों को (आ अरुक्षत्) ऊंचा किया । [तब] (वृषणम्) उस बलवान् (बृहस्पतिम्) बृहस्पति [बड़े ब्रह्माण्डों के स्वामी परमात्मा] को (आसा) मुख से (नाना) नाना प्रकार (वर्धयन्तः) बढ़ाते हुये (सन्ताः) सन्त लोग [सत्पुरुष] (ज्योतिः) ज्योति को (विभ्रतः) धाणिर करने वाले [हुये हैं] ॥ १० ॥

भावार्थ—जब परमात्मा सूर्य आदि लोकों को उत्पन्न करके अपना सामर्थ्य दिखाता है, तब योगी जन उस जगदीश्वर की स्तुति करते हुये अपने आत्मा को प्रकाश युक्त करते हैं ॥ १० ॥

सुत्यामाशिषं कृणुता वयोधै कीरिं चिद्भवयस्व स्वेभरेवैः ।
पुश्चा मृधे अपभवन्तु विश्वास्तद्वरौदसी शृणुतं विश्वमन्वे ११
सुत्याम् । आ-शिषम् । कृणुत । वयः-धै । कीरिम् ।
चित् । हि । अवय । स्वेभिः । एवैः ॥ पुश्चा । मृधः ।
अप । भवन्तु । विश्वाः । तत् । रौदसी इति । शृणुतम् ।
विश्वमिन्वे इति विश्वम्-इन्वे ॥ ११ ॥

भावार्थ—[हे विद्वानो !] (वयोधै) जीवन धारण करने के लिये (आशिषम्) मेरी प्रार्थना को (सत्याम्) सत्य (कृणुत) करो, (कीरिम्) स्तुति करने वाले को (स्वेभिः) अपने (एवैः) उद्योगों से तुम (चित् हि) अवश्य ही (अवय) वचाते हो । (विश्वा) सब (मृधः) सताने वाली

आरोहितवान् । उत्पादितवानित्यर्थः (उत्तराणि) उत्तमतराणि (सद्म) सद्मानि । लोकान् (बृहस्पतिम्) परमात्मानम् (वृषणम्) बलवन्तम् (वर्धयन्तः) स्तुवन्तः (नाना) विविधप्रकारेण (सन्तः) सत्पुरुषाः (विभ्रतः) धारयन्तः (ज्योतिः) प्रकाशम् (आसा) आस्येन । मुखेन ॥

११—(सत्याम्) यथार्थम् (आशिषम्) प्रार्थानाम् (कृणुत) कुरुत (वयोधै) प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै । पा० ३ । ४ । १० । वयस् + दधातेः—कैप्रत्ययस्तुमर्थे । जीवनं धारयितुम् (कीरिम्) अ० २० । १७ । १२ । स्तोतारम् (चित्) अवश्यम् (हि) एव (अवय) रक्षय (स्वेभिः) आत्मीयैः (एवैः)

(४, ३०८)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ८१ [६९८]

सेनायें (पश्चा) पीछे (अप भवन्तु) हटजावें (तत्) इस को, (विश्वमिन्वे)
हे सब । मैं व्यापक (रोदसी) आकाश और भूमि ! (शृणुतम्) दोनों
सुना ॥ ११ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग संसार के सब पदार्थों से उपकार लेकर प्रजा
की रक्षा करें ॥ ११ ॥

इन्द्रो महा महतो अर्णवस्य वि सुर्धानमभिनदबुदस्य ।
अहन्नहिरिणात् सुप्तसिन्धून् देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः १२
इन्द्रः । महा । महतः । अर्णवस्य । वि । सुर्धानम् ।
अभिनत् । अबुदस्य ॥ अहन् । अहिम् । अरिणात् । सुप्त ।
सिन्धून् । देवैः । द्यावापृथिवी इति । प्र । अवतम् । नः ॥ १२ ॥

भाष्यार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] ने (महा)
अपनी महिमा से (महतः) विशाल (अर्णवस्य) गति वाले [वा जल वाले]
(अबुदस्य) हिंसक [अथवा मेघ के समान अन्धकार करने वाले बैरी] के
(सुर्धानम्) शिर को (वि अभिनत्) तोड़ दिया है, वह [परमात्मा] (अहिम्)
सब ओर चलने वाले मेघ में (अहन्) व्यापा है, और उस ने (सप्त) सात
(सिन्धून्) बहते हुये समुद्रों [के समान भूर आदि सात अवस्था वाले सब
लोकों] को (अरिणात्) चलाया है, (द्यावापृथिवी) हे आकाश और भूमि !
(देवैः) उत्तम गुणों के साथ (नः) हम को (प्र अवतम्) दोनों बचालो ॥ १२

गमनैः । उद्योगैः (पश्चा) पश्चात् (मृधः) हिंसिकाः सेनाः (अप) दूरे
(भवन्तु) (विश्वाः) सर्वाः (तत्) वचनम् (रोदसी) हे आकाशभूमी
(शृणुतम्) (विश्वमिन्वे) अ० २० । ३५ । ४ । हे सर्वव्यापिके ॥

१२—(इन्द्रः) परमात्मा (महा) महिम्ना । महत्त्वेन (महतः) विशा-
लस्ये (अर्णवस्य) गतियुक्तस्य उदकयुक्तस्य (वि) विशेषेण (सुर्धानम्)
शिरः (अभिनत्) अञ्चिन्तत् (अबुदस्य) अर्ब गतौ हिंसायां च—उदच् प्रत्ययः ।
हिंसकस्य । मेघस्येव अन्धकारविस्तारकस्य शत्रोः (अहन्) व्याप्तवान्
(अहिम्, अरिणात्, सप्त, सिन्धून्) एते व्याख्याताः—अ० २० । ३४ । ३
(देवैः) उत्तमगुणैः (द्यावापृथिवी) हे आकाशभूमी (प्र) प्रकर्षेण
(अवतम्) रक्षतम् (नः) अस्मान् ॥

सू० ८२ [६८०]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,३०८)

भावार्थ—भूर, भुवः आदि सात अवस्थाओं के लिये अ० २० । ३४ ।
३ । देखो और मिलओ । परमात्मा अपने अनन्त सामर्थ्य से बड़े बड़े विघ्नों को
हटाकर समस्त संसार की रक्षा करता है, उसी जगदीश्वर की कृपा से धर्मात्मा
लोग बलवान् होकर दुष्टों को मिटाकर आनन्द पाते हैं ॥ १२ ॥

सूक्तम् ८२ ॥

१—२१ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, २ निचृद् गायत्री; ३ गायत्री; ४, ६, ८, १०,
१२ निचृद्नुष्टुप्; ५ भुरगार्घ्युष्णिक्; ७ विराडनुष्टुप्; ८ पङ्क्तिः; ११ अनुष्टुप्;
१३ निचृत् पङ्क्तिः; १४ पथ्या वृद्धी; १५ विराडाषी वृद्धी; १६ भुरिगार्घ्यनुष्टुप्;
१७ निचृदाषी पङ्क्तिः; १८ निचृत्पथ्या वृद्धी; १९ सतः पङ्क्तिः २० विराडाषी
वृद्धी; २१ निचृत् सतः पङ्क्तिः ॥

१—३ राजप्रजाधर्मोपदेशः—१—३ राजा और प्रजा के धर्म का उपदेश ॥

अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे । सुनुं सुत्यस्य
सत्पतिम् ॥ १ ॥

अभि । प्र । गो-पतिम् । गि-रा । इन्द्रम् । अर्च । यथा ।
विदे ॥ सुनुम् । सुत्यस्य । सत्-पतिम् ॥ १ ॥

भावार्थ—[हे मनुष्य ।] (गोपतिम्) पृथिवी के पालक, (सत्यस्य)
सत्य के (सुनुम्) प्रेरक, (सत्पतिम्) सत्पुरुषों के रक्षक (इन्द्रम्) इन्द्र
[बड़े पेश्वर्य वाले राजा] को, (यथा) जैसा (विदे) वह है, (गिरा) स्तुति
के साथ (अभि) सब ओर से (प्र) अच्छे प्रकार (अर्च) तू पूज ॥ १ ॥

भावार्थ—जैसे राजा उत्तम गुण वाला हो, वैसे ही मनुष्यों को उसकी
यथार्थ बड़ाई करनी चाहिये ॥

मन्त्र १—१५ । ऋग्वेद में हैं — ८ । १६ [सायणभाष्य ५८] । ४—१८ ।

मन्त्र १—३ आचुके हैं अथर्व० २० । २२ । ४—६ ॥

आ हरयः ससृजिरेऽरुषीरधि बृर्हिषि । यत्राभि सं नवामहे ॥ २ ॥
आ । हरयः । ससृजिरे । अरुषीः । अधि । बृर्हिषि ॥ यत्र ।

१—३—न्यासप्रज्ञाः—अ० २० । २२ । ४—६ ॥

(४,३१०)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ८२ [६८०]

अभि । सुसु-नवांसहे ॥ २ ॥

भाषार्थ—(हरयः) दुःख हरने वाले मनुष्य (अरुषीः) गति शील [प्रजाओं] को (बर्हिषि) बढ़ती के स्थान में (अधि) अधिकार पूर्वक (आ-ससृजिरे) लाये हैं, (यत्र) जहां पर [तुम्हें राजा को] (अभि) सब ओर से (संनवामहे) हम मिलकर सराहते हैं ॥ २ ॥

भाषार्थ—जिस राजा की सुनीति से विद्या द्वारा उन्नति होवे, प्रजा सहित विद्वान् जन उस के गुणों का गान करें ॥ २ ॥

इन्द्राय गावः आशिरं दुदुहे वज्रिणे मधु । यत् सीमुपहुरे
विदत् ॥ ३ ॥

इन्द्राय । गावः । आ-शिरम् । दुदुहे । वज्रिणे । मधु ।
यत् । सीम् । उप-हुरे । विदत् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(वज्रिणे) वज्रधारी (इन्द्राय) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले राजा] के लिये (गावः) वेद वाणीयों ने (आशिरम्) सेवने वा पकाने योग्य पदार्थ [दूध, दही, घी आदि] को और (मधु) मधुविद्या [यथार्थ ज्ञान] को (दुदुहे) भर दिया है । (यत्) जब कि उसने [इन वेदवाणीयों को] (उपहुरे) अपने पास (सीम्) सब प्रकार (विदत्) पाया ॥ ३ ॥

भाषार्थ—ऐश्वर्यवान् पुरुष वेदवाणीयों से सुशिक्षित होकर दूध आदि, भोग्य पदार्थ प्राप्त करके यथार्थ ज्ञान बढ़ावे ॥ ३ ॥

मन्त्राः ४-२१ परमात्मगुणोपदेशः—मन्त्र ४-२१ परमात्मा के गुणों का उपदेश ॥

उद् गद् ब्रध्नस्य विष्टपं गृहमिन्द्रश्च गन्वहि ।

सध्वः पीत्वा संचेवहि त्रिः सुप्त सख्युः पुदे ॥ ४ ॥

उत् । यत् । ब्रध्नस्य । विष्टपम् । गृहम् । इन्द्रः । च । गन्वहि ॥

सध्वः । पीत्वा । संचेवहि । त्रिः । सुप्त । सख्युः । पुदे ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(यत्) जब (ब्रह्मस्य) नियम करने वाले [वा महान् , परमेश्वर] के (विष्टपम्) सहारे [अर्थात्] (गृहम्) शरण को (इन्द्रः) इन्द्र [वड़े ऐश्वर्य वाला आचार्य] (च) और [मैं ब्रह्मचारी] (उत्) ऊँचे होकर (गन्वहि) हम दोनों प्राप्त करें । (त्रिः) तीन बार [सत्य, रज, तम तीनों गुणों सहित] (सप्त) सात [भूर्, भुवः आदि सात अवस्थाओं वाले संसार] के (मध्वः) निश्चित ज्ञान का (पीत्वा) पान करके (सख्युः) सखा [मित्र, परमात्मा] के (पदे) पद [प्राप्ति योग्य मोक्ष सुख] में (सचेवहि) हम दोनों सीधे जावें ॥ ४ ॥

भाषार्थ—आचार्य और जिज्ञासु ब्रह्मचारी परमात्मा की शरण लेकर सत्य, रज और तम तीनों गुणों द्वारा भूर्, भुवः, स्वः, महः, जनः, पतः और सत्य इन सात अवस्थाओं से सूक्ष्म और स्थूल पदार्थों को जानकर मोक्ष पद प्राप्त करके सदा बुद्धि करें ॥ ४ ॥

अर्चतु प्राचतु प्रियमेधासो अर्चत ।

अर्चन्तु पुत्रका उत्त पुरं न धृष्णवर्चत ॥ ५ ॥

अर्चत । प्र । अर्चतु । प्रिय-मेधासः । अर्चत ॥

अर्चन्तु । पुत्रकाः । उत्त । पुरं । न । धृष्णु । अर्चतु ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(प्रियमेधासः) हे प्यारी [हितकारिणी] बुद्धि वाले पुरुषों! (धृष्णु) निर्भय (पुरं न) गढ़ के समान [उस परमेश्वर] को (अर्चत)

४—(उत्) उक्त्वैः (यत्) यदा (ब्रह्मस्य) अ० ७ । २२ । २ । नियामकस्य । महतः परमेश्वरस्य (विष्टपम्) अ० १० । १० । ३१ । आश्रयम् (गृहम्) शरणम् (इन्द्रः) परमैश्वर्यवानाचार्यः (च) अहं ब्रह्मचारी च (गन्वहि) आवां प्राप्नुयाव (मध्वः) मधुनः । यथार्थज्ञानस्य (पीत्वा) पानं कृत्वा । असुभूय (सचेवहि) पच समवाये लेके च । सिद्धौ प्रवृद्धौ भवेव (त्रिः) त्रिवारं सत्त्वरजस्तमोगुणैः (सप्त) भूर्, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम्, इति सप्तावस्थाविशेष-सम्बन्धिनः संसारस्य (सख्युः) सर्वमित्रस्य परमेश्वरस्य (पदे) प्राप्तये मोक्षसुखे ॥

५—(अर्चत) पूजयत—इन्द्रं परमात्मानम् (प्र) प्रकर्षण (अर्चत) (प्रियमेधासः) अ० २० । १० । २ । प्रियमेध—असुक् जसि । प्रिया हितकरी

पूजो, (प्र) अच्छे प्रकार (अर्चत) पूजो, (अर्चत) पूजो, (अर्चत) पूजो,
(उत) और (पुत्रकाः) गुणी सन्तानें [उस को] (अर्चन्तु) पूजें ॥ ५ ॥

भाषार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि वे अपने पुत्र पुत्रियों सहित प्रत्येक क्षण में, प्रत्येक पदार्थ में, प्रत्येक धर्म में परमात्मा की शक्ति को निहार कर आत्मा की उन्नति करें ॥ ५ ॥

यह मन्त्र कुछ भेद से सामवेद में भी है—पू० ४। ८। ३ ॥

अव स्वराति गर्गरो गोधा परि सनिष्णत् ।

पिङ्गा परि चनिष्कद्विन्द्राय ब्रह्मोद्यतम् ॥ ६ ॥

अव । स्वराति । गर्गरः । गोधा । परि । सनिष्णत् ॥

पिङ्गा । परि । चनिष्कद्वत् । इन्द्राय । ब्रह्म । उद्यतम् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(इन्द्राय) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले परमात्मा] के लिये (उद्यतम्) ऊंचे किये हुये (ब्रह्म) वेदज्ञान का (गर्गरः) गर्गर [सारंगी आदि बाजा] (अव स्वराति) स्वर आलापे, (गोधा) गोधा [वीणा आदि बाजा] (परि सनिष्णत्) बोल बोलें, और (पिङ्गा) पिङ्गा [धनुष की दढ़ डोरी] (परि चनिष्कद्वत्) टङ्कार करे ॥ ६ ॥

भाषार्थ—मनुष्यों को योग्य है कि घर के बीच उटसवों में और युद्ध क्षेत्र के बीच संग्रामों में परमात्मा का स्मरण भली भाँति करते रहें ॥ ६ ॥

मेधा प्रज्ञा येषां तत्सम्बुद्धौ (अर्चत) (अर्चन्तु) पूजयन्तु (पुत्रकाः) अनुकम्पा याम् । पा० ५ । ३ । ७६ । पुत्र—कप्रत्ययः । गुणितः सन्तानाः (उत) अपि च (पुरम्) दुर्गम् (न) यथा (धृष्णु) निर्भयम् (अर्चत) ॥

६—(अव स्वराति) निश्चयेन शब्दयेत् (गर्गरः) अ० ४ । १५ । १२ । गृ शब्दे—गप्रत्ययः + रा दाने—कप्रत्ययः । गर्गरस्य कलशस्य ध्वनियुक्तो वाद्यविशेषः (गोधा) अ० ४ । ३ । ६ । गुंथ परिवेष्टने ऋञ् टाप् । वीणादिवाद्यविशेषः (परि) सर्वतः (सनिष्णत्) स्वन शब्दे, यङ्लुकि लोट् । भृशं ध्वनिं कुर्यात् (पिङ्गा) अ० ८ । ६ । ६ । पिङ्गि बले दीप्तौ च—अव्, कुत्वम् । दढ़ा धनुष्या (परि) (चनिष्कद्वत्) स्फुटित गतिशोषणयोः—यङ्लुकि लोट् । गतिं कुर्यात् टङ्कारयेत् (इन्द्राय) परमेश्वर्यवते परमात्मने (ब्रह्म) वेदज्ञानम् (उद्यतम्) ऊर्ध्वोद्यतम् ॥

सू० ८२ [६८०] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,३१३)

आ यत् पतन्त्येन्यः सुदुघा अनपस्फुरः ।

अपस्फुरं गृभायत सोममिन्द्राय पातवे ॥ ७ ॥

आ । यत् । पतन्ति । एन्यः । सु-दुघाः । अनप-स्फुरः ॥

अप-स्फुरम् । गृभायत । सोमम् । इन्द्राय । पातवे ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(यत्) जब (एन्यः) गति वाली, (सुदुघाः) अच्छे प्रकार कामनायें पूरी करने वाली, (अनपस्फुरः) निश्चल बुद्धियां (आ पतन्ति) आ जावें, [तव] (अपस्फुरम्) अत्यन्त बड़े हुये (सोमम्) उत्पन्न करने वाले परमात्मा को (इन्द्राय) बड़े पेश्वर्य की (पातवे) रक्षा के लिये (गृभायत) तुम ग्रहण करो ॥ ७ ॥

भाषार्थ—मनुष्य सब में गति वाली उत्तम बुद्धि को प्राप्त होकर परमेश्वर का आश्रय लेकर अपना पेश्वर्य बढ़ावें ॥ ७ ॥

अपादिन्द्रो अपाद्गिर्विश्वे देवा अमत्सत । वरुण इदिह क्षयत् तमापो अभ्यनूषत वृत्सं संशिश्वरीरिव ॥ ८ ॥

अपात् । इन्द्रः । अपात् । अग्निः । विश्वे । देवाः । अमत्सत ॥

वरुणः । इत् । इह । क्षयत् । तम् । आपः । अभि । अनुषत् ।

वृत्सम् । संशिश्वरीः-इव ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [प्रतापी सूर्य] ने [पृथिवी आदि के जल को] (अपात्) पिया है, (अग्निः) अग्नि ने [काठ हव्य आदि के रस को]

७—(आ पतन्ति) आगच्छन्ति (यत्) यदा (एन्यः) वीज्याज्वरिभ्यो निः । ७० ४ । ४८ । इण् गतौ-निप्रत्ययः, डीप् । एन्यो नदीनाम्—निघ० १ । १३ । गतिशीलाः (सुदुघाः) सुष्ठु कामानां प्रपूरयिष्यः (अनपस्फुरः) अन् अप+स्फुर संचलने—क्विप् । निश्चला बुद्धयः (अपस्फुरम्) अप+स्फुर संचलने वृद्धौ च क्विप् । अत्यन्तं प्रवृद्धम् (गृभायत) गृह्णीत (सोमम्) उत्पादकं परमात्मानम् (इन्द्राय) पेश्वर्यम् (पातवे) पातुम् । रक्षितुम् ॥

८—(अपात्) पा पाने—लुङ् । पीतवान् पृथिव्यादिजलम् (इन्द्रः) प्रतापी सूर्यः (अपात्) पीतवान् काष्ठहव्यादिरसम् (अग्निः) प्रसिद्धः (विश्वे)

(४,३१४)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ८२ [६८०]

(अपात्) पिया है, [उस से] (विश्वे) सब (देवाः) व्यवहार करने वाले प्राणी (अमत्सत) तृप्त हुये हैं । (इह) इस [सब कर्म] में (वरुणः) श्रेष्ठ परमात्मा (इत्) ही (ज्ञयत्) समर्थ हुआ है, (तम्) उस [परमात्मा] को (आपः) प्राप्त प्रजाओं ने (अभि) सब प्रकार (अनूपत) [प्रीति से] सराहा है, (इव) जैसे (संशिश्वरीः) मिलती हुयी गौयें (वत्सम्) बछड़े को [प्रीति करती हैं] ॥ ८ ॥

भाष्यार्थ—जिस परमात्मा के नियम से सूर्य जल को खींच कर वृष्टिद्वारा अन्न आदि उत्पन्न करने में, और आग लकड़ी, घी आदि पदार्थों को जलाकर अशुद्धि हटाने और भोजन आदि बनाने में उपकार करता है, उस परमेश्वर से सब मनुष्य आपा छोड़कर इस प्रकार प्रीति करे, जैसे गौ आपा छोड़कर अपने छोटे बच्चे से प्रीति करती है ॥ ८ ॥

सुदेवो अक्षि वरुण यस्य ते सुप्त सिन्धवः ।

अनुसरन्ति काकुद सुम्यं सुषिरामिव ॥ ८ ॥

सु-देवः । अक्षि । वरुण । यस्य । ते । सुप्त । सिन्धवः ॥

अनु-सरन्ति । काकुदम् । सुम्यम् । सुषिराम्-इव ॥ ८ ॥

भाष्यार्थ—(वरुण) हे श्रेष्ठ परमात्मन् । तू (सुदेवः) बड़ा देव [अति प्रकाशमान वा दानी] (अक्षि) है, (यस्य ते) जिस तेरे (काकुदम्) तालू को (सप्त) सात (सिन्धवः) बहते हुये समुद्र [अर्थात् भूर्, भुवः, स्वः,

(देवाः) व्यवहारिणः प्राणिनः (अमत्सत) मदी हवें । तृप्ता अभवन् (वरुणः) श्रेष्ठः परमात्मा (इत्) एव (इह) अस्मिन् सर्वस्मिन् कर्मणि (ज्ञयत्) क्षि पेश्वर्ये । समर्थोऽभवत् (तम्) वरुणम् (आपः) प्राप्ताः प्रजाः (अभि) (अनूपत) अ० २० । १७ । १ । अस्तुवन् (वत्सम्) गोशिशुम् (संशिश्वरीः) स्नामवि-पद्यर्त्ति० । ३०४ । ११३ सम् + शश प्लुतगतौ—घनिप् । अकारस्य इकारः । वनो र च । पा० ४ । १ । ७ । ऊीबरेफौ । संशश्वर्यः संगच्छमाना गावः (इव) यथा ॥

६—(सुदेवः) कृत्याणदेवः । अतिप्रकाशमानः । महाधनी (अक्षि) (वरुण) हे श्रेष्ठ परमात्मन् (यस्य) (ते) तव (सप्त) सप्तसंख्याकाः (सिन्धवः) स्यन्दमानाः समुद्राः । भूर्भुवराद्यिवस्थाविशेषयुक्ताः सर्वल्लोकाः

महः, जनः, तपः, सत्य, इन सात अवस्थाओं वाले सब लोक] (अनुत्तरन्ति) निरन्तर सींचते हैं, (इव) जैसे (सूर्यम्) बड़े वेग वाले (सुषिराम्) झरने को [जल सींचते हैं] ॥ ६ ॥

भावार्थ—इस मन्त्र के लिये—अ० २०। ३४। ३ और-निरुक्त ५। २७ भी देखो। जिस परमात्मा की आज्ञा में यह सब बड़े छोटे लोक इस प्रकार झुकते हैं, जैसे जल दूर दूर से एकत्र होकर झोते में झुक कर गिरते हैं, हे मनुष्यो ! तुम अभिमान छोड़कर उसी जगदीश्वर के सामने झुको ॥ ६ ॥

यो व्यतीरफाणयत् सुयुक्तां उप दाशुषे ।

तुक्को नेता तदिह वपुःपुमा यो अमुच्यत ॥ १० ॥

यः । व्यतीन् । अफाणयत् । सु-युक्तान् । उप । दाशुषे ॥ तुक्कः
नेना । तत् । इत् । वपुः । उप-मा । यः । अमुच्यत ॥ १० ॥

भावार्थ—(यः) जिस [परमात्मा] ने (व्यतीन्) विविध प्रकार चलते रहने वाले, (सुयुक्तान्) बड़े योग्य पदार्थों को (दाशुषे) आत्मदानी [भक्त] के लिये (उप) सुन्दर रीति से (अफाणयत्) सहज में उत्पन्न किया है और (यः) जिस [परमात्मा] ने (उपमा) पास रहने वाले को (अमुच्यत) [दुःखों से] मुक्त किया है, (तत् इत्) वही (वपुः) बीज बोने वाला [ब्रह्म]

(अनुत्तरन्ति) निरन्तरं लिङ्गन्ति (काकुषम्) तालु—निरु० ५। २६ (सूर्यम्) कल्याणोर्मिम् । सुवेगवतीम् (सुषिराम्) इषिमदिमुदि० । उ० १। ५१ । शुष शोषणे—किरच्, ङाप्, शस्य सः । जलनिसरणच्छिद्रम् । झोतेः (इव) यथा ॥

१०—(यः) परमात्मा (व्यतीन्) अतः सातत्वगमने-इन् । विविधसदा-गमनशीलान् (अफाणयत्) फण गतौ अनायासेनोत्पत्तौ च—णिच् । फणति-गतिकर्मा—निघ० २। १४ । अनायासेनोत्पादितवान् (सुयुक्तान्) सुयोग्यान् पदार्थान् (उप) पूजायाम् (दाशुषे) आत्मदानिने । उपासकाय (तुक्कः) कृगुशुद्ध्यो यः । उ० १। १५५ । तुक्कतिर्गतिकर्मा—निघ० २। १४ वप्रत्ययः । व्यापकः (नेता) (तत्) (इत्) एव (वपुः) अतिपुवपि० । उ० २। ११७ । वपुः बीजतःतुसस्ताने—उसि । बीजोत्पादकं ब्रह्म (उपमा) विभक्तेराकारः ।

(४, ३१६)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ८२ [६८०]

(तक्रः) व्यापक (नेता) नेता [अगुआ परमात्मा] है ॥ १० ॥

भावार्थ—जिस परमात्मा ने अपने सहज स्वभाव से अनोखे अनोखे पदार्थ रचकर अपने धिवेकी भक्तों को परम आनन्द दिया है, सब मनुष्य उस सर्वशक्तिमान् की उपासना करके सुखी हों ॥ १० ॥

अतीदुः शक्र ओहत इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ।

भिनत् कनीन ओदनं पच्यमानं पुरो गिरा ॥ ११ ॥

अति । इत् । जं । इति । शक्रः । ओह ते । इन्द्रः । विश्वाः ।

अति । द्विषः ॥ भिनत् । कनीनः । ओदनम् । पच्यमानम् ।

पुरः । गिरा ॥ ११ ॥

भावार्थ—(शक्रः) शक्तिमान् (इन्द्रः) इन्द्र [परम पेश्वर्य वाला परमात्मा] (इत्) ही (उ) अवश्य (अति) तिरस्कार करके (विश्वाः) सब (द्विषः) विरोध करने वाली प्रजाओं को (अति) सर्वथा (ओहते) मारता है, [जैसे] (कनीनः) चमकता हुआ सूर्य (गिरा) घाणी [गर्जन] से (पच्यमानम्) पचाये गये [ताड़े गये] (ओदनम्) मेघ को (पुरः) दूर (भिनत्) छिन्न भिन्न करता है ॥ ११ ॥

भावार्थ—सर्वशक्तिमान् परमेश्वर हमारे सब विघ्नों को दूर कर देता है जैसे सूर्य मेघ को छिन्न भिन्न करके प्रकाश करता है ॥ ११ ॥

अर्भको न कुमारकोऽधि तिष्ठन्नव रथम् ।

उपमे अस्तिकनामा—निघ० २ । १६ । उपमं निकटस्थम् । उपासकम् (यः) परमात्मा (अनुच्यत) मुक्तवान् दुःखेभ्यः ॥

११—(अति) अतीत्य । उद्वलङ्घ्य (इत्) एव (उ) अवश्यम् (शक्रः) शक्तिमान् (ओहते) उद्विर् अर्धने । नाशयति (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् परमेश्वरः (विश्वाः) सर्वाः (अति) सर्वथा (द्विषः) द्वेषीः प्रजाः (भिनत्) भिनत्ति (कनीनः) कनतिः कान्तिकर्मा—निघ० २ । १६—ईन प्रत्ययः । प्रकाशमानः सूर्यः (ओदनम्) मेघम्—निघ० १ । १० (पच्यमानम्) ताड्यमानमित्यर्थः (पुरः) परस्तात् । दूरे (गिरा) शब्देन । गर्जनेन ॥

स पक्षन्महिषं मृगं पित्रे मात्रे विभुक्तुम् ॥ १२ ॥

अर्भकः । न । कुमारकः । अधि । तिष्ठत् । नवम् । रथम् ॥

सः । पक्षत् । महिषम् । मृगम् । पित्रे । मात्रे । विभु-क्तुम् ॥ १२

भाषार्थ—(न) जैसे (कुमारकः) खिलाड़ी (अर्भकः) बालक (नवम्) नवे (रथम्) रथ पर (अधि तिष्ठत्) चढ़े । [वैसे ही] (सः) वह [जिज्ञासु] (मात्रे) माता के लिये और (पित्रे) पिता के लिये (महिषम्) महान्, (मृगम्) खोजने योग्य (विभुक्तुम्) व्यापक कर्म वाले, [परमात्मा] को (पक्षत्) ग्रहण करे ॥ १२ ॥

भाषार्थ—जैसे छोटा बालक रथ आदि क्रीड़ा वस्तुओं में प्रीति करता है, वैसे ही जिज्ञासु पुरुष माता पिता की प्रसन्नता के लिये महान् परमात्मा में प्रीति कर के अपना जीवन सुधारे ॥ १२ ॥

आ तू सुशिप्र दंपते रथं तिष्ठा हिरण्ययम् । अध व्युक्षं संचे-
वहि सुहस्रपादमरुषं स्वस्तिगामनेहसम् ॥ १३ ॥

आ । तु । सु-शिप्र । दम्-पते । रथम् । तिष्ठ । हिरण्ययम् ॥

अध । व्युक्षम् । संचे-वहि । सुस्र-पादम् । अरुषम् ।

स्वस्ति-गाम् । अनेहसम् ॥ १३ ॥

भाषार्थ—(सुशिप्र) हे बड़े ज्ञानी ! (दम्पते) हे दमनरत्नक [जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी] (हिरण्ययम्) प्रकाशमय [ज्ञानरूपी] (रथम्)

१२—(अर्भकः) बालकः । (न) यथा (कुमारकः) कुमार क्रीडायाम्—
युन । क्रीडकः (अधि तिष्ठत्) आरोहेत् (नवम्) नवीनम् (रथम्) यानम्
(सः) जिज्ञासुः (पक्षत्) परिगृहणीयात् (महिषम्) महान्तम् (मृगम्)
मृग्यम् । अन्वेषणीयम् (पित्रे) पितृप्रसादाय (मात्रे) मातृप्रसादाय
(विभुक्तुम्) व्यापककर्मणि परमात्मानम् ॥

१३—(आ तिष्ठ) आरोह (तु) क्षिप्रम् (सुशिप्र) अ० २० । ७१ । ६ ।
हे बहुज्ञानयुक्त ब्रह्मचारिन् (दम्पते) वसु उपशमे—किम् । हे दमनरत्नक
जितेन्द्रिय (रथम्) (हिरण्ययम्) तेजोमयं ज्ञानरूपम् (अध) अनन्तरम्

रथ पर (तु) शीघ्र (आ तिष्ठ) चढ़ । (अथ) फिर (द्युक्तम्) व्यवहारों में समर्थ, (सहस्रपादम्) सहस्रों [असीम] गति शक्ति वाले, (अरुणम्) व्यापक, (स्वस्तिगाम्) आनन्द पहुँचाने वाले, (अनेहसम्) निर्दोष परमात्मा को (सचेवहि) हम दोनों [आचार्य और ब्रह्मचारी] मिल जावें] ॥ १३ ॥

भाषार्थ—अब ब्रह्मचारी ब्रह्म विद्या में पूरी निष्ठा करता है, तब आचार्य और ब्रह्मचारी परमात्मा के आश्रय में पूरा आनन्द पाते हैं ॥ १३ ॥

तं चैमित्या नमस्विन उप स्वराजमासते ।

अर्थ चिदस्य सुधितं यदेतव आवर्तयन्ति दावने ॥ १४ ॥

तम् । धु । ईम् । इत्या । नमस्विनः । उप । स्व-राजम् ।

आसते ॥ अर्थम् । चित् । अस्य । सु-धितम् । यत् । एतवे ।

आ-वर्तयन्ति । दावने ॥ १४ ॥

भाषार्थ—(तम्) उस (धु) ही (ईम्) प्राप्ति योग्य (स्वराजम्) स्वराजा [अपने आप राजा परमेश्वर] को (इत्या) इस प्रकार (नमस्विनः) नमस्कार करने वाले लोग (उप आसते) पूजते हैं, (यत्) जब कि वे (अस्य) उस [परमात्मा] का (चित्) ही (सुधितम्) भले प्रकार रक्खा हुआ (अर्थम्) पाने योग्य धन (एतवे) पाने के लिये और (दावने) दान के लिये [उस परमात्मा] को (आवर्तयन्ति) सामने वर्तमान करते हैं ॥ १४ ॥

(द्युक्तम्), अ० २० । ४ । २ । दिष्टु व्यवहारे—द्विवि + क्ति ऐश्यये—ड । व्यवहारेषु समर्थम् (सचेवहि) आचाराचार्यब्रह्मचारिणौ संगच्छेवहि । संगतौ भवेव (सहस्रपादम्) अ० ७ । ४१ । २ । असीमगतिशक्तियुक्तम् (अरुणम्) अतिपुनरि० । २ । ११७ । ऋ गतौ—उसि । व्यापकम् (स्वस्तिगाम्) आनन्दस्य गमयितारं प्रापकम् (अनेहसम्) निर्दोष परमात्मानम् ॥

१४—(तम्) (धु) एव (ईम्) प्राप्यम् (इत्या) इत्थम् । अनेन प्रकारेण (नमस्विनः) नमस्कारयुक्ताः (उप आसते) सेवन्ते (स्वराजम्) स्वयं राजानं शासकम् (अर्थम्) अरणीयं प्रापणीयं धनम् (चित्) एव (अस्य) परमात्मनः (सुधितम्) सुष्ठु स्थापितम् (यत्) यदा (एतवे) एतुम् । प्राप्नुम् (आवर्तयन्ति) अभिमुखं वर्तमानं कुर्वन्ति (दावने) दानाय ॥

भावार्थ—जो परमात्मा अपने आप सब का राजा है, सब लोग उस की आज्ञा मानकर विविध प्रकार धन प्राप्त करके सुपात्रों का सहाय करें ॥ १४ ॥

अनु प्रत्नस्योक्तः प्रियमेधास एषाम् ।

पूर्वामनु प्रयतिं वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आशत ॥ १५ ॥

अनु । प्रत्नस्य । ओक्तः । प्रिय-मेधासः । एषाम् ॥ पूर्वाम् ।

अनु । प्र-यतिम् । वृक्त-बर्हिषः । हित-प्रयसः । आशत ॥ १५ ॥

भाषार्थ—(एषाम्) इन प्राणियों के बीच (प्रियमेधासः) प्यारी बुद्धि वाले, (वृक्तबर्हिषः) हिंसा त्यागने वाले (हितप्रयसः) हितकारी अन्न वाले पुरुषों ने (प्रत्नस्य) सनातन (ओक्तः) आश्रय [परमात्मा] के (अनु) पीछे होकर (पूर्वाम्) पहिली (प्रयतिम्) प्रयत्न रीति को (अनु) निरन्तर (आशत) पाया है ॥ १५ ॥

भावार्थ—इन प्राणियों के बीच सर्वहितेषी विद्वान् लोग परमात्मा का आश्रय लेकर आनन्द पावें ॥ १५ ॥

यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरग्निगुः ।

विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठो यो वृत्रहा गृणे ॥ १६ ॥

यः । राजा । चर्षणीनाम् । याता । रथेभिः । अग्नि-गुः ॥

विश्वासाम् । तरुता । पृतनानाम् । ज्येष्ठः । यः । वृत्र-हा ।

गृणे ॥ १६ ॥

भाषार्थ—(यः) जो [परमेश्वर] (चर्षणीनाम्) मनुष्यों का

१५—(अनु) अनुकृत्य (प्रत्नस्य) पुराणस्य (ओक्तः) आश्रयस्य पर-
मेश्वरस्य (प्रियमेधासः) हितकरमेधायुक्ताः (एषाम्) मनुष्याणां मध्ये
(पूर्वाम्) प्रथमाम् (अनु) निरन्तरम् (प्रयतिम्) यती प्रयत्ने—इन् । प्रयत्न-
रीतिम् (वृक्तबर्हिषः) अ० २० । ५२ । १ । त्यक्तहिंसाः (हितप्रयसः) हित-
करायुक्ताः (आशत) प्राप्तवन्तः ॥

१६—(यः) परमेश्वरः (राजा) ऐश्वर्यवान् (चर्षणीनाम्) मनुष्या-

(राजा) राजा (रथेभिः) रथों [के समान रमणीय लोका] के साथ (अग्निगुः) बेरोक (याता) चलने वाला, और (यः) जो (विश्वासाम्) सब (पृतना-नाम्) शत्रु सेनाओं का (तरुता) हराने वाले, (ज्येष्ठः) अति श्रेष्ठ (वृत्रहा) अन्धकार नाशक है, [उस की] (गृणे) मैं स्तुति करता हूँ ॥ १६ ॥

भाष्यार्थ—जो परमात्मा सब मनुष्य आदि प्राणियों और सूर्य आदि लोकों का स्वामी है, हम उसके गुणों को ग्रहण कर के सब कष्टों से बचें ॥ १६ ॥

मन्त्र १६—२१ ऋग्वेद में है—२। ७० [सायणभाष्य ५६] । १—६ ।
मन्त्र १६, १७ सामवेद—उ० ३। १ । १५, मन्त्र १६ साम० । पू० ३। ६। १;
मन्त्र १६, १७ आगे हैं—अ० २० । १०५। ४, ५॥

इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्त्रवसे यस्य द्विषिता विधुर्तरि ।

हस्ताय वज्रः प्रति धायि दर्शुतो मुहो दिवे न सूर्यः ॥ १७ ॥

इन्द्रम् । तम् । शुम्भ । पुरु-हन्मन् । अवसे । यस्य । द्विषिता ।
वि-धुर्तरि ॥ हस्ताय । वज्रः । प्रति । धायि । दर्शुतः ।
मुहः । दिवे । न । सूर्यः ॥ १७ ॥

भाष्यार्थ—(पुरुहन्मन्) हैं बहुत ज्ञानी ऋषि ! (तम्) उस (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] का (शुम्भ) भाषण कर, (यस्य) जिसके (द्विषिता) दोनों धर्म [अनुग्रह और निग्रह गुण] (विधुर्तरि) बुद्धिमान् जन

णाम् (याता) गन्ता (रथेभिः) रथसदृशै रमणीयलोकैः सह (अग्निगुः) अ० २०। ३५। १ । अधृतगमनः । अनिवारितगतिः (विश्वासाम्) सर्वासाम् (तरुता) प्रसितस्कभितस्तमितो० । पा० ७। २ । ३४ । इकारस्य उकारः । तरिता । अभिभविता (पृतनानाम्) शत्रुसेनानाम् (ज्येष्ठः) अतिश्रेष्ठः । अतिवृद्धः (यः) (वृत्रहा) अन्धकारनाशकः (गृणे) स्तौमि तम् ॥

१७—(इन्द्रम्) परमेश्वरम् (तम्) (शुम्भ) शुम्भ हिंसाभाषणभा-
सनेषु । भाषस्व । वर्णय (पुरुहन्मन्) सर्वधातुभ्यो मनिन् । उ० ४। १४५ । पुरुं +
हन् हिंसागत्योः—मनिन् । पुरु बहु हन्ति गच्छति जानातीति पुरुहन्मा तत्स-
म्बुधौ । हे बहुज्ञानिन् । ऋषे. (अवसे) रक्षणाय (यस्य) परमेश्वरस्य

पर (अवसे) रक्षा के लिये और [जिस का] (दर्शतः) दर्शनीय (महः) महान् (वज्रः) वज्र [दण्ड सामर्थ्य] (हस्ताय) हाथ [अर्थात् हमारे बाहु-बल] के लिये (प्रति) प्रत्यक्ष (धायि) धारण किया गया है, (न) जैसे (सूर्यः) सूर्य (दिवे) प्रकाश के लिये है ॥ ७ ॥

भावार्थ—परमात्मा अति प्रत्यक्ष रूप से दुष्टों को दण्ड देता है और धर्मात्माओं पर अनुग्रह करता है, ऐसा निश्चय करके विद्वान् लोग सदा ईश्वर की आज्ञा में रहकर सुखी होंवें ॥ १७ ॥

नकिष्टं कर्मणा नशुद् यश्चकार सदावृधम् ।

इन्द्रं न युजैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णवोजसम् ॥ १८ ॥

नकिः । तम् । कर्मणा । नशुत् । यः । चकार । सदावृधम् ॥

इन्द्रम् । न । युजैः । विश्व-गूर्तम् । ऋभ्वसम् । अधृष्टम् ।

धृष्णु-वोजसम् ॥ १८ ॥

भाषार्थ (यः) जिस [परमात्मा] ने (सदावृधम्) सदा बढ़ाने वाले व्यवहार को (चकार) बनाया है, (तम्) उस (विश्वगूर्तम्) सबों को उद्यम में लगाने वाले, (ऋभ्वसम्) बुद्धिमानों को ग्रहण करने वाले, (अधृष्टम्) अजेय, (धृष्णवोजसम्) निर्भय बल वाले (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] को (नकिः) न कोई (कर्मणा) कर्म से और (न) न

(द्विता) द्वित्वम् । निग्रहानुग्रहरूपं गुणद्वयम् (विधर्तरि) मेधाविनि जने—निघ० ३ । १५ (हस्ताय) अस्माकं बाहुबलाय (वज्रः) दण्डसामर्थ्यम् (प्रति) प्रत्यक्षम् (धायि) अधारि (दर्शतः) दर्शनीयः (महः) मह—अच् । महान् (दिवे) प्रकाशाय (न) यथा (सूर्यः) ॥

१८—(नकिः) न कश्चित् (तम्) प्रसिद्धम् (कर्मणा) (नशुत्) प्राप्नुयात् (यः) परमेश्वरः (चकार) रचितवान् (सदावृधम्) सदावर्धकं व्यवहारम् (इन्द्रम्) (न) निषेधे (युजैः) दानैः (विश्वगूर्तम्) अ० २० । ३५ । ६ । विश्वं सर्वं जगद् गूर्णम् उद्यतम् उद्यमे कृतं येन तम् (ऋभ्वसम्) अभुर्मेधाविनाम्—निघ० ३ । १५ + अस ग्रहणे—अच् । ऋभूणां मेधाविनां प्रहीतारम् (अधृष्टम्) अजेयम् (धृष्णवोजसम्) धर्षकबलम् । निर्भयपरा-

(यज्ञैः) दानों से (नशत्) पा सकता है ॥ १८ ॥

भाषार्थ—जो परमात्मा सृष्टि आदि अद्भुत कर्मों को करता है, और सब को पालता है, कोई भी प्राणी उस अनन्तकर्मा और अनन्तदानी परमेश्वर के समान नहीं हो सकता है ॥

मन्त्र १८, १९ सामवेद में भी हैं—उ० ४। २। ८, मन्त्र १८—साम० पू० ३। ६१ ॥

अषात्हमुग्रं पृतनासु सासुहिं यस्मिन् महीरुज्रयः ।

सं धेनवो जायमाने अनोनवुर्द्यावः क्षामो अनोनवुः ॥ १८ ॥

अषात्हम् । उग्रम् । पृतनासु । सासुहिम् । यस्मिन् । महीः ।
उरु-ज्रयः ॥ सम् । धेनवः । जायमाने । अनोनवुः । द्यावः ।
क्षामः । अनोनवुः ॥ १८ ॥

भाषार्थ—(यस्मिन् जायमाने) जिस [परमात्मा] के प्रकट होने पर (महीः) पृथिविषां (उरुज्रयः) बहुत चलने वाली होती हैं, (अषात्हम्) उस अजेय, (उग्रम्) तेजस्वी, और (पृतनासु) सङ्ग्रामों में (सासुहिम्) जिताने वाले [परमेश्वर] को (धेनवः) वाणियों ने (सम्) मिलकर (अनोनवुः) अत्यन्त सराहा है, (द्यावः) सूर्यों और (क्षामः) भूमियों ने (अनोनवुः) अत्यन्त सराहा है ॥ १८ ॥

कमयुक्तम् ॥

१८—(अषात्हम्) वह सर्वश्रेष्ठ अभिभवे—क्त, ओकारस्य आकारः ।
असोढम् । अभिभूतम् (उग्रम्) तेजस्विनम् (पृतनासु) सङ्ग्रामेषु (सासु-
हिम्) अ० ३। १८। ५। अभिभवितारम् । विजयकारकम् (यस्मिन्) पर-
मात्मनि (महीः) पृथिव्यः (उरुज्रयः) जयतिर्गतिकर्मा—निघ० २। १४।
घातेर्दिङ् । उ० ४। १३४। जि गतौ—इण्, डिप् । बहुगतिशीलाः (सम्)
एकीभूय (धेनवः) प्रीणयिष्योवाचः (जायमाने) प्रकटीभूयमाने (अनोनवुः)
णु स्तुतौ—यङ् लुकि लङ् । भृशमस्तुवन (द्यावः) सूर्याः (क्षामः) पृथिव्यः
(अनोनवुः) ॥

भावार्थ—जब परमात्मा अपने सामर्थ्य को प्रकट करता है, तब सब पृथिवी आदि लोक उत्पन्न होते हैं, और उसकी अद्भुत महिमा को सूर्य पृथिवी आदि लोकों में देख कर सब प्राणी आनन्द पाते हैं ॥ १६ ॥

यद् द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः ।

न त्वा वज्रिन्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥ २० ॥

यत् । द्यावः । इन्द्र । ते । शतम् । शतम् । भूमीः । उत ।

स्युरिति स्युः ॥ न । त्वा । वज्रिन् । सहस्रम् । सूर्याः । अनु ।

न । जातम् । अष्ट । रोदसी इति ॥ २० ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (यत्) जो (शतम्) सौ (द्यावः) अन्तरिक्ष [वायु लोक], (उत) और (शतम्) सौ (भूमीः) भूमि लोक (ते) तेरे [सामने] (स्युः) हों, [न वे सब] और (न) न (सहस्रम्) सहस्र (सूर्याः) सूर्य लोक और (रोदसी) दोनों अन्तरिक्ष और भूमि लोक [मिलकर] और (न) न (जातम्) उत्पन्न हुआ जगत्, (वज्रिन्) हे दण्डधारी ! [परमात्मन्] (त्वा) तुझ को (अनु) निरन्तर (अष्ट) पा सके हैं ॥ २० ॥

भावार्थ—सब असंख्य लोक और पदार्थ अलग अलग होकर अथवा सब मिलकर परमात्मा की महिमा का पार नहीं पा सकते ॥ २० ॥

मन्त्र २०, २१ आ चुके हैं—अ० २० । ८१ । १, २ ॥

आ पृथाय महिना वृष्या वृषन् विश्वा शविष्ठ शवसा ।

अस्मां अव मघवन् गोमति व्रजे वज्रिं चित्राभिरुतिभिः ॥ २१ ॥

आ । पृथाय । महिना । वृष्या । वृषन् । विश्वा । शविष्ठ ।

शवसा ॥ अस्मान् । अव । मघ-वन् । गो-मति । व्रजे ।

वज्रिन् । चित्राभिः । उ-ति-भिः ॥ २१ ॥

भाषार्थ—(वृषन्) हे शूरा ! (शविष्ठ) हे अत्यन्त बली ! [परमात्मन्]

२०, २१—व्याख्याती—अ० २० । ८१ । १, २ ॥

(महिना) अपने बड़े (शवसा) बल से (विश्वा) सब (वृष्या) शूर के योग्य बलों को (आ) सब ओर से (पप्राथ) तू ने भर दिया है । (मघवन्) हे महाधनी ! (वज्रिन्) हे दण्डधारी ! [शासक परमेश्वर] (गोमति) उत्तम विद्या वाले (व्रजे)-मार्ग में (चित्राभिः) विचित्र (ऊतिभिः) रक्षाओं से (अस्मान्) हमें (अव) बचा ॥ २१ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि परमात्मा से प्रार्थना करके सब पदार्थों से उपकार ले कर यथावत् पालन करें ॥

सूक्तस्य ८३ ॥

१-८ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ४ निचृद् गायत्री; २ गायत्री; ३ स्वराडाक्षी गायत्री; ५-८ विराडाक्षी गायत्री ॥

परमेश्वरोपासनोपदेशः—परमेश्वर की उपासना का उपदेश ॥

उत् त्वा मन्दन्तु स्तोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः । अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ १ ॥

उत् । त्वा । मन्दन्तु । स्तोमाः । कृणुष्व । राधः । अद्रिवः ॥
अव । ब्रह्म-द्विषः । जहि ॥ १ ॥

भावार्थ—(अद्रिवः) हे अन्न वाले ! [वा वज्र वाले परमेश्वर !] (त्वा) तुझ को (स्तोमाः) स्तुति करने वाले लोग (उत्) अच्छे प्रकार (मन्दन्तु) प्रसन्न करें, तू [हमारे लिये] (राधः) धन (कृणुष्व) कर, (ब्रह्मद्विषः) वेद द्वेषियों को (अव जहि) नष्ट कर दे ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमात्मा के गुणों को जानकर विद्याधन और सुवर्ण आदि धन बढ़ावे और अधर्मियों का नाश करें ॥ १ ॥

मन्त्र १-३ ऋग्वेद में है—८ । ६४ [सायणभाष्य ५३] । १-३ और कुछ भेद से सामवेद में हैं—७०६ । १ । तृच ३ और मन्त्र १ साम०—५०३ । १ । १ ॥

१—(उत्) उत्तमतया (त्वा) (मन्दन्तु) तर्पयन्तु (स्तोमः) स्तावकाः (कृणुष्व) कुरु (राधः) विद्यासुवर्णादिधनम् (अद्रिवः) अदिशदिभूशुभिभ्यः क्रिन । ७०४ । ६५ । अद भक्षणे—क्रिन । हे. अन्नवन् । वज्रिन् (अव जहि) विनाशय (ब्रह्मद्विषः वेदद्वेषन् ॥

पदा पुणीरराधसो नि बाधस्व मुहाँ असि । नहि त्वा
कश्चन प्रति ॥ २ ॥

पदा । पुणीन् । अराधसः । नि । बाधस्व । मुहान् । असि ॥
नहि । त्वा । कः । चन । प्रति ॥ २ ॥

भाषार्थ—[हे परमेश्वर !] तू (पदा) अपनी व्यति से (अराधसः)
आराधना न करने वाले (पुणीन्) कुव्यवहारी पुरुषों को (नि बाधस्व)
रोकता रह, तू (मुहान्) महान् (असि) है । (कः चन) कोई भी (त्वा प्रति)
तेरे समान (नहि) नहीं है ॥ २ ॥

भावार्थ—परमात्मा सर्वव्यापक होकर दुष्टों का नाश और धर्मा-
त्माओं की रक्षा करता है ॥ २ ॥

त्वमीशिवेशुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम् । त्वं राजा जनानाम् ३
त्वम् । ईशिवे । सुतानाम् । इन्द्र । त्वम् । असुतानाम् ॥
त्वम् । राजा । जनानाम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [परमेश्वर] (त्वम्) तू (सुतानाम्)
उत्पन्न हुये पदार्थों का, और (त्वम्) तू (असुतानाम्) न उत्पन्न हुये [पर-
माणु रूप] पदार्थों का (ईशिवे) स्वामी है, (त्वम्) तू (जनानाम्) उत्पन्न
होने वालों का (राजा) राजा है ॥ ३ ॥

भावार्थ—परमेश्वर ही परमाणुओं के संयोग वियोग से भूत, भवि-
ष्यत् और वर्तमान सृष्टि का स्वामी है ॥ ३ ॥

२—(पदा) पद गतौ स्थैर्यं च—किप् । गत्या । व्याप्त्या (पुणीन्)
कुव्यवहारिणः पुरुषान् (अराधसः) अराधसमनाराधयन्तम्—निरु० ५ । १७ ।
अनाराधनाशीलान् (नि) नितराम् (बाधस्व) विलोडय । अपवृणु (मुहान्)
(असि) (नहि) (कश्चन) कश्चिदपि (त्वा प्रति) त्वया सदृशः ॥

३—(त्वम्) (ईशिवे) ईश्वरो भवसि (सुतानाम्) उत्पन्नानां पदा-
र्थानाम् (इन्द्र) हे परमेश्वर (त्वम्) (असुतानाम्) अनुत्पन्नानां परमाणुरूप-
पदार्थानाम् (त्वम्) (राजा) (जनानाम्) जनिष्यमाणानाम् ॥

ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते । भोजनासः सुवीर्यम् ४
 ईङ्खयन्तीः । अपस्युवः । इन्द्रम् । जातम् । उप । आसते ॥
 भोजनासः । सु-वीर्यम् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(ईङ्खयन्तीः) चेष्टा करती हुई, (अपस्युवः) काम
 चाहने वाली, (सुवीर्यम्) बड़े सामर्थ्य को (भोजनासः) सेवन करती हुई
 प्रजायें (जातम्) प्रकट हुये (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] की
 (उप आसते) उपासना करती हैं ॥ ४ ॥

भाषार्थ—यह सब पदार्थ पतमेश्वर के नियम से चेष्टा करते हुये
 और अपना कर्तव्य करते हुये उस जगदीश्वर की आज्ञा में रहते हैं ॥ ४ ॥

मन्त्र ४—८ अवेद में हैं १० । १५३ । १—५; मन्त्र ४ सामवेद पू० २ । ६ । १॥
 त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः । त्वं वृषन् वृषेदसि ५
 त्वम् । इन्द्र । बलात् । अधि । सहसः । जातः । ओजसः ५॥
 त्वम् । वृषन् । वृषा । इत् । अस्ति ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (त्वम्)
 तू (बलात्) बल से, (ओजसः) पराक्रम [धैर्य] और (सहसः) जयशीलता
 से (अधि) अधिक करके (जातः) प्रसिद्ध है । (वृषन्) हे बलवान् ! (त्वम्)
 तू (वृषा इत्) बलवान् ही (अस्ति) है ॥ ५ ॥

भाषार्थ—परमात्मा अपने अनन्त सामर्थ्य से सब को अपने वश में
 रक्ता है ॥ ५ ॥

यह मन्त्र कुछ भेद से सामवेद में भी है—पू० २ । ३ । ६ ॥

४—(ईङ्खयन्तीः) ईलि गतौ—शतृ । गच्छन्त्यः । चेष्टमानाः (अपस्युवः)
 अपः कर्मात्मन इच्छन्त्यः (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं परमात्मानम् (जातम्)
 प्रादुर्भूतम् (उप आसते) परिचरन्ति (भोजनासः) छान्दसं रूपम् । मजमानाः
 (सुवीर्यम्) शोमनं बलम् ॥

५—(त्वम्) (इन्द्र) (बलात्) (अधि) अधिकृत्य (सहसः) अभिभ-
 वनात् । जयशीलत्वात् (जातः) प्रसिद्धः (ओजसः) पराक्रमात् । धैर्यात्
 (त्वम्) (वृषन्) हे बलवान् (वृषा) बलवान् (इत्) एवं (अस्ति) ॥

त्वमिन्द्रासि वृत्रहा व्यन्तरिक्षमतिरः । उद् द्यामस्तभूना
ओजसा ॥ ६ ॥

त्वम् । इन्द्र । असि । वृत्र-हा । वि । अन्तरिक्षम् । अतिरः ॥
उत् । द्याम् । अस्तभूनाः । ओजसा ॥ ६ ॥

भाष्यार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [षडे ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (त्वम्)
तू (वृत्रहा) अन्धकार नाशक (असि) है, (अन्तरिक्षम्) आकाश को (वि
अतिरः) तू ने फैलाया है, और (ओजसा) पराक्रम के साथ (द्याम्) घमकते
हुये सूर्य को (उत्) उत्तम रीति से (अस्तभूनाः) थांभा है ॥ ६ ॥

भावार्थ—परमेश्वर ही आकर्षण नियम से सूर्य आदि लोकों को अपने
अपने स्थान पर आकाश में स्थिर रखता है ॥ ६ ॥

त्वमिन्द्र सजोषसमर्कं बिभर्षि बाहोः । वज्रं शिशानु
ओजसा ॥ ७ ॥

त्वम् । इन्द्र । स-जोषसम् । अर्कम् । बिभर्षि । बाहोः ॥
वज्रम् । शिशानः । ओजसा ॥ ७ ॥

भाष्यार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [वडे ऐश्वर्य वाले परमेश्वर] (ओजसा)
पराक्रम से (वज्रम्) वज्र को (शिशानः) तीक्ष्ण करता हुआ (त्वम्) तू
(सजोषसम्) प्रीति युक्त [वा विचारवान्] (अर्कम्) पूजनीय विद्वान् को
(बाहोः) दोनों भुजाओं पर [जैत्रे] (बिभर्षि) धारण करता है ॥ ७ ॥

६—(त्वम्) इन्द्र) परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (असि) (वृत्रहा) अन्ध-
कारनाशकः (अन्तरिक्षम्) आकाशम् (विअतिरः) तू तरण्ये—तद् अदादित्वम् ।
विस्तारितवानसि (उत्) उत्तमतया (द्याम्) द्योत्मानं सूर्यम् (अस्तभूनाः)
स्तमितवानसि (ओजसा) पराक्रमेण ॥

७—(त्वम्) (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (सजोषसम्) प्रीत्या
विचारेण वा सह वर्तमानम् (अर्कम्) पूजनीयं परिडितम् (बिभर्षि) धारयसि
(बाहोः) भुजयोः (वज्रम्) (शिशानः) तिष्ठन् । तीक्ष्णीकुर्वन् (ओजसा)
पराक्रमेण ॥

भाषार्थ—परमात्मा दुष्टों का नाश करता हुआ आज्ञाकारी विचारशील विद्वानों को अपने प्रेम की गोद में बिठा कर बढ़ाता है ॥ ७ ॥

त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा जातान्योजसा । स विश्वा भुवः अभवः ॥ ८ ॥

त्वम् । इन्द्र । अभि-भूः । असि । विश्वा । जातानि । ओजसा ॥ सः । विश्वाः । भुवः । आ । अभवः ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हैं इन्द्र ! [परमेश्वर] (त्वम्) तू (ओजसा) पराक्रम से (विश्वा) सब (जातानि) उत्पन्न वस्तुओं को (अभिभूः) वश में रखने वाला (असि) है, (सः) सो तू (विश्वाः) सब (भुवः) भूमियों को (आ) सब ओर से (अभवः) प्राप्त हुआ है ॥ ८ ॥

भाषार्थ—परमात्मा सब संसार को वश में रखकर सब स्थानों में व्यापक है ॥ ८ ॥

सूक्तम् ६४ ॥

१—११ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ विराडावीं त्रिष्टुप्; २, १० निचृत् त्रिष्टुप्; ३, ११ त्रिष्टुप्; ४, ६, ७, ८, विराड् जगती; ५ भुरिक् त्रिष्टुप्; ८ निचृज्जगती ॥

राजप्रजाकर्तव्योपदेशः—राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

आ यात्विन्द्रुः स्वपतिर्मदायु यो धर्मेणा तूतुजानस्तुविष्मान् ।
मृत्वक्ष्णो अति विश्वा सहास्यपारेण महता वृण्येन ॥ १ ॥
आ । यातु । इन्द्रः । स्व-पतिः । मदाय । यः । धर्मेणा ।
तूतुजानः । तुविष्मान् ॥ मृ-त्वक्ष्णः । अति । विश्वा ।
सहासि । अपारेण । महता । वृण्येन ॥ १ ॥

८—(त्वम्) (इन्द्र) परमेश्वर्यवन परमात्मन् (अभिभूः) अभिभविता ।
वशीकर्ता (असि) (विश्वा) सर्वाणि (जातानि) उत्पन्नानि भूतानि (ओजसा)
पराक्रमेण (सः) स त्वम् (विश्वाः) सर्वाः (भुवः) भूमीः (आ) समन्तात्
(अभवः) भू प्राप्ता । प्राप्तवानसि ॥

भाषार्थ—(स्वपतिः) धन का स्वामी वा स्वयं स्वामी (इन्द्रः) इन्द्र
[वड़े ऐश्वर्य वाला राजा] (मदाय) हमारे आनन्द के लिये (आ यातु)
आवे, (यः) जो [राजा] (धर्मणा) धर्म के साथ (तूतुजानः) फुरतीला,
(तुविष्मान्) वृद्धि वाला और (अपारेण) अपने अपार (महता) बड़े
(वृष्येन) साहस से [बैरियों के] (विश्वा) सब (सदांसि) जीतने वाले बलों
को (अति) सर्वथा (प्रत्वक्षमाणः) रेतने वाला [छीलने वाला] है ॥ १ ॥

भावार्थ—राजा और प्रजा परस्पर सहाय करके शत्रुओं का नाश
करें ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—१० । ४४ । १-११ ॥

सुष्ठामा रथः सुयमा हरी ते मिम्यक्ष वज्रौ नृपते गभस्तौ ।
शीभं राजन् सुपथा याह्यर्वाङ् वर्धाम ते पुपुषो वृष्यानि ॥२॥
सु-स्थामा । रथः । सु-यमा । हरी इति । ते । मिम्यक्ष ।
वज्रः । नृ-पते । गभस्तौ ॥ शीभम् । राजन् । सु-पथा ।
आ । याहि । अर्वाङ् । वर्धाम । ते । पुपुषः । वृष्यानि ॥२॥

भाषार्थ—(नृपते) हे नरपति ! [मनुष्यों के स्वामी] (ते) तेरा
(रथः) रथ (सुष्ठामा) दृढ़ बैठकों वाला है, (हरी) दोनों घोड़े (सुयमा)
अच्छे साथे हुये हैं, (गभस्तौ) हाथ में (वज्रः) वज्र (मिम्यक्ष) प्राप्त हुआ

१—(आ यातु) आगच्छतु (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् राजा (स्वपतिः)
धनपतिः स्वयं पतिर्वा (मदाय) अस्माकं हर्षाय (यः) इन्द्रः (धर्मणा)
शास्त्रोक्तव्यवहारेण (तूतुजानः) त्वरमाणः (तुविष्मान्) वृद्धिमान् (प्रत्व-
क्षमाणः) प्रकर्षेण तनू कुर्वन् (अति) सर्वथा (विश्वा) सर्वाणि (सदांसि)
अभिभवशीलानि बलानि (अपारेण) पाररहितेन (महता) प्रवृत्तेन (वृष्येन)
वृषकर्मणा । साहसेन ॥

२—(सुष्ठामा) दृढावस्थानयुक्तः (रथः) (सुयमा) सुयमौ । सुशि-
क्षितौ (हरी) अश्वौ (ते) तव (मिम्यक्ष) म्यक्षतिर्गतिकर्मा—निघ० २ ।
१४, लिट् । प्राप्तो बभूव (वज्रः) आयुधम् (नृपते) नृणां पालक राजन्
(गभस्तौ) बाहौ । हस्ते (शीभम्) अथ० ३ । १३ । २ । शीघ्रम् (राजन्)

(४,३३०)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० ८४ [६८२]

है। (राजन्) हे राजन् ! (सुपथा) सुन्दर मार्ग से (शीमम्) शीघ्र (अर्वाङ्) सामने होकर (आ याहि) आ, (पपुषः ते) तुझ रक्षक के (वृष्यानि) बलों को (वर्धाम) हम बढ़ावें ॥ २ ॥

भाष्यार्थ—जो राजा रथ, अश्व आदि सेना सजाकर बैरियों पर चढ़ाई करे, प्रजागण सहाय करके उसका बल बढ़ावे ॥ २ ॥

इन्द्रवाहो नृपतिं वज्रबाहुमुग्रमुग्रासंस्तविषासं एनम् ।
प्रत्वक्षसं वृषभं सत्यशुष्ममेमस्मन्ना सधमादो वहन्तु ॥ ३ ॥

आ । इन्द्र-वाहः । नृ-पतिम् । वज्र-बाहुम् । उग्रम् ।
उग्रासः । तविषासः । एनम् ॥ प्र-त्वक्षसम् । वृषभम् ।
सत्य-शुष्मम् । आ । ईम् । अस्म-न्ना । सध-मादः ।
वहन्तु ॥ ३ ॥

भाष्यार्थ—(नृपतिम्) मनुष्यों के स्वामी, (वज्रबाहुम्) भुजा पर वज्र रखने वाले, (उग्रम्) प्रचण्ड (प्रत्वक्षसम्) [शत्रुओं के] रेत डालने वाले, (वृषभम्) सुख की बरसा करने वाले, (ईम्) प्राप्ति योग्य (एनम्) इस (सत्यशुष्मम्) सच्चे बल रखने वाले [राजा] को (उग्रासः) प्रचण्ड, (तविषासः) बलवान् (सधमादः) मिलकर उत्सव मनाने वाले, (इन्द्रवाहः)

(सुपथा) शोभनेन मार्गेण (आ याहि) आगच्छ (अर्वाङ्) अभिमुखः सन् (वर्धाम) वर्धयाम (ते) तव (पपुषः) पा रक्षणे—कसु । रक्षकस्य (वृष्यानि) बलानि ॥

३—(आ) समस्तात् (इन्द्रवाहः) वह प्रापणे—शिवः । इन्द्रस्य वोढारोऽश्व-
गजादयः (नृपतिम्) (वज्रबाहुम्) हस्ते वज्रयुक्तम् (उग्रम्) प्रचण्डम्
(उग्रासः) उग्राः (तविषासः) तवेर्णिद्धा । ३० १ । ४ ८ । तव वृद्धौ—दिपञ्च-
कसुक् च । तविषाः । बलान्तः (एनम्) (प्रत्वक्षसम्) गतिकारकोपपदयोः
पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वं च । ३० ४ । २२७ । प्र + त्वक्षू तनूकरणे—असि । शत्रूणां
प्रकर्षेण तनूवर्तारम् (वृषभम्) सुखस्य वर्धयाम् (सत्यशुष्मम्) यथार्थबलो-

ऐश्वर्यवान् राजा के ब्राह्मण [घोड़ा हाथी आदि] (अस्मत्) हमारे बीच में (आ आ वहन्तु) अवश्य ही लावें ॥ ३ ॥

भाषार्थ—राजा अपने बलवान् सैनिकों के साथ शत्रुओं के मारने को उद्यत होवे ॥ ३ ॥

एवा पतिं द्रोणसाचं सचेतसमुर्ज स्कम्भं धुरण आ वृषायसे ।
ओजः कृष्व सं गृभाय त्वेअप्यसे यथा केनिपानामिनो वृधे ॥ ४ ॥
एव । पतिम् । द्रोण-साचम् । स-चेतसम् । ऊर्जः । स्कम्भम् ।
धुरणै । आ । वृष-यसे ॥ ओजः । कृष्व । सम् । गृभाय ।
त्वे इति । अपि । असः । यथा । के-निपानाम् । इनः । वृधे ४

भाषार्थ—[हे राजन् !] (एव) इस प्रकार से (पतिम्) पालन करने वाले, (द्रोणसाचम्) ज्ञान से सींचने वाले, (सचेतसम्) सचेत, (ऊर्जः) बल के (स्कम्भम्) खम्भे रूप पुरुष से (धुरणे) धारण करने में (आ) सब प्रकार (वृषयसे) तू बलवान् के समान आचरण करता है । तू (ओजः) पराक्रम को (कृष्व) कर और (त्वे) अपने में [इस को] (सम् गृभाय) एकत्र कर, (अपि) और (केनिपानाम्) आत्मा में शुषने वाले बुद्धिमानों के (इनः यथा) स्वामी के समान (वृधे) बढ़ती के लिये (असः) तू वर्तमान हो ॥ ४ ॥

पेतम् (आ) समन्तात् (ईम्) प्राप्तव्यम् (अस्मत्) अस्मात् (सहमादः) सहमादयन्तः (वहन्तु) प्रापयन्तु ॥

४—(एव) एवम् (पतिम्) पालकम् (द्रोणसाचम्) कृवृजुसिद्धं ।
उ० ३ । १० । द्व गतौ—नप्रत्ययः + एव समवाये सेचने च—अएव । ज्ञानेन सेका-
रम् (सचेतसम्) चेतसा शुद्धम् (ऊर्जः) बलस्य (स्कम्भम्) स्तरभं यथा
(धुरणे) धारणे (आ) समन्तात् (वृषयसे) वृषन्—कयङ् । वृषेव बलवा-
निवाचरसि (ओजः) बलम् (कृष्व) कुरुष्व (सम् गृभाय) सं गृहाण (त्वे)
त्वायि (अपि) विज्ञा (असः) भवेः (यथा) सादृश्ये (केनिपानाम्) आये-
ष्वपि दृश्यते । पा० ३ । २ । १०१ । के + नि + पत्ल पतने—डप्रत्ययः । के
आत्मनि पतन्ति केनिपाः । आकेनिपो मेधाविनाम्—निघ० ३ । १५ । मेधावि-
नाम् (इनः) स्वामी (वृधे) वर्धनाय ॥

हे । (राजन्) हे राजन् ! (सुपथा) सुन्दर मार्ग से (शीमम्) शीघ्र (अर्वाङ्)
सामने होकर (आ याहि) आ, (पपुषः ते) तुझ रक्षक के (वृषयानि) बलों
को (वर्धाम) हम बढ़ावें ॥ २ ॥

भाषार्थ—जो राजा रथ, अश्व आदि सेना सजाकर वैरियों पर चढ़ाई
करे, प्रजागण सहाय करके उसका बल बढ़ावें ॥ २ ॥

इन्द्रवाहो नृपतिं वज्रबाहुमुग्रमुग्रासस्तविषासं एनम् ।
पूर्वसमं वृषभं सत्यशुष्ममेमस्मन्ना सधमादो वहन्तु ॥ ३ ॥

आ । इन्द्र-वाहः । नृ-पतिम् । वज्र-बाहुम् । उग्रम् ।
उग्रासः । तविषासः । एनम् ॥ प्र-त्वक्षसम् । वृषभम् ।
सत्य-शुष्मम् । आ । ईम् । अस्म-न्ना । सध-मादः ।
वहन्तु ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(नृपतिम्) मनुष्यों के स्वामी, (वज्रबाहुम्) भुजा पर
वज्र रखने वाले, (उग्रम्) प्रचण्ड (प्रत्वक्षसम्) [शत्रुओं के] रेत डालने
वाले, (वृषभम्) सुख की बरसा करने वाले, (ईम्) प्राप्ति योग्य (एनम्)
इस (सत्यशुष्मम्) सच्चे बल रखने वाले [राजा] को (उग्रासः) प्रचण्ड,
(तविषासः) बलवान् (सधमादः) मितलकर उत्सव मनाने वाले, (इन्द्रवाहः)

(सुपथा) शोभनेन मार्गेण (आ याहि) आगच्छ (अर्वाङ्) अभिमुखः सन्
(वर्धाम) वर्धयाम (ते) तव (पपुषः) पा रक्षणे—कसु । रक्षकस्य
(वृषयानि) बलानि ॥

३—(आ) समस्तात् (इन्द्रवाहः) वह प्रापणे—एव । इन्द्रस्य वोढारोऽश्व-
गजादयः (नृपतिम्) (वज्रबाहुम्) हस्ते वज्रयुक्तम् (उग्रम्) प्रचण्डम्
(उग्रासः) उग्राः (तविषासः) तवेर्णिद्धा । ३० १ । ४ ८ । तव वृद्धौ—द्विषच्
रुद्रक् च । तविषाः । बलदन्तः (एनम्) (प्रत्वक्षसम्) गतिकारकोपपदयोः
पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वं च । ३० ४ । २२७ । प्र + त्वक्षू तनूकरणे—असि । शत्रूणां
प्रकर्षेण तनूवर्तारम् (वृषभम्) सुखरथ वर्धयाम् (सत्यशुष्मम्) यथार्थबलो-

ऐश्वर्यवान् राजा के ब्राह्मन् [घोड़ा हाथी आदि] (अस्मन्ना) हमारे बीच में
(आ आ बहन्तु) अवश्य ही लावें ॥ ३ ॥

भाषार्थ—राजा अपने बलवान् सैनिकों के साथ शत्रुओं के मारने को
उद्यत होवे ॥ ३ ॥

युवा पति द्रोणसाचं सचेतसमुर्ज स्कम्भं धुरुण आ वृषायसे ।
ओजः कृष्व सं गुभाय त्वे अप्यसो यथा केनिपानामिनो वृधे ॥ ४ ॥
युव । पतिम् । द्रोण-साचम् । स-चेतसम् । ऊर्जः । स्कम्भम् ।
धुरुणैः । आ । वृष-यसे ॥ ओजः । कृष्व । सम् । गुभाय ।
त्वे इति । अपि । असः । यथा । के-निपानाम् । इनः । वृधे ४

भाषार्थ—[हे राजन् !] (एव) इस प्रकार से (पतिम्) पालन
करने वाले, (द्रोणसाचम्) ज्ञान से सींचने वाले, (सचेतसम्) सचेत,
(ऊर्जः) बल के (स्कम्भम्) खम्भे रूप पुरुष से (धुरुणे) धारण करने में
(आ) सब प्रकार (वृषयसे) तू बलवान् के समान आचरण करता है । तू
(ओजः) पराक्रम को (कृष्व) कर और (त्वे) अपने में [इस को] (सम् गुभाय)
एकत्र कर, (अपि) और (केनिपानाम्) आत्मा में झुबने वाले बुद्धिमानों के
(इनः यथा) स्वामी के समान (वृधे) बढ़ती के लिये (असः) तू वर्तमान हो ॥ ४ ॥

पेतम् (आ) समन्तात् (ईम्) प्राप्तव्यम् (अस्मन्ना) अस्मात् (सधमादः)
सधमादयन्तः (बहन्तु) प्रापयन्तु ॥

४—(एव) एवम् (पतिम्) पालकम् (द्रोणसाचम्) कृवृजृसिद्धं ।
उ० ३ । १० । द्वु गतौ—नप्रत्ययः + षच् समवाये संघने च—अथ । ज्ञानेन सेका-
रम् (सचेतसम्) चेतसा युक्तम् (ऊर्जः) बलस्य (स्कम्भम्) स्तम्भं यथा
(धुरुणे) धारणे (आ) समन्तात् (वृषयसे) वृषन्—क्यङ् । वृषेव बलवा-
निचाचरसि (ओजः) बलम् (कृष्व) कुरुष्व (सम् गुभाय) सं गृहाण (त्वे)
त्वयि (अपि) विश्व (असः) भवेः (यथा) सादृश्ये (केनिपानाम्) आये-
त्यपि दृश्यते । पा० ३ । २ । १०१ । के + नि + पत्त् पतने—इप्रत्ययः । के
आत्मनि पतन्ति केनिपाः । आकेनिपो मेधाविनाम्—निघ० ३ । १५ । मेधावि-
नाम् (इनः) स्वामी (वृधे) वर्धनाय ॥

भावार्थ—राजा को योग्य है कि वीर बुद्धिमान् पुरुषों के साथ दया करके बल बढ़ावे और प्रजा की उन्नति करे ॥ ४ ॥

गमन्नुस्मे वसुन्या हि शंसिषं स्वाशिषं भरमा याहि सोमिनः ।
त्वमीशिषे सास्मिन्ना सत्सि बृहिष्यनाधुष्या तव पात्राणि
धर्मणा ॥ ५ ॥

गमन् । अस्मे इति । वसूनि । आ । हि । शंसिषम् । सु-आ-
शिषम् । भरम् । आ । याहि । सोमिनः ॥ त्वम् । ईशिषे ।
सः । अस्मिन् । आ । सत्सि । बृहिषि । अनाधुष्या । तव ।
पात्राणि । धर्मणा ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(अस्मे) हम को (वसूनि) अनेकधन (आ गमन्) आवें,
(हि) क्योंकि (शंसिषम्) मैं कहता हूँ, (सोमिनः) शान्त स्वभाव वाले के
(स्वाशिषम्) सुन्दर आशीर्वाद वाले (भरम्) पोषण व्यवहार को (आ)
सब प्रकार (याहि) तू प्राप्त हो । (त्वम्) तू (ईशिषे) स्वामी है, (सः) सो
तू (अस्मिन्) इस (बृहिषि) उत्तम आसन पर (आ) आकर (सत्सि) बैठ
(तव) तेरे (पात्राणि) रक्षा साधन (धर्मणा) धर्म के साथ (अनाधुष्या)
अजेय हैं ॥ ५ ॥

भावार्थ—राजा प्रजा की सम्मति से सिंहासन पर विराजकर उत्तम
साधनों से रक्षा करके धन की वृद्धि करे ॥ ५ ॥

५—(आ गमन्) आगच्छन्तु (अस्मे) अस्मभ्यम् (वसूनि) धनानि
(हि) यतः (शंसिषम्) शंस कथने—लुङ् । कथयामि (स्वाशिषम्) शोभनाशी-
र्वाद्युक्तम् (भरम्) पोषणम् (आ) समन्तात् (याहि) प्राप्नुहि (सोमिनः)
शान्तस्वभावयुक्तस्य (त्वम्) (ईशिषे) ईश्वरो भवसि (सः) स त्वम्
(अस्मिन्) (आ) आगत्य (सत्सि) सीद (बृहिषि) उत्तमासने (अनाधुष्या)
अधुषा प्रागल्भ्ये—क्यप् । धर्षितुमशक्यानि । अजेयानि (तव) (पात्राणि)
रक्षासाधनानि (धर्मणा) शास्त्रविहितव्यवहारेण ॥

पृथक् प्रायन् प्रयुमा देवहूतयोऽकृण्वत अवस्यानि दुष्टरा ।
न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहंसीमैव ते न्यविशन्त-केपयः ॥६॥
पृथक् । प्र । आयन् । प्रयुमाः । देव-हूतयः । अकृण्वत ।
अवस्यानि । दुष्टरा ॥ न । ये । शेकुः । यज्ञियाम् । नावम् ।
आ-रुहंम् । ईर्मा । एव । ते । नि । अविशन्त । केपयः ॥६॥

भाषार्थ—(प्रथमाः) मुखिया, (देवहूतयः) विद्वानों के बुलाने वाले पुरुष (पृथक्) अलग अलग [अर्थात् कोई वीरता, कोई विद्यावृद्धि आदि गुण से] (प्र) आगे (आयन्) गये हैं, और उन्होंने ने (दुष्टरा) दुष्टरा [बड़े कठिन] (अवस्यानि) यश के कर्म (अकृण्वत) किये हैं । (ये) जो (यज्ञियाम्) यज्ञ [देवपूजा, संगतिकरण और दान] की (नावम्) नाव पर (न आरुहं शेकुः) नहीं चढ़ सके हैं, (ते) वे (केपयः) दुराचारी (ईर्मा) मार्ग में (एव) ही (नि अविशन्त) टिक रहे हैं ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्य विद्वानों की शिक्षा से अनेक कठिन कामों को पूरा करके यश बढ़ावें, और दुष्कर्मियों के समान श्रेष्ठ कर्मों को छोड़कर निन्दनीय कर्मों में न पड़े ॥ ६ ॥

यह मन्त्र निरुक्त ५ । २५ में भी व्याख्यात है ॥

६—(पृथक्) नाना प्रकारेण, केचद् वीरत्वेन केचद् विद्यावृद्ध्यादिना (प्र) प्रकर्षेण (आयन्) इण् गतौ—लङ् । अगच्छर (प्रथमाः) मुख्याः (देवहूतयः) विदुषामाह्वितारः (अकृण्वत) अकुर्वन् (अवस्यानि) अवशीयानि यशांसि (दुष्टरा) दुःखेन तरणीयानि (न) निषेधे (ये) पुरुषाः (शेकुः) शक्ता बभूवुः (यज्ञियाम्) यज्ञसम्बन्धिनोम् (नावम्) नौकाम् (आरुहम्) शक्तिण्मुलकमुलौ । पा० ३ । ४ । १२ । रोहतेः कमुल् तुमर्थे । आरोढुम् (ईर्मा) इषियुधीन्धि उ० १ । १४५ । ईर् गतौ—मक्, विभक्तैर्डा । ईर्मै गन्तव्ये मागे (एव) अवधारणे (ते) पुरुषाः (नि अविशन्त) निवेशं स्थितिस्थानं प्राप्नुवन् (केपयः) कु+पय गतौ—किप्, कुशब्दस्य के इत्यादेशः । केपयः कपूया भवन्ति कपूयमिति पुनर्नति कर्म कुत्सितं दुष्पूयं भवति—निरु० ५ । २४ । कुत्सितगतयः । दुराचारिणः ॥

एवैवापागपरे सन्तु दूढ्योऽश्व। येषां दुर्युजं आयुयुजं । इत्या-
 ये प्रागुपरे सन्ति दावनें पुरुणि यत्र वयुनानि भोजना ॥ ७ ॥
 एव । एव । अपाक् । अपरे । सन्तु । दुः-ध्वः । अश्वः ।
 येषाम् । दुः-युजः । आ-युयुजं ॥ इत्या । ये । प्राक् । उपरे ।
 सन्ति । दावनें । पुरुणि । यत्र । वयुनानि । भोजना ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(एव) ऐसे (एव) ही (अपरे) वे दूसरे [वेद विरोधी]
 (दूढ्यः) दुर्बुद्धि लोग (अपाक्) नीच गति में (सन्तु) हों, (येषाम्)
 जिन के (दुर्युजः) कठिनाई से जुतने वाले [अति प्रबल] (अश्वः) घोड़े
 (आयुयुजं) बांध दिये गये [हठस दिये गये] हैं । (इत्या) इसी प्रकार
 (प्राक्) उत्तम गति में (सन्तु) वे हों, (ये) जो लोग (उपरे) निवृत्ति
 [विषयों के त्याग] में (दावने) दान के लिये हैं, (यत्र) जिस [दान] में
 (पुरुणि) बहुत से (वयुनानि) कर्म और (भोजनानि) पालन साधन
 धन आदि हैं ॥ ७ ॥

भावार्थ—दुर्बुद्धि वेद विरोधी मनुष्य बहुत प्रयत्न करने पर भी श्रेष्ठ
 कर्म नहीं कर सकते, और जो पुरुष कुविषयों को छोड़कर वेदाद्या में आत्म-
 दान करते हैं, वे अनेक प्रकार धन आदि प्राप्त करके संसार में उत्तम गति
 भोगते हैं ॥ ७ ॥

७—(एव) एवम् (एव) अवधारणे (अपाक्) अपा + अञ्चु गतौ—
 किन् यथा भवति तथा । अपागतौ (अपरे) अन्ये वेदविरोधिनः (सन्तु)
 (दूढ्यः) दुर्धियः । दुर्बुद्धयः । (अश्वः) तुरङ्गाः । (येषाम्) (दुर्युजः) युज
 संयमने—किन् । दुर्योज्जीयाः । अतिप्रबलाः (आयुयुजं) युज संयमने—
 कर्मणि लिट् । सम्यग् वद्धाः स्थितिं प्राप्ता बभूवुः (इत्या) अनेन प्रकारेण
 (ये) (प्राक्) प्रकृष्टगमने (उपरे) उप + रमतेर्ङ प्रत्ययः । उपरतौ निवृत्तौ ।
 विषयत्यागे (सन्ति) (दावने) ददाते—वनिप् । दानाय (पुरुणि) बहूनि
 (यत्र) यस्मिन् दाने (वयुनानि) कर्माणि (भोजना) भोजनानि । पालन-
 साधनानि धनानि—निघ० २ । १ ॥

गिरीं रज्जान् रेजमानान् अधारयद् द्यौः क्रन्ददन्तरिक्षाणि
कोपयत् । समीचीने धिषणे वि स्कभायति वृष्णः पीत्वा
मदे उक्थानि शंसति ॥ ८ ॥

गिरीन् । अज्जान् । रेजमानान् । अधारयत् । द्यौः ।
क्रन्दत् । अन्तरिक्षाणि । कोपयत् ॥ समीचीने इति सम-
ईचीने । धिषणे इति । वि । स्कभायति । वृष्णः । पीत्वा ।
मदे । उक्थानि । शंसति ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(क्रन्दत्) पुकारता हुआ (द्यौः) प्रकाशमान परमात्मा
(अज्जान्) चलते हुये और (रेजमानान्) कांपते हुये (गिरीन्) मेघों को
(अधारयत्) धारण करता और (अन्तरिक्षाणि) आकाशस्थ लोकों को
(कोपयत्) प्रकाशित करता, (समीचीने) आगस में मिले हुये (धिषणे)
दोनों सूर्य और भूमि को (वि) विविध प्रकार (स्कभायति) थांमता और
(वृष्णः) ऐश्वर्यों को (पीत्वा) ग्रहण करके (मदे) आनन्द में (उक्थानि)
कहने योग्य वचनों का (शंसति) उपदेश करता है ॥ ८ ॥

भाषार्थ—जो परमात्मा भाग्य रूप में धारण करके वृष्टि करता,
जगत् को रचता, सूर्य, भूमि आदि लोकों को आकर्षण द्वारा रह रखता और
श्रुतियों द्वारा वेदों का उपदेश करता है, सब मनुष्य उसी की उपासना
करें ॥ ८ ॥

८—(गिरीन्) मेघान् (अज्जान्) अ० २० । ३१ । ५ । शीघ्रगमनान्
(रेजमानान्) कम्पयमानान् (अधारयत्) धारयति (द्यौः) प्रकाशमानः पर-
मात्मा (क्रन्दत्) कदि आह्वाने रोदने च—शत् । क्रन्दन् । आह्वयन् (अन्तरि-
क्षाणि) आकाशस्थलोकान् (कोपयत्) कुपयतौ क्रोधे च । दीपयति । प्रकाश-
यति (समीचीने) संगच्छमाने (धिषणे) अ० २० । ३१ । ५ । चावापृथिव्यौ—
निघ० ३ । ३० । सूर्यभूमिलोको (वि) विविधम् (स्कभायति) स्तम्भाति
स्तम्भयति (वृष्णः) वृषु सेचने ऐश्वर्ये च—कनिम् । ऐश्वर्याणि (पीत्वा)
गृहीत्वा (मदे) आनन्दे (उक्थानि) कथनीयानि वचनानि (शंसति)
उपदिशति ॥

इमं विभर्मि सुकृतं ते अङ्कुशं येनारुजासि मघवंक्षारुजः ।
 अस्मिन्सु ते सवने अस्त्वोवयं सुत इष्टौ मघवन् बोध्याभगः ८
 इमम् । विभर्मि । सु-कृतम् । ते । अङ्कुशम् । येन ।
 आ-रुजासि । मघ-वन् । शफ-आरुजः ॥ अस्मिन् । सु ।
 ते । सवने । अस्तु । ओक्वम् । सुते । इष्टौ । मघ-वन् ।
 बोधि । आ-भगः ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(मघवन्) हे महाधनी ! (इमम्) इस (सुकृतम्) दृढ़ बने
 हुये (अङ्कुशम्) अङ्कुश को (ते) तेरे लिये (विभर्मि) मैं रखता हूं, (येन)
 जिस [कारण] से (शफारुजः) शान्ति भंजकों को (आरुजासि) तू नष्ट
 करे । (अस्मिन्) इस (सवने) ऐश्वर्य के बीच (ते) तेरा (ओक्वम्)
 निवास (सु) भले प्रकार (अस्तु) होवे, (इष्टौ) यज्ञ [देवपूजा, संगति
 करण और दान] के बीच (सुते) सिद्ध किये हुये तत्त्व रस में, (मघवन्)
 हे महाधनी ! (आभगः) बड़ा ऐश्वर्य (बोधि) जाना जाता है ॥ ८ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग राजा की रक्षा के लिये अङ्कुश आदि हथि-
 यार धारण कर के शत्रुओं को हटाकर ऐश्वर्य बढ़ावें ॥ ८ ॥

गोभिष्टरेमामति दुरेवां यवैन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
 वयं राजभिः प्रथसा धनान्यस्माकेन वृजनैना जयेम ॥ १० ॥

४—(इमम्) दृश्यमानम् (विभर्मि) धरामि (सुकृतम्) दृढ़निर्मितम्
 (ते) तुभ्यम् (अङ्कुशम्) आयुधविशेषम् (येन) कारणेन (आरुजासि)
 आरुजसि । आभिमुख्येन पीडयसि (मघवन्) हे धनवन् (शफारुजः) अ०
 ८ । ३ । २१ । शम शान्तौ—अच्, मस्य फः, शफ + आ + रुजो भङ्गे—किप् ।
 शान्तिसम्भञ्जकान् (अस्मिन्) (सु) सुष्ठु (ते) तव (सवने) ऐश्वर्ये
 (अस्तु) (ओक्वम्) ओक्वः । निवासः (सुते) संस्कृते तत्त्वरसे (इष्टौ)
 यज्ञे । देवपूजादिव्यवहारे (मघवन्) (बोधि) अबोधि । ज्ञायते (आभगः)
 समस्ताद् ऐश्वर्यम् ॥

गोभिः । तुरेस । अमतिम् । दुः-एवास् । यवेन । क्षुधम् ।
पुरु-हुत । विश्वास् ॥ वयम् । राज-भिः । प्रथमाः । धनानि ।
अस्माकेन । वृजनेन । जयेम् ॥ १० ॥

भाषार्थ—(पुरुहुत) हे बहुतों से बुलाये गये । [राजन्] (गोभिः)
विद्याओं से (तुरेवाम्) दुर्गति वाली (अमतिम्) कुमति [वा कङ्काली] को
और (यवेन) अन्न से (विश्वाम्) सब (क्षुधम्) भूख को (तरेम) हम
हटावें । (वयम्) हम (राजभिः) राजाओं के साथ (प्रथमाः) प्रथम श्रेणी
वाले होकर (धनानि) अनेक धनों को (अस्माकेन) अपने (वृजनेन) बल
से (जयेम्) जीते ॥ १० ॥

भावार्थ—मनुष्य प्रयत्न करके विद्याओं द्वारा कुमति और निर्धनता
हटाकर भोजन पदार्थ प्राप्त करें और अपने भुज बल से महाधनी होकर राजाओं
के साथ प्रथम श्रेणी वाले हों ॥ १० ॥

मन्त्र १०, ११ आ चुके हैं—अ० २० । १७ । १०, ११ । और कुछ भेद से—
२० । ८६ । १०, ११ ॥

बृहस्पतिर्नः । परि पातु पश्चादुत्तरस्मादधरादघायोः ।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ११
बृहस्पतिः । नः । परि । पातु । पश्चात् । उत । उत्-
तरस्मात् । अधरात् । अघ-योः ॥ इन्द्रः । पुरस्तात् । उत ।
मध्यतः । नः । सखा । सखि-भ्यः । वरिवः । कृणोतु ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(बृहस्पतिः) बृहस्पति [बड़े शत्रु का रक्षक सेनापति]
(नः) हमें (पश्चात्) पीछे से (उत्तरस्मात्) ऊपर से (उत) और (अध-
रात्) नीचे से (अघायोः) बुरा चीतने वाले शत्रु से (परि पातु) सब प्रकार
बचावे । (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला राजा] (पुरस्तात्) आगे से
(उत) और (मध्यतः) मध्य से (नः) हमारे लिये (वरिवः) सेवनीय धन

१०, ११—मन्त्रौ व्याख्यातौ—अ० २० । १७ । १०, ११ ॥

(कृणोतु) करे, (सखा) [जैसे] मित्र (सखिभ्यः) मित्रों के लिये [करता है] ॥ ११ ॥

भावार्थ—मनुष्य वीरों में महावीर और प्रतापियों में महाप्रतापी होकर दुष्टों से प्रजा की सदा रक्षा करें ॥ ११ ॥

सूक्तम् ८५ ॥

१—४ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ अष्टिः; २, ३ अतिजगती; ४ भुरिगतिजगती ॥

राजकर्तव्योपदेशः—राजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृपत् सोममपिबुह
विष्णुना सुतं यथावशत् । स ई समादु महि कर्म कर्तवे
महामुनं सैनं सग्रह देवो देवं सत्यमिन्द्रं सुत्य इन्दुः ॥ १ ॥

त्रि-कद्रुकेषु । महिषः । यव-आशिरम् । तुवि-शुष्मः । तृपत् ।
सोमम् । अपिबत् । विष्णुना । सुतम् । यथा । अवशत् ॥
सः । ईम् । समादु । महि । कर्म । कर्तवे । महाम् ।
उरम् । सः । सुनम् । सुग्रह । देवः । देवम् । सत्यम् ।
इन्द्रम् । सुत्यः । इन्दुः ॥ १ ॥

भावार्थ—(त्रिकद्रुकेषु) तीन [शारीरिक, आत्मिक] और सामाजिक [उन्न-
तियों] के विधानों में (तृपत्) तृप्त होते हुये (महिषः) महान् (तुविशुष्मः) बहुत
बल वाले [शूर] ने (विष्णुना) बुद्धिमान् मनुष्य वा व्यापक परमेश्वर करके
(सुतम्) निचेड़े हुये, (यवाशिरम्) अन्न के भोजन युक्त (सोमम्) सोम

१—(त्रिकद्रुकेषु) अ० २।५।७। त्रि+कद्रु कवि आह्वाने—कुन्, कप-
य । तिसृणां शारीरिकात्मिकसामाजिकवृद्धीनां त्रिकद्रुकेषु आह्वानेषु विधानेषु
(महिषः) महान् (यवाशिरम्) अ० २०।२४।७। अन्नभोजनयुक्तम्
(तुविशुष्मः) बहुबलः (तृपत्) तृप्तभावः । सुत्यन् (सोमम्) तद्वरसमे-
(अपिबत्) पीतवान् (विष्णुना) कर्मसु व्यापकेन विदुषा सर्वव्यापकेन परमे-

श्रवण [तत्त्व रस] को (अपिबत्) पिया है, (यथा) जैसा (अवशत्) उस [शूर] ने चाहा । (सः) उस [तत्त्वरस] ने (ईम्) प्राप्ति योग्य, (महाम्) महान् (उरुम्) लम्बे चौड़े पुरुष को (महि) बड़े (कर्म) कर्म (कर्तव्ये) करने के लिये (ममाद्) हर्षित किया है, (सः) वह (देवः) दिव्य (सत्यः) सत्य गुण वाला, (इन्दुः) ऐश्वर्यवान् [तत्त्वरस] (एनम्) इस (देवम्) कामना योग्य, (सत्यम्) सच्चे [सत्यकर्मा] (इन्द्रम्) इन्द्र [महाप्रतापी मनुष्य] को (सश्वत्) व्यापा है ॥ १ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करके परमात्मा और विद्वानों के सिद्धान्तों पर चलता है, वही शूर संसार में बड़े बड़े कर्म करके सर्वहितेपी होता है ॥ १ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—२। २२। १, सामवेद—पू० ५। ६। १। तथा साम०—उ० ६। ३। २० ॥

प्रो ऋस्मै पुरोरुयमिन्द्राय शुषमर्वत । अभीके चिदु लोक-
कृत् सुं गे सुमत्सु वृत्रहास्माकं बोधि बोदिता नभन्तामन्य-
केषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ २ ॥

प्रो इति । सु । अस्मै । पुरः-रुयम् । इन्द्राय । शुषम् ।
अर्वत् ॥ अभीके । चित् । ऊं इति । लोक-कृत् । सुम्-गे ।
सुमत्-सुं । वृत्र-हा । अस्माकम् । बोधि । बोदिता ।
नभन्ताम् । अन्यकेषाम् । ज्याकाः । अधि । धन्व-सु ॥ २ ॥

वा (सुतम्) निष्पादितम् (यथा) येन प्रकारेण (अवशत्) वश कान्तौ—
छान्दसः शप् । अवष्ट । अकामयत (सः) सोमः (ईम्) प्राप्तव्यम् (ममाद्)
हर्षितवान् (महि) महत् (कर्म) कर्तव्यम् (कर्तव्ये) तुमर्थे तवेन । कर्तुम्
(महाम्) महान्तम् (उरुम्) विस्तृतम् (सः) सोमः (एनम्) (सश्वत्)
सश्वतिर्गतिकर्मा—निघ० २। १४ । असश्वत् । व्याप्तवान् (देवः) दिव्यः
(देवम्) कमनीयम् (सत्यम्) यथार्थकर्माणम् (इन्द्रम्) महाप्रतापिनं मनु-
ष्यम् (सत्यः) सत्यगुणयुक्तः (इन्दुः) इति परमैश्वर्य—कु । परमैश्वर्यवान्
सोमः ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्यो !] (अस्मै) इस (इन्द्राय) इन्द्र [महा प्रतापी राजा] के लिये (पुरोरथम्) रथ को आगे रखने वाले (शूषम्) शत्रुओं के सुखाने वाले बल का (सु) भले प्रकार से (प्रो) अवश्य ही (अर्चत) आदर करो । (अभीके) समीप में (चित् उ) ही (संगे) मिलने पर (समत्सु) परस्पर खाने के स्थान सङ्ग्रामों में (वृत्रहा) शत्रुनाशक (अस्माकम्) हमारा (चोदिता) प्रेरक [उत्साह बढ़ाने वाला] और (लोककृत्) स्थान करने वाला (बोधि) जाना गया है । (अन्यकेषाम्) दूसरे छोटे लोगों की (ज्याकाः) निर्बल डोरियां (धन्वसु अधि) धनुषों पर चढ़ी हुई (नभन्ताम्) टूट जावें ॥ २ ॥

भाषार्थ—जिस शूर राजा के प्रताप से उपद्रवी शत्रु लोग हार मानें और प्रजागण आगे बढ़ें, विद्वान् पुरुष उस वीर का सदा मान करें ॥ २ ॥

मन्त्र २—४ ऋग्वेद में हैं—१० । १३३ । १—३ । और सामवेद—उ० ४ । १ । तृच १४ ॥

त्वं सिन्धूरवासृजोऽधुराचो अहन्नहिम् । अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे
विश्वं पुण्यसि वार्यं तं त्वा परि ष्वजामहे नभं० ॥ ३ ॥

त्वस् । सिन्धून् । अर्व । असृजः । अधुराचः । अहन् ।

२—(प्रो) प्र उ इति निपातसमुदायः । ओत् । पा० १ । १ । १५ । इति प्रगृह्यम् । प्रकर्षणैव । अवश्यमेव (सु) सुष्ठु (अस्मै) (पुरोरथम्) अग्रे रथयुक्तम् (इन्द्राय), महाप्रतापिने राज्ञे (शूषम्) अ० २० । ७१ । १६ । शत्रुशोषकं बलम् (अर्चत) सत्कुरुत (अभीके) अलीकादयश्च । उ० ४ । २५ । अभि + इण् गतौ—कीकृत् । धातोर्लोपः । आसन्ने—निरु० ३ । २० (चित्) एव (उ) अवधारणे (लोककृत्) स्थानस्य कर्ता (संगे) संगमे (समत्सु) परस्परादनस्थानेषु संग्रामेषु (वृत्रहा) शत्रुनाशकः (अस्माकम्) (बोधि) अबोधि । ज्ञायते (चोदिता) प्रेरकः । उत्साहवर्धकः (नभन्ताम्) नभतेर्बधकर्मा—निघ० २ । १६ । हिं स्यन्ताम् । नश्यन्तु (अन्यकेषाम्) अव्ययसर्वनासामकच् प्राक् टेः । पा० ५ । ३ । ७१ । अन्य—अकच् । कुत्सितानामन्येषां शङ्खाम् (ज्याकाः) कुत्सिते । पा० ५ । ३ । ७४ । ज्या—कप्रत्ययः । कुत्सिता निर्बला ज्याः (अधि) उपरि (धन्वसु) धनुषु ॥

अहिम् ॥ अशत्रुः । इन्द्र । जज्ञिषे । विश्वम् । पुष्यसि ।
वार्यम् । तम् । त्वा । परि । स्वजामहे । ० ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(त्वम्) तू ने (अशत्रुः) नीचे को बहने वाले (सिन्धुम्)
नदी नालों को (अव असृजः) छोड़ दिया है, (अहिम्) मारने वाले विघ्न को
(अहन्) तू ने मारा है । (इन्द्र) हे इन्द्र ! [महाप्रतापी राजन्] तू (अशत्रुः)
निर्वैरी (जज्ञिषे) हो गया है, (विश्वम्) सब (वार्यम्) जल में होने वाले
[अन्न आदि] को (पुष्यसि) तू पुष्ट करता है, (तम्) उस (त्वाम्) तुझ से
(परि स्वजामहे) हम मिलते हैं । (अन्यत्वेनाम्) दूसरे छोटे लोगों को.....
[मन्त्र २] ॥ ३ ॥

भावार्थ—राजा पहाड़ आदि जल स्थानों से नदी नाले निकाल कर
खेती आदि उद्यम को बढ़ावे, जिस से प्रजागण उस से प्रीति करें ॥ ३ ॥

विषु विश्वा अरातयोऽयं नशन्त नो धियः । अस्तासि शत्रवे
बुधं यो न इन्द्र जिघासति या ते रातिर्दुर्दिशु नमन्तामन्य-
केषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ ४ ॥

वि । सु । विश्वाः । अरातयः । अर्यः । नशन्त । नः । धियः ॥
अस्ता । अस्ति । शत्रवे । बुधम् । यः । नः । इन्द्र । जिघासति ।
या । ते । रातिः । दुदिः । वसु । नमन्ताम् । अन्य-
केषाम् । ज्याकाः । अधि । धन्व-सु ॥ ४ ॥

३—(त्वम्) (सिन्धुम्) स्यन्दनशीलान् जलपूरान् । नदीः कुल्याः (अव
असृजः) असृष्टवान् निर्गमितवानसि (अशत्रुः) अधोमुखमञ्चतो गन्तून्
(अहन्) हतवानसि (अहिम्) आहन्तारं विघ्नम् (अशत्रुः) शत्रुरहितः (इन्द्र)
महाप्रतापिन् राजन् (जज्ञिषे) जनेर्लिङ् । प्रादुर्बभूविष्य (विश्वम्) सर्वम्
(पुष्यसि) वर्धयसि (वार्यम्) वार—यत् । वारि जले भवमुत्पन्नमन्नादिकम्
(तम्) तादृशम् (त्वा) त्वाम् (परि) परितः (स्वजामहे) स्वज आलिङ्गने-
आलिङ्गामः । संगच्छामहे । अन्यत् पूर्ववत् ॥

भाषार्थ—(नः) हमारे (अर्यः) शत्रु की (विश्वाः) सब (अरातयः)
 कंजूस प्रजायें और (धियः) बुद्धियाँ (सु) सर्वथा (वि नशन्त) नष्ट हो
 जावें । (इन्द्र) हे इन्द्र [महाप्रतापी राजन्] तू (शत्रवे) उस त्रैरी पर (वधम्)
 शस्त्र (अस्ता) चलाने वाला (असि) है, (यः) जो (नः) हमें (जिघांसति)
 मारना चाहता है, (या) जो (ते) तेरी (रातिः) दान शक्ति है, [वध] (वसु)
 धन को (ददिः) देने वाली है । (अन्यकेषाम्) दूसरे छोटे लोगों की (ज्याकाः)
 निर्बल डोरियाँ (अन्वसु अधि) धनुषों पर चढ़ो हुई (नभन्ताम्) टूट जावें ॥ ४ ॥

भावार्थ—राजा ऐसा प्रबन्ध करे कि दुष्ट लोग उपद्रव न मचावें और
 सदाचारी राजसक्त सन्तुष्ट होकर सुखी रहें ॥ ४ ॥

सूक्तस्य ८६ ॥ १-२४ ॥

१-५ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ३ त्रिष्टुप् ; २ विराट् त्रिष्टुप् ; ४, ५ विराडा ष
 त्रिष्टुप् ॥

राजकर्तव्योपदेशः—राजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

तीव्रस्याभिधयसो अस्य पाहि सर्वरथा वि हरी इह मुञ्च ।
 इन्द्र मा त्वा यजमानासो अन्ये नि रीरमुन् तुभ्यमिमे सुतासः १
 तीव्रस्य । अभि-धयसः । अस्य । पाहि । सर्व-रथा । वि ।
 हरी इति । इह । मुञ्च ॥ इन्द्र । मा । त्वा । यजमानासः ।
 अन्ये । नि । रीरमुन् । तुभ्यम् । इमे । सुतासः ॥ १ ॥

४—(वि) विविधम् (सु) सर्वथा (विश्वाः) सर्वाः (अरातयः)
 अरातयः प्रजाः (अर्यः) अरे । शत्रोः (नशन्त) नश्यन्तु (नः) अस्माकम्
 (धियः) बुद्धयः (अस्ता) क्षेता (असि) (शत्रवे) (वधम्) आयुधम् (यः)
 शत्रुः (नः) अस्मान् (इन्द्र) महाप्रतापिन् राजन् (जिघांसति) हन्तुमिच्छति
 (या) (ते) तत्र (रातिः) दानशक्तिः (ददिः) ददाते—किप्रत्ययः । न लोका-
 व्ययनिष्ठाखल्यर्थतृणाम् । पा० २ । २ । ६६ । इति वसुशब्दात् षष्ठ्यभावः ।
 वात्री (वसु) धनम् । सिद्धमन्यत्—म० २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (अस्य) इस (तीव्रस्य) तीक्ष्ण [शीघ्र बलदायक] (अभिवयसः) प्राप्त अन्न की (पाहि) तू रक्षा कर और (सर्वरथा) सब रथों के योग्य (हरी) आने दोनों घोड़ों को (इह) यहां पर (वि मुञ्च) छोड़ दे । (त्वा) तुझ को (यज-मानासः) यजमानों के गिराने वाले [अथवा यजमानों से भिन्न] (अन्ये) दूसरे [विरोधी] लोग (मा नि रीरमन्) न रोक लेवें, (तुभ्यम्) तेरे लिये (इमे) यह (सुतासः) सिद्ध किये हुये [तत्त्व रत्न] हैं ॥ १ ॥

भावार्थ—राजा अन्न आदि बलदायक पदार्थों की रक्षा करके प्रजा की बात सुने और बैरियों के फन्दों में न पड़कर श्रेष्ठों के सिद्धान्तों को माने । मन्त्र १—५ ऋग्वेद में हैं—१० । १६० । १—५ ॥

तुभ्यं सुतास्तुभ्यं सुतास्त्वाम् गिरः श्वात्र्या आ ह्वयन्ति ।
इन्द्रे दस्युः सर्वान् जुषाणो विश्वस्य विद्वां इह पाहि सोमं मरु-
तुभ्यं । सुताः । तुभ्यं । ऊँ इति । सोत्वांसः । त्वाम् ।
गिरः । श्वात्र्याः । आ । ह्वयन्ति ॥ इन्द्र । इदम् । अद्य ।
सर्वान् । जुषाणः । विश्वस्य । विद्वां । इह । पाहि ।
सोमं ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [महाप्रतापी राजन्] (तुभ्यम्) तेरे

१—(तीव्रस्य) तीक्ष्णस्य । त्विप्रबलकरस्य (अभिवयसः) वयोऽन्नम्-निघ० २ । ७ । अभिगतस्य प्राप्तस्यान्नास्य (अस्य) समीपस्थस्य (पाहि) रक्षां कुरु (सर्वरथा) सर्वरथयोग्यौ (वि मुञ्च) विमुञ्च (हरी) अश्वौ (इह) अत्र (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् राजन् (मा) निषेधे (त्वा) त्वाम् (यज-मानासः) यजमान + असु क्षेपणे—किप् । यजमानानां श्वेत्तारः । यद्वा । सुपां सुपो भवन्ति । वा० पा० ७ । १ । ३४ । पञ्चम्यर्थे प्रथमा, असुक् च । यजमानेभ्यः सकाशात् पृथग् भूताः (अन्ये) अपरे । विरोधिनः (नि) नितराम् (रीरमन्) रमु उपरमे—णिचि लुङ् । अडभावो माङ्योगे । उपरमयन्तु । निवर्तयन्तु (तुभ्यम्) त्वदर्थम् (इमे) लभ्यमानाः (सुतासः) संस्कृतास्तत्त्वरसाः ॥

२—(तुभ्यम्) त्वदर्थम् (सुताः) संस्कृतास्तत्त्वरसाः (तुभ्यम्) (उ)

लिये (सुताः) सिद्ध किये हुये, (उ) और (तुभ्यम्) तेरे लिये (सोत्वासः) सिद्ध होने वाले [तत्त्वं रस] हैं, (त्वाम्) तुझको (श्वाध्याः) गति वाली [प्रजा] की (गिरः) वाणियां (आह्वयन्ति) बुलाती हैं । (अद्य) अब (इदम्) इस (सवनम्) ऐश्वर्य कर्म का (जुषाणः) सेवन करता हुआ और (विश्वस्य) सब का (विद्वान्) जानने वाला तू (इह) यहां पर (सोमम्) उत्पन्न संसार की (पाहि) रक्षा कर ॥ २ ॥

भावार्थ—राजा को चाहिये कि भूत भविष्यत् और वर्तमान को विचार कर प्रजा की सदा रक्षा करे ॥ २ ॥

य उ॒शुता मन॑सा सोम॑सस्मै सर्व॑हृदा देव॑कामः सु॒नोति॑ । न
गा इन्द्र॑स्तस्य॒ परा॑ ददा॑ति प्रशु॒स्तमिच्छा॑रु॑सस्मै कृ॒णोति॑ ॥३॥
यः । उ॒शुता । मन॑सा । सोम॑स् । अ॒स्मै । सर्व॑-हृदा । देव॑-
कामः । सु॒नोति॑ ॥ न । गाः । इन्द्रः॑ । तस्य॑ । परा॑ । द॒दाति॑ ।
प्र-शु॒स्तस् । इत् । चारु॑स् । अ॒स्मै । कृ॒णोति॑ ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(यः) जो (देवकामः) दिव्यगुण चाहने वाला मनुष्य (उशुता) कामना वाले (मनसा) मन से और (सर्वहृदा) पूरे हृदय से (अस्मै) इस [संसार] के लिये (सोमम्) सोम [तत्त्वं रस] को (सुनोति) निचोड़ता है । (इन्द्रः) इन्द्र [महा प्रतापी राजा] (तस्य) उस [मनुष्य] की (गाः)

च (सोत्वासः) कृतार्थे तवैकेन केन्यत्वनः । पा० ३ । ४ । १४ । सुनोतेः—त्वं सोतव्याः । संस्कृताव्याः (त्वाम्) (गिरः) वाण्यः (श्वाध्याः) श्वान्नतिर्गति-कर्मा—निघ० २ । १४ । अच् प्रत्ययः, डीप् । गतिशीलायाः प्रजायाः (आ ह्वयन्ति) आक्रोशन्ति (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् राजन् (इदम्) (अद्य) (सवनम्) ऐश्वर्यकर्म (जुषाणः) सेवमानः (विश्वस्य) सर्वस्य (विद्वान्) ज्ञाता (इह) अत्र (पाहि) रक्ष (सोमम्) उत्पन्नं संसारम् ॥

३—(यः) पुरुषः (उशुता) कामयमानेन (मनसा) चित्तेन (सोमम्) तत्त्वरसम् (अस्मै) दृश्यमानाय संसाराय (सर्वहृदा) पूर्णहृदयेन (देवकामः) दिव्यगुणान् कामयमानः (सुनोति) निष्पादयति (न) निषेधे (गाः) वाणीः (इन्द्रः) महाप्रतापी राजा (तस्य) पुरुषस्य (परा ददाति) परादानं विनाशः ।

वाणियों को (न नहीं (परा ददाति) नष्ट करता है, (अस्मै) उसके लिये वह (प्रशस्तम्) प्रशंसनीय, (चारुम्) मनोहर व्यवहार (इत्) ही (कृणोति) करता है ॥ ३ ॥

भावार्थ—राजा और विद्वान लोग संसार के हित के लिये परस्पर श्रेष्ठ व्यवहार करें ॥ ३ ॥

अनुस्पष्टो भवत्येषो अस्य यो अस्मै रेवान् न सुनोति सोमम् ।
निरुत्तौ मघवा तं दधाति ब्रह्मद्विषो हन्त्यनानुदिष्टः ॥ ४ ॥

अनु-स्पष्टः । भवति । एषः । अस्य । यः । अस्मै । रेवान् ।
न । सुनोति । सोमम् ॥ निः । अरुत्तौ । मघ-वा । तम् ।
दधाति । ब्रह्म-द्विषः । हन्ति । अननु-दिष्टः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(एषः) वह [मनुष्य] (अस्य) इस [शूर पुरुष] का (अनुस्पष्टः) सर्वथा स्पष्ट [दृष्टि गोचर] (भवति) होता है, (यः) जो [मनुष्य] (रेवान् न) धनवान् के समान (अस्मै) उस [शूर] के लिये (सोमम्) सोम [तस्व रस] (सुनोति) निचोड़ता है । (मघवा) धनवान् [शूर] (तम्) उस [मनुष्य] को (अरुत्तौ) अपनी गोद में (निः) निश्चय करके (दधाति) बैठाता है, और (अननुदिष्टः) बिना कहा हुआ [वह शूर] (ब्रह्मद्विषः) वेद विरोधियों को (हन्ति) मारता है ॥ ४ ॥

भावार्थ—राजा बुद्धिमान् राजभक्तों पर सदा दया-दृष्टि रखे ॥ ४ ॥

विनाशयति (प्रशस्तम्) प्रशंसनीयम् (इत्) एव (चारुम्) मनोहर व्यवहारम् (अस्मै) पुरुषाय (कृणोति) करोति ॥

४—(अनुस्पष्टः) निरन्तरस्पष्टः । दृष्टिगोचरः (भवति) (एषः) स मनुष्यः (अस्य) प्रसिद्धस्य शूरस्य (यः) मनुष्यः (अस्मै) शूराय (रेवान्) धनवान् (न) इव (सुनोति) निष्पादयति (सोमम्) तस्वरसम् (निः) निश्चयेन (अरुत्तौ) श्रुतन्यञ्चि० । उ० ४ । २ । ऋ गतौ—कलित्, रत्निर्वद्धमुष्टिकरः स नास्ति यत्र । विस्तृतकनिष्ठाङ्गुलिमुष्टिकहस्ते । हस्ते । क्रोड़े (मघवा) धनवान् (तम्) पुरुषम् (दधाति) स्थापयति (ब्रह्मद्विषः) वेदघ्नेषुन् (हन्ति) नाशयति (अननुदिष्टः) अनुदेशमप्राप्तः । अनुक्तः । अप्रार्थितः ॥

अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो हवामहे त्वोपगन्तुवा उ ।
 आभूषन्तस्ते सुमतौ नवायां वयमिन्द्र त्वा शुनं हुवेम ॥ ५ ॥
 अश्व-यन्तः । गव्यन्तः । वाजयन्तः । हवामहे । त्वा । उप-
 गन्तुवै । ऊ इति ॥ आ-भूषन्तः । ते । सु-मतौ । नवायाम् ।
 वयम् । इन्द्र । त्वा । शुनम् । हुवेम् ॥ ५ ॥

भाषार्थ—[हे राजन् ।] (अश्वायन्तः) घोड़े चाहते हुये, (गव्यन्तः)
 भूमि चाहते हुये, (वाजयन्तः) बल वा अन्न चाहते हुये हम (त्वा) तुम्हें
 (उपगन्तवै) आने के लिये (उ) अवश्य कर के (हवामहे) बुलाते हैं । (इन्द्र)
 हे इन्द्र ! [महाप्रतापी राजन्] (ते) तेरी (नवायाम्) श्रेष्ठ (सुमतौ)
 सुमति में (आभूषन्तः) शोभा पाते हुये (वयम्) हम (त्वा) तुम्हें को
 (शुनम्) सुन्न से (हुवेम) बुलावें ॥ ५ ॥

भावार्थ—प्रजागण धर्मात्मा राजा की नीति में चलकर सदा रक्षति
 करें ॥ ५ ॥

मन्त्रः, ६—१० ॥ राजयक्ष्मन् देवता ॥ ६ आर्षी; ७ त्रिष्टुप्; ८ निचृत्
 त्रिष्टुप्; ९ विराट् त्रिष्टुप्; १० निचृवतुष्टुप् ॥

रोगनाशनोपदेशः—रोग नाश करने का उपदेश ॥

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयस्मादुत राजय-
 स्मात् । ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्य इन्द्राग्नी प्र मुमुक्त-

५—(अश्वायन्तः) अश्व—कयच्, शतृ । अश्वायस्यात् । पा० ७ । ४ ।
 ३७ । इत्यास्त्वम् । अश्वान् इच्छन्तः (गव्यन्तः) गो—कयच्, शतृ । वान्तो
 यि प्रत्यये । पा० ६ । १ । ७६ । अवादेशः । गां भूमिमिच्छन्तः (वाजयन्तः) बल-
 मन्नं वेच्छन्तः (हवामहे) आह्वयामः (त्वा) त्वाम् (उपगन्तवै) तुमर्थे
 सेसेनसे० । पा० ३ । ४ । ६ । गमेः—तवैप्रत्ययः । आगन्तुम् (उ) अवधारणे
 (आभूषन्तः) इलंक्रिमाणाः । शोभयमानाः । ते) तव (सुमतौ) शोभनायां
 बुद्धौ (नवायाम्) एतत्तु—इप् । एतुःपायाम् (वयम्) (इन्द्र) महाप्रतापिन्
 राजन् (त्वा) (शुनम्) सुन्नेन (हुवेम) आह्वयेम ॥

मेनम् ॥ ६ ॥

मुञ्चामि । त्वा । हविषा । जीवनाय । कम् । अज्ञात-
यक्ष्मात् । उत । राज-यक्ष्मात् ॥ ग्राहिः । जग्राह । यदि ।
एतत् । एनम् । तस्याः । इन्द्राग्नी इति । प्र । मुमुक्तम् ।
एनम् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—[हे प्राणी !] (त्वां) तुझ को (हविषा) भक्ति के साथ
(कम्) सुख से (जीवनाय) जीवन के लिये (अज्ञातयक्ष्मात्) अप्रकट रोग
से (उत) और (राजयक्ष्मात्) राजरोग से (मुञ्चामि) मैं छुड़ाता हूँ ।
(यदि) जो (ग्राहिः) जकड़ने वाली पीड़ा [गठिया रोग] ने (एतत्) इस
समय (एनम्) इस प्राणी को (जग्राह) पकड़ लिया है, (तस्याः) उस
[पीड़ा] से, (इन्द्राग्नी) हे सूर्य और अग्नि (एनम्) इस [प्राणी] को (प्र
मुमुक्तम्) तुम छोड़ाओ ॥ ६ ॥

भावार्थ—सद्बुद्धि गुप्त और प्रकट रोगों से विचार पूर्वक रोगी को
अच्छा करता है, ऐसे ही प्रत्येक मनुष्य (इन्द्राग्नी) सूर्य और अग्नि अर्थात् सूर्य
से लेकर अग्नि पर्यन्त अर्थात् दिव्य और पार्थिव सब पदार्थों से उपकार लेकर,
अथवा सूर्य और अग्नि के समान तेजस्वी विद्वानों से मिलकर, अपने दोषों को
मिटोकर यशस्वी होवे ॥ ६ ॥

मन्त्र ६—६ आ चुके हैं—अ० ३।११।१—४ ॥

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव ।
तस्मा ह्यहं निर्वृतेरुपस्थादस्पर्शमेनं शतशरदाय ॥ ७ ॥

यदि । क्षित-आयुः । यदि । वा । परी-इतः । यदि मृत्योः ।
अन्तिकम् । नि-इतः । एव ॥ तम् । आ । ह्यहम् । निः-
वृतेः । उप-स्थात् । अस्पर्शम् । एनम् । शत-शरदाय ॥ ७ ॥

६—६ — व्याख्यातः—अ० ३।११।१—४ ॥

भाषार्थ—(यदि) चाहे [यह] (क्षितायुः) डूटी आयु वाला, (यदि वा) अथवा (परेतः) अंग भंग है, (यदि) चाहे (मृत्योः) मृत्यु के (अन्तिकम्) समीप (एव) ही (नीतः = नि—इतः) आ चुका है । (तम्) उस को (निर्मृतेः) महामारी की (उपस्थात्) गोद से (आ हरामि) लिये आता हूँ, (एनम्) इस को (शातशारदाय + जीवनाय) सौ शरद ऋतुओं वाले [जीवन] के लिये (अस्पर्शम्) मैं ने छुआ है ॥ ७ ॥

भावार्थ—जैसे चतुर वैद्य यत्न करके भारी भारी रोगियों को चंगा करता है, ऐसे ही मनुष्य शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कठिन संकट पड़ने पर अपने आत्मा को प्रबल रखे ॥ ७ ॥

सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहार्षमेनम् ।
इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य दुरितस्य पारम् ॥ ८ ॥
सहस्र-अक्षेण । शत-वीर्येण । शत-आयुषा । हविषा । आ ।
अहार्षम् । एनम् ॥ इन्द्रः । यथा । एनम् । शरदः ।
नयाति । अति । विश्वस्य । दुः-इतस्य । पारम् ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(सहस्राक्षेण) सहस्रों नेत्र वाले, (शतवीर्येण) सैकड़ों सामर्थ्य वाले, (शतायुषा) सैकड़ों जीवन शक्ति वाले (हविषा) आत्मदान वा भक्ति से (एनम्) इस [आत्मा] को (आ अहार्षम्) मैं ने उभारा है । (यथा) जिस से (इन्द्रः) पेशवर्यवान् मनुष्य (एनम्) इस [जीव] को (विश्वस्य) प्रत्येक (दुरितस्य) कष्ट के (पारम्) पार (अति = अतीत्य) निकालकर (शरदः) [सौ] शरद ऋतुओं तक (नयाति) पहुंचावे ॥ ८ ॥

भावार्थ—जब मनुष्य एकाम्र चित्त होकर अनेक प्रकार से अपनी दर्शन शक्ति, कर्म शक्ति और जोविका शक्ति बढ़ाकर अपने को सुधारता है, तब वह इन्द्र पुरुष सब उलझनों को सुलझाकर यशस्वी होकर चिरंजीवी होता है ॥ ८ ॥
शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हैमन्तान्छुतम् वसन्तान् ।
शतं तु इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषा-

४—(अस्पर्शम्) स्पृष्टवानस्मि । अन्यद् गतम् ॥

हार्षमेनम् ॥ ८ ॥

शतम् । जीव । शरदः । वर्धमानः । शतम् । हेमन्तान् ।
शतम् । ऊ इति । वसन्तान् ॥ शतम् । ते । इन्द्रः । अग्निः ।
सविता । बृहस्पतिः । शत-आयुषा । हविषा । आ ।
आहार्षम् । एनम् ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(वर्धमानः + त्वम्) बढ़ती करता हुआ तू (शतं शरदः)
सौ शरद ऋतुओं तक, (शतं हेमन्तान्) सौ शीत ऋतुओं तक (उ) और (शतं
वसन्तान्) सौ वसन्त ऋतुओं तक (जीव) जीता रह । (इन्द्रः) ऐश्वर्यवान्,
(अग्निः) तेजस्वी विद्वान्, (सविता) सब के चलाने वाले, (बृहस्पतिः + अहं
जीवः) बड़े बड़ों के रक्षक मैं ने (शतम्) अनेक प्रकार से (ते) तेरे लिये
(शतायुषा) सैकड़ों जीवन शक्ति वाले (हविषा) आत्मदान वा भक्ति से
(एनम्) इस [आत्मा] को (आ आहार्षम् उभारा है ॥ ८ ॥

भावार्थ—मनुष्य उचित रीति से वर्षा, शीत और उष्ण ऋतुओं को
सहकर बहुप्रकार मन्त्रोक्त विधि पर विद्या आदि बल से शक्तिमान् होकर
जीविका उपार्जन करता हुआ आत्मा की उन्नति करे ॥ ८ ॥

आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः ।

सर्वाङ्गः सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् ॥ १० ॥

आ । आहार्षम् । अविदम् । त्वा । पुनः । आ । अगाः ।

पुनः-नवः ॥ सर्व-अङ्ग । सर्वम् । ते । चक्षुः । सर्व । आयुः ।

च । ते । अविदम् ॥ १० ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्य !] (त्वा) तुझ को (आ आहार्षम्) मैं ने प्रदण
किया है और (अविदम्) मैं ने पाया है, तू (पुनर्णवः) नवीन होकर (पुनः)
फिर (आ अगाः) आया है । (सर्वाङ्गः) हे सम्पूर्ण [विद्या] के अङ्ग वाले !
(तेरे) लिये (सर्वम्) सम्पूर्ण (चक्षुः) दर्शन सामर्थ्य (च) और (ते)

तेरे लिये (सर्वम्) सम्पूर्ण (आयुः) आयु (अविद्वत्) मैं ने पायो है ॥ १० ॥

भावार्थ—जिस पुरुष को आचार्य स्वीकार करके विद्यादान देकर द्विजन्मा बनाता है, वह मन्त्र प्रसार प्रिया से प्रकाशित होकर उत्तम जीवन युक्त होता है ॥ १० ॥

यह मन्त्र आ चुका है—अ० ८ । १ । २० । ॥

मन्त्र ११—१६ ॥ गर्भसंज्ञाये गार्भशय देवता ॥ ११. १२. १४ निचृद-

नुष्टुप्, १३, १५ १६ अनुष्टुप् ॥

गर्भरक्षोपदेशः—गर्भ रक्षा का उपदेश ॥

ब्रह्मण्याग्निः संविदानो रक्षोहा बाधतामृतः ।

अमीवा यस्तु गर्भं दुर्गाम् । योनिमाशये ॥ ११ ॥

ब्रह्मणा । अग्निः । सुसं-विदानः । रक्षः-हा । बाधताम् ।

इतः ॥ अमीवा । यः । ते । गर्भम् । दुः-नामा । योनिम् ।

आ-शये ॥ ११ ॥

भाषार्थ—[हे गर्भिणी !] (ब्रह्मणा) विद्वान् वैद्य से (संविदानः) मेल रखता हुआ, (रक्षोहा) रक्षसों [रोगों] का नाश करने वाला (अग्निः) अग्नि [अग्नि के समान रोग भस्म करने वाला औषध] (इतः) यहां से [उस रोग को] (बाधताम्) हटावे, (यः) जो कोई (दुर्गाम्) दुर्गामा [दुष्ट नाम वाले बवासीर आदि रोग का कीड़ा] (अमीवा) पीड़ा होकर (ते) तेरे (गर्भम्) गर्भाशय [कोख] और (योनिम्) योनि [गुप्त-उत्पत्ति मार्ग] को (आशये) घेर लेता है ॥ ११ ॥

११—(ब्रह्मणा) विदुषा वैद्येन सह (अग्निः) अग्निसमानं रोगस्य भस्मी-
करमौषधम् (संविदानः) ऐकमत्यं प्राप्तः (रक्षोहा) रक्षसां रोगाणां नाशकः (बाध-
ताम्) हिनस्तुतं रोगम् (इतः) अस्मात् स्थानात् (अमीवा) पीडा (यः)
(ते) तव (गर्भम्) गर्भाशयम् (दुर्गाम्) अ० ८ । ६ । १ । दुर्गामा किमि-
भवति पापनामा—निरु० ६ । १२ । अर्शआदिरोगजन्तुः (योनिम्) गुप्तोत्प-
त्तिमार्गम् (आशये) तलोपः । आशेते । प्राप्नोति ॥

भाषार्थ—स्त्री की कोख और योनि के रोग जन्तुओं को विद्वान् वैद्यों की सम्मति से दूर करना चाहिये ॥ ११ ॥

मन्त्र ११—१६ ऋग्वेद में हैं—१०। १६२। १—६ ॥

इन मन्त्रों से मिलाओ—म० का० ८। सू० ६ ॥

यस्ते गर्भस्मीवा दुर्णामा योनिमाशये ।

अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्कृष्यादमनीनशत् ॥ १२ ॥

यः । ते । गर्भम् । अमीवा । दुः-नामा । योनिम् । आ-शये ॥

अग्निः । तम् । ब्रह्मणा । सह । निः । कृष्य-अदम् ।

अनीनशत् ॥ १२ ॥

भाषार्थ—[हे गर्भिणी !] (यः) जो कोई (दुर्णामा) दुर्णामा [दुष्ट नाम वाला बवासीर आदि रोग का कीड़ा] (अमीवा) पोड़ा होकर (ते) तेरे (गर्भम्) गर्भाशय [कोख] और (योनिम्) योनि [गुप्त स्तपस्ति मार्ग] को (आशये) घेर लेता है, (ब्रह्मणा सह) विद्वान् वैद्य के साथ (अग्निः) अग्नि [अग्नि समान रोग भस्म करने वाला औषध] (तम्) उस (कृष्यादम्) मांस खाने वाले [रोग] की (निः) सर्वथा (अनीनशत्) नाश करे ॥ १२ ॥

भाषार्थ—मन्त्र ११ के समान है ॥ १२ ॥

यस्ते हन्ति पुतयन्तं निषत्स्नुं यः सरीसृपम् ।

जातं यस्ते जिघांसति तस्मिन् नाशयामसि ॥ १३ ॥

यः । ते । हन्ति । पुतयन्तम् । नि-षत्स्नुम् । यः । सरीसृपम् ॥

जातम् । यः । ते । जिघांसति । तम् । इतः । नाशयामसि ॥ १३ ॥

भाषार्थ—[हे गर्भिणी !] (यः) जो कोई [रोग] (ते) तेरे [गर्भा-

१२—(यः ते गर्भम् ...) इत्यादयो गताः सुगमाश्च (निः) निःशेषेण (कृष्यादम्) मांसभक्षकं रोगम् (अनीनशत्) नाशयतु ॥

१३—(यः) रोगः (ते) त्वं गर्भाशये (हन्ति) नाशयति (पुतयन्तम्)

शय में] (पतयन्तम्) गिरते हुये [वीर्य रूप गर्भ] को और (निषत्सुम्) जमते हुये [अंकुरये अर्थात् बालक] को और (यः) जो कोई [रोग] (सरी-सृपम्) डोलते हुये गर्भ को (हन्ति) नाश करे, और (यः) जो कोई [रोग] (ते) तेरे (जातम्) उत्पन्न हुये बच्चे को (जिघांसति) मारना चाहे, (तम्) उस [रोग] को (इतः) यहां से (नाशयामसि) हम नाश करें ॥ १३ ॥

भाषार्थ—उत्तम वैद्यों द्वारा रोगों का नाश करके गर्भ और उत्पन्न हुये बच्चे की रक्षा करनी चाहिये ॥ १३ ॥

यस्तं ऊरु विहरत्यन्तरा दम्पती शये ।

योनिं यो अन्तरारेलिह तस्मिन् नोशयामसि ॥ १४ ॥

यः । ते । ऊरु इति । वि-हरति । अन्तरा । दम्पती इति दम्पती । शये ॥ योनिम् । यः । अन्तः । आ-रेलिह । तस्म । इतः । नाशयामसि ॥ १४ ॥

भाषार्थ—(यः) जो कोई [रोग] (ते) तेरी (ऊरु) दोनों जंघाओं को (विहरति) फैला दे और (दम्पती अन्तरा) पति पत्नी के बीच में (शये) पड़ जावे और (यः) जो कोई [रोग] (योनिम्) योनि को (अन्तः) भीतर से (आरेलिह) चाट लेवे, (तम्) उस [रोग] को (इतः) यहां से (नाश-

पतन्तं वीर्यरूपगर्भम् (निषत्सुम्) ग्लाजिस्थश्च क्स्नु । पा० ३ । २ । । १३६। नि + षद् लृट् विशरणगत्यवसादनेषु—क्स्नु ग्स्नु वा । निषीदन्तं गर्भम् (यः) रोगः (सरीसृपम्) अ० ३ । १० । ६ । सृपेर्यङ्लुगन्तात् पचाद्यच् । सर्पण-शीलं गर्भम् (जातम्) दशसु मासेषूत्पन्नं गर्भम् (यः) रोगः (ते) तव (जिघांसति) हन्तुमिच्छति (तम्) रोगम् (इतः) अस्मात् स्थानात् (नोश-यामसि) नाशयामः ॥

१४—(यः) रोगः (ते) तव (ऊरु) जंघे । पादमूलौ (विहरति) विशिलष्टे करोति (दम्पती अन्तरा) जायापत्योर्मध्ये (शये) शेते । वर्तते (योनिम्) गर्भाशयम् (यः) रोगः (अन्तः) मध्ये (आरेलिह) लिह आस्वा-दने, आशयिकः, कपिलकावित्वाल् लत्वविकल्पः । आस्वादयति । शोषयति

यामसि) हम नाश करें ॥ १४ ॥

भावार्थ—जिस रोग से स्त्री की जांघें फैल जावें, और जिस रोग से सन्तान उत्पन्न करने में स्त्री पुरुषों को विघ्न होवे और योनि आदि में सुखा का रोग लग जावे, उस सब का औषध करना चाहिये ॥ १४ ॥

यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा ज्वारो भूत्वा निपद्यते ।

मृजां यस्ते जिघांसति तस्मिन् नोशयामसि ॥ १५ ॥

यः । त्वा । भ्राता । पतिः । भूत्वा । ज्वारः । भूत्वा । नि-
पद्यते ॥ मृ-जाम् । यः । ते । जिघांसति । तस्मिन् । इतः ।
नाशयामसि ॥ १५ ॥

भावार्थ—[हे स्त्री !] (यः) जो कोई (ज्वारः) व्यभिचारी (भ्राता) भाई (भूत्वा) होकर [अथवा] (पतिः) पति (भूत्वा) होकर (त्वा) तेरे पास (निपद्यते) आ जावे, [अथवा] (यः) जो कोई [दुष्ट] (ते) तेरे (प्रजाम्) सन्तान को (जिघांसति) मारना चाहे, (तस्मिन्) उस को (इतः) यहां से (नोशयामसि) हम नाश करें ॥ १५ ॥

भावार्थ—जो कोई दुराचारी जन भाई वा पति के समान वन कर घर में आकर उपद्रव करे, उसका नाश करना चाहिये ॥ १५ ॥

यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निपद्यते ।

मृजां यस्ते जिघांसति तस्मिन् नोशयामसि ॥ १६ ॥

यः । त्वा । स्वप्नेन । तमसा । मोहयित्वा । नि-पद्यते ॥ मृ-
जाम् । यः । ते । जिघांसति । तस्मिन् । इतः । नाशयामसि ॥ १६ ॥

निषक्तं रेतः । अन्यत् पूर्ववत् ॥

१५—(यः) दुराचारी (त्वा) त्वाम् (भ्राता) भ्रातरूपः (पतिः) भर्तृरूपः (भूत्वा) (ज्वारः) व्यभिचारी (भूत्वा) (निपद्यते) अमिगच्छति (प्रजाम्) सन्तानम् (यः) दुराचारी (ते) तव (जिघांसति) हन्तुमिच्छति । अन्यत् पूर्ववत् ॥

भाषार्थ—[हे स्त्री !] (यः) जो कोई [दुष्ट] (स्वप्नेन) नींद से [अथवा] (तमसा) अंधेरे से (मोहयित्वा) धबड़ा देकर (त्वा) तेरे पास (निपद्यते) आजावे, और (यः) जो कोई (ते) तेरे (प्रजाम्) सन्तान को (जिघांसति) मारना चाहे, (तम्) उस [दुष्ट] को (इतः) यहां से (नाशयामसि) हम नाश करें ॥ १६ ॥

भावार्थ—जो कोई दुष्ट जन नींद की औषधि से अथवा अंधेरा करके कुछ हानि करे, उसका नाश करना चाहिये ॥ १६ ॥

मन्त्राः १७—२३ ॥ आत्मा देवता ॥ १७, २० अनुष्टुप्, १८ निचृदनुष्टुप्, १९ विराडनुष्टुप्, २१ निचृदुपरिष्ठाद् बृहती; २२ भुरिगनुष्टुप्, २३ पङ्क्तिः ॥

शारीरिकविषये शरीररक्षोपदेशः—शारीरिक विषय में शरीर रक्षा का उपदेश ॥

अस्त्रीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां क्षुबुकादधि । यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते ॥ १७ ॥

अस्त्रीभ्याम् । ते । नासिकाभ्याम् । कर्णाभ्याम् । क्षुबुकात् । अधि ॥ यक्ष्मम् । शीर्षण्यम् । मस्तिष्कात् । जिह्वायाः । वि । वृहामि । ते ॥ १७ ॥

भाषार्थ—[हे प्राणी !] (ते) तेरी (अस्त्रीभ्याम्) दोनों आंखों से, (नासिकाभ्याम्) दोनों नथनों से, (कर्णाभ्याम्) दोनों कानों से, (क्षुबुकात् अधि=क्षुबुकात् अधि) ठोड़ी में से, (ते) तेरे (मस्तिष्कात्) भेजे से, और (जिह्वायाः) जिह्वा से (शीर्षण्यम्) शिर में के (यक्ष्मम्) क्षयी [क्षयी रोग] को (वि वृहामि) मैं उखाड़े देता हूँ ॥ १७ ॥

भावार्थ—इस मन्त्र में शिर के अवयवों का वर्णन है। जैसे सद्बुद्धि उत्तम औषधों से रोगों की निवृत्ति करता है, ऐसे ही मनुष्य अपने आत्मिक

१६—(यः) दुष्टः (त्वा) त्वाम् (स्वप्नेन) निद्रौषधेन (तमसा) अन्धकारेण (मोहयित्वा) मूढ़ां कृत्वा (निपद्यते) अभिगच्छति । अन्यत् पूर्ववत् ॥

१७—२३ व्याख्याताः—अ० २ । ३३ । १—७ ॥

और शारीरिक दोषों को विचार पूर्वक नाश करे ॥

मन्त्र १७—२३ आ लुके हैं—अ० २। ३३। १—७ ॥

ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनुक्यात् ।

यद्दमं दोषण्यं स संसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते ॥ १८ ॥

ग्रीवाभ्यः । ते । उष्णिहाभ्यः । कीकसाभ्यः । अनुक्यात् ॥

यद्दमम् । दोषण्यम् । संसाभ्याम् । बाहुभ्याम् । वि । वृहामि ।
ते ॥ १८ ॥

भाषार्थ—(ते) तेरे (ग्रीवाभ्यः) गले की नाड़ियों से, (उष्णिहाभ्यः)
गुदी की नाड़ियों से, (कीकसाभ्यः) हंसली की हड्डियों से, (अनुक्यात्)
रीढ़ से और (ते) तेरे (संसाभ्याम्) दोनों कंधों से, और (बाहुभ्याम्)
दोनों भुजाओं से, (दोषण्यम्) मुड़के वा बकले से (यद्दमम्) क्षयी रोग को
(वि वृहामि) मैं उखाड़े देता हूँ ॥ १८ ॥

भावार्थ—इस मन्त्र में ग्रीवा के अवयवों का वर्णन है । भावार्थ मन्त्र
१७ के समान है ॥ १८ ॥

हृदयात् ते परि क्लोमो हलीक्षणात् पार्श्वभ्याम् ।

यद्दमं मतस्नाभ्यां ग्रीहो यक्रस्ते वि वृहामसि ॥ १९ ॥

हृदयात् । ते । परि । क्लोमः । हलीक्षणात् । पार्श्वभ्याम् ॥

यद्दमम् । मतस्नाभ्याम् । ग्रीहः । यक्रः । ते । वि ।
वृहामसि ॥ १९ ॥

भाषार्थ—(ते) तेरे (हृदयात्) हृदय से, (क्लोमः) फेफड़े से,
(हलीक्षणात्) पित्ते से, (पार्श्वभ्यां परि) दोनों कांखों [कक्षाओं] से और
(ते) तेरे (मतस्नाभ्याम्) दोनों मतनों [गुदों] से, (ग्रीहः) ग्रीहा वा
पिलई [तिल्ली] से, (यक्रः) यकृत [काल खण्ड वा कलेजा] से (यद्दमम्)
क्षयी रोग को (वि वृहामसि) हम उखाड़े देते हैं ॥ १९ ॥

भावार्थ—इस मन्त्र में कंधों के नीचे के अवयवों का वर्णन है । भावार्थ
मन्त्र १७ के समान है ॥ १९ ॥

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि ।

यद्म' कुक्षिभ्यां प्लाशेनभ्या वि वृहामि ते ॥ २० ॥

आन्त्रेभ्यः । ते । गुदाभ्यः । वनिष्ठोः । उदरात् । अधि ॥

यद्म'स् । कुक्षि-भ्यास् । प्लाशेः । नाभ्याः । वि । वृहा_मि । ते २०

भाषार्थ—(ते) तेरी (आन्त्रेभ्यः) आंतों से, (गुदाभ्यः) गुदा की नाड़ियों से, (वनिष्ठोः) वनिष्ठु [भीतरी मल स्थान] से, (उदरात् अधि) उदर में से, और (ते) तेरी (कुक्षिभ्याम्) दोनों कोखों से, (प्लाशेः) प्लाशि [कोख में की धैली] से, और (नाभ्याः) नाभि में से (यद्मम्) क्षयी रोग को (वि वृहामि) मैं उखाड़े देता हूँ ॥ २० ॥

भावार्थ—इस मन्त्र में उदर के अवयवों का वर्णन है । भावार्थ मन्त्र १७ के समान है ॥ २० ॥

ऊरुभ्यां ते अष्टीवद्भ्यां पार्श्विभ्यां प्रपदाभ्यास् । यद्म' भसुद्य'१ श्रोणिभ्यां भासदं भंससो वि वृहामि ते ॥ २१ ॥

ऊरु-भ्यास् । ते । अष्टीवत्-भ्यास् । पार्श्वि-भ्यास् । प्र-पदाभ्यास् ॥ यद्म'स् । भसुद्य'स् । श्रोणि-भ्यास् । भासदस् । भंससः । वि । वृहा_मि । ते ॥ २१ ॥

भाषार्थ—(ते) तेरी (ऊरुभ्याम्) दोनों जंघाओं से, (अष्टीवद्भ्याम्) दोनों घुटनों से (पार्श्विभ्याम्) दोनों पड़ियों से, (प्रपदाभ्याम्) दोनों पैरों के पंजों से और (ते) तेरे (श्रोणिभ्याम्) दोनों कूहों से [वा नितम्बों से] और (भंससः) गुह्य स्थान से (भसद्यम्) कटि [कमर] के और (भासदम्) गुह्य के (यद्मम्) क्षयी रोग को (वि वृहामि) मैं जड़ से उखाड़ता हूँ ॥ २१ ॥

भावार्थ—इस मन्त्र में कटि के नीचे के अवयवों का वर्णन है । भावार्थ मन्त्र १७ के समान है ॥ २१ ॥

अस्थिभ्यस्ते मुज्जभ्युःस्नावभ्यो धुमनिभ्यः । यद्म' पाणि-भ्याम् इगुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते ॥ २२ ॥

अस्थि-भ्यः । ते । मज्ज-भ्यः । स्नाव-भ्यः । धुमन्ति-भ्यः ॥
यद्मम् । पाणि-भ्याम् । अङ्गुलि-भ्यः । नखेभ्यः । वि ।
वृहामि । ते ॥ २२ ॥

भाषार्थ—(ते) तेरे (अस्थिभ्यः) हड्डियों से, (मज्जभ्यः) मज्जा धातु [हड्डी के भीतर के रस] से, (स्नावभ्यः) सूक्ष्म नाड़ियों [वा पुट्टों] से, और (धुमन्तिभ्यः) स्थूल नाड़ियों से, और (ते) तेरे (पाणिभ्याम्) दोनों हाथों से, (अङ्गुलिभ्यः) अङ्गुलियों से और (नखेभ्यः) नखों से (यद्मम्) क्षयी रोग को (वि वृहामि) मैं जड़ से उखाड़ता हूँ ॥ २२ ॥

भावार्थ—मनुष्य अपने शरीर के भीतरी धातुओं, नाड़ियों और हाथ आदि बाहिरी अङ्गों को यथा योग्य आहार विहार से पुष्ट और स्वस्थ रखे, जिस से आत्मिक शक्ति सदा बढ़ती रहे ॥ २२ ॥

अङ्गेअङ्गे लोम्लोम्लि यस्ते पर्वणिपर्वणि । यद्मं त्वचस्यं
ते वयं कश्यपस्य विबर्हेण विष्वञ्चं वि वृहामसि ॥ २३ ॥

अङ्गे-अङ्गे । लोम्लि-लोम्लि । ते । पर्वणि-पर्वणि ॥ यद्मम् ।
त्वचस्यम् । ते । वयम् । कश्यपस्य । वि-बर्हेण । विष्वञ्चम् ।
वि । वृहामसि ॥ २३ ॥

भाषार्थ—(यः) जो [क्षयी रोग] (ते) तेरे (अङ्गेअङ्गे) अङ्ग अङ्ग में, (लोम्लोम्लि) रोम रोम में और (पर्वणिपर्वणि) गांठ गांठ में है । (वयम्) हम (ते) तेरे (त्वचस्यम्) त्वचा के और (विष्वञ्चम्) सब अवयवों में व्यापक (यद्मम्) क्षयी रोग को (कश्यपस्य) ज्ञानदृष्टि वाले विद्वान् के (विबर्हेण) विविध उद्यम से (वि वृहामसि) जड़ से उखाड़ते हैं ॥ २३ ॥

भावार्थ—इस मन्त्र में उपसंहार वा समाप्ति है अर्थात् प्रसिद्ध अवयवों का वर्णन करके अन्य सब अवयवों का कथन है । जिस प्रकार सद्बैद्य निदान पूर्वक रोगी के जोड़ जोड़ में से रोग को नाश करता है, वैसे ही ज्ञानी

पुरुष निदिध्यासन पूर्वक आत्मिक दोषों को मिटाकर प्रसन्नचित्त होता है ॥ २३ ॥

अपेहि मनसस्पृतेऽपं काम पुरश्चर । पुरो निर्ऋत्या आ चक्षुः
बहुधा जीवतो मनः ॥ २४ ॥

अपं । इहि । मनसः । पृते । अपं । काम । पुरः । चर ॥
पुरः । निः-ऋत्यै । आ । चक्षुः । बहुधा । जीवतः । मनः ॥ २४ ॥

मन्त्र २४ ॥ दुःस्वप्नं देवता ॥ निचक्षुस्तु दुःखन्दः ॥

स्वास्थ्यरक्षोपदेशः—स्वास्थ्य की रक्षा का उपदेश ॥

भाषार्थ—(मनसः पते) हे मन के गिराने वाले ! [दुष्ट स्वप्न आदि-
रोग] (अप इहि) निकल जा, (अप काम) पैर उठा, (पुरः) परे (चर)
चला जा । (निर्ऋत्यै) अलक्ष्मी [महामारी, दरिद्रता आदि] को (पुरः)
दूर [जाने के लिये] (आ चक्षुः) कहदे, (जीवतः) जीवित मनुष्य का
(मनः) मन (बहुधा) बहुत प्रकार से [बहुत विषयों में उत्सुक] होता
है ॥ २४ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि उत्तम विचारों के साथ स्वास्थ्य-
की रक्षा करें और निरालस होकर शुभ कर्मों को सोचते हुये पेश्वर्यवान्
हों ॥ २४ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—१० । १६४ । १ ॥

इत्यष्टमोऽनुवाकः ॥

२४—(अप इहि) अप गच्छ । निर्गच्छ (मनसः) चित्तस्य (पते)
सर्वधातुभ्य इन् । उ० ४ । ११८ । पतल पतने—इन् । अधोगमयितः (अपक्रम)
पादौ वक्षिप (पुरः) परस्तात् । दूरे (चर) गच्छ (पुरः) परस्तात् (निर्ऋत्यै)
अ० २ । १० । १ । कृच्छायत्तये (आ) आभिमुख्येन (चक्षुः) ब्रूहि (बहुधा)
बहुप्रकारेण । बहुषु विषयेषु उत्सुकम् (जीवतः) जीवितस्य (मनः) चित्तम् ॥

अथ नवमोऽनुवाकः ॥

सूक्तम् ८७ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृदार्षी बृहती, २ निचृद् विष्टारपङ्क्तिः, ३ आर्ष्यनुष्टुप् ॥

वीरलक्षणोपदेशः—वीर के लक्षणों का उपदेश ॥

वृथमेनसिदा ह्योऽपीपेमेह वृज्जिणम् । तस्मा उ अद्य समना
सुतं भुरा नूनं भूषत श्रुते ॥ १ ॥

वृथम् । सुनम् । इदा । ह्यः । अपीपेम । इह । वृज्जिणम् ॥
तस्मै । ऊं इति । अद्य । समना । सुतम् । भुर । आ ।
नूनम् । भूषतु । श्रुते ॥ १ ॥

भाषार्थ—(वयम्) हम ने (इदा) परम पेश्वर्य के साथ [वर्तमान]
(एनम्) इस (वृज्जिणम्) वृज्जिधारी [वीर] को (ह्यः) कल्य (इह) यहाँ पर
[तस्य रस] (अपीपेम) पान कराया है । [हे विद्वान्] (तस्मै) उस
(समना) पूर्ण बल वाले [शूर] के लिये (उ) हो (अद्य) आज (सुतम्)
सिद्ध किये हुये [तस्य रस] को (भुर) भर दे, और (नूनम्) निश्चय करके
(श्रुते) सुनने योग्य शास्त्र के बीच (आ) सब ओर से (भूषत) तुम
शोभा बढ़ाओ ॥ १ ॥

भावार्थ—जिस पराक्रमी वीर को सदा तस्य ज्ञान का उपदेश होता
है, वहाँ प्रत्येक मनुष्य अलग-अलग और सब मनुष्य मिलकर विज्ञान की
उन्नति करते हैं ॥ १ ॥

१—(वयम्) (एनम्) (इदा) इति परमैश्वर्ये—किप्, नलोपः । परमै-
श्वर्येण सह वर्तमानम् (ह्यः) गतदिने (अपीपेम) पीछे पाने जुहोत्यादौ लङ्
परस्मैपदं छान्दसम् । पानं कारितवन्तः (इह) अत्र (वृज्जिणम्) (तस्मै)
(उ) निश्चयेन (अद्य) अस्मिन् दिने (समना) अन प्राणने—अच्, विभक्तोर्वा ।
समनाय । पूर्णबलवते (सुतम्) संस्कृतं तस्य रसम् (भुर) धर (आ)
समन्तात् (नूनम्) अवश्यम् (भूषत) अलं कुरुत (श्रुते) भवणीये शास्त्रे ॥

यह त्व ऋग्वेद में है—८ । ६६ [सायणभाष्य ५५] । ७-६ मन्त्र १, २
सामवेद—३० ८ । २ । १३; मन्त्र १—साम०—पू० ३ । ८ । १० ॥

वृकश्चिदस्य वारुण उरामथिरा वयुनेषु भूषति । सेमं नुः
स्तोमं जुजुषाण आ गृहीन्द्र प्र चित्रया धिया ॥ २ ॥

वृकः । चित् । अस्य । वारुणः । उरामथिः । आ । वयुनेषु ।
भूषति ॥ सः । इमम् । नः । स्तोमम् । जुजुषाणः । आ ।
गृहि । इन्द्र । प्र । चित्रया । धिया ॥ २ ॥

भाषार्थ—(वारुणः) रोकने वाला (उरामथिः) भेड़ों का मथने वाला
(वृकः) भेड़िया (चित्) भी (अस्य) इस [वीर] के (वयुनेषु) कर्मों में
(आ) अनुकूल (भूषति) हो जाता है । (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले
शूर] (सः) सो तू (नः) हमारे (इमम्) इस (स्तोत्रम्) स्तोत्र को
(जुजुषाणः) स्वीकार करता हुआ (चित्रया) विचित्र (धिया) बुद्धि वा
कर्म के साथ (प्र) भले प्रकार (आ गृहि) आ ॥ २ ॥

भावार्थ—शूर प्रतापी राजा भेड़िये की प्रकृति वाले दुष्टों को विचित्र
नीति से वश में करके प्रजा को सुखी करे ॥ २ ॥

इस मन्त्र के अर्थ के लिये देखो—निरु० ५ । २१ ॥

कदु न्वं१ स्याकृतमिन्द्रस्यास्ति पौंस्यम् । केनो नु कं ओम-
तेन न शुश्रुवे जुनुषः परि वृत्रहा ॥ ३ ॥

२—(वृकः) वृक आदाने—क । श्वापि वृक उच्यते विकर्तनात्—निरु०
५ । २१ । व्याघ्रभेदः (चित्) अपि (वारुणः) वारयिता (उरामथिः) उराम-
थिः । उरणमथिः । उरण ऊर्णावान् भवत्यूर्णा पुनर्वृणतेरूर्णोतेर्वा—निरु०
५ । २१ । मेषाणां मथिता नाशयिता (आ) समन्तात् । आनुकूल्येन (वयुनेषु)
कर्मसु (भूषति) भवति (सः) स त्वम् (इमम्) (नः) अस्माकम् (स्तोमम्)
स्तोत्रम् (जुजुषाणः) सेवमातः । स्वीकुर्वाणः (आ गृहि) आगच्छ (इन्द्र)
परमेश्वर्यवान् वीर (प्र) प्रकर्षेण (चित्रया) अद्भुतया (धिया) बुद्ध्या
कर्मणा वा ॥

कत् । ज॒ति । नु । अ॒स्य । अ॒कृत॑म् । इन्द्र॑स्य । अ॒स्ति ।
 [पौ॒स्वम् ॥ के॒नो इति । नु । क॒म् । ओ॒मते॑न । न । शु॒श्रु॒वे ।
 ज॒नुषः । परि । वृ॒त्र-हा ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(अस्य) इस (इन्द्रस्य) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले वीर]
 का (नु) अब (कत् उ) कौन सा (पौ॒स्वम्) पौरुष (अकृतम्) बिना किया
 हुआ (अस्ति) है ? (के॒नो) किस (ओ॒मते॑न) श्रुति [वेद] मानने वाले
 करके (नु) अब (ज॒नुषः परि) जन्म से लेकर (वृ॒त्रहा) शत्रुनाशक [वीर-
 पुरुष] (कम्) सुख से (न) नहीं (शु॒श्रु॒वे) सुना गया है ॥ ३ ॥

भावार्थ—जब मनुष्य विश्वकर्मा होकर अपना सब धार्मिक सतन्त्र
 कर लेता है, तब वह वीर समस्त संसार में बड़ाई पाता है ॥ ३ ॥

सूक्तम् ८८ ॥

१—२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृवनुष्टुप् ; २ स्वराडापी. बृहती ॥

राजधर्मोपदेशः—राजा के धर्म का उपदेश ॥

त्वामि॒न्द्रि हवाम॑हे सु॒ता वा॒ज॒स्य॑ क॒ारवः ।

त्वां वृ॒त्रे॒ष्विन्द्र॑ सत्प॑तिं न॒र॒स्त्वां का॒ष्ठास्व॑र्धतः ॥ १ ॥

त्वाम् । इत् । हि । हवामहे । सुता । वाजस्य । कारवः ॥

त्वाम् । वृत्रेषु । इन्द्र । सत्-पतिम् । नरः । त्वाम् ।

काष्ठासु । अर्धतः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (कारवः)

३—(कत्) किम् (उ) एव (नु) इदानीम् (अस्य) (अकृतम्)
 अनाचारितम् (इन्द्रस्य) परमैश्वर्यवतो वीरस्य (अस्ति (पौ॒स्वम्) पौरु-
 षम् (के॒नो) के॒नापि (नु) इदानीम् (कम्) सुखेन (ओ॒मते॑न) गमेर्दोः । उ०
 २ । ६७ । भु भवणे—डोप्रत्ययः + मनःज्ञाने पूजायां च—क । भोः भवणीयो
 वेदो मतः संमानितो येन तेन (न) निषेधे (शु॒श्रु॒वे) भु भवणे—कर्मणि क्तिट् ।
 भूयते स्म (ज॒नुषः) जन्मतः सकाशात् (परि) (वृ॒त्रहा) शत्रुनाशकः ॥

१—(त्वाम्) (इत्) एव (हि) (हवामहे) आह्वयामः (सुता) सातौ ।

काम करने वाले, (नरः) नेता लोग हम (त्वाम्) तुझ को (इत् हि) ही (वाजस्य) विज्ञान के (साता) लाभ में, (सत्पतिम्) सत्पुरुषों के पालने वाले (त्वाम्) तुझ को (वृत्रेषु) धनों में, और (त्वाम्) तुझ को (काष्ठासु) बड़ाइयों के बीच (अर्धतः) छोड़ों को जैसे (हवामहे) पुकारते हैं ॥ १ ॥

भावार्थ—कार्यकर्ता लोग राजा के सहाय से विद्या, धन और विजय की प्राप्ति करें ॥ १ ॥

मन्त्र १, २ ऋग्वेद में हैं—६। ४६। १, २; यजुर्वेद—२७। ३७, ३८; सामवेद उ० २। १। १२ और मन्त्र १ साम०—पू० ३। ५। २ ॥

स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया म॒ह स्त॑वानो अ॒द्रि॒वः ।
गाम॑श्च र॒थ्य॑मिन्द्र॒ सं किर॑ सु॒त्रा वाजं॑ न जि॒ग्युषे॑ ॥ २ ॥

सः । त्वम् । नः । चित्र । वज्र-हस्त । धृष्णु-या । महः ।
स्तुवानः । अ॒द्रि-वः ॥ गाम् । अश्वम् । रथ्यम् । इन्द्र ।
सम् । किर । सुत्रा । वाजम् । न । जिग्युषे ॥ २ ॥

भावार्थ—(चित्र) हे अद्भुत स्वभाव वाले ! (वज्रहस्त) हे हाथ में वज्र रखने वाले ! (अद्रिवः) हे अज्ञ वाले ! (इन्द्र) इन्द्र ! [महाप्रतापी राजन्] (सः) सो (धृष्णुया) निर्भय (महः) बड़े लोगों की (स्तवानः) स्तुति करता हुआ (त्वम्) तू (नः) हमारे लिये (रथ्यम्) रथ के योग्य (गाम्) बैल

विभागे । लाभे (वाजस्य) विज्ञानस्य (कारवः) कर्तारः (त्वाम्) (वृत्रेषु) धनेषु (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् राजन् (सत्पतिम्) सत्पुरुषाणां पालकम् (नरः) नेतारः (त्वाम्) (काष्ठासु) हनिकुषिनीरमिकाशिभ्यः कथन् । उ० २। २। काशु दीप्ती—कथन् । काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि—अमरः २३। ४१। उत्कर्षेषु (अर्धतः) अश्वानिव ॥

२—(सः) (त्वम्) (नः) अस्मभ्यम् (चित्रे) अद्भुतस्वभाव (वज्रहस्त) शस्त्रपाणे (धृष्णुया) विभक्त्या—पा० ७। १। ३६। धृष्णुः । प्रगल्भः (महः) महतः पुरुषान् (स्तवानः) प्रशंसन् (अद्रिवः) हे अज्ञान (गाम्) वृषभम् (अश्वम्) तुरङ्गम् (रथ्यम्) रथस्य घोडारम् (इन्द्र)

और (अश्वम्) घोड़ों को (सं किर) संग्रह कर, (न) जैसे (सत्रा) सत्य के साथ (जिग्युषे) जीतने वाले वीर को (वाजम्) अन्नआदि पदार्थ [देते हैं] ॥२॥

भाषार्थ—जैसे विजयी योद्धा लोग ज्ञान पान आदि पदार्थों से प्रतिष्ठा पाते हैं, वैसे ही अन्य विद्वान् लोग अपनी चतुराई के कारण योग्य प्रतिष्ठा और धन प्राप्त करें ॥ २ ॥

सूक्तम् ८८ ॥

१—२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृत् पथ्या बृहती; २ स्वराडाणीं बृहती ॥

परमेश्वरगुणोपदेशः—परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः । समीचीनासं
ऋभवः समस्वरन् रुद्रा गुणन्त पूर्व्यम् ॥ १ ॥

अभि । त्वा । पूर्व-पीतये । इन्द्र । स्तोमेभिः । आयवः ॥
सम्-ईचीनासः । ऋभवः । सम् । अस्वरन् । रुद्राः ।
गुणन्त । पूर्व्यम् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [परम ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (पूर्व-पीतये) पहिले [मुख्य] भोग के लिये, (समीचीनासः) साधु, (ऋभवः) बुद्धिमान्, (रुद्राः) स्तुति करने वाले (आयवः) मनुष्यों ने (स्तोमेभिः) स्तोत्रों से (पूर्व्यम्) प्राचीन (त्वाम्) तुझ को (सम्) मिलकर (अभि) सब प्रकार (अस्वरन्) आलापा है और (गुणन्त) गाया है ॥ १ ॥

भाषार्थ—सब बुद्धिमान् लोग परमेश्वर के गुणों को जानकर अपनी उन्नति करें ॥ १ ॥

महाप्रतापिन् राजन् (सं किर) संग्रहाण (सत्रा) सत्येन (वाजम्) अन्नादि-कम् (न) यथा (जिग्युषे) जयते—कष्ट । जयशीलस्य ॥

१—(अभि) अभितः (त्वा) त्वाम् (पूर्वपीतये) प्रथमपानाय । मुख्य-भोगाय (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (स्तोमेभिः) स्तोत्रैः (आयवः) मनुष्याः—निघ० २ । ३ (समीचीनासः) संगताः । साधवः (ऋभवः) मेधाविनः (सम्) संगत्य (अस्वरन्) स्तु शब्दोपतापयों । अस्तुवन् (रुद्राः) स्तोतारः—निघ० ३ । १६ (गुणन्त) स्तुतवन्तः (पूर्व्यम्) प्राचीनम् ॥

दोनों मन्त्र ऋग्वेद में हैं—८।३।७, ८; सामवेद—३०७।३१; मन्त्र
१ साम० पू० ३।७।४॥

अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्यम् शवो मदे सुतस्य विष्णवि ।
अद्या तमस्य महिमानमायवोऽनुं स्तुवन्ति पूर्वथा ॥ २ ॥
अस्य । इत् । इन्द्रः । वृधे । वृष्यम् । शवः । मदे ।
सुतस्य । विष्णवि ॥ अद्या । तम् । अस्य । महिमानम् ।
आयवः । अनुं । स्तुवन्ति । पूर्व-था ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [परम ऐश्वर्य वाले परमात्मा] ने (इत्) ही
(सुतस्य) उत्पन्न हुये (अस्य) इस [जीव] के (वृष्यम्) पराक्रम और
(शवः) बल को (विष्णवि) व्यापक (मदे) आनन्द में (वृधे) बढ़ाया है,
(अस्य) इस [परमात्मा] की (तम्) उस (महिमानम्) बड़ाई को (आयवः)
मनुष्य (अथ) अब (पूर्वथा) पहिले के समान (अनु स्तुवन्ति) सराहते
रहते हैं ॥ २ ॥

भाषार्थ—अनादि निर्विकार परमात्मा इस प्राणी के आनन्द के लिये
सदा सहाय करता है, उसी की उपासना सब मनुष्य सदा करते हैं ॥ २ ॥

यह मन्त्र यजुर्वेद में भी है—३३।६७॥

सूक्तम् १०० ॥

१—३ । इन्द्रो देवता ॥ १ । विराडाप्युष्णिक्; २ विराडुष्णिक्; ३
निषदुष्णिक् ॥

राजप्रजाकर्तव्योपदेशः—राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

अधा हीन्द्र गर्धण उप त्वा कामान् मुहः संसृज्महे ।

उदेव यन्त उदभिः ॥ १ ॥

२—(अस्य) जीवस्य (इत्) एवं (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् परमात्मा
(वृधे) वर्धितवान् (वृष्यम्) वृष्टत्वम् । पराक्रमम् (शवः) बलम् (मदे)
आनन्दे (सुतस्य) उत्पन्नस्य (विष्णवि) विष्णौ । व्यापके (अथ) (तम्)
(अस्य) परमेश्वरस्य (महिमानम्) महत्त्वम् (आयवः) मनुष्याः (अनु)
निरन्तरम् (स्तुवन्ति) प्रशंसन्ति (पूर्वथा) यथापूर्वम् ॥

अथ । हि । इन्द्र । गिर्वणः । उप । त्वा । कामान् । महः ।
ससृजमहे ॥ उदा-इव । यन्तः । उद-भिः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(गिर्वणः) हे स्तुतियों से सेवनीय (इन्द्र) इन्द्र ! [महा-
प्रतापी राजन्] (अथ हि) अब ही (त्वा) तुझे (महः) अपनी बड़ी (कामान्)
कामवाओं को, (उदा) जल [जल की बाढ़] के पीछे (उदभिः) दूसरी
जलों की बाढ़ों के साथ (यन्तः इव) चलते हुये पुरुषों के समान हमने (उप)
आदर से (ससृजमहे) समर्पण किया है ॥ १ ॥

भावार्थ—जैसे नदी की बाढ़ अति वेग से लगातार चती आती हो
और गामों और प्राणी आदि को बहाये ले जाती हो, उसे देख लोग घबड़ाकर
भागते हैं, वैसे ही प्रजागण दुष्टों से बचने के लिये राजा की शरण शीघ्र
लेवें ॥ १ ॥

यह तुल्य ऋग्वेद में है—८। ६८ [सायणभाष्य ८७] । ७—६; सामवेद—
उ० १। १। तुल्य २३ और मन्त्र १ साम० पू० ५। २। ८ ॥

वार्त्ता त्वा युव्याभिर्वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि । वृध्वान्सं चिद-
द्रिषो दिवेदिवे ॥ २ ॥

वाः । न । त्वा । युव्याभिः । वर्धन्ति । शूर । ब्रह्माणि ॥
वृध्वान्सं । चित् । आद्रि-वः ॥ दिवे-दिवे ॥ २ ॥

भाषार्थ—(आद्रि-वः) हे वज्रधारी (शूर) शूर ! [राजन्] (दिवे-
दिवे) दिन दिन (वृध्वान्सं) बढ़ते हुये (चित्) भी (त्वा) तुझको

१—(अथ) सम्प्रति (हि) (इन्द्र) महाप्रतापिन् राजन् (गिर्वणः)
स्तुतिभिः सेवनीय (उप) पूजयाम् (त्वा) त्वाम् (कामान्) कमनीयान्
मनोरथान् (महः) महतः । विशालान् (ससृजमहे) वयं समर्पितन्वन्तः
(उदा) उदकेन । जलप्रवाहेण (इव) यथा (यन्तः) गच्छन्तः पुरुषाः
(उदभिः) उदकैः । अन्यजलप्रवाहैः ॥

२—(वाः) जलम् (न) यथा (त्वा) त्वाम् (युव्याभिः) खलुयव-
माषतिलवृषब्रह्मणश्च । पा० ५। १ । ७। यव—यत् ॥ यवेभ्यो हिता मिर्जल-
नालीभिः । नदीभिः । युव्याः, नदीनाम्—निघ० १। १३ (वर्धन्ति) वर्धयन्ति ।

(ब्रह्माणि) वेदज्ञान (वर्धन्ति) बढ़ाते हैं, (न) जैसे (वाः) जल को (यन्या-
भिः) जो आदि अन्न की हित करने वाला नालियों से [बढ़ाते हैं] ॥ २ ॥

भाषार्थ—राजा वेदानुकूल चल कर अपनी और प्रजा की वृद्धि करे
जैसे जन को नल से ऊँचा लेजाकर अन्न आदि बढ़ाते हैं ॥ २ ॥

युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाययोरौ रथं उरुयुगे । इन्द्रवाहा
वचोयुजा ॥ ३ ॥

युञ्जन्ति । हरी इति । इषिरस्य । गायया । उरौ । रथे ।
उरु-युगे ॥ इन्द्र-वाहा । वचुः-युजा ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(गायया) प्रशंसा के साथ (इषिरस्य) शीघ्र गामी [राजा]
के (उरुयुगे) बड़े जुये वाले, (उरौ) बड़े (रथे) रथ में (इन्द्रवाहा) इन्द्र
[बड़े ऐश्वर्य वाले राजा] को ले चलने वाले, (वचोयुजा) वचन से जुतने
वाले (हरी) दो घोड़ों को (युञ्जन्ति) वे [सारथी आदि] जोतते हैं ॥ ३ ॥

भाषार्थ—राजा धर्म की रक्षा के लिये सुशिक्षित शीघ्रगामी घोड़ों के
रथ से चलकर प्रशंसा पावे ॥ ३ ॥

सूक्तम् १०१ ॥

१—३ ॥ अग्निर्देवता ॥ १, २ गायत्री, ३ निचृद् गायत्री ॥

भौतिकाम्निगुणोपदेशः—भौतिक अग्नि के गुणों का उपदेश ॥

अग्निं दुतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् । अस्य यज्ञस्य
सुक्रतुम् ॥ १ ॥

अग्निम् । दुतम् । वृणीमहे । होतारम् । विश्व-वेदसम् ॥

उन्नयन्ति (शूर) (ब्रह्माणि) वेदज्ञानानि (ववृध्वांसम्) वर्धतेः कसु । वर्ध-
मानम् (चित्) अपि (अद्रिचः) वज्रिन् (दिवेदिवे) दिने दिने ॥

३—(युञ्जन्ति योजयन्ति (हरी) अश्वौ (इषिरस्य) शीघ्रगामिनो
राक्षः (गायया) गायनीयया प्रशंसया (उरौ) महति (रथे) याने (उरुयुगे)
महायुगयुक्ते (इन्द्रवाहा) इन्द्रस्य घोढारौ (वचोयुजा) वचनेन युज्यमानौ ।
सुशिक्षितौ ॥

अस्य । यज्ञस्य । सुक्रतुम् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(द्रुतम्) पदार्थों के पहुँचाने वाले वा तपाने वाले, (होतारम्) वेग आदि देने वाले, (विश्ववेदसम्) सब धनों के प्राप्त कराने वाले, (अस्य) इस [प्रसिद्ध] (यज्ञस्य) यज्ञ [संयोग वियोग व्यवहार] के (सुक्रतुम्) सुधारने वाले (अग्निम्) अग्नि [आग, बिजुली, सूर्य] को (वृणीमहे) हम स्वीकार करते हैं ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि कला यन्त्र यान विमान आदि में वेग से चलाने के लिये और शरीरों में भोजन आदि द्वारा बल बढ़ाने लिये बिजुली आदि अग्नि को काम में लावें ॥ १ ॥

यह त्वच ऋग्वेद में है—१।१२।१—३, सामवेद उ० २।१। त्वच ६ तथा म० १ साम० पू० १।१।३ ॥

अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विशपतिम् । हव्यवाहं पुरुप्रियम् ॥ २ ॥

अग्निम्-अग्निम् । हवीम-भिः । सदा । हवन्त । विशपतिम् ॥ हव्य-वाहम् । पुरु-प्रियम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्यो !] (हवीमभिः) ग्रहण करने योग्य व्यवहारों से (विशपतिम्) प्रजाओं के पालने वाले, (हव्यवाहम्) देने लेने योग्य पदार्थों के पहुँचाने वाले, (पुरुप्रियम्) बहुत प्रिय करने वाले (अग्निमग्निम्) अग्नि अग्नि [अर्थात् पृथिवी की आग, बिजुली और सूर्य] को (सदा) सदा

१—(अग्निम्) विद्युत्सूर्यपार्थिवान्तरिक्षम् (द्रुतम्) पदार्थानां प्रापकं तापकं वा (वृणीमहे) स्वीकुर्मः (होतारम्) वेगादिदाताम् (विश्ववेदसम्) सर्वधनप्रापकम् (अस्य) प्रसिद्धस्य (यज्ञस्य) संयोगवियोगव्यवहारस्य (सुक्रतुम्) शोभनकर्तारम् ।

२—(अग्निमग्निम्) प्रत्येकप्रकारं विद्युत्सूर्यपार्थिवान्तरिक्षम् (हवीमभिः) अथ० २०।७२।३। प्राणव्यवहारैः (सदा) (हवन्त) गृहणीत (विशपतिम्) प्रजानां पालकम् (हव्यवाहम्) दातव्यप्राणपदार्थप्रापकम्

(हवन्त) तुम ग्रहण करो ॥ २ ॥

भाषार्थ—मनुष्यों को योग्य है कि प्रसिद्ध अग्नि, विजुली और सूर्य को कला यन्त्र आदि में प्रयुक्त करके सदा सुख की वृद्धि करें ॥ २ ॥

अग्ने देवां इहो वह जज्ञानो वृक्तवर्हिषे । असि होता नु ईड्यः ॥ ३ ॥

अग्ने । देवान् । इह । आ । वह । जुज्ञानः । वृक्त-वर्हिषे ॥
असि । होता । नुः । ईड्यः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(अग्ने) हे अग्नि ! [आग, विजुली और सूर्य] (जज्ञानः) प्रकट होता हुआ तू (देवान्) दिव्य तत्त्वों को (इह) यज्ञ (वृक्तवर्हिषे) हिंसा छोड़ने वाले विद्वान् के लिये (आ वह) ला । तू (नः) हमारे लिये (होता) धन देने वाला और (ईड्यः) खोजने योग्य (असि) है ॥ ३ ॥

भाषार्थ—मनुष्य अग्नि, विजुली और सूर्य की विद्या को खोज करके अनेक प्रकार उपयोग करें और उत्तम उत्तम पदार्थ प्राप्त करके सुखी हों ॥ ३ ॥

सूक्तम् १०२ ॥

१—३ ॥ अग्निदेवता ॥ १ विराड् गायत्री; २, ३ निन्द्र गायत्री ॥

परमेश्वरस्य गुणोपदेशः—परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

ईलेन्यो नमस्यस्तिरस्तमांसि दर्शतः । समग्निरिध्यते वृषा ॥ १
ईलेन्यः । नमस्यः । तिरः । तमांसि । दर्शतः ॥ सम ।
अग्निः । इध्यते । वृषा ॥ १ ॥

भाषार्थ—(ईलेन्यः) खोजने योग्य, (नमस्यः) सत्कार करने योग्य,
(पुरुप्रियम्) बहुहितकरम् ॥

३—(अग्ने) हे विद्युत्सूर्यपार्थिवान्तरूप (देवान्) दिव्यपदार्थान् (इह) (आ वह) प्राप्त्य (जज्ञानः) प्रादुर्भूतः सन् (वृक्तवर्हिषे) अथ० २० ।
५२ । १ । त्यक्तहिंसाय विदुषे (असि) (होता) धनस्य दाता (नः) अस्म-
भ्यम् (ईड्यः) अध्येष्टव्यः ॥

१—(ईलेन्यः) कुर्याथे तपैकेत्येतत्त्वतः । पा० ३ । ४ । १४ । ईड—

(तमांसि) अन्धकारों को (तिरः) हटाने वाला. (दर्शतः) देखने योग्य,
(वृषा) बलवान् (अग्निः) अग्नि [प्रकाशमान परमेश्वर] (सम्) भले प्रकार
(इध्यते) प्रकाश करता है ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्य अन्धकार नाशक परमात्मा को प्रत्येक पदार्थ में
साक्षात् कर के अपने हृदय को प्रकाशमान करे ॥ १ ॥

यह तृच ऋग्वेद में है—३ । २७ । १३ —१५, सामवेद—३० ७ । २ ।
तृच २ ॥

वृषो अग्निः समिध्यतेऽश्वो न देववाहनः । तं हविष्मन्त ईलतेऽ
वृषो इति । अग्निः । सम् । इध्यते । अश्वः । न । देव-
वाहनः ॥ तम् । हविष्मन्तः । ईलते ॥ २ ॥

भावार्थ—(अश्वः न) शीघ्र गामी घोड़े के समान (देववाहनः) उत्तम
पदार्थों का पहुँचाने वाला (वृषो) बलवान् ही (अग्निः) अग्नि [प्रकाश-
मान परमेश्वर] (सम्) भले प्रकार (इध्यते) प्रकाश करता है । (हविष्म-
न्तः) ग्रहण करने योग्य वस्तुओं वाले पुरुष (तम्) उस को (ईलते) खोजते
हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—जैसे घोड़े आदि वाहन द्वारा पदार्थ प्राप्त किये जाते हैं,
वैसे ही परमात्मा सब संसार को वायु जल आदि उत्तम पदार्थ सदा पहुँचाता
है ॥ २ ॥

स्तुतौ, अभ्येषणायाम्—निरु० ७ । १५ । केन्यप्रत्ययः, डस्य लः । अभ्येषणीयः
(नमस्यः) अचो यत् पा० ३ । १ । ६७ । नमस्यते—यत् । सत्कर्तव्यः (तिरः)
तिरस्कुर्वन् (तमांसि) ध्वान्तानि (दर्शतः) अथ० ४ । १० । ६ । दर्शनीयः
(सम्) सम्यक् (अग्निः) प्रकाशमानः परमेश्वरः (इध्यते) दीप्यते (वृषा)
बलवान् ॥

२—(वृषो) वृषैव । बलिष्ठ एव (अग्निः) प्रकाशमानः परमेश्वरः
(सम्) सम्यक् (इध्यते) दीप्यते (अश्वः) तुरङ्गः (न) इव (देववाहनः)
दिव्यपदार्थवाहकः (तम्) (हविष्मन्तः) ग्राह्यपदार्थयुक्ताः पुरुषाः (ईलते)
म० १ । अभ्येषणया प्राप्नुवन्ति ॥

वृषणं त्वा वयं वृषन् वृषणः समिधीमहि । अग्ने दीद्यतं
बृहत् ॥ ३ ॥

वृषणम् । त्वा । वयम् । वृषन् । वृषणः । सम् । इधीमहि ॥
अग्ने । दीद्यतम् । बृहत् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(वृषन्) हे बलवान् (अग्ने) अग्नि ! [प्रकाशस्वरूप
परमेश्वर] (वृषणः) बलवान् होते हुये (वयम्) हम (वृषणम्) बलवान्
(बृहत्) बहुत (दीद्यतम्) प्रकाशमान (त्वा) तुझ को (सम्) भले प्रकार
(इधीमहि) प्रकाशित करें ॥ ३ ॥

भावार्थ—मनुष्य सर्वशक्तिमान् परमात्मा के अनेक उपकारों से
बलवान् होकर उस के उत्तम गुणों को खोजते रहें ॥ ६ ॥

सूक्तम् १०३ ॥

१—३ ॥ अग्निर्देवता ॥ १ विराडाषी बृहती; २ निचृद् बृहती; ३ विरा-
डाषी पङ्क्तिः ॥

परमेश्वरगुणोपदेशः—परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

अग्निमीलिष्वामसे गायामिः शीरशौचिषम् ।

अग्निं राये पुरुमीलह श्रुतं नरोऽग्निं सुदीतये हृदिः ॥ १ ॥

अग्निम् । ईलिष्व । अमसे । गायामिः । शीर-शौचिषम् ॥

अग्निम् । राये । पुरु-मीलह । श्रुतम् । नरः । अग्निम् ।
सु-दीतये । हृदिः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(पुरुमीलह) हे बहुत ज्ञान से सींचे हुये मनुष्य । (नरः)

३—(वृषणम्) बलवन्तम् (त्वा) (वयम्) (वृषन्) बलवान् (वृषणः)
बलवन्तः सन्तः (सम्) सम्यक् (इधीमहि) प्रकाशयेम (अग्ने) प्रकाश-
स्वरूप परमेश्वर (दीद्यतम्) दीद्यतिर्ज्वलतिकर्मा—निघ० १ । १६, शत ।
दीप्यमानम् (बृहत्) बहुप्रकारेण ॥

१—(अग्निम्) प्रकाशस्वरूपं परमात्मानम् (ईलिष्व) अ० २० । १०२ ।

नर [नेता] होकर तू (गाथाभिः गाने योग्य क्रियाओं के साथ (अवसे) अपनी रक्षा के लिये (शीरशोचिषम्) बड़े प्रकाश वाले (अग्निम्) अग्नि [प्रकाश स्वरूप परमात्मा] को, (राये) धन के लिये (श्रुतम्) विख्यात (अग्निम्) अग्नि [प्रकाश स्वरूप परमात्मा] को और (सुदीतये) सुन्दर प्रकाश के लिये (छर्दिः) घर सदृश (अग्निम्) अग्नि [प्रकाशस्वरूप परमात्मा] को (ईलिष्व) खोज ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमात्मा की भक्ति से अपनी रक्षा के लिये धन और विद्या को बढ़ावे ॥ १ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—८। ७१ [सायणभाष्य ६०] । १४; सामवेद—पृ० १। ५। ६॥

अग्ने आ याहुग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।

आ त्वामनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे ॥ २ ॥

अग्ने । आ । याहि । अग्नि-भिः । होतारम् । त्वा । वृणीमहे ॥

आ । त्वाम् । अनुक्तु । प्र-यतां । हविष्मती । यजिष्ठम् । बर्हिः । आ-सदे ॥ २ ॥

भावार्थ—(अग्ने) हे अग्नि । [प्रकाशस्वरूप परमेश्वर] (अग्निभिः) ज्ञान प्रकाशों के साथ (आ याहि) तू प्राप्त हो, (होतारम्) दानी (त्वा)

१। अधीष्व । अन्विच्छ (अवसे) रक्षणाय (गाथाभिः) गानयोग्यक्रियाभिः (शीरशोचिषम्) स्फायितश्चिवश्चि० । उ० २। १३। शीङ् स्वप्ने—रक् । अर्चि-शुचि० उ० २। १०८। शुच शोके—इसि । महाप्रकाशयुक्तम् (अग्निम्) (राये) धनाय (पुरुमील्ह) मिह सेचने—क । बहुज्ञानेन मीढ सिक वर्धित मनुष्य (श्रुतम्) विख्यातम् (नरः)नेता सन् (अग्निम्) (सुदीतये) पतोपः । सुदीतये । शोभनप्रकाशाय (छर्दिः) अर्चिशुचिहुसृपिच्छर्विम्य इसिः । उ० २। १०८। छर्वसन्दीपने—इसि । गृहम्—निघ० ३। ४ ॥

२—(अग्ने) हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर (आ याहि) प्राप्तो भव (अग्नि-भिः) ज्ञानप्रकाशैः (होतारम्) दानतारम् (त्वा) त्वाम् (वृणीमहे) स्वीकृते;

तुम्ह को (वृणीमहे) हम स्वीकार करते हैं । (प्रयता) नियम युक्त (हविष्मती) भक्ति वाली प्रजा (बर्हिः) वृद्धि (आसदे) पाने के लिये (यजिष्ठम्) अत्यन्त संयोग वियोग करने वाले (त्वा) तुम्ह को (आ) सब प्रकार से (अनक्तु) प्राप्त होवे ॥ २ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमात्मा की आज्ञा में रहकर सद वृद्धि करें ॥ २ ॥

मन्त्र २, ३ ऋग्वेद में हैं—८। ६० [सायण भाष्य ४६] । १, २; सामवेद—
उ० ७। २। ७ ॥

अच्छा हि त्वा सहसः सूनी अङ्गिरः सुचश्चरन्त्यध्वरे ।

ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहेऽग्निं यज्ञेषु पुर्व्यम् ॥ ३ ॥

अच्छ । हि । त्वा । सहसः । सूनी इति । अङ्गिरः । सुचः ।

चरन्ति । अध्वरे ॥ ऊर्जः । नपातम् । घृत-केशम् । ईमहे ।

अग्निम् । यज्ञेषु । पुर्व्यम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(सहसः सूनी) हे बल के पहुँचाने वाले ! (अङ्गिरः) हे ज्ञानी परमेश्वर ! (सुचः) चलने वाली प्रजाये (अध्वरे) बिना हिंसावाले व्यवहार में (त्वा) तुम्ह को (हि) ही (अच्छ) अच्छे प्रकार (चरन्ति) प्राप्त होती हैं । (ऊर्जः) बल के (नपातम्) न गिराने वाले [रक्षक], (यज्ञेषु) यज्ञों [संयोग वियोग व्यवहारों] में (पुर्व्यम्) पुराने (अग्निम्) अग्नि

(आ) समन्तात् (त्वाम्) परमेश्वरम् (अनक्तु) अर्जु गतौ । प्राप्नोतु (प्रयता) यम—क । नियमयुक्त (हविष्मती) भक्तिमती प्रजा (यजिष्ठम्) यष्ट—इष्टम् । अतिशयेन यष्टारंसंयोगवियोगकर्तारम् (बर्हिः) वृद्धिम् (आसदे) प्राप्तुम् ॥

३—(अच्छ) सुष्ठुप्रकारेण (हि) एव (त्वा) (सहसः) बलस्य (सूनी) प्रेरक (अङ्गिरः) हे ज्ञातिन् परमेश्वर (सुचः) चिक् च । उ० २। ६२। सुं गतौ—किप् चिगागमः । गतिशीलाः प्रजाः (चरन्ति) गच्छन्ति । प्राप्नुवन्ति (अध्वरे) हिंसारहिते व्यवहारे (ऊर्जः) बलस्य (नपातम्) नपातयितारम् । रक्षकम् (घृतकेशम्) घृतं जलं केशं प्रकाशं च (ईमहे) याचामहे (अग्निम्)

[प्रकाशस्वरूप परमेश्वर] से (घृत्केशम्) जल और प्रकाश को (ईमहे) हम मांगते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि परमेश्वर के बनाये पदार्थों से उपकार लेकर उन्नति करें ॥ ३ ॥

सूक्तम् १०४ ॥

१—४ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृद् बृहती; २ निचृत् पङ्क्तिः; ३ निचृदार्षी बृहती; ४ भुरिगार्षी बृहती ॥

परमेश्वरगुणोपदेशः—परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

इमा उ त्वा पुरुवसो गिरौ वर्धन्तु या मम । पावकवर्णाः
शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत ॥ १ ॥

इमाः । ऊ इति । त्वा । पुरुवसो इति पुरु-वसो । गिरः ।
वर्धन्तु । याः । मम ॥ पावक-वर्णाः । शुचयः । विपुः-चितः ।
अभि । स्तोमैः । अनूषत ॥ १ ॥

भाषार्थ—(पुरुवसो) हे बहुन्त धन वाले ! [परमात्मन्] (मम) मेरी (याः) जो (गिरः) वाणियां हैं, (इमाः) वे (त्वा) तुझ को (उ) निश्चय करके (वर्धन्तु) बढ़ावें [विख्यात करें] । (पावकवर्णाः) अग्नि के समान तेजस्वी, (शुचयः) पवित्र (विपश्चितः) विद्वान् लोगों ने (स्तोमैः) स्तोत्रों से [तेरी] (अभि) सब ओर से (अनूषत) प्रशंसा की है ॥ १ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग पूर्वज विद्वानों के समान परमेश्वर के उपकारों की स्तुति करके अपनी उन्नति करें ॥ १ ॥

प्रकाशस्वरूप परमेश्वरम् (यज्ञेषु) संयोगवियोगव्यवहारेषु (पूर्वम्) पुरातनम् ॥

२—(इमाः) वक्ष्यमाणाः (उ) निश्चयेन (त्वा) (पुरुवसो) हे बहुधनवन् (गिरः) वाण्यः (वर्धन्तु) वर्धयेन्तु विख्यातं कुर्वन्तु (याः) (मम) (पावकवर्णाः) अग्निवत्सैजवस्विनः । ब्रह्मवर्चस्विनः (शुचयः) पवित्राः (विपश्चितः) विद्वान् (अभि) सर्वतः (स्तोमैः) स्तोत्रैः (अनूषत) अस्तुन ॥

मन्त्र १, २ ऋग्वेद में हैं—८। ३। ३, ४; यजुर्वेद—३३। ८१, ८३; साम-
वेद—३० ७। ३। १८; म० १ साम०—पू० ३। ६। ८ ॥

अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे । सत्यः सो
अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये ॥ २ ॥

अयम् । सहस्रम् । ऋषि-भिः । सहः-कृतः । समुद्रः-इव ।
पप्रथे ॥ सत्यः । सः । अस्य । महिमा । गृणे । शवः ।
यज्ञेषु । विप्र-राज्ये ॥ २ ॥

भाषार्थ—(समुद्रः इव) आकाश के समान वर्तमान (अयम्) इस
[परमेश्वर] ने (ऋषिभिः) ऋषियों [वेदार्थ जानने वालों] द्वारा (सहस्कृतः)
पराक्रम करने वालों को (सहस्रम्) सहस्र प्रकार से (पप्रथे) फैलाया है ।
(अस्य) इस [परमात्मा] की (सः) वह (महिमा) महिमा (सत्यः) सत्य
है, (विप्रराज्ये) विद्वानों के राज्य के बीच (यज्ञेषु) यज्ञों [श्रेष्ठ व्यवहारों] में
(शवः) उस बल की (गृणे) मैं बढ़ाई करता हूँ ॥ २ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि परमात्मा की सदा स्तुति करते रहें
क्योंकि वह विद्वानों को प्राप्त होकर राज्य करने वाले पुरुष का बल बढ़ाता है ॥ २ ॥

आ नो विश्वांसु हव्य इन्द्रः समत्सु भूषतु । उप ब्रह्माणि
सर्वानानि वृत्रहा परमज्या ऋचीषमः ॥ ३ ॥

आ । नः । विश्वांसु । हव्यः । इन्द्रः । समत्-सु । भूषतु ॥
उप । ब्रह्माणि । सर्वानानि । वृत्र-हा । परम-ज्याः । ऋचीषमः ॥

२—(अयम्) परमेश्वरः (सहस्रम्) बहुप्रकारेण (ऋषिभिः) वेदार्थ-
विद्भिः (सहस्कृतः) पराक्रमकर्तृन् (समुद्रः) अन्तरिक्षम् (इव) यथा (पप्रथे)
विस्तारितवान् (सत्यः) यथार्थः (सः) (अस्य) परमेश्वरस्य (महिमा)
महत्त्वम् (गृणे) स्तौमि (शवः) बलम् (यज्ञेषु) श्रेष्ठव्यवहारेषु (विप्रराज्ये)
मेधाविद् राष्ट्रैः ॥

सू० १०४ [द्वंद्व]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४, ३७५)

भाषार्थ—(विश्वासु) सब (समस्तु) संग्रामों में (हव्यः) पुकारने योग्य, (वृत्रहा) अन्धकार मिटाने वाला, (परमज्याः) बड़े शत्रुओं का मारने वाला, (ऋचीषमः) स्तुति के समान गुण वाला (इन्द्रः) इन्द्र [परम पेश्यवाला परमात्मा] (नः) हमारे (ब्रह्माणि) वेद ज्ञानों और (सवनानि) पेश्वर्य की वस्तुओं को (आ) सब ओर से (उप) भले प्रकार (भूयतु) शोभायमान करे ॥ ३ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमपिता परमेश्वर का आश्रय लेकर शत्रुओं का नाश कर के पेश्वर्य बढ़ावे ॥ ३ ॥

मन्त्र ३. ४ ऋग्वेद में है—८। ६० [लायणभाष्य ७६] । १, २, सामवेद—
७० ७। १। २; मन्त्र १ साम० पू० ३। ८। ७ ॥

त्वं दाता प्रथमो राधसामस्यसि सत्य ईशानकृत् ।

तुविद्युम्नस्य युज्या वृणीमहे पुत्रस्य शर्वसो मुहः ॥ ४ ॥

त्वम् । दाता । प्रथमः । राधसाम् । असि । असि । सत्यः ।
ईशान-कृत् ॥ तुवि-द्युम्नस्य । युज्या । आ । वृणीमहे ।
पुत्रस्य । शर्वसः । मुहः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—[हे परमेश्वर !] (त्वम्) तू (राधसाम्) धनों का (प्रथमः) सब से पहिला (दाता) दाता (असि) है, और (सत्यः) सच्चा (ईशानकृत्) पेश्वर्यवान् बनाने वाला (असि) है । (तुविद्युम्नस्य) बड़े यशस्वी पुरुष के

३—(आ) समन्तात् (नः) अस्माकम् (विश्वासु) सर्वासु (हव्यः) आह्वातव्यः (इन्द्रः) परमेश्वरः (समस्तु) संग्रामेषु (भूयतु) अलं करोतु (उप) पूजायाम् (ब्रह्माणि) वेदज्ञानानि (सवनानि) पेश्वर्यवस्तूनि (वृत्रहा) अन्धकारनाशकः (परमज्याः) आतो मनिन् कनिष्वनिपञ्च । पा० ३। २। ७४ । परम+ज्या वयोहानौ—विच् । महाशत्रूणां नाशयिता (ऋचीषमः) अथ० २०। ३५। १ । स्तुतितुल्यगुणयुक्तः ॥

४—(त्वम्) (दाता) दानी (प्रथमः) आदिभिः (राधसाम्) धनानाम् (असि) (असि) (सत्यः) यथार्थः (ईशानकृत्) पेश्वर्यवतां कर्ता (तुविद्युम्नस्य) बहुयशस्विनः पुरुषस्य (युज्या) युज्—कथप् । योग्यानि कर्माणि

(पुत्रस्य) पुत्र के (महः) बड़े (शवसः) बल के (युज्या) योग्य कामों को (आ) सब प्रकार (वृणीमहे) हम मङ्गीकार करते हैं ॥ ४ ॥

भाषार्थ—जो मनुष्य उत्तम धरानों में उत्पन्न होकर माता पिता आदि से सुशिक्षा पाकर परीक्रम करते हैं, जगदीश्वर उन का ऐश्वर्य बढ़ाता है ॥ ४ ॥

सूक्तम् १०५ ॥

१—५ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ४ भुरिगार्घ्यनुष्टुपः २ पङ्क्तिः ३ निचृत् पश्या वृद्धी ५ निचृदापी पङ्क्तिः ॥

परमेश्वरगुणोपदेशः—परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः ।

अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥ १ ॥

त्वम् । इन्द्र । प्र-तूर्तिषु । अभि । विश्वाः । असि । स्पृधः ॥

अशस्ति-हा । जनिता । विश्व-तूः । असि । त्वम् । तूर्य । तरुष्यतः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमेश्वर] (त्वम्) तू (प्रतूर्तिषु) मार धाड़ वाले संग्रामों में (सर्वाः) सब (स्पृधः) ललकारती हुई शत्रु सेनाओं को (अभि असि) हरा देता है । (त्वम्) तू (अशस्तिहा) अपकीर्ति मिटाने वाला, (जनिता) सुख उत्पन्न करने वाला, (विश्वतूः) सब शत्रुओं का मारने वाला (असि) है, (तरुष्यतः) मारने वाले वैरियों को (तूर्य) मार ॥ १ ॥

(आ) समन्तात् (वृणीमहे) स्वीकुर्मः (पुत्रस्य) (शवसः) बलस्य (महः) महतः ॥

१—(त्वम्) (इन्द्र) परमेश्वर (प्रतूर्तिषु) तूरी-गतित्वरणहिसनयोः—किन् । परस्परमारणेषु संग्रामेषु (अभि असि) अभिमवल (विश्वाः) सर्वाः (स्पृधः) स्पर्धमानाः शत्रुसेनाः (अशस्तिहा) अपकीर्तिनाशकः (जनिता) सुखोत्पादकः (विश्वतूः) तूरी हिलायाम्—किप् । सर्वशत्रुनाशकः (असि) (त्वम्) (त्वम्) (तूर्ति) कौं हिसे ॥ मारय (तरुष्यतः) बाधकान् वैरिणः ॥

भावार्थ—युद्धपंडित-राजा विघ्ननाशक परमात्मा का आश्रय लेकर सब शत्रुओं का नाश करके प्रजापालन करे ॥ १ ॥

मन्त्र १—३ ऋग्वेद में हैं—८।६६ [सायण भाष्य ८८]। ५—७; मन्त्र १, २ यजुर्वेद—३३।६६, ६७; सामवेद—३०८।१।८; म० १ साम० पू० ४।२।६।

अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा ।
विश्वास्ते स्पृधः शनथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि ॥ २ ॥
अनु । ते । शुष्मम् । तुरयन्तम् । ईयतुः । क्षोणी इति ।
शिशुम् । न । मातरा ॥ विश्वाः । ते । स्पृधः । शनथयन्त ।
मन्यवे । वृत्रम् । यत् । इन्द्र । तूर्वसि ॥ २ ॥

भावार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेशवर्य वाले परमेश्वर] (क्षोणी) दोनों आकाश और भूमि लोक (ते) तेरे (तुरयन्तम्) वेग करते हुये (शुष्मम् अनु) शत्रुओं को सुखाने बल के पीछे (ईयतुः) चलते हैं, (न) जैसे (मातरा) माता पिता दोनों (शिशुम्) बालक के [पीछे प्रीति से चलते हैं] । (ते) तेरे (मन्यवे) क्रोध से (विश्वाः) सब (स्पृधः) ललकारती हुई शत्रु सेनायें (शनथयन्त) मारी गयी हैं, (यत्) जब कि तू (वृत्रम्) शत्रु को (तूर्वसि) मारता है ॥ २ ॥

भावार्थ—जैसे माता पिता आपा छोड़ कर बच्चे से प्रीति करते हैं, वैसे ही सर्वशक्तिमान्, सर्वनियन्ता परमात्मा में परम भक्ति करके मनुष्य शत्रुओं को मारे ॥ २ ॥

२—(अनु) अनुसृत्य (ते) तव (शुष्मम्) शत्रुशोषकं बलम् (तुरयन्तम्) तुरां कुर्वन्तम् (ईयतुः) गच्छतः (क्षोणी) छावापृथिव्यौ (शिशुम्) (न) इव (मातरा) मातापितरौ (विश्वाः) (ते) तव (स्पृधः) स्पृधमानाः शत्रुसेनाः (शनथयन्त) शनथतिर्वधकर्मा—विष० ३। १६। इता अभवन् (मन्यवे) क्रोधाय (वृत्रम्) शत्रुम् (यत्) यदा (इन्द्र) परमेश्वर-यन् परमात्मन् (तूर्वसि) हंसि ॥

इत ऊ॒ती वो अ॒जरं प्रहे॒तार॒मप्र॑हितम् । आ॒शुं जे॒तारं हे॒तारं
र॒थी॒त॒मम॒तूर्तं तु॒ग्र॒य॒वृ॒धम् ॥ ३ ॥

इतः । ऊ॒ती । वः । अ॒जरम् । प्र॒हे॒तारम् । अ॒प्र॒हि॒तम् ॥
आ॒शुम् । जे॒तारम् । हे॒तारम् । र॒थि॒त॒मम् । अ॒तूर्त॒म् ।
तु॒ग्र॒य॒वृ॒धम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्यों ।] (वः) तुहारी (ऊती) रक्षा के लिये
(अजरम्) जरा रहित [सदा बलवान्] (प्रहेतारम्) सब के चलाने वाले,
(अप्रहितम्) किसी से न चलाये गये, (आशुम्) फुरतीले, (जेतारम्) जय
करने वाले, (हेतारम्) बढ़ाने वाले, (रथितमम्) रमणीय पदार्थों के सब
से बड़े स्वामी, (अतूर्तम्) न सताये गये, (तुग्रयवृधम्) बस्ती के हितकारी
के बढ़ाने वाले [परमेश्वर] को (इतः) वे दोनों [आकाश और भूमि—
म० २] प्राप्त होते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—जिस परमात्मा ने पृथिवी और आकाश के पदार्थ मनुष्य
के हित के लिये रचे हैं, उस जगदीश्वर की सदा भक्ति करके बलवान् होकर
वृद्धि करें ॥ ३ ॥

मन्त्र ३ सामवेद में भी है— पू० ३ । १० । १ ॥

यो राजा च॒र्षणी॑नां या॒ता रथे॑भिर॒ग्नि॒गुः ।

वि॒श॒वा॒सां त॒रु॒ता पृ॒त॒ना॒नां ज्येष्ठो॑ यो वृ॒त्र॒हा गृ॒णो ॥ ४ ॥

यः । राजा । च॒र्ष॒णी॒नाम् । या॒ता । रथे॑भिः । अ॒ग्नि॒गुः ॥

३—(इतः) गच्छतः प्राप्तः । ते क्षोणी— म० २ (ऊती) ऊत्यै रक्षायै
(वः) युष्माकम् (अजरम्) जरारहितम् (प्रहेतारम्) हि गतौ—तुन् । प्रक-
र्षण, गमयितारम् (अप्रहितम्) केनाप्यचालितम् (आशुम्) वेगवन्तम्
(जेतारम्) जयकर्तारम् (हेतारम्) हि वृद्धौ—तुन् । वर्धयितारम् (रथित-
मम्) रमणीयपदार्थानां स्वामितमम् (अतूर्तम्) तुरी हिंसने—क । अहिंसि-
तम् (तुग्रयवृधम्) स्फायितञ्चिवञ्चि० । उ० २ । १३ । तुरज तुजि हिंसा-
प्रकाधाननिकेतनेषु रक्, तुग्र-यत्, निघासाय हितस्य वर्धकम् ॥

विश्वासात् । तुरुता । पृतनानाम् । ज्येष्ठः । यः । वृत्र-हा ।
गुणो ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(यः) जो [परमेश्वर] (चर्षणीनाम्) मनुष्यों का
(राजा) राजा (रथेभिः) रथों [के समान रमणीय लोकों] के साथ
(अभिगुः) बेरोक (याता) चलने वाला, और (यः) जो (विश्वासाम्)
सब (पृतनानाम्) शत्रु सेनाओं का (तुरुता) हराने वाला, (ज्येष्ठः) अति
श्रेष्ठ, (वृत्रहा) अन्धकार नाशक है, [उसकी] (गुणे) मैं स्तुति करता
हूँ ॥ ४ ॥

भाषार्थ—जो परमात्मा सब मनुष्य आदि प्राणियों और सूर्य आदि
लोकों का स्वामी है, हम उसके गुणों को ग्रहण कर के सब कष्टों से बचें ॥४॥

मन्त्र ४।५ आ-चुके हैं—अथ० २०।४२।१६, १७ ॥

इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्त्रवसे यस्य द्विता विधुर्तरि ।
हस्ताय वज्रः प्रति धायि दर्शतो सहो दिवेन । सूर्यः ॥ ५ ॥
इन्द्रश्च । तम् । शुम्भ । पुरु-हन्मन् । अत्रसे । यस्य । द्विता ।
वि-धुर्तरि ॥ हस्ताय । वज्रः । प्रति । धायि । दर्शतः ।
सहः । दिवे । न । सूर्यः ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(पुरुहन्मन्) हे बहुत ज्ञानी ऋषि ! (तम्) उस (इन्द्रम्)
इन्द्र [बड़े पेशवर्य वाले परमात्मा] का (शुम्भ) भाषण कर, (यस्य) जिस के
(द्विता) दोनों धर्म [अनुग्रह और निग्रह गुण] (विधुर्तरि) बुद्धिमान
जन पर (अत्रसे) रक्षा के लिये और [जिसका] (दर्शतः) दर्शनीय (सहः)
महान् (वज्रः) वज्र [दण्ड सामर्थ्य] (हस्ताय) हाथ [अर्थात् हमारे बाहु बल]
के लिये (प्रति) प्रत्यक्ष (धायि) धारण किया गया है, (न) जैसे (सूर्यः)
सूर्य (दिवे) प्रकाश के लिये है ॥ ५ ॥

भाषार्थ—परमात्मा अति प्रत्यक्ष रूप से तुम्हें को दंड देता है और
धर्मात्माओं पर अनुग्रह करता है, ऐसा निश्चय करके विद्वान् लोग सदा ईश्वर
की आशा में रहकर सुखी हों ॥ ५ ॥

४, ५—व्याख्यातो—अथ० २०।४२।१६, १७ ॥

सूक्तम् १०६ ॥

१-३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृदुष्णिक्; २, ३ विराडाशुष्णिक् ॥

परमेश्वरगुणोपदेशः—परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

तव त्यदिन्द्रियं बृहत् तव शुष्मसुत क्रतुषु । वज्रं शिशति
धिषणा वरेण्यम् ॥ १ ॥तव । त्यत् । इन्द्रियम् । बृहत् । तव । शुष्मसु । उत । क्रतुषु ॥
वज्रसु । शिशति । धिषणा । वरेण्यम् ॥ १ ॥भाषार्थ—[हे परमेश्वर !] (तव) तेरे (त्यत्) उस [प्रसिद्ध]
(बृहत्) बड़े (इन्द्रियम्) इन्द्रपते [ऐश्वर्य], (तव) तेरे (शुष्मम्) बल
(उत) और (क्रतुम्) बुद्धि और (वरेण्यम्) उत्तम (वज्रम्) वज्र [दण्ड
सामर्थ्य] को (धिषणा [तेरे] वाणी (शिशति) पैना करती है ॥ १ ॥भावार्थ—मनुष्य परमेश्वर के गुणों को वेद द्वारा निश्चय करके अपना
सामर्थ्य बढ़ावे ॥ १ ॥यह त्वच ऋग्वेद में है—८। १५। ७—६; कुछ भेद से सामवेद—७०
= १। १। त्वच ११ ॥तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं पृथिवी वर्धति अवं । त्वामापुः पर्वता-
सश्च हिन्विरे ॥ २ ॥तव । द्यौः । इन्द्र । पौंस्यम् । पृथिवी । वर्धति । अवं ॥
त्वाम् । आपुः । पर्वतासः । च । हिन्विरे ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मनः] (तव)

१—(तव) (त्यत्) तत्प्रसिद्धम् (इन्द्रियम्) इन्द्रलिङ्गम् । ऐश्वर्यम्
(बृहत्) (तव) (शुष्मम्) शोषकं बलम् (उत) अपि च (क्रतुम्) प्रज्ञाम्
(वज्रम्) शासनसामर्थ्यम् (शिशति) श्यति । तीक्ष्णीकरोति (धिषणा)
वेदरूपा वाणी (वरेण्यम्) वरणीयं श्रेष्ठम् ॥

२—(तव) (द्यौः) आकाशः (इन्द्र) हे परमेश्वर (पौंस्यम्) पौंस्यम्

सू० १०७ [६६५] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥ (४, ३-१)

तेरे (पौंस्यम्) पुरुषार्थ और (भवः) यश को (द्यौः) आकाश और (पृथिवी) पृथिवी (वर्धति) बढ़ाती है । (त्वाम्) तुम को (आपः) जलों ने (च) और (पर्वतासः) पहाड़ों ने (हिन्विरे) प्रसन्न किया है ॥ २ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमेश्वर को उसके बड़े बड़े कर्मों से जानकर पुरुषार्थ करे ॥ २ ॥

त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः । त्वां शर्धो मदुत्यनु मारुतम् ॥ ३ ॥

त्वाम् । विष्णुः । बृहन् । क्षयः । मित्रः । गृणाति । वरुणः ॥ त्वाम् । शर्धः । मदुति । अनु । मारुतम् ॥ ३ ॥

भावार्थ—[हे परमेश्वर !] (बृहन्) बड़ा (क्षयः) ऐश्वर्यवान् (विष्णुः) व्यापक सूर्य, (मित्रः) प्रेरक वायु और (वरुणः) स्वीकार करने योग्य जल (त्वाम्) तेरी (गृणाति) बड़ाई करना है । (त्वाम् अनु) तेरे पीछे (मारुतम्) शूर पुरुषों का (शर्धः) बल (मदति) तृप्त होता है ॥ ३ ॥

भावार्थ—जिस परमात्मा के बल से सब सूर्य आदि में बल है, उस सर्वशक्तिमान् की उपासना करके सब मनुष्य आत्मबल बढ़ावें ॥ ३ ॥

सूक्तम् १०७ ॥

१—१५ ॥ १—१२ इन्द्रः, १२—१५ सूर्यो देवता ॥ १—३ गायत्री, ४ निचु-
दाशी त्रिष्टुप्, ५ विराट् त्रिष्टुप्, ६, १० विराडाशी त्रिष्टुप्, ७-८, ११, १४,
१५ निचु त्रिष्टुप्, १२ आशी त्रिष्टुप्, १३ पङ्क्तिः ॥

१—१२ परमेश्वरगुणोपदेशः १—१२ परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

(पृथिवी) (वर्धति) वर्धयति (भवः) यशः (त्वाम्) (आपः) जलानि
(पर्वतासः) शैलाः (च) (हिन्विरे) प्रीणयन्ति स्म ॥

३—(त्वाम्) (विष्णुः) व्यापकः सूर्यः (बृहन्) महान् (क्षयः)
क्षि ऐश्वर्यवान् (मित्रः) प्रेरको वायुः (गृणाति) स्तौति
(वरुणः) स्वीकरणीयं जलम् (त्वाम्) (शर्धः) बलम् (मदति) इष्यति
(अनु) अनुसृत्य (मारुतम्) महतां शूरपुरुषाणां पिदम् ॥

समस्य मुन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः । समुद्रायैव
सिन्धवः ॥ १ ॥

सम् । अस्य । मुन्यवे । विशः । विश्वाः । नमन्तु । कृष्टयः ॥
समुद्राय-इव । सिन्धवः ॥ १ ॥

भाष्यार्थ—(विश्वाः) सब (विशः) प्रजायें और (कृष्टयः) मनुष्य
(अस्य) इस [परमेश्वर] के (मुन्यवे) तेज वा क्रोध के आगे (सम्)
ठीक ठीक (नमन्त) नमते हैं, (समुद्राय इव) जैसे समुद्र के लिये (सिन्धवः)
नदियां [नमती हैं] ॥ १ ॥

भाष्यार्थ—जैसे नदियां समुद्र की ओर झुकती हैं, वैसे ही सब सृष्टि के
पदार्थ और सब मनुष्य परमात्मा की आज्ञा को अवश्य मानते हैं ॥ १ ॥

मन्त्र १—३ ऋग्वेद में हैं—८।६।४—६; सामवेद—३० ८।१।तुच
१३; मन्त्र १ साम० पू० २।५।३ ॥

ओजस्तदस्य तित्तिवे उमे यत् समवर्तयत् । इन्द्रश्चर्मैव रोदसी
ओजः । तत् । अस्य । तित्तिवे । उमे हति । यत् । सम-
वर्तयत् ॥ इन्द्रः । चर्म-इव । रोदसी हति ॥ २ ॥

भाष्यार्थ—(अस्य) इस [परमेश्वर] का (ओजः) बल (तत्) तब
(तित्तिवे) प्रकाशित हुआ, (यत्) जब (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले पर-
मात्मा] ने (उमे) दोनों (रोदसी) आकाश और भूमि को (चर्म इव)
चमड़े के समान (समवर्तयत्) यथाविधि वर्तमान किया ॥ २ ॥

१—(सम्) सम्यक् (अस्य) परमेश्वरस्य (मुन्यवे) मनुष्यमन्यतेर्दी-
प्तिकर्मणः क्रोधकर्मणो वधकर्मणो वा-निरु० १०।२६। तेजसे । क्रोधाय (विशः)
प्रजाः (विश्वाः) (नमन्त) नमतेर्लङ् । नमन्ति स्म (कृष्टयः) मनुष्याः
(समुद्राय) (इव) यथा (सिन्धवः) स्यन्दनशीला नद्यः ॥

२—(ओजः) बलम् (तत्) तदा (अस्य) परमेश्वरस्य (तित्तिवे)
त्विष दीप्तौ—लिट् । दिद्योपे (उमे) (यत्) यदा (समवर्तयत्) यथाविधि
वर्तितवान् (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् परमात्मा (चर्म) (इव) यथा (रोदसी)
आकाशभूमी ॥

सू० १०९ [६८५] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,३८३)

भाषार्थ—जैसे कोई चमड़े को कमाकर ठीक करता है, वैसे ही परमात्मा परमाणुओं के संयोग वियोज से सृष्टि बनाता है, तब उस की महिमा प्रकट होती है ॥ २ ॥

वि चिद् वृत्रस्य दोधतो वज्रेण शतपर्वणा । शिरौ विभेद वृष्णिना वि । चित् । वृत्रस्य । दोधतः । वज्रेण । शत-पर्वणा ॥ शिरः । विभेद । वृष्णिना ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(दोधतः) क्रोध करते हुये (वृत्रस्य) रोकने वाले शत्रु के (शिरः) शिर को (शतपर्वणा) नैर्झों जोड़ों वाले, (वृष्णिना) दड़ (वज्रेण) वज्र से (चित्) निश्चय करके (वि) अनेक प्रकार (विभेद) उस [परमेश्वर] ने तोड़ा है ॥ ३ ॥

भाषार्थ—जैसे शूर पुरुष भारी भारी शस्त्रों से शत्रुओं को मार गिराता है, वैसे ही परमात्मा पापियों को अनेक प्रकार दण्ड देता है ॥ ३ ॥

तदिदं भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेष नृमणः । सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रून्नु यदेनं मदन्ति विश्व ऊमाः ॥४॥
तत् । इत् । आसु । भुवनेषु । ज्येष्ठम् । यतः । जज्ञे । उग्रः । त्वेष-नृमणः ॥ सद्यः । जज्ञानः । नि । रिणाति । शत्रून् । अनु । यत् । सुनसु । मदन्ति । विश्वे । ऊमाः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(तत्) विस्तीर्ण ब्रह्म (इत्) ही (भुवनेषु) लोकों के भीतर (ज्येष्ठम्) सब में उत्तम और सब में बड़ा (आसु) प्रकाशमान हुआ । (यतः) जिस [ब्रह्म] से (उग्रः) तेजस्वी (त्वेषनृमणः) तेजोमय बल वा धन वाला पुरुष (जज्ञे) प्रकट हुआ । (सद्यः) शीघ्र (जज्ञानः) प्रकट होकर (शत्रून्) गिराने वाले विघ्नों को (नि रिणाति) नाश कर देता है, (यत्)

३—(वि) विविधम् (चित्) एव (वृत्रस्य) आवरकस्य शत्रोः (दोधतः) अ० १२ । १ । १८ । कुप्यतः (वज्रेण) शस्त्रेण (शतपर्वणा) बहुसन्धियुक्तेन (शिरः) (विभेद) विच्छेद (वृष्णिना) वीर्यवता । दहेन ॥

४—१२ । एते मन्त्रा व्याख्याताः—अथ० ५ । २ । १—४

जिस से (एतम् अनु) इस [परमात्मा] के पीछे पीछे (विश्वे) सब (ऊमाः) परस्पर-रक्तक लोग (मरुन्ति) हर्षित होते हैं ॥ ४ ॥

भावार्थ—आदि कारण परमात्मा की उपासना से मनुष्य वीर होकर शत्रुओं को मारता है, जिस के कारण सब लोग प्रसन्न होते हैं, उस जगदीश्वर की उपासना सब लोग किया करें ॥ ४ ॥

मन्त्र ४-१२ आ चुके हैं—अथ० । २ । १—६ ॥

ववृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दासाय भियसं दधाति ।
अव्यनच्च व्यनच्च सस्ति सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु ॥ ५ ॥

ववृधानः । शवसा । भूरि-प्रोजाः । शत्रुः । दासाय । भिय-
सम् । दधाति ॥ अवि-अनत् । च । वि-अनत् । च । सस्ति ।
सम् । ते । नवन्त । प्रभृता । मदेषु ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(शवसा) बल से (ववृधानः) बढ़ता हुआ, (भूर्योजाः) महाबली, (शत्रुः) हमारा शत्रु (दासाय) दान पात्र दास को (भियसम्) भय (दधाति) देता है । (अव्यनत्) गति शून्य स्थावर (च) और (व्यनत्) गति वाला जङ्गम जगत् (च) निश्चय करके [परमात्मा में] (सस्ति) लपेटा हुआ है, (प्रभृता) अच्छे प्रकार पुष्ट किये हुए प्राणी (मदेषु) आनन्दों में (ते) तेरी (सम् नवन्त) यथावत् स्तुति करते हैं ॥ ५ ॥

भावार्थ—सर्वशक्तिमान् परमेश्वर समस्त जगत् में व्यापक होकर सब को धारण करता है । उसी की महिमा को जानकर सब मनुष्य पुरुषार्थ पूर्वक अपने विघ्नों को नाश करके प्रसन्न हों ॥ ५ ॥

त्वे क्रतुमपि पृञ्चन्ति भूरि द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः । स्वादोः
स्वादीयः स्वादुना सृजा समुदः सु सधु सधुनाभि योधीः ॥ ६ ॥
त्वे इति । क्रतुम् । अपि । पृञ्चन्ति । भूरि । द्विः । यत् ।
एते । त्रिः । भवन्ति । ऊमाः ॥ स्वादोः । स्वादीयः । स्वा-
दुना । सृज् । समु । सु । सधु । सधुना । अभि । योधीः ॥

श्रु० १०७ [६८५] विंश काण्डम् ॥ २० ॥ (४, ३८५)

भाषार्थ—[हे परमात्मन् !] (त्वे अपि) तुझ में ही (कतुम्) अपनी बुद्धि को (भूरि) बहुत प्रकार से [सब प्राणी] (पृञ्चन्ति) जोड़ते हैं, (एते) यह सब (ऊमाः) रक्तक प्राणी (द्विः) दो बार [स्त्री पुरुष रूप से] (त्रिः) तीन बार [स्थान, नाम और जन्म रूप से] (भवन्ति) रहते हैं । (यत्) क्योंकि (स्वादोः) स्वादु से (स्वादीयः) अधिक स्वादु मोक्ष सुख को (स्वादुना) स्वादु [सांसारिक सुख] के साथ (सम् सृज) संयुक्त कर, (अदः) उस (मधु) मधुर [मोक्ष सुख] को (मधुना) मधुर [सांसारिक] ज्ञान के साथ (सु) भले प्रकार (अग्नि) सब ओर से (योधीः) तू ने पहुँचाया है ॥ ६ ॥

भावार्थ—लिङ्ग रहित आत्मा कभी स्त्री कभी पुरुष होकर अपने कर्मानुसार मनुष्य आदि शरीर, नाम और जाति भोगता है । सब प्राणी परमेश्वर की महिमा जानकर सांसारिक व्यवहार द्वारा मोक्ष सुख प्राप्त करें जैसे कि पूर्वज ऋषियों ने वेद द्वारा प्राप्त किया है ॥ ६ ॥

यदि चित्तु त्वा धना जयन्तं रणैरणो अनुमदन्ति विप्राः ।
ओजीयः शुष्मिन्स्थिरमा तनुष्व मा त्वा दभन् दुरेवासः
कुशोकाः ॥ ७ ॥

यदि । चित् । नु । त्वा । धना । जयन्तस् । रणै-रणो । अनु-
मदन्ति । विप्राः ॥ ओजीयः । शुष्मिन् । स्थिरम् । आ ।
तनुष्व । मा । त्वा । दभन् । दुः-स्वासः । कुशोकाः ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(यदि) जो (चित्) निश्चय कर के (विप्राः) पंडित जन (रणैरणो) प्रत्येक रण में (नु) शीघ्र (धना) धनों को (जयन्तम्) जीतने वाले (त्वा) तेरे (अनुमदन्ति) पीछे पीछे आनन्द पाते हैं । (शुष्मिन्) हे बलवान् परमात्मन् ! (ओजीयः) अधिक बलवान् (स्थिरम्) स्थिर मोक्ष सुख (आ) सब ओर से (तनुष्व) फैला (दुरेवासः) दुष्ट गति वाले (कुशोकाः) परसुख में शोक करने वाले जन (त्वा) तुझ को (मा दभन्) न सतावें ॥ ७ ॥

भावार्थ—बुद्धिमान् मनुष्य विप्राँ को हराकर कठिन कठिन कार्य सिद्ध कर के स्थिर सुख पाते हैं ॥ ७ ॥

त्वया वयं शाश्वद्महे रणेषु प्रपश्यन्तो युधेन्यानि भूरि ।
चोदयामि तु आयुधा वचोभिः सं ते शिशामि ब्रह्मणा
वयांसि ॥ ८ ॥

त्वया । वयम् । शाश्वद्महे । रणेषु । प्र-पश्यन्तः । युधेन्यानि ।
भूरि ॥ चोदयामि । ते । आयुधा । वचः-भिः । सम् । ते ।
शिशामि । ब्रह्मणा । वयांसि ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(भूरि) बहुत से (युधेन्यानि) युद्धों को (प्रपश्यन्तः)
देखते हुये (वयम्) हम लोग (त्वया) तेरे साथ (रणेषु) रण क्षेत्रों में
[शत्रुओं को] (शाश्वद्महे) मार गिराते हैं । (ते) तेरे (वचोभिः) वचनों
से (आयुधा) अपने शस्त्रों को (चोदयामि) मैं आगे बढ़ाता हूँ और (ते)
तेरे (ब्रह्मणा) ब्रह्म ज्ञान से (वयांसि) अपने जीवनों को (सम्) यथावत्
(शिशामि) तीक्ष्ण करता हूँ ॥ ८ ॥

भावार्थ—शूर वीर मनुष्य परमेश्वर में विश्वास करके पुरुषार्थ पूर्वक
बड़े बड़े कार्य सिद्ध करते हैं ॥ ८ ॥

नि तद् दधिषेऽवरे परे च यस्मिन्नाविधावसा दुरोणे । आ
स्थापयत मातरं जिगत्सुमत इन्वतु कर्वराणि भूरि ॥ ८ ॥

नि । तत् । दधिषे । अवरे । परे । च । यस्मिन् । आविथ ।
अवसा । दुरोणे ॥ आ । स्थापयत् । मातरम् । जिगत्सुम् ।
अतः । इन्वतु । कर्वराणि । भूरि ॥ ८ ॥

भाषार्थ—[हे परमात्मन् !] (अवरे) छोटे (च) और (परे)
बड़े मनुष्य में (तत्) उस [घर] को (नि) निश्चय कर के (दधिषे) तू
ने पोषण किया है, (यस्मिन्) जिस (दुरोणे) कष्ट-से भरने योग्य घर में
(अवसा) अन्न से (आविथ) तू ने रक्षा की है । [हे मनुष्यो !] (जिगत्सुम्)
सर्वव्यापक (मातरम्) माता [परमेश्वर] को (आ) भली भाँति (स्थाप-
यत) [हृदय में] ठहराओ और (अतः) इसी से (भूरि) बहुत से (कर्व-

सू० १०७ [६८५]

विंश काण्डम् ॥ २० ॥

(४,३८७)

राणि) कर्मों को (इन्वत) सिद्ध करो ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमेश्वर की उपासना पूर्वक अन्न आदि पदार्थ प्राप्त करके अपने सब काम सिद्ध करें ॥ ६ ॥

स्तुष्व वष्मन् पुरुवत्मानं सृभ्वाणमिनतममाप्तमाप्त्यानाम् ।
आ दर्शति शवसा भूर्योजाः प्र सन्नति प्रतिमानं पृथिव्याः १०
स्तुष्व । वष्मन् । पुरु-वत्मानम् । सम् । सृभ्वाणम् । इन्-
तमम् । आप्तम् । आप्त्यानाम् ॥ आ । दर्शति । शवसा ।
भूरि-ओजाः । प्र । सन्नति । प्रति-मानम् । पृथिव्याः १० ॥

भाषार्थ—(वष्मन्) हे ऐश्वर्यवान् पुरुष ! (पुरुवत्मानम्) बहुत मार्ग वाले (सृभ्वाणम्) दूर दूर चमकने वाले, (इन्तमम्) महा प्रभु और (आप्त्यानाम्) आप्त [यथार्थ वक्ता] पुरुषों में रहने वाले गुणों के (आप्तम्) यथार्थ वक्ता परमेश्वर की (सम्) यथावत् (स्तुष्व) स्तुति कर । (भूर्योजाः) वह महाबली (शवसा) अपने बल से (आ) सब ओर (दर्शति) देखता है, और वह (पृथिव्याः) पृथिवी का (प्रतिमानम्) प्रतिमान होकर (प्र) भली भाँति (सन्नति) व्यापता है ॥ १० ॥

भावार्थ—मनुष्य जगदीश्वर परमात्मा के गुण कर्म स्वभाव विचार कर अपनी उन्नति करें ॥ १० ॥

इमा ब्रह्म बृहद्विः कृण्वद्दिन्द्राय शुषमाग्निः स्वर्षाः । महो
गोत्रस्य क्षयति स्वराजा तुरिहि विश्वमर्णवत् तपस्वान् ११
इमा । ब्रह्म । बृहत्-विः । कृण्वत् । इन्द्राय । शुषम् ।
अग्निः । स्वः-साः ॥ महः । गोत्रस्य । क्षयति । स्व-राजा ।
तुरः । चित् । विश्वम् । अर्णवत् । तपस्वान् ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(बृहद्विः) बड़े व्यवहार या गति वाला, (अग्निः) अगुआ और (स्वर्षाः) स्वर्ग का सेवन करने वाला पुरुष (इन्द्राय) परमेश्वर के लिये (इमा) इन (ब्रह्म = ब्रह्माणि) बड़े रत्नों को (शुषम्) अपना बल

(कृण्वत्) वनावें । (स्वराजा) वह स्वराजा [स्वतन्त्र राजा परमेश्वर] (महः) बड़े (गोत्रस्य) भूपति राजा का (जयति) राजा है, और वह (तुरः) शीघ्र स्वभाव, (तत्स्थान्) सामर्थ्य वाला परमात्मा (चित्) ही (विश्वम्) सब जगत् में (अर्णवत्) व्यापता है ॥ ११ ॥

भाषार्थ - मनुष्य जगदीश्वर परम पिता के गुण जानकर अपना बल बढ़ावे ॥ ११ ॥

एवा मुहान् बृहद्दिवो अथर्वावोचत् स्वां तन्वम् इन्द्रमेव ।
स्वसारौ मातरिभ्वरी अरिमे हिन्वन्ति चैने शवसा वर्धयन्ति
च ॥ १२ ॥

एव । मुहान् । बृहद्-दिवः । अथर्वा । अवोचत् । स्वाम् ।
तन्वम् । इन्द्रम् । एव ॥ स्वसारौ । मातरिभ्वरी इति ।
अरिमे इति । हिन्वन्ति । च । एने इति । शवसा । वर्ध-
यन्ति । च ॥ १२ ॥

भाषार्थ—(महान्) महान्, (बृहद्दिवः) बड़े व्यवहार वाले, (अथर्वा) निश्चल स्वभाव पुरुष ने (स्वाम्) अपनी (तन्वम्) विस्तृत स्तुति (इन्द्रम्) परमेश्वर के लिये (एव) ही (एव) इस प्रकार से (अवोचत्) कही है । (मातरिभ्वरी) आकाश में वर्तमान (स्वसारौ) अच्छे प्रकार ग्रहण करने वाले वा गति वाले [वा दो बहिनों के समान सहायकारी] दिन और रात (च) और (अरिमे) निर्दोष (एने) यह दोनों [सूर्य और पृथिवी] (शवसा) अपने सामर्थ्य से [उसी को] (हिन्वन्ति) प्रसन्न करती (च) और (वर्धयन्ति) सराहती हैं ॥ १२ ॥

भाषार्थ—हम से पहिले ऋषियों ने भी उसी परमात्मा की स्तुति की है, और दिन रात आदि काल और सूर्य पृथिवी आदि सब लोक उसी के आह्लाकारी हैं ॥ १२ ॥

मन्त्र १३—१५ ॥ आध्यात्मोपदेशः—मन्त्र १३—१५ परमात्मा और जीवात्मा के विषय का उपदेश ॥

सू० १०७ [६८५] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥ (४,३८८)

चित्रं देवानां केतुरनीकं ज्योतिष्मान् प्रदिशुः सूर्य उद्यन् ।
 दिवाकरोऽति द्युम्नैस्तमांसि विश्वातारीद् दुरितानि शुक्रः १३
 चित्रम् । देवानां । केतुः । अनीकम् । ज्योतिष्मान् ।
 प्र-दिशुः । सूर्यः । उत्-यन् ॥ दिवा-करः । अति । द्युम्नैः ।
 तमांसि । विश्वा । अतारीत् । दुः-इतानि । शुक्रः ॥ १३ ॥

भाषार्थ—(चित्रम्) अद्भुत (अनीकम्) जीवन-दाता [ब्रह्म],
 (देवानाम्) गतिमान् लोकों के (केतुः) जताने वाले, (ज्योतिष्मान्) तेजोमय
 (सूर्यः) सर्वप्रेरक [परमात्मा] (प्रदिशुः) सब दिशाओं में (उद्यन्) ऊंचे
 होते हुये (दिवाकरः) दिन को रचने वाले [सूर्य रूप], (शुक्रः) वीर्यवान्
 [परमेश्वर] ने (द्युम्नैः) अपने प्रकाशों से (तमांसि) अन्धकारों को (अति)
 लाभकर (विश्वा) सब (दुरितानि) कठिनाइयों को (अतारीत्) पार
 किया है ॥ १३ ॥

भावार्थ—जैसे यह सूर्य अन्धकार नाश करके दिन बनाकर प्रकाशमान
 है, वैसे ही वह परमेश्वर सूर्य आदि लोकों को रचकर धारण आकर्षण द्वारा
 सब की रक्षा करता है, वैसे ही मनुष्य विद्या से प्रकाशमान होकर विघ्नों को
 हटावे ॥ १३ ॥

मन्त्र १३, १४ आचुके हैं—अथ० १३।२।३४, ३५ ॥

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
 आप्राद् द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगत्तस्यु-
 बंश्च ॥ १४ ॥

चित्रम् । देवानां । उत् । अगात् । अनीकम् । चक्षुः ।
 मित्रस्य । वरुणस्य । अग्नेः ॥ आ । आप्रात् । द्यावापृथिवी
 इति । अन्तरिक्षम् । सूर्यः । आत्मा । जगत् । तस्यु-
 बंश्च ॥ १४ ॥

भाषार्थ—(देवानाम्) गतिमान् लोकों का (चित्रम्) अद्भुत (अनी-

कम्) जीवन दाता, (मित्रस्य) सूर्य [वा प्राण] का, (वरुणस्य) चन्द्रमा [अथवा जल वा अग्नय] का और (अग्नेः) विजुहो का (चक्षुः) दिखाने वाला [ब्रह्म] (उन्) सर्वोपरि (अगात्) व्यापा है । (सूर्यः) सर्वप्रेरक, (जातः) जङ्गम (च) और (तस्थुषः) स्थावर के (आत्मा) आत्मा [निरन्तर व्यापक परमात्मा] ने (द्यावापृथिवी) सूर्य भूमि [प्रकाशमान अप्रकाशमान लोकों] और (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष को (आ) सब प्रकार से (अप्रात्) पूर्ण किया है ॥ १४ ॥

भाषार्थ—जो अद्भुत स्वरूप परमात्मा सूर्य, चन्द्र, वायु आदि द्वारा सब प्राणियों को सुख देता है, मनुष्य उस को उपासना द्वारा जानकर आत्मोन्नति करे ॥ १४ ॥

सूर्यो देवीसुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पृश्नात् ।
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम् ॥ १५ ॥
सूर्यः । देवीम् । उषसम् रोचमानां । मर्यः । न । योषाम् ।
अभि । एति । पृश्नात् ॥ यत्र । नरः । देव-यन्तः । युगानि ।
वि-तन्वते । प्रति । भद्राय । भद्रम् ॥ १५ ॥

भाषार्थ—(सूर्यः) सूर्य मण्डल (देवीम्) देवी [दिव्यगुण वाली] (रोचमानाम्) रुचि कराने वाली (उषसम्) उषा [प्रभात वेला] के (पृश्नात्) पीछे पीछे (अभि) सब ओर से (एति) प्राप्त होता है, (न) जैसे (मर्यः) मनुष्य (योषाम्) अपनी स्त्री को [प्रीति से प्राप्त होता है], (यत्र) जहाँ [संसार के बीच] (देवयन्तः) व्यवहार चाहने वाले (नरः) नर [नेता लोग] (भद्रम् प्रति) आनन्द स्वरूप परमात्मा के सामने (भद्राय) आनन्द के लिये (युगानि) जुगों [वर्षों] को (वितन्वते) फैलाते हैं ॥ १५ ॥

१५—(सूर्यः) सविता (देवीम्) दिव्यगुणयुक्ताम् (उषसम्) प्रभात-वेलाम् । सन्धिकालम् (रोचमानाम्) रुचिकारिकाम् (मर्यः) पतिर्मनुष्यः (न) इव (योषाम्) स्वभार्याम् (अभि) सर्वतः (एति) प्राप्नोति (पृश्नात्) (यत्र) यस्मिन् संसारे (नरः) नेतारः (देवयन्तः) व्यवहारान् कामयमानाः (युगानि) वर्षाणि (वितन्वते) विस्तारयन्ति (प्रति) अभिमुखीकृत्य (भद्राय) कल्याणाय (भद्रम्) सुखस्वरूपं परमात्माय ॥

भावार्थ—जैसे ईश्वरकृत नियमों के अनुसार सूर्य और उषा के सम्बन्ध से प्रकाश, और पुरुष और स्त्री के सम्बन्ध से सन्तान होता है, वैसे ही बुद्धिमान् लोग सुखस्वरूप परमात्मा की आज्ञा में रहकर नियम पूर्वक सुख भोगते हुये अपना जीवन काल बढावें ॥ १५ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—१। ११५। २ ॥

सूक्तम् १०८ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ विराडुष्णिक्; २, ३ विराडाव्युष्णिक् ॥

परमेश्वरप्रार्थनोपदेशः—परमेश्वर की प्रार्थना का उपदेश ॥

त्वं न इन्द्रा भरु ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे । आ वीरं
पृतनासहम् ॥ १ ॥

त्वम् । नः । इन्द्र । आ । भरु । ओजः । नृम्णम् । शतक्रतो
इति शत-क्रतो । वि-चर्षणे ॥ आ । वीरम् । पृतना-सहम् १

भाषार्थ—(शतक्रतो) हे सैकड़ों कर्म करने वाले ! (विचर्षणे) हे विविध प्रकार देखने वाले ! (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले जगदीश्वर] (त्वम्) तू (नः) हमारे लिये (ओजः) बल, (नृम्णम्) धन (आ) और (पृतनासहम्) संग्राम जीतने वाले (वीरम्) वीर को (आ) भले प्रकार (भर) पुष्ट कर ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमेश्वर से प्रार्थना करके प्रयत्न पूर्वक बलवान्, धनवान् और वीर पुरुषों वाले होवें ॥ १ ॥

यह तृच ऋग्वेद में है—८। ६८ [सायण भाष्य ८७] । १०—१२; साम-वेद—३० ४। २। तृच १३; मन्त्र १ साम० पू० २। २। ७ ॥

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो नृभूविष्य । अधा ते

१—(त्वम्) (नः) अस्मभ्यम् (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् जगदीश्वर (आ) समन्ततात् (भर) पोषय (ओजः) बलम् (नृम्णम्) धनम् (शतक्रतो) बहु-कर्मन् (विचर्षणे) विविधद्रष्टुः (आ) समुच्चये (वीरम्) वीर्यपितम् (पृतना-सहम्) संग्रामजेतारम् ॥

सुम्नसीमहे ॥ २ ॥

त्वम् । हि । नः । पिता । ब्रूये इति । त्वम् । माता । शत-
क्रतो इति शत-क्रतो । बभूविथ ॥ अध । ते । सुम्नम् ।
ईमहे ॥ २ ॥

भाषार्थ—(वसो) हे बसाने वाले ! (शतक्रतो) हे सैकड़ों कर्मों वाले ।
[परमेश्वर] (त्वम्) तू (हि) ही (नः) हमारा (पिता) पिता और (त्वम्)
तू ही (माता) माता (बभूविथ) हुआ है, (अध) इस लिये (ते) तेरे (सुम्नम्)
सुख को (ईमहे) हम माँगते हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—परमेश्वर सदा से सब सृष्टि का पालन पोषण करता है,
हम उसी से प्रार्थना करके पुंरुषार्थ के साथ सुखी हों ॥ २ ॥

त्वां शुष्मिन् पुरुहूत वाज्यन्तसुपं ब्रूवे शतक्रतो । स नो
रास्व सुवीर्यम् ॥ ३ ॥

त्वाम् । शुष्मिन् । पुरु-हूत । वाज-यन्तम् । उप । ब्रूवे ।
शतक्रतो इति शत-क्रतो ॥ सः । नः । रास्व । सु-वीर्यम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(शुष्मिन्) हे महाबली ! (पुरुहूत) हे बहुत प्रकार बुलाये
गये ! (शतक्रतो) हे सैकड़ों कर्मों वाले ! [परमेश्वर] (वाज्यन्तम्) बलवान्
बनाने वाले (त्वाम्) तुझ को (उप) आदर से (ब्रूवे) मैं बुलाता हूँ,
(सः) सो तू (नः) हमें (सुवीर्यम्) बड़ा वीरपन (रास्व) दे ॥ ३ ॥

भावार्थ—मनुष्य महाबली परमेश्वर से प्रार्थना करके अनेक उप-
कारी कर्म करते हुये अपनी वीरत्वं बढ़ावें ॥ ३ ॥

२—(त्वम्) (हि) (नः) अस्माकम् (पिता) पालकः (वसो) वास-
यितः (त्वम्) (माता) जननीवद्धारकः (शतक्रतो) बहुकर्मन् (बभूविथ)
(अध) अनन्तरम् (ते) तव (सुम्नम्) सुखम् (ईमहे) याचामहे ॥ २ ॥

३—(त्वाम्) (शुष्मिन्) महाबलिन् (पुरुहूत) बहुविधाहूत (वाज-
यन्तम्) बलघ्नं कुर्वाणम् (उप) पूजायाम् (ब्रूवे) वदामि (शतक्रतो) बहुकर्मन्
(सः) स त्वम् (नः) अस्मभ्यम् (रास्व) देहि (सुवीर्यम्) महावीरत्वम् ॥

सूक्तम् १०८ ॥

१—३॥ इन्द्रो देवता ॥ पथ्या पङ्क्तिः ॥

सभापतिसभ्यजनलक्षणोपदेशः—सभापति और सभासदों के लक्षणों का उपदेश ॥

स्वादोरित्या विषुवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यैः । या इन्द्रेण सयावरीवृष्णा मदन्ति शोभसे वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ १ ॥

स्वादोः । इत्या । विषु-वतः । मध्वः । पिबन्ति । गौर्यैः ॥

याः । इन्द्रेण । स-यावरीः । वृष्णा । मदन्ति । शोभसे ।

वस्वीः । अनु । स्व-राज्यम् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इत्या) इस प्रकार (स्वादोः) स्वादु (विषुवतः) बहुत फैलाव वाले (मध्वः) ज्ञान का (गौर्यैः) वे उद्योग करने वाली प्रजायें (पिबन्ति) पान करती हैं, (याः) जो [प्रजायें] (वृष्णा) बलवान् (इन्द्रेण) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले सभापति] के साथ (सयावरीः) मिलकर चलने वाली, (वस्वीः) बसने वाली [प्रजायें] (स्वराज्यम् अनु) स्वराज्य [अपने राज्य] के पीछे (शोभसे) शोभा पाने के लिये (मदन्ति) प्रसन्न होती हैं ॥ १ ॥

१—(स्वादोः) स्वादयुक्तस्य (इत्या) अनेन प्रकारेण (विषुवतः) व्याप्तिर्युक्तस्य (मध्वः) मधुनः । ज्ञानस्य (पिबन्ति) पानं कुर्वन्ति (गौर्यैः) गुरो उद्यमे—घञ् । षिद्गौरादिभ्यश्च । पा० ४ । १ । ४१ । इति ङीष् । गौरी रोचतेर्ज्वलतिकर्मणोऽयमपीतरो गौरी वर्ण एतस्मादेव प्रशस्यो भवति—निरु० ११ । ३६ । उद्यमयुक्ताः प्रजाः (याः) (इन्द्रेण) परमैश्वर्यवता सभापतिना (सयावरीः) आतो मनिन्० । पा० ३ । २ । ७४ । या प्रापणे—वनिप् । वनो रच । पा० ४ । १ । ७ । ङीवरेफो । सहगच्छस्यः (वृष्णा) बलवता (मदन्ति) हृष्यन्ति (शोभसे) शोभार्थम् (वस्वीः) शृश्वस्तिहिन्नप्यसिबसि० । उ० १ । १० । वस निवासे—उप्रत्ययः । वेतो गुणवचनात् । पा० ४ । १ । ४४ । इति ङीष् । वासकारिण्यः प्रजाः (अनु) अनुलक्ष्य (स्वराज्यम्) स्वकीय-राष्ट्रम् ॥

भावाय—जिस राज्य में सभापति और सभासद लोग आपस में मिलकर उत्तम ज्ञान के साथ प्रजा के उपकार का प्रयत्न करते हैं, वहां आनन्द बढ़ता है ॥ १ ॥

यह तृच ऋग्वेद में है—१। ८४। १०-१२; सामवेद—उ० ३। २। तृच १५; म० १ साम—पू० ५। ३। १ ॥

ता अस्य पृश्नयुवः सोमं श्रियन्ति पृश्नयः । प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सायकं वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ २ ॥

ताः । अस्य । पृश्नु-युवः । सोमम् । श्रियन्ति । पृश्नयः ॥
प्रियाः । इन्द्रस्य । धेनवः । वज्रम् । हिन्वन्ति । सायकम् ॥ २ ॥

भावाय—(अस्य) इस (इन्द्रस्य) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले सभापति] की (पृश्नयुवः) स्पर्श चाहती हुई और (पृश्नयः) प्रश्न करती हुई (ताः) वे [प्रजायें] (सोमम्) सोम [तत्त्व रस] को (श्रियन्ति) परिष्कृत करती हैं । (प्रियाः) प्रीति करती हुई, (धेनवः) गौओं के समान दूध करने वाली (वस्वीः) बसने वाली [प्रजायें] (स्वराज्यम् अनु) स्वराज्य [अपने राज्य] के पीछे (वज्रम्) वज्र और (सायकम्) बाण को (हिन्वन्ति) बढ़ाती हैं [छोड़ती हैं] ॥ २ ॥

भावाय—जैसे गौयें अपने रक्तक पुरुष से अन्न घास आदि पाकर उस को दूध से दूध करती हैं, वैसे ही प्रजागण वीर सभापति राजा से सुरक्षित रहकर स्वराज्य पाकर सहाय करें ॥

२—(ताः) (अस्य) (पृश्नयुवः) सलोपः । स्पर्शनकामाः (सोमम्) तत्त्वरसम् (श्रियन्ति) पचन्ति (पृश्नयः) घृणिपृश्निपार्णि० । उ० ४ । ५२ । प्रह्व जिज्ञासायाम्—ति । जिज्ञासमानाः, (प्रियाः) प्रीतिकारिण्यः (इन्द्रस्य) परमैश्वर्यवतः सभाध्यक्षस्य (धेनवः) गावो यथा तर्पयिष्यः (वज्रम्) आयधुम् (हिन्वन्ति) प्रेरयन्ति (सायकम्) शरम् । अन्यत् पूर्ववत् ॥

ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसुः । व्रतान्यस्य
सशिचरे पुरुणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ ३ ॥

ताः । अस्य । नमसा । सहः । सपर्यन्ति । प्रचेतसः ॥ व्रतानि ।
अस्य । सशिचरे । पुरुणि । पूर्वचित्तये । वस्वीः । अनु ।
स्व-राज्यम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(प्रचेतसः) उत्तम ज्ञान वाली (ताः) वे [प्रजायें]
(नमसा) आदर के साथ (अस्य) उस [सभापति] के (सहः) बल के
(सपर्यन्ति) सेवन करती हैं । (वस्वीः) बसने वाली [प्रजायें] (स्व-
राज्यम् अनु) स्वराज्य [अपने राज्य] के पीछे (पूर्वचित्तये) पूर्वजों का ।
ज्ञान पाने के लिये (अस्य) इस [सभापति] के (पुरुणि) बहुत से (व्रतानि)
नियमों को (सशिचरे) प्राप्त होती हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग स्वराज्य के साथ साथ राजधर्म को मानकर
प्रजा को शान्त रखें ॥ ३ ॥

शुक्तम् ११० ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥

विद्वत्कर्तव्योपदेशः—विद्वानों के कर्तव्य का उपदेश ॥

इन्द्राय मद्भवे सुतं परि स्तोभन्तु नो गिरः । अर्कमर्चन्तु
कारवः ॥ १ ॥

इन्द्राय । मद्भवे । सुतम् । परि । स्तोभन्तु । नः । गिरः ॥
अर्कम् । अर्चन्तु । कारवः ॥ १ ॥

३—(ताः) प्रजाः (अस्य) सभापतेः (नमसा) सत्कारेण (सहः)
बलम् (सपर्यन्ति) सेवन्ते (प्रचेतसः) प्रकृष्टज्ञानवत्यः (व्रतानि) नियमान्
(अस्य) (सशिचरे) सश्व गतौ । गच्छन्ति । प्राप्नुवन्ति (पुरुणि) बहूनि
(पूर्वचित्तये) चित्तां संज्ञाने—क्तिन् । पूर्वेषां ज्ञानप्राप्तये । अन्यत् पूर्ववत् ॥

भाषार्थ—(मन्त्रे) आनन्द कारी (इन्द्राय) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले मनुष्य] के लिये (नः) हमारी (गिरः) वाणियां (सुतम्) निचोड़े हुये तत्त्व रस का (परि) सब प्रकार (स्तोमन्तु) आदर करें और (कारवः) काम करने वाले लोग (अर्कम्) उस पूजनीय का (अर्चन्तु) आदर करें ॥ १ ॥

भाषार्थ—जो मनुष्य विद्वानों के उत्तम सिद्धान्तों को माने, लोग सदा उस का आदर करें ॥ १ ॥

यह तृच ऋग्वेद में है—८। ६२ [लायण भाष्य ८१]। १६—२१, साम-वेद—उ० १। २। तृच ४; म० १ साम०—पू० २। ७। ४ ॥

यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सुप्त संसदः । इन्द्रं सुते हवामहे ॥ २ ॥

यस्मिन् । विश्वाः । अधि । श्रियः । रणन्ति । सुप्त । सुप्त-सदः ॥ इन्द्रं । सुते । हवामहे ॥ २ ॥

भाषार्थ—(यस्मिन्) जिस [पुरुष] में (सप्त) सात (संसदः) मिलकर बैठने वाले [अर्थात् त्वचा, नेत्र, कान, जिह्वा, वाक्, मन और बुद्धि] (विश्वाः) सब (श्रियः) सम्पत्तियों को (अधि) अधिकार पूर्वक (रणन्ति) पाते हैं, (इन्द्रम्) उस इन्द्र [महाप्रतापी मनुष्य] को (सुते) सिद्ध किये तत्त्व रस में (हवामहे) हम बुलाते हैं ॥ २ ॥

भाषार्थ—जो मनुष्य इन्द्रियों को वश करके सब सम्पत्तियां प्राप्त करे, वह सब का माननीय होवे ॥ २ ॥

१—(इन्द्राय) परमैश्वर्यवते मनुष्याय (मन्त्रे) माद्यते—कनिष् । आनन्दकाय (सुतम्) संस्कृतं तत्त्वरसम् (परि) सर्वतः (स्तोमन्तु) स्तो-भतिरर्चतिकर्मा—निघ० ३। १४। सत्कुर्वन्तु (नः) अस्माकम् (गिरः) वाणयः (अर्कम्) अर्चनीयम् (अर्चन्तु) पूजयन्तु (कारवः) कर्मकर्तारः ॥

२—(यस्मिन्) इन्द्रे (विश्वाः) सर्वाः (अधि) अधिकृत्य (श्रियः) सम्पत्तौः (रणन्ति) गच्छन्ति । प्राप्नुवन्ति (सप्त) सप्तसंख्याकाः (संसदः) परस्परस्थितिशीलाः—त्वचानेत्रभ्रोत्रजिह्वावाग्नोबुद्धयः (इन्द्रम्) तं महा-प्रतापिनं मनुष्यम् (सुते) निष्पादिते तत्त्वरसे (हवामहे) आह्वयामः ॥

यजुर्वेद ३४ । ५५ में आया है—(सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे) सात ऋषि [अर्थात् त्वचा, नेत्र, कान, जिह्वा, वाक्, मन और बुद्धि] शरीर में रखे हुये हैं ॥

त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमन्नत । तमिह वर्धन्तु नो गिरः३
त्रि-कद्रुकेषु । चेतनम् । देवासः । यज्ञम् । अन्नत ॥ तम् ।
इत् । वर्धन्तु । नः । गिरः ॥ ३ ॥

भाष्यार्थ—(देवासः) विद्वानों ने (त्रिकद्रुकेषु) तीन [शारीरिक, आत्मिक, और सामाजिक उन्नतियों के] विधानों में (चेतनम्) चेताने वाले (यज्ञम्) यज्ञ [देवपूजा, संगति करण और दान] को (अन्नत) फैलाया है । (तम् इत्) उस ही [यज्ञ] को (नः) हमारी (गिरः) विद्याये (वर्धन्तु) बढ़ावे ॥ ३ ॥

भाष्यार्थ—मनुष्य विद्वान् पूर्वज महात्माओं के समान विद्या प्राप्त करके शारीरिक, आत्मिक और समाजिक उन्नति करें ॥ ३ ॥

सूक्तम् १११ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृदुष्णिक, २, ३ उष्णिक ॥

मनुष्यकर्तव्योपदेशः—मनुष्य के कर्तव्य का उपदेश ॥

यत् सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्तये । यद्वा
सुखत्सु मन्दसे समिन्दुभिः ॥ १ ॥

यत् । सोमम् । इन्द्र । विष्णवि । यत् ॥ वा घ । त्रिते ।
आप्तये ॥ यत् । वा । सुखत्-सु । मन्दसे । सम् । इन्दु-भिः ॥ १ ॥

३—(त्रिकद्रुकेषु) अथ० २० । ६५ । १ तिसृणां शारीरिकात्मिकसामा-
जिकवृद्धीनां कद्रुकेषु आह्वानेषु विधानेषु (चेतनम्) ज्ञानसाधनम् (देवासः)
विद्वान्सः (यज्ञम्)-देवपूजासंगतिकरणदानव्यवहारम् (अन्नत) अतन्वत ।
विस्तारितवन्तः (तम् इत्) तमेव यज्ञम् (वर्धन्तु) वर्धयन्तु (नः) अस्माकम्
(गिरः) त्रिविधविद्याः ॥

यद्वा शक्र परावति समुद्रे अधि मन्दसे । अस्माकमित् सुते
रणा समिन्दुभिः ॥ २ ॥

यत् । वा । शक्र । परा-वति । समुद्रे । अधि । मन्दसे ॥
अस्माकम् । इत् । सुते । रण । सम् । इन्दु-भिः ॥ २ ॥

यद्वासि सुन्वतो वृधो यजमानस्य सत्पते । उक्थे वा यस्य
रणसि समिन्दुभिः ॥ ३ ॥

यत् । वा । असि । सुन्वतः । वृधः । यजमानस्य । सुत्-पते ॥
उक्थे । वा । यस्य । रणसि । सम् । इन्दु-भिः ॥ ३ ॥

भाषार्य—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले मनुष्य] (यत्) जब
(घ) निश्चय करके (यत् वा) अथवा (आप्त्ये) आप्तों [यथार्थ वक्ताओं]
के हितकारी, (त्रिते) तीनों लोकों में फैले हुये (विष्णवि) विष्णु [व्यापक
परमात्मा] में, (यत् वा) अथवा (मरुत्सु) शूर विद्वानों में (इन्दुभिः)
ऐश्वर्य व्यवहारों के साथ (सोमम्) सोम [तत्त्वरस] को (सम्)
ठीक ठीक (मन्दसे) तू प्राप्त होता है ॥ १ ॥ (शक्र) हे शक्तिमान् ! (मनुष्य)
(यत् वा) अथवा (परावति) बहुत दूर वाले (समुद्रे) समुद्र [जलनिधि
वा आकाश] में (अधि) अधिकार पूर्वक (इन्दुभिः) ऐश्वर्य व्यवहारों
के साथ [तत्त्वरस को] (सम्) ठीक ठीक (मन्दसे) तू हर्ष युक्त करता

१—(यत्) यदा (सोमम्) तत्त्वरसम् (इन्द्र) हे परमैश्वर्यवान् मनुष्य
(विष्णवि) विष्णौ । व्यापके परमात्मनि (यत् वा) अथवा (घ) निश्चयेन
(त्रिते) अथ० ५ । १ । १ । त्रि+तनु विस्तारे—इप्रत्ययः । त्रिषु लोकेषु विस्तृते
(आप्त्ये) आप्तानां यथार्थवक्तृणां हिते (यत् वा) अथवा (मरुत्सु) शूर-
विद्वत्सु (मन्दसे) मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु । गच्छसि ।
प्राप्तोषि (सम्) सम्यक् (इन्दुभिः) ऐश्वर्यव्यवहारेः ॥

२—(यत् वा) अथवा (शक्र) हे शक्तिमान् (परावति) दुरगते
(समुद्रे) जलनिधौ । आकाशे (अधि) अधिकृत्य (मन्दसे) म० १ । मोदे-
यसि । आनन्दयसि (अस्माकम्) (इत्) एव (सुते) संस्कृते तत्त्वरसे

है, (सत्पते) हे सत्पुरुषों के स्वामी ! (यत् वा) जब कि तू (सुन्वतः) उस तत्त्व रस निचोड़ने वाले (यजमानस्य) यजमान का (वृधः) बढ़ाने वाला (असि) है, (यस्य) जिस [यजमान] के (उक्थे) वचन में (वा) निश्चय करके (इन्दुभिः) ऐश्वर्य व्यवहारों के साथ (सम्) ठीक ठीक (रण्यसि) तू उपदेश करता है, [तव] (अस्माकम् इत्) हमारे भी (सुते) सिद्ध किये हुये तत्त्व रस में (रण) उपदेश कर ॥ २, ३ ॥

भाषार्थ—मनुष्य तत्त्व रस की प्राप्ति से परमात्मा की आज्ञा पालता हुआ, तथा समष्टि रूप से सब मनुष्यों का और व्यष्टि रूप से प्रत्येक मनुष्य का ऐश्वर्य बढ़ाता हुआ उन्नति करके सदा धर्म का उपदेश करे ॥ २—३ ॥

यह तुल्य ऋग्वेद में है— ८। १२। १६—१८; म० १ सामवेद—पू० ७।

१०। ४ ॥

सूक्तम् ११२ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृद् गायत्री; २, ३ गायायत्री ॥

मनुष्यकर्तव्योपदेशः—मनुष्य के कर्तव्य का उपदेश ॥

यद्दुद्य कच्च वृत्रहनुदगा अभिसूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥ १ ॥

यत् । अद्य । कत् । च । वृत्र-हन् । उत्-अगाः । अभि ।

सूर्य ॥ सर्वम् । तत् । इन्द्र । ते । वशे ॥ १ ॥

भाषार्थ—(वृत्रहन्) हे शत्रु नाशक ! (सूर्य) हे सूर्य ! [सूर्य के समान सर्वप्रेरक] (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] (अद्य)

(रण) शब्दय । उपदिश (सम्) सम्यक् (इन्दुभिः) ऐश्वर्यव्यवहारैः ॥

३—(यत् वा) अथवा (असि) (सुन्वतः) तत्त्वरसं निष्पादयतः पुरुषस्य (वृधः) वर्धयिता (यजमानस्य) (सत्पते) सतां पालक (उक्थे) वचने (वा) अवधारणे (यस्य) यजमानस्य (रण्यसि) उपदिशसि (सम्) सम्यक् (इन्दुभिः) ऐश्वर्यव्यवहारैः ॥

१—(यत्) वस्तु (अद्य) (कत् च) किमपि (वृत्रहन्) शत्रुनाशक (उदगाः) इत्यु गतौ—लुङ् । उदिनवानभि (अभि) प्रति (सूर्य) सूर्यवत्प्रेरक

आज (यत् कत् च अभि) जिस किसी वस्तु पर (उदगाः) तू उदय हुआ है, (तत्) वह (सर्वम्) सब (ते) तेरे (वशे) वश में है ॥ १ ॥

भाषार्थ—मनुष्य विद्या और पराक्रम से संसार में सूर्य के समान प्रकाशमान होकर सब पदार्थों का तत्त्व जानकर उनको उपयोगी बनावे ॥ १ ॥

यह त्वच ऋग्वेद में है—८। ६३ [सायण भाष्य ८२]। ४—६; म० १ यजुर्वेद—३३। ३५; सामवेद—पू० २। ४। २ ॥

यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न मरु इति मन्यसे । उतो तत् सत्यमित् तव ॥ २ ॥

यत् । वा । प्र-वृद्ध । सत्-पते । न । मरु । । इति । मन्यसे ॥
उतो इति । तत् । सत्यम् । इत् । तव ॥ २ ॥

भाषार्थ—(प्रवृद्ध) हे बड़े हुये (सत्पते) सत्पुरुषों के रक्षक । [पुरुष] (वा) और (यत्) जो (इति) ऐसा (मन्यसे) तू मानता है—(न मरु) मैं न मरु, (उतो) सो (तत्) वह (तव) तेरा [वचन] (सत्यम्) सत्य (इत्) ही [होवे] ॥ २ ॥

भाषार्थ—मनुष्य प्रयत्न कर के सत्पुरुषों की रक्षा करते हुये धर्म में प्रवृत्त रहकर अपना नाम बनाये रखे ॥ २ ॥

ये सोमांसः पुरावति ये अर्वावति सुन्विरे । सर्वान्तां इन्द्र गच्छसि ॥ ३ ॥

ये । सोमांसः । पुरा-वति । ये । अर्वा-वति । सुन्विरे ॥
सर्वान् । तान् । इन्द्र । गच्छसि ॥ ३ ॥

(सर्वम्) (तत्) वस्तु (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् मनुष्य (ते) तव (वशे) अधीनस्वे ॥

२—(यत्) यदि (वा) च (प्रवृद्ध) प्रवर्धमान (सत्पते) सत्तां पालक (न) निषेधे- (मरु) अहं म्रिये (इति) एवम् (मन्यसे) बुध्यसे (उतो) अपि च (तत्) वचनम् (सत्यम्) यथार्थम् (इत्) एव (तव) ॥

सू० ११३ [७०९] विंश काण्डम् ॥ २० ॥ (४,४०९)

भाषार्थ—(ये) जो (सोमासः) सोम रस [तत्त्व रस] (परावति) दूर देश में और (ये) जो (अर्वावति) समीप देश में (सुन्विरे) निचाड़े गये हैं । (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] (तान् सर्वान्) उन सब को (गच्छसि) तू प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

भावार्थ—मनुष्य को चाहिये कि पुरुषार्थ करके दूर और समीप अर्थात् सब स्थान में उत्तम धिया प्राप्त कर के ऐश्वर्य बढ़ावे ॥

यह मन्त्र सामवेद में कुछ भेद से है—उ० ४ । २ । ११ ॥

सूक्तम् ११३ ॥

१—२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृद् बृहती, २ सतः बृहती ॥

राजधर्मोपदेशः—राजा के धर्म का उपदेश ॥

उभयं शृण्वच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः । सुत्राच्या मघवा
सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत् ॥ १ ॥

उभयम् । शृण्वत् । च । नुः । इन्द्रः । अर्वाक् । इदम् ।
वचः ॥ सुत्राच्या । मघ-वा । सोम-पीतये । धिया । शविष्ठः ।
आ । गमत् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला राजा] (उभयम्) दो प्रकार से [शत्रुओं पर दण्ड और भक्तों पर अनुग्रह करने से] (नः) हमारे (इदम्) इस (अर्वाक्) वर्तमान (वचः) वचन को (च) निश्चय करके (शृण्वत्) सुने, (मघवा) महाधनी और (शविष्ठः) महाबली

२—(ये) (सोमासः) तत्त्वरसाः (परावति) दूरदेशे (ये) (अर्वा-
वति) समीपदेशे (सुन्विरे) सुनोते; कर्मणि लिट् । अभिषुता बभूवुः (सर्वान्)
(तान्) सोमान् (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् पुरुष (गच्छसि) प्राप्नोषु ॥

१—(उभयम्) द्विप्रकारं शत्रुनिग्रहं भक्तानुग्रहं च (शृण्वत्) शृणुयात्
(च) अवधारणे (नः) अस्माकम् (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् राजा (अर्वाक्)
अभिमुखम् (इदम्) (वचः) वचनम् (सुत्राच्या) सत्यगतिवत्या (मघवा)

[राजा] (सोमपीतये) सोम [तत्त्व रस] पीने के लिये (सत्राच्या) सत्य गति वाली (धिया) बुद्धि के साथ (आ गमात्) आवे ॥ १ ॥

भाषार्थ—राजा धन की पूर्णता और पराक्रम की उपयोगिता से शत्रुओं को मिटाकर और राज भक्तों को बढ़ाकर श्रेष्ठ कर्म करता रहे ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—८ । ६१ [सायण भाष्य ५०] । १—२; सामवेद—३० ५ । १ । १४; म० १ साम० पू० ३ । १० । ८ ॥

तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसे धिषणे निष्टतक्षतुः ।

उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते मनः ॥ २ ॥

तम् । हि । स्व-राजम् । वृषभम् । तम् । ओजसे । धिषणे
इति । निः-तुतक्षतुः ॥ उत । उप-मानां । प्रथमः । नि ।

षीदसि । सोम-कामम् । हि । ते । मनः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(तम् हि) उस ही [तुम्ह] (स्वराजम्) स्वराजा को, (तम्) उस ही [तुम्ह] (वृषभम्) बलवान् को (ओजसे) पराक्रम के लिये (धिषणे) दोनों सूर्य और भूमि ने (निष्टतक्षतुः) बना दिया है। (उत) और (उपमानाम्) समीप वालों का भी (प्रथमः) पहिला [मुख्य] होकर (नि षीदसि) तू बैठता है, (हि) क्योंकि (ते) तेरा (मनः) मन (सोमकामम्) पेश्वर्य का चाहने वाला है ॥ २ ॥

महाधनी (सोमपीतये) तत्त्व रसस्य पानाय (धिया) प्रज्ञया (शविष्ठः) अतिशयेन बलवान् (आ गमात्) आगच्छतु ॥

२—(तम्) तादृशं त्वाम् (हि) एष (स्वराजम्) स्वयमेव राजानम् (वृषभम्) बलवन्तम् (तम्) (ओजसे) पराक्रमाय (धिषणे) अथ० २० । ६४ । ८ । सूर्यभूमिलोकौ (निष्टतक्षतुः) संवत्सरतुः (उत) अपि च (उपमानाम्) समीपस्थानाम् (प्रथमः) मुख्यः (नि षीदसि) उपविशसि (सोमकामम्) पेश्वर्यं कामयमानम् (हि) यस्मात् कारणत् (ते) तव (मनः) अन्तःकरणम् ॥

भावार्थ—राजा सूर्य के समान तेजस्वी और पृथिवी के समान सहन शील होकर अपने पराक्रम से ऐश्वर्य बढ़ावे ॥ २ ॥

सूक्तम् ११४ ॥

१—२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृदुष्णिक; २ विराडाधी पङ्क्तिः ॥

परमेश्वरगुणोपदेशः—परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र सनादसि । युधेदापित्वमि-
च्छसे ॥ १ ॥

अभ्रातृव्यः । अना । त्वम् । अनापिः । इन्द्र । जुनुषा ।
सनात् । असि ॥ ॥ युधा । इत् । आपि-त्वम् । इच्छसे ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमेश्वर] (त्वम्)
तू (जुनुषा) जन्म से (सनात्) सदा (अभ्रातृव्यः) बिना बैरी वाला, (अना)
बिना नेता वाला और (अनापिः) बिना बन्धु वाला (असि) है, (युधा) युद्ध में
(हि) ही [हमारे साथ संग्राम होने पर ही] (आपित्वम्) बन्धुपन [हमारे
लिये सहायता] (इच्छसे) तू चाहता है ॥ १ ॥

भावार्थ—अनादि, अद्वितीय परमात्मा अपने धर्मात्मा भक्तों को सदा
संकट से छुड़ाता है ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—८। २१ । १३, १४, सामवेद, उ० ६। २। ४।
म० १ सा० पू० ५। २। १ ॥

नकी रेवन्तं सुख्यायं विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः ।

यदा कृणोषि नदनुं समुहस्यादित् पितेव हूयसे ॥ २ ॥

नकिः । रेवन्तम् । सुख्यायं । विन्दसे । पीयन्ति । ते । सुरा-

१—(अभ्रातृव्यः) अ० २। १८ । १ । शत्रुरहितः (अना) अनेतृकः
(त्वम्) (अनापिः) बन्धुवर्जितः (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (जुनुषा)
जन्मना (सनात्) चिरादेव (असि) (युधा) विभक्तेराकारः । अस्माभिः
सह युद्धे (इत्) पक्ष (आपित्वम्) बन्धुत्वम् (इच्छसे) कामयसे ॥

श्वः ॥ यदा । कृणोषि । नदनुम् । सम् । ऊहसि । आत् ।
इत् । पिता-इव । ह्युसे ॥ २ ॥

भाषार्थ—[हे परमात्मन् !] (रेवन्तम्) [उस] बड़े धनवान् को (सख्याय) अपनी मित्रता के लिये (नकिः) कभी नहीं (विन्दसे) तू मिलता है, (सुराश्वः) [जो] मदिरा से बढ़ा हुआ [उन्मत्त पागल मनुष्य] (ते) तेरी (पीयन्ति) हिंसा करता है । (यदा) जब तू (नदनुम्) गर्जन (कृणोषि) करता है और (सम्) यथावत् (ऊहसे) तू विचार करता है, (आत् इत्) तभी (पिता इव) पिता के समान (ह्युसे) तू बुलाया जाता है ॥ २ ॥

भावार्थ—परमात्मा दुराचारी नास्तिक बड़े धनी को भी जब तच्छ कर देता है, तब वह अभिमानी उस परमात्मा की महिमा को साक्षात् करता है ॥ २ ॥

सूक्तम् ११५ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥

परमेश्वरगुणोपदेशः—परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

अहमिद्धि पितुर्परि मेधामृतस्य जुग्रभं । अहं सूर्यं इवाजनिः
अहम् । इत् । हि । पितुः । परि । मेधाम् । ऋतस्य ।
जुग्रभं ॥ अहम् । सूर्यः-इव । अजुनि ॥ १ ॥

भाषार्थ—(अहम्) मैं ने (पितुः) पिता [परमेश्वर] से (इत् हि)

२—(नकिः) न कदापि (रेवन्तम्) बहुधनवन्तम् (सख्याय) सखि-
भाषाय (विन्दसे) त्वं लभसे (पीयन्ति) एकवचनस्य बहुवचनम् । पीयति ।
हिंसां करोति (ते) तव (सुराश्वः) सरा + दुश्चो शिव गतिवृद्ध्योः—उप्रत्ययः ।
सुरया मदिरया वृद्धः । प्रमत्तः । नास्तिकः (यदा) कृणोषि । करोषि (नद-
नुम्) अनुङ् नदेश्च । ८० ३ । ५२ । एद अव्यक्ते शब्दे—अनुङ् । गर्जनम् ।
संग्रामम्—निघ० २ । १७ (सम्) सम्यक् (ऊहसि) धितर्कयसि (आत्)
अनन्तरम् (इत्) एव (पिता) (इव) (ह्युसे) आह्वयसे ॥

१—(अहम्) मनुष्यः (इत्) एव (हि) अवश्यम् (पितुः) पालकात्

अवश्य करके (ऋतस्य) सत्य वेद ही (मेधाम्) धारणावती बुद्धिं (परि) सब प्रकार (जग्रभ) पाई है, (अहम्) मैं (सूर्यः इव) सूर्य के समान (अजनि) प्रसिद्ध हुआ हूँ ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमात्मा के दिये वेद ज्ञान को ग्रहण कर के संसार में सूर्य के समान विद्या का प्रकाश करें ॥ १ ॥

यह तृच ऋग्वेद में है—८। ६। १०-१२, सामवेद ७। १। १ तृच ५; म० १ सा० पू० २। ६। ८ ॥

अहं प्रत्नेन मन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत् । येनेन्द्रः शुष्म-
मिद् दधे ॥ २ ॥

अहम् । प्रत्नेन । मन्मना । गिरः । शुम्भामि । कण्व-वत् ॥
येन । इन्द्रः । शुष्मम् । इत् । दधे ॥ २ ॥

भाषार्थ—(अहम्) मैं (कण्ववत्) बुद्धिमान् के समान (प्रत्नेन) उस प्राचीन (मन्मना) ज्ञान से (गिरः) अपनी वाणिषों को (शुम्भामि) शोभित करता हूँ, (येन) जिस [प्राचीन ज्ञान] से (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] ने (शुष्मम्) बल (इत्) अवश्य (दधे) दिया है ॥ २ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमेश्वरीय ज्ञान वेद से सुशोभित होकर बलवान् होवे ॥ २ ॥

ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवर्चयो ये च तुष्टुवुः । ममेद् वर्धस्व

परमेश्वरात् (परि) सर्वथा (मेधाम्) धारणावती बुद्धिम् (ऋतस्य) सत्य-
ज्ञानस्य (जग्रभ) हस्य भः । अहं जग्रह । गृहीतवानस्मि (अहम्) (सूर्यः)
(इव) (अजनि) अजनिषं प्रादुरभूवम् ॥

२—(अहम्) मनुष्यः (प्रत्नेन) प्राचीनेन (मन्मना) मननसाधनेन
ज्ञानेन (गिरः) वाणीः (शुम्भामि) अलं करोमि (कण्ववत्) मेधावी यथा
(येन) मन्मना (इन्द्रः) परमेश्वरः (शुष्मम्) बलम् (इत्) अवश्यम् (दधे)
दत्तवान् ॥

सुष्टुतः ॥ ३ ॥

ये । त्वास् । इन्द्र । न । तुस्तुवुः । ऋषयः । ये । च । तुस्तुवुः ।
मम । इत् । वर्धस्व । सु-स्तुतः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (ये)
जिन [नास्तिकों] ने (त्वाम्) तुझ को (न) नहीं (तुष्टुवुः) सराहा है,
(च) और (ये) जिन (ऋषयः) ऋषियों [ज्ञानी महात्माओं] ने (तुष्टुवुः)
सराहा है, [इन दोनों में] (सुष्टुतः) अच्छे प्रकार स्तुति किया हुआ तू
(मम) मेरी (इत्) भी (वर्धस्व) वृद्धि कर ॥ ३ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमात्मा की भक्ति करके ऐसे प्रिय आचरण करें
कि नास्तिक भी आस्तिक हों और वेदज्ञानी आस्तिक रह कर उपकार करें ॥ ३ ॥

सूक्तम् ११६ ॥

१—२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृदाषीं बृहती; २ विराडाषीं बृहती ॥

राजकर्मोपदेशः—राजा के कर्म का उपदेश ॥

मा भूम निष्ठ्या इवेन्द्र त्वदरणा इव । वनानि न प्रजहि-
तान्यद्रिवो दुरोषासो अमन्महि ॥ १ ॥

मा । भूम । निष्ठ्याः-इव । इन्द्र । त्वत् । अरणाः-इव ॥
वनानि । न । प्र-जुहितानि । अद्रि-वः । दुरोषासः । अम-
न्महि ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (त्वत्)
तुझ से [अलग होकर] (निष्ठ्याः इव) वर्ण सङ्कर नीचों के

३—(ये) नास्तिकाः (त्वाम्) (इन्द्र) परमेश्वर (न) निषेधे
(तुष्टुवुः) स्तुतवन्तः (ऋषयः) साक्षात्कृतधर्माणिः (ये) (च) समुच्चये
(तुष्टुवुः) स्तुतवन्तः (मम) (इत्) एवं (वर्धस्व) वृद्धिं कुरु (सुष्टुतः)
शोभनं स्तुतः सन् ॥

१—(मा भूम) न भवेम (निष्ठ्याः) अथ० १ । १६ । ३ । निस—त्यप्
गतार्थो निर्गता वर्णधर्मस्थः । चाण्डालाः । वर्णसङ्कराः (इव) (इन्द्र)

सू० ११६ [७०४] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥ (४,४०७)

समान और (अरणाः इव) न बाल करने योग्य शत्रुओं के समान और (प्रजहितानि) छोड़ दिये गये (वनानि न) वृत्तों के समान (मा भूम) हम न हों, (अद्रिवः) हे वज्रधारी । (दुरोषासः) न जल सकने वाले वा न मर सकने वाले [अर्थात् जीते हुये, प्रबल] (अमन्महि) हम समझे जायें ॥ १ ॥

भाषार्थ—राजा प्रजा की रक्षा करके उसको प्रबल और मित्र बनाये रखे, जैसे माली वृत्तों को सींचकर उपयोगी बनाता है ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—८।१।१३, १४ ॥

अमन्महीदनाशवोऽनुग्रासश्च वृत्रहन् । सुकृत् सु ते महता
शूर राधसानु स्तोमं मुदीमहि ॥ २ ॥

अमन्महि । इत् । अनाशवः । अनुग्रासः । च । वृत्र-हन् ॥
सुकृत् । सु । ते । महता । शूर । राधसा । अनु । स्तोमम् ।
मुदीमहि ॥ २ ॥

भाषार्थ—(वृत्रहन्) हे शत्रुनाशक ! [राजन्] (अनाशवः) अन-
फुरतीले (च) और (अनुग्रासः) अनतेज (इत्) ही (अमन्महि) हम जाने
गये हैं । (शूर) हे शूर ! (ते) तेरे (महता) बड़े (राधसा) धन से (स्तो-
मम् अनु) बड़ाई के साथ (सुकृत्) एक बार (सु) भले प्रकार (मुदीमहि)
हम आनन्द पायें ॥ २ ॥

परमैश्वर्यवान् राजन् (त्वत्) त्वत्तः (अरणाः) रण शब्दे—अप् । असंभा-
षणीयाः । शत्रवः (इव) (वनानि) वृत्तजातानि (न) इव (प्रजहितानि)
ओहाक् त्यागे—क्त । शास्त्रादिभिः परित्यक्तानि । प्रवीणानि (अद्रिवः) हे
वज्रवन् (दुरोषासः) उष दाहे हिंसे च—घञ्, असुक् । ओषितुं दग्धुं हिंसितुं
वा अशक्याः । जीवन्तः प्रबलाः (अमन्महि) मन जाने लिङ्गर्थे लुङ् । जाता भवेम ॥

२—(अमन्महि) म० १ । जाता अभूम (इत्) एवं (अनाशवः) अशीघ्राः,
अत्वरमाणाः (अनुग्रासः) अनुग्राः । निस्तेजसः (च) (वृत्रहन्) शत्रुनाशक
राजन् (सुकृत्) एकवारम् (सु) (ते) तव (महता) प्रभूतेन (शूर) (राधसा)
धनेने (अनु) अनुलक्ष्य (स्तोमम्) स्तुत्यं गुणम् (मुदीमहि) आनन्देम ॥

भाषार्थ—राजा को चाहिये कि प्रजा को निरालसी, उद्यमी और बलवान् बनाने के लिये राजकोश से धन का व्यय करे ॥ २ ॥

सूक्तम् ११७ ॥

१—३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृदार्षी पङ्क्तिः; २ भुरिगार्षी पङ्क्तिः; ३ विराड् गायत्री ॥

राजकर्तव्योपदेशः—राजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

पिब सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव ह्यश्वद्रिः ।

सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्षी ॥ १ ॥

पिब । सोमम् । इन्द्र । मन्दतु । त्वा । यम् । ते । सुषाव ।

हुरि-अश्व । अद्रिः ॥ सोतुः । बाहु-भ्याम् । सु-यतः । न ।

अर्षी ॥ १ ॥

भाषार्थ—(ह्यश्व) हे फुरतीले घोड़े वाले (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (सोमम्) सोम [तरव रस] का (पिब) पान कर; (त्वा) तुझ को (मन्दतु) वह [तरव रस] आनन्द देवे; (यम्) जिस को (ते) तेरे लिये (सुयतः) अच्छे सिंखाये हुये (अर्षी न) घोड़े के समान, (अद्रिः) मेघ [के तुल्य उपकारी पुरुष] ने (सोतुः) सार निकालने वाले की (बाहुभ्याम्) दोनों भुजाओं से (सुषाव) सिद्ध किया है ॥ १ ॥

भाषार्थ—जैसे अच्छा सधा हुआ घोड़ा अपने स्वामी को ठिकाने पर पहुँचाता है, वैसे ही विद्वानों के सिद्ध किये हुये तरव रस को ग्रहण करके राजा पराक्रमी होवे ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—७।२२।१—३; सामवेद—३०३।१।तृच १३; म० १ साम० पू० ५।१।८ ॥

१—(पिब) (सोमम्) तरवरसम् (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् राजन् (मन्दतु) आनन्दयतु (त्वा) (यम्) सोमम् (ते) तुभ्यम्, (सुषाव) निष्पादितवान् (ह्यश्व) हरयो हरणशीलाः प्रोपणशीला अशवा यस्य तत्सम्बुद्धौ (अद्रिः) मेघ इवोपकारी पुरुषः (सोतुः) अभिषवकर्तुः (बाहुभ्याम्) भुजाभ्यां द्वारा (सुयतः) सुशिक्षितः (न) नृप (अर्षी) अश्वः ॥

यस्ते सदी युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि । स
त्वामिन्द्र प्रभुवसो असत्तु ॥ २ ॥

यः । तेः । मदः । युज्यः । चारुः । अस्ति । येन । वृत्राणि ।
हरि-अश्व । हंसि ॥ सः । त्वाम् । इन्द्र । प्रभुवसो इति
प्रभु-वसो । अ-सत्तु ॥ २ ॥

भाषार्थ—(हर्यश्व) हे फुरतीले घोड़ों वाले ! (प्रभुवसो) हे समर्थ
बसाने वाले [वा बहुत धन वाले] (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्]
(यः) जो [तत्त्वरस] (ते) तेरे लिये (युज्यः) योग्य और (चारुः) सन्दर
(मदः) आनन्दकारी (अस्ति) है, और (येन) जिस [तत्त्वरस] से
(वृत्राणि) शत्रुदलों को (हंसि) तू मारता है, (सः) वह [तत्त्वरस]
(त्वाम्) तुझ को (असत्तु) आनन्द देवे ॥ २ ॥

भाषार्थ—राजा उचित उपायों से शत्रुओं को मारकर प्रजा का आनन्द
बढ़ावे ॥ २ ॥

बोधुः सु मे मघवन् वाचसेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रश-
स्तिम् । इमा ब्रह्मा सधुमादे जुषस्व ॥ ३ ॥

बोधः । सु । मे । मघ-वन् । वाचम् । आ । इमां । याम् ।
ते । वसिष्ठः । अर्चति । प्र-शस्तिम् ॥ इमां । ब्रह्मा । सधु-
मादे । जुषस्व ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(मघवन्) हे महाधनी राजन् ! (याम्) जिस (प्रशस्तिम्)

२—(यः) तत्त्वरसः (ते) तुभ्यम् (मदः) हर्षकरः (युज्यः) युज-कृप्
योग्यः (चारुः) समीचीनः (अस्ति) (येन) तत्त्वरसेन (वृत्राणि) शत्रु-
दलानि (हर्यश्व) म० १ । प्रापणशीलाश्चयुक्त (हंसि) नाशयसि (सः)
तत्त्वरसः (त्वाम्) (इन्द्र) परमैश्वर्यवन् राजन् (प्रभुवसो)- हे समर्थ-
वासयितः । बहुधन (ममत्तु) मादयतु । हर्षयतु ॥

३—(बोध) बुध्यस्व । जानीहि (सु) सुष्ठु (मे) मम (मघवन्) हे

उत्तम [वाणी] को (ते) तुझे (वसिष्ठः) वसिष्ठ [अति श्रेष्ठ विद्वान्]
 (अर्चति) समर्पण करता है, (मे) मेरी (इमाम्) इस (वाचम्) वाणी को
 (सु) भले प्रकार (आ) सामने से (बोध) तू समझ, और (इमा) इन
 (ब्रह्म) वेद वचनों का (सधमादे) मिलकर हर्षमानने के स्थान उत्सव में
 (जुषस्व) सेवन कर ॥ ३ ॥

भावार्थ—राजा को योग्य है कि बड़े बड़े विद्वानों की श्रेष्ठ वाणी और
 वेद वचनों को यथावत् मानकर उन्नति करे ॥

सूक्तम् ११८ ॥

१-४ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ३ निचूद् बृहती ॥ २ विराडाशी पङ्क्तिः ; ४
 भुरिगाशी पङ्क्तिः ॥

परमेश्वरोपासनोपदेशः—परमेश्वर की उपासना का उपदेश ॥

शुग्ध्यु ३ शु शचीपते इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।

भगं न हि त्वा युशसं वसुविदमनु शूर चरामसि ॥ १ ॥

शुग्धि । ऊं इति । सु । शुची-पते । इन्द्र । विश्वाभिः ।

ऊति-भिः ॥ भगम् । न । हि । त्वा । युशसम् । वसु-विदम् ।

अनु । शूर । चरामसि ॥ १ ॥

भाषार्थ—(शचीपते) हे वाणियों वा कर्मों के स्वामी (इन्द्र) इन्द्र !
 [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (विश्वाभिः) सब (ऊतिभिः) रक्षाओं के
 साथ (उ) निश्चय करके (सु) भले प्रकार (शुग्धि) शक्ति दे । (शूर) हे

धनवन् (वाचम्) वाणीम् (आ) आभिमुख्येन (इमाम्) (याम्) (ते)
 तुभ्यम् (वसिष्ठः) अतिशयेन वसुः श्रेष्ठो विद्वान् (अर्चति) समर्पयति
 (प्रशस्तिम्-) उत्तमाम् (इमा) इमानि (ब्रह्म) ब्रह्माण वेदज्ञानानि (सधमादे)
 सहहर्षस्थाने (जुषस्व) सेवस्व ॥

१—(शुग्धि) अ० १६ । १५ । १ । शकैर्लोद् । शक्तिं देहि (उ) निश्चयेन
 (सु) (शचीपते) अ० ३ । १० । १२ । हे शचीनां वाचां कर्मणां वा पालक
 (इन्द्र) परमैश्वर्यवन् परमात्मन् (विश्वाभिः) (ऊतिभिः) रक्षाभिः (भगम्)

शूर ! [परमेश्वर] (भगम् न) ऐश्वर्यवान् के समान (यशसम्) यशस्वी और (वसुविदम्) धन पहुंचाने वाले (त्वा हि अनु) तेरे ही पीछे (चरामसि) हम चलते हैं ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्य परमेश्वर की भक्ति के साथ उत्तम कर्म और बुद्धि करके यशस्वी और धनी होवे ॥ १ ॥

मन्त्र १, २ ऋग्वेद में हैं—= । ६१ [सायण भाष्य ५०] । ५, ६ ; साम-वेद ७० ७ । ३ । ३ ; म० १ सा० पू० ३ । ७ । १ ॥

पौरो अश्वस्य पुरुकृद् गवामस्युत्सो देव हिरण्ययः ।

नकिर्हि दानं परिमर्धिषत् त्वे यद्यद्यासि तदा भर ॥ २ ॥

पौरः । अश्वस्य । पुरु-कृत् । गवाम् । असि । उत्सः । देव ।

हिरण्ययः ॥ नकिः । हि । दानम् । परि-मर्धिषत् । त्वे इति ।

यत्-यत् । यामि । तत् । आ । भूर ॥ २ ॥

भावार्थ—(देव) हे देव ! [कामना योग्य परमेश्वर] तू (अश्वस्य) घोड़ों का (पौरः) भरपूर करने वाला, (गवाम्) गौओं का (पुरुकृत्) बहुत करने वाला, (हिरण्ययः) तेजोमय और (उत्सः) जल के स्रोत [कुये के समान उपकारी] (असि) है । (हि) क्योंकि (त्वे) तेरे (दानम्) दान को (नकिः) कोई भी नहीं (परिमर्धिषत्) नाश कर सकता, (यद्यत्) जो जो (यामि) मांगता हूं, (तत्) वह वह (आ भर) भर पूर कर ॥ २ ॥

ऐश्वर्यवन्तम् (न) इव (हि) एव (त्वा) (यशसम्) अर्शआद्यच् । यशस्वि-नम् (वसुविदम्) धनस्य लभकम् (अनु) अनुलक्ष्य (शूर) (चरामसि) गच्छामः ॥

२—(पौरः) पूर—अण् स्वार्ये । पूरः । पूरकः । पूरयिता (अश्वस्ये) अश्वसमूहस्य (पुरुकृत्) बहुकर्ता (गवाम्) धेनूनाम् (असि) (उत्सः) कूपतुल्य उपकारकः (देव) कमनीय परमात्मन् (हिरण्ययः) तेजोमयः (नकिः) न कश्चिदपि (हि) यतः (दानम्) (परिमर्धिषत्) मृध मृधु हिंसायाम् आर्द्राभावे च—लेट् । नाशयेत् (त्वे) (विभक्तेः शो । तव (यद्यत्) वस्तु (यामि) याचे (तत्) (आ) समन्तात् (भर) धर ॥

भावार्थ—मनुष्य परमेश्वर की सृष्टि में सब पदार्थों से उपकार लेकर सदा आनन्द पावे ॥ २ ॥

इन्द्रमिह देवतातये इन्द्रं प्रयत्यध्वरे । इन्द्रं समीके वृनिनो
हवामहे इन्द्रं धनस्य सातये ॥ ३ ॥

इन्द्रम् । इत् । देव-तातये । इन्द्रम् । प्र-यति । अध्वरे ॥
इन्द्रम् । सु-ई के । वृनिनः । हवामहे । इन्द्रम् । धनस्य ।
सातये ॥ ३ ॥

भावार्थ—(इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] को (इत्)
ही (देवतातये) दिव्य गुण फैलाने के लिये, (इन्द्रम्) इन्द्र [परमात्मा]-को
(प्रयति) प्रयत्न साथ (अध्वरे) बिना हिंसा वाले व्यवहार में, (इन्द्रम्)
इन्द्र [परमात्मा] को (समीके) युद्ध में, और (इन्द्रम्) इन्द्र [परमात्मा]
को (धनस्य) धन के (सातये) मिलने के लिये, (वृनिनः) शब्द करते हुये
हम (हवामहे) पुकारते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—मनुष्य अपने सब काम परमेश्वर को समर्पण करके पुण्यार्थ
के साथ आनन्द पावे ॥ ३ ॥

मन्त्र ३, ४ ऋग्वेद में हैं—म । ३ । ५, ६ ; सामवेद उ० ७ । ३ । ८ ; म० ३
सा० पू० ३ । ६ । ७ ॥

इन्द्रो मुहा रोदसी प्रयच्छव इन्द्रुः । सूर्यमरोचयत् । इन्द्रो
हु विश्वा भुवनानि येमिह इन्द्रो सुवामास इन्द्रवः ॥ ४ ॥

इन्द्रः । मुहा । रोदसी इति । प्रयच्छत् । शवः । इन्द्रः ।
सूर्यम् । अरोचयत् ॥ इन्द्रो । हु । विश्वा । भुवनानि ।

३—(इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं परमात्मानम् (इत्) एव (देवतातये)
दिव्यगुणानां विस्ताराय (इन्द्रम्) परमात्मानम् (प्रयति) अ० ७ । ६७ । १ ।
प्रयत्नसाध्ये (अध्वरे) हिंसारहिते व्यवहारे (इन्द्रम्) (समीके) अथ०
२० । ८६ । ४ । संग्रामे (वृनिनः) वन शब्दे—अच्, इनि । शब्दवन्तः (हवामहे)
आह्वयामहे (इन्द्रम्) (धनस्य) (सातये) लाभाय ॥

सू० ११८ [७७७] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥ (४, ४९३)

येमिरे । इन्द्रे । सुवानासः । इन्द्रवः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] ने (शवः) बल की (महा) महिमा से (रोदसी) आकाश और भूमि को (पप्रथत्) फैलाया है, (इन्द्रः) इन्द्र [परमात्मा] ने (सूर्यम्) सूर्य को (अरोचयत्) चमकाया है । (इन्द्रे) इन्द्र [परमात्मा] में (ह) ही (विश्वा) सब (भुवनानि) भुवन (येमिरे) ठहरे हैं, (इन्द्रे) इन्द्र [परमात्मा] में (सुवानासः) उत्पन्न होते हुये (इन्द्रवः) ऐश्वर्य हैं ॥ ४ ॥

भाषार्थ—जिस परमात्मा ने ब्रह्माण्ड के भीतर सब ऐश्वर्यवान् पदार्थ रचे हैं, मनुष्य उस की भक्ति से सब पदार्थों से उपकार लेकर उन्नति करें ॥ ४ ॥

सूक्तम् ११८ ॥

१—२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ पथ्या बृहती । २ सतः पङ्क्तिः ॥

परमेश्वरस्तुत्युपदेशः—परमेश्वर की स्तुति का उपदेश ॥

अस्तावि मन्म पुर्व्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत । पूर्वीऋतस्य बृहती-
रनुषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत ॥ १ ॥

अस्तावि । मन्म । पुर्व्यम् । ब्रह्म । इन्द्राय । वोचत ॥

पूर्वीः । ऋतस्य । बृहतीः । अनुषत । स्तोतुः । मेधाः ।

असृक्षत ॥ १ ॥

भाषार्थ—(पूर्व्यम्) पुराना (मन्म) ज्ञान (अस्तावि) स्तुति किया

४—(इन्द्रः) परमेश्वर्यवान् परमात्मा (महा) महिम्ना । महारवेन (रोदसी) आकाशभूमी (पप्रथत्) विस्तारितवान् (शवः) विभक्तेः सुः । शवसः । बलस्य (इन्द्रः) (सूर्यम्) प्रसिद्धम् (अरोचयत्) अदीपयत् (इन्द्रे) परमात्मनि (ह) एव (विश्वा) व्याप्तानि । सर्वाणि (भुवनानि) लोक-
जातानि (येमिरे) यम उपरमे—लिङ् । नियमिताः स्थापिता बभूवुः (इन्द्रे) (सुवानासः) सुयमानाः । उत्पद्यमानाः (इन्द्रवः) ऐश्वर्याणि ॥

१—(अस्तावि) स्तुतम् (मन्म) ज्ञानम् (पूर्व्यम्) पुरातनम् (ब्रह्म)

गया है, (इन्द्राय) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मा] के पाने के लिये (ब्रह्म) वेद वचन को (वोचत) तुम बोलो । (ऋतस्य) सत्य ज्ञान की (पूर्वीः) पहिली (वृद्धीः) बढ़ती हुई वाणियों की (अनूपत) उन्होंने ने [ऋषियों ने] स्तुति की है और (स्तोतुः) स्तुति करने वाले विद्वान् की (मेधाः) धारणावती बुद्धियाँ (असृजत) दी है ॥ १ ॥

भावार्थ—जिन वेद वाणियों को विचारकर ऋषि लोग सदा ज्ञानी होते हैं, उन्हीं वेद वाणियों को विचार कर मनुष्य अपना ज्ञान बढ़ावें ॥ १ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—२। ५२। ६ [साम्य भाष्य, अवशिष्ट, वाल-
खिल्य, सू० ४ म० ६] : सामवेद, उ० ८। २। ७ ॥

तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्रुतं विप्रासो अर्कमानृचुः ।

अस्मे रयिः पप्रथे वृण्यम् शवोऽस्मे सुव्रानास इन्दवः ॥ २ ॥

तुरण्यवः । मधु-मन्तम् । घृत-श्रुतम् । विप्रासः । अर्कम् ।

आनृचुः ॥ अस्मे इति । रयिः । पप्रथे । वृण्यम् । शवः ।

अस्मे इति । सुव्रानासः । इन्दवः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(तुरण्यवः) फुरतीले (विप्रासः) बुद्धिमानों ने (मधु-
मन्तम्) मधु [वेदविद्या] वाले (घृतश्रुतम्) प्रकाश के बरसाने वाले
(अर्कम्) पूजनीय परमात्मा को (आनृचुः) पूजा है । (अस्मे) हमारे
लिये (रयिः) धन, और (वृण्यम्) वीर के योग्य (शवः) बल (पप्रथे)

वेदवचनम् (इन्द्राय) परमेश्वरप्राप्तये (वोचत्) लोडर्थे लुङ् । ब्रूत यूयम्
(पूर्वीः) पूर्वकालीनाः (ऋतस्य) सत्यज्ञानस्य (वृद्धीः) वर्धमाना वाणीः
(अनूपत) अ० २०। १७। १। अस्तुवन् ते ऋषयः (स्तोतुः) स्तुतिं कुर्वतः
पुरुषस्य (मेधाः) धारणावती बुद्धीः (असृजत) सृज विसर्गें । दत्तवन्तः ॥
२—(तुरण्यवः) पृथिवीव्यधि० । उ० १ । २३ । त्वरण त्वरायाम् ;

कण्डवादिः—कुप्रत्ययः । वेगशीलाः (मधुमन्तम्) वेदज्ञानवन्तम् (घृतश्रुतम्)
अ० १०। ६। ६। श्रुतिर् क्षरणे—किप् । श्रुततिर्गतिकर्मा—निघ० २। १४।
प्रकाशवर्षकम् (विप्रासः) मेधावितः (अर्कम्) पूजनीयं परमात्मानम् (आनृचुः)
अ० १२। १। ३६। पूजितवन्तः (अस्मे) अस्मभ्यम् (रयिः) धनम् (पप्रथे)

फैल रहा है, (अस्मे) हमारे लिये (स्तुवातासः) उत्पन्न होते हुये (इन्द्रवः) ऐश्वर्य हैं ॥ २ ॥

भाषार्थ—मनुष्य सर्वपूजनीय परमात्मा की महिमा विचार कर धनवान्, बलवान् और ऐश्वर्यवान् होवें ॥ २ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—८।५१।१० [सायण भाष्य, अवशिष्ट, वाल-
खिल्य सू० ३ म० १०] ; सामवेद, उ० ७।३।१६ ॥

सूक्तम् १२० ॥

१—२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ भूरिगार्ग्यनुष्टुप् ; २ निचृत् पङ्क्तिः ॥

परमेश्वरगुणोपदेशः—परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

यदिन्द्र प्रागपुगुदङ्ग्यं वा हुयसे नृभिः ।

सिमां पुरु नृषूतो अस्यानुवेऽसि प्रशर्धं तुर्वशे ॥ १ ॥

यत् । इन्द्र । प्राक् । अपाक् । उदक् । न्यक् । वा । हुयसे ।

नृ-भिः ॥ सिम । पुरु । नृ-सूतः । असि । आनवे । असि ।

प्र-शर्ध् । तुर्वशे ॥ १ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (यत्) जब (प्राक्) पूर्व में, (अपाक्) पश्चिम में, (उदक्) उत्तर में (वा) और (न्यक्) दक्षिण में (नृभिः) मनुष्यों करके (हुयसे) तू पुकारा जाता है । (सिम) हे सीमा बांधने वाले (प्रशर्धं) प्रबल ! [परमात्मन्] (आनवे) मनुष्यों के (तुर्वशे) हिंसकों के वश करने वाले पुरुष में (पुरु) बहुत प्रकार

विस्तृतं वर्तते (वृण्यम्) वृण्णे बलवते हितम् (शवः) बलम् (अस्मे) अस्मभ्यम् । अन्यद् गतम्—अ० २०।११८।४ ॥

१—(यत्) यदा (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (प्राक्) प्राच्यां दिशि (अपाक्) प्रतीच्यां दिशि (उदक्) उदीच्यां दिशि (न्यक्) नीड्यां दक्षिणस्यां दिशि (वा) च (हुयसे) आहूयसे (नृभिः) नेतृभिः (सिम) अविसिविलिशुषिभ्यः कित् । उ० १।१४४।षिञ् बन्धने—मन् कित् । हे सीमा-कारक (पुरु) बहुलम् (नृषूतः) पू प्रेरणे—क । नरैः प्रेरितः प्रार्थितः (असि) (आनवे) मनु—मण् । अनवो मनुष्यताम्—निघ० २।३। मनुष्यसम्बन्धिनि

(नृषतः) तू मनुष्यों से प्रेरणा [प्रार्थना] किया गया (असि) है, (असि) है ॥१॥

भावार्थ—मनुष्य सब स्थानों में परमात्मा को बारंबार स्मरण करके परस्पर उपकार करें ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—८।४।१, २; सामवेद, उ० ५।१। १३; म० १ सा० पू० ३।६।७ ॥

यद्वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा । कण्वा-
सस्त्वा ब्रह्मभि स्तोमवाहस इन्द्रा यच्छुन्त्या गहि ॥ २ ॥

यत् । वा । रुमे । रुशमे । श्यावके । कृपे । इन्द्र । मादयसे ।
सचा ॥ कण्वासः । त्वा । ब्रह्म-भिः । स्तोम-वाहसः । इन्द्र ।
आ । यच्छुन्ति । आ । गहि ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (यत्)
जब (रुमे) ज्ञानी पुरुष में, (रुशमे) हिंसकों के फँकने वाले में, (श्यावके)
उद्योगी में (वा) और (कृपे) समर्थ में (सचा) नित्य मेल से (मादयसे)
तू हर्ष पाता है, [तभी] (इन्द्र) हे इन्द्र [परमात्मन्] (स्तोमवाहसः)
बड़ाई के प्राप्त कराने वाले (कण्वासः) बुद्धिमान् लोग (त्वा) तुझ को
(ब्रह्मभिः) वेद वचनों से (आ यच्छुन्ति) अपनी ओर खींचते हैं, (आ गहि)
तू आ ॥ २ ॥

(असि) (प्रशर्ध) शृधु उत्साहे—अच् । शर्धो बलनाम—निघ० २।६।
हे प्रबल (तुर्वशे) अ० २०। ३७। ८ । तुरां हिंसकानां वशयितरि ॥

२—(यत्) यदा (वा) च (रुमे) अविस्तिवि० । उ० १। १४४ । रुद्ध-
गतिरेषणयोः—मन्, कित् । क्षानिनि पुरुषे (रुशमे) रुश हिंसायाम्—क+
डुमिञ् प्रक्षेपणे—डप्रत्ययः । हिंसकानां प्रक्षेपतरि (श्यावके) अ० ५। ५। ८ ॥
गतिशीले । उद्योगिनि (कृपे) कृपू सामर्थ्ये—क । समर्थे (इन्द्र) परमैश्वर्यवान्
परमात्मन् (मादयसे) हृष्यसि (सचा) समक्षयेन (कण्वासः) मेधाविनः (त्वा)
(ब्रह्मभिः) वेदवचनैः (स्तोमवाहसः) अ० २० । ६८ । ११ । स्तुतिप्रापकाः
(इन्द्र) (आ यच्छुन्ति) आनीय यमयन्ति । आकर्षन्ति (आगहि) आगच्छ ॥

भावार्थ—परमात्मा स्वभाव से पुरुषार्थियों पर कृपा करता है, इसी से विद्वान् लोग उसे हृदय में वर्तमान जानकर संसार में उन्नति करते हैं ॥ २ ॥

सूक्तम् १२१ ॥

१—२ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १ निचृद्बृहती ; २ निचृत् पङ्क्तिः ॥

परमेश्वरगुणोपदेशः—परमेश्वर के गुणों का उपदेश ॥

अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः ।

ईशानस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्युषः ॥ १ ॥

अभि । त्वा । शूर । नोनुमः । अदुग्धाः-इव । धेनवः ॥ ईशान-
स्य । जगतः । स्वः-दृशम् । ईशानम् । इन्द्र । तस्युषः १

भाषार्थ—(शूर) हे शूर (इन्द्र) इन्द्र ! [परमेश्वर] (अदुग्धाः)
विना दुही (धेनवः इव) दुधेल गौओं के समान [मुककर] हम (अस्य)
इस (जगतः) जगत् के (ईशानम्) स्वामी और (तस्युषः) स्थावर के
(ईशानम्) स्वामी, और (स्वर्दृशम्) सुख के दिखाने वाले (त्वा) तुझ को
(अभि) सब ओर से (नोनुमः) अत्यन्त सराहते हैं ॥ १ ॥

भावार्थ—जैसे दूध से भरी गौये दूध देने के लिये मुक जाती है, वैसे
ही मनुष्य विद्याआदि शुभ गुणों से भर पूर होकर परमेश्वर की महिमा देखते
हुये नम्र होकर संसार में उपकार करें ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—७। ३२ । २२, २३; यजुर्वेद २७। ३५, ३६;
सामवेद उ० १। १। ११; म० १ सा० ३। ३। ५ ॥

१—(अभि) सर्वतः (त्वा) (शूर) (नोनुमः) अ० २०। १८। ४।
भृशं स्तुमः (अदुग्धाः) ईक्षीरपूर्णोधस्त्वेन वर्तमानाः (इव) यथा (धेनवः)
बोधयोगी गावः (ईशानम्) ईश्वरम् (अस्य) दृश्यमानस्य (जगतः) जगत्स्य
(स्वर्दृशम्) सुखस्य दर्शयितारम् (ईशानम्) (इन्द्र) परमैश्वर्ययुक्त (तस्युषः)
स्थावरस्य ॥

न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ।
 अश्वयन्तो मधवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥ २ ॥
 न । त्वा-वान् । अन्यः । दिव्यः । न । पार्थिवः । न । जातः ।
 न । जनिष्यते ॥ अश्व-यन्तः । मध-वन् । इन्द्र । वाजिनः ।
 गव्यन्तः । त्वा । हवामहे ॥ २ ॥

भाषार्थ—(मधवन्) हे महाधनी (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले परमात्मन्] (त्वावान्) तेरे समान (अन्यः) दूसरा कोई (न) न तौ (दिव्यः) आकाश में रहने वाला और (न) न (पार्थिवः) पृथिवी पर रहने वाला है, और (न) न (जातः) उत्पन्न हुआ है, और (न) न (जनिष्यते) उत्पन्न होगा । (अश्वयन्तः) घोड़े चाहते हुये, (गव्यन्तः) भूमि चाहते हुये, (वाजिनः) वेग वाले हम (त्वा) तुझ को (हवामहे) पुकारते हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—परमेश्वर से तुल्य वा अधिक बलवान् संसार में कोई नहीं है, इस प्रकार उसकी उपासना करके मनुष्य अपना वैभव बढ़ावे ॥ २ ॥

सूक्तम् १२२ ॥

१-३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, २ गायत्री, ३ निमृद् गायत्री ॥

सभापतिलक्षणोपदेशः—सभापति के लक्षण का उपदेश ॥

रेवतीर्नः सधुमाद् इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः । सुमन्तो याभि-
 र्मदेस ॥ १ ॥

रेवतीः । नः । सधु-मादे । इन्द्रे । सन्तु । तुवि-वाजाः ॥ सु-
 मन्तः । याभिः । मदेस ॥ १ ॥

२—(न) निषेधे (त्वावान्) त्वया सहशः (अन्यः) मित्रः कश्चित् (दिव्यः) दिवि आकाशे भवः (न) (पार्थिवः) पृथिव्यां विदितः (न) (जातः) उत्पन्नः (न) (जनिष्यते) उत्पत्स्यते ५ अश्वयन्तः) अश्वान् काम-
 यमानाः (मधवन्) महाधनिन् (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् परमात्मन् (वाजिनः) वेगवन्तः (गव्यन्तः) गां भूमिमिच्छन्तः (त्वा) त्वाम् (हवामहे) आह्वयामः ॥

भाषार्थ—(इन्द्रे) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले सभापति] में (नः) हमारे (सधमादे) हर्ष युक्त उत्सव के बीच (रेवतीः) बहुत धन वाली और (तुविवाजाः) बहुत बल वाली [प्रजाये] (सन्तु) हों। (यासिः) जिन [प्रजाओं] के साथ (क्षुमन्तः) बहुत अन्न वाले होकर (मदेम) हम आनन्द पावें ॥ १ ॥

भावार्थ—सभापति प्रयत्न करे कि सब प्रजागण उद्योगी, धनी होकर सुखी हों ॥ १ ॥

यह तृच ऋग्वेद में है—१।३०।१३—१५; सामवेद, उ० ४।१।तृच १४; म० १ सा० पू० २।६।८ ॥

आ घृ त्वावान् त्मनाप्रस्तोतृभ्यो धृष्णवियानः । ऋणोरक्षं
न चक्रयोः ॥ २ ॥

आ । घृ । त्वा-वान् । त्मना । आप्तः । स्तोतृ-भ्यः । धृष्णी
इति । इयानः ॥ ऋणोः । अक्षम् । न । चक्रयोः ॥ २ ॥

आ । यद् दुर्वः शतक्रतुवा कामं जरितृणाम् । ऋणोरक्षं न
शचीभिः ॥ ३ ॥

आ । यत् । दुर्वः । शतक्रतो इति शत-क्रतो । आ । कामम् ।
जरितृणाम् ॥ ऋणोः । अक्षम् । न । शचीभिः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(धृष्णो) हे निर्भय ! [सभापति] (त्मना) अपने आप
(त्वावान्) अपने सहस्र (आप्तः) आप्त [सच्चा उपदेशक] (इयानः)

१—(रेवतीः) धनवत्यः प्रजाः (नः) अस्माकम् (सधमादे)
आनन्देन सह वर्तमाने महोत्सवे (इन्द्रे) परमैश्वर्यवति सभाध्यक्षे (सन्तु)
(तुविवाजाः) बहुबलयुक्ताः (क्षुमन्तः) बहुविधानयुक्ताः (यासिः) प्रजाभिः
(मदेम) हृष्येम ॥

२—(आ) अमितः (घ) एवं (त्वावान्) त्वत्सहस्रः (त्मना)
आत्मना (आप्तः) यथार्थज्ञाता । सत्योपदेशा (स्तोतृभ्यः) स्तावकेभ्यः

ज्ञानवान् तू (स्तोत्रम्यः) स्तुति करने वालों के लिये (घ) अवश्य (आ)
सब प्रकार से (ऋणोः) प्राप्त हो, (न) जैसे (चक्रयोः) दोनों पहियों में
(अक्षम्) घुरा [होता है ॥ २ ॥ (यत्) क्योंकि, (शतक्रतो) हे सैकड़ों बुद्धियों
वा कर्मों वाले ! [सभापति] (जरितृणाम्) स्तुति करने वालों को (दुवः)
सेवा को (कामम्) अपनी इच्छा के अनुसार (आ) सब ओर से (आ) पूरी
रीति पर (ऋणोः) तू पाता है, (न) जैसे (अक्षम्) घुरा (शचीभिः) अपने कर्मों
से [रथ को प्राप्त होता है] ॥ ३ ॥

भावार्थ—जैसे घुरा पहियों के बीच में रहकर सब बोझ उठाकर रथ
को चलाता है, वैसे ही सभापति राज्य का सब भार अपने ऊपर रखकर प्रजा
को उद्योगी बनावे और प्रजा भी उसकी सेवा करती रहै ॥ २, ३ ॥

सूक्तम् १२३ ॥

१—२ ॥ सूर्यो देवता ॥ त्रिष्टुप् छन्दः ॥

कृत्योपदेशः—सूर्य के काम का उपदेश ॥

तत् सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तुर्विततं सं जभार ।
यदेदयुक्त हरितः सुधस्यादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ॥ १ ॥
तत् । सूर्यस्य । देव-त्वम् । तत् । मृहि-त्वम् । मध्या । कर्तुः ।
वि-ततम् । सस्मै । जभारु ॥ यदा । इत् । अयुक्त । हरितः ।
सुध-स्यात् । आत् । रात्री । वासः । तनुते । सिमस्मै ॥ १ ॥

(धृष्टयो) हे निर्भय (इवानः) इङ् गतौ—कानच् । अभिज्ञाता (ऋणोः) ऋण
गतौ, लोडर्थे लङ् । प्राप्नुहि (अक्षम्) धूः (न) इव (चक्रयोः) आदग-
महनजनः । पा० ३ । २ । १७१ । करोतेः—कि प्रत्ययः । रथस्य चक्रयोः ॥

३—(आ) समन्तात् (यत्) यतः (दुवः) अ० । २० । ६६ । ५ । परि-
चरणम् (शतक्रतो) बहुप्रज्ञ । बहुकर्मन् (आ) अभितः । पूरणतः (कामम्)
यथेष्टम् (जरितृणाम्) स्तावकानाम् (ऋणोः) म० २ । प्राप्नुषि (अक्षम्)
धूः (न) इव (शचीभिः) कर्मभिः ॥

भाषार्थ—(तत्) उस [ब्रह्म] ने (सूर्यस्य) सूर्य के (मध्या) बीच में (तत्) उस (विततम्) फैले हुये (देवत्वम्) प्रकाशपन को, (महित्वम्) बड़प्पन को और (कर्तों :) [आकर्षण आदि] कर्म को (सम् जभार) बटोर कर रख दिया है—कि (यदा इत्) जब ही वह [सूर्य] (हरितः) रस पहुँचाने वाली किरणों को (सधस्थात्) एक से स्थान से (अयुक्त) जोड़ता है, [आगे बढ़ाता है], (आत्) तभी (रात्री) रात्री (सिमस्मै) सब के लिये (वासः) वस्त्र [अन्धकार] (तनुते) फैलाती है ॥ १ ॥

भाषार्थ—जिस परमात्मा ने बहुत बड़े तेजस्वी, आकर्षक सूर्य लोक को बनाया है, और जो उस सूर्य और पृथिवी की गति से प्रकाश और रात्रि करके प्राणियों को कार्य कुशलता और विश्राम देता है, सब मनुष्य उस जगदीश्वर की उपासना करें ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—१।११५।४, ५ ॥

तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्यौरुपस्थे ।
अनन्तमन्यद् रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्वरितः सं भरन्ति ॥२॥
तत् । मित्रस्य । वरुणस्य । अभि-चक्षे । सूर्यः । रूपम् ।
कृणुते । द्योः । उप-स्थे ॥ अनन्तम् । अन्यत् । रुशत् अस्य ।
पाजः । कृष्णम् । अन्यत् । हरितः । सम् । भरन्ति ॥ २ ॥

भाषार्थ—(तत्) उस (अनन्तम्) अनेक [ब्रह्म] के द्वारा (द्योः)

१—(तत्) प्रसिद्धं ब्रह्म (सूर्यस्य) रविमण्डलस्य (देवत्वम्) प्रकाशत्वम् (तत्) प्रसिद्धम् (महित्वम्) महत्त्वम् (मध्या) विभक्तैराकारः । मध्ये (कर्तों :) करोते—तोसुप्रत्ययः । कर्म (विततम्) विस्तृतम् (सम्) संचित्य (जभार) जहार । गृहीतवान् (यदा) (इत्) एव (अयुक्त) युनक्ति (हरितः) रसप्रापकान् रुशमीन् (सधस्थात्) समानस्थानात् (आत्) अन्तरम् (रात्री) (वासः) वस्त्रम् । अन्धकारम् (तनुते) विस्तारयति (सिमस्मै) सर्वस्मै संसाराय ॥

२—(तत्) तेन (मित्रस्य) प्राणस्य (वरुणस्य) उदानस्य (अभिचक्षे)

प्रकाश के (उपस्थे) गोदमें (मित्रस्य) प्राण वायु और (वरुणस्य) उदान वायु के (अभिचक्षे) सब ओर देखने के लिये (सूर्यः) प्रेरणा करने वाला सूर्य लोक (रूपम्) रूप को (कृणुते) बनाता है, (अस्य) इस [सूर्य] के (अन्यत्) एक (रुशत्) प्रकाश और (अन्यत्) दूसरे (कृष्णम्) आकर्षण (पाजः) बल को (हरितः) दिशायें (सम्) मिलकर (भरन्ति) धारण करती हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—परमेश्वर के नियम से सूर्य लोक आने प्रकाश से वायु में नीचे ऊपर जाने का बल उत्पन्न करके पृथिवी आदि लोकों को सब दिशाओं में आकर्षण में रखता है ॥ २ ॥

सूक्तम् १२४ ॥

१—६ ॥ १—३ इन्द्रो देवता; ४—६ इन्द्रो विश्वे देवाश्च देवताः ॥

१ गायत्री; २ निचृद् गायत्री, ३ पाद निचृद् गायत्री; ४ विराट् पङ्क्तिः; ५, ६ निचृत् त्रिष्टुप् ॥

राजप्रजाधर्मोपदेशः—राजा और प्रजा के धर्म का उपदेश ॥

कया नश्चित्र आ भुवदूती सुदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥ १ ॥

कया । नः । चित्रः । आ । भुवत् । ऊती । सुदा-वृधः । सखा ॥ कया । शचिष्ठया । वृता ॥ १ ॥

भाषार्थ—(चित्र !) विचित्र वा पूज्य और (सुदावृधः) सदा बढ़ाने

चक्षिद् दर्शने—किप् । संमुखदर्शनाय (सूर्यः) प्रेरकः सविता (रूपम्) चक्षु-प्राङ्गुणम् (कृणुते) करोति (द्योः) प्रकाशस्य (उपस्थे) उपस्थाने मध्ये (अनन्तम्) अन्तरहितेन ब्रह्मण (अन्यत्) एकम् (रुशत्) रुश हिंसायाम्—शतृ—रुशदिति वर्णनाम रोचतेर्ज्वलतिकर्मणः—तिरु० २।२०। ज्वलितवर्णम् दीप्यमानम् (अस्य) सूर्यस्य (पाजः) बलम् (कृष्णम्) आकर्षणम् (अन्यत्) द्वितीयम् (हरितः) दिशः (सम्) एकीभूय (भरन्ति) धरन्ति ॥

१—(कया) अन्येष्वपि दृश्यते । पा० ३ २।१०१ । क्रमेः क्रमेर्वा—उपस्थयः क्रमे रेफलोपः स्त्रियां टाप् । कः कमनो वा कमणो वा सुखो वा—

सू० १२४ [७१२] विंश कारण्डस् ॥ २० ॥ (४,४२३)

वाला [राजा] (नः) हमारी (कया) कमनीय वा क्रमणशील [आगे बढ़ती हुई], अथवा सुख देने वाली [वा कौन सी] (ऊती) रक्षा से और (कया) कमनीय आदि [वा कौन सी] (शचिष्ठया) अति उत्तम वाणी वा कर्म वा बुद्धि वाले (वृता) वर्ताव से (सखा) [हमारा] सखा (आ) ठीक ठीक (भुवत्) होवे ॥ १ ॥

भावार्थ—राजा और प्रजा प्रयत्न करके परस्पर प्रीति रखें ॥ १ ॥

मन्त्र १—३ ऋग्वेद में हैं—४। ३१। १—३; यजुर्वेद २७। ३४-४१ तथा ३६। ४—६; सामवेद ७०। १। १। तृच १२; म० १ सा० पू० २। ८। ५ ॥

कस्तवा सुत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सुदन्धसः । दृह्ला चिद्वारुजे वसु ॥ २ ॥

कः । त्वा । सुत्यः । मदानां । मंहिष्ठः । मत्सुत् । अन्धसः ॥

दृह्ला । चित् । आ-रुजे । वसु ॥ २ ॥

भाषार्थ—(कः) कमनीय वा आगे बढ़ता हुआ, वा सुख देने वाला (सत्यः) सत्य शील वाला, (मदानाम्) आनन्दों और (अन्धसः) अज्ञ का (मंहिष्ठः) महादानी राजा (दृह्ला) दृढ़ (वसु) धनों को (चित्) अवश्य

निरु १०। २२। कमनीयया क्रमणशीलया गतिवत्या । सुखप्रदया । अथवा प्रश्नवाचकोऽस्ति (नः) अस्माकम् (चित्रः) अमिचिमि० । ७० ४ । १६४ । चिज् चयने-क्त्र । चित्रं चायनीयम्—निरु १२। ६ । अद्भुतः । पूज्यः (आ) समन्तात् (भुवत्) भवतेर्लेट् । भवेत् (ऊती) उत्था रक्षया । गत्या (सदावृधः) वृधु—क । सदा वर्धमानो वर्धयिता वा (सखा) सुहृद् (कया (शचिष्ठया) शची—इष्टन् मत्वर्थीयलोपः । शची=वाक्-निघ० १। ११। कर्म-२ । १। प्रज्ञा-३। ११। अतिश्रेष्ठया वाचा क्रियया प्रज्ञया वा युक्तया (वृता) वृत्तु-किप् । वृत्त्या । वर्तनेन ॥

२—(कः) म० १ । कमनीयः । क्रमणशीलः । सुखप्रदः (त्वा) त्वां प्रजाजनम् (सत्यः) सत्सु साधुः (मदानाम्) आनन्दानाम् (मंहिष्ठः) अ० २०। १५। १ । दातृतमः (मत्सुत्) आनन्दयेत् (अन्धसः) अज्ञस्य (दृह्ला) दृढानि (चित्) अवश्यम् (आरुजे) दशे विषये च । पा० ३। ४। ११। आ+

(आरुजे) खोल देने के लिये (त्वा) तुझ [प्रजा जन] को (मत्सत्) तुझ करे ॥ २ ॥

भावार्थ—सत्यशील राजा सुनोति से प्रजा को प्रसन्न रखकर धन धान्य को बढ़ावे ॥ २ ॥

अभीषुणः सखीनामविता जरितृणाम् । श्रुतं भवांस्युतिभिः ३
अभि । सु । नः । सखीनाम् । अविता । जरितृणाम् ॥ श्रुतम् ।
भवासि । ऊति-भिः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—[हे राजन् ।] (सखीनाम्) [अपने] सखाओं और (जरितृणाम्) स्तुति करने वाले (नः) हम लोगों का (सु) उत्तम् । (अविता) रत्नक होकर तू (श्रुतम्) सौ प्रकार से (ऊतिभिः) रत्नाओं के साथ (अभि) सामने (भवासि) होवे ॥ ३ ॥

भावार्थ—जिस प्रकार प्रजागण राजा के हित के लिये प्रतल करें, वैसे ही राजा भी उनका हित करे ॥ ३ ॥

इमानु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः । युजं च
नस्तन्व च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सुहवीक्लृपाति ॥ ४ ॥

इमा । नु । कम् । भुवना । सीषधाम् । इन्द्रः । च । विश्वे ।
च । देवाः ॥ युजम् । च । नः । तन्वम् । च । प्र-जाम् ।
च । आदित्यैः । इन्द्रः । सुह । वीक्लृपाति ॥ ४ ॥

रुजो भङ्गे—केन तुमर्थे । समन्ताद् भङ्कुम् । प्रकाशयितुम् (वसु) वसुनि । धनानि ॥

३—(अभि) अभिमुखम् (सु) (नः) अस्माकम् (सखीनाम्) सुह-
दाम् (अविता) रत्नकः (जरितृणाम्) स्तोतृणाम् । सद्गुणविदाम् (श्रुतम्)
बहुप्रकारेण (भवासि) लेट्टि रूपम् । भवेः (ऊतिभिः) रत्नाभिः ॥

सू० १२४ [७१२] विश्व कारण्डसू ॥ २० ॥ (४, ४२५)

भाषार्थ—(इमा) यह (भुवना) उत्पन्न पदार्थ, (च) और (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला सभापति] (च) और (विश्वे) सब (देवाः) विद्वान् लोग हम (तु) शीघ्र (कम्) सुख को (सीसधाम) सिद्ध करें । (आदित्यैः सह) अखण्ड व्रतधारी विद्वानों के साथ (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला सभापति] (नः) हमारे (यद्यम्) यद्य [मेल मिलाप आदि] को (च) और (तन्वम्) शरीर (च) और (प्रजाम्) प्रजा [सेन्तान आदि] को (च) भी (चीकृत्पाति) समर्थ करे ॥ ४ ॥

भावार्थ—सभापति राजा और सभासद लोग संसार के सब पदार्थों से उपकार लेकर सब को यथावत् रक्षा करें ॥ ४ ॥

मन्त्र ४—६ आचुके हैं—अथ० २० । ६३ । १—३ ॥

आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्धिरस्माकं भूत्वविता तनूनाम् ।
हृत्वाय देवा असुरान् यदायन् देवा देवत्वमभिरक्षमाणाः ॥ ५ ॥
आदित्यैः । इन्द्रैः । स-गणः । मरुत्-भिः । अस्माकम् ।
भूतु । अविता । तनूनाम् ॥ हृत्वाय । देवाः । असुरान् ।
यत् । आयन् । देवाः । देव-त्वम् । अभि-रक्षमाणाः ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(सगणः) गणों [सुभट् वीरों] के साथ वर्तमान (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला सभापति] (आदित्यैः) अखण्ड व्रतधारी (मरुद्धिः) शूर मनुष्यों के साथ (अस्माकम्) हमारे (तनूनाम्) शरीरों का (अविता) रक्षक (भूतु) होवे । (यत्) क्योंकि (असुरान्) असुरों [दुराचारियों] को (हृत्वाय) मारकर (देवाः) विजय चाहने वाले, (अभिरक्षमाणाः) सब ओर से रक्षा करते हुये (देवाः) विद्वानों ने (देवत्वम्) देवतापन [उत्तम पद] (आयन्) पाया है ॥ ५ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य शूर वीर विद्वानों के साथ प्रजा की रक्षा कर सके, वही अपने उत्तम कर्मों के कारण उत्तम पद सभापतित्व आदि के योग्य होवे ॥ ५ ॥
मृत्यञ्चमर्कमनयं कूर्चीभिरादित् स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ।
अया वाजं देवहितं सनेसु मदेस श्रुतहिमाः सुवीराः ॥ ६ ॥

४—६ । ऐते मन्त्रा व्याख्याताः—अथ० ६३ । १—३ ॥

प्रत्यञ्चम् । अर्कम् । अनयन् । शचीभिः । आत् । इत् ।
स्वधाम् । इषिराम् । परि । अपश्यन् ॥ अया । वाजम् ।
देव-हितम् । सुनेम् । मदेम् । शत-हिमाः । सु-वीराः ॥ ६ ॥

भाष्यार्थ—(प्रत्यञ्चम्) प्रत्यक्ष पाने योग्य (अर्कम्) पूजनीय व्यवहार
को (शचीभिः) अपने कर्मों से (अनयन्) उन [विद्वानों] ने प्राप्त कराया है,
और (आत् इत्) तभी (इषिराम्) चलाने वाली (स्वधाम्) आत्म धारण
शक्ति को (परि) सब ओर (अपश्यन्) देखा है । (अया) इसी [नीति] से
(शतहिमाः) सौ वर्षों जीते हुये (सुवीराः) उत्तम वीरों वाले हम (देवहितम्)
विद्वानों के हितकारी (वाजम्) विज्ञान की (सनेम्) देवों और (मदेम्)
आनन्द करें ॥ ६ ॥

भावार्थ—जैसे विद्वान् लोग अपने उत्तम कर्मों से संसार का उपकार
करने रहे हैं, वैसे ही हम श्रेष्ठ ज्ञान की प्राप्ति से मनुष्यों को वीर बनाकर
आनन्द दें ॥ ६ ॥

सूक्तम् १२५ ॥

१—७ ॥ १—३, ६, ७ इन्द्रः; ४, ५ अश्विनौ देवते ॥ १—त्रिष्टुप्; २, ३
निचृत् त्रिष्टुप्; ४ निच्छन्तुष्टुप्; ५—७ विराडाधी त्रिष्टुप् ॥

राजधर्मोपदेशः—राजा के धर्म का उपदेश ॥

अपेन्द्र प्राचो मघवन्नमित्रानपापाचो अभिभूते नुदस्व ।
अपोदीचो अपं शूराधुराचं उरौ यथा तव शर्मन् मदेम् ॥१॥
अपं । इन्द्र । प्राचः । मघ-वन् । मित्रान् । अपं । अपाचः ।
अभि-भूते । नुदस्व ॥ अपं । उदीचः । अपं । शूर । अधु-
राचः । उरौ । यथा । तव । शर्मन् । मदेम् ॥ १ ॥

भाष्यार्थ—(मघवन्) हे महाधनी ! (अभिभूते) हे विजयी ! (शूर)

१—(अप) दूरे (इन्द्र) परमेश्वर्यवन् राजन् (प्राचः) प्र + अश्नते—

हे शूर ! (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (प्राचः) पूर्व वाले (अमित्रान्) वैरियों को (अप) दूर, (अपाचः) पश्चिम वाले [वैरियों] को (अप) दूर, (उदीचः) उत्तर वाले [वैरियों] को (अप) दूर, और (अधराचः) दक्षिण वाले [वैरियों] को (अप) दूर (नुदस्व) हटा, (यथा) जिस से (तव) तेरी (उरौ) चौड़ी (शर्मन्) शरण में (मदेम) हम आनन्द करें ॥ १ ॥

भावार्थ—प्रतापी राजा सब दिशाओं के शत्रुओं का नाश करके प्रजा को सुख देवे ॥ १ ॥

यह सूक्त कुछ भेद से ऋग्वेद में है—१०। १३१। १—७ ॥

कुविदुङ्ग यवमन्तो यव चित् यथा दान्त्यनुपूर्व विभूय । इहे-
हैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमोवृत्ति न जुग्मुः ॥ २ ॥

कुवित् । अङ्ग । यव-मन्तः । यवम् । चित् । यथा । दान्ति ।
अनु-पूर्वम् । वि-भूय ॥ इह-इह । एषाम् । कृणुहि । भोज-
नानि । ये । बर्हिषः । नमः-वृत्तिम् । न । जुग्मुः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(अङ्ग) हे [राजन् ।] (यवमन्तः) जौ आदि धान्य वाले [किसान लोग] (यथा चित्) जैसे ही (यवम्) जौ आदि धान्य को (अनु-पूर्वम्) क्रम से (विभूय) अलग अलग करके (कुवित्) बहुत प्रकार (दान्ति) काटते हैं । (इहेह) इस इस [व्यवहार] में (एषाम्) उन [लोगों] के

किन्, शस् । प्रादेशे वर्तमानान् (मघवन्) महाधनिन् (अमित्रान्) पीडकान्
वैरिणः (अप) (अपाचः) पश्चिमदेशे वर्तमानान् (अभिभूते) अभिमवितः
(नुदस्व) प्रेरय । दूरे गमय (अप) (उदीचः) उत्तरदेशे वर्तमानान् (अप)
(शूर) (अधराचः) दक्षिणदिशि वर्तमानान् (उरौ) विस्तीर्णै (यथा) येन
प्रकारेण (तव) (शर्मन्) शर्मणि । शरणे (मदेम) हृष्येम ॥

२—(कुवित्) बहुतम् (अङ्ग) हे (यवमन्तः) यवादिधान्ययुक्ताः
कर्षकाः (यवम्) यवादिकम् (चित्) एव (यथा) (दान्ति) लुनन्ति
(अनुपूर्वम्) यथाक्रमम् । धान्यानां जातिपाककमेण (विभूय) पृथक्-
कृत्य (इहेह) अस्मिन्नस्मिन् व्यवहारे (एषाम्) पुरुषाणाम् (कृणुहि) कुरु

(भोजनानि) भोजनों और धनों को (कृणुहि) कर, (ये) जिन (बर्हिषः) बढ़ती करते हुये लोगों ने (नमोवृक्तिम्) सत्कार के त्याग को (न) नहीं (जग्मुः) पाया है ॥ २ ॥

भावार्थ—जैसे चतुर किसान जो गेहूं आदि धान्य को काटकर उन की जाति और पकने के अनुसार पकत्र करते हैं, वैसे ही राजा आज्ञाकारी कर्मकुशल प्रजा गणों को उनकी योग्यता के अनुसार भोजन और धन आदि दान करे ॥ २ ॥

यह मन्त्र कुछ भेद से यजुर्वेद में भी है—१० । ३२; १६ । ६; तथा २३ । ३८ ॥

नहि स्थूर्युतुथा यातमस्ति नोत अवा विविदे संगमेषु ।
गव्यन्त इन्द्रं सुख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ॥३
नहि । स्थूरि । ऋतु-या । यातस् । अस्ति । न । उत । अवाः ।
विविदे । सु-गमेषु ॥ गव्यन्तः । इन्द्रं । सुख्याय । विप्राः ।
अश्व-यन्तः । वृषणम् । वाजयन्तः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(स्थूरि) ठहरा हुआ [ढीला] काम (ऋतुथा) ऋतु के अनुसार [ठीक समय पर] (यातम्) पाया हुआ (नहि) नहीं (अस्ति) होता है, (उत) और [इसी कारण] (संगमेषु) समाजों [वा संग्रामों] में (अवाः) यश (न) नहीं (विविदे) मिलता है, (सुख्याय) मित्रता के लिये (वृषणम्) बलवान् (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले राजा] को (वाजयन्तः) वेगवान्

(भोजनानि) भोगसाधनानि खाद्यानि धनानि च (ये) पुरुषाः (बर्हिषः) वृद्धिकराः (नमोवृक्तिम्) वृजी वर्जने-क्त । नमस्कारस्य सत्कारस्य वर्जनं त्यागकरणम् (न) निषेधे (जग्मुः) प्रापुः ॥

३—(नहि) न कदापि (स्थूरि) स्थः किञ्च । उ० ५ । ४ । घ्रा गतिवृत्तौ-ऊरन् । गतिशून्यं प्रवृत्तिरहितं कर्म (ऋतुथा) ऋतौ । निश्चितसमये (यातम्) प्राप्तं समाप्तम् (अस्ति) (न) निषेधे (उत) अपि (अवाः) यशः (विविदे) लङर्थे लिट् । लभ्यते प्राप्यते (संगमेषु) समाजेषु । संग्रामेषु (गव्यन्तः) भूमि-मिच्छन्तः (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं राजानम् (सुख्याय) सखिकर्मणे (विप्राः)

बनाते हुये (विप्राः) बुद्धिमान् लोग (गव्यन्तः) भूमि चाहते हुये और (अश्व-
यन्तः) घोड़े चाहते हुये हैं ॥ ३ ॥

भाषार्थ—जो मनुष्य कार्य आरम्भ करके आलस के मारे छोड़ देता है,
वह यश नहीं पाता है, इस लिये वह विद्वानों से शिक्षा पाकर राज्य आदि कामों
को पुरुषार्थ से चलावे ॥ ३ ॥

युवं सुराममश्विना नमुचावासुरे सचा ।

विपिपाना शुभस्पती इन्द्रं कर्मस्वावतम् ॥ ४ ॥

युवम् । सुरामम् । अश्विना । नमुचौ । आसुरे । सचा ॥

वि-पिपाना । शुभः । पुती इति । इन्द्रम् । कर्म-सु ।

आवतम् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(शुभः पती) हे शुभ व्यवहार के पालन करने वाले (अश्विना)
कर्मों में व्यापक [सभापति और सेनापति] (सचा) मिले हुये (विपिपाना)
विविध प्रकार रत्नक (युवम्) तुम दोनों ने (नमुचौ) न छोड़ने योग्य [सदा
रखने योग्य] (आसुरे) बुद्धिमान् पुरुष के व्यवहार में (कर्मसु) कर्मों के बीच
वर्तमान्, (सुरामम्) भले प्रकार आनन्द देने वाले (इन्द्रम्) इन्द्र [परम
ऐश्वर्य वाले धनी पुरुष] को (आवतम्) रक्षा की है ॥ ४ ॥

भाषार्थ—प्रजा और सेना के अधिकारी मिलकर व्यवहार कुशल धनी
पुरुषों की रक्षा करके खेती आदि व्यापारों से प्रजा को सुख पहुंचावें ॥ ४ ॥

मन्त्र ४; ५ यजुर्वेद में भी है—१० । ३३, ३४ तथा २० । ७६, ७७ ॥

मेधाविनः (अश्वयन्तः) तुरगानिच्छन्तः (वृषणम्) बलवन्तम् (वाजयन्तः)
वेगवन्तं कुर्वन्तः ॥

४—(युवम्) युवाम् (सुरामम्) सुष्ठु रमयितारं आनन्दयितारम् (अश्विना)
कर्मसु व्यापकौ सभासेनेशौ (नमुचौ) अ० २० । २१ । ७ । अमोचनीये । सदा
रक्षणीये (आसुरे) असुर—अण् । असुः प्रज्ञा—निघ० ३ । ६; रो मत्वर्थे ।
असुरस्य मेधाविनः पुरुषस्य व्यवहारे (सचा) समवेतौ (विपिपाना) पा रक्षणे—
कानच् । विविधं रक्षमाणौ (शुभः) कल्याणकरस्य व्यवहारस्य (पती) पालकौ
(इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं धनिकम् (कर्मसु) (आवतम्) युवां रक्षितवन्तौ ॥

पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावयुः काव्यैर्दंसनाभिः । यत्
सुराम् व्यपिबुः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् ॥ ५ ॥
पुत्रस्-इव । पितरौ । अश्विना । उभा । इन्द्र । आवयुः ।
काव्यैः । दंसनाभिः ॥ यत् । सु-राम् । वि । अपिबुः ।
शचीभिः । सरस्वती । त्वा । मघ-वन् । अभिष्णक् ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(पितरौ) माता पिता (पुत्रम् इव) जैसे पुत्र को [वैसे]
(अश्विना) कामों में व्यापक [सभापति और सेनापति] (उभा) तुम दोनों
ने (काव्यैः) बुद्धिमानों के किये व्यवहारों से और (दंसनाभिः) दर्शनीय क्रियाओं
से [राज्य की] (आवयुः) रक्षा की है, और (मघवन्) हे महाधनी (इन्द्र)
इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (यत्) क्योंकि (सुराम्) बड़े आनन्द देने
वाले [आनन्द रस] को (शचीभिः) अपनी बुद्धियों से (वि) विविध प्रकार
(अपिबुः) तू ने पिया है, (सरस्वती) सरस्वती [विज्ञान युक्त विद्या] ने
(त्वा) तुम्हें को (अभिष्णक्) सेवन किया है ॥ ५ ॥

भावार्थ—जब प्रजा और सेना के अधिकारी पूरी प्रीति से प्रजा की
रक्षा करते हैं, और जब मुख्य सभापति राजा भी तत्त्व जानने वाला होता है,
उस राज्य में विद्या की वृद्धि होती है ॥ ५ ॥

इन्द्रः सुत्रासु स्वतां श्वोभिः सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः ।
बाधेतां द्वेषो अभयं नः कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥६॥

५—(पुत्रम्) सन्तानम् (इव) यथा (पितरौ) जननीजनको (अश्विना)
कर्मसु व्यापकौ सभासेनेशौ (उभा) द्वौ (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् राजन् (आवयुः)
राज्यं रक्षितवन्तौ युवाम् (काव्यैः) कविभिर्मैधाविभिर्निर्मितैर्व्यवहारैः (दंस-
नाभिः) अथ० २० । ७४ । २ । शर्शनीयाभिः क्रियाभिः (यत्) यतः (सुराम्)
म० ४ । शोभनानन्दयितारम् (वि) विविधम् (अपिबुः) पीतवानसि (शचीभिः)
प्रज्ञाभिः (सरस्वती) विज्ञानयुक्ता विद्या (त्वा) (मघवन्) महाधनिन्
(अभिष्णक्) मिष्णज् उपसेवायां कण्डवादिः, लङ्, यको लुक् छान्दसः ।
उपसेवताम् ॥

इन्द्रः । सु-त्रामा । स्व-वान् । अवः-भिः । सु-मृडोकः ।
भवतु । विश्व-वेदाः ॥ बाधताम् । द्वेषः । अभयम् । नः ।
कृणोतु । सु-वीर्यस्य । पतयः । स्याम् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(सुत्रामा) बड़ा रत्नक, (स्ववान्) बहुत से ज्ञाति पुरुषों
वाला, (विश्ववेदाः) बहुत धन-वा ज्ञान वाला (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य
वाला राजा] (अवोभिः) अनेक रत्नाओं से (सुमृडोकः) अत्यन्त सुख देने
वाला (भवतु) होवे । वह (द्वेषः) वैरियों को (बाधताम्) हटावे, (नः)
हमारे लिये (अभयम्) निर्भयता (कृणोतु) करे और हम (सुवीर्यस्य) बड़े
पराक्रम के (पतयः) पालन करने वाले (स्याम्) होवें ॥ ६ ॥

भावार्थ—राजा दुष्ट स्वभावों और दुष्ट लोगों को नाश करके प्रजा की
रक्षा करे ॥ ६ ॥

मन्त्र ६, ७, आचुके हैं—अथ० ७ सू० ६१, ६२ ॥

स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मदाराच्चिद् द्वेषः सनुतयुयोतु ।
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम ॥ ७ ॥
सः । सु-त्रामा । स्व-वान् । इन्द्रः । अस्मत् । आरात् ।
चित् । द्वेषः । सनुतः । युयोतु ॥ तस्य । वयम् । सु-मतौ ।
यज्ञियस्य । अपि । भद्रे । सौमनसे । स्याम् ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(सः) वह (सुत्रामा) बड़ा रत्नक, (स्ववान्) बड़ा धनी,
(इन्द्रः) इन्द्र [महा प्रतापी राजा] (अस्मत) हम से (आरात् चित्) बहुत
ही दूर (द्वेषः) शत्रुओं को (सनुतः) निर्णय पूर्वक (युयोति) हटावे । (वयम्)
हम लोग (तस्य) उस (यज्ञियस्य) पूजा योग्य [राजा] की (अपि) ही
(सुमतौ) सुमति में और (भद्रे) कल्याण करने वाली (सौमनसे) प्रसन्नता
में (स्याम्) रहें ॥ ७ ॥

भावार्थ—सब मनुष्य प्रजा रत्नक, शत्रुनाशक राजा की आज्ञा में रह-
कर सदा प्रसन्न रहें ॥ ७ ॥

६, ७—मन्त्रौ आच्यतां—अथ० ७ सू० ६१, ६२ ॥

सूक्तक्त १२६ ॥

१—२३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ १, ५—७, १०—१५, १८, १९, २३ पङ्क्तिः, २ विराडापी पङ्क्तिः, ३, ४, ८, ९, २०—२२ निचृत् पङ्क्तिः, १६, १७ विराट् पङ्क्तिः ॥

गृहस्थकर्तव्योपदेशः—गृहस्थ के कर्तव्य का उपदेश ॥

वि हि सोतोऽरक्षुक्षत नेन्द्र देवसंसत । यत्रासदद् वृषाकपि-
र्यः पुष्टेषु मत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १ ॥

वि । हि । सोतोः । अरक्षुक्षत । न । इन्द्रस् । देवस् । असं-
सुत ॥ यत्र । असदत् । वृषाकपिः । अर्यः । पुष्टेषु । मत्-
सखा । विश्वस्मात् । इन्द्रः । उत्तरः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(हि) क्योंकि (सोतोः) तत्त्व रस का निकालना (वि अरक्षत) उन्होंने ने [लोगों ने] छोड़ दिया है, [इसी से] (देवम्) विद्वान् (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले मनुष्य आत्मा] को (न असंसत) उन्होंने ने नहीं जाना, (यत्र) जहां [संसार में] (अर्यः) स्वामी (मत्सखा) मेरा [देह वाले का] साथी (वृषाकपिः) वृषाकपि [बलवान् कपाने वाले अर्थात् चेष्टा कराने वाले जीवात्मा] ने (पुष्टेषु) पुष्टि कारक धनों में (असदत्)

१—(वि) वियोगे (हि) यस्मात् कारणात् (सोतोः) ईश्वरे तो-
सुनकसुनौ । पा० ३ । ४ । १३ । पुञ् अभिषवे—तोसुन् । अभिषोतुम् । तत्त्वरसं
निष्पादयितुम् (अरक्षत) विसृष्टवन्तः । त्यक्तवन्तः (नि) निषेधे (इन्द्रम्)
परमैश्वर्यवन्तं मनुष्यम् (देवम्) विद्वांसम् (असंसत) । मन ज्ञाने-लुब्ध ।
ज्ञातवन्तः (यत्र) यस्मिन् संसारे (असदत्) हृष्टोऽभूत् (वृषाकपिः) कनिन्
युववितक्षि० । उ० १ । १५६ । वृष सेचने पराक्रमे च—कनिन्, यद्वा, इगुपधवा-
प्रीकिरः । पा० ३ । १ । १३५ । इति कप्रत्ययः । कुण्ठकम्प्योर्नलोपश्च ॥ उ० ४ ।
१४४ । कपि चलने-इप्रत्ययः । अन्येषामपि दृश्यते । पा० ६ । ३ । १३७ । इति
दीर्घः । वृषाकपिः पदनाम-निध० ५ । ६ । अथ यद् रश्मिभिरभिप्रकम्पयन्नेति
तद् वृषाकपिर्भवति वृषाकम्पनः—निह० १२ । २७ । हरविष्णु वृषाकपी—

आनन्द पाया है, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ १ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य, दूसरे जीवों से अधिक उत्तम और तत्त्व ज्ञानी होने पर भी अपने सामर्थ्य और कर्तव्या को भूल जाते हैं, वे आत्मघाती संसार में सुख कभी नहीं पाते ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—१०।८६।१—२३ ॥

सूचना—इस सूक्त में इन्द्र, वृषाकपि, इन्द्राणी और वृषाकपायी का वर्णन है। इन्द्र शब्द से मनुष्य का शरीरधारी जीवात्मा, वृषाकपि से भीतरी जीवात्मा, इन्द्राणी से इन्द्र की विभूति वा शक्ति और वृषाकपायी से वृषाकपि की विभूति वा शक्ति पात्पर्य है, अर्थात् एक ही मनुष्य के जीवात्मा का वर्णन भिन्न भिन्न प्रकार से है। इन्द्र अर्थात् शरीरधारी मनुष्यः सब प्राणियों से श्रेष्ठ है, वह अपने को बुराई से बचाकर भलाई में सदा लगावे—सूक्त का यही सारांश है ॥

परा हीन्द्रु धावसि वृषाकपेरति व्यथिः । नो अह प्रविन्द-
स्युन्यत्र सोमपीतये विश्वस्मादिन्द्रु उत्तरः ॥ २ ॥

परा । हि । इन्द्रु । धावसि । वृषाकपेः । अति । व्यथिः ॥
नो इति । अह । प्र । विन्दसि । अन्यत्र । सोम-पीतये ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले मनुष्य] तू (हि) ही (वृषाकपेः) वृषाकपि [बलवान् चेष्टा कराने वाले जीवात्मा] से (अति) अत्यन्त (व्यथिः) व्याकुल होकर (परा) दूर (धावसि) दौड़ता है ।

अमरः, २३।१३० । वृषाकपिः=विष्णुः, शिवः, अग्निः, इन्द्रः, सूर्यः—इति शब्दकल्पद्रुमः । वृषा-बलवान्, कपिः कम्पयिता चेष्टयिता इन्द्रो जीवात्मा (अर्थः) स्वामी (पुष्टेषु) पोषकेषु धनेषु (मत्सखा) मम शरीरधारिणः सखा (विश्वस्मात्) सर्वस्मात् प्राणिमात्रात् (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् शरीर-धारी मनुष्यः (उत्तरः) श्रेष्ठतरः ॥

२—(परा) दूर (हि) अवधारणे (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् मनुष्य (धावसि) शीघ्र गच्छसि (वृषाकपेः) म० १ । बलवच्चेष्टाकारकाज्-जीवात्मनः (अति) अत्यन्तम् (व्यथिः) सर्वधातुभ्य इत् । उ० ४ । ११८ ।

(अन्यत्र) [अपने आत्मा से] दूसरे [प्राणी] में (सोमपीतये) सोम [तत्त्व रस] के पान के लिये (नो अह) कभी नहीं (प्र विन्दसि) तू पाया जाता है, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ २ ॥

भाष्यार्थ—जो मनुष्य आत्मज्ञान के बिना कष्टों से व्याकुल होकर अपने सामर्थ्य को सोचकर काम करता है, वही तत्त्व मार्ग पर चलकर आप सुखी होता और सब को सुखी करता है ॥ २ ॥

किमुयं त्वां वृषाकपिश्चकार हरितो मृगः । यस्मै हरस्यसीदु
न्वर्ष्योवापुष्टिमह वसु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ३ ॥

किम् । अयम् । त्वाम् । वृषाकपिः । चकार । हरितः । मृगः ॥
यस्मै । हरस्यसि । इत् । जं इति । नु । अर्यः । वा । पुष्टि-
मत् । वसु । ० ॥ ३ ॥

भाष्यार्थ—[हे मनुष्य] (किम्) कौनसा [अपकार] (अयम्) इस (हरितः) छीन लेने वाले, (मृगः) घूमने वाले मृग [जंगली पशु के समान] (वृषाकपिः) वृषाकपि [बलवान् चेष्टा कराने वाले जीवात्मा] ने (त्वाम्) तुझ को (चकार) किया है ? (यस्मै) जिस [जीवात्मा] के लिये (अर्यः) स्वामी होकर तू (पुष्टिमत्) पुष्टि रखने वाले (वसु) धन का (इत्) भी (वा) अवश्य (उ) निश्चय करके (नु) अब (हरस्यसि) डाह करतो है, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से

अथ भयसंचलनयोः—इन् । व्याकुलः (नो) नैव (अह) निश्चयेन (प्र) (विन्दसि) लभसे । प्राप्य से (अन्यत्र) स्वात्मनो भिन्ने (सोमपीतये) तत्त्वरसपानाय । अन्यत् पूर्ववत् ॥

३—(किम्) किमपकारम् (अयम्) विचार्यमाणः (त्वाम्) मनुष्यम् (वृषाकपिः) म० १ । बलवच्चचेष्टाकारको जीवात्मा (चकार) कृतवान् (हरितः) हरणशीलः (मृगः) मृगो माष्टेगतिकर्मणः—निरु १३।३ । भ्रमण-शीलो वनपशुरर्था (यस्मै) वृषावप्ये जीवात्मने (हरस्यसि) हरस ईच्यायां क्रूरत्वादिः । ईर्ष्यसि (इत्) अपि (उ) एव (नु) इदानीम् (अर्यः) स्वामी

(उत्तरः) उत्तम है ॥ ३ ॥

भावार्थ—मनुष्य को चाहिये कि पशु के समान आचरण अर्थात् पाप-
बुद्धि और डाह छोड़कर पुरुषार्थ से वृद्धि करे ॥ ३ ॥

यमिसं त्वं वृषाकपिं प्रियमिन्द्राभिरक्षसि । श्वा न्वस्य
जम्भिषदपि कर्णे वराहयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ४ ॥

यम् । इमम् । त्वम् । वृषाकपिम् । प्रियम् । इन्द्र । अभि-
रक्षसि ॥ श्वा । नु । अस्य । जम्भिषत् । अपि । कर्णे ।

वराह-युः । ० ॥ ४ ॥

भावार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले मनुष्य] (त्वम्) तू
(यम्) जिस (इमम्) इस (प्रियम्) प्यारे (वृषाकपिम्) वृषाकपि [बल-
वान् चेष्टा कराने वाले जीवात्मा] की (अभिरक्षसि) सब ओर से रक्षा करे,
[तौ] (नु) क्या (वराहयुः) सुअर को दूढ़ने वाला (श्वा) कुत्ता [अर्थात्
पाक कर्म] (अस्य) इस [सुअर अर्थात् जीव] के (अपि) भी (कर्णे)
कान में (जम्भिषत्) काटेगा, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला मनुष्य]
(विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ ४ ॥

भावार्थ—जब सब प्राणियों में श्रेष्ठ मनुष्य अपने आत्मा को अपने
वश में कर लेता है, तब उसको कोई वाप कर्म ऐसा नहीं सताता है, जैसे
कुत्ता सुअर को कान पकड़कर झंभोर डालता है ॥ ४ ॥

प्रिया तुष्टानि मे कुपिर्व्यक्ता व्यदूषत् । शिरो न्वस्य
राविष् न सुगं दुष्कृते भुवं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ५ ॥

(वा) अवधारणे (पुष्टिम्) पोषयुक्तम् (वष्टु) धनम् । सिद्धमन्यत् ॥

४—(यम्) जीवात्मानम् (इमम्) शरीरे विद्यमानम् (त्वम्)
(वृषाकपिम्) म० १ । बलवच् चेष्टाकारकं जीवात्मानम् (प्रियम्) इष्टम्
(इन्द्र) परमैश्वर्यवान् मनुष्य (अभिरक्षसि) परिपालयसि (श्वा) कुक्कुरः
(नु) प्रश्ने (अस्य) जीवात्मनः (जम्भिषत्) भक्षयेत् (अपि) एवं (कर्णे)
श्रोत्रे (वराहयुः) वराहं शूकरमिच्छन् । अन्यद् गतम् ॥

प्रिया । तृष्टानि । मे । कपिः । वि-अक्ता । वि । अदुदुषत् ॥
 शिरः । नु । अस्य । राविषम् । न । सु-गम् । दुः-कृते ।
 भुवम् । ० ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(कपिः) कपि [चंचल जीवात्मा] ने (मे) मेरे (व्यक्तानि) स्वच्छ किये हुये (प्रिया), प्यारे (तृष्टानि) कर्मों को (वि) विरुद्धपन से (अदुदुषत्) दूषित कर दिया है (अस्य) इस [पाप कर्म] के (शिरः) शिर को (नु) अब (राविषम्) मैं काट डालूँ, और (दुष्कृते) दुष्ट कर्म में (सुगम्) सुगम (न) नहीं (भुवम्) हो जाऊँ, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ ५ ॥

भावार्थ—विद्वान् जितेन्द्रिय मनुष्य के मन में यदि पाप की लहर उठे, वह ज्ञान से उस को सर्वथा नष्ट करके अपना महत्त्व दृढ़ बनाये रखे ॥ ५ ॥

न मत्स्त्री सुभसत्तरा न सुयाशुतरा भुवत् । न सत् प्रतिच्य-
 वीयसी न सक्थ्युद्यमीयसी विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ६ ॥

न । सत् । स्त्री । सुभसत्-तरा । न । सुयाशु-तरा । भुवत् ॥
 न । सत् । प्रति-च्यवीयसी । न । सक्थि । उत्-यमीयसी । ०६

भाषार्थ—(स्त्री) कोई स्त्री (सत्) मुझ से (न) न (सुभसत्तरा)

५—(प्रिया) कमनीयानि (तृष्टानि) कृतानि कर्माणि (मे) मम (कपिः) म० १ । कुण्डिकम्योर्नलोपश्च । उ० ४ । १४४ । कपि चलने—इत्ययः । चपलो जीवात्मा (व्यक्ता) वि + अङ्ग—क । स्वच्छीकृतानि (वि) विरोधे (अदुदुषित्) दुष वैकृत्ये—णिच् लुङ् । दूषितवान् (शिरः) मस्तकम् (नु) इदानीम् (अस्य) पापकर्मणः (राविषम्) रुङ् गतिरेषणयोः—लुङ्, अडभावः । लुनीयाम् (न) निषेधे (सुगम्) यथा तथा सुगमम् (दुष्कृते) दुष्टकर्मणि (भुवम्) भवेयम् । अन्यद् गतम् ॥

६—(न) निषेधे (सत्) मत्तः (स्त्री) अन्या तारी (सुभसत्तरा) शुद्ध-

अधिक बड़ी शोभा वाली, (न) न (सुयाशुतरा) अधिक सुन्दर बल वाली,
(न) न (मत्) मुक्त से (प्रतिच्यवीयसी) अधिक सहने वाली और (न)
न (सक्थि) जंघा [आदि शरीर के अंगों] को (उद्यमीयसी) उद्योग में
अधिक लगाने वाली (भुवत्) होवे, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला
मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ ६ ॥

भाषार्थ—स्त्रियां भी मनुष्य शरीर पाकर सब प्रकार विद्या ग्रहण करें
और कर्तव्य में चतुर बनकर अन्यस्त्रियों और प्राणियों से अपनी शोभा अधिक
बढ़ावें ॥ ६ ॥

उवे अम्ब सुलाभिके यथैवाङ्ग भविष्यति । भुसन्मे अम्ब
सक्थि मे शिरः मे वीव हृष्यति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥७॥

उवे । अम्ब । सुलाभिके । यथा-इव । अङ्ग । भविष्यति ॥

भुवत् । मे । अम्ब । सक्थि । मे । शिरः । मे । वि-इव ।

हृष्यति । ० ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(उवे) हे (अम्ब) अम्मा ! (अङ्ग) हे (सुलाभिके)
सुन्दर लाभ कराने वाली ! (यथा इव) जैसा कुछ (भविष्यति) आगे होगा
[वैसा किया जावे], (अम्ब) हे अम्मा ! (मे) मेरा (भुवत्) चमकता हुआ
कर्म, (मे) मेरी (सक्थि) जंघा, (मे) मेरा (शिरः) शिर (वि) विविध

भसोऽदिः । उ० १ । १३० । भस दोस्तौ—अदि । अधिकसुदीप्यमाना । सुसंगतरा
(न) (सुयाशुतरा) यमु प्रयत्ने—उष, सस्य शः । अतिशयेन सुप्रयतमाना
(भुवत्) भवेत् (न) (मत्) (प्रतिच्यवीयसी) च्युङ् सहने गतौ च—तृच,
ईयसुन् । प्रत्यक्षेणाधिकक्षयावयित्री । अधिकसहनशीला (न) (सक्थि)
जंघादिशरीराङ्गजातम् (उद्यमीयसी) यमु उपरमे—तृच, ईयसुन् । अतिशयेन
उद्यमयित्री । अन्यद् गतम् ॥

७—(उवे) संबोधने निपातः । हे (अम्ब) मातः (सुलाभिके)
शोभनलाभे (यथा इव) येन प्रकारेणैवोक्तं तथैव (अङ्ग) हे (भविष्यति)
भवतु (भुवत्) म० ६ । दीप्यमानं कर्म (मे) मम (अम्ब) (सक्थि) म०

प्रकार से (इव) ही (हृष्यति) आनन्द देवे, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ ७ ॥

भाष्यार्थ—सब लड़के लड़कियां गुणवती माता से, शरीर के अङ्गों से सुन्दर चेष्टा करके बलवान् और गुणवान् होना सीखें ॥ ७ ॥

किं सुबाहो स्वङ्गुरे पृथुष्टो पृथु जघने । किं शूरपत्नि नुस्त्व-
अमीषि वृषाकपि विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ८ ॥

किम् । सुबाहो इति सु-बाहो । सु-अङ्गुरे । पृथुस्तो इति
पृथु-स्तो । पृथु-जघने ॥ किम् । शूर-पत्नि । नः । त्वम् ।
अभि । अमीषि । वृषाकपिम् । ० ॥ ८ ॥

भाष्यार्थ—(सुबाहो) हे बलवान् भुजाओं वाली ! (स्वाङ्गुरे) हे
बड़ा अंगुलियों वाली ! (पृथुजघने) हे मोटी जंघाओं वाली ! (पृथुष्टो) हे
बड़ी स्तुति वाली ! [कुलवधू] (किम्) क्यों, (शूरपत्नि) हे शूर की पत्नी !
(किम्) क्यों, (त्वम्) तू (नः) हमारे (वृषाकपिम्) वृषाकपि [बलवान्
चेष्टा कराने वाले जीवात्मा] को (अभि) सर्वथा (अमीषि) पीड़ा देगी,
(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र]
से (उत्तरः) उत्तम है ॥ ८ ॥

भाष्यार्थ—रूपवती, बलवती, गुणवती स्त्री पुत्र पुत्रियों को रूपवान्,
बलवान् और गुणवान् बनाकर पति आदि को सदा प्रसन्न करे ॥ ८ ॥

अवीरामिव मामयं शूरारुभि मन्यते । उताहमस्मि वीरि-

६ । जंघा (मे) (शिरः) (मे) (वि) विविधम् (इव) अवधारणे (हृष्यति)
हर्षयतु । अन्यद् गतम् ॥

८—(किम्) आक्षेपे । किमर्थम् (सुबाहो) बलयुक्तभुजापेते (स्वाङ्गुरे)
बड़ाङ्गुलिके (पृथुष्टो) अथ० ७ । ४६ । १ । इदम् स्तुतौ—इ । बहुस्तुतियुक्ते
(पृथुजघने) स्थूलजंघे (किम्) (शूरपत्नि) हे वीरस्य भार्ये (नः) अस्मा-
कम् (त्वम्) (अभि) सर्वतः (अमीषि) अम पीडने । आमयसि । पीडयिष्यसि
(वृषाकपिम्) म० १ । बलवन्तं चेदयितारं जीवात्मानम् । अन्यत् पूर्ववत् ॥

णीन्द्रपत्नी मरुत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ८ ॥

अवीराम्-इव । माम् । अयम् । शराहः । अभि । मन्यते ॥
उत । अहम् । अस्मि । वीरिणी । इन्द्र-पत्नी । मरुत्-सखा ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(अयम्) यह (शराहः) अपकारी मनुष्य (माम्) मुझ [स्त्री] को (अवीराम् इव) अवोर स्त्री के समान (अभि मन्यते) मानता है, (उत) और (अहम्) मैं (वीरिणी) वीरिणी [वीर सन्तानों वाली], (इन्द्र-पत्नी) इन्द्र पत्नी [बड़े ऐश्वर्य वाले मनुष्य की पत्नी], और (मरुत्सखा) विद्वान् वीरों को साथी रखने वाली (अस्मि) हूं, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ ८ ॥

भावार्थ—वीर पत्नी स्त्री वीर सन्तानों और वीर पुरुषों के साथ रहकर दुष्टों से निर्भय होवे ॥ ८ ॥

संहोत्रं स्म पुरा नारी समनं वाव गच्छति । वेधा ऋतस्य
वीरिणीन्द्रपत्नी महीयते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १० ॥

सु-होत्रम् । स्म । पुरा । नारी । समनम् । वा । अव ।
गच्छति ॥ वेधाः । ऋतस्य । वीरिणी । इन्द्र-पत्नी ।
महीयते । ० ॥ १० ॥

भाषार्थ—(नारी) नारी [नरों का हितकरने वाली स्त्री] (पुरा) पहिले काल से (स्म) ही (संहोत्रम्) मिलकर अग्नि होत्र आदि यज्ञ करने (वा) और (समनम्) मिलकर जीवन करने को (अव गच्छति) जानती है । (ऋतस्य)

६—(अवीराम्) अबलाम् (इव) यथा (माम्) स्त्रियम् (अयम्) (शराहः) शूचन्धोराहः । पा० ३ । २ । १७३ । शृ हिंसायाम्—आह । घातुकः । अपकारी (अभि) आभिमुख्ये (मन्यते) जानाति (उत) अपि च (अहम्) स्त्री (अस्मि) (वीरिणी) वीरसन्तानवती (इन्द्रपत्नी) इन्द्रस्य ऐश्वर्यवतः पुरुषस्य भार्या (मरुत्सखा) मरुद्भूमिर्विद्वद्भूमिः शूरैर्युक्ता । अन्येद् गतम् ॥

१०—(संहोत्रम्) पत्यादिभिः सहाग्निहोत्रादियज्ञम् (स्म) एव (पुरा) पुस्त्यात् (नारी) नराणां हिता स्त्री (समनम्) अन प्राणने—मन् । सहजी-

सत्य ज्ञान का (वेधाः) विधान करने वाली (वीरिणी) वीरिणी [वीर सन्तानों वाली], (इन्द्रपत्नी) इन्द्रपत्नी [बड़े ऐश्वर्य वाले मनुष्य की स्त्री] (महीयते) पूजी जाती है, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम श्रेष्ठ है ॥ १० ॥

भावार्थ—जो ज्ञानवती स्त्री अपने सदृश वीर पति से विवाह करके वीर सन्तानें उत्पन्न करती है, वही संसार में बड़ाई पाती है ॥ १० ॥

इन्द्राणीमासु नारिषु भगामहमश्वम् । नृह्यस्या अपरं च न
जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ११ ॥

इन्द्राणीम् । आसु । नारिषु । सु-भगाम् । अहम् । अश्वम् ॥
नृहि । अस्याः । अपरम् । च न । जरसा । मरते । पतिः । ० ॥ ११ ॥

भावार्थ—(आसु) इन (नारिषु) चलायी गयी प्रजाओं के बीच (इन्द्राणीम्) इन्द्राणी [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष की विभूति वा शक्ति] को (सुभगाम्) बड़ी भगवती [ऐश्वर्य वाली] (अहम्) मैं ने (अश्वम्) सुना है, (अस्याः) इस [विभूति] का (पतिः) पति [पालन करने वाला, इन्द्र यह मनुष्य] (अपरम् च न) दूसरे प्राणियों के समान (जरसा) वयोहानि से (नहि) नहीं (मरते) मरता है, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ ११ ॥

वनम् (वा) समुच्चये (अथ गच्छति) जानाति (वेधाः) विधात्री (श्रुतस्य) सत्यज्ञानस्य (वीरिणी) म० ६ (इन्द्रपत्नी) म० ६ (महीयते) पूज्यते । अन्यद् गतम् ॥

११—(इन्द्राणीम्) इन्द्राणीन्द्रस्य पत्नी—निरु० ११ । ३७ । इन्द्राणी इन्द्रस्य पत्नी इन्द्रस्य विभूतिः—दुर्गाचार्यः । परमैश्वर्यवतः पुरुषस्य विभूतिं शक्तिम् (आसु) दृश्यामानासु (नारिषु) वसिष्ठपियत्रि० उ० ४ । १२५ । नृ नये-इत् । नीतासु प्रजासु (सुभगाम्) बह्वैश्वर्यवतीम् (अहम्) मनुष्यः (अश्वम्) अश्वौषम् । श्रुतवानस्मि (नहि) नैव (अस्याः) विभूतेः (अपरम्) अन्यत् प्राणिजातम् (च न) सादृश्ये (जरसा) वयोहान्या । निर्वलत्वेन (मरते) म्रियते (पतिः) पालकः । अन्यद् गतम् ॥

भावार्थ—यह वेदादि शास्त्रों से प्रसिद्ध है कि उन्नतिशाल मनुष्य अपनी बुद्धि आदि शक्तियों को ठिकाने रखकर सदा बलवान् रहकर यशस्वी होवे ॥ ११ ॥

नाहमिन्द्राणि रारण सख्युर्वृषाकपेक्षुते । यस्येदप्यं हविः
प्रियं देवेषु गच्छति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १२ ॥

न । अहम् । इन्द्राणि । ररण । सख्युः । वृषाकपेः । क्षुते ॥
यस्य । इदम् । अप्यम् । हविः । प्रियम् । देवेषु । गच्छति । ० ॥ १२ ॥

भावार्थ—(इन्द्राणि) वे इन्द्राणी ! [इन्द्र, बड़े पेश्वर्यवान् मनुष्य की विभूति] (सख्युः) सखा (वृषाकपेः) वृषाकपि [बलवान् चेष्टा कराने वाले जीवात्मा] के (अहम्) बिना (अहम्) मैं [शरीरधारी] (न) नहीं (ररण) चलसकता, (यस्य) जिस [वृषाकपि, जीवात्मा] का (इदम्) यह (अप्यम्) प्रजाओं का हितकारी (प्रियम्) प्यारा (हविः) हवि [देने लेने योग्य, घृत, जल आदि पदार्थ] (देवेषु) विद्वानों में (गच्छति) पहुँचता है, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ १२ ॥

भावार्थ—मनुष्य अपनी शक्ति को अपने मित्र जीवात्मा के साथ दृढ़ रखकर स्वस्थ रहे, और सब प्राणियों से उत्तम होकर मोक्ष सुख पावे ॥ १२ ॥

वृषाकपायि रेवंति सुपुत्र आदु सुस्नुषे । घसत् त इन्द्रं
उदाणः प्रियं काचित्कुरं हविर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १३ ॥
वृषाकपायि । रेवंति । सु-पुत्रे । आत् । जं इति । सु-स्नुषे ॥

१२—(न) निषेधे (अहम्) शरीरी जीवः (इन्द्राणि) म० ११ । हे पर-मैश्वर्यवतः पुरुषस्य विभूते (ररण) रण गतौ शब्दे च—लङ्गं लिट् । गच्छामि (सख्युः) सखिभूतात् (वृषाकपेः) म० १ । बलवतश्चेष्टयितुर्जीवात् (अहम्) बिना (यस्य) वृषाकपेः (इदम्) दृश्यमानम् (अप्यम्) अपां प्रजानां हितम् (हविः) दातव्यग्राह्यं घृतजलादिकम् (प्रियम्) प्रीतिकरम् (देवेषु) विद्वत्सु (गच्छति) प्राप्यते । अन्यत् सिद्धम् ॥

चसत् । ते । इन्द्र । उद्दणः । प्रियम् । काचित्-करम् । हविः । १० ॥ १३

भाषार्थ—(वृषाकपायि) हे वृषाकपायी ! [वृषाकपि बलवान्, चेष्टा कराने वाले जीवात्मा की विभूति] (रेवति) हे धनवाली ! (सुपुत्रे) हे वीर पुत्रों की करने वाली ! (सुस्तुपे) हे बहुत सुख बरसाने वाली ! (आत् उ) लगातार ही (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (ते) तेरे (उद्दणः) बढ़ती करने वाले पदार्थों को (घसत्) खावे, वह (प्रियम्) १. प्यारा (काचित्-करम्) सुख का सब ओर से एकत्र करने वाला (हविः) हवि [म० १२ । घृत, जल आदि पदार्थ] है, [क्योंकि] (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ १३ ॥

भाषार्थ—मनुष्य आत्मबल को अपनी विभूति में संयुक्त करके संसार के सब पदार्थों से उपकार लेकर आनन्द पावे ॥ १३ ॥

उद्दणो हि मे पञ्चदश सुकं पचन्ति विंशतिम् । उताहमग्नि
पीव इदुभा कुक्षी पृणन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १४ ॥
उद्दणः । हि । पञ्च-दश । सुकम् । पचन्ति । विंशतिम् ॥

१३—(वृषाकपायि) म० १। वृषाकप्यग्नि० पा०। ४। १। ३७। वृषाकपि—झीप, ऐकारादेशश्च । वृषाकपायी वृषाकपेः पत्न्यपैवाभिसृष्टकालतमा निरु० १२ । ८। वृषाकपायी वृषाकपेः पत्नी, वृषाकपिरादित्यः, तस्य पत्नी, तद्विभूतिः इति दुर्गाचार्यः । वृषाकपायी श्रीगौर्योः—इत्यमरः, २३। १५६। लक्ष्मीः, गौरी, स्वाहा, शची, जीवन्ती, शतावरी—इति शब्दकल्पद्रुमः । हे वृषाकपेर्जीवात्मनो विभूते (रेवति) धनवति (सुपुत्रे) सु वीराः पुत्रा यस्याः सकाशात् सा सुपुत्रा तत्सम्बुद्धौ (आत्) अन्तरम् (उ) पच (सुस्तुपे) स्तुवश्चि० । उ० ३ । ६६ । णु प्रसवणे—सः कित्, टाप् । स्तुपा साधुसाधिनीति वा साधुसाधिनीति वा स्वपत्यं तत् सनोतीति वा—निरु० १२ । ६ । बहुसुखस्य वर्षयिषि (घसत्) घसल्ल अदने—लेट् । भक्षयेत् (ते) तव (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् मनुष्यः (उद्दणः) उद्दतेर्बृद्धिकर्मणः—निरु० १२ । ६ । वृद्धिकरान् पदार्थान् (प्रियम्) इष्टम् (काचित्करम्) क + आ + चिञ् चयने—किप्, तुक् + करोतेः—अथ । सुखाचयकरं सुखकरम्—निरु० १२ । ६ । कं सुखं तस्याचित् संघः, तत्करम् (हविः) म० १२ । घृतजलादिकम् । अन्यद् गतम् ॥

उत । अहम् । अग्नि । पीवः । उभा । कुक्षी इति । पृणन्ति । से० १४

भाषार्थ—(पञ्चदश, विंशतिम्) पन्द्रह, बीस [अर्थात् बहुत से] (उदणः) बढ़ती करने वाले पदार्थों को (मे) मेरे लिये (हि) ही (साकम्) एक साथ (पचन्ति) वे [ईश्वर नियम] परिपक्व करते हैं, (उत) और (अहम्) मैं (पीवः) उन के पुष्टि कारक रस को (इत्) ही (अग्नि) खाता हूँ, और (मे) मेरी (उभा) दोनों (कुक्षी) कोखों को (पृणन्ति) वे [पदार्थ] भरते हैं, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी-मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ १४ ॥

भावार्थ—परमात्मा ने संसार में अनेक उपकारी पदार्थ उत्पन्न किये हैं, मनुष्य उन का सार लेकर शरीर और आत्मा की पुष्टि करे ॥ १४ ॥

वृषभो न तिग्मशृङ्गोऽन्तर्गुणेषु रोरुवत् । मन्यस्त इन्द्रोऽं हृदे यं ते सुनोति भावयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १५ ॥

वृषभः । न । तिग्म-शृङ्गः । अन्तः । गुणेषु । रोरुवत् ॥ मन्यः । ते । इन्द्र । शम् । हृदे । यम् । ते । सुनोति । भावयुः । ०॥१५

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले मनुष्य] (गुणेषु अन्तः) यूथों के बीच (रोरुवत्) दहाड़ते हुये, (तिग्मशृङ्गः) तीक्ष्ण सींगों वाले (वृषभः न) बेल के समान, (मन्यः) वह तस्व रस (ते) तेरे (हृदे) हृदय के लिये (शम्) शान्ति दायक हो, (यम्) जिस [तस्व रस] को (ते) तेरे

१४—(उदणः) म० १३ । वृद्धिकरान् पदार्थान् (हि) एवं (मे) मह्यम् (पञ्चदश, विंशतिम्) बहुतसंख्याकान् (साकम्) सह (पचन्ति) परिपक्वान् कर्चन्ति ते परमेश्वरनियमाः (उत) अपि च (अहम्) मनुष्यः (अग्नि) भक्षयाभिं (पीवः) पीव स्थौल्ये-असुन । पुष्टिकरं रसम् (इत्) एव (उभा) उभौ । द्वौ (कुक्षी) उदरस्य वामदक्षिणपार्श्वौ (पृणन्ति) पूरयन्ति ते पदार्थाः (मे) मम । अन्ग्रह गतम् ॥

१५—(वृषभः) पुङ्गवः (न) इव (तिग्मशृङ्गः) तीक्ष्णविषाणः (अन्तः) मध्ये (गुणेषु) सजातीयसमूहेषु (रोरुवत्) कः शब्दे-यङ्लुकि शत् । भूशं ध्वनिं कुर्वन् (मन्यः) तस्वरसः (ते) तव (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् मनुष्य

लिये (भावयुः) सत्ता चाहने वाला [परमात्मा] (सुनोति) मन्थता है, [क्योंकि] (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ १५ ॥

भाषार्थ—जैसे बलवान् सांड अपने भुंड़ों को बश में करके सुख को प्राप्त होता है, वैसे ही प्रतापी मनुष्य परमात्मा के उत्पन्न किये पदार्थों से तत्त्व रस ग्रहण करके सुखी होवे ॥ १५ ॥

न शेषे यस्य रम्बतेऽन्तरा सुकथ्या इ कपृत् । शेषे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १६ ॥

न । सः । ईशे । यस्य । रम्बते । अन्तरा । सुकथ्या । कपृत् ॥
सः । इत् । ईशे । यस्य । रोमशम् । नि-सेदुषः । वि-जृम्भते ॥ १६ ॥

भाषार्थ—(सः) वह पुरुष (न ईशे) ऐश्वर्यवान् नहीं होता है, (यस्य) जिस का (कपृत्) शिर पालने वाला कपाल (सकथ्या अन्तरा) दोनों जंघाओं के बीच (रम्बते) नीचे लटकता है, (सः इत्) वही पुरुष (ईशे) ऐश्वर्यवान् होता है, (यस्य निषेदुषः) जिस बैठे हुये [विचारते हुये] पुरुष का (रोमशम्) रोम वाला मस्तक [ज्ञान सामर्थ्य] (विजृम्भते) फैलता है, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ १६ ॥

भाषार्थ—मनुष्य को चाहिये कि आलस्य से मस्तक झुकाकर अपने

(शम्) सुखदः (हृदे) हृदयाय (यम्) मन्थम् (ते) तुभ्यम् (सुनोति) निष्पादयति (भावयुः) भावं सत्तामिच्छुकः । अन्यद् गतम् ॥

१६—(न) निषेधे (सः) पुरुषः (ईशे) ईशे । ऐश्वर्यवान् भवति (यस्य) (रम्बते) लस्य रः । लम्बते । अधस्तादाभियते (अन्तरा) मध्ये (सकथ्या) सकथिनी । जंघे (कपृत्) क + पृ पालने-क्रिप्, तुक् । कस्य शिरसः पालकः । कपालः (सः) (इत्) एव (ईशे) ईशे (यस्य) (रोमशम्) मत्स्थं शप्रत्ययः । रोमयुक्तं मस्तकम् (निषेदुषः) उपविष्टस्य (विजृम्भते) विवृतं भवति । विस्तीर्यते । अन्यद् गतम् ॥

ज्ञान को संकुचित न करे, किन्तु शिर को सब ओर घुमाकर भली मान्ति विचारकर ज्ञान बढ़ाता हुआ अपना इन्द्रत्व दिखावे ॥ १६ ॥

न शेषे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते । सेदीशे यस्य रम्ब-
तेऽन्तरा सुकथ्या ३ कपृद् विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १७ ॥

न । सः । ईशे । यस्य । रोमशम् । नि-सेदुषः । वि-जृम्भते ॥

सः । इत् । ईशे । यस्य । रम्बते । अन्तरा । सुकथ्या । कपृत् ०१७

भाषार्थ—(सः) वह पुरुष (न ईशे) ऐश्वर्यवान् नहीं होता, (यस्य निषेदुषः) जिस बैठे हुये [आलसी] को (रोमशम्) रोम वाला मस्तक (विजृम्भते) जंभाई लेता है, (सः इत्) वही पुरुष (ईशे) ऐश्वर्यवान् होता है, (यस्य) जिस का (कपृत्) शिर पालने वाला काल (सकथ्यः अन्तरा) दोनों जंघाओं के बीच [ध्यान में] (रम्बते) नीचे लटकता है, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ १७ ॥

भाषार्थ—जो मनुष्य आलस्य से शिर झुकाकर ओंछने लगते हैं, उन को विद्या, सुवर्ण और राज्य आदि ऐश्वर्य नहीं मिलता, ऐश्वर्य उन को मिलता है जो शिर को झुकाकर अपना आपा सोचते हुये इन्द्र बनते हैं ॥ १७ ॥

अयमिन्द्र वषाकपिः परस्वन्तं हुतं विदुः । असि सुनां नवं
चरुमादेधुस्यान् आचितुं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १८ ॥

अयम् । इन्द्र । वषाकपिः । परस्वन्तम् । हुतम् । विदुः ॥

असिम् । सुनाम् । नवम् । चरुम् । आत् । एधस्य । अनः ।

आ-चितम् ० ॥ १८ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले मनुष्य] (अयम्) इस (वृषाकपिः) वृषाकपि [बलवान् चेष्टा कराने वाले जीवात्मा] ने (पर-

१७—(विजृम्भते) आलस्येन जृम्भां मुखविकाशं करोति। अन्यत् पूर्ववत् ॥

१८—(अयम्) प्रसिद्धः (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् मनुष्य (वृषाकपिः)

स्वन्तम्) पालने वाले व्यवहार को (हतम्) नाश किया हुआ (विदत्) पाया है, (आत्) तभी (नवम्) नवीन (चरम्) स्थान [अर्थात् देश निकास], [अथवा] (असिम्) तलवार, (सूनाम्) बध स्थान, और (पधस्य) इन्धन का (आचितम्) भरा हुआ (अनः) झुड़ड़ा [पाया है], (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ १८ ॥

भाष्यार्थ—जो पापी आत्मा उपकारी व्यवस्था को तोड़े, उस को दण्ड रीति से ऐसा कष्ट भोगना चाहिये, जैसे कोई अपराधी देश से निकाला जावे, अथवा तलवार आदि शस्त्र से मारकर लकड़ी से भस्म किया जावे ॥ १८ ॥

अयमैमि विचाकशद् विचिन्वन् दासुमार्यैश्च । पिबामि पाकु-
सुत्वनोऽभि धीरमचाकशु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १९ ॥

अयम् । एमि । वि-चाकशत् । वि-चिन्वन् । दासुम् । आर्यैश्च ॥
पिबामि । पाकु-सुत्वनः । अभि । धीरम् । अचाकशुम् ॥ १९ ॥

भाष्यार्थ—(विचाकशत्) विविध प्रकार सुशोभित हुआ, और (दासुम्) डाकू और (आर्यम्) आर्य [श्रेष्ठ पुरुष] को (विचिन्वन्) पहि-
चानता हुआ (अयम्) यह मैं [इन्द्र] (पमि) चलता हूँ, (पाकुसुत्वनः) पकके विद्वान् के तत्त्व रस को (पिबामि) पान करता हूँ और (धीरम्) धीर

म० १ । बलवान् चैष्टयिता जीवात्मा (परस्वन्तम्) पृ पालनपूरणयोः—
अमुन् । पालनवन्तं व्यवहारम् (हतम्) हिंसितम् (विदत्) अविदत् । प्राप्तवान्
(असिम्) खड्गम् (सूनाम्) पृ क्षेपे—क्त, टाप् । प्राणिवधस्थानम् (नवम्)
नवीनम् (चरम्) चरस्थानम् । विवासनम् (आत्) अनन्तरम् (पधस्य)
इन्धनस्य (अनः) शकटम् (आचितम्) पूर्णम् । अन्यद् गतम् ॥

१९—(अयम्) इन्द्रः (पमि) गच्छामि (विचाकशत्) अ० १३ । ३ ।
१ । काष्ठ दीप्तौ यङ्लुकि शतृ । विविधं भृशं शोभमानः (विचिन्वन्) चिञ्
चयने—शतृ । परिचिन्वन् । विशेषेण जानन् (दासुम्) उपक्षेपयितारम् ।
दस्युम् (आर्यम्) श्रेष्ठं पुरुषम् (पिबामि) पानं करोमि (पाकुसुत्वनः) पुक्

[बुद्धिमान्] को (अभि) सब प्रकार (अचाकशम्) सुशोभित करता है, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ १६ ॥

भाषार्थ—मनुष्य विद्या आदि श्रेष्ठ गुणों से सुशोभित होकर, दुष्टों और शिष्टों की विवेचना करके शिष्टों का मान और दुष्टों का अपमान करता हुआ इन्द्रत्व दिखावे ॥ १६ ॥

धन्वं च यत् कुन्तव्यं च कति स्वित् ता वि योजना । नेदीयसो
वृषाकुपेऽस्तमेहि गृहान् उप विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २० ॥

धन्वं । च । यत् । कुन्तव्यं । च । कति । स्वित् । ता । वि ।
योजना ॥ नेदीयसः । वृषाकुपे । अस्तम् । आ । इहि ।
गृहान् । उप । ० ॥ २० ॥

भाषार्थ—(यत्) जो (कुन्तव्यम्) काटने योग्य वन (च च) और (धन्वं) निर्जल देश है, (ता) वे (कति स्वित्) कितने ही (योजना) योजना (वि) दूर दूर हैं । (वृषाकुपे) हे वृषाकपि ! [बलवान् चेष्टा कराने वाले जीवात्मा] तू (नेदीयसः) अधिक समीप वाले (गृहान्) घरों को और (अस्तम्) अपने घर को (उप) आदर से (आ इहि आ, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ २० ॥

अभिषवे—कनिष् । पाकः पक्तव्यो भवति विपक्षप्रज्ञ आत्मा—निरु० ३ । १२ ।
विपक्षप्रज्ञस्य तत्त्वरसस्य (अभि) सर्वतः (धीरम्) बुद्धिमन्तम् (अचाकशम्)
काश्रु दीप्तौ यङ्लुकि लङ् । शोभयामि । अन्यद् गतम् ॥

२०—(धन्वं) धन्वानि । निर्जलदेशान् (च) (यत्) (कुन्तव्यम्)
कृतेर्नुम् च । उ० ३ । १०६ । कृती छेदने—कवनं लुम् च । छेदनीयं वनम् (च)
(कति) किंपरिमाणानि (स्वित्) प्रश्ने (ता) तानि धन्वानि (वि) विकृ-
ष्टानि (योजना) चतुः कोशस्थस्थानानि (नेदीयसः) अतिशयेन समीपस्थान्
(वृषाकुपे) म० १ । हे बलवान् चेष्टयितजीवात्मन् (अस्तम्) स्वगृहम् (आ
इहि) आगच्छ (गृहान्) (उप) आदरे । अन्यद् गतम् ॥

भावार्थ—मनुष्य को चाहिये कि कठिनाई पड़ने पर आत्मघाती
अर्थात् हताश न होवे, किन्तु धैर्य बांधकर ठिकाने पर आ जावे ॥ २० ॥

पुनरेहि वृषाकपे सुविता-कल्पयावहै । य एष स्वप्नंशुनोऽस्तु-
मेवि पथा पुनर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २१ ॥

पुनः । आ । इहि । वृषाकपे । सुविता । कल्पयावहै ॥ यः ।
एषः । स्वप्न-नशनः । अस्तम् । एवि । पथा । पुनः । ० ॥ २१ ॥

भाषार्थ—(वृषाकपे) हे वृषाकपि ! [बलवान् चेष्टा कराने वाले
जीवात्मा] तू (पुनः) फिर (आ इहि) आ, (सुविता) ऐश्वर्य कर्मों को
(कल्पयावहै) हम दोनों [तू और मैं] विचार कर करें, (यः) जो (एषः)
यह तू (स्वप्नंशुनः) स्वप्न नाश करने वाला [आलस्य छुड़ाने वाला] है,
सो तू (पथा) मार्ग से [सन्मार्ग से] (पुनः) फिर (अस्तम्) घर (एवि)
पहुँचता है, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब
[प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ २१ ॥

भावार्थ—मनुष्य अपने गिरे हुये आत्मा को सावधानी से ठिकाने पर
लाकर ऐश्वर्य बढ़ाता रहे ॥ २१ ॥

यदुदञ्चो वृषाकपे गृहमिन्द्राजमन्तन । क्व १ स्य पुंस्त्वचो मृगः
कमगं जनयोपनो विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २२ ॥

यत् । उदञ्चः । वृषाकपे । गृहम् । इन्द्र । अजमन्तन ॥ क्व ।
स्यः । पुंस्त्वचः । मृगः । कम । अगन् । जुन-योपनः । ० ॥ २२ ॥

२१—(पुनः) (आ इहि) आगच्छ (वृषाकपे) म० १ । हे बलवान्
चेष्टयितजीवात्मन् (सुविता) अ० १५ । १० । १ । ऐश्वर्यकर्माणि (कल्पयावहै)
त्वमहं चावामुभौ पर्यालोच्य कुर्याव (यः) (एषः) स त्वम् (स्वप्नंशुनः) यश
अदर्शने नाशे च—एयुद् । मस्तिजनशोर्भलि । पा० ७ । १ । ६० । इति जुम् ।
स्वप्नस्यालस्यस्य नाशयिता (अस्तम्) गृहम् (एवि) गच्छसि (पथा)
सन्मार्गेण (पुनः) । अन्यद् गतम् ॥

सू० १२६ [७१४] विंशं कारुण्यम् ॥ ३० ॥

(४,४४८)

भाषार्थ—(वृषाकपे) हे वृषाकपि ! [चलवान् चेष्टा कराने वाले जीवात्मा] (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेशवर्य वाले मनुष्य] [और हे इन्द्राणी ! मनुष्य की विभूति] (यत्) जब (उदञ्चः) ऊँचे चढ़ते हुये तुम सब (गृहम्) घर (अजगन्तन) पहुँच गये, (स्यः) वह (पुलवधः) महापापी, (जनयोपनः) मनुष्य को घबरा देने वाला, (मृगः) पशु [पशु समान गिरा हुआ जीवात्मा] (क) कहां (कम्) किस मनुष्य को (अगन्) पहुँचा, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेशवर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ २२ ॥

भाषार्थ—जब मनुष्य अपने आत्मा और बुद्धि आदि विभूति को ठिकाने ले आता है, वह कभी भी दुष्ट कर्म करके संकट में नहीं पड़ता है ॥ २२ ॥

पशुर्ह नाम मानवी साकं संसूव विंशतिम् । भद्रं भलं त्वस्या अभुद् यस्या उदरमाभयद् विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २३ ॥

पशुः । हु । नाम । मानवी । साकम् । संसूव । विंशतिम् ॥
भुद्रश्च । भलम् । त्वस्यै । अभुत् । यस्याः । उदरम् । आभयत् ।
विश्वस्मात् । इन्द्रः । उत्तरः ॥ २३ ॥

भाषार्थ—(पशुः) शत्रुओं का नाश करने वाली (मानवी) मनुष्य की विभूति ने (ह) निश्चय करके (नाम) प्रसिद्ध (विंशतिम्) बीस [पंच

२२—(यत्) यदा (उदञ्चः) उद्गामिनः सन्तः (वृषाकपे) म० १ । हे चलवान् चेष्टयितजीवात्मन् (गृहम्) (इन्द्र) परमेश्वर्यवान् मनुष्य । हे इन्द्राणि च यूयं सर्वे (अजगन्तन) गमेल्लोडि मध्यमबहुवचने छान्दसः शपः श्लुः । तत्तनप्तनथनाश्च । पा० ७ । १ । ४५ । तनवादेशः । यूयम् अगच्छत (क) कुत्र (स्यः) सः (पुलवधः) पुरु + अघ पापकरणे—अच्. रस्य लः । बहुपापः (मृगः) म० ३ । पशुतस्यो नीचगामी जीवात्मा (कम्) प्रश्ने । मनुष्यम् (अगन्) अगच्छत् (जनयोपनः) जनमोहनः । अन्यद् गतम् ॥

२३—(पशुः) आक्षुपरयोः लनिशुभ्यां डित्च । उ० १ । ३३ । पर + शु हिंसायाम्—कु डित्, पुषोदरादित्वादकारलोपः । पराणां शत्रूणां नाशयित्री (ह) अवधारणे (नाम) प्रसिद्धौ (मानवी) अ० ३ । २४ । ३ । मनु—अब,

(४,४५०)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० १२७ [७१५]

ज्ञानेन्द्रियों और पांच कर्मेन्द्रियों और इन के दस विषयों] को (साकम्) एक साथ (ससूत्र) उत्पन्न किया है । (भल) हे विचारवान् ! [आत्मा] (त्यस्यै) उसे [माता] के लिये (भद्रम्) कल्याण (अभूत्) हुआ है, (यस्याः) जिस [माता] के (उदरम्) पेट को (आमयत्) उस [गर्भ] ने पीड़ा दी थी, (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला मनुष्य] (विश्वस्मात्) सब [प्राणी मात्र] से (उत्तरः) उत्तम है ॥ २३ ॥

भावार्थ—दस इन्द्रियां और उनके दस विषय, मनुष्य की उत्तम विभूति अर्थात् शक्ति से उत्तम होते हैं, इस लिये मनुष्य तपश्चरण से उत्तम विद्या प्राप्त करके सुख पावे; जैसे माता गर्भ का कष्ट सहकर उत्तम सन्तान उत्पन्न करके सुख पाती है ॥ २३ ॥

अथ कुन्तापसूक्तानि [१२७-१३६] ॥

सूक्तम् १२७ ॥

१-१४ ॥ प्रजापतिरिन्द्रो वा देवता ॥ १, २ पथ्या बृहती ; ३, ५, १२ निचृदनुष्टुप् ; ४, ७, ६-११, १३ अनुष्टुप् ; ६ भुरिगुष्णिक् ; ८ भुरिगनुष्टुप् ; १४ निचृत् पङ्क्तिः ॥

राजधर्मोपदेशः—राजा के धर्म का उपदेश ॥

इदं जनु उप श्रुत् नराशंसु स्तविष्यते । षष्टि सुहस्रा नवृतिं च कौरम् आ रुशमेषु ददमहे ॥ १ ॥

इदम् । जनुः । उप । श्रुत् । नराशंसुः । स्तविष्यते ॥ षष्टिम् । सुहस्रा । नवृतिम् । च । कौरम् । आ । रुशमेषु । ददमहे ॥ १ ॥

कीष् । मनोर्मनुष्यस्येयं विभूतिः (साकम्) सह (ससूत्र) ससूत्रेति निगमे । पा० ७ । ४ । ७४ । इति सूतेर्लिटि कृपम् । सुषुवे । जनयामास (विंशतिम्) दशेन्द्रियाणि दश तेषां विषयान् च (भद्रम्) कल्याणम् (भल) भल बधे दाने निरूपणे च—अच् हे निरूपकात्मन् (त्यस्यै) तस्यै । जनन्यै (अभूत्) (यस्याः) जनन्याः (उदरम्, गुमशियम्, आमयत्) अम पीडने । पीडितवान्

सू० १२७ [७१५]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,४५१)

[सूचना—सू० १३६ के मन्त्र १ तथा ४ को छोड़कर, यह कुन्तापसूक्त १२७—१३६ ऋग्वेद आदि अन्य वेदों में नहीं हैं। हम स्वामी विश्वेश्वरानन्द नित्यानन्द कृत पद सूची से पद पाठ को संग्रह करके और कुछ शोधकर लिखते हैं। आगे सूचना अथर्व० २० । ३४ । १२, १६, १७, ४८ । १—३ ; ४६ । १—३ भी देखो ॥]

भाषार्थ—(जनाः) हे मनुष्यो ! (इदम्) यह (उप) आदर से (श्रुत) सुनो, [कि] (नराशंसः) मनुष्यों में प्रशंसा वाला पुरुष (स्तविष्यते) बड़ाई किया जावेगा। (कौरम) हे पृथिवी पर रमण करने वाले राजन् ! (षष्टिम् सहस्रा) साठ सहस्रा (च) और (नवतिम्) नब्बे [अर्थात् अनेक दानों] को (रुशमेष्टु) हिंसकों के फँकने वाले वीरों के बीच (आ ददाहे) हम पाते हैं ॥ १ ॥

भावार्थ—उत्तम कर्म करने वाला मनुष्य संसार में सदा बड़ाई पाता है, यह विचार कर राजा कर्मकुशल वीरों के बीच आदर कर के सुपात्रों को अनेक दान देवे ॥ १ ॥

(कुन्तापसूक्तानि) का अर्थ पाप वा दुष्ट के भस्म करने वाले सूक्त अर्थात् वेद मन्त्रों के समुदाय है ॥

उषट्त्वा यस्य प्रवाहणो वधूमन्तो द्विर्दश । वृष्म रयस्य नि जिहीडते दिव ईषमाणा उपस्पृशः ॥ २ ॥

उषट्त्वाः । यस्य । प्रवाहणः । वधूमन्तः । द्विर्दश ॥ वृष्म ।

[कुन्तापसूक्तानि—कुङ् आर्तस्वरे—दुप्रत्ययः + तप दाहे—वज्र, अलुक्-समासः + सु + वच् कथने—क। कौः पापस्य दुःखस्य तापकानि दाहकानि सूक्ताणि सुन्दरकथनानि वेदमन्त्रसमुदायाः—इत्यर्थः] ॥

१—(इदम्) वक्ष्यमाणम् (जनाः) हे मनुष्याः (उप) आदरे (श्रुत) शृणुत (नराशंसः) अथ० ५ । २७ । ३ । नरेष्टु आशंसा यस्य सः । मनुष्येषु प्रशंसनीयः (स्तविष्यते) स्तुत्यो भविष्यति (षष्टिं सहस्रा नवतिं च) बहुसंख्याकानि दानानि—इत्यर्थः (कौरम) कौ + रमु क्रीडायाम्—अच्, अलुक्समासः । हे कौ पृथिव्यां रमणशील राजन् (रुशमेष्टु) अथ० २० । ३० । २ । रुशमाणां हिंसकानां प्रक्षेपकेषु वीरेषु (आ ददाहे) वयं गृह्णीमः ॥

रथस्य । नि । जिहीडते । दिवः । ईषमाणाः । उपस्पृशः ॥ २॥

एष इषायं मामहे शतं निष्कान् दश स्रजः ।

त्रीणि शतान्यर्वतां सुहस्ता दश गोनाम् ॥ ३ ॥

एषः । इषायं । मामहे । शतम् । निष्कान् । दश । स्रजः ॥

त्रीणि । शतानि । अर्वताम् । सुहस्ता । दश । गोनाम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(यस्य) जिस [राजा] के (रथस्य) रथ के (प्रवाहणः) ले चलने वाले, (ईषमाणाः) शीघ्र गामी, (उपस्पृशः) छूते हुये, (वधूमन्तः) उंटनियों सहित, (द्विदश) दो बार दस (उपद्राः) ऊंट (दिवः) उन्मत्त मनुष्य के (वर्ष्मा = वर्ष्माणम्) ऊंचे पद का (नि जिहीडते) अपमान करते रहते हैं ॥ २ ॥ (एषः) उस [राजा] ने (इषायं) उद्योगी पुरुष को (शतम्) सौ (निष्कान्) दीनारे [सुवर्ण मुद्रा], (दश) दस (स्रजः) मालायें, (अर्वताम् त्रीणि शतानि) तीन सौ छोड़े और (गोनाम् दश सहस्रा) दस सहस्र गौयें (मामहे) दान दी हैं ॥ ३ ॥

२—(उद्राः) उषिकुशिभ्यां कित् । उ० ४ । १६२ । उष दाहे, बधे च—
द्रम् कित् । पशुमेवाः (यस्य) राज्ञः (प्रवाहणः) वह प्रापणे—णिच् कनिच्
वाहकाः (वधूमन्तः) उष्ट्रीसहिताः (द्विदश) द्विवारं दश । विंशतिम् (वर्ष्मा)
अ० ३ । ४ । २ । वृष प्रजननैश्वयोः—मनिच् । सुपां सुलुक्० । पा० ७ । १ । ३६ ।
द्वितीयास्थाने सुः । वर्ष्माणम् । उच्चपदम् (रथस्य) यानस्य (नि) नितराम्
(जिहीडते) अ० ४ । १२ । ५ । हेड्डु अनादरे क्रोधे च तिरस्कुर्वन्ति (दिवः)
विद्वु मदे—किप् । उन्मत्तस्य (ईषमाणाः) ईष बतौ—शानच् । शीघ्रगामिनः
(उपस्पृशः) उपस्पृष्टाः । योजिताः ॥

३—(एषः) स राजा (इषायं) इष गतौ—क । उद्योगिने पुरुषाय
(मामहे) महतेर्दानकर्मा—निघ० ३ । २० । ददौ (शतम्) (निष्कान्)
निश्चयेन कायति । निस् + कै शब्दे—क । यद्वा, नौ सदेर्दिङ् । उ० ३ । ४५ ।
पदस्य गतिविशरणयोः—कन्, स च डित् । दीनारान् । सुवर्णमुद्राः (दश)
(स्रजः) स्रज विसर्गे—किन् । मालाः (त्रीणि) (शतानि) (अर्वताम्) अर्वा-
गाम् (सहस्रा) सहस्राणि (दश) (गोनाम्) गवाम् । धेनूनाम् ॥

भाषार्थ—राजा बीसहों ऊंट इंटनी आदि को रथ आदि में जोतकर अनेक उद्यम करे करावे और उद्योगी लोगों को बहुत से उचित पारितोषिक देवे ॥ २, ३ ॥

वच्यस्व रेभं वच्यस्व वृक्षे न पुक्के शुकुनः ।

नष्टे जिह्वा चर्चरीति क्षुरो न भुरिजोरिव ॥ ४ ॥

वच्यस्व । रेभं । वच्यस्व । वृक्षे । न । पुक्के । शुकुनः ॥ नष्टे ।

जिह्वा । चर्चरीति । क्षुरः । न । भुरिजोः । इव ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(रेभं) हे विद्वान् ! (वच्यस्व) उपदेश कर, (वच्यस्व) उपदेश कर, (न) जैसे (शुकुनः) पक्षी (पुक्के) फल वाले (वृक्षे) वृक्ष पर [चढ़ चढ़ाता है] । (नष्टे) दुख व्यापने पर (भुरिजोः) दोनों धारण पोषण करने वाले [स्त्री पुरुष] की (इव) ही (जिह्वा) जीभ (चर्चरीति) चलती रहती है, (न) जैसे (क्षुरः) क्षुरा [केशों पर चलता है] ॥ ४ ॥

भाषार्थ—विद्वान् स्त्री पुरुष प्रसन्न होकर सन्तान आदि को सदा सद्-उपदेश करें, जैसे फलवाले वृक्ष पर पक्षी प्रसन्न होकर बोलते हैं, और सद्-उपदेश द्वारा क्लेशों को इस प्रकार काटें, जैसे नापित केशों को क्षुरा से काट डालता है ॥ ४ ॥

अ रेभासो मनीषा वृषा गाव इवेरते ।

अमोतपुत्रका सुषाममोत गा इवांसते ॥ ५ ॥

अ । रेभासः । मनीषाः । वृषाः । गावः-इव । ईरते ॥ अमोत ।

४—(वच्यस्व) अतीत्येक । ब्रूहि । उपदिश (रेभं) स्तोत्रनाम—निघ० ३ । १६ । हे विद्वान् (वच्यस्व) (वृक्षे) (न) यथा (पुक्के) फलयुक्ते (शुकुनः) अथ० ६ । २७ । २ । शक्ल शकौ—उन । शकः । पक्षी (नष्टे) नशत्, व्याप्ति-कर्मा—निघ० २ । १८ । व्याप्ते दुःखे (जिह्वा) वाणी (चर्चरीति) भृशं चरति (क्षुरः) क्षुर विलेखने-क । नापितास्त्रम् (न) यथा (भुरिजोः) भृज इव । उ० २ । ७२ । दुभृज धारणपोषणयोः—इति कित्, उकारान्तादेशः । धारक—पोषकयोः स्त्रीपुरुषयोः (इव) एव ॥

पुत्रकाः । एषाम् । अमोत । गाः-इव । आसते ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(वृषाः) बलवान् (गावः इव) बैलों के समान (रेमासः) विद्वान् लोग (मनीषाः) बुद्धियों को (प्र ईरते) आगे बढ़ाते हैं । (अमोत) हे बन्धन रहित ! (अमोत) हे मुक्त मनुष्य ! (एषाम्) इन [विद्वानों] के (पुत्रकाः) पुत्र (गाः) विद्याओं और भूमियां को (इव) अवश्य (आसते) सेवते हैं ॥ ५ ॥

भाषार्थ—जैसे बलवान् बैल आगे बढ़ते जाते हैं, मनुष्य विद्वानों से मुक्त होकर बुद्धि को अनेक प्रकार बढ़ावें और सन्तान आदि को योग्य विद्वान् और राज्याधिकारी बनावें ॥ ५ ॥

प्र रेभु धीं भरस्व गोविदं वसुविदम् ।

देवत्रेमां वाचं श्रीणीहोषुर्नवीरुस्तारम् ॥ ६ ॥

प्र । रेभु । धीम् । भरस्व । गोविदम् । वसुविदम् ॥ देव-त्रेमा ।

इमाम् । वाचम् । श्रीणीहि । इषुः । न । अवीः । अस्तारम् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(रेभु) हे विद्वान् ! (गोविदम्) भूमि प्राप्त कराने वाली और (वसुविदम्) धन प्राप्त कराने वाली (धीम्) बुद्धि को (प्र) अच्छे प्रकार से (भरस्व) धारण कर । (देवत्रेमा) विद्वानों के बीच (इमाम्) इस [पूर्वोक्त] (वाचम्) वाणी को (श्रीणीहि) पकी कर, (इषुः न) जैसे तीर (अवीः)

५—(प्र) प्रकर्षेण (रेमासः) विद्वानः (मनीषाः) बुद्धीः (वृषाः) बलवन्तः (गावः) वृषभाः (इव) यथा (ईरते) गमयन्ति (अमोत) मूढ बन्धने—क, छान्दसो गुणः । हे अमूत । अवद्ध । मुक्त (पुत्रकाः) पुत्राः । सन्तानाः (एषाम्) पूर्वोक्तानाम् (अमोत) (गाः) विद्याः । भूमीः (इव) एव (आसते) उपासते । सेवन्ते ॥

६—(प्र) प्रकर्षेण (रेभु) विद्वन् (धीम्) गङ्गाम् (भरस्व) धरस्व (गोविदम्) भूमिप्राप्तिकाम् (वसुविदम्) धनप्राप्तिकाम् (देवत्रेमा) विद्वत्सु (इमाम्) पूर्वोक्ताम् (वाचम्) वाणीम् (श्रीणीहि) परिपक्वां वृद्धां कुरु (इषुः) क्षयः (न) यथा (अवीः) अव प्रवेशे—इन् । प्रवेश्याणि लक्ष्याणि (अस्तारम्)

प्रवेश योग्य लक्ष्यों को (अस्तारम्) तीर चलाने वाले के लिये [पका करता है] ॥६॥

भावार्थ—मनुष्य विद्वानों में बैठकर निश्चय करे कि राज्य और धन की प्राप्ति के लिये यत्न सुफल हों, जैसे चतुर धनुर्धारी का बाण लक्ष्य पर ही पहुँचता है ॥ ६ ॥

राज्ञो विश्वजनीनस्य यो देवो मर्त्याँ अति ।

वैश्वानरस्य सुष्टुतिमा सुनोता परिक्षितः ॥ ७ ॥

राज्ञः । विश्वजनीनस्य । यः । देवः । मर्त्यान् । अति ॥

वैश्वानरस्य । सुष्टुतिम् । आ । सुनोत । परिक्षितः ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(यः) जो (देवः) देव [विजय चाहने वाला पुरुष] (मर्त्यान् अति) मनुष्यों में बढ़कर [गुणी है], (विश्वजनीनस्य) सब लोगों के हितकारी, (वैश्वानरस्य) सब के नेता, (परिक्षितः) सब प्रकार ऐश्वर्य वाले (राज्ञः) उस राजा की (सुष्टुतिम्) उत्तम स्तुति को (आ) भले प्रकार (सुनोत) मधो ॥ ७ ॥

भावार्थ—सर्वहितकारी पुरुष से सब मनुष्य उत्तम गुणों का ग्रहण करें ॥ ७ ॥

परिच्छिन्नः क्षेममकरोत् तम् आसनमाचरेन् ।

कुलायन् कृण्वन् कौरव्यः पतिर्वदति जायया ॥ ८ ॥

परिच्छिन्नः । क्षेमम् । अकरोत् । तम् । आसनम् । आचरेन् ।

कुलायन् । कृण्वन् । कौरव्यः । पतिः । वदति । जायया ॥ ८ ॥

शरप्रक्षोभारम् ॥

७—(राज्ञः) तस्य शासकस्य (विश्वजनीनस्य) आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात् खः । पा० ५ । १ । ६ । विश्वजन-खप्रत्ययः । सर्वजनेभ्यो हितस्य (यः) (देवः) विजिगीषुः (मर्त्यान्) मनुष्यान् (अति) अतीत्या । उत्तुङ्ग्य श्रेष्ठगुणैः—वर्तते (वैश्वानरस्य) सर्वनायकस्य (सुष्टुतिम्) कल्याणीं स्तुतिम् (आ) समन्तात् (सुनोत) मधश्च (परिक्षितः) क्षि ऐश्वर्ये-किप्, तुक् । सर्वत ऐश्वर्यशुक्तस्य ॥

भाषार्थ—(तमः) अन्धकार (परिच्छिन्नः) काट डालने वाले [राजा] ने (आसनम्) आसन (आचरन्) ग्रहण करते हुये (दोमम्) दानन्द (अकरोत्) करदिया है—[यह बात] (कुलायन्) घरों को (कुरवन्) बनाता हुआ (कौरव्यः) कार्य करताओं का राजा (पतिः) पति [गृहस्थ] (जायया) अपनी पत्नी से (वदति) कहता है ॥ ८ ॥

भाषार्थ—न्यायकारी, प्रजापालक राजा की चर्चा गृहपति लोग अपनी अपनी स्त्रियों से कहते हैं ॥ ८ ॥

कुतरत् तु आ हराणि दधि मन्थां परि श्रुतम् ।

जायाः पतिं वि पृच्छति राष्ट्रे राज्ञः परिक्षितः ॥ ८ ॥

कुतरत् । ते । आ । हराणि । दधि । मन्थां । परि ।

श्रुतम् ॥ जायाः । पतिम् । वि । पृच्छति । राष्ट्रे । राज्ञः ।

परिक्षितः ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(कतरत्) कौन वस्तु (ते) तेरे लिये (परि) सुधारकर (आ हराणि) मैं लाऊं, (दधि) दही, (मन्थाम्) निर्जल मठा, [वा] (श्रुतम्) नानी मासन आदि—[यह बात] (जायाः) पत्नी (पतिम्) पति से (परिक्षितः)

८—(परिच्छिन्नः) कर्तरि क्तः । परिच्छेदकः । सर्ववतो नाशकः (दोमम्) दानन्दम् (अकरोत्) कृतवान् (तमः) अन्धकारम् (आसनम्) सिंहासनम् (आचरन्) स्वीकुर्वन् । गृहणन् (कुलायन्) ह्रस्वश्चान्दसः । कुलायान् । स्थानानि । गृहाणि (कुरवन्) कुर्वन् । रचयन् (कौरव्यः) कुमोरोच्च । उ० १ । २४ । डुकृञ् करणे—कु, उकारश्च । कुरुनादिभ्यो एयः । पा० ४ । १ । १७२ । कुरु—एय । कुरुणां कार्यकर्तृणां राजा । गृहपतिः (पतिः) भर्ता (वदति) (जायया) पत्न्या ॥

८—(कतरत्) किं वस्तु (ते) तुभ्यम् (आ हराणि) आनयानि (दधि) (मन्थाम्) मथ्यते विलोड्यते, मन्थ विलोडने—घञ् टाप् । मथितम् । निर्जलतकम् (परि) परिभूष्य (श्रुतम्) सु गतौ क्षरणे च—क्त, सस्य शः । श्रुतम् । क्षरितं नवनीतादिकम् (जायाः) एकवचनस्य बहुवचनम् । पत्नी

सब प्रकार ऐश्वर्य वाले (राज्ञः) राजा के (राष्ट्रे) राज्य में (वि) विविध प्रकार (पृच्छति) पूछती है ॥ ६ ॥

भावार्थ—सुनीति वाले राजा के राज्य में दूध, दही घृत आदि पदार्थ बहुतायत से पाकर लोग सुखी होते हैं ॥ ६ ॥

अभीवस्वः प्र जिहीते यवः पृक्कः पृथो बिलम् ।

जनः स भद्रमेधति राष्ट्रे राज्ञः परिक्षितः ॥ १० ॥

अभीवस्वः । प्र । जिहीते । यवः । पृक्कः । पृथः । बिलम् ॥

जनः । सः । भद्रम् । एधति । राष्ट्रे । राज्ञः । परिक्षितः ॥ १० ॥

भावार्थ—(अभीवस्वः) सब ओर से बसाने वाला, (पृक्कः) पका हुआ (यवः) जौ आदि अन्न (पथः) मार्ग से (बिलम्) गढ़े [खत्ती आदि] को (प्र) भले प्रकार (जिहीते) पहुँचता है । (सः जनः) वह मनुष्य (परिक्षितः) सब प्रकार ऐश्वर्य वाले (राज्ञः) राजा के (राष्ट्रे) राज्य में (भद्रम्) आनन्द (एधति) बढ़ाता है ॥ १० ॥

भावार्थ—राजा के सुप्रबन्ध से किसान आदि धनवान् लोग अन्न को पकजाने पर यथाविधि एकत्र करके खत्ती आदि में भरें और आवश्यकता पर काम में लाकर सुखी हों ॥ १० ॥

इन्द्रः कारुमबूधुदुत्तिष्ठ वि चरा जनम् ।

ममेदुग्रस्य चकृधि सर्व इत् ते पृणादुरिः ॥ ११ ॥

(पतिम्) भर्तारम् (वि) विविधम् (पृच्छति) ज्ञातुमिच्छति (राष्ट्रे) राज्ये (राज्ञः) शासकस्य (परिक्षितः) म० ७ । सर्वत ऐश्वर्ययुक्तस्य ॥

१०—(अभीवस्वः) कृगृष्टृदृश्यो चः । उ० १ । १५५ । अभि + वस निवासे—वप्रत्ययः, छान्दसो दीर्घः । सर्वतो वासयिता (प्र) प्रकर्षेण (जिहीते) ओहाङ् गतौ । गच्छति । प्राप्नोति (यवः) यवादिभक्ष्यपदार्थः (पृक्कः) पाकं गतः (पथः) मार्गात् (बिलम्) छिद्रम् । अन्नधारणगर्तम् (जनः) मनुष्यः, (सः) (भद्रम्) आनन्दम् (एधति) एधयति । वर्धयति । अन्यद् गतम्—म० ७ ॥

इन्द्रः । कारुम् । अबूबुधत् । उत्तिष्ठ । वि । चर । जनम् ॥ मम ।
इत् । उग्रस्य । चर्कधि । सर्वः । इत् । ते । पृणात् । अरिः ॥ ११

भाषार्थ—(इन्द्रः) इन्द्र [बड़े पेशवर्य वाले पुरुष] ने (कारुम्)
काम करने वाले को (अबूबुधत्) जगाया है—(उत्तिष्ठ) उठ और (जनम्)
लोगों में (वि चर) विचर, (मम इत् उग्रस्य) मुझ ही तेजस्वी की [भक्ति]
(चर्कधि) तू करता रहे, (सर्वः) प्रत्येक (अरिः) वैरी (इत्) भी (ते)
तेरी (पृणात्) तृप्ति करे ॥ ११ ॥

भावार्थ—प्रतापी राजा के प्रबन्ध से मनुष्य उद्यमी होकर आपस में
विचारें और राज भक्त होकर चोर आदि प्रजा के शत्रुओं को वश में करें ॥ ११ ॥
इह गावः प्रजायध्वमिहाशवा इह पूरुषाः ।

इहो सहस्रदक्षिणोऽपि पुषा नि षीदति ॥ १२ ॥

इह । गावः । प्रजायध्वम् । इह । अशवाः । इह । पूरुषाः ॥

इहो । सहस्रदक्षिणः । अपि । पुषा । नि । षीदति ॥ १२ ॥

भाषार्थ—(गावः) हे गौओं ! तुम (इह) यहां पर [इस घर में],
(अशवाः) हे घोड़ों ! तुम (इह) यहां पर (पूरुषाः) हे पुरुषों ! तुम (इह)
यहां पर (प्रजायध्वम्) बढ़ो, (इहो) यहां पर (सहस्रदक्षिणः) सहस्रों
की दक्षिणा देनेवाला (पुषा) पोषक [गृहपति] (अपि) भी (नि षीदति)
बैठता है ॥ १२ ॥

११—(इन्द्रः) परमेश्वर्यवान् राजा (कारुम्) कार्यकर्तारम् (अबूबुधत्)
प्रबोधितवान् (उत्तिष्ठ) (वि) विविधम् (चर) गच्छ (जनम्) मनुष्यसमूहम्
(मम) (इत्) एव (उग्रस्य) तेजस्विनः (चर्कधि करोते—यङ्लुकि रूपम् ।
भृशं भक्तिं कुरु (सर्वः) प्रत्येकः (इत्) (ते) तव (पृणात्) पुण्य प्रीणने ।
तृप्तिं कुर्यात् (अरिः) शत्रुः ॥

१२—(इह) अस्मिन् गृहे (गावः) हे धेनवः (प्रजायध्वम्) प्रवर्धध्वम्
(इह) (अशवाः) हे तुङ्गाः (इह) (पूरुषाः) हे मनुष्याः (इहो) इह—उ ।
अत्रैव (सहस्रदक्षिणः) बहुदानस्वभावः (अपि) (पुषा) पोषको गृहपतिः
(नि षीदति) उपविशति ॥

भावार्थ—उत्तम राजा के प्रबन्ध से गृहस्थ लीग गौओं, घोड़ों और मनुष्यों से वृद्धि करके परस्पर उपकार करें ॥१२॥

यह मन्त्र महर्षि दयानन्द कृत संस्कारविधि विवाह प्रकारण में उद्धृत है ॥

नेसा इन्द्र गावो रिषन् मो आसां गोप रीरिषत् ।

आसांममित्रयुर्जन इन्द्र मा स्तेन ईशत ॥ १३ ॥

न । इमाः । इन्द्र । गावः । रिषन् । मो इति । आसाम् ।

गोप । रीरिषत् ॥ मा । आसाम् । अमित्रयुः । जनः । इन्द्र ।

मा । स्तेनः । ईशत ॥ १३ ॥

भावार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े पेश्वर्य वाले राजन्] (इमाः) यह (गावः) भूमियों (न रिषन्) न नष्ट होवें और (आसाम्) इन का (गोप) रक्षक (मो रीरिषत्) नहीं नष्ट होवे । (इन्द्र) हे इन्द्र ! [राजन्] (मा) न तो (अमित्रयुः) वैरियों को चाहने वाला (जनः) नीच मनुष्य, और (मा) न (स्तेनः) चोर (आसाम्) इन [भूमियों] का (ईशत) राजा होवे ॥ १३ ॥

भावार्थ—राजा डाकू चोर आदि से खेती आदि भूमियों की रक्षा करके प्रजा को पाले ॥ १३ ॥

उप नो न रमसि सूक्तेन वचसा वयं भुद्रेण वचसा वयम् ।

वनादधिध्वनो गिरो न रिष्येम कुदा च न ॥ १४ ॥

उप । नुः । न । रमसि । सूक्तेन । वचसा । वयम् । भुद्रेण ।

१३—(न) निषेधे (इमाः) दृश्यमानाः (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् राजन् (गावः) कृष्यादिभूमयः (रिषन्) नश्यन्तु (मो) निषेधे (आसाम्) गवां भूमीनाम् (गोप) गुप् रक्षणे—अच् । आयादय आर्धधातुके वा । पा० ३ । १ ३१ । आयलोपः । विभक्तोर्लुक् । गोपः । रक्षकः (रीरिषन्) रिष हिंसायाम्, एयन्ताद् माङि लुङि चङि रूपकर्मण्यर्थे । नश्येत् (मा) निषेधे (आसाम्) (अमित्रयुः) अमित्र-क्वच्, उपत्ययः । शत्रून् कामयमानः (जनः) पामरलोकः (इन्द्र) (मा) (स्तेनः) चोरः (ईशत्) राजा भवेत् ॥

वचसा । वयम् ॥ वनात् । अधिध्वनः । गिरः । त । रिष्येम ।
कदा । चन । ॥ १४ ॥

भाषार्थ—[हे राजन् !] (नः) हम को (न) अब (उप) आदर से (रमसि) तू आनन्द देता है, (सूक्तेन) वेदोक्त (वचसा) वचन के साथ (वयम्) हम, (भद्रेण) कल्याणकारी (वचसा) वचन के साथ (वयम्) हम (वनात्) क्लेश से अलग होकर (अधिध्वनः) ऊंची ध्वनि वाली (गिरः) वाणियों को (कदा चन) कभी भी (न) न (रिष्येम) नष्ट करें ॥ १४ ॥

भावार्थ—राजा और प्रजा परस्पर उपकार करके दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ संसार में सुख बढ़ावें ॥ १४

सूक्तम् १२८ ॥

१—१६ ॥ प्रजापतिरिन्द्रो वा देवता ॥ १—३, ७, १०, १२ निचृदनुष्टुप्;
४, ८, ६, १४ अनुष्टुप्; ५ आर्यनुष्टुप्; ६, १६ भुरिगनुष्टुप्; ११, १३
विराडार्यनुष्टुप्; १॥ विराडनुष्टुप् ॥

मनुष्यकर्तव्योपदेशः—मनुष्य के कर्तव्य का उपदेश ॥

यः सुभेयो विदुष्यः सुत्वा युज्वाथ पूरुषः ।

सूर्यं चासूँ रिशादसुस्तद् देवाः प्रागंकल्पयन् ॥ १ ॥

यः । सुभेयः । विदुष्यः । सुत्वा । युज्वा । अथ । पूरुषः ॥

सूर्य-सु । च । असूँ । रिशादसुः । तत् । देवाः । प्राक् । अंक-
ल्पयन् ॥ १ ॥

[सूचना—पदपाठ के लिये सूचना सूक्त १२७ देखो ॥]

१४—(उप) पूजायाम् (नः) अस्मान् (न) सम्प्रति (रमसि) रमयसि । आनन्दयसि (सूक्तेन) वेदविहितेन (वचसा) वचनेन (वयम्) प्रजाजनाः (भद्रेण) कल्याणकरेण (वचसा) (वयम्) (वनात्) वन उपतापे—अध् । क्लेशात् पृथग्भूय (अधिध्वनः) ध्वन शब्दे—किप् । उच्चध्वनि-
शुकाः (गिरः) वाणीः (न) निषेधे (रिष्येम) नाशयेम (कदा) कस्मिन् काले (चन) अपि ॥

सू० १२८ [७१६]

विंशं कारुडम् ॥ २० ॥

(४,४६९)

भाषार्थ—(यः) जो (समेयः) सम्य [सभाओं में चतुर],
(विदध्यः) विद्वानों में प्रशंसनीय, (सुत्वा) तत्त्व रस निकालने वाला (अथ)
और (यज्वा) मिलनसार (पुरुषः) पुरुष है। (अमुं) उस (सूर्यम्) सूर्य
[के समान प्रतापी] को (च) निश्चय करके (तत्) तब (रिशादसः)
हिंसकों के नाश करने वाले (देवाः) विद्वानों ने (प्राक्) पहिले [ऊँचे स्थान
पर] (अकल्पयन्) माना है ॥ १ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग सब में चतुर मनुष्य को सभापति बनाकर
प्रजा की रक्षा करें ॥ १ ॥

यो जाम्बा अग्रथयुस्तद् यत् सखायं दुधूर्षति ।

ज्येष्ठो यदप्रचेतास्तदाहुरधेरागिति ॥ २ ॥

यः । जाम्बाः । अग्रथयुः । तत् । यत् । सखायम् । दुधूर्षति ॥

ज्येष्ठः । यत् । अप्रचेताः । तत् । आहुः । अधेराक् । इति ॥ २

भाषार्थ—(यः) जो मनुष्य, (जाम्बाः) कुल ली को (अग्रथयः)
गिराता है, (तत्) वह पुरुष, और (यत्) जो (सखायम्) मित्र को (दुधू-
र्षति) मारना चाहता है, और (यत्) जो (ज्येष्ठः) अति वृद्ध होकर (अग्र-

१—(यः) (समेयः) दृश्यन्दसि । पा० ४ । ४ । १०६ । सभा-
दप्रथयः । सभासु साधुः । सम्यः (विदध्यः) तत्र साधुः पा० ४ । ४ ।
६८ । विदध्य—यत् । विद्वत्सु साधुः (सुत्वा) सुयजोर्द्ध्वनिप् । पा०
३ । २ । १०३ । पुञ् अमिषवे—ङ्वनिप् । सोमस्य तत्त्व रसस्य सोता (यज्वा)
यज्ञ—ङ्वनिप् पूर्वसूत्रेण । यष्टो । संगन्ता (अथ) समुच्चये (पुरुषः) पुरुषः
(सूर्यम्) सूर्यवत् प्रतापिनम् (च) अवधारणे (अमुं) सुपां सुपो भवन्ति ।
वा० पा० ७ । १ । ३६ । द्रुवचनस्य द्विवचनम् । अमुम् (रिशादसः) अ० २ ।
२८ । २ । रिशं हिंसायाम् + क + अद् भक्षणे—असुन् । हिंसकानां भक्षका
नाशकाः (तत्) तदा (देवाः) विद्वांसः (प्राक्) पूर्वम् । अग्रम् (अकल्पयन्)
कल्पितवन्तः ॥

२—(यः) पुरुषः (जाम्बाः) अथ० २ । ७ । २ । द्वितीयार्थे षष्ठो ।
जामिम् । कुलस्त्रियम् (अग्रथयः) पृथ प्रक्षेपे । प्रक्षिपति । अधोगमयति
(तत्) सः (यत्) यः (सखायम्) (दुधूर्षति) धुरीं हिंसायाम्—सन् ।

चेताः) अज्ञानी है, (तत्) वह (अधराक्) अधोगामी है—(इति) ऐसा (आहुः) वे लोग कहते हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य सती स्त्री को पाप में लगावे, मित्रघाती हो और वयोवृद्ध होकर भी अज्ञानी हो, वह विद्वानों में नीच गति पाता है ॥ २ ॥

यद् भद्रस्य पुरुषस्य पुत्रो भवति दाधृषिः ।

तद् विप्रो अब्रवीदु तद् गंधर्वः काम्यं वचः ॥ ३ ॥

यत् । भद्रस्य । पुरुषस्य । पुत्रः । भवति । दाधृषिः ॥ तत् ।

विप्रः । अब्रवीत् । ऊं इति । तत् । गंधर्वः । काम्यम् । वचः ॥

यश्च पुणि रघुजिष्ठ्यो यश्च देवां अदाशुरिः ।

धीराणां शश्वतासुहं तदपागिति शुश्रुम ॥ ४ ॥

यः । च । पुणि । रघुजिष्ठ्यः । यः । च । देवान् । अदाशुरिः ॥

धीराणाम् । शश्वताम् । अहम् । तत् । अपाक् । इति ।

शुश्रुम ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(यत्) जब (भद्रस्य) श्रेष्ठ (पुरुषस्य) पुरुष का (पुत्रः) पुत्र (दाधृषिः) ढीठ (भवति) हो जावे, (तत्) तब (विप्रः) बुद्धिमान् (गन्धर्वः) विद्या के धारण करने वाले पुरुष ने, (उ) निश्चय करके (तत्) यह (काम्यम्) मनोहर (वचः) वचन (अब्रवीत्) कहा है [कि] ॥ ३ ॥—

हन्तुमिच्छति (ज्येष्ठः) अतिवृद्धः सन् (यत्) यः (अप्रचेताः) अपरिहृतः (तत्) सः (आहुः) कथयन्ति ते विद्वांसः (अधराक्) अधोगामी भवति (इति) वाक्यसमाप्ति ॥

३—(यत्) यदा (भद्रस्य) श्रेष्ठस्य (पुरुषस्य) (पुत्रः) (भवति) (दाधृषिः) किंकिनावृत्सर्गश्छन्दसि सदादिभ्यो दर्शनात् । वा० पा० ३ । २ । १७१ । जिधृषा प्रागहभ्ये—किन्, धृष्टः । अगहभः । निर्लज्जः (तत्) तदा (विप्रः) मेधावी (अब्रवीत्) (उ) अवधारणे (तत्) इदम् (गन्धर्वः) अथ० २ । १ । २ । गो + धृञ् धारणे—घट्टयः, गोशब्दस्य गमादेशः । विद्याधारकः (काम्यम्) मनोहरम् (वचः) वचनम् ॥

(यः) जो मनुष्य (पणि) कुव्यवहारी (रघुजिष्ठ्यः) अत्यन्त इतका है, (च च) और (यः) जो (देवान्) विद्वानों को (अदाशुरिः) नहीं दान देने वाला है, (तत्) वह (शश्वताम्) सब (धीराणाम्) धीर पुरुषों में (अपाक्) दूर रहने योग्य है—(इति) ऐसा (अहम्) हम ने (शुश्रुम) सुना है ॥४॥

भाषार्थ—विद्वानों को प्रयत्न करना चाहिये कि उन के सन्तान विद्वान् होकर विद्वानों से मिलकर रहें ॥ ३, ४ ॥

ये च देवा अयं जुन्ताथो ये च परादुदिः ।

सूर्यो दिवमिव गत्वाय मघवा नो वि रप्शते ॥ ५ ॥

ये । च । देवाः । अयं जुन्त । अथो इति । ये । च । परादुदिः ॥

सूर्यः । दिवम्-इव । गत्वाय । मघवा । नः । वि । रप्शते ॥५॥

भाषार्थ—(ये) जिन (देवाः) विद्वानों ने (अयं जुन्त) मेल किया है, (अथो च च) और (ये) जो (परादुदिः) शत्रुओं के पकड़ने वाले हैं । (सूर्यः) सूर्य (दिवम् इव) जैसे आकाश को (गत्वाय) प्राप्त होकर, [वैसे ही] (मघवा) महाधनी [सभापति] (नः) उन हम को [प्राप्त होकर] (वि) विविध प्रकार (रप्शते) शोभित होता है ॥ ५ ॥

४—(यः) (च) (पणि) विभक्तेर्लुक् । पणिः । कुव्यवहारी (रघु-जिष्ठ्यः) लघुज्येष्ठ्यः, छान्दसं रूपम्, लघु+ज्येष्ठ—भावे यत् । लघुषु निःसारेषु ज्येष्ठ्यम् अतिशयेन वर्धनं यस्य सः । अतिशयेन निःसारः (यः) (च) (देवान्) विदुषः प्रति (अदाशुरिः) प्र+दाशू दोन—उरिन् प्रत्ययः । अदानशीलः (धीराणाम्) बुद्धिमतां मध्ये (शश्वताम्) बहूनाम् । सर्वेषाम् (अहम्) बहुवचनस्यैकवचनम् । वयम् (तत्) सः (अपाक्) दूरे गमनीयः (इति) एवम् (शुश्रुम) वयं श्रुतवन्तः ॥

५—(ये) (अथो च च) समुच्चये (देवाः) विद्वान्सः (अयं जुन्त) संगतिं कृतवन्तः (ये) (परादुदिः) अथ० २० । ५६ । २ । बहुवचनस्यैकवचनम् । परादुदयः । पराणां शत्रूणामादातारो अहीतारः (सूर्यः) (दिवम्) आकाशम् (इव) यथा (गत्वाय) ल्यप् छान्दसः । गत्वा । प्राप्य (मघवा) धनवान् । सभापतिः (नः) अस्मान् प्राप्य (वि) विविधम् (रप्शते) राजते—ऋग्वेदभाष्ये ४ । ४५ । १, दयानन्दसायणौ ॥

भावार्थ—सूर्य लोग और सभापति मिलकर संसार का उपकार करके शोभा बढ़ावे, जैसे सूर्य आकाश में चमक कर उपकार करता हुआ शोभित होता है ॥ ५ ॥

योऽनात्ताक्षो अनभ्युक्तो अमणिवो अहिरण्यवः ।

अब्रह्मा ब्रह्मणः पुत्रस्तोता कल्पेषु संमिता ॥ ६ ॥

यः । अनात्ताक्षः । अनभ्युक्तः । अमणिवः । अहिरण्यवः ॥

अब्रह्मा । ब्रह्मणः । पुत्रः । तोता । कल्पेषु । संमिता ॥ ६ ॥

भावार्थ—(यः) जो (ब्रह्मणः) ब्रह्मा [वेदज्ञानी] का (पुत्रः) पुत्र (अब्रह्मा) अब्रह्मा [वेद न जानने वाला, कुमार्गी] (अनात्ताक्षः) अशुद्ध व्यवहार वाला और (अनभ्युक्तः) अविख्यात है । वह (अमणिवः) मणियों [रत्नों] का न रखने वाला और (अहिरण्यवः) तेजहीन होवे, (तोता) यह यह कर्म (कल्पेषु) शास्त्र विधानों में (संमिता) प्रमाणित हैं ॥ ६ ॥

भावार्थ—जो कोई ब्रह्मी का सन्तान होकर कुमार्गी मूर्ख होवे, वह निर्धन होकर निस्तेज हो जाता है, यह बात वेदशास्त्र से सिद्ध है ॥ ६ ॥

य आत्ताक्षः सुभ्युक्तः सुमणिः सुहिरण्यवः ।

सुब्रह्मा ब्रह्मणः पुत्रस्तोता कल्पेषु संमिता ॥ ७ ॥

यः । आत्ताक्षः । सुभ्युक्तः । सुमणिः । सुहिरण्यवः ॥ सुब्रह्मा ।

ब्रह्मणः । पुत्रः । तोता । कल्पेषु । संमिता ॥ ७ ॥

६—(यः) सन्तानः (अनात्ताक्षः) अन् + आ + अञ्जू व्यक्तिप्रदान-कास्तिगतिषु—क्त । अशुद्धव्यवहारयुक्तः (अनभ्युक्तः) अन् + अभि + अञ्जू व्यक्तौ—क्त । अव्यक्तः । अविख्यातः । (अमणिवः) वप्रकरणेऽन्येभ्योऽपि दृश्यते । वा० पा० ५।२।१०६ वो मत्वर्थे । रत्नरहितः । निर्धनः (अहिरण्यवः) तेजोहीनः (अब्रह्मा) अवेदज्ञः (ब्रह्मणः) वेदज्ञस्य (पुत्रः) (तोता) ता + उ + ता । तान्येव तानि कर्माणि (कल्पेषु) शास्त्रविधानेषु (संमिता) प्रमाणितानि ॥

भाषार्थ—(यः) जो (ब्रह्मणः) ब्रह्म [वेदज्ञानी] का (पुत्रः) पुत्र (सुब्रह्मा) सुब्रह्मा [बड़ा वेदज्ञानी, सुमार्गी], (आक्ताक्षः) शुद्ध व्यवहार वाला और (सुभ्यक्तः) बड़ा विख्यात हो, वह (सुमणिः) बहुत मणियों [रत्नों] वाला और (सुहिरण्यवः) बड़ा तेजस्वी होवे, (तोता) यह यह कर्म (कल्पेषु) शास्त्र विधानों में (संमिता) प्रमाणित हैं ॥ ७ ॥

भाषार्थ—विद्वान् का सन्तान विद्वान् होने से ही संसार में प्रतिष्ठा पावे, यह वेद मत है ॥ ७ ॥

अप्रपाणा च वेशन्ता रेवाँ अप्रतिदिश्ययः ।

अयभ्या कुन्या कल्याणी तोता कल्पेषु संमिता ॥ ८ ॥

अप्रपाणा । च । वेशन्ता । रेवान् । अप्रतिदिश्ययः ॥ अय-

भ्या । कुन्या । कल्याणी । तोता । कल्पेषु । संमिता ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(च) जैसे (अप्रपाणा) बिना पनघट वाला (वेशन्ता) सरोवर है, [वैसे ही] (अप्रतिदिश्ययः) प्रतिदान का न करने वाला (रेवान्) धनवान् और (अयभ्या) मैथुन के अयोग्य [रोग आदि से पीड़ित, सन्तान उत्पन्न करने में असमर्थ] (कल्याणी) सुन्दर (कुन्या) कन्या है, (तोता) यह यह कर्म (कल्पेषु) शास्त्र विधानों में (संमिता) प्रमाणित हैं ॥ ८ ॥

भाषार्थ—बिना पनघट के जल से भरा सरोवर, बिना प्रतिदान के बड़ा धनी, और बिना सन्तान उत्पन्न करने के रूपवती स्त्री निष्फल हैं ॥ ८ ॥

७—(यः) सन्तानः (आक्ताक्षः) म० ६ । आ + अञ्—क । शुद्धव्यवहार-युक्तः (सुभ्यक्तः) म० ६ । सु + अभि + अञ्—क अकारलोपः । बहुविख्यातः (सुमणिः) बहुरत्नयुक्तः (सुहिरण्यवः) महातेजस्वी (सुब्रह्मा) महावेदज्ञः (ब्रह्मणः) वेदज्ञस्य । अन्यद् गतम् ॥

८—(अप्रपाणा) विभक्तेराकारः—पा० ७ । १ । ३६ । पानस्थानशून्यः (च) उपमार्थे (वेशन्ता) सरोवरः । तडागः (रेवान्) धनवान् (अप्रतिदिश्ययः) दिश दाने—क्यप् + या प्रापणे—ड । अप्रतिदानप्रापकः (अयभ्या) पोरदुपधात् । पा० ३ । १ । ६८ । यम मैथुने—यत् । अमैथुनयोग्या । रोगादिवशात् सन्तानोत्पादने असमर्था (कुन्या) (कल्याणी) सुन्दरी । अन्यद् गतम् ॥

सुप्रपाणा च वेशन्ता रेवान्सुप्रतिदिश्ययः ।

सुयभ्या कन्या कल्याणी तोता कल्पेषु संमिता ॥ ८ ॥

सुप्रपाणा । च । वेशन्ता । रेवान् । सुप्रतिदिश्ययः ॥ सुयभ्या ।
कन्या । कल्याणी । तोता । कल्पेषु । संमिता ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(च) जैसे (सुप्रपाणा) अच्छे पनघट वाला (वेशन्ता)
सरोवर है, [वैसे ही] (सुप्रतिदिश्ययः) सुन्दर प्रतिदान करने वाला
(रेवान्) धनवान् और (सुयभ्या) अच्छे प्रार मैथुन योग्य [नीरोग होकर
सन्तान उत्पन्न करने में समर्थ] (कल्याणी) सुन्दर (कन्या) कन्या है, (तोता)
यह यह कर्म (कल्पेषु) शास्त्र विधानों में (संमिता) प्रमाणित हैं ॥ ८ ॥

भावार्थ—जल भरे सरोवर की उपयोगिता जल काम में आने से, धन
की उचित व्यय करने से, और रूपवती स्त्री की वीर सन्तान उत्पन्न करने से
होती है ॥ ८ ॥

परिवृक्ता च महिषी स्वस्त्या च युधिगुमः ।

अनाशुरश्चायामी तोता कल्पेषु संमिता ॥ १० ॥

परिवृक्ता । च । महिषी । स्वस्त्या । च । युधिगुमः ॥ अना-
शुरः । च । आयामी । तोता । कल्पेषु । संमिता ॥ १० ॥

भाषार्थ—(च) जैसे (परिवृक्ता) त्यागे हुये [कर्तव्य छोड़े हुये]
(महिषी) पूजनीया गुणवती पत्नी, [वैसे ही] (स्वस्त्या) सुख के साथ

८—(सुप्रपाणा) शोभनपानस्थानोपेतः (च) उपमार्थे (वेशन्ता)
तडागः (रेवान्) धनवान् (सुप्रतिदिश्ययः) म० ८ । योग्यप्रतिदानप्रापकः
(सुयभ्या) म० ८ । सुमैथुनयोग्या । आरोग्यात् सन्तानोत्पादनसमर्था । अन्यद्
गतम् ॥

१०—(परिवृक्ता) त्यक्ता । स्वकर्तव्यविरक्ता (च) उपमार्थे (महिषी)
मह पूज्याम्—टिषच् डीष् । पूजनीया गुणवती पत्नी (स्वस्त्या) सुखेन ।
अनायासेन (च) समुच्चये (युधिगुमः) दशुपधात् कित् । उ० ४ । १२० । युध

[जीव चुराकर] (युधिगमः) युद्ध से चल देने वाला, (च च) और (अनाशुरः) आलसी (आयामी) शासन करने वाला [नकम्मा है], (तोता) यह यह कर्म (कल्पेषु) शास्त्र विधानों में (संमिता) प्रमाणित हैं ॥ १० ॥

भाषार्थ—घर आदि कर्तव्य कर्म छोड़ने से गुणवती स्त्री, युद्ध से भागने से शूर, और आलस करने से शासक पुरुष नकम्मा है ॥ १० ॥

वावाता च महिषी स्वस्त्या च युधिगमः ।

श्वाशुरायाामी तोता कल्पेषु संमिता ॥ ११ ॥

वावाता । च । महिषी । स्वस्त्या । च । युधिगमः ॥ श्वाशुरः । च । आयामी । तोता । कल्पेषु । संमिता ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(च) जैसे (वावाता) अति शीघ्रकारिणी (महिषी) पूजनीया पत्नी, [वैसे ही] (स्वस्त्या) सुख के साथ [धर्म समझकर] (युधिगमः) युद्ध में जाने वाला (च च) और (श्वाशुरः) बड़ा वेगशील (आयामी) शासन करने वाला [सुखदायी है], (तोता) यह यह कर्म (कल्पेषु) शास्त्र विधानों में (संमिता) प्रमाणित हैं ॥ ११ ॥

भाषार्थ—कर्तव्य में देखा स्त्री, हर्ष के साथ युद्ध को जाने वाला शूर और शीघ्र स्वभाव वाला राजा सुखदायी है ॥ ११ ॥

यदिन्द्रादो दाशराज्ञे मानुषं वि गाहयाः ।

संप्रहारे—इन् कित्+गम्ल गतौ—खच् मुम च । युधेयुद्धाद् गमनशीलः पलायनशीलः (अनाशुरः) शत्रुशेरास्तौ । उ० १ । ४४ । अन्+अशू व्याप्तौ—उरन्, स च णित् । अनाशुः । अशीघ्रः । आलस्यवान् (च) (आयामी) आ+यम वेष्टने नियमने णिच्—णिनि । आ समन्ताद् यामयति नियामयति प्रज्ञागणान् । नियन्ता । शासकः । अन्यद् गतम् ॥

११—(वावाता) हसिमृगिणवामदि० । उ० ३ । ८६ । वां गतिगन्धनयोः यङि तन् प्रत्ययः, टाप् । भृशं शीघ्रकारिणी (च) (महिषी) म० १० । पूजनीया पत्नी (स्वस्त्या) सुखेन । धर्मभावेन (च) (युधिगमः) म० १० । युधौ युद्धे गमनशीलः शूरः (श्वाशुरः) म० १० । सु+आशुरः । सुष्ठु वेगवान् (च) (आयामी) म० १० । शासकः । अन्यद् गतम् ॥

विरूपः सर्वस्मा आसीत् सह यज्ञाय कल्पते ॥ १२ ॥

यत् । इन्द्र । अदः । दाशराज्ञे । मानुषम् । वि । गाहथाः ॥

विरूपः । सर्वस्मै । आसीत् । सह । यज्ञाय । कल्पते ॥ १२ ॥

भाषार्थ—(यत्) जब, (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले मनुष्य] (दाशराज्ञे) दानपात्र सेवकों के राजा के लिये [अर्थात् अपने लिये] (अदः) उस [वेदोक्त] (मानुषम्) मनुष्य के कर्म को (वि गाहथाः) तू ने बिलो डाला है [गड़बड़ कर दिया है] । (सर्वस्मै) सब के लिये (विरूपः) वह दुष्ट रूप वाला व्यवहार (आसीत्) हुआ है । यह [मनुष्य] (यज्ञाय) पूजनीय कर्म के लिये (सह) मिलकर (कल्पते) समर्थ होता है ॥ १२ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य वेद मर्यादा को तोड़कर स्वार्थ के लिये सेवक आदि को सताता है, वह सब को कष्ट देता है, इस लिये मनुष्य सदा परोपकार करे ॥ १२ ॥

त्वं वृषाक्षं मघवन्नम्रं सूर्याकिरो रविः ।

त्वं रौहिणं व्यास्यो वि वृत्रस्याभिनुच्छिरः ॥ १३ ॥

त्वम् । वृषा । अक्षुम् । मघवन् । नम्रम् । सूर्य । आकुरः ।

रविः ॥ त्वम् । रौहिणम् । व्यास्युः । वि । वृत्रस्य । अभि-

नुत् । शिरः ॥ १३ ॥

भाषार्थ—(मघवन्) हे धनवान् (मर्य) मनुष्य ! (त्वम्) तू ने

१२—(यत्) यदा (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् मनुष्य (अदः) तत् । वेदोक्तम् (दाशराज्ञे) दाश दानै—घञ् । राज्ञ दीप्तौ ऐश्वर्ये च—कनिन् । दाशानां दानीयानां दानपात्राणां भृत्यानां स्वामिहिताय । स्वार्थाय (मानुषम्) मनु—अण् पुक् च । मनुष्यसम्बन्धि कर्म (वि गाहथाः) गाह बिलोडने—लुङ्, अडभावः । बिलोडितघानलि (विरूपः) विकृतरूपो दुष्टरूपो व्यवहारः (सर्वस्मै) प्रत्येकप्राणिने (आसीत्) (सह) संयोगेन (यज्ञाय) यज्ञ पूजायाम्—घञ् । पूजनीयकर्मणे (कल्पते) कृपू सामर्थ्ये । समर्थो भवति ॥

१३—(त्वम्) (वृषा) बलवान् (अक्षुम्) अ० ६ । ३ । ङ अक्षु व्याप्तौ-

सू० १२८ [७१६] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥ (४,४६८)

(वृषा) बलवान् और (रविः) सूर्य [के समान प्रतापी] होकर : (अनुम्) व्यापन शील [चतुर] (नम्रम्) नम्र [विनीत] पुरुष को (आकरः) आवाहन किया है । (त्वम्) तू ने (रौहिणम्) मेघ [के समान अन्धकार फैलाने वाले पुरुष] को (व्यास्यः) फेंक गिराया है और (वृत्रस्य) शत्रु के (शिरः) शिर को (वि अभिनत्) तोड़ दिया है ॥ १३ ॥

भावार्थ—सभापति राजा सूर्य के समान प्रतापी होकर चतुर सुशिक्षित लोगों का आदर और दुष्ट शत्रुओं का नाश करे ॥ १३ ॥

यः पर्वतान् व्यदधाद् यो अपो व्यगाहयाः ।

इन्द्रो यो वृत्रहान्मुहं तस्मादिन्द्र नमोस्तु ते ॥ १४ ॥

यः । पर्वतान् । वि । अदधात् । यः । अपः । वि । अगाहयाः ॥

इन्द्रः । यः । वृत्रहा । आत् । मुहस्य । तस्मात् । इन्द्र । नमः ।

अस्तु । ते ॥ १४ ॥

भावार्थ—(यः) जिस (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] तू ने (पर्वतान्) पहाड़ों को (वि) विविध प्रकार (अदधात्) धारण किया है, (यः) जिस तू ने (अपः) जलों को (वि) विविध प्रकार (अगाहयाः) विलोया है, (आत्) और (यः) जो (वृत्रहा) शत्रुनाशक है, (तस्मात्) इसी से, (इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] (ते) उस तुझ को

उप्रत्ययः । व्यापनशीलं प्रवीणम् (मघवन) घनवन (नम्रम्) विनीतं पुरुषम् (मर्यं) हे मनुष्य (आकरः) आ—आकरः । आङ् + डुकृञ् आवाहने—लुङ् । आहूतवानसि (रविः) सूर्यवत्प्रतापी सन् (त्वम्) (रौहिणम्) अथ० २० । ३४ । १३ । मेघमिवान्धकारकरं दुष्टम् (व्यास्यः) असु लोपे—लुङ् । प्रक्षितवानसि (वि) पृथग्भावे (वृत्रस्य) शत्रुः (अभिनत्) अभिदः । भिन्नवानसि (शिरः) ॥

१४—(यः) पुरुषः (पर्वतान्) शैलान् (वि) विविधम् (अदधात्) अदधाः । धारितवानसि (यः) (अपः) जलानि (वि) (अगाहयाः) विलो-
डितवानसि (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् पुरुषः (यः) (वृत्रहा) शत्रुनाशकः—
असि (आत्) अगन्तरम् (मुहम्) मुहत् (तस्मात्) कारणात् (इन्द्र)

(४,४७७)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० १२८ [७१६]

(महम्) बहुत (नमः) नमस्कार (अस्तु) होवे ॥ १४ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य पहाड़ों में मार्ग कर के नदी नाले निकाल कर प्रजा का उपकार करे, सब लोग उस का आदर करें ॥ १४ ॥

पृष्ठं धावन्तं हुर्यो रौच्यैः अश्वसम्ब्रुवन् ।

स्वस्तिश्व जैत्रायेन्द्रमा वह सुस्रजम् ॥ १५ ॥

पृष्ठम् । धावन्तम् । हुर्योः । रौच्यैः अश्वसम् । अम्ब्रुवन् ॥
[स्वस्ति । अश्व । जैत्राय । इन्द्रम् । आ । वह । सुस्रजम् ॥ १५ ॥

भावार्थ—(हुर्योः) ते चलने वाले दोनों बल और पराक्रम के (पृष्ठम्) पीछे (धावन्तम्) दौड़ते हुये (रौच्यैः अश्वसम्) उच्चैः श्रवा [बड़ी कीर्ति वाले वा ऊँचे कानों वाले घोड़े] से (अम्ब्रुवन्) वे [चतुर लोग] बोले, (अश्व) हे घोड़े ! (स्वस्ति) कुशल से (जैत्राय) जीतने के लिये (सुस्रजम्) सुन्दर माला के समान सुन्दर सेना वाले (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] को (आ वह) ले आ ॥ १५ ॥

भावार्थ—चतुर विद्वान् लोग श्रेष्ठ घोड़े आदि लाकर राजा को देवें, जिस से वह अपनी बड़ी सेना के साथ रण क्षेत्र में दुष्ट शत्रुओं के जीते ॥ १५ ॥

ये त्वां श्वेता अजैश्वसो हार्या युञ्जन्ति दक्षिणम् ।

(नमः) सत्कारः (अस्तु) (ते) तादृशाय तुभ्यम् ॥

१५—(पृष्ठम्) पृष्ठतः । अनुसरणेन (धावन्तम्) शीघ्रं गच्छन्तम् (हुर्योः) हरणशीलयोर्वलपराक्रमयोः (रौच्यैः अश्वसम्) उच्चैः + श्रु श्रवणे—अस्तुन्) स्वार्थे अण् । रौच्यैः अश्वसः अश्वनाम—निघ० १। १४ । उच्चैर्महत् । कुर्वो यशो यस्य, यद्वा, उन्नते श्रवसी कर्णौ यस्य तम् । बहुकीर्तिमन्तमुन्नतकर्णं वा घोटकम् (अम्ब्रुवन्) अकथयन् ते विद्वांसः (स्वस्ति) कुशलेन (अश्व) हे घोटक (जैत्राय) जेतु-अण् । जयाय (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवन्तं पुरुषम् (आ वह) आनय (सुस्रजम्) स्रज विसर्गे—किन् । सुमालयेव सुसेनया युञ्जन् ॥

पूर्वा नमस्य देवानां विभ्रदिन्द्र महीयते ॥ १६ ॥

ये । त्वा । श्वेताः । अजैश्रवसः । हार्यः । युञ्जन्ति । दक्षि-
णम् ॥ पूर्वा । नमस्य । देवानाम् । विभ्रत् । इन्द्र । महीयते १६

भाषार्थ—(नमस्य) हे नमस्कार योग्य (इन्द्र) इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य
वाले पुरुष] (ये) जो (श्वेताः) चांदी [आदि धन] वाले, (अजैश्रवसः)
अजेय कीर्ति वाले (हार्यः) मनुष्य (दक्षिणम्) चतुर (त्वा) तुझ से (युञ्जन्ति)
मिलते हैं, (देवानाम्) विद्वानों की (विभ्रत्) पोषण करने वाले (पूर्वा)
[उन की] पुरानी नीति (महीयते) पूजी जाती है ॥ १६ ॥

भावार्थ—चतुर राजा धनी विद्वान् मनुष्यों की सुनीति का सदा
आदर करे ॥ १६ ॥

सूक्तम् १२८ ॥

१—२० ॥ प्रजापतिर्देवता ॥ १—५, ७, १०—१२, १४, १५, २० प्राजा-
पत्या गायत्री; ६ । १६ याजुषी गायत्री; ८, ६ दैवी बृहती; १३ साम्नी गायत्री;
१६, १७ याजुष्युष्णिक्; १८ याजुषी पङ्क्तिः ॥

मनुष्यप्रयत्नोपदेशः—मनुष्य के लिये प्रयत्न का उपदेश ॥

सुता अश्वा आ म्वन्ते ॥१॥ सुताः । अश्वाः । आ । म्वन्ते ॥१॥

प्रतीपं प्राति सुत्वनम् ॥२॥ प्रतीपम् । प्राति । सुत्वनम् ॥२॥

[पद पाठ के लिये सूचना सूक्तं १२७ देखो]

१६—(ये) (त्वा) (श्वेताः) श्वेतं रूप्येऽपि रजतम्—अमरे २३ ।
७६ । श्वेत—अर्श आद्यच् । श्वेतेन रजतादिधनेन युक्ताः (अजैश्रवसः) अजेय-
श्रवसः । अजेयकीर्तयः (हार्यः) वसिवपियजि० । उ० ४ । १२५ । इज् हरणे—
इज् । हरयो मनुष्यनाम—निघ० २ । ३ । हरयः । मनुष्याः (युञ्जन्ति) संयोज-
यन्ति (दक्षिणम्) दक्ष वृद्धौ—इन्द्र । दक्षम् । कार्यकुशलम् (पूर्वा) प्राचीना
नीतिः (नमस्य) हे सत्करणीय (देवानाम्) विदुषाम् (विभ्रत्) विभ्रती ।
पोषणं कुर्वन्ती (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् मनुष्य (महीयते) पूज्यते ॥

भाषार्थ—(एताः) यह (अश्वाः) व्यापक प्रजाये (प्रतीपम्) प्रत्यक्ष व्यापक (सुत्वनम् प्राति) ऐश्वर्य वाले [परमेश्वर] के लिये (आ) आकर (स्रवन्ते) चलती हैं ॥ १, २ ॥

भाषार्थ—संसार के सब पदार्थ उत्पन्न होकर परमेश्वर की आका में वर्तमान हैं ॥ १, २ ॥

तासामेका हरिक्रिका ॥३॥ तासाम् । एका । हरिक्रिका ॥३॥
हरिक्रिके किमिच्छसि ॥४॥ हरिक्रिके । किम् । इच्छसि ॥४॥
साधुं पुत्रं हिरण्ययम् ॥५॥ साधुम् । पुत्रम् । हिरण्ययम् ॥५॥
क्वाहंतुं परीक्ष्यः ॥ ६ ॥ क्वा । आहंतुम् । परीक्ष्यः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(तासाम्) उन [व्यापक प्रजाओं] के बीच (एका) एक [स्त्री प्रजा] (हरिक्रिका) मनुष्य में प्रीति करने वाली है ॥ ३ ॥ (हरिक्रिके) हे मनुष्य में प्रीति करने वाली ! तू (किम्) क्या (इच्छसि) चाहती है ॥ ४ ॥ (साधुम्) साधु [कार्य साधने वाले], (हिरण्ययम्) तेजोमय (पुत्रम्) पुत्र

१—(एताः) उपस्थिताः (अश्वाः) अश्व व्याप्तौ—कन्, टाप् । व्यापिकाः प्रजाः (आ) आगत्य (स्रवन्ते) गच्छन्ति ॥

२—(प्रतीपम्) आप्रोतेर्ह्रस्वश्च । उ० २ । ५८ । प्रति + आसृ व्याप्तौ—किप् । ऋक्पूरब्धूः पथामनन्ते । पा० ५ । ४ । ७४ । अप्रत्ययः । द्वयन्तरूप-सर्गेभ्योऽपि ईत् । पा० ६ । ३ । ६३ । इति ईत् । प्रत्यक्षव्यापकम् (प्राति) साहितको दीर्घः । प्रति । उद्दिश्य (सुत्वनम्) सुयजेर्ङ्वनिप् । पा० ३ । २ । १०३ । पु. प्रसवैश्वर्ययोः—ङ्वनिप्, तुक् च । उत्पादकम् । ऐश्वर्यवन्त परमेश्वरम् ॥

३—(तासाम्) पूर्वोक्तप्रजानां मध्ये (एका) स्त्री प्रजा (हरिक्रिका) हरयो मनुष्याः—निघ० २ । ३ । कुन् शिल्पिसंज्ञयोरपूर्वस्यापि । उ० २ । ३२ ॥ कनो दीप्तिक्कान्तिगतिपु—क्वुन्, टाप्, अत इत्त्वम् । धातोः अकारलोपः । हरिक्रिका । मनुष्येच्छुका ॥

४—(हरिक्रिके) म० ३ । हे मनुष्येच्छुके (किम्) (इच्छसि) कामयसे ॥

५—(साधुम्) कार्यसाधकम् (पुत्रम्) सन्तानम् (हिरण्ययम्) तेजोमयम् ॥

[सन्तान्] को (क) कहां (आहतम्) ताड़ा हुआ (परास्यः) तूने दूर फेंक दिया है ॥ ५,६ ॥

भावार्थ—सृष्टि के बीच माता अपने पुरुष से प्रीति करके सन्तान उत्पन्न करके उन को कुमार्ग से बचाके तेजस्वी और सुमार्गी बनावे ॥ ३-६ ॥

यत्रासूस्तिस्त्रः शिशुपाः ॥७॥ यत्र । असूः । तिस्त्रः । शिशुपाः ॥७॥

परि त्रयः ॥ ८ ॥ परि । त्रयः ॥ ८ ॥

पृदाकवः ॥ ९ ॥ पृदाकवः ॥ ९ ॥

शृङ्गं धुमन्तं आसते ॥१॥ शृङ्गम् । धुमन्तः । आसते ॥१॥

भाषार्थ—(यत्र) जहां (असूः) वे (तिस्त्रः) तीन [माता पिता और आचार्य रूप प्रजायें] (शिशुपाः) बालक की पालने वाली हैं ॥ ७ ॥

[वहां] (त्रयः) तीन [आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक क्लेश रूप] (पृदाकवः) अजगर [बड़े सांप] (शृङ्गम्) धुमन्तः) सींग फूकते हुये [बाजे के समान फुफकार मारते हुये] (परि) अलग (आसते) बैठते हैं ॥ ८-१० ॥

भावार्थ—जिस कुल में माता पिता और आचार्य सुशिक्षक है, वहां सन्तान सदा सुखी रहते हैं, और जैसे अजगर सांप अपने श्वास से खेंचकर प्राणियों को खा जाते हैं, वैसे ही विद्वान् सन्तानों को तीनों क्लेश नहीं सताते हैं ॥ ७-१० ॥

अयन्महा तं अर्वाहः ॥११॥ अयत् । महा । ते । अर्वाहः ॥११॥

६—(क) कुत्र (आहतम्) ताडितम् (परास्यः) असु क्षेपणे । परा दूरे आस्यः अक्षिपः ॥

७—(यत्र) यस्मिन् कुले (असूः) प्रसिद्धाः (तिस्त्रः) मातापितराचार्यरूपाः प्रजाः (शिशुपाः) छान्दसं रूपम् । शिशुपाः । बालानां पालिकाः ॥

८—(परि) पृथग्भावे (त्रयः) आध्यात्मिकाधिभौतिकाधिदैविकक्लेशाः ॥

९—(पृदाकवः) अजगराः । बृहत्सर्पाः ॥

१०—(शृङ्गम्) वाद्यविशेषं यथा, तथा श्वासशब्दम् (धुमन्तः) धमा शब्दाग्निसंयोगयोः—शतु । दीर्घश्वासेन शब्दयन्तः (आसते) उपविशन्ति ॥

स इच्छकं सघाघते ॥१२॥ सः । इच्छकम् । सघाघते ॥१२॥

सघाघते गोमीद्या गोगतीरिति ॥ १३ ॥

सघाघते । गोमीद्या । गोगतीः । इति ॥ १३ ॥

पुमां कुस्ते निमिच्छसि ॥१४॥ पुमान् । कुस्ते । निमिच्छसि ॥१४॥

भाषार्थ—[हे स्त्री !] (अर्वाहः) ज्ञान पहुंचाने वाला [मनुष्य] (महा) महत्त्व के साथ (ते) तेरे लिये (अयत्) प्राप्त होता है ॥ ११ ॥ (सः) वह [मनुष्य] (इच्छकम्) इच्छा वाले को (सघाघते) सहाय करता है ॥ १२ ॥ (गोमीद्या) वेद वाणी जानने वाली [स्त्री] (गोगतीः) पृथिवी पर गति वाली [प्रजाओं] को (सघाघते) सहाय करती है, (इति) ऐसा [निश्चय] है ॥ १३ ॥ [हे मनुष्य !] (पुमान्) रत्नक पुरुष होकर (कुस्ते) मिलाप के व्यवहार में (निमिच्छसि) चलता रहता है ॥ १४ ॥

भावार्थ—स्त्री पुरुष मिलकर धर्म व्यवहार में एक दूसरे के सहायक होकर संसार का उपकार करें ॥ ११—१४ ॥

११—(अयत्) अयते । प्राप्यते (महा) मह पूजायाम् किप् । महश्चेन (ते) तुभ्यम् (अर्वाहः) ऋ गतौ—विच्+वह प्रापणे—अण् । ज्ञानप्रापको विद्वान् ॥

१२—(सः) मनुष्यः (इच्छकम्) इषु इच्छायाम्—शकप्रत्ययः । इच्छा-युक्तम् (सघाघते) वह ज्ञानायाम् इत्यस्य रूपम् । यद्वा, सघ हिंसायाम् अत्र सहाये । साहयते ॥

१३—(सघाघते) म० १२ ॥ साहयते (गोमीद्या) गौर्वाङ्नाम—निघ० १ । ११ । अघन्यादयश्च । उ० ४ । ११२ । मिद्व मेधाहिंसनयोः—यक्, टाप् दीर्घश्च । गां वेदवाणीं मेवते प्रजानाति या सा (गोगतीः) गवि पृथिव्यां गति-युक्ताः प्रजाः (इति) एवमस्ति ॥

१४—(पुमान्) पातेर्दुमसुन् । उ० ४ । ११८ । पुमस् । रत्नकः सन् (कुस्ते) अजिघृक्षिभ्यः कः । उ० ३ । ८६ । कुस् संश्लेषणे—क । संयोगव्यवहारे (निमिच्छसि) मियक्षति म्यक्षतीति गतिकर्मा—निघ० २ । १४ इत्यस्य रूपम् । यद्वा मिच्छ उत्क्रेशे—पीडने, इत्ययमपि गतौ । नितरां गच्छसि ॥

पल्पं बद्ध वयो इति ॥१५॥ पल्पं । बद्ध । वयः । इति ॥१५॥
बद्धं वो अघा इति ॥१६॥ बद्धं । वः । अघाः । इति ॥१६॥

भाषार्थ—(पल्प) हे रक्तक ! (बद्ध) हे प्रबन्ध करने वाले ! [पुरुष]
(वयः इति) यह जीवन है ॥ १५ ॥ (अघाः) हे पापियो ! (वः) तुम्हारी
(बद्ध इति) यह [प्राणी] प्रबन्ध करने वाला है ॥ १६ ॥

भावार्थ—मनुष्य सावधान जितेन्द्रिय होकर पाप से बचने का उपाय
करते रहें ॥ १५, १६ ॥

अजागार केविका ॥ १७ ॥ अजागार । केविका ॥ १७ ॥

अश्वस्य वारो गोशपद्यके ॥ १८ ॥

अश्वस्स्य । वारः । गोशपद्यके ॥ १८ ॥

भाषार्थ—(केविका) सेवा करने वाली [बुद्धि] (अजागार)
जागती हुई है ॥ १७ ॥ (अश्वस्य वारः) अश्ववार [घुड़चढ़ा, घोड़ा लेने को]
(गोशपद्यके) गौधों के सोने के स्थान में [व्यर्थ है] ॥ १८ ॥

भावार्थ—सेवा करने वाली अर्थात् उचित काम में लगी हुई बुद्धि तीव्र
होती है, घुड़चढ़े को उत्तम घोड़ा घुड़साल में मिलता है, गोशाला में
नहीं ॥ १७, १८ ॥

श्येनीपती सा ॥ १८ ॥ श्येनीपती । सा ॥ १८ ॥

१५—(पल्प) पानीविविभ्यः पः । उ० ३ । २३ । पल गतौ रक्षणे च—
पप्रत्ययः । हे रक्तक (बद्ध) कर्तरि क । हे प्रबन्धक (वयः) जीवनम् (इति)
अवधारणे ॥

१६—(बद्ध) विभक्तोर्लुक् । प्रबन्धकः (वः) युष्माकम् (अघाः) अघं
पापम्—अर्शआद्यच् । हे पापिनः (इति) ॥

१७—(अजागार) जागरिता सावधाना असवत् (केविका) केव
लेवने—एबुल, वाप अत इश्वम् । सेविका बुद्धिः ॥

१८—(अश्वस्य) तुरंगस्य (वारः) वारयिता । आरुढ़ः (गोशपद्यके)
गो + शीकृ शयने—ङ + पद—यत्, स्वार्थे कन् । गोशयनस्थाने । गोष्ठे ॥

अनामयापजिह्विका ॥२०॥ अनामया । उपजिह्विका ॥ २० ॥

भाषार्थ—(सा) वह [सेवा करने वाली बुद्धि—म० १७] (श्येनीपती) शीघ्र गति वाली प्रजाप्रा की स्वामिनी होकर ॥ १६ ॥ (अनामया) नीरोग और (उपजिह्विका) उपकारी जिह्वा [वाणी] वाली है ॥ २० ॥

भावार्थ—उत्तम बुद्धि वाला मनुष्य शीघ्र काम करने वाला, स्वस्थ और उपकारी वचन बोलने वाला होता है ॥ १६, २० ॥

सूक्तम् १३० ॥

१—२० ॥ प्रजापतिर्देवता १ याजुषी पङ्क्तिः ; २, ३, ४, १८ याजुषी गायत्री ; ५, ६, ८, ११, १२, १४—१७, १९, २० प्राजापत्या गायत्री ; ७ याजुषी षड्दती ; १० याजुष्युष्णिक् ; १३ दैवी पङ्क्तिः ॥

मनुष्यपुरुषार्थोपदेशः—मनुष्य के लिये पुरुषार्थ का उपदेश ॥

को अर्य बहुलिप्ता इषूनि ॥१॥ कः । अर्य । बहुलिप्ता । इषूनि १

को असिद्धाः पर्यः ॥ २ ॥ कः । असिद्धाः । पर्यः ॥ २ ॥

को अर्जुन्याः पर्यः ॥ ३ ॥ कः । अर्जुन्याः । पर्यः ॥ ३ ॥

कः क्राण्यर्थाः पर्यः ॥ ४ ॥ कः । क्राण्यर्थाः । पर्यः ॥ ४ ॥

एतं पृच्छ कुहं पृच्छ ॥५॥ एतस् । पृच्छ । कुहंस् । पृच्छ ॥५॥

कुहाकं पक्वकं पृच्छ ॥६॥ कुहाकस् । पक्वकस् । पृच्छ ॥६॥

[सूचना—पदपाठ के लिये सूचना सूक्त १२७ देखो ॥]

भाषार्थ—(कः) कौन मनुष्य (बहुलिप्ता) बहुत से (इषूनि) इष्ट

१६—(श्येनीपती) अ० ३ । ३ । ३ । श्यैङ् गतौ—इनच्, डीप् + पति—डीप् । श्येनीनां शीघ्रगामिनीनां प्रजानां स्वामिनी (सा) केविका बुद्धिः—म० १७ ॥

२०—(अनामया) वलिमलितनिभ्यः कथन् । उ० ४ । ६६ । अम पीडने घुरा०—कथन्, टाप् । रोगरहिता । (उपजिह्विका) शेवायहजिह्वा० । उ० १ । १५४ । जि जये—बन् हुक् च, टाप् । उप उपकारिका जिह्वा वाणी यस्याः सा ॥

१—(कः) (अर्य) अ गतौ—इत्यस्य रूपम् । अर्यात् । प्राप्नुयात्

वस्तुओं को (अर्थ) पावे ॥ १ ॥ (कः) कौन (असिद्धाः) बिना बन्धन वाली क्रिया के (पयः) अन्न को ॥ २ ॥ (कः) कौन (अर्जुन्याः) उद्यम वाली क्रिया के (पयः) अन्न को ॥ ३ ॥ (कः) कौन (कार्णयाः) आकर्षण वाली क्रिया के (पयः) अन्न को [पावे] ॥ ४ ॥ (एतम्) इस [प्रश्न] को (कुहम्) अद्भुत स्वभाव वाले मनुष्य से (पृच्छ) पूछ, (पृच्छ) पूछ ॥ ५ ॥ (कुहाकम्) अद्भुत स्वभाव वाले, (पक्कम्) पके [दृढ़ चित्त वाले] से (पृच्छ) पूछ ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्य विवेकी, किया कुशल विद्वानों से शिखा लेता हुआ विद्या बल से चमत्कारी, नवीन नवीन आविष्कार करके उद्योगी होवे ॥ १—६॥

यवानो यतिस्वभिः कुभिः ॥७॥ यवानः। यतिस्वभिः। कुभिः॥७॥

अकुप्यन्तः कुपायकुः ॥ ८ ॥ अकुप्यन्तः । कुपायकुः ॥ ८ ॥

आमणको मणत्सकः ॥ ९ ॥ आमणकुः । मणत्सकः ॥ ९ ॥

देनं त्वप्रतिसूर्य ॥ १० ॥ देव । त्वप्रतिसूर्य ॥ १० ॥

(बहुलिमा) पृश्वादिभ्य इमनिच्वा । पा० ५ । १ । १२२ । बहुल-इमनिच् । वह्नि (इपुनि) इषु इच्छायाम् उपत्ययः कित् । इष्टवस्तूनि

२—(कः) (असिद्धाः) पिञ् बन्धने-क्तिन्, तस्य दः । असिद्धाः । बन्धन-रहितक्रियायाः (पयः) पय गतौ-असुन् । अन्नम्—निघ० २ । ७ ॥

३—(कः) (अर्जुन्याः) अर्जेर्णिलुक् च । उ० २ । ५ ८ । अर्ज अर्जने-उनन् ङीष् । उद्योगिन्याः क्रियायाः (पयः) म० २ ॥

४—(कः) (कार्णयाः) वृणिपृश्नपार्णि० । उ० ४ । ५२ । कृष विले-खने-तिप्रत्ययः, वृद्धिश्च । आकार्षकक्रियायाः (पयः) म० २ ॥

५—(एतम्) प्रश्नम् (पृच्छ) (कुहम्) कुह विस्मापने—क । अद्भुत-स्वभावं पुरुषम् (पृच्छ) ॥

६—(कुहाकम्) बहुलमन्यत्रापि । उ० २ । ३७ । कुह विस्मापने—कपुन्, वृद्धिः । यद्वा, पिनाकादयश्च । उ० ४ । १५ । कुह—आकर्षत्ययः । अद्भुतस्व-भावम् (पक्कम्) दृढ़चित्तम् (पृच्छ) ॥

भाषार्थ—(यवानः) युवा [बलवान्], (यतिस्वभिः) यतियों [यत्न करने वालों] में प्रकाशमान, (कुभिः) ढकलेने वाला [प्रताप वाला] ॥ ७ ॥
 (अकुप्यन्तः) कोप नहीं करने वाला, (कुपायकुः) पृथिवी की रक्षा करने वाला ॥ ८ ॥
 (आमणकः) उपदेश करने वाला और (मणत्सकः) विद्वानों में शक्तिमान् होकर ॥ ९ ॥ (देव) हे विद्वान् ! (त्वप्रतिसूर्य) तू सूर्य समान [प्रतापी] है ॥ १० ॥

भावार्थ—मनुष्य शरीर और आत्मा से बलवान् होकर भूमि की रक्षा और विद्या की बढ़ती करे ॥ ७—१० ॥

एनश्चिपङ्क्तिका हविः ॥ ११ ॥ एनश्चिपङ्क्तिका । हविः ॥ ११ ॥
 प्रदुद्रुहो सचाप्रति ॥ १२ ॥ प्रदुद्रुहः । सचाप्रति ॥ १२ ॥

भाषार्थ—(एनश्चिपङ्क्तिका) पाप के नाश का फैलाने वाला

७—(यवानः) सम्यानच् स्तुवः । उ० २ । ८६ । यु मिश्रणामिश्रणयोः—
 आनच् । युवा । बलवान् (यतिस्वभिः) सर्वधातुभ्य इन् । उ० ४ । ११८ ।
 यती यत्ने—इन् । इगुपधात् कित् । उ० ४ । १२० । शुभ शुभ भाषणभासनहिंसने-
 षु—इन् कित् । उकारस्य वः । यतिषु यत्नशीलेषु दीप्यमानः (कुभिः) इगुपधात्
 कित् । उ० ४ । १२० । कुम कुमि आच्छादने—इन् कित् । आच्छादकः प्रतापवान् ॥

८—(अकुप्यन्तः) जृविशभ्यां भृच् उ० ३ । १२६ । कुप क्रोधे—भृच्,
 अत्र कित् यकारश्च । क्रोधरहितः (कुपायकुः) कठिकुपिभ्यां काकुः । उ० ३ ।
 ७७ । काकुरेव ककुः । कु + पा रक्षणे—ककु, यकारश्च । कुं भूमिं पातीति सः ।
 पृथिवीपालः ॥

९—(आमणकः) कृजदिभ्यः संज्ञायां वुन् । उ० ५ । ३५ । आ + मण
 शब्दे—वुन् । उपदेशकः (मणत्सकः) वर्त्तमाने पृषद् वृहन् । उ० २ । ८४ । मण
 शब्दे—अति + शक्ल + सामर्थ्ये—अच् । मणत्सु विद्वत्सु शक्तः ॥

१०—(देव) हे विद्वन् (त्वप्रतिसूर्य) विभक्तोर्लुक् । त्वमेव सूर्य-
 समानः प्रतापवान् ॥

११—(एनश्चिपङ्क्तिका) वातेर्दिङ् । उ० ४ । १३४ । एनः + चन
 भक्षोपहननयोः—इण हित् । वृतेस्तिकन् । उ० ३ । १४६ । पचि व्यक्तीकरणे
 विस्तारवचने—तिकन् । सुपां सुलुक्० । पा० ७ । १ । ३६ । विभक्तोराकारः ।

(हविः) देन लेन [होवे] ॥ ११ ॥ (प्रदुद्दः) अच्छे प्रकार गति देने वाला व्यवहार (मघाप्रति) धनों के लिये [होवे] ॥ १२ ॥

भावार्थ—मनुष्य सत्य से व्यवहार कर के धन प्राप्त करे ॥ ११, १२ ॥

शृङ्ग उत्पन्न ॥ १३ ॥ शृङ्गः । उत्पन्न ॥ १३ ॥

आ त्वाभि सखा नो विदन् ॥ १४ ॥

आ । त्वा । अभि । सखा । नः । विदन् ॥ १४ ॥

भाषार्थ—[हे शत्रु !] तू (शृङ्गः) हिंसक (उत्पन्न) उत्पन्न है ॥ १३ ॥ (त्वा) तुझ से (नः) हमारा (सखा) सखा [साथी] (मा अभि विदन्) कभी न मिले ॥ १४ ॥

भावार्थ—मनुष्य अपने मित्रों को दुष्टों से कभी न मिलने देवे ॥

वृशायाः पुत्रमा यन्ति ॥ १५ ॥ वश्याः । पुत्रम् । आ । यन्ति ॥ १५ ॥

इरावेदुमय दत् ॥ १६ ॥ इरावेदुमयम् । दत् ॥ १६ ॥

अथो ह्यन्नियन्निति ॥ १७ ॥ अथो । ह्यन्-ह्यन् । इति ॥ १७ ॥

अथो ह्यन्निति ॥ १८ ॥ अथो । ह्यन् । इति ॥ १८ ॥

अथो इवा अस्थिरौ भवन् ॥ १९ ॥

अथो । इवा । अस्थिरः । भवन् ॥ १९ ॥

पनसः पापस्य चेताशस्य पङ्क्तिकं विस्तारकम् (हविः) हु दानादानयोः—इति । दानादानकर्म ॥

१२—(प्रदुद्दः) शते च । उ० १ । ३५ । प्र+द्रु गतौ—कु डित्, ददातेः—क । प्रकर्षेण गतिदायको व्यवहारः (मघाप्रति) मघं धननाम—निघ० २ । १० । धनानि प्रति अभिमुखीकृत्य ॥

१३—(शृङ्गः) शृणातेर्ह्रस्वश्च । उ० १ । १२६ । शृ हिंसायाम्—गन्, जुट् च । हिंसकः । शत्रुः (उत्पन्न) प्रादुर्भूतोऽसि ॥

१४—(मा) निषेधे (त्वा) त्वाम् (अभि) सर्वतः (सखा) (नः) अस्माकम् (विदन्) प्राप्नोतु ॥

उयं युकांशलोकका ॥ २० ॥ उयम् । युकांशलोकका ॥ २० ॥

भाष्यार्थ—(वशायाः) कामना योग्य स्त्री के (पुत्रम्) पुत्र को (आ यन्ति) वे [मनुष्य] आकर पहुँचते हैं ॥ १५ ॥ (इरावेदुमयम्) भूमि के ज्ञान वाला व्यवहार [उस को] (दत्त) तुम दो ॥ १६ ॥ (अथो) फिर वह [पुत्र] (इयन्—इयन्) चलता हुआ, चलता हुआ [होवे], (इति) ऐसा है ॥ १७ ॥ (अथो) फिर वह (इयन्) चलता हुआ [होवे], (इति) ऐसा है ॥ १८ ॥ (अथो) अथवा (श्वा) कुत्ते [के समान] (अस्थिरः) चंचल स्वभाव वाला (भवन्) होता हुआ ॥ १९ ॥ वह (उयम्) निश्चय करके (युकांशलोकका) यातना [घोर पीड़ा] वाले भाग का दिखाने वाला [होवे] ॥ २० ॥

भाष्यार्थ—विद्वान् लोग गुणवती स्त्री के सन्तानों को उत्तम शिक्षा देकर महान् विद्वान् और उद्योगी बनावें । ऐसा न करने से बालक निर्गुणी और पीड़ा बाधक होकर कुत्ते के समान अपमान पाते हैं ॥ १५—२० ॥

१५—(वशायाः) वश कान्तौ—अङ्, टाप् । कामनीयायाः स्त्रियाः (पुत्रम्) सन्तानम् (आ) आगत्य (यन्ति) प्राप्नुवन्ति ॥

१६—(इरावेदुमयम्) ऋज्जेन्द्राग्र० । उ० २ । २८ । इण् गतौ—रन्, गुणाभावः । भूमृशीङ्० । उ० १ । ७ । विद्व ज्ञाने—उप्रत्ययः । इराया भूमेर्ज्ञानियुक्तं व्यवहारम् (दत्त) तलोपः । यूयं दत्त ॥

१७—(अथो) अनन्तरम् (इयन्नियन्) इण् गतौ—शत्, इयङ् इत्यादेशः, द्वित्वं च । यन् यन् । गच्छन् गच्छन्—स भवतु (इति) एवम् ॥

१८—(अथो) अनन्तरम् (इयन्) म० १७ । गच्छन् (इति) ॥

१९—(अथो) पक्षान्तरे । अथवा (श्वा) श्वनुत्तनपूषन् ० । उ० १ । १५६ । दु ओ शिव गतिवृद्धयोः—कनिन् । कुक्कुरो यथा (अस्थिरः) चञ्चल-प्रकृतिः (भवन्) सन् ॥

२० (उयम्) अव्ययम् । निश्चयेन (युकांशलोकका) कृत्रादिभ्यः संज्ञार्थांश्च । उ० ५ । ३५ । यत् ताडने—डुन्, स च डित्+अंश विभाजने—अच् । कृत्रादिभ्यः ० । उ० ५ । ३५ । लोका दर्शने—डुन्, विभक्तेराकारः । यस्य यात-कस्य महापीडकस्य अंशस्य भागस्य लोकको दर्शयिता ॥

सूक्तम् १३१ ॥

१-२० ॥ प्रजापतिर्वरुणो वा देवता ॥ १-४,६-११, १४, १८, १९ प्राजा-
पत्या गायत्री; ५ अनुष्टुप्; १२, १३ दैवी बृहती; १४, १६ याजुषी गायत्री; १७
दैवी पङ्क्तिः; २० याजुष्युष्णिक् ॥

पेश्वर्यप्राप्त्युपदेशः—पेश्वर्य की प्राप्ति का उपदेश ॥

आमिनो निति भद्यते ॥ १ ॥ आ-अमिनोन् । इति । भद्यते ॥ १ ॥
तस्य अनु निभञ्जनम् ॥ २ ॥ तस्य । अनु । निभञ्जनम् ॥ २ ॥
वरुणो याति वस्वभिः ॥ ३ ॥ वरुणः । याति । वस्वभिः ॥ ३ ॥
शतं वा भारती शवः ॥ ४ ॥ शतम् । वा । भारती । शवः ॥ ४ ॥
शतमाश्वा हिरण्ययाः । शतं रुध्या हिरण्ययाः ॥
शतं कुया हिरण्ययाः । शतं निष्का हिरण्ययाः ॥ ५ ॥
शतम् । आश्वाः । हिरण्ययाः ॥ शतम् । रुध्याः । हिरण्ययाः ॥
शतम् । कुयाः । हिरण्ययाः ॥ शतम् । निष्काः । हिरण्ययाः ॥

भाषार्थ—(आ—अमिनोन्) उन [विद्वानों] ने [विघ्न को] सब
ओर से हटाया है, (इति) यद् (भद्यते) कल्याणकारी है ॥ १ ॥ (तस्य)
हिंसक विघ्न का (अनु) लगातार (निभञ्जनम्) विनाश होवे ॥ २ ॥ (वरुणः)
श्रेष्ठ [धनी पुरुष] (वस्वभिः) श्रेष्ठ वस्तुओं के साथ (याति) चलता
है ॥ ३ ॥ (शतम्) सौ (भारती) पोषण करने वाली विद्यार्थे (वा) और

१—(आ—अमिनोन्) डुमिन् प्रक्षेपणे—लङ् छान्दसः । मिनोतिर्बध-
कर्मा—निघ० २ । १६ । समन्तात् नाशितवन्तः, ते विद्वानो विघ्नम् (इति)
अवधारणे (भद्यते) भवि कल्याणे लुखे च । कल्याणकरं भवति ॥

२—(तस्य) तर्द हिंसे—डप्रत्ययः । हिंसकस्य विघ्नस्य । चौरस्य
(अनु) निरन्तरम् (निभञ्जनम्) विनाशनम् ॥

३—(वरुणः) श्रेष्ठः । धनी पुरुषः (याति) गच्छति (वस्वभिः)
वस्तुभिः । श्रेष्ठवस्तुभिः ॥

४—(शतम्) बहु (वा) चार्थे (भारती) अथ० ५ । १२ । च । सुभूष

(शवः) बल हैं ॥ ४ ॥ (शतम्) सौ (हिरण्ययाः) सुनहरे (आश्वाः) घोड़े हैं । (शतम्) सौ (हिरण्ययाः) सुनहरे (रथ्याः) रथ हैं । (शतम्) सौ (हिरण्ययाः) सुनहरी (कुथाः) हाथी की भूले हैं । (शतम्) सौ (हिरण्ययाः) सुनहरे (निष्काः) हार हैं ॥ ५ ॥

भावार्थ—मनुष्य पूर्वज विद्वानों के समान विघ्नों को हटाकर अनेक प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त करें ॥ १—५ ॥

अहल कुश वर्त्तक ॥ ६ ॥ अहल । कुश । वर्त्तक ॥ ६ ॥

शुफेनद्रुव ओहते ॥ ७ ॥ शुफेन । द्रुव । ओहते ॥ ७ ॥

आय वुनेनती जनी ॥ ८ ॥ आ-अय । वुनेनती । जनी ॥ ८ ॥

वनिष्ठा नाव गुह्यन्ति ॥ ९ ॥ वनिष्ठाः ॥ न । अव । गुह्यन्ति ॥ ९ ॥

इदं मह्यं मदुरिति ॥ १० ॥ इदम् । मह्यम् । मदुः । इति ॥ १० ॥

ते वृक्षाः सुह तिष्ठति ॥ ११ ॥ ते । वृक्षाः । सुह । तिष्ठति ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(अहल) हे प्रकाशमान । (कुश) हे पाप नाशक । (वर्त्तक) हे प्रवृत्ति करने वाले ! [मनुष्य] ॥ ६ ॥ (शुफेन द्रुव) खुर से जैसे, (ओहते)

धारणपोषणयोः—अतच्, स्वार्थे अण्, डीप्, बहुवचनस्यैकवचन् । भारती वाक्—निघ० १ । ११ । भारत्यः । विद्याः (शवः) शवांसि बलानि ॥

५—(शतम्) (आश्वाः) स्वार्थे अण् । अश्वाः । तुरगाः (हिरण्ययाः) हिरण्यमयाः । सुवर्णयुकाः । तेजोमयाः (शतम्) (रथ्याः) खलगोरथात् । पा० ४ । २ । ५० । रथ—य । रथसम्बाः (हिरण्ययाः) (शतम्) (कुथाः) कुथ, कुन्थ संश्लेषणे—अच् । गजपृष्ठस्थचित्रकम्बलाः (हिरण्ययाः) (शतम्) (निष्काः) निस् निश्चयेन + कै शब्दे—क । उरोभूषणानि । हाराः (हिरण्ययाः) ॥

६—(अहल) शकिसम्योर्नित् । उ० १ । ११२ । अहि गतौ दीप्तौ च—कलप्रत्ययः । हे दीप्यमान (कुश) कु पापं शयतीति, शो तनूकरणे—उप्रत्ययः । हे पापनाशक (वर्त्तक) वृत्तु वर्तने—एवुल् । हे प्रवृत्तिशील ॥

७—(शुफेन) खुरेण (द्रुव) यथा (ओहते) उहिर अर्द्धने । हन्यते स शत्रुः ॥

वह [शत्रु] मारा जाता है ॥ ७ ॥ (वनेनती) उपकार में भुक्ने वाली (जनी) माता होकर (आय) तु आ ॥ ८ ॥ (वनिष्ठाः) अत्यन्त उपकारी लोग (न) नहीं (अव गृह्णन्ति) रुकते हैं ॥ ९ ॥ (इदम्) यह [वचन] (मह्यम्) मेरे लिये (मद्ः) आनन्द देने वाली नीति है—(इति) यह निश्चय है ॥ १० ॥ (ते) वे (वृक्षाः) स्वीकार करने योग्य पुरुष (सह) मिलकर (तिष्ठति) रहते हैं ॥ ११ ॥

भावार्थ—सब मनुष्य और स्त्रियां सदा उपकार करके क्लेशों से बचें और परस्पर प्रीति से रहें ॥ ६—११ ॥

पाकं बलिः ॥ १२ ॥ पाकं । बलिः ॥ १२ ॥

शकं बलिः ॥ १३ ॥ शकं । बलिः ॥ १३ ॥

अश्वत्थ खदिरो ध्रुवः ॥ १४ ॥ अश्वत्थ । खदिरः । ध्रुवः ॥ १४ ॥

अरदुपरम ॥ १५ ॥ अरदुपरम ॥ १५ ॥

शयो हुत इव ॥ १६ ॥ शयः । हुतः । इव ॥ १६ ॥

भावार्थ—(पाक) हे रक्षक श्रेष्ठ पुरुष [(बलिः) बलि [भोजन

८—(आय) अय गतौ । आगच्छ (वनेनती) वन उपकारे—अच् । पातेर्ङिति । उ० ४ । ५७ । एम प्रह्वत्वे शब्दे च—ङिति, डीप् । उपकारे नम्रा (जनी) जन जनने—इन्, डीप् जनयित्री । माता सती त्वम् ॥

९—(वनिष्ठाः) वनित्—इष्टन्, वृचोलोपः । वनित्तमाः । उपकारितमाः (न) निषेधे (अव गृह्णन्ति) अवग्रहं प्रतिरोधं प्राप्नुवन्ति ॥

१०—(इदम्) वचनम् (मह्यम्) मनुष्याय (मद्ः) कृषिचमि० । उ० १ । ८० । मदी हर्षे—ऊप्रत्ययः । हर्षकरी नीतिः (इति) अवधारणे ॥

११—(ते) पूर्वोक्ताः (वृक्षाः) वृक्ष वरणे—क । स्वीकरणीयाः पुरुषाः (सह) एकीभूय (तिष्ठति) तिष्ठन्ति । वर्तन्ते ॥

१२—(पाक) इण्भीकापा० । उ० ३ । ४३ । पा रक्षणे—कन् । पाकः प्रशस्यताम्—निघ० ३ । ८ । पाकः पक्षव्यो भवति विपक्षपक्ष आदिभ्यः—निरु० ३ । १२ । हे रक्षक । प्रशस्य (बलिः) सर्वधातुभ्य इन् । उ० ४ । ११८ । बलि प्राणने धान्याधरोधने च—इन् । भोजनादिदानम् । उपहारः । राजप्राज्ञः करः ।

आदि की भेंट होवे] ॥ १२ ॥ (शक्र) हे समर्थ ! (बलिः) बलि
[राजा का ग्राह्य कर आदि का लेना होवे] ॥ १३ ॥ (अश्वत्थ) हे अश्वत्थामा !
[बलवानों में ठहरने वाले वीर] (खदिरः) दृढ़ चित्त वाला (ध्रुवः) मनुष्य
[होवे] ॥ १४ ॥ (अरदुपरम) हे हिंसा से निवृत्ति वाले ! ॥ १५ ॥ (शयः)
सांप [के समान शत्रु] (हतः) मारा हुआ (इव) जैसे है ॥ १६ ॥

भावार्थ—मनुष्य उचित रीति से भोजन आदि का उपहार वा दान
और कर आदि का ग्रहण करके दृढ़चित्त होकर शत्रुओं का नाश करे ॥ १२-१६ ॥

व्यापू पूरुषः ॥ १७ ॥ व्यापू । पूरुषः ॥ १७ ॥

अदूहमित्यां पूषकम् ॥ १८ ॥ अदूहमित्याम् । पूषकम् ॥ १८ ॥

अत्यर्धर्चं तरस्वतः ॥ १९ ॥ अत्यर्धर्चं । परस्वतः ॥ १९ ॥

दौव हस्तिनो दृती ॥ २० ॥ दौव । हस्तिनः । दृती ॥ २० ॥

भावार्थ—(अत्यर्धर्चं) हे अत्यन्त बढ़ी हुई स्तुति वाले ! (पूरुषः)
इस पुरुष ने (अदूहमित्याम्) अनष्ट ज्ञान के बीच (परस्वतः) पालन सामर्थ्य

१३—(शक्र) शकल सामर्थ्य—अच् । हे समर्थ (बलिः) म० १२ ।
राजग्राह्यकरः ॥

१४—(अश्वत्थ) अथ० ३ । ६ । १ । अश्व + घ्रा गतिनिवृत्तौ—क,
पृषोदशद्विरूपम् । अश्वेषु बलवत्सु स्थितिशील । अश्वत्थामन् वीर (खदिरः)
अथ० ३ । ६ । १ । खद स्थैर्यहिंसयोः—किरच् । स्थिरचित्तः (ध्रुवः) अथ०
५ । ५ । ५ । धावु गतिशुद्ध्योः—पचाद्यच्, ह्रस्वः । ध्रुव इति मनुष्यनाम
तद्वियोगाद्विधवा—निरु० ३ । १५ । शुद्धः । मनुष्यः ॥

१५—(अरदुपरम) वर्त्तमाने पृषद्वहनमहज् । उ० २ । ८४ । श्रु
हिंसायाम्—अति + उप—रम निवृत्तौ—घञ् । हिंसनात् निवृत्तिशील ॥

१६—(शयः) शीङ् शयने—अच् । सर्पः । सर्प इव शत्रुः (हतः) नाशितः
(इव) यथा ॥

१७—(व्यापू) व्यापितवान् । विस्तारितवान् (पूरुषः) अर्थ मनुष्यः ॥

१८—(अदूहमित्याम्) अ + दुहिर् अर्दने—क + माङ् माने—क्तिन् । अन-
घाया मित्यां ज्ञाने (पूषकम्) पूष वृद्धौ—शुबुल् । वृद्धिकरं व्यवहारम् ॥

वाले [मनुष्य] के (पृथक्) बढ़ती करने वाले व्यवहार को (व्याप) फैलाया है ॥ १७—१८ ॥ [जैसे] (हस्तिनः) धौकनी वाले को (दौव) दोनों (हती) खालें [धौकनी फैलती हैं] ॥ २० ॥

भावार्थ—मनुष्य विद्या आदि की प्राप्ति से संसार का उपकार करके अपनी कीर्ति फैलावे, जैसे लोहार धौकनी की खालों को वायु से फुलाकर फैलाता है ॥ २० ॥

सूक्तम् १३२ ॥

१—१६ ॥ प्रजापतिदेवता ॥ १—६, १२, १६ प्रजापत्या गायत्री ; १०, १४ आसुरी जगती ; ११, १३ दैवी जगती ; १५ याजुषी गायत्री ॥

परमात्मगुणोपदेशः—परमात्मा के गुणों का उपदेश ॥

आदलाबुमेककम् ॥ १ ॥ आत् । अलाबुकम् । एककम् ॥ १ ॥

अलाबुकं निखातकम् ॥ २ ॥ अलाबुकम् । निखातकम् ॥ २ ॥

कुर्कुरिको निखातकः ॥ ३ ॥ कुर्कुरिकः । निखातकः ॥ ३ ॥

तद् वात उन्मथायति ॥ ४ ॥ तत् । वातः । उन्मथायति ॥ ४ ॥

[पद पाठ के लिये सूचना सूक्त १२७ देखो ॥]

भावार्थ—[वह ब्रह्म] (अलाबुकम्) न डूबने वाला (आत्) और

१६—(अत्यर्थं) ऋधु वृद्धौ—घञ्, ऋच स्तुतौ क्तिप् । ऋक्पूरब्धूः० । पा० ५ । ४ । ७३ । समासान्तस्य अप्रत्ययः । हे अतिशयेन प्रवृद्धस्तुतियुक्त (परस्वतः) पृ पात्ननपूरणयोः—असुन्, मतुप् । पात्ननसामर्थ्ययुक्तस्य मनुष्यस्य ॥

२०—(दौव) द्वौ (हस्तिनः) हस्तिमृगिण्० । उ० ३ । ८६ । हसे विकाशे—तन्, इति । हस्तं भस्त्रा । भस्त्रावतः पुरुषस्य (हती) हृणातेर्ह्रस्वः । उ० ४ । १८४ । ह विदारणे—तिप्रत्ययः, ह्रस्वश्च । द्वे चर्मनिर्मितपात्रे ॥

१—(आत्) अनन्तरम् (अलाबुकम्) नञि लभ्येर्नलोपश्च । उ० १ । ८७ । नञ्+लवि अवसंसने—ऊ, ऊकारस्य उकारः, स, च, णित् नलोपश्च, स्वार्थे कन् । न लभ्यते कुत्रापि । अनधःपतनशीलम् निराधारं ब्रह्म (एककम्) स्वार्थे कन् । असहायम् ॥

(एककम्) अकेला है ॥ १ ॥ (अलाबुकम्) न डूबने वाला और (निखातकम्) दृढ़ जमा हुआ है ॥ २ ॥ [वह परमात्मा] (कर्करिकः) बनाने वाला (निखातकः) दृढ़ जमा हुआ है ॥ ३ ॥ (तत्) उस [ब्रह्म] को (वातः) वायु (उन्मथायति) अच्छे प्रकार मथन [मनन] करता है ॥ ४ ॥

भाषार्थ—वह ब्रह्म निराधार अकेला होकर सब का आधार और बनाने वाला है, वायु आदि पदार्थ उस की आका में चलते हैं । सब मनुष्य उसकी उपासना करें ॥ १-४ ॥

कुलायं कृणवादिति ॥ ५ ॥ कुलायन् । कृणवात् । इति ॥ ५ ॥
उग्रं वनिषदाततम् ॥ ६ ॥ उग्रम् । वनिषत् । आततम् ॥ ६ ॥
न वनिषदनाततम् ॥ ७ ॥ न । वनिषत् । अनाततम् ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(कुलायन्) स्थानों को (कृणवात्) वह [परमात्मा] बनाता है, (इति) ऐसा [मानते हैं] ॥ ५ ॥ (उग्रम्) दृढ़ और (आततम्) सब ओर फैला हुआ पदार्थ (वनिषत्) यह [मनुष्य] मांगे ॥ ६ ॥ (अनाततम्) बिना फैले हुये पदार्थ को (न वनिषत्) वह न मांगे ॥ ७ ॥

२—(अलाबुकम्) म० १ (निखातकम्) खनु अवदारणे-क, स्वार्थे कन् । खनित्वा दृढीकृत्य स्थापितम् ॥

३—(कर्करिकः) फर्फरीकादयश्च । उ० ४ । २० । डुकृञ् करणे-ईकन्, कर्करादेशः, ईकारस्य इकारः । कर्ता । रचयिता (निखातकः) म० २ । दृढीकृत्य स्थापितः ॥

४—(तत्) ब्रह्म (वातः) वायुः (उन्मथायति) उत्तमतया मथनं मननं करोति ॥

५—(कुलायन्) अ० २० । १२७ । ८ । कुलायन् । स्थानानि (कृणवात्) लङर्थेलेट् । करोति रचयति परमेश्वरः (इति) एवं मन्यन्ते ॥

६—(उग्रम्) दृढ़म् (वनिषत्) वनु याचने लिङर्थे लुङ् । परस्मैपदं च । अवनिष्ट, याचतां मनुष्यः (आततम्) समन्ताद् विस्तृतं पदार्थम् ॥

७—(न) निषेधे (वनिषत्) म० ६ । याचतां सः (अनाततम्) अविस्तृतम् ॥ सङ्कुचितं पदार्थम् ॥

सू० १३२ [७२०] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,४८७)

भावार्थ—परमात्मा ने यह सब बड़े बड़े लोक बनाये हैं । मनुष्य अग्ने
हृदय को सदा बढ़ाता जावे, कभी संकुचन न करे ॥ ५—७ ॥

क एषां कर्करी लिखत् ॥८॥ कः । एषाम् । कर्करी । लिखत्
क एषां दुन्दुभि हनत् ॥९॥ कः । एषाम् । दुन्दुभिम् । हनत् ॥
यदीयं हनत् कथं हनत् ॥ १० ॥

यदि । इयम् । हनत् । कथम् । हनत् ॥ १० ॥

देवी हनत् कुहनत् ॥११॥ देवी । हनत् । कुहनत् ॥ ११ ॥

पर्यागारं पुनःपुनः ॥ १२॥ परि-आगारम् । पुनः-पुनः ॥१२॥

भाषार्थ—(कः) कौन (एषाम्) इनके बीच (कर्करी) कर्करी
[भारी जलपात्र, वा जलतरंग आदि वाजो] (लिखत्) छोड़े [बजावे] ॥८॥
(कः) कौन (एषाम्) इन के बीच (दुन्दुभिम्) दुन्दुभि [ढोल] (हनत्)
बजावे ॥ ९ ॥ (यदि) जो (इयम्) यह [प्रजा, पुरुष वा स्त्री] (हनत्)
बजावे, (कथम्) कैसे (हनत्) बजावे ॥ १० ॥ (देवी) देवी [उत्तम प्रजा,
मनुष्य वा स्त्री] (पर्यागारम्) घर घर पर (पुनःपुनः) बार बार (हनत्)

८—(कः) (एषाम्) मनुष्याणां मध्ये (कर्करी) अर्त्तिकमिश्रमि० ।
उ० ३ । १३२ । सौत्रो धातुः, कर्क हासे—अरप्रत्ययः, यद्वा, कर्क हासं राति, रा
दाने—क, गौरादित्वात् ङीष्, विभक्त्येर्लुक् । कर्करीम् । सनालजलपात्रम् ॥
जलतरङ्गादिवाद्यम् (लिखत्) लिख अक्षरविन्यासे । अक्षरविन्यासरीत्या
वाद्येत् ॥

९—(कः) (एषाम्) (दुन्दुभिम्) अथ० ५ । २० । १ । गृहङ्गकाम्
(हनत्) वाद्येत् ॥

१०—(यदि) सम्भावनायम् (इयम्) दृश्यमाना स्त्रीपुरुषरूपा प्रजा
(हनत्) (कथम्) केन प्रकारेण (हनत्) ॥

११—(देवी) दिव्यगुणवती प्रजा (हनत्) (कुहनत्) कुह विस्मापने ।
विस्मापयेत् । चमत्कारं कुर्यात् ॥

१२—(पर्यागारम्) परि + अग कुटिलायां गतौ—घर, आगमच्छति आ

बजावे और (कुहनत् । चमत्कार दिखावे ॥ ११, १२ ॥

भावार्थ—चुने हुये विद्वान् मनुष्य और विदुषी स्त्रियों संसार में उत्तम उत्तम बाजों के साथ वेद विद्या का गान करके आत्मा और शरीर की बल बढ़ाने वाली चमत्कारी क्रियाओं का प्रकाश करें ॥ ८--१२ ॥

त्रीण्युष्ट्रस्य नामानि ॥ १३ ॥ त्रीणि । उष्ट्रस्य । नामानि ॥ १३
हिरण्य इत्येके अब्रवीत् ॥ १४ ॥

हिरण्यः । इति । एके । अब्रवीत् ॥ १४ ॥

द्वौ वा ये शिशवः ॥ १५ ॥ द्वौ । वा । ये । शिशवः ॥ १५ ॥

नीलशिखण्डवाहनः ॥ १६ ॥ नीलशिखण्डवाहनः ॥ १६ ॥

भावार्थ—(उष्ट्रस्य) प्रतापी [परमात्मा] के (त्रीणि) तीन (नामानि) नाम ॥ १३ ॥ (हिरण्यः) हिरण्य [तेजोमय], (वा) और (द्वौ) दो (नीलशिखण्डवाहनः) नीलशिखण्ड [नीलों निधियों वा निवास स्थानों का पहुँचाने वाला] तथा वाहन [सब का लेचलने वाला] हैं, (इति) ऐसा (ये शिशवः) बालक हैं, (एके) वे कोई कोई (अब्रवीत्) कहते हैं ॥ १४-१६ ॥

भावार्थ—परमात्मा अपने अनन्त गुण, कर्म स्वभाव के कारण नामों की गणना में नहीं आ सकता है, जो मनुष्य उसके केवल “हिरण्य” आदि नाम बताते हैं, वे बालक के समान थोड़ी बुद्धि वाले हैं ॥ १३-१६ ॥

गतौ-अण् । आगारं गृहम् । प्रतिगृहम् ॥ (पुनःपुनः) वारंवारम् ॥

१३—(त्रीणि) त्रिसंख्याकानि (उष्ट्रस्य) उषिखनिभ्यां कित् । उ० ४ । १६२ । उष दाहे बधे च-घृन् कित् । प्रतापितः परमेश्वरस्य (नामानि) संज्ञाः ॥

१४—(हिरण्यः) हिरण्यः = हिरण्यमयः—निक० १० । २३ । तेजोमयः (इति) एवम् (एके) केचित् (अब्रवीत्) लङ् । लङ्, बहुवचनस्यैकवचनम् अशुभम् । ब्रुवन्ति ॥

१५—(द्वौ) (वा) समुच्चये (ये) (शिशवः) बालाः । बालसमाना-
श्चबुद्धयः (नीलशिखण्डवाहनः) नीलशिखण्डश्च वाहनश्च [नीलशिख-
ण्डः—अथ० २ । २७ । ६] स्फायितञ्चिवञ्चि० । उ० २ । १३ । लीङ् प्रापये-
रक्, रस्य लः । यद्वा नि + इत् गतौ—कः । अण्डन् कृच्छ्रबुद्धः । उ० १ । २६ ।

परिचित सेवकलाल कृष्णदास संशोधित पुस्तक में मन्त्र १३—१६ का पाठ इस प्रकार है ॥

त्रीण्युष्टस्य नामानि ॥ १३ ॥ हिरण्यमित्येकमब्रवीत् ॥ १४ ॥

द्वे वा यशः शवः ॥ १५ ॥ नीलशिखण्डो वा हनत् ॥ १६ ॥

(उष्ट्रस्य) प्रतापी [परामात्मा] के (त्रीणि) तीन (नामानि) नाम हैं ॥ १३ ॥ (एकम्) एक (हिरण्यम्) हिरण्य [तेजोमय], (वा) और (द्वे) दो (यशः) यश [कीर्ति] तथा (शवः) बल है, (इति) ऐसा (अब्रवीत्) [वह, मनुष्य] कहता है ॥ १४, १५ ॥ (नीलशिखण्डः) नील शिखण्ड [नीलों निधियों वा निवास स्थानों का पहुँचाने वाला परमेश्वर] (वा) निश्चय करके (हनत्) व्यापक है [हन गतौ, गच्छति व्याप्नोति] ॥ १६ ॥

सूक्तम् १३३ ॥

१—६ ॥ कुमारी देवता ॥ १—३, ५ निचृदनुष्टुप् । ४, ६ अनुष्टुप् ॥

स्त्रीणां कर्तव्योपदेशः—स्त्रियों के कर्तव्य का उपदेश ॥

विततौ किरणौ द्वौ तावा पिनष्टि पूरुषः ।

न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे ॥ १ ॥

विततौ । किरणौ । द्वौ । तौ । आ । पिनष्टि । पूरुषः ॥

न । वै । कुमारि । तत् । तथा । यथा । कुमारि । मन्यसे ॥ १ ॥

[पदपाठ के लिये सूचना सूक्त १२७ देखो ॥]

भाषार्थ—(द्वौ) दोनों (किरणौ) प्रकाश की किरणें [शारीरिक बल और आत्मिक पराक्रम] (विततौ) फैले हुये हैं, (तौ) उन दोनों को (पूरुषः) पुरुष [देहधारी जीव] (आ) सब ओर से (पिनष्टि) पोसता है [सूक्ष्म रीति से

शिखि गतौ—अण्डन् कित् । नीलानां निधीनां यद्वा नीलानां नीडानां निवासानां शिखण्डः प्रापकः [वाहनः] वह प्राणो-र्यु स च णित् । वोढा । सर्वं वहनशीलः परमेश्वरः ॥

१—(विततौ) विस्तृतौ (किरणौ) प्रकाशरश्मी । शारीरिकबल-आत्मिक-पराक्रमौ (द्वौ) (तौ) किरणौ (आ) समन्तात् (पिनष्टि) पिप्पलु संचूर्णते । संचूर्णीकरोति । सूक्ष्मतया प्रयोजयति (पूरुषः) शरीरी जीवः (त) निषेजे

काम में लाता है] । (कुमारि) हे कुमारी ! [कामना योग्य स्त्री] (वै) निश्चय करके (तत्) वह (तथा) वैसा (न) नहीं है, कुमारि) हे कुमारी ! (यथा) जैसा (मन्यसे) तू मानती है ॥ १ ॥

भावार्थ—संसार में सब प्राणी शरीर और आत्मा की स्वस्थता से सूक्ष्म विचार और कर्म के द्वारा उन्नति करने हैं, स्त्री आदि भी समय को व्यर्थ न खोकर सदा पुरुषार्थ करें ॥ १ ॥

मातुष्टे किरणौ द्वौ निवृत्तः पुरुषानृते । न वै ० ॥ २ ॥

मातुः । ते । किरणौ । द्वौ । निवृत्तः । पुरुषान् । ऋते ॥ न । वै । ० ॥ २ ॥

भाषार्थ—(मातुः ते) तुझ माता के (द्वौ) दोनों (किरणौ) प्रकाश की किरणें [शारीरिक बल और आत्मिक पराक्रम] (पुरुषान्) पुरुषों [शरीर धारी जीवों] को (ऋते) सत्य शास्त्र में (निवृत्तः) प्रकाशमान करते हैं । (कुमारि) हे कुमारी ! [म० १] ॥ २ ॥

भावार्थ—माता आदि से ही सुशिक्षा पाकर सब सन्तान पुरुषार्थी होते हैं । स्त्री आदि [म० १] ॥ २ ॥

निगृह्य कर्णकौ द्वौ निरायच्छसि मध्यमे । न वै ० ॥ ३ ॥

निगृह्य । कर्णकौ । द्वौ । निरायच्छसि । मध्यमे ॥ न । वै । ० ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(मध्यमे) हे मध्यस्थ होने वाली ! [स्त्री] (द्वौ) दोनों (कर्णकौ) कोमल कानों को । निगृह्य) वश में करके [सुनने में लगवाकर]

(वै) निश्चयेन (कुमारि) कमेः किदुच्छोपधायाः । उ० ३ । १३८ । कमु कान्तौ—आरन् कित् अकारस्य उकारः, यद्वा कुमार क्रीडने-पचाद्यच्, डीप् । हे कमनीये स्त्रि (तत्) कर्म (तथा) (यथा) (कुमारि) (मन्यसे) जानासि ॥

२—(मातुः) जनन्याः (ते) तथ, मातुः—इति पदेन समानाधिकरणम् (किरणौ) म० १ (द्वौ) (निवृत्तः) वृत्त चुरादि—भाषणे दीपने च + निवर्तयतः । नितरां दीपयतः (पुरुषान्) शरीर धारणो जीवान् (ऋते) सत्यशास्त्रे । अन्यत् पूर्ववत् । म० १ ॥

३—(निगृह्य) वशीकृत्य (कर्णकौ) अनुकम्पायाम्—कन् । कोमल-कर्णौ (द्वौ) (निरायच्छसि) निश्चयेन समन्तात् नियमयसि (मध्यमे) हे

(निरायच्छसि) [सन्तानों को] तू नियम में चलाती है । (कुमारि) हे कुमारी ! [म० १] ॥ ३ ॥

भाषार्थ—माता आदि ध्यान दिलाकर बालकों को सुशिक्षा देवें, स्त्री आदि [म० १] ॥ ३ ॥

भगवान् यास्क का वचन है—निरु० २।४॥

य आतृण्यत्यवितथेन कर्णावदुःखं कुर्वन्नमृतं सम्प्रयच्छन् । तं मन्येत पितरं मातरं च तस्मै न दुह्येत् कतमच्चनाह ॥

(यः) जो [आचार्य] (अदुःखं कुर्वन्) दुःख न करता हुआ, (अमृतं सम्प्रयच्छन्) अमृत देता हुआ (अवितथेन) सत्य [वेदज्ञान] से (कर्णौ) दोनों कानों को (आतृण्यति) खोल देता है, (तम्) उस को (मातरं पितरं च) माता और पिता (मन्येत) वह [शिष्य] माने, (तस्मै) उस से (कथमच्चनाह) किसी प्रकार कभी (न दुह्येत्) बुराई न करे ॥

उत्तानायै शयानायै तिष्ठन्ती वाव गूहसि । न वै ० ॥ ४ ॥

उत्तानायै । शयानायै । तिष्ठन्ती । वा । अव । गूहसिः ॥
न । वै । ० ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(उत्तानायै) बड़े उपकार वाली नीति के लिये (तिष्ठन्ती) ठहरती हुई तू (शयानायै) सोती हुई [आलस्य वाली] रीति को (वा) निश्चय करके (अव) निरादर करके (गूहसि) ढांप देती है । (कुमारि) हे कुमारी [म० १] ॥ ४ ॥

भाषार्थ—स्त्री आदि अपनी चतुराई से कुरीतें छोड़कर सुरीतें चलावें, स्त्री आदि [म० १] ॥ ४ ॥

मध्यमवे स्त्रिः ॥ अन्यत्—म० १ ॥

४—(उत्तानायै) उत्+तनु विस्तारं श्रद्धोपकारादिषु च—घञ् । उत्तमोपकारयुक्तायै नीतये (शयानायै) सम्यानश्च स्तुवः । उ० २ । ८६ । शीङ् शयने—आनच् । टाप् । सुपां सुपो भवन्ति । वा० पा० ७ । १ । ३६ । द्वितीयार्थे चतुर्थी । प्राप्तनिद्राम् । आलस्ययुक्तां रीतिम् (तिष्ठन्ती) वर्तमाना त्वम् (वा) अवधारणे (अव) अनादरे । अनादृत्य (गूहसि) गुह्र संवरणे । आच्छादयसि । अन्यत्—म० १ ॥

श्लक्ष्णायां श्लक्ष्णिकायां श्लक्ष्णमेवाव गूहसि । न वै ० ॥ ५ ॥
 श्लक्ष्णायाम् । श्लक्ष्णिकायाम् । श्लक्ष्णम् । एव । अव ।
 गूहसि । न । वै । ० ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(श्लक्ष्णायाम्) चिकनी [कोमल] और (श्लक्ष्णिकायाम्)
 मनोहर वाणी में (श्लक्ष्णम्) स्नेह [प्रेम] को (एव) निश्चय करके (अव)
 शुद्धि के साथ (गूहसि) तू गुहा [हृदय] में रखती है । (कुमारि) हे
 कुमारी ! [म० १] ॥ ५ ॥

भाषार्थ—स्त्री आदि मधुर मनोहर वाणी से शुद्ध प्रेम के साथ उपदेश
 करें, स्त्री आदि [म० १] ॥ ५ ॥

मनु महाराज ने कहा है—मनुस्मृति अध्याय २ श्लोक १५६ ॥ अहिंसयैव
 भूतानां कार्य श्रेयोऽनुशासनम् । वाक् चैव मधुरा श्लक्ष्णा प्रयोज्या धर्ममिच्छता ॥

(भूतानाम्) प्राणियों को (अहिंसया एव) अहिंसा [दुख न देने]
 से ही (श्रेयः) कल्याणकारी (अनुशासनम्) शासन वा उपदेश (कार्यम्)
 करना चाहिये । (च) और (धर्मम् इच्छता) धर्म चाहने वाले करके (वाक्
 एव) वाणी भी (मधुरा) मधुर, (श्लक्ष्णा) मनोहर (प्रयोज्या) बोलनी चाहिये ॥

अवश्लक्ष्णमिव अंशदन्तलोममति हुदे ।

न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे ॥ ६ ॥

अवश्लक्ष्णम् । इव । अंशदन्तलोममति । हुदे ॥ न । वै ।

कुमारि । तत् । तथा । यथा । कुमारि । मन्यसे ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(अंशदन्तलोममति) भीतर पड़े हुये केश आदि पदार्थ

५—(श्लक्ष्णायाम्) श्लिषेरञोपाधायाः । उ० ३ । १६ । श्लिष आलिंगने
 संसर्गे च—कस्न, इकारस्य अकारः । चिकृष्णायाम् । कोमलायाम् (श्लक्ष्ण-
 कायाम्) श्लक्ष्ण—कञ् स्वार्थे, टाप् अत इत्वम् । मनोहरायां वाचि—यथा मनु
 २ । १५६ (श्लक्ष्णम्) स्नेहम् । प्रेमभावम् (एव) अवधारणे (अव) शुद्धौ ।
 शुद्ध्या (गूहसि) गुह संवरणे । गुहायां हृदये स्थापयसि । अन्यत्—म० १ ॥

६—(अवश्लक्ष्णम्) म० ५ । अव अनादरे, परिभवे च । अमनोहरत्वम् ।

बाले (हृदे) जलाशय में (अवश्लक्षणम् इव) जैसे गदला रूप [दीखता है] ।
(कुमारि) हे कुमारी ! [कामना योग्य स्त्री] (वै) निश्चय करके (तत्)
वह (तथा) वैधा (न) नहीं है, (कुमारि) हे कुमारी (यथा) जैसा (मन्यसे)
तू मानती है ॥ ६ ॥

भावार्थ—गदले पानी में गदला रूप दीखता है, और शुद्ध में शुद्ध, वैसे
ही स्त्री आदि सब लोग मानसिक मैल तज कर शुद्ध व्यवहार करें ॥ ६ ॥

सूक्तम् १३४ ॥

१—६ ॥ प्रजापतिर्देवता ॥ १, ३, ५, ६ तिचृत् सास्त्री पङ्क्तिः; २ सास्त्री
पङ्क्तिः; ४ विराट् सास्त्री पङ्क्तिः ॥

बुद्धिवर्धनोपदेशः—बुद्धि बढ़ाने का उपदेश ॥

इहेत्थ प्रागपुगुदगुधराग्—अरालागुदभर्त्सय ॥ १ ॥

इह । इत्थ । प्राक् । अपाक् । उदक् । अधराक्—अराल-
अगुदभर्त्सय ॥ १ ॥

[पद पाठ के लिये सूचना सूक्त १२७ देखो ॥]

भावार्थ—(इह) यहां (इत्थ) इस प्रकार (प्राक्) पूर्व में, (अपाक्)
पश्चिम में, (उदक्) उत्तर में और (अधराक्) दक्षिण में—(अरालागुद-
भर्त्सय) हिंसा की गति का अधिकार करने वाला परमात्मा है ॥ १ ॥

भावार्थ—परमात्मा को सब स्थान और सब काल में वर्तमान जानकर

मलिनरूपत्वम् (इव) यथा (अंशदन्तलोममति) अंशु अधःपतने—शतृ +
अन्तः + लोम—मनुप् । अधःपतितमध्यकेशादिपदार्थयुक्ते । अतिमलिनवस्त्-
पेते (हृदे) जलाशये । अन्यत्—म० १ ॥

१—(इह) अत्र (इत्थ) इत्थम् । अनेन प्रकारेण (प्राक्, अपाक्, उदक्,)
अथ० २० । १२० । १ (अधराक्) नीच्यां दक्षिणस्यां दिशि (अरालागुदभर्त्सय)
स्थावतिमृजेरालज्० । ३०१ । ११६ । अ हिंसायाम्—आलच् + अग गतौ—उदच्
प्रत्ययः, यथा अर्बुदशब्दे + शोड्शपिठ० । ३० ३ । ११३ । भर्त्स तर्जने—अध-
प्रत्ययः । सुपां सुलुक्० । पा० ७ । १ । ३६ । विभर्त्सुक् । अराल-अगुद-
भर्त्सयः । हिंसागतिरिहकर्ता परमेश्वरः ॥

मनुष्य हिंसाकर्म से बचे ॥ १ ॥

इस मन्त्र का मिलान करो—अथ० २० । १२० । १ ॥

० वृत्साः पुरुषन्त आसते ॥ २ ॥

० ॥ वृत्साः । पुरुषन्तः । आसते ॥ २ ॥

भाषार्थ—(इह) यहां (इत्थ) इस प्रकार.....[म० १]—(वृत्साः) प्यारे बच्चे (पुरुषन्तः) पुरुष होते हुये (आसते) ठहरते हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—सब स्थान और सब काल में मनुष्य पुरुषार्थ करें ॥ २ ॥

० स्थालीपाकं वि लीयते ॥ ३ ॥

० ॥ स्थालीपाकः । वि । लीयते ॥ ३ ॥

० स वै पृथु लीयते ॥ ४ ॥

० ॥ सः । वै । पृथु । लीयते ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(इह) यहां (इत्थ) इस प्रकार.....[म० १]—(स्था-लीपाकः) स्थाली पाक [बटले वा कड़ाही में पका हुआ भोजन पदार्थ] (वि) विविधप्रकार (लीयते) मिलता है ॥ ३ ॥ (इह) यहां (इत्थ) इस प्रकार.....[म० १]—(सः) वह [भोजन पदार्थ] (वै) निश्चय करके (पृथु) विस्तार से (लीयते) मिलता है ॥ ४ ॥

भावार्थ—मनुष्य को सब स्थान में सदा भोजन आदि पदार्थ प्राप्त करना चाहिये ॥ ३, ४ ॥

० आष्टै लाहणि लीशायी ॥ ५ ॥

० ॥ आष्टै । लाहणि । लीशायी ॥ ५ ॥

२—(वृत्साः) प्रियशिशवः (पुरुषन्तः) पुरुषा भवन्तः (आसते) तिष्ठन्ति ॥

३—(स्थालीपाकः) स्थाचतिमृजेगलज्० । उ० १ । ११६ । घ्रा गतिनि-वृत्तौ—आलच् डोष् + डुगचष् पाके—घञ् । स्थाल्यां सुपादिपचन्यां पच्यते । पक्वभोजनपदार्थः (वि) विविधम् (लीयते) लीड् श्लेषणे । श्लिष्यते । संयुज्यते ॥

४—(सः) स्थालीपाकः (वै) निश्चयेन (पृथु) यथा तथा विस्तारेण (लीयते) म० ३ । संयुज्यते ॥

भाषार्थ—(इह) यहां (इत्थ) इस प्रकार [म० १]—(लाहणि) प्रेरक बुद्धि (लीशाथी) चलती हुई (आष्टे) फैलती है ॥ ५ ॥

भावार्थ—सब विद्वान् अपनी बुद्धि को सब ओर चलाकर संसार में विचरें ॥ ५ ॥

इहेत्थ प्रागपागुदग्धराग्—अद्विलली पुच्छलीयते ॥ ६ ॥

इह । इत्थ । प्राक् । अपाक् । उदक् । अधराक्—अद्विलली । पुच्छलीयते ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(इह) यहां (इत्थ) इस प्रकार (प्राक्) पूर्व में, (अपाक्) पश्चिम में, (उदक्) उत्तर में और (अधराक्) दक्षिण में—(अद्विलली) व्यवहार ग्रहण करने वाली बुद्धि (पुच्छलीयते) प्रसन्न होती है ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्य अपनी बुद्धि को सब कामों में प्रविष्ट करके प्रसन्न रहें ॥ ६ ॥

सूक्तम् १३५ ॥

१—१३ ॥ प्रजापतिरिन्द्रश्च देवते ॥ १, ५, ६ स्वराडाप्यनुष्टुप्; २ भुरिगनुष्टुप्; ३ आर्षी पङ्क्तिः । ४ आष्युष्णिक्, ७ भुरिगार्षी त्रिष्टुप्; ८ भुरिगगायत्री; ९ विराडाप्यनुष्टुप्; १०, १२, १३ अनुष्टुप्; ११ निचृदाप्यनुष्टुप् ॥

मनुष्यकर्तव्योपदेशः—मनुष्य के कर्तव्य का उपदेश ॥

भुगित्यभिगतुः शलित्यपक्रान्तुः फलित्यभिष्ठितः ।

५—(आष्टे) अशू व्याप्तौ । व्याप्यते (लाहणि) अर्त्तिसृष्टौ । उ० २ । १०२ । लाभ प्रेरणे—अग्नि, मस्य हः । विभक्तेर्लुक् । प्रेरिका शक्तिः । तीक्ष्णा बुद्धिः (लीशाथी) क्वदिभ्यां डित् । उ० ३ । ११५ । लिश गतौ—अल्पीभावे च—अथ प्रत्ययः, डीप्, पृषोदरादिरुपम् । गमनशीला सती ॥

६—(अद्विलली) अक्षू व्याप्तौ—किप् । सलिकल्पनि० । उ० १ । ५४ । ला आदाने, इलच् स च डित्, डीप् । अक्षः अक्षस्य व्यवहारस्य प्रादिका बुद्धिः (पुच्छलीयते) पुच्छ प्रसादे—इति शब्दकल्पद्रुमः । सलिकल्पनि० । उ० १ । ५४ । इति इलच् डीप् । भृशादिभ्यो भुव्यच्चेर्लोपश्च हलः । पा० ३ । १ । १२ । पुच्छली-क्यङ् भवत्यर्थे बाहुलकात् । प्रसन्ना भवति । अन्यद् गतम्—म० १ ॥

दुन्दुभिमाहननाभ्यां जरितरोयामो दैव ॥ १ ॥

भुक् । इति । अभि-गतः । शल् । इति । अप-क्रान्तः ।

फल । इति । अभि-स्थितः ॥ दुन्दुभिम् । आहननाभ्याम् ।

जरितः । आ । उत्थामः । दैव ॥ १ ॥

[पद पाठ के लिये सूचना सूक्त १२७ देखो ॥]

भाष्यार्थ—(भुक्) पालने वाला [परमात्मा] (अभिगतः) सामने पाया गया है—(इति) ऐसा है, (शल्) शीघ्रगामी वह (अपक्रान्तः) सुख से आगे चलता हुआ है—(इति) ऐसा है, (फल्) सिद्धि करने वाला वह (अभिष्ठितः) सब ओर ठहरा हुआ है—(इति) ऐसा है । (जरितः) हे स्तुति करने वाले (दैव) परमात्मा को देवता मानने वाले विद्वान् ! (दुन्दुभिम्) ढोल को (आहननाभ्याम्) दो डंकों से (आ) सब ओर (उत्थामः) हम उठावें [बल से बजावें] ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि परमेश्वर के उपकारों को देखकर डंके की चोट प्रयत्नी और उपकारी हों ॥ १ ॥

कोशुबिलै रजनि ग्रन्थै धनिमुपानहि पादम् ।

उत्तमां जनिमां जुन्यानुत्तमां जनीन् वत्सैन्यात् ॥ २ ॥

कोशुबिलै । रजनि । ग्रन्थैः । धानम् । उपानहि । पादम् ॥

१—(भुक्) भुज पालनाभ्यवहारयोः—किप् । पालकः परमात्मा (इति) एवं वर्तते (अभिगतः) अभिमुख्येन प्राप्तः (शल्) शन गतौ—किप् । शीघ्रगामी (इति) (अपक्रान्तः) अप आनन्दे + क्रमु पादविक्षेपे—क । सुखेन क्रमणशीलः (फल्) फल निष्पत्तौ—किप् । सिद्धिकर्ता परमेश्वरः (इति) (अभिष्ठितः) सर्वतः स्थितः (दुन्दुभिम्) बृहड्ढकाम् (आहननाभ्याम्) ताडनस्य वादनस्य साधनाभ्याम् (जरितः) जरिता स्तोतृनाम्—निघ० ३ । १६ । हे स्तोतः (आ) समन्तात् (उत्थामः) उत् + ष्ठा—लट् अन्तर्गतएयर्थः । उत्थामः । उत्थापयामः । उच्चैर्वादयामः (दैव) देव—अण् । देवः परमात्मा देवता यस्य, तत्संभूयो । हे परमेश्वरोपासक विद्वन् ॥

सू० १३५ [७२३] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥ (४,४८७)

उत्तमासम् । जनिमासम् । जुन्या । अनुत्तमासम् । जनीन् । वर्त्मन् ।
यात् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(रजनि) रात्रि में [जैसे] (कोशबिले) कोश [सोना
चांदी रखने] के कुण्ड के भीतर (ग्रन्थेः) गांठ के (धानम्) रखने को,
[अथवा जैसे] (उपानहि) जूते में (पादम्) पैरे को, [वैसे ही] (जुन्या)
मनुष्यों के बीच (उत्तमासम्) उत्तम (जनिमासम्) जन्म लक्ष्मी [शोभा वा ऐश्वर्य],
(अनुत्तमासम्) अति उत्तम गति और (जनीन्) उत्पन्न पदार्थों को (वर्त्मन्)
मार्ग में (यात्) [मनुष्य] प्राप्त होवे ॥ २ ॥

भावार्थ—जैसे रात्रि में कोशागार में रखकर सोने चांदी की, और
जूता पहिनकर पैर की रक्षा करते हैं, वैसे ही मनुष्य श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होकर
उत्तम प्रवृत्ति करके उन्नति करें ॥ २ ॥

अलाबूनि पृषातकान्यश्वत्थुपलाशम् । पिपीलिकावटश्वसे
विद्युत्स्वार्पणशुफो गोशुफो जरितुरोयामो दैव ॥ ३ ॥

अलाबूनि । पृषातकानि । अश्वत्थु-पलाशम् ॥ पिपीलिका ।
वटश्वसः । वि-द्युत् । स्वार्पणशुफः । गोशुफः । जरितुः ।
आ । उयामः । दैव ॥ ३ ॥

२—(कोशबिले) सुवर्णरूप्यस्थितिकुण्डे (रजनि) रजन्याम् । रात्रौ
(ग्रन्थेः) बन्धनस्य (धानम्) स्थापनम् (उपानेहि) उप+णह बन्धने-किप् ।
नहिवृत्तिवृषि० । पा० ६ । ३ । ११६ । पूर्वपदस्य दीर्घः । चर्मपादुकायाम्
(पादम्) (उत्तमासम्) श्रेष्ठाम् (जनिमासम्) जनिघसिभ्यामिण् । उ० ४ । १३० ।
जनी प्रादुर्भावे-इण् । जनिषथ्योश्च । पा० । ७ । ३ । ३५ । वृद्धिनिषेधः । माङ्माने
शब्दे च-किप् । जनेः उत्पत्तेः जन्मतो मां लक्ष्मीं शोभामैश्वर्यं वा (जुन्या) सुपां
सुलुक्० । पा० ७ । १ । ३६ । जन-ज्या सप्तमी बहुवचने । जनेषु । मनुष्येषु
(अनुत्तमासम्) अतिशयेन श्रेष्ठाम् (जनीन्) उत्पन्नान् पदार्थान् (वर्त्मन्)
वर्त्मनि । मार्गे (यात्) यायात् । प्राप्नुयात् ॥

भाषार्थ—(अलाबूनि) तुंबी आदि बेलें, (पृषातकानि) पृषातक [वृक्ष विशेष], (अश्वत्थपलाशम्) पीपल और पलाश वा ढाक [वृक्ष विशेष], (पिपीलिका) पिपीलिका [वृक्ष विशेष], (वटश्वसः) वटश्वस [वृक्ष विशेष] (विद्युत्) बिजुली [वृक्ष विशेष], (स्वापर्णशफः) स्वापर्णशफ [वृक्ष विशेष] और (गोशफः) गोशफ [वृक्ष विशेष] हैं, [उन सब में] (जरितः) है स्तुति करने वाले (दैव) परमात्मा को देवता मानने वाले विद्वान् ! (आ) सब ओर से (उत्थामः) हम उठते हैं ॥ ३ ॥

भाषार्थ—मनुष्यों को योग्य है कि बाटिका, खेत आदि में अनेक लता बेलों और वृक्षों को लगाकर ठीक ठीक उपकार लेकर सुखी हों ॥ ३ ॥

वीमे देवा अक्रंसताध्वर्यो क्षिप्रं प्रचर ।

सुसुत्यमिद् गवामस्यसि प्रखुदसि ॥ ४ ॥

वि । इमे । देवाः । अक्रंसत । अध्वर्यो । क्षिप्रम् । प्रचर ॥

सुसुत्यम् । इत् । गवाम् । असि । असि । प्रखुदसि ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(इमे देवाः) इन विद्वानों ने (वि) विविध प्रकार (अक्रंसत) पैर बढ़ाया है, (अध्वर्यो) हे हिंसा न करने वाले विद्वान् (क्षिप्रम्) शीघ्र

३—(अलाबूनि) नञि लम्बेर्नलोपश्च । उ० १ । ८७ । नञ् + लवि अवसंसने-ऊ, ऊकारस्य उकारः, स च णिप्, नलोपश्च । तुम्बीलताः (पृषातकानि) अथ० १४ । २ । ४८ । पृषु सेचने-क + अत वधने-कुन् । वृक्षविशेषाः (अश्वत्थपलाशम्) पिप्पलपलाशवृक्षसमूहः (पिपीलिका) अथ० ७ । ५६ । ७ । अपि + पील रोधने-एबुल, अकारलोपः, टाप्, अत इत्त्वम् । पिपीलिका पेलतेर्गतिकर्मणः निरु० ७ । १३ । वृक्षविशेषः (वटश्वसः) वट वेष्टने-अच् + श्वस प्राणने- अच् । वृक्षविशेषः (विद्युत्) वृक्षविशेषः (स्वापर्णशफः) वृक्षविशेषः (गोशफः) वृक्षविशेषः (जरितः) म० १ । हे रतोतः (आ) समन्तात् (उत्थामः) उत्थामः । उच्चैर्भवामः (दैव) म० १ । हे परमेश्वरोपासक विद्वन् ॥

४—(वि) विविधम् (इमे) प्रसिद्धाः (देवाः) विद्वान् (अक्रंसत) कमु पादविक्षेपे । पादं विक्षिप्तवन्तः । अग्रे गताः (अध्वर्यो) अ० ७ । ७०३ । ५ । हे आहिंसाप्रापक विद्वन् (क्षिप्रम्) शीघ्रम् (प्रचर) अग्रे गच्छ (सुसुत्यम्)

सू० १३५ [७२३]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,४८८

(प्रचर) आगे बढ़ । और (प्रखुदसि) बड़े आनन्द में (असि) तू हो, (असि) तू हो, [यह वचन] (गवाम्) स्तोताओं [गुण व्याख्याताओं] का (सुसत्यम् इत्) बड़ा ही सत्य है ॥ ४ ॥

भावार्थ—पहिले विद्वान् लोग काम करने से बड़े हो गये हैं, वैसे ही हम भी विद्वानों का वचन मानकर आगे बढ़ें ॥ ४ ॥

पुत्नी यदृश्यते पुत्नी यक्ष्यमाणा जरितुरोयामो दैव ।

होता विष्टीमेन जरितुरोयामो दैव ॥ ५ ॥

पुत्नी । यत् । दृश्यते । पुत्नी । यक्ष्यमाणा । जरितुः । आ ।

उयामः । दैव ॥ होता । विष्टीमेन । जरितुः । आ । उयामः ।

दैव ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(पुत्नी) पत्नी (यत्) जहाँ पर (यक्ष्यमाणा) पूजी जाती हुई (पुत्नी) पत्नी (दृश्यते) दीखती है, [वहाँ] (जरितुः) हे स्तुति करने वाले (दैव) परमात्मा को देवता मानने वाले विद्वान् । (आ) सब ओर से (उयामः) हम उठते हैं । (विष्टीमेन) विशेष कोमलपन के साथ (होता) तू दाता है, (जरितुः) हे स्तुति करने वाले (दैव) परमात्मा को देवता मानने वाले विद्वान् ! (आ) सब ओर से (उयामः) हम उठते हैं ॥ ५ ॥

भावार्थ—पत्नी और पति गुणवान् और परमेश्वर भक्त होकर आनन्द भोगें ॥ ४ ॥

आदित्या ह जरितुरङ्गिरोभ्यो दक्षिणामुनयन् ।

तां ह जरितुः प्रत्यायुस्तासु ह जरितुः प्रत्यायन् ॥ ६ ॥

सर्वसत्यम् (इत्) एव (गवाम्) गौः स्तोता—निघ० ३ । १६ । स्तोतृणाम् । गुणव्यातृणाम् (असि) त्वं भव (असि) (प्रखुदसि) उषः किञ्च । उ० ४ । २३४ । प्र + खुर्द क्रीडायाम्—असि कित् रेफलोपः । प्रकृष्टसुखे ॥

५—(पुत्नी) वेदविधानेनोढा । गृहिणी (यत्) यत्र (दृश्यते) प्रेक्ष्यते (पुत्नी) (यक्ष्यमाणा) पूज्यमाना (जरितुः, आ, उयामः, दैव) म० १, ३ (होता) त्वं दातासि (विष्टीमेन) वि + ष्ठीम क्लेदे-प्रज्ञ् । विशेषेण आद्री-भावेन । कोमलत्वेन । अन्यद् गतम् ॥

आदित्याः । ह । जरितुः । अङ्गिरः-भ्युः । दक्षिणासु । अन-
यन् ॥ तासु । ह । जरितुः । प्रति । आयन् ॥ तासु । जइति ।
ह । जरितुः । प्रति । आयन् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(आदित्याः) अखण्ड ब्रह्मचारियों ने (ह) ही, (जरितुः)
हे स्तुति करने वाले ! (अङ्गिरोभ्यः) विद्वानी पुरुषों के लिये (दक्षिणाम्)
दक्षिणा [दान वा प्रतिष्ठा] को (अनयन्) प्राप्त कराया है । (तासु) उस
[दक्षिणा] को (ह) ही, (जरितुः) हे स्तुति करने वाले ! (प्रति आयन्)
उन्होंने ने प्रत्यक्ष पाया है, (तासु) उस [दक्षिणा] को (उ) निश्चय करके
(ह) ही, (जरितुः) हे स्तुति करने वाले ! (प्रति आयन्) उन्होंने ने प्रत्यक्ष
पाया है ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्य पूर्व विद्वानों के समान विद्वानों द्वारा उत्तम शिक्षा-
पाकर अवश्य प्रतिष्ठित हों ॥ ६ ॥

तां ह जरितर्नः प्रत्यगृभ्णुस्तासु ह जरितर्नः प्रत्यगृभ्णः ।
अहानेतरसं नु वि चेतनानि युज्जानेतरसं नु पुरोगवांसः ॥७॥
तासु । ह । जरितः । नुः । प्रति । अगृभ्णन् । तासु । जइति ।
ह । जरितः । नुः । प्रति । अगृभ्णः ॥ अहानेतरसम् । नु ।
वि । चेतनानि । युज्जानेतरसम् । नु । पुरोगवांसः ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(तासु) उस [दक्षिणा] को (ह) ही, (जरितुः) हे स्तुति

६—(आदित्याः) अथ० १६ । ११ । ४ । अदिति—एय । अखण्डब्रह्मचा-
रिणः (ह) एव (जरितुः) हे स्तोतः (अङ्गिरोभ्यः) अ० २० । २८ । २ ।
विद्वानिभ्यः (दक्षिणाम्) अथ० ५ । ७ । १ । दानम्, प्रतिष्ठाम् (अनयन्)
प्रापितवन्तः (तासु) दक्षिणाम् (ह) (जरितुः) (प्रति) प्रत्यक्षम्
(आयन्) अथ० २० । ६१ । २ । अगच्छन् । प्राप्नुवन् (उ) अवश्यम् । अन्यद्
गतम् ॥

७—(तासु) दक्षिणाम्-म० ६ (ह) एव (जरितुः) हे स्तोतः (नः)

सू० १३५ [७२३] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,५०१)

करने वाले ! (नः) हमारे लिये (प्रति अगृह्णन्) उन्होंने ने [विज्ञानियो ने — म० ६] प्रत्यक्ष पाया है, (ताम्) उस को (उ) निश्चय करके (ह) ही, (जिरितः) हे स्तुति करने वाले ! (नः) हमारे लिये (प्रति अगृह्णः) तू ने प्रत्यक्ष पाया है । (न) अभी (अहानेतरसम्) व्याप्ति में बल रखने वाले व्यवहार को, (वि) विविध (चेतनानि) चेतनाओं को, और (न) अभी (यज्ञानेतरसम्) यज्ञ [देवपूजा, संगति करण और दान] में बल रखने वाले व्यवहार को (पुरोगवामः) हम आगे होकर पावे ॥ ७ ॥

भावार्थ—जैसे पूर्वज महात्माओं ने श्रेष्ठ कर्मों से प्रतिष्ठा पाई है, वैसे ही आप और हम मिलकर विज्ञान द्वारा बड़ाई पावें ॥ ७ ॥

उत श्वेत आशुपत्वा उतो पद्याभिर्यविष्ठः ।

उतेमाशु मानं पिपर्ति ॥ ८ ॥

उत । श्वेतः । आशुपत्वाः । उतो । पद्याभिः । यविष्ठः ॥

उत । ईम् । आशु । मानम् । पिपर्ति ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(आशुपत्वाः) हे शीघ्रगामी पुरुषो ! (श्वेतः) श्वेत वर्ण वाला [सूर्य] (उत) भी (यविष्ठः) अत्यन्त बलवान् होकर (पद्याभिः)

अस्मभ्यम् (प्रति) प्रत्यक्षम् (अगृह्णन्) अगृह्णन् । गृहीतवन्तः (ताम्) (उ) निश्चयेन (ह) (जिरितः) (नः) (प्रति) प्रत्यक्षम् (अगृह्णः) अगृह्णः । गृहीतवानसि (अहानेतरसम्) सम्यानच् स्तुवः । उ० २ । ८६ । अहं व्याप्तौ-आनच् । तरो बलनाम-निघ० २ । ६ । ततः अर्श आद्यच् । अहाने व्याप्तौ तरसं बलयुक्तं व्यवहारम् (न) सम्प्रति-निरु० ७ । ३१ (वि) विविधानि (चेतनानि) चेतनाः । ज्ञानानि (यज्ञानेतरसम्) सम्यानच् स्तुवः । उ० २ । ८६ । यज्ञ देवपूजासंगतिकरणदानेषु-आनच् ; नकारश्छान्दसः । यज्ञे बलयुक्तं व्यवहारम् (न) सम्प्रति(पुरोगवामः) गु गतौ-लट् ; परस्मैपदम् । गवते गतिकर्मा-निघ० २ । १४ । अग्रे भूत्वा गच्छामः प्राप्नुमः ॥

८—(उत) अपि (श्वेतः) शुक्लवर्णः सूर्यः (आशुपत्वाः) शीघ्रगामि-लटि० । उ० १ । १५१ । आशु + पत गतौ-कन् । हे शीघ्रगामिनः (उतो) निश्चयेन (पद्याभिः) पाद-यत् । पद्यत्यतर्क्यं । पा० ६ । ३ । ५३ । इति

चलने योग्य गतियों से (उतो) निश्चय करके (उत) अवश्य (ईम्) प्राप्ति योग्य (मानम्) परिमाण को (आशु) शीघ्र (पिपर्ति) पूरा करता है ॥ ८ ॥

भावार्थ—जैसे सूर्य अपने मार्ग में चलकर संसार का उपकार करता है, वैसे ही मनुष्य वेद मार्ग पर चलकर शीघ्र उपकार करें ॥ ८ ॥

आदित्या रुद्रा वसवस्त्वेऽनु त इदं राधः प्रति गृभ्णीह-
ङ्गिरः । इदं राधो विभु प्रभु इदं राधो बृहत् पृथु ॥ ८ ॥

आदित्याः । रुद्राः । वसवः । त्वे । अनु । ते । इदम् । राधः ।
प्रति । गृभ्णीहि । अङ्गिरः ॥ इदम् । राधः । विभु । प्रभु ।
इदम् । राधः । बृहत् । पृथु ॥ ८ ॥

भाषार्थ—[हे शूर सभापति !] (ते) वे (आदित्याः) अखण्ड ब्रह्म-
चारी, (रुद्राः) ज्ञान दाता और (वसवः) श्रेष्ठ विद्वान् लोग (त्वे अनु)
तेरे पीछे पीछे हैं, (अङ्गिरः) हे विज्ञानी पुरुष ! (इदम्) इस (राधः)
धन को (प्रति) प्रत्यक्ष रूप से (गृभ्णीहि) तू ग्रहण कर । (इदम्) यह
(राधः) धन (विभु) व्यापक और (प्रभु) बलयुक्त है, (इदम्) यह
(राधः) धन (बृहत्) बहुत और (पृथु) विस्तीर्ण है ॥ ८ ॥

भावार्थ—शूर प्रतापी सभापति की सुनीति से सब लोग ब्राह्मण
आदि चारों वर्ण अपना अपना कर्तव्य पूरा करें और विद्या और धन की
वृद्धि से संसार में सुख बढ़ावें ॥ ८ ॥

पदभावः । पादाय गमनाय हिताभिर्गतिभिः (यविष्ठः) अथ० १८ । ४ । ६१ ।
युवन्—इष्टन् । अतिशयेन बलवान् सन् (उत) अवश्यम् (ईम्) प्राप्तव्यम्
(आशु) शीघ्रम् (मानम्) परिमाणम् (पिपर्ति) पूरयति ॥

६—(आदित्याः) अदिति-एय । अखण्डब्रह्मचारिणः (रुद्राः) रुतो
ज्ञानस्य रातारो दातारः (वसवः) श्रेष्ठपुरुषाः (त्वे) विभक्तेः शे । त्वाम्
(अनु) अनुसृत्य (ते) प्रसिद्धाः (इदम्) (राधः) धनम् (प्रति) प्रत्य-
क्षेण (गृभ्णीहि) गृह्णाण (अङ्गिरः) विज्ञानिन् (इदम्) (राधः) (विभु)
व्यापकम् (प्रभु) समर्थम् (इदम्) (राधः) (बृहत्) बहु (पृथु)
विस्तृतम् ॥

इस मन्त्र का मिलान करो—अथ० ११।६।१३; और १६।११।४ ॥

देवा ददुत्वासुरं तद् वो अस्तु सुचेतनम् ।

युष्माँ अस्तु दिवैदिवे प्रत्येव गृभायत ॥ १० ॥

देवाः ! ददुतु । आसुरम् । तत् । वः । अस्तु । सुचेतनम् ॥

युष्मान् । अस्तु । दिवैदिवे । प्रति । एवं । गृभायत ॥ १० ॥

भाषार्थ—[हे मनुष्यो !] (देवाः) विद्वान् लोग (आसुरम्) बुद्धि-
मत्ता (ददुतु) देवें, (तत्) वह (वः) तुम्हारे लिये (सुचेतनम्) सुन्दर
ज्ञान (अस्तु) होवे । (युष्मान्) तुम को वह (दिवैदिवे) दिने दिन (अस्तु)
होवे, [उस को] (प्रति) प्रत्यक्ष रूप से (एवं) ही (गृभायत) तुम ग्रहण
करो ॥ १० ॥

भावार्थ—सब मनुष्य विद्वानों से शिक्षा लेकर सदा आनन्द पावे ॥ १० ॥

त्वमिन्द्र शुर्मरिणा हव्यं पारावतेभ्यः ।

विप्राय स्तुवते वसुवनिं दुरग्रवसे वह ॥ ११ ॥

त्वम् । इन्द्र । शुर्म । रिणाः । हव्यम् । पारावतेभ्यः ॥ विप्राय ।

स्तुवते । वसुवनिम् । दुरग्रवसे । वह ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (त्वम्)
तू ने (शुर्म) शरण और (हव्यम्) हव्य [विद्वानों के योग्य अन्न] (पारा-

१०—(देवाः) विद्वान्सः (ददुतु) प्रयच्छन्तु (आसुरम्) असुर-अण्
भावे । असुरत्वं प्रज्ञावत्त्वं वानवत्त्वं वापि वासुरिति प्रज्ञानामास्यत्यनर्था-
नस्तांश्चास्यामर्थाः—निरु० १०।३४। बुद्धिमत्त्वम् (तत्) आसुरम् (वः)
युष्मभ्यम् (अस्तु) (सुचेतनम्) प्रशस्तं ज्ञानम् (युष्मान्) युष्मभ्यम् (अस्तु)
(दिवैदिवे) दिने दिने (प्रति) प्रत्यक्षेण (एवं) निश्चयेन (गृभायत)
अ० ८।४।१८। गृहीत ॥

११—(त्वम्) (इन्द्र) परमैश्वर्यवान् राजन् (शुर्म) शरणम् । सुखम्
(रिणाः) री नतिरेषणयोः—लङ् । अरिणाः । प्रापितवानसि (हव्यम्) हु—

वतेभ्यः) पार और अवार देश वाले लोगों के लिये (रिणाः) पहुंचाया है ।
 (स्तुवते) स्तुति करने वाले (विप्राय) बुद्धिमान के लिये (वसुवनिम्)
 धनों का सेवन (दुरश्रवसे) दुष्ट अपयश मिटाने को (वह) प्राप्त करा ॥११॥

भावार्थ—राजा दूर और समीप वाली प्रजा को शरण में रख कर
 विद्या और धन से उन की उन्नति करे ॥ ११ ॥

संहिता के (शर्मरिणाः) एक पद के स्थान पर [शर्म रिणाः] दो पद मानकर
 हम ने अर्थ किया है ॥

त्वमिन्द्र कुपोताय छिन्नपक्षाय वञ्चते ।

श्यामाकं पक्कं पीलुं च वारस्मै अकृणोर्बहुः ॥ १२ ॥

त्वम् । इन्द्र । कुपोताय । छिन्नपक्षाय । वञ्चते ॥ श्यामाकम् ।

पक्कम् । पीलुं । च । वाः । अस्मै । अकृणोः । बहुः ॥ १२ ॥

भावार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [बड़े ऐश्वर्य वाले राजन्] (त्वम्) तू ने
 (अस्मै) इस (छिन्नपक्षाय) कटे पंख वाले, (वञ्चते) चलते हुये (कुपोताय)
 कबूतर को (पक्कम्) पका हुआ (श्यामाकम्) श्यामा [समा अन्न], (पीलुं) पीलु
 [फल विशेष] (च) और (वाः) जल (बहुः) बहुत बार (अकृणोः) किया है ॥१२॥

यत् । देवयोग्यान्नम् (पारावतेभ्यः) पार + अवार—वत्, अण्, पृषोदरादि-
 रूपम् । पारावतघ्नी पारावारघातिनीं पारं परं भवत्यवारमवरम्—निरु० २।
 २४ । पारावारदेशे विद्यमानेभ्यः (विप्राय) मेधाविने (स्तुवते) स्तुतिं
 कुर्वते (वसुवनिम्) छन्दसि वनसनरक्षिमथाम् । पा० ३।२।२७ । वसु +
 वन सम्भक्तौ—इन् । धनानां सेवनम् (दुरश्रवसे) क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि
 स्थानिनः । पा० २।३।१४ । इति तुमुनः कर्मणि चतुर्थी । दुर दुष्टम् अश्रवः
 अपयशः, तन्नाशयितुम् । दुष्टापकीर्तिनाशनाय (वह) प्रायय ॥

१२—(त्वम्) (इन्द्र) परमैश्वर्यवन् राजन् (कुपोताय) पक्षिविशेषाय
 (छिन्नपक्षाय) (वञ्चते) वञ्चु गतौ—शत् । गच्छते (श्यामाकम्) क्षुद्रधान्य-
 भेदम् (पक्कम्) (पीलुं) फलविशेषम् (च) (वाः) जलम् (अस्मै) प्रसि-
 द्दाय (अकृणोः) कृतवानसि (बहुः) द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच् । पा० ५।४।१८ ।
 इति सुच् बाहुलकात् । बहुवारम् ॥

सू० १३६ [७२४]

विंश. काण्डम् ॥ २० ॥

(४,५०५)

भावार्थ—जैसे पंख कटे कबूतर को अन्न और जल देकर पुष्ट करते हैं, वैसे ही राजा दीन दुखियों को अन्न आदि देकर सुखी करे ॥ १२ ॥

अरुं गुरो वावदीति त्रेधा बुद्धो वरत्रया ।

इरामह प्रशंसत्यनिरामपं सेधति ॥ १३ ॥

अरु-गुरः । वावदीति । त्रेधा । बुद्धः । वरत्रया ॥ इराम् ।

अह । प्रशंसति । अनिराम् । अपं । सेधति ॥ १३ ॥

भावार्थ—(अरुंगरः) पूरा विज्ञानी पुरुष (त्रेधा) तीन प्रकार से [स्थान, नाम और मनुष्य आदि जन्म से] (वरत्रया) रस्सी से (बुद्धः) बंधा हुआ (वावदीति) बार बार कहता है । (इराम्) लेने योग्य अन्न को (अह) ही (प्रशंसति) वह सराहता है और (अनिराम्) निन्दित अन्न को (अप सेधति) हटाता है ॥ १३ ॥

भावार्थ—विद्वान् आत्त पुरुष अपना स्थान, नाम और जन्म सुधारने के लिये अधर्म को छोड़कर धर्म से अन्न आदि पदार्थ ग्रहण करे ॥ १३ ॥

सूक्तम् १३६ ॥

१—१६ ॥ प्रजापतिर्देवता ॥ १, २, ५, ७—६, १५ निचृदनुष्टुप्, ३ ।
आर्यनुष्टुप्, ४ भुरिगनुष्टुप्, ६, १०, ११, १६ अनुष्टुप्, १२ निचृत् ककुमु-
ष्णिक्, १३ भुरिगार्युष्णिक्, १४ उरोबृहती-॥

राजप्रजाकर्तव्योपदेशः—राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

यदस्या अंहुभेद्याः कृधु स्युलमुपातसत् ।

१३—(अरुंगरः) अलम् + गृ विज्ञाने-अप् । पूर्णविज्ञानी पुरुषः (वाव-
दीति) पनुः पनुर्वदति (त्रेधा) धामानि त्रयाणि भवन्ति स्थानानि नामानि
जन्मानि-निरु० ६ । २८ । स्थाननामजन्मभिस्त्रिप्रकारेण (बुद्धः) (वरत्रया)
वृश्चिचत् । उ० ३ । १०७ । वृश् वरणे-अत्रन् चित् । रज्ज्वा (इराम्) अज्जेन्द्रा-
ग्र० । उ० २ । २८ । इण् गतौ-रन्, गुणाभावः । इरा अन्ननाम-निघ० २ । ७ ।
प्रापणीयमन्नम् (अह) अवश्यम् (प्रशंसति) स्तौति (अनिराम्) निन्दितमन्नम्
(अप सेधति) अपगमयति निवारयति ॥

मुष्काविदस्या एजुतो गोशुफे शकुलाविव ॥ १ ॥

यत् । अस्याः । अंहु-भेद्याः । कृधु । स्थूलम् । उपा-अतसत् ॥
मुष्कौ । इत् । अस्याः । एजुतः । गो-शुफे । शकुलौ-इव ॥ १ ॥

[पद पाठ के लिये सूचना सूक्त १२७ देखो ॥]

भाषार्थ—(यत्) जब (अस्याः) इस (अंहुभेद्याः) पाप से नाश होने वाली [प्रजा] के (कृधु) छोटे और (स्थूलम्) बड़े [पाप] को (उपा-तसत्) वह [राजा] नाश करता है । (अस्याः) इस [प्रजा] के (मुष्कौ इत्) दोनों ही चोर [स्त्री और पुरुष चोर अथवा राति और दिन के] चोर (गोशुफे) गौ के खुर के गढ़े में (शकुलौ इव) दो मछलियों के समान, (एजुतः) कांपते हैं [डरते हैं] ॥ १ ॥

भावार्थ—जब राजा न्याय से सब प्रजा के छोटे बड़े अपराध को मिटाता है, तब सब स्त्री पुरुष राति और दिन में पाप से कांपते हैं जैसे मछ-लियां थोड़े जल में घबराती हैं ॥ १ ॥

यह मन्त्र यजुर्वेद में है—२३। २८ । और महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका पृष्ठ ३३२ में व्याख्यात है ॥

यदा स्थुलेन पसंसाणौ मुष्का उपावधीत् ।

विष्वाञ्चा वस्या वर्धतुः सिकतास्वेव गर्दभौ ॥ २ ॥

१—(यत्) यदा (अस्याः) अग्रे वर्तमानायाः (अंहुभेद्याः) भूमृशीङ्० । उ० १ । ७ । अम रोगे पीडने च—उप्रत्ययः, इक् च । अंहुरः=अंहस्वान्—निरु० ६ । २७ । अवितृस्तृतन्निभ्यर्हः । उ० ३ । १५८ । मिदिर् विदारणे—ईप्रत्ययः । अंहुना पापेन भेदनीया विदारणीया या सा अंहुभेदी तस्याः प्रजायाः (कृधु) ह्रस्वम्—निघ० ३ । २ । अल्पं पापम् (स्थूलम्) महत् पापम् (उपातसत्) तस्य उपक्षये उपक्षेपे च—लङ् लङर्थे । उपक्षिपति नाशयति (मुष्कौ) सवृभूशुषि-मुषिभ्यः कक् । उ० ३ । ४१ । मुष स्तेये—कक् । तृस्करौ । स्त्रीपुरुषरूपौ रात्रि-दिवसभवौ चौरौ वा (इत्) एव (अस्याः) प्रजायाः (एजुतः) कस्पेते । विभीतः (गोशुफे) गोखुरचिह्ने (शकुलौ) मद्गुरादयश्च । उ० १ । ४१ । शकल शकौ-डरच्, रस्य लः । मत्स्यौ (इव) यथा ॥

यदा । स्थूलेन । पससा । अणौ । मुष्को । उप । अवधीत् ॥
विष्वञ्चा । वस्या । वर्धतः । सिकतासु । एव । गर्दभौ ॥ २ ॥

भाषार्थ—(यदा) जब (स्थूलेन) बड़े (पससा) राज्य प्रबन्ध के साथ (अणौ) सूक्ष्म) न्याय के बीच (मुष्को) दोनों चोरों [स्त्री और पुरुष चोरों वा रात्रि और दिन के चोरों] को (उप अवधीत्) वह [राजा] मार डालता है । (विष्वञ्चा) सब और पूजनीय (वस्या) अति श्रेष्ठ दोनों [स्त्री और पुरुष], (सिकतासु) रेत वाले देशों में (गर्दभौ एव) दो श्वेत कमलों के समान, (वर्धतः) बढ़ते हैं ॥ २ ॥

भावार्थ—जब राजा सूक्ष्म विचार के साथ सब दुष्ट चोरों को मिटा देता है, तभी श्रेष्ठ गुणवान् स्त्री पुरुष बढ़ते हैं, जैसे बाल के स्थानों में श्वेत कमल बढ़ता है ॥ २ ॥

यदल्पिकास्वल्लिका कर्कधुकेवद्यते ।

वासन्तिकमिव तेजं यन्त्यवाताय वित्पति ॥ ३ ॥

यत् । अल्पिकासु । अल्लिका । कर्क-धुके । अव-यते ॥

वासन्तिकम्-इव । तेजं-यन्ति । अवाताय । वित्पति । ३

भाषार्थ—(यत्) जब (अल्पिकासु) छोटी प्रजाओं में (अल्लिका)

२—(यदा) (स्थूलेन) महता (पससा) अथ० ४।४।६। पस बन्धे वाधे च—असुन । पसः=राष्ट्रम्—वयानन्दभाष्ये, यजु० २३। २२। राज्यप्रबन्धेन (अणौ) सूक्ष्मे न्याये (मुष्को) म० १। तत्कारौ (उप) व्याप्तौ (अवधीत्) इति । नाशयति (विष्वञ्चा) विषु+अञ्चु गतिपूजनयोः—किन् । सर्वतः पूज्यौ (वस्या) वसु—ईयसुन्, ईकारलोपः । सुपां सुलुक्० । पा० ७। १। ३६। विमर्कडा । वसीयसौ । अतिश्रेष्ठौ स्त्रीपुरुषौ (वर्धतः) (सिकतासु) पृथिरञ्जिभ्यां कित् । उ० ३। १११। सिक सेचने—अतच् । बालयुक्तभूमिषु (एव) सादृश्ये । इव (गर्दभौ) । कृशुशलिकलिगर्दिभ्योऽमच् । उ० ३। १२२। गर्द शब्दे—अमच् । द्वे श्वेतकुमुदे ॥

३—(यत्) यदा (अल्पिकासु) सुप्रासु प्रजासु (अल्लिका) क्षत्रा प्रजा

छोटी प्रजा (कर्कधूके) अग्नि के झोले में (अवषद्यते) कष्ट पाती है । [तब] (विस्पति) विद्वानों के पतन में (अवाताय) दुःख मिटाने के लिये (वासन्तिकम् इव) वसन्त ऋतु में होने वाली [उत्तेजना) के समान (तेजनम्) उत्तेजना को (यन्ति) वे [शूर लोग] पाते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—छोटी छोटी प्रजाओं पर अन्याय होने से बड़ों को हानि पहुँचती है, इस लिये शूर वीर पुरुष वसन्त ऋतु के समान उत्तेजित होकर शत्रुओं का नाश करें ॥ ३ ॥

यद् देवासो ललामगुं प्रविष्टीमिनमाविषुः ।

सकुला देदिश्यते नारी सत्यस्यास्तिभुवो यथा ॥ ४ ॥

यत् । देवासः । ललाम-गुम् । प्र । विष्टीमिनम् । आविषुः ॥

सकुला । देदिश्यते । नारी । सत्यस्य । अस्तिभुवः । यथा ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(यत्) जैसे (देवासः) विद्वान् लोग (ललामगुम्) प्रधानता पहुँचाने वाले (विष्टीमिनम्) कोमलता से युक्त न्याय में (प्र आविषुः) प्रविष्ट हुये हैं । और (यथा) जैसे (सकुला) बाल बच्चों वाली (नारी)

(कर्कधूके) कदाधा० । उ० ३ । ४० । दुःखं करणे—कप्रत्ययः, ककारस्य इत्संज्ञा न । सृष्टुम्० । उ० ३ । ४१ । धूञ् कम्पने—कक् । कर्कस्य अग्नेः धूके कम्पने (अवषद्यते) अवसीदति । दुःखं प्राप्नोति (वासन्तिकम्) वसन्ताच्छ । पा० ४ । ३ । २० । वसन्त—ठञ् । वसन्ते भवं तेजनम् (इव) यथा (तेजनम्) उद्दीपनम् । उत्तेजनाम् । प्रेरणाम् (यन्ति) प्राप्नुवन्ति ते शूराः (अवाताय) वात गतौ सेवायां सुखीकरणे च—घञ् । वातं सुखम् अवातं दुःखम् । तत् नाशयितुम् (विस्पति) विद् ज्ञाने—किप् + पत्ल् गतौ—किप् । विदां विदुषां पति अधःपतने ॥

४—(यत्) यथा (देवासः) विद्वांसः (ललामगुम्) प्रथेयम् । उ० ५ । ६८ । लल ईप्तायाम्—अमच् पृषोदरादिर्वीर्घः । गच्छते—डु । ललाम् पुच्छपुण्ड्राश्वभूषाप्रोधान्यकेतुषु—अमरः २३ । १४२ । प्राधान्यस्य गमयितारं प्रापयितारम् (प्र) (विष्टीमिनम्) वि+ष्टीम् क्लृप्ते—घञ् । अत इतिठनौ । पा० ५ । २ । ११५ । विष्टीम्—इति । विशेषेण आदभावेन कोमलत्वेन युक्तं

नारी [स्त्री] (अक्षिभुवः) आंखों से हुये [प्रत्यक्ष] (सत्यस्य) सत्य का (देदिश्यते) बार बार उपदेश करती है [वैसे ही राजा न्याय और उपदेश करे] ॥ ४ ॥

भावार्थ—जैसे पूर्वज लोग न्याय करने से प्रधान हुये हैं, और जैसे माता सत्य का उपदेश करके सन्तानों को गुणी बनाती हैं, वैसे ही राजा प्रजा का हित करता रहे ॥ ४ ॥

यह मन्त्र कुल्लु भेद से यजुर्वेद में है—२३। २६ । और महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पृष्ठ ३३४ में व्याख्यात है ॥

महान्गन्यतृप्रद्वि मोक्रदुदस्थानासरन् ।

शक्तिकानना स्वचमशकं सक्तु पद्यम ॥ ५ ॥

महान् । अग्री इति । अतृप्रत् । वि । मोक्रदुत् । अस्थाना ।

आसरन् ॥ शक्तिकाननाः । स्वचमशकम् । सक्तु । पद्यम् ॥५॥

भावार्थ—(महान्) महान् पुरुष (अग्री) दोनों अग्निश्रेणियों [शारीरिक और आत्मिक बलों] को (वि) विशेष करके (अतृप्रत्) तृप्त करे, और (अस्थाना) अयोग्य स्थान में (आसरन्) आता हुआ (मोक्रदुत्) न घबरावे । (शक्तिकाननाः) सामर्थ्य का प्रकाश करने वाले हम (स्वचमशकम्) क्षातिर्यों

न्यायम् (आविषुः) अब रक्षणगतिप्रवेशादिषु—लुङ् । प्रविष्टवन्तः (सकुला) कुलैः सन्तानैः सह वर्त्तमाना (देदिश्यते) दिश दाने—यङ्प्रत्ययः । पुनः पुनरुपदेशं करोति (नारी) नरस्य स्त्री (सत्यस्य) यथार्थज्ञानस्य (अक्षिभुवः) अक्षि + भू—किप् । अक्षिभ्यां भवस्य प्रत्यक्षस्य (यथा) ॥

५—(महान्) समर्थः पुरुषः (अग्री) प्रगृहत्वाभावः । अग्निरूपौ आत्मिकसामाजिकप्रतापौ (अतृप्रत्) तर्पयेत् (वि) विशेषेण (मोक्रदुत्) क्रद, क्रदि वैकल्ये । नैव व्याकुलो भवेत् (अस्थाना) सुपां सुलुक्० । पा० ७। १ । ३६ । विभक्तेराकारः । अयोग्यस्थानम् (आसरन्) सृ गतौ—शत् । आगच्छन् (शक्तिकाननाः) कन दीप्तौ—णिच्, ल्युट् । शक्तिं कानयन्ति दीपयन्तीति शक्तिकाननाः । सामर्थ्यप्रकाशकाः (स्वचमशकम्) अत्यविचमितमि० । ड० ३ । ११७ । चमु अदने—असच् । सस्य शः, स्वार्थेकन् । स्वेभ्यो-क्षातिभ्यःपिष्टकभेदं लडङ्कादिकम् (सक्तु) अण्डयवादिचूर्णम् (पद्यम्)

के लिये भोजन [लङ्घ आदि] और (सक्तु) सक्तू (पचम) प्राप्त करें ॥५॥

भाष्यार्थ—समर्थ मनुष्य अन्न आदि पदार्थों का संग्रह करके कठिन समय में अपने भाई बन्धुओं को पुष्ट करके रक्षा करे ॥ ५ ॥

महानुग्न्युलूखलमतिक्रामन्त्यब्रवीत् ।

यथा तव वनस्पते निरग्नन्ति तथैवति ॥ ६ ॥

महान् । अग्नी इति । उलूखलम् । अतिक्रामन्ति । अब्रवीत् ॥

यथा । तव । वनस्पते । निरग्नन्ति । तथा । एवति ॥ ६ ॥

भाष्यार्थ—(महान्) महान् पुरुष (अग्नी) दोनों अग्नियों [आत्मिक और सामाजिक बलों] से (उलूखलम्) ओखली को (अतिक्रामन्ति) लांघता है और (अब्रवीत्) कहता है — (वनस्पते) हे वनस्पति ! [काठ के पात्र] (यथा) जैसे (तव) तुझ में (निरग्नन्ति) [लोग] कूटते हैं, (तथा) वैसे ही (एवति) ज्ञान के विषय में [होवे] ॥ ६ ॥

भाष्यार्थ—जैसे ओखली में कूटकर सार पदार्थ लेते हैं, वैसे ही मनुष्य परिश्रम करके ज्ञान प्राप्त करें ॥ ६ ॥

महानुग्न्युप ब्रूते भ्रष्टोथाप्यभूभुवः ।

यथैव ते वनस्पते पिप्पति तथैवति ॥ ७ ॥

महान् । अग्नी इति । उप । ब्रूते । भ्रष्टः । अथ । अपि । अभू-

व्यं प्राप्नुयाम ॥

६—(महान्) (अग्नी) सुपां सुलुक्० । पा० । ७ । १ । ३६ । विभक्तेः पूर्वसवर्णदीर्घः, प्रगृह्यत्वाभावश्च । अग्निभ्याम् । आत्मिकसामाजिकबलाभ्याम् (उलूखलम्) धान्यादिकण्डनपात्रम् (अतिक्रामन्ति) एकवचनस्य बहुवचनम् । अतिक्रामति । उल्लंघयति (अब्रवीत्) ब्रवीति (यथा) (तव) त्वयि (वनस्पते) हे काष्ठमय पात्र (निरग्नन्ति) अकारशृङ्खान्दसः । निरग्नन्ति । नितरामा-हननं कुर्वन्ति मनुष्याः (तथा) (एवति) वर्तमाने पृषद्बृहन्मह० । उ० २ । ८४ । इति व्यासौ—अति, नकारलोपः । ज्ञानविषये ॥ ६ ॥

सू० १३६ [७२४] विंशं कारुडम् ॥ २० ॥

(४,५११)

भुवः॥ यथा । एव । ते । वनस्पते । पिप्पति । तथा । एवति ७

भाषार्थ—(महान्) महान्, (भ्रष्टः) परिपक्व, (अथ अपि) और भी (अभूभुवः) अशुद्धि का शोधने वाला पुरुष (अग्नी) दोनों अग्नियों [आत्मिक और सामाजिक बलों] को (उप) पाकर (ब्रूते) कहता है— (वनस्पते) हे वनस्पति ! [काठ के पात्र ओखली] (यथा) जैसे (ते) तुझ में (पिप्पति) [मनुष्य] भरता है, (तथा एव) वैसे ही (एवति) ज्ञान के विषय में [होवे] ॥ ७ ॥

भावार्थ—मन्त्र ६ के समान है ॥ ७ ॥

महान्गन्धुप ब्रूते भृष्टोपाप्यभूभुवः ।

यथा वयो विदाह्यं स्वर्गे नमवदह्यते ॥ ८ ॥

महान् । अग्नी इति । उप । ब्रूते । भृष्टः । अथ । अपि ।

अभूभुवः ॥ यथा । वयः । विदाह्यं । स्वर्गे । नम् । अवदह्यते ८

भाषार्थ—(महान्) महान्, (भ्रष्टः) परिपक्व, (अथ अपि) और भी (अभूभुवः) अशुद्धि का शोधने वाला पुरुष (अग्नी) दोनों अग्नियों [आत्मिक और सामाजिक बलों] को (उप) पाकर (ब्रूते) कहता है— (यथा) जैसे (वयः) जीवन को (विदाह्यं) विविध प्रकार तपाकर (स्वर्गे)

७—(महान्) (अग्नी) म० ५ । आत्मिकसामाजिकप्रतापौ (उप) उपेत्य । प्राप्य (ब्रूते) कथयति (भ्रष्टः) असृज पाके—क । भृष्टः । परिपक्वः (अथ) अनन्तरम् (अपि) (अभूभुवः) भू सत्ताशुद्धिचिन्तनमिश्रणेषु—किप्+भूरङ्गिभ्यां कित् । उ० ४ । २१७ । भू शुद्धौ—असृज कित् । अशुद्धि-शोधकः पुरुषः (यथा) (एव) (ते) त्वयि (वनस्पते) म० ६ (पिप्पति) पृ पालनपूरणयोः पृषोदरादिरूपम् । पिपति । पूरयति (तथा) (एवति) म० ॥ ६ ॥

८—(वयः) सर्वधातुभ्योऽसृज । उ० ४ । १८६ । वी गतिव्याप्तिप्रजना-दिषु—असृज । जीवन्तम् (विदाह्यं) दह दाहे । विविधं तपश्चरणेन तपत्वा (स्वर्गे) सुखविशेषे (नम्) एह बन्धे—ड । बन्धम् (अवदह्यते) भस्मीकरोति

स्वर्ग में [सुख विशेष में] (नम्) बन्धन को (अवदह्यते) [विद्वान्] भस्म करदेता है, [वैसे ही मनुष्य करे] ॥ ८ ॥

भाषार्थ—मनुष्य शुद्ध चित्त से बल बढ़ाकर विद्वानों के समान ब्रह्मचर्य आदि तप करके दुर्जों से मुक्त होवे ॥ ८ ॥

म॒हान॒ग॒न्यु॒प॑ ब्रू॒ते स्व॒सावे॑शितं॒ प॒सः ।

इ॒त्थं फ॒लस्य॑ वृ॒क्षस्य॑ शूर्पे॑ शूर्पं॒ भ॒जेम॑हि ॥ ८ ॥

म॒हान् । अ॒ग्नी इति॑ । उ॒प॑ । ब्रू॒ते । स्व॒सा । आ॒वे॒शित॑म् ।
प॒सः ॥ इ॒त्थम् । फ॒लस्य॑ । वृ॒क्षस्य॑ । शूर्पे॑ । शूर्पं॒म् । भ॒जेम॑हि । ८

भाषार्थ—(महान्) म॒हान् पुरुष (अग्नी) दोनों, अग्नियों [आत्मिक और समाजिक बलों] को (उप) पाकर (स्वसा) सुन्दर गति [उपाय] से (आवेशितम्) प्राप्त हुये (पसः) राज्य प्रबन्ध के विषय में (ब्रूते) कहता है—[कि] (इत्थम्) इसी प्रकार से (वृक्षस्य) स्वीकार करने योग्य (फलस्य) फल के (शूर्पे) एक रूप में (शूर्पम्) दूसरे रूप को (भजेमहि) हम सेवें ॥ ८ ॥

भाषार्थ—जैसे मनुष्य अन्न आदि पदार्थ को रूप से लगातार शुद्ध करते हैं, वैसे ही राज्य का प्रबन्ध सदा बिचार से करना चाहिये ॥ ८ ॥

म॒हान॒ग्नी कृ॑क॒वाक् श॑म्य॒या परि॑ धावति ।

अ॒यं न वि॒द्य यो मृ॑गः शी॒घ्रं ह॑रति धा॒णिकाम् ॥ १० ॥

म॒हान् । अ॒ग्नी इति॑ । कृ॑क॒वाक् । श॑म्य॒या । परि॑ । धावति ॥

वित्तमश्नति विद्वान् । अन्यद् गतम्—म० ७ ॥

६—(महान्) (अग्नी) म० ५ । आत्मिकसमाजिकप्रतापी (उप) उपेत्य (ब्रूते) (स्वसा) सु + अस गतिदीप्त्यादानेषु—किप् । सुगत्या । उचितो-क्त्येन (आवेशितम्) प्राप्तम् । रक्षितम् (पसः) म० २ । राज्यप्रबन्धम् (इत्थम्) एवम् (फलस्य) (वृक्षस्य) वृक्ष वरणे—क । स्वीकरणीयस्य (शूर्पे) शूर्पमाने—यञ् । एकस्मिन् धान्यस्फोटके (शूर्पम्) अग्न्यं शूर्पम् (भजेमहि) सेवेमहि ॥ ८ ॥

अयम् । न । विद्म । यः । मृगः । शीर्ष्णा । हरति । धाणिकम् १०

भाषार्थ—(महान्) महान् पुरुष (अग्नी) दोनों अग्नियों [आत्मिक और सामाजिक बलों] से और (शम्यया) जूये की कील [के समान शस्त्र] से (कृकवाकम् परि) बनावटी बोली वाले पर (धावति) दौड़ता है । [उसको] (न) अब (विद्म) हम जानते हैं, (अयम् यः) यह जो (मृगः) पशु [के तुल्य मूर्ख] (शीर्ष्णा) शिर से [कल्पित विचार से] (धाणिकम्) वस्ती [राजधानी आदि] को (हरति) लूटता है ॥ १० ॥

भावार्थ—जो ठग छल से भूँटी बनावटी बोली बोल कर राजधानी आदि वस्ती को लूटे, राजा उन को यथावत् दण्ड देवे ॥ १० ॥

मुहान् ग्री महान् धावन्तु मनु धावति ।

हुमास्तदस्य गा रक्ष यभ मामद्धयौदनम् ॥ ११ ॥

मुहान् । अग्री इति । महान् । अग्रम् । धावन्तुम् । अनु ।

धावति ॥ हुमाः । तत् । अस्य । गाः । रक्ष । यभ । माम् ।

अद्धि । औदनम् ॥ ११ ॥

भाषार्थ—(महान्) महान् पुरुष (अग्नी) दोनों अग्नियों [आत्मिक और सामाजिक बलों] के, और (महान्) महान् पुरुष (अग्रम्) ज्ञानवान्

१०—(महान्) (अग्नी) म० ६ । अग्निभ्याम् । आत्मिकसामाजिक-बलाभ्याम् (कृकवाकम्) सृष्टृभूषिमुषिभ्यः कक् । उ० ३ । ४१ करोतेः—। कक् + वच् कथने-घञ् । कृकः कृत्रिमः कल्पितो वांको वचनं यस्य तम् । कृत्रिमवाचिनम् (शम्यया) अथ० ६ । १३८ । ४ । शान्तिकरेण युगकीलतुल्य-शस्त्रेण (परि) प्रति (धावति) शीघ्रं गच्छति (अयम्) (न) सम्प्रति—निरु० ७ । ३१ (विद्म) जानीमः (यः) (मृगः) पशुतुल्यो मूर्खः (शीर्ष्णा) शिरसा । कल्पितविचारेण (हरति) लुण्ठति (धाणिकम्) आणको लू-शिङ्घिधाजभ्यः । उ० ३ । ८३ । दधातेः—आणकप्रत्ययः, टाप् अत इस्वम् । वस्तीम् । राजधान्यादिकाम् ॥

११—(महान्) (अग्री) म० ५ । आत्मिकसामाजिकपराक्रमौ (महान्) (अग्रम्) धापृवस्यज्यतिभ्यो नः । उ० ३ । ६ । अग गतौ—न प्रत्ययः । ज्ञान-

(धावन्तम् अनु) दौड़ते हुये के पीछे (धावति) दौड़ता है । (तत्) सो (अस्य) इस [पुरुष] को (इमाः) इन (गाः) भूमियों की (रक्ष) रक्षा कर, (यम) हे न्यायकारी ! (माम्) मुझको (औदनम्) भोजन (अद्धि) खिला ॥ ११ ॥

भावार्थ—महान् पुरुष आत्मिक और सामाजिक बल प्राप्त करके ज्ञानियों का अनुकरण करे, और राज्य की रक्षा करके प्रजा को पाले ॥ ११ ॥

सुदेवस्त्वा महान्ग्रीर्बबाधते सहतः साधु खोदनम् ।

कुसं पीवुरो नवत् ॥ १२ ॥

सुदेवः । त्वा । महान् । अग्रीः । बबाधते । सहतः । साधु ।

खोदनम् ॥ कुसम् । पीवरः । नवत् ॥ १२ ॥

भाषार्थ—[हे प्रजा जन !] (सुदेवः) बड़ा विजय चाहने वाला, (महान्) महान् पुरुष (त्वा) तुझ से (सहतः) बड़े (अग्रीः) अग्रियों [आत्मिक और सामाजिक बलों] के द्वारा (खोदनम्) खोदने के कर्म [सैंध सुरंग आदि] को (साधु) मले प्रकार (बबाधते) रोकता है । (पीवरः) पुष्टाङ्ग पुरुष (कुसम्) आपस में मिलाप को (नवत्) प्राप्त करे ॥ १२ ॥

वन्तम् (धावन्तम्) शीघ्रं गच्छन्तम् (अनु) अनुकृत्य (धावति) शीघ्रं गच्छति (इमाः) (तत्) ततः (अस्य) पुरुषस्य (गाः) भूमीः (रक्ष) (यम) मय्य भः । हे यम । न्यायकारिन् (माम्) प्रजाजनम् (अद्धि) अद् भक्षणे, अन्तर्गतणिजर्थः । आदय । खादय (औदनम्) स्वार्थे अण् । भोजनम् ॥

१२—(सुदेवः) सुविजिगीषुः (त्वा) प्रजाजनसकाशात् (महान्) (अग्रीः) अग्रीन् । आत्मिकसामाजिकपराक्रमैः—इत्यर्थः (बबाधते) बाधते । निवारयति (सहतः) विशालान् । विशालैः (साधु) यथा तथा । यथावत् प्रकारेण (खोदनम्) खुड संवरणे-भेदने च—ल्युट् । भेदनम् । सन्धिकरणम् । (कुसम्) कुस संश्लेषणे—क, परस्परसंगमनम् (पीवरः) अर्त्तिकमिध्रमि० । उ० ३ । १३२ । पीव स्थौत्ये—अरप्रत्ययः, स च चित् । पुष्टः पुरुषः (नवत्) नवत इति गतिकर्मा—निघ० २ । १४ । प्राप्नुयात् ॥

सू० १३६ [७२४]

विंश काण्डम् ॥ २० ॥

(४,५१५)

भावार्थ—राजा और प्रजा के मेल से चोर आदि दुष्ट लोग प्रजा को न सतवें ॥ १२ ॥

वशा दुग्धामिमाङ्गुरि प्रसृजतोयतं परे ।

महान् वै भद्रो यभ मामद्भ्यौदनम् ॥ १३ ॥

वशा । दुग्धाम्-दुग्ध । अङ्गुरिम् । प्रसृजत । उग्रतम् । परे ॥

महान् । वै । भद्रः । यभ । माम् । अद्भि । औदनम् ॥ १३ ॥

भावार्थ—[हे विद्वानो !] (वशा) बन्ध्या [निष्फल] (उग्रतम्) उग्रता [प्रचण्ड नीति] को (दुग्धाम्) जली हुई (अङ्गुरिम् इम) अंगुरी के समान (परे) दूर (प्रसृजत) सर्वथा छोड़ो । (महान्) महान् पुरुष (वै) ही (भद्रः) मंगलदाता है, (यभ) हे न्यायकारी ! (माम्) मुझ को (औदनम्) भोजन (अद्भि) तु खिला ॥ १३ ॥

भावार्थ—जैसे साँप आदि के विष से जले हुये अंगुली आदि अङ्ग को शरीर की रक्षा के लिये शीघ्र काटकर फेंक देते हैं, वैसे ही विद्वान् लोग निष्फल प्रचण्ड नीति को छोड़कर प्रजा को सुख देवें ॥ १३ ॥

विदेवस्त्वा महान्ग्रीर्विबाधते महतः साधु खोदनम् ।

कुमारिका पिङ्गलिका कार्द भस्मा कु धावति ॥ १४ ॥

विदेवः । त्वा । महान् । अग्रीः । विबाधते । महतः । साधु ।

खोदनम् । कुमारिका । पिङ्गलिका । कार्द । भस्मा ।

कु । धावति ॥ १४ ॥

भावार्थ—[हे प्रजा जन !] (विदेवः) मद रहित [निरहंकारी],

१३—(वशा) विभक्तैर्लक् । वशाम् । बन्ध्याम् । निष्फलाम् (दुग्धाम्) विषदुग्धाम् (इम) वस्य मः । इव । यथा (अङ्गुरिम्) अङ्गुलिम् (प्रसृजत) सर्वथा त्यजत (परे) दूरे (महान्) (वै) एव (भद्रः) मङ्गलप्रदः । अन्यद् गतम्—म० ॥ ११ ॥

१४—(विदेवः) दिव्य क्रीडामवादिषु- कच् । विगुतमदः । निरहंकारः

(महान्) महान् पुरुष (त्वा) तुभ्य से (महतः) बड़े. (अग्नीः) अग्नियों [आत्मिक और सामाजिक बलों] के द्वारा (खोदनम्) खोदने के कर्म [सैंध सुरंग आदि] को (साधु) भले प्रकार (विबाधते) हटा देता है। (पिङ्गलिका) शोभायमान (कुमारिका) कामना योग्य कुमारी [कन्या] (कार्द) कीचड़ और (भस्मा) भस्म [राख आदि] को (कु) भूमि पर (धावति) शुद्ध कर देती है ॥ १४ ॥

भांवार्य—राजा और प्रजा मिलकर चोर आदि दुष्टों को हटावे, जैसे शुद्ध स्वभाव वाली स्त्री कूड़े करकट को घर से बाहिर फेंक देती है ॥ १४ ॥

महान् वै भद्रो बिल्वो महान् भद्र उदुम्बरः ।

मुहाँ अभिक्त बाधते महतः साधु खोदनम् ॥ १५ ॥

महान् । वै । भद्रः । बिल्वः । महान् । भद्रः । उदुम्बरः ॥

महान् । अभिक्त । बाधते । महतः । साधु । खोदनम् ॥ १५ ॥

भाषार्य—(भद्रः) मंगल दाता (महान्) महान् पुरुष (वै) ही (बिल्वः) बेल [वृक्ष के समान उपकारी] है, (भद्रः) मंगल दाता (महान्) महान् पुरुष (उदुम्बरः) गुलर [वृक्ष के समान उपकारी] है। (अभिक्त) हैं

पुरुषः (विबाधते) निवारयति (कुमारिका) कमेः किदुच्चोपधायाः । उ० ३ । १३८ । कमु कान्तौ—आरन्, कन् टाप् अकारस्य, उकारः, अत इत्वम् । कमनीया कन्या (पिङ्गलिका) कलस्तृपश्च । उ० १ । १०४ । पिजि दौप्तौ, वासे, बले, हिंसायां दाने च—कलप्रत्ययः, कन्, टाप्, अत इत्वम् । दीप्यमाना । शोभमाना (कार्द) कर्द कुत्सिते शब्दे—घञ्, विभक्तेर्लुक् । कार्दम् कर्दमम् । पङ्कम् (भस्मा) छान्दसो दीर्घः । भस्म । दग्धगोमयादिविकारम् (कु) कौ । भूम्याम् (धावति) धावु गतिशुद्धयोः । शोधयति । अन्यद् यथा म० ॥ १२ ॥

१५—(महान्) (वै) एव (भद्रः) मङ्गलप्रदः (बिल्वः) उल्वादयश्च । उ० ४ । १५ । विल-भेदने—घञ् । फलवृक्षविशेषः । शिवद्रुमः (महान्) (भद्रः) (उदुम्बरः) पृथिव्यधि० । उ० १ । २३ । उड संहतौ सौत्रो धातुः—कु । संज्ञायां भृतृवृ० । पा० ३ । २ । ४६ । उडु+वृज् वरणे—अच्, मुम् च, डङ्य दः, घस्य घः । वृक्षविशेषः । जन्तुफलः । यज्ञीयः (महान्) (अभिक्त) अभि+अञ्ज

सू० १३६ [७२४] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥ (४,५१७)

विख्यात ! (महान्) महान् पुरुष (महतः) बड़े [आत्मिक और सामाजिक बलों—म० १४] से (खोदनम्) खोदने के कर्म [सैंध सुरंग आदि] को (साधु) भले प्रकार (बाधते) हटाता है ॥ १५ ॥

भावार्थ—सब महान् पुरुष प्रयत्न करके प्रजा को दुष्टों से बचावें ॥ १५ ॥

यः कुमारी पिङ्गलिका वसन्तं पीवरी लभेत् ।

तैलकुण्डमिमाङ्गुष्ठं रोदन्तं शुद्धमुद्धरेत् ॥ १६ ॥

यः । कुमारी । पिङ्गलिका । वसन्तम् । पीवरी । लभेत् ॥

तैलकुण्डम्-इम । अङ्गुष्ठम् । रोदन्तम् । शुद्धम् । उद्धरेत् ॥ १६ ॥

भावार्थ—(पीवरी) पुष्पाङ्गी, (पिङ्गलिका) शोभायमान, (कुमारी) कामनायोग्य कुमारी [कन्या] (यः) प्रयत्न से (वसन्तम्) वसन्त राग को (लभेत्) प्राप्त होवे । [वैसे ही राजा] (तैलकुण्डम्) [तप्त हुये] तैलकुण्ड में डाले हुये (अङ्गुष्ठम् इम) अंगूठे [अंगुली] को जैसे [वैसे] (रोदन्तम्) रोते हुये (शुद्धम्) ज्ञान दाता का (उद्धरेत्) उद्धार करे [उंचा उठावे ॥ १६ ॥

भावार्थ—जैसे स्त्रियां प्रसन्न होकर वसन्त राग को गाती हैं, वैसे ही राजा प्रसन्न होकर क्लेश में पड़े हुये विद्वानों को उठावे, जैसे तपे हुये तैल में से अंगुली को उठा लेते हैं ॥ १६ ॥

इति कुन्तापसूक्तानि समाप्तानि ॥

व्यक्तिप्रक्षणकान्तिगतिषुः—क, अकारलोपः । अभ्यक्तं । हे विख्यात (बाधते) निवारयति । अन्यद् यथा म० ॥ १२ ॥

१६—(यः) यस्मै प्रयत्ने—किप्, विभक्तेर्लुक् । यसा । प्रयत्नेन (कुमारी) म० १४ । कमु कान्तौ—आरन्, डोप् । कमनीया कन्या (पिङ्गलिका) म० १४ शोभमाना (वसन्तम्) तृभूवहिवसि० । उ० ३ । १२८ । वस निवासे—भच् । रागविशेषम् (पीवरी) म० १२ । पीवरीङीप् । पुष्पाङ्गी (लभेत्) प्राप्नुयात् (तैलकुण्डम्) पचाद्यच् । तप्ततैलकुण्डेन युक्तम् (इम) म० १३ । इव । यथा (अङ्गुष्ठम्) अङ्गु + ष्टा गतिनिवृत्तौ—क । अम्भान्वगोभू० । पा० ८ । ३ । ६७ । कृति पठ्यम् । अङ्गौ हस्ते पादे वा तिष्ठतीति । अम्भाम्भेति सूत्रे अङ्गु शब्द-प्रयोगः । कृष्णाङ्गुलिम् । अङ्गुलिम् (रोदन्तम्) रोदनं कुर्वन्तम् क्लेश प्राप्तम् (शुद्धम्) शुद्ध गतौ—डु + ददातेः—क । ज्ञानदातारम् (उद्धरेत्) दृष्ट्वा हरणे कर्षमाणं वेत्

सूक्तम् १३७ ॥

१—१४ ॥ १ अलक्ष्मीघ्नम्; २ विश्वे देवाः; ३ दधिकावा; ४—६ पचमानः
सोमः; ७, ८, १०—१४ इन्द्रः; ६ इन्द्रा बृहस्पती देवते ॥ १, ६ निचृद्नुष्टुप्; २
निचृज् जगती; ३—५ अनुष्टुप्; ७, ८, १० निचृत् त्रिष्टुप्; ६ विराट् त्रिष्टुप्;
११ आर्षी पङ्क्तिः; १२—१४ गायत्री छन्दः ॥

राजप्रजाकर्तव्योपदेशः—राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

यद्बु प्राचीरजगन्तीरो मरुदूरधाणिकीः ।

हुता इन्द्रस्य शत्रवः सर्वे बुद्बुदयाश्वः ॥ १ ॥

यत् । हु । प्राचीः । अजगन्त । उरः । मरुदूर-धाणिकीः ॥

हुताः । इन्द्रस्य । शत्रवः । सर्वे । बुद्बुद-याश्वः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(मरुदूरधाणिकीः) हे विभग धारण करने वाली (उरः)
मारु सेनाग्रो ! (प्राचीः) आगे बढ़नी हुई (यत् ह) जभी (अजगन्त) तुम
चली हो । [तभी] (इन्द्रस्य) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले राजा] के (सर्वे) सब
(शत्रवः) वैरी लोग (बुद्बुदयाश्वः) बुद्बुदों के समान चलने वाले और
फैलने वाले होकर (हुताः) मारे गये ॥ १ ॥

भावार्थ—राजा ब्रूह रचना से दुकरो दुकरी करके सुशिक्षित सेना के

१—(यत्) यदा (ह) एव (प्राचीः) प्रकर्षेण अचन्त्यः । प्रकृष्टगमानाः सत्यः
(अजगन्त) गमेर्लङि मध्यमबहुवचने छान्दसः शपः श्लुः । तप्तनप्तनथाश्च ।
पा० ७ । १ । ४५ । तस्य तद्देशः । अगच्छत यूयम् (उरः) उर्वी हिंसायाम्—
किप् । राल्लोपः । पा० ६ । ४ । २१ । वलोपः, तनो जसि रूपम् । हे हिंसित्र्यो
मारणशीलाः सेनाः (मरुदूरधाणिकीः) मीनातेरुन् । उ० १ । ६७ । मडि
विभाजने भूषायां हर्षे च—ऊरन् । आणको लूधूशिङ्घिधायञ्भ्यः । उ० ३ ।
८३ दधाते—आणकप्रत्ययः, डीप्, इत्वं च । हे विभागस्य धारयित्र्यः ब्रूहेन
(हुताः) नष्टाः (इन्द्रस्यः) ऐश्वर्यवतो राज्ञः (शत्रवः) (सर्वे) (बुद्बुदया-
श्वः) बुद्बुद आलोचने प्रणिधाने—किप् + बुद्बुद आलोचने + क । यन्ति गच्छन्तीति
याः, या—किप् । अशुवन्त इत्याश्वः, अशु व्याप्तौ—उण । बुद्बुदवत् जलस्य
गोलाकारविकारवत् यातारो व्यापनशीलाश्च सन्तः ॥

सू० १३७ [७२५] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,५१८)

द्वारा शत्रुओं को बुदबुदों के समान निर्बल करके मारे ॥ १ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—१०। १५५। ४ ॥

कपृन्नरः कपृथमुद् दधातन चोदयंत खुदत वाजसातये ।

निष्टिग्र्यः पुत्रसा च्यावयेतय इन्द्रं सुबाध इह सोमपीतये ॥२

कपृत् । नरः । कपृथम् । उत् । दधातुन् । चोदयंत । खुदत ।

वाज-सातये ॥ निष्टिग्र्यः । पुत्रम् । आ । च्यवय । ऊतये ।

इन्द्रम् । सु-बाधः । इह । सोम-पीतये ॥ २ ॥

भाषार्थ—(कपृत्) हे सुख से भरने वाले, (नरः) नरो । [नेताओं]
 (सबाधः) नाश के रोकने वाले होकर तुम (कपृथम्) सुख से भरने वाले,
 (निष्टिग्र्यः) निश्चित इष्ट क्रिया की बताने वाली [माता] के (पुत्रम्) पुत्र
 (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले शूर] को (वाजसातये) धनों के पाने के
 लिये (सोमपीतये) सोम [तत्त्व रस] पीने के लिये और (ऊतये) रक्षा के
 लिये (इह) यहां पर (उत्) अच्छे प्रकार (दधातन) धारण करो, (चोदयत)
 आगे बढ़ाओ, (खुदत) सुखी करो और (आ) सब ओर से (च्यवय)
 उत्साही करो ॥ २ ॥

भावार्थ—नेता लोग बड़े गुणी शूर पुरुष को प्रजा की रक्षा के लिये

२—(कपृत्) कं सुजम् + पृ पूर्तौ—किप् तुक् च, विभक्तैर्लुक् । हे कपृत् ॥
 सुखेन पूरकाः (नरः) हे नेतारः (कपृथम्) हनिकुपिनी० । उ० २। २। क +
 पृ पूर्तौ—कथन् । सुखेन पूरयितारम् (उत्) उत्कर्षेण (दधातन) धारयत
 (चोदयत) प्रेरयत (खुदत) खुर्द क्रीडायाम्, रेफलोपः । क्रीडयत । सुजयत
 (वाजसातये) धनानां लाभाय (निष्टिग्र्यः) नि + इष्टि, पृषोदरादिरूपम् + गृ
 विज्ञापने—किप् । निष्टिम् निश्चिताम् इष्टिम् इष्टक्रियां गारयते विज्ञापयतीति
 निष्टिग्रीः तस्या जनन्याः (पुत्रम्) (आ) समन्तात् (च्यवय) च्यु सहने, एक-
 वचनं छान्दसम् । च्यवयत । उत्साहिनं कुरुत (ऊतये) रक्षायै (इन्द्रम्)
 परमैश्वर्यवन्तं शूरम् (सबाधः) स्यतीति सः । षो अन्तर्कर्मणि—ड + बाधु
 लोडने प्रतिघाते—किप् । सबाधः ऋत्विजः—निघ० ३। १८ । नाशस्य प्रति-
 घातकाः (इह) अत्र (सोमपीतये) तत्त्वरसपानाय ॥

राजा बनावे और सब प्रकार उत्साही करें ॥ २ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—१०।१०१।१२ ॥

दधिक्रावणो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।

सुरभि नो सुखा कर्त्तु प्र ण आयूषि तारिषत् ॥ ३ ॥

दधि-क्रावणः । अकारिषम् । जिष्णोः । अश्वस्य । वाजिनः ॥

सुरभि । नः । सुखा । कर्त्तु । प्र । नः । आयूषि । तारिषत् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(दधिक्रावणः) चढ़ाकर चलने वाले वा हीलने वाले (जिष्णोः) जीतने वाले, (वाजिनः) वेगवान् (अश्वस्य) घोड़े के (अकारिषम्) कर्म को मैं ने किया है । वह [कर्म] (नः) हमारे (सुखा) सुखों को (सुरभि) ऐश्वर्य युक्त (कर्त्तु) करे और (नः) हमारे (आयूषि) जीवनो को (प्र तारिषत्) बढ़ावे ॥ ३ ॥

भाषार्थ—जैसे शीघ्र गामी घोड़ा मार्ग को जीतकर अश्वचार को लेकर ठिकाने पर पहुँचकर सुख पाता है, वैसे ही विद्वान् पराक्रमी अपना कर्तव्य पूरा करके यश प्राप्त करे ॥ ३ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—४।३६।६; यजु० २३।३२; साम० पू० ४।७।७॥

सुतासे। मधुसत्तमाः सोमा इन्द्राय मुन्दिनः ।

३—(दधिक्रावणः) अथ० ३।१६।६। दुधाञ् धारणपोषणयोः—कि, दधि+क्रमु पादविक्षेपे वा कदि आह्वाने, क्रन्द सातत्यशब्दे—वनिप् । दधिक्रावा अश्वनाम—निघ० १।१४। दधत् क्रामतीति वा दधत् क्रन्दतीति वा दधदा-कारो भवतीति वा—निरु० २।२७। दधिः, धारयिता सन् क्रामतीति वा क्रन्दतीति वा दधिक्रावा, तस्य तथाभूतस्य (अकारिषम्) अहं कर्म कृतवानस्मि (जिष्णोः) मार्गजयशीलस्य (अश्वस्य) तुरंगस्य (वाजिनः) शीघ्रगामिनः (सुरभि) अ० १२।१।२३। सुर ऐश्वर्यदीप्तयोरित्यस्माद् बाहुल्यकादौणादि-कोऽभिच् प्रत्ययः—इति इयानन्दो यजु० १२।३५। सुरभीणि ऐश्वर्यवन्ति (नः) अस्माकम् (सुखा) सुखानि (कर्त्तु) कुर्यात् तत् कर्म (नः) अस्माकम् (आयूषि) जीवनानि (प्र तारिषत्) वर्धयेत् ॥

सू० १३७ [७२५] विंशं कारडम् ॥ २० ॥

(४,५२१)

पुवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गच्छन्तु वो मदाः ॥ ४ ॥

सुतासः । मधुमत्-तमाः । सोमाः । इन्द्राय । मन्दिनः ॥

पुवित्र-वन्तः । अक्षरन् । देवान् । गच्छन्तु । वः । मदाः ॥४॥

भाषार्थ—(सुतासः) निचोड़े हुये, (मधुमत्तमाः) अत्यन्त ज्ञान करने वाले, (मन्दिनः) आनन्द देने वाले, (पुवित्रवन्तः) शुद्ध व्यवहार वाले (सोमाः) सोम [तत्त्व रस] (इन्द्राय) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले पुरुष] के लिये (अक्षरन्) बहे हैं, (मदाः) वे आनन्द देने वाले [तत्त्व रस] (वः) तुम (देवान्) विद्वानों को (गच्छन्तु) पहुँचे ॥ ४ ॥

भावार्थ—विद्वान् लोग ज्ञान के साथ सब पदार्थों का तत्त्व जानकर पेश्वर्य बढ़ावे ॥ ५ ॥

मन्त्र ४—६ ऋग्वेद में हैं—६।१०१। ४—६; सामवेद—उ० २।२।

तृच १५; म० १ साम० पू० ६।६।३ ॥

इन्दुरिन्द्राय पवते इति देवासो अब्रुवन् ।

वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान् ओजसा ॥ ५ ॥

इन्दुः । इन्द्राय । पवते । इति । देवासः । अब्रुवन् ॥

वाचः । पतिः । मखस्यते । विश्वस्य । ईशानः । ओजसा ॥५॥

भाषार्थ—(इन्दुः) सोम [तत्त्व रस] (इन्द्राय) इन्द्र [बड़े पेश्वर्य वाले मनुष्य] के लिये (पवते) शुद्ध होता है, (वाचः पतिः) वेदवाणी का

४—(सुतासः) निष्पादिताः (मधुमत्तमाः) मधुना ज्ञानेन अतिशयेन युक्ताः (सोमाः) तत्त्वरसाः (इन्द्राय) परमैश्वर्यवते मनुष्याय (मन्दिनः) अ० २०।१७।४। आनन्दयितारः (पुवित्रवन्तः) शुद्धव्यवहारोपेताः (अक्षरन्) संचलनं कृतवन्तः (देवान्) विदुषः पुरुषान् (गच्छन्तु) प्राप्नुवन्तु (वः) (युष्मान्) (मदाः) हर्षकाः सोमाः ॥

५—(इन्दुः) सोमः । तत्त्वरसः (इन्द्राय) परमैश्वर्यवते पुरुषाय (पवते) शुष्यति (इति) पवम् (देवासः) विद्वांसः (अब्रुवन्) अकथयन् (वाचः)

(४,५२२)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० १३७ [७२५]

स्वामी [परमात्मा] (ओजसा) अपने सामर्थ्य से (विश्वस्य) सब का (ईशानः) राजा होकर (मरुस्यते) पुरुषार्थ चाहता है—(इति) ऐसा (देवासः) विद्वानों ने (अब्रुवन्) कहा है ॥ ५ ॥

भावार्थ—विद्वानों का निश्चय है कि परमात्मा पुरुषार्थियों को तत्त्व ज्ञान देकर ऐश्वर्यवान् करता है ॥ ५ ॥

सुहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः ।

सोमः पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे ॥ ६ ॥

सुहस्र-धारः । पवते । समुद्रः । वाचस्-ईङ्खयः ॥

सोमः । पतिः । रयीणाम् । सखा । इन्द्रस्य । दिवे-दिवे ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(सहस्रधारः) सहस्रों धाराओं वाला (समुद्रः) समुद्र [जैसे], (वाचमीङ्खयः) विद्याओं का प्रवर्त्तक, (रयीणाम्) धनों का (पतिः) स्वामी, (इन्द्रस्य) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष] का (सखा) मित्र (सोमः) सोम [तत्त्व रस] (दिवेदिवे) दिन दिन (पवते) शुद्ध होता है ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्य विद्याओं द्वारा पदार्थों का तत्त्व जानकर दिन दिन नवीन नवीन आविष्कार करके धन की वृद्धि करे ॥ ६ ॥

अव द्रुणो अशुमतीमतिष्ठदियानः कृष्णो दुग्भिः सुहस्रैः ।

आवत् तमिन्द्रः शच्या धमन्तमपु स्नेहितीर्न मणा अधत् ॥ ७ ॥

अव । द्रुणः । अशु-मतीम् । अतिष्ठत् । दियानः । कृष्णः ।

वेदवाण्याः (पतिः) स्वामी परमात्मा (मरुस्यते) मरु गतौ, लालसायां सुगागमः । गतिं पुरुषार्थमिच्छति (विश्वस्य) सर्वस्य (ईशानः) राजा (ओजसा) सामर्थ्येन ॥

६—(सहस्रधारः) बहुधाराभिर्युक्तः (पवते) शुध्यति (समुद्रः) जल-धिर्यथा (वाचमीङ्खयः) ईक्षि गतौ, एयन्तस्य सुप्युपपदे खशप्रत्ययः । वाचां विद्यानां प्रवर्त्तकः (सोमः) तत्त्वरसः (पतिः) स्वामी (रयीणाम्) धनानाम् (सखा) (इन्द्रस्य) परमैश्वर्यवान् पुरुषस्य (दिवेदिवे) दिने दिने ॥

सू० १३७ [७२५]

विंश काण्डम् ॥ २० ॥

(४,५२३)

दश-भिः । सहस्रैः ॥ आवत् । तम् । इन्द्रः । शच्या ।
धमन्तम् । अप । स्नेहितीः । नृ-मनाः । अधत्त ॥ ७ ॥

भाषार्थ—(द्रुपः) घमंडी, (कृष्णः) कौवा [के समान निन्दित
लुटेरा शत्रु] (दशभिः सहस्रैः) दस सहस्र [बड़ी सेना] के साथ (इयानः)
चलता हुआ (अंशुमतीम्) विभाग वाली [सीमा वाली नदी—म० ८] पर
(अव अतिष्ठत्) ठहरा है । (नृमणाः) नरों के समान मन वाले (इन्द्रः) इन्द्र
[बड़े प्रतापी शूर] ने (तम् धमन्तम्) उस हांफते हुये को (शच्या) बुद्धि
से (आवत्) बचाया है और (स्नेहितीः) अपत्री मारु सेनाओं को (अप
अधत्त) हटा लिया है ॥ ७ ॥

भावार्थ—जो शत्रु चढ़ाई करे और थककर हार मान लेवे, वीर राजा
जीवित छोड़कर उसे मित्र बनावे और यथोचित प्रबन्ध करके अपनी सेना हटा
लेवे ॥ ७ ॥

मन्त्र ७—११ ऋग्वेद में है—८ । ६६ [सायण भाष्य ८५] । १३—१७;
मन्त्र ७ सामवेद—पू० ४ । ४ । १ ॥

द्रुपसमपश्यं विषुणे चरन्तमुपहुरे नृद्यौ अंशुमत्याः । नभो न
कृष्णमवतस्थिवांसुमिष्यामि वो वृषणो युध्यताजौ ॥ ८ ॥
द्रुपसम् । अपश्यम् । विषुणे । चरन्तम् । उप-हुरे । नृद्यौ ।

७—(द्रुपः) वृत्तवदिवचि० । उ० ३ । ६२ । उप हर्षमोहनयोः, उत्करोशे,
गर्वे च—सप्रत्ययः । गर्ववान् (अंशुमतीम्) मृगखाद्यश्च । उ० १ । ३७ । अंश
विभाजने—कु । विभागवती सीमायुक्ता नदीम् (अव अतिष्ठत्) अवस्थितवान्
(इयानः) इङ् गतौ—कानच् । गच्छन् (कृष्णः) अ० ७ । ६४ । १ । श्वा काक
इति कुत्सायाम्—निरु० ३ । १८ । काक इव निन्दितो दस्युः शत्रुः (दशभिः
सहस्रैः) बहुभिः सेनाभिः (आवत्) रक्षितवान् (तम्) शत्रुम् (इन्द्रः) महा-
प्रतापी शूरः (शच्या) प्रज्ञया—निघ० ३ । ६ (धमन्तम्) उच्छ्वन्सतम् । परा-
भवेन दीर्घं श्वसन्तम् (स्नेहितीः) स्नेहतिः स्नेहयतिर्बध्कर्मा—निघ० २ ।
१६ । स्वकीया मारणशीलाः सेनाः (नृमणाः) नेतृतुल्यमनस्कः (अप अधत्त)
दूरे धारितवान् निवर्तितवान् ॥

अंशु-सत्याः ॥ नभः । न । कृष्णम् । अवतस्थि-वांसम् ।
इष्यामि । वः । वृषणः । युध्यत । आजौ ॥ ८ ॥

भाषार्थ—(द्रप्सम्) घमंडी को (अंशुमत्याः) विभाग वाली
[सीमा वाली] (नद्यः) नदी के (उपह्वरे) समीप में (विषुणे) विरुद्ध
आचरण [अन्याय] के बीच में (चरन्तम्) विचरते हुये, (नभः) आकाश
से (अवतस्थिवांसम्) उतरे हुये (कृष्णम् न) कौवे के समान (अपश्यम्) मैं
ने देखा है, (वृषणः) हे ऐश्वर्य वाले वीरों ! (वः) तुम को (इष्यामि) मैं
प्रेरणा करता हूं, (आजौ) संग्राम में (युध्यत) युद्ध करो ॥ ८ ॥

भाषार्थ—राजा लुटेरे शत्रु को सीमा पर आते देखकर अपने वीरों
को भेजकर उसे रोक दे ॥ ८ ॥

अधं द्रुषो अंशुसत्या उपस्येऽधारयत् तन्वं तित्विषाणः ।
विशो अदेवीरभ्याश्चरन्तीर्बृहस्पतिना युजेन्द्रः ससाहे ॥ ९ ॥
अधं । द्रुषः । अंशु-सत्याः । उप-स्ये । आधारयत् । तन्वंम् ।
तित्विषाणः ॥ विशः । अदेवीः । अभि । आ-चरन्तीः ।
बृहस्पतिना । युजा । इन्द्रः । ससाहे ॥ ९ ॥

भाषार्थ—(अध) फिर (तित्विषाणः) भड़कीले (द्रुषः) घमंडी

८—(द्रप्सम्) म० ७ । गर्ववन्तम् (अपश्यम्) अदर्शम् (विषुणे)
क्षुधिपिशिमिथिभ्यः कित् । ३० ३ । ५५ । विष विप्रयोगे—उनन् कित् । विषुण-
स्य विषमस्य—नि० ४ । १६ । विरुद्धाचरणे । अन्याये (चरन्तम्) विच-
रन्तम् (उपह्वरे) अथ० २० । २२ । ६ । समीपे (नद्यः) नद्याः (अंशुमत्याः)
म० ७ । विभागवत्याः । सीमायुक्तायाः (नभः) विमर्कैर्लुक् । नभसः ।
आकाशात् (न) यथा (कृष्णम्) म० ७ । काकम् (अवतस्थिवांसम्) अव-
स्थितम् (इष्यामि) इष गतौ । प्रेरयामि (वः) युष्मान् (वृषणः) अथ० ११ ।
१ । २ । हे ऐश्वर्यवन्तः । वीराः (युध्यत) संप्रहरत (आजौ) अ० २० । १६ ।
२ । संग्रामे ॥

९—(अध) अथ (द्रुषः) म० ७ । अभिमानी (अंशुमत्याः) म० ७ ।

ने (अंशुमत्याः) विभाग वाली [सीमा वाली नदी] के (उपस्थे) समीप में (तन्वम्) अपने शरीर को (अधारयत्) पुष्ट किया । [तव] (युजा) अपने मित्र (बृहस्पतिना) बृहस्पति [बड़ी विद्याओं के स्वामी] के साथ (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े प्रतापी राजा] ने (अभि) सब ओर (आचरन्तीः) घूमती हुई, (अदेवीः) कुव्यवहार वाली (विशः) प्रजाओं को (नसहे) जीत लिया ॥ ६ ॥

भाषार्थ—यदि शत्रु लोग बार बार एकत्र होकर उपद्रव मचावें, नीति-कुशल राजा मित्रों का सहाय लेकर वैरियों को हरावे ॥ ६ ॥

त्वं ह त्वत् सुप्तभ्ये । जायमानोऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुं रिन्द्र ।
गुल्हे द्यावापृथिवी अन्विन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्ये । रणं
धाः ॥ १० ॥

त्वम् । ह । त्वत् । सुप्त-भ्यः । जायमानः । अशत्रु-भ्यः ।
अभवः । शत्रुः । इन्द्र ॥ गुल्हे इति । द्यावापृथिवी इति ।
अनु । अविन्द्रः । विभुमत्-भ्यः । भुवनेभ्यः । रणम् । धाः ॥ १० ॥

भाषार्थ—(इन्द्र) हे इन्द्र ! [महाप्रतापी राजन्] (त्वत् ह) तभी (जायमानः) प्रकट होता हुआ (त्वम्) तू (अशत्रुभ्यः) अशत्रु [बिना वैर वाले, आपस में मित्र] (सुप्तभ्यः) सातो [कान, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, नासिका पांच ज्ञान इन्द्रिय, मन और बुद्धि] के हित के लिये (शत्रुः) [दुष्टों का] शत्रु (अभवः) हुआ है । (गुल्हे) [अज्ञान के कारण] ढके हुये (द्यावा-

विभागवत्या नद्याः (उपस्थे) समीपे (अधारयत्) अपोषयत् (तन्वम्) स्वशरीरम् (तित्विषाणः) त्विष दीप्तौ—कान्त् । दीप्यमानः (विशः) प्रजाः । शत्रुसेनाः (अदेवीः) कुव्यवहारवतीः (अभि) सर्वतः (आचरन्तीः) विचरन्तीः (बृहस्पतिना) बृहतोनां महतीनां विद्यानां स्वामिना (युजा) सहायेन (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् राजा (नसहे) पह अभिभवे—लिट् । अभिवभूच ॥

१०—(त्वम्) (ह) एव (त्वत्) तत् । तदा (सुप्तभ्यः) सुप्तसंख्या-केभ्यः । मनोबुद्धिसहितपंचज्ञानेन्द्रियाणां हिताय (जायमानः) प्रादुर्भवन् सन् (अशत्रुभ्यः) शत्रुतारहितेभ्यः । परस्परमित्रभूतेभ्यः (अभवः) (शत्रुः) दुष्टानां शत्रुः (इन्द्र) महाप्रतापिन् राजन् (गुल्हे) अज्ञानेन गूढ़े संवृते

पृथिवी) आकाश और भूमि को (अनु) अनुक्रम से (अविन्दः) तू ने पाया है और (विभुमद्भ्यः) महत्त्व वाले (भुवनेभ्यः) लोकों को (रणम्) रमण [आनन्द] (धाः) तू ने दिया है ॥ १० ॥

भाषार्थ—राजा प्रबन्ध करे कि सब लोग शरीर और आत्मा से स्वस्थ रहकर आकाश और भूमि के पद्यों से विज्ञान द्वारा उपकार लेकर सुखी रहें ॥ १० ॥

त्वं ह त्वदप्रतिमानमोजो वज्रेण वज्रिन् धृषितो जघन्य ।
त्वं शुष्णस्यावातिरो वधत्रैस्त्वं गा इन्द्र शच्येदविन्दः ॥११॥
त्वस् । हु । त्यत् । अप्रति-मानम् । ओजः । वज्रेण । वज्रिन् ।
धृषितः । जघन्य ॥ त्वस् । शुष्णस्य । अव । अतिरः ।
वधत्रैः । त्वस् । गाः । इन्द्र । शच्य । इत् । अविन्दः ॥११॥

भाषार्थ—(वज्रिन्) हे वज्रधारी (इन्द्र) इन्द्र ! [महाप्रतापी राजन्] (धृषितः) निर्भय (त्वम्) तू ने, (त्वम्) तू ने (ह) ही (शुष्णस्य) सुखाने वाले बैरी के (त्यत्) उस (अप्रतिमानम्) अनुपम (ओजः) बल को (वज्रेण) वज्र से और (वधत्रैः) हथियारों से (जघन्य) नष्ट करदिया है और (अव अतिरः) नीचे किया है, (त्वम्) तू ने (गाः) उस की भूमियों को (शच्य) अपनी बुद्धि से (इत्) ही (अविन्दः) पाया है ॥ ११ ॥

(द्यावापृथिवी) आकाशभूलोकौ । तत्रत्यपदार्थान् (अनु) अनुक्रमेण (अविन्दः) अलभथाः (विभुमद्भ्यः) महत्त्वयुक्तेभ्यः (भुवनेभ्यः) लोकेभ्यः (रणम्) मलोपः । रमणम् । आनन्दम् (धाः) दत्तवानसि ॥

११—(त्वम्) (ह) एव (त्यत्) तत् । प्रसिद्धम् (अप्रतिमानम्) प्रतिमान-
मुपमा । निरुपमम् (ओजः) बलम् (वज्रेण) आयुधेन (वज्रिन्) हे वज्रवन्
(धृषितः) धृष्टः । निर्भयः (जघन्य) हन्तेर्लिट् । हतवान् नाशितवानसि
(त्वम्) (शुष्णस्य) शोषकस्य शत्रोः (अव अतिरः) अवतारितवानसि ।
नीचैः कृतवानसि (वधत्रैः) अमिनक्षिपजिजधि० । उ० ३ । १०५ । वध
संयमने—अत्रन्, यद्वा, हन हिंसागत्योः—अत्रन्, वधादेशः । संयमनसाधनैः
हननसाधनैर्वा आयुधैः (त्वम्) (गाः) शत्रुभूमीः (इन्द्र) महाप्रतापिन्
राजन् (शच्य) स्वपक्षया (इत्) एव (अविन्दः) अलभथाः ॥ ॥

सू० १३७ [७२५] विंशं काण्डम् ॥ २० ॥ (४,५२७)

भावार्थ—राजा अपनी बुद्धि के बल से शस्त्र अस्त्र आदि युद्ध सामग्री एकत्र करके शत्रुओं को मारकर प्रजा की रक्षा करे ॥ ११ ॥

तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे । स वृषा वृषभो भुवत् ॥ १२ ॥

तम् । इन्द्रम् । वाजयामसि । महे । वृत्राय । हन्तवे ॥ सः । वृषा । वृषभः । भुवत् ॥ १२ ॥

भाषार्थ—(तम्) उस (इन्द्रम्) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले राजा] को (महे) बड़े (वृत्राय) रोकने वाले वैरी के (हन्तवे) मारने को (वाजयामसि) हम बलवान् करते हैं [उत्साही बनाते हैं], (सः) वह (वृषा) पराक्रमी (वृषभः) श्रेष्ठ वीर (भुवत्) होवे ॥ १२ ॥

भावार्थ—प्रजागण राजा को शत्रुओं के मारने के लिये सहाय करें और राजा भी प्रजा की भलाई के लिये प्रयत्न करे ॥ १२

मन्त्र १२—१४ आचुके हैं—अथ० २० । ४७ । १—३ ॥

इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स मर्दे हितः । द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः ॥ १३ ॥

इन्द्रः । स । दामने । कृतः । ओजिष्ठः । सः । मर्दे । हितः ॥ द्युम्नी । श्लोकी । सः । सोम्यः ॥ १३ ॥

भाषार्थ—(सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाला राजा] (दामने) दान करने के लिये और (सः) वह (मर्दे) आनन्द देने के लिये (ओजिष्ठः) महाबली और (हितः) हितकारी (कृतः) बनाया गया है, (सः) वह (द्युम्नी) अज्ञ वाला और (श्लोकी) कीर्ति वाजा पुरुष (सोम्यः) ऐश्वर्य के योग्य है ॥ १३ ॥

भावार्थ—प्रजागण प्रतापी, गुणी पुरुष को इस लिये राजा बनावें कि वह प्रजा के उपकार के लिये दान करके प्रयत्न करे और अन्न आदि पदार्थ

१२—१४ । एते मन्त्रा व्याख्यातः—अथ० २० । ४७ । १—३ ॥

बद्धाकर कीर्ति पावे ॥ १३ ॥

गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः । ववक्ष ऋष्वो
अस्तृतः ॥ १४ ॥

गिरा । वज्रः । न । सम्-भृतः । स-बलः । अनप-च्युतः ॥
ववक्षे । ऋष्वः । अस्तृतः ॥ १४ ॥

भाषार्थ—(गिरा) बाणी से (संभृतः) पुष्ट किया गया, (सबलः)
सबल, (अनपच्युतः) न मिरने योग्य, (ऋष्वः) गति वात्ता, और (अस्तृतः)
बेरोक सेनापति (वज्रः न) बिजुली के समाने (ववक्षे) रिस द्योवे ॥ १४ ॥

भावार्थ—जो मनुष्य अपनी बात में सच्चा महाबली हो, वह सेनानी
होकर शत्रुओं पर बिजुली के समान क्रोध करे ॥ १४ ॥

सूक्तम् १३८ ॥

१-३ ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥

राजप्रजाकर्तव्योपदेशः—राजा और प्रजा के कर्तव्य का उपदेश ॥

मुहौ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमां इव । स्तोमैर्वत्सस्य
ववृधे ॥ १ ॥

मुहान् । इन्द्रः । यः । ओजसा । पर्जन्यः । वृष्टिमान्-इव ॥
स्तोमैः । वत्सस्य । ववृधे ॥ १ ॥

भाषार्थ—(यः) जो (मुहान्) महान [पूजनीय] (इन्द्रः) इन्द्र
[बड़े ऐश्वर्य वाला राजा] (ओजसा) अपने बल से (वृष्टिमान्) मेघ वाले
(पर्जन्यः इव) बादल के समान है, [वह] (वत्सस्य) शास्त्रों के कहने वाले
[आचार्य आदि] के (स्तोमैः) उत्तम गुणों के व्याख्यानों से (ववृधे) बढ़ा है ॥ १ ॥

१—(मुहान्) पूजनीयः (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् राजा (यः) (ओजसा)
बलेन (पर्जन्यः) मेघः (वृष्टिमान्) वृष्ट्या युक्तः (इव) यथा (स्तोमैः)
स्तुतृगुणानां व्याख्यानैः (वत्सस्य) वृत्तवदिवचिवत्ति० । उ० ३ । ६२ । वद
वृत्तकायां वाचि—सप्रलयः । शास्त्राणां कथनशीलस्य (ववृधे) वृद्धिं गतः ॥

सू० १३८ [७२६] विंशं काण्डम् ॥ ३० ॥

(४,५२८)

भावार्थ—मनुष्य गुरु जनों से शिक्षा पाकर बरसने वाले बादल के समान उपकार करके पूजनीय होवे ॥ १ ॥

यह तुच्च ऋग्वेद में है—८।६।१—३, सामवेद—७०५।२।तुच्च १०; मन्त्र १ यजु० ७।४० ॥

प्रजासृतस्य पिप्रतुः प्र यद् भरन्त वह्नयः । विप्रा ऋतस्य वाहसा ॥ २ ॥

प्र-जाम् । ऋतस्य । पिप्रतुः । प्र । यत् । भरन्त । वह्नयः ॥
विप्राः । ऋतस्य । वाहसा ॥ २ ॥

भाषार्थ—(ऋतस्य) सत्य धर्म का (पिप्रतुः) पालन करते हुये (वह्नयः) ले चलने वाले [नेता लोग] (प्रजाम्) प्रजा को (यत्) जब (प्र) भले प्रकार (भरन्त) पुष्ट करते हैं, [तब] (विप्राः) बुद्धिमान् लोग (ऋतस्य) सत्य धर्म के (वाहसा) प्राप्त कराने वाले [होते हैं] ॥ २ ॥

भावार्थ—नेता गण सत्यवती होकर प्रजा को सुख देकर विद्वानों द्वारा सत्य धर्म का प्रचार करें ॥ २ ॥

कण्वा इन्द्रं यदक्रतु स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम् । जामि ब्रुवत आयुधम् ॥ ३ ॥

कण्वाः । इन्द्रम् । यत् । अक्रतु । स्तोमैः । यज्ञस्य । साधनम् ॥
जामि । ब्रुवते । आयुधम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(कण्वाः) बुद्धिमानों ने (यत्) जब (इन्द्रम्) इन्द्र

२—(प्रजाम्) राज्यजनान् (ऋतस्य) सत्यधर्मस्य (पिप्रतुः) पालनं कुर्वन्तः (प्र) प्रकर्षेण (यत्) यदा (भरन्त) भरन्ति । पुष्णन्ति (वह्नयः) बोद्धारः । नेतारः पुरुषाः (विप्राः) मेधाविनः (ऋतस्य) सत्यधर्मस्य (वाहसा) वह्नियुभ्यां णित् । ७०३ । ११६ । वह प्रापणे—असच्, स च णित्, विसर्गलोपः । वाहसाः । बोद्धारः प्रापयितारः सन्ति ॥

३—(कण्वाः) मेधाविनः—निघ० ३ । १५ (इन्द्रम्) महाप्रत्यभिज्ञः

[महाप्रतापी मनुष्य] को (स्तौमैः) उत्तम गुणों के व्याख्यानों से (यज्ञस्य) यज्ञ [देव पूजा, संगतिकरण और दान] का (साधनम्) सिद्ध करने वाला (अकृत) बनाया है, [तभी उस को] आयुधम्) मनुष्यों का पोषण करने वाला (जामि) बन्धु (ब्रुवते) कहते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—बुद्धिमान् लोग प्रतापी गुणी पुरुष को प्रधान बनाकर प्रजा को पालें ॥ ३ ॥

सूक्तम् १३६ ॥

१—५ ॥ अश्विनौ देवते ॥ १, ४ पद्या बृहती; २ गायत्री; ३ निचृद् गायत्री; ५ कक्बुणिक् वृन्दः ॥

गुरुजनगुणोपदेशः—गुरु जनों के गुणों का उपदेश ॥

आ नूनमश्विना युवं वत्सस्य गन्तमवसे ।

मास्मै यच्छतमवृकं पृथु च्छुर्दियुयुतं या अरातयः ॥ १ ॥

आ । नूनम् । अश्विना । युवम् । वत्सस्य । गन्तम् । अवसे ।

म । अस्मै । यच्छतम् । अवृकम् । पृथु । छुर्दिः । युयुतम् ।

याः । अरातयः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(अश्विना) हे दोनों देवों [चतुर माता पिता, अथवा राजा और मन्त्री] (युवम्) तुम दोनों (वत्सस्य) निवास करने वाले [प्रजा जन] की (अवसे) रक्षा के लिये (नूनम्) अवश्य (आ गन्तम्)

मनुष्यम् (यत्) यदा (अकृत) करोतेर्लुङि रूपम् । अकृत (स्तौमैः) स्तुत्यगुणानां व्याख्यानैः (यज्ञस्य) देवपूजासंगतिकरणदानव्यवहारस्य (साधनम्) साधयितारं निष्पादकम् (जामि) वसिष्ठपियमि० । उ० ४ । १२५ । जमु अदने—इज् । जामिं बन्धुम् (ब्रुवते) कथयन्ति (आयुधम्) आयुधो मनुष्यनाम—निघ० २ । ३ । मनुष्याणां पोषकम् ॥

१—(आ गन्तम्) आगच्छतम् (नूनम्) अवश्यम् (अश्विना) अथ० २ । २६ । ६ । अश्विनौ... राजानौ पुरयकृतावित्यैतिहासिकाः—निघ० १२ । १ । हे चतुरमातापितरौ राजाभात्यौ वा (युवम्) युवाम् (वत्सस्य) अथ० २० ।

सू० १३८ [७२७]

विंशं काण्डम् ॥ २० ॥

(४,५३९)

आश्वो । और (अस्मै) उस को (अवृकम्) बिना भेड़िये वाला [भेड़िये के समान चोर डाकू के बिना], (पृथु) चौड़ा (छर्दिः) घर (प्र यच्छतम्) दो और (याः) जो (अरातयः) कर न देने वाली प्रजायें हैं, [उन्हें] (युयुतम्) अलग करो ॥ १ ॥

भावार्थ—चतुर माता पिता तथा राजा और मन्त्री सब गुरु जन प्रजा की रक्षा करें और शत्रुओं को हटावें ॥ १ ॥

चार सूक्त १३६—१४२ के २१ मन्त्र ऋग्वेद में है—८ । ६ । १—२१ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—८ । ६ । १—५ ॥

यदन्तरिक्षे यद् दिवि यत् पञ्च मानुषां अनु । नृम्णं तद् धत्तमश्विना ॥ २ ॥

यत् । अन्तरिक्षे । यत् । दिवि । यत् । पञ्च । मानुषान् । अनु । नृम्णम् । तत् । धत्तम् । अश्विना ॥ २ ॥

भावार्थ—(यत्) जो [धन] (अन्तरिक्षे) आकाश में, (यत्) जो (दिवि) सूर्य आदि के प्रकाश में और (यत्) जो (पञ्च) पांच [पृथिवी आदि पांच तत्त्वों] से संबन्ध वाले (मानुषान् अनु) मनुष्यों में है, (अश्विना) हे दोनों अश्वी ! [चतुर माता पिता] (तत्) उस (नृम्णम्) धन को (धत्त) दान करो ॥ २ ॥

१३८ । १ । वस निवासे—सप्रत्ययः । निवासशीलस्य प्रजाजनस्य (अवसे) रक्षणाय (प्र यच्छतम्) प्रदत्तम् (अस्मै) प्रजाजनाय (अवृकम्) अथ० ४ । ३ । १ । वृको हिंस्रजन्तुविशेषः, तद्रहितम् । वृकसमानचौरादिरहितम् (पृथु) विस्तीर्णम् (छर्दिः) गृहम् (युयुतम्) पृथक्कृतम् (याः) (अरातयः) अथ० १ । २६ । २ । अदानशीलाः शत्रुभूताः प्रजाः ॥

२—(यत्) धनम् (अन्तरिक्षे) आकाशे (यत्) (दिवि) सूर्यादि-प्रकाशे (यत्) (पञ्च) पृथिव्यादिपञ्चभूतसम्बन्धितः (मानुषान् अनु) लक्षणे अनोः कर्मप्रवचनीयत्वात् । कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया । पा० २ । ३ । ८ । इति द्वितीया । मनुष्यान् प्रति (नृम्णम्) धनम् (तत्) तादृशम् (धत्त) दत्त (अश्विना) म० १ । हेचतुरमातापितरौ ॥

भावार्थ—माता पिता आदि गुरु जन प्रबन्ध करें कि सब लोग आपस में खगोल विद्या, सूर्य, विजुली, अग्नि आदि विद्याये जानकर धनी हों ॥ २ ॥

ये वां दंसांस्थिश्चिन्ता विप्रांसः परिमामृशुः । एवेत् काणवस्य बोधतम् ॥ ३ ॥

ये । वास् । दंसांसि । अश्विना । विप्रांसः । पुरि-मृशुः ॥

एव । इत् । काणवस्य । बोधतम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(अश्विना) हे दोनों अश्वी ! [चतुर माता पिता] (वाम्) तुम दोनों के (दंसांसि) कर्मों को (ये) जिन (विप्रांसः) बुद्धिमानों ने (परिमामृशुः) विचारा है, (एव इत्) वैसे ही [उन के बीच] (काणवस्य) बुद्धिमान के किये कर्म का (बोधतम्) तुम दोनों ज्ञान करो ॥ ३ ॥

भावार्थ—जैसे विद्वान् लोग माता पिता आदि गुरु जनों को उत्तम प्रकार से विचारें, वैसे ही गुरु जन भी विद्वानों का आदर करें ॥ ३ ॥

अयं वां घर्मो अश्विना स्तोमेन परि सिच्यते । अयं सोमो मधुमान् वाजिनीवसु येन वृत्रं चिकेतथः ॥ ४ ॥

अयम् । वास् । घर्मः । अश्विना । स्तोमेन । परि ।

सिच्यते ॥ अयम् । सोमः । मधु-मान् । वाजिनीवसु इति

वाजिनी-वसु । येन । वृत्रम् । चिकेतथः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(अश्विना) हे दोनों अश्वी ! [चतुर माता पिता, गुरुजनो] (वाम्) तुम दोनों का (अयम्) यह (घर्मः) पत्नीना (स्तोमेन)

३—(ये) (वाम्) युवयोः (दंसांसि) कर्माणि (अश्विना) म० १ । हे चतुरमातापितरौ । गुरुजनो (विप्रांसः) विप्राः । मेधाविनः (परिमामृशुः) मृश स्पर्शं प्रणिधाने च—लिट् । विचारितवन्तः (एव) एवम् । तथा (इत्) अवधारणे (काणवस्य) कणवेन मेधाविना प्रणीतस्य कर्मणः (बोधतम्) बोधं कुरुतम् ॥

४—(अयम्) शरीरस्थः (वाम्) युवयोः (घर्मः) घर्मग्रीष्मौ । उ० १ । १४६ । वृ कर्णदीप्तयोः—रक् । स्वेदः (अश्विना) म० १ । हे चतुर—

स्तुति योग्य कर्म के साथ (परि सिच्यते) सिंचता है [बहता है], (वाजिनी-
यसू) हे बहुत वेग वाली वा बहुत अन्न वाली क्रियाओं में निवास करने वाले
दोनों ! (अयम्) वह [पसीना] (मधुमान्) उत्तम ज्ञान वाला (सोमः)
सोम [तत्त्व रस] है (येन) जिस [तत्त्व रस] से (वृत्रम्) रोकने वाले शत्रु
को (चिकेतथः) तुम दोनों जान लेते हो ॥ ४ ॥

भावार्थ—गुरु जन महान् परिश्रम करके मधुविद्या अर्थात् तत्त्वज्ञान
को प्राप्त करें और शत्रुओं को मारें ॥ ४ ॥

यदुप्सु यद् वनस्पतौ यदोषधीषु पुरुदंससा कृतम् । तेन
अविष्टमश्विनान् ॥ ५ ॥

यत् । अप्-सु । यत् । वनस्पतौ । यत् । ओषधीषु । पुरु-
दंससा । कृतम् ॥ तेन । मा । अविष्टम् । अश्विना ॥ ५ ॥

भाषार्थ—(पुरुदंससा) हे बहुत कर्म वाले दोनों ! (यत्) जो कुछ
(कृतम्) किया फल (अप्सु) जल में है, (यत्) जो (वनस्पतौ) वनस्पति
[वृक्षों] में है, और (यत्) जो (ओषधीषु) औषधियों [जौ चावल आदि]
में है, (अश्विना) हे दोनों अश्वी ! [चतुर माता पिता] (तेन) उस [किया
फल] से (मा) मेरी (अविष्टम्) रक्षा करो ॥ ५ ॥

भावार्थ—गुरुजन जिज्ञासुओं को जल आदि सब पदार्थों का तत्त्व ज्ञान
कराके क्रियाकुशल बनावें ॥ ५ ॥

मातापितरौ । गुरुजनौ (स्तोमेन) स्तुत्यकर्मणा (परि सिच्यते) आसिच्यते ।
बहति (अयम्) स घर्मः (सोमः) तत्त्वरसः (मधुमान्) मधुविद्यायुक्तः ।
श्रेष्ठज्ञानोपेतः (वाजिनीयसू) अथ० १४ । २ । ५ । हे वेगवतीषु अन्नवतीषु वा
क्रियासु निवासिनौ (येन) तत्त्वरसेन (वृत्रम्) आवरकं शत्रुम् (चिकेतथः)
जानीथः ॥

५—(यत्) (अप्सु) जलेषु (यत्) (वनस्पतौ) जाताविदमेकवचनम् ।
वनस्पतिषु वृक्षेषु (यत्) (ओषधीषु) यववीक्षादिषु (पुरुदंससा) हे बहु-
कर्माणौ (कृतम्) कियाफलम् (तेन) कियाफलेन (मा) माम् (अविष्टम्)
अवतेलौटि बाहुलकात् सिप्, तत् इट् । रक्षतम् (अश्विना) म० १ । हे चतुर-
मातापितरौ ॥

सूक्तम् १४० ॥

१—५ ॥ अश्विनौ देवते ॥ १ पृथ्वा बृहती; २, ३ अनुष्टुप्; ४ विराडनुष्टुप्; ५ भुरिगार्गी पङ्क्तिः ॥

अहोरात्रसुप्रयोगोपदेशः—दिन और राति के उत्तम प्रयोग का उपदेश ॥
यन्नासत्या भुरण्यथो यह वा देव भिषज्यथः । अयं वा वृत्सो
मृतिभिर्न विन्धते हविष्मन्तं हि गच्छथः ॥ १ ॥

यत् । नासत्या । भुरण्यथः । यत् । वा । देवा । भिषज्यथः ॥
अयम् । वृत्सः । मृति-भिः । न । विन्धते । हविष्म-
न्तम् । हि । गच्छथः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(नासत्या) हे असत्य न रखने वाले दोनों ! [दिन राति]
(यत्) क्योंकि (भुरण्यथः) तुम पोषण करते हो, (वा) और, (देवा) हे
व्यवहार कुशल दोनों ! (यत्) क्योंकि (भिषज्यथः) तुम औषध करते हो ।
(अयम्) यह (वृत्सः) बोलने वाला (वाम्) तुम दोनों को (मृतिभिः)
अपनी बुद्धियों से (न) नहीं (विन्धते) पाता है, (हविष्मन्तम्) भक्ति रखने
वाले को (हि) ही (गच्छथः) तुम दोनों मिलते हो ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्य दिन राति का सुन्दर प्रयोग करके पुष्ट, स्वस्थ,

१—(यत्) यतः (नासत्या) नास्ति असत्यं ययोस्तौ । नभ्राण्यनपान-
वेदानासत्या० । पा० ६ । ३ । ७५ । इति त्रयः प्रकृतिभावः । विभक्तेराकारः ।
नासत्यौ चाश्विनौ, सत्यावेव नासत्यावित्यौर्णभावः, सत्यस्य प्रणेतारवित्याप्रा-
यणः, नासिकाप्रभवौ बभूवतुरिति वा । निरु० ६ । १३ । नासिकाप्रभवौ प्राणा-
पानावित्यर्थः । हे असत्यरहितौ । सदा सत्यस्वभावौ । अश्विनौ (भुरण्यथः)
भुरण धारणापोषणयोः कण्ड्वादिः । सर्वं पोषयथः (यत्) (वा) च (देवा)
छान्दसः सांहितिको ह्रस्वः । व्यवहारकुशलौ (भिषज्यथः) भिषज चिकित्सायां
कण्ड्वादिः । भैषज्यं कुरुथः (अयम्) (वाम्) शुवाम् (वृत्सः) अथ०
२० । १३८ । १ । वदतेः—सप्रत्ययः । कथयिता (मृतिभिः) बुद्धिभिः (न)
निषेधे (विन्धते) दस्य धः । विन्दते लभते (हविष्मन्तम्) भक्तिमन्तम् (हि)
एव (गच्छथः) प्राप्नुयः ॥

विद्वान् हाकर आनन्द पावै ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—८।६।६-१० ॥

आ नूनमुश्विनोऽर्हृषि स्तोमं चिकेत वामया ।

आ सोमं मधुमत्तमं घर्मं सिञ्चादथर्वणि ॥ २ ॥

आ । नूनम् । अश्विनोः । ऋषिः । स्तोमम् । चिकेत ।

वामया ॥ आ । सोमम् । मधुमत्-तमम् । घर्मम् । सिञ्चात् ।

अथर्वणि ॥ २ ॥

भाषार्थ—(ऋषिः) ऋषि [विद्वानी पुरुष] (अश्विनोः) दोनों अश्वी [व्यापक दिन राति] के (स्तोमम्) स्तुति योग्य कर्म को (वामया) उत्तम बुद्धि से (नूनम्) अवश्य (आ) सश और से (चिकेत) जाने । और (मधुमत्तमम्) अत्यन्त ज्ञान वाले और (घर्मम्) प्रकाश वाले (सोमम्) सोम [तत्त्वं रस] को (अथर्वणि) निश्चल [जिज्ञासु] पर (आ) भले प्रकार (सिञ्चात्) सींचे ॥ २ ॥

भावार्थ—विद्वानी-पुरुष काल की महिमा जानकर जिज्ञासुओं को तत्त्व ज्ञान का उपदेश करे ॥ २ ॥

आ नूनं रुधुवर्तनि रथं तिष्ठायो अश्विना ।

आ वां स्तोमा इमे सम नमो न चुच्यवीरत ॥ ३ ॥

आ । नूनम् । रुधु-वर्तनिम् । रथम् । तिष्ठायः । अश्विना ॥

आ । वाम् । स्तोमाः । इमे । सम । नमः । न । चुच्यवीरत ॥

२—(आ) समन्तात् (नूनम्) अवश्यम् (अश्विनोः) अथ० २ । २६ ।

६ । अश्विनो अश्विनोऽर्हृषि ते—निरु० १२ । १ । व्यापकयोः । अश्वि-

रात्रयोः (ऋषिः) विद्वानी पुरुषः (स्तोमम्) स्तुत्यव्यवहारम् (चिकेत) कित ज्ञाने-लिट्—जानीयात् (वामया) वामः प्रशस्यः—निघ० ३ । ८ ।

उक्त्या बुद्ध्या (आ) (सोमम्) तत्त्वरसम् (मधुमत्तमम्) अतिशयेन मधुविद्यायुक्तम् (घर्मम्) अ० २० । १३६ । ४ । घृ दितौ—मक् । दीप्यमानम् (सिञ्चात्) सिञ्चेत् (अथर्वणि) अथ० ४ । १ । ७ । अ+थर्व चरणे-वनिप्, वलोपः । निश्चले जिज्ञासौ ॥

भाषार्थ—(अश्विना) हे दोनों अश्वी ! [व्यापक दिन राति] (रघुवर्तनिम्) हलके घूमने वाले [अति शीघ्रगामी] (रथम्) रथ पर (नूनम्) अवश्य (आ तिष्ठाथः) तुम चढ़ते हो, (मम) मेरे (इमे) यह (स्तोमाः) स्तुति के वचन (वाम्) तुम दोनों को (नभः न) मेघ के समान [शीघ्र] (आ) सब ओर से (चुच्यवीरत) [हमें] प्राप्त कराते हैं ॥ ३ ॥

भावार्थ—जैसे पवन से बादल आकाश में दौड़ता है; उस से भी अधिक शीघ्रगामी काल को वश में लाकर बुद्धिमान् आनन्द पाते हैं ॥ ३ ॥

यदुद्य वा नासत्याकथैराचुच्युवीमहि ।

यद् वा वाणीभिरश्विनेवेत् काण्वस्य बोधतम् ॥ ४ ॥

यत् । अद्य । वाक् । नासत्या । उक्थैः । आ-चुच्युवीमहि ॥

यत् । वा । वाणीभिः । अश्विना । एव । इत् । काण्वस्य । बोधतुम् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(नासत्या) हे सदा सत्य स्वभाव वाले दोनों ! [दिन राति] (अद्य) आज (यत्) जैसे (उक्थैः) कहने योग्य शास्त्रों से, (वा) अथवा (यत्) जैसे (वाणीभिः) अपनी वाणियों से (वाम्) तुम दोनों को (आचुच्युवीमहि) हम लावें, (अश्विना) हे दोनों अश्वी ! [व्यापक दिन राति] (एव इत्) वैसे ही (काण्वस्य) बुद्धिमान् के किये कर्म का (बोधतम्) तुम दोनों जानकरो ४

३—(आ तिष्ठाथः) अधितिष्ठथः (नूनम्) अवश्यम् (रघुवर्तनिम्) वृतेश्च । उ० २ । १०६ । लघु + वृत्तु वर्तने—अनि, लस्य रः । लघुवर्तनोपेतम् । अतिशीघ्रगामिनम् (रथम्) यानम् (अश्विना) म० २ । हे व्यापकौ । अहोरात्रौ (आ) समन्तात् (वाम्) युवाम् (स्तोमाः) स्तुतिवचनानि (इमे) (मम) (नभः) मेघः (न) यथा (चुच्यवीरत) अन्तर्गतार्थः । च्यवयन्ति । गमयन्ति ॥

४—(यत्) यथा (अद्य) अस्मिन् दिने (वाम्) युवाम् (नासत्या) म० १ । हे सदा सत्यस्वभावौ (उक्थैः) कथनीयशास्त्रैः (आचुच्युवीमहि) आगम्येम (यत्) यथा (वा) अथवा (वाणीभिः) वाग्भिः (अश्विना) म० २ । हे व्यापकौ । अहोरात्रौ । अन्यद् गतम्—१३५ । ३ ॥

भावार्थ—मनुष्य शीघ्र शास्त्रों में प्रवीण होकर अपने वचन के पक्के होवें और प्राप्त अवसर का यथावत् प्रयोग करें ॥ ४ ॥

यद् वां कक्षीवां उत यद् व्यश्व ऋषिर्यद् वां दीर्घतमा जुहाव । पृथी यद् वां वैन्यः सदानेष्वेवेदतो अश्विना चेतयेथाम् ॥ ५ ॥

यत् । वाम् । कक्षीवान् । उत । यत् । वि-अश्वः । ऋषिः ।
यत् । वाम् । दीर्घ-तमाः । जुहाव ॥ पृथी । यत् । वाम् ।
वैन्यः । सदानेषु । एव । इत् । अतः । अश्विना । चेतयेथाम्

भाषार्थ—(यत्) जैसे (वाम्) तुम दोनों को (कक्षीवान्) गति वाले [वा शासन वाले] पुरुष ने, (उत) और (यत्) जैसे (व्यश्वः) विविध वेग वाले ने और (यत्) जैसे (वाम्) तुम दोनों को (दीर्घतमाः) दीर्घममा [लंबा हो गया है, चला गया है अन्धकार जिल से ऐसे] (ऋषिः) ऋषि [विज्ञानी] ने, (यत्) जैसे (वाम्) तुम दोनों को (वैन्यः) बुद्धिमानों के पास रहने वाले (पृथी) विस्तार वाले पुरुष ने (सदानेषु) अपने स्थानों में (जुहाव) गृहण किया है, (अश्विना) हे दोनों अश्वी ! [व्यापक दिन राति] (एव इत्) वैसे ही (अतः) इस [मेरे वचन] को (चेतयेथाम्) जानो ॥ ५ ॥

५—(यत्) यथा (वाम्) युवाम् (कक्षीवान्) अथ० । ४ । ३६ । ५ ।
कश गतिशासनयोः—किस, मनुष्य, मनुष्य वः, दीर्घश्च । गतिशीलः शासनशीलो वा (उत) अपि च (यत्) यथा (व्यश्वः) वि + अशू व्याप्तौ—कन् । विविध-वेगयुक्तः (ऋषिः) विज्ञानी, (यत्) (वाम्) दीर्घतमाः) द विदारणे—घञ् + तमु काङ्क्षायां खेदे च—असुन् दीर्घं विदीर्णं दूरीभूतं तमः अन्धकारो यस्मात् स विद्वान् (जुहाव) द्रु आदाने—लिट् । गृहीतवान् । स्वीकृतवान् (पृथी) अ० ८ । १० (४) । ११ । प्रथविस्तारं—घञर्थे कप्रत्ययः सम्प्रसारणं च, मत्वर्थे इति । विस्तारवान् (यत्) (वाम्) (वैन्यः) अथ० ८ । १० (४) । ११ ।
वेनो मेधावी—निघ० २ । १५ । अदूरभवश्च । पा० ४ । २ । ७० । इति एय ।
मेधाविनां समीपस्थः (सदानेषु) संहितायां दीर्घः । स्थानेषु (एव) एवम् ।
तथा (इत्) अवश्यम् (अतः) इदम्—द्वितीयार्थे तसिः । इदं वचनम् (अश्विना) म० २ । हे व्यापकौ । आहोरात्रौ (चेतयेथाम्) जानीतम् ॥

(४,५३८)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० १४१ [७२६]

भावार्थ—जैसे जैसे मनुष्य दिन राति का सुप्रयोग करते हैं, वैसे ही दिन राति उनको सुख देते हैं ॥ ५ ॥

सूक्तम् १४१ ॥

१—५ ॥ अश्विनौ देवते ॥ १ त्रिपाद् विराड् गायत्री; २ जगती; ३ निचृद्-उण्डप्; ४ निचृद् बृहती; ५ निचृत् पथ्या बृहती ॥

अहोरात्रसुप्रयोगोपदेशः—दिन और राति के उत्तम प्रयोग का उपदेश ॥

यातं छर्दिष्पा उत नः परस्पा भूतं जगत्पा उत नस्तनूपा ।
वृतिस्तोकाय तनयाय यातम् ॥ १ ॥

यातम् । छर्दिः-पौ । उत । नः । परः-पा । भूतम् । जगत्-पौ ।
उत । नः । तनू-पा ॥ वृतिः । तोकाय । तनयाय ।
यातम् ॥ १ ॥

भाषार्थ—[हे दिन राति दोनों !] (छर्दिष्पौ) घर के रक्षक होकर (यातम्) आओ, (उत) और (नः) हमारे बीच (परस्पा) पालनीयों के पालक, (जगत्पा) जगत् के रक्षक (उत) और (नः) हमारे (तनूपा) शरीरों के बचाने वाले (भूतम्) होओ, और (तोकाय) संतान और (तनयाय) पुत्र के हित के लिये (वृतिः) [हमारे] घर (यातम्) आओ ॥ १ ॥

भावार्थ—सब मनुष्य घर आदि स्थानों में दिन रात का सुप्रयोग करके अपने बालक आदि को सुमार्ग में चलावें ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—८।६।११—१५ ॥

यदिन्द्रेण सुर्यं यायो अश्विना यद् वा वायुना भवयुः

१—(यातम्) आगच्छतम् (छर्दिष्पौ) गृहपालकौ (उत) अपि च (नः) अस्माकं मध्ये (परस्पा) पृ पालनपूरणयोः—असुन् । परस्पा पालनीयानां पालकौ (भूतम्) भवतम् (जगत्पा) जगतः संसारस्य रक्षकौ (उत) (नः) अस्माकम् (तनूपा) शरीराणां पालकौ (वृतिः) अर्चिशुचिद् । उ० २।१०८ । वृत्तु वर्तने—इति । छर्दिः । गृहम् (तोकाय) संतानहिताय (तनयाय) पुत्रहिताय (यातम्) आगच्छतम् ॥

समोकसा । यदादित्येभिः ऋभुभिः सजोषसा यद् वा विष्णो-
र्विक्रमणेषु तिष्ठथः ॥ २ ॥

यत् । इन्द्रेण । सु-रथम् । यायः । अश्विना । यत् । वा । वायुना ।
भवथः । सम-ओकसा ॥ यत् । आदित्येभिः । ऋभु-भिः ।
सु-जोषसा । यत् । वा । विष्णोः । वि-क्रमणेषु । तिष्ठथः ॥ २ ॥

भाषार्थ—(अश्विना) हे दोनों अश्वी ! [व्यापक दिन राति] (यत्)
चाहे (इन्द्रेण) इन्द्र [बड़े ऐश्वर्य वाले सूर्य] के साथ (सरथम्) एक रथ में
चढ़कर (यायः) तुम चलते हो, (वा) अथवा (यत्) चाहे (वायुना) पवन के
साथ (समोकसा) एक घर वाले । भवथः) होते हो । (यत्) चाहे (आदि-
त्येभिः) अखण्ड व्रतधारी (ऋभुभिः) बुद्धिमानों के साथ (सजोषसा) एक
सी प्रीति करने हुये, (वा) अथवा (यत्) चाहे (विष्णोः) सर्वव्यापक पर-
मात्मा के (विक्रमणेषु) पराक्रमों में (तिष्ठतः) ठहरते हो [वहां से दोनों
आओ—म० १] ॥ २ ॥

भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि सर्वत्र व्यापी दिन राति अर्थात्
काल को सूर्य विद्या, वायु विद्या, विद्वानों के सत्संग और परमेश्वर की भक्ति
आदि में लगाकर अपना पुरुषार्थ बढ़ावें ॥ २ ॥

यद्व्याश्विनावृहं हुवेयु वाजसातेये ।

यत् पृत्सु तुर्वणे सहस्तच्छेष्टमश्विनोरवः ॥ ३ ॥

२—(यत्) यदि । सम्भावनायाम् (इन्द्रेण) परमैश्वर्यवता सूर्येण सह
(सरथम्) समानमेकं रथमास्थाय (यायः) गच्छथः (अश्विना) सू० १४० ।
म० २ । हे व्यापकौ । अहोरात्रौ (यत्) यदि (वा) अथवा (वायुना) पवनेन
(भवथः) (समोकसा) समानगृहौ (यत्) (आदित्येभिः) अखण्डव्रतिभिः
(ऋभुभिः) अथ० १ । २ । ३ । मेधाविभिः—निघ० ३ । १५ (सजोषसा)
समानप्रीयमाणौ (यत्) (वा) (विष्णोः) सर्वव्यापस्य परमेश्वरस्य (विक्रम-
णेषु) शौर्यातिशयेषु । पराक्रमेषु (तिष्ठथः) वर्तये । सर्वस्मादपि स्थानादा-
गच्छतम्—इति पूर्वमन्त्रेण सह अन्वयः ॥

यत् । अद्य । अश्विनौ । अहम् । हुवेय । वाज-सातये ॥

यत् । पुत्-सु । तुर्वणे । सहः । तत् । श्रेष्ठम् । अश्विनौ ।
अवः ॥ ३ ॥

भाष्य—(यत्) जब (अद्य) (अश्विनौ) दोनों अश्वी [व्यापक दिन राति] को (वाजसातये) विज्ञान के लाभ के लिये (अहम्) मैं (हुवेय) बुलाऊँ । और (पुत्सु) संग्रामों के बीच (तुर्वणे) शत्रुओं के मारने में (यत्) जो (सहः) बल है, (तत्) वह (अश्विनौ) दोनों अश्वी [व्यापक दिन राति] की (श्रेष्ठम्) अति उत्तम (अवः) रक्षा [होवे] ॥ ३ ॥

भावार्थ—मनुष्य सदा विज्ञान के साथ अपना सामर्थ्य बढ़ावे, और शत्रुओं को मारकर सुखी होवे ॥ ३ ॥

आ नूनं यातमश्विनेसा हव्यानि वां हिता ।

इमे सोमासो अधि तुर्वणे यदाविमे कर्षेषु वामथ ॥ ४ ॥

आ । नूनम् । यातम् । अश्विना । इमा । हव्यानि । वाम् ।
हिता ॥ इमे । सोमासः । अधि । तुर्वणे । यदा । इमे ।
कर्षेषु । वाम् । अथ ॥ ४ ॥

भाष्य—(अश्विना) हे दोनों अश्वी ! [व्यापक दिन रात] (नूनम्) अवश्य (आ यातम्) आओ, (इमा) यह (हव्यानि) ग्राह्य द्रव्य (वाम्) तुम दोनों के लिये (हिता) रखे हैं । (इमे) यह (सोमासः) सोम रस

३—(यत्) यदा (अद्य) अस्मिन् दिने (अश्विनौ) म० २ । व्यापकौ ।
अहोरात्रौ (अहम्) (हुवेय) आह्वयेय (वाजसातये) विज्ञानस्य लाभाय
(यत्) (पुत्सु) संग्रामेषु (तुर्वणे) कृपवृजि० । उ० । २ । ८१ । तर्वा हिंसायाम्—
क्यु । शत्रूणां नाशने (सहः) अभिभवितु बलम् (तत्) (श्रेष्ठम्) प्रशस्यतमम्
(अश्विनौ) अहोरात्रयोः (अवः) रक्षणं भवतु ॥

४—(आ यातम्) आगच्छतम् (नूनम्) अवश्यम् (अश्विना) म० २ ।
हे व्यापकौ । अहोरात्रौ (इमा) पुरोवर्तीनि (हव्यानि) ग्राह्यवस्तूनि (वाम्)
युवाभ्याम् (हिता) धृतानि (इमे) दृश्यमानाः (सोमासः) तत्त्वरसाः

[तत्त्व रस] (तुर्वशे) हिंसकों को वश में करने वाले, (यदौ) तत्त्वशील मनुष्य में (अथ) और (इमे) यह [तत्त्व रस] (कण्वेषु) बुद्धिमानों में (वाम्) तुम दोनों के (अधि) अधिकाई से हैं ॥ ४ ॥

भावार्थ—समय के सुप्रयोग से विद्वान् प्रयत्न करने वालों को उत्तम उत्तम पदार्थ मिलते हैं और सदा मिलते रहेंगे ॥ ४ ॥

यन्नास्त्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् ।

तेन नूनं विमृदाय प्रचेतसा छुर्दिर्वत्साय यच्छतम् ॥ ५ ॥

यत् । नास्त्या । पराके । अर्वाके । अस्ति । भेषजम् ॥ तेन ।

नूनम् । वि-मृदाय । प्र-चे-तसा । छुर्दिः । वत्साय । यच्छतम् ॥

भाषार्थ—(नास्त्या) हे सदा सत्य स्वभाव वाले दोनों ! [दिनराति] (यत्) जो (भेषजम्) औषध (पराके) दूर में और (अर्वाके) समीप में (अस्ति) है । (प्रचेतसा) हे उत्तम ज्ञान कराने वाले दोनों (तेन) उस [औषध] के साथ (नूनम्) अवश्य करके (विमृदाय) निरहंकारी [वा अदीन] (वत्साय) शाखा के कहने वाले पुरुष को (छुर्दिः) घर (यच्छतम्) दान करो ॥ ५ ॥

(अधि) आधिक्येन (तुर्वशे) अ० २० । ३७ । ६ । तरां हिंसकानां वशयितरि । (यदौ) यती प्रयत्ने—उप्रत्ययः, तकारस्य दः । प्रयत्नशीले (इमे) (कण्वेषु) मेधाविषु (वाम्) युवयोः (अथ) अपि च ॥

५—(यत्) (नास्त्या) सू० १४० । १ । हे सदा सत्यस्वभावौ (पराके) पिनाकादयश्च । उ० ४ । १५ । परा + क्रमु पादविश्लेषे—आकप्रत्ययः, धातुलोपः । पराके दूरनाम—निघ० ३ । २६ । पराके पराक्रान्ते—निघ० ५ । ६ । दूरदेशे (अर्वाके) वलाकादयश्च । उ० ४ । १४ । अर्वाक् + क्रमु पादविश्लेषे—आकप्रत्ययः, धातुलोपः । अर्वाके अन्तिकनाम—निघ० ३ । १६ । समीपे (अस्ति) (भेषजम्) औषधम् (तेन) भेषजेन सह (नूनम्) अवश्यम् (विमृदाय) अ० ४ । २६ । ४ । निरहंकाराय । अदीनाय (प्रचेतसा) प्रकृष्टं ज्ञानं याभ्यां तौ । हे प्रकृष्ट-ज्ञानकारकौ (छुर्दिः) गृहम् (वत्साय) सू० १३८ । १ । शाखाणां कथनशीलाय (यच्छतम्) दत्तम् ॥

भावार्थ—मनुष्य घर और बाहिर समय को उत्तम रीति से काम में लगाकर सुन्दर घरों में स्वस्थ रहें ॥ ५ ॥

सूक्तम् १४२ ॥

१—६ ॥ अश्विनो देवते ॥ १ आचर्यनुष्टुप् ; २, ४ अनुष्टुप् ; ३ विराडा-
र्प्यनुष्टुप् ; ५ गायत्री ; ६ निचृद् गायत्री ॥

अहोरात्रसुप्रयोगोपदेशः—दिन और राति के उत्तम प्रयोग का उपदेश ॥

अभुत्स्यु प्र देव्या साकं वाचाहमश्विनोः ।

व्यावर्दे व्या मुति वि राति मर्त्येभ्यः ॥ १ ॥

अभुत्सि । जं हति । प्र । देव्या । साकम् । वाचा । अहम् ।
अश्विनोः ॥ वि । आनः । देवि । आ । मतिम् । वि ।
रातिम् । मर्त्येभ्यः ॥ १ ॥

भाषार्थ—(अहम्) मैं (देव्या) उत्तम गुण वाली (वाचा साकम्)
वाणी के साथ (अश्विनोः) दोनों अश्वी [व्यापक दिन राति] के बीच (उ)
अवश्य (प्र अभुत्सि) जागा हूं । (देवि) हे देवी ! [प्रकाशमान उषा—म०
२] तू ने (आ) आकर (मर्त्येभ्यः) मनुष्यों के लिये (मतिम्) बुद्धि और
(रातिम्) धन को (वि) विशेष करके (वि आवः) खोल दिया है ॥ १ ॥

भावार्थ—मनुष्य प्रभात समय उठकर दिन राति विद्या और धन को
प्राप्त करें ॥ १ ॥

यह सूक्त ऋग्वेद में है—८।६।१६—२१ ॥

प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि सूनृते महि ।

प्र यज्ञहोतरानुषक् प्र सदायश्वो बृहत् ॥ २ ॥

१—(प्र अभुत्सि) बुध अवगमने—लुङ् । प्रबुद्धोऽस्मि (उ) अवश्यम्
(देव्या) उत्तमगुणवत्या (साकम्) सह (वाचा) वाण्या (अहम्) (अश्विनोः)
सू० १४० । म० २ । व्यापकयोः । अहोरात्रमध्ये (वि आवः) वृणोतेर्लुङ् । त्वं
विधृतां विस्तृतां कृतवती (देवि) हे द्योतमाने उषः—म० २ । (आ) आगत्य
(मतिम्) बुद्धिम् (वि) विशेषेण (रातिम्) धनम् (मर्त्येभ्यः) मनुष्याणां हिताय ॥

प्र । बोधय । उषः । अश्विनौ । प्र । देवि । सुनृते । महि ॥

प्र । यज्ञ-होतः । आनुषक् । प्र । मदाय । भवः । बृहत् ॥२॥

भाषार्थ—(उषः) हे उषा ! [प्रभात वेला] (अश्विनौ) दोनों अश्वी [व्यापक दिन राति] को (प्र बोधय) जगादे, (देवि) हे देवी ! [व्यवहार कुशल] (सुनृते) हे अन्न वाली ! (महि) हे पूजनीया ! [उषा] (प्र=प्र बोधय) जगादे । (यज्ञहोतः) हे उत्तम संगति देने वाले ! [विद्वान्] (आनुषक्) लगातार (प्र) जगादे, (बृहत्) बड़े (भवः) यश के लिये और (मदाय) आनन्द के लिये (प्र) जगादे ॥ २ ॥

भाषार्थ—मनुष्य प्रातःकाल उठकर सदा अन्न आदि धन, कीर्ति और आनन्द के लिये प्रयत्न करें ॥ २ ॥

यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे ।

आ हायमश्विनो रथो वर्तिर्याति नृपाय्यम् ॥ ३ ॥

यत् । उषः । यासि । भानुना । सम् । सूर्येण । रोचसे ॥ आ ।

ह । अयम् । अश्विनोः । रथः । वर्तिः । याति । नृ-पाय्यम् ३

भाषार्थ—(उषः) हे उषा ! [प्रभात वेला] (यत्) जब तू (भानुना) प्रकाश के साथ (यासि) चलनी है, [तब] तू (सूर्येण) सूर्य के साथ (सम्) ठीक प्रकार से (रोचसे) रुचती है [प्रिय लगती है] [तभी] (अश्विनोः)

८—(प्र बोधय) जागरय (उषः) हे प्रभातवेले (अश्विनौ) व्यापकौ । अहोरात्रौ (प्र) प्र बोधय (देवि) हे व्यवहारकुशले (सुनृते) अथ० ३ । १२ । २ । सुनृता अन्ननाम—निघ० २ । ७, अर्शआद्यच्, टाप् । हे अन्नवति (महि) हे महति (प्र) प्र बोधय (यज्ञहोतः) हे उत्तमसंगतिदातः । विद्वान् (आनुषक्) अथ० ४ । ३२ । १ । अनुषक्त निरन्तरम् (प्र) प्र बोधय (मदाय) हर्षाय (भवः) विभक्तैर्लुक् । भवसे । यशसे (बृहत्) बृहते । महते ॥

३—(यत्) यदा (उषः) हे प्रभातवेले (यासि) गच्छसि (भानुना) दीप्तया सह (सम्) सम्यक् (सूर्येण) (रोचसे) रुचिरा प्रिया भवसि (आ याति) आगच्छति (ह) अपि (अयम्) दृश्यमानः (अश्विनोः) व्यापकयोः ।, अहो-

होनों अश्वी [व्यापक दिन राति] का (अयम्) यह (रथः) रथ (ह) भी (नृपाय्यम्) नरों [नेताओं] से पालने योग्य (वर्तिः) घर पर (आ याति) आता है ॥ ३ ॥

— भाषार्थ—जैसे उषा सूर्य के साथ सदा शोभायमान होती है, वैसे ही मनुष्य ज्ञान के साथ शोभा बढ़ाकर दिन राति को सफल करें ॥ ३ ॥

यदापीतासो अंशवो गावो न दुह ऊर्ध्वभिः ।

यद्वा वाणीरनूषतु प्र देव्यन्तो अश्विना ॥ ४ ॥

यत् । आ-पीतासः । अंशवः । गावः । न । दुहे । ऊर्ध्व-भिः ॥

यत् । वा । वाणीः । अनूषत । प्र । देव-यन्तः । अश्विना ॥ ४ ॥

प्र व्युम्नाय प्र शवसे प्र नृषाह्याय शर्मणे । प्र दक्षाय प्रचे-
तसा ॥ ५ ॥

प्र । व्युम्नाय । प्र । शवसे । प्र । नृ-सहाय । शर्मणे ॥

प्र । दक्षाय । प्र-चे-तसा ॥ ५ ॥

यन्नूनं धीभिरश्विना पितुर्योना निषीदयः । वद्वा सुम्नेभि-
रुवया ॥ ६ ॥

यत् । नूनम् । धीभिः । अश्विना । पितुः । योना ।

नि-सीदयः ॥ यत् । वा । सुम्नेभिः । उक्थया ॥ ६ ॥

भाषार्थ—(यत्) जब (आपीतासः) अच्छे प्रकार पीये हुये (अंशवः) बटे हुये सोम रस [तत्त्व रस] (दुहे) दुहे जाते हैं, (गावः न) जैसे गौरों

रात्रयोः (रथः) (वर्तिः) सू० १४१ । १ । गृहम् (नृपाय्यम्) श्रुदक्षिस्पृ-
हि० । उ० ३ । ६६ । पा रक्षणे—आय्य । नृभिर्नृभिः पातव्यं पालनीयम् ॥ ३ ॥

४—(यत्) यदा (आपीतासः) समन्तात् कृतपानाः (अश्वः) अंश
विभाजने—कु । विभक्ताः सोमाः । तत्त्वरसाः (गावः) घेनवः (न) यथा (दुहे)

(ऊधमिः) लेवाओं [अयनों, थनों के स्थानों] से [दूध दुहती हैं] । (वा) और (यत्) जब (देवयन्तः) दिव्य गुण चाहने वाले लोग (वाणीः) वाणियों से (अश्विना) दोनों अश्वी [व्यापक दिन राति] को (प्र) अच्छे प्रकार (अनूषत) सराहते हैं ॥ ४ ॥

[तव] (प्रचेतसा) हे उत्तम ज्ञान देने वाले ! तुम दोनों (धुम्नाय) चमकते हुये यश के लिये (प्र = प्रभवथः) समर्थ होते हो, (शवसे) बल के लिये (प्र) समर्थ होते हो, (नृपहाय) मनुष्यों को सहाय देने वाले (शर्मणे) शरण [घर आदि] के लिये (प्र) समर्थ होते हो, और (दत्ताय) चतुराई [कार्य कुशलता] के लिये (प्र) समर्थ होते हो ॥ ५ ॥

(यत्) क्योंकि (नूनम्) अवश्य, (उक्थ्या) हे बड़ाई योग्य (अश्विना) दोनों अश्वी [व्यापक दिन राति] (धीभिः) कर्मों के साथ, (वा) और (यत्) क्योंकि (सुम्नेभिः) अनेक सुखों के साथ (पितुः) पालन करने पुरुष के (योना) घर में (निषीदथः) दोनों बैठते हो ॥ ६ ॥

भावार्थ—मनुष्य दिन राति तत्त्व का ग्रहण करके यशस्वी, बलवान् और कार्य कुशल होंगे ॥ ४—६ ॥

अथ० १० । १० । ३२ । प्रपूर्यन्ते (ऊधमिः) आपीनैः । क्षीराधारैः (यत्) यदा (वा) समुच्चये (वाणीः) वाणीभिः (अनूषत) गू स्तवने, लडर्थे लुङ् । नुवन्ति । स्तुवन्ति (प्र) प्रकर्षेण (देवयन्तः) देवान् दिव्यगुणान् कामयमानाः पुरुषाः (अश्विना) व्यापकौ । अहोरात्रौ ॥

५—(प्र) प्रभवथः । समर्थौ भवथः (धुम्नाय) द्योतमानाय यशसे (प्र) प्रभवथः (शवसे) बलाय (प्र) प्रभवथः (नृपहाय) शकिसहोश्च । पा० ३ । १ । ६६ । यह दमायां—यत्, संहितायां दीर्घः । नृणां सहायाय (शर्मणे) गृहाय । शरणाय (प्र) प्रभवथः (दत्ताय) दत्तत्वाय । कार्यकुशलत्वाय (प्रचेतसा) हे प्रकृष्टज्ञानप्रदौ ॥

६—(यत्) यतः (नूनम्) अवश्यम् (धीभिः) कर्मभिः—निघ० २ । १ । (अश्विना) हे व्यापकौ । अहोरात्रौ (पितुः) पालनकर्तुः पुरुषस्य (योना) योनौ । गृहे (निषीदथः) उपविशथः । निवसथः (यत्) यतः (वा) समुच्चये (सुम्नेभिः) सुम्नैः । अनेकसुखैः (उक्थ्या) हे उक्थ्यौ । प्रशस्यौ ॥

सूक्तम् १४३ ॥

१—६ ॥ १—७, ६ आश्विनौ देवते; ऽ क्षेत्रपतिर्देवता ॥ १, ३, ६—६ निचत्
त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ४ भुरिक् पङ्क्तिः; ५ विराट् त्रिष्टुप् ॥

१—७, ६ राजा मातृकृत्येऽपदेशः; म० ऽ कृषिकर्मोपदेशः—१—७, ६ राजा
और मन्त्री के कर्तव्य का उपदेश; म० ऽ खेती के काम का उपदेश ॥

तं वां रथं वयमुद्या हुवेम पृथुज्रयमश्विना संगतिं गोः ।

यः सूर्या वहति बन्धुरारुर्गिवाहसं पुरुतमं वसुयुम् ॥ १ ॥

तस् । वाम् । रथम् । वयम् । अद्य । हुवेम् । पृथु-ज्रयम् ।

अश्विना । वसु-गतिम् । गोः ॥ यः । सूर्याम् । वहति ।

बन्धुर-युः । गिर्वाहसम् । पुरु-तमम् । वसु-युम् ॥ १ ॥

भाषार्थ—(अश्विना) हे दोनों अश्वी ! [चतुर राजा और मन्त्री]
(वयम्) हम (अद्य) आज (वाम्) तुम दोनों के (पृथुज्रयम्) बड़ी गति
वाले, (गोः) पृथिवी की (संगतिम्) संगति करने वाले, (गिर्वाहसम्) विज्ञान
से चलने वाले, (पुरुतमम्) अत्यन्त बड़े, (वसुयुम्) बहुत धन वाले (तम्)
उस (रथम्) रमणीय रथ को (हुवेम) ग्रहण करें, (यः) जो (बन्धुरयुः)
यन्त्रों के बन्धनों वाला [रथ] (सूर्याम्) सूर्य की धूप को (वहति) प्राप्त
होता है [रखता है ॥ १ ॥

१—(तम्) (वाम्) युवयोः (रथम्) रमणीयं यानम् (वयम्)
(अद्य) संहितायां हीर्घः । अस्मिन् दिने (हुवेम) आदद्याम (पृथुज्रयम्)
अयतिर्गतिकर्मा—निघ० २ । १४, ततः—अच् । बहुगतियुक्तम् (अश्विना) अथ०
२ । २६ । ६ । अश्विना... राजानौ पुण्यकृता वित्यैतिहाहिकः—निरु० १२ । १ । हे चतुर-
राजा मातृयौ (संगतिम्) गमेः-क्लिच् । संगन्तारम् (गोः) पृथिव्याः (यः) रथः
(सूर्याम्) सूर्यस्य कान्तिम् । भानुतापम् (वहति) प्राप्नाति । धारयति (बन्धुरयुः)
मद्गुरादयश्च । उ० १ । ४१ । बन्ध बन्धने—उरच्+युजिर् योगे—ङु । यन्त्राणां
बन्धनयुक्तः (गिर्वासम्) अथ० २० । ३५ । ४ । गृ विज्ञापने विज्ञाने शब्दे च—
किप्+वह प्रापणे—कृहुन् । विज्ञानेन गतिशीलम् (पुरुतमम्) अतिशयेन
विशालम् (वसुयुम्) द्वान्द्वसो वीर्घः । बहुधनयुक्तम् ॥

भावार्थ—राजा और मन्त्री विज्ञानियों से ऐसे रथ यान विमान आदि
वनवायें जो भानुताप [सूर्य की धूप] आदि से चले ॥ १ ॥

मन्त्र १—७ ऋग्वेद में हैं—४।४४।१—७ ॥

युवं श्रियमश्विना देवता तां दिवो नपाता वनथुः शचीभिः ।
युवोर्वपुर्भि पृक्षः सचन्ते वहन्ति यत् कुकुहासो रथे वाम् २॥
युवम् । श्रियम् । अश्विना । देवता । ताम् । दिवः ।
नपाता । वनथुः । शचीभिः ॥ युवोः । वपुः । अभि । पृक्षः ।
सचन्ते । वहन्ति । यत् । कुकुहासः । रथे । वाम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—(दिवः) हे व्यवहार के (नपाता) न गिराने वाले
(अश्विना) दोनों अश्वी ! [चतुर राजा और मन्त्री] (देवता) दिव्य गुण
वाले (युवम्) तुम दोनों (शचीभिः) बुद्धियों से (ताम्) उस (भियम्)
लक्ष्मी का (वनथुः) सेवन करते हो, (यत्) जिस [लक्ष्मी] के लिये (पृक्षः)
अनेक अन्न (युवोः) तुम दोनों के (वपुः) शरीर को (अभि) सब ओर से
(सचन्ते) सींचते हैं और [जिस के लिये] (कुकुहासः) बड़े विद्वान् लोग
(वाम्) तुम दोनों को (रथे) रमणीय रथ में (वहन्ति) ले चलते हैं ॥ २ ॥

२—(युवम्) युवाम् (भियम्) लक्ष्मीम् (अश्विना) म० १ । हे चतुर-
राजमन्त्रिणौ (देवता) ऋग्वेदशि० । उ० ३ । ११० । दिवु क्रीडादिषु-अतच्,
विभक्तेराकारः । दिव्यगुणसम्पन्नौ (ताम्) वक्ष्यमाणाम् (दिवः) व्यवहारस्य
(नपाता) अथ० १ । १३ । २ । नञ्+पत अघःपतने णिच्—किप्, नञः
प्रकृतिभावः । न पातयितारौ । रक्षकौ (वनथुः) संभजेथे । संसेवेथे (शचीभिः)
प्रक्षामिः (युवोः) युवयोः (वपुः) शरीरम् (अभि) अभितः (पृक्षः) पृची
सम्पर्क—किप्, धातोः कुगागमः, बहुवचनम् । पृक्षः अन्ननाम—निघ० २ । ७ ।
अन्नानि (सचन्ते) पच सेचने । सिञ्चन्ति (वहन्ति) नयन्ति (यत्) यस्यै
श्रिये (कुकुहासः) क+कु+हन हिंसागत्योः—इप्रत्ययः । कस्य सुखस्य कुं
भूमिं स्थानं प्राप्नोतीति ककहः, असुगागमः । ककह इति महन्नम—निघ० ३ । ३ ।
महान्तो विद्वांसः—दयानन्दभाष्ये ऋ० १ । ४६ । ३ (रथे) रमणीये शाने
(वाम्) युवाम् ॥

भाषार्थ—विद्वान् लोग विज्ञान द्वारा यान विमान आदि बनाकर राज्य की सम्पत्ति बढ़ावें और अन्न आदि प्राप्त करके राजा और प्रजा को सुखी करें ॥ २ ॥

को वासुद्या करते रातहव्य ऊतये वा सुतपेयाय वाकैः ।
 ऋतस्य वा वनुषे पुर्व्याय नमो येमानो अश्विना ववर्तत् ॥ ३
 कः । वाम् । अद्य । करते । रात-हव्यः । ऊतये । वा ।
 सुत-पेयाय । वा । अकैः ॥ ऋतस्य । वा । वनुषे । पुर्व्याय ।
 नमः । येमानः । अश्विना । आ । ववर्तत् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—(अश्विना) हे दोनों अश्वी ! [चतुर राजा और मन्त्री]
 (रातहव्यः) देने योग्य को दिये हुये (कः) कौन पुरुष [अर्थात् प्रत्येक मनुष्य]
 (ऊतये) रक्षा के लिये (वा वा) और (सुतपेयाय) निचोड़े हुये सोम [तत्त्व
 रस] पीने के लिये (वाम्) तुम दोनों के निमित्त (अकैः) सत्कारों के साथ
 (अद्य) आज (करते) कर्म करता है, (वा) और (ऋतस्य) सत्य ज्ञान के
 (पुर्व्याय) प्राचीनों में रहने वाले (वनुषे) सेवन के लिये (नमः) अन्न को
 (येमानः) खींचता हुआ [कौन अर्थात् प्रत्येक मनुष्य] (आ ववर्तत्) बर्ताव
 करता है ॥ ३ ॥

भाषार्थ—प्रत्येक मनुष्य चतुर राजा और मन्त्री का आदर करके
 पूर्वजों के समान सत्य ज्ञान बढ़ाकर अन्न आदि प्राप्त करे ॥ ३ ॥

हिरण्ययेन पुरुषु रयैनेमं युजं नासुत्योप यातम् ।

३—(कः) प्रत्येकपुरुषः, इत्यर्थः (वाम्) युवाभ्याम् (अद्य) म० १
 (करते) कर्म प्रयत्नं करोति (रातहव्यः) दत्तदातव्यः (ऊतये) रक्षणाय
 (वा वा) समुच्चये (सुतपेयाय) निष्पादितस्य सोमस्य तत्त्वरसस्य पानाय
 (अकैः) सत्कारैः (ऋतस्य) सत्यज्ञानस्य (वा) समुच्चये (वनुषे) जने-
 कसिः । उ० २ । ११५ । वन संभक्तौ—उसि । संभजनाय । सेवनाय (पुर्व्याय)
 प्राचीनेषु भवाय (नमः) अन्नम् (येमानः) यमेः कानच्, एत्वमभ्यासलोपश्च,
 चित्त्वादन्तोदात्तः । नियच्छन् । आकर्षन् । गृह्णन् (अश्विना) म० १ (आ)
 (ववर्तत्) वर्तते ॥

पिबायु इन्मधुनः सोम्यस्य दधयो रत्नं विधुते जनाय ॥ ४ ॥

हिरण्ययेन । पुरुभू इति पुरु-भू । रथेन । इमम् । युज्जम् ।
नासत्या । उप । यातम् ॥ पिबायः । इत् । मधुनः । सोम्यस्य ।
दधयः । रत्नम् । विधुते । जनाय ॥ ४ ॥

भाषार्थ—(पुरुभू) हे पालन व्यवहारों के विचारने वाले ! (नासत्)
हे सदा सत्य स्वभाव वाले दोनों ! [राजा और मन्त्री] (हिरण्ययेन) ज्योति
रखने वाले [अग्नि आदि प्रकाश बल से चल्ते वाले] (रथेन) रमणीय रथ
से (इमम्) इस (युज्जम्) यज्ञ [देवपूजा, संगति करण और दान व्यवहार]
को (उप) आदर से (यातम्) प्राप्त होओ, और (मधुनः) उत्तम ज्ञान के
(सोम्यस्य) सोम [तत्त्व रस] में उत्पन्न रस का (इत्) अवश्य (पिबायः)
पान करो और (विधुते) पुरुषार्थ करते हुये (जनाय) मनुष्य के लिये
(रत्नम्) रत्न [सुन्दर धन] (दधयः) दान करो ॥ ४ ॥

भावार्थ—राजा और मन्त्री के सुप्रबन्ध से सब प्रजा गण विज्ञान के
साथ शिल्प विद्या द्वारा रत्नों का संग्रह करके सुखी होंवें ॥ ४ ॥

आ नौ यातं दिवो अच्छा पृथिव्या हिरण्ययेन सुवृत्ता रथेन ।
मा वामुन्ये नि यमन् देवयन्तुः सं यद् ददे नामिः पूर्या वाम्प
आ । नुः । यातम् । दिवः । अच्छ । पृथिव्याः । हिरण्ययेन ।

४—(हिरण्ययेन) तेजोमयेन । अग्न्यादिप्रकाशबलयुक्तेन (पुरुभू)
पृथिव्याधि० । उ० १ । २६ । पृ पालनपूरणयोः—कु + भू चिन्तने—डु । हे
पुरुषां पालनव्यवहाराणां भावयितारौ चिन्तयितारौ (रथेन) रमणीयेन यानेन
(इमम्) (यज्ञम्) देवपूजासंगतिकरणदानव्यवहारम् (नासत्या) सू० १४० ।
१ । हे सदा सत्यस्वभावौ (उप) पूजायाम् (यातम्) प्राप्तुम् (पिबायः)
लेटि रूपम् । पानं कुरुतम् (इत्) अवश्यम् (मधुनः) निश्चितज्ञानस्य । मधु-
ज्ञानस्य (सोम्यस्य) सोमे तत्त्वसे भवस्य रसस्य (दधयः) दध दाने धारणे
च—लेट् । दत्तम् (रत्नम्) रमणीयं धनम् (विधुते) विध विधाने—शतृ ।
पुरुषार्थं कुर्वते (जनाय) मनुष्याय ॥

सु-वृता । रथेन ॥ मा । वाम् । अन्ये । नि । यमन् । देव-
यन्तः । सस् । यत् । ददे । नाभिः । पूर्व्या । वाम् ॥ ५ ॥

भाषार्थ—[हे राजा और मन्त्री !] (दिवः) आकाश से और (पृथिव्याः) भूमि से (हिरण्ययेन) ज्योति रखने वाले [अग्नि आदि प्रकाश बल से चलने वाले], (सुवृता) शीघ्र घूमने वाले [चलने वाले] (रथेन) रमणीय रथ [विमान आदि वाहन] द्वारा (अच्छ) अच्छे प्रकार (नः) हम को (आ यातम्) दोनों प्राप्त होओ, (अन्ये) अन्य (देवयन्तः) पीड़ा देने हुये लोग (वाम्) तुम दोनों को (मा नि यमन्) न रोकें, (यत्) क्योंकि (पूर्व्या) पुरानी (नाभिः) बन्धुता ने (वाम्) तुम दोनों को (सं ददे) बांधा है ॥ ५ ॥

भावार्थ—राजा और मन्त्री आकाश और पृथिवी पर चलने वाले योन विमानों द्वारा शत्रुओं से बेरोक होकर प्रजा की रक्षा करें ॥ ५ ॥

नू नौ रुयिं पुरुवीरं बृहन्तं दस्त्रा मिमांयामुभयैष्वस्मे । नरो
यद् वामशिवना स्तोममावन्सुधस्तुतिमाजमूलहासो अगमन् ६
नु । नः । रुयिम् । पुरु-वीरम् । बृहन्तम् । दस्त्रा । मिमा-
याम् । उभयैषु । अस्मे इति ॥ नरः । यत् । वाम् । अश्विना ।
स्तोमम् । आवन् । सुध-स्तुतिम् । आज-मूलहासः । अगमुर्द

भाषार्थ—(दस्त्रा) हे दर्शन योग्य (अश्विना) दोनों अश्वा ।

५—(आ) (नः) अस्मान् (यातम्) प्राप्तम् (दिवः) आकाशम् (अच्छ) साहितिको दीर्घः । सम्यक् (पृथिव्याः) भूमेः सकाशात् (हिरण्ययेन) म० ४ (सुवृता) सुवर्तनशीलेन । शीघ्रगामिना (रथेन) विमानादियानेन (वाम्) युवाम् (अन्ये) इतरे (मा नि यमन्) न निगृह्यन्तु (देवयन्तः) दिव अर्दने = पीड़ने चुरादिः - शतृ । पीडयन्तो जनाः (यत्) यतः (सं ददे) ददातेर्लिट् । सन्दानं बन्धनम् । बन्धे कृतवती (नाभिः) नहो भश्च । उ० ४ । १२६ । एह बन्धने—इह, हस्य भः । बन्धुत्वम् (पूर्व्या) पूर्व्यं पुराणनाम — निघ० ३ । २७, प्राचीना (वाम्) युवाम् ॥

६—(नु) सद्यः (नः) अस्मभ्यम् (रुयिम्) धनम् (पुरुवीरम्) बहवो

[चतुर राजा और मन्त्री] (नः) हमारे लिये [अर्थात्] (उभयेषु) दोनों राजजन और प्रजाजन वाले (अस्मे) हम लोगों में (पुरुवीरम्) बहुत वीरों के प्राप्त कराने वाले (बृहन्तम्) बड़े (रयिम्) धन को (तु) शीघ्र (मिमाथाम्) नापो [दो] । (यत्) क्योंकि (नरः) नरों [नेता लोगों] ने (वाम्) तुम दोनों के लिये (स्तोमम्) प्रशंसा की (आवन्) रक्षा की है, और (आजमीलहासः) उन घृत आदि पदार्थों और सुवर्ण आदि धन वालों ने (सधस्तुतिम्) परस्पर कीर्ति (अगमन्) पाई है ॥ ६ ॥

भावार्थ—राजा और मन्त्री राजजन और प्रजाजनों का सत्कार करके परस्पर कीर्ति बढ़ावें ॥ ६ ॥

इहेह यद् वां समुना पपुक्षे सेयमुस्मे सुसुतिर्वाजरत्ना । उरु-
ष्यतै जरितारै युवं ह श्रितः कासौ नासत्या युवद्रिक् ॥ ७ ॥

इह-इह । यत् । वाम् । समुना । पपुक्षे । सा । इयम् । अस्मे
इति । सु-सुतिः । वाज-रत्ना ॥ उरुष्यतैश्च । जरितारैश्च ।
युवम् । हु । श्रितः । कासः । नासत्या । युवद्रिक् ॥ ७ ॥

भावार्थ—(वाजरत्ना) हे ज्ञान और धन रखने वाले दोनों ! [राजा-
और मन्त्री] (इहेह) यहां [राज्य में] ही (यत्) जो (सुसुतिः) सुसुति

श्रीरा यस्मात्तम् (बृहन्तम्) महान्तम् (दस्त्रा) अथ० ७ । ७३ । २ । दस्त्र दर्शने-
रक् । दर्शनीयौ—निरु० ६ । २६ (मिमिथाम्) माङ् माने-लोड् । परिमितं कुरुतम् ।
दत्तम् (उभयेषु) द्वित्वविशिष्टेषु । राजप्रजाजनयुक्तेषु (अस्मे) अस्मासु (नरः)
नेतारः (यत्) यतः (वाम्) युवाभ्याम् (अश्विना) म० १ । हे चतुरराजा-
त्मा । तौ (स्तोमम्) प्रशंसाम् (आवन्) अथ० ४ । २ । ६ अव रक्षणगत्यादिषु—
लङ् । अरक्षन् (सधस्तुतिम्) सध = सह । परस्परकीर्तिम् (आजमीलहासः)
आ + अञ्जू व्यक्तिप्रक्षणकान्तिगतिषु-घञर्थे क + मिह सेचने—क । आजम्
आज्यं घृतम् । मीलहं धनम्—निघ० २ । ७ । घृतादिपदार्थः सुवर्णादिधनं च
येषां ते तथाभूताः (अगमन्) अगमन् । प्राप्नुवन् ॥

७—(इहेह) अस्मिन्नेव राज्ये (यत्) या सुसुतिः (वाम्) युवाम्
(समना) समान + अन प्राणने—अच्, वा मन ज्ञाने—अच् । समनं समन-

(४, ५५३)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० १४३ [७३१]

[उत्तम बुद्धि] (समता) एक से मन वाले (वाम्) तुम दोनों को (पपृक्षे) छूती है, (सा इयम्) वही [सुमति] (अस्मे) हम में [होवे] । (नासत्या) हे सदा सत्य स्वभाव वाले ! [धर्मात्माओं] (युवम्) तुम दोनों (ह) ही (जरितारम्) गुणों की व्याख्या करने वालों की (उरुष्यतम्) रक्षा करो, (अशितः) [तुम्हारा] आश्रय लिये हुये [कामः] मेरा मनोरथ (युवद्विक्) तुम दोनों की ओर देखने वाला है ॥ ७ ॥

भावार्थ—राजा और मन्त्री अपनी हितकारिणी बुद्धि का राज्य में विस्तार करके प्रजा की रक्षा करें ॥ ७ ॥

यह मन्त्र अग्वेद ४ । ४३ । ७ में भी है ॥

मधुमतीरोषधीर्द्यावु आपो मधुमन्त्रो भवत्वन्तरिक्षम् ।

क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान्नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम ॥ ८ ॥

मधु-मतीः । ओषधीः । द्यावः । आपः । मधु-मत् । नुः ।

भुवतु । अन्तरिक्षम् ॥ क्षेत्रस्य । पतिः । मधु-मान् । नुः ।

अस्तु । अरिष्यन्तः । अनु । एनम् । चरेम् ॥ ८ ॥

भावार्थ—(नः) हमारे लिये (ओषधीः) ओषधियां [चावल जौ आदि अन्न], (द्यावः) सूर्य आदि के प्रकाश, (आपः) जल [मेघ, कूपे, नदी आदि के] (मधुमतीः) मधुर आदि गुण वाले [होवें], (अन्तरिक्षम्)

नाद्धा सम्मानाद्धा—निरु० ७ । १६ । समानमनस्कौ (पपृक्षे) पृथ्वी संपर्चने । पृक्ते संयोजयति (सा) (इयम्) (अस्मे) अस्मासु (सुमतिः) शोभना प्रज्ञा (वाक्-रक्षा) वाजो बोधी रत्नं धनं च ययोस्तौ । हे ज्ञानेन धनेन च युक्तौ (उरुष्यतम्) उरुष्यती रक्षाकर्मा—निरु० ५ । २३ । रक्षतम् (जरितारम्) स्तोत्रारं गुणानां व्याख्यातारम् (युवम्) युवाम् (ह) एव (अशितः) आश्रितः । युवयोराश्रयमृतः (कामः) मनोरथः (नासत्या) म० ४ । हे सदा सत्यस्वभावी । धर्मात्मानौ (युवद्विक्) वशिष्ट प्रेक्षणे—किप्, ऋकारस्य रिकारः । युवां पश्यन् ॥

८—(मधुमतीः) मधुमत्यः । मधुरादिगुणयुक्ताः (ओषधीः) ओषधयः । मीहियवादिभोज्यपदार्थाः (द्यावः) सूर्यादिप्रकाशाः (आपः) मेघकूपनद्यादि-जलानि (मधुमत्) मधुरादिगुणयुक्तम् (नः) अस्मभ्यम् (भवतु) (अन्त-

आकाश (मधुमत्) मधुर आदि गुण वाला (भवतु) होवे । (क्षेत्रस्य पतिः)
खेत का स्वामी [किसान] (नः) हमारे लिये (मधुमान्) मधुर आदि गुण
वाला (अस्तु) होवे, (अरिभ्यन्तः) बिना कष्ट उठाये हुये हम (एनम् अनु)
इस [किसान] के पीछे पीछे (चरेम) चलें ॥ ८ ॥

भावार्थ—जैसे किसान खेत में बीज बोकर धूप, जल, भूमि आदि से
काम लेता हुआ अन्न उत्पन्न करके उपकार करता है, वैसे ही विद्वान् लोग सब
पदार्थों का उपयोग करके संसार का उपकार करें ॥ ८ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—४।५७।३ ॥

पुनाय्यं तदश्विना कृतं वा वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः ।
सुहस्रं शंसा उत ये गविष्टौ सर्वा इत् तान् उप याता पिबन्धयै । ८
पुनाय्यम् । तत् । अश्विना । कृतम् । वाम् । वृषभः ।
दिवः । रजसः । पृथिव्याः ॥ सुहस्रम् । शंसाः । उत । ये ।
गो-इष्टौ । सर्वा । इत् । तान् । उप । याता । पिबन्धयै ॥ ८ ॥

भावार्थ—(अश्विन) हे दोनों अश्वी ! [चतुर राजा और मन्त्री]
(तत्) वह (वाम्) तुम दोनों का (कृतम्) काम (पुनाय्याम्) बड़ाई योग्य
है [कि] पृथिव्याः) पृथिवी के और (रजसः) आकाश के (दिवः) व्यव-
हार के (वृषभः=वृषभौ) दोनों शासक [हो] । (उत) और (गविष्टौ)

रक्षाम्) आकाशम् (क्षेत्रस्य) शस्याद्युत्पत्तिस्थानस्य (पतिः) स्वामी ।
कृषाणः (मधुमान्) मधुरादियुग्युक्तः (नः) अस्मभ्यम् (अस्तु) (अरिभ्यन्तः)
निहिंसायाम्—शत्रु, नञ्जमासः । हिंसां न प्राप्नुवन्तः (अनु) अनुसृत्य
(एनम्) क्षेत्रपतिम् (चरेम) गच्छेम ॥

६—(पुनाय्यम्) श्रुदक्षिस्पृहिगृहिभ्य आय्यः । उ० ३ । ६६ । एनं व्यव-
हारे स्तुतौ च—आय्यप्रत्ययः । स्तुत्यम् (तत्) वक्ष्यमाणम् (अश्विना) म०
१ । हे चतुरराजामात्यौ (कृतम्) कर्म (वाम्) युवयोः (वृषभः) अश्विद्विभ्यां
क्ति । उ० ३ । १२३ । वृषु सेचने, वृषप्रजनैश्चर्ययोः + अमच् । सुपां सुलुक् ।
पा० ७ । १ । ३६ । द्विवचनस्य सुः । वृषभौ । ईश्वरौ । शासकौ (दिवः) दिव्य
व्यवहारादिषु—द्विवि । व्यवहारस्य (रजसः) अन्तरिक्षस्य । आकाशस्य

(४, ५५४)

अथर्ववेदभाष्ये

सू० १४३ [७३१]

विद्या की प्राप्ति में (ये) जो (सहस्रम्) सहस्र (शंताः) प्रशंसनीय गुण हैं,
(तान् सर्वान्) उन सब को (इत्) ही (पिबध्वै) [सोम अर्थात् तत्त्व रस]
पीने के लिये (उप) आदर से (यात) तुम सब लोग प्राप्त करो ॥ ६ ॥

भावार्थ—राजा और मन्त्री विज्ञान द्वारा यान विमान आदि से
पृथिवी और आकाश में मार्ग करें और सब लोग विद्या की वृद्धि से तत्त्व रस
प्राप्त करके सुखी होवें ॥ ६ ॥

यह मन्त्र ऋग्वेद में है—८। ५७। ३ [सायण भाष्य अवशिष्ट वाल-
खिल्य सू० ६। म०३] ॥

इति नवमोऽनुवाकः ॥

इति शस्त्रकारण्डं नाम विंशं कारण्डं समाप्तम् ॥

अथर्ववेदसंहिता च संपूर्णा ॥

यह शासन कारण्ड नाम बीसवां कारण्ड पूरा हुआ ॥

और अथर्ववेद संहिता भी पूरी हुई ॥

ओ३म्—शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इति भीमद्राजाधिराजप्रथितमहागुरुमहिम श्रीसयाजीरावगायकवाङ्मा-

धिष्ठित बड़ोदेपुरीगतआयण्मासदक्षिणापरीक्षायाम्-

ऋक्सामाथर्ववेदभाष्येषु लब्धदक्षिणने श्रीपरिडित

क्षेमकरणदास त्रिवेदिना

कृते अथर्ववेदभाष्ये विंशं कारण्डं समाप्तम् ॥

(पृथिव्याः) भूमेः (सहस्रम्) बहुसंख्यावाः (शंताः) स्तोमाः । स्तुत्यगुणाः
(उत) अपि च (ये) (गविष्टौ) इष गतौ, यद्वा यज द्वेषपूजासंगतिकरण-
दानेषु—क्षिन् । गोर्वाचो विद्याया इष्टौ प्राप्तौ (सर्वान्) (इत्) एव (तान्)
शंसान् स्तुत्यगुणान् (उप) पूजयाम् (यात) सांहितिको दीर्घः । प्रामुत
(पिबध्वै) अथ० २०। ८। ३। पातुम् । सोमस्य तत्त्वरसस्य पानं कर्तुम् ॥

इदं काण्डं प्रयागनगरे द्वितीयश्रावणमासे पूर्णमास्यां रक्षाबन्धनतिथौ १६७७ तमे

[सप्तसप्तत्युत्तरैकोनविंशतिशतके] विक्रमीये संवत्सरे

धीर-वीर-चिरप्रतापि-महायशस्वि

श्रीराजराजेश्वर पञ्चमजार्ज महोदयस्य सुसाम्राज्ये सुसमाप्तिमगात् ॥

शुद्धितम् - आश्विन शुक्ला ८ संवत् १६७७ वि० तारीख २० अक्टूबर
१६२० ईस्वी ॥

५२ लूकरगंज, प्रयाग
[अलाहाबाद],
आश्विन शुक्ला ८
संवत् १६७७ वि०
२० अक्टूबर १६२० ई०

सैमकरणदास त्रिवेदी
जन्म, कार्तिक शुक्ला ७ संवत् १६०५
विक्रमीय [ता० ३ नवम्बर १८४८ ईस्वी] ।
जन्म स्थान, ग्राम शाहपुर—महराज,
ज़िला अलीगढ़ ।



अथर्ववेद भाष्य सम्मतिया ॥

श्रीमती आर्य प्रतिनिधिसभा, पंजाब, गुरुदत्त भवन लाहौर
अन्तरंग सभा के प्रस्ताव संख्या ३ तिथि ६-१२-७३ की प्रति ।

ला० दीवान चन्द प्रतिनिधि आर्य समाज बटाला का प्रस्ताव, कि पं० क्षेम-
करणदास को अथर्ववेद भाष्य के लिये ४०) मासिक की सहायता दी जावे,
उपस्थित हुआ । निश्चय हुआ कि २५) मासिक की सहायता एक वर्ष के लिये दी
जावे और उसके परिवर्तन में उतने मूल्य की पुस्तकें उनसे स्वीकार की जावें ॥

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रदेश आगरा और
अवध, स्थान बुलन्दशहर, अन्तरंग सभा ता० ४ जून १८१६ ई०
के निश्चय संख्या १३ (अ) और (ब) की लिपि ।

(अ) समाजों में गश्ती चिट्ठी भेजी जावे कि वे इस भाष्य के ग्राहक बनें
तथा अन्यो को बनावें ।

(ब) सभा सम्प्रति १ वर्ष पर्यन्त १५) मासिक एक क्लर्क के लिये पं०
क्षेमकरणदास जी को देवे, जिसका बिल उक्त पंडित जी कार्यालय सभा में
भेजते रहें । इस धन के बदले में पंडित जी उतने धन की पुस्तकें सभा को देंगे ॥
लिपि गश्ती चिट्ठी श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा जो पूर्वोक्त
निश्चय के अनुसार समाजों को भेजी गयी (संख्या ५८७६ प्राप्त
२० जूलई १८१६ ई०) .

॥ ओ३म् ॥

आन्यवर, नमस्ते !

आपको ज्ञात होगा कि आर्यसमाज के अनुभवो वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं०
क्षेमकरणदास त्रिवेदी गत कई वर्षों से बड़ी योग्यता पूर्वक अथर्ववेद का
भाष्य कर रहे हैं । आपने महर्षि दयानन्द के अनुसार ही इस भाष्य को करने
का प्रयत्न किया है । भाष्य काण्डों में निकलता है अब तक ६ कांड निकल चुके
हैं । आर्यसमाज के वैदिक साहित्य सम्बन्ध में वस्तुतः यह बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य
हो रहा है । त्रिवेदी महाशय के भाष्य की जानकारी ने खूब प्रशंसा की है ।
परन्तु खेद है कि अभी आर्यसमाज में उच्च कोटि के साहित्य को पढ़ने की ओर
लोगों की बहुत कम रुचि है । जिसके कारण त्रिवेदी जी अर्थ हानि उठा रहे
हैं । भाष्य के ग्राहक बहुत कम हैं । लागत तक वसूल नहीं होती । वेदों का पढ़ना
पढ़ाना और सुनना सुनाना आर्यसमाज का प्रधान कर्त्तव्य है । अतएव सचिनय
त्रिवेदन है कि वैदिक धर्मी मात्र श्री त्रिवेदी जी को उनके महत्त्वपूर्ण गुरुतर कार्य
में साहस प्रदान करें । स्वयम् ग्राहक बनें और दूसरों को बनावें । ऐसा करने से
भाष्यकार महाशय उसे छापने की अर्थ सम्बन्धिनी चिन्ताओं से मुक्त होकर
भाष्य को और अधिक उत्तमता से सम्पादन करने की ओर प्रवृत्त होंगे ।
आशा है कि वेदों के प्रेमा उक्त प्रार्थना पर ध्यान दे इस ओर अपना कुछ
कर्त्तव्य समझेंगे । प्रत्येक आर्य के घर में वेदों के भाष्य होने चाहिये । समाज के
पुस्तकालयों में तो उनका रखना बहुत ही जरूरी है । भाष्य के प्रत्येक कांड का
मूल्य त्रिवेदी जी ने बहुत ही थोड़ा रक्खा है ।

त्रिवेदी जी से पत्र व्यवहार ५२ लूकरगंज, प्रयाग के पते पर कीजिये ।
जल्दी से भाष्य मंगाइये ।

भवदीय—

नन्दलाल सिंह,

B. Sc., LL. B. उपमन्त्री ।

चिट्ठी संख्या २७० तिथि १०—१२—१५१४। कार्यालय श्रीमती आर्य-
प्रतिनिधि सभा, संयुक्तप्रान्त आगरा व अवध, बुलन्दशहर।

आपका पत्र संख्या १०१ तथा अथर्ववेद भाष्य का तृतीय कांड मिला। इस
कृपा के लिये अनेक धन्यवाद है। वास्तव में आप आर्यसमाज के साहित्य को
समृद्धि शाली बनाने में बड़ा कार्य कर रहे हैं, आपकी विद्वत्ता और कृपा के
लिये आर्य संसार ही नहीं, प्रत्युत प्रत्येक शिक्षा सूत्र धारी को आभारी होना
चाहिये। ईश्वर आपको उत्तरोत्तर उस महत्त्व पूर्ण कार्य के सम्पादन और
समाप्त करने के लिये शक्ति प्रदान करें, ऐसे उपयोगी ग्रन्थ प्रकाशन को आप
सदैव जारी रखें यही प्रार्थना है।

भवदीय—

मदन मोहन सेठ

(एम० ए० एल० एल० बी०) मन्त्री सभा।

श्रीमान् परिडित तुलसीराम स्वामी—प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा
संयुक्तप्रान्त, सामवेद भाष्य कार, सम्पादक वेदप्रकाश, मेरठ—१८१३।

ऋग्यजुर्वेद का भाष्य श्रीस्वामीदयानन्द सरस्वती जी ने संस्कृत और भाषा
में किया है, सामवेद का श्री पं० तुलसीराम स्वामी ने किया है, अथर्ववेद के
भाष्य की बड़ी आवश्यकता थी। पं० क्षेमकरणदास जी प्रयाग निवासी ने इस
अभाव को दूर करना आरम्भ कर दिया है। भाष्य का क्रम अच्छा है। यदि
इसी प्रकार समस्त भाष्य बन गया, जो हमारी समझ में कठिन है, तो चारो
वेदों के भाषा भाष्य मिलने लगेंगे, आर्यों का उपकार होगा।

श्रीयुत महाशय नारायणप्रसाद जी—मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल बुन्दा-
वन मथुरा—उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, संयुक्तप्रान्त। आर्यमित्र आगरा,
२४ जनवरी १८१३।

श्री पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी प्रयाग निवासी, ऋक्, साम तथा अथर्ववेद
सम्बन्धी परीक्षोत्तीर्ण अथर्ववेद का भाषा भाष्य करते हैं, मैंने सम्पूर्ण [प्रथम]
कांड का पाठ किया। त्रिवेदी जी का भाष्य ऋषि दयानन्द जी की शैली के अनु-
सार भावपूर्ण संक्षिप्त और स्पष्टतया प्रकट करने वाला है कि मन्त्र के किस
शब्द के स्थान में भाषा का कौनसा शब्द आया, फिर नोटों में व्याकरण तथा
निरुक्त के प्रमाण, आरम्भ में एक उपयोगी भूमिका दे देने से भाष्य की उप-
योगिता और भी बढ़ गई है, निदान भाष्य अत्युत्तम, आर्यसमाज का पक्षपोषक
और इस योग्य है कि प्रत्येक आर्यसमाज उसकी एक २ पोथी (कापी) अपने
पुस्तकालय में रखे।

त्रिवेदी जी ने इस भाष्य का आरम्भ करके एक बड़ी कमी के पूर्ण करने का

उद्योग किया है। ईश्वर उनको बल तथा वेद प्रेमी आवश्यक सहायता प्रदान करें निर्विघ्नता के साथ वह शुभ कार्य पूरा हो... छपाई और कागज़ भी अच्छा है।

श्रीयुत महाशय मुन्शीराम जी—जिज्ञासु-मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार—पत्र संख्या ६४ तिथि २७—१०—१९६६।

अथर्ववेदभाष्य आप का दिया वा किया हुआ अवकाशानुसार तीसरे हिस्से के लगभग देख चुका हूँ आप का परिश्रम सराहनीय है।

तथा—पत्र संख्या ११४ तिथि २२—१२—१९६६।

अवलोकन करने से भाष्य उत्तम प्रतीत हुआ।

श्रीयुत पं० शिव शंकर शर्मा काव्यतीर्थ—छान्दोग्योपनिषद् भाष्यकार, वेदतत्त्वादि ग्रंथकर्त्ता वेदाध्यापक कांगड़ी गुरुकुल महाविद्यालय, आदि आदि, सम्पादक आर्यमित्र—८ फरवरी १९१३।

अथर्ववेद भाष्य। श्री पं० लोमकरण दास त्रिवेदी जी का यह परिश्रम प्रशंसनीय है। आप बहुत दिनों तक सरकारी नौकरी कर और अब वहाँ से पेंशन पाके अपना सम्पूर्ण समय संस्कृत पढ़ने में लगाने लगे। अन्ततः आपने वेदों में विशेष परिश्रम कर बड़ौदा राजधानी में वेदों की परीक्षा दी और उनमें उत्तीर्ण हो त्रिवेदी बने हैं। आप परिश्रमी और अनुभवी वृद्ध पुरुष हैं। आप का अथर्ववेदीय भाष्य पढ़ने योग्य है।

श्रीयुत पंडित भीमसेन शर्मा इटावा—उपनिषद् गीतादि भाष्यकत वेदव्याख्याता कलकत्ता यूनीवर्सिटी, सम्पादक ब्राह्मण सर्वस्व इटावा, फरवरी १९१३।

अथर्ववेदभाष्य—इसे प्रयाग के परिणित लोमकरणदास त्रिवेदी ने प्रकाशित किया है। इसका क्रम ऐसा रक्खा गया है कि प्रथम तो प्रत्येक सूक्त के प्रारम्भ में अभिप्राय यह है कि भाष्य का ढंग अच्छा है भाष्यकर्त्ता के मानसिक विचारों का मुकाब आर्यसामाजिक सिद्धान्तों की तरफ है अतएव भाष्य भी आर्य सामाजिक शैली का हुआ है। तब भी कई अंशों में स्वामी दयानन्द के भाष्य से अच्छा है। और यह प्रणाली तो बहुत ठीक है।

श्रीमती पंडिता शिवप्यारी देवी जी, १३७ हकीम देवी प्रसाद जी अतरसुइया, प्रयाग, पत्र ता० २१—१०—१९१५ ॥

श्रीयुत परिणित जी नमस्ते,

महेवा के पते से आरका भेजा हुआ पत्र और अथर्ववेद भाष्य चौथा कांड मिला, मैं ने चारों कांड पढ़े, पढ़कर अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ। आपने हम सभी पर अत्यंत कृपा की है आपको अनेकों धन्यवाद हैं। आशा है कि पांचवां कांड भी शीघ्र तैयार होकर वी० पी० द्वारा मुझे मिलेगा।

दो पुस्तक हवनमन्त्राः की जिस का मूल्य १॥ है कृपाकर भेज दीजिये मेरी एक बहिन को आवश्यकता है ।

श्रीयुत पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी—कानपुर, सम्पादक सरस्वती प्रयाग, फरवरी १९१३ ।

अथर्ववेद भाष्य—श्रीयुत क्षेमकरणदास त्रिवेदी जी के वेदार्थज्ञान और श्रम का यह फल है, कि आप ने अथर्ववेद का भाष्य लिखना और क्रम क्रम से प्रकाशित करना आरम्भ किया है... बड़ी विधि से आप भाष्य की रचना कर रहे हैं । स्वर सहित मूलमन्त्र, पद पाठ, हिन्दी में सान्वय अर्थ, भावार्थ, पाठान्तर, टिप्पणी आदि से आपने अपने भाष्य को अलंकृत किया है... आपकी राय है कि "वेदों में सार्वभौम विज्ञान का उपदेश है" । आपका भाष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती के वेदभाष्य के ढंग का है ।

श्रीयुत पण्डित गणेश प्रसाद शर्मा—संपादक भारतसुदशाप्रवर्त्तक फतेहगढ़, ता० १२ अप्रैल १९१३ ।

हर्ष की बात है कि जिस वेद भाष्य की बड़ी आवश्यकता थी, उसकी पूर्ति का आरम्भ होगया । वेद भाष्य बड़ी उत्तम शैली से निकलता है । प्रथम मन्त्र पुनः पदार्थयुक्त भाषार्थ, उपरान्त भावार्थ, और नोट में सन्देह निवृत्ति के लिये धात्वार्थ भी व्याकरण व निरुक्त के आधार पर किया गया है, वैदिक धर्म के प्रेमियों को कम से कम यह समझ कर भी ग्राहक होना चाहिये कि उनके मान्य ग्रन्थ का अनुवाद है और काम पड़े पर उस से कार्य लिया जा सकता है ।

बाबू कालिकाप्रसाद जी—सिलक मर्चेंट कमनगढ़ा, बनारस सिटी संख्या ५८६ ता० २७-३-१३ ।

आपका भेजा अथर्ववेदभाष्य को वी० पी० मिला, मैं आपका भाष्य देखकर बहुत प्रसन्न हुआ, परमेश्वर सहाय करे कि आप इसे इसी प्रकार पूर्ण करें । आप बहुत काम एक साथ न छेड़कर इसी की तरफ समाधि लगाकर पूर्ण करेंगे । मेरा नाम ग्राहकों में लिख लीजिये, जब २ अङ्क छपें मेरे पास भेज देना ।

श्रीयुत महाशय रावत हरप्रसाद सिंहजी वर्मा, मु० एकडका पोस्ट किशुनपुर जिला फतेहपुर हसवां, पत्र ६ दिसम्बर १९१३ ।

वास्तव में आप का किया हुआ "अथर्ववेद भाष्य" निष्पक्षता का आश्रय लिया चाहता है । आप ने यह साहस दिखाकर साहित्य भण्डार की एक बड़ी भारी न्यूनता को पूर्ण कर दिया है । ईश्वर आपको वेद भण्डारे के आवश्यक-कीय कार्यों के सम्पादन करने का बल प्रदान करें ।

श्रीयुत महाशय पंडित श्रीधर पाठक जी, (सभापति हिन्दी साहित्य सम्मेलन लखनऊ)—मनोविनोद आदि अनेक ग्रन्थों के कर्ता, सुपरिन्टेन्डेंट गवर्नमेंट सेक्रेटारियट, पी० डब्ल्यू० डी० श्री प्रयागराज, पत्र ता० १७-६-१३ ।

आप का अथर्ववेद भाष्य अवलोकन कर चित्त आश्चर्यतः सन्तुष्ट हुआ। आप की यह पाण्डित्य-पूर्ण कृति वेदार्थ जिज्ञासुओं को बहुत हितकारिणी होगी। आप का व्याख्याक्रम परम मनोरम तथा प्रांजल है, और ग्रन्थ सर्वथा उपादेय है।

प्रकाश लाहौर १२ आषाढ़ संवत् १८७३ (२५ जून १८१६--
लेखक श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी)

हम पाण्डित दोमकरणदास जी का धन्यवाद करने से नहीं रह सकते—स्वामी (दयानन्द) जी ने लिखा है— कि वेद का पढ़ना पढ़ाना आर्यों का परम धर्म है—इसके अनुकूल श्री पंडित जी अपना समय वेद अध्ययन में लगाते हैं—और आर्यों के लिये परम उपयोगी पुस्तक प्रकाशित करने में पुरुषार्थ करते रहते हैं—पंडित जी ने इस समय तक हवन मन्त्रों तथा रुद्राध्याय का भाषा में अर्थ प्रसिद्ध किया है—जो कि आर्यों के लिये पठन पाठन में उपयोगी हैं इस सम्बन्ध में यह अथर्ववेद के पांच कांड छपवा कर निःसन्देह बड़ा लाभ पहुंचाया है। आर्यों की जो शिक्षा प्रणाली थी उसको दृष्टे आज पाँच हजार वर्ष हो चुके हैं। ऐसे अंधेरे के समय में स्वामी जी ने वेद के ऊपर लोगों के भीतर दृढ़ विश्वास उत्पन्न करके एक धर्म का दीपक प्रकाशित किया। परन्तु हमें शोक यह है वेद के पढ़ने में आर्य लोग इतना समय नहीं लगाते जितना वे प्रबन्ध सम्बन्धी अंगुष्ठों की बातों में लगाते हैं। हमारा विश्वास है कि जब तक पं० दोमकरणदास जी जैसे वेदाभ्यासी पुरुषार्थी लोग अपना समय वेदों के खोज में न लगावेंगे तब तक आर्य समाज का कोई गौरव नहीं बढ़ सकता। अथर्ववेद के अर्थ खोजने में बड़ी कठिनता है। इसके ऊपर सायण भाष्य उपलब्ध नहीं होता, जो इस समय तक छपा हुआ है वह बड़ी अधूरी दशा में है, सूक्त के सूक्त ऐसे हैं कि जिनके ऊपर अब तक कोई टीका नहीं हुई।.....इस समय जो पांच कांडों का भाष्य पंडित जी ने प्रकाशित किया है उसके लिखने का ढंग बड़ा अच्छा और सुगम है। प्रथम उन्होंने सूक्त के तथा मन्त्रों के देवता दिये हैं—पश्चात् छन्द...विद्वानों का यही काम है कि वह जैसे जैसे साधन उनके पास हों वैसा वैसा सोचकर वेद मन्त्रों का अर्थ प्रकाशित करें। ऐसे सैकड़ों प्रयत्न जब होंगे, तब सच्चे अर्थ खोज करना आगामी विद्वानों को सरल होगा। परन्तु इस समय बड़ी भारी कठिनाई यह है कि प्रकाशित पुस्तकों के लिये पर्याप्त संख्या में ग्राहक नहीं मिलते हैं और विद्वानों के पास सम्पत्ति का अभाव होने के कारण हानि के डर से पुस्तकों का प्रकाशित करना बन्द होता है। इसलिये सब आर्यों को परम उचित है कि पंडित दोमकरणदास जी जैसे विद्वान पुरुषार्थी के ग्रन्थ मोल लेकर उनको अन्य ग्रन्थ प्रकाशित करने की आशा देते रहें। त्रिवेदी जी कोई धनाढ्य पुरुष नहीं हैं, उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति जो कुछ उनके पास है लगा दी है.....त्रिवेदी जी ने जो कुछ किया है वह वैदिक धर्म के प्रेम से प्रवृत्त होकर—इसलिये न केवल सब आर्य पुरुषों का यह कर्त्तव्य है कि इस भाष्य को मोल लेकर त्रिवेदी जी को उत्साहित करें किन्तु धनाढ्य आर्य पुरुषों का यह भी कर्त्तव्य है कि उनकी आर्थिक सहायता करें।

The VIDYADHIKARI (Minister of Education), Baroda State,
letter No 624 dated 6th February 1913.

....It has been decided to purchase 20 copies of your book entitled अथर्ववेद भाष्यम्. It has been sanctioned for use of the library and the prize distribution. Please send them ...also add on the address label "For Encouragement Fund."

RAI THAKUR DATTA RETIRED DISTRICT JUDGE, Dera Ismail Khan
Letter dated March 25th, 1914.

The Atharva Veda Bhashya:—It is a gigantic task and speaks volumes for your energies and perseverance that you should have undertaken at an advanced age. I wish I had a portion of your will-power.

Letter dated 30th April 1914.

I very much admire your labour of love and hope...the venture will not fail for want of pecuniary support.

THE MAGISTRATE OF ALLAHABAD.

Letter No 912 dated 21st May 1915.

Has the honour to request him to be so good as to send a copy each of the 1st and 3rd Kandas of Atharva Veda Bhashya to this office. for transmission to the India Office, London.

THE ARYA PATRIKA LAHORE APRIL 18 1914.

THE *Atharva Veda Bhashya* or commentary on the *Atharva Veda*

which is being published in parts by Pandit Khem Karan Das Trivedi, does great credit to his energy, perseverance and scholarship. The first part contains the Introduction and the first *Kanda* or Book. There is a learned disquisition on the origin of the Vedas and the pre-eminent position in Sanskrit literature The arrangement is good, the original *Mantra* is followed by a literal translation and their *bhavarth* or purport in Arya Bhasha. The footnotes are copious; they give the derivation and meaning in Sanskrit of the various words quoting the authority of *Ashtadhyayi* of Panini, *Unadikosha* of Dayananda, *Nirukta* of Yaska, *Yoga Darshana* of Patanjai and other standard ancient works..... The Pandit appears to have laboured very hard and the Book before us does credit to his erudition; scholars may not agree with certain of his renderings, but like a true Arya, who venerates the Vedas, he has made an honest attempt to find in the Vedic verses something which will elevate and ennoble mankind. Cross references to verses where the word has already occurred in this Veda are also given to enable the reader to compare notes. There can be no finality in Vedic interpretation, but honest attempts like these which shall render the task easy to others are commendable. We are glad to call public attention to this scholarly work, and hope that Pandit Khem Karan Das Trivedi will get the encouragement which he so richly deserves..... Our earnest request is that the revered Pandit will go on with this noble work and try to finish the whole before he is called to eternal rest.....

N.B.—The printing and paper are good, the price is moderate.

॥ ओ३सु ॥

प्रियं मां कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु ।
प्रियं सर्वस्य पश्यंत उत शुद्र उतार्य ॥ १ ॥

अथर्व० का० १६ सू० ६२ म० १ ॥

प्रिय मोहि करौ देव, तथा राज समाज में ।
प्रिय सब दृष्टि वाले, औ शूद्र और अर्य में ॥

अथर्ववेदभाष्ये ।

संहिताया मन्त्राणां वर्णानुक्रम- सूचीपत्रम्

श्रीमद्राजाधिराजप्रथितमहागुणमहिमधीरवीरचिरप्रतापि श्री
सयाजीरावगायकवाडाधिष्ठित बडोदेपुरीगतश्रावणमास-
दक्षिणापरीक्षायाम् ऋक्सामाथर्ववेदभाष्येषु
लब्धदक्षिणेन

श्री पण्डित क्षेमकरणदासत्रिवेदिना

निर्मितं प्रकाशितं च ।

Make me beloved among the Gods,
beloved among the Princes, make
Me dear to every one who sees,
to Sudra and to Aryanman.

Griffith's Trans. Atharva 19 : 62 : 1.

सर्वाधिकारः स्वाधीन एव भाष्यकारेण रक्षितः ।

अयं ग्रन्थः पण्डित काशीनाथ वाजपेयिप्रबन्धेन
प्रयागनगरे ओंकारयन्त्रालये मुद्रितः ।

प्रथमावृत्ती

संवत् १८७७ वि०

१००० पुस्तकानि

सन् १८२१ ई०

मूल्यम् १-

आनन्दसमाचार ॥ अथर्ववेद भाष्य छप गया ॥

[आप देखिये और अपने मित्रों को दिखाइये]

१—अथर्ववेदभाष्य—जिन वेदों की महिमा सब बड़े ऋषि, मुनि और योगी गाते आये हैं और विदेशी विद्वान् जिनका अर्थ खोजने में लग रहे हैं। वे अब तक संस्कृत में होने के कारण बड़े कठिन थे। ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद का अर्थ तो भाषा में हो चुका था परन्तु अथर्ववेद का अर्थ अभी तक नागरी भाषा में न था। और संस्कृत में भी भी साधारण भाष्य पूरा नहीं है। अब परमात्मा की कृपा से अथर्ववेद का भाष्य भी नागरी भाषा (हिन्दी) और संस्कृत में वेद, निघण्टु, निरुक्त, व्याकरणादि सत्य शास्त्रों के प्रमाणों सहित, प्रयाग निवासी पं० क्षेमकरणादास त्रिवेदी ने संवत् १९६६ वि० में आरंभ करके संवत् १९७७ वि० में श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त और पंजाब प्रान्त तथा विद्वान् ग्राहक महाशयों की सहायता से पूरा कर लिया।

२—इस वेद के बीसो काण्डों का भावपूर्ण-संक्षिप्त स्त्री पुरुषों के समझने योग्य अति सरल हिन्दी और संस्कृत भाष्य अल्प मूल्य में छपकर उपस्थित है। वेदप्रेमी महाशय सब स्त्री पुरुष स्वाध्याय, पुस्तकालयों और पारितोषिकों के लिये भाष्य मंगाने और जगत्पिता परमात्मा के पारमार्थिक और सांसारिक उपदेश, ब्रह्मविद्या, वैद्यकविद्या, शिल्पविद्या, राजविद्यादि अनेक विद्याओं का तरब जानकर आनन्द भोगें, छपाई उत्तम और कागज बढ़ियां रायल अठपेजी है।

३—पूरे भाष्य के स्थायी ग्राहकों में नाम लिखाने वाले सज्जन मूल्य में से २०) सैकड़ा छोड़कर भाष्य पाते हैं। डाकव्यय और कपड़े की पूरी जिल्द बंधवाई के दाम ग्राहक देते हैं।

काण्ड	१ भूमिका सहित		२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	
मूल्य	१।)		१।-	१।।-	२)	१।।=)	३)	२।)	२)	२।)	२।।)	२।)	
काण्ड	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	परिशिष्ट	मन्त्र सूची	पद सूची	योग
मूल्य	२=)	१।=)	१।)	१-)	१।-	१=)	२।=)	३।)	७।)		१-)		४३-)

सब भाष्य मन्त्र सूची सहित छप गया, पद सूची और छप रही हैं। जिसके छप जाने पर यह भाष्य सब प्रकार पूरा हो जावेगा। पुराने ग्राहक जिनके पास सब काण्ड नहीं पहुंचे और नये ग्राहक भाष्य शीघ्र मंगाने पुस्तक थोड़े रहे हैं, ऐसे बड़े ग्रन्थ का फिर छपना कठिन है, नवीन स्थायी ग्राहक बनने का नियम ३० अपरेल १९२१ तक रहेगा।

हवनमन्त्राः—धर्म शिक्षा का उपकारी पुस्तक—चारों वेदों के संगृहीत मन्त्र ईश्वर स्तुति, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, हवनमन्त्र, वामदेव्यगान सरल भाषा में शब्दार्थ सहित संशोधित बढ़िया रायल अठपेजी पृष्ठ ६०, मूल्य १-)

रुद्राध्यायः—प्रसिद्ध यजुर्वेद अध्याय १६ (नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः) ब्रह्मनिरूपक अर्थ संस्कृत, भाषा और अंग्रेजी में बढ़िया रायल अठपेजी, पृष्ठ १४८, मूल्य १=)

रुद्राध्यायः—मूलमात्र बढ़िया रायल अठपेजी, पृष्ठ १४ मूल्य ॥

वेदविद्यायें—कांगड़ी गुरुकुल में व्याख्यान दिया था। वेदों में विमान, नौका, अन्न शस्त्र निर्माण, व्यापार, सुहृत्स्थ, अतिथि, सभा ब्रह्मचर्यादि का वर्णन मूल्य - ॥

१० मार्च १९२१।

पता पं० क्षेमकरणादास त्रिवेदी

Onkar Press, Allahabad

५२, लूकरगंज, प्रयाग। (Allahabad)

॥ ओ३म् ॥

अथर्ववेदभाष्ये ॥

अथर्ववेदसंहितायाः ॥

मन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची ॥

अ

अकर्म ते स्वपसो

अग्निर्माग्निना

	कां० सू० म०		कां० सू० म०
अकर्म ते स्वपसो	१८ ३ २४	अग्न आ याज्ञगिनि	२० १०३ २
अकासो धीरो	१० ८ ४४	अग्न इन्द्रश्च दा	७ ११० १
अकुप्यन्तः कुग	२० १३० ८	अग्नये कव्यवाह	१८ ४ ७१
अक्षद्रुग्धो राज	५ १८ २	अग्नावग्निश्चर	४ ३६ ६
अक्षन्मीमदन्त	१८ ४ ६१	अग्नाविष्णु महि तद्	७ २६ ६
अक्षाः फलवती	७ ५० ६	अग्नाविष्णुमहि धाम	७ २६ २
अक्षितास्त उपसु	६ १४२ ३	अग्निमन्तश्च्छाद	६ ३ १४
अक्षितिं भूयसीम्	१८ ४ २७	अग्निमग्निं इवि	२० १०१ २
अक्षितोतिः	२० ६६ ७	अग्निमीलिष्याव	२० १०३ १
अक्षीभ्यां ते ना	२ ३३ १	अग्निराग्नीध्यात्	२० २ २
अक्षीभ्यां ते ना	२० ६६ १७	अग्निरासीन	६ ७ १६
अक्षमोपशं चित्तं	६ ३ ८	अग्निरिव मन्यो	४ ३१ २
अक्षयौ च ते मुखं	४ ३ ३	अग्निरिवैतु प्रति	५ १४ १३
अक्षयौ३ नि	५ २६ ४	अग्निरेनं क्रव्यात्	१२ ५ ७२
अक्षयौ नौ मधुसंका	७ ३६ १	अग्निर्दिव आ	१२ १ २०
अग्नन्दिन्द्र भवो	२० २० ३	अग्निर्नोः शत्रून्	३ १ १
अग्नन्दिन्द्र भवो	२० ५७ ६	अग्निर्नोः दूतः	३ २ १
अगन्मस्व१ः स्वर	१६ ६ ३	अग्निर्मय्यामोष	१२ १ १६
अगोरुधाय गवि	२० ६५ २	अग्निर्माग्निना	१६ ४५ ६

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
अग्निर्मा गोप्ता	१७	१	३०	अग्ने त्वचं	८	३	४
अग्निर्मा पातु वसु	१६	१७	१	अग्ने देवाँ इहा	२०	१०१	३
अग्निर्यव इन्द्रो	६	२	१३	अग्ने पृतनाषाद्	५	१४	६
अग्निर्वनस्पती	५	२४	२	अग्ने प्रेहि प्रथमो	४	१४	५
अग्निवासाः	१२	१	२१	अग्ने मन्युं प्रति	५	३	२
अग्निर्वै नः पदवायः	५	१८	१४	अग्ने यत्तेऽर्चिस्तेन	२	१६	३
अग्निर्होताध्वयु	१८	४	१५	अग्ने यत्ते तपस्तेन	२	१६	१
अग्निष्टे नि	६	१११	२	अग्ने यत्तेतेजस्ते	२	१६	५
अग्निष्वात्ताः पि	१८	३	४४	अग्ने यत्ते शोचिस्ते	२	१६	४
अग्निस्तफमा	५	२२	१	अग्नेयत्तेहरस्तेन	२	१६	२
अग्निं ते वसुवन्त	१६	१८	१	अग्नेरिवास्य बह	६	२०	१
अग्निं दूतं धृषी	२०	१०१	१	अग्नेरिवास्य बह	७	४५	२
अग्निं ब्रूमे	११	६	१	अग्नेर्घासो अपां	६	७	६
अग्निं होतारं	२०	६७	३	अग्नेर्भागस्थ	१०	५	७
अग्निं होत्रं च	११	७	६	अग्नेर्मन्वे प्रथम	४	२३	१
अग्निः क्रव्याद्	१२	५	४१	अग्ने वर्म परि	१८	२	५६
अग्निः पचनस्तु	१२	३	२४	अग्ने वैश्वानर	२	१६	४
अग्निः परेषु धाम	६	३६	३	अग्ने सधं महते	७	७३	१०
अग्निः पूर्वे आ	१	७	४	अग्नेष्टे प्रोणमस्तु	६	२	१३
अग्निः प्राणान्सं	३	३१	६	अग्ने समिधमाहा	१६	६४	१
अग्निः प्रातः	६	४७	१	अग्ने सपत्नानघ	१३	१	३१
अग्निः सूर्यश्च	५	२८	२	अग्ने सहस्वान	११	१	६
अग्निः सुचो	५	२७	५	अग्ने स्वाहा	५	२७	१२
अग्नी रक्षस्तपतु	१२	३	४३	अग्नेः प्रजातं परि	१६	२६	१
अग्नी रक्षांसि	६	३	२६	अग्नेः शरीरमसि	६	२	२८
अग्नीषोमा पथि	१८	२	५३	अग्नेः सांतपनस्या	६	७६	२
अग्नीषोमाभ्यां	१२	४	२६	अग्नौ तुषानावप	११	१	२६
अग्नीषोमावद्	६	६	१४	अग्नौ सूर्येचन्द्रम	११	५	१३
अग्ने अक्रव्या	१२	२	४२	अग्न्याधेय	११	७	८
अग्ने अज्ज्ञा वदेह	३	२०	२	अग्रमेन्पोषधीनां	४	१६	३
अग्ने चरुयज्ञिय	११	१	१६	अघद्विष्टा	२	७	१
अग्ने जनिष्ठा	११	१	३	अघमस्तवघ	१०	१	५
अग्ने जातान्प्रणुदा	७	३४	१	अघविषा निपत	१२	५	२६
अग्ने जायस्वादि	११	१	१	अघशंस दुःशंसा	१२	२	२
अग्ने तपस्तप्यामह	७	६१	२	अघायतामपि	१०	६	१
				अथाश्वस्येदं	१०	४	१०

कां० सू० म०		कां० सू० म०	
अधोरचक्षुरपति	१४ २ १७	अजोह्यश्नेरज	४ १४ १
अघं पठ्यमाना	१२ ५ ३२	अजोश्चयज	६ ५ १६
अघ्ये पदवीर्भेव	१२ ५ ५८	अजं च पचत	६ ५ ३७
अघ्ये प्र शिरो ज	१२ ५ ६०	अजःपक्षःस्वर्गे	६ ५ १८
अङ्गभेदमङ्गज्वरं	६ ८ ५	अङ्गते व्यङ्गते	१८ ३ १८
अङ्गभेदो अङ्गज्व	५ ३० ६	अतन्द्रो यास्यन्	१३ २ २८
अङ्गादङ्गात् प्र	१० ४ २५	अतिथीन्प्रति	६ ६(५) ८
अङ्गादङ्गाद्वय	१४ २ ६६	अतिद्रव श्वानौ	१८ २ ११
अङ्गिरसो नः	१८ १ ५८	अतिधन्वान्यत्य	७ ४१ १
अङ्गिरसामयनं	१८ ४ ८	अतिधावताति स	५ ८ ४
अङ्गिरोभिर्यज्ञिभ्यै	१८ १ ५६	अतिनिहो अतिस्व	२ ६ ५
अङ्गेअङ्गे लोमि	२० ६६ २३	अतिमात्रमवर्धन्त	५ १६ १
अङ्गेअङ्गे लोमि	२ ३३ ७	अति विश्वान्यरु	१६ ४६ २
अङ्गेअङ्गे शोचिषा	१ १२ २	अतिसृष्टो अपां	१६ १ १
अङ्गेभ्यस्त उदरा	११ २ ६	अतीदु शक्र ओह	२० ६२ ११
अचिकित्वां	६ ६ ७	अतीवयो मरुतो	२ १२ ६
अचिक्रदत्स्वपा	३ ३ १	अतो वै बृहस्पति	१५ १० ४
अच्छ त्वा यन्तु	३ ४ ३	अतो वै बृहस्पति	१५ १० ५
अच्छा हि त्वा सह	२० १०३ ३	अतो वै ब्रह्म	१५ १० ३
अच्छायमेति	५ २ ७५	अत्यर्धर्चपरस्व	२० १३१ १६
अच्छा न इन्द्रं यश	६ ३६ २	अतःपरिज्मन्ना	२० ७० ५
अच्छा महन्द्रं मत	२० १७ १	अत्राह गोरमन्व	२० ४१ ३
अच्युतच्युत सम	५ २० १२	अत्रिवद् वःक्रिमयो	२ ३२ ३
अजमनजिम	४ १४ ६	अत्रिवद् वःक्रिमयो	५ २३ १०
अजस्त्रिनाके त्रि	६ ५ १०	अत्रैनानिन्द्र	५ ८ ६
अजागार केवि	२० १२६ १७	अथ य एवंविदुषा	१५ १२ ८
अजाता आसन्न	११ ८ ५	अथयस्यान्नात्यो	१५ १३ ११
अजारोह सुकृतां	६ ५ ६	अथर्वाणो अबध्न	१० ६ २०
अजिराधिराजौ	७ ७० ३	अथर्वाणं पितरं	७ २ १
अजैषं त्वा संक्षि	७ ५० ५	अथर्वा पूर्णां चम	१८ ३ ५४
अजैष्माद्यासना	१६ ६ १	अथा तेअन्तमा	२० ५७ ३
अजो अग्निरज	६ ५ ७	अथा ते अन्तमा	२० ६८ ३
अजो भागस्तप	१८ २ ८	अथोश्वाअस्थि	२० १३० १६
अजो वा इदमग्ने	६ ५ २०	अथोह्यञियञ	२० १३० १७
अजोह्यश्नेरज	६ ५ १३	अथोह्यञिति	२० १३० १८

	कां०	सू०	म०
अथो पदान् भग	१६	३४	८
अथो यानि च	१६	४८	१
अथो सर्वश्वापदं	११	६	१०
अदन्ति त्वा पिपी	७	५६	७
अदब्धो दिवि पृ	१७	१	१२
अदान्यान्सोमपा	२	३५	३
अदारसुद्भवतु	१	२०	४
अदितिः श्मश्रु	६	६८	२
अदितिर्घौरदि	७	६	१
अदितिर्मादित्यैः	१८	३	२७
अदितेर्हस्तांस्तु	११	१	२४
अदूहमित्यां पूषक	२०	१३१	१८
अदृशन्नस्य केत	१३	२	१८
अदृशन्नस्य केत	२०	४७	१५
अदेवृक्ष्यपति	१४	२	१८
अदो यत्ते हृदि भि	६	१८	३
अदो यदवधावति	२	३	१
अदो यदवरोचते	३	७	३
अदो यदेवि प्रथमा	१२	१	५५
अद्भिरन्नादीभि	१५	१४	६
अद्भ्यस्त्वा राजा	३	३	३
अद्याग्ने अद्य	४	४	६
अद्या मुरीय	८	४	१५
अद्य ते विश्वमनु	२०	१५	२
अद्य त्यं द्रप्सं	१८	१	२१
अद्य द्रप्सो अंशुम	२०	१३७	६
अधराज्जं प्र	५	२२	४
अध रात्रि तृष्ट	१६	४७	८
अध रात्रि तृष्ट	१६	५०	१
अधरोधर उत्तरे	६१	१३४	२
अधा यथा नः	१८	३	२१
अधा हीन्द्र निर्व	२०	१००	१
अधि द्वयोरदधा	२०	२५	३
अधिनो ब्रूतं पृत	४	२८	७
अधि ब्रूहि मा	८	२	७

	कां०	सू०	म०
अधि स्कन्द	५	२५	८
अधीतीरध्यगा	२	६	३
अध्यक्षो वाजी	६	२	७
अध्यर्च्यवोऽरुणं	२०	८७	१
अनच्छयेतुरगातु	६	१०	८
अनडुद्भ्यस्त्वं	६	५६	१
अनड्वानिन्द्रः	४	११	२
अनड्वान्दाधार	४	११	१
अनड्वान्दुहे	४	११	४
अनड्वान्दुहं भव	१२	२	४८
अनन्तं विततं	१०	८	१२
अनपत्यमदपप	१२	४	२५
अनभयः सन्नमा	१६	२	३
अनमित्रं नो	६	४०	३
अनयाहमोषध्या	४	१६	५
अनयाहमोषध्या	१०	१	४
अनवद्याभिः समु	२	२	३
अनवद्यैरभिद्यु	२०	७०	४
अनवद्यैरभिद्यु	२०	४०	२
अनर्शरातिं वसु	२०	५८	२
अनस्थाः पूताः	४	३४	२
अनागमिष्यतो	१६	६	१०
अनागो हत्यावै	१०	१	२६
अनाधृष्यो जात	७	८४	१
अनाप्ता ये वः	४	७	७
अनाप्ता ये वः	५	६	२
अनामयोपजिहि	२०	१२६	२०
अनास्माकस्तद्	१६	५७	५
अनु गच्छन्ति	१२	५	२७
अनु च्छय श्यामे	६	५	४
अनु जिघ्रं प्रमृ	८	६	६
अनु ते शुष्मं	२०	१०५	२
अनु त्वाग्निः	१०	१०	७
अनु त्वा रोदसी	२०	४२	२
अनु त्वा हरिणो	३	७	२

कां० सू० म०		कां० सू० म०	
अनुपूर्ववत्सां	६ ५ २६	अन्तर्धेहि जात	११ १० ४
अनु प्रत्नस्यौक	२० २६ ३	अन्तश्चरतिरो	६ ३१ २
अनु प्रत्नस्यौक	२० ६२ १५	अन्तश्चरति रो	२० ४८ ५
अनुमतिः सर्वमिदं	७ २० ६	अन्तिसन्तं न	१० ८ ३२
अनुमते निवदं	६ १३१ २	अन्नाद्येन यशसा	१३ ४ ५६
अनुमन्यतामनु	७ २० ३	अन्नाद्येन यशसा	१३ ४ ४६
अनुमतः पितुः	३ ३० २	अन्नं पूर्वा रास्तां	१६ ७ ४
अनुमता रोहिणी	१३ १ २२	अन्यमृषु	१८ १ १६
अनु सूर्यमुदयतां	१ २२ १	अन्यदोत्रे न रम	५ २२ ६
अनुस्पष्टो भवत्ये	२० ६६ ४	अन्यत्रास्मन्नुच्यतु	६ २६ ३
अनुद्वं परिह्वं	१६ ८ ४	अन्येभ्यस्त्वा	१२ २ १६
अनुद्वतः पुनरेहि	५ ३० ७	अन्वग्निरुषसामग्र	७ ८२ ४
अनुणाअस्मिन्न	६ ११७ ३	अन्वग्निरुषसा	१८ १ २७
अनुत्तरा अज	१४ १ ३४	अन्वद्य नोऽनुमति	७ २० १
अनेनेन्द्रो मणिना	८ ५ ३	अन्वांज्यं शीर्षण्य	२ ३१ ४
अन्तकाय मृत्यवे	८ १ १	अन्वारभेधा	६ १२२ ३
अन्तकोसि	१६ ५ ६	अन्विदनुमते त्वं	७ २० २
अन्तकोसि	१६ ५ २	अन्हाप्रत्यङ् ब्रा	१५ २ १८
अन्तर्दधे द्यावा	८ ५ ६	अन्हेचत्वारान्नये	८ १ २
अन्तरा द्यां च	६ ३ १५	अपःसमुद्रा	४ २७ ४
अन्तरिक्ष आसां	१ ३२ २	अपकामंस्थन्दमा	३ १३ ३
अन्तरिक्षाय स्वाहा	५ ६ ३	अपकामति	१२ ५ ६
अन्तरिक्षाय स्वाहा	५ ६ ४	अपकामन् पौरुषे	७ १०५ १
अन्तरिक्षेण पतति	६ ८० १	अपकाम नानद	१० १ १४
अन्तरिक्षेण सह	४ ३८ ६	अपक्रीताः	८ ७ ११
अन्तरिक्षेण सह	४ ३८ ७	अपचितं लोहिनी	७ ७४ १
अन्तरिक्षे वायवे	४ ३६ ३	अपचितःप्रपतत	६ ८३ १
अन्तरिक्षं जात	८ ८ ५	अपज्योतिषा त	२० १६ ५
अन्तरिक्षं दिवं	१० ६ १०	अप तस्य हतं तमो	१० ७ ४०
अन्तरिक्षं धेनु	४ ३६ ४	अप त्ये तायवो	१३ २ १७
अन्तरेमे नभसी	५ २० ७	अप त्ये तायवो	२० ४७ १४
अन्तर्गर्भरच	११ ४ २०	अपथेनाजभारैणां	५ ३१ १०
अन्तर्दधे जुहुता	६ ३२ १	अपनःशोशुचदघ	४ ३३ १
अन्तर्देशा अब	१० ६ १६	अपन्यधुपौरुषेयं	१६ २० १
अन्तर्धिर्द्वानां	१२ २ ४४	अप पापं परिज्ञव	१६ ८ ५

	कां०	सू०	म०
अभिमित्यमप्रतीचं	६	११७	१
अपमृज्य यातु	४	१८	८
अपरिमितमेव	६	५	२२
अपवासे नक्षत्राणां	३	७	७
अपश्चाद्गन्धर्व	१६	५५	५
अपश्यं गोपा	६	१०	११
अपश्यं युवतिं	१८	३	३
अपस्त ओषधी	१६	१८	६
अप स्तेवं वास	१६	५०	५
अपस्त्वं धुत्ते	१०	१०	८
अपाधूहभृतां	१८	२	३३
अपाङ्क प्राङ्गेति	६	१०	१६
अपाञ्चौत उभौ	७	७०	४
अपादग्रे सम	१०	८	२१
अपादिन्द्रो अपा	२०	६२	८
अपादेति प्रथमा	६	१०	२३
अपानति प्रणति	११	४	१४
अपानाय व्यानाय	६	४१	२
अपामपिनस्तनूमिः	४	१५	१०
अपामभ्रमसि समु	१६	१	६
अपामह दिव्या	१६	२	४
अपासस्मै वज्र	१०	५	५०
अपामार्ग ओषधी	४	१७	८
अपामार्गापमाधु	४	१८	७
अपामिदं	६	१०६	२
अपामूर्ज ओजसे	१६	४५	३
अपामूर्मिर्मदक्षि	२०	२८	४
अपामूर्मिर्मदक्षि	२०	३६	५
अपामह दिव्याना	१६	२	४
अपावृत्त गार्हप	१२	२	३४
अपास्मत्तम	१४	२	४८
अपां तेजो ज्योति	१	३५	३
अपां फेनेन नमुखे	२०	२६	३
अपां मापाने	५	२६	८
अपां यो अग्रे प्रविमा	६	४	२

	कां०	सू०	म०
अपां रसः प्रथ	४	४	५
अपाःपूर्वेषां हरिश्च	२०	३२	३
अपिबृश्च पुराश्च	७	६०	१
अपिनह्यामिते	७	७०	५
अपूपवानजवांश्च	१८	४	२१
अपूपवावपवांश्च	१८	४	२४
अपूपवान् क्षीरवां	१८	४	१६
अपूपवान् घृतवां	१८	४	१६
अपूपवान् द्रव्यवां	१८	४	१८
अपूपवान् दधि	१८	४	१७
अपूपवाद्मधुमां	१८	४	२२
अपूपवान् मांसवां	१८	४	२०
अपूपवान् रसवांश्च	१८	४	२३
अपूपापिहितान्	१८	३	६८
अपूपापिहितान्	१८	४	२५
अपूर्वेणेषिता	१०	८	३३
अपेत वीत	१८	१	५५
अपेतो वायो	४	२५	४
अपेन्द्र द्विषतो	१	२१	४
अपेन्द्रप्राचो मघ	२०	१२५	१
अपेमां मात्रां	१८	२	४०
अपेमं जीवा	१८	२	२७
अपेयं रात्र्युच्छ	२	८	२
अपेहि मनसरूपत	२०	६६	२४
अपेह्यरिरस्य	७	८८	१
अपैतेनाशस्ती	५	६	७
अपो दिव्या अक्षा	७	८६	१
अपो दिव्या अक्षा	१०	५	४६
अपो देवीरुपह्वये	१	४	३
अपो देवीर्मधु	१०	६	२७
अपो लिपिश्चिञ्ज	४	१५	१२
अपो यदद्रिं पुरुष	२०	७७	८
अपो वामदेव्येन	८	१०(२)	८
अपो वामदेव्यं	८	१०(२)	१०
अपो वृत्तं वक्षिषां	२०	७७	७

कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
अप्रजास्त्वं मार्त	८	६	२६	अभिद्युम्नानि च	२०	६ ७
अप्रपाणा च वेक्षन्ता	२०	१२	८	अभि प्रगोपतिं	२०	६२ १
अप्राणैति प्राणेन	८	६	६	अभि प्र गोपतिं	२०	२२ ४
अप्सरसः सधमादं	७	१०	३	अभि प्र वः सुराध	२०	५१ १
अप्सरसःसधमादं	१४	२	३४	अभि प्रेहि दक्षि	४	३२ ७
अप्सु ते जन्म	६	८०	३	अभि प्रेहि माप	४	८ २
अप्सु ते राजव्वरु	७	८३	१	अभिभूर्यज्ञोअभि	६	६७ १
अप्सु धूतस्य	२०	३३	१	अभि वर्धतां पय	६	७८ २
अप्सु मे सोमो	१	६	२	अभि त्व सपत्ना	१	२६ २
अप्सु स्तीमासु	११	८	३४	अभिवृष्टा ओष	११	४ ६
अप्सन्तर	१	४	४	अभिश्चावं नक्त	२०	१६ ११
अप्सासीन्मा	१०	८	४०	अभि हि सत्यसो	२०	६४ २
अबोध्यग्निः स	१३	२	४६	अभीवर्तेन मयि	१	२६ १
अभयं द्यावापृथि	६	४०	१	अभीवर्तो अभि	१	२६ ४
अभयं नः करत्य	१६	१५	५	अभीवस्वः १ प्र	२०	१२७ १०
अभयं मित्रादभ	१६	१५	६	अभीवृताहिरं	१०	१० १६
अभयं मित्रावरुणा	६	३२	३	अभीशुनामेया	६	१३७ २
अभागः सन्नप	४	३२	५	अभीषुणःसखी	२०	१२४ ३
अभि क्रन्द स्तन	४	१५	६	अभीहि मन्यो	४	३२ ३
अभिक्रन्दन् स्तन	११	५	१२	अभुत्सुप्रैक्ष्या	२०	१४२ १
अभि गोत्राणि	१६	१३	७	अभूतिरुपह्रिय	१२	५ ३५
अभि तिष्ठामि	६	४२	३	अभूद् तःप्रहितो	१८	४ ६५
अभि तेऽधां	३	१८	६	अभ्यक्ताका	१०	१ २५
अभि तं निष्कृति	४	३६	१०	अभ्यन्यदेति	१३	२ ४३
अभि त्यं देवं	७	१४	१	अभ्यंजनं सुर	६	१२४ ३
अभि त्वा जरि	३	११	८	अभ्यर्चत सुष्टितिं	७	८२ १
अभि त्वा देवः	१	२६	३	अभ्यावर्तस्व	११	१ २२
अभि त्वा पूर्वपीत	२०	६६	१	अभ्रातृत्नी वरु	१४	१ ६२
अभि त्वा मनुजा	७	३७	१	अभ्रातृभ्यो	२०	११४ १
अभि त्वा वर्चसा	२०	४८	१	अग्निye दिद्युन्न	२	२ ४
अभि त्वा वर्चसा	४	८	६	अभ्रंपीवो मञ्जा	६	७ १८
अभि त्वा वृषभा	२०	२२	१	अमन्महीदनाश	२०	११६ २
अभि त्वा शूर नो	२०	१२१	१	अमाकृत्यापा	४	१८ ३
अभि त्वेन्द्रवरि	६	६६	१	अमाघृतं कृणुते	११	५ १५
अभि त्वोर्णोमि	१८	२	५२	अमावास्या च	१५	२ १४

कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
अमावास्यायेन	७	७६	४	अयामि घोष इन्द्र	२०	१२ २
अमासिमात्रां	१८	२	४५	अयाविष्टाजनय	७	३ १
अमित्रसेनां मघ	३	१	३	अयाहृत्यं माय	२०	३६ ६
अमीयेयुध	६	१०	३	अयुक्त सप्तशु	१३	२ २४
अमीषां चित्तानि	३	२	५	अयुक्त सप्तशु	२०	४७ २१
अमुकथावधमाद् दु	२	१०	६	अयुतोहमयुतो	१६	५१ १
अमुत्र भूयादधि	७	५३	१	अयोजाला अ	१६	६६ १
अमुत्रसन्निह	१३	१	३८	अयोमुखाः सूची	११	१० ३
अमुत्रैनमागच्छ	६	३	१०	अयोद्विष्टोअर्चि	८	३ २
अमूनश्चत्थ	८	८	३	अयं प्राचापृथुबु	१२	३ १४
अमूनहेतिः पतत्रि	६	२६	१	अयं जीवतुमा	८	२ ५
अमूयेदिवि	३	७	४	अयं त इन्द्रसोमो	२०	५ ५
अमूर्याडप	१	४	२	अयं तेअस्म्युप	४	३२ ६
अमूर्या यन्ति	१	१७	१	अयंतेकृत्यां	१०	३ ४
अमूःपारेपुदा	१	२७	१	अयं तेयोनि	३	२० १
अमोतं वासो	६	५	१०	अयंदर्भाविमन्यु	६	४३ १
अमोहमस्मि	१४	२	७१	अयंदेवाइहैवास्त्व	८	१ १८
अम्बयो यन्त्य	१	४	१	अयंदेवानामसुरो	१	१० १
अम्भोअमोमहः	१३	४	५०	अयंनो नभस्पती	६	७६ १
अम्भोअरुणं	१३	४	५१	अयंपन्थाःकृत्ये	१०	१ १५
अयज्ञियोहव	१२	२	३७	अयं पिपानः	६	४ २१
अयन्महातेअर्वा	२०	१२६	११	अयं प्रतिसरो	८	५ १
अयमग्निःसप्तपति	७	६२	१	अयंमणिःसपत्न	८	५ २
अयमग्निरमूमहद्	३	२	२०	अयंमणिर्वरणो	१०	३ ३
अयमग्निरुपसद्य	५	३०	११	अयं मेव रण	१०	३ ११
अयमस्तु धनपतिः	४	२२	१	अयं मे वरणो	१०	३ १
अयमायात्यर्यमा	६	६०	१	अयं मे हस्तो	४	१३ ६
अयमिद्वैप्रति	८	५	१६	अयं यो अभिशोच	६	२० ३
अयमिन्द्र वृषा	२०	१२६	१८	अयंयोभूरिमूलः	६	४३ २
अयमु ते समतसि	२०	४५	१	अयं यो वक्रो	७	५६ ४
अयमुत्वा विचर्ष	२०	५	१	अयं यो विश्वान्	५	२२ २
अयमेमि विचाक	२०	१२६	१६	अयंलोकःप्रियत	५	३० १७
अयमौदुम्बरो	१६	३१	२४	अयंलोको जालं	८	८ ८
अयस्मये दुपदे	६	६३	३	अयंरजस्तर्पयता	६	१३४ १
अयस्मये दुपदे	६	८४	४	अयं वस्ते गर्भं	१३	१ १६

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
अयं वा उ अग्निर्	१५	१०	७	अयमणं यजामहे	१४	१	१७
अयं वां वमोअ	२०	१३६	४	अयमाणं बृह	३	२०	७
अयं विष्कन्धं	२	४	३	अर्वागन्य इतो	११	५	११
अयं सदेवोअप्	१३	३	१५	अर्वागन्यः परो	११	५	१०
अयं सशिङ्को	६	१०	७	अर्वाङ्गेहि सोम	२०	८	२
अयं सहस्रमानो	७	२२	१	अर्वाङ् परस्तात्	१३	२	३१
अयं सहस्रमृषि	२०	१०४	२	अर्वाचीनं सुते	२०	१६	२
अयं स्तुवान	१	८	२	अर्वाञ्चमिन्द्रममु	५	३	११
अयं स्नाक्तो मणि	८	५	४	अर्वाञ्चं त्वा सुखे	२०	२३	६
अरदुपरम	२०	१३१	१५	अर्वावतो न आग	२०	६	८
अरसस्त इषो	४	६	६	अर्वावतो नआग	२०	२०	४
अरसस्य शर्कोट	७	५६	५	अर्वावतोनआग	२०	५७	७
अरसास इहाह	१०	४	६	अलसालासि	६	१६	४
अरसंक्रुत्रिमं ना	१६	३४	३	अलाबुकं निखा	२०	१३२	२
अरसं प्राच्यं	४	७	२	अलावूनि पृषा	२०	१३५	३
अरातीयोध्रात्	१०	६	१	अलिङ्गवा	११	६	६
अरात्यास्त्वा	१०	३	७	अलगण्डून्हन्मि	२	३१	३
अरायक्षयणम	२	१८	३	अवकक्षिणं वृषभं	२०	८५	२
अरायमसृक्पा	२	२५	३	अवकादानभिषो	४	३७	१०
अरायान्ब्रूमो	११	६	१६	अवकोत्वा उदका	८	७	६
अरिषा आपो अ	१०	५	२४	अव जहि यातुधा	५	१४	२
अरिषा आपो अ	१६	१	१०	अव ज्यामिव	६	४२	१
अरिष्टोहमरिष्ट	१०	३	१०	अव दिवस्तारय	७	१०७	१
अरुस्त्राणमिदं	२	३	५	अव द्रप्सो अंशुम	२०	१३७	७
अरं कामाय हर	२०	३१	२	अवधीत्कामो	६	२	११
अरंगरो वावदी	२०	१३५	१३	अव पद्यन्तामे	८	८	२०
अरंघुषोनिम	१०	४	४	अव बाधे द्विष	४	३५	७
अर्चत प्रार्चत	२०	६२	५	अव मन्युजायता	६	६५	१
अर्चामि वां	१८	१	३१	अव मा पाप्मन्त्सु	६	२६	१
अर्जुनि पुनर्वो	२	२४	७	अवर्तिरश्यमाना	१२	५	३७
अर्धमर्धेन	५	१	६	अवशसा	६	४५	२
अर्धमासाश्च	११	७	२०	अवश्वेतपदाज	१०	४	३
अर्बुदिर्नामयो	११	६	४	अव श्लवणमिव	२०	१३३	६
अर्बुदिश्च त्रिषं	११	६	२३	अव सृज पुनरग्ने	१८	२	१०
असको न कुमार	२०	६२	१२	अव सृष्टा परा	३	१६	८

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
अथ इय शूराध्वनौ	२०	७७	२	अश्वत्थो देव	५	४	३
अवस्वरातिगर्ग	२०	६२	६	अश्वत्थो देवसद्	३	६५	१
अवाचीनानव ज	१३	१	३०	अश्वत्थो देवसद्	१६	३६	६
अवायन्तां पति	११	१०	६	अश्वस्य वारो	२०	१२६	१८
अवास्तुमेनमस्व	१२	५	४५	अश्वस्याश्वतरस्य	४	४	८
अविर्वेनाम	१०	८	३१	अश्वस्यास्नः	५	५	६
अविः कृष्णा भाग	१२	२	५३	अश्वायन्तो गव्य	२०	६६	५
अधीरामिव माम	२०	१२६	६	अश्वावति	२०	२५	१
अवैतेनारात्सी	५	६	६	अश्वावतीगौमती	३	१६	७
अवैरहत्यायेदमा	६	२६	३	अश्वावतीं प्रतर	१६	२	३१
अवो द्वाभ्यां पर	२०	६१	४	अश्वाः कणा	११	३	५
अवःपरेण पर	६	६	१७	अश्विना त्वाग्रे	३	४	४
अवःपरेण पर	१३	१	४१	अश्विना ब्रह्मणा	५	२६	१२
अवःपरेण पितरं	६	६	१६	अश्विना सारधेण	६	६६	२
अव्यवसश्च	१६	२६	१	अश्विना सारधेण	६	१	१६
अशिता लोका	१२	५	३६	अपाङ्गहसुग्रं पृ	२०	६२	१६
अशितावत्य	६	६(३)	८	अष्ट जाता भूता	८	६	२१
अशीतिभिस्ति	२	१२	४	अष्टचमेऽशीति	५	१५	८
अशनापिनद्धं मधु	२०	१६	८	अष्टधां युको बह	१३	३	१६
अश्मन्वतीरीयते	१२	२	२६	अष्टर्चेभ्यः स्वाहा	१६	२३	५
अश्मवर्म मेऽसि	५	१०	१	अष्टोचक्रा नवद्वारा	१०	२	३१
अश्मवर्म मेऽसि	५	१०	२	अष्टोचक्रं वर्तत	११	४	२२
अश्मवर्म मेऽसि	५	१०	३	अष्टादशर्चेभ्यः	१६	२३	१५
अश्मवर्म मेऽसि	५	१०	४	अष्टापदीचतुरक्षी	५	१६	१५७
अश्मवर्म मेऽसि	५	१०	५	अष्टाविंशानि शि	१६	८	२
अश्मवर्म मेऽसि	५	१०	६	अष्टेन्द्रस्य	८	६	२३
अश्मवर्म मेऽसि	५	१०	७	असच्छात्रां प्रति	१०	७	२१
अश्रमदियमर्य	६	६०	२	असति सत्प्रति	१७	१	१६
अश्रान्तस्य त्वा	१६	२५	१	असदन् गाव	७	६६	१
अश्रूणि कृपमाण	५	१६	१३	असद्भूम्याः	४	१६	६
अश्रेष्माणो	३	६	२	असन्मंत्राद्	४	६	६
अश्लीलातनूर्ध	१४	१	२७	असपत्नं नो	८	५	१५
अश्व इव रजो	१२	१	५७	असपत्नं पुरस्ता	१६	१६	१
अश्वत्थ क्षत्रियो	२०	१३१	१४	असपत्नं पुरस्ता	१६	२७	१४
अश्वत्थो दमो	८	७	२०	असर्ववीरश्चरतु	६	२	१४

कां० सू० म०	कां० सू० म०
असितस्य ते १ १४ ४	अस्मा इदु प्रभरा २० ३५ १२
असितस्य तैमात ५ १३ ६	अस्मा इदु प्रय २० ३५ २
असितं ते प्रलभ १ २३ ३	अस्माइदु सतिमि २० ३५ ५
असि हि धीर २० ५६ २	अस्मा इदु स्तोमं २० ३५ ४
अधुन्वामिन्द्र २० २६ ५	अस्माकमिन्द्रः १६ १३ ११
अधुराणां दुहिता ६ १०० ३	अस्मान्सु तन्न २० ७१ १२
अधुरास्त्वान्यख ६ १०६ ३	अस्मिन्निन्द्रो ८ ५ २१
असूतिका रामाय ६ ८३ ३	अस्मिन्मणावेक १६ ४६ ५
असृग्रमिन्द्र ते २० ७१ १०	अस्मिन्वयं संक १६ ३ १३
असौ मे स्मरता ६ १३० २	अस्मिन्वसु १ ६ १
असौ या सेना ३ २ ६	अस्मे धेहि श्रवो २० ७१ १४
असौ यो अधराद् २ १४ ३	अस्मै क्षत्रमग्नीषो ६ ५४ २
असौ हा इह ते १६ ४ ६६	अस्मै क्षत्राणि ७ ७८ २
असंज्ञा गन्धेन १२ ५ ३४	अस्मै ग्रामाय ६ ४० २
असंतापे सुतपसौ ४ २६ ३	अस्मै द्यावापृथि ४ २२ ४
असंतापं मे हृदय १६ ३ ६	अस्मै भीमाय नम २० १५ ३
असंबाधं बध्यतो १२ १ २	अस्मै मणिं वर्म ८ ५ १०
असंबाधे पृथि १७ २ २०	अस्मै मृत्योश्चाधि ८ २ ८
अस्तंयते नमो १७ १ २३	अस्य देवाः १ ६ २
अस्तावि मन्म पू २० ११६ १	अस्य पीत्वा शत २० ६८ ८
अस्तेव सु प्रतरं २० ८६ १	अस्य वामस्य ६ ६ १
अस्त्रा नीलशिख ११ २ ७	अस्येदिन्द्रो २० ६६ २
अस्थाद्द्व्यौरस्थात् ६ ४४ १	अस्येदु त्वेषसा २० ३५ ११
अस्थाद्द्व्यौरस्थात् ६ ७७ १	अस्येदु प्रब्रूहि २० ३५ १३
अस्थि कृत्वा समि ११ ८ २६	अस्येदु भिया २० ३५ १४
अस्थिजस्य १ २३ ४	अस्येदु मातुः २० ३५ ७
अस्थिभ्यस्ते २ ३३ ६	अस्येदेव प्ररिदि २० ३५ ६
अस्थिभ्यस्ते २० ६६ २२	अस्येदेव श्वसा २० ३५ १०
अस्थिस्त्रं परः ६ १४ १	अस्येन्द्र कुमारस्य ५ २३ २
अस्थीन्यस्यपीड १२ ५ ७०	अस्यैदेवतावा उद १५ १३ १३
अस्मा इदुगता २० ३५ ८	अस्त्रामस्तका १ ३१ ३
अस्मा इदुत्यदनु २० ३५ १५	अस्वगता परि १२ ५ ४०
अस्मा इदु त्यमुपमं २० ३५ ३	अहवहिं २ ५ ६
अस्मा इदु त्वष्टा २० ३५ ६	अहमास्मि सहमान १२ १ ५४
अस्मा इदु प्रतप्से २० ३५ १	अहमस्मि सहमाना ३ १७ ५

कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
अहमिद्धि पितु	२०	११५	१	अहं गृभ्णामि	६	६४ २
अहमेनावुदतिष्ठि	७	६५	२	अहं जजान पृथि	६	६१ ३
अहमेव वात इव	४	३०	८	अहं पचाम्यहं	१२	३ ४७
अहमेव स्वयमिदं	४	३०	३	अहं पशूनामधिपा	१६	३१ ६
अहमेवास्म्यमावा	७	७६	२	अहं प्रत्नेन मन्म	२०	११५ २
अहलकुशवर्त्तक	२०	१३१	६	अहं राष्ट्री संगम	४	३० २
अहश्च रात्री च	१५	२	२०	अहं रुद्राय धनुरा	४	३० ५
अहा अरातिमवि	२	१०	७	अहरुद्रेभिर्वसु	४	३० १
अहीनां सर्वेषां	१०	४	२०	अहं वदामिनेत्त्वं	७	३८ ४
अहोरात्राभ्यां	६	१२८	३	अहं विवेच	६	६१ २
अहोरात्रे अन्वेषि	१२	२	४६	अहं वि व्यामि म	१४	१ ५७
अहोरात्रे इदं	११	६	५	अहंसुवे पितर	४	३० ७
अहोरात्रे नासि	१५	१८	४	अहं सोममाहनसं	४	३० ६
अहोरात्रैर्विमितं	१३	३	८	अह्ने च त्वा	८	२ २०
अहं गृभ्णामि	३	८	६	अहा प्रत्यङ्	१५	१८ ५

आ

कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
आकृतिं देवीं	१६	४	२	आचार्यो मृत्युर्वरु	१११	५ १४
आकृत्या नो बृहस्प	६	८	८२	आच्छद्विधानेर्गु	१४	१ ५
आकृत्या नो बृहस्प	१६	४	३	आच्याजानुद	१८	६ ५२
आक्रन्द्य धनपते	२	३६	६	आजनाय दुहणे	२०	३६ ८
आक्रन्द्य बलमो	६	१२६	२	आजामि त्वा	३	२५ ५
आदवैकं मणिमे	१६	४५	५	आजुहान ईड्यो	५	१२ ३
आगच्छत आग	६	८२	१	आज्यस्य परमेष्ठि	१	७ २
आगन् रात्री	७	७६	३	आज्यं विभर्ति	६	४ ७
आगातुदगादयं	२	६	२	आञ्जनस्य मदुघ	४	१०२ ३
आ गावो अगमन्तु	४	२१	१	आञ्जनं पृथि	१६	४४ ३
आगृह्णीतं सं	११	६	११	आण्डेव भित्त्वा	२०	१६ ८
आ घ त्वावान्	२०	१२२	२	आतन्वाना	६	६६ २
आघागमद्यदि	२०	२६	२	आतिष्ठन्तं परि	४	८ ३
आघा ता गच्छा	१८	१	११	आ तू न इन्द्रमद्य	२०	२३ १
आङ्गिरसानामा	१६	२२	१	आ तू सुशिप्र	२०	६२ १३
आचार्य उपनय	११	५	३	आ ते ददे वक्षणा	७	११४ १
आचार्यस्ततस्त	११	५	८	आ तेन यतु सविता	२	३६ ८
आचार्यो ब्रह्मचा	११	५	१६	आ ते प्राणं सुवाम	७	६५ ३

कां० सू० म०		कां० सू० म०	
आ ते योनिं गर्भं	३ २३ २	आदित्यपश्याभ्यु	३ १३ ६
आ ते राष्ट्रमिह	१३ १ १५	आदित्या रुद्रा वस	११ ६ १३
आ ते सिञ्चामि	२० ४ २	आदित्या रुद्रा वस	२० १३५ ६
आ ते स्तोत्रा	५ ११ ६	आदित्या रुद्रा वस	१६ ११ ४
आ तौ दिनौ	७ ६५ ३	आदित्या ह जरि	२० १३५ ६
आत्मन्वत्युर्वरा	१४ २ १४	आदित्येभ्यो	१२ ३ ४४
आत्मानं पितरं	६ ५ ३०	आदित्यैरिन्द्रःस	२० ६३ २
आ त्वागन् राष्ट्रं	३ ४ १	आदित्यैरिन्द्रःस	२० १२४ ५
आ त्वागमंशं	४ १३ ५	आदिनवं प्रति	७ १०८ ६
आ त्वाग्न इधीम	१८ ४ ८८	आ देवानामपि	१६ ५६ ३
आ त्वा चतुत्त्व	५ २८ १२	आ देवेषु वृश्चते	१५ १२ १०
आ त्वा ब्रह्मयुजा	२० ३ २	आधीपणीं	३ २५ २
आ त्वा ब्रह्मयुजा	२० ३८ २	आनन्दा मोदाः प्र	११ ७ २६
आ त्वा ब्रह्मयुजा	२० ४७ ८	आनन्दा मोदाः	११ ८ २४
आ त्वाकरोह	१३ १ १५	आनयैतमा	६ ५ १
आ त्वा विशन्तु	२ ५ ४	आनूनमश्विना	२० १३६ १
आ त्वा विशन्त्वा	२० ६६ ५	आनूचमश्विनो	२० १४० २
आ त्वा हर्यन्तं	२० ३२ २	आनूनं यातमश्वि	२० १४१ ४
आ त्वाहार्धमन्तर	६ ८७ १	आनूनं रघुवर्तनिं	२० १४० ३
आ त्वेता निषीद	२० ६८ ११	आत्तृयतःशिख	४ ३६ ७
आथर्वणानां	१६ २३ १	आ नो अग्ने सुम	२ ३६ १
आथर्वणीराणि	११ ४ १६	आनोभरमापरि	५ ७ १
आदङ्गा कुविदङ्गा	२ ३ २	आ नो यज्ञंभारती	५ १२ ८
आदङ्गिरा प्रथमं	२० २५ ४	आ नो यातंदिवो	२० १४३ ५
आ दत्सेजिनतां	१२ ६ ५६	आ नो याहि सु	२० ४ १
आददानमांगिर	१२ ६ ५२	आ तो विश्वासु	२० १०४ ३
आ दधामि ते	२ १२ ८	आन्त्राणि जत्रवो	११ ३ १०
आदलानुकमेक	२० १३२ १	आन्त्रेभ्यस्ते	२० ६६ २०
आदह स्वधामनु	२० ४० ३	आन्त्रेभ्यस्तेगुदा	२ ३३ ४
आदह स्वधामनु	२० ६६ १२	आप इद्वा उ	६ ६१ ३
आ दानेन संदाने	६ १०४ १	आप इद्वा उ	३ ७ ५
आदोय जीतं	१२ ५ ५७	आ पप्राथ महिना	२० ८१ २
आदिक्ते अस्य	२० ७५ ३	आ पप्राथ महिना	२० ६२ २१
आदित्य चक्षुरा	५ २१ १०	आ पर्जन्यस्य	३ ३१ ११
आदित्य नावमा	१७ १ २५	आपश्चित्पिप्यु	२० १२ ४

कां० सू० म०	कां० सू० म०
आ पश्यति प्रति ४ २० १	आ मे धनं सरस्व १६ ३१ १०
आ पस्पुत्रासो १२ ३ ४	आमे महच्छुतभि १६ ७ ५
आपुर्णो अस्य २० ८ ३	आ मे सुपके ५ २६ ६
आपो अग्निं प्र १८ ४ ४०	आयत्पतन्त्येन्य २० ६२ ७
आपो अग्ने विश्व ४ २ ६	आयद्दुवः शत २० १२२ ३
आपो अग्रं दिव्या ८ ७ ३	आयनेते परायणे ६ १०६ १
आपो अस्मान्मा ६ ५१ २	आयन्ति दिवः १२ ३ २६
आपो न देवीरुप २० २५ २	आयमगन्तस्वत्सरः ३ १० ८
आपो न सिन्धुम २० १७ ७	आयमगन्तस्वविता ६ ६८ १
आपो निषिञ्च ४ ३ १५	आयमगन्पर्ण ३ ५ १
आपो भद्रा घृत ३ १३ ५	आयमगन्पुवा १० ४ १५
आपो मौषधी १६ १७ ६	आ ययाम सं ६ ३ ३
आपो यद्वस्तप २ २३ १	आयवनेनतेजनी २० १३१ ८
आपो यद्वस्तेज २ २३ ५	आयात पितरः १८ ४ ६२
आपो यद्वोऽर्चि २ २३ ३	आयतु मित्र ३ ८ १
आपो यद्वो हरस्ते २ २३ २	आयात्विन्द्र २० ६४ १
आपो यद्वः शोचि २ २३ ४	आयाहि सुषुमा २० ३ १
आपो वत्सं जनय ४ २ ८	आयाहि सुषुमा २० ३८ १
आपो विबुधं ४ १५ ६	आयाहि सुषुमा २० ४७ ७
आपो हिष्ठा मयो १ ५ १	आयुरस्मै धेहि २ २६ २
आपः पृणीत भेषजं १ ६ ३	आयुरस्यायुर्मे २ १७ ४
आपमेतीमं लोक ६ ६(६) १३	आयुददं ६ ५२ ३
आ प्र च्यवेथा १८ ४ ४६	आयुर्दा अग्ने २ १३ १
आ प्रत्यञ्जं दाशुषे ७ ४० २	आयुर्यत्ते अति ७ ५३ ३
आ प्र द्रव परमस्या ३ ४ ५	आयुर्विश्वायुः १८ २ ५५
आप्रुषायन्मधुन २० १६ ४	आयुश्च रूपं च १२ ५ ६
आवयो अनावयो ६ १६ १	आयुषायुष्कृतां १६ २७ ८
आभूत्या सहजा ४ ३१ ६	आयुषे स्वा वर्चसे १६ २६ ३
आमणको मण २० १३० ६	आयुषोऽसि प्रत १६ ४४ १
आ मध्वोअस्मा २० ७६ ७	आयुष्मतामायु ३ ३१ ८
आमन्द्रैरिन्द्र ७ ११७ १	आयुथेव जुमाते १८ ३ २३
आ मा पुष्टे च ३ १० ७	आया धर्माणि ५ १ २
आ मारुतत् पर्ण ३ ५ ५	आयं गौः पृश्निर ६ ३१ १
आ माउत्तदेव ८ ५ २०	आयं गौः पृश्निर २० ४८ ४
आमिनोनिनि २० १३१ १	आयं विशन्ती ६ २ ३

	का०	सू०	म०		का०	सू०	म०
आ रभस्व जातवे	१	७	६	आ वो वहन्तु	२०	१३	२
आ रभस्व जातवे	१८	३	७१	आशरीकं विशरी	१६	३४	१०
आ रभस्वेमा	८	२	१	आशसनं विश	१४	१	२८
आराच्छुत्रमप वा	२०	८६	७	आशानामाशा	१	३१	१
आ रात्रि पार्थिवं	१६	४७	१	आशामाशां	४	१५	८
आरादरा तिं	८	२	१२	आशासानासौ म	१४	१	४२
आरे अभूद्विषमः	१०	४	२६	आशिषश्च प्रशि	११	८	२७
आरेक्षतावस्मदस्तु	१	२६	१	आशीर्ण ऊज	२	२६	३
आ रोदसी हर्य	२०	३२	१	आशुः शिशानो	१६	१३	२
आरोह चर्मोप	१४	२	२४	आश्रयवन्तं यवं	६	१४२	२
आरोहत जनित्री	१८	४	१	आष्टेलाहणि	२०	६	१३४
आरोहत दिव	१८	३	६४	आसत्यो वातुम	२०	७७	१
आरोह तल्पं	१४	२	३१	आसीनासो अरु	१८	३	४३
आरोहतायुर्जर	१२	२	२४	आसुरी चक्रे	१	२४	२
आरोहन्नुको	१३	२	४२	आ सुचयन्ती	५	१२	६
आरोहन्धामभृ	१३	१	४३	आसुसलःसुलसो	७	७६	१
आरोहोरुमुप	१४	२	३६	आसो बलासो	६	८	१०
आर्तिरवर्ति	१०	२	१०	आसंयतमिन्द्र	२०	३६	१०
आर्षेयेषु निदधे	११	१	३३	आस्तेयीश्चवा	११	८	२८
आलापाश्च	११	८	२५	आस्नस्ते गाथा	१०	१०	२०
आलिगां च	५	१३	७	आस्यै ब्राह्मणाः	१४	१	३६
आवन्ति देवाँ इह	२०	६७	५	आ हरयः ससृजि	२०	२२	५
आवतस्त आवतः	५	३०	१	आ हरयः ससृजि	२०	६२	२
आ वात वाहि भषजं	४	१३	३	आ हरामि गवां	२	२६	५
आवामगन्तु म	१४	२	५	आहवनीयस्य च	१५	६	१५
आवां प्रजां जनय	१४	२	४०	आहार्षमविदं	८	१	२०
आविरात्मानं	१२	४	३०	आहार्षमविदं त्वा	२०	६६	१०
आविष्कणुष्व रु	४	२०	५	आहुतास्यमिहुत	६	१३३	२
आविष्टिताघवि	५	१८	३	आहुत्याआ	१५	१४	८
आविः कृष्णा	१२	२	२	आहं खिदामि ते	६	१०२	२
आविः सनिहितं	१०	८	६	आहं तनोमि ते	४	४	७
आ वीरामिव	२०	६	१२६	आहं तनोमि ते	६	१०१	३
आ वृषायस्व	६	१०१	१	आहं पितृन्सु	१८	१	४५

इ

कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
इच्छन्ति देवाः	२०	१८	३	इदं तद्युज उत्तर	६	५४ १
इच्छन्नश्च स्य	२०	४१	२	इदं तद्रूपं यदवस्त	१४	१ ५६
इष्टस्य ते वि	६	३	१८	इदं तमति सृजामि	१६	१ ४
इडया जुह्वतो	३	१०	११	इदं तृतीयं सवनं	६	४७ ३
इडयास्पदं	३	१०	६	इदं ते हव्यं घृतव	७	६८ २
इडेवास्मां अनु	७	२७	२७	इदं देवाः शृणुत	२	१२ २
इत ऊती वो अजरं	२०	१०५	३	इदं पितृभ्यः प्र	१८	४ ५१
इत एत उदारुहन्	१८	१	६१	इदं पितृभ्यो नमो	१८	१ ४६
इतश्च मामुतश्चा	१८	३	३८	इदं पूर्वमपरं	१८	४ ४४
इतश्च यदमुतश्च	१	२०	३	इदं पैद्वो अजायते	१०	४ ७
इतिहासस्य च वै	१५	६	१२	इदं प्रापमुत्तमं	१२	३ ४५
इतो जयेतो विजय	८	८	२४	इदं मह्यं मदूरिति	२०	१३१ १०
इतो वा सातिमीमहे	२०	७०	६	इदं मे ज्योतिरिमृतं	११	१ २८
इत्थं श्रेयो मन्यमा	८	६	२२	इदं यत्कृष्णा	७	६४ १
इदमकर्म नमो	२०	१६	१२	इदं यत्कृष्णः शु	७	६४ २
इदमहमामुष्याय	१६	७	८	इदं यत्परमेष्ठिनं	१६	६ ४
इदमहं रुशन्तं	१४	१	३८	इदं यत्प्रेम्यः	६	८६ १
इदमाज्यं घृत	६	२	८	इदं व आपो हृदय	३	१३ ७
इदमादानमकरं	६	१०४	२	इदं वर्चो अग्निना	१६	३७ १
इदमाप प्रवहता	७	८६	३	इदं विद्वानाञ्जन	४	६ ७
इदमिदमेवास्य	६	५	२४	इदं विष्कन्धं	१	१६ ३
इदमिद्धा उ भेषज	६	५७	१	इदं विष्णुर्विचक्रमे	७	२६ ४
इदमिद्धा उ नापरं	१८	२	५०	इदं सदो रोहिणी	१३	१ २३
इदमिद्धा उ नापरं	१८	२	५१	इदं सवितर्विजा	१०	८ ५
इदमिन्द्र शृणुहि	२	१२	३	इदं सु मे नरः	१४	२ ६
इदमुग्राय बभ्रवे	७	१०६	१	इदं हविर्यातुधाना	१	८ १
इदमुल्लेयोऽवसा	१६	१४	१	इदं हिरण्यं	२	३६ ७
इदा वत्सराय	६	५५	३	इदं हिरण्यं	१८	४ ५६
इदं कसाम्बुचय	१८	४	३७	इध्मेन त्वाजातवे	१६	६४ २
इदं खनामि भेष	७	३८	१	इध्मेनाश इच्छमा	३	१५ ३
इदं जना उपश्रुत	२०	१२७	१	इन्दुरिन्द्राय	२०	१३७ ५
इदं जनासो विद	१	३२	१	इन्द्र आशाभ्यस्व	२०	२० ७
इदं त एकं पर	१८	३	७	इन्द्र आशाभ्य	२०	५७ १०

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
इन्द्र इन्द्रयोः	२०	३८	५	इन्द्रवायू उभावि	३	२०	६
इन्द्र इन्द्रयोः सचा	२०	४७	५	इन्द्रश्चकार प्र	६	६५	३
इन्द्र इन्द्रयोः सचा	२०	७०	८	इन्द्रश्च मृतयाति	२०	२०	६
इन्द्र उक्थामरान्	५	२६	३	इन्द्रश्च मृतयाति	१२०	५७	६
इन्द्र एतमदीधरद्	६	८७	३	इन्द्रश्च सोमं	२०	१३	१
इन्द्र एतां ससृजे	२	२६	७	इन्द्र सेनां मोहयामित्रा	३	१	५
इन्द्र षष्ठां नेता	१६	१३	६	इन्द्र सोमाः सुता	२०	६	४
इन्द्र ओषधी	२०	११	१०	इन्द्र सोमाः सुता	२०	२४	५
इन्द्र क्रतुं न आ भर	१८	३	६७	इन्द्रस्तुजो बर्हण	२०	११	५
इन्द्र क्रतुं न आ भर	२०	७६	१	इन्द्रस्तुराषाड्	२	५	३
इन्द्र क्रतुविदं सुतं	२०	६	२	इन्द्रस्त्रातोत वृत्र	१६	१५	३
इन्द्र क्रतुविदं सुतं	२०	७	४	इन्द्रस्थातर्हरी	२०	६४	५
इन्द्र क्षत्रमभि	७	८४	२	इन्द्रस्य कुक्षिरसि	७	१११	१
इन्द्र चित्तानि	३	२	३	इन्द्रस्य गृहोसि	५	६	११
इन्द्र जठरं नव्यो	२	५	२	इन्द्रस्य त्वा वर्म्म	१६	४६	४
इन्द्र जहि पुमांसं	८	४	२४	इन्द्रस्य नाम गृह्ण	१६	३५	१
इन्द्र जीव सूर्य जीव	१६	७०	१	इन्द्रस्य जु प्रा	२	५	५
इन्द्र जुषस्व प्र	२	५	१	इन्द्रस्य प्रथमो	१०	४	१
इन्द्र ज्येष्ठं न आ	२०	८०	१	इन्द्रस्य बाहु	१६	१३	१
इन्द्र त्रिधातु शरणं	२०	८३	१	इन्द्रस्य भागस्थ	१०	५	८
इन्द्र त्वा वृषभं वयं	२०	६	१	इन्द्रस्य मन्महे	४	२४	१
इन्द्र त्वा वृषभं वयं	२०	१	१	इन्द्रस्य या मही	२	३१	१
इन्द्र त्वोतास आ	२०	७०	१६	इन्द्रस्य व इन्द्रिये	१६	१	६
इन्द्रन्ते मरुत्वन्त	१६	१६	८	इन्द्रस्य वचसा	६	८५	२
इन्द्र पुत्रे सोम	३	१०	१२	इन्द्रस्य वरुधम	५	६	१४
इन्द्र प्र णो धिता	२०	६	३	इन्द्रस्य वृष्णो वरु	१६	१३	१०
इन्द्र मेहि पुरस्त्वं	२०	५	३	इन्द्रस्य वर्मासि	५	६	१३
इन्द्रमहं वणिजं	३	१५	१	इन्द्रस्य शर्मासि	५	६	१२
इन्द्रमित्केशिना	२०	२६	२	इन्द्रस्यौज स्येन्द्र	१०	५	१
इन्द्रमित्था	२०	२४	३	इन्द्रस्यौज०	१०	५	२
इन्द्रमिद् गाथिनो	२०	३८	४	इन्द्रस्यौज०	१०	५	३
इन्द्रमिद् गाथिनो	२०	४७	४	इन्द्रस्यौज०	१०	५	४
इन्द्रमिद् गाथिनो	२०	७०	७	इन्द्रस्यौज०	१०	५	५
इन्द्रमिद्देवतातय	२०	११८	३	इन्द्रस्यौज स्येन्द्र	१०	५	६
इन्द्र वाजेषु नो	२०	७०	१०				

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
इन्द्रस्यौजो मरुता	६	१२५	३	इन्द्रेर्म प्रतरं	६	५	२
इन्द्रस्यौजो वरु	६	४	८	इन्द्रे लोका इन्द्रे	१०	७	३०
इन्द्राग्नी काम	६	२	६	इन्द्रे हि मत्स्यन्ध	२०	७१	७
इन्द्राग्नी द्यावापृ	१४	१	५४	इन्द्रो अङ्ग महद् भय	२०	२०	५
इन्द्राग्नी भसद्वा	६	७	८	इन्द्रो अङ्ग महद्भय	२०	५७	८
इन्द्राग्नी मासु	२०	१२६	११	इन्द्रो जघान	१०	४	१८
इन्द्रादिन्द्रः सो	११	८	६	इन्द्रो जयाति	६	६८	१
इन्द्राय गाव आ	२०	२२	६	इन्द्रो जातो मनु	४	११	३
इन्द्राय गाव आ	२०	६२	३	इन्द्रोतिभिर्वहुला	७	३१	१
इन्द्राय भागं परि	६	५	२	इन्द्रो दधीचो अ	२०	४१	१
इन्द्राय मघने सुतं	२०	११०	१	इन्द्रो दिवोऽधिप	५	२४	११
इन्द्राय साम	२०	६२	५	इन्द्रो दीर्घाय चक्षस	२०	३८	६
इन्द्राय सोम	६	२	१	इन्द्रो दीर्घाय चक्षस	२०	४७	६
इन्द्रा याहि चित्र	२०	८४	१	इन्द्रो दीर्घाय चक्षस	२०	७०	६
इन्द्रा याहि तूतुजा	२०	८४	३	इन्द्रो अलं रक्षिता	२०	६१	६
इन्द्रा याहि धियो	२२	८४	२	इन्द्रो ब्रह्मा ब्राह्म	२०	२	३
इन्द्रा याहि मे	५	८	२	इन्द्रो मन्थतु	८	८	१
इन्द्रावरुणा सुत	७	५८	१	इन्द्रो मदाय	२०	५६	१
इन्द्रावरुणा मधु	७	५८	२	इन्द्रो महा महतो	२०	६१	१२
इन्द्रासोमा तपतं	८	४	१	इन्द्रो महा रोदसी	२०	११८	४
इन्द्रासोमा दुष्कृ	८	४	३	इन्द्रो मा मरुत्वा	१८	३	२५
इन्द्रासोमा परि	८	४	६	इन्द्रो मा मरुत्वा	१६	१७	८
इन्द्रासोमा वर्तय	८	४	४	इन्द्रो मेन्द्रियेणा	१६	४५	७
इन्द्रासोमा वर्तय	८	४	५	इन्द्रो मेहिम	१०	४	१६
इन्द्रासोमा समघ	८	४	२	इन्द्रो मेहिम	१०	४	१७
इन्द्रियाणि शत	२०	२०	२	इन्द्रो यज्वने	४	२१	२
इन्द्रियाणि शत	२०	५७	५	इन्द्रो यातूनाम	८	४	२१
इन्दुरिन्द्राय पव	२०	६	१३७	इन्द्रो युनक्तु	५	२६	११
इन्द्रेणे दत्तो	२	२६	४	इन्द्रो राजा जगत	१६	५	१
इन्द्रेण मन्थुना	७	६३	१	इन्द्रो रूपेणाग्नि	४	११	७
इन्द्रेण रोचना	२०	२८	३	इन्द्रो वीर्येणोद	१६	१६	६
इन्द्रेण रोचना	२०	३६	४	इन्द्रो वृत्रमवृणे	२०	११	३
इन्द्रेण सं हि दक्षसे	२०	४०	१	इन्द्रो ह चक्रे त्वावा	२	२७	३
इन्द्रेण सं हि दक्षसे	२०	७०	३	इन्द्रं ते मरुन्वन्त	१६	१८	८
इन्द्रेन्द्र मनुष्याः	३	४	६	इन्द्रं तं शुभं पुरुष	२०	६२	१७

कां० सू० म०	कां० सू० म०
इन्द्रं तं शुम्भः पुरुह २० १०५ ५	इमा लु कं भुवना २० १२४ ४
इन्द्रं मित्रं वरुणम् ६ १० २८	इमा ब्रह्म बृहद्विः २० १०७ ११
इन्द्रं वयमनूराधं १६ १५ २	इमा ब्रह्म बृहद्विः ५ २ ८
इन्द्रं वयं महाधन २० ७० ११	इमा ब्रह्म ब्रह्म हवाः २० २३ ३
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे २० १६ ५	इमामग्ने शरणिं ३ १५ ४
इन्द्रं वो विश्वतरुण २० ३६ १	इमामेषां पृथिवीं १० ८ ३६
इन्द्रं वो विश्वतरुण २० ७० १६	इमा या देवीः २ १० ४
इन्द्रं सोमस्य पीत १० २४ ४	इमा या ब्रह्मणस्प १६ ८ ६
इन्द्रः कारुण २० १२७ ११	इमा यास्तिस्रः ६ २१ १
इन्द्रः पूर्भिदाति २० ११ १	इमा यास्ते शतं ७ ३५ २
इन्द्रः प्राङ् तिष्ठ ६ ७ २०	इमा याः पञ्च ३ २४ ३
इन्द्रः स दामने कृत २० ४७ २	इमास्तिस्रो ५ २८ १०
इन्द्रः स दामने कृत २० १३७ १३	इमां भूमिं पृथिवीं ११ ५ ६
इन्द्रः सीतां निगृ ३ १७ ४	इमां मात्रां मिमी १८ २ ३८
इन्द्रः सुत्रामा स्व ७ ६१ १	इमां शालां ३ १२ ४
इन्द्रः सुत्रामा स्व २० १२५ ६	इमे गृहा मयोभुव ७ ६० २
इन्द्रः सेनां मोहयतु ३ १ ६	इमे जीवा वि १२ २ २२
इन्द्रः स्वर्षा जनयन् २० ११ ४	इमे त इन्द्र ते वयं २० १५ ४
इम उता सृत्युपाशा ८ ८ १६	इमे मयूखा १० ७ ४४
इममग्ने आगुषे २ २८ ५	इमौ युवज्मि ते १८ २ ५६
इममग्ने चमसं १८ ३ ५३	इमं कन्यादा १२ २ ४३
इममादित्या ५ २८ ४	इमं गावः प्रजया १४ १ ३३
इममिन्द्र गवाशि २० २४ ७	इमं गोष्ठं पशवः २ २६ २
इममिन्द्र वर्धय ४ २२ १	इमं जीवेभ्यः परिधिं १२ २ २३
इममिन्द्रं वह्नि १२ २ ४७	इमं वज्रामि ते १६ २८ १
इममोदनं नि दधे ४ ३४ ८	इमं विभर्मि वरुण १० ३ १२
इमा आपः प्र ३ १२ ६	इमं विभर्मि सुकृतं २० ६४ ६
इमा आपः प्र ६ ३ २३	इमं मे अग्ने पुरुषं ६ १११ १
इमा उ त्वा पुरुव २० १०४ १	इमं मे कुष्ठ पुरुषं ५ ४ ६
इमां खनाभ्योषधि ३ १८ १	इमं यम प्रस्तरमा १८ १ ६०
इमां धियं सप्त २० ६१ १	इमं यवमष्टा ६ ६१ १
इमा नारीरविधवाः १२ २ ३१	इमं रश्मधि ६ ६ ३
इमा नारीरविधवाः १८ ३ ५७	इमं वीरमनु ६ ६२ ३
इमानि यानि १६ ६ ५	इमं वीरमनु ६ १३ ६
इमा लु कं भुवना २० ६३ १	इमं स्तोममर्हते २० १३ ३

	क्रा०	सू०	मं०		क्रा०	सू०	मं०
इमं होमा यज्ञमवते	१६	१	२	इह पुष्टिरिह	३	२८	४
इयमग्ने नारी	२	३६	३	इह प्र ब्रूहि यत्तमः	८	३	८
इयमन्तर्दति	५	३०	१६	इह प्रियं प्रजायै	१४	१	२१
इयमेव पृथ्वी	११	३	११	इह ब्रवीतु य	६	६	५
इयमेव सा या प्रथ	३	१०	४	इहा यन्तु प्रचेतसो	८	७	७
इयमेव सा या प्रथ	८	६	११	इहेत्थ प्रागपागुद	२०	१३४	१
इयं कल्याण्या	१०	८	२६	इहेत्थ० वत्साः	२०	१३४	२
इयं ते धीतिरिदमु	११	१	११	इहेत्थ० स्थाली	२०	१३४	३
इयं नारी पतिलोकं	१८	३	१	इहेत्थ० स वै पृथु	२०	१३४	४
इयं नार्युग ब्रूते	१४	२	६३	इहेत्थ० आष्टेला	२०	१३४	५
इयं पिश्या राष्ट्रे	४	१	२	इहेत्थ० अदिल	२०	१३४	६
इयं मही प्रति	११	१	८	इहेदसाथ न परो	३	८	४४
इयं या परमेष्ठिनी	१६	६	३	इहेदसाथ न परो	१४	१	३२
इयं वा उ पृथिवी	१५	१०	६	इहेमाचिन्द्र सं जुद	१४	२	६४
इयं वीरुन्मधुजाता	१	३४	१	इहेह यद्वा समना	२०	१४३	७
इयं वीरुन्मधुजाता	७	५६	२	इहैधि पुरुष	५	३०	६
इयं वेदिः परो	६	१०	१४	इहैव गाव एत नेहो	३	१४	४
इयं समित्पृथिवी	११	५	४	इहैव ध्रुवां नि	३	१२	१
इरावेदुमयं दत्त	२०	१३०	१६	इहैव ध्रुवा प्रति	३	१२	२
इरेव नोप दस्वति	३	२६	६	इहैव सन्तः	६	११७	२
इषिरा योषा युव	१६	४६	१	इहैवस्त मानु	७	६०	७
इषीकां जरतीमि	१२	२	५४	इहैवस्त माप	६	७३	३
इरा पुंश्चली	१५	२	१६	इहैव स्तं प्राणापानौ	३	११	६
इषुरिष दिग्धा	५	१८	१५	इहै वस्तं मावि	१४	१	२२
इष्टं च वा एष	६	(६)३	१	इहैव हवमायात	१	१५	२
इप्वा अजीयः	५	१४	१२	इहैवाग्ने अधि	७	८२	३
इह गावः प्र जा	२०	१२७	१२	इहैवामि वि तनूमे	१	१	३
इह तेसुरिह	८	१	३	इहैवैधि धन	१८	४	३८
इह त्वा गोपरीणसा	२०	२२	३	इहैवैधि माप	६	८७	२

इ

ईङ्कयन्तीरप	२०	६३	४	ईडे अग्निं स्वावसुं	७	५०	३
ईजानश्चित्तमा	१८	४	१४	ईमभ्यामयनं	१०	१०	२१
ईजानानां सुकतां	६	५	१२	ईश्याया भ्राजि	६	१८	१

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
ईलेन्यो नमस्य	२०	१०२	१	ईशानां त्वा भेषजा	४	१७	१
ईशान एनमिष्वी	१५	५	१५	ईशां वो मरुतो	११	८	२५
ईशाना वार्याणां	१	५	४	ईशां वो वेद राज्ञ्यं	११	१०	२

उ

उक्षाज्ञाय वशा	३	२१	६	उत हन्ति पूर्वा	१०	१	२७
उक्षाज्ञाय उशा	२०	१	३	उतामृता सुव्रत	५	१	७
उक्षणे हि मे पञ्च	२०	१२६	१४	उताग्धान्स्पृ	८	३	७
उग्र इत्ते वनस्पत	१६	३४	६	उतासि पारंपाणं	४	६	३
उग्र एनं देव इष्वा	१५	५	६	उतेदानीं भगव	३	१६	४
उग्रो राजा मन्य	५	१६	६	उतेयं भूमिर्वरुण	४	१६	३
उग्रं पश्ये राष्ट्र	६	११८	२	उतेव प्रभ्वीकृत	१२	३	२७
उग्रं वनिषदाततम्	२०	१३२	६	उतैनां भेदो	१२	४	५०
उक्त्वा पतन्तमरुणं	१३	२	३६	उतैषां पितोत वा	१०	८	२८
उच्चैर्घोषो दुन्दुभिः	५	२०	१	उतो अस्य बन्धु	४	१६	१
उच्छुम्भौषधीनां	४	४	४	उतो नो अस्या उ	२०	७२	३
उच्छ्रयस्व बहुर्भव	६	१४२	१	उत्कसन्तु हृद	११	६	२१
उच्छ्रवञ्चमाना पृथिवी	१८	३	५१	उत्केतुना बृहता	१३	२	६
उच्छ्रवञ्चस्व पृथिवी	१८	३	५०	उत्क्रामातः	८	१	४
उच्छिष्टे द्यावापृथिवी	११	७	२	उत्क्रामातः	६	५	६
उच्छिष्टे नाम रूपं	११	७	१	उत्तमेभ्यः स्वाहा	१६	२२	१२
उक्षायातां परशु	२०	१७	६	उत्तमो अस्योष	६	१५	१
उज्जिहीष्वे स्तन	८	७	२१	उत्तमो अस्योष	१६	३६	४
उत ग्ना व्यन्तु	७	४६	२	उत्तमो अस्योष	८	५	११
उत देवा अथ हितं	४	१३	१	उत्तमो नाम कुष्ठा	५	४	६
उत नग्ना बोधुवती	५	७	८	उत्तरस्वमधरे ते	४	२२	६
उत नः सुभगाँ	२०	६८	६	उत्तराहमुत्तर	३	१८	४
उत प्रहामतिदी	७	५०	६	उत्तरेणैव गाय	१०	८	४१
उत प्रहामतिदी	२०	८६	६	उत्तरेभ्यः स्वाहा	१६	२२	१३
उत ध्रुवन्तु नो	२०	६८	५	उत्तरं द्विषतो	१०	६	३१
उत यत्पतयो दश	५	१७	८	उत्तरं राष्ट्र	१२	३	१०
उत यो द्यामति	४	१६	४	उत्तानपणं सुभगे	३	१८	१२
उत श्वेत आशुप	२०	१३५	८	उत्तानायै शया	२०	१३३	४
उत स्म सखा हयं	२०	३१	५	उत्तिष्ठतमा रमेथा	११	६	३

कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०	
उत्तिष्ठत सं नह्य	११	६	२	उद्घेदस्य केतवो	१३	२	१
उत्तिष्ठत सं नह्य	११	१०	१	उद्घेदस्य श्यावौ	७	६५	१
उत्तिष्ठताव पश्यते	७	७२	१	उद्घेदमायुरायुषे	१८	२	२३
उत्तिष्ठता प्र तरता	१२	२	२७	उदायुरुद्वल	५	६	६
उत्तिष्ठ त्वं देवज	११	६	५	उदायुषा समाशु	३	३१	१०
उत्तिष्ठ त्वं दे वज	११	१०	५	उदितक्यो	४	३	१
उत्तिष्ठन्नोजसा	२०	४२	३	उदिन्नवस्य रिच्य	२०	५६	३
उत्तिष्ठ प्रेहि	१८	३	६	उदिमां मात्रां	१८	२	४३
उत्तिष्ठे ब्रह्मणस्प	१६	६३	१	उदिह्यु दिहि सूर्य	१७	१	६
उत्तिष्ठेतो विश्वा	१४	२	३३	उदिह्यु दिहि सूर्य	१७	१	७
उत्तिष्ठेतः किमि	१४	२	१६	उदीचां दिक् सोमो	३	२७	४
उत्तुदस्त्वोत्तुदतु	३	२५	१	उदीचीनैः	१२	२	२६
उत्ते स्तभ्नामि	१८	३	५२	उदीच्यां दिशः	६	३	२८
उत्थापय सीदतौ	१२	३	३०	उदीच्यां त्वा दि	१८	३	३३
उत्पुत्रः पितरं	५	१	८	उदीच्यै त्वा दि	१२	३	५८
उत्पुरस्तात्सूर्य	५	२३	६	उदीरयत मरुतः	४	१५	५
उत् त्वा द्यौरुत्पृथि	८	१	१७	उदीरतामवर	१८	१	४४
उत् त्वा मन्दन्तु	२०	६३	१	उदीरय पितरां	१८	१	२३
उत् त्वा मृत्योरयी	८	१	१६	उदीराणा उता	१२	१	२८
उत् त्वा यज्ञा ब्रह्म	१३	१	३६	उदीर्घ्वं नार्याभि	१८	३	२
उत् त्वा वदन्तु मरुत	१८	२	२२	उदु त्तमं वरुण	७	८३	३
उत् त्वा हार्षं पञ्च	८	७	२८	उदुत्तमं वरुण	१८	४	६६
उत्समक्षितं	४	२७	२	उदु त्ये मधुमत्तमा	२०	१०	१
उत्सूर्यो दिव पति	६	५२	१	उदु त्ये मधुमत्तमा	२०	५६	१
उदगातां भगवती	२	८	१	उदु त्यं जातवेदस	१३	२	१६
उदगातां भगवती	६	१२१	३	उदु त्यं जातवेदस	२०	४७	१३
उदगादयमादि	१७	१	२४	उदुत्सं शतधारं	३	२४	४
उदग्रमं परिपाणाद्	४	२०	८	उदु ब्रह्मारण्यैरत	२०	१२	१
उदङ्जातो हिमव	५	४	८	उदुषा उदु सूर्य	४	४	२
उदन्वतो द्यौरवमा	१८	२	४८	उदेणीव वारण्य	५	१४	११
उदपूरसि मधुपूर	१८	३	३७	उदेनमुत्तरं	६	५	१
उदप्रुतो न वयो	२०	१६	१	उदेनं भागो अग्र	८	१	२
उदप्रुतो मरुत	६	२२	३	उदेहि वाजिन	१३	१	१
उदरात्ते क्लोमनो	६	८	१२	उदेहि वेदिं	११	१	२१
उदसौ सूर्यो	१	२६	५	उद्घेदमि भ्रुताम	२०	७	१

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
उद्धर्षन्तां मघव	३	१६	६	उप प्रागात्सहस्रा	६	३७	१
उद्धर्षिणं मुनिकेशं	८	६	१७	उप प्रागाद् देवो	१	२८	१
उद्ना आजदङ्गिरो	२०	२८	२	उप प्रियं पनिप्रतं	७	३२	१
उद्ना आजदङ्गिरो	२	३६	३	उपबुदे पुनर्वो	२	२४	६
उद्भिन्दती सञ्जन	४	३८	१	उपमितां प्रतिमिता	६	३	१
उद्यच्छ ध्वमप	१४	१	५६	उप मौदुम्बरो म	१६	३१	७
उद्यते नम उदायते	१७	१	२२	उप श्रेष्ठा न	४	२५	७
उद्यद्ब्रध्नस्य विष्ट	२०	६२	४	उप श्वसेद्रुवये	११	१	१२
उद्यन्नादित्यः	२	३२	१	उप श्वासय पृथिवी	६	१२६	१
उद्यन् रश्मीना	१३	२	१०	उप सर्प मातरं	१८	३	४६
उद्यानं ते पुरुषु	८	१	६	उप स्तृणीहि	१४	२	२३
उद्योधन्त्यभि	१२	३	२६	उप स्तृणीहि	१२	३	३७
उद्यंस्त्वं देव सूर्य	१३	१	३२	उपस्थास्ते अन	१२	१	६२
उद्भव ऊर्मिः शम्या	१४	२	१६	उपहरति प्रति	६	६(५)	६
उद्ययन्तमसरूप	७	५३	७	उपहरति हवीं	६	६(२)	३
उद्वाज आगन्धो	१३	१	२	उप हव्यं विषूवन्तं	११	७	१५
उद्वेपमाना मनसा	५	२१	२	उपहृता इह गावः	७	६०	५
उद्वेपय त्वमबुदे	११	६	१८	उपहृता नः पितरः	१८	३	४५
उद्वेप यसां विजन्तां	११	६	१२	उपहृता भूरिधनाः	७	६०	४
उन्मादयत मारुतः	६	१३०	४	उपहृतो मे गोपा	१६	२	३
उन्मुञ्चन्तीर्वि	८	७	१०	उपहृतो वाचस्पति	१	१	४
उन्मुञ्च पाशांस्त्व	६	११२	२	उपहृतौ सयुजौ	६	१४०	३
उपजीका उद्भरन्ति	२	३	४	उपह्वये सुदुधां	७	७३	७
उपजीवा स्थोप	१६	१६	२	उपह्वये सुदुधां	६	१०	४
उप त्वा कर्मन्तूतये	२०	१४	२	उपाव सृज तम्या	५	१२	१०
उप त्वा कर्मन्तूतये	२०	६२	२	उपास्तरीकरो	१२	३	३८
उप त्वा देवो अ	७	११०	३	उपास्मान्प्राणो	१६	५८	२
उप त्वा नमसा वयं	३	१५	७	उपाहतमनुबुद्ध	१०	१	१६
उप द्यामुप वेत	१८	३	५	उपेहोप पर्च	६	४	२३
उप द्रव पयसा	७	७३	६	उपैनं विश्वरूपा	६	७	२६
उप नो न रमसि	२०	२७	१४	उपो ते बध्वे बद्धा	१३	४	४५
उप नः सवनाग	२०	५७	२	उपोत्तमेभ्यः स्वाहा	१६	२२	११
उप नः सवनाग	२०	६८	२	उपोहश्चसमूह	३	२४	७
उप नः सुतसा	२०	२४	१	उभयोरग्रभं	१६	३८	३
उप प्र वद मण्डकि	४	१५	१४	उभयं शृणुद्वय	२०	११३	१

कां० सू० म०		कां० सू० म०	
उभाजिग्यथुर्न	७ ४४ १	उर्वीरासन्परि	१३ १ ४६
उभाभ्यां देव सवि	६ १६ ३	उलूक यातुं	८ ४ २२
उभावन्तौ समर्ष	१३ २ १३	उलूखले मुसले	१० ६ २६
उभे नभसी	१२ ३ ६	उवे अम्ब सुला	२० १२६ ७
उभोभयाविश्रुप	८ ३ ३	उशती कन्यला इ	१४ २ ५२
उयं यकांशलोकका	२० १३० २०	उशन्तस्त्वेधीम	१८ १ ५६
उरुगूलायादुहि	५ १३ ८	उशन्ति घाते	१८ १ ३
उरुव्यचसाग्नेर्धा	५ २७ ८	उषसे नःपरिदेहि	१६ ५० ७
उरुव्यचानो	५ ३ ८	उषस्पतिर्वाचस्प	१६ ६ ६
उरुं नो लोकमनु	१६ १५ ४	उषा अपस्वसुस्त	१६ १२ १
उरुःकोशो वसु	११ २ ११	उषा देवी वाचा	१६ ६ ५
उरुः पृथुः सुभूर्भु	१३ ४ ५२	उषाः पुंश्चली	१५ २ १३
उरुःप्रथस्	११ १ १६	उषा यस्माद् दुष्व	१६ ६ २
उरणसावसु	१८ २ १३	उष्ट्रा यस्य प्रवाह	२० १२७ २
उर्वश्चमा चमसश्च	१६ ३ ३		

ऊ

ऊती शचीवस्तव	२० ३३ ३	ऊर्ध्वास्तिष्ठा न ऊतेय	२० ४५ ३
ऊरुभ्यां ते अष्टीव	२ ३३ ५	ऊर्ध्वाअस्यं समि	५ २७ १
ऊरुभ्यां ते अष्टीव	२० ६६ २१	ऊर्ध्वा दिग्गृहस्पति	३ २७ ६
ऊरु पादावष्टी	११ ८ १४	ऊर्ध्वा यस्यामति	७ १४ २
ऊर्ज एहि स्वध	८ १० (२) ४	ऊर्ध्वाया दिशः	६ ३ ३०
ऊर्जमस्माऊर्ज	२ २६ ५	ऊर्ध्वायां त्वा दि	१८ ३ ३५
ऊर्जस्वतीपयस्वती	६ ३ १६	ऊर्ध्वायै त्वा दिशे	१२ ३ ६०
ऊर्जां च षाएष	६ ६ ३) ३	ऊर्ध्वो नु स्रष्टा	१० २ २८
ऊर्जेत्वा बलाय	१६ ३७ ३	ऊर्ध्वो बिन्दुरुद	१० १० १६
ऊर्जोभागो निहितो	११ १ १५	ऊर्ध्वो रोहितो	१३ १ ११
ऊर्जोभागो य इमं	१८ ४ ५४	ऊर्ध्वमरन्तमुदकं	१० ८ १४
ऊर्जं बिभ्रद्वसुव	७ ६० २	ऊर्ध्वःसुमेधु जा	११ ४ २५
ऊर्ध्वस्थिष्ठतु रत्न	१६ ४६ २	ऊर्ध्वोरोजोऽङ्ग	१६ ६० २

ऋ

ऋक्सामयजुः	११ ७ ५	ऋचा कपोत	६ २८ १
ऋक्सामाभ्याम	१४ १ ११	ऋचा कुम्भी	६ ५ ५

ऋचा कुंभ्यधिहि

(४, ५ = १)

एत देवा दक्षिणतः

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
ऋचा कुंभ्यधिहि	११	३	१४	ऋतुमिष्टार्तवै	५	२८	१३
ऋचां च स साम्ना	१५	६	६	ऋतुभ्यष्टार्तवेभ्यो	३	१०	१०
ऋचो अक्षरे परमे	६	१०	१८	ऋतुभ्यष्टार्तवेभ्यो	१६	३७	४
ऋचं साम यजाम	७	५४	१	ऋतूनां च वै	१५	६	१८
ऋचं साम यद्	७	५४	२	ऋतून ब्रूम	११	६	१७
ऋचः पदं मात्र	६	१०	१६	ऋन्त्यजऋतु	३	१०	६
ऋचः प्राश्चः	१५	३	६	ऋतेन गुप्तऋतु	१७	१	२६
ऋचः सामानि	११	७	२४	ऋतेन तष्टा	११	१	२३
ऋजीषी वज्री	२०	१२	७	ऋतेन स्थूणा	३	१२	६
ऋणादृणमिव	१६	४५	१	ऋतं शंसन्त	२०	६१	२
ऋतवस्तमवधत्ता	१०	६	१८	ऋतं सत्यं तपोरा	११	७	१७
ऋतवः पत्कारं	११	३	१७	ऋतं हस्तावनेज	११	३	१३
ऋतस्य च वै	१५	६	६	ऋधङ्मन्त्रो यो	५	१	१
ऋतस्य पन्थामनु	८	६	१३	ऋभुरसि जगच्छ	६	४८	२
ऋतस्य पन्थामनु	१८	४	३	ऋषिभ्यः स्वाहा	१६	२२	१४
ऋतस्यर्तेना	६	११४	२	ऋषीणां प्रस्तरो	१६	२	६
ऋतावानं वैश्वा	६	३६	१	ऋषी बोधप्रती	५	३०	१

र

एकचक्रं वर्तत	१०	८	७	एकोनविंशतिः	१६	२३	१६
एकपदी द्विपदी	१३	१	४२	एको बहूनामसिं	४	३१	४
एकपाद् द्विपदो भू	१३	२	२७	एको वो देवोऽप्य	३	१३	४
एकपाद् द्विपदो भू	१३	३	२५	एको गौरेक	८	६	२६
एकया च दश	७	४	१	एकं पादं नोत्खिद	११	४	२१
एकरात्रो द्विरात्रः	११	७	१०	एकं रजस एना	५	११	६
एकर्चेभ्यः स्वाहा	१६	२३	२०	एजदेजदजग्रभं	४	५	४
एकशतं ता जनता	५	१८	१२	एत उ त्ये पतयन्ति	८	४	२०
एकशतं लक्ष्म्यो	७	११५	३	एतत्ते तत स्वधा	१८	४	७७
एकशतं विष्कन्धा	३	६	६	एतत्ते ततामह	१८	४	७६
एका च मे दश	५	१५	१	एतत्ते प्रततामह	१८	४	७५
एकादशर्चेभ्यः स्वाहा	१६	२३	८	एतत्ते देयः सवि	१८	४	३१
एकानृचेभ्यः स्वाहा	१६	२३	२२	एनत् त्वा वासः	१८	२	५७
एकाष्टका तपसा	३	१०	१२	एतदारोह वय	१८	३	७३
एकैकयैषा सुष्टया	३	२८	१	एत देवा दक्षिणतः	११	६	१८

कां	सू०	म०	कां०	सू०	म०
एतद्वा उ स्वादीयो	६ (६३)	६	एन्येका श्येन्येका	६	८३ २
एतद्वै ब्रध्नस्य	११	३ ५०	एभिर्द्युभिः सुमना	२०	२१ ४
एतद्वै विश्वरूपं	६	७ २५	एमाशुमाशवे	२०	६८ ७
एतद्वो ज्योतिः	६	५ ११	एमा अशुर्योषितः	११	१ १४
एतद्वो ब्राह्मणा	१२	४ ४८	एमां कुमारस्तकण	३	१२ ७
एतद्वि शृणु मे	१०	१ २८	एमेनं सृजता सुते	२०	७१ ६
एतमिधमं समाहि	१०	६ ३५	एमं पन्थामह	१४	२ ६
एतस्माद्वा ओह	११	३ ५२	एमं भज ग्रामे	४	२२ २
एता अश्वा आ	२०	१२६ १	एमं यज्ञमंजु	७	२० ५
एत एना व्याकरं	७	११५ ४	एयमगन्वक्षिणा	१८	४ ५०
एता देवसेनाः	५	२१ १२	एयमगन्वोषधी	४	३७ ६
एतास्ते अग्ने समि	५	२६ १४	एयमगन् पतिकामा	२	३० ५
एतास्ते अग्ने समि	१६	६४ ४	एयमगन् बर्हिषा	५	२६ ६
एतास्ते असौ	१८	४ ३३	एवा ते हारियोज	२०	३५ १६
एतास्त्वान्जोष	६	५ १५	एवा त्वं देव्यन्त्ये	१२	५ ६५
एतु तिस्रःपरावत	६	७५ ३	एवा नू नमुप	२०	६६ २
एते अस्मिन्देवा	१३	४ १३	एवानेवाव सा	१६	७ ४
एते त इन्द्र जन्तवो	२०	५६ ६	एवा पतिं द्रोणसाचं	२०	६४ ४
एते वै प्रियाश्वा	६	६(२) ६	एवा पाहि प्रलथा	२०	८ १
एते स्तोमा नरां	२०	३७ १०	एवा पित्रे विश्वदे	२०	८८ ६
एतोऽन्विन्द्रं स्तवाम	२०	६५ १	एवा महान् बृहद् दिवो	५	२ ६
एतौ आवाणौ	११	१ ६	एवा महान् बृहद् दिवो	२०	१०७ १२
एतं पृच्छ कुहं पृ	२०	१३० ५	एवा रातिस्तुवीम	२०	६० २
एतं भागं परि	६	१२२ १	एवा हि ते विभूतय	२०	६० ५
एतं वो युवानं	६	४ २४	एवा हि ते विभूतय	२०	७१ ५
एतं सधस्थापरि	६	१२३ १	एवा ह्यसि वीरयुरे	२०	६० १
एदु मध्वो मदन्त	२०	६४ ४	एवा ह्यस्य काम्या	२०	६० ६
एदं बर्हिरसदो मे	१८	४ ५२	एवा ह्यस्यस्यकाम्या	२०	७१ ६
एधोस्थोधिषीय	७	८६ ४	एवा ह्यस्य सुनृता	२०	६० ४
एनश्चिपङ्क्तिका	२०	१३० ११	एवा ह्यस्य सुनृता	२०	७१ ४
एना व्याघ्रं	४	८ ७	एवेदिन्द्रं वृषणं	२०	१२ ६
एनीर्धाना हरि	१८	४ ३४	एवैवापागपरे सन्तु	२०	६४ ७
एन्द्र नो गधि प्रियः	२०	६४ १	एवोष्वस्मिन्नि	६	८४ ३
एन्द्रवाहो नृपतिं	२०	६४ ३	एष इषाय मामहे	२०	१२७ ३
एन्द्र खानतिं	२०	७० १७	एष ते यज्ञो	७	६६ ६

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
एष यज्ञानां	४	३४	५	एषामहं समासी	७	१२	३
एष वा अतिथिर्य	६	६(३)	७	एषा सनन्ती	१०	८	३०
एष स्थ ते तन्वो	२०	६७	६	एषां यज्ञमुत्	१	६	४
एषा ते कुलपा	१	१४	३	एह यन्तु पशवो ये	२	२६	१
एषा ते राजन्	१	१४	२	एह यातु वरुणः	६	७३	१
एषा त्वचां पुरुषे	१२	३	५१	एहि जीधं त्रायमाणं	४	६२	१
एषा पशन्त्सं	३	२८	२	एह्यस्मानमा	२	१३	४
एषामहमायुधां	३	१६	५				

रे

ऐतु देवस्यायामा	१६	३६	१	ऐनं ब्रह्म गच्छति	१५	१०	८
ऐतु प्राण ऐतु मन	५	३०	१३	ऐनं वशो गच्छति	१५	११	६
ऐनमापो गच्छ	१५	७	३	ऐनं भद्रा गच्छ	१५	७	५
ऐनमिन्द्रियं ग	१५	१०	१०	ऐन्द्राग्रं पावमानं	११	७	६
ऐनान्यतामिन्द्रा	६	१०४	३	ऐन्द्राग्नं धर्म बहुलं	८	५	१६
ऐनं निकामो ग	१५	११	११	ऐभिरग्ने सरथं	२०	१३	४
ऐनं प्रियं गच्छति	१५	११	७	ऐषु नह्य वृषा	६	६७	३

ओ

ओको अस्य भुजव	५	२२	५	ओदनेन यज्ञव	११	३	१६
ओ चित्चत्सन्नार्थं स	१८	१	१	ओषदर्भ	१६	२६	७
ओजश्च तेजश्च	१२	५	७	ओषधयो भूत	११	५	२०
ओजस्तदस्य	२०	१०७	२	ओषधीनोमहं	१०	४	२१
ओजो ऽस्योजो	२	१७	१	ओषधीभिर्भ्रा	१५	१४	१२
ओता आपः	६	२३	२	ओषधीरेव	८	१०(२)	७
ओते मे द्यावा	५	२३	१	ओषधीरेवास्मै	८	१०(२)	६
ओते मे द्यावा	६	६४	३	ओषन्ती समोषन्ती	१२	५	५४
ओदन एवौदनं	११	३	३१				

औ

अं

	कां	सू०	म०		कां०	सू०	म०
अंशो भगो वरु	७	४	२	अंशोमुचं वृषभं	१६	४२	४
अंशोमुचे प्रभरे	१६	४२	३				

क

क इदं कस्मा	३	२६	७	कर्करिको निखात	२०	१३२	३
क ईं वेद सुते सचा	२०	५३	१	कर्णाभ्यान्ते कङ्कूषे	६	८	२
क ईं द सुते सचा	२०	५७	११	कर्णा श्वावित् तदन्न	५	१३	६
क एषां कर्करी लि	२०	१३२	८	कर्शफस्य विशफ	३	६	१
क एषां दुन्दभिं	२०	१३२	६	कर्षेदेनं न चैनं	१५	१३	१२
कण्वा इन्द्रं यद	२०	१३८	३	कल्याणि सर्ववि	६	१०७	४
कण्वा इव भृगवः	२०	१०	२	कविर्न निरयं	२०	७७	३
कण्वा इव भृगवः	२०	५६	२	कश्यपस्त्वामसृज	८	५	१४
कण्वेभिर्धृष्ण	२०	५२	३	कस्यपस्य चक्षु	४	२०	७
कण्वेभिर्धृष्ण	२०	५७	१६	कस्ते मद इन्द्र र	२०	७६	३
कण्वः कक्षीवा	१८	३	१५	कस्तं प्र वेद	६	१	६
कतरत्त आहराणि	२०	१२७	६	कस्त्वा सत्यो	२०	१२४	२
कति देवाः कतमे	१०	२	४	कस्मादङ्गादीप्य	१०	७	२
कति जु वशा नारद	१२	४	४३	कस्मान्नु गुल्फा	१०	२	२
कथं गायत्री त्रिवृतं	८	६	२०	कस्मिन्नङ्गे तपो	१०	७	१
कथं महे असुराया	५	११	१	कस्मिन्नङ्गे तिष्ठति	१०	७	३
कथं वातो नेलयति	१०	७	१७	कस्ये सृजाना अति	१८	३	१७
कदा मर्त्तमराधसं	२०	६३	५	कामस्तदग्रे समव	१६	५२	१
कदु धुम्नमिन्द्र	२०	७६	४	कामस्येन्द्रस्य	६	२	६
कदु स्तवन्त अमृत	२०	५०	२	कामेन मा काम	१६	५२	४
कदुन्वश्याकृत	२०	६७	३	कामो जज्ञे प्रथमो	६	२	१६
कज्ञव्यो अतसी	२०	५०	१	कालादापः	१६	५४	१
कपृन्नरः कपृथ	२०	१३७	२	काले तपः काले	१६	५३	८
कप्रु फलीकरणा	११	३	६	कालेन वातः	१६	५४	२
कयां नश्चिन्न आ	२०	१२४	१	काले मनः काले	१६	५३	७
करीषिणीं फलव	१६	३१	३	कालो यमङ्गिरा	१६	५४	५
करंभं कृत्वातिथं	४	७	३	काले यज्ञं समैरय	१६	५४	४

	का०	सू०	म०		का०	सू०	म०
कालो ह भूतं भव्यं	१६	५४	३	कृत्याकृत्यो बलगिनो	१०	१	३१
कालो अश्वो वह	१६	५३	१	कृत्यादुषण एवा	१६	३४	४
कालो भूतिमसृज	१६	५३	६	कृत्यादुषिरयं	२	४	६
कालो सू दिवमज	१६	५३	५	कृत्याः सन्तु कृत्या	५	१४	५
कालः प्रजा असृजत	१६	५३	१०	कृत्रिमः कंटकः	१४	२	६८
किमङ्ग त्वा मघव	२०	८६	३	कृन्त दर्भ	१६	२८	८
किमयं त्वां वृषा	२०	१२६	३	कृष्णायाः पुत्रो	१३	३	२६
किञ्चिता स्कम्भः प्र	१०	७	६	कृष्णं नियानं हर	६	२२	१
किलासं च पलितं	१	२३	२	कृष्णं नियानं हर	६	१०	२२
किं भ्राता सद्यद	१८	१	१२	कृष्णं नियानं हर	१३	३	६
किं सिञ्जो राजा	१८	१	३३	केतुं कृण्वन्नकेतवे	१०	२६	६
किं सुबाहो स्व	२०	१२६	८	केतुं कृण्वन्नकेतवे	२०	४७	१२
कीर्तिश्च यशश्च	१५	२	८	केतुं कृण्वन्नकेतवे	२०	६६	११
कीर्तिश्च यशश्च	१५	२१	२८	केन देवाँ अनु	१०	२	२२
कीर्तिश्च यशश्चा	१३	४	१४	केन पर्जन्यमन्वे	१०	२	१६
कीर्तं च वा एष	६	६(३)	५	केन पाष्णी आभृ	१०	२	१
कुत इन्द्रः कुतः	११	८	१२	केन श्रोत्रियमा	१०	२	२०
कुतस्तौ जातौ	८	६	१	केनापो अन्व	१०	२	१६
कुतः केशान् कुतः	११	८	१२	केनेमां भूमिं	१०	२	१८
कुम्भीकादूषीकाः	१६	६	८	केनेयं भूमिर्वि	१०	२	२४
कुलायेधि कुलाय	६	३	२०	केवलीन्द्राय दुदुहे	८	६	२४
कुलायं कृणवादि	२०	१३२	५	कैरात पुन उपतृ	५	१३	५
कुवित्सस्य प्र हि	२०	७८	२	कैरातिका कुमारिका	१०	४	१४
कुविदङ्ग यवम	२०	१२५	२	को अर्जन्याः पयः	२०	१३०	३
कुहाकं पक्कं पृ	२०	१३०	६	को अद्य युक्तं धुरि	१८	१	६
कुहूर्देवानाममृत	७	४७	२	को अर्य बहुलिमा	२०	१३०	१
कुहूर् देवीं सुकृतं	७	४७	१	को अस्मिन्नापो	२०	१३०	२
कृत्यास्य सं	१२	४	३	को अस्मिन्नापो	१०	२	११
कृणुतं धूमं	११	१	२	को अस्मिन् प्राण	१०	२	१३
कृणोमि ते प्राजा	३	२३	५	को अस्मिन् यज्ञ	६०	२	१४
कृणोमि ते प्राणा	८	२	११	को अस्मिन् रूप	१०	२	१२
कृतव्यधनि विध्य	५	१४	६	को अस्मिन् रेतो	१०	२	१७
कृतं न श्वघ्नी	२०	१७	५	को अस्मै वासः	१२	२	१५
कृतं मे वक्षिणे	७	५०	८	को अस्य बाहू	१०	२	५
कृत्याकृतं बलगिन	५	३१	१२	को अस्य वेद प्रथ	१८	१	७
				को अस्या नो दुहो	७	१०३	१

कां०	सू०	म०		कां०	म०	सू०
को ददश प्रथमं	६	६	४	कवादमक्षिमि	१२	२ ६
को सु गौः क	८	६	२५	कव्यादमशे	५	२६ १०
को वामद्या करते	२०	१४३	३	कव्यादानुवर्तय	११	१० १८
को विराजो मिथु	८	६	१०	कूरमस्या आश	५	१६ ५
कोशं दुहन्ति	१८	४	३०	कोडआसीजामि	६	४ १५
कोशविले रजनि	२०	१३५	२	कोडौ ते स्तां	१०	६ २५
कः काश्याः पयः	२०	१३०	४	कोधो वृकौ मन्थु	६	७ १३
कः पृश्निं धेनुं	७	१०४	१	क्लीब क्लीवं त्वाकरं	६	१३८ ३
कः सप्त जालि	१०	२	६	क्लीवं कृध्योपशिन	६	१३८ २
कन्दाय ते प्राणाय	११	२	३	क१प्रेसन्ती युवती	१०	७ ६
क्रमध्वमग्निना	४	१४	२	क१प्रेसनदीप्यते	१०	७ ४
कव्यादमग्निं प्र	१२	२	८	कार्धमासाः क यन्ति	१२	७ ५
कव्यादमग्निं श	१२	२	१०	काहतं परास्यः	२०	१२६ ६

ख

खड्गेऽधिवङ्कमां	११	६	१६	खलः पातं स्फ्या	११	३ ६
खण्वखाश्चैम	४	१५	१५	खे रथस्य खे नसः	१४	१ ४१

ग

गणास्त्वोप गायन्तु	४	१५	४	गावः सन्तु प्रजाः	६	४ २०
गणेश्यः स्वाहा	१६	२२	१६	गिरयस्ते पर्वता	१२	१ ११
गन्धर्वाप्सरसो	११	६	४	गिरा वज्रो न संभृ	२	४७ ३
गन्धर्वाप्सरसः	८	८	१५	गिरा वज्रो न संभृ	२०	१३७ १४
गन्धारिभ्यो मूजव	५	२२	१४	गिरावरगराटेषु	६	६६ १
गमक्षस्मे वसूत्या	२०	६४	५	गिरिमेनाँआ वेशय	२	२५ ४
गर्भे तु नौ जनिता	१८	१	५	गिरीरज्जाप्रजेमा	२०	६४ ८
गर्भो अस्योषधीनां	५	२५	७	गिर्वणः पाहि नः	२२	६ ६
गर्भो अस्योषधीनां	६	६५	३	गीर्भिरुध्वान्	१३	१ ५४
गर्भं ते मित्रावरुणौ	५	२५	४	गुदो आसन्ति	६	४ १४
गर्भं धेहिसिनीवा	५	२५	३	गृहमेधी गृहपति	८	१०(१) ३
गायत्रयुष्णिग	१६	२१	१	गृहाण प्रावाणौ	११	१ १०
गायत्रेण प्रतिमि	६	१०	२	गृह्णामि ते सौम	१४	१ ५०
गावो भगो गाव	४	२१	५	गोभिष्टरेमामतिं	७	५० ७

	कां०	सू०	मं०		कां०	सू०	मं०
गोभिष्टरेमामतिं	२०	१७	१०	ग्राहि पाष्मानम	१२	३	१८
गोभिष्टरेमामतिं	२०	८६	१०	ग्राह्या गृहाः सं	१२	२	३६
गोभिष्टरेमामतिं	२०	६४	१०	ग्रीवाभ्यस्त उष्णि	२०	६६	१८
गोभिष्टा पात्वृष	१६	२७	१	ग्रीवाभ्यस्त उष्णि	२	३३	२
गोभ्यो अश्वेभ्यो	६	३	१३	ग्रीवास्ते कृत्ये	१०	१	२१
गोसनिं वाच	३	२०	१०	ग्रीष्मस्ते भूमेव	१२	१	३६
गौरमीमेदभि	६	१०	६	ग्रीष्मो हेमन्तः शि	६	५५	२
गौरिन्मिमाम	६	१०	२१	ग्रीष्मावेनं मासौ	१५	४	६
गौरैव तान्	५	१८	११	ग्रीष्मौ मासौ	१५	४	५
ग्रामणीरसि	१६	३१	१२				

घ

घर्म इवाभि तप	१६	२८	३	घृतादुल्लुप्तं मधुना	५	२८	१४
घर्मः समिद्धो	८	८	१७	घृतेन त्वा समुक्षा	१६	२७	५
घृतमप्सरारभ्यो	७	१०६	२	घृतेन सीता मधुना	३	१७	६
घृतस्य जूतिः	१६	५८	१	घृतं ते अग्ने	७	८२	६
घृतहृदा मधुकूलाः	४	३४	६	घृतं प्रोक्षन्ती	१०	६	११
घृतादुल्लुप्तो मधु	१६	३३	२	घोरा ऋपयो	२	३५	४
घृतादुल्लुप्तो मधु	१६	४६	६				

च

चक्षुरसि चक्षुर्मे	२	१७	६	चतुर्वीरं बध्यत	१६	४५	४
चक्षुर्मुशलं काम	११	३	३	चतुर्द्वीतार आ	११	७	१६
चक्षुषा ते चक्षुर्ह	५	१३	४	चतुष्टयं युज्यते	१०	२	३
चक्षुषो हेते मनसो	५	६	६	चतुरात्रः पञ्च	११	७	११
चक्षुः श्रोत्रं यशो	११	५	२५	चत्वारि वाक्परि	६	१०	२७
चतस्रश्च मे चत्वा	५	१५	४	चन्द्रमा अप्स्व	१८	४	८६
चतस्रो दिवः प्रदि	१	११	२	चन्द्रमा नक्षत्राणा	५	२४	१०
चतुरः कुंभाश्चतु	४	३४	७	चन्द्रमा नक्षत्रै	१६	१६	४
चतुर्दंष्ट्रांष्ट्र्याव	११	६	१७	चन्द्रा मनसो जात	१६	६	७
चतुर्दशर्चभ्यः	१६	२३	११	चन्द्र यत्ते तपस्तेन	२	२२	१
चतुर्धा रेतो अभश्च	१०	१०	२६	चन्द्र यत्ते तेजस्तेन	२	२२	५
चतुर्नमो अष्टक	११	२	६	चन्द्र यत्ते ऽर्चिस्तेन	१	२३	३

चन्द्र यत्ते शोचिस्तेन

(४,५८८)

जितम् ०।०।स म

	का०	सू०	म०		का०	सू०	म०
चन्द्र यत्ते शोचिस्तेन	२	२२	४	चित्रं देवानामुद	१३	२	३५
चन्द्र यत्ते हरस्तेन	२	२२	२	चित्रं देवानामुद	२२	१०७	१४
चरं पञ्च विलमु	११	३	१८	चित्रं देवानां केतुर	१३	२	३४
चरेदेवा त्रैहायणा	१२	४	१६	चित्रं देवानां केतुर	२०	१०७	१३
चिन्तिरा उपवर्ह	१४	१	६	चेतो हृदयं	६	७	११
चित्रश्चिकित्वा	१३	२	३२	च्युता चेत्यं	६	२	१५
चित्राणि साकं	१६	७	१				

छ

छन्दांसि यज्ञे	५	२६	५	छिन्धि दर्भं	१६	२८	६
छन्दः पक्षे उषसा	८	६	१२	छिन्ध्या छिन्धि	१२	५	५१
छिनत्यस्य पितृ	१२	५	४३				

ज

जगता सिन्धु	६	१०	३	जायमानामि जा	१२	४	१०
जङ्घिडोसि जङ्घि	१६	३४	१	जाया इदो अप्सरसो	४	३७	१२
जङ्घिडो जम्भाद्	२	४	२	जालापेणामि	६	५७	२
जज्ञानः सोमं सह	२०	८७	३	जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकम-			
जनाद् विश्वजनी	७	४५	१	श्यष्टां	१०	५	३६
जनाय चिद्य ईवते	२०	६०	२	जितमस्माकमु	१६	८	१
जनिन्यन्ति नाव	१४	१२	७२	जितम् ०।०।स	१६	८	२१
जनीन्नीव प्रति	१२	३	२३	जितम् ०।०।स	१६	८	६
जनं बिभ्रती	१२	१	४५	जितम् ०।०।स	१६	८	२६
जरायुजः प्रथम	१	१२	१	जितम् ०।०।स	१६	८	२७
जरायै त्वा परि	३	११	७	जितम् ०।०।स	१६	८	१२
जरां सु गच्छ परि	१६	२४	५	जितम् ०।०।स	१६	८	१३
जवस्ते अर्धजिहि	६	६२	२	जितम् ०।०।स	१६	८	२०
जहि त्वं काम मम	६	२	१०	जितम् ०।०।स	१६	८	१५
जहि दर्भं सपत्ना	१६	२६	६	जितम् ०।०।स	१६	८	१७
जाग्रद् दुष्यन्त्यं	१६	६	६	जितम् ०।०।सनि	१६	८	५
जातघेदो नि	६	७७	३	जितम् ०।०।सनि	१६	८	७
जातो व्यख्यत्	२०	३४	१६	जितम् ०।०।सप	१६	८	८
जातीत स्मैर्न	६	१२३	२	जितम् ०।०।सप	१६	८	११

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
जितम्०।०।स वृह	१६	८	१०	जीवला स्थ जी	१६	६६	४
जितम्०।०।स मासा	१६	८	२२	जीवलां नघारिषां	८	२	६
जितम्०।०।स मि	१६	८	२८	जीवलां नघारिषां	८	७	६
जितम्०।०।स रा	१६	८	३६	जीवानामायुः	१२	२	४५
जितम्०।०।स वन	१६	८	१८	जीवा स्थ जीव्या	१६	६६	१
जितम्०।०।स वा	१६	८	१६	जीवेभ्यस्त्वा	८	१	१५
जितम्०।०।सोऽ	१६	८	२५	जीवेम शरदः शतम्	१६	६७	२
जितम्०।०।सोऽ	१६	८	६	जीवं रुदन्ति	१४	१	४६
जितम्०।०।सोऽ	१६	८	१४	जुष्टो दमूना अति	७	७३	६
जितम्०।०।सोऽ	१६	८	१६	जूर्णि पुनर्वो यन्तु	२	२४	५
जितम्०।०।सोऽ	१६	८	२३	जूहर्दाधार घामु	१८	४	५
जितम्०।०।सोऽ	१६	८	२४	ज्याके परि णो	१	२	२
जितमस्माकमु	१६	८	३०	ज्या घोषा दुन्दुभयो	१५	२१	६
जितमस्माकमु	१६	६	१	ज्यायस्त्रन्त	३	३०	५
जिह्वा ज्या भवति	५	१८	८	ज्यायान्निमिष	६	२	२३
जिह्वाया अग्रे	१	३४	२	ज्यैष्ठ्यां जातो	६	११०	२
जीवतां ज्योतिः	८	२	२	ज्योतिष्मतो लो	६	६(६)	१४
जीवला नाम ते	१६	३६	३				

त

तकमन् भ्रात्रा	५	२२	१२	ततश्चैनमन्येन	११	३	४०
तकमन् मूजवतो	५	२२	७	ततश्चैनमन्येन	११	३	४३
तकमन् व्यालवि	५	२२	६	ततश्चैनमन्येन	११	३	३५
ततश्चैनमन्यया	११	३	३६	ततश्चैनमन्येनार	११	३	४१
ततश्चैनमन्यया	११	३	४६	ततश्चैनमन्येनोद	११	३	४२
ततश्चैनमन्याभ्या	११	३	३४	ततश्चैनमन्यैर्द	११	३	३७
ततश्चैनमन्याभ्या	११	३	४४	ततश्चैनमन्यैः	११	३	३८
ततश्चैनमन्याभ्या	११	३	४५	ततस्ततामहास्ते	५	२४	१७
ततश्चैनमन्याभ्या	११	३	४६	तता अवरे ते	५	२४	१६
ततश्चैनमन्याभ्या	११	३	४७	ततं तन्तुमन्वेके	६	१२२	२
ततश्चैनमन्याभ्या	११	३	३३	तत् त्वा यामि सुवीर्यं	२०	६	३
ततश्चैनमन्याभ्या	११	३	४८	तत् त्वा यामि सुवीर्यं	२०	४६	६
ततश्चैनमन्येन	११	३	३६	तत्सूर्यस्य देवत्वं	२०	१२३	१
ततश्चैनमन्ये	११	३	३२	तथा तदग्रे कणु	५	२६	२

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
तदग्निराह तदु	१६	६	२	तनूनपात् पथ	५	१२	२
तदाग्निराह तदु	८	५	५	तनूष्टे वाजिन् तन्वं	६	६२	३
तदग्ने चक्षुः	८	३	२१	तनूस्तन्वा मे सहे	१६	६१	१
तदद्या चित्त	२०	६१	३	तन्त्रमेके युवती	१०	७	४२
तदमुष्मा अग्ने	१६	६	११	तन्नस्तुरीयमद्भुतं	५	२७	१०
तदस्तु मित्रावरु	१६	११	६	तन्नो वि वोचोयदि	२०	३६	४
तदिदास भुवनेषु	५	२	१	तन्मित्रस्य वरुण	२०	१२३	२
तदिदास भुवनेषु	२०	१०७	४	तन्वं स्वर्गो बहुधा	१२	३	५४
तदृषु ते महत् पृथु	५	१	५	तपनो अस्मि पिशा	४	३६	६
तदेकमभवत्	१५	१	३	तपश्चैवास्तां कर्म	११	८	२
तद् ब्रह्म च तपश्च	८	१० (४)	१६	तपश्चैवास्तां कर्म	११	८	६
तद्भद्राः समगच्छ	१०	१०	१७	तपसा ये अना	१८	२	१६
तद् यस्मा एवं विदुषे	५	१० (६)	१	तप्तो वां धर्मो नक्षतु	७	७३	५
तद् यस्यैवं विद्वान्				तमाहवनीयश्च	१५	६	१४
व्रात्य उद्धते	१५	१२	१	तमितिहासश्च	१५	२	११
तद् यस्यैवं विद्वान्				तमिदं निगतं खडः	१३	४	१२
व्रात्य एकां	१५	१३	१	तमिन्द्र मदमाग	२०	२४	३
तद् यस्यैवं विद्वान्				तमिन्द्रं जोहवीमि	२०	५५	१
व्रात्यश्चतुर्थी	१५	१३	७	तमिन्द्रं वाजयाम	२०	४७	१
तद् यस्यैवं विद्वान्				तमिन्द्रं वाजयाम	२०	१३७	१२
व्रात्यस्तृतीयां	१५	१३	५	तमिमं देवतामणिं	१०	६	२६
तद् यस्यैवं विद्वान्				तमीमं ह इन्द्रमस्य	२०	३६	३
व्रात्योतिथिः	१५	११	१	तमु नः पूर्वं पितरो	२०	३६	२
तद् यस्यैवं विद्वान्				तमुष्टुहि यो	६	१	२
व्रात्यो द्वितीयां	१५	१३	३	तमृचश्च सामानि	१५	६	८
तद् यस्यैवं विद्वान्				तमृतं च सत्यं	१५	६	५
व्रात्योपरि	१५	१३	६	तमृतवश्चार्त	१५	६	१७
तद् यस्यैवं विद्वान्				तम्बमि प्र गायत	२०	६१	४
व्रात्यो राक्षो	१५	१०	१	तम्बमि प्र गायत	२०	६२	८
तद् वाअथर्वणः	१०	२	२७	तयार्बुदे प्रणुत्ता	११	६	२०
तद् वात उन्मथाय	२०	१३२	४	तयार्हं शत्रून्सा	२	२७	५
तद् विषं सर्पा	८	१० (५)	१६	तयोरहं परिनुत्य	१०	७	४३
तद्विष्णोः परमं पदं	७	२६	७	तरणिर्विश्वदर्श	१३	२	१६
तद् वै राष्ट्रमास्त्रवति	५	१६	८	तरणिर्विश्वदर्श	२०	४७	१६
तद् वो गाय सुते	२०	७८	१	तरी मन्त्रासु प्रयत्न	५	२७	६

	सू०	का०	म०
तदहै पतङ्गहै जम्भ	६	५०	२
तदपते वधापते	६	५०	३
तव चतस्रः प्रदिश	११	२	१०
तव ज्योत्नानि	२०	३७	५
तव त्यद्भिन्द्रियं	२०	१०६	१
तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं	२०	१०६	२
तव व्रते निविशन्ते	४		३
तवेदं विश्वमभितः	२०	८७	६
तस्तुवं न तस्तुवं	५	१३	११
तस्मा अग्नौ भवन्	६	६(५)	६
तस्मा अरंगमाम	१	५	३
तस्मा उदीच्या	१५	४	१०
तस्मा उदीच्या	१५	५	८
तस्मा उद्यन्तसूर्यो	६	६(५)	४
तस्मा उषाहि	६	६(५)	१
तस्मा ऊर्ध्वाया	१५	४	१६
तस्मा ऊर्ध्वाया	१५	५	१२
तस्मात् पितृभ्यो	८	१०(३)	४
तस्मादमुं निर्भजा	१६	८	३१
तस्मादमुं निर्भजा	१६	८	२
तस्मादश्वा अजा	१६	६	१२
तस्माद् देवेभ्यो	८	१०(३)	६
तस्मान्मनुष्येभ्यः	८	१०(३)	८
तस्माद् यज्ञात् सर्व	१६	६	१३
तस्माद् यज्ञात् सर्व	१६	६	१४
तस्माद् वनस्पतीनां	८	१०(३)	२
तस्माद् वै ब्राह्मणा	१२	५	१७
तस्माद् वै विद्वान्पु	११	८	३२
तस्मिन् हिरण्यये	१०	२	३२
तस्मै घृतं सुरां	१०	६	५
तस्मै दक्षिणाया	१५	४	४
तस्मै दक्षिणाया दिशो	१५	५	४
तस्मै ध्रुवाया दिशो	१५	४	१३
तस्मै ध्रुवाया दिशो	१५	५	१०
तस्मै प्रतीच्या दिशो	१५	५	६

	सू०	का०	म०
तस्मै प्रतीच्या दिशो	१५	४	७
तस्मै प्राच्या दिशो	१५	५	१
तस्मै प्राच्या दिशः	१५	४	१
तस्मै वात्यायास	१५	३	३
तस्मै सर्वेभ्योअ	१५	५	१४
तस्य अनु निभ	२०	१३१	२
तस्य देवजनाः	१५	३	१०
तस्य प्राशं त्वं जहि	२	२७	७
तस्य वात्यस्य	१५	१५	१
तस्य वात्यस्य	१५	१८	१
तस्य० । एकं तदे	१५	१७	१०
तस्य० । यदाधि	१५	१७	६
तस्य० । योस्य			
चतुर्थोपानः	१५	१६	४
तस्य० । योस्य			
चतुर्थो व्यान	१५	१७	४
तस्य० । योस्य			
चतुर्थः प्राणो	१५	१५	६
तस्य० । योस्य			
तृतीयोपानः	१५	१६	३
तस्य० । योस्य			
तृतीयो व्यानः	१५	१७	३
तस्य० । योस्य			
तृतीयः प्राणः	१५	१५	५
तस्य० । योस्य			
द्वितीयोपानः	१५	१६	२
तस्य० । योस्य			
द्वितीयो व्यान	१५	१७	२
तस्य० । योस्य			
द्वितीयः प्राणः	१५	१५	४
तस्य० । योस्य			
पञ्चमोपानः	१५	१६	५
तस्य० । योस्य			
पञ्चमो व्यानस्त	१५	१७	५

कां० सू० म०		कां० सू० म०
तस्य० । योस्य		तस्येदं वर्चस्तेजः १६ ८ ४
पञ्चमः प्राणः १५ १५ ७		तस्येदं वर्चस्तेजः १६ ८ ३३
तस्य० । योस्य		तस्येमे नव कोशा १३ ४ १०
प्रथमः प्राण १५ १५ ३		तस्येमे सर्वे यातव १३ ४ २७
तस्य० । योस्य		तस्यैष मारुतो १३ ४ ८
प्रथमोपानः १५ १६ १		तस्यौदनस्य बृह ११ ३ १
तस्य० । योस्य		ता अधरादुदीची १२ २ ४१
प्रथमो व्यानः १५ १७ १		ता अपाः शिवा १६ २ ५
तस्य० । योस्य		ता अर्षन्ति शुभि २० ४८ २
षष्ठोपानः १५ १६ ६		ता अस्य नमसा २० १०६ ३
तस्य० । योस्य		ता अस्य पृतना २० १०६ २
षष्ठो व्यानस्त १५ १७ ६		तानश्वत्थ निः श्रु ३ ६ २
तस्य० । योस्य		तानि कल्पद् ब्र ११ ५ २६
षष्ठः प्राणः १५ १५ ८		तानि सर्वाण्यप १२ ५ ११
तस्य० । योस्य		ता नः प्रजाः सं १२ १ १६
सप्तमोपानः १५ १६ ७		तान्तस्यौजाः प्र दह ४ ३६ १
तस्य० । योस्य		तावुवं न तावुवं ५ १३ १०
सप्तमो व्यानः १५ १७ ७		तामन्तको भार्य ८ १०(४) ७
तस्य० । योस्य		तामाददानस्य १२ ५ ५
सप्तमः प्राणो १५ १५ ६		तामासन्दीं ब्रात्य १५ ३ ६
तस्य० । समानम्र १५ १७ ८		तामुपाह्वयन्त ८ १०(२) ३
तस्या आहननं १२ ५ ३६		तामूर्जा देवा ८ १०(५) ४
तस्या इन्द्रो वत्स ८ १०(२) ५		तार्धाधीरग्ने समिधः ५ २६ १५
तस्या इन्द्रो वत्स ८ १०(५) २		ता वज्रिणं मन्दि २० ३१ १
स्या ग्रीष्मश्च १५ ३ ४		तावद् वाँ चक्षुस्तति १२ ३ २
तस्यामनुर्वैव ८ १०(४) १०		तावन्तो अस्य महि १६ ६ ३
तस्यासु सर्वा नक्ष १३ ४ २८		तावांस्ते मघवन् १३ ४ ४४
तस्यामृतस्येमं ८ ७ २२		तासामेका हरि २० १२६ ३
तस्यामेवास्य तद् १५ १३ १४		तासु त्वान्तर्जरस्य २ १० ५
तस्या यमो राजा ८ १०(४) ६		तास्ते रक्षन्तु तव ६ ५ ३८
तस्या विरोचनः ८ १०(४) २		तां तिरोधामि त ८ १०(५) १२
तस्याश्चित्ररथः ८ १०(५) ६		तां देवमनुष्या ८ १०(२) २
तस्यास्तक्षको ८ १०(५) १४		तां देवाभमीमांस १२ ४ ४२
तस्याः कुवेरो ८ १०(५) १०		तां देवः सविता ८ १०(५) ३
तस्याः सोमो राजा ८ १४(४) १०		तां द्विमुधात्व्यो ८ १०(४) ३

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
तां धृतराष्ट्रः	८	१०(५)	१५	तुभ्यमेव जरिमन्	२	२८	१
तां पूषं छिन्नतमा	१४	२	३८	तुभ्येदिन्द्र स्वओक्थे	२०	२४	८
तां पृथी वेन्यो	८	१०(४)	११	तुभ्येदिमा सवना	२०	७३	१
तां बृहस्पति	८	१०(४)	१५	तुभ्यं वातः प्रवतां	८	१	५
तां मायामसुरा	८	१०(४)	४	तुभ्यं सुतास्तुभ्य	२०	६६	२
तां मे सहस्राक्षो देवो	४	२०	४	तुरग्यवो मधुमन्तं	२०	११६	२
तां रजतनाभिः	८	१०(५)	११	तुराणामतुराणां	७	५०	२
तां वसुरुचिः	८	१०(५)	७	तुविग्रीवो वपोदरः	२०	५	२
तां सवितः सत्यस	७	१५	१	तृचेभ्यः स्वाहा	१६	२३	१६
तांस्त्वं प्रच्छिन्धि	१०	३	१६	तृणानि प्राप्तः	६	७	५२
तां स्वधां पितर	८	१०(४)	८	तृणैरावृतां पल	६	३	१७
तां ह जरितर्नः	२०	१३५	७	तृतीयकं वितृतीयं	५	२२	१३
तिग्ममनीकं विदितं	४	२७	७	तृतीयेभ्यः शङ्खेभ्यः	१६	२२	१०
तिग्मो विभ्राजन्	१३	२	३३	तृन्धि दर्भ०	१६	२६	२
तिरश्चिराजेरसि	७	५६	१	तृष्टमेतत्कुटुक	१४	१	२६
तिर्यग्विलश्चमस	१०	८	६	तृष्टालि तृष्टिका	७	११३	२
तिष्ठावरे तिष्ठ पर	१	१७	२	तृष्टिके तृष्टिवन्दन	७	११३	१
तिस्त्रश्च मे त्रिंशच्च	५	१५	३	तृष्णामारं क्षुधामार	४	१७	७
तिस्त्रो जिह्वा वरुण	१०	१०	२८	ते अधराञ्चः प्र	३	६	७
तिस्त्रो दिवस्तिस्त्रः	४	२०	२	ते अधराञ्चः प्र	६	२	१२
तिस्त्रो दिवस्तिस्त्रः	१६	२७	३	तेऽवदन् प्रथमा	५	१७	१
तिस्त्रो दिवो अत्यतृ	१६	३२	४	ते कुष्ठिकाः सरमायै	६	४	१६
तिस्त्रो देवीर्महिनः	५	३	७	ते कृषिं च सस्यं च	८	१०(४)	१२
तिस्त्रो मातृस्त्रीन्	६	६	१०	ते त्वा मदा अमद	२०	२१	६
तिस्त्रो मात्रा गन्धर्वा	३	२४	६	ते त्वा मदा इन्द्र	२०	१२	५
तिस्त्रो ह प्रजा	१०	८	३	ते त्वा रक्षन्तु ते	८	१	१४
तीक्ष्णीयांसः	३	१६	४	ते देवेभ्य आ	१२	२	५०
तीक्ष्णेनाग्ने चक्षु	८	३	६	तेन तमभ्यतिष्ठ	१५	१	५
तीक्ष्णो राजा वि	१६	३३	४	तेन भूतेन हविषा	६	७८	१
तीक्ष्णो यवो ब्राह्म	५	१८	६	तेनेषितं तेन	१६	५३	६
तीर्थैस्तरन्ति	१८	४	७	तेनैनं विध्याम्य	१६	७	१
तीव्रस्यामिवयसो	२०	६६	१	तेऽमुष्मै परावह	१६	६	७
तुञ्जेतुञ्जे य उक्त	२०	७०	१३	ते वृक्षाः सह तिष्ठ	२०	१३१	११
तुभ्यमग्रे पर्यवहन्	१४	२	१	तेषामासन्नानां	६	६(२)	४
तुभ्यमारण्याः	११	२	२४	तेषां न कश्चना	६	६(६)	८

	कां०	सू०	म०
तेषां प्रज्ञानाय	११	३	५३
तेषां सर्वेषांमीशा	११	६	२६
ते सत्येन मनसा	२०	६१	८
तैस्त्वा सवैरभि	४	१६	६
तौदी नामासि कन्या	१०	४	२४
तौविलिकेवेलय	६	१६	३
तं घेमिस्था नमस्वि	२०	६२	१४
तं जहि तेन मन्दस्व	१६	७	१२
तं ते मदं गृणीभसि	२०	६१	१
तं त्वा वाजेषु वे	२०	६८	६
तं त्वा स्वप्न तथा	१६	५	१०
तं त्वा स्वप्न तथा	१६	५	३
तं त्वा स्वप्न तथा	१६	५७	४
तं त्वौदनस्य	११	३	२२
तं धाता प्रत्यमुञ्च	१०	६	२१
तं पुण्यं गन्धं	८	१०(५)	८
तं पृच्छन्ती वस्त्रह	२७	३६	५
तं प्रजापतिश्च	१५	६	२५
तं प्रजापतिश्च	१५	७	२
तं बृहच्च रथतरं	१५	२	२
तं भूमिश्चाग्निश्चौ	१५	६	२
तं यज्ञायज्ञियं	१५	२	१०
तं यज्ञं प्रावृष	१६	६	११
तं वत्सा उप तिष्ठ	१३	४	६
तं वर्धयन्ते मति	२०	६१	६
तं वां रथं वयमद्या	२०	१४३	१
तं वृक्षा अप सेधन्ति	५	१६	६
तं वैरूपं च वैराजं चा	१५	२	१६
तं वो दस्ममृतीषहं	२०	६	१
तं वो दस्ममृतीषहं	२०	४६	४
तं वो धिया नव्य	२०	३६	७
तं वो वाजानां पति	२०	६४	६
तं श्यैतं च नौधसं	१५	२	६२
तं श्रद्धा च यज्ञश्च	१५	७	४
तं सभा च रुमिति	१५	६	२

	कां०	सू०	म०
तं समाप्नोति	१३	२	१५
तं सुष्टुत्या चिवासे	२०	४४	३
तं हि स्वराजं वृषभं	२०	११३	२
त्यसू बु वाजिनं	७	८५	१
त्रपु भस्म हरितं	११	३	८
त्रयस्त्रिंशद् देवता	१६	२७	१०
त्रयोदशर्चभ्यः	१६	२३	१०
त्रयो दासा आञ्ज	४	६	८
त्रयो लोकाः सं मि	१२	३	२०
त्रयः केशिन ऋतुथा	६	१०	२६
त्रयः पोषास्त्ववृत्ति	५	२८	३
त्रयः सुपर्णा उप र	१८	४	४
त्रयः सुपर्णास्त्रिवृ	५	२८	८
आतारमिन्द्रमवि	७	८६	१
आयन्तामिमं	४	१३	४
आयन्तामिमं	८	७	२
आयध्वं नो अघवि	६	६३	३
आयमाणे विश्वजि	६	१०७	२
त्रिकद्रुकेभिः पव	१८	२	६
त्रिकद्रुकेषु चेतनं	२०	११०	३
त्रिकद्रुकेषु महि	२०	६५	१
त्रिते देवा अस्मृजतै	६	१६३	१
त्रिभिः पद्भिर्धाम	१६	६	२
त्रिर्यातुधानः प्रसितिं	८	३	११
त्रिशोर्षाणं त्रिक	५	२३	६
त्रिषन्धे तमसा	११	१०	१६
त्रिषु पात्रेषु तं	१०	१०	१२
त्रिष्टा देवा अजन	१६	३४	६
त्रिंशद्धामा विरा	६	३१	३
त्रिंशद्धामा विरा	२०	४८	६
त्रिः शाश्वभ्यो	१६	३६	५
त्रीणि च्छन्दांसि	१८	१	१७
त्रीणि ते कुष्ठा ना	१६	३६	२
त्रीणि पदानि रु	१८	३	४०
त्रीणि पदा वि	७	२६	५

	कां०	सू०	मं०		कां०	सू०	मं०
त्रीणि वै वशाजातानि	१२	४	४७	त्यया वयं शाशवाहे	२०	१०७	८
त्रीण्युष्टस्य नामानि	२०	१३२	१३	त्वयि राज्ञि वसा	१६	४७	६
त्रीणाकांस्त्रीन्	१६	२७	४	त्वष्टा जायामजन	६	७८	३
त्रेधा जातं जन्म	५	२८	६	त्वष्टा दुहित्रे	१८	१	५३
त्रेधा भागो निहि	११	१	५	त्वष्टा दुहित्रे	३	३१	५
त्र्यायुषं जमदग्नेः	५	२८	७	त्वष्टा मे दैव्यं	६	४	१
त्वज्जातास्त्ययि	१२	१	१५	त्वष्टा युनक्तु बहु	५	२६	८
त्वमग्न ईदितो जा	१८	३	४२	त्वष्टा वासो व्यद	१४	१	५३
त्वमग्ने क्रतुभिः	१३	३	२३	त्वष्टः श्रेष्ठे न	५	२५	११
त्वमग्ने यातुधाना	१	७	७	त्वामग्ने वृणते	२	६	२
त्वमग्ने व्रतपा असि	१६	५६	१	त्वामाहुर्देववर्म	१६	३०	३
त्वमसि सहमानो	१६	३२	५	त्वामिद्धि हवामहे	२०	६८	१
त्वमस्यावपनी	१२	१	६१	त्वामिन्द्र ग्रहाणा	१७	१	१४
त्वमाविथ सुश्रव	२०	२१	१०	त्वामुग्रमवसे	२०	८०	२
त्वमिन्द्र कपोताय	२०	१३५	१२	त्वाष्ट्रेणाहं वचसा	७	७४	३
त्वमिन्द्र प्रतूर्ति	२०	१०५	१	त्वां जना ममसत्ये	२०	८६	४
त्वमिन्द्र बलाद्	२०	६३	५	त्वां विशो वृणतां	३	४	२
त्वमिन्द्र शर्मरिणा	२०	१३५	११	त्वां विष्णुर्बृहन्	२०	१०६	३
त्वमिन्द्र सजोषसं	२०	६३	७	त्वां शुष्मिन् पुरुहूत	२०	१०८	३
त्वमिन्द्रस्त्वं	१७	१	१८	त्वां सुतस्य गीतये	२०	२४	६
त्वमिन्द्राधिराज	६	६८	२	त्वां स्तोमा अवी	२०	६६	६
त्वमिन्द्रा पुरुहूत	१६	५५	६	त्वे क्रतुमपि पृञ्च	५	२	३
त्वमिन्द्राभिभूर	२०	६२	६	त्वे क्रतुमपि पृञ्च	२०	१०७	६
त्वमिन्द्रासि भूर	२०	६३	८	त्वेषस्ते धूम	१८	४	५६
त्वमिन्द्रासि विश्व	१७	१	११	त्वं करञ्जमुत	२०	२१	८
त्वमिन्द्रासि वृत्र	२०	६३	६	त्वं काम सहसासि	१६	५२	२
त्वमीशिषे पशूनां	२	२८	३	त्वं तमिन्द्र पर्वतं	२०	१५	६
त्वमीशिषे सुता	२०	६३	३	त्वं तृतं त्वं पर्ये	१७	१	१५
त्वमेतां जनराज्ञो	२०	२१	६	त्वं त्वमहर्यथा उप	२२	३०	५
त्वमोदनं प्राशी	११	३	२७	त्वं दाता प्रथमो	२०	१०४	४
त्वया पूर्वमथर्वाणो	४	३७	१	त्वं धृष्णो धृषता	२०	३७	३
त्वयाप्र मूर्णं मृदि	१२	५	६१	त्वं न इन्द्र महते	१७	१	६
त्वया मन्यो सरथ	४	३१	१	त्वं न इन्द्रा भरं	२०	१०८	१
त्वया वयमप्ससरसो	४	३७	२	त्वं न इन्द्रोतिभिः	१७	१	१०
त्वया वयं शाशवाहे	५	२	५	त्वं नृभिर्नृमणो	२०	३७	४

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
त्वं नो अग्ने अग्नि	३	२०	५	त्वं स्त्री त्वं पुमान्	१०	८	२७
त्वं नो अग्ने अधरात्	८	३	१६	त्वं ह त्यत् सप्तभ्यो	२०	१३७	१०
त्वं नो नभसस्पत	६	७६	२	त्वं ह त्यदप्रतिमा	२०	१३७	११
त्वं नो मेघे प्रथमा	६	१०८	१	त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्स	२०	३७	२
त्वं भूमित्येषो	१६	३३	३	त्वं हि नः पिता	२०	१०८	२
त्वं मणीनामधिपा	१६	३१	११	त्वं हि मन्यो अभि	४	३२	४
त्वं रक्षसे प्रदिशश्च	७	१	१६	त्वं हि विश्वतो मुख	४	३३	६
त्वं वर्मासि सप्रथ	२०	१८	६	त्वं हि शश्वतौना	२०	६४	३
त्वं वीरुधां श्रेष्ठतमा	६	१३८	१	त्वं हि स्तोमवर्धन	२०	२६	१
त्वं वृषाक्षुं मधवन्	२०	१२८	१३	त्वं ह्य १३ वरुण स्वधा	५	११	५
त्वं सिन्धूरवास्तु	२२	६५	३	त्वं ह्य १३ वरुण ब्रवी	५	११	७
त्वं सुतस्य पीतये	२०	६६	४				

द

दक्षिणा दिगिन्द्रो	३	२७	२	दश शाकमजाय	११	८	३
दक्षिणाया दिशः	६	३	२६	दह दर्भ सपत्नान्	१६	२६	८
दक्षिणायै त्वादि	१२	३	५६	दाना मृगो न वारणः	२०	५३	२
दक्षिणां दिशम	१२	३	८	दाना मृगो न वारणः	२०	५७	१२
दक्षिणायां त्वा	१८	३	३१	दिक्षु चन्द्राय	४	३६	७
दण्डं हस्तादाद	१८	२	५६	दितिः शूर्पमदि	११	३	४
ददामीत्येव ब्रूया	१२	४	१	दितेश्च वै सोदिते	१५	६	२१
ददाम्यास्मा अवसा	१८	२	३७	दितेः पुत्राणां	७	७	१
ददिर्ह मङ्ग्यं वरुणो	५	१३	१	दिवस्त्वा पातु हरि	५	२८	६
दधिक्राव्णो अका	२०	१३७	३	दिवस्पृथिव्याः	६	१२५	२
दधिष्वा जठरे	२०	६	५	दिवस्पृथिव्याः	६	१	१
दमूना देवः सविता	७	१४	४	दिवस्पृथिव्याः	११	३	१
दर्भेण त्वं कृण्वो	१६	३३	५	दिवस्पृष्टे धावमा	१३	२	३७
दर्भेण देव जातेन	१६	३२	७	दिवा मा नक्तं यत	५	२६	६
दर्भः शोचिस्तृ	१०	४	२	दिवि जातः समुद्र	४	१०	४
दर्शय मा यातुधाना	४	२०	६	दिवि ते तूलमोषधे	१६	३२	३
दर्शोसि दर्शतोसि	७	८१	४	दिवि त्वा त्रिरधा	१३	२	१२
दश च मे शतं च मे	५	१५	१०	दिवि न केतुरधि	२०	३०	४
दशर्चभ्यः स्वाहा	१६	२३	७	दिवि स्पृष्टो	२	२	२
दशवृत्त मुञ्चेम	२	६	१	दिवे चक्षुषे	६	१०	३

दिवे स्वाहा

(४,५६७)

देवा वा पतस्या

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
दिवे स्वाहा	५	६	१	दृढो दृढ स्थिरो	११	७	४
दिवे स्वाहा	५	६	५	दृष्टमदृष्टमनु	२	३१	२
दिवो नु मां बृहतो	६	१२४	१	दृढ प्रज्ञान जनया	६	१३६	२
दिवो मादित्या	१६	१६	२	दृढ मूलमात्रं यच्छ	६	१३७	३
दिवो मादित्या	१६	२७	१५	देवजना गुदा	६	७	१६
दिव मूलमव	२	७	३	देव त्वप्रतिसूर्य	२०	१३०	१०
दिवो विष्णु उत वा		२५	८	देवपीयुश्चरति	५	१८	१३
दिवं च रोह पृथिवी	१३७	१	३४	देववन्तो यथा	२०	७०	२
दिवं पृथिवी	३	२१	७	देव संस्फान	६	७६	३
दिवं ब्रह्मो नक्षत्रा	११	६	१०	देवस्ते सविता	१४	१	४६
दिव्यस्य सुपर्णस्य	४	२०	३	देवस्य सवितु	१०	५	१४
दिव्यादित्याय	४	३६	५	देवस्व त्वा सवितुः	१६	५१	२
दिव्या गन्धर्वो	२	२	१	देवस्य सवितुः	६	२३	३
दिव्यं सुपर्णं पयसं	७	३६	१	देवहेतुर्हि यमाणा ॥	१२	५	२६
दिशश्चतस्रो	८	८	२२	देवा अग्रे न्यपद्यन्त	१४	२	३२
दिशां प्रज्ञानां	१३	२	२	देवा अदुः सूर्यो	६	१००	१
दिशा ज्योतिष्म	१०	५	३८	देवा अमृतेनोद	१६	१६	१०
दिशोदिशः शाला	६	३	३१	देवा इमं मधुना	६	३०	१
दिशो धेनवस्तासां	४	३६	८	देवाञ्जन त्रैकुर्वं	११	४४	६
दीर्घस्तवे अस्वङ्क	२०	५	४	देवा ददत्वासुरं	२०	१३५	१०
दीर्घायुत्वाय	२	४	१	देवानासस्थि कुशलं	४	१०	७
दुन्दुभेर्वाचं प्रयतां	५	२०	५	देवानामेतत् परिषू	११	५	२३
दुरदभनैनमा शये	१२	४	१६	देवानामेनं घोरैः	१६	७	२
दुरो अश्वस्य	२०	२१	२	देवानां निहितं	१६	२७	६
दुर्णामा च सुनामा	८	६	४	देवानां पत्नीनां	१६	५७	३
दुर्मन्त्रावामृतस्य	१८	१	३४	देवानां पत्नीकशती	७	४६	१
दुर्हादः संघोरं	१६	३५	३	देवानां पत्नीः पृ	६	७	६
दुष्ट्यै हि त्वा	३	६	५	देवानां भाग	६	४	५
दुष्कर्म्यं काम	६	२	३	देवानां हेतिः	८	२	६
दुहे सायं दुहे प्रात	४	११	१२	देवान् यज्ञाथितो	७	१०६	७
दुहां मे पंच प्रदिशो	३	२०	६	देवा यज्ञमृतवः	१८	४	२
दुराचक्रमानाय	१६	५२	३	देवा वशामयाचन्मुखं	१२	४	२०
दुरे चित् सन्त	३	३	२	देवा वशामयाचन्यस्मिन्	१२	४	२४
दुरे पूर्णेन वसति	१०	८	१५	देवा वशां पर्यवदन्	१२	४	४६
दुष्या दुषिरसि	२	११	१	देवा वा पतस्या	५	१७	६

	का०	सू०	म०		का०	सू०	म०
देवास्ते चीतिम	२	६	४	द्यावापृथिवी दातृ	५	२३	३
देवाः कपोत इषितो	६	२७	१	द्यावापृथिवी श्रो	११	३	२
देवाः पितरो	११	७	२७	द्यावा ह क्षामा	१८	१	२६
देवाः पितरो	१०	६	६	द्युत्तं सुदानुं	२०	६	२
देवाः पितरः	६	१२३	३	द्युत्तं सुदानुं	२०	४६	५
देवी देव्यामधि	६	१२६	१	द्युमन्तस्त्वेधीमहि	१८	१	५७
देवीं हनन्त कुहनन्त	२०	१३२	११	द्युमन्तेषु पृतनाज्ये	२०	२६	७
देवेभ्यो अधिजातो	५	४	७	द्यौर्धेनुस्तस्या आ	४	३६	६
देवेभ्यः कमवृणी	१८	३	४१	द्यौरनः पिता जनि	६	१०	१२
देवैनसात् पिङ्गा	१०	१	१२	द्यौश्च म इदं पृथि	६	५३	१
देवैनसादुन्मदि	६	१११	३	द्यौश्च म इदं पृथि	१२	१	५३
देवैर्दत्तेन मणिना	२	४	४	द्यौष्ट्या पिता पृथिवी	२	२८	४
देवैर्दत्तं मनुना	१४	२	४१	द्रप्समपश्यं विषु	२०	१३७	८
देवो अग्निः संक	१२	२	१२	द्रप्सश्चस्कन्द	१८	४	२८
देवो देवान् परिभू	१८	१	३०	द्रपदादिव मुमुक्षान	६	११५	३
देवो देवान् मर्चय	१३	१	४०	द्वादशघा निहितं	६	११३	३
देवो देवाय गृणते	५	११	११	द्वादश प्रधयश्च	१०	८	४
देवो देवेषु देवः	५	२७	२	द्वादशर्चैभ्यः स्वाहा	१६	२३	६
देवो द्रविणोदा	२०	२	४	द्वादश वा एता	४	११	११
देवो मणिः सपत्न	१६	३१	८	द्वादशारं नहि	६	६	१३
दैवा होतार ऊर्ध्व	५	२७	६	द्वारो देवीरन्वस्य	५	२७	७
दैवीर्विशः पय	६	४	६	द्वाविमौ वातौ वात	४	१३	२
दैवीः षदर्धैरु नः	५	३	६	द्वा सुपर्णा सयुजा	६	६	२०
दैव्या होतारा	५	१२	७	द्वितीयेभ्यः शङ्खे	१६	२२	६
दोषो गाय बृहद् गय	६	१	१	द्विभागधनमा	१२	२	३५
दोहेन गामुहप	२०	८६	२	द्विषतस्तापयन्	१६	२८	२
दौव हस्तिनो	२०	१३१	२०	द्विषते तत् परावह	१६	६	३
दौष्वप्यं दौर्जीवि	७	२३	१	द्विषो नो विश्वतो	४	३३	७
दौष्वप्यं दौर्जीवि	४	१७	५	द्वे च मे विंशतिश्च	५	१२	१
द्यावा चिदस्मै	२०	३४	१४	द्वे ते चक्रे सूर्ये	१४	१	१६
द्यावापृथिवी अनु	२	१२	५	द्वौ च ते विंशति	१६	४७	५
द्यावापृथिवी उप	२	१६	२	द्वौ वा ये शिशवः	२०	६३२	१५
द्यावापृथिवी उर्व	२	१२	१	द्वयास्याच्चतुरन्तात्	८	६	२२

ध

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
धनुर्विंशति हरि	११	२	१२	धान्मो धान्मो	७	८३	२
धनुर्हस्तादाददा	१८	२	६०	धिये समशिवना	६	४	३
धनं न रूपद्रं बहुलं	२०	८६	५	धीती वा ये अनयन्	७	१	१
धन्व च यत् कृन्तव्र	२०	१०६	२०	धीभिः कृतः प्र	५	२०	८
धरुण्यसि शाले	३	१२	३	धुनेतयः सुप्रकेतं	२०	८८	२
धर्ता धियस्व	१२	३	३५	धूमाक्षी संपततु	११	१०	७
धर्तासि धरुणो	१८	३	३६	धृषत् पिब कलशे	७	७६	६
धर्ता ह त्वा धरुणो	१८	३	२६	धेनुष्ट इन्द्र स्रुता	२०	२७	३
धाता च सविता	६	७	१०	ध्रुव आरोह पृथि	१८	४	६
धाता दधातु दाशुषे	७	१७	२	ध्रुवा दिग्विष्णुराधि	३	२७	५
धाता दधातु नो	७	१७	१	ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा	६	८८	१
धाता दाधार	६	६०	३	ध्रुवाया दिशः	६	३	२६
धाता मा निष्ठात्या	१८	३	२६	ध्रुवायां त्वा दिशि	१८	३	३४
धाता रातिः सवितेदं	३	८	२	ध्रुवायै त्वा दिशे	१२	३	५६
धाता रातिः सवितेदं	७	१७	४	ध्रुवेयं विराएनमो	१२	३	११
धाता विधाता	५	३	६	ध्रुवोच्युतः प्र	६	८८	३
धाता विश्वा वार्या	७	१७	३	ध्रुवं ते राजा वरुणो	६	८८	२
धातः श्रेष्ठेन रूपेणा	५	२५	१०	ध्रुवं ध्रुवेण ह	७	६४	१
धाना धेनुरभवद्	१८	४	३२				

न

न कामेन पुनर्मथो	५	११	२	न च प्राणं रुणद्धि	१५	३	५५
न किल्बिषमत्र	१२	३	४८	न च सर्वज्यानि	११	३	५६
नक्रिष्टं कर्मणा	२०	६२	३८	नहमा रोह न ते	१२	२	१
नकी रेवन्तं सख्या	२०	११४	२	न ता अर्वा रेणु	४	२१	४
नक्तं जातास्यो	१	२३	१	न ता नशन्ति न	४	२१	३
नक्षत्रमुल्काभि	१६	६	६	न तिष्ठन्ति न नि	१८	१	६
न घा त्वद्रिगप	२०	१७	२	न ते नार्थं यस्मिन्ना	१८	१	१३
न घा वसुर्नियम	२०	७८	२	न ते बाहोर्बलमस्ति	७	५६	६
न घेमन्यदापपन	२०	१८	२	न तेवर्तास्ति राघ	२०	२७	४
न घ्नंस्तताप न हिमो	७	१८	२	न ते सखा सख्यं	१८	१	२
न च प्रत्याह्न्यान्	८	१०(६)	२	न तं यक्ष्मा अरु	१६	३८	१

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
न त्वदन्यः कवि	५	११	४	नमो रुद्राय नमो	६	२०	२
न त्वा पूर्वा ओष	१६	३४	७	नमो कुराय च्यव	७	११६	१
न त्वा वा अन्यो	२०	१२१	२	नमो वः पितर ऊर्जे	१८	४	८१
नदी सूत्री वर्षस्य	६	७	१४	नमो वः पितरो भा	८१	४	८२
नदी यन्त्वप्सरसो	४	३७	३	नमो वः पितरो यद्	१८	४	८३
न देवेष्वापृश्चते	१५	१२	६	नमो वः पितरो यच्	१८	४	८४
न द्वितीयो न तृती	१३	४	१६	नमो वः पितरः स्व	१८	४	८५
न पञ्चमो न षष्ठः	१३	४	१७	नमोस्तु ते निर्ऋते	६	६३	२
न पितृयाणं पन्थां	१५	१२	६	नमोस्त्वसिताय	६	५६	२
न पिशाचैः सं	४	३६	७	नमः शीताय	१	२५	४
न वहवः समशकन्	१	२७	३	नमः सनिस्त्र	२	८	५
न ब्रह्मणो हिंसि	५	१८	६	नमः सायं नमः	११	२	१६
न भूमिं वातो अति	४	५	२	नयतामून् मृत्यु	८	८	११
न मत्स्त्रीसु भसत्त	२०	१२६	६	न यत्पुरा चक्रमा	१८	१	४
नमस्कृत्य धावा	७	१०२	१	न यस्याः पारं	१६	४७	२
नमस्तस्मै नमो	६	३	१२	नव च मे नवतिश्च	५	१५	६
नमस्ते अधिवाकाय	६	१३	२	नव च या नवतिश्च	६	२५	३
नमस्ते अस्तु नार	१२	४	४५	न वनिषदनाततम्	२०	१३२	७
नमस्ते अस्तु विद्युते	१	१३	१	नव प्राणान्नवभिः	५	२८	१
नमस्ते अस्तु पश्य	१३	४	४८	नव भूमीः समुद्रा	११	७	१४
नमस्ते अस्तु पश्य	१३	४	५५	नव यो नवति	२१	७	२
नमस्ते अस्तवायते	११	४	७	नवर्च्येभ्यः स्वाहा	१६	२३	६
नमस्ते अस्तवायते	११	२	१५	नवर्ष मैत्रावरुणं	५	१६	१५
नमस्ते जायमानायै	१०	१०	१	न वा उ ते तनू	१८	१	१४
नमस्ते घोषिणी	११	२	३१	न वा उ सोमो	८	४	१३
नमस्ते प्रवतो	१३	१	२	न विकर्णः पृथु	५	१७	१३
नमस्ते प्राण क्रन्दाय	११	४	२	न विजानामि	६	१०	१५
नमस्ते प्राण प्राणते	११	४	८	नवैतं चक्षुर्ज	१०	२	१०
नमस्ते यातुधाने	६	१३	३	नवैव ता नवतयो	५	१६	११
नमस्ते राजन् चरु	१	१०	२	न वै वातश्चन	६	२	२४
नमस्ते रुद्रास्यते	६	६०	३	नवो नवो भवसि	७	८१	२
नमस्ते लाङ्गलेभ्यो	२	८	४	नवो नवो भवसि	१४	१	२४
नमो गन्धर्वस्य	१४	२	३५	नवं बर्हिरोदनाय	१२	३	३२
नमो देव वधेभ्यो	६	१३	१	नवं वसानः सुर	१४	२	४४
नमो यमाय नमो	५	३०	१२	नष्टासवो नष्टविषा	१०	४	१३

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
न सेशे यस्य रम्बते	२०	१२६	१६	निन्दाश्च वा अनिन्दा	११	८	२२
न सेशे यस्य रोमशं	२०	१२६	१७	निघ्नचस्तिस्त्रो	१३	३	२१
नहि ते अग्ने तन्वः	६	४६	१	नि येन मुष्टिह	२०	७०	१८
न हि ते नाम	३	१८	३	निरमुं तुद ओकसः	६	७५	१
नहि स्थूर्यृतुथा	२०	१२५	३	निररणि सविता	१	१८	२
नाके राजन् प्रति	६	१२३	५	निरितो मृत्युं	१२	२	३३
नाके सुपर्णमुप	१८	३	६६	निरिमां मात्रां	१८	२	४२
नाधृष आद्रधृषते	६	३३	२	निर्दुर्मणय ऊर्जा	१६	२	१
नाभिरहं रयीणां	१६	४	१	निर्द्विषन्तं दिवो	१६	७	६
नाभ्या आसीद्	१६	६	८	निर्बलासेतः प्र	६	१४	३
नाम नाम्ना जोह	१०	७	३१	निर्बलासं बलासि	६	१४	२
नामानि ते शतक्र	२०	१६	३	निर्लक्ष्यं लक्ष्म्यं	१	१८	१
नाहप इति ब्रूया	११	३	२४	निर्वै क्षत्रं नयति	५	१८	४
नाष्टमो न नवमो	१३	४	१८	निर्वो गोष्ठादजा	२	१४	२
नास्मै पृश्निं वि	५	१७	१७	निर्हस्ताः सन्तु	६	६६	३
नास्य केशान् प्रघप	१६	३२	२	निर्हस्तेभ्यो नैर्हस्तं	६	६५	२
नास्य क्षत्ता	५	१७	१४	निर्हस्तः शत्रु	६	६६	१
नास्य क्षत्रे पुष्करि	५	१७	१६	निवेशनः संगमनो	१०	८	४२
नास्य जाया शतवा	५	१७	१२	नि शीर्षतो नि पतत	६	१३१	१
नास्य धेनुः कल्याणी	५	१७	१८	नि स्वापया मिथू	२०	७४	३
नास्य पशून् न	१५	५	३	निः सालां धृष्णुं	२	१४	१
नास्य पशून् न	१५	५	१६	नीचैः खनन्त्य	२	३	३
नास्य श्वेतः कृ	५	१७	१५	नीचैः पद्यन्तां	३	१६	३
नास्यास्थीनि	६	५	२३	नीलनखेभ्यः	१६	२२	४
नास्यास्मिल्लो	१५	१२	११	नीलमस्योदरं	१५	१	७
नाहमिन्द्राणिरार	२०	१२६	१२	नीललोहितं भव	१४	१	२६
निक्ष दर्भं सपत्नान्	१६	२६	१	नीलशिखण्डवा	२०	१३२	१६
नि गावो गोष्ठे	६	५२	२	नीलेनैवाप्रियं	१५	१	८
निगृह्य कर्णकौ द्वौ	२०	१३३	३	नुदस्व काम प्र	६	२	४
नि तद्दधिषेवरे	५	२	६	नू इन्द्र शूर स्तव	२०	३७	११
नि तद्दधिषेवरे	२०	१०७	६	नू चिन्तु ते मन्यमा	२२	७३	२
निधनं भृत्याः प्रजायाः	६	६(५)	३	नू नो रयि पुरुवीर	२०	१४३	६
निधनं भृत्याः प्रजायाः	६	६(५)	१०	नूनं तदस्य काव्यो	४	१	६
निधि निधिपा	१२	३	४२	नृचक्षा रक्षः परि	८	३	१०
निधि विभ्रती	१२	१	४४	नेच्छत्रः पाशं जया	२	२७	१

	कां०	सू०	म०		का०	सू०	म०
नेमा इन्द्र गावो	२०	१२७	१३	नैनं प्राप्नोति	४	६	५
नेमि नमन्ति	२०	५४	३	नैनं रक्षांसि	१	३५	२
नेव मांसेन पीवसि	१	११	४	नैवाहमोदनं	११	३	३०
नैतां ते देवा अद्बु	५	१८	१	न्यग् वातो वाति	६	६१	२
नैतां विदुः पितरो	१६	५६	४	न्यस्का रुरोहिथ	६	१३६	१
नैनं घ्नन्ति पर्यायि	६	७६	४	न्यूषु वाचं प्रमहे	२०	२१	१
नैनं हन्यन्त्यप्सर	८	५	१३	न्वेतेनारात्सीरसौ	५	६	५

प

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
पक्षी जायान्यः पत	७	७६	४	पनाय्यं तदश्विना	२०	१४३	६
पञ्च च मे पञ्चा	५	१५	५	पयश्च रसश्चान्नं	१२	५	१०
पञ्च च याः पञ्चा	६	२५	१	पयश्च वा पष	६	६(३)	२
पञ्चदशर्चभ्यः	१६	२३	१२	पयस्वतीरोषधयः	३	२४	१
पञ्चपादं पिपरं	६	६	१२	पयस्वतीरोषधयः	१८	३	५६
पञ्चभिः पराक्	१७	१	१७	पयस्वतीः कृणु	६	२२	२
पञ्च राज्यानि वी	११	६	१५	पयो धेनूनां रस	४	२७	३
पञ्च रुक्मा ज्योति	६	५	२६	परमांतं परावत	६	७५	२
पञ्च रुक्मा पञ्च	६	५	२५	पराक् ते ज्योतिरप	१०	१	१६
पञ्चर्चभ्यः स्वाहा	१६	२३	२	पराच पनान् प्रणुद	२	२५	५
पञ्चवाही बहस्य	१०	८	८	पराजिताः प्र	८	८	१६
पञ्च व्यष्टुरबुः	८	६	१५	पराञ्चं चैनं प्रा	११	३	२८
पञ्चापूरं शितिपा	३	२६	४	परादेहि शामुल्यं	१४	१	२५
पञ्चापूरं शितिपा	३	२६	५	पराद्य देवा वृजि	८	३	१४
पञ्चारे चक्रे	६	६	११	परामित्रान् दुन्दुभि	५	२१	७
पञ्चौदनं पञ्चभि	४	१४	७	परा यात पितरः	१८	३	१४
पञ्चौदनः पञ्चधा	६	५	८	परा यात पितरः	१८	४	६३
पताति कुरङ्गुणा	२०	७४	६	परा शृणीहि तपसा	१०	५	४६
पक्षी यदृश्यते	२०	१३५	५	परा शृणीहि तपसा	८	३	१३
पथ्या रेवतीर्बुधा	३	४	७	परा हीन्द्र धावसि	२०	१२६	२
पदज्ञा स्थ रमतयः	७	७५	२	परि ग्राममिवाचितं	४	७	५
पदा पणीरराधसो	२०	६३	२	परिच्छिन्नः क्षेम	२०	१२७	८
पदोरस्या अधि	१२	४	५	परि-त्रयः	२०	१२६	८
पद्भिः सेदिमषका	४	११	१०	परि णो वृद्धि	६	३७	२

कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
परि त्वाग्ने पुरं वयं	७	७१	१	परोपेहि मनस्पाप	६	४५ १
परित्वाग्ने पुरं वयं	८	३	२२	परोऽपेह्यसमृद्धे	५	७ ७
परि त्वा धात् सवि	१३	१	२०	परं मृत्यो अनु परे	१२	२ २१
परि त्वा परितत्तुने	१	३४	५	परं योनेरवरंते	७	३५ ३
परि त्वा पातु समाने	८	२	२६	परः सो अस्तु	८	४ ११
परि त्वा रोहितै	१	२२	२	पर्णौ राजापिधानं	१८	४ ५३
परि दक्ष इन्द्रस्य	६	६६	३	पर्णोसि तनूपानः	३	५ ८
परि द्यामिव	६	१२	१	पर्यस्ताक्ष्ना अप्र	८	६ १६
परि द्यावापृथिवी	२	१	४	पर्यस्य महिमा	१३	२ ४५
परि धत्त धत्त नो	२	१३	२	पर्यस्यास्मिन्लो	१५	१२ ७
परि धत्त धत्त नो	१६	२४	४	पर्यागारं पुनः पुनः	२०	१३२ १२
परि धामान्यासा	२	१४	६	पर्यायिकेभ्यः	१६	२२ ७
परिपाणमसि	२	१७	७	पर्यावर्ते दुष्व	७	१०० १
परिपाणं पुरुषाणां	४	६	२	पर्युं शु प्र धन्वां	५	६ ४
परि पूषा पुरस्ता	७	६	४	पर्वताद् दिवो	५	२५ १
परि मा दिवः	१६	३५	४	पशुर्ह नाम मानवी	२०	१२६ २३
परि मां परिमे	२	७	४	पलालानुपलालौ	८	६ २
परि वरमनि	६	६७	१	पल्प वद्ध वयो इति	२०	१२६ १५
परि विश्वा	२	१	५	पवमानः पुनातु	६	१६ २
परिवृक्ता च महीषी	२०	१२८	१०	पवस्तैस्त्वा पर्य	४	७ ६
परि वः सिकता	१	१७	४	पवीनसात् तङ्ग	८	६ २१
परिसृष्टं धारयतु	८	६	२०	पशुपतिरेनमि	१५	५ ७
परि स्त्रुणीहि	७	६६	१	पश्चात् पुरस्ताद्	८	३ २०
परिहस्त वि धारय	८	८१	२	पश्चात्प्राञ्च आ	१३	४ ७
परीदं वासो अधिधाः	२	१३	३	पश्यन्त्यस्याश्चरि	६	१ ३
परीदं वासो अधिधाः	१६	२४	६	पश्याम ते वीर्यं	१	७ ५
परीममिन्द्रमायुषे	१६	२४	२	पश्येम शरदः शतम्	१६	६७ १
परी ३ मेगिनमर्षत	६	२८	२	पाकबलिः	२०	१३१ १२
परीमं सोममायुषे	१६	२४	३	पाकः पृच्छामि	६	६ ६
परीवृतो ब्रह्मणा	१७	१	२८	पाटामिन्द्रो व्या	२	२७ ४
परेहि कृत्ये मा	१०	१	२६	पातं न इन्द्रा	६	३ १
परेणैतु पथा	४	३	२	पातां नो देवाश्विना	६	३ ३
परेयिवांसं प्रवतो	१८	१	४६	पातां नो द्यावापृथि	६	३ २
परेहि नोरि	११	१	१३	पादाभ्यां ते जानु	६	८ २१
परेहि विग्रमस्तुत	२२	६८	४	पापाय वा भद्राय	१३	४ ४२

पाप्माधिधीयमा	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
पाप्माधिधीयमा	१२	५	३०	पुनः कृत्यां कृत्याकृ	५	१४	४
पार्थिवस्य रसे	२	२६	१	पुनः पत्नीमग्नि	१४	२	२
पार्थिवा दिव्याः	११	५	२१	पुनः प्राणः	६	५३	२
पार्थिवा दिव्याः	११	६	८	पुमान् पुंसः परिजा	६	६	१
पाश्वे आस्तां मनु	६	४	१२	पुमान् पुंसो ऽधि	१२	३	१
पिङ्ग रत्न जायमानं	८	६	२५	पुमानन्तर्वान्स्थवि	६	४	३
पिण्डि दर्म	१६	२६	६	पुमां कुरुते निमि	२०	१२६	१४
पितरः परेते	५	२३	१५	पुमांसं पुत्रं	३	२३	३
पिता जनिनु	११	७	१६	पुरस्तात् ते नमः	११	२	४
पिता वत्सानां	६	४	४	पुरस्ताद् युक्तो	५	२६	१
पितृभ्यः सोम	१८	४	७३	पुरुष एवेदं सर्वं	१६	६	४
पितृणां भागस्थ	१०	५	१३	पुरुषानमून	८	८	४
पितेव पुत्रानभि	१२	३	१२	पुरुषदुतस्य धामभिः	२०	१६	४
पिप्पली क्षित	६	१०६	१	पुरुतमं पुरुषा	२०	६८	१२
पिप्पल्य १ः समव दन्	६	१०६	२	पुरोडाशवत्सा	१२	४	३५
पिषा सोममिन्द्र	२०	११७	१	पुरं देवानाममृतं	५	२८	११
पिशङ्गरूपो नभसो	६	४	२२	पुष्टिरसि पुष्ट्या	११	३१	१३
पिशङ्गे सूत्रे खृगलं	३	६	३	पुष्टिं पशूनां परि	१६	३१	५
पिशाचक्षयणमसि	२	१८	४	पुष्पवतीः प्रसूमतीः	८	७	२७
पिंश दर्म	१६	२८	६	पुंसि वै रेतो भवति	६	११	२
पुरण्डरीकंनवद्वारं	१०	८	४३	पूताः पवित्रैः पवन्ते	१२	३	२५
पुरणं पूर्वाफाल्गु	१६	७	३	पूतिरज्जूरुपधानी	८	८	२
पुत्रइव पितरं गच्छ	५	१४	१०	पूर्णात् पूर्णमुदचति	१०	८	२६
पुत्रमत्तु यातुधानोः	१	२८	४	पूर्णा पश्चादुत	७	८०	१
पुत्रमिव पितराव	२०	१२५	५	पूर्णं नारि प्र भर	३	१२	८
पुत्रं पौत्रमधि तर्प	१८	४	३६	पूर्णः कुम्भोऽधि	१६	५३	३
पुनन्तु मा देवजनाः	६	१६	१	पूर्वापरं चरतो माय	७	८१	१
पुनरेहि वाचस्पते	१	१	२	पूर्वापरं चरतो माय	१३	२	११
पुनरेहि वृषाकपे	२०	१२६	२१	पूर्वापरं चरतो माय	१४	१	२३
पुनर्दाय ब्रह्मजायां	५	१७	११	पूर्वो अग्निष्ठां तपतु	१८	४	६
पुनर्देहि वनस्पते	१८	३	७०	पूर्वो जातो ब्रह्म	११	५	५
पुनर्मैत्विन्द्रियं	७	६७	१	पूर्वो दुन्दुभे प्र वदा	५	२०	६
पुनर्वै देवा अददुः	५	१७	१०	पूषन् तव व्रते	७	६	३
पुनस्त्वादित्या	१२	२	६	पूषा त्वेतश्च्याव	१८	२	५४
पुनस्त्वादुर्यस्यरसः	६	११३	४	पूषेम शरदः शतम्	१६	६७	५

	कां०	सू०	म०		कां०	अ०	सू०
पूषेमा आशा	७	६	२	प्रजापतिश्चरति	१०	८	१३
पृच्छामि त्वा परमन्तं	६	१०	१३	प्रजापतिष्ठा विभ्रा	१६	४६	१
पृतताजितं सहमान	७	६३	१	प्रजापतिं ते प्रजन	१६	१८	६
पृथक् प्रायन् प्रथमा	२०	६४	६	प्रजापतिः सलिला	४	१५	११
पृथक् सर्वे प्राजा	११	५	२२	प्रजापतिः प्रजा	१६	१६	११
पृथक्सहस्राभ्यां	१६	२२	१६	प्रजापते न त्वतेता	७	८०	३
पृथग्रूपाणि	१२	३	२१	प्रजापतेरावृतो	१७	१	२७
पृथिवी दण्डो	६	१	२१	प्रजापतेर्वा एष	६	६(२)	१२
पृथिवी धेनु	४	३६	२	प्रजापतेश्च वै	१५	६	२६
पृथिवीप्रो महिषो	१३	४४	४४	प्रजापते श्रेष्ठेन	५	२५	१३
पृथिवी शान्तिरन्त	१६	६	१४	प्रजामृतस्य	२०	१३८	२
पृथिवी त्वा पृथि	२२	३	२२	प्रजावतीः सूर्यवसे	४	२१	७
पृथिवी त्वा पृथि	१८	४	४८	प्रजावतीः सूर्यसे	७	७५	१
पृथिव्यामग्नये	४	३६	१	प्रजां च वा एष	६	६(३)	५
पृथिव्यै श्रोत्राय	६	१०	१	प्रणेतारं वस्यो	२०	४६	१
पृथिव्यै स्वाहा	५	६	२	प्र णो यच्छत्वयमा	३	२०	३
पृथिव्यै स्वाहा	५	६	६	प्रणो वनिर्देवकृता	५	७	३
पृदाक्रवः	२०	१२६	६	प्र तद् विष्णु स्तवते	७	२६	२
पृष्ठात् पृथिव्या	४	१४	३	प्र तद् वोचेदमृतस्य	२	१६	२
पृष्ठे धावन्ततं	२०	१२८	१५	प्रतिष्ठानानाश्रुमु	११	६	७
पैद्व प्रेहि प्रथमो	१०	४	६	प्रतिष्ठानः सं	११	६	१४
पैद्वस्य मन्महे	१०	४	११	प्रति चक्ष्व वि	८	४	२५
पैद्वो हन्ति	१०	४	५	प्रति तममि चरयो	२	११	३
पौरो अश्वस्य पुरु	२०	११८	२	प्रतितिष्ठ विरा	१४	२	१५
पौर्णमासी प्रथमा	७	८०	४	प्रति दह यातुधानान्	१	२८	२
प्रकेतुना बृहता	१८	३	६५	प्रतिष्ठेह्यभवतं	४	२६	२
प्रच्यस्व तन्वं	१८	३	६	प्रति स्मरेथां तुज	८	४	७
प्रजया स विक्रीणी	१२	४	२	प्रतीची दिग्ब्रूणो	३	२७	३
प्रजानन्तः प्रति	२	३४	५	प्रतीची दिशामिय	१२	३	६
प्रजानत्यघ्न्ये	१८	३	४	प्रतीचीन आङ्गिर	१०	१	६
प्रजानां प्रजन	६	६(४)	१०	प्रतीचीनफलो	७	६५	१
प्रजापतिरनु	६	११	३	प्रतीची सोममसि	७	३८	३
प्रजापतिर्जनयति	७	१६	१	प्रतीचीं त्वा प्रती	६	३	२२
प्रजापतिर्मा	१६	१७	६	प्रतीच्या दिशः	६	३	२७
प्रजापतिश्च परमेष्ठी	६	७	१	प्रतीच्यां त्वा दिशि	१८	३	३२

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
प्रतीच्यां दिशि	४	१४	८	प्रवृत्तीनां मृदतः	११	६	१६
प्रतीच्यै त्वा दिशे	१२	३	५७	प्र भ्राजमानां	१०	२	३३
प्रतीपं प्राति सुत्वनम्	२०	१२५	२	प्रमुञ्चन्तो भुवनस्य	२	३४	२
प्रतिहारो निधनं	११	७	१२	प्र मंहिष्टाय	२०	१५	१
प्र ते अस्या उषसः	२०	७६	२	प्रयच्छ पशुं त्वरया	१२	३	३१
प्र ते भिन द्मि मेहनं	१	३	७	प्र यत्ते अग्ने	४	३३	४
प्र ते महे विनेथे	२०	३०	१	प्र यदग्ने सहस्वतो	५	३३	५
प्र ते शृणामि	२	३२	६	प्र यदेते प्रतरं	४	३	४
प्रतो हि कमी	६	११०	१	प्र यद्भूमन्दिष्ट पृष्ठां	४	३३	५
प्रत्यग्निरुषसा	७	८२	५	प्र तमन्तर्वषसवा	२०	८५	८
प्रत्यग्निरुषसा	१८	१	२८	प्र या जिगाति	८	४	१७
प्रत्यङ् तिष्ठन्	६	७	२१	प्र यो जज्ञे विद्वानस्य	४	१	३
प्रत्यङ् देवानां वि	१३	२	२०	प्र रेभ धी भरस्व	२०	१२७	६
प्रत्यङ् देवानां वि	२०	४७	१७	प्रवतो नपाक्षम	१	१३	३
प्रत्यङ् हि संबधू	४	१६	७	प्रवर्तय दिवो	८	४	१६
प्रत्यञ्चमकर्मनयं	२०	६३	३	प्र वा एतीन्दु	८	४	६०
प्रत्यञ्चमकर्मनयं	२०	१२४	६	प्र विशतं प्राणा	३	११	५
प्रत्यञ्चमकर्म	१२	२	५५	प्र विशतं प्राणा	७	५३	५
प्रत्यञ्चं चैनं	११	३	२६	प्रवीयमाना चर	१२	४	३७
प्र त्वा मुञ्चामि	१४	१	१६	प्र वो महे महिवृधे	२०	७३	३
प्र त्वा मुञ्चामि	१४	१	५८	प्र सम्रागं चर्षणी	२०	४४	१
प्रथमा ह व्युवास्व	३	१०	१	प्र सुमतिं सवित	४	२५	६
प्रथमेन प्रमारेण	११	८	३३	प्र सुभ्रुतं सुराधस	२०	५१	३
प्रथमेभ्यः शङ्खे	१६	२२	८	प्रसूत इन्द्र प्रवता	३	१	४
प्रथो वरो व्यचो	१३	४	५३	प्रस्कन्धान्प्र	१२	५	६७
प्रवुद्रुदो मघाप्रति	२०	१३०	१२	प्रस्तृणतीस्त	८	७	४
प्र द्युम्नाय प्र	२०	१४२	५	प्राग्नये वाचमी	६	३४	१
प्र नभस्व पृथिवी	७	१८	१	प्राची दिग्ग्निरधि	३	२७	१
प्र पतेतः पापि	७	११५	१	प्राचीनं बर्हिः	५	१२	४
प्रपथे पथामजनिष्ट	७	६	१	प्राचीं प्राचीं प्रदि	१२	३	७
प्र पदोष नेनिग्धि	६	५	३	प्राच्या दिशस्त्व	६	६८	३
प्र पादौ नययाव	१६	४६	१०	प्राच्या दिशः शालाया	६	३	२५
प्र पितृयाणं पन्थां	१५	१२	५	प्राच्यां त्वा दिशि	१८	३	३०
प्र बुध्यस्व सुबुधा	१४	२	७५	प्राच्यै त्वा दिशे	१२	३	५५
प्र बोधयोषो	२०	१४२	२	प्राजापत्याभ्यां	१६	२३	२६

प्राजापत्यो वा	कां०	सू०	म०	प्राश्मत् पाशान् वरुण	कां०	सू०	म०
प्राण प्राणं त्राय	१६	४४	४	प्राश्मत् पाशान् वरु	१८	४	७०
प्राण मां मत् पर्या	११	४	२६	प्राश्मदेनो वहन्तु	१६	१	११
प्राणमाहुर्मातरिश्वा	११	४	१५	प्रिया तष्टानि मे	२०	१२६	५
प्राणापानौ चक्षुः	११	७	२५	प्रिया प्रियाणि	१०	२	६
प्राणापानौ चक्षुः	११	८	४	प्रियास इत्ते मघ	२०	३७	८
प्राणापानौ चक्षुः	११	८	२६	प्रियं पशूनां भ	१२	४	४०
प्राणापानौ मा	१६	४	५	प्रियं मा कृणु देवेषु	१६	६२	१
प्राणापानौ मृत्यो	२	१६	१	प्रियं मा दर्भ	१६	३२	८
प्राणापानौ व्रीहियव	११	४	१३	प्रियं प्रियाणां	१२	३	४६
प्राणाय नमो यस्य	११	४	१	प्रेता जयता नर	३	१६	७
प्राणायान्तरिक्षा	६	१०	२	प्रेतो मुञ्चामि ना	१४	१	१८
प्राणे त्वा द्विपदां	८	२	४	प्रेतो यन्तु व्याध्यः	७	११४	२
प्राणेन प्राणतां	३	३१	६	प्रेतं पादौ प्रस्फुरतं	१	२७	४
प्राणेन विश्वतो	३	३१	७	प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथ	२०	८७	५
प्राणेनान्नि सं	१६	२७	७	प्रेमां मात्रां	१८	२	३६
प्राणेनाग्ने चक्षुषा	५	३०	१४	प्रेरय सुरो अर्थं	२०	७६	५
प्राणेनाग्नादेता	१५	१४	२२	प्रेव पिपतिषति	१२	२	५२
प्राणो अपानो	१८	२	४६	प्रेहि प्रेहि पथिभिः	१८	१	५४
प्राणो मृत्युः	११	४	११	प्रेणान्छृणीहि	१०	३	२
प्राणो विराट्	११	४	१२	प्रेणाक्षुदे मनसा	३	६	८
प्राणः प्रजा अनु	११	४	१०	प्रेषा यज्ञे निविदः	५	२६	४
प्रातरग्निं प्रात	३	१६	१	प्रोग्रां पीति वृष्ण	२०	२५	७
प्रातर्जितं भगमुग्रं	३	१६	२	प्रोग्रां पीति वृष्ण	२०	३३	२
प्रातःप्रातर्गृहपति	१६	५५	४	प्रोष्ठेशयास्तल्पे	४	५	३
प्राणान्तसपत्ना	७	३५	१	प्रोष्वस्मै पुरोरथ	२०	६५	२
प्राभू जयाभी	६	१२६	३				

ब

बद्ध सूर्य भवसा	२०	५८	४	बन्धस्त्वाम्रे	१६	५६	२
बयमहांमसि सूर्य	१३	२	२६	बन्ने रक्षः समवमा	११	१	३२
बयमहांमसि सूर्य	२०	५८	३	बन्नेरध्वर्योमुख	११	१	३१
बतो बतासि यम	१८	१	१५	बन्नेरर्जुनका	२	८	३
बस्र वो अघा इति	२०	१२६	१६	बर्हिर्वा यत् स्वप	२०	२५	६

	कां०	सू०	मं०		कां०	सू०	मं०
बहिषदः पितरः	१३	१	५१	बृहस्पतिर्जयो	६	६ (५)	२
बलमसि बलं मे	२	१७	३	बृहस्पतिर्नः परि	७	५१	१
बलविज्ञायः स्थविरः	१६	१३	५	बृहस्पतिर्नः परि	२०	१७	११
बलेनात्रादेनात्रम	१५	१४	४	बृहस्पतिर्नः परि	२०	८६	११
बहिर्विलं निर्द्रवतु	६	८	११	बृहस्पतिर्नः परि	२०	६४	११
बह्वी३दं राजन् वरु	१६	४४	८	बृहस्पतिर्मः आकू	१६	४	४
बलादेकमणीय	१०	८	२५	बृहस्पतिर्मः आत्मा	१६	३	५
बालास्ते प्रोक्षणीः	१०	६	३	बृहस्पतिर्मा वि	१६	१७	१०
बुध्येम शरदः शतम्	१६	६७	३	बृहस्पतिं ते विश्व	१६	१८	१०
बृषभं वाजिनं वयं	७	८०	२	बृहस्पतिः प्रथमं	२०	८८	४
बृहच्च रथंतरं	१५	३	५	बृहस्पतिः प्रथमः	१४	१	५५
बृहच्च रथंतरं	८	१०(२)	६	बृहस्पतिः समज	२०	६०	३
बृहतश्च वै स	१५	२	४	बृहस्पतिः सविता	६	४	१०
बृहता मन उप ह्वये	५	१०	८	बृहस्पते परि दीया	१६	१३	८
बृहती परि मात्राया	८	६	५	बृहस्पते या परमा	२०	८८	३
बृहतेच वै स रथ	१५	२	३	बृहस्पते युवमिन्द्र	२०	१७	१२
बृहतः परि सामानि	८	६	४	बृहस्पते युवमिन्द्र	२०	८७	७
बृहत् ते जालं	८	८	७	बृहस्पते सवित	७	१६	१
बृहत् पलाशे सुभगे	६	३०	३	बोधश्च त्वा प्र	८	१	१३
बृहदन्यतः पक्ष	१३	३	१२	बोधा सु मे मघघ्न	२०	११७	३
बृहदायवनं रथन्त	११	३	१६	ब्रह्मलोको भवित	११	३	५१
बृहदेवमनु वस्ते	१३	३	११	ब्रह्मः समीची	७	२२	२
बृहद्धि जालं	८	८	६	ब्रह्मगवी पठ्यमाना	५	१६	४
बृहद् गावासुरेभ्यो	१६	५६	३	ब्रह्म च क्षत्रं च	६	७	६
बृहन्तो नाम ते देवा	१०	७	२५	ब्रह्म च क्षत्रं तच्च	१२	५	८
बृहज्जेषामधिष्ठाता	४	१६	१	ब्रह्म च तपश्च	१३	४	२२
बृहस्पतिना ०।ते	१४	२	५४	ब्रह्मचर्येण कन्या	११	५	१८
बृहस्पतिना ०।प	१४	२	५७	ब्रह्मचर्येण तपसा	११	५	१७
बृहस्पतिना ०।भ	१४	२	५५	ब्रह्मचर्येण तपसा	११	५	१६
बृहस्पतिना ०।य	१४	२	५६	ब्रह्मचारिणं पितरो	११	५	३
बृहस्पतिनाव ०।व	१४	२	५३	ब्रह्मचारी चरति	५	१७	५
बृहस्पतिनाव ०।र	१४	२	५८	ब्रह्मचारी जनयन्	११	५	७
बृहस्पतिरमत	२०	१६	७	ब्रह्मचारी ब्रह्म भ्रा	११	५	२४
बृहस्पतिराङ्गिर	११	१०	१३	ब्रह्मचारी ण्णश्च	११	५	१
बृहस्पतिराङ्गिर	११	१०	१०	ब्रह्मचार्येति स्मि	११	५	६

	कां	सू०	म०		कां०	सू०	म०
ब्रह्म ज्ञानं प्रथमं	४	१	१	ब्रह्मवादिनां वद	११	३	२६
ब्रह्म ज्ञानं प्रथमं	५	६	१	ब्रह्म भोजयिमा	१०	२	२१
ब्रह्मज्येष्ठां संभृता	१६	२२	२१	ब्रह्म स्रुचो घृतव	१६	४२	२
ब्रह्मज्येष्ठा संभृता	१६	२३	३०	ब्रह्म होता ब्रह्म	१६	४२	१
ब्रह्मज्यं देव्यध्व्या	१२	५	६३	ब्रह्माणस्त्वा वयं	२०	३	३
ब्रह्मणाग्निः	२०	६६	११	ब्रह्माणस्त्वा वयं	२०	३८	३
ब्रह्मणाग्नी	१३	१	४६	ब्रह्माणस्त्वा वयं	२०	४७	३
ब्रह्मणा तेजसा	१०	६	३०	ब्रह्मापरं युज्यतां	१४	१	६४
ब्रह्मणा ते ब्रह्म	२०	८६	१	ब्रह्माभ्यावर्त	१०	५	४०
ब्रह्मणाग्नादेना	१५	१४	२४	ब्रह्मास्य शीर्षं	४	३४	१
ब्रह्मणा परिशृष्टी	११	३	१५	ब्रह्मण एव पतिर्न	५	१७	६
ब्रह्मणा भूमिर्वि	१०	२	६५	ब्रह्मण्यभ्या	१०	५	४१
ब्रह्मणा शालां	६	३	१६	ब्रह्मणेन पर्युक्ता	४	१६	२
ब्रह्मणा शुद्धा	११	१	१८	ब्रह्मणेभ्य ऋषभं	६	४	११
ब्रह्मणे स्वाहा	१६	२२	२०	ब्रह्मणेभ्यो व	१०	१०	३३
ब्रह्मणे स्वाहा	१६	२३	२६	ब्रह्मणो जज्ञे	४	६	१
ब्रह्म देवाँ अनु	१०	२	२३	ब्रह्मणो स्य मुक्ता	१६	६	६
ब्रह्म पद्वायं	१२	५	४	ब्रीहिमत्तं यव	६	१४०	२
ब्रह्म प्रजापति	१६	६	१२	ब्रूमो देवं सवितार	११	६	३
ब्रह्म ब्रह्मचारि	१६	१६	८	ब्रूमो राजानं वरुणं	११	६	२

भ

भग एव भगवां	३	१६	५	भद्रात् मन्वाग्नि	५	५	५
भग प्रणेतर्भग	३	१६	३	भद्रासि रात्रि च	१६	४६	३
भगमस्या वचं	१	१४	१	भद्रार्धं नो मध्य	६	१२८	२
भगस्ततश्च चतुरः	१४	१	६०	भद्रसुरिद्रसुः	१३	४	५४
भगस्ते हस्तमग्र	१४	१६	५१	भद्रजि पुनर्वो	२	२४	३
भगस्त्वेतो नयतु	१४	१६	२०	भव एनमिष्वासः	१५	५	२
भगस्य नावमारोह	२	३६	५	भव राजन् यजमा	११	२	२८
भगेन मा शशिपेन	१	१२६	१	भवाकद्रो सयुजा	११	२	१४
भगो मा भगेनाव	१६	४५	६	भवाशर्वावस्थतां	१०	१	२३
भगो युनक्त्वाशि	५	२६	६	भवाशर्वाविदं	११	६	६
भद्रमिच्छन्त ऋष	१६	४१	१	भवाशर्वा मन्वे	४	२८	१
भद्रावधि भेयः	७	८	१	भवाशर्वा मृडतं	११	२	१

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
भवेम शरदः शतम्	१६	६७	६	भूतं च भविष्यच्छ	१५	२	७
भवो दिवो भव	११	२	२७	भूतं च भव्यं च	१३	४	२३
भसदासीदादित्या	६	४	१३	भूतो ब्रूमो भूतपतिं	११	६	२१
भाग्यो भवदयो	१०	८	२२	भूमिर्मातादिति	६	१२०	२
भिन्धि दर्भं सप	१६	२८	४	भूमिष्ठा पातु	५	२८	५
भिन्धि दर्भं सप	१६	२८	५	भूमिष्ठा प्रति	३	२६	८
भिन्धि विश्वा	२०	४३	१	भूमे मातर्नि धेहि	१२	१	६३
भीमा इन्द्रस्य हेतयः	४	३७	८	भूमेश्च वै सो	१५	६	३
भीमा इन्द्रस्य हेतयः	४	३७	६	भूम्यां देवेभ्यो	१२	१	२२
भुगित्यभिगतः	२०	१३५	१	भूयसी शरदः श	१६	६७	८
भुवो जनस्य	२०	३६	६	भूयानरात्याः श	१३	४	४७
भूतपतिर्निरज	२	१४	४	भूयानिन्द्रो नमु	१३	४	४६
भूतिश्च वा अभूति	११	८	२१	भूयेम शरदः शतं	१६	६७	७
भूते ह विष्मती	६	८४	२	भूरि त इन्द्र वीर्यं	२०	१५	५
भूतो भूतेषु पयः	४	८	१	भ्रातृव्यक्षयणम्	२	१८	१

म

मखस्य ते तविष	२०	११	२	मध्वा यज्ञं नक्षति	५	२७	३
मङ्गलिकेभ्यः	१६	२३	२८	मनसरूपत इमं	७	६७	८
मज्जज्ज्ञा मा सं	४	१२	४	मनसाज्ञादेना	१५	१४	२
मतयः सोमपामुखं	२०	२३	५	मनसा सं कल्पयति	१२	४	३१
मत्स्या सुशिष	२०	७१	६	मनसा होमैर्हरसा	६	६३	२
मदेमदे हि नो ददि	२०	५६	४	मनसे चेतसे धिय	६	४१	१
मधु जनिषीय मधु	६	१	१४	मनो अस्या अन	१४	१	१०
मधुमतीरोषधी	२०	१४३	८	मन्त्रमखर्व सुधि	२०	५६	४
मधुमती स्थ मधुम	१६	२	२	मन्थ दर्भ०	१६	२६	५
मधुमन्मूलं मधु	८	७	१२	मन्युनाज्ञादेना	१५	१४	२०
मधुमेनिष्क्रमणं	१	३४	३	मन्युरिन्द्रो मन्यु	४	३२	२
मधुमान भवति	६	१	२३	मन्वे वां द्यावापृ	४	२६	१
मधोरसि मधुतरा	१	३४	४	मन्वे वां मित्रावरु	४	२६	१
मधोःकशामजन	६	१	५	मम त्वा दोषणि	६	६	२
मध्यन्दिन उद्गा	६	६(५)	५	मम देवा विहवे	५	३	३
मध्यमेतदुडुहो	४	११	८	ममाग्रे वर्चो	५	३	१
मध्वा पूज्ये नयः१:	५	१२	३	ममेयमस्तु पोष्या	१४	१	५२

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
मया गावो गोपतिना	३	१४	६	महाँ इन्द्रः परश्च	२०	७१	१
मया सोऽन्नमत्ति	४	३०	४	महीमू पु मातरं	७	६	२
मयि क्षत्रं पर्णमणे	३	५	२	महो महानि पतय	२०	११	६
मयि देवा द्रविणं	५	३	५	मह्यमापो मधुमदेर	६	६१	१
मयि वर्चो अथो	६	६६	३	मह्यं त्वा मित्रावरु	६	८६	३
अय्यग्रे अग्निं गृह्णा	७	८२	२	मह्यं यजन्तां मम	५	३	४
अरीचीधूर्मान्	६	११३	२	मा गतानामा दीधी	८	१	८
अरुतां पिता	५	२४	१२	माचिदन्यद् वि	२०	८५	१
अरुतां मन्वे अधि	४	२७	१	मा ज्येष्ठं वधीदय	६	११२	१
अरुतो मा गणैरव	१६	४५	१०	मातरिश्वा च पव	१५	२	७
अरुतो यस्य द्वि	२०	१	२	मातरिश्वा च पव	१५	२	७
अरुतः पर्वता	५	२४	६	मातली कव्यैर्यमो	१८	१	४७
अरुतः पोत्रात्	२०	२	१	मातादित्यानां	६	१	४
अर्माणि ते वर्मणा	७	११८	१	माता पितरमृत	६	६	८
अर्माविधं रोरुवतं	११	१०	२६	मातुष्टे किरणौ द्वौ	२०	१३३	२
अस्वं बिभ्रती गुरु	१२	१	४८	मा ते अस्यां सहसा	२०	३७	७
अस्तिष्कमस्य	१०	२	८	मा ते प्राण उप	५	३०	१५
महत्कांडाय स्वाहा	१६	२३	१८	मा ते मनस्तत्र	८	१	७
महत्पयो विश्वरूप	६	१	२	मा ते मनो मासो	१८	२	२४
महत् सधस्थं महती	१२	१	१८	मात्रे जु ते सुमिते	२०	७६	६
महदेषाव तपति	१२	४	३६	मा त्वा कव्यादभि	८	१	१२
महद् यक्षं भुवनस्य	१०	७	३८	मा त्वा जम्भः	८	१	१६
महागणेश्यः	१६	२२	१७	मा त्वा दभनत्स	१७	१	८
महादेव एनमि	१५	५	१३	मा त्वा दभन परि	१३	२	५
महानग्नी कृत	२०	१३६	१०	मा त्वाभि सखा	२०	१३०	१४
महानग्नी महान	२०	१३६	११	मा त्वा मूरा	२०	२२	२
महानग्न्यतृप्तद्वि	२०	१३६	५	मा त्वा वृक्षः सं	१८	२	२५
महानग्न्युप ब्रूते	२०	१३६	७	मादयस्व सुते	२०	५६	५
महानग्न्युप ब्रूते	२०	१३६	८	मा न आपो मेधां	१६	४०	२
महानग्न्युप ब्रूते	२०	१३६	६	मानस्य पत्नि	३	१२	५
महानग्न्युलूखल	२०	१३६	६	मा नो अज्ञाता	२०	७६	२
महान्तं कोशमुद	४	१५	१६	मा नो गोषु पुरु	११	२	२१
महान् वै भद्रो	२०	१३६	१५	मा नो देवा अहि	६	५६	१
महावृषान्मृजवतो	५	२२	८	मा नोनिदे च वृक	२०	१८	५
महाँ इन्द्रो य भोज	२०	१३८	१	मा नोभिक्षा मस्यं	११	२	१६

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
मा नो मर्त्ता अमि	२०	६६	८	मुञ्जाय ते पशुपते	११	२	५
मा नो महान्ततुत	११	२	२६	मुग्धा देवा उत	७	५	५
मा नो मेधां मा नो	१६	४०	३	मुञ्चन्तु मा शपथ्या	६	६६	२
मा नो रक्षो अमि	८	४	२३	मुञ्चन्तुमा शपथ्या	७	११२	२
मा नो रुद्र तक्मना	११	२	२६	मुञ्चन्तु मा शपथ्या	११	६	७
मा नो विदन्	१	१६	१	मुञ्च शीर्षकथा	११	२	३
मा नो हासिषु	६	४१	३	मुञ्चामि त्वा वैश्वा	१	१०	४
मा नो हिंसीरधि	११	२	२०	मुञ्चामि त्वा हवि	३	११	१
मा नः पाशं प्रति	६	३	२४	मुमुक्तमस्मान् कुरि	५	६	८
मा नः पश्चान्मा	१२	१	३२	मुमुक्षाना ओषधयो	८	७	१६
मा प्र गाम पथो	१३	१	५६	मुहुर्गुण्यैः प्रबद्ध	१२	२	३८
माविमेर्न मरिष्य	५	३०	८	मुह्यन्त्वेषां बाहव	११	६	१३
मा भूम निष्टया	२०	११६	१	मूढा अमित्रा	११	१०	२१
मा भ्राता भ्रातरं	३	३०	३	मूढा अमित्रा	६	६७	२
मा मा वोचलराक्षसं	५	११	८	मूर्णा मृगस्य दन्ता	४	३	६
मा मां प्राणो हासी	१६	४	३	मूर्धानमस्य संलीव्या	१०	२	२६
मायाभिरुत्तिस्तु	२०	२६	४	मूर्धाहरयीणां सू	१६	३	१
मारेअस्मद् वि	२०	२३	८	मूर्धनो देवस्य	१६	६	१६
मा वनिं मा वाचं	५	७	६	मूलबर्हणी	१२	५	३३
माविदन्परिप	१४	२	११	मृगो न भीमः	७	८४	३
मा वः प्राणं मा	१६	२७	६	मृण दर्भ०	१६	२६	४
माश्वाननां भद्रे	१६	४७	७	मृत्युवे मूर्धप्र	८	८	१०
मासं वृतो मोप	८	६	३	मृत्युरीशो द्विपदां	८	२	२३
मास्मै तान्संखी	५	२३	११	मृत्युर्हिङ्कुरवत्यु	१२	५	२१
मा हिंसिष्टं कुमार्यं	१४	१	६३	मृत्युः प्रजानामधि	५	२४	१३
मांसान्यस्य शात	१२	५	६६	मृत्योरहं ब्रह्मचारी	६	१३३	३
मित्र ईक्षमाणा	६	७	२३	मृत्योरावम। पद्य	८	८	१८
मित्र एनं वरुणो	२	२८	२	मृत्योः पदं योपय	१२	२	३०
मित्रश्च त्वा वरुणश्च	१६	४४	१०	मेदस्वता यजमानाः	६	११४	३
मित्रश्च वरुणश्च	६	७	७	मेधामहं प्रथमां	६	१०८	२
मित्रश्च वरुणश्चेन्द्रो	३	२२	२	मेधां सायं मेधां	६	१०८	५
मित्रावरुणयो	१०	५	११	मेनिः शतवधा	१२	५	१६
मित्रावरुणा परि	१८	३	१२	मेनिः शरव्या	१२	५	५६
मित्रावरुणौ	५२	२४	५	मेनिर्दुष्टमाना	१२	५	२३
मित्रः पृथिव्योद्	१६	१६	१	मेमं प्राणो हासीन्मो	७	५३	४

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
मेघ इव वै सं च	६	४६	२	मो धु वो अस्मद्	२०	६७	२
मैतं पन्थामनु	८	१	१०	ओकानुम्रोक्	२	२४	३
मैनमग्ने वि दहो	१८	२	४	ओको मनोहा	१६	१	३
मो धु ब्रह्मोव तन्द्र	२०	६०	३				

य

य आक्तोक्षः	२०	१२८	७	य ऊरु अनुसर्प	६	८	७
य आगरे मृग	४	३६	३	य ऋते चिदमि	१४	२	४७
य आत्मदा बलदा	४	२	१	य ऋणवो देव	१६	३५	५
य आत्मदा बलदा	१३	३	२४	य एक इन्द्रव्यश्च	२०	३६	१
य आत्मानमति	८	६	१३	य एक इन्द्रिदयते	२०	६३	४
य आदित्यं क्षत्रं	१५	१०	११	य एकश्चर्षणीनां	२०	७०	१५
य आमं मांस	८	६	२३	य एतं देवमेकवृतं	१३	४	१५
य आर्षेयेभ्यो या	१२	४	१२	य एतं देवमेकवृतं	१३	४	२४
य आशानामाशा	१	३१	२	य एनामवशामा	१२	४	१७
य आस्तेयश्चरति	४	५	५	य एनां वनिमायन्ति	१२	४	११
य इन्द्र इव देवेषु	६	४	११	य एनं परिषीदन्ति	६	७६	१
य इन्द्र सोमपातमो	२०	६३	७	य एनं हन्ति मृदुं	५	१८	५
य इन्द्रेण सरथं	३	२१	३	य एवापरिमिताः	१५	१३	१०
य इमां देवो मेखला	६	१३३	१	य एवं विदुषे	१२	४	२३
य इमे द्यावापृथिवी	५	१२	६	य एवं विदुषो	१२	५	४६
य इमे द्यावापृथिवी	१३	३	१	य एवं विद्यात्स	१०	१०	२७
य इह पितरो जीवा	१८	४	८७	यच्चक्षुषा मनसा	६	६६	३
य ईशे पशुपतिः	२	३४	१	यच्च प्राणति प्रा	११	७	२३
य ई चकार	६	१०	१०	यच्च वच्चो अक्षेषु	१४	१	३५
य उग्रीणामुग्रवाहु	४	२४	२	यच्चद्धि त्वा जना	२०	८५	३
य उग्रः सन्ननिष्ठुत	२०	५३	३	यच्चद्धि सत्य	२०	७४	१
य उग्रः सन्ननिष्ठुत	२०	५७	१३	यच्छुक्रा वाच	२०	४६	१
य उत्तरतो जुहति	४	४०	४	यच्छयानः पर्यावर्ते	१२	१	३४
य उहानत् परायणं	६	७७	२	यजमानब्राह्मणं	६	६(२)	१
य उह्वचीन्द्रगोपा	२०	२१	११	यजुषि यज्ञे	५	२६	१
य उपरिष्ठाज्जुहति	४	४०	७	यज्ञाग्रद् यत् सुप्तो	१६	७	१०
य उभाभ्यां प्रहरसि	७	५६	८	यज्ञामयो यधु	१४	२	६१
य उशता मनसा	२०	६६	३	यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्	२०	२७	५

कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
यज्ञ पति विततः	१८	४	१३	यत् ते कामं शर्म	६	२ १६
यज्ञ पतिमृषयः	२	३५	२	यत् ते कृष्णः शकुन	१८	३ ५५
यज्ञपदीराक्षीरा	१०	१०	६	यत् ते क्रुद्धो धनप	१०	१० ११
यज्ञ यज्ञं गच्छ	७	६७	५	यत् ते क्लोमा	१०	६ १५
यज्ञतौ दक्षिणीयो	८ १०(१)		७	यत् ते चन्द्रं कश्यप	१३	३ १०
यज्ञस्य चक्षुः	२	३५	५	यत् ते चर्मशतौ	१०	६ २४
यज्ञस्य चक्षुः	१६	५८	५	यत् ते तनूष्वनहा	१६	२० ३
यज्ञायज्ञियाय	१५	२	११	यत् ते दर्भं जरा	१६	३० १
यज्ञायज्ञियस्य	१५	२	१४	यत् ते देवा अक्षरव	७	७६ १
यज्ञेन यज्ञमय	७	५	१	यत् ते देवी निश्रु	६	६३ १
यज्ञैरथर्वा प्रथमः	२०	२५	५	यत् ते नद्यं	६	३ २
यज्ञैरिषूः	८	३	६	यत् ते नाम सुहव	७	२० ४
यज्ञैः संमिश्राः	२०	६७	४	यत् ते नियानं	८	२ १०
यज्ञो दक्षिणाभिः	१६	१६	६	यत् ते पितृभ्यो	१०	१ ११
यज्ञो बभूव सः	७	५	२	यत् ते पुच्छं	१०	६ २२
यज्ञं दुहानं सद	११	१	३४	यत् ते प्रजायां पशु	१४	२ ६२
यज्ञं ब्रूमो यजमान	११	६	१४	यत् ते भूमे विखनाभि	१२	१ ३५
यज्ञं यन्तं मनसा	६	१२२	४	यत् ते भ्रजा	१०	६ १८
यत् इन्द्र भयामहे	१६	१५	१	यत् ते मध्यं पृथिवि	१२	१ १२
यतो दष्टं यतो	७	५६	३	यत् ते माता	५	३० ५
यतः सूर्य उदेत्य	१०	८	१६	यत् ते यकुक्षे	१०	६ १६
यत्कशिपूष	६	६(१)	१०	यत् ते रिष्टं यत् ते	४	१२ २
यत्कामकामय	१६	५२	५	यत् ते वर्चो जातवेदो	३	२२ ४
यत्किंचेदं पतय	१६	४८	३	यत् ते वासः परिधानं	८	२ १६
यत् किं चासौ मनसा	७	७०	१	यत् ते शिरो यत् ते	१०	६ १३
यत्किं चेदं वरु	६	५१	३	यत् परममवमं	१०	७ ८
यत्कृषते यद् वजु	१२	२	३६	यत् परिवेष्टारः	६ ६(६)	३
यत्क्षुरेण मर्चयता	८	२	१७	यत् पिबामि सं	६ १२५	२
यत्तश्चात्मनि	१	१८	३	यत् पुरा परिवेष्टा	६ ६(१)	१२
यत् क्षत्तारं	६ ६(६)		१	यत् पुरुषेण हविषा	७	५ ४
यत्तच्छरीरमश	११	८	१६	यत् पुरुषेण हविषा	१६	६ १०
यत्तर्पणमाहरन्ति	६ ६(१)		६	यत् पुरुषं व्यदधुः	१६	६ ५
यत् ते अङ्गमतिहितं	१८	२	२६	यत् प्रति शृणोति	६ ६(६)	२
यत् ते अङ्गं भुवस्पत	१०	५	४५	यत् प्रत्याहन्ति	८ १०(२)	३
यत् ते अपोषकं वि	५	१३	३	यत् प्राङ् प्रत्यङ्	१३	२ ३

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
यत् प्राण ऋतावा	११	४	४	यत् सभागयति	६	६(६)	६
यत् प्राण स्तनयि	११	४	३	यत् समुद्रमनुश्रितं	१३	२	१४
यत् प्रेषिता वरुणे	३	१३	२	यत् सुपर्णा विवक्षवो	२	३०	३
यत्र ऋषयः प्रथम	१०	७	१४	यत् सोममिन्द्र	२०	१११	१
यत्र तपः पराक्र	१०	७	११	यत् संयमो न वि	४	३	७
यत्र देवा ब्रह्मविदो	१०	७	२४	यत् स्वप्ने अन्न	७	१०१	१
यत्र देवाश्च	१०	८	३४	यथा कलां यथा शफं	६	४६	३
यत्र नाव प्र भंशनं	१६	३६	८	यथा कलां यथा शफं	१६	५७	१
यत्र ब्रह्मविदो	१६	४३	१	यथा सरो मघवं	२	३६	४
यत्र ब्रह्मविदो	१६	४३	८	यथाग्ने त्वं वनस्पते	१६	३१	६
यत्र ब्रह्म ० । आपो	१६	४३	७	यथा चकुर्देवासुरा	६	१४१	३
यत्र ब्रह्म ० । इन्द्रो	१६	४३	६	यथाज्यं प्रगृहीत	१२	४	३४
यत्र ब्रह्म ० । चन्द्रो	१६	४३	४	यथा त्वमुत्तरो सो	१६	४६	७
यत्र ब्रह्म ० । वायु	१६	४३	२	यथादित्या वसुभिः	६	७४	३
यत्र ब्रह्म ० । सूर्यो	१६	४३	३	यथा देवा असुरान्	६	२	१८
यत्र ब्रह्म ० । सोमो	१६	४३	५	यथा देवेष्वमृतं	१०	३	२५
यत्र वः प्रेक्षा	४	३७	५	यथा द्यां च पृथिवीं	१	२	४
यत्र लोकाश्च	१०	७	१०	यथा द्यौश्च पृथिवी	२	१५	१
यत्र रक्षसः	१०	७	२६	यथा नकुलो वि	६	१३६	५
यत्रादित्याश्च	१०	७	२२	यथा नडं कशिपुने	६	१३८	५
यत्रासूस्तिक्ष्णः	२०	१२६	७	यथा पसस्तायादरं	६	७२	२
यत्रासृतं च	१०	७	१५	यथा प्रधिर्यथो	६	७०	३
यत्राश्वत्था	४	३७	४	यथा प्राण बलि	११	४	१६
यत्रा सुपर्णा	६	६	२२	यथा बीजमुर्व	१०	६	३३
यत्रा सुहार्दः सुकृतो	३	२८	५	यथा ब्रह्म च क्षत्रं	२	१५	४
यत्रा सुहार्दः सुकृतो	६	१२०	३	यथा भूतं च भव्यं	२	१५	६
यत्रा सुहार्दः सुकृता	३	२८	६	यथा भूमिर्मुतमना	६	१८	२
यत्रेदानीं पश्यसि	८	३	५	यथा मक्षा इदं	६	१	१७
यत्रैषामग्ने	१	८	४	यथा मधु मधुकृतः	६	६	१६
यत् त्वा क्रुद्धाः प्र	१२	२	५	यथा मनो मनस्केतै	६	१०५	१
यत् त्वाभिचेरुः	५	३०	२	यथा मम स्मरादसौ	६	१३०	३
यत् त्वा शिक्षः परा	१०	६	३	यथा मांसं यथा	६	७०	१
यत् त्वा सोम प्रति	१४	१	४	यथा मुगाः सं वि	५	२१	४
यत् त्वं शीतो ऽथो	५	२२	१०	यथा यमाय हर्म्य	१८	४	५५
यत् समुद्रो अभ्य	१६	३०	५	यथा यशश्चन्द्र	१०	३	१८

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
यथा यशो अग्नि	१०	३	२२	यथा सोमस्तृतीये	६	१	१३
यथा यशो यजमा	१०	३	२३	यथा सोमो द्वितीये	६	१	१२
यथा यशः कन्या	१०	३	२०	यथा सोमः प्रातः	६	१	११
यथा यशः पृथि	१०	३	१६	यथा स्म ते विराह	४	४	३
यथा यशः पूजाप	१०	३	२४	यथा हव्यं वहसि	४	२३	२
यथा यशः सोम	१०	३	२१	यथाहश्च रात्री	२	१५	२
यथायाद् यमसाद	१२	५	६४	यथा हस्ती हस्ति	६	७०	२
यथायं बाहो अश्विना	६	१०२	१	यथाहान्यनुपूर्वं	१२	२	२५
यथा वाणः सुसं	६	१०५	२	यथेदं भूम्या अग्नि	२	३०	१
यथा वातश्चा	१०	३	१४	यथेन्द्र उद्वाचनं	५	८	८
यथा वातेन	१०	३	१५	यथेन्द्रो द्यावापृ	६	५८	२
यथा वातो	१०	३	१३	यथेमे द्यावापृथिवी	६	८	३
यथा वातो यथा	१	११	६	यथेयं पृथिवी मही	५	२५	२
यथा वातश्च्य	१०	१	१३	यथेयं पृथिवी मही	६	१७	१
यथा वृकादजावय	५	२१	५	यथेयं पृथिवी मही	६	१७	२
यथा वृक्षमशनि	७	५०	१	यथेयं पृथिवी मही	५	२५	३
यथा वृक्षं लिबुजा	६	८	१	यथेयं पृथिवी मही	६	१७	४
यथा वृक्ष इमा	६	८५	३	यथेषुका पर पतद्व	१	३	६
यथा शेषो अपा	७	६०	३	यथोदकमपपुषो	६	१३६	४
यथा शेषधिर्नि	१२	४	१४	यदक्षेषु वदा यत्	१२	३	५२
यथा शाम्याकः	१६	५०	४	यदग्ने षण्ण समिति	१८	१	२६
यथा श्येनात् पतत्रि	५	२१	६	यदग्निरापो अदहत्	१	२५	१
यथाश्वत्थ निरभ	३	६	३	यदग्ने अद्य मिथुना	८	३	१२
यथाश्वत्थ वानस्प	३	६	६	यदग्ने अद्य मिथुना	१०	५	४८
यथा सत्यं चानृतं	२	१५	५	यदग्ने तपसा तप	७	६१	१
यथा सिन्धुर्नदी	१४	१	४३	यदग्ने यानि कानि	१६	६४	३
यथासितः प्रथयते	६	७२	१	यदग्नौ सूर्ये विषं	१०	४	२२
यथा सुपर्णः प्रपतन्	६	८	२	यददीव्यन्नुणमहं	६	११६	१
यथा सूर्यश्चन्द्र	२	१५	३	यददोअदो अभ्य	१६	७	६
यथा सूर्यस्य रश्मयः	६	१०५	३	यददो देवा अस्तु	४	१६	४
यथा सूर्यो नक्षत्राणा	७	१३	१	यददः संभूयति	३	१३	१
यथा सूर्यो मुच्यते	१०	१	३२	यदद्य कच्च वृत्रहन्	२०	११२	१
यथा सूर्यो अतिभाति	१०	३	१७	यदद्य त्वा प्रयति	७	६७	१
यथा सो अस्य परि	५	२६	३	यदद्य वां नास	२०	१४०	४
यथा सोम ओषधी	६	१५	३	यदद्या रात्रि सुभ	१६	५०	६

	कां०	सू०	म०
यदद्याश्विनावहं	२०	१४१	३
यदनूचीन्द्रमैरात्	१०	१०	१०
यदन्तरा द्यावा	१०	८	३६
यदन्तरा परावत	२०	६	६
यदन्तरिक्षेयददि	२०	१३६	२
यदन्तरिक्षं पृथिवी	६	१२०	१
यदन्तरं तद् वाह्यं	२	३०	४
यदन्नमद्मि बहुधा	६	७१	१
यदन्नमद्म्यनृतेन	६	७१	३
यदन्ये शतं याचे	१२	४	२२
यदप्सु यद् वनस्पतौ	२०	१३६	५
यदभिवदति	६	६(१)	४
यदयातं शुभरूप	१४	१	१५
यदर्वाचीनं	१०	५	२२
यदलिङ्गकास्वलिङ्ग	२०	१३६	३
यदशनकृतं ह्वयन्ति	६	६(१)	१३
यदश्नामि बलं	६	१३५	१
यदश्मसि यत् पिब	८	२	१६
यदश्विना पृच्छमा	१४	१	१४
यदसावमुतो	५	८	३
यदस्मासु दुष्व	१६	४५	२
यदस्मृति चक्रम	७	१०६	१
यदस्य दक्षिणम	१५	१८	२
यदस्य हतं विहृतं	५	२६	५
यदस्या अंहुमेद्याः	२०	१३६	१
यदस्या गोपतौ	१२	४	८
यदस्याः कस्मै	१२	४	७
यदस्याः पलपूलनं	१२	४	६
यदहरहरभि	१६	७	११
यदाकेशानस्थि	११	८	११
यदागार्हपत्य	१४	२	२०
यदाञ्जनभ्यञ्ज	६	६(१)	११
यदाञ्जनं त्रैकुकु	४	६	६
यदा त्वष्टा व्यतृण	११	८	१८
यदादित्यैर्द्वय	१०	१०	६

	कां०	सू०	म०
यदान्त्रेषु गवीन्यो	१	३	६
यदापीतासो	२०	१४२	४
यदापो अभ्या	१६	४४	६
यदा प्राणो अभ्य	११	४	५
यदा प्राणो अभ्य	११	४	१७
यदावघ्नन् दाक्षाय	१	३५	१
यदा वज्रं हिरण्य	२०	७३	४
यदा वलस्य पीय	२०	१६	६
यदावसथान् कल्प	६	६(१)	७
यदा वाजमसनद्	२०	६१	१०
यदाशसा वदतो	७	५७	१
यदाश्रुतं कृणवो	१८	२	५
यदासंघामुपधा	१४	२	६५
यदासुतः क्रियमा	३	७	६
यदा स्थूलेन पस	२०	१३६	२
यदाह भूय उद्धरेति	६	६(२)	२
यदि कर्तं पतित्वा	४	१२	७
यदि कामादप	६	८	८
यदि क्षितायुर्यदि	३	११	२
यदि क्षितायुर्यदि	२०	६६	७
यदि चतुर्वृषो	५	१६	४
यदि चिन्नुत्वा	५	३	४
यदि चिन्नुत्वा घ	२०	१०७	७
यदि जाग्रद्यदि	६	११५	२
यदि त्रिवृषोसि	५	१६	३
यदि दशवृषोसि	५	१६	१०
यदि द्विवृषोसि	५	१६	२
यदि नववृषोसि	५	१६	६
यदि नो गां हंसि	१	१६	४
यदिन्द्र प्रागपागुद	२०	१२०	१
यदिन्द्र ब्रह्मणस्प	६	४५	३
यदिन्द्र यावतस्त्वं	२०	८२	१
यदिन्द्रादो दाश	२०	१२८	१२
यदिन्द्राहं यथा	२०	२७	१
यदिन्द्रेण सरथं	२०	१४१	३

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
यदि पञ्चवृषोसि	५	१६	५	यदेनसो मातृकृता	५	३०	४
यदि प्रेयुर्देव	५	८	६	यद् गायत्रे अग्नि	६	१०	१
यदि प्रेयुर्देव	११	१०	१७	यद् गिरामि सां गिरा	६	१३५	३
यदि वासि त्रैककुदं	४	६	१०	यद् गिरिषु पर्वतेषु	६	१	१८
यदि वासि देव	५	१४	७	यद् दण्डेन यदिष्वा	५	५	४
यदि वासि तिरो	७	३८	५	यद् दधिषे प्रदिधि	२०	८७	२
यदि वाहमनृतदेवो	८	४	१४	यद् दारुणि बध्यसे	६	१२१	२
यदि वृक्षादभ्य	६	१२४	२	यद् दुद्रोहिथ शेपिषे	५	३०	३
यदि शोको यदि	१	२५	३	यद् दुर्भगां स्नपि	१०	१	१०
यदि षड्वृषोसि	५	१६	६	यद् दुष्कृतं चक्षुर्मलं	७	६५	२
यदि सप्तवृषोसि	५	१६	७	यद् दुष्कृतं यच्छुर्मलं	१४	२	६६
यदि स्त्री यदि वा	५	१४	६	यद् देवा देवहेडनं	६	११४	१
यदि स्थ क्षेत्रियाणां	२	१४	५	यद् देवा देवान्	७	५	३
यदि स्थ तमसा	१०	१	३०	यद् देवासो लला	२०	१३६	४
यदि हुतां यदि	१२	४	५३	यद् प्राचीरज	२०	१३७	४
यदीदिदं मरुतो	४	२७	६	यद् स्ताभ्यां च	६	११८	१
यदीदं मातुर्यदि	६	११६	३	यद् धावलि त्रियो	६	१३१	३
यदीमे केशिनो	१४	२	५६	यद्दिशयं सूर्येणा	१६	२६	२
यदीयं दुहिता	१४	२	६०	यद् ब्रह्मभिर्यदधि	६	१२	२
यदीयं हनत् कथं ह	२०	१३२	१०	यद् भद्रस्य पुरुष	२०	१२८	३
यदुदञ्चो वृषा	२०	१२६	२२	यद्यग्निः क्रथा	१२	२	४
यदुदरं वरुणं	१०	१०	२२	यद्यज्ञाया पचति	१२	३	३६
यदुदीरत आज	२०	५६	३	यद्यत् कृष्णः शकु	१२	३	१३
यदुपरिशयनमाह	६	६(१)	६	यद्यन्तरिक्षो सदि	७	६६	१
यदुपस्तृणन्ति	६	६(१)	८	यद्यर्चिर्यदि	१	२५	२
यदुवक्थानृतं	१	१०	३	यद्यष्टवृषोसि	५	१६	८
यदुषो यासि भानुना	२०	१४२	३	यद्द्यामं चक्रुर्ननि	६	११६	१
यदुस्त्रियास्वाहुतं	७	७३	४	यद्द्याव इन्द्रते शतं	२०	८१	१
यदेजति पतिति	१०	८	११	यद्द्याव इन्द्र ते शतं	२०	६२	२०
यदेनमाह ब्रात्य	१५	११	३	यद्येकवृषोसि	५	१६	११
यदेनमाह ब्रात्यो	१५	११	४	यद्येकादशोऽसि	५	१६	११
यदेनमाह ब्रात्य	१५	११	५	यद्येयथ द्विपदी	१०	१	२४
यदेनमाह ब्रात्य	१५	११	६	यद् योधया महतो	२०	८७	४
यदेनमाह ब्रात्य	१५	११	८	यद् राजानो विभ	३	२६	१
यदेनमाह ब्रात्य	१५	११	१०	यद् रिप्रं शमलं	१२	२	४०

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
यद् रोदसी रेजमाने	१	३०	३	यन्मे छिद्रं मनस्त्रो	१६	४०	१
यद् वदामि मधु	१२	१	५८	यन्मेदमभिषो	४	२६	७
यद् वाचतिथिरति	६	६ (१)	३	यन्मे मनसो न प्रिय	६	२	२
यद् वाचतिथिरति	६	६ (६)	५	यन्मे माता	१०	३	८
यद् वा कृणोष्योष	१३	४	४३	यमव० । तमग्निः	१०	६	६
यद् वा प्रयुद्धसत्य	१०	११२	२	यमव० । तमापो	१०	६	१४
यद् वा रमे रुग्मे	२०	१२०	२	यमव० । तमिन्द्रः	१०	६	७
यद्वा शक्र परावति	२०	१११	२	यमव० । तमिमं	१०	६	१७
यद्वालि पुन्यतो	२०	१११	३	यमव० । तेनेमां	१०	६	१२
यद्वा कलीवांउत्	२०	१४०	५	यमव० । तं देवा	१०	६	१६
यद्वाडांसो यद्	६	११५	१	यमव० । तं विभ्र	१०	६	१०
यद् द्विपाउचनुपा	१६	३१	४	यमव० । तं विभ्र	१०	६	१३
यद् वीधे स्तनयति	६	१	२४	यमव० । तं राजा	१०	६	१५
यद् वीलाविन्द्र यत्	२०	४३	२	यमव० । तं सूर्यः	१०	६	६
यद् वेद राजा वरुणो	५	२५	६	यमव० । तं सोमः	१०	६	८
यद् वो राजा वरुणो	१६	२६	४	यमव० । सोअस्मै	१०	६	११
यद् वो अग्निरजं	१८	४	६४	यमव० । समायं म-			
यद् वो देवा उपजी	६	१००	२	गिरागत्तेजसा	१०	६	२७
यद् वो मनः परागतं	७	१२	४	यमव० । समायं म-			
यद् वो सुद्रं पितरः	१८	३	१६	गिरागमत्सर्वा	१०	६	२८
यद् वो वयं प्रमिता	१६	५६	२	यमव० । स मायं म-			
यद् वा सहः सहमाना	८	७	५	गिरागमत्सह	१०	६	२३
यन्तालि यच्छयो	६	८१	१	यमक० । स मायं म-			
यन्त्यस्य देवो	८	१० (१)	५	गिरागमत्सहजो	१०	६	२४
यन्त्यस्य सभां	८	१० (१)	१०	यमव० । स मायं म-			
यन्त्यस्य समिति	८	१० (१)	११	गिरागमदूर्जयो	१०	६	२६
यन्त्यस्यामन्त्र	८	१० (१)	१३	यमव० । स मायं म-			
यत्त इन्द्रो अजगद्	७	२४	१	गिरागमदस्तेन	१०	६	२२
यत्तास्तथा पराके	२०	१४१	५	यमव० । स मायं म-			
यत्तास्तथ भुर	२०	१४०	१	गिरागमन्मधो	१०	६	२५
यत्तुनं धीमिर	२०	१४२	६	यममी पुरो दधिरे	५	८	५
यन्मन्युर्जाया	११	८	१	यमराते पुरोधस्ते	५	७	२
यन्मातला रध	११	६	२३	यमस्य भाग स्थ	१०	५	१२
यन्मा हुतमहुतमा	६	७१	२	यमस्य मा यम्य	१८	१	८
यन्मे अदयोरादि	६	२४	२	यमस्य लोकाद	१६	५६	१

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
यमाय घृतवत् पयो	१८	२	३	यस्त आस्यत् पञ्चा	४	६	४
यमाय पितृमते	१८	४	७४	यस्त ऊरु विहर	२०	६६	१४
यमाय मधुमत्तमं	१८	२	२	यस्तस्तम्भ सहसा	२०	८८	१
यमाय सोमः पवते	१८	२	१	यस्तिग्मशृङ्गो वृष	२०	३७	१
यमिन्द्र दधिषे	२०	५५	३	यस्तिष्ठति चरति	४	१६	२
यमिन्द्राशी स्मर	६	१३२	४	यस्ते अग्ने सुमति	१८	१	२४
यमिन्द्राणी स्मर	६	१३२	३	यस्ते अष्टु महिमा	१६	३	२
यमिमं त्वं वृषाक	२०	१२६	४	यस्ते केशोवपद्यते	६	१३६	३
यमु पूर्वमद्बुधे तमि	२०	६७	७	यस्ते गन्धः पुष्कर	१२	१	२४
यमोदनं प्रथमजा	४	३५	१	यस्ते गन्धः पुरुषे	१२	१	२५
यमो नो गातुं प्रथ	१८	१	५०	यस्ते गन्धः पृथि	१२	१	२३
यमो मृत्युरघमारो	६	६३	१	यस्ते गर्भममावा	१२	६६	१२
यमः परोवरो	१८	२	३२	यस्ते गर्भं प्रति	८	६	१८
यमः पितृणा	५	२४	१४	यस्तेङ्कुशो वसु	६	८२	३
यया द्यौर्यया	१०	१०	४	यस्ते देवेषु महिमा	१६	३	३
ययो रथः सत्य	४	२६	७	यस्ते पुरुषि	१०	१	८
ययोरभ्यध्व	४	२८	२	यस्ते पृथुस्त	७	११	१
ययोरोजसा रुक्	७	२५	१	यस्ते प्राणोदं	११	४	१८
ययोर्वधानापद्यते	४	२८	५	यस्ते साशिर्यो	१०	६	१७
ययोः संख्याता	४	२५	२	यस्ते मदोवकेशो	६	३०	२
यवानो ययिस्वभिः	२०	१३०	७	यस्ते मदो युज्यश्वा	२०	११७	२
यशसं मेन्द्रो मघवान्	६	५८	१	यस्ते मन्यो विदध्	४	३२	१
यशा इन्द्रो यशा	६	३६	३	यस्ते शृङ्गपृषो न	२०	५	७
यशा इन्द्रो यशा	६	५८	३	यस्ते शोकाय तन्वं	५	१	३
यशा यासि प्रदि	१३	१	३८	यस्ते सप्तो वृश्चि	१२	१	४६
यशो ह विर्वर्धता	६	३६	१	यस्ते स्तनः	७	१०	१
यश्च कविची यश्चा	११	१०	२२	यस्ते हन्ति पतय	२०	६६	१३
यश्चकार न शशाक	४	१८	६	यस्ते हवं विवदत्	३	३	६
यश्चकार न शशा	५	३१	११	यस्त्वा कृत्याभि	८	५	१५
यश्चकार स निष्क	२	६	५	यस्त्वा पिबति	५	५	२
यश्च गां पदा	१३	६	५६	यस्त्वा भ्राता पति	२०	६६	१५
यश्च पणिरधु	२०	१२८	४	यस्त्वा शाले प्रति	६	३	६
यश्चर्षणिप्रो	४	२४	३	यस्त्वा शाले निमि	६	३	११
यश्च सापत्नः	२	७	२	यस्त्वा स्वपन्ती	८	६	८
यश्चिद्धि रवा	२०	६३	६	यस्त्वा स्वप्नेन	२०	६६	१६

कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
यस्त्वा स्वप्ने नि	८	६	७	यस्य द्विवर्हसो बृह	२०	६१ ५
यस्त्वोवाच	१०	१	७	यस्य द्विवर्हसो बृह	२०	६२ ६
यस्मा ऋणं यस्य	६	११८	३	यस्य तेशे यज्ञप	४	११ ५
यस्मात् कोषादुद्	१६	७२	१	यस्य ब्रह्म मुख	१०	७ १६
यस्मात् पकादमृतं	४	३५	६	यस्य भीमः प्रतीका	६	८ ६
यस्माद्वचो अपात	१०	७	२०	यस्य भूमिः प्रमा	१०	७ ३२
यस्माद् वाता ऋतु	१३	३	२	यस्य वशास	४	२४ ४
यस्मान्न ऋते विज	२०	३४	६	यस्य वातः प्राणा	१०	७ ३४
यस्मान्मासा	४	३५	४	यस्य विश्वे द्विम	४	२ ५
यस्मिन् षडुर्वी	१३	३	६	यस्य व्रते पशवो	७	४० १
यस्मिन्लमुद्रो	११	३	२०	यस्य शिरो वै	१०	७ १८
यस्मिन्स्तब्धवा	१०	७	७	यस्य सूर्यश्चक्षु	१०	७ ३३
यस्मिन् देवा अमृ	१२	२	१७	यस्य संस्थेन	२०	१६६ २
यस्मिन् देवा मन्म	१८	१	३६	यस्य हेतोः प्रच्यव	६	८ ३
यस्मिन् देवा विद	१८	१	३५	यस्याश्चतस्रः	१२	१ ४
यस्मिन्नुक्त्यानि	२०	४४	२	यस्याञ्जन प्रसर्प	४	६ ४
यस्मिन् भूमिरन्त	१०	७	१२	यस्यामक्षं ब्रीहि	१२	१ ४२
यस्मिन् त्रयं दधिमा	२०	८६	६	यस्यामापः परि	१२	१ ६
यस्मिन् विराट्	१३	३	५	यस्यामितानि	२०	६५ ३
यस्मिन् विश्वा	२०	११०	२	यस्याश्वासः	२०	३४ ७
यस्मिन् वृक्षे मध्वदः	६	६	२१	यस्यास्त आसनि	६	८५ १
यस्मै त्वा यज्ञवर्धन	१०	६	३४	यस्यां कृष्णमरु	१२	१ ५२
यस्मै हस्ताभ्यां	१०	७	३६	यस्यां गायन्ति	१२	१ ४१
यस्य कृण्मो	६	५	३	यस्यां पूर्वं पूर्वजना	१२	१ ५
यस्य क्रूरमभजन्त	१६	५६	५	यस्यां पूर्वं भूतकृत	१२	१ ३६
यस्य चतस्रः	१०	७	१६	यस्यां वृक्षावाज	१२	१ २७
यस्य जुष्टिं	४	२४	५	यस्यां वेदिं परि	१२	१ १३
यस्य तक्मा कासि	११	२	२२	यस्यां सद्योह	१२	१ ३८
यस्य ते वासः	२	१३	५	यस्यां समुद्र उत	१२	१ ३
यस्य ते विश्वमा	२०	४३	३	यस्याः पुरो देव	१२	१ ४३
यस्य त्रयस्त्रिंशद् दे	१०	७	१३	यस्येदमारजो	६	३३ १
यस्य त्रयस्त्रिंशद् दे	१०	३	२७	यस्येदं प्रदिशि	४	२३ ७
यस्य त्रयस्त्रिंशद् दे	१०	७	२७	यस्येदं प्रदिशि	७	२५ २
यस्य देवा अरु	११	३	२१	यस्योरुषु त्रिषु	७	२६ ३
यस्य योरुर्वी	४	२	४	या अकृन्तन्नव	१४	१ ४५

या अक्षेषु

(४,६२२)

यावन्तो अस्याः

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
या अक्षेषु	४	३८	४	या मज्जो निर्धयन्ति	६	८	१८
या आपो दिव्याः	४	८	५	यामन्यामन्नुययुक्तं	४	२३	३
या आपो याश्च	११	४	३०	यामनवैच्छद्वि	१२	१	६०
या इन्द्र भुज	२०	५५	२	यामश्विनावमि	१२	१	१०
या एव यज्ञ	६	६(१)	५	यामहती महोन्माना	५	७	६
या ओषधयो या	१४	२	७	यामापीनामुपसी	६	१	६
या ओषधयः	६	६६	१	या मा लक्ष्मीः	७	११५	२
या गुदा अनु सर्प	६	८	१७	या माहुतिं प्रथ	१६	४	१
या गृत्स्थस्त्रिप	१६	३४	२	यामाहुस्तारकैषा	५	१७	४
या ग्रैव्या अपचितो	७	७६	२	यामिन्द्रेण सं	११	१०	६
या त इन्द्र तनूरप्सु	१७	१	१३	या मृषयो भूतकृतो	६	१०८	४
यातुधानस्य सोमप	१	८	३	या मेप्रियतमा	१४	२	५०
यातुधाना निम्न	७	७०	२	यायैः परिनुत्य	४	३८	३
या ते प्राण प्रिया	११	४	६	या रोहन्त्य झिरसीः	८	७	१७
या ते वसोर्यात	१६	५५	२	या रोहिणीर्देवत्या	१	२२	३
यातं छुर्दिष्पा उत	२०	१४१	१	याण्वे ऽधि	१२	१	८
या दुर्हादो युवत	१४	२	२६	यावङ्गिरसमवथो	४	२६	३
या देवीः पञ्च	११	६	२२	यावच्चतस्रः प्रदि	३	२२	५
या द्विपक्षा चतुष्प	६	३	२१	यावती द्यावा	४	६	२
यानसावतिसरां	५	८	७	यावती द्यावा	६	२	२०
यानावह उशतो	७	६७	३	यावतीनामोषधी	८	७	२५
यानि कानि चि	१६	६	१३	यावतीषु मनुष्या	८	७	२६
यानि चकार	१६	२०	२	यावतीर्दिशः	६	२	२१
यानि तेन्तः	६	३	६	यावतीर्भृङ्गा	६	२	२२
यानि ग्रीणि	८	६	३	यावतीः कियतो	८	७	१३
यानि नक्षत्राणि	१६	८	१	यावतीः कृत्या	१४	२	४६
यानि भदाणि	३	२३	४	यावत् तेभि वियश्या	१२	१	३३
या नः पीपरद	१६	४०	४	यावत् सत्तूलद्ये	६	६(४)	६
यान्युलुखल	६	६(१)	१५	यावदग्निष्टोमेन	६	६(४)	२
याप सर्प विजमां	१२	१	३७	यावदङ्गीनं	६	७२	३
या पुरस्ताद् युज्यते	१२	८	१०	यावदतिरात्रे	६	६(४)	४
या पूर्व पतिं विस्वा	६	५	२७	यावदस्या गोप	१२	४	२७
या प्लीहानं शोष	३	२५	३	यावद् दा ताभिमन	११	३	२५
या यज्ञवो याश्च	८	७	१	यावद् द्वादशा	६	६(४)	८
याभ्यामजय	७	११०	२	यावन्तो अस्याः	१२	३	४०

	का०	सू०	म०		का०	सू०	म०
याचन्तो मा सपत्ना	७	१३	२	यां ते चक्रुः कृक	५	३१	३
या वशा उदकल्प	१२	४	४१	यां ते चक्रुः पुरुषा	५	३१	४
यावरोभाथे बहु	४	२८	४	यां ते चक्रुः सभायां	५	३१	६
या विशयतीन्द्रम	७	४६	३	यां ते चक्रुः सेनायां	५	३१	७
या शशाप शपनेन	४	१७	३	यां ते धेनुं निपृणा	१८	२	३०
या शशाप शपनेन	१	२८	३	यां ते बर्हिषि	१०	१	१८
याश्चाहं चेद चोरुधः	८	७	१८	यां ते रुद्र इषु	६	६०	१
यासां देवादिषि	१	३३	३	यां त्वा गन्धर्वो	४	४	१
यासां द्यौः पिता	३	२३	६	यां त्वा देवा असु	१	१	४
यासां नाभिरारेहणं	६	६	३	यां त्वा पूर्वे भूतकृत	६	१३३	५
यासां राजा वरुणो	१	३३	२	यां देवा अनुतिष्ठ	११	१०	२७
या सुबाहुः स्वङ्गुरिः	७	४६	२	यां देवाः प्रति नन्दन्ति	३	१०	२
यास्तिरश्चीरुप	६	८	१६	यां द्विपादः पक्षि	१२	१	५१
यास्ते ग्रीवा ये	१०	६	२०	यां प्रच्युतामनु	८	६	८
यास्ते जङ्घायाः	१०	६	२३	यां मृतायानुवध	५	१६	१२
यास्ते धाना अनु	१८	३	६६	यां मेधामृभवो वि	६	१०८	३
यास्ते धाना अनु	१८	४	२६	यां रक्षन्त्यस्वप्ना	१२	१	७
यास्ते धाना अनु	१८	४	४३	याः कृत्या आ	८	५	६
यास्ते प्राचीः	१२	१	३१	याः कृन्दास्तमिषी	२	२	५
यास्ते राके सुमतयाः	७	६८	२	याः पार्श्वे उप	६	८	१५
यास्ते रुद्रः प्ररुहो	१३	१	६	याः सीमानं विरुज	६	८	१३
यास्ते विशस्तप	१३	१	१०	याः सुपणा आङ्गि	८	७	२४
यास्ते शतं धमनयो	६	८०	२	युक्तामातासीद् धुरि	६	६	६
यास्ते शिवास्तन्वः	६	२	२५	युजे रथं गवेषणं	२०	१२	३
यास्ते शोचयो	१८	२	६	युज्यमानो वैश्वदेवो	६	७	२४
या हस्तिनि द्वीपिनि	६	३८	२	युज्जन्ति ब्रध्नमरुषं	२०	२६	४
या हृदयमुपर्व	६	८	१४	युज्जन्ति ब्रध्नमरुषं	२०	४७	१०
यां कल्पयन्ति	१०	१	१	युज्जन्ति ब्रध्नमरुषं	२०	६६	३
यां जमदग्नि	६	१३७	१	युज्जन्तिहरी इषिरस्य	२०	१००	३
यां ते कृत्यां कूपेऽथ	५	३१	८	युज्जन्त्यस्य का	२०	२६	५
यां ते चक्रुरमृतायां	५	३१	४	युज्जन्त्यस्य का	२०	४७	११
यां ते चक्रुरामे	४	१७	४	युज्जन्त्यस्य का	२०	६६	१०
यां ते चक्रुरामे	५	३१	१	युध पकः संखज	१०	१०	२४
यां ते चक्रुरेकशफे	५	३१	३	युधायुधमुप	२०	२१	७
यां ते चक्रुर्गार्हपत्ये	५	३१	५	युधेन्द्रो महा	२०	११	७

कां०	सू०	म०	कां०	सू०	म०
युनक्त सीरा वि युगा	३	१७	२	ये ग्राम्याः पशवो	३४ ४
युनक्त देवः सविता	५	२६	२	ये च जीवा ये च मृता	४ ५७
पुनज्मि त उत्तरा	४	२२	५	ये च देवा अयज	२० १२८ ५
युवं भगं संभरतं	१४	१	३१	ये च धीरः ये चाध्री	११ ६ २२
युवचं श्रियमश्वि	२०	१४३	२	येचित् पूर्व ऋत	१८ २ १५
युवं सुराममश्वि	२२	१२५	४	ये त आरण्याः	१२ १ ४६
यूयमग्ने शतमामि	१८	४	१०	ये त आसन् दश	११ ८ १०
यूयमुग्रा मरुतः	१३	१	३	ये त आसीद् भूमिः	११ ८ ७
यूयमुग्रा मरुतः	५	२१	११	ये तातृषु देवत्रा	१८ ३ ४७
यूयमुग्रा मरुतः	३	१	२	ये ते देवि शमिता	१० ६ ७
यूयं गावो मेदयथा	४	२१	६	ये ते नाड्यौ देवकृते	६ १३८ ४
यूयं नः प्रवतो	१	२६	३	ये ते पन्थानो व दिवो	७ ५५ १
ये अग्नयो अप्स्व	३	२१	१	ये ते पन्थानो बहवो	१२ १ ४७
ये अग्नजा ओष	१०	४	२३	ये ते पाशा वरुण	४ १६ ६
ये अग्निदग्धा ये	१८	२	३५	ये ते पूर्वे परागता	१८ ३ ७२
ये अग्रवः शशमा	१८	२	४७	ये ते रात्रि नृचक्ष	१६ ४७ ३
ये अङ्गानि मदयन्ति	६	८	१६	ये ते राध्वनड्वाह	१६ ५० २
ये अत्रयो अङ्गिर	१८	३	२०	ये ते शृङ्गे अजरे	८ ३ २५
ये अन्ता यावतीः	१४	२	५१	येष्ट पितरः पितरो	१८ ४ ८६
ये अपीषन् ये	३	६	७	ये त्रयः कालका	६ ८० २
ये अमृतं विभृथो	४	२६	४	ये त्रिषसताः परि	१ १ १
ये अमृतो जातान्	८	६	१६	ये त्वा कृत्वा	१२ १ ६
ये अर्वाङ् मध्य	१०	८	१७	ये त्वामिन्द्र न तु	२० ११५ ३
ये अर्वाङ्गस्ताँ	६	६	१६	ये त्वा श्वेताँ	२० १२८ १६
ये उस्त्रिया विभृथो	४	२६	५	ये दक्षिणतो जुह्व	४ ४० २
ये कीलालेन तर्पय	४	२६	६	ये दस्यवः पितृषु	१८ २ २८
ये कीलालेन तर्पय	४	२७	५	ये दिवि पुण्या	१५ १३ ६
ये कुकून्धाः कुकू	८	६	११	ये दिशामन्तर्देशे	४ ४० ८
ये क्रिमयः पर्वतेषु	२	३१	५	ये देवा अन्तरिक्ष	१६ २७ १२
ये क्रिमयः शिति	५	२३	५	ये देवा दिविषदो	१० ६ १२
ये पन्धर्वा अप्सर	१२	१	५०	ये देवा दिविषदो	११ ६ १२
ये गर्भा अवपद्यन्ते	५	१७	७	ये देवा दिवि ष्ट ये	१ ३० ३
ये गव्यता मनसा	२०	८३	२	ये देवा दिव्येकाद	१६ २७ ११
ये गोपति पराणी	१२	४	५२	ये देवानामृत्वि	१६ ११ ५
ये ग्रामा यदरपयं	१२	१	५६	ये देवानामृत्वि	१६ ५८ ६

	कां०	सू०	म०
ये देवाः पृथिव्या	१६	२७	१३
ये देवा राष्ट्रभृतो	१३	१	३५
ये देवास्तेन हासंते	४	३६	५
येदं पूर्वागन् रश	१४	२	७४
येऽधस्ताज्जुहति	४	४०	५
ये धीवानो रथका	३	५	६
येन ऋषयो बल	४	२३	५
येन ज्योतीष्याय	२०	६१	२
येन कृशं वाजयस्ति	६	१०१	२
ये नदीनां संस्त्रवन्ति	१	१५	३
येन देवा अमृत	४	२३	६
येन देवा असुराणां	६	७	३
येन देवा असुरान्	६	२	१७
येन देवा ज्योति	११	१	३७
येन देवा न वियन्त	३	३०	४
येन देवाः स्वरांरु	४	११	६
येन देवं सवितारं	१६	२४	१
येन धनेन ० । तन्मे भू	३	१५	५
येन धनेन ० । तस्मिन्	३	१५	६
येन महानठ्न्या	१४	१	३६
येन मृतं स्तपयन्ति	५	१६	१४
येन वृक्षां अभ्य	६	१२६	२
येन वेहद् बभूविथ	३	२३	१
येन सिन्धुं मही	२०	६३	६
येन सूर्या सावित्री	६	८२	२
येन सोम साहन्त्या	६	७	२
येन सोमादितिः	६	७	१
येन हस्ती वर्चसा	३	२२	३
येनाशिरूपा	१४	१	४८
येनातरन् भूतकृतो	४	३५	२
येन दशग्वमधि	२०	६३	८
येना दित्यान् हरि	१३	३	१७
येना निचक्र आसुरी	७	३८	२
येना पावक चक्ष	१३	२	२१
येना पावक चक्ष	२०	४७	१८

	कां०	सू०	म०
येनावपत् सविता	६	६८	३
येना श्रवस्यवश्च	३	६	४
येना समुद्रमसृजो	२०	६	४
येना समुद्रमसृजो	२०	४६	७
येना सहस्रं बहसि	६	५	१७
येनासौ गुप्त आदि	११	१०	११
ये निष्ठाता ये परोस्ता	१८	२	३४
येनेन्द्राय समभरः	१	६	३
येनेमा विश्वाच्य	२०	३४	४
ये नः पितुः पितरो	१८	२	४६
ये नः पितुः पितरो	१८	३	४६
ये नः पितुः पितरो	१८	३	५६
ये नः सपत्ना	५	३	१०
येऽन्तरिक्षाज्जुह	४	४०	६
येऽन्तरिक्षे पुण्या	१५	१३	४
ये पन्थानो बहवो	३	१५	२
ये पन्थानो बहवो	६	५५	१
ये पर्वताः सोम	३	२१	१०
ये पश्चाज्जुहति	४	४०	३
ये पाकशंसं वि	८	४	६
ये पितरो बधूदर्शा	१४	२	७३
ये पुण्यानां पुण्या	१५	१३	८
ये पुरस्ताज्जुहति	४	४०	१
ये पुरुषे ब्रह्म	१०	७	१७
ये पूर्वं बध्वोऽयन्ति	८	६	१४
ये पृथिव्यां	१५	१३	२
ये बध्यमानमनु	२	३४	३
ये बाहवो या इष	११	६	१
ये बृहत्सामा	५	१६	२
ये ब्राह्मणं प्रत्य	५	१६	३
ये भक्षयन्तो न	२	३५	१
येभिर्वात इषितः	१०	८	३५
येभिः पाशैः परि	६	११२	३
ये मा क्रोधयन्ति ल	४	३६	६
येऽमावास्यां रा	१	१६	१

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
ये मृत्यव एकशतं	८	२	२७	यो अद्वयौ परि	५	२३	३
ये यत्मासो अर्भका	१६	३६	३	यो अग्निः क्रव्या	१२	२	७
ये युध्यन्ते प्रधाने	१८	२	१७	यो अग्नौ कद्रो	७	८७	१
ये रथिनो ये अर	११	१०	२४	यो अग्रतो रोचना	४	१०	२
ये राजानो राज	३	५	७	यो अङ्गयो यः	६	१२७	३
ये राजिमनुतिष्ठ	१६	४८	५	यो अद्य देव सूर्य	१३	१	५८
ये व आपोऽपामग्न	१०	५	२१	यो अद्य सेन्यो वधो	१	२०	२
ये वध्वश्चन्द्रं	१४	२	१०	यो अद्य सेन्यो वधो	६	६६	२
ये वर्मिणो ये वर्मा	११	१०	२३	यो अद्य स्तेन आ	१६	४६	६
ये वशाया अर्दानाय	१२	४	५१	यो अद्य स्तेन आ	४	३	५
ये वाषासः कष्क	५	२३	७	यो अद्रिभित् प्रथ	६०	६०	१
ये वां दंसांश्चशिव	२०	१३६	३	यो अनिधमो दी	१४	१	३७
ये वो देवाः पितरो	१	३०	२	यो अन्तरिक्षेण	४	२०	६
ये व्रीहयो यवा	६	६(१)	१४	यो अन्धो यः	६	१२६	३
ये शालाः परि	८	६	१०	यो अन्नादो अन्न	१३	३	७
ये श्रद्धा धनकाम्या	१२	२	५१	यो अन्येद्युः रुभयद्यु	७	११६	२
येषामभ्येति-प्रव	७	६०	३	यो अस्य पारे	६	३४	५
येषां पश्चात् प्रपदा	८	६	१५	यो अस्य विश्वज	११	४	२३
येषां प्रयाजा उत्त	१	३०	४	यो अस्य समिधं	६	७६	३
ये सत्यासो हवि	१८	३	४८	यो अस्य सर्व	११	४	२४
ये सर्पिणः संभवन्ति	१	१५	४	यो अस्य स्याद्	१२	४	१३
ये सहस्रमराजन्ना	५	१८	१०	यो अस्या ऊधो	१२	४	१८
ये सूर्यात् परिसर्पन्ति	८	६	२४	यो अस्या ऋच	१२	४	२८
ये सूर्यं न तितिल	८	६	१२	यो अस्याः कर्णा	१२	४	६
ये सोमासः पराः	२०	११२	३	यो गिरिष्वजा	५	४	१
येऽस्माकं पितर	१८	४	६८	योगेयोगे तवस्तरं	१६	२४	७
येऽस्यां स्थ दक्षि	३	२६	२	योगेयोगे तवस्तरं	२०	२६	१
येऽस्यां स्थ ध्रुवा	३	२६	५	यो जात एव प्रथ	२०	३४	१
येऽस्यां स्थ प्रती	३	२६	३	यो जास्या अप्रथ	२०	१२८	२
येऽस्यां स्थ प्राच्यां	३	२६	१	यो जायमानः	१६	३२	६
येऽस्यां स्थोदीच्यां	३	२६	४	यो जिनाति	६	१३४	३
येऽस्यां स्थोर्ध्व्यां	३	२६	६	यो तिथीनां	६	६(२)	१३
ये स्नाक्तयं मणि	८	५	७	योथर्वाणं	४	१	७
ये रिन्द्रः प्रक्रीडते	५	२१	८	यो ददाति	३	२६	३
यो अक्रन्दयन्त	८	६	२	यो दध्ने अन्तरि	१८	३	६३

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
यो दाधार पृथिवी	४	३५	३	यो रश्मस्य चोदि	२०	३४	६
यो देवाः कृत्या	४	१८	२	यो राजा चर्षणी	२०	६२	१६
ये देवो विश्वाद्य	३	२१	४	यो राजा चर्षणी	२०	१०५	४
यो न इदमिदं	२०	६२	३	यो रायोऽश्वनिर्म	२०	६८	१०
यो न इदमिदं	२०	१४	३	यो रोहितो वृषभः	१३	१	२५
यो न जीवोसि	६	४६	१	यो व आपोऽग्निः	१६	१	८
यो नस्तायद् दिप्स	८	१०८	१	यो व आपोऽपाम	१०	५	२०
योऽन्ताकाक्षो	२०	१२८	६	यो व आपोऽपामू	१०	५	१६
यो नो अग्निगार्ह	१६	३१	२	यो व आपोऽपां भा	१०	५	१५
यो नो अग्निः	१२	२	३३	यो व आपोऽपां व	१०	५	१७
यो नो अग्नेषु	१२	२	१५	यो व आपोऽपां वृष	१०	५	१८
यो नो दिप्सद	४	३६	२	यो व आपोऽपां हि	१०	५	१६
यो नो द्युवे धनमिदं	३	१०६	५	यो व अभिभुवं	६	५	३६
यो नो द्वेषत् पृथि	१२	१	१४	यो वा उद्यन्तं	६	५	३५
यो नो भद्राहमकरः	६	१२८	४	यो वाचा विचा	२०	७३	६
यो नो मर्तो मरुतो	७	७७	२	यो विद्यात् सप्त	१०	१०	२
यो नो रसं दिप्सति	८	४	१०	यो विद्यात् सत्रं	१०	८	३७
यो नः पाप्मन् न	६	२६	२	यो विद्याद् ब्रह्म	६	६(१)	१
यो नः शपादशपतः	६	३७	३	यो विश्वचर्षणि	१३	२	२६
यो नः शपादशपतः	७	५६	१	यो विश्वाभि	६	३४	४
यो नः सुतान् जाग्र	७	१०८	२	यो वेतसं हिरण्य	१०	७	४१
यो नः सोम सुशं	६	६	२	यो वेदानडुहो	४	११	६
यो नः सोमाभि	६	६	३	यो वेहतं मन्यमा	१२	४	३८
यो नः स्वो यो	१	१६	३	यो वै कशायाः	६	१	२२
योऽन्तरिक्षो ति	११	२	२३	यो वै कुर्वन्तं	६	५	३२
योऽप्स्वश्मि	१६	१	७	यो वै तां ब्रह्मणो	१०	२	२६
योऽभि यातो नि	११	२	१३	यो वै ते विद्यादर	१०	८	२०
यो भूतं च भव्यं च	१०	८	१	यो वै नैदाघं	६	५	३१
यो ममार प्रथमो	१८	३	१३	यो वै पिन्वन्तं	६	५	३४
यो मा पाकेन	८	४	८	यो वै संयन्तं	६	५	३३
यो माभिच्छाय	१३	१	५७	यो वः शिवतमो	१	५	२
यो मायातुं यातु	८	४	१६	यो वः शुष्मो	६	७३	२
यो मारयति प्रा	१३	३	३	योऽव्यतीरफाणयत्	२०	६२	१०
यो यज्ञस्य प्रसा	१३	१	६०	योऽस्मान् द्वेष्टि यं	७	८१	५
यो रक्षांसि निज्	६	३४	२	योऽस्मान् द्वेष्टि त	१६	७	५

	का०	सू०	म०		का०	सू०	म०
योऽस्मान् ब्रह्मण	६	६	१	यं वयं मृगयामहे	१०	५	४२
योऽस्मांश्चक्षुषा	५	६	१०	यं वातः परि शुम्भ	१३	१	५१
योस्य दक्षिणः	१५	१८	२	यं वां पिता	१२	३	५
यो हत्वा हि मरि	२०	३४	३	यं विश्वे देवाः	६	१३२	२
यो हरिमा जाया	१६	४४	२	यं स्मा पृच्छन्ति	२०	३४	५
यौ त ऊरु	१०	६	२१	यः कीकसाः प्रशु	७	७६	३
यौ त ओष्ठौ	१०	६	१४	यः कुक्षिः सोमपा	२०	७१	३
यौ ते दूतौ	६	२६	२	यः कुमारी पिंग	२०	१३६	१६
यौ ते बलास	६	१२७	२	यः कृणोति मृत	८	६	६
यौ ते बाहू	१०	६	१६	यः कृणोति प्रमो	६	८	४
यौ ते मातोन्म	८	६	१	यः कृत्याकृन्मूल	४	२८	६
यौ ते श्वानौ यम	१८	२	१२	यः कृष्णकेश्यसुर	८	६	५
यो भरद्वाजमव्रथो	४	२६	५	यः परस्याः परा	६	३४	३
यौ मेधातिथी	४	२६	६	यः परुषः पारुषे	५	२२	३
यौ व्याघ्राववरुढौ	६	१४०	१	यः पर्वतान् व्यद	२०	१२८	१४
यौ श्यावाश्वमवथो	४	२६	४	यः पौरुषेयेण	८	२	१५
यं क्रन्दसी अत्रत	४	२	३	यः पृथिवीं बृहस्तं	१५	१०	६
यं क्रन्दसी संयती	२०	३४	८	यः पृथिवीं व्यथ	२०	३४	२
यं ग्राममाविशत	४	३६	८	यः प्रथमः कर्म	४	२४	६
यं ते मन्थं यमो	१८	४	४२	यः प्रथमः प्रवत	६	२८	३
यं त्वमग्ने समदह	१८	३	६	यः प्राणतो निमिष	४	२	२
यं त्वा पृषती	१३	१	२१	यः प्राणदः प्राण	४	३५	५
यं त्वा वेद पूर्वं	१६	३६	६	यः प्राणेन द्यावा	१३	३	४
यं त्वा होतारं	३	२१	५	यः शतौदनां	१०	६	४
यं देवा अंशुमा	७	८१	६	यः शम्बरं पर्यत	२०	३४	१२
यं देवाः पितरो	१०	६	३२	यः शम्बरं पर्वतेषु	२०	३४	११
यं देवाः समर	६	१३२	१	यः शश्वतो मद्योनो	२०	३४	१०
यं द्विभ्यो यच्च	१६	६	४	यः श्रमात् तपसो	१०	७	३६
यं निदधुर्वनस्यतौ	३	५	३	यः सपत्नौ यो	१	१६	४
यं परिहस्तमग्नि	६	८१	३	यः सप्तर्षिर्मवृष	२०	३४	१३
यं बलवजं त्यस्यथ	१४	२	२२	यः सभेयो विद	२०	१२८	१
यं ब्राह्मणे निदधे	६	५	१६	यः समाप्त्यो ३ वरु	४	१६	८
यं मित्रावरुणौ	६	१३२	५	यः सहमातृश्वरसि	३	६	४
यं मे दत्तो भागं	१४	२	४३	यः सुन्वते पचते	२०	३४	१८
यं याचास्यहं	५	७	५	यः सुन्वन्तमवति	२०	३४	१५

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
यः सोमकामो	२०	२४	३७	यः संग्रामान् नयति	४	२४	७
यः सोमे अन्तर्यो	३	२१	२				

र

रक्षन्तु त्वाग्नयो	८	१	११	रुजश्च मा वेनश्च	१६	३	२
रक्षा माकिर्नो	१६	४७	६	रुद्र एनमिष्वासो	१५	५	११
रक्षांसि लोहित	६	७	१७	रुद्र जलाशमेपज	२	२७	६
रक्षोहणं वाजिन	८	३	१	रुद्रस्य मूत्रमस्य	६	४४	३
रथजितां राथजिते	६	१३०	१	रुद्रस्यैतवकारे	११	२	३०
रथे अक्षेष्टवृषमस्य	६	३८	३	रुद्रो वो ग्रीवा	६	३२	२
रपद् गन्धर्वीर्या	१८	१	१६	रुद्धि दर्भ	१६	२६	३
रयिं मे पोषं सवि	४	२५	५	रुहो रुरोह	१३	१	४
रश्मिभिर्नभ	१३	४	२	रूपंरूपं वयोवयः	१६	१	३
रश्मिभिर्नभ	३	४	६	रेवतीरनाधृषः	६	२१	३
राकामहं सुहवा	७	४८	१	रेवतीर्नः सधमाद	२०	१२२	१
राजन्ये दुन्दुभाव	६	३८	४	रैभ्यासीदनुदेयी	१४	१	७
राजसूयं वाजपेय	११	७	७	रोचसे दिवि रोच	१३	२	३०
राज्ञो वरुणस्य	१०	५	४४	रोहणयसि रोहण्य	४	१२	१
राज्ञो विश्वजनी	२०	१२७	७	रोहिते द्यावापृथि	१३	१	३७
रात्रि मातरुषसे नः	१६	४८	२	रोहितेभ्यः स्वाहा	१६	२३	२३
रात्रिरात्रिमग्र	१६	५५	३	रोहितो दिवमारु	१३	२	२५
रात्रिरात्रिमरिष्य	१६	५०	३	रोहितो दिवमारु	१३	१	२६
रात्रिभिरस्मा	१८	१	१०	रोहितो द्यावापृ-			
रात्री माता नभः	५	१	१	थिवी अहंहत्	१३	१	७
राद्धिः प्राप्तिः समा	११	७	२२	रोहितो द्यावापृ-			
राया वयं सुमनस	१४	२	३६	थिवी जजान	१३	१	६
रारन्धि सवनेषु	२०	२३	४	रोहितो यज्ञस्य ज	१३	१	१३
रिश्यपदीष	१	१८	४	रोहितो यज्ञं व्यद	१३	१	१४
रिष्यस्येव परीशा	५	१४	३	रोहितो लोको	१३	२	४०
रुक्म प्रस्तरणं	१४	२	३०	रोहितः कालो	१३	२	३६
रुचिरसि रोचोसि	१७	१	२१	रोहेम शरदः शतम्	१६	६७	४
रुजन् परिहजन्	१६	१	२				

ल

	कां०	ख०	म०		कां०	ख०	म०
लाङ्गलं पवीर	३	१७	३	लोमान्यस्य	१२	५	६८
लोम लोम्ना सं.	४	१२	५	लोहितेन स्वधिति	६	१४१	२

व

वच्यस्व रेभ	२०	१२७	४	वरणेन प्रव्यधिता	१०	३	६
वज्रापवसाभ्यः	२०	४८	३	वरणो वारयाता	६	८५	१
वज्रेण शतपर्वणा	१२	५	६६	वरणो वारयाता	१०	३	५
वज्रो धावन्ती	१२	५	१८	वराहो वेद	८	७	२३
वत्सो विराजो	१३	१	३३	वरुणस्य भाग स्थ	१०	५	१०
वध्रयस्ते खनितारो	४	६	८	वरुणोपामधिपतिः	५	२४	४
वनस्पतिः सह	१२	३	१	वरुणो मादित्यै	१६	१७	४
वनस्पतीन् वान	८	८	१४	वरुणो याति वस्व	२०	१३१	३
वनस्पते वसृजा	५	२७	११	वरुणं त आदि	१६	१८	४
वनस्पते वीड्यङ्गो	६	१२५	१	वर्च आ धेहि मे	१६	३७	२
वनस्पते स्तीर्णमा	१२	३	३३	वर्चसा मां पितरः	१८	३	१०
वनिष्ठा नाव गृह्य	२०	१३१	६	वर्चसा मां समन	१८	३	११
वनेन वायेन्य	२०	७६	१	वर्चसो द्यावापृथि	१६	५८	३
वनोति हि सुन्वन्	२०	६७	१	वर्म मध्यमयं मणिः	१०	६	२
वयमिन्द्र त्वायवोमि	२०	२८	४	वर्म मे द्यावापृथिवी	८	५	१८
वयमिन्द्रा त्वायवो				वर्म मे द्यावपृथिवी	१६	२०	४
हवि	२०	२३	७	वर्ये वन्दे सुभगे	१६	४६	३
वयमु त्वा तदि	२०	१८	१	वर्षमाज्यं प्रसो	१३	१	५३
वयमु त्वामपूर्व्य	२०	१४	१	वर्ष वनुष्वापि	१२	३	५३
वयमु त्वामपूर्व्य	२०	६२	१	ववक्ष इन्द्रो अ	२०	७७	५
वयमेनमिदा	२०	६७	१	वशा चरन्ती बहु	१२	४	२६
वयो न वृक्षं सुपक्षा	२०	१७	४	वशा दग्धामिम	२०	१३६	१३
वर्यं च त्वा सुताव	२०	५२	१	वशाया दुग्धं पी	१०	१०	३१
वर्यं च त्वा सुताव	२०	५७	१४	वशा द्यौर्वशा पु	१०	१०	३०
वर्यं जयेम त्वया	७	५०	४	वशा माता राजन्य	१०	१०	१८
वर्यं तदस्य संभृतं	७	६०	२	वशा माता राजन्य	१२	४	३३
वर्यं शूरेभिरस्तु	२०	७०	२०	वशामेवामृत	१०	१०	२६

	का०	सू०	म०		का०	सू०	म०
वशा यज्ञं प्रत्य	१०	१०	२५	वायो यस्ते हर	२	२०	२
वशायाः पुत्रमा	२०	१३०	१५	वायोः पूतः पवित्रेण	६	५१	१
वशां देवा उप	१०	१०	३४	वायोः सवितुर्वि	४	२५	१
वषट्कारेण	१५	१४	१८	वारिदं वारयातै	४	७	१
वषट् ते पूषन्नस्मि	१	११	१	वार्यं त्वा यय्या	२०	१००	२
वषड्दुतेभ्यो	७	६७	७	वार्त्रहत्याय शवसे	२०	१६	१
वसवस्त्वा दक्षिणत	१०	६	८	वार्षिकावेनं	१५	४	६
वसोरिन्द्रं वसु	२०	७१	१५	वार्षिकौ मासौ	१५	४	८
वसोर्या धारा	१२	३	४१	वावात च महिषी	२०	१२८	११
वस्यो भूयाय	१६	६	४	वावृधानस्य ते वयं	२०	२७	६
वाङ् म आसन्न	१६	६०	१	वावृधानः शवसा	२०	१०७	५
वाचमष्टापदीमहं	२०	४२	१	वावृधानः शवसा	५	२	२
वाचस्पत ऋतवः	१३	१	१८	वासन्तावेनं	१५	४	३
वाचस्पते पृथिवी	१३	१	१७	वासन्तौ मासौ	१५	४	२
वाचस्पते सौमन	१३	१	१६	वि ग्राम्याः पशव	३	३१	३
वाजस्य नु प्रसवे	३	२०	८	वि चिद् वृत्रस्य दो	२०	१०७	३
वाजेषु सासहिर्भ	२०	१६	६	विचिन्वतामाकि	४	३८	२
वाजस्य नु प्रसवे	७	६	४	वि जिहीष्व बार्ह	५	२५	६
वाङ्ग मे तन्वं	६	६	१	वि जिहीष्व ताकं	६	१२१	४
वात इव वृक्षाभि	१०	१	१७	विजेषकदिन्द्र	४	३१	५
वातरंहा भव	६	६२	१	वि ज्योतिषा बृहता	८	३	२४
वाताज्जातो अन्त	४	१०	१	वि ततूर्यन्ते मघव	२०	८५	४
वातात् ते प्राणमविदं	८	२	३	विततां किरणौ द्वौ	२०	१३३	१
वातं ब्रूमः पर्जन्य	११	६	६	वि तिष्ठन्वं मरुतो	८	४	१८
वानस्पत्या ग्रावा	३	१०	५	वि तिष्ठन्तां मानुर	१४	२	२५
वानस्पत्यः संभृत	५	२१	३	वि ते भनशि	१	११	५
वायुरन्तरिक्षस्या	५	२४	८	वि ते मदं मदावति	४	७	४
वायुरन्तरिक्षेणो	१६	१६	२	वि ते मुञ्चामि	७	७८	१
वायुरभिन्नाणा	११	१०	१६	वि ते हनव्यां	६	४३	३
वायुरेनाः समाकर	६	१४१	१	वि त्वा ततस्ते मिथु	२०	७२	२
वायुर्मान्तरिक्षे	१६	१७	२	वि त्वा ततस्ते मिथु	२०	७५	१
वायुं तेऽन्तं ज्ञ	१६	१८	२	विदुष्टे अस्य वीयं	२०	७५	२
वायो यर प	२	२०	१	विदवस्त्वा महान	२०	१३६	१४
वायो य तेज	२	२०	५	वि देवा जरसा	३	३१	१
वायो ऽर्चि	२	२०	३	विश ते सभे नाम	७	१२	२
वायो यस्ते शोचि	२	२०	४				

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
विद्य ते सर्वाः परि	१६	५६	६	विद्रव्यस्य बलात्	६	१२७	१
विद्य ते स्वप्न जनि-				विधुं दद्राणं	६	१०	६
प्रमभूत्याः	१६	५	५	विध्य दर्भ सपत्ना	१६	२८	१०
विद्य ते स्वप्न जनि-				विध्याम्यासां प्र	७	७४	२
अं प्राह्याः	१६	५	१	वि न इन्द्र मृधो जहि	१	२१	२
विद्य ते स्वप्न जनि-				विपश्चितं तरणिं	१३	२	४
अं देवजामीनां	६	४६	२	विभिद्या पुरं शप	२०	६१	५
विद्य ते स्वप्न जनि-				विभिन्दती शत	४	१६	५
अं देवजामीनां	१६	५	८	विभ्राजं ज्योति	२०	६२	७
विद्य ते स्वप्न जनि-				वि मिमीष्व पथ	१३	१	२७
अं निर्ऋत्याः	१६	५	४	विमृग्वरीं पृथि	१२	१	२६
विद्य ते स्वप्न जनि-				विमोकश्च मार्द्रप	१६	३	४
अं निर्ऋत्याः	१६	५	६	वि य और्णोन्पृथि	१३	३	२२
विद्य ते स्वप्न जनि-				वि रक्षो वि मृधो	१	२१	३
अं पराभूत्याः	१६	५	७	विराजश्च वै स	१५	६	२३
विद्य वै ते जायान्य	७	७६	५	विराजास्त्राद्या	१५	१४	१०
विद्या शरस्य पितरं				विराडग्नेसमभ	१६	६	६
चन्द्रं	१	३	४	विराड् वा इदमग्र	८	१०(१)	१
विद्या शरस्य पितरं				विराड् वाग् विराट्	६	१०	२४
पर्जन्यं भूरि	१	२	१	वि रोहितो अमृश	१३	१	८
विद्या शरस्य पितरं				विलपन्तु यातुधा	१	७	३
पर्जन्यं शत	१	३	१	विलिप्ती या बृह	१२	४	४६
विद्या शरस्य पितरं				विलिप्या बृहस्प	१२	४	४४
मित्रं शत	१	३	२	विलोहितो अधि	२२	४	४
विद्या शरस्य पितरं				विवस्वान् नो अभयं	१८	३	६१
वरुणं	१	३	३	विवस्वान् नो अमृ	१८	३	६२
विद्या शरस्य पितरं				विवाहां ज्ञातीन्स	१२	५	४४
सूर्यं	१	३	५	विशां च वै स सब	१५	८	३
विद्या हि त्वा	२०	२४	६	विशंविशं मघवा	२०	१७	६
वि द्यामेषि रजस्पृ	१३	२	२२	विश्वकर्माणं ते	१६	१८	७
वि द्यामेषि रजस्पृ	२०	४७	१६	विश्वकर्मा मा सन्त	१६	१७	७
विद्याश्च वा अवि	११	८	२३	विश्वजित् कल्या	६	१०७	३
विद्युज्जिह्वा मरुतो	६	७	३	विश्वजित् त्रायमा	६	१०७	१
विद्युत् पुंश्चली	१५	२	२५	विश्वमन्यामभी	१	३२	४
विद्योतमानः	६	६(५)	७	विश्वम्भर विश्वेन	२	१६	५

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
विश्वम्भरा वसुधानी	१२	१	६	विषेण भङ्गुरा	८	३	२३
विश्वरूपां सुभगाम	६	५६	३	विषं गवां यातुधाना	८	३	१६
विश्वरूपं चतुरक्षां	२	३२	२	विषं प्रयस्यन्ती	१२	५	३१
विश्वव्यवा घृत	१२	३	१६	विष्टारिणमोदनं	४	३४	३
विश्वव्यवाश्चर्मौ	६	७	१५	विष्टारिणमोदनं	४	३४	४
विश्वस्वं मातरमो	१२	१	१७	विष्णुयुनक्तु	५	२६	७
विश्वानि शक्रो	२०	७७	६	विष्णुर्योनि	५	२५	५
विश्वान् देवानिदं	११	६	१६	विष्णोर्नु कं	७	२६	१
विश्वान्येवास्य	१५	३	११	विष्णोः कर्माणि	७	२६	६
विश्वामित्रजमद	१८	३	१६	विष्णोः क्रमोसि	१०	५	२५
विश्वाहाते सद्मि	३	१५	८	विष्णोः क्रमोसि	१०	५	२६
विश्वाः पृतना	२०	५४	१	विष्णोः क्रमोसि	१०	५	२७
विश्वे देवा उपरिष्टा	८	८	१३	विष्णोः क्रमोसि	१०	५	२८
विश्वे देवा भरत	६	४७	२	विष्णोः क्रमोसि	१०	५	२९
विश्वे देवा वसवो	१	३०	१	विष्णोः क्रमोसि	१०	५	३०
विश्वेषु हि त्वा सव	२०	७२	१	विष्णोः क्रमोसि	१०	५	३१
विश्वं वायुः स्वर्गो	६	७	४	विष्णोः क्रमोसि	१०	५	३२
विषमेतद् देवकृतं	५	१६	१०	विष्णोः क्रमोसि	१०	५	३३
विषमेवास्याप्रियं	८	१०(६)	४	विष्णोः क्रमोसि	१०	५	३४
विषाणा पाशान् वि				विष्णोः क्रमोसि	१०	५	३५
विषालहि०।०।०	६	१२१	१	विश्वज्ञो अस्म	१	१६	२
ह इन्द्रमायुष्मान्				विश्वपञ्चस्तस्माद्	१६	३८	२
विषालहि०।०।०	१७	१	१	विसहस्य	६	८	२०
ह इन्द्रं प्रियो देवा				विहृतो नाम ते	६	१६	२
विषालहि०।०।०	१७	१	२	वि हि सोतोऽस्म	२०	१२६	१
ह इन्द्रं प्रियः पशू				वि हृदयं वैमनस्यं	५	२१	१
विषालहि०।०।०	१७	१	४	विशतिः स्वाहा	२३	२३	१७
ह इन्द्रं प्रियः प्रजा				वी३दं मध्यमवा	१६	४४	७
विषालहि०।०।०	१७	१	३	वी३मां मात्रां	१८	२	४१
ह इन्द्रं प्रियः समा	१७	१	५	वीमे देवा अक्रंस	२०	१३५	४
विषालह्यै स्वाहा	१६	२३	२७	वीमे द्यावापृथिवी	३	३१	४
विषितं ते वस्तिबिलं	१	३	८	वीहि स्वामाहुतिं	६	८३	४
विषुविशवा अरा	२०	६५	४	वीलुचिदारुज	२०	७०	१
विषूच्येतु क्रन्तती	१	२७	२	वृक्षश्चिदस्य	२०	६७	२
विषूचिन्द्रो	२०	१७	३	वृक्षं यद् गावः	१	२	३

कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
बृहदारण्यकोपनिषद्	५	५	३	वैवस्तः कृणु	६	११६ २
बृश्च प्र बृश्च	१२	५	६२	वैश्वदेवी ह्यु १८५	१२	५ ५३
बृश्च दर्भ	१६	२८	७	वैश्वदेवीं वर्चस	१२	२ २८
बृश्च त्वा वयं	२०	१०२	३	वैश्वानरस्य दंष्ट्रा	१०	५ ४३
बृश्चो न तिग्मशृ	२०	१२६	१५	वैश्वानरस्य प्रति	८	६ ६
बृश्चोसि स्वर्ग	११	१	३५	वैश्वानरस्यैनं	१६	७ ३
बृश्चाकपायिरेव	२०	१२६	१३	वैश्वानराय प्रति	६	११६ २
बृश्चा न क्रुद्धः पतय	२०	१७	८	वैश्वानरीं वर्चस	६	६२ ३
बृश्चा मतीनां	१८	५	५८	वैश्वानरीं सूनुता	६	६२ २
बृश्चा मे रवो नभसा	५	१३	३	वैश्वानरे हवि	१८	४ ३५
बृश्चायमाणो	२	५	७	वैश्वानरो न आगम	६	३५ २
बृश्चा यूथेव	२०	७०	१४	वैश्वानरो न ऊतये	६	३५ १
बृश्चा वृष्णे दुदुहे	१८	१	१८	वैश्वानरो ऽङ्गिरसां	६	३५ ३
बृश्चासि त्रिष्टुप्	६	४८	३	वैश्वानरो रश्मि	६	६२ १
बृष्णेन्द्रस्य वृष्णा	६	८६	१	वैश्वानरः पविता	६	११६ ३
बृष्णेव यूथे सहसा	५	२०	३	वंशानां ते नहनानां	६	३ ४
बृष्णे अग्निः समि	२०	१०२	२	व्यञ्जस्वतीरुर्विया	५	१२ ५
वेत्था हि निष्कृती	२०	६६	३	व्यन्तरिक्षमतिर	२०	२८ १
वेद आस्तरणं	१५	३	७	व्यन्तरिक्षमतिर	२०	३६ २
वेद सत् ते अमर्त्य	१३	७	४४	व्यवात् ते ज्योतिर	८	१ २१
वेद वै रात्रि ते नाम	१६	४८	६	व्यस्यै मित्रावरुणौ	३	२५ ६
वेदाहं पयस्वन्तं	३	२४	२	व्याकरोमि हवि	१२	२ ३२
वेदाहं सप्त प्रवतः	१०	१०	३	व्याकृतय एषा	३	२ ४
वेदाहं सूत्रं	१०	८	३८	व्याघ्रं न्वाजनिष्ट	६	११० ३
वेदिष्टे चर्म भवतु	१०	६	२	व्याघ्रो अधि वैयाघ्रो	४	८ ४
वेदि भूमि कल्प	१३	१	५२	व्याघ्रं दत्ततां	४	३ ४
वेदः स्वस्तिर्द्रघणः	७	२८	१	व्यानसिन्द्रः	२०	७६ ८
वेनस्तत् पश्यत्	२	१	१	व्याप पुरुषः	२०	१३१ १७
वैकङ्कतेनेध्मेन	५	८	१	व्यार्त्या पवमानो	३	३१ २
वैयाघ्रो मणिवी	८	७	१४	व्रजं कृणुध्वं सहि	१६	५८ ४
वैरूपाय च	१५	२	१७	व्रतेन त्वं व्रतपते	७	७४ ४
वैरूपस्य च	१५	२	१८	व्रात्य आसीदीय	१५	१ १
वैरं विकृत्यमाना	१२	५	२८	व्रात्याभ्यां स्वाहा	१६	२३ २५

श

	का०	सू०	म०		का०	सू०	म०
शकधूमं नक्षत्राणि	६	१२८	१	शतं वीरानजय	१६	३६	४
शकयलिः	२०	१३१	१३	शतं सहस्रमयुतं	१०	८	२४
शकमयं धूममारा	६	१०	२५	शत्रूणां नीषाड	५	२०	११
शकरी स्थ पशवो	१६	४	७	शन्तिवा सुरभिः	१२	१	५६
शको वाचमधृष्टा	२०	४६	२	शस्त्रारमेतु शपथो यः	२	७	५
शको वाचमधृष्टा	२०	४६	३	शफेन इव ओहते	२०	१३१	७
शङ्खू पु शर्वा	२०	११८	१	शमरनयः शमिद्धा	१८	४	१२
शङ्खेनामीषाममति	४	१०	३	शमग्ने पञ्च त् तप शं	१८	४	११
शचीव इद्र पुरु	२०	२१	३	शमीमश्वत्थ आक	६१	११	१
शणश्च मा लङ्घि	२	४	५	शम्या हृनाम इषि	१६	४६	७
शतकारणो दु	१६	३२	१	शयो हत इव	२०	१३१	१६
शतधारं वायुमकं	१८	४	२६	शरदे त्वा हेमन्ताय	८	२	२२
शतमाश्वा हिर	२०	१३१	५	शरदया मुखेपिन	१२	५	२५
शतमहं दुर्णाम्नी	१६	३६	६	शर्कराः सिकता	११	७	२१
शतबाजं स यजते	६	४	१८	शर्म यच्छ्रुत्वोषधिः	६	५६	२
शतवारो अग्नीन	१६	३६	१	शर्म यमैतदाहरा	१४	२	२१
शतरूप धमनीनां	१	१७	३	शर्व पन्मिषवास	१५	५	५
शतहस्त समाहार	३	२४	५	शर्वः क्रुद्धः पिश्य	१२	५	३६
शतानीका हेतयो	२०	५१	४	शहषाद् विषं निरवोचं	४	६	५
शतानीकेव प्रजिगा	२०	५१	२	शवसा ह्यसि भृतो	१८	१	३८
शतापाष्टां निगिरति	५	१८	७	शाखिगो शाखि	२०	५	६
शतेन पाशैरभि	४	१६	७	शान्ता घोः शान्ता	१६	६	१
शतेन मा परि पाहि	४	१६	८	शान्तानि पूर्वकपा	१६	६	२
शतं कंसाः शतं दो	१०	१०	५	शान्तो अग्निः	३	२१	६
शतं च न ग्रहरन्तो	१६	४६	३	शारबावेनं मासा	१५	४	१२
शतं च मे सहस्रं चाप	५	१५	११	शारदो मासो	१५	४	११
शतं जीव शरदो वर्ष	३	११	४	शास इत्या महा	१	२०	४
शतं जीव शरदो वर्ष	२०	६६	६	शिक्षेयमस्मै दिसे	२०	२७	२
शतं ते दर्भ वर्माणि	१६	३०	२	शिक्षेयमिग्मद्वय	२०	८२	२
शतं ते युतं हा	८	२	२१	शिक्षिभ्यः स्वाहा	१६	२२	१५
शतं वा भेषजानि	६	४४	२	शितिपदी सं पत	११	१०	६
शतं वा भारतीन्	२०	१३१	४	शितिपदी सं पत	११	१०	२०

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
शिप्रिन् वाजानां	२०	७४	२	शुनं हुवेम मघाशत	२०	११	११
शिरोहस्तावधो	११	८	१५	शुम्भनी चावापु	७	११२	१
शिला भूमिरश्मा	१२	१	२६	शुम्भनी चावापु	१४	२	४५
शिवानग्नीनपु	१६	१	१३	शुम्भन्तां लोकाः	१८	४	६७
शिवा नारीयमरुत	१४	२	१३	शुष्मिन्तमं न ऊत	२०	२०	१
शिवा नः शंतमा	७	३८	३	शुष्मिन्तमं न ऊत	२०	५७	४
शिवा भव पुरुषे	३	२८	३	शुष्यतु मयि	६	१३६	२
शिवाभिष्टे हृदयं	२	२६	६	शूद्रकृता राजकृता	१०	१	३
शिवास्त एका अ	७	४३	१	शूर्प पवित्रं	६	६(१)	१६
शिवास्ते सन्त्वोष	८	२	१५	शृङ्गाभ्यां रक्षो	१६	३६	२
शिवे ते स्तां चावा	८	२	१४	शृङ्गाभ्यां रक्ष	६	४	१७
शिवेन मा चक्षुषा	१	३३	४	शृङ्ग उत्पन्न	२०	१३०	१३
शिवेन मा चक्षुषा	१६	१	१२	शृङ्गं धमन्त आस	२०	१२६	१०
शिवो वो गोष्ठो	३	१४	५	शृतमजं शृतग्रा	४	१४	६
शिवौ ते अस्तां श्रीहि	८	२	१८	शृतं त्वा हव्यमुप	११	१	२५
शिवां राजिमनु	१६	४६	५	शेरभक शेरभ	२	२४	१
शिवाः कपोत इषि	६	२७	२	शेवृधक शेवृधे	२	२४	२
शिशुमारा अज	११	२	२५	शैशिरावेनं	१५	४	१८
शीर्षकि शीर्षामयं	६	८	१	शैशिरौ मालौ	१५	४	१७
शीर्षणवती नक्षत्री	१०	१	२	शोचयामसि	६	८६	२
शीर्षलोकं तृतीय	१६	३६	१०	शं च नो मयश्च	६	५७	३
शीर्षामयमुप	५	४	१०	शं त आपो धन्व	१६	२	३
शुक्रो ऽसि आजो	२	११	५	शं त आपो हैमव	१६	२	१
शुक्रो ऽसि आजो	१७	१	२०	शं तप मातितपो	१८	२	३६
शुक्रं वहन्ति हर	१३	३	१६	शं ते अग्निः	२	१०	२
शुखा धिखा व्योष	३	२५	४	शं ते नीहारो भवतु	१८	३	६०
शुखी ते चक्रे यात्या	१४	१	१२	शं ते वातो अन्तरि	२	१०	३
शुखा न आपस्त	१२	१	३०	शं ते हिरण्यं	१४	१	४०
शुखाः पूता योषि	६	१२२	५	शं न आपो धन्व	१	६	४
शुखाः पूता योषि	११	१	१७	शं न इन्द्राग्नी	१६	१०	१
शुखाः पूता योषि	११	१	२७	शं न इन्द्रो वसु	१६	१०	६
शुनालीरेह स्म	३	१७	७	शं नो अग्निज्यौ	१६	१०	४
शुने क्रोष्टे मा	११	२	२	शं नो अज एकपादे	१६	११	३
शुनं वाहाः शुनं नरः	३	१७	६	शं नो अदितिर्भ	१६	१०	६
शुनं सुफाला वि सुव	३	१७	५	शं नो ग्रहाश्चान्द्रस	१६	६	१०

कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
शं नो देवा विश्व	१६	११	२	श्येनो सि गा यत्र	६	४८ १
शं नो देवी पृश्नि	२	२५	१	श्येनो हव्यं नयत्वा	३	३ ४
शं नो देवीरमिष्टय	१	६	१	श्येनः क्रोडो	६	७ ५
शं नो देवः सविता	१६	१०	१०	श्यैताय च वै	१५	२ २३
शं नो द्यावापृथि	१६	१०	५	श्यैतस्य च वै	१५	२ २४
शं नो धाता शम्भु	१६	१०	३	अद्वा पुंश्चली	१५	२ ५
शं नो भगः शम्भु	१६	१०	२	अद्वाया दुहिता	६	१३३ ४
शं नो भवन्वप	२	३	६	अमेण तपसा सृष्टा	१२	५ १
शं नो भूमिर्वेप्यमा	१६	६	८	आतं मन्य ऊधनि	७	७२ ३
शं नो मित्रः शं वरु	१६	६	६	आतं हविरो ध्विन्द्रं	७	७२ २
शं नो मित्रः शं वरु	१६	६	७	आभ्यतः पचतो	११	१ ३०
शं नो वातो वातु	७	६६	१	आयन्त इव सूर्य	२०	५८ १
शं नः सत्यस्य	१६	११	१	अियं च वा एष	६	६(३) ६
शं नः सूर्य उरुच	१६	१०	८	अ्रुतं च विश्रुतं च	१५	२ २६
शं नः सोमो भवतु	१६	१०	७	अ्रुतकर्णाय कवये	१६	३ ४
शं मे परस्मै	१	१२	४	अ्रुधी नो अग्ने	१८	१ २५
शं रुद्राः शं वसवः	१६	६	११	अ्रेयांसमेत	१५	१० २
श्याममयोऽस्य	११	३	७	अ्रेयः केतो वसु	५	२० १०
श्यामश्च त्वा मा	८	१	६	अ्रेष्ठमसि मेषजानां	६	२१ २
श्यामा सरूपं	१	२४	४	अ्रोत्रमसि अ्रोत्रं	२	१७ ५
श्यावदता कुनजिना	७	६५	३	श्लक्षणायां श्लक्ष	२०	१३३ ५
श्यावाश्वं कृष्ण	११	२	१८	श्वन्वतीरप्सर	११	६ १५
श्येनीपती सा	२०	१२६	१६	श्वेवैकः कपिरिवै	४	३७ ११
श्येनो नृचक्षा	७	४१	२			

ष

षट् त्वा पृच्छाम	८	६	७	षष्टिश्च षट् च रे	१६	४७ ४
षट् च मे षष्टिश्च मे	५	१५	६	षष्ट्यां शरत्सु	१२	३ ३४
षडाहुः शीतान्	८	६	१७	षष्टाय स्वाहा	१६	२२ २
षड् जाता भूता	८	६	१६	षोडशर्चभ्यः स्वाहा	१६	२३ १३
षड्चेभ्यः स्वाहा	१६	२३	३			

स

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
स इच्छकं सधा	२०	१२४	१२	स तांल्लोकान्तस	१०	६	६
स इत् तत् स्योनं हर	१४	१	३०	स तौ प्र वेद	६	१	७
स इद् व्याघ्रो भव	८	५	१२	सत्तो होता न	२०	२३	२
स षुहस्तैः सनि	१६	१३	४	सत्यजितं शपथ	४	१७	२
स ई सत्येभिः	२०	६१	७	सत्यमहं गभीरः	५	११	३
स उत्तमां दिश	१५	६	७	सत्याय च तपसे	१२	३	४६
स उत्तिष्ठ प्रहि	४	१२	६	सत्यामाशिषं	२०	६१	११
स उदतिष्ठत् स उदी	१५	२	२१	सत्ये अन्यः समा	१३	१	५०
स उदतिष्ठत् स द	१५	२	६	सत्येनावृता	१२	५	२
स उदतिष्ठत् स प्र	१५	२	१५	सत्येनोत्तमिता	१४	१	१
स उदतिष्ठत् स प्रा	१५	२	१	सत्येनोर्ध्वस्तप	१०	८	१६
स उपहृत उपहृतः	६	(६)६	१२	सत्यं चतं च	६	५	२१
स उपहृतो दिवि	६	(६)६	६	सत्यं बृहद्वतमुग्रं	१२	१	१
स उपहृतो देवेषु	६	(६)६	१०	सत्रासाहं वरेण्यं	२०	२१	८
स उपहृतो ऽन्त	६	(६)६	६	स त्वं न इन्द्र	२०	४६	३
स उपहृतो लोकेषु	६	(६)६	११	स त्वं नश्चित्र	२०	६८	२
स उपहृतः पृथिव्यां	६	(६)६	७	सदान्वाक्षयणमसि	२	१८	५
स ऊर्ध्वा दिशमनु	१५	६	४	सदासि रणवो	१८	१	२२
स एकव्रात्यो भवत्	१५	१	६	स दिशोऽनु व्यच	१५	६	२२
स एति सविता	१३	४	१	स देवानामीशां	५	१	५
स एव मृत्युः	१३	४	२५	सद्यश्चिन्नु ते	२०	३७	६
स एव सं भुवना	१६	५३	४	सद्यो जातो व्य	५	१२	११
सखाय आ शिषामहे	१८	१	३७	स धाता स विधर्ता	१३	४	३
सखायाविध	६	४२	२	सध्रीचीनान् वः	३	३०	७
सखासावस्मभ्य	१	२६	२	स ध्रुवां दिशमनु	१५	६	१
स ग्राह्यः पाशान्	१६	८	३	स न इन्द्रः शिवः	२०	७	३
स घाघते गोमी	२०	१२६	१३	सनातनमेनमाहु	१०	८	२३
स घा नो देवः	६	१	३	स ना ता त इन्द्र	२०	३७	६
स घा नो योग आ	२०	६६	१	सनादग्ने मृणसि	५	२६	११
स चाति सृजे	१५	१२	३	सनादग्ने मृणसि	८	३	१८
सचेतसौ द्रुहणे	४	२६	२	सन्नुच्छिष्टे असं	११	७	३
स जज्ञिहस्य महि	१६	३४	५	सनेमि चक्रमजिरं	६	६	११

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
स नो ददातु तां	६	३३	३	सप्त होमाः समिद्धो	८	६	१८
स नो नियुज्जिः	२०	३६	११	सप्ताधर्गर्भा	६	१०	१७
स नो भवः परि	११	२	८	सप्तास्यासन् परि	१६	६	१५
स नो रक्षतु जङ्गि	१६	३५	२	स प्रजापतिः सुवर्ण	१५	१	२
स नो वृषन्नमु चरुं	२०	७०	१२	स प्रजाभ्यो विप	१३	४	११
स नः पतिः पारया	२०	४६	२	स बन्धुश्चासयन्धु	६	१५	२
स नः पिता जनिता	२	१	३	स बन्धुश्चासयन्धु	६	५४	३
स नः सिन्धुमिव	४	३३	८	स बुध्यादाष्ट	४	१	५
स पचामि स ददामि	६	१२३	४	स वृद्धीं दिशमनु	१५	६	१०
सपत्नक्षयणमसि	२	१८	२	सभा च मा समिति	७	१२	१
सपत्नक्षयणो	१	२६	६	सभायाश्च वै	१५	६	३
सपत्नक्षयणं दर्भ	१६	३०	४	समग्नयो विदु	१२	३	५०
सपरत्नहनमृषभं	६	२	१	समध्वरायोषसो	३	१६	६
सपत्नहा शतका	१६	३२	१०	स मन्दस्वा	२०	२३	६
स परमां दिशमनु	१५	६	१३	समस्मिँलोके	१२	३	३
सप्तऋषीनभ्या	१०	५	३६	समस्य मन्यवे	२०	१०७	१
सप्त क्षरन्ति शिशवे	७	५७	२	समहमेषां राष्ट्रं	३	१६	२
सप्त चक्रान् वहति	१६	५३	२	स महिमा सद्गु	१५	७	१
सप्त च मे सप्ततिश्च मे	५	१५	७	समाचिनुस्वा नु	११	१	३६
सप्त च याः सप्ततिश्च	६	२५	२	स मा जीवीत् तं प्रा	१६	७	१३
सप्त च्छन्दांसि	८	६	१६	समानलोको भव	६	५	२८
सप्त जाता न्यवृद्ध	११	६	६	समानां मासा	१	३५	४
सप्त त्वा हरितो	१३	२	२३	समानी प्रपा सह	३	३०	६
सप्त त्वा हरितो	२०	४७	२०	समाती व आकृतिः	६	६४	३
सप्तदशर्चभ्यः स्वाहा	१६	२३	१४	समानो मन्त्रः	६	६४	२
सप्त प्राणानष्टौ	२	१२	७	समानौ बन्धुर्वरण	५	११	१०
सप्त प्राणाः सप्ता	१५	१५	२	समास्त्वाग्ने ऋत	२	६	१
सप्त मर्यादाः	५	१	६	समाहर जातवेदो	५	२६	१२
सप्तमाष्टमाभ्या	१६	२२	३	सम्राडस्यसुराणां	६	८६	३
सप्त मेघान् पशवः	१२	३	१६	समिद्धो अग्न आ	१२	२	१८
सप्त युज्जन्ति	६	६	२	समिद्धो अग्निर	७	७३	२
सप्त युज्जन्ति	१३	३	१८	समिद्धो अग्निर्वृष	७	७३	१
सप्तर्चभ्यः स्वाहा	१६	२३	४	समिद्धो अग्निः	१३	१	२८
सप्तर्षीन् वा	११	६	११	समिद्धो अग्ने स	११	१	४
सप्त सूर्यो हरितो	१३	२	८	समिद्धो अथ	५	१२	१

	का०	सू०	म०		का०	सू०	म०
समिन्द्र गर्दभं	२०	७४	५	स यत् सर्वानन्तर्दे	५१	१४	२३
समिन्द्र नो मनसा	७	६७	२	स यदुदीचीं	१५	१४	७
समिन्द्र राया	२०	२१	५	स यदूर्ध्वा दिशमनु	१५	१४	१७
समिन्धते अमर्त्यं	१८	४	४१	स यद् दक्षिणां	१५	१४	३
समिन्धते संकसु	१२	२	११	स यद् देवाननुव्यच	१५	१४	१६
समिमां मात्रां	१८	२	४४	स यद् भ्रुवां दिशम	१५	१४	६
समीक्षयन्तु	४	१५	२	स यन्मनुष्याश्च	१५	१४	१५
समीक्षयस्व	४	१५	३	स यज्ञस्तस्य यज्ञः	१३	४	४०
समीं रेभासो अ	२०	५४	२	स यज्ञः प्रथमो	१३	१	५५
समुत्पतन्तु प्रदिशो	४	१५	१	सरस्वति या सारथं	१८	१	४३
समुद्र ईशो स्रव	६	८६	२	सरस्वति या सरथं	१८	४	४७
समुद्राज्जातो	४	१०	५	सरस्वति व्रतेषु ते	७	६८	१
समुद्रो नदीभि	१६	१६	७	सरस्वतीं देवयन्तो	१८	१	४१
समुद्रं वः प्रहिणो	१०	५	२३	सरस्वतीं देवयन्तो	१८	४	४५
स मृत्योः पङ्क्तीशा	१६	८	३२	सरस्वतीं पितरो	१८	१	४२
समृद्धिरोज आ	११	७	१८	सरस्वतीं पितरो	१८	४	४६
समेत विश्वे वचसा	७	२१	१	सरस्वतीमनुमति	५	७	४
समोहे वा य आशत	२०	७१	२	स राजसि पुरुष्टुतं	२०	६१	६
समं ज्योतिः सूर्ये	४	१८	१	स राजसि पुरुष्टुतं	२०	६२	१०
सम्यञ्च तन्तुं प्रदि	१३	३	२०	स रुद्रो वसुवनि	१३	४	२६
सम्राज्येधि	१४	१	४४	सरूपा नाम ते माता	१	२४	३
स य एवं विदुष	११	३	५४	सरूपौ द्वौ विरूपौ	५	२३	४
स य एवं विदुषा	१५	१२	४	सर्पानुसर्प	२	२४	४
स य एवं विद्वानुव	६	६(४)	६	सर्वज्यानिः कणौ	१२	५	२२
स य एवं विद्वान्न	६	६(२)	७	सर्वदा वा पृथ युक्तग्रा	६	६(२)	१०
स य एवं विद्वान्क्षीर	६	६(४)	१	सर्वाण्यस्यां क्रूरा	१२	५	१४
स य एवं विद्वान्स	६	६(४)	३	सर्वाण्यस्यां घो	१२	५	१३
स य एवं विद्वान्मधूप	६	६(४)	५	सर्वानग्ने सहमा	१२	२	४६
स य एवं विद्वान्मांस	६	६(४)	७	सर्वान् कामान् पूरय	३	२६	२
स य ओदनस्य	११	३	२३	सर्वान् कामान् यम	१२	४	३६
स यत् पशुननु	१५	१४	११	सर्वान् देवानिदं	११	६	२०
स यत् पितृननु	१५	१४	१३	सर्वान्समागा	१२	३	३६
स यत् प्रजा अनु	१५	१४	२१	सर्वा दिशः	१३	२	४१
स यत् प्रतीची दि	१५	१४	५	सर्वाल्लोकान्स	११	१०	१२
स यत् प्राची दिश	१५	१४	१	सर्वास्याङ्गा पर्वा	१२	५	४२
				सर्वास्याङ्गा पर्वा	१२	५	७१

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
सर्वाः समग्रा ओष	८	७	१६	ससनातायाँ उत	२०	११	६
सर्वे अस्मिन् देवा	१३	४	२१	स सुष्टुभा स	२०	८८	५
सर्वे गर्भादवेपन्त	१०	१०	२३	स सुत्रामा स्ववाँ	७	६२	१
सर्वे देवा अत्या	११	१०	१४	स सुत्रामा स्ववाँ	२०	१२५	७
सर्वे देवा अत्या	११	१०	१५	स संवत्सरमूर्द्ध्वो	१५	३	१
सर्वे देवा उपासिन्त	११	८	१७	स स्रूषीस्तदपसो	६	२३	१
सर्वेभ्यो हिरोभ्यो	१६	२२	१८	स स्वर्गमारोहति	१०	६	५
सर्वेषां च किमीणां	५	२३	१३	सहमानेयं प्रथमा	२	२५	२
सर्वो वा एष जग्ध	६	६ (२)	८	सहसूकुणपा	११	१०	२५
सर्वो वा एषोजग्ध	६	६ (२)	६	सहसूणीथाः	१८	२	१८
सर्वो वै तत्र जीवति	८	२	२५	सहस्रधामन् विशि	४	१८	४
सर्वं तद् राजा वरुणो	४	१६	५	सहस्रधार एव ते	५	६	३
सर्वं परिक्रोशं ज	२०	७४	७	सहस्रधारं शतधा	१८	४	३६
स वरुणः सायम	१३	३	१३	सहस्रधारः पवते	२०	१३७	६
स वा अग्नेरजायत	१३	४	३६	सहस्रपृष्ठः शतधारो	११	१	२०
स वा अद्भ्यो जा	१३	४	३७	सहस्रबाहुः पुरुषः	१६	६	१
स वा अन्तरिक्षा	१३	४	३१	सहस्रशृङ्गो वृषभो	४	५	१
स वा अहो जायत	१३	४	२६	सहस्रशृङ्गो वृषभो	१३	१	१२
स वा अग्भ्यो जा	१३	४	३८	सहस्राक्षमतिप	११	२	१७
सविता प्रसवाना	५	२४	१	सहस्राक्षेण शतवीर्येण	३	११	३
सवितः श्रेष्ठेन	५	२५	१२	सहस्राक्षेण शतवीर्येण	२०	६६	८
स विशो नु व्यच	१५	६	१	सहस्राक्षौ वृत्रहणा	४	२८	३
स विशः सवन्धू	१५	८	२	सहस्रार्घः शतका	१६	३३	१
स विश्वा प्रति चा	६	३६	२	सहस्राह्वयं विय	१०	८	१८
स वेद पुत्रः पितरं	७	१	२	सहस्राह्वयं विय	१३	२	३८
स वै दिग्भ्यो जाय	१३	४	३४	सहस्राह्वयं विय	१३	३	१४
स वै दिवो जायत	१३	४	३३	सहस्वनो अभि	१६	३२	६
स वै भूमेरजायत	१३	४	३५	सहस्व मन्यो	४	३१	३
स वै यज्ञादजायत	१३	४	३६	स हि दिवः स	४	१	४
स वै रात्र्या अजा	१३	४	३०	स हृदयं सामनस्य	३	३०	१
स वै वायोरजायत	१३	४	३२	सहे पिशाचा	४	३६	४
स रुतनयति स	१३	४	४१	सहो ऽसि सहो	२	१७	२
स सन्तु त्या अरा	२०	७४	४	साकं जानां सप्त	६	६	१६
स सर्वस्मै वि पश्यति	१३	४	१६	साकं सजातैः पय	११	१	७
स सर्वानन्तर्देशा	१५	६	२४	सा ते कामं दुहिता	६	२	५

	का०	सू०	म०		का०	सू०	म०
साधुपुत्रं हिरण्य	२०	१२६	५	सुजातं जातवेदसं	४	२३	४
साध्या एकं जाल	८	८	१२	सुतपावने सुता इमे	२०	६६	३
साध्वर्या अतिथि	२०	१६	३	सुतासो मधुमत्तमः	२०	१३७	४
सा नो भूमिरा	१२	१	४०	सुतेसुते न्योकसे	२०	७१	१६
सा पश्चात् पाहि सा	१६	४८	४	सुत्रामाणं पृथिवीं	७	६	३
सा ब्रह्मज्यं	१२	५	१५	सुदेवस्त्वा महन	२०	१३६	१२
सा मन्दसाना	१४	२	६	सुदेवो असिवरु	२०	६२	६
सामानि यस्य	६	६ (१)	२	सुनोता सोमपावने	६	२	३
सामासाद उद्नीथो	१५	३	८	सुपर्णसुवने गिरौ	५	४	२
सायंसायं गृहपति	१६	५५	३	सुपर्णस्त्वा गुरु	४	६	३
सावीर्हि देव प्रथमा	७	१४	३	सुपर्णस्त्वान्ववि	२	२७	२
साहस्रस्त्वेष	६	४	१	सुपर्णस्त्वान्ववि	५	१४	१
सांतपना इदं हवि	७	७७	१	सुपर्णा वाचमक्रतो	६	४६	३
सिनात्वेनान् निष्पृ	३	६	५	सुपर्णो जातः	१	२४	१
सिनीवालि पृथुष्णु	७	४६	१	सुप्रपाणा च वेश	२०	१२८	६
सिन्धुपत्नीः	६	२४	३	सुमङ्गली प्रतरणी	१४	२	२६
सिन्धोर्गर्भो सि वि	१६	४४	५	सुमङ्गलीरियं	१४	२	२८
सिलाची नाम का	५	५	८	सुयामश्वाक्षुष	१६	७	७
सिंह इवास्तानी	५	२०	२	सुरूपकृतुमृतये	२०	५७	१
सिंहप्रतीको विशो	४	२२	७	सुरूपकृतमृतये	२०	६८	१
सिंहस्य रात्र्युष	१६	४६	४	सुविज्ञानं चिकतुषे	८	४	१२
सिंहस्येव स्तनयोः	८	७	१५	सुश्रुतिश्च मोप	१६	२	५
सिंहे व्याघ्र उत	६	३८	१	सुश्रुतौ कर्णौ भद्र	१६	२	४
सीताः पर्शवः	११	३	१२	सुषूदत मृडत	१	२६	४
सीते वन्दामहे त्वां	३	१७	८	सुष्ठामा रथ	२०	६४	२
सीरा युञ्जन्ति क	३	१७	१	सुहवमग्ने कृत्ति	१६	७	२
सीसायाध्याह	१	१६	२	सूनुतावन्तः सुभ	७	६०	६
सीसे मलं साद	१२	२	२०	सूनुता संनतिः	११	७	१३
सीसे मृड्द्वं	१२	२	१६	सूयवसाद् भगवती	७	७३	११
सुकर्माणः सुख	१८	३	२२	सूयवसाद् भगवती	६	१०	२०
सुकिंशुकं बहतुं	१४	१	६१	सूरिरसि चर्चोधा	२	११	४
सुकेषु ते हरिमाणं	१	२२	४	सूर्य एनं दिवः	१२	५	७३
सुक्षेत्रिया सुगातुया	४	३३	२	सूर्य चक्षणा मां	२	१६	३
सुखं सूर्य रथमंशु	१३	२	७	सूर्य नावमारुक्तः	१७	१	२६
सुगा वो देवाः	७	६७	४	सूर्य मृतं तमसो	२	१०	८

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
सूर्य यत्ते तपस्तेन	२	२१	१	सोदक्रामत् सा पितृ	८	१०(३)	३
सूर्य यत्ते तेजस्तेन	२	२०	५	सोदक्रामत् सा पितृ	८	१०(४)	५
सूर्य यत्ते चिस्तेन	२	२०	३	सोदक्रामत् सा मनु	८	१०(३)	७
सूर्य यत्ते शोचिस्तेन	२	२०	४	सोदक्रामत् सा मनु	८	१०(३)	६
सूर्य यत्ते हरस्तेन	२	२१	२	सोदक्रामत् सा मन्त्र	८	१०(१)	१२
सूर्यश्चक्षुषा	५	२४	६	सोदक्रामत् सा वन	८	१०(३)	१
सूर्यश्चक्षुर्वातः	११	८	३१	सोदक्रामत् सा सप्त	८	१०(४)	१३
सूर्यस्य रश्मीननु	४	३८	५	सोदक्रामत् सा सभा	८	१०(१)	८
सूर्यस्यावृत्त	१०	५	३७	सोदक्रामत् सा समितौ	८	१०(१)	१०
सूर्यस्याश्वा हरयः	१३	१	२४	सोदक्रामत् सा सर्पा	८	१०(५)	१३
सूर्याभ्यां स्वाहा	१६	२३	२४	सोदक्रामत् सासुरा	८	१०(४)	१
सूर्याया चहुतुः	१४	१	१३	सोदक्रामत् साहव	८	१०(१)	४
सूर्यायै देवेभ्यो	१४	२	४६	सोदक्रामत् सेतरज	८	१०(५)	६
सूर्यो दिवोदक्राम	१६	१६	३	सोनादिष्टां दिश	१५	६	१६
सूर्यो देवीमुखसं	२०	१०७	१५	सोनावृत्तां दिश	१५	६	२०
सूर्यो द्यां सूर्यः	१३	१	४५	सोब्रवीदासंदि	१५	३	२
सूर्यो मा द्यावा	१६	१७	५	सोम एकैभ्यः	१८	२	१४
सूर्यो मान्हः पात्व	१६	४	४	सोम ओषधी	१६	१६	५
सूर्यो मे चक्षुर्वातः	५	६	७	सोमजुष्टं ब्रह्म	२	३६	२
सूर्यं चक्षुषा गच्छ	१८	२	७	सोममेनामेके द्रुहे	१०	१०	३२
सूर्यं ते द्यावोपृथि	१६	१८	५	सोम राजन्	११	१	२६
सूषा व्यूणीति	१	११	३	सोमस्त्वा पात्वो	१६	२७	२
सेदिरुग्रा	८	८	६	सोमस्य जायो	१४	२	३
सेदि रूपतिष्ठन्ति	१२	५	२४	सोमस्य पर्णः	३	५	४
सैषा भीमा	१२	५	१२	सोमस्य भाग स्थ	१०	५	६
सो अग्निः स उ	१३	४	५	सोमस्यांशो युधां	७	८१	३
सो अस्य वज्रो	२०	३०	३	सोमस्येव जातवेदो	५	२६	१३
सो चिक्षु भद्रा क्षु	१८	१	२०	सोमाय पितृमते	१८	४	७२
सोचिक्षु वृष्टिर्	२०	७३	५	सोमारुद्रा युवमेता	७	४२	२
सोदक्रामत् सा गन्ध	८	१०(५)	५	सोमारुद्रा विवृहतं	७	४२	११
सोदक्रामत् सा गार्ह	८	१०(१)	२	सोमेने पूर्णं कलशं	६	४	६
सोद क्रामत् सा दक्षि	८	१०(१)	६	सोमेनादित्या	४	१	२
सोदक्रामत् सा देवा	८	१०(३)	५	सोमो ददद् गंधर्वा	१४	२	४
सोदक्रामत् सा देवा	८	१०(५)	१	सोमो मा रुद्रैर्दक्षि	१६	१७	३
सोदक्रामत् सान्तरि	८	१०(२)	१	सोमो मा सौम्ये	१६	४५	८

कां०	सू०	म०	कां०	सू०	म०	
सोमो युनक्तु	५	२६	१०	७	५२	१
सोमो राजाधिपा	१०	१	२२	४	१२	३
सोमो राजा प्रथमो	५	१७	२	६	८	२२
सोमो राजा मस्ति	६	७	२	६	५६	३
सोमो वधूयुरभ	१४	१	६	१४	२	७०
सोमो मा विश्वैर्दे	१८	३	२८	६	१०३	१
सोमो वीरुधा	५	२४	७	६	३	५
सोमं ते रुद्रवन्त	१६	१८	३	६	१०३	२
सोमं मन्यते पपि	१४	१	३	१४	२	३७
सोमं राजानमवसे	३	२०	४	७	६८	१
सोरज्यत तनो	१५	८	१	१४	२	६७
सोरिष्ट न मरिष्यसि	८	२	२४	७	८६	२
सोर्यमा स वरुणः	१३	४	४	६	१	१५
सोवर्द्धत स महान	१५	१	४	१०	५	४७
सोषामविन्दत्	२०	१६	६	७	३३	१
संकर्षन्ती करुकरं	११	६	८	६	८६	३
संकसुको विकसुको	१२	२	१४	१०	४	८
संकाशयामि	१४	२	१२	१६	५७	२
संक्रन्दनेनानि	१६	१३	३	३	१०	३
संक्रन्दनः प्रवदो	५	२०	६	८	३	१७
सं क्रामतं मा	७	५३	२	७	७७	३
सं क्रोशतामेनान्	८	८	२१	८	८	२३
सं ख्याता स्तोकाः	१२	३	२८	४	१५	१३
सं गच्छस्व पितृ	१८	३	५८	६	१३६	३
सं गोभिराङ्गिरसो	२०	१६	२	६	५३	३
सं गोमदिन्द्र वाज	२०	७१	१३	७	१०६	६
सं चेध्यस्वाग्ने	२	६	२	१८	२	२६
सं चेन्नयाथो	२	३०	२	३	१४	१
सं चोदय चित्रम	२०	७१	११	३	८	५
संजग्माना अवि	३	१४	३	६	६४	१
संजयन् पृतना	५	२०	४	४	१५	७
सं जानीध्वं सं पृच्य	६	६४	१	६	७४	१
सं जानामहै मनसा	७	५२	२	३	१४	२
संजीवा इथ सं जी	१६	६६	३	३	१६	१
संज्ञपनं वो मनसो	६	७४	२	६	६३	४
संज्ञानं नः स्वेभिः	७	५२	१			
सं ते मज्जा मज्ज्ञा	४	१२	३			
सं ते शीर्ष्णः कपा	६	८	२२			
सं ते हन्मि दत्तादतः	६	५६	३			
सं त्वा नह्यामि	१४	२	७०			
संदानं वो बृहस्पतिः	६	१०३	१			
संदंशानां पलदानां	६	३	५			
सं परमान्तसमवभा	६	१०३	२			
सं पितरावृत्विष्ये	१४	२	३७			
सं बर्हिर्न हविषा	७	६८	१			
संभले मलं साद	१४	२	६७			
सं माग्ने वर्चसा	७	८६	२			
सं माग्ने वर्चसा	६	१	१५			
सं माग्ने वर्चसा	१०	५	४७			
सं मा सिञ्चन्तु	७	३३	१			
संघ्राडस्यसुराणां	६	८६	३			
संयतं न वि स्परद्	१०	४	८			
सं राजानो अगुः	१६	५७	२			
संवत्सरस्य प्रतिमां	३	१०	३			
संवत्सरीणं पय	८	३	१७			
संवत्सरीणा मरुतः	७	७७	३			
संवत्सरो रथः	८	८	२३			
संवत्सरं शशयाना	४	१५	१३			
संवन्तनी समुष्पला	६	१३६	३			
सं वर्चसा पयसा	६	५३	३			
सं वसव इति	७	१०६	६			
सं विशन्तिवह	१८	२	२६			
सं वो गोष्ठेन सुषदा	३	१४	१			
सं वो मनांसि सं	३	८	५			
सं वो मनांसि सं	६	६४	१			
सं वो वन्तु सुदानव	४	१५	७			
सं वः पृच्यन्तां	६	७४	१			
सं वः सृजत्वयमा	३	१४	२			
संशितं म इदं	३	१६	१			
संसमिद् युवसे	६	६३	४			

	कां०	सू०	म०
संसिचो नाम ते	११	८	१३
सं संसिचामि गवां	२	२६	४
संसृष्टं धनमुभयं	४	३१	७
सं सं स्रवन्तु सिन्धवः १	१५	१	१
सं सं स्रवन्तु नद्यः १	१६	१	१
सं सं स्रवन्तु पशवः २	२६	३	
सं हि वातेनागत	१०	१०	१४
सं हि शीर्षायग्रभं	१०	४	१६
सं हि सूर्येणागत	१०	१०	१५
सं हि सोमेतागत	१०	१०	१३
संहोत्रं स्म पुरा	२०	१२६	१०
स्कम्भेनेमे विष्ट	१०	८	२
स्कम्भे लोकाः स्कम्भे	१०	७	२६
स्कम्भो दाधार	१०	७	३५
स्तुता मया वरदा	१६	७१	१
स्तुवानमग्न आ वह	१	७	१
स्तनयितुस्ते वाक्	६	१	१०
स्तनयितुस्ते वाक्	६	१	२०
स्तुष्व वर्ष्मन् पुरु	५	२	७
स्तुष्व वर्ष्मन् पुरु	२०	१०७	१०
स्तुहि श्रुतं गर्त	१८	१	४०
स्तुदीन्द्रं व्यश्वव	२०	६६	१
स्तेगो न क्षामत्येपि	१८	१	३६
स्तेयं दुष्कृतं	११	८	२०
स्तोत्रं राधानां	२०	४५	२
स्तोमस्य नो वि	१६	४६	६
स्तोमा आसन् प्र	१४	१	८
स्त्रियः सतीस्तां	६	६	१५
स्योनाद्योनेरधि	१४	२	४३
स्योना भव श्वशु	१४	२	१७
स्योनास्मै भव	१८	२	१६
स्योनं ध्रुवं प्रजायै	१४	१	४७
स्रक्त्योऽसि प्रति	२	११	२
स्नाक्येन मणिन	८	५	८
सुगदर्विर्नेक्षण	६	१(१)	१७

	कां०	सू०	म०
स्रुचा हस्तेन प्राणेन	६	६(२)	५
स्रुवेवं यस्य हरिणी	२०	३१	४
स्वधया परिहता	१२	५	२
स्वधाकारेण पितृ	१२	४	३२
स्वधाकारेणाज्ञा	१५	१४	१४
स्वधा पितृभ्यो अन्त	१८	४	७६
स्वधा पितृभ्यो दिवि	१८	४	८०
स्वधा पितृभ्यः पृथि	१८	४	७८
स्वधास्तु मित्रावरुणा	६	६७	२
स्वतु माता स्वतु पिता	४	५	६
स्वप्न स्वप्नाभिकर	४	५	७
स्वप्नो वै तन्द्री	११	८	१६
स्वप्नं सुप्त्वा	१०	३	६
स्वमेतदच्छायन्ति	१२	४	१५
स्वयमेनमभ्युदे	१५	११	२
स्वयमेनमभ्युदे	१५	१२	२
स्वरन्ति त्वा सुते	२०	५२	२
स्वरन्ति त्वा सुते	२०	५७	१५
स्वर्गं लोकमभि	१२	३	१७
स्वर्श्यद् वेदि	२०	७७	४
स्वर्यन्तो नापेक्षन्त	४	१४	४
स्वर्विदो रोहित	१३	१	४८
स्वस्ति ते सूर्य चर	१३	२	६
स्वस्ति तं मे सुप्रातः	१६	८	३
स्वस्तिदा विशां प	१	२१	१
स्वस्तिदा विशां प	८	५	२२
स्वस्ति नो अस्व	१६	८	७
स्वस्ति मात्र उत पित्रे	१	३१	४
स्वस्त्यश्चोषसो	१६	४	६
स्वाक्तं मे द्यावापृथि	७	३०	१
स्वादुष्टे अस्तु संसु	२०	४	३
स्वादुक्किलायं	१८	१	४८
स्वादोरित्था	२०	१०६	१
स्वायसा असयः	१०	१	२०
स्वाधुग् देवस्यामृतं	१८	१	३२

	कां०	सू०	म०		कां०	सू०	म०
स्वातदसि सूया	१६	४	२	स्वाहाकृतः शुचिः	७	७३	३
स्वातदस्ये भवतमि	१८	३	३६	स्वाहाकारेणाप्ता	१५	१४	१६



हतासा अस्य वेशसो	२	३२	५	हिरण्य इत्येके	२०	१३२	१४
हतासो अस्य वेशसो	५	२३	१२	हिरण्यगर्भं पर	१०	७	२८
हतास्तिरश्चिराज	१०	४	१३	हिरण्यगर्भः समव	४	२	७
हतो येवाषः किमीणां	५	२३	८	हिरण्यपाणिं सवि	३	२१	८
हतो राजा किमीणा	२	३२	४	हिरण्ययाः पन्थान	५	४	५
हतो राजा किमीणा	५	२३	११	हिरण्ययी नौरचर	५	४	४
हतं तद् समङ्गमा	६	५०	१	हिरण्ययी नौरचर	६	६५	२
हन्त्वेनान् प्रदह	१३	१	२६	हिरण्ययी नौरच	१६	३६	७
हन्वोर्हि जिह्वाम	१०	२	७	हिरण्येन पुरुभू	२०	१४३	४
हरिणस्य रघुस्य	३	७	१	हिरण्यवर्णाः शुचयः	१	३३	१
हरिक्विके किमिच्छ	२०	१२६	४	हिरण्यवर्णा सुभगा	५	७	१०
हरितेभ्यः स्वाहा	१६	२२	५	हिरण्यवर्णे सुभगे सूर्य	५	५	६
हस्मिणं ते	६	८	६	हिरण्यवर्णे सुभगे शु	५	५	७
हरिश्मशाहं हरि	२०	३१	३	हिरण्यवर्णे अज	१६	२४	८
हरिं हि योनिमभि	२०	३०	२	हिरण्यभृङ्ग ऋष	१६	३६	५
हरिः सुपर्णो दिव	१६	६५	१	हिरण्यस्त्रगयं	१०	६	४
हर्यश्वं सत्पतिं	२०	१४	४	हिरण्यानामेके	४	१०	६
हर्यश्वं सत्पतिं	२०	६२	४	हुवे सोमं सवितारं	३	८	३
हविर्धानमग्निशालं	६	३	७	हृदयात् ते परि	२	३३	३
हस्ताभ्यां दशशा	४	१३	७	हृदयात् ते परि	२०	६६	१६
हस्तिवर्चसं प्रथ	३	२२	१	हृदा पूतं मनसा	४	३६	१०
हस्ती मृगाणां	३	२२	६	हेडं पशूनां न्येति	१२	४	२१
हस्तेनैव प्राह्यः	५	१७	३	हेतिः पक्षिणी	६	२७	३
हिङ्गिरिकती	६	१	८	हेतिः शफानुत्स्वि	१२	५	१६
हिङ्गुएवती वसुप	७	७३	८	हैमनावेनं मासौ	१५	४	१५
हिङ्गुएवती वसुप	६	१०	५	हैमनौ मासौ	१५	४	१४
हिमवतः प्र स्रवन्ति	६	२४	१	हंसैरिव सखिभिः	२०	६१	३
हिमस्य त्वा जरा	६	१०६	३	हयन्तु त्वा प्रतिजनाः	३	३	५
हिमेव पर्णां मुषिता	२०	१६	१०	हयामि ते मनसा	१८	२	२१
हिमं प्रसं चाधाय	११	१	४७				

क्ष

	का०	सू०	म०		का०	सू०	म०
क्षेत्रेनाग्ने स्वेन	२	६	४	क्षुदेभ्यः स्वाहा	१६	२२	१६
क्षिप्रं वै तस्य पृच्छ	१२	५	५०	क्षुदेभ्यः स्वाहा	१६	२३	२१
क्षिप्रं वै तस्य वास्तु	१२	५	४६	क्षुधामारं वृष्णामार	४	१७	६
क्षिप्रं वै तस्यादहनं	१२	५	४८	क्षुरपविरीक्षमा	१२	५	२०
क्षिप्रं वै तस्याहनेन	१२	५	४७	क्षुरपविर्मुत्यु	१२	५	५५
क्षीरे मा मन्ये	५	२६	७	क्षेत्रियात् त्वा	२	१०	१
क्षुक् कुक्षिरिरा	६	७	१२				

इति मन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची ॥

इति श्रीमद्राजाधिराजप्रथितमहागुणमहिम श्रीमयाजीरावगाय-

वाड़ाधिष्ठितबड़ोदेपुरीगंतश्रवणमासदक्षिणापरीक्षायाम्

ऋक्सामाथर्ववेदभाष्येषु लब्धदक्षिणेन श्री परिडत

क्षेमकरणदास त्रिवेदिना

कृते अथर्ववेदभाष्ये अथर्ववेदसंहियाया मन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची समाप्ता ॥

इयं मन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची प्रयागनगरे माघमासे शुक्लपक्षे वसन्त-

पञ्चम्यां तिथौ १६७७ तमे (सप्तसप्तत्युत्तरैकोनविंशतिशतके)

विक्रमीये संवत्सरे धीर-वीर-चिरप्रतापि-महायशस्वि-

श्री राजराजेश्वर पञ्चमजार्ज महोदयस्य

सुसाम्राज्ये सुसमाप्तिमगात् ।

मद्रितम्—माघशुक्ला १४ संवत् १६७७

तारीख २१ फरवरी १६२१ ईस्वी ॥

श्रीमती आर्य प्रतिनिधिसभा, पंजाब, गुरुदत्त भवन लाहौर
अन्तरंग सभा के प्रस्ताव संख्या ३ तिथि ६-१२-३३ की प्रति ।

ता० दीवान चन्द प्रतिनिधि आर्य समाज बटाला का प्रस्ताव, कि पं० जेम-
करणदास को अथर्ववेद भाष्य के लिये ४०) मासिक की सहायता दी जावे,
उपस्थित हुआ । निश्चय हुआ कि २५) मासिक की सहायता एक वर्ष के लिये दी
जावे और उसके परिवर्तन में उतने मूल्य की पुस्तकें उनसे स्वाकार की जावें ॥

श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रदेश आगरा और
अवध, स्थान बुलन्दशहर, अन्तरंग सभा ता० ४ जून १८९६ ई०
के निश्चय संख्या १३ (अ) और (ब) की लिपि ।

(अ) समाजों में गश्ती चिट्ठी भेजी जावे कि वे इस भाष्य के ग्राहक बनें
तथा अन्यो को बनावें ।

(ब) सभा सम्प्रति १ वर्ष पर्यन्त १५) मासिक एक क्लर्क के लिये पं०
जेमकरणदास जी को देवे, जिस का बिल उक्त पंडित जी कार्यालय सभा में
भेजते रहें । इस धन के बदले में पंडित जी उतने धन की पुस्तकें सभा को देंगे ॥
लिपि गश्ती चिट्ठी श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा जो पूर्वोक्त
निश्चय के अनुसार समाजों को भेजी गयी (संख्या ५८७६ प्राप्त
२० जूलई १८९६ ई०)

॥ ओ३म् ॥

मान्यवर, नमस्ते !

आप को ज्ञात होगा कि आर्यसमाज के अनुभवी वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं०
जेमकरणदास त्रिवेदी गत कई वर्षों से बड़ी योग्यता पूर्वक अथर्ववेद का
भाष्य कर रहे हैं । आप ने महर्षि दयानन्द के अनुसार ही इस भाष्य को करने
का प्रयत्न किया है । भाष्य कार्डों में निकलता है अब तक ६ कांड निकल चुके
हैं । आर्यसमाज के वैदिक साहित्य सम्बन्ध में वस्तुतः यह बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य
हो रहा है । त्रिवेदी महाशय के भाष्य की जानकारों ने खूब प्रशंसा की है ।
परन्तु खेद है कि अभी आर्यसमाज में उच्च कोटि के साहित्य को पढ़ने की ओर
लोगों की बहुत कम रुचि है । जिसके कारण त्रिवेदी जी 'अर्थ' हानि उठा रहे
हैं । भाष्य के ग्राहक बहुत कम हैं । लागत तक वसूल नहीं होती । वेदों का पढ़ना
पढ़ाना और सुनना सुनाना आर्यसमाज का प्रधान कर्त्तव्य है । अतएव सचिनय
निवेदन है कि वैदिक धर्मो मात्र श्री त्रिवेदी जी को उनके महत्त्वपूर्ण गुरुतर कार्य
में साहस प्रदान करें । स्वयम् ग्राहक बनें और दूसरों को बनावें । ऐसा करने से
भाष्यकार महाशय उसे छापने की अर्थ सम्बन्धिनी चिन्ताओं से मुक्त होकर
भाष्य की और अधिक उत्तमता से सम्पादन करने की ओर प्रवृत्त होंगे ।
आशा है कि वेदों के प्रेमी उक्त प्रार्थना पर ध्यान दे इस ओर अपना कुछ
कर्त्तव्य समझेंगे । प्रत्येक आर्य के घर में वेदों के भाष्य होने चाहिये । समाज के
पुस्तकालयों में तो उनका रखना बहुत ही जरूरी है । भाष्य के प्रत्येक कांड का
मूल्य त्रिवेदी जी ने बहुत ही थोड़ा रक्खा है ।

त्रिवेदी जी से पत्र व्यवहार ५२ लूकरगंज, प्रयाग के पते पर कीजिये
भवदीय—

नन्दलाल सिंह,

B. Sc., LL. B. उपमन्त्री ।

चिट्ठी संख्या २७० तिथि १०—१२—१९१४। कार्यालय श्रीमती आर्य-
प्रतिनिधि सभा, संयुक्तप्रान्त आगरा व अवध, बुलन्दशहर।

आपका पत्र संख्या १०१ तथा अथर्ववेद भाष्य का तृतीय कांड मिला। इस
कृपा के लिये अनेक धन्यवाद है। वास्तव में आप आर्यसमाज के साहित्य को
समृद्धि शाली बनाने में बड़ा कार्य कर रहे हैं, आप की विद्वत्ता और कृपा के
लिये आर्य संसार ही नहीं, प्रत्युत प्रत्येक शिक्षा सूत्र धारी को आभारी होना
चाहिये। ईश्वर आप को उत्तरोत्तर उस महत्त्व पूर्ण कार्य के सम्पादन और
समाप्त करने के लिये शक्ति प्रदान करें, ऐसे उपयोगी ग्रन्थ प्रकाशन को आप
सदैव जारी रखें यही प्रार्थना है।

भवदीय—

सदन मोहन सेठ

(एम० ए० एल० एल० बी०) मन्त्री सभा।

श्रीमान् पण्डित तुलसीराम स्वामी—प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा
संयुक्तप्रान्त, सामवेद भाष्यकार, सम्पादक वेदप्रकाश, मेरठ—मार्च १९१३।

ऋग्यजुर्वेद का भाष्य श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने संस्कृत और भाषा
में किया है, सामवेद का श्री पं० तुलसीराम स्वामी ने किया है, अथर्ववेद के
भाष्य की बड़ी आवश्यकता थी। पं० क्षेमकरणदास जी प्रयाग निवासी ने इस
अभाव को दूर करना आरम्भ कर दिया है। भाष्य का क्रम अच्छा है। यदि
इसी प्रकार समस्त भाष्य बन गया, जो हमारी समझ में कठिन है, तो चारो
वेदों के भाषा भाष्य मिलने लगेंगे, आर्यों का उपकार होगा।

श्रीयुत महाशय नारायणप्रसाद जी—मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल बृन्दा-
वन मथुरा—उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, संयुक्तप्रान्त। आर्यमित्र आगरा
२४ जनवरी १९१३।

श्री पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी प्रयाग निवासी, ऋक् साम तथा अथर्ववेद
सम्बन्धी परीक्षोत्तीर्ण अथर्ववेद का भाषा भाष्य करते हैं, मैंने सम्पूर्ण [प्रथम]
कांड का पाठ किया। त्रिवेदी जी का भाष्य ऋषि दयानन्द जी की शैली के अनु-
सार भावपूर्ण संक्षिप्त और स्पष्टतया प्रकट करने वाला है कि मन्त्र के किस
शब्द के स्थान में भाषा का कौन सा शब्द आया, फिर नोटों में व्याकरण तथा
निरुक्त के प्रमाण, प्रारम्भ में एक उपयोगी भूमिका दे देने से भाष्य की उप-
योगिता और भी बढ़ गई है, निदान भाष्य अत्युत्तम, आर्यसमाज का पक्षपोषक
और इस योग्य है कि प्रत्येक आर्यसमाज उसकी एक २ पृथी (कापी) अपने
पुस्तकालय में रखे।

त्रिवेदी जी ने इस भाष्य का आरम्भ करके एक बड़ी कमी के पूर्ण करने का

उद्योग दिया है। ईश्वर उनको बल तथा वेद प्रेमी आवश्यक सहायता प्रदान करें निर्विघ्नता के साथ यह शुभ कार्य पूरा हो... छुपाई और कागज़ भी अच्छा है।

श्रीयुत महाशय सुन्शीरामजी—जिज्ञासु-मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार—पत्र संख्या ६४ तिथि २७-१०-१९६६।

अथर्ववेदभाष्य आप का दिया व किया हुआ अवकाशानुसार तीसरे हिस्से के लगभग देख चुका हूँ आप का परिश्रम सराहनीय है।

तथा—पत्र संख्या ११४ तिथि २२-१२-१९६६।

अवलोकन करने से भाष्य उत्तम प्रतीत हुआ।

श्रीयुत पं० शिव शंकर शर्मा काव्यतीर्थ—छान्दोग्योपनिषद् भाष्यकार वेदतत्त्वादि ग्रंथकर्त्ता वेदाध्यापक कांगड़ी गुरुकुल महाविद्यालय, आदि आदि, सम्पादक आर्यमित्र—८ फरवरी १९१३।

अथर्ववेद भाष्य। श्री पं० क्षेमकरण दास त्रिवेदी जी का यह परिश्रम प्रशंसनीय है। आप बहुत दिनों तक सरकारी नौकरी कर और अब वहाँ से पेंशन पाके अपना सम्पूर्ण समय संस्कृत पढ़ने में लगाने लगे। अन्ततः आपने वेदों में विशेष परिश्रम कर बड़ौदा राजधानी में वेदों की परीक्षा दी और उन में उत्तीर्ण हो त्रिवेदी बने हैं। आप परिश्रमी और अनुभवी वृद्ध पुरुष हैं। आप का अथर्ववेदीय भाष्य पढ़ने योग्य है।

श्रीयुत पंडित भीमसेन शर्मा इटावा—उपनिषद् गीतादि भाष्यकर्त्ता वेदव्याख्याता कलकत्ता यूनीवर्सिटी, सम्पादक ब्राह्मण सर्वस्व इटावा, फरवरी, १९१३।

अथर्ववेदभाष्य—इसे प्रयाग के पण्डित क्षेमकरणदास त्रिवेदी ने प्रकाशित किया है। इस का क्रम ऐसा रक्खा गया है कि प्रथम तो प्रत्येक सूक्त के प्रारम्भ में अमिप्राय यह है कि भाष्य का ढंग अच्छा है भाष्यकर्त्ता के मानसिक विचारों का मुकाब आर्यसामाजिक सिद्धान्तों की तरफ है अतएव भाष्य भी आर्य सामाजिक शैली का हुआ है। तब भी कई अंशों में स्वामी दयानन्द के भाष्य से अच्छा है। और यह प्रणाली तो बहुत ठीक है।

श्रीमती पंडिता शिवप्यारी देवी जी, १३७ हकीम देवी प्रसाद जी अतरसुइया, प्रयाग, पत्र ता० २१-१०-१९१५ ॥
श्रीयुत पण्डित जी नमस्ते,

महेवा के पत्ते से आर का भेजा हुआ पत्र और अथर्ववेद भाष्य चौथा कांड मिला, मैं ने चारों कांड पढ़े, पढ़कर अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ। आपने हम सभी पर अत्यंत कृपा की है आप को अनेकों धन्यवाद हैं। आशा है कि पाँचवां कांड भी शीघ्र तैयार होकर वी० पी० द्वारा मुझे मिलेगा।

दो पुस्तक हवनमन्त्राः की जिस का मूल्य १॥ है कृपाकर भेज दीजिये मेरी एक बहिन को आवश्यकता है।

श्रीयुत परिणत महावीर प्रसाद त्रिवेदी—कानपुर, सम्पादक सर-
स्वती प्रयाग, फरवरी १९१३।

अथर्ववेद भाष्य—श्रीयुत क्षेमकरणदास त्रिवेदी जी के वेदार्थज्ञान और श्रम का यह फल है, कि आप ने अथर्ववेद का भाष्य लिखना और क्रम क्रम से प्रकाशित करना आरम्भ किया है... बड़ी विधि से आप भाष्य की रचना कर रहे हैं। स्वर सहित मूलमन्त्र, पद पाठ, हिन्दी में सान्वय अर्थ, भावार्थ, पाठान्तर, टिप्पणी आदि से आप ने अपने भाष्य को अलंकृत किया है... आप की राय है कि "वेदों में सार्वभौम विज्ञान का उपदेश है"। आपका भाष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती के वेदभाष्य के ढंग का है।

श्रीयुत परिणत गणेश प्रसाद शर्मा—संपादक भारतसुदशाप्रवर्त्तक
फतेहगढ़, ता० १२ अप्रैल १९१३।

वर्ष की बात है कि जिस वेद भाष्य की बड़ी आवश्यकता थी, उसकी पूर्ति का आरम्भ होगया। वेद भाष्य बड़ी उत्तम शैली से निकलता है। प्रथम मन्त्र पुनः पदार्थयुक्त भाषार्थ, उपरान्त भावार्थ, और नोट में सन्देह निवृत्ति के लिये धात्वर्थ भी व्याकरण व निरुक्त के आधार पर किया गया है, वैदिक धर्म के प्रेमियों को कम से कम यह समझ कर भी ग्राहक होना चाहिये कि उनके मान्य ग्रन्थ का अनुवाद है और काम पड़े पर उस से कार्य लिया जा सकता है।

बाबू कालिकाप्रसाद जी—सिलेक्ट मर्चेन्ट कमनगढ़ा, बनारस सिटी
पत्र संख्या ५८६ ता० २७-३-१३।

आप का भेजा अथर्ववेदभाष्य का वी० पी० मिला, मैं आप का भाष्य देखकर बहुत प्रसन्न हुआ, परमेश्वर सहाय करे कि आप इसे इसी प्रकार पूर्ण करें। आप बहुत काम एक साथ न छोड़कर इसी की तरफ समाधि लगाकर पूर्ण करेंगे। मेरा नाम ग्राहकों में लिख लीजिये, जब २ अङ्क छपें मेरे पास भेज देना।

श्रीयुत महाशय रावत हरप्रसाद सिंह जी वर्मा, मु० एकडला पोस्ट
किशुनपुर जिला फतेहपुर हसवा; पत्र ६ दिसम्बर १९१३।

वास्तव में आप का किया हुआ "अथर्ववेद भाष्य" निष्पक्षता का आश्रय लिया चाहता है। आप ने यह साहस दिखाकर साहित्य भण्डार की एक बड़ी भारी न्यूनता को पूर्ण कर दिया है। ईश्वर आप को वेद भण्डार के आवश्यक-कीय कार्यों के सम्पादन करने का बल प्रदान करे।

श्रीयुत महाशय पंडित श्रीधर पाठक जी, (सभापति हिन्दी
साहित्य सम्मेलन लखनऊ)—मनोविनोद आदि अनेक ग्रन्थों के कर्ता,
सुपरिन्टेन्डेन्ट गवर्नमेंट सेक्रेट्रियट, पी० डब्ल्यू० डी० श्री प्रयागराज, पत्र
ता० १७-६-१३।

आप का अथर्ववेद भाष्य अवलोकन कर चित्त अत्यन्त सन्तुष्ट हुआ। आप की यह पारिडत्य-पूर्ण कृति वेदार्थ जिज्ञासुओं को बहुत हितकारिणी होगी। आप का व्याख्याक्रम परम मनोरम तथा प्रांजल है, और ग्रन्थ सर्वथा उपादेय है।

प्रकाश लाहौर १२ आषाढ़ संवत् १८७३ (२५ जून १८९६—
लेखक श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर खातवलेकर जी)

हम पण्डित क्षेमकरणदास जी का धन्यवाद करने से नहीं रह सकते—स्वामी (दयानन्द) जी ने लिखा है— कि वेद का पढ़ना पढ़ाना आर्यों का परम धर्म है—इसके अनुकूल श्री पण्डित जी अपना समय वेद अध्ययन में लगाते हैं—और आर्यों के लिये परम उपयोगी पुस्तक प्रकाशित करने में पुरुषार्थ करते रहते हैं—पण्डित जी ने इस समय तक हवन मन्त्रों तथा रुद्राध्याय का भाषा में अर्थ प्रसिद्ध किया है—जो कि आर्यों के लिये पठन पाठन में उपयोगी हैं—इस सम्बन्ध में यह अथर्ववेद के पांच कांड छपवा कर निःसन्देह बड़ा लाभ पहुँचाया है। आर्यों की जो शिक्षा प्रणाली थी उसको दूटे आज पांच हजार वर्ष हो चुके हैं। ऐसे अंधेरे के समय में स्वामी जी ने वेद के ऊपर लोगों के भीतर दृढ़ विश्वास उत्पन्न करके एक धर्म का दीपक प्रकाशित किया। परन्तु हमें शोक यह है वेद के पढ़ने में आर्य लोग इतना समय नहीं लगाते जितना वे प्रबन्ध सम्बन्धी झगड़ों की बातों में लगाते हैं। हमारा विश्वास है कि जब तक पं० क्षेमकरणदास जी जैसे वेदाभ्यासी पुरुषार्थी लोग अपना समय वेदों के खोज में न लगावेंगे तब तक आर्य समाज का कोई गौरव नहीं बढ़ सकता। अथर्ववेद के अर्थ खोजने में बड़ी कठिनता है। इसके ऊपर सायण भाष्य उपलब्ध नहीं होता, जो इस समय तक छपा हुआ है वह बड़ी अधूरी दशा में है, सूक्त के सूक्त ऐसे हैं कि जिनके ऊपर अब तक कोई टीका नहीं हुई।.....इस समय जो पांच कांडों का भाष्य पण्डित जी ने प्रकाशित किया है उसके लिखने का ढंग बड़ा अच्छा और सुगम है। प्रथम उन्होंने सूक्त के तथा मन्त्रों के देवता दिये हैं—पश्चात् छन्द...विद्वानों का यही काम है कि वह जैसे जैसे साधन उनके पास हों वैसा वैसा सोचकर वेद मन्त्रों का अर्थ प्रकाशित करें। ऐसे सैकड़ों प्रयत्न जब होंगे, तब सच्चे अर्थ खोज करना आगामी विद्वानों को सरल होगा। परन्तु इस समय बड़ी भारी कठिनाई यह है कि प्रकाशित पुस्तकों के लिये पर्याप्त संख्या में ग्राहक नहीं मिलते हैं और विद्वानों के पास सम्पत्ति का अभाव होने के कारण हानि के डर से पुस्तकों का प्रकाशित करना बन्द होता है। इस लिये सब आर्यों को परम उचित है कि पण्डित क्षेमकरणदास जी जैसे विद्वान् पुरुषार्थी के ग्रन्थ मोल लेकर उनको अन्य ग्रन्थ प्रकाशित करने की आशा देते रहें। त्रिवेदी जी कोई धनाढ्य पुरुष नहीं हैं, उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति जो कुछ उनके पास है लगा दी है.....त्रिवेदी जी ने जो कुछ किया है वह वैदिक धर्म के प्रेम से प्रवृत्त होकर—इसलिये न केवल सब आर्य पुरुषों का यह कर्त्तव्य है कि इस भाष्य को मोल लेकर त्रिवेदी जी को उत्साहित करें किन्तु धनाढ्य आर्य पुरुषों का यह भी कर्त्तव्य है कि उनकी आर्थिक सहायता करें।

The VIDYADHIKARI (Minister of Education), Baroda State
 Letter No 624 dated 6th February 1913.

....It has been decided to purchase 20 copies of your book entitled *अथर्ववेद भाष्यम्*. It has been sanctioned for use of the library and the prize distribution. Please send them ...also add on the address label "For Encouragement Fund."

RAI THAKUR DATTA RETIRED DISTRICT JUDGE, Dera Ismail Khan
 Letter dated March 25th, 1914.

The Atharva Veda Bhashya:—It is a gigantic task and speaks volumes for your energies and perseverance that you should have undertaken at an advanced age. I wish I had a portion of your will-power.

Letter dated 30th April 1914.

I very much admire your labour of lore and hope...the venture will not fail for want of pecuniary support.

THE MAGISTRATE OF ALLAHABAD.

Letter No. 912 dated 21st May 1915.

Has the honour to request him to be so good as to send a copy each of the 1st and 3rd Kandas of *Atharva Veda Bhashya* to this office for transmission to the India Office, London.

THE ARYA PATRIKA LAHORE APRIL 18 1914.

THE *Atharva Veda Bhashya* or commentary on the *Atharva Veda*

which is being published in parts by Pandit Khem Karan Das Trivedi, does great credit to his energy, perseverance and scholarship. The first part contains the Introduction and the first *Kanda* or Book. There is a learned disquisition on the origin of the Vedas and the pre-eminent position in Sanskrit literature.....The arrangement is good, the original *Mantra* is followed by a literal translation and their *bhavarth* or purport in Arya Bhasha. The footnotes are copious; they give the derivation and meaning in Sanskrit of the various words quoting the authority of *Ashtadhyayi* of Panini, *Unadikosha* of Dayananda, *Nirukta* of Yaska, *Yoga Darshana* of Patanjai and other standard ancient works.....The Pandit appears to have laboured very hard and the Book before us does credit to his erudition; scholars may not agree with certain of his renderings, but like a true Arya, who venerates the Vedas, he has made an honest attempt to find in the Vedic verses something which will elevate and ennoble mankind. Cross references to verses where the word has already occurred in this Veda are also given to enable the reader to compare notes. There can be no finality in Vedic interpretation, but honest attempts like these which shall render the task easy to others are commendable. We are glad to call public attention to this scholarly work, and hope that Pandit Khem Karan Das Trivedi will get the encouragement which he so richly deserves.....Our earnest request is that the revered Pandit will go on with this noble work and try to finish the whole before he is called to eternal rest.

N.B.—The printing and paper are good.

[सूचना—इस परिशिष्ट को अथर्ववेद भाष्य की मन्त्र सूची से पहिले लगालीजिये ।

॥ ओ३म् ॥

प्रियं मां कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु ।
प्रियं सर्वस्य पश्यन्त उत शुद्र उताय ॥ १ ॥

अथर्व० का० १६ सू० ६२ म० १ ॥

प्रिय मोहि करौ देव, तथा राज समाज में ।

प्रिय सब दृष्टि वाले, औ शूद्र और अर्य में ॥

अथर्ववेदभाष्ये ।

परिशिष्टम् ॥

श्रीमद्राजाधिराजप्रथितमहागुणमहिमधीरवीरचिरप्रतापि श्री
सयाजीरावगायकवाडाधिष्ठित बड़ोदेपुरीगतश्रावणमास-

दक्षिणापरीक्षायाम् ऋक्सामाथर्ववेदभाष्येषु
लब्धदक्षिणेन

श्री पण्डित क्षेमकरणदासत्रिवेदिना

निर्मितं प्रकाशितं च ।

Make me beloved among the Gods,
beloved among the Princes, make
Me dear to every one who sees,
to Sudra and to Aryanman.

Griffith's Trans. Atharva 19 : 62 : 1.

सर्वाधिकारः स्वाधीन एव भाष्यकारेण रक्षितः ।

अयं ग्रन्थः पण्डित काशीनाथ वाजपेयिप्रबन्धेन

प्रयागनगरे श्रींकार यन्त्रालये मुद्रितः ।

प्रथमावृत्तौ

संवत् १९७८ वि०

१००० पुस्तकानि

सन १९२१ ई०

मूल्यम् ॥३॥

पता—पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी, ५२ लक्ष्मणगंज प्रयाग (Allahabad.)

अथर्ववेद भाष्य परिशिष्ट और मन्त्र सूची सहित पूरा हो गया, पद सूची और छप रही है ।

आनन्द समाचार ॥ अथर्ववेद भाष्य छप गया ॥

[आप देखिये और अपने मित्रों को दिखाइये]

१—अथर्ववेदभाष्य—अथर्ववेद का अर्थ अभी तक आर्य भाषा (हिन्दी) में न था । और संस्कृत में भी श्री सायण भाष्य पूरा नहीं है । अब परमात्मा की कृपा से अथर्ववेद का भाष्य भी आर्य भाषा (हिन्दी) और संस्कृत में वेद, निघण्टु, निरुक्त, व्याकरणादि सत्य शास्त्रों के प्रमाणों सहित, प्रयाग निवासी पं० क्षेमकरणादास त्रिवेदी ने संवत् १९६६ वि० में आरंभ करके श्रीमान् राजाधिराज श्रीर-वीर-चिरप्रतापी श्री सयाजी राव गयकवाड़ बड़ौदाधीश तथा श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रांत और पंजाब प्रांत तथा विद्वान् ग्राहक महाशयों की विशेष प्रचार सहायता से पूरा कर लिया ।

२—इस वेद के बीसों काण्डों का भावपूर्ण-संक्षिप्त स्त्री पुरुषों के समझने योग्य अति सरल हिन्दी और संस्कृत भाष्य अल्प मूल्य में छप कर उपस्थित है । वेदप्रेमी महाशय सब स्त्री पुरुष स्वाध्याय, पुस्तकालयों और परितोषिकों के लिये भाष्य मंगावें और जगत्पिता परमात्मा के पारमार्थिक और सांसारिक उपदेश, ब्रह्मविद्या, वैद्यकविद्या, शिल्पविद्या, राजविद्यादि अनेक विद्याओं का तत्त्व जानकर आनन्द भोगें, छपाई उत्तम और कागज बढ़िया रायल अठपेजी है ।

३—पूरे भाष्य के स्थायी ग्राहकों में नाम लिखाने वाले सज्जन मूल्य में से २०) सैकड़ा छोड़कर भाष्य पाते हैं । डाक व्यय और कपड़े की पूरी जिल्द बंधवाई के दाम ग्राहक देते हैं ।

काण्ड	१ भूमिका सहित			२.	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
मूल्य	१।)			१।-)	१।।-)	२)	१।।।)	३)	२।)	२)	२।)	१।)	२।)
काण्ड	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	परि- शिष्ट	मन्त्र सूची	पद सूची	योग
मूल्य	२=)	१।=)	१।)	१-)	१।-)	१=)	२।=)	३।)	७।)	१=)	१-)		४३।)

सब भाष्य परिशिष्ट और मन्त्र सूची सहित छप गया, पद सूची और छप रही हैं । जिसके छप जाने पर यह भाष्य सब प्रकार पूरा हो जावेगा । पुराने ग्राहक जिनके पास सब कांड नहीं पहुंचे और नये ग्राहक भाष्य शीघ्र मंगावें पुस्तक थोड़े रहे हैं, ऐसे बड़े ग्रन्थ का फिर छपना कठिन है,

हवनमन्त्राः—धर्म शिक्षा का उपकारी पुस्तक—चारों वेदों के संगृहीत मन्त्र ईश्वर स्तुति, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, हवनमन्त्र, वामदेव्यगान सरल भाषा में शब्दार्थ सहित संशोधित बढ़िया रायल अठपेजी पृष्ठ ६०, मूल्य १-)

रुद्राध्यायः—प्रसिद्ध यजुर्वेद अध्याय १६ (नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे तमः) ब्रह्मनिरूपक अर्थ संस्कृत, भाषा अंग्रेजी में बढ़िया रायल अठपेजी, पृष्ठ १४८ मूल्य १।)

रुद्राध्यायः—मूलमात्र बढ़िया रायल अठपेजी, पृष्ठ १४ मूल्य १।।

वेदविद्यार्थे—कांगड़ी गुरुकुल में व्याख्यान दिया था । वेदों में विमान, नौका, अस्त्र शस्त्र निर्माण, व्यापार, ग्रहस्थ, अतिथि, सभा, ब्रह्मचर्यादि का वर्णन मूल्य १।)

पता पं० क्षेमकरणादास त्रिवेदी

१५ मई १९२१ ।

५२, लूकरगंज, प्रयाग । (Allahabad)

॥ ओ३म् ॥

[सूचना—इस परिशिष्ट को अथर्ववेद भाष्य की मन्त्र सूची से पहिले लगा लीलिये ।]

निवेदन ॥

अथर्ववेद भाष्य काण्ड १६ के साथ विज्ञापन [ता० १५ दिसम्बर १९१६] द्वारा निवेदन किया गया था कि विद्वान् वेदपाठी महाशय यदि अथर्ववेद भाष्य में कोई त्रुटि देखें वा किसी प्रकार का सुधार उचित समझें, कृपा करके सूचित करें, विचार करके शुद्धि पत्र द्वारा उन महाशयों के नाम सहित वह ठीक कर दिया जावेगा ॥

इस विज्ञापन के अनुसार श्रीयुन परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री सत्य-प्रकाश जी वैदिक यति स्थान जेवर जिला बुलन्दशहर [संयुक्त प्रान्त] ने अथर्व-वेद भाष्य का संशोधन भेजा है, वह हार्दिक धन्यवाद सहित परिशिष्ट रूप में प्रकाशित किया जाता है कि विद्वान् जन उसे पढ़कर वेदों में अपनी विचार शक्ति बढ़ावें । प्रशंसित सन्यासी जी महाशय की बनाई हुई ब्रह्म-बोधिनी सन्ध्या नामक पुस्तक लगभग ३२५ प्रमाण युक्त वेद प्रेमी विद्वानों के लिये उपयोगी, पढ़ने और विचारने योग्य है । मूल्य ॥, प्रशंसित महात्मा जी से मिलेगी ।

फाल्गुन कृष्ण १४,
संवत् १९७७ विक्रमीय ।

सोमकरण दास निवेदी,

५२ लूकरगंज, प्रयाग ।

अथर्ववेदभाष्ये परिशिष्टम् ॥

(अथ० १।१।१) (ये) जो, (त्रिषप्ताः) [त्रि=ज्ञानं कर्तुं उपासना तीनों, सप्ताः=गायत्री उषिण रू बृहती अनुःपुष पङ्क्ति त्रिष्टुप् जगती सातों] तीनों सप्त वा सात त्रिक अर्थात् वेद के तीनों काण्ड जिन में से प्रत्येक उपयुक्त सातों छन्दों में विभक्त हैं, अथवा तीनों भाग जो [पप समवाये] सर्वत्र [सर्व पदार्थों से] सम्बद्ध हैं, (विश्वा) विश्वानि=सब (रूपाणि) दृष्ट वा निरूपित पदार्थों

अथवा (रुद्र गतिरेषणयोः) सर्व सत्य विद्यार्यों की, (विभृतः) धारण करते [रखते] हुये, (परियन्ति) सब ओर [सर्वत्र] व्याप्त एवं प्राप्त हैं, (वाचस्पतिः) वेद वाणी का यथार्थ अधिपति [पूर्ण रक्षक] नित्य जगत्पुरु विभ्रान्त सर्वज्ञ परमात्मा, वा वेदज्ञ अध्यापक उपदेशक एवं वेद रक्षक विद्वान्, (तेषाम्) उन [ज्ञान कर्म उपासना] की, (बला) बलानि = शक्तियों [उनके जानने एवं उन पर चलने की शारीरिक मानसिक और आत्मिक सामर्थ्य और उस से उन के वास्तविक स्वरूप] को (अथ) वर्तमान काल वा इस जन्म में (मे) मुझ उपासक के (तन्वः) तनौ = शरीर [स्थूल-सूक्ष्म-कारण तीनों शरीरों के समुदाय इस प्रत्यक्ष] शरीर एवं मुझ आत्मा में, (दधातु) धारण करे ।

भावार्थ—यहां उपदेश है कि हे मनुष्यो ! वेद की तीनों विद्यार्यों [सात छन्दों वाली] जगत् के सर्व धार्मिक [शारीरिक] कर्मों और मानसिक आत्मिक [वास्तविक] सूक्ष्म विचारों वा क्रियायों एवं सर्व सत्य विद्याओं का आदि स्रोत वा मूलधार हैं । संसार के कोई भी धार्मिक [वास्तविक सुखप्रद] कर्म बिना ज्ञान कर्म और उपासना के पूरे नहीं हो सकते, और न कोई सत्य विद्या जगत् में ऐसी है जिस का मूल वेद में न हो । इसलिये तुम लोक यथार्थ संसार और परमार्थ सुख अर्थात् उभयत्र उभय प्रकार के मोक्ष प्राप्ति के लिये वेदज्ञ विद्वान् से वेदाध्ययन करके, योगाभ्यास करते हुये साक्षात् जगदाचार्य ज्ञान-स्वरूप ब्रह्म से वेद तत्त्वार्थ एवं तत्त्वस्वरूप अनुभूत [प्राप्त] करने जानने की परम पुरुषार्थ करो ।

अङ्क—(त्रिसप्ताः) का अर्थ करते सर्व जगत् सामवेत, ३ गुणों [सत्त्व रज तम], ३ कालों, ३ लोकों, ३ विद्यार्यों, ३ अवस्थाओं [सुषुप्ति रुद्र जागृति], ३ देहों, ३ धामों [कार्य कारण और उभयासङ्गत ब्रह्म] अथवा दैविक भौतिक और आत्मिक तीनों गुणों, के ये सात त्रिक माने जा सकते हैं. उन का सम्बन्ध भी सर्व जगत् से है, परन्तु (वाचस्पति) से प्रार्थना पूर्वक तीनों तत्त्वादि अथवा उत्तरोक्त सातों त्रिक [विद्या शून्य के लिये] युक्त नहीं हैं ।

(अथ० १ । १३ । १) हे जगदीश्वर ! (ते) आप की (विभ्रुते) विभ्रुताय, विभ्रुली के लिये (नमोऽस्तु) स्वरक्षा रूप सत्किया हो, वा वज्र हो । (ते) आप के (स्तनयिजत्रे) गरजते हुये बादल के लिये, (नमोऽस्तु) युक्त कर्म हो, ते अश्मने) आप के पाषाण [ओलों] के लिये, (नमोऽस्तु) समुचित

व्यवहार ही, (वैतन्त्र्यैः) जिन के द्वारा (दूडाशे=दूडाशम्) दुष्कर्मों मनुष्य को (अहमसि) बूझ करता वा लाड़ता है ।

भाव—परमेश्वर दुष्ट अधर्मियों को घोर आधिदैविक दंड रूप दुःख देता है अतः मनुष्य धर्मानुगामी हों । तथा विजुली से बचने के अनेक साधन सम्बन्ध हों, घरों में लोहे के छड़ आदि लगावें, और बादल एवं पत्थरों से बचने लिये भवन, छत्र आदि जाना पदार्थ बना कर प्रयुक्त करें ॥

(अथ० १ । ३० । ३) अन्तरिक्ष=अन्तः—ईक्ष=आत्मनि—ईक्ष्यते यः—
“या आत्मनि तिष्ठन्नात्मानमन्तरो—(अन्तर्यामी ब्रा० बृ० अ०)—“तमा-
त्मन् ईक्ष्यतेऽनुपश्यति”—कठ, “तस्मिन् हिरण्यये कोशे.....यद्यक्षमात्मन्वत्”
—अथ० १० । २ । ३२ ।

(अथ० २ । ३१ । १) क्रिमि=फैलने वाले रोग वा दोष ।

(अथ० २ । ३२ । १) गधि=शरीरे=शरीर में वा नेत्र में, (क्रिमयः) रोग वा शक्तियाँ ।

भाव—जहाँ इक्ष सन्त्र में प्रातः भ्रमण का विधान है, वहाँ उदय अस्त होने हुये सूर्य को अनुचित देखने का निषेध भी है, कुतः नेत्र ज्योति का हास होता है ।

(अथ० २ । ३२ । ४) (हतमाता) क्षमाहीन, (हतभ्राता) संयमहीन, (हतस्वला) दयाहीन । “धैर्ययस्य पिता क्षमा च जाति दया च भगिनी भ्राता मनःसंयमः” (क्रिमोणाम्) आक्रमण करने वालों का ।

भावार्थ—जिस आक्रमी में क्षमा, दया, धैर्य और संयम न हो उस का राजा, वह एवं अग्रगन्ता मारा जावे ।

(अथ० २ । ३२ । ५) (अस्य) चढ़ाई करनेवाले के (क्षुल्लुका इव) तुच्छ, चाटुकार, (क्रिमयः) चढ़ाई करने वाले ।

(अथ० २ । ३२ । ६) (शृङ्गे) दांत । भाव—दुष्ट वृषभ अपने सींगों से, वा दुष्ट सर्प अपने दांतों से ।

(अथ० २ । ३३ । ५) (ऊक्ष्म्याम्) कुक्ष्म्याम्=दोनों कोखों से ।

(अथ० ३ । १ । ४) (हरिभ्याम्) अग्नि और वायु से, ग्राहक होने से अग्नि और प्रापक होने से वायु ।

(अथ० ३ । १ । ५) (भ्राज्या) आग्नेय एवं वायवीय वाणों से वा वाणों से ।

(अथ० ३।३।३) (श्येनो भूत्वा आपत=) सर्व व्यापक होकर प्राप्त हो।

(अथ० ३।३।४) (श्येनः) सर्वव्यापक परमेश्वर (इमम्) इस [जीव] को (परस्मात्) सर्वोत्तम से (अन्यक्षेत्रे) भिन्न, अवर शरीर में (अपरुद्धम्) भोगार्थीन निरुद्ध वा रुका हुआ (चरन्तम्) भोगते हुये [को] (हव्यम् आनयतु) देय पदार्थ प्राप्त करावे वा आहवनीय [जीव] को अपनी ओर लावे। (अस्य) इस के (पन्थानम्) योग मार्ग को (अश्विनौ) प्राणापान (सुगम् कृणुताम्) सुलभ करें [हे अत्यन्तोपास्य पितः] (ते) आप के (सजाताः) समान चैतन-नित्य होने से साथी [आप को] (अभि-संविशध्वम्) सब ओर से प्राप्त हों। [योग में कहा है—ईश्वरप्राणिधा-नाद्वा, प्राणायामाद्वा]

(अथ० ३।३।५) (प्रतिजनाः)=नास्तिकमनुष्याः, (मित्राः)=आस्तिकाः, (अवृषत=वृषेत) दर्शन करें, (अदीधरन्)=धारण करें।

(अथ० ३।४।७) (दशमी) दशवीं इन्द्रिय [उपस्थ=मूत्रेन्द्रिय] को, (इह)=इस शरीर में

(अथ० ३।५।५।) (आ अरुक्षत्=अरोहते) सब ओर [सृष्टिद्वारा] प्रकट होता है—“कार्यात् कारणानुमानः”

(अथ० ३।६।६) (वानस्पत्यान्)=चाटुकारी राजनाशकों, (आरोहन्)=दबाकर, चढ़ाई करके।

(अथ० ३।१०।२, ३, ४) (संवत्सरस्य) कालस्य=काल की, (प्रतिमा) नापने वाली, (पत्नी) रक्षिका प्रकृति, प्रकृति काल को नापती है परमेश्वर को नहीं।

(अथ० ३।१८।१) (खनामि)=अत्यन्त यत्न वा समाधि से प्राप्त करता हूँ।

(अथ० ३।१९।३) (ब्रह्मणा)=ब्रह्मास्त्र से।

(अथ० ४।१।६) सोता हुआ सा=निष्क्रिय सा—जिन लोकों को रच दिया उनकी अपेक्षा सोता सा कहा है। अन्यथा वह सदैव कोई न कोई लोक रचता रहता है, क्योंकि महा लघु एवं अवान्तर तीन प्रलयें होती हैं [देखो—४ ब्रह्म बोधिनी वैदिक सन्ध्या]

(अथ० ४।२।२) (प्राणतः) श्वास लेते हुये ज्ञानवान् मनुष्यादि

जङ्गम , (निमिषतः) बाह्य ज्ञान हीन सुषुप्तेषु [गाढ़ी निद्रा में यावत् स्थूल शरीर सोते हुये] वृक्षादि स्थावर ।

(अथ० ४ । २ । ६, ८) (आपः) व्यापक द्रव पदार्थों [परमाणुओं] से, [तन्मात्रा अहङ्कार का कार्य होने से नित्य वा सृष्टि के पूर्व नहीं होते— सां० १ । ६१ देखो]

(अथ० ४ । ५ । २) (सर्वाः स्त्रियः) सब इन्द्रियां, (शुनः) अन्तःकरणों (मन आदि) को ।

(अथ० ४ । १० । ६) (रथे) जगति=जगत् में,

(अथ० ४ । १६ । ५) (जनानाम्) प्राणियों के—कुतो यदि परमेश्वर प्राणी मात्र के कर्म वा क्रियाओं को एवं उन के भोग मात्र को न गिन सकेगा तो वह व्यवस्थापक एवं ईश्वर भी सर्व प्राणियों का नहीं बन सकता ।

(अथ० ४ । १६ । ६) (असत्) अविदित = न जाने हुये, भू सत्तायां—मिन् भूमिः=प्रकृति, भूम्याः प्रकृत्या वा भूमेः=प्रकृतेः=प्रकृति से ।

(अथ० ४ । ३० । ४) (मया) मेरे साथ मुझे समर्थ करता हुआ, (विपश्यति) मन [इन्द्रिय] से देखता है, (प्राणति) जीवन सफल करता है ।

(अथ० ४ । ३० । ५) (ब्रह्मद्विषे) वेद निन्दक के लिये (धनुः) रोग (आतनोमि) फैलाता हूँ ।

(अथ० ४ । ३० । ७) (योनिः) संयोजन व्योजन शक्ति ।

(अथ० ४ । ३१ । १, २, ३, ४, ५, ६, ७) तथा (अथ० ४ । ३२ । १, २, ३, ४, ५, ६,) (मन्यो मन्यु) राजस ब्रह्म=शासन शक्ति, प्रताप वा ज्ञान युक्त [राजस] क्रोध । ईश्वर में तामस क्रोध का सर्वथा अभाव है, कुतः तमोगुण उत्तम मनुष्य के लिये भी दूषण है, फिर जगदीश्वर में तम [अन्धकार] कहाँ ॥

(अथ० ५ । १ । १) (यः) जो (ऋधङ्मन्त्रः) वृद्धिशील वा सत्य ज्ञान वाला, (अमृतासुः) निरालस्य वा नित्य क्रिया शील प्राण वाला (वर्धमानः) बढ़ता हुआ अर्थात् उन्नति शील (सुजन्मा) [मनुष्य शरीर पाने से] अच्छी प्रसिद्धि वाला (योनिम्) गर्भाशय को (आबभूव=आभवति) अच्छे प्रकार [बिना क्लेश के] प्राप्त होता है । उस (अदब्धासुः) अचूक वा त्रुटि हीन उत्तम बुद्धि वाले (अहा इव अहा इव) दिन के तुल्य (भ्राजमानः) प्रकाशमान वा ज्ञानवान् (धर्ता) सब योनियों के धारण करने वाले (त्रितः) [आत्म] रक्षा—वा [ईश्वर] आत्मा पालन—करने वाले, वा सब [बद्ध जीवों] से बड़े

वा जन्म नाम स्थानों को प्राप्त करने और तीनों से तरने वारे वा तीनों लोकों में जाने वाले, वा तीनों कालों में फैलने=रहने वारे वा तृतीय धाम नाम [कार्य कारण वा जीव प्रकृति से विलक्षण] ब्रह्म मात्र को प्राप्त करने वारे वा स्थूल सूक्ष्म एवं कारण तीनों देहों से [मुक्ति में] पार होने वारे वा ज्ञान कर्म उपासना त्रयी विद्या प्राप्त करने वारे [मुक्त पुनरावर्त्त] जीवात्मा ने (त्रीणि) तीनों [धामों अर्थात् जन्म नाम स्थान वा कारण सूक्ष्म और स्थूल देहों तथा तीनों विद्याओं] को (दाधार) धारित किया है वा करता है । “इह चैदशकद् बोद्धुं प्राक् शरीरस्य विस्मयः । ततः सर्गेषु लोकेषु शरीरत्वाय कलरते” कठ० ६।४। त्रेड् पालने यद्वा तू प्लवनतरणयोः—इतिन्, यद्वा त्रि+तनु विस्तारं—ड, वाता पालयिता तीर्णो विस्तीर्णः—देखो भाष्य ।

भावार्थ—जीवात्मा आत्म [अपनी] शक्तियों को विचारें जिस से सांसारिक और मोक्ष सुख को प्राप्त कर सकें—कर्मानुसार ही जीवात्मा सब योनियों एवं सब लोकों में जाता है, तीनों कालों में रहता है । कर्म की स्वतन्त्रता से आत्मरक्षक और भोग की परतन्त्रता से ईश्वर आज्ञा पालक है, मुक्त अवस्था में बद्ध जीवों से ज्येष्ठ, मुक्ति से लौटने पर जन्म नाम स्थान वा कारण सूक्ष्म और स्थूल तीनों देहों का धारण करने वाला, मुक्ति में तीनों से पृथक् वा पार हो जाने वाला और परमात्मदेश में रहने वाला है । मुक्ति से लौटने पर सर्गारम्भ में कर्म योनि पाने और पृथिवी माता से उत्पन्न होने से सुजन्मा वा अक्लिष्ट मनुष्य शरीर पाने वाला और साक्षात् ब्रह्म से त्रयी विद्या प्राप्त करने से अचूक बुद्धि वाला वा पूर्ण ज्ञानी कहा जाता है ।

(अथ० ५।१।२) (यः) जो (प्रथमः) [मनुष्य शरीरस्थ होने से] प्रख्यात वा प्रधान जीव, (धर्माणि) धारण योग्य धर्मों वा ईश्वर वदस्थ.ओं को (आ) कर्मानुसार (ससाद=सीदति) प्राप्त करता है (ततः) उस प्राप्ति कर्म से वा उन व्यवस्थाओं से वह (पुरुणि) अनेक (वपूंषि) रूपों वा योनियों एवं शरीरों को (कृणुषे=कृणुते) प्राप्त वा धारित करता है । वही (प्रथमः) [पूर्व भोग हीन कर्म शरीर पाने वाला होने से, भोग—वा उभय—योनिस्य जीवों में] प्रधान (धास्युः) [देह] धारण करने की इच्छा वाला जीव (योनिम्) कारण और सूक्ष्म देहों एवं पृथिवी के गर्भाशय में (आ) बिना क्लेश के (विवेश=विशति) प्रवेश करता है । (यः) जो मुक्त पुनरावर्त्त जीव (अनुदिताम्) अलौकिक वा लोक अप्रचलित वा अप्रकट (वाचम्) वेद वाणी को

(आ) साक्षात् आत्मस्थ ईश्वर से (चिकेत = चिकेति) जानता है । छन्दसि व्यत्ययो बहुलम् ॥

भावार्थ—मुक्ति से लौट कर जीवात्मा ईश्वर नियम से सृष्ट्यारम्भ में कर्म देह पृथिवी माता के उदर में बिना गर्भ दुःख के पाता है । उस के पश्चात् कर्मानुसार नाना योनियां धारित करता है । सम्यक् [पूरा] ज्ञान होजाने पर मुक्त हो जाता है । मुक्ति से लौट कर कारण और सूक्ष्म शरीरों को प्राप्त करके स्थूल देह प्राप्त करता हुआ वेद को प्राप्त करता है ॥

(अथ० ५ । १२ । ३) (स्वाहुता) मुमुक्षुता = मुमुक्षु के संग (मधुता) परमार्थ ज्ञान से (योधोः) मिलाया है ।

(अथ० ५ । ४ । ३) (देवसदनः) मुक्तों के प्राप्ति योग्य, (अश्वस्थः) अत्यन्त पुरुषार्थियों के ठहरने का देश, (देवाः) मुमुक्षुओं ने, सर्व विर्तनी = मुक्त ।

(अथ० ५ । १६ । १—५) (एकवृषः) एक वेद वा आत्मिक बल (द्विवृषः) दो वेद वा आत्मिक और शारीरिक बल, (त्रिवृषः) तीन वेद वा आत्मिक, शारीरिक और सामाजिक बल, (चतुर्वृषः) चार वेद वा आत्मिक शारीरिक सामाजिक और धनबल (पञ्चवृषः) आत्मिक, शारीरिक, सामाजिक, धनबल और सेनाबल ॥

(अथ० ५ । १७ । ६) (पूर्वं) पहले उत्पन्न हुए, [यत्र ऋषयः प्रथमजा ऋतः—अ० १० । ७ । १४] (सप्तऋषयः) = अपने से सम्बन्ध [परमान्धार्य परमेश्वर] को साक्षात् देखने एवं परमेश्वर से साक्षात् समवेत वेद पढ़ने वारे, अथवा [गायत्र्यादि मुख्य] सात छन्दों वाले [वेद] को साक्षात् करने वाले महर्षि लोक, (तपसा) बिना इन्द्रियों के भोग के, (निषेदुः) [पृथिवी माता के उदर अवकाश में] बैठे थे, [देवो—प्रथेयं पृथिवी मही भूतानां गर्भमादधे । पत्रा ते ध्रियवां गतोऽनुसृतुं सवितवे ॥ अथ० ६ । १७ । १] (जाया) प्रसिद्धि का द्वारा, (व्योमन्) वि—ओमति = विशेष अर्थात् उभय संसार और मोक्ष सुख प्राप्त कराने वारे जगदीश्वर के नियम में, वा संसार परमार्थ सुख दोनों के स्थान में, (दुर्धाम्) दुःखदायी दूष्ट रूप को, (दधति) धारित कर लेती है ।

भावार्थ—सर्गारम्भ में (देवाः) मुक्त पुनरावर्त्त सब से श्रेष्ठ कर्मयोनि पाने वारे जीवात्माओं ने [जित के शरीर पृथिवी गर्भस्थ होने से] पार्थिव रस द्वारा पलते रहने से जो लौकिक विषयों से विरत थे] साक्षात् ईश्वर से वेद प्राप्त करके अन्यो को ईश्वर उपदेश सुनाया कि ब्रह्म विद्या का निराद्व

करने से घोर दुःख होते हैं, अतएव सब को वेद का परम आदर करना चाहिये ।

(अ० ५ । १७ । ७) (जगत्) चलते फिरते मनुष्यादि प्राणियों का समूह (अपलुप्यते) [पशु समान अपितु इससे भी दुष्टतर कर्म करने से] दुर्दशा को प्राप्त होकर विनष्ट हो जाता है । और (ये) जो, (वीराः) शूर्मा लोक शत्रुओं को नष्ट कर स्वदेश की रक्षा, एवं राज्य वृद्धि करने हारे, [ईर्ष्या द्वेषादि में फँस कर] (मिथः) परस्पर एक दूसरे से, (तृह्यन्ते) लड़ कर कट मरते हैं ।

भाव—मनुष्यों के वेद न जानने से यज्ञ हवन नहीं हो सकते, यज्ञों के न होने से आकाश आदि पंच भूत प्राणियों के मलों से दूषित होकर रोगों के साधन दुष्ट अन्नादि पदार्थ, एवं स्वयं भी रोग उत्पत्ति का कारण बनते हैं, और उत्तम, सुखदायी अन्न तथा घास आदि पदार्थ नहीं उपजते । इस कारण सब प्राणी दुःखित होते एवं अनिष्ट मृत्यु पाते हैं ।

(अथ० ५ । १७ । ८) (उ३) वितर्क, क्या, (पूर्वं) अगुवा वा सर्गारम्भ में उत्पन्न हुये, (दश) पूरण संख्या वारे = गिनती भर = समस्त, (अब्राह्मणाः) वेद पढ़े देश एवं जाति रक्षक क्षत्रिय लोक, वेद जानने वारे धन धान्य वधर्क, शिल्पकार तथा पशु आदि पालने वाले वैश्य लोक अथवा मूर्ख वा शूद्र लोक (स्त्रियाः) शब्द रूपा वेद विद्या के, (यत्पतयः) [पतित्वाय यत्मानाः] पति होने का विद्या भिन्न यत्न करते हुये, वा लिप्सा मात्र रखते हुये रक्षक हो सकते हैं ? (च) अथवा, (ब्रह्मा) उपदेश से वेद प्रचार बढ़ाने वाले ब्राह्मण ने, (इत्) ही, (हस्तमग्रहीत्) सुदृढ़ प्रतिज्ञा से विधिवत् रक्षा करना अङ्गीकृत किया है, (स एव) वह ही, (एकधा) एक मात्र, (पतिः) यथार्थ रक्षक है ?

भावार्थ—इस मन्त्र में प्रश्न है कि क्या वेदज्ञ क्षत्रिय वैश्य स्व २ कर्म करने वारे अथवा मूर्ख समुदाय मात्र वेद रक्षा कर सकता है और उन ही सब की दी हुई व्यवस्था मान्या हो सकती है, अथवा वेद तत्त्वज्ञ वेद उपदेशक एवं अध्यापक ब्राह्मण [गृहस्थ वा संन्यासी] ही वेद रक्षक और धर्म व्यवस्थापक भी हो सकता है ? देखो—“एकेऽपि वेदविद्वर्ग्यं व्यवस्थेत् द्विजोत्तमः । सविज्ञेयः परमोधर्मो नाज्ञानामुदितोऽयुतैः ॥ मनु० १२ । ११३ ।

अङ्क—गिनती के अ केवल १ से ६+० [१०] तक हैं अर्थात् १ से १० तक वृद्धि होती है, पुनः ये ही अङ्क मिला २ कर कार्यवाही की जाती है । अतः दश का अर्थ संख्यान्त वा समस्त करना अयुक्त नहीं है ।

वारे को वेद रक्षक और व्यवस्थापक बताया है, इतरों को इसके विपरीत माना है, म० १० में म० ८+६ के अनुसार ही वेद तत्त्व से वेद प्रचार और अन्य क्षत्रियादि से यथायोग्य सहायता पहुंचना निश्चित किया है, म० ११ में उक्त प्रचार से ऐहिक [संसार] सुख, आमुष्मिक [परमार्थ] सुख की प्राप्ति का उपदेश है ॥

(अथ० ६ । १२ । २) (यत्) जो [ब्रह्म] (ऋषिभिः) ऋषियों ने [साक्षात् ब्रह्म से] (यत्) जो [वेद] (ब्रह्मभिः) [वेद जानने को समर्थ] अन्य ब्राह्मणों ने (देवैः) विजिगीषु [विजयच्छुक्] क्षत्रियों एवं व्यवहार [लेन देन आदि] कुशल वैश्यों ने [उन ऋषियों से] (यत्) जिस [त्रयी विद्या] को (पुरा) सृष्टि के आरम्भ में (विदितम्) जाना था, (विषम्) [विषयों के राग रूपी] विष को ।

भावार्थ—वेद सृष्ट्यारम्भ में ४ ऋषियों को ईश्वर से और उन से अन्य ब्राह्मणादि को मिलकर नित्य रहता है । उसी को जान कर मनुष्य अपने दोषों को दूर करें ॥

(अथ० ६ । १२ । ३) भावार्थ—ईश्वर उपदेश है कि हे मनुष्य यदि तेरे मुँह में शान्ति एवं तेरे हृदय [मन] में शान्ति [समता] हो तो नदी पहाड़ वस्ती वा जङ्गल सब सुख दायी हो जावें ।

(अथ० ६ । १६ । १) (आबयो) हे सर्वव्यापक, (अनाबयो) सर्वतो अव्याप्त वा सर्वजनक स्वयम्भू, (आबयो) सर्वतः कान्तिमान् ईश्वर, (ते) तेरा = आप का, (रसः उग्रः) आनन्द स्वरूप है, (ते कश्मभमद्यसि) तेरे विद्ये हुये अन्नादि को खाता हूँ ।

(अथ० ६ । १६ । ४) (अल...साला) अन्धेरे पदार्थों को प्रकाशित वा अभूषितों को [अज्ञानियों को] भूषित [ज्ञानी] वा आलसियों को समर्थ करने वाली प्रधान शक्ति है । परमाणु परमाणु को प्रकट करने वाली और सर्व ब्रह्माण्डों में निरन्तर व्यापिका होकर सब के सब ओर बाहर उतरी हुई अनन्ता है ।

(अथ० ६ । १७ । १) (भूतानाम्) प्राणियों का—पृथिवी स्वयं ५ भूतों के गर्भ में रहकर उन से बनती है । उसे ५ महाभूतों की गर्भधारिका कहना अरोचक है । भाव यह है कि जैसे अमैथुनी सृष्टि पृथिवी के गर्भ से हुई, ऐसे व हे त्वि गर्भ धारण करके प्रजा उत्पन्न कर ॥

(अथ० ६ । ६३ । १) (निष्कर्तः) अविद्या, (आयुषे) मुक्त जीवन के लिये, (वर्चसे) आत्म प्रकाश के लिये, (बलाय) आत्म बल के लिये, (अन्नम्) मोक्षानन्द को ।

(अथ० ६ । ६३ । २) (नमः) वज्र = तिरस्कार, (अयस्मयान्) लोह कण मोह कृत । (नमः) नमस्कार = उपासना ।

(अथ० ६ । १३८ । २०) (आण्ड्यौ) = पथरी ।

(अथ० ७ । ४ । १) भावार्थ—महाभूत = सूक्ष्म भूत । २२ योजनार्थ = १० इन्द्रिय + ५ प्राण + ४ अन्तःकरण [मन बुद्धि, चित्त, अहङ्कार] + कारण शरीर + स्थूल शरीर + १ जीव ।

(अथ० ७ । २६ । ७) (सूरयः) विद्वान् योगी लोक ।

(अथ० ७ । २८ । १) (दुघणः) उन्नति घातक, (वैदिः) रण भूमेः (परशुः) शत्रुघात, परशुः = पर वज्र ॥

(अथ० ७ । १११ । १) (देवानाम्) सत्य भाषियों का, (मनुष्याणाम्) सत्यासत्य मिश्रित भाषियों का ।

(अथ० ८ । १ । ६) (यमस्य) नियन्तुः परमेश्वरस्य = नियामक परमेश्वर के ।

(अथ० ८ । ३ । १६) (विषम्) दुग्ध = रस

(अथ० ८ । ६ । ३) (ऊरु) कोख—ऊर्णु आच्छादने इस धातु से उदरस्थ यन्त्र की ढकने वाली कुक्षी ।

(अथ० ८ । ७ । १५) (पुरुषाणाम् गवाम्) पुरुषों की इन्द्रियों का ।

(अथ० ८ । ६ । १८) [इन्द्रियां.....बुद्धि] बुद्धि = चित्त स्मृति कारण होने से विषय ग्राहक है बुद्धि नहीं ।

(अथ० ८ । ६ । २०) महाभूत = सूक्ष्म भूत, द्यौः वा प्रकाश = जल- [सत्यार्थ प्रकाश पृ० २४२ पकादश संस्करण देखो]

(अथ० ८ । १० (२) । ६) (बृहत्) सब से बड़ा ऋग्वेद, (रथन्तरम्) संसार के रथ पदार्थों से तारने वाला सामवेद, (यज्ञायज्ञियम्) सर्व यज्ञ हितकर वा उपयोगी यजुर्वेद, (वामदेव्यम्) वामदेव परमेश्वर से प्रकाशित अथर्ववेद ।

भावार्थ—(आकाश.....प० भूत) = ४ वेद ।

(अथ० ८ । १० (२) । ७) (देवाः) विद्वान् ऋषियों ने, (रथन्तरेण) रथ संसार से पार करने वाली बुद्धि से, (बृहता) ब्रह्माण्ड से, (आपः) चित्त अहङ्कार, बुद्धि आदि को ।

(अथ० ६ । १ । ११, १२, १३, १६) (मे आत्मनि) मुझ आत्मा में । मेरे आत्मा ऐसा कहना असंगत है क्योंकि उसका अन्तर्यामी ईश्वर होता है । अतः वक्ता आत्मा वा मुझ आत्मा में कहना चाहिये ।

(अथ० ६ । १ । १८) (पर्वतेषु) मुमुक्षुओं में, (गोषु) गौपालक वैश्यों में, (अश्वेषु) अश्वचार क्षत्रियों में ।

(अथ० ६ । ४ । १०) (ते आत्मा) तू आत्मा, (ते... आभृतः) = तुझे आत्मिक बल दिया है ।

अथ० ६ । ४ । ११) (ऋषभस्य) सर्वशिक्षक विद्वान् के ।

(अथ० ६ । ४ । १२) (अनुमत्याः पार्श्वे) बुद्धि की दो पसुली, (भगस्य अनुवृजौ) ऐश्वर्य की दो कोखें, (अष्टीवन्तौ मित्रः) दोनों जानु भाग मित्रता को, भाव यह है कि बुद्धि दोनों निचली कोखें [पसलियों] की अनुकूलता के समान, ईश्वर अनुकूल है, दोनों कोखों की ऐश्वर्य के तुल्य ऐश्वर्य और दोनों घुटनों की मैत्री की न्याई सर्वशिक्षक विद्वान् में मित्रता स्वाभाविक है ।

(अथ० ६ । ४ । १३) (भसत्) दीप्तिः, (श्रोणी) गत्या, गति शोधन का साधन,

(अथ० ६ । ५ । २७) (अपरम्) नियोजितं पतिम् (अन्यम्) विवाहितं पतिम् कुतोऽस्मिन् मनत्रे “न” अक्षरं विशेषतः पठितमस्ति यदपार्थक्य-साधकं वास्ति न तु नियोगे विहितैव समुचितपार्थक्यसाधकमस्ति । द्वितीये मन्त्रे पुनर्भवापतेः पूर्वविवाहितपतिना सह समानलोका उपदिष्टा भविति तदपि नियुक्तपतिना सह न युज्यते किन्तु सर्वथा वियुज्यते । अपरम् का अर्थ नियुक्त नहीं हो सकता किञ्च यह प्रकरण पुनर्भू वा पुनर्विवाह का है नियोग का नहीं ।

अथ० ६ । ६ (३) ७) (अतिथिः) नित्य बेरोक आने का अधिकारी यति, (श्रोत्रियः) वेद के गूढ़ मर्मों वा सूक्ष्म तत्त्वों का ज्ञाता ।

(अथ० ६ । ६ । १) (अस्य) इस (वामस्य) ग्रहणीय (पलितस्य) रक्षित जगत् का (होतः) [जीवों के भोगार्थ] देने वाला परमेश्वर सच्चिदानन्द है । (तस्य) उस का (मध्यमः) बीच का (भ्राता) सहकारी वा जगत्

रचने का कारण [सत्—चित्] जीतात्मा (अज्ञः) भोक्ता (अस्ति) है, (अस्मि) उस परमेश्वर का (तृतीयः) तीसरा [छोटा = सत् प्रकृति (भ्राता) सहयोगी [उपादान कारण—परमाणु समूह] (घृतपृष्ठः) आकाश स्वरूप ब्रह्म से व्याप्त है । (अत्र) इस प्राकृत] (कारण एवं कार्य) जगत् में (अपश्यम्) = वयं पश्यामः । हम देखने हैं (निष्पत्तिम्) प्रजाओं के पालन (सप्तपुत्रम्) सर्वव्याप्त जगत् के शोभक जगदीश्वर को ।

भावार्थ—सर्व जगत् तीन प्रकार के पदार्थों का समुदाय है । एक जड़ [ज्ञान हीन] प्रकृति [सत्त्व रज तम तीन प्रकार के परमाणु एक कारण, नाम धारी], जिस से रचे पदार्थों को भोगने वाले दूसरे जीवात्मा अल्पज्ञ हैं और तीसरा जगदीश्वर सर्वव्यापक अनन्त सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता आत्मकाम [अभोक्ता] अपने सम्बन्ध [व्याप्त] जगत् के पदार्थों का रक्षक एवं संशोधक [शुद्ध करने वाला] और कर्माध्यक्ष है ।

(अथ० ६।६।२) (अश्वः) अश्व रूप गमन शील जीवात्मा । यहां यास्कीय अर्थ [सूर्य के एक देशी सर्वत्र न जानने वाला और ऋतुओं के ६ होने से] युक्त नहीं हैं ।

(अथ० ६।६।४) (अनस्था) बिना शरीर वाला अर्थात् निराकार जीवात्मा । कुतः प्रकृति निराकार नहीं है । निराकार प्रकृति से साकार जगत् नहीं बन सकता “कारणगुणपूर्वकाः कार्यगुणा दृष्टाः” ।

भावार्थ—जीवात्मा एकदेशी और अणु स्वरूप है और संयोजक वियोजक विभू स्वरूप परमात्मा है, प्रकृति संयोज्य वियोज्य है । जड़ [ज्ञान हीन] में स्वतन्त्रता वा संयोजकता आदि नहीं घटते ।

(अथ० ६।६।८) (ऋते) क्रिया बती प्रकृति में वा द्रव महत्तत्त्व [ब्रह्माण्ड] में, अर्थात् प्रकृति द्रव [बहता] पदार्थ होता है, इसी लिये उसे अप आदि नाम दिये जाते हैं । जल पर्यन्त सर्व प्राकृत कार्य भी कारण गुण पूर्वक द्रव ही होते हैं ।

जल = व्याप्त प्रकृति को ब्रह्माण्ड रूप में उत्पन्न किया [रचा वा प्रकट किया—देखो भावार्थ “शन्नो देवी” मंत्र का ब्रह्म बोधिनी सन्ध्या में]

आदि कारण = ईश्वर निमित्त कारण है, प्रकृति [जगत् का आदि] उपादान कारण है । जड़ जगत् का आदि उपादान कारण चेतन ब्रह्म नहीं हो

सकता । [देखो “अस्य वामस्य” उपर्युक्त अर्थ एवं मन्त्र “द्वा सुपर्णा” और “त्रयाः सुपर्णा उपरस्य” आदि ।

(अथ० ६।६।२१) (सुपर्णाः) विद्वान् योगी लोक, (निविशन्ते) स्वरूप प्रतिष्ठित होकर अन्तर दृष्टि करते हैं । (सुवते) असंप्रज्ञात समाधि के पश्चात् उठते हैं ।

(अथ० ६।१०।१२) (पिता) गर्भस्थापक वा गर्भदाता (माता) शरीर बनाने में सहायिका ।

(अथ० ६।१०।१७) [पृथिवी जल तेज वायु आकाश के परमाणु] शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध के कण वा दाने, कुतः शब्दादि पूर्व हैं ।

(अथ० १०।१।३) (शूद्रकृता) शूद्र से की हुई, (राजकृता) क्षत्रिय से की हुई, (स्त्रीकृता) स्त्रियों से की हुई (ब्रह्मभिः कृता) ब्राह्मणों से की हुई वा वैश्यों से की हुई [हिंसाक्रिया] (कर्तारम्) हिंसक पुरुष को, (बन्धु) स्नेही वा बान्धने वारे के समान (ऋच्छतु) प्राप्त हो वा चली जावे (इव) जैसे (पत्या) पति करके [वा पत्नी से] (नुत्ता) अनुज्ञाता=आज्ञा दी गई वा निकाली हुई [वा अनुज्ञात अथवा निकाला हुआ] (जाया) पत्नी [वा पति] ।

भावार्थ—चारों वर्णों के किसी पुरुष वा स्त्री ने जैसा पाप वा अधर्म किया हो उसे वैसा दण्ड दिया जावे जैसे दुष्टा स्त्री को पति और दुष्ट पति को स्त्री बन्धन में डलवाता वा डलवाती है, अथवा जैसे अयोग्य पुरुष [पति] अपनी पत्नी को उसके स्नेही के पार्श्व भेज देता है एवं अयोग्या पत्नी अपने पति को उसकी स्नेहिनी स्त्री से नियुक्त कर देती है ।

(अथ० १०।२।७) (वरीवर्ति) निरन्तर उपस्थित वा व्यापक है ।

(अथ० १०।२।१३) (प्राण) बाहर जाने वाला परिश्वास, (अपान) आने वाला श्वास, इति महर्षि दयानन्द मतम् एवं (अथ० ६।१०।१६) ।

(अथ० १०।२।३१) (अष्टा चक्का) आठ बिद्युत् चक्र नाभि, हृदय, कण्ठ, त्रिबुक्, जिह्वाग्र, नासिकाग्र, त्रिवेणी [त्रिकुटी वा भ्रूमध्य] और रन्ध्र-स्थान [ब्रह्माण्ड वा ब्रह्म रन्ध्र] [मन और बुद्धि] पायूपसौ मल मूत्र इन्द्रिया—बुद्धि और मन छिद्र नहीं हैं ।

(अथ० १०।५।२) (क्षत्रयोगैः) दुःख भज्जन के ध्यानों [चिन्तन] से ।

(अथ० १०।६।५) (तस्मै) उस [संन्यासी] के किये (धृतम्)

उत्तम जल घृतादि गौरस (सुराम्) औषधियों का रस (अन्नम् अन्नम्)
नाना रस युक्त अन्न भांति भांति के (क्षदामहे) हम भेंट करें (सः) (मणिः)
वह वेद रत्न रूप वेद मर्म का ज्ञाता सर्वोत्तम प्रशंसनीय [यति] (पिता इव
पुत्रेभ्यः) पिता पुत्र वत् (भूयोभूयः) बारंबार (देवेभ्यः) [अपनी] इन्द्रियों
और अन्तःकरणों से (एत्थ) प्राप्त किये हुए ज्ञानों वा अनुभूत विचारों
को (श्रेयः श्रेयः) [जो हमारे लिये] एक से एक सुख प्रद हों (श्वः श्वः)
नित्य प्रति आये दिन आकर (चिकित्सतु) वैद्य की भांति बताया करें ।

(अथ० १० । ७ । २६) (पुराणम्) पहले वर्तमान कारण [प्रकृति
परमाणुओं] को—पुरा-अन् जीवने वर्तनै च—अच् ।

(अथ० १० । ७ । ३२) [जैसे जीवात्मा शरीर के... है] जैसे आकाश
[महाभूत] जगत् में सान्तर व्यापक है । जीवात्मा अणु है । एषोऽणुरात्मा
चेतसो वेदितव्यः [मुण्डक ५२] “वालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च ।
भागो जीवः स विज्ञेयः सच्चानन्त्याय कल्पते (श्वेताश्व० ५ । ६)

अथ० १० । ८ । १) (च च) वर्तमान और, (नमः) मेरी क्रिया मात्र हो ।
अर्थात् हम सब उस की आज्ञा में चल कर सुख भोगें ।

(अथ० १० । ८ । ३) (अर्कम् अभि) पूजनीय परमात्मा में सब ओर ।
ईश्वर अनन्त स्वरूप है उसके आस पास कहना नहीं बनता ।

(अथ० १० । ८ । ५) (एकजः) एकला गतिमान् ।

(अथ० १० । ८ । ६) (ऊर्ध्वबुध्नः) ऊपर को जड़ [चोटी] वाला ।

(अथ० १० । ८ । १२) (अनन्तम्) अवयव रहित = निरवयव एवं
नित्य । (अन्तवत्) सावयव एवं अनित्य । अन्त = अवयव = नाश । (पुरुषा)
बहुत प्रकार रक्षक (विततम्) । सर्वव्यापक ।

(अथ० १० । ८ । १५) (दूरे) अति दुर्ग्राह्य होता हुआ भी ।

(अथ० १० । ८ । १८) (याति) व्यापक है ।

(अथ० १० । ८ । २१) (भोग्यः चतुष्पाद् भूत्वा सर्वं भोजनमावृत्त)
जीवात्मा जरायुज अण्डज उद्भिज और स्वदेज चार प्रकार के उत्पत्ति द्वारों
से नाना योनियां धारित करके सर्व भोगों को प्राप्त करते हैं ।

भावार्थ—भण्डार है = भण्डार है वही जीवों को जरायुजादि चार द्वारों
से नाना भोग देता है ।

(अथ० १० । ८ । २४) (असंख्येयम्) = जिन की गिनती [गणना] मनुष्यों से नहीं हो सकती [उनके लिये अनावश्यक है] ।

भावार्थ—अनन्त = असंख्य = गणनातीत अर्थात् मनुष्यगणनातीत, क्योंकि परमेश्वर के सर्व प्राणी अर्थात् जीवात्मा मात्र गिने हुए हैं—“संख्याता अस्य निमिषो जनानाम्” [अथ० ४ । १६ । ५] ।

(अथ० १० । ८ । २५) (एकम्) एक अद्वितीय प्रकृति वा परमाणु समूह (बालात्) बाल वा केश से (अणीयस्कम्) अधिक सूक्ष्म है (उत) और (एकम्) स्वतन्त्र कर्ता [जीवात्मा] [न इव] नहीं के समान अर्थात् आकार रहित वा निराकार (दृश्यते) दीखता है, (ततः) उस निराकार से [भी अति सूक्ष्मतम] जो [परि = अभि] बाह्याभ्यन्तरतः = बाहर भीतर से (ध्वजीयसी) चिपटने वाली वा व्यापिका है । (सा) वह (देवता) मोक्षानन्द दाता [परमेश्वर] (मम) मेरा (प्रिया) हित साधक वा पूरा करने वाला है ।

भावार्थ—एक नाम स्वतः सिद्धा, एकली उपादान कारण और नित्या प्रकृति [सत्त्व रज तम तीन प्रकार के परमाणु]—देखो ब्रह्मबोधिनी सन्ध्या, जो सब से पतले बाल की नोक के ७२० वें भाग के बराबर कही जा सकती है और साकार है, दूसरे एक नाम स्वयम्भू जीवात्मा “न इव,, प्रकृति की अपेक्षा नहीं के तुल्य, बाल की नोक के दश सहस्रवें भाग = टुकड़े के सदृश निराकार वस्तु हैं, जो मनुष्य गणनातीत पर जगदीश्वर के गणनान्तर [गिने हुये] हैं, उसी निराकार जीव से सूक्ष्मतम [अत्यन्त पतला] परमात्मा सर्व जीवों को अभि व्याप्त करके सर्वव्यापक जगत्कर्त्ता जीवात्माओं का आचार्य पथ दर्शक, कर्म फल दाता और मोक्षानन्द अनुभावित होने से जीवों का सत्पिता एवं अत्यन्त हितैषी है ।

(अथ० १० । ८ । २४) (देवाः) सत्यवादी उत्तम पुरुष, (मनुष्याः) सत्यासत्य मिश्रितवादी मध्यम पुरुष (अपाम्) परमाणुओं के, (पुष्पम्) कार्यम् = बने को

(अथ० १० । ८ । ४०) (अप्सु) कारण शरीरों में, (मातरिश्वा) जीवात्मा, (प्रविष्टः आसीत् = आसन्) प्रविष्ट थे, (देवाः) बुद्धि आदि अन्तःकरण चारों और दशों इन्द्रियां आदि, (सलिलानि) सलिले = प्रकृति में, (प्रविष्टाः आसन्) = घुसी [मिली] हुई थीं [तद्रूप होकर लय हो गई थीं] ।

भावार्थ—प्रलय के समय सर्व दिव्य पदार्थ जिन सत्त्व रज तम से बने थे,

उन के ऊपर के होकर उनहीं में [अर्थात् जो जगत् रचना से बचे पृथक् रखे थे उनमें] मिल गये थे । और बद्ध जीवात्मा एक एक परमाणु [कारण शरीर] में सुषुप्ति की अवस्था में होगये थे, केवल एक परमात्मा एक रस ठहरा हुआ था ॥

(अथ० १० । ६ । २१) (ऊरु) कोखें, (अष्टीवन्तौ) कूले कटि के नीचे की हड्डियां ।

(अथ० १० । १० । १) (नमः) आज्ञा पालन करें [देखो-ब्रह्म बोधिनी वैदिक सन्ध्या]

(अथ० १० । १० । २) (वशा) स्वयम्भवा क्योंकि अनादि हैं, जड़ और ईश्वर आधीन होने से स्वाधीन नहीं हैं । जब कि अल्पज्ञ पराधीन होता है तब सर्वथा ज्ञान हीन की गणना ही क्या ।

(अथ० ११ । १ । ५) (देवानाम्) ब्राह्मणों का (पितॄणाम्) श्रद्धियों का, (मर्त्यानाम्) मनुष्यों का [पशु आदि पालन और वणिक् कर्ताओं] वैश्य लोगों का ।

(अथ० ११ । १ । १६) (पञ्चदशः) पन्द्रह कला—५ महाभूत, [आकाश, वायु अग्नि, जल पृथिवी] ६ मुख्य प्राण ७ बुद्धि ८ मन ९ दशों ज्ञान कर्मेन्द्रियां, १० सूक्ष्म शरीर ११ स्थूल शरीर १२ अन्न १३ वीर्य १४ ज्ञान वा मन्त्र १५ नाम वाला जीवात्मा, [प्रश्न० ६ । ४]

(अथ० ११ । ३ । १) (तस्यैव नस्य) उस सुख स्नायक परमेश्वर का (शिरः) मस्तिष्क अर्थात् मस्तिष्क से कार्य लेने वाला उपासक ज्ञानी, (गृहस्पतिः) बड़ों का स्वामी वा वेद वाणी का रक्षक, और (मुखम्) मुख से कार्य करना वा उपदेशक, (ब्रह्म) महान् वा पूज्य [होजाता है] ।

भावार्थ—जगदीश्वर का ध्यान करने वाला अर्थात् आत्मस्थ हो ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव का वेद द्वारा चिन्तन करके धारण करने वाला, गृह, प्रास, नगर, प्रान्त, देश एवं लोक गुरु तथा शासक वेद का रक्षक और पूज्य यथायोग्य बनता है । ध्यान हीन अर्थापत्तिमाण से वेद निन्दक और इस लिये निम्न, सेवक, प्रजा एवं सर्वत्र तिरस्कृत होता है । ध्यान विधि और ईश्वर के गुण धारण करने के प्रकार के लिये ब्रह्म बोधिनी [वैदिक] सन्ध्या देखो ।

(अथ० ११ । ४ । १) जब कि इस मन्त्र में प्राण के लिये ईश्वर शब्द का स्पष्ट प्रयोग है फिर प्रश्नोपनिषद् की क्या प्रमाणता । क्या कभी जड़ पदार्थ

प्राण वायु भी ईश्वर हो सकता है । वह तो ऐश्वर्य ही हो सकता है । ईश्वरत्व तो केवल चेतन में घटता है । पुनः म० १२ देखो ।

(अथ० ११ । ६ । २२) (द्वादश) बारह नाम बुद्धि सहित ११ इन्द्रियां वा बारह मास, (संवत्सरस्य) नियम से जिस में रहते हैं उस शरीर के अथवा काल (वर्ष) के ।

(अथ० ११ । ६ । १३) (मातली) इन्द्र [जीव] की ग्रहण शक्ति ।

भाषार्थ—जड़ मनः [अन्तः करण अन्तरिन्द्रिय] द्वारा जड़ [प्राकृत] पदार्थों का ही अनुभव हो सकता है अप्राकृत ईश्वर गुण आनन्द का नहीं, वह तो केवल आत्म अनुभव शक्ति वा मन शक्ति से ही अनुभूत हो सकता है । मोक्ष में जड़ पदार्थों का जीवात्मा से सर्वतः सर्वथा पार्थक्य हो जाता है । जैसा प्रमाणों से सिद्ध है “गताः कलाः पञ्चदशः प्रतिष्ठा देवाश्च सर्वे प्रतिदेवतासु [मुण्डक० ६]” कस्य नूनं कतमस्यामृतानां को नो मह्या अदितये पुनर्दात् [ऋग् १ । २४ । १]

(अथ० ११ । ७ । २७) (देवाः) ब्राह्मणाः = वेदज्ञ ब्राह्मण (पितरः) क्षत्रिय (मनुष्याः) वैश्य क्योंकि ये तीन ही क्रम से धर्म देश [राज्य] और धन आदि के रक्षार्थ आकाश [अन्तरिक्ष] और भूमि पर जाया करते हैं ।

(अथ० ११ । ८ । २) (च च) ज्ञान और (आस्ताम् = आसन्) थे [३]

(अथ० ११ । ८ । ४) उदान = कण्ठस्थ शिर में क्रिया करने वाला वायु,

(अथ० ११ । ८ । ६) [च च] ज्ञान और (आस्ताम् = आसन्) तीनों थे ।

(अथ० ११ । ८ । ८) (इन्द्रात्) सर्व ऐश्वर्यवान् से, (इन्द्र) भोग्य पदार्थ साधन मेघ वा विद्युत्, (सोमात्) सर्व जड़ चेतन के प्रेरक परमेश्वर से, (सोमः) सर्व जड़ प्रेरक वायु (अग्नेः) सर्व प्रकाशक जगदीश्वर से (अग्निः) आग (अजायत) उत्पन्न कियी गई । (त्वष्टुः) सब से अधिक सूक्ष्म स्वरूप सूक्ष्म रचक से (त्वष्टा) सूक्ष्म शरीर का कारण महत्त्व एवं अहङ्कार (ह) निःसन्देह (जज्ञे) प्रकाशित किया गया और (धातुः) सर्वाधार परमेश्वर से (धाता) धारण करने वाला [आकाश] (अजायत) उत्पन्न किया गया है । भाव यह है कि सत्त्व रज तम तीनों द्रव्यों से [जिनका गौणिक नाम प्रकृति और स्वारूपिक नाम परमाणु है] सृष्टि कर्ता ने पूर्व सृष्टि के समान ही सब पदार्थ रचे ।

(अथ० ११ । ८ । १८) (यदा) यत् + आ = यतः समन्तात् = क्योंकि सब ओर से ।

भावार्थ—जब = क्योंकि, तब = इस लिये ।

(अथ० ११ । १० । ६) (चतुष्पदी) हस्ति, अश्व, उष्ट्र और खच्चर आदि ।

(अथ० १२ । १ । १) (ब्रह्म यज्ञ) वीर्य निग्रह पूर्वक वेद को नेत्रों से देखते हुये पढ़ना, और पठित अर्थ को ब्रह्म मुहूर्त्त में बुद्धि से मनन करना, पुनः अध्यात्म तत्त्व को निदिध्यसिते करके वैसे ही आत्म प्रत्यक्ष करना जैसे मनन से अन्य पदार्थ बुद्धि प्रत्यक्ष वा स्पष्ट निश्चित किये थे ।

(अथ० १२ । १ । १५) (मर्त्याः) मरणशीलेभ्यः = मरने वाले स्थावर जङ्गम, (मानवाः) [मनु इच्छायाम्—अण्] भोगेच्छा युक्त प्राणिमात्र [मनुष्य से वृक्ष पर्यन्त] (येम्यः मर्तेभ्यः) जिन मरण धर्मी प्राणि मात्र के लिये, किञ्च पृथ्वी पर सब प्राणि उत्पन्न होते रहते और ईश्वर की सन्तान हैं ।

(अथ० १२ । १ । २६) (अकरम्) सोंपा है—आपुं कोश ।

(अथ० १२ । १ । ६१) प्राणियों की = प्राणियों के देहों की । कुतः अन्नादि से देह पलते हैं नकि प्राणी प्राण वाला चेतन ।

(अथ० १२ । २ । ४४) (देवानाम्) परोक्ष प्रिय सत्यवादी उपासकों का (अन्तर्धिः) भीतर धारण करने वाला, (मनुष्याणाम्) प्रत्यक्ष प्रिय मिश्रित सत्यासत्य भाषी प्राणियों का (परिधिः) सब ओर बाहर से धारण करने वाला, (गार्हिपत्यः) [उन दोनों के गृह नाम शरीर रक्षकों [जीवात्म्यों] से संयुक्त वा संवेत, (अग्निः) सर्व व्यापक ज्ञान स्वरूप जगदीश्वर (उभयान् अन्तरा) दोनों देव मनुष्यों के भीतर (श्रितः) ठहरा है ।

(अथ० १३ । १ । ६) (एकपादः) एक अवयव निरवयव ।

(अथ० १३ । १ । ११) (तृतीये) [अपने] गुण स्वभाव से भिन्न (रजसि) क्रिया वा कर्म क्षेत्र में ।

(अथ० १३ । १ । ४५) (एकचक्षुः) समदर्शी

(अथ० १४ । १ । १) लोक दो प्रकार के हैं = लोक तीन प्रकार के हैं ।

[देखो अथ० १३ । २ । २७ और ब्रह्म बोधनी सन्ध्या]

(अथ० १४ । १ । ५४) (पतिलोके) पति के कुल वा परिवार में ।

(अथ० १४ । २ । ३) जाया कस्मात् पिता वै जायते पुत्रः यस्यां [अत्मा वै पुत्रनामासि] सा पत्नी.....जाया का अर्थ पत्नी उाणादि कोश० ४ । १११ में भी उपलब्ध होता है । पतिर्भार्या' संप्रविश्य गर्भो भूत्वेह जायते, मनु० ६ । ८ । पतिर्जायां प्रविशति गर्भो भूत्वेह मातरम् बभूव ब्राह्मण । माता कही नहीं । उक्त "उत्पत्ति स्थान" का अर्थ माता असंगत है और तत्रस्थ नियोग परक अर्थ ही युक्त है ।

(अथ० १८ । २ । ५०) (दिवि) आत्म प्रकाश में, ज्ञान नेत्र से = आत्म दृष्टि से [आत्म दर्शन शक्ति से] एष हि द्रष्टा.....(प्रश्न० उ० ४ । ६) "वयं पश्यन्तः" (य० ३५ । ४)

(अथ० १८ । ३ । २) (जीवलोकम्) = जीवित पुरुषों को [सजीव शरीरों को]

(अथ० १८ । ३ । ४) (जीवलोकम्) = जीवित पति के शरीर को (प्रजानती) = सेवती हुई ।

(अथ० १८ । ३ । ६५) (अन्तात्) समीप से ।

(अथ० १८ । ३ । ७२) (तेभ्यो) तैः = (धृतस्य कुल्या शतधारा व्युन्दती पशु) = उन से ज्ञान का प्रचार अनेक विधि से होवे, अथवा उन की प्रसिद्धि वा नाम के लिये नाना प्रकार संस्कृत पाठशाला, गुरुकुल, आदि से वेद प्रचार आदि के द्वारा ज्ञान का प्रकाश [प्रचार] पक्षपात छोड़ कर करावें जैसे [जल जल की नालियों में बहता, और उन से उमड़ कर उन के बाहर गिरता हुआ अपने तथा अन्यो के क्षेत्रों में भी पहुंचता है, ऐसी ही जाति, धर्म और देश का पक्षपात तज कर विद्या का प्रचार करावें ।

(अथ० १८ । ४ । ५१) (जीवम्) इस जीव अर्थात् अपने को [आत्मा को] 'अपने' और "आत्मा" सम्बन्धक और सम्बन्धित, ये दो पद दो अर्थ चारे, सम्बन्ध कारक नहीं हैं । आप नाम सम्बोधित, एवं वक्ता आत्मा ही हैं, जड़ शरीर नहीं, यह मिथ्या [तामस] अहङ्कार त्याज्य है, (आरोह) बैठ ।

(अथ० १८ । ४ । ६७) (लोकाः) पुरुषाः, लोक का प्राकृत [बिगड़ा] रूप लोग है ।

(अथ० १८ । ४ । ७६) अन्तरिक्ष = आकाश (भूत)

(अथ० १६ । ६ । १ (विशतश्चक्षुः) सब ओर से एवं सब स्थानों से दर्शन करने वाला वा दिखाई देने वाला,—मुख उपदेश करने वाला,—बाहुः = बल किया वाला,—पात् = गति, वा दर्शन, वचन, ग्रहण, गमन वा प्रापण शक्ति वाला ।

(अथ० १६ । ६ । ५) (पुरुषः) सृष्टि रचन, धारण, एवं संहरण सामर्थ्य से पूर्ण [युक्त] सर्वत्र व्यापक जगत् कर्ता, (अस्य) पुरुष की सृष्टि का, (मुखम्) = मुख्य पदार्थ [शिरः सम] (बाहु) भुजाओं (बल पराक्रम) के तुल्य, (ऊरु) [ऊर्णुञ् आच्छादने इस धातु से ऊरु पद बनता है] = कोखें वा कुक्षियें ।

भावार्थ—जिस भांति कुक्षियें अपने अन्तरस्थ यन्त्र द्वारा अन्न आदि पदार्थों का ग्रहण, पाचन, रसादि धातु भावन [बनाना] करके सर्व धातुवै शिर, भुजाओं और पादों (जङ्घा + पैरों) को पहुंचाती हैं, वैसे ही वैश्य लोक धन धान्य रसादि सर्व भोग्य पदार्थों की प्राप्ति, रक्षा, वृद्धि आदि करके ब्राह्मण क्षत्रिय और शूद्रों को यथा योग्य एवं राज नियम से पहुंचाते हैं यह सनातन धर्म है ।

अत एव ऊरु का अर्थ जङ्घा अयुक्त है । जङ्घाओं में जब [वेग] भार वाहन से युक्त है इस लिये शूद्र स्थानी जङ्घा और पाद (पद) हैं । पद गतौ से पाद बनता है । गमन जङ्घा [टांगों] से होता है, पाँव मात्र से नहीं अतः पाद = जङ्घा + पाँव, नकि पाद मात्र से गमन वा भार वाहन सम्भव है । देखो—ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः पादयोः प्रतिष्ठा—अथ० १६ । ६० । २ । ऊरु और जङ्घाओं में भेद स्पष्ट दिखाया है । ओज जैसे पदार्थ की मुख्य वा विशेष आवश्यकता कुक्षिस्थ यन्त्र में है । जहां शरीर स्थिति का एक मात्र साधन रसादि बनाये जाते हैं न कि जङ्घाओं में जो केवल चलन साधिका हैं, जब ऊरुनाम कुक्षीस्थ यन्त्र [उदर] में पाचन शक्ति अर्थात् रसादि बनाने की सामर्थ्य नहीं रहती, तब शिरादि को रसादि न पहुंचने से न शिर रहता [कार्य करता] है न बाहु बाहुओं का कार्य करते हैं और न पाँव [जङ्घा] पैरों का ऐसे ही जब जङ्घा सदृश वैश्य निज गुण हीन होगा तब ब्राह्मणादि को भोग्य पदार्थ न पहुंचने से वे निज कार्य यथाविधि न कर सकेंगे और आज कल्य की भांति स्वकर्म त्यागकर, परकर्म [अर्थात् ब्राह्मण सेवा, कृषि गो आदि पशुपालन वणिक्, भूमि रक्षा, क्षत्रिय सेवा कृषि आदि, वैश्य सेवा, अध्यापन भूमिरक्षा,

तथा शूद्र ब्राह्मण क्षत्रियादि के कर्म] ग्रहण करते हुए “स्वकर्मणां च त्यागेन आयन्ते वर्णसंकराः,, इस मानवोक्ति को चरितार्थ करेंगे । मनु० १० । २४)

(अथ० १६ । ६ । ६) (मध्यम्) उदर कुक्षियों से आवर्त [मन्त्र ५ देखिये] .

(अथ० १६ । ६ । ७) (मनसः) शरीरान्तरस्थ मन के समान ब्रह्माण्ड के मध्यस्थ रज तम बाहुल्य कृत सृष्टिका विशिष्ट पञ्च भूतों से, (चक्षोः) शरीर बाह्यस्थ नेत्रों के समान विराट् के बाह्यस्थ सत्त्व विशिष्ट कृत अग्नि प्रधान पञ्च भूतों से सूर्य, (मुखात्) अति अधिक मुख्य रूप [तन्मात्र] से दिव्य अग्नि बिजुली एवं आकाश वायु में अधिक रूप मिलाकर सामान्य अग्नि [आग] (प्राणात्) शरीरस्थ चालक प्राण के सदृश महत्तत्त्वस्थ रज बाहुल्य कृत, स्पर्श विशिष्ट पदार्थ से वायुः ।

भाव यह है कि विराट् प्रकाशित ब्रह्माण्ड = अण्डाकार प्रकाशित महत्तत्त्व में सत् कृत महत्तत्त्व शरीर की त्वचा वत् बाहर को रखाया गया, राजस तामस [केवल रज का बना वा केवल तम का] महत्तत्त्व अग्रन्तर रखा जिस से वह [महत्तत्त्व] सब ओर से चमकता था, उस महत्त्व से सात्विक [सत् विशिष्ट] अहङ्कार बना, उससे शब्दादिक ५ तन्मात्रायें, तन्मात्राओं के सात्विक अंश से सत् विशिष्ट आकाशादि ४ महाभूत और तम अतिबाहुल्य युत अंश से पृथिवी पञ्चम महा भूत । ब्रह्माण्ड को शरीर से उपमित करके बताया है कि हे मनुष्यो ! तुम्हारे मन स्थानी महत्तत्त्व के भीतरी रज तम अधिक से परम्परा से बनी अधिक मट्टी युक्त ५ महाभूतों से चन्द्रमा बना है, ऐसे ही नेत्र स्थानी बाह्य सात्विक महत्तत्त्व कृत अग्न्याधिक्य ५ महा भूतों से सूर्य, अधिक सत् युक्त मुख्य रूप से बिजुली एवमेव बिजुली से कुछ न्यून सात्विक रूप अधिक युक्त आकाश आदि से अग्नि । ऐसे ही राजस महत्तत्त्व से परम्परा से राजस आकाश और राजस स्पर्श मिला के वायु ।

(अथ० १६ । ६ । १०) वसन्त में घृत, ग्रीष्म में इन्धन और शरद ऋतु में होम योग्य ओषधियां अच्छी होती हैं, अतः देवयज्ञ के मर्मज्ञ इन वस्तुओं को इन ऋतुओं में वर्ष भर के लिये प्राप्त करके सुरक्षित रखें । इन्ही ऋतुओं में ये पदार्थ उत्तम होने से तीन ही का वर्णन है शेष तीन वा सर्व ऋतुओं का प्रकरण यहां नहीं है । अन्य पदार्थों का प्रकरण है । अतः केवल ३ ऋतु वर्ष के यहां न मानने चाहिये ।

(अथ० १६।६।१५) (पशुम्) प्रकृति को, (अबध्नन्) निश्चित किया अर्थात् अपने से भिन्न एक परमात्मा और जड़ प्रकृति का निश्चय किया ।

भाव यह है कि ऋषियों ने संप्रज्ञात समाधि के उत्तर अङ्ग वैचारिक में केवल कारण शरीरस्थ हो कर परमाणु नाम जड़ प्रकृति की सत्ता एवं स्वरूप का निश्चय किया और असम्प्रज्ञात समाधि में आत्माश्रित वा परमात्म स्वरूप-स्थ हो कर आत्म परमात्म स्वरूप का साक्षात् दर्शन एवं निर्णय किया है ।

(अथ० १६।६।११) ८ वसुवों में प्रकाश, के स्थान में 'जल, युक्त प्रतीत होता है । किन्तु वसु पद वास दाता वा वास स्थान वाचक है, जल में जलचर जीव रहते हैं, जैसे अन्तरिक्ष आकाश में तद्वासी । किन्तु प्रकाश का स्थान अन्तरिक्ष से बाहर कहीं नहीं है । जिससे उसकी वसुवों में गणना उतनी युक्त हो जितनी जलकी । मर्यादादेवोत्तम महर्षिदयानन्द स्वयमेव प्रकाश संस्करण सत्यार्थ प्रकाश के ८ समुल्लास के पृ० २४२ पर जल और आकाश दोनों महाभूतों को वसुवों में गिनते हैं यह उनका निज का मत प्रतीत होता है ।

(अथ० १६।२३।१३) तप सूक्ष्म शरीर [तपो अधिष्ठान] कर्म लोक = चेष्टा [क्रिया] आश्रय स्थूल शरीर ।

(अथ० १६।२३।१४) (सप्तदशर्चेभ्यः) ८ सिद्धि + ६ ऋद्धि ।

(अथ० १६।३६।२) (शृङ्गाभ्याम्) पत्तों से (मध्येन) दण्डल से ।

(अथ० १६।३८।२) गन्धक्रिया जाता है = हवन किया जाता है ।

(अथ० १६।५१।१) (अहम्) मैं [जीवात्मा] (मे आत्मा) मेरा अन्तर्यामी अत्मा नाम परमात्मा, कुतः दोनों स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर अपितु कारण शरीर [एकपरमाणु] ये तीनों जड़ हैं इनमें भाषण शक्ति जो चेतन [ज्ञानी] का गुण है नहीं हो सकती और न है । अहं पद का वक्ता चेतन आत्मा ही है । उसका [अन्तर्यामी] आत्मा परमात्मा ही हो सकता है और वह ही है । अन्य नहीं । जैसा कि "य अत्मानि तिष्ठन्नात्मानमन्तरो—वृ० उ० माध्या० शाखा । एवं "तमात्मस्थं,—ऊठ० ५। १२ "तस्मिन् हिरण्यये कोशे अरे त्रिप्रतिष्ठते । तस्मिन् यद् यक्षमात्मन्वत् तद् वै ब्रह्मविदो विदुः । अथ० १०।२।३१ ।

(अथ० १६।५६।१) (यमस्य) नियामकस्य = नियम में चलाने वाले [परमेश्वर के] (लोकात्) लोक दर्शने = दर्शनात् दर्शन होने पर; अथवा यमस्य = जीवके [देखो अथ० ८।१० (४)।६] लोकात् = दृश्यमान स्थूल शरीर

[शव] से, (अधि) अधिकार पूर्वक अर्थात् [देखे सुने वा भोगे पदार्थों के चित्रवत् वा किये कराये कर्मों क्रियाओं और भोगे भोगों के संस्कार रूप] मनाश्रित होकर (आबभूविथ) [स्वप्न] आया है, (धीरः) स्थिर = अविचलित न डिगमिगाने वारा (प्रमदा) प्रमाद के संग (मर्त्यान्) मरण धर्मियों वा आलसियों को, (प्रयुनक्षि) = प्रयुनक्ति = विशेष रूप से [हृदयस्थ हो कर] काम में लगाता है, पूर्व देखे सुने आदि पदार्थों के दर्शनादिमें आसक्त करता है, (असुरस्य योनौ) प्राणरक्षक वा उदर पूरक जीब के शरीर में वा अन्तःकरण में, (स्वप्नम्) आलस्य, (मिमानः) करता हुआ, (विद्वान्) चैतन्य ज्ञानवान्, (एकाकिना) असंगी [सम्बन्धी जनों से वियुक्त] एकले जीव के सार्थ (सरथम्) एक रथ [अन्तःकरण वा कारण शरीर] में, (यासि) = याति, चलता है ।

भावार्थ—जब सर्वनियन्ता जगदीश्वर जीव को उस के स्थूल शरीर से [सृष्टि काल में] वा स्थूल सूक्ष्म दोनों शरीरों से [प्रलय काल में] पृथक् करने को [जीवापेक्ष्य] साक्षात् रूप से उद्यत होता है और जीव उसके दिये देह से अलग होने लगता है । उस समय उसके क्रिया, कर्म और भोग का अभ्यास स्थूल संस्कार रूप, और उनके सम्बन्धी सर्वपदार्थ चित्र रूप से उस के सूक्ष्म शरीर में, वा सूक्ष्म रूप से कारण शरीर में आश्रय पाकर उसके संग दूसरे स्थूल देह वा स्थूल और सूक्ष्म दोनों देहों को प्राप्त होते [पहुँचते] हैं । पत्र पर से चित्र के के समान, अन्तःकरणों से नहीं हटते । आलसी प्रमादी, बहुत खाने वाले बहुत सोने वाले तामसी प्राणी बहुत स्वप्न देखते हैं । सब पदार्थों के मानसिक चित्रों का [जो निद्रावस्था में दीखते हैं अथवा जागृतावस्था में भी जिन के श्रवण दर्शनादि अपितु स्मृति मात्र से हर्ष भय शोक आदि होते हैं] का सामूहिक नाम स्वप्न है । एवं जिस अवस्था में वे मानसिक चित्र दीखते हैं उस का नाम भी स्वप्न है ।

अङ्ग—सृष्टि काल में स्थूल शरीर नष्ट होता है । सूक्ष्म और कारण शरीर रहते हैं । प्रलय में सूक्ष्म भी नष्ट होता है केवल कारण रहता है ।

(अथ० १६ । ५६ । २) [हे स्वप्न !] (त्या) = तं, उस स्वप्न को, (रात्र्याः) लघु रात्रि वा महा रात्रि वा रात्रि के अन्धकार सम मृत्यु अन्धकार के (जनितोः) होने से (अग्रे) आगे, (एके अङ्गि) केवल दिन (कार्यकाल वा

जीवन समय में] छिपाता हुआ तू=छिपाता हुआ, (इदम्) यह स्वप्न, (अधि) अन्तः करणों में स्थित होकर पूर्ण स्थिरता से, (आ) सर्वत्र [जगत् में] (बभूविथ) व्यापा है।

भाव यह है कि जो क्रिया कर्म और भोगों के संस्कार वा तत्त्वस्वन्धी पदार्थों के चित्र मन चित्त एवं अहङ्कार में कार्यकाल में वा जीवन समय में आश्रय लेते हैं वे चिर काल पर्यन्त जीव के साथ रहते हैं, अर्थात् जैसे दिन [जाग्रतावस्था] के संस्कार रात्रि [स्वप्न अवस्था] में रहते हैं वैसे ही जीवन काल के संस्कार वा उपर्युक्त चित्र अन्य जन्म में जाते हैं। परन्तु प्रलयावस्था में सूक्ष्म शरीरों के नाश से वे संस्कार और चित्र अति सूक्ष्म रूप से कारण शरीर में और उन्नत ज्ञान आत्मा में सूक्ष्मरूप में रहता है, तदनुसार पूर्ण ज्ञानी सृष्टि कर्ता यथावत् प्रबन्धक जगदीश्वर उनके अन्तः करणों में वैसे ही संस्कार आदि उपस्थित करदेता हैं। अतः वे संस्कार आदि वैद्यक [स्थूल दर्शन] विद्या की पहुँच के बाहर हैं। अत एव कर्माधिकारी जीवात्माओं को चाहिये कि आलस्य, प्रमाद, छल, कपट चोरो जारी अन्याय आदिआदि अधर्मों को त्याग कर शुभ वैदिक कर्मों को करें जिस से उक्त संस्कार एवं दुःख से बचकर इस लोक [इस शरीर] और द्वितीय शरीर में संसार सुख और मोक्षानन्द को प्राप्त करें।

(अथ० १६।१६।३) (बृहद्गाथा) महती प्राप्तियुत [स्वप्न विद्या] (महिमानम् इच्छन्) अपनी वृद्धि एवं प्रचार के अर्थ, अथवा स्वप्न [गाढ़ निद्रा] प्राकृत साधनों का सर्वथा निष्क्रिया होना [वा सर्वतः सर्वथा पृथक् होना] (बृहद्गाथा महिमानम् इच्छन्) महती [ईश्वरानन्द अनुभवरूप] प्राप्ति वाला अपने गौरव=वृद्धि [पूजा वा प्रकाश] को चाहता हुआ, विषयी प्राण रक्षक अपोगियों के समीप से, [हट कर] (देवान्) विरक्त मुमुक्षु योगियों को (उप अवर्तत)=उप वर्तने, प्राप्त होता है, [तब] (स्वः) सुख [समाधि वा मोक्ष आनन्द] (आनशानाः) पा चुकने वा उपभुक्त कर चुकने पर, [उन समाधिष्ठों वा मुक्तों के समाधि से उठने अथवा पुनरावर्तन के समय उन के] (त्रयस्त्रिंशसः) तैत्तीस [१० इन्द्रिय+१० प्राण+४ अन्तःकरण और ६ गोलकों] वा जीव की २४ शक्तियों+काम क्रोधोदि+४ अविबेक, अविद्या, कर्म, वासना) [देवे] [यथाक्रम] (तस्मै स्वप्नाय) उस लौकिक जागृति और सुषुप्ति के,

पट्टा पारमार्थिक जागृति [मुक्ति] और सुषुप्ति [प्रलय] के मध्य [बीच] की अवस्था को, (आधिपत्यम्) शासक पन, (दधुः) = दधति = देते हैं ।

भावार्थ—मलिन अन्तःकरण युक्त वेद मर्म अनभिज्ञ उपासना न करने वाले आत्माओं को स्वप्न विद्या नहीं प्राप्त होती, वेद तत्त बुभुत्सु शुद्ध अन्तःकरण वाले उपासक मुमुक्षु जीवों को उक्त ज्ञान यथार्थ प्राप्त होता है । ऐसे ही अनुपासक अज्ञानी जीवों को भी यद्यपि गाढ़ निद्रा में अज्ञान पूर्वक ईश्वर प्राप्ति होती है पर वे उसे नहीं समझते, उपासक विद्वान् सुषुप्ति के तात्त्विक स्वरूप को विचार एवं अनुभूत करके, उसी [सुषुप्ति] के सदृश जागृतावस्था में सर्वतः सर्वथा निश्चेष्ट अर्थात् प्राणों की भी गति को रोक समाधिष्ट होते हैं, तब ज्ञान पूर्वक ईश्वर को साक्षात् प्रत्यक्ष करके उस स्वप्न नाम प्राकृत निश्चेष्टापन का महत्त्व समझते हैं; और उस समय आनन्द पाकर वे [योगी जन] ३३ देव नाम १० इन्द्रिय + १० + प्राण + ४ अन्तःकरण और ६ गोलकों [कान + आंख + नाक + मुँह वा मुख + खाल वा त्वक् + हाथ + पाँव + उपस्थ और पायु [मल मूत्र इन्द्रियों] के विषयों [भाग्य जड़पदार्थों] को किंवा २४ आत्म-शक्तियों के लौकिक विषयों और काम क्रोधादि + अविवेकादि नवों [६] को व्यर्थ एवं दुःखद मानते हैं एवं विरक्तता पूर्वक समाधि [योग] करते २ परमेश्वर को पूर्णतया साक्षात् आत्म प्रत्यक्ष करके मुक्त होते हैं; और मुक्तावस्था में सर्व प्राकृत साधनों [स्थूल सूक्ष्म और कारण तीनों शरीरों] से सर्वतः सर्वथा पृथक् होकर [देखो “गताः कलाः पञ्चदशाः प्रतिष्ठा देवाश्च सर्वे प्रति देवतासु.....मुण्डक] मोक्षानन्द का अनुभव करते हैं । पुरा-वर्तन काल में [मोक्ष सुख पाचुकने एवं मुक्ति समय समाप्त होने पर] अपनी उपर्युक्त २४ दिव्य शक्ति नाम देवता एवं ६ कामादि [प्रवाह अनादि पदार्थों] के संसार सुख भोगार्थ उनको स्वप्न नाम [लौकिक जागृति और सुषुप्ति की मध्यावस्था के समान] पारमार्थिक वा वास्तविक, पूर्ण एवं निरन्तर जागृति [मुक्ति] और वास्तविक, पूर्ण एवं निरन्तर सुषुप्ति [प्रलय] की मध्य दशा नाम ब्रह्म दिन [सृष्टि काल = जगत्] के आधीन करते हैं अर्थात् मुक्ति से लौट कर जगत् में आते हैं ।

अङ्क—यहां शतपथीय वा यास्कীয় ३३ देवों की अपेक्षा उपर्युक्त दोनों प्रकार के ३३ देव विशेष युक्त हैं । [८ सि० ६ ऋ० + १६ कला] = ३३ देव कहे जा सकते हैं ।

स्वप्न विचार एवं व्याख्या—सर्व साधारण जन जानते हैं कि स्वप्न में सोना [प्रायः सर्व शरीर का अक्रिया होना] और मनादि वरणों से जगत् के देखे सुने आदि पदार्थों का देखना सुनना आदि दो कार्य होते हैं। गाढ़ निद्रा में सर्व अङ्ग एवं सर्व इन्द्रियां और सब अन्तःकरण निश्चेष्ट हो जाते हैं। आत्मा निश्चेष्ट केवल अविवेक पूर्वक आनन्द अनुभव करता है। इस के कुछ विद्वद् समाधि वा योग में सब स्थूल सूक्ष्म शरीराङ्गों की निश्चेष्टता के संग प्रायः प्राण भी अक्रिय होने पर विवेक पूर्वक जीवात्मा ईश्वरानन्द अनुभव करता है। अत एव सामान्य लोकव्याख्यात स्वप्न का तुलनात्मिक अर्थ “समाधि” युक्त है। पूर्व में आत्म-मनन शक्ति मनैन्द्रिय द्वारा कार्य करती है, उत्तर में स्वयं बिना करण। स्वप्न के दो अर्थ हैं—१ गाढ़ निद्रा [सुषुप्ति]—२ सोने में कुछ क्रिया मनादि से करना, सुषुप्ति की तुलना समाधि और मोक्ष के सार्थ इस लिये करते हैं कि तीनों में प्राकृत शारीरिक हल चल नहीं होती और अविवेक वा विवेक पूर्वक बिना साधनों के आनन्द का अनुभव होता है।

प्रलय में वास्तविक चिर सुषुप्ति होती है क्योंकि दोनों कार्य शरीर नहीं रहते। मोक्ष को वास्तविक, पूर्ण एवं निरन्तर जागृति कहना न्याय संगत है कुतः उस अवस्था में जीवात्मा अपने एवं ब्रह्म स्वरूप का तत्त्विक एवं यथार्थ ज्ञान रहते हुये ईश्वरानन्द अनुभव करता है और असाधन [बिना इन्द्रियों के] यथेच्छ गतिमान रहता है [विचरता है], इसी लिये मोक्ष और प्रलय की मध्यवर्ती दशा का उपमानात्मिक एवं यौक्तिक अर्थ जगत् [सृष्टि काल], फलतः स्वप्न [सोना और जगत् के पदार्थों का मानसिक भोगा-भोग] किया गया है, क्योंकि जगत् में रहने की दशा में प्राणी को सामान्यतया अपने स्वरूप का यत् किञ्चित्, कथन भर को वा भ्रम सा एवं उलटा सुलटा ज्ञान रहता है पर इस के विद्वद् वह जगत् के जड़ पदार्थों में प्रायः पूर्णतया रमा रहता है। कभी ध्यान समाधि में आत्मा परमात्मा का छाया सा भ्रम मूलक देखा अथवा कतिपय दिवस आवागमन में एक स्थूल से दूसरे स्थूल देह तक जाने के मध्य सूक्ष्म शरीर मात्र में रह कर कुछ ज्ञान रहा, पुनः यथा पूर्व दशा होती है। जहां स्वप्न में जीवात्मा शरीर को सर्वतः स्थिरता पूर्वक स्वस्थ करते हुये आनन्द अनुभव करते हैं और किञ्चित् [लोक के] भोग भी मन से भोगते हैं। वहां सम्पूर्ण जगत् काल में सामूहिक

रूप से, वे [जीव] शारीरिक भोगार्थ शरीर को प्रायः सचेष्ट करते हुये शारीरिक सुखादि भोगते हैं और पूर्वोक्त यत् किञ्चित् ज्ञानात्मक यथा कथा एवं यदा कदा करते हैं। जैसे स्वप्न में जगत् के पदार्थों का किञ्चित् ज्ञान भ्रमात्मक होता है वैसे ही [मानव दैनिक जागृति के समान] ब्रह्म दैनिक जागृति में यत् किञ्चित् आत्म ज्ञान रहता है, स्वप्न में शारीरिक निश्चेष्टता होती है जागृति में स्वयं आत्मिक। मुक्तावस्था में स्वयं एवं साक्षात् आत्मिक चेष्टा होती है। [“देखो स नो बन्धु.....तृतीये धामन्नधैरयन्त” य० ३२। १०], प्रलय में सर्वथा विपरीत पूर्ण आत्म स्थिरता होती है। इन दोनों के मध्य वा विलक्षण सृष्टि काल में आत्मा प्रायः शारीरिक चेष्टायें और कभी २ आत्मिक क्रिया [योगादि] करता है। अतः जगत् का अर्थ-स्वप्न किया गया है।

समाधि और सुषुप्ति में अचिरानन्द होता है; मोक्ष में चिर [देखो० द्वयोः सवीजमन्यत्र तद्धति सां०]।

स्वप्न नाम गाढ निद्रा पद वाच्य से असंप्रज्ञात समाधि और ब्राह्म मोक्षानन्द स्वरूपता का सादृश्य एवं साम्य है। और स्वप्न नाम अपूर्ण निद्रा [मानसिक क्रिया सहित] से जगद्वास को सादृश्य है। इति स्वप्न विवेकः।

(अथ० १६। ५६। ४) (नैताम्) न [स्वप्न में हुई] इस [प्राप्ति] को, अथवा न एतम् = न इस [उपयुक्त आनन्द प्रापक स्वप्न] को, (पितरः) क्षत्रिय लोक (उत) और (न) (देवाः) ब्राह्मण [वेद पाठी] लोक (विदुः) जानते हैं; (त्रेषाम्) जिनकी, (जल्पिः) वक्तृता = वाणी = आज्ञा, (इदम् अन्तरा) इस संसार में, (चरति) विचरती, व्य.प्ता वा मानी जाती है। (वरुणेन) श्रेष्ठ ब्रह्मवित्गुरु से वा सत्रश्रेष्ठ उपास्य देव जगद्गुरु ब्रह्म से (अनुशिष्टाः) शिक्षा पाये हुये, (नरः) अपने स्थूल सूक्ष्म शरीरों के यथार्थ नेता, (आदित्यांसः = आदित्य—अ.सः) अतादि अनन्त ब्रह्म में स्थित वा समाधिष्ठ होकर, (आप्तये) यथार्थ सत्य वक्ताओं के हितु वा सर्वथा पूर्ण आत्मकाम [परमात्मा], (त्रिते) तीनों लोकों के विस्तारक एवं तीनों लोकों में व्यापक होकर उनसे बाहर वरे वा निकले हुये जगदीश्वर में, (स्वप्नम्) [सवथा सवत्रः सवदः] अचलत्वं = कूट [स्वरूपा] स्थित एवं तत्फल का आनन्द स्वरूपत्वं अर्थात् सब भाँति सब ओर से नित्य न हिलन चलना और इस कारण अत्यन्त आनन्द होना, अथवा, (आप्तये) आत्म आत्माओं के

सत्कार करने वारे वा समाधिसुख [वा मोक्षानन्द] प्राप्त करलेने वारे, (त्रिते) तीनों [जन्म नाम स्थानों] को प्राप्त किये वा पार किये हुये, तीनों कालों में गति [रहने] वारे, एवं तृतीय धाम नाम ब्रह्म मात्र को प्राप्त किये हुये (देखो— अथ० ५।१।१) समाधिष्ठ वा मुक्त जीव में, (स्वप्नम्) विषय प्रापक सर्व प्राकृत साधनों के निश्चेष्ट [स्थिर] होने वा सर्वतः सर्वथा अलग हो जाने पर समाधि सुखानुभव वा मोक्षानन्द अनुभव को, (अदधुः) दधति [ठहराया, निश्चित किया] ठहराते निश्चित करते हैं।

भाव यह है कि शरीरिक बल वा मानसिक [विद्या] बल से स्वप्न-सिद्धि वा स्वप्नसिद्ध पदार्थ का ज्ञान बड़े से बड़े सेनाध्यक्ष शूर वा विद्वान् लोक मान्य परिणित को लौकिक गुरु वा साक्षात् जगद्गुरु जगदीश्वर से सीख-कर ईश्वरोपासना किये बिना नहीं होसकता।

जो जीवात्मा उक्त विधि ज्ञान प्राप्त कर योगाभ्यास करते हैं वे ही सुषुप्ति के आनन्द स्रोत को जानकर सर्वथा शरीरिक क्रिया को रोके हुये अ.त्मस्थ वा परमात्मस्थ होकर [यथा अधिकार] समाधि के आनन्द को पाते हैं, अथवा कार्य और कारण जगत् [स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों] से पृथक् [मुक्त] होकर मोक्षानन्द को अनुभव करते हैं। तथा समाधि अवस्थित होकर निश्चित करते हैं कि ऐसा सापेक्ष आनन्द [बन्धन के अन्तर सहित एक अर्थात् बड़े काल तक [जैस के पीछे बन्धन अवजनीय है] जीव को मिल सकता है, और निरन्तर निरपेक्षानन्द नित्य मुक्त ब्रह्म को ही नित्य प्राप्त है, स्वप्न नाम गढ़ निद्रा [सर्वतः निश्चेष्टत्व] का पूर्ण, नित्य एवं वास्तविक स्वरूप तथा भाव ब्रह्म में ही प्राप्त है। जो सर्वतः सर्वथा सर्वदा निश्चेष्ट, कूटस्थ नित्यानन्द स्वरूप है।

अङ्क—तृतीय मन्त्र वत्, मन की जागृति और शेष सर्व साधनों की सुषुप्ति को यहां भी आत्म जागृति और सर्वकरण सेन्द्रियादि की सुषुप्ति [अक्रियता] से तोला गया वा समता दी गई है, और फिर उत्तर दोनों [अ.त्मादि] को ईश्वर स्वरूप (जो अनन्त और सर्वव्यापक होने से अचल है) और परमात्म ज्ञान की एकरसता से तुलना की गई है। जैसे लोक प्रसिद्ध स्वप्न में सब इन्द्रियादि स्थिर होजाते हैं और मन द्वारा विषय अनुभव होता रहता है,। ऐसे ही सुषुप्ति और समाधि में मन सहित सर्व साधन अक्रिय, और मोक्ष में वियुक्त होजाते हैं और आत्मा को स्वयं [अकरण=विना

साधनों के] ब्रह्मानन्द का अनुभव होता है, एवमेव ब्रह्म नित्य अक्रिय और आनन्द स्वरूप हैं । अत एव यह वाक्य सुषुप्ति मोक्षेषु ब्रह्म रूपता, अर्थात् जीव को समाधि सुषुप्ति और मोक्ष में विना करणों के ब्रह्म सदृश (अपाणिपादो जवजो) कर्ता कहा है ।

(अथ० २० । १३ । १) विद्वत्सभाराजसभे संगत्य राज्यं रक्षेताम् = विद्वत्सभा और राज सभा दोनों मिल कर राज्य को रखावें ।

(अथ० २० । ३५ । ६) (रणाय) जड़ चेतन दोनों को संघर्ष समाप्त करने को [मोक्ष प्राप्ति के लिये], (आववक्षे) परमाणुओं को संहत [जगदाकार] किया है ।

(अथ० २० ५८ । २) (अनर्शरातिम्) निस्स्वार्थ दानी ।

(अथ० २० । ७७ । ५) भावार्थ—परमात्मा अपने अतोल बल... कर रहा है = परमात्मा ने अपने अनन्त बल के तुच्छ [अति अल्प] मात्रा से, अपने अनन्त स्वरूप के अल्प देशस्थ सब जगत् को बनाया [रचा] और धारित किया है ।

देखो “पादो अस्य विश्वा भूतानि...” (यजु० ३१ । ३),

(अथ० २० । ७६ । १ (इन्द्र) हे परमेश्वर! (नः) हमारे लिये, (क्रतुम्) बुद्धि (आभर) सर्व प्रकार भरदे (यथा) जैसे पिता जनक = बाप (पुत्रेभ्यः) सन्तानों के लिये, (पुरुहूत) हे बहुत बुलाये गये [परमात्मन्] (अस्मिन्) इस (यामनि) समय वा मार्ग [जगत् के व्यापार] में (नः) हम को (शिक्ष) सिखा, [जिस से] (जीवाः) हम जीव लोक (ज्योतिः) प्रकाश को (अशीमहि) पावें । भावार्थ—इस मन्त्र में उपदेश है कि हे शरीरस्थ जीवात्माओ जिस प्रकार तुम अपने शारीरिक पिता एवं माता से संसार के कार्य चलाने को नाना विधि से शिक्षा लेते [उनसे पूछते] हो वैसे ही तुम जगद्व्यापार तथा परमार्थ प्राप्ति मार्ग में, परमात्मा [जगदाचार्य] से शिक्षा प्राप्त किया करो ।

(अथ० २० । ८७ । २) (हृदा) हृदय = मनसे, (मनसा) बुद्धि से, ॥

(अथ० २० । १२६ । १) (इन्द्रम्) इन्द्रिय युत शरीरी जीवात्मा को, (मत्सखा) [अहंनाम] मुझ [पद वाक्य] जीवात्मा का नित्य सङ्गी समान प्रसिद्धि वाला (वृषाकपिः) सर्व शक्तिमान् नियामक जगदीश्वर (पुष्टेषु) पुष्ट किये [यथाविधि] बनाकर धारण किये हुये] लोकों में, (अमदत्)

मदति=अनन्दित रहता है (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान्, परमात्मा, (विश्वस्मात्) सब जगत् से (उत्तरः) परे, उत्तम है ।

भावार्थ—तत्त्वचिन्तन [ध्यान समाधि] त्याग देने से शरीर जीवात्मा को प्राकृत पदार्थों, प्रकृति वा परमाणुओं का भी यथार्थ बोध नहीं रहता, अपितु पांचो भूतों को कितने नहीं जानते वा जान नहीं सकते, आत्म स्वरूप का ज्ञान तो हो ही नहीं सकता, अपने को भौतिक शरीर [जड़] मानते जानते हैं, अपनी आयु के वर्ष १०, २०, ३०, ४०, ५० आदि बताने लगते हैं, अपने को दुबला, मोटा [स्थूल] रुग्ण स्वस्थ आदि आदि कहते हैं । शरीरापेक्ष्य छोटा बड़ा आदि आदि जान मान कर प्राणि सर्वांश आत्मघाती सर्वथा मिथ्यावादी बन जाते हैं । अन्यथा तत्त्व निष्कर्ष से स्थूल लोकों [लोक दर्शने—जो कुछ स्थूल नैत्रों से वा अन्य इन्द्रिय गोलकों से देखा वा जाना जाता है अर्थात् सूर्यादि तथा उनके निवासी प्राणियों के शरीरादि एवं अन्य अप्राणि अर्थात् केवल जड़ पदार्थ] और उन के कारण सूक्ष्म स्थूल दर्शों भूतों एवं सूक्ष्म भूतों के कारण अहङ्कारादि को यथा-वत् जानकर आत्म [गुण कर्म स्वभाव रूप] शक्तियों एवं निज स्वरूप को भी वे ही प्राणी [मनुष्य शरीरधारी] जान लेते हैं पुनः स्वरूप प्रतिष्ठित होकर ब्रह्म स्वरूप का साक्षात् दर्शन करते हैं जो मोक्षप्रद होने से सर्वोपरि है ।

अङ्क—जीवात्मा—चेतन, अल्पज्ञ, स्वयम्भू, कालापेक्ष्य अनादि अनन्त, अणु स्वरूप [अत्यन्त लघु] है, और ब्रह्म चेतन सर्वज्ञ, स्वयम्भू काल एवं देशापेक्ष्य अनादि अनन्त विभू स्वरूप [अत्यन्त महान्], जीव से सूक्ष्मतर [विशेष पतला] होने से उसमें भी नित्य व्यापक है और इस लिये कभी उस से पृथक् न होने से उसका सखा कहा जाता है ।

साधुचेतावती—एक शरीर में दो आत्मा (एक शरीर धारी और दूसरा भीतरी वा अशरीरी) एकत्र तदाभिमानि नहीं होते, वह रह सकते हैं, यह मन वेद एवं बुद्धि विरुद्ध होने से अप्राह्य और त्याज्य केवल भ्रम मूलक है ।

(अथ० २० । १२६ । २) (वृषाकपेः) बल स्वरूप भोग दाता जगन्नियन्ता परमेश्वर से, (अन्यत्र) शरीर से भिन्न [अन्य] शरीर में, (सोमपीतये) ऐश्वर्य प्राप्ति के लिये, (प्रविन्दसि) प्रविन्दति=विशेष रूप से [स्वयम् शरीर छोड़ वा शरीर घात करके] पाता है, (इन्द्रः) जगदीश्वर ।

भावार्थ—हे जीव ! यदि जगदीश्वर के न्याय से मूर्खता बश तू !

असंतुष्ट होकर आत्म [अपने] शरीर का घात अर्थात् स्वतः किसी प्रकार देह त्याग करता है [करेगा] तो तुझे दूसरे लोक [शरीर] में भी सुख नहीं मिलता [मिलेगा] क्योंकि तू अनन्त स्वरूप सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ अत्यन्त निष्पक्ष न्यायी जगदीश्वर से बन्ध नहीं सकता वह सर्वत्र है ।

(अथ० २० । १२६ । ३) (वृषाकपिः) अत्यन्त बली सर्वशासक परमेश्वर, (यस्मै) जिस अङ्कार [हानि] के लिये, (पुष्टिमत्) सर्वपोषक, (वसु) जगन्निवास=संसार के निवास स्थान परमात्मा जगदाधार का, (इन्द्रः) अनन्तैश्वर्य युक्त परमेश्वर ।

भावार्थ—सर्व नियामक अत्यन्त निष्पक्ष न्यायी जगदीश्वर नै हे जीव ! तुझे अन्याय से हानि वा कष्ट नहीं दिया है उसकी अस्तुति मत कर । वह सर्व दोषों से (उत्तर) अत्यन्त दूर वा परे है ।

(अथ० २० । १२६ । ४) (वृषाकपिः) जीवात्मा, बली राजा, (इन्द्रः) मुक्त जीव ।

(अथ० २० । १२६ । ५) (कपिः) चञ्चल चिन्तन शक्ति ने, (शिरः) शिरस्थ चित्त वा उत्पत्ति स्थान व साधन [दुष्ट संस्कार] (राविषम्) [उपासना द्वारा] नष्ट करदूँ । (इन्द्रः) जगदधिपति परमेश्वर, (उत्तरः) उतारने पार करने वाला है । भाव यह है कि—जीव के जो दुष्ट संस्कार मन और चित्त में रहते हैं वे नाना दुष्कर्मों के साधन बनते हैं । किये कराये शुभ कर्मों को भी दुष्ट संस्कारों के वश [ज्ञान कृत हस्ति के समान धूलि प्रक्षेपण रूप] दुष्ट कर्मों से वह आवर्त कर लेता है । उन दुष्ट संस्कारों को हटा शुभ संस्कारों से आभूषित करने वाला सब जैव दुर्गुणों से नित्य परे जीवों को पार करने वाला “अलसालः” परमेश्वर ही है ।

(अथ० २० । १२६ । ६, ७) (इन्द्रः) जगदीश्वर । भाव यह है कि मन्त्रोक्त पदार्थों की सिद्धयर्थ एक मात्र यह ज्ञान कि जगदीश्वर ही सर्व पदार्थों का प्रापक [दाता] है, अत्यन्तावश्यक है ।

(अथ० २० । १२६ । ८) (वृषाकपिः) सबल प्रबन्धक लौकिक [अनित्य असत्पति] जावात्मा अत्यन्त बली अध्यक्ष नित्य एवं सत्पति परमेश्वर को (अमीषि=अमिष्यसि) [अम गतिशब्दसम्भक्तिषु] जानेंगी, सम्बोधित करेगी [बुलावेगी] एवं सेवेगी, (इन्द्रः) जीवात्मा वा जगदीश्वर ।

भावार्थ—ईश्वर का उपदेश है कि शारीरिक पत्नी शरीरस्थ आत्मा को

चाहिये कि वह अपने शरीर के अशरीर पति को जगत् के सब प्राणियों से उत्तम ज्ञान कर पतिवत् केवल उसी की सेवा करे, और ऐसे ही अपने शरीर के एवं अपने [कर्थात् आत्मा के] नित्य पति [जगत्पति] को सर्व जगत् का पूज्य तथा वास्तविक सर्वोत्तम जान कर, ईश्वर उपासना [योग] को निज परम कर्तव्य करे।

अथ० २० । १२६ । ६, १०) (इन्द्रः) बड़े ऐश्वर्य वारा पति, [म० ८ देखो]

(अथ० २० । १२६ । ११) (इन्द्राणी) बड़े ऐश्वर्यवान् [प्राणि] राजा की पत्नी, शक्ति, वा परमेश्वर की विभूति एवं शक्ति को, (इन्द्रः) मनुष्य राजा वा परमेश्वर (अपरम्) दूसरे शरीर धारी वा अशरीरी निराकार जीवात्माओं के समान (मरते) मरता अर्थात् वियुक्त होता है।

भावार्थ—महदैश्वर्यवान् पुरुष [जीवात्मा] ऐश्वर्य के सदुपयोग एवं दान से अपने नाम को चिरजीवी करता है। परमैश्वर्यवान् जगत्पति का ऐश्वर्य प्राणि अप्राणि वा मुक्त बद्ध सब के लिये है, न तो उस ऐश्वर्य का वार पार है और नहीं ऐसे अपार ऐश्वर्य वाला अजर अमर जगदीश्वर कभी मरता वा जीता [प्रकृति से संयुक्त रहता] है, ऐसा जानकर उसी की उपासना [योग] से चक्रवर्ती राज्यादि एवं सर्वोत्तम मोक्ष ख्याति की प्राप्ति करनी चाहिये।

(अथ० २० । १२६ । १२) (इन्द्राणी) बृहदैश्वर्य के स्वामी वीर पुरुष की वीरा पत्नी, (वृषाकपिः) सर्वाध्यक्ष अनन्त शक्तिमद् ब्रह्म (यस्य) जिस ईश्वर का, (इन्द्रः) जगदीश्वर।

भावार्थ—ईश्वर का उपदेश है कि हे बड़े ऐश्वर्य वाले पुरुष शरीर की पत्नी देहस्थ आत्मा तू गर्व कत कर सर्वेश्वर प्राणी अप्राणी का नियामक और शासक है, उस के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता, वह ही सर्वव्यापक सर्वाधार हो सब को साधनोपसाधन सम्पन्न करके सर्व क्रियाओं में सहकारी रूप नित्य शुभ कर्म के लिये बलात्कार—हीन, उदासीन रूप से प्रेरणा [उपदेश] करता रहता है [क्योंकि जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है] वह जगदीश्वर किसी पदार्थ को नहीं भोगता। वह सब भोगों से उत्तर [परे]। एवं सब से महान् है।

(अथ० २० । १२६ । १३ (वृषाकपायि) हे सर्वशक्तिमज्जगन्नायक

ब्रह्म की विभूति, (रेवति) है ऐश्वर्य युक्त, (सुपुत्रे) है उत्तम पुत्रों की देने वाली वा उत्तमता से पवित्र करने वाली, (सुसुप्ते) है बहुत सुख वर्णन वाली, (ते) तेरे (उक्ष्णः) बढ़ती करते हुये पदार्थों एवं (प्रियम्) प्यारा, बहुत सुख प्रद, (काचित्करम्) सुखों का चयन नाम प्रापण करने वाला, (हविः) दान अर्थात् उत्तम अभीष्ट धृतादि पदार्थों को, (इन्द्र) अनेक शक्ति का पुरुषार्थ—प्राप्त, सुख सामग्री युक्त राजा वा अन्य मनुष्य, (घसत्) खावे [भोगे] (इन्द्रः) जगदीश्वर, (विश्वस्मात्) = सब जगत् से, (उत्तरः) उत्तम है ।

द्वितीयार्थ—(वृषाकपायि) है बड़े बलिष्ठ लोक शासक राजा की रानी! (रेवति) प्रचुर धनैश्वर्यवारी, (सुपुत्रे) है विद्वान् एवं वीर पुत्रों की जननी (सुसुप्ते) है मनोहर वचनों की वर्णन करने वाली, (ते उक्ष्णः) तेरे बढ़ते हुये पदार्थ, और (प्रियम्) जन हितकर, (काचित्करम्) सुख साधन, (हविः) दान को, (इन्द्रः) परमेश्वर, (घसत्) ग्रहण करे अर्थात् उसके, उपदेशानुसार हो, कुतः, (विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः) [अस्ति] सर्व जगत् के प्राणियों से (इन्द्र) जगदीश्वर ऊपर वा परे है ।

(१) भावार्थ—जगदीश्वर ही सब से बलवान् सब का चालक वा शासक है, सब अभीष्टों, [शारीरिक सुखों, पुत्र पौत्रादि ऐश्वर्यों] का दाता है, मनुष्य पुरुषार्थ करके धर्म एवं न्याय से सर्व सुख एवं सुख साधन ग्रहण करें, अन्यायादि से न लें, अन्यथा दुःख के भागी होंगे ।

(२) भावार्थ—हे बड़े राजा की रानी ! वा शक्ति शाली राजन ! तू परमेश्वर के उपदेश का अनुसरण करता हुआ निज धार्मिक पुरुषार्थ से प्राप्त किये हुए पदार्थों को ही भोग, जगत् का ऐश्वर्य प्राप्त करके ऐहिक एवं पारमार्थिक सुखार्थ स्वैश्वर्य का न्याय से सुपात्रों को दान दे और जगदुपकार में लगा, नाम के लिये चाटुकारी दुराचारियों को अन्याय से मत दे, क्योंकि जगदीश्वर सर्वोपरि विराजमान अपने पुत्रों के हितार्थ जगत् को रचकर न्याय से सब को देता है ।

(अथ० २० । १२६ । १४) (पञ्चदश) पन्द्रह अर्थात् ५ प्राण और १० इन्द्रियां (विंशतिम्) २० अर्थात् ५ सूक्ष्म भूत [शब्दादि] ५ स्थूल भूत [आकाशादि] ४ अन्तःकरण [मन बुद्धि चित्त अहङ्कार] और छह रस [मिष्टादि] (इन्द्र) जगदुत्तर ऐश्वर्य मज्जगदीश्वर, (विश्वस्मात्) उन सर्व

जगत् के भोगों से (उत्तरः) परे है आप्तकाम [सर्व पदार्थों को नित्य एकरस व्याप्त किये हुए] होने से ।

भावार्थ—जगत् के सब पदार्थ प्राणियों के भोग के लिये जगदीश्वर ने रचे हैं, वह सर्वाधार सर्वाध्याक्ष एवं सब पदार्थों में सदैव बाहिर भीतर से ओत प्रोत प्रविष्ट होने से भोग कल्पना से परे है, भोग की आवश्यकता इस लिये भी नहीं रखता कि भोग अपने स्वरूप से बाहर के शरीर के लिये [जिसमें उपचय अपचय हो] होता है । उस से बाहर कोई वस्तु नाम उस का शरीर नहीं कुतः वह अनन्त है । अतः कोई भी कदापि नहीं चाहिये ।

(अथ० २० । १२६ । १५) (भावयुः) प्रापययुः = प्राप्त कराने की इच्छा वाला परमात्मा, (इन्द्रः) सब से महानैश्वर्य वाला महेश्वर, (विश्वस्मात्) सब जगत् के भोगों एवं भोगेच्छाओं से, (उत्तरः) उतरा हुआ है । क्योंकि वह आनन्द स्वरूप है और जीवों को भोगों से [संसार दुःख सागर से] उतारने वाला है [देखो मन्त्र० १४] ।

(अथ० २० । १२६ । १६) (निषेदुषः) आत्मस्थस्य = स्वरूप प्रतिष्ठितस्य, ईश्वर से योग करते हुये का, अर्थात् स्थूल सूक्ष्म शरीरों को निश्चेष्ट [निष्क्रिया = स्थिर] करके आत्म चिन्तन शक्ति को परमात्म चिन्तन में लगाने वाले योगी का, (इन्द्रः) अलौकिक ऐश्वर्य वाला प्रभु ।

भावार्थ—मनुष्य सर्व ऐश्वर्य प्रद सर्वोत्तम भुवनपति परमात्मा का नित्य न्यून से न्यून द्विकाल सन्ध्यान वा साक्षात्-दर्शन कर अपने ऐश्वर्य को बढ़ावे, और एवं विधि सर्व दैहिक, मानसिक और आत्मिक सुखों को भोगते हुये दुःख सुख में समता करके [समान समझ के] मुक्त हों ।

आरसी [आलसी] नास्तिक होकर ईश्वर [दाता] के स्थान में ऐश्वर्य [दान] के चिन्तन (चोरी अन्याय आदि) में न लग कर बालगे रह कर निर्धन दुःखी वा साधन दुःखी (दरिद्री दुःखी वा ऐश्वर्यवान् दुःखी) अर्थात् धन, धान्य पुत्र, पौत्र, स्त्री, प्रजा, नाना पशु, महल भवन राज्यादि होते हुए भी शरीर दुःख वा मानसिक दुःख [लौकिक चिन्ता] एवं आत्मिक दुःख रूप अज्ञान, उलटे ज्ञान [भ्रम भंवर] में फंसे रहकर दुष्ट [भोग] योनियों के साधक न बनें ॥

(अथ० २० । १२६ । १७) ध्यान में = ईश्वर उपासना में (इन्द्रः) अतुलित

ऐश्वर्यं युतं स्वयम्भु । भावः यहं है कि—ऐश्वर्यं दाता कर्माध्यक्ष परमेश्वर के चिन्तन से ऐश्वर्य प्राप्त होता है । अन्यथा नहीं । (अ० १६ देखो) ।

(अथ० २० । १२६ । १८) (अयं वृषाकपिः) यह बलवान् राजा वा ईश्वर, जब (परस्वन्तम्) पालन कार्य को वा (परमुअन्तम्) दूसरे के सुन्दर [अमोघ] परिणाम वा सिद्धि (हतम्) नष्ट किया हुआ, (विदत् = विन्दति) पाता है । [पाया है] प्राप्त कराता है । (इन्द्रः) बड़े ऐश्वर्य वाला महाराजा वा परमात्मा, (विश्वस्मात्) देश, लोक, वा सर्व जगत् से (उत्तरः) विशेष न्यायो शासक है ।

(अथ० २० । १२६ । १९) (दासमोर्यन्) डाकू वा शूद्र [मूर्ख सेवक] और श्रेष्ठ पुरुषों को, (विचाकशश्च विचिन्वन्) साक्षी रूप से पहचानता [विवेचना करता] हुआ, (अयम्) यह मैं [इन्द्र] (एमि) प्राप्त होता हूँ । इन्द्र = राजा ।

(अथ० २० । १२६ । २०) (च च) बनेलू हिंसक पशु और, (उपपद्भिः) प्यार से आ, यह विचारता हुआ कि (इन्द्रः) परमेश्वर परम पिता, (विश्वस्मात्) सर्व भयों से, (उत्तरः) पार करने वाला है ।

(अथ० २० । १२६ । २१) (वृषाकपे) सर्व शक्तिमान् जगन्नियन्ता परमेश्वर, (पुनः) बारं बार [प्रातः के पश्चात् सायं वा अनेक बार], (आ इहि) साक्षात् प्राप्त होवे, (कल्पयावहै) हम दोनों [स्त्री पुरुष] विचार पूर्वक करें, (अस्तम) हमारे अन्तःकरणों में, (एषि) साक्षात् प्रत्यक्ष होता है ।

(भावार्थ)—आत्मा = आत्मबल ।

भावार्थ—पति पत्नी [दम्पति] को चाहिये कि प्रातः सायं ईश्वर को सर्वशक्तिमान् कर्मफल दाता, आलस्यादि दुर्गुणों से छुड़ाने वाला, और उत्तम गुण और ऐश्वर्य प्राप्त कराने, संसार सागर से पार करने वाला जान कर परमेश्वर की उपासना किया करें ।

(अथ० २० । १२६ । २२) (वृषाकपे) हे अनन्त बली सर्वनेता सर्वेश्वर परमतामन् !, (इन्द्रः) = महदेश्वर्य वाला जीवात्मा, और (इन्द्राणी) इन्द्र (बड़े ऐश्वर्य वाले जीव) के शरीर की पत्नी-शरीरस्थ जीवात्मा वा विभूति रूप बुद्धि, (गृहिम्) स्वस्थिति स्थान को [स्थिरता को] (इन्द्रः) सर्वाधिपति जगत्पिता ।

भावार्थ—जब मनुष्य ईश्वर उपासना करता हुआ अपनी शक्तियों, अन्तःकरणों आत्म-स्वरूप और परमात्म—स्वरूप का यथार्थ निश्चय कर लेता है। तब कोई दुष्कर्म वा दुष्ट प्राणी उसे हानि पहुंचाने को उस के समीप भी नहीं पहुंच सकता। सर्व दुष्टात्माओं और दुष्ट पदार्थों से उसको पार करने वाला परमेश्वर है।

(अथ० २० । १२६ । २३) (मानवी) मनुष्य की शक्ति, (सस्रव) स्रवति = प्राप्त करती है, (पु पेश्वर्ये) (भल) उदार विवेकी [जीवात्मा] माता = गर्भ धारिका के लिये, (भद्रम्) कल्याण कर = सुखदाता, (अभूत्) भवति = होता है, (आमयत्) = आमयति = पीड़ित करता है। यह दुःख सुख का द्वन्द्व लोक माता को ही होता है, जगन्माता को नहीं क्योंकि (विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः) वह आनन्द स्वरूप होने से इन सब से परे है।

इत्यथर्ववेदभाष्यपरिशिष्टम् ।

इति श्रीमद्राजाधिराज प्रथितमहागुणमहिम—
श्री सयाजीराव गयकवाड़ाधिष्ठित-
बडोपुरीगंतश्रावणमासदक्षिणापरीक्षायाम्
ऋक्सामाथर्ववेदभाष्येषु लब्धदक्षिणेन श्री परिष्ठित
क्षेमकरणदास त्रिवेदिना
कृते अथर्ववेदभाष्ये परिशिष्ट समाप्तम् ।

इदं परिशिष्टं प्रयाग नगरे धीर-वीर-चिरप्रतापि-महायशस्वि—
श्री राजराजेश्वर पञ्चम जार्ज महोदयस्य
सुसाम्राज्ये वैशाखशुक्लाचतुर्थ्यां संवत् १९७८ [अष्टसप्तत्यु—
त्तरैकोनविंशतिशतके] विक्रमीये संवत्सरे,
(तारीख ११ मई १९२१ ईस्वीये) मुद्रितम् ॥

अथर्ववेदभाष्य सम्मति या ॥

श्रीमती आर्य प्रतिनिधिसभा, पंजाब, गुरुदत्त भवन लाहौर
अन्तरंग सभा के प्रस्ताव संख्या ३ तिथि ६-१२-७३ की प्रति ।

ला० दीवान चन्द्र प्रतिनिधि आर्य समाज बटाला का प्रस्ताव, कि पं० श्रेम-
करणदास को अथर्ववेद भाष्य के लिये ४०) मासिक की सहायता दी जावे,
उपस्थित हुआ । निश्चय हुआ कि २५) मासिक की सहायता एक वर्ष के लिये दी
जावे और उसके परिवर्तन में उतने मूल्य की पुस्तकें उनसे स्वीकार की जावें ॥

श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रदेश आगरा और
अवध, स्थान बुलन्दशहर, अन्तरंग सभा ता० ४ जून १८९६ ई०
के निश्चय संख्या १३ (अ) और (ब) की लिपि ।

(अ) समाजों में गश्ती चिट्ठी भेजी जावे कि वे इस भाष्य के ग्रहक बनें
तथा अन्यो को बनावें ।

(ब) सभा सम्प्रति १ वर्ष पर्यन्त १५) मासिक एक ल्कर्क के लिये पं०
श्रेमकरणदास जी को देवे, जिसका बिल उक्त पंडित जी कार्यालय सभा में
भेजते रहें । इस धन के बदले में पंडित जी उतने धन की पुस्तकें सभा को देंगे ॥
लिपि गश्ती चिट्ठी श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा जो पूर्वोक्त
निश्चय के अनुसार समाजों को भेजी गयी (संख्या ५८७६ प्राप्त
२० जुलाई १८७६ ई०)

मान्यवर नमस्ते !

॥ ओ३म् ॥

आपको ज्ञात होगा कि आर्यसमाज के अनुभवी वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं०
श्रेमकरणदास त्रिवेदी गत कई वर्षों से बड़ी योग्यता पूर्वक अथर्ववेद का
भाष्य कर रहे हैं । आपने महर्षि दयानन्द के अनुसार ही इस भाष्य को करने
का प्रयत्न किया है । भाष्य काण्डों में निकलता है अब तक ६ कांड निकल चुके
हैं । आर्यसमाज के वैदिक साहित्य सस्वन्ध में वस्तुतः यह बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य
हो रहा है । त्रिवेदी महाराज के भाष्य की जानकारी ने खूब प्रशंसा की है ।
परन्तु खेद है कि अभी आर्यसमाज में उच्च कोटि के साहित्य को पढ़ने की ओर
लोगों की बहुत कम रुचि है । जिसके कारण त्रिवेदी जी अर्थ हाथि उठा रहे
हैं । भाष्य के ग्राहक बहुत कम हैं । लागत तक वसूल नहीं होती । वेदों का पढ़ना
पढ़ाना और सुनना सुनाना आर्यसमाज का प्रधान कर्त्तव्य है । अतएव सधिनय
त्रिवेदी हैं कि वैदिक धर्मों मात्र श्री त्रिवेदी जी को उनके महत्त्वपूर्ण गुरुतर कार्य
में साहस प्रदान करें । स्वयम् ग्राहक बनें और दूसरों को बनावें । ऐसा करने से
भाष्यकार महाराज उसे छापने की अर्थ सम्बन्धिनी चिन्ताओं से मुक्त होकर
भाष्य को और अधिक उत्तमता से सम्पादन करने की ओर प्रवृत्त होंगे ।
आशा है कि वेदों के प्रेमी उक्त प्रार्थना पर ध्यान दे इस ओर अपना कुछ
पुस्तकालयों में तो उनका रखना बहुत ही ज़रूरी है । भाष्य के प्रत्येक कांड का
मूल्य त्रिवेदी जी ने बहुत ही थोड़ा रक्खा है ।

त्रिवेदी जी से पत्र व्यवहार ५२ लूकरांज, प्रयाग के पते पर कीजिये ।
भवदीय—
नन्दलाल सिंह,
B. Sc., LL. B. उपमन्त्री ।

चिह्नी संख्या २७० तिथि १०—१२—१९१४ । कार्यालय श्रीमती आर्य-
प्रतिनिधि सभा, संयुक्तप्रान्त आगरा व अवध, बुलन्दशहर ।

आपका पत्र संख्या १०१ तथा अथर्ववेद भाष्य का तृतीय कांड मिला । इस
रूपा के लिये अनेक धन्यवाद है । वास्तव में आप आर्यसमाज के साहित्य को
समृद्धि शाली बनाने में बड़ा कार्य कर रहे हैं, आपकी विद्वत्ता और रूपा के
लिये आर्य संसार ही नहीं, प्रत्युत प्रत्येक शिक्षा सूत्र धारी को आभारी होना
चाहिये । ईश्वर आप को उत्तरोत्तर उस महत्त्व पूर्ण कार्य के सम्पादन और
समाप्त करने के लिये शक्ति प्रदान करें, ऐसे उपयोगी ग्रन्थ प्रकाशन को आप
सदैव जारी रखें यही प्रार्थना है ।

भवदीय—

मदन मोहन सेठ

श्रीमान् पण्डित तुलसीराम स्वामी—प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा
संयुक्तप्रान्त, सामवेद भाष्यकार, सम्पादक वेदप्रकाश, मेरठ—१९१३ ।

ऋज्यजुर्वेद का भाष्य श्रीस्वामीदयानन्द सरस्वती जी ने संस्कृत और भाषा
में किया है, सामवेद का श्री पं० तुलसीराम स्वामी ने किया है, अथर्ववेद के
भाषा की बड़ी आवश्यकता थी । पं० क्षेमकरणदास जी प्रयाग निवासी ने इस
अभाव को दूर करना आरम्भ कर दिया है । भाष्य का क्रम अच्छा है । यदि
इसी प्रकार समस्त भाष्य बन गया, जो हमारी समझ में कठिन है, तो चारों
वेदों के भाषा भाष्य मिलने लगेंगे, आर्यों का उपकार होगा ।

श्रीयुत महाशय नारायणप्रसाद जी—मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल बृन्दाबन
मथुरा—उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, संयुक्तप्रान्त । आर्यमित्र आगरा,
२४ जनवरी १९१३ ।

श्री पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी प्रयाग निवासी, ऋक् साम तथा अथर्ववेद
सम्बन्धी परीक्षोत्तीर्ण अथर्ववेद का भाषा भाष्य करते हैं, मैंने सम्पूर्ण [प्रथम]
कांड का पाठ किया । त्रिवेदी जी का भाष्य ऋषि दयानन्द जी की शैली के अनु-
सार भावपूर्ण संक्षिप्त और स्पष्टतया प्रकट करने वाला है कि मन्त्र के किस
शब्द के स्थान में भाषा का कौनसा शब्द आया, फिर नोटों में व्याकरण तथा
निरुक्त के प्रमाण, प्रारम्भ में एक उपयोगी भूमिका दे देने से भाष्य की उप-
योगिता और भी बढ़ गई है, निदान भाष्य अत्युत्तम, आर्यसमाज का पक्षपोषक
और इस योग्य है कि प्रत्येक आर्यसमाज उसकी एक २ पोथी (कापी) अपने
पुस्तकालय में रखे ।

त्रिवेदी जी ने इस भाष्य का प्रारम्भ करके एक बड़ी कमी के पूर्ण करने का

उद्योग किया है। ईश्वर उन को बल तथा वेद प्रेमी आवश्यक सहायता प्रदान करें निर्विघ्नता के साथ वह शुभ कार्य पूरा हो...छपाई और कागज़ भी अच्छा है।

श्रीयुत महाशय मुन्शीराय जी—जिज्ञासु-मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी
हरिद्वार—पत्र संख्या ६४ तिथि २७—१०—१९६६।

अथर्ववेदभाष्य आप का दिया व किया हुआ अवकाशानुसार तीसरे हिस्से के लगभग देख चुका हूँ आप का परिश्रम सराहनीय है।

तथा—पत्र संख्या ११४ तिथि २२—१२—१९६६।

अवलोकन करने से भाष्य उत्तम प्रतीत हुआ।

श्रीयुत पं० शिव शंकर शर्मा काव्यतीर्थ—छन्दोग्योपनिषद् भाष्यकार,
वेदतत्त्वादि ग्रंथकर्ता वेदाध्यापक कांगड़ी गुरुकुल महाविद्यालय, आदि आदि,
सम्पादक आर्यमित्र—८ फरवरी १९१३।

अथर्ववेद भाष्य। श्री पं० क्षेमकरण दास त्रिवेदी जी का यह परिश्रम प्रशंसनीय है।आप बहुत दिनों तक सरकारी नौकरी कर और अब वहाँ से पेन्शन पाके अपना सम्पूर्ण समय संस्कृत पढ़ने में लगाने लगे। अन्ततः आपने वेदों में विशेष परिश्रम कर बड़ौदा राजधानी में वेदों की परीक्षा दी और उनमें उत्तीर्ण हो त्रिवेदी बने हैं। आप परिश्रमी और अनुभवी वृद्ध पुरुष हैं। आप का अथर्ववेदीय भाष्य पढ़ने योग्य है।

श्रीयुत पंडित भीमसेन शर्मा इटावा—उपनिषद् गीतादि भाष्यकर्ता
वेदव्याख्याता कलकत्ता यूनीवर्सिटी, सम्पादक ब्राह्मण सर्वस्व इटावा, फरवरी १९१३।

अथर्ववेदभाष्य—इसे प्रयाग के पण्डित क्षेमकरणदास त्रिवेदी ने प्रकाशित किया है। इसका क्रम ऐसा रक्खा गया है कि प्रथम तो प्रत्येक सूक्त के प्रारम्भ मेंअभिप्राय यह है कि भाष्य का ढंग अच्छा है...भाष्यकर्ता के मानसिक विचारों का भुकाव आर्यसामाजिक सिद्धान्तों की तरफ है अतएव भाष्य भी आर्य सामाजिक शैली का हुआ है। तब भी कई अंशों में स्वामी दयानन्द के भाष्य से अच्छा है। और यह प्रणाली तो बहुत ठीक है।

श्रीमती पंडिता शिवप्यारी देवी जी, १३७ हकीम देवी प्रसाद जी
अतरसुइया, प्रयाग, पत्र ता० २१—१०—१९१५॥

महेवा के पते से आपका भेजा हुआ पत्र और अथर्ववेद भाष्य चौथा कांड मिला, मैं ने चारों कांड पढ़े, पढ़कर अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ। आपने हम सभी पर अत्यन्त कृपा की है आपको अनेकों धन्यवाद हैं। आशा है कि पांचवां कांड भी शीघ्र तैयार होकर वी० पी० द्वारा मुझे मिलेगा।

दो पुस्तक हवनमन्त्राः की जिस का मूल ॥॥ है कृपाकर भेज दीजिये मेरी एक बहिन को आवश्यकता है ।

श्रीयुत पण्डित महाबोर प्रसाद द्विवेदी—कानपुर, सम्पादक सरस्वती प्रयाग, फरवरी, १९१३ ।

अथर्ववेद भाष्य—श्रीयुत क्षेमकरणदास त्रिवेदी जी के वेदार्थज्ञान और धर्म का यह फल है, कि आप ने अथर्ववेद का भाष्य लिखना और क्रम क्रम से प्रकाशित करना आरम्भ किया है... बड़ी विधि से आप भाष्य की रचना कर रहे हैं । स्वर सहित मूलमन्त्र, पद पाठ, हिन्दी में सान्त्वय अर्थ, सावाय, पाठान्तर, टिप्पणी आदि से आपने अपने भाष्य को अलंकृत किया है... आपकी राय है कि "वेदों में सार्वभौम विज्ञान का उपदेश है" । आप का भाष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती के वेदभाष्य के बराबर है ।

श्रीयुत पण्डित गणेश प्रसाद शर्मा—सम्पादक भारतसुदशाप्रवर्तक फतेहगढ़, ता० १२ अप्रैल १९१३ ।

हर्ष की बात है कि जिस वेद भाष्य की बड़ी आवश्यकता थी, उसकी पूर्ति का आरम्भ हो गया । वेद भाष्य बड़ी उत्तम शैली से निकलता है । प्रथम मन्त्र पुनः पदार्थयुक्त भाषार्थ, उपरान्त भावार्थ, और नोट में सन्देह निवृत्ति के लिये धात्वर्थ अ. व्याकरण व. निष्कर्ष के आधार पर किया गया है, वैदिक धर्म के प्रेमियों के कम से कम यह समझ कर भी ग्राहक होना चाहिये कि उनके मान्य ग्रन्थ का अनुवाद है और काम पड़े पर उस से कार्य लिया जा सकता है ।

बाबू कालिकाप्रसाद जी—सिलक प्रिन्ट कसनगाढ़ा, बनारस सिटी संख्या ५८६ ता० २७-३-१३ ।

आपका भेजा अथर्ववेदभाष्य का बी० बी० मिला, मैं आपका भाष्य देखकर बहुत प्रसन्न हुआ, परमेश्वर सहाय करे कि आप इसे इसी प्रकार पूर्ण करें । आप बहुत काम एक साथ न छेड़ कर इसी की तरफ समाधि लगाकर पूर्ण करेंगे । भेरा नाम ग्राहकों में लिख लीजिये, जब २ अङ्क छपें मेरे पास भेज देना ।

श्रीयुत महाशय रावत हरप्रसाद सिंह जी वर्मा, मु० एरुडका पोस्ट किशुनपुर जिला फतेहगढ़ हसवा, पत्र ६ दिसम्बर १९१३ ।

वास्तव में आप का किया हुआ "अथर्ववेद भाष्य" निष्पक्षता का आश्रय लिया जा सकता है । आप ने यह साहस दिखाकर साहित्य भण्डार की एक बड़ी भारी न्यूनता को पूर्ण कर दिया है । ईश्वर आपको वेद भण्डार के आवश्यक-कीय कार्यों के सम्पादन करने का बल प्रदान करे ।

श्रीयुत महाशय पण्डित श्रीधर पाठक जी, (सभापति हिन्दी साहित्य सम्मेलन लाखनऊ)—मनोविनोद आदि अनेक ग्रन्थों के कर्ता, सुपरिन्टेन्डेन्ट गवर्नमेंट सेक्रेटरियट, पी० डब्ल्यू० डी० श्री प्रयागराज, पत्र ता० १७-६-१३ ।

आप का अथर्ववेद भाष्य अवलोकन कर चित्त अन्यन्त सन्तुष्ट हुआ। आप की यह पाण्डित्य-पूर्ण कृति वेदार्थ जिज्ञासुओं को बहुत हितकारिणी होगी। आप का व्याख्याक्रम परम मनोरम तथा प्राञ्जल है, और ग्रन्थ सर्वथा उपादेय है।

प्रकाश लाहौर १२ आषाढ़ संवत् १८७३ (२५ जून १८१६—
लेखक श्रीयुत पं० श्रीपाद दासोदर सातवलेकर जी)

हम परिचित क्षेमकरणदास जी का धन्यवाद करने से नहीं रह सकते—स्वामी (दयानन्द) जी ने लिखा है—कि वेद का पढ़ना पढ़ाना आर्यों का परम धर्म है—इसके अनुकूल श्री पंडित जी अपना समय वेद अध्ययन में लगाते हैं—और आर्यों के लिये परम उपयोगी पुस्तक प्रकाशित करने में पुरुषार्थ करते रहते हैं—पंडित जी ने इस समय तक हवन मन्त्रों तथा रुद्राध्याय का भाषा में अर्थ प्रसिद्ध किया है—जो कि आर्यों के लिये पठन पाठन में उपयोगी हैं—इस सम्बन्ध में यह अथर्ववेद के पांच कांड छपवा कर निःसन्देह बड़ा लाभ पहुंचाया है। आर्यों की जो शिक्षा प्रणाली थी उसको दूटे आज पांच हजार वर्ष हो चुके हैं। ऐसे अंधेरे के समय में स्वामी जी ने वेद के ऊपर लोगों के भीतर दृढ़ विश्वास उत्पन्न करके एक धर्म का दीपक प्रकाशित किया। परन्तु हमें शोक यह है वेद के पढ़ने में आर्य लोग इतना समय नहीं लगाते जितना वे प्रबन्ध सम्बन्धी ऋगड़ों की बातों में लगाते हैं। हमारा विश्वास है कि जब तक पं० क्षेमकरणदास जी जैसे वेदाभ्यासी पुरुषार्थी लोग अपना समय वेदों के खोज में न लगावेंगे तब तक आर्य समाज का कोई गौरव नहीं बढ़ सकता। अथर्ववेद के अर्थ खोजने में बड़ी कठिनाई है। इसके ऊपर सायण भाष्य उपलब्ध नहीं होता, जो इस समय तक छपा हुआ है वह बड़ी अधूरी दशा में है, सूक्त के सूक्त ऐसे हैं कि जिनके ऊपर अब तक कोई टीका नहीं हुई।..... इस समय जो पांच कांडों का भाष्य पंडित जी ने प्रकाशित किया है उसके लिखने का ढंग बड़ा अच्छा और सुगम है। प्रथम उन्होंने सूक्त के तथा मन्त्रों के देवता दिये हैं—पश्चात् छन्द...विद्वानों का यही काम है कि वह जैसे जैसे साधन उनके पास हों वैसा वैसा सोचकर वेद मन्त्रों का अर्थ प्रकाशित करें। ऐसे सैकड़ों प्रयत्न जब होंगे तब सर्वे अर्थ खोज करना आगामी विद्वानों को सरल होगा। परन्तु इस समय बड़ी भारी कठिनाई यह है कि प्रकाशित पुस्तकों के लिये पर्याप्तसंख्या में ग्राहक नहीं मिलते हैं और विद्वानों के पास सम्पत्ति का अभाव होने के कारण हाथ के डर से पुस्तकों का प्रकाशित करना बन्द होता है। इस लिये सब आर्यों को परम उचित है कि पं० क्षेमकरणदास जी जैसे विद्वान् पुरुषार्थी के ग्रन्थ मोल लेकर उनको अन्य ग्रन्थ प्रकाशित करने की आशा देते रहें। त्रिवेदी जी कोई धनाढ्य पुरुष नहीं हैं, उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति जो कुछ उनके पास है लगा दी है..... त्रिवेदी जी ने जो कुछ किया है वह वैदिक धर्म के प्रेम से प्रवृत्त होकर इस लिये—न केवल सब आर्य पुरुषों का यह कर्त्तव्य है कि इस भाष्य को मोल लेकर त्रिवेदी जी को उत्साहित करें किन्तु धनाढ्य आर्य पुरुषों का यह भी कर्त्तव्य है कि उनकी आर्थिक सहायता करें।

The VIDYADHIKARI (Minister of Education), Baroda State
Letter No 624 dated 6th February 1913.

...It has been decided to purchase 20 copies of your book entitled *अथर्ववेद भाष्यम्*. It has been sanctioned for use of the library and the prize distribution. Please send them ...also add on the address label "For Encouragement Fund"

RAI THAKUR DATTA RETIRED DISTRICT JUDGE, Dera Ismail Khan
Letter dated March 25th, 1914.

The Atharva Veda Bhashya :—It is a gigantic task and speaks volumes for your energies and perseverance that you should have undertaken at an advanced age. I wish I had a portion of your will-power.

Letter dated 30th April 1914.

I very much admire your labour of love and hope...the venture will not fail for want of pecuniary support.

THE MAGISTRATE OF ALLAHABAD.

Letter No. 912 dated 21st May 1915.

Has the honour to request him to be so good as to send a copy each of the 1st and 3rd Kandas of *Atharva Veda Bhashya* to this office for transmission to the India Office, London.

THE ARYA PATRIKA LAHORE APRIL 18, 1914.

THE *Atharva Veda Bhashya* or commentary on the *Atharva Veda* which is being published in parts by Pandit Khem Karan Das Trivedi, does great credit to his energy, perseverance and scholarship. The first part contains the Introduction and the first *Kanda* or Book. There is a learned disquisition on the origin of the Vedas and the pre-eminent position in Sanskrit literature.....The arrangement is good, the original *antia* is followed by a literal translation and their *bhavarth* or purport in *Arya Bhasha*. The footnotes are copious; they give the derivation and meaning in Sanskrit of the various words quoting the authority of *Ashtadhyayi* of Panini, *Unadikosha* of Dayanand, *Nirukta* of Yaska, *Yoga Darshana* of Patanjai and other standard ancient works... The Pandit appears to have laboured very hard and the Book before us does credit to his erudition; scholars may not agree with certain of his renderings, but like a true *Arya* who venerates the Vedas he has made an honest attempt to find in the Vedic verses something which will elevate and ennoble mankind. Cross references to verses where the word has already occurred in this *Veda* are also given to enable the reader to compare notes. There can be no finality in Vedic interpretation, but honest attempts like these which shall render the task easy to others are commendable. We are glad to call public attention to this scholarly work, and hope that Pandit Khem Karan Das Trivedi will get the encouragement which he so richly deserves. Our earnest request is that the revered Pandit will go on with this noble work and try to finish the whole before he is called to eternal rest.....

N.B.—The printing and paper are good, the price is moderate.

All rights reserved.

॥ ओ३म् ॥

प्रियं मां कृणु दे॒ वे॒षु॑ प्रियं राज॑सु मा कृणु ।

प्रियं सर्व॑स्य पश्य॑त उ॒त शु॒द्र उ॒ताये॑ ॥ १ ॥

अथर्व० का० १६ सू० ६२ म० १ ॥

प्रिय मोहि करौ देव, तथा राज समाज में ।

प्रिय सब दृष्टि वाले, औ शुद्र और अर्य में ॥

अथर्ववेद भाष्ये

संहितायाः पदानां वर्णानुक्रम सूचीपत्रम्

श्रीमद्राजाधिराज प्रथितमहागुण महिम-धीर-वीर-चिर प्रतापि श्री
सयाजीरावगायकवाडाधिष्ठित बड़ोदेपुरीगत श्रावणमास-
दक्षिणापरीक्षायाम् ऋक्सामाथर्व वेदभाष्येषु
लब्धदक्षिणेन

श्री परिडित होमकरणदासत्रिवेदिना
निर्मितं प्रकाशितं च ।

Make me beloved among the Gods,
beloved among the princes, make
Me dear to every one who sees,
to Sudra and to Aryanman.

Griffith's Trans. Atharva 19. 62. 1.

सर्वाधिकारः स्वाधीन एव भाष्यकारेण रक्षितः ।
अयं ग्रन्थः परिडित बद्रीप्रसाद पाण्डेय प्रबन्धेन
प्रयागनगरे नारायण यन्त्रालये मुद्रितः ।

प्रथमावृत्तौ
१००० पुस्तकानि

संवत् १९७८ वि०
सन् १९२१ ई०

मूल्यम् ४)

अथर्ववेद भाष्य विषय सूची और पद सूची आदि सहित सब प्रकार पूरा रूप गया, परमात्मा को धन्यवाद है ॥

॥ ओ३म् ॥

आनन्द सभाचार ॥ अथर्ववेद भाष्य पूरा छप गया, शीघ्र मंगाइये ॥

१—अथर्ववेद भाष्य—अथर्ववेद का अर्थ अभी तक हिन्दी में न था, और संस्कृत में भी श्री सायण भाष्य पूरा नहीं है। अब परमात्मा की कृपा से उस का हिन्दी और संस्कृत भाष्य वेद, निघण्टु, निरुक्त, व्याकरणादि सत्य शास्त्रों के प्रमाणों से प्रयाग निवासी पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी का किया हुआ संवत् १९६६ में आरंभ होकर संवत् १९७८ में श्रीमान् राजाधिराज धीर-वीर-चिरप्रतापी श्री सयाजी राव गयकवाड़ बड़ोदाधीश, तथा श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त और पंजाब प्रान्त तथा दिद्वान् ग्राहक महाशयों को विशेष प्रचार सहायता से पूरा होकर छप गया।

२—इस वेद के बीसों कारणों का भावपूर्ण-संक्षिप्त स्त्री पुरुषों के समझने योग्य अति सरल हिन्दी और संस्कृत भाष्य विषय सूची, मन्त्रसूची, पदसूची आदि सहित अल्प मूल्य में उपस्थित है। वेदप्रेमी महाशय सब स्त्री पुरुष स्वाध्याय, पुस्तकालयों और पारितोषिकों के लिये भाष्य मंगावें और जगत्पिता परमात्मा के पारमार्थिक और सांसारिक उपदेश, ब्रह्मविद्या, वैद्यकविद्या, शिल्पविद्या, राजविद्यादि अनेक विद्याओं का तत्त्व जानकर आनन्द भोगें, छपाई उत्तम और कागज़ बढ़िया रायल आठपेजी है।

३—पुराने ग्राहक जिन के पास सब कांड नहीं हैं और नये ग्राहक भाष्य शीघ्र मंगावें, पुस्तक थोड़े रहे हैं, ऐसे बड़े ग्रन्थ का फिर शोध छपना कठिन है। वोभ्र आठ नौ सेर है, रेल से मंगाने वाले महाशय रेलवे स्टेशन लिखें।

कारण	१ भूमिका साहित			२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
मूल्य	१।)			१।-)	१।।-)	२)	१।।।=	३)	२।)	२)	२।)	२।।)	२।)
कारण	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	परि- शिष्ट	मन्त्र सूची	पद सूची	योग
मूल्य	२=)	१।३=)	१।)	१-)	१।-)	१।=)	२।=)	३।)	७।)	१।=)	१-)	४)	४७।)

पूरा भाष्य २३ भाग कपड़े की पांच जिल्दों में ५२।।) डाकव्यय लगभग ४)

हवनमन्त्रः—धर्म शिक्षा का उपकारी पुस्तक—चारों वेदों के संगृहीत मन्त्र ईश्वर स्तुति, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, हवनमन्त्र, वामदेव्यगान सरल हिन्दी में शब्दार्थ सहित, गुरुकुलों, डी०ए०वी० कालिजों और स्कूलों में प्रचलित संशोधित।)

रुद्राध्यायः—प्रसिद्ध यजुर्वेद अध्याय १६ (नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः) ब्रह्मनिरूपक अर्थ संस्कृत हिन्दी और अंग्रेजी में मूल्य १=)

रुद्राध्यायः—मूलमात्र बढ़िया रायल अठपेजी, पृष्ठ १४ मूल्य ७।।

वेदविद्याये—कांगड़ी गुरुकुल में हिन्दी व्याख्यान। वेदों में विमान, नौका, अस्त्र शस्त्र व्यापार, ग्रहस्थ, अतिथि, सभा, ब्रह्मचर्यादि का वर्णन मूल्य ७।।

माघ संवत् १९७८,
३० दिसंबर १९२१ ॥

पता—पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी
नारायण प्रेस, प्रयाग।

५२, लूकरगंज, प्रयाग।

ओ३म् ॥

अथर्ववेदभाष्ये
अथर्ववेदसंहितायाः
पदसूचीपत्रम् ॥

अंशः द. ४, २; २०. ५६, ३.	अंसद्रमि ११. १, २३.	अंहुः प. १, ६.
अंशम् ७. ५०, ४; ११. ६, २.	अंसस्थियाम् २. ३३, २; २०. ६६, १८.	अंहुणा द. २, ३.
अंशवः द. ६, (१) १४; ११. १, १८; १६. ६, १६; २०. १४२, ४.	अंसे द. ६, १३.	अंहुणात् द. ६६, १.
अंशान् ११. १, ५.	अंतौ द. ४, ८; ७, ७; १०. २, ५; ६, १६; ११. ३, ६.	अकः १. ८, १.
अंशुः प. २६, १३.	अंहः-मुचंम् १६. ४२, ४.	अकः २. २५, ७. ३०, १; १०. ६, १६; ३०; ११. ४, ६; २०. ६१, ४.
अंशुः-इव प. २६, १२.	अंहः-मुचं १६. ४२, ३.	अकरः १२. ३, ३८.
अंशुम् ७. ८१, ६; २०. ८७, १.	अंहसः २. ४, ३; २८, १; ४. १०, १; ३; २३, १-७; २४, १-७; २५, १-७; २६, १-७; २७, १-७; २८, १-७; २९, १-७; ३०, १-७; ३१, १-७; ३२, १-७; ३३, १-७; ३४, १-७; ३५, १-७; ३६, १-७; ३७, १-७; ३८, १-७; ३९, १-७; ४०, १-७; ४१, १-७; ४२, १-७; ४३, १-७; ४४, १-७; ४५, १-७; ४६, १-७; ४७, १-७; ४८, १-७; ४९, १-७; ५०, १-७; ५१, १-७; ५२, १-७; ५३, १-७; ५४, १-७; ५५, १-७; ५६, १-७; ५७, १-७; ५८, १-७; ५९, १-७; ६०, १-७; ६१, १-७; ६२, १-७; ६३, १-७; ६४, १-७; ६५, १-७; ६६, १-७; ६७, १-७; ६८, १-७; ६९, १-७; ७०, १-७; ७१, १-७; ७२, १-७; ७३, १-७; ७४, १-७; ७५, १-७; ७६, १-७; ७७, १-७; ७८, १-७; ७९, १-७; ८०, १-७; ८१, १-७; ८२, १-७; ८३, १-७; ८४, १-७; ८५, १-७; ८६, १-७; ८७, १-७; ८८, १-७; ८९, १-७; ९०, १-७; ९१, १-७; ९२, १-७; ९३, १-७; ९४, १-७; ९५, १-७; ९६, १-७; ९७, १-७; ९८, १-७; ९९, १-७; १००, १-७.	अकरत् १. २४, २; ६. २, ११.
अंशु-मतीः द. ७, ४.	अंहसः २. ४, ३; २८, १; ४. १०, १; ३; २३, १-७; २४, १-७; २५, १-७; २६, १-७; २७, १-७; २८, १-७; २९, १-७; ३०, १-७; ३१, १-७; ३२, १-७; ३३, १-७; ३४, १-७; ३५, १-७; ३६, १-७; ३७, १-७; ३८, १-७; ३९, १-७; ४०, १-७; ४१, १-७; ४२, १-७; ४३, १-७; ४४, १-७; ४५, १-७; ४६, १-७; ४७, १-७; ४८, १-७; ४९, १-७; ५०, १-७; ५१, १-७; ५२, १-७; ५३, १-७; ५४, १-७; ५५, १-७; ५६, १-७; ५७, १-७; ५८, १-७; ५९, १-७; ६०, १-७; ६१, १-७; ६२, १-७; ६३, १-७; ६४, १-७; ६५, १-७; ६६, १-७; ६७, १-७; ६८, १-७; ६९, १-७; ७०, १-७; ७१, १-७; ७२, १-७; ७३, १-७; ७४, १-७; ७५, १-७; ७६, १-७; ७७, १-७; ७८, १-७; ७९, १-७; ८०, १-७; ८१, १-७; ८२, १-७; ८३, १-७; ८४, १-७; ८५, १-७; ८६, १-७; ८७, १-७; ८८, १-७; ८९, १-७; ९०, १-७; ९१, १-७; ९२, १-७; ९३, १-७; ९४, १-७; ९५, १-७; ९६, १-७; ९७, १-७; ९८, १-७; ९९, १-७; १००, १-७.	अकरम् ६. ११५, २.
अंशु-मतीम् २०. १३७, ७.	अंहसः २. ४, ३; २८, १; ४. १०, १; ३; २३, १-७; २४, १-७; २५, १-७; २६, १-७; २७, १-७; २८, १-७; २९, १-७; ३०, १-७; ३१, १-७; ३२, १-७; ३३, १-७; ३४, १-७; ३५, १-७; ३६, १-७; ३७, १-७; ३८, १-७; ३९, १-७; ४०, १-७; ४१, १-७; ४२, १-७; ४३, १-७; ४४, १-७; ४५, १-७; ४६, १-७; ४७, १-७; ४८, १-७; ४९, १-७; ५०, १-७; ५१, १-७; ५२, १-७; ५३, १-७; ५४, १-७; ५५, १-७; ५६, १-७; ५७, १-७; ५८, १-७; ५९, १-७; ६०, १-७; ६१, १-७; ६२, १-७; ६३, १-७; ६४, १-७; ६५, १-७; ६६, १-७; ६७, १-७; ६८, १-७; ६९, १-७; ७०, १-७; ७१, १-७; ७२, १-७; ७३, १-७; ७४, १-७; ७५, १-७; ७६, १-७; ७७, १-७; ७८, १-७; ७९, १-७; ८०, १-७; ८१, १-७; ८२, १-७; ८३, १-७; ८४, १-७; ८५, १-७; ८६, १-७; ८७, १-७; ८८, १-७; ८९, १-७; ९०, १-७; ९१, १-७; ९२, १-७; ९३, १-७; ९४, १-७; ९५, १-७; ९६, १-७; ९७, १-७; ९८, १-७; ९९, १-७; १००, १-७.	अकरम् १. ३२, ४; २. २, ५; ५. ७, ६; १०; २३,

(४, ६८८)

अकृताम्—अक्षरेण.

अकृताम् ६. १४१, २.
 अकर्म १८. ३, २४.
 अकर्म ७. ६७, ४; २०. १६,
 १२.
 अकल्पत् १३. १, ४६; ५३.
 अकल्पन्त ११. ३, २१.
 अकल्पयत् १०. २, १५२; ६,
 २१; १३. १, ५३; १४. १,
 ५५.
 अकल्पयथा: १२. १, ५५.
 अकल्पयन् २०. १२८, १.
 अकल्पयन् ६. ४, १४.
 अकल्पयन् ६. १०६, १; १६.
 ६, ५; ८.
 अकल्पयन्त १८. ४, ७.
 अकृच्च: ११. १०, २२.
 अक्राम: १०. ८, ४४.
 अक्राम-कर्शन: २०. २१, २.
 अक्रामा: ६. ११४, ३.
 अकारि २०. १५, ३.
 अकारिषम् ७. ७, १; २०.
 १३७, ३.
 अकुप्यन्त: २०. १३०, ८,
 अकुर्वत ६. १२८, १.
 अकुर्वन् १५. ४. २; ५; ८;
 ११; १४; १७.
 अकुर्वन् १५. ५, १; ४; ६;
 ८; १०; १२; १४.
 अकृपार: ५. १७. १.
 अकृणो: १४. १, ४१; २०.
 १३५, १२,
 अकृणो: ७. ८४, २,

अकृणोत् १०. ७, ६; १६.
 ४, १; २०. १७, ८.
 अकृणोत् ६. १०, ६; २०.
 ११, ३; १६, ६.
 अकृणवत् २०. ६४, ६.
 अकृणवत् ८. ५; १४.
 अकृण्वन् १. २५, १; ४.
 २३, ६; ७. ७६, १; ११.
 १; २४.
 अकृण्वन् १०. २, २.
 अकृतम् २०. ६७, ३.
 अकृत-रुक् ४. ३१, ४.
 अकृन्तत् २०. ६१, ५.
 अकृन्तन् १४. १, ४५.
 अकृपयत् २०. १६, १०.
 अकृपेताम् २०. ४२, २.
 अकृपन् १८. ३, २३.
 अकृष्ट-पच्ये ५. २६, ७.
 अकृतवै २०. २६, ६; ४७,
 १२; ६६, ११.
 अक्रम ७. ६८, १२,
 अकृत-भि: १३. २, १७; २२;
 १७. १, ६; १८. १, ५५;
 २०. ४७, १४; १६.
 अकृतन् १८. १, ३५.
 अकृत २०. १३८, ३.
 अकृत ३. १२, ५; ५. ३,
 १०; ६. २८, २; ४६, ३.
 अकृतु: ४. ३२, ५.
 अकृतुम् ३. २५, ६.
 अकृन् २. २६, ७; ३. ४, ७;
 ४. २१, १; १८. १, ५५; ३,

२२; २०. ३५, १६.
 अकृन्दयत् ८. ६, २.
 अकंसुत् २०. १३५, ४.
 अक्रमत् ४. ११, ७; १. ५,
 २०.
 अक्रमन् ४. ३, १.
 अक्रमीत् १. १७, ४; ३. ७,
 २; ६. ३१, १; ८. १, २१;
 १६. ३६, ५; २०. ४८, ४.
 अकृच्य-अत् १२. २, ३; ४२.
 अक्रामत् ८. १० (१), २;
 ४; ६; ८; १०; १२;
 १० (२) १; (१०) १; ३;
 ५; ७; १० (४) १; ५; ६;
 १३; १० (५), १; ५; ६;
 १३; १६. ६, २; १६, १-
 ११.
 अक्रामन् १६. १६, १०.
 अक्रीणन् ४. ७, ६.
 अक्ष: ६. ६, ११; १४. १, १२;
 १६. ५३, २.
 अक्ष-क्रामा: २. २, ५.
 अक्ष-वान् ६. ६, १५.
 अक्षत: १२. १, ११.
 अक्ष-दुग्ध: ५. १८, २.
 अक्षन् १८. ४, ६१.
 अक्षन् १८. ३, ४२; ४, ६५.
 अक्ष-पराजयम् ४. १७, ७.
 अक्षम् २०. १२२, २; ३.
 अक्षये १६. ५२, ३.
 अक्षरन् २०. १३७, ४.
 अक्षरा: १३. १, ६.
 अक्षरे ६. १०, १८.
 अक्षरेण ६. १०, २; १८. ३, ४७.

अक्ष-वृत्तम्—अगमन्.

(४, ६)

अक्ष-वृत्तम् ६. ११८, २.
 अक्षाः ७. ५०, ६.
 अक्षाः ६. ७०, १; ७. १०६,
 ६; १४. १, ३६.
 अक्षाणाम् ६. ११८, १; ७.
 १०६, ५.
 अक्षात् २. १४, २.
 अक्षान् ७. १०६, ७.
 अक्षान्-इव ४. १६, ५.
 अक्षि १. ८, ३; १५. १८, २२.
 अक्षिणी इति १०. ६, १४;
 ११. ३, २.
 अक्षित-ऊतयः २०. १०, १;
 ५६, १.
 अक्षित-ऊतिः २०. ६६, ७.
 अक्षितः ४. ५, ७; ६. १४२,
 २; ६. १, ६; ११. १, २०.
 अक्षितम् ३. २४, ४२; ७;
 २६, ४; ५; ४. २७, २; ७.
 ८१, ६; १८. ४, ३६; १६.
 ५४, ४; २०. ७१, १३.
 अक्षितस्य ७. ७६, ४.
 अक्षिता २०. ६, ७.
 अक्षिताः १. १५, ३; ६.
 १४२, ३५. ७. ८१, ६;
 १०. ६, १४.
 अक्षिताम् ७. १७, २; ८०,
 २; १८. ४, ३२.
 अक्षितिः ११. ७, २५; ८,
 ४; २६.
 अक्षितिम् १८. ४, २७.
 अक्षितौ ६. १, ७.
 अक्षिभुवः २०. १३६, ४.
 अक्षीणि ४. ५, ५.

अक्षीभ्याम् २. ३३, १; ११.
 ३, २४२; २०. ६६, १७.
 अक्षीयमाणम् ७. २०, ३.
 अक्षु-जालाभ्याम् ८. ८, १८
 अक्षुध्याः ७. ६०, ४; ६.
 अक्षुम् ६. ३. ६.
 अक्षुम् २०. १२८, १३.
 अक्षेभ्यः ७. १०६, २.
 अक्षेषु ४. ३८, ४; ५. ३१, ६;
 ६. ३८, ३; ७. १०६, १;
 १२. ३, ५२; १४. १, ३५.
 अक्षैः ७. ५०, १.
 अक्षौ १६. ५०, १.
 अक्षुहि ४. २२, १.
 अक्षणोः १६. ६०, १.
 अक्ष्यम् ४. ६, १.
 अक्ष्योः ५. ४, १०; ६. २४,
 २; १२७, १.
 अक्ष्यौ १. २७, १; ४. ३, ३;
 ५. २३, ३; २६, ४; ६. ६,
 १२; ७. ३६, १.
 अक्षिल्ली २०. १३४, ६.
 अक्षु १६. ४५, ५.
 अक्षनत् ४. ४, १; ६. १३७,
 १; ७. २४, १.
 अक्षनत् २. २७, २; ५. १४, १.
 अक्षनम् ६. १०६, ३.
 अक्षर्वम् २०. ५६, ४.
 अक्षातम् ५. १३, १.
 अक्ष्यत् १८. १, २४.
 अक्ष्यत् ६. ३१, २; ७. ७३,
 ६; ८२, ४; ५; १०. १०,
 १५; १३. २, ६; १८. १,
 २७; २८; ३, २३; २०.
 १४, १६; ४८; ५.

अगच्छः २०. ६२, ७.
 अगच्छत् ८. १० (३),
 ३; ५; ७; १० (४), १;
 ६; १३; १० (५), १;
 ६; १३; १५. ७, १.
 अगच्छन्त ७. ७६, २;
 १०, १७.
 अगत १०. १०, १३; १४;
 अगतस्य ११. १०, १६;
 २, ७४.
 अगदः ४. १७, ८; ५.
 ६; ७; ८; ६.
 अगदम् ५. ४, ६; ६. ६
 ३; १८. ३, ५५.
 अगन् १४. २, ३६; ७४; २
 २०, ३; ५७, ६.
 अगन् २. ६, ३; २६, ४;
 ५; ३. ५, १; ४; १
 ४. ३७, ६; ५. २६, १
 ६८, १; ७. २५,
 ७६, ३२; ६. ४, २२;
 ४, १५; ११. १, १४
 ३, १५; १३. २, ६;
 २, ५; १३; १४; १
 ८; २, ५७; ४, ५०
 १६. ३१, ७; ३७, १
 ४; २०. ७६, ४; १२६
 अगन्म ७. ३२, १; ५
 १४. २, ३६; १६.
 १८. ३, ६४.
 अगन्म १६. ६, ३२
 ५६, ३.
 अगन्महि ६. ५३, ३.
 अगमत् १. ८, २; ६
 २; १०. ६, २; २२
 अगमन् १४. २, ६३.

अगमम्—अग्निः.

५, ६६०)

अगमम् २. ३०, ५२; ४. १३,
५; ६. १२, १; ७. ८६, १;
८. ६, २२; ९. १, १४;
१०. ५, ४६; ११. ३५, ३.

अगतिम् ४. २६, ३.

अगस्त्यः ४. ३७, १; १८.
३, १५.

अगस्त्यस्य २. ३२, ३; ५.
२३, १०.

अगाः ८. १, २०; १४. २,
१६; १६. २७, ८; २०. ६६,
१०.

अगात् १. २८, १; २६, ५;
२. ६, २; ३; ५. २८, ६;
६. ३७, १; ९. ६, १७;
१०. ४, २६; १२. २, ४३;
१३. १, ४१; २, ३५; १४.
१३, १३; १७. १, २४; २०.
१०७, १४.

अगाताम् २. ८, १; ६. १२१, ३.

अगाम् १. ३४, ५; ४. १४,
१; १८. २, ४५; १९. १४, १.

अगमि ३. १५, ४.

अगाम् १२. २, २२.

अगत् २०. ६१, ३.

अगह्याः २०. १२८, १४.

अगः २. ५, २; ३. २२, ७;

२४, १; ८. ६, १३२;

अग. ३, ६; ११. १, १०;

४; १३. १, १०; १४;

अग. ५७, २; २०. २४, ३.

अग्न १८. २, ३३.

अग्नः २०. १३५, ७.

अग्नम् २०. १३५, ७.

अग्न १२. १, १६.

अगृह्णात् १०. १०, २५.

अगोताम् ४. १७, ६.

अगो-रुधाय २०. ६५, २.

अगोह्यः २०. ६४, १.

अग्रम् २०. १३६, ११.

अग्रयः २. ३५, १; ३. २१,

१; ७. ६६, १; ८. १, ११;

९. ४, १८; १०. ५, २१;

१२. १, १६; ३७; ३, ५०;

१३. २, १८; १६. १, १;

१८. ४, १२; १३; १९. ६,

११; १२; १६, २; २७, १५;

२०. ४७, १५.

अग्रये ४. ३६, १; ६. १०,

१; ३४, १; ७. ८७, १; ९.

३, १२; ११. ८, ३१; १२.

३, ५५; ४, ३४; १४. २,

४; १८. ४, ७१; १९. ४,

१; ४३, १; ५५, ५; २०.

१, ३.

अग्रायी ७. ४६; २.

अग्नाविष्णु इति ७. २६, १; २.

अग्नि-आधेयम् ११. ७, ८.

अग्निः १. ७, ४; ६, १; २;

१६, १; २; २५, १; २८,

१; ३३, १; २. १, ४; १०,

२; १२, ८; २८, २; २६,

१; ३४, ३; ३. १, १; २;

३; ६; २, १; २; ४, ३; ८,

१; ३; ११, ४; १५, ६;

२१, ६; १०; २६, १; २७,

१; ३१, ६; ४. ११, ७;

१५, १०; ३६, १; ३६, २;

६; ५. ३, ३; ८, ३; १२,

१०; ११; १७, २; १८, ६;

१४; २२, १; २३, १; २४,

२; २५, ४; २६, १; २७,

३; ५; ११; २८, २; ५; ३०,

११; ३१, १२; ६. ३, २;

२७, २; ३४, २; ५; ३५,

१; २; ३६, ३; ३६, ३; ४५,

२; ४७, १; ५३, १; ५८, ३;

७१, १; २; ७३, १; ७६, १;

८६, २; ८८, २; ९४, ३;

९७, १; १०६, ३; १११,

२; १२०, १; १२१, २; ७.

१७, ४; २०, १; २४, १;

३३, १; ५३, २; ३; ६; ६२,

१; ६३, २; ६४, २; ७३, १;

२; ८२, ४; ५; ११४, २; ८.

३, १; २४; २६; ५, ५; १०;

१८; ८, २३; ९, ६; ९. २,

१३; २०; २४; ३, २१;

२२; ४, ३; ५, ६; ७; ७,

१; १६; १०. ३, १४; ४,

२६; ६, ६; ७, २; ४; १२;

८, ३६; ९, २६; १०, ७;

११. १, २; ३३; २, ८; ७,

१; ८, ८; ९, २५; १२.

१, १६; २०; ५३; २, ४;

७; ११; १२; १५; १६; ३३;

३५; ३८; ४४; ५०; ५२; ३;

२; २४; २५; ४३; ५, ४१; ६१;

७२; १३. १, ११; १७; २०;

२७; २८; ४८; ५३; २;

४६; ३, ५; १३; ४, ५; २६;

१४. १, ८; ४८; ४६; २,

२; ३; ४; ५६-६२; १५.

४; १५; ६, २; १०, ७; १४,

१५; १५, ३; १८, ३; १६.

१, ७; ८; ४, ४; ७; ९, २;

१७. १, १०; १८. १; २७,

अग्नि-इव—अग्नेः

(४, ६६१)

२८; ३६; २, २८; ५४; ३,
११; ५५; ६५; ४, ८; ६;
१५; ६४; १६. ४, १; ६,
७; १०, ४; १७, १; २४,
८; ३१, २; ३३, १; ३७,
१; ४३, १२; ४५, ६; ५५,
३; ४; ५६, ३; ३; २०. २,
२; ६२, ८; ६६, ६; ११;
१२; १०२, १; २.

अग्नि-इव २. २५, ४; ४. ३१,
२; ५. १४, १३; १८, ४;
२२, २; ६. ३७, २.

अग्नि-जाः १०. ४, २३.

अग्नि-जिह्वाः ११. ६, १६.

अग्नि-तपःभिः २०. १६, ६.

अग्नि-तृप्तेभिः ८. ४, ५.

अग्नि-तेजाः १०. ५, २५.

अग्नि-दग्धाः १८. २, ३५.

अग्नि-इतः २. १२, -७; १८.
२, १.

अग्नि-धानात् १२. ३, ३५.

अग्नि-धाने ६. २७, ३.

अग्निना ३. १२, ६; ४. १४,

२; २३, ५; ३६, २; ५. २३,

१३; ६. ८५, ३; ८. ८, १७;

६. ३, २३; ५, ५; ११. २,

२६; १३. १, २६; १६. ३७,

१; ४५, ६.

अग्नि-भिः ३. २०, ५; २०.
१०३, २.

अग्नि-भ्यः ३. २१, १-७.

अग्निम् १. ६, २; ३३, १; २;

३; ३. १६, १; २०, ४;

२१, ८; ३०, ६; ४. २३,

३; ४; ७; ४०, १; ५. १८,

५; ३०, १२; ६. १८, १;

२८, २; ७. ५०, ३; ६३,

१; ८२, २३; ११०, २; ८.

२, ६; ८, २; ६. ३, १४;

१०, २८; १०. २, २०;

२१; ७, ३३; ८, १७; ११.

६, १; १२. १, ६; १६;

२०; २, ८; ६; १०, ५४;

१३. १, २५; ४०; ५२; ५७;

१४. १, ३६; २, १८; २०;

२३; २४; २५; १५. ४, १४;

१०, ६; १८. १, २०; २१;

३, २२; ६०; ४, १४; ४०;

१६. १८, १; २७, ७; २०.

१६, ६; ३४, ३; ६७, ३;

१०१, १; १०३, १; ३.

अग्निम्-अग्निम् २०. १०१, २.

अग्निमान्-इव ८. ४, २.

अग्निम्-इव ७. ४५, २; ८; २, ४.

अग्नि-मठानाम् ६. ६७, २.

अग्नि-रूपाः ४. ३१, १.

अग्नि-वासाः १२. १, २१.

अग्नि-शालम् ६. ३, ७.

अग्निषु १५. १२, २.

अग्नि-स्तोमः ११. ७ ७.

अग्नि-स्तोमम् १०. ६, ८.

अग्नि-स्तोमेन ६. ६ (४) २.

अग्निस्तोमैः १२. ३, ३३.

अग्नि-स्वात्ताः १८. ३, ४४.

अग्नि-होत्रम् ११. ७, ६.

अग्निहोत्र-हुताम् ३. २८, ६.

अग्नि-होत्राः ६. ६७, १.

अग्नि-होत्रे १०. ३, २२, १५.

१२, २.

अग्नीः २०. १३६, १२; १४.

अग्नी इति ११. ५, ११, १३.

१, ४६; ४७; ४२, ५०; ५१;

२०. १३६, ५-११.

अग्नीन् १२. २, ४, १६. १ १३

अग्नीषोमा १. ८. २, १८

२, ५३.

अग्नीषोमा ६. ६३, ३.

अग्नीषोमाभ्याम् १२. ४, २६

अग्नीषोमीयः ६. ६ (१) ६.

अग्नीषोमी ३. १३, ५; ८. ६

१४.

अग्नीषोमौ ६. ६१, ३.

अग्नीषोमौ ६. ५४, २.

अग्ने १. ७, २; २. १६, ४;

१६, १; -५; ३. ३, १; १५,

५; २०, २; २२, ३; ४. १४.

५; ३३, १; ५. ३, २; ८,

१; १४, ८; २७, १२; २६,

१; ४; १३; ६. ५, १; ६३.

४; १०८, ४; १३०, ४; ७

३४, १; ६१, २; ७३, १

११०, १; ८. ३, ४;

२०; २३; ६. २, ४;

१०. ६, ३५; ११; १,

३; ६; १६; १२. २, ४

१३. १, ३१; १४. २,

१८. १, ३४; २, ३६;

५; ४, ३०; १६. ३,

३; २७, ५; ६४, १; २

१३, ३; १०१, ३; १०२,

१०३, २.

अग्ने १. ७, १; ३; ६; ७;

४२; ६, ३; ४; २. ६,

२२; ३३; ४३; ५; १३, १

२८, ५; ३६, १; ३;

१५, ३; ४; ८; २०, १;

३१, १; ४. ४, ६; ३३,

५. ३, १; ६, १०; १२,

२५, ७; २८, ४; २६,

(४,६६२)

अग्नेः—अघ-यवः.

३; ५; १०; ११; १४; १५;
 ३०, १४; ६. ५, ३; ३२,
 १; ४६, १; १०३, २;
 ३; १०४, २; ११०, १;
 १११, १; ११२, १; २;
 ११७, १; २; ११६, १;
 १२२, ४; १२४, १; ७.
 ५३, १; ६१, १; ७१, १;
 ७३, ६; ७८, १; २; ८२,
 ३२; ६२; ८४, १; ८६,
 १; २; ६७, ३; १०६, १; १०८,
 १२; १०६, २; ८. ३, ३;
 ५; ६; ८; १०; ११; १२;
 १३; १५; १७; १८; १६;
 २०; २१; २२; ४, १०;
 १४; ६. १, १४; १५; ५,
 १७; १६; ६, १३; १०. ५,
 ४६; ४७; ४८; ४६; ११.
 १, ४; ३६; १२. २, ३; ५;
 ६; १७; १८; ४५; ४६;
 १३. ३, २१; ३३; १४. २,
 ६६; १६. ६, ११; १८. १,
 २२, २४; २५; २६; २, ४;
 १०; ३४; ३, ६; २१; ४२;
 ४७; ४८; ५३; ४, ६; १०;
 ११; ८८; १६. ३, ४; ७,
 २; ८, ३; ११, ६; ५५, १,
 २; ६; ५६, १; ६४, ३; ४;
 २०. १३, ४.

अग्नेः ३. १, ५; २, ३; १६, ४;
 ४. १४, १; २३, १; ३३, ५;
 ३६, २; ५. २७, १; ५; ८;
 ६; २८, ६; ६. ७६, २; ४;
 ७. ७०, ४; ५; ८. १, ४; २,
 १३; २७; २८; ७, ८; १६; ६.
 १, १; ३; १०; २, ६; ५, ६;
 १३; १०. ५, ७; ११. १,

२५; ३, ३६; ८, ६; १२. १,
 २०; २, ४०; ३, ३४; १३. १,
 ३०; २, ३५; ४, ३६; १५.
 ६, ३; १८. २, ५८; ४, ८;
 १६. २६, १; २७, ५; ४५,
 ३; २०. १०७, १४.

अग्नेः-इव ६. २०, १; ७.
 ४५, २; ८. ७, १५.

अग्नौ ४. ३६, ६; ५. ३१,
 ६; ६. २६, १; ३८, १;
 १२२, ३; ७. ७२, ३; ८७,
 १; ६. ५, ५; १०. १, १८;
 ४, २२; ११. १, २६; ५,
 १३; १२. २, १३; १६; ३,
 ७; ५४; १७. १, १३.

अग्मत २. ३०, २.

अग्मन् २०. ८६, ८.

अग्मन् ४. २१, १; २०.
 १४३, ६.

अग्र-इत्वंरी १२. १, ५७.

अग्रतः ४. १०, २; ५. १७, १४.

अग्रभम् १०. ४, १६.

अग्रभम् ४. २०, ८; ५. १३,
 २; २; ३; ६. ८३, २; १६.
 ३८, २.

अग्रभीत् १. १२, २.

अग्रभीत् ७. ११०, ३; ८. १,
 २; १७; १०. ६, २, १८. ३,
 १६.

अग्रम् २. २६, २; ४. १, ५;
 १६, ३; ३२, ७; ६. १३७,
 ३; ७. १, १; ३, १; ८१,
 २; ८२, ४; ५; ८. ७, ३;
 १२; १०. ८, ८; १२. ३,
 १०; १४. १, २४; १६. १,
 ६; १८; १, २७; २८.

अग्रवः १४. २, ७२.

अग्रवः १८. २, ४७.

अग्र-शः १२. ४, ३३; १६.
 ६, ११-

अग्रहीत् ५. १७, ८.

अग्रा ८. ३, १०.

अग्रियः ५. २, ८; २०. १०७,
 ११.

अग्रियम् ११. ६, ३.

अग्रुव ६. ६०, १; ३.

अग्रे १. ३४, २; २. २६, ७;

३४, ३; ४; ३. ४, ४; ६,

६; १२, ५; २२, ३; ४. १,

२; २, ६; ७; ८; १४, १२;

१६, ४; २८, ४; ५. १२, ४;

२८, ११; ६. ११६, १; ७.

८२, २; ११०, २; ८. १०(१)

१; ६. ४, २; ५, २०; ६,

८; २१; १०. ७, २८; ८,

२१२ ११. १, २३; १०,

१५; १२. १, ८; २४; २,

३१; ३; १; ६; ४, २४; १३.

२, ३६; १४. २, १; ३२;

५०; १८. ३, ५७; १६. ६,

६; २२, २१; २३, ३०; ३१,

६; ३५, १; ४१, १; ५२,

१, ५३, १०; ५६, २.

अघ-अश्वस्य १०. ४, १०.

अघकृते १०. १, ५.

अघकृत्-भिः १४. २, ६२.

अघ-द्विष्टा २. ७, १.

अघम् १. २८, ३; ४, १७, ३;

३३, १२; २-८; ८. ४, २;

६, २६; १०. १, ५; १२.

३, १४; ५, ३२; १४. २;

५६; ६०; ६१; २०. २०,

६; ५७, ६.

अघ-मारः ६. ६३, १.

अघ-यताम् १०. ६, १.

अघ-यन्ताम् १०. ४, १०.

अघ-यवः १. २७, २; ३; १६.
 १८, १-१०.

अध्यायः—अङ्गो-अङ्गो.

(४, ६६३)

अध्यायः ४. ३, २; ५. ६, १०;
१०, १-७; १६. ४७, ७;
४६, ६.
अध्यायनाम् १. २०, २.
अध्यायोः १. २७, १; ७. ५१,
१; २०. १७, ११; ८६, ११;
६४, ११.
अध्यायः ८. १, १६; ११. २,
११.
अध्यायः ८. ८, १०.
अध्यायविषा ५. १८, ३; १२.
५, १२; २६; ५६.
अध्यायविषाः ६. ६३, २.
अध्यायविषाभ्याः ६. ६३, ३.
अध्यायशंसः ४. २१, ७; ७. ७५,
१; १६. ४७, ६.
अध्यायशंस-दशंसाभ्याम् १२.
२, २.
अध्यायशंसम् ८. ३, १६; ४, २.
अध्यायशंसाय ८. ४, ४.
अध्यायहारः ६. ६६, १.
अध्यायः २०. १२६, १६.
अध्याय १२. ५, ५६.
अध्याय २०. ३७, ७.
अध्यायिणीः ११. ६, १४.
अध्यायचक्षुः १४. २, १७.
अध्यायेण ७. ६०, १; १४. २,
१२.
अध्याय ८. १० (३) १; ३; ५;
७; ११. ५, १६.
अध्यायः ६. ४, १७.
अध्याया ३. ३०, १; ६. ६१,
२; ७. ७३, ८; ६. १०, ५;
१६. १६, २; २७, १५.
अध्यायाः ७. ८३, २; ८. ७,
२५; १६. ४४, ६.
अध्यायानाम् ६. ४, २; ४. १६.
अध्यायाः ८. ३, १५.
अध्याये १२. ५, ५८; ६०.
अध्याये ६. ७०, १; २; ३; ७.

७३, ११; ६. १०, २०; १०.
६, ३; ११; २४; १०, १;
१२. ५, ६३; ६४; १८. ३, ४.
अध्यायौ १४. २, १६; १८. ४,
४६.
अध्यायान् १. १२, २.
अध्यायिनः १६. ६६, १.
अध्यायकुशः ६. ८२, ३; २०.
५, ४.
अध्यायकुशम् २०. ६४, ६.
अध्यायकेन ७. ११५, १.
अध्यायवतम् ६. ६६, २; ६. १,
१६.
अध्याय १. १६, २; २. ३, २१;
५. ११, ५; ७; ६. ६, ५;
११. ४, २१; १३. ३, २१;
२०. २०, ५; ५७, ८; ६३,
४; ५; ६; ८६, ३; १२५,
२; १२६, ७.
अध्याय-ज्वरः ५. ३०, ६.
अध्याय-ज्वरम् ५. ३०, ८; ६.
८, ५.
अध्याय-भेदः ५. ३०, ६, १६.
४४, २.
अध्याय-भेदम् ६. ८, ५; २२.
अध्यायम् ५. १७, ५; ६. ७२,
१; १०. ७, २; ६; २५; २६;
१४. १, २७; १८. २, २६;
४, ६४.
अध्यायम्-अङ्गम् ४. ६, ४; ६.
३, १०.
अङ्गा ६. ६६, ३; ११. ८,
१२; १२. ५, ४२; ७१.
अङ्गात् १०. ७, २१.
अङ्गात्-अङ्गात् ५. २५, १; ८.
७, ३; १०. ४, २५; १४.
२, ६६.

अङ्गानाम् १८. २, २४,
अङ्गानि ३. २, ५; ११, ६; ४.
५, ४; १२, ७; ६. ६०, २;
६. ४, ११; ८, १६; १०.
५, ५०; ७, १८; ११. ७, ६.
अङ्गारः २०. १०३, ३,
१३५, ६.
अङ्गारः-मि २. १२, ४; १८.
१, ४७; ५६; ६०; २०.
७७, ८.
अङ्गारः-भ्यः १२. ३, ४४; १६.
२०, १८; २०. २८, २; ३६,
३; १३५, ६.
अङ्गारसः २. १२, ५; ३. २१,
८; ८, ८; १३; ६. ५, १६;
१०. ६, २०; ७, १८; ३४;
११. ६, १३; १२. ३, ४३;
४५; १८. १, ५८; ६१; १,
२०; ४, ३; २०. ६१, २.
अङ्गारसम् ४. २६, ३.
अङ्गारसाम् ६. ३५, १; १६.
८, १४; १८. ४, ८.
अङ्गारः १६. ३४, ६; ५४, ५;
२०. २५, ४.
अङ्गारेभ्यः १६. ३६, ५.
अङ्गारिम् ४. १८, ६; ५. ३१,
११, २०. १३६, १३.
अङ्गारि-मिः ४. १४, ७.
अङ्गारि-भ्यः २. १३, ६; २०.
६६, २२.
अङ्गारिः १०. २, १.
अङ्गारम् २०. १३६, १६.
अङ्गो १०. ७, ११; ३५;
१३; २७.
अङ्गो-अङ्गो १. १२, २; २.
३३, ७; ६. ११२, ३; २०.
६६, १३.

(४,६६४)

अङ्गेन—अजनयन्त.

अङ्गेन ६. ७२, १.
 अङ्गेभ्यः १. १२, ४; २. ३४,
 ५; ३. ७, ३; ५; २२, १४;
 ३०, ८; ६. ६०, १; ६. ८,
 ७; ८; ११. २, ६; १६.
 ४४, २.
 अङ्गे-स्थाः ६. १४, १,
 अङ्गैः ४. १४, ६; ६. १२०,
 ३; ७. ५, ५; ८. २, ३.
 अङ्गो इति ६. ६०, २.
 अङ्गधि ३. १२, ८; ४. १५,
 ६; १२. ३, ४५; १६. ३१,
 १३,
 अङ्ग्यः ६. १२७, ३.
 अच ४. १५, १६.
 अचक्रुषे ५. १४, ६.
 अचति १०. ८, २६.
 अचरत् ६. ६२, २.
 अचरत् ५. ४, ४; ६. ६५,
 २; १०, १०, १६; १३. २,
 ४१; १६. ३६, ७.
 अचकृषु ६. ३०, १; ६१, १.
 अचलत् १५. २, १; ६; १५;
 २१; ६, १; ४; ७; १०; १३;
 १६; १६; २२२; २४; ६, १.
 अचस्व ३. ३; १.
 अचाकृशम् २०. १२६, १६.
 अचामि १४. १, ३८,
 अचायिषम् ७. ८६, १; १०.
 ५, ४६.
 अचाकृ २०. ३४, १३,
 अचिकित्वा ६. ६, ७.
 अचिकित्सीः ५. ११, १.
 अचिक्रवत् ३. ३, १.
 अचिक्रवत् १८. ४, ५८; २०.
 ३१, ५.

अचितः ८. ४, १.
 अचितम् ८. ३, २१.
 अचित्तीः २. ६, ५.
 अचित्या ५. १७, १२;—१७;
 ३०, ३; ३१, १०; ६. ५१,
 ३; १२. ४, ५१; ५२.
 अचिन्वन् १०. २, ४.
 अचीकलपत् ६. ११, ३.
 अचीचरत् १२. ४, २८.
 अचेतयत् २०. ११, ५.
 अच्छ ३. ४, ३; २०, २; ५.
 २७, ४; ६. ३६, २; ११.
 १, २; १३. २, ४६; १६. २,
 ३; २०. १२, ४; १७, १;
 २४, ३; ३६, ५; ४६, १;
 ७०, २; १०३, ३; १४३, ५.
 अच्छ-आयन्ति १२. ४, १४;
 १५.
 अच्छ-आवदामसि ७. ३८,
 ३; ८. ७, १; १०. १०, ४;
 १२, १, २७.
 अच्छ-आवदामसि ६. १४२,
 २.
 अच्छ-आवदामि ६. ५६, ३.
 अच्छिदन् ६. १०४, १.
 अच्छिधमानया ७. ४८, १.
 अच्छिद्यमाना ८. २, १.
 अच्छिन्नः १६. ५८, १.
 अच्छिन्न-पर्येन १६. ३२, २.
 अच्छिन्नम् ६. १२२, १.
 अच्छिन्नाः १६. ५८, १.
 अच्छोक्ति-भिः २०. ३५, ३.
 अच्छ्यसे ६. ४६, २.
 अच्छ्युतः ६. ८८, ३; १६.
 ३३, २.

अच्युत-च्युत् ५. २०, १२;
 २०. ३४, ६.
 अच्युतम् ५. २८, १४; १२.
 ३, ३५.
 अच्युता ६. २, १५; २०.
 ३६, ६.
 अज ४. ३७, २; ६. ५, ६; १६.
 अज ६. ५, १५.
 अज-अवयः ५. २१, ५; ७.
 ६०, ५; ८. ७, २५; ११.
 २, ६, १६. ६, १२.
 अज-अविषु ११. २, २१; १२.
 २, १५.
 अजः ४. १४, १; ६. ५, १;
 ३; ७२; १०; ११; १३; १६;
 १८; २०; २१; ३१; ३२;
 ३३; ३४; ३५; ३६; १०. ७,
 ३१; ८, ४१; १३. १, ६;
 १८. २, ८; १६. ११, ३.
 अजगन् १६. ४६, ३.
 अजगन्त २०. १२७, १.
 अजगन्तन २०. १२६, २२.
 अजगन्ताः ४. १५, ७; ६; ११.
 २, १५.
 अजरध-पाप्मा ६. ६(२) ६.
 अजग्रभम् ४. ५, ४.
 अजत् ३. ८, ४.
 अजल २. १४, ४; ७. ६, ४;
 ८. ६, १६.
 अजनयत् ६. ७८, ३; १५, १;
 २; १६. ३६, ४; ५३, ५;
 ५४, ३.
 अजनयन् १६. २७, ७; ३४,
 ६; ५२, ३.
 अजनयन्त १३. ३, १२; २१.

अजयन्त—अजैश्वसः.

(४,६६५)

अजयन्त ए. १, ५.
 अजयन्तम् द. ६१, २; ३.
 अजनि २०. २५, ५; ११५, १.
 अजनिष्ठ ४. १४, १; ए. ५,
 १३.
 अजनिष्ठ द. ११०, ३; ७.
 ए. १; १२. ३, ४७.
 अजनिष्ठाः ११. १, ३.
 अजन्तु द. ५, ५; ६: १४.
 १, ३६.
 अज-बधु प. ५, द.
 अजम् ४. १४, ६; ६; ए. ५,
 ७२; ११; १२; २२: २४-२८;
 ३१; ३७; १८. २, ६.
 अजयः २०. २६, ३.
 अजयत् ७. ६२, १; द. ५,
 ३२; १४; १०. ६, ६; १०;
 १३; १६. १३, २; २०. ६०,
 ३.
 अजयन् ७. ११०, २.
 अजयन् १०. ६, १६; ११.
 १०, १२.
 अजरः द. ३, २०; १६. २४,
 द; ५३, १; २०. ३६, ३.
 अजरन्ताम् ७. ६, २.
 अजरम् ३. १६, १; ५; ६. ६८,
 २; ए. ६, २; १४; १०. द,
 ४४; १३. ३, १८; १८. ४,
 द; २०. १०५, ३.
 अजरा १०. द, २६.
 अजराम् २. २६, ७; १२. २,
 ३२.
 अजरासः द. ३, १६.
 अजरो इति द. ३, २५; ६, १२.
 अजरोभिः द. ४, ५.
 अज-शृङ्गि ४. ३७, २.

अज-शृङ्गी ४. ३७, ६.
 अजस्य ४. ४, द; १४, ७; द;
 ए. ५, १६; ६, ७.
 अजस्रः ७. ७८, १; १६. ३, २.
 अजस्रम् द. ३६, १; १३. २,
 ३६; १६. २, ५.
 अजसा १८. १, ३५.
 अजहात् १८. २, ३३; ४, ६४.
 अजागार २०. १२६, १७.
 अजाताः ११. द, ५,
 अजातान् द. १३६, २; ७. ३४,
 १; ३५, १.
 अजानन् ए. ५, १६; १४. १,
 १५.
 अजानये द. ६०, १.
 अजानात् ११. द, १७.
 अजाम् द. ७१, १.
 अजामसि २. १४, २; १२.
 २, २; ३.
 अजामि १८. १, १०; ११.
 अजामि ३. २५, ५.
 अजायत द. ३४, ५; १२. १,
 ५७; ४, २४,
 अजायत् २. २५, २; ६. ३६,
 ३; ५८, ३; १०. ४, ७;
 १०, १८; १६; ११. द, द;
 ६२; १३. १, ४८; ५५; ३,
 २६; ४, २६-३३, ३४,
 ३५; ३६; ३७; ३८; ३९;
 १५. १, ३; द, १; १८.
 १, २१; १६. ६, ६; ७२;
 १३, ३०, ५; ३६, ६; ७;
 द; ५३, १०; ५४, ३.
 अजा-थाः प. ४, १; ७. द४, २.
 अजायथाः ४. १६, ४; २०.
 २६, ६; ४७, १०; ६६, ४;
 ११.

अजायन्त ११. द, ३; १३.
 ४, ३४; ३७; ३८: १६.
 ६, १२; १६.
 अजाधि-भिः १०. ६, २३.
 अजिनम् द. ६७, ३.
 अजिनेन प. ३१, ७.
 अजिनैः ४. ७, ६.
 अजिर-अधिराजौ ७. ७०, ३.
 अजिरः ३. ४, ३.
 अजिरम् द. द, ३.
 अजिर-यते २०. २८, ४; ३६,
 ५.
 अजीगम् द. ३२, २; ७४, १.
 अजीगम् २. २५, ५; ११.
 ३, ३२-४६.
 अजीगरिति २०. ७६, १.
 अजीजनः प. ११, ११.
 अजीजनन् ११. १, ३.
 अजीजभम् ७. ५६, ५.
 अजीतः १२. १, ११.
 अजीता १. २७, ४.
 अजीवनः १८. २, ३०.
 अजीहिडत् १२. ४, द.
 अजुरम् २०. द५, २.
 अजुर्य २०. ३६, ६.
 अजुर्यम् प. १, ४.
 अजुषे द. ६१, ३.
 अजुष्टा ७. ११५, २.
 अजुष्टानि द. ४५, २.
 अजुष्टाम् १०. ३, ६.
 अजे प. ३१, २.
 अजे प. ११, २.
 अजेन १८. २, २२.
 अजैत् १२. ३, ५४.
 अजैश्वसः २०. १२८, १६.

अजैषम् २. १४, ६; ७. ५०;
५१; ८. ५, ८.

अजैषीत् १४. २, ७४.

अजैषम् १६. ६, १.

अजोषाः २०. ७१, १०.

अज्ञातः १०. १, ८.

अज्ञातम् ६. १२७, ३,

अज्ञात-युष्मात् ३. ११, १;
२०. ६६, ६.

अज्ञाताः ८. ७, १८; २०.
७६, २.

अज्ञाति १०. १, २०.

अज्ञास्याः ३. ४, ६.

अजम् ६. ६७, ३; १६. १३, ६.

अजमना ११. १०, २२.

अजमनि ११. १०, २२.

अज्यते १४. १, २६.

अज्यसे २०. ६, ६.

अज्यानिम् ६. ५५, १.

अजान् २० ६१, ५; ६२, ६;
६४, ८.

अज्यत् ११. १०, १६.

अजः २. ५, ६.

अजः-यानैः १८. २, ५३.

अजत् १६. ५३, २.

अजते १८. ३, १८.

अजते १८. ३, १८.

अजन्तु १८. ३, १०.

अजन्तु ३. २२, २.

अजि-षम् ८. ६, ६.

अजिष २०. ६७, ४.

अजो २०. १५, ५.

अजीवः-कम् १०. ८, १५.

अजीनि ११. ७, १०.

अजो २०. १३६, ३.

अर्षीभिः २०. ८४, १.

अर्तः ५. २, ६; २२, ११; ६.

१११, १; ८. १, ४; ६. ५,

६; १५. १०, ३; ४; ५;

१८. १, ३२; ५५; २०. २१,

३; ७०, ५; ७७, ५; ८८,

३; १०७, ६; १४०, ५.

अर्तनुत् १०. २, १६; १८.

३, ४१.

अर्तन्द्रः ११. ४, २४; १३. २,

२८; ४२.

अर्तन्द्राः २०. १८, ३.

अर्तन्घत ७. ५, ४, १६. ६,
१०.

अर्तपत् १३ २, ४०.

अर्ततः ६. ५, ६.

अर्तरत् २०. ३४, १२.

अर्तरन् ४. ३५, २.

अर्तर्पयत् ८. ६, २४.

अर्तसि २०. ४५, १.

अर्तसीनाम् २०. ५०, १.

अर्तस्करम् १२. १, ४७.

अर्तान् ६. ४, १.

अर्तारीत् १३. २, ३४; २०.

१०७, १३.

अर्ति २. ६, ५४; ११, १-५;

३. ११, ३; ४. ५, २२;

१६, ४; ६; ३३, ७; ८;

३४, ४; ३५, १; २२; -६;

५. ८, ४; २८, १२; ६. ३४,

१-५; ५१, १; ७५. ३२;

११०, २; ७. ४१, १२;

६३, १२; ११७, १; ८. ५,

६; ६, २६; ६. ५, ६; १०,

१, १६; ५, १५-२१; ८,

१६; ६, ८; ६. १०, १५; ११.

१, १२; २१; ३, २५;

१२. २, ११; ३, १८; १३.

१, ३६; ४५; २, ५; ३४;

४०; १४. २, ११; ७४;

१५. १२, २; १६. १, ४;

७; १७. १, २५२; २६२;

१८. १, २४; ३३; ३८;

३६; २, ११; ३२; ३८;

३, १७; १६. ६, १; ६; ३२,

४; ३३, ३; ३६, २; ४६,

२; ५०, २; २०. १२, २;

३१, ३; ३६, ७; ४६, २;

५७, ३; ६८, ३; ७६, २;

६२, ११२; ६४, १; ६६,

८; १०७, १३; १२६, २;

१२७, ७.

अर्ति-अमन्यन्त १०. ८, ३५.

अर्ति-आप्तिः ११. ७, २२.

अर्ति-आयन्ति ११. १०, १४.

अर्ति-आयन्तु ११. १०, १५.

अर्ति-आयम् १०. ८, ३.

अर्ति-इव २. १२, ६,

अर्ति-एषि १३. १, ५७.

अर्ति-कामन्तः १२. २, २८;

२६.

अर्तिकामन्ति २०. १३६, ६.

अर्ति-क्षयः ११. ७, १६.

अर्ति-जीवः ८. २, २६.

अर्ति-तार्यीः ८. २, २७.

अर्तिव्रसन् ५. २१, ७.

अर्तिथयः ६. ६ (२) ६.

अर्तिथिः ७. २१, १; ७३, ६;

६. ६ (२), ४; ६ (३), ७;

१०. ६, ४; १५. १०, १;

११. १; १२, २; १३, १;

३; ५; ७; ६; ११.

अतिथि-ग्वम् २०. २१, १०.
 अतिथि-ग्वस्य २०. २१, ८.
 अतिथि-ग्वाय २०. ३७, ६.
 अतिथिनीः २०. १६, ३.
 अतिथि-पतिः ६. ६ (१), ३;
 ६ (२), १; ६ (६), ५.
 अतिथीन् ६. ६ (१), ३; ६
 (५) ८; ६ (६) ५.
 अतिथीनाम् ६. ६ (२) १३.
 अतिथेः ६. ६ (३) १-६.
 अतिथौ ६. ६ (३), ८.
 अति-दीघा ७. ५०, ६; २०.
 ८६, ६.
 अति-नुक्तः ८. ७, १५.
 अति-पश्यम् ११. २, १७.
 अति-भाति १०. ३, १७.
 अति-मात्रम् ५. १६, १; ८.
 ६, १३.
 अतिरः २०. ६३, ६; १३७,
 ११.
 अतिरत् ५. १८, ११; २०.
 ११, १; ५; २८, १; ३६, २.
 अति-रात्रम् १०. ६, ६.
 अति-रात्रेण ६. ६ (४), ४.
 अति-रिक्तः ८. ६, १७.
 अति-रोचते ६. ३४, ३.
 अतिविज-भेषजी ६. १०६,
 १.
 अति-विच्यन्ति ८. ५, १६.
 अति-शर्वरे ४. ५, ४.
 अति-शर्वरेषु ७. ८०, ४.
 अतिष्ठः १०. १०, १६.
 अतिष्ठत् ६. ६, ६.
 अतिष्ठत् ३. १३; ४; ८.
 १० (२), १; ११. ५, ५;
 २६; १५. २, १; ६; १५;

२१; ३, १; १६. ६, १;
 २०. १३७, ७.
 अतिष्ठताम् १५. १०, ३.
 अतिष्ठन् ५. २७, ६; १०.
 ८, ३६.
 अतिष्ठिपम् ६. ७७, १; ७.
 ६५, २; ६६, १.
 अति-सक्ता १२. ३, २३.
 अति-सुराः ५. ८, २; ४.
 अति-सुरान् ५. ८, ७.
 अति-सर्पति ४. २०, ६.
 अति-सर्पात् ४. १६, ४.
 अति-सृजेत् १५. १२, ३२.
 अति-सृष्टः १५. १२, ४; ७;
 १६. १, १.
 अतिसृष्टाः १६. १, १.
 अति-स्थाय १६. ३३, ५.
 अतिस्था-वान् ३. २२, ६,
 अति-हितम् ७. ५३, ३; १८.
 २, २६.
 अतीतरः ११. ४, ६.
 अतुतपः १२. ३, ३६.
 अतुराणाम् ७. ५०, २.
 अतूर्तम् २०. १०५, ३.
 अतुणत् १६. ३२, ४.
 अतृपम् ३. १३, ६.
 अतृप्तम् २०. १३६, ५.
 अतृप्याः ७. ६०, ४; ६.
 अतृहम् २. ३१, २२.
 अतृजसम् २. १६, ५; २०,
 ५; २१, ५; २२, ५; २३, ५.
 अत् २. २४, १-८.
 अत्तम् ६. १४०, २.
 अत्तवे १. ११, ४; ५. १८,
 १; १२. २, ३७; १४. १,
 २६; १८. १, ५६; ५७; २,
 ३४.

अत्तारः ६. १४२, ४.
 अत्ति ६. ६, २०.
 अत्ति ४. ३०, ४; १२. ५,
 ४१; १५. १४, २; ४; ६;
 ८; १०; १२; १४; १६; १८;
 २०; २२; २४.
 अत्तु १. २८, ३; ४; ४. १७,
 ३; १८. ३, ४६.
 अत्तुम् १८. ४, ६३.
 अत्तो इति १८. ३, ४४.
 अत्तिः १३. २, ४; १२; ३६;
 ३, १५; १८. ३, १५; १६.
 अत्तिः १. ७, ३; १६, १;
 ३; २. ४, ३; ४. १०, २;
 ६. ३२, ३; ८. ४, १; ५.
 अत्तिः २०. ६३, ७.
 अत्तिः १. ८, ४.
 अत्तिः ४. २६, ३; ४.
 अत्ति-वत् २. ३२, ३; ५. २१,
 १०.
 अत्त २०. ११०, ३.
 अत्-भिः २. १०, २; ४. २७,
 ४; ५; १२. ३, ३०; १५.
 १४, ६; १८. १, ५५.
 अत्-भुतम् ५. २७, १०.
 अत्-भ्यः ३. ३, ३; १०. ५,
 ३३. १३. ४, ३७; १५. २,
 १७; १६. ४३, ७.
 अत्यः २०. ३१, ५.
 अत्यर्ध २०. १३१, १६.
 अत्यन् २०. ११, ६.
 अत्र ३. २३, २; ४. ७, ७;
 ५. १; ३; ५; ६, २; ८,
 ६; ६. ३७, २; १३, ३;
 १०४, २; १२३, २, ८, १,
 ६; ६. ४, २४; ६, १; ७;

(४,६६८)

अत्रयः—अद्वदात्.

१३; २२; १०, १२; ११.
 १, ३३; १२. २, १; १०;
 १८; २६; २७; ३, १७; ४५;
 ४८; ५५; ६०; १४. १,
 ५८; १७. १, ८; १८. १,
 १३; २६; ३१; ३४; ३६;
 ३६; ४३; २, ३०; ५६; ३,
 ६; ५१; ७३; ४, ७; ३३;
 ४७; ४६; ८६; १६. ७,
 ३; २०. ४१, ३; ८६, ४.
 अत्रयः १८. ३, २०.
 अत्राः ६. ७, १६; १०. १०,
 २१.
 अर्थ १. ७, ३; ७; १८, १;
 २. ६, ५; ३. ३, ६; ८,
 १; १२, ५; २५, ६; ४. १,
 ५; ४, ८; ७, २; १७, ८;
 ६. ५०, १; ६६, ३; ११६,
 १; ११६, २; १२१; १;
 १३८, २; ७. ८, १; १४,
 ३; ५६, ६; ८३, ४; ८.
 १, ६; ८, २०; ६, २४; ६. ५,
 २७; ६, १२; १०. १, २८;
 ४, १; ११. १, ८; ४, १४;
 ८, ३१; १२. २, ३०; ३,
 ५५-६०; ४, २२; २३;
 २५; २८; ३६; ५२; १४.
 १, १६; २१; २, ३६; १५.
 १२, ८; १३, ११; १८. २,
 ४; ५; ६; ३, ७१; १६.
 ३४, ८; ५२, ५; ६८, १;
 २०. ११, १०; ५६, ५;
 ५७, ३; ६८, ३; ७३, ४;
 ८७, ५; १३०, १७; १८;
 १४१, ४.
 अथ २०. १२८, १; १३०,
 १६; १३६, ७; ८.

अथर्व-अङ्गिरसः १०. ७,
 २०.
 अथर्वणः १०. २, २७.
 अथर्वणाम् १६. ८, १६.
 अथर्वणि २०. १४०, २.
 अथर्वणे ७. १०४, १.
 अथर्वन् ५. ११, २.
 अथर्व-वत् ८. ३, २१.
 अथर्वा ५. २, ६; १०. २,
 २६; १०, १२; १७; १८.
 ३, ५४; १६. ४, १; ५४,
 ५; २०. २५, ५; १०७, १२
 अथर्वणिः ४. ३७, १; १०.
 ६, २०; ११. ६, १३; १८.
 १, ५८.
 अथर्वणम् ४. १, ७; ५. ११.
 ११; ७. २, १.
 अथो इति १. १४, २; २२,
 २; ४; २. ४, ६; ६, १;
 ३१, २; ४; ३२, ५; ३६,
 ७; ३. २, ४; १८, ५;
 २१, ६; २४, १; २५, ५;
 ४. ३, ४; ४, ५; ६, ६;
 ६, ३; १३, ५; १७,
 ७; १६, ३; २०, ५; ३६,
 १; ५. १४, २; २१, ४; ५;
 ६; २२, १०; २३, १२;
 ३०, १३; ६. १३, १; १४,
 ३; १६, २; २१, ३; ६६,
 ३; ७४, २; ६६, २;
 १०३, २; १०६, ३; १२८,
 ४; १३३, ४; १३८, २;
 १३६, २; ४; १४०; २२;
 ७. ५६, २; ५; ६०; ५;
 ७४, ३; ७६, २; ६५, ३;
 ११२, २; ८. २, २८; ५,
 १२३; ७, ५; १०; २२; २८;

६. ३, १; ४, ४; २०; ८, ७;
 १०, २८; १०. २, २७; ३, ७;
 ८, २२; ३८; ६, १२-२४;
 १०, १७; ३३; ११. १,
 २६; ४, ३; ६; १७; ६, २;
 ६; ७; ७, ८; ८, ५; १४;
 १५; २३; ६, १०; २२; १०,
 ३; १२. १, ७; ६; २, १६;
 ४, १८; ३०; ३६; ४०;
 ४६; १४. १, २, २८; २,
 ४; १६. ४, ३; ६, ६;
 ३४, ४; ३१, २; ३; ४;
 ४६, ३; ४८, १; ४६, ३;
 ५०, ५; २०. २०. ४; ३२,
 ३; ५७, ७; १२८, ५.

अदः २. ३, १; ३. ७, ३;
 १३, १; ४. २, ४; १६,
 ४; ५. २, ३; ६.
 १८, ३; १०. ६, ५; ११.
 ८, ३३; १३. १, ५५,
 १६. ५२, ४; २०. १०७,
 ६; १२८, १२.

अदः-अदः १६. ७, ६.

अदत् १०. ८, २२.

अदत्त २. ५, ७; १०. ८, २१
 १५. १, ६; १६. ४६, ३.

अदत्तः ५. ११, ६; १०.

अदत्ता १२. ४, १३.

अदत्त्वा १२. ४, १६; २३; ४५.

अददत् १२. ४, २०; २१; २६;
 ३४.

अददन्त १४. १, ४५.

अददात् १२. ४, ५०, १४.
 १, ६.

अदुः—अद्वैतः.

(४, ६६६)

अदुः ५. १७, १०२; १८, १.
 अदुः १२. ४, ४८.
 अदुः १२. ४, ३६.
 अदुः २०. २५, ३०.
 अदुः २०. १२८, १४.
 अदुः १०. २, ७; १३. ३,
 २२.
 अदुः १०. २, ११; १२;
 १४; १५; १७; ११. ८, १४;
 १५; १३. १, १४; १४. १, ५३.
 अदुः १८. १, ३५; १६. ६,
 ५; २०. १६, ११.
 अदुः ४. ३०, २; ८. ६,
 १४; ६. ४, १६; १०. २, २;
 ४; १८. २, ३३; ४, ७; १६.
 ५६, ४.
 अदुः ७. ५६, ७; ८. ६, २३.
 अदुः ११. १०, २६.
 अदुः ५. १२, ११; ८. ३,
 ७; ११. १०, २३; २४.
 अदुः ६. ५३, २; १७. १,
 १२.
 अदुः ५. १, १.
 अदुः १३. २, ४४.
 अदुः २०. ८८, २.
 अदुः १७. १, १२.
 अदुः १७. १, ६.
 अदुः २०. ६१, ७.
 अदुः १. २५, १.
 अदुः १८. ३, ४२; ४, ६५.
 अदुः ३. २६, ७२; ६. १००,
 ११; १२. ४, ४६; १४. १,
 ५२; २, २; ४.
 अदुः ५०, १.
 अदुः १२. ४, ५१.
 अदुः २. ३५, १.

अदुः ३. २१, ४; ७. २६,
 ५; १८. १, १८.
 अदुः ८. ४, २०; २०.
 ५८, ४.
 अदुः १६. १३, ७.
 अदुः १. २०, १.
 अदुः २०. ३७, ६.
 अदुः २० १२८, ४.
 अदुः २०. ३७. १.
 अदुः २०. ५६, ६.
 अदुः ७. १, ३; ११६, १.
 अदुः ५. १२, ४; ७. ३४,
 १; ८. ३, ३; ८. ३, १६;
 १८. ४, ६६.
 अदुः ३. २२, १; ५. २६,
 ६; ६. ३, १; ४, १; २; ७,
 १; ६८, २; ८. ३, १२०,
 २; ७. ६, ११; १७, ३; ८.
 ६, २१; ६. ७, १०; ११.
 १, १; ११; ३, ४; १२. १,
 ६१; १५. ६, २०; १८, ४;
 १८. १, १६; ३६; ३, २७;
 १६. १०, ६.
 अदुः ३. ८, २; ७. ६,
 २; ६, ३; ४; १८. ४, ३०.
 अदुः २. २८, ५, १२. ३,
 ११;
 अदुः २. २८, ४; ३. १६,
 २; ७. ७, १; ११. १, २४;
 १३. २, ६; १५. ६, २१;
 १८. १, १८.
 अदुः ३. २२, १; ५. १,
 ६; १३. १, ३८; २, ३७.
 अदुः २. २०, ८.
 अदुः ७. १४ २.
 अदुः ४. ३६, २.
 अदुः १. १४, १; १३. १, ३०.

अदुः ४. ६, ७.
 अदुः ६. ८७, ३.
 अदुः ३. ३, ५.
 अदुः ११६, १.
 अदुः ५. २५, ६; ११. १, १७.
 अदुः २. ३६, ७; ३. २२,
 १; ६. १००, १२; १४. १,
 ५०; १६. ३०, २.
 अदुः १४. २, १६.
 अदुः १४. २; ४०.
 अदुः २०. १२१, १.
 अदुः ७. १५, ३.
 अदुः २. १, १.
 अदुः १० (२) ७.
 अदुः २०. १२६; ५.
 अदुः ४. १८, ५, १०.
 १, ४.
 अदुः २. ३१, ३.
 अदुः २०. १३१, १८.
 अदुः १३. १, ६; १६. ३२,
 ६; २०. ३४, २.
 अदुः १३. १, ७.
 अदुः ४. ११, ७.
 अदुः १०. ८, १३.
 अदुः २. २, १८; २०.
 ४७, १५.
 अदुः ५. २३, ७,
 अदुः २. ३१, २.
 अदुः ५. २३, ६; ६.
 ५२, १.
 अदुः ६. ५२, २.
 अदुः ५. २३, ६; ६. ५२,
 ३; ८. ८, १५.
 अदुः ६. ६, १; २०. ३६,
 ११.

(४,७००)

अदेवः—अधराक्ष्यम्.

अदेवः ५. ८, ३.
 अदेवीः ८. ३, २४; २०. ८७,
 ५; १६७. ६.
 अदेवृ-वृत्ती १४. २, १८.
 अलोमदम् ६. ६३, १.
 अलोमधो ८. २, १८.
 अद्गाः-इष १. २७. ३.
 अद्वा २०. ५८, ३.
 अद्वातयः ११. ८, ७; १४.
 १, १६.
 अद्वातिः ६. ७६, २.
 अद्दि ७. ७३, ११; ६; १०,
 २०; १८. ४, ६५; २०.
 १३६, ११; १३.
 अद्दि ४. २२ ७; ५. २२,
 ८; ६. ६३, १; १२. २,
 ३; १८. ३, ४२.
 अद्भुतः २. १२, १.
 अद्भसि ६. १६, १.
 अद्भि ६. ७१, १; ३.
 अद्भि ५. १८, ७; १४. १,
 ५७; २०. १२६, १४.
 अद्घ १. १, १; २०. ९; ३२;
 ३; ३. २, ४; २२, ३; ४.
 ३, ५; ४, ६५; ५. ७, ५;
 ६; १२, १; ६; १८, २; ६.
 ६६, २; ६७, १; ६०, १;
 ६६, २; १०८, ४; ११८, १;
 १३८, १; ७. २०, १; ३१, १;
 ४७, २; ४८, २; ५०, १;
 ८२, ६; ८४, १; ६७, १;
 ८. ३, १२; १४; ४, १५;
 ६. १०, ६; १०. ५, ४८;
 ७, २३; ८, २३; २६; १०,
 ११; ११. ४, २१; ८, ३;
 १६; १०, २०, १२. २, २२;

१३. १, ५८; १६ ४, ६; ६,
 १२; १८. १, ६; ४६; २,
 १३; ३, ५६; १६. ११,
 ५; ४७, ५; ६; ४६, ६;
 ५०, २; ६; २०. ६१, ३;
 ७७, २; ६६, २; ६७, १;
 ६६, २; ११२, १; १४०, ४;
 १४१, ३; १४३, १; ३.
 अद्घात् ५. १८, २.
 अद्घातयम् ४. २३, ५.
 अद्घयः २०. २३ २; ३३, १
 अद्घिः ५. २०, १०; ६. ४,
 ५; १६. १०, ३; २०.
 ११७, १.
 अद्घि-दुग्धाः २०. ८८, ३.
 अद्घि-मित् २०. ६०, १.
 अद्घिम् २०. १६, ११; ३५,
 ७; ३८, ६; ४७, ६; ७०,
 ६; ७७, ८.
 अद्घि-वः २०. २०, ४; २३,
 १; ५७, ७; ६१, १; ६३, १;
 ६८, २; १००, २; ११६, १.
 अद्घुहः ६. ७, १; २०. ५४, ३.
 अद्घुणम् ८. २, १६.
 अद्घोघ-अविता ११. १, २.
 अद्घोघ-वाचम् ६. १, २;
 २०. ३६, २.
 अद्घ १. २८, ४; ३. ४, ४;
 २०, १; ४. ३२, ७; ५.
 २२, २३; ६. ६५, १; ७.
 ७३, ११; ८३, ३; ८. ४,
 १५; ६. १० २०; १०. २,
 ७; ४, २५; १२. ३; २; ६;
 १३. १, ३०; १४. २, २०; १८.
 १, १६; २१ ३; ५१; २, ११;
 २३; ३, १७; २१; ४, ४८;

६३; ६६; ७०; १६. ३३,
 ५; ४७, ८; ५०, १; २०.
 १५, २; २४, ६; ६०, २;
 ८३, २; ६२, १३; १००, १;
 १०८, २; १३७, ६.
 अद्घः ३. १८, ४; ६. ४२, २;
 ८. ४, ११.
 अद्घः-पदम् २. ७, २; ५. ८,
 ५; ८; ७. ३४, १; ६२, १;
 ११. १, १२; २१.
 अद्घः-पदेन १०. ४, २४.
 अद्घः-वचसः ५. ११, ६.
 अद्घत्त १३. १, ४६; २०.
 १३७, ७.
 अद्घम् ८. ४, १६.
 अद्घमत् २०. ८८, ४.
 अद्घमम् १. २१, २; २. ८,
 १; ३. ७, ४; ७. ८३, ३; ८.
 २, २४; ६. २, १७; १८;
 १०. ३, ६; १३. १, ३२;
 १८. ४, ६६.
 अद्घमा ६. २, ४; ६.
 अद्घमाः ६. १२१, १; ७.
 ८३, ४.
 अद्घरः ७. ३१, १; १६. ४६,
 ५.
 अद्घरः-अधरः ६. १३४, २.
 अद्घरम् २०. ३४, ४.
 अद्घरस्याः ८. २, १५.
 अद्घर-हुनुः ६. ७, २.
 अद्घरा ३. १८, ४.
 अधराक् ३०. १३४, १-६.
 अधराङ् ५. २२, २; १२. २, १.
 अधराक्षः २०. ६५, ३; १२५,
 १.
 अधराक्ष्यम् ४. ७, २.

अध्यायः ३. ६, ७; ६. २,
१२.

अध्यायम् ५. २२, ३; ४;
६. १२७, ३; १०. ५, ३६;
१६. ८, ४-२६; ३३; १६.
३६, १०.

अध्यायः २०. १२८, २.

अध्यायः ७. ५१, १; २०. १७,
११; ८६, ११; ६४, ११.

अध्यायः २. १४, ३; ६. ४०,
३; ८. ३, १६; २०; ४, १६;
५, १७; ११. २, ४१; १२.
१, ३१; ३२; २, ४१; १८.
४, ११; १६. १५, ५; ४८,
४.

अध्यायः २. ३६, ३; ३. ६,
६; ५. ८, ८; २८, १४; ६.
८८, ३; १०. ३, ३; ६,
१६; ३०; १३. १, ३१; १६.
३३, २.

अध्यायः ३. १८, ४.

अध्यायः १. ६, २; ४, ३. १६, ३;
४. २२, ६; १३. १, ३१.

अध्यायः १०. २, २.

अध्यायः ४. ४०, ५.

अध्यायः ६. १०, १२; १०. ४,
२६; ५, ४३; १२. २, ६.

अध्यायः २. २६, ५; १८. ३,
१२.

अध्यायः ३. १८, ६; ७. ३५,
२.

अध्यायः २०. ७६, १.

अध्यायः १०. ७, ७; २०.
१३७, ६.

अध्यायः १०. १०, २५; १३.
२, १२; २०. ६४, ८.

अध्यायः ४. ११, ७.

अध्यायः १८. ३, ६८; ४, २५;
१६. २४, १.

अध्यायः ३. ६, २; ५. १६,
१३; १४; ६. ४, १६; १७.
२, ५३-५८.

अधि १. ३, ६; ६; ६, २; ४;
१४, १; १६, १; २; २४, ४;
३२, ४; ३४, १; ३५, ३;
२. १, ५; ३, १; ४; ५; ७,
१; ३; ६, १; ३; ४; १०,
८; १४, ४; २७, ७; ३०, १;
३३, १; ४; ३. ६, १; ७,
१; १२, ६; २६, १-६; ७.
२, ६; ४, ७; ६, ४; ७, १;
८, २; ४; १०, २; ६; १६,
४; ७; २७, १; २८, ७; ३४,
१; ५. ४, ७; ६, ४; १२,
६; २०, १०; २१, ४; २५,
८; ३०, ६; ६. ५, ३; ७,
२; २१, १; ३०, १; ६३,
३; ७०, १; २; ३; ७३,
३; ७६, १; ८४, ४; ८७,
१; ३; १०१, ३; १०६, २;
१११, १; ११८, ३; १२१,
१; १२४, ३; १३३, ४; १३६,
१; १३८, ४; ५; १४१, १;
७. ८, १; ५३, १; ६५,
१; ८२, ३; ११५, ३; ८.
२, ७; ८; २७; ६, २४;
७, २; ७; १३; १४; १६;
१६; ६, ४; ५; १६; ६.
१, १०; १६; १७; ३, २०;
५, ४; ५; ६; ८; १५; ८,
१२; ६, २; ३; ६; १८;
२१; १०, १; ७; १८; २१;
१०. २. ५; ७; १३; १४;

१७; २६; ६, ३१; ३२; ७,
१; २; १२; १५; २६;
३०; ४३; ८, १६; ४१; ६,
२; १२; १०, ५; १३; १६;
१६; २१; ११. १, ४, ७;
१३; १६; २४; २६; ३०;
३६; २, २०; ४, ४; ५,
११; १५; २४; ७, ८; ६;
१४; १८; ८, १; ३०; ३४;
६, १०; १२. १, ८; ११;
५२; ५६; ५६; २, ४१; ३,
१; ३; २६; ३६; ४७; १३.
१, ११; १४; २५; ३७;
४२; २, ७; ३, २; ६; १८;
२६; ७, ५; १७. १, १; २,
६; २३; ३७; ४३; ४८;
४६; १८. १, १; २, ३२;
४७; ३, ४; ४५; ४, ३;
४; १६. ३, १; ५, १;
६, ६; १६; २४, २; ३;
२६, १; २७, १०; ३१,
१२; ३४, ६; ४५, ३; ४८,
६; ५३, ३; ५४, ५; ५६,
१; २; ३; ५; २०. ५, ५;
१७, २; २२, ५; २५, ३;
३०, ४; ७०, ५; ६; ७४,
६; ६२, २; १२; ६३, ५;
६५, २; ३; ४; ६६, १७;
२०; ११०, २; १११, २;
१४१, ४.

अधि-अक्षः ६. २, ७; १०.
१, ६.

अधि-अक्षः ५. ३, १.

अधि-अक्षः १. ३१, १.

अधि-अक्षः २. ६, ३.

अधि-अक्षः ७. ६०, ३; १७.
१, ३०.

(४,७०२)

अधि-क्षियन्ति-अनुड्वान्.

अधि-क्षियन्ति ७. २६, ३.
 अधि-गम्यते ७. १०१, १.
 अधि-गवम् ६. ६ (३) ६.
 अधि-चङ्क्रमाम् ११. ६, १६.
 अधि-जानन् ६. १४, ६.
 अधि-तिष्ठति १०. ८, १.
 अधि-तिष्ठन् १३. २, ३१;
 २०. ८६, १.
 अधिथाः २. १३, ३; १६.
 २४, ६.
 अधि-देवने ५. ३१, ६; ६.
 ७०, १.
 अधि-धीयमाना १२. ५, ३०.
 अधिध्वनः २०. १२७, १४.
 अधि-निष्क्रमसि ६. १३८, ३.
 अधि-निर्धेहि २. २६, २.
 अधि-पतयः ५. २४, ६.
 अधि-पतये ६. १०, १; २;
 ३; १२. ३, ५५-६०.
 अधि-पतिः ३. २७, १-६;
 ४. ८, १; ३५, ६; ५. २४,
 १; २; ४; ७-१४; ३०,
 १५; ७. ५, २; १२. ५,
 ४; १३. २, २५; ४१.
 अधिपति-भ्यः ३. २७, १-६.
 अधिपती इत्यधि-पती ५.
 २४. ५.
 अधिपती इत्यधि-पती ५.
 २४, ३.
 अधि-पाः ४. १५. १०; ३१,
 ५; ६. ११६, १; ७. ५३,
 २; १०. १, २२; १२. ३,
 ६; १६. ३१, २; ६; ११;
 ५६, ६.
 अधि-रज्जुः ६. ११८, २.
 अधि-राजः ६. ६८, १; २;
 ६. १०, २४; १६. ४६, ४.
 अधि-राजम् ५. ३, १०.

अधि-वाकाय ६. १३, २.
 अधि-विकर्तनम् १४. १, २८.
 अधि-शेमहे १२. १, ३४.
 अधि-श्रिते १५. १२, १.
 अधि-सर्वने ६. २०, १०.
 अधि-स्थाता ४. १६, १.
 अधि-स्थानात् १२. ४, ४; ५.
 अधि-स्थाने १२. ४, २३.
 अधि-हिता ११. ३, १४.
 अधीरः ५. ३१, १०.
 अधीराः ११. ६, २२,
 अधुनुथाः २०. २६, ४.
 अधुषत् १८. ४, ६१.
 अधृष्टम् २०. ६२, १८.
 अधृष्टाः १६. ५८, ४.
 अधृष्टाय २०. ४६, २.
 अधृष्टाणि २०. ४६, २; ३.
 अधेतवे ६. ५६. १.
 अधोक् ८. १०(४), ३२; ७२;
 ११२; १५२; १० (५) ३२;
 ७२; ११२; १५२.
 अधि-गवे २०. ३५, १.
 अधि-गुः २०. ६२, १६;
 १०५, ४.
 अधि-गुम् २०. ६३, ८.
 अध्व-गतः १३. १, ३६; ४३.
 अध्वनः ४. ११, २; ७. ७२,
 २; २०. ७७, २.
 अध्व-भिः १. ४, १.
 अध्वरः ४. २४, ३; ७. ५८,
 १; ११. ७, ७; १८. २, ३२.
 अध्वरम् १. ४, २; ५. १२,
 २; २७, ८; ६; १४. १,
 ४६.
 अध्वराणाम् १६. ४२, ४.

अध्वरान् १६. ५६, ३.
 अध्वराय ३. १६, ६.
 अध्वरि-यताम् १. ४, १.
 अध्वरे ८. ४, १८; १८. १,
 २१; ४१; ४, ४५; १६.
 ३३; ३; २०. १५, ३;
 १०३, ३; ११८, ३.
 अध्वरेषु ५. २७, ५; ६.
 ११०, १; १४. १, ३७.
 अध्वर्यः २०. १३५, ४.
 अध्वर्यवः २०. ८७, १.
 अध्वर्युः ७. ७३, ५, १८. ४;
 १५, १६. ४२, १.
 अध्वर्यु-भिः २०. ६७, ७.
 अध्वर्यो इति ११. १, ३१;
 २०. ६४, ४; १३५, ४.
 अध्वो १३. २, १४.
 अध्वानम् ३. १५, ४.
 अनु ३. ३१, ६.
 अनः १४. १, १०; १२; २०.
 १२६, १८.
 अनुक्ति ५. २७, २; २०.
 १६, २.
 अनुक्तु ५. २८, ३.
 अनुक्तु १०. ३, १७-२५;
 १३. १, ८; १४. २, ४०;
 १८. ३, ११२; १२; २०.
 १०३, २.
 अनग्नाः १२. ३, ५१.
 अनग्नि-दग्धाः १८. २, ३५.
 अनुङ्गुरे ८. ६, २२.
 अनुज्मि ४. १४, ६.
 अनुडुत-भ्यः ६. ५६, १.
 अनुडुहः ४. ११, ३; ८; ६; ११.
 अनुडुहि ४. ११, ७.
 अनुड्वान् ४. ११, १५; २;

४; १०; ५. १७, १८; ८.
 ५, ११; ६. १, २१; ११.
 ४, १३; ५, १८; १२. ३,
 ४६; १६. ३६, ४.
 अनङ्वाहः १६. ५०, २.
 अनङ्वाहम् ६. ५, २६; १२.
 २, ४८.
 अनङ्वाहौ १४. १, १०.
 अनङ्वाहौ-द्वय ३. ११, ५;
 ७. ५१, ५.
 अनत् ६. १०, ८.
 अनति ४. ४, ३; ७. २५, २.
 अनति १०. ८, १६; ११. ४,
 १४.
 अनति-उद्यम् १०. ७, २८.
 अनति-व्याध्यम् ६. २, १६.
 अनति-सृष्टः १५. १२. ८; ११.
 अनवत् ३. १३, १.
 अनवन्तः ६. ५०, २.
 अननु-कृत्यम् २०. १६, १०.
 अननु-वः २०. २१, ८.
 अननु-विष्टः २०. ६६, ४.
 अनन्तम् ८. ४, १७; १०. ८,
 १२२; २०. १२१, २.
 अनप-च्युतः २०. ४७, ३;
 १३७, १४.
 अनप-त्यताम् ४. १७, ६.
 अनपत्यम् १२. ४, २५.
 अनपत्य-वन्तः १८. २, ४७.
 अनम-वाचनाम् ८. ८, ६.
 अनप-स्पृक् १३. १, २७.
 अनप-स्फुरः २२. ६२, ७.
 अनप-स्फुरन् १०. १०, २७.
 अनप-स्फुरन्तम् १८. ४, ३६.
 अनप-स्फुरन्ती १२. १, ४५.
 अनप-स्फुरन्ती १८. ४, ३४.

अनप-स्फुरन्ती ६. १, ७.
 अनभ्युक्तः २०. १२८, ६.
 अनभि-आरूढम् ११. ५, २३.
 अनभ्यः १६. २. ३.
 अनमन् ४. ३६, १; २; ५; ७.
 अमणिवः २०. १२८, ६.
 अनमित्रम् ६. ४०, १; १२
 १, ४७.
 अनमित्राम् १२. १, १०.
 अनमीवः २. २६, ५.
 अनमीवम् १८. २, १२,
 अनमीवा ११. १, २२.
 अनमीवाः २. ३०, ३; ३.
 १४, ३; १२. १, ६२; २,
 ३१; १८. १, ४२; ३, ५७;
 ४, ४६.
 अनमीवान् १२. २, २६.
 अनयन् ७. १, १.
 अनयन् २०. ६३, ३; १३४, ६.
 अनयन् २०. १३५, ६.
 अनयम् १८. ३, ३.
 अनया ४. १८, ५; ६. १३३,
 ३; १०. १, ४; ५, १५-२१;
 ११. १०, १२; २१.
 अनयीत् १०. ४, २६.
 अनर्तिषुः ६. ४६, ३.
 अनर्पणम् १२. ४, ३३.
 अनर्मणाम् ७. ७, १.
 अनर्वम् ६. ६; २; १३. ३,
 १८.
 अनर्श-रातिम् २०. ५८, २.
 अनव-ग्लायता ४. ४, ७; ६.
 १०१, ३.
 अनवद्य-रूपाः २०. १६, ३.
 अनवद्योभिः २. २, ३.
 अनवद्यैः २०. ४०, २; ७०, ४.
 अनव-द्राणः ८. १, १३.

अनव-धृष्यम् ८. २, १०.
 अनव-व्रवः ४. ३१, ५.
 अनवायम् ८. ४, २.
 अनश्नन् ६. ६, २०.
 अनश्रवः १२. २, ३१; १८.
 ३, ५७.
 अनष्ट-पशुः १८. २, ५४.
 अनसः १२. १, ४७, १४. १,
 ४१.
 अनस्था ६. ६, ४.
 अनस्थाः ४. ३४, २.
 अनस्वती-द्वय १०. १, १५.
 अनह्यन्त १६. २७, ३.
 अना २०. ११४, १.
 अनाकाक्षः २०. १२८, ६.
 अनागः-द्वत्या १०. १, २६.
 अनागमिष्यतः १६. ६, १०,
 अनागसः ७. ६, ३; ३४, १;
 ८३, ३; ६. ५, २; १६. ६,
 १; १८. ४, ६६.
 अनागसः १०. १, ७; १६.
 ५०, ७.
 अनागसम् १६. ४४, ३.
 अनागसम् २. १०, १-८;
 १४. १, १८.
 अनागाः ६. २७, ३.
 अनागान् १८. १, ३६.
 अनाजानन् ६. ११६, ३.
 अनातितम् २०. १३२, ७.
 अनानुरान् १२. २, ४६.
 अनाथम् १८. १, १२.
 अनाविष्टाम् १५. ६, १६.
 अनाद्यम् ८. २, १६.
 अनाद्या ५. १८, ३.
 अनाद्याम् ५. १८, १.
 अनाधृषः ६. २१, ३.

अनाधृष्यः ७. ८४, १.
 अनाधृष्या २०. ६४, ५.
 अनधृष्याः १६. २, १६.
 अनापिः २०. ११४, ६.
 अनाताः ४. ७, ७; ५. ६, २.
 अनाबयो इति ६. १६, १.
 अनामगः १६. ४५, २.
 अनामनात् १२. ४, ५; ८.
 अनामया २०. १२६, २०.
 अनामयाः ६. ८, १३-१८.
 अनामयितुभ्याम् ४. १३, ७.
 अनायतनः ११. ३, ४६.
 अनरभ्मयो ८. ४, ३.
 अनर्षयाणाम् ११. १, ३३.
 अनावन् २०. १६, १.
 अनावयाः ७. ६०, ३.
 अनावृत्ताम् १५. ६, १६.
 अनाव्याधाम् १४. १, ६४.
 अनावृत्कः १२. ४, ४७.
 अनाशयः २०. २६, ५.
 अनाशवः २०. ११६, २.
 अनाशस्ताः इव २०. ७४, १.
 अनाशुरः २०. १२८, १०.
 अनास्माकः १६. ५७, ५.
 अनास्माकम् १६. ५७, ४.
 अनास्त्रावम् २. ३, २.
 अनि-ओकाः १२. २, ४.
 अनि-आहितः १२. २, ३५;
 ३६.
 अनि-स्तृतः २०. ५३, ३;
 ५७, १३.
 अनिजम् १०. ४, १६.
 अनिधमः १४. १, ३७.
 अनिन्दाः ११. ८, २२.
 अनि-पद्यमानम् ६. १०, ११.
 अनि-भृष्टः १६. ६०, २.

अनि-मानः २०. ३६, ७.
 अनि-मिषः १६. १३, २.
 अनि-मिषेण १६. १३, ३.
 अनि-मेघम् ६. ६, २२.
 अनिराम् २०. १३५, १३.
 अनि-स्तृतः ७. ८२, ३.
 अनि-हृत्य १२. ३, ४४.
 अनौकम् ४. २७, ७; ६.
 १२५, ३; ७. ३६, १; १३.
 २, ३४; ३५; २०. १७, ४;
 १०७, १३; १४.
 अनौक-शः ५. २१, ८; ६;
 ६. १०३, ३.
 अनौनशः ६. ८, २२.
 अनौनशत् १. २४, २.
 अनौनशत् २. ३, ३; ५; ३.
 ७, १; ७. ५६, १; ८. ६,
 ६; ८; १६, ३६, १; ३;
 २०. ६६, १२.
 अनौनशन् ८. ७, ३; १२. २, १४.
 अनौनशम् १. २३, ४; ७.
 ११५, ४; ६. ८, २१.
 अनौश्वराः १२. ३, ४२.
 अनु १. २२, १; ३५, ४; २.
 ५, ५; १२, ५; १३, ५;
 २७, २; ३४, ३; ३. ७,
 २; ८, ६; ६, ६; १३, २;
 १७, ५; १८, ६; २१, ७;
 २३, ३; ४. ८, १; १५,
 ४; ७; ८; ६; १२; २१, ४;
 ३८, ५; ५. १, ३; २, १;
 ८, ६; १४, १; १७, ५;
 २१, १०; २७, ७; २८,
 ११; २६, ११; ३०, १;
 ६; १७; ६. ११, २; १७,
 १-४; २६, २; २६, ३;
 ३६, १; ४८, १; २; ३;

५३, १; ३; ६६, २; ७२,
 १; ७३, ३; ८६, २; ६०,
 २; ६४, २; ६७, ३; १०५,
 १; २; ३; ११२, १; ११३,
 २; ११८, १; २; १२१,
 ४; १२२, १; २; १३०, १;
 २; ३; ४; १३१, १; २;
 १३४, ३; ७. ६, २; १६,
 १; २०, १; २; ३; ६; २१,
 १; २७, १; ३५, १; ४३,
 १; ५७, १; ५६, १; ६०,
 ७; ८२; ४; ६७, ४; ११८,
 १; ८. १, ७; १०; १५;
 २, २१; ३, १८; ६, ८; १२;
 १३२; १५; १६; १७; २३;
 ६. १, १६; २४; ४, २०;
 २४; ५, २; ४; ६, ६; १०.
 १, १६; २, १६; १६;
 २२; २३; ४, ६; २६; ५,
 २५-३५; ३७; ४५; ५०;
 १०, ७; ११. १, ३१;
 ३६; २, १०; ४, १०; २४;
 २५; ५, २; १२; ८, ११;
 १६-२२; २४; २७; ६;
 ४; २१; १०, १; १२, १;
 १७; ५१; २, २१; ४३;
 ४६; ३, १७; ४, १; १३.
 १, ४; ७; १०; २, १४;
 १८; २१; ४०; ३, १; ११;
 २०; ४, १६; १४. १, १५;
 ४६; ५६; ६०; २, १०; ७४;
 १५. २, १; ६; १५; २१;
 ४, ३, ६; ६; १२; १५; १८;
 ५, २; ५; ७; ६; ११; ११;
 १५; ६, १; ४; ७; १०;
 १३; १६; १६; २२; २४;
 ६, १; १४, १; ३; ५; ७;

६; ११; १३; १५; १७; १६; २१; २३; १७. १, १६, २, १८. १, २०; २७, ३२; ५०; २, ६; १३; ३, ४०, २; ६६; ४, ३; २६; २८, ४३; ७५; ७६; ८६; ८७; १६. ४, ४; ६, २; १३, ६, २; १५, २; ४; २६, ३; ४६, २; ६; ५८, ३, २०. ४, २; ११, ८; १५, २; ५; १६, १२; १७, ५; २६, ३; ३५, १५; ४०, ३; ४२, २; ४७, १५; १८; ६१, ३; ६७, ३; ६६, १२; ७०, १; ७६, २; ८१, १; ६१, ६; ६२, १५, २; २०; ६६, २; १०५, २; १०६, ३; १०७, ४; १०६, १; २; ३; ११६, २; ११८, १; १३५; ६, १३६; ११; १३७, १०; १३६, २; १४३, ८.	अनु-आरभेयाम् ६. २२२, ३; १२. ३, २०; ४७. अनु-आरोहामि ६, १२२; ४. अनु-आवर्ते १०. ५, ३७. अनु-आशये १०. ७, ६. अनु-इच्छन् ६. ३७, १. अनु-पेक्षन्ति २. ३४, ३. अनु-पेच्छन्ति १२. १, ६०. अनु-कुरेण १२. २, २. अनु-किरामि १८. ३, ६६; ४, २६; ४३. अनु-कूलम्-इव ५. १४, १३, अनु-क्षरन्ति २०. ६२, ६. अनु-गच्छन्ती १२. ५, २७. अनु-गत्य १६. ४४, १०. अनु-ग्रासः २०. ११६. २, अनु-चक्रदे २०. ६, ४; ४६, ७. अनु-जहिरे १८; ३, ४६. अनु-जिघ्रम् ८. ६, ६. अनु-तन्वन्ति ६. ८, १४. अनु-तन्मा २०. १३५, २. अनु-तप्यमानम् २. ३५, २. अनु-तिष्ठते ६. ६ (६), ६. अनु-तिष्ठन्ति ११. १०, २७; १६. ४८, ५. अनु-त-मदितः ६. १११, १-४. अनु-दः ७. ८४, २. अनु-वदाति २०. ३४, १०. अनु-दहन २. २५, ४. अनु-दिताम् ५. १, २. अनु-वेयी १४. १, ७.	अनु-धावति २०. १३६, १२. अनु-ध्याः ७. ११४, २. अनु-निक्षन्ति ६. ८, १५, अनु-निर्वह ६. २, ६. अनु-प-क्षितौ ६. ७८, २. अनु-प-दस्वतः ४. ११, ६; १२. अनु-प-दस्वतीम् २. ३६, ५; ७. ८०, २. अनु-परिपन्ति १५. १७, ८. अनु-प-सेचनः ११. ३, २४. अनु-प-स्पृशानः ६. २८, १. अनु-प-स्पृशानम् १८. १, ४६, अनु-पालयन्ती १८. १, १. अनु-पूर्वम् १२. २, २४; २५; २०. १२५, २. अनु-पूर्व-वत्साम् ६. ५, २६. अनु-प्रयानम् ७. ७३, ६. अनु-प्रयुङ्क्ताम् १२. १, ४०. अनु-प्रयुङ्क्ते ११. २, ११. अनु-प्रवोदुम् १६. ५६, ४. अनु-प्राविशथाः १०. १०, २२. अनु-प्रेमः ५. ७, ३. अनु-प्रेयतुः १६. ४४, १०. अनु-बुधन्ति ५. १६, १२. अनु-बुधम् ४. २४, ६; १०. १, १६. अनु-मतम् ६. ७१, २; ७. २०, ४. अनु-मता ३. १७, ६. अनु-मतिः १. १८, २; ६. ११,
--	--	---

३; ७. २०; १; ५; ६; २४,
१.

अनु-मतिम् ५. ७, ४.

अनु-मतो ६. १३१, २; ७. २०,
४; ६.

अनु-मत् २. २६, २; ७. २०, २.

अनु-मत्याः ६. ४, १२.

अनु-मदन्ति ५. २, ४; २०.
१०७, ७.

अनु-मन्यमानः ७. २०, ३.

अनु-मन्यमानौ १४. २, ४२.

अनु-माद्या १४. १, ४७.

अनु-मेयाः ६. १३७, २.

अनु-मृश्य २०. १६, ५.

अनु-म्लोक २. २४, २.

अनु-याजाः १. ३०, ४.

अनु-राधम् १६. १५, २.

अनु-राधा १६. ७, ३.

अनु-रोधनम् ६. १०२, ३.

अनु-वर्पते १२. २, ५०.

अनु-वर्तते १२. २, ३७.

अनु-वर्तयन् ११. १०, १८.

अनु-वर्तमानः ३. ८, ६; ६.
६४, २.

अनु-वृक्कैः १६. २२, १.

अनु-विक्रमते ६. ६(२), १२.

अनु-विधत्ते १६. ५०, ४.

अनु-विद्वान् १२. २, ३८; ५२.

अनु-विसिञ्च्यते ८. १०, (६)
४.

अनु-वृजौ ६. ४, १२.

अनु-वसतः ३. ३०, २.

अनु-व्रता ३. २५, ४; १३. १,
२२; १४. १, ४२.

अनु-व्यचलत् १५. १४, १;

३; ५; ७; ६; ११; १३;

१५; १७; १६; २१; २३.

अनु-व्यचलन् १५. २, २; १०;

१६; २२; ६, २; ५; ८;

११; १४; १७; २०; २५;
६, २.

अनु-व्य-वर्तयन्त १५. ७, २.

अनु-शिष्टाः १६. ५६, ४.

अनु-शेरते ८. ६, १६.

अनुष्ठु १२. ४, ४५.

अनु-संक्राम १८. २, ५७.

अनु-संचरन्ति ३. २१, ७.
४, ३८, ५.

अनु-संचरन्ती १८. ३, ४.

अनु-संदह १२. ५, ६३.

अनु-संविशामि ४. १६, ६.

अनु-संप्रयाहि ११. १, ३६.

अनु-संयन्ति ११. ५, २.

अनु-संरमेथाम् ६. १२२, ३.

अनु-संवहन्ति १०. ८, ८.

अनु-संविदुः १०. ७, १७;
२६.

अनु-संविशस्व १८. ३, ६.

अनु-सर्प २, २४, ४.

अनु-सर्पति ६. ८, ७.

अनु-सर्पन्ति ६. ८, १७.

अनु-सूर्यम् १६. ४६, ५.

अनु-स्तप् ८. ६, २०; १६.
२१, १.

अनु-स्तुभम् ८. ६, १४.

अनु-स्थाता १५. ५, २; ५;
७; ६; ११; १३; १५.

अनु-स्थातारम् १५. ५, १;

४; ६; ८; १०; १२; १४.

अनु-स्थातारौ १५. ४, २;

५; ८; ११; १४; १७.

अनु-स्पष्टः २०. ६६, ४.

अनु-स्फुरम् १. २, ३.

अनु-स्वधम् २०. १३, ४.

अनु-ह्रुवम् १६. ८, ४.

अनुहाय ५. १८, ६.

अनु-हृतः ५. ३०, ७.

अनूकम् ४. १४; ८.

अनकात् ६. ८, २१.

अनूक्यम् ६. ६ (१), १.

अनूक्यात् २. ३३, २; २०.
६६, १८.

अनूक्ये १ इति ११. ३, ६.

अनूचः ३. १, ४.

अनूची १०. १०, १०.

अनूच्ये १ इति १५. ३, ५.

अनूनः ७. ८१, १.

अनूनम् ७. ८१, ३; १२. ३;
४८.

अनूयाः १. ६, ४; १६. २, २.

अनूर्मिम् २०. ६६, १.

अनूषत २०. १४२, ४.

अनूषत २. १, १; २०. १७,

१; ३८, ४; ४७, ४; ७०,

२; ७; ६२, ८; १०४, १;

११६, १.

अनूरा १८. २, १६.

अनुत्तराः १४. १, ३४.

अनुत्तः द. ११७, १; २.

अनुत्तः द. ११७, ३४.

अनुत्त-वेवः म. ४, १४.

अनुत्तम् १. १०, ३; २. १५,

५; ४. ६, ७; १६, ६; द.

६१, १; ३; ७. ८६, ३;

६. १०, २३; १०. २, १४;

५, २२; १२. ३, ५२; १८.

१, ४; १६. ४४, ८.

अनुत्त-वाक् ४. १६, ७.

अनुत्तस्य २०. ६१, ४.

अनुत्तेन द. ७१, ३; ७. ७०,

२; म. १, ११.

अनुत्तेभिः म. ४, ८.

अनुत्तयत् १०. १०, १४.

अनेन १. १६, ३; ३. १६,

२; प. २८, १; द. ६५, १;

म. ५, १५; १०. ५, १५;

१६; १७; १८; १६;

२०; २१; १८. ४, ५०.

अनेव १६. ७, ४.

अनेषत्तः द. १८, २;

अनेषत्तम् ७. ६, ३; २०.

६२; ११.

अनेहा द. ८४, ३.

अनैक्षीत् २. ७, १.

अनेनवुः २०. ६२, १६.

अन्तः द. १०, १४.

अन्तः १. २, ४; ४. ४, ६,

२; १३, ३; ३०, ३; २.

१०, ५; ३१, ५; ३२, १;

३. ६, ३; १०, ४; २०, ८;

२१, १; २२, ७; २२, ३;

४. ८, ७; १०, ७; ११, ३;

२६, ५; २८, ५; ३०, ७;

५. ११, ८; ६; ३०, १६;

६. १, २; ३१, २; ५३,

१; ७३, २; ८०, ३; ८७,

१; १३२, १; २; ३; ४; ५;

७. ३६, १; ४३, १; ८७,

१; म. १, ११; ४, ३; ५,

६; ६, ११; ६. ३, ६; १४;

२२; म. ७; ६; ६, ६; १०,

१०; ११; १२; १०. २, ७;

५, १५; १६; १७; १८;

१६; २०, २१; ७, १०; म.

१३; २८; १०, २५; २८; ११.

२, ११; २४; ४, २०; ५, ३;

७, १; ६; म. २; ६; १०, ४;

१२. १, १६; ३७; ६०; २,

३३; १३. १, १; २; ४०;

५६; २, ३०; ३, १५; २०;

१४. १, ३७; १७. १, ८;

१३; २६; १८. ४, ८६;

१६. ३, २; २७, १०; ४८,

१; ७२, १; २०. ३४, ३;

१२; ४८, ५; ५६, ६; ८६,

म; ६६, १४; १२६, १५.

अन्तःकोशम्-इव १. १४, ४.

अन्तः-वधानाः प. २८, ८.

अन्तः-वावे द. ३२, १.

अन्तः-वेशाः म. ८, २२; १०.

६, १६.

अन्तः-वेशात् १५. ५, १; २;

४; ५; ६; ७; म; १०; ११;

१२; १३.

अन्तः-वेशान् १५. ६, २४;

१४, २३.

अन्तः-वेशेभ्यः ४. ४०, ८; ५.

१०, ७; १५. ५, १४; १५.

अन्तः-धिः १२. २, ४४.

अन्तःपात्रे ११. ६, १५.

अन्तः-वान् ६. ४, ३.

अन्तः-हस्तम् ७. ५०, २.

अन्तः-हितम् १६. ४२, १.

अन्तः-हिताः ११. ६, १६.

अन्तःकः द. ४६, २; म. १०

(४), ७; १६. ५, २; ४;

५; ६; ७; ६; १६. ६, ७.

अन्तःकाय म. १, १.

अन्तःतः १४. १, ६४.

अन्तम् ६. १०, १३; १०. ७,

४२; १२. ३, ३४; १५. ७,

१.

अन्तम् २०. ८३, २.

अन्तमानाम् २०. ५७, १; ६८,

३.

अन्तरम् १. १६, ४; २. ३०,

४; ७. १००, १.

अन्तरा ३. १५, २; ४. १६,

५; प. २०, ७; द. ५५, १;

७. १०६, ३; म. ६, ३;

६. ३, १५; म. ६; १०. ७,

२८; म. ३६; ११. ४,

१४; ५, ११; म. ३४;

१२. २, ४४; १३. १, ५७;

५८; ३, ६; १४. २, ३४;

१६. ५६, ४; २०. ६, ६;

६६, १४; १२६, १६; १७.

अन्तरिक्ष द. १३०, ४.

अन्तरिक्षम् २. १२, १; ३.

२१, ७; २६, ८; ४. २,

४; ११, १; १४, ३; २०,

१; ३५, ३; ३६, ४; प. ३,

३, ६, ७, २८, २; ६. ४०,
 १; १२०, १; २; ७. १, २;
 ६, १; ६४; ८. १, १२; ४,
 २३; ८, ५; २१; २२; ६.
 १, २१; ३, १५; ५, २०;
 ७, ५; १०, २४; १०. २,
 २४; २५; ५, २६; ७, ३;
 १२; ३२; ३५; ८, ३६; ६,
 १०; ११. २, १०; २७;
 ५, ४; ६, ६; ६, ४; १२. १.
 २०; ५३; ३, २०; २६; १३;
 १, ७; ६; १६; ३३; २, ३२
 ३५; ४५; ४, ३१; १४. २,
 ६६; १५. १७, २; १७. १,
 १३; १८. २, ६; ४६; ३,
 ५६; ४, ५; ६; १६. ६, ८;
 ६, १; १४; १०, ५; १५,
 ५; ३२, ६; ५८, २; २०.
 ११, १०; २८, १; ३४, २;
 ३६, २; ४६, १; ७६, १;
 ८७, ३; ६३, ६; १०७, १४;
 १४३, ८.

अन्तरिक्ष-वन्तम् १६. १८, २.

अन्तरिक्ष-संशितः १०. ५,
 २६.

अन्तरिक्ष-सत्-भ्यः १८. ४,
 ७६.

अन्तरिक्ष-सदः १०. ६; १२;
 ११. ६, १२.

अन्तरिक्षस्य ५. २४, ८,

अन्तरिक्षा २०. ३६, ८.

अन्तरिक्षाणि १६. २७, ३;
 २०. ६४, ८.

अन्तरिक्षात् ४. १०, १; १४,

३; ४०, ६; ५. १०, ८;

६. १२४, १; २; ७. २६,

८; ६. १, १; १०. १, १३;

५, २६; १२. ५, ७३; १३.
 ४; ३१; १६. ४, ४; ७,
 ६; १८. ४, ६; १६. ३, १;
 ३५, ४; २०. १६, ५; ३५,
 ६.

अन्तरिक्षाय ५. ६, ३; ४; ६.
 १०, २; ७. १०२, १; ११.
 २, ४.

अन्तरिक्षे १. ३०, ३; ३२,
 २; ३३, ३; २. १०, ३; ४.

८, ५; १४, ८; २५, २;
 ३६, ३२; ७. ६६, १; ६७;

८; ८. ३, ३; ५; १० (२),
 १; ६. ४, १०; ६(६), ८२;

११. २, २३; १०, २; ८;
 १३. २, ३०; ३, २२; १५.

१३, ४; १७. १, १२;
 १८. ३, ६३; १६. ८, १;

१७, १२; २०. १३६, २.
 अन्तरिक्षेण ४. २०, ६; ३८,

५; ६७; ६. ८०, १; ११.
 ३, ३६; १३. ३, १३; १६.

१७, २; १६, २.
 अन्त-वत् १०. ८. १२.

अन्ताः १. १७, ३; १४. २,
 ५१.

अन्तत् १८. ३, ६५.
 अन्तान् १४. १, ४५; २०.

८८, १.
 अन्ति १०. ४; ६; ८, ३२२;

१८. ३, २३.
 अन्तिकम् ३. ११, २; २०.

६६, ७.
 अन्तिकात् १२. २, ३८; ५०;
 ५२.

अन्तिकात्-इव ४. १३, १.

अन्तितम् ६. ४, २; ८. ५,
 ११.

अन्तिसुन्ने इत्यन्ति-सुन्ने ७.
 ११२, १; १४. २, ४५.

अन्ते २०. ७७, २.
 अन्तौ ६. ८६, ३; १३. २, ६;

१३.
 अन्धः ७. ५८, २; २०. ७७, १.

अन्धः ६. १२६, ३; ६. ६, १५;
 ११. ३, ३४,

अन्धम् ६. ८, ४.
 अन्धसः ६. २, २; २०. १,

१; ४, १; ५, २; ६, १;
 ६, १; १३, २; २३, ६; ३१,

४; ४६, ४; ५३, १; ५७,
 ११; ६४, ४; ७१, ७; १२४,

२.
 अन्धा ६. २, १०; २०. ७७,

४.
 अन्धेन १८, ३. ३.

अज्ञ-अदः १३. ३, ७.
 अज्ञ-अदम् १५. १४, १; ३;

१३; १५; १७; २१; २३.
 अज्ञ-अदाय १६. ५५, ५.

अज्ञ-अदीः १५. १४, ५; ११.
 अज्ञ-अदीभिः १५. १४, ६;

१२.
 अज्ञ-अदीम् १५. १४, ७; ६.

अज्ञ-अदेन १५. १४, २; ४;
 १४; १६; १८; २०; २२;

२४.
 अज्ञ-अद्यम् १२. ५, १०, १३.

४, १४; २२; १५. ७, ४;
 ५; ८, २.

अज्ञ-अद्यस्य १५. ८, ३.
 अज्ञ-अद्या १५. १४, ८; १०.

अस-अर्धेन १३. ४, ४६-५३;
 ५६,
 अर्ध-तेजाः १०. ५, ३४.
 अर्ध-पतये १६. ५५, ५.
 अर्ध-पतिः १३. ३, ७.
 अर्ध-भागः ३. ३०, ६.
 अर्ध-भागम् १२. १, २६.
 अर्धम् ३. २७, ३; ४. ३०, ४;
 ५. १८, ४; ७. ६३,
 १; ७१, १; ३३; ११६, १;
 ७. १०१, १; ८. २, १६;
 ७, १२; ६. ६ (२), ७; ८;
 ६; १०. २, २७; ५, ४५;
 ८, २२; १०, ८; ११. ५,
 २५; १२. १, ३; ४; ४२;
 ५, १०; १३. ४, १४; २२;
 १५. ७, ५; ५; ८, २;
 १४, २; ४; ६; ८; १०;
 १२; १४; १६; १८; २०;
 २२; २४; १६. ७, ४; २०.
 ८७, २.
 अर्धम्-अर्धम् १०. ६, ५; ३३.
 अर्ध-चान् १८. ४, २६.
 अर्ध-विदः ६. ११६, १.
 अर्धस्य ५. २८, १; ७. ६०,
 ५; १५. ८, ३; १६. ३१, ८.
 अर्धा १०. ३५, ७.
 अर्धानाम् १८. ४, ५४.
 अर्धानि १६. ३१, ४.
 अर्धाय १२. ३, ५७.
 अर्धे १०. ५, ४४; १२. १, ४;
 २०. ७६, ४.
 अर्धेन १०. ६, २३; १२. १,
 २२.
 अर्धैः २०. ७६, ३; ५.

अन्यः २. ४, ५२; ३. २, ६;
 ३०, १; ५; ४. १३, २२;
 ५. ११, ४; ७. ७६, ४;
 ८०, ३; ८१, १२; ८. ६,
 १६; ६. ६, २०२; १०, २६;
 १०. ८, २३; ११. ४, २६;
 ५, १०२; ११२; १२. ३,
 ५०; १३. १, ५०२; २, ११;
 १४. १, २३२; १८. १, १६;
 १६. ३५, ५; २०. १५, ४;
 १७, ५; १२१, २.
 अन्यकेषाम् २०. ६५, २; ३; ४.
 अन्य-क्षेत्राणि ५. २२, ८.
 अन्य-क्षेत्रे ३. ३, ४; ५. २२,
 ६.
 अन्यत् ५. ११, ५; ६. १२,
 १; १०. २, २२; २३, ७,
 ३१; ११. ८, २३; १३. २,
 ४३२; १८. २, ३१; ५१;
 १६. ५३, ४; २०. १८, २;
 ८२, २; ८५, १; १२३, २.
 अन्यतः १३. ३, १२२; २०.
 ६८, ५.
 अन्यत्र ३. २३, १; ६. ११,
 ३; २६, ३; ४०, २; ६३,
 २; १४०, ३; ७. १११, १;
 ११५, २; ६. २, २५; १०.
 १, १६; ११. २, १६; २१;
 २६; २०. १२६, २.
 अन्य-नाभिः १. ३०, १.
 अन्यम् ३. २, ६; ३०, १; ४.
 १८, ३; ६. २०, १; २६, २;
 ६. ५, २७; १०, १६२; १२.
 ३, ५०; १३. २, ११; १८.
 १, ११; १६; ४०.
 अन्यथा ११. १, ३६; ४६.

अन्य-वर्णम् १२. ३, ५४.
 अन्यस्मिन् ८. ६, १६; १२.
 ४, १५.
 अन्यस्मै ३. ३०, ५; १२. ३,
 ४६.
 अन्यस्य १०. ८, २३.
 अन्यस्याम् १. १२, ४२.
 अन्या ६. ३०, २; १०. ७,
 ४२२; १८. १, १५.
 अन्याः ६. ६०, २; १०. ८,
 ३.
 अन्यान् १. १०; २; ३०, ३;
 २. २६, ३; ४. ५, ७; ३६,
 ३; ७. ३५, १; १२. १,
 ५८; १६. ३३, ५; ५०, ६.
 अन्यास्याम् ११. ३, ३३; ३४;
 ४४-४८
 अन्याम् १. ३२, ४; १२. ४,
 १३.
 अन्याम्-अन्याम् २०. ७५, ३.
 अन्यासाम् ६. ६०, २; ७.
 ३७, १; ३८, ४.
 अन्ये २. ६, २; २८, १; ३.
 ११, ५; ७; ६. ६, १२;
 १२. ३, ४२; ५१; ४, २२;
 २०. ६६, १; १४३, ५.
 अन्येद्युः १. ३५, ४; ७.
 ११६, २.
 अन्येन ११. ३, ३२; ३५; २६;
 ४०; ४१; ४२; ४३; १८.
 १, ६; १३; १६. ६, ४.
 अन्येभिः ८. ५, ६.
 अन्येभ्यः १२. २, १६.
 अन्येभ्यः १२. ४, २३.
 अन्येषाम् १२. २, ५१; १४.
 २, ८.

(४,७१०)

अन्येषु—अप-नीता.

अन्येषु ११. ४, २३.

अन्येषु २०. ४५, ३.

अन्यैः ११. ३, ३७, ३८.

अन्वञ्चम् ६. १३४, ३.

अप १. २, २; १०, ४; १८, ३; २१, ४; २८, १; २८, ३, ६; ८, २; ३; ४; ५; ३५, २; ३७, ७; ६, १; ११, ६; १२, ६; २३, १; ४. ३, ५; ८, २; १४, ४; १७, ६; ७; १८, ७; ८; २०, ५; २५, ४; ३१, ७; ३२, ५; ३३, १; २-८; ३५, ७; ३७, १२; ५. ३, १०; ६, ७; ७, ७; १६, ६; २२, १; ६, ४, २; ६, २, ३; १४, ३; १६, ३; २०, १; ४५, १; २; ७३, ३; ८१, १; ८३, १; २; ८७, २; ६१, १; ११६, ३; १२६, १; २; १२४, १; १२६, १; २; ३; १३४, १; ७. ६५, २; ३; ८४, २; ८८, १; ८. १, २१; २, ११; १२, ४, १७; २३, ६, ४; ५; ७, १४; ८, ५; ११; ६. २, २५; ५, ७; ११; १०. १, १; २; १०; १३; १४; ५, २३; ७, ४०; ४२; ११. १, २६; ३, ४; ४, १४; ५, १६; १२. १, ३७; ४६; २, ४७; ३, १४; १६; ४३; ४६; ५४; ५, ६; ११; १३. २, ६; १५; १७; १४. १, ३८; ५६; २, ६; ११; ४८; ६८; ६६; १६. १,

१०; ६. २, १८. १, २५; ५५; २, २७; ३३; ४०; ५७; ३, २१; ७३; ४, ४६; १६. १२, १; २०, १; ३४, ३; ३६, ४; ४६, १०; ५०, ५; ५६, ६; २०. १६, ५; १७, २; २०, ५; ४३, १; ४७, १४; ५७, ८; ७०, १२; ७८, ३; ८६, ७; ६१, ११; ६६, २४; १२५, १; १३५, १३; १३७, ७.

अप-अकषन् १०. ७, २०.

अप-अतक्षन् १०. ७, २०.

अप-अयातै ७. ६०, १.

अप-आवृत्त्य १२. ५. ३४.

अप-ईक्षमाणा १२. ५, १६.

अप-उदकः ५. १६, ११.

अप-उदकम् ५. १३, २.

अप-उदकस्य ५. १३, ६.

अप-उदित ६. ५०, २.

अप-ऊण्णवन् ६. ३, १८.

अप-आतुः ३. २८, १.

अपः ७. ४८. १, १८. १; ३१.

अपः १. ४, ३; ५; ४; २. ३,

६; ५, ५; ४. १५, १२; २१, ७; २७, ४; ६. २२,

१; २; २३, १; ३; ७. ४१,

१; ७५, १; ८६, १; १०६, २;

८, ६, २३; १०(२), ८; १०;

६. ६(१), ४; १०, २२; १०.

२, ७; ५, ३३; ४६; ६,

२७; १०, ८; ११. १, १५;

१८; ५, ७; ६, ११; ८,

२८; १३. १, २; २१; ३,

६; १४. १, ३७; २, ६६;

१५. ४, ५; ११, ४; १८.

२, ७; १६. २, ५; १८,

६; २०. ६, ४; ११, ८;
१५, ६; १७, ८; ३६,
८; ४६, ७; ६१, ३;
५; ६२, ६; ६३, ६; ७५,
७; ७७, ६; ७; ८६,
२; ६०, ३; १२८, १४.

अप-कामम् ३. २३, १.

अप-कामस्य २. १२, ५.

अप-कामात् ६. ८, ८.

अप-क्रान्तिः २०. १३५, १.

अप-कामन् ७. १०५, १.

अप-क्रीताः ८. ७, ११;

अपक्षाः ११. ५, २१.

अप-गाः १. १४, ५; २. ३०,
१; ६. ८, १; २; १.

अप-गृहमानः १६. ५६. २.

अप-चत् ४. १५, १.

अप-चन्त ६. १०, १५.

अप-चित् ६. ८१, १.

अप-चितः ६. ८१, १,

अप-चितः ७. ७६. २.

अप-चिताम् ७. ७४, १.

अप-चिताम्-इव ६. ३५, १;
२; १.

अप-तत् ५. २८, ६.

अप-तिः ८. ६; १६.

अप-ति-घ्नी १४. २, १७; १८.

अप-ति-घ्नीम् १४. १, ६२,

अप-त्यम् ७. १०८, १.

अप-त्य-वत् १२. ४, १.

अप-थम् ६. ७३, ३; १०. १,
१६.

अप-थेन ५. ३१, १०.

अप-दम् ६. २६, २.

अप-द्यन्त १४. २, ३२.

अप-धा २०. ३४, १.

अप-ध्वसेन ४. ३, ५.

अप-नीता ५. १७, ६,

अप-पद्यते ४. २८, ५.
 अप-पापम् १६. ८, ५.
 अप-पुषः ६. १३६, ४.
 अप-सत् ७. ६६, १.
 अप-सत् ५. ३०, ६; ६. १२४,
 १.
 अप-कथाः ७. ६३, १.
 अप-बाधमानः १२. ३, १५;
 १६. १३, ८-
 अप-ब्रवत ६. ५७, १.
 अप-भर्तवै १८. १, ५०.
 अप-भूतये ५. ८, ५.
 अप-मयाः १६. ५७, ५.
 अप-गा १०. ४, १.
 अप-मित्यं ६. ११७, २.
 अप-मित्यम् ६. ११७, १.
 अप-मृज्य ४. १८, ८.
 अप-मृष्टम् ६. ११३, ३.
 अप-र-अह्नः ६. ६(५), ५.
 अप-रः ६. ५, २८; १०. १,
 २७२; ४, १; १२. २, २३;
 २५; १३. २, १४; १४. २,
 ३.
 अप-रम् ६. ५, २७; १३. १,
 ५६; ५७; १४. १, ६४;
 १८. २, ३८-४५; ५०;
 ५१२; ४, ४४.
 अप-रम् २०. १२६, ११.
 अप-रस्याः २०. ७६, २.
 अप-राः १०. १०, ८.
 अप-रा-जितः ५. ३०. १७;
 ८. ५, २२; १०. ४, १५.
 अप-रा-जिताम् १०. २, ३३.
 अप-राजः ६. ११६, २.
 अप-रान् १०. ३, १३; १४; १५.
 अप-रा-परणः १२. ५, ४५.
 अप-राम् ६. १८, १.

अप-रासः १८. १, ४६.
 अप-रा-हतः १८. ४, ३८.
 अप-रि-परेण १८. २, ४६.
 अप-रि-मितः ६. ५, २१; १५.
 १५, ६.
 अप-रि-मितम् ६. ५, २२.
 अप-रि-मिताः १५. १३, ६,
 १०.
 अप-रुद्धम् ३. ३, ४.
 अप-रूपम् १२. ४. ६.
 अप-रे ६. ६(६), ३; १८. ३,
 ७२, २०. ६४, ७.
 अप-रेण १०. ४, ३.
 अप-लिताः १६. ६०, १.
 अप-लुप्यते ५. १७, ७.
 अप-वृत्तारः ५. १५, १-११.
 अप-वान् १८. ४, २४.
 अप-वान् १६. ५०, ४.
 अप-वासे ३. ७, ७२.
 अप-वृत्तम् २०. १५, १.
 अप-वृत्तेन ३. २, ६.
 अप-शु-क्षीम् १४. १, ६२.
 अप-शुष्यति ६. १३६, ४.
 अप-श्वा १६. ५५, ५,
 अप-श्यत् ४. १४, १; ६. ६,
 ६; १०, ३; १५. १. २;
 १६. ५६, २; २०. १६, ८.
 अप-श्यन् २०. ६३, ३; १२४, ६.
 अप-श्यम् ६. १०, ११; १८.
 ३, ३.
 अप-श्यम् ६. ६, १; १०, २५;
 २०. १३७, ८.
 अप-श्रयः १५. ३, ८.
 अप-श्रितम् २०. ४१, २.
 अप-श्रितौ ६. १२७. २.
 अप-सः ६. २३, १; १६. २,
 ३; २०. १८, २.

अप-सिध्यं ८. २, ७.
 अप-स्कम्भस्य ४. ६, ४.
 अप-स्पृधेयाम् ७. ४४, १,
 अप-स्फुरम् २०. ६२, ७.
 अप-स्युवः २०. ६३, ४.
 अपाः २०. ३३, ३.
 अपाक् २०. ६४, ७; १२०, १.
 अपाक् २०. १२८, ४; १३४,
 १-६.
 अपाक्तः ८. ४, १६.
 अपाङ् ६. १०, १६.
 अपाचः २०. १२५, १.
 अपाचीनम् ६. ६१, १.
 अपाचीम् १८. ३, ३; २०.
 ६१, ५.
 अपाञ्चः ५. ३, २.
 अपाञ्चम् ३. ३, ६.
 अपाञ्चौ ७. ७०, ४.
 अपात् २०. ६२, ८.
 अपात् ६. १०, २३; १०. ८,
 २१.
 अपानः २. २८, ३; ५. ३०,
 १५; ७. ५३, ३; ४; ११.
 ४, १३; १२. ५, ६; १५.
 १६, १-७; १६. ४, ३;
 १८. २, २६; ४६; १६.
 ५१, १.
 अपानतः ६. ३१, २; २०.
 ४८, ५.
 अपानते ११, ४, ८.
 अपानम् १०. २, १३; १६,
 २७, ६.
 अपानाः ६. १०४, १; ८. १,
 १; ११. ३, २६; १५. १५,
 २.
 अपानाय ६. ४१, २; १६.
 ४५, ६-१०.

अप्रजुः-त्वम् ८. ६, २६.

अप्रजाः-त्वार्य १०. १, १७.
 अप्रति ७. ५०, १२; ६३, १;
 ११०, १; २०. १२, ३;
 २१, ६.
 अप्रति-इतः २०. ६०, ३.
 अप्रति-इतौ ७. २५, १.
 अप्रतिदिश्ययः २०. १२८, ८.
 अप्रतिब्रुवत्-भिः ३. ८, ३.
 अप्रति-मन्यमानाः १३. १;
 ३१.
 अप्रति-मानम् २०. १३७,
 ११.
 अप्रति-स्कृतः २०. ४१, १;
 ६३, ४; ७०, १२; १४.
 अप्रति-स्कृतम् २०. ५५, १.
 अप्रति-स्थानः ११. ३, ४६.
 अप्रतीक्षम् ६. ११७, १.
 अप्रथयः २०. १२८, २.
 अप्रथेयाम् ४. २६, १.
 अप्रपाणा २०. १२८, ८.
 अप्र-मादम् १२. १, ७. ६;
 १८; १३. १, २३; ३, ११;
 १६. ४६, २.
 अप्र-मायुकम् १६. ४४, ३.
 अप्र-यातम् १६. ५५, १.
 अप्र-यावन् ३. ५, १,
 अप्र-युच्छन् २. ६, ३; ६. ४,
 ३; ७. ६, २; १८. १, ३४.
 अप्र-हितम् २०. १०५, ३.
 अप्र-हितौ ६. २६, २.
 अप्राक् १०. ४, २६.
 अप्राक्षम् ७. ५४, २.
 अप्राणत् १०. ८, ११,
 अप्राणा ८. ६, ६.
 अप्रात् १३. २, ३५; २०.
 १०७, १४.

अप्रायि १६. ४७, १.
 अप्रायु-भिः २०. ६४, ६.
 अप्रियः ८. १२, २.
 अप्रियम् ८. १० (६), ४; १५.
 १, ८.
 अप्रियस्य ६. ५, ३१; ३२२;
 ३३२; ३४५; ३५२; ३६२.
 अप्रियाः ६. ६ (२), ६.
 अप्रिये ८. ६, २६; १२. १,
 ३०; १६. ५७, १.
 अप्रावाः-इव १६. ५०, ३.
 अप्रवाम् ६. ८, ६.
 अप्रवे ३. २, ५.
 अप्रसः ६. ४६, २,
 अप्रसरसः ४. ३७, २; ३;
 १२; ६. १११, ४; ७. १०६,
 ३; ८. ५, १३; ६. ७, १०;
 ११. ६, १५; १२. १, २३;
 ५०; १४. २, ६; ३४; ३५.
 अप्रसरसः ४. ३७, ३; ४; ५.
 अप्रसरसाम् ६. १३०, १.
 अप्रसरसौ ६. ११८, ३.
 अप्रसरसौ ६. ११८, १.
 अप्रसरा-पतेः ४. ३७, ७.
 अप्रसराभ्यः २. २, ५; ७.
 १०६, २.
 अप्रसराम् ४. ३८, १२; २२;
 ४.
 अप्रसरसु २. २, ३.
 अप्रससा ६. ४६, २.
 अप्रसु १. ४, ४२; ६, २;
 ३०, ३; २. ३१, ५; ३.
 २१, १; २२, ३; ४. ८,
 ७; १०, ७; ३०, ७; ३७,
 १०; ६. ३८, २; ८०, ३;
 १३२, १-५; ७. ८३, १;

८७, १; ८. १, ११; १०.
 ५, १५; १६; १७-२१;
 ८, ४०; ११. २, २४; ३,
 ४३; ५, १३; ७, २३; ८,
 ३४; १२. १, ३७; १३. १,
 १; २; ५०; २, ३०; ३,
 १५; १४. १, ३७; १६. १,
 ७; १७. १, ८; १३; १८.
 १, ४; ३, ६०; ४, ८६; १६.
 ३, २१; ८, १; २७, १०;
 २०. ३३, १; १३६, ५.
 अप्रसु-जाः १०. ४, २३.
 अप्रसु-योगैः १०. ५, ५.
 अप्रसु-संशितः १०. ५, ३३.
 अप्रसु-सदः १२. २, ४; १६.
 १, १३.
 अप्रफलाः ८. ७, २७.
 अप्राणयत् २०. ६२, १०.
 अप्रघ्नत् १०. ६, १८;
 १६२; २०२.
 अप्रघ्नन् १६. ६, १५.
 अप्रघ्नात् १०. ६, ६; ७; ८;
 ६; १०; ११; १२; १३;
 १४; १५; १६; १७; २२;
 २३; २४; २५; २६; २७;
 २८; १४. १, १६; ५८.
 अप्रघ्नः ४. १६, ७.
 अप्रघ्नु ६. १२२, २.
 अप्रघ्नु-कृत् ४. १६, १.
 अप्रघ्नुवा २०. २१, ६.
 अप्रघ्न-धन्वनः ३. १६, ७.
 अप्रघ्नान् ३. १६, ७.
 अप्रघ्नलासौ ८. २, १८.
 अप्रघ्नेन ३. २६, ३.
 अप्रभिः ६. ८१, ३; ८. ५,
 १४; १८. २, ५७; ३,
 ५४; ४, ५६.

अभिमेत न. १०. (१), १.
 अभिभ्यत् १६. ६५, १.
 अभिभ्युषा २०. ४०, १; ७०,
 १.
 अभिभ्युषीः ३. १४, ३.
 अभुञ्जमाने इति १०. ७४,
 ३.
 अभुवधत् २०. १२७, ११.
 अबोधि १३. २, ४६.
 अब्रवीः ५. ११, १.
 अब्रवीत् २०. १३२, १४;
 १३६, ६.
 अब्रह्मा २०. १२८, ६.
 अब्रवीत् १. ६, २; ५. १३,
 ६; १६, १०; ६. ११, २;
 ८२, २; ६. ४, १२; १०.
 ४, ४; १२. ४, ४२; १३.
 १, ५४; १५. ३, २.
 अब्रवीत् २०. १२८, ३.
 अब्राह्मणः १२. ४, ४३; ४४;
 ४६.
 अब्राह्मणाः ५. १७, ८; ११. १,
 ३२.
 अब्रुवन् ५. १६, १२; ८.
 १०, (२), २; ६. ४, १४२;
 १२. ४, १३; २२; १५. ३,
 १; २०. १३७, ५.
 अब्रुवन् २०. १२८, १५.
 अब्रुवाम् १५. १०, ३.
 अभुक्षि २. २५, १.
 अभुगाः ५. ११, ११.
 अभजन्त १६. ५६, ५.
 अभजन्त ११. १०, ११.
 अभय-तमेन ७. ६. २.
 अभयम् ४. २१; ४; ६. ३२, ३;

४०, १४; २; ५०, १; ७.
 ६१, १; ८. १, १०; ११.
 २, ३१; १३. १, ५; १८.
 ३, ६१; १६. ३, ४; ८, ७;
 ६, १३; १४, १; १५, १;
 ४; ५५; ६१; १६, १; २७,
 १४; ४४, १; २०. २०, ७;
 ५७, १०; १२५, ६.
 अभयम्-कुरः १. २१, १; ८.
 ५, २२.
 अभयाः १६. ४५, ४.
 अभयः २०. ५५, २.
 अभरत् ६. ६१, १; १६७, १;
 १०. २, ५; ८, २१; ११.
 ५, १६; ८, १२२; १६; १७;
 १३. २, ३६; १८. १, २१;
 २, ३३; १६. ५३, ४.
 अभरन् १५. ३, ३.
 अभरन्त १६. ३३, ३.
 अभवः २०. ४२, २.
 अभवः ४. ६, ३; २०. ६८,
 ८; ६३, ८; १३७, १०.
 अभवत् १६. ६, ४.
 अभवत् ३. १०, १; १२; ४.
 १६, ६; ५. १२, ११; ७.
 १, २२; ८. ४, २१;
 १० (३), १; ३; ५; ७; ६.
 १, ५; ४, ५; ५, २०; १०.
 २, १८; ८, २१; १०,
 २४; २६; २६; ३४; ११.
 ५, १६; ८, १; २; ८; १२.
 १, ६०, ४, ४६; १३. २,
 ३६; ४०; १४. १, ६; १५.
 १, ३०; ४१; ५; ६; ७,
 १, १८. ४, ३२२; १६. ६,
 २; ६; ६; ५३, ४; २०.
 ११, १०; ३०, ४; ८७, ५.

अभवत् ४. २६, १; २.
 अभवन् १०. ७, १८; ३४.
 अभुवन् ५. १८, १०; १२;
 १६, १; ११; १०. १०,
 २०; २४; १६. ५४, १. ३.
 अभुगाः ४. ३२, ५.
 अभारिषम् ४. ११. ५; ६;
 ५२, ३.
 अभवयत् ८. ५, ३,
 अभि १. १, ३; ६, १; २७,
 ३; २६, १; २१; ३१; २.
 १, १; ४, ५; १०, ४;
 ११, ३; १३, १; ३. १,
 २; ३; २, ५; ६; ११,
 ८; १२, ८; १७, ४; १८,
 ६; २१, ५; २२, ६; २४,
 ६; २५, ४; ३०, १; ४.
 १; ३; ५; ८, २; ५; ६;
 १०, ७; ११, १०; १३,
 ७; १४, ६; ६; १५, ६;
 १६; १६, ७; ६; १६, ८;
 २१, ४; २७, ४; ३२, ३;
 ६; ७; ३६, १०; ५. १, ५;
 ६; २, ३; ३, ४; ४, २; ५;
 ६; ८, ६; ११, ७; १३,
 ४; १६, ४, ६; १५; २०,
 १; ३; ७; २१, ४; ५; ६;
 ६; २७, ६; ६. २५, १;
 २; ३; ३४, ४; ४०, २;
 ४१, ३; ४२, ३; ४७, ३;
 ५७, २; ७८; १; २१;
 ७६, १; ६७, १; ६६, १;
 १०२, १; १२४, १;
 १२६, २; ३; १३६, ३;
 ७. ६, १; १४, १; ३५,
 ३; ३७, १; ७३, १०;

म२, १; म४, २; ६३, १;
 १०६, ४; ११६, २; म.
 १, ७; १२; २, ४; १४;
 १५; ३, ३; ६; ४, २;
 १६; २१२; २३; ६, २२;
 ७, २६; म, ६; म; ६; ६;
 ६; ६; १५; २१; ६. १,
 म; ४, २२; २४; ५, ४२;
 ६; १२; ६(५), म; ६, ३;
 २०; १०, ६२; १०. १,
 १५; २, १८; २७; ३,
 १३; १४; १५; ५, ३६;
 ४३; ६, १२; ११. १, ६;
 ३३; ३७; २, १; म; १६;
 ३, १८; ६, ३; १२. १,
 १२; २६; ३३; ३४; २,
 २६; २७; ३, ४; म२; ११;
 १२; १५; १६; १७; २६;
 २६; ३०; ३४२; ३७;
 ४१; ४२; ५२; ४, १०;
 १५; ५, २०; १३. १,
 १०; २०; २२; ३३; २,
 ६; २७; ४२; ४३; ३,
 २३; २५; १४. २, ३४;
 ३५; १६. १, ६; ६, १;
 १८. १, ५२; २, ४; ५०;
 ५१; ५२; ३, २२; १८;
 ४०; ५०; ७३; ४, १०;
 १३; २६; ६२; ६६; १६.
 म, ५; १०, ४; १३, ७;
 ३१, १२; ४५, ४; ४६,
 १; २; ३; ४; ५२; ६; ७;
 ४६, २, २०. ५, १; ६,
 ७; ७, १; म, १; ३; ६,
 १; १२, ६; १६, १; ११;
 १७, ७; १८; ४; २०, ५;

२२, १; ४; ५; ३०, २;
 ३५, १०; ३६, १; २;
 ४८, १२; ४६, ४; ५१,
 १; ५७, म; ६१, ४; ६२,
 म; ६४, २; ६५, १; ३;
 ६७, २; ६८, ११; ६९,
 म; ७३, ५; ७६; ३; ७;
 ७७, ५; म८, २; ६२, १;
 २; म; ६६, १; १०४, १;
 १०५, १; १०७, ६; १५;
 ११२, १; १२१, १; १२४,
 ३; १२६, म; ६; १६;
 १३७, ६; १४३, २.

अभि २०. १३०, १४.

अभि-अक्ता १०. १, २५.

अभि-अक्रन्दत् १६. ६०, ५.

अभि-अगच्छन् १६. ७, ६.

अभि-अघायति ७. ७०, ३;

१६. ५०, ४.

अभि-अघायन्ति ५. ६, ६.

अभि-अचक्षत १८. ३, ३६.

अभि-अञ्जनम् ६. १२४, ३;

१४. १, ६.

अभि-अतिसृजामः १०. ५,

१५; १६; १७; १८; १६;

२०; २१; १६. १, ५.

अभि-अधत्त ३. ११, म.

अभि-अध्वे ४. २८, २.

अभि-अपक्रमीः १०. २, १८.

अभि-अपसत् ६. ३२४, २.

अभि-अपेहि ७. म८, १.

अभि-अमवः ६. १२६, २.

अभि-अवतनोमि म. म, २४.

अभि-अवनिक्षि १०. ५,

१५; १६; १७; १८; १६;

२०; २१; १६. १, ४.

अभि-अवर्तयन् १२. १, ५.

अभि-अवर्षीत् ११. ४, ५;
१७.

अभि-अवसृजामि १६. १, ६.

अभि-असिच्यन्त १४. १,
३६.

अभि-आक्रमम् १०. ७, ४२.

अभि-आगात् ६. १०, ५.

अभि-आचारम् १०. ३, २.

अभि-आर्यत ४. २४, ६.

अभि-आरोहति ३. २६, ३.

अभि-आवर्तस्व ७. १०५,

१; ११. १, २२.

अभि-आवर्ते १०. ५, ३८;

३६; ४०; ४१.

अभि-आववृत्स्व ३. १७, ६.

अभि-इद्धाः ७. ७३, ७; ६.

१०, ४.

अभि-उदतिष्ठत् १५. म, २.

अभि-उदिहि ३. २०, १०;

१७. १, ६; ७.

अभि-उदेत्य १५. ११, ३;

१२, २.

अभि-ऊढः १५. १५, ५.

अभि-ऊर्णुते १४. १, २७.

अभि-एति १. २५, ४; ७.

११६, २; ६. १, म.

अभि-एहि म. २, २.

अभि-एमि ६. ११८, ३.

अभि-कनिकदत् २०. ६१, ३.

अभि-कृत्वरीः २. म, २.

अभिक्त २०. १३६, १५.

अभि-कृतूनाम् २०. ११, १०.

अभि-क्रन्दति म. ७, २१;

११. ४, ३, ४.

अभि-कन्दन ५. २०, २;
११. ५, १२.

अभि-गतः २०. १३५, १.

अभि-गच्छामि १६. ७, ११.

अभि-घोरितः ५. २१, ३.

अभि-घोरितौ १०. ६, २५.

अभि-चक्र ३. ६, १.

अभि-चक्षणम् ६. १२७, २.

अभि-चक्षणाः ६. २, २१.

अभि-चक्षौ २०. १२३, २.

अभि-चष्टे ८. ४, ८; १. १०,
२६.

अभि-चस्कन्द ७. ११५, २.

अभि-चारः ११. १, २२.

अभि-चाराः ११. ६, ६.

अभि-चारात् ८. २, २६; १०.
३, ७.

अभि-चारिणः १०. १, ६.

अभि-चरुः ५. ३०, २; १०.
१, १८.

अभि-छायम् १३. १, ५७

अभि-जज्ञमानः ५. २०, ६.

अभि-जित् ११. ७, १२; १६.
७, ४.

अभि-जिताः १२. ३, ६.

अभि-जित्य १२. ३, ३६; १६.
५४, ५.

अभितः ३. ५, ६; ७; ३०, ६;

४. ५, ६; १०. ८, ३; १७;

१२. ३, ४२; १३. १, ३५;

१४. १, ४५; १६. १६, २;

२७, १५; २०. २१, ३; २५,

१; ८७, ६; ८८, ३.

अभि-तपन् १६. २८, ३.

अभितप्तम्-इव ४. ४, ३.

अभि-तुर्पयन्तीः १८. ४, ३६.

अभि-दासतः १. २१, ३.

अभि-दासति १. १६, ३; २१,

२; २. २७, ७; ४. १६, ५;

६. ६, ३; १५, १; २; ५४,

३; ८. ४, ७.

अभि-दासन् ६. ६६, १.

अभि-दासन्तम् ८. ३, २५

अभि-दासन्ति ४. ४०, १-८.

अभि-दासात् ५. ६, १०;

१०, १-७; ७. १०८, २;

१२. १, १४; १६. १८,

१-१०.

अभि-दिग्धाः ५. १८, ८.

अभि-दीपयन् ४. १६, ३.

अभि-दुद्रोह ७. ८६, ३.

अभि-दुन्वन् ५. २२, २.

अभिद्यु-भिः २०. २१, ५;

४०, २; ७०, ४.

अभि-द्रोहम् ६. ५१, ३.

अभि-धानी ८. १०(२), ५.

अभिधार्य ८. ८, ५; ७; १६.

५०, ५.

अभि-धावामि ६. ११६, ३.

अभि-नक्षमाणाः १८. १, ४२;

४, ४६.

अभि-नत् २०. २८, १; ३६,

२.

अभि-नत् २०. १२८, १३.

अभि-नत् २. ५, ५; २०. २१,

८; ६१, १२.

अभि-नन्दति ६. २, २.

अभि-नन्दन् १६. ८, ३.

अभि-निर्वर्तस्व १०. १, ७.

अभि-निष्कारिणः १०. १,

३१.

अभि-निष्कृतात् १०. १, १२.

अभि-निष्पतन् ७. ६४, १.

अभि-ज्ञे ४. २१, २.

अभि-पर्यावर्तन्त १५. ७, ४.

अभि-पश्यतः १०. ८, २४.

अभि-पितृत्वम् २०. ७७, १.

अभि-पितृत्वेषु २०. २५, ६.

अभि-पुर्तम् ६. ५, १३.

अभि-पूर्वम् ११. २, २२.

अभि-प्रघ्नन्ति २०. ८३, २.

अभि-प्रमन्वते ६. ८४, १.

अभि-प्रहिताम् १०. १, १५.

अभि-प्रेष्यामि १६. ७, २.

अभि-भञ्जतीनाम् १६. १३,

६.

अभि-भवः १. २६, ४,

अभि-भवन्तीम्-अभिभवन्तीम्

६. ५. ३६

अभि-भाः १. २०, १; ५. ३,

६; ११. २, ११; १८. ४;

४६; १६. ४४, ७.

अभि-भाम् ४. २८, ४.

अभि-भुम् १०. ६, २६.

अभि-भुवम् ६. ५, ३६.

अभि-भूः २. २७, १; ६. ६७,

१५; ६. ५, ३६; ११. १,

६; १४. २, १६; २०. ६२,

६; ६३, ८.

अभि-भूतरम् २०. ५४, १.

अभि-भूति-ओजाः ४. ३३,

४; २०. ११, ६.

अभि-भूतिः ६. ६८, २.

अभि-भूते २०. २१, ३; १२५, १.	अभि-वदति ६. ६ (१), ४.	अभि-श्रियौ ८. २, १४.
अभि-भूयाय १६. ३७, ३.	अभि-वयसः २०. ६६, १.	अभि-श्रिषः १४. २, ४७.
अभि-मनस्येते ११. ३, २५.	अभि-वर्गात् ११. २, ४.	अभि-श्रुता ६. १३८, १.
अभि-मन्यते ६. ६, १,	अभि-वर्गे ३. ५, २; ६. ५४, २.	अभिष्णाक् २०. १२५, ५.
अभि-मातयः २. ७, ४.	अभि-वर्तः १. २६, ३; ४.	अभिष्टये १. ६, १; ६. ३, २; २०. ५१, ३.
अभिमाति-जित् २. ६, ३.	अभि-वर्तेन १. २६, १.	अभिष्टिः २०. ११, ४; ७१, ७.
अभि-मातिम् ४. ३१, ३; १६. ३२, ६.	अभि-वृष्ट्रे १. २६, १.	अभिष्टौ २०. ३७, ८; ६; ७७, ४.
अभि-मातिषु २०. १६, ७,	अभि-वारः १. ३२, ४.	अभि-संगत्य ११. १, १६.
अभिमाति-सहः ४. ३२, ४; ५. ३, ६; २०. १; ११,	अभि-वीरः १६. १३, ५.	अभि-संतपाति २. १२, ६.
अभिमाति-सह्यो २०. १६, ३,	अभि-वृता ६. १०, ७; १०. १०, १६.	अभि-संबभूव ३. २८, ५; ६.
अभि-मातीः १८. २, ५६,	अभि-वृत्य १. २६, २.	अभि-संभूय ५. २८, ८.
अभिमोद-मुदः ११. ७, २६; ८, २४.	अभि-वृष्टाः ११. ४, ६.	अभि-संयन्ति ११. ५, ३.
अभि-यन्ति १०. ७, ४; ६.	अभि-व्याधिनः १. १६, १.	अभि-संविशध्वम् ३. ३, ४; ६. ६४, २; ८. ५, २०; २१.
अभि-यन्ती ७. ४६, ३.	अभि-शस्ता ५. १८, १.	अभि-संविशन्ति १५. १७, ६.
अभि-यन्तौ ५. १, ५.	अभि-शस्ति-पाः २. १३, ३; ४. ३६, ६; ५. १८, ६; ८. ७, १४; १६. २४, ५; ६.	अभि-संविशस्व ६. २, २५.
अभि-यातः ११. २, १३.	अभि-शस्तिम् ३. १, १; २, १.	अभि-सत्त्वा १६. १३, ५.
अभि-याति ४. २६, ७,	अभि-शस्तेः ७. ५३, १.	अभि-सर्वनीः ६. ६ (१), १६.
अभि-युजः ७. ७३, ६.	अभि-शस्त्या ६. १२०, २; १२. ५, ५८.	अभि-साचः १६. ११, २.
अभियुध्याः २०. ८७, ४.	अभि-शाचः १८. ४, ४४.	अभि-सिक्तः १६. ३१, १२.
अभि-रक्षथ १०. ७, २३.	अभि-शोकः १. २५, ३.	अभि-सिञ्चामि ६. १२२, ५; १०. ६, २७; ११. १; २७.
अभि-रक्षमाणाः २०. ६३, २; १२४, ५.	अभि-शोचः १. २५, ३.	अभि-सिञ्चेत् ८. १० (६), १.
अभि-रक्षसि २०. १२६, ४.	अभि-शोचन्ति ४. २६, ७.	अभि-स्कन्दम् ५. १४, ११.
अभि-राष्ट्रः १. २६, ६.	अभि-शोचनम् ४. ६, ५.	अभि-स्तुतः ६. २, १.
अभि-रूपाम् ८. ६, ६.	अभि-शोचनात् २. ४, २.	अभि-स्तुताः ८. ७, ११.
अभिरेषात् ४. ३५, १.	अभि-शोचयिष्युः ६. २०, ३.	अभि-स्थितः ५. १४, १०; २०, १३५, १.
अभि-रोरुदम् ७. ३८, १.	अभि-शोचान् ४. ३७, १०.	अभि-स्वरन्ति ६. ६, २२.
अभिलाप-लपः ११. ८, २५.	अभि-श्रावे १८. १, २६.	

अभि-स्वरा २०. ५४, ३.
 अभि-स्वरे १३. ३, २५.
 अभि-हतः ११. १०, २२.
 अभि-हतम् १६. ६, ६.
 अभि-हस्यम् ६. ३०, २.
 अभि-हिङ्कृणोत १२. ३,
 ३७.
 अभि-हितः ६. ६३, ३; ८४,
 ४.
 अभि-हितम् ६. ३, ८.
 अभिहिता-इव १०. १, ३०.
 अभि-हितौ १४. १, ११.
 अभि-हुता ६. १३३, २.
 अभि-हुतः ६. ४, २.
 अभिहुती इत्यभि-हुती ६.
 ३, ३.
 अभि-ह्वारे ६. ७६, ३.
 अभीर्के २०. ६५, २.
 अभीन् १६. २८, २.
 अभीपतः ७. ३६, १.
 अभीरुणम् ७. ८६, ३.
 अभीवस्व २०. १२७, १०.
 अभीशवः ८. ८, २२.
 अभीशुना ६. १३७, २.
 अभीषाद् १२. १, ५४; १३.
 १, २८.
 अभुत्सत १२. ४, १.
 अभुत्सि २०. १४२, १.
 अभूः २. १३, ३; १६. २४,
 ६.
 अभूः २. १०, ७; ५. ३, ११;
 ६. ८७, १; १८. ४, ५२.
 अभू'त् २. ६, २; ५. २२, ६;
 १२. २, २२; १८. २, ३७;
 ४, ६५.

अभूत् ६. ८१, १; ८. १, २१;
 १०. ४, २६; १३. १, ५;
 २०. १२६, २३.
 अभूतन् ४. ३७, ३; ४; ५.
 अभू'तम् १४. २, ५.
 अभूताम् १६. १४, १.
 अभू'तिः ११. ८, २१; १२.
 ५, ३५.
 अभू'त्या १६. ७, १.
 अभू'त्याः ७. १००, १; १६.
 ५, ५; ८, ६.
 अभूभुवः २०. १३६, ७; ८.
 अभू'म १२. २, १३; १४. २,
 ६७; १६. ६, १.
 अभूम् १८. ३, २४.
 अभूवन् २. ३१, ३.
 अभूषन् ४. ८, ३.
 अभूष्य १६. ६, २.
 अभ्यसेताम् २०. ३४, १.
 अभ्रः ६. ६(५), ६.
 अभ्र-जाः १. १२; ३.
 अभ्रम् ४. १५, ६; ८. १०(२),
 ५; ६. ७, १८; १०. १,
 १३; ११. ३, ६.
 अभ्रम्-इव ८. ६, १६; २०.
 १६, ५.
 अभ्राणि ४. १५, १; ११. ७,
 २१.
 अभ्रात् १२. ३, २५.
 अभ्रातरः-इव १. १७, १.
 अभ्रातृ-स्त्रीम् १४. १, ६२.
 अभ्रातृव्यः २०. ११४, १.
 अभ्रि-खाते ४. ७, ५; ६.
 अभ्रि-भिः १०. ४, १४.

अभ्रियस्य-इव २०. १६, १.
 अभ्रियाय २०. १६, १२.
 अभ्रिये २. २, ४.
 अभ्रे ११. ५, १२.
 अभ्र्वम् ४. १७, ५; ७. २३,
 १; १३. ४, २५.
 अभ्रंसत् २. १२६, १.
 अभ्रः १३. ४, ५०; १४. २,
 ७१.
 अभ्रिणः २०. १२८, ६.
 अभ्रत २०. १६, ७.
 अभ्रतिः १०. २, १०.
 अभ्रतिः ७. १४, २.
 अभ्रतिम् ४. १०; ३; ७. ५०,
 ७; १२. २, ४८; १६.
 ३१, ११; ३४, ३; २०.
 १७, १०; २१; ४; ८६,
 १०; ६४, १०.
 अभ्रतेः २०. १७, ३.
 अभ्रत्रः २०. ३५, ६.
 अभ्रत्रम् २०. ७६, ७.
 अभ्रत्सत् २०. ६२, ८.
 अभ्रदत् २०. १२६, १.
 अभ्रदन् २०. २१, ६.
 अभ्रदन् २०. ४६, १.
 अभ्रन्तवः ४. ३०, ४.
 अभ्रन्दत् २०. १४, ४; ६२, ४.
 अभ्रन्दिषुः २०. ५१, १.
 अभ्रन्महि २०. ११६, २.
 अभ्रन्महि २०. ११६, १.
 अभ्रन्यत् १५. ६, १६.
 अभ्रन्यमानान् २०. ३४, १०.
 अभ्रन्युताः १२. ३, ३१
 अभ्रन्वत् ७. १, १; २०.
 ४१, ३.
 अभ्रन्भिः ८. २, २६.

अमृत्यु ११. २, ३; १३. १, ४४.	३. ११. ६, १६; १०, २२; २६.	अमिमाताम् १२. १, १०.
अमृत्युः ६. २६, ३; ७. ८४, १; ८. ३, २०; २६; ६. १०, ८; १६.	अमित्रम् २०. ६०, ३.	अमिमीत ५. १२, ११; ७. १४, २; ११. १, ५२.
अमृत्युम् १८. ४, ४१; २०. ६७, २.	अमित्र-यन्तन् ७. ८४, २.	अमी इति ३. ८, ५; २६, १; ५. ८, ५; २१, ८; ६. ६४, १; १०३, ३; ७. ८०, ४; ८. ८, १०; २४; ६. १०, १८; १३. २, १३.
अमृत्युम् १६. ८, १.	अमित्र-सेनाम् ३. १, ३.	अमीत्यः ८. ८, २४.
अमृत्याः ६. ४१, ३; १२. १, २४.	अमित्र-सेनाम् ५. २०, ६.	अमीमवः ४. ६, ३.
अमृत्याः ४. १७, १२.	अमित्रस्य १. २१, ३.	अमीमवन्त १८. ४, ६१.
अमृत्यान् ७. ५, १.	अमित्र-हा ४. ३२, ३.	अमीमवम् ७. ७४, ३.
अमृत्येन ७. ५, १.	अमित्राः २. २८, ३; ५. २१, २; ८; ६. ६७, २; १०४, २; ८. ८, २; ११. १०, २१; २३; २०. ३४, ८.	अमीमांसन्त १२. ४, ४२.
अमृत्यौ ८. ७, २०.	अमित्राः ८. ८, १६.	अमीमृणन् ३. १, २.
अम-वान् १८. १, २४.	अमित्राणाम् ३. १, ५; ५. २१, ६; ६. ६७, १; ८. ८, १; ११. ६, ३; ५; १८; २०; २३; १०, १६; २०.	अमीमेत् ६. ६, ६.
अमा ४. १८, ३; ५. ३, २; ११. ५, १५; १२. ४, ३८; ५३.	अमित्रात् १६. १५, १.	अमीमेत् ६. १०, ६.
अमा-उत्तम् ६. ५, १४; १२. ३, ५१.	अमित्रान् १. १६, २; ३; ३. २, ५; १६, ३; ८; ४. २२, १; ५. २०, ८; २१, ४; ५; ६; ७; १२; ६. १०४, १; ११. ६, १२; १८; २१; २३; १०, १; ३; १३; १८; १६; १६. १३, ८; २०. ४६, १; ८०, ३; ६०, २; १२५, १.	अमीव-चातनः १. २८, १; ८. २, २८; १६. ४४, ७.
अमा-वास्या ७. ७६, २; १५. २, १४; १६, ३.	अमित्रेभ्यः ५. २१, ३; ६. १०४, ३; ११. ६, १; १५; २२; २४; १०, ६.	अमीव-चातनीः ३. ७, ५; ६. ६१, ३.
अमा-वास्याम् १. १६, १; १५. १७, ६.	अमित्रेषु ५. २१, १; ११. ६, ६; ११; २५.	अमीवा ७. ४२, १; २०. ६६, ११; १२.
अमा-वास्यायै ७. ७६, ३.	अमिनाम् २०. ११, ३.	अमीवाः ७. ८४, १; ८. ७, १४; १६. ३४, ६; ४४, ७.
अमा-वास्ये ७. ७६, १; ४.		अमीवाम् ४. १०, ३.
अमा-वास्ये ४. ३६, १.		अमीषाम् ३. २, ५; १६, ८; ८. ८, १६; ११. ६, २०; १०, १६; १२. २, ५५; १६. ५२, ४.
अमासि १२. १, ३०; १८. २, ४५.		अमीषि २०. १२६, ८.
अमितः १. २७, ३.		अमुक्याः २. १०, ६.
अमितम् १०. ७, ३६; २०. ७७, ५.		अमुक्याः २. १०, ६; १६. ४६, ८.
अमित-वीर्यं १६. ३४, ८.		अमुलि १४. २, ४४.
अमिता ४. २६, १.		अमुच्यत २०. ६२, १०.
अमितानि २०. ६५, ३.		
अमित्रः ४. २२, २; ६. ६७, ५		

(४, ७२०)

अमृत्त्याः—अमृतस्य

अमृत्त्याः १६. ६, १०.

अमृत्त्ये १४. १, ५७.

अमृत्तुः ७. ५३, १.

अमृत्तुत् ३. ११, ८; २०.
३५, १०.अमृत्तुत् १०. ६, ६; ७; ८;
६; १५; १७; २१.अमृतः १. २०, ३; ५. ३,
११; ८, ३; ७. ११५, १;
८. ६, ६; ११. १०, ६;
१४; १४. १, १७; १८; ३;
१८. ३, ३८.अमृत्तु ८. १, १८; ६. ३,
१०; १३. १, ३६.

अमृत्तु-भूयात् ७. ५३, १.

अमृत् २. १२, ४; ३. ३, १;
५. ८, ७; २२, १२; ६.
७५, १; १३५, २; ३; ८.
६, १२; ६. ६ (६), १३;
१०. ५, ४४; १६. ८, २२;
५३; ६२; ७२; ८२; ६२;
१०२; ११२; १२२;
१३२; १४२; १५२;
१६२; १७२; १८२;
१९२; २०२; २१२;
२२२; २३२; २४२;
२५२; २६२; २७२;
२८२; २९२; ३१२;
२०. ७०, १२.अमृत्ता ५. २२, १; ७. ५६,
६; ६६, १; १४. १, २७;

२०. ७४, ५.

अमृत् ५. १, ६; ११, ५.

अमृत्ता १. २७, ४.

अमृत्ताः २०. ७५, २.

अमृत्त्यात् २०. ६१, ६.

अमृत्तात् १२. ५, ३८.

अमृत्तिन् ११. ४, १८; १२.
५, ५७.अमृत्ति ७. ११२, १; १६. ६,
७; ११.अमृत्त्ये ६. १३५; १; २; ३;
६. ६, १०.

अमृत्त्ये ६. १३०, ३.

अमृत्त्याः ६. १३८, ४; ५; ८.
८, १६; १०. ५, ३६; ४४;
१६. ७, ८; ८, २; ५-३१.

अमृत्त्याः ४. १६, ६.

अमृत् १३. ४, २८.

अमृत् २०. १२८, १.

अमृत् इति ३. ७, ४.

अमृत् १. ४, २; १७, १; २७,
१; ६. ६७, १; ६. ४, ६;
११. ६, १८; १०, २०२;
२०. १२६, ७.अमृत् ५. ८, ८; ६. २६, १;
८४, २; ८. ८, ३२; ४;
८; ६; १०; ११; २४;
१०. १, ६; ३१; ११. १,
२०.अमृत् ४. ३०, ७; ६. ६, ३;
१२६, ३; १३६, ३; ७.
११३, १; ८. ८, २; १४;
१५; १७; १८; ११. १०,
१३; १६. ५३; ५.

अमृत्तुत् ३. २, २.

अमृत्तायाम् ५. ३१, ४.

अमृत्तुत् ६. ११३, १.

अमृत् १०. ४, २६.

अमृत-असुः ५. १, १; ७.

अमृतः ८. २, १३; २६; १०.
८, ४४; १२. २, ३३; १३.
१, ४३; १६. ४, २.

अमृत-गर्भः ६. ४६, १.

अमृत-त्वम् ७. १०६, १; ६.
१०, १; १५. १७, १०;
१८. ४, ३७; १६. ६४,
४.

अमृत-त्वस्य १६. ६, ४.

अमृत-त्वे १८. ३, ६२.

अमृतम् १. ४, ४; २. १, ५;
३. ३०, ७; ४. २, २; १५,
१०; २३, ६; २४, ४;
३५, ६; ५. ६, ८; २८;
११; ७. १७, ३; ८. १,
६; ७, २०; ६. १, १; २;
१०. २, १४; ३, २५; ६;
१४; ७, १५; १०, २६;
२६; ११. १, २८; ६,
२३; ७, १३; १२. १, ८;
१५; ३, ४; १३. १, ७;
३४; ४, २५; १८. १, ३२;
३, ४१, ६२; ४, ३६;
१६. ६, ३; २६, १; ४३;
७; ५३, २; २०. १५, ५.अमृतस्य २. १, २; ३. ११,
६; ४. ७, १; ६, ३; ११;
६; ५. ४, ३; ४; २८, ७;
३०, १४; ६. ४४, ३; ६५;
१; ३; १२१, ३; ७. ४७,
२; ८. १, १; २, १; ७;
१२; २२; ६. १, ४; ६;
२२; ११. ५, ७; १२. ३;
४१; १३. २, १५; १;
२०; १४. १, ६१; १८.

१, २५; ३४; १६. ३६,
६; ७; ८.
अमृता १०. ८, २६.
अमृताः ३. ३१, ११; ४. २,
६; १३. १, २४; १८. ३,
५३; १६. ११, ५.
अमृतात् ८. २, १३.
अमृतानि ४. ८, ३; ५. १,
३; ६. १, ३; ८. १, ५.
अमृताम् १८. २, ३३.
अमृताय १४. १, ४२; २०.
११, २.
अमृतासः ७. ७३, ३; १२.
३, २७; १८. १, ३; ३,
३६.
अमृते १०. ८, ४१; ११. ७,
११.
अमृतेन ३. १२, ८; ६; ५.
२८, ८; ७. ११८, १; ६.
३, २३; १०. २, २६; ११.
५, ५; २३; १८. ४, ४;
१६. १६, १०.
अमृतेभ्यः १. ३१, १.
अमृतौ ६. ३, १६.
अमृधाम् २०. ३६, १०.
अमृशत् १३. १, ८.
अमृतयः ५. ६, ६.
अमृचीन् ५. ६, १०.
अमोक् १२. २, १२.
अमोक्त्यैः ३. ६, ५.
अमोचि १३. २, ८.
अमोत २०. १२७, ५.
अमोत २०. १२७, ५.
अमोः ८. ६, १६.
अम्ब २०. १२६, ७३.

अम्बयः १. ४, १.
अम्मः १३. ४, १४; २२; ५०;
५१.
अयः ११. ३, ७; १८. ३, २२;
१६. ५०, ६.
अयः ७. ६७, १.
अयः-जालाः १६. ६६, १.
अयः-संज्ञः ८. ३, २.
अयः-पात्रम् ८. १० (४),
२.
अयः-मखाः ११. १०, ३.
अयक्ष्म-तातिम् ४. २५, ५.
अयक्ष्मम् ५. २६, १३.
अयक्ष्मम्-कर्णः १६. २, ५,
अयक्ष्माः ३. १२, ६; ६. ३,
२३; १२. १, ६२.
अयक्ष्मान् ६. ५६, ३,
अयच्छत् २०. ३५, ११.
अयच्छत् १. १६, २; २.
१३, २; ५. १७, २; १०.
२, १५; ११. ५, १५;
१६. २४, ४.
अयच्छन् ६. १२८, १; ११.
८, ३२.
अयजन् ७. ११५, २.
अयजन्त ७. ५, ३; ५.
अयजन्त २०. १२८, ५.
अयजन्त ७. ५, १; ५; १६.
६, ११.
अयज्ञियः १२. २, ३७.
अयज्यम् २०. ७५, २.
अयज्यतः ३. २४, २; ११.
२, २३.
अयत् २०. १२६, ११.

अयत् ४. ३, ६. ११८,
२.
अयत्ताम् १. २२, १.
अयति १३. १, ५८; १६.
४६, १०.
अयति ४. ३, ५; ६. ६, २;
२०, १; १०. १, १२;
१६. ४६, १०.
अयन् १८. ३, २२; २०.
६४, ६.
अयनम् ५. ३०, ७; १७. १,
८; १०, २२; १८. ४,
८; १५; १६. ७, २.
अयना १०. १, १६.
अयन्ताम् ११. १०, ८.
अयभ्या २०. १२८, ८.
अयम् १. ७, ४; ८, ३; १०,
१; २; २२, २; २. ४,
३; ६; ६, २; ३; २८,
१. २६, २; ३; २६, ७;
३. २, २; ४, ५; ६; ५,
१; ८, ३; १०, ८; ११,
७; १४, ६; २०, १; ४.
५, ६; १३, ४; ६; २२,
२; ३; ४; २२, ६; ३८,
७; ५. ६, ७; २२, २; २६,
१२; २७, ४; २८, ६; २६,
६; ७; ८; १२; १३; ३०,
११; १७; ६. ५, ३; १६,
३; २०; ३; २१, १; ४३,
१२; २; ४४, १; ६०,
१; ६८, १; ३; ७२, १;
७४, १; ७८, १; ७६, १;
८३, १; ८५, १; ८६, १;
८७, ३; ८८, १; ३०२,
१; १११, १; ११२, १;

१२०, १; १२१, २; १३०,
१; १३४, १; ७. २२, १;
३०, १; ३३, १; ५३, ५;
६; ५६, ४; ६२, १; ७३,
४; ८. १, १; १८२, २,
५; ८; ५, १; २; ४; १६;
८, ८; १७; ६. ४, २१३;
१०, ७; १४३; १०. १,
८; १५; ३, १; ३; ४४;
५; ६; ८; १०; ११; ४,
१५; ६, २; ४; २२-२८;
३१३; ३२; ११. १, २;
१५; २, ११; १०, ५; १२.
२, ८; ४३; ३, १४; १३.
१, १६३; ३, १५; १४.
१, ३३; १५. १०, ७;
१५, ३; ६; १८, ३३; १७.
१, २४; १८. १, ४८४;
३, ४; १४; १५; ५३; ४,
१५; ३७; १६. २७, १०;
३१, १०; १४; ३२, ६;
१०; ३३, १; ३४, ४; ३६,
५; ३६, २; ३; ४; ५४,
५; २०. ५, १; ५; ६; ८,
२; ४५, १; ४८, ४; ५३,
१; ५७, ११; १०४, २;
१२६, ३; ६; १८; १६;
१३६, १०; १३६, ४२;
१४०, १; १४२, ३.

अयसा ५. २८, ५.

अयसि ५. २८, १.

अयसे २०. १५, १.

अयस्मयम् ५. २८, ६.

अयस्मयान् ६. ६३, २; ८४,
१.

अयस्मयीः ४. ३७, ८.

अयस्मये ६. ६३, ३; ८४, ४.

अयस्मयेन ७. ११५, १.

अयस्मयैः १६. ६६, १.

अया ७. ३, १; १६. १२, १;

२०. ३६, ६; ५६३, ३;

१२४, ६.

अयाः २. १२, ७.

अयाचन् १२. ४, २०; २४.

अयात् १२. ५, ६४; १४. १,

६; १०.

अयातम् १०. ८, ८; १४. १,

१४; १५.

अयातुम् ८. ४, १६.

अयाम् १२. ३, १८.

अयामः १६. ६, १४.

अयामि २०. १२, २.

अयाशवः ८. ६, १५.

अयास्यः २०. ६१, १.

अयुक्त १४. २, २४; २०. ४७,

२१; १२३, १.

अयुक्त १३. २, ८.

अयुजन् २०. २३, २.

अयुतः १६. ५१, ११.

अयुतम् १६. ५१, ११.

अयुतम् ८. २, २१; ८, ७;

१०. ८, २४.

अयुवन्त ४. २३, ५.

अयैः ४. ३८, ३.

अयोध्यः ५. २०, १२; १६.

१३, ७.

अयोध्या १०. २, ३१.

अयोध्येन १६. १३, ३.

अरंसत् १. १७, ३; १४. २,

५.

अरुगराटिषु ६. ६६, १.

अरुज्युत् १५. ८, १.

अरणः १. १६, ३; ५. ३०,

२; ७. १०८, १.

अरणम् ५. २२, १२.

अरणाः-इव २०. ११६, १.

अरणाय ६. ४३, १.

अरणिम् १. १८, २.

अरणी ७. १०८, १.

अरणी इति १०. ८, २०.

अरणेभिः ७. ५२, १.

अरण्यम् १२. १, ११; ५६,

अरण्यात् २. ४, ५.

अरण्यान्याः १२. २, ५३.

अरताम् १४. २, १६.

अरत्नीन् १६. ५७, ५,

अरत्नौ २०. ६६, ४.

अरथाः ११. १०, २४.

अरन्धनायः २०. २१, १०.

अरन्धयः २०. १७, २.

अरन्धयत् १०. ४, १०; १६;

१७.

अरुपः १८. १, ५१.

अरुपाः १. २२, २; ४. ११, ४.

अरम् १. ५, ३; २०. ११, २.

अरम्-कृतः २. १२, ७; १८.

२, १.

अरम्-कृतम् १२. १, २२.

अरम्-गमः ३. १३, ५.

अरम्-गमासः १३. २, ११.

अरम्-गुरः २०. ११५, १३.

अरम्-धुषः १०. ४, ४.

अरम्णात् २०. १४, २.

अरकः ६. ४६, १.

अरकषीः १६. १५, २.

अरस ६. १३८, ३.

अरस ४. ६, ६.
 अरसः ४. ६, ६; ५. १६,
 १-१०; २२, २.
 अरस-तमम् ५. १३, ६.
 अरस-तराः ७. ७६, १.
 अरसम् ४. ६, १; ६९; ७,
 २२; ५. ४, ६; ८, ६;
 १३, ८; १०; ११, ६.
 २६, ३; १००, ३; १३८,
 ३; ७. ५६, २; ७; १०.
 ४, ३; ४; ११. १०, १७;
 १६. ३४, ३.
 अरसस्य ४. ६, ६; ७. ५६,
 ५.
 अरसा १०. ४, ८.
 अरसाः ५. १३, ७.
 अरसाः २. ११, ३; ४. १८,
 १; ६. २, १०; १६. ३४,
 ३.
 अरसान् २. २७, १-६; १६.
 ३४, २; १०; ३५, ५.
 अरसासः १०. ४, ६.
 अराः ३. ३०, ६; १०. ८, ३४.
 अराजन् ५. १८, १०.
 अराजिषुः २०. २८, ४; ३६,
 ५.
 अराट्की ४. ३७, ६.
 अरातयः १. २६, २; ५. २३,
 २; ६. १२६, १; २; ३;
 ११. ८, २१; १३. १,
 ५६; १४. २, ११; १६.
 ५०, ३; २०. ७४, ४; ६५,
 ४; १३६, १.
 अरातये ५. ७, १; ३.
 अरातिः २. ७, ४; ६. १२४,
 ३; १२. ३, १७.

अराति-दूषणः १६. ३४, ४.
 अराति-दूषिः २. ४, ६.
 अरातिम् १. १८, १२; २.
 १०, ७; ३. १, १; २, १;
 १५, १; ५. ७, १. ६; ८.
 २, १२; १२. २, ३;
 ४५; १६. ३१, ११.
 अराति-यात् ४. ३६, १.
 अराति-योः १०. ६, १.
 अराति-हम् १६. ३५, २.
 अरातीः १. २, २; १०. ५,
 ३६; १३. १, २०; १६.
 ६, १.
 अराते ५. ७, ८.
 अराते ५. ७, १; २; ७; १४.
 २, १६.
 अरात्या ३. ३१, १.
 अरात्याः १०. ३, ७; १३.
 ४, ४७.
 अरात्यै ५. ७, १०.
 अरातसीः ५. ६, ५; ६; ७.
 अराधसः १२. ५, ६०; ६५;
 २०. ६३, २.
 अराधसम् ५. ११, ७; ८;
 २०. ६३, ५.
 अराम ११. २, २७.
 अरामहि ११. २, ७; २०.
 अराय-क्षरणम् २. १८, १.
 अराय-चार्तनम् २. १८, ३.
 अरायम् २. २५, ३.
 अरायाः १२. १, ५०.
 अरायान् ८. ६, ४; ५; ६;
 १२; ११. ६; १६; १६.
 ६, ७.

अरायैभ्यः ८. २, २०.
 अराय्यः १. २८, ४; २. १४,
 ३; ४. १७, ५; १८, ७;
 ८; ७. २३, १.
 अराल-अगुर्व-भर्तय २०.
 १३४, १.
 अराल्यो २०. १८, ५.
 अरिः ७. ८८, १९; १३. १,
 २६.
 अरिः २०. ६८, ६; ७१, १६.
 अरिच्यत् १६. ६, ६.
 अरिणात् २०. ३४, ३; ६१,
 १२.
 अरिणाणि ५. ४, ५.
 अरिप्राः १०. ५, २३; १६.
 १, १०.
 अरिप्रे इति ५. २, ६; २०.
 १०७, १२.
 अरिष्ट १६. ७, ३.
 अरिष्ट ८. २, २४.
 अरिष्टः ४. ५, ७; ७. ५३, ५;
 ८. ३, ८; १०. ३, १०.
 अरिष्ट-गुः १०. ३, १०.
 अरिष्ट-सातये ३. ५, ५; ५.
 ३०, १२; ६. १६, २;
 ८०, २; ८. २, ६; ५,
 २०; ७, ६; २७; १६.
 ३८, १.
 अरिष्टाति-भिः ४. १३, ५.
 अरिष्ट-नेमिम् ७. ८५, १.
 अरिष्ट-वीराः ३. १२, १.
 अरिष्टाः ५. ३, ५; १०. ५,
 २३.
 अरिष्टानि १६. ६०, २.
 अरिष्टासः ७. ५०, ७; १६.
 ४७, २; २०. ८६, १०.

अरिष्टासूइत्यरिष्ट-असू १४.

२, ७२.

अरिष्यन्तः २. ४, १; १६.

५०, ३; २०. १४३, ८.

अरुः ५. ५, ४.

अरुः-स्त्राणाम् २. ३, ३; ५.

अरुक्षुः १७. १, ८; २५; २६.

अरुक्षत् २०. ६१, १०.

अरुक्षत् ३. ५, ५; ८, ५,

२०; ११. १, ३३; १६;

१२. ३, ४२; १८. ४,

१४.

अरुक्षाम् १४. २, ८.

अरुणः ५. २२, ३; ११. ५,

१२.

अरुणम् १२. १, ५२; १३.

२, ३६; ४, ५१; २०.

८७, १.

अरुणाः १०. २, ११; ११.

१०, ७.

अरुणाय ६. २०, ३;

अरुणीः १८. ३, २१.

अरुणीनाम् १८. ३, ४३.

अरुणैः ११. १०, २.

अरुदत् १४. २, ६०.

अरुधुन १८. २, २७.

अरुन्धति ४. १२, १; ५. ५,

५; ६; ६. ५६, १.

अरुन्धती ६. ५६, २.

अरुन्धतीम् ८. ७, ६.

अरुन्धते १६. ३८, १,

अरुषः २०. १७, ६,

अरुषम् २०. २६, ४; ४७,

१०; ६६, ६; ६१, १३.

अरुषालः ३. १, २.

अरुषीः २०. २२, ५; ६२, २.

अरुहः १६. ६५, १.

अरुहत् १२. २, १२; १३.

१, २६; २, ८; २५; १६.

४६, २.

अरुहुन १८. १, ६१२.

अरुहन्त १६. ४६, २.

अरुहम् ४. १४, ३२,

अरुरुपः ४. ६, ३.

अरुपलः ७. २२, २.

अरौगणम् २. ३, २.

अरौचथाः ३. २०, १.

अरौचथाः १३. ३, २३.

अरौचयः २०. ६२, ६.

अरौचयत् २०. १३, ४;

११८, ४.

अरौदयत् २०. ६१, ६,

अरौहत् १४. १, १२; २,

३०; १५. ३, ६; १८.

३, ४०; १६. ६, २.

अरौत् १०. ४, २६.

अर्क-अश्वमेधौ ११. ७, ७.

अर्कः ४. १५, ५; २४, ५;

६. ७२, १; १३. ३, २३;

२०. १६, ४; २५, ६.

अर्कम् ३. ३, २; ६. १०,

२; १०. ८, ३; १२. २,

५५; १३. १, ३३; १८.

३, ४०; ४, २६, २०.

३५, ५; ८; ६३, ३; ६१,

५; ६३, ७; ११०, १;

११६, २; १२४, ६.

अर्कस्य २०. ७२, ३.

अर्काः २०. १६, १.

अर्किणः २०. ३८, ४; ४७,

४; ७०, ७.

अर्केण ६. १०, २; २०.

१६, ६.

अर्केभिः २०. ३८, ४; ४७,

४; ७०, ७.

अर्कैः १८. ३, ४७; २०.

११, १; १२, ६; १६, ६;

७७, ४; ६०, ३; १४३,

३.

अर्च २०. ५१, ३.

अर्च २. १६, ३; २०, ३; २१,

३; २२, ३, २०. २२,

४; ५१, १; ६२, १.

अर्चत २०. ६२, ४३;

अर्चत् २. २३, ३; ७. ८२,

१; १८. ३, ६३; ४, ५४;

२०. ३०, २; ६२, ५३;

६५, २.

अर्चति २०. ११७, ३.

अर्चति २०. ४०, २; ७०,

४; ७१, १६.

अर्चनानाः १८. ३, १५.

अर्चन्ति १. २, ३; १२. १,

३८.

अर्चन्ति १३. १, ३३; २०.

१२, ६.

अर्चन्तु २०. ६२, ५.

अर्चन्तु २०. ११०, १.

अर्चात् २०. ७७, ३.

अर्चाम् ६. २७, १.

अर्चामि ७. १४, १; १८. १;

३१.

अर्चिः १. २५, २; २. १६,

३; २०, १; २१, ३; २२;

३; २३, ३; १२. १, ५१;
 १८. २, ८.
 अर्चि-मिः ८. ३, २३.
 अर्चिषा ५. २६, १५, ६.
 ३२, ३; ८. ३, २; ११;
 १३; १७; २५; १०. ५,
 ४६; १३. २, २; १६.
 ६५, १२.
 अर्चीषि ११. ५, १३.
 अर्चे २०. ३६, १.
 अर्जुनः १३. १, २६.
 अर्जुन-काण्डस्य २. ८, ३.
 अर्जुनम् २. ३२, २; ५. २३,
 ६; २८, ५; ६.
 अर्जुनाः ४. ३७, ५.
 अर्जुनि २. २४, ७.
 अर्जुन्याः २०. १३०, ३.
 अर्णवत् ५. २, ८; २०.
 १०७, ११.
 अर्णवम् ७. ८१, १; १३.
 १, ३६; २, ११; १४. १,
 २३; १८. १, १.
 अर्णवस्य २०. ६१, १२.
 अर्णवात् १. १०, ४; १३.
 १, २६.
 अर्णवे ३. ६, ३; ११. ८,
 ३; ६; १२. १, ८; ६०;
 १३. १, ४०; २, २.
 अर्णवेन ५. ६, ४.
 अर्णसि २०. ३५, १२; ७७,
 ७.
 अर्तिव्ये १४. १. ५६.
 अर्त्यः ८. १०(४), ३.
 अर्थम् १२. २, २३; १५. १७,
 ८; २०. ७६, ५; ६२, १४.

अर्थाय १. ७, ६.
 अर्तुति १२. ४, ३.
 अर्दय ४. १५, ६.
 अर्दय ६. ६५, १.
 अर्दयन् ६. ४६, २.
 अर्दयाति ४. १५, ११.
 अर्ध-ऋचेन ६. १०, १६.
 अर्धः ८. ६, १.
 अर्ध-क-घातिना ११. २, ७.
 अर्ध-गर्भाः ६. १०, १७.
 अर्ध-भाक् ६. ८६, ३.
 अर्धम् ६. ६, १७; १३. १,
 ४१.
 अर्धम् ५. १, ६; १०. ८, ७;
 १३; ११. ४, २२.
 अर्ध-सासाः १०. ७, ५; ११.
 ७, २०; १५. ६, १७.
 अर्ध-मासानाम् १५. ६, १८;
 १६. ८, २३.
 अर्ध-मासे ८. १०, (३) ५;
 ६.
 अर्धयन्ति ७. ८०, ४.
 अर्धे ४. १, ६; ६. ६, १२.
 अर्धेन ५. १, ६२; १०. ८,
 ७; १३; ११. ६, २२.
 अर्पणेन १२. ३, २२.
 अर्पय ५. २२, ६; ६. ६६,
 १; १०. ३, १५; ६, १.
 अर्पयतम् ८. ४, १.
 अर्पितम् ६. ६, १२.
 अर्पिणम् १२. १, ३५.
 अर्बदस्य २०. ६१, १२.

अर्बुदिः ११. ६, ४; २३.
 अर्बुदे ११. ६, ५; १०, ५.
 अर्बुदे ११. ६, १; २; ३;
 ७-११; १३; १४; १५;
 १८; २०; २२; २४; २५;
 १०, २३,
 अर्भकः २०. ६२, १२.
 अर्भकम् ७. ५६, ६; ११. २,
 २६.
 अर्भकाः १. २७, ३; १६.
 ३६, ३.
 अर्भस्य ७. ५६, ३.
 अर्भे २०. ५६, १; ७०, ११.
 अर्थ २०. १३०, १.
 अर्थः ६. ६३, ४; १८. ३,
 २३; २०. १८, ५; ३४,
 ४; ५; ५६, ६; ६६, १;
 ८५, ४; ८६, १; ६५, ४;
 १२६, १; ३.
 अर्थ-पत्नीः २०. १७, ८.
 अर्थमणम् ३. २०, ७; १४.
 १, १७; २०. १६, २.
 अर्थमन् ६. ६०, २२.
 अर्थमा १. ११, १; १८, २;
 ३. १४, २; २०, ३; ५.
 ५, १; २८, १२; ६. ४,
 २; ६०, १; १०३, १; ६.
 ७, ७; ११. ६, ४; १३.
 ४, ४; १४. १, ५०; २,
 १३; ४०; १६. ६, ६;
 १०, २.
 अर्थम्णाः ३. ५, ५; १४. १,
 ३६; २, ५.
 अर्थम्णा २. ३६, ३; १४. १,
 ३४.

अर्धतः १०. ४, ७; १६. ५०,
 ५, २०. ६८, १.
 अर्धता २०. ७०; १८.
 अर्धताम् ४. ६. २; २७; ३;
 २०. १२७, १.
 अर्धतीः-इव १०. ५, २१.
 अर्धत-भिः २०. ११, २; १.
 अर्धन् ६. ६२, २.
 अर्धन्तः १६. ११, १.
 अर्धा ४. २१, ४; २०. ११७,
 १.
 अर्धाक् ४. २५, ६; ५. ११,
 ६; ८. १, १०; १०. १,
 १६; ११. ५, १०; ११;
 १८. १, ५१; १६. ५, १;
 २०. ६७१, ११; ७६, १;
 ११३, १.
 अर्धाके २०. १४१, ५.
 अर्धाङ् ३. २, ३; ४. १५,
 ११; ३२, ६; ३८, ६; ५.
 २२, ११; २६, १२; ८.
 १, ६. २, २; १०. ८,
 १७; २६; १३. २, ११;
 १, १६; १७. १, १७;
 १८. १, ६०; १, ४८;
 २०. ८, २; १२, ७; ११,
 ४; २३, ८; ६४, २.
 अर्धाचः ६. ६, १६.
 अर्धाची ३. १७, ८; ६. ६७,
 १.
 अर्धाचीनाम् १०. ५, २२;
 २०, १६, २.
 अर्धाचीनाम् ३. १६, ६;
 अर्धाञ्चः ६. ६, १६.
 अर्धाञ्चम् ५. ३, ११; ११,
 १, १२-४६; २०. २३,

६; २८, २; ३६, ३.
 अर्धाञ्चो ५. २६, १२.
 अर्धाणः १८. ३, १६.
 अर्धा-वतः २०. ६, ८; २०,
 ४; ५७, ७.
 अर्धा-वतम् २०. ६, ६.
 अर्धा-वति २०. ११२, १.
 अर्धाहः २०. १२६, ११.
 अर्धाणीः ६. ८, ११; १६;
 २१.
 अर्धत् १०. ४, १.
 अर्धत् ६. २८, १.
 अर्धत्तु ४. ३, २; १६. ४७, ७.
 अर्धन्ति २०. ४८, २.
 अर्धसि १३. ३, १३.
 अर्धसे १८. ४, ६०.
 अर्हति १०, १, २६; १४.
 १, २६; १६. २२, २१;
 २३, ३०; २६, १.
 अर्हते २०. १३, १.
 अर्लजेः ६. ८, २०.
 अर्लपन् ८. २, ३.
 अर्लम् ६. १०६, १.
 अर्लसाला ६. १६, ४.
 अर्लाबुकम् २०. १३२, १; २.
 अर्लाबुनि २०. १३५; १.
 अर्लाबुना ८. १० (६), १.
 अर्लाबु-पात्रम् ८. १० (५)
 १४.
 अर्लिंशः ८. ६, १.
 अर्लिक्लवाः ११. ६, ६.
 अर्लिक्लवेभ्यः ११. २, २.
 अर्लिप्स्त ६. ५२, २.
 अर्लीकाः ५. १३, ५.

अर्लुभ्यतः ३. १०, १२.
 अर्लुखलम् २०. १३६, ६.
 अर्लाण्डन् २. ३१, २; १.
 अर्लपः ११. ३, २४.
 अर्लप-पशुम् १२. ४, २५.
 अर्लपशयन्-इव ४. ३६, ६.
 अर्लिपका २०. १३६, १.
 अर्लिपकासु २०. १३६, १.
 अर्लपे ४. १६, ३.
 अर्ल १. ११, ३; ४२; ५; ६;
 २. ५, ६; ३. ३, ६; ४.
 १, ७; १५, १२; २२, ७;
 ३५, ७; ५. ३, १०; ६,
 ६; ११, ३; १३, ६; १४,
 १; २२; १८, ६; ११;
 १६, ७; २०, ८; २१, १;
 २७, ११; ६. १६, ३२;
 २६, १; ४२, १; २; ६५,
 ११; ७६, ४; १२०, २;
 १३४, १; ७. ७, १; ४२,
 २; ५५, १; ७२, १; ८३,
 ३; ६०, ३; ६४, १; १०७,
 १; ८. १, ४; ४, १७; ६,
 ३; १६; २०; ८, २०; ६.
 २, १०; १४; ४, १६; ५,
 ३; ५; २२; ६ (१), ६;
 ६ (४), २; ४; ६; ८;
 १०; १०. ४, ३; ११. १,
 १७; १०, ८; १२. १,
 ५८; १, ४१; ४६; ४,
 १६; १३. १, ३०; १२;
 २, १५; १४. २, ५२;
 १५. ११, ४; ६; ८ १०;
 १३, २; ४; ६; ८; १०;
 १६. ७, ४; ११; १८. २;
 १०; ५६; ३, ६०; ५;
 १२; १३; १७; ६१; ६६;

१६. ३, ४; ६, ८; ३६, ४; ५; ४४, ७; ४६, २; ६५; १; ७२, १; २०. १५, ६; २६, ४; ६७, १; ७३, ५; ७७, २; ७६, २; ६२, ६; ६३, १; ६५, ३; १२६, १०; १३१, ६; १३३, ४; ५; १३७, ७; ११. अव ३. १६, ३; ७. ५०, ४; १३. १, ४३; २०. ७०, १०; ८१, २; ६२, २१. अव-अतिरः २०. ७५, २२. अव-अमृतत् ७. ६४, २. अव-असृजत् १४. १, १३; २०. ३४, १३. अव-असृजन् ४. ६, ७. अवः २०. ४४, २; १४१, ३. अवः ६. ६, १७; १८२; १३. १, ४१; २०. २५, २; ६१, ४. अवःभिः ७. ६१, १; १६. १०, १; २०. १२५, ६. अवका-अदान् ४. ३७, ८; ६; १०. अवका-उत्तवाः ८. ७, ६. अव-केशः ६. ३०, २. अव-कृत्तिराम् २०. ८५, २. अव-कामन् ४. ११, १०; १३. १, २०. अव-कामी ५. १४, १०. अव-क्षामम् ६. ३७, ३. अव-क्षिपन् २०. १६, ४. अव-क्षती ११. १, ६. अव-चरन्तिका ५. १३, ६. अव-चाकशत् ६. ८०, १;	१३. २, १२; ४, १; २०. १७, ६. अवत् १६. १, २; १३, ११; ७२, १. अवतः ४. २, ३. अव-ततम् २. ७, ३. अव-तुम् ६. ४, ३; १४. १, ३५; ३६; २०. ६१, १२. अव-तस्थि-वांसम् २०. १३७, ८. अव-ताः २०. ८८, ३. अव-ताम् ५. २४, ३; ५; २७, ८; ७. १२, १; १८. ३, ३८. अव-ति ८. ७, २१; २०. ३४, १५. अव-ति १. १६, २; ८. ४, १२. अव-तिष्ठति ६. ४३, २; ७. ७६, ३. अव-तु २. १२, ४; ५. २४, १; २; ४; ७-१४; ७. २०, ५; १६. १३, ७; ४५, ६; ७; ८; ६. अव-तोकाम् ८. ६, ६. अव-त-कम् २. ३, १. अव-त-तरः १८. ३, ५. अव-थ २०. ६१, ११. अव-थः ४. २६, १; २; ३२; ४२; ५२; ६२. अव-वधुः ५. ३१, ८. अव-दन् ७. १, १. अव-दन् ५. १७, १; १२. ४, ४६. अव-दन्त ५. १७, ६; ६. १०६, २.	अव-दहते २०. १३६, ८. अव-द्यम् ७. ८६, ३; १८. ३, ५८. अव-द्य-वदयाः ७. १०३, १. अव-द्यात् २. १०, ६; ५. ६, ८; १२. २, ४७; ४८. अव-द्यानि ५. ११, ७. अव-धायति २. ३, १. अव-धिषम् ७. ७०, ४; ५. अव-धीत् ६. २, ११. अव-धीत् २०. ७, २. अव-धीयमाना १२. ५, ३०. अव-ध्वंसः-इव ५. २२, ३. अव-नद्धम् ६. ३, ८. अव-निः २०. ६८, १०. अव-नीः २०. ३५, १०. अव-न्ति १८. ३, २४; अव-न्तुः १८. ३, १५. अव-न्तु २. १३, ५; ३. १६, ५; २३, ६; ४. १५, ७; ६२; २७, १; ५. २४, ६; १५; १६; १७; ७. ४६, १२; १८. १, ४४; ४७; ३, ४५; १६. ४५, १०. अव-न्वत् ५. ४, ३; ४; ६. ६५, १; २. अव-पत् ६. ६८, ३. अव-पत् ८. ८, ५; १६. ३६, ४. अव-पद्यते ६. १३६, ३. अव-पद्यन्ते ५. १७, ७. अव-पद्यमानाम् ५. १७, ४. अव-पन् १८. ४, ५५. अव-पन् ६. १०६, ३. अव-पश्यन् १. ३३, २.
---	---	--

(४, ७२८)

अव-पानम्—अवास्तुम्.

अव-पानम् २०. १७, २;
५७, १.

अव-अग्रशनम् १६. ३६, ८.

अव-भृथम् ६. ६ (६), ५.

अवमम् ५. १३, २; १०. ७,
८.

अवमा १८. २, ४८.

अवमाः १६. ४७, ५.

अवमान् ६. १०३, २.

अव-मुञ्चन् ८. २, २.

अव-मुञ्चमानः ८. १, ४.

अवयत् १०. २, १३.

अवयन् १४. १, ४५.

अव-याः २. ३५, १.

अव-याता २. २, २.

अव-यानम् ८. १, ६.

अवरः १८. २, ३२.

अवर-परम् ११. ३, २०.

अवरम् १. ८, ३; ५. ११,
५; ७. ३५, ३; ८. ३, ३;
१०. ८, ८.

अवरा ७. ४१, १.

अवरान् १२. २, २६.

अवराय १. १२, ४.

अव-रुन्धे ६. ६ (४), २; ४;
६; ८.

अव-रुढौ ६. १४०, १.

अवरे ५. २, ६; २४, १६; १०.
७, २१; १८. १, ४४;
२०. ३४, ८; १०७, ६.

अवरे १. १७, २.

अवरेण ६. ६, १७; १८; १०,
२५; १३. १, ४१.

अव-रोचते ३. ७, ३.

अवर्चसम् ४. २२, ३.

अवर्जुषीणाम् ८. ५०, २.

अवर्तत ४. २, ७; १६. ६, ८;
५२, १; ५६, ३.

अवर्तयः २०. २६, ३.

अवर्तयत् २०. २७, ५.

अवर्तिः ४. ३४, ३; १०. २,
१०; १२. ५, ३७.

अवर्तिम् ६. २, ३; ४; ४, १७.

अवर्त्या १२. २, ३५.

अवर्धत २०. ३१, ३.

अवर्धत् १५. १, ४.

अवर्धन्त ५. १६, ३.

अवर्धयत् २०. २७, ५.

अवर्माणः ११. १०, २३.

अववृत्तन् ६. २२, १; ६.
१०, २२; १२. २, २२;
४१; १३. ३, ६; २०. ८,
३.

अवशाः ६. ४२, ३; ४३, ३.

अवशात् २०. ६५, १.

अव-शसा ६. ४५, २.

अवशा १२. ४, ४२.

अवशाम् १२. ४, १७.

अवश्लक्ष्णम् २०. १३३, ६.

अव-श्वसम् ४. ३७, ३.

अव-सद्यते २०. १३६, ३.

अव-सर्जनाय ६. ८४, ३.

अवसा ५. २, ६; १८. १,
५१; २०. १०७, ६.

अवसान-दर्शः ७. ४१, १.

अव-सानम् १८. १, ५५; २,
३७; १६. १४, १.अव-सृष्टा १. ३, ६, ३. १६,
८.

अव-सृष्टाः १७. १; २८.

अव-सृष्टाम् १४. २, ५३-५८.

अवसे ३. २०, ४; ५. २५,

२; ६. १०८, २; ७. ६,

२; ४०, १; ८. ७, २३;

२४; २०. ३४, ६; ८०,

२; ६२, १७; १०३, १;

१०५, ५; १३६, १.

अवस्कृवम् २. ३१, ४.

अवस्त १४. १, ५६.

अवस्थस्य ७. ६०, ३.

अवस्थयः २०. १४, १; २४,

६; ६२, १; ७२, २; ७५,

१.

अवस्त्रम् १८. ३, २४.

अवस्वन्तः ३. २६, ६.

अवहत् २०. ७६, २.

अव-हतः ६. १३४, २.

अवहन ११. ८, ४; १४. २,

१.

अव-हाय ७. ५३, ४; १६.

४, ३.

अव-हितम् ४. १३, १.

अवाचीः १०. २, ११.

अवाचीनम् १०. ४, २५.

अवाचीनान् १३. १, ३०.

अवाट् १८. ३, ४२; ४, १.

अवात् ८. १, २१.

अवाताय २०. १३६, ३.

अवात्सीः १५. ११, २; ३.

अवाटिरन् ११. ४, ६.

अवादिषम् ४. ६, २; ५. ७,

४.

अवादिषुः ४. १५, १३.

अवारयन्त १०. ३, २.

अवास्तुम् १२. ५, ४५.

अवि-अनत् ५. २, २.
 अवि-अनत् २०. १०७, ५.
 अवि-अङ्घ्रिः १०. २, १०.
 अवि-एष्यत् १२. ४, ६.
 अविः ३. २६, १; २; ५. १६,
 २; १०. ८, ३१; १२. २,
 ५३.
 अवि-लत ६. ५२, २.
 अवि-चाचलत् ६. ८७, १;
 २.
 अवि-चाचलाः १०. ८, ४.
 अवि-छेदाय ६. ६ (३), ८.
 अवि-जानन् ६. ६, ६.
 अविज्ञात-गदा १२. ४, १६.
 अविता १६. १३, ८; २०.
 ३४, ६; ३७, १०; ५६,
 ५; ६३, २; १२४, ३; ५.
 अवितारम् ७. ८६, १; २०.
 १४, २; ६२, २.
 अवि-त्तेः १६. ६, १०.
 अवि-तिस्र १८. १, ४५.
 अवि-दः २. १०, ७.
 अवि-दत् २०. २१, १.
 अवि-दन् २. ६, ४.
 अवि-दन् २. ६, ४.
 अवि-दन्त १८. २, ४७.
 अवि-दम् ८. १, २०; २०.
 ६६, १०.
 अवि-दम् ८. १, २०; २, ३;
 २०. ६६, १०.
 अवि-दाम ८. ५, ११.
 अवि-दाम १०. १, १६; १८.
 १, १५.
 अवि-दुःतरासः १६. ५६, २.
 अवि-दुषः ४. १८, २.
 अवि-द्याः ११. ८, २३.

अवि-द्वांसः ६. ११५, २.
 अवि-द्विषे १. ३४, ५.
 अवि-द्वेषम् ३. ३०, १.
 अवि-धत् ४. ३२, १.
 अवि-धवाः १२. २, ३१; १८.
 ३, ५७.
 अवि-नक् ११. ३, ४.
 अवि-न्दः २०. ७०, १.
 अवि-न्दः २०. १३७, १०; ११.
 अवि-न्दत् १३. २, ३६; २०.
 ११, ४; १७, ८.
 अवि-न्दत् २. २७, २; ५.
 १४, १; १७, ५; २०.
 १६, ६; ६१, १.
 अवि-न्वत् २०. २५, ४.
 अवि-न्वन् १३. १, ४; ७.
 अवि-म् ३. १७, ३; २६, ३;
 ४; ५; ५. १, ६; ८, ४;
 ६. ७१, १; ७. ५०, ५.
 अवि-मतः ६. ३७, १.
 अवि-मोक्ष्यम् ६. ६३, १.
 अवि-राधयन्ती २. ३६, ४.
 अवि-वेषीः २०. ३७, ५.
 अवि-शत् १०. १०, ७; २५;
 ११. ८, ११; २३; ३०;
 १२. १, ५५; १५. १०,
 ५.
 अवि-शन् ११. ८, १३; १८;
 १६-२२; २४; २५; २७;
 २६.
 अवि-शन्त १०. ८, ३; २०.
 ६४, ६.
 अवि-श्व-विशाम् ६. ६, १०.
 अवि-षत् २०. ५६, १.
 अवि-षम् ८. २, १६.

अवि-ष्टम् २०. १३६, ५.
 अवि-ष्यवः ३. २६, २; ११.
 २, २; २०. २२, २.
 अवि-हुतम् ६. २६, १.
 अवीः २०. १२७, ६.
 अवीनाम् १६. ४७, ६.
 अवीर-घ्नीः ६. ८३, २; १४.
 १, ३६.
 अवीर-हा १. १६, ४; ६.
 १४, ३.
 अवीराम्-इव २०. १२६, ६.
 अवीवरत ३. १३, ३.
 अवीवरन् ६. ८५, १; १०.
 ३, ५.
 अवीवृत्तन् ७. ५७, २. १
 अवीवृत्ताम् १४. १, ३६.
 अवीवृधः १३. ४, ४३.
 अवीवृधत् १. २६, ३.
 अवीवृधन् २०. ६६, ६.
 अवृक् १३. २, ६.
 अवृक् २०. १३६, १.
 अवृकाः १८. १, ४४.
 अवृकेभिः २०. ३७, ७.
 अवृणक् २०. २१, ६.
 अवृणीत् २. ५, ७; ६. ४,
 ५; १४. १, १५; १८. ३,
 ४१.
 अवृणीध्वम् ६. ७, ३.
 अवृणीमहि ७. ६७, १.
 अवृणोत् २०. ११, ३.
 अवृत्तः २०. ६७, १.
 अवृत्तन् ३. ३१, १.
 अवृत्तम् १२. ४, ५०.
 अवृषत् ३. ३, ५.

अथत् १०. १०, २२.
 अथेपन्त १०. १०, २३.
 अथेपयः ५. २२, १०.
 अथेपयः २०. ४२, ३.
 अथेशयत् ११. ६, २३.
 अथैर-हृत्याय ६. २६, ३.
 अथोचित ५. २, ६; १७, ३;
 २०. १०७, १२.
 अथोच्यम् ४. ६, ४; ५२; ५.
 ३०, ८; १६; ६. ८, १०;
 ११; १२; १६; २०.
 अथोच्यम् ५. १, ६.
 अथ्ययम् २०. ५५, ३.
 अथ्यसः १६. ६८, १.
 अथ्योम् ५. ३१, २; १२. २,
 १६; २०.
 अथत्तः ६. २०, १; ७. ११६,
 २.
 अथोत्थः १५. १३, ११.
 अथोत्त १२. ४, १८.
 अथोत्त १. २७, ३.
 अथोत्त ६. ४०, २.
 अथोत्तः २०. ६५, ३.
 अथोत्त-भ्यः २०. १३७, १०.
 अथोत्त-कृतम् ६. ६ (१), १३.
 अथोत्तानुशने इत्यथन-अनुश-
 ने १६. ६, २.
 अथोत्तः ३. २७, ४; ६. ३७,
 २; १४२, १; ७. ५०, १;
 ८. ३, ४.
 अथोत्त-भिः ८. ३, ६.
 अथोत्तम् ८. ४, २०; २५.
 अथोत्त ५. २६, ६; ७.
 अथोत्तया ७. १०६, ४.
 अथोत्तयै १२. ३, ५८.

अथोत्तः ६. ३७, ३; ७. ५६,
 १.
 अथोत्त २. २५, १.
 अथोत्त १६. ८, १६.
 अथोत्त ६. ६६, २; ७५, १.
 अथोत्त ६. ३२, २.
 अथोत्तयः ७. ११४; २.
 अथोत्तानि ६. ४५, १.
 अथोत्तः १. २०, १; ५. ३, ६.
 अथोत्तम् ८. २, २; १७. १,
 ८; १७.
 अथोत्त-हा २०. १०५, १.
 अथोत्तयाः १२. २, १२.
 अथोत्त १. ७, २.
 अथोत्त २०. १७, ६.
 अथोत्त ११. ८. १७.
 अथोत्त-वति ६. ६ (३), ८.
 अथोत्ता १२. ५, ३७; ३८.
 अथोत्ता २०. ७३, ६.
 अथोत्ताः ७. ४३, १; १२. २,
 २७.
 अथोत्तासः २०. ७६, २.
 अथोत्तायत् ६. ३१, ३; २०.
 ४८, ६.
 अथोत्ता १६. ४६, १०.
 अथोत्ता २. ३१, ३.
 अथोत्तयः ११. ३, २१.
 अथोत्तः ५. १५, ८; १६.
 ४७, ३.
 अथोत्त-भिः २. १२, ४.
 अथोत्तहि १६. ११, ६.
 अथोत्तहि १३. १, ६०; १४.
 २, ५; १८. ३, ६७; १६.
 ४७, २२; २०. ७६, १.

अथोत्त १६. ४, ६; १६. ६१,
 १.
 अथोत्तः-इव ६. ६७, २.
 अथोत्तम् १६. ४७, ८;
 ५०, १.
 अथोत्तः ६. ८, २२.
 अथोत्तम् २. ३, ४.
 अथोत्तम् ३. २१, १०.
 अथोत्तम् ३. २१, ६.
 अथोत्तम् १४. २, १६.
 अथोत्तम् १६. ५२, ३.
 अथोत्ताः १६. ६०, १.
 अथोत्तः ६. ६, १.
 अथोत्तन्ति ६. ६ (२), ८; ६;
 ११. १०, १४.
 अथोत्तन्तु १२. ३, ३२.
 अथोत्तवत् १६. ५५, ६.
 अथोत्तवत् १२. ३, ३४.
 अथोत्तवामहै ६. १०६, २.
 अथोत्ता २०. १६, ८.
 अथोत्ताति ६. ६ (३), १-६.
 अथोत्ताति ६. (६)३, १-६;
 १४. १, ३; ५.
 अथोत्तामि ६. १३५, १; ७.
 १०१, १.
 अथोत्तासि ८. २, १६.
 अथोत्तायात् ४. ११, ३.
 अथोत्तायात् ६. ६ (२), ७;
 ६ (३), ७; ८; १२. ४,
 ४३; ४४; ४६.
 अथोत्तः १४. २, ६.
 अथोत्तम् १४. १, २२.
 अथोत्ताम् ८. २, ८; १४.
 २, ६४.
 अथोत्त १६. ३८, १.

अशनुते—अश्वाः.

(४, ७३१)

अशनुते ४. ६, ५; २१, ४, ६. ५, २६; १०. १०, ३३; १६. ३८, १.	अश्ववन् ७. ६६, १.	३; ६. ११, १; ६५; १; ८. ७, २०; १६. ३६, ६.
अशनुवन्ति २०. ७३ २.	अश्ववम् २०. १२६, ११.	अश्ववत्थः २०. १३१, १४.
अशनुवे ६. १०, १५.	अश्वान्तस्य १६. २५, १.	अश्ववत्थस्य ३. ६, ८.
अशनुहि २०. २२, १.	अश्वीरम् ४. २१, ६.	अश्ववत्थाः ४. ३७, ४.
अशमनः ६. ४२, २; २०. १६, ४.	अश्व-मुखी ११. ६, ७.	अश्ववत्थात् ५. ५, ५.
अशमना ५. २३, १३; ६. १३८, ५; ७. ६५, २; १३. १, ३२.	अश्वणि ५. १६, १३.	अश्व-पर्णाः ६. १२६, ३.
अशमने १. १३, १.	अश्वेष्मार्णः ३. ६, २.	अश्वम् १. १६, ४; ४. ६, ७; ५. २६, १; ६. ७१, १; ८. ७, ११; १०. १, १७; २६; २०. १६, ११; २७, ३; ५५, ३; ६८, २.
अशमनोः २०. ३४, ३.	अश्वैत् १३. २, ६.	अश्वम्-इव ४. ३६, १०; ५. १४, ६.
अशमन-मयानि २०. ६१, ३.	अश्वलीला १४. १; २७.	अश्व-यन्तः २०. ६६, ५; १२१, २; १२५, ३.
अशमन-वती १२. २, २६; २७.	अश्वलोणः १. ३१, ३.	अश्व-युजौ १६. ७, ५.
अशम-वर्म ५. १०, १-७.	अश्वलोणाः ६. १२०, ३.	अश्व-वत् १८. ३, ६१; २०. ७, ३.
अशम-सु ३. २१, १; १२. १, १६.	अश्व-अभिधान्या ४. ३६, १०; ५. १४, ६.	अश्व-वति २०. २५, १.
अशमहन्म-भिः ८. ४, ५.	अश्व २०. १२८, १५.	अश्व-वती ३. १२, २.
अशमा १. २६, १; २. १३, ४, ४. १२, ७; १०. ५, २०; १२, १, २६; १८. ४, ५४.	अश्वः २. ३०, ५; ५. ५, ८; ८. २, २५; ६. ६, २; १०. १०, १६, ११. ५, १८; १३. ३, १८; १६. ५३, १; २०. १०२, २.	अश्व-वतीः ३. १६, ७.
अशमानिः ४. १८, ३; ११. ७, २१.	अश्वः-इव १०. १, १६; १२. १, ५७; २, ५०; १६. ५७, ४२.	अश्ववतीम् १८. २, ३१.
अशमानम् १. २, २; २. १३, ४; ७. ३५, ३; ८. ४, १६; १३. ४, ४१; १४. १, ४७; २०. ७७, ६.	अश्व-क्षिभा १६. ४६, १.	अश्व-वत्या २०. २१, ५.
अशयमाना १२. ५, ३७.	अश्व-जित् ५. ३, ११; ७. ५०, ८.	अश्व-वन्तम् २०. २५, ४.
अश्व ११. ८; २२.	अश्व-तृत् ४. ४, ८.	अश्व-वान् ६. ६८, ३.
अश्वः १२. २, ५१.	अश्वतृत्स्य ४. ४, ८.	अश्वस्य ४. ४, ८; १५, ११; ५. ५, ६; ६. ३८, ४; ७२, ३; ६. १०, १३; १४; १०. ४, २; १६. ४६, ४; २०. २१, २; ४१, २; ११८, २; १३७, ३.
अश्वमत् ६. ६०, २.	अश्वतृत् ३. ६, ५.	अश्व-वत् ११. २) २२.
अश्वयन् ११. १०, १०.	अश्वतृत्-पलाशम् २०. १३५, ३.	अशवाः २०. १२७, १२.
	अश्वतृत् ३. ६; २; ३; ४; ६; ८, ८, ३.	अशवाः २०. १२६, १.
	अश्वतृत् ३. ६; १; ५. ४,	

अश्व-इव न. ४, ६,
 अश्वः १. ४, ४; २. २६, ३;
 ३. १६, ६; ६. ६, ३;
 ११. २, ६; ३, ५; १३.
 १, २४; २, ६; ७; १८.
 ४, १०; १६. २, ४; ६,
 १२; २०. १३, ४; ६४, ७.
 अश्वः-इव १६. ३८, २.
 अश्वान् ६. ७७, १.
 अश्वानाम् ४. ६, २; न. ४,
 १०; १२. १, ५; १६. ४७,
 ७.
 अश्वीय-इव ३. १५, न; १६.
 ५५; १; ६.
 अश्वसः २०. ३४, ७.
 अश्विना ५. २६, १२; ६.
 ५०, १; ६६, २; ६. १,
 १६; १४. १, ३६.
 अश्विनी ३. ३, ४; ४, ४;
 १६, १; २२, ४; ४. ३०,
 १; ५. ३, ६; २५, ३; ६.
 ३, ३; ८२, २; १०३, १;
 १४१, २; ७. ५३, १; ६.
 ७, १६; ११. ६, ४; न,
 ५; १४. १, न; ६; २०;
 ३५; ५४; २, १३; १६.
 १०, ४; २०, १; ४०, ४;
 ४२, ४; २०. २१, ४;
 १२५, ५; १४२, २; ४.
 अश्विना २. ३०, २; ६. ४;
 ३; १०२, १; १४१, ३;
 ७. ५२, १; ७३, १; २;
 ४; ५; ६. १, ११; १६;
 १७; १४. १, १४; ५५;
 २, ५; २०. १२५, ४;
 १३६, १; २; ३; ४; ५;
 १४०, ३; ४; ५; १४१,

२; ४; १४२, ६; १४३,
 १; २; ३; ६; ६.
 अश्विनी ७. ४६, २.
 अश्विनोः २. २६, ६; ७.
 ७३, ३; ६. १, ११; ४,
 न; ११. ३, ४६; १६.
 ५१, २; २०. १४०, २;
 १४१, ३; १४२, १; ३.
 अश्विनौ १०. ६, १२; १२.
 १, १०; १८. २, ३३;
 १६. १६, २; २७, १५;
 २०. १४१, ३.
 अश्विभ्याम् ७. ७३, न;
 ६. १०, ५.
 अश्वेभिः ६. १०८, १.
 अश्वेभ्यः ३. २८, ३; ६. ३,
 १३; १२. २, १६; १६.
 ४७, ६.
 अश्वेषु ४. २२, २; ६. १,
 १८; १२. १, १६; २५;
 २, १५; २०. ७४, १-७.
 अश्वैः ३. १६, ३; ७. ८१;
 ४; ५; १८. १, २४; २०.
 १६, १२.
 अश्व्यम् २०. १४, ४; ६२,
 ४.
 अश्व्येन न. ३, १५.
 अषाढाः १६. ७. ४.
 अषाढम् २०. ६२, १६,
 अष्ट ५. १५, न; न. ६, २१२;
 २३; ११. न, २६.
 अष्ट २०. ६२, २०,
 अष्ट-अ चेभ्यः १६. ३३, ५.
 अष्टका १५. १६, २.
 अष्ट-कृत्वाः ११. २, ६.
 अष्ट-धा १३. ३, १६.

अष्ट-पुत्रा न. ६, २१.
 अष्टमः १३. ४, १८.
 अष्टमीम् न. ६, २१.
 अष्टये ६. ५४, १.
 अष्ट-योनिः न. ६, २१.
 अष्ट-वृषः ५. १६, न.
 अष्टा-चक्रम् ११. ४, २२.
 अष्टा-चक्रा १०. २, ३१.
 अष्टादश-अ चेभ्यः १६. २३,
 १५.
 अष्टा-पक्षाम् ६. ३, २१.
 अष्टा-पदी ५. १६, ७; ६.
 १०. २१; १०. १, २४;
 १३. १, ४२.
 अष्टा-पदीम् २०. ४२, १.
 अष्टा-योगैः ६. ६१, १.
 अष्टा-विंशति १६. न, २.
 अष्टौ २. १२, ७; १६. ४७,
 ३.
 अष्टौम् ३. १७, ६,
 अष्टीवत्-भ्याम् २. ३३, ५;
 ११. ३, ४५२; २०. ६६,
 २१.
 अष्टीवन्तौ ६. ४, १२; ७,
 १०; १०. २, २; ६, २१;
 ११. न, १४.
 अस-सूक्त-गिलेभ्यः ११. २,
 ३०.
 असः १. १६, ४; ३४, २; ५१;
 २. ३०, ११; ३. १७, न;
 २५, ५; ४. १, ७; न, ६;
 ६. न, १२; २२; ३३; ६;
 २; ७. ३७, १; ३८, ४;
 ११३, १; न. २, ११;
 १४. १, २०; ५०; २.

७५; १६. ४६, ७; २०. ६४, ४.	असन् ८. ४, ८; ११. १, १३; ७, ३; १२. २, २६; २७; २०. ७६, ४.	असत्-स्थितम् ६. ५०. २.
असः ३. १२, ५; ६. १३१, ३; १८. २, ३०.	असन्तत् २०. ६१, १०.	असयः १०. १, २०.
असत् १. २२, २; २. २८, ५; ३. २०, ६; २३, ५; ४. १३, ४; १६, ६; ६.	असन्तम् १६. ३२, ७.	असरन् २. १४, ६; ३. ३१, ३.
७५, ३; ७. ४२, २; ६०, ३; ८. ४, १२, १३; ५, २१; ७, २२; १०. ७, १०; २५; १६. ६, ११; १८. २, ३०; १६. ३१, २; २०. ७१, ११; ७६, २.	असन्नोत् २०. ११, १०. असन्तापे इत्यसम्-तापे ४. २६, ३; ८. २, १४.	असर्व-वीरः ६. २, १४.
असत् १. २६, १; २. १, २; ३. १७, २; ६. ५, २; ७, ५६, ८; ६. ६, १५; १०. ४, १८; १४. २, १५; २१; १८. १, १२; १६. ४६, ७; २०. १५, २.	असपन्नः १. १६, ४.	असर्वः ८. २, २६; १८. ३, ६२.
असत् १८. ४, ५५.	असपन्नः १. २६, ५; १०. ६, ३०; १६. ४६, ७.	असवे १६. ४४, ४.
असतः ४. १, १; ५. ६, १; ८. ४, ८; १०. ७, २५.	असपन्नम् ८. ५, १७. ६. २, ७; ८; १२. १, ४१; १६. १६, १; २७, १४.	असश्चतः ५. ६, ३.
असति ६. ६४, ३; १११, १; ३; ७. ३६, १; १४. १, १८; १७. १, १६.	असपन्नाः १६. १४, १.	अससि १. २६, ३; २. ३, १; ६. १११, २; ४; ७. ११३, २.
असतीभ्यः ७. ७६, १.	असपर्यैत् १४. २, २०.	असहन्त ११. १, २.
असत्-तराः ७. ७६, १.	असवन्धुः ६. १५, २; ५४, ३.	असहन्त ३. १०, १२.
असत्-मन्त्रात् ४. ६, ६.	असमः १२. ३, ३८.	असहिष्ट २०. ८७, ५.
असत्त्वम् १६. ४८, ३.	असमातिम् ६. ७६, १.	असात् ६. १२८, १.
असत्-शास्त्रम् १०. ७, २१.	असम्-ऋद्धयः १४. २. ४६.	असाथ ३. ८, ४; १४. १, ३२.
असद् १८. ४, ५२.	असम्-ऋद्धये ५. ७, १.	असाढ्यन् ११. ८, २८; २६.
असदत् ६. ३१, १; २०. ४८, ४.	असम्-ऋद्धाः १. २७, २; ३.	असादाः ११. १०, २४.
असदन् ७. ६५, १.	असम्-ऋद्धे ५. ७, ७.	असानि १. २६, ५; ३. ५, ५; ८, २; ६. ६७, १; ७. ३८, २; ८. ५, १६.
असदन् ६. ५२, २; २०. १७, ४.	असम्-ख्याताः १२. ३, २८.	असानि १६. ३१, ६.
	असम्-ख्येयम् १०. ८, २४.	असाम १६. ४६, ६; २०. २१, ११.
	असम्-ज्ञा १२. ५, ३४.	असामि २०. ३०, ५.
	असम्-तापम् १६. ३, ६.	असाविषुः १. १८, २.
	असम्-बाधम् १२. १, २.	असि २०. १३५, ४.
	असम्-बाधे १८. २, २०.	असि १. २३, ३; २५, २; ३; ४. ६, १०; ३३, ६; ५. ५, २; ११, ६; १४, ७; १६, १-११; ६. ४६, १; ७. ३८, ५; ४६, १; ३; ६. ३, ६; १०. १, २६; ११. ४, १८; १३. ४,
	असम्-भुज्यम् ५. १८, १२, १६, ११.	
	असम्-यत् १८. १, १४.	
	असम्-यत्तः २०. २५, ३.	

४५; १७. १, २१; १८. १,
३८; १९. ३८, २; २०.
२६, १; ५६, २. ६०,
१; ६४; २; ३; १०१, ३;
१०४, ४; १११, ३; १२०,
१; २०. १३५, ४.

असि १. १३, ३; २०, ४;
२३, १; २५, २; ३; ३४,
१; २. ३, २; ११, १. ३;
२. ४. ५. १७, १-७;
१८, १-५; २७, १; ३.
५, ८, १०, १३; १२, ३;
५; १८, ५; २०, २; ४.
३, ७; ४, ५. ६, ८;
७, ६; ६, १. २; ३. २;
१०, ६. १२, १; १६,
१. २; २; ३. २०, ३; ७;
३१, ४; ५. ४, ७. ६;
५, १. ३; ४; ६; ७; ८;
६, ४; ६; ११-१४; १०,
१-७; ११, २; ६; ११;
१२, १; ३; १३, १०;
११; १६, १-११; २०,
१०; २२, ५; २५, ७; ८;
२६, १; ६. १५, १; १६,
२; ४. २१, २; ४४, ३;
४६, १. २. ४८, १;
२; ३; ८१, १; ८६, ३;
६५, ३; ६८, ३. १००,
३. १०८, १; १२५, १;
१२६, २; १३३, २;
१३६, १; १३८, १; ७.
१२, २; १८, ३; ८१, ३;
४. ८८, १. ८६, ४;
१११, १; ११३, २; ८.
२, २८. ५, ११; ६. २,

१६-२२, २३. २४; ३,
७; ५, १०; १६. १०.
४, २४. ५, २५-३५;
४४; ८, २७; ११. १, ६;
३५; १२. १, ६१; १३.
२, १६; २६. ३०; ४,
४६; ४७; १४. १, ५१;
२, १५; १६. १, ६; २,
६; ४, २; ५, १; २. २;
४. ५. ६. ७. ८;
६. १७. १, ११; १२;
२०. २१. १८. १, १५;
२२; ३, ५; ३६. ३७. ३;
४, ६८; १६. ३१, ११;
१२. १३; ३२, ३; ५;
३४, १. ३५, ३; ३६,
४; ६; ४४, १; ५; ४८,
६; ४६, ८; ५२, २; ५७,
३; ५६, १; २०. ११, २;
१८, ६; २१, २; ३४, १८;
३७, १; ४७, १६; ५८,
३. ४. ६२, ६. ७३,
१; ८७, ६; ६२, ६; ६३,
२; ५; ६; ८५, ४;
१०४, ४; १०५, १. २;
११४, १; ११८, २;
१२०, १.

असिक्लि १. २३, १.
असिक्ली १. २३, ३.
असिक्ली: ८. ७, १.
असिक्ल्या ५. १३, ८.
असिक्ल्याम् १२. २, २०.
असिक्चिन् ४. ८, ६; २०.
७६, ७,
असिक्चत् ६. १३२, १.
असिक्चत् १०. ७, २८.

असिक्चत् ११. १०, १२; १३.
असिक्चताम् ६. १३२, ४; ५.
असिक्चन् ६. १३२, १; २.
असिक्चतः ३. २७, १; ६. ७२,
१.

असिक्च-क्षू: १२. १, २१,
असिक्चम् १. २३; ३. ११.
२; १८.

असिक्चम् १०. ४; ५; १३.
असिक्चस्य १. १४, ४; ६.
१३७, १.

असिक्चस्य ५. १३, ६.
असिक्चता: ५. १३, ५.
असिक्चता: ६. १३७, २; ३.
असिक्चतात् ७. ५६, १.
असिक्चताय ६. ५६; २, १२.
३, ५५.

असिक्च्या: २०. १३०, २.
असिक्चिना ६. ५, ४.
असिक्चम् २०. १२६, १८.
असिक्चौ ४. २८, २.
असिक्चसन् ७. १०७, १.
असिक्चिन् २१. ६, १.
असु: ५. १, ७; ६. ५३, २;
८. १, ३; ६. ६, ४.

असु-तुपा १६. ४६ ७.
असु-तुप: ८. ३, १३; १०.
५, ४६.

असु-तुपौ १८. २, १३.
असुतानाम् २०. ६३, ३.
असुना ६. १०४, १; ८. १,
१.

असु-नीताय १८. २, ५६.
असु-नीति: १८. ३, ५६.

असु-नीतिम् १८. १, ३१;
२, ५.
असु-न्वत २०. ८६, ४.
असु-न्वाम् २०. २६, ५.
असु-म् २. १२, ८; ५. २६,
५; ३०, १; ७. २, १; ८.
१, १५; २, १; १८. १,
२६; ४४; २, १३.
असु-र २०. ३२, १.
असु-रः १. १०, १; ४. १५,
१२; ५. २७, १; ८. ६;
५, १८. १, २३.
असु-र-क्षयणम् ११. १०,
१०; १२; १३.
असु-र-क्षितिम् १०. ६,
२२-२८.
असु-र-क्षतः २०. ३६, ४.
असु-रम् २०. ११५, १०.
असु-र-भायया ३. ६, ४.
असु-रस्य ४. ८, ३; ६. ७२,
१; १८. १, २; १६. ५६,
१; २०. ६१, १.
असु-राः २. ३, ३; ६. १०८,
३; १०६, ३; ८. १०(४),
१; ४; १०. १०, २६;
११. १०, १५; १६.
६६, १.
असु-राणाम् ४. २३, ५; ६.
७, ३; ८६, ३; १००,
३; १०. ३, २; ६, १०;
१६. १३, १.
असु-रान् ४. १६, ४; ६. ७,
२; ८. ५, ३; ६, २४;
१०(४), १; ६. २, १७;
१८. १०. ३, ११; ११.

५, ७; १२. १, ५; २०.
६३, २; १२४, ५.
असु-राय ५. ११, १; १३.
४, ४२.
असु-रेभ्यः २. २७, ३; ४; ६.
६५, ३; १६. ५६. ३;
२०. ५५, २.
असु-र्यः २०. ५८, ४.
असु-र्याय २०. ७७, २.
असु-तिका ६. ८३, ३.
असु-न् ६. १०४, १; १२. २,
५५; १८. २, २७.
असु-र्तम् १०. ३, ६.
असु-स्वः १०. १०, २३.
असु-क् ४. १२, ४; ५; ६.
६, ४.
असु-क्-पावनिम् २. २५, १.
असु-क्-मुखान् ११. ६, १७.
असु-क्षत २०. १२६, १.
असु-क्षत १४. २, ५२; २०.
११६, १.
असु-प्रम् २०. ७१, १०.
असु-जः २०. ६, ४; ४६, ७.
असु-जः २०. १५, ६; ६५, ३.
असु-जत् १६. ५३, ६.
असु-जत १२. २, १७.
असु-जत ८. ५, १४; ११. ३,
५३; १६. ५३, १०; २०.
६१, ८.
असु-जन् २. १०, ८.
असु-जन्त १. १३, ४; ३.
२८, १.
असु-पत् १६. ४४, ७.
असु-ष्ट १८. १, ३६.

असो इति १६. ४४, ४.
असोः ११. ७, १६; १८. २,
२४.
असौ १. २६, १; २; २६ ५;
२. १४, ३; ३. २, ६;
४. २, ३; ४; १६, ३;
५. ८, ३; ७; ६. १३०,
१; २; ३; ४; १३१,
१; २; ७. ७०, १; २;
११. १०, ११; १२. ३,
२०; १३. १, २३; १५.
१०, ७; १५, ४; ५; १८,
२; १६. ८, २; ५-२६;
३१; १८. ४, ६६.
असौ ४. १६, ६; ५. ६, ५;
६; ७; १८. ४, ३३.
अस्कन्वत् १०. १०, १६.
अस्कभायत् ४. १, ३; ७.
२६, १.
अस्कभायत् ४. १, ४; ६.
१०, १.
अस्कधायुः २०. ३६; ३.
अस्तकम् २. २६, ५.
अस्तम्नाः २०. ६३, ६.
अस्तम्नात् ४. ३५, १; १६.
३२, ६. २०. १४, ३,
अस्तम् ४. १५, ६; १०. ८,
१६; १४. १, ४३; २,
१३; २६; १८. ३, ५८;
२०. १२६, २०; २१.
अस्तम्-इताय १७. १, २३.
अस्तम्-पृथते १७. १, ११.
अस्तम्-यते १७. १, २३.
अस्तम्-यन् ६. ६(५), ५.
अस्त्या ५. ११, १२.
अस्तरीः १२. १, ३८.

अस्ता ६. ६३, १; ८. ३, ५;
१६. १३, ४; २०. १५,
७; ६५, ४.

अस्ता-व १६. १४, ३; २०.
८६, १.

अस्ताः १. १६, २.

अस्तानीत् ५. २०, २.

अस्ताम् ६. ५६, ३; १२. २,
४७; ४, ५२.

अस्तारम् २०. ७, १; १२७,
६.

अस्ताधि २०. ११६, १.

अस्ति १. १८, ३; ४. १२,
२; ५. ६, १२; १३; १४;
११, ६; ७. ५, ४; ६७,
२; १०. ७. ३१; ११.
२०; २७; १२. १, ४८;
१४. २, १२; १८. १, ३३;
१६. ५, १; २०. ६५, १;
३; ५२, २; ११७, २;
१२५; ३; १४१, ५.

अस्ति ३. ६, ७; ४. १६, २;
५. ६, ११; ११, ५, ७.
७, १; ५६, ६; ८. ६, २२;
६. २, १२; ६, १; ११.
१, ३३; २, २५; १२. २,
३६; १६. ५३, ४; २०.
२७. ४; ३४, ५; ६७, ३.

अस्तु २०. १२८, १४.

अस्तु २०. १३५, १०२.

अस्तु १६. ७, २.

अस्तु १. १, २; ३; ३, १-५; ६,
२; १०, २; १२, ४; १३,
१; ३; ४; २५, ४; २६,
१; २; ३१, ४; २. २,
१; १०, २; ३५, ४; ३६,

१; ४; ३. १०. २; ६;
१४, ४; १५, १; ४; ४;
१६, ५; १६, १; ५; २१,
१-७; २७, १-६; ३०,
७; ४. २२, २; ३; ३४,
८; ३८, ६; ५. ३, १; ३;
४; ५; ७, १; ३; २०,
७; २८, ६; २६, ६-६;
३०, १२; ६. १२, ३;
१३, १; १५, १; २०, १;
२; २७, १; २; ३; २८,
३; २६, २; ३२, ३; ४०,
१; ५६, २; ५७, ३;
६३, २; ६४, ३; ६६,
१; ६८, ३; ७१, ३; ७३,
२; ३; ८४, ३; ६७, २;
६८, २; ११६, १; ३;
१२८, २; १४१, २; ७.
८, १; ४१, २; ७६, ४;
८०, ३; ८२, ३; ८७, १;
१०१, १; १०६, १; ८.
१, १; १८; २, १; ७;
१६; ४, ३; ८; ११; ६.
४, २०; ५, १२; १०. १,
५; ३, २; ११. १. १५;
२, ८; १५; १८; २२;
४, ७; ८; २३; १०,
४; १२. १, ११; ४२; २;
६; ३, ११; ३२; ३६;
४, ४५; १३. १, १७;
१८; १६; २७; ४, ४८;
५०; ५१-५३; ५५; १४.
१, १६; ५२; ६०; २, ६३;
१५. ११, २; ६; ८;
१०, १६. २, ६; १८. १,
४६; २, ३१; ३६; ३,

६१; ७१; ४, १५; ४८,
१६. ३, ४; ४, २; ७,
३; ८, २; ३; ७; ६;
२; ३; ४; ५; ६; १३;
१४; १०, २; ३; ४;
५; ६; ७; ६; १०;
११, २; ३; ६; १४,
१; १५, ३; ५; ४६, ५;
४६, ५; ५८, १; ६४, ३;
२०. ४, ३; ५, ४; १७,
२; ३६, १; ४५, २;
७०, १६; ७१, १; ८६,
३; ६४, ६; १४३, ८.

अस्तृतः १८. ४६, १; २; ३;
४; ५; ६; ७; २०. ४७,
३; १३७, १४.

अस्तृतः १. २०, ४; ५. ६,
७.

अस्तृतम् १६. ४६, १; २०.
६८, ४.

अस्तृते १६. ४६, ५.

अस्तृ-भिः २०. ७०, २०.

अस्तृषत १८. ४, ६१.

अस्तृत् २०. ६१, ३.

अस्तम् ११. १०, १६.

अस्ता ११. २, ७.

अस्ता ६. ६३, २.

अस्तृणाः ८. ६, १६.

अस्थन्-वन्तम् ६. ६, ४.

अस्थ-भिः २०. ४१, १.

अस्तात् २. ३४, २; ६. ४४,
१; ७७, १.

अस्थायत् ६. ६, १७; १०.
१०, १३; १३. १, ११;
४१; २, ३३; १६. १३,
१०.

अस्थाना २०. १३६, ५.
 अस्थाम् १०. ५, ३६; १२.
 १, ११; १६. ६, १.
 अस्थाम् ३. ३१, ११.
 अस्थि ४. १०, ७; १२, ३; ४;
 ५; १०. ६, १८; ११. ८,
 ११; २६.
 अस्थि-जस्य १. ५३, ४.
 अस्थित ७. २७, १.
 अस्थि-भूयान् ५. १८, १३.
 अस्थि-भ्यः २. ३३, ६; २०.
 ६६, २२.
 अस्थिरः २०. १३०, १६.
 अस्थिरन् ४. २५, ७.
 अस्थि-स्त्वम् ६. १४, १.
 अस्थानि ६. ५, २३; ११. ८,
 १२; १२. ५, ७०.
 अस्थुः १. १७, ३; ६. ४४, १.
 अस्थुः ६. ७७, १; ७. ६६,
 १; २०. १२, ३.
 अस्थनः ४. १२, १.
 अस्थनः ५. ५, ६; १६, ३.
 अस्थना ५. ५, ८.
 अस्पर्शम् ३. ११, २, २०.
 ६६, ७.
 अस्पृक्षत् ६. १२४, २.
 अस्पृशन् ५. १६, १.
 अस्पृशन्त १४. २, १२.
 अस्फुरत् २०. ३४, १३.
 अस्मात् १. २, ३; ६, २; ४;
 १८, ४; १६, १; २; २०,
 २; २६, १; ३. ७, ७; ४.
 १७, ५; ६. २०, १; २६,
 ३; ४५, २; ७३, ३; ८४,
 ३; ६३, २; ६७, २;
 १२१, १; १२४, ३; ७.

२३, १; ४२, १; २;
 ५३, १; ६०, ४; ६; ७७,
 ३; ८३, ३; ४२; ६२, १;
 ११५, २; ८. ७, १४;
 १०. १, १६; ५, २३;
 २४; ११. २, १६; २६;
 १२. १, ४६; ५०; ३,
 ४०; ४३; १३. १, ३१;
 १४. २, ४८; १६. १,
 १०; ११; १८. १, ४०;
 ४; ६६; ७०; १६. ३१,
 ११; ३३, ३; २०. २३,
 ८; ३४, १६; ६७, २;
 १२५, ७.

अस्म-आ २०. ६४, १.
 अस्मात्-सखा ६. १२५, १.
 अस्मद्व्यञ्जः २०. १७, १०.
 अस्मभ्यम् १. १६, १; १८,
 २; २६, २; २. ६, ५; ३.
 ५, ३; ८, १; १२, ५; ४.
 १८, ६; ३१, ७; ५. ३१,
 ११; ६. ६२, ३; ११०,
 १; १२८, ३; ७. १४, ३;
 २४, १; ५०, ४; ७८, २;
 ११५, ३; ८. ४, १४; ६.
 २, ३; ४, ६; २२; ५,
 १२; १२. १, ६३; १४.
 १, ६२; १८. २, १३; ३,
 १४; ४, ६२; १६. ११,
 ६; २०. ७०, १२.

अस्म-युः २०, २३, ७; २४,
 १.

अस्माक १. ७, ६; ३. २४,
 ४; ७. ७७, १.

अस्माकम् २. १२, २; ३;
 २६, ४; ५; ३१, ५; ३.

१०, १३; ४. ३१, ५;
 ५. ३, ११; ६. १५, १;
 ६३, १; १२६, ३; ७.
 ४१, २; ५०, ४; १०. ५,
 २६; १२. ३, ५५-६०;
 १६. ८, ११०; ५१०-
 १०१०; ६, ११; १८, ४,
 ६८; १६. १३, ७; ८;
 ११; ३४, १; ५७, ५;
 २०. ४, १; ३६, १; ६३,
 २; ७०, १६; ८५, ३;
 ६५, २; १११, २; १२४,
 ५.

अस्माकसः ४. ३३, ३.

अस्माकेन २०. १७, १०;
 ६४, १०.

अस्मात् ८. १, ४; ७, ५; ६.
 २, १७; १८; १२. ५,
 १८; १८. २, २८; ४, ४६.

अस्मान् १. १, ४; १६, ३;
 २१, २; २६, १; २. ११,
 ३; १६, १-५; २०,
 १-५; २१, १-५; २२,
 १-५; २३, १-५; ३५,
 ४; ३. १, ३; २, ६; २७,
 १-६; ४. १०, ५; १६,
 ५; ४०, १-८; ५. ६, ८;
 ६; १०; १४, ३; ६. ६,
 १; १५, १; २; १६, ३;
 २७, ३; ४७, १; २; ५१,
 २; ५४, ३; ६६, २; १११,
 ३; ७. ६, २; २७, १;
 ६६, १; ७५, २; ८०, ५;
 ६; १०६, ४; ८, ४,
 २३; ५, ४; ६. २, २५;
 ४, ७; १०. १, ७; २१;

५, १५-३५; १२. १, २५;
२, १२, ३३; १६. १, ५;
७, ५; १८. ३, ४५; ४,
८०; १६. ४, ४; १३, ११;
२०, १; ३; ३५, ४; ४५,
५; ४६, ३; ५०, ४; ६;
५८, २; ६४, २; २०.
१२, २; ३७, ६; ५६, ३;
७१, १२; ८१, २; ६२,
२१.

अस्मार्तिः ६. १२२, १; १२.
३, ४२.

अस्मार्तिः ४. ३२, ४; ५. ६,
८; ६. ८४, २; ७. ५, २;
५२, १; ७६, ६; ८२, १;
१०. ५, ७-१४; ११.
५, २५; १२. २, ४६;
१६. ३, ३; ३१, ३; ४५,
२; ५७, २; ४; ६४, ४;
२०. ६७, २.

अस्मि ३. १६, १; ४; ५.
११, १०; ६. ११७, १;
१२३, ३; १३३, ३; ८.
४, १४; १५; ६. १०, १५.

अस्मि १. ७, ४; ३४, ४; ३.
१८, ५; ४. ३२; ५; ६;
३६, ६; ५. ६, ७; ११,
३; १०; ६. ३६, ३; ५८,
३; १२३, ३; ७. ७६, २;
८. ४, १६; ६, २२; ११.
१, १६; १२. १, ५४;
५८; १४. २, ७१; १६.
३, ६; १८. १, १३; १६.
१२, ५; २०. १२६, ६.

अस्मिन् १. ६, १; ११, १;
१५, २; २०, १; ३०, १;
३५, ३; २. २६; १; ३.

१४, ३; १८, ३; ४. ४,
४; ८; १६, ३; २२, ३;
५. ३, ८; २४, १-
१७; २६, २; ३; ७-
११; २८, ४; ६. ४७, २;
८५, १; ११७, ३; ७.
४३, १; ४७, १; ५८, २;
६७, १; ८. ५, २१; ७,
११; ६. १, ६; ४, २३;
५, २; ७; ११; १६, १७;
१०. ३, ५; १६; २०; २३;
२४; ४, ८; १२. २, १३;
१३. १, ४१; १४. १, २१;
२, ४८; ४६; १५. १२,
७; ११; १८. १, ४२;
५६; ३, २०; ६७; ४,
४६; १६. २७, १०; ४६,
५; २०. ११, ११; १२,
५; १३, १; १७, २; ४५,
३; ७७, २; ७६, १; ६४,
५; ६.

अस्मिन् ५. १६, ३; १०. २,
११; १२; १३; १४;
१७; १६; ३, १७; ८,
२४; ११. ८, १६; १७;
१२; १२. ३, ३; १३. ४,
१३; २१; १६. ४६, ५;
२०. ५, ७; ७०, ५.

अस्मृति ७. १०६, १.

अस्मे-इति ४. २१, १; ५. १,
३; १८. १, ३; ४२; ४,
४६; १६. ४०, ४; २०.
१३, १; ७१, १३; १४;
८६, ६; ७; ६४, ५;
११६; २; १४३, ६; ७.

अस्मै २०. १३६, १.

अस्मै १. ३०, ३; ४; २. २६,
१; २; ५; ३. ८, ४;
१७, ५; २८, ३; ४. २२,
३; ४; ३१, ३; ५. ३, ३;
४, ७; २६, ६; ३०, १२;
६. ४०, २; ५४, २;
८०, २; ७. ७८, २; ६७,
३; ८. २, ६; ८; ५, १०;
७, ६; २३; २४; २७;
१०. ५, ७-१४; १२. २,
४५; १४. १, ३३; २,
२४; ३१; १८. १, ५५;
४, ३४; १६. ३०, २; ३८,
२; ५५, १; २०. १५, ३;
३५, १-६; ८; १२; १५.

अस्मै २. ५, ६; २८, ५; २६,
५; ३. ३, २; ४. ६, ३;
२२, १; ५. १. ६; १४,
४; १७, १७; १६, १५;
६. ७८, १; १२३, २;
१२८, १; ७. १४, ३;
१८, २; ८. २, ५; १०;
१०(२), ६; ६. ५, २४;
२५; २६; १०. २, १५;
५, ५०; ६, ६-११; १३;
१५; ११. २, ८; १८; २२;
१२. ४, १८; १६; ३५;
१८. १, १०; ५५; २, १२;
१६; ३७; ३, ५०; ५१;
१६. ४१, १; ५२, ३;
२०. २१, १०; २७; २;
३१, १; ३४, ५; १४;
३७, २; ७६, ७; ८; ८६,
१; ५; ६; ६५, २; ६६,
३; ४. १३५, १२.

अस्य १. ६, २; ३२, २; २.

५, २; ४. ४, ६; २२, २;
 २८, १-६; ५. १२, ११;
 ५३, २; २७, १०; २६, २;
 ३; ४; ६. २८, ३; ३१,
 २; ३४, ५; ४८, १; २;
 ३; ५२, ३; ५४, १; ६८,
 ३; ७३, १; १०१, २;
 ७. ८६, २; ६५, १; ६.
 १, १५; ६, १; ५; १०,
 १०; १०. ५, ४७; ८, ६;
 ११. ४, २३; २४; १३.
 २, २४; १८, १, ५; ७;
 ४८; ४, ८६; १६. ४६,
 ५; २०. ५, ५; १५, ५;
 १८, ४; ३५, ७; ६; १०;
 ११; १३; १४; ४८, ५;
 ६१, २; ६८, ८; ७२, ३;
 ७५, २; ३; ६६, १; ६६,
 २; १०१, १; १२१, १.

अस्य १. २, १; १२, २; ३;
 २. १, २; ६, ३; ३२, २;
 ५; ३. ७, २; ११, ६; ४.
 १, १; ३; ६; २, १; ११,
 ४^२; ५; ८; १२; १४, ८^२;
 १६, ४; ५; २१, २; २२,
 १; ३; २४, १; ३०, ७;
 ३४, १^२; ५. ६, १; ८,
 ३; ४; १३, ३; १७, १२;
 १४; १५; १६; १८; १८,
 ६^२; २२, ५^२; २३, ६;
 २२; २७, १; ५; ७; २६,
 ५; १०; १२; १५; ३०,
 १३; ६. ३, २; ६, २;
 १४, २; २०, १; ७६, ३;
 १३४, १; १३८, २; ३;
 ७. १४, ४; १५, १; २०,

३; २६, ४; ४५, २; ४७,
 २; ५६, ५; ५७, २^२;
 ७०, १; २^२; ६०, २;
 ६५, १; ३; ८. ४, ११;
 १०(१), ५; ६; ११; १३;
 १०(३), २; ८; १०(६),
 ४; ६. १, २३; ४, ४; ७;
 १६; ५, २३; २४; ६, १;
 ५; १८; १०. २, ५^२; ८;
 १५^२; २६; ३, १६; ४,
 ७; ५, ५०; ७, १^२; २;
 ३; ६; ८, ७; ८; १२;
 १३; १८; २४; ६, ४; ११.
 २, २८; ३, ७^२; ८; २२;
 ४, २२; २५; ८, ३१;
 १२. ३, १८; ४५; ४, ३;
 १३; २७^२; ३८; ५, ४२;
 ४३; ६८; ६६^२; ७०^२;
 ७१; १३. २, १; १४;
 १८; ३२; ३८; ४५; १,
 १४; १५. १, ७; ३, ११;
 ५, ३; १६; १२, ६; ७;
 १०; ११; १३, १४; १५,
 २-६; १६, १-७; १७,
 १-७; १८, २^२; ३२; १८.
 १, ५; ३३; ३६; २, ४;
 ३, ७१; ४, ३४; ४४;
 १६. ६, २; ३^२; ५; ६^२;
 १०; १५; ३२, २; ५३,
 २; २०. ८, ३; ६, ४;
 ११, ६; ७; १३, ३; १७,
 ७; २४, २; २६, ५; ३०,
 ३; ३१, २; ३४, १५; ३५,
 ८; ३६, ३; ४७, ११;
 १५; ४६, ७; ५१, २;
 ४; ५५, २; ५८, २; ५६,

३; ६०, ४; ६; ६७, ६;
 ६६, १०; ७०, १३; ७१,
 ४; ६; ७३, ४; ६; ७६,
 ५; ७७, १; ५; ८१, १;
 ८७, २; ५; ८८, २; ८६,
 ६; ८२, १४; ६६, ५;
 ६७, २; ३; ६६, २;
 १०४, २; १०७, १; २;
 १०६, २; १^२; १२१,
 २; १२६, ४; ५.

अस्य २०. १३६, ११.

अस्यतः १२. ४, १७.

अस्यतम् ३. २५, ६; ८. ४,
२५.

अस्यतात् १०. ४, ६.

अस्यताम् ६. ८६, ३; १०.
१, २३.

अस्यति १३. ४, ४१.

अस्यते ६. ६०, १.

अस्यते ५. १६, ५; १३.
२, ४३.

अस्यथ १. २६, १; ६. ६५,
१.

अस्यन् २०. ८६, १.

अस्यन्तः ६. ६६, २.

अस्यन्तम् ११. २, १७.

अस्यन्ति ५. १८, ६.

अस्यन्ति १२. ३, २६.

अस्यसि १. ११, १; ११.
२, २५.

अस्याः ५. १२, ४; २५,

१०-१३; ६. ६०, २;

७. ८, १; १२, ३; १०१,

१; ८. ६, ६; १५; ६.

१०, १५; १२. ३, ४०;

१४. १, ४८; २, २५;

द्दः ६६; २०. ७२, १;
 ७६, २.
 अस्याः १. १४, १; ५. १०, १;
 १०, १६, ५; ७. २०, ५;
 ८. ६, ५; ६, १०; ६. १,
 २; ३; ६; ७; १०, २३;
 १०. १०, ५; २३; २४;
 ११; १२. ४, ५-६; १५;
 १८; २७; २८; १४.
 १, १०; २६; ५७; २, २;
 १८. ४, १२; २०, १२६,
 ११; ११६, १.
 अस्याम् ३. २६, १-६; ५.
 २४, १-१०६; १६.
 ४७, २; २०. ३७, ७.
 अस्याम् ३. १०, ४; ८. ६,
 ११; १०. १०, ३; १३;
 १२. ५, १३; १४; १४.
 २, १४.
 अस्यामसि ६. ४२, २.
 अस्यामि ५. ८, ५; ६. १७,
 १.
 अस्यै २. ३६, १; ६. ६०, १;
 १; ११. १, ३; ११; १२.
 १, ११; १४. १, ११;
 ५६; २, ६; १३; २१;
 २७; २८; २६; ७३; ७४;
 १५. १३, १३.
 अस्यै २. ३६, ८; ३. २५, ६;
 ४. ५, ६; ६. ७८, ३;
 ८१, ३; ८. ६, ३; १४.
 १, ३६.
 अस्वन्तीम् ७. ६, १.
 अस्वामिः १. ३१, ३.
 अस्वाङ्गम् ४. २८, ४.
 अस्वगता १२. ५, ४०.

अस्वगताम् ६. २, १.
 अस्वगम् १२. ५, ४५.
 अस्वम् ५. १०, १०; ८. १.
 १३.
 अस्वमाः १२. १. ७.
 अस्वमेन १६. ५६, ५.
 अस्वम् ७. १५, ३.
 अस्वरन् ५. ६, ३; २०.
 १०, २; ५४, २; ५६, २;
 ६६; १.
 अस्वापयः २०. ३७, ४.
 अह २०. ११५, १३.
 अह १. ३४, २; ४. १८, ७;
 ७. ३८, ४; १६. २, ४;
 २०. १७, ६; ४०, ३; ४१,
 ३; ६६, १२; ८६, ८;
 १२६, २.
 अहः २. १५, २; ४. १, ५;
 ६. ३१, ३; ८. ५, ६;
 १८; ६. २, १०; १०. २,
 १६; ११. ४, २१; १३.
 २, २२; ४, २६; १५. २,
 ५; १३; १६; २०; २५;
 १७. १, २५; २६; १६.
 २०, ४; ४८, २; ५०, ७;
 २०. ४७, १६; ४८, ६.
 अहः-अहः १६. ७, ११; १६.
 ५५, ६; २०. ६६, ३.
 अहः-जातस्य ३. १४, १; ५.
 २८, १२.
 अहः-दिशि ५. २१, ६.
 अहः-मिः १८. १, ५५.
 अहतः १२. १, ११.
 अहन २. ५, ५; ६; ७; २०.
 ११, ३; १६, ११; ३७,
 ५; ६१, १२; ६५, ३.

अहन् ८. ५, ३; २०. १७,
 ५; ७७, ७.
 अहनि ७. ५२, २.
 अहनी इति १३. ३, ३.
 अहमिः १८. १, १०.
 अहम् १. ६, ४; १०, ३; २६,
 ५; ६; २. १०, २-८;
 २५, २; २७, ५; ३०,
 ५; ३२, ३; ३. ५, २;
 ५; ६, १; ३; ५; ७, ६;
 ८, ३; ६; १५, १; १८,
 ४; ५; १६, २; ३; ५;
 २२, ६; २४, १; २; २६,
 ८; २१, १-११; ४. ४, ७;
 ५, ७; ६, ४; ५; ६, ७;
 १४, ३; १८, ५, २०,
 २; ४; ८; २६, ३; २८,
 ३; ३०, १; २; ३; ५;
 ६; ७; ८; ३२, ५; ३६,
 ७; ६; ५. ३, ४; ७, ५;
 ७; ८, ८; ६; ६, ७; ११,
 ३; १०; १३, ३; ६;
 १३, १०; १०, ८; ६.
 १५, २; ३; २१, १; २३,
 १; १६, ३; ५८, ३; ६१,
 २; ३; ६५, २; ७१,
 १; ७६, २; ८४, १; ६५,
 २; ६७, १; १०१, ३;
 १०५, २; १०८, २; ११७,
 २; ११६, १; १२२, ५;
 १२४, १; १२७, २;
 १३०, ३; १३३, ३; ७.
 १२, ३; १५, १; ३५, ३;
 ३८, २; ४; ४८, १; ५०,
 १; ७४, १; ३; ७६, २;
 ६५, २; १००, १; ११०.

२; ११४, १; ६. २,
 २; ६; ४, १४; ७, ६;
 १८; ८, ८; ६, २२; ६.
 २, २; ३, २; १५; ८,
 १०; ११; १२; १६; २०;
 १०. १, ४; ३२; ३, १०;
 ४, २१; ५, २५-३६; ७,
 ४३; ८, १६; ३८; ६,
 २७; १०, ३; ११. १,
 १६; २७; ३, १०; ३, ३२-
 ४६; ६, ४; १०, ६; १३;
 १२. १, १२; १२; ५४;
 २, ३२; ३३; ३, ४०;
 १३. १, १६; ३८; २,
 ४४; ४५; १४. १, ३८;
 ५१; ५७; २, १६; ७१;
 १६. ३, १; ४, १; ७, ८;
 १७. १, ६; २०; २१; २४;
 २७; २८; २६; १८. १,
 १३; ४५; ३, ५२; १६.
 ६, १४; ३१, ४; ५; ६;
 १३; ३२, ४; ५; ७; ३६,
 ६; ४०, २; ५१, १; ७०,
 १; २०. २७, १; २; ४२,
 १; ८२, १; ११५, १;
 २; १२६, ६; १२; १२;
 १४; १२८, ४; १४१, ३;
 १४२, १.
 अहम्-उत्तरे १२. ४, ५०.
 अहम्-उत्तरेषु ४. २२, १.
 अहयः ६. ६७, २; १०. ४,
 ६.
 अहये ८. ४, ६.
 अहरत् १०. १०, ११.
 अहरत् १०. १०, १०; १२.
 अहरितः १. २२, २.

अहर्यत् २०. ११, ५.
 अहर्यथाः २०. ३०, ५.
 अहल २०. १३१, ६.
 अहा १८. १, ११; २०. ८५, १.
 अहा-इव ५. १, १.
 अहाः २. १०, ७.
 अहाः ६. १०१, २; ३; ७.
 ५३, ३; १३. १, ४.
 अहानि ७. ६६, १; ८२, ४;
 ५; १२. २, २५; १८. १,
 २७; २८; १६. ७, १;
 २०. ११, ४; १०.
 अहानितरसम् २०. १३५, ७.
 अहार्यम् २. २६, ५; ३. ११,
 १; ४; ६. ८७, १; ८. १,
 २०; २, १५; ७, २८;
 १६. ६४, १; २०. ६९,
 ८; ६; १०.
 अहाणीत् १३. १, ५.
 अहासत् २०. ७१, १०.
 अहिंसतीम् ६. १, २२.
 अहिंसन्तः ६. ५०, २; १२.
 ३, ११.
 अहिंसन्तीः ६. ८, ११-१८.
 अहिः ४. ६, ८; ६. ५६, १;
 १०. ४, २६; १६. ११, १.
 अहि-क्याः १०. ४, ७.
 अहित ३. ११, ८.
 अहिम् २. ५, ५; १; ४. १,
 ४; २४, ६; ६. ११६, ५;
 ७. ८८, १; १०. ४, ६;
 १०; १६; १७; १६. ४७,
 ८; ५०, १; २०. ७, २;
 ३०; ४; ३४, १; ११, ६१;
 १२; ६५, १.
 अहित्यकः २०. १२८, ६.

अहि-दस्ये २०. ३५, ८.
 अहि इति १०. ४, ८.
 अहीन् १०. ४, ६.
 अहीनाम् २. ५, ७; ६. १०,
 १; १०. ४, १; ३; ४; २०;
 २१.
 अहुत-अवः १. १०, ४; १८.
 २, २८.
 अहुतम् ६. ७१, २.
 अहुतम् १५. १२, १०.
 अहुताम् १२. ४, ५३.
 अहुतेभ्यः ७. ६७, ७.
 अहुवे २०. ६७, ७.
 अहुमहि २०. ६४, ६.
 अहुणीयमानः ५. १७, २; ६.
 ७४, ३; १८. ४, ६.
 अहुणीयमानाः १. ३५, ४; ६.
 ७४, ३; ८. २, २१.
 अहे ५. ११, ४; १०. ४, २१.
 अहे ६. ५६, १; १०. ४, १८.
 अहेः १०. ४, १६; २६.
 अहोता ६. ६ (१), ४.
 अहोरात्रयोः १५. ६, १८;
 १६. ८, २४.
 अहोरात्राः ४. ३५, ४.
 अहोरात्राभ्याम् ६. १२८,
 १; १३. २, ४३; १४. २,
 ४०; १६. ८, २; ७.
 अहोरात्रे इति १०. ७, ६;
 ८, २१; ११. ५, २०; ६,
 ५; ७; ७, १४; १३. १,
 ६; ३९; ५२; २, ४६;
 १३. २, ५; ३२; १५. ६,
 १७; १८, ४.
 अहोरात्रैः १३. १, ८.

(४, ७४२)

अहो—आ

अहो ३. ११, १.

अहुः ८. ६, ६; १३. ४, २६;

१६. ४, ४; १८. १, ७;

२०. ८६, ५.

अहो ४. १८, १; १५. १८,

५; २०. ७७, ३.

अहो ५. १६, ४; ५. १२,

४; ६. १२८, ७; ७. ८५,

४; ८१, २; १४. १, २४;

१८. ४, ५८; २०. ११,

४.

अहि ६. ११०, १; १६.

५६, २.

अहो ८. २, २०; १६. ४८,

२; ५०, ७.

अहो १६. ८, २५.

अहो ५. १, २.

अहुता ६. ६२, ३.

अहुता ६. १२०, १.

अहवत् ३. ४, ५; ६.

अहवत् १८. २, २३.

अहवयत् १०. १०, १०; २२.

अहवयत् ५. १, ८.

अहवयत् ८. १०(२), ३;

१०(४), १; ५; ६; १३;

१०(५), १; ५; ६; १३.

अहवयेयाम् ४. २, ३.

अहवि ४. १७, २.

अहवे ४. २७, १; ६. ८०, २.

आ

आ १. १, २; २, ३; ७, १;

४; ५; ६; ७; ८, १; २;

६, ३; ४; १०, ४; १४,

१; ३; १५, २; २३, २;

३१, ३; २. २, ३; ५,

१; ४; ७; ६, १; ६,

२; १०, ५; १२, ४; ५;

८; १३, ४; २५, ४;

२६, १; २; ५; २६,

१; २; ४; ७; ३०, ५;

३५, ५; ३६, १; ५; ६;

८; ३. १, ६; ३, १; २;

३; ४; ४, १; ५; ५,

१; ४; ५; ८, १; ४; ६;

६, ३; १०, ७; ८; ११,

२; ३; ४; १२, ३; ७;

१३, १; ५; ६; ७; १४,

४; १५, १; ६; १६, ६;

१७, २; २०, १; १०; २२,

४; २३; २३; ५; २४, १;

७; २५, ५; २६, ७; ३०,

५; ३१, १२; ४. ४, ६;

७; ८, १; २; ३; ६, २;

११, १; ४; १२, २; ३;

५; १४, ३; ४; १५,

६; ११; १४; १७, १;

१६, १; ८; २०, १; ३;

४; ६; २१, १; ३; २२,

२; ६; ७; २३, २; २४,

१; २५, ५; ३०, ५;

३१, ३; ३२, ३; ५; ६;

३३, १; ३४, ५; ३७, ६;

३८, ३; ५; ६; ५. १,

२; ३; ४; २, ४; ६;

७; ८, ५; ४, १; ६;

५, ३; ५; ६; ७, १; ६;

८, १; २; ३; ७; ६;

११, ८; ६; १२, १; ३;

६; ८; १३, ५; १४, ४;

१७, २; १८; १६; २०,

४; २१, १०; २२, ११;

२५, १; २; ३; ५; ७;

८; ६; १०; ११; १२;

१३; २६, ६; १२; २७,

८; ६; २८, २२; १४;

२६, ५; १२; १३; ३०,

७; १३; ३१, १०; ६.

२, १; २, २; ७, १; ११,

१; १६, २; २२, १; २६,

१; २८, २; २९, ३;

३१, १; ३२, १; २; ३;

३५, १; २; ३; ३८, १;

२; ३; ४; ४८, १; २; ३;

५०, ३; ५२, २; ५२, ३;

५३, २; ५५, २; ६०,

१; ६१, १; ६२, २; ६३,

४; ६४, १; ६७, ३; ६८,

१; ७३, १; ७६, २;

७७, ३; ७८, १; ७९,

२; ८१, २; ३; ८२,

२; ८७, १; ८२, १; ३;

८४, २; १०१, १; २;

३; १०२, २; १०४, १;

२; ३; १०८, १; ३; ५;

११०, १; ११७, ३; ११८,

२; १२६, २; १२३, ४;

१२५, १; १२७, १; ३;

७. १, २; ५, २; ६,

३; ८, १; ६, १; ४; १२,

१; ४; १३, १; २; १४,

३; १५, १; २०, ५; २२,

१; २६, २; ८; २६, १;

३६; १; ४०, २; ४१, १;

४६, २; ५३, ३; ६;

५५, १; ५७, १; ५८, २;

५९, १; ६०, १; ७; ६७,

१; ७३, २; ४; ६; ६;

१०; ७४, २; ७५, १; ७६,

१; ४; ६; ७८, २; ३२;
 म१, ५२; ६; म२, ४;
 ५; ६; म४, ३; म५, १;
 म६, १; ६७; ४; ११०;
 ३; ११४; १५; ११५, १;
 ११६; १; म१; ६२; म४;
 ६; १६; २०२; २; १२;
 ३; ७; १४; ३; १; २; ६;
 १६; ४; ६; ५; २०; ७;
 १; ७; १०; १६; म; २;
 १८; ६; ६; १३२; २२;
 १०(२), ४५; १०(३); १;
 ३; ५; ७; १०(४); १२;
 ५२; ६२; १३२; १०(५);
 १२; ५२; ६२; १३२; ६.
 १, १४; २, ७; ११; ३,
 ३; १०; २१; ४, १; ७;
 ६; २२; ५; ११; ३२; ५;
 ६; ३२-३६; ६(२), ३;
 ६(६), १; ६; म; १३;
 १५; २२; १०; म; १०;
 ११२; १२; ३३; २३२;
 १०. २, ५; ७; १७; २८;
 ३३; ३; १; २; ४; ६; १५;
 ३२; २४; ५; ४२; ४६;
 ६; २; २२-२८; ७; ३५;
 म; ३; २१२; ४०; ६; ५;
 १०; ११; १२; ११. १;
 ४; १०; १३; १४२; १५;
 २०; २६; २६; ३२; २;
 २७; ४; ११; ५, ६; ११;
 १३; १६; ६; १८; ७;
 १४; म; ४; १२२; १३;
 १६; १७; १८; २६; ६;
 ३; ११; १०; ३; १०;
 १६; १२. १, २०; २६;
 ४०; ५५; ६१; २, १२

६; १०; ११; १७; २२२;
 २४; २८; ३०२; ३१;
 ४१; ४२; ४३; ४६; ४८;
 ५०; ५२; ३; ७; १३;
 १४; १५; १७; २०२;
 २२; २६; ३१; ३३;
 ४५; ४८; ५५-६०; ४,
 ६; १२; १६; १६; २६;
 ३४; ५१; ५; १५; ५१;
 ५६; ६३; १३. १; २२;
 ३; ४२; ५; १०२; १४;
 १५५; २०; २४; २६;
 ३०; ३३; ४५; ४६; २,
 म; ६; १०; १६; २५२;
 ३३; ३५; ३६; ३; ६;
 २२; ४; ७; १४. १; ४;
 १२; २०; २१; २३; ३६;
 ४७; ६१; ६२; २; ५; म;
 १३; १४; १६; १६; २१;
 २२; २४; ३०; ३१; ३६;
 ३८; ३६; ४०२; ४८; ७०;
 ७१; ७३; १५. १; ६; २,
 ३; म२; ११; १४२; १७;
 १०२; २३; ३८२; ३; ६;
 ७; ३२; ५५; १०; २२;
 म; १०; ११; ७; ६; ११;
 १२; ६; १०; १६. १, १३;
 ४; २; १७. १, म; ११;
 २५; २६; ३०; १८. १;
 ३; ३; म; ११; २१; २३;
 २४; २५; २७; २८; ३७;
 ४२; ४५; ४६; ५१; ५६;
 ५७; ५६२; ६०२; ६६२;
 २; ३; २१; २६; ३४;
 ५७; ६०; ३; २; १४;
 १६; २३; ३०-३५; ३८;
 ४१; ४४; ४५; ४७;

४८; ५७; ५८; ६२२;
 ६४; ६५; ६७; ७१; ७३;
 ४; १२; ६२; १२; १४;
 १६-२४; ३७; ४६; ४८-
 ५३; ६२; ६३; ६४; ६७;
 म८२; म६; १६. २, ५;
 ३; १; २; ४; ३; ७; ४;
 ५५; १३; ५; १४; १; १६;
 १-११; २३; २१; २३;
 ३०; ३१; ७; ६; १०; ३२;
 ३; ३३; ३; ५; ३४, ६;
 ३५; ३; ३७; १; २; ३६;
 १; ४२; ३; ४४; १०; ४५;
 ५२; ४७; १२; ४६; १;
 ६; ४; ५०; ७; ५१; २;
 ५२; २; ३; ४२; ५३; १;
 ४; ५६; १; २; ५८, ५;
 ५६, १२; ३; ३; ६४;
 १; ३; ६५, १२; २०. ३;
 १२; २; ४; १; २; ५, ५;
 ७; ६; २; म; ६; ७; ४;
 म; २२; ३; ११; १२; ५;
 १४; १; १३; १; २२;
 ४२; १४; ४; १५; ३; ५;
 १६; ५२; १७; ४; म;
 १८; २; १६, १; २०;
 २; ४२; २१; ३; २२;
 २; ५; २३; १; ३; २४;
 १; ६; ५५; ४; ५२; २६;
 २; २७; ६; ३०; १; २;
 ३; ३१; ५; ३२, १; २;
 ३; ३४, ५; १८२; ३५;
 ६; १६; ३६; ३; म; १०;
 ११२; ३८; १२; २; ५;
 ६; ४३, १; २; ३; ४४;
 ३; ४७, ५; ६; ७२; म;
 १६; ४८, ४; ४६, २; ५०

श्री-अक्षयन् १२. १, ५७.

आ-ईमसि १०. ४, ६.

श्री-क्रुह्यमानि: ६. ५, ६.

आ-कृन्दः १२. १, ४१.	१०, १०; १२; १३; १६.	आज-मीतहासः २०. १४३,
आ-कर्मणम् ५. ३०, ७; १३.	४, ४; २०. १६, २; ६०,	६.
१, ४४.	१.	आजयः २०. ५६, ३.
आ-कर्म्यं ८. ८, १६.	आङ्गिरसम् ५. १६, २.	आजिमू ६. ६२, २; ७. ८२,
आ-क्षियति १०. ५, ४५.	आङ्गिरसानाम् १६. ८,	१; १३०२, ४; ५; २०.
आ-क्षियन्ति १८. २, ४६.	१५; १६. २२, १.	८७, ४.
आखण्डल २०. ५, ६.	आङ्गिरसि १२. ५; ५२.	आजिषु २०. ५६, १.
आ-खरः २. ३६, ४.	आङ्गिरसीः ८. ५, ६; ७,	आजीन् २. १४, ६.
आ-खरे ६. ४६, ३.	१७; २४; ११. ४, १६.	आ-जुहोति ६. ४, ६; १८.
आखुम् ६. ५०, १.	आङ्गुलम् २०. ३५, २; ३.	आ-जुह्वानः ५. १२, ३.
आगः ४. १३, १; १३. ३,	आचरन् २०. १२७, ८.	आ-जुह्वानस्य २०. ६७, ३.
१-२५; १८. १, ५२.	आचरस्यवः २०. ४८. १.	आजौ २०. १६, २; १३७, ८.
आ-गच्छतः ६. ८२, १.	आ-चरन्तम् २. ३४, ५.	आज्यम् ५. ८, १; ६. ११५,
आ-गच्छेत् १५. १०, १;	आ-चरन्ती ७. ७३, ११; ६.	३; ७. ७०, २; ३; ६. २,
११, १; १२, २; १३, ११.	१०, २०.	८; ४, ७; ५, ३८; ६(१),
आ-गतम् १०. ४, ६.	आ-चरन्तः २०. १३७, ६.	११; १०. ६, ६; ११. ५,
आ-गतस्य ६. ८२, १.	आ-चरिक्तम् ११. ५, ६.	१३; ८, २६; १२. ४, ३४;
आ-गताः १४. २, १०.	आ-चार्यः ११. ५, ३; ८;	१३. १, ५३; १६. ६, १०.
आ-गते ७, ५२, २; ११. ४,	१४-१७.	आज्यस्य १. ७, २.
४; १६. १३, १.	आ-चार्यम् ११. ५, १.	आज्यानि ६. ११४, ३; ८. ६,
आ-गतेन १६. ५३, ७.	आ-चार्याय १६. ६४, ४.	१८.
आ-गत्य २०. २४, ७.	आ-चितम् ४. ७, ५; २०.	आज्याय ११. १, ३१.
आ-गमत् २०. २४, ४.	१२६, १८.	आज्ये ५. २१, २; ११. ६,
आ-गमिष्ठाः १८. १, ४५.	आ-च्युवोमहि २०. १४०,	६.
आ-गमे ६. ८१, २.	४;	आज्येन २. २६, ४; ५. २१,
आ-गरे ४. ३६, ३.	आ-च्छन्-विधानैः १४. १, ५.	३; ६. २, १; १०. ६,
आ-गसः १२. ४, ५०.	आ-जगन्ध १४. २, १६.	२५; १२. ३, २३; १३.
आ-ग्रीधात् २०. २, २; ६७,	आ-जगाम ६. २७, १; ७१, २.	१, ५२; १६. २७, ५.
५.	आ-जगम् ७. ६७, ४.	आजून-अभ्यजूनम् ६. ६(१),
आ-घाटाः ४. ३७, ५.	आ-जगुषः २. २६, २.	११.
आ-घृणिः ७. ६, २.	आजत् २०. १६, ५; ७; २५,	आण्ड-अवः ८. ६, २५.
आ-घोषते २०. २५, ६.	५; २८, २; ३६, ३; ८८,	आण्डा-इव २०. १६, ७.
आ-घ्नानाः ११. ६, १४;	५.	आण्डात् १४. २, ४४.
१२. ५, ४८.	आजित १२. ४, २४.	आण्डिकम् ५. १७, १६.
आङ्गिरसः ६. ४५, ३; ८.		आण्डौ ६. ७, १३.
१०, १५; १०. १, ६; ११.		आण्ड्यौ ६. १३८, २.

आत् २. ३, ३; ३. १३, २;
 ६, २१, १०; ४. ३, ३;
 ४; ६, ८; २०, १; ५.
 १३, २; ३; ६. २२, १;
 ७. ७०, २; ८. ६, २६;
 ९. १०, १५; ३२; १०.
 १०, १०; ११. ५, २४;
 ६, ८; १३. २, ४१; १०.
 ३५, ४; ४०, ३; ६३, ३;
 ६६, १३; ७५, ३; ११४,
 २; १२३, १; १२४, ६;
 १२६, १३; १८; १२८,
 १३; १३२, १.
 आ-ततः १३. १, ६०; १८.
 ४, ५६.
 आ-ततम् ७. ४६, ७; ६०, ३.
 आ-ततम् २०. १३२, ६.
 आ-तनोति १२. १, १५.
 आ-तन्वाणाः ६. ६६, २.
 आ-तपन्तम् ८. ६, १२.
 आ-तपन्ति १२. ३, ५०.
 आ-तस्थतुः ७. ११०, २.
 आ-तस्थि-वांसा २०. ३४, ८.
 आ-तस्थुः ६. ६, ११; १५.
 आ-तिष्ठन्तः ५. १, ४.
 आ-तिष्ठन्तम् ४. ८, ३.
 आ-तिष्ठे २. १, ४.
 आ-तुलोद १८. ३, ५४.
 आ-तुरम् ६. १०१, २.
 आ-तुदः १४. ३, ४७.
 आ-तोविनौ ७. ६५, ३.
 आ-त्म-वाः ४. ३, १; १३. ३,
 १४.
 आ-त्म-वृषिः १६. १, ३.

आत्मन् ६. ६(२), ४; १२.
 ३, ५४; १५. १, ३.
 आत्मनः ५. २६, ५; ६. ८,
 ६; ११. ५, १५; १५.
 १०, २.
 आत्मना ३. २६, ८; ५. २६,
 ६; ७; ८; ६; ८. ३, ८;
 ६. ५, ३१; ३३; ३३;
 ३४; ३५; ३६; १८. २;
 ७; १६. ३३, ५.
 आत्मनि १. १८, ३; ४. १२,
 २; ७. ५३, ३; ५७, १;
 ६. १, ११; १३; १३;
 १६.
 आत्मने ४. १८, ६; १३. १,
 १०; २, ३४.
 आत्मन्-वत् ४. १०, ७; ३४,
 १; १०. २, ३२; ८, २;
 ४३; ११. २, १०; १३.
 १, ५२.
 आत्मन्-वताम् १६. २७, ८.
 आत्मन्-वती १४. २, १४.
 आत्म-पराजितः ५. १८, २.
 आत्म-सदौ ५. ६, ८.
 आत्म-सु ३. १५, ७; ११.
 ५, २२; १६. ४८, ५.
 आत्मा ५. १, ७; ५, ७; ६,
 ७; ६. ५३, २; ७. ६७,
 १; १११, १; ६. ४, १०;
 ६, ४; १३. २, ३४; १६.
 ३, ५; ७, ५; १६. ५१,
 ११६०, २; २०. १०७,
 १४.
 आत्मानम् ४. ६; ५; २०, ५;
 ५. ६, ७; ६. १६, ३; ८.
 ६, १३; ६. ५, ३०; १०.

८, ४४; ११. ८, ३१;
 १२. ३, ३०; ५१; ४,
 ३०; १६. ७, ५; १६.
 १७, १-१०.
 आत्स्यः १६. ३६, ६.
 आथर्वण ६. १, १.
 आथर्वणम् ४. ३, ७.
 आथर्वणाः १०. ६, २०.
 आथर्वणानाम् १६. ८, १७;
 १६. २३, १.
 आथर्वणीः ११. ४, १६.
 आदत् २०. १६, ६; ३४, ४.
 आ-दत्ते १२. ५, ४६.
 आ-ददानः १५. २, ५६; ६०.
 आ-ददानम् १२. ५, ५२.
 आ-ददानस्य १२. ५, ५; ११.
 आ-ददाना ४. ३८, ३,
 आ-दद्वे ७. १३, १; १३. ३, ५;
 आ-दधे १. २८, ३; ४. १७, ३;
 ५. २५, २; ६. १७, १.
 आ-दभुः २०. ८३, २.
 आ-दहनम् १२. ५, ४८.
 आ-दानम् ६. १०४, २; ३.
 आ-दान-सदानाभ्याम् ११.
 ६, ३.
 आ-दानेन ६. १०४, १.
 आ-दाय १२. २, ३५; ५, ५७;
 आदित्य ५. २१, १०; ११.
 १०, ४; १७. १, २५.
 आदित्य ७. ८३, ३; ६. ८,
 २३; १३. २, ३; २८;
 ३६२; १८. ४, ६६; २०.
 ५८, ३.
 आदित्यः २. ३२, १; ४. १६,
 ६; ६. ५२, १; ६. ३, १५.

११. ६, २५; १०, ११;
 १६; १५. ४, १८; १०,
 ७; १५, ४; १८, २; १७.
 १, २४; १६. ६, १०.
 आदित्यम् ३. २०, ४; १०. ८,
 १७; १५. ४, १७; १०,
 ११; १७, ६.
 आदित्य-वन्तम् १६. १८, ४.
 आदित्यस्य १३. २, १.
 आदित्याः ६. ११४, १; २०.
 १३५, ६; ६.
 आदित्याः १. ६, १; ३. २७,
 १; ५. ३, ६; १०, ६.
 ६८, १; ७४, ३; ८. १,
 १६; १०. ७, २३; ६, ८;
 ११. ६, १३; १२. २, ६;
 ३, ४३; १४. १, १; ३;
 १५. २, ३; १८. ३, १२;
 ४, ३; १६. ६, ११; ११,
 ४; १६, २; २७, १५.
 आदित्याः १. ३०, १; ५,
 २८, ४; ६. ११४, २.
 आदित्यान ३. ८, ३; १०.
 ६, १०; ११. ६, ५; १३.
 ३, १७.
 आदित्यानाम् ६. १, ४; ४,
 १३; १५, २, ४; १८. ४,
 ८; १६. १३, १०.
 आदित्याय ४. ३६, ५३; १२.
 ३, ५५.
 आदित्यासः १६. ५६, ४.
 आदित्ये १०. ३, १८.
 आदित्येन ४. ३६, ६.
 आदित्येभिः २. १२, ४; १६.
 १०, ६; २०. १४१, ३.

आदित्येभ्यः १२. ३, ४४,
 १५. २, ३; १६. ३६, ५.
 आदित्यैः ४. ३०, १; ८, ८,
 १२; १०. १०, ६; १८,
 ३, २७; १६. १७, ४;
 २०. ६३, १; ३; १३४;
 ४; ५.
 आदित्यौ ८. ३, १५.
 आ-दिदेशति ६. ६, २.
 आ-दिद्योत ६. २४, २.
 आदिनवम् ७. १०६, ४.
 आ-दीयमाना १२. ५, १५.
 आद्यम् ८. २, १६.
 आद्यैः १६. २३, १.
 आ-धाय ८. ६, १३; १३. १,
 ४७.
 आ-धारः १२. ३, ४८.
 आ-धिः ५. १७, ३.
 आधि-पत्यम् १८. ४, ५४;
 १६, ५६, ३.
 आधी-पर्णाम् ३. २५, २.
 आ-धुषे ६. ३३, २२.
 आ-ध्यैः ६. १३१, १.
 आध्या ६. १३२, १-५.
 आध्रः ३. १६, २.
 आध्वम् ४. १४, २.
 आन ६. १०, ६.
 आनंश ६. ४६, १.
 आनंश २०. ६४, ५.
 आनद १८. ३, ६५; २०. ७६,
 ८; ६१, ७.
 आ-नन्दः ६. ७, २३.
 आ-नन्दाः ११. ७, २६; ८,
 ३४.
 आ-नन्दान १०. २, ६.
 आ-नन्दिनीः ४. १५, १६.
 आ-नन्दिनीम् ४. ३८, ४.

आनवे २०. १२०, १.
 आनशानाः २. १, ५; ६.
 ४७, ३; १६. ५६, ३.
 आनशः २०. ३६, ४; ५०, १.
 आनशुः ६. १०, १; २०. १०,
 २; ५६, २.
 आनशे ६. ११३, १; ३.
 आनशे १३. १, १६; २०.
 ३१, २.
 आ-निनाय २०. १४, ३; ६२,
 ३.
 आनिषुः ३. १३, ४.
 आनिषक् ४. ३२, १; २०.
 २३, २; १४२, २.
 आनृचुः १२. १, ३६.
 आनृचुः २०. ११६, २.
 आ-नृत्यतः ४. ३७, ७.
 आनृधुः २. ३५, १.
 आ-नोनवीति २०. १६, १२.
 आन्तरिक्षाः १६. ६, ७.
 आन्त्रम् १०. ६, १६.
 आन्त्राणि ६. ७, ६६; ८,
 १७; ११. ३, १०.
 आन्त्रेभ्यः २. ३३, ४; १०.
 १०, २१; २०. ६६, २०.
 आन्त्रेषु १. ३, ६.
 आप ८. ६, २०; १२. ३, ५.
 आपः १. ५, १; ३; ६, १; ३;
 ४२; २५, १; ३३, १-४;
 २. ५, ६; ७, १; २३, १;
 २; ३; ४; ५; २६, ५; ३.
 ७, ५; १२, ६; १३, ५;
 २१, १०; २६, ३; ३१,
 ३; ४. २, ६; ८, ८, ४;
 ५; ६; १५, १; ५; ६;
 ११; ५. १७, १; २८, २;

६. २३, २; २४, १; २;
 ५१, २; ५८, २; ६१, १;
 ६८, २; ८५, ३; ६१,
 ३१; १२४, २; ७. १८,
 २; ४०, १; ६४, २; ८३,
 २; १०७, १; ११२, १;
 ८. १, ५; २, १४; ७, ३;
 ६. १, ६३; २, २०; ३,
 २२; २३; ६(१), ५; १६;
 १०. २, ११; १६; ५,
 २२; २३; ६, ३; १४; ७,
 ६; १०; ११; ३७; १०,
 ४; २६; ११. १, १७; २,
 २४; ५, १३, ६, २३; ७,
 २; २०; ८, २६; ३०;
 ६२. १, ३; ६; १६; २३;
 ३०; ५३; २, ४०; ३, ४;
 १३. १, ४५; ३, ६; ४,
 ३७; १४. १, ३६; ४०२;
 २, १६; ४५; १५. २, १६;
 ७, २; ३; १५, ७; १६.
 १, १०; १८, १, १७; ३,
 ११; ४, ३६२; ४०; १६.
 २; १२; २३; ३; ६, १;
 १४; १०, ८; १७, ६;
 २७, ३; ६; ४०, २; ४३,
 ७; ४४, १; ६; ५४, १;
 २०. १२, ४; १५, २; १७,
 ७; २५, १; २; ५२, १;
 ५७, १४; ७१, ३; ६२,
 ८; १०६, २; १४३, ८.
 आपः १. ३३, ४; ३. १३,
 २; ७; ७. ८६, ३; १०.
 ५, ६-२१; १२. ३, १३;
 २७; २६; १६. १, ८;
 १२; ४, ६.

आपः-इव ८. ४, ८; ११. २,
 ८.
 आपत् १. ३०, १; ११. १,
 २२; १४. २, ६६४; १७.
 १, २६; १६. २०, ४.
 आपतन्तम् १२. २, ४७.
 आपध ११. १, ३०.
 आपन् १७. १, २८.
 आपम् १२. ३, ४५.
 आपाके-स्थाः ८. ६. १४.
 आपित्वम् २०. ११४, १.
 आपिथ १३. २, ३०.
 आपीतासः २०. १४२, ४.
 आपीनाम् ६. १, ६.
 आपुः ४. ३५, ४.
 आपुः ६. २, १६; १२. ३,
 २८; १७. १, १२.
 आपूर्णः २०. ८, ३.
 आपूर्णासि १३. १, ६; १८.
 २, ६.
 आपेः ४, ३२; ६.
 आपेयम् ३. २०, ६.
 आतः २०. १२२, २.
 आतम् ५. २, ७; २०. १०७,
 १०.
 आप्त्यानाम् ५. २, ७; २०.
 १०७, १०.
 आप्तये १६. ५६, ४; २०.
 १११, १.
 आपुहि २. ११, १; २; ३;
 ४; ५.
 आपोत् ३. १३, २.
 आपोति ६. ५, २२; ६(६),
 १३२.
 आपोति ४. ६, ५; ११, ६;
 ६. ३, २४; ५, १४; १०.

२, २०; २१; ६, ६; १०;
 १३. २, १५.
 आपोत् ४. ३८, ३.
 आप्यम् २०. ८२, २.
 आप्यायमानाः १८. ३, १७.
 आप्याययन्ति ७. ८१, ६.
 आप्रयच्छ ७. २६, ८.
 आप्रियः ११. ७, १६.
 आप्रुषायन् २०. १६, ४.
 आवर्ध ५. २८, ११.
 आववर्ध ६. ६३, १; १३३,
 १.
 आवभूय ४. ३१, ५.
 आवभूव ५. १, १.
 आवभूवुः १०. ४, २३.
 आवयो इति ६. १६, १.
 आवयो इति ६. १६, १.
 आवेधुः ६. ३, ६.
 आवेधे ५. २८, ११.
 आवगः २०. ६४, ६.
 आवगम् ४. २३, ३.
 आवरन्तीम् ८. ६, १४.
 आववन् ३. २६, २.
 आवति १३. २, २.
 आविः २०. ३६, १.
 आविः २. २, ३; २०. ३६,
 ११.
 आववम् २०. ६७, १.
 आवकम् ६. २६, ३.
 आवतः ११. ४, २०.
 आवत्या ४. ३१, ६.
 आवृषति ७. ११, १.
 आवृषन्तः २०. ६६, ५.
 आवृतः २. ४, ५; ४. १०

४: ६. ४. १०; २०. ६७, ६.	आमुष्यायण १०. ५, ३६.	आयवः २०. १०, २; ५६, २; ७२, १२; ६६, १; २.
आ-भूतम् ६. १२५, २; ७.	आमुष्यायणे १६. ७, ८.	आ-यवन्तम् ६. ६(१), १७; ११. ३, १६; १२. ३, ३६.
४५, १; १०. १, १६;	आमूर्च्छित २०. ३४, १२.	आयवे २०. ६१, २.
११. ५, १४; २२; १३.	आमे ४. १७, ४२; ५. २६, ६; ३१, १२.	आयसः २०. ३०, ३; ४; ३१, ३.
१, ५५; ४, २-७; ६.	आय १६. ८, ३.	आयसीः १६. ५८, ४.
आभूताः १. ६, ४; ८. ५, ६;	आ-यच्छन्तः ६. ६६, २.	आयामि २०. १२८, १०; ११.
७, ८; २५; १६. २, २.	आ-यत् १२. ३, ४६.	आयुः १. ३०, ३; ३५, २; २. १३, २; ४; १७, ४२; २६, २; ४. ३६, २; ४; ६; ८; ५. ६, ८; ६. ४१, ३; ७८. ३; ७. ३२, १; ३३, १; ५३, ३; ६; ८०, २; ८२, २; १०३, १; ८. १, ३; २०; २, १; २; ७; ११; १७; ४, १५; ६. ४, २२; १०. २, १५; ५, ३६; ११. १, ३४; ४, ६; १२. १, २२; ६२; २, २४२; ३०; ४५; ४, २८; ५, ६; १३. २, ३७; १४. १, २२; २४; ४७; २, ३६; ३६; ३४; ७५; १६. ८, ४-२६; ३३; १८. २, ३; १०; २३; २६; ४६; ५५; ३, १७; ४, ४८; ५३; ६२; ११. २४, ४; ३२, ३; ५५, ६; ५६, ५; ६१, १; ६३, १; ६४, ४; ६६, १; ३; ३; ४; ७०, १; ७१, १; २०. १२, २; २१, ११; ४८, ३; ६६, १०.
आभूताभ्यः ८. ७, १५.	आ-यतः ६. ८२, १; ७. ३८, १; ६०, २; ३.	आयुः-कृत् ५. ६, ८.
आभूति इत्या-भूते १०. २, १.	आ-यतनम् १५. १२; ७; ११.	
आभ्यः ३. ३, ३.	आ-यता ६. ६५, १.	
आभ्यः ६. ५१, २; १४१, १; १०. ६, १४; १७.	आ-यताम् ११. २, १.	
आम-अदः ८. ३, ७; ११. १०, ८.	आ-यतायाम् ६. ३८, ४.	
आमणकः २०. १३०, ६.	आ-यतीः ६. १०६, २; १६. ५८, ३.	
आमनसम् २. ३६, ६.	आ-यतीम् १३. २, ४६.	
आमन्त्रणम् ८. १०(१), १३.	आ-यते ११. २, १५; ४, ७.	
आमन्त्रणीयः ८. १०(१), १३.	आयत्ताः ११. ७, ३.	
आमन्त्रणे ८. १०, १२.	आयत्त-वसुः १३. ४, ५४.	
आम-पात्रम् ८. १०(५), १०.	आयन् ३. २२, ३; ५. २८, ८; १८. १, ३१; २०. ६३, २; १२४; ५.	
आमम् ८. ६, २३.	आयन् ४. १४, १; ८. ६, १८; १०. ८, ३; ११. ५, २.	
आममत् ६. ५७, ३. १०. ५, २३.	आयन् २०. १३५, ६, आयन् २०. १३५, ६.	
आमयत् २०. १२६, २३.	आ-यन् ७. ८१, २; १४. १, २४.	
आमयत् ६. ८, १०.	आयने ६. १०६, १.	
आमिक्षा ६. ४, ४.	आ-यन्ताम् ७. १३, २.	
आमिक्षाम् १०. ६, १३-२४.	आ-यन्ति ६. ६६, १; १०३, ३; १२. ४, ११.	
आमित्रः ४. २१, ३,	आयन्ति २०. १३०, १५.	
आमित्रो ५. २०, ५; ११. १०, २५.	आयम् २. १, ४; ५.	
आ-मुरिम् २०. ५४, १.		
आमुष्यायण ४. १६, ६.		
आमुष्यायणम् १०. ५, ४४; १६. ८, २; ५-२६; ३१.		

आयुःकृताम् ३. ३१. म; १६.

२७, म;

आयुःवदम् ६. ५२; १.

आयुःदाः २. १३; १.

आयुःप्रतरणः ४. १०; ४.

आयुजः ११. म; २५.

आयुधम् ६. १३३; २; १०.

१०; १८; ११. ६; १;

२०. १३८; ३.

आयुधा ३. १६; ५; ४. ३१;

१; ५. २; ५; २०. १०७;

म.

आयुधानि ५. १०; म; म. म;

२०; २०. ३५; १३.

आयुम् २०. २१; १०.

आयुयुक्ते २०. ६४, ७.

आयुषः १०. ३; १३; १६. ४४;

१; ५८; १.

आयुषा ३. ५; ३; ३१; १-६;

१०४; ११५ ७. ८६; २;

६. १; १५; १०. ५; ४७;

१२. २; ३२; ५५; १३.

१; १७; १८; १६; १४.

२; २; १६. २७; म; ३३;

१.

आयुषे १. ३५; १; २. २८; ५;

४. १०; ७; ५. २८; ६;

१३; ६. ६३; १; ७६; २;

४; १८. २; २३; १६.

२४; २; ३; २६; ३; ३२;

१; ४०; ३; ४५; ६; ७;

म; ६; १०; ४६; १.

आयुष्यती इत्यायुःपत्नी ५.

६, म.

आयुष्यत् ६. ६८, ३.

आयुष्यतः म. २, १३.

आयुष्यताम् ३. ३१, म.

आयुष्यती १४. १; ४५.

आयुष्यतोम् ३. १०; ३; म.

आयुष्यन्तः ६. ४७; १; २;

७. ६१; १; २.

आयुष्यान् म. ५; १६; २१;

१०. ३; १०; १२; १७.

१; १; १८. २; ४५; १६.

२६; २; २७; म.

आयुष्यम् २. २६; १; १६.

२६; ४;

आयुषि २. ४; ६; ४. १०;

६; ५. २८; ७; ६. ७८;

३; ७. १४; ४; १२. २;

१३; २५; १४. २; ६७;

१६. ३४; ४; २०. १३७;

३.

आयोः ५. १; ६; १८; ३, २३

आर ४. २७, ६.

आरण्याः ५. २१; ४; ६. ५०;

३; ११. २, २४; ५, २१;

६, म; ६. १, ४६; १६.

६, १४.

आरुण्यैः ३. ३१, ३.

आरुत् १०. ४, १.

आरुत २०. ६८; ५.

आरुन्धः ५. १८, ४.

आरुन्धान् म. ३, ७.

आरुभमाण ४. ३०; म.

आरुभ्य २०. १५, ४.

आरात् १. १६, १; २. ३,

६; ६. ३०, २; ३२, १;

७. ६२, १; म. १, १२;

२, ६; १३; ६. १०, २५;

१०. १, १; २; १६. ३१;

११; ५६; ६; २०. ८६;

६; ७; १२५; ७.

आरुजन्तः ४. ३१; १.

आरुजत्तुभिः २०. ७०; १.

आरुजासि २०. ६४; ६.

आरुज २०. १२४; २.

आरुक्षतः २०. २६; ४.

आरुक्षुः ४. ११, ६.

आरुह १३. १. ६.

आरुहन् २०. ४६, १.

आरुहम् २०. ६४. ६.

आरुह्य म. ५, ७,

आरुसेज ४. २४. ३.

आरुढः ६. ११; १.

आरे १. २६; १२; ६. ४५;

२; १०. ४; २६; २०.

२३, म.

आरेमाणान् म. ३; ७.

आरेभाथे इत्यारेभाथे ४.

२८; ४.

आरेमे १. २८; ३; ४. १७;

३.

आरेल्य २०. ६६, १४.

आरेशत्रुम् ७. म, १.

आरेहणम् ६. ६, ३.

आरोचयन् १३. २; ३२.

आरोहणम् ५. ३०; ७.

आरोहन् ३. ६, ६; १३. १;

४३; २; ४२; १७. १;

१०, १६. ३६, १.

आरोहन्तः ४. १४; ६; ११.

१, ३७.

आरोहन्तम् २०. ४४. १३.

आर्चन् १३. ३, २३.

आजु नैयाय २०. ३७, २.

आतृवाः ५. २८, २; १०. ६, १८; ७, ५; ११. ३, १७; ७, २०; १५. ६, १७; १७, ६.	आर्यैः ४. २०, ४; ५. ११, ३; १६. ४५, ४. आर्यम् ४. २०, ८; ३२, १; २०. ११, ६; १७, ४; १२६, १६.	आ-वर्षनी १२. १, ६१. आ-वृत्तिका १४. २, ६३. आवर्यः ६. १६, २. आवयत् ४. ६, ३; ५. २६, २.
आतृवान् ३. १०, ६; ११. ६. १७.	आर्याः १८. १, २१, आर्याणि २०. ३६, १०. आर्याय १६. ३२, ८. आर्ये १६. ६२, १.	आ-वृत्तम् ८. ६, २६. आवरित्यावः २०. ६१, ४. आ-वर्तनम् ६. ७७, २. अ-वर्तयन्ति २०. ६२, १४.
आतृवानाम् १५. ६, १८; १६. ८, २१.	आशम् ४. ४, ५. आर्षेयाः ११. १, १६; २५; ३२.	आ-वृत्स्यन् १५. ६, १६. आ-वर्तततः ५. १, ८.
आतृवेभ्यः ३. १०, १०; १६. ३७, ४.	आर्षेयाणाम् १६. ८, १३. आर्षेयान् ११. १, २६; ३५. आर्षेयेभ्यः १२. ४, २; १२.	आ-वृत्तस्थान् ६. ६(१), ७. आवहन २०. ४८, ३.
आतृवैः ५. २८, १३.	आर्षेयेषु ११. १, ३३. आल ६. १६, ३.	आ-वहात् ६. १२३, १.
आर्तिः ८. ८, ६; १०. २, १०. आर्तिम् १२. २, ३८.	आ-लमे ७. १०६, ७. आ-लापाः ११. ८, २५.	आ-वातु ४. १३, २.
आर्त्ति-इवेत्यार्त्ति-इव १. १, ३.	आ-लिगी ५. १३, ७. आ-लुम्पेत् १२. ४, ३४.	आविः ४. २०, ५; ६. १२३, २; ७. १०८, १; ८. ३, २४; १०. ८, ६; १२. १, ६०; ४, २६; ३०; २०. ८, १; ११, ३; १६, ६; ३८, २; ३२, १; ३६, ३; ७२, २; ७५, १; ७७, ८.
आर्त्या ३. ३१, २. आर्त्विज्येन ११. ३, १४. आर्द्र-दानुः १६. ३, ४. आर्द्र-पविः १६. ३, ४. आर्द्र-पवित्रः ६. ६(२), १०. आर्द्रम् १. ३२, ३.	आवः ४. १, १; ५. ६, १; २०. ३७, २; ३३; ६८, ८; १४२, १.	आविथ ५. २, ६; २०. ६, ३; ४६, ६; ५७, ३; ६३, ८; ७५, ३२; १०७, ६.
आर्द्र-हस्ता १२. ३, १३. आर्द्रा १६. ७, २. आर्घेत् ४. ३६, १; ३, ५; ७.	आवत् २०. १३७, ७. आवत् २०. ११, ६; ३५, १५; ७७, ७.	आविथ २०. २१, १०. आ-विवासत् ७. २१, १.
आर्षयन् ५. १६, २. आर्षितः ६. ११२, ३; १०. ७, १४.	आवत् २०. ११, ६; ३५, १५; ७७, ७.	आ-विवासताम् ८. ४, २१.
आर्षितम् १०. ८, ६; १०. ३३.	आवर्तः ५. ३०, ११. आवर्तम् २०. १२५, ४.	आ-विवासति २०. ६३, ६.
आर्षिता ११. ५, ६; १८. २, ६.	आवर्तुः २०. १२५, ५. आ-वदानि ६. ६६, २; ६. १, १६.	आ-विविशुः २. ३१, ५; १८. २, ४६; ३, ५६.
आर्षिताः १०. ७, १२; १३. ३, १०.	आवन् २०. १४३, ६.	आ-विवेश १. १२, ३; ३. २१, १; २; ७. ४२, १;
आर्षितानि ८. ६, १६; १८. ४, १७.	आवन् ४. २, ६.	

८७, १; १२. १, २४; २,
 ३३; ५५; १६. १, ८;
 १८. ३, ५५; १६. ३, ३;
 ५६; २.
 आ-विशते ४. ३६; ८.
 आ-विशन् १८. ४, ५८.
 आ-विशे ४. ३६, ७.
 आविषुः २०. १३६, ४.
 आ-विष्टः ३. २१, २; ६.
 ८५, १; १०. ३, ५.
 आ-विष्टिता ५. १८, ३.
 आ-विस्थितानि ५. २८, १.
 आ-वृणानः १६. ४२, ३.
 आ-वृत्तः १०. २, ३१; १३.
 ४, २-७; ६; १७. १, २७.
 आवृत्तः ६. ७७, ३; १०. ७,
 ४.
 आ-वृत्तम् ६. १२५, २; ६.
 ६, १४; १०. ८, ४३;
 ११. ६, ४; १२. १, ८;
 २०. ६, २; ४६, ५.
 आ-वृत्तम् १०. ५, ३७.
 आ-वृत्ता ६. ३, १७; १०.
 १, ३०; १२. १, ५२; ५,
 २; १२; ५३.
 आ-वृत्ताम् १०. २, २६.
 आ-वृत्ते २०. २४, ३.
 आ-वृत्तः ६. ७, २३.
 आ-वेशयन्तः ४. ३०, २.
 आ-वेशयन्ती ७. ७६, ३.
 आ-वेशितम् २०. १३६, ६.
 आ-व्युषम् ४. ५, ७.
 आ-शंसेत १२. ४, ४४; ४६.
 आशत २०. ७१, २.
 आशत २०. ६२, १५.

आ-शये २०. ६६, ११; १२.
 आ-शरीकम् १६. ३४, १०.
 आशवः ३. ६, ५; २०. ६६,
 ५.
 आशवे १०. ६, ११-१७;
 २०. ६८, ७.
 आ-शसन्तम् ५. १६, ५; १२.
 ५, ३६; १४. १, २८.
 आ-शसा ७. ५७, १.
 आ-शशानाः १८. २, २१.
 आशाः ५. ७, ६; ६. ६२, २;
 ७. ६, २; ६. २, २१;
 १०. ५, २६; ८, ३६;
 ११. ६, ६; १६. १५, ६;
 ५२, ३.
 आशानाम् १. ३१, १; २; ३.
 आशा-पालः १. ३१, ३.
 आशा-पालाः १. ३१, २.
 आशा-पालेभ्यः १. ३१, १.
 आशाभ्यः १०. ५, २६; २०.
 २०, ७; ५७, १०.
 आ-शाम् ६. ११६, ३; १६.
 ४, २.
 आशाम्-आशाम् ४. १५, ८;
 १२. १, ४३; ५४.
 आशा-एषी ४. १५, ६.
 आशा-संशितः १०. ५, २६.
 आ-शासाना १४. १, ४२.
 आ-शिरम् २०. २२, ६; ६१,
 ६; ६२, ३.
 आ-शिवः ४. २५, ७; ५. २६,
 ६; ८. ६, २५; २६; ११.
 १०, २७; १२. ५, ५६.
 आ-शिवम् २०. ६१, ११.
 आशिवम् ११. ३, ३२-४६.
 आ-शिवा १४. २, ६.

आ-शिषि ५. २४, १-१७.
 आ-शीः २. २६, ३; ५. ३,
 ५.
 आशीः ११. ३, २६.
 आशीः ११. ३, २६.
 आशीत् ८. ३, १७; ११. ३,
 ३१.
 आशीविषः १२. ५, ३४.
 आशुंगः ६. १४, ३.
 आशु २०. १३५, ८.
 आशुः २. १४, ६; १३. २,
 ३१; १६. १३, २.
 आशुपत्वाः २०. १३५, ८.
 आशुम् ७. ८५, १; १३. २,
 २; २०. ६८, ७; १०५,
 ३.
 आशु-मत् ६. १०५, १; २;
 ३.
 आशु इति २०. ८६, १.
 आशु-इव ४. २७, १; २०.
 १६, २.
 आ-शुवती ५. २०, ५.
 आ-शुवन्तम् ६. १४२, २.
 आश्रात् २. २७, ४.
 आ-आवयन्तः ५. १३, ५.
 आ-अेषम् ८. ६, २.
 आश्वः २०. १३१, ५.
 आश्विनम् ६. १३१, ३.
 आषम् ८. ८, १८.
 आष्टे २०. १३४, ५.
 आष्ट ४. १, ५.
 आष्टी इति ६. २७, ३.
 आ-श्लेषाः १६. ७, २.
 आस ७. ६६, १.
 आसु ४. ३२, २; ५. २, १;
 २०. १०७, ४.

आसः ६. न, १०.	आसनम् २०. १२७, न.	न; १३. ३, १२; १८. २,
आसक्तिः १४. १, २६.	आसनि ६. न४, १; १०.	३३; ३, ३; १६. ५२, १;
आसत् ११. न, ५; ६.	१०, २८.	५३, न.
आसताम् ११. १०, २.	आसन्न-वृषन् १८. १, ६.	आसीत् २. २, ३; ४, २, ६;
आसते २०. १२६, १०; १३४,	आ-सन्दीम् १५. ३, २; ३;	७; न; ५. १७, २; ६.
२.	६.	३०, १; ७. न०, ४; न.
आसते २०. १२७, ५.	आ-सन्दीम् १४. २, ६५.	न, ५; न; १०(१), १;
आसते ११. न, ३२; १८. २,	आ-सन्नानाम् ६. ६(२), ४.	६. ४, १३; १५. ६, ६।
४८; ५५.	आ-सन्न वत् ६. १२, २.	१०. न, ३६; ४०; १४.
आसते ५. १७, ११; १६,	आसभिः ६. ४६, २.	१, ६; ७; न; १०२; १४;
३; ७. ७२, २; ६. १०,	आस्तरणम् २०. ४६, ३; १३६,	१५. १, १; १८. २, २७;
१८; २०. ४, ११; न, ६;	५.	१६. ६, ६; न; १०.
१०, २६; ३१; ३२; ११.	आ-सत्साद ६. २८, ३; १२.	आसीरेत् १२. ५, ५०.
४, ११; १२; न, १०;	३, १३.	आ-सीदन्ति १४. २, ११.
१३. २, २७; ४, २७;	आसा २०. ६१, १०.	आसीनः ६. ७, १६.
१८. २, १४; ४, ३६;	आसातै १८. ३, ७०.	आसीनाः २. १४, ४; १२.
२०. ५२, १; ५७, १४;	आसातै १. १४, ३.	१, २८; २, ३०.
६२, १४; ६३, ४.	आ-सादः १५. ३, न.	आसीनाम् १८. ४, ४०.
आ-सदे २०. २३, ६; १०३,	आसाम् १. ३२, २; २. २,	आसीनाय ११. २, १५; ४,
२.	३; १४, ६; ३. १३, ६;	७.
आ-सद्य ७. ५८, २. १८. १,	४. २१, ३; ७. ७४, २;	आसीनासः १८. ३, ४३.
४२; ३, २०; ४, ४६; २०.	न. ७, १२२; १२. ४,	आसु ३. १०, ४; ७. १११,
६७, ४.	४५; २०. ११, ५; १६,	१; न. ६, ११; २०.
आसन् ५. १८, १०; ६.	७.	१२६, ११.
११२, २; ११. न, १०;	आसाम् २०. १२७, १३.	आसु १८. ३, १८.
१२. १, ३७; १५. ३,	आसाम् २०. १२७, १३.	आ-सुतेः ३. ७, ६.
१०.	आ-लिकम् ४. ७, १.	आ-सुनोति २०. ८६, ५.
आसन् न. ३, २; १८. ३,	आ-लिकाः १२. ३, २५.	आलुरम् २०. १३५, १०.
११; १६. ६०, १.	आ-लित्वन्ति ४. २७, २.	आलुरस्य ३. २२, ४.
आसन् ३. १३, ५; ५. ४,	आसिथि १. २४, १.	आसुरी १. २४, १; २; ७.
५२; ६. ३०, १; १३७,	आसिम ७. ६५, ३.	३८, २.
२; ७. ५, १; ६. ४, १४;	आसीत् २०. ३२८, १२.	आसुरीः न. ५, ६.
१०, २५; १०. २, ४; न,	आसीत् न. ६, १४; १०(२),	आसुरे २०. १२५, ४.
३५; ४०; ११. ५, १४;	५; १०(४), २; ६; १०;	आ-सुनोति १२. ४, ६.
न, १; २; ५; १३. १,	१४; १०(५), २; ६; १०;	आस्त १०. १०, १२; १७.
४६; १४. १, न; १६. ६;	१४; ११. न, ७; १२. ३.	आ-स्तरणम् १५. ३, ७.
१५.		

आस्ताम् ४. १६, ७; ८.
 १०(२), ६; १५. ३, ४;
 ५.
 आस्ताम् १. १४, १; ६. ४,
 १२२; १३; ११. ८, २;
 ६; १४. १, ६; १०; ११.
 आस्ते ४. ५, ५; ३४, ३.
 आस्ते १०. ८, ३१; ११. ५,
 ६.
 आस्तेयीः ११. ८, २८.
 आस्थत् १३. १, ५.
 आ-स्थाता ६. १२५, १.
 आ-स्थानम् १. २३, ३; ३२,
 ३.
 आ-स्थाने ६. ७७, १; ७. ६६,
 १.
 आ-स्थितम् ४. १७, ८; ६.
 १४, १.
 आस्त्रः १०. १०, २०.
 आस्त्रा ६. ५६, ३; ७. ७७, ३.
 आ-स्त्राने १४. २, ६५.
 आस्त्रे ६. १२, ३.
 आ-स्पन्दमानः ३. १२, ३.
 आस्महे १३. ४, २; ५; ४७;
 ५०-५४.
 आस्युः २०. १२८, १३.
 आस्यत् ४. ६, ४; ६. ६०,
 १.
 आस्युतः ६. ७६, २; ६. ८,
 ३.
 आस्यन् ४. ६, ७.
 आस्यम् ६. ५६, ३; १३६, २;
 ४; ७. ६८, २; ७०, ४;
 ५; १०. ७, ३३.
 आस्याः १. १६, २.
 आस्यानि ४. ३६, १०.

आस्यथ ११. २, ६.
 आस्ये ७. ५६, ८.
 आस्येन ७. ५६, ८; २०. ३५,
 ३.
 आस्त्राव-भेषजम् ६. ४४,
 २.
 अ-स्त्रावम् १. २, ४.
 आ-स्त्रावस्य २. ३, ३; ४; ५.
 आह ३. १६, २; ८. ४, १५;
 १६२; ६. ६(२), २; १२.
 ४, १७; १५. ११, ३-६;
 ८; १०.
 आहु १. १६, २; ३. ४, ५;
 ८. ५; ५२; ११. ३, २८;
 २६; ३, ३२-४६; १६.
 ६, २२; १८. २, ३७;
 १६. २४, ८२; ४४, ८.
 आ-हुतः १४. १, १२.
 आ-हुतम् १. ११, ४.
 आहुतम् २०. १२६, ६.
 आ-हुताः १०. ८, ४.
 आहुनः १८. १, ७; ६.
 आ-हननम् १२. ५, ३६.
 आहननाभ्याम् २०. १३५, १.
 आ-हनने १२. ५, ४७.
 आहनसम् ४. ३०, ६.
 आ-हरन्ति ६. ६(१), ६;
 ६-१२.
 आ-हराणि ३. १५, २.
 आ-हवनीयः ६. ६(२), १३;
 १५. ६, १४.
 आ-हवनीयस्य १५. ६, १४.
 आ-हवनीये ८. १०(१), ४.
 आहुवेषु १८. १, ४८.
 आ-हार्यम् ६. १, २३.

आ-हार्याणि ६. ६(२), १.
 आ-हितः ४. ११, ८; ६.
 १२६, ३; ७. ५०, ८;
 ११. ४, १३; ७, १; २;
 १४. १, २; १६. ५३, ३.
 आ-हितम् ६. १०, १२; १०.
 ३, १७; २३; २५; ७, १;
 २६; ३०; १४. १, ३५;
 १७. १, १६.
 आ-हिता १०. ७, ३; १२;
 ११. ७, २२; १६. ५४,
 २.
 आहुः ३. ११, ५; ७; २१,
 ४२; ४. २, ५; ५. १७,
 ४; ६. २, ५; ६, २१;
 १०. ७, १६२; १०, २३;
 ११. ६, ७; १२. ३, ४;
 ४, ५२; १३. २, ३६.
 आहुः १. २५, १; २. २, ३;
 ३५, २; ४. ११, ११; ५.
 २८, ६; ८. ६, ७; १६;
 १७; ६. १, २; ४, ७; ८;
 ६; ५, ७२; ६, १२२;
 १५; १६; १६२; १०, ३;
 २८२; १०. ७, २५; ८,
 २३; ३३; १०, २६; ११.
 ५, १२; १५; १२. २, ५३;
 ४, १०; ३३; ३६; १८.
 १, १४; १६. २७, ३;
 ३०, ३२; ५३, ३; २०.
 ८, २; ३४, ५; ८६, ३.
 आहुः २०. १२८, २.
 आ-हुत ६. ५, १; १२. २,
 १८.
 आ-हुतः ११. १०, ५; १८.
 २, १०.

आ-हुतम् ७. २०, २; ४६,
१; ६८, १; ७३, ४; १३.
१, ६०.

आ-हुता ६. १३३, २.

आ-हुतिः १०. ५, ४३; ११.
१०, ५; १५; १५. १७,
१०.

आ-हुतिम् ६. ८३, ४; ७.
७०, १; १०. ८, ३५;
११. १०, १४; २६; १५.
१४, ७; १६. ४, १.

आहुति-वृधम् ७. ३२, १.

आ-हुतेः ३. २२, ४.

आ-हुत्या ११. १०, १२; १५.
१४, ८.

आ-हुत्याः १२. १, १३.

आहुत-यज्ञकतुः ६. ६(२),
१०.

आ-हुताः २. २६, ५.

इ

इ-जुणा १. ३४, ५.

इ-ज्वाकः १६. ३६, ६.

इ-ज्य ३. १७, ६.

इ-ज्ज १८. १, १६.

इ-ज्ज ५. २२, ६; ७; ६.
१३४, ३; १४. २, ३३.

इ-ज्जः १०. १, ७.

इ-ज्जकम् २०. १२६, १२.

इ-ज्जत ८. ४, १८.

इ-ज्जत ४. १५, १५,

इ-ज्जतः ८. ६, ४.

इ-ज्जताम् ८. ६, ४.

इ-ज्जतु ६. २०, १.

इ-ज्जते ११. ५, १७.

इ-ज्जत ६. २७, १; ६०, १;

७. १०५, १. १६. ५६,
३; २०. ४१, २; ८७, १;
६१, ४.

इ-ज्जन्तः १६. ४१, १.

इ-ज्जन्ति २०. १८, ३.

इ-ज्जन्ती ७. ७३, ८; ६. १०,
५; ११. ६, ८; १४. २,
१६.

इ-ज्जन्ते १०. ८, ५.

इ-ज्जमानः ३. १५, ३; ५; ६;
१६. ७, १; २०. ६१, ६.

इ-ज्जसि १०. १, २०.

इ-ज्जसि २०. १२६, ४.

इ-ज्जसे २०. ११४, १.

इ-ज्जस्व १८. १, ११.

इ-ज्जत् ४. २१, ५; ६.
१३३, १; १२. ३, ३४;
४१; ४२.

इ-ज्जामि ४. २१, ५.

इ-ज्जते १२. ४, १३.

इ-ज्ज इव ६. १४, ३.

इ-ज्जस्य ६. ३, १८.

इ-ज्जः ६. ६३, ४; १८. १, ४३;
४, ४७.

इ-ज्जया ३. १०, ११; ६. ६२,
३.

इ-ज्जा ५. १२, ८; २७, ६; ७.
२७, १; ११. ७, १८;
१५. ६, २०.

इ-ज्जाम् १८. ४, ३०.

इ-ज्जायाः ३. १०, ६; १५. ६,
२१.

इ-ज्ज १. २, ४; १७, २; ३;
३४, २; ४; २. २, ४;
२७, १; ३०, २; ३. ७,
५; ८, ४; १३, ५; ६;

१५, ८; १६, ५; १७, २;
३; १८, ४; २०, ६; ४.
२, ५; १७, ८; २१, २;
३; २४, १; २७, ६; २८,
४; ३७, १२; ५. १, ६;
२, १; १३, १०; ११;
१४, ६; १७, ३; ८; ६.
२२, १; २६, ३; ५०, १;
५१, २; ३; ५५, २; ५७,
१; ६३, २; ४; ८४, ३;
६१, ३; १०१, १; ११६,
१; १२०, १; १२१, २;
१२२, २; १३४, ३; ७.
१८, २; २०, २; २१,
१; २६, १; ३८, ४;
५०, ६; ५७, २; ८८, १;
८. ४, १२; २१, ५, १२;
१६; ६. २, १६-२४;
४, २१; ५, ६; ६(१), २;
६, ८; १६; १०, १; १०;
१५; १८; २१; २२; १०.
४, १; ६, ७; ८; १०;
१४; १५; १६; १७; १०,
२४; ११. १, ६; ३४; ८,
७; १२. २, ३६; ३, ६; ४७;
४, १८; २१; ४८; १३.
१, १२; १४. १, ५; ७;
१६; २६; ३०; ३२; ५७;
२, ४१; १७. १, ६-१६;
२४; १८. २, ६; ३७;
५०; ५१; ५८; ३, २१;
१६. २६, १; ३२, ७;
३४, ६; ४५, ३; ५०, ६;
५५, ६; ५६, ३; २०. ६,
६; ७, १; १०, २; १२,
२; ६; १४, २; १६, २;
१७, २; ३३; १८, २;

२१, ३; ७; २४, ८; २५,
 १; ६; २७, १; २८, २;
 ३५, १-६५; ३६, १; ३७,
 ८; ३८, ४; ५; ४७, ४;
 ५; ५५, २; ५६, १; ५७,
 २; ५८, १; ५९, २; ३;
 ६२, २; ६३, ३; ४; ६४,
 ४; ६५, १; ६७, १; ७;
 ६८, २; ५; ६; ७०, ७;
 ८; ७१, ११; १६; ७३,
 १; ४; ५; ६; ७५, ३; ७६,
 १; ८२, १; २; ८५, १;
 ८७, १; २; ५; ८८, ६;
 ८२, ८; १०; ११; ८३,
 ५; ८६, ३; ८८, १; ८९,
 २; १०७, ४; ११०, ३;
 १११, २; ११२, २; ११४,
 १; २; ११५, १; २; ३;
 ११६, २; ११८, ३; १२३,
 १; १२४, ६; १२६, ३;
 १४; १६; १७; १२७,
 ११२; १३५, ४; १३६, १;
 १३७, ११; १३८, ३;
 १४०, ४; ५; १४३, ४; ६.
इतु ३. १, २; २, ४; ८, ६;
 १३, ७; १६, ७; ३०, ५;
 ४. ३७, ३; ४; ५; ६.
 ६४, २; ७. ७५, २;
 ६७, ७; ८. ७, १६; ११.
 ६, १८; १२. २, ३०;
 ३४; १८. १, ५५; ४,
 ३७; २०. ६८, ११.
इतु १. २०, ३; २३, २; ३;
 २. १४, ४; ५; ६; ३.
 ११, ६; ३१, ४; ४. ३,
 १; ६, २; १४, ६; १७,
 ३; २५, ४; ३७, ११; ५.

४, १; ३; २२, १; ३१,
 १०; ६. १४, ३; २३, २;
 २५, १; २; ३; ८३, ३;
 ६५, १; १२६, २; ७.
 २६, ५; ६५, १; ८३, २;
 ६५, ३; ११४, २; ११५,
 १; २; ३; ८. १, १८;
 २, ८; ६, ७; ११; १४;
 २३; २५; ८, २४; ६,
 ६; १०. १, १४; १७;
 २०; २४; ३०; ११. २,
 १२; १४; २७; ५, ११;
 ८, ७; १०, ६; १४; १२.
 १, ४६; २, २; ३; १३.
 १, ३६; २, १३; १४.
 १, १७; १८; २०; २,
 १६; ३३; ३६; १८. १,
 ६१; २, २७; ५१; ५४;
 ३, ३८; १६. ३४, ३;
 ३६, ६; ४४, ७; २०.
 २४, ३; ७०, ६; ६६,
 ११; १३-१६; १०५, ३.

इतुन ३. १४, ४; ५. ८, ३;
 ६. ८३, २; १०. ५, २३.

इतुम १. २७, ४; ६. ११८,
 ३; १२. ३, ४४; १८. ४,
 ४६.

इतर १२. २, ८; २१.

इतर-जना ११. १०, १.

इतर-जना ८. १०(५), ६;
 १२; ६. ७, १७; ११. ६,
 १६.

इतर-जना ८. १०(५), ६.

इतरम ११. ८, ३१; १२. २,
 ७.

इतरा ११. १, १३.

इतरान ३. ११, ५; ७.

इतराभि १८. २, ६.

इतरासु ३. १०, ४; ८. ६,
 ११.

इताम् ७. ५३, ३; १४. २,
 ११.

इति १. ३, १-६; ७, ४; ३.

१३, ४; १६, २; ३१, ५;

४. १७, २; २०, ६; ५.

१७, ३; ४; १८, ७; १९,

६; २३, १; ६. ८१, ३;

८२, २; ८४, १२; १२८,

१; १३०, २; ७. ७४,

१; ८३, २; १०६, ६;

८. ४, १५; १६; ६,

१८; १०(१), १; १०(२),

२; ४; १०(४), १; ५; ६;

१३; १०(५), १; ५; ६;

१३; १०(६), २; ६. १,

२४; ४, १२; ६(२), १;

२; ६, १६; १०. १, ७;

१५; २, ५; १७; १०,

२३; ११. १, ७; २, २८;

३, २४; २६; २७; २८;

२६; ३, ३२-४६; ६, ७;

८, २२; ३२; १२. ४, १;

६; ४२; ४८; ४६; ५२;

५, ५०; १३. ४, ४७;

५०-५४; १५. १, ४; ८;

३, १; २; १०, ३; ४;

११, २; ३; ५; ६; ८;

१०; १२, २; १३, १३;

१७, १०; १८. १, ४६;

२, २२; ४८; ४, ७; १६.

३४, ६; ४४, ६; २०.

३४, ५; ११२, २; १२८,

२; ४; १२६, १३; १५;
 १६; १३०, १७; १८;
 १३१, १०; १३२, ५.
 इति २०. १३१, १.
 इति २०. १३२, १४; १३६,
 ६; ७.
 इति २०. १३५, १.
 इतिह-आसः १५. ६, ११.
 इतिह-आसस्य १५. ६, १२.
 इत्थ २०. १३४, १-६.
 इत्थम् ३. १३, ७; ६. १३५,
 १; ८. ६, २२; २०.
 १३६, ६.
 इत्था १. २०, ४; ४. १, ६;
 २०. २४, ३; ४१, ३;
 ७७, ३; ६२, १४; ६४,
 ७; १०६, १.
 इदत्-वसुः १३. ४, ५४.
 इदम् १. ७, ३; ५; ८, १;
 १६, ३; २३, १; २४,
 २; ३; ४; २६, ५; ३०,
 २; ३१, १; ३२, १; २.
 १, १; ३, ३; ५; १२,
 २; ३; १३, ३; २६,
 ५; ३०, १; ३६, ७; ३.
 ४, ५; ८, २; १३, ७;
 १५, ४; १६, १; २३, १;
 २४, ४; २६, ७; ८; ३१,
 ५; ४. ४, २; ५, ५; ६,
 ८; ७, १; २; ८, १; ६,
 ७; १२, १; १६, १; ४;
 २३, ७; २६, ७; २७, ६;
 २८, १; ३०, ३; ३६, ८;
 ३८, ३; ५. ८, २; १२, ८;
 २६, १२; २७, ६; १२;
 २८, ६; २६, १; ६. १३,

२; ३; २७, १; २६, २;
 ३; ३३, १; ४४, १;
 ४७, ३; ५१, ३; ५३,
 १; ५४, १; ५७, १;
 ६८, ३; ७७, १; ८३, ४;
 ८८, १; ८९, १; ९०,
 १; ९४, ३; ९७, १;
 १००, २; १०४, २;
 १०६, २; ११६, ३; ११७,
 १; २; १२२, ५; १२८,
 १; १३१, २; १३६, ३;
 ७. १, २; ११, १; १७,
 ४; १८, १; २०, ६; २५,
 २; २६, ४; ३५, १; ३८,
 १; ५८, २; ६४, १; २;
 ६८, २; ७४, २; ७५,
 २; ७७, १; ८६, ३; १०६,
 १; ५; ८. २, २५; ३,
 ८; ८, १६; ६, २२;
 १० (१), १; ६. १,
 १७; २, ८; ३, ५; ५,
 २०; ३८; ६(२), १; १०,
 १५; १०. १, ६; २,
 २२-२५; ४, ७; १०;
 ५, १५-२१; ३६; ६,
 १३; ७, ३५; ८, २; ५;
 ६; ६, २७; १०, ११;
 २६; ३४; ११. १, ११;
 २७; २८; २, १०;
 ३०; ३, २४; ४, १; ८;
 १८; ५, १४, ६, ५; ६;
 ११; १६; २०; ८, १६;
 ३२; १२. १, ३; ५३;
 २, १; ३, ४४; ४५; ५,
 ५०; १३. १, १; २०;
 २३; ५४, ५५; २, ४४;
 ४५; ३, १५; ४, १२; २०;

१४. १, ३८; ४५; ४६;
 ५६; २, ६; १६; ४६;
 ७४; १६. १, ४; ७, ८;
 ८, ४-२६; ३३; १८.
 १, ४६; ५२; ५३; २, २;
 ५०; ५१; ३, २; ७; ६४;
 ४, ३५; ३७; ४४; ५१;
 ५२; ५६; १६. ६, ४;
 ६. १; ४; ११, ४; ६;
 १४, १; २४, ६; २७,
 ११; १२; १३; ३७, १;
 ४४, ७; ८; ४८, ३; ५२,
 ५; ५६, २; ४; २०. ३,
 १; १६, १२; २१, २; ३;
 ७; ३२, ३; ३४, १५; ३८,
 १; ४७, ७; ६७, ७; ८५,
 ३; ८७, ६; ६६, २; ११३,
 १; १२६, १२; १२७, १;
 १३१, १०; १३५, ६.
 इदम्-इदम् ६. ५, २३; २४;
 २०. १४, ३; ६२, १.
 इदा २०. ६७, १.
 इदानीम् ३. १६, ४; ८, ३,
 ५.
 इदा३म् ६. ६(२) १.
 इदावत्सराय ६. ५५, ३.
 इद्ध-अग्रयः २०. २५, ४.
 इद्धः ३. ८, ३; १६. ६४, ४.
 इधीमिहि १८. १, ५६;
 ५७; ४, ८८; २०.
 १०२, ३.
 इध्मः १६. ६, १०.
 इध्मम् १०. ६, ३५; १२.
 २, ५४.
 इध्मेन ३. १५. ३; ५. ८, १;
 १६. ६४, २.

इध्यते १३. १, ४८; ५०;
 २०. १०२, १; २.
 इध्यसे ६. ६३, ४.
 इध्यस्व २. ६, २.
 इध्यस्व ११. १, ४.
 इन्द्रः २०. २१, २; ६४, ४.
 इन्द्र-तमम् ५. २, ७; २०.
 १०७, १०.
 इन्द्र २०. १३५, ६.
 इन्द्रवः ६. २, २; २०. ६, ४;
 ५; १३, १; ११८, ४;
 ११६, २.
 इन्द्रवः ७. १०६, ६.
 इन्द्रवे १८. ३, ३६.
 इन्द्रः १८. ३, ५४; ४, ६०;
 २०. ६५, १; १३७, ५.
 इन्द्र-मिः २०. २१, ४२;
 १११, १; २; ३.
 इन्द्र २०. १२८, १५.
 इन्द्र २०. १२८, १६.
 इन्द्र २०. १२८, १२; १३५,
 ११; १२.
 इन्द्र २. ५, १; २; ३. १, ५;
 २, ३; ४. २२, २; ५. ३,
 ८; ८, २; ५; ६; ६. ५,
 २; ४०, ३; ७. ३१, १;
 ८४, ३; ११०, ३; ८. ४,
 २४; ५, १७; ६, १३;
 १३. १, ३०; १४. १,
 ६२; १८. ३, ६७; १६.
 १३, १; ७०, १; २०.
 १, १; ३, १; ५, ३; ६,
 १-४; ६; ६; ७, ४; ११,
 २; १८, १; १६, १; २; ३;
 ६; ७; २०, १; २; ४;
 २३, ८; २४, ५; २५, ७;

२७, ४; २६, १; ४; ३३,
 २; ३५, १६; ३८, १;
 ४२, २; ४७, ७; ५२, २;
 ५७, ४; ५; ७; १५; ६१,
 ६; ६२, १०; ६४, २; ३;
 ५; ६६, ४; ७०, १०;
 १६; २०; ७१, ७; १२;
 १४; ७६, १; ८०, १;
 ८३, १; ८४, १; २; ३;
 ८३, ३; ८६, १; २; ६७,
 २; ८६, १; ११६, १;
 ११८, १; १२०, २;
 १२५, ५; १२८, १४.

इन्द्र १. २, ३; १६, १; २१,
 २; ३; ४; २. ५, ४;
 १२, ३; २७, ७; २६, ३;
 ३. १, ३; ४; ३, ६; ४.
 ४, ४; २२, १; ३; ५. ८,
 ७; ६; २३, २; २८, ४;
 ६. ४५, ३; ६६, १;
 ३; ८२, ३; ८८, २; ३;
 ८६, १; १२६, ३; ७.
 १२, ३; ५०, ४; ७२, २;
 ७३, ३; ७६, ६; ८४, ३;
 ८७, २; ११७, १; ८. ४,
 ८; १६; २२, ५, १५; ८,
 ७; ६, २१; ८. ४, २३;
 ११. ६, २३; १३. १, ५६;
 ४, ४६; ४७; १४. १, १८;
 ४१; २, ६४; १७. १, ६;
 १०; ११; १२; १३४;
 १४; १६. ८, ६; १३,
 ५; १५, १; २; ४; ४२,
 ३; ५५, ६; २०. ३, २;
 ३; ५, १; ५; ६, ५; ८,
 १; ६, ४; १२, २; ४;
 ५; १४, २; १५, ४; ५;

६; १८, ४; २०, ३; २१,
 २; ३; ५; ७; १०; ११;
 २३, १; ४; ७; ६; २४;
 १; २; ७; ८; १५, १;
 २७, १; ३; ६; २८, ४;
 २६, ३; ५; ३०, ५; ३२,
 २; ३; ३३, १; ३; ३४,
 १८; ३६, ४; ६; १०;
 ३७, २; ६; १०; ११;
 ३८, २; ३; ५; ४२, ३;
 ४३, २; ४६, ३; ४७,
 ८; ६; ४६, ७; ५०, २;
 ५५, २; ३; ५६, ३; ६;
 ५७, ६; ६०, २; ५; ६२,
 २; ६; ७; ६३, ७; ६४,
 १; ६८, ६; ६६, ५; ८;
 ७०, १; १७; ७१, ५;
 १०; ११; १३; ७२, २;
 ३; ७३, २; ७४, १-७;
 ७५, १; २; ७६,
 ३-६; ८१, १; ८२, १;
 ८३, २; ८५, ३; ८६,
 १; ८७, २; ३; ४; ६;
 ८८, ३; ४; ७; ८२, २०;
 ८३, ५; ६; ७; ८; ८५,
 ३; ४; ८६, ५; ८८, १;
 २; १००, १; १०५, १;
 २; १०६, २; १०८, १;
 १११, १; ११२, १; ३;
 ११४, १; ११५, ३;
 ११७, १; २; १२०, १;
 १२१, १; २; १२५, १;
 १; १२६; २; ४; १५;
 १८; २२; १३७, १०;
 ११.

इन्द्र-इन्द्र ३. ४, ६.

इन्द्र-इषिताः ७. ७०, २.

इन्द्र-ऋषभा १२. १, ६.

इन्द्रः १. ७, ३; ४; ७; ६,
 १; १६, २; २१, १; २६,
 २; २६, १; २. ५, ३;
 १४, ४; २७, ३; ४;
 ५; २६, ७; ३. १, ६;
 ३, ३; ८, २; ११, ३;
 ४; १२, ४; १३, २; ३;
 १४, २; १५, ६; १७,
 ४; २२, २; २७, २; ४.
 ३, ५; ११, २; ३; ७;
 १६, ८, २१, २; ५;
 २३, ५; ३२, २; ५. ८,
 ८; १८, ५; ६; १४; २१,
 ८; ११; २३, १; २४,
 ११; २५, ४; ६; २६,
 ३; ११; २६, १०; ३१,
 १२; ६. ३०, १; ३३,
 ३; ३६, ३; ४०, २; ४७,
 २; ५८, १; २; ३; ६५,
 ३; ६६, २; ६७, १; २;
 ७५, १; २; ८०, ३; ८८,
 २; ६४, ३; ६७, १;
 ६८, १; १०३, २; ३;
 १०४, ३; १११, ४;
 १२२, ५; १३८, २;
 १४१, १; ७. २४, १;
 ४४, १; ५१, १; ६१, ६;
 ८६, १; ८६, २; ६१,
 १; ६२, १; ६४, १;
 ११०, १; ८. १, १५;
 ४, १६; २१, २५; ५, ३;
 ५; १०; १४; १८; २१;
 २३; ८, १; १८; २३;
 १०(२), ५; १०(५), २;

६. १, १५; २, १३; १७;
 १८; ४, २१; ७, १; २०;
 ६, १६; १०. ३, ११; ४,
 १०; १२; १६; १७; १८;
 ५, ४७; ६, ७; ८, ४२;
 १०, ६; ११. १, २७; ५,
 ७; १६; १६; ६, २३; ७,
 १; ८, ८; ६, २०; २५;
 १०, ११; १६; २७; १२.
 १, १०; १८; ४०; २,
 ५४; ३, २४; १३. १,
 २७; ५१, ३, १३; ४,
 ४६; १४. १, ३७; २,
 ४२; १५. १०, ६; १४,
 ३; १७. १, १८; १८.
 ३, १२; २५; ४, १५; १६.
 ५, १; ६, ७; ६, ६; १२;
 १०, ६; १३, २; ४; ७;
 ६; ११; १५, ३; १७, ८;
 १६, ६; २०, ३; २४, ८;
 २६, ४; २७, १; ६; ३४,
 ८; ६; ४३, ६; ४५,
 ७; ४६, ३; २०. २, ३;
 ५, २; ७, ३; ११, १; ३;
 ४; ५; ७; ६; १०; १२,
 ३; ७; १३, १; १७, ३;
 ११; १२; २०, ५; ६; ७;
 २५, ६; २८, १; ३४,
 १-१७; ३५, ६; १०;
 १५; ३६, ७; ३८, ५;
 ६; ३६, २; ४१, १; ४६,
 २; ४७, २; ५; ६; ५३,
 ३; ५६, १; ५७, ८; ६;
 १०; १३; ५६, ३; ६३,
 १; २; ४; ५; ६; ६७,
 १; ६६, ७; ७०, ८; ६;
 १५; ७१, १; ७३, ४; ५;

७६, १; ८; ७७, ५; ८०, १;
 ७; ८६, ११; ६१, ६; १२;
 ६२, ४; ८; ११; ६४, १;
 ११; ६६, ३; ८; ६६,
 २; १०४, ३; १०७, २;
 ११३, १; ११५, २; ११८,
 ४; १२४, ४; ५; १२५,
 ६; ७; १२६, १-२३;
 १२७, ११; १३७, ७; ६;
 १३; १३८, १.

इन्द्र २०. १२७, १३.

इन्द्रः २०. १२७, १३; १२८,
१४.

इन्द्रः-इव ४. ५, ७; ३१, ५;
 ६. ८७, २; ६. ४, ११;
 १६. २८, ३; ४६, २.

इन्द्र-गुप्तम् १२. १, ११.

इन्द्र-जाः ४. ३, ७.

इन्द्र-जालेन ८. ८, ८.

इन्द्र-जुतम् ६. ३६, १; २.

इन्द्र-ज्येष्ठाः ३. १६, ६; ७.
७६, २.

इन्द्र-धनुः १५. १, ६.

इन्द्र-पत्नी २०. १२६, ६;
१०.

इन्द्र-पुत्रे ३. १०, १३.

इन्द्रम् ३. ३, २; १०, १२;
 १५, १; १६, १; २०, ७;
 २१, ८; ४. २१, ५; २२,
 ५; २४, ७; ५. २, ६; ३;
 ११; ६. ३८, १; २; ३; ४;
 ३६, २; ५४, १; ६७, ३;
 ७. ३८, २; ४६, ३; ८६,
 १; ६८, १; ११०, २; ८.
 ४, २०; ६. ४, ६; १०, २८;
 १०. ७, ३०; १०, १०;

११. ६, १; १२. १, ३७;
 २, ४७; १५. १०, ४; ५;
 ११; १७. १, १-५; १८.
 १, ४८; ३, २२; १६. १३,
 ६; १५, २; १८, ८; २४,
 २; ७; २०. ६, ७; ८, ३;
 ६, १; १०, २; ११, ८;
 १२; १२, १; ६; १४, ३;
 १७, १; ४; ७; १६, ५;
 २२, ४; २३, ५; २४, ३;
 ४; २६, १; २७, ५; २६,
 २; ३१, १; ३६, १; ३;
 ५; ३८, ४; ३६, १;
 ४४, १; ४७, १; ४; ४६,
 ४; ५१, १; ५४, १; २;
 ५५, १; ५६, २; ६१, ४;
 ६२, ३; ८; ६५, १; ६६,
 १; ६८, ४; ११; १२; ७०,
 ६; ७; ११; १६; ७१,
 १५; ७२, १; ८५; १;
 ८६, १; २; ८; ८२, १;
 १७, १८; ८३, ४; ८५,
 १; १०५, ५; १०७, १२;
 ११०, २; ११८, ३;
 १२५, ३; ४; १२६, १;
 १३७, २; १२; १३८, ३.
 इन्द्रम् २०. १२८, १५.
 इन्द्र-मेदिनी ११. ६, १८.
 इन्द्रमेदि-भ्याम् ११. ६, ४.
 इन्द्र-मेदी ५. २०, ८.
 इन्द्र-योगैः १०. ५, ३.
 इन्द्र-वन्तः ५. ३, ३.
 इन्द्रवायु इति ३. २०, ६.
 इन्द्र-वाहः २०. ६४, ३.
 इन्द्र-वाहा २०. १००, ३.
 इन्द्र-संध्या ११. १०, ६.

इन्द्र-सखा ४. ५, २; २२, ६;
 ७.

इन्द्रस्य २. ३, ६; ५, ५; ३१,
 २; ३. १६, ४; ४. २२,
 ४; २४, १; ३७, ८; ६; ५.
 ६, ४; ११-१४; ८, ४;
 ६. ३३, १; २; ५१, १;
 ८२, १; ८५, २; ८६, १;
 ८२, १; ८६, २; ३; १२५,
 २; ३; १२६, २; ७. २६,
 ६; ५२, २; ७२, १; १११,
 १; ८. ४, १३; ६, २३;
 ६. २, ६; ४, ७; ८; १०.
 ४, १; ५, १-६; ८;
 १२. ४, ५१; १६. १, ६;
 १८. ४, ५८; ६०; १६.
 १३, १०; ३०, ३; ३५,
 १; ४६, ४; २०. ११, ६;
 १५, २; १६, ४; ४०,
 २; ५१, ४; ५८, १; २;
 ६८, ६; ७०, ४; १३;
 ८७, ५; ८७, ३; १०६,
 २; १३७, १; ६.

इन्द्राग्नि-भ्याम् ५. ३, १०.

इन्द्राग्नी इति १३. १, ११.

इन्द्राग्नी इति १. ३५, ४;
 ३. ३, ५; ४. ३०, १; ५.
 ७, ६; ६. १०४, ३;
 १३२, ४; ८. १, २; १६;
 २, २१; ६. २, ६; ३,
 १६; १०. १, २१; ११.
 ८, ५; १४. १, ५४; १६.
 १०, १; १६, २; २०, १;
 २७, १५.

इन्द्राग्नी इति ३. ११, १; ६.
 १, १२; २०. ६६, ६.

इन्द्राग्न्याः ६. १, १२; १६.
 ८, २७.

इन्द्राग्नि २०. १२६, १२.

इन्द्राग्नी १. २७, ४; ६.
 १३२, ३; ७. ४६, २;
 ६. ७, ८; १५. ६, २०.

इन्द्राग्नी-इव १४. २, ३१.

इन्द्राग्नीम् २०. १२६, ११.

इन्द्राग्न्याः १५. ६, २१.

इन्द्रात् ११. ८, ६; २०.
 ४२, १.

इन्द्रापूषणा १६. १०, १.

इन्द्रापूषणा ६. ३, १.

इन्द्राय १. ६, ३; ४. २१, १;
 ५. २, ८; २७, १२; ६.
 २, १; ३; ८. ६, २४;
 ६. ४, ३; ५, २; १२. १,
 ३८; ३, ५४; १६. ४३,
 ६; २०. २१, १; २२, ६;
 ३०, २; ३१, १; ३५,
 १; २; ४; ५; ८; ६०, ६;
 ६२, ५; ६८, १०; ६६;
 २; ७१, ६; ८; १६; ७६;
 ७; ६१, १; ६२, ३; ६;
 ७; ६५, २; १०७, ११;
 ११०, १; ११६, १;
 १३७, ४; ५.

इन्द्रावरुणा १६. १०, १.

इन्द्रावरुणा ७. ५८, १; २.

इन्द्रासोमा १६. १०, १.

इन्द्रासोमा ८. ४, १-७.

इन्द्रियम् ३. २२, ५; ५. ६;
 ८; ६. १३३, ४; ७. ६७,
 १; १२. ५, ७; १५. १०,
 १०; १६. ४२, ४; २०.

इन्द्रिय-वान्—ह्रमाः.

(४, ७६१)

१५, ३; ५०, १; १०६,
 १.
 इन्द्रिय-वान् १५. १०, १०.
 इन्द्रियाणि १. ३५, ३; १६.
 ६, ५; २०. २०, २; ५७.
 ५.
 इन्द्रियाय १६. ३७, २,
 इन्द्रियेण ६. १२४, १; १६.
 १, ६; १६. ३३, २; ४२,
 ४; ४५, ७.
 इन्द्रियैः १६. २७, १.
 इन्द्र्ये १०. ७, २६; ३०^३;
 २०. ३०, ३; ५६, ४;
 ६८, ५; ८६, ६; ११८,
 ४^२; १२२, १.
 इन्द्र्ये-इव १. ३५, ३.
 इन्द्र्येण २. २६, ४; ३. ५, ४;
 ६, २; २१, ३; ५. १४,
 ७; २०, १२; २१, ११; ६.
 ६५, ३; १०४, २; १२६,
 १; १२६, १; ७. ४१, १;
 ६०, २; ६३, १; ६८, १;
 ६. ३, ३; १०. ४, १२;
 ६, १; ११. १०, ६; १२.
 ४, ५०; १३. १, ३; १८.
 ३, ४८; १६. १३, ३;
 ३१, ७; २०. २१, ४;
 २८, ३; ३६, ४; ४०, १;
 ७०, ३; १०६, १; १४१,
 २.
 इन्द्र्यते ४. २३, १; ८. १, ११.
 इन्द्र्यते ११. ३, १७; १२. १,
 २०; २, ११; १३. १,
 ४०; १८. ४, ४१.
 इन्द्र्यानाः ५. ३, १; १६. ५५,
 ३; ४. -

इन्द्र्याम् १२. २, ७; ३, २५.
 इन्द्र्ये ५. १८. ५; ७. ८२, ६;
 ११. ३, १८.
 इन्द्र्यत ५. २, ६; २०. १०७,
 ६.
 इन्द्र्यथ ४. २७, ३.
 ह्रमः ११. २, १८.
 ह्रमम् १. ८, २; ६, १-४;
 १०, १; १५, १; २; ३०,
 १^२; २. ६, २; ६, १;
 १३, १; २; २६, २; २८,
 १; ३^२; ५; ३५, ५; ३.
 ३, ४; ६; २१, ८; ४.
 १३, ४; २२, १^२; २;
 २७, १; ३४, ८; ३८, ५;
 ५. ३, ११; ४, ६; ५, ४;
 २७, ८; २८, ४^२; ३०,
 १४; ६. ५, २; ३०, १;
 ३५, २; ५४, २; ६३, ३;
 ८४, ४; ६१, १; ६५, ३;
 ६७, ३; १११, १; १३८,
 १; ७. २, १; ५, ५; ८,
 १; २०, ५^२; २८, १; ५३,
 ४; ५८, १; ७३, ६; ७५,
 २; ७८, २; ८२, १; ६७,
 ८; ११६, २; ८. १, ६;
 १८; २, ५; ७; ८; १०;
 २०; ५, १२; १३; २०;
 २१; ७, २; ५; ७; १६;
 २२; ६. २, ७; ५, १७;
 ६(६), १३; ६, ३; १०.
 २, २०^२; २१^२; ३, १२;
 ६, १७; २६; ११. १, ४;
 १६; १८; ६, २६; १२.
 २, ४; ७; २३; ४३; ४७;
 ३, ४; ३२; ३७; १४. १,

३२; ३३; २, ८; १३; १८;
 २३; २५; ४०; ७०; ७३;
 १७. १, ११; १८. १,
 ६०; २, ५; २७; ३, ५२;
 ५३; ६०; ४, २८; ४०;
 ५४; १६. १, १; २^२; ३;
 १३, ६; २४, १; २; ३;
 ४; २८, १; ३०, १; ४२,
 ३; ४६, २; ५४, ५; ५८,
 ५; ६; २०. ३, १; ११,
 ५; १३, ३; २४, ७; ३८,
 १; ४७, ७; ६६, ७; ६४,
 ६; ६७, २; १२६, ४;
 १४३, ४.

ह्रमा ३. २०, ८; ५. २, ८;
 २२, ८; ७. ८७, १; ८.
 ४, ६; ६. ६, २; ७; ११.
 २, ११; १३. ३, १८;
 १७. १, १६; १८. १,
 ५१; १६. १३, १; ५३,
 २; ३; २०. २३, ३; ३४,
 ४; ६३, १; ७३, १; १०७,
 ११; ११७, ३; १२४, ४;
 १४१, ४.

ह्रमाः २०. १२७, १३.

ह्रमाः १. १७, ३; २. १०,
 ४; ३. ३, ३; ४. २; १२.
 ६; २४, ३; ४. २, ५;
 २०; २; २१, ५; ५.
 १३, ६; २८. १०; ६.
 २१, १; ८५, ३; ६८,
 २; २२२, ५; ७. १६,
 २; २०, १; ३५, २; ८.
 ७, १३; ६. ३, २३; ४,
 ६; १०. १, ११; ६, ६;
 ८, ३७; ३८. १०, ४;

११. १, १४; १७; २७;
४, १६; १२. १, ४२;
२, ३१; ३, ३०; १४.
२, ५२; १५. १५, ७;
६; १६, ७; १८. ३, ५७;
४, ३६; १६. ८, ६; ३२,
४; ४५, ४; ५३, ५; ७;
२०, ६, ८; ११, ५; १७,
८; ७५, २; १०४, १;
१३६, ११.

इमान् ६. १७, २; ५०, २;
७४, ३; ८४, २; ११. १,
११; १२. २, ३२; ५५;
१४. १, ५६; २, २६;
१८. २, २१; ३, ६२;
४, ५०.

इमानि ७. ६८, २; १०. ४,
७; १३. १, १४; १६. ६,
५.

इमाम् २०. १२७, ६.

इमाम् १. १८, २; २. ३६,
१; ३. १२, ४; ७; ८; ८;
१५, ३; ४; १६, ३; १७,
७; १८, १; ६. १२५,
३; १३३, १; ८. २, १;
६, ६; १६; १० (२),
२; ६. ३, १५; १०. २,
१८; ६, १२; ८, ३६;
११. १, ५; ६; ५, ६;
१०, १४; २६; १४. १,
३५; ३६; ५३; ५४; ५५;
५६; २, ४; २८; ५३—
५८; १५. १३, १३;
१८. २, ३८—४४; ४,
५; २०. ११, ८; ६१,
१; ११७, ३.

इमाशु २०. १३५, ६.

इमे २. ६, ३; ३. १, २; ४.
२४, १; ३८, ६; ५. ८,
२; ६. ८, ३; २८, २;
८८, १; १२६, ३; ७.
६०, २; ७६, २; ८. ८,
१६; २४; ६, ७; ६. ६,
१२; १०. ४, ११; ६,
३१; ७, ४४; ८, ३१;
६, १२; ११. १, १८;
२, ६; १२. १, १५; २,
२१; २२; १३. ४, १०;
२७; १४. २, ५६; १५.
१५, ८; १८. ३, ६१; २०.
६, ४; १५, ४; १७, ३;
२४, ५; ६६, ३; ८४, १;
८५, ३; ६६, १; १३५,
४; १४०, ३; १४१, ४;
इमे इति ३. ३१, ४; ५. १२,
६; २०, ७; ६. ५८, १;
८. ५, ३; १०. ७, ३५;
८, २; ११. ५, ८; ११;
१३. ३, १; १६. १५,
५; ३१, ११; २०. ८०,
१.

इमौ ४. १३, २; ६. ७८, २;
१०. २, ६; १४. २, ६३;
१८. २, ५६.

इयंक्षति १८. १, २३.

इयंक्षमाणाः ४. १४, ५.

इयथ ८. १, १०.

इयन्-इयन् २०. १३०, १७.

इयन् २०. १३०, १८.

इयम् १. ३४, १; २. ८, २;
२५, २; ३०, ५; ३६,
३; ४; ३. १०, ४; ४.

१, २; ४, ३; १६, ३;
३७, ६; ३८, ६; ५. २५,
२; २६, ६; ३०, १६;
६. १७, १; २; ३; ४;
६०, २; १०६, १; ७.
३८, ५; ५६, १; २; ७३,
८; ८. ४, ६; ६, ११;
१० (१), १; १० (२),
२; ६. २, १५; ४, ८;
५, २०; ६ (१), १७;
१०, ५; १२; १४; १०.
२, २४; ५, ४३; ८,
२६; ११. १, १; ६; ८;
११; ३, ११; ५, ४; ६,
४; १०, ४; ६; १२. २,
२७; ३, ६; ११; १४.
१, १८; ५२; २, २३;
१४; २०; २८; ६०; ६३;
७४; १५. १०, ६; १७,
१; १८. ३, १; ४, ५०;
१६. ६, ३; २०. १५,
५; १३२, १०; १४३; ७.

इयर्त ६. २२, ३.

इयर्ति २०. ७०, १४.

इयर्मि २०. ११, २.

इयर्मि २०. २५, ७; ३३, २;

इयानः २०. १२२, २; १३७,

७.

इयानासः २०. ६१, ८.

इयाश्म १२. ४, ४२.

इयाय १०. ७, ३१.

इरज्यति २०. ७०, १५.

इरज्यन्ति २०. १२, २.

इरस्यसि २०. १२६, ३.

इरा ६. ७, १२.

इरा १५. २, १६.

इरा-इव ३. २६, ६; ५. १३,
१.
इरा-क्षीरा १०. १०, ६.
इराम् ४. ११, १०; १६.
३१, ३; २०. १३२, १३.
इरा-वति ८. १०(२), ४;
१०(४), ६.
इरा-वन्तः ७. ६०, ६.
इरावेदुमयम् २०. १३०, १६.
इरिणा ४. १५, १२.
इर्यः ३. ८, ४.
इर्यः-इव १२. ३, ११.
इलयत् १. १७, ४.
इलयति १०. ७, ३७.
इलयन्ति १०. ७, ३७.
इव २०. १३३, ६.
इव २०. १३१, ७.
इव २०. १३१, १६.
इषः १८. १, ४२; ४, ४६;
२०. ८, १; ७१, १४.
इषण्यन्त २०. ६१, ८.
इषम् ३. १०, ७; ४. ३६, २;
४; ६; ८; ५. २०, ११;
६. २८, १; ६. १, २०;
५, २४; १८. १, २४; ४,
४; ८८; १६. ४०, ४.
इषवः २. ३, ६; ३. २६, १-
६; २७, १-६; ८. ८,
२०; ११. ६, १; १७. १,
२८; १६. १३, ११.
इषा ३. १५, ८; ७. ८०, १;
१६. ५५, १; २. २०.
२१, ४; ५.
इषाय २०. १२७, ३.
इषितः ५. १२, ३; ६; ६.
२७, १; २; १०. ८, ३५;

१२. २, ६; १८. ४, १;
२०. ८४, २.
इषितम् ६. ११६; २; १६.
५३, ५; ६.
इषिताः १०. ८, ३३; २०.
२४, ३.
इषिरः ६. ६२, १; १८. १,
२१; १६. १०, ४.
इषिरम् ५. १, ६.
इषिरस्य २०. १००, ३.
इषिरा १६. ४६, १.
इषिराः ६. ४६, ३; २०.
१६, ३.
इषिराम् २०. ६३, ३; १२४,
६.
इषीकाम् १२. २, ५४.
इषीकाम्-इव ७. ५६, ४.
इषु-अग्राणि ११. १०, १६.
इषु-आयुधे ५. ३१, ७.
इषु-आसः १५. ५, २; ५;
७; ६; ११; १३; १५.
इषु-आसम् १५. ५, १; ४;
६; ८; १०; १२; १४.
इषुः ३. २५, १; ३; ५. १८,
१५; ७. ५२, २; ११. २,
१२; १६. ५५, २.
इषुः २०. १२७, ६.
इषुः-इव ५. १८, १५.
इषुका १. ३, ६.
इषु-धिम् ३. २३, २.
इषु-धौ ४. १०, ६.
इषु-भृताम् ४. २८, २.
इषु-भ्यः ३. २७, १-६.
इषुम् १. १३, ४; ३. २५, २;
६. ५७, १; ६०, १; ८.

८, २०;
१२. ४,
३.
इषु-मतीभ्यः १२. ३, ५६.
इषु-मते १२. ३, ५५; ५६;
५७; ६०.
इषु-मत्यै १२. ३, ५८.
इषु-मन्तम् ४. २४, ५.
इषु-हस्तेन १६. १३, १.
इषु-हस्तैः १६. १३, ४.
इषुः ८. ३, ६; ११. ६, ६.
इषूनि २०. १३०, १.
इषे ७. ७३, १.
इषे २०. ३६, ५.
इषो इति ४. ६, ६.
इष्टम् ६. ५, १३; ६(३), १;
११. ७, ६; १२. ५, १०;
५, ५६; १६. ७२, १.
इष्टयः ११. ७, १६.
इष्ट्यै ७. ४, १; २०. १५, २.
इष्ट-वन्तः १८. ३, २०.
इष्टस्य १८. १, १६.
इष्टा ५. ३, ४.
इष्टानि ६. ६, १६.
इष्टापूर्तम् २. १२, ४; ३. १२,
८; ६. १२३, २; १८.
२, ५७.
इष्टापूर्तस्य ३. २६, १.
इष्टापूर्तेन १८. ३, ५८.
इष्टे ७. १४, ४.
इष्टौ २०. ६४, ६.
इष्टा ६. ६(४), २; ४; ६; ८;
१२. २, ५४.
इष्णान् ११. ५, १.

(४, ७६४)

इष्टानः—ईक्षते.

इष्टानः २०. ३५, १३.

इष्टानामि ८. ८, १४; १५.

इष्ट्यति १८. १, २३.

इष्ट्यन् २०. ३५, १२.

इष्ट्यामि २०. १३७, ८.

इष्ट्याः ५. ५, ४; १०. १, २७.

इष्ट्याः ५. १४, १२.

इह १. १, ३; ५, २; ७, ७; ८,

१; ६, ३; १०, ४; १५,

२; ३१, ३; २. ५, १; ४;

६, ४; १२, १; २६, १; ३.

३, १; ६; ४, १; ७; ८,

४; ११, ६; १२, १; २;

१३, ७; १४, ४; ५; ६;

१६, ५; १७, २; ७; २०,

२; ६; २४, ३; ५; ७;

२८, ३; ४; ३१, ६;

४. २१, १; २५, ५; ३१,

५; ३८, १; २; ४; ६;

७; ५. ३, ४; ६; ६, ५;

६; ७; ८, १; ११, १;

१२, ८; १०, ११;

२५, ७; २६, १; ४; ५;

२८, ३; ३०, १; ६; ११;

१७; ६. ११, ३; २७, ३;

३२, ३; ४०, १; ५५, १;

५८, १; ६२, ३; ६३, ३;

७३, १; ७४, ३; ८४,

४; ८७, २; ८८, ३; ९७,

२; ९८, १; ११४, २;

११७, २; १२१, ३; ७.

२, १; ४, १; ५, ५;

६, ३; १०, १; १२, ४;

४०, २; ५०, ३; ५२, १;

५३, २; ५; ६०, ५; ७;

६७, १; ७३, २; ७४, ४;

७८, १; २; ८२, ३; ८४,

१; ८५, १; ९७, १;

१११, १; ८. १, १;

३; ७; १८; २, ६; ७;

३, ८; ७, ६; ७; १०; ६.

२, ८; ४, ६; २३; ६, ५;

१८; १०. १, २०; ४, ६;

११. १, १; ४; १०; ८,

३३; १०, ६; १२. २, ८;

२१; ३, १२; १३; ४३;

१३. १, २; ४; ५; १०;

१७; १८; १६; ३६; १४.

१, २१; २२; ३२; २,

१५; १८; १६; २४; २५;

२६; ३१; ३२; ३७; ३६;

६३; ७१; ७४; १८. १,

७; ६; २५; ३६; ४५;

५६; २, १३; २१; २४;

२६; ३७; ५७; ५६; ३,

१; १४; २५-३५; ४३;

४४; ४५; ६१; ७३; ४,

१२; १३; १६-२४; २,

३८; ६६; ८७; १६.

६, २; ६, १४; १०, ६;

४८, ४; ४६, ३; ५२, ४;

५३, ६; ७२, १; २०.

६, ६; २०, ४; २२, ३;

२३, ८; २४, ४; २५, ७;

३३, १; २; ५७, ७; ६७,

५; ७७, १; ६२, ८; ६६,

१; २; ६७, १; १०१, ३;

१२७, १२; १३४, १;

२; ३; ४; ५; ६; १३७,

२.

इह-इह २०. १२५, २; १४३;

७.

इह-कृतः १८. ४, ३८.

इह-चित्तः १८. ४, ३८.

इह-भोजनौ १८. ४, ४६.

इहि १६. ४६, ७.

इहि १. १, २; २. ५, ४; १३,

४; २५, ४; ३. २, ५;

४, १; ५; ६; ४. ८, २;

६, १; १२, ६; १४, ५;

१५, ११; ३१, ३; ३२,

३; ५; ६; ७; ३८, ६; ५.

४, १; ५, ५; ६; ७, ७;

२२, २; ३०, ६; ७; ६.

१६, ३; ४५, १; ६८,

१; ७. ८, १; ८८, १;

११७, १; ८. १, ८; ६;

१०(२), ४; १०(४),

१; ५; ६; १३; १०(५),

१; ५; ६; १३; ६. ५, ८;

१०. १, ७; १६; २०;

२४; २५; २६; २८; ४;

६; ६, ३; ११; ११. १,

१३; १०, १८; १२. २,

१; २१; ३, १; १३. १,

२०; १४. २, ३४; ३५;

१७. १, ६; ७; १८.

१, ५४; २, ११; २१;

६०; ३, २; ८; ५८; ७३;

१६. ३, १; २; २०. ५,

३; ५; ८, २; ६८, ४;

७१, ७; ६६, २४; १२६,

२०; २१.

इहो २०. १२७, १२.

(इहउडति) इहो इति. ३.

१४, ४.

इ

ईक्षते ६. ६(१), ३.

ई-जन्ते ४. १४, ४; १४. १,
३६.
ई-जन्माणाः ६. ७, २३.
ई-जन्माणा १२. ५, २०.
ई-जयन्तु ४. १५, २.
ई-जयस्व ४. १५, ३.
ई-ज्ये १२. १, ५८.
ई-ज्ययन्ति ६. १०, २७.
ई-ज्ययन्तीः २०. ६३, ४.
ई-जाते इति १३. १, ४७;
४६; ५०; ५१.
ई-जानः १८. ४, १४.
ई-जानम् १८. ४, १; १०;
१३.
ई-जानाः १८. ४, २.
ई-जानानाम् ६. ५, ८; १२.
ई-जिरे ७. ५, ४.
ई-डते १४. १, ३७.
ई-डते ४. ३२, २.
ई-डानः ५. २७, ४.
ई-डामहे १४. २, ३३.
ई-डितः १८. ३, ४२.
ई-डिता ४. ३१, ४.
ई-डो ७. ५०, ३.
ई-डो ४. २३, ३; ५. १, ८;
१४. २, १६.
ई-ड्यः २. २, १; ५. १२, ३;
६. ६८, १; ११०, १; ८.
३, २६; १६. ५६, १;
२०. १०१, ३.
ई-ड्यम् १७. १, १-५.
ई-दृक् ४. २७, ६.
ई-दृशे ३. १, २; ७. १०६,
१, ७.
ई-दृशन् ६. ५, १२.
ई-म् ४. ३०, ४; ६. ६, ५;

१०; १५; १०, १०२;
१८. १, ७; २०; २, ४;
२०. ५, ५; १८, २; ३४,
५; ५१, ४; ५३, १; ५४,
२२; ५६, १; ५७; ११.
६८, ७; ७१, ८; ६१; ५;
७; ६२, १४; ६४, ३;
६५, १.
ई-म् २०. १३५, ८.
ई-मसि १०. ४, ६.
ई-महे २०. ७०, ६.
ई-महे ४. २३, १; ६. ३६,
१; १८. ४, ६१; २०. ६,
२; १६, ३; ६; २४, ६;
३६, ३; ४६, ५; ५२, ३;
५७, १६; ६३, ७; ८; ६;
१०३, ३; १०८, २.
ई-यतुः २०. १०५, २.
ई-यते १२. १, ५१; २०. ३१,
२.
ई-यते ४. ३४, ४; १६. ५३,
२; ५४, ५.
ई-यन्ते ११. ८, २६.
ई-यमानः १५. १, १.
ई-यमानम् ११. २, १७.
ई-यसे ४. १३, ३.
ई-यसे ५. ६, ४.
ई-युः १८. १, ४४; ४६, २,
५५.
ई-युः ६. ६, ८.
ई-रताम् ३. १६, ६; १८.
१, ४४.
ई-रते २०. १२७, ५.
ई-रते १६. ८, ६.

ई-रते ४. २५, ३; १३. २,
१; १६. ३८, २; २०.
१०, १; ५६, १.
ई-रय ५. ३०, १४; ६. ३४,
१; ७. ६७, ३; १८. १,
२३; २०. ७६, ५.
ई-रयत ४. १५, ५.
ई-रयन् ४. १५, ११.
ई-रयन्ताम् ५. १, ३; ६.
६१, १.
ई-रयस्व १४. २, ३८; १७.
१, ११.
ई-रयामः ५. २६, ५.
ई-रयामसि ८. २, ५.
ई-रयेथाम् ५. १, ४.
ई-रसीः ५. ७, ६.
ई-र्मा २०. ६४, ६.
ई-र्माभ्याम् १०. १०, २१.
ई-र्ष्याम् ६. १८, ३; ७. ४५,
२; ७४, १.
ई-र्ष्यायाः ६. १८, १; ७.
४५, १.
ई-र्ष्याः ६. १८, २.
ई-र्ष्व १८. ३, २.
ई-लते २०. १०२, १.
ई-लय ६. १६, ३;
ई-लिष्व २०. १०३, १.
ई-लेन्यः २०. १०२, १.
ई-वतः २०. १२, १.
ई-वते २२. ६०, २.
ई-शत ४. २१, ७; ७. ७५,
१; १६. ४७, ६२.
ई-शत २०. १२७, ११.
ई-शते ५. २१, ७.
ई-शते २०. १७, ३.
ई-शा ११. ८, १७.

ईशाथे इति ४. २८, १-६.

ईशाथे इति २०. १७, १२;
८७, ७.

ईशानः ३. १५, १; ६. २,
३; ७. १७, १; १८, १;
६. २, ३; ११. ७, १६;
६, ४; १५. १, ५; ५, २;
५; ७; ६; ११; १३;
१५, १४, १६; २०. ५,
३; ३५, ६; १२; १५;
६३, ४; ६६, ८; ७०,
१४; १३७, ५.

ईशान-कृत् २०. ३५, ११;
१०४, ४.

ईशानम् १५. ५, १४; २०.
६८, १२; १२१, १२.

ईशानाः १. ५, ४; ४. २७,
४; ५; ११. ६, २६.

ईशानाम् ४. १७, १.

ईशाम् ११. ६, २५; १०,
२; १५. १, ५.

ईशिध्वे ४. २७, ६.

ईशिध्वे २. २८, ३; ६. ७६,
३; २०. ६३, ३; ६४, ५.

ईशीय २०. २७, १; ८२, १.

ईशो २. ३४, १; ३. १५, ३;
४. २, १; ११, ५; ६.
२८, ३; ११. ४, २३;
२४; १३. ३, २४.

ईशो ६. ८६, २; ८. २,
२३; ११. २, २७; २०.
१२६, १६; १७.

ईशमहे ४. ३८, ७.

ईश्वरः ११. ४, १; १०; १६.
६, ४; ५३, ८.

ईश्वराः ७. १०२, १.

ईश्वरानः २०. १२७, २.

ईषतु ११. ६, २१.

ईषा ८. ८, २३.

ईशा-युगेयः २. ८, ४.

ईषिरे ५. १६, ३; १६. २६,
२.

ईषे इति ११. ३, ६.

ईष्यन्तम् १८. २, ५३.

उ

उक्तम् १. ३०, २; ४. ३०,
४.

उक्ता १२. १, ५५.

उक्थम् ६. ३५, ३; २०. ६०,
६; ७१, ६; ७७, २; ६१,
१.

उक्थ-मदानि ५. २६, ३.

उक्थ-वर्धनः २०. २६, १.

उक्थ-वाहः २०. ३३, १.

उक्थ-शसः १८. ३, २१;
२०. ३७, ६.

उक्था २०. ३७, ६; ६६, ६;
८५, १.

उक्थानि २. १२, २; २०.
४४, २; ६४, ८.

उक्थिनः २०. ५२, २; ५७,
१५; ६१, ३.

उक्थे २०. १११, ३.

उक्थेमिः २०. ११, ७; १८,
१; २४, ४.

उक्थेषु ६. ३५, २; २०.
२३, ४.

उक्थैः ७. ६३, १; १८. १,
४३; ४, ४७; २०. ३५,
१३; १४०, ४.

उक्थ्यः ११. ७, १०; १८.
१, २२; २०. २५, ६.

उक्थ्यम् ७. ४७, १; ४८, १;
१२. २, १०; २०. २५, ३;
३०, ५.

उक्थ्या २०. १४२, ६,

उक्थ-अत्राय ३. २१, ६; २०.
१, ३.

उक्थ्याः ४. २४, ४; २०. १२६,
१३.

उक्थ्याम् १८. ३, १८.

उक्थ्याम्-इव ३. ११, ८.

उक्थत ५. २८, ४; ७. ७५,
२.

उक्थतु १०. ३, १७; १८; १६;
२०; २१; २२; २३; २४;
२५; १२. १, ७; ६.

उक्थन्तु ३. १२, ४.

उक्थन्तु १८. २, २२.

उक्थमाणा ३. १२, १.

उक्थाम् ६. १०, २५.

उक्थामि १६. २७, ५.

उक्थिता ५. ५, ८.

उक्थः २०. १२६, १४.

उक्थम् ११. ३, १८.

उक्था १२. ३, २३.

उक्थान् ४. १४, २.

उग्र १. १०, २; ४; ११. २,
१०; २१; २०. ७३, २.

उग्र-आयुधाः ३. १६, ७.

उग्रः २. २६, ४; ३. ४, २; ३;
४; ७; १२, ६; ४. ८, २;
६, ४; १६, ८; ५. २, १;
८, ६; १६, ६; ६. १६,
१; ८. ५, २; ६. २, ३;
७; १४; १०. २, ६; ११.
१, १५; १२. ५, २१;
१३. ३, १६; १५. ५;

६; १८. ३, २३; १६.
१३, ५; ७; ३२, १; ३४,
७; ६; ५२, २; ६५, १;
२०. १४, २; ५३, ३;
५७, १३; ६२, २; ७०,
१०; ७६, ३; ८६, ७;
१०७, ४.

उग्र-जितौ ६. ११८, १.

उग्रतम् २०. १३६, १३.

उग्र-धन्वा ८. ६, १८; १६.
१३, ४.

उग्र-बाहवः ३. १६, ७.

उग्रवाहुः ४. २४, २.

उग्रम् ३. ५, ४; १६, २; ४.

१३, ५; २७, ७; ३०,

३; ३१, ३; ३६, ८; ५.

३, १०; १७, १; ६.

५७, २; ६७, ३; ६६,

१; ८. ५; १६; १०. ४,

३; ४; ६; ६; ७; ८; ६;

१०; १२. १, १; १५.

५, ८; १८. १, ४०;

१६. १३, ६; १०; ३३,

४; २०. ११, ११; ५४,

१; ५५, १; ६३, ६; ८०,

२; ६२, १६; ६४, ३;

१३२, ६.

उग्रम्-पश्याः ७. १०६, ६.

उग्रपश्ये इत्युग्रम्-पश्ये ६.

११८, २.

उग्रपश्ये इत्युग्रम्-पश्ये ६.

११८, १.

उग्रस्य १. १०, १; ६. ७३,

१; २०. १२७, ११.

उग्रा २. २५, १; ८. ८, ६;

६. १, ३; १०; १६.
१५, ४.

उग्राः ३. १, २; १६, ७; ५.

२१, ११; ६. ७४, ३; ८.

७, ४; १०; १३. १, २;

१६. ३४, ८.

उग्रभिः २०. ७०, १०;

उग्राम् २०. २५, ७; ३३, २.

उग्राय ७. १०६, १.

उग्रासः २०. ६४, ३.

उग्रोणाम् ४. २४, २.

उग्रेण ५. १३, ३; २३, २.

उग्रैः ५. १३, १.

उग्रौ ४. २८, ३; ६; ८. ६,

२०; ११. २, १४.

उग्रौ ४. २८, ७.

उग्रा १३. २, ३६.

उच्चैः ४. १, १.

उच्चैः-घोषः ५. २०, १.

उच्चैः-घोषा ६. १, ८.

उच्यते २. १४, ३; ६. २६,

३.

उच्यते ६. ६ (१), २; १०.

२, २८; ३०.

उच्यते ३. १३, ४; ४. २१,

६; ५. १८, १४; ६. ४३,

१, २; ६. २, ५; १०.

२, २३; २३; ११. ४,

१३३; १५; ८, ३४;

१३. ५, १७-१८.

उच्यते ४. ६, १०; १२. ४,

४; ५, ५३.

उच्यते १६. ४४, १.

उच्यते इति १६. ६, ५.

उच्छ्रुत २. ८, २; ३; ४; ५;

३. ७, ७; ६, ८३, १; ७.

६८, १; ८. ४, २३; १४.
२, ४८; १६. ६, २.

उच्छ्रुत २. ८, २; ३. १६, ७.

उच्छ्रुत ११. ४, २१.

उच्छ्रोचन-प्रशोचनौ ७. ६५,

१.

उत् १. २०, १; २२, १; २६,

५; २. ३, ४; ६, २; ८,

१; ६, १; २. १०, ६; ३.

४, १; ६, ५; ६; ११, ८;

१२, २; १३, ४; १६, ३;

१७, ३; ६; १६, ३; ६;

२४, ४; २५, १; ३१,

१०२; ११; ४. १, ३; ३,

१; ४, २५; ४; १२, ६;

१३, १; १४, ७; ६; १५,

३; ५; १६; २०, ८; २७,

४; ५. ६, ८; १३, १२;

३; १४, ११; २०, ८;

११; २३, ६; ३०, ११;

६. ५, १; २२, १; ३६,

२; ५१, २; ५२, १; ७६,

१; १०२, ३; १०६, ३;

११२, २; ११६, १; १२०,

१; १२१, २; ३; १२७,

१; १३०, ४; १३४, २;

१४२, १; २; ७. २६, २;

५०, ४; ५२, २; ५३, ७;

७२, १; ८०, १; ८३, ३;

६५, १; १; १०३, १;

११३, १; ८. १, २; ३;

४; १६; १७; १८;

१६; २, ८; १५; २३;

४, ४; ७, २१; २८; ६,

१; ६; १४, १; ५; ६;

१३; १०(१), २; ४; ६;

ऋ; १०; १२; १०(२), १;
 १०(३), १; ३; ५; ७;
 १०(४), १; ५; ६; १३;
 १०(५), १, ५; ६, १३;
 ६. २, २; ५, ६; ६(२),
 २; ६(५), २; ५; ७; ऋ;
 ६, १७; २१; १०, २२;
 १०. १, १७; २०; २६;
 ३१; ७, ४३; ऋ, २६;
 १०, १६; २२; ११. १,
 ७; ६; १४; ४, २१; ५,
 ५; ६, २; ३; ५; ६; १२;
 १३; १८; २१२; २६; १०,
 १; ५; १२. १, ३०; ३६;
 २, ५; २६; २७२; ३,
 १५; २६; ३०; ३५; ३६;
 ४६; ५३; ४, २४; ५,
 ७२; १३. १, २; २३;
 ३६; ४१; ४३; २, १;
 ६; १६; २०; ३५; ३,
 १-२५; १४. १, ३८;
 ३६; ५७; ५६; २, १६;
 १६२; ३३; ३६; १५. २,
 १; ६; १५; २१; १०, ३;
 १७. १, ६३; ७३; २४;
 १८. १, १०; २३; ४४३;
 ६१; २, २२; २३; ४३;
 ३, २; ऋ; ५०; ५२; ६५;
 ४, ६६; १६. १०, ऋ;
 १३, १०; १६, १-११;
 २७, ऋ; ५४, १; ६३, १;
 २०. ७, १; १०, १; १२,
 १; १६, ७; १७, ६; ११;
 २०, ३; २८, २; २६, ३;
 ३६, ३; ४७, १३; १७;
 ५७, ६; ५६, १; ३; ६४,
 ५; ७१, १०; ७३, २; ५;

ऋ, ५; ६१, ३; ४; ऋ;
 ६२, ४; ६३, १; ६; ६४,
 ११; १०७, १४; १३७, २.
 उत १. ४, ४; ऋ, ३; ६, १;
 २; ४२; ११, २; १२, ३;
 १५, २; १७, २; १८, ४;
 १६, ३; २२, ३; २८,
 ४; ३०, १२; ४; ३१, ४;
 ३५, ३; २. १, ३; ६, ३;
 ४; १२, १; २८, ३; २६,
 ३; ३२, ४; ३४, १; ३.
 ५, ५; ६, ऋ; ७, ७; १०,
 ६; ११, १; १३, ६; १४,
 ४; ५; १६, १; ४५; १६,
 ४; २०, ३; ऋ; २१, ३;
 २८, २; ३०, ३; ४. २;
 ७; ऋ; ३, २; ४, ५३;
 ६, ३; ५; ६; ७, ६;
 ऋ, ५; ६, ३३; ६; १०,
 ३; ११, १; १३, १२;
 १४, ५; १५, ७; ६; १६,
 ३३; ४; १६, ३; २०,
 ४; ऋ; २१, १; २२, ५;
 २५, ५; २८, २; ५; २६,
 ५; ६; ३०, १; ३; ६; ७;
 ३२, ६; ३७, ५; ५. १,
 ७३; ऋ; ७, ऋ; १२, २;
 १३, १; १७, ऋ; १८, ६;
 १०; २१, ११; २२, १३;
 २३, ७; ऋ; ११; ३०, १२;
 ३१, ५; ६. ३, १; ३;
 १८, १; २; २१, ३; २७,
 ३; ३८, १; ४१, १;
 ५६, २; ६०, १; ३; ६१,
 १; २; ३; ७१, १; ३;
 ६२, २; ६३, २; ६५,
 ३; ६६, २; ६८, ३;

१०६, १; ११३, २; ११६,
 १; १२०, १; १२६, १;
 १४१, ३; ७. ५, ५२;
 ११, १; २६, ऋ; ३५,
 २; ३; ३८, ३; ४६, २;
 ५०, ५; ६; ५१, १२;
 ५६, ६; ७३, ७; ७४, २;
 ८०, १; ६५, ३; ६७, १;
 १११, १; ११२, २; ऋ.
 ३, ३; ५३; ७३; १६;
 २०; ४, २२३; २४; ५,
 ६३; ६, १; ५; ६; १७;
 २१; ७, १; २७; २८; ऋ,
 १४; ६, २४; ६. १, २;
 २, १४; २४; ३, १; ५,
 १५; १०, ४; १०. १,
 २७३; ३, १३; १४; १५;
 ४, ५; ७, १६; ३२; ऋ,
 १२; १७; २३; २५; २७;
 २८४; १०, १; ३४; ११.
 १, १८; ३४; २, ४; १५;
 २६३; ४, ७; १६; ५, ४;
 ६, १; ३; ऋ; १७; २१;
 ६, १५; २१; २४; १२.
 १, ३; २५; २८; ३२; २,
 १७; ३, ११; १२; ३६;
 २७३; ४, १८; ५०; १३.
 १, १५; ३८; २, २६३;
 ३, ७; १४. १, १०; २८;
 ४४३; २, ४८; ६६; १७.
 १, १२; २६; १८. १, ५;
 ४८३; २, ३३; ४६; ३,
 ५३; ५५; १६. १, २; ६,
 ४; ११, ४; ६; १५, ३;
 २२, २१; २३, ३०; ३२,
 ४; ३५, ४; ४४, ६; ४८,
 ४; ५०, ५; ५३, ५; ५६,

४; ६२, १३; २०. न, १;
 ११, २; न; ६३; १७, ३;
 ५; ११; १२; १६, २; २१,
 न; २३, ७; २६, १; ३२,
 ५; ३४, ५; ३७, ५; ५४,
 १; ५६, १; ६०, १; ६७,
 २३; ४; ६८, ५; ६; न१,
 १; न७, २३; ७; न६, ६;
 ११२; ६१, ३; ६२, ५;
 २०; ६४, ११; ६६, ६;
 १०६, १; ११३, २;
 १२५, ३; १२६, ६; १४;
 १३५, न३; १४०, ५;
 १४१, १३; १४३, ६.
 उतउहति २०. १३५, न.
 उत-इव ६. २०, १; १२. ३,
 २७.
 उत-अकल्पयन् १२. ४, ४१.
 उत-अगाः २०. ११२, १.
 उत-अमराम १६. ७२, १.
 उतम् १४. २, ५१.
 उत-अयत् न. ४, ३.
 उत-अयनम् प. ३०, ७.
 उत-अवन्तौ ७. ६५, २.
 उत-अवस्यति ६. ६(६), ६.
 उत-अस्थः १. १६, १.
 उत-आकुल १२. ४, ४१.
 उत-आगाम् १४. २, ४४.
 उत-आचरत् ४. ५, १.
 उत-आजत् २०. ३४, ३.
 उत-आनद् ६. ७७, २३.
 उत-आयच्छतु प. ३०, १५.
 उत-आयते १७. १, २२.
 उत-आयन् ११. १, ३७.
 उत-आय्यम् १०. १, ७.
 उत-आराः ११. १०, १.

उत-आराः ११. ६, १६.
 उत-आराणान् ११. ६, ६.
 उत-आरान् ६. ११३, २; ११.
 ६, १; १५; २२; २४.
 उत-आरे प. ११, ३.
 उत-इतयः १०. २, १०.
 उत-इताय १७. १, २२.
 उत-इते ४. २५, ३.
 उत-इतौ ३. १६, ४; ७. ५, ३.
 उत-इत्य १८. २, ४७.
 उत-इव प. १६, १; ६. ७१,
 २.
 उत-इरते १. २०. २; ६. ६६,
 २; २०. ५६, ३.
 उत-इराणाः १२. १, २८.
 उत-उह्य १६. २५, १.
 उत-ऋचि ६. ४८, १; २;
 ३; २०. २१, ११.
 उत-पत् ११. ६, १८.
 उत-पति १०. न, १६; १३.
 ४, ७.
 उत-पत्य १२. ४, ४१.
 उत-पहि प. ३०, ११; ११.
 १, २१; १३. १, १.
 उतो इति ४. १६, ३; १६,
 १३; १०. ७, २१; न, २६;
 १८. १, ४८; १६. ३५,
 ५; ४७, ३; २०. ७२, ३;
 ११२, २; १३५, न.
 उत-कूलम् १६. २५, १.
 उत-खिदन् ४. ११. १०.
 उत-खिदन्ती १२. ५, १६.
 उत-खिवेत् ११. ४, २१.
 उत-गीथः ११. ७, ५; १५.
 ३, न.
 उत-गृहणन् ६. ६(५), ७.

उत-चरन् ११. ४, २१.
 उत-चरन्तम् ६. ६२, ३; न.
 ४, २४.
 उत-चरातः २०. १६, १०.
 उत-जिहानाः १३. २, ४६.
 उत-जैवे ४. १७, १.
 उत-ततम् २. ७, ३; ७. ६०,
 ३.
 उत्तमिता १४. १, १३.
 उत्त-तमः ३. ५, २; प. ४,
 ६२; ६. १५, १; २; ३३;
 न. ५, ११; १६. ३६, ४.
 उत्त-तमम् १. ६, २; ४; २.
 ३, २; न, १; ३. ७, ४;
 ४. १४, ६; ६; २२, ५;
 प. १३, २; ६. ६३, ३;
 न४, ४; ७. ५३, ७२;
 न३, ३; ११. १, ४;
 ३०; ३७; १२. ३, ४५;
 १८. ३, ६४; ४, ६६.
 उत्त-तमा ६. २१, १.
 उत्त-तमाः ६. १२१, १; ७.
 न३, ४.
 उत्त-तमानि प. ४, न; ७.
 ७३, १०.
 उत्त-तमाम् ६. ५, २६; १५.
 ६, ७; १८. ३, ६४; २०.
 १३५, २.
 उत्त-तमे ११. ४, ११; १८;
 १२. १, न.
 उत्त-तमेन १. ६, ३.
 उत्त-तमेभ्यः १६. २२, १२.
 उत्तरः ४. २२, ६; प. २८,
 १०; ११. न, १८; १२.
 १, ५४.

उत्-तरः २०. २६, ५; १२६,
१-२३.

उत्तरः ३. ५, ५.

उत्-तरः १६. ४६, ७.

उत्तरतः ४. ४०, ४; १८.
४, ६.

उत्तर-स्वे ३. ८, ३.

उत्तर-द्रौ ६. ४६, २.

उत्तरम् ४. १४, ८; ११. ५,
६; १२. ३, १०.

उत्-तरम् २. २७, ७; ४.
३१, ६; ६. ५४, १; २;

७. २६, १; १०. ६, ३१;

७, ३; ११; १८. ४, ५१.

उत्-तरम् ६. ५, १.

उत्तर-वत् १२. ३, १०; ४७.

उत्तर-वन्तम् ४. २२, ५; १०.
८, २२.

उत्-तरस्मात् ७. ५१, १;
२०. १७, ११; ८६, ११;
६४; ११.

उत्तरस्मिन् ११. २, २५.

उत्-तरस्मिन् १. ६, १.

उत्तरस्याम् ४. १४, ८.

उत्तर-हनुः ६. ७, २.

उत्तरा ६. १६, ४.

उत्-तरा ३. १८, ४२; १०.
३, २४; २५; १८. १, ११.

उत्-तराः १६. ७, ४.

उत्-तराणि २०. ६१, १०.

उत्तरात् ६. ४०, ३; ८. ३,
३०; ५, १७; १०. ६, ८;

११. २, ४; ६, १८; १२.

१, ३२; ३, २४; १८. ४,

११; १६. १६, १; २७,

१४; ४८, ४.

उत्-तरात् १६. १५, ५.

उत्-तराम्यः ३, १८, ४.

उत्तराम् ६. ११८, ३; ८. २,
१५.

उत्तराम्-उत्तराम् ३. १०, १;
१७, ४; १२. १, ३३.

उत्-तरे १६. १३, ११; २०.
७०, १३.

उत्-तरे ३. १८, ४.

उत्तरेण-इव १०. ८, ४१.

उत्तरेभ्यः ६. १३४, २.

उत्-तरेभ्यः १६. २२, १३.

उत्-तरौ १०. २, ३.

उत्तयाम् २०. १३५, २.

उत्तस्थि-वांसः ६. ६३, १.

उत्तान-पर्ण ३. १८, २.

उत्तानयोः ६. १०, १२.

उत्तान-शीवरीः ३. २१, १०.

उत्तानाः १२. १, ३४.

उत्तानायाम् ६. ६, १४.

उत्तानायै २०. १३३, ४.

उत्-तिरः १६. ३२, १.

उत्-तिरन् ६. ३६, २.

उत्तिष्ठ २०. १२७, ११.

उत्-तिष्ठन् २०. ४२, ३.

उत्-तदः ३. २५, १.

उत्थातुः ६. ४, १४.

उत्थाय १६. ३१, १२.

उत्थितः ६. ४३, २; ६. ७,
१६.

उत्थितम् ३. १५, ४.

उत्थिता ६. ४४, ३.

उत्-नयन्तीम् ८. ७, ६.

उत्-निनाय १३. २, ४.

उत्-पतन्तम् १६. ६५, १.

उत्-पुलिङ्गम् १६. ४, १४.

उत्पन्न २०. १३०, १३.

उत्-पाताः १६. ६, ७.

उत्-पारणस्य ५. ३०, १२.

उत्-पिपानः ५. २०, ७.

उत्-पिपानम् १३. १, ३१.

उत्-भरन्ती ११. १, ६.

उत्-भित् ५. २०, ११.

उत्-भिन्दतीम् ४. ३८, १.

उत्-भिन्नम् १०. ५, ३६; १६.
८, १; ५-३०; ६, १. •

उत्-भु ६. २, १६.

उत्-भूतम् २. ३, ५; ६.
१२५, २; ७. ४५, १.

उत्-भूता १. २४, ४.

उत्-भ्यसाः ११. ६, १७.

उत्-भवीः १७. ४, २६; ४३.

उत्-मज्ज्य १०. ४, ४.

उत्-भक्तम् ६. १११, ३.

उत्-मदितम् ६. १११, ३.

उत्-ममार्ज ८. ६, १.

उत्-मञ्जन्तीः ८. ७, १०.

उत्-मृजानः १८. ३, ७३.

उत्-यतः ४. २४, ६; ८. ८,

१२; १२. ३, १८.

उत्-यतम् २०. ६२, ६.

उत्-यतानि ५. ११, ६.

उत्-यते १७. १, २२.

उत्-यत्य ८. ८, १२.

उत्-यन् २. ३२, १; ७. १३,
१; २; ६. २, १५; ५,

३५; ६(५), ४; ८. २३।

१२. १, १५; १३. १,

३२; २, १०; २८; ३४;

३, १३; १७. १, ३७।

१६. २८, ४; २०. १०७,
१३.
उत्-यन्तम् ६. ७६, २; ६.
५, ३५.
उत्-यमीयली २०. १२६, ६.
उत्-यानम् ८. १, ६.
उत्-गुणम् ५. २२, ११.
उत्-युज्ज ६. ७०, ३.
उत्-युतम् ६. १११, २.
उत्-लुप्तः १६. ३३, २; ४६,
६.
उत्-लुप्तम् ५. २८, १४.
उत्-वतः १२. १, २.
उत्-बृहः १६. २५, १.
उत्-वाचनम् ५. ८, ८.
उत्-वीता १२. ५, १८.
उत्-वेपमानाः ५. २१, २.
उत्-वेपयति ६. ८, ६.
उत्-शिषातै २. ३१, ३.
उत्-शिष्टः ११. ७, १५, १६.
उत्-शिष्टम् ६. ५(६), ६.
उत्-शिष्टात् ११. ७, ११;
२३-२७.
उत्-शिष्टे ११. ३, २१; ७,
१३; २२; ३२; ४; ५२;
६-१०; १२, १३; १४२;
१७-२२.
उत्-शोचनौ ७. ६५, १.
उत्-शोचयन् ५. २२, २.
उत्-श्रितम् १३, ४, ३.
उत्-श्रेयः १६. १४, १.
उत्-शुद्धौ १०. २, १.
उत्-श्वश्रमाना १८. ३, ५१.
उत्-श्वसे १८. ३, १८.
उत्सः ६. १०६, १; २०.
११८, २.

उत्-सन्नाः ११. ७, ८.
उत्सम् ३. २४, ४; ४. २७,
२; ३१, ५; १७. १, १५;
१८. ४, ३५; ३६.
उत्साः ४. १५, ७; ६.
उत्सासः १. १५, ३.
उत्सितः ६. ११२, ३.
उत्सिताः ६. ११२, २.
उत्-सिखसतः २०. २६, ४.
उत्स्याः १६. २, १.
उत्-हर्षिणम् ८. ६, १७.
उत्-हृत्य १६. ६८, १.
उत्थामः २०. १३५, १; ३;
५२.
उदक् २०. १२०, १; १३४,
१; २; ३; ४; ५; ६.
उदक-आत्मानः ८. ७, ६.
उदकम् ३. १३, ४; ५. १४,
१३; १६, ८; ६. १००;
२; १३६, ४; ७. ७३,
११; ६. ५, ५; ६(१),
४; ६(४), ६; १०; ६(५),
८; ६, ५; १०, २०; १०.
८, १४; १२. ३, ३०;
१५. ११, ३; ४; १३,
१३.
उदकस्य १. १५, ४.
उदके ४. १६, ३.
उदकेन ४. ३४, ६; ७; ६.
६८, १.
उदकेषु ६. २, ६.
उदक्तः ८. ३, १६; ४, १६.
उदङ् ५. ४, ८; ६. ७; २१.
उदञ्चः २०. १२६, २२.
उद-धिम् ४. १५, ६; ११.
उद-धेः २०. ६१, ५.

उदधेः-द्वय १. ३, ८.
उदनि २०. १६, ८.
उदन्-वती १८. २, ४८.
उदन्वतीः १६. ६, १.
उद-पूः १८. ३, ३७.
उद-प्रुतः ६. २२, ३; १८.
२, २२; २०. १६, १.
उद-मुतम्-इव १०. ४, ३; ४.
उद-भिः २०. १००, १.
उद-र-दारः ११. ३, ४२.
उदरम् ४. १६, ७; ३४, १;
६. ३, १५; ७, १६; १०.
७, ३२; १०, २२; ११.
५, २५; १५. १, ७; २०.
१२६, २३.
उदरात् २. ३३, ४; ६. ८,
६; ११; १२; १०. १०,
२१; २०. ६६, २०.
उदराय ११. ३, ६. —
उदरे ११. ५, ३.
उदरेण ११. ३, ४२.
उद-वाहाः १८. २, २२.
उद-हार्यम् १०. ८, १४.
उदा-इव २०. १००. १.
उदार-धिम् ४. ७, ३.
उदिता ७. ६८, २.
उदीचः २०. १२५, १.
उदीची ३. २७, ४; १२. ३,
१०.
उदीचीः १२. १, ३१; २,
४१.
उदीचीनैः १२. ३, २६.
उदीचीम् १५. २ २१; १४,
७.
उदीच्यम् ४. ७, २.
उदीच्याः ४. ४०, ४; ५. १०,

४; ६. ६८, ३; ६. ३,
 २८; १५. ४, १०; १२;
 ५, ८; ६; १८. ३, २८;
 १६. १७, ७; १८, ७.
 उदीच्याम् ३. २६, ४; १५.
 २, २४; १८. ३, ३३.
 उदीच्या १२. ३, ५८.
 उदुम्बरः २०. १३६, १५.
 उदुम्बलम् ८. ६, १७.
 उदुम्बलौ १८. २, १३.
 उदयम् ३. २०; १०; १६. २;
 २.
 उद्धरन् २०. १६, ४.
 उद्धरेत् २०. १३६, १६.
 उद्धिः ८. ८, २२.
 उद्धिता ६. ३, ६; १६. ४२,
 २.
 उद्धिताः १८. २, ३४.
 उद्धृता १२. ५, ३४.
 उद्धृतेषु १५. १२, २.
 उद्भूतः ७. १८, १; २०. १६,
 ५.
 उद्भूता ३. १२, ४; ७. ४५,
 २.
 उद्भूता-इव २०. १६, ४.
 उद्यतीम्-उद्यतीम् ६. ५,
 ३५.
 उद्यमानन् ७. ६६, १.
 उद्यिमाणा १२. ५, ३४.
 उन्वन्तु ६. ६८, १; २.
 उन्वते ५. १६, १४.
 उन्मथायति २०. १३२, ४.
 उन्मोचने-प्रमोचने इत्युन्मो-
 चन-प्रमोचने ५. ३०,
 २; ३; ४.
 उप १. १, ४; ४, २; ३; ७,

५; १६, २; २८, १; ३३,
 ४; २. १, ४; ५, २; ३.
 ४, ५; ८, ४; १०, ११;
 १२, १; ६; १४, ६; १५,
 ७; १७, ७; १८, ६; २६,
 २; ४; ५; ६; ७. ११,
 ११; १५, ४; १८, २;
 २१, २; ४; २४, १; २५,
 ७; ३०, ४; ७; ३१, १;
 ३२, ६; ३४, ३; ५; २;
 ६; ७; ३६, ८; ५.
 ८, ३; १०, ८; ११,
 २; ६; १७, ११; १६, ६;
 २०, ४; २२, ११; ३०,
 १५; ६. २३, १; ३२, १;
 ३; ३५, १; २; ३७,
 १; ४२, २; ४६, ३; ५७,
 २; ६७, ३; ११४, ३;
 १२६, १; ७. १२, १;
 २७, १; ३२, १; ५८, १;
 ६०, ३; ६१, २; ७३,
 ६; ७; ६; ७४, ४; ७५,
 २; ६७, १; ११०, ३; ८.
 २, १; ३, १; २; ३; ६,
 ३; ८, २१; १०(२), २;
 ३; १०(३), ८; १०(४),
 १; ४; ५; ८; ६; १२;
 १३; १६; १०(५), १; ४;
 ५; ८; ६; १२; १३; १६;
 ६. १, २०; ३, २३; ४,
 २३५; ५, १५; ३०; ६(१),
 ४; ७(२), ३; ६(५), ६;
 ७, २६; ६, ४; १०, ४;
 १०. १, १०; ४, १४; ५,
 ६; ७, ४४; १०, २६;
 ३१, ३२; ३४; ११. १,
 २३; २५; ३४; २, १७;

४, ११; १२; ५, ६; ८,
 ५; ६; १७; १०, २; १२.
 १, ४६; ३, ३; १६;
 ३४; ३७; ३८; ४०; ५३;
 ४, २; ३५; ५, २७; ५२,
 १३. १, १४; २, ३७;
 ४, ६; २७; ४७; ५०;
 ५१; ५२; ५३; ५४; १४.
 १, १५; २, २३; २४;
 २५; ३६; ५१; ६३;
 १६. १, १२; ४, ७; १८.
 १, ११; २, ४; १०; १४;
 २१; २३; ३७; ५३;
 ६०; ३, १; २; ५; ४६;
 ५१; ६६; ४, ८; ३२;
 ३३; ३६; ४०; १६. ३,
 ४; ४, ३; १५, २; ४;
 ३१, ७; १०; ३४, ८; ४३,
 ७; ५२, ४; ५६, ३; ५८,
 २; ३; ६६, २; २०. ३,
 २; ४, १; १२, ३; ७;
 १४, २; १६, ५; २१, ७;
 २४, १; २५, २; २६,
 २; २६, २; ३७, ११;
 ३८, २; ४७, ८; ५६, ५;
 ५७, २; ५८, २; ६२, २;
 ६६, २; ६८, २; ७६, ३;
 ७७, १; ७८, २; ८४, २;
 ३; ८५, ४; ८६, १; ८६,
 २; ८२, १०; १४; ६३,
 ४; १००, १; १०४, ३;
 १०८, ३; १२६, २०;
 १२७, १; १४; १३६, २;
 ७; ८; ६; १४३, ४; ६.
 उप-अंशु ४. ३२, ७.
 उप-अतसत् २०. १३६, १.

उप-अतिष्ठः—उप-वर्दति.

(४, ७७३)

उप-अतिष्ठः १०. १०, ६.
 उप-अयति १६, ४६, १०.
 उप-अयसि १६. ५०, ६.
 उप-अवसृज ५. १२, १०.
 उप-अवैति ६. ६(६), ५.
 उप-आकृतम् २. ३४, २.
 उप-आगहि ७. ४८, २.
 उप-आनसात् २. १४, २.
 उप-आयतीम् ३. १०, २.
 उप-आयसि १. ३४, २; ३.
 २५, ५; ६. ६, २; ४२,
 ३; ४३, ३.
 उप-आरिम ६. ४५, २; ६६,
 ३; ७. १०६, १.
 उप-आवृतः ६. ७७, ३.
 उप-आसते ४. २, १; ५.
 १७, १७; ६. ६४, १;
 १०. ६, ३१; ७, २१;
 २४; १३. ३, २४.
 उप-आसातै १०. ८, २२.
 उप-आस्महे ३. १०, ३.
 उप-आहृतम् १०. १, १६.
 उप-उत्तमेभ्यः १६. २२, ११.
 उप-उदैति ६. ६(६), ५.
 उप-ऊचिरे ५. ८, ६; ११.
 १०, १७.
 उप-ऊहः ३. १४, ३.
 उप-अवृणति ६. ८, १४;
 १५; १६.
 उप-एतन ३. १४, ३.
 उप-एयिम १०. १, १०.
 उप-एवन्तम् ८. ६, १७.
 उप-पेतु ७. ६६, १.
 उप-पेमि ६. ११८, ३.
 उप-कस ६. ५०, २.

उप-गन्तवै २०. ६६, ५.
 उप-जग्मुषः २०. २१, ६.
 उप-जा ११. १, १६.
 उप-जिह्विका २०. १२६,
 २०.
 उप-जिघ्रति १२. ४, ५.
 उप-जीकाः २. ३, ४.
 उप-जीकाः ६. १००, २.
 उप-जीवनीयः ८. १० (४),
 ५; ८; १२; १६; १०(५),
 ४; ८; १२; १६.
 उप-जीवन्ति १०. ६, ३२.
 उप-जीवाः १६. ६६, २.
 उप-जीवेम ८. १०(२), २.
 उप-तप्यामहे ७. ६०, १.
 उप-तिष्ठन्ति १७. १, ८.
 उप-तिष्ठन्ती १२. ५, २४.
 उप-तिष्ठन्ते ७. ४०, १; ८.
 ६, ८.
 उप-तिष्ठमानः १३. ३, २५.
 उप-तिष्ठमानाम् ८. ६, ८.
 उप-तृणय ५. १३, ५.
 उप-दद्य १०. ८, १८; १३.
 २, ३८; ३, १४.
 उप-दान १६. ३४, ८.
 उप-देश्यम् ११. ८, २३.
 उप-द्रष्टा ११. ३, ५४.
 उप-धाने १४. २, ६५.
 उप-धिः ६. ७०, ३.
 उप-ध्यानी ८. ८, २.
 उप-नयमानः ११. ५, ३.
 उप-नाहः ६. ४, ५.
 उप-निसेदुः १६. ४१, १.
 उप-पक्ष्याः ७. ७६, २.
 उप-पर्वन ६. ४, २३.

उप-पृञ्चती १८. ४, ५०.
 उप-प्रतारय २. ३६, ५.
 उप-प्रयन्ति १२. ४, ३१.
 उप-प्रवद ४. १५, १४.
 उप-वद्वान् १. ७, ७.
 उप-वर्हणम् ६. ५, २६; १४.
 १, ६; १५. ३, ७.
 उप-वर्हीणे १२. २, १६; २०.
 उप-वदे २. २४, ६.
 उप-वदैः ८. ४, १७.
 उप-भूत् १८. ४, ५; ६.
 उप-मम् २०. ३५, ३; ७६, ३.
 उप-मस्य ५. १, ६.
 उप-मा २०. ६२, १०.
 उप-माः ४. १, १; ५. ६, १.
 उप-मानाम् २०. ११३, २.
 उप-माम् १८. ३, ६५.
 उप-मास्यम् ८. १०(३), ४.
 उप-मिताम् ६. ३, १.
 उप-यासि १८. १, २२.
 उप-युक्तम् ४. २३, ३.
 उपरः ६. ४६, २.
 उपरस्य ६. ४६, ३; १८. ३,
 २३; ४, ४.
 उपरि ८. ६, ६; १८. ३,
 २५-३५.
 उपरि-शयनम् ६. ६(१),
 ६.
 उपरिष्ठात् ४. ४०, ७; ८. ८,
 १३.
 उपरि-स्पृशः ५. ३, १०.
 उपरे ६. ६, १२; २०. ६४, ७.
 उप-लिप्तमानाः ६. ११८.
 १.
 उप-वर्दति १५. २, ३; ११;
 १७; २३.

उप-वन्धः १८. ४, ६५.
 उप-वन्धम् ६. ६, ८.
 उप-वाम् १२. १, ५१,
 उप-वासने १४. २, ४६;
 ६५.
 उप-विषय १४. २, २३.
 उप-शृणुयात् १२. ४, २७.
 उप-शक्तिम् ६. ११४, २.
 उप-श्रुतिः १६. २, ५.
 उप-श्रुत्य १२. ४, २८.
 उप-श्रुत्या २. १६, २.
 उप-श्रोता २०. १२, १.
 उप-श्वसे ११. १, १२.
 उप-संनमन्तु १६. ४१, १.
 उप-संपरानयात् १८. ४,
 ५०.
 उप-संयन्तु ३. ८, ४.
 उप-संयात ६. ७३, १.
 उप-संव्ययस्व २. १३, ३;
 १६. २४, ५.
 उप-सत्ता ७. ८२, ३.
 उप-सत्तारः २. ६, २; ३.
 १२, ६.
 उप-सदः ६. १४२, ३; ६.
 ७, ६; १५. ३, १०; ११.
 उप-सद्यः ३. ४, १; ५. ३०,
 ११; ६. ६८, १.
 उप-सर्पतः ७. ५६, ५.
 उप-सिच्य ६. ६(४), १; ३;
 ५; ७; ६; १०.
 उप-सीदन्ति ६. १, ६.
 उप-सीदान् ११. १, २६; ३२.
 उप-सेचनम् ११. ३, १३.
 उप-स्तयः ६. १५, १.
 उप-स्तरणम् ५. १६, १२.
 उप-स्तर १४. २, २१.

उप-स्तिः ६. १५, १.
 उप-स्तीन् ३. ५, ६; ७;
 उप-स्तुतः १६. ५, १; २०.
 ३०, ५.
 उप-स्तृणन्ति ६. ६(१), ८.
 उप-स्तृणीयन् १४. २, २२.
 उप-स्थम् १३. १, ४.
 उप-स्थाः १२. १, ६२.
 उप-स्तात् ३. ११, २; ७;
 ५३, ३; १४. २, २५;
 २०. ६६, ७.
 उप-त्यै २. २८, १; ४; २६,
 ४; ७. ६, ४; ८. ४, ६;
 १३. १, ३८; १४. १, २;
 ४७; १८. ३, ४३; ६५;
 २०. ३४, १६; १२३, २;
 १३७, ६.
 उप-रूपशः २०. १२७, २.
 उप-हन्तुम् १८. १, ४०.
 उप-हृत्याम् ५. ४, १०.
 उप-हरति ६. ६(२), १०;
 ११; १२; ६(४), १; ३;
 ५; ७; ६; १०.
 उप-हथम् ११. ७, १५.
 उप-हस्वानः २०. २२, २.
 उप-हृतः १. १, ४; ७. ६०,
 ५; ६. ६(६), ७२-१२३;
 १६. २, ३२; १६. ४०, २.
 उप-हृताः ६. १२२, ४; ७.
 ६०, ४; ५२; १८. ३,
 ४५.
 उप-हृतौ ६. १४०; ३,
 उप-हृता १२. ५, ३५.
 उप-हि यमाणा १२. ५, ३५.
 उप-ह्वारे २०. २२, ६; ६२,
 ३; १३७, ८.

उपाके इति ५. १२, ६; २७,
 ८.
 उपानहि २०. १३५, २.
 उपो इति १३. ४, ४४; ४५;
 २०. ३५, १४.
 उप्ताः ८. ८, १६.
 उब्ज ८, ८, ६; ११. १, ६;
 ७.
 उब्जतम् ८. ४, १.
 उब्जत् ६. ३, १८.
 उब्जन्तः ८, ८, १३.
 उभयः ११. ७, ११.
 उभय-द्युः १. २५, ४; ७;
 ११६, २; ८. १०(३) ८.
 उभयम् ४. ३१, ७; २०.
 ११३, १.
 उभयम्-करम् २०. ८५, २.
 उभयोः २०. ३४, ८.
 उभयादतः १६. ६, १२.
 उभयादिति ५. ३१; ३.
 उभयादम् ५. १६, २.
 उभयान् १२. २, ४४; ३, ६;
 १८. ४, ३६.
 उभयानि ७. १०६, २.
 उभयाविन् ८. ३, ३.
 उभयाविनम् ५. २५, ६;
 २०. ८५, २.
 उभयाहृत्या २०. ५६, ४.
 उभयोः ८. ५, ६.
 उभये ७. ७६, २; ८. १०(२),
 ३; १२. १, ४७.
 उभयेन १२. ४; १८.
 उभयेसु २०. १४३, ६.
 उभयोः ७. ७६, ४; १०. ४;
 १०; १५; १६. ३८, ३.

उभा ३. ४, ४; ४. ३०, १२;
 ५. ३, ६; २५, ३; ७.
 ४४, १; ११०, १; ८. २,
 १५; ३, ३; ६; ४; १०.
 ४, १६; ११. ६, ५; १३.
 २, १०; ३०; १४. १,
 ६; ५४; २, १३; १८.
 १, ५४; २०. १२५, ५;
 १२६, १४.

उभाभ्याम् ६. १६, ३; ७.
 ५६, ८; ८. २, २०;
 ११. २, १६.

उभे इति १. १, ३; २. १०,
 १-८; ३. ४, ५; १८,
 ५; ४. ६, १०; ५. १८,
 ५; ३०, २; ३; ४; ६.
 १, ३; ५८, १; १३८,
 २; ७. ६. १; ५७, २;
 ८. ५, ३; ६. ४, १०;
 १०. ७, ३५; ११. ५,
 १; ८; १२. ३, ५; ६;
 १६. १५, ५; २०. ११,
 १; ४२, २; ६४, २; ७७,
 ५; ८०, १; १०७, २.

उभौ ३. २०, ६; ४. ३२,
 ७; ५. ७, ६; ६. ८६,
 ३; ७. ७०, ४; ८. ४,
 १३; ६. ३, ६; १०. ४,
 ८; ११. २, १४; ७, ३;
 १०, ११; १२. ४, १७;
 १३. २, ६; १३; १६.
 ३२, ५.

उभूत ८. ८, ११.

उयम् २०. १३०, २०.

उरः ६. ५, २०; १०. २, ४;
 ११. ६, १४; २०. १३७,
 १.

उरसा ११. ३, ४१२.

उरसि १०. ३, ११; ८, १८;
 १२. ५, ४८; १३. २,
 ३८; ३, १४; १६. ३२,
 २.

उरा-मथिः २०. ६७, २.

उरु २. १२, ११; ४. २, ४;
 ११, १; ५. ३, ६; ६.
 ४०, १; ४६, २; ७. ६,
 ४; २६, ३२; १०. ७,
 ३५; ११. २, १०; २७;
 १२. १, २०; १४. २,
 ६६; १८. २, ४६; ३,
 ५६; १६. ६, १; २०.
 १३, २; ८७, ३.

उरुः ७. ३, १; ११. १, १६;
 २, ११; १२. ३, ३८;
 १३. ४, ५२.

उरु-क्षयाः ७. ७७, ३.

उरु-गाय २०. ७६, ४.

उरु-गायः २. १२, १; ७.
 २६, १.

उरु-गायम् ४. २१, ४; ५.
 १७, ११; १६. ११, ५.

उरु-गुलायाः ५. १३, ८.

उरु-ग्राहैः ११. ६, १२.

उरु-चक्षाः १६. १०, ८.

उरु-जम्ब ६. ४, ३.

उरु-जयः २०. ६२, १६.

उरुण्डाः ८. ६, १५.

उरुधारा-इव २०. ७, ३.

उरु-नलौ १८. २, १३.

उरुम् ६. ३३, ३; ७. ८४, २;
 ६. २, ११; १२. १, १;
 १४. १, ५८; १६. १५,

४; २०. १५, ६; २३,
 ५; ६५, १.

उरु-युगे २०. १००, ३.

उरु-लौकम् ५. ३, ३.

उरुवाचः २०. ४६, २.

उरु-व्यचसम् १८. ३, ४६.

उरु-व्यचसा ५. २७, ८.

उरु-व्यचाः ५. ३, ८; २०.
 ८, २.

उरु-व्यचै ६. ४१, २.

उरुयुं ७. २६, ३.

उरुण्य ६. ४, ३.

उरुण्यतम् २०. १४३, ७.

उरुण्यताम् ६. ३, ३.

उरुची १६. १०, ३.

उरुची इति ३. ३, १.

उरुची इति ४. २६, २.

उरुचीम् ७. ६, २.

उरुः ७. २६, ८; ११८, १.

उरौ १८. २, २०; २०. १००,
 १; १२५, १.

उर्वः १६. ३, ३.

उर्वरा १४. २, १४.

उर्वराः १०. १०, ८.

उर्वरायाम् १०. ६, ३३.

उर्वरी-इव १०. ४, २१.

उर्वशीः १८. ३, २३.

उर्वशिकम्-इव १४. १, १७.

उर्वशि-इव ६. १४, २.

उर्वि १६. ४७, ३.

उर्विया ५. १२, ५; १८. १, २.

उर्वी ४. २, ४; १६. ३, ६.

उर्वी इति ४. २६, ३; ११.

५, ८; १८. १, ३२; २०.

१५, ८.

उर्वी ३. २०, ६; ४. २१, १;

म. ६, १६; ६. २, ११;
१०. ७, ३५; १३. १, ४;
४६; ३, १; ६; १८. २,
६; २०. ७१, ३.

उर्वीः ५. ३, ६.

उर्वीभिः १२. २, ४८.

उर्वीम् १८. ३, २२.

उर्वीः ११. ७, १८.

उल्लपेषु ७. ६६, १.

उल्लम् १२. १, ४६.

उल्ललयः ३. १६, ६.

उल्लकः ६. २६, १.

उल्लक-यातुम् ८. ४, २२.

उल्लखलम् ११. ३, ३; १२.
३, १३; २०. १३६, ६.

उल्लखल-मुसलानि ६. ६(१),
१५.

उल्लखले १०. ६, २६.

उल्ला १६. ६, ८; ६.

उल्लाः १६. ६, ६.

उल्लाम्-इव २०. १६, ४.

उल्लकुषी-मान् ५. १७, ४.

उल्लः ४. १, ८.

उल्लक्य १. १०, ३.

उल्लाच १०. १, ७.

उल्लाच २०. ८७, ३.

उल्लास ३. १०, १; १८. १,
२०.

उल्ले २०. १२६, ७.

उल्लतः ७. ६७, ३; १८. १,
५६.

उल्लता २०. ६६, ३.

उल्लताम् १८. १, २०.

उल्लती ७. ४७, २; १४. २,
३८; १६. ४६, २; ४; ८.

उल्लतीः ७. ४६, १; १४. २,
५२; २०. १७, १.

उल्लतीः-इव १. ५, २.

उल्लत-भिः १८. ३, ४६.

उल्लतम् २०. ११, ३.

उल्लन् १८. १, ५६; ३, ४६;
२०. ६७, ५; ८७, २.

उल्लना २०. २५, ५.

उल्लना-इव २०. ७७, २.

उल्लनाम् ४. २६, ६.

उल्लन्तः १४. २, ३८; १८.
१, ५६२.

उल्लन्तम् १८. १, २०.

उल्लन्ति १८. १, ३.

उल्लिक्-भिः २०. ११, ४.

उल्लिजः २०. ३३, ३; ७५,
३; ७७, ६.

उल्लः १६. ६, २; २०. १५, ३.

उल्लः १६. ६, ६२.

उल्लः २०. १४२, २; ३.

उल्लत-भिः २०. २६, ६; ४७,
१२; ६६, ११.

उल्लसः ३. १६, ६; ७; ४.
२१, १; ७. २२, २; ७३,
६; ८२, ४; १०. १, ३२;
७, ३१; ८, ३०; १४. २,
३१; ४३; ४४; १६. ४,
६; १७. १, ३०; १८. १,
२७; ३, २४; १६. १०,
१०; ४६, ६; २०. ७२,
३; ७६, २.

उल्लसम् १०. २, १६; १३.
२, ४६; २०. ३४, ७;
६१, ५; १०७, १५.

उल्लसा ८. ६, १२; १६. ६,
५.

उल्लसान्ता ५. १२, ६; २७,
८; ३, ३.

उल्लसाम् ३. ७, ७; ७. ८१,
२; ८२, ४; ५; १४. १,
२४; १८. १, २७; २८;
४, ५८.

उल्लसे १६. ४८, २; ५०, ७.
उल्लाः ४. ४, २; ७. ६६, १;
६. ६(५), १; ११. ६,
७; १५. २, १३; १६. ६,
५; १८. १, २०; १६.
१२, १; ४८, २; ५०, ७.

उल्लाम् २०. १६, ६.
उल्लस्य २०. १३२, १३.
उल्लाम्-उल्लाम् १२. २, ४५.
उल्ला २०. १२७, २.
उल्लान् ८. ६, १७.
उल्लिक् १६. २१, १.
उल्लिहा ६. १३४, १.
उल्लिहा-अल्लरः १३. १, १५.
उल्लिहाभ्यः २. ३३, २; ६.
८, २१; १०. १०, २०;
२०. ६६, १८.

उल्लिषम् १५. २, ५; १३;
१६; २५.
उल्लोर्न ६. ६८, १.
उल्लोलानि १४. १, ६०.
उल्ला १२. ३, ३७.
उल्लाः २०. ६१, ४.
उल्लियः १. १२, १; ६. ४; १.
उल्लियाः ४. २६, ५; १४.
१, ३२; २०. १६, ७;
७०, १; ८८, ५; ६१, ८.
उल्लियाणाम् २०. १६, ६.
उल्लियाभिः ३. ८, १; ५. २०,
३; २१, १.

उलियायाः—ऊमाः.

(४, ७७७)

उलियायाः ७. ७३, ५, ६;
म. ३, १७.

उलियासु ७. ७३, ४.

उल्यते १४. १, १३.

उल्यमानम् १४. २, ६.

ऊ

ऊं इति १. ६, ४२; ११, १;

१४, ३; २४, ४; २. २, ३;

३, ३; ४; ५; ६, २; १३,

२; ३; २६, ३; ३०, २;

३. ४, ६; ७, ५; ११, ४;

२१, ४; २३, ५; ४. ३, ४;

६; ४, २; १२, ३; १६, ६;

३०, ५; ३६, १०; ३६,

६; ५. १, ५; ४, ६; ६,

४; ११, ११; १२, ४;

१३, २; ३; १४, २; ६;

२२, ६; ६. १, २; ११,

३; २१, १; २६, २; ३;

५६, ३; ५७, १; ७४,

१; ८५, १; ८७, २; ६१,

३; १२४, २; ३; १३३,

११; १३६, २; ७. ५, २;

६, २; २०, ६; ३१, १;

५६, ८; ७०, २; ७३, ३;

७; ७४, ३; ८४, २; ८५,

१; १०३, १; ८. २,

१३; ४, १३; २०; २१;

५, ५; ६; ६, ३; ६, १०;

१६; १७; २३; २५; ६.

१, ६; ७; ४, ४; ७; ५,

७; ६(३), ६; ६, ६;

१५; १६; १०, ४; ६;

१०. २, २; ३; ७; १३;

३, ५; ४, १८; ७, ३८;

८, ४; १६; २८; १०,

१३; १४; १५; ११. १,

११; ४, २०; ८, १; १२.

१, १२; २, ३; ३, ३;

२६; ४७; १३. २, १६;

२५; ४, ५; ४१; १४.

१, ४०; १५. १०, ६;

७; १६. ६, २; १८. १,

७; १२; १४; १६; ३७;

५०; २, ८; २६; ३०;

३३; ५०; ५१; ३, ६; ७;

२०; ३८; ७१; ७३; ४,

११; ४४; १६. २, १;

६, ६; १०, २; ३;

७; ८; ११, १; २;

२४, ४; ५; ६; ८; ३४,

६; ५३, ६, २०. ५, १;

८, ३; १०, १; १२, १;

१४, १; ३; १८, १; २;

२०, ४; २१, १; ३५,

१-८; ११-१५; ३६,

२; ४५, १; ४७, ११;

५०, २; ५७, ७; ५६,

१; ६१, १; ४६, ६२, १;

३; ८; ६४, ४; ६७, ७;

७६, ४; ६०, २; ६२, ११;

६५, २; ६६, २; ५, ६;

६७, १; १०४, १; ११८,

१; १२६, ३; १३; १२८,

३; १३५, ६; ७; १४२, १.

ऊत्रिम ७. ८३, २; १६.
४४, ६.

ऊत्रुः १८. ४, ४६.

ऊत्र्या २०. ६०, ५; ७१, ५.

ऊत्र्ये ४. १८, १; २५, ६;

२७, १; ६. ३५, १; ८०,

२; १६. २४, ७; २०. ११,

११; १४, २; ३; १७, १;

२०, १; २६, १; ४५, २;

५७, १; ४; ६२, २; ३;

६८, १; ७०, १७; ७१,

१५; ८५, ३; ४; १३७,

२; १४३, ३.

ऊति-भिः ७. ३१, १; १७.

१, १०; १६. १५, १; २०.

२१, १०; २५, १; २६,

२; ३७, ३; ५४, २; ७०;

१०; ८१, २; ६२, २१;

११८, १; १२४, २.

ऊतिम् २०. २७, ४.

ऊती ७. ७७, १; १८. १,

५१; २०. ३३, ३; ३४,

१५; ३७, ११; १०५, ३;

१२४, १.

ऊदिम् १०. ५, २२.

ऊदुः ६. २२, १; ६. ६०,

२२.

ऊघः ४. ११, ४; ८. १०(२),

५; ६. ७, १४; १०. ७,

१६; ६, २२; १०, ७;

१२. ४, १८.

ऊघनि ७. ७२, ३.

ऊघ-भिः २०. १४२, ४.

ऊनः १०. ८, ४४.

ऊनम् १२. १, ६१.

ऊनयीः २०. २१, १.

ऊनेन १०. ८, १५.

ऊपे २२. १६, ३.

ऊवध्यम् ६. ४, १६; ७, १७;

११. ३, १२; १२. ४,

३६.

ऊमाः ५. २, १; ३. २०.

१०७, ४; ६.

ऊरुभ्याम् २. ३३, ५; ११.

३, ४४; २०. ६६, २१.

ऊरुम् १४. २, ३६.

ऊरु इति १. ७, ६; ८, ७;

१०. २, ३, ६, २१; ११.

३, ४४; ८, १४; १४. २,

३८; १६. ६, ५; २०.

६६, १४.

ऊर्जः १२. १, १२.

ऊर्जः ११. १, १५; १८. ४,

५३; ५४; १६. ४५, ३;

२०. ६४, ४; ४०३, ३.

ऊर्जम् २. २६, ३; ५; ३.

१०, ७; ४. ३६, २; ४;

६; ८; ५. १७, ११; ६.

२२, २; २८, १; ४०, २;

७६, २; ७. ६०, १; ७६,

३३; ८. ६, १३; ६. १,

७; ६, २०; ५, २४; १२.

१, २६; २, ४६; १८. ३,

४३; ४, ४; ३०; ३४;

३६; ४०; १६. ७, ४.

ऊर्जया ४. २५, ४; ५. १,

७; ६. ६(५), २; १०.

६, २६.

ऊर्जस्वती ३. १२, २; १७,

६; ६. ३, १६.

ऊर्जस्वती इति २. २६, ५,

ऊर्जस्वन्तः ७. ६०, २.

ऊर्जस्वान् १६. ४६, ६.

ऊर्जा ११. ७, १३; १६. २,

१.

ऊर्जाम् २. २६, ७; ८. १०(५),

३, ४; ६. ६(३), ३.

ऊर्जं ८. १०(२), ४; १०(५),

१; १६. ३७, ३.

ऊर्जे १. ५, १; १८. ४, ८१.

ऊर्ण-भ्रदाः १८. ३, ४६.

ऊर्णवन्तु १. ११, २.

ऊर्णध्व १८. २, ५८.

ऊर्णहि ४. १४, ६; १८. २,

५०; ५१; ३, ५०; ४,

६६.

ऊर्णोति १५. १, ८.

ऊर्णोतु १. ११, ३; १८. ४,

५६.

ऊर्णोमि १८. २, ५२.

ऊर्ध्वः ४. १२, ६; ३५, ३;

७. १०२, १; ६. ६, १०;

१०. २, २६; २८; ७, ४;

८, १६; १०, १६; ११.

१, ७; ४, २५; ६, २१;

१३. १, ११; १५. ३, १;

१५, ३; १६. ४६, २;

२०. ४५, ३.

ऊर्ध्व-बुध्नः १०. ८, ६.

ऊर्ध्वम् ५. २७, ६; १०. २,

३; २४; २५; ८, १४; ११.

१, ६; १८. ३, २६.

ऊर्ध्व-सायुः ५. २०, ४.

ऊर्ध्वया २०. ६७, ३.

ऊर्ध्व-स्वप्नाः ६. ४४, १.

ऊर्ध्वा ३. २७, ६; ५. २७,

१; ७. १४, २.

ऊर्ध्वाः ५. २७, १; १०. २,

११; १२. १, १३; १३.

३, १६,

ऊर्ध्वान् १३. १, ५३; ५४.

ऊर्ध्वाम् १५. ६, ४; १४, १७.

ऊर्ध्वायाः ४. ४०, ७; ५. १०,

६; ६. ३, ३०; १५. ४,

१६; १८; ५, १२; १३;

१६. १७, १०; १८, १०.

ऊर्ध्वाभ्याम् ३. २६, ६; ४.

१४, ८; १८. ३, ३५.

ऊर्ध्वयि १२. ३, ६०.

ऊर्मयः ६. ५२, २; २०. १६,

१.

ऊर्मिः १०. ५, १६; १४. २,

१६; २०. २८, ४; ३६, ५.

ऊर्वम् २०. ८८, २.

ऊर्वोः १६. ६०, २.

ऊर्धुरित्युः २०. ३५, ८.

ऊर्ध्वि ७. १०६, ७.

ऊष्माणम् ६. १८, ३.

ऊह ११. १, ६; १८. २, ५७.

ऊहतुः ६. ८२, २.

ऊहतुः १६. ४४, १०.

ऊहसि २०. ११४, २.

ऊहामि १४. १, ३८; १६.

३७, ३.

अ

अक् ११. ७, ५; १४. २, ७१.

अक्-भिः १०. १, १३; १२.

१, ३८; ४, ४६.

अक्-भ्यः १०. ५, ३०; १३.

४, ३८.

अक्-ता २०. ८८, ५.

अक्-भिः १८. १, ४७; २०.

५४, ३.

अक्-ग्रीवम् ८. ६, २.

अक्-क्षाम् १८. २, ३१.

अक्-क्षीकाम् १२. १, ४६.

अक्-संशितः १०. ५, ३०.

अक्-सामाभ्याम् १०. १,

११.

अग्निमयम् २०. ७१, १५.

अघायमाणः २०. ३५, १३.

अचः ६. ६(१), १; १०. ५,
३०; ७, १४; २०; १०,
१४; ११. ६, १४; ७,
२४; ८, २३; १२. ४;
२७; २८; १३. ४, ३८;
१५. ३, ६; ६, ८; १६.
६, १३; ५४, ३.

अचः ६. १०, १८; १६.

अचम् ७. ५४, २.

अचा ६. २८, १; ६. ५, ५;
१०, १८; ११. ३, १४.

अचाम् १०. ८, १०; १५.
६, ६.

अचीषमः २०. १०४, ३.

अचीषमाय २०. ३५, १.

अच्छति १२. ४, ५३.

अच्छतु २. १२, ५; ४. १६,
६; ५. १४, ११; ६. २६,
३; १०. १, ३.

अच्छन्तु ८. ३, १४; १६.
१८, १-१०.

अच्छरीः १०. ६, २३.

अच्छात् ५. १०, १; २; ३;
४; ५; ६; ७.

अजवः १४. १, ३४.

अजिर्वना २०. २१, ८.

अजीयः ५. १४, १२; ८. ४,
१२.

अजीषा ६. ६(१), १६.

अजीषी २०. १२, ७; ७७,
१, ५.

अजु २०. ६१, २.

अजु-कतुः २०. ५६, ४.

अजु-नाः १. १२, १.

अजु-रश्मिः ४. २६, ७.

अजुते २०. ७०, ५.

अजुधत् १८. १, ६.

अजुम् ६. ४६, ३; ११८, १;
२३; ११६, १; २; १६.
५७, १.

अजुम्-व १६. ४५, १.

अजुणात् ६. ११८, २; १६.
४५, १.

अजुणोः २०. १२२, २; ३.

अजुवताम् १८. २, ६.

अजु-उद्येषु १७. १, ३१.

अजु-जाताः १८. २, १५.

अजु-जाते ५. १५, १-११.

अजु-जाः ४. २, ६; १८. १,
४४; १६. ११, ५; २०.
३३, ३.

अजु-प्रजाता १. ११, १.

अजु-प्रजाताम् २०. ६१, १.

अजु-तम् २. १०, ८; ७. ७२,
३; ८. ३, ११; ६. ५,
२१; १०, २३; १०. ७,
१; ११; २६; ३०; १०,
३३; ११. ३, १३; ७;
१७; १२. १, १; ११;
१४. १, ३१; १५. ६, ५;
१६. ८, १; ५-३०; १८.
१, ४; ३, २१; २४; २०.
१२, ४; ६१, २.

अजु-यन्तु २०. ५०, २.

अजु-वः २. ६, १; ८. ८, २२;
६, १५; १८; १०. ६,
१८; ७, ५; ११. ३, १७;
६, २२; ८, ५; १२. १,
३६; २, २५; १३. १, १८;

१५. ६, १७; १७, ५; ८;
१८. ४, २.

अजु-वरि ५. १५, १-१२;
६. ३०, ३.

अजु-वृत्ति १०. १०, ६; १६.

अजु-वरी इत्युत-वरी ६.
६२, १.

अजु-वरीः ३. १३, ७.

अजु-वा २०. ६०, १.

अजु-वानिम् ६. ३६, १.

अजु-वृधः ११. ६, १६; २०;
१८. २, १५.

अजु-वृधौ ४. २६, १.

अजु-साताः १८. २, १५.

अजु-स्थाः ४. १, ४.

अजु-स्पृशः २०. ८८, ३.

अजु-स्पृशम् २०. ४२, १.

अजु-तस्य २. १, ४; ५; ४.

३५, १; ५. १२, २; ११;

१७, १; ६. २२, १; ३६,

१; ११४, १; २; १२२,

१; १३४, १; ७. ६, २;

८. ६, १३; १६; २१; ६.

३, २२; ६, १३; १०,

१५; २२; ११. ३, ४८;

१२. १, ६२; १३. ३, ६;

१६; १४. १, १६; १५.

६, ६; १७. १, १६; १८.

१, ६; ३, ४०; ४, ३;

२०. १६, ४; १७, ६;

६३, ६; ११५, १; ११६,

१; १२६, १०; १३८,

२२; १४३, ३.

अजु-तानि ७. १, १; ५७, २.

अजु-तिः १२. ५, २५.

अति-सहस्रम् २०. ६, १; ४६, ४.	१, १; १७. १, २६; १८. १, २६; ३०.	अशः-इव ४. ४, ७; ६. १०१, ३.
अतुः ७. ४६, २; ६. ५, ३१-३६.	अतौ ११. ४, ४.	अवति ६. ४, १७.
अतु-था ५. १२, १०; ६. १०, २६; १३. ३, २; १४. १, १६; २०. १२५, ३.	अत्वा ४. ४०, १-८; ६. १२०, २; १२. ४, ५३.	अवतु ४. ३७, ६; ८; ६. अवन्तु ८. ७, ६.
अतुनी २०. २, १; ३; ४.	अत्विजः ८. ६, २१; ६. ६(२), ६; १०. ६, ४; १२. १, ३८; १६. ११, ५; ४२, २; ५८, ६.	अवमः ३. ६, ४; ४. ३८, ५; ५. २०, २; ६. ४, १; ३; ७; १०. १०, १०; १६. २७, १; ३६, ५.
अतु-पतीन् ३. १०, ६; ११. ६, १७.	अत्विजः ६. २, १.	अवम-वायिनः ६. ४, २०.
अतु-भिः १. ३५, ४; ३. ८, १; ५. २८, २; १३; ११. १, १६; ३, ३७; ५, २०; ७, २०; १२. २, २५; ३, ३२; १७. १, २६; २०. ६७, ७.	अत्विजः ३. २०, १; २०. २३, २.	अवमम् ६. २, १; ४, ६; १४; १५; १८; १६.
अतु-भ्यः ३. १०, १०; १६. ३७, ४.	अत्विजम् ७. ७२, १.	अवमस्य ४. ४, ८; ६. ३८, ३; ७. ११३, २; ६. ४, ११; २३; १४. २, १४.
अतुम् ८. ६, १७; ६. ५, ३१-३६.	अत्विज्याय १२. ३, २६.	अवभाः ३. २३, ४.
अतु-शः ६. ५, १३.	अत्विजे इति १४. २, ३७.	अवभाणाम् ४. ४, ४.
अतुन् ३. १०, ६; ६. ३६, २; ६१, २; ३; ७. ८१, १; ८. ६, १०; ११. ६, १७; १४. १, २३; १८. १, १८; १६. ५६, ३.	अवन्तु ८. ४, २४.	अवभासः ४. २४, ४.
अतुनाम् १६. ८, २०.	अवधक्-सन्नः ५. १, १.	अवयः २. ६, १; ३५, २; ४; ४. २३, ५; ६. ४१, ३; १०८, ३; ४; १३३, ५; ८. ५, १०; ६, ७; १४; ६. ६, १६; १०. ७, १४; ८, ६; १०, २६; ११. ३, ३२-४६; ६; २५; १०, १०; १२. १, ३६; २, २६; १७. १, १४; १८. ३, ६४; १६. ३३, ३; ३५, १; ४१, १; २०. ८८, १; ११५, ३.
अतुनाम् १५. ६; १८.	अधेम १६. ५५, ४.	अवयः ८. ६, ८.
अते ४. २६, ६; ६. ६, ८; १२. ५, १; १४. २, ४७; २०, ३४, ६; १२६, १२; १३३, २.	अध्यताम् ४. ३६, ४; ८. २, १३; १४. १, २१; १६. ५२, ५.	अविः ११. ८, १४; १८. ३, ४१; २०. ५०, २; १४०, २; ५.
अतेन ३. १२, ६; ६. ४७, ३; ११४, १; २; १०. ८, ११; ११. १; २३; १४.	अध्यन्ते १२. ४, १६.	अविणा १३. १, ५५.
	अध्याम् ७. ५०, ३.	
	अध्यासम् ६. ६४, ३.	
	अध्वन् ५. १२, २.	
	अभवः ६. १०८, ३; १६. ११, १; २०. ६६, १.	
	अभवः ६. १, १३.	
	अभुः ४. १२, ७; ६. ४८, २; १०. १, ८.	
	अभु-भिः २०. १४१, २.	
	अभुम् १. २, ३.	
	अभूणाम् ६. १, १३.	
	अभ्वसम् २०. ६२, १८.	
	अभ्वणाम् ५. २, ७; २०. १०७, १०.	

अष्टाध्यायी-इव म. ५, न.
 अष्टाध्यायी-प्रतिष्ठा ११. १, १५.
 अष्टाध्यायी-मिः ६. १२, २; ७.
 न. २, ६. १, १५; १०.
 ५, ४७; १८. ३, ४७;
 ४८; २०. १०४, २.
 अष्टाध्यायी-मयः १८. २, २; १६.
 २२, १४.
 अष्टाध्यायी-मु. ३०, ३.
 अष्टाध्यायी-स्तुताम् ६. १०८, २.
 अष्टाध्यायी इति ५. ३०, १०.
 अष्टाध्यायी-म. ३६, ६; ६.
 १३३, २; ४; न. ६, २३;
 १०. १, १२; १६. २,
 ६; न. १२.
 अष्टाध्यायी-म. ६, २४; ११. १,
 २६; ३५; १८. २, १५;
 १८.
 अष्टाध्यायी-मिः न. ३, ७; २०.
 ६७, ४.
 अष्टाध्यायी-म. ३७, न; ६.
 अष्टाध्यायी-म. १६. ३५, ५.
 अष्टाध्यायी-म. १, ३४.
 अष्टाध्यायी-म. ७. ११, १; २०.
 ४७, ३; १३७, १४.

ए

एक-अक्षरम् ५. २८, न.
 एक-अक्षरम् १६. २३,
 २२.
 एक-अक्षरम् ३. १०, १२.
 एक-अक्षरम् ३. १०, ५.
 एक-अक्षरम् ३. १०, न.
 एक-अक्षरम् १६. २३, २०.
 एक-अक्षरम् न. ६, २५; २६.
 एक-अक्षरम् न. ६, २५; २६;
 १०. ७, १४.

एक-एकम् ३. २८, १.
 एकः २. १, ३; २, १; २;
 ३. १३, ४; ४. २, २; ७;
 १०, ६; १७, न; ३१, ४;
 ३७, ११२; ६. ३६, ३; ७.
 २१, १; न. ४, ३; न.
 १२; ६, २६२; ६. ६,
 २; १०; १०, २६; १०.
 २, १४; न. ५, २; २८;
 ३६२; १०, २४२; १३.
 २, ३; २६; ३, १८; ४,
 १२२; २४२; १८. ४,
 ११; २०. १२, ५; २७,
 १; ३५, १५; ३६, १;
 ३७, १; ६१, ६; ६२, १०;
 ६३, ४; ६५, १; ७०,
 १५; न. ६.
 एक-कम् २०. १३२, १.
 एक-चक्रम् ६. ६, २; १०.
 न. ७; १३. ३, १८.
 एक-ज ४. ३१, ३.
 एक-जः १०. न, ५.
 एक-जम् ६. ६६, १; ६. ६,
 १६.
 एक-तेजनाम् ६. ५७, १.
 एक-धा ५. १७, न; न. ६,
 २६; १०. १०, ५.
 एक-नेमि १०. न, ७; ११.
 ४, २२.
 एक-पत्नीः १०. न, ३६.
 एक-पदः १३. २, २७.
 एक-पदी ६. १०, २१; १३.
 १, ४२.
 एक-पात् १३. २, २७; १,
 २५; १६. ११, ३.
 एक-पावः १३. १, ६.

एकम् १. १२, १; ५. ११,
 ६; १७, ५; न. ६, ६; ७.
 २१, १; न. न, १२३; ६,
 ३२; १५; २६; ६. ६, ७;
 १०, न. १०. ७, ६;
 २५; २६; न. ४, ११;
 २५२; ११. २, २२; ४,
 २१; १२. ३, ३६; १३.
 १, ४५; ३, १७; १४. १,
 १४; १६; १५. १, ३;
 १७; १०; १८. २, ६; ३,
 ७; ४, ६४; १६. ४५,
 ५; २०. ७२, १.
 एक-मुखाः ६. ४, ६.
 एक-मूर्ध्निः न. ६, १५.
 एक-या ७. ४, १; १७. १,
 १७; २०. ६१, ४.
 एक-राद् ३. ४, १.
 एक-रात्रः ११. ७, १०.
 एक-रूपः १२. ३, २१.
 एक-रूपम् २. १, १.
 एक-रूपाः २. ३४, ४.
 एक-वाद्याम् २. १४, १.
 एक-विंशः न. ६, २०.
 एक-वीरः १६. १३, २; २०.
 ३४, १७.
 एक-वृत् न. ६, २५; २६;
 १३. ४, १२; २०.
 एक-वृत्तः १३. ४, १३; २१.
 एक-वृत्तम् १३. ४, १५-२१;
 २२; २४.
 एक-वृषः ४. २२, ६; ७; ५.
 १६, १; ६. न. १; २; ३.
 एक-वृषम् ४. २२, १; ५.
 एक-वायः १५. १, ६.
 एक-शतम् ३. ६, ६; ५. १८,

१२; ७. ११५, ३; म. २,
 २७; ११. ६, १६; १६.
 ४६, ५.
 एक-शके ५. ३१, ३,
 एक-शीर्षाणः १३. ४, ६.
 एक-शुक्लाः म. ७, ४.
 एक-श्रुष्टिन् ३. ३०, ७.
 एकस्मिन् १२. ३, ३६; १८.
 १, १७.
 एकस्य ६. १०, २६; १८.
 १, ३.
 एका ५. १५, १; द. म३,
 २१; ७. ४३, १; म. ६,
 १३१; ६. ५, १०.
 एका २०. १२६, ३.
 एकाः ७. ४३, १३.
 एकाकिना १६. ५६, १.
 एकादश १६. २७, ११; १२;
 १३; ४७, ५.
 एकादश-आ-चेभ्यः १६.
 २३, म.
 एकादशः ५. १६, ११.
 एकाम् ५. १, ६; १५. १३,
 १.
 एकै ६. १२२, २१; १०. ७,
 २७; म. ३६; १०, ३२१;
 १८. २, १४, १६. ५६,
 २; २०. १३२, १४.
 एकै इति १०. ७, ५२.
 एकैन् ५. ११, ६; ११. म,
 ३३१; १६. ४५, ५.
 एकैन्-एकेन १०. म, ३०.
 एकैभ्यः १८. २, १४.
 एकोनविंशतिः १६. १३,
 १६.
 एजत् ६. १०, म, १६; १०.

म, ६; १२. १, ३; ४;
 १३. २, ३१.
 एजत् २०. १३६, १.
 एजति ७. २०, ६; म. ६, म;
 १०. म, ११; १२. १,
 ४६; १६. ४७, २.
 एजत् ४. ४, २.
 एजत्-एजत् ४. ५, ४.
 एजत्-काः ५. २३, ७.
 एजथ ६. २२, २.
 एजथुः १२. १, १८.
 एजाति ६. २२, ३.
 एणी-इव ५. १४, ११.
 एत ११. १, १८.
 एतत् १. ३५, २; २. १३,
 २; ३. ११, १; २१,
 १-७; २२, १; २६, ७;
 ४. ७, ७; ११, म; ५. ३,
 ५; ६, २; १०, १; ७;
 १६, १०; ६. २६, १;
 ३२, १; ११३, १; ११८,
 २; १२३, ५; म. १,
 १०; ६. ५, ११; ६(२),
 १; ६(३), ६; ७, २५;
 ६, ४; १०. १, २८; म,
 २४; ११. १, ३१; ३,
 ५०; ५, २३; १२. ३, म;
 ३०; ३७; ४८; ४, १४;
 १५; ४८; १३. २, १३;
 ३, १-२५; १४. १, १४;
 २६१; २, २१; ४१; ६६;
 १५. १७, म; १६. १, म;
 १८. १, २; ३; १२; १३;
 २, ३७१; ५७१; ३, ३६;
 ७३; ४, ३१; ६४; ७५;
 ७६; ७७; १६. २४, ४;

३३, ४; ५०, ६; २०.
 ६६, ६.
 एतत् १८, ३, ४०.
 एतम् १. ३०, २; २. २६,
 ६; ३. १२, म; ४, १,
 २; १४, ७; ६. ८७, ३;
 १२२, १; ३; १२३, १;
 म. १, १०; ६. ४, म;
 २४; ५, १; ६; १२; ३७;
 ३८; १०. ६, ३५; ६, १;
 ११. १, २६; ३, ३२-
 ४६; १२. २, २३; ३,
 ७; १६; ३४; ३८; ४४;
 ४६; ५३; ५५-६०; १३.
 ४, १५-२१; २२; २४,
 १८. १, ५५; ३, २; १३,
 २०. १३०, ५.
 एतवे ६. २३, २; २०. ६२;
 १४.
 एतशम् २०. ३५, १५.
 एतस्मात् ११. ३, ५२.
 एतस्य ७. ४५, २; ६. ६(२),
 ११; १६. ५२, ५.
 एतस्याः १६. १७; २; ४; ६;
 म; १८, २; ४; ६; म.
 एतस्याम् ५. १७, ६.
 एताः ४. ११, ११; ३४, ५;
 ६; ७; ५. २१, १२; २६;
 १४; ७. ११५, ४; ६. ५;
 १५; ११, १, १५; १६.
 ४, ३३; १६. ६४, ४;
 २०. १२६; १.
 एतान् १. १६, ३; ५. २३,
 ११; ६. ११६, २; १३-
 १, ५३; २०. २१, ६;
 एतानि ५. २२, म; ७. ४२,

२; ७६, ४; ८०, ३; १६.
 ८, १.
 एताभिः १२. ४, ४६.
 एताम् २. २६, ७; ५. ११,
 २; १८, १; ७. ४५, २;
 ७३, ७; ६. ५, ४; १०,
 ४; ११. १, २४; २, २६;
 १२. २, ४८; ३, २१;
 ४, २४; १४. १, ३१;
 १७. १, ८; १८. २, ५;
 ३, ४६; ५२; १६. ४, १;
 ४, ४; ५६, ४.
 एतावत् ४. ११, ८; २०.
 ८२, १.
 एतावतः ५. १२, ७.
 एतावती ४. ३०, ८.
 एतासु ५. १३, २.
 एति ४. २४, १; ६. ४, ११;
 ८, ७; ११. २, २२; ३२.
 ३, ४८; १६. ८, १.
 एति १. १२, १; ४. १६, ६;
 ३४, ४; ५. १७, ६; १४;
 १८, १३; २३, ६; २७,
 ४; ६. २०; १; ५२, १;
 ८. ५, २; ६; ६२; २१;
 ६. ६(१); ४; ६, ६; १०,
 १६; २३; १०. २, १६;
 ८, १६; १०, ६; ११. ५,
 ६२; १२. २, ११; ४,
 २०; २१; १३. २, २५;
 २७; ४३; ३, २५; ४; १-
 ६; १४. १, ७; १८. १,
 ५३; ४, १३; १५; ३७;
 ६०, १६. ५४, १; २०.
 १०७, १५.
 एतं ६. ७५, ३३.

एतु १. ११, ४; १५, २; २१,
 १; २७, २; ४; २. ७, ५;
 १०, ५; ३४, १; ३; ३.
 १, १; ४; ६; १५, १;
 १६, ६; २३, २; ५; ४.
 १, २; ३, २; ५; १५,
 ६३; ३८, ३; ५; ५. १२,
 ८; १३, ३; ४; १४, १३;
 २२, ४; ३०, ११; १३१;
 ६. २६, १; ३८, १; २;
 ३; ४; ५३, २; ७६, १;
 ७६, २; ८६, २; १२१,
 ३; १४०, ३; ७. ६, २;
 ६७, १; १०८, १; ११६,
 २; ८. २, ८; ३, ११; १४;
 ४, १०; २१; ७, १५; ६.
 ४, ७; १०. १, १; २;
 १०; १६; ४, २२; २५;
 ११. १, १७; १२. १,
 ४०; ३, १७; १३. १,
 १०; १४. १, ३६; ५६;
 १८. ३, ६२; ७२; ४,
 ५७; १६. ४, ४; १०, ८;
 १३, ६; ३६, १; ५२, ४.
 एते २. ३६, ७; ५. १, ४; २,
 ३; ७, ६६, १; ८. ४,
 २०; ६. ६(२), ६; १३.
 ४, १३; १८. १, ६; ६१;
 २०. ३७, १०; ५६, ६;
 १०७, ६.
 एते इति ७. ५४, १.
 एतेन ४. १५, ११; ५. ६, ५;
 ६; ७.
 एतेभ्यः १८. २, ५४.
 एतैः ११. १, ३६; १२. ३,
 २६.

एतो इति २०. ६५, १.
 एतौ ७. ८१, १; ८. २, १८;
 ६. ४, १३; ११. १, ६;
 १२. २, ३२; १३. १,
 ४६; २, ११; १४. १,
 २३.
 एधः ७. ८६, ४; १२. ३, २.
 एधति २०, १२७, १०.
 एधतुः ११. ७, २२.
 एधतुम् ६. २, ११.
 एधन्ते १४. १, २६.
 एधस्य २०. १२६, १८.
 एधस्व १८. २, २५.
 एधि ३. २८, ३; ४. ३१,
 २; ६; ५. ३०, ६; ६.
 ८७, २; १४२, २; ७.
 ७८, १; ११. १, ७;
 २२; १२. २, १०; ४६;
 १४. १, ४३; ४४; २,
 १८; १८. ३, ७; ४,
 ३८; १६. १३, ८; ५५,
 ३; ४.
 एधिषीमहि १४. २, १७.
 एधिषीय ७. ८६, ४.
 एधिषीय ७. ८६, ४.
 एनः २. ३५, ३; ५. ३, ४;
 ६. ६७, २; ११३, १;
 ११५, २; ११६, ३; ३;
 ११६, ३; ७. ४२, १; २;
 १०. ३, ८; ५, २४; १२.
 २, ११; १६. १, ११;
 २०. ३४, १०.
 एतन्निपुण्क्ति का २०. १३०,
 ११.
 एतत् ६. ११३, १; ११७,
 २३; ८. ६, ३; १०. ७,

४३१, १६. ६, ४; १६.
२६, १.

पुनर्मु १. ६, ३; १२, २; ३०,
२; ३५, २; २०. ५, ७; ६,
१२; २८, १; २; ३०. ११,
१२; २; ३२; ४; ४. ६,
५२; ११, ४; १६, ७;
५. २, १; १८, ५२; ६;
६. ५, १२; ७५, १; ७६,
१; ४; ११०, २२; ११२,
१; १२३, २; १३३, ३;
७. १४, ४; १६, १२;
३५, १; ५३, ४२; ५६,
५; ८. १, २१; ३, ४५;
८; ११; १४; ५, १३;
६. १, २४; २, १३; १६;
३, १०; ४, १८; ५, ४२;
५; २३; २४; ७, २६;
१०. ३, १६; ५, ३६;
८, २३; ११. १, १६;
२४; ३०; ३, २८२; २६२;
३, ४२५-४६५; ५६; ५,
२; १२. ३, ३४; ३६;
३८; ४२; ४३२; ४, १६;
४८; ५, ४५; ७२; ७३;
१३. ३, ११; १५. २,
८; १४; २०; २८; ४, ३;
६; ६; १२; १५; १८;
५, २२; ५२; ७२; ६२;
११२, १३२; १५२; ७,
३२; ५५; १०, २; ८;
१०; ११, २; ३; ४; ५;
६; ७; ८; ६; १०; ११;
१२, २; १३, १५२; १३;
१६. ७, १२; २; ३; ११;
८, ४-२६; ३३, १५.
२, ४२; ५; ८; १२; ५०;

५१; ३, ४; ५०; ७१;
४, ११२; ६६; १६. १,
३; २४, २; ३; २६, १;
३६, २; ३८, १; ७२, १;
२०. ३४, ५; ७१, ८;
६४, ३; ६५, १; ६६,
६२; ७; ८२; ६; ६७, १;
१०७, ४; १४३, ८.

पुनर्योः ७. ४४, १.

पुनर्सः २. १०, ८; ५. ३०,
४; ६. ५१, ३; ८४, २;
११५, ३; ७. ६४, २;
७७, ३; १२. २, १२; ४,
६; १४. २, ४४; ५६;
६०; ६१; ६२.

पुनर्सा २. ३५, २.

पुनर्स्थः ६. ११५, २.

पुनर्स्थम् ८. ७, ६.

पुना ४. ८, ७; ३०, ८; ५.
११, ५२; ६२; ६. ६, ६;
१७; १८; २२; १०, २५;
१२. ३, ३३; १३. १,
४१; १४. १, २१; १८.
१, ५०; ६०.

पुनर्सा ६. ११५, १.

पुनाः ५. २६, १४; ६. १४१,
१; ७. ११५, ४.

पुनर्ना २. २५, ४; ५; ३. ६,
५; ८२; ४. ३४, ३; ४;
४०, १-८; ५. ३, १०;
८, ६२; १२, ३; २१, १;
६. १०४, ३; ७. ७, १;
८. ३, १६; ८, ३; ४;
१०; ११; २१; ६. २, ५;
१०; १६; १०. ३, २; ११.
१, २०; २५; १२, ३; ३०;

४, १५; १३. १, २६;
३२.

पुनर्ना ३. १२, ८; २५, ६;
२८, २; ५. ३१, १०; ७.
७३, ७; ८. ६, ६; ६.
१०, ४; १०. १, १; २;
१०, ३२; ११. १, ७;
२१२; २२२; १२. ४, १;
११२; १७; २२; २५; ५०;
१४. २, ३७; १८. ३, ३;
१६. ४, २.

पुनर्नी ६. ८३, २; १८. १, ३२.

पुनर्नीः ८. ३, ७; १८. ४,
३३; ३४.

पुने इति ५. २, ६; २०.
१०७, १२.

पुनेन ६. ६(४), २; ४; ६; ८;
१२. २, ३७.

पुनौ ७. ६५, २; १४. २, ६४.

पुन्यः २०. ६२, ७.

पुमिः २०. २१, ४२.

पुमिः २०. १३, ४.

पुम्यः ८. ८, २४.

पुम्यः २. ३५, ४; ३. २७, १;
२; ३; ४; ५; ६; ६. ६३;
२; १०. ६, १६; ६, ७;
११. १, २६; ३२; २०.
७५, ३; ८३, १.

पुमि ४. २८, ३; ५. १, ७;
६. ८, ३; ५१, २; ७.
६०, १; ६. ३, २२; ११.
६, ४; १६. ४, २; १७.
१-१०; २०. १२६, १६.

पुनर्मु ६. २२, ३.

पुनर्मानः ६. ११८, २.

पुनर् २०. ११५, १०.

एव २०. १३६, २.

एव २०. १३६, ६; ७.

एव १. १, २; ३२; २, ४;
 ३, ६; ७; ८; ९; ११, ६;
 १३, ३; १५, २; ३१, ४;
 २. १, ३; २, १; २, ४;
 १; ६, ५; १०, २-८;
 १५, १-६; २८, १; ३०,
 १; ३६, ४; ३८, ३; ६;
 ८, ३; १०, ४; ११, २;
 ६; १२, १; २; १४, ४; २;
 ५; १६, ५; १८, ३;
 २४, ४; २५, ६; ३१, ६;
 ४. २३, २; ३०, ३; ८;
 ३२, २; ३६, १; ३; ५;
 ७; ५. २, ६; ६, ३; ८;
 ३; ६; १७, ३; ८; ६;
 १८, ४; ११; १६, ११;
 २१, ४; ५; ६; २५, २;
 ३०, १; ६, ८; १; २; ३;
 १७, १; २; ३; ४; १८,
 २; २६, ३; ४६, ३; ५८,
 २; ७०, १; २; ३; ७१,
 १; ७२, १; ७३, ३; ७४,
 ३; ८५, ३; ८७, २; ८६,
 २; ६७, १; १०२, १;
 १०५, १; २; ३; ११७,
 २; १२२, २; १२४, २;
 ३; १३८, ५; १३६, ४;
 ५; १४१, ३; ७. १३, १;
 २७, १; ५०, १; ५; ६०,
 ७; ६७, १; ७८, १; ७६,
 २; ८२, ३; ८८, १; ११०,
 २; ८. १, १८, २, ७; ६,
 ११; १०(१), १; १०(२),
 १; ७; ६; १०(४), ३; ७;

१०(५), ३; ७; ११; १५;
 १०(६), ३; ४; ६. १,
 ११; १२; १३; १६; १७;
 २४; २, ७; ८; ५, २२;
 २४; ३१-३६; ६(१),
 ५-१५; १७; ६(२), २;
 ६(३), ६; ६(६), १; २;
 ३; ५; ६; ६, ११; १०. १,
 १३; २०; ३२; ३, १३;
 १४; १५; १७-२५; ६,
 ३३; ७, ४-७; १०-१६;
 १८; १६; २०; २२; ३६;
 ८, ११; १६; १७; २४;
 ३०; ४४; १०, २६; ११.
 १, २०; ३, ११; ३०; ३१;
 ३, ३२-४६; ४, १६; २१;
 ८, २; ६; १२. २, १०;
 १८; २५; ३६; ४६; ३,
 २०; २६; ४६; ४, १; १५;
 १६; १८; ३४; ५, ६५;
 १३. १, १७; १८; १६;
 ४, ५; १२; २०; २५;
 १४. १, २२; ४३; १५.
 १, १; ६; ८; ३, ११;
 १०, ४; ५; ६; ११, ३;
 ४; ५; ६; ८; १०; १३,
 २; ४; ६; ८; १०; १४;
 १७, ६; १०; १६. ७, ४;
 १७. १, २०; २१; १८,
 १, १५; २, १४; १६;
 १७; ५६; ४, ३८; ५५;
 १६. २, ५; ६, ४; ७, ४;
 ६, २; ३; ४; ५;
 १४; ३१, ६; ३४, ४;
 ५०, ४; ५३, ४; ५७,
 १; २०. ८, ६; १२, ६;
 ३५, १; ३५, ६; १०;

१६; ६०; १; २; ४; ५;
 ६; ६४, ४; ६६, २; ७१,
 ४; ५; ६; ८८, ६; ६४,
 ४; ६; ७; ६६, ७; १०७,
 १२२; १३३, ५; १३६,
 ३; १४०, ४; ५.

एवति २०. १३६, ६; ७.

एवम् ८. १०(१), ३; ५; ७;
 ६; ११; १३; १०(२),
 १०; १०(३), २; ४; ६;
 ८; १०(४), ४; ८; १२;
 १६; १०(५), ४; ८; १२;
 १६; १०(६), १; ४; ६,
 १, २३; २४; ६(२), ७;
 ६(४), १; ३; ५; ७; ६;
 १०; ६(५), ३; ५; ७;
 १०; ६(६), १४; ७, २६;
 १०. १०, २७; ३२; ११.
 ३, ३२-४६; ५१; ५४;
 १२. ४, २२; २३; ५,
 ४६; १२, ८; १३. ३,
 १-२५; १५. २, ३; ८;
 ११; १४; १७; २०; २३;
 २८; ३, ११; ४, ३; ६;
 ६; १२; १५; १८; ५, ३;
 १६; ६, ३; ६; ६; १२;
 १५; १८; २१; २३; २६;
 ७, ३; ५; ८, ३; ६, ३;
 १०, १; ११, १; ७; ६;
 ११; १२, १; ४; ७; ११;
 १३, १; ३; ५; ७; ६;
 १४; १५, २; ४; ६; ८;
 १०; १२; १४; १६; १८;
 २०; २२; २४.

एवैः ८. ४, ७; ६; २०. ६१,
१६.

एवो इति ६. ८४, ३.

एषः २. १, ४३; २६, ४; ३५,
३; ३६, ४; ४. १, ६;
११, ८; ३४, ५; ६. ८४,
२; १४०, २; ७. ५४, २;
६७, ६; ८. १, १०; ६.
४, ५; ५, ६; २१; ३१—
३६; ६(२), ८; ६; १०;
१२; ६(३), १—७; १०,
८, २४; ६, २; ११. ३,
३२—४६; १२. २, २१;
३, ४५; १३. ४, ८; १२;
२०; १४. २, २४; ६८;
१६. १, ८; १८. २,
३७; ३, ७०; १६. ५३,
२; २०. २४, ८; ३४, ५;
६७, ६; ६०, ३; ६६, ४;
१२६, २१; १२७, ३.

एषः ६. ५, ६.

एषतु ६. ६७, ३.

एषतु ६. ६७, ३.

एषा १. १४, २; ३; २. २६,
७; ३. ३८, १; २; ५.
११, १०; १७, ३; ४;
१८, ३; १०. ८; ३०; २;
६, २; ११. १, २३; २८;
१२. ३, २२; ५१; ४, १०;
३६; ४२; ५, १२; १३.
१, २७; १४. १, २५; १८,
१, २६; ५०; ३, ४६;
१६. ५५, २.

एषाम् १. २६, ६; ३. १६,
२; ५५; ६. ८४, १; ११२,
१; २; ७. १२, ३; १२.
२, २५; १४. १, २; १६.
३८, ४; २०. १२७, ५.

एषाम् २०. १३२, ८.

एषाम् २०. १३२, ६.

एषाम् १. ७, ७; ८, ४३; ६,
४; २. २६, २; ३२, ४;
३५, ४; ३. १, २; ४; २,
४३; ६; १६, ८; ४. १६,
१; ३३, ३; ३४, २२;
३६, ४; ५. ३, २; २३,
११; ६. ४७, २; ६४, २;
६६, १; ३२; १०४, १;
७. १०८, १; ८. ३; ६;
४, ३; ८, ६; २०; ६.
१०, २६; १०. १, १७;
८, ५; ८; २८; ३६;
११. ६, ६; ६, १३;
२३; १०, १६; २१,
१२. २, २३; ४६; ३,
१६; १४. २, २७; १५,
१७, १०; १८. १, ६; ३,
६२; १६. १३, ६; ३१,
४; ४५, ५; ५३, ४; २०.
१७, ४; ३५, १५; ६२,
१५; १२५, २.

एषि १३. २, ५.

एषि ४. १६, २; ३; ६. ६८,
३; ७. ८१, २; १२. २,
४६; १३. २, १२; २०;
२२; १४. १, २४; १७.
१, १५; १६; १७; १८.
१, ३६; १६. ३३, ३;
२०. ७, १; २१, ७; ४७,
१७; १६; १२६, २१.

एषु १४. २, ६; २०. २३,
४; ७१, ६.

एषु ६. ३५, ३; ६७, ३; १०.
३, २५; २०. ३५, १६.

एष्यः १२. २, ३६.

एष्यः १२. ४, १६.

एष्यामि ६. ६०, ७.

एष्याः १२. ३, ३३.

ऐ

ऐः १०. १०, १०.

ऐः ५. २२, ११.

ऐत १३. ३, ६.

ऐत ११. ५, १५.

ऐतामि ८. ५, ११.

ऐत् १०. ८, ३६.

ऐत् १५. १, ५; १६. ५३,
४.

ऐतम् १८. ३, ३८.

ऐताम् ८. ६, १; १४. १,
११.

ऐतोः २०. ७७, ७.

ऐन् १०. २, १६.

ऐन्द्रः ५. २०, २; ६. ४, २२.

ऐन्द्राः ५. ८, २.

ऐन्द्राग्रम् ८. ५, १६; ११.
७, ६.

ऐरत् २०. १२, १.

ऐरयः ७. ५५, १.

ऐरयत् ८. ५, १४; १०. २,
२६; १५. १, १; १६.
५४, ४; २०. ३८, ६;
४७, ६; ७०, ६.

ऐरयत् ७. ३, १.

ऐरयन् १. ११, २; ३. ३१,
७; ४. २, ८; ७. २२, २.

ऐरयन्त २. १, ५; ६. ४७, ३.

ऐरयथा ७. ४४, १.

ऐरावतः ८. १०(५), १५.

ऐलवः द. १६, ३.

ऐलव-कारेभ्यः ११. २, ३०.

ऐलवम् १२. ५, ४७; ४८;
४९.

ऐल्यीत् द. १६, ३.

ओ

ओ इति ७. ७२, २; १८. १,
१.ओकः प. २२, ५^२; १८. ३,
८; २०. ५२, २; ५७, १५.ओकसः ३. २, २; द. ७५,
१; २०. २६, ३; ६२,
१५.

ओक्यम् २०. ६४, ६.

ओक्ये २०. २४, ८.

ओजः १. १२, १; ३५, २;
३; २. १७, १^२; ३. ५,
१; १६, २; ४. २४, ५;
३१, २; ३२, १; ४; द.
१२५, २; ३; १२६, २;
७. ५४, २; ८४, २; ६०,
१; ६. १, १७; ४, ८;
१०. ३, १२; ५, १; २;
३; ४; ५; ६; ११. ७,
१८; ८, २०; १२. ५, ७;
१८. ४, ५३; १६. ३३,
४; ३४, ५; ३७, १; २;
४१, १; ४२; ५३, २;
६०, २; २०. ६७, ६;
६४, ४; १०७, २; १०८,
२; १३७, ११.ओजसः १६. ४५, ३; २०.
६३, ५.ओजसा ३. १, ६; २, ६;
द. ६७, ३; ७. २५, १;८. ८, १२; १३; १०. ३,
१३; ६, १; ११. १०,
१३; १६. १३, ६; ३३,
३; ३४, ५; २०. ५, ३;
२१, ७; ३१, ५; ४२, ३;
५३, १; २; ५४, २; ५७
११; १२; ५८, १; ७०,
१४; ७१, ७; ६३, ६; ७;
८; १३७, ५; १३८, १.ओजसे ८. ५, २०; १०. ६,
६; ७^२; ८; ६; १०; ११
१०, ११; १६. २६, ३;
३७, ३; ४५, ६; ७; ८;
६; १०; ४६, १; २०.
१५, ५; ११३, ३.

ओजस्वान् ८. ५, ४; १६.

ओजांसि द. ८, ३,

ओजायमानम् २०. ३४, ११,
ओजिष्ठः २०. ४७, २; १३७,
१३.ओजिष्ठम् २०. ५४, १; ८०,
१.ओजीयः प. २, ४; ७. ५,
४; २०. १०७, ७.

ओजीयसः १०. ३, ७.

ओज्मानम् ४. १६, ८; द.
१२५, २; १६. ३४, ६.

ओणिम् २०. ३५, १४.

ओण्योः ७. १४, १.

ओतवः १४. २, ५१.

ओतवै ६, ६, ६.

ओते इत्या-उते प. ३३, १;
द. ६४, ३.

ओदन् ११. १, ३३.

ओदन् १०. १०, २५; ११.

३, ३०; ३१; २, ३२-
४६; ५०; १२. ३, ५.ओदजम् प. १४, ७, ३४,
३; ४; ८; ३५, १; ११.
१, २३; ३, २६; २७;
३०; ३१; १२. ३, ४;
१२; २७; १८. २, ३०;
४, ४२; २०, ६२, ११.ओदजस्य ४. ३४, १; ११.
१, १७; २४; ३, १; ११;
२२; २३; १२. ३; ५१.

ओदजा ३: ११. ३, २७.

ओदजात् ११. ३, ५२.

ओदजान् ६. ५, ३७.

ओदजानाम् ६. ५, १६.

ओदजाय १२. ३, ३२.

ओदजेन ४. ३५, १-६; ११.
३, १६.

ओपशः १४. १, ८.

ओपशम् ६. ३, ८; २०. २७,
५.

ओपशिन्म् द. १३८, १; २.

ओष १६. २६, ७^५.

ओष ८. ३, २१.

ओषत्म् ८. ४, १.

ओषत् १२. ५, ७२; ७३.

ओषधयः २. ३, ६; ३. २३,
६; २४, १; ४. १५, २;
१६; द. ६६, १; ८. १,
१७; २, १५; ७, ३; ६;
१६; ६. ७, १५; ११. ४,
६; १६; १७; ५, १४; २०;
७, २१; १२. १, २३;
१४. २, ७; १५. ६; २;

१८. १, १७; ३, ५६; १६.
 ६, १४; ३४, ७; ४४, ६.
 श्रीषधि: ४. ४, ३; ६. ५६,
 ३; ७. ३८, ५; १६. ३२,
 १.
 श्रीषधि-जा: १०. ४, २३.
 श्रीषधिम ३. १८, १; ४. ४,
 १; १४. १, ३.
 श्रीषधी: ३. १७, ५; २१, १;
 २६, ५; ४. १७, २; २३,
 ६; ६. २२, २; २३, ३; ७.
 ८७, १; ८. ३, २४; ७, १;
 ४; १०; १३; १७; १६;
 २४; २५; ८, १४; ६, २३;
 १०(२), ७; ६; ६. ४,
 १३; १०. १, ११; ५,
 ३२; ११. ४, ३; ४; ६,
 १; ६, २४; १२. १, २;
 ३, ३१; ५०; १३. १, २;
 ४, ४३; १५. १४, ११;
 १६. ६, १; १०, ५; २०.
 ११, १०; १४३, ८.
 श्रीषधी: ८. ७, ५; २१.
 श्रीषधीनाम् ३. ५, १; ३१,
 १०; ४. ४, ४; १५, १०;
 १७, ८; १६, ३; २२, ४;
 २७, ३; ३७, ६; ५. २५,
 ७; ६. १५, १; ३; ६५,
 ३; ७. ३६, १; ८. ३,
 १६; ५, ११; ७, २५; ६.
 ४, ५; १०. ४, २१; १२.
 १, १७; ५७; १४. २,
 ७०; १५. ६, ३; १६.
 ३१, ५; ३२, १०; ३६, ४.
 श्रीषधीभि: २. १०, २; ४.
 १५, २; १२. ३, २८;

१५. १४, १२; १६. ११,
 ५; २७, २.
 श्रीषधीभ्य: ६. २०, २; १०.
 ५, ३२; १२. ३, ५६;
 १६. ३, १.
 श्रीषधीम् ८. २, ६; ७, ६.
 श्रीषधी-मती: १६. १७, ६;
 १८, ६.
 श्रीषधीषु १. ३०, ३; २.
 ३१, ५; ४. २७, २; ६.
 ५८, २; १०. ४, २२;
 १२. १, १६; १८. २, ७;
 १६, ३, २; २०. १३६,
 ५.
 श्रीषधी-संशित: १०. ५, ३२.
 श्रीषधे १. २३, १; ३; २४,
 ३. २. २७, १-६; ३०,
 ४; ३६, ८; ४. ६, ८; ७,
 ६; १२, ५; १७, १; १६,
 २; ४; २०, २; ६; ३७,
 १; १०; ५. १४, १; २;
 १५, १-११; ६. १२७,
 १; १३६, १; १३७, ३;
 १३८, १; ८. ६, ६; १०.
 १६. ३२, ३; ३४, ६.
 श्रीषध्या ४. १८, ५; १०. १,
 ४.
 श्रीषन्ती १२. ५, ५४.
 श्रीषम् २. ३६, १; ७. ७३,
 ६; १२. ३, ३१.
 श्रीषौ १०. ६, १४.
 श्रीहते २०. १३१, ७.
 श्रीहते २०. ५०, २; ६२,
 ११.
 श्रीहम् २०. ३५, १.
 श्रीहसे २०. ४५, १.

श्री

श्रीक्ष: २. ३६, ७.
 श्रीक्ष-गन्धि: ४. ३७, ३.
 श्रीक्षन् १६. ६, ११.
 श्रीक्षै: अवसम् २०. १२८,
 १५.
 श्रीक्षन्म् २०. १३६, ११;
 १३.
 श्रीक्षम्बर: १६. ३१, २; ६;
 ७; १०; ११; १३; १४.
 श्रीक्षम्बरम् १६. ३१, ४.
 श्रीक्षम्बरस्य १६. ३१, ३.
 श्रीक्षम्बरेण १६. ३१, १.
 श्रीक्षोत् १३. ३, २२.
 श्रीक्षोत् ७. १, २; १०. २,
 १८.
 श्रीक्षत् १०. २, १७.
 श्रीक्षत् ६. १०, ७.
 श्रीक्षताम् ७. ५३, १.
 श्रीक्षन् ५. २८, ८; १२. २,
 २६.

क

कंसा: १०. १०, ५.
 क: ३. १६, ८; २६, ७; ४.
 ५, २; २५, २; २८, ५;
 ५. १६, १०; ६. २८, २;
 ७. ७, १; ७०, ३; ७६,
 ३; १०३, १५; १०४;
 १; ८. ८, १६; ६, १०५;
 २५२; ६. १, ६२; ६(६);
 ४; ६, ४२; १८; १०, २३;
 ६०. २, १-७; ११७
 १५५; १७५; ४, १८; ७.

२३; ८, ४; ११. ४, २५;
 ८, १; १२; १४; १६;
 ६, २०; १०, १६; १२.
 १, १८; २३; २४; २५;
 ४, ७; १४. १, ५६; १८.
 १, ६; ७^१; ३३; ४८;
 १६. २२, २१; २३; ३०;
 २०. ३६, ४; ५०, २;
 ५३, १; ५७; ११; ७६;
 ३; ६३, २; १२४, २;
 १३०, १; २; ३; ४;
 १३२, ८; ६; १४३, ३.
 कः ७. १०, १; १८. १, ५;
 १६. ३२, ६.
 ककुजा-कृता ११. १०, २५.
 ककुटिकाम् १०. २, ८.
 ककुत् ६. ८६, ३; ६. ४, ८;
 ७, ५; १०. ६, १६.
 ककुत्सलम्-इव १८. ४, ६६.
 ककुदात् १०. १०, १६.
 ककुदि ३. ४, २; ७. ७६, ३.
 ककुप् १३. १, १५.
 ककुभाः ८. ६, १०.
 ककुहासः २०. १४३, २.
 ककुलीवन्तम् ४. २६, ५.
 ककुलीवान् १८. १, १५; २०.
 १४०, ५.
 ककुल ६. १२७, २.
 ककुया ८. ४, ६.
 ककुया-इव १८. १, १५.
 ककु-पर्वणः ७. ५६, १.
 ककु-पर्वणः ६. ८, २.
 ककुम् १४. १, २६.
 ककुः १०. ६, २६.
 ककुः ११. ३, ५.
 ककुः १४. २, ६८.

ककुः ४. ३७, १; ७. १५,
 १; १८. ३, १५.
 ककु-जम्भनी २. १५, १.
 ककुम् २. २५, ३; ४. २६,
 ५.
 ककु-वत् २. ३२, ३; ५.
 २३, १०; २०. ११५, २.
 ककुस्य ६. ५२, ३.
 ककुः २०. १८, १; १३६,
 ३.
 ककु-इव २०. १०, २;
 ५६, २.
 ककुन् २. २५, ४; ५.
 ककुवासः २०. १२०, २.
 ककुन ४. १६, २.
 ककुभिः २०. ५२, ३; ५७,
 १६.
 ककुषु २०. १४१, ४.
 ककु १८. १, ४; ७; ३३; २७,
 १४, १; ५०, १; २२;
 ५३, १; ५७, ११; ६२,
 १; ७६, ३; ४२, ६७, ३;
 ११२, १.
 ककुमः ८. ८, ६; ६, १; २५
 १०. २, ८; ७, ४-७;
 १०-१६; १८; १६; २०;
 २२; ३६; ८, १३; ११.
 ४, २२.
 ककुम् ५. ३, ४; ६. २,
 १०.
 ककुमस्याः ८. ६, १.
 ककुमा १०. ८, १०; १२. ४,
 ४५.
 ककुमे १०. २, ४; ८, १५.
 ककुः ७. ४४, १.
 ककुत् २०. १२७, ६.

ककुरेण ८. ६, १.
 ककु १०. २, ४५; १२. ४,
 ४३; २०. १२६, २०.
 ककु-धा ८. ६, १०२; १६.
 ६, ५.
 ककुम् ५. ११, १२; ७. ७६,
 ५; ८. ६, १६२; २०५;
 १०. ७, ३७२.
 ककुम् २०. १३२, १०.
 ककु ८. १, १६.
 ककुदा १. २०, ४; ४. ३४, ३;
 ६. १३०, ३; ७. ६, ३;
 ८. ४, ७; १०. ७, ३७;
 ११. ४, २१; २०. ५०,
 २; ५२, २; ५७, १५;
 ६३, ५२; १२७, १४.
 ककुची ६. ६, १७; १३. १,
 ४१.
 ककुकम् १०. ४, २२.
 ककुक्रदत् २. ३०, ५; २०.
 ८, ५.
 ककुष्ठः १०. ८, २८.
 ककुष्ठिका १. १७, २.
 ककुनीनः २०. ६३, ११.
 ककुनीनिका ४. २०, ३.
 ककुनीयः ३. १५, ५; १२. ४,
 ६.
 ककुन्या ५. ५, ३.
 ककुन्याः १४. २; ५२.
 ककुन्या २०. १२८, ८; ६.
 ककुन्या १. १४, २; १०. ४,
 २४; ११. ५, १८; १४.
 २, २२.
 ककुन्या-इव ६. २२, ३.
 ककुन्यानाम् २. ३०, ४.
 ककुन्यायाम् १०. ३, २०; १२.
 १, २५.

कपोलम् १०. २, ८.
 कपालानि ६. ८, २२.
 कपिः ६. ४६, १; २०. १२६,
 ५.
 कपिः-इव ३. ६, ४; ४. ३७,
 ११.
 कपृत् २०. १२६, १६; १७;
 १३७, २.
 कपृथम् २०. १३७, २.
 कपोत-उलूकाभ्याम् ६.
 २६, २.
 कपोतः ६. २७, १; २; ३;
 २६, १.
 कपोतः-इव २०. ४५, १.
 कपोतम् ६. २८, १.
 कपोताय २०. १३५, १२.
 कफोडौ १०. २, ४.
 कबन्धम् ६. ४, ३; १०. २,
 ३.
 कब्रु ११. ३, ६.
 कम २. १, ५; ३. ११, १;
 ४. ६, १; ५. ११, २; ६.
 २०, १; ६१, १; ८४, १;
 ११०, १; ८. २, २५; ६.
 ३; ६; ६, १७; १०. ६,
 ७; ११. ८, ५; ११; १३.
 १, ४१; १४. १, ४२;
 ५३; २, ३०; १५. १०,
 ३; १८. ३, ४१; १६.
 ४६, १; २०. ५६, ३;
 ६६, ६; १२६, २२.
 कम १. १७, ४; ३. १३, ३;
 ७. २६, १; २०. ६३,
 १; ६७, ३; १२४, ४.
 कमलम् ८. ६, ६.
 कम्बले १४. २, ६६; ६७.

कम्बुकान् ११. १, २६.
 कया २०. ७६, ४; १२४, १२.
 कर १६. ५७, ३.
 करः २०. ३६, १०.
 करः ४. २०, ७; ५. १५,
 १-११; २०. २३, ६.
 करजम् २०. २१, ८.
 करणः ६. ४६, २; १६. ५,
 १; ४; ५; ६; ७; ८.
 करत् ४. २२, ५; ६. ५६, २;
 १०. ६४, १.
 करत् २. ६, ५; ४. ८, ६;
 ५. ४, १०; ६. १०३, १;
 ७. ३०, १; १६. ३१, १;
 ३४, २; १०; ३५, ५;
 ४५, ३; ४६, ७; २०.
 २०, ७; ५७, १०; १३७,
 ३.
 करति १६. १५, ५.
 करते २०. ७७, १; १४२,
 ३.
 करन् ६. २४, २.
 करम् १. ३, १; २; ३; ४;
 ५; १४. १, १८.
 करम्मम् ४. ७, ३; ६. १६,
 १.
 करम्भेण ४. ७, २.
 करवः १३. १, ५६; ५७.
 करवात् १०. २, ५.
 करसि १८. २, ४.
 करसे २०. ७६, ४.
 कराम १८. १, ५२.
 करामहे ७. ६, ४.
 करिक्त २०. ७२, २; ७५,
 १.

करिक्तम् १०. ४, १३.
 करिक्ति ४. १८, ३.
 करिति कः २०. ३५, ११.
 करिष्यति ६. १०, १८; १०.
 ६, २.
 करिष्यथ ५. १३, ७.
 करिष्यन् २०. ३७, ८.
 करिष्यामि ५. ८, २.
 करीषिणीः ३. १४, ३.
 करीषिणीम् १६. ३१, ३.
 करुणौ १२. ३, ४७.
 करुमाः ८. ६, १०.
 करुकरम् ११. ६, ८.
 करेण १२. २, २.
 करेण-इव २०. ६१, ६.
 करोति १२. ५, ४५.
 कर्क-धुके २०. १३६, ३.
 कर्करिकः २०. १३२, ३.
 कर्करी २०. १३२, ८.
 कर्कर्यः ४. ३७, ५.
 कर्को ४. ३८, ६.
 कर्कीम् ४. ३८, ६; ७.
 कर्णः १५. १८, ३३;
 कर्णकौ २०. १३३, ३.
 कर्णातः ६. ८, ३.
 कर्णयोः ६. १४१, २; १६.
 ६०, १.
 कर्ण-शूलम् ६. ८, १; २.
 कर्णा ५. १३, ६.
 कर्णाभ्याम् २. ३३, १; ६.
 ४, १७; ८, २; २०. ६३,
 १७.
 कर्णिनी १०. १, २.
 कर्णौ २०. ५४, ३; १२६, ४.
 कर्णौ १०. २, ६; ६, ३३.

१२. ४, ६; ५, २२; १६.
 २, ४२.
 करण्यः दं. १२७; ३.
 कर्तम् ११. २, २.
 कर्तम् ५. १२, ७.
 कर्तम् ३. १७, ५.
 कर्तवे १३. २, १२; २०.
 ६५, १.
 कर्ता २. १२; ५; ५. २६,
 १.
 कर्तारम् २०. ४६, १.
 कर्तारम् ४. १६, ६; ५. १४,
 ११; १०. १, ३; २५.
 कर्तुम् ४. १८, ६; ५. ३१,
 ११.
 कर्तुन् १०. १; १४; १७.
 कर्तौः २०. १२३, १.
 कर्त्रम् १०. १; १६; ३२.
 कर्त्रे १०. १, ३०.
 कर्त्तव्यम् १. ४, ३.
 कर्त्तव्यमि १०. १, २१.
 कर्म ६. २३, ३; ११. ७, १७;
 ८; २; ६; २०. ११, ६;
 ६५, १.
 कर्म ४. ३६, ६.
 कर्म-कृत् २. २७, ६.
 कर्म-कृत्याय ४. २४, ६.
 कर्मणः ११. ८, ६.
 कर्मणा १०. ५, १५-२१;
 २०. ५६, ४; ६२, १८.
 कर्मणि ५. २४, १-१७.
 कर्मणे १६. ३७, २.
 कर्मण्याः ६. २३, २.
 कर्मन् १२. ३, ४७; २०.
 १४, २; ६२, २.
 कर्मन्-कर्मन् ४. २३, ३.

कर्म-सु २०. १२५, ४.
 कर्मणि ४. ७; ७; ५. ६, २;
 ७. २६, ६; ५४, १; १०.
 २, १८; १६. ६८, १;
 २०. ३५, १३.
 कर्मराः ३. ५, ६.
 कर्मरम् १०. ४, १६.
 कर्मराणि ५. २, ६; ७. ३,
 १; २०. १०७, ६.
 कर्मरस्य ३. ६, १.
 कर्मि १३. २, ३.
 कर्मैत् १५. १३, १२२.
 कर्मशः ६. १, ६; ४, १५;
 २०. ८, ३.
 कर्मशम् ६. ४, ६; १८. ४,
 ३०.
 कर्मशान् १८. ४, ५८.
 कर्मशे ७. ७६, ६; १८. ४,
 ६०.
 कर्मशैः ३. १२, ७.
 कर्लाः १६. ५७, २.
 कर्लाम् ६. ४६; ३; १६. ५७,
 १.
 कर्लि-भिः १०. १०, १३.
 कर्लिम् ७. १०६, १.
 कर्पत् ११. ५, २६.
 कर्पताम् ५. ७, ३.
 कर्पते २०. १२८, १२.
 कर्पते ४. ७, २; ५. १६,
 १५; ८. ६, २०; १०. ६,
 ४.
 कर्पम् ८. ६, १०.
 कर्पमानः ३. ८, १; १३. २,
 ३३; ४३; १८. ४, १३.
 कर्पय १. २४, ४; ४. १२,
 ५२; ६. ५, ४; ११. १,
 ३६; १२. २, २५.

कर्पयताम् ६. ८८, ३.
 कर्पयति १२. ४, ३१.
 कर्पयतु ५. २५, ५.
 कर्पयन्तः ८. ६, १४; ६;
 १०, १६.
 कर्पयन्ताम् ७. ६७, १.
 कर्पयन्ति ६. ६ (१), ७; १०;
 १, १.
 कर्पयन्ति ६. ६ (१), ७;
 १८. ४, २.
 कर्पयन्तु ६. ५, १३.
 कर्पयसि ४. २३, २.
 कर्पयस्व १८. १, १३.
 कर्पयात् ३. ४, ६.
 कर्पयाति ७. १०४, १; १८.
 ३, ५६; १६. ५६, ३.
 कर्पयामि १२. २, ३२; १८.
 ४, ५२; १६. २७, ४.
 कर्पयावहै २०. १२६, २१.
 कर्पयित्वा १३. १, ५२; ५४.
 कर्पये २०. १२८, ६; ७; ८;
 ६; १०; ११.
 कर्पलिः १५. २; ५; १३;
 १६; २५.
 कर्पमाण-ग्रीवः ३. २७, ५.
 कर्पमाण-ग्रीवाय १२. ३, ५६.
 कर्प्याणि ६. १०७, ३; ४;
 १३६, ३.
 कर्प्याणी २०. १२८, ८; ६.
 कर्प्याणी ५. १७, १२; १८;
 १०. ८, २६.
 कर्प्याण्यै ६. १०७, ३.
 कर्पच-प्राशैः ११. १०, २२.
 कर्पची ११. १०, २२.
 कर्पयः ३. १७, १; ५. १, ६;
 ८. ६, १७; ६. २, ५; ४,

कृपालम् १०. २, ८.
 कृपालानि ६. ८, २२.
 कृपिः ६. ४६, १; २०. १२६,
 ५.
 कृपिः इव ३. ६, ४; ४. ३७,
 ११.
 कृपित् २०. १२६, १६; १७;
 १३७, २.
 कृपुथम् २०. १३७, २.
 कृपोत-उलूकाभ्याम् ६.
 २६, २.
 कृपोतः ६. २७, १; २; ३;
 २६, १.
 कृपोतः इव २०. ४५, १.
 कृपोतम् ६. २८, १.
 कृपोताय २०. १३५, १२.
 कृफोडौ १०. २, ४.
 कर्बन्धम् ६. ४, ३; १०. २,
 ३.
 कर्बु ११. ३, ६.
 कम् २. १, ५; ३. ११, १;
 ४. ६, १; ५. ११, ३; ६.
 २०, १; ६१, १; ८४, १;
 ११०, १; ८. २, २५, ६.
 ३; ६; ६, १७; १०. ६,
 ७; ११. ८, ५; ११; १३.
 १, ४१; १४. १, ४२;
 ५३; २, ३०; १५. १०,
 ३; १८. ३, ४१; १६.
 ४६, १; २०. ५६, ३२;
 ६६, ६; १२६, २२.
 कम् १. १७, ४; ३. १३, ३;
 ७. २६, १; २०. ६३,
 १; ६७, ३; १२४, ४.
 कमलम् ८. ६, ६.
 कम्बले १४. २, ६६; ६७.

कम्बूकान् ११. १, ३६.
 कया २०. ७६, ४; १२४, १२.
 कर् १६. ५७, ३.
 कर्ः २०. ३६, १०.
 कर्ः ४. २०, ७; ५. १५,
 १-११; २०. २३, ६.
 कर्जम् २०. २१, ८.
 कर्णः ६. ४६, २; १६. ५,
 १; ४; ५; ६; ७; ८.
 कर्त्त ४. २२, ५; ६. ५६, २;
 १८. ६४, १.
 कर्त्त २. ६, ५; ४. ८, ६;
 ५. ४, १०; ६. १०३, १;
 ७. ३०, १; १६. ३१, १;
 ३४, २; १०; ३५, ५;
 ४५, ३; ४६, ७; २०.
 २०, ७; ५७, १०; १३७,
 ३.
 कर्त्ति १६. १५, ५.
 कर्त्ते २०. ७७, १; १४३,
 ३.
 कर्त्त ६. २४, २.
 कर्म् १. ३, १; २; ३; ४;
 ५; १४. १, १८.
 कर्म्मम् ४. ७, ३; ६. १६,
 १.
 कर्म्मेण ४. ७, २.
 कर्त्तः १३. १, ५६; ५७.
 कर्त्वात् १०. २, ५.
 कर्त्सि १८. २, ४.
 कर्त्से २०. ७६, ४.
 कर्त्तम् १८. १, ५२.
 कर्त्तम्हे ७. ६, ४.
 करिक्त २०. ७२, २; ७५,
 १.

करिक्तम् १०. ४, १३.
 करिक्त्ति ४. १८, ३.
 करिक्त्ति कः २०. ३५, ११.
 करिष्यति ६. १०, १८; १०,
 ६, २.
 करिष्यथ ५. १३, ७.
 करिष्यन् २०. ३७, ८.
 करिष्यामि ५. ८, २.
 करीषिणीः ३. १४, ३.
 करीषिणीम् १६. ३१, ३.
 करुणो १२. ३, ४७.
 करुमाः ८. ६, १०.
 करुकरम् ११. ६, ८.
 करुणो १२. २, २.
 करुणो इव २०. ६१, ६.
 करोति १२. ५, ४५.
 कर्क-धुके २०. १३६, ३.
 कर्क-रिक्तः २०. १३२, ३.
 कर्करी २०. १३२, ८.
 कर्करीः ४. ३७, ५.
 कर्को ४. ३८, ६.
 कर्कीम् ४. ३८, ६; ७.
 कर्णीः १५. १८, ३.
 कर्णीकौ २०. १३३, ३.
 कर्णतः ६. ८, ३.
 कर्णयोः ६. १४१, २; १६,
 ६०, १.
 कर्ण-शूलम् ६. ८, १; २.
 कर्णा ५. १३, ६.
 कर्णाभ्याम् २. ३३, १; ६.
 ४, १७; ८, २; २०. ६३,
 १७.
 कर्णिनी १०. १, २.
 कर्णो २०. ५४, ३; १२६, ४.
 कर्णौ १०. २, ६; ६, ३३.

१२. ४, ६; ५, २२; १६.
 २, ४२.
 करण्यः ६. १२७; ३.
 कर्तम् ११. २, २.
 कर्तम् ५. १२, ७.
 कर्तम् ३. १७, ५.
 कर्तवे १३. २, १२; २०.
 ६५, १.
 कर्ता २. १२; ५; ५. २६,
 १.
 कर्तारम् २०. ४६, १.
 कर्तारम् ४. १६, ६; ५. १४,
 ११; १०. १, ३; २५.
 कर्तुम् ४. १८, ६; ५. ३१;
 ११.
 कर्तृन् १०. १; १४; १७.
 कर्तोः २०. १२३, १.
 कर्त्रम् १०. १; १६; ३२.
 कर्त्रे १०. १, ३०.
 कर्त्रम् १. ४, ३.
 कर्त्स्न्यामि १०. १, २१.
 कर्म ६. २३, ३; ११. ७, १७;
 ८; २; ६; २०. ११; ६;
 ६५, १.
 कर्म ४. ३६, ६.
 कर्म-कृत् २. २७; ६.
 कर्म-कृत्याय ४. २४, ६.
 कर्मणः ११. ८, ६.
 कर्मणा १०. ५, १५-२१;
 २०. ५६, ४; ६२, १८.
 कर्मणि ५. २४, १-१७.
 कर्मणे १६. ३७; २.
 कर्मण्याः ६. २३, २.
 कर्मन् १२. ३, ४७; २०.
 १४, २; ६२, २.
 कर्मन्-कर्मन् ४. २३, ३.

कर्म-सु २०. १२५, ४.
 कर्माणि ४. ७; ७; ५. ६, २;
 ७. २६, ६; ५४, १; १०.
 २, १८; १६. ६८, १;
 २०. ३५, १३.
 कर्मराः ३. ५, ६.
 कर्वरम् १०. ४, १६.
 कर्वराणि ५. २, ६; ७. ३,
 १; २०. १०७, ६.
 कर्शफस्य ३. ६, १.
 कर्षि १३. २, ३.
 कर्षेत् १५. १३, १२२.
 कलशः ६. १, ६; ४, १५;
 २०. ८, ३.
 कलशम् ६. ४, ६; १८. ४,
 ३०.
 कलशान् १८. ४, ५८.
 कलशे ७. ७६, ६; १८. ४,
 ६०.
 कलशैः ३. १२, ७.
 कलाः १६. ५७, २.
 कलाम् ६. ४६, ३; १६. ५७,
 १.
 कलि-भिः १०. १०, १३.
 कलिम् ७. १०६, १.
 कल्पत् ११. ५, २६.
 कल्पताम् ५. ७, ३.
 कल्पते २०. १२८, १२.
 कल्पते ४. ७, २; ५. १६,
 १५; ८. ६, २०; १०. ६,
 ४.
 कल्पम् ८. ६, १०.
 कल्पमानः ३. ८, १; १३. २,
 ३३; ४३; १८. ४, १३.
 कल्पय १. २४, ४; ४. १२,
 ५२; ६. ५, ४; ११. १,
 ३६; १२. २, २५.

कल्पयताम् ६. ८८, ३.
 कल्पयति १२. ४, ३१.
 कल्पयतु ५. २५, ५.
 कल्पयन्तः ८. ६; १४; ६;
 १०, १६.
 कल्पयन्ताम् ७. ६७, १.
 कल्पयन्ति ६. ६(१), ७; १०.
 १, १.
 कल्पयन्ति ६. ६(१), ७;
 १८. ४, २.
 कल्पयन्तु ६. ५, १३.
 कल्पयसि ४. २३, २.
 कल्पयस्व १८. १, १३.
 कल्पयात् ३. ४; ६.
 कल्पयाति ७. १०४, १; १८.
 ३; ५६; १६. ५६, ३.
 कल्पयामि १२. २, ३२; १८.
 ४, ५२; १६. २७, ४.
 कल्पयावहै २०. १२६, २१.
 कल्पयित्वा १३. १, ५२; ५४.
 कल्पेषु २०. १२८, ६; ७; ८;
 ६; १०; ११.
 कल्मलिः १५. २; ५; १३;
 १६; २५.
 कल्मष-ग्रीवः ३. २७, ५.
 कल्मष-ग्रीवाय १२. ३, ५६.
 कल्याणि ६. १०७, ३; ४;
 १३६, ३.
 कल्याणी २०. १२८, ८; ६.
 कल्याणी ५. १७, १२; १८;
 १०. ८, २६.
 कल्याण्यै ६. १०७, ३.
 क्वच-प्राशैः ११. १०, २२.
 क्वचि ११. १०, २२.
 क्वचयः ३. १७, १; ५. १, ६;
 ८. ६, १७; ६. २, ५; ४,

कामये—कियेधाः.

(४, ७६३)

कामये ४. ३०, ३.	कारु २०. ७७, ३.	कासिका ११. २, २२.
कामये ६. ४५, १.	कार् २०. १३६, १४.	कासे ६. १०५, १; २; ३.
काम-शल्याम् ३. २५, २.	क_र्यस्य ३. २४, ५.	काहायाहम् ६, ८, ११.
कामल्य ३. २५, १; ३; ६.	क_र्शनः ४. १०, ७.	कि_तवम् ७. १०६, ३.
१३६, ५; ६. २, ६.	काणी'वयाः ६. ११६, १.	कि_तवान् ७. ५०, १.
कामाः ११. ७, १३; १२. ३,	काष्णम् ११. ५, ६.	किम् ४. २६, ६; ५. ११,
३६; ४, १६; १४. २, ५;	क_प्यर्थाः २०. १३०, ४.	५२; १३, ७; ६. ४५,
१६. ४२, ३.	क_लः १३. २, ३६; १६. ५३,	१; ५१, ३; ५७, ३; ७१,
कामात् ६. ८, ८.	१; २२; ५२; ६; ८; ६;	१; ७. ५६, ६; ८; ७०, १;
कामाद् ३. १०, १३; २६, २;	१०२; ५४, ३; ४; ५.	१०६, १; ४, १४;
१२. ४, ३५; ३६; २०.	क_लकाजाः ६. ८०, २.	६, २५; ६. ६, ७; १०,
५६, ५; १००, १.	क_लम् १६. ५३, ३.	१८; १०. १, २०; ५, २२;
कामाय ३. ८, ४; २६, ७; ५.	क_लात् १६. ५३, १०२; ५४,	२३; ७, ३७; ८, १६;
३, ३; १२. ४, २६; २०.	१२; ३३.	११. ३, २४; ४, ४; ६,
३१, २.	क_ले ७. ५०, ६; १६. ५३,	१३; १३. १, ५५; ३,
कामिना २. ३०, २.	३; ५; ६३; ७३; ८३;	२३; १४. ३, १६; १५,
कामिनी १. ३४, ५; २. ३०,	५४, १; २; ४२; ५; २०.	३, १; १८. १, १२२;
१; ६. ८, १; २; ३.	८६, ६.	३३; २, २४; ३२; ३, ४१;
कामिनीः ३. ८, ४.	क_लेन १६. ५३, ७; ५४, १;	१६. ६, ५२; ४८, ३२;
कामेन ३. २६, ७; ५. ११,	२२.	२०. ३६, ४; ८६, ३;
२; ६. ६, १; १३६, २;	क_व्यः ४. १, ६; २०. २५,	१२६, ३; ८२; १२६, ४.
४; ११. ७, १३; १६.	५.	कि_मीदिनः १. ७, ३; २८,
५२, १; ३; ४.	काव्यम् ६. १०, ६; १०. ८,	१; २; ४. २०, ५; ८.
काव्यः १६. ३६, ६.	३२.	४, २३; ६, २१; २५;
काव्यम् २०. ५१, ३.	क_ल्यम् ४. २६, ६.	१२. १, ५०.
काव्यम् २०. १२८, ३.	काव्येन ५. १, ५; ११, २;	कि_मीदिनः २. २४, १-४.
काव्या २०. २६, ५; ४७, ११;	३; ८. ३, २०; २०. ७६,	कि_मीदिनम् १. ७, १; ४.
६०, ६; ६६, १०; ७१, ६.	६.	२०, ८; ८. ३, २५.
काव्यैः २०. ४०; २; ७०, ४.	काव्यैः २०. १२५, ५.	कि_मीदिनीः २. २४, ५; ६,
क_व्यम् १६. ५७, ४.	क_श्यामि १४. २, १२.	७; ८.
क_व्यम् २०. ७५, ३.	क_शिना ८. ४, ८.	कि_मीदिने ८. ४, २.
क_व्यः ७. ७३, १; २०. ६८,	काष्ठात् २०. ६८, १.	कि_मीदी ४. २८, ७.
१; ११०, १.	क_साः १. १२, ३.	कि_म_कराः ८. ८, २२.
क_व्ये २०. २१, ६.	क_सा २०. ३४, १२.	कियत् १०. ७, ८; ६.
क_रुः २०. २५, ६.	क_सम् ५. २२, ११.	कियता १०. ७, ८; ६.
क_रुम् २०. १२०, ११.	क_सा ५. २२, १०.	कियतीः ८. ७, १३.
कारु इति ५. १२, ७.	कासिकया ५. २३, १२.	कि_येधाः २०. ३५, ६; १२.

कि०र ३. २४, ५: २०. ६८, १.
 किरणौ २०. १३३, १.
 किरणौ २०. १३३, २.
 किल १. ३४, ४; ४. ७, ३;
 १८. १, १५; ४८२; २०.
 ३४, १८.
 कि०लास-नाशनम् १. २४.
 २.
 कि०लास-भेषजम् १. २४, २.
 कि०लासम् १. २३, १; २;
 २४, २.
 कि०लासस्य १. २३, ४.
 किल्विषम् ५. १६, ५; १२.
 ३, ४८.
 किल्विषाणि ६. ११८, १; २.
 कि०शोरा: १२. ४, ७.
 कीकसा: ७. ७६, ३; ६.
 ७, ५; ८, १४; ११, ८,
 १५.
 कीकसाभ्य: २. ३३, २; २०.
 ६६, १८.
 कीटैभ्य: ६. ४, १६.
 कीनाश: ४. ११, १०.
 कीनाश: ३. १७, ५; ६.
 ३०, १.
 कीरये २०. १७, १२; ८७,
 ७.
 कीरिम् २०. ६१, ११.
 कीरे: २०. ३४, ६.
 कीर्तया: ७. ३७, १; ३८,
 ४.
 कीर्ति: १२. ५, ६; १३. ४,
 १४; २२; १५. २, ८२;
 १४२; २०२; २८२; २०.
 ४८, ३.
 कीर्तिम् ५. २०, ६; ६.
 ६(३), ५; १०. ३, १०—

२५; १६. ६३, १; ७१,
 १.
 कीर्त्या १०. ६, २७,
 कीलाल-ऊम्नी १२. १, ५६.
 कीलाल: ७. ६०, ५.
 कीलालम् ४. ११, १०.
 कीलाले ६. ६६, १.
 क०लालेन ४. २६, ६; २७,
 ५; १०. ६, २५.
 कु २०. १३६, १४.
 कुकुन्धा: ८. ६, ११.
 कुकुरभा: ८. ६, ११.
 कुक्षि: ७. १११, १; ६. ७,
 १२; २०. ७१, ३.
 कुक्षि-भ्याम् २. ३३, ४; २०.
 ६६, २०.
 कुक्षिला: ८. ६, १०.
 कुक्षी इति २. ५, ४; ४. १६,
 ३; ६. ५, २०; १०. ६,
 १७; २०. १२६, १४.
 कुक्ष्यो: २०. ४, २.
 कुचर: ७. २६, २; ८४, ३.
 कुणपम् ११. १०, ४.
 कुणपे ११. ६, १०; १०, ८.
 कुण्डापाय्य: २०. ५, ७.
 कुण्डुणाच्या २०. ७४, ६.
 कुत: ८. ६, १; ४; ६. ६, १८;
 १०. २, १०२; १४२; ८,
 ४४; ११. ८, ८२; १२४.
 कुत्सम् ४. २६, ५; २०,
 २१, १०; ३७, २.
 कुत्सेन २०. ७६, २.
 कुथा: २०. १३१, ५.
 कुनखिना ७. ६५, ३.

कुपायक: २०. १३०, ८.
 कुवेर: ८. १०(५), १०.
 कुभि: २०. १३०, ७.
 कुमार: ३. १२, ३; ७; ४.
 ३७, ११; १०. ८, २७.
 कुमारक: २०. ६२, १२.
 कुमारम् १. ११, ५.
 कुमारस्य ५. २३, २.
 कुमारा: १२. ४, ८.
 कुमारि २०. १३३, १२; २२;
 ३२; ४२; ५२; ६२.
 कुम०रिका १०. ४, १४;
 २०. १३६, १४.
 कुम०री १०. ८, २७.
 कुम०री २०. १३६, १६.
 कुम०रीम् २. ३६, १.
 कुम०र्यम् १४. १, ६३.
 कुम्बम् ६. १३८, ३.
 कुम्भ: ३. १२, ७; १६. ५३,
 ३.
 कुम्भम् ३. १२, ८; ११. १,
 १४.
 कुम्भ-मुष्का: ८. ६, १५.
 कुम्भ-मुष्कान् ११. ६, १७.
 कुम्भान् ४. ३४, ७; १८. ३,
 ६८; ४, २२५.
 कुम्भी ११. ३, ११; १४; १२.
 ३, २३.
 कुम्भीका: १६. ६, ८.
 कुम्भीम् ६. ५, ५; १०. २,
 ५१.
 कुम्भे १. ६, ४.
 कुम्भेन-इव १०. ८, १४.

कुम्भेभिः १६. २, २.
 कुम्भ्याः ६. ६(१), १७.
 कुयवम् २०. ३७, २.
 कुरीरम् ६. १३८, ३; १४,
 १, ८.
 कुरारिणम् ६. १३८, २.
 कुरारिणि ५. ३१, ३.
 कुरु ५. ४, ६; ११. ६, १;
 १५; २२; २४; १४. २,
 २०.
 कुरुते ६. ६ (२), १, २; १५.
 ११, ५.
 कुरुथाः ५. २२, ११.
 कुरुटिनी १०. १, १५.
 कुरुवरः ६. २, २२.
 कुरुवम् २. ३१, २.
 कुरुवौ-इव ७. ६५, २.
 कुर्वताम् १६. ७, ४.
 कुर्वतीम्-कुर्वतीम् ६. ५,
 ३२.
 कर्वते ७. ५४, १; ८. ६, ११;
 १४.
 कुर्वते १२. ५, ४७; ४६.
 कुर्वन् ६. ५, ३३.
 कुर्वन्तम् ६. ५, ३२.
 कुर्वन्ति ८. १०(३), ८.
 कुर्वाणाः १२. ५, ८.
 कुर्वे ६. १३५, १; ७, ३८,
 ३; १२. ४, ६.
 कुल-पाः १. १४, ३; ७. ७२,
 २.
 कुलायन् २०. १२७, ८;
 १३२, ५.
 कुलायम् ६. ३, २०; १४. १,
 ४७.

कुलाये ६. ३, २०.
 कुलिशेन-इव २. १२, ३.
 कुलमलम् २. ३०, ३; ५. १८,
 ८.
 कुलमलात् ४. ६, ५.
 कुल्या ११. ३, १३; १८. ३,
 ७२; ४, ५७.
 कुल्याः-इव २०. १७, ७.
 कुल्यायाः ५. १६, ३.
 कुवित् २. ३, २; २०. २४,
 २; ४; १२५, २.
 कुवित्-सस्व २०. ७८, ३.
 कुश २०. १३१, ६.
 कुशिकासः २०. २४, ६.
 कुषुम्भम् २. ३२, ६.
 कुष्ठ ५. ४, १.
 कुष्ठ ५. ५, ६; ६; १६. ३६,
 २; ६,
 कुष्ठः ५. ४, १०; १६. ३६,
 १; ५; ६२; ७२; ८२.
 कुष्ठम् ५. ४, ३; ४; ५; ६.
 ६५, १; २.
 कुष्ठस्य ५. ४, ८; ६. १०२,
 ३.
 कुष्ठाः १६. ५७, २.
 कुष्ठिकाः ६. ४, १६; ७, १०;
 १०. ६, २३.
 कुसम् २०. १३६, १२.
 कुसिन्धम् १०. २, ३.
 कुसिन्धे १०. २, ५.
 कुसूलाः ८. ६, १०.
 कुस्ते २०. १२६, १४.
 कुह २०. ३४, ५.
 कुहम् २०. १३०, ५.
 कुहनत् २०. १३२, ११.

कुहचित्-विदे २०. ८२, २.
 कुहाकम् २०. १३०, ६.
 कुहः ७. ४७, २.
 कुहम् ७. ४७, १.
 कुजन्तौ ७. ६५, २.
 कुटम् ८. ८, १६.
 कुट्या १२. ४, ३.
 कुर्यम् ५. १६, १२.
 कुर्ये ५. ३१, ८.
 कुम्भ्याः ६. ४, १६.
 कुल्वजम् १२. ५, १२; ५३.
 कुक्वाश्वम् २०. ७४, ७.
 कुक्वाकम् २०. १३६, १०.
 कुक्वाकौ ५. ३१, २.
 कुकाटम् ६. ७, १.
 कृणवः १८, २, ५.
 कृणवः ५. १, ८.
 कृणवत् २. ६, ५; ५. ८, ७.
 कृणवत् २. ३५, १; ३. १,
 १; २, १; ५. ३, ८; ६.
 १११, १; ११६, २; १२.
 ३, १०; १६. ३७, १०;
 ३३, ५; २०. १०७, ११;
 कृणवन् १८. १, ११.
 कृणवात् २०. १३२, ५.
 कृणवामि ६. २७, १.
 कृणवामि १२. ३, ४६.
 कृणु २. १६, ५; २०, ५; २१,
 ५; २२, ५; २७, १-६;
 ३६, ६२; ३. ५, ६; ७;
 २२, ३; ४. २२, १; ५.
 ६, १०; २६, २; ३; १३;
 ६. ६६, ३; १०८, ४; १२१,
 ४; १२६, २; ३; १४०, १;
 ७. १२, ३; १२. १, २३;
 २४; १४. १, ६१; १६.

३१, १३; ३२; न; ४७,
७; ५०, १; ६२, १.
कृणुत ११. १, २.
कृणुत १. ३०, ३; २. १३,
२; २३, ५; ३. ६, १; ६.
५५, ३; १३३, २; १२.
२, ३४; १८. ४, ३७;
१६. २४, ४; २०. ६१;
११.
कृणुतम् ६. ५४, २; १४१, ३.
कृणुतम् ३. २५, ६; ६. ५०;
१.
कृणुताम् २. २८, २; ४; ३.
३, ४; ७. ६२, १.
कृणुते १. ३५, २; ६. २७,
३; न. ३, २४; ६. ४,
१६; ११. ५, ३; १०;
१५; १२. ४, ६; ३०२;
१३. २, २८; ४२; २०.
न६; ४; १२३, २.
कृणुथ ४. २१, ६२; ६. २२,
२.
कृणुध्वम् १६. ५८, ४२; २०.
७३, ३.
कृणुषे ३. ६, ६; न. २, १६.
कृणुषे ५. १, २; १६. ४६,
४.
कृणुष्व २०. ६३, १.
कृणुष्व ३. ४, ४; ४. २०, ५;
७. ३४, १; ३६, १; ७३,
१०; १०. १, १६; १२.
४, २६; १४. २, ५०;
१८. १, १६; ३, न; १६.
४५, ५.
कृणुहि २०. न, १.
कृणुहि ३. १, ४; ४. २२,

३; ५. ११, ११; १२, २;
२७, १२; ७. न, २; ११.
१, ३१; २०. १२५, २.
कृणोत ५. ३, ६.
कृणोति २. ३६, ३; ६. २६,
१; न. ३, न; ६, ६; ६.
न, ४२.
कृणोति ६. ६(५), १; ४; ६;
न; १२. ४, २५; १८. १,
५३; ३, ५४; २०. ६६,
३.
कृणोतु ६. न३, १; न. ६,
१८; ६. २, ७; १६. ४४,
३.
कृणोतु १. ११, १; ३. १५,
४; ४. ४, ३; ६. ४०, १;
२२; ५३, ३; ५८, १२;
७१, १; २; ७२, १; ७३,
३; ७८, ३; १०४. ३;
१०६, ३; ७. ३२, १;
३३, १; ५१, न६, १;
६१, १; ११८, १; न.
न, २; ४; ६. ४, २;
१०, २४; १०. ६, ३१;
६, २६; ११. १, ६;
१२. १, १; २१; २२;
४१; ४३; १४. १, ४७;
४६२, २, १२; ३६; ७५;
१८. ३, १२; ५२; ५५;
६१; १६. ३१, १४; २०.
१७, ११; ५५, १; न६,
११; ६४, ११; १२५, ६.
कृणोमि २. ३६, २; ३. ६,
२; २३, ५; ४. १८, १;
६. ६, ३; १११, २; ३;
११६, १२; न. २, ५;

११; ६, ३; १२. २, ३२;
१४. १, ५८.
कृणोमि १. २५, ४; ३०,
४; २. २, ४; ३, १; १०,
१-न; ३. न, ६; ३०,
१; ५; ७; ४. ३०, ३; ५;
५. १, ५; २८, ११; ३०,
५; न; ६. २०, ३; ६३,
२; ६४, २; ७. ३५, ३३;
न. १, ६; २, १२; १६; ७,
५; २२; ६. २, १६-२४;
१४. २, ३४; १६. ३०,
४; २०. ७३, १.
कृणोषि ६. २२, २; ६. २०,
३; ३०, २; ७. ५६, ४;
१३. ४, ४३; २०. ११४,
२.
कृणमः ६. ५, ३; ७. ७६, ५.
कृणमः १. १३, ३; ३. ३०,
४; ५. ७, २; न. २, १६;
२१; ६. ३, १२; ११-२,
३; ४; १४. १, ६३; २,
३५.
कृणमति १६. ५२, ५.
कृणमसि ४. ३१, ४; ५.
२८, १३; न. २, १०.
कृणमहे १६, ६८, १.
कृणवत् ५. २८, १४.
कृणवती १४. ३, ६०.
कृणवतीः १४. २, ६१.
कृणवते न. ५, ७.
कृणवन् ६. १, ७; ६. ७२,
१; १२. १, ५१; १८.
१, २६; १६. ३३, २;
२०. २६, ६; २८, २;

कृवन्तः—कृत्वा .

(४, ७६७)

३६, ३; ४७, १२; ६६,
११; १२७, ८.
कृवन्तः ३. १०, ५; ६. २,
८; १८. २, २२; २६; ४,
१२; १३.
कृवन्तः १४. २, ५६.
कृवन्ति १. ३३, ३.
कृवन्तु २. १३, ४; २०. १६,
२.
कृवन्तु ३. ६, ३; ६. २३,
२; ३; ६१, ३.
कृवन्ताथाम् १४. २, ३७. ३६.
कृवन्तः २. २६, ३.
कृवन्तानां १. १३, ४; ५. ८,
६; ११. १०. १७.
कृवन्तानाम् ४. ३८, १.
कृवन्ते ५. ८, ८; ११. ३, २८;
३१.
कृवन्ते ७. १००, १; ६. ३,
१५.
कृत-अकृतम् १६. ६, २.
कृत-आगसः १२. ५, ६०;
६५.
कृतः ४. ६, ७; ५. २०, ८;
६. १५, ३; ६. ३, २;
२०. ४७, २; १३७, १३.
कृत-द्विष्टा ७. ११३, १.
कृतम् ३. ६, २; ४. २६, ७;
३८, ३; ५. ५, ४; ६. ८;
६. ६, ३; ११, १; ७२,
२; ६७, २; ७. ४२, १;
२; ५०, २; ३; ५; ८; ६.
२, १६; १०. १, ३२;
१३. ४, ४०; १४. २,
६२; ६५; १६. ६, १२;
७२, १; २०. १३, २;
१७, ५; १३६, ५; १४३,
६.

कृतम् १६. १६, १; २७,
१४; ४४, १.
कृतम्-इव ७. ५०, ६; २०.
८६, ६.
कृत-वीर्यः १७. १, २७.
कृत-व्यधनि ५. १४, ६.
कृतस्य १. २३, ४; ३. २४,
५; ७. ५०, ६.
कृतो ५. १४, ७; १०. १, ३;
८, २६.
कृताः ४. ६, ७; १६. ६, १५.
कृतानि ४. ३८; १; २; ३;
२०. ३४, ४; ८७, ५.
कृते ३. १७, २; २०. ३१, ४.
कृतेन ६. १२४, १.
कृत्तिकाः ६. ७, ३; १६. ७,
२.
कृत्तीः ८. ६, ११.
कृत्तुन् २०. ४४, ३.
कृत्या ४. ६, ५; ५. १४, ५;
११; १२; १३; १२. ५,
१२; ३६; ५, ३३; ५, ५३;
१४. १, २५; २६.
कृत्याः ४. १८, ५; ५. १४,
५; ८. ५, २; ५; ६; ७;
६; १०. १, ४; ६; ३०;
१४. २, ४६; १६. ६,
६.
कृत्या-कृत ४. २८, ७.
कृत्या-कृतः ४. १७, ४; १६,
१; १०. १, ६; १६; ३१;
१६. ३४, २; ४५, १.
कृत्या-कृतम् ५. १४, १; २;
४; ५; १०; १२; १३; ३१,
१२; १०. १, ५.

कृत्या-कृता १०. १, २; २४;
३२.
कृत्या-कृते ५. १४, ३, ४;
५; ८; १०. १, २३.
कृत्या-दूषणः १. ३४, ४.
कृत्या-दूषणम् १०. १, ६.
कृत्या-दूषणीः ८. ७, १०.
कृत्या-दूषिः २. ४, ६.
कृत्याभिः ८. ५, १५.
कृत्याम् ४. १७, ४; १८, २;
४; ५. ६, ८; १४, ३; ४;
६; ८; ३१, १-८; १०,
१, १८; ३, ४; १४. २,
६५; १६. ४५, १.
कृत्ये ५. १४, १०; ११. १०,
६.
कृत्ये १०. १, ७; १५; १७;
२०; २१; २५; २६; २६;
३१.
कृत्रिमः १४. २, ६८.
कृत्रिमम् १६. ३४, ३.
कृतवः ११. २, ६; १२. २,
२६.
कृतवरोः ४. १८, १.
कृत्या ३. ३, ६; २५, २; ६३
४. ७, ३; १८, २; ३; ५.
१७, ११; २२, ४; ६.
१०३, ३; ८. ६, २६; ६,
२; १०. १, ६; ६, ५; ६;
२५; ११. ५, ६; ८, ११;
१८; २६; १२. २, ४;
४३, ५४; ४, २०; १३.
१, ४७; ५२; ३, १;
१५. १४, १; ३; ५; ७;
६; ११; १३; १५; १७;

१६; २१; २३; १८. २;
३३; ३; ४२; १६. ८; ६;
३०, १.

कृषि २०. ८६, ७.

कृषि १. २, २३; १३; २;
२४, ३; २६; ४; ३४, १;
२. २७, ७; ३. १८, २;
५. ४, ६; ६; ५, ४; ८;
६; ७; ६. ५, १; २; ४०;
३; ६५, १; ६७, ३; ७४,
३; ७७, ३; ६५, ३; १०६;
२; १२८, ३; १३६, २;
१३८, १; २३; १३६, ३;
१४१, ३; ७. २०, २;
२६, ३; ५०, ४; ८१, ३;
८. ५, १७; ११. १०;
१७; १७. १, ७; १८. २;
६; १६. ८, ६; १५, १;
३२, ६; २०. ३२, १;
८०, २.

कृषु २०. १३६, १.

कृषु-कृषि ११. ६, ७; १०;
७.

कृत् १६. २८, ८५.

कृत्तती १. २७, २.

कृत्तत्रम् २०. १२६, २०.

कृत्तः ११. १०, २८.

कृत्तमाणस्य ५. १६, १३.

कृत्ता १८. ४, ५६; २०. ६७,
३.

कृत्तात् ७. १४, २.

कृत्ते २०. १२०, २.

कृत्तः ४. १५, ६.

कृत्तः ४. १०, १; ३.

कृत्तनम् ४. १०, ७.

कृत्तनेभिः २०. १६, ११.

कृत्तम् ४. २१, ६; ६. १०१,
२.

कृत्तस्य २०. ३४, ६.

कृत्तु ३. १७, ६.

कृत्ते १२. २, ३६,

कृत्तम् ३. १२, ४; ८. १०
(४), ११; १३; १०. ५,
३४; ६, १२.

कृत्त-संशितः १०. ५, ३४.

कृत्तः ३. २४, ३; १२. १,
३; ४; ४२; २०. ६८, ६;
१०७, १.

कृत्त-राधिः ८. १०(४), १२.

कृत्तः २०. ३७, १; ६५, १;
७०, १४.

कृत्ते १०. ६, ३३.

कृत्त-अजिनम् ६. ६(१),
१७.

कृत्तः ७. ६४, १; २; ८. ६,
५; १२. ३, १३; १८. ३,
५५; २०. २३७, ७.

कृत्त-कर्णः ५. १७, १५.

कृत्त-द्रम् ६. ७, ४.

कृत्तम् ६. २२, १; ६. १०,
२२; ११. २, १८; १२.
१, ५२; १३. ३, ६; २०.
१२३, २; १३७, ८.

कृत्त-वर्तने १. २८, २.

कृत्त-शकुनेः १६. ५७, ३.

कृत्तः ६. ८३, २; ७. ७४,
१; १२. २, ५३.

कृत्तः ६. ४६, ३.

कृत्तः ५. २३, ५; ८. ७, १;
११. २, २; १८. ४, ३४.

कृत्तात् ५. ३०, ११.

कृत्ताम् १२. १, ११; ३, ५४.

कृत्तायाः १३. ३, २६.

कृत्तः १. २३, १.

कृत्ता ५. २३, ४.

कृत्ता ११. ४, ४१.

कृत्ताः २. ४, ५; ८. ३, १६;
१०. ५, ३४; १२. २,
३७.

कृत्त २०. ६४, ४.

को ४. २२, ६; ५. २३, ५; ६.
५०, ३; ७. १२, २;
११७, १; १०. ७, ३८;
११. ८. १२; १६. ६;
१२.

कोतः ११. १०, ७; १३. २,
१; १६; १८; २०. ४७;
१३; १५.

कोतुः ७. ११, १; ८. २;
१०. ८, १३; ११. ४,
२२; १३. २, ३४; १४.
१, २४; २०. ३०, ४;
१०७, १३.

कोतुना १३. २, ६; ३१; १८.
३, ६५.

कोतु-भिः ११. १०, १; २;
१३. ३, २३.

कोतुम् १०. २, १२; २०. ११;
४; १६, ६; ४७, १२;
६६, ११.

कोतु-मत् ६. १२६, ३.

कोतुमती इति कोत-मती ८.
६, १२.

कोत-मन्तः ३. १६, ६; १३.
१, २४.

कोतु-मान १३. २, ३८.

कैतून-क्रमान्.

(४, ७६६)

कैतून द. १०३, ३; १०. १, ३२.	२६, २; ३८, २; ४७, ८.	क्रतुना १३. २, १०; २०. ३४, १.
कोन प. ११, २३; १०. २, १६; १६४; १८४; १६४; २०४; २२४; २४३; १८. १, ५२.	कोशिनी: १२. ५, ४८. कोशिनीभ्य: ११. २, ३१. कोशी द. ६, ५. कोशेभ्य: ६. ३०, ३; १३६, १. कोशेषु १. १८, ३. कोश्यम् १४. २, ६८. कोसर-प्राचन्धाया: प. १८, ११.	क्रतु-भि: द. ३, १; १३. ३, २३. क्रतुम् प. २, ३; १८. १, २०; ३, १८; ६७; २०. ७६; १; १०६, १; १०७, ६. क्रतु-विदम् २०. ६, २; ७, ४. क्रतौ १. ३४, ५; ३. २५, ५; ६. ६, २. क्रत्वा ४. ३१, ६; ३२, ५; २०. ५४, १; ७६, ७. क्रत्वे ६. १६, २; १८. २, २३. क्रन् ७. ८२, ३; द. ६, २५; १४. १, ३२; १६. २०; ४. क्रन्त् ४. १५, ६; प. २०, ७; २१, ४; ५; ६. क्रन्द: ११. २, २२. क्रन्दत् २०. ६४, द. क्रन्द्य २. ३६, ६; द. १२६, २. क्रन्दसी इति ४. २, ३; २०, ३४, द.
को-निपानाम् २०. ६४, ४. कोनो इति २०. ६७, ३. कोपय: २०. ६४, ६. कोवल: ७. ३७, १; ३८, ४; २०. ३६, १; ७०, १६; ८७, ५. कोवलम् ३. १८, २; ४. २३, ७; १०. ७, ३६; द. १; ११. ५, १०; १५; २०. १५, ६; ३२, ३. कोवली ३. २५, ४; द. ६, २४; १६. ४, २. कोवली: ७. ६४, १. कोवलौ ६. ४, १२. कोविका २०. १२६, १७. कोश: ६. १३६, ३. कोश-वृंहणी: ६. २१, ३. कोश-वर्धनी: ६. २१, ३. कोश-वर्धनीम् ६. १३७, १. कोश-वा: द. ६, २३. कोश-शमश्चु द. २, १७. कोश: ६. ६, १; १३७, २; ३; १५. २, ५; १३; १६; २५; १६. ६०, १. कोशान् प. १६, ३; ११. द, ११; १२; १४. १, ५५; १६. ३२, २. कोशिन: ६. १०, २६; ११. २, १८; १४. २, ५६. कोशिना २०. ३, २; ३३, ६;	कैरात प. १३, ५. कैरातिका १०. ४, १४. कोक: प. २३; ४. कोकम् द. ६, २. कोक-यातुम् द. ४, २२. कोपयत् २०. ६४, द. कोश: ६. ३, २०; १०. २, ३१; ११. २, ११; १४. १, ६. कोश-इव ४. १६, ७. कोशम् ४. १५, १६; १८. ४, ३०; २०. द, ३; ८६, २. कोशविले २०. १३५, २. कोशा: १३. ४, १०. कोशात् १६. ७२, १. कोशान् १०. ७, १०. कोशं ६. ३, २०; १०. २, ३२. कौमार: १२. ३, ४७. कौरम् २०. १२७, १. कौरव्य: २०. १२७, द. क्रदि-वत: ७. १०, ३. क्याख: १८. ३, ६.] कर्त्तमाणम् २०. ४२, २. कर्तु: द. ६, २३; २०. १८, ५.	क्रतुना १३. २, १०; २०. ३४, १. क्रतु-भि: द. ३, १; १३. ३, २३. क्रतुम् प. २, ३; १८. १, २०; ३, १८; ६७; २०. ७६; १; १०६, १; १०७, ६. क्रतु-विदम् २०. ६, २; ७, ४. क्रतौ १. ३४, ५; ३. २५, ५; ६. ६, २. क्रत्वा ४. ३१, ६; ३२, ५; २०. ५४, १; ७६, ७. क्रत्वे ६. १६, २; १८. २, २३. क्रन् ७. ८२, ३; द. ६, २५; १४. १, ३२; १६. २०; ४. क्रन्त् ४. १५, ६; प. २०, ७; २१, ४; ५; ६. क्रन्द: ११. २, २२. क्रन्दत् २०. ६४, द. क्रन्द्य २. ३६, ६; द. १२६, २. क्रन्दसी इति ४. २, ३; २०, ३४, द. क्रन्दाय ११. २, ३; ४, २. क्रम: १०. ५, २५-३५. क्रमताम् ६. ५, १; १२; द. क्रमते ७. १४, ४. क्रमभवम् ४. १४, २. क्रमस्व ४. ४, ७; द. ६०१, ३. क्रमस्व ४. द, ४; ७. २६, ३; १८. ४, ६; २०. ८५, ४. क्रमान् द. ६, १०.

क्रमुः २०. ७६, २.
 क्रमे १०. ५, २५-३५; १६.
 १७, १-१०.
 क्रविः ८. ६, २३.
 क्रविषा ८. ३, १५.
 क्रविष्णुः ८. ३, ४.
 क्रव्य-अत् ३. २१, ६; २८,
 २; ५. २६, ८; १५;
 ८. १, १२; ३, ४; १२.
 २, ४; ७; ३५; ३६; ३७;
 ३८; ४३; ५०; ५२; ५३;
 ३, ४३; ६, ३; ७२.
 क्रव्य-अदः २. २५, ५; ४.
 ३६, ३; ५. २६, ११; ८.
 २, १२; ३, २; १८; ११.
 १०, ३.
 क्रव्य-अदम् ३. २१, ८; ६;
 १०; ५. २६, १०; ३१,
 ६; ८. २, ६; ६, ६; १२.
 २, ८; ६; १०; १५; १६;
 ३६; ४२; ४३; २०, ६६,
 १२.
 क्रव्य-अदा ११. १०, १८;
 १२. २, ३४; ५१; १३.
 १, २६.
 क्रव्य-अदे ८. ४, २.
 क्रान्तम् १०. ७, ३८.
 क्राम २०. ११, १-५; ८.
 १, ४; ६. ५, ६; १०.
 १, १४; २०. ६६, २४.
 क्रामत्तम् ७. ५३, २.
 क्रामति १२. ५, ६.
 क्रामन्ति १२. ५, ११.
 क्रिमयः २. ३१, ५; ३२, १;
 ५; ५. २३, ५; १२.

क्रिमयः २. ३२, ३; ५. २३,
 १०.
 क्रिमिः २. ३२, ४; ५. २३,
 ७; ११; ११. ६, १०;
 १२. १, ४६.
 क्रिमिम् २. ३२, २; ५. २३,
 १; ३; ६.
 क्रिमीणाम् २. ३१, ३; ५;
 ३२, ४; ५. २३, ८; ११;
 १३२.
 क्रिमीन् २. ३१, १; २; ४२;
 ३२, १; ३; ५. २३, २;
 ५; ६; १०.
 क्रिमोः २. ३१, १.
 क्रियते ३. २६, ३; ८. २,
 २५; १६. ५८, ६.
 क्रियते १८. २, १; ३, ६४.
 क्रियन्ते २०. २३, ३.
 क्रियमाणम् २. १२, ६; ५.
 २६, १; १६. ११, ४.
 क्रियमाणायाः ३. ७, ६.
 क्रीडन्तोः ६. ४, २४.
 क्रीडन्तौ ७. ८१, १; १३. २,
 ११; १४. १, २२; २३.
 क्रीणीते १२. ४, २.
 क्रीत्वा ३. १५, २.
 कुष्ठः १६. १०, १०; ११; १२.
 ५, ३६; १३. ३, ६; २०.
 १७, ८.
 कुष्ठस्य १३. ३, १-२५.
 कुष्ठा १२. ४, ३७.
 कुष्ठाः १२. २, ५.
 कुष्ठः ११. २, १६; २०.
 कुष्ठ्यति ४. ३६, १०.
 कूरम् ५. १६, ५; ६. ४६, १;
 १८. ४, ८३; १६. ६,
 १४; ५६, ५.

कूराणि १२. ५, १४.
 कूरैः १६. ७, २.
 कूडः ६. ४, १५; ७, ५.
 कूडौ १०. ६, २५.
 कूधः ६. ७, १३.
 कूधम् ४. ३८, ४.
 कूधयन्ति ४. ३६, ६.
 कूशताम् ८. ८, २१.
 कूशतु ११. ६, ७; १०, ७.
 कूशन्तु ५. २१, ६.
 कूष्टारः ११. २, ११.
 कूष्ट्रे ११. २, २.
 कून्दाः २. २, ५.
 कूब ६. १३८, ३.
 कूबम् ६. १३८, १, २; ३.
 कूब-रूपान् ८. ६, ७.
 कूबाः-इव ८. ६, ११.
 कल्लः १०. १०, २३.
 वल्लः ८. ६, १५.
 क्लोमा १०. ६, १५.
 क्लोमः २. ३३, ३; ६. ८,
 १२; २०. ६६, १६.
 क २०. १२६, ६.
 क' ६. ६, ४; १७; १०. २, २;
 ७, १२; ४२; ५२; ६; ८,
 ७; ४१; १३. १, ४१; १४.
 १, १४२; १५. ११, २;
 ३; २०. १२६, २२.
 क'-इव १०. ८, ३६. —
 क्षणिष्ठाः १०. १, १६.
 क्षत्ता ५. १७, १४.
 क्षत्तारम् ६. ६ (६), १.
 क्षत्तारौ ३. २४, ७.
 क्षत्र-भूत ७. ८६, १.
 क्षत्रम् २. १५; ४; ३. ५, २;
 १६, १; ५; ५. १, ८

१८, ४; ६. ७, ६; ६.
 ५४, १; २; १७, २; ६८,
 २; ७. ८४, २; १०. २,
 २२; २३; ३, १२; ११,
 ७, १८; ८, २०; १२. ५,
 ८; १५. १०, ३; ४; ५;
 ७; ११; १६. १, १३.
 क्षत्र-योगैः १६. ५, २.
 क्षत्र-वर्धनम् १०. ६, २६.
 क्षत्रस्य १६. ३०, ४.
 क्षत्राणाम् ४. २२, २.
 क्षत्राणि ७. ७८, २.
 क्षत्राय १५. १०, २; १६.
 २४, २.
 क्षत्रियः ६. ७६, ४; ७. १०३,
 १; १२. ५, ४६.
 क्षत्रियम् ४. २२, १; ८. ४,
 १३.
 क्षत्रियस्य ५. १७, ३; १२.
 ५, ५; ११.
 क्षत्रियेण ६. ७६, ३; १२.
 ५, ४४.
 क्षत्रे १६. २४, २.
 क्षत्रेण २. ६, ४; ७. ८२, २;
 ३; १२. ३, ५१; १८.
 २, ६०.
 क्षदामहे १०. ६, ५.
 क्षपाचान् २०. ७६, १.
 क्षमा ६. ५७, ३.
 क्षमाम् १२. १, २६.
 क्षमि १८. १, १; १६. ५,
 १.
 क्षयः २०. १०६, १.
 क्षयत् २०. ६२, ८.
 क्षयति ५. २, ८; २०. १०७. ०
 ११.

क्षयन्तोः १. ५, ४.
 क्षयम् २०. ६, ४; ६७, १.
 क्षयाय १. ५, ३; ७. २६, ३.
 क्षये २०. १, २.
 क्षयेम् १६. १५, ४.
 क्षर ७. १०६, ४.
 क्षरत् ५. १, ३.
 क्षरन्ति ४. ३५, ५; १२. १, ६.
 क्षरन्ति ७. १८, २; ५७,
 २; ६. १०, २१; ११.
 २, २४; १३. १, ४२.
 क्षरन्तु ८. २, १४; १२. १,
 ३०.
 क्षवम् १६. ८, ५.
 क्षापय १२. ५, ५१.
 क्षापय १२. ५, ५१.
 क्षापयति १२. ५, ४४.
 क्षाम् ५. १, ५; १८. १, ३६;
 १६. ४६, ८; २०. ३६,
 ८.
 क्षाम १८. ३, २१.
 क्षामः २०. ६२, १६.
 क्षामत् ७. ६३, १.
 क्षामा १८. १, २६.
 क्षिणाति ३. २८, १; २;
 १२. २, ३५.
 क्षिणामि ३. १६, ३.
 क्षिणीहि १०. ३, १५; १३.
 ३, १-२५.
 क्षिणोमि ६. १४, २.
 क्षित-आयुः ३. ११, २; २०.
 ६६, ७.
 क्षितिः ११. ७. २५; ८, ४;
 २६; १२. ५, १६; ३३.
 क्षितीनाम् ६. ३४, १; २०.

११, २; ७०, १५; ८७,
 १.
 क्षिपति ६. १, १०; २०.
 क्षिप्त-भेषजी ६. १०६, १.
 क्षिप्तस्य ६. १०६, ३.
 क्षिप्र-धन्वने ११. ४, २३.
 क्षिप्रम् ८. ८, ४; ११. १,
 १३; १२. १; ३५; ५,
 ४७-५०; २०. १३५, ४.
 क्षिय ६. १२१, ४.
 क्षियति १०. २, २२; २३;
 ११. ७, १६.
 क्षियन्तम् १३. २, ४३; २०.
 १६, ८; ३४, ११.
 क्षियन्ति १३. ३, १.
 क्षियन्ति ४. ३०, ४.
 क्षियेम् ६. ११७, ३.
 क्षीयते १२. ५, ४५.
 क्षीरम् २. २६, ४; ५; ५.
 १६, ५; ८. ३, १५; ६.
 ६(३), ६; ६(४), १; ६,
 ५; १०. ६, १२-२४;
 १०, ८; १०; ११.
 क्षीर-चान् १८. ४, १६.
 क्षीरस्य १. १५, ४.
 क्षीरिणीम्-इव ७. ५०, ६.
 क्षीरे ५. २६, ७; १८. १, ३०.
 क्षीरेण ४. ३४, ६; ७.
 क्षुण्वानः ५. २०, १.
 क्षुत् ६. ७, १२.
 क्षुब्धः १६. २३, ६; २३,
 २१.
 क्षुधः ११. ८, २१.
 क्षुधः २०. १७, ३.
 क्षुधत् २. २६, ४.
 क्षुधम् ७. ५०, ७; ८, १८.

१६. ३१, ११; २०. १७,
 १०; ८६, १०; ६४, १०.
 क्षधा ४. ७, ३.
 क्षधा-म-रम् ४. १७, ६; ७.
 क्ष-मति १८. ३, २३.
 क्ष-मती १८. १, २०.
 क्ष-मन्तः २०. १२२, १.
 क्ष-मन्तम् २०. ६, २; ४६, ५.
 क्षम्पम्-इव २०. ६३, ५.
 क्षुरः २०. १२७, ४.
 क्षुर-पविः १२. ५, २०; ५५.
 क्षुर-भृष्टिना १२. ५, ६६.
 क्षुरेण ६. ६८, १; ३; ८. २,
 १७.
 क्षुक्ल-काः-इव २. ३२, ५; ५.
 २३, १२.
 क्षेति २०. २५, ३.
 क्षेत्र-सातौ २०. ३७, ३.
 क्षेत्रस्य २. ८, ५; १२, १,
 १६. १०, १०; २०.
 १४३, ८.
 क्षेत्राणि २. २६, ३; १४. २,
 ७.
 क्षेत्रात् ११. १, २८.
 क्षेत्राय ३. २८, ३.
 क्षेत्रिय-नाशनी २. ८, २-५.
 क्षेत्रियम् २. ८, २-५; ३.
 ७, १; २; ३; ६३; ७; ४.
 १८, ७.
 क्षेत्रियस्य २. ८, १; ३, ७,
 ४.
 क्षेत्रियाणाम् २. १४, ५.
 क्षेत्रियात् २. १०, १-८; ३.
 ७, ४.

क्षेत्रे ४. १८, ५; ५. १७,
 १६; ३१, ४; १०. १,
 ४; १८; ४, ८; ११. १,
 २२; १२. १, ४३.
 क्षेमः ११. ७, १३; १३. १,
 २७.
 क्षेमम् ३. ३, ५; ४. १, ४;
 १६. ८, २२; २०. १२७,
 ८.
 क्षेमे ३. १२, १.
 क्षेभ्यः १२. २, ४६.
 क्षेष्ट ४. ३४, ८.
 क्षोक्षी इती २०. १०५, २.
 क्षोणीः २०. ६, ४; ४६, ७.
 क्षोणीः-इव २०. १५, ४.
 क्षोभणः १६. १३, २.
 क्षिब्धाः ८. ३, ७.

ख

खड्गरे ११. ६, १६.
 खण्व-खाड्ड ४. १५, १५.
 खदिर ८. ८, ३.
 खदिरः २०. १३१, १४.
 खदिरम् १०. ६, ६; ७; ८;
 ६; १०.
 खदिरात् ३. ६, १; ५. ५,
 ५.
 खनः १६. १, ३.
 खनति १०. ४, १४.
 खनन्ति २. ३, ३.
 खनमानाः १६. २, ३.
 खनामसि १. ३४, १; ४.
 ४, १; ६. १३६, १.
 खनामि ३. १८, १; ७. ३८,
 १.
 खनितारः ४. ६, ८.

खनित्रिमाः १. ६, ४; ५. १३,
 ६; १६. २, २.
 खनिम् १६. १, ७.
 खर्गला-इव ८. ४, १७.
 खर्व-वासिनीम् ११. ६,
 १६.
 खर्विकाम् ११. ६, १६.
 खर्लः ११, ३, ६.
 खल-जाः ८. ६, १५.
 खल्वान-इव २. ३१, १; ५,
 २३, ८.
 खातम् ५. १३, १.
 खाताः २०. ८८, ३.
 खाद ८. ८, ३.
 खादतः ६. ४६, २.
 खादन्तः ५. १६, ३.
 खादन्ति ८. ६, २३.
 खादम् ६. ६ (१), १२.
 खानि १०. २, १; ६.
 खालत्यम् ११. ८, १६.
 खिद ४. २२, ७.
 खिदति ११. ४, २१.
 खिदामि ५. १०२, २.
 खिद्वः २०. ३६, ४.
 खिले ७. ११५, ४.
 खिल्ये ४. २१, २.
 खीलाः १०. ८, ४.
 खुदत २०. १३७, २.
 खृगलम् ३. ६, ३.
 खे १४. १, ४१.
 खेम-खाड्ड ४. १५, १५.
 खोदनम् २०. १३६, १३,
 १४; १५.
 ख्यः २०. ५६, ६.
 ख्यः २०. ५७, ३; ६८, ३.
 ख्यन् १८. १, २.

ग

गच्छ ५. २२, १२; १८. २,
७.गच्छ २. ३४, ५; ५. १४,
१०२; २२, ७; ६. ११३,
२; ७. ६७, ५३; १०. १,
८; ११. १, ३५; १२.
३, ५३; १४. १, २०; २,
७५; १८. २, ७३; ४६;
३, ६; ४, ६; १६. २४,
५.

गच्छत १८. ३, ४४.

गच्छतः ४. ११, १०.

गच्छतम् १८. २, ५३.

गच्छतात् २. ३०, ३; ६. ३,
१०; १८. २, १४; १५;
१६; १७; १८; ५६.गच्छताम् १८. २, १०; ३,
५८.गच्छति ५. २३, ३; १०. ८,
१६; ११. ८, ३३; २०,
१२६, १२.

• गच्छति ३. १३, ६; ६. ७६,
४; ६. ६ (४), १०; ११,
८, ३३२; १२. ४, ३१;
३२; १५. २, ८३; १४२;
२०२; २८२; ७, ३२;
५५; १०, ८; १०; ११,
७; ६; ११; १८. २, १;
२०. २५, १; १२६, १०.

गच्छतु २. १२, ८; ७. ६८,
१; ६. ५, १; ५; १२.
१, ४; ८; १८. २, २३.गच्छथः ४. २६, २; २०.
१४०, १.गच्छन्ति २. २५, ५; १०.
८, ३३.गच्छन्तु १२. २, ४५; २०.
१३७, ४.

गच्छसि २०. ११२, ३.

गच्छस्व १८. २, २१; ३,
५८.

गच्छति ४. १, ७.

गच्छति १८. २, ५.

गच्छान् १८. १, ११.

गच्छासि ५. ५, ६.

गच्छेम ६. १२१, १; ७.
८३, ४; ११. १, ८; ३६.

गणः १३. ४, ८.

गणाः ४. १३, ४; १५, ४.

गणोन १६. १३, ४; २०.
८८, ५.

गणोभ्यः १६. २२, १६.

गणौ १६. ४५, १०; २०.
४०, २; ७०, ४.

गत १८. १, ५१.

गत-असुम् १८. ३, २.

गत-असोः १८. २, ५६.

गतम् ७. ७३, २; ४.

गताः १०. १०, ३२.

गतान् १८. ४, ४१.

गतानाम् ८. १, ८.

गत्वम् ६. ११८, १.

गत्वा २. ३६, ३; ४. १४, २;
१२. ३, १३; १६. ८, ३.

गत्वाय २०. १२८, ५.

गुद ५. २२, ६.

गुधि २०. ६४, १.

गुन् ३. ४, १; १३. १, २.

गुन्तम् २०. १३६, २.

गुन्तवे ६. ५, १७.

गन्तारम् २०. ७१, १५.

गन्धः ११. ३, ८; १२. १,
२३; २४; २५; १६. ३८,
१.गन्धम् ८. १० (५), ७; ८;
१२. १, २४.गन्धर्व-अप्सरसः ८. ८,
१५; १० (५), ५२; ८;
१०. ६, ६; ११. ६, ४;
७, २७; ६, १६; २४;
१६. ५४, ४.गन्धर्व-अप्सरसाम् १६.
३६, ६.गन्धर्व-ऋतुना १४. २,
३४.

गन्धर्वः २०. १२८, ३.

गन्धर्वः २. १, २; २, १; २;
३; ४. ४, १; ३७, ११;
१४. २, ३; ४; १८. १,
४.

गन्धर्व-पत्नीभ्यः २. २, ५.

गन्धर्वम् २. २, ४; १४. २,
३६.गन्धर्वस्य ४. ३७, ७; ७.
७३, ३; १४. २, ३५.

गन्धर्वाः ४. ३७, १२.

गन्धर्वाः ८. ५, १३; ७, २३;
६, ७, १०; ११. ५, २;
१२. १, २३; ५०; १३.
१, २३; १४. २, ६.

गन्धर्वाणाम् ३. २४, ६.

गन्धर्वान् ४. ३७, २; ८; ६;
८, ६, १६.

गन्धर्वाय १४. २, ४.

गन्धर्वीः १८. १, १६.

गन्धर्वेभिः ७. १०६, ५.

गन्धर्वैः ४. ३४, ३; १०.
 १०, १३.
 गन्धार्थ ११. २, ६.
 गन्धारिभ्यः ५. २२, १४.
 गन्धेन ४. ३७, ३; ८. ६,
 १०; १२. ५, ३४.
 गन्धहि २०. ६२, ४.
 गर्भस्तौ २०. ६४, २.
 गर्भस्त्योः २०. ३०, ३.
 गन्धि-सक् ७. ७, १.
 गर्भोरः ५. ११, ३.
 गर्भः २०. ५०, २; ५२, २;
 ५३, २; ५७, १२; १५.
 गर्भत् २०. ६६, १; ७८, ३.
 गर्भत् २०. २६, २; ५३,
 ३; ५७, १३; ११३, १.
 गर्भन् २०. ६४, ५.
 गर्भन्तु १८. ३, ४५-
 गर्भय १. २१, २; ३. ३,
 ६; ६. ८१, २; १२. ३,
 ३४.
 गर्भयति ६. ५, २४.
 गर्भयम् १८. ४, ६४.
 गर्भयन्ति ६. ६(२), ६.
 गर्भयाम् १८. २, २७.
 गर्भायाम् १६. ६, ४.
 गर्भयामसि ३. १८, ३.
 गर्भालः १०. ७, ४२.
 गर्भाथ ३. ८, ४; १४. १,
 ३२.
 गर्भाम् १. ५, ३.
 गर्भिष्ठः ५. २०, १२.
 गर्भिष्यति ५. २२, ६; १०.
 ६, ११.
 गर्भेत् २. ३६, १. ३. १२,
 ३; १३, ५; ६. ४, २.

गर्भे म हि १. १, ४; ७. ६,
 ४,
 गर्भोरः १६. ४६, २.
 गर्भोरम् १६. ५०, ३.
 गर्भोरात् ५. ३०, ११.
 गर्भोरे १६. २, ३.
 गर्भोरे इति ४. २६, ३; ११.
 ५, ८.
 गर्भोरैः १८. ४, ६२; ६३.
 गर्भम् ७. ४२, १; ८४, १;
 २०. ६६, १.
 गर्भस्य १. १४, ४; ६. ३, ३;
 २०. ३७, १.
 गर्भे २. ६, ३.
 गर्भ-गौर्याः ५. १८, १३.
 गर्भत् १६. ७, ४.
 गर्भत्मान् ४. ६, ३; ६. १०,
 २८.
 गर्भरः २०. ६२, ६.
 गर्भराः ४. १५, १२.
 गर्भराणाम् ६. ४, ४.
 गर्भ-सर्वम् १८. १, ४०.
 गर्भ-भ-नादिनः ८. ६, १०.
 गर्भम् २०. ७४, ५.
 गर्भ-भ-इव १०. १, १४.
 गर्भ-भे ५. ३१, ३.
 गर्भ-भौ २०. १३६, २.
 गर्भ १६. ५७, ३.
 गर्भ-अदम् २. २५, ३.
 गर्भः ३. २३, २; ५; ५. २५,
 ७४; ६; ६. १७, १-४;
 ६५, ३४; १२१, ४; १२५,
 ३; ८. ७, ८; ६. १, ५;
 २१; ६, ६; १०, २३;
 ११. ४, २०; ५, ७; १३.
 १, ४; १६. ४४, ५.

गर्भ-इव ६. ३, २१; ११.
 ७, ६.
 गर्भ-करणम् ५. २५, ६.
 गर्भ-त्वम् २०. ४०, ३; ६६,
 १२.
 गर्भ-धिम् २०. ४५, १.
 गर्भम् १. ११, २; ३३, १; २;
 ३; ३. १०, १२; ४. २,
 ६; ८; ५. २५, २२; ३४;
 ४४; ५; ७; ८; ६. १७,
 १; ७. २, १; ३६, १;
 ८. ६, १८; २०; ६. १०,
 १२; ११. ५, ३; १३.
 १, १६; २०. १६, ७;
 ६६, ११; १२.
 गर्भम् इव ११. ४, २६.
 गर्भ-रसा ६. ६, ८.
 गर्भस्य ५. २५, १.
 गर्भाः ५. १७, ७.
 गर्भात् १०. १०, २३.
 गर्भान् ८. ६, २३; २५; ११.
 ४, ३.
 गर्भाय ६. ८१, २.
 गर्भे १०. ८, १३; २८; ११.
 ४, १४; १३. ३, २०;
 १८. १, ५.
 गर्भान्तः ६. ८३, ३.
 गर्भाम् २. २६, ४; ५; ६. ६,
 २; २२, ४; ८. ३, १६;
 ४, १०; ७. १५; ६. ४,
 १७; ६, ३; १२, १, ५;
 १६. ३१, ८; ४७, ६;
 २०. ५६, ४; ८७, ६;
 ११८, २; १३५, ४.
 गर्भाम् इव ३. ६, २.
 गर्वि २. ३२, १.

गुविष्ठिरम्—गायत्र्याः.

(४, ८०५)

गुविष्ठिरम् ४. २६, ५.	गाः ५. १६, ६; ३०; १२; ६; ८. १, ७; १०; २, १; १२. २, १०.	गाधम् १६. ११, ६; २०. ३५, ११;
गुवर्तिके इति १. ११, ५; ६. ८, ७.	गाः इव २०, १७, ५.	गाम् १. १६, ४; ३. ११, ८; १७, ३; ४. ६, ७; ५. १८, १; २; १०; १६, १०; २६, १; ६. २८; १; २; ७१, १; ७. ५०, ६; ८. ७, ११; ६, १५; ६. ६, ६; १०. १, १७; २६; १२. ४, २; १२; ५, ४६; १३. १, ५६; २०. ११, ६; २७, ३; ५५, ३; ८५, २; ८६, २; ६१, ५; ६८, २.
गुवीन्योः १. ३, ६; ५. २५, १०; ११; १२; १३.	गात् ५. १; ६; ३०, १४; ७. ५३, ४; ८. १; ७; १८; ६. ६, ४, १२. २, २३; ३, ४६; १६. ४, ३.	
गुवे २०. ७८, १.	गात् ७. ६०, ७.	
गुव्यता २०. ८३, २.	गातुम् ३. ११, ६.	
गुव्यन् ५. २०; ३; १०.	गाताम् १२. ३, १४.	
गुव्यन्तः २०. ६६; ५; १२१, २; १२५, ३.	गातुः ७. ३, १; १०. ६, १; १३. २, ४४.	
गुव्यन्ता २०. ७२, २; ७५, १.	गातुम् २. ३४, २; ७. ६७, ७२; १०. २; १२; १३. १, ४; १८. १, ५०; २०. ३६, ५.	
गुव्यम् २. १३, १; ७. ८२, १; २०. १४, ४; ६२, ४.	गातु-या २०, ४६, ३.	
गुव्यस्य २०. ७२, २; ७५, १.	गातु-चित् ११. १, १५.	
गुव्यानि १६. ४६, ३.	गातु-विदः ७. ६७, ७.	
गुव्याम् १८. ३, २२.	गुतु-विदम् १३. २; ४३.	
गुव्यतिः १६. ३, ६; १८. १, ५०.	गात्रा १०. ७, २७; ११. १, ३१; १८. ३, ६; २०. ४, २.	
गुहि ६. ७; १; १०८, १; १८. १, ५६; १६. ४, ३; २०. ६, ८; ६; २०, ४३; २४, १; २; ३६, ११; ५७, २; ३; ७२; ६८, २; ३; ७०, ५; ६७, २; १२०, २.	गात्राणि ५. २६, १२; ११. १, २४; १८. ४, ५२.	
गुह्वरम् १२. २, ५३.	गात्राय १. १२, ४.	
गाः ३. २८, १; ७. ११५, ४; १२. १, ३६; १३. १, २; १६; १८. १, ६; २०. ८, १; १६, ३; ४; ५; १०; ११; २५, ५; २८, २; ३४, ३; ३५, १०; ३६, ३; ६१, ३; ४; ६; ८; ६६, ३; १३६, ११; १३७, ११.	गात्रय १४. १, ७; २०. १००, ३.	
	गाथाः १०. १०, २०; १५. ६, ११.	
	गाथानाम् १५. ६, १२.	
	गाथामिः २०. १०३, १.	
	गाथिनः २०. ३८, ४; ४७, ४; ७०, ६.	
		गायत्रम् १६. ११, ६; २०. ३५, ११;
		गाम् १. १६, ४; ३. ११, ८; १७, ३; ४. ६, ७; ५. १८, १; २; १०; १६, १०; २६, १; ६. २८; १; २; ७१, १; ७. ५०, ६; ८. ७, ११; ६, १५; ६. ६, ६; १०. १, १७; २६; १२. ४, २; १२; ५, ४६; १३. १, ५६; २०. ११, ६; २७, ३; ५५, ३; ८५, २; ८६, २; ६१, ५; ६८, २.
		गाम् ५. ३, ४.
		गाम् १३. १; ५६.
		गाय ६. १, १३; २०. ७८, १.
		गायत् २०. ६१, ४; ६२, ५; ८; ६८, १०; ११; ६६, २.
		गायतः ४. १५, ३.
		गायति ६. ६(५), २; ५; ७; ८.
		गायत्र-छन्दाः ६. ४८, १.
		गायत्रम् ६. १०, १.
		गायत्रस्य ६. १०, ३.
		गायत्री ८. ६, २०; १०(२), ५; १८, २, ६; १६. २१. १.
		गायत्रीम् ३. ३, २; ८. ६, १४; १०. ८, ४१; १३. १, १०.
		गायत्रे ६. १०, १.
		गायत्रेण ६. १०, २.
		गायत्र्याः ४. ३५, ६.

३, ७०.

गुप्तः ५. २०; १२; ११. १०; ११; १७. १, २६२; गुप्तये द. १२२, ३; १२. ३, ७; गुप्ता ११. ६, २; १२. ५, ३. गुप्तस्व ५. २०, ४. गुरुः द. ४२, २; ६. ३, २४. गुरु-भूत १२. १, ४८. गुल्गुलु २. ३६, ७. गुल्गुलु १६. ३८ २. गुल्गुलुः ४. ३७, ३. गुल्गुलोः १६. ३८, १. गुल्फौ १०. २; १; २. गुप्पितम् ३. ७, २; ७, ६०, १. गुहा १. ८; ४; १३; ३; २. १, १; २२; द. ६२, २, ८. ६, २; ६. १०, २७; १०. ८; ६; ११. ५, १०; ७, १५; १२. १, ४४; ४६; ६०; १४. १, १६; २०. १६, ७; २८, २; ३४, ४; ३६, ३; ७०, १; ६१, ४. गुह्याः १०. ७, ४१. गुह्याम् ३. ५, ३. गुह्यास्य ७. २६, १. गुह्या ७. २६, २. गुह्याः ११. ८, २८. गुहः द. १३४, २. गुर्त-श्रवसम् २०. ३५; ५. गुल्हे इति २०. १३७, १०. गुह्याः ४. २०, ५. गुह्यमाना ८. ४, १७. गुहसि २०. १३३, ४; ५. गुह्यत ५. २७, ६.	गुह्यत ५. २७, ६. गुह्यते ४. २१, २; ५. ११, ११; ८. ३, ११. गुह्यति १०. ७, ४३. गुह्यन्तु २०. ६६, १. गुह्यन्तः द. ६२, २; २०. ३३, ३; ५०, १; ७१; १५; ७७, ३. गुह्यन्ति २०. ११, ७. गुह्यन्तु १८. १, ५२. गुह्याति २०. १०६, ३. गुह्यानः १७. १, १०; २०. २५, ७; ३३, २; ७७, १; ८. गुह्याना १. १३, ४; ५. २७, ६. गुह्याति २०. ५०, १. गुह्यामसि ४. ३१, ५; २०, २१, २; ६१, १; ७३, ६. गुह्ये २०. ६२, १६; १०५, ४. गुह्ये २०. १०४, २. गुह्यस्यः १६. ३४, २. गुह्यः ११. २, २१. गुह्यत् ८. ६, १. गुह्यैः १२. २, ३८. गुह्यैः ५. २३, ६. गुह्य-यातुम् ८. ४, २२. गुह्याः ११. ६, ६; १०; ८; २४; १२. ५, ४७. गुह्येभ्यः ११. २, २. गुह्यै ७. ६५, १. गुह्याय २०. ४, २. गुह्याय २. ३०, ४; ३. १०; ६; द. १२५, ३; ११.	१, १४; १६. ४२, ३; २०. ५६, ४; ६४, ४; गुह्यायत २०. १३५, १०. गुह्यायत ८. ४, १८. गुह्यायत २०. ६२, ७. गुह्यैः १२. १, ५७. गुह्यैतः ६. १०, १६. गुह्यैत्वा १२. ३, २०. गुह्यामि ३. ८, ६; द. ६४, २. गुह्याहि २०. १३५, ६. गुह्यैः ८. ६, २४. गुह्यैनाम् २. १३; ३; १६; २४; ५. गुह्यैः २. १४, ३; ५. ६, ४; ११; ७. ८३, १. गुह्य-पतिः ८. १० (१) ३; १४. १; ५१; १६. ५५; ३; ४. गुह्य-पतिम् १६. ३१, १३. गुह्य-पत्नी १४. १, २०; २; ७५; गुह्य-पत्न्याः ३. २४, ६. गुह्यम् ४. १८, २; २१, ६; ६. २७, २; २६, २; ३७; १; ११. ८, १८; १२. २, ७; १६. ४५, १; २०. ६२, ४; १२६, २२. गुह्य-मेधी ८. १० (१), ३; १६. ३१, १३. गुह्य-राजस्य ११. १, २६; गुह्यस्य २. १४, ४. गुह्याः ७. ६०, ४; ६. गुह्याः द. १०६, २; ७. ६०; ३. १२. २, ३६; ४, ३.
---	--	---

गुह्याण ३. २, ५; ११. १,
१०.

गुह्याण ५. २६, १४.

गुह्याणाम् ३. १२, ६; ६.
१२, १; ६. ६ (३), १;
२; ३; ४; ५; ६; १४. २,
२६.

गुह्यात् ११. ८, १; १४. २,
१६.

गुह्यान् १. २७, ४; ३. १०,
११; १२, ६; ७. ६०,
१; ३; ६. ३, २३; ६
(६), ५; १४. १, २०;
२, २६; ७५; १५. १०,
१; ११, १; १२, २; १३,
११; १८, २, २१; ४,
३७; ६३; २०. १२६,
२०.

गुह्यासः १८. ३, ५१.

गुह्यीत्वा १६. ५८, ३२.

गुह्ये १. १४, २; ३. २४,
२; ३०, ४; ६. ५, ३;
२६, ३; ७. ७६, ५; ८.
१० (३), ८; १०. १,
२०; ६, ४; ८, २६; १२,
४, २७; ४८; १४. १,
२१; २, ५६; ६०; ६१;
१५. १३, १; ३; ५; ७;
६; १६. ३१, ३; ४५,
२; ५७, ४; २०. ४१,
३.

गुह्येभ्यः २. १४, २; ६.
१३७, १; १४. २, १७;
२७; १८, २, २७.

गुह्येषु ६. ४५, १; ७६, १;
२; ७. ६१, ५; १४. २,
६२; १८. ३, १७.

गुह्यैः ७. ८१, ४; ५; १४. २,
१२.

गुह्यते १८. ३, १८.

गुह्यन्तः १६. ३५, १.

गुह्यन्तु २. ३४, ५; ६. ५,
३७.

गुह्याति ६. ७६, ४; १३. ३,
११.

गुह्यातुं ११. १, ११.

गुह्यातु ३. १७, ४; २६, ८;
५. १४, १२; ११. १, ८;
१८; १४. १, ४६.

गुह्यानः ५. २०, ४; ६. ८१,
१.

गुह्यानाः ५. १७, १०.

गुह्यानाम् ४. ३८, २.

गुह्यामि ५. १३, २; १२. ३,
१७; १४. १, ५०.

गुह्यामि ३. २६, ७; ६. ८२,
१; ७. ८२, २; ६. ३,
१५२; १२. २, ३३; १४.
१, ४८; १६. ३७, २.

गुह्याहि ३. १०, १३; ५. २६,
१५.

गुह्यीतम् ११. ६, ११.

गुह्यीतात् ११. १, १३.

गुह्यीयात् १०. १०, २; २७.

गुह्ये १६. ३१, ४.

गुह्यन्ति २०. १३१, ६.

गुह्याः ५. २०, ४.

गुह्यम् ४. ११, ६; १४, ६; ११.
१, ३७.

गो-अग्रया २०. २१, ५.

गो-अजम् १६. ५०, ५.

गो-आशिरम् २०. ३४, १; ७.

गो-इषे २०. ६५, २.

गो-इष्टौ ४. २४, ५; २०.
१४३, ६.

गो-एषणः ५. २०, ११.

गो-एषणम् २०. १२, ३.

गोः १. २२, १; ७. ५, ५; २२,
२; १२. २, ३७; १८. १,
३२; २०. २१, २; ३२,
१; ३५, १२; ४१, ३;
१४३, १.

गोगतीः २०. १२६, १३.

गो-जाताः १६. ११, ४.

गो-जित् ५. ३, ११; ७. ५०.
८.

गो-जितम् ६. ६७, ३; १७.
१, १-५; १६. १३, ६.

गो-जिति १३. १, ३७.

गोतम् १८. ३, १६.

गोतमम् ४. २६, ६.

गोतमासः २०. ३५, १६.

गोत्रस्य ५. २, ८; २०. १०७,
११.

गोत्रा २०. ७७, ८.

गोत्राणि १६. १३, ७.

गो-दाः २०. ५७, २; ६८, २.

गो-दुहे २०. ५७, १; ६८, १.

गोधा ४. ३, ६; २०. ६२, ६.

गो-धायसम् २०. ६१, ७.

गोधुक् ७. ७३, ६; ७; ६.
१०, ४.

गोप २०. १२७, १३.

गोनाम् २०. १२७, ३.

गो-पतये १२. ४, ३७; ३६.

गो-पतिः ४. २१, ३; १२. ४,
२७; १८. ३, ४; २०.
२७, २; ८७, ६.

गो-पतिना—गौः .

(५, २०६)

गो-पतिना ३. १४, ६.
 गो-पतिम् १२. ४, ४; २२;
 ५२; १६. ५८, ३; २०.
 २२, ४; ६१, ८; ६२, १.
 गो-पते ५. १८, १५.
 गो-पते: ८. २, २३.
 गो-पतौ २. २६, ४; १२. ४,
 ८.
 गोपनम् १२. ४, १०.
 गो-परीणसा २०. २२, ३.
 गोपा ५. ६, ८; १४. २, ५.
 गोपा: ३. ८, ४; ५. ३, २;
 ६. ७७, २; ७. २६, ५;
 ५३, २; ८१, ६; ६. ६,
 २२; १०. ८, ६; १२. १,
 ५७; ३, ११; १६. २, ३;
 १८. २, ५४.
 गोपाम् ६. १०, ११; १३.
 २, २.
 गोपाय १६. ४८, ४.
 गोपायत १२. ३, ५५-६०.
 गोपायत: १५. ४, ३; ६; ६;
 १२; १५; १८.
 गोपायतम् ५. ६, ८.
 गोपायतु १६. १७, १-५;
 ७; ८; ६; १०.
 गोपायन् ८. १, १३.
 गोपायन्ति १८. २, १८.
 गोपायन्तु ८. १, १४; १६.
 १७, ६.
 गोपीथ: १६. २, ३.
 गोपीथाय ५. ६, ७.
 गो-पुंगवम् ८. ७, १२.
 गो-पोषम् १३. १, १२.
 गोसा ११. १, ३३; १७. १,
 ३०.

गोसार: १०. १०, ५.
 गोसारौ ५. ३०, १०; १५.
 ४, २; ५; ८; ११; १४;
 १७.
 गोप्ट्वन् १६. २७, ४.
 गोप्यन्ति १०. ६, ७; ८; ६.
 गोभि: ३. १६, ३; ६. १०८,
 १; १२५, १; २; ७. ५०,
 ७; ८१, ४; ५; ६७, २;
 १०. ६, २३; १८. २,
 ५८; १६. ३७, १; २०.
 १६, २; १२; १७, १०;
 २१, ४; ३८, ६; ४७, ६;
 ७०, ६; ८६, १०; ६४,
 १०.
 गोभ्य: १. ३१, ४; ३. २८,
 ३; ६. २७, ३; ५६, ३;
 ६. ३, १३; १२. २, १६;
 १६. ४७, ६.
 गो-मत् १८. ३, ६१; २०. ७,
 ३; १२, ६; ७१, १३;
 ८६, ७.
 गो-मत: ३. १०, ११; २०.
 ६०, ३; ७८, २; ६०, ३.
 गोमताम्-इव ४. ३६, ६.
 गो-मति २०. ८१, २; ६२,
 ३१.
 गो-मती ३. १२, २; २०. ६०,
 ४; ७१, ४.
 गो-मती: ३. १६, ७.
 गो-मन्तम् २०. ६, २; २५,
 ४; ४६, ५; ५३, ३; ५७,
 १६; ७७, ६; ७८, ३.
 गो-मात्र ६. ६८, ३.
 गोमोद्या २०. १२६, १३.
 गो-रूपम् १६. ४६, ८.

गो-रूपम् ६. ७, २५.
 गो-रूपुष: २०. १६, ६.
 गो-विदन् १६. १३, ५.
 गोविदम् २०. १२७, ६.
 गोशपद्युक्ते २०. १२६, १८.
 गोशफ: २०. १२५, ३.
 गोशुफे २०. १३६, १.
 गोषु ३. १५, ७; २१, २; ४.
 १८, ५; २२, ३; ६. ३८,
 २; ४५, १; ५५, २; ६६,
 १; ६. १, १८; ४, ११;
 १०. ३, ४; ११. २, २१;
 १२. १, ४; १६; ३, १;
 १५; ४, २७; २८; ३६;
 १४. १, ३५; २, ५३-
 ५८; १६. ४५, २; ५७,
 ४; २०. ३५, १; ७४,
 १-७.
 गो-सखा २०. २७, १.
 गो-सन्निम् ३. २०, १०.
 गो-सोधाम् १. १८, ४.
 गो-स्थ: ३. १४, ५; ६; ११.
 १, १३.
 गो-स्थम् २. २६, २; ६. ५६,
 २; ७. ७५, ३; १२. २,
 ४.
 गो-स्थात् २. १४, ३.
 गो-स्थे २. २६, १; ३. १४,
 ३; ४. २१, १; ६. ५२,
 २; ७. ३६, १; ६. ४,
 १६; २३; १३. १, १६;
 १६. ३१, १.
 गो-स्थे-इव ११. ८, ३२.
 गो-स्थेन ३. १४, १.
 गौ: ५. १८, ३; ११; ६. ३१,
 १; ६७, ३; ८. २, २५;

६, २५; २६; ६. ६, १७;
 १०, ६; ७; २१; १२. ४,
 ३६; ५, १७; १३. १, ४१;
 २०. ४८, ४.
 गौः-इव ३. १८, ६; ६. ४६,
 १; ८. ६, १७.
 गौरः २०. २२, ३.
 गौरात् २०. ८७, १.
 गौर्यः २०. १०६, १.
 द्वाः ७. ४६, २; २०. ३५, ८.
 द्वाभिः १६. १०, ६.
 द्वाभ्यः २०. ७६, ५.
 द्वाभ्यः ६. ३, २.
 द्वाभ्यो ६. ३, ३.
 द्वाभ्योर्धनम् २०. १३५, २.
 द्वाभ्योर्धनम् १. १२, २.
 द्वाभ्योर्धनम् १६. ३४, ८.
 द्वाभ्योर्धनम् ११. ७, १८; १६. ६,
 ७, १०.
 द्वाभ्योर्धनम् १४. १, ३८.
 द्वाभ्योर्धनम् ५. २०, ६.
 द्वाभ्योर्धनम् ६. ६७, ३; १६.
 १३, ६.
 द्वाभ्योर्धनम् १६. ३१, १२.
 द्वाभ्योर्धनम् ३. ५, ७.
 द्वाभ्योर्धनम् ४. ३६, ७; ८; ५,
 १७, ४.
 द्वाभ्योर्धनम् ४. ७, ५.
 द्वाभ्योर्धनम् १२. १, ५६; २०. ३४,
 ७.
 द्वाभ्योर्धनम् १८, २, २७.
 द्वाभ्योर्धनम् ५. २०, ३.
 द्वाभ्योर्धनम् ६. ४०, २.
 द्वाभ्योर्धनम् ४. २२, २; ८. ७, ११.
 द्वाभ्योर्धनम् २. १४, ४; ३. १०,

६; ३१, ३; ११. ५, २१;
 १६. ६, १४.
 द्वाभ्योर्धनम् २०. २४, २.
 द्वाभ्योर्धनम् ६. १३८, २.
 द्वाभ्योर्धनम् ५. २०, १०; २३, १;
 ६. ३, २; १०. ६, २;
 १२. ३, १४; २१; ३७.
 २५, ६.
 द्वाभ्योर्धनम् ३. १०, ५; ४. २४,
 ३; ८. ४, १७; ६. ६(१),
 १५; १६. १७, ७.
 द्वाभ्योर्धनम् ११. १, ६; १०.
 द्वाभ्योर्धनम् १४. १, ५.
 द्वाभ्योर्धनम् ३. ११, १; ६. ११३,
 १; ३; २०. ६६, ६.
 द्वाभ्योर्धनम् ८. २, १२; १२. ३,
 १८.
 द्वाभ्योर्धनम् ५. १७, ३.
 द्वाभ्योर्धनम् ३. २, ५; १२. २, ३६;
 १६. ७, १.
 द्वाभ्योर्धनम् २. ६, १; १७, ६; ८;
 ६. ११२, १; २; १६. ५,
 १; ८, ३; १६. ४५, ५.
 द्वाभ्योर्धनम् ६. ३२, २; १३४, १;
 ६. ७, ३; १०. १, २१;
 ३, ४; ६, २०; ११. ८,
 १५; १६. ४६, ६.
 द्वाभ्योर्धनम् २. ३३, ३; २०.
 ६६, १८.
 द्वाभ्योर्धनम् ६. ६३, १.
 द्वाभ्योर्धनम् ६. ५५, २; १२. १,
 ३६; १५. ३, ४; १६.
 ६, १०.
 द्वाभ्योर्धनम् ८. २, २२.
 द्वाभ्योर्धनम् ६. २६, २; ७. ७६, २.
 द्वाभ्योर्धनम् ५. २२, १३.

द्वाभ्योर्धनम् १५. ४, ५; ६.
 द्वाभ्योर्धनम् ६. ६, १०.
 द्वाभ्योर्धनम् ७. १०६, ५.
 द्वाभ्योर्धनम् ६. ३२, ३.
 द्वाभ्योर्धनम् ४. ३८, १; २.
 द्वाभ्योर्धनम् ६. ८३, ३.
 घ
 घ ५. १३, १०; ११; ६. १,
 ३; १८, १, ३; ११; ४,
 ८८; २०. ७, १; १७,
 २; १८, २; २१, ७; २६,
 २; ५२, १; ५७, १४;
 ६६, १; ७८, २; ६२,
 १४; १११, १; १२२, २;
 घनः २०. ६८, ८.
 घना २०. ७०, १६.
 घनाघनः १६. १३, २.
 घनेन १०. ४, ६,
 घर्मः ४. ११, ३. ७. ७३,
 १; २; ५; ७; ८. ८, १७;
 ६. ७, ३; १०, ४; ११;
 ३, १८; २०. १३६, ४.
 घर्मः-इव १६, २८, २; ३.
 घर्मदुर्धनम् इवेति घर्मदुर्धनम्
 ४. २२, ४.
 घर्मम् ४. १, २; ११, ५; ६,
 ३६, १; ७. ७३, ४; ६७,
 ४; ६. १०, ६; ११. ५;
 १२. २, ७. २०. १४०,
 २.
 घर्मसत्-भिः १८, १, ४७;
 ४८.
 घर्मस्य ४. ११, ६.
 घर्मस्वदेभिः २०. ६१, ७;
 घर्माः ८. ६, १३.

घृमनि ६. १, ८.	२, १४; २०. ३०, १;	घृतात् ५. २८, १४; १६.
घृमे ७. ७३, ७.	४८, ३.	३३, २; ४६, ६; २०.
घसत् २०. १२६, १३,	घृत-योने ७. २६, ३.	६५, २.
घातुकः १२. ४, ७.	घृत-वत् ३. १०, ६; १७,	घृतेन १. ३१, ३; ३. १२,
घारय १२. ३, ३७,	६; ७. ६८, २; ६. २,	४; १५, २; ३; १७, ६;
घासः ४. ३८, ७; ८. ७, ८.	८; १२. ३, ४५; १८,	४. १४, ६; २६, ६; २७,
घासम् १२. ५, १८; १८.	२, ३.	५; ५. १२, १०; २७,
२, २६; १६. ५५, १;	घृत-वता ३. १०, ११.	२; २८, ३; ६. ५, १;
६.	घृत-वती ३. १२, २.	२२, १; ३२, १; ५१,
घासात् १८. २, २६.	घृत-वतीः १६. ४२, २.	२; ७३, २; ६३, २; ७.
घृणिः ७. ३, १.	घृत-वन्तः ४. ३५, ५; २०.	५७, १; ७५, २; ८२,
घृत-आहुतः १३. १, १२;	७६, ६,	६; ६८, १; १०६, १;
२८.	घृत-वान् १८. ४, १६.	३; ४; ६. २, १; १०,
घृत-आहुतम् ४. २३, ३.	घृत-वृद्धः १३. १, २८.	२२; ११. १, १८; ३१;
घृत केशम् २०. १०३, ३.	घृत-श्चुतः १. ३३, ४; १०.	१२. ३, ३७; ४१; ४४;
घृत-पदी ७. २७, १.	६, २७; १८. ६, ५१;	१३. १, ८; ३३; १८.
घृत-पावा १३. १, २४.	६८; ४, २५; ४२.	३, १०; १६. २७, ५.
घृत-पृष्ठः २. १३. १; ६.	घृत-श्चुतम् १०. ६, ६-१०;	घोर-चक्षसे ८. ४, २.
६, १; १२. ३, १६;	२०. ११६, २.	घोरम् १. १८, ३; ६. १४०,
५३.	घृतस्य ३. १२, ८; ६, ६,	३; १६. १; ८; १८.
घृत-पृष्ठाः ६. ५, १५; १८.	१; ७. २६, १; २; ८२,	४, ८३; १६. ६, ३; ४;
४, ५.	१; ६. ४, ५; १०. ६,	५; १४; २०. १४, ५.
घृत-प्रतीकः २. १३, १.	२५; १८. ३, ७२; ४,	घोरस्य ७. ७०, ५.
घृत-प्रियम् १२. १, २०;	५७; १६. ५८, १; २०.	घोरा ५. १८, १५.
१८. ४, ४१.	६७, ३.	घोराः ३. ३५, ४.
घृत-ज्वः ६. ५१, २.	घृत-स्तावः १२. २, १७.	घोराणि १२. ५, १३.
घृतम् २. १३, १; ३. १२,	घृत-स्तु इति घृत-स्तु २०.	घोरात् ४. ६, ६; १८. ४,
१; १३, ५; १६, ७; ७.	२३, ६.	६.
१८, २; २६, ३; २६,	घृत-स्तु इति घृत-स्तु १८. १,	घोरे ६. ८४, १.
१; २; ७३, ४; ८२, ६१;	३१.	घोरैः १६. ७, २.
१०६, २; ८. ७, १२;	घृत-हवाः ४. ३४, ६.	घोषः ३. १३, ६; १६, ६;
६. २, ११; ४, ४; ७;	घृता ५. २७, ४.	५. २०, ७; १६. १३,
१०. ६, ५; ६, ११; १०,	घृताची ६. १, ४; १०. ४,	१०; २०. ११, २.
३३; ११. ५, १५; १२.	२४; १६. ४८, ६.	घोष-बुद्धा ५. २०, ५.
१, २६; १८. ३, ३२;	घृताचीम् १३. १, २७.	घोषम् ३. १०, ५; ४. ३१,
		४; ७. ४३, १; ८. ६,
		११.

घोषाः ३. १६, ६; ७. ५२,
२; ११. ६, ११; २०.
१६, १.

घोषात् २०. ६७, २.

घोषिणः ४. १५, ४.

घोषिणीः ११. ७, २०.

घोषिणीभ्यः ११. २, ३१.

घ्राताम् १. २८, ४.

घ्राते १६. ३२, २.

घ्रातृ. २३, ६; २०. ६०,
२.

घ्रान्तः ७. ६३, २; ८. ८, १३.

घ्रान्तम् २०. ११, ११.

घ्रान्ति ६. ७६, ४; ८. ५,
१३; १०. ८, २४.

घ्रातु ३. १, ६; ७. ७०, २;
८. ४, १७; ८. २०.

घ्रांसः १३. १, ४८; ५३.

घ्रांसम् १३. १, ४६; ४७;
५२.

घ्रातृ ७. १८; २.

च

च १. २, ४५; ५, ३; ६, २;
३; ७, ३; ८, ३; ९, १;
१०, ४; ११, ५; १२,
३; १३, ३; १४, ४;
१५, ४; १७, २; १८,
२; ४; २०, ३; २२,
१; २३, १; २४, ४;
२६, ६; २०, २; ४; २२,
३; ४; २५, ३; २. २,
३; ४, ५; ६, २; ७,
२; ८, २; १०, ६; १३,
३; १४, ३; ४; १५,
१-६; २५, ३;

३०, २; ३४, ३; ३५,
४; ५; ३. १, १; ३; २,
१; ३, ६; ५, ७; ६, १;
२; ३; ५; ६; ८, ४; १०,
७; १५, ४; १७, ३;
२०, ४; ५; ६; ७; ८;
९; २२, २; ४; २३, ३;
४; २४, ५; ७; २८, ५;
६; ३०, ४; ४. १, १;
४; ७; २, ४; ५; ३, ३;
४, ८; ५, २; ५; ६, ६;
११, ६; १०; १६, २;
८; १८, ७; २०, २; ४;
७; ८; २१, २; ३; २२,
६; २३, ७; २५, १; ३;
४; ७; २८, ४; ३१,
७; ३२, ३; ३३, २; ३;
३६, १; २; ३७, १०;
३८, ४; ५. २, २; ६;
६; ३, ७; ४, ६; ५,
२; ६, १; ८; १०; ७.
३; ८; ८, ७; ११, ११;
१२, १; २; ३; १३, ६;
७; ८; १५, १-१२;
१७, ३; ७; ८; १८, ८;
२१, २; ७; २३, १;
४; ५; ६; ७; १३;
२५, ४; २७, ६; २८,
२; १४; २६, १४; ३०,
४; ५; ८; १०; १६;
१७; २१, ८; २. २, १;
५, १; ३; ६, ३; १४,
१; १५, २; १६, ३;
१८, ३; २२, २; २३,
१; २४, २; २५, १;
२; २; २१, १; २४,
४; २५, ३; ३७, ३;

४०, १; ४२, ३; ४३, १;
४४, २; ४६, २; ५०, ३;
५१, २; ५३, १; ५४,
३; ५७, ३; ६१, २; ६६,
२; ६७, १; ७१, १; ७२,
३; ८१, १; ८५, २;
८७, ३; ८८; २; ८९,
१; ९४, ३; ९६, ३;
९८, १; १०१, १; १०२,
१; ३; १०४, १; ३;
१०७, १-४; ११०,
१; ११२, ३; ११५, २;
११७, ३; १२०, ३; १२१,
२; १२२, २; १२४, २;
१२३, ४; १२६, ३; १२८,
३; १२९, ३; १४०, १;
२; ३; ७. ४, १; ८,
१; १२, १; २; १३,
१; २०, १; २; ६; २५,
२; ३३, १; ४४, १;
५६, ८; ५८, १; ६७,
१; ७०, १; ७; ७६, ३;
४; ७८, २; ८१, ३;
८२, ५; ८६, ३; ९०,
३; ९०६, २; ३; ५; ११०,
१; ८. १, ८; १२;
१३; २०; २, २०; ३;
३; ४; १०; ११; १२;
२५; ५, ८; १०; १६;
१८; २२; ६, ४; ७;
१०; १५; २३; २४; ७,
१; ५; १०; १३; १७;
१८; २०; २४; ८, ८;
१७; १८; ८, ७; १०(२),
६; १०(४), ११; १२;
१५; १६; १०(६),
२; ८. १, १७; २२;

२, ३; १५^३; ३, २; ४;
 ५; ६; १२^३; १५^३; २२;
 ४, २२^३; २४; ५, ६; १४;
 १६; २१^३; २७; ३७^३;
 ६(२), ६^३; ६(३), १२—
 ६^३; ६(६), ३^३; ७, १२;
 ७^३; ६^३; १०^३; ८, १७;
 १८; २२; ६, १३; १६;
 २१; १५, ११^३; १०. १,
 १३; २१; २२; ३२; २,
 ६; १२^३; १६^३; २४; २५;
 २६; २६^३; ३, ८; १२^३;
 १४^३; १६; १८; ४, ३^३;
 ८^३; ६; १०; १५; १६^३;
 १७; ५, २२; २३; ७, ८;
 १०^४; ११^३; १५^३; १७;
 २२^४; ३३; ३८; ८, १^४;
 २^३, ४; १०^३; ११^३; १२;
 १६; १७; ३४^३; ६, ६;
 ७; ६; १२^३; १३; १४;
 १६; १७; १८; १६; २०;
 २१; २२; २३; २६; १०,
 ३; २१; ३०; ३१; ११.
 १, ६; ३३; ३४; २, २;
 ३; १६^३; २६; ३१; ३,
 २४^३; २८; २६; ३,
 ३२^३—४६^३; ५५; ५६; ४,
 १०^३; १५; १७; १८; ५,
 १; ५; ८; ६; २१^३; २३;
 ६, ६; ६; १२; ७, १^३;
 ३^३, ५; ६^३; ११^३; १२^३;
 १५; १७^३; २०^३; २२;
 २३^३; २५^३; २६; २७; ८,
 २^३, ४^३; ६^३; १५; २०^३;
 २१^३; २२^३; २३^३; २४;
 २५^३—२८^३; ३०; ६, १^३;
 ५^३; ७; १३; १५; १६;

१७; १८; २२; २३;
 २४; २५; १०, २; ७;
 ६; ११; १८; २१;
 २३; २४; १२. १, ५;
 १२; २३; ३१; ४७; ५०;
 ५१; ५२; ५३; २; २;
 १४; १८; १६; ३६;
 ४०; ३; ५; ६; ६;
 १२; २५; २७; २६;
 ३४; ३६; ४६; ५०; ४;
 १; २; ७; १२; १३; १४;
 १६; १८; १६; २१; २५;
 २६; २८; ३८; ४४;
 ४८; ५३; ५, ७; ८;
 ६; १०; १३; ३८;
 ५६; १३. १, ८; १२;
 १३; १६; २५; ३४;
 ३७; ३८; ४६; ४७; ५४-
 ५८; २, ५; १४;
 ३५; ४, ११; १४;
 १६; २२; २३; १४.
 १, ३३; ३५; ३६; ४५;
 ४८; ५३; २, ४; ६;
 २०; २२; २६; ३४; ३५;
 ३७; ४१; ४२; ४६;
 ५१; ५६; ६०; ६१; ६२;
 ६६; ६६; ७४; १५. २,
 २; ३; ४; ६; ७;
 ८; १०; ११; १२;
 १४; १६; १७; १८;
 २०; २२; २३; २४;
 २६; २७; २८; ३,
 ४; ५; ४, २; ३;
 ५; ६; ८; ६;
 ११; १२; १४; १५;
 १७; १८; ६, २;

१६; ५५; ६५; ८५; ९५;
 ११५; १२५; १४५; १५५;
 १७५; १८५; २०५; २१५;
 २२५; २३५; २५५; २६५;
 ७, २६; ४५; ८, ३५;
 ६, २५; ३५; १०, ३५;
 १२, ३५; १३, १२; १७,
 ८, ६५; १८, ४५; १६,
 २, ५५; ३, २५; ३४;
 ४५; ४, ६; ६, ४; १७,
 १, ६५; ७५; २१५; २४;
 २७; २८; २६५; १८, १,
 ४; १५; १६; २६; २८;
 ४५५; ४७५; ५४; ५५;
 २, २; ७५; १२; ३४;
 ३७; ५६; ५८; ३, १;
 १४५; १६; ३८५; ४४;
 ५५; ७२; ४, २८५; २६;
 ५७५; ६२५; ७५; ७६;
 १६, ६; ३; ४; ७५; ११;
 १२५; १४; ७, २; ३;
 ५; ८, २५; ५; ६, २५;
 ८; १०; १६, १५—११५;
 २०, २; २४, ५२; ६;
 २५, १; २६, ३२; २७,
 १०; ३१, ३; ४५; ५;
 ७५; १०५; ११; १३;
 १४; ३२, ७; ८५; ६;
 ३३, २; ३४, २; ३६,
 ३; ३७, १; ३६, १; ५;
 ६; ७; ८; १०; ४०, १;
 ४१, १; ४२, २; ४४,
 १०५; ४५, २५; ४; ४६,
 १५; ३; ६५; ४७, ४५;
 ५२; ४८, १५; ३५; ५;
 ४६, ५; ५३, ५; ५४, १;

(४, ८१४)

च—चक्षणी इति.

५५, ५५, ५५, ५७, ५८;
 ५८, ५८, ६३, १३, ६४,
 १३, २३, ६८, १३, २०.
 ६, ८, ६, ७, २, ११,
 ८, १३, १, ४, १५, ५;
 १७, १२, १८, ५, ६, १६,
 १, ७, २०, ६, २४, ७;
 २८, ३, ३४, १७, ३५, ४;
 १४, ३६, ८, ३७, ४, ५;
 १०, ३६, ४, ४४, २;
 ४६, ३३, ४८, ४, ५४,
 १, ५५, १, २, ५७, ६;
 ६०, ६, ६१, २, ६, ६२,
 १०, ६३, १५, ६५, २;
 ६७, २, ५, ७०, १०;
 ७१, १, ६, ७६, ५, ७;
 ८२, १, ८, ८५, १, ३;
 ८७, ७, ८१, ३, ८२,
 ४, ८६, १०, १०६, २;
 १०७, ५, ८, १२२;
 १४, ११२, १, ११३,
 १, ११५, ३, ११६, २;
 १२४, ४, १२६, २०;
 १२८, १०, ११, १३५,
 १२.
 च २०. १२८, १, १०, ११२.
 च २०. १२७, १, १२८, ४२;
 ५, ८, ६.
 चक्रमानाय १६. ५२, ३.
 चक्रवर्त्त २०. ६१, ६.
 चक्रतिथि २०. १५, ६.
 चक्रार्थ २०. ७५, ३.
 चक्रार्थ ६. १००, ३, २०.
 ८७, ३.
 चक्रार्थ १२. ३, १६.
 चक्रानः २. ५, १.

चकार २. ५, ५, ६, ५, ३.
 २४, २, ४. १८, ६, ५.
 ८, ७, १४, ६, ६, ३१,
 ११, ७. १०६, ५, ६.
 १०, ७, १०, १०. १,
 २८, ८, २६, १३. १,
 ५२, १६. २०, २, २०.
 ८७, ५, ६०, २, ६२,
 १८, १२६, ३.
 चकार ४. ६, १, ६. ६५,
 ३, ६, ३, ३, १८. २,
 २७, २०. ११, ७, १६,
 १०, ७७, ४.
 चक्रम् ६. ११४, १, ११५, १;
 ११८, १, ७. १०६, १;
 १०. ३, ८, १२. २, ४०;
 १८. १, ४.
 चक्रम् १८. १, ३३, ५१.
 चक्रवान् २. ३५, ३.
 चक्रवे १८. २, २०.
 चक्रार्थः ३. १७, ७, ६. ६,
 १६.
 चक्रम् ६. ६, २, १३, १४;
 १०. ८, ४, ११. ७, ४;
 १३. ३, १८, १४. १,
 १४, १६.
 चक्रमे ७. २६, ४, ५, १०.
 ८, ४१, १३. २, २७;
 ३, २५.
 चक्रये २०. ७१, ८.
 चक्रवाका-इव १४. २, ६४.
 चक्रा १८. १, ८, ६, १६.
 ५३, १.
 चक्राणः २०. २७, ५.
 चक्रान् १६. ५३, २.
 चक्राम् २०. १४, २, ६२, २.

चक्रिम् २०. ७१, ८.
 चक्रिरे ४. ७, ७, ५. ६, २;
 ८, ६, ११. १०, १७;
 १८. २, १६.
 चक्रुः ४. १७, ४, १८, ५;
 ५. ३१, १३-६, ६.
 ११६, १, १४१, ३, १०.
 १, ४, १४. २, ६, १६.
 ३५, १, २.
 चक्रुः १०. ७, ४४, ११. ६;
 २५, २०. ७७, ३.
 चक्रुषम् ४. १३, १.
 चक्रुषे ४. १८, ४.
 चक्रे ४. १७, १, ५. ८, ८, ६.
 ६, ११, १०. ७, ३२;
 ३३, ३४, ३६, १२. १,
 १०, १६. २०, ३.
 चक्रे १. २४, १, २, २. २७;
 ३, ८. ६, २, ६. ३,
 ११, १२. ३, ५४, १३.
 १, ११, ३, २५, १६.
 ६, १४, २०. १६, ५.
 चक्रे इति १४. १, ११, १२;
 १६.
 चक्रेण २०. २१, ६.
 चक्रयोः २०. १२२, २;
 चक्रपत् ६. ३५, ३.
 चक्रपुः ६. १०, १६.
 चक्रपे ७. ८७, १.
 चक्रपे ६. ३६, २.
 चक्षणीम् ६. ४, ३, २८, ७;
 ६. ६५, १, १६. ३६,
 ६, ७, ८.
 चक्षणी इति १०. २, ६.

चतुर्-चतुः-भ्यः.

(४, ८१५)

चतुर् ए. १०, २६; १८. ४,
२६.

चतुर्सा १३. २, २१; २०.
४७, १८; ५४; ३; ८७,
६.

चतुर्से १. ५, १; ६. १६; ३;
३६, १; ४१, १; ६८, २;
७६, १; १०. ६, ८; २०.
३८, ६; ४७, ६; ७०, ६.

चतुः २. १७, ६२; ३५, ४;
५; ३. २२, ५; ४. ५, ४;
१४, ५; २०, ७; ५. ६,
७; १०, ८; १३, ४; २१,
१०; ३०, १३; ६. ५३,
२; ७. २६, ७; ८. १,
२०; २; ३; ३, २१; ६.
६, १४; १०. २, २६; ३०;
६; ३५; ७; १८; ३३; ३४;
१०, २४; ११. ३, ३; ५,
२५; ७, २५; ८, ४; २६;
३१; १२. १, ३३; ३, २;
५, ६; १३. १, ४५; २,
३५; १४. १, ६; १६. २,
५; १८. १, १०; २, ४६;
१६. ३५, ३; ४३, ३;
४४, ५; ४६, ३; ५१, १;
५३, ६; ५८, १; ५; ६०,
१; २०. १६, २; ६६, १०;
१०७, १४.

चतुःमत्स्य २. ७, ५; १६.
४५, १.

चतुःपः ४. ६, ६; ५. ६, ६;
६. २, २; १२. ३, ३२.

चतुःषा १. ३३, ४; २. १६,
३; ३४, ३; ५. ६, १०;
१३, ४; २१, २; ३०, १४;

६. ६६, ३; ७. ६०, १;
८. ३, ६; ७, १८; ६. ४,
१७; १०. ७, ३६; ८, १४;
१०, १५; ११. ७, २३;
१३. ३, ६; १४. २, १२;
१६. १, १२; १८. २, ७.

चतुःषाम् ५. २४, ६.

चतुःपी इति ६. ५, २१.

चतुःषे ५. ४, ७; ६. १०, ३;
८. २, ४; ३, ८; १४. २,
३५; १८. ३, १०.

चतुःष्मती १६. ४६, ८.

चतुःष्मते १२. २, २१.

चतुःषि ३. १, ६; ११. २, ५.

चतुः ५. ११, २.

चतुः १६. ६, ७.

चतुः ५. २०, ४; ८. ४,
२५; २०. ६६, २४.

चतुः १४. १, ५६.

चतुः ६. ५, ३.

चतुःस्य २. १४, १.

चतुःस्रः १. ११, २२; २. ६,
१; १०, ३; ४; ३. २२,
५; २४, ६; ५. ३, १;
१५, ४; ६. ४०, २; ८.
५, ३; ८, २२; ६. २,
११; १०, १६; १०. ७,
१६; ११. २, १०; ५, १२;
१२. १, ४; ५५; १३. ३,
६; १७. १; १६; १६.
१, ३; १०, ८; ३३, ५.

चतुः ११. २, ६.

चतुःश्रुतम् २. ३२, २.

चतुःश्रुतात् ८. ६, २२.

चतुःश्रुती ५. १६, ७.

चतुःश्रुती १२. २, ११; १८.
२, १२.

चतुःश्रुत्याः ४. २०; ७.

चतुःउत्तराणि ८. ६, १६.

चतुःश्रुचेभ्यः १६. २३, ६.

चतुःवर्षान् ११. ६, १७.

चतुःधा ४. ३४, ७; ८. ६;
२४; १० (२); १; १०.
१०, २६.

चतुःपक्षा ६. ३, २१.

चतुःपदः ३. २१, २; ४. ३;
१; २८, १-६; ६. २८;
३; ११. २, १; १२. ६;
१५; १३. १, २; ३, २४.

चतुःपदा ६. १०, २; १६.
१५, २.

चतुःपदाम् २. ३४, १; ८.
२, ४; २३; १६. ३१, ५.

चतुःपदी ६. १०, २१; १०.
१, २४; ११. १०, ६;
१३. १, ४२.

चतुःपदीम् १८. ३, ४०.

चतुःपदे ६. २७, १; ५६, १;
११. २, २८; १४. २, ४०.

चतुःपात् ४. ११, ५; ६.
१०७, १-४; ८. ८, १४;
१०. ८, २१; १३. ३;
२५; १६. ३१, ४; ३४, १.

चतुःपादः १०. २, ६.

चतुःविलम् १८. ४, ३०.

चतुःभिः ३. ७, २; ४. १४,
६.

चतुःभृष्टम् १०. ५, ५०.

चतुःभ्यः १. १२, ४; २१,
१; १६. ४५, ५.

चतुःरात्रः ११. ७, ११.
 चतुःवीरम् १६. ४५, ३; ४;
 ५.
 चतुःचृषः ५. १६, ४.
 चतुःश्रोत्रा ४. १६, ७.
 चतुःहनुः ५. १६, ७.
 चतुःहोतारः १६. ७, १६.
 चतुरः ४. १५, १४; ३४, ७;
 ८. ६, २४; १४. १, ६०;
 १६. २७, ३.
 चतुर्थः १३. ४, १६; १५.
 १५, ६; १६, ४; १७, ४.
 चतुर्थम् ८. ६, ३.
 चतुर्थीम् १५. १३, ७.
 चतुर्दश-ऋचेभ्यः १६. २३,
 ११.
 चतुष्टयम् १०. २, ३.
 चतुष्पक्षम्-इव ३. ७, ३.
 चत्तः ६. ५, ६.
 चत्वारः १. ३१, २; १६.
 ४७, ४.
 चत्वारि ८. २, २१; ६. १०,
 २७; १४. १, ६०.
 चत्वारिंशत् ५. १५, ४; १६.
 ४७, ४.
 चत्वारिंश्याम् २०. ३४, ११.
 चन १. २०, ४; ३. १६, ८;
 ४. ५, २; २५, २; २६,
 ६; २८, ५; ३४, ३; ५.
 ३, ४; १६, १०; ६. ५७,
 ३; १२७, १; १३०, ३;
 ७. ७, १; ६, ३; ३७, १;
 ३८, ४; ४४, १; ८. ४,
 ३; ८, ६; १६; ६. २,
 १०; २४; ६ (६), ४;

१०. ५, २३; ७, ३७; ८,
 १६; ४४; ११. ४, २१;
 २५; ६, १३; २०; १०,
 १६; १२. १, १८; २३;
 २४; २५; १८. १, ४८;
 २, २४; ३२; २०. ५६,
 ४; ८२, २; ६३, २; १२६,
 ११; १२७; १४.
 चनः २०. ८४, ३.
 चनिस्कृत् २०. ६२, ६.
 चन्द्र २. २२, १-५.
 चन्द्रः २. १५, ३; ३. ३१,
 ६; ४. ३६, ८; १५. ६,
 ५; १६. २७, २; ४३, ४२.
 चन्द्रम् १. ३, ४; १२. २,
 ५३; १३. ३, १०; १४.
 २, १०; १६. २६. २.
 चन्द्रमः ७. ८१, २; १४. १,
 २४.
 चन्द्रमसः २०. ४१, ३.
 चन्द्रमसा १३. ४, २८.
 चन्द्रमसि १०. ३, १८; ११.
 ५, १३.
 चन्द्रमाः ५. २४, १०; २८,
 २; ६. ८३, १; ८६, २;
 ८. १, १२; ८, २३; ६.
 २, २४; १०. ६, १०; ७,
 २; १२; ३३; ११. ४, १२;
 ६, ७; ७, २; १०, १६;
 १५. १५, ५; १८, २;
 १८. ४, ८६; १६. ६, ७;
 ८, १; १६, ४.
 चन्द्रस्य १५. ६, ६; १६.
 २७, ५.
 चन्द्राय ४. ३६, ७३; १६.
 ४३, ४.

चन्द्रासः २०. ६, ४.
 चन्द्रे १६. २७, १०.
 चन्द्रेण ४. ३६, ८.
 चमस-अध्वर्यवः ६. ६ (६),
 ३.
 चमसः ७. ७३, ३; ८. १०
 (५), २; १०. ८, ६; १६.
 ३, ३; १८. ३, ५३; १६.
 ४६, ८; ५८, ४.
 चमसम् ६. ४७, ३; १८.
 ३, ५३; ५४; २०. १६, ८.
 चमसे २०. ३१, ४.
 चमसेन ७. ११०, ३.
 चम इति २०. ४२, ३.
 चम-सदः २०. १७, ४.
 चम्बोः ६. १०, १२.
 चयत् ७. ५०, ३.
 चयनेन १८. ४, ३७.
 चर २. ११, ३; ३. ३, ३;
 ४. १७, ८; ६. ४५, १;
 १३६, २; ४; ८. १, १२,
 १८. ४, ३१; २०. ७३,
 ३; ६६, २४.
 चर २०. १२७, ११.
 चरणीनाम् २०. ६६, २.
 चरणे ७. १०६, १.
 चरण्यात् ७. २६, १; २.
 चरत् १३. २, ४०.
 चरत ६. ६७, २; ६. ४, २४.
 चरतः ७. ५७, १; १०८, २;
 ८. २, ११.
 चरतः ७. ८१, १; ८. ६,
 १२; ११. २, १४; १३.
 २, ११; १४. १, २३;
 १८. १, ३५; २, १३.
 चरति ४. ५, ५; १६, २;

चरति—चारु.

(४, ८१७)

७. २०, ६; १८. २, १०; १६. ५६, ४.	चरमतः १६. १५, ३.	१०. ६, २; १७. २४;
चरति ३. १०, ४; ४. ८, १; ३; १०, ७; ११. २; ३; ३६, ६; ५. १७, ५; १८, १३; ६. ३१, २; ७. ६, १; ८. ६, ११; २२; ६. १, ४; १०, ८; १०. ८, १२; १३; ११. २, १२; ४, २०; ५, १; २३; १२. ४, ३७; २०. ४८, ५.	चरसि ३. ६, ४. चरसि १३. १, ४०; २०. ५३, २; ५७, १२. चरसे १३. २, ६. चराचरः १४. १, ११. चरातै ३. ४, ३. चरामः ६. १३३, १. चरामसि ६. ४५, ३; २०. १५, ४; ११८, १. चरामि ३. १५, ५; ६; ६. ११७, १. चरामि ४. ३०, १; ६. १०, १५. चरितम् ३. १५, ४; ६. १, ३. चरिजाणि १०. २, १२. चरुः ८. ४, २; ११. १, १६; १८; १८. ४, १६-२४. चरुम् ११. १, १७; ३, १८; २०. ७०, १२; १२६, १८. चरुम्-इव ४. ७, ४. चरुणाम् १८. ४, ५३. चरत् १२. ४, १६; २७. चरेते इति ८. ६, १२. चरेम् ३. १२, १; १२. १, १७; १६. ५८, ३३; २०. १४३, ८. चरेयम् १७. १, २७. चरोः ६. ५, ६. चर्किरन् २०. ५७, ३. चर्कृत्यः ६. ६८, १. चर्कृत्यम् २०. ६६, २. चर्कृधि २०. १२७, ११. चर्चराति २०. १२७, ४. चर्म ४. १२, ४; ६. ७, १५;	१०. ६, २; १७. २४; ११. १, ८; १२. ३, १; १४; १४. २, ३२; २४. चर्म-इव २०. १०७, २. चर्मणा ४. १२, ४; ५. १८, ३. चर्मणि १०. ६, २६; ११. १, ६; १४. २, २३. चर्षणि-धृतः २०. ३६, ४. चर्षणि-प्रः ४. २४, ३. चर्षणि-प्राः २०. ११, ७; ७३, ३. चर्षणि-सहम् २०. १४, ४; ६२, ४; ८०, २; ८५, २. चर्षणीनाम् १. ५; ४; ७. ८४, २; १३. १, ३८; १६. ५, १; ११, २; २०. ३६, १; ४४, १; ७०, १५; ६२, १६; १०५, ४. चष्टे ७. २५, २. चष्टे ४. ११, २; १६, ५; ६. १, ५; १०. ८, ३०. चस्कन्द १८. ४, २८. चस्कभाने इति ४. २, ३. चाकन् २०. ७६, १. चाकशीति ६. ६, २०. चाक्षुष १६. ७, ७. चातयत् १६. ४४, ७. चातयन् १६. ३४, ६. चातयामहे २. १४, २; ४. ३७, २. चातुः-मास्यानि ११. ७, १६. चाद्रुमसाः १६. ६, १०. चायित्वा ६. १, १. चार २. १३, १; ७. १२, १;

१२. १, ५६; १४. १,
 ३१; १६. ७, २; २०.
 ३०, १; ३५, ७; ८७, २.
 चारुः २. ५, १; ३६, ४; १३.
 १, ३८; १८. ३, ७; १६.
 २४, ६; ३३, ३; २०.
 ११७, २.
 चारुम् २०. ६६, ३.
 चिकित्ताम् ६. ५३, १.
 चिकितुषः ६. ६, ७.
 चिकितुषी ४. ३०, २; ७.
 ४७, २.
 चिकितुषे ८. ४, १२; १४.
 २, ४१; २०. ७७, २.
 चिकित्ते २०. १२, २.
 चिकित्त्वन् ७. ६७, १.
 चिकित्वा ७. ५२, २.
 चिकित्वान् ५. १२, १; १३.
 २, ३२; ४२; १८. १,
 ३०; २, ३७.
 चिकित्सति १३. २, १५.
 चिकित्सतु ६. ६८, २.
 चिकित्सतु ६. १४१, १;
 १०. ६, ५.
 चिकित्सवः १०. १, १.
 चिकित्सात् ६. २, ३.
 चिकीर्षति ५. ८, ३; १२.
 ४, १६.
 चिकीहि १. १०, ४.
 चिकेत ५. १, २; ७. २, १;
 ५, ५.
 चिकेत ६. १, ६; ७; ६;
 १५; १०, २३; १०. २,
 २; ७; ८, ४; २०. १८,
 २; १४०, २.
 चिकेतयः २०. १३६, ४.

चिकेतसि २०. ७२, १.
 चिक्युः ६. १०, १६; १०.
 २, ४.
 चिक्युः ६. १०, १६.
 चिकिपः १८. २, ४.
 चिकिपन् १८. ४. १२; १३.
 चित् ३. ३, २; १६, २३; ४.
 ६, ४; २१, ५; ६२; २८,
 २; ५. २, ४; ८; ११, ४;
 ६; २७, ४; ३०, ११; ६.
 ३, ३; २०, १; ६७, २;
 ७. १४, ४; १६, १; १८,
 ३; ४२, १; ६२, १; १०६,
 १; ११७, १; ८. ४, ७;
 ६. ६, ७; १०, २३; १२.
 ४, ७२; १४. २, ४७;
 १८. १, १२; ३; ८; २०;
 ३३; ५२; २, १४-१७;
 ३, २३२; ६५; १६. ५,
 १; ६, १३; ६४, ३; २०.
 १२, ४; १४, १; १७, १२;
 ३१, १; ३१, ५२; ३४,
 ८; १४२; १८; ३५, ६;
 ८; ३६, ४; ६; ३७, ६;
 ४५, १; ५६, २; ६०, २;
 ५; ६१, ३; ६२, १; ६३,
 ६; ६८, ५; ७०, १२;
 ७१, ५; ७३, २; ५;
 ७४, १; ७७, ३; ५; ६;
 ८५, १; ३; ८७, ७; ८६,
 ६; ६०, २; ६१, ११;
 ६२, १४; ६५, २; ६७,
 २; १००, २; १०७, ३;
 ७, ११; १२४, २; १२५,
 २; ७.
 चितम् १८. ४, १४; ३७.

चितयन्तः २०. ७२, १.
 चित्ते ७. २२, २.
 चित्-आकृतम् ११. ६, १;
 १३.
 चितम् १. ३४, २; ३. १,
 ४; ८, ६; १६, ५; २५,
 ५; ५. ३, २; ७, ८; ६.
 ६, २; ४२, ३; ४३, ३;
 ६४, २; ६४, ३; १०,
 १०, १८.
 चितये ६. ४१, १.
 चित्तस्य १६. ४, २.
 चित्तात् ५. १८, ५.
 चित्तानि १. ६; ४; २. ३०,
 ३; ३. २, १; २; ३; ४;
 ५; २५, ६; ५. २१, ४;
 ५; ६; ७. ७७, २; ११.
 ८, २७.
 चित्तिः १४. १, ६.
 चित्तिनः ३. ३०, ५.
 चित्ति-भिः ६. १०, ७.
 चित्तेन ३. ६, ८.
 चित्तेभिः ३. ८, ६; ६, ६४, २.
 चित्या ५. ६, १०.
 चित्याम् ५. २४, १-१७.
 चित्यम् १०. १, ८.
 चित्र २०. ८०, १; ६८, २.
 चित्रः १३. २, ३२; ४२; २०.
 १२४, १.
 चित्र-भानु १३. ३, १०.
 चित्रभानो इति चित्रभानो
 ४. २५, ३; २०. ८४, १.
 चित्रम् १३. २, ३४; १५;
 २०. १४, १; ६२, १;
 ६७, २; ७१, ११; १०७,
 १६; १४.

चित्रया २०. ६७, ३.
 चित्र-रथः न. १० (५), ६.
 चित्र-राधाः १. २६, २.
 चित्रा १६. ७, ३; १३, १.
 चित्राणि १६. ७, १.
 चित्रामिः २०. ८१, २; ६२,
 २१.
 चित्वा १०. २, न.
 चिनोति ७. ५०, ६; २०.
 १७, ५; ८६, ६.
 चिनोतु न. ३, ४; ११. १,
 २४.
 चीकृपाति २०. ६३, १;
 १२४, ४.
 चीतिम् २. ६, ४.
 चीपुद्गुः ६. १२७, २.
 चुच्यवत् २०. २०, ५; ५७,
 न.
 चुच्यवीरत् २०. १४०, ३.
 चुमुरिम् २०. ३७, ४.
 चृत ६. ६३, २; ८४, ३;
 ११२, १; २.
 चृततु ५. २८, १२.
 चृतामसि ५. २८, १२; ६.
 ३, १; ३; ४; ५; ६; न;
 १३; १४.
 चृतामि ६. ३, १८.
 चोकिते २०. २१, ३.
 चेतः ६. ६४, २; ६. ७, ११.
 चेतत् ६. ६, १५.
 चेतति २०. ६३, ७.
 चेततु ३. २२, २.
 चेतनानि २०. १३५, ६.
 चेतनम् २०. ११०, ३.
 चेतनीम् ६. ४, २१.

चेतयन्ती ५. १२, न.
 चेतयेथाम् २०. १४०, ५.
 चेतसः ६. ११६, ३.
 चेतसि ११. १०, २.
 चेतसे ६. ४१, १.
 चेत्ता ४. न, २.
 चेतारम् ५. ३, १०; ६.
 ६६, १.
 चेतुः ६. ७३, १.
 चेरिम् ७. ६५, २.
 चेषतः ११. ४, २३; २४.
 चोदत् १६. ५, १.
 चोदय ३. २०, ५; ७; २०.
 ७१, ११; १२.
 चोदयत् २०. १३७, २.
 चोदयन् २०. ५८, २.
 चोदयन्ताम् १६. ७१, १.
 चोदयस्व ७. ४६, ३.
 चोदयामि ५. २, ५; २०.
 १०७, न.
 चोदयामि ३. १५, १.
 चोदयासे २०. ७६, न.
 चोदामि २०. २४, न.
 चोदिता २०. ३४, ६; ६५,
 २.
 च्यवना २०. ३४, ४.
 च्यवनाय ७. ११६, १.
 च्यवय १०. ४, २५; २०.
 ८६, २; १३७, २.
 च्यवयति १०. १, १३; २०.
 ३७, १.
 च्यवयतु १८. २, ५४.
 च्यवर्यन् १२. १, ५१.
 च्यवयन्तु ३. ३, २; १२.
 ३, ३५.

च्यवयिष्युः १६. ३३, २.
 च्यवस्व १८. ३, ६.
 च्यवेथाम् १८. ४, ४६.
 च्युता ६. २, १५.
 च्योष्ठाः ६. ८७, २.
 च्यात्तानि २०. ३७, ५.

छ

छदिः ३. ७, ३; १४. १, १०.
 छन्दः न. १० (४), १४; १२.
 ३, १०; १४. १, न; १६.
 ६, १३.
 छन्दःपक्षे इति छन्दःपक्षे
 न. ६, १२.
 छन्दः-मिः ६. १२४, १.
 छन्दसा ११. ७, न.
 छन्दासि ४. ३४, १; ५. २६,
 ५; न. ६, १७; १६; ११.
 ७, २४; १८. १, १७;
 २, ६.
 छर्दिः २०. ८३, १; १०३,
 १; १३६, १; १४१, ५.
 छर्दिः-पी २०. १४१, १.
 छादयसि ६. ३, १४.
 छादयामि ७. ११८, १.
 छार्यकात् न. ६, २१.
 छायाया ५. २१, न.
 छाया ४. २, २.
 छायाम् ५. १६, ६; १३.
 १, ५६; ५७.
 छायाम्-इव न. ६, न.
 छित्याः न. १, ४.
 छिद्यते ६. ६, ११.
 छिद्रम् १६. ४०, १.
 छिनत्ति १२. २, ३७; ५, ४३.
 छिनत्ति १२. ५, ३८.

छिन्नस्तु ५. २६, १०.

छिन्नशि ६. १४, २.

छिन्नशि ७. ७४, २.

छिन्नस्तु ४. १६, ६.

छिन्नस्तु ६. ५०, १.

छिन्धि १६. २८, ६४.

छिन्धि १०. ३, १६.

छिन्धि १२. ५, ५१.

छिन्धि ४. १६, १; ७.

१११, १; १२. ५, ५१२;

६८.

छिन्नपक्षात् २०. १३५, १२.

छिन्नम् ४, १२, ५.

छिन्नस्य ४. १२, १.

छिन्ना ३. ६, ७; ६. २, १२.

छुबुकात् २. ३३, १; २०.

६६, १७.

छ्य ६. ५, ४.

ज

जन्ति-वांसः ७. ६७, ३.

जन्ति-वान् ४. ७, ३.

जगत् ५. १७, ७; ६. १७, ४;

४४, १; ७७, १; ८८, १;

१२६, १; ६. १०, १.

जगतः ४. २, २; ७. १६, १;

६. ३, १७; १२. १, ६;

१३. २, ३५; १६. ५, १;

२०. ३६, ६; १०७, १४;

१२१, १.

जगता ३. १२, ७; ६. १०,

३.

जगताम्-इव ८. ५, ११; १६.

३६, ४.

जगति ६. १०, १.

जगत्-इव ६. १२, १.

जगती ८. ६, २०.

जगतीम् ८. ६, १४.

जगते १. ३१, ४.

जगत्-छन्दाः ६. ४८, २.

जगत्-पौ २०. १४१, १.

जगत्यै १६. २१, १.

जगन्वान् १८. १, १.

जगन्त्यात् ७. २६, २; ४१,

१; ८४, ३; २०. ३५,

१६.

जगाम ७. ७२, २; १८. ४,

५४; १६. ४०, १.

जगाम ७. २०, ५.

जगार ६. १०, ६.

जगृहुः १०. १, ११.

जगृहे १८. १, ३३.

जग्ध-पाप्मा ६. ६ (२), ८.

जग्धम् ५. २६, ५.

जग्ध्वा ५. १८, १०; १६,

१०.

जग्मुः २०. १२५, २.

जग्मुः २. ५, ६.

जग्मे ६. ६, ८.

जग्मे २. २, ३.

जग्रम २०. ११५, १.

जग्रम १६. ३१, ५.

जग्रमम् ६. २१, १.

जग्राह २. ६, १; ३. ११,

१; १८, ३; १४. १,

४८; २०. ६६, ६.

जग्राह १६. ५८, २.

जघनम् १४. १, ३६.

जघन्थ २०. १३७, ११.

जघन्याम् ७. ७४, २.

जघन्वान् २०. १२, ३.

जघस ६. ११७, २.

जघान २. ५, ३; ४. १२,

७, ८, ८, ७; १०. ४, १२;

१८. २, ३१; २०. ३४,

१०; ११; १७; ४१, १;

७३, ६.

जघान ४. ३७, १; ७. १८,

२; १०. ४, १८.

जघास ५. २६, २; ४.

जग्निम् १०. ४, १२;

जग्नुः ४. ३७, १.

जङ्गिड १६. ३४, ८.

गङ्गिड १६. ३४, ३.

जङ्गिडः २. ४, २; ३; ५;

६; १६. ३४, १४; २;

४; ७; १०; ३५, २-५.

जङ्गिडम् २. ४, १; १६.

३५, १.

जङ्गिडस्य १६. ३४, ५.

जङ्गिडेन २. ४, ४.

जङ्घजाव ४. ३२, ७.

जङ्घनीहि ५. २०, ८.

जङ्घयोः १६. ६०, २.

जङ्घाः ६. ७, १०; १०. ६,

२३.

जङ्घाभिः ४. ११, १०.

जङ्घे इति १०. २, २.

जजनुः १०. ५४, १.

जजान ३. १०, १२; ६. ३८,

१-४; १०. ८, ७; १३;

११. ४, २२; १३. १,

१; ३, १; १५; १८. ४,

५४; २०. ३४, ३; ७.

जज्ञान ६. ६१, ३; ७. ७६,

४; ८०, ३; १०. २, ३;

जुजार—जानासः

(४, ८२१)

१३. १, ६; १६. ३१, ११.	३०, २; १०. १, ८; २०. १, २.	जुन-योपनः १२. २, १५; २०. १२६, २२.
जुजार १०. ८, २६.	जुनः २०. १२७, १०; १३.	जुन-राज्ञः २०. २१, ६.
जुजास ५. १३, १.	जुनताः ५. १८, १२.	जनस्य १. २६, ६; १८. २, ३०; २०. ३६, ६.
जुज्ञानः ५. २, १; २०. ८७, ३; १०१, ३; १०७, ४.	जननात् ६. १०६, २.	जना २०. ७२, २; ७५, १.
जुज्ञानम् ४. १, १; ५. ६, १.	जनम् ४. ५, ७; ५. ४, ८; ७, ८; ८, ७; २२, १२; ७. ८४, २; १२. १, ४५.	जनाः ५. १६, २; ६. ३३, १; ८४, १; ७. ६, १; ८. ५, ७; १०. ७, १०; २१; २५; २८; ६, ७; १४. २, ५६; २०. ८५, ३; ८६, ४.
जुज्ञानाः १८. १, ५०.	जनम् २०. ३४, १२.	जना २०. १२७, १.
जुज्ञिरे १०. ७, २५.	जनम् २०. १२७, ११.	जनात् ६. ८१, ३; ७. ४५, १.
जुज्ञिरे १०. १०, २१; ११. ७, ११; २३-२७; १६. ६, १२; १३२.	जनमाने २०. ५८, १.	जनान् ३. ५, ६; ७; ४. ५, १; ६. ६६, २; ७४, ३; ७५, ३; ७. ५७, १; ६. १, १६; १२. १, ५७; २, ६; १३. २, १८; २१; १४. २, १०; १८. २, १३; १६. २६, ३; ३२, ७; २०. ४७, १५; १८.
जुज्ञिषे ४. १०, २; ५. ३०, १७; १६. ३१, ६.	जनम् २०. ३४, १२.	जनानाम् १. ३३, २; ४. १६, ५; २२, ५; ५. ५, २; ६. ६८, २; ७. २१, १; १२. १, ६१; १३. २, ४६; १८. १, ४०; ४६; ३, १३; २०. १७, ६; ३२, २, ५६, ६; ८५, ४; ६३, ३.
जुज्ञिषे १. ७, ६; ४. १०, ६; १०. १०, १६; १६. ५६, ५; २०. ६५, ३.	जनय ३. १६, ३; २३, ३; ७. १११, १; १४. २, २४; ३१.	जनाय ४. ३०, ५; ८. ४, १२; २०. ३६, ८; ६०, २; १४३, ४.
जुज्ञे ४. १, ३; २४, ६; ५. २, १; ६. १, १; ३; १०; २०. १०७, ४.	जनयः ५. १२, ५; १२. २, ३१; १८. ३, ५७; २०. १७, १.	जनासः ४. २५, ३; ५. ११, ७; ८; २०. ३४, ६.
जुज्ञे ४. १, ६; ६, १; ७. ५, २; ८. ६, ५; ६. २, १६; १०. १०, २०; ११. ८, ६; ६; १३. १, ५५; १६. २२, २१; २३, ३०.	जनयत् १४. २, १४; २०. ६१, १.	जनासः १. ३३, १; ४. २१,
जुठरम् २. ५, २; १३. ३, ४; २०. ३३, १.	जनयति ७. १६, १.	
जुठरे ११. १, २५; २०. ६, ५; ८, २; २४, ५; ३२; ३.	जनयतु १४. २, ४०.	
जुत्रवः ११. ३, १०.	जनयथ १. ५, ३.	
जुत्र-भ्यः १४. २, ४७.	जनयन् ७. ३, १; ११. ५, ७; २४; १३. १, ११; २, २६; २०. ११, ४.	
जुत्र्यः ६. २, २२.	जनयन्त ८. ३, १२; १०. ५, ४८.	
जुन-अर्यनाः १२. १, ४७.	जनयन्ति ३. २३, ४.	
जनः १. ८, १; ३. २०, ६; ४. ५, ६; ५. ११, ४;	जनयन्तीः ४. २, ८.	
	जगयाः ३. २३, ३.	
	जुनयावहै १४. २, ७१.	
	जुनये १४. १, ४६.	

५; २०. ३४; १-१७.
 जनि-कामः २. ३०, ५.
 जनि^तव्यम् ४. २३, ७.
 जनि^{ता} २. १, ३; ४, १, ७;
 ६. ४, ६; १०, १२; १३.
 १, १३; ३, १६; १८. १,
 ५; २०. १०५, १.
 जनि^{ता}रम् ४. १४, १; १०.
 ४, १८.
 जनि^{तु}: ११. ७, १५; १६.
 जनि^{तु}: २०. ३४, १६.
 जनि^{तो}: १६. ५६, २.
 जनि^{त्र}म् १. २५, १; २; ६.
 -४६, २; १२०, २; ११.
 १, ११; १३. ३, २१;
 १४. २, ३४; १६. ५, १;
 ४-८.
 जनि^{त्रा}: २. २७, ३.
 जनि^{त्री} ३. १०, ४; ८. ६,
 ११; १२. ३, ४.
 जनि^{त्री} इति ५. १२, ६.
 जनि^{त्री}-इव १२. ३, २३.
 जनि^{त्री}म् ६. ११०, ३; ६.
 ५, ३०; १८. ४, १.
 जनि^{त्}वम् ७. ६, १.
 जनि^{त्}वम् १८. ३, २.
 जनि^{धा}: इव २०. ७६, ५.
 जनि^म २. २८, २; ३१, ५;
 ४. १, ३; ५. ११, ५;
 ६. १२, १; १८. ३, २२;
 २३.
 जनि^{मा}नि १. ८, ४; १३. १,
 ३७; ३, २१.
 जनि^{मा}म् २०. १३५, २.
 जनि^यते ६. ८२, ३.

जनि^यन्ति १४. ३, ७२.
 जनि^{षी}य ६. १, १४.
 जनि^{ष्ट} ४. १, ५.
 जनि^{ष्य}ते २०. १२१, २.
 जनी २०. १३१, ८.
 जनीः-इव २०. ५, १.
 जनीन् २०. १३५, २.
 जनी^{ना}म् ७. ४६, २; १३.
 १, ४.
 जनु^ष: ४. १, ५; ७. ११५,
 ३; २०. ३५, १४; ६७,
 ३.
 जनु^{षा} ६. ४, २४; १४. २,
 ३३; २०. ११४, १.
 जनु^{षा}म् १३. १, ४.
 जनु^{षे} ४. १, २.
 जने ४. ३६, ६; ६. ५१, ३;
 १६. ४, ५; २०. १६, २.
 जने^{भ्य}: २०. ३६, १; ७०,
 १६
 जने^{षु} ४. २८, ४; ६. ३३,
 ३; १८. ४, ३०; २०.
 १२, २; २०; २; ५७,
 ५.
 जन्त^व: २०. ५६, ६.
 जन्तो: ८. ४, १६.
 जन्म ६. ८०, ३.
 जन्म^{ना} ५. २८, ६.
 जन्मानि १३. २, २२; २०.
 ४७ १६.
 जन्यम् १३. ४, ४३.
 जन्या २०. ८६, ६.
 च^{न्या} २०. १३५, २.
 जन्या: ११. ८, १; २.
 जन्यु: १८. १, ३.
 जभारं ७. ६५, ३.

जभार ४. १, ३; ५. ३१;
 १०२; १०. ७; ४३; ११.
 ५; ६; १२; २०. १६;
 ८; ६; १२३, १.
 जभ्य ६. ५०, २.
 जभ्रे २०. ३५, ८.
 जभत्-अग्नि: ६. १३७, १;
 १८. ३, १५.
 जभ^{त्}-अग्निम् ४. २६, ३.
 जभ^{त्}-अग्ने १८. ३, १६.
 जभ^{त्}-अग्ने: ५. २८, ७.
 जभ^दग्नि-वत् २. ३२, ३;
 ५. २३, १०.
 जभ^म: ८. १, १६.
 जभ^मन: १०. ४, १५.
 जभ^मयं २०. ७४, ७.
 जभ^मयत् ४. ६, ६.
 जभ^मय^{ता}म् ५. २३, १.
 जभ^मयन्तम् ८. ६, १७.
 जभ^मया: १६. ४७, ८.
 जभ^मयामसि २. ३१, २;
 ४; ४. ३, ३; ४; ५.
 २३, ३; ५; ६. ५०, ३.
 जभ^{मा}त् २. ४, २.
 जभ^{मि}षत् २०. १२६, ४.
 जभ^{मे} ३. २७, १-६.
 जभ^{मे}: ८. ३, ३.
 जयं ३. १६, ८; ८. ८, २४;
 ११. १०, १८.
 जय ६. ६२, २; १२६, ३;
 ८. ८, २४३; ६. ५, ६;
 १२; २०. ६१, ३.
 जय: ७. ५०, ८.
 जय^{त्} २०. १७, ५.
 जय^त ३. १६, ७.

जयत-जयम्.

(४, ८२३)

जयत ११. १०, ६; १४; १६. १३, ३.	२; १; ५, १६; २१; १४. १, ५०; १७. १, २७.	जराय ६. ६, १३.
जयताम् ३. १६, ६; ११. ६, १७; १६. १३, १०.	जरत्-अष्टिम् ५. ३०, ५; ८; १२. १, २२; १४. १, ४६; १८. ३, १०; १२.	जरायु १. ११, ४२; ५; ६; ६. ४६; १; ६. ४, ४;
जयति ७. ५०, ६; ६. १, २३; ६ (६); १४; २०. ८६, ६.	जरतीः १४. २, २६.	जरायु-जः १. १२, १.
जयतु ६. १२५; १.	जरतीम् १२. २, ५४.	जरायुणा १. ११, ५; ६; ६; १०६, ३.
जयन् ११. ६, १८; २०. ६०; १.	जरदष्टी इति जरत्-अष्टी ६. ३, ६.	जरायु-भिः १. २७, १.
जयन्ताम् ५. २, ४; ६. ६७, ३; ७. ११८, १; १६. १३, ६; २०. १०७; ७.	जरन्ते २०. १८, १.	जरायै ३. ११, ७१.
जयन्ताम् ८. ३, १६; ८, २४.	जरसः ५. ३०, १७; ६. १२२, १; ४; १०. २, ३०; ११. ३, ५६.	जरितः २०. १३५, १; ३; ५२; ६१.
जयन्ति ४. २२, ५.	जरसम् १. ३०, ३; २. १३, १; १२. २, २४.	जरितः ५. ११, ८; २०. ८६, २.
जयन्तो ५. ५, ३.	जरसा ३. ३१, १; ८. २, ८; २०. १२६, ११.	जरितः २०. १३५, ६; ७१.
जयन्तीः ११. ६, १६.	जरसि २. १०, ५; १२. ३; ६; १८. २, ५१.	जरितरिति २०. ८६, १.
जयन्तीनाम् १६. १३, ६.	जरसे १. ३०, २; ३. ११, ६; ६. ५, २; ७. ५३, ४; १२. ३; ५५; ५६; ५७; ५८; ५६; ६०; १४. १, ४५; १८. ३, १०; १६. २४, २; ३; ३०, २; ३३, ४.	जरितारः २०. १२, ४; ३६; ४.
जयन्तु ६. ६५, ३.	जरा ३. ११, ७; ११. ८, १६; १२. ३, ५५; ५६; ५७; ५८; ५६; ६०; १८. ४; ५०.	जरितारम् २०. १४३, ७.
जयन्तु ५. २१, १२; ६. १२६, ३१, ८, ८, २४; १६. १३, ११.	जरांम् ८. २, ११; १६. २४; ५.	जरितुः २०. २१, ३.
जयम् २. २६, ३.	जरांम्हे २०. २३, ७.	जरितु-भ्याः २०. ५१, १.
जयाति २. २७, १; ६. ६८, १.	जरा-मृत्युः १६. २४, ८; २६, १; ३०, १.	जरितुणाम् २०. १२२, ३; १२४, ३.
जयातै ६. ६८, १.	जरा-मृत्युम् २. १३, २; २८, ३; ४; १६. २४, ४.	जरित्रे १८. १, ४०; २०. ११, ५; १२, ५; ८६, ७.
जयेथे इति ७. ४४, १.		जरिमन् २. २८, १.
जयेम २०. ७०, १६.		जरिमा ३. ११, ८.
जयेम ५. ३, १; ७. ५०, ४; ७; ६. ५, १८; १२. १, ४७; ३, १५; १३. १, २२; १८. २, ५६; २०. १७, १०; ८७, ४; ८६, १०; ६४, १०.		जरिष्णः ७. ५३, ५; १८. ३, ६२.
जरत् १०. ८, ६.		जरिष्णे ८. ३, २०.
जरत्-अष्टिः २. २८, ५; ८.		जह्वाणः १८. २, ५८.
		जलोषः १६. १०, ६.
		जलोष-भेषज २. २७, ६.
		जलियः १६. ५६ ४.१
		जवः ६. ६२, २; १६. ६०, २.
		जवम् ४. २७, ३; ३६, ५; ६. ६२, १; १०. २, १३.

(४, २२४)

जुवानि—जुतिवदे.

जुवानि १६. ७, १.

जुवाः ११. २, ३५.

जसुम् २०. १६, ६.

जहृः ३. ६, ६.

जहाति १०. १, ३२; १२. २,
११; २५.जहाति १०. २, ३०; ८, ३२;
११. ३, ५६.

जहातु ५. २६, १५.

जहातु ७. ३१, १; १०. ५,
२५-३५; १६. ७, १३.

जहानि १३. १, १२.

जहामि १०. १, ३२.

जहासि ६. २६, २.

जहि १. ८, ४; ३. १, ४;
१६, ८; ८. ४, २२; २४;
६. २, १०; ११. १०,
२१; १६. २६, ६; ३४,
६; २०. ८, १; ४३, १.जहि १. ८, ३; २१, २; ३;
२. २७, १-७; ३. २, ४;
४. १७, ४; ३२, ३; ५.
१४, १; २; ६; २१, १;
२३, २; २६, १०; ६. २,
२; ६, २; २६, ३; ३७,
२; १०१, १; १३४, ३;
७. ८८, १; १०६, ४;
८. ३, ७; २३; ४, १६;
५, १५; १०. १, ६; ३१;
४, ३; १३; ६, ६-१७;
२०; २१; ११. १, ६; २,
२१; १०, २१; १२. ५,
६०; ६७; ७०; १३. १,
३०; ३२; १६. ७, १२;
१६. १५, १; ३०, १;
४७. ८; ५०, १; ६५, १;२०. ५, ३; ७४, ७; ६३,
१.

जहिम् ६. २६, २.

जहीत १२. २, २६; २७.

जहीतम् ७. ५३, २.

जहीतात् ११. १, १३.

जह्याः १६. ५०, १.

जह्युः ६. ४७, २.

जा ५. ११, १०२.

जाः-पत्यम् ७. ७३, १०.

जाग्रत् १६. २४, २; ३.

जाग्रत्सि १४. २, ३१.

जाग्रत् ५. १६, १०; ११.
४, २५.

जागृत १. ३०, १.

जागृतम् ८. ४, २५.

जागृतात् ४. ५, ७.

जागृताम् ५. ३०, १०.

जागृविः ५. ३०, १०; ८.
१, १३.जागृविम् २०. २०, १; ५७,
४.

जागृहि १६. ४७, ६.

जागृहि २. ६, ३; ३. १५,
७; १२. २, १०; १३. १,
६; १४. १, २१.जाग्रत् ६. ११५, २; १६. ७,
१०.जाग्रतः ६. ४५, २; ६६, ३;
७. १०८, २.

जाग्रति १६. ४८, ५.

जाग्रति १६. ४८, ५; ६.

जाग्रतोम् ८. ६, ८.

जाग्रत्-दुस्वप्यम् १६. ६, ६.

जातः १. २४, १; ३३, १;

३. २०, १; ४. १, ४; २;
७; १०, १; ४; ५; ११,
३; ३४, १; ५. ४, ७; ८;
१२, ११; २२, ५; ६.
११०, २; ६. १, ५; १०.
६, २; ७, ३६; ८, २७;
२८; ११. ५, ५; १६. ६;
७; ६; ३६, ५; ४२, १;
२०. ३४, १; १६; ६३,
५; १२१, २.जातम् १. २८, ३; ४. ६, ८;
६, ६; १७, ३; २३, ७;
५. ४, २; २८, ६; ७. ६,
१; ८, २, ४; ६, १८; ६.
१, ५; १०. १०, २१;
११. ५, ३; ५; २३; १६.
६, ११; ४१, १; ४४, ३;
४५, ३; ५३, ६; २०.
२५, ५; ४८, २; ८१, १;
६२, २०; ६३, ४; ६६,
१३.

जातम्-इव ३. ३०, १.

जात-वेदः १. ७, २; ३. १०,
६; ५. ८, २; ६. ७७, ३.जात-वेदः १. ७, ५; ६; ८;
४; ६, ३; २. २६, २; ३.
१५, ८; २२, ४; ४. २३,
२; ३६, १०; ४०, १-
८; ५. १२, १; २७, १२;
२६, १; २; ३; १०; १२;
१३; १४; ६. १४०, १;
७. ३४, १; ३५, १; ७४,
४; १०६, १; १०८, २;
११५, ३; ८. ३, २; ४;
५; ७; ११; २५; ४,
१४; ११. १, ३; ४; १०;
४; १३. १, १५; १८.

२, ४; ५; ८; १५; ३,
 ४२; ७१; ४, ११; १६.
 ६४, २; ६५, १; ६६, १.
 जात-वैदसः ८. २, १३;
 १८. ४, १; १२, १३;
 १६. ४५, ३.
 जात-वैदसम् ४. २३, ४;
 १२. २, ७; १३. २, १६;
 २०. ४७, १३; ६७, ६२.
 जात-वैदसि २. १२, ८. १०.
 ३, १६; ६, ३५; ११.
 १, २६.
 जात-वैदसे १६. ६४, १;
 २०. १३, ३.
 जात-वैदाः ३. १, १; २, १;
 ४. १५, १०; ३२, २;
 ३४, २; ५. ११, २; ३;
 ६. १२३, १; ७. ८२,
 ४; ८४, १; ८. १, ११;
 ६. ४, ३; १२. ३, ८;
 १३. १, १२; १४. १,
 ४६; १८. १, २७; २८;
 ४, ६४; ६५; १६. ३, १;
 ४, १; १६, २; ३७, १५;
 ६४, १.
 जातस्य १६. ६, १६.
 जाता ५. १३, ८; ६. १३३,
 ४; १३६, १; ८. ६, १६;
 २१; १०. ८, ३०; १६.
 ४, १; ४६, ३.
 जाताः २. १४, ५; २८, ३;
 ७. ११५, ३; १०. २,
 ११; ११. ५, २०; २१;
 ८, १०; १२. १, १५;
 १८. ४, ५७; १६. ६,
 १२.

जातान् ६. १३६, २; ७. ३४,
 १; ८. ६, १६; १०. ३,
 १३; १५; ११. १, २६;
 ६, ६.
 जातानाम् ३. २३, ३.
 जातानि १. १६, ३; १०.
 ४, २३; २०. ६३, ८.
 जातायाः ८. ६, १; १० (१)
 १.
 जातार्यै १०. १०, १.
 जातारः १८. १, ३२.
 जाते २०. ५८, १.
 जातेन ५. ११, २; ३.
 जातौ ८. ६, १.
 जात्रीः २०. ४८, २.
 जानताम् ६. ६४, १.
 जानते ४. ३६, ८.
 जानन् ३. २०, १.
 जानन्तु ६. ११२, १७. ६०,
 २; ३; १०. ५, ५०;
 १८. ४, ५१; ५२.
 जानम् ७. ७६, ५.
 जानात् ३, २, ६.
 जानाति ८. १० (३) ४;
 ६; १५. १२, ५; ६.
 जानातु १६. ४, ४.
 जानानाः १२. ३, ४०.
 जानामहे ७. ५२, ५.
 जानामि ६. १०, १४; १०.
 ७, ४३.
 जानीत ६. १२३, २.
 जानीत ६. १२३, १.
 जानीतात् ६. ५, १६.
 जानीध्वम् ६. ६४, १; ११.
 १, ५.
 जानीमः ८. ७, १८.
 जानीहि १०. १, २५.

जानीहि १०. ८. ५.
 जानु १८. १, ५२.
 जानुनोः १०. २, २.
 जानु-भ्याम् ६. ८, २१. १०.
 २, ३.
 जामयः १. ४, १; १४, ४;
 १७, १; १४. २, ६१;
 १८. १, ११; ४, ६६.
 जामि १८. १, ४; २०. १३८,
 ३.
 जामिः ५. ३०, ५.
 जामि-कृत् ४. १६, १.
 जामिम ६. १२०, २; ७.
 ६६, १; १४. २, ३३.
 जामि-शंसस्य ६. ४, १५.
 जामि-शंसात् २. १०, १-८.
 जाम्याः २. ७, २; २०.
 १२८. २.
 जाम्यै ५. १, ४.
 जायताम् ६. १०६, १.
 जायताम् ३. २३, २; ३; १३.
 १, ५४; १४. २, १५;
 २१; २०. १७, ६.
 जायत ८. ३, १२; ६. ८, ८;
 १०. ५, ४८; १२. ४, १४.
 जायते ५. १७, १३; १६; १६,
 ४; ६. ३, २०; १०. ८,
 १३; ११. ४, १४; २०;
 १२. ४, ६; १०; १३. २,
 २५.
 जायध्वम् ३. १४, ४; ५.
 जायन्ताम् २. १३, ५; ४.
 १५, २; ३.
 जायन्ते ११. ४, ३; १६; १७.
 जायमानः ६. ११०, ३; ७.
 ८१, २; १३. ३, २२;
 १४. १, २४; १६. ३२.

६; २०. ८८, ४; १३७,
 १०.
 जायमानम् ३. ११, ८; ८.
 ६, २५; ६. ६, ४.
 जायमानस्य ४. २, ८.
 जायमाना १२. ४, १०.
 जायमानाः २. १, १; १४. २,
 २५.
 जायमानात् १०. १०, २३.
 जायमानायै १०. १०, १.
 जायमाने २०. ६२, १६.
 जायया १२. ३, १७; २०.
 १२७, ८.
 जायसे ७. ७६, ५; १३. २,
 ३.
 जायसे ७. ८१, १; १४. १,
 २३.
 जायस्व ११. १, १.
 जाया ३. ३०, २; ५. १७, ६;
 १२; ६. २२, ३; १०. १,
 ३; ११. ८, १७; १२. ३,
 ३६; ४७; १४. १, २५;
 ३०; २, ३; १८. १, ५३;
 २, ५१.
 जाया-इव १८. १, ८.
 जायाः ३. ४, ३; ४. ३७, १२;
 १४. २, ३५; २०. १२७,
 ६.
 जायान्य ७. ७६, ५.
 जायान्यः ७. ७६, ४; १६.
 ४४, २.
 जायान्यम् ७. ७६, ३.
 जायाम् ५. १७, ५; ६. ६०,
 १; ७८, १; ३; ८२, २;
 ३; ११८, ३; ६. ५, ३०;
 ११. ८, १; १४. १, ५६;
 ३, १; ३६.

जाये १२. ३, ३६.
 जायेते इति १०. ८, २३.
 जायेमहि ४. ३३, ४.
 जायः १८. १, २३; २०. ६६,
 १५.
 जायम् २०. ८६, २.
 जायिषुः २०. ६७, २१.
 जाल-दण्डम् ८. ८, १२.
 जाल-दण्डाः ८. ८, ५.
 जालम् ८. ८, ५; ६; ७; ८.
 जलाषम् ६. ५७, २.
 जालाषेण ६. ५६, २२.
 जालेन १०. १, ३०.
 जाल्मः ४. १६, ७.
 जाल्माः १२. ४, ५१.
 जाष्कमदाः ११. ६, ६.
 जिगल्लुम् ५. २, ६; २०.
 १०७, ६.
 जिगात् २०. १३, २.
 जिगाति ८. ४, १७.
 जिगाति २०. ५१, २.
 जिगाय ४. २३, ५; २०. ११,
 ४.
 जिगाय ३. १०, ४; ७. ८०,
 १; ८. ६, ११.
 जिगीर्षति ११. ५, १८.
 जिगीवान् ४. २२, ६; ७;
 ८. ५, २२; २०. ३४, ४.
 जिग्यथुः ७. ४४, १.
 जिग्युः ५. २६, ११; ८. ३,
 १८.
 जिग्युषः २०. २७, ६; ५६, ३.
 जिग्युषे २०. ६८, २.
 जिग्ये ७. ४४, १.
 जिघत्सुः ५. १८, १.

जिघत्सतः ६. १४०, ३.
 जिघत्सति ५. १६, ६.
 जिघत्सु-भ्यः ८. २, २०.
 जिघत्-स्वम् २. १४, १.
 जिघर्षि ८. ३, १.
 जिघांसति ४. १८, ३; ७.
 ७७, २; ८. ५, १५;
 १२. ४, २६; ३०; २०,
 ६५, ४; ६६, १३; १५;
 १६.
 जिघांसन् ६. ६६, २.
 जिघते २०. ५, २.
 जिघसे २०. ६१, ६; ६२,
 १०.
 जिज्ञासे १४. १, ५६.
 जिज्यासतः १. २१, ४.
 जितम् ६. ६८; ३; १०. ५,
 ३६; ११. ६, ४; १६. ८,
 १; ५; ६-३०; ६, १;
 १६. १३, १.
 जिता १. २४, १.
 जिताः ४. २४, २; ११. १०,
 १५.
 जितिम् १०. ६, १६.
 जिते ११. १०, ७.
 जिनतः ६. १३४, ३; १२,
 ५, ५; ११.
 जिनताम् १२. ५, ५६.
 जिनाति ६. १३४, ३; १३.
 ३, १; २५.
 जिनीयात् १२. ४, १५.
 जिन्व ७. ३१, १.
 जिन्वत् १२. १, ४६.
 जिन्वतम् ८. ४, ६.

जिन्वतात्—जीव-भोजनम्.

(४, ८२७)

जिन्वतात् १०. ६, ३४.
 जिन्वति ८. ६, १३; १२. १,
 ३.
 जिन्वतु ३. ५, १.
 जिन्वथ १. ५, ३.
 जिन्वन्ति ६. ४, १८.
 जिन्वसि ११. ४, १४; १६.
 जिन्वितः १६. ३१, ७.
 जिन्विः ८. १, ६; १४. १,
 २१.
 जिष्ण्व १०. ५, १-६.
 जिष्णु ३. १६, ५.
 जिष्णुः ३. १६, १; ११. ६,
 १८; १६. १०, ५.
 जिष्णुना १६. १३, ३.
 जिष्णुम् २०. ६१, ६.
 जिष्णोः २०. १३७, ३.
 जिहताम् १. ११, १.
 जिहिंसिम ६. १२०, १.
 जिहिंसीः १२. ३, १८.
 जिहीड ४. ३२, ५.
 जिहीडते २०. १२७, २.
 जिहीडे ६. ११६, ३.
 जिहीते १२. १, ४८.
 जिहीते २०. १२७, १०.
 जिहीध्वे ८. ७, २१.
 जिहीर्षति २. २५, ३; ५.
 २६, १५.
 जिहीष्व ५. २५, ६; ६.
 १२१, ४.
 जिह्वः १२. ४, ५३.
 जिह्वया १. १०, ३; ५. २७,
 ६; ६. ५६, ३; ८. २, ३;
 ३, २; ११. २, १७, ३;
 १६१; २०. ४, २.

जिह्वरः १८. ३, ५३.
 जिह्वा ४. १३, ७; ५. १८,
 ८; ३०, १६; ७. २६, १;
 २; ८. १, १६; ६. ७,
 ३; १०. ६, ३; ११. ३,
 ३६; २०. १६, ६; १२७,
 ४.
 जिह्वाः १०. १०, २८.
 जिह्वामिः ६. ७६, १;
 जिह्वाम् ५. २६, ४; ६. ५६,
 ३; १०. २, ७; ७, १६;
 ११. ८, १५; १६. ३२,
 ४.
 जिह्वा-मूले १. ३४, २.
 जिह्वायाः १. ३४, २; २. ३३,
 १; २०. ६६, १७.
 जिह्वार्ये ११. २, ६.
 जीजनत् २०. ७७, ३.
 जीजनन् १८. १, २०.
 जीतम् १२. ५, ५७.
 जीतस्य ५. १६, १३.
 जीतार्य १२. ५, ५७.
 जीमूताः ११. ५, १४.
 जीयते १. २०, ४; ५. १६,
 ६; ११. ३, ५६.
 जीयते ११. ३, ५५.
 जीर-दानवे २०. १७, ८.
 जीर-दाजुः ७. १८, ३; १८.
 ३, ६१.
 जीर्यः १०. ८, २७.
 जीर्यति १०. ८, ३२.
 जीव २. १३, ३; १६. २४,
 ५; ६; ७०, १३.
 जीव २. २६, ७; ३. ११,
 ४; ३१, ८; ७. ५३, २;
 १४. १, ५३; १६. २७,
 ८; २०. ६६, ६.

जीवः ६. ४६, १; ६. १०,
 ८; १४. २, ४४.
 जीवतः २०. ६६, २४.
 जीवतः-जीवतः ५. ३०, ७.
 जीवता ६. ५, ७.
 जीवताम् ८. २, २; ६. ३, ६.
 जीवति ५. ५, २.
 जीवति ३. २६, ४; ५; ८,
 २, २५; १८. ४, ३२.
 जीवतु ५. २६, १३.
 जीवतु ८. २, ५.
 जीव-धन्याः १२. ३, २५.
 जीव-धन्याः १२. ३, ४.
 जीवन् ५. ८, ४; १८. २,
 २०; १६. २४, ६.
 जीवनम् ६. २, ५; १६.
 जीवनाय ३. ११, १; ४.
 ६, १; ८. २, २५; १२.
 २, २४; २०. ६६, ६.
 जीवन्तः १२. २, २३; १८.
 २, २६.
 जीवन्तः १६. ३६, ३.
 जीवन्ति ८. १०(४), ४; ८;
 १२; १६; १०(५), ४;
 ८; १२; १६; ६. १, २०;
 १०, १६; १०. १०, ३४;
 ११. ५, १२; १२. १,
 २२; २, ५०.
 जीवन्तीः ३. १४, ६.
 जीवन्तीम् ८. २, ६; ७, ६.
 जीवन्तौ १२. ३, ३५.
 जीव-पुत्रौ १२. ३, ३५.
 जीव-पुराः २. ६, ३; ५.
 ३०, ६.
 जीव-बर्हिः ११. ७, ७.
 जीव-भोजनम् ४. ६, ३.

जीवम् ४. ६, १; ६. १०६,
२; ६. १०, ८; १२. ३,
४; १४. १, ४६; १८,
४; ५१.

जीवयथ ४. १३, १.

जीवला १६. ३६, ३.

जीवलाः १०. ६, ३; १२,
३, २५; १६. ६६, ४.

जीवलाम् ६. ५६, ३; ८. २,
६; ७, ६.

जीव-लोकम् १८. २, ६०;
३, २; ४.

जीवसे ६. १६, २; ४१, ३;
५७, २; ११. ४, ६; २६;

१८. २, ३; २३; ३, ६३;
४, ५४.

जीवाः २. २८, ४; १६. ७०, १.

जीवाः ३. १४, ६; ६. ११७,
२; १२. २, २२; १८. २,

२७; ३, ६७; ४, ५७;
८७; १६. ६६, १; २०.

७६, १.

जीवात् १८. १, ६.

जीवातवे ६. ५, २; ८. २,
६.

जीवात १४. २, २; ६३.

जीवाति १. १०, ३; २.
२६, २.

जीवातुम् ४. १७, २; ८.
१, ६.

जीवान् १८. ४, ५०.

जीवान् १२. ३, ३४.

जीवानाम् २. ६, १; २; १२.
२, ४५.

जीवानि ५. १८, २.

जीवाम् १८. ३, ३.

जीवासः १२. २, ३०.

जीवितम् ६. १३४, १.

जीवित-योपनः १२. २, १६.

जीवित-योपनान् २. २५, ४;
५.

जीवितवै ६. १०६, १.

जीविषुः ६. २, १०.

जीवीः ५. १३, ४.

जीवीत् १०. ५, २५-३५;
१६. ७, १३.

जीवेभ्यः ६. ११७, ३; ८.
१, ७; १५; १२. २, २३;

१८. ४, ५३.

जीवेम १६. ६७, २.

जीवेम ३. १२, ६; १८. ४,
७०.

जीवेषु १. ३५, ३; १८. २,
३; ५२.

जीवौ १४. २, ४३.

जीव्यासम् १६. ६६, १;
४; ७०, १.

जीव्यासम् १६. ६६, १-४;
७०, १.

जुगुपुः १६. २७, ६; १०.

जजुषाणः १८. २, २१; २०.
६७, २.

जुजुषाणम् २०. १२, ३.

जुजुष्टन् ७. ७७, १.

जुजोष २. २६, १.

जपताम् ६. २७, २.

जुषध्वम् १८. १, ५१.

जुषध्वम् ११. १०, १४;
१६. २७, ११; १२; १३.

जुषन्ताम् १. १५, १; ३. ८,
२; १५, २; ५. २७, १२;

७. १७; ४; २८, १; १८.
२, ३५; ४, १३; ४०;

१६. ११, ४.

जुषमाणः १६. ३, १.

जुषसे १८. ३, ६.

जुषस्व २. ५, १; ७. २०,
२; ४६, १; ६८, १.

जुषस्व २. ५, ४; ४. ३६, १०;
५. २६, १४; १८. ३, ४;

१६. ६४, ३; २०. ६, ८;
११७, ३.

जुषाणः ४. ३८, ५; ६. ८३,
४; १२५, ३; ७. ७२,

३; १०४, १; १०६, ५;
१०. ६, ३५; २०. ८७,

२; ६६, २.

जुषाणाः ४. ७३, ३; ६७, ४;
१०६, २; ६. २, ८.

जुषाणौ ७. २६, २.

जुषेत २०. ७२, ३.

जुषेत ७. ४७, २.

जुषेथाम् ५. ६, ८.

जुषेथाम् ३. १५, ४; १७, ७.

जुष्टः ७. ७३, ६.

जुष्टम् ४. ३०, ३.

जुष्टा २. ३६, १; ४.

जुष्टाम् ५. ७, ४.

जुष्टिम् ४. २४, ५.

जुहाव २०. १४०, ५.

जुहु १८. ४, ६.

जुहुत ६. ३२, १.

जुहुमः ७. ७६, ४; ८०, ३.

जुहुयात् १५. १२, ३.

जुहुयात् १५. १२, ३.

जुहुराणाः १८. १; ३३.
 जुहुः १८. ४, ५.
 जुहुमति २०, ५७. १; ६८,
 १.
 जुहोत १८. २, २.
 जुहोतन ७. ७२, १; २०.
 ८७, १.
 जुहोतन ६. ४६, २; १८.
 २. ३.
 जुहोति ६. ७०. १; २; १५.
 १२, ४; ७; ८; ११.
 जुहोति ६. ६ (२), ४.
 जुहोमि ४. ३२, ७; ६. ८३,
 ४; ८४, १.
 जुहोमि १. १५, १; ३१,
 ३; २. २६, ३; ३५, ५;
 ३. १५, ३; ४. ३६, ६;
 १०; ६. ६४, २; ११६,
 १; ६. ४, १०; ५, ३८;
 १२. ३, ५४; १३. १,
 ३३; १८. ४, २८; ३५;
 १६. १, १; २; ३; ५८,
 ५.
 जुहंतः ३. १०, ११; ६. ११४,
 ३; १७. १, १८.
 जुहन्ति ४. ४०, १-८.
 जुहति १७. १, १८.
 जुहम् ५. १७, ५.
 जुह्वा २०. ३५, ५.
 जुतिः १६. ५८, १.
 जुति-मिः १३. २, १५.
 जुतिम् २०. ११, २.
 जुति-मान् १२. १, ५८,
 जूयि २. २४, ५.

जेता ५. २०, १२; ६. २,
 ३; २०. २०; ७; ५७;
 १०.
 जेतारम् २०. १०५, ३.
 जेत्वानि ६. १२५, १.
 जेप्यन् ५. २०, १.
 जेहमानाः १८. ३, ४७.
 जेत्रम् १६. १३, ५.
 जैत्रां २०. ६१, ६; ६२, १०.
 जैत्राय २०. १२८, १५.
 जेषुः ४. ३८; ३.
 जोगुवानः २०. ३४, १४.
 जोषम् २०. ३१, २.
 जोषयन्ते २०. २५, २.
 जोषसे १६. ४६, ६.
 जोह्वीति १०. ७, ३१.
 जोह्वीति ६. ७३, ३.
 जोह्वीमि रु १२, ३; ३.
 २१, ३.
 जोह्वीमि ३. १६, ५; ४.
 २३; ७; २४, ७; २६,
 ७; २७, ७; २८, ७; २९,
 ७; ७. ४४, १; ११. १,
 २६; १६. ४, १; २०.
 ५५, १.
 ज्ञातयः ४. ५, ६; १४. १,
 २६.
 ज्ञातात् १६. १५, ६.
 ज्ञातारम् ६. ३२, ३; ८. ८;
 २१.
 ज्ञाति-मुखाः १८. २, २८.
 ज्ञातीन् १२. ५, ४४.
 जेषम् ६. ५, १६.

जमः २०. ८८, १.
 ज्यया १. १, ३.
 ज्या ५. १८; ८.
 ज्याकाः २०. ६५, २; ३; ४.
 ज्याके १. २, ३.
 ज्या-घोषाः ५. २१, ६.
 ज्या-प्रायैः ११. १०, २२.
 ज्याम्-इव ४. ४, ७; ५.
 १३, ६; ६. ४२, १;
 १०१, ३.
 ज्यायस्वन्तः ३. ३०, ५.
 ज्यायान् ६. २, १६-२४;
 १६. ६, ३.
 ज्येष्ठः २०. ६२, १६; १०५,
 ४.
 ज्येष्ठः १०. ८, २८; १८;
 १, १६.
 ज्येष्ठः २०. १२८, २.
 ज्येष्ठ-क्ष्याम् ६. ११०, २.
 ज्येष्ठतः ११. ३, ३२.
 ज्येष्ठ-तातये ६. ३६, १.
 ज्येष्ठम् ५. २, १; ६. १५,
 ४; १६. २२, २१; २३,
 ३०; ५३, ८; २०. ८०,
 १; १०७, ४.
 ज्येष्ठम् ५. १, ८; ६. ११२,
 १; १०. ७, १७; २४;
 ८, १६; १६; २०; ११.
 ५, ५; २३; ८, ५; ६;
 १५. १, ३.
 ज्येष्ठ-राजम् २०. ४४, ३.
 ज्येष्ठ-वरः ११. ८, १; २.
 ज्येष्ठस्य १२. २, ३५.
 ज्येष्ठा १६. ७, ३.
 ज्येष्ठाय १०. ७, ३२; ३३;
 १४; ३६; ८, १.
 ज्येष्ठ्याय २०. ६६, ४.

ज्योक् १. ६, ३; १४, १; ३;
१४, १; ३; ३१, ४; ४.
२१, ३; ६. ६२, ३;
१२. २, १८; ४६; १८.
२, २६; १६. २४, २; ३.

ज्योतय ७. १६, १.

ज्योतय ४. ३७, १०.

ज्योतिः १. ६, २; ३५, ३;
२. ११, ५; ४. १४, ३;
१८, १; ५. १२, ७; १३,
३; ६. ६२, ३; ७. २२,
१; ५३, ७; ८. १, ८;
२१; २, २; ५, १७; ६,
१४; ६. ५, ७; ११;
२६; १०. १, १६; ११.
१, २८; १२. १, १५;
३, ५०; १३. २, ६; ३६;
३, ११; १७; १८. २, ५;
१८. १, ३५; ३, ६४; ६७;
१६. १५, ४; २०. ११, ४;
१५, ३; १६, ११; १७,
४; ८; ४६, १; ५८, ४;
६५, ३; ७७, ४; ७६, १;
६१, ४; १०.

ज्योतिः-अग्राः १४. २, ३१.

ज्योतिः-अनीकः १६. १०,
४.

ज्योतिः-कृत् १३. २, १६;
२०. ४७, १६.

ज्योतिषः ४. १, ५; १०, १;
६. ३६, १; २०. ८८, ४.

ज्योतिषा ८. ३, २१; २४;
१०. २, २१; ११. १;
३७; १३. १, ११; २,
४५; १६. ६, ३; १७.
१, २७; २८; १८. ३,

७; २०. १६, ५; १७,
६; ६२, ७.

ज्योतिषा-इव ४. १६. ३.

ज्योतिषि १. ६, १.

ज्योतिषी-मान् १८. ४, १४.

ज्योतिषे ६. ६१, १.

ज्योतिष्मतः ६. ६(६), १४.

ज्योतिष्मती १६. ४०, ४.

ज्योतिष्मतीः ४. ३५, ५;

१०. ५, ३८.

ज्योतिष्मन्तम् ६. ५, ६;

ज्योतिष्मान् १२. ३, ६; १६;

१३. २, ३३; ३४; २०.

१०७, १३.

ज्योतींषि ६. ५, ८; १०. ७;

४०; १०, १५; २०. ६१, २.

त

तंस्तनीहि ५. २०, १.

तक्मन् ५. २२, ६; ७; १२.

तक्मन् १. २५, १; २; ३;

५. २२, २; ५; ७; १०;

११.

तक्मनः ५. ३०, १६.

तक्मना ११. २, २६.

तक्म-नाशन् ५. ४, १.

तक्मनाशनम् ५. ४, २.

तक्मने १. २५, ४; ५.

२२, ४; ८; ६. २०, १;

२; ३.

तक्मा ४. ६, ८; ५. २२, ६;

११. २, २२; ४, ११;

१२. ५, ३१.

तक्मानम् ५. ४, १; ६;

२२, १; ३; १३; १४; ६. ८,

६; १६. ३४, १०; ३६, १;

५; ६; ७; ८; १०.

तक्कः २०. ६२, १०.

तक्कः ८. १०(५), १४.

तक्कत् २०. ३५, ६.

तक्कतम् ८. ४, ४.

तक्कती ६. १०, २१.

तक्का १०. ६, ३.

तक्कत्वात् ८. ६, २१.

तक्कुलः १०. ६, २६.

तक्कुलम् १२. ३, १८.

तक्कुलाः ११. १, १८; ३,

५; १२. ३, ३०.

तक्कुलैः १२. ३, २६.

तत् १. १६, २; १८, ३; २४,

१; ३२, १; ३; ३; ४;

३५, १; ३; २. १, १;

२; ३, १; ३२; ४२; ५२;

७, २; २५, ५; २८, २;

३०, ४२; ३१, ५; ३,

२, ४; ४, ५; ६, २; ३;

१३, २; १५, ५; २२,

१; ५; २३, १२; ३०,

४; ४. १, ६; ७, ७; ८,

३; १०, ७२; ११, ११;

१२, २; १६, २; ५; १७,

६; ७; १८, ८; १६, ६२;

२०, १; ३७, ३; ४; ५; ५.

१, ५; ७; २, १; ६; ४,

१०; ६, २; ४; ८, २;

६; ११, ६; १०२; १३,

२; ६; १७, ६; १८, १४;

१६, ५; ६; ८२; १२;

२२, ११; २५, ६; २७,

१०; २८, ६; २६, २;

३; ५; ६; ७; ८; ६;

३०, १३; ६. ११, १२;

२३, २३, १; २४, १; २;

२६, २; ५४, १; ६३;

१; ६६, १; ३; ७१, १; २;
 ६८, ३; ११६, १; ११७,
 १; २; ११८, १; ११९, ३;
 १२२, ५; १२४, २; ३२;
 १४१, २; १४२, २; ७. ५,
 ३; १२, ४; २५, १; २६,
 २; ७; २६, १; ४४, १;
 ५३, ३२; ५६, १; ५७,
 १; ६५, २; ३; ६६, १;
 ७०, १; २; ७२, ३; ७३,
 ७; ७६, ४; ७७, १; ७८,
 ४; ८०, ३; ८०, २; ३२;
 १०१, १२; ८. २, ३; १२;
 १३२; १६; ३, २१; ४,
 ३; १२; ५, ५३; १६; ६,
 २०; २६; १०(२), २; १०
 (४), १६; १०(५), १६;
 १०(६), १; ३; ८. १,
 २२; १८; २४; २, २;
 ३, २; १५; ४, ४; २०;
 ५, १३; १६; ६(१), ७;
 ८; ११; १३; ६(३), ८;
 ६; ६(६), १; २; ५; ६;
 ६, १३; २१; १०, १;
 ४; १८; २३; १०. १,
 १६; २, २; ३; ५; ७;
 २७; ३२; ४, १०, २५;
 ५, ४०; ५०; ७, ८; २५;
 २६; २८; ३१; ८, ४; ७;
 ६; ११२; १६२; २४; २६२;
 ३३; ३४; ४१; ४३; ६,
 २६; २७; १०, ११; १७;
 ११. ३, २५; ४, ५; ५,
 १०; १५; ६, २३२; ७,
 ५; ७; १२; १४; १६; ८,
 ६; १४-१७; २६; ६,
 १; १०, १७; १२. १,
 १६

३४; ४६; ५८; ६१; २, ५;
 ३६; ३, १; ३; १६; २२;
 ३६२; ४, १; ११; ३१;
 ४०; ५, ५०; १३. १,
 ४४; ५२; २, ३२; १४;
 १४. १, १५; १६; ३०;
 ५६; २, १२; २२; ५१;
 ६६; ६६; १५. १, २;
 ३७; ६; १०, १; ११, १;
 १२, १; १३, १; ३; ५;
 ७; ६; १४; १७, २; ६;
 १०; १६. १, ८; ६, २;
 ३२; ११; ६, २२; १८.
 १, ४; ३२; २, २६; ३३;
 ५२; ३, ३; २४; ५५; ४,
 ३१; ३७; ४६२; ५१; ६४;
 १६. ३, ४; ६, ६; ६,
 १४२; ११, ६२; १३,
 ३२; २०, ३; २४, ८;
 २६, २; ४२; ४०, १;
 ४१, १; ४४, १; ४६, १;
 ५२, १; ४; ५; ५३, ६;
 ५७, ३; ५; ५६, २; ३;
 ६४, ३२; २०. ६, ३२;
 ४; १५, ४; १६, ८;
 १७; ५; ३६, ४; ४१,
 २; ४३, १; २; ३; ४५,
 १; ४६, ६२; ७; ६१, ३;
 ६३, ६; ६७, २; ७८, १;
 ६१, ११; ६२, १०;
 १०७, २; ४; ६; ११२,
 १; २; ११८, २; १२३,
 १२; २; १२८, १; २२;
 ३२; ४; १३२, ४; १३३,
 १; २; ३; ४; ५; ६;
 १३५, १०; १३६, ११;

१३६, २; १४१, ३;
 १४३, ६.

तुत १८. ४, ७७.

ततः १. १०, १; ३. ४, २;
 ४; ४. ४, ३; ६, ४; १६,
 ४; ६; ३०, ७; ५. १, २;
 २४, १७; ६. १८, ३; ८६,
 १; ११३, १; ३; १३१, ३;
 ७. ५६, ३; ८३, १; २;
 १०६, १; ८. ६, ६; ६.
 २, १६; २०; २१; २२;
 २३; २४; १०, ३; १०.
 १, २६; ३, ८; ८, २५;
 १०, १८; १६२; २२;
 ११. ३, ३२-४६; १२.
 ४, ७; ८; ६; ३१; १३.
 २, १५; १४. १, ४; १५.
 ६, १६; ८, १; १८. २,
 ३२; १६. ३, १; ५, १;
 ६, ३; १५, १; ३०, ५२;
 ३६, ६; ७; ८; ४१, १;
 ५६, २; ५७, ५; २०. ६,
 ६; २०, ४; २५, ५; ५७,
 ७.

तुतल २. ५, ६; ११. ५, ८;
 १४. १, ६०२.

तुतलु: ५. १, ६; २०. ५४,
 १.

तुतप ८. ४, १५.

तुतम ६. १२२, २.

तुतद २. ५, ५; ७. ४१, १;
 १०. २, ६.

तुतह ११. ५, ७.

तुतल २०. ८८, २.

तुतल २०. ७२, २; ७५, १.

तुता: ५. २४, १६.

तुतान २०. १२, १.

तृत्तान ७. ८२, ५; १३. १,
६; १८. १, २८; १६.
२२, २१; २३, ३०.

तृत्ताप ७. १८, २.

तृत्तामह १८. ४, ७६.

तृत्तामहाः ५. २४, १७.

तृत्ति १२. ३, २.

तृत्ति-धा १२. ३, २.

तृत्तिम् २०. ३६, २.

तृत्तिपिम् २०. ६, २; ७, ४.

तृत्तिपुः ११. ७, १३.

तृत्तिषुः १८. ३, ४७.

तृत्ते २०. २५, ५.

तृत्त-तृत् २०. ७३, ६.

तृत्तम् १६. ४२, २.

तृत्तिरे १४. १, ४५.

तृत्तिरे ६. ६, ६.

तृत्त १. २५, १; २. १४, ३२;

३०, ३; ४. ७, १; ११,

११; १६, २; ५. ४, ३;

४; ८. ११, १; २२,

२; ६५, १; २; ६६, २;

१०६, १; ११६, ३; १२०

३; १२३, ५; ७. ५, ३;

१८, २; ७६, ५; ८. १,

७; २, १५; २४; २५; ६,

१; ६. १, १८; ३, २०;

१०. १, ८; १६; ७, ८;

६; ८, ४; ६; ११. १,

२३; ३५; १२. १, ३४;

३, १; १३. १, ६२; ४६;

५३; १४. २, २३; १८.

२, ७; ५३; ५५; ३, ८;

६; ५३; १६. ३६, ६; ७;

८; ४३, १-८; २०.

७१, १२.

तृत्ति १६. ३६, २.

तृत्-विदे ६. १, ६.

तृत्-सिनाय २०. ३५, ४.

तृत्था ३. ४, ५; ६, १; २;

२८, २; ४. ५, ५; ८,

६; ११, ६; ५. ८, ८;

१७, ३; १८, १४; २६,

२; ३; ६. ४६, २; ६.

२, १८; ५, १४; १०.

१०, २७; १२. ४, ४;

१४; ३३; १५. १०, २२;

४; ११, २२; ६; ८; १०,

१६. ५, ३-७; १०; १६

६, २; ८; ४६, ७; ५७,

४; ६४, २; २०. १३६,

६; ७,

तृत्था २०. १३३; १; २; ३;

४; ५; ६.

तृत्ता ११. ४, ४.

तृत्तानीम् १०. ८, ३६; १२.

१, ५५.

तृत्ति-अर्थः २०. १८, १.

तृत्ति ४. १५, १५.

तृत्तयाय २०. १४१, १.

तृत्ता ८. ४, १०; ११; २०.

८४, १.

तृत्तायाः ७. ७३, ५.

तृत्तु १. १, ३; ७. ६०, ३२.

तृत्तु २०. १२३, १.

तृत्तु १३. २, १०;

तृत्तु ५. २, ४; २०. १०७,

७.

तृत्तु इति ४. २५, ५.

तृत्तुः २. १३, ४; ४. ३२, ५;

६. ६२, ३; ११. ४, ६;

१२. ३, २२; १४. १,

२७; २, ५०; १७. १,

१३; १६. ३, ३; ६१, १.

तृत्तु-जस्य १. २३, ४.

तृत्तु-जाः ६. ४१, ३.

तृत्तु-त्यजः १८. २, १७.

तृत्तु-द्विषिः १६. १, ३.

तृत्तु-द्विषिम् १४. १, ३८; १६

१, ७.

तृत्तु-नपात् ५. १२, २.

तृत्तु-नपात् ५. २७, १.

तृत्तु-नाम् ८. ४, १०; १६.

१३, ८; २०. ६३, २;

६६, ८; १२४, ५.

तृत्तु-पा २०. १४१, १.

तृत्तु-पाः ६. ४१, ३; ५३, २;

२०. ८३, २.

तृत्तु-पानः २. ११, ४; ३. ५,

८.

तृत्तु-पानम् ५. ८, ६; ८. ५,

२०; ११. १०, १७; १६

३०, ४.

तृत्तु-द्वलम् ६. ४, २०.

तृत्तु-भिः ४. १५, १०; ५. ३,

७; ६. ५३, ३; १४. २,

३२; १८. ४, १०.

तृत्तु-स्यः १. १३, २; २६, ४.

तृत्तुम् १८. १, १३; १४.

तृत्तु-वशिन् १. ७, २; ५. ८,

२.

तृत्तु-वशिन् ४. ४, ४; ८.

तृत्तु-वशी ७. १०६, १.

तृत्तु-व ७. ४२, २२; १६. २०,

३.

तुनेत ३. १२, २.
 तुनेतु ३. १२, ४.
 तुनेमि ४. ४, ७; ३०, ५;
 ६. ४२, १; २; १०१, ३.
 तुनेषि ६. ४, ६.
 तन्तवः १४. २, ५१; १५. ३,
 ६.
 तन्तुः १०. २, १७; १३. १,
 ६०.
 तन्तुम् २. १, ५; ६. १२२,
 १; २; ६. ४, १; १२. ३,
 ५२; १३. १, ६; ३, १६;
 २०.
 तन्तु ६. ६, ६; १०. ७, ४२.
 तन्त्रम् १०. ७, ४२.
 तन्त्रयुः २०. ६०, ३.
 तन्त्रीः ८. ८, ६; ११. ८,
 १६.
 तन्त्रुतः ५. १३, ३.
 तन्त्रः १. १, १; २. २६, १;
 ३. २२, १; २८, ५; ५.
 १, ७; ४, १०; ६. ४१,
 ३; ४६, १; ५३, ३; ६२,
 २; ७४, १; ६१, १;
 १२०, ३; १२४, २;
 १४०, ३; ७. ५७, १;
 १०४, १; ८. ६, २; ६.
 २, २५; १२. १, १२;
 १३. ३, १६; ४, ४४;
 १४. २, ३२; १८. २,
 ८; २४; ३, ५६; १६.
 ३, २; २०. ६७, ६.
 तन्वताम् ४. १५, १६.
 तन्वते १२. १, १३.
 तन्वते ३. १७, १.

तन्वन्ति १३. ४, ७.
 तन्वम् १. २, २; २. ३१, ५;
 ५. १, ३; २, ६; ३, १;
 ६. ६, १; ६२, ३; ११०
 १; ७. ३, १; ८. ४, १७;
 ५, १६; ११. २, २६;
 १२. ३, ५४; १३. १,
 ३४; २, २७; ३३; १४.
 १, २१; ४०; १८. १,
 ३; ८; १२; ३, ३६; ३,
 ६; ४१; ४, ५२; १६.
 ५५, ३; २०. ४२, १;
 ६३, १; १०७, १२;
 १२४, ४; १३७. ६.
 तन्वा १. ३३, ४; ५. ३, ५;
 ३०, १४; ७. ३, १;
 ११५, ३; ८. ४, १०;
 ११; १६. १, १२; १७.
 १, १३२; १८. १, १२;
 १३; १४; २, १०; ३, ७;
 ५८; १६. ५०, ३; ६१,
 १; २७. ११, १; २३, ६;
 ३७, २; ११.
 तन्वाना ५. २६, ६.
 तन्वानाः १६. ६, १५.
 तन्वाम् १. १८, ३; १६.
 ३७, २.
 तन्वे १. ३, १-५; ६, ३;
 १३, १; ४; ५. ३, ७; ८.
 १, ५; २, १६; ६. ३,
 ६; ५, २६; १२. १, ३०;
 २०. ४, ३.
 तप २०. ३६, ८.
 तप २. १६, १; २०, १;
 २१, १; २२, १; ११. १,
 १६; १८. २, ३६; ४,
 ११.

तपः १. १३, २; २. १६, १;
 २०, १; २१, १; २२, १;
 २३, १; ५. १७, १, ६.
 १३३, ४; ७. ६१, १;
 २२, ८. १०(४), १५, १६;
 १०. ७, १; ११; २६;
 ३०; १०, ३३; ११. ५,
 २६; ७, ६; १७; ८, २;
 ६२; १२. १, १; ३, १२;
 १३. ४, २२; १५. १, ३;
 १८. २, १६; ३६, १६.
 ४०, ३; ४१, १; ५३, ८;
 १०; ५४; १.
 तपः १८. २, ३६.
 तपः-जाः ६. ६१, १.
 तपः-जान् १८. २, १५, १८.
 तपत २. २३, १.
 तपतम् ८. ४, १.
 तपति ६. ६१, २; १०. ८,
 १६; १२. १, २०; ४,
 ३६; १३. ३, १३; १६.
 ५३, ६.
 तपतु ७. ६६, १; ८. २, १४;
 १२. ३, ४३; १८. २,
 ८; ४, ६.
 तपन १३. २, १२.
 तपनः ४. ३६, ६.
 तपनम् ४. १८, ६; १६. २८,
 १; ३०, ४.
 तपन्ति १३. ३, १६.
 तपन्तु ११. १, १६.
 तपसः ४. ३४, १; ५. ६,
 ६; ६. १३३, ४; १०. ७,
 ३६; ११. १, २६; १३.
 १, १०; १८. २, ८.
 तपसा ३. १०, १२; ४. ११,
 ६; ३२, २; ३; ३५, १;

१०; ७, ५; १२; १३;
 १८. १, ३४; २, ८;
 २७; ३, ४; ६; ६३; ४,
 १३; ५४; १६. ६, ११;
 ३०, २; ३२, १; ३३,
 ४; ३४, ६; ३८, १; ४५,
 २; ४७, ८; ५०, १; ५३,
 १; ३२; ५७, ४; ५८, ४;
 २०. ६, १; १४, ३; १५,
 ६; २१, २; २४, २; २५,
 १; ३६, १; २; ३७; ५; ७;
 ४४, ३; ४७, १; ४६, ४;
 ५५, १; ३; ५६, १;
 ५६, ३; ४; ६१, १; ४;
 ६२, ३; ८; ६३, ७; ८;
 ६; ६४, ६; ६७, ७;
 ६८, ६; ७२, १; ७५, २;
 ८७, ४; ८८, १; ८६, ६;
 ६१, ६; ६२, ८; १४;
 १७; १८; ६५, ३; ६६,
 ४; ७; १२-१६; ६६, २;
 १०२, २; १०५, ५;
 ११०, ३; ११३, २;
 १३७, ७; १२; १४३,
 १.

तमः १. २१, २; ८. १, १०;
 १६; २१; २, १; २४;
 ६. २, १७; १८; १०.
 ३, ६; ७, ४०; १२. ३,
 १८; ४६; ५, २६; १३.
 १, ३२; २, ८; १६.
 १२; १; ४०, ४; ४७,
 १; २०. १६, ५; ११.

तमः २०. १२७, ८.

तमः-इव ८. २, १२.

तमः-वृधः ८. ४, १.

तमसः २. १०, ८; ५. ३०,

११; ७, ५३, ७; ८. १,
 ८; १०. १, ३२.

तमसः-इव ५. १३, ३.

तमसा ३. २, ५; ६; ८. ८,
 ८; १०. १, ३०; ११. १०,
 १६; १६. ७, १; १८.
 ३, ३; २०. ६६, १६.

तमसाः ११. ८, २२.

तमसि ८. ४, ३; २०. ६१,
 ४.

तमस्वति १६. ४७, २.

तमांसि २. २५, ५; ६. २,
 ४; ६; १०; ५, १; ३;
 ७; ११; १३. २, ३४;
 २०. १६, ६; ७७, ४;
 ८८, ४; १०२, १; १०७,
 १३.

तमिषीचयः २. २, ५.

तम्-तम् ४. ३०, ३.

तया २. २५, २; २७, ५;
 २६, ७; ३१, १; ३६,
 ५; ३. २४, ६; २५, १;
 ३; ४. १७, ४; २०, ४;
 ५. १८, १५; ६. ६३,
 २; १०८, ४; १३६, १;
 ८. ३, १२; ६. २, ५;
 १०. ५, ४८; ११. ३,
 ३६२; ४६२; ६, २०;
 १०, ६; २७; १३. १,
 २२२; १५. ११, २; १७.
 १, १३; १६. ३, ३; ६,
 ३; ५५, २.

तयोः ८. ४, १२; ६. ६,
 २०; १०. ७, ४३; ११.
 ५, ६; ११.

तु २. ६, ५; १८. २, ३१.

तुरणिः १३. २, १६; २०.
 ४७, १६.

तुरणिम् १३. २, ४; ३६.

तुरत १२. २, २६; २७; २०.
 ८६, १.

तुरन् ७. ४१, १.

तुरन्ति ६. १२२, २; १८.
 ४, ७; १६. ३४, ७;
 ४४, ६; २०. ५६, ४.

तुरसाम् १०. १०, २४.

तुरसे ३. १५, ३.

तुरस्विनः २०. ५४, ३.

तुरस्विनम् २०. ५४, १.

तुरांसि १०. १०, २४.

तुराणि ४. ३५, १-६.

तुराथः १४. २, ४३.

तुरामसि २०. ७६, २.

तुरी ५. २७, ६.

तुरुणः ३. १२, ७.

तुरुणम् ६. १, ५; १२. ३,
 ३७.

तुरुता २०. ६२, १६; १०५,
 ४.

तुरुतारम् ७. ८५, १.

तुरुष्यतः २०. १०५, १.

तुरुणकम् १०. ४, ३.

तुरेम १६. ५०, ३.

तुरेम ६. १२२, १; ७. ५०,
 ७; १२. २, २६; २७;
 ४८; २०. १७, १०; ८६,
 १०; ६४, १०.

तुरेयुः १६. ५०, ३.

तुर्वयन्ते २०. ८५, ४.

तुर्द ६. ५०, २.

तुर्द-पते ६. ५०, ३.

तुर्दम् ६. ५०, १.

तर्क १४. १, ४०.
 तर्पणम् ६. ६ (१), ६.
 तर्पयताम् ६. १३४, १.
 तर्पयति १३. ३, ४.
 तर्पयथः ४. २६, ६.
 तर्पयन्तम् ७. ३६, १.
 तर्पयन्ति ४. २७, ५.
 तर्पयन्तु १५. ११, २; ५.
 तर्पयन्तु ४. १५, १; ५; १८.
 ४, ३६.
 तर्पयति ६. ५, ६.
 तर्पयामि २. २६, ६.
 तर्हणम् ८. ४, ४.
 तर्हणी २. ३१, १.
 तर्हि ३. १३, ६; ११. ८, ५;
 १२. ४, १३; १६.
 तलाशा ६. १५, ३.
 तलीघाम् ७. ७६, ३.
 तल्प १२. २, ४६.
 तल्पम् ५. १७, १२; १४.
 २, ३१.
 तल्पा १३. १, १७.
 तल्पाणि १४. २, ४१.
 तल्पे-शयाः ४. ५; ३.
 तव १. १०, २; २३, ३; २.
 २६, २; ३. १०, ८; ४.
 ६, ७; २५, ३; ३२, ५;
 ३६, १०; ५. ५, ८; ८,
 ६३; ३०, ८; ६. १५,
 १; ४४, १; ५१, ३;
 १३६, १; ७. ६, ३; ७३,
 १०; ८३, ३; ८. २, ३;
 ७; ६. ४, २३; ५, ३८;
 ८, ११; १६; १०. ४,

१८; १०, १८; २०; २१;
 २२; ११. २, ६; १०५;
 ११; २४; ४, ६; ६, ७-११;
 १३; १४; २५; १२. १,
 १५; १४. १, ५१; २,
 ६०; १७. १, ६-१६; २४;
 १८. १, १६; ३, २; ४,
 ६६; १६. १५, १; २०.
 ४, ३; ६, ४; ५; १३,
 ३; १५, ५; १८, २; २१,
 ३; १०३; २५, १; ३०,
 ५; ३३, ३; ३७, ५; ७;
 ६७, ५; ७४, २; ८७,
 ६; ६४, ५; १०६, १२;
 २; ११२, २; १२५, १;
 १३६, ६.
 तवः-तर्म् १६. २४, ७;
 २०. २६, १.
 तवसः ४. ३२, ३.
 तवसम् ११. १, १४; २०.
 ५४, १.
 तवसे २०. १५, १; ३५, १.
 तविषम् २०. ६१, ४; ६२,
 ८.
 तविषस्य ४. ३२, ५; २०.
 ११, २.
 तविषाः ४. १५, २; १६.
 ५८, ६.
 तविषासः २०. ६४, ३.
 तविषीभिः २०. ६, २; ४६,
 ५.
 तविषीम् २०. ७३, ६.
 तविष्यते १८. १, २३.
 तवीयान् ४. ३२, ३.
 तृष्टा ११. १, २३.

तृष्टा-इव २०. ३५, ४.
 तृष्टानि २०. १२६, ५.
 तसराणि १०. ७, ४०.
 तस्करः ४. ३, २; २१, ३;
 १६. ४७, ७३.
 तस्करम् १६. ५०, ५.
 तस्तुम् १०. ७, ४४.
 तस्तम् ६. ८५, ३; ६. ६, ७;
 २०. ८८, १.
 तस्तुरे १६. ४६, ३.
 तस्तुवम् ५. १३, ११.
 तस्तुवेन ५. १३, ११.
 तस्थुः १४. १, १४.
 तस्थि-वांसम् ४. ८, ७.
 तस्थिषे ४. ६, २.
 तस्थुः ६. ६, २; ३; १३. ३,
 १८; १४. २, ६; २०.
 ३३, ३.
 तस्थुः ६. ६, ११.
 तस्थुषः १३. ३, ३५; २०.
 २६, ४; ४७, १०; ६६,
 ६; १०७, १४; १२१, १.
 तस्थे ५. १७, ३; ६. १०,
 १६.
 तस्थौ ४. १, ३; ८, ३; ५.
 १, ६; ६. ६, १०; १०.
 ८, ३; ४०; ४२.
 तस्मात् ३. १३, १-४; २६,
 १; ४. ६, ६; ३६, ७;
 ८; ६. ५१, ३; ११४,
 १; ११५, १; २; १२०,
 १; १२१, २; ७. ५, ४;
 ५४, २; ८४, १; २;
 २, १०; २३; २७; १०(३),
 २; ४; ६; ८; ६. १,

तस्मिन्—ताः.

(४, ८३७)

२४; ६(३), ७; १०, १०;
१०. ५, २२; ६, ३; ८,
२४; १०, १०; ११. ५,
५; २३; ८, ३२; ३४;
१२. २, ४०; ४, ६; १०;
४६; ५०; ५, १७; १३.
१, १४; २५; ४८; ५५;
४, २६-३६; १४. २,
५६; ६०; ६१; ६२; १६.
७, ११; ८, २; ५-२६;
३१; १६. ६, १२; ३;
१३; १४; ३८, २; ४४,
८; ६; ४८, ३; ५३, ४;
२०. १२८, १४.

तस्मिन् ३. १५, ६; ४. २८,
६; ५. १७, १३; ६. २,
३; ६ (६), ७-११; १०.
२, ३२; ६, ३५; ७,
३८; ४०; ८, ५; ६; ४३;
११. ५, १; ८; २४;
८, ३४; १२. २, १७; ३,
६; ८; ३२; ३८; ५२;
१३. १, ५८; १८. ३,
५३; ५४; १६. १७,
१-५; ७; ८; ६;
१०; ४६, ३; ५३, ६;
७२, १; २०. ५५, ३.

तस्मि १. ५, ३; २. १२, ६;
३. २३, ५; ४. १, २;
५. ७, २; ११, ११; १४,
६; २५, २; २८, ११;
६. ५, ३; २०, ३; २७,
१; ३८, ३; ५५, १; ६३,
२; ८४, ३, ८७, ३;
१२८, ४; ७. १७, ३;
८७, १; ६. २, १६-२४;

३, १२; १५; ६ (५), १;
४; ६; १०. २, २६; ६,
५; ७, ३२; ३३; ३४;
३६; ८, १; १५; ११.
२, २३; २७; ४, १८;
१६; २३; १२. ४, १७;
२३; १३. १, ५; १५.
३, ३; ४, १; ४; ७;
१०; १३; १६, ५, १; ४;
६; ८; १०; १२; १४; १६.
६, ४; १८. ४, १४. ३७;
८३; ८४; १६. १७,
१-५; ७; ८; ६; १०;
५६, ३; २०. ३७, ६;
६८, १०; ६६, २; ७७,
१; ८६, ५; ६७, १.

तस्य १. ५, २; २४, १; २.
२७, ७, ३. ७, ६; २२,
६; ४. १, ५; २, ८; ८,
१; २०; ३; २१, ४; २७,
६; २८, १; ५. ५, ४; ८;
६, ३; ८, ३; १८, ५; ६.
४, २; ६, ३; २४, ३;
३६, २; ७६, ३; १२२,
३; १२७, २, ७. २०, ३;
८१, ५; ६२, १; ८. ३,
१०; १७; ७, २२; ६.
४, ११; ५, २०; ६, १;
११; २१; १०, २४, १०.
५, ४५; ७, ४०; ११. ३,
१; ४, ६; १२. ३, ७;
४, २८; ५, ४७-५०;
१३. १, ५६; ५७; ३,
१-२५; ४, ८; १०; २७;
२८; ४०; १४. १, ३; २,
३३; ५०; १५. २, ४;
१२; १८; २४; ३, १०;

१५, १; ३-६; १६, १-
७; १७, १-१०; १८, १;
१६. ७, १२; ८, ४-२६;
३३, १८. १, १६; ३,
४३; १६. ४६, ६; ५३,
१; २०. ८, २; १७, ३;
२५, ६; ६६, ३; १२५,
७; १३१, २.

तस्याः ३. ११, १; ४. ३६,
२; ४; ६; ७. २०, ६;
८. १०(१), १; १०(२),
५; १०(४), २; ६; १०;
१४; १०(५), २; ६; १०;
१४; ६. १, ५; १०,
२१; १०. ८, ३१; ११.
१०, २७; १२. ४, ३३;
४४; ४६; ५, ३६; १३.
१, ४२; १५. ३, ४;
२०. ६६, ६.

तस्याम् ४. १८, ३; ७. ८०,
१; १०. २, ३१; १०, ५;
१२. ३, ६; १४. २, १४;
१५. १३, १४.

तस्यै १. १३, ४; ५. ७, ६;
१०; ७. ४६, २; ११.
२, १२; १२. १, २६;
१८. ३, १.

ता ३. १३, १; ५. ११, ४;
६. ६, १५; १०, १६;
१८. १, ११; २, ६;
२०. ३१, १; ३७, ६;
१२६, २०.

ताः १. ४, २; ५, १; १८,
४; ३३, १-४; २. १४,
४; ३. ४, ७; ७, ५; १३,
५; २३, ६; ४. ५, ३;
१७, ५; २१, ३; ४१;

३६, ८; ५. १, ८; १८,
 १२; १६, ११; २८,
 १०२; २६, १४; ६. २५,
 १; २; ३; ६१, ३; ६६, १;
 ७. ४, १; २३, १; ४६, १;
 ७४, १; १०७, १; १०६,
 ३; १११, १; ११२, १;
 ११५, ४; ८. ५, ६; ७,
 ३; १०; १३; १७; २३;
 २४; ६, १५; १८; ६.
 ५, ३८; ६(१), ५^२;
 १०. ५, ३८^२; ८, ३३;
 ११. १, १०; ६, ६; ८,
 २८; ६, १५; १२. १,
 १६; ३१; २, ४१; ३,
 २५; २६^२; २७; ४१;
 ४, ४३; ४७; १३. १,
 १०^२; १४. १, ४५; २,
 ७; ३४^२; ४५; ४६; १५.
 १५, ७; ६; १६, ७; १८.
 १, ११; २, ६; २०; ३,
 ६६^२; ४, २६^२; ४३^२;
 १६. २, ५^२; ८, ६; १३,
 ११; १७, ६^२; २७, ३;
 ६; २७. ४८, २; ७१,
 १४; १०६, २; ३.

ताजऋङ्गः इव ८. ८, ३.

ताडम् १६. ३२, २.

ताडि ७. ८४, ३.

ताडित् १२. ५, ५०.

ताडुरि ४. १५, १४.

तान् १. ८, ४; ३०, ४; २.

१२, ७; २५, ४; २६,

१; ३४, ३; ४; ३. १,

३; ५; २, ३; ६, २; ३;

८, ५; ४. ४, ८; ११,

१२; १६, ६; २२, १;

३६, १; ३; ६; ५. ६,
 १०; ८, १; ७; १७, ७;
 १८, ११; २२, ७; २३,
 ५; ६. २२, ३; ५०, ३;
 ७३; २; ८०, २; ६४, १;
 १०३, २^२; ३^२; १०४,
 २; ११३, २; ७. ६७,
 ३; १०८, १; २; ११७,
 १; ८. ४, ६; ६, ७; ८;
 १०; ११; १४; १५; २३;
 ६, २३; ६. २, १७;
 १८; ५, २; ३०; ६, १५;
 १६^२; १०. ३, ३; १६;
 ५, २१^२; ७, २४; २७;
 ६, ६; ११. १, ५; ५,
 ११; २२; ८, ३; ६, २२;
 २४; १०, २३; २४; १२.
 १, ५०; ५७; २, २४; ३,
 १६; १८; ३६; ४०; १४.
 २, १०; १५. १३, २; ४;
 ६; ८; १०; १८. २,
 १४; १६; १७; २८; ३४;
 ३५; १६. ६, १४; ८,
 ४; ३५, ३; ५; ४६, ७;
 ६५, १; ६६, १; २०.
 २४, ५; ३६, ८; ८७,
 ४; ११२, ३; १४३, ६.

तान्य ४. ४, ६; ६. १०१,
 २.

तानि १. १८, १; २. १, २;

४. १६, ५; ६. ६६, ३;

७. ५, १; ४६, ४; ८.

६, १६; ६. ३, ६; ६;

१६; १०, २५; २७; ११.

५, २६; १२. ५, ११;

१३. १, ३६; १४. १,

२८; १५. १७, ४; १८.
 १, १७; १६. २०, २;
 ३७, १; ४८, १; २०. ११,
 ७; १२, २; २०, २;
 २१, ६; ३७, ५; ५७,
 ५; ६७, २.

तापयन् १६. २८, २२.

ताबुवम् ५. १३, १०.

ताबुवेन ५. १३, १०.

ताभिः १. २२, ३; ४. २१,
 ३; ३७, ८; ६; ५. २२,
 १०; ६. ७७, ३; ७.
 ४८, २; ८. ३, ६; ६.
 २, २५; १३. १, ४; २,
 २४; १८. २, ८; १६.
 ३, २; ४, १; ६, १४;
 २०. ४७, २१.

ताभ्यः २. २, ४; ५; ६. ५,
 ३८; १६. १७, ६.

ताभ्याम् ४. ६, १०; १३, ७;
 ८. ३, २५; ११. २, १४;
 ३३, ३३^२; ३४^२; ४४^२—
 ४८^२; ६, ४; १८. २,
 १२; ५६; १६. ६८, १.

ताम् १. १४, ३; २. २५, १;
 ३५, १; ३. २, ६; १२,
 १; १७, ४; २५, २; ४.
 ४, १; ६, २; २०, ४;
 ३०, २; ३८, १; २; ४;
 ५. १४, ६; ७; १८, ७;
 २२, ६; ३१, १—१०; ६.
 ३३, ३; ७८, १; ६०, १;
 १०८, ३; १०६, १;
 ११३, १; ३; १३६, १;
 १३७, १; ७. १५, १;
 ३८, ३; ११५, २; ८.

६, ७; १०(२), २; ३;
 १०(३), १; ३; ५; ७;
 १०(४), १; ३; ४; ५;
 ७; ८; ६; ११; १३;
 १५; १०(५), १; ३;
 ४; ५; ७; ६; ११;
 १२; १३; १५; ६. १,
 १; २०; १०. २, २६;
 ८, १०; १०, २३; ११.
 ८, ७; १२. ३, २१;
 ५४; ४, १४; २४; ४२;
 ५, ५; १३. १, २३;
 १४. १, ५६; २, १३;
 ३८; ४८; ६५; ७४; १५.
 ३, ६; १८. ४, ३२; १६.
 ४, १; १७, १-१०;
 १६, १-११; ४०, ४;
 ४८, ६; २०. १३५, ६;
 ७, १४३, २.

ताम्र-धूम्राः १०. २, ११.

तायत् ४. १६, १; ७. १०८,
 १.

तायताम् १०. २, १७.

तायते १०. ८, १०.

तायते १७. १, १८.

तायमाने १८. १, ४१; ४,
 ४५.

तायवः १३. २, १७; २०.
 ४७, १४.

तायादुरम् ६. ७२, २.

तारका ५. १७, ४.

तारके इति २. ८, १; ३. ७,
 ४; ६, १२१, ३.

तारम् ४. ३७, ३.

तारयन्तः १८. ३, १०.

तारयन्ति ७. १०७, १.

तारिषत् २. ४, ६; ४. १४,
 २०.

६; १२. २, १३; १४. २,
 ६७; १६. ३४, ४; २०,
 १३७, ३.

तारिषुः २. ७, ४.

तारीत् २. ७, ४; ६. १२४,
 ३; १२. ३. १७.

तादयम् ७. ८५, १,

ताप्यम् १८. ४, ३१.

तार्ध-अघीः ५. २६, १५.

तार्धत् ३. २२, ४; ५; ६. ७२,
 २; ३; ६. ६ (४), २; ४;
 ६; ८; १२. १, ३३; ३,
 २२; ४, २७.

तार्धतीः ८. ७, २५; २६.

तार्धन्तः १६. ६, ३.

तार्धान् ५. २३, ५; १३. ४,
 ४४.

तासाम् १. २७, १; ३. २४,
 ६; ४. ८, ५; ३६, ८; ५.

१, ६; १३, ६; ६. २१,
 १२; ६०, २; ७. ३५, २;

४३, १; ११५, ३; १०.

१०, २८; ११. १, १३;

५, १३२; १२. ३, ४; ४,

४१; १३. १, ६.

तासाम् २०. १२६, ३.

तासु २. १०, ५; १२. १, १२;
 १६. १७, ६२.

तिग्म-आयुधौ ५. ६, ५; ६;
 ७.

तिग्म-इषवः ४. ३१, १.

तिग्मः १३. २, ३३.

तिग्म-तेजः ६. ६३, २.

तिग्म-तैजसः १६. ६, १०.

तिग्मम् ४. २७, ७; ७. ८४,
 ३.

तिग्म-शृङ्गः १३. १, २५,
 २०. ३७, १; १२६, १५.

तिग्महेती इति तिग्म-हेती
 ५. ६, ५; ६; ७; ८. ३,
 २५.

तिग्मेन ६. ३४, २; ८. ३,
 २३; १३. १, ११.

तिग्मन्ते ८. ६, १२.

तिग्मिन्ते १२. १, ४८.

तिग्मिन्ते २०. १३७, ६.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिग्मिन्ते २०. १०७, २.

तिरश्चि-राजिम १०. ४, १७.
तिरश्चि-राजेऽ. ५६, १.
तिरश्चीः ६. ८, १६, १०.
२, ११.

तिरश्चीन् १६. १६, २; २७,
१५.

तिरश्चयेइ इति १५. ३, ५.
तिरसे ७. ८१, २; १४. १,
२४.

तिराति १८. ४, ४८.
तिरामसि २०. २०, ३;
५७, ६.

तिरामि २. ३१, ३; ६.
१३१, १.

तिरीदिनः ८. ६, ७.
तिर्यक् ११. २, २४; २५.

तिर्यक्-बिलः १०. ८, ६.
तिर्यङ् १०. २, २८; ८, १६;
११. ४, २५.

तिर्यञ्चः १५. ३, ६.
तिर्यम् ४. ७, ३.

तिलः १८. ४, ३२.
तिल-पिङ्ग्या २. ८, ३.

तिलम् ६. १४०, २.
तिल-मिश्राः १८. ३, ६६;
४, २६; ४३.

तिल-चत्साः १८. ४, ३३;
३४.

तिलस्य २. ८, ३.
तिलिपिजम् १२. २, ५४.

तिष्ठ १. १७, २३; ४. ७,
५.

तिष्ठि १. १७, २; १६, २;
२. ६, २; १३, ४; ३४,
५; ३, १२, २; ४. ८,
२; १२, ६३; १४, ६३;

तिष्ठि १. १७, २; १६, २;
२. ६, २; १३, ४; ३४,
५; ३, १२, २; ४. ८,
२; १२, ६३; १४, ६३;

तिष्ठि १. १७, २; १६, २;
२. ६, २; १३, ४; ३४,
५; ३, १२, २; ४. ८,
२; १२, ६३; १४, ६३;

तिष्ठि १. १७, २; १६, २;
२. ६, २; १३, ४; ३४,
५; ३, १२, २; ४. ८,
२; १२, ६३; १४, ६३;

५. ८, ६; ६. ८७, १;
२; १२३, ५; ७. ७३,
१०; १०. १, २०; ११.

१, १४; ६, ५; ६; १०,
५; १२. ३, १; १३. २,
७; १४. १, ४७; २, १५;

१६३; ३३; १८. २, ७;
३, ८; १६. १३, ५; ४६,
५; ६३, १; २०. ४५, ३;

७६, ८; ६२, १३.
तिष्ठः ८. १, ६; १०. १,
२६.

तिष्ठत् २०. ६२, १२.
तिष्ठत १. १७, ४.

तिष्ठत् ७. ७२, १; ११. ६,
२; २६; १०, १; १२. २,
२७; १८. २, २.

तिष्ठतः ६. १२७, २; ७.
१०८, २; ६. २, २३;
११. १०, ११.

तिष्ठतः १०. ८, २; १५. ४,
३; ६; ६; १२; १५; १८;
१६, ५४, ५.

तिष्ठतम् ११. ६, ३.
तिष्ठिताम् १८. २, ३७.

तिष्ठति १. २, ४; १७, २;
४. १६, २; ६. १३८,
४; ७. २०, ६; १०. ८,
११; ११. २, २३.

तिष्ठति २०. १३१, ११.
तिष्ठति १०. ७, १२; ३४;
११. ५, ११; १२. ४,
३५; १५. ५, २; ५; ७;

६; ११; १३; १५; १६.
३६, ५; ६; ७; ८; २०.
७३, ४.

तिष्ठतु १. २, ४; १५, २;
२. १४, ४; ५. ३०,
१३; ६. १२३, ५; १०.
१, १०; ११. ४, २४;
१८. ३, ५१; १६. ४३,
७; ४६, २.

तिष्ठते ३. १५, ८; ११. २,
१५; ४, ७; १६. ५५, १;
६.

तिष्ठते १६. ४६, २; ५३, ५.
तिष्ठथः २०. १४१, २.

तुष्ठध्वम् ८. ४, १८; ११.
६, २६.

तिष्ठन् ४. ५, ५; ७. १०२,
१; ६. ७, २०३; २१३;
१२. २, ४६.

तिष्ठन्तः ७. ६०, २; १२.
१, २८.

तिष्ठन्तम् ८. ३, ५; १०. ७,
४१; ११. १, ३६.

तिष्ठन्ताम् १४. २, २५.
तिष्ठन्ति ४. १६, ६; १०.
७, १२; १६; १२. १,
२७.

तिष्ठन्ति ८. ६, १६; ६.
७, २६; १०, १७; १३.
४, ६; १४. १, १; १८.
१, ६; १६. ५८, ३.

तिष्ठन्ती २०. १३३, ४.
तिष्ठन्तीः २०. ६१, ४.
तिष्ठन्तु १. १७, १.
तिष्ठन्तु ४. ३४, ५; ६; ७;
१०. ५, ६; १८. ४, ३३.

तिष्ठसि ५. ५, ५; ६. ३,
१७; १४. १, ५; १५.
३, १.

तिष्ठसे—तुरीयः .

(४, ८४१)

तिष्ठसे १७. १, १६; १६. ४७, १.	तीतिपासि ६. ३२, १. तीर्त्वा ६. ५, १; ३.	तुभ्यं २०. २४, ८; ७३, १.
तिष्ठति १. १७, २; ६. ४४, १.	तीर्थम् १४. २, ६. तीथः १८. ४, ७.	तुभ्यम् १. १३, ३; २. ६, ५; २८, १; ३. २३, ५;
तिष्ठति ३. १२, १; ६. ५३, २.	तीयतोः १६. ६, ८. तीव्रः ३. १३, ५; १८. १, ४८.	४. ८, ३; ५. १८, १; ६. ६२, ३; ११२, १; ७. ४६, ३; ८२, ३; ६; ८. १, ५; २, २२; ७, २५; ९. ५, ३८; ११.
तिष्ठायः २०. १४०, ३.	तीव्रस्य २०. ६६, १.	२, २४; ४, १६; १२.
तिष्ठामि ६. ४२, ३.	तीव्राः १२. २, ११; २०, ८६, ८.	१, ६२; १४. १, ५८; २, १; १७. १, १८; १६.
तिष्ठामि १६. ४५, ४.	तीव्रान् २०. ८६, ५.	२०. २५, ७; ३३, १; २; ३७, १०; ६७, ६; ७३, १; ८८, ३; ६६, १; २३.
तिष्ठे ४. ३०, ७; ६. १, २४.	तीव्रैः २०. १७, ६.	तुभ्यम् २०. ३६, ५.
तिष्ठ-भिः २. १२, ४; ७. ४, १.	तु ४. १८, ६; १६. ३१, ४; २०. १४, ४; १८, ४; २३, १; ६२, ४; ६८, ११; ७४, १-७; ६२, १३.	तुभ्यं ५. २, ८; २०. १०७, ११.
तिष्ठि २०. २३, २.	तुभ्य-वृधम् २०. १०५, ३.	तुभ्यः ३. १६, २; ६. १०२, ३; २०. ५०, १.
तिष्ठः ३. २४, ६; ४. २०, २; ५. ३, ७; १२, ८; १५, ३; २७, ६; २८, १०; ६. २१, १; ७५, ३३; १००, १; ७. ४३, १; ८. ४, ११; ६, १३; ६. ६, १०; १०, ३; १०. ८, ३; १०, २८; ११. ५, ३; १३. ३, २१; १६. २७, ३२; ३२, ४२; २०. ६१, ४.	तुजः २०. ११, ५. तुजला २०. ३५, ६. तुजन् २०. ३५, ६. तुजयत्-भिः ८. ४, ७. तुजये ७. ४६, १. तुजे ६. ३३, १. तुजेते वृत्ति २०. ३५, १४. तुजते २०. ७२, १. तजे-तुजे २०. ७०, १३. तुलिङ्कः ८. ६, ५. तुल्लेजम् ८. ६, १७. तुल्ल २०. ३०, ४. तुल्लु ३. २५, १. तुल्लन्त ३. १७, ५. तुल्लाना ६. २२, ३. तुल्ला ६. २२, ३.	तुरः ३. १६, २; ६. १०२, ३; २०. ५०, १. तुरः-पेयं २०. ३१, ३. तुर-गातु ६. १०, ८. तुरायवः २०. ११६, २. तुरयन्तम् २०. १०५, २. तुरस्य २०. ३५, १३. तुरा २०. ३१, २. तुराणाम् ७. ५७, २. तुरायं २०. ३५, १. तुराणाद् २. ५, ३; २०. १२, ७. तुरीपम् ५. २७, १०. तुरीयः १. १६, १; ३२, ३; १४. २, ३.

तृतीयम् १०. १०, २६.
 तृतीयम् ६. १०, २७; २०.
 ६१, १.
 तृतीया ८. ६, १४.
 तृतीयैण ७. १, १.
 तुरेण १८. ३, ४८.
 तूर्मिशम् १६. ७, १.
 तूर्वाणि: २०. ३५, ११.
 तूर्वाणै २०. १४१, ३.
 तूर्वशम् २०. ३७, ८.
 तूर्वशे २०. १२०, १; १४१,
 ४,
 तूर्वीतये २०. ३५, ११.
 तुवि-कूर्मिम् २०. ३६, ५.
 तुवि-ह्वाम् ७. ६, २.
 तुवि-ग्राभम् २०. ३६, ५.
 तुवि-ग्रीवः २०. ५, २.
 तुवि-ज्ञात २०. ७६, ५.
 तुवि-ज्ञातः २०. ८८, ४.
 तुवि-तमः ६. ३३, ३.
 तुवि-द्युम् २०. ७१, १२.
 तुवि-द्युम् २०. १०४, ४.
 तुवि-प्रतिम् २०. २६, ३.
 तुवि-मघ २०. ६०, २; ७४,
 १-७.
 तुवि-राधसम् २०. १२, ५.
 तुवि-वाजाः २०. १२२, १.
 तुवि-शुष्मः २०. ६५, १.
 तुविष्मान् २०, ३४, १३;
 ६४, १.
 तुषम् १२. ३, १६.
 तुषाः ६. ६(१), १६; ११.
 ३, ५.

तुषान ११. १, २६.
 तुषैः ११. १, १२.
 तुस्तुवुः २०. ११५, ३२.
 तूतुजानः २०. ३४, १२;
 ८४, ३.
 तूतुजानः २०. ६४, १.
 तपराः ११. ६, २२.
 तूयम् ५. १२, ८; १८. १,
 ६; २०. ३६, ११.
 तूर्य २०. १०५, १.
 तूर्वयाणम् २०. २१, १०.
 तूर्वसि २०. १०५, २.
 तूलम् १६. ३२, ३.
 तूचेभ्यः १६. २३, १६.
 तूड्ढ्वा १६. ३६, ५.
 तूण्वि १६. ३२, ४.
 तूणम् २. ३०, १; ३. १२,
 ५; ६. ५४, १; १०२,
 २; ७. ७३, ११; ६.
 १०, २०.
 तूणस्य ६. ३, ४.
 तूणहान् ५. ८, ७.
 तूणा ११. ७, २१.
 तूणानि ६. ७, २२.
 तूणेडु ८. ८, ११.
 तूणैः ६. ३, १७.
 तूतम् १७. १, १५.
 तृतीयः ४. १६, २; ६. ६,
 १; १०. ४, १; १३. ४,
 १६; १४. २, ३; १५.
 १५, ५; १६. ३; १७,
 ३.
 तृतीयकम् ५. २२, १३.
 तृतीयकम् १६. ३६, १०.

तृतीयकाय १. २५, ४.
 तृतीयम् ६. ४७, ३; ६. ५,
 १; ३; ६; ११; १०. १०,
 ८.
 तृतीयस्याम् ५. ४, ३; ६. ६५,
 १; १६. ३६, ६.
 तृतीया १८. २, ४८.
 तृतीयाम् १५. १३, ५.
 तृतीयै ६. ११७, ३; १२२,
 ४; ६. १, १३; ५, ४; ८;
 १३. १, ११; १८. ४, ३.
 तृतीयेन ७. १, १; १८. ३,
 ७.
 तृतीयेभ्यः १६. २२, १०.
 तृद्धि १६. २६, २४.
 तृद्धि ५. २६, ४.
 तृद्धि २०. ८, १.
 तृपत् २०. ६७, ६; ६५, १.
 तृणवः २०. २४, २.
 तृणहि २०. ६७, ६.
 तृप्तः १०. ८, ४४.
 तृप्त्या ६. ५, ६.
 तृप्यतु ११. ६, १०.
 तृप्यते १६. २, ५.
 तृप्यन्तु ११. ६, ६.
 तृप्-दंशिनः ७. ५६, ३.
 तृप् २०. २२, १.
 तृषत् २. २६, ४.
 तृषाणः २०. ५२, २; ५७,
 १५.
 तृष्ट-जम्भाः ६. ५०, ३.
 तृष्ट-दंशमा १२. १; ४६.
 तृष्ट-धम्मम् १६. ४७, ८;
 ५०, १.

तृष्टम् प. १६, ५; द. ३,
१२; १०. ५, ४८; २४.
१, २६.

तृष्ट-वन्दने ७. ११३, १.

तृष्टा प. १८, ३; ७. ११३,
२.

तृष्टानाम् १६. ५७, ३.

तृष्टिका ७. ११३, २.

तृष्टिके ७. ११३, १.

तृष्टिके ७. ११३, १.

तृष्ट्या ३. ३१. २.

तृष्ट्याः ११. द, २१.

तृष्ट्या-मारम् ४. १७, ६; ७.

तृष्ट्यान्ताम् १. २८, ४.

तृष्ट्यान्ते प. १७, ७.

तृष्ट्याणानाम् १०. ४, १८.

ते १. ७, ५; ३०, ३; ३१,

२; ३५, ४; २. १२, १;

३२, ५; ३. ३, ५६, ७;

१५, २; २१, १०; २२,

२; २६, १३-६१; ४.

६, ७; ६, द; २७, १-

७; ३०, ४; ३५, ७; ३६,

६; ४०, १-द; प. ३,

१०; ६, ३; १७, १;

१८, १०; १६, ३; २३,

४; १२; २४, ६; १५;

१६; १७; २८, ३; ३०,

१५; ६. २२, १; ४७,

३; ६३, १; ११८, ३;

७. ५, १; १२, २; २८,

१; ३४, १; ५३, ४;

६०, २; ३; ७०, २; ७७,

३; ८०, ४; १०६; ७;

द, १, १४३; २, २१;

४, २४; ५, ५; ६; १०(४),

१२; ६. १, ६२; २, १०;

१२; ३, ३; ४, १६; ५,

२६; ६(१), १०; १४;

१५; ६(६), ३; १०,

१; १७२; १८; २२; १०.

२, ४; ३, ६; ५, ३६१;

४१३; ७, १७२; द, १७;

३५; ६, ७; ६; १०, ५;

३१; ३२; ११. १, १;

३; ५, २०; २१; ६,

१-६; द; १०-२२; द,

२२; ४; ५; ६; १०२;

१३; २६; १०, २; १२.

१, ४६; २, १४; ५०;

५१; ३, ४६; १३. १,

३२; २, २७; ३, ६; १४.

२, ७३; १५. १५, द;

१७, ५; ६; १६. ६, ७;

१८. १, ३; ४४; ४५;

४७; ५१; २, ३५; ४७;

५५; ३, १६; ४२; ४३;

४५२; ५१; ६८; ४,

२५; २६२; ४०; ४२; ४४;

६५; ८६; ८७; १६. १८,

११. २; ४; ५; ६; ७; ६;

१०; २०, ३; २७, ११;

१२; १३; ४८, ५२;

२०. १२, ५; १५, ४;

२१, ६२; ७५, ३; ६१,

द; ६४, ६; १२८, १४;

१३१, ११; १३५, ६.

ते १. ३, १३-५३; ६; ७२;

द; ७, ५; १०, २; ११,

१; ५; १३, १४; २;

३; ४; १४, २; ३३;

४८; १८, ३; २२, १;

४२; २३, ३; २४, ३२;

२५; १; २; ३५, १; २.

२, १३; ३, १; २; ६,

२२; द, ३; ४; ६, ४२;

१०, १; २३; ३३; ४-द;

१२, ७; द; १३, ४३;

५; १६, १-५; २०, १; २;

३; ४; ५; २१, १-५;

२२, १-५; २६, ६; ७३;

३०, १; ३२, ६२; ३३,

१३-७२; ३५, ४; ३६,

द; ३. १, ४; ३, ४; ६; ४,

५; ७; ७, ३; ११, ४; द;

१२, ६; १५, द; १८,

३; ६३; २०, १; २२,

४; २३, २३; ५३; २४, ७;

२६, ७; ४. ३, ३२; ६;

४, ३२; ७; ६, ४; ६३;

द; ७, १; ४; ६, १०;

१०, ७; १२. २३; ३३;

४; ५; १३, २; ५२; १६,

६; ७; ६; १७, ४; द;

१८, ५; १६, ६; द; २२,

५; ६२; ३०, ४; ३१, ३;

५; ३२, १; ६; ७; ३३,

४३; ३८, ६३; ३६, ६;

प. १, ३; ५; द; २,

२; ५२; ४, ६; ५, १;

७; ६, ६; ७, २; ७;

द, ५; ११, ६; द; ६;

१०२; १३, १२; २३;

३३; ४२; १८, १; १६,

१२; १३; १४; २०, २३;

७; २२, १०; २५, २; ३;

४३; ५; ६३; २८, ५;

६; ७; २६, ११; १४;

३०, १३; २; ३; ४; ५३;

६; १०; ११; १५; ३१,
 १; २; ३; ४; ५; ६;
 ७; ८; ९; १०; २; ३;
 ६, १; १२, १; २; १३,
 १; २४; ३; १६, १;
 २; १७, १; २; ३; ४;
 १८, १; ३; २०, ३;
 २६, २; ३०, २; ३६, २;
 ४२, १; २; ३; ४३,
 ३; ४४, २; ४६, १; २;
 ४६, १; ५६, ३; ६३,
 १; २; ७०, १; २; ३;
 ७२, १; २; ३; ७७, ३;
 ७६, ३; ८०, १; ३;
 ८२, ३; ८४, १; २; ८५,
 २; ३; ८८, २; ३; ८९,
 १; २; ९०, १; २;
 ३; ९१, १; २; ३; ९२,
 १; २; ३; ९८, २; ३;
 १०१, ३; १०२, १; २;
 १०६, १; १११, १; २;
 ११२, ३; ११३, १; ३;
 १२५, १; १२६, १; १२७,
 २; १२८, ४; १३१, १;
 १३२, १-५; १३६, ३;
 १३७, २; ३; १३८, ४;
 ५; १३९, १; २; १४२,
 ३; ७. ८, १; ९, ३; १०,
 १; ११, १; १२, २;
 २०, ४; ६; ३५, २;
 ३; ३८, २; ४३, १;
 ४८, २; ५०, ५; ५३,
 २; ५२, ६; ५५, १;
 ५६, ३; ६; ६०; ६४, २;
 ६८, १; २; ३; ७०,
 ४; ५; ७४, ३; ७६,
 ५; ७८, १; ७९, १; ४;

८०, ३; ८२, ३; ६;
 ८३, १; ९०, २; ९७, ६;
 १०७, १; १११, १; ११४,
 १; ११८, १; ८. १, १;
 ३; ५; ६; ७; ८; १०;
 १५; २०; २१; २, १; २;
 ३; ४; ९; १०; ११;
 १३; १४; १५; १६;
 १८; १९; २१; २६; ३,
 ११; १८; १९; २५; ४,
 १४; ५, २२; ६, १;
 १८; २०; ७, ३; ४;
 ८, ७; ९. १, १०; २०;
 २, ५; १६; १९-२५;
 ३, २; ४; ६; १०;
 १२; १३; १४; १५; १८;
 ४, ६; १०; ५, ३७;
 ३८; ८, १; २; ३; ४;
 ५; ७; ९; १२; १६; २१;
 २२; १०. १; ४; ८;
 ११; १६; १८; २०; २१;
 ३, २; ३; ४; ४, २१;
 २२; २४; २५; ५, ४५;
 ७, २१; २५; ९, २;
 ३; ७; १३; १४;
 १५; १६; १७; १८;
 १९; २०; २१; २२;
 २३; २४; २५; १०,
 १; ७; १०, ११; २०;
 ११. १, ६; १०; ११;
 १२; २०; २५; ३२; २, २;
 ३; ४; ५; ६; ९; ११;
 १५; १६; २५; ३१; ३,
 ३२; ३५; ३६; ३७; ४४;
 ४, २; ७; ८; ९;
 १८; २३, १२. १; ११२;
 १२; १८; २३; २४; २५;

३१; ३३; ३५; ३६;
 ४६; ४७; ५६; ६१;
 ६२; २, १; ३; १४;
 २१; ५३; ३, १; २२;
 ५४; ४, ४५; ५२; १३;
 १, ५; ८; ९; १०;
 १४; ३५; ३७; ४४;
 ५६; ५७; २, ३; ६;
 ७; २६; ३७; ३, १०;
 २१; ४, ४४; ४५; ४८;
 ५०-५३; ५५; १४. १,
 ५; ११; १२; १६; १९;
 २१; ४०; ४७; ४८-५१;
 २, ३; ९; २४; ३३;
 ३४; ३५; ५६; ६१;
 ६२; ७५; १५. ११, २;
 ६; ८; १०; १६. ५, १;
 ४; ५; ६; ७; ८; १७;
 १, ८; ११; १२; १३;
 १८. १, २; ३; १३;
 १४; १५; २४; ३२; ४०;
 ५४; ५६; २, ७; ८;
 ९; १०; १२; २०; २१;
 २३; २४; २६; ३०;
 ३६; ५६; ५७; ३, ४; ७;
 ९; २४; ४५; ५२; ५५;
 ६०; ६८; ६९; ७१;
 ७२; ४, ९; १५; २५;
 २६; ३१; ३३; ३४;
 ४२; ४३; ४४; ५२;
 ५६; ५९; ६६; ७५; ७६;
 ७७; ८८; १९. २, १;
 २; ५; ३, २; ३; ४,
 १; ८, ५; ११, ५; १५;
 ४; १८, ३; ८; २६, ४;
 २७, ४; ३८, १; ३०,
 १; २; ४; ३२, १;

३; ३३, ४; ३४, ८; ६;
 ३६, २; ३७; ४२, ४;
 ४४, २; ४५, ३; ४७;
 ४६, १; ४७, २; ३२;
 ५३; ४८; १; ४; ६; ५०,
 २; ५२, ५; ५५, १; २३;
 ६; ५६, ६३; ६४, ३; ४;
 ६६, १; २०. ३, १; ४,
 २; ३३; ५, ४; ५; ६; ७;
 ६, ४; ११, २; १२, ४;
 १५, २; ४; ५३; १७, २;
 ५; १६, २; ३; २०, २२;
 ३; ४; २१, ११; २४, १;
 ६; ८; २५, ३; २६, ३;
 २७, ३; ४; ६; २८, ४;
 ३०, १३; ३२, ३; ३४,
 १८; ३५, १६; ३६, ४३;
 ३७, ६३; ७; ८; ६३;
 ३८, १; ३६, ५; ४३, ३;
 ४५, १; २; ४७, ७; ४६,
 ७; ५६, २; ६; ५७, ३;
 ५३; ६; ७; ५८, ३; ६०,
 १; ५; ६१, १; ३; ६२,
 ७; ६४, ५; ६७, ६; ६८,
 ३; ४; ६६, ५; ७१, ५; १०;
 ११; ७३, २२; ७५, २;
 ३; ७६, २; ३; ५; ६३;
 ७७, ७; ८; ८१, १; ८५,
 ३; ८६, १; ८७, ३; ६;
 ८८, ३; ६२, ६; २०;
 ६४, २३; ६३; ६५, ४;
 ६६, ५; ६; १०३; ११;
 १२; १३३; १४; १५;
 १६, १७३; १८; १६३;
 २०३-२३३; १०५, २३;
 १०७, ५; ८३; १०८,
 २; ११२, १; ११३, २;

११४, २; ११६, २; ११७,
 १; २; ३; १२६, १३;
 १५३; १२७, ६; ११;
 १२६, ११; १३३, २;
 १३६, ७.

ते इति ४. २६, १-७; ५. २४, ३;
 ६. १३८, ४; १०. ८, १२;
 २०; ११. ५, ८; १५.
 १०, ३; २०. ३५, ८.

तेजः १. ३५, ३; २. १६, ५;
 २०, ५; २१, ५; २२, ५;
 २३, ५; ५. १६, ४; ७. ८६,
 ४३; ६. १, १७; १०. ३,
 १७; ४, २५; ५, ३६; १२.
 ३, २; ५, ७; १३. ३, ५;
 १४. २, ५४; १६. ८, १;
 ४; ५३-२६३; ३०; ३३;
 १६. ३१, १२३; ५३,
 ४.

तेजःभिः १३. १, ३०.

तेजन्म २०. १३६, ३.

तेजन्म १. २, ४; ६. ४६,
 १.

तेजसः १६. ३४, २.

तेजसा ३. ५, ८; ५. ३८,
 १३; ६. २, १५; १०. ३,
 १७-२५; ६, २७; ३०;
 १३. ४, ४६-५६; ४; ५;
 ६; ६, १; २; ५; १६.
 ३१, ३; ३६, १.

तेजसे १६. २८, १; ४५,
 ६-१०.

तेजस्वत् १८. ३, ७१.

तेजसि ७. १३, १; १३. १, १४.

तेजिष्ठया २०. २१, ८.

तेन १. ३, १-५; ६, ३; २२,

१; २६, १; २. ७, ३;
 ५; १६, १-५; २०, १;
 २; ३; ४; ५; २१, १-५;
 २२, १-५; २३, १-५;
 ३. ५, ८; ६, ४; ७, ३;
 १०, १२; १४, १; १६,
 ५; १७, ७; २२, ३; ४.
 ५, १; ७, १; ११, ६;
 १४, १३; ६; १७, ८;
 १८, ३; २०, ८; ३५,
 १-६; ३६, ५; ५. ६,
 ११; १२; १३; १४; १७,
 ५; २८, १२; १३; ६. ७,
 १; २; ३; १२, १; २; २४,
 ३; ५७, २; ६८, ३; ७४,
 २; ७८, १; ८०, १; ३;
 ८२, २; ३; ८१, १; ८२,
 २; १००, २; १०१, १;
 २; २२६, २; ३; ७. २०,
 ४; ३८, २; ७०, ४; ५;
 ७६, १; ८१, ६; ८. ७,
 ५; ८, ५-८; ६. २, १६;
 १७, ३, १५३; ४, १३;
 २४; ५, १७; १८; २४;
 ६(१), ६; ६(२), २;
 १०, १६; १०. १, ६;
 १५; ३, १; ५, १५-२०;
 ६, ६-१७; २०; २१; ११-
 १, ३७; २, ७; ३, ३२;
 ३५३; ३६३-४३३; ५,
 १२; १०, १३; १२. १,
 २३; २४; २५; ४६; ४७;
 २, १; २; ४७३; ३, १५;
 २२; १३. १, ७४; २, १५;
 १४. १; ३५; ३६; ४८;
 ५३; ५५; २, ५३-५८;
 १५. १, ३; ४; ५;

६; म; १०; १३, २; ४;
 ६; म; १०; १६. १, ५; ७,
 १; १२; १८. १, ६;
 ५३; २, ३०; ३, ५६; १६.
 ६, ११; ६, ४; २२, २१;
 २३, ३०; २४, १; २७,
 १०; ३०, १; ३२, ७;
 १०; ३६, ६; ४७, म;
 ५०, १; ५३, ६; ७२,
 १; २०. म६, ७; १३६,
 ५; १४१, ५.

तेनो इति ६. १, २०; १८.
 ३, १६.

तेभिः १. १५, ३; ४; २.
 ३५, २; ५. म, २; १८,
 म; ७. ५५, १; ६८, २;
 ११. ६, ६; १८. ३,
 ४६; ४, २; ३; १६.
 ४७, ५; ५०, २; २०.
 ३३, १.

तेभ्यः ३. २१, १-७; २६,
 १२-६; २७, १-६;
 ४. ३६, १०; ६. १३,
 १; ७. १०६, ६; म. १,
 १४; म, १०; १०. ४,
 २३; ६, १२; ११. १,
 ४; १२. ४, २६; १४.
 २, ४६; १८. २, २६;
 ४६; ३, ५६; ७२; ४,
 ५७.

तेषाम् १. १, १; २. ३, २;
 ३५, १; ३. ६, ६; १०,
 ६; २६, १-६; ४. ५,
 ५; ५. १६, २; ६. १५, २;
 ५५, १; ३; ६५, १; ६७, २;
 ११६, ३; ७. ७, १; म.

३, १५; ६, २४; ६. २,
 ४; ६; ६ (२) ४; ६ (६),
 ४; ६, १६; १०. ४,
 १८; ११. ३, ५३; ६,
 २६; १२. ३, ६; ४,
 ११; २०; १८. १, ५८;
 ६८; म६; म७; २०. ३७,
 १०; ५६, ६.

तेषु म. ६, १६; १२. १.
 ५६; ४, २६; १७. १,
 ७.

तैः ३. २३, ४; ४. १६, ६;
 ३६, ५; ५. २१, म; म.
 म, ६; १०. ५, २१; ६,
 २०; ११. ३, ३७;
 ३८; ५, १४; १३. १,
 ३५; १६. ६, ५; १२.

तैमात्तस्य ५. १३, ६; १८,
 ४.

तैलकुण्डम्-इम २०. १३६,
 १६.

तुकिम् १. २८, ३; ४. १७,
 ३.

तुकिस्य २०. ७१, २.

तुकिनि ५. १६, २.

तुकिाय २०. १४१, १.

तुकिभ्यः १. १३, २; २६, ४.

तुकिमाना ३. १७, ५.

तुकिता २०. १२८, ६; ७; म;
 ६; १०; ११.

तौ ३. २४, ७; ४. २५, १-७;
 २८; १-७; २६, १-७;
 ५. २४, ५; ३०, १०;
 ६. १४०, १; ७. ५३,
 ३; म. ६, १; ६. १,
 ७; ३, ६; ५, २७; ६

(१), १२; १०. ४, म;
 ६, २५; ११. ५, १०;
 १२. २, ३२; १४. २,
 ७१; १८. २, १३; १६.
 १३, १; ४४, १०; २०.
 १३३, १.

तौदी १०. ४, २४.

तौलस्य १. ७, २.

तौविलिके ६. १६, ३.

तमना ५. २७, ११; ७. ४८,
 १; २०. १६, ७; १२२,
 २.

तमन्या ५. १२, १०.

त्यजसम् १८. १, ३.

त्यत् २०. १६, ७; ३५, १५;
 ३७, २; १०६, १; १३७,
 १०; ११.

त्यम् ७. १४, १; म५, १;
 १३. २, १६; १८. १,
 २१; २०. ३५, ३; ३६,
 ६; ४७, १३.

त्यस्य २०. १२६, २३.

त्याः २०. ७४, ४.

त्ये म. ३, १६; ४, २०; १३.
 २, १७; २०. १०, १;
 ४७, १४; ५६, १.

त्रपु ११. ३, म.

त्रयः २०. १२६, म.

त्रयः ४. ३, १; ६, म ५.
 २८, ३; म; ६. म०, २;
 ११२; २; म. ६, १३.
 ६. १०, २६; १०. ६;
 ३१; ११. १, १०; ३;
 ३७; १२. ३, २०; १३.
 ३, ६; १८. ४, ४; १६.
 ४७, ४.

त्रयः-त्रिंशत् ६, १३६, १;
 १०. ७, १३; २३; २७;
 ११. ५, २; १२. ३,
 १६; १६. २७, १०; ३७,
 १.
 त्रयः-त्रिंशतम् ११. ३, ५२.
 त्रयः-त्रिंशतः १६, ५६, ३.
 त्रयः-त्रिंशेन ८. ६, २०.
 त्रयः-दश ३. २१, ५.
 त्रयः-दशः ५. ६, ४.
 त्रयः-दशम् १३. ३, ८.
 त्रयान् ४. ११, २.
 त्रयोदश-ऋक्षेभ्यः १६. २३,
 १०.
 त्रसत् ८. ८, १६.
 त्रसदस्यम् २०. ३७, ३.
 त्रसन्तु ५. २१, ८.
 त्राता ४. १६, ३; १६. १५,
 ३.
 त्रातारम् ७. ८६, १.
 त्रातुः ६. ६६, ३.
 त्राम-भिः २०. २१, १०.
 त्रायताम् ६. ६६, ३.
 त्रायताम् ८. ५, १६.
 त्रायध्वम् ६. ६३, ३.
 त्रायन्ताम् ४. १३, ४३; ८.
 ७, २; ११.
 त्रायमाणः ८. १, १५; ७,
 १४; १६. १०, १०; ३६,
 १.
 त्रायमाणम् ४, ६; १; ६.
 ४, १.
 त्रायमाणाम् ८. २, ६.
 त्रायमाणायै ६. १०७, १.
 त्रायमाणो ६. १०७, १; २.
 त्रायसे ५. ५, २.
 त्रायस्व २०. ३७, ७.

त्रायस्व १६. ४४, ४; ४६,
 ३.
 त्रासय ५. २१, ५.
 त्रासय ५. २१, ४; ६.
 त्रि-अरे १०. २, ३२.
 त्रि-आयुषम् ५. २८, ७.
 त्रिंशत् ५. १५, ३; ६. ३१,
 ३; १६. ४७, ४; २०.
 ४८, ६.
 त्रिंशत्-अङ्गम् १३. ३, ८.
 त्रिंशतम् २०. १३, ४.
 त्रिंशत्-अराः ४. ३५४.
 त्रिंशता ७. ४, १.
 त्रिः ५. २, ३; ८. ३, ११;
 १२. २, २६; १४. १,
 ४१; १६. ६, १५; ३४,
 ६; ३६, ५३; २०. ६३,
 ४; १०७, ६.
 त्रि-ककुत् ४. ६, ८.
 त्रिककुदम् ५. २३, ६.
 त्रि-कद्रुकेभिः १८. २, ६.
 त्रि-कद्रुकेषु ३. ५, ७; २०.
 ६५, १; ११०, ३.
 त्रिचक्रण १४. १, १५.
 त्रितः ५. १, १; ६. ११३,
 १.
 त्रितस्य ६. ११३, ३.
 त्रिते ६. ११३, १; १६. ५६,
 ४; २०. १११, १.
 त्रि-दिवम् १०. ६, ५; १०,
 ३२; १७. १, १०.
 त्रि-दिवे ६. ५, १०.
 त्रि-धातु २०. ८३, १.
 त्रि-नाके ६. ५, १०.
 त्रि-नाभि ६. ६, २; १३.
 ३, १८.

त्रि-नामन् ६. ७४, ३.
 त्रि-पञ्चाशीः १६. ३४, २.
 त्रि-पात् ६. १०, १६; १६,
 ६, ३.
 त्रि-पादम् १३. २, २७; ३,
 २५.
 त्रि-पृष्ठे ६. ५, १०.
 त्रि-प्रतिस्थिते १०. २, ३२.
 त्रि-मिः ६. ११२, २; १०.
 ८, ४३; १२. ३, ४२;
 १६. ६, २.
 त्रि-भुजम् ८. ६, २.
 त्रियोजनम् ६. १३१, ३.
 त्रि-वरुथम् ७. ६, ४; ८,
 ५, २०; ६. २, १६; २०,
 ८३, १.
 त्रि-वृत् ५. २८, ४; ६. ११.
 त्रि-वृत्तः १६. २७, ३;
 त्रि-वृत्तम् ८. ६, २०; १०.
 ८, १७; १६. २७, ३.
 त्रि-वृत्ता ५. २८, २; ८,
 १६. २७, ३; ६.
 त्रि-वृत्ति ५. २८; ३.
 त्रिवृत्-भिः १६. २७, ३;
 ६.
 त्रि-वृषः ५. १६, ३.
 त्रि-शताः ११. ५, २.
 त्रि-शोर्षणम् ५. ३३, ६.
 त्रि-शोकः २०. ७६, २.
 त्रि-शोकम् ४. २६, ६.
 त्रिषु ७. २६, ३; ६. ६, ६;
 १०. १०, ११; १२, २०,
 ६७, ५.
 त्रि-संधिः ११. ६, २३.
 त्रि-संधिना ११. १०, ३;
 २७.

2, 24, 6, 6, 20, 6,

त्वम्-त्वम्-त्वा.

(४, ८४६)

७; ६. २, १; ४; ६; १०;
 १७-२५; ३, ६; १०.
 १, २६; ३, १; १५;
 १६; ५, ४५; ६, ६-१७;
 २०; २१; ३४; ८, २७^१;
 ६, ३; १२; १०, ८^२;
 १६; ११. १, १०; ३,
 २७; ४, १४; १६; ६,
 १; ५; ६; १५; १८; २२;
 २४; १०, ५; १६; १२.
 १, १५^३; ६१; २, १;
 १०; १७; ४५; ४, ४३; ५,
 ५५; ६५; १३. १, ३२; २,
 २१; २६; ३, २३; ४,
 ४७; १४. १, २०; ४३;
 ५१; ६१; २, ५०; ७१^४;
 १७. १, ६-२१; २४; १८
 १, १६; २, ३५; ५६;
 ६०; ३, ६; ८; ४२^५;
 ४, ३१; ५६; ६५; १६.
 १५, १; २८, २; ३०, ३;
 ३१, ६; ११^६; १३; ३२,
 ५; ३३, ३^७; ५; ३५, ३;
 ४४, १; ४६, ७; ४८, ३;
 ४६, ८; ५२, २^८; ५५,
 ६; ५७, ४; ५६, १^९;
 ६४, २; ४; २०. ५, ३;
 १२, ४; १५, ६; १८, ६;
 २१, ८^{१०}; ६; १०^{११}; २३,
 ७; २७, १; २६, १; ३०,
 ५; ३७, २; ३; ४^{१२}; ४६,
 ३; ४७, १८; ५५, ३;
 ६२, ६^{१३}; ६४, ३; ६७,
 ६; ६६, ४; ७३, १; ८२,
 १; ६३, ३^{१४}; ५^{१५}; ६; ७;
 ८; ६४, ५; ६५, ३; ६८,

२; १०४, ४; १०५, १^{१६};
 १०८, १; २^{१७}; ११४, १;
 १२६, ४; ८; १२८, १३;
 १३५, ११; १२; १३७,
 १०; ११^{१८}.

त्वम्-त्वम् २०. ३०, ५.

त्वया १. ७, ५; ३. ६, ४;
 ४. १५, ६; १७, ६; ७;
 १८, ८; १६, ४; २०, २;
 ३१, १; ४; ३२, १; ३७,
 १^{१९}; २; ५. २, ५; ३,
 १; २६, १; ३०, १६; ७.
 ५०, ४; ६५, २; ३; ६.
 ५, १६; ११. २, २०;
 १२. २, ५; ५, ६१; १४.
 २, १७; १८. ४, ७०;
 १६. ३२, ३; ४; २०.
 १८, ६; २१, ११; ७०,
 २०; ७६, २; ८७, ४;
 १०७, ८.

त्वयि ४. २५, ३; ८. २, ३;
 १२. १, १५; १३. १,
 ५४; १८. २, ५२, ३,
 ७०; १६. ३१, ११^{२०};
 ४७, ६.

त्वरणाः ११. ८, २८.

त्वर्य १२. ३, ३१.

त्वष्टः ५. २५, ११.

त्वष्टः २. २६, २; ५. २७,
 १०; ६. ३. ३.

त्वष्टा २. ५, ६; २६, १; ३.

८, २; २०, १०; ३१, ५;

५. २५, ५; २६, ८; ६.

४, १; ५३, ३; ७८, ३^{२१};

८१, ३; ६२, १; १४१, १;

७. १७, ४; ६. ४, ६; ६

(५), २; ७, ७; ११. ८,
 ८; ६; १८; १२. २, २४;
 १४. १, ५३; ६०; १८.
 १, ५; ५३; १६. १०,
 ६; २०. ३५, ६.

त्वष्टारम् ४. ३०, ६; ५. १२,
 ६; ११. ६, ३.

त्वष्टुः ६. ४, १०; ११. ३,
 ४२; ८, ६; १८; २०. ४१,
 ३.

त्वष्ट्रा-इव १२. ३, २३.

त्वा २०. १३५, ६; १३६,
 १२; १४.

त्वा १. १०, ३; ४; १२, २;
 १३, ४; १६, ४; १८, ३;
 २२, १; २; ३; २३, २;
 २६, ३^{२२}; ३१, ३^{२३}; ३४,
 १; ५; ३५, ४; २. २, १;
 ५, २; ४; ६, १; १०, १^{२४};
 २; ३; ४; ५^{२५}; ६; ७;
 ८; १३, ३; १३, ५^{२६}; २७,
 २^{२७}; ३, २८, ४; ३. ३,
 १; ३^{२८}; ५; ४, १^{२९}; ३;
 ४^{३०}; ५; ६; ७; ५, ८; ७,
 २; ५; ६; ६, ५; १०, ३;
 १०; ११, १; ७^{३१}; ८^{३२};
 १२, १; ३; १५, ७; १६,
 ५; १७, ८; २१, ५; २३,
 ६; २४, ६; २५, १^{३३}; २;
 ३; ५; २६, ७; ८; ४. ४,
 १^{३४}; ६, ३; ७, ३; ४; ६;
 ८, ४; ५; ६^{३५}; ६, ५; १०,
 ७; १३, ५; ७; १५, ४;
 १६, ६; १७, १^{३६}; २०,
 ६; २२, ५; २२, ५; ३४,
 ५^{३७}; ६^{३८}; ७^{३९}; ५. २, ५^{४०};

३, १; ५, २; ६, ११ २-१४२;
 ७, ७; ८, ६; ११, ७; १३,
 ४; १४, १२; ७; २२, ११;
 २५, ८; २८, ५; ६२;
 १०; १२२; १३२; २६,
 ११; ३०, २; ५; ८; १५;
 १७; ६, ६, २; २६, २;
 २६, ३; ४५, १; ४६, २;
 ४८, १; २; ३; ८४, १२;
 ८७, १२; ८६, ३२; ८२,
 १; ८६; १२; १०६, ३;
 १०६, ३२; १११, ४२;
 ११३, १; ३; १३३, ५;
 १३६, १; १३८, ३२;
 १४२, १; २; ७. ३५, ३२;
 ३७, १; ३८, ३; ४५,
 १; ५०, ५; ५६, ७; ७१,
 १; ७२, २; ७४, ४;
 ७८, २; ८२, ३; ८७,
 १; ११०, ३; ११५, १;
 ११७, १; ११८, १२; ८.
 १; ३; ७; ६; ११२-
 १३२; १४२-१७२; १८२;
 २०; २, २; ४; ६२;
 १४; १५२; २०; २२; २६;
 ३, ६; १८; २२; ५, १४२;
 १५२; २२; ६, ७; ८२;
 २१; ७, २८; ६, १; ७;
 १०(६), २; ६, १, २; ३;
 ६; ११२; २२; २४; ४, १०;
 ५, २; १५; १०, १३; १०.
 १, ७; ६२; ११; १२; १५२;
 १८; २६; २८; २६; ३, ३;
 ४; ७; १३; १४; १५; ४,
 ६; ६, ३२; ३४; ७, २६;
 ३०; ८, १०; ३४; ६, २२;
 ७, ८२; ६; १०, ७२; ६;

१०; १६; २२; ११. १, १;
 ३; १३; १४; १६; २२;
 २५; २६; ३२; ३३;
 ३४; ३, २२; २८; २६;
 ३८; ४०; ४२; ४७; ४, १६;
 ४६; १२. १, १८; २६;
 ३४; ५५; २, ५२; ६२;
 १६२; ३, २२; २३; २४२;
 ३५२; ५५-६०; ४, ४३;
 १३. १, १; १०; १२;
 १५२; १७; १८; १६;
 २०२; २१; ३६२; ४३२;
 २, ४; ५; १२; २३; ३६;
 ४, ४७; ५०-५४; १४.
 १, ४; १६२; २०२; ४५;
 ५०; ५२; ५८२; २, ७;
 १६; ३३; ५६; ६०; ६१;
 ६२; ७०२; १६. ५, ३-
 ७; १०; १७. १, ८; १८.
 १, ५६; ५७; ६०; २,
 २१; २२; २५; ३१; ५२;
 ५४२; ५५२; ५७; ५८;
 ३, १; २६-३५; ४६;
 ६६; ४, ६; ३३; ४४;
 ४८; ५१; ५२; ६७; ८८;
 १६. १४. १; २५, १;
 २६, २; ३२; २७, १२;
 २२; ३; ५; ६; ३४, ६२;
 ७२; ३७, २; ३४; ४;
 ३६, २; ३; ४; ६२; ४४,
 ६; १०२; ४६, १२-७२
 ४६, ५; ५१, २; ५५, ३;
 ४; ५६, २; ५७, ४; ६४,
 २; ६५, १; २०. १, १;
 ३, २; ३; ५, १; ६, १;
 ८, १; २; ६, ३; १२, ५;

१४, २; १५, ४; १८, १;
 १६, १; २१, ६; २२, १;
 २; ३; २३, ६; २४, ६;
 ३०, १; ३२, २; ३८, २; ३;
 ४२, २; ४७, ८; ६; २०।
 ४८, १; ४६, ६; ५२, १;
 २; ५३, २; ५६, ५; ५७,
 १२; १४; १५; ६२, २;
 ६३, ६; ६८, ६; ६६, ५;
 ७२, १२; २; ७५, १;
 ७६, ३; ८१, १; ८५, ३;
 ८६, ३२; ८२, २०; ८३,
 १; २; ८५, ३; ८६, १;
 ५२; ६; १०; १५; १६;
 ८६, १; १००, १; २;
 १०२, ३; १०३, २;
 ३; १०४, १; १०७, ७२;
 ११७, १; ११८, १; १२०,
 २; १२१, १; २; १२४,
 २; १२५, ५.

त्वा २०. १२८, १६; १३०,
१४.

त्वा-ऊतासः २०. ७०, १८;
१६.

त्वा-दातम् २०. ६, ६.

त्वाम् २. ६, ३; १०, २-८।
 ३६, ७; ३. ४, २२; ६;
 ६. ५. १४, ६; २५, २;
 ६. ६३, २; ७८, ३; ८४,
 ३; ७. ३८, २; ५; ८०,
 ४; ८२, ६; ८. १, ५; २-
 २३; २७; ५, १४; ७, २६।
 ८. ४, ६२; ११. १, ११;
 २, १३; ३, २७; १३.
 १, ५८; १७. १, १४;
 १८. १, १५; २६; ४,

७५; ७६; १६. ३०, २;
३१; ३१, १३; ३३, ३;
४८, ६; २०. १४, १;
२; १६, ६; २१, ११;
२४, ६; ४८, १; ६२, १;
२३ ६६, ६३; ७१, १०;
८०, २; ८६, ४; ६६, २;
६८, ११; १०३, २; १०६,
२; ३१; १०८, ३; ११५,
३; ११७, २; १२६, ३.

त्वा-यतः २०. २१, ३.

त्वा-यतः २०. १८, १.

त्वा-यतः २०. १८, ४; २३,
७; ८४, १.

त्वा-यतः २०. ७६, ४.

त्वा-यतः २०. १२१, २; १२२,
२.

त्वा-यतः ७. ७४, ३.

त्विषिः ६. ३८, १; २; ११.
५, ८.

त्विषिः ४. ३१, २.

त्विषिम् १२. १, ८.

त्विषि-मती ४. १६, २.

त्विषि-मते ६. २०, २.

त्विषि-मन्तम् १२. १, २१.

त्विषि-मान् १२. १, ५८.

त्विष्या १०. ६, २७.

त्वे इति ५. २, ३; ८. ६, ६१;
२०. १७, २; १८, ५;

५५, २; ६४, ४; १०७,

६; ११८, २; १३५, ६.

त्वेषः ४. १५, ५; ६. ४, १;
१८, ४, ५६.

त्वेष-नृणाः ५. २, १; ११,
१; २०. १०७, ४.

त्वेषम् १६. ४७, १.

त्वेष-सुदृक् २०. ३६, ६.

त्वेषसा २०. ३५, ११.

त्सरति ८. ६, ८.

त्सरन् १२. ३, १३.

त्सारि १०. १, १६.

द

दंष्टारम् १०. ४, २६.

दंष्ट्रयोः ४. ३६, १; १६, ७,
३.

दंष्ट्राः ११. ६, २२.

दंष्ट्राभ्याम् १०. ५, ४३.

दंष्ट्रौ ८. ३, ३.

दंसना २०, ७४, २.

दंसनाभिः २०. १२५, ५.

दंसांसि २०. १३६, ३.

दक्ष-तातिम् ८. १, ६.

दक्षम् २, २६, ३; ४. १३,
२; ५; २५, ५; २८, ५;
७. १४, ४; १६. ४, ७;
२०. ५६, ३.

दक्षमाणः १. ३५, २.

दक्षमाणाः २. ४, १.

दक्षायि ६. १६, २; १८, २,
२३; २०. २४२, ५.

दक्षिण-अग्निः ६. ६(२), १३;
१५. ६, १४; १८. ४, ८;
६.

दक्षिण-अग्नेः १५. ६, १५.

दक्षिण-अग्नौ ८. १०(१), ६.

दक्षिणाः १५. १८, ३.

दक्षिणतः ४. ३२, ७; ४०,
२; ६. ६८, ३; १०. ६,
८; ११. ६, १८; १२. ३,

१४; १८. १, ५२; ४;
१५; १६. १६, १; २७,
१४.

दक्षिणम् ४. १४, ७; ७. ६,
४; १२. १, ३४; १४. १,
४८, १५. १८, २; १८,
४, ५६; २०. १२८, १६.

दक्षिण्या ६. ५३, १.

दक्षिण-संन्याभ्याम् १२. १,
२८.

दक्षिणा ३. २७, २; ४. ११
४; ११. ७, ६; ८, २२;
१८. ४, ५०; १६. १३,
६; २०. ६५, ३.

दक्षिणा ६. ७, २०; १२.
२, ३४; १८. १, ४२;
४, ४६.

दक्षिणाः ६. ६(६), ६; १५.
१६, ७.

दक्षिण-ज्योतिषम् ६. ५,
२२, १४; २५, २६; २८,
३१-३६.

दक्षिणात् ७. २६, ८.

दक्षिणानाम् १८. ४, ८.

दक्षिणाभिः १६. १६, ६.

दक्षिणाम् ५. ७, १; ११,
१; ६. ५, १४; १०. ५,
३७; १२. ३, ८; १३. १,
५२; १५. २, ६; १४, ३;
१८. ४, २६; २०. १३५
६.

दक्षिणायाः ४. ४०, २; ५.
१०, २; ६, ५८, १; ६.
३, २६; ६, ६; १५. ४,
४; ६; ५, ४; ५; १८, ३,
२६; १६. १७, ३; १८,
३.

दुः—दुधिषे.

(४, ८५३)

दुः १०. १०, ३२.	दधतः १८. ४, ६२.	३; ६; ६; ४०, १; ४३,
दुः ५. १७, १०; १०. २,	दधताम् ८. ८, २; १२. २,	१-६; ८.
२६; १२. १, ५३; १६.	२३,	दधानः १३. १, २; १८. १,
३५, १.	दधते ११. ४, ३.	२४; २०. ११, ५.
दधशे १६. ४७, २.	दधथः २०. १४३, ४.	दधानम् २०. ५५, १.
दधुशे १०. ८, ८.	दधथुः १८. २, ५३.	दधानाः ४. २, ६; ३१, ७;
दधुशे ६. १०, २६; १०. ८,	दधन्विरे २०. ३१, १; २.	१२. २, ३०; १८. ३,
४१.	दधर्षति ४. २१, ३; ६. २८	१७; २०; २०. २१, ११;
दध्याम् १२. ३, ३३.	२.	३३, ३; ४०, ३; ६८, ५;
दधे २०. १४३, ५.	दधात २०. ५६, ४.	६६, १२; ६१, २.
दधे १. ६, ४; २. १२, ४;	दधातु ६. ५५, २; १४. १,	दधानान् २०. ३४, १०.
४. ३६, ४; ६. १३५, १;	५६; १८. १, ५१; ३,	दधानि इति ५. १२, ६.
७. १२, ३; १३, १; २;	१४; ४३; ४४.	दधानौ ७. २६, १.
११४, १३; १०. २, १६;	दधातुन १. ५, १; २०.	दधामि ७. ३७, १.
४, २४; १६. १७, १-	१३७, २.	दधामि २. १०, ५; १२, ८;
१०; ४६, ४.	दधाति ५. १, ७.	४. ३०, ६; ३६, २; ५.
दधौ १६. ३४, ८.	दधाति ३. ३१, ६; ४. ८,	२५, २; ७. ८२, २; ८.
दधः ६. ६६, ३; ३; ११७,	१; २१, २; ५. २, २;	२, २; ६; ८, ८; ११.
२; १२. ३, ४६; ५५-	१७, ६; ६. ७६, ३; ६.	१, २०; १२. २, २३; ३,
६०.	५, १०; १८; ११. ५,	२३; १३. १, १६; १६.
दधसि १. १४, ३; ५. २२,	१३; २०. ५६, ३; ६६,	७, ३; १८. ३, ३०-३५.
१४; ८. २, २०; २२;	४; १०७, ५.	दधार ६. ६०, ३.
१६. ४८, १.	दधातु ६. ६०, ३.	दधासि ७. ८१, २; १४. १,
दधहे २२. १२७, १.	दधातु १. १, १; ३. ८, १;	२४.
दधात् ३. २८, २; ६. ५,	१५, ६; २०, ३; १०; ५.	दधि २०. १२७, ६.
१४.	२५, ४; ५; २८, ५; ६.	दधि-आशितः २०. ६६, १.
दधारणम् ६. १०, ६.	४५, २; ४७, १; ६२, १;	दधिकारवा-इव ३. १६, ६.
दधुषीणाम् ५. १३, ८.	७. ५, २; ६; ४; १७,	दधि-कारणः २०. १३७, ३.
दधुः २०. ५६, ३२.	१; २; ३; ४; १६, १२;	दधिम २०. ८६; ६.
दधत् ६. ११, ३; ७. १४,	४७, २; ८. १, १५; ४,	दधिरे १. ३३, १; २; ३; ८.
४; ६. ४, २२; १०. ६,	६; ५, १८; २१; ६. ४,	४, १८.
४.	३१; १२. १; ३; ४; ५;	दधिरे ६. ४६; ३; २०. २५,
दधत् ४. १२, २; ७; १६, ८;	६; ८; २२; ४४; ५२;	४; ८८, १.
२०, ४; ५. २५, १; ६.	१३. १, १७; १८; ३५;	दधि-घान् १८, ४, १७.
११, ३; ७. ५३, ६; १०.	१६. ४, ७; १८. २,	दधिषे १६. ४६, ७; २०.
३, १२; ११. ४, ११.	५५; १; ६२; १६. ३३;	५५, ३; ८७, २.

दधिमे ५. २, ६; २०. १५,
६; ३१, ५; १०७, ६.

दधिषोः १८. ३, २.

दधिष्व २०. ६, ५.

दधिष्व २०. २०, ३; २४,
५; ५७, ६; ८४, ३.

दधीचः २०. ४१, १.

दधीत १८. १. १.

दधुः १६. ५६, ३.

दधृक् १८. २, ५८.

दधृषते ६. ३३, २.

दधृषन्त ३. ३, २.

दधृषम् २०. २४, ६.

दधृषुः १. २७, ३.

दधे २०. ११५, २.

दधे ४. ७, ७; २७, २; ३४,
८; ५. ६, २; ६, ७; ३०,

१२; ७. २६, ४; ८. ५,
६; ११. १, २८; ३३;

१७. १, २६; १६. ४,
२; २०. ५३, १; २; ५७,

११; १२.

दधेते इति ५. १, २.

दधी ६. ४, १०; १०. २, ५;
१७; १६. ३४, ६.

दधः ३. १२, ७; ७. ७२, ३.

दध्या ४. ३४, ६; ७.

दध्मः ३. २७, १-६; ४. ५,
५; ६. ४, २४; १२. १,

३०; १६. ७२, १.

दध्मसि १६. ६४, ३.

दध्मसि १. २२, १-४३; ३.

३३, १; ५. २१, १; ८.

१, २१; १४. २, ६५;
६६.

दधे १८. ३, ६३; १६. २६,
१.

दधे १२. १, ३७; २०. ५, ७.

दन्ताः ४. ३, ६; ५. १८, ८;
६. ७, ३; ११. ३, ३७;

१६. ६०, १.

दन्तैः ११. ३, ३७२.

दन्तौ ६. १४०, १; ३.

दन्तौ ६. १४०, २; ३.

दभन् ४. ७, ७; ५. २, ४; ६,
२; ८. ३, ६; ६, २५;

१३. २, ५; १७. १, ८;

१६. २७, ५; ६; ४६, २;

२०. २२, २; १०७, ७.

दभन्ति २०. ५६, ३.

दभति ४. २१, ३; ६. २७,
३.

दभायत् ४. १, ७.

दभीतये २०. ३७, ४.

दभ्नुहि १७. ३, ३;

दभ्रम् ८. ४, १०.

दभ्रस्य २०. ५६, २.

दभयन् ५. २०, १.

दभिता २०. ११, १०.

दभूनाः ७. १४, ४; ७३, ६;

१६. ४६, १.

दभ २०. ३५, ६.

दभे-दभे ७. २६, १; २.

दपति-भ्याम् १२. ३, २७.

दपती इति दम्-पती १२.

३, १४; १५; १४. २, ६;

११; ६४; १८. १, ५;

२०. २६, २; ६६; १४.

दपती इति दम्-पती ६.

१२२, ३; १२. ३, ७.

दम्-पते २०. ६३, ११.

दम्भय ७. ६०, १.

दयताम् ८. १, ५.

दयमानः २०. ११, १.

दयसे २०. १२, ४; ५.

दयसे २०. ३६, ६.

दयस्व ८. २, ८.

दयामसि १६. ५७, ५.

दये १६. ७, ११.

दरयन्तः २०. २१, ४.

दता २०. ६४, ३.

ददः २०. ७७, ८.

ददरीति २०. ६०, २.

ददर्षि २०. ३४, १८.

दर्भ १६. ३३, २.

दर्भ १६. २८, २-१०; २६,

१-६; ३०, १-४; ३२,

८.

दर्भः ६. ४३, १; २; ८. ७,

२०; १०. ४, २; ११. ६,

१५; १६. ३०, ५; ३२,

१; ६; १०; ३३, १.

दर्भम् १६. २८, १; ३३, ५.

दर्भेण १६. ३२, २; ७; ३३,

५.

दर्भेषु १०. ४, १३.

दर्माणम् २०. ३५, ५.

दविः ६. ६(१), १७; ११. १,

२४; ३, १६; १२. ३,

३६.

दविम् १७. ४, ११.

दवे ३. १०, ७.

दव्या ४. १४, ७.

दुर्श ७. ८१, ३.

दुर्श ७. ८१, ४.

दुर्शतः ४. १०, ६; ७, ८१,

दृशं तम्—दाताम्:

(४, ८५५)

४; २०. ६२, १७; १०२,
 २; १०५, ५.
 दृशं तम् १८. १, १७.
 दृशं ति ५. २, ७; २०, १०७,
 १०.
 दृशं न् ५. १, ८.
 दृशं यि ४. २०, ६२.
 दृशं यि ४. २०, ६; ६; ११. ६,
 १; १५; २२; २४.
 दृशि २०. ५२, ३; ५७, १६;
 ७७, ८.
 दृविद्युतत् ७. ६२, १; २०.
 १७, ४.
 दृविध्वतः २०. ३१, ४.
 दृवीयः ६. १२६, १; १०. ८,
 ८,
 दृश ५. १५, १; १०; १७, ८;
 २८, ११; ६. ६, १४; ११.
 २, ६; ७, ४; ८, ३; १०;
 १३. ४, ६; २०. २१, ६;
 ६.
 दृश २०. ११७, ३२.
 दृश ५. १४, १०.
 दृश-अङ्गुलम् १६. ६, १.
 दृश-आस्यः ४. ६, १.
 दृश-ऋचेभ्यः १६. २३, ७.
 दृश-ओणिम् २०. ३२, २.
 दृश-ग्वम् २०. ६३, ८.
 दृश-पक्षाम् ६. ३, २१.
 दृश-भिः ७. ४, १; ८. ४,
 १५; ११. २, ३३; २०.
 १३७, ७.
 दृशम् १३. ४, १८.
 दृशम् २०. ६६, २.
 दृश-मास्य १. ११, ६.
 दृश-मास्यः ३. २३, २.
 २२

दृशमीम् ३. ४, ७.
 दृशमे ५. २५, १०; ११; १२;
 १३.
 दृश-वृत्त २. ६, १.
 दृश-वृषः ५. १६, १०.
 दृश-शताः ५. १८, १०.
 दृश-शलात् ८. ७, २८.
 दृश-शाखाभ्याम् ४. १३, ७.
 दृश-शीर्षः ४. ६, १.
 दृशस्य २०. ४६, ३.
 दृशस्यन् २०. ३५, ११.
 दृशस्येत् १८. १, १०.
 दृशोनसिम् १०. ४, १७.
 दृष्टम् ७. ५६, ३.
 दृष्टत् ५. ३०, १५.
 दृष्टम् २०. १७, २; ६८, ६;
 ७३, २.
 दृष्टम् १८. १, २१; २०. ६,
 १; ४६, ४.
 दृष्ट्यम् २०. ६५, २.
 दृष्ट्यति ३. २६, २; ६२; १२.
 ४, २.
 दृष्ट्यवः १८. २, २८.
 दृष्ट्यभ्यः २. १४, ५.
 दृष्ट्यम् २०. २१, ४; ३७, ४.
 दृष्ट्युहा ४. ३२, ३; २०. ४२,
 २; ७८, ३.
 दृष्ट्यन् ५. ३२, ६; ६. ३,
 १७; १८; ११. १, २;
 १२. १, ३७; १६, ४६,
 २; २०. ११, ६; ६; २६,
 ४.
 दृष्ट्यन्-इव १०. ३, ११.
 दृष्ट्यनाम् ३. १०, १२; ६.

८, ५; ७; १०. ६, २०.
 दृष्ट्योः १. ७, १; २०. ३४,
 १०; ६४; ३.
 दृष्ट्या ७. ७३, २; ३७. १४३,
 ६.
 दृष्ट्वा १२; ५, ६२; १६. २६,
 ८.
 दृष्ट्वा १. २८, २२; ३. २, ५;
 ५. २६, ११; ६. ३२, १;
 ७. १०८, २; ८. ३, १८;
 ६. २, ४; १२. ५, ६२;
 १८. ३, ७१.
 दृष्ट्वा १८. २, ४.
 दृष्ट्वतः ६. २०, १; ७. ४४,
 २२.
 दृष्ट्वत् ३. १, ३.
 दृष्ट्वति ४. ३४, २; ६. ५,
 ३१-३६.
 दृष्ट्वत् ४. ३६, १; १२. ५,
 ६१; १३. १, २६.
 दृष्ट्वन् १. २८, १; ६. ३७, २.
 दृष्ट्वन्तु ८. ३, १६.
 दृष्ट्वामसि १३. १, २६.
 दृष्ट्वामि ५. २३, १३.
 दृष्ट्वन्ते १२. ४, ३.
 दृष्ट्वा २. ६, ५; १७, १-७; १८,
 १-५; ३. १२, ५; ५. ३,
 ८; १४. १, ३७; २, १.
 दृष्ट्वायणम् १. ३५, २.
 दृष्ट्वायणाः १. ३५, १.
 दृष्ट्वा १८. १, ४१; ४, ४५.
 दातवे ३. २०, ५.
 दाता ३. २६, ७; ४. ११, ५;
 ११. ३, २५; १६. ४५,
 ३; ४; २०. १०४, ५.
 दाताम् १८. २, १३.

दातारम् ३. २१, ४; ६. ५,
६.

दातुः ६. ५८, १; १८. ४, ४६.

दातुम् ६. १२२, २; १२. ४,
१८.

दातृणाम् ५. २४, ३.

दात्रे ६. ३, १२; ४, १; १०.
६, १३-२४; १०, २७.

दाधार ४. ३५, ३; ६. १७,
२; ३; ४; २०. ६१, ५;
६२, ६.

दाधार ४. २, ७; ११, ११;
५. १, १; १०. ७, ३५;
८, ११; ११. ५, १; १८.
४, ५२.

दाधृषिः २०. १२८, ३.

दान-श्रोकसम् २०. ३५, ५.

दान-कामः ३. २०, ६.

दानम् २०. ११८, २.

दानम् २०. ७८, २.

दानवानाम् ४. २४, २; १०.
६, १०.

दाना २०. ५३, २; ५७, १२.

दानाय ३. २०, ५; ७.

दानाय २०. ५८, २.

दानुना २०. १७, ७.

दानुम् २०. ३४, ११.

दानेन १२. ४, ३२.

दान्ति २०. १२५, २.

दान्तु १२. ३, ३१.

दापयतु ३. २०, ८.

दाम ६. ६३, १.

दामने २०. ४७, २; १३७,
१३.

दामानम् २०. ८६, ८.

दासा ६. १०३, २; ३.

दायादः ५. १८, ६; १४.

दायि २०. ३५, १५.

दारु १०. ४, ३; ४.

दारुणि ६. १२१, २.

दारुणि १६. ६४, ३.

दावने २०. ३५, १०; ६२,
१४; ६४, ७.

दावस्य ७. ४५, २.

दाशराज्ञे २०. १२८, १२.

दाशसि १८. १, ३८.

दाशुषः ४. २४, १.

दाशुषे ७. १७, २; ३; २०, १;
४०, २; ४८, २; ११०,
१; १८. १, ४१; ३, ४३;
४, ४५; १६. ५, १; २०.
३५, ११; ३७, ६; ५१,
२; ६०, ४; ५; ६३, ४;
६६, १; ७१, ४; ५; ६२,
१०.

दाश्वंसम् ७. ४०, २.

दासः ५. ११, ३.

दासम् ४. ३२, १; २०, ११,
१; ३४, ४; ३७, २; १२६,
१६.

दास्य १२. ५, ५२.

दास्यति १२. ५, २७.

दासस्य ७. ६०, १.

दासाः ४. ६, ८; ५. ११, ६.

दासानि २०. ३६, १०.

दासाय ५. २, २; २०. १०७,
५.

दासी ५. १३, ८; १२. ३,
१३; ४, ६.

दासीम् ५. २२, ६.

दास्यन ६. ७१, ३.

दास्यन्तम् २०. ६७, ३.

दिक् ३. २७, १-६.

दिक्-भ्यः ४. ४०, ८; १०.
५, २८; १३. ४, ३४.

दिज्जु ३. २१, ७; ४. १४, ६;
३६, ७२; ५. ११, ८; ६;
१८. १, ४६; १६. ८,
१; ४६, ५.

दिक्-संशितः १०. ५, २८.

दिग्धा ५. १८, १५.

दितिः ११. ३, ४; १५. ६,
२०; १८, ४.

दिनेः ७. ७, १; १५. ६, २१.

दित्सन्ति १२. ४, २; १२; १३;
१६.

दित्सन्तः ५. ७, ६.

दित्ससि २०. २७, ४.

दित्स्यम् २०. २७, २.

द्विदिङ्हि ७. ४६, १.

द्विदेवं ५. २६, २.

द्विदेश १२. २, ५५.

द्विदेश १४. २, १३.

द्विद्वत् २. २, ४.

द्विद्युम् १. २, ३; २०. ८३,
१.

द्विधिषेय २०. ८२, १.

द्विधृत २०. ६७, २.

दिप्स ५. १४, १.

दिप्सत् ४. ३६, २.

दिप्सतः ४. ३६, २; ३.

दिप्सति ४. ३६, २; ५. १४,
२; ७. १०८, १; ८. ४,
१०; ११; ६, ८.

दिप्सन्तम् ५. १४, १.

दिप्सन्ति १०. ३, १६; १६.
४६, ७; ६५, १.

द्विस्तुति न. ४, २०.

द्विस्तुति न. ४, २०.

द्विस्तुति ४. ३६, १.

द्विवः ४. २०, २; ३४, ४; ११.
७, १४; १३. ३, २१;
१६. २७, ३; २०. १४३,
२.

द्विवः १. ११, २; २. ५, २;
७, ३; ४. १, ४; १४, २;
३; १५, १०; १६, ४;
२७, ४; ५. ६, ३; १३,
१; २४, ११; २५, १; २८,
६; ६. ३७, २; ५२, १;
८६, १; १००, ३; १२४,
१; १२५, २; ७. ६, १;
२१, १; २६, ८; ५५, १;
७३, १; ४; १०७, १; ८.
४, ४; ५; १६; ६, १२;
७, २०; ६. १, १; २,
२१; ४, २१; ६, १०; १२;
१०. ५, २७; ७, ३; ६,
५; १०, ३२; ११. २, ४;
२७; ५, १०; १२. १, २०;
२, १२; ३; २६; ५, ७३;
१३. २, ३६; ३७; ४१;
४, १; ३३; १६. ७, ६;
१७. १, १०; १८. १, २;
१८; ६१; २, ३५; ३, ६५;
४, ५८; १६. ३, १; १६,
२; २७, ३; १५; ३२, ४;
३५, ४; ४४, ५; ४७,
१; २०. १, २; २८, ३;
३५, ६; ३६, ४; ६२, ७;
६४, १; २; ३; ७०, ५;
६; ७७, ३; ६१, २; १२७,
३; १४३, ५; ६.

द्विवः १६. ४७, ५; २०. ६७,
४.

द्विवः-द्विवः ७. १५, ३.

द्विवम् २. ३४, ५; ३. २१,
७; ४. १४, ३; २०, १;
६; २७, ४; ४. ३४, ५;
३५, ३; ५. १६, १; ६.
२२, १; ७. ६७, ४; ८.
५, ७; ६. ५, २६; १०,
२२; १०. २, ८; १८; ५,
२७; ७, ३२; ४४; ८,
३६; ६, ३; १०; ११; २५;
११. ५, १; ८; ६, ६,
१०; १२. २, १७; ३,
२५; १३. १, ८; १६;
२४; २५; २६; ३४; ४५;
५२; २, ४; ५; ८; २५;
४०; ४१; ३, ६; १३; १६;
१४. २, ६६; १५. ४,
१७; १०, ११; १७. १,
८; १८. २, ७; ६; ३, ६४;
४, १४; १६. २२, २१;
२३, ३०; ३२, ६; ५३,
५; ६५, ११.

द्विवम्-द्विव २०. १२८, ५.

द्विवा ५. ७, ३; २६, ६; ३०,
१०; ६. २३, १; १२८,
४; ७. १०१, १; ८. ३,
१; ४, ११; ५, २२; ११.
२, १६; १६. ७, १०; १६.
१५, ६; ३६, २; ३; ४.

द्विवा ४. ३०, ८; ११. ३, ४०;
१२. १, ६३; १८. १,
१०; १६. १६, ३; ३२,
६.

द्विवा-कुरः ४. १०, ५; १३.

२, ३४; २०. १०७, १३.

द्विवि १. ३०, ३; ३२, १;
३३, ३; २. २, १; २;
३. ७, ४; १७, ७; ४.
१०, ४; ३६, ५; ५. ४,
३; ४; ६. ६६, ३; ७५,
३; ८०, २; ३; ६५, १;
२; ७. ६७, ८; ६. १,
२०; ६ (६), ६; १०,
३; ११. ६, १३; ७, २३
-२७; १०, २; ८; १०;
१२. ३, ५०; १३. १, ३६;
४४; २, १; १३; ३०; ३,
१६; २३; १४. १, १;
११; १५. १३, ६; १७. १,
१२; १८. २, ५०; ४,
५६; ८६; १६. ६, ३; ७,
१; ८, १; २७, ११; ३२,
३; ७; ३६, ६; ७; २०.
२५, ६; २६, ४; २७, ५;
३०, ४; ३८, ६; ४७, ६;
१०; ६६, ६; ७०, ६;
१३६, २.

द्विवि-द्विव ६. ६३, ३; ७.
२६, ७.

द्विवि-चराः १६. ६, ७.

द्विवि-अतः ११. ७, २३-२७,

द्विवि-सत्-भ्यः १६. ४, ८०.

द्विवि-सर्वः १०. ६, १२; ११.
६, १२.

द्विवे १. ३२, ४; ५. ६, १; ५;
६. १०, ३; २०, २; १६.
११, ६; २०. ६२, १७;
१०५, ५.

द्विवे-द्विवे ७. ७१, १; ८. ३,
२२; २०. ६१, ३; ८२, २;

८७, २; १००, २; १३७,
 ६.
 दिवे-दिवे २०. १३५, १०.
 दिव्य २. २, १.
 दिव्यः २. २, १; ७. ४१, २;
 ८. १, ११; ९. १०, २८;
 १०. ५, २०; १३. २, ६;
 २०. १२१, २.
 दिव्यम् ४. १४, ६; ७. १८,
 १; २६, १; १८. १, ३२;
 २०, ३०, २.
 दिव्यस्य ४. २०, ३; ६. ८०,
 १; ३; ७. १८, १; २०.
 १७, १२; ३६, ६; ८७,
 ७.
 दिव्या ६. १४२, १; १६. ४६,
 ८.
 दिव्याः ४. ८, ४; ५; ६;
 ७. ८६, १; ८. २, १४;
 ७, ३; २४; ९. ५, १४;
 १०. ५, ४६; ६, ६; ११.
 २, २४; ५, २१; ६, ८;
 १६. १, १; १६. ११, २;
 ४.
 दिव्यात् ८. ४, २३.
 दिव्यानाम् १६. २, ४.
 दिव्यानि २०. ३६, ८.
 दिव्याम् ११. २, १६.
 दिव्ये ७. ८२, ६.
 दिव्ये इति ५. १२, ६.
 दिव्येन २. ६, १; ११. २,
 २६; २०. १७, ७.
 दिव्येषु ७. ६८, १.
 दिशः ४. ८, ४; ३६, ८; ५.
 २१, ६; २८, २; ६. ८८,

३; ८. ५, १३; ८, ५;
 २२; ६, १५; ९. २, २१;
 ५, २०; ३७; १०. २, २८;
 ५, २८; ३८; ६, ६; ७,
 ३४; ८, ३५; ६, १०;
 ११. ६, ६; १३. १, ३८;
 २, २; ४१; ३, ६; १६;
 ४, ३४; १५. ६, २२;
 १८. ४, ६; ७; १६. ६,
 ८; २०, २; ४५, ३; ४;
 ५४, १.
 दिशः ४. ४०, १-७; ५. १०,
 १-६; ६. ६८; ३२; ६.
 ३, २५-३०; १५. ४, १;
 ३; ४; ६; ७; ६; १०;
 १२; १३; १५; १६; १८;
 ५, १; २; ४-१३; १८.
 ३, २५; २६; २७; २८;
 १६. १७, २-१०; १८,
 १-१०.
 दिशः-दिशः ४. १५, ८; ६.
 ३, ३१; १०. ३, १०;
 १८. ४, ६; १६. ३५, ४.
 दिशतु १२. १, ४०.
 दिशन्ता ५. १२. ७.
 दिशम् १२. ३, ८; १५. २,
 १; ६; १५; २१; ६, १;
 ४; ७; १०; १३; १६; १६;
 १४, १; ३; ५; ७; ६;
 १७.
 दिशम्-दिशम् ३. ३१, ४.
 दिशाम् ४. ४०, ८; ५. १०,
 ७; १२. ३, ६; १०; १३.
 २, २.
 दिशि ३. २६, १-६; ४.
 १४, ७; ८; ११. २,

१२; १४; २७; १५. २,
 ४; १२; १८; २४; १८.
 ३, ३०-३५.
 दिशे १२. ३, ५५-६०.
 दिष्टः ५. ३०, १७.
 दिष्टम् १२. ३, ५५-६०.
 दिष्टात् १०. ३, १६.
 दिष्टानः ८. ३, ६.
 दीक्षया १२. ५, ३; १६. ४३,
 १-८.
 दीक्षा ११. ७, ८; १२. १,
 १; १५. १६, ५.
 दीक्षाः ८. ६, १७.
 दीक्षाभिः ८. ५, १५,
 दीक्षाम् ६. ६ (१), ४; १४.
 २, ५२; १६. ४०, ३; ४१;
 १.
 दीक्षितः १०. १०, १२; १७;
 ११. ५, ६.
 दीक्ष्यत् १४. १, ३७.
 दीक्ष्यत् ३. ८, ३.
 दीक्ष्यति १८. ४, ८८.
 दीक्ष्यन्ते १८. ३, ७३.
 दीदिहि ७. ७८, २,
 दीदिहि २. ६, १; ४; ७.
 ७४, ४; ८४, १; १२. २,
 १८.
 दीर्घतम् २०. १०२, ३.
 दीर्घति १०. १०, २८.
 दीर्घाथाम् २. १२, ५.
 दीर्घिम २०. ५८, १.
 दीर्घीयाः ८. १, ८.
 दीर्घ्यः ८. १, ६.
 दीर्घ्यतः १८. ३, २१.

दीर्घानि:—दुःनामा.

(४, ८५६)

दीर्घानि: १८. १, १.
 दीर्घाना: २. ३४, ३; १८.
 २, ४७; २०. ८८, १;
 ६१, २.
 दीर्घ्यु: १४. १, ४६.
 दीने २०. १६, ८.
 दीपय: २०. ३६, ८.
 दीपयामसि १२. २, ५.
 दीप्यते १०. ७, २; ४.
 दीय १६. १३, ८.
 दीयते १२. ४, ३.
 दीयमान: ६. ५, ६; १०.
 दीर्घ-आयु: १४. २, २; ६३.
 दीर्घ: २०. ५, ४.
 दीर्घ-तमा: २०. १४०, ५.
 दीर्घम् १. ३५, २; २. १३,
 २; ३. ८, ३; ६. ७८,
 ३; ७. ३२, १; ३३, १;
 ८१, २; १०३, १; ८.
 २, ११; ११. १, ३४;
 १२. १, ६२; १३. २,
 ३७; १४. १, २४; ४७;
 २, ३६; ७५; १८. २,
 ३; १६. २४, ४.
 दीर्घ-श्रमश्रु: ११. ५, ६.
 दीर्घ-श्रवस: २०. ७३, ४.
 दीर्घाम् १४. १, ४६.
 दीर्घाय ६. ३६, १; २०. ३८,
 ६; ४७, ६; ७०, ६.
 दीर्घायु-त्वार्य १. २२, २;
 ३५, १; २. ४, १; ३. ५,
 ४; ४. १०, ७; ५. २८,
 १; ६. ६८, २; ११०,
 २; १३३, ५; ८. ५, २१;

१२. २, ६; १४. २, ७५;
 १८. ४, ५३; १६. २८,
 १.
 दीर्घेण १२. २, ३२; ५५.
 दु: ६. १११, ४२.
 दुः-अर्मण्य: १६. २, १.
 दुः-आधर्षा १२. ५, १७.
 दुः-आध्य: २०. ७६, २.
 दुः-इतम् ६. १२१, १; ७.
 ८३, ४; ८. २, ७; ७, ६;
 ६. २, ३; १०. १, २५;
 ३२; ५, २४; १४. २,
 ६६; ६७.
 दुः-इतस्य ३. ११, ३, २०.
 ६६, ८.
 दुः-इतां ५. ६, ५; ६. २८,
 १; १२६, २; १२. २,
 २८; २०. ३१, ३.
 दुः-इतात् २. १०, ६; ५. ६,
 ८; ६. ४५, ३; ७. ६४,
 १; ८. ७, ७; १६; १०.
 ५, २२; १२. २, ४७; ४८.
 दुः-इतानि ५. २८, ८; ६.
 ५३, २; ११०, २; ११२,
 ३; ११३, २; ७. ६३, १;
 १३. १, ५८; १, ३४;
 १६. ३३, ३; २०. १०७,
 १३.
 दुः-इते २. १२, २.
 दुः-इष्टि: २. ३५, १.
 दुः-एवा: ८. ३, १६; २४;
 १२. २, २६.
 दुः-एवाम् ७. ५०, ७; २०.
 १७, १०; ८६, १०; ६४,
 १०.

दुः-एवास: ५. २, ४; २०.
 १०७, ७.
 दुः-कृत: ८. ४, ३; १६. ५६,
 ५.
 दुः-कृतम् ४. २५, ४; ७.
 ६५, २; ११. ८, २०;
 १२. २, ४०; १४. २,
 ६६.
 दुः-कृतात् ४. ६, ६.
 दुः-कृतानि ६. ४५, २.
 दुः-कृते ८. ४, ७; १०. १,
 २३; २०. १२६, ५.
 दुः-गन्धीन् ८. ६, १२.
 दुः-गम् १४. २, ११.
 दुः-गहानि २०. ३६, ७.
 दुः-गा १२. ४, २३.
 दुः-गा: १०. १, १६.
 दुः-गान् १३. २, ५.
 दुः-गानि ७. ६३, १; ६.
 ५, ६; १६. ५०, २.
 दुः-चरितम् ६. ५, ३.
 दुः-चित: ५. ३१, ५.
 दुः-चितम् ११. १०, २६;
 १२. ५, ६१.
 दुः-च्यवन: १६. १३, ७; ३२,
 १.
 दुः-च्यवनेन १६. १३, ३.
 दुः-दाशे १. १३, १.
 दुः-धरम् २०. १५, १.
 दुः-धाम् ५. १७, ६.
 दुः-ध्य: २०. ६४, ७.
 दुः-नशम् ५. ११, ६.
 दुः-नामा ८. ६, १; ४; २०.
 ६६, ११, १२.

दुःनामानः ११. १०, २.
 दुःनाम्नः १६. ६, ७; १६.
 ३६, ४; ५.
 दुःनाम्नाम् २. २५, २.
 दुःनाम्नीः ४. १७, ५; ७. २३,
 १.
 दुःनाम्नीनाम् १६. ३६, ६.
 दुःपदा २६. २१, ६.
 दुःप्रतिग्रहा १०. १०, २८.
 दुःभगाम् १०. १, १०.
 दुःभूतम् ३. ७, ७; ८. २,
 १२; १०. १, १३; ३२.
 दुःमतिम् १४. २, ६.
 दुःमत्यै ६. १३, २.
 दुःमन्तु १८. १, ३४.
 दुःयुजः २०. ६४, ७.
 दुःवाचः ४. १७, ५; ७. २३,
 १.
 दुःशंसः ६. ६, २; १६. ४७,
 ६.
 दुःस्तुतिः २०. २१, १.
 दुःस्वप्न्यम् ६. ४६, ३; १२१,
 १; ७. ८३, ४; ६. २, २;
 ३; १०. ५, २४; १२. ५,
 ३२; १३. १, ५८; १६.
 १, ११; ७, ८; १६. ४५,
 २; ५७, १; २२; ४; ५.
 दुःस्वप्न्यात् ४. ६, ६; ६.
 ४६, २; ७. १००, १;
 १६. ५, ३-७; १०; ६,
 २.
 दुःहार्दः २. ७, ५; ४. ६, ६;
 १०. ६, १; १४. २, २६;
 १६. २८, २; ५; ७; ६;

१०; २६, १-६; ३२, ४;
 ६; ३६, ३; ४५, १; २.
 दुःहार्दम् ८. ३, २५.
 दुःहार्दान् १६. २८, ६; ८.
 दुःहितान् ४. ३६, ६.
 दुःकृणायुः ७. ७७, २.
 दुःकृणायून् १८. १, ६.
 दुग्धम् १०, ६, ३१; १०,
 ३०; ३१; १४. २, १४;
 २०. ८७, १.
 दुग्धस्य ७. ७३, ५.
 दुग्धा ८. ६, १; १२. ५, २३.
 दुघानाम् २०. ६१, ६.
 दुच्छुना ५. १६, ८; ६. ४, ३.
 दुच्छुनाम् ५. १७, ४; ६.
 १२६, २; १२. १, ४६.
 दुच्छुने १०. १, २४.
 दुद्धौ ८. ६, २४; १८. १,
 १८.
 दुद्धौ २०. २२, ६; ६२, ३.
 दुद्रोहिथ ५. ३०, ३.
 दुर्धिता २०. ७७, ४.
 दुधुवे १२. १, ५७.
 दुधूर्षति २०. १२८, २.
 दुध्र २०. ३६, ४.
 दुध्रः २०. ३४, १८.
 दुनोति ५. १७, ४; १८, ४.
 दुन्दुमयः ५. २१, ६.
 दुन्दुभिः ५. २०, १; ६. १२६,
 १; १२. १, ४१.
 दुन्दुभिम् २०. १३२, ६;
 १३५, १.

दुन्दुभिना ५. ३१, ७.
 दुन्दुमे ५. २०, ४; ६१, १०;
 २१, १२; ४; ५; ६; ६.
 १२६, १; २.
 दुन्दुभेः ५. २०, ५.
 दुन्दुभौ ५. ३१, ७; ६. ३८,
 ४.
 दुन्वन्ति ६. ४, १८.
 दुरः २०. ७६, ३.
 दुरः २०. २१, २३.
 दुरदक्षा १२. ४, ४; १६.
 दुरश्रवसे २०. १३५, ११.
 दुरस्यतः ४. ३६, ४; १०.
 ३, १.
 दुरस्यति १. २६, २.
 दुरस्यतीः ७. ११४, २.
 दुरस्यवः ५. ३, २.
 दुरस्यात् ४. ३६, १.
 दुराहा ८. ८, २४.
 दुरोणे ५. २, ६; १२, १; ७.
 १७, ३; ७३, ६; २०.
 ३३, ३; १०७, ६.
 दुरोषासः २०. ११६, १.
 दुर्नामि-चातनः १६. ३६, १.
 दुर्नामि-चातनम् ८. ६, ३.
 दुर्नामि-हा १६. ३६, ३.
 दुर्निहित-पुषिणीम् ११. ६,
 १५.
 दुर्यान् १४. २, ५.
 दुर्वः २०. ६८, ५; १२२, ३.
 दुर्व्यै ३. ६, ५.
 दुस्तनो इति दुःतनो ४. ७,
 ३.

वुस्तरम् द. ४, १; २०. २०,
३; ५७, ६; ६७, २२.

वुस्तरा २०. ६४, ६.

वुस्तराः २०. ५१, ४.

वुहन्ति प. १७, १७; १८. ४,
३०.

वुहाताम् १२. १, ३६.

वुहाते इति ६. १, ७.

वुहाथाम् ४. २२, ४; १३.
१, ५.

वुहानिः ४. ११, २.

वुहानम् ११. १, ३४; १८.
४, ३६.

वुहाना ७. ७६, ३; ८. ६,
२४.

वुहानाः ३. १६, ७; ४. २१,
१; १८. ४, ३४; ३६.

वुहाम् ७. ७३, ८; ६. १०,
५.

वुहाम् ३. १०, १; १७, ४;
४. ३६, २; ४; ६; ८; ६.
४, २१; १२. १, ७; ६;
४५.

वुहितः १६. ४७, ५.

वुहितरः २. १४, १.

वुहितरौ ७. १२, १.

वुहिता ३. १०, १३; ५. १३,
८; ६. १००, ३; १३३,
४; ६. १, ४; २, ५; १४.
२, ६०.

वुहिता-इव १०. १, २५.

वुहितुः ६. १०, १२.

वुहिजे ३. ३१, ५; ६. १३७,
१; १८. १, ५३.

वुहे ४. ११, १२; १०. १०,
२७; १८. १, ३२.

वुहे ४. ११, ४; ६. ६१, ३;

८. १० (२), ६; ६. ५,

२४; १०. ६, ६-१७; १२.

४, १८; ३५; ३६; ३६;

२०. २७, ३.

वुह्यते ७. ७३, १.

वुह्यन्ते ७. ७३, २.

वुह्यमाना १२. ५, २३.

वुह्यताम् ७. ८२, ६; ८. ७,
१२; १०. ६, १३-२४;

१२. १, १६.

वुह्यते ६. ६, ५; १८. ४,
२६.

वुह्याम् ३. २०, ६.

वुह्याम् ८. ७, २७; १८. ४,
४; ५.

वुह्ये २०. १४२, ४.

वुह्ये १०. १०, ३२.

वुह्यतः १. ७, ६; ३. १, २; २,
१; ४, ३; ४. १३, ३; ५.
१२, १; ६. २७, १; १८.

२, २७; ४, ६५.

वुह्यतम् १८. ३, ६६; २०.
१०१; १.

वुह्याः ८. ८, १०.

वुह्याय ५. १७, ३.

वुह्यतौ ५. ३०, ६; ६. २६, २;
१८. २, १३.

वुह्याः २. ३१, ३.

वुह्यके १०. ४, ६.

वुह्यतः ४. ३८, ५.

वुह्यम् ३. २५, ४; ६. ५६, ३;
६७, २; ७. ४२, १; ८.
७, १४; ६. २, १७; १८;

५, ७; ११; १२. १, २६;

२, २५; १२. २, ४; ७;
८; १४; १६. ४४, १०;
५६, ६; २०. ७४, ६;
८६, ७.

वुह्यात् ५. १८, ६; ६. १२६,
१; ७. ४५, १; १२. २,
१४; १६. ५२, ३.

वुह्ये ३. ३, २; २३, १; ४.
२८, २; १०. ८, १५;

वुह्ये-अन्ता ४. १६, ३.

वुह्ये-गव्युती इति वुह्ये-गव्युती
४. २८, ३.

वुह्याः ६. १०६, १.

वुह्यानि ८. ६, ११.

वुह्याभिः ४. ७, ६.

वुह्याः ३. ६, ४.

वुह्याणि ४. ६, २.

वुह्यत ६. १००, २.

वुह्यन् ४. २६, ७; ८. ५, २.

वुह्यन्ति ८. ४, ६.

वुह्यिष्यामि ३. ६, ५.

वुह्याः २. ११, १.

वुह्याः १६. ६, ८.

वुह्या १. २३, ४.

वुह्याः २. ११, १.

वुह्ये ६. १३६, २; १३७, ३.

वुह्याय ६. १३६, १.

वुह्यत १६. ५८, ४.

वुह्यतु ६. ६६, ३.

वुह्यन्तम् १२. २, ६.

वुह्य-स्थिरः ११. ७, ४.

वुह्यात् १२. ३, २४.

वुह्यतानि २०. २८, ३; ३६,
५.

दृक्ष'से २०. ४०, १; ७०, ३.
 दृढः ११. ७, ४.
 दृढम् ५. ३०, १.
 दृढा ६. ३, १०.
 दृढाः ११. ५, ११.
 दृढान् ६. ३, ३.
 दृष्टिम् ७. १८, १.
 दृष्टी २०. १३१, २०.
 दृष्टेः-इव ६. १८, ३.
 दृशन् ८. ४, २४.
 दृश्ये १८. २, १३; ४६; १६.
 १०, ५.
 दृशे १. ६, ३; २. १, ५; ७.
 २२, १; ११. ६, १; १५;
 २२; २४; १२. २, १८;
 १३. २, १६; २०; २०.
 ४७, १३; १७.
 दृशे-इव ४. ३७, ११.
 दृशेम १. ३१, ४.
 दृश्यते ७. १०१, १.
 दृश्यते २०. १३५, ५.
 दृश्यते १०. ८, २५.
 दृषत् २. ३१, १.
 दृषदा २. ३१, १; ५. ३३,
 ८.
 दृषदा-इव ८. ४, २२.
 दृष्टः ५. २३, ७.
 दृष्टम् २. ३१, २.
 दृष्टान् ५. २३, ६; ८, ८,
 १५.
 दृष्ट्वा ४. ३६, ६; १२. ३,
 २६.
 दृष्ट्वा २०. २६, ६; १२४, २.
 दृष्ट्वाः २०. ३५, १४.
 दृष्ट्वानि २०. २८, ३; ३६, ४.
 दृदिश्यते २०. १३६, ४.
 दृष्टम् ६. ५, ७.
 दृष्टो १२. ४, १०.

देव ५. २७, १०; ६. ३, ३;
 ७६, ३; ६६, ३; १२५,
 ३; २०. १३०, १०.
 देव १. ७, १; १८, २; २०,
 १; २५, २; ३; २. २, १;
 ३. २०, ५; ४. ३६, १०;
 ६. १६, ३; ५१, ३; १२३,
 ५; ७. ११, १; १४, ३;
 ६७, ३; ११. २, ३१;
 १३. १, ३२; ५८, २,
 २३; ३०; १८. ३, ४२;
 ४, ६५; ८८; २०. ४७,
 २०; ५८, ३; ४; ११८,
 २.

देव-असुराः ६. १४१, ३.
 देव-असुरेभ्यः ४. १०, ५.
 देव-आज्जन १६. ४४, ६.
 देव-इषितात् ८. ७, २.
 देव-एनुसात् ६. १११, ३;
 १०. १, १२.

देवः १. १८, ३; २८, १; २६
 ३; ३१, ३; २. ३४, ३;
 ४; ३. १३, ४; १६, ५;
 २१, ३; ४; २४, २; ४.
 १, ७; २, ६; ३, १; २०
 ४; ३२, २; ५. ३, ६;
 ११, ११; १२, १; १०;
 २५, ४; २६, २; २७,
 २२; ३; २८, ११; ६. १,
 ३; ५८, १; ६१, १; ८५
 १; ८८, २; ६२, ३;
 १३३, १; ७. १४, ४;
 ६३, १; १०६, ५, ११०,
 ३; ८. ३, १६; १०(५);
 ३; ६. ३, १४; १०. २,
 ५; ८; १३; १४; ३, ५;

८; ११; ८, २४; २८;
 ११. ६, ४; ७; ६, ४;
 २५; १२. २, ८; १२; ५,
 २१; १३. १, २०; २४;
 ४०; २, ८; २६; ३०;
 ३, १५; १४. १, ४६; २,
 २४; ३६; १५. ५, ६; १८
 १, ५; २६; ३०; ३६; २,
 ५५; ४, ३१; ४८; १६.
 १०, ६; १०; ११, ३;
 २६, ४; ३१, ८; ३३, १;
 ३६, १; ५३, २; ५४, ५;
 ५६, १; २०. ३, ४; २७,
 ४; ३४, १; ३६, ११;
 ६७, ३; ६०, ३; ६५, १;
 १२७, ७.

देव-इव १७. ८, ४२.
 देव-क्रामः ७. ५०, ६; २०.
 ८६, ६; ६६, ३.
 देव-किल्बिषात् ६. ६६, ३;
 ७. ११२, २; ८. ७, २८
 देव-कृतम् ५. १६, १०.
 देव-कृता ५. ७, ३; १४,
 ७; १२. ४, ११.
 देव-कृताः १२. १, ४३;
 १६. ३५, ५.
 देव-कृते १४. १, ६३.
 देव-कृते इति देव-कृते
 ६. १३८, ४.
 देव-कोशः १०. २, २७.
 देव-गोपा ७. २०, ५; १६.
 ११, ३.
 देव-गोपाः २०. २१, ११.
 देव-जन् ११. ६, ५; १०, ५.
 देव-जनाः ११. ६, २; २६.
 देव-जनाः ६. १६, १; ६३,

देव-जनेभ्यः—देवरः.

(४, ८६३)

१; ६. ७, १६; ११. ५,
२; १५. ३, १०.
देव-जनेभ्यः ६. ५६, १; २.
देव-जाः ६. ६, १६; १०.
६, ३१.
देव-जाता २. ७, १.
देव-जातिन १६. ३२, ७.
देव-जाभिः २०. १२, २.
देव-जामीनाम् ६. ४६, २;
१६. ५, ८; ८, ६.
देव-जूतम् ७. ८५, १.
देव-जूते ३. १८, २.
देव-जूतैः ५. १८, ८.
देवता ४. १, ५; ७. ८२, १;
१०. ८, २५; ३१; २०.
५०, २; १४३, २.
देवताः १०. ६, १७; २६;
११. ७, ४; ८, १६; ३०;
३२; १२. ३, १६; ३५;
१५. ६, २२; १६. ४,
४; २७, १०.
देव-तातये २०. ११८, ३.
देवतानाम् ४. १४, ५; १५.
६, २३.
देवताभिः ८. ८, २१; ११.
१, २२; १२. ३, ३३.
देवताभ्यः १२. ३, ३८; ४६
४, ३२.
देवताम् ३. २२, ३; ४. १४;
१; १५. १३, १३३.
देवतायाम् १५. १३, १४.
देवतायै १५. १३, १३.
देवतास्तु ६. ११६, २; ७.
७८, २; ११. ४, २०.
देवते इति १२. ३, १२.

२३

देवत्याः १. २२, ३.
देव-त्रा ५. १२, २; ७. ५३,
७; १२. ४, ४०; १८. ३,
४७; २०. १२, ५; १२७,
६.
देव-त्वम् २०. ६३, २; १२३,
१; १२४, ५.
देवने २०. १७, ५.
देवपत्नी इति देव-पत्नी ६.
११८, ३.
देव-पत्नीः ७. ४६, २; २०.
३५, ८.
देव-पानः ७. ७३, ३; १८.
३, ५३.
देव-पीयुः ५. १८, ५; १३;
१६. ५७, ५.
देव-पीयुम् ४. ३५, ७; १२.
५, १५; १६. ५७, ४.
देव-पीयून् ५. १८, ८; ११.
२, २३; १२. १, ३७.
देव-पीयोः १२. ५, ६०;
६५.
देवपुत्रे इति देव-पुत्रे १८.
१, २५.
देव-पुराः ५. ८, ६; २८, ६;
१०; ११. १०, १७.
देव-पुराम् १४. १, ६४.
देव-प्रसूतेन ६. १००, २.
देव-बन्धुम् ४. १, ७; ५.
११, ११; १८, १३; ७.
२, १.
देवम् ४. २५, ७; ५. १२,
६; ६. १, १; १४२, २;
७. १४, १; ५३, ७; ६.
६, १८; १०. ८, २२;

११. ६, ३; १२. २, ३३;
१३. २, १६; ३, १६;
४, १५-२२; २४; १५.
५, ८; १८. १, ५४; १६.
२४, १; २०. ४७, १३;
६५, १; १२६, १.
देव-मणिः ८. ५, २०.
देव-मनुष्याः ८. १०(२), २.
देव-यजनः १०. ५, १५-
२०.
देव-यजनम् ६. ६ (१), ३;
१२. २, ४३.
देव-यजनाः १०. ५, २१.
देव-यन्तः ७. २७, १; १८.
१, ४१; ३, २२; ३८, ४,
४५; २०. ७७, २; १०७,
१५; १४२, ४; १४३, ५.
देव-यन्तम् १२. ३, १८.
देव-यानः ११. १, २०; १८.
४, १४.
देव-यानम् ८. १० (३), ६;
१५. १२, ५; ६.
देव-यानाः ३. १५, २; ६.
५५, १; ११७, ३.
देव-यानात् १२. २, २१.
देव-यानान् ११. १, २६;
१५. ११, ३.
देव-याने १२. ३, ३.
देव-यानैः २. ३४, ५; ६. ४,
३; १२. २, १०; ४१; १८.
४, २; १६. २७, ६.
देव-युम् ४. २१, २; २०.
२५, २.
देव-यूनाम् ८. ६, १३.
देवयोः ४. २५, ७.
देवरः १४. १, ३६.

देव-रथस्य म. म. २२.

देव-वधेभ्यः द. १३, १.

देव-वन्दैः १८. ३, ४७.

देव-वर्म १६. ३०, ३.

देव-वाहनः २०. १०२, २.

देव-वीतये ७. ५८, १.

देव-वीती २०. ३७, ४.

देव-सर्वनः प. ४, १, द.

६५, १, १६, ३६, ६.

देव-सेनाः प. २१, १२.

देव-सेनानाम् १६. १३, ६.

देवस्य २. ३६, २; ४. १, ६;

६. २३, ३; १३३, १; ७.

१७, २; २५, २; ७०, ४;

७४, १; ६. ४, १३; १०,

६; १०. ५, १४; म. ३२;

१२. १, २०; १३. ३,

१-२५; १८. १, ३२;

१६. ६, १६; ४६, १;

५१, २.

देव-हितम् ७. ६७, २; १६.

१२, १; २०. ६३, ३;

१२४, ६.

देव-हृतयः २०. ६४, ६.

देव-हृतिः प. ३, ५; १२.

२, २२.

देव-हृतिम् म. १० (१), ५.

देव-हृतिषु प. ७, ४.

देव-हृती २०. ६०, २.

देव-हृत्याम् प. २४, १-१७.

देव-हेडनम् द. ११४, १.

देव-हेतिः ११, २, १२; १२.

५, २६.

देव-हेतिम् १०. १, २३;

११. २, १६.

देव-हेत्याः म. १, १२.

देवा द. ३, ३.

देवा २०. १४०, १.

देवाः ४. १३, १२; द. २७,

१, १५३, २; ३२, १३०,

१, २; ३; १३१, १, २;

७. ६७, ७; १६. ७०, १;

२०. १३५, १०.

देवाः १. ६, १; ११, २;

१३, ४; १८, २; १६, ४;

३०, ४; ३३, ३; ३५, ४;

२. १, ५; ६, ४२; १०,

म. १३, ४; ५; २६, ५;

३५, ५; ३. ३, २; ५, ४,

४; ५, ३२; म. ४; १०,

२; १२; १६, ५; ६; २२,

१; ३; २६, १-६; ३०,

४; ३१, १; ७; ४. २, १;

म. २; ११, ६; १३, ४;

१४, १; १६, १; १६, ४;

२३, ६२; ३०, २; ३५,

७; ३६, ५; प. ३, ३;

४; ५; ६; ४, ३; ४; म.

३; १२, ११; १७, ६;

१०; १८, १; १६, १२;

१३; १४; २१, ७; २५, ६;

२७, १२; द. ३०, १;

४७, २; ६१, १; ६४, १;

म. ५, १; ६५, १; २;

१००, १; २; १०६, १;

३; १११, ५; ११२, १;

११३, १२; ३; १३२, १;

२; ७. ५, १२; ३; ४; ५;

६, १; १६, १; १७, ३२;

२४, १; ३५, १; ७०, २;

७६, १; २; म. १, ६; म. ६,

२; १०६, २; ११८, १;

म. १, २; ७; २, २१; २७;

३, १४; ५, ५; ६; १०;

१४; १६; म. १३; १०

(१), ५; १० (२), ७;

१० (३), ५; १० (५), १;

४; ६. १, ५; १५; २, ७२;

१३; १७; १८; १६; ४,

१५; १८; २०; ५, ११;

६ (५), २; १०, १८; १७.

२, ४; ३, २; ५; ५, ४७;

५०; ६, १६; ३२; ७,

१३; २३; २४; २५; २७;

३८; ३६; म. ३४; ३५;

४०; ६, ६; १२; १०, ५;

२६; ३४; ११. १, २;

१०; ३३; ३७; २, २८; ३,

२१; ४, ११; ५, १; २;

३; ५; म. १६; २३; २४;

६, १२; १३; १८; २२;

७, २३-२६; २७; म. ३;

१०; १३; १७; १८;

२६; ३१; १०, ११; १२;

१४; १५; २७; १२. १,

५; ७; ५३; २, १७; ३,

३२; ३८; ५०; ४, २०;

२२; २४; २८; ४१; ४२;

४६; ५०; १३. १, ७;

१३; २५; १५; २; १३; १,

१२; २३; २४; ४, १३;

५, म. १४. १, १५; ३२;

५०; २, १०; ३२; ५३-

५८; १५. २, २; ३, १;

६, २२; १७, म. १६. ६;

११; १८. १, ३१; ३२;

दे॒वा—दे॒वी.

(४, ८६५)

३५; ३६; ४७; ३, १०;
 ११; २२; २४; ५३; ६८;
 ४, २; २५; १६. ४, ४; ६,
 १०; ११; १५; ६, ११;
 १२; १४; ११, २;
 १६, १०; २०, ३; ४; २४,
 २; २७, ६; ७; ३०, २;
 ३४, ६; ३५, १; २; ४१,
 १; ४६, ४; ५६, ४; ५८,
 ५; ६; २०. १८, ३; ४६,
 १; ६२, ७; ६३, १; २२;
 ६२, ८; १२४, ४; ५२;
 १२८, १; ५; १३५, ४.

दे॒वाः १. ६, २; ३०, १, २;
 ३; ३१, २; २. १२, २;
 २८, ५; २६, १; ३४, २;
 ३. ६, १; १५, ५; ६; ४.
 १३, १; १८, २; २७,
 ६; ५. ८, ३; १४, ३;
 १७, ५; ६. ७, ३; २७,
 २; ३; ५५, १; ५६, १;
 ६५, २; ७१, ३; ६३, ३;
 ११४, १; ३; ११५, १;
 ११८, ३; ७. ६७, ४;
 ८. १, १८; ४, ११; ६.
 ४, ७; १०. ७, २३; १६.
 २७, ११; १२; १३; ५६,
 २; ७२, १.

दे॒वाः-इव ३. ६, ४; ३०, ७;
 ६. ८०, २.

दे॒वाच्या २०. ६७, १.

दे॒वान् ३. ४, ६; १०, ११;
 १५, ५; २२, ८; ४. २१,
 ३; ३४, ३; ५. १२, १;
 ७. ५, ३; ३८; ३; ६७,
 ३; १०६, ७; ८. ४, १४;

८, १५; ६, २४; १०(३),
 ५; १०(५), १; १०. २,
 २२; २३; ७, २७; ८;
 १८; ६, ११; १०, ६;
 ११. १, ४; ५, २; ६,
 १६; २०; ६, २४; १०,
 ६; १२. ३, ५३; ४, १०;
 ३१; ५३; १३. १, ४०;
 २, ३८; ३, १४; १४. २,
 २५; १५. १४, १६; १८.
 १, ३०; ३३; ४७; १६.
 ५६, ३; ६३, १; २०. १३,
 ४; ३४, १; ६७, ५; १०१,
 ३; १२८, ४; १३७, ४.

दे॒वानाम् १. १०, १; ३५, २;
 २. १, ३; २८, २; ३४, २;
 ३. ५, १; १०, ७; १६,
 ४; ४. १, ३; १०, ७; ११,
 २; १३, ३; १४, ५; ३०,
 ३; ३६, ६; ५. ५, १; ७,
 ४; १२, ३; १०; ११; १७,
 ५; २८, ११; ३०, १७; ६.
 ४६, १; ४७, २; ८५, २;
 ८६, ३; १००, ३; १०८,
 २; ७. ५, २; ७, १; ४६,
 १; ४७, २; ४६, १; ५३,
 १; ६७, २; १११, १; ८.
 २, ६; १०(१), ५; ६. ३,
 ७; ४, ५; ७, ६; ६, ६;
 १०. २, ३१; ४, १; ११.

१, ५; ५, २३; १२. २,
 ४४; ४, २; १२; १७;
 २१; २६; १३. १, २७; २,
 १५; २०; २५; ३४; ३५;
 ३, १६; २१; १४. १,
 ३३; २, ६६; १५. १, ५;

२, ४; ६, २३; १६. ७,
 २; १७. १, २; १८. १,
 ६; २५; २, ५; ३, ४;
 ७; २३; २५-३५; ५३;
 ४, १६-२४; १६. ३, ४;
 १०, ३; ११, ५; १३,
 १; २७, ६; ३३, ४; ४६,
 ४; ५७, ३; ५८, ६; ५६,
 ३; २०. ३४, १६; ४७,
 १७; ५८, ४; ६७, १;
 १०७, १३; १४; १२८,
 १६.

दे॒वाय ४. २, १-८; ५. ११,
 ११.

दे॒वांसः ६. ११४, ११.

दे॒वांसः ३. २२, २; ७. २८,
 १; २०. २५, २; ११०, ३;
 १३६, ४; १३७, ५.

दे॒वांसः १. २६, १; २. १२,
 ५; ५. ३, ६; ८. ५, २१;
 १२. ३, ३७; १६. १३,
 ११; २७, ११; १२; १३.

दे॒वि १. १३, ४; २. २५, ४; ४.
 ४, ६; २०, १; २; ७. २०,
 २; ६; ४६, १; ३; ६८,
 १; ६. ३, ७; १०. ६.
 ७; २५; १२. १, ५५; ३,
 ११; ५, ६४; ६५; १८. १,
 ४३; ४, ४७; २०. १४२,
 १; २.

दे॒वी २. २५, १; ३. १२, ५;
 २०, ३; ५. २३, १; २५,
 ६; ६. ३, २; ३८, १; २;
 ३; ४; ६३, १; ८६, ३;
 ६४, ३; १३६, १; ७.
 ४६, ३; ६. ४, ३; १०.

५, ४३; ८, ३०; ९, ११;
१०, १२; ११. १, ८;
१२. १, ४४; १६. ६, ५१;
१८. १, २६; २, २५;
१९. ७, ४; ९, ३; २०.
१३२, ११.

देवी इति ४. २६, २.

देवीः ५. १२, ५.

देवीः १. ४, ३; ६, १; २.
१०, ४; ३. ४, २; २०,
३; ५. १२, ८; १७, १;
२७, ७; ६. २३, १;
२४, १; ५१, २; ५६, २;
७. ४६, २; ८२, ६; ११२,
१; ९. ५, १५; १०. ५,
७; ९, २७; ११. ६, ११;
२२; १४. १, ४५; २, ९;
४५; १८. ४, ३६; २०.
११, ८; २५, २.

देवीः २. २, ४; ३. १३, ३;
५. ३, ७; ७. ४६, १; ७५,
२; १०. ५, ८-१४; १६.
१, १३.

देवीम् ३. ८, २; १५, ३; ७.
४७, १; १३. २, ५; १९.
४, २; २०. १०७, १५.

देवीषु ४. २, ६.

देवुकामा १४. २, १७; १८.

देवेषु १४. १, ४४.

देवे ८. ४, १८.

देवेन १. १, २.

देवेभिः ३. १२, ५; ४.
१४, २; ७. ७५, २; २०.
६, ३.

देवेभ्यः ४. २३, २; ५. ४,
७; ८, १; १२, ४; ५;
२७, ११; ७. ३८, २;
८१, २; ८४, २; ८. १०
(३), ६; ९. ३, २५-३१;
१०. ६, ५; २२-२८;
११. ५, १६; ८, ३; १०;
१२. १, २२; २, ८; ५०;
१४. १, २४; २, ४६;
१५. २, ३; १८. २, ५३;
५४; ३, ४१; ४, ५१;
१९. ५४, ४; २०. ११,
७; ८७, ३.

देवेषु ३. १७, १; ४. २८, ५;
५. २७, २; ६. २१, २;
२८, २; ५८, २; ७. २०,
१; ५४, १; ७३, ३; ८७,
८; १०३, १; ९. ४, ११;
५, १७; ६(६), १०२; १०.
३, २५; १२. ४, ६; १२;
१३. १, ६०; १५. १२,
६; १०; १८. १, २६; १९.
३, ३; ६२, १; २०. ८०,
२; १२६, १२.

देवैः २. ४, ४; १६, ४; ३.
१७, ९; ४. ९, १; ५.
१७, ११; २६, २; ३; ६.
१२, २; १२६, १; ७.
८०, १; ९८, १; १२. १,
५५; ३, १५; ४, २४;
१४. २, ४१; १८. ३,
२८; ४८; ४, १०; १९.
१७, १०; ४०, १; २०.
६१, १२.

देवौ ३. २६, ६.

देव्या २०. २१, ५; १४२, १.

देव्याः १४. १, ४७; ६३.

देव्याम् ६. १३६, १.

देवोप-सर्गाः १९. ९, ९.

देव्याय १४. १, १४.

देव्या १०. १०, १७; ११. ४,
१२.

देहि ५. ११, ९.

देहि ६. १०७, १-४; १४.
१, २५; १८. ३, ७०;
१९. ४८, २; ५०, ७.

देहिनः १९. २०, ३.

देव २०. १३५, १; ३; ५१.

देवः ७. ११, १.

देवः ४. १६, ८.

देव-जनीः १०. २, २२; २३.

देवम् ५. ४, १०.

देवाः ५. २७, ९.

देवाः ५. ३, ५; ११. १, १६;
२५.

देवात् ४. २६, ७.

देवानाम् ११. १, २३.

देवाय १६. २, ६.

देवीः १. १६, २; ३. २३, ६;
५. ३, ६; ६. ६८, २; ९.
४, ९; ११. ४, १६.

देवीः १२. ३, ३२.

देवीनाम् २०. ११, २.

देवीम् ५. २०, ४; ६. ६१,
२; ७. ६, ३.

देव्यम् ६. ४, १; ७. १०५, १.

देव्यस्य २. २, २.

देव्या ५. १२, ७; ८. १, ३.

वैयाः द. ४१, ३; म. ६, २१;
 १७. १, २८.
 वैयायाः प. २६, ११; म. ३,
 १८.
 वैया द. ५१, ३.
 वैयान २. १२, ४; ४. २७,
 ६; ७. ५२, २; ७८, २;
 म. ३, २१; १६. २७, ६.
 दोषधारः १०. १०, ५.
 दोषतः १२. १, ५८; २०.
 १०७, ३.
 दोषशि-श्रिषम् द. ६, २.
 दोषणी इति ६. ७, ७, १०.
 ६, १६.
 दोषण्यम् २. ३३, २; २०.
 ६६, १८.
 दोषसः १६. ४, ६.
 दोषा १६. ७, ६.
 दोषो इति द. १, १.
 दोषसा १८. १, १८.
 दोहः ४. ११, ४.
 दोहत् ७. ७३, ७; ६. १०,
 ४.
 दोहते २०. ७, ३.
 दोहम् प. १७, १७.
 दोहाः ४. ११, ६.
 दोहेन २०. ८६, २.
 दौःजीवित्यम् ४. १७, ५;
 ७. २३, १.
 दौःभाग्यैः १४. २, २८.
 दौःस्वर्ण्यम् ४. १७, ५; ७.
 २३, १.
 दौर्व २०. १३१, २०.
 द्यु द. १०३, २; ३; १०४, २.
 द्युताम् द. १०४, ३.

द्युति १२. ५, १५.
 द्युतु ११. १०, ६.
 द्युवि द. ४६, ३; १२. २,
 १८; १८. ४, ८८.
 द्युवि-द्युवि २०. ५७, १; ६८,
 १.
 द्याम् १. २, ४; ४. १, ४; २,
 ७; ११, १; १४, ४; १६,
 ४; ३०, ७; द. ६०, ३;
 ६१, २; ३; १२०, १;
 १२६, १; ७. १, २; ६, ३;
 ६. ३, १५; ५, १५; ६,
 १३; ११. १, ३७; १३. १,
 ४३; ४५; २, २२; ४५;
 ३, २६; १८. १, ६१; २,
 ४७; ४६; ३, ५; ४, ५;
 ६; २८; १६. ६, २; २०.
 ११, ८; १६, ११; २६,
 ४; ३४, २; १३; ४७, १६;
 ६१, १०; ६३, ६.
 द्याम्सि द. १०४, १.
 द्यामि द. १०३, २.
 द्याम्-इव द. १२, १; ६६, ३;
 ७. ६५, १; १८. ३, २५-
 ३५.
 द्यावः २०. ८१, १; ६२, १६;
 २०; १४३, ८.
 द्यावा १८. १, २६; २०. ३४,
 १४; ३५, १४.
 द्यावापृथिवी इति २. १, ४;
 १०, १-८; १२, १; २६,
 ५, ३. ४, ५; १५, २; ३१,
 ४; ४. ६, २; २६, ७; ३०,
 ५; ५. १२, ६; २३, १;
 २४, ३; द. ३, १; म. ३;
 ५५, १; ५८, १; ६२, १;

६४, ३; ७. ३०, १; ८२,
 ४; ५; ११२, १; म. २,
 १४; ५, ३; ६; १८; म,
 २१; २२; ६. २, २०; ४,
 १०; १०. ७, ३५; म. ३६;
 ११. ३, २; ७, २; १३.
 १, ५; ६२; ७; ३७; २,
 २६; ३५; ३, १; ४; १४.
 १, ५४; २, ४५; १८. १,
 २७; २८; १६. १०, ५;
 १४, १; १५, ५; २०, ४;
 ४६, १; ५८, ३; २०. ३५,
 म; १०७, १४; १३७, १०.
 द्यावापृथिवी इति २. १२,
 ५; १६, २; ४. २६, २-
 ६; ५. १४, १२.
 द्यावापृथिवी इति २. २६,
 ४; ४. २२, ४; २६, १;
 द. ४०, १; २०. ६१, १२.
 द्यावापृथिवीः म. ६, १६.
 द्यावापृथिवीभ्याम् प. ६, ७;
 ७. १०२, १; ११. ३,
 ३३; १६. १७, ५.
 द्यावापृथिवी-वन्तम् १६.
 १८, ५.
 द्यावापृथिव्योः द. ५८, २;
 १६. ८, २६.
 द्यावाभूमी इति १८. १, ३१.
 द्युक्षम् २०. ६, २; ४६, ५;
 ६२, ११.
 द्युक्षार्य २०. ६५, २.
 द्युक्षसः २०. ६, ५.
 द्युता १८. ४, ५८.
 द्युत्तम् ४. १२, २; १२. ३,
 २२.
 द्युभिः द. ११, ३; २०. २१,
 ४; ४८, ६.

(४, ८६८)

द्यु-मत्-द्राणिम्

द्यु-मत् २. ३५, ४; ५. २०,
६; ६. १, १.

द्यु-मत्तः १८. १, ५७.

द्यु-मत्-तम् २०. २१, ३.

द्यु-मत्-तमा ५. २७, १.

द्यु-मन्तः ४. १, ५; १८. १,
५७.

द्यु-मन्तम् ४. ३१, ४; १८.
४, ८८.

द्यु-मान् १८. १, २४; ५७.

द्यु-मन् ६. ३५, ६; २०. २०,
३; ५७, ६; ७१, १४;
७६, ४.

द्यु-मन् २०. ८६, ६.

द्यु-मन्नि ७. ७३, १०; २०.
६, ७; ६७, २.

द्यु-मन् २०. १४२, ५.

द्यु-मन्निम् २०. २०, १; ५७,
४.

द्यु-मन् २०. ३०, ३; ४७, २;
१३७, १३.

द्यु-मन् २०. १६, ७.

द्यु-मन् १३. २, ३४; २०.
१०७, १३.

द्यु-राज्यः १६. २०, ३.

द्यु-वम् ७. ५०, ६.

द्यु-वे ७. १०६, ५.

द्यु-ते १२. ३, ४६.

द्यु-न् १८. १, २४.

द्युः २०. १६, ४; १२३, २.

द्यु-तताम् ४. १५, ८.

द्यु-तते १३. ४, ४१.

द्यु-तनिम् १८. १, ३५.

द्युः २. १२, ६; १५, १; २८,

४; ३. ६, १; २३, ६;

४. २, ४; १६, ३; ३६,

६; ५. २८, २; ६. ३,

१; ४, ३; ६, ३; ४४,

१, ५३, १; ७७, १; ८८,

१; १००, १; १२०, २;

७. ६, १; ८. १, १२;

१७; ७, २; ६, ६; ८. १,

२१; ५, २०; ७, २; १०,

१२; १०. २, २४; २५;

७, ३; १२; ८, २;

१०, ४; ३०; ११. २,

१०; ३, ११; २०; ५,

४; १२. १, ५३; ३,

२०; १३. ४, ३३; १४.

१, १; ६; १०; २, ७१;

१५. ४, १८; १०, ६;

१७, ३; १८. १, ५;

२, ४८; १६. ६, ८; ६,

१; १४; ५४, २; २०.

१५, ५; ७१, १; ७६,

६; ६१, ५; ६४, ८; १०६,

२.

द्युः-इव ६. १४२, २.

द्युः-संशितः १०. ५, २७.

द्युः ११. ७, ३.

द्युः १८. ४, २८; २०.
१३७, ७; ६.

द्युः १८. १, २१; ४,
२८; २०. १३७, ८.

द्युः-वान् १८. ४, १८.

द्युः २०. ५, ५.

द्युः ३. ४, ५; ४. १२, ६;

७. ७३, ६; १०. १,

२१; ६, ८; १८. २,

२१; २३; ३, ८.

द्युः १०. ७, ६.

द्युः ८. ८, ११.

द्युः २०. ७७, १.

द्युः ८, ८, १३-१८.

द्युः २०. ६७, ७.

द्युः १६. ३, २; २०.

२, ४.

द्युः २०. २१, १.

द्युः २. २६, ३; ४.

३६, ४; ५. ३, ५; ७.

५, २; १७, ४; ६७, १;

१०. १, १०; ५, ३७-

४१; १२. ५, ८; १३.

१, ३४; १४. २, ७४;

१८. ३, १; १६. ७१;

१; २०. ६१, ७.

द्युः १२. १, ४५.

द्युः ३०, ६; ७. ७८,

२; १८. ३, १४.

द्युः ७. ८२, १; १६.

३१, ६; ११.

द्युः ४७, १; १२. १,

६.

द्युः २, १५; १०. ६;

२६.

द्युः १८. १, २५.

द्युः १६. ४७, ३.

द्युः ११. ५, १.

द्युः २, २; १२. ३,

३०; २०. २१, ११.

द्युः ६. ६६, १.

द्युः १२६, १; २१

१४. २, ११.

द्युः १३. ३, १.

द्राहि—द्विषः.

(४, ८६६)

द्राहि ६. १४, १.
 दुग्धम् १. १०, २.
 दु-धनः ७. २८, १.
 दुतः ६. ५१, १.
 दुपदात्-इव ६. ११५, २;
 ३.
 दु-पदे ६. ६१, १; ८४, ४;
 १६. ४७, ८; ५०, १.
 दुवयः ५. २०, २.
 दुवये ११. १, १२.
 दुहः २. १०, १-८; ७. ७७,
 २; १०३, १; ८. ४, ७;
 १६. ६, १०; १६. १५,
 २.
 दुहः ६. ५, ४.
 दुहन् २०. ६६, ८.
 दुहुः ८. ४, ७; १७.
 दुहणः ४. २६, १; २.
 दुहणे २०. ३६, ८.
 द्रोघ-वाचः ८. ४. १४.
 द्रोण-कलशाः ६. ६ (१),
 १७.
 द्रोण-साचम् २०. ६४, ४.
 द्रुया १६. ७, ५.
 द्रुयानि ४. २४, ७.
 द्रुयविनः ६. २८, १.
 द्रुयोः २०. २५, ३.
 द्रा ६. ६, २०; १८. २, ३३;
 २०. ७२, २; ७५, १.
 द्राः ६. १, २२.
 द्रादश ४. ११, ११; १०. ८,
 ४; ११. ६, २२.
 द्रादश-अरः ४. ३५, ४.

द्रादश-अरम् ६. ६, १३.
 द्रादश-अहः ११. ७. १२.
 द्रादश-अहेन ६. ६ (४), ८.
 द्रादश-आकृतिम् ६. ६, १२.
 द्रादश-अचेम्यः १६. २३, ६.
 द्रादश-धा ६. ११३, ३.
 द्राभ्याम् ७. ४, १; २०. ६१,
 ४.
 द्रारः ५. २७, ७.
 द्रारः ५. १२, ५.
 द्रारम् १४. १, ६३.
 द्वि-आस्या ५. १६, ७.
 द्वि-आस्यात् ८. ६, २२.
 द्विः ५. २, ३; २०. २१, ६;
 १०७, ६.
 द्वि-क्षत् ३. ३०, ३.
 द्वि-क्षत् १२. १, १८; २३,
 २४; २५; २, ३३.
 द्वि-जानाम् १६. ७२, १.
 द्वि-जिह्वा ५. १६, ७.
 द्विता २०. ६२, १७; १०५, ५.
 द्वितीयः १३. ४, १६; १५.
 १५, ४; १६, २; १७, २.
 द्वितीयम् १०. ८, १७.
 द्वितीया ११. ५, ४.
 द्वितीयाम् ११. १, २४; १५.
 १३, ३.
 द्वितीयै ६. ४७, २; ६. १,
 १२.
 द्वितीयैभ्यः १६. २२, ६.
 द्वि-पक्षा ६. ३, २१.
 द्वि-पदः १३. २, २७; ३, २५.

द्वि-पदः ३. २१, २; ४. २,
 १; २८, १-६; ६. २८,
 ३; १०. २, ६; ११. २,
 १; १२. १, १५; १३. १,
 २; ३, २४.
 द्वि-पदा ६. १०, २; १६.
 १५, २.
 द्वि-पदाम् २. ३४, १; ८. २,
 ४; २३; १३. ३, २५;
 १६. ३१, ५.
 द्वि-पदी ६. १०, २१; १०.
 १, २४; १३. १, ४२.
 द्वि-पदे ६. २७. १; ११. २,
 २८; १४. २, ४०.
 द्वि-पात् १३. २, २७२; ३,
 २५.
 द्वि-पात् ६. १०७, १-४; ८.
 ८, १४; १६. ३१, ४;
 ३४, १.
 द्वि-पादः १२. १, ५१.
 द्वि-बर्ह-ज्मा २०. ६०, १.
 द्वि-बर्ह-सः २०. ६१, ५; ६२,
 ६.
 द्वि-भाग-धनम् १२. २, ३५.
 द्वि-मूर्धा ८. १० (४), ३.
 द्वि-राजे ५. २०, ६.
 द्वि-राजः ११. ७, १०.
 द्वि-र्वश २०. १२७, २.
 द्वि-वृषः ५. १६, २.
 द्विषः २. ६, ५; ४. ३३, ७;
 ६. ३४, १; २; ३; ४; ५;
 १६. १५, १; २०. ४३, १;
 ४६, २; ६७, १२; ६२,
 ११.
 द्विषः ५. ६, ४.

(४, ८७०)

द्विषतः—धन-सैः.

द्विषतः १. २१, ४; ६. ६(२),
७; १०. ६, १; ६-१७;
१६; २०; २१; ३१; ११.
१; ६; १२; २१; १६-२८,
१; २; ३; ५-१०; २६, १;
२; ३; ४; ५; ६; ७; ८;
६; ३०, ४.

द्विषताम् ५. २०, १२; २८,
१०; ७. १३, १; २; १६.
२८, ४.

द्विषते ५. ३, ७; ६. ४६, ३;
७. ११५, १; १६. ६, ३;
१७. १, ६; २४; १६.
५७, २; ३; ५.

द्विषन् १. १६, ४; ६. ६(२),
७; १७. १, ६.

द्विषन्तम् ४. ३५, ७; १५. १,
८; १६. ७, ६.

द्विषन्ति ६. ५; २; १०. ३, ३;
१२. ३, ४६.

द्विषेभिः १६. ५६, ६.

द्विष्टः ५. १८, ५

द्विष्मः २. ११, ३; १६, १-
५; २०, १-५; २१, १-५;
२२, १-५; २३, १-५; ३.
२७, १-६; ६. २६, ३;
७. ३१, १; ८१, ५; १०.
५, १५-२१; २५-३५;
१२. २, ३; १६. १, ५;
६, ४; ७, ५.

द्विष्मः १६. १४, १.

द्विषिर्निः १६. ४६, ४.

द्विषिर्नम् ४. ८, ७.

द्विषिर्नि ६. ३८, २.

द्वे इति ५. १५, २; ६. ८३,

२; ८. २, २१; १३. २,
२८; ४२; १६. १, १६.
द्वेषः ६. ४, २; ७. ६१, १;
६२, १; ८. ४, २; २०.
१२५, ६; ७.

द्वेषत् १२. १, १४.

द्वेषांसि १. २, २; ५. २२,
१; १८. २, ४७.

द्वेषाम ६. २६, ३.

द्वेषि २. ११, ३; १६, १-५;
२०, १-५, २१, १-५;
२२, १-५; २३, १-५;
३. २७, १-६; ७. ३१,
१; ८१, ५; १०. ५, १५-
२१; २५-३५; १२. २, ३;
१६. १, ५; ६, ४; ७, ५.

द्वेष्टु १६. ७, ५२.

द्वेष्टि ३. ६, १; ३; ५.

द्वेष्ट्यः ६. २, १४.

द्वेष्ट्या १. २०, १; ५. ३, ६.

द्वौ ४. १३, ३; १६, २; ५.
२३, ४५; ८. १०(२),
६३; १०. ४, ८; १५. ३,
४२; १६. ४७, ५; २०.
१३२, १५; १३३, १; २;
३.

ध

धत्त २. १३, २; १६. २४, ४.

धत्त २. १३, २; ३४, २; ६.
४१, ३; ५५, १; ७. ८२,
१६७, ३; १०. ५, ७-
१४; १६. १, १३; १८.
३, ४३; ४; १; १६. २४,
४; २०. ३४, ५.

धत्तन् १६. २४, १; २; ३.

धत्तम् २०. १७, १२; ८७, ७.

धत्तम् २. २६, ३; ५२ ४.
२५, ५; २८, ६; ५. ६,
८; ७. ४२, २; ८. २, ७;
४, २; ११. ६, ३; २०.
१३६, २.

धत्ताम् ३. २२, ४; ४. ३१,
७; ३६, १०; ५. २५, ३;
१४. १, ५३.

धत्ते १०. ७, ४२.

धत्ते ८. १० (५), १२.

धत्स्व ८. ३, २; १४. १,
४५; २, ३६; १६. २४,
५.

धन-कामः ५. १८, ५.

धन-कम्या १२. २, ५१.

धन-जित् ५. ३, ११.

धन-दाः ३. १५, १; २०, १.

धन-पतिः ४. २२, ३; १०.
१०, ११.

धन-पते २. ३६; ५. २३, २.

धन-पालः १६. ३५, २.

धनम् १. १५, ३; ४; २. ७,
४; ३. १५, २; ५; ६; ४.
३१, ७; ३८, ३; ५. १६,
६; ६. ८१, १; ७. ५०,
६; १०६, ५; ८. ५, १६;
११. १, २८; १२. १,
४०; १६. ३१, १०; २०.
५६, ३; ८६; ५; ६.

धनम्-जयः ३. १४, २; ७.
५०, ८.

धनम्-जयम् २०. २४, ६.

धन-सर्निः १८. ४, ३८.

धन-साः १६. ३१, ८; २०.
१०, १; ५६, १.

धन-सातये १६. ३१, ८.

धन-सैः २०. ६१, ७.

धनस्य—धाता.

(४, ८७१)

धनस्य १६. ३१, ६; २०.
 ११८, ३.
 धना ५. २, ४; १६. ४६, ७;
 २०. ५६, ३; १०७, ७.
 धना-इव १६. ३५, ३.
 धनात् १२. २, ३७.
 धनानाम् ४. २२, ३; १०. ८,
 ४२; २०. ११, ११; ६८,
 ६.
 धनानि ७. ५०, ७; २०. १७,
 १०; २७, ६; ८६, १०;
 ६४, १०.
 धनुः ४. ६, ६; ३०, ५; ७.
 ५०, ६; ११. २, १२; १५.
 १, ६; १८. २, ६०.
 धनुः-इव ४. ४, ६; ६. १०१,
 २.
 धनुः-भिः ५. १८, ८.
 धनुः १. १७, ४.
 धने २०. ६, ३; ४६, ६.
 धनेन ३. १५. ५२; ६२, ७.
 ३३, १; ८१, ३; ४; ५;
 १४. १, ४८; २, ७०;
 १८. ३, १७; १६. ३१, ७;
 ६४, २.
 धनैः ५. ४, २.
 धन्व ६. ३४, ३; २०. ६२६,
 २०.
 धन्व ५. ६, ४.
 धन्व-इव ७. ११७, १.
 धन्वान् ५. १३, १.
 धन्वानः १. ३, ६; ४. ६, ४;
 ५. १३, ६; ६. ४२, १.
 धन्वनाम् ११. ६, १.
 धन्वनि ४. ४, ७; ६. १००,
 २; १०१, ३.

धन्वत्याः १. ६, ४; १६. २,
 २.
 धन्व-सु २०. ६५, २; ३; ४.
 धन्वानि ७. ४१, १.
 धमत्तु ३. २, २२.
 धमनयः ६. ६०, २.
 धमनिः १. १७, २.
 धमनि-भ्यः २. ३३, ६; २०.
 ६६, २२.
 धमनीः ७. ३५, २.
 धमनीनाम् १. १७, ३.
 धमन्तः १८. ३, २२.
 धमन्तम् २०. १३७, ७.
 धमन्तु ८. १, १६.
 धमन्तः २०. १२६, १०.
 धमाति १८. २, २८.
 धमामि ८. २, ४.
 धयेत् ६. ५, २३.
 धरिष्ये ५. ११, ३.
 धरुणः १६. ३, ३; १८. ३,
 २६; ३६.
 धरुणम् ४. ३२, ७; ७. ३,
 १.
 धरुणाय ६. ६२, ३.
 धरुणी ३. १२, ३.
 धरुणी १२. ३, २४; ३५; २०.
 ६४, ४.
 धरुणेषु ५. १, ६.
 धर्ता ५. १, १; १२. ३, ३५;
 १६. ३, ३; १८. ३, २६;
 ३६; १६. १०, ३.
 धर्तारः १८. १, २.
 धर्तारि ७. ७३, ४.
 धर्म ६. ५१, ३.
 धर्मः ११. ७, १७; १२. ५,
 ७.

धर्म-कृते २०. ६२, ५. —
 धर्मणा ६. १३२, १-५; ७.
 २५, २; १२. १, १७;
 १४. १, ५१; २०. ६४,
 १; ५.
 धर्मणि ७. १४, ४.
 धर्म-धृतः १. २५, १.
 धर्मत् २०. ४६, ३.
 धर्म-भिः १८. २, ७.
 धर्मम् १८. ३, १.
 धर्माणि ५. १, २; ७. ५, १;
 २५, ५; ६. १०, २५.
 ध्रुवः २०. १३१, १४.
 ध्रुवात् ५. ५, ५.
 ध्राः ५. २५, ७; ६. १२६, २;
 ७. ११५, ३; २०. ३५,
 १६; १३७, १०.
 ध्राक् ८. १, ११.
 ध्राणिकाम् २०. १३६, १०.
 ध्रात् २. १०, ३; २६, १; ६.
 ६१, १; १३. १, २०;
 १६. ६, २; १८. ३, ६३;
 ४, ५४; २०. १६, १२.
 ध्रातः ५. २५, १०. —
 ध्रातः ७. १८, १; १२. २,
 २५.
 ध्रातवे ६. ८१, २; ७. १०,
 १.
 ध्राता ३. ८, २; ४. १२, २;
 ५. ३, ६; २५, ४; ५; ६.
 ६०, ३१; ७. १७, १-४;
 १६, १; ८. १, १५; ५,
 १८; ६. ७, १०; २१;
 १०. ६, २१; ११. ८,
 ५; ८; ६; ८, २५; १३.
 ४, ३; १४. १, ३३; २४;
 ५६; २, १३; १८. ३,

२६; ४, ४८; १६. ६,
१२; १०, ३; २०, १; ३१,
३.

धातारम् ११. ६, ३.

धातु १८. १, १६; २०. १२,
६.

धातुः २. ३६, २; ११. ८, ६.

धातु-भिः २०. ६०, २.

धात्रे ३. १०, १०; १६. ३७,
४.

धानाः १८. ३, ६६; ४, २६;
३२; ३४; ४३.

धान्यम् २. २६, ५; ३. २४,
२; ४; ६. ११७, २; ८.
२, १६; १६. ३१, ५;
१०.

धान्यस्य २. २६, ३.

धन्याय ६. ५०, १.

धान्ये ५. २६, ७.

धापयाथः १२. ३, ५१.

धापयामः १६. ४६, ४.

धाम् ७. ६७, ८.

धाम १. १३, ३; २. १, २; ४.

१, ६; ६. ३१, ३; ७. ८,

१; २६, २; ८. ६, १०;

२५; २६; १५. २, ४;

१२; १८; २४; ६, ३; ६;

६; १२; १५; १८; २१;

२३; २६; ८, ३; ६, ३;

१८, १, ७; २०. १५, ३;

४८, ६; ४६, ३; ६१, २.

धामान् ४. २५, ७.

धामानि-धामानि १२. १, ५२.

धाम-भिः १६. ४७, १; २०.
१६, ४.

धाम-सः ६. ६, १६.

धाम-सु ६. ३६, १; ७. ६८,
१.

धामानि २. १, ३; १४, ६;

७. ८३, १.

धाम्नः-धाम्नः ७. ८३, २.

धाम्ना ५. २७, ८; १०. ५,
७-१४.

धायि ५. ३०, १५; १८. १,

३; २०. ३०, ४; ६०, २;

६२, १७; १०५, ५.

धारय्य ६. ७६, १, ८१, २;

८७, २; ७. ८३, ३; १६.

३१, १२.

धारय्यतम् ६. ५४, २.

धारय्यतात् ३. ५, २.

धारय्यताम् ६. ८८, २.

धारय्यति १०. ७, ११.

धारय्यतु ८. ६, २०.

धारय्यन् ७. २५, ५.

धारय्यन्तम् ७. ७८, २; ८. ४,

१३.

धारय्यन्ति १२. १, १; १८.

३, ५२.

धारय्यन्तु १. ६, १९;

धारय्यन्ते १८. १, ३५.

धारय्यन्ते १८. १, ३२.

धारया ७. ५०, ६; १०. ६,

२५.

धारयातै १८. ३, २६.

धारयामः १. ३५, ३.

धारयामि ८. २, ३; १४. १,

४७.

धाराः ४. ११, ४; ३४, ५;

६; ७; ७. ८२, १; १०७,

१; ६. ५, १५; १२. १,

४५; ३, ४१.

धाराभिः २०. ६, ६.

धारम् ३. १२, ८.

धारुः-इव ४. १८, २.

धाव १२. ५, ५५; २०, ७६,
३.

धावतु ४. ३७, १२; ५. ८,

४; २१, १०; ६. २, १;

८. ८, १६; ११. १०, १;

१६. २७, ६.

धावतात् १६. २५, १.

धावति २०. १३६, १०; ११;

१४.

धावतु ६. ६२, ३.

धावतु ३. १८, ६; ५. २०,

५; १६. ४७, ७; २०. ४,

२.

धावते १८. ४, ८६.

धावथ ६. ६६, २.

धावन्तम् २०. १२८, १५.

धावन्तम् २०. १३६, ११.

धावन्ति ५. २१, ५.

धावन्ति १०. ६, १४.

धावन्ति १२. ५, १८.

धावन्ती १२. ५, १८.

धावन्तु ५. २१, २.

धावन्तु ११. ६, १४.

धावमानम् १२. २, ३७.

धावसि ६. १३१, ३; २०.

१२६, २.

धावात् १०. ३, ६.

धास्यवे ४. १, २.

धास्युः २. १, ४; ५. १, २

धित-वानम् २०. ६, ३.

धियः ६. २, २५; १६. ४३,

४; २०. ११, ५; ३५, ३

६५, ४.

धियम् ३. १५, ३; १६, ३;

२०. ३५, १६; ८६, ७

६१, १.

धिया २. ५, ४; ६. १६, १; १०. १, ८; १८. १, १८; २०. ३६, ७; ७६, ४; ८४, २; ६७, २; ११३, १.	१०. ८, ४४; ११. ४, २४; १६. ५६, १.	धूम-अन्ती ११. १०, ७.
धिया-यवः २०. ७१, २.	धी-रणासः २०. ११, ८.	धूमः १८. ८, ५६.
धिया-वसुः २०. ३५, १६.	धीर-तरः ५. ११, ४.	धूमः-इव ६. ८६, २.
धिये ६. ४, ३; ४१, १.	धीर-तराः १०. १, १८.	धूम-केतुः १८. १, ३०; १६. ६, १०.
धिषणाम् २. १४, १.	धीरम् १०. ८, ४४; २०. १२६, १६.	धूमम् ६. ७६, २; ८. ८, २; ६. १०, ३५; ११. १, २; १२. ३, ५३.
धिषणा २०. ३१, ५; १०६, १.	धीराः ३. १७, १; ११. ६, २२.	धूम-शिखाः ११. ६, १६.
धिषणे इति २०. ६४, ८; ११३, २.	धीराणाम् २०. १२८, ४.	धूमान् ६. ११६, २.
धिषण्याः २. ३५, १; ७. ६७, १.	धीरासः ६. ४, ८.	धूयताम् १. १४, २.
धिष्व २०. ३६, ६.	धीरी ११. १, १३.	धूर्वन्तम् ८. ३, २१.
धोः १८. १, ५१; २०. ८६, ३.	धीवानः ३. ५, ६.	धूर्वन्तु १. १६, ४.
धीतम् ७. ५६, १; २०. १०, २; ५६, २.	धुक्ते १०. १०, ८२.	धृतः ६. ४, १५.
धीतिः ११. १, ११.	धुक्त्व १०. ६, १२; १८. ४, ६.	धृत-राष्ट्रः ८. १०(५), १५.
धीति-भिः ६. १०, १७.	धुन-इतयः २०. ८८, २.	धृत-व्रतः ७. ८३, १; २०. ५४, २.
धीती ७. १, १; ६. ६, ८.	धुनिम् २०. १७, ४.	धृत-व्रतौ ७. ५८, १.
धीमिः ५. १२, २; २०. ८; १६. ११, २; २०. १२; ४; २५, ७; ३३, २; ६१, ८; १४२, ६.	धुरम् ५. १७, १८.	धृता १२. १, २६.
धीमहि ७. १७, २; ७१, १; ८. ३, २२; २०. ७२, १.	धुरा ६. ६, १६.	धृतम् १२. १, १७; २७.
धीम् २०. १२७, ६.	धुरि ५. १७, १५; ६. ६, ६; १८. १, ६; २०. ७२, १.	धृताः ३. २५, १.
धीयताम् ४. १२, ४; ७. ६६, १.	धुर्यम् ५. १, ४.	धृषत् ७. ७६, ६; २०. १४, २; ५२, ३; ५७, १६; ६२, २.
धीयते २०. ५६, १.	धृवामि ३. ११, ७.	धृषता २०. ३६, ६; ३७, २.
धीयस्व १८. २, २०.	धृतस्य २०. ३३, १.	धृषत्-वर्णम् ७. ७१, १; ८. ३, २२.
धीरः २. ३५, ३; ३. २१, ४; ६. १, ६; ६, २	धूनु ११. २, १६.	धृषाणः ६. ३३, २.
	धूनुते ५. १६, ७; १६. ३६, ४.	धृषितः ६. ३३, २; २०. १३७, ११.
	धूनुष्व १६. ४६, २.	धृषावै ७. ११६, १; १८. १, ३७; २०. ५६, ३.
	धूनुहि ५. २२, ७.	धृष्य २०. ६२, ५.
	धूनोति ६. ४, १३; २०. २; ७३, ५.	धृष्य-ओजसम् २०. ६२, १८.

धृष्णुः प. २६, १०; १८. २,
५८.

धृष्णुना १६. १३, ३.

धृष्णुम् १. १३, ४; २. १४,
१.

धृष्णु-या २०. २१, ७; ५१, २;
८३, २; ६८, २.

धृष्णु-सेनः प. २०, ६.

धृष्ण इति २०. २६, ५; ४७,
११; ६६, १०,

धृष्णो इति २०. ३७, ३; ५२,
३; ५७, १६; ७७, ७;
११२, २.

धेनवः २. ५, ६; ३. १२, ३;
४. ३६, ८; ७. ७३, २;
६. ५, २५; १८. ४, ३३;
३४, २०. ६, १; ३०, २;
४८, १; ४६, ४; ६२, १६;
१०६, २; १२१, १.

धेनीः २०. ११, ३; १७, ६.

धेनीभिः २०. २५, ७; ३३, २.

धेनुः ३. १०, १; ४. ३४, ८;
३६, १; ४, ६; प. १७,
१८; ६. १, २२; २, ५;

५, १०; १२. १, ४५;

३, ४६; १३. १, २७; १८.

४, ३२; २०. २७, ३.

धेनुका ३. २३, ४.

धेनु-भ्यः ६. ५६, १.

धेनुम् ३. १०, २; ७. ७३, ७;

१०४, १; ६. ४, २१; ५,

२६; १०, ४; ११. १, ३४;

१८. २, ३०; ४, ३०.

धेनुम्-इव १३. २, ४६.

धेनू इति ४. २२, ४.

धेनुनाम् ४. २७, ३.

धेनोः ७. १, १.

धेहि १. ६, ३; २. २६, २;

३६, ८; ४. ४, ४; ८; १२,

५; १४, ७; ८; १६, ७;

२२, ३; ३२, ४; प. १४,

४; २५, ३; ८; १०; ११;

१२; १३; ६. १, १; २६,

१; ७६, ३; ८१, २; ८२,

३; १३३, ४; १३६, ५;

७. २०, ४; ५५, १; ७६, ६;

७६, १; ८६, ४; ६६, १; ८.

३, ३; २१; ६, ७; ६. ५,

५; ११. १, २१; २३; ४, ६;

५, २५; १०, ४; १२. १,

१२; १६; ६३; २, ४५;

४६; १३. १, १२; १४. २,

६; १६. ६, ४; १७. १,

६-१६; २४; १८. १, ४२;

४३; २, १२; ३, १; ७१;

४, ११; ४६; ४७; १६. ३,

३; ४, ३; ३१, १२; १३;

३७, २; ५२, १; २; ६४,

४; २०. ५५, ३; ७१, १३;

१४; ८६, ७.

ध्राजिः ६. १०, २६.

ध्राजिम् ६. १८, १.

ध्राज्या ३. १, ५; २, ३.

ध्रियताम् ६. १७, १-४;

१४१, १; ६. १, ११; १२;

१३; १६; १७.

ध्रियस्व १२. ३, ३५.

ध्रुवः ६. ८७, १; २; ८८, १;

३; १६. ४५, ४.

ध्रुवम् ६. ८७, ३; ८८, १; २५;

७. ६४, १; ६७, १२; ६.

१०, ८; १४. १, ४७.

ध्रुवयः १६. १०, ८.

ध्रुवा ३. १२, २; २७, ५; ६.

८८, १; १२. ३, ११;

१८. ४; ५.

ध्रुवा-इव १२. १, ४५.

ध्रुवाः २. २६, ४; ८. ७, ८;

१२. १, २७; १७. १, ३०.

ध्रुवाम् ३. १२, १; १२. १,

११; १७; १५. ६, १; १४,

६.

ध्रुवाय ६. ८८, ३.

ध्रुवायाः ४. ४०, ५; ६; प.

१०, ५; ६, ३, २६; १५.

४, १३; १५; ५, १०;

११; १६. १७, ६; १८, ६.

ध्रुवायाम् ३. २६, ५; ४. १४,

८; १८. ३, ३४.

ध्रुवाये १२. ३, ५६.

ध्रुवासः ६. ८८, १.

ध्रुवे १८. ४, ६.

ध्रुवेया ६. ८७, ३; ७. ६४, १.

ध्रुवेयुः १६. १३, ११.

ध्रुवनयः प. २०, ७.

ध्रुवसौ ६. १०, ७.

ध्रुवङ्गः १२. ४, ८.

ध्रुवङ्गाः ११. ६, ६.

न

न १. ११, ४; २०, ४; २७,

३२; ३२, १; २, ३४, ५;

३५, २; २. ५, २; ३;

१५, १-६; २७, १;

३०, १; ३५, १; ३; ३२,

६; ६, ७; ८, ४; २६, २;

३; ६; ३०, ४; ४. १, ७;

३, ७; ५, २; ६, ३;

७, ३, ५, ६, ८, ७, ६,
 ५^४, ७, ११, ३^३; ५^४,
 १४, ४; १६, ४; १८, ६;
 १६, २; २१, २; ३२; ४^२,
 २२, ५, २५, २, २६, ६,
 ७, २८, ५, ३४, २; ३, ४,
 ३५, १, ४, ३६, ६; ७^४,
 ८, १०, ५, ६, ३; ११, २,
 ३^३; ४^२; १२, ५; १३, ३,
 १०^३; ११^३; १४, ६; १७,
 ३, ५, ६^३; १२-१८^२,
 १८, १, ५, ६, ७; ६; १३,
 १६, १, ४; १०, १५^३, २२,
 ६, २६, ११, ३०, ८, ३१,
 ११; ६, २, २, ८, १, २,
 ३, २६, २, २७, ३; ३२,
 १, ३३, २^३; ४२, ३, ४३,
 ३, ४५, १, ४६, १^३; ४७,
 २, ५०, १, ५६, १^३; ७५,
 २; ३, ७६, ३; ४^३; ६८,
 १, १०६, २; ११४, २, ३,
 ११६, १; ११८, २, १३०,
 ३, ७, ७, १, ६, ३, १८,
 २^३, २६, २; ३७, १, ३८,
 ४^३; ४४, १^३; ५२, ६; ५६,
 ६^३; ८; ७२, २; ७६, ४;
 ८०, ३; ८४, ३; १०१, १,
 ११७, १; ८, १, ६, १०,
 २, १३, २४^३; ३, १८; ४,
 ३, १३^३; ५, १३^३; १६,
 ६, १२, ८, ६, १६; ६, ६,
 २६, १० (६), २, ६, २,
 २^३; १२, १६^३; २४^३; ४,
 १८, ५, ६, २३^३; २७;
 ६(२), ७^४; ६; ६(३), ७;
 ६; ६(६), ४, ६, ७, १०;
 ११^३; १५; १६; ३१^३;

१०, १०, १५, १६; १८;
 २६; २७; १०, १, २६; २,
 ३०^३; ४, ८^३; ७, ८; ३१;
 ३७^३; ४२^३; ४३, ८, ८;
 १४; १६; ३२^३; ४२; ४४^३,
 ११, १, ३३; २, २५^३; ३,
 २४^३; २५, ३०^३; ३,
 ३२^३-४६^३; ५५, ५६; ४,
 १०, २१^३; २५, २६; ८,
 २२; १०, २७; १२, १,
 ३७, २, १; २५; ३६; ३७;
 ३, ४८^३; ४, २; १२; १३;
 १८, १६^३; २७^३; ३२;
 ४३; ४४; ४६; ४६, ५०;
 १३, १, १२; ५६; ५७; २,
 १५^३; ४, ११; १६^३; १७^३,
 १८^३; १६, १७, १, ३, ५,
 १७; १८; २६; ३०; ३२,
 ३३, ५७; २, ८; १५, ५,
 २^३; ३^३; ५^३; ७^३; ६^३,
 ११^३, १३^३; १५^३; १६^३,
 ६, १६, १०, ३^३; १२,
 ३^३; ६, ६^३; ११; १३,
 १२, १६, ६, ११, १७,
 १, ७; १२; १८, १, २,
 ४, ६^३; १३^३; १४, १५,
 ३३, ३६; ३६^३; ४८,
 ५०, २, ३२; ३८; ३६-
 ४५; ५०; ५१; ५८, ३,
 २२, ४१; ६३; ४, ५६;
 ६०; ८६; १६, १३, २,
 १४, १; ३२, २^३; ३४,
 ७२, ३६, २, ३८, १^३,
 ३६, ८; ४४, ६; ४६,
 ३^३; ४७, २^३; ४६, ७^३,
 ८^३; १०^३; ५०, ३; ४;
 ५३, ४; ५६, ४^३; २०.

६, १; २; ४; १२, ४^३;
 १४, १; १५, २; ३^३;
 १६, १^३; २; ६; ८^३; ६,
 ११, १७, १; २; ४, ५^४,
 ७^३; ८; ६; १८, २, ३,
 २०, ६; २१, १, २३, ५,
 ६, २५, २; २७, ४^३,
 २८, ३; ३०, १; २, ४^३,
 ३१, ५, ३४, ५; ६, १०;
 १६; ३५, १; ४; ८; १०;
 १२; ३६, ११^३; ३७, १;
 ३६, ४; ४४, २; ४७, ३,
 ४८, १; ४६, ४; ५, ७,
 ५१, ४; ५२, १; ५३, २,
 ३, ५७, ६; १२; १३;
 १४, ५८, १; २, ५६,
 ३^३; ६०, ४; ६२, १; ६४,
 १, ५; ६५, ३^३; ६७,
 ३, ६६, २; ७०, १३; ७१,
 १, ३; ४, ७२, १^३; ७३,
 २^३; ७६, १, ४, ५, ८;
 ७७, २, ३; ७८, १, २;
 ८१, १^३; ८२, १; ८५, २,
 ८६, २; ४; ५; ८; ६, २,
 ५, १२; १७; १८; २०^३;
 ६४, ६; ६६, ३; ४, ६७,
 ३, ६८, २, १००, २,
 १०२, २; १०५, २, ५;
 १०७; १५, ११२, २,
 ११५, ३; ११६, १, ११७,
 १; ११८, १, १२१, २^३,
 १२२, २, ३; १२५, २,
 ३, १२६, १, ५; ६^३; १२,
 १५, १६; १७; १२७,
 ४^३; ६; १३; १४^३,
 १३१, ६, १३२, ७, १३३,
 १; ३; ३, ४; ५; ६; १३६,

१०; १३७, ८; १४; १४०,
१; ३; १४२, ४.

न २०. १३५, ७.

न-व १. ११, ४; १०, ८,
२५.

नः १. २, ३, ४, ५; ३, ५,
१, २, ३, ६, १; ४;
७, ३, ५, ६, १०, ४;
१२, १; १३, २, ४, १६,
४; १८, १, १६, १; ३;
४, २०, १; २१, १, २;
२५, १, २, ३, २६, ३;
४, २६, २; ३१, २, ३;
४; ३३, १, २, ३, ४;
३४, १; २, १, ३; ३, ६;
४, २, ३, ६, ५, ४, ६,
३, ७, २, ३, ४; ५, १२,
४, ६, १३, २, २५, १;
२७, ७; २६, ३, ४, ३५,
१, २, ३६, १; ३. १,
१, २, १, ४, २, ४; १०,
१, २, ३, ७, ८, १३, १२,
४, १५, १; ४; ७, १६,
३; ५, ७; १७, २, ४;
८; १६, ३, २०, १;
२४, ३, ५; ६; ८, २६,
१-६; २, ३, ५, ६;
४, ७, ७; ६, ६, १०;
१०, १; ३, ४, ६, १२,
५, १५, १०, १२, १७,
२, १३, १, २; ३, ४, ५;
६, ७, २४, १-७; २५,
१-७; २६, १-७; २७,
१-७; २८, १-७; २९,
१-७; ३१, २, ६; ३२,
२, ३, ५, ६; ७, ३३,
१-८; ३६, १; २, ३;
३८, ६, ५, ५, ३, २;

५, ६; ७; ८; १०;
११, ५, ५, ६, ६, २, ५;
६, ७, ७, १; ३, ६;
११, ११, १२, २, ८, १८,
१४; १६, ६, २१, ८;
१२; २२, ६, १०; २७,
८, ६; १०; २६, २, ६.
१, ३, ३, १; २; ३;
४, १, ३; ६, २, ३, ७,
१, २; ३, २३, ३, २४,
३, २६, १, २, २७, १, २४;
३; २८, १; २९, २, ३२,
१, ३, ३३, ३, ३४, १, २;
३, ४, ५, ३५, १; २;
३७, २; ३; ३८, १-
४, ३६, २; ४०, १;
२; ३; ४१, ३, ४५,
३, ४६, २, ४७, १; ३;
५१, २, ३, ५३, १, २;
३; ५५, २; ५६, १;
५७, २, ३, ५८, ३, ६२,
१, ६३, ४, ६५, १, ७७,
३, ७६, १; २, ३, ८३,
३, ८६, १, ३, ८८, २;
३, १०४, २; ३, १०६,
२; ३, १०७, १-४;
१०८, १; ११४, १; २;
११५, १; ११६, १, २;
३, ११८, १; २; ११९,
१, १२०, १; २; १२१,
२, १२३, ५, १२५, ३;
१२६, २, ३, १२८, २;
४, १३१, ३, १३३, १;
४; ७, २, १, ५, ५, ६,
४, ६, ४, ११, १, १७,
१; ४, १८, १, २०, १;
२; ४; ६, २२, १, २४,
१, २६, ३, २८, १, ३१,

१, ३६, १, ४१, २;
४२, १; २, ४६, १, ४७,
१, २; ४८, १, २, ४९,
१; ५०, ३, ५१, १;
५२, १, ५३, ६, ५५, १;
५६, १; ६०, २, ३, ५;
६३, १, ६८, १, ३;
६९, १; ७०, ३, ७३,
७, ६, ७७, २, ७९, १;
३, ४, ८०, २, ३, ८२,
१, ८३, २; ८४, १;
८६, १, ८१, १, ८५, १;
८७, २; ८, १०३, १;
१०६, १; १०८, १;
२, १०९, १, ५; ७;
११०, ३, ११२, १, ११५,
२, ८, २, १७, ३, १;
११६, २०, ४, १०; २३;
५, १७; ७, १७, ६, ७;
१७, ६, ३, ६, २४, ४,
२, २२; २३; २४; ५,
२, १७, १६, १०, ४;
१२; १०, १, ६, २०;
२२, २६, ३, ८, ५, २३;
४५, ६, ४, ५, ११, १,
१७, २, १, ८; ११;
१६; २०; २१; २६;
२६; ३२; ४, ५, ६;
६, ६, १-६, ८-२२, ६,
२, २३, १०, २६, १२,
१, १-१०, १२; १३;
१४; १६, १८; २२, २३;
२४, २५, ३०; ३२;
३४, ३६, ४०, ४१, ४३;
४४, ४६, ४७, ४८, ४९;
२, ३; ७, १३, १५;
१६, २२, २३, ४६, ३,

नकिः—नखान्.

(४, ८७७)

१०; ११; १२; १५;
 १६; १७; १८; ३१;
 ४५; ४६; ४८; ५५—
 ६०; ४; ४६; १३. १,
 १७; १८; १६; २६;
 ५६; २; ३७; १४. १,
 ३४; ६०; २; १; ३८; ४०;
 ४५; ५१; ६७; १६. ५,
 ३; ४; ५; ६; ७; १०;
 ६; ४; १७. १, ६—१६;
 २४; १८. १, १६;
 २५; २६; ३०; ३१;
 ३३; ३६; ३६; ४४;
 ४७; ५०; ५१; ५२;
 ५८; २; ३; २६; ४६;
 ३, १४; १५; १६;
 २१; २२; ३६; ४४; ४५;
 ४६; ५६; ६१; ६२;
 ६३; ६७; ४; ४०; ४८;
 ५०; ५३; ५४; ६२; ६३;
 १६. ३, १; २; ४; ४, २;
 ३; ८; ७; ६, १—११;
 १४; १०, १—११; १;
 २; ३; ४; ५; १४,
 १; १५, १—६; १६, १;
 २४, ४; २७, १४; ३१,
 २; ३; १३; १४; ३२,
 ६; ६; १०; १३, १; ३४,
 ४; ५; ३५, २; ४०, २;
 ३; ४; ४४, ४; ६; ४५,
 २; ४७, ५; ६; ६; ४८,
 २—६; ४६, ५; ५०, २;
 ७; ५२, ५; ५५, २; ३;
 ४; ५६, ६; ५७, ४; ५८,
 १; २०. ३, २; ४, १; ६,
 ३; ६; ८; ७, ३; ८, २;
 १२, ४; ६; १३, ३;

१४, २; ३; ४; १५, ४;
 १६, १३; १७, ११;
 १२; १८, ४; ५; २०, १;
 ४; ६; २३, १; २; ४;
 २४, १; ७; २६, २; ३६,
 २; ४; ७; १०; ११; ३७,
 ७; ११; ३८, २; ४५,
 १; ३; ४६, २; ३; ४७,
 ८; ५५, १; ५६, १; ४;
 ५; ६; ५७, २; ३; ४; ७;
 ६; ६२, २; ३; ४; ६३,
 १; ५; ६४, १; ६८, २;
 ३; ५; ६; ६६, १; ६;
 ८; ७०, १०; १२; ७२,
 ३; ७४, १—७; ७६, ४;
 ७७, १; २; ८; ७८, ३;
 ७९, १; २; ८०, १; २;
 ८२, २; ८३, २; ८४, ३;
 ८७, ७; ८८, २; ८९, ३;
 ११; ९०; ९१, ९१, १;
 १२; ९४, ११; ९५, ४;
 ९७, २; ९८, २; १०१,
 ३; १०४, ३; १०८, १;
 २; ३; ११०, १; ३; ११३,
 १; १२२, १; १२४, १;
 ३; ४; १२५, ६; १२६,
 ८; १२७, १४; १२८, ५;
 १३०, १४; १३५, ७०,
 १३७, ३; १४१, १;
 १४३, ५; ६; ८२.
 नकिः २. ३१, ३; १८. १,
 ५; २०. ५३, २; ५७,
 १२; ६४, ५; ६२, १८;
 ११४, २; ११८, २.
 नकुलः ६. १३६, ५; ८. ७,
 २३.
 नक्तभिः ८. ४, १८.

नक्तम् ५. ७, ३; २६, ६; ३०,
 १०; ६. २३, १; १२८,
 ४; ८. ३, १; ४, ११;
 १७; ५, २२; १६. ७,
 १०; १६. १५; ६.
 नक्तम्-जाता १. २३, १.
 नक्षति ५. २७, ३.
 नक्षतु ७. ७३, ५.
 नक्षते २०. ३६, ५.
 नक्षत-दाभम् २०. ३६, २.
 नक्षत्र-जाः ६. ११०, ३.
 नक्षत्रम् १०. २, २२; २३;
 १६. ६, ६.
 नक्षत्र-राज ६. १२८, ४.
 नक्षत्रा १३. २, १७; ४, २८;
 २०, ४७, १४.
 नक्षत्राणाम् ३. ७, ७; ५. २४,
 १०; ६. ८६, २; ७. १३,
 १; १४. १, २; १५. ६,
 ६.
 नक्षत्राणि ६. १२८, १; ६.
 ७, १५; ११. ६, १०;
 १५, ६, ५; १७, ४; १६.
 ८, १.
 नक्षत्रिये २. २, ४.
 नक्षत्रेभिः २०. १६, ११.
 नक्षत्रेभ्यः ६. १०, १; १२८,
 ३.
 नक्षत्रैः १६. १६, ४; २७, २.
 नक्षत्र २०. १२, ४.
 नक्षत्राणाः २०. १६, २.
 नक्षत्राणाः १८. २, २६.
 नक्षत्राणां १२. ३, ८.
 नक्षत्र १०. १, १४.
 नखान् ४. ३, ३.

(४, ८७८)

नखेभ्यः—नमः.

नखेभ्यः २. ३३, ६; २०. ६६,
२२.

नखेषु १६. ८, १.

नखकात् ८. ६, २१.

नखा ५. ७, ८.

नख-रिषाम् ८. २, ६, ७, ६.

नट् ८. ४, २३.

नडम् ६. १३८, ५; १२. २,
१; ५०; ५४.

नडम्-इव ४. १६, १.

नडाः-इव ६. १३७, २, ३.

नडे १२. २, १६.

नवतः ४. १५, १; ५.

नवनिमा ५. २३, ८.

नवनुम् २०. ११४, २.

नदस्य १८. १, १६.

नदी १. ८, १; ६. ७, १४;
१२. २, २७.

नदीः-इव ३. २४, ३.

नदीनाम् १. १५, ३; ६. ५२,
२; ११३, २; १४. १, ४३;
१८. ३, ५.

नदीभिः १६. १६, ६.

नदीम् ४. ३७, ३.

नदीषु ४. ३६, ५.

नडम् ६. ३, २.

नद्धा ६. ३, १०.

नद्धानि ६. ३, १; ४, ५.

नद्य १६. ३६, २; ३; ४.

नद्यः ३. १३, १; ६. १२,
३; २४, ३; ७. ३८, ५;
११. ६, १०; १४. २, ७;
१६. १, १; २०. १३७,
८.

नद्यम् २०. ५७, ३.

नद्य-मारः १६. ३६, २.

नद्य-रिषः १६. ३६, २.

ननान्दुः १४. १, ४४.

ननाश १८. १, ५३.

ननु २. १, ४; ४. ३१, ३;
११. ४, २५; १३. २, १३;
१६. ३२, ६.

नन्वन्ति ६. १, १; १६. ५३,
७.

नन्वान् १०. २, ६.

नपात् १६. ११, ३.

नपात् १. १३, २; ३; २६,
३; ६. ३, १; ३; १४. १,
१, ३७; २०. ५, ७.

नपातम् १८. १, १; ४५; १६.
४२, ४; २०. १०३, ३.

नपाता २०. १४३, २.

नपिः ६. १, ३; १०.

नप्तुभिः १४. १, २२.

नप्त्यः २. १४, १; ७. ८२, ६;
१३. २, २४; २०. ४७,
२१.

नप्त्यम् १. २८, ४.

नमः ४. १५, ५; ७. १८, १;
१३. ४; २-७; ६; १४;
२२; २०. १३७, ८; १४०,
३.

नमः-भिः ६. ६२, १.

नमताम् ७. १८, २.

नमन्ताम् २०. ६५, २; ३; ४.

नमसः ६. ७६, १; १८. ४,
१४.

नमसः ६. ४, २२.

नमस्रः ६. ७६. २.

नमसा ५. १३, ३.

नमस्री इति ५. १८, ५; २०,
७; ११. ५, ८; ११; १२.

१, ५; ६; १७. १, १६.

नमस्व ७. १८, १.

नमस्वतः ४. १५, १; ५.

नमस्वतीः ४. १५, १.

नमोसि ४. १५, १.

नम्यम् ६. ७०, ३; १२. १,
१२.

नम्यानि १०. ८, ४.

नम् २०. १३६, ८.

नम् १. २, २.

नमः १. १०, २; १३, १-४;
२५, ४^१; ३२, ४; २. २,
१; ४; ५; ८, ४^२; ५^३;
३५, ४^४; ३. २६, १-६;
२७, १^५-६^५; ५. १, ५;
५, १; ७, १^६, २; ३; ६;
१०; २२, ४; २८, ११;
३०, १-२^३; ६. १३, १^१;
२^१; ३^१; २०, १; २^२;
३; २८, ३; ५५, ३; ५६,
१; २^४; ६३, २^१; ८४,
३; ६०, ३^१; ६३, २;
१२८, ४; १३१, २; ७.
३२, १; ८७, १; १०६,
१; ११६, १^२; ८. १, १;
१४, २, ४^१; ६. २, १६-
२४; ३, १२^१; १३; २५-
३१; १०. ७, २२; ३३;
३४; ३६; ८. १, १०;
१^१; ११. २, १; ३; ४^३;
५; ६; ८; ६^२; ११; १२;
१४; १५^१; १६^१; १८;
१६; २५; २३; २७; ३०;
३१^१; ४, १; २^१; ७^१;
८; २३; १२. १, २६; ४२;
३, ११; ४, ४५; १३.

नमः—नरः .

(४, ८७६)

४, ४८; ५०-५३; ५५;
 १४. २, २०; ३४; ३५;
 ४६; ४८; १५. १८, ५;
 १६. २, ६; १७. १,
 २२; २३; १८. १,
 ४६; २, २; ४, ७१; ७२;
 ७३; ७४; ८१-८५; १६.
 ८, २; ७; ११, ६; ५५,
 ५; २०. १६, १२; १२८,
 १४; १४३, २.

नमः ७. ५६, ४.

नमः-कारेण ५. ३६, ६.

नमः-कृताभ्यः ११. २, ३१.

नमः-कृत्य ७. १०२, १.

नमः-भिः ३. ८, ३; ७. ५०,
 ३; १८. ३, १६; ३६.

नमः-वाके १३. ४, २६.

नमः-वृत्तिम् २०. १२५, २.

नमन्तु ३. १६, ६; २०. १०७,
 १.

नमन्ताम् ५. ३, १; ६. २,
 ११; २०. ८६, ६.

नमन्ति २०. ५४, २.

नमन्तु ४. ३, १; ३६, १; ३;
 ५; ७; ५. ८, २.

नमयामसि ३. ८, ५; ६. ६४,
 १.

नमसा ३. ३, १; १५, ७; ४.
 १, ७; ३६, ६; ५. २७, ४;
 ७. ७, १; १०. ४, २३;

१४. २, ३३; १८. २,
 ४६; २०. १५, ३; ८८,
 ६; १०६, ३.

नमसानाः ६. ३६, २.

नमसे १४. २, ३५.

नमस्य २०. १२८. १६.

२५

नमस्यः २. २, १; २; ३.

४, १; ६. ६८, १; २०.

१०२, १.

नमस्यन्तः १. १२, २.

नमस्येइति ४. २६, ३.

नमस्येभ्यः ६. ६३, २.

नमस्वन्तः ६. ६, ८.

नमस्विनः २०. ६२, १४.

नमांसि १. २५, १.

नमामसि ३. ८, ५; ६. ६४,
 १.

नमूचिम् २०. २१, ७; ३७,
 ५.

नमूचेः २०. २६, ३.

नमूचौ २०. १२५, ४.

नमुयात् १३. ४, ४६.

नमे ते इति २०. ३४, १४.

नम्या २०. २१, ७.

नम्रम् २०. १२८, १३.

नय २. ६, १; २८, ५; ३. ३,

१; ५. १४, ४; ६. ५, १;

२; ८. ३, ६; ६. ५, १;

१०. १, २६.

नयत ८. ८, ११.

नयत ७. ८२, १.

नयति ४. २४, ७; ५. १७, ४.

नयति ६. ६(१), ४.

नयतु २. २६, २; ३६, ८;

३. ३, ४; ६. ५६, ३;

१२. २, २४; १४. १,

२०; १६. ४३, १-८.

नयते ५. १६, १५.

नयथ ४. १३, १.

नयन्ति ५. ३०, १२; ८. १,
 ८.

नयन्ति १३. १, २३; १४. १,
 ४६; २०. २५, २.

नयन्ती ६. ६२, ३.

नयन्तु १४. २, १०.

नयन्तु ६. ४७, ३; ६३, २;
 १२. ३, २६; १६. ४६,
 ४.

नयस्व १. ८, ३.

नयाति ३. ११, ३; २०. ६६,
 ८.

नयाति ६. ११६, १; १२०,
 १; १२१, २.

नयाथः २. ३०, २.

नयाम् १६. २४, २; ३.

नयामः ६. २८, १; १०. १,
 १५.

नयामसि १. १८, १; ५. ७,
 ७; १४, ६; ७; २५, ८; ६.

४३, ३; ४६, ३; ७. ६४,
 १; १६. ५७, १.

नयामि १०. ४, २१.

नयामि १. १०, १; ३. १६,
 ३; ८. ८, १०; ६. ५, २;

१६. १६, १-११.

नयासि १२. ३, १७.

नयासे ४. ३१, ३.

नरः ३. १७, ६; ४. ३१, १;

६. १२६, ३; ६. १, ३;

१४. १, ४६; १६. ५६,

४; २०. २५, ४; ३७, ८;

६; ५२, २; ५७, १५;

७१, २; ७६, ५; ६८, १;

१०३, १; १०७, १५;

१४३, ६.

नरः ३. १६, ७; ६. २२, २;

१४. २, ६; १४; १६.

१३, ३; २०. ६७, ४;
 १३७, २.
 नरकम् १२. ४, ३६.
 नरम् २०. २६, ३; ४४, १;
 ५४, १; ६५, १.
 नराज्याम् ५. ३१, ४.
 नराम् २०. ३७, १०.
 नराशंसः ५. २७, ३.
 नराशंसः २०. १२७, १.
 नरिष्टा ७. १२, २; ११. ८,
 २४.
 नर्य-अपसम् २०. ७, १.
 नर्यः २०. ७६, १; ७.
 नर्या २०. ११, ५.
 नर्याणि १६. ४६, ३; २०. ७७,
 ६.
 नरुदस्य ६. १०२, ३.
 नरुदी ४. ३७, ३.
 नरु ५. १५, ६; १६, ११, २८,
 १; ६. २५, ३; ११. ७,
 १४; १३. ४, १०; १६.
 ४७, ३; ५७, ५; २०. ७,
 २; २१, ६; ३७, ५; ४१,
 १.
 नरु-अच्येभ्यः १६. २३, ६.
 नरुः ७. ८१, १; १४. १, २३.
 नरुः-नरुः ७. ८१, २; १४.
 १, २४.
 नरु-गत ३. १०, ४; ८. ६,
 ११.
 नरु-गवाः १८. १, ५८, ३;
 २०; २०. ३६, २.
 नरु-गवैः १४. १, ५६.
 नरुत् २०. १३६, १२.
 नरुतयः ५. १६, ११.
 नरुतिः ५. १५, ६; ६. २५,
 १; १६. ४७, ३.

नरुतिम् ८. ५, ६; १०. १,
 १६; २०. ७, २; २१, ६;
 ३७, ५.
 नरुतिम् २०. १२७, १.
 नरुतीः २०. ४१, १.
 नरु-द्वारम् १०. ८, ४३.
 नरु-द्वारा १०. २, ३१.
 नरु-धा १३. ४, १०.
 नरुन्त ५. २, २; ६. ६, ३;
 २०. १०७, ५.
 नरु-पदी ६. १०, २१; १३.
 १, ४२.
 नरु-भिः ५. २८, १.
 नरुम् १२. ३, ३२; १४. २,
 ४४; २०. ६६, २; ६२,
 १२; १२६, १८.
 नरुमः १३. ४, १८.
 नरु-चुषः ५. १६, ६.
 नरु-सक्तिम् २०. ४२, १,
 नरुः १२. २, ४१; १६. ३४,
 ७.
 नरुनि ६. ५, २५.
 नरुमहे २०. ६, १; ४६, ४.
 नरुयाम् २०. ६६, ५.
 नरुविष्टौ २०. १८, २.
 नरुवीयः ७. ७२, ३; १८. २,
 ३१; ३, १७; १६. ११, ४.
 नरुवीयसः २०. ७२, ३२.
 नरुव्यः ६. ११०, १; २०. ३५,
 १३; ५०, १.
 नरुव्यः २. ५, २.
 नरुव्यम् २०. ४४, १; ६७, २.
 नरुव्यम्-नरुव्यम् २०. ३२, १.
 नरुव्यस्या २०. ३६, ७.
 नरुशत् ६. ६, २१; २०. २०,
 ६; ५७, ६; ६२, १८.

नरुशन्त २०. ६५, ४.
 नरुशन्ति ४. २१, ३.
 नरुशिष्यति ६. ८३, ३.
 नरुश्य ७. ११५, १.
 नरुश्य ६. ११३, २.
 नरुश्यत २. १४, ५; ६.
 नरुश्यन्ति ४. ३६, ७; ८.
 नरुश्यन्तु ६. २५, १; २; ३.
 नरुष्ट-असवः १०. ४, १२.
 नरुष्टम् ७. ६, ४.
 नरुष्ट-विषाः १०. ४, १२.
 नरुष्टे २०. १२७, ४.
 नरुष्टेन ७. ६, ४.
 नरुस्ता २. २७, २; ५. १४, १.
 नरुस्तोः १६. ६०, १.
 नरुस्वती १०. १, २.
 नरुहना २०. ६१, ३.
 नरुहनानाम् ६. ३, ४.
 नरुहि ३. १८, ३; ६. ४६, १;
 ७. १०१, १; ६. ६, १३;
 १७; १३. १, ४१; २०.
 १२, २; १५, ४; ५०, १;
 ८२, २; ६३, २; १२५,
 ३; १२६, ११.
 नरुह्य ६. ६७, ३; १०. ६, १.
 नरुह्यत् ५. ८, ४; ७. ५०, ६.
 नरुह्यतम् ६. ५०, १.
 नरुह्यवम् ११. ६, २; २५;
 १०, १.
 नरुह्यस्व १४. १; ४२.
 नरुह्यामि १. १४, ४; ७. ७०,
 ४; ५२; ६५, ३; १४. ३,
 ७०१.
 ना २०. १२७, ६.
 नाकः १०. १०, ११; १३. १,
 ७.

नाक-पालः—नारदः.

(४, मच१)

नाक-पालः १०. म, १२.
 नाकम् १. ६, २; ४; ३. २६,
 ३; ४. १४, २; ६; ६; ६.
 ६३; ३; म४, ४; ७. ५,
 १; ५३, ७; ७३, ६; ६.
 ५, १; ३; ६; ११. १, ४;
 ३०; ३७; १३. २, ४६.
 १६. ७, १.
 नाकस्य ४. १४, ३; ७. म०,
 १; ६. ५, १०; १५; ११.
 १, ७; १८. २, ४७; ४,
 ४; १४.
 नाकान् १६. २७, ४.
 नाके' ५. ६, ३; ६. १२२, ४;
 १२३, ५; ७. म०, ४; ६.
 ५, ४; म; १०. ७, ४३;
 ११. १, ३६; १३. १, ११;
 १८. ३, ६६; ४, ३.
 नाडीकाः ५. १८, म.
 नाड्यः १०. ७, १५; १६.
 नाड्यौ ६. १३८, ४.
 नाथ-क्रामः १३. २, ३७.
 नाथम् ४. २०, ६; ६. २, ७;
 १८. १, १३.
 नाथ-वित् ११. १, १५.
 नाथितः ४. २३, ७; ३४, ७;
 ३६, ७; २७, ७; २८, ७;
 २६, ७; ७. १०६, ७;
 १३. १, १२.
 नाथिता ५. २०, ५; ११. १,
 १.
 नाथिताः ३. १, २.
 नावम् १६. ३४, ३.
 नावे १८. १, १६.
 नाधमानस्य १३. २, ४४;
 २०, ३४, ६.

नाधमानाः १३. २, ४३; १७.
 १, १४.
 नानदतम् २०. ६१, ६.
 नानदती १०. १, १४.
 नाना २०. २४, म; म५; ३;
 ६१, १०.
 नाना-धर्माणम् १२. १, ४५.
 नानानम् १२. २, ४३.
 नाना-रथम् २०. १३, ४.
 नाना-रूपाः १४. २, २५.
 नानारूपे इति नाना-रूपे १३.
 २, ३.
 नाना-चोर्याः १२. १, २.
 नाभयः १२. ३, ४१.
 नाभा ७. ६२, १.
 नाभिः १. १३, ३; ६. ६, ३;
 ४४, ३; १२५, ३; ६. १,
 ४; १०, १२; १४; १६.
 ४, १२; १८. १, ४; २०.
 १४३, ५.
 नाभिम् ४. ११, ६; ५. २७,
 १०; ६. १०, १३; १२.
 ३, ४०; १३. १, १४;
 ३७.
 नाभिम्-इव ३. ३०; ६; ११.
 ७, ४.
 नाभीः १६. ५३, २.
 नाभौ १८. ३, ४०.
 नाभौ-इव १०. म, ३४.
 नाभ्याः २. ३३, ४; ६. म,
 १२; १६. ६, म; २०.
 ६६, २०.
 नाम १. २४, ३१; २५, २; ३;
 २. म, १; ३. ७, ४; १३,
 १; ३; १४, १; १८, ३;
 २४, २; २६, १-६; ४.

म, ३; ६, म; १६, ५; ३१,
 ५; ५. १, ३; ४, ६२, ५,
 १; ३; ६; म; ६, ४; ६,
 ७; २८, १२; ६. १६, २२;
 ४४, ३; ४६, १; ७६, ४;
 म२, १; म३, २; १२१, ३;
 ७. १, १; ६, ४; १२, २२;
 २०, ४; २६, १; ४५, १;
 म१, ३; म. २, २८; ६. ५,
 ३१-३६; ६, ३; १०.
 १, ११; २, १२; ४, २४;
 ७, २५; ३१; म, ६; ३१;
 ११. ६, ४; ७, १; म, १३;
 १६; ६, ४; १२. १, ५४;
 ४, ५; ५, ६; १५. १५,
 ३-६; १६. ३, ५; १७.
 १, १-५; १८. १, ३४;
 १६. ३५, १; ३८, २; ३६,
 ३२; ४८, ६२; ४६, ७;
 ५३, ७; २०. १५, ३; १६,
 ७; २१, ७; ४०, ३; ४१,
 ३; ६७, ७; ६६, १२;
 १२६, २३.
 नाम-ग्राहात् १०. १, १२.
 नाम-था ११. म, ७.
 नाम-धः २. १, ३.
 नाम-धेयम् ७. १०६, ६.
 नाम-विभ्रती १५. १३, ११.
 नामानि ३. १३, १; ५. ४, म;
 १६. ३६, २; २०. १६,
 ३; १३२, १३.
 नाम्ना १०. ७, ३३.
 नाम्नी इति ४. ६, १०.
 नारद ५. १६, ६; १२. ४,
 १६; ४३; ४५.
 नारदः १२. ४, २४.

नाशयः १२. ४, ४१; ४२.
 नाशयसी १४. १, ७.
 नाशयसीः १५. ६, ११.
 नाशयसीनाम् १५. ६, १२.
 नाशिरि ३. १२. ८; २३, ५;
 ११. १, १३; १४; २३;
 १४. २, २०; ३२, १८.
 ३, २.
 नाशिरिषु २०. १२६, ११.
 नाशी १. ११, १; २, ३६, ३;
 ४; ५. २०, ५; १४. २,
 १३; १४; ६३; १८. ३, १;
 २०. १२६, १०; १३६, ४.
 नाशीः ४. ५, ३; १२. २, ३१;
 १८. ३, ५७.
 नाशीम् १४. १, ५३; ५४; ५५;
 ५६.
 नाशीः ५. २५, १०-१३.
 नाशै १४. २, २१.
 नाशवेन ४. १६, २.
 नाशः ५. ४, ५.
 नाशम् २. ३६, ५; ६. १६, ८;
 ७. ६, ३; ६. २, ६; १२.
 २, ४८; १७. १, २५, २६;
 २०. ७२, १; ६४, ६.
 नावा ४. ३३, ८; २०. ४६, २.
 नावा-इव ४. ३३, ७.
 नाव्याः ८. ५, ६; ७, १५, १०.
 १, १६.
 नाशय ५. ४, ६.
 नाशय १. २३, २; ३; २. २५,
 ३; ३. १, ५; २, ३; ४.
 ३७, २; ५. २२, १३; ६.
 १४, १; ८. ६, ६; १०;
 १३; १५; १६. १५, २;
 ३४, ३; ३६, १-८.

नाशयत् १६. ४४, ७.
 नाशयत् ११. १०. १६.
 नाशयन् ५. ४, १.
 नाशयन्तु ६. ११३, १; ३.
 नाशयामः २. १४. १.
 नाशयामसि ३. २३, १.
 नाशयामसि १. १८, ४; ३.
 ७, ३; ४. १७, ५; ३७,
 ११; ७. २३, १; ८. ६,
 ११; १२; १४; २३; २०.
 ६६, १३-१६.
 नाशयामि ३. ७, ६.
 नाश्याः ८. २, २७.
 नाश्या २०. १४०, १; ४;
 १४१, ५; १४३, ४; ७.
 नाशिकाभ्याम् २. ३३, १;
 २०. ६६, १७.
 नाशिकाम् १६. ८, ५.
 नाशिके इति १०. २, ६; ६,
 १४; १५. १८, ४.
 नासे इति ५. २३, ३.
 नाहुषाणि २०. ३६, १०.
 नि १. १, २; ३; १४, २; २२,
 ४; २. १२, २; १४, ३;
 २६, १; २; ३१, ३; ३.
 ११, ७; १२, १; ४२;
 १५, ५; १७, ४; २०, ८;
 २३, १; ४. ५, १; ७;
 १६, ५; २१, २; २५, ३;
 ६; २८, ६; ३१, ७;
 ३४, ८; ३८, ७; ५. २,
 १; ६; ३, ४; ६, ३; ६,
 ७; १२, ६; १३, १२;
 ५; १८, ७; २०, ८;
 २१, १; २३, ८; २६,
 ४३; ६. ८, २; २६, ३;

२६, १; ४६, ३; ५२,
 २५; ३; ७०, १; २; ३;
 ७६, ३; ७७, ३; १०६,
 ३; १११, २; ११७, २;
 १३१, १३; १३६, २, ४;
 ७. ६, ४; २४, १; २६,
 ४; ३८, २; ४१, २; ४७,
 १; ५२, १; ८२, ३; ६०,
 ३; ११५, ३; ८. १, २१;
 ३, ७; ११; २१; ४, १३;
 ५; १०; ५, २१; ६, २४;
 ८, ६; ६, १७; १०(१),
 २; ४; ६; ८; १०; १२;
 ६. ४, ६; १०, ७; १६, १;
 २३; १०. १, १७; २७;
 २, २; १७; ३, १५; १७-
 २५; ५, ३६; ८, ३; ७;
 ११. १, ३; ६; ६; ११;
 २८; ३३; ४, २२; २५;
 ८, ३३; १०, १३; १२;
 १, २६; ३०; ३१; ६३;
 २, ६; ३, ८; १४; ५५-
 ६०; ४, २०; २१; ५,
 ७३; १४. २, ५; ३२;
 ६५; ६६; १६. ८, ४-२६;
 ३३; १७. १, १४; १८.
 १, ३; ६; १६; ४०; २,
 २०; ३, १; ११२; १२;
 ५०; ४, ४०; १६. ३१,
 ५; ६; ८; १३; १४;
 ३२, ४; ४७, २; ४६,
 ५; ५४, १; २०. ५,
 ७; १३, १; १७, २;
 २१, १; ६; ६; ३०, १;
 ३७, २; ४; ८२; ५३, २;
 ५६, १; ५७, १२; ६३,
 ७; ६७, ५; ६८, ११;

७०, १८१; ७४, ३; ७८,
२; ८८, ३; ८९, १; ५; ६;
८१, ६३, २; ८४, ६;
८६, १; १०७, ४; ६;
११२, २; १२७, २; १२९;
१४३, ५.
नि-अक्ताम् १४. २, ३३.
नि-अञ्जनम् ४. ३६, ६.
नि-अञ्जनी ५. ५, २.
नि-अञ्जन्ति ६. १, १७.
नि-अर्यनम् ६. ७७, २; १०६,
२.
नि-अर्पिताः १०. ३, १५.
नि-अर्बुदम् ८. ८, ७; १०.
८, २४; १३. ४, ४५.
नि-अर्बुदिः ११. ६, ४.
नि-अर्बुदे ११. ६, ६; ११;
१२; १६; १०, २०; २१.
नि-अस्तिका ६. १३६, १.
नि-अस्त्यथ १४. २, २२.
नि-अह्ने १८. ४, ६५.
नि-आगन् ७. ७३, ८.
नि-आनयत् ७. ३८, ५.
नि-इतः ३. ११, २; २०. ६६,
७.
नि-इत्य १२. २, १८.
नि-ऋष्टम् २०. ८६, २.
नि-ओक्ते २०. ७१, १६.
नि-ओचनी १४. १, ७.
नि-ओचरः ५. २२, ५.
निः १. ८, ३; १८, १३; २१;
२३, २; ३; २. ६, ५; १०,
८; १४, २४; ४; ३. २,
४; ५; ६, २; ३; ४, ६.

२; ४; ५३; २२, १; २;
५. ४, ६; १०; ५, ४; ५;
१८, ४; १६, ४; ३०, ८;
१६; ६. १४, २; ३; १६,
३; १८, १; ३; २४, २;
७५, १; ६०, २; १२१,
१; ७. ५६, ३; ७६, ३;
८३, ४; १०८, २; ११५,
३; ८. ८, ३; ६. २, ४;
५, २३; ३१-३६; ८, १-
२०; १०. १, २१; ४,
२६३; ५, २५-३५; ११.
१, ६; ३, ५२; १२.
२, २; ३२; १२; १५; १६;
४२; ४७; ४८; ४, ५३;
५, ७०; १६. २, १; ७,
६१; ८, २; ५-२६; ३१;
१८. २, २७; ४२; ४,
५६. १६. ४४, २; ५०, १;
५७, २; ५; २०. १६, ३;
८; ६; ६८, ५; ६१, ५;
६६, ४; १२.
निः-अकुर्वत ४. १६, ४.
निः-अतक्षत ६. १०, १.
निः-अतक्षतम् १. ३२, ३.
निः-अमनः ३. ६, ३.
निः-आदधत् १२. २, ३६.
निः-आदधौ १२. २, ५४.
निः-आवहन् ५. ४, ५.
निः-इन्द्रियाः ६. २, १०.
निः-उप्यन्ते ६. ६(१), १४.
निः-ऊहन् ८. २, ६.
निः-ऋतिः २. १०, ५; ३. ६,
५; ४. ३६, १०; ६. ६३,
१; ८४, १; १२४, ३; ७.

७०, १; २; ६. १०, १०;
१०. २, १०; ११. ८,
१६; १२. ३, १७; ५, २७;
१८. १, १२.
निः-ऋतिम् ६. ६७, २; १२४,
२; ७. ४२, १; ८. १, २१;
२, १२; ६. ५, १८; १२.
२, ३.
निः-ऋतीनाम् २०. ६६, ३.
निः-ऋते १६. ४४, ४.
निः-ऋते ६. २६, २; ६३, २;
८४, ३; ७. ६४, २; १४.
२, १६.
निः-ऋतेः ३. ११, २; ७. ५३,
३; ८. ४, ६; ११. १, २६;
२०. ६६, ७.
निः-ऋत्य १०. २, २.
निः-ऋत्याः १. ३१, २; २.
१०, १-८; ६. २७, १;
८. १, ३; १०. ३, ७; १६.
५, ४; ८, ५; १८. ३, २६;
१६. ४४, ४.
निः-ऋत्यै २. २५, १; ५. ७,
६; २०. ६६, २४.
निः-ऋथः ६. ६३, १; १२. २,
१४.
निः-ऋथम् ८. ४, १४.
निः-ऋथात् ५. ३, ६.
निः-पेतुं १०. ४, २१; २२.
निः-कर्ता १४. २, ४७.
निः-कृतिः ५. ५, ४; ६.
निः-कृतिम् ६. २७, १; ४६,
३; १८. ४, ६०.
निः-कृते ५. ५, ६.
निः-कृतेः ४. २७, ६.

निः-कतिः २. ३४, १.
 निः-खिदन् ५. १८, ७.
 निः-जरायवः १. २७, १.
 निः-तक्वरीम् ५. २२, ६.
 निः-तत्तज्जतुः २०. ११३, २.
 निः-दहनी १४, २, ४८.
 निः-दाहः १६, १, ३.
 निः-दाहम् ५. ३१, ६.
 निः-धयन्ति ६. ८, १८.
 निः-नयते ११. २, २२.
 निः-भक्तम् २. ३५, २.
 निः-भृत्या १६. ७, १.
 निः-भूत्याः १६. ५, ६; ८,
 ७.
 निः-मथ्यते १०. ८, २०.
 निः-मितः ४. ३५, ४.
 निः-मितम् ८. ६, ४.
 निः-मिता ८. ६, ४; ५.
 निः-मिमीते १३. ३, ८.
 निः-मुक्त्यै १२. ३, ५.
 निः-याचन् ६. १३३, २.
 निः-शसा ६. ४५, २.
 निः-सालाम् २. १४, १.
 निः-सालाम् २. १४, १.
 निः-सृजः २०. ७२, २२,
 ७५, १२.
 निः-सृप्य ११. १, २५.
 निः-हतम् १६. ६, ८.
 निः-हस्तः ६. ६६, १.
 निः-हस्ताः ६. ६६, २, ३.
 निः-हस्तान् ३. १, १; २, १.
 निः-हस्तेभ्यः ६. ६५, २.
 निः-कर्तुम् १०. १, २६.
 निः-कामः २०. ३०, ३.

निः-कामः १५. ११, २; १८;
 ११.
 निः-कामम् १५. ११, १०.
 निः-कामस्य १५. ११, १२.
 निः-कामे १५. ११, ११.
 निः-कामैः २०. ७७, ६.
 निः-कारिणः ७. ८२, ३.
 निः-कित्तिषम् ५. १७, ११.
 निः-क्रमणम् १. ३४, ३.
 निः-क्ष १६. २६, १४.
 निः-क्ष ८. ३, २५.
 निः-खनन्तः ६. ११६, १.
 निः-खातकम् २०. १३२, ३.
 निः-खातकः २०. १३२, ३.
 निः-खातम् १०. १, १६.
 निः-खाताः १८. २, ३४; १६.
 ६, ६.
 निः-गच्छात् १८. १, १२; १४.
 निः-गतम् १३. ४, १२; २०.
 निः-गृह्य २०. १३३, ३.
 निः-घ्नतः १०. १, २७.
 निः-घ्नन्तः १६. ४६, ३.
 निः-चक्रे ७. ३८, २.
 निः-चक्रुः ५. ३१, ८; १०.
 १, १८.
 निः-चिकीर्षति ११. २, १३.
 निः-चिकेषि १. १०, २.
 निः-चिक्व्यत् ५. २०, १२.
 निः-चितः २०. ३४, १४.
 निः-जः ३. ५, २.
 निः-जूर्वति ६. ३४, २.
 निः-जूर्वथः ८. ४, ४.
 निः-जूर्वन् ६. ५२, १.
 निः-णयः ६. १०, १५.
 निः-णयम् २०. ७७, ३.
 निः-तुष्टि ६. १३६, १.

निः-तर्पन् १६. २८, ३.
 निः-तानाः ६. १३६, १.
 निः-तुदन्तीम् ५. ७, ७.
 निः-तोदिनः ७. ६०, ३.
 निः-तोदिनौ ७. ६५, ३.
 नित्यः १८. १, ३०.
 नित्य-वत्साम् ७. १०४, १,
 ६. ४, २१.
 निदः २०. ६८, ५.
 नि-दधत् १८. ३, ५२.
 नि-दधुः ३. ५, ३.
 नि-दधे ६. ५, १६.
 निदे २०. १८, ५; २३, ६.
 नि-धनम् ६. ६ (५), २, ३;
 ५२; ७२; ६; १०; ७,
 १८; ११. ७, १२; १२.
 १, ४८; ५, ३.
 नि-धिः १२. ४, २६.
 नि-धि-पतिः ७. १७, ४.
 नि-धि-पाः १२. ३, ३४; ४१;
 ४२.
 नि-धि-भिः ७. ७२, २.
 नि-धिम् १०. ७, २३२; १२.
 १, ४४; ३, ४२; ४६; ४,
 १७; १६. २७, ६.
 नि-धिषु १८. ३, ४५.
 नि-धी इति नि-धी ११. ५,
 १०.
 नि-धीन् १८. ४, ४१; २०.
 १६, ६.
 निनाय ६. २, १७.
 निनाय ५. १७, २; २०. १६;
 २.
 निनीषति १६. ५०, ५.
 निन्दाः ११. ८, २२.
 निन्दिषत् २. १२, ६.

नि-पतन्ती—नि-हृत्यते.

(४, ८८५)

नि-पतन्ती १२. ५, २६.	१०; ६. १०, २२; १३.	नि-वेशनः १०. ८, ४२.
नि-पतिता १२. ५, २६.	३, ६; १८. ४, ४४.	नि-वेशनम् ६. १०६, २.
नि-पतितायै ६. ६०, ३.	नि-युतः २०. १२, ४.	नि-वेशनी ६. ३, १७; १२.
नि-पद्यते ८. ६, ७; २०.	नियुत्-भिः २०. ३६, ११.	१, ६; १८. २, १६.
६६, १५; १६.	नि-योजनम् ७. ७८, १.	नि-वेशने २०. ३७, ५.
नि-पिष्टासः १०. ४, १३,	निरङ्गन्ति २०. १३६, ६.	नि-वृष्यः ६. ७, ४.
२०.	निरायच्छसि २०. १३३, ३.	नि-वृज्जि-भिः १६. १३, ४.
नि-पुरः १८. २, २८.	नि-रिणाति २०. ३५, १३.	निष्क-ग्रीवः ५. १७, १४.
नि-पूतः २०. ५, ५.	नि-रुध्यते ५. १७, १२-१७.	निष्कम्-इव ५. १४, ३;
नि-पृणामि १८. २, ३०; ४,	नि-रुन्धानः २०. २१, ४.	१६. ५७, ५.
४२.	नि-रुन्धानस्य १२. ४, ३६.	निष्काः ७. ६६, १, २०.
नि-प्रिययते १२. ४, ११; २१;	निरे-के २०. ५२, २; ५७,	१३१, ५.
२५.	१५.	निष्कान् २०. १२७, ३.
नि-बर्हयः २०. २१, ७.	नि-रोधनम् १२. ४, १५.	निष्टि-यः २०. १३७, २.
नि-भञ्जनम् २०. १३१, २.	नि-लयते ११. २, १३.	निष्ट्यः १. १६, ३; ३. ३,
नि-मज्ज १०. ४, ४.	नि-लायन् ४. १६, २.	६; ६. ६, ३.
नि-मन्युः ३. २५, ४.	नि-लिम्पाः ३. २६, ५.	निष्ट्याः-इव २०. ११६, १.
निमिच्छसि २०. १२६, १४.	नि-लीनः ४. १६, ३.	नि-सत्ताः १८. १, ४६.
नि-मिता ३. १२, ५; ६. ३,	नि-वतः ६. २२, ३.	नि-सत्त्वम् २०. ६६, १३.
१६.	नि-वता ५. ३, २.	नि-सद्यः २२. ३, ३२; १८.
नि-मिताः ४. ३५, ४.	नि-वर्तनम् ३. ६, ७; ६.	१, ५२; ५६.
नि-मिताम् ६. ३, १६२.	७७, २; ७. ३८, १; ६.	नि-सिञ्चन् ४. १५, १२.
नि-मिमाय ६. ३, ११.	२, १२.	नि-सीदथः २०. १४२, ६.
नि-मिषः ४. १६, ५.	नि-वाते ६. ५५, २.	नि-सेचनम् १. ३, १-५.
नि-मिषत् १०. ८, २; ११.	नि-वाशाः ११. ६, ११.	नि-सेदुः ५. १७, ६; ६.
नि-मिषतः ४. २, २; ६. २,	नि-विदः ५. २६, ४; ११.	१०, १८.
२३.	७, १६.	नि-सेदुषः २०. १२६, १६;
नि-मीयते ६. ३, २१; १२.	नि-विद्धा ६. ६, ८.	१७.
१, ३८.	नि-विशन्ते ६. ६, २१.	नि-स्थितः १६. ३२, ३.
नि-मीवन्तीम् ५. ७, ७.	नि-विष्टः ७. ४०, १; १८.	नि-स्थितम् १४. २, ६२;
निम्ना-इव २०. १५, २.	२, ३२.	१६. ३४, ६.
नि-मुक् ४. ३, ६.	नि-विष्टम् ६. १, २; १०.	नि-स्वरः १२. २, १४.
नि-मुचः १३. ३, २१.	८, २४; १८. ३, ६.	नि-स्वरम् ८. ४, ५.
नि-मोचन् २. ३२, १.	नि-वृताः २०. १५, ६.	निहः २. ६, ५.
नि-यन्ति ६. ४६, ३.	निवृत्तः २०. १३१, २.	नि-हन्ति ६. ८, २.
नि-यानम् ६. २२, १; ८, २,	नि-वृत्य १०. १, १७.	नि-हृत्यते ६. ७०, १; २, ३.

(४, ८८६)

नि-हितः—ननुदे.

नि-हितः ६. ६२, २; १४०,
 २; ७. ६२, १; ११. १,
 ५; १५; १२. ३, ४२; ४,
 १४; २६; १८. ३, ७०.
 नि-हितम् ६. ११३, ३; ६.
 ६, ५; १०. २, १६; ८,
 ६; ६; ११. ७, १०; १२.
 १, ६०; ३, ४८; ४, १७;
 २१; १६. २७, ६.
 नि-हिता १. १३, ३; २. १,
 २; ६. ६, ३; ६; १०,
 २७; १०. १, २६; ११.
 ७, २२.
 नि-हिताः ४, ३५, ६; ७.
 ४३, १.
 नि-हितान् १८. ४, ४१.
 नि-हितौ ११. ५, १०.
 नीचः ११. १, ६.
 नीचा १, २१, २; ४. ३, ६.
 नीचीः ४. १५, १२.
 नीचीनम् ६. ६१, २.
 नीचीनस्य ७. ५६, ५.
 नीचैः २. ३, ३; ३. १६, ३;
 ४. १, ३; ५. ११, ६; ६.
 २, २; ६; १५.
 नीडे ५. १, ६.
 नीताम् ५. १७, ५.
 नीनाहम् १६. ५७, ४.
 नीयमानाम् ५. ७, १; १८. ३,
 ३.
 नीयसे ५. ४, ८.
 नील-नखैर्यः १६. २२, ४.
 नीलम् १४. २, ४८; १५. १,
 ७.
 नील-लोहितम् १४. १, २६.
 नील-लोहिते ४. १७, ४.
 नील-लोहितेन ८, ८, २४.

नील-शिखण्ड २. २७, ६.
 नील-शिखण्डः ६. ६३, १.
 नीलशिखण्डचाहनः २०.
 १३२, १६.
 नील-शिखण्डेन ११. १, ७.
 नीलागलसाला ६. १६, ४.
 नीलेन १५. १, ८.
 नीवि-भार्यौ ८. ६, २०.
 नीविम् ८. २, १६; १४. २,
 ५०.
 नोषाट् ५. २०, ११.
 नोहारः १८. ३, ६०.
 नोहरान् ६. ११३, २.
 नु २. ५, ५; ३. २०, ८; ४.
 १, ६; १६, १; ५. १; ८;
 २, ४; ६, ५; ११, २; ४;
 ६; २६, ८; ६; ३०, १;
 १४; ६. ४, १; ६०, २;
 १२४, १; ७. ५, ४; ६,
 ४; २६, १; ८६, १; ८.
 ६, २५; ६. १०, १०;
 १०. २, २; १०; २८;
 १२. २, २३; ४, ४३; ५,
 ५०; १४. २, २६; १५.
 ३, १; १८. १, ५; २०;
 ४८; २, ५७; १६. ४७,
 ५; ५३, २२; ३; ५४, ५;
 २०. २१, १; २४, २; ३२,
 १; ३६, ५; ३७, ६; ११;
 ५०, १; ५६, ३; ६३, १;
 ६५, १; ७१, १; ७३, २२,
 ५; ७६, ६; ६७, ३२;
 १०७, ७; १२४, ४; १२६,
 ३; ४; ५; १४३, ६.
 नुत्ता १०. १, १४.
 नुत्ता-इव १०. १, ३.
 नुत्ताः ८, ८, १६.

नुत्तानाम् ६. २, ४.
 नुद् २. २५, ५; ३. १८, ३;
 ६. १३६, ३२, ७. ३४,
 १; १२. २, ४२; १४. २,
 ४२; १४. २, ६४.
 नुदत् ६. २८, १; १२. १,
 ३०.
 नुदत्तम् ६. ३२, १.
 नुदत्ताम् ६. २, १५; १२. १,
 ४१; ५, ७२, ७३; १७,
 १, ३०.
 नुदत्तु १. ७, ४; ६. ७५, २.
 नुदत्तं १६. ३६, २,
 नुदन् ३. १५, १; १६. ३३,
 २.
 नुदन्तु ६. १२४, २; १२. ३,
 ४६.
 नुदस्व ६. २, ४; ११. १, २१.
 नुदस्व ४. ३१, २; ७. ३४,
 १; ३५, १; ८४, ३; ६.
 २, ४; १७; १८; १२. ३,
 २१; १३. १, २७; २०.
 १२५, १.
 नुदामः १२. १, ४३.
 नुदामः १०. १, १; १.
 नुदामसि १२. २, १५; १६.
 नुदामहे ३. ६, ८.
 नुदिष्टाः १२. १, ३२.
 नुदे ३, ६, ८; ६. ७५, १; ६.
 २, ६.
 नुदेथाम् ८. ४, १.
 नुदेथे इति ४. २६, १; २.
 ननुदे २०. ११, १०.
 ननुदे २०. २८, २; ३६, ३.

नृवन्तम्—नो-इति.

(४, म. ७)

नृवन्तम् २०. ७४, ५.
 नृवन्तम् २०. ७४, ५.
 नृवन्तः २०. १७, ५.
 नृवन्तम् ७. २१, १.
 नृवन्ता २०. ८७, ५.
 नृनम् ४. १, ६; ७. ७३, २;
 ८. ४, २०; १८. १, ४;
 ४६; २०. ६६, २; ६७,
 १; १३६, १; १४०, २;
 ३; १४१, ४; ५; १४२, ६.
 नृ-चक्षुः १. ७, ५; ४. १६,
 ७; ८. ३, ६; १७.
 नृ-चक्षुः ८. ३, ८; १३.
 २, १; १८. ४, २६, १६.
 ४७, ३.
 नृ-चक्षुः १८. २, १२.
 नृ-चक्षुः १०. ३, १८.
 नृ-चक्षुः ४. २६, २.
 नृ-चक्षुः ७. ४१, १; २; ८.
 ३, १०.
 नृणाम् २. ६, २; १६. ४७,
 ७; २०. ३७, १०; ७६,
 १; २.
 नृतः १०. २, १७.
 नृतम् २०. ३७, १०.
 नृतम् २०. ७६, १; ७७, ४.
 नृतम् २०. ११, ११.
 नृतम् २०. ७६, २.
 नृतम् १८. १, ३७.
 नृत्ये १२. २, २२.
 नृतौ २०. ७६, २.
 नृतानि ११. ८, २४.
 नृत्य ५. २०, १०.

नृत्य १०. ६, २.
 नृत्यन्ति १२. १, ४१.
 नृत्यन्ति १२. ५, ४८.
 नृ-पतिम् २०. ६४, ३.
 नृपती इवेति नृपती इव
 ८. ४, ६.
 नृ-पते ५. १८, १; १५; २०.
 ६४, २.
 नृ-पानः १६. ५८, ४.
 नृ-पायम् २०. १४२, ३.
 नृ-भिः ३. १६, ३; ५. १३,
 ३; १८. ४, ६५; २०.
 १६, १२; ३३, १; ३७,
 ४; ५६, १; ७३, १; ८७,
 ४; १२०, १.
 नृ-भ्यः २०. ७७, ४.
 नृ-मनः २०. ३७, ४.
 नृ-मनाः १६. ३, ५; २०.
 १३७, ७.
 नृ-मादनम् २०. ६८, ७.
 नृम्णम् ४. २४, ३; ८. ५,
 २१; १०. ५, १; २; ३५,
 ४; ५; ६; २०. १०८, १;
 १३६, २.
 नृम्ण-वर्धनः २०. ६७, ६.
 नृम्णस्य २०. ३४, १.
 नृ-वत् २०. ११, ५.
 नृ-वतः २०. ३६, ३.
 नृ-वन्तः ३. १६, ३.
 नृ-वाहसा २०. २६, ५; ४७,
 ११; ६६, १०.
 नृ-सहम् २०. ४४, १.
 नृ-सहाय २०. १४२, ५.
 नृ-सूतः २०. १२०, १.

नृन् १८. १, ७; २०. ७६, २;
 ४.
 नेजणम् ६. ६(१), १७.
 नेता १६. १३, ६; २०. ३४,
 ७; ७७, ८; ६२, १०.
 नेतारः १०. ८, ३५.
 नेत्रम् १०. १०, २२.
 नेदिष्ठम् २०. ८५; ४.
 नेदीयः ३. १७, २; १०. ८,
 ८.
 नेदीयसः २०. १२६, २०.
 नेनिग्धि ६. ५, ३.
 नेमिम् २०. ५४, ३.
 नेमे २०. १५, ५.
 नेशत् ५. ३, २; १३, २.
 नेष ७. ६७, २; १२. ३, १६.
 नेषत् ६. ११०, २; ७. ६, २;
 १२. ३, ५५; ५६; ५७;
 ५८; ५६; ६०.
 नेषि १६. १५, ४; २०. ४६,
 ३.
 नेष्ट ३. ११, ७.
 नेष्यति ७. १०३, १.
 नैः-ऋतेभ्यः १६. ४५, ५.
 नैः-वाच्येन ६. ७५, १.
 नैः-हस्तम् ६. ६५, २; ३.
 नैदाघः ६. ५, ३१.
 नैदाघम् ६. ५, ३१.
 नो-इति १. ३२, १; ३. १८,
 ३; ३०, ४; ८. २, २४;
 १८. ३, ३८-४५; २०.
 ३४, १६; १२६, २.

नोदनाय ७. ११६, १.
 नोधाः २०. ३५, १४.
 नोमुमः २०. १८, ४; १२१,
 १.
 नौ ५. ११, १०२; ७. ३६,
 १३; ११. १, ३५; १३.
 १, १८; १४. २, ७२;
 १८. १, ४२; ५२.
 नौः ५. ४, ४; ६. ६५, २;
 १६. ३६, ७.
 नौः-इव ३. ६, ७; ६. २,
 १२.
 नौधसम् १५. २, २२; ४,
 ११; १२.
 नौधसस्य १५. २, २४.
 नौधसाय १५. २, २३.
 न्यः ११. ७, ४.
 न्यक् ६. ६१, २१; २०. १२०,
 १.
 न्यग्रोधाः ४. ३७, ४.
 न्यग्रोधात् ५. ५, ५.
 न्यङ् ५. २२, २.
 न्यधुः १६. २०, १.

प

पक्तवे ११. १, ३.
 पक्ता ११. १, १०; १६.
 पक्तारः १०. ६, ७; ११.
 ३, १७.
 पक्तारम् १०. ६, ११; २५;
 १२. ३, ४८.
 पक्त्वा ४. ३४, ५; ११.
 १, १८; ३७.
 पक्कः ६. ५, १८; १२. ३,
 ४८; २०. १२७, १०.
 पक्कम् ३. १७, २; ६. १२२,

३; ११. १, २८; ३३;
 १२. ३, ७; ११; २०.
 १३५, १२.
 पक्चकम् २०. १३०, ६.
 पक्का १२. ५, ३२; २०. ६०,
 ४; ७१, ४.
 पक्कात् ४. ३५; ६; १२. ३,
 २; ६.
 पक्काय १२. ३, ८.
 पक्के २०. १२७, ४.
 पक्वेन ६. ११६, २; १२.
 ३, ३४; ५५; ५६; ५७;
 ५८, ५६; ६०.
 पक्कः १३. ३, १२.
 पक्कत् २०. ६२, १२.
 पक्कसी इति ८. ८, २२.
 पक्काणाम् ६. ३, ४.
 पक्किणः १. ११, ६; ११. ५,
 २१; ६, ८; १०, ८; १२.
 १, ५१.
 पक्किणी ६. २७, २; ३.
 पक्की ४. ३४, ४; ७. ७६, ४;
 १३. २, ३३.
 पक्की ४. ३४, १; ६. ८, २;
 ८. ६, १४; १०. ८, १८;
 ६, २५; १३. २, ३८; ३,
 १४.
 पङ्क्तिः ६. १०, २१; १३. १,
 १५; ४२; १६. २१, १.
 पङ्क्तिम् १३. ३, २५.
 पङ्क्त्या १३. ३, ५.
 पचत ६. ५, ३७.
 पचत् १२. ३, २७.
 पचतः ११. १, ३०; १२. ३,
 १२; ५०.

पचतम् २०. ३५, ७.
 पचति १०. ६, ४; १२. ३,
 ४; ५; ३६.
 पचति ११. १, १.
 पचते १२. ४, ३८; ५३; २०.
 ३४, १८.
 पचन् १२. ३, २४.
 पचन्तम् २०. ३४, १५.
 पचन्ति ४. ३४, ३; ४; ६.
 ६ (२), १३; २०. १२६,
 १४.
 पचामि ४. ३५, ७; ६. १२१,
 ४; १२. ३, ४७.
 पच्यमानम् २०. ६२, ११.
 पच्यमाना ५. १६, ४; १२.
 ५, ३२.
 पञ्च १. ३०, ४; ३. ४, २;
 २०, ६; २१, ५; २४, ३;
 ६. २५, १; ७५, ३; ७.
 ६, १; ८. ६, ४; १५;
 २३; ६. ५, २५; २६;
 ३७; १०. ८, ३५; ११.
 २, ६; ६, १५; २३;
 १२. १, १५; ४२; १३.
 १, १८; ३, ६; १८. ४,
 ५५; १६. ६, ५; २३, १;
 ४७, ४; २०. ७०, १५;
 १३६, २.
 पञ्च ५. १५, ५.
 पञ्च-अङ्गुरिः ४. ६, ४.
 पञ्च-अपूपम् ३. २६, ४; ५.
 पञ्च-अरे ६. ६, ११.
 पञ्च-अच्येयः १६. २३, २.
 पञ्च-ओदनः ६. ५, ८; ६;
 १०; १८; २१; ३१-३६.

पञ्च-ओदनम् ४. १४, ७; ६.
५, ११; १२; २२; २४—
२८; ३१—३६.

पञ्च-दश २०. १२६, १४.

पञ्च-दश-अच्येभ्यः १६. २३,
१२.

पञ्च-दशः ११. १, १६.

पञ्च-दशेन ८. ६, १५; २०.

पञ्च-धा ४. १४, ७; ६. ५,
८.

पञ्च-नास्त्रीम् ८, ६, १५.

पञ्च-पादम् ६. ६, १२.

पञ्च-पादात् ८. ६, २२.

पञ्च-बिलम् ११. ३, १८.

पञ्च-भिः ४. १४, ७; १७.
१, १७.

पञ्च-भ्यः ५. १७, ६.

पञ्चमः १३. ४, ७; १५. १५,
७; १६, ५; १७, ५.

पञ्च-योजनम् ६. १३१, ३.

पञ्च-रात्रः ११. ७, ११.

पञ्च-वाही १०. ८, ८.

पञ्च-वृषः ५. १६, ५.

पञ्च-शलात् ८. ७, २८.

पञ्च-सु २०. २०, २; ५७,
५.

पञ्चाशत् ५. १५, ५; ६. २५,
१; १६. ४७, ४.

पटुरैः १३. ३, १६.

पटुरौ ११. ६, १४.

पट्वीशम् ८. १, ४.

पट्वीशात् ६. ६६, २; ७.
११२, २; ८. ७, २८;
१६. ८, ३२.

पट्वीशे १२. ५, १५.

पण्यः ५. ११, ६; १६. ४६,
२.

पणि २०. १२८, ४.

पणिम् २०. ६१, ६.

पणीन् ४. २३, ५; ५. ११,
७; २०. ३७, ६; ६३, २.

पण्ये २०. २५, ४.

पण्यौ २०. ५५, ३.

परङ्गाः ८. ६, १६.

पुत १. ११, ६; ३. ३, ३;
१०, ७; १६, ८; ६.
१४, ३; १०५, १; २; ३;
७. ११५, १; १४. २,
१६.

पुतङ्ग ६. ५०, २; १३. २,
३०.

पुतङ्गः ६. ३१, ३; १३. २,
३१, ३, १; २०. ४८, ६.

पुतत् ६. ८३, १.

पुततः १०. ८, १८; १३. २,
३८; ३, १४.

पुतति ४. २०, ६; १०. ८,
११.

पुतति २. ८०, १; ७. ७६,
४.

पुतत् ५. १४, १२; ११. १०,
७, २०.

पुतत्रिणः १. १५, १; ५.
२१, ६; ८. ७, २४; ११.
६, ६; १०, २४; १६. १,
१.

पुतत्रिणी ५. ५, ६; ६. २६,
१.

पुतत्रिभिः १०. १०, १४.

पुतत्रि-इव १४. २, ४४.

पुतत्रैः १३. २, २६.

पुतन्तम् ८. ३, ५; १३. २,
३६; १८. ३, ६६.

पुतन्ति १. ११, ६; २०. ६२,
७.

पुतन्ति ६. २२, १; ६. १०,
२२; १३. ३, ६.

पुतन्तु १. १६, २; २. ३, ६;
६. १२६, ३.

पुतयः ३. १०, ५; ४. ३७,
१२; ५. १७, ८; ६. ६२,
२; ७. ७६, ४; ८. ३;
६१, १; १०६, ६; ६. ७,
१४; १०. १, २२; ६, २७;
१६. ११, १; २०. ८८,
६; १२५, ६.

पुतयत् २०. ६८, ७.

पुतयत् २०. १७, ८.

पुतयति १६. ४८, ३.

पुतयन् १३. २, ३१.

पुतयन्तम् १३. २, २; १८.
१, १८; २०. ६६, १३.

पुतयन्ति ८. ४, १८.

पुतयन्ति ८. ४, २०.

पुतयालः ७. ११५, २.

पुतयिष्णुकम् ६. १८, ३.

पुतये २. ८, ५; ३. १०, ६;
१०; १६. ३७, ४.

पुताति ५. २६, २; ३; २०.
७४, ६.

पतिः १. १, १; ३; ४; २१,
१; २. २, १; २; ३६, ८;
३. ४, १; १०, ८; ४. २,
७; ५. ३, ६; १७, ८; ६;
६. ४, १; ५, ३; ३३, ३;
७३, ३; ७४, १; ७६, १;

म०, ३; ७. १७, १; ३०,
१; म. ५, २२, ६. ४, २;
४; १७; ५, २८; ११. ६,
२५; १२. २, ६; ३६; ३,
३६; १३. १, ५१; ३,
७२; ४, ४७; १४. १,
२६; २७; २, २; ३२;
६३; १६. ६, ६२; १८.
१, ३; १६. १०, ५; १०;
२०, २; २०. २१, २; ६४,
१; २; ३; ७३, ४; ७७,
७; ६१, ७; ६६, १५;
१२६, ११; १३७, ५; ६;
१४३, ८.

पतिः २०. १२७, ८.

पति-कामा २. ३०, ५.

पतित्वा ४. १२, ७.

पतिना १६. ६, ६२.

पति-भ्यः २. ३६, ७; ५. १२,
५; १४. १, ४६; ६१; २,
१; १२.

पतिम् २. ३६, ३२; ३. १६,
१; १८, १; २; ५. १, ४;
६. ३६, १; ६०, १; ३;
७८, ३; ७. २१, १; ४६,
३; ६. ५, २७; ११. ५,
१८; ६, ४; ६, ८; १२.
३, २६; १४. १, ६; १०;
१२; २५; ३१; ५६; २,
२२; ५२; १८. १, ११;
१६. ३०, ३; २०. १७,
१; २३, ५; ६४, ६; ७१,
१०; ६४, ४.

पतिम् २०. १२७, ६.

पतिम्-इव १८. २, ५१.

पति-लोकम् १४. २, ४०;
१८, ३, १.

पति-लोके १४. १, ६४.

पति-वेदनम् २. ३६, २; १४.
१, १७.

पति-वेदनौ ८. ६, १.

पतिष्यति ६. ८३, ३२.

पती इति ६. ३, ३.

पती इति ६. ६६, २; ६. १,
१६; १४. १, १५; २, ५;
६; २०. १२५, ४.

पते १. १, २२; २६, १; ३.
२०, २; ४. ४, ६; १६,
८; ६. ६, १; ४५, ३;
७६, २; १०१, २; १४०,
१; ७. ५६, ४; ७४, ३;
८१, ३; ६७, ८; ८. ६,
१५; १०. ५, ४५२; १३.
१, १७; १८; १६; १४.
१, ३१; १६. ८, ६; २४,
१; ६३, १; २०. ४५,
२; ६०, ३; ७४, २; ७५,
२; ६६, २४.

पतौ ३. १८, ३.

पत्-घोषैः ५. २१, ८.

पत्तः ६. १३१, १.

पत्तीन् ७. ६२, १.

पत्थाः ८. १, ४; १०.

पत्तिः ३. १२, ५; ७. ४६,
३; ६. ३, ६.

पत्नी २. १२, १; ३. १०,
२; ७. ४७, २; ६. ३,
६; १२. १, १; १४.
१, ५१.

पत्नी २०. १३५, ५२.

पत्नीः २. २६, ५; ७. ४६,
१; ६. ७, ६; १४. २,
३२.

पत्नीनाम् ६. ३, ७.

पत्नीनाम् १६. ५७, ३.

पत्नीभिः ५. २६, ४; ११.
६, १६; २०; १४. २,
५१; १६. ८, ६.

पत्नीम् ७. ६, २; ६. ३,
२१; १४. १, ४६; २,
२.

पत्नी-वतः २०. १३, ४.

पत्न्याः ६. ३, ५.

पत्-भिः ३. ७, २; ४. ११,
१०; १४, ६; १६. ६,
२.

पत्-भ्याम् ५. ३०, १३; १२.
१, २८; १६. ६, ६; ८.

पत्यते २०. ३६, १; ६७, ७.

पत्यते २०, ६३. ६.

पत्यमाने इति ५. २७, ८.

पत्न्या २. ३६, १; ४; १०.
१, ३; ११. १, १४;
१४. १, २१; ४०; ५०;
५२; २, ३२.

पत्न्या-इव ६. २२, ३.

पत्युः १४. २, ४२; ४३; १८.
३, २.

पत्ये ३. ३०, २; ८. ६, २१;
१४. १, ६; ४६; ५५;
२, ७; २४; २६; २७;
३१; १८. १, ८; २०.
३५, २.

पत्येते इति ७. २५, १.

पत्-वता १०. १०, १३.

पत्-वती ६. ३, १७; १४.
१, २५.

पत्-वतीनाम् ६. १०, २३.

पत्-सङ्गिनीः ५. २१, १०.

पुत्ति ६. १२०, २.	पुत्थ्याः ३. ४, ७; १८. १, ५०.	पुदोः १. १८, २; १२. ४, ५.
पुत्तु ६. ६२, १.		पुद्यताम् १. ११, ४; ५; ६; ४. १८, २; ६. २६, २; १०. ६, २७.
पुथः ५. १२, २; २७, २; ३०, ७; ६. ११७, ३; १२१, ४; ८. २, १०; १०. ४, ६; ११. १, ३६; १३. १, ५६; १५. ११, ३; २०. २५, ५; १२७, १०.	पुदः ४. १५, १४; ६. ४, १४; ५, ३.	पुद्यते ११. ४, २५; १८. ३, १.
पुथा ३. १८, ६; ४. ३, २; ५. ३१, १०; ६. ७, १; ८२, २; १८. १, ६१; २, ११; ४६; ४, ६०; २०. १२६, २१.	पुद-ज्ञाः ८. ७५, २.	पुद्यन्ताम् ३. १६, ३; ८. ८, १८; २०; १३. १, ३१.
पुथाम् ४. ३, ५; ५. १, ६; ६. २६, २; ७. ६, १.	पुदनीः-इव ११. २, १३.	पुद्यम् २०. १३६, ५.
पुथि १४. १, ६३.	पुदम् २. १२, ८; ३. १०, ६; ६. २७, ३; २६, १; ७०, २; ७६, १; ३; ७. २६, ७; ६. ६, ५; १०, १; १६; १०. १, २६; ४, २४; ८, ६; १२. २, ३०; १८. ४, ८६; २०. ६१, २.	पुद्यस्व ३. १६, ८; ११. १०, १८.
पुथि-कृतः १८. ३, २५-३५; ४, १६-२४.	पुद-योपनीम् ५. १६, १२.	पुद्याभिः २०. १३५, ८.
पुथि-कृता १८. २, ५३.	पुदयोपनेन १२. २, २६.	पुद्ये ५. ६, ११; १२; १३; १४; १६. ८, २२.
पुथि-कृत-भ्यः १८. २, २.	पुद-वायः ५. १८, १४.	पुनयन्ति २०. ११, ६.
पुथि-भिः २. ३४, ५; ६. ४, ३; १०, ११; १२. २, १०; २६; ४१; १८. १, ५४; २, ५३; ४, २; ३; ६२; ६३; १६. २७, ६; ४७, ७.	पुद-वायम् १२. ५, ४.	पुनस्यते २०. ५८, ३.
पुथि-रक्षो इति पुथि-रक्षी ८. १, ६.	पुद-चोः १२. ५, ५८.	पुनस्यते २०. ६२, ५.
पुथि-रक्षः ६. २८, १.	पुदा ७. २६, ३; ५; ८. ६, १७; ६. ६, ५; १७; १०. ४, ३; ७; १३. १, ४१; ५६; २०. ६३, ५; ६३, २.	पुनाय्यम् २०. १४३, ६.
पुथि-सदी इति पुथि-सदी १८. २, १२.	पुदात् ६. २८, १.	पुनिप्रतम् ७. ३२, १.
पुथि-स्थाम् १४. २, ६.	पुदानि २. १, २; ६, २८, १; ६. ६, ६; १०, २७; १२. २, २८; १८. ३, ४०.	पुनिष्पदा ५. १०, १६.
पुथीनाम् ६. ५, १६.	पुदार्य ३. १६, ६.	पुनीयसी १८. ४, ८८.
पुथ्या-इव १८. ३, ३६.	पुदीष्ट ७. ३१, १; ८. ४, १६; १७.	पुनीयसे २०. १५, ३.
	पुदे ६. ६३, ४; ७. २७, १; २०. ६२, ४.	पन्थाः ४. २, ३; १०. १, १५; १३. १, २३; १४. १, ११; १८. ४, १४.
	पुदेन ६. ७०, २.	पन्थानः ३. १५, २; ३१, ४; ५. ४, ५; ६. ५५, १; ७. ५५ १; १२. १, ४७; १४. १, ३४.
	पुदे-पदे ५. ६, ३.	पन्थानम् १२. १, ४७.
		पन्थाम् ३. ३, ४; ६. २८, ३; ८. १, १०; ६. १३; १० (३). ५; ६; ११. १, २८; ३०; ३१; १०, १६; १२. २, २१; ५५; १४. १,

(४, ८६२)

पञ्चानाम्—परम्.

५८; २, ८; ७४; १५.
 १२, ५; ६; १७. १, १६;
 १८. १, ४६; ३, ४; ४,
 ३; १६. ५६, ३; २०.
 ६३, ६.
 पञ्चानाम् ६. २, ६.
 पपत्यात् ६. २६, ३.
 पपन् २०. १८, २.
 पपाच ४. ३५, २.
 पपात् ७. ४३, १.
 पपाथ २०. ८७, ३.
 पपि-चांसः ७. ६७, ३.
 पपि-चांसम् १८. १, ४८.
 पपि-वान् १४. १, ३; २०.
 ३५, ७.
 पपुंरि २०. ८०, १.
 पपुषः २०. ६४, २.
 पपुक्षे २०. १४३, ७.
 पपुन्याम् १८. १, १३; १४.
 पपौ ४. ६, १.
 पप्तत् ७. ५२, २.
 पप्तम् १२. १, ३१.
 पप्रथत् २०. ११८, ४.
 पप्रथाना १२. १, ६१.
 पप्रथे १६. ३, ३.
 पप्रथे २०. १०४, २; ११६,
 २.
 पप्राथ २०. ८१, २; ८७, ३;
 ६२, २१.
 पप्रिः २०. ४६, २.
 पप्रिम् १२. २, ४७.
 पप्रि ११. २, २७.

पप्रौ १६. ४६, १; २०. ७७,
 ५.
 पर्यः १. ४, १; २. २६, ५;
 ३. ५, १; १७, ७; २६,
 ६; ४. ८, १; ११, ४; २७,
 ३; ६. ६६, ३; ७. ७३,
 ४; ६; ८. २, १६; ३,
 १७; ६. १, २; ६(३), २;
 १०, ५; १०. ६, ३१;
 १०, १०; ३१, ११. ५,
 १४; १२. १, ६; १०; ५,
 १०; १४. २, ५७; १८.
 २, ३; ३, ५६२; १६.
 ३१, ५; ४३, ५; ४४, ५;
 २०. ४८, ३; १३०, २;
 ३; ४.
 पर्यःभिः ६. १, ८; १०, ६.
 पर्यःस्फातिम् १६. ३१, १०.
 पर्यते ६. १, ८; १०, ६.
 पर्यसः ७. ७३, ५; १८. ३,
 ५६,
 पर्यसम् ४. १४, ६; ७. ३६,
 १.
 पर्यसा १. ३५, ४; ३. १५, २;
 १७, ६; ४. ८, ५; १४, ६;
 १५, ६; ५. १, ६; २८,
 ३; ६. ५३, ३; ६२, १;
 ७८, २; १२४, १; ७.
 ७३, ६; ७६, ३; १०. १,
 १२; ६, २६; ११. १, ७;
 १२. १, ५६; १३. १, ८;
 ६; १४. २, ७०२.
 पर्यस्वत् ३. २४, १; १८.
 ३, ५६.
 पर्यस्वती ३. १०, १; १२,
 २; १७, ४; ४. ३८, ३;
 ६. ३, १६; १२. १, ५६.

पर्यस्वती इति ६. ६२, १.
 पर्यस्वती इति २. २६, ५.
 पर्यस्वतीः ३. २४, १; ४.
 ८. ४; ६; ६. २२, २;
 ८. २, १४; ७, १७; १८.
 ३, ५६.
 पर्यस्वनीनाम् ३. २४, १.
 पर्यस्वतीम् १४. १, २७.
 पर्यस्वन्तः ७. ६८, २.
 पर्यस्वन्तम् ३. २४, २; ६.
 ५६, २.
 पर्यस्वान् ७. ७३, ५; ८६,
 १; ६. १, १४; ४, १; ३;
 ६; १०. ५, ४६; १६.
 ३३, १; २; ४६, ६२.
 पर्यसि १. ६, ३; ५. २६,
 १०; १८. १. १८.
 परः ६. १०, १४; १८. २,
 ३२.
 परः ३. ८, ४; ४. ३०, ८;
 ५. ७, ७; ११, ५; ६२;
 ६. ४५, १; ७. ७, १;
 ८. २, १२; ४, ११; ६.
 ४, २१; ६, १७; १८; १०,
 २५; १०. ७, २५; ११.
 १, २६; २, ११३; ५,
 १०; १३. १, ४१; १४.
 १, ३२; १८. ३, ७; २०.
 ७१, १; ६१, ४; ६३,
 ११; ६६, २४२.
 परः-तराम् ५. २२, ७; १०,
 ६; ६. ६७, १.
 परः-परः १२. ३, ३६.
 परः-पा २०. १४१, १.
 परः-सहृन्ताः ८. ८, ११.
 परम् १. ८, ३; ७. ३५, १;
 ८. ३, ३; ६. १०, १३;

परमः—परा-ई-युः.

(४, ८६३)

१०. ७, ३१; ऋ, ऋ; ११.
१, ३०; १२. २, २१;
१८. २, ३२; १६. ५३,
४.
परमः १६. ५४, ५.
परम-ज्याः २०. १०४, ३.
परमम् १. १३, ३; २५, १;
२. १, १; २; ५. ११,
११; ७. २६, ७; ६. १०,
१३; १४; १०. ७, ८;
२८; ११. १, ३०; १४. २,
३६; १८. १, ४; १६.
५४, ५.
परमम्-ईव १०. ७, २१.
परमस्य १३. ३, ५.
परमस्याः ३. ४, ५.
परमा २०. ८८, ३.
परमात् ७. ६३, १.
परमान् ६. १०३, २.
परमाम् ६. ७५, २; १५. ६,
१३.
परमे ५. १७, ६; ६. १२३,
१; २; ७. ५, ३; ८. ६,
८; ६. १०, १८; १२. १,
८; २, ७; १३. १, ४४;
१७. ११, ६-१६; २४;
१८. ३, ५७; ५८; ४,
३०; १६. ४३, ३; २०.
८८, ४.
परमेण ४. ३, २; १६. ५६,
५.
परमेभिः १६. ४७, ७.
परमे-स्थिन् १. ७, २; १३.
१, १७; १८; १६.
परमे-स्थिनिः १०. ५, ४२;
१५. ६, २६.

परमे-स्थिन्म् १०. २, २०;
२१; ७, १७२; ११. ५,
७; १६. ६, ४; ५३, ६.
परमे-स्थिनि १०. ३, २४.
परमे-स्थिनी १६. ६, ३.
परमे-स्थी ४. ११, ७; ८. ५,
१०; ६. ३, ७; १२, १;
१२. ३, ४५; १३. १, ६;
३, ५; १५. ६, २५; ७,
२; १४, २३.
परशुः ७. २८, १२; ८. ४,
२१; २०. १७, ६.
परश्वत् ११. ६, १.
परशोः ३. १६, ४.
परस्तात् ४. २६, ४; ५; ६.
७३, ३; १२२, १; ४;
७. ६, ४; ८. १, १०;
१०. ७, ४३; ८, ३६;
१३. २, ८; ३१.
परस्फानः १६. १५, ३.
परस्मात् ३. ३, ४.
परस्मिन् ६. ११७, ३.
परस्मै १. १२, ४.
परस्य १३. ३, ५; २०. ३४,
१६.
परस्याः ६. ३४, ३; ७. २६,
२; ८४, ३.
परस्वतः ६. ७२, २.
परस्वतः २०. १३१, १६.
परस्वन्तम् २०. १२६, १८.
परा १. २३, २; २. २, ३;
३. २, ५; ४, ६; १०, ७;
१८, २; १६, ८; ४. १३,
५; २०, १; ३७, ३; ४;
५; ५. ३, ८; १४, ४;

१८, १०; १२; १६, १; ६;
११; २१, ७; २२, २; ३;
२८, ६; ६. २६, ३; ४५,
१; ६६, २; ७५, १; ६८,
१; १२७, ३; १४०, ३;
७. ६, १; ४४, १; ५३,
४; ६; १००, १; ८. ३,
१३३; १४; १६२; ४, १;
५, ३; ६; ८, २४; ६. ६,
१७; १०, ११; १०. १,
७; १६; २०; २४; २५;
२६; ४, २०; ५, ४६;
११. १, ११; १३; १२.
१, ३७; २, १; २१; ५५;
४, ४६; ५, ४३; १३. १,
४१; १४. १, २५; २,
३४; ३५; १६. ४, ३; ६,
३२; ७; ११; १८. ३,
१४; ६२; ४, ६३; १६.
८, ४; ३६, १०; २०.
६८, ४; ७७, ७; ६६, ३;
१२६, २.
परा-अर्पतत् १. ३, ६.
परा-अर्पन्तम् १. ३४, २; ६.
७७, २; १०. ४, ७.
परा-अर्पने ६. १०६, १.
परा-अर्पणीत् १०. ६, ३.
परा-इतः ३. ११, २; ४. ३२,
५; १८. २, २६; २०.
६६, ७.
परा-इतम् १८. ४, ५१; ६२.
परा-इताः १२. २, २६; १८.
१, ५०; ५४; ४, ४४.
परा-इत्य ५. २२, ८; १०.
४, १६; १४. १, ४३.
परा-ईयुः २. २६, १; १८.
२, ४७.

(४, ८६४)

परा-उत्ताः—परि.

परा-उत्ताः १८. २, ३४.
 पराक् १०. १, १६.
 पराक्ते २०. १४१, ५.
 पराक्-मताः ८. १, ६.
 परा-कर्म्य १०. ७, ११.
 परा-क्रान्तः १०. ७, १६.
 परा-गतम् ७. १२, ४.
 परा-गताः १८. ३, ७२.
 पराङ् ६. २६, ३; ६७, ३;
 १७. १, १७.
 पराचः २. २५, ५; ३. १,
 ४; ६. ६, १६.
 पराचीना ६. १०६, २.
 पराचीनय ११. ४, ८.
 पराचीम् ६. २६, ३.
 पराचैः २. १०, ५; ६. ६७,
 २; १२४, २; ७. ४२, १;
 ५३, ३; ८. ६, २; १८.
 २, २६.
 परा-जयन्ते ४. २२, ५.
 परा-जिता ३. १, ६.
 परा-जिताः ५. २१, ६; ८.
 ८, १६.
 परा-जितासः ४. ३१, ७.
 पराञ्चः ४. ४०, १-८; ६.
 ६, १६; ११. ६, २२.
 पराञ्चम् ६. ६५, १; ११. ३,
 २६; २८. ३; ३२-४६.
 परा-वृद्धिः २०. ५६, २.
 परावृद्धिः २०. १२८ ५.
 परा-वृश्य ८. ८, २.
 परा-वै २०. ३७, ७.
 परा-नीय १२. ४, ५२.
 परा-नुवे २०. २८, ३; ३६,
 ४.
 परा-पतति ६. १०५, १; २.
 परा-पतन्ति ६. १०५, ३.

परा-परैता १८. ४, ४८.
 परा-पुरः १८. २, २८.
 परा-अवेत् १२. ४, ४५.
 परा-भुवे १. २६, ४.
 परा-भूतिः १२. ५, ३५.
 परा-भूत्या १६. ७, १.
 परा-भूत्याः १६. ५, ७; ८,
 ८.
 परा-भूतम् ५. २६, ५; १२;
 ७. ४१, २; २०. ४३, २.
 पराम् ३. १८, ३.
 परा-सृष्टा १२. ५, २४.
 परा-यतः ७. ३८, १.
 परा-यते ११. २, १५; ४,
 ७.
 परा-वत् २०. ८८, ३.
 परा-वतः ३. ४, ५; ४. १३,
 २; ५. ३०, १; ६. ३४,
 ३; ३५, १; ७५, ३; ७.
 २६, २; ८४, ३; ८. ५,
 ६; १०. १०, २; ३; १२.
 ५, ६४; १८. ४, ४१;
 २०. ६, ८; २०, ४; ५७,
 ७.
 परा-वर्तम् ३. १८, ३; ६.
 ७५, २; ८. १, ८; २०.
 ६. ६.
 परा-वर्ति २०. २१, ७; १११,
 २; ११२, ३.
 परा-वाकाय ६. १३, २.
 परा-शर ६. ६५, १.
 परा-शूरः ८. ४, २१.
 परा-शसा ६. ४५, २.
 परासः १८. १; ४४; ३, २१.
 परास्यः २०. १२६, ६.
 परि २०. २२७, ६.

परि १. २, २; १०, १; ४;
 १४, ३; १७, ४; २०,
 २; २२, १; २; ३; २५,
 १; २; ३; ३०, २; ३;
 ३४, ५; ६. १, ४; ५;
 ४, २; ७, ३; ४३; १३,
 २; ३; १४, ६; ३३,
 ३; ३४, ५; ३. २, ४;
 ११, ७; २५, ५; ४. ७,
 ५; ६; ८, ३; ६, ६; १०,
 १; ४; ११, १२; १५,
 १०; १६, ८; २१, ७;
 ३४, ४; ५. ३, २; ४,
 २; ६, ४३; ७, १; १४,
 ३; २२, १०; १४; ३०,
 ११; ६. ८, १; ३; १२,
 १; २७, २; २८, १; २३;
 ३७, २, ५५, १; ६१,
 २; ६७, १; ८४, १; ८६,
 १; ६३, १; ६६, २; ३;
 १०३, २; ३; १०६, ३;
 १०७, १; २; ३; ४; १०८,
 ५; ११०, २; १११, ३;
 ११२, १; ११६, ३; १२२,
 १; २२३, १; १२५, २;
 १३३, ५; १३७, २; ३;
 ७. ६, ४; ३८, २; ४५,
 १; ५१, १; ५३, ४; ७;
 ५६, १; ७१, १; ७२, २;
 ७५, १; ८१, १; ८४,
 १; ६६, १२; ८. २, ६;
 २०२; २२; २६; ३, ३;
 १०; २०; २२; ४, ५;
 ६; ६, २१; २२; ६, ४;
 ५२; १८; ६. २, ५;
 १६२; ४, १०; ५, २; ६;
 ८, ८; २१; ६, १३; २०।

परि-अभूषत्—परि-नृत्यन्त्योः-इव.

(४, ८६५)

१०, ३; १७; १०. १,
 ३२; २, १५; १८; ३,
 १०; ४, २५; ७, २५; ८,
 १७; ३०; ३६; ११. २,
 ४; ८; २०; २५; ६,
 ५; १०, १६; १२. २,
 ३३; ४७; ३, २६; २५;
 ३१; ३३; ३५; ४०; ४६;
 ५१; ५३; ५५-६०;
 ४, ४६; ५२; ५, ४८;
 १३. १, १७; १८; १६;
 २०; २५; २६; २, ३;
 ११; ३२; ४३; ४४; ४५;
 १४. १, २३; ३६; ४५;
 ५३; २, १; ३६; ४४;
 १५. १, ५; १२, ७; १३,
 १३; १७, ८; १७. १,
 ६; १५; ३०; १८. १, २;
 १५; १६; १६; ३५; २,
 ५; १२; २७; ५४; ५५;
 ५८; ३, १२; ५२; ४,
 ६; १६. १, ३; ३, १;
 १३, ८; १७, १-१०; २०,
 १; २४, १-६; २६,
 १; ३१, ५; ३२, १०;
 ३३, १; ३४, ५; ३५,
 ४; ३७, ३; ३६, १;
 ५; ४४, ६; ८; ४५,
 ५; ४६, ३; ४; ४८, १;
 २; ५०, ७; ५२, ४;
 ५३, ४; ५७, ५; २०.
 १६, ८; १७, १; ६; ११;
 २०, ७; २६, ४; ३४, १२;
 ३५, ८; ११; ३६,
 १; ४२, १; ४३, १; ४७,
 १०; ५२, १; ५७, १०;
 १४; ६३, ३; ६६, ६; ७०,

१६; ८६, ११; ६२, ६२;
 ६४, ११; ६५, ३; ६६,
 १६; ६७, ३; ११०, १;
 ११५, १; १२४, ६; १२६,
 ८; १३६, १०; १३६, ४.
 परि-अभूषत् २०. ३४, १.
 परि-अस्यन्ती १२. ५, २१.
 परि-आकृता १२. ५, ३३.
 परि-आक्रियमाणा १२. ५,
 ३३.
 परि-आगारम् २०. १३२,
 १२.
 परि-आदधति १२. २, ५१.
 परि-आधत्त ६. ५, ५.
 परि-आनन्दम् १४. २, १२.
 परि-आयिनः ६. ७६; ४.
 परि-आवर्ते ७. १००. १;
 १२. १, ३४.
 परि-आवर्तयाम् १२. ३, ८.
 परि-आवृतः ११. ४, २६.
 परि-इक्ष्यातै १८. २, ५८.
 परि-उक्ता ४. १६, २.
 परि-उद्यमाना १८. १, ५३.
 परि-ऊढा ११. ३, १५; १२.
 ५, ३.
 परि-एतवे २०. ६५, ३.
 परि-एति ४. ३८, ५; ६. ८,
 ३.
 परि-कृत्य ५. १४, ३.
 परि-कृत्यमानः ४. १६, ७.
 परि-कृत्य १२. ४, १७.
 परि-कामम् ८. ६, ८.
 परि-क्रोशम् २०. ७४. ७.
 परि-क्षवम् १६. ८, ४; ५.

परि-क्षवात् १०. ३, ६.
 परि-क्षितः २०. १२७, ७; ६;
 १०.
 परि-गृहीता ११. ३, १५.
 परि-गृह्णन्ति १२. १, १३.
 परि-चराः १२. १, ६.
 परि-च्छिन्नः २०. १२७, ८.
 परि-जाः १६. ५६, ६.
 परि-जातः ३. ६, १.
 परि-जम् २०. ७०, ५.
 परि-ज्मा ७. १४, ४.
 परि-णहि १६. ४८, १.
 परि-तल्लयार्थे २०. ३६, ७.
 परितः-इव १०. ७, ३८.
 परि-तल्लुना १. ३४, ५.
 परितः-तताः १. ७, ५.
 परिधयः ६. ६(१), १०; १३.
 १, ४६; १६. ६, १५.
 परि-धातुवै २. १३, २; १६.
 २४, ४.
 परि-धानम् ८. २, १६.
 परि-धार्य २. २६, ६.
 परि-धिः ४. ६, १; ५. ३६,
 २; ३; ८. २, २५; १२.
 २, ४४.
 परि-धिमू ८. २, ६; १२.
 २, २३.
 परि-नीयमानाम् १८. ३,
 ३.
 परि-नृत्यति ४. ३८, ३.
 परि-नृत्यन्ति ८. ६, १०.
 परि-नृत्यन्त्योः-इव १०. ७,
 ४३.

परिपदाम्-इव २०. ६६, ३.
 परि-पन्थिनः १. २७, १;
 १२. १, ३२; १४. २, ११.
 परि-पन्थिनम् ३. १५, १.
 परि-पानः ८. ५, १; १६;
 १६. ३४, ७; ३५, ३.
 परि-पानम् २. १७, ७२; ४.
 ६, २२; ३; ५. ८, ६;
 ११. १०, १७; १६. ३५,
 २.
 परि-पानात् ४. २०, ८.
 परि-पानाय ४. ६, २.
 परि-बेधिरे ६. १३३, ५.
 परि-ब्रवीमि १६. ३६, २;
 ३; ४.
 परि-भुवः ६. १०, १७.
 परि-भू इति परि-भू ४.
 २५, १.
 परि-भूः ३. २१, ४; ४. ३३,
 ६; ७. ७६, ४; ८०, ३;
 १३. २, १०; १८. १,
 ३०.
 परि-ममृशुः २०. १३६, ३.
 परि-मधिषत् २०. ११८, २.
 परि-मिता ६. १०, २७.
 परि-मिताम् ६. ३, १.
 परि-यन्तः ४. ३५, ४.
 परि-यन्ति १. १, १.
 परि-यान्तम् १३. २, ४; ५.
 परि-यासि १३. २, ६.
 परि-रथ्यम् ८. ८, २२.
 परि-रापिणः १२. ४, ५१.
 परि-रापिणम् ५. ७, २.
 परि-रुजन् १६. १, २.

परि-वत्सरः ८. ८, २३.
 परि-वत्सराय ६. ५५, ३.
 परिवत्सरीणम् ३. १०, ५.
 परि-वर्ग्यः ६. २, १४.
 परि-वर्तमाने ६. ६, ११.
 परि-वादम् १६. ८, ४.
 परि-वित्तः ६. ११२, ३.
 परि-विष्टम् ६. १२२, ३;
 १२. ३, ७; २०. १६,
 ६.
 परि-विष्य ६. ६ (६), ५.
 परि-वीतः ६. १०, १०.
 परि-वृक्ता ७. ११३, २.
 परिवृक्ता २०. १२८, १०.
 परि-वृजम् २०. ६६, ३.
 परि-वृतः १७. १, २८.
 परि-वृता १०. ८, ३१; १२.
 ५, २.
 परि-वेशसः २. ३२, ५; ५.
 २३, १२.
 परि-वेषात् ६. ६ (१), १२.
 परि-वेषटारः ६. ६ (६),
 ३.
 परि-शासम् ५. १४, ३.
 परि-शुम्भन्ति १३. १, ५१.
 परिष्कृता ६. ३, १०; १४.
 १, ७.
 परिष्टौ २०. ३७, ७.
 परि-सदम् १८. ३, २२.
 परि-सर्पति ५. २३, ३२.
 परि-सर्पन्ति ८. ६, २४.
 परि-सस्वज्ञानः १. २, ३;
 ४. ८, ७.

परि-सस्वज्ञे ६. ८, १.
 परि-सिक्तम् ७. ५८, २.
 परि-सिच्यते १०. ८, ३६.
 परि-सीदन्ति ६. ७६, १.
 परि-सूतम् ११. ५, २३.
 परि-सूताः २०. २१, ८.
 परि-सृष्टम् ८. ६, २०.
 परि-स्कन्दाः १५. ३, १०.
 परि-स्कन्दौ १५. २, ६; १४;
 २०; २६.
 परि-स्तरणम् ६. ६ (१),
 २.
 परि-स्था ११. २, २५.
 परि-सुतः ३. १२, ७.
 परि-स्वजीयसी १०. ८, १५.
 परि-स्वजे १४. १, ४६.
 परि-स्वज्जल्यस्य ६. ३, ५.
 परि-हवम् १६. ८, ४.
 परि-हस्त ६. ८१, २.
 परि-हस्तः ६. ८१, १.
 परि-हस्तम् ६. ८१, ३.
 परि-हिता १२. ५, ३.
 परि-हिनोमि ८. ४, ६.
 परि-हुता १२. ६, २.
 परीणसः २०. ६७, १.
 परीत्तः ६. ६२, १.
 परुः ४. १२, २; ३; ७.
 परुः-परुः १. १२, ३; ४.
 ६, ४; ६. ३, १०.
 परुः-संसम् ६. १४, १.
 परु-शः ६. ५, ४.
 परुष-आहः ८. ८, ४.

पुरुषः प. २२, ३.
 पुरुषस्य १०. ४, २.
 पुरुषा ४. १२, २; ३; ७.
 पुरुषान् म. म, ४.
 पुरुषाणि ६. १२, ३.
 पुरुषि ६. ३, ३; ६ (१),
 १; म, १८; १०. १, म;
 २०.
 परे २०. १३६, १३.
 परे प. २, ६; २४, १५; ६.
 ६, १२; १३. १, ४०;
 २०. ३४, म; १०७, ६.
 परे १. १७, २.
 परेण ४. ३, २३; प. ११,
 ५; ६. ६, १७; १८२;
 १०. १, १६; १३. १,
 ४१; १६. ४७, ७२.
 परेमिः १२. २, २६.
 परेयि-वांसम् १८. १, ४६.
 परेषाम् ३. १, १; २, १; ६;
 प. ३, २; २०, ३.
 परेषु ६. ३६, ३.
 परैः १८. ३, ४८.
 पुर्जन्य ४. १५, ४; ६.
 पुर्जन्यः ३. २१, १०; ४. ११,
 ४; ६. ४, १; म. ७, २१;
 १०. १०, ७; १२. १,
 १२; १६. १०, १०; ३०,
 ५; २०. १३८, १.
 पुर्जन्य-जिन्विताम् ४. १५,
 १३.
 पुर्जन्य-पत्नी १०. १०, ६.
 पुर्जन्य-पेतन्यै १२. १, ४२.
 पुर्जन्यम् १. ३, १; ३, १;

१०. २, १६; ११. ६, ६.
 पुर्जन्यस्य ३. ३१, ११.
 पुर्जन्ये ६. ३८, ३.
 पुर्ण ३. ५, ६; ७.
 पुर्णः ३. ५, ४; म; १८. ४,
 ५३.
 पुर्ण-धेः ४. ६, ५.
 पुर्णम् म. ७, १२.
 पुर्ण-मणिः ३. ५, १; ५.
 पुर्ण-मणे ३. ५, २.
 पुर्णम्-इव प. २५, १.
 पुर्ण्यम् २०. २१, म.
 पुर्णा २०. १६, १०.
 पुर्णात् प. ५, ५; १०. १,
 २६.
 पुर्णस्त-अक्षाः म. ६, १६.
 पुर्णायिकेभ्यः १६. २२, ७.
 पुर्व १. १२, २; २०. ३५,
 १२.
 पुर्वणः २०. १६, ६.
 पुर्वणि-पुर्वणि २. ३३, ७;
 २०. ६६, २३.
 पुर्वतः १. १४, १; ४. ६, म.
 पुर्वतः-इव ६. ८७, २.
 पुर्वतम् २०. १५, ६.
 पुर्वतस्य ४. ६, १; १२. २,
 ४१; २०. १६, ७.
 पुर्वताः ३. २१, १०; ६. १२,
 ३; ७७, १; म, १; ७.
 ६६, १; ६. ७, १२; १२.
 १, ११; १७. १, ३०;
 १६. १०, म; २०. ३४,
 १४.

पुर्वतात् २. ३, १; प. २५,
 १.
 पुर्वतान् १. १२, ३; ६. १७,
 ३; १०. २, १८; ११. ६,
 १०; १३. १, ४७; ५३;
 २०. ३४, २.
 पुर्वतान् २०. १२८, १४.
 पुर्वतानाम् २. ५, ५; ४. ६,
 म; प. २४, ६.
 पुर्वताय १६. ४८, ३.
 पुर्वतासः २०. १०६, २.
 पुर्वतीयम् १६. ४५, ३.
 पुर्वतीयाः १६. ४४, ६.
 पुर्वते २. ५, ६; २०. १५, २.
 पुर्वतेन म. ४, १६; १२. २,
 २३; २०. ३६, ६.
 पुर्वतेभ्यः ३. ३, ३; ६. ५२,
 १; म. ४, ४; २०. १६,
 ३.
 पुर्वतेषु २. ३१, ५; ४. ३६,
 ५; म. ७, १७; ६. १,
 १८; २०. ३४, ११; ४१,
 २.
 पुर्वते-स्थाम् २०. ३६, २.
 पुर्वन् १२. ३, ३१.
 पुर्व-शः २०. १५, ६.
 पुर्व-सु २. ६, १; ६. १४, १.
 पुर्वी १२. ५, ४२.
 पुर्वीणि १. ११, १; म. ३,
 ४; ११. म, १२; १२. ५,
 ७१.
 पशवः ६. ७, ६; १०. ६,
 २०; ११. ३, १२.
 पशानि म. ४, ५; २०. ४३,
 २.

पशुः २०. १२६, २३.
 पशुम् १२. ३, ३१.
 पृष ४. ३३, ८.
 पृषणिम् २०. ७२, १.
 पृषत् ६. ३४, १-५; ७.
 ६३, १.
 पृषि २०. १२, २.
 पृलदान् ६. ३, १७.
 पृलदानाम् ६. ३, ५.
 पृलाल-अनुपृलालौ ८. ६,
 २.
 पृलाल्या २. ८, ३.
 पृलावान् १२. ३, १६.
 पृलितः ६. १०, ६.
 पृलितम् १. २३, १; २.
 पृलितस्य ६. ६, १.
 पृलोजकम् ८. ६, २.
 पृल्प २०. १२६, १५.
 पृल्पलनम् १२. ४, ६.
 पृवताम् ५. ३, ३; ८. १,
 ५.
 पृवते ४. २४, ४.
 पृवते १०. ७, २; ४; १३.
 ३, १६; १८. २, १; ६;
 १४; ३, ५४; ४, ५८;
 १६. ५४, २; २०. १३७,
 ५; ६.
 पृवनेन ४. ३४, २.
 पृवनैः १८. ३, ११.
 पृवन्ताम् ७. ८२, १.
 पृवन्ते १३. ३, २.
 पृवन्ते १२. ३, २५.
 पृवमानः ३. ३१, २; ४. ११,

४; ६. १६, १; २; ६. ७,
 ८; १०. २, २६; ८, ४०;
 ६, २६; १५. २, ७; १४;
 २०; २७; १५, ६; १८,
 ३; १६. ६१, १.
 पृवमाने १७. १, १३.
 पृवस्तैः ४. ७, ६.
 पृवस्व १२. १, १२.
 पृविता ६. ११६, ३.
 पृवित्रम् ६. ६(१), १६; १६.
 ३३, ३.
 पृवित्र-वन्तः २०. १३७, ४.
 पृवित्रस्य २०. ५२, १; ५७,
 १४.
 पृवित्रा ६. १२४, ३.
 पृवित्रेण ६. १६, ३; ५१,
 १; १२. १, ३०.
 पृवित्रेण-इव ६. ११५, ३.
 पृवित्रैः १२. ३, ३; १४;
 २५.
 पृवि-नृसात् ८. ६, २१.
 पृविम् ७. ८४, ३.
 पृवीर-वत् ३. १७, ३.
 पृशवः २. २६, १; २; ३;
 ३४, ४; ३. १०, ६; ३१,
 ३; ७. ४०, १; ६६, १;
 ६. १, २०; २, ५; १६;
 ७, २६; १०. ६, ३३;
 १०, २६; ११. २, ६;
 २४; ४, ५; ५, २१; ६,
 ८; १२. १, ४६; ३, १६;
 ५१; ५, १०; १४. २,
 २५; १५. २, १०; ६, १४;
 १५, ८; १६. ४, ७; ८,
 १; ५-३०.

पृशव्यम् २०. ८७, ६.
 पृशुः १. १५, २; ८. २, २५;
 ६. ६(१), ६.
 पृशुना ८. ३, १५.
 पृशु-पतिः २. ३४, १; ११.
 २, २८; ६, ६; १५. ५,
 ७.
 पृशु-पतिम् १५. ५, ६.
 पृशुपती इति पृशु-पती ११.
 २, १.
 पृशु-पते ११. २, २; ५; ६;
 ११; १६; २४.
 पृशु-बन्धाः ११. ७, १६.
 पृशु-भिः ४. ३६, ५; ७. ८१,
 ४; ५; ६. ३, १४; १०.
 १, १०; ११. १, २२;
 १२. ४, २; १७. १. ६-
 १६; २१; २४.
 पृशु-भ्यः ४. ११, २; १४. २,
 १८; १५. २, ११.
 पृशुम् ८. ७, ११; १८. ३,
 १८; १६. ६, १५; ७१,
 १; २०. २५, ४.
 पृशु-वित् ११. १, १५.
 पृशुषु १. ३०, ३; २. ३१,
 ५; १०. ३, १६; १४. २,
 ६२; १६. ३, २; ४८, ५.
 पृशुन् ३. २८, १-६; ६. ६(३),
 ४; १०. ३, १२; ६, ३५।
 ११. १, १७; १५. ५,
 ३; १६; १४, ११; १६.
 ६, १४; ४८, ५; ६३, १.
 पृशुनाम् १६. ३१, १.
 पृशुनाम् २. २८, ३; ३४, १;
 ४. २२, ४; ५. २४, १२;
 २८, ३; ३१, ३; ६. ४,

पशोः—पाणिना.

(४, ८६६)

६; ६(५), ३; ५; ७; १०; ११. २, २८; १२. २, ५३; ३, २१; ४, २१; ४०; १३. १, ३८; १५. २, १२; ६, १५; १७. १, ४; १६. ३१, २; ५३; ६.	पश्यति ४. २०, १; ६. ३४, ४; ७६, २; ११. ७, २३. पश्यति ४. ५, २; १६, १; २०, १४; ६. ६(५), ८; १०. ८, १६; ३२; १३. १, ४५; ४, ११; १६; १६. ५३, ६.	पश्येम ६. ६२, ३; १२०, ३. पश्वः ७. १४, ३; १८. ३, २३. पसः ४. ६, ७; ६. ७२, २१; ३; १०१, २; ३; २०. १३६, ६.
पशोः १६. ३१, ८. पश्चा १०. ४, ११; ८, ७; ११. ४, २२; २०. ६१, ११.	पश्यते ६. ४, १६. पश्यन् १२. २, ७; १३. २, २२; १४. १, ५७; २०. ४७, १६.	पससा २०. १३६, २. पस्त्यम् २०. ३२, १. पस्त्यान्मि ६. १०, ८. पस्त्योः २०. ३१, ५.
पश्चात् ४. ४०, ३; ६. ४०, ३; ७. ५१, १; ८०, १; ८. ३, १६; २०; ५, १७; ६, १५; ६, ६; १०. ८, १०; ६, ८; ११. २, १३; ६, १८; १२. १, ३१; ३२; १३. २, २७; ३, ११; २५; ४, ७; १८. ४, ६; ११; १६.	पश्यन्ति ८. ६, ६; ६. १, ३; १०. ८, १४. पश्यन्ति ४. १६, ४; ७. २६, ७; ८. ६, ६; १३. १, ३६; २, ४; २०. २५, २.	पस्पशे ७. २६, ६. पस्पृधाते इति ८. ४, १२. पस्पृधानम् २०. ३५, १५. पांसुः १२. १, २६.
१७, २१; २०, ६; ५७, ६; ८६, ११; ६४, ११; १०७, १५.	पश्यसि ११. २, २५; १३. १, ३६; १८. २, ५०.	पांसुरे ७. २६, ४. पांसून् ७. १०६, २.
पश्य १३. ४, ४८; ५०-५३; ५५.	पश्या ४. २०, ५. पश्यानि ४. २०, २.	पाक २०, १३१, १२.
पश्य ८. ३, १०; ६. १०, ६; १०. ८, ३२; १४. १, २८; १८. ४, ३.	पश्यामि ११. २, २५; १३. १, ३६; १८. २, ५०.	पाकः ६. ६, ६; पाकम् ६. ६, २२; १०. १, १८.
पश्यत् ६. ६, १५.	पश्यामि ८. ७, १८; १७. १, ७.	पाकस्य ४. १६, ३.
पश्यत् २. १, १.	पश्यामि ३. १३, ६; ४. २०, ४; ८; १८. २, ३२.	पाकैन् ८. ४, ८.
पश्यत् १४. २, २८.	पश्यामि १०. ३, ६.	पाङ्क्तम् १२. ३, १०.
पश्यत् १. ३३, ४; ७. २६, ६; ७२, १; १३. ४, ४८; ५०-५५, १६. १२; १, १८. ४, ३७.	पश्यामि १८. १, ५४. पश्यासि ३. ४, ३.	पाजस्यम् ४. १४, ८; ६. ७, ५.
पश्यतः १६. ६२, १.	पश्येम ७. ५, ३; १६. ६७, १.	पाजस्यात् १०. १०, २०. पाञ्च-जन्यस्य ४. २३, १.
		पाटाम् २. २७, ४. पाणिना १२. ५, ४८.

पाणि-भ्याम् २. ३३, ६; २०.
६६, २२.

पात् १६. ६, २.

पात् ३. १६, ७; १२. २,
४७; १६. ११, ५; २०.
१२, ६; १७, १२; ३७,
११; ८७, ७.

पात्न ६. ३, १.

पात्तम् ६. ३, १; ७. ७३, ५.

पात्तम् २. १६, १; २.

पात्तय १. ८, ३; १६, १;
२३, २; ६. १३४, ३;
११. २, २६; १६. २८,
४; ५०, ४.

पात्तयाथ ४. १५, ५.

पात्तयामसि ४. ७, ४.

पात्तयासि १२. ३, ५३.

पात्तवे १२. १, ३८; २०.
६२, ७.

पात्ताम् ६. ३, २; ३.

पात्ति ६. १०, २३.

पातु ६. ३, १; २४.

पातु २. ४, २; ३; २८, १;
४. १०, १; ३; ५; ५.
२८, ५; ६१; ६. ४, १;
४५, ३; ४७, १; ५३, १;
७. ५१, १; ८. २, २६;
३, १; ४, २३२; ५, ४;
६, २१; १०. ३, १०;
१६. ४, ४; १७. १, ३०;
१८. १, १६; २, ५५२;
३, २५-२८; ४६; १६.
१७, १-१०; २०, १; ३;
२७, १४; २९; ३२, १०;
३३, १; ३४, ५; ३५,
४; ४५, ५; २०. १७, ११;
८६, ११; ६४, ११.

पातृन् ३. १२, ८.

पात्रम् ८. १०(४), २; ६; १०;
१४; १०(५), २; ६; १०;
१४; ११. ३, ६; १२. १,
६०; ३, ८; ३७; ४८.

पात्र-हस्ताः ६. ६(६), ३.

पात्रा-इव ८. ४, २१.

पात्राणि ६. १४२, १; ६. ६-
(१), १७; २०. ६४, ५.

पात्रान् १०. १०, ६.

पात्रै ४. १७, ४; ५. ३१, १;
१२. ३, २५; ३३; ३६;
४०.

पात्रेषु १०. १०, ११; १२.

पात्रैः १२. ३, ३०.

पाथ २०. १, २.

पाथः २. ३४, २; ५. १२, १०.

पाथः ७. २६, १.

पादः १६. ६, ३.

पादम् ४. १८, ७; ५. ३१,
११; ११. ४, २१.

पादम् २०. १३५, २.

पादय १०. १, १७.

पादय ८. ६, १६; ६. २, १;
१०; १३. १, ३१.

पादयन्तम् ११. २, १८.

पादयस्व ६. ८८, ३.

पादयति १०. ३, ३.

मादयाथः ६. २, ६.

पादयामि १०. ५, ३६; ११.
१, १२; २१; १६. ८, ४-
२६; ३३.

पादयोः १६. ६०, २.

पाद-वत् ११. ८, ११.

पादान् १४. १, ६०.

पादाभ्याम् ६. ८, २१; १०.
७, ३६; ११. ३, ४६२.

पाद्वि ७. ७०, २, ८, ६, २०.

पादौ ६. ६, १; १०. १, २१;
११. ८; १४; १५. ३, ४;
१६, ६, ५; ४६, १०.

पादौ १. २७, ४.

पाने ५. २६, ८.

पान्तु ६. ३, १; ४, २.

पान्तु ५. ३, ६; ७. ६४, १;
१०. ५, २२; १६. १७,
६.

पाप १६. ८, ५.

पापः ५. १८, २; १६. ५७, ३.

पाप-कृते १०. १, २३.

पाप-कृत्या ३. ३१, २.

पाप-कृत्स्नम् १६. ३५, ३.

पाप-त्वार्य २०. ८३, १.

पापम् २. १२, ५; ४. ३६, ८;
१०. १, १०; ३, ६; १२.
२, ५०; ५, ४८; १८. १,
१४; १६. ६, १४.

पापया ५. १७, १८; ७. ५६,
६; ६५, २; १४. १, २७;
२०. ७४, ५.

पाप-लोकान् १२. ५, ६४.

पाप-वृदात् १०. ३, ६.

पापात् ७. १००, १; १०. १,
११; ३, ४.

पापाय १३. ४, ४२.

पापि ७. ११५, १.

पापिष्ठाः ७. ११५, ३.

पापीः ७. ११५, ४; ६. २,
२५.

पाप्मन् ६. २६, १; २; १११,
२.

पाप्मना ३. ३१, १-११; १०.
७, ४०.

प्राप्पने—प्राहि.

(४,६०१)

प्राप्पने प. १४, ६.
 प्राप्मा प. २२, १२; द. २६,
 २; १२. ५, ३०; १७. १,
 २६; १६. ३२, ६; ३६, २.
 प्राप्मानः ११. म, १६.
 प्राप्मानम् ४. १८, ३; म.
 १०(५), १२; १२. ३, १८.
 प्राययामसि म. ७, २२.
 प्रायवः द. ३, २.
 प्रायु-भिः १६. ४७, ५.
 प्रायम् ३. ११, ३; द. १३३,
 १; १६. ४७, २३; २०.
 ७६, ५; ६६, म.
 प्राय्य ४. ३३, ७; १७. १,
 २५; २६; १६. ५०, २.
 प्राय्यन्तु प. २८, २.
 प्राय्यात् ४. १७, २.
 प्राय्याति ११. १, ५; २०.
 ४६, २.
 प्राय्यामसि म. ७, ७; १६.
 प्राय्यामसि म. १, १८.
 प्राय्यामि म. २, ६.
 प्राय्यिष्णु प. २८, १४; म.
 २, २८.
 प्राय्यिष्णुः द. ६२, ३.
 प्राय्यिष्णु इति १६. १३,
 १.
 प्रायस्वतम् द. ७२, ३.
 प्रायस्वतेभ्यः २०. १३५, ११
 प्रायस्वत् २०. ३१, ३.
 प्रायवेयः प. २२, ३.
 प्राय्यम् १२. ५, ३०.
 प्राये १. २७, १; द. ३४, ५.
 प्रायिवः १४. १, ३; ५, २०.
 १२१, २.
 प्रायिवम् ४. १, ४; १६. ४७,
 १.

प्रायिवस्य २. २६, १; २०.
 १७, १२; ३६, ६; म७,
 ७.
 प्रायिवाः द. ५, १४; १०. ६,
 ६; ११. ५, २१; ६, म;
 १६. ६, ७; ११, २.
 प्रायिवात् म. ४, २३; २०.
 ७०, ६.
 प्रायिवानाम् २. २८, ३.
 प्रायिवानि ४. २५, २; ७.
 २६, १; २०. ३६, म.
 प्रायिवासः ७. ४६, १; १६.
 ११, ४.
 प्रायिवे १८. १, ४६.
 प्रायिवेभ्यः १६. ४, ४.
 प्रायिवम् ४. १४, ७; म; १२.
 १, ३४.
 प्रायिव्याम् २. ३३, ३; २०.
 ६६, १६.
 प्रायिवे इति द. ४, १२; ५,
 २०; म, १५; ११. म, १४.
 प्रायिव्यम् २. ३१, ४.
 प्रायिव्याम् २. ३३, ५; २०.
 ६६, २१.
 प्रायिवी इति १०. २, १.
 प्रायिवीः म. ६, १५.
 प्रायिवी द. ४२, ३; म. ६,
 १७.
 प्रायिवीः द. २४, २.
 प्रायिव्यम् ११. म, १६.
 प्रायिवक् १३. २, २१; १८. ४,
 ५६; २०. ४७, १८.
 प्रायिवकः द. ४७, १; म. ३,
 २६.
 प्रायिवक-वर्णाः २०. १०४, १.
 प्रायिवकाः १. ३३, १; ४; द.
 ६२, ३; १२. २, ११; २८.

प्रायमानम् ११. ७, ६.
 प्रायमानी १६. ७१, १.
 प्रायः द. ३, २.
 प्रायम् २. म, १; ३. ७, ४;
 ७. म३, ३; द. ३, २४;
 १८. ४, १६.
 प्रायः ४. १६, ६; १४. २,
 ४६.
 प्रायात् २. १०, १-म; ४.
 ३६, १०; १४. १, १६;
 ५८; १६. म, ३; ५-२६;
 ३२.
 प्रायान् द. ११२, १; २२;
 ११७, १; ११६, २; १२१,
 १; ७. ७७, २; ३; म३, ४;
 द. ३, १३; १४; १३. ३,
 १-२५; १४. १, ५६; ५७;
 १६. ६, १०; १८. ४, ७०.
 प्रायान् प. ६, ३; ७. ११७,
 १; १७. १, म.
 प्रायै २. १२, २.
 प्रायैभ्यः १. ३१, २; म. १,
 ३; १६. ४४. ४.
 प्रायैषु १३. ४, ३७.
 प्रायैः ३. ६, ५; ४. १६, ७;
 ६; द. ११२, ३; १६.
 ६६, १.
 प्रायस्त २. ३. ४३.
 प्राहि ४. ३२; २; २०. ६,
 ६.
 प्राहि २. ७, ३; ४; १६, ३;
 ४; ५; ३५, ४; ४. ६, ६;
 १०; १६, म; प. ३, २;
 द. ४६, २; ११०, २;
 १०६, १; ७. म५, १;
 १११, १; म. ३, २०; ६,
 २२; १६. ५, ३-१०; १७.

(४,६०२)

पिंश—पितृभ्यः.

१, ६; १८. १, ३४; ४,
६; १६. ४४, ६; ४७, ५;
४८, ३; ४; ५५, ५; ५६,
६; ६६; १; २०. १, १;
६, १; ८, १; २०, १; ५७,
४; ८७, २; ६६, १; २.

पिंश १६. २८, ६^४.

पिंशतु ५. २५, ५,

पिङ्ग ८. ६, २५.

पिङ्गः ८. ६, ६; १८; १६;
२१; २४;

पिङ्गलः ११. ५, २६.

पिङ्गलिका २०. १३६, १४;
१६.

पिङ्गा २०. ६२, ६.

पिण्ड १६. २६, ६^४.

पितः ६. ४, ३.

पितरः २. १२, ५; ६. १२३,
३२; १८. ३, १६.

पितरः १. ३०, २; ३. २७,
२; ५. २४, १५; ६. ११६,
३; ८. १० (३), ३;
१० (४), ५; ८. २,
१६; १०. ६, ३२; ६, ६;
१०, २६; ११. १, १६;
५, २; ७, २७; १२. ३,
३४; १४. २, ७३; १८. १
४२; ४४^२; ४७; ५०; ५४;
५५; ५८; २, २६; २६;
४८; ४६; ३, १०; २१;
४५; ४६; ५२; ५६; ७२;
४, ३६; ४०; ४४; ४६;
५१; ५२; ६४; ६८; ८६^२;
८७; १६. ११, १; ५६,
४; २०. १६, ११; ३६,
२.

पितरः ४. १५, १५; ७. १२,
१; ६. ५, ११; १२. २,
३३; १८. १, ५१; ५२;
३, १४; १६; ४३; ४४;
४, ६२; ६३; ८१^२; ८२^२;
८३^२; ८४^२; ८५^२.

पितरम् १. २, १; ३, १-५;
४. १, ७; ३०, ७; ५. १,
८; ११, ११; १४, १०;
६. ३१, १; ११०, ३;
१२०, १; १४०, १; २; ३;
७. १, २; २, १; ८. ६, ७;
६. ५, ३०; ६, ८; १२;
१८; २१; १०. १, २५;
११. २, २६; १४. १, १५;
१८. ४, ३५; २०. ४८, ४.

पितरौ १८. १, २३; ३१.

पितरौ ६. १२०, ३; २०.
१२५, ५.

पितरौ १४. २, ३७.

पिता १. २४, ३; २. १, २;
३; ६, २; २८, ४; ३. ६,
१; २३, ६; ४. ५, ६; ६,
८; १५, १२; १६, ५; ५.
४, ६; ५, १; ८. १३, ७;
२४, १२; ३०, ५; ६. १६;
२; ४६, १; ११६, २;
१२०, २; १३१, ३; ७.
६, १; ८. ७, २; ६. ४,
२; ४२; ६, १५; १०,
१२^२; १०. ३, ८; ८,
२८; ११. ४, १०; २०; ७,
१५; १६; ८, १८; १२.
१, १२; ३, ५; १३. ३,
१६; १४. २, ३७; १५.
६, २५; ७, २; १८. १,
५६; ३, ६७; ४, ५६; १६.

३६, ३; ५३, ४; ८. २०,
२६, ३; ७६, १; ८२, २;
६०, १; ६१, १; १०८, २.
पिता-इव २. १३, १; ८. ६,
७; १०. ६, ५; १२. ३,
१२; २०. ८, २; ७३, ६;
११४, २.

पितृषु ६. ११२, २.

पितामहः ५. ५, १; ११. ७,
१६; १५. ६, २५; ७, २.

पितामहम् ६. ५, ३०.

पितामहस्य १५. ६, २६.

पितामहाः ११. १, १६;
१८. २, ४६; ३, ४६; ५६.

पितामहान् १८. ४, ३५.

पितुः १. १४, २; २. १, २;
३. २५, ५; ३०, २; ४.
६, ३; ६. ११६, ३; ७.
२, १; ६. ६, १५; १५.
६, २६; १८. १, १; २,
४६; ३, ४६; ५६; ४, ५६;
१६. ४७, १; २०. ११५,
१; १४२, ६.

पितुम् २०. ३५, ७.

पितृ-कृतात् ५. ३०, ४.

पितृ-बन्धु १२. ५, ४३.

पितृ-भिः ६. ६३, १; ७१,
२; ८४, ४; १२. ३, ८;
१८. १, ४३; ६०, २;
२१; ३, ८; ५८; ४, ४७.

पितृभ्यः ५. ३०, १२; ७.
१४, ४; ८. १० (३), ५;
१०. १, ११; १२. २,
३२; ३४; ४, ३३; १४.
१, ४६; २; २०; १८. १,

पितृ-मते—पितृ.

(४,६०३)

४६; २, ५; १०; २७; ४६; ५४; ३, ४२; ४, ३६; ५०; ५१; ६५; ७३; ७८; ७६; ८०. पितृ-मते १८. ४, ७२; ७४. पितृ-यज्ञाय १२. २, ७. पितृ-यानम् ५. १८, २३; ८. १०(३), ४; १५. १२, ५; ६. पितृ-यानी: ६. ११७, ३. पितृ-यानै: १२. २, १०; १८. ४, १; ६२. पितृ-लोकम् १८. ४, ६४. पितृ-लोकात् १४. २, ५२. पितृषु १. १४, १; ३; ५. १६, ५; ७. ४१, २; ११. १, २८; ३१; १२. २: १०; १८. २, २५; २८; ५२; ४, ४८; ४६; १६. ३, ३. पितृ-सद्वना: १८. ४, ६७. पितृ-सद्वने १८. ४, ६७. पितृ-सद्वम् १४. २, ३३. पितृणाम् २. १२, ४; ३. २६, ४; ५. २४, १४; ६. ४४, ३; ७. ६८, २; १०. ५, १३; ११. १, ५; १२. २, ६; ४५; १८. ३, ६३; ७३. पितृन् ५. ३०, १; ८. १, ७; ८, १५; १० (३), ३; १० (४), ५; ६. ६, १०; ११. ६, ११; २६; ६, २४; १४. २, ६६; १५. १४, १३; १८. १, ४५; ५६; ५७; २, ४; ११; २३; ३४; ४६; ४; ४०; ४१. २८	पित्तम् १. २४, १; १८. ३, ५. पित्रे १. ३१, ४; ५. ११, १; ७. १४, ३; ५७, २; २०. ८८, ६; ६२, १२. पित्रो: २०. ३४, १६. पित्र्यम् ६. १२२, २. पित्र्या ४. १, २. पित्र्यात् ६. १२०, २; १०. १, १२. पित्व: ८. ४, १०; १८. १, ४५. पिनष्टि २०. १३३, १. पिनष्टन् ८. ४, १८. पिनष्टि २. ३१, १; ३२, ३; ५. २३, १०. पिनाकम्-इव १. २७, २. पिन्वत् ६. २२, २. तिन्वत् ६. ६७, २. पिन्वतीम्-पिन्वतीम् ६. ५, ३४. पिन्वते २०. ७१, ३. पिन्वते २०. ५१, ४. पिन्वन् ६. ५, ३४. पिन्वन्तम् ६. ५, ३४. पिन्वमान: ४. ३४, ८; १८. ४, ३५. पिन्वमाना ३. १७, ६. पिन्वमाना: ४. ३५, ५; ६; ७. पिन्विरे २०. ५१, २. पिपतिषति १२. २, ५२. पिपति २०. १३५, ८. पिपति ६. १०, २३; १३. ३, ४. पिपति ६. १, ५; २०; ११. ५, १; २; ४. पिपति ५. २८, ५; ६. ५३, १; १२. १, १२. पिपति १. ३५, ४. पिपान: ६. ४, २१. पिपील: १८. ३, ५५. पिपीलिका २०. १३५, ३. पिपीलिका: ७. ५६, ७. पिपुष्टि १८. १, १२. पिपुत् ५. २६, ५. पिपुहि ७. ३५, १. पिपुहि ७. २०, ४; ७६, १. पिपेश १४. १, ६०. पिपेष २०. ११, ६. पिपति २०. १३६, ७. पिपलम् ६. ६, २०; २१. पिपली ६. १०६, १. पिपल्य: ६. १०६, २. पिपु: २०. १२, ४. पिपुषी २०. २७, ३. पिपत: २०. १३८, २. पिप्रायस्व ६. ११०, १. पिप २. ५, १; ७. ७२, ३; ७३, ११; ६. १०, २०; २०. ३; १; ४, १; ५, ५; ६, २; ७, ४; ३२, २; ३३, १; ३८, १; ४७, ७; ६७, ५; ७; ११७, १. पिप ५. २५, ६; ७. २६, ३; ७६, ६; १६. ४५, ५; २०. ८, २; २२, ३; २४, ७; ५७, २; ६७, ६; ६८, २.
--	---

पिबत २०. ६७, ४.
 पिबतम् ७. ५८, १; ७३, ४;
 २०. १३, १.
 पिबताम् २. २६, ६.
 पिबति ५. ५, २.
 पिबति ५. १८, ४.
 पिबतु १३. १, २७; २०. २,
 १-४.
 पिबत्यै २०. ८, ३; १४३,
 ६.
 पिबन्तम् २०. ५३, १; ५७,
 ११.
 पिबन्ति १. ४, ३.
 पिबन्ति २०. १०६, १.
 पिबन्तीः ४. २१, ७; ७. ७५,
 १.
 पिबंसि ८. २, १६.
 पिबात् ७. १४, ४.
 पिबाथः २०. १४३, ४.
 पिबामः ६. १३५, २.
 पिबामि ६. १३५, २; २०.
 १२६, १६.
 पिबामि ६. १३५, २.
 पिबाव ४. ३२, ७.
 पिब्वना २०. ८०, २.
 पिब्यारुः १६. ५७, ५.
 पिब्यारुम् १६. ५७, ४.
 पिब्यारुणाम् ११. २, २१.
 पिशङ्गम् १४. २, ४८.
 पिशङ्ग-रूपः ६. ४, २२.
 पिशङ्ग-रूपाम् २०. ५२, ३;
 ५७, १६.
 पिशङ्ग-संवृशम् ६. ३३, ३.
 पिशङ्गे ३. ६, ३.
 पिशाचः ५. २६, ४; ६; १२.
 ३, ४३.
 पिशाच-क्षयणम् २. १८, ४.

पिशाच-चातनम् २. १८,
 ४.
 पिशाच-जम्भनीः ५. २६,
 १४.
 पिशाचम् ४. २०, ७; ६;
 ५. २६, ७; ५. २६, १०.
 पिशाचाः १. ३५, २; ४.
 ३६, ७; ८; ५. २६, ६;
 ७; ८; ६. ३२, २.
 पिशाचान् ४. २०, ६; ३६,
 ४; ३७, १०; ८. २, १२;
 १२. १, ५०; ३, १५.
 पिशाचानाम् ४. ३६, ६.
 पिशाचैः ४. ३६, ७; ५.
 २६, ५.
 पिशाच्याः १. १६, ३.
 पिशितम् ५. १६, ५; ६.
 १२७, १.
 पिशिता १२. ५, ३६.
 पिशुनेभ्यः ८. ४, २०.
 पिश्माना १२. ५, ३६.
 पिष्टाः १२. २, ५३.
 पीषस्य १६. ४६, ४.
 पीडय १२. ५, ७०.
 पीतये १. ६, १; ७. ५८, १;
 २०. २२, १; २४, ४; ८;
 ६; ५४, २; ६६, ४; ७६,
 ६.
 पीतिम् २०. २५, ७; ३३,
 ८; ८७, २.
 पीत्वा २. १३, १; १०. १०,
 ३१; २०. २१, ४; ६८,
 ६२, ४; ६४, ८.
 पीत्वी २०. ६, ७; ४२, ३.
 पीपरत् १६. ४०, ४.
 पीपिहि २०. ८, १.

पीबः ६. ७, १८.
 पीबः-पाकम् ४. ७, ३.
 पीबरीम् ३. १७, ३.
 पीयकान् १६. ६, ८.
 पीयतः ५. १८, १५; २०. १६,
 ६.
 पीयते ५. १६, ५.
 पीयन्ति २०. ११४, २.
 पीयूषः ६. ४, ४.
 पीयूषम् ८. ३, १७; ६, २४.
 पीला ४. ३७, ३.
 पीलु २०. १३५, १२.
 पीलु-मती १८. २, ४८.
 पीबः २०. १२६, १४.
 पीवरः २०. १३६, १२.
 पीवरी २०. १२६, १६.
 पीवसा १८. २, ५८.
 पीवसि १. ११, ४.
 पुंश्चली १५. २, ५; १३; १६;
 २५.
 पुंसः ३. ६, १; ६. ७०, १;
 २; ३; ६. ६, १५; १२.
 ३, १.
 पुंसाम् ४. ४, ४; ७. १३,
 १.
 पुंसि ६. ११, २.
 पुंसे ५. ३०, ३.
 पुच्छ-धौ ७. ५६, ८.
 पुच्छम् ६. ४, १३; ७, ८;
 १०. ६, २२; १२. ५,
 २१.
 पुच्छलीयते २०. १३४, ६.
 पुच्छे ७. ५६, ६.
 पुच्छेन ७. ५६, ८.

पुण्डरीकम्—पुनः.

(४,६०५)

पुण्डरीकम् १०. न, ४३.
 पुण्डरीक-वान् ६. १०६, १.
 पुण्य-गः १६. न, ५.
 पुण्य-गन्धयः ४. ५, ३.
 पुण्य-गन्धिः न. १०(५), न.
 पुण्य-गन्धे न. १०(५), ५.
 पुण्य-जुनान् न. न, १५; ११.
 ६, १६; ६, २४.
 पुण्यम् न. १०(५), ७; न;
 ६. ५, १६; १६. ७, ३;
 ४; न, ५; ५६, ५.
 पुण्या १२. ५, ६.
 पुण्याः ७. ११५, ४; १५.
 १३, २; ४; ६; न; १०;
 १६. ५४, ५.
 पुण्यान् १६. ५४, ५.
 पुण्यानाम् १५. ११, न.
 पुत्र ४. १६, ६.
 पुत्रः १. २५, ३; ३. २३,
 २; ३०, २; ४. ३६, ६;
 ५. १, न; ६. ४६, २;
 ७. १, २; ६, १; ६. ६,
 १५; १०. न, २८; १२.
 १, १२; ३, ४७; १३. २,
 ६; ३, २६; १४. १, १५;
 २, २४; १६. ५, १; ४;
 ५; ६; ७; न; १६. ५३,
 ४; ५४, ३; २०. १२८,
 ३; ६; ६.
 पुत्र-ईव ५. १४, १०.
 पुत्रकाः २०. ६२, ५.
 पुत्रकाः २०. १२७, ५.
 पुत्र-कामा ११. १; १.
 पुत्र-काम्या ६. न१, ३.

पुत्रम् १. ११, ५; २८, ४;
 २. २८, १; ३. १६, २;
 २३, ३; ४; ५; ५. १,
 ६; २०, ५; २५, ६-१३;
 २६, ५; ६. न१, २; ३;
 ६. ५, ३०; १०. ५, ४४;
 ११. ४, २०; ६, न; १३.
 २, ३७; १६. न, २;
 ५-२६; ३१; १८. २,
 ५०; ३, ५०; ४, ३६;
 २०. १२६, ५; १३०,
 १५; १३७, २.
 पुत्रम्-ईव ११. ४, १०;
 २०. १२५, ५.
 पुत्र-विद्याय ३. २३, ६.
 पुत्रस्य ६. ११, १; २; १०.
 ५, ३६; १२. २, २५;
 २०. १०४, ४.
 पुत्राः १. ३०, ३; ३. ४, ३;
 ६. ६, १३; १२. ३, ३४;
 ४०.
 पुत्राणाम् २. ६, २; ३. २३,
 ३; ६. १३१, ३; ७. ७,
 १.
 पुत्रात् ६. ११६, ३.
 पुत्रान् २. १३, १; ३६, ३;
 ६. १२०, ३; १२. ३,
 १२; ४, ३८; १४. २, ४.
 पुत्राय १२. १, १०.
 पुत्रालः ७. ५७, २; १८.
 १, २; २०. ६१, २.
 पुत्रालः १२. ३, ४.
 पुत्रिणीम् १४. १, ६२.
 पुत्रि-यन्ति १४. २, ७२.
 पुत्रे १६. ७, न.

पुत्रेभ्यः ६. ३०, ३; १०. ६,
 ५; ११. न, १०; १२. ३,
 ११; १८. ३, ४३; ६७;
 २०. ७६, १.
 पुत्रैः ६. ४, १; १२. ३, ६;
 १७; १४. १, २२.
 पुत्रौ न. ७, २०.
 पुनः १. १, २; २४, ४; २.
 २४, १-न१; ३. १, ६;
 ६, ७; ६, १; १०, ७;
 ११, ६; ४. १२, २; १३,
 १२; ५. न, ७; ११, न;
 १४, ४; ५; ७; न; १०;
 १२; १३; १७, २; १०;
 २२; ४; ११; २६, ५; ५;
 ३०, ७; ३१, १-६; ६.
 ५३, २५; ६३, २; ७५, २;
 ३; ७७, ३; ७८, १; न४, ३;
 १०६, ३; १११, ४;
 १३१, ३; १३६, ५; ७.
 ५, २; ६, ४; ५३, ३;
 ६६, १; ६७, १; न. १,
 २०; २, १; ४, ३; ६.
 २, १२; १०. १, २४;
 ३०; ४, ४; ११. १, १३;
 २५; ४, १४; २०; १२.
 २, ५; ६; १०; ५२;
 ३, २०; ४८; १३. २,
 २५; १४. १, ४; २, २;
 १०; ४७; १८. २, १०;
 १३; २६; ३, ६; ५८;
 ७०; ४, ६३; ६४; १६.
 ६, २; न, ३; ४४, १०;
 ४६, ४; ४६, ७; ५४, १;
 २०. ४०, ३; ६६, १२;
 ६६, १०; १२६, २१.

(४,६०६)

पुनः-दाय-पुरस्तात्.

पुनः-दाय ५. १७, ११.
 पुनः-नवः ८. १, २०; १०.
 ७, ३३; ८, २३; २०.
 ६६, १०.
 पुनः-नवाः ८. ७, ८.
 पुनः-पुनः २०. १३२, १२.
 पुनः-भुवा ६. ५, २८.
 पुनः-भुवाः १. २७, २.
 पुनः-मघ ५. ११, १.
 पुनः-मघः ५. ११, २; ७. १,
 २.
 पुनः-मघेषु ५. ११, ७.
 पुनः-सरः ६. १२६, ३.
 पुनः-सरम् १०. १, ६.
 पुनः-सराम् ४. १७, २.
 पुनर्ते ७. २७, १.
 पुनन्तु ६. १६, १; १०. ६,
 ३.
 पुनन्तु ६. ५१, २; १८. ३,
 ११.
 पुनर्वसु इति पुनः-वसू १६.
 ७, २.
 पुनाति १२. २, ११; १८. ३,
 ४०.
 पुनात ६. १६, १; २; ६२,
 १; ०६, ३; ११६, ३.
 पुनानः १२. ३, ५४.
 पुनामि १२. १, ३०.
 पुनीताम् ६. ६२, १.
 पुनीहि ६. १६, ३; ११. १,
 ११; १६. ३३, ३.
 पुनीसम् ३. २३, ३; ५. २५,
 १०; ११; १२; १३; ६.
 ११, ३; ८. ४, २४; ६,
 २५; ११. १, ३४.

पुमान् १. ८, १; ३. ६, १;
 २३, २; ३; ५. १४, ६;
 ७. ६५, ३; ६. ४, ३; १०.
 ४, ८; ७, ४३; ८, २७;
 १२. ३, १; २०. १२६,
 १४.
 पुम्-सु १२. १, २५.
 पुम्-सुवनम् ६. ११, १.
 पुः १०. ६, १०; २०; १२.
 १, ४३; १६. ५८, ४; २०.
 ७, २; २१, ८; ३७, ५;
 ५३, १; ५७, ११; ७५,
 २; ६०, २.
 पुः १. २१, १; २७, ४; ४.
 ७, ७; २७, २; ५. ६, २;
 ३०, १२; ६. ३१, १;
 ४०, ३; ५२, १; ७. ६,
 २; ८. ५, १७; ६, १५;
 १०. ८, ७; ११. ४, २२;
 १४. १, ५६; १६. ४, २;
 ६, ६; १३, ६; १५, ६;
 ४८, ४; २०. ५, ३; २०,
 ६; ४८, ४; ५७, ६; ८८,
 १.
 पुः-पता ३. १५, १; १६,
 ५; ५. २०, १२; ७. ८,
 १; १०. ३, २.
 पुः-गवः १२. १, ४०; १४.
 १, ८.
 पुः-गवाः १८. ४, ४४.
 पुः-गवी ४. १३, ७.
 पुः-गाः ५. १२, ११.
 पुः-दधिरे ५. ८, ५.
 पुः-धत्से ५. ७, २.
 पुः-धायाम् ५. २४, १; २;

३; ४; ५; ६; ७; ८; ९;
 १०; ११; १२; १३; १४;
 १५; १६; १७.
 पुः-योधः २०. १८, ६.
 पुः-रथम् २०. ६५, २.
 पुः-सरौ १५. २, ८; १४;
 २०; २८.
 पुः-हितः ३. १६, १; ४;
 ७. ६२, १; १०. १; ६;
 २०. ५८, ४.
 पुः-हितम् ११. १०, १८.
 पुः-हिताः ८. ५, ५; ६.
 पुः-पु ५. २८, ११; ७. ७१,
 १; ८. ३, २२; १०. २;
 २८; २६; ३०; ३३; १६.
 १७, १; २; ३; ४; ५; ६;
 ७; ८; ९; १०; १६, १;
 २; ३; ४; ५; ६; ७; ८;
 ९; १०; ११; २०. २१, ७;
 ६१, ५; ६२, ५.
 पुः-द्वरः ८. ८, १.
 पुः-धिः १४. १, ५०; १६.
 १०, २.
 पुः-ध्याम् २०. ६६, १.
 पुः-स्तात् १. ७, ५; ४. १,
 १; ११, ४; ४०, १; ५.
 ६, १; २३, ६; २६, १;
 ६. ६०, १; ७. ५१, १;
 ८०, १; ८. ३, १६; २०;
 १०. ३, १; ८. १०; ११.
 १, ३२; २, ४; १७; ६;
 १८; १२. १, १३; ३३;
 ५५; ३, २४; ३७; १३.
 ३, ११; १८. २, ५५; ३,
 ४६; ४, ६; ११; १६.

१५, ३; ५; १६, १; २;
 १७, १; २७, १४; १५;
 ५६, ६; २०. १७, ११;
 ८६, ११; ६४, ११.
 पुरा प. ३०, १७; द. १२,
 २; ३३, २; ६६, १; ७.
 २५, २; ७०, १; ६. ६(१),
 १२; १०. २, ३०; ३,
 १६२; ७, ३१२; ११. १,
 ५; १५; ३, ५६; ८, ३;
 १०; १२. ३, ४६; १३.
 २, १३; १४. २, ४७; १८.
 १, ४; २, ३८-४५; ५७;
 ३, ३०-३५; ४, ५६; १६.
 ३४, ८; ५४, ३; ५६, २;
 २०. १४, ३; २१, ७;
 ३६, ४; ६२, ३; ६७, २;
 १२६, १०.
 पुराणः २०. १७, ५.
 पुराणम् १०. ७, २६२; ८,
 १७; ११. ७, २४; १५.
 ६, ११; १८. ३, १.
 पुराण-वत् ७. ६०, १; २०.
 १७, ६.
 पुराण-वित् ११. ८, ७.
 पुराणस्य १५. ६, १२.
 पुराणी १०. ८, ३०.
 पुराणीः १२. २, ४१.
 पुराम् २०. ३५, ५; ६४, ३.
 पुरि-तत् ६. ७, ११; १०.
 ६, १५.
 पुरीकयाः ११. २, २५.
 पुरीषिणः ११. १, ३२.
 पुरीषिणम् ६. ६, १२.
 पुरु ६. ४६, ३; ७. २१, १;

१८. १, १; १६. ४६, ४;
 २०. ५६, ४; ७३, ६;
 १२०, १.
 पुरुः १६. ६१, १.
 पुरु-कृत् ७. ७२, ३; २०.
 ११८, २.
 पुरु-कृत् २०. २१, ३.
 पुरु-क्तु प. ३, ८; २७, १०.
 पुरु-क्तोः २०. ३६, ३.
 पुरु-चन्द्रैः २०. २१, ५.
 पुरु-जातः १६. १०, २.
 पुरु-तमम् २०. ६८, १२;
 १४३, १.
 पुरु-त्रा ४. ३०, २; ६. १२६,
 १; १०. २, ६; ८, १२;
 २०. ५३, २; ५७, १२.
 पुरु-दलसा २०. १३६, ५.
 पुरु-दमांसः ७. ७३, १.
 पुरु-दिनेषु २०. ७६, १.
 पुरु-धा ७. ५, ५; ८२, ५;
 १८. १, २८.
 पुरु-नामानम् ६. ६६, १.
 पुरु-प्रियम् २०. १०१, २.
 पुरु-भूइतिपुरु-भू २०. १४३,
 ४.
 पुरु-भोजसः २०. ५१, २.
 पुरु-भोजसम् २०. ६, २;
 ११, ६; ४६, ५.
 पुरु-मायः २०. ३६, १.
 पुरु-मीढः १८. ३, १५.
 पुरु-मीढम् ४. २६, ४.
 पुरु-मीढह २०. १०३, १.
 पुरु-रूपम् ६. १०, १६; १८.
 १, १७; २०. ८५, ४.

पुरु-रूपाः ४. २१, १.
 पुरु-वर्तमानम् प. २, ७; २०.
 १०७, १०.
 पुरु-वसः १४. २, ४७; २०.
 ५१, १.
 पुरु-वसुम् २०. ५६, ५.
 पुरु-वसोइतिपुरु-वसो २०.
 ३६, ४; १०४, १.
 पुरु-वीरम् २०. १४३, ६.
 पुरु-वीरस्य २०. ३६, ३.
 पुरु-वृत्तः १०. २, ११.
 पुरु-शाक ४०. ३७, ६.
 पुरु-शाकः १३. ३, १५.
 पुरुष ४. ६, ७; प. ३०, ६;
 १०; ८. १, ४; ६; १०;
 १८. ४, ५१.
 पुरुष-अर्धः १२. १, ४६.
 पुरुष-अस्ये प. ३१, ६.
 पुरुष-इषिताः २. १४, ५.
 पुरुषः ४. ३, १; प. ३०, २;
 ६. १०६, २; ८. १, १;
 २, २५; १०. २, ६; १८;
 २०; २१; २८; ३०; ११.
 ४, १४; ५, १३; १२. ३,
 १०; १६. ६, १; ३; ४;
 ६; ३६, २; ३; ४; ४४,
 ८.
 पुरुष-गन्धिः १२. २, ४६.
 पुरुष-जीवनम् १६. ४४, ३.
 पुरुष-जीवनीः ८. ७, ४.
 पुरुषता १८. १, ५२.
 पुरुष-तेजाः १०. ५, ३५.
 पुरुषन्तः २०. १३४, २.
 पुरुषम् १. १६, ४; प. ४, ६;
 ५, २; ४; ७, २; २६, १;

६. ३०, २; १११, १;
१३३, ३; १३८, १; ७.
७६, ४; ८. २, ५; ७, २;
५; ७; ११; १६; २२; ६.
८, ४; ६; १०. १, १७;
२६; ११. ८, १३; १८;
२६; ३२; १२. ४, १३;
२५; १६. ६, ५; ११; १५.

पुरुष-रेखाः ३. २१, ६.

पुरुष-वृद्धाः १२. ४, १४.

पुरुषस्य ५. ७, ८; २८, ३;
६. ३८, ४; ८. ४, १५;
१०. २, १; ३; ४; ८;
११. ८, ३१; १६. ४६,
४; २०. १२८, ३.

पुरुषाः २. २६, ३; ११. २,
६.

पुरुषाणाम् ४. ६, २; ८. ७,
१५.

पुरुषात् ५. २१, ४; १६. ६,
१६.

पुरुषात् ३. २८, ५; ६; ६.
५६, २; ६. ३, १४; १८.
३, ६२; २०. १३३, २.

पुरुषाय ६. २, १२; १३. ४,
४२.

पुरुषे ३. २१, १; १०. २,
१०-१४; ७, १५; १७;
११. ६, ७; १४; १२. २,
५; ३. ५१.

पुरुषेण ७. ५, ४; १६. ६,
१०.

पुरुषेभ्यः १. ३१, ४; ३. २८,
३; ३०, ४; ६. २७, ३;
१२. २, १६; १६. ४७,
६.

पुरुषेषु ४. १८, ५; ६. ३८,
२; १०. १, ४; ११. २,
२१; १२. १, १६; २५;
२, १.

पुरुषैः ५. १४, ७.

पुरु-स्तुत २०. ६, २; ७, ४;
१५, ४; ६१, ६; ६२,
१०.

पुरु-स्तुतः ६. २, ३.

पुरु-स्तुतम् २०. ६१, ४;
६२, ८.

पुरु-स्तुतस्य २०. १६, ४.

पुरु-हन्मन् २०. ६२, १७;
१०५, ५.

पुरु-हूत २०. ३६, ४.

पुरु-हूत ४. ३१, ६; ७. ५०,
७; १८. ३, ६७; १६.
५५, ६; २०. १७, २;
१०; ३६, ११; ७७, ८;
७६, १; ८६, ७; १०;
६४, १०; १०८, ३.

पुरु-हूतः ५. ३, ८; १७. १,
११; २०. ४६, २.

पुरु-हूतम् ७. ८६, १; २०.
१६, ५; ६१, ४; ६२, ८.

पुरु-हूताय २०. ७८, १.

पुरु-चीः २. १३, ३; १२. ३,
२३; १८. २, २६; १६.
२४, ५; ६.

पुरु-चीम् १०. २, ७.

पुरु-णाम् २०. ६८, १२.

पुरु-णि ५. १, २; २०. ११,
५; ६; ३१, १; ६४, ७;
१०६, ३.

पुरोगवामः २०. १३५, ७.

पुरोडाशम् १८. ४, २.

पुरोडाश-वत्सा १२. ४, ३५.

पुरोडाशाः ८. ८, २२.

पुरोडाशा ६. ६(१), १२;
१०. ६, २५.

पुरोलाशम् २०. २३, ३.

पुरुवधः २०. १२६, २२.

पुरु-म् ५. ३, १; १६. ५५,
३.

पुष्कर-पर्यम् ८. १०(५), ६.

पुष्करम् ११. ३, ८; १२. १,
२४.

पुष्कर-रजा ३. २२, ४; ५.
२५, ३,

पुष्करिणी ५. १७, १६.

पुष्करिणीः ४. ३४, ५; ६; ७.

पुष्कलम् १३. ३, १०.

पुष्ट-पतिः ३. ८, ४; ७. १६,
१; ४०, १; १६. ३१, ६;
११.

पुष्ट-पतिम् ७. ४०, २.

पुष्टम् ५. ३, ७; ६. ७६, २;
७. १६, १; ७६, ३; १२.
१, २६; १८. २, ६०; १,
६१; १६. ३१, ६; ११.

पुष्टये १०. ६, २६.

पुष्टानि ४. २४, ७; २०.
३४, ४.

पुष्टाय १४. २, २७.

पुष्टिः ३. २८, ४; १६. ३,
३; ३१, १३.

पुष्टि-कामाय १६. ३१, १.

पुष्टिम् ६. ४, १६.

पुष्टिम् १६. ३१, ३; ५.

पुष्टि-मत् २०. १२६, १.

पुष्टीः—पूर्व-रूपाणि.

(४,६०६)

पुष्टीः २०. ३४, ५.	५; ११. १, १७; १८;	११. ७, ६; १२. ५, १०;
पुष्टे ३. १०, ७.	२७; १२. २, २५.	५६.
पुष्टेषु २०. १२६, १.	पुतासः २०. ८४, १.	पुर्तस्य ६. १२३, ५.
पुष्ट्या ६. ६(५) २.	पुति-धान्या ३. १२, ३.	पुति-कामः ७. १०३, १.
पुष्ट्या १६. ३१, २; ६; १३;	पुतिम् ८. ८, २.	पूर्व-अज्ञौ ५. ३१, ५.
४६, ३.	पुति-रज्जुः ८. ८, २.	पूर्व-अपरम् ७. ८१, १;
पुष्पम् ५. ४, ४; ६. ६५,	पुतुः ८. २, २८.	१३. २, ११; १४. १,
२; ८. ७, १२; १०. ८,	पुतौ १२. ३, ३.	२३.
३४; १६. ४४, ५.	पुत्रिमम् ६. १२४, ३.	पूर्व-आसिनम् १०. १, २७.
पुष्प-वतीः ८. ७, २७.	पुत्वा १४. १, ४१	पूर्वः १. ७, ४; ५. २०, ६;
पुष्पाम् ८. ७, ६.	पूरय ३. १०, १३.	८. ३, ७; ६. ६ (३), १;
पुष्पिणीः ६. १०६, १.	पूरयति ३. २६, २.	२; ३; ४; ५; ६; ७; १०.
पुष्यः १६. ७, २.	पूरयाति १२. १, ६१.	३, ३; ११. ५, ५; १३.
पुष्यत ३. १४, २; ४; ५; ७.	पूरवः २०. ७५, २.	२, १४; १८. ४, ८; ६;
६०, ७.	पूरम् २०. ३७, ३.	२८; १६. ३६, ६.
पुष्यतः ७. ५७, २.	पूरुषः २०. १२८, १; १३१,	पूर्वकाम-कृत्वने ७. ११६,
पुष्यतम् १४. २, ३७.	१७; १३३, १.	१.
पुष्यति ४. ३२, १; २०. २५,	पूरुषाः २०. १२७, १२.	पूर्व-कृत्वहि १२. १, १४.
३.	पूरुः १०. ६, २; १६. ५३,	पूर्व-चित्तये २०. ६, ३; ४६,
पुष्यते १८. १, २२.	३.	६; १०६, ३.
पुष्यन्ति २०. ५६, ६.	पूरुम् ३. १२, ८; ६. ४, ६;	पूर्व-चित्ताः ७. ८२, ३.
पुष्यसि ७. १०, १.	१०. ८, २६; १८. ३,	पूर्व-जनाः १२. १, ५.
पुष्यसि १३. २, १०; २०.	५४; २०. ७६, ७; ८६,	पूर्व-जैम्यः १८. २, २.
६५, ३.	२.	पूर्व-या २०. ६१, ३; ६६,
पूः १०. २, ३१.	पूरुर्णा ३. १०, ७; ७. ८०,	२.
पूः-मित् २०. ११, १.	१३.	पूर्व-पीतये २०. ६६, १.
पूः-यानैः १८. १, ५४; ४, ६३.	पूरुर्णाः ४. ३४, ६; ७. ६०, २.	पूर्व-पेये १२. १, ३.
पूतः ६. ५१, २; २; ११. १,	पूरुर्णात् १०. ८, २६.	पूर्वम् ४. ३५, २; ३७, १;
२५; १२. ३, १४.	पूरुर्णात् ४. ३४, ७.	८. १, १०; ६. ५, २७;
पूत-वलाः ५. २२, १; ६.	पूरुर्णाम् २. ३६, ५.	१२. २, २५; १४. १,
६३, ३.	पूरुर्णेन ७. १७, १; १०. ८,	६४; २, २०; १८. ४,
पूतम् ४. ३६; १०; ६. ११५,	१५; २६.	१५; ४४; २०. २६, ३;
३.	पूतम् ६. ५, १३; ६(३), १;	६७, ७.
पूताः ४. ३४, २; ६. १२२,		पूर्व-यावा २०. ११, २.
		पूर्व-रूपाणि १६. ६, २.

(४,६१०)

पूर्वस्मात्—पृणाति.

पूर्वस्मात् १६. २, २५; ५,
६.

पूर्वस्य १०. १, २७.

पूर्व-हृतिः ७. २५, १; २.

पूर्व-हृतौ १६. १०, ५,

पूर्वा ६. १६, ४; १३३, २;
११. ८, ७; १४. २, ७४;
१६. ७, ३; ४.

पूर्वा २०. १२८, १६.

पूर्वाः १६. ३४, ७.

पूर्वान् ५. ३०, १; १०. ३,
१३; १४; २५.

पूर्वाम् १६. ७, ६; २०. ६२,
१५.

पूर्वासः १८. १, ४६.

पूर्वी इति २०. ७६, ३.

पूर्वीः ४. २१, १; २०. १६,
१२; ५६, ४; ७३, ३; ७६,
५; ८; ११६, १.

पूर्वे २. ३४, ५; ४. १, ६;
५. १७, ६; ८; ६. ६४,
१; १३३, ५; ७. ५, १;
८. ६, १४; ६. ६(६),
३; ११. २, १८; ३,
३२-४६; १२. १, ५; ३६;
१८. १, ५०; ५४; २,
१५; ३, ७२; ४, ४४; १६.
२६, २; २०. ३६, २.

पूर्वेण १०. ४, ३.

पूर्वेभिः २०. ३०, ५.

पूर्वेभ्यः १८. २, २.

पूर्वेषाम् २०. ३२, ३.

पूर्वैः १८. ३, ४८.

पूर्व्यः ७. २१, १.

पूर्व्यम् २०. ६६, १.

पूर्व्यम् ५. १, ४; १८. ३,
३६; २०. ७७, ८; १०३,
३; ११६, १.

पूर्व्य-स्तुतिम् २०. ६४, ५.

पूर्व्यस्य ४. १, ६.

पूर्व्या २०. १४३, ५.

पूर्व्याः १६. ३४, ६.

पूर्व्याणि २०. ३५, १३.

पूर्व्याय २०. १४३, ३.

पूर्व्यानि १४. २, ६३.

पूर्वकम् २०. १३१, १८.

पूर्वणम् ३. १६, १; ४. ३०,
६; ११, ६, ३; १८. २,
५३.

पूर्वन् ६. ६, ३; १४. २, ३८.

पूर्वन् १. ११, १; ६. ११२,
३; ११३, २; १४. १,
३६.

पूर्वा १. ६, १; ३. १४, २;
१७, ४; ५. २८, ३; १२;
६. ६७, १; ७३, ३; ७.
६, १; २; ४; ३३, १;
१४. १, १५; ३३; १६.
६, २; १८. २, ५४; ५५;
१६. १०, ६; २०, १;
२०. १२७, १२.

पूर्वम् १६. ६७, ५.

पूर्वणः १६. ५१, २.

पूर्वः २०. १४३, २.

पूर्व् २०. १३०, ५.

पूर्व् २०. १३०, ५.

पूर्व् २०. १३०, ६.

पूर्व् २०. ६८, ४.

पूर्व्ति २०. १२७, ६.

पूर्वन्ति २०. ३४, ५.

पूर्वन्ति १२. ५, ५०.

पूर्वन्ती २०. ३६, ५.

पूर्वमानौ १४. १, १४.

पूर्व्म ८. ६, ७.

पूर्व्मि ६. १०, १३.

पूर्व्मि ८. ६, १; ६. ६,
६; ७; १०. ८, १०; ३४;
११. ३, २२; १२. ४, ४३.

पूर्व्यध्वम् ६. ६४, १.

पूर्व्यन्ताम् ६. ७४, १.

पूर्व् ६. ४, २३.

पूर्वतोः १. ४, १.

पूर्वतीः २०. ४८, २.

पूर्वन्ति ५. २, ३; २०, १०७,
६.

पूर्व् ६. १२, ३.

पूर्व् २०. १५, ५.

पूर्व्ति ५. १, ६; २०. २५,
१.

पूर्वत् ७. ५७, १.

पूर्वतः १. २७, ४.

पूर्वन्तः ६. १४२, ३.

पूर्वन्ति १८. ४, २६; २०,
३०, २.

पूर्वन्ति २०. १२६, १४.

पूर्वस्व २. ५, २; ४.

पूर्वस्व ७. ३६, ८; १६. ६१,
६१, १; २०. ३३, १.

पूर्व्ति ६. २२, ३.

पृष्ठाति—पृथिवीम्.

(४,६११)

पृष्ठाति ११. ५, ४.
 पृष्ठातु १६. ५६, २.
 पृष्ठादुरिः २०. १२७, ११.
 पृष्णीत १. ६, ३.
 पृष्णीहि १७. १, ६-१६; २४.
 पृर्तनाः ५. ३, १; १४, ८;
 २०, ४; ६. ६७, १; ८.
 ५, ८; १०. ५, ३६; १३.
 १, २२; १६. ६, १; १६.
 ३२, १०; २०. ११, ४;
 ५४, १; ७६, ८.
 पृर्तना-जितम् ७. ६३, १.
 पृर्तना-जिम ७. ८५, १.
 पृर्तनाज्ये २०. १६, ७.
 पृर्तनानाम् २०. ६२, १६;
 १०५, ४.
 पृर्तना-युतः १६. २८, ५-
 १०; २६, १-६; ३२, ६.
 पृर्तनाषाद् ११. १, २; १६.
 १३, ७.
 पृर्तनाषाद् ५. १४, ८.
 पृर्तना-सहम् २०. १०८, १.
 पृर्तना-सहाय २०. १६, १.
 पृर्तनासु ३. २१, ३; ४. २७,
 ७; २८, ७; ३२, ४; ५.
 २६, ११; ८. ३, १८;
 १६. ५३, ३; २०. ७५,
 ३; ७६, ८; ६२, १६.
 पृर्तन्युतः १. २१, २; ७.
 ७०, ३; ६३, १; १६.
 ३२, १०; ४६, २; २०.
 १७, ६; ७०, २०.
 पृर्तन्यति ६. ७५, १; १३.
 १, २६.

पृर्तन्यन्तम् १. २६, २.
 पृर्तन्यवः ७. ३४, १; ६२,
 १; ११. १, ६; ११.
 पृर्तन्यात् १२. १, १४; १६.
 ४६, ५.
 पृर्तन्यान् ३. १६, ३.
 पृर्त-सु २०. ६१, १; ६०,
 २; १४१, ३.
 पृर्तसुतु २०. १६, ७.
 पृर्थक् ३. १७, १; १६; ६;
 ४. १५, २; ३२; ४. २०,
 २; ५. २०, ७; ७. ४५,
 २. ६. १, ३; ११. ५,
 २; १३; २२; १२. ३,
 २१; २०. ७२, १३; ६४,
 ६.
 पृर्थक्-सहस्राभ्याम् १६. २२,
 २६.
 पृथिवि ७. १८, २; १२.
 १, ११; १२; १४; १५;
 १६; २३; २४; ३०; ३६;
 ४६; ४६; ६२; १८. २,
 १६; ३, ५०.
 पृथिवि-सत्-भ्यः १८. ४,
 ७८.
 पृथिवी २. १५, १; २८,
 ४; ३. ६, १; २३, ६;
 ४. २, ४; ३६, २; ५.
 ६, ७; २५, २; ६. १७, १;
 २; ३; ४; ४४, १; ५३, १;
 ७७, १; ८८, १; १००, १;
 ७. १८, २; ८. १, १२;
 १७; ४, २३; ७, २; १०
 (४), १०; ६. २, ३१;
 ७, २; १०, १३; २४;
 १०. १०, ४; ३०; ११.

१, ८; २, १०; ३, ११;
 ५, ४; ६, ४; १२. १,
 १; २; ५; २१; २२; ३७;
 ४१; ४४; ४५; ४८; ५२;
 ५३; ५६; ३, २०; ४,
 २३; १३. १, १७; १४.
 १, २; २, ७१; १५. १०,
 ६; १८. १, ५; २, २५; ३,
 २५; २७; २८; ३०-३५;
 ४६; ५१; १६. ६, १;
 १४; ५४; २; ५८, २;
 २०. १५, ५; ७६, ६; ७७,
 ७; १०६, २.
 पृथिवी इति २०. ३४, १४.
 पृथिवी-इव ६. ४, २.
 पृथिवोः ४. २०, ३; ६. २१,
 १; ८. ४, ११; १६. २७,
 ३; ३२, ४; ५३, ५.
 पृथिवी-प्रः १३. २, ४४.
 पृथिवीम् १. २, १; ४; ३.
 ८, १; ६, ६; २१, ७; ४.
 २, ७; ११; १; १५, १;
 ४; ५; ७; ८; ६; २७,
 ४; ३५, ३; ६. २२, १;
 ६०, ३; ६१, २; ३; १२०,
 १; १२६, १; ७. ६, ३;
 ८. २, १५; ६. ३, १५;
 ५, १५; १०, २२; १०.
 ५, २५; ४५; ८, ११;
 ३६; ११. २, १०; ४,
 ५; १७; ५, १; ८; ६;
 १२. १, १; ७; ११२;
 १७; २७; २६; ४३; ५७;
 ३, २२; २३; २५; २६;
 २८; ४०; १३. १, २५;

(४,६१२) ११ ११

पृथिवी-संशितः—पृषतीम्.

४४; ४५; २, ५; ४५;
३, २२; १४. २, ६६;
१५. १०, ६; १८. १,
३६; २, ७; ४६; ३, २६;
४६; ५२; ४, ५; ६; २८;
४८; १६. ३२, ६; ५८,
३२; २०. ११, ८; ३४,
२; ७५, २.

पृथिवी-संशितः १०. ५,
२५.

पृथिव्या ४. ३०, ८; ११. ३,
४१; १२. ३, २३; १८.
१, १०; १६. १६, १.

पृथिव्याः १. २४, ४; २. ३,
५; ७, ३; ४. १, ४; १४,
३; ५. २, ७; १०, ८;
१२, ४; १७, ११; ६.
४३, २; ८६, १; २; १००,
३; १०५, २; १२५, २;
१३४, २; ७. ८, १; ६,
१; २६, ८; ८. ४, ४; ६,
१; ६. १, १; १०, १३;
१४; १०. ५, २५; ११. २,
२७; ५, ११; १२. १, ४;
८; १२; ३, ३५; ५, ७२;
१३. १, १६; ३८; १४.
१, ४७; २, ७०; १५. ७,
१; १६. ४, ४; ७, ६;
१८. २, २०; ५२; १६.
३, १; ३५, ४; २०. ३५,
६; ७६, ७; १०७, १०;
१४३, ५; ६.

पृथिव्याम् १. ३, १-५; ३०,
३; ३२, १; ४. ८, ५;
३६, १; ६. ८०, ३;
१३६, १; ७. ६२, १;

६७, ८; ८. ७, १३; ६,
२५; २६; ६. १, ३; २,
१४; ३, १६; १७; ६(६),
७२; १०. ३, १६; ४, २२;
११. ५, १२; २६; ६, १२;
१०, २; १२. १, १३; ३,
२२; १३. २, ३०; १५.
१३, २; १७. १, १२;
१३; १८. २, ३६; ४, ४८;
१६. २७, १३; ३२, ३;
४४, ३.

पृथिव्यै १. ३२, ४; ५. ६,
२; ६; ६. १०, १; २०,
२; १२. १, २६.

पृथ्वी ८. १० (४), ११; २०.
१४०, ५.

पृथु १३. २, २२; २०. ४७,
१६; ७१, १३; १३६, १;
१३४, ४; १३५, ६.

पृथुः ७. ११, १; १३. ४,
५२; २०. ६४, १.

पृथु-जघने २०. १२६, ८.

पृथु-उमन् ५. १, ५.

पृथु-जयम् २०. १४३, १.

पृथु-बुधः १२. ३, १४.

पृथु-शिराः ५. १७, १३.

पृथु-स्तुके ७. ४६, १.

पृथुस्तो इति पृथु-स्तो २०.
१२६, ८.

पृथुनि १६. ५८, ४.

पृदाकवः १०. ४, ११; १३;
२०; २०. १२६, ६.

पृदाकवे १२. ३, ५७.

पृदाकुः ३. २७, ३.

पृदाकुम् १०. ४, १७.

पृदाकूः-इव ५. १८, ३; १५.

पृदाकोः ७. ५६, १.

पृदाकौ ६. २८, १.

पृदाकः १. २७, १.

पृदाकम् १०. ४, १७.

पृदाकाः १०. ४, ५.

पृथन-युवः २०. १०६, २.

पृथनयः ८. ७, १; २०. १०६,
२.

पृथिन १. ११, ४.

पृथिनः २. १, १; ६. ३१, १;
१०. ५, २०; १६. ११,
३; २०. ४८, ४.

पृथिन-पृथि २. २५, ३.

पृथिन-पृथि २. २५, ४.

पृथिन-पृथि २. २५, १; २.

पृथिन-बाहवः ४. १५, १२.

पृथिन-बाहुः ८. ८, १७.

पृथिनम् ५. ११, १; २; ८;
१७, १७; ७. १०४, १;
६. १०, २५.

पृथिन-मातरः १३. ३, २३.

पृथिन-मातरः ५. २१, १६;
८. ७, २१; १३. १, ३.

पृथिन-मातृन् ४. २७, २.

पृथि-हा १०. ४, १५.

पृथि ५. १३, ५.

पृषत् १. २३, २; ३.

पृषत्-आज्यम् १६. ६, १४.

पृषती १३. १, २१; २३.

पृषतीभिः २०. ६७, ४.

पृषतीम् १३. १, २४.

पृषदाज्य-प्रनुत्तानाम् ११.
१०, १६.

पृषन्तम् २०. ८८, २.

पृषातकानि २०. १३५, ३.

पृषातकी १४. २, ४८.

पृष्टः ७. ५४, २.

पृष्टयः ४. ३, ६; ६. ७, ६.

पृष्टि-आमयम् १६. ३४, १०.

पृष्टि-वाहः १८. ४, १०.

पृष्टीः २. ७, ५; ३२, २; ५.

२३, ६; ६. ३२, २; ५०,

१; ८. ३, १०; ६. ८,

१५; १०. २, ४; ६, २०;

११. ८, १४; १६. ७,

१२; १६. ४५, १.

पृष्टीभिः १२. १, ३४.

पृष्ट्याम्-इव ६. १०२, २.

पृष्ठम् ४. १४, २; ३४, १; ६.

५, २०; १५. १, ७; २०.

१२८, १५.

पृष्ठान् ४. १४, ३२; ११. ५,

१०; १८. ४, १४.

पृष्ठानि १२. २, १२; १८.

१, ६१.

पृष्ठे ५. २०, ६; ७. ८०, १;

६. ५, १०; १५; ६, १०;

१०, ६; १०. ७, ३८;

१०, ५; ११. ५, २६;

१२. २, ४१; १३. २,

३७; ४, १; १८. २, ४७;

४, ४; ३६.

पृष्ठेन ११. ३, ४०२.

पृष्ठतुः ७. ६५, १.

पृष्ठः ५. १६, २.

पृष्ठस्य ४. ४, ८.

पृष्ठशान्ते इति ८. ६, १२.

पृष्ठः १६. ११, ३.

पृष्ठः २०. २६, ६; ४७, १२;

६६, ११.

पृष्ठनीः १०. २, १.

पृष्ठम् ४. १२, २.

पृष्ठम्-इव ६. ३७, ३.

पृष्ठः १०. ४, ६.

पृष्ठः १०. ४, ५; ७, १०.

पृष्ठस्य १०. ४, ११.

पृष्ठान् २०. २, १; ४; ६७,

४; ७.

पृष्ठः ६. ४, ७.

पृष्ठम् १. ६, ४; २. १३, ३;

२६, २; ३. २०, १०; ४.

२५, ५; ३६, २; ४; ६;

८; ५७, २; १८. १, ४३;

४, ४७; १६. २४, ५;

५२, १.

पृष्ठय ३. २८, ४.

पृष्ठयिष्णु ५. २८, ४.

पृष्ठयिष्णुः ३. १४, ६.

पृष्ठाः २. ३४, १; ५. २८, ३.

पृष्ठा ६. १४१, १; १६.

३१, १३.

पृष्ठे ३. १०, ७; ६. ४, २.

पृष्ठेण ३. १०, ३; ८; १४,

६; १५, ८; ६. ५, २;

१६. ५५, १; २.

पृष्ठैः ६. ४, २२; २४; ११.

१, ३४; १८. ४, ६२.

पृष्ठ्या १४. १, ५२.

पृष्ठ्यम् २०. ७३, ६; ६७,

३; १०६, २.

पृष्ठ्या २०. ६७, २; ६७, ७.

पृष्ठ्यैः २०. ७६, ७.

पृष्ठिष्ठः-इव १०. ४, १६.

पृष्ठि-आद्यम् १२. ५, २८.

पृष्ठिः ११. ७, १६.

पृष्ठम् ६. ५, ३०; १२. ३,

१४; १८. ४, ३६.

पृष्ठान् १२. ४, ३८.

पृष्ठः २०. ११८, २.

पृष्ठ-कुत्सिम् २०. ३७, ३;

पृष्ठयैः १. ३०, १.

पृष्ठयैम् ८. ६, २३; १२.

३, ४६; १६. २०, १.

पृष्ठयैत् ४. २६, ७; ७.

१०५, १; १०. ३, ४.

पृष्ठयै ११. ६, १०.

पृष्ठयैण ८. ३, १५.

पृष्ठ-मासम् ७. ८०, २.

पृष्ठ-मासी ७. ८०, १; ४;

१५. २, १४; १६, १.

पृष्ठ-मासीम् १५, १७, ६.

पृष्ठयत्ताम् ४. १५, ११; ५.

२६, १२; १३; ६. ७८,

१.

पृष्ठयन्ताम् १२. ३, २०.

पृष्ठयन्ति ४. ११, ४.

पृष्ठयन्तु ७. ८१, ६.

पृष्ठययामि १८. ४, ६४.

पृष्ठयसे १४. १, ४.

पृष्ठयस्व ७. ८१, ५.

पृष्ठयिषीमहि ७. ८१, ५.

प्र १. ३, ७; ७, २; ४; ५;

१०, २; १६, २; १८, २;

२४, ४; २७, ४; २८,

१; ३०, १; २. १, २; ४,

६; ५, १; ५; ६, २; ७,

१; १०, ५; १३, २; २५,
 ५; ३२, ६; ३४, ३; ४;
 ३५, ३; ३. १, २; ४; २,
 २; ५; ४, ५; ६, ७; ८^३;
 ११, १; ५; १२, ८; ९^२;
 १४, ४; ५; १६, ३^२; १८,
 ६; १९, ७; ८; २०, २;
 ३^३; ९; २३, ६; २६, १;
 ३१, ९; ४. १, ३^२; ७,
 ४; ८, २; ९, ५; १०, ६;
 १२, ६^२; १४, ५; ९; १५,
 ९; ११; १३; १६, ४;
 २०, ९; २५, ३; ६; २७,
 १; २८, ४; २९, १; २;
 ५; ६; ३०, ८; ३१, १;
 ३; ३२, ७; ३३, ३^२;
 ४^२; ५; ३४, २; ३६, १;
 ३७, १०; ५. १, ४; २,
 ७; ६, ४; ११^२; १२^२;
 १३^२; १४^२; ७, ३; ११,
 ६; १७, २; २०, ६; ८;
 ११; २१, ४; ५; ६; ११;
 २२, ४; ८; २८, ९; २९,
 ४; ३०, ९; ३१, १०; ६.
 ४, ३; १४, ३; २४, १;
 २८, १; ३४, १; ३५, १;
 ३७, १; ८३, १; ३^२;
 ८८, ३; ९७, २; १०५,
 १; २; ३; ११०, ३; ११३,
 २; १२१, ३^२; ११६, ३;
 १२८, १; १३०, १; २;
 ३; १३१, १; २; १३४,
 १; ७. २, १; ५, २; ५;
 ८, १; १८, १; २; २५,
 २; २६, १; २; ३४, १;
 ३५, १; ४२, १; ४९, १;
 ५०, ३; ४; ५३, ५; ६४,

७; ७२, २; ८३, ५; ७;
 ७७, ३; ७८, २; ८१, २;
 ८३, ४; ८६, ३; ९७, ३;
 ११४, २^२; ११५, १^२;
 ३; ८. १, ५; ७; १०;
 ११; २, १; १७; ३, ४;
 ८; ९; २४; ४, ३; १७;
 १९; २२; ६, ८; १७; ८,
 १०; १९; ९, १०; १०(३),
 ४; ६; ९. १, ६; ७; २,
 ४; ६; १२; १४; १७;
 १८; ३, ६; २२; २३^२;
 ५, ३; ८; १६^२; २३;
 ६(१), ३; ४; ६(५), १;
 ४; ६; ८; ९, १८; १०,
 ३; ४; १०. १, १५; ३०;
 २, १५; २६; ३, १; २^२;
 १५; १६; ४, ६; २५; ५,
 २३; २४^३; ५०^२; ७, ८;
 ९^२; २८; ४२; ८, ७; १९;
 २३; ९, ३; ११; १०, ७;
 १४; ११. १, १८; २२;
 २५; ३, २६; २७; ३१;
 ३, ३२-४९; ४, ३; ४;
 ५; ६; १४; १६; १७;
 २०; २२; ५, १५; ६,
 २३; ८, ११; १९-२५;
 २७; ३०; ३१; ९, १; १५;
 २२; २४; १०, १८^२; १२.
 १, १८; ४१; २, ३; ४;
 ८; १०; १३; २६; २७;
 ३४; ३५; ३८; ४५; ३,
 १५; १८; ३१; ३२; ३८;
 ४३; ४५; ४, ४७; ५, ५१;
 ५७; ६०; ६२^२; ६७^२,
 ७३; १३. १, १; ३; २७;
 २९^२; ४३; ५९; २, ३१;

३२; ३७; ४६^२; ३, १-
 २५; १४. १, १३; १७-
 २०; २४; ५८; २, १५;
 १९; २१; २६; ५९-६२;
 ६७; ६९^२; ७५; १५. १,
 २; ३; ८; १०, ३; ४; ५;
 १२, ५^३; १६. १, ११^२;
 ४, ५; १७. १, २८; २९;
 १८. १, ५; ७; २४; ५४^२;
 ६१; २, २; ३; ४; २८; ३१;
 ३९; ५३; ५४; ५८; ३, ८^२;
 ९; ३८; ४२; ४३; ६५; ७३;
 ४, १४; २९; ४०; ४८;
 ४९; ५१; ६०^२; ६५; ७०;
 १९. ६, ११; ७, ३; ८,
 २^२; १३, ७; १७, १-१०;
 १९, १^२-११^२; २०, ४;
 २४, ४; ३२, २; ३; ३४,
 ४; ३७, १; ४०, २; ४२,
 ३; ४६, ४; ४९, ९^२;
 १०^२; ५०, ४; ५६, १;
 ५७, ३; ६४, १; ७१, १;
 २०. ५, १; ३; ६; ६,
 ३; ४; ११, २; ३; ४;
 ५; ९; १३, २; १४,
 ३; १५, १; १७, ४; १८,
 ४; २१, १; २२, ४; २५,
 २; ७; ३०, १^२; ३१, ४;
 ३२, १; ३३, २; ३५, १;
 ३; ९; १२; १३; १५;
 ३७, १; ३^२; ४४, १; ५१,
 १; २^२; ३; ५६, १; ६१,
 ४; ६२, ३; ८; ६८,
 ८; ११; ७३, ३^२; ७६,
 २^२; ५; ७^२; ७८, ३;
 ८७, ३; ५^२; ८९, १;
 २; ८; ९१, ३; १२; ९२,

१; ५, ६४, ६; ६६, ६;
६७, २; १०७, १०; १२६,
२; १२७, ५; ६; १०;
१३६, ४; १३७, ३; १३८,
२; १३९, १; १४२, १;
२५; ४; ५८.

प्र-अञ्जनात् ४. ६, ५.
प्र-अनुदन्त ६. २, १७; १८.
प्र-अपादि ५. १७, ४.
प्र-अयम् ४. २५, २.
प्र-अर्थः ५. २२, ६.
प्र-अविशत् १०. ७, ८.
प्र-अशितारः ११. १, २५;
३२.

प्र-अश्रुती ६. १३३, २.
प्र-अश्नन्ति ८. ७, २५.
प्र-अहैत् २. २४, १-८.
प्र-आप्तः ६. ७, २२.
प्र-आप्तिः ११. ७, २२.
प्र-आप्नोषि ४. १६, २.
प्र-आवृत्त्य ११. ८, १५.
प्र-आशीः ११. ३, २८; २६;
३, ३२-४६.

प्र-आश्रन् ११. ३, ३२-४६.
प्र-इतम् १८. ३, १.

प्र-इयार्थ १८. ३, १३.

प्र-इव १२. २, ५२.

प्र-इषिता ११. ३, १४.

प्र-इषिताः ३. १३, २.

प्र-इषितौ ८. १, ६.

प्र-इक्षते ६. ६ (२), १.

प्र-इक्षाः ४. ३७, ५.

प्र-इप्सन् १०. ७, ४२.

प्र-इप्सन्तीः १०. ७, ४; ६;
३७.

प्र-इयुः ५. ८, ६; ११. १०,
१७.

प्र-उक्षणीः १०. ६, ३.

प्र-उक्षणीभिः ५. २६, ६.

प्र-उक्षन्ती १०. ६, ११.

प्र-ऊढः १५. १५, ४.

प्र-पृषाः ५. २६, ४; ११.
७, १८.

प्र-पृषैः १६. ७, २.

प्र-पृषन् ५. २२, १४.

प्र-कल्पयन् १६. ८, १.

प्र-कशः ६. १, २१.

प्र-कु पितान् २०. ३४, २.

प्र-कृन्तति १२. ४, ७.

प्र-क्रामन्तः १२. १, २८.

प्र-क्नीः ४. ७, ६; ११. ७, १०.

प्र-क्रोडन्ते ५. २१, ८.

प्र-क्षीणाः १०. ३, १५.

प्र-खुदसि २०. १३५, ४.

प्र-गृहीतम् १२. ४, ३४.

प्र-चक्रः १२. २, ५.

प्र-चर २०. १३५, ४.

प्र-चरते ६. ३, १२.

प्र-चर्षणी इति प्र-चर्षणी
७. ११०, २.

प्र-चेतः ४. ३२, ५; ७.
१०६, १; ८. ३, ६.

प्र-चेतसः ४. २३, १; ६.
६८, १; ८. ७, ७; १४.
२, ४६; २०. १०६, ३.

प्र-चेतसा २०. १४१, ५;
१४२, ५.

प्र-चेतसे २०. ६६, ५; ७३, ३.

प्र-चेतसौ ६. ५३, १.

प्र-चेताः ५. १२, १; ६. ४५,
३; १८. २, २७.

प्र-चोदयः २०. ६३, ६.

प्र-चोदयन्ता ५. १२, ७.

प्र-च्यवन्ते ६. ८, ३.

प्र-च्यवन्ते ८. ६, ८.

प्र-च्युतः ६. १२१, ४.

प्र-च्युताः ४. १५, ७; ८; ६;
५. २०, ३.

प्र-च्युताम् ८. ६, ८.

प्र-जनन-वन्तम् १६. १८, ६.

प्र-जनन-वान् १६. १७, ६.

प्र-जननाय ६. ६(४), १०.

प्र-जनयन् १०. ७, २६.

प्र-जन्वः ६. ४, ६.

प्र-जया २. ३४, ३; ४; ३.
२६, ८; ५. ३, ७; २६,
६; ७; ८; ६; ६. ५,

१; १४१, २; ७. १७,
४; ३३, १; ८१, ३; ४;
५; ८६, २; ६. १, १५;

१०. ५, ४७; ६, २३;
११. १, १; १४; २०;
२१; १२. ३, १०; ४,

२; १४. १, ३२; ३३;
४८; ५३; ५४; २, १;
१३; ६४; ७०; १८. ३,

१७; १६. २४, ८; ३१,
७; ६४, २.

प्र-जहितानि २०. ११६, १.

प्र-जा ७. ३४, ३; ६. ७,
१३; १०. ६, ३३; ११.

१, १६; ३, ३२; ३५;
१२. ५, १०.

प्र-जा-अमृतत्वम् ११. १,
३४.

प्र-जाः २. ३५, २; ७. १६,
१; १११, १; ६. १, १;

३४; ४, २०; १०. ८, ३;

३७; ३८; ११. ४, १०;
१६; १२. १, १६; १३.
१, १६; १५. १४, २१;
१५, ६; १६. ८, १;
५-३०; १६. ५३, ७;
१०.

प्रजा-कामाय ७. १७, ३.

प्र-जातिम् ६. ६, १८; १६.
२६, १,

प्र-जाता १. ३४, १.

प्र-जातिने ६. ८६, १.

प्र-जानती १८. ३, ४.

प्र-जानती इति प्र-जानती
८. ६, १२.

प्र-जानती: १२. २, ४१.

प्र-जानन् २. २६, २; ३.
१२, ४; २०, ८; ४. २३,
२; ५. २६, २; ६. ११२,
१; २; ७. ६, १; २; ८.
६, २२; ६. ५, १; ३;
१२. २, ८; १४. १, ५६;
२०. ८६, १.

प्र-जानन्तः २. ३४, ५; १३.
३, १७.

प्र-जानाम् ५. २४, १३; ६.
१, ४; ६(४), १०२; १०.
१, २१; १७. १, ३.

प्र-जा-पतिः २. ३४, ४; ३.
१५, ६; ४. ४, २; ११,
७; १५, ११; ३५, १;
५. २५, ५; ६. ११, २;
३; ६८, २; ६६, ३; ७.
१७, ४; १६, १; २४, १;
८. १, १७; ५, १०; ६.
१, २४२; ३, ११; ७;
१; २४; १०, २४; १०.
७, ७; ८; ४१, ८, १३;

१०, ३०; ११. ३, ५२;
५, १६२; ७, ३; ८, ३०;
६, २५; १२. १, ४३;
६१; १३. २, ३६; ३,
५; १४. २; १३; ४०;
१५. १, २; ६, २५; ७,
२; १४, २१; १७. १, १८;
१६. ६, ६; १२; १७,
६; १६, ११; २०, २;
४६, १.

प्रजा-पतिम् १०. ७, १७;
११. ४, १२; ५, ७; ६,
११; १५. १, १; १६.
१८, ६; ५३, १०.

प्रजापति-सृष्टः १०. ६, १६.

प्रजा-पते ५. २५, १३; ७.
८०, ३; ६. १, २४.

प्रजा-पते ३. २४, ७; ६.
१, १०; २०; १०. ५,
४५.

प्रजा-पते: ३. १०, १३; ४.
११, ११; ७. १२, १;
६. ६(३), १२; १०. ५,
७-१३; १४; १५. ६,
२६; १६. ८, ११; १७.
१, २७; १६. ५३, ८.

प्रजा-पतौ १०. ३, २४; ७,
४०; ११. ५, १५; १२.
४, ४७.

प्र-जामिः १६. १६, ११.

प्र-जाम्यः ४. १५, १०; ६. १,
२४; १३. ४, ११; १६.
१०, १०; २०, २.

प्र-जाम् १. ८, ३; २. ७, ४;
२६, २; ३. १०, ३; ८;
४. ११, ६; १६, १; ३६,
२; ४; ६; ८; ५. १८,

१२; १६, ११; ६. ८१,
१; ७. २०, २; ४६, १;
६८, १; ८२, २; ८. ५,
१६; ६, १३; ६. ४, २२;
६(३), ४; १०. १, १६;
३१; २, २६; ६, ३५;
११. १, ६; १७; २, २१;
१३. १, ३४; १४. १,
४२; २, १४; २४; ३१;
३७; ३६; ४०; ७१; ७४;
१८. ३, १; ४, ६२; १६.
६३, १; २०. ६३, १;
६६, १५; १६; १२४,
४; १३८, २.

प्र-जायते ६. ३, २०.

प्रजायध्वम् २०. १२७, १२.

प्र-जायाः ६. ६(५), ३; ५; ७;
१०.

प्र-जायाम् ६. ५५, २; १४.
२, ६२.

प्र-जायै १. १८, १; ५. ३,
७; ८; २५, ८; ८. ६,
२१; ६. ३, ११; १४. १,
२१; ४७; १८. ३; ४१.

प्रजा-वत् ६. ६७, २; १२.
४, १; १४. २, ७३; २०.
३३, ३.

प्रजा-वति ६. ३, १३; १४.

प्रजा-वति १४. १, ५२.

प्रजा-वती ११. १, १४; १४.
२, १८; ३२.

प्रजावती इति प्रजा-वती
१०. १, २१.

प्रजा-वती: ४. २१, १; ७;
७. ७५, १.

प्रजा-वतीम् १४. २, ७.

प्रजा-वन्तः—प्रति-क्रोशे.

(४,६१७)

प्रजा-वन्तः ७. ७४, ४; १६.
 २६, २.
 प्रजा-वन्तम् ७. २१, ३.
 प्रजा-वान् ६. ६८, ३.
 प्रजा-वित् ११. १, १५.
 प्र-जासु ३. १५, ७.
 प्र-ज्ञानाम् १३. २, २.
 प्र-ज्ञानाय ११. ३, ५१.
 प्र-ज्ञानीः १०. ७, ३४.
 प्र-तङ्कम् ४. १६, २; ५. १३,
 ८.
 प्र-ततामह १८. ४, ७५.
 प्र-तन्वतोः ८. ७, ४.
 प्र-तरणाः ६. १२५, १; १२.
 २, ४६.
 प्र-तरणम् १६. ४४, १.
 प्र-तरणी १४. २, २६.
 प्र-तरम् ५. १, ४; ६. ५, २;
 ४१, ३; ८. २, २; ११.
 १, २१; १२. २, ३०;
 १८. १, १; २, ३१; ३,
 १०; १७; ६३; ४, ५४;
 २०. २१, ११; ८६, १.
 प्र-तरीता १८. ४, ५८.
 प्र-तानाः ६. १३६, १.
 प्रति १. ७; ३; ८, २; २८,
 २२; २. ११, ३; १६, १;
 २; ३; ४; २०, १; २; ३;
 ४; २१, १; २; ३; ४; २२,
 १; २; ३; ४; २३, १; २;
 ३; ४; ३४, ५; ३. १,
 १; ३; ३, ५; ४, ३; ८,
 २; १०, ६; १३; १२,
 २; २६, ७; ८; ४. १२,
 ६; १४, ६; १८, ४; २०,
 १; ५; ५. ७, ६; ८, ५;

१४, ३; १२; २८, ८;
 २६, ४; १४; १५; ३०,
 १३; ३१, १-६; ६. ३१,
 ३; ३२, १; ३६, २;
 ३७, ३; ११७, २; ११६,
 २; १२३, ५; १२५,
 ३; ७. २६, १; २; ३४,
 १; ३५, १; ५३, १; ५८,
 १; ६६, १; ७३, ३; ७७,
 २; ८२, ५; ८. ३, ६;
 १०; १६; २१; २३; ४,
 ७; ११; २५; ६, २६; ८,
 १०; ६, १६; ६. १, १;
 २, २; ३; ३, १५; २४;
 ४, २४; ५, ३७; ६ (५),
 ६; ५; ७; ८; ६; ८, १३;
 १०, २; ७; १०. १,
 १५; २७; २८; ६, ६; ७;
 ८; ६; १५; १७; २१;
 ३०; ३५; ८, ३६; १०,
 २; २५; २७; ११. १,
 ८; १४; १८; २, १८;
 १०, १६; १२. २, २६;
 ३, २३; ४४; १३. २,
 ४६, ३, १-२५; १४.
 १, ३६; २, १५; २५;
 ३१; १८. १, २८; २,
 ७; ३७; ३, ४०; ४, ५;
 ५१; ५२; १६. ४, ४;
 २५, १; ३१, १३; ३७,
 २; ४२, ३; ४५, २; ४६,
 ८; ५७, ५; २०. १५, ४;
 १८, ६; ४८, ६; ५८, १;
 ६७, ५; ७१, १०; ६२,
 १७; ६३; २; १०५, ५;
 १०७, १५; १३५, ६;
 ७; १३५, ६.

प्रति २०. १३५, १०.
 प्रति-अक्षम् ६. ६ (१), १;
 १०. ७, २४; २६; ३०;
 ११. ८, ३.
 प्रति-अभिचरणः २. ११,
 २.
 प्रति-अमुचम् १०. ६, ३४.
 प्रति-अर्पयित्वा १२. २, ५५.
 प्रति-अष्टीवन् ५. १६, ३.
 प्रति-आतिष्ठन्ती ५. ५, ३.
 प्रति-आदाय १०. १, २७.
 प्रति-आश्रययति ६. ६ (६),
 २.
 प्रति-आहन्ति ८. १० (६),
 ३.
 प्रति-आहन्ति ८. १० (६),
 ३.
 प्रति-आहन्मि ८. १० (६),
 २.
 प्रति-आहन्त्यात् ८. १० (६),
 १; २.
 प्रति-आहन्त्यात् ८. १० (६),
 २.
 प्रति-इत्य १६. ४६, ६.
 प्रति-उदैत् ७. ३, १.
 प्रति-एतु ३. १, २; २; १.
 प्रति-कामम् १८. ३, ४६.
 प्रति-कामाय २. ३६, ७.
 प्रति-काम्यः २. ३६, ५; ६;
 ८.
 प्रति-काम्यम् ६. ६०, ३.
 प्रति-काशः ६. ८, ६.
 प्रति-कूलम् ५. १४, १३;
 १०. १, ७.
 प्रति-क्रोशे ४. ३६, ३.

(४, ६१८)

प्रति-गृह्यणीहि—पुच्छेन.

प्रति-गृहीतः ६. ५, १२.
 प्रति-गृह्यतः ६. ३, १६.
 प्रति-गृह्यन्तम् ३. २१, ४.
 प्रति-गृह्यन्ति ६. ३, ६.
 प्रति-गृह्य ३. २६, ८.
 प्रति-गृहीता ३. ३६, ७; ४.
 ११, ५.
 प्रति-गृह्याना ११. ६, ७.
 प्रति-गृह्यानाः ११. ६, १४.
 प्रति-चक्षणे १. १८, ३.
 प्रति-चाकशात् ६. २६, ३२.
 प्रति-च्यवीयसी २०. १२६,
 ६.
 प्रति-जग्रहं ६. ७१, १.
 प्रति-जनाः ३. ३, ५.
 प्रति-दहनं ३. १, १; २, १.
 प्रति-दीवन् ७. १०६, ४.
 प्रति-दीव्यति ७. १०६, ४.
 प्रति-धयः १४. १, ८.
 प्रति-धाम् ८. ८, २०; ११.
 १०, १६.
 प्रति-धुक् ६. ४, ४.
 प्रति-नन्दनम् ७. ३८, १.
 प्रति-नन्दन्ति ३. १०, २.
 प्रति-नुद्व ५. ३, २.
 प्रति-पुणः ३. १५, ४.
 प्रति-पश्यति ६. ६(१), ३.
 प्रति-पश्यथ ७. १३, २.
 प्रति-पानाय १६. ५२, ३.
 प्रति-प्रहिणमः २०. १, ५.
 प्रति-पाशः २. २७, १; २;
 ३; ४; ५; ६.
 प्रति-बुद्धाः ४. ३७, ३, ४;
 ५.
 प्रति-बुध्यमानाः १२. १, ६३.

प्रति-बोधः ८. १, १३.
 प्रति-बोधेन ८. ६, १५; १६.
 ३५, ३.
 प्रति-भृत्य २०. ३२, २.
 प्रति-मा ८. ६, ६; ६. ४, २.
 प्रति-मानम् ५. २, ७; २०.
 ३४, ६; १०७, १०.
 प्रति-माम् ३. १०, ३.
 प्रति-मिताम् ६. ३, १.
 प्रति-मृशात् ८. ६, १८.
 प्रति-मोहयन्ती ३. २, ५.
 प्रति-तिरन्तः १८. २, २६.
 प्रति-तिरन्ते १४. २, ३६.
 प्रति-वर्तः ८. ५, ४; १६.
 प्रति-वर्त्म १०. १, ६.
 प्रति-वेशाः ३. १५, ८; १६.
 ५५, १; २.
 प्रति-शत्रवः ४. २२, ६.
 प्रति-शिद्दन्ति २०. ७६, ५.
 प्रति-शीवुरि १२. १, ३४.
 प्रति-शृणोति ६. ६ (६), २.
 प्रति-तिष्ठन्तीम् १०. ७, २१.
 प्रति-सुरः २. ११, २; ८. ५,
 १; ४.
 प्रति-सुरेण ४. ४०, १-८.
 प्रति-सरैः ८. ५, ५; ६.
 प्रति-स्थया ११. ३, ४६.
 प्रति-स्था १२. १, ६; १६.
 ६०, १.
 प्रति-स्थाः १२. ३, २५.
 प्रति-स्थाम् ६. ३२, ३; ८. ८,
 २१; ६. ६(४), १०; १०.
 ३, १; १८, ४, ५; १६.
 ११, ६.
 प्रति-स्थाय ११. ३, ४६.

प्रति-स्थायः १६. १७, ६.
 प्रति-स्थायाम् ५. २४, १-१७.
 प्रति-स्थितः ११. ४, १८; १६.
 ५२, २.
 प्रति-स्थितम् १०. ७, १;
 ३०; ८, ६; ११. ४, १;
 १५; १७. १, १६; १६.
 ५३, ६.
 प्रति-स्थिता १२. ५, ३.
 प्रति-स्थिताः १०. ७, २२;
 १६. ५४, ४.
 प्रतिस्थे इति प्रतिस्थे ४.
 २६, १; ३.
 प्रति-स्पाशनम् ८. ५, ११.
 प्रति-हरणेन ५. १४, ८.
 प्रति-हारः ११. ७, १२.
 प्रति-हिताभिः १६. १३, ४.
 प्रति-हिताम् ११. २, १.
 प्रति-हितायै ६. ६०, ३.
 प्रतीचः ३. १, ४; ५. ८, ७;
 ६. ३२, ३; ७. १०८, १.
 प्रतीचः ८. ३, ६.
 प्रतीचिका १६. २०, ४.
 प्रतीची ३. २७, ३; ७. ३८,
 ३२; ४६, ३; १०८, १;
 १२. ३, ६.
 प्रतीचीः १. २८, २; ८. ५,
 ५; ४; १०. १, ६.
 प्रतीचीनः ६. ३, २२; १०.
 १, ६.
 प्रतीचीनः ४. ३२, ६.
 प्रतीचीन-फलः ४. १६, ७;
 ७. ६४, १.
 प्रतीचीनाय ११. ३, ५;
 ८.

प्रतीचीम्—प्रथमाय.

(४,६१६)

प्रतीचीम् ६. ३, २२; ११.
 १०, २६; १२. १, ३४;
 १५. २, १५; १४, ५.
 प्रतीच्याः ४०. ४०, ३; ५.
 १०, ३; ६. ३, २७; १२.
 ३, २४; १५. ४, ७; ६;
 ५, ६; ७; १८. ३, २७;
 १६. १७, ५; १८, ५.
 प्रतीच्याम् ३. २६, ३; ४.
 १४, ८; १५. २, १८;
 १८. ३, ३२.
 प्रतीच्यै १२. ३, ५७.
 प्रतीपम् २०. १२६, २.
 प्र-चूतिषु २०. १०५, १.
 प्र-तोदः १५. २, ७; १४;
 २०; २७.
 प्र-क्षः ६. ११०, १.
 प्र-क्ष-था २०. ८, १.
 प्र-क्षम् २०. २४, ६; ३६, ७.
 प्र-क्ष-वत् २०. ३६, ७.
 प्र-क्षस्य २०. २६, ३; ६२,
 १५.
 प्र-क्षान् ६. १३६, २.
 प्र-क्षाय २०. ३६, २.
 प्र-क्षार्सः १८. ३, २१; २०.
 ८, १.
 प्र-क्षेन १०. ११५, २.
 प्रत्यक् ४. १८, २; १६, ५;
 ६; ४०, १-८; ५. १३,
 ४; ३०, ५; ८. ३, १४;
 ५, २; १५; १०. १, ५.
 प्रत्यङ् ३. २०, २; ४. ११,
 ८; १६, ७; ६. ५१, १;
 ६. ७, २१; ११. १, २२;
 १३. १, ५६; २, ३; २०.
 १५. १८, ५; १८. १, २६;

३०

१६. ५३, ३; २०. ४७,
 १७१.
 प्रत्यञ्चः ११. ७, १३.
 प्रत्यञ्चम् ७. ४०, २; ८. ३,
 १७; २५; ११. ३, २६;
 ३, ३२-४६; १२. २, ५५;
 २०. ६३, ३; १२४, ६.
 प्रत्यञ्चदिम् ११. ३, २६.
 प्र-त्रासम् ५. २१, ३.
 प्र-त्रासेन ५. २१, २.
 प्र-त्त्वत्तसम् २०. ६४, ३.
 प्र-त्त्वत्तान् २०. ६४, १.
 प्रथः १३. ४, ५३.
 प्रथताम् ३. २२, १; १२.
 १, २; ३, ३८.
 प्रथते ५. १२, ४.
 प्रथमः १. १२, १; २४, १;
 ४. ६, १२; १४, ५; २४,
 ६; ५. १, २२; १७, २;
 २८, ११; ६. २८, ३; ७.
 ८२, ४; ५; ६. २, १६;
 १०. २, ८; ४, १; ६; ८,
 २८; ११. ५, ६; १३. १,
 ५५; १४. १, ५५; १५.
 १५, ३; १६, १; १७, १;
 १८. १, १६; २७; २८;
 ३०; ५०; ३, १३३; ७३;
 १६. ४, १; १३, १; २२,
 २१; २३, ३०; ३२, १०;
 ५३, २; २०. २५, १; ५;
 ३४, १; १०४, ४; ११३;
 १.
 प्रथम-जः ४. ४, ५.
 प्रथम-जम् १. ३५, २.
 प्रथम-जा ८. ६, १६; २१.
 प्रथम-जाः ४. ३५, १; ५.
 १७, १; ६. १२३, १; ६.

१०, १५; १०. ७, १५;
 १२. १, ६१; २०. ६०, १.
 प्रथम-जाम् २. १, ४; ५, ७.
 प्रथमम् ४. १, १; ३, ४; ६,
 ३; ३६, २; ४; ६; ८; ५.
 ६, १; ६. ५६, १; ६५,
 ३; ८. ६, २४; ६. ६, ४;
 १०. ४, १८; ७, ३१; १२.
 ३, १; १४. २, ३; १८.
 २, ५७; १६. ४२, ४; ४६,
 १; ५२, १; २०. २५, ४;
 ८, ५; ६१, २.
 प्रथम-वास्त्यम् २. १३, ५.
 प्रथमस्य ४. २१, ५; २३,
 १; २४, ६; १८. १, ७;
 १६. २५, १.
 प्रथमस्याः ६. १८, १.
 प्रथमा १. २४, २; २७, ४;
 २. २५, २; ३. १०, १;
 ४; ४. ३०, ३; ३२, ७;
 ५. १२, ७; ६. १०, ८, १;
 ७. ८०, ४; ८. ६, ११;
 ६. ३, २३; १०, २३; १०.
 ६, १; २०. ८७, ५.
 प्रथमाः ४. ७, ७; ५. ६, २;
 १७, १; ७. ५०, ७; १०.
 ७, १६; १०, ८; २०. १७,
 १०; ८६, १०; ६४, ६;
 १०.
 प्रथमाना १२. १, ५५.
 प्रथमानाः ११. १, ३२.
 प्रथमानि २. ५, ५; ७. ५,
 १; ६. १०, २५.
 प्रथमाम् ६. १८, १; १०८,
 २; ७. ७४, २; १६. ४, १.
 प्रथमाय ४. १, २२; ७. १४,
 ३.

(४,६२०)

प्रथमे इति—प्रभृता.

प्रथमे इति १८. १, २६.

प्रथमेन ११. ८, ३३.

प्रथमेभ्यः १६. २२, ८.

प्रथय १२. ३, ३७.

प्रथयते ६. ७२, १.

प्रथयस्व ६. १०१, १.

प्रथस्व ११. १, १६.

प्रथिना २०. ७१, १.

प्रथिष्ठम् ८. ३, १.

प्रदक्षिणम् २. ३६, ६; ७.
५०, ३.

प्रदक्षिणित् २०. ८, ३.

प्रददातु ८. ४, ६.

प्रददुषे १२. ४, ३५; ३६.

प्रदहन् १०. ८, ३६.

प्रदाता ३. २६, ४; ५.

प्रदिवः १. १५, १; २०.
२१, २.प्रदिवि २०. ६७, ६; ८७,
२.

प्रदिशः १. ११, २; ३०, ४;

२. ६, १; १०, ३; ४; ३.

४, १; २; २०, ६; २२,

५; २४, ३; ४. २, ५;

११, १; १५, १; २०, २;

३५, ५; ५. ३; १; २८,

२; ६. ४०, २; ८. ५, ३;

६. २, ११; २१; १०, १६;

१०. ६, १६; ७, १६; ३५;

११. २, १०; ५, १२; ६,

२२; १२. १, ४; ३१; ५५;

३, ३०; १३, १, ३८; २,

३३; ३४; ३, १; २०; १७.

१, १६; १६. १, ३; १०,

८; १४, १; २०, २; ३३,

५; ४५; ३; २०. १०७,
१३.

प्रदिशम् १२. ३, ७.

प्रदिशा ५. १२, ३; ७; ६.
१०, १७.प्रदिशि १. ६, २; ४. २३,
७; २८, १; ७. २५, २;
२०. ३४, ७.

प्रदीक्ष्यतः १०. ४, ११.

प्रदीयते १२. ४, ३३; ४०.

प्रदुद्रुदः २०. १३०, १२.

प्रद्यौः १८. २, ४८.

प्रधनेषु १८. २, १७.

प्रधयः १०. ८, ४.

प्रधावति १८. २, १४.

प्रधिः ६. ७०, ३.

प्रधौ ६. ७०, ३.

पूनपादिति पूनपात् २०.
५, ७.

पूनीतये ६. २३, २.

पूनीतीः ७. १०५, १.

पूनीयन्ते ६. ६ (१), ५.

पूनुत्तः ६. २, १४.

पूनुत्तानाम् ११. ६, २०.

पूनुत्यन्तः ८. ६, ११.

पूनेजने १६. २, ४.

पूनेतः ३. १६, ३.

पूनेतारम् २०. ४६, १.

पूनोवम् ६. २८, १.

पूपणः ३. १५, ४.

पूपणम् ३. १५, ५; ६.

पूपतन् ६. ८, २; १६. ५०,
४.पूपथे ७. ६, १४; १८. २,
५५; २, ४६.

पूपदानि ८. ६, १५.

पूपदायाम् २. ३३, ५; ११.
३, ४७२; २०. ६६, २१.

पूपदेन ६. ४२, ३.

पूपदोः ६. २४, २.

पूपद्य १४. १, ६४.

पूपद्यन्ते ६. ६ (६), ३.

पूपश्यन् १३. १, ४.

पूपश्यन्तः ५. २, ५; २०.
१०७, ८.

पूपा ६. ३०, ६.

पूपितामहान् १८. ४, ३५.

पूपित्वे ३. १६, ४.

पूपिबन्ति १४. १, ४.

पूपीताः ३. १६, ७.

पूपीताम् ६. १०८, २.

पूपीनम् ११. १, ३४.

पूपीनाः १२. ३, ४१; १८.
४, ६.

पूपीनाम् ७. १५, १.

पूपृथक् ६. १२२, ४; १०.
६, २७; ११. १, २७.

पूप्र ७. २६, ३.

पूप्रत्यम् ३. १७, ३; ५.
२२, ७.

पूप्रधाम् ५. ३, २.

पूप्रवन् ५. १७, ६.

पूप्रवाणाः १. ७, ५.

पूप्रलीनः ११. ६, १६.

पूप्रञ्जन् १६. १३, ८.

पूप्रवन् ३. २६, २.

पूप्रु २०. ७१, ११; १४५, ६.

पूप्रुवसो इति पूप्रुवसो
२०. १५, १; ११७, २.पूप्रुः ६. ४, २; १३. ४,
४७.पूप्रुता ५. २, २; २०. १०७,
५.

प्र-भूतिः २. ३५, ५; १६. ५८,
 ५.
 प्र-भ्रजमानाम् १०. २, ३३.
 प्र-भ्रवीः १२. ३, २७; १८. ३,
 ६६; ४, २६; ४३.
 प्र-भ्रतिः ७. २०, ५; १८. ३,
 ६३; २०. १३, ३.
 प्र-भ्रत्या २०. २१, ५.
 प्र-भ्रदा १६. ५६, १.
 प्र-भ्रनाः २. २८, १.
 प्र-भ्रन्दनी ४. ३७, ३.
 प्र-भ्रयुः ८. १, १६.
 प्र-भ्रा १०. ७, ३२.
 प्र-भ्रादम् २०. १८, ३.
 प्र-भ्रादेण ११. ८, ३३,
 प्र-भ्रिनाम् १६. ५६, २.
 प्र-भ्रोलिनम् ८. ६, २.
 प्र-भ्रञ्च ७. ८४, १.
 प्र-भ्रञ्चन्तः २. ३४, २.
 प्र-भ्रुः ११. ७, २६; ८, २४;
 १८. १, १३.
 प्र-भ्रुणम् १२. ५, ६१.
 प्र-भ्रणन् ३. १, ४; ५, १; ४.
 ३१, ३; ५. २३, ६; ११.
 २, २३; १६. १, २; १६.
 १३, ८; ६६, १.
 प्र-भ्रणन्तम् ६. ६७, ३; १६.
 १३, ६.
 प्र-भ्रशन्तम् ८. ६, ६.
 प्र-भ्रोतम् ६. ८, ४.
 प्र-भ्रोदन्ते ४. ३८, ४.
 प्र-भ्रोदिनीम् ४. ३८, ४.
 प्र-भ्रयः २०. ३५, १.
 प्र-भ्रयः इव २०. ३५, २.
 प्र-भ्रयः ५. २७, ५; ६.
 प्र-भ्रयन्तः ६. १२२, २.

प्र-यच्छन्ति १०. ७, ३६.
 प्र-यच्छसि २०. ५, ४.
 प्र-यज्यो इति प्र-यज्यो २०.
 ३६, ११.
 प्र-यतः १३. २, ३१.
 प्र-यतस्य २०. ८७, ६.
 प्र-यता १८. ३, ४२; ४,
 ६५; २०. १०३, २.
 प्र-यतानि १८. ३, ४४.
 प्र-यताम् ५. २०, ५.
 प्र-यति ७. ६७, १; २०.
 ११८, ३.
 प्र-यतिम् २०. ६२, १५.
 प्र-यती १४. १, १२.
 प्र-यन ६. ३१, १; २०.
 ४८, ४.
 प्र-यन्ता २०. ३७, १.
 प्र-यस्ता १२. ५, ३१.
 प्र-यस्यन्ती १२. ५, ३१.
 प्र-यस्वान् २०. ८६, ५.
 प्र-याजाः १. ३०, ४.
 प्र-युजः ११. ८, २५; २०.
 ३२, २.
 प्र-यै २०. २५, ७; ३३, २.
 प्र-रुहः १३. १, ८; ६.
 प्र-लयन्तम् १. २३, ३.
 प्र-लापाः ११. ८, २५.
 प्र-वणे २०. १५, १; १७, ३.
 प्र-वतः १. १३, ३.
 प्र-वतः ४. २५, ६; १०.
 १०, २; ३; १२. १, २;
 १३. २, २८; ३३; १८.
 १, ४६; ४; ७; २०. ७६,
 २.
 प्र-वतः १. १३, २; ३६, ३.
 प्र-वतम् ६. ३८, ३.
 प्र-वता ३. १, ४.

प्र-वदः ५. २०, ६.
 प्र-वदन्ति ४. २४, ३.
 प्र-वन्तवे २०. ७५, ३.
 प्र-वर्तौ १५. २, ५; १३;
 १६; २५.
 प्र-वसन् ७. ६०, ३.
 प्र-वहन्ति ६. ५१, २.
 प्र-वार्ति १०. ८, ३५.
 प्र-वाम् १२. १, ५१.
 प्र-वाय्यम् ६. १०५, १.
 प्र-वाहणः २०. १२७, २.
 प्र-विद्वान् ५. २६, १; ३; ६;
 ७. ६७, १; ११. १,
 ३१; १२. २, ५५.
 प्र-विध्यन्तः ३. २६, ४.
 प्र-विवेश १२. २, ४; ७.
 प्र-विशि-वांसम् ४. २३, १.
 प्र-विश्य १. २५, १; १२. ५,
 ४१.
 प्र-विष्टः ४. ३६, ६; १०. ८,
 ३८; ४०; १४. २, ५५;
 ५८.
 प्र-विष्टम् १४. २, ५३; ५५;
 ५६; ५७.
 प्र-विष्टा ३. १०, ४; ६.
 ७३, २; ८. ६, ११.
 प्र-विष्टाः ७. ८०, ४; १०.
 ८, ४०; १८. २, २८.
 प्र-विष्टाम् १२. १, ६०;
 १६. ४, २.
 प्र-वीयमाना १२. ४, ३७.
 प्र-वीरः १६. १३, ५.
 प्र-वृद्ध २०. ११२, २.
 प्र-वृद्धे इति प्र-वृद्धे ४. २६,
 २.
 प्र-वेद-कृत ५. २०, ६.

(४,६२२)

प्र-व्यथिताः—प्राणा.

प्र-व्यथिताः १०. ३, ६.
 पशंसति २०. १३५, १३.
 प्र-शर्ध २०. १२०, १.
 प्र-शस्तम् २०. ६६, ३.
 प-शस्ति-भिः १. ४, ४.
 प-शस्तिम् २०. ११७, ३.
 प्र-शिषः ११. ८, २७.
 प्र-शिषम् ४. २, १; १३. ३,
 २४; ४, २७.
 प्र-शिषा ६. १३३, १; १४.
 १, ५३.
 प्र-शिषि ५. १२, ११.
 प-शिष्टाः १२. ३, २७.
 प्र-शणाति ७. ७६, ३.
 प्रष्टयः १०. ८, ८.
 प्रष्टिः १३. १, २१.
 प्रष्टुम् ६. ६, ४.
 प्र-सक्तः ७. ५०, ३.
 प्र-सर्पतः ८. ६, २२.
 प्र-सर्पसि ४. ६, ४.
 प्र-सर्वाणाम् ६. ३६, १.
 प्र-सुवानाम् ५. २४, १.
 प्र-सुवे ३. २०, ८; ६. ६२,
 १; ७. ६, ४; ८. ६, ८;
 १६. ५१, २.
 प्र-सार्धनः १३. १, ६०.
 प्र-सितयः २०. ५६, ४.
 प्र-सितिम् ८. ३, ११; १४;
 १४. १, ४६.
 प्र-सितौ ८. ५, १३.
 प्र-सूः ३. २३, ४.
 प्र-सूतः ३. १, ४; ६. ६३,
 १; १६. ५१, २.
 प्र-सूताः १२. १, ६२.
 प्र-सू-मतीः ८. ७, २७.
 प्रसूजत २०. १३६, १३.

प्रस्कण्वम् २०. ६, ३; ४६,
 ६.
 प्रस्तरः १६. २, ६.
 प्र-स्तरम् १८. १, ६०.
 प्र-स्तराय १६. २, ६.
 प्र-स्तुतम् ११. ७, ५.
 प्र-स्तृणतीः ८. ७, ४.
 प्रस्था-वत् ३. १७, ३.
 प्र-स्थितम् २०. ६७, ५; ७.
 प्र-स्थितान् २०. ८७, २.
 प्र-क्षपिताम् १०. १, १०.
 प्र-स्त्रवणेषु २०. ५२, १; ५७,
 १४.
 प्र-स्वः १६. १०, ७.
 प्र-हरन्तः १६. ४६, ३.
 प्र-हरसि ७. ५६, ८.
 प्र-हरेम १४. २, ३८.
 प्र-हाम् ४. ३८, ३; ७. ५०,
 ६; २०. ८६, ६.
 प्र-हाय्याः १५. ३, १०.
 प्र-हासिनः ८. ६, १४.
 प्र-हितः २. २६, ४; १८. ४,
 ६५.
 प्र-हितान् ८. २, ११.
 प्र-हितौ ६. २६, २.
 प्र-हृतः ४. १२, ७.
 प्र-हेतारम् २०. १०५, ३.
 प्र-हेया ५. १७, ३.
 प्राः २०. ८०, १.
 प्राक् २०. ६४, ७; १२०, १;
 १२८, १; १३४, १; २; ३;
 ४; ५; ६.
 प्राक्तः ८. ४, १६; १८. ३, ३.
 प्राघर्म-सत् २०. ६०, १.
 प्राङ् ३. ४, १; ६. ७, २०;
 १०, १६; १०. ८, १०;

१३. २, ३; १५. १८, ५.
 प्राचः २०. १२५, १.
 प्राची ३. २७, १.
 प्राचीः ५. २८, ११; १२. १,
 ३१; २०. १३७, १.
 प्राचीन-उपचीतः ६. १, १४.
 प्राचीन-पक्षा ३. २५, ३.
 प्राचीनम् ४. ११, ८; ५.
 १२, ४; ७.
 प्राचीम् ७. १७, २; १५. २,
 १; १४, १.
 प्राचीम्-प्राचीम् १२. ३, ७.
 प्राचैः २०. २५, २.
 प्राच्यम् ४. ७, २.
 प्राच्याः ४. ४०, १; ५. १०,
 १; ६. ६८, ३; ६. ३,
 २५; १५. ४, १; ३; ५,
 १; २; १८. ३, २५; १६.
 १८, १.
 प्राच्याम् ३. २६, १; ४. १४,
 ७; १५. २, ४; १८. ३,
 ३०.
 प्राच्याम् ५. ४, ८.
 प्राच्यै १२. १३, ५५.
 प्राजा-पत्यः ६. ६(२), ११.
 प्राजा-पत्यम् ३. २३, ५;
 १८. ४, १२; १३.
 प्राजा-पत्याः ११. ५, २२.
 प्राजा-पत्याभ्याम् १६. २३,
 २६.
 प्राञ्चः ११. ६, १८; १२. २,
 २२; १३. ४, ७; १५. ३,
 ६.
 प्राञ्चम् ८. ३, ६.
 प्राण ११. ४, २६; १६. ४४,
 ४.

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

(४, ६२४)

प्राहादिः—फेनेन.

प्राहादिः ङ. १०(४), २.
 प्रिय-प्रियाणि १०. ३, ६.
 प्रियः २. ३६, ४; ४. २२,
 ४२; ३७, ११; ६. ५८,
 १; १३०, २; ङ. १०(१),
 ५; ६. १, ११, १२; १३;
 ६(४), १०; १५. ११, ७;
 १५, ८; १७. १, २-५;
 १८. ३, ७; ५३; १६. ४५
 ३; २०. ४८, २; ६४, १.
 प्रियतनोः इव ५. १८, ६.
 प्रिय-तमः ५. ३०, १७.
 प्रिय-तमम् ५. २८, ६.
 प्रिय-तमा १४. २, ५०.
 प्रियतमे इति प्रिय-तमे ७.
 ६, १.
 प्रिय-धामा १७. १, १०.
 प्रियम् २. २८, ५; ३४, २; ३.
 ५, ३; ४. ३१, ५; ६. ३७,
 २; ७. १४, १; २६, २;
 ३२, १; ६. २, २; ११. ४,
 १०; १२. १, ७; २, ३४;
 ३, ३२; ४६; ४, ४०;
 १४. १, २१; १५. २, ४;
 १२; १८; २४; ६, ३; ६;
 ६; १२; १५; १८; २१;
 २३; २६; ८, ३; ६, ३;
 ११, २; ६२; ७; १६.
 ३२, ८; ६२, १३; २०.
 ३२, १; १२६, ४; १२;
 १३.
 प्रिय-मेधासः २०. ६२, ५.
 प्रिय-मेधासः २०. १०, २;
 ५६, २; ६२, १५.
 प्रिय-यमाणाः १६. २७, १०.
 प्रिय-वते ४. १८, ४.
 प्रिय-वादिनी ३. ३५, ४.

प्रियस्य १५. ११, ७.
 प्रियाः १०. ८, २५; ११. ४,
 ६; १०, ५; १५; १२. ३.
 १; २०. १२६, ५.
 प्रियाः ७. ६१, १; ६. ५, ३०
 ६(२), ६; १४. २, ५;
 २०. ८, ३; ६७, ४; १०६,
 २.
 प्रियाणाम् १२. ३, ४६.
 प्रियाणि १३. १, ११.
 प्रियान् १८. ४, ६१.
 प्रियाम् ४. १८, ४; १८. ३,
 ४१.
 प्रियासः २०. ३४, १८; ३७,
 ७; ८.
 प्रियासम् ३. ५, ४.
 प्रिये १२. १, ५२.
 प्रियेषु १८. ३, ४५.
 प्रीताः १०. ६, ४.
 प्रुणुते २०. ७३, ५.
 प्रुष्वा १८. ३, ६०.
 प्रे ग्यः ६. ८६, १.
 प्रेसन्ती इति प्र-ईपसन्ती
 १०. ७, ६.
 प्रेयसी ११. ४, ६.
 प्रै णानः ५. २७, ३.
 प्रो इति ७. ११४, २; २०.
 ६५, २.
 प्रोष्ठ-पदा १६. ७, ५.
 प्रोष्ठे-श्याः ४. ५, ३.
 प्रुत्तात् ५. ५, ५.
 प्रुवन्ताम् ३. ६, ७; ६. २, १२.
 प्रुवन्ते २०. १२६, १.
 प्रुवम् १२. २, ४८.
 प्रुवस्व ४. १५, १४.
 प्रुशयः ६. ७, १२.

प्रुशिः १०. ६, १७.
 प्रुशोः २. ३३, ४; २०. ६६,
 २०.
 प्रुहानम् ३. २५, ३.
 प्रुहः २. ३३, ३; २०. ६६,
 १६.
 प्रुसातः १०. ३, १४.
 प्रुसातु १०. ५, ४३.
 प्रुसाहि १०. ३, १४.
फ
 फट् ४. १८, ३.
 फल् २०. १३५, १.
 फलम् ६. १२४, २.
 फल-वतीम् ७. ५०, ६; १६.
 ३१, ३.
 फलस्य २०. १३६, ६.
 फलि-गम् २०. ८८, ५.
 फलित्यभिष्ठितः २०. १३५,
 १.
 फलिन्म् ३. १५, ४;
 फलिनीः ८. ७, २७.
 फली-करणाः ११. ३, ६.
 फलुनीषु १४. १, १३.
 फलुन्यौ १६. ७, ३.
 फालम् १०. ६, ६; ७; ८; ६;
 १०.
 फालात् १०. ६, २.
 फालेन १०. ६, ३३.
 फेनम् १२. ३, २६.
 फेनम्-इव १. ८, १.
 फेनान् ६. ११३, २.
 फेनेन २०. २६, ३.

वज्रः—वज्रवे

(४,६२५)

व

वज्रः म. ६, ६; ७; २४.
 वज्रम् म. ६, ३.
 वज्र १३. २, २६; २०, ५८,
 ३२; ४.
 वज्रडया १२. ४, ३.
 वज्रडेन ७. ६५, ३.
 वज्र १८. १, १५.
 वज्रः १८. १, १५.
 वज्र २०. १२६, १५.
 वज्र २०. १२६, १६.
 वज्रः २. १२, २; ३५, ३; ६.
 १११, १, २०. १३५,
 १३.
 वज्रकम् ६. १२१, ३.
 वज्र-मोचनम् ६. १२१,
 ३.
 वज्रम् ७. १२, ४; ४२, २.
 वज्रा ५. ३०, १६.
 वज्रानाम् ६. ८४, १.
 वज्रानि १३. ४, ४५.
 वज्रा म. ८, १०; १०, ६, १८.
 वज्रा-इव ७. ३८, ५.
 वज्रान १०. ५, ४४.
 वज्रिरः ११. ३; ३३.
 वज्रिराः ११. ६, २२.
 वज्रन्ति ३. ६, ३.
 वज्रन्तु म. ५, १०.
 वज्रात् ६. ८१, ३; १६. ४६,
 १.
 वज्रात् ८. ५, २२.
 वज्रामि ११. ४, २६.
 वज्रामि १. ३५, १; ३. ५, ८;
 ४. १०, ७; ५. ३०, १;
 १६. २८, १; ३२, १; ३३,
 ४; ४६, १.

वज्रीमः ४. ३८, ७.
 वज्र्यताम् १. १४, २; २६, ४;
 १२. ४, ३७.
 वज्र्यते ६. ६(१), ६; १८. ४,
 ७०.
 वज्र्यते म. ५, १; १४. १, २६;
 १६. ३१, १४; ४५, ४.
 वज्र्यन्ताम् ३. १७, ६.
 वज्र्यमानम् २. ३४, ३.
 वज्र्यसे ६. १२१, २२.
 वज्र्यासम् ७. ५०, १.
 वज्र्ये १३. ४, ४५.
 वज्र्यः १०. ५, ४४; १६. ५६,
 २.
 वज्र्यनम् ६. १४, २.
 वज्र्यनात् ३. ६, ७; ६. २,
 १२; १४. १, १७.
 वज्र्य-पाशान् ६. ६३, २;
 ८४, ३.
 वज्र्यम्-इव ५. १४, १०.
 वज्र्यात् ६. १२१, ४.
 वज्र्यु ५. १३, ७; २२, ८; १०.
 १, ३.
 वज्र्युः २. १, ३; ४. १, ३;
 ५. १२, १०; ११; ६.
 १०, १२; १०. १०, २३.
 वज्र्युना १६. ५६, ५.
 वज्र्युरः ३. ६, ३.
 वज्र्युरम् १०. ४, २.
 वज्र्युरा ३. ६, ४.
 वज्र्येभ्यः १६. ४५, ५.
 वज्र्येषु १४. १, २६.
 वज्र्ये ६. ३, ३.
 वज्राघते २०. १३६, १२.
 वज्राघे ६. २, १८.
 वज्राघे २०. १६, ६.

वज्रस्ति ६. २, २.
 वज्रस्ति ६. ४६, १; २.
 वज्राज ६. ६, ८.
 वज्र्य ११. २, २८; २०. ६४,
 २.
 वज्र्य १८. ३, २.
 वज्र्य २. ३६, ४; ३. २२,
 ६; २३, ६; ४. २, २;
 १५, १०; ३५, ५; ६;
 ६. १३३, ४; ७. २०,
 ५; ८. ७, २; ६. ४, २;
 १०. २, ३; १२. ३, ३१;
 १३. १, २५; २, ४४;
 ३, ७; १६. ४६, ४; २०.
 ३४, ६; ७७, ५.
 वज्र्य ३. २८, १; ४. ८, १;
 १०, ७; ३०, ८; ५. ५,
 ७; २८, ६; ७. ५, २४;
 २०, ६; ८. ७, १२; ६.
 १०, २४; १०. ७, ८; ८,
 ७; ३०; ३६; १२. ३,
 १०; ५०; ५१; १३. ३,
 २५; १६. ३२, १०.
 वज्र्यः ४. २५, १; १६. ५८,
 ३.
 वज्र्य १०. ३, २८.
 वज्र्य १. ७, १; ३. २३,
 १, २०. १०८, २.
 वज्र्य ६. ५, ६; १२. १,
 १६; १६. ५६, २; २.
 वज्र्य ३. २०, ८.
 वज्र्य ६. २, २२; १०. ८, ६.
 वज्र्य ६. १०, २१; १३.
 १, ४२.
 वज्र्यः म. ७, १.
 वज्र्य ६. २०, ३; ५६, २; ७.
 १०६, १.

(४, ६२६)

बुधु—बुहिः.

बुधु द. १२६, ३.

बुधुः प. २३, १; द. १६, ३;
६३, १; ११. ५, २६.बुधु-कर्णः प. २३, ४; द. १६,
३.

बुधुणा ४. २६, २; प. ७, ५.

बुधुम् १२. १, १२.

बुधन् ७. १०६, ७.

बुधे ११. १, ३२.

बुधो ११. १, ३१.

बुधो इति प. १३, ५.

बुधोः २. ८, ३; प. १३, ६.

बुज्जो इति ११. ८, १४.

बुद्धि १८. १, ११.

बुद्ध्याः २०. ११, ५.

बुद्धयः २०. २१, ६.

बुद्धिः प. १२, ४; ८, २२, १;
१७, ६; ७, ६८, १; ८.

१, १६; ६. ४, १०; ६

(१), ८; १०. ६, २; १२.

३, ३२; ३३; १८. ४, ५१,

५२; ६८; २०. ३, १; १३,

२; ३३, २; ३; ६; २५,

६; ३८, १; ४७, ७; ४६,

३; ६७, ४; १०३, २.

बुद्धिः-स्थाम् २०. २४, २.

बुद्धिः २०. ६१, ३; ११५, ३

बुद्धिषा प. १६, ६.

बुद्धिषि ७. ५८, १; १०. १,

१८; १०, १२; १७; १८.

१, ४२; ५६; ३, २०; ४४;

४, ४६; २०. ५, ५; १७,

२; २२, ५; ६२, ३; ६४,

५.

बुद्धिर्मान्ते २०. २१, ६.

बुद्धिर्च्यु १८. २, ४५.

बुद्धि-सदः १८. १, ५१.

बुद्धि-सदः १८. १, ४५.

बुल-दाः ४. २, १; १३. ३,
२४.

बुल-दावा ४. ३२, ५.

बलम् १. ३५, ३; २. १७,

३२; २६, ४; ३. १६, १;

२; ४. २४, २; ५. ६, ८;

३०, १३; ६. ६, ३; १२६

२; १३५, १; ७. ५४, २;

५६, ६; ८. १, १५; ७, ५;

२२; ६. १, १७; ७, ६;

१०. २, १५; ५, १-६;

६, ७; १०, २०; ११. ७,

१७; ८, २०; १२. १, ८;

५, ७; १५. १४, ३; १८.

४, ५३; १६. ३३, ४;

३७, १; २; ४१, १; ४३,

६; ४६, ३; ६०, १.

बलम् ४. २३, ५; ६. ३, २;

१६. २८, ३.

बलवत्-तमः प. ४, १.

बलवत्-तमाम् ३. १८, १.

बल-वान् ६. ६२, २.

बल-विज्ञायः १६. १३, ५.

बला १. १, १.

बलात् २०. ६३, ५,

बलाय १. ३५, १; ३. १५, ३

४. १०, ७; ६. ६३, १;

११. १०; ११; १६. २६,

३; ३७, ३; ४६, १.

बल्लास द. १४, ३; १२७, २.

बल्लासः ४. ६, ८; ६. ८, १०.

बल्लास-नाशनीः ८. ७, १०.

बल्लासम् प. २२, ११; ६.

१४, १; २; ६. ८, ८;

१६. ३४, १०.

बल्लासस्य द. ११७, १.

बल्लासिनः द. १४, २.

बल्लासेन प. २२, १२.

बलिः ११. १०, ५; २०.

१३१, १२; १३.

बलिनः १४. १, २.

बलिना द. ११, १.

बलिम् ३. ४, ३; १०. ७, १६;

८, १५; ११. ४, १८; १६;

१६. ४५, ४; ५५, ६.

बलि-हाराय ११. १, २०.

बलि-हृतः ११. १, ६; ४,

१६; १२. १, ६२.

बली ३. ५, १.

बलीयसे ३. २६, ३.

बले २. २६, १; ११. ७, १७.

बलेन ३. ५, १; ४. २५, ४;

प. ३०, १४; ६. ६२, २;

७. ८२, २; ६. २, ६;

१३. १. ६; १५. २४, ४;

१८. २, ५६; ६०.

बल्वजम् १४. २, २२; २३.

बल्विकान् प. २२, ७; ६.

बल्विकेषु प. २२, ५.

पुष्कये ६. ६, ६.

बल्ल-अभिवासिनः ११. ६,

२२.

बल्ल-वासिनः ८. ६, १२.

बल्लिना ११. ३, ४३२.

बल्लौ १. ३, ६.

बल्लवः १. २७, ५; २. १३, ५;

३. १५, २; ६. ५५, १;

१२. १, ४७; २. २१; १३;

३, १७; १८. ३, ६१;

बुद्धिः १. ३, १-६; ६. ८,

१-६; ११; १३; १४; १५;

बहिष्ठः—बाहु-शुद्धी.

(४, ६२७)

१६; १७; १८; १९. ४४, २.	बहुलम् ४. १५, ६; ८. ५. १६ १२. ३, ८; २०. ८६, ५.	बाधस्व ४. २२, ७; २०. ८६, ७; ६३, २.
बहिष्ठः ४. ३४, ५.	बहुला १०. २, ६; १९. ५८, ४.	बाधामहे ५. ३, १०.
बहु १. १०, ३; ३. ५, ४; २४, २; ४. २८, ४; ३४, २; ५. २१, ५; ६. १४१, २; ८. ८, २०; १०. ८, २२; ११. ५, २६; १०, ४; १२. १, २; १८. १, १२; १९. ४४, ८; ६०, १.	बहुलाः ३. १४, ६; ४. १८, ३; २८, ६.	बाधिष्ट १८. २, २५; २०. १२, ३.
बहुः ६. १४२, १; ७. ६०, ३; २०. १३५, १२.	बहुलान् ११. १, १७; १२. ३, २६.	बाधे २०. ३५, २.
बहु-चारी ११. ३, ४६.	बहुलानि १९. २०, २.	बाधे ४. ३५, ७; ५. १३, २.
बहु-धा १. ३३, ३; २. ३४, ४; ३. ४, ७; ४. १५, १६; २३, १; ५. २०, ४; ६. २६, ७; ८. १०; ११; ६. ७१, १; ८. १, ३; ५, १; ३; १०, २८; १०. ४, २३; ८. १३; ११. २, १७; १२. १, ४; ४४; ४५; ३, २१; ५४; ४, २६; १३. ३, १७; १७. १, ६-१६; २४; १८. २, ५७; १९. ५३, ३.	बहुलिमा २०. १३०, १.	बाधेते इति ८. २; १८.
बहु-प्रजाः ६. १०, १०.	बहुले ७. ५२, २.	बाधेथाम् ६. ६७, २; ७. ४२, १.
बहु-मिः ४. १, ६; ७. २६, ८.	बहु-सूचरी ७. ४६, २.	बाधेतैः १४. १, ५.
बहु-म्यः ५. २०, ६; ६. २८, ३; १८. १, ४६; २०. ६३, ६.	बहुन् १९. ३२, ६.	बाधेतु-सामे ५. २५, ६.
बहुम् ३. ४, ३; २४, ७; ६. ५, १; २०. ३४, २२.	बहुनाम् ४. ३१, ४.	बाहस्पत्यः ६. ४, १.
बहुल-अन्तासः २०. ८६, ८.	बह्वीः ६. ६६, १; ११. ४, ३; १३. २, ४; ६; ७.	बाल १. ३, १-६; १८. २, २२.
	बाणः ६. १०५, २.	बालाः ६. ७, ८; १०. ६, ३; २२.
	बाणः-इव ३. २३, २.	बालाति १०. ८, २५.
	बाणम् १०. २, १७.	बालानि १२. ४, ७.
	बाधः २०. ४३, १.	बालेभ्यः १०. १०, १.
	बाधताम् ७. ६१, १; २०. १२५, ६.	बाह्वः ३. १६, ७; ११. ६, १; १३.
	बाधताम् ५. २२, १; १०. ३, ११; २०. ६६, ११.	बाहु-अङ्कैः ११. ६, १२.
	बाधते ३. १८, १.	बाहु-अजसा २०. ७, २.
	बाधते २०. १३६, १५.	बाहु-च्युता १८. ३, २५-२६; ३०-३५.
	बाधते १. १६, ३; २. ४, ३; ८. ५, ७; १९. ३६, २.	बाहु-मिः २०. १३, २; ८७, ४.
	बाधथाः १८. ३, ५०.	बाहु-म्यम् २. ३३, २; १३. ३, २६; १९. ५१, २; २०. ६६, १८; ११७, १०.
	बाधमानः ६. १२६, २; ६. ५, १८; १७. १, १७.	बाहुम् १८. १, ११.
	बाधय १२. १, ४६.	बाहु-मान् १. ७, ४; १३. १, ३०.
	बाधसे ४. ६, ४.	बाहु-वीर्यं ५. २१, १०.
	बाधस्व ८. ६, २५.	बाहु-शुद्धी १९. १३, ४.

(४,६२८)

बाह्व इति—बृहत्.

बाह्व इति ४. २, ५; ६. ६५,
१, ६६, २, ३; ७. ७०,
४; ५. ६. ४, ८; ७, ७;
१०. २, ५; ६, १६; १६.
६, ५; ६; १३, १; १५, ४,
बाह्वन् ३. १६, २; ६. ६५, २;
८. ३, ६; ११. १०, १६;
बाह्वौ २. २७, ३.
बाह्वाम् २. ३०, ४.
बाह्याः १६. ४४, ६.
बाह्योः ८. ५६, ६; १६. ६०,
१; २०, ६७, ६; ६३, ७.
बिन्दुः ६. १, २१; १०. १०,
१६; १६. ३०, ५.
बिन्दून् १२. ३, २६.
बिभ्रत् १. ३५, ३.
बिभ्रति १. ३५, २; ४. ६, ५;
८. ५, १२; १३; ६. ६,
४; ११. ७, १५; १२. १,
२; ४; १६. ५३, ६.
बिभ्रति १६. २६, १; २.
बिभ्रति ६. २, १५; ४, ३; ७;
११. ५, ३; २४; १८. ४,
३५.
बिभ्रत् १३. १, १.
बिभ्रमि ४. ३०, १; ६; १०.
३, १२; २०. ६४, ६.
बिभ्रमि ४. ३१, ६; ७. ४३,
१; ५६, ६; ६. ४, ६;
११. २, १२; १२. १,
१५; १६. ४६, ८; २०.
६३, ७.
बिभाय ५. ११, ४; १०. ८,
४४; १४. २, ५०.
बिसिदुः २०. ७७, ६.
बिसिदुः १०. ६, २०.

बिभीत ७. ६०, १.
बिभीतः २. १५, १-६.
बिभीतन् ७. ६०, ४; ६; १८.
३, ६४.
बिभृथः ४. २६, ४^२, ५.
बिभृमः २. ४, १.
बिभृहि १८. ४, ५६.
बिभ्रेः २. १५, १-६; ५. ३०,
८; ८. २, २३; २४.
बिभ्रेद् २. ५, ३; २०. ७, २;
११, १०.
बिभ्रेद् १०. ४, ५; २०. १६,
४; १०७, ३.
बिभ्र्यतः ५. २१, २.
बिभ्र्यताम् ८. ८, २०.
बिभ्र्यतीः ५. २१, ५.
बिभ्रत् ५. २८, १०; ७. ६०,
१; ८. ५, १४; ६. ४, १;
६, १०; १०. ६, १०;
१३; १२. २, ४६^२, १६.
३१, ४; ३३, ५; १२८,
१६.
बिभ्रतः १. १, १; ४. २४, २;
७. ३२, १; ८. ६, १४;
१०. ६, १६; २०. ६१,
१०.
बिभ्रतम् १४. २, ३०; १६.
३२, ६.
बिभ्रति ८. ६, ११; १३; १२.
१, २३.
बिभ्रति ३. १३, ५; ११. ५,
२२; १२. १, १६.
बिभ्रती १. २७, २; ४. ३८,
४; ६. ३, १६; ६; १७;
१०. १०, १४; १५; १२.
१, ६; ४४; ४५; ४८;

१३. १, ४१; १४. २, १४.
बिभ्रतीः ३. १४, ३; १०. ६,
१४.
बिभ्रतीम् १२. १, २६.
बिभ्रम् ७. ३५, २; ६. ८,
११; १३; १४; १५; १६;
१७; १८; १६. ६८, १.
२०. १२७, १०.
बिभ्र १२. ३, १३.
बिभ्रः २०. १३६, १५.
बिभ्रले १. ११, ३.
बिभ्रम् ५. १७, १६.
बीजम् ३. १७, २; १०. ६,
३३; १४. २, १४; १८.
बीजानि ३. २३, ४.
बीभृत्सुः ६. ६, ८.
बीभृत्सौ ११. ८, २८.
बृह्वुद-याशवः २०. ११७,
१.
बृध्रे २. १४, ४; १२. ३, १०.
बृध्न्यः १६. ११, ३.
बृध्न्याः ४. १, १; ५. ६, १.
बृध्न्यात् ४. १, ५.
बृध्न्यते ६. १, २४.
बृध्न्यमाना १४. २, ३१, ७५.
बृध्न्यमानो १४. २, ४३.
बृध्न्यस्व ६. १, २४; १४. १,
७५.
बृध्न्ये १६. ६७, ३.
बृहत् ३. ८, १; २२, १; ४;
४. २१, ६; ३४, १; ६.
१, १; ३३, १; ५५, ३;
८. ५, १६; ८, ६; ७६;
४; १०(२), ६; ६; ११.
३, १६; ५, १२; ८, २०;
१२. १, १; १३. ३, ११;

बृहत्-बृहस्पतेः.

(४,६२६)

१२, १५. २, २, ३, ५;
 ४, २, ३; १८. १, ७, २,
 ६, ३, २४; ७३; २०.
 २०, ३, ३१, ५, ३८, ४;
 ४७, ४; ५७, ६; ६१, ५;
 ६२, ५, ६, ७०, ७; ७१,
 १३, १४, १६; १०२, ३;
 १०६, १, १३५, ६, १४२
 २.
 बृहत्: ६. १२४, १, ८. ८, ६,
 ७, ६, ४, १५. २, ४,
 १६. ६, १६.
 बृहत्तम् ११. ६, ११.
 बृहत्-अर्कीम् ८. ६, १४.
 बृहता ५. १०, ८, ८. ३, २४,
 १०(२), ७, १३. २, ६;
 १८. ३, ६५; १६. ५२, १.
 बृहताम् ७. ७, १.
 बृहती १. १७, ४; ४. १६, ३,
 ८, ६, ४, ५; ६. १, ८;
 २, १५; १३. १, १५; २२;
 १६. २१, १, ४७, १, २०.
 १५, ५.
 बृहती इति ५. १२, ६, १६.
 १०, ३.
 बृहती: ६. ७, ५; १३. २, ८,
 ४२; २०. ११६, १.
 बृहती: ५. १२, ५.
 बृहतीम् ३. ३, २, १५. ६,
 १०; २०. ३६, १०; ६१,
 १.
 बृहते २. ४, १, १४. २, ३०;
 ७२, १५. २, ३; १६. ११,
 ६; ६४, १; २०. ११, ४;
 १५, १; ६२, ५; ७१, १६.
 बृहत्-गावा १६. ५६, ३.

बृहत्-छन्दा: ३. १२, ३.
 बृहत्-जालेन ८. ८, ४.
 बृहत्-दिव: ५. २, ८; ६; २०.
 १०७, ११, १२.
 बृहत्-पलाशे ६. ३०, ३.
 बृहत्या: ८. ६, ४.
 बृहत्-रये २०. १५, १.
 बृहत्-सामानम् ५. १६, १.
 बृहन् ४. १६, १, ६, ५३, १;
 ८२, ३, ६. ४, ५; १०,
 ८, ३, ४०; २०. १०६,
 ३.
 बृहन्तः १०. ७, २५.
 बृहन्तम् ४. १४, ६; ६. १२२,
 ४; ७. ३६, १, २०. १४३,
 ६.
 बृहन्ती १६. १५, ४.
 बृहन्ति ८. ६, ३.
 बृहस्पतये २. ३५, ४, १२.
 ३, ६०.
 बृहस्पति: २. १३, २, २६,
 २; २६, १, ३. ११, ४; ८;
 १२, ४; १४, २; २०, ३;
 २६, ६; २७, ६; ४. १, ५;
 ५. १७, ५; २५, ४; २८,
 १२; ६. ७३, १, ८८, २;
 १०३, १, ७. ८, १; ३३,
 १, ५१, १; ८१, ६; ११०,
 ३, ८. ५, ५; १०(४),
 १५; ६. ४, १०; ६(५),
 २, ७, ५; १०. ६, ६-
 १७; २२-२८ ११. ३, १;
 ८, ५; १०, १०; १२, १३;
 १२. ४, ३८; १४. १,
 ५२; ५४; ५५; १५. १०,
 ६; १४, १७; १६. ३, ५;

१८. १, ४७; ३, ४१; ४,
 १५; १६. ४, ४; ६, ६;
 ११; १३, ६, १७, १०;
 २०, १; २४, ४; ८; २६,
 ४; ३१, ५, ४०, १; ५८,
 २; २०. १६, ३-६, ११;
 १२, १७, ११; ८८, १;
 ४; ५, ८६, ११; ६०, १;
 २, ३३, ६१, ३, ४; ५, ८;
 ६४, ११; ६६, ६.
 बृहस्पति: इव ६. ३, २.
 बृहस्पतिना ७. १०४, १;
 ११. ३, ३२, १४. २,
 ५३-५८; २०. १६, १०;
 १३७, ६.
 बृहस्पति-प्रजुत्तानाम् ८. ८,
 १६.
 बृहस्पति-प्रसूता: ६. ६६, १.
 बृहस्पतिम् ३. २०, ४; ७;
 २१, ८; ४. १, ७; ६. ४,
 ८, ११. ६, १, १५. १०,
 ४, ५, ६; १६. १८, १०;
 २०. १६, १, ६१, ६;
 १०.
 बृहस्पते १. ८, २, ५. २६,
 १२; ७. १६, १, १४.
 २, ४२; १६. १३, ८;
 २०. १६, २; १७, १२;
 ८७, ७; ८८, २; ३; ६.
 बृहस्पते ११. १०, ६, १३;
 १२. ४, ४४; ४६, १३. १,
 ४१, १४. १, ६२, १६.
 ४, ३; २०. १३, १.
 बृहस्पते: ७. ५३, १.
 बृहस्पते: ६. ४, १३; १४. १,
 ५३; १६. ८, १०.

(४, ६३०)

वे धिषे — ब्रह्म-ज्य.

वे धिषे ६. ६३, ३; ८४, ४.
 बोधं २०. ११७, ३.
 बोध १६. ४६, ५.
 बोधः ८. १, १३.
 बोधतम् २०. १३६, ३; १४०, ४.
 बोधतु ७. ४८, १.
 बोधन्तु ८. ७, १६; २०. ७४, ४.
 बोध-प्रतीबोधौ ५. ३०, १०.
 बोधय १०. १, १७; १६. ६३, १; २०. ८६, २; १४३, २.
 बोधि ४. ३२, ६; २०. ७२, ३; ६४, ६; ६५, २.
 बोभुवती ५. ७, ८.
 ब्रह्मः ७. २२, २.
 ब्रह्मम् १६. ४६, ४; २०. २६, ४; ४७, १०; ६६, ६.
 ब्रह्म-लोकः ११. ३, ५१.
 ब्रह्मस्य १०. १०, ३१; ११. ३, ५०; ५१; १३. १, १६; २०. ६२, ४.
 ब्रह्मान् १६. २७, ४.
 ब्रवः ७. ३, १; ५, ५; १८. १, ७.
 ब्रवत् १. १६, १; ६. ५, ३; ८७, ३; १४१, १.
 ब्रवाथ ७. ५६, ७.
 ब्रवाचहै २०. ४५, ३.
 ब्रवीतु १. ७, ४.
 ब्रवीतु ६. ६, ५; १२. १, ५६.
 ब्रवीमि १३. २, ४४; ४५.
 ब्रवीमि ५. ११, ६; ८. १, १०; १२. २, २१.

ब्रवीषि ५. ११, ७.
 ब्रह्म १. १०, ४; १६, ४; ३२, १; २. १२, ६; १५, ४; ३. १६, १; २०, ५; ३०, ४; ४. १, १; ३; ११, ११; ३४, १; ३५, २; ४०, ८; ५. २, ८; ६, १; ८, ६; ७. १००, १; ८. २, १०; २५; १०(४), १५; १६; ६. २, १६; ६(१), १; ७, ६; १०, १६; १०. २, २१^४; २३^४; २५^२; २६; ३३; ५, ४०; ७, १०; ११; १७; १६; २४; १०, ३३; ११. ३, १; ५, ५; ७; १०; २२; २३; २४^२; ७, ४; ८; २; २३; ३०; ३२; १०, १७; १२. १, १; ५, ४; ८, १३. १, ३३; २, १३; ४, २२; १४. १, ५४; ६४^४; १५. १, ३; ३, ७; ६, ८; १०, ३; ४; ८; ७; ८; १४, २३; १६. ८, १; ५-३०; १८. १, ३७; ३, ३६; १६. ६, १२; १०, ७; ११, ४; १६, ८; २२, २१; २३, ३०; ४०, २; ४२, १^२; २३; ४३, ८; ५३, ८; ६; ५४, १; २०. ८, १; ६, ३; २३, ३; ३४, १५; ४६, ६; ८५, ३; ६२, ६; १०७, ११; ११७, ३; ११६, १.
 ब्रह्म-आहुतौ १३. १, ४६.
 ब्रह्म-इन्द्रौ १३. १, ४६; ५०; ५१.

ब्रह्म-ओदनः ११. १, २०.
 ब्रह्म-ओदनम् ४. ३५, ७; ११, १, १; ३७.
 ब्रह्म-ओदनस्य ११. १. २३.
 ब्रह्म-ओदनाय ११. १, ३.
 ब्रह्म-ओदने ११. १, २६.
 ब्रह्म-कित्विषे ५. १७, १.
 ब्रह्म-गवी ५. १६, ४; १२. ५, १२; १५; २७; ३८; ४१; ४४.
 ब्रह्म-गवीम् १२. ५, ५; ११.
 ब्रह्म-चर्यम् ७. १०६, ७.
 ब्रह्म-चर्येण ११. ५, १७^३; १८^२; १६^२;
 ब्रह्म-चारिणः ११. ५, २०; २१.
 ब्रह्म-चारिणम् ११. ५, १; ३; १७.
 ब्रह्म-चारिणि ११. ५, २२.
 ब्रह्म-चारि-भिः ६. १०८, २; १६. १६, ८.
 ब्रह्म-चारी ५. १७, ५; ६. १३३, ३; ११. ५, १; ४-१३; १५; १६^२; २४; २६.
 ब्रह्म-जाया ५. १७, ३; ४; ७; १२; १३; १४; १५; १६; १७.
 ब्रह्म-जायाम् ५. १७, २; १०; ११.
 ब्रह्म-जुष्टम् २. ३६, २.
 ब्रह्म-जूतः २०. ११, १; ३७, ११.
 ब्रह्म-जूताम् ६. १०८, २.
 ब्रह्म-ज्य ५. १६, १२; १३; १४.

ब्रह्म-ज्यम् ५. १६, १५; १२.
५, १५; ३८; ४१; ५२;
६३.

ब्रह्म-ज्यस्य ५. १६, ७; १२.
५, १६; २७; ४४; ६०;
६५; १३. ३, १-२५.

ब्रह्म-ज्येयम् १२. ४, ११.

ब्रह्म-ज्येष्ठा १६. २२. २१;
२३, १०.

ब्रह्मणः ३. १६, १; ४. १,
३; ५. ६, ६; ६. ४, १;
५, ३; ७. ४, १; ८. ७, ३;
७. ३०, १; ८. ६, ७;
१०. २, २८; २६; ३०;
१०, १६; ११. ५, ५; ६,
४; ६, २५; १२. २, ६;
५, ५५; १३. १, ५१; ३,
७; १४. १, ३१; १५. ६,
६; १६. ३०, ३; ४२,
१३; ७२, १; २०. ६१,
७; १२८, ६; ७.

ब्रह्मणः २०. ३४, ६.

ब्रह्मणः १. २६, १; ४. ४,
६; ६. ६, १; ४५, ३;
१०१, २; १४०, १; ७.
५६, ४; ८. ६, १५; १६.
८, ६; २४, १; ६३, १.

ब्रह्मणा १. ८, ४; ६, ३; १०,
१; १४, ४; २३, ४; २.
२, १; १०, १-८; १२,
७; ३२; ३; ३. ६, ८;
१५, ३; १६, १; ४, ३७,
११; ५. २, ५; २०, १०;
२३, १०; २६, १२; ६.
११३, १; ३; १३३, ३;

७. १, १; ७८, २; ६७,
२; ८. ८, १६; ६. ३, ८;
१६; १०. १, १२; १४;
२, २५; ५, १५-२१;
४२; ६, ३०; ३५; ८,
१६; १०, ४; ६; ११. १,
१८; ३, १५; ३, ३५;
४, २४; ८, ३०; १०,
६; १२. १, २६; २, ३२;
३, २२; ५, १; १३. १,
६; ३३; ४८; ४६; १४.
२, १२; ३५; १५. १४,
२४; १७. १, १२; १४;
२७; २८; १८. ४, ८; ५२;
१६. ६, ५; २३, २१;
२३, ३०; २७, १; ४२,
१; २; ५४, ५; २०. ८६,
१; ६६, ११; १२; १०७,
८.

ब्रह्मणा १०. १०, २५.

ब्रह्मणाम् ५. १८, ७; ६.
१२२, ५; १०. ६, २७;
११, १, २५, २७.

ब्रह्मणि ५. ३४, १-१७.

ब्रह्मणे १०. ७, ३२; ३३; ३४;
३६; ८, १.

ब्रह्मणे ३. २८, ३; ४. ३५,
१; ३; ६. ५, ७; ६; १०;
११; १२; १४. २, ४१;
४२; १६, २२, २०; ३३,
२६; ४३, ८.

ब्रह्मण-वृत्ति ८. १० (५), १३.

ब्रह्मण-वृत्तिम् ६. १०८, २.

ब्रह्म-तेजः १०. ५, ११.

ब्रह्म-द्विषः २०. २२, २;
६३, १; ६६, ४.

ब्रह्म-द्विषम् २. १२, ६.

ब्रह्म-द्विषे ४. ३०, ५; ८. ४,
२; २०: ३६, ८.

ब्रह्म-नुत्तम् १०. १, १३.

ब्रह्म-पूता: १३. १, ३६; ४३.

ब्रह्म-प्रियम् २०. २५, २.

ब्रह्म-भागम् १४. २, ४२.

ब्रह्म-सि: १०. १०, २३; २०.
१२०, २.

ब्रह्म-सि: ६. १२, २; १०. १,
३.

ब्रह्म-भ्यः १२. २, ३४; ४, १;
१०; ३०; ३३; ३४; ४०;
४७; १४. १, १५.

ब्रह्म-युजा २०. ३, २; ३८, २;
४७, ८; ८६, १.

ब्रह्म-योगैः १०. ५, १.

ब्रह्म-राजन्याभ्याम् १६. ३२,
८.

ब्रह्म-लोकम् १६. ७१, १.

ब्रह्म-वर्चसम् १६. ७१, १.

ब्रह्म-वर्चसी ८. १० (५), १६;
१५. १०, ८.

ब्रह्म-वादिनः ११. ३, २६;
१५. १, ८.

ब्रह्म-चाहुः २०. ३३, ३.

ब्रह्म-विदः १०. २, ३२; ७,
२४; २७; ८, ४३; १६.
४३, १-८.

ब्रह्म-वृद्धौ १३. १, ४६.

ब्रह्म-शुम्भितः ४. २४, ४.

ब्रह्म-संशितम् १६. ६, ४.

ब्रह्म-संशिता १६. ६, ४.

ब्रह्म-संशिता ११. १०, १०.

ब्रह्म-संशिते ३. २६, ८.

(४,६३२)

ब्रह्मसंशिते इति ब्रह्म-साश्रत—भक्षयात्.

ब्रह्मसंशिते इति ब्रह्म-संशिते
न. ३, २५.

ब्रह्मा २. ७, २; ५. १७, न;
१८, न; न. ६, ३, ६.१,
६, ४, ११; १०, १४, १०.
७, २४, १०, २२, १२.
१, ६; ३६, १४. १, २८;
२६; ३०; १८. ४, १५;
१६. ६, १२, ३२, २१,
२३, ३०, ४३, न, २०.
२, ३.

ब्रह्मा-इव ६. ५०, २; २०.
६०, ३.

ब्रह्माणः २. ६, २, ६, ४, १२.
१, ३८; ४, ३१; १४. १,
३, १६; २०. ३, ३; ३८,
३, ४७, ६.

ब्रह्माणः ६. ६८, १.

ब्रह्माणम् ३. २०, ४; ४. ३०,
१; ५. न, ५; १६, न.

ब्रह्माणि न. ४, ६; २०. ३, २;
१२, १; ३; ३५, १; १६,
१७, ६; ३८, २; ४७, न
७३, १; न४, २; ३;
१००, २, १०४, ३.

ब्रह्माणः ४. ६, १, ५. १७,
६; १८; १८, ६; १६,
६, ६. १, २२, १२. ५,
४; १६. ६, ६.

ब्रह्मणाम् ७. ६६, १; ६७,
१; १०. ७, १७; न, २०;
३३; ३७; ३८; ११. ५,
५; २३; १२. ४, २०.

ब्रह्माणम् ५. १८, ४; १३;
१६, ३; ३; ६; ११. ३,

४८; १२. ५, ५; ११,
१३. ३, १-२५.

ब्रह्माण-वचसम् १०. ५, ३७;
३८; ३६; ४०; ४१; १३.
४, १४; २२.

ब्रह्माण-वचसेन १३. ४,
४६-५६, १७. १, २१.

ब्रह्मणस्य ५. १७, ६; १८,
१; २; ३; १०; १५; १६,
६; १०; ११. ५, १०;
१२. ३, ४४; ५, ४६;
५८.

ब्रह्मणाः २. ६, ३; ४. १५,
१३; ५. १८, ६; ६. १०,
२७; १२. ४, १५, १६;
२२; २६; १४. १, ३६;
१६. ३४, ६; ३५, २.

ब्रह्मणाः १२. ४, ४८.

ब्रह्मणात् २०. २, ३; ६७,
६.

ब्रह्मणान् १०. ५, ४१; १८.
३, ५५; १६. ५६, २.

ब्रह्मणानाम् १२. ४, १२;
१४, ५, १७.

ब्रह्मणीम् ५. १८, १२, १६,
११.

ब्रह्मणे ६. ३८, १; ६. ४,
६; १८; ५, १६.

ब्रह्मणेन १२. ३, २०.

ब्रह्मणेन ४. १६, २.

ब्रह्मणेभ्यः ६. १३, ३; ६.
४, १६; १०. १०, ३३;
१२. ४, २१.

ब्रह्मणेषु ४. ३४, न; ११.
१, २८.

ब्रह्मण्यैः १२. ३, २५.

ब्राह्माः १०. २, २६.

ब्रुवते २०. १३८, ३.

ब्रुवन् ४. न, २.

ब्रुवन्तु ४. २७, १; १८. ३,
४५; २०. ६८, ५.

ब्रुवे ५. २२, ११; २०. १८,
६; १६, ५; १०८, ३.

ब्रूत ३. २६, १, २; ३; ४; ५;
६; ४. ११, ५; न. ६, १७.

ब्रूतम् ४. २८. ७.

ब्रूते १४. २, ६३; २०. १३६.
७; न, ६.

ब्रूमः ५. २२, न; ११. ६, १;
२२; ३२; ४; ५२; ६२;
न; ६; १०; ११२; १४२;
१५; १६२; १७; १६;
२०; २१.

ब्रूयात् ११. ३, २४; १२. ४,
१; १५. ११, २; १२, २.

ब्रूहि १, ७, ५; २. २७, ७;
न. २, ७; न; ३, न; १०.
७, ४; ५; ६; ७; १०-
१६; १८; १६; २०; २३;
३६; ११. २, २०; २०.
३५, १३.

भ

भंसंसः २. ३३, ५; न. ६,
५; ६. न, २१; २०. ६६, २१.

भक्ति-वांसः ६. ७६, ३;

भक्त्वा ५. १७, ११.

भक्षः ४. २१, ५; न. ७, १२.

भक्षत २०. ५८, १.

भक्षम् १. ३३, ३; ६. ४, ५;
६, २२; १३. २, १५;
१८. ३; ५४.

भक्षयति ६. ६ (६), ७-११.

भक्षयन्तः २. ३५, १.
 भक्षयन्ति ७. ८१, ६; १८.
 ४, ३.
 भक्षि ३. १६, १.
 भक्षिमहि १६. ८, ५, २०.
 ८७, ६.
 भग ३. १६, ३.
 भग ३. १६, ५.
 भगः १. २६, २; २. ३६, ७;
 ३. १२, ४; १६, ५; २०,
 ३; ४. २१, ५; ५. २६,
 ६; ६. ४, २; ५३, १;
 ७४, १; ८२, २; १०३,
 १; १११, ४; १२६, ३;
 ७. ५०, २; ८. १, २;
 १२. १, २५; ४०; १४.
 १, २०; ५०; ५१; ५३;
 ५४; ५६; ६०; २, १३;
 ५५; १६. १०, २; ४५,
 ६.
 भगः—इव ६, २१, १, २०.
 १६, २.
 भगम् १. १४, १; ४; २. ३६,
 २; ३. १६, १; ११, ६;
 ४. ३०, ६; ५. ७, ४;
 ११. ६, २; १२, १, ५;
 १४. १, ३१; १८. १,
 ३३; १६. ७, ५; २०.
 ८६, ३; ११८, १.
 भग-वः १६. ३४, ८.
 भग-वती ७. ७३, ११; ६.
 १०, २०.
 भगवती इति भग-वती २.
 ८, १; ६. १२१, ३.
 भगवत्-तमः २. ६, २.
 भगवत्-तरः ४. १३, ६.

भगवत्-भ्यः ५. ३१, ११.
 भग-वन्तः ३. १६, ४; ५, ७.
 ७३, ११; ६. १०, २०.
 भग-वान् ३. १६, ५; ४. १३,
 ६.
 भगस्य २. २६, १; ३६, ४;
 ५; ६. ७४, २; १०२, १;
 ६. ४, १२; १४. २, १५;
 २१; १६. ४, ३; ४६, १.
 भगाय ७. १५, १.
 भगासः २. ३०, २.
 भगिनम् ६. १२६, १; २; ३;
 ७. १२, ३.
 भगेन २. ३०, ५; ३६, १; ३.
 २२, ६; ६. १२६, १; २;
 १४. १, ३४; १६. ४५, १.
 भङ्गः ११. ६, १५.
 भङ्ग-र-वतः ७. ७१, १; ८. ३,
 २३; २३; ४, ७.
 भङ्गि ३. ६, ३; ८. ३, ६;
 १०. ३, १३.
 भज ३. ४, २; ४; ४. २२,
 २; १४. १, २५.
 भजत ६. ५५, २.
 भजध्वम् १२. ३, ४.
 भजन्त १८. १, ४५.
 भजन्तु १६. ८, २.
 भजस्व ४. ३१, २.
 भजात् १६. ५०, ७.
 भजाम् १६. ७, ६.
 भजामः १०. ५, २५-३५;
 १६. ८, २; ५-२६; ३१.
 भजामहै ६. ६६, १; ७.
 ६०, २.
 भजामि ११. १, ५.
 भजासि १६. २४, ६.
 भजेमहि २०. १३६, ६.

भजन्ताम् ८. ८, ३; ४.
 भजती १०. १, १५.
 भजन् ११. ६, ५.
 भस्स्यामि ३. ६, ५.
 भद्यते २०. १३१, १.
 भद्र-अहम् ६. १२८, १; २;
 ३; ४.
 भद्रः १४. १, ३८; १६. ५७,
 ३; २०. १३६, १३; १५.
 भद्रः २०. १३६, १५.
 भद्र-कृत् २०. २६, १.
 भद्रतः १८. ४, ५०.
 भद्र-पापस्य १२. १, ४८.
 भद्र-पापाः १२. १, ४७.
 भद्रम् ४. १८, ६; २१, १; ६;
 ५. ३१, ११; ७. १८, २;
 ७८, २; ८. ४, ६; ६. ४,
 १; १७; १४. १, ७; १६.
 २, ४; १८. २, १३; ५२;
 ३, १४; २४; १६. ७, २;
 ४१, १; ४४, ३; २०.
 २०, ६; ५७, ६; १०७,
 १५; १२६, २३; १२७,
 १०.
 भद्र्या ३. ३०, ३; ४. १२,
 २; ६. ४, ११; १२. १,
 ५२; ६३; १३. ४, ४३;
 १८. २, ५२; २०. ७६,
 ८.
 भद्र-वाचः ४. २१, ६.
 भद्र-श्रुती १६. २, ४.
 भद्रस्य ६. २६, १.
 भद्रस्य २०. १२८, ३.
 भद्रा १. १८, १; ३. ११, ७;
 ७. २०, ५; ८२, १; १०.
 १०, १५; १२. १, २२;
 १८. १, २०; १६. ४६,

(४,६३४)

भ्रूवाः—भ्रूवः

२; ८; २०. १३, ३; २५,
 ३.
 भ्रूवाः ३. १३, ५; १६, ७; ६.
 २, २५; १०. १०, १७;
 २०. ५८, २.
 भ्रूवाणि ३. २३, ४.
 भ्रूवात् ५. ५, ५; ७. ८, १.
 भ्रूवाम् ६. १०८, ३.
 भ्रूवाय १३. ४, ४२; २०.
 १०७, १५.
 भ्रूवे १६. ४७, २.
 भ्रूवे २. १०, ७; ६. ५५, ३;
 ७. ६२, १; १८. १, ५८;
 २०. १२५, ७.
 भ्रूवे १०. १०, ७; १६. ४७,
 ७.
 भ्रूवे इति ४. ६, १०.
 भ्रूवेण ७. ६०, ७.
 भ्रूवेण २०. १२७, १४.
 भ्रूवन्ति १०. ३, १३.
 भ्रूवन्तु ११. १०, १६.
 भ्रूवन्ता २०. ६४, ५.
 भ्रूवन्तिष्ठः ४. ३३, ३.
 भ्रूयताम् २०. ८६, ६.
 भ्रूयन्ते २०. ३४, १४.
 भ्रूयम् ४. १६, २; ५. २१, १;
 ८. १, १०; ८. २, १८;
 १६. ३, ४; २०. २०, ५;
 ४७, ८.
 भ्रूयात् १०. ३, ४; ७.
 भ्रूयामहे १६. १५, १.
 भ्रू ३. १०, ७; १२, ८; ४.
 २२, ६; ३२, ३; ५. ७;
 १; २६, ५; ६. ६३, ४;
 ७. ७३, ६; ११. १, १५;
 १८. ३, ६७; ४, ८८;

२०. १५, ३; २१, ३;
 ३५, १२; ३६, ३; ४३,
 १; २; ३; ५६, ४; ६;
 ६८, ७; ७०, १७; ७६,
 १; ८०, १, ८५, ४; ८६,
 १; ३; ६७, १; १०८, १;
 ११८, २.
 भ्रूयः १६. ७, ५.
 भ्रूयत् १४. १, ३१.
 भ्रूयस्य २०. ६७, ४.
 भ्रूयताम् ५. ७, ६.
 भ्रूयति ८. ३, १५; १३. २,
 १६.
 भ्रूयति ६. १०, २३.
 भ्रूयत्-वाज १८. ३, १६.
 भ्रूयत्-वाजः २. १२, ३; १६.
 ४८, ६.
 भ्रूयत्-वाजिम् ४. २६, ५.
 भ्रूयध्वम् २०. ७३, ३.
 भ्रूयन् १८. ३, ३८,
 भ्रूयन्त २०. १३८, २.
 भ्रूयन्तः १६. ५५, १; २०. १४,
 १; ६२, १.
 भ्रूयन्तम् १०. ८, १४.
 भ्रूयन्ताम् ८. ३, १६.
 भ्रूयन्ति १८. २, २८.
 भ्रूयन्ति २. ३, ४; १०. ८,
 १५; २०. १२३, २.
 भ्रूयन्ती १०. १, २५.
 भ्रूयन्तु ८. १; १६; १५. ३, ३;
 भ्रूयम् २०. ६४, ५.
 भ्रूयमाणाः ७. ६७, ४.
 भ्रूयसा २. १६, ५.
 भ्रूयस्व ५. २०, ४; ११; १६.
 ३, ६; ४; ५३,
 भ्रूयस्व २०. १२७, ६.

भ्रूयाम् ६. ११, १; ८. १,
 ३; ६. ३, २४.
 भ्रूयामहे २०. २१, १.
 भ्रूयामि २०. ३५, २; ३.
 भ्रूयामि ३. १२, ६; ८. २, १;
 २३; ७, २६; ६. ३, २३;
 १८. ४, ५१.
 भ्रूय ११. १, १३.
 भ्रूय २. २४, ८.
 भ्रूये २०. ११, ११; ४४, ३.
 भ्रूये ३. २४, १; ६. १०२, ३;
 ७. ५०, ३; १६. ४२, ३;
 २०. १५, १.
 भ्रूये-भ्रूये ७. ५०, ४; २०. ६१,
 ६.
 भ्रूयेम् ३. १५, ८.
 भ्रूयेषु ४. २६. १; २; २०.
 १६, ५.
 भ्रूयीः ६. १, ४; १६. ३६, १.
 भ्रूयीस्वतीम् ६. ६६, २.
 भ्रूयीवे ३. ५, ३; १८. ४, ३१.
 भ्रूयीवै १६. ३०, २.
 भ्रूयी ११. ७, १५; १८. २,
 ३०.
 भ्रूयी ५. ५, २.
 भ्रूय ७. ५६, ७; २०. १२६,
 २३.
 भ्रूय ३. २३, ५; ११. २, २८;
 १६. २४, ५.
 भ्रूय २. ६, ३; ३. ४, १;
 ४६, ५; १७. ८; २०. २६,
 २४, ४; २८, ३; ४; ३१;
 ६; ४. ३१, ५; ३२, ७;
 ५. २८, १०; ३०, १; ६;
 ८४, २; ८६, १; २१, ३;
 ६२, १; ६८, १; १२३,

५; १३३, २; १४२, १,
 ७. ६८, ३; ८. २, २६;
 ६. ३, ६; २४; १०. १,
 २६; ११. २, ३; ५; २५;
 १०, ६; १२. १, ३२; ५,
 ५८; ५६२; १४. २, २७२;
 ३२; ४०; १७. १, १०;
 १८. २, १६; ३, ५०;
 १६. ४, ३; २५, १; ६४
 ४; २०. १६, ६; ५६, ५;
 ८३, २.
 भवः ८. ८, १७; ११. २, ८२;
 २७२; १५. ५, २२; ५;
 ७; ६; ११; १३; १५.
 भवत् १०. ८, २२; १४. २,
 २४.
 भवत् ५. १२, ५; ७. ६०,
 ७; १२. २, २०; ३, २६.
 भवत् १८. १, २६.
 भवतम् ४. २६, २; ३; ४;
 ५; ६.
 भवतम् १८. ३, ३६.
 भवताम् ८. २०, १.
 भवताम् १६. १०, १.
 भवति २. १, १; ५. १८, ८;
 ६. १, ११; १२; १३; २,
 २५; ५, ३१; ३२; ३३;
 ३४; ३५; ३६.
 भवति २०. १२८, ३.
 भवति ३. २२, ४; ५. १७, ५;
 १८, १३; ६. ११, २; ८.
 ५, १२; १० (१), ३; ५;
 ७; ६; ११; १३; १० (४),
 ४; ८; १३; १६; १० (५),
 ४; ८; १२; १६; ६. १,
 २२; ३३२; २४; ५, २४;
 ३२

२८; ६(४), १०; ६(५),
 ३; ५; ७; १०; १०. ८,
 ११; ११. ३, ११; ३, ३२—
 ४६; ५१, ५४, ५; १२.
 २, ३७; ४, ४०; ५, ४५;
 १३. ३, १३२; १४. १,
 २६; २७; १५. २, ४; १२;
 १८; २४; ६, ३; ६; ६;
 १२; १५; १८; २१; २३;
 २६; ८, ३; ६, ३; १०, ८;
 १०; ११, ७; ६; ११; १२,
 ६; १०; २३; १४; १६.
 २६, १; २; २०. ६६, ४.
 भवत् ६. ८, १०.
 भवत् १. २०, १; २. १३, ४;
 ३. १४, ५; १५, ५; ३०,
 २; ४. ३, ६; १२, ३; १५,
 १६; ६. ६१, २; ७. ६१,
 १; ६. ८, १०; १०. ६,
 २; १४. १, ४०; १८. ३,
 ६०; १६. ६, ६; १०, ३;
 ७; ६; १०; ११, ३; २०.
 १२५, ६; १४३, ८.
 भवत्-वस्तुः १३. ४, ५४.
 भवथ १. ४, ४.
 भवथ १. ४, ४; १६. २, ४.
 भवथः २०. १४१, २.
 भवन् २०. १३०, १६.
 भवन् ३. २६, २; ६. ६ (५),
 ६; १८. ४, ५१; २०.
 २६, ५; ७७, ७.
 भवन्तः ६. ६२, ३; १२. २,
 ११; २८.
 भवन्ति १. ३३, ३; ५. २, ३;
 १२. ३, २५; २०. १०७,
 ६.

भवन्ति ५. २७, १; ६. ५,
 २५; २६२; १०, १७; ११.
 ५, १; ८; १३. ४, १३;
 २१; १५, ३, ११.
 भवन्ती ६. १०, ७.
 भवन्तीः ३. १४, ६.
 भवन्तु १. ६, १; ६, २; ४;
 ३३, १-४; २. ३, ६; १०,
 ३; ३. ४, ३; १६; ३, ४.
 १५, १६; २७, ३; ३५,
 ७; ५. ३, १०; ११, ६;
 २२, १; ६. २३, ३; ७.
 ६६, १; ६. २, ७; १२.
 १, ३१; २, २१; ३, ३१,
 १४. १, ४०; २, ६; १८.
 ३, ६१; ४, ३३; ४८; १६.
 ६, ६; १३; १०, ५; ७—
 १०; ११, १२; २, १३,
 ११; १४, १; १५, ६; ४०,
 ३; ४५, ४; २०. ७६, ६;
 ६१, ११.
 भवम् १५, ५, १.
 भवसि ७. ८१, २; १०. ८,
 २७; १२. ३, २१; १४.
 १, २४.
 भवस्य ८. ८, ११.
 भवति १८. १, २; १२, २६;
 ३४.
 भवति २. ३६, ३; ६. १२०,
 २; १८. २, ५; २०. २०,
 ६; ५७, ६; १२४, ३.
 भवाथः १२. ३, २; ६; १४.
 २, ३७.
 भवामि १६. ४६, ६.
 भवामि ५. ११, २; ६. ११७,
 १; २.

(४, ६३६)

भवाय—मिन्दन्.

भवाय ६. ६३, २; ११. २,
 ६; १६.
 भवारुद्रौ ११. २, १४.
 भवाव १४. २, ७१.
 भवाशर्वी ४. २८, १; ८. २,
 ७; ११. २, १.
 भवाशर्वी ५. २८, ७; १०.
 १, २३; ११. ६, ६; १२.
 ४, १७.
 भवासि ३. २३, ३.
 भवित्रम् १६. १०, ६.
 भविष्यत् ४. ११, २; १०. ७,
 ६; ११. ४, २०; ७, १७;
 १३. ३, ७; १५. २, ६.
 भविष्यति ८. १०(१०), १;
 २०. १२६, ७.
 भविष्यति ११. ४, ५.
 भविष्यन् १२. ३, १६; ५३.
 भविष्यसि ११. ३, ३३; ३४;
 ४५; ४६; ४, २६.
 भवायसा २०. २५, १.
 भवेम १६. ६७, ६.
 भवेम ६. ११६, २; १२. ३,
 १०; ५५; ५६; ५७; ५८;
 ५९; ६०.
 भव्यः १३. १, ५५.
 भव्यम् २. १५, ६; ६. १२, २;
 १३५, २; ६. १०, २४; २
 १०. ७, २२; ८. १; १.
 ११. ४, १५; २०; १३.
 ४, २३; १७. १, १६; १६.
 ६, २; ५३, ५; ५४, ३.
 भव्यस्य ६. ३६, ३; १२. १,
 १.
 भव्यात् १६. ३५, ४.
 भव्ये १७. १, १६.

भव्येन १७. १, २६.
 भसत् ६. ४, १३; ७, ८; १०.
 ६, २१; २०. १२६, ७.
 भसदम् ४. १४, ८.
 भसद्यम् २. ३३, ५; २०.
 ६६, २१.
 भस्म ११. ३, ८.
 भस्मा २०. १३६, १४.
 भाः ७. १४, २.
 भाः-ऋजीकः १८. १, ३०.
 भागः ६. ८४, २; १४०, २;
 ७. ७३, ४; ६. ४, ५;
 १०. ५, ७-१५; ११. १,
 ५; १५; १२. २, ६; ३,
 ४५; १४. २, ३३; १८. २,
 ८; ४, ५५; २०. ३६, ४.
 भाग-धेयम् ६. १११, १; ११६,
 २; ७. ७६, १; ११. १,
 २६; १२. २, १; ५३२;
 १८. २, ३१; १६. ५८,
 ६.
 भागम् २. ३४, १; ४. ३६,
 ६; ५. १६, १३; १४; ६.
 ६४, १; १२२, १; ७. ७२,
 १; ८१, २; ८. ३, १६;
 ६. ५, २; १०, १५;
 ११. १, १६; २६; १२.
 ४, २१; १४. १, २४; ३३;
 १८. १, २६; ४३; ४, ४७;
 १६. ५४, ४; २०. ५५,
 ३; ५८, १.
 भागस्य २०. ६७, ५.
 भागे ८. १, १.
 भाजयत् १. ५, २.
 भाति ८. ३, २४; ११. ७, १४;
 १३. १, ११; ३, १६;
 १८. ३, ६५; ४, १४.

भानवः ४. ३३, ५; १३. २,
 ४६.
 भानुः १६. ७, २.
 भानुना २०. १७, ६; १४२, ३.
 भानुम् १८. ३, २६.
 भामः ४. ३२, ४.
 भामाय १४. २, १५; १८. ४,
 ८२.
 भामिनः १८. १, ६.
 भारः ६. ३, २४.
 भारती ५. १२, ८; २७, ६.
 भारती २०. १३१, ४.
 भारम् ६. १०, २३.
 भावयति १२. ५, ४३.
 भावयुः २०. १२६, १५.
 भाव्यम् १३. १, ५४; १६. ६,
 ४.
 भासति १३. ४, ७.
 भासदम् २. ३३, ५; २०. ६६,
 २१.
 भासि १३. २, १०; १६; २८;
 १७. १, १६; २०. ४७,
 १६.
 भाहि २. ६, १; १६. ३३, ५.
 भिक्षाम् ११. ५, ६.
 भित्वा २०. १६, ७.
 भिदेयम् ६. २, २.
 भिनत् २०. १६, ११; ६३,
 ११.
 भिनत्तु ६. १३८, २.
 भिनन्ति २. ३२, ६; ४. ३७,
 ७; ५. २३, १३.
 भिनन्ति १. ३, ७; ११, ५६.
 १३८, ४; ५.
 भिन्वत् ५. २८, १४.
 भिन्दन् ८. ४, २१.

मिन्वन्तः—भुवन्तानि.

(४,६३७)

मिन्वन्तः १८. ३, २१.	भीमः ७, २६, २; ८४, ३; ८. १, १०; ६. ८, ६; १६. १३, २; २०. ३७, १.	भुवन्तः १. २२, २; ३. २०, ६; १०. ८, ११; २०. ५६, ४.
मिन्वन्ति ६. १३८, ५.		
मिन्वन्ति ५. १८, ६.		
मिन्वि ७. १८, १; १६. २८, ४; ५४.	भीम-तमा १२. ४, ४५.	भुवन्तः ३. १, १; ५. १०, १४; ७. १, २१; १६. २६, ४१; २०. ३५, १४; ४७, १; ६६, १; ७७, ८; १२४, १; १२६, ६; १३७, १२.
मिन्वि ३. ६, ६; १६. २८, ३.	भीमम् ११. २, १८; १८. १, ४०.	भुवन्-व्यवानाम् १६. ११, १०.
मिन्व्यात् ६. ५, २१.	भीमा ३. २५, १; ५. १७, ६; १०. १, २६; १२. ४, ४८; ५, १२.	
मिन्वि २०. ४३, १.	भीमाः ४. ३७, ८; ६, ५. २२, १०.	भुवन्तम् ३. ११, ५; ४. ११, १; १०. ७, ३५; ८, ७; ११; ११. ७, ३५; ८, ७; १३; ११. ४, २२; १३. ३, १५; १८. १, ५१.
मिन्वि ४. १६, ५; ८. ३, ४; ११. १, ६.	भीमाम् १२. ४, ४१.	भुवन्तस्य २. २, १; २. ३४, १; ५. ३, ६; ७. ८१, ६; ६. ६, २२; १०, ११; १४; १७; २१; १०. ७, १८; ८, १५; १२. १, ५७; १३. १, १४; २७; ४२; १, २; ३, ७; १८. २, ५४; १६. २०, १.
मिन्जाम्-इव ५. १६, ८.	भीमार्य २०. १५, १.	
मिर्यः ४. ११, ७.	भुक् २०. १३५, १.	
मिर्यम् ६. ६७, १.	भुजः २०. ५५, २.	
मिर्यन्तम् ५. २, २; २०. १०७, ५.	भुजम् ८. २, ८.	
मिर्यसा ५. १३, २.	भुजिष्यम् १२. १, ६०.	
मिर्यसानि इति ४. २, १.	भुज्मा २०. ५१, ४.	
मिर्या ११. ६, १२; २०. ३५, १४.	भुनजाम्-इव ६. २४, १.	
मिषक् ५. २६, १; १०. ४, १५.	भुरणौ २०. ७६, १.	
मिषक्-तराः १६. १, १.	भुरण्यथः २०. १४०, १.	
मिषक्-भ्यः १६. २, ३; ५६, २.	भुरण्यन्तम् १३. १, २१; २०. ४७, १८.	
मिषक्-भ्याम् १०. ६, १२.	भुरण्यम् १८. १, ६६.	
मिषजः २. ६, ३; २६, ७; ८. ७, २६.	भुरिजोः इव २०. १२७, ४.	
मिषजा २. ६, ५; ७. ५३, १.	भुवः ३. १७, ८; ६. १०६, १; १३. ४, ५२; १८. २, १२; २०. ३६, ६; ६०, १; ६३, ८.	
मिषजाम् ६. २४, २.	भुवः २०. ३४, १६.	
मिषज्यथः २०. १४०, १.	भुवः १०. ५, ४५; १८. १, ६०.	
भीताः १३. २, ३७.		
भीता ५. २०, ५.		भुवन्तानि २. १, १; ५. ३. २०, ८; ४. २५, ३; २६, ५; २०, ७; ८. ५. ११, ५; १२, ६; ७. २६, १; ८७, १; ११०, २; ६. ६, ११; १४; १०. ८, १८;

(४, ६३८)

भुवने—भूमानम्.

११. २, ११; ५, ६; १३.
 २, ६; ३८; ३, १; ३;
 १४; १६. ५३, २-४२;
 २०. ३४, १७; ११८, ४.
 भुवने १२. १, ३१; १८. १,
 १७; १६. ७, १.
 भुवनेभ्यः २०. १३७, १०.
 भुवनेषु ५. २, १; ६. १०,
 ११, १०. २, ७; २०.
 १०७, ४.
 भुवने-स्याः २. १, ४; ४. १,
 ३.
 भुवम् २०. १२६, ५.
 भूः ५. ६८, २; १८. १, २५;
 २०. ३७, १०.
 भूः-जयः १८. १, ६१.
 भूत् ५. ११, ७; ७. ३५, ३;
 १०८, १; ८. १, ७; ४,
 ७; २०. ७६, ३.
 भूत् १८. ३, १६.
 भूतः ४. ८, १; ११. ४, १;
 २०. १३. १, ५५; ३,
 ७.
 भूत-कृतः ३. २८, १; ४. ३५,
 २; ६. १०८, ४; १३३,
 ५; ११. १, १; ३; २४;
 १२. १, ३६; १६. १६,
 २; २७, १५.
 भूत-कृताम् ६. १३३, ४.
 भूत-पतिः २. १४, ४.
 भूत-पतिम् ११. ६, २१.
 भूतपती इति भूत-पती ११.
 २, १.
 भूत-मव्यम् ११. ५, २०.
 भूतम् २. १५, ६; ४. ११, २;

६. १२, २; ११५, २; ८.
 ६, १८; ६. १०, २४२;
 १०. ६, १८; २१; ७, ६;
 २२; ३१; ८, १; १३; ११.
 ४, १५; ६, २१; ७, २;
 १७; १३. १, ५४; २, ४१;
 ४, २३; १५. २, ६; १७.
 १, १६२; १६. ६, ४; ६,
 २; ५३, ५; ५४, ३; २०.
 १४१, १.
 भूतस्य १. ३१, १; ३२, २;
 ३. १०, ६; १०; ४. २;
 ७; ५. २५, ७; ६. ३६,
 ३; ३६, ३; ४८, ३; ८६,
 १; ६५, ३; १०. १, २२;
 १२. १, १; १३. १, ४५;
 १४. २, ४६; १६. ३७,
 ३५; ४.
 भूता ६. ८०, १; ८. ६, १६;
 २१; १३. २, १२.
 भूतात् ६. १३३, ३; १६.
 ३५, ४.
 भूतानाम् ४. ८, १; ५. २५,
 २; ६. १७, १; ११. ६,
 २१; १६. २२, २१; २३,
 ३०.
 भूतानि १. २६, ३; ४. १३,
 ४; २०, २; ६. १६, १;
 १०. ५, ६; ११. ६, २१;
 १५. ३, १०; ११; १८.
 ४, ७; १६. ६, ३; ५३, ६.
 भूतिः ११. ७, २२; ८, २१.
 भूति-भिः १०. ६, २८.
 भूतिम् १०. ३, १७; १८; १६;
 २०; २१; २२; २३; २४;
 २५; ६, ६; १२. ४, २८;
 १६. ५३, ६.

भूतु ८. ५, ६; २०. ६३, २;
 ८५, ३; १२४, ५.
 भूते ६. ८४, २.
 भूते १७. १, १६.
 भूतेन ६. ७८, १; १७. १,
 २६.
 भूतेषु ४. ८, १; १६. ४८,
 ५.
 भूत्या १०. ६, २४.
 भूत्याः ६. ६ (५); ३; ५; ७;
 १०.
 भूत्याम् १२. १, ६३, ४,
 ४४; ४६.
 भूत्वा १. ७, ६; ३. ३; १८, ५;
 २८, २; ३०, ३; ४. ३४,
 ४२; ३७, ११; ५. ५, ६;
 १६, ७; ६. ४२, १; ८.
 ४, १८; ६, ७; ६. २, ६;
 १०. १, २४; ८, २१; ६,
 ३; १०, १६; ११. ५,
 ७२; १५; १२. ५, ४१,
 ५५; १३. ३; १३२; १४.
 १, २५; ४२; १५. ७, १;
 २; ४; १४, १; ३; ५; ७; ६;
 ११; १३; १५; १७; १६;
 २१; २३; १८. ४, १०;
 १६. ३२, ५; ५३, ६; २०.
 ६६, १५२.
 भूम १३. २, ३; २०. ३५,
 १४.
 भूम ७. २०, ३; २०. ३७,
 ७; ११६, १.
 भूमा ५. २८, ३.
 भूमानम् ३, २४, ७; १६.
 ३१, ४; ८.

भूमिः १. ३२, ३; ३. ३६, ८;
 ४. १६, ३; ५. १८, १२;
 १६, ११; २८, २; ५; ६.
 १८, २; २१, १; ८४, १;
 १२०, २; १०. २, २४;
 २५; ७, ३; १२; ३२; ८,
 २; ११. ३, २०; ८, ७;
 १२. १, ३; ४; ६; ८;
 ६; १०; १२; १३; २२;
 २६, ४०; ४१; ५२; ५६;
 १३. १, ४६; ५३; ४,
 ३५; १४. १, १; ६;
 १५. ४, १५; ६, २; १७,
 १; १६. ६, ८; ६, ८.

भूमि-गृहः ५. ३०, १४.

भूमि-द्वहः १६. ३३, २.

भूमि-द्वहम् ५. २८, १४.

भूमिम् ३. १७, ५; ४. ५,
 २; १५, २; ३; ६; १६,
 ४; २०, १; ३; ६;
 ४०, ५; ५. ११, ६; ८;
 ७, १६; १०. २, १८; ६,
 १०; ११. २, २५; ५, ६;
 ६, १०; १२. १, ७;
 ११; १७; २६; १३. १,
 ५२; ५४; २, ४०; ४१;
 १५. ४, १४; १८. ३,
 ४६; १६. ६, १; ६; ३३,
 ३; २०. २७, ५.

भूमिः ११. ७, १४; २०.
 ८१, २; ६२, २०.

भूमि १२. १, ३३; ६३.

भूमि १२. १, १४; १८; २५;
 २६; ३१; ३२; ३४;
 ३५; ३६; ५०; १८. २,
 ५०; ५१; ३, ५०; ४, ६६.

भूमिः १३. ४, ३५; १५. ६,
 ३; १८. ३, ६.

भूमि ११. ५, १२; १२. ३,
 १२; १८. १, ३६; १६.
 ८, १.

भूमि ६. १४१, १.

भूम्याः १. ११, २; २. ३०,
 १; ४. १६, ६; ५. २०,
 ६; २८, ६; ६. ८६, ३;
 ६. ६, ४; १०. १, १३;
 १२. ३, २६; १४. १,
 ४८; १६. १६, २; २७,
 १५; २८, ४; २०. १६, ४.

भूम्याम् २. ६, ४; ६. ८, २;
 १२१, २; ६. १, १०;
 २०; १०. ६, १२; ११.
 ४, ४; ७, १६; १०, २३;
 १२. १, १३; १६; २२२;
 २८; ४१; ५२; ५४; ५६;
 १६. ३४, ६.

भूम्यै १२. १, ४२.

भूम्यः ३. १५, ५; ६. ६(२),
 २; १३. २, २५; २७.

भूम्यः-भूम्यः ४. २१, २; १०.
 ६, ५; ६; ७; ८; १०;
 ११; १२; १३; १४; १५;
 १६; १७.

भूम्यसीः १६. ६७, ८.

भूम्यसीम् १८. ४, २७.

भूम्यासः ७. ६०, ७.

भूम्याः ५. २२, २; ६. १३५,
 १; ७. ७३, ११; ६. १०,
 २०; २०. १७, ६.

भूम्याः ६. ६(२), १.

भूम्यात् ४. २२, ४.

भूम्यान् १३. ४, ४६; ४७.

भूम्यासम् १. ३४, ३.

भूम्यासम् ३. ५, २; ६. १५,
 २; ३; ७. ५०, ८; ८१,
 ४; १३. १, ३८; १६.
 ३, १; ४, १; ६, ४; १७.
 १, १; २; ३; ४; ५; १८.
 २, ४५; १६. ५५, ५.

भूम्यास्थ १८. ४, ८६.

भूम्यास्म ७. ६१, १; १८. ४,
 ८७.

भूम्यैम् १६. ६७, ७.

भूम्यैः १८. ४, ५५.

भूरि ४. २२, ४; ३०, २;
 ३२, ७; ५. २, ३; ५;
 ६; ११, ७; २२, ६; ६.
 १, ३; ७. १४, ३; १८.
 २, ६०; २०. १५, ५;
 ५६, २२; ८६, ८; १०७,
 ६; ८; ६.

भूरि-ओजाः ५. २, २; ७;
 २०. १०७, ५; १०.

भूरि-दात्रः २०. ११, १.

भूरि-धनाः ७. ६०, ४.

भूरि-धायसम् १. २, १.

भूरि-धायसे ६. ४१, २.

भूरि-धारा १२. १, ६.

भूरि-पाणिः ५. २७, १.

भूरि-भारः ६. ६, ११.

भूरि-मिः १८. १, २२.

भूरिम् २०. ७७, ८.

भूरिमूलः ६. ४३, २.

भूरि-रेतसा ८. ६, १२.

भूरि-रेताः १६. ५३, १.

भूरि-वर्णसम् १. १, १.

(४, ६४०)

भूरि-स्थानाम्-आता.

भूरि-स्थानाम् ४. ३०, २.
 भूरी'शि २०. १७, ४.
 भूरैः २०. ३५, १५; ४३, ३.
 भूर्ण'यः ५. ६, ३.
 भूवन् २०. ६७, २.
 भूष १४. २, २५.
 भूषत् २०. ६७, १.
 भूषति १८. १, २४; २०. ६७,
 २.
 भूषतु २०. १०४, ३.
 भूषन् २०. ११, २.
 भूषन्-हव २०. ८६, १.
 भृगवः २८. १, ५८; २०. १०,
 २; ५६, २.
 भृगवे २०. ६, ३; ४६, ६.
 भृगुः २. ५, ३.
 भृगु-मिः ४. १४, ५.
 भृगुम् ५. १६, १.
 भृङ्गाः ६. २, २९.
 भृत्याम् १८. १, ६.
 भृत्यै २०. ७६, ४.
 भृमत्तः १२. १, ४६.
 भृजानः ३. १३, ६.
 भृजानांसः २०. ६३, ४.
 भृजिरे १२. १, २३.
 भृजिरे ५. ४, ८; ११. ८,
 ३१.
 भेत २०. १६, ६.
 भेवः १२. ४, ५०.
 भेवम् १२. ४, ४६.
 भेषज ८. ६, १६.
 भेषजम् १. ४, ४; ५. ४; ६,

३; २. ३, १; ३; ४२;
 ५; ३. ७, १; ६; ४.
 १३, ३; ५. ३०, ५; ६.
 २१, १; २४, ३; ५७,
 १२; २; ३२; ८३, १;
 ६१, ३; १०६, ३; १११,
 २; ३; १२७, २; ७. ३८,
 १; ४५, १; ७६, ४; ८.
 २, ५; २८; ६, ३; ७.
 ५; २२; २६; १०. ४,
 १०; १४; ११. ४, ६;
 ६, २३२; १६. ३५. १;
 ४४, १; २०. १४१, ५.
 भेषजस्य ५. २६, १; १६.
 ३८, १.
 भेषजा १. ६, २; ११. ६,
 १४.
 भेषजानाम् ४. १७, १; ६.
 २१, २.
 भेषजानि २. ३, २; ६, ५;
 ६. ४४, २; ७. ४२, २.
 भेषजी ७. ५६, २.
 भेषजीः ३. ७, ५२; ६. ६१,
 ३२; ८. ७, ८; १६. २,
 ५.
 भेषजीम् ६. १०६, ३२; ८.
 ७, २३.
 भेषजेभ्यः ६. १३, ३.
 भेषजौ ८. ६, २०; ७, २०.
 भेषीः १०. ६, ७.
 भोगम् २०. ११, ६.
 भोगाय १२. ४, ७.
 भोगाय १६. ४४, १०.
 भोगे १२. १, ६०.
 भोगेभिः ११. ६, ५.
 भोग्यः १०. ८, २१; २२.

भोजनम् १०. ८, २१; २०.
 २५, ४.
 भोजना २०. ६४, ७.
 भोजननि ४. २२, ६; ७; ७.
 ७३, ६; २०. १७, ६;
 १२५, २.
 भोजम् २०. ८६, १.
 भोजय १६. ५०, ६.
 भौवनाः ३. २१, ५.
 अंशदन्तलोममति २०. १३३,
 ६.
 भ्रजः ७. ६०, २.
 भ्रशत् ६. ८७, १.
 भ्रष्टः २०. १३६, ७; ८,
 भ्राजः २. २१, ५; १७. १,
 २०.
 भ्राजत् ११. ५, २४.
 भ्राजता १७. १, २०.
 भ्राजन्तः १३. २, १; १८. १६.
 २७, ६; २०. ४७, १५.
 भ्राजमानः ५. १, १; १३.
 १, २४; २, १०.
 भ्राजमानम् १३. २, ४; १६;
 १, १६.
 भ्राज्यासम् १७. १, २०.
 भ्रातरः २. १३, ५; १०. ३,
 ८.
 भ्रातरम् ३. ३०, ३; ११. ६,
 ८.
 भ्राता ३. ३०, ३; ४. ४, ५;
 ५. ३०, ५; ६. १२०,
 २; ८, ६, ७; ६. ६,
 १२; १८. १, १२; १३;
 १४; १६; २०. ६६, १५.

भ्रातृः—मृणिः

(४, ६४१)

भ्रातृः १. १४, २; ६. ११६, १.	भक्तिकाः ११. २, २; १०, ८.	मृध-वान् ६. ५८; १; ७. ८६, १; २०. ७७, १.
भ्रातृ-मिः ६. ४, १.	मृच्छु २०. ६, २; ३५, १६; ४६, ५; ५२, ३; ५७, १६.	मृध-वानम् ३. १६; ३; २०. ११, ११; १७, १; ५५, १.
भ्रातृष्यः ८. १० (३), २.	मृस्त्रः १८. १, २३; २०. ४०, २; ७०, ४.	मृधाः १६. ७, २.
भ्रातृव्य-क्षरणम् २. १८, १.	मृस्त्रस्य २०. ११, २.	मृधानि २०. १७, १०.
भ्रातृव्य-ज्जी १०. ६, १.	मृस्त्रस्यते २०. १३७, ५.	मृधाप्रति २०. १३०, १२.
भ्रातृव्य-चातनम् २. १८, १.	मृगधेयः ५. ३२, १४.	मृधासु १४. १, १३.
भ्रातृव्यम् ८. १० (६), ४; १५, १, ८.	मृगुन्ध्याः २. १४, २.	मृधैः १८. १, ३८.
भ्रातृव्यस्य ६. ५, ३१; ३२२; ३३१; ३४२; ३५२, ३६२; १०. ६, १.	मृध-वेयाय २०. ८६, २.	मृधोनः १८. १, ४८.
भ्रातृव्याः १०. १, ६.	मृधम् २०. २७, ४.	मृधुलिकेभ्यः १६. २३, ३८.
भ्रातृव्येण ५. २२, १२.	मृधवत्-भ्यः २०. ८३, १.	मृज्ज-भ्यः २. ३३, ६; २०. ६६, २२.
भ्रात्रा ५. २२, १२.	मृधवत्-सु २०. ५१, ४.	मृज्ज-सु १. ११, ४.
भ्रूण-ज्जि ६. ११२, १; ११३, १.	मृध-वन १६. १५, १.	मृज्जा ४. १२, ३; ४, ६. ७, १८; १०. ६, १८.
	मृध-वन २. ३६, ४; ३. १, १; १६, ४; १६, ६; ७. ३१, १; ५०, ४; ८. ४, १६; १३. ४, ४४; २०. १५, ५; १७, ५; ३७, ८; ६; ५०, २; ५२, ३; ५५, २; ५७, १६; ६७, ६; ८१, २; ८२, २; ८३, २; ८५, ४; ८६, ३; ६२, २१; ६४, ६२; ११७, ३; १२१, २; १२५, १; ५.	मृज्जानम् ११. ८, ११, १२; १२. ५, ७०; २०. १६, ६.
	मृधवन २०. १२८, १२.	मृज्जः ६. ५, २३; ८, १८.
	मृध-वा २. ५, ७; १४. ३, ४७; २०. १४, ४; १७, ३; ५; ६; ८; ५१, १; ५२, १; ५३, ३; ५७, १३; ६२, ४; ७३, ४; ८७, ५; ८६, ६; ८; ६६, ४; ११३, १; १२८, ५.	मृज्जाना २०. ७६, ६.
		मृज्जमि १३. १, १४; १७.
		मृदुमृदाः ८. ६, १५.
		मृणत्सकः २०. १३०, १६.
		मृणिः १. २६, ४; २. ४, २; ६; ४. १०, ४; ५; ८. ५, १; २; ४; १६; ७, १५; १०. ३, १; २; ३; ६; १०; १७; १८; १६; २०; २१; २३; २३; २४; २५; ६, २; ४; ५; १६; २२; २३; २४; २५; २६; २७; २८; ३१; ३२; १५. २, ५; १३;
मंससे ७. २०, २; ६.		
मंस्त ८. १, १२.		
मंस्थाः ६. ५, ४.		
मंढते २०. ५१, ३.		
मंढमानम् २०. ६६, १.		
मंढिष्ठः २०. ५५, १; १२४, २.		
मंढिष्ठः २०. ४६, २.		
मंढिष्ठम् २०. ३५, ३; ४४, १, ८५, २.		
मंढिष्ठाय २०. १५, १.		
मककान् ८. ६, १२.		
मक्षाः ६. १, १७.		
मक्षिका ११. ६, १०.		

(४,६४२)

मुणिना—मदसि.

१६; २५; १६. ३१, २;
६; ७२; ८; १०; १४;
३३, १; ३६, १; ३; ५.

मुणिना १. २६, १; २. ४, ४;
८. ५, ३; ८; १०. ६,
१२; १६. ३१, १.

मुणिम् २. ४, १; ३. ५, ३;
६, ६; ८. ५, ७; १०;
१२; १३; १४; २२; १०.
६, ६; ७; ८; १०; १०;
११; १२; १३; १४;
१५; १६; १७; १८;
१२. १, ४४; १६. २८,
१; ३०, ४; ३१, ४; ४५,
५.

मुणीनाम् १६. ३१, ११.

मुणौ १०. ६, ३४.

मुणे ३. ५, ८; १६. २८, ३;
४; ५; ६; ७; ८; १०;
२६, १; २; ३; ४; ५; ६;
७; ८; ९.

मुणौ ६. ३०, १; १६. ४६, ५.

मुण्डकम् ७. ११६, २.

मुण्डकाः ४. १५, १२; १३.

मुण्डुकि ४. १५, १४.

मुण्डुकी १८. ३, ६०.

मुण्डुर-धाणिकीः २०. १३७,
१.

मत् १. ३४, ५; २. ७, १;
३०, १; ४. १६, ७; ६.
८, १; २; ३; ११८, ३;
७. ६०, १; ६५, १; १०.
१, १०; १३; ११. ४,
२६; १२. ३, ४६; १८.
१, ६; ११; १३; २०.
१२६, ६.

मृतयः २०. १७, १; २३, ५.
स्तत्त्वस्याम् २. ३३, ३;
२०. ६६, १६.

मृतस्ने इति १०. ६, १६.

मृतिः ७. २२, १; ८. ४, ६;
१०. २, १०.

मृति-भिः २०. ३६, २; ६१,
६; १४०, १.

मृतिम् ६. १३३, ४; ७. १४,
१; २०. १५, १; ७०, २;
१४२, १.

मृती १८. १, २३.

मृतीनाम् १३. १, ३३; ३,
१६; १८. ३, ६३; ४,
५८; २०. ३५, ३.

मृतेः २. ५, १.

मृत्तः ६. २०, १.

मृत्तम् ८. ८, ११; ११. २,
१६.

मृत्तयै ६. ४१, १.

मत्-संख्या २०. १२६, १.

मत्सत् २०. १२, ७; १२४,
२.

मत्सरम् ४. २५, ६.

मत्सराः ७. ७७, ३.

मत्सि २०. ७१, ७.

मत्स्यम् २०. १६, ८.

मत्स्याः ११. २, २५.

मत्स्यै २. ५, ४; २०. २३,
८; ६०, ३; ७१, ६.

मथत् ७. ५०, ५.

मथव्यान् २. ३५, २.

मथायति २. ३०, १.

मथिष्टन १६. ४०, २.

मथन्त ७. ७०, २.

मथनायि २. ३०, १; ७. ५०,
५.

मथनीत् ५. ८, ४.

मदः ६. ३०, २; २०. ५७,
२; ७; ६८, २; ७६, ३;
११७, २.

मदः ८. १, ७.

मद-च्युता २०. ५६, ३.

मदति २० १०६, ३.

मदत् ४. ३४, ३.

मदन्-इव २. २८, ४; १६,
५.

मदन्तः ३. १५, ८; ६. २८,
१; ६२, ३; १६. ५५, १;
२; २०. १६, १; ८८, २.

मदन्ति ३. २८, ५; ४. ८, ५;
५. २, १; ६. १२०, १;
७. ७३, २; १०६, २;
१८. २, ११; ४, १०;
२०. १०७, ४; १०६, १.

मदन्ति ७. १०६, ३; १४,
२, ३४; २०. ११, ८.

मदन्ता १८. १, ४३; ४, ४७.

मदन्तीम् १८. ४, ३०.

मदन्तु ७. १६, १; ३५, १;
११८, १.

मदन्तौ १८. १, ५४.

मदम् ४. ७, ४; २०. २३, १;
२४, २; ३०, १; ३३, १;
६१, १.

मदयन्ति ६. ८, १६.

मददिवि २०. ४६, २.

मद-वति ४. ७, ४.

मद-वती ६. १६, २.

मदसि १६. ५६, ५.

मर्दस्य—मृषुला.

(१६५)

मर्दस्य २०. ११, ४.
 मर्दस्व १८. ३, ८.
 मर्दाः २. ४, १; २०. १२, ४;
 ११, १; २८, ४; १६, ४;
 ११०, ४.
 मर्दानाम् २०. १२४, २.
 मर्दाय २. ४, १; २०. ८, १;
 १; ४६, १; ६४, १; १४२,
 १.
 मर्दिन-तमः ११. ०, ०.
 मर्दिन-तरम् २०. १४, ४.
 मर्दिष्ठः ४. २४, १.
 मर्दुवस्य ६. १०२, १.
 मर्दुघात् १. १४, ४.
 मर्दः २०. १११, १०.
 मर्दे २. ४, १; २०. ४, १;
 १८, १; ११, १; १६, २;
 ४०, १; ६४, ८; ६६, १;
 ११०, ११.
 मर्देत् ६. १, १.
 मर्देम ७. ४, १; १६. १२, १;
 २०. ६१, १; १२२, १;
 १२४, ६; १२४, १.
 मर्देम ६. १२२, ४; ७. ८०,
 १; १०६, ४; १२२, २;
 २८; २०. १०, ८; ६१, ६.
 मर्दे-मदे २०. ४६, ४.
 मर्देषु ४. १, १; २०. ०४, १;
 १०१, ४.
 मर्दम् ७. ४८, १.
 मर्दयक् २०. ११, १.
 मर्दयद्रिक् २०. ११, ११.
 मर्दने २०. ११०, १.
 मर्धु १. १४, ४; २. ११, १;
 ३. १४, १; ४. १, १;
 १४, १; १४, ४; १४, ४;
 १४, ४.

७. ८; ६. १०१, ११; ६.
 ११, ११; १२, १; १६,
 १; ७. ७१, १; ६. १,
 १४; १६; १०१, १८;
 २२; ६(४), ४; १०.
 ६; ४; ६, १२; ११; १४;
 १४; १६; १०१, १८; १६;
 २०१, २१; २२; २३;
 १४; १२. १, ७; १६;
 १, ४४; १८. २, १४; ४,
 १; २०. ४, २; १६, ८;
 २२, १; ६०, ४; ७; ७१,
 ४; ६२, १; १००, ६.
 मर्धु-अर्दः ६. ६, ११.
 मर्धु-कृशा ६. १, १; १; १;
 ४; १०.
 मर्धु-कृशाम् १०. ०, १६.
 मर्धु-कृलाः ४. १४, १.
 मर्धु-कृतः ६. १, १६.
 मर्धु-जाता १. १४, १; ७.
 ४६, २.
 मर्धु-जिह्वाः ४. ६, १.
 मर्धु-तरः १. १४, ४.
 मर्धु-धारा १८. ४, ४०.
 मर्धुनः २०. ६४, १; १४१,
 ४.
 मर्धुना १. ४, १; १४, १; ३.
 १०, ६; ४. २, १; १२,
 १०१, २८, १४; ६. १०,
 १; १६, २; ६०, १; ११६
 १; ६. १, १६; १२. १,
 ४१, १८. १, १०१, १४;
 १८; २०. १६, ४; १००,
 १.
 मर्धु-पुर्के १०. १, ११.
 मर्धु-पु १८. १, १०.

मर्धु-पृचाम् ३. १२, ४.
 मर्धु-भागः ६. ११६, १.
 मर्धु-मत् १. १४, १; ४.
 १४, ४; ६; ७. ६, ६१,
 १; ७२, १; ११६, १; ७.
 ८२, १; ८. ७, १२६, ६.
 १, २१; १२. १, ४८; २०.
 १४१, ८.
 मर्धु-मतः १. १४, १; ६. १,
 २३.
 मर्धु-मती १६. ३, १.
 मर्धु-मतीः ४. २१, ६; १०.
 ६, २०१, १४. १, २०१
 १६. २, २; १८. ४, २६;
 २०. १४३, ८.
 मर्धु-मतीम् ३. १०, २; ४.
 ०, ४; ८. ७, ६; १६. २,
 १; १८. ४, १०१, १६.
 ११, १४.
 मर्धुमतीम्-इव १. १४, ४.
 मर्धुमत्-तमम् १८. २, ४
 २०. १४०, २.
 मर्धुमत्-तमस्य ७. ४८, २.
 मर्धुमत्-तमाः २०. १०, १;
 ४६, १; १३०, ४.
 मर्धुमत्-तरः १. १४, ४.
 मर्धु-मत्तः ७. ६८, २; १८.
 १, ६८; ४, १४; ४४.
 मर्धु-मत्तम् २०. १२, १; ११६,
 २.
 मर्धु-मान् ६. १, २१; ११;
 १२-१, ६; १८. १, ४८;
 ४, ११; १६. ११, १;
 ४६, ६; २०. ४, १; ११६,
 ४; १४१, ८.
 मर्धुला ४. १४, १; १; १; ७

(५, ६४४)

मध्यश्रुत-मनवः.

५. ६, ७, ८; ६. १०, ११;
७. ५१, २.

मध्यश्रुत ७. ५६, २.
मध्यश्रुतः ६. ५, १४; १८.
१, २०.

मध्यसंकाशे इति मध्य-संकाशे
७. ३६, १.

मध्य-संदृशः १. १४, ३.
मध्यः ७. ५६, २.
मध्यनि ७, ६७, १; ८. ६,
१८; ६. १, २१, २०, ७६,
६.

मध्यलकम् १. १४, २.
मध्योः १. १४, १; ४. २, ५,
१; १; ७. ७३, ५; ८. ७,
१२; ६. १, ५; १०. ६,
२५; २०. ६, ६.

मध्यो ६. १, १६; १७.
मध्यतः ४. १४, ८; ७. ५१,
१; ५६, ६; ८. १, १०.
२, १; १२. १, २; १३.
१, ११; १४. १, ६०;
६४; १८. १, ७३; ४,
६; १६. १५, ३; २०.
१७, ११; ८६, ११; ६४,
११.

मध्यन्दिनः ६. ६(५), ५.
मध्यन्दिनम् ४. ११, १२; ६.
१०८, ५.

मध्यन्दिने ६. १२८, २.
मध्यम् ४. ११, ८; १४, ८;
५. ५३, ३; ६. ८६, ३;
१३७, ३; ७. ७२, २; ८.
७, १२; ६. ५, ८; २०;
१०. ४, १६; १२. १,
१५; १६. ६, १; ४५, ७.

मध्यमः ६. ६, १.
मध्यमम् ५. ११, २; ७. ८३,
१; १०. ७, ८; १८. ४,
१६.

मध्यमशीः-इव ४. ६, ४.
मध्यमा १८. २, ४८.
मध्यमाः १. १७, ३; १८. १,
४४.

मध्यमान् ६. १०३, २.
मध्यमाम् ७. ७४, २.
मध्यमे २०. ११३, १.
मध्यमे १. १७, २.
मध्यमे-स्थाः २. ६, ४; ३. ८,
२.

मध्या २०. १२३, १.
मध्यात् ४. १, ३; ५. २८, ६.
मध्यै १. ३३, २; ३. १६, ४;
४. १५, १४; १५; ५.
१६, ३; ६. १०६, २; ६.
१०, ८; १०. ७, १८; ८,
१५; १७; १०, २८; १३.
१, १६; १८. २, ३५;
१६. १, १६; १३, ६.

मध्यै न ८. ८, १३; १६. ३६,
२.
मध्यः ४. ३२, ७; ७. ३, १;
२०. १, १; ६, १; १३,
२; ३२, ३; ६४, ४; ७६,
७; ८८, ३; ६२, ४;
१०६, १.

मध्या ५. १२, २; २७, २;
३; ६. १३, ३; १८. १,
११.

मनः १. ११, ६; २१, ४; २७,
२; २. १२, २; ३; ३०;
१; ४; ५; ४; ४; १८, ६.

४. १५, १५; ३८, ६;
५. १०, ८; १०, १३; ६.
८, २; ३; १८, २; ४५,
१; ६४, ३; ७०, १;
२; १; ७१, २; ८६,
२; १०२, १; २; १०५,
१; १११, २; ७. १२, ४;
३६, १; ८. १, ३; ७; २,
३; ६. ४, १६; ६, १८;
१०. २, १६; २७; ७, ३७;
११. ५, २४; ८, ४; २६;
१२. ४, १०; १३. १,
१६; १४. १, १०; १५.
२, ६; १४; २०; २१;
१४, १; १८. १, ३; १५;
१६; १६; २, २१; २३;
२४; ३, ६; ४, ६६;
१६. ६, ४; २८, २;
४३, ४; ५२, ४; ५३, ७;
२०. ५, ७; १७, २; १६;
२; ५८, २; ६०, १;
६६, २४; ११३, २.

मनः-कम् ६. १८, ३.
मनः-केतैः ६. १०५, १.
मनः-जवाः ६. ६२, १.
मनः-जुवा २०. ३६, ६.
मनः-तेजाः १०. ५, १८.
मनः-पाप ६. ४५, १.
मनः-मुहः २. २, ५.
मनः-युजा ५. ७, ५; १०, ८;
६. ६५, १.

मनः-षष्ठानि १६. ६, ५.
मनः-हनम् ५. २६, १०.
मनः-हा १६. १, १.
मनः-हन्त २०. ६१, २.
मनः-हन्त ६. १६, १; १६. ११, १.

मनुष्ये १८. १, ३४.

मनुष्ये १८. १, २०. ११,

४. १०, ४. ८, ६१, २.

मनुष्यः २. ३५, ४. ५. ३, ४,

१, ६. ७४, २. १०५,

१. ७. ६७, ८. ८. ३,

१२. ६. १, २. १०. ५,

४८. १४. १, ५७. १८.

१, १४. १६. ६, ७. ४०,

१. ५२, १. ५६, ५.

मनुष्यः २०. ६६, २४.

मनुष्यः १. १, २. १४, ३.

३५, ५. ३. ६, ८. ८,

६. १०, ६. २१, ५. ४.

२१, ५. १६, १०. ५. ६,

१०. ११, १. २१, २.

३०, ६. ५३, ३. ८३,

४१. ६३, २. ६४, १.

६६, ३. १२६, ३. १२२,

४. ७. १, १. २, १. ५,

३. ५. ५२, २. ७०, १.

७३, ८. ६७, २. ८. ४,

८. १०(६), ३. ६. ४,

१०. ६, ६. ८. १०, ५.

१५. १०. १०. ८, १४.

११. १, १३. ६, ८. १२.

१. १४. ३, ५३. ४, ११.

१३. १, १०. १३. ३,

१६. १४. १, ६. ५६.

५०. ३, ६. १५. १४, २.

१८. २, २१. १६. २५,

१. ५८, ५. २०. ३५,

२. ८३, २. ८७, २. ६१,

८. ६६, १.

मनुष्यः ६. ७१, २. १०. ८,

२८. १८. १. ३. १६.

४. २.

मनुष्ये ६. ४१, १,

मनुस्मयम् १४. १, १२.

मनुस्वान् २०. ३४, १.

मनुसि ३. ८, ५. ६. ६.

६४, १. ७४, १. ६४, १.

२. १४. १, १२.

मनुष्यः १८. ४, ५८. २०.

१३, १.

मनुष्यः २०. ३५, २. ७६, ३.

मनुष्यः २०. १२७, ५.

मनुष्यः २०. ७६, ४.

मनुष्यम् ५. ६, ८. १६.

४२, १.

मनुष्यः ३. ५, ६. ६. ४,

८. १०, २७. ११. ६,

१३. १२. १, ८.

मनुष्यः ८. ५, ८.

मनुष्यः २०. २७, २.

मनुष्यः ८. ५. १.

मनुः ७. ८२, ६. ८. १०

(४), १०.

मनुजातेन ७. १७, १.

मनुजा ३. ६, १. १४. २, ४१.

मनुष्यः ५. १२, १. ७. १८.

१, २२. २०. १३, १.

मनुष्य-इष्टः १. १६, २.

मनुष्य-एनसानि ६. ११३,

१.

मनुष्य-जाः ११. ४, १६;

१२. ४, ४३. १४. २, ३.

मनुष्यः ३. ४, ६. ५. १७,

१०. ६. ५१, २. १४१.

१. ८. १, ११. ७, २६,

१०(३), ७. १०(४), ६.

१२. ६. ७, १६. १०,

२०. १०. ६, २२. ८, ३५.

६, ६. १०, २६. १४. १६.

७, २७. १२. १, २२. २,

१७. १४. २, ३८.

मनुष्याणाम् ६. ८६, १. १२.

२, ४४.

मनुष्यः ४. २६, ५. ८. ६,

२३. २४. १०(३), ७.

१०(४), ६. १५. १४,

१५.

मनुष्येभ्यः ८. १०(३), ८.

१६. ४, ४.

मनुष्येषु ३. २२, १. ४. १२,

१. ६. ११३, १. १६.

३, ३.

मनुष्यः ६. ७१, २.

मनुष्यः ५. १२, ८.

मनुष्यः १६. ११, ५. १०.

६४, १.

मनुष्यः ६. ६४, २. १५, २.

१३.

मनुष्यः ५. १०, ११, २०.

५६, ४.

मनुष्यन्ते ६. ६. १०.

मनुष्यामहे ६. ८, १. ३.

१. ४. ५. ६. ७. ८. ९.

मनुष्येति इति ४. ११, २.

मनुष्यः १८. १, ६०.

मनुष्यः १६. २६, ५४.

मनुष्यः २०. १२६, १२८.

मनुष्यः ८. ८. १.

मनुष्यः ११. १, २.

मनुष्यः २. २६, ६. १८, ४,

४२.

मनुष्याम् २०. १२७, ६.

मनुष्यता ८. ८. १.

मनुष्यः ५. ७६, ७.

मन्थने १०. ६, २.
 मन्थतु २०. ८, १; ११७, १.
 मन्थ्ये २०. ७७, २.
 मन्थन्तु २०. २२, ३। ६३, १.
 मन्थयत्-संखम् २०. ६८, ७.
 मन्थुस्रानः २०. ७४, २.
 मन्थुस्राना १४. २, ६। २०.
 ११, १.
 मन्थसे २०. १११, १। २.
 मन्थस्व १६. ७, १२। २०.
 १३, ६.
 मन्थानः २०. ५३, १। ५७,
 ११। ६२, २.
 मन्थानम् २०. ६, १; ४६, ५.
 मन्थिनः २०. १७, ४। १३७,
 ४.
 मन्थिनम् २०. ११, १.
 मन्थिर्ने २०. ७१, ८.
 मन्थि-मिः २०. ७१, ६.
 मन्थिम् २०. ७१, ८.
 मन्थ इति २०. ४०, १। ७०.
 १.
 मन्थः १८. १, ३०.
 मन्थ-जिह्वम् २०. ८८, १.
 मन्था १२. १, ५७.
 मन्थासु ५. १७, ६.
 मन्थैः ७. १२७, १.
 मन्थ २०. ३०, १। ७२, १।
 ७७, २। ११६, १.
 मन्थना २०. ११५, १.
 मन्थनि १८. १, ३६.
 मन्थहे ४. २४, १२। २५,
 १। १०. ४, ११.
 मन्थानि ५. १२, १.
 मन्थाः २. १२, ७.
 मन्थताम् ४। ८, १। ५.
 १८, ११। ७. २०, १।

३। १८. ३, ६६; ४, २६;
 ४३.
 मन्थते २. १२, ६। ४. १६,
 १। २०, ६। ५. १८, ४;
 ७। १६, ६। १२. ४, ६.
 मन्थते ११. ८, १२; १४.
 १, ३। २०. १२६, ६.
 मन्थन्ताम् १. १५, ४; ८.
 २, २१। ६. ४, १०.
 मन्थन्ते १०. ७, २१.
 मन्थमानः २. १५, ३। ३.
 १६, २। ५. १८, ५। १६,
 ६। १२. ४, ३७। ३८.
 मन्थमानस्य २०. ७१, २.
 मन्थमाना ८. ६, २२.
 मन्थमानान् २०. ८७, ४.
 मन्थर्वे १. १०, २। १२. ४,
 १२। ५१। १८. ४, ८२,
 २०. १०५, २। १०७, १.
 मन्थसे २०. ११२, २। ११३,
 १। २। ३; ४। ५। ६.
 मन्थस्व ६. १३१, २.
 मन्थाः ६. २५, १.
 मन्थुः ४. ११, ७। १२, २२,
 ६. ४०, २। ६५, १।
 ११६, १। ७. ७४, ३।
 ६. ७, ११। ११. ८, १.
 मन्थुतः २. ७, २.
 मन्थुना ५. १८, ६। ७. ७०,
 ४। ५। ६३, १। १२. २,
 ५। १५. १४, २०.
 मन्थुम् १. २१, ३। ५. ३,
 २। ६. ४२, १. २२। ३।
 १५. १४, १६.
 मन्थु-मत् ८. ४, १.
 मन्थुमत्-मत् ७. २५, १.

मन्थु-मन्तम् १६. ४०, १.
 मन्थु-शर्मनः ६. ४३, १। २.
 मन्थे ३. १३, ६।
 मन्थे ४. १६, ६। ७. ४५, १।
 ७२, ११। १०. ८, ११।
 २०. ६७, १.
 मन्थेत १०. ८, २०। ११.
 ८, ७.
 मन्थे इति ४. १२, ६.
 मन्थे इति ४. ११, १। १।
 १। ४। ५। ६। १२, १।
 २। ३; ४। ५; ६. २, २१.
 मन्थोः १. १०, १। ५. ११,
 ६। ६. ४३, १। ८. १,
 १२। १०. ५, ४८.
 मन्थीत १२. ४, ४८.
 मन्थे ४. २६, १; २८, १।
 २६, १.
 मन्थे ४. २३, १। २७, १.
 मन्थ २०. १२७, ११.
 मन्थ १. ६, ३। १२, ४। १६,
 २। ३। ४। १४, २। ३.
 ८, ६०; १८, ४। २५।
 ५१। ६। ७. १०, ७।
 १६, ८। ५. ३, १। ११।
 ४; ७, २। ८, १। २३,
 २। ६; ६, २१। २७, १।
 ४२, १। ४३, ३। ४५, १।
 ६४, २१। १३०, १। १३६,
 १। ७. २०, १। २७, ११।
 १८, ४। ५०, २। ८. ७,
 ७। १६। ६. २, १। ४।
 ५। ७१। ६। १०१। ११।
 १६। १७। १८। ४, ११।
 १०. १, १५। ८, २४।
 १२. १, ७७। १३. १।

१८, १४, १, ५५, १८.	१२, ५५, ५, ५५, ६.	१५, १, ५५, १, ५५.
१, १०, ४, ४६, १६.	१६, १, ११, ५१, १, १.	१, ५, १, १, ६, ५.
५, १, १५, ६, ४६, ५.	१०२, १, १०५, १, १५६,	१, १०, ६, ५, १०, १६.
५०, १, २०, ६, १, १८,	१, ७, १२, ५, १६, १.	१, ११, ६, २५, १६.
५, १४, १, १८, १, ४०,	७६, १, ८५, १, ८६,	१, २५, १६, १, ६५.
५, ८६, १, १०४, १.	५, ६, १, १८, १०, १,	५५, १८, २, २५, १६.
११५, १, १४०, १.	११, १६, ४, २५, ७,	१०, ६, ११, ६, ४५, १५.
ममर्त्तन ७. ७२, १.	१, ५, ११, १५, १२.	२०, २, २.
ममर्त्तु २०. ११०, १.	१, ११, १६, १, ५५.	ममर्त्तु: १. १०, १, २. १५,
ममर्त्तु ७. १४, ७.	१६, १, ११, ६, ५.	६, ३, १, १, १, ६.
ममर्त्तु २०. १२, १.	१७, १, १०, १८, २,	१५, ५, १०, १, ५, ११,
ममर्त्तु-सुत्येषु २०. ८६, ४.	५२, १, ६१, १६, ११,	११, १६, ५, ६, २२, २.
ममर्त्तु १०. ६, २६.	१, १२.	६१, १, ११०, ५, ७.
ममर्त्तु २०. ६५, १.	ममर्त्तु: १०. ७, ४५.	७७, १, ८, १८, १६.
ममर्त्तु १०. ६, १६, १.	ममर्त्तु-रोम-भि: ७. ११०, १.	१, ११, २०. १६, १.
ममर्त्तु १०. ८, १२.	ममर्त्तु: ७. ५६, ७.	१०, २.
ममर्त्तु ६. ११३, १.	ममर्त्तु २०. १२६, ११.	ममर्त्तु-भि: ११, ५, १५,
ममर्त्तु १०. १, १०, ११, २०.	ममर्त्तु-सुत्येषु: ११. १, ४५.	१५, १०, १, ५, १५,
१५, ५, ४५, १.	ममर्त्तु-सुत्येषु ११. १, १२, १५,	११, ६, १२५, १, ७.
ममर्त्तु: ६. १८, १.	१६.	५०, १, ६, १, १, १०.
ममर्त्तु: १. १३, १, १६, ५, ६.	ममर्त्तु-सुत्येषु ५. १०, ८, ८.	५, ८, १६, ११, १०.
५०, १, १६, १, ४६,	१, १४, ११, १, ४१,	ममर्त्तु-भि: २. २६, ५, ३.
१६, २, ५.	४६.	१०, ६, ५, १५, ७, ८.
ममर्त्तु-सुत्येषु: १. ५, ७, १०, १.	ममर्त्तु-चय: ५. २६, १०.	६, ६, ७४, १, ७, ६८,
ममर्त्तु-सुत्येषु २. ४, ७.	ममर्त्तु-चय: ५. १८, ५, ६, ११,	१, २०, ११, १, १२४, ५.
ममर्त्तु-सुत्येषु ५. १०, १, ७, १०,	१.	ममर्त्तु-चय: ७. ५०, १.
१, १६, ४५, १.	ममर्त्तु-सुत्येषु ५. १, १०.	ममर्त्तु-चय: ७. ११, १.
ममर्त्तु-सुत्येषु १८. १, ६.	ममर्त्तु १. १६, १, ७, ७०,	ममर्त्तु-चय: १६. १८, ८.
ममर्त्तु ३. ५, ८, १५, ५, १.	१, २०, १, २.	ममर्त्तु-चय: १०४, १, १२२,
५, १०, ५, ७, १०, ७.	ममर्त्तु २. १६, ५, ३, ६, ६,	५, ११, १, २५, १२, २.
१६, १, ४८, ५०, ५०.	१, १, ४, ५, १२, ५.	१५, १८, १, २५.
१६, ७, १.	१६, ६, ७, ११, ५, २५,	ममर्त्तु-चय: १६. १०, ८.
ममर्त्तु १. १, २, १, २.	१५, १, ५, ५, ७, ५.	ममर्त्तु-चय: २०. १५, ६.
१, १, २, ५, ५, ३, ५,	१, १, २५, ६, ६, ३.	ममर्त्तु-सुत्येषु २०. १११, १.
१, १, २, ५, ५, ३, ५,	१, ५, ५, ५, ५, ५.	ममर्त्तु २०. ११२, १.
१, १, २, ५, ५, ३, ५,	५, ५, ५, ५, ५, ५.	ममर्त्तु-चय: २. १, १५.

(४,६४८)

मूर्चयसि—महतः .

मूर्चयसि १३. १, ४०.
 मूर्जयन्त २०. १५, २.
 मूर्तिः ७. ७७, २; ६. ३, २०;
 १८. १, २४.
 मूर्तिम् २०. ६१, ५.
 मूर्तित्य ४. २१, ४.
 मूर्तीः २०. १६, ८.
 मूर्तीन् ८. ३, २०; १८. १,
 २६; २०. १२, ५.
 मूर्तीय २०. ६१, ४.
 मूर्तिसः १२. १, २०; १८.
 ३, २३.
 मूर्त्य १८. १, १.
 मृत्यः ६. ४६, १; १२. २,
 ३८; ४. २१; १८. ४,
 ३७; १६. ४६, ६; २०.
 २५, १; २७, ४; ५०, १.
 मृत्यम् ११. ८, ११; १८; २०.
 ७५, २.
 मृत्यस्य ७. ११५, ३; १०.
 ८, २६; १२. २, ३६;
 १८. १, १.
 मृत्याः ८. ५, १३; ६. १,
 १६; १२. १, १५; २२;
 ४१.
 मृत्यान् ४. ३७, १२; ६. ४१,
 १; ६. १०, ७; १६. ५१,
 १.
 मृत्यान् २०. १२७, ७.
 मृत्यानाम् ११. १, ५; १८.
 १, १३.
 मृत्याय १८. १, ४३.
 मृत्यै ६. १०, ८; १६. ७७.
 मृत्यैः १२. १, १५; १८.
 १, ३३; २०. १४२, १.
 मृत्यैः ५. २८, २३; ६. १;

४. १२. २, ३३; १६. ४,
 २; १६. २६, १; ५६, १.
 मर्म १२. १५; २०. १५, ६.
 मर्माणि ५. ८, ६; ८. ३, १७;
 ८, २०.
 मर्मन् ८. ३, १४.
 मर्माणि ७. ११८, १.
 मर्माविधम् ११. १०, २६.
 मर्मजत् २०. ३१, ४.
 मर्मज्यन्ते ४. ८, ७.
 मर्य २०. १२८, १३.
 मर्याः २०. १०७, १५.
 मर्याः-इव १४. २, ३७; १८.
 ४, ६०.
 मर्याम् २०. १७, १.
 मर्याः २०. २६, ६; ४७, १२;
 ६६, ११.
 मर्यादम् ५. १, ८.
 मर्यादाः ५. १, ६.
 मर्यादे ६. ८१, २.
 मर्याधीरेभ्यः ५. ३१, १०.
 मलगः-इव १२. ३, २१.
 मलम् ७. ८६, ३; १०. ५,
 २४; १२. २, २०; १४.
 २, ६७; ६८, ६६.
 मलम्-इव २. ७, १.
 मलात्-इव ६. ११५, १.
 मलिम्बुः १६. ४६, १०.
 मलिम्बुचम् ८. ६, २.
 मल्वः ४. ३६, १०; ५. १८.
 ७.
 मल्वम् १२. १, ४८.
 मशक-जम्भनी ७. ५६, २.
 मशकस्य ७. ५६, ३.
 मशकाः ११. ३, ५.
 मशकाः-इव ४. ३६, ६.

मष्मणा ५. २३, ८.
 मस्तिष्कः ६. ७, २.
 मस्तिष्कम् १०. २, ८.
 मस्तिष्कात् २. ३३, १; १०.
 २, २६; २०. ६६, २७.
 मह-उन्माना ५. ७, ६.
 मह-ऋषयः १६. ६, ११.
 महः ४. २५, ५; ६. ८०, १;
 १; ६. ५, २४; १०. ६,
 ४; १२. ११. ४, ५; ७,
 २२; १३. ४, ५०; १८.
 २, १६; २०. १७, ७.
 महः ४. १, ६; ५. २, ८; ६.
 ६२, १; ७. २६, ८; १०.
 ७, २; १८. १, १; ५३;
 २०. ११, ६; ३५, ७;
 ४४, १; ५८, ३; ७०, १;
 ८८, ४; ६०, ३; ६२,
 १७; ६८, २; १००, १;
 १०४, ४; १०५, ५; १०७,
 ११.
 महत् १. २०, ३; २१, ४;
 ३२, १; २. ३, ३; ५; ३.
 २६, ६; ८. ४. ८, १;
 १६, ६; ५. १, ५; ६;
 १, ३; १०. ७, ३८; ८;
 ६; १५; २०; ३१; ३७;
 ३८; ११. ८, ३; १६;
 १२. १, १८; ५, १६;
 १५, १, १; १६. ७, ५;
 २०. २०, ५; ५७, ८.
 महतः १. १०, ४; ६. ७१,
 १; ८. ८, ८; १०. ८,
 ६; १२. ५, ७२; १६.
 १, २६; २, २६; २०.
 ४०, ४; ६१, १२.

महत्तः—महिमानम्.

(४, २४६)

महत्ता २०. १२१, १२३, १४, १५.	महोत्ति ७. ७३, १००.	महा-यमा १३. ४, ५.
महत्ता २. ११, ३; ५. ११, १२; ६. ६६, ११. ८. ४, १६; ६. १, ११. ११. १, १६; १३. १, ८. २०. ६४, १; ११६, २.	महा-गणेश्यः १६. २२, १०. महा-बुधः ५. २१, ११. ६. ७, ७, १२. ५, १६; १३. ४, ४, १५. १, ४; ५, ११.	महा-वृक्षाः ४. १०, ४. महा-वृषाः ५. २२, ५. महा-वृषान् ५. २२, ५; ८. महा-वृषतम् ११. ७, १.
महत्ताम् ६. ४, ४; १६. ११, २.	महा-बुधम् १५. ५, ११. महा-धनस्य ४. ११, ६. महा-धने २०. ७०, ११. महान् २०. १३६, ५; ६; ७; ८; ६; १०; ११.	महि ४. २२, ३; ५. ३, ७; ७. २६, १; २; १२. १, १४; १३. ३, ११; २०. १४, १०; ७०, ४; ६५, १.
महत्ति ३. ६, १; ११. ८, २; ६.	महान् १. २०, ४; ४. १, ४; ५. २, ६; ८. ८, ८; ६. १, ४; २, १६; २०; २१. २२; २३; २४; ११. १, २२; १२. १, १८; १३. २, १४; २६; १५. १, ४; २०. ५१, २; ५७, १२; ५८, ३; ४; ६२, ६; ६८, १०; ७१, १; ७; ६३, २; १०७, १२; १३६, १२, १३; १४; १५; १३८, १.	महि २०. १४२, २. महित्वम् ७. २६, १; १३. १, ५५; २०. ३५, ६; ७१, १; १२२, १.
महत्ती ५. ७, ६; १२. १, १८.	महान् २. २०, ४; ४. १, ४; ५. २, ६; ८. ८, ८; ६. १, ४; २, १६; २०; २१. २२; २३; २४; ११. १, २२; १२. १, १८; १३. २, १४; २६; १५. १, ४; २०. ५१, २; ५७, १२; ५८, ३; ४; ६२, ६; ६८, १०; ७१, १; ७; ६३, २; १०७, १२; १३६, १२, १३; १४; १५; १३८, १.	महि-त्वा ४. २, १; ४. ५; ५. ११, ३; ७. ७६, १; ८०, १; ८. ३, २४; ६, १; ६. १०, ३; ६; १२. ३, ५; १४. १, ३२; १६. ४६; १; २०. १२, १; ३२, १; ७०, ५.
महत्तीम् ११. १०, १५.	महान् २०. १३६, ११.	महिना २०. ८१, २; ६२, २१.
महत्ते २. ६, २; ३. १२, २; ४. ८, ७; ५. २८, १४; ७. १६, १; ७१, ८; १०; ६. १०, ५; ११. १, १; ७; १७. १, ६.	महान् २०. १३६, ११. महान्-प्रयाः १४. १, ३६. महान्-प्रयाः ११. ७, ६. महान् २०. ११, ६. महान्तः ३. १०, ४; ८. ६, ११; १६. ३६, ३.	महिमा ६. ८०. १; ११. ३, २२; १३. २, २६; ४५; ४, ४४; १५. ७, १; १६. १, २; १; ३४, ५; २०. ६, ४; ४६, ७; ५८, १; ७७; ५; १०४, २.
महत्-काण्डाय १६. २१, १८.	महान्तम् ४. १५, ११; ११. २, ३६.	महिमानः ३. १०, ४; ७. ५, १; ६. ६, ११; १६. ६, १.
महत्-सु २०. ५६, १.	महान्ति ६. ५, १; ६०. ४, २३.	महिमानम् ३. १०, ११; ५. २०, ५; ११. ६, ३३; १७. ६, १३; १८. ७, ८; १६. ५६, ३; २०. ३५, ५; ५०, ६; ७१, ३; ८०, ३; ६६, २.
महम् २०. १२८, १४.	महा-भा-व १. १५, १. महाम् २०. १५, १; ७०, २; ६५, १.	
महय २०. १२, १.	महान्तम् ४. १५, ११; ११. २, ३६.	
मह-यते २०. ८२, २.	महान्ति ६. ५, १; ६०. ४, २३.	
महयन्तः २०. १०, २; ५६, २.	महान्तम् ४. १५, ११; ११. २, ३६.	
महयन्तु ४. १५, २; ३.	महान्तम् ४. १५, ११; ११. २, ३६.	
महयामसि २०. १६, ४.	महान्तम् ४. १५, ११; ११. २, ३६.	
महसा ६. १४२, १; १०. ६, २४; १४. २, ४३.	महान्तम् ४. १५, ११; ११. २, ३६.	
महस्वन्तम् ४. २५, ६.	महान्तम् ४. १५, ११; ११. २, ३६.	
महा २०. १२६, ११.	महान्तम् ४. १५, ११; ११. २, ३६.	
महा-आस्येभ्यः ११. ३, १०.	महान्तम् ४. १५, ११; ११. २, ३६.	
महा-इन्द्रः १३. ४, २-७; ६; १७. १, १८.	महान्तम् ४. १५, ११; ११. २, ३६.	
महा-आर्षभस्य ४. १५, १; ५.	महान्तम् ४. १५, ११; ११. २, ३६.	

(४, ६५०)

महिम्ना—मा.

महिम्ना ४. १०, मा २५, ३।
 ६. ७१, १। ११. १, १६।
 १३. १, ८.

महिम्ने ६. १, २५। २५। २७।
 २८। २६। १०। १३.

महि-वृत्ते २०. ७१, १.

महि-वृत्तस्य १३. २, १.
 महिवृत्ते इति महिवृत्ते ७.
 ११२, १। १४. २, ४५.

महिष २. १५, ४.

महिषा ५. १, मा ३१, ३।
 ६. १२, २। ७. १५, १।
 १२. ७, १८। १३. २,
 १०। १३। १३। ४२। ४३।
 ४४। ६८. १, ६५। २०.
 ४८, ५। ६५, १.

महिषम् २०. ६१, १३.

महिषी २. ४१, १; २०.
 १२८, १०। ११.

मही १. १०, १। २. ११, १।
 ४. ३, ४। ५. ७, १०।
 १५, १। २०, ६। ६. १०,
 १। १। १। ४। ६. १०, १३।
 १०. ७, १४। ८, १०।
 ११. १, मा ७, २०। ८,
 १५। ६, ४। १४. १, २।
 १८. २, २५। १६. ४४,
 २। २०. ११, ४; ६०,
 ४; ७१, ४.

मही इति ४. २, ४; ५. १,
 ५। १८. २, १६.

मही-वृत्त ६. १, १.

महीः ३. ४१, ४। ४. ८, ४।
 ४. ८, ४। १८. १, ४६।
 ४, ७। २०. ६, ४। ४६,
 ७। ४१, ७। ४१, ६; ६२,
 १६.

महीम् ६. ४४, १; ७. १, ३।
 ६. ४। ८. ८, १३। १०.
 १, ७। ११. ४, ५। १७।
 १३. १, ४५। २०. ७५,
 २.

महीयते १०. १२८, ११.

महीयते ५. १०, १५। १०.
 १२६, १०.

महीलुका १०. १०, १.

महे १. ४, १; २. ५, ४। ५.
 ११, १। १०. ६, मा १६.
 २४, १। १। २०. २१, १।
 १०। २२, १। २३, ६।
 ३०, १। ४७, १। ७१, १।
 १३७, १२.

महेम २०. ११, १.

महा ६. १०, १। १०. १,
 १८। १८. १, ६३। २०.
 ११, ७। ३४, १। ४८, ४;
 ६१, ११। ११८, ४.

महानि १०. १, ६.

महानम् १०. १, १२.

मह्यम् १. २६, ४। २. १३,
 २। ३. ५, ६; ७। १५,
 १। २२, १। ४. १६, १०।
 १६, १। १। ५। ७। ५.
 १, १; १; ४; ११, १। ६.
 २४, १। ६१, १। ६१,
 २; ७१, १। ८२, १; ८४,
 १; ८६, १। ७. २८, ५।
 ६. १, ७। मा ११। १०.
 १, मा २६। ११. १, २०।
 १२. १, १६। ११। १,
 ११; १४. १, ४०। ४५।
 २, ४; १७. १, १। २४।
 १६. ८, ६। ११, ६; ७१,
 १. २०. ४३. १.

मह्यम् २०. ४८, ३। १२१,
 १०.

मह्यै ३. ५, ५। ८. ५, २०.

मा १. १, ४। १६, १। २०,
 ११; २०, ११; २. १,
 ११; ७, ४१। १५, १।
 १। १। ७। ५। १। २८, १।
 ११; २६, ४१; ७। ३.
 ११, १। १२, १। १५,
 ५। मा १६, मा २५, १।
 २८, ५। १। २६, मा;
 ३०, ११; ५। २१, मा;
 ६; ४. ७, ७। मा, १। १।
 ७। २०, ५। ७। २१, ७।
 १४, मा १०, ११। १८,
 १। २६, ६। ५. २, ४। १।
 ५। ६१, ७। मा १। १।
 ७, ११; २; ११; मा ११।
 ४। ६, मा ११, मा मा
 ११, ४; ५; १८, १। १।
 १६, ६। २२, ११। २६,
 ११; १०, ११। १। मा
 १४१; १५। १७। ६. २०;
 १। २३, ११। ४१, १।
 ५१, १। ५६, १। ५७।
 १; ७१, १। ८०, १। ३।
 ११०, ११; ११५, ३।
 ११८, १। १२०, २। १२।
 ४। १२४, १। १२७, १।
 १३४, १। १४०, १। १।
 १४२, १। ७. ११, १।
 २०, १; २५, ११; २२,
 २१, ५२, १। ४; ५७।
 १। ६०, १। मा १। ७।
 ६८, १। ७०, १। ७५।
 ११, ८२, १। ६६, ३।
 १०२, १। १०८, १। ११०.

१; ८, १, ४२; ५; ७५;
 ८; ६२; १०२; ११; १२;
 १५; १६१; १८; १६२; २,
 १२; ५२; ७; १७; २३;
 २५; २६; ३, ६; १७;
 १८; ४, ७; २३; २४;
 ६, ३२; २०; २५२; ८,
 १६; २०; २१२; ६, २,
 १०; ३, १६; २४; ४,
 २४; ५, ४२; १०. १, ७;
 १६; १७; २६; २६; ३१;
 ५, १५; १६; १७; १८;
 १६; २०; २१; २३; २५;
 २६; २७; २८; २६; ३०;
 ३१; ३२; ३३; ३४; ३५;
 ६, ७, ११. १, २२२;
 २५; ३२; २, १४; २२;
 ७; ८; १७; १६२; २०२;
 २१२; २६२; २६२; ४,
 २६; ६, १३; २०; २१;
 १०, ६; १४; १६; १६;
 १२. १, १८; २३; २४;
 २५; २८; ३१; ३२२; ३३;
 ३४; ३५२; ४६; २, १०;
 १८; २३; ३३२; ३, १४;
 १७; १८२; २२; २३;
 ४३; ४६२; ४, ५२; १३.
 १, १३; ५६२; २, ५; १७;
 १७. १, २२; ४८; ६३;
 २, ६; ११; १६; १६;
 ५०; ६६२; १६. १, ४;
 २, ५; ३, २२; ३२; ४;
 ४, ३; ५२; ७, १३;
 ८, ३; ५; ६; ७; ८; ६;
 १०; ११; १२; १३; १४;
 १५; १६; १७; १८; १६;
 २०; २१; २२; २३; २४;

३४

२५; २६; २७; २८; २६;
 ३२; १७. १; ६; ८; २४;
 २८२; २६२; १८. १,
 ५२; २, ४४; २४५; २५२;
 ३१; ३६२; ३, ६; ५०;
 ५३; ६४; ७३; ४, १२;
 १३; ३०; १६. १५, २;
 २०, ४; २७, ५; ६२;
 ८२; ३३, ५; ४०, २२;
 ३३; ४६, २; ४७, ६२;
 ७२; ५५, १; २; ५७, ३;
 ५८, ४; २०. १३, ३;
 १८, ५; २१, ३; २२,
 २२; २३, ८; ३७, ७;
 ५५, ३; ५७, ३; ६७, २;
 ६८, ३; ६६, ८; ७६, २२;
 ८५, १२; ६६, १; १०७,
 ७; ११६, १; १२७, १३२;
 १२८, १५; १३०, १४;
 १४३, ५.

भा १. ३३, ४; २. ४, ५; १२,
 ५२; १६, १; २; ३; ४;
 ५; ३. ५, १; ५; १०, ७;
 १३, ५; ६२; १५, २; ४;
 २०, १०; २२, २; २५,
 ४; ७. १६; ८२; २०, ६;
 २४, १; २६, ७; ३०, २;
 ३६, ६; ५. ३, ४; ६,
 ८२; १०, १; २; ३; ४;
 ५; ६; ७; ११, ८; २४,
 १; २; ३; ४; ५; ६; ७;
 ८; ६; १०; ११, १२;
 १३; १४; १५; १६; १७;
 २८, २; १४; २६, ६; ७;
 ८; ६; ६. १६, १२, २;
 २६, १२; ३६, १; ४८,
 ११; २; ३; ५५, १; ५८,
 १२; ६६, २; ७१, २;

६६, २; ६६, २; १०७,
 १; २; ३; ४; ६१५, २;
 ३; ११६, ३; १२६, १२;
 २; ३; ७. १२, १२; १३,
 २; ३३, १२; ५०, ६;
 ५४, २; ६४, १; २; ६७,
 १; ७५, २; ८१, ३; ८६,
 १; २; ६७, ४; १०२, १;
 २; १२२, २; ११५, २;
 ८, ४, ७; ८; ११; १५;
 १६; ५, २०; ६, १; ७;
 १३; ६. १, १४; १५;
 १६; २४; ६, २२; १०,
 १५; १०. १, १०; ३,
 १०; १७२; १८२; १६२;
 २०२; २१२; २२२; २३२;
 २४२; २५२; ५, ६; २२२;
 ४६; ४७; ६, २; २२;
 २३; २४२; २५; २६; २७;
 २८; ३१; ३२; ३३. ४,
 २४; ६, ७२; १२. १,
 २१; २२; २३; २४; ३०;
 ४१; ५८; ६३२; २, ४०;
 ३, १७; ४, ३७; १३. १,
 १२; १३; १४; ५७; ४, ४८;
 ५०-५५; १६. १, १२;
 २, ५२; २, २२; ३२; ४३;
 ४, ४; ५; ७; ६, २; १७.
 १, ६२; ७२; ८; ६;
 १०; ११; १२; १३;
 १४; १५; १६; १७; १८;
 १६; २४; २५; २६;
 १८; २६; ३०; १८. ३,
 ८; ३, १०२; ११; १२२;
 २५; २६; २७; २८; ३८;
 ५६; १६. १६, १२; २२;
 १७, १२; २२; २३; ४२;

५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००.

मा-इति २०. १२७, १३.

मा-क्रवत् इति माक्रवत् २०. १३६, ५.

मांसम् ४. १२, ४, ५, २६, ५, १५, ६. ७०, १, ८. ६, २३, ६. ६(३), ६, ६(४), ७, १०. २, १, ६, १८, ११. ८, ११, १२, १८, ४, ४२.

मांस-वान् १८, ४, २०.

मांसस्य ४. १२, ३.

मांसानि २. १४, १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००.

मांसि १. ११, ४, ४. १७, ४, ५. ११, १.

मांसिन ४. १२, ४.

मांसु ११. २, ८.

माकिः १८. १, २५, १६. ४७, ६.

माकीम् २०. २२, २.

मागुधः १५. २, ५, ११, १६, २५.

मातः १६. ४८, २.

मातुः १२. १, ६३,

मातरः १. ५, २; ६. ५१, २; ६, ३; १६. ४०, ३; २०. २३, ५.

मातरम् १. २, १; ११, ५; ४. १८, २; ५. २, ६; ६. ३१, १; ११०, ३; ११२, २; १२०, १; १४०, १; २; ३; ७. १, २; ६, २; ४; ६. ५, ३०; ११. २, २६; १२. १, १७; १८. ३, ४६; २०. ४८, ४; १०७, ६.

मातरा ५. १, ४; २०. १०५, २.

मातरि ११. ७, ६.

मातरिष्वरी इति ५, २, ६; २०. १०७, १२.

मातरिष्वन् ११. ५, १३.

मातरिष्वनः १६. २७, ४.

मातरिष्वना ५. १०, ८.

मातरिष्वन् ५. १७, १; ८. १, ५; १०. ७, २; ४; ८, ३६; ४०, ६, २६; १२. १, ५१, १३. ३, १६; १४. १, ५४; १५. २, ७; १४; २०, २७; १६. ३, ४; १६. २०, २.

मातरिष्वानम् ६. १०, २८; ११. ४, १५.

मातली ८. ६, ५; ११. ६, २३; १८. १, ४७.

मातुवै ६. १०, ६.

माता १. २४, ३; २. २८, ४; ३. ६, १; २३, ३; ६; ४. ५, ६; ५. ५, १; १३, ७; ३०, ५; ६. १६, २;

४६, १; १२०, २; ७. ६, १; ७४, १; ८. ६, १; ७, २; ६. १, ४; ५; ६, ८; १०, १२; १०. ३, ८; १०, १८; १२. १, १०; १२, ३, ५; ४, ३३; १४. २, ३७; १८, १, ५३; २, ५०; ३, ५०; १६. ४, २; ३६, ३; ४६, ५; २०. ८७, ३; १०८, २.

माता इव २. २८, १; ५; ६. २६, ५; ६. ३०, ३.

मातुः १. १४, २; ३. २५, ५; ६. ११६, २; ३; ७. २, १; ८. ६, ५; ६. १०, १०; १२. ४, ३२; १४. २, २५; १८. २, ५२; २०. ३५, ७; १३३, २.

मातृ-कृतात् ५. १०, ४.

मातृ-बन्धु १२. ५, ४३.

मातृमत्-भ्यः १२. १, १७

मातृः ६. ६, १०५

मातृ-भ्यः ३. १०, १०, १६, २७, २; ३७, ४.

मात्रया ६. १०, १६.

मात्रा ८. ६, ५; ११. १, ६

मात्रा ३. ३०, २.

मात्राः ३. २४, ६.

मात्राम् १८. २, २८; १६; ४०; ४१; ४२; ४३. ४५

मात्रायाः ८. ६, ५.

मात्रे १. ३१, ४; २०. ६२, १२.

मात्रे—भार्यति.

(४, ६५३)

मात्रे इति २०. ७६, ६.	मानुवी २०. १२६, २३.	१२; १३. १, ५७, ५८;
मादय ५. ८, १; ६. ११०, ४२.	मानुवीः ३. २४, ३.	१६. ४, ३; १८. ३, १०;
मादयत् ६. ११०, ४.	मानुवेभ्यः ५. १७, ६.	११; १६. ५२, ४; २०.
मादयध्यै २०. ३६, १.	मानस्य ३. १२, ५; ६. ३, ५; ६. २१.	१२६, ६; १३६, ११; १३.
मादयध्वम् २०. १३, २.	मानस्य ६. ३, ६.	मामकम् १. २६, ५; ३.
मादयध्वम् ५. ३. ६; ६. १, ८; १८. १, ४२; १, २०; ४, ४६; ६४.	मानुषः ४. १६, ८; १२. ४, २०.	२४, १; ४. ४, २; १८. ३, ५६.
मादयन्ताम् १८. १, ५३; १६. ५८, ६.	नानुपम् २०. १२८, १२.	मामकान् ३. ६, १; ५; ४.
मादयन्तु २०. १२, २.	मानुषाः ६. २३, १; १८. ३, ३८.	१७, १०; १३. १, ३०.
मादयन्ते १८. १. ३५, १, ३५.	मानुषाणाम् ४. १४, ५; ३०, ३; ७. १११, १.	माम-पश्यम् ७. ३८, १.
मादयसे २०. १२०, २.	मानुषान् २०. १३६, २.	मामहे २०. १२७, ३.
मादयस्व २०. १३, ४; ५६, ५.	मानुषासः ७. ७७, ३.	मायया ४. ३८, १; ६. ७२, १; ७. ८१, १; ८. ४, २४; १०. ८, ३४; १३. २, १; ११; १४. १, २३; १६. ६८, १; २०. ३६, ६.
मादयस्व १८. १, ५६; ६०; २०. १२, ५; २५, ७; ३३, २.	मानुषीः ४. ३२, २; १३. २, २०; १७. १, २८; २०. ४७, १७.	माया ८. ६, ५.
मादयाथः ४. २५, ६.	मानुषीणाम् २०. ११, २.	मायाः ४. २३, ५; ८. ३, २४; २०. ३६, ६; ८०, ५.
मादयिष्णवः ७. ७७, १.	मानुषीभिः ७. ८५, १.	मायाभिः १२. १, ८; २०. ११, ६; २६, ४.
मादयेशाम् ७. ५८, २.	मानुषीषु ५. ११, ८; ६.	मायाम् २. २६, ६; ८. १० (४), ३; ४.
माध्यन्दिनस्य ७. ७२, ३.	मानुषे ८. ५, १४.	मायायाः ८. ६, ५.
माध्यन्दिने ७. ७६, ६; २०. १२, ७.	मानुषेषु ४. २८, ५.	मायिनः १६. २७, ५; १; १६, १.
माध्वी इति ७. ७३, ४.	माम् १. ३४, ४; ५; २. ७, ४; २७, ७; ३०, १; ३. ६, १; ३; ५; १८, ६; २२, ३; ६; ४. ३०, ४; ६. ८, १; २; ३; ६, १; ८२, २; ८६, २; १०२, १; १०८, ४; १२४, १; १३०, १; २; ३; ४; १३१, १; २; १३३, ५; १३६, २; ३; ४; ७. १२, ३; ३६, १; ७६, २; १०. ६, ३१; ११. ३, १०; १२. ३,	मायिनम् २०. २१, ७.
मानम् २०. १३५, ८.		मायिनाम् २०. ११, ३.
मानयेत् १५. १०, २.		मायी ५. ११, ४.
मानवाः ३. २१, ५; ११. १०, २; १२. १, १५; १८. ४, ५५.		मायुम् ६. १, ८; १०, ६; ७; १६. ४६, ४.
मानवानाम् ४. २२, ५; १२. १, २.		मायु इति १८. ४, ४.
		मायि ८. १०(४), १.
		मायौ ६. १८, ४.
		मार्यति १३. १, ३.

(४,६५४)

मारयन्ति—मित्रैः.

मारयन्ति न. ६, १६.
 मारयाति न. ६, १८.
 मारुतः १३. ४, न.
 मारुतम् ४. २७, ७; १५.
 १४, १; २०. १०६, ३.
 मारुताः ४. १५, ४.
 मारुतेन ४. २७, ६.
 मार्त-वत्सम् न. ६, २६.
 मार्यवः न. १० (४), ७.
 मार्यु ४. १८, ७; ६. ५३, ३;
 १०. ६, ३.
 भा-वते २०. ६०, ५; ७१,
 ५.
 भार्ष-आज्यम् १२. २, ४
 भार्षम् ६. १४०, २.
 भाषाः १२. २, ५३.
 भासः प. ६, ४; १४. १, ४.
 भासः न. ६, १७.
 भासम् १३. ३, न.
 भासाः ४. ३५, ४; १०. ७,
 ५; ११. ७, २०; १५. ६,
 १७.
 भासातै १८. २, ३८, ३६;
 ४०; ४१; ४२; ४३; ४४;
 ४५.
 भासान् ३. १०, ६; ११. ६,
 १७.
 भासानाम् १५. ६, १८; १६.
 न, २२.
 भासाम् १. ३५, ४.
 भासाय १३. २, १२.
 भासि प. २५, १०; ११; १२;
 १३; न. १०(३), ३; ४;
 १८, १३५; ४, ६३.
 भासौ १५. ४, ५; ३; ५; ६;

न; ६; ११; १२; १४;
 १५; १७; १८.
 माहिनाय २०. ३५, ६.
 मितः १८. ३, ५१.
 मितयः १६. १०, ७.
 मिता न. ६, ४; ६. ३, ६;
 १६; १७; ११. १, ६.
 मिताः १२. ३, ३०; १६.
 ४२, १.
 मिताम् ६. ३, १६.
 मित्र ४. २६, ५.
 मित्रः १. ६, १; १८, २;
 २. ५, ३; २८, १; २; ३.
 न, १; २२, २; प. १७,
 २, ६. ४, २; १०३, १;
 ७. ३०, १; ६. ३; १८;
 ४, १२; ७, ७; २३; १०.
 ४, १६; ११. ५, १५;
 ६, २५; १३. ३, १३;
 १५. २, ५; १८. १, ३३;
 ३६; ३६; १६. ६, ६;
 ७; १६, १; ४४, १०;
 २०. १६, २; ७६, ४;
 १०६, ३.
 मित्रः-इव १६. ४६, २.
 मित्र-तूयाय प. २०, ७.
 मित्र-धा २. ६, ४.
 मित्रम् १. ३, २; ३. २१,
 न; प. १६, १५; न. ३,
 १; ६. १०, २८; ११. ६,
 २; १६. १५. ६.
 मित्र-महः प. १२, १.
 मित्र-राजन् २. २८, ५.
 मित्र-वर्धन ४. न, २.
 मित्र-वर्धनः ४. न, ६.

मित्रस्य ६. न५, २; १२५,
 ३; १३. २, ३५; १८. १,
 ७; २०. १०७, १४; १२३,
 २.
 मित्राः ११. ६, २; २६.
 मित्राः २. २८, ३; ३. ३, ५;
 ६. ७, १.
 मित्राणाम् ६. २, १४.
 मित्राणि ११. ६, २.
 मित्रात् १६. १५, ६.
 मित्राय १२. ४, २६; १४. ३,
 ४६.
 मित्रावरुणयोः १०. ५, ११;
 ११. ३, ४४; १६. न,
 २८.
 मित्रावरुणा ४. २६, ३; ४.
 मित्रावरुणा ३. ४, ४; १६,
 १; ४, १०, १; १४. १,
 ५४; १८. ३, १२.
 मित्रावरुणा ६. ६७, २; ६.
 १०, २३; १६. ११, ६.
 मित्रावरुणौ ४. २६, ६; १३.
 १, ३१.
 मित्रावरुणौ ४. २६, ७; प.
 २४, ५; २५, ४; ६. न६,
 ३; १३२, ५; १३. १, २०,
 १६. ४, ७; १६. १०, ४.
 मित्रावरुणौ १. २०, २; ३.
 २५, ६; ४. २६, १; ६.
 ३२, ३.
 मित्रिणः ११. ६, २१.
 मित्रियात् २. २८, १.
 मित्रियेण ७. ६०, १; १४. २,
 १२.
 मित्रेण २. ६, ४; ३. ६, २.
 मित्रैः प. २०, न; १२. ३,
 ४८.

मिथः १. २८, ४; ३. ३०,
४; ५. १७, ७; ६. ३२; ३;
७. ८३, १; ८. ८, २१;
२०. १६, १०.
मिथः-अवधपेसिः २०. ६१,
८.
मिथी-योधः १२. ५, २४.
मिथु-दृष्टा २०. ७४, ३.
मिथुन-त्वम् ८. ६, १०.
मिथुनम् ६. १४१, २.
मिथुना ८. ३, १२; १०. ५,
४८; १४. २, ५; १८. १,
१०; २, ३३; २०. २५, ३.
मिथुना १२. ३, २; ६.
मिथुनाः ८. ४, २३; २०. ७२,
२; ७५, १.
मिथुनासः ६. ६, १४.
मिथुया ४. २६, ७; ३६, ६;
८. ४, १३.
मिनन्ति १८. १, ५.
मिनाति १४. १, ३३; १८.
४, ६०; २०. ३४, ५.
मिनीत् ६. ११०, ३.
मिनोति ४. १६, ५.
मिनोतु ३. १२, ४.
मिनोमि ३. १२, १.
मिमते ४. ३६, ५; ६. १५,
२.
मिमाति ६. १, ८; १०, ६;
७.
मिमायाम् २०. १४३, ६.
मिमानः ४. ३१, २; १०. ७,
१; १३. २, २२; १६. ५६,
१; २०. ४७, १६.
मिमानः १३. ३, १६.

मिमाना ५. १२, ७.
मिमाय ६. १०, २१.
मिमिचिरे २०. ३०, ३.
मिमिचुः २०. ३३, १.
मिमिचे ४. ११, २; ५. २८,
१; ६. १०, २; १०. ७,
२; १८. ३, ४०.
मिमिमहे १८. २, ३८; ३६;
४०; ४१; ४२; ४३; ४४.
मिमियात् ६. ६२, ३; १८.
१, १०.
मिमिच १३. १, २७.
मिमिहि २०. ३७, ११.
मिम्यक्त २०. ६४, ३.
मिश्र-धान्ये ५. ३१, १.
मिश्रम् १२. ३, ४४.
मिश्राः ४. १४, २; १२. ३,
४१.
मिषता १०. ८, ३०.
मिषन्तम् ६. १०, ६.
मिषन्ति ५. ६, ३; १८. १,
६.
मीदुषः १३. २, १.
मीदवः १४. १, १८.
मीमांसमानस्य ६. ६(२), ७.
मीमांसमानाः ६. १, ३.
मीमांसितस्य ६. ६(२), ७.
मीमाय ५. ११, ३.
मीमृषः ३. १५, ४.
मीयन्ते ४. २४, ४; १२. १,
१३.
मीयमाना ११. १, ६.
मुक्षत् ५. २६, ११; ८. ३,
१८.
मुखतः ११. ३, ३५.
मुखम् २, ३५, ४; ४. ३, ३;

३४, १; ५. २३, १४; ६.
५०, १; ८. २, १७; १०.
२, ६; ७, १६; २०; ६,
१३; ११. १, ३१; ३, १;
८, १४; १५; १२. ३, ५१;
४, २०; १३. १, १३; २,
३६; १६. ६, ५; ६; ५७,
३; ५८, ५.
मुखस्य ७. ११४, १.
मुखा ६. १०६, २; ८. ६, १५;
२०. १३७, ३.
मुखात् १६. ६, ७.
मुखानि ७. ५६, ४; १०. ६,
१.
मुखाय ११. २, ५.
मुखे ६. ६, २; १२. ५, २५.
मुखेन ७. ६४, २; ११. ३,
३५२; १२. ४, ५.
मुख्याम् ६. ४३, ३.
मुग्धाः ७. ५, ५.
मुचः ६. ३, २४.
मुच्यताम् १. ३, ६; ७; ८.
मुच्यते १०. १, ३२.
मुच्यते ४. ३६, १०.
मुच्यन्ताम् ६. ११२, ३.
मुच्यमानः १२. २, १२.
मुच्यसे ८. ८, १६.
मुच्यति ८. ८, ६.
मुच्यतै ४. १६, ४.
मुञ्च १. १२, ३; २. ६, १; ६.
८४, २; १६. ४४, ८; ६.
मुञ्च २. ३५, ३; ६. ११२, २२;
७. ४, १; ८. २, ४,
८. ६, २६; ६. २, ३;

मूधा—मूहमंनः-तरा.

(४,६५७)

मूधा १६. ३, १, २.	मूहस्य ४. ३, ६.	मूडन्तु ७. १०६, ७.
मूधानिम् ३. ६, ६, ६. ८,	मूगाः ५. २१, ४; ८. ७,	मूडय १. १३, २, २६.
१३, १०, ६, १०. २,	२४; ११. २, २४, ६, ८,	मूडयन्तु १०. १, २२.
१६, ७, १२, २०. ६१,	१२. १, ४६, १६. ३८,	मूडयासि ५. २२, ६ ६.
१२.	३.	२६, १.
मूधः १६. ६, १६.	मूगाणाम् २. ३६, ४, ३.	मूडात् २. २, ३.
मूल-कृत् ४. २८, ६.	१२, ६.	मूडाति १. १२, १, ४.
मूल-बहणात् ६. ११०, २;	मूगाय १२. १, ४८.	१०६, १.
११२, १.	मूगासः ६. ५२, २.	मूडिता १०. १, २२, १२.
मूल-बहणी १२. ५, ३३.	मूगी-हंघ ५. १४, ११.	३, ६.
मूलम् २. ७, ३; ३. २३, ६;	मूगेषु ३. २१, २; १२. १,	मूडिह ११. १, २६, ३१;
६. १४, २; १३७, ३; ८.	२५.	१८, ४, ५६.
३, १०; ७, २; १२; १३.	मूजानाः १८. ३, १७.	मूड्द्वम् १२. २, १६.
१, ५६; ५७; १६. ७, ३.	मूजे १६. ७, ८.	मूण १६. २६, ४७.
मूलात् ६. ४४, ३; ७. ५६,	मूजेशाम् १८. ४, ४६.	मूण ८. ४, २२; १०. ३, २.
१; १२. ५, ६४.	मूज्मः ४. १७, ८.	२०. ७४, ५.
मूलानि १२. ५, ४२.	मूज्महे १४. २, ६६.	मूणत् ६. २, १४.
मूलिनम् ५. ३१, १२.	मूज्महे ४. १७, ६; ७; १८,	मूणत ३. १, २.
मूलैः ७. ७४, १, १६. ३६,	८; ७. ६५, २; ३; १२.	मूणत् ४. ३१, ३; १६. १, २.
२.	२, १३; १३. १, ५८.	मूणन्तम् ११. २, १८.
मूलैः ६. १३, ३.	मूड १८. १, ४०.	मूणसि ५. २६, ११, ८. ३,
मूत् ६. ११२, ३; ११३,	मूड १. १३, ४; ५. ३, ८,	१८.
२.	४, ७; ६. ३०, ३; ५७,	मूणीत् ४. २१, ११, १३. १.
मूगः ४. ३. ६; ७. २६, २;	२; ११. २, ११; २८;	३.
८४, ३; १०. १, २६;	१२. १, ४६; ४७; १७.	मूणीहि ६. १४२, १; १०. १.
३, ६; २०. ५३, २; ५७,	१, ८; ११; १६. ४४,	३१.
१२; १२६, ३; २२; १३६,	४; ५५, २.	मूणीहि ४. १७, १०, ५. २६,
१०.	मूडत १. २०, १; २६, ४;	४; ६. ८८, ३; १०. १,
मूगम् ३. १५, १; २०. ६२,	१८. ३, १६.	१७; ३, १.
१२.	मूडत ३. २६, १; २; ३; ४;	मूत ८. २, ५.
मूगम्-इव ५. १४, १२.	५; ६.	मूतः ६. ४६, १.
मूगयन्ते ४. ३६, ३.	मूडतम् ८. ३, ७; ११. २,	मूत-मंजे ४. ४, १.
मूगयामिहे १०. ५, ४२.	१.	मूतम् ५. १६, १४; ६. १८;
मूग-युः १०. १, २६.	मूडतम् ५. ६, ५; ६; ७.	२.
मूग-शिरः १६. ७, २.	मूडतात् ११. १, २०.	मूतमंनः-तरा ६. १८, २.

(४, ६५८)

मृतमनाः—मै.

मृतमनाः ६. १८, २.
 मृतचक्षुषाम् ८. ६, ६; १०.
 १, १०.
 मृतस्य ६. १०, ८; १८. २,
 ६०.
 मृताः १२. २, ४५; १८. ४,
 ४८; ५७.
 मृतात् ६, १८, २.
 मृताय ५. १६, १२.
 मृते १२. २, ५.
 मृतेभ्यः १८. ३, ३.
 मृतैः १२. २, २२.
 मृत्यवः २. २८, १; ३. ११,
 ५; ७; ८. २, २७; १२.
 ५, १३.
 मृत्यवे ५. ८, ५; ३०, १२;
 १७; ६. २८, ३; ३७, ३;
 ६३, २; ७६, ३; ८४, ३;
 ७७, १०२, १; ८. १, १;
 ८, १०; १२. ३, ५५; ५६;
 ५७; ५८; ५९; ६८.
 मृत्युः ३. ११, ८; ४. २, २;
 ८, १; ५. २१, ११; २४,
 १३; ६. ४६, २; ६३, १;
 ८. १, ५; २. २३, ६.
 १०, २४; १०. २, १४;
 ७, १५; ११. ४, ११; ५,
 १४; ७, ३; १२. ५, २१;
 ५५; १३, ४, २५; १६.
 ५, २; ४; ५; ६; ७; ६;
 १७. १, २६; १८. २, २७;
 ३, ६२; १६. ६, १०.
 मृत्युवृत्ताः ८. ८, ११.
 मृत्युना ७. ७०, १; ११. १०,
 १८.

मृत्युपाशाः ८. ८, १६.
 मृत्युपाशान् ८. २, २; १७.
 १, ३७.
 मृत्युपाशौ ८. ८, १०.
 मृत्युभिः ६. ६३, ३; ८४, ४.
 मृत्युभ्यः १३. ४, ४६.
 मृत्युम् ४. ३५, १; २२, ३;
 ४; ५; ६; ५. २८, ८; ६.
 ३२, ३; ७. ५३, १; ८.
 १, २१; २, ११; ८, २१;
 १०. १०, २६; ११. ५,
 १६; १२. २, २; ३; ६;
 २३; २६; ३०; ३, ४६;
 १८. ३, ४१.
 मृत्युन् १. ३०, ३; ११. ६,
 १६.
 मृत्यो इति ८. २, ५; १०.
 मृत्यो इति ६. १३, १; २;
 ३; ८. २, ४; ८; १२. २,
 २१.
 मृत्योः २. १६, १; ३. ६, ५;
 ११, २; ५. ३०, ११; १५;
 ६. २३३, ३; ८. १, ४;
 १७; १८; १६; २, ६;
 २३; ७, १३; ८, १०; १८;
 १०. ३, ७; ८, ४४; १२.
 २, ३०; ४, ३७; ५, १५;
 १६. ८, ३२; १६. २०,
 १; २७, ८; २०. ६६, ७.
 मृथाः ३. ३१, ८; ६; ५. ३०,
 १७; १६. २७, ८.
 मृदितः ११. ६, १६.
 मृदितम् ११. १०, २६; १२.
 ५, ६१.
 मृदुः ३. २५, ४.

मृदुम् ५. १८, ५.
 मृदुः १. २१, २; ३; ४. ३१;
 २; ५. २०, १२; ६. २,
 २; ७. ८४, ३; ८. ५, ८;
 १३. १, ५; २७; १८. २,
 ५६; १६. १५, १; २०.
 ४३, १; ७२, ३; ६१, ११.
 मृध्वाचः २०. ७३, ६.
 मृलयाति २०. २०, ६; ५७,
 ६.
 मृशन्तीम् ८. ६, ६.
 मृशाम् सि ३. २४, ६; ४.
 १३, ७.
 मृषा ५. १८, ६; ६. ४५, ३.
 मृष्ट्वा १२. २, १७; २०.
 मृ १. १, १; ६, २; १२, ४१;
 १५, १; २; ३; ४; १६,
 २; ३०, २; ३३, ४; ३४,
 २; ३२; २. २, ३; ५,
 ४; ७, ४; १५, १; २; ३;
 ४; ५; ६; १७, १; २; ३;
 ४; ५; ६; ७; १८, १; २;
 ३; ४; ५; ३०, ३; ३२. ६,
 ६; ८, २; १५, ५; ६;
 १६, ६; १७, ७; १८,
 २२; ५; १६, १; २०, ३;
 ६; १०; २२, ४; ४. १३,
 ६३; २०, ४; २१, ५;
 २२, १; २५, ५; २६,
 २; ३; ४; ५; ६; २७, १;
 ३४, ८; ३५, ७; ३६,
 ४; ३६, २; ४; ६; ८;
 ५. ३, ४; ४, ६; ७;
 ६, ११; १२; १३; १४;
 ८, १; २२; ६, ७; ८;
 १०, १; २; ३; ४; ५; ६;

मे_क्षामि—मे_षः_इव.

(४,६५६)

७, ११, २, ८, ६, १३,
 ३, ५, १५, १६, २३;
 ३, ४, ५, ६, ७, ८;
 ८, १०, ११, २३,
 १, २, ११, ६, २,
 १, ४, १, ६, १, ६, १;
 ३, २४, २, ४५, १, ५०,
 ३, ५२, १, ५४, ३, ७१,
 २, ६४, ३, ६५, ३,
 १११, १, १२२, ५, १३०,
 २, १३८, १, ७, १२,
 २, ३०, १, ३२, १;
 ३३, १, ३४, १, ५०,
 ८, ५७, १, ८६, २;
 १०१, १, १०६, ३, ८,
 ३, २०, ५, ५, ६, १८, १;
 १६, ६, ११, १२, १३,
 १५, १६, १७, २, २, ७,
 १५, ६, १५, १०, २४;
 १०, १, २, ३, १, ८, १;
 ६, ११, १२, १३, १४;
 १७, १८, १९, २०, २१;
 २२, २३, २४, २५, ४,
 १०, १६, १७, ५, ६;
 ३७, ३८, ३९, ४०, २;
 ४१, ४२, ५०, ६, १६;
 ३०, ६, ७, ११, १,
 २७, २८, ३३, १०, ४;
 १२, १, १०, ३३, ४४;
 ४५, ४६, ४७, ४८, १,
 १, ४२, ५०, ६३, १५,
 ३, २, १६, १, १२, २,
 ३, ३, ५, ६, ४, ७;
 १८, १, १२, १४, ३१;
 २, ३२, ३, ११, १२;
 ४, ४०, ५५, ८६, १६.

१, १२, ४, २, ४, ७,
 २, ३, ४, ५, ८, २;
 ३, ४, ६, ५, १२, ४;
 १३, १४, १५, १६,
 १६, २, २०, २, ४, २;
 २७, १५, २८, ५, ६, ७;
 ७, ८, ९, १०, ११;
 १६, १७, २०, २१, ४, ७;
 ५, ६, ७, ८, ९, १०;
 ११, १२, १३, १४, १५, १६;
 १७, १८, १९, २०, २१, २२;
 २३, २४, २५, २६, २७, २८;
 २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४;
 ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०;
 ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६;
 ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२;
 ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८;
 ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४;
 ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०;
 ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६;
 ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२;
 ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८;
 ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४;
 ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००.

मे_क्षामि ७. १०२, १.

मे_क्षालया ६. १३३, ३; ११.
५, ४.

मे_क्षालाम् ६. १३३, १.

मे_क्षाले ६. १३३, २, ४, ५.

मे_क्षाः ४. १५, ७, ८, ९.

मे_क्षिः ११. ७, ५.

मे_क्ष्म ७. ६५, १.

मे_क्षिः १४. १, ४०.

मे_क्षिम् ८. ५, १०.

मे_क्ष्य ४. २१, ६.

मे_क्ष्वा ४. २७, ५; १८, २;
५८.

मे_क्ष्वता ६. ११४, ३.

मे_क्षिनः १०. ६, २०.

मे_क्षिना ६. ६५, ३; १२६,

१; १२. १, ३३.

मे_क्षिनीः ८. ७, ७.

मे_क्षिनौ ६. १०४, ३.

मे_क्षी ३. ६, ७; ४. ३१, ६;

५. ३, ११; ८, ६.

मे_क्ष्य-अतिथिम् ४. २६, ६.

मे_क्ष्या ५. ११, ४; ६. १०८,

४; ८. ४, ६.

मे_क्ष्या ६. ७, ११.

मे_क्ष्याः १६. ४३, १; २०.

११६, १.

मे_क्ष्यान् १२. ३, १६.

मे_क्ष्याम् ६. १०८, २; ३, ४;

५, १३३, ४; १०. २,

१७, ११. ५, २४; १२.

१, ५३; १८, ३, ११, १६.

४०, २; ३, ६४, १; २०.

११५, १.

मे_क्ष्याविनः ६. १०८, ४.

मे_क्ष्याविनम् ६. १०८, ४.

मे_क्ष्याय २०. ३५, ४.

मे_क्ष्ये ६. १०८, १.

मे_क्ष्यः १८. ४, ५१; ५२.

मे_क्ष्यम् ५. २६, १३; १८. ४,

१२, १३.

मे_क्ष्यास्तः ४. १४, १.

मे_क्ष्यः २. ११, १; ५. ६, ६;

१२. ५, १६; २३, ३६;

५६.

मे_क्ष्या ५. ६, १०; १०. ५,

१५; १६; १७; १८, १६;

२०; २१.

मे_क्ष्याः २. ११, १; ५. ६, ६.

मे_क्ष्यः ६, १३७, २.

मे_क्ष्यः ६. ४६, २.

(४,६६०)

मे_षम्—यः.

मे_षम् २०. ५४, ३.
 मे_षि १६. ४, ५.
 मे_ष्ट १२. १, १३.
 मे_ष्टाः ८. १, ५; २, १.
 मे_हताम् १६. ८. ५.
 मे_हति १३. १, ५६.
 मे_हनम् १. ३, ७; ११, ५.
 मे_हन्ती १२. ५; २२.
 मै_त्रावरुणम् ५. १६, १५.
 मो_इति १. १६, १; २०,
 १; २. १८, ३२; ५. ३,
 ६; ११, ७; ३०, १५;
 ६. १२४, ३; ७. ५३,
 ४; १०८, १; १२. ३,
 १७; १६. ४, ३; १८. ३,
 ६; ५२; ६२; २०. ६०,
 ३; ६७, २; १२७, १३.
 मो_क्रवत् २०. १३६, ५.
 मो_घम् ८. ४, १४; १५.
 भो_घम् ६. २६, १.
 मो_चि ३. १६, ८; ४. १६,
 ७; ५. ८, ४; ८. ८,
 १६; ११. ६, २०; १०,
 १६; १६. ८, ३; ५; ६;
 ७; ८; १०; ११; १२;
 १३; १४; १५; १६; १७;
 १८; १९; २०; २१; २२;
 २३; २४; २५; २६; २७;
 २८; २९; ३०.
 मो_दत्ते ११. ४, ४.
 मो_दन्ते ११. ४, ५.
 मो_दमानौ १४. १, २२; २,
 ३६; ४३.
 मो_दाः ११. ७, २६; ८. ३५;

मो_दिषी_ष्टाः २. २६, ६.
 मो_षीः ७. ६६, १; ८. २,
 १७.
 मो_हः ८. ८, ६.
 मो_हय ३. १, ५; ५. २१, ४;
 ५; ६.
 मो_हयतु ३. १, १; ६; २,
 १.
 मो_हयन् ३. २, ३.
 मो_हयन्ति ६. ८, १७.
 मो_हयित्वा २०. ६६, १६.
 म्रि_यते १२. २, ३६.
 म्रि_यन्ते ८. २, २४; १२. ४,
 ७, ८.
 म्रि_षमाणम् २०. ४८, ३.
 म्रि_यस्व ५. १३, ४.
 म्रो_क २. २४, ३.
 म्रो_कः १६. १, ३.
 म्रो_कम् ५. ३१, ६; १६. १, ७.
 म्ल_ापयामसि ६. ६६, ३.
 म्ल_ापयामि ७. ६०, २.

य

यं_सत् २०. ८६, ८.
 यं_सि २०. ३५, ९.
 या १. ५, २; ८, १; १२, १;
 २; ३; १५, २; १६, ३;
 ४; २०, २; २१, २; २५,
 ४; २६, २; ३०, १; ३१,
 ३; ३५, २; २. १, २; ३;
 २, १; २; ५, ३; ७, २;
 ५; ६, ५; ११, ३; १२,
 २; ३; ६; १४, ३; १६,
 १; २; ३; ४; ५; २०, १;

२; ३; ४; ५; २१, १; २;
 ३; ४; ५; २२, १; २; ३;
 ४; ५; २३, १; २; ३; ४;
 ५; २४, १; २; ३; ४; ५;
 ६; ७; ८; २५, ३; २७,
 ७; २२, ६; २३, ७; २४,
 १; २६, ५; ६; ८; २.
 ३, ६; ६, ४; ११, ८;
 १४, २; १६, २; २१,
 १; २३; ३; ४; ६; २३,
 ५; २४, २; २७, १; २; ३;
 ४; ५; ६; २६, ३; ४. १,
 ३; ७; २, १; २; ३, ५;
 ५, १; ५; ६, ४; ६, ५;
 १०, २; ११, ३; ५; ६;
 ११; १५, १०; १६, १;
 २७; ४; ६; ८; १८, २;
 ३; ६; ७; १६, ५; २०,
 ४, ६; २२, २; ५; २४,
 १; २२; ३; ६; ७;
 २८, ६; ७; ३०, ४; ३२,
 १; ३५, १; ३६; ५; ६;
 ३६, १; २; २; १०;
 ५. १, १; २; ३; ३, ६;
 ११; ४, १; ५, २; ८;
 ६, १०; १०, १; २; ३;
 ४; ५; ६; ७; १२, ६;
 १४, २; ६; १८, ४; ५; ७;
 १३; १६, ६; ६; २२, २;
 ३; २३, २; २८, ११;
 २६, २; ६; ७; १५; २०,
 ६; १०; १२; ३१; ११; ६.
 १, २; २, १; ६, १; २;
 ३; १४, १; १५, १; २;
 १६, २; २०, ३; २६,
 २; २८, ३; ३०, २;
 ३४, २; ३; ४; ५; २७,

३३, ४२, २; ४३, २;
 ४६, १; ४४, ३; ६१,
 ३; ७३, २; ७५, १; ७६,
 ३; ४; ७७, २; ८२, ३;
 ८४, २; ८५, १; ८२,
 २; १११, १; १२३, ३;
 १२७, ३; १२८, ४;
 १२९, ३; १३३, १;
 १३४, ३; १३६, ३;
 ७, २, १; ५, ५; १०,
 १; ११, १; २६, १;
 ३१, १; ४६, २; ५०,
 ६; ५६, ४; ८; ५६, १;
 ७०, ३; ७३, ३; ७४, ३;
 ७६, ३; ७७, २; ८१,
 ५; ८७, १; ८५, ३;
 १०८, १; २; १०९, १;
 ४; ५; ११६, २; ८. ३,
 ८; ११; १५; ४, ७;
 ८; १०; ११; १५;
 १६; ५, १२; १३;
 १५; ६, ५; ७; ८;
 ६; १६; १८; ६, २; १०
 (१), ३; ५; ७; ६; ११;
 १३; १०(२), १०; १०(३),
 २; ४; ६; ८; १०(४), ४;
 ८; १२; १६; १०(५), ४;
 ८; १२; १६; १०(६), ४;
 ६, १, ६; २३; २३; २४;
 २, ३; ३, २; ६; १३;
 ४, २; ६; ११; १७; १८;
 ५, २२; २४; २५; २६;
 २८; २९; ३०; ३१;
 ३२; ३३; ३४; ३५;
 (१), १; ६; ६(२), ७;
 १०; ११; १२; १३; ६
 (३), १; २; ३; ४; ५;

६; ६(४) १; ३; ५; ७;
 ६; १०; ६(५), ३; ५;
 ७; १०; ६(६), १४; ७,
 २६; ८, ४; ७; २२; ६, ५;
 ७; १५; १८; २१; १०,
 १२; १८; १०. १, ७; ८;
 २८; २, ८; २८; २९; ३०;
 ३५; ५, १५; १६; १७;
 १८; १९; २०; २१;
 २५; २६; २७; २८; २९;
 ३०; ३१; ३२; ३३; ३४;
 ३५; ७, १७; २४; ३२;
 ३३; ३४; ३६; ४१; ८,
 १; ५; २०; २२; २६;
 २६; ३७; ६, ४; ५; ६;
 १०; १७; २६; १०,
 २; २४; २७; ११. १,
 ५; १५; २८; ३१; २,
 ३३; २३. २८; ३, २२;
 २३; २४-४६; ५२; ५५; ४,
 १; १८; १९; २३; २४; ६,
 ४; ६; २१; ७, १२; ८,
 ३; ७; १८; ६, ४; १०,
 २३; २६; १२. १, १४;
 २३; २४; २५; ३०;
 ४६; २, १; ३; ७; १४;
 १५; १६; २१; ३३;
 ३५; ३६; ३, ६; १६;
 ५०; ४, २; ६; ११;
 १२; १३; १७; १८; २३;
 २८; ३८; ४४; ४६; ५,
 ४६; १३. १, १; २;
 २५; २६; ५६; ५७;
 ५८; ६०; २, १; १४;
 २६; ३, १; २;
 ३; ४; ५; ६; ७;
 ८; ९; १०; ११; १२;

१३; १४; १५; १६;
 १७; १८; १९; २०; २१;
 २२; २३; २४; २५;
 ४, १५-२२; २४; १४.
 १, २६; ३०; ३७; ३८;
 २, २; ४१; ४७; ५५;
 ५८; ६८; १५. २, ३;
 ८; ११; १४; १७; २०;
 २३; २८; ३, ११; ४,
 ३; ६; ६; १२; १५; १८;
 ५, ३; १६; ६, ३; ६;
 ६; १२; १५; १८; २१;
 २३; २६; ७, ३; ५;
 ८, ३; ६, ३; १०, ६;
 ११; ११, ७; ६; ११;
 १२, ४; ७; ८; ११; १३,
 १४; २४, २; ४; ६; ८;
 १०; १२; १४; १६; १८;
 २०; २२; २४; १५, ३;
 ४; ५; ६; ७; ८; ९;
 १६, १; २; ३; ४; ५; ६;
 ७; १७, १; २; ३; ४; ५;
 ६; ७; १८; २; १६. १,
 ५; ७; ८; ९; १०; ११;
 १२; १३; १४; १५; १६;
 १७; १८; १९; २०; २१;
 २२; २३; २४; २५; २६;
 २७; २८; २९; ३०; ३१.
 १, ६; १४; २४; ३४; ५६;
 २, १०; २६; ३०; ३१;
 ३७; ५३; ३, १३; ५३;
 ५५; ६१; ६३; ७०; ७३; ४,
 २८; ५४; १६. ३, २; ३;
 १५, ६; २०, २; २६; १;
 २; ३१, २; ३२, १; ६;
 ३५, ५; ३६, १०; ४४,

२; ४६, ४; ५; ४६, ७;
 ६; १०; ५०, ४; ५; ५३,
 ८; ५६, ६; ५७, ३^२; ५६,
 २; २०. ५, ७; ७, २; ११,
 ८; १२, १; १४, २; ३; ४;
 १६, १२; १७, ८; २०, ४;
 २४, १; ३०, १; ३; ४;
 ३१, २; ३^२; ३४, १; २^४
 ३^३; ४^२; ६^४; ७^३; ६^२;
 १०^३; ११^२; १२^२; १३^२
 १४^२; १५^४; १६; १७^४;
 १८; ३६, १^२; ३; ३७,
 १^२; ५१, १; ३; ५३, १; ३;
 ५७, ७; ११; १३; ५६, ३,
 ४; ६२, २; ३; ४; ६३,
 ४; ६; ७; ६५, १; ६७,
 ३; ७; ६८, ४; १०; ७०,
 १५; ७१, ३; ७३, ६^२;
 ७६, १; २; ७७, ५; ८८,
 १; ८६, ४; ५; ६; ७; ६;
 ६०, १; २; ६२; १०^३;
 १६^२; १८; ६४, १; ६५,
 ४; ६६, ३; ४; ११; १२;
 १३^३; १४^२; १५^२; १६^२
 २३; १०५, ४^२; ११७, २;
 १२६, २१; १२७, ७;
 १२८, १; २; ४^२; ६;
 १४^२; १३६, १०; १६;
 १३८, १; १४३, १.

यः-यः ३. २४, २.

यकांशलोका २०. १३०,
२०.

यक'त् ६. ७. ११; १०. ६,
१६.

युक्तः २. ३३, ३; २०. ६६,
११,

अज्ञत् ३. ४, ६; ५. २७, ५.

युक्तम् ब. ६, द; २५; २६;
१०. २, ३२; ७, ३८; द,
१५; ४३; ११. २, २४.

युक्ताणि ११. ६, १०.

युक्ताय २०. १२८, १२.

यत्ति २०. ६७, ५.

यज्ञि ५. १२, ३; ६.

यद्मः २. १०, ५; ५. ३०,
 ६; ६. ८५, १; ८. ७,
 १५; ९. ८, ३; १०. ३,
 ५; १२. २, १५; ४, ८.

युद्धमः-धाम् ६. ५, ६.

युद्ध-नाशनी: ३. १२, ६;
६. ३, २३.

यत्सम् २. ३३, १; २; ३; ४;
 ५; ६; ७; ४. ६, ४; १३,
 ५; ५. ४, ६; ३०, ८;
 १६; ६. ८५, २; ३; १२७;
 ३; ७. ५३, ६; ८. १,
 २१, २, १८; ७, ३. ६.
 ८, ७; १२. २, २; १४;
 १४. २, ६६; १६. ३६,
 २; ४४, २; २०, ६६, १७;
 १८; १६; २०; २१, २२;
 २३.

यदमाः १४. २, १०; १६. ३८,
१; २.

यत्प्रमाणम् द्वि. द, १०; ११;
१२; १६; २०.

यद्मात्र २. १०, ६; द. ७, २;
५.

यद्मानि १६, १६, १; ४.

यक्षमासः ६. द, १६; १६.
३६, ३.

यत्तमेण ३. ३१, १; २; ३;
४; ५; ६; ७; ८; ९; १०;
११.

यद्यमाणा २०. १३५, ५.

यच्छ १८. २, १६.

यच्छु १. २०, ३; २१, १; ४,
२. २६, २; २८, ५; ३.

२०, २; ८; ६. ५६, १,
१३७, ३; ७. ११५, ३; ६.

४, ६; ११. १, ३; ११;
१२. ३, १४; १६; ३१;

१७. १, १२; १३; १६.
३१, १३; ४७, ६; २०.

८३, १.
युच्छत ५. ३, ७; ६. ७, ३;

१८. ३, ४३.
यच्छतः ७. ५४. १.

यच्छतम् ४. २५, ६; ७. ५२,
१; ८. २, ७; २०. १३,

१; १३६, १; १४१, ५.
यच्छताम् ६. १२१, ३; १६.

१६, २; २७, १५.
यच्छ्रुति १६. ३२, २.

यच्छ्रुतु १. १, ३; २. १६,
१: ३. २०, ३: ५, ३: ५:

६. ५६, २; ७. १७, १;
१०. ३. १७; १८; १९;

२०; २१; २२; २३; २४;
२५; ५. ३७; ४०; ३८.

८, १२५; १८, १; २; ३।
४; ५। ६; ७; ८; ९; १०।

११; ३१, ६; ५; ६४, १.
यच्छध्वम् १४. १. ५६.

यच्छन्ति १८. ४, २६.

यच्छन्तु ७. ४६, १; द. ७.

४१; १४. २, ७३; १५.

यच्छसि १२. ५, ५७.

यच्छसे ६. ८१, १.

यच्छात् ७. ६, ४; २४, १;
४१, २; ३७, १; १२. ३,
८; १६. ३१, ५; १४.

यच्छाथ १. २६, ३.

यच्छान् १२. ३, ३८; १८.
४, ४०.

यच्छामि ८. ८, १०.

यच्छेत् १२. ४, ४७.

यज् ६. १२५, २; १६. ३, ४.

यजतः २. २, २.

यजता १८. १, २६.

यजति २०. ६७, १.

यजति १८. १, १८.

तजते ४. २१, १.

यजते ६. ४, १८.

यजते इति ५. १२, ६; २७,
८.

यजत्र १८. १, २६.

यजत्रः १३. २, ४४; ४५.

यजत्राः ६. ११४, २; १६.
११, ५.

यजथाय १८. १, २६.

यजथै ५. १२, ७.

यजन्ताम् ५. ३, ४; ५.

यजमानः ६. १२३, १; २;
१५. २, १०; ६, १४.यजमान-ब्राह्मणम् ६. ६(२)
१.यजमानम् २. ३४, १; ५. ३,
६; ११. ६. १४; १६.

६३, १; २०. ३४, १२.

यजमानस्य ७. ६६, १; ६.

५, २; १०. ६, १; १५.

२, १२; ६, १५; १६.

४२, ३; २०. १११, ३.

यजमानाः ४. १४, ५; ६.
११४, ३.

यजमानाय २. ३४, २; ४.

३०, ६; ५. २६, १२; ६.

६, १; ५४, ३; ७. १७,

४; ११०, ३; ८. ६, १४;

६. ४, १; ५, २; ११.

१, ६; २, २८; १५. २, ११;

१८. १, ४३; ४, ४; ५; ७;

४७; १६. ५२, १; २; २०.

५, ४; २५, ३; २७, ३;

५६, २.

यजमानासः २०. ६६, १.

यजमाने १०. ३, २३; २०.

५५, ३.

यजमानेन १८. ४, ६.

यजसि ५. १२, १.

यजस्व ६. ११०, १.

यजात् १६. ५६, ३.

यजामहे ४. ३३, २; ७. ५४,

१; ८०, २; १४. १, १७;

१८. ३, २५; २६; २७;

२८; २६; ३०; ३१; ३२;

३३; ३४; ३५; ४, १६;

१७; १८; १६; २०; २१;

२२; २३; २४; २०. २५,

५.

यजामि १. ३१, ३.

यजिष्ठम् २०. १०३, २.

यजीयान् ५. १२, ३; ६; १८.

१, ३०.

यजुः ७. ५४, २; ६. ६(१),

२; १०. ७, १४; २०;

११. ७, ५; ८, २३; १८.

१, ३२; १६. ६, १३; ५४,
३.

यजुः-विदः १२. १, ३८.

यजुषा ७. ७०, १; ११. ७,
२४.

यजुषाम् १५. ६, ६.

यजुष्यः १०. ५, १५; १६;
१७; १८; १६; २०.

यजुष्याः १०. ५, २१.

यजूषि ५. २६, १; ११. ६,
१४; १५. ३, ६; ६, ८.यजुः ३. १०, ६३; १०; ११;
६. १२३, ४; १६. ३७;

४.

यज्ञ ७. ८७, ५.

यज्ञ-आयुधानि १८. ४, २.

यज्ञ-आयुधैः १२. ३, २३.

यज्ञ-ऋतः ८. १०(१), ५.

यज्ञः ४. ११, ४; ५; ३४, १,
५. २६, १२; ६. ६७, १;

७. ५, २; ७३, ३; ६७,

६; ६. ५, २१; ६(२),

११; १०, १४; १०. ७,

१६; ८, १०; १०, २०;

२७; २६; ११. १, १४;

१५; ८, २०; १२. १, १;

१३. १, ४८; ५५; ४, ३६;

४०३; १५. २, १०; ६,

१४; ७, ४; ५; १६, ६;

१६. ८, १; ५; ६; ७; ८;

६; १०; ११; १२; १३;

१४; १५; १६; १७; १८;

१६; २०; २१; २२; २३;

२४; २५; २६; २७; २८;

२६; ३०; ६, ४; १७. १,

१८; १८. २, १; ३, १४;

४, १३; १५; १६. १३,
६; १६, ६; २०. २७, ५.

यज्ञ-कामः ७. १०३, १.

यज्ञ-क्रामाः ७. २८, १.

यज्ञ-कृतः १८. ४, ७.

यज्ञ-पतिः ४. ११, ५.

यज्ञ-पतिम् २. ३५, २; ७.

२६, ३; ६७, ५.

यज्ञ-पते ७. ६७, ६.

यज्ञ-पदी १०. १०, ६.

यज्ञम् १. ६, ४; १५, १, २.

३५, ५; ३. २०, ५; ४.

१४, ४; १५, १६; २३,

२; ५. ३, ११; ६, ८;

१२, २; ७; ८; ११, ३६,

६; ३२; २७, ३; ८; १२;

६. ३५, २; ११४, ३;

१२२, ४; ७. २, १; ५,

१; ४; ५; २०, १; ४;

५२, २७, १; २८, १;

४७, २; ५४, १; ७३,

६; ७६, १; ८२, १; ६७,

१; ५; ८; ८. २, ६; १०

(२), ८; १०; ६. ४, ७;

५, १७; २२; १०. २,

१४; १६; ५, ३१; ६,

४; १०, २५; ११. १, १०;

३४; ३६; ३; ५३; ६, १४;

१२. १, १३; २२; १३.

१, १४; १८. १, ४२; २,

३५; ३, ४१; ४, २; ४०;

४६; १६. १, २; २२; ३;

६, १०; ११; १५; ५४,

४; ५८, ५; ६. २०. ६,

३; २६, २; ३२, २; ६३,

१; ११०, ३; १२४, ४;

१४३, ४.

यज्ञ-वचः ११. ३, १६.

यज्ञ-वर्धन १०. ६, ३४.

यज्ञ-वाहलः ६. ११४, २.

यज्ञ-वृधम् ४. २३, ३.

यज्ञ-धियम् २०. ६८, ७.

यज्ञ-लंशितः १०. ५, ३१.

यज्ञस्य २. ३५, ३; ५; ६.

३६, २; ४८, १; २; ३;

६६, ३; ८. ६, १४; ६.

६(३), ८२; १०. १०, २;

३; ११. ७, ६; १०; १३.

४, १३; ६०; ३, ६; ४,

४०; १५. २, १२; ६, १५;

१६. ४२, २; ५८, ५; २०.

६१, २; १०१, १; १३८,

३.

यज्ञ-होतः २०. १४३, २.

यज्ञाः ८. ६, ८; १०. १०, २४,

११. ७, ८; ११; १५;

१६; १३. १, ३६; ४३;

१६. १०, ७; ४२, १.

यज्ञात् १०. ५, ३१; १२. ४,

४१; १३. १, ५६; ४,

३६; १८. २, २८; १६.

६, १३; १४.

यज्ञान् ३. १०, ७.

यज्ञानाम् ४. ३४, ५; १३. २,

३६.

यज्ञानेत्यस्य २०. १३५, ७.

यज्ञाय १५. २, ११.

यज्ञायज्ञियम् ८. १०(२), ६;

१०; १५. २, १०; ३; ५;

४, ५; ६.

यज्ञायज्ञियस्य १५. २, १२.

यज्ञायज्ञियाय १५. २, ११.

यज्ञायज्ञियेन ८. १०(२), ८.

यज्ञियः ११. १, १६; १८. १,
१८; २०. ५५, १.

यज्ञियम् २. ३४, १; ६. ११६,
१; २०. ४०, ३; ६६,
१२.

यज्ञियस्य ७. ६२, १; २०.
१२५, ७.

यज्ञिया ६. १०८, १; ७. ८०,
४; १०. ६, ३३.

यज्ञियाः २. १२, २; ६. १२२,
५; ७. ३८, ३; ११. १,
१०; १३; १७; १८; २७;
१२. २, १३; २०; १४.
२, १०; ६७; १८. ४,
५७; १६. ५८, ६.

यज्ञियान् ११. १, ४; १८. १,
१८.

यज्ञियाम् २०. ६४, ६.

यज्ञियानाम् ४. ३०, २; ६.
५५, ३; ७. ६७, २; १८.
१, ५८; १६. ४२, ४.

यज्ञियासः १६. ११, ४, ५.

यज्ञियासः ११. १, १२.

यज्ञिये ७. ८०, ४.

यज्ञिये इति ६. ६२, १.

यज्ञियेषु २०. ५६, ४.

यज्ञियैः १८. १, ५६.

यज्ञे २. २०, १; ५. २६, १;

३; ३; ४; ५; ७; ८;

६; १०; ११; ७. ४७, १;

६७, १; ६. ५, २; ६(१),

५; १०. १, ११; ३, २३;

१०, १८; १२. ५, ३;

२०. १३, १.

यज्ञेन ७. ५, १; १२. १, ३६;
४, ३२; १३. ३, १७; १६.
६३, १.

यज्ञेभिः २०. ६४, ६.

यज्ञेषु १६. ५६, १; २०. १०३,
३; १०४, २.

यज्ञैः ६. १२४, १; ७. ७०, १;
८०, ४; ८. ३, ६; ५, १५;
२०. २५, ५; ६७, ४;
७२, १; ८८, ६; ९२, १८.

यज्व २०. १२८, १.

यज्वानः ४. २१, ४.

यज्वानाम् १२. ३, ६.

यज्वाने ४. २१, २.

यज्व-भिः २०. ३०, ५.

यत् १. २, ३; ३, ६३; १०,
३; १३, ३; १८, ३२;
२०, ३२; २३, १; ४;
२५, १; ३२, ३; ३५, १;
२. १, १; २, ३, १; ७,
२; ४; १२, ३; १६, १; २;
३; ४; ५; २०, १; २; ३;
४; ५; २१, १; २; ३;
४; ५; २२, १; २; ३; ४;
५; २३, १; २; ३; ४; ५;
३०, ३; ४३; ३२, २;
३४, २; ३५, ३; ४; ३;
२, ४; ३, २; ७, २; ३;
६; १३, १; २; १४, १;
२; १७, ७; २२, १;
४; २६, १; ४. १,
५; ३, ७३; ७, २; ६,
६; १२, २३; १३, २; ३;
१६, २; ५३; १६, ४;
२३, ७३; २६, ७; २८,

१; २; ३३, ३; ४; ५;
५. १, ४; ५; ७; २, १;
३; ३, ७; ५, ४३; ६,
११; १२; १३; १४; ८,
३; ६; ११, ३; ६; १०३;
१३, २; १७, ७; ८; १६,
५; २२, १०; २३, ६;
२५, ६३; २८, ८; १२;
२६, ५३; १२३; ३०,
२३; ३; ४३; ५३; ६.
१२, २४; १८, ३; २२,
२; २४, २३; २७, १;
२६, १३; ४५, २३; ३;
४६, २; ३; ५१, ३;
५३, ३; ६१, २; ३;
६३; १३; ६६, १; ३;
७१, १३; २; ३; ७२, ३;
७४, २; ८०; १; ३; ८३,
४; ८६, १; ८६, ३३;
१००, २; १०७, १; २;
३; ४; ११४, १; २; ११५,
१३; ११६, १; २; ११७,
१; २; ११८, १; २;
११९, १; ३३; १२०,
१३; १२१, २४; १२२,
३; १२४; २; १२८, १;
१३१, ३; १३३, ३; १३५,
१; २; ३; ७. ५, ३; ४;
१२, ४३; २०, ४; ६३;
२४, १३; २५, २; ४१,
२; ४२, २; ४४, १; ५३,
१; ३; ५४, २; ५७, १३;
६२, १; ६४, १; २; ६५,
२३; ३; ६६, १; ६८,
२; ७०, १३; २; ७३, ४;
७६, १; ८३, २३; ८६,
३३; ८०, ३३; ८७, १;

२; १०१, १; १०६, १;
१०८, ७३; ८. २, ३; १०;
१२; १६; १७; १६३; ३,
१२३; ४; १२; ५, १६;
६, २०; ७, ५३; १०
(२); २; १० (६), ३;
६. १, १८३; २४; २,
२३; १६; २५; ३, २;
१३; १५३; ४, ५; १४;
१५; २३; ५, ३; २१;
३१; ३३; ३३; ३४; ३५;
३६; ६ (१), ३; ४३;
६; ७; ८; ६; १०; ११;
१३; १३; ६ (२), १; २;
६; ६ (३), ७; ६; ६ (६),
१; २; ३; ४; ५; ६; ७;
८; ६; १०; ११; ६, ४;
२१; १०, १३; १७. १,
१०; ११; २. ३; २६;
३२; ३, ८३; ४, २२३;
२५; ५, २२; ४५; ४८;
६, ३; ७; ८; ११; ८;
२३; ७; ११३; १३; ३८;
३६; ४३; ६, १३३; १५;
१६; १७; १८; २२;
२४; १०, ६; १०;
११; १६; २२; ११.
१, ३०; २, १०; ३,
५०; ४, ३; ४३; ६; १०३;
२१; २२; ६, २३; ७,
२३३; ८, १; १६; २२;
२३; ६, १; १३; १०, १७
१२, १, १२३; २५; २६;
३५; ४०; ४३; ४७; ५५;
५६; ५८; ६०; ६१; २,
५; १६; ३६; ३६; ४०;
३, ७; १३; ३०; ४३; ४८;

५२३; ४, ७, ८; ६; १५;
 २२; ३३; ४०३; ५, ५०;
 १३. १, ४४३; ५४३;
 ५५; २, ३३; ५; १४; २८;
 ३६; ४२; ४४; ४५; ३,
 १०३; १२; १७; २२;
 २३; ४, ७; ११३; १६३;
 ४३३; १४. १, ३; ४; ६;
 ६; १०; १४; १५; १६;
 २७; ३५३; ५६; २, १२;
 ४८; ५१; ५३; ५४; ५६;
 ५७; ६१३; ६२३; ६५३;
 ६६३; १५. ११, ३; ४; ५;
 ६; ८; १०; १४, १; ३;
 ५; ७; ६; ११; १३; १५;
 १७; १६; २१; २३; १७,
 ६; १८, २३; १६. १, ८;
 ६, ४; ७, ६३; १०३; ११;
 १८. १, २; ४; १२३; १४;
 २०; २२, २६३; २६;
 ३१; ३२; ३४; ५२; २,
 २६; ३३; ३६, ५७; ३, ३;
 १६; २४; ३८; ५५; ५६;
 ६६; ४, ७; ४२; ४६; ५६;
 ६४; ८३३; ८४३; ८८;
 १६. ५, १; ६, ४३; ५; ६;
 १०; १५; ६, ४; ८; १४३;
 १३, १; १५, ४; २०, ३३;
 २६, १; २; ४३; २७,
 १०; ३०, १; ५; ३१, ४;
 ५; ३८, २३; ४०, १३;
 ३; ४४, ६३; ४५, २३;
 ३; ४७, २; ४८, ३३;
 ४६, ७; ५०, ६३; ५२,
 १; ४; ५; ५७, २; ४३;
 ५६, २; ३; ६४, ३; २०.
 ६, ६; १२, २; १५, २;
 १६, ७; १७, ५; ७; २१,

६; ७; २२, ६; २५, ६;
 २७, १; २; ४; ५; २८,
 १; २६, ३; ३१, ४; ३५,
 ११; १३; १५; ३७, २;
 ५; ३६, २; ४१, २; ४२,
 १; ४३, २३; ४६, १;
 ५१, ४; ५४, २; ५६,
 ३; ६३, २; ६७, २३;
 ७२, २; ३; ७४, १; ७५,
 १; २; ३३; ७६, ४; ७७३;
 ३; ४३; ८; ७८, १; २,
 ८१, १; ८२, १; ८५, ३;
 ८७, २; ४३; ६; ६२, ३;
 ४; ७; १४; २०; १०५,
 २; १०७, २; ४; ६; १११,
 १३; २; ३; ११२, १; २;
 १२०, १; २; १२२, ३;
 १२४, ५; १२५, ५; १२६,
 २०; २२; १२८, २३; ३;
 १२; १३५, ५; १३६, १;
 ३; ४; १३७, १; १३८,
 २; ३; १३६, २३; ५३;
 १४०, १३; ४३; ५३;
 १४१, २३; ३३; ५; १४२,
 ३; ४३; ६३; १४३, २;
 ५; ६; ७.

यतः १, १३, २; २. २, ३;
 ३. २०, १; ४. ६, ८;
 ३१, ५; ५. २, १; ६.
 ७५, २; ३; ७. २६, ६;
 ५६, ३३; ७६, ५; ८. ४,
 ३; ६. १, २; १०. १,
 १६; २८; ८, १६; २६;
 १४. २, १०; १६. ३,
 ४, १५, १; २०. १०७,
 ४.

यतः १८, ४, ५६.

यत्-न्ताम् १७. १, ३०.

यत्-न्ते २०. ७६, ८.

यत्-मः ४. ११, ५; ५. २६,
 २; ४; ७; ८; ६; ६. ५५,
 १; ८. ३, ८; १७, ६,
 १७; १०. २, ८.

यत्-मत् ५. २६, ५.

यत्-मस्याम् ११. २, १२;
१४; २७.

यत्-मा १२. ३, १.

यत्-माः ११. १, १३.

यत्-मान् ११. १, १०.

यत्-मानाः १२. २, २४.

यत्-माने इति १८. ३, २८.

यत्-मे ११. १, २६; ३२; १२.
३, ४६.

यत्-रत् ८. ४, १२.

यत्-रा १०. ७, ४३.

यत्-स्त्रुचा २०. २५, ३.

यत्-स्व २. ६, ४.

यत्-ति १०. ३, ६; १२. २,
२४.

यत्-ति-धा ७. ६, ७; १०. १,
२०.

यत्-ति-भ्यः २०. ६, ३; ४६, ६.

यत्-ति-स्वभिः २०. १३०, ७.

यत्-इव ६. १०, १५,

यत्-ती ६०. ६, २.

यत्-तीः २. ५, ३; ३. १३, २;
 ५. २१, ६; ६. ८५, ३,

यत्-तीः १४. १, ३२; २. ५२.

यत्-तेते इति ७. ५७, २.

यत्-कामः ५. १२२, ५; १०.
 ६, २७, ११. १, २७.

यत्-कामाः ७. ७६, ४, ८०,
३.

यत्-यत् ११. ५, १५; १२.
१, ४६; ३, ३; १३; २२;
३६; २०. ११८, २.

यत्र १. ४, ३; ८, ४, २५, १।
२. १, १, ५; २५, ५।
३. १३, ७; २८, १०; ५।
६; २६, ३; ४. ११, ८;
१६, २; ३७, ४; ५; ५. ५।
१७, ४; १८, १६, ६; ८;
६. २२, २; ६८, ३; १२०,
३; १२४, २; १४२, २;
७. ५, १; १८, २; ८. २,
२५; ३, ५; ६. ५, ५; ६।
६, २; ३; २२; १०. ७,
४; ५; ६; १०; ११;
१४; १५; १६; २२; २४;
२६; ८, १६; ३३; ३४;
३६; ६, ५; १०, १२; १७।
१२. ७, १२; १३. ३, १८;
१४. २, ३६; १८. १, ११,
५०; २, ५५; ५७। ३,
६; ४, ३; १०; १५; १६.
३६, ८; ४३, १; २; ३।
४; ५; ६; ७; ८; २०. २२,
५; २५, ६; ६२, २; ६४,
७; १०७, १५; १२६, १.

यत्र २०. १२६, ७.

यत्र-कामम् ६. ३, २४.

यत्र-यत्र १०. १, २६; १६. ३,
१.

यथा १. २, ४; ३, ६; ११, ६;
१६, ४; २२, २; २६, ३;
५; ६; ३४, ५; २. ३,
१; १५, १; २; ३; ४; ५।

६; २८, ४; ५; ३०, १;
३; ५; ३१, ३; ३६, ४;
६. २, ६; ५, ५; ६, ३;
६; ८, २; ६, १; ११, ३।
१५, २; १७, ८; २०, ६।
२५, ५; ४. १, ७; ४, ३।
५, ५; ८, ६; १३, ४; २३,
२; ३६, १; ३; ५। ७;
५. ८, ७; ८; १४, ४; २१,
४; ५; ६; २५, २; २६,
१; २; ३। ६. ८, १;
२; ३; ६, २; १४, २।
१५, ३; १७, १; २; ३; ४;
१८, २; २१, २; २६, ३।
३३, २; ४२, १; ३; ४३,
३; ४६, ३; ५८, २।
६४, १; ३; ६६, २; ७०,
१; २; ३; ७२, १;
२; ७४, ३; ८१, ४; ८५,
३; ६७, १; १०२, १।
२; १०५, १; २; ३; १११,
२; ४; १३०, ३; १३८,
५; १३६, ४; ५; १४१,
३; ७. १३, १; ३७, १।
३८, २; ५०, १; ५;
६०, ३; ६४, १; ११३,
१; २; ८. २, १३; ४,
२१; ५, १६; २१; ७,
७; १६; २२; ८, १; ६;
१४; १५; ६. १, ११;
१२; १३; १६; १७; १६;
२, १८; १०. १, ५।
१३; ३२; ३, १३; १४;
१५; १७; १८; १६;
२०; २१; २२; २३;
२४; २५; ६, ३३;
११. ४, १६; ६, २३;

१२. २, २५; ३, ५४;
४, १४; १५; ३४; ५,
६४; १४. १, १८; २०।
४३; ५०; २, ७५; १५.
११, २; ६; ८; १०।
१६. ६, ११; १७. १,
२०; २१; १८. १, १८;
६१; २, ३८; ३६; ४०;
४१; ४२; ४३; ४४; ४५।
५०; ३, २१; ५०; ६७;
७०; ४, ५५; १६. २,
५; ४, ५५; २४, २; ३।
२६, ३; ३१, ६; ४६, ७;
४६, १०; ५०, ४; ६;
५७, १; २०. १७, १;
२२, ३; ४; २५, १; २;
२७, १; ३०, २; ३२, २;
४८, २; ५१, १; ७०, २;
७३, ५; ७६, १; ६२, १;
६४, ४; ६५, १; ६६, ८;
१२५, १; २; १३३, १।
२; ३; ४; ५; ६; १३६,
८.

यथा ६. १४, ३; १३. २,
१७; १८; २०. ४७, १४;
१५, ८५, २; १३६, ४.

यथा २०. १३६, ६; ७.

यथा-अङ्गम् ६. १०१, १.

यथा-इव २०. १२३, ६.

यथा-ओक्लम् १२. १, ४५.

यथा-नाम ४. ३८, ७.

यथा-पुरु ६. ५, ४; १८. ४,
५२.

यथा-यलम् ३. २०, ६.

यथा-भागम् ७. १०६, २.

(४, ६६८)

युथा-यथम्-यम्.

युथा-यथम् १०. न, ३३; ६,
४.

युथा-लोकम् ११. ६, २६.

युथा-वृक्षम् ३. १३, ४; ७.
१०४, १, १८. ३, ५६.

युथा-स्थाम् ७. ६७, १.

युदा ३. १३, ६; ६. १११, १;
३, न. ७, २१; ६. १०,
१५; ११. ४, ५; १४; १६;
१७, न, ११; १८, १२.
३, २, ४, २६; ३०;
१४. २, २०; १८. २, ४;
५; २०. १६, ६; ७३, ४;
न०, ५; ६१, १०; ११४,
२; १२३, १.

युदा २०. १३६, २.

यदि २०. १३२, १०.

यदि १. १६, ४^३, २५, २^३,
३^३, २. १४, ५^३, ३. ११,
१, २^३, ४. ६, १०^३; १२,
७^३, २७, ६^३; ५. २, ४;
न, ६; १४, ६^३, ७^३; १६,
१, २, ३; ४; ५; ६; ७; न;
६; १०; ११; ६. १११, २;
११३, १, ३; ११५, २^३;
११६, ३^३; ११६, २; १२४,
२^३; ७. ३८, ५^३; ६६,
१^३, ७२, १^३; न. ४, १४;
१५^३; ६. न, न, १०. १,
२४; ३०, ३, ६; ११. १०,
१७; १२. २, ४^३; ३, ३०;
४, ५^३; १३. २, ६; ७;
४, ४५; १४. २, ५६;
६०; १८. १, २१; ३२;
२, ७; ३५; २०. २६, २;
३६, ४; ५३, ३; ५७, १३;६६, ६; ७^३; १०७, ७.

युद्धो दिति १८. २, ५.

युद्धो २०. १४१, ४.

यन् १८. १, ३६.

यन्तः ४. १४, ४; ५. ७, ४;
२०. १००, १.

यन्तम् ६. १२२, ४; १८. २, ६.

यन्तवे २०. ६१, ६; ६२, १०.

यन्ता २०. ७२, २; ७५, १.

यन्ता ६. न१, १.

यन्ति १. १७, १; २. २, ३;
४. ३, १; ३३, ५; ५. २१,
न, ६. ७, १; ६८, ३; ७.
४०, १; न. ६, १४; १०
(१), ५; ६; ११; १३; १०.
२, ६; ७, ५; ६, ४; १२.
२, २५; ३, २५; १३. १,
३५; ३, १७; १४. १, ३४;
२, १०; १८. ४, २, ३;
७; २०. १८, ३.

यन्ति २०. १३६, ३.

यन्ति १. ४, १; २. १, ३; ४.
२१, ४; ३४, २; ५. ४,
२; न. २, २४; न, १२;
६, ६^३; ६. ५, २६; १०.
७, ५; १२. ३, २६; ४,
५२; १३. १, १३; २,
१७; १५. १७, न; १८.
३, १७; २०. ६, ४; २५,
२; ४७, १४, ६६, ३.

यन्तु न. ४, ५.

यन्तु १. ७, ५; २. २४, १; २;
३; ४; ५; ६; ७; न; २६,
१; ३५, ५; ३. ४, ३;
११, ५; ७; १७, ५; १६,
६; ४. १४, ५; १५, १; न;३१, १; ३४, ५; ६; ७;
३७, ३; ५. ३, २; न, १;
११, ६; २०, ३; ७; ६.
३२, ३; ७. ११४, २; न.
३, १४; ५, ६; ७, ७; १०;
न, १३^३; २१; ६. २, ४;
७; ५, १५; १०. ३, ६;
११. २, ११; ६, ११; १६;
१२. ३, २०; ४६; १३.
१, ३२; १६. १३, ६; ५८,
५.

यम् २०. १३६, ११; १३.

यम् १. २६, १; २. ११, ३;
१६, १; २; ३; ४; ५;
२०, १; २; ३; ४; ५;
२१, १; २; ३; ४; ५;
२२, १; २; ३; ४; ५;
२३, १; २; ३; ४; ५;
३. ५, ३; १५, ४; १६,
२^३, २१, ३; ४^३; ५;
२७, १; २; ३; ४; ५; ६;
४. २, ३; २३, १; २४,
५; ३०, ३; ३५, १; २^३;
४; ३६, ७; न; ५. ७, २;
५; न, ५; ६. २, २; २६,
३^३; ६५, २; न१, ३;
१०६, २; ११८, ३; १२३,
१; १३२, १; २; ३; ४;
५; ७. ३१, १; न१, ५;
६^३; न. १, ११; ५, ११; ६.
५, १६^३; १०. ५, १५; १६;
१७; १८; १६; २०; २१; २५;
२६; २७; २८; २६; ३०;
३१; ३२; ३३; ३४; ३५;
३६, ६, ६; ७; न; ६;
१०; ११; १२; १३; १४;
१५; १६; १७; २२; २३;

२४, २५, २६, २७, २८;
 ३२, ७, २३, ६, २६; ११.
 १, ७; ६, ७; १०, १२;
 १३; १२. १, २३, २४;
 २, ३; ३७; ३, ४२; ५७;
 १२; १३. १, २१; ५१२;
 २, ४७; ६, ७; ३६; १४.
 १, ३; १३; ३७; २,
 २२, ४२; १६. १, ५;
 ६, ४; ७, ५; १८. २,
 १०; ३, ६; ५४; ४,
 ४२, १६. २०, १; २७,
 ६; ३२, ६; ३५, १, २; ३८,
 १, ३६, ६४; २०. ६, ४;
 २६, ३; ३०, २; ३३, १;
 ३४, ५; ८; ४६, ७;
 ५५, ३; ६७, ७; ७३, ४;
 ७६, ८; ८६, ८; ११७,
 १; १२६, ४; १५.

यम १८. १, ५६.

यम १. १४, २; १८. १, १५;
 ६०, २; १२; १५; १८.

यमः ४. ३४, ४; ५. २४, १४;
 ६. ४६, १; ६३, २; ८४,
 ३; ६३, १; ८. १० (४),
 ६; ६. ७, १; २०; १२.
 ३, ८; १५. १४, १३;
 १६. ४, ४; १८. १, ४७;
 ५०; ५५; २. ३२; ३७;
 ३, ४१; ४६; ५२; ६३;
 ६६; ४, २६; ४३; ५४;
 १६. २०, १.

यमः ४. ३७, ७२.

यमत् ६. ३५, ३; ५६, १;
 १०. ४, ८; २०. ५३; २;
 ५७, १२.

यमत् २०. ७८, २.

यम-दूताः ८. ८, ११.

यम-दूतान् ८. २, ११.

यमन् ७. ११७, १; २०.
 १४३, ५.

यमम् २०. ६६, १.

यमम् ४. ४०, २; ६. १०,
 २८; १४. २, ६६; १८.
 १, ४६; ५४; २, १; ३,
 १३; ६२.

यमय ६. १३७, २.

यमराज-स्तु १८. २, २५.

यम-राज्ञः १२. २, ८; १८.
 २, ४६.

यम-राज्ये १२. १, १, ४,
 ३६.

यम-राज्येषु १२. ३, ३.

यम-श्रेष्ठान् ११. ६, ११.

यम-सद्वनात् १२. ५, ६३.

यमस्य २. १२, ७; ३. २६,
 १; ५. ५, ८; ३०, ६;
 ६. २६, ३; ४६, २; ६६,
 २; ११०, २; ११७, १;
 ११८, २; ७. ५३, १;
 ११२, २; ८. १, ६; ७,
 २८; ६, २३; १०. ५,
 १२; १२. २, ५४; १६. ५,
 १; ४; ५; ६; ७; ८; १८.
 १, ८; १०; ३४; ५३; २,
 १३; २७; ५६; ३, ६६;
 ७०; ४, ३१; ३२; १६.
 ५६, १; ५७, ३; २०.
 २५, ५.

यमाः ६. ६, १६; १०. ८, ५.

यमाय ५. ३०, १२; ६. २८,

३; ६३, २; ८४, ३;
 १३३, २; १२. ३, ५६;
 १८. २, १२; २; ३; ४,
 ५५; ७४.

यमि १८. १, १३; १६.

यमिनि ३. २८, ४.

यमिनी ३. २८, १; ५; ६.

यमीः १८. १, १०.

यमे ३. १०, १; ४. ३४, ३;
 १८. २, ६; ३२.

यमे हवेति यमे-हव १८. १,
 ३८.

यमेत् १८. २, १.

यमेन ६. ३२, २; ६३, ३;
 ८४, ४; १८. २, ११;
 २१, ३, ५८.

यम्यम् १८. १, ८.

ययस्तु ८. ४, २.

यया ३. १८, १२; १०. ८,
 १०; १०, ४३; ११. ३,
 ३६; ४६; १०, १५; १४.
 २, ६; १७. १, १३; १६.
 ६, ३; २०. ३६, १०.

ययार्थ १८. १, ४३; ४, ४७.

ययाम् ६. ३, ३.

ययुः ४. २४, २; १८. १, ६१;
 २, १६.

ययोः ४. २५, २३; २६, ५;
 २८, १; २; ५; २६, ७;
 ६. १३८, ४; ७. २५, १.

ययु ६. १४२, १.

यव-आशिरम् २०. २४, ७;
 ६५, १.

यवः ८. ७, २०; ६. १, २२;

२, १३३; ११. ६, १५;
 २०. १२७, १०.
 युवन् ३. १७, २.
 यवम् ६. ३०, १; ६१, १;
 १४०, २; १४२, २; २०.
 १७, ७; १२५, २.
 यवम्-इव २०. १६, ३.
 यव-मत् २०. ७, ३; ८६, ७.
 यव-मन्तः २०. १२५, २.
 यवय ६. ४, ३; २०. ८३, १.
 यवय १. २, ३; २०, ३२;
 २१, ४; ४. १६, ७; ५.
 २२, ६; १२. १, ३२; ५०;
 २०. ६६, ८.
 यवयत् ६. ४, २.
 यवयत्तम् १. २०, २.
 यवयन्तु ६. २, १३.
 यवयाः ७. ६५, १.
 यव-यावानः ६. २, १३.
 यवसा-इव १८. १, २२.
 यवस्य २. ८, ३; २०. २१, २.
 यवाः ६. ६(१), १४.
 यवान् ६. ५०, १; २.
 यवानः २०. १३०, ७.
 यविष्ठ ५. २६, ४; ८. ३, ८.
 यविष्ठः २०. १३५, ८.
 यविष्ठाः १८. ४, ६१.
 यविष्ठ्य १६. ६४, ३.
 यवे ११. ४, १३.
 यवेन ७. ५०, ७; २०. १७,
 १०; ८६, १०; ६४, १०.
 युव्यामिः २०. १००, २.
 यशः ३. २२, १; ६. ३६,
 १; ६६, १; ३; ८. ४,
 ११; ६. ६(३), ५; १०.
 ३, १८; १६, २०; २१२;

२२३, २३; २४; ८, ६;
 ११. ५, २५; ८, २०;
 १२. ५, ८; १३. ५, १;
 ६, १; १४. २, ५६;
 १५. २, ८; १४३; २०२;
 २८३; १६. ३७, १; ५८,
 ३; २०. ६, ६.
 यशः-तमः ६. ३६, ३; ५८,
 ३.
 यशः-भिः ६. ३६, २.
 यशसः २. ६, २; ६. ३६,
 २; ५८, २.
 यशसम् ६. ३६, २; ५८,
 ११; १६. ५८, ३; २०.
 ११८, १.
 यशसा १०. २, ३३; ३, १७;
 १८; १६; २०; २१; २२;
 २३; २४; २५; ६, २७;
 १२. ५, २; १३. ४, ४६-
 ५६; १६. ५६, ६.
 यशसे ३. २१, ५.
 यशस्यवः ४. ११, ६.
 यशस्वतः २०. ७१, १२.
 यशस्वती १८. १, २०.
 यशस्वतीः ६. ५८, २.
 यशस्वान् ६. ५८, २.
 यशस्विनः १६. ५६, ६.
 यशस्विनम् ६. ३६, १.
 यशाः ६. ३६, ३४; ५८, ३४;
 १३. १, २८३.
 यस्म १६. ४८, १.
 यस्मात् ४. ३५, ४३; ६; ६.
 ७१, २; ६. ३, २०; १०.
 ७, २०२; ३१; ११. ३,
 ३; १२. ३, ४५; १३.
 ३, २३; १६. ६, २; १६.

७२, १; २०. ३४, ६; १७;
 यस्मिन् ४. २४, ५२; ३५,
 ६; ५. २, ६; १७, १२;
 १३; १४; १५; १६; १७;
 ८. ६, ३२; ६. ६(२),
 १३; ६, ११; १४; २१;
 १०, १८; १०. ७, ७;
 १२२, १४; ८, १६; ३७;
 ३८, ११. २, ११; ३,
 २०; ४, १; १८; १२. २,
 १७२, ४, १४; २४; १३.
 ३, १; ५; ६. १०; १४.
 २, ८; १८. १, ३५; ३६;
 २०, ४४, २; ६६, ७;
 ८६, ६; ६२, १६; १०७,
 ६; ११०, २.
 यस्मिन् २०. ३४, १२.
 यस्मै ४. २४, ३; ४३; ३५,
 ५; ५. ३०, १७; ६.
 ११८, ३; ८. १० (६),
 १०. ६, ३४; ७, ३६३;
 ८, २६; १६. ३२, २; ८;
 ३६, २; ३; ४; २०.
 ३२६, ३.
 यस्य १. ५, ३; २०, ४; २.
 १३, ५; २४, १; २; ३;
 ४; ५; ६; ७; ८; ४. २,
 १२, २२; ३; ४३; ५३;
 ६, ४; ११, ५; २३, ७;
 २४, ३; ४; ५; ६; ३५;
 ५; ६. ५, ३; ३३, १;
 ७६. २; ११८, ३; १३३,
 १; ७. १४, २; २५, २;
 २६, ३; ४०, १२; ७६,
 ५; ६. ६(१), १२; २;
 ६(२), ८; ६; ८; ३; ६;
 १०. ६, ३१; ७, १३;

१५; १६; १८; १९; २०; २३; २७; ३२; ३३; ३४; ८; १; ११. २, २२; ३, २१; ४, १; १३. १, १७; ३, १६; २४; १५. १०, १; ११, १; १२, १; १३, १; ३; ५; ७; ६; ११; १६. ४, ४; ५६, ५; २०. १, २; १५, १; ३; १७, ६; ३१, ४; ३४, १; ७; १५; ३६, ५; ४३, ३; ४५, २; ६१, ५; ६२, ६; ६५, ३; ६६, २; ७६, १; ६२, ६; १७; १०५, ५; १११, ३; १२६, १२; १६; १७; १२७, २.

यस्याः ६. ६२, २; ८४, १; ७. ६, ४; २७, १; ८. ६, ८; ९. ३, १०; १०. २, ३, २८; ३०; ११. १२, २७; १२. १, २; ४; ८; ४२; ४३; १६. ४७, २; २०. १२६, २३.

यस्याम् १२. १, ३; ४; ५; ६; १०; १३; २७; ३७; ३८; ३९; ४१; ४२; ५१; ५२; ३, ६; १४. २, ३८; १८. २, ४८.

यह ५. १२, ३.

यहः १८. १, १८.

यहः—इव १३. २, ४६.

या १. १५, २; १६, ३; १८, १; २०, १; २८, ३; २. ३, २; ६, १; २६, ३; ३१, १; ३५, १; ३. २, ६; १०, २; ४; १८, ४;

२४, ६; २५, १; ३; ४. १७, ३; ३८, ३; ५. ३, ६; ७, ६; ६. ४, ३; २२, ३; ३८, १; २; ३; ४; ४४, २; ७३, २; ७. ४२, १; ४६, १; २; ३; ११५, २; ८. ३, १२; ४, १७; ६, ११; १४; ६. १, ८; ३, २१; ५, २७; ६, १६; १०. ५, ४८; ८, १०; ६, १६; २१; १०, २६; ११. ४, ६; ७, २५; ८, ४; ७; १७; २६; ३०; ६, २; १२. १, २; ४; ८; ३७; ३, ५४; ४, ४४; ४६; ४८; १४. २, ७; १६; २२; ३८; ४८; ५०; ७४; १७. १, १३; १८. १, ४३; २, ३१; ४, ४७; १६. ३, ३; ४, १; ६, ३; ४०, ४; ५५, १; २०. २०, २; २५, ३; ५७, ५; ८७, ५; ८८, ३; ६५, ४.

याः १. ४, २; ६, ४; १७, १; २२, ३; २६, २; ३३, १; २; ३; ४; २. २, ४; ५; १०, ४; ३. २४, ३; ४. ५, ३; ८, ५; २१, ५; ३२, २; ३८, ४; ५; ५. १, ८; १३, ६; १८, १२; १६, ११; २१, ६; ६. २१, १; २४, ३; २५, १; २; ३; ६०, २; ६६, १; ६६, २; ७. ३५, २; ४८, २; ४६, १; ७६, २; ११०, १; ११५, ४; ८. २, २७; ५, ६; ७, १; ४; ८; १०; २;

११; १७; १८; २३; २४; ६. २, २५; ४, ६; ५, १६; ६ (१), ५; ८, १३; १४; १५; १६; १७; १८; १०. ६, १६; २०; २३; ११. २, ३; ४, १७; ६, ६; २२; ८, २१; २७; २८; ३०; ६, १; १२. १, २; ३१; ५६; ३, ४१; ४, ५; ४३; २३. १, २; ६; १०; ३, १; १४. १, ४५; २, ७; २६; ४६; १७. १, २८; १८. २, ८; ६; २०; ३, ६६; ४, २६; ४३; १६. २, २; ८, ६; १३, ११; ३४, २; ७; २०. ३६, ११; ५५, २; १०४, १; १०६, १; १३६, १.

याचति ६. ६(१), ४; ६(५), ८.

याचतुभ्यः १२. ४, १; १. १२.

याचन्ति १२. ४, २६.

याचमानः ६. ११८, १; ११६, ३.

याचमानस्य ७. ५७, १.

याचयते १२. ४, ३८.

याचामि ५. ७, ६.

याचामि १. ५, ४; १५. १३, १३.

याचितः १२. ४, ४८; ५०.

याचिताम् १२. ४, १३; १६; २५; २६.

याचितुम् १२. ४, ३१.

याचैयुः १२. ४, २२; ४८.

याच्येय १२. ४, ३०.

यात् १२. १, ५७; २०. १६, १०; १३५, २.

यातु १. १५, २; द. ७३, ३;
१८. ३, १४; ४; ६२;
६३३, २०. १४३, ६.

यातुः ७. ८१, १; १३. २,
११; १४. १, २३.

यातुम् ३०. ८, ६; द. ६४, २;
१०. ८, ८; २०. १२५,
३; १४१, १.

यातुम् ५. २६, १२, ११. २,
१; २०. १४१, १; ४;
१४३, ४; ५.

यातुयन्ताम् ५. २६, ६; ७;
८; ६.

यातुर्वः २. २४, १; २; ३;
४; ५; ६; ७; ८; १०. ७,
१८; १३. ४, २७.

यातुवे १२. १, ४७; १३. २,
८; २०. ६३, ६.

याता २०. ६२, १६; १०५, ४.

यातम् १८. १, ३३.

याति २०. १३१, ३.

याति १. ३३, २; ३. २१,
३; १३. १, २३.

याति ३. ३१, ५; ४. ३४,
३; द. ६०, १; १०. ८,
१८; १३. २, २४; ३८;
१, १३; १४; २०. ४७,
२१; ८७, १; १४२, ३.

यातु ३. ८, १; द. ३५, १;
४०, २; ७३, १२; ७.
५८, १; १८. २, १०;
२०. ७७, १; ६४, १.

यातुचातनम् १. १६, २.

यातुजस्मनम् ४. ६, ३.

यातुधान ८. ४, १५; १६.

यातुधानः ४. ३८, ६; ८. ३,

८; ११; १४; १५; १७; ४,
१५.

यातुधानक्षयणम् ६. ३२,
१.

यातुधानम् १. ७; १; ४.
३, ४; २०, ८; ८. ३, ५;
४, २४.

यातुधानस्य १. ८, ३; ८.
३, ४; १०.

यातुधानाः १. ७; ३; ७.
७०, २; ८. ३, ६; १६;
१६. ४६, २.

यातुधानाः ६. ३२, २.

यातुधानान् १. ७, २; ५;
६; ७; ८, १; २८, १; २;
४. १८, ८; २०, ६; ५.
१४, २; २६, ११; ८. ३,
२; ३; ६; ७; १२; १३;
१८; २१; १०. ५, ४८;
४६.

यातुधानीः १. २८, ४; ४.
१८, ७.

यातुधानेभ्यः ६. १३, ३.

यातुधान्यः १. २८, २; ४;
२. १४, ३; ४. ६, ६;
२०, ६; १६. ३६, २;
३६, १; ५; ६; ७; ८;
४७, ७.

यातुमत्भ्यः ८. ४, २०; २५.

यातुमान् १. ७, ४.

यातुमावत् ८. ४, २३.

यातुहा १. १६, १.

यातुन् ४. ६, ६.

यातुनाम् ५. २६, ८; ६; ८.
४, २६.

यात्याः १४. १, १२.

याथः २०. १४१, २.

यात्रम् २०. ३७, ८.

यान् २. ३५, १; २; ३. ६,
१; ३; ५; ११, ५; ७;
२३, ३; ५. ८, ७; ७.
६७, ३; ८. ८, १६; १२.
२, ३८; ५०; ५२; १७.
१, ७; १८. १, ४७; ३,
६८; ४, २५.

यानान् ५. १२, २.

यानि २. ५, ५; ६, १; ३. २,
२; २३, ४; ४. ७, ७;
५. ३, ४; ६, २; १६,
१३; ८. ६, ३; ६. ३,
६; ६(१); १५; १०. ७,
४०; ६, २; २४; ११.
२, ५; १४. २, ७; १६.
८, १; ६, ५; १३; २०,
२; ३१, ४; ३७, १;
४८, १; ४६, ३; ६४,
३.

यान्ति १६. ४३, १; २; ३;
४; ५; ६; ७; ८.

यामिः १. ४, २; ४. २१, ३;
५. ४; ५; ७. ४८, २;
६. २; २५; १३. १, ६;
१४. १, ३७; १८. २, ६;
२०. १२२, १.

याम्याम् २. ३२, ६; ४. २५,
२; २६, ६; ७. ५४; १;
११०, २; १०. २, ३; ८,
२०; ११. ३, ३३; ३४;
४४-४८; ६, ४; १६. ११,
१.

याम् १. १३, ४; ३. १०, २;

यामन्-युङ्गि.

(४, ६७३)

३; ४. ४, १; २७, ४^१;
 १८, ५^१; १६, ६; ५.
 १७, ४; १८, ६; १६,
 १२; ३१, १^१; २^१; ४^२;
 ५^१; ६^१; ७^१; ८^१; ९^१;
 ६. ७८, १; ६०, १; १०८,
 ३^१; १३३, ५; १३७, १;
 ७. १५, १; ८. २, १६;
 ४, ६; ६, ८; ६. १, ६;
 २, ५; १०. १, १; ४^१;
 १८^१; १०. १, २४; ८,
 ७; १०, ६; २७; १२. १,
 ७; ८; १०^१; ५१; ६०;
 ४, १६; ४५; १४. २,
 ६५; १८. २, ३०; १६.
 ४, १; २; २०. ११७,
 १.

यामन् २०. ६७, ४.

यामनि १८. ३, ६७; २०.
७६, १.

यामन्-यामन् ४. २३, १.

यामम् १०. २, ६.

यामम् ६. ११६, १.

यामि २०. ११८, ६.

यामि ४. ३७, ७; ८. ३, १.
१३. २, ३७; १६. ३, ४;
२०. ६, ३; ४६, ६.

यामुनम् ४. ६, १०.

यामेषु ६. २१, २.

यावत् ३. १५, ३; २२, ४;
 ५^१; ४. ६, २; ५. १६,
 ४; ३२, ५; ६. ७३, ३;
 ३; ७५, ३; ८. ६, ६; ६.
 २, २०^१; ६(४), २; ४;
 ६; ८; १०. १०, ३४;

११. ३, २५; १२. १, ३३;
४, २७.यावत् १३. २, ४२; २०.
८२, १.

यावत्-अङ्गीनम् ६. ७२, ३.

यावत्ती इति ४. ६, २; ६. २,
२०.यावत्ती: ८. ७, १३; ६. २;
२१^१; २२^१; १४. २,
४६; ५१.यावत्तीनाम् ८. ७, २५^१.

यावत्तीषु ८. ७, २६.

यावत्-अष्टाभिः ७. ३१, १.

यावत्-सर्वन्तु १८. ४, ३७.

यावन्तः ६. ११६, ३; ७. १३,
 २; १२. ३, ३६; ४०; ५०;
 १४. २, ४६; १६. ५८,
 ६.

यावन्तौ १२. ३, १.

यावान् ४. ११, ८.

यासुत् २०. १२, ७.

यासाम् १. ३३, २; ३. ३.
 २३, ६; ४. ३८, ५; ६.
 ६, ३; ८. ७, २; १६;
 १२. ३, ३१.

यासि १३. २, ३; २०. १४२,
३.यासि १३. २, २१; ३८; १६.
५६, १.यासु १. ३३, १^१; ४. २, ६;
८. ७, १८.

यास्यन् १३. २, २८.

याहि ७. ११७, १; २०. १२,
४.याहि २. ५, १; ३४, ५; ५.
८, २; ११, ८; १३, ३;

२०, १२; ३६, १२; ६.
 ६२, १; ७. ७२, २; ७३,
 १; ६७, १; ८, ३, ३;
 १०. १, १५; १२. ३, १६;
 ५३; १३. २, ५; १८. १,
 ६; ३, ४७; ४८; ४, २;
 ३; ८; १६. ५६, ६; २०.
 ३, १; ४, १; १३, ४;
 २३, १; ८; ३६, ११; ३८,
 १; ४७, ७; ८४, १; २;
 ३; ८६, १; ६४, २; ५;
 १०३, २.

युक्तः ५. १७, १५, २६, १; ६.

७, २४; १३. ३, १६.

युक्त-ग्रावा ६. ६(२), १०.

युक्त-ग्राव्याः २०. ३४, ६.

युक्तम् ८. ६, ७; १८. १, १५.

युक्ता ६. ६, ६.

युक्ताः ५. २६, ४; ५; ६. ६,
 १४; १६; १०. ५, ६; ८,
 ८; १८. ४, १.

युक्त्वा ६. ३७, १; २०. १२,
७.युक्त्व १८. १, २५; २०. ५६,
३.

युगस्य १४. १, ४०; ४१.

युगा ३. १७, १; २.

युगानि १८. १, ११; २०.
१०७, १५.

युगे इति ८. २, २१.

युगे-युगे २०. ६७, २.

युङ्क्ते १८. १, ६.

युङ्गि ८. ३, ११; ११. १,
 ६.

(४, ६७४)

युजः—युष्माकम्.

युजः ६. ३३, १, ११. ८, ११.

युजम् २०. ७०, ११; ८६, ४.

युजा ४ २३, ५; ३१, ४; ३२,

१, ३; ५. २१, ११; ७.

५०, ४; १३. १, ३; २०.

३, ३; १८, ६; ३८, ३;

४७, ६; ७०, २०; १३७,

६.

युजे ६. ५४, १; २; १७. ३,

३६; २०. १२, ३.

युज्यः ५. ११, ६; १०; ६. ५१,

१; ७. २६, ६; २०. ११७,

२.

युज्यताम् १४. १, ६४.

युज्यताम् २. १२, २.

युज्यते ८. ६, ३; १०. ८,

१०२;

युज्यते १०. २, ३.

युज्यन्ते १२. १, ३८.

युज्यमानः ६. ६२. १; ६. ७.

२४; १८. १, ३६.

युज्या २०. १०४, ४.

युज्याय २०. ३७, ६.

युज्यन्ति २०. १२८, १६.

युज्यन्ति २०. २६, ४; ५; ४७,

१०; ११; ६६, ६; १०;

१००; ३.

युज्यन्ति ३. १७, १; ६. ६, २;

१३. ३, १८.

युज्यन्तु ३. ३, १; ६. ६२, १.

युत-वैपसः २०. २१, ४.

युताः १३. ४, ६.

युताम् ११. १०, १६.

युव-सु १६. १३, ७.

युज्याय ४. ३१, ४.

युज्यः १०. १०, २४; १६.

१३, ३; ४.

युज्यम् ६. ६६, १; १०३, ३;

२०. २१, ७.

युधा १. २४, १; १०. ६, १६;

२०. ११, ७; २१, ७; ४६,

१; ८७, ३; ११४, १.

युधाम् ७. ८१, १.

युधि २०. ७०, १६.

युधिगमः २०. १२८, १०;

११.

युधे ४. २४, ७; २०. ३५,

१३.

युधेन्यानि ५. २, ५; २०.

१०७, ८.

युध्यत २०. १३७, ८.

युध्यन्ते १८. २, १७.

युध्यन्ते १२. १, ४१.

युध्यमानाः २०. ३४, ६.

युनक्त ३. १७, २.

युनक्ति ३. ३१, ५.

युनक्तु ५, २६, २.

युनक्तु ५. २६, १; ३; ७; ८;

६२; १०; ११.

युनक्ति १६. ५६, १.

युनजिम् ४. २२, ५; ७. ७८,

२; १६. २५, १.

युनजिम् ३. ३०, ६; १०. ५,

१; २; ३; ४; ५; १८. २,

५६; २०. ३७, ६; ८६,

१.

युपितम् ४. २५, २.

युयुले ८. ६, ७.

युयुतम् २०. १३६, १.

युयुत्सति ११. १०, २६.

ययोज ६. १३३, ११.

युयोतु ७. ६२, १; २०. १२५,

७.

युयोपिम ६. ५१, ३.

युयोम ७. ६८, १.

युवतयः १४. २, २६; ६१.

युवति २०. ८६, ५.

युवतिः १६. ४६, १; ८.

युवतिम् १८. ३, ३.

युवती इति १०. ७, ६; ४२.

युवद्विक् २०. १४३, ७.

युषम् १. २०, २; ३. १, ३;

११, ६; ४. २५, ३; ७.

४२, २; ५२, १; ८. ४,

५; १४. १, ३१; २, ४२;

२०. १७, १२; ८७, ७;

१२५, ४; १३६, १; १४३,

२; ७.

युवसे ६. ६३, ४.

युवा ६. २. ३; १०. ४, १५;

१३. १, ११; २०. १४,

२; ६२, २.

युवानम् ६. १, २; ७. २, १;

३२, १; ६. ४, २४; १०,

६; १०. ८, ४४; ११. ५,

१८.

युवोः ७. ५८, १; २०. १४३,

२.

युष्महि ७. ५२, २.

युष्माकम् ८. ६, २२.

युष्मान् १८. ४, ८६.

युष्मान् २०. १३५, १०.

युथा २०. ५६, ४.

युथा-इव १८. ३, २३; २०.
७०, १४.युये ५. २०, ३; ६. ६, १७;
१३. १, ४१.

युयेषु २०. १२६, १५.

युथ्या २०. ७३, ५.

युने २०. २१, १०.

यूपः १२. १, ३८.

यूपान् १३. १, ४७.

यूपे ६. ६(२), ५.

युयम् १. २६, ३; ३०, १; ३.
१, २; १६, ७; ४. २१,
६; २७, ६; ३७, १२; ५.
२१, ११; ६. ११४, १;
११५, १; ११. १, १२; ६,
२; २६; १३. १, ३; १८.
४, १०; ८६; १६. ११,
५; ४०, २; २०. १२, ६;
१७, १२; ३७, ११; ८७,
७.

युयाः ८. ४, १५.

युषम् ६. १२३, ४.

ये १. १, १; ६, १४; ७, ३;
१५, ३; ४; १६, १; १६,
२; ३०, २; ३१, ३१,
३; २. १२, २; २६, १;
३८, १; ३; ३१, ५;
३३, १; ५; ३४, ३; ४;
३५, १; ३. ५, ६; ७;
६, १; ३; ५; ८, ५; १०,
६; १५, २; १६, ३; २१,
१; ७; १०; २६, १;

३७

२; ३; ४; ५; ६; ४,
८; ६, ७; ७, ७; ११,
१२; १४, ४; १६, ६;
२२, ६; २७, २; ३;
४; ५; ३४, ३; ४;
३५, ७; ३६, ५; ६;
४०, १; २; ३; ४; ५; ६;
७; ८; ५. ३, १०; ६,
२; ६; १७, ६; ७; १७;
१८, १०; ११; १६, २;
३; २१, ७; ८; २३,
५; १२; ३०, १२; ६.
३, २; १३, १; ४१, ३;
४७, ३; ५०, ३; ५५,
१; ६३, ३; ६६, १; २;
७६, १; ८०, २; ८४,
४; ६४, १; १०३, ३;
१०४, १; २; ११७, ३;
१२१, १; ७. १, १;
१२, २; ३४, १; ५५, १;
६२, १; ८०, ४; ८३, ४;
६७, ४; ८. १, ८; ११;
२, २७; ४, ६; १८;
२३; ५, ७; ६, १०;
११; १२; १३; १४;
१५; १६; २३; २४;
८, १०; ६; २१; ६. १,
६; २, ४; ५; १०; ११;
१६; १७; १८; ४, ८;
५, २; १४; ३०; ६(१),
१४; ८, १६; ६, ३; १६;
१०, १; १८; २७; १०.
१, ६; २, ४; ३, ३;
१६; ४, ६; २३;
५, २१; ७, १७; २१;
२५; ३८; ८, ४; ६; १७;

३५; ४१; ६, ६; ७;
६. १२; २०; २२;
२३; १०, ५; ३०; ३१;
३२; ११. १, ६; ११;
३, २; ५, २१; ६, ८;
१२; २२; ७, ११;
१५; २६; २७; ८, १०;
१३; २४; २५; ६, १;
१६; १७; २२; १०,
२; ८; १४, २३;
२४; १२. १, ३७; ४७;
४६; ५०; ५६; ५७;
३, २६; २७; ५५; ५१;
३, ६; ४०; ४२; ५१;
४, ११, ५१; ५२; १३.
१, १८; २८; ३५; १६.
१, ४६; २, ६; १०;
११; ४६; ५१; ७३;
१५. १३, २; ४; ६; ८;
१०; १७. १, ८; १८.
१, ६; ४४; ४५; ४६;
४७; २, ११; १५; १६;
१७; १८; २८; ३४;
३५; ४७; ४८; ३,
३०; २५; २६; २७;
२८; २९; ३०; ३१; ३२;
३३; ३४; ३५; ४६; ४७;
४८; ५९; ७२; ४,
१६; १७; १८; १९; २०;
२१; २२; २३; २४; २५;
४०; ४४; ५७; ६८;
७५; ७६; ८६; ८७;
१६. ६, ११; १२; १४;
११, ४; ५; १८, १; २;
३; ४; ५; ६; ७; ८;
१०; २७, ११; १२; १३;

(४, ६७६)

ये इति—योनिम्.

३१, ४; ३४, २; ३५, ५;
 ३६, ३; ४२, २; ४७,
 ३; ४८, ५; ४९, ७;
 ५०, २; ५५, ५; ५८,
 ६; ६५, १; ६६, १;
 २०. १५, ४; २१, ११;
 २५, ४; ३०, २; ३७,
 ६; ५५, २; ७०, १३;
 ७१, २; ७६, ५; ७७;
 ६; ८३, २; ८८, २;
 ९४, ६; ७; ११२, ३;
 ११५, ३; १२५, २;
 १२८, ५; १६; १३२,
 १५; १३६, ३; १४३, ६.
 ये इति ३. ७, ४; ४. २६,
 १; ४४; ५२; ६३; ६.
 १३८, ४; ८. ३, २५;
 १०. ६, १३; १४; १६;
 १६; २१.
 येतिरे १८. १, १७.
 येन १. ६, ३; १३, १; २६,
 १; ३२, १; ३. ६, ४;
 १५, ५; ६; २२, ३;
 २३, १; ३०, ४; ४. ११,
 ६; २२, ५; २३, ५;
 ६; २४, ५; ६; ३५,
 २; ५. १६, १४; ६.
 ७, १; २; ३; ३०, २;
 ५७, १; ६८, ३; ८२,
 २; १०१, २; ११७, १;
 १२६, २; ७. १०, १;
 १२, १; ३८, २; ८. १,
 १०; ३, २१; ४, ४; ६.
 २, १७; ३, ६; ५,
 १७; १०, ७; १०. ४,
 ६; ११. १, २; ३७; ३७;

३, ३२; ३५; ३६-४३;
 ८, १६; १०, ११; १३.
 १, २३; २, ६; २१; ३,
 १७२; १४. १, १६; ३०;
 ३६; ४८; ५८; १८.
 १, ५४; ४, ३; ७; ४४;
 १६. ६, ४; २४, १; ३४,
 ५; ४६, ५; २०. ५, ४;
 ६, ३; ४; ३४, ४; ३५,
 ६; ४७, १८; ४६, ६;
 ७; ६१, २; ६३, ७; ८;
 ६; ७०, १८; ८०, १;
 ६४, ६; ११५, २; ११७,
 २; १३६, ४.
 येन-येन ४. २६, ७.
 येभिः ६. ११२, २; ७;
 ५५, १; १०. ८, ३५; १४.
 १, ३४.
 येभ्यः ११. २, २५; १२. १,
 १५; १८. २, १४; १६.
 ५८, ६.
 येमानः २०. १४३, ३.
 येमिरे २०. ६२, ७; ११८, ४.
 येवाषः ५. २३, ८.
 येवाषासः ५. २३, ७.
 येवन्तम् ४. ७, ४.
 येवाम् १. ३०, ४; २. २६,
 १; ३. १६, १; ४; ६.
 १२२, २; ७. ६०, ३; ८.
 ६, १५; ६, ३; १०. २,
 ६; ४, २३; १६. ५६, ४;
 २०. ६४, ७.
 येषु ७. ६०, ३; ८. २, २२.
 यैः ५. २१, ८; ११. ३, ३७;
 ३८; १२. १, ४७; १८.
 ४, २; ७०; १६. ६, ५.

यो इति ११. ४, ६.
 योः १. ६, १; १८. १, ५१;
 १६. १०, १; ११, ६.
 योक्त्रम् ७. ७८, १.
 योक्त्राणि १४. २, १६.
 योक्त्रे ३. ३०, ६.
 योक्त्रे १६. १३, १.
 योगम् १६. ८, २३.
 योगाय १०. ५, १; २; ३; ५;
 ५; ६.
 योगे १६. १३, १; २०. ६६, १.
 योगे-योगे १६. २४, ७; २०.
 २६, १.
 योग्यम् ८. ६, ७.
 योजना २०. १२६, २०.
 योजनानि ४. २६, १.
 योजनाषु ६. ६, ६.
 योद्यन्ति १२. ३, २६.
 योद्ययाः २०. ८७, ४.
 योद्यीः ५. २, ३; २०. १०७,
 ६.
 योना ६. १०, १०; २०.
 १४२, ६.
 योनिः ३. २०, १; ४. ३०, ७;
 ६. १०, १२; १३. १,
 १७; १५. १५, ७.
 योनिम् १. ११, ३; ५; ३;
 २३, २; ५; ४. १, १; ५.
 १, १; २; ६, १; २५, ५;
 ६; ६. ८१, २; ७. ६७, ५;
 ८. ६, २; १२; १०. ५,
 २३; १२. २, ३१; १३.
 २, २५; १८. ३, ५७; ४,
 २८; २०. १६, ४; ३०,
 २; ८८, २; ६६, ११; १२;
 १४.

योनिषु १३. १, १६; २०.
६७, ५.

योनिः ५. २५, १; ७. ३५, ३;
१४. २, ४३.

योनि २. १, ५; ३. १७, २;
५. १२, ६; ११. ५, ७;
१४. १, १६; १८. १,
८; ३, ६६; १६. ५६, १.

योण्याः-इव ६. १२१, ४.

योण्याम् ५. २५, ८.

योपयन्तः १२. २, ३०.

योयुवत् १६. ४७, २.

योषणा १८. १, १६.

योषणे इति ५. १२, ६.

योषतः ६. ५, २७.

योषति २०. ५३, ३; ५७,
१३.

योषा १४. १, ५६; १८. १,
४; १६. ४६, १.

योषा-इव १२. ३, २६.

योषाः १८. ४, ६०.

योषाम् १४. २, ३७; २०.
१०७, १५.

योषितः १. १७, १; ६.
१२२, ५; ११. १, १४;
१७; २७.

योषितम् ६. १०१, १.

यौ ४. २५, १; २८, १२;
२; ३; ४; ५; ६;
२६, १; २; ३; ४;
५; ६; ६. २६, २;
१२७, २; १४०, १; ७.
२५, १; ११०, २; ८.
१, ६; ६, १; ६. १,
७; १०. १, २१; ६, १३;

१४; १७; १६; २१;
१८. २, १२.

यौमि २. २, १.

यौवने १८. ४, ५०.

यौष्ट ३. ३०, ५.

यौष्टम् १४. १, २२.

र

रंस्थाः १४. २, १६.

रंहयः १८. २, ६.

रंघ्या २०. ३०, ४.

रंक्ष २०. १३६, ११.

रक्ष ६. १०७, १; २; ३; ४;
८. ६, २५; १६. ४७,
६.

रक्ष ४. १६, ८; ३८, ६; ७;
८. ३, ६; १६; १२. ३,
११.

रक्षः १. २१, ३; ४. १७, ५;
३७, २; ७. २३, १; ७०,
२; ८. २, १२; ३, ११०;
१३; ४, १; ४; १३; २२;
२३; ६. ४, १७; १०. ५,
४६; ११. १, २१; ३२;
१२. १, ४६; ३, १४; १५;
४३; १३. ४, २५; १४.
१, ५६; १६. ३६, २.

रक्षः-भ्यः ८. ३; २४; ४, २५.

रक्षः-हनम् ४. २३, ३; ८.
३, १.

रक्षः-हा १. २८, १; ८. २,
२८; १६. १३, ८; ३३,
४; ४४, ७; २०. ६६, ११.

रक्षत १. ३०, १.

रक्षत ८. २, २०; ११. १०,
१५.

रक्षतः १०. ६, १२.

रक्षतात् २०. ८८, २.

रक्षतात् २. १३, १.

रक्षताम् ८. १, १२.

रक्षताम् २. ४, ५; ८. १,

१३; २, १५; ६, २०;

६. ३, १६; १०. १, २१;

१६. १६, २; २७, १५.

रक्षति ८. ६, १३; १०. २,

२७; ६, १८; १०, ११;

११. ५, ८; १०; १७; २२;

१२. १, १८; १३. २, ४१.

रक्षतु ८. १, ११; १२.

रक्षतु ३. १७; ४; ४. १०,

७; ६. ७६, १; ८. १, ११;

१२; ५, १६; २२; १०.

३, १३; १४; १५; १२.

३, २४; १८. ३, ६२;

१६. १६, २; १७, १; २;

३; ४; ५; ७; ८; ६;

१०; २७, २; १५; ३४,

१; ३५, २; ४६, १; २; ३;

४; ५; ६; ७.

रक्षथः ४. २५, १.

रक्षथः ४. २५, ३.

रक्षन् ४. ३८, ५; १६. ४६,

२.

रक्षन्तः ८. २, १०.

रक्षन्ति १६. ७, २३; १२. १,

७; १६. ४८, ५.

रक्षन्ति ५. २७, ७; १०. ८,

३६; १३. १, २३.

रक्षन्तु ८. १, ११.

रक्षन्तु ५. १, ४; २८, १०;

८. १, ७; १४, ६. ५, ३८;

११. १, ३३; १४. २, ७;

१६. १६, २३, १७, ६;
 २७, ३; ६; १५.
 रत्नभाणः ३. ३०, ७; १८.
 ४, ७०; २०. १६, १.
 रत्नसा २. ६, १; ६. १११,
 ३.
 रत्नसः २. ३, ६; ४. १६, ३;
 ८. ३, २३; ४, ७; १७;
 १८; १६; २१; ५, ८; १४.
 २, ७.
 रत्नसाम् २. ३, ६.
 रत्नसि १६. ३०, ३.
 रत्नसे १७. १, १६.
 रत्नस्विनीः ६. २, ३, ७.
 ११४, ३.
 रत्नसि १. ३५, ३; २. ४, ४;
 ४. १०, २; २५, ४; ३७,
 १; ५. २६, ११; ६. ३२,
 १; ३४, २; ५२, १; ८१,
 १; ८. ३, ६; १८; २६; ६,
 १३; ७, १४; ६. ७, १७;
 ११. ६, १६; ६, १६; १०,
 १; १२. १, ५०; १४. २,
 २४; ४१; १६. ३४, ६;
 ३६, १; ४; ५.
 रत्नाः ८. ४, १६.
 रत्नाति ३. १२, ८.
 रत्नितः १४. १, ५.
 रत्निता १६. ३४, १.
 रत्निता ३. ३४, १; २; ३; ४;
 ५; ६; १४. १, ४; १६;
 १५, ३.
 रत्निताम् २०. ६१, ६.
 रत्निताम् १८. २, १२.
 रत्निवभ्यः ३. २७, १; २;
 ३, ५; ५; ६.

रत्नित्रे १२, ३, ५५; ५६;
 ५७; ५८; ५६; ६०,
 रत्नीः ५. ७, १.
 रघटः ८. ७, २४,
 रघुजिष्ठयः २०. १२८, ४.
 रघुपत्त्वानः २०. १३, २.
 रघुवर्तनिम् २०. १४०, ३.
 रघुस्यदः ३. ७, १; १३. ३,
 १६; २०. १३, २,
 रजः ४. १, ४; २५, २; ६;
 ३३, १; ८. २, १; १०.
 १, ३२; ३, ६; १२. १,
 ५७; १३. २, २३; ४,
 ५१; १६. ४७, १; २०.
 २५, २; ४७, १६.
 रजःसु २०. १७, ८.
 रजतनाभिः ८. १४, ११.
 रजतपात्रम् ८. १०(४), ६.
 रजतम् १३. ४, ५१.
 रजते ५. २८, १.
 रजनि १. २३, १.
 रजनि २०. १३५, २;
 रजय १. २३, १.
 रजसः ४. २, ३; ५, ११,
 ५; ६; ६. ३४, ५; ८.
 ३, ६; ६. ३, १५, ६,
 १६; १०, ८, ३; ४०;
 १३. २, ८; १६. १०,
 ५; २०, ७०; ६; १४३,
 ६;
 रजसम् ८. २, १०.
 रजसा ६. ६, १४.
 रजसाः ११. २, २५.
 रजसि १२. १, ६०; १३,
 १, ११; २, ४३; १८. १,
 ४६.

रजसि ७. २५, १; २६, १;
 ४१, १; ६. ६, ७; १२,
 १, ५१; १३. १, ७; २,
 २१; २८.
 रज्जुः ४. ३, २; १६. ४७,
 ७,
 रज्ज्वा ३. ११, ८.
 रज्ज्वाम् ६. १२१, २.
 रण २०. १११, २.
 रणान्ति २०. ११०, २.
 रणम् २०. १३७, १०.
 रण्यन्तु ४. २१, १.
 रणाय १. ५, १; २. ४, १; ५,
 ४; २०. ५, ६; ११, ४;
 ३५, ६; ६; ५३, ३; ५७;
 १३.
 रण्य-रण्ये ५. २, ४; २०.
 १०७, ७.
 रण्येषु ५. २, ५; २०. १०७,
 ८.
 रण्यति २०. १७, ६.
 रण्यति २०. २५, ६.
 रण्यन्ति २०. ४४, २.
 रण्यसि २०. १११, ३.
 रण्याम् १२. १, ४३.
 रण्यार्थ ६. ३, ६.
 रणवः १८. १, २२.
 रत्नधाम् ७. १४, १.
 रत्नधेयाय ६. १४०, ३.
 रत्नम् ५. १, ७; ७. १४, ४;
 १८. २, ५३; २०. ३१,
 १; १४३, ४.
 रत्ना ७. ३६, १; १८. १,
 २६.
 रथ ६. १२५, ३.
 रथ-उपस्थः ८. ८, ३३.
 रथः ४. १२, ६; १६, ७; ७.

५८, १; ८. ८, २३; १०.
 ४, १३; २०. ७६, २; ६४,
 २; १४२, ३.
 रथः-इव ५. १४, ५; १३.
 रथ-काराः ३. ५, ३.
 रथ-क्रीतम् ११. ६, २३.
 रथ-जिताम् ६. १३०, १.
 रथ-जूतिम् १६. ४४, ३.
 रथम् ६. ३७, १; १२५, २; ८.
 १, ६; ६. ६, २; ३; ११.
 २, १८; १३. १, २४; २,
 ७; ३, १८; १८. १, २५;
 १६. १३, ५; २०. १२, ३;
 ३४, ८; ३५, ४; ७३, ४;
 ४६, ८; ८६, १; ६२, १२;
 १३; १४०, ३; १४३, १.
 रथम्-इव ३. १६, ६; २०.
 १३, ३.
 रथ-मुखम् ८. ८, ३३.
 रथम्-तरम् ८. १०(२), ६;
 ६, ११. ३, १६, १३.३,
 ११; १२; १५. २, २; ३,
 ५; ४, २; ३.
 रथम्-तरस्य १५. २, ४.
 रथम्-तराय १५. २, ३.
 रथम्-तरे ६. १०, ३.
 रथम्-तरेण ८. १०(२), ७.
 रथ-याने ४. ३४, ४.
 रथव्याः १०. ४, ५.
 रथ-वाहनम् ३. १७, ३.
 रथस्य १०. ४, २; १३. १,
 ४७; १३. २, २४; १४.
 १, ४१; २०. ४७, २१.
 रथस्य २०. १२७, २.

रथस्य-इव ४. १२, ७; १०.
 १, ८.
 रथाः-इव ३. ६ ५; २०. १०,
 १; ५६, १.
 रथानाम् ७. ८५, १.
 रथान-इव ५. १३, ६; २०.
 ६३, ६.
 रथाय १३. २, ६.
 रथासः २०. ३४, ७.
 रथि-तमम् २०. १०५, ३.
 रथिनः ६. १२६, ३; ११.
 १०, २४.
 रथिनीः २०. ७१, १४.
 रथी ४. ३४, ४; ७. ७३, १.
 रथो-इव ७. ६२, १.
 रथे ४. १०, ६; ६. ३८, ३;
 १०. ३, २०; १३. १, २१;
 २, ८; २३; २०. २३, ६;
 २६, ५; ३१, १; ३२, २;
 ४७, ११; २०; ६६, १०;
 १००, ३; १४३, २.
 रथेन १४. १, २०; १६. १३,
 ८; २०. १४३, ४; ५.
 रथेभिः २०. ६२, १६; १०५
 ४.
 रथे-स्थाम् २०. ३६, ५,
 रथैः-इव ७. ५०, ३,
 रथ्यम् २०. ६८, २.
 रथ्या २०. २१, ६.
 रथ्याः २०. १३१, ५.
 रथ्या-इव १८. १, ८; ६.
 रद् २०. ३५, १२.
 रदन्ताम् ११. १०, ८.
 रद्व-सो इति रद-वसो २०.
 ८२, १.
 रद्विते ११. ६, ७-११; १३;
 १५; २५.

रधम् १७. १, ६; २४.
 रधाम् ५. ३, ७.
 रध्वत् १७. १, ६.
 रधस्य २०. ३४, ६.
 रन्त २०. ३५, ११.
 रन्तिः ३. १०, ६.
 रन्त्यः २०. ७६, ३.
 रन्त्यम् ६. १३, १.
 रन्धय ४. २२, १; २; ८.
 ३, ८; १२. १, १४.
 रन्धयन् १७. १, २४.
 रन्धयन्तु ७. १०६, ३.
 रन्धयामि १६. ६६, १.
 रन्धयासि ६. ७, २.
 रन्धयासि ६. ६, १; ५४,
 ३.
 रन्धीः २०. १८, ५.
 रपः ४. १३, २; ३; ५. ४,
 १०; ६. ५७, ३; ६१, १;
 २.
 रपत् १८. १, १६.
 रपामि १८. १, १२.
 रपेम् १८. १, ४.
 रप्यते २०. १२८, ५.
 रभः-वाम् २०. ३६, ५.
 रभताम् १. ७, ४.
 रभथाः ८. २, ७.
 रभध्वम् २. १२, ५; ६. ६२,
 २; ३; ६७, ३; १२. २,
 २६; २८; १६, १३, ६.
 रभन्ताम् ११. १०, ८; १८.
 ४, १२.
 रभस्व १. ७, ६; २. ६, ४;
 ८, २, १; ३, २; ८.
 ५, १; २; १०. ३, १; २;
 ११. १, १४; १८. ३,
 ७१; १६. ३, २.

रमस्वतः २०. ७१, १२.
 रमामहे ४. १७, १; ५. ८,
 ६; ८. १, ८.
 रमे ४. २०, ६; ६. ४८, १;
 २; ३; ७६, २; १६. ५१,
 २.
 रमेथाम् ११. ६, ३; १२.
 ३, ७.
 रमेमहि २०. २१, ४; ५.
 रमतयः ७. ७५, २.
 रमताम् ७. १२, ४.
 रमतिः ६. ७३, २; ३.
 रमते १०. ७, ३७.
 रमध्वम् ७. ६०, १.
 रमध्वम् ५. १३, ५.
 रमन्ताम् ७. ११५, ४.
 रमन्ताम् ७. १११, १; ८.
 १, १.
 रमय १. १, २; २०. ८६, १.
 रमसि २०. १२७, १४.
 रमसे ३. १८, ३; ५. २२,
 ६.
 रम्बते २०. १२६, १६; १७.
 रयिः १. १५, २; १६. ३१,
 १२; २०. ११६, २.
 रयिम् २. ६, ५; ३. ५, २;
 १२, ५; २०, १; ३; ५;
 ४. २१, २; २५, ५; ३३,
 १; ३६, २; ४; ६; ८; ६.
 ३३, ३; ५४, २; ६५, १;
 ७. १७, १; २०, ३; ४;
 ४७, १; ७६, ६; ७६, १;
 ८०, २; ८२, ३; ६.
 ४, २१; ११. १, ३; ११;
 १२. २, ४६; १४. १,
 ४२, २, ४; ६; ३७; १८.
 १, ११; १४; ४३; ४४;

४, २६; ४०; १६. ३, ३;
 ७, ५; ३१, १२; १३;
 १४; २०. १३, १; १७,
 १२; ६७, १; ७०, १७;
 ८७, ७; १४३, ६.
 रयि-स्थानः ७. ७६, ६.
 रयि-स्थाम् ७. ३६, १; ४०,
 २.
 रयीणाम् ३. १०, ५; ६. ६२,
 २; ७. ४०, २; ७६, ४;
 ८०, ३; १०६, ६; १०.
 ६, २७; ११. १, ३४;
 १६. ३, १; ४, १; २०.
 ८८, ६; १३७, ६.
 रय्या ३. १४, १; ६. ७८, २.
 ररण २०. १२६, १२.
 ररन्तु २०. २४, ८.
 ररन्धि २०. २३, ४.
 रराणः ५. २७, ११; ७. ११५
 २; १३. २, ३३.
 रराणा १. १८, २; ७. ४८,
 २; ६. १, २.
 रराध २. ३५, २.
 ररास्व ७. २०, २; ६८, १.
 ररिः ५. १३, ३.
 ररिः २०. १२८, १३.
 ररिण २०. ८८, १; ४; ५;
 ६१, ६.
 रशना १०. ६, २.
 रशनाम् ७. ७८, १.
 रशना-यमाना १४. २, ७४.
 रशमयः ६. १०५, ३; ७.
 १०७, १; १०. १०, २०;
 ११. ५, ११; १३. २,
 १८; २०. ४७, १५.

रश्मि-मिः २. ३२, १; ५.
 ३०, १५; ६. ६२, १;
 १०८, १; ५; ७. ११, १;
 ६. ८, २२; १२. १, १५;
 १३. २, २; ४०; ४, २-
 ७; ६.
 रश्मीन् ४. ३८, ५; ७. ८२,
 ४; ५; १३. २, १०; १८.
 १, २७; २८.
 रसः १. ५, २; ३. १३, ५;
 २८, ४; ४. ४, ५; ३. १६,
 १; ६. ४, ५; १०. ४,
 १८; १२. ५, १०; १४.
 २, ५८.
 रसम् २. २६, ४; ५; ४. २७,
 २; ३; ५. १३, २; ३; ८.
 ४, १०; ६. ६ (३), २;
 १६. ३१, ५.
 रस-वान् १८. १, ४८; ४,
 २३.
 रसस्य १. २८, ३; ४. १७,
 ३; १८. २, २४.
 रसाः ४. १५, २; १६. ३१,
 ४; २०. ५१, २.
 रसाम् ४. २, ५.
 रसाय १८. ४, ८१.
 रसे २. २६ १.
 रसेन ३. ३१. १०; ४. ३५,
 ३; ६. ७८, १; १२४, १;
 ७. ८६, १; १०. ५, ४६;
 ६, २; २२; ८, ४४.
 रसेभ्यः २. ४, ५.
 राकाम् ७. ४८, १.
 राके ७. ४८, २.
 राज ३. ४, १; ६. ६८, २;
 ११. १, २२; १४. १,
 ६४.

राज-अश्वः—राता.

(४, ६८१)

राज-अश्वः द. १०२, २.

राज-कृतः ३. ५, ७.

राज-कृता १०. १, ३.

राज-तुः ७. ५४, १; ५७, २.

राज-ति १०. १०, २८.

राज-ति १. १०, १; द. ३१,

३; ३६, ३; ७. ७३, ६;

८. ५, १३; ११. ५, १६;

२०. ४८, ६.

राज-ति २०. ४६, ३.

राज-तु २. ३६, ३.

राज-न २०. ८०, २.

राज-न १. १०, २; १४, २;

३; ३. ४, १; ४. २२,

६; ५. ३, ७; द. ६६,

३; १२३, ५; १२८,

३; ७. ८३, १; २; ११.

१, २६; २, २८; १८. १,

६०; २, १२; ४, ७०;

१६. ४४, ८; २०. ६४,

२.

राज-नि द. ११६, १.

राज-न्य ५. १८, १; ३.

राज-न्यः ५. १७, ६; १८, २;

१२. ४, ३२; १४. ८,

१; १६. ६, ६.

राज-न्यस्य १०. १०, १८;

१२. ४, ३३.

राज-न्य द. ३८, ४.

राज-भिः २०. १७, १०;

६४, १०.

राज-यन्मः ११. ३, ३६;

१२. ५, २२.

राज-यन्मात् ३. ११, १;

२०. ६६, ६.

राज-यातै द. ६८, १.

राज-वधेभ्यः द. १३, १.

राज-सि २०. ६१, २; ६;

६२, १०.

राज-सु द. ६८, १; ७. ५०,

७; १६. ६२, १; २०.

८६, १०.

राज-सूर्यम् ४. ८, १; ११.

७, ७; १६. ३३, १.

राज-से २०. ५४, १.

राजा १, ३३, २; २. ३२, ४;

३६, ३; ३. ३, ३; ४, ५;

१२, ४; १६, २; २२,

३; ४. २, २; ८, १;

१६, २; ५; २२, २; ३;

४; ५. १७, २; १६, ६;

१०; २१, ११; २३,

११; २५, ६; द. ८८,

१; २; ६८, ३; १०४,

३; ७. ८३, १; ११८, १;

८, ७. १६; २०; १०(४),

६; १४; ६. १, २२; ७,

२; २२; १०. १, २२;

३, ११; ६, १५; ११.

५, १७; १४. १, ४६;

५६; १५. २, १६; २२;

१४, ५; ७. १२; १८.

१, ३३; ३, ६६; ४,

२६; ४३; ५३; १६. ५,

१; २०, १; २६, ४. ३३;

४; २०. १२, ७; ३६,

६; ६२, १६; ६३, ३;

१०५, ४.

राजा-श्च १६. ४६, ६; २०.

१७, २.

राजा-निः ३. ५, ७; २६, १;

५. १७, १०; १६. ५७,

२.

राजानिम् ३. २०, ४; द.

१२८, १; ११. ६, ३;

१८. १, ४०; ४६; ३,

१३.

राजानौ १८. १, ५४.

राज्ञः १. १०, १; ३; २५, ३;

४. १६, ३; ४; द. ६८,

१; ३; ६. २, ६; १०.

५, ४४; १४. २, ४६;

१५. २, १८; २४; १०,

१; १६. ८; २६; १६.

६, १६; १३, १०; २०.

१२७, ७; ६; १०.

राज्ञाम् २. ६, ४; ४. २२,

५; द. ४०, २.

राज्ञे २. १३, २; द. २०, २;

६३, २; १५. २, १७;

२३; १८. २, ७; १६.

२४, ४; २०. २१, १०.

राज्यम् ११. १०, २; १२.

३, ३१. .

राज्यम् ४. ८, १.

राज्यानि ११. ६, १५.

राज्याय ३. ४, २.

राज्ये १८. ४, ३१; ३२.

राट् ७. ४१, २.

रात-तमा २०. ३५, १.

रातयः ११. ८, २१; २०.

५८, २; ७४, ४.

रात-ह्वयः २०. १४३, २.

रात-ह्वयम् ३. ३, १.

रात-ह्वया १६. १०, १.

रात-ह्वयाय २०. ३७, ६.

राता ७. ४६, ३.

रातिः १. २६, २; ३. ८, २;
७. १७, ४; २०. ६०, २;
६५, ४.

रातिम् १६. ३, ४; २०. १४२,
१.

राति-साचः १८. ३, २०;
१६. ११, २.

राती ६. ३६, २.

रात्रये ८. २, २०.

रात्रि ३. १०, ७; १६. ४७,
२; ५. ४८, २; ४६, ३;
६, ७.

रात्रि ३. १०, ३; १६. ४७,
१; ३. ८, ६; ४८, ३; ६;
४६, ८; ५०, १; २; ४;
६; ७.

रात्रिः १३. ४, २०.

रात्रिम् १. १६, १; ३. १०,
२; ५. १७, १८; ८. ६,
२१; १०. १, ३२; १५.
१३, १; ५; ७; १३; १६.
७, ६; १७. १, २५; २६;
१६. ४८, ५; ४६, ५.

रात्रिम्-रात्रिम् १६. ५०, ३;
५५, १.

रात्री २. ८, २; १५, २; ४.
१८. १; ५. ५, १; ६.
१२, १; १२८, २; ७.
६६, १; ७६, ३; ११. ४,
२१; १५. २, ५; १३; १६.
२०; २५; १६. ४६, १;
२, ४; ६; २०. १२३, १.

रात्री-इव ६. ३, १७.

रात्रीः ४. ११, ११; ११. ५,
३; १५. १३, ६.

रात्रीणाम् ४. ५, ४; ७. ८०,
४.

रात्रीभिः १८. १, १०.

रात्र्या ११. २, १६; १५. १८,
५.

रात्र्याः १३. ३, २६; ४. ३०;
१६. ५६, २.

रात्र्याम् २०. १६, ११.

रात्र्यसि ११. ३, ४१.

रात्र्य-जित्तीयानाम् ६. १३०,
१.

रात्रिः १०. २, १०; ११. ७,
२२.

रात्रिः ५. ११, ११; १६. ५,
१; २०. १५, १; ३०, ५;
३४, १५; ६५, ३; ७१,
११; ७३, २; ७६, ३;
६३, १; १३५, ६३.

रात्रिः २०. १३५, ६.

रात्र्यामि ११. १, १०.

रात्र्यसः २०. २७, ४.

रात्र्यसा २०. ११६, २.

रात्र्यसाम् २०. १०४, ४.

रात्र्यसे ७. ४६, ३; २०. २२,
३; २३, ६; ५६, ५.

रात्र्यानाम् २०. ४५, २.

रात्र्यि १. १, ४; ३. २६,
८.

रात्र्ये १६. ७, ३.

रात्र्यताम् १२. १, २.

रात्र्यम् २०. ६०, १.

रात्र्यमानस्य ११. ३, ११.

रात्र्यास्म १६. १५, २.

रात्र्यायणी ६. ८३, ३.

रात्र्यायाम् १२. २, १६.

रामे १. २३, १.

राम्याणाम् २०. ११, ३.

रायः १६, १०, २.

रायः १. ६, ४; २. १३, ३;
२६, २; ३४, १; ३.

१०, ३; ८; १४, ६; १५,
८; ५. २७, १०; ६. ५,

२; ७. ४०, २; ४७, २;
५०, ६; ६. ४, २२;

२४; ११. १, ३४; १८.
१, ४३, ४, ४७; ६२;

१६. २४, ५; ३१, १३;
५२, १; ५५, १; २; २०.

१७, ३; ३६, ३; ५६,
४; ६८, १०; ८२, २;

८६, ६.

राया १४. २, ३६; २०. २१,
५.

राये १८. २, ३७; २०. ५५,
१; ६६, १; ७१, १२;

१०३, १.

रायजीति ६. ७१, २.

रायिषम् २०. १२६, ४.

राय्यः ६. १४२, ३.

राय्य-द्विष्वः १०. ३, १६.

राय्य-भृत् ६. १११, २.

राय्य-भृताः ७. १०६, ६; १०.
८, १५; १३. १, ३५.

राय्य-भृत्याय १६. ३७, ३.

राय्यम् ३. ४, १; ८, १; १६,
२; ५; ५. १७, ३; ४;
१६, ६; ७; ८; ६. ३६,
२; ८७, १; २; ८८, २;
१२८, १; १३४, १; ७.
३५, १; ८. ६, १३; १०.
३, १२; १० ८; ११. ५,

१७: ७, १७; १८; १२.
 ३, १०; ५, ८; १३. १,
 १; ४; ५; ८; २०; ३४;
 ३५; १६. ४१, १.
 शाष्टस्य ३. ४, २; ५, २; ५.
 १६, ४; ६. ५४, २.
 शाष्टाणि १६. ३०, ३.
 शाष्टाय १. २६, १; ४; १३.
 १, १; १५. १०, २; १६.
 २४, १.
 राष्ट्री ४. १, २; ३०, २.
 राष्ट्रे ५. १७, १२; १३; १४;
 १५; १६; १७; १६, १०;
 १२. १, ८; १३. १, ६;
 २०. १२७, ६; १०.
 राष्ट्रेण ६. ७८, २.
 रासताम् १६. ७, ४२; ४०,
 ४.
 रासन्ताम् १६. ११, ५.
 रासमाना १२. १, ४४.
 रासीय २०. ८२, १.
 रास्व ६. ३६, २; ७६, ३;
 २०. १०८, ३.
 राहुणा १६. ६, १०.
 रिक्त-कुम्भान् १६. ८, ४.
 रिच्यते ८. ६, २६; २०. ५६,
 ३.
 रिणन् १३. १, २१.
 रिणाः २०. १३५, ११.
 रिणाति ५. २, १; २०.
 १०७, ४.
 रिणामि ५. १३, १.
 रिपः ८. ४, १८; २०. ५६, ३.
 रिपुः ८. ४, १०; १६. ४६, ६.

रिप्रम् ६. ५१, २; १०. ५,
 २३; १२. २, ११; ४०;
 १६. १, १०; १८. ३, १७.
 रिप्र-वाहः १२. २, ८.
 रिप्राणि १२. २, १३.
 रिप्रात् १२. ३, ५.
 रिफुती ३. २८, १.
 रिचिचे ६. १०, ३; २०. ३५,
 ६.
 रिचिच्याम् १८, १, ८.
 रिचिषः ५. ३, ८; ११. २,
 २६.
 रिचेच ५. १, ३.
 रिचेच १८. ३, ४१; २०. ७७,
 ६.
 रिशादसः २०. १२८, १.
 रिशादसः ७. ७७, १.
 रिशादाः २. २८, २.
 रिशाम् ११. ६, १५.
 रिश्य-पदीम् १. १८, ४.
 रिश्यस्य-इव ५. १४, ३.
 रिषः ८. ३, १.
 रिषण्यत् २०. ८५, १.
 रिषत् १६. ३६, २; ३; ४.
 रिषन् २. ६, २; ३. १२, ६;
 ११. १, २५; ३२.
 रिषन् २०. १२७, १३.
 रिषम् १८. ३, ५२.
 रिषाम् ३. १५, ८; १३. २,
 ३७; १४. २, ५०; १६.
 ५५, १; २; २०. १३, ३.
 रिष्टम् ४. १२, २.
 रिष्यतः २. १५, १; ३; ३;
 ४; ५; ६.

रिष्यति १४. १; ३०; २, ८.
 रिष्याः ८. २, १३.
 रिष्याति ६. १०६, २.
 रिष्येम २०. १२६, १४.
 रिष्येम ७. ६, ३.
 रिहन्ति २०. २३, ५.
 रिहन्ति ७. ७३, ३; १८. ३,
 १८.
 रिहाणे इति ५. १, ४.
 रीयते १२. २, २६.
 रीरमन् २०. ६६, १.
 रीरिषः ६. ५१, ३.
 रीरिषत् २०. १२७, १३.
 रुक्म-प्रस्तरणाम् १४. २,
 ३०.
 रुक्म-वत्सुः ६. २२, २.
 रुक्मा ६. ५, २५; २६.
 रुचिः १२. १, २५; १३. ४,
 २३; १७. १, २१.
 रुचिम् ३. १५, ६.
 रुचिषीय १७. १, २१.
 रुचे १०. २, १६.
 रुच्या १३. २, ३०; १७. १,
 २१.
 रुज १. २१, ३; ७. ५०, ४.
 रुजः १६. ३, २; २०. ३६, ६.
 रुजन् १. १२, १; ४. ३१,
 ३; १६. १, २; २०. ७७,
 ८.
 रुणञ्जि ७. ५०, ६; ११. ३,
 ५५; २०. ८६, ६.
 रुणञ्जि ११. ३, ५४.
 रुणधामहै २०. ७०, १८.

(४, ६८४)

रुतम्—रूपे .

रुतम् ५. ५, ६.

रुदृत्यः ११. ६, १४.

रुदन् ८. १, १६.

रुदन्ति १४. १, ४६.

रुद्र २. २७, ६.

रुद्र ६. ६०, ३; ११. २, ३;
१३; १५; २६; २६; १८.
१, ४०.रुद्रः १. १६. ३; ३. २२, २;
६. ३२, २; ६०, १;
१४१, १; ७. ८७, १;
८. ५, १०; १३. ४, ४;
२६; १५. ५ ११; १४,
११; १६. १०, ६.रुद्रम् ३. १६, १; ११. २,
१७; ६, ६; १५. ५,
१०.

रुद्र-वन्तम् १६. १८, ३.

रुद्रस्य ४. ३१, ७; ६. ४४,
३; ५७, १; ५६, ३; ७.
७५, १; ११. २, १२;
३०; १२. २, ४७; ४,
५२.रुद्राः ५. ३, ६; १०; ६. ६८,
१; ८. ८, १२; १०. ७,
२२; ११. ६, १३; १२.
२, ६; १६. ६, १०; ११;
११, ४; २०. ६६, १;
१३५, ६.रुद्राय ४. ३०, ५; ६. २०,
२; ७. ८७, १; १६. ५५,
५.

रुद्रेण ११. २, ७.

रुद्रेभिः ४. ३०, १; १६.
१०, ६.

रुद्रैः १६. १७, ३.

रुधिरम् ५. २६, १०.

रुध्मः १२. ३, ४३.

रुन्दि १६. २६, ३४.

रुन्दि ५. ११, ३; ६. ५, ६.
५, २२; ६ (१), ६; ६
(४), २; ४; ६; ८; १२.
३, ४१; १५. ११, ४;
६; ८; १०; १३, २; ४;
६; ८; १०.

रुन्धते १३. २, १५.

रुन्धाम् ३. २०, १०.

रुपः १८. ३, ४०.

रुमे २०. १२०, २.

रुरुजुः २०. ७७, ४.

रुरुध्ने ४. ३१, ३.

रुरुहुः ४. १४, १.

रुरोज २०. ८८, ५.

रुरोह १०. २, ८; १३. १,
४२, १५३; २६; ३३;
४५; ३, २६.

रुरोहिथ ७. ६५, १.

रुरोहिथ ४. २०, ३; ६.
१३६, १.

रुव ५. २०, ३.

रुशत् २०. १२३, २.

रुशती ३. २८, १; १४. १,
२७.

रुशतीम् १२. ३, ५४.

रुशन्तः ४. १६, ६.

रुशन्तिम् १४. १, ३८.

रुशन्तीः ४. २१, ७; ७.
७५, १.

रुशमे २०. १२०, २.

रुशमेषु २०. १२७, १.

रुह १२. २, १७.

रुहः १३. १, ४; ८; ६; २६;
३, २६.

रुहेम् ७. ६, ३.

रुह्याः १३. १, ८.

रूपकाः ११. ६, १५.

रूप-धेयानि २. २६, १.

रूपम् १. २४, १; २. २६,
६; ५. २६, १५; ६. ४,
७; ५, २४; ७, १५; १०,
२६; १०. २, १२; ११.
७, १; १२. ३, ३३; ५,
६; १४. १, ५६; ५७; १६.
५६, २; २०. १२३, २.रूपम्-रूपम् १. २२, ३; १६.
१, ३.

रूपयोः १०. ८, २३.

रूप-शः ६. ६, १६.

रुपा २०. ३०, ३.

रुपाः ५. २६, ८.

रुपाणि १. १, १; २४, ४;
४. २०, ५; ५. २५, ५;
६. २०, ३; ७. ६०, ७;
७६, ४; ८०, ३; ६. ४,
१; ११. ३, २१; ४,
२६; १३. १, ११; २,
१०; १४. १, २८; २, ३०;
१६. ४६, ४.

रुपाणाम् ६. ४, ६.

रुपाय १०. १०, १; ११. २,
५.

रुपे ६. ६, ७.

रूपे इति—रोदसी इति.

(४,६८५)

रूपे इति १३. २, २८; ४२.
 रूपेण ४. ११, ७; ५. २५,
 १०; ११; १२; १३;
 १०. ८, ३१.
 रूपैः ५. १२, ६.
 रूपः ५. २२, १०.
 रूपम् ५. २२, १३.
 रूपार्थ १. २५, ४, ७. ११६,
 १.
 रूपः ४. ७, ३; ५; ६.
 रूचि २०. ७७, ५.
 रूजन्ते ६. ६, १६.
 रूजन्ते २०. ३४, १७.
 रूजमानान् २०. ६४, ८.
 रूजमाने इति १. ३२, ३.
 रूण-ककाटः ४. २१, ४.
 रूणम् १०. १, १३.
 रूतः २. २८, ५; ३४, २; ४.
 १५, ११; ३४, ४; ५.
 २८, ६; ६. ११, २; ४६
 ३; ८. ६, १३; ६. १, २;
 ४, ४; ७; २३; १०, १३;
 १४; १७; १०. २, १७;
 १०, २६, ११. ५, १२;
 २५; ८, २६; १२. ३, ३,
 १४. २, १४; १६. ५२, १.
 रूतः-धाः ५. २५, १.
 रूतसः १४. २, ३७.
 रूतसा ८. ७, २१; १३. १,
 १५.
 रूम् २०. १२७, ४.
 रूम् २०. १२७, ६.
 रूभाः ८. ३, १२; १०. ५,
 ४८.

रूभासः २०. ५४, २; १२७,
 ५.
 रूभे ८. ३, २१.
 रूहिहतीम् ११. ६, १५.
 रूहिहम् ८. ६, ६.
 रूवतः २०. ५७, २; ६८, २.
 रूवति २०. १२६, १३.
 रूवति १६. ४७, ४.
 रूवती १६. ७, ५.
 रूवतीः ६. २१, ३.
 रूवतीः ३. ४, ७; ६. ७, ३;
 २०. १२२, १.
 रूवतीभिः १३. १, ५.
 रूवन्तम् २०. ११४, २.
 रूवान् २०. ६६, ४; १२८,
 ८; ६.
 रूष्य ११. १, २०.
 रूष्म-छिन्नम् ६. १०२, २.
 रूष्मा १५. २, ७; १४; २०;
 २७.
 रूभी १४. १, ७.
 रूगः ६. ४४, १.
 रूग-नाशनम् ६. ४४, २.
 रूगम् १. २, ४; २. ३, ३;
 ४; ५; ३. २८, ५; ६.
 १२०, ३; ६. ८, १; २;
 ३; ४; ५; २१, २२.
 रूचः १७. १, २१२.
 रूचताम् २०. १७, ६.
 रूचते ११. ८, १६.
 रूचते १०. ८, २४; ११. ५,
 २६.

रूचन् १३. २, १६; २०.
 ४७, १६.
 रूचन्तः ४. १०, ६; १४. १,
 ३८.
 रूचन्तम् १३. १, ३६; २०.
 ६२, ७.
 रूचन्-वत् १३. ३, १०.
 रूचना ६. ३१, २; ७५, ३;
 २०. २६, ४; २८, १; ३;
 ३६, २; ४; ४७, १०;
 ४८, ५; ६६, ६.
 रूचनात् २०. ७०, ५.
 रूचनानाम् ४. १०, २.
 रूचनानि १६. ७, १.
 रूचने ७. ७३, ४.
 रूचनेन २. ६, १.
 रूचन्ते २०. २६, ४; ४७,
 १०; ६६, ६.
 रूचमानः ३. ५, ४; ५. २०,
 ६; १३. २, २८; ४२.
 रूचमानम् ११. ५, २३.
 रूचमानाम् २०. १०७, १५.
 रूचय १२. १, १८; १४. १,
 ३१.
 रूचसे १३. २, ३०^४; १८.
 ४, ५६.
 रूचसे १३. १, ३६; २०.
 १४२, ३.
 रोदन्तम् २०. १३६, १६.
 रोदम् ८. ६, २६.
 रोदसी ७. ४६, २.
 रोदसी इति १. ३२, ३; ३.
 ३, १; ४. १, ४; २, ३;
 १४, ४; १६, ५; ५. १,
 ६; ८. ६, ६; ११. ५, १;

२४; ४८; १८. ३, ६४;
 ४, १.
 रोहति १०. ६, ३३.
 रोहति ८. १०(३), २; १०.
 ६, ५; १३. ३, २६.
 रोहत्तु ४. १२, ३; ४^३; ५;
 १०. ६, ३१; ३२; ३३;
 १२. १, ३५; १४. २,
 २२; १८. ३, ६.
 रोहन्तः ७. ५३, ७.
 रोहन्ति ८. ७, ८; १७.
 रोहन्ति ४. १४, ४; १६. ५३,
 १.
 रोहन्तु ६. १०६, १; १२.
 २, ३१; १८. ३, ५७.
 रोहय ४. १२, १.
 रोहय १. ६, २; ४; ६. ६३,
 ३; ८४, ४; ११. १, ४;
 ३०; १४. २, ३७; १८.
 ३, ४.
 रोहयत् २०. ३८, ६; ४७,
 ६; ७०, ६.
 रोहयत्तु १३. १, १३.
 रोहयामि १८. ४, १.
 रोहसि ५. ५, ३.
 रोहात् ११. १, ३०.
 रोहान् ४. १४, १.
 रोहिणी १३. १, २२; २३;
 १६. ७, २.
 रोहिणी इति ६. ८३, २.
 रोहिणीः १. २२, ३२; ८.
 ७, १; १८. ४, ३४.
 रोहिणीम् १२. १, ११.
 रोहित १३. १, २१; ३

१; २; ३; ४; ५; ६; ७;
 ८; ९; १०; ११; १२;
 १३; १४; १५; १६; १७;
 १८; १९; २०; २१; २२;
 २३; २४; २५.
 रोहितः १३. १, १; ३; ४;
 ५; ६; ७; ८; ९; १०;
 ११; १२; १३; १४; १५;
 १८; २४; २५; २६;
 ३५; ४६; ५२; ५४; २,
 २५; ३६; ४०; ४१;
 ३, २६.
 रोहितम् १३. १, १३; ३,
 १२; २३.
 रोहितम् ४. ४, ७; ६. १०१,
 ३.
 रोहितस्य १. २२, १; १३.
 १, ६; २२; २३; ४७;
 ४८; ४९; ५०; ५१.
 रोहिताय १३. १, १३.
 रोहिते १३. १, ३७; १४.
 २, २३.
 रोहितेन १३. १, ३४; ५५.
 रोहितेभ्यः १६. २३, २३.
 रोहितैः १. २२, २.
 रोहितौ ५. २३, ४.
 रोहिम् १६. ६७, ४.
 रोहिः १३. १, १३.
 रोहिणम् २०. १२८, १३.
 रोहिणम् २०. १२८, १३.
 ल
 लक्षम् २०. ३४, ४.
 लक्षम् १. २३, ४; ६. १४१,
 २; ३; १२. ४, ७.
 लक्षिम् ७. ११५ १.

लक्ष्मीः ७. ११५, २; ४;
 ११. ७, १७; १२. ५,
 ६.
 लक्ष्म्यः ७. ११५, ३.
 लक्ष्म्यम् १. १८, १.
 लक्ष्मीयसी १०. १, २६.
 लघुः ६. ३, २४.
 लपन्तु १. ७, ३.
 लपिताः ४. ३६, ६.
 लब्ध्वा १. ८, २; ५. ८, ८.
 लभेत् २०. १३६, १६.
 लयन्ताम् ४. ३१, ७.
 ललाटम् ६. ७, १; १०. २,
 ८,
 ललामगुम् २०. १३६, ४.
 ललामम् १५. १, ३.
 ललाम्यम् १. १८, १; ४.
 लवणात् ७. ७६, १.
 लाक्षे ५. ५, ७.
 लाङ्गलम् ३. १७, ३; ६.
 लाङ्गलेभ्यः २. ८, ४.
 लापय १. ७, २; ६.
 लायम् २०. ८६, १.
 लालपीति ६. १११, १.
 लाहणि २०. १३४, ५.
 लिखत् २०. १३२, ८.
 लिखात् १४. २, ६८.
 लिखितम् १२. ३, २२.
 लिबुजा ६. ८, १.
 लिबुजा-इव १८. १, १५;
 १६.
 लिम्पामि ११. १०, १३.
 लीयते २०. १३४, ३; ४.
 लीयाथी २०. १३४, ५.

लोकः ३. २८, ६; ५. ३०,
 १७; ८. ८, ८; ६. ५,
 ५; ६; ७, ४; ११. १,
 ७; ७, १, १२. २, १;
 ३, ४७; ५, ३; १३. २,
 ४०; ४, ५३; १५. ७,
 ४; ५; १७. १, १८; २०.
 २०, ४; ५७, ७.
 लोक-कृत् २०. ६५, २.
 लोक-कृतः १८. १, २५; २६;
 २७; २८; २६; ३०; ३१;
 ३२; ३३; ३४; ३५; ४,
 १६; १७; १८; १६; २०;
 २१; २२; २३; २४.
 लोक-कृतम् २०. ६१, १.
 लोक-जितम् ४. ३४, ८.
 लोकम् २. ६, १; ३. २८,
 ५; ६; ४. ११, ६; ६;
 १४, ६; ३४, २; ५. १८,
 १३; ६. ११६, १; १२०,
 १; १२१, १; २; ४;
 १२२, ३; १२३, २; ७.
 ८३, ४; ८४, २; ८. ६,
 १५; ६. २, ११; ५, १; ६;
 १२२; १६२; २२; २६; ६
 (१), ६; ६(२), ६; ६(६),
 १३; ११. १, ८; १७; १८;
 ३१; ३७२; ५, ७; ८, १०;
 ११; १२. १, १; २, ४५;
 ३, ७; १६; १७; १६;
 २६; ३८; ३६; ५३; ४,
 ३६; १४. १, ५८; ६१; २,
 १३; १८. १, ५५; २, ८;
 २५; ४७; ५३; ३, ४; १३;
 ३८; ७३; ४, २; ७; १०;
 १३; ४४; १६. १५, ४;

५४, ५२; २०. ६०, २.
 लोकाः १५. ६, १७.
 लोकाः ४. ३५, ५; ६. ११७,
 ३; १०. ६, ३१; ७, २२;
 २६; ३०; ११. ३, १६;
 १२. ३; २०; १५. १३,
 २; ४; ६; ८; १०; १८.
 ४, ४; ५; ६७; १६. ६,
 १२; ५४; ४.
 लोकात् ६. १२०, २; ८. १,
 ४; ६, १; ६. २, १७;
 १८; १२. ३, ४५; ४,
 ५३; ५, ३८; १६. ५६, १.
 लोकान् ४. ३८, ५; ६. १,
 २३; ५, १४; १८; ६(६),
 १४; १०. ६; १६; ७, ७;
 १०; ३६; ६, ६; १०; १०,
 ३३; ११. ३, ५२; ५,
 ४; ६; १०, १२; १२, ३,
 ६; १५; २५; ३६; १३.
 १, १६; २, १०; ४२;
 १६. ६, ८; ५४, ५२.
 लोकानाम् १५. ६, १८.
 लोकानाम् ४. ३५, १;
 लोकार्थ १०. ५, ७; ८; ६;
 १०; ११; १२; १३; १४.
 लोके २. १०, ७; ३. २६, ४;
 ४. ११, ४; ३४, २; ५;
 ६; ७; ६. २६, १, ११७,
 ३; ११८, २; ७. ६६, १;
 ८. १, १; ६. ५, ७; ११;
 १८; १६; १०. ७, २८;
 ११. १, १६; ३५; ४,
 ११; १८; ८, १०; १२.
 २, ६; ३, ३; ४, ३५; ५,
 ५७; १४. १, १६; १५.
 १२, ७; ११; १६. ६, २;

१८. २, २०; ३, ७१; ४,
 १; ११; ६७; १६. ६,
 १३.
 लोकेन ३. २६, ३; ४; ५.
 लोकेषु ६, ६ (६), ११२.
 लोभम् १८. ३, ५२.
 लोभं ४. १२, ५; १०. ४, ८.
 लोभश-वक्षणे ५. ५, ७.
 लोमानि ६. ६ (१), २; ७,
 १५; १०. ७, २०; ६, २;
 २४; १२. ५, ६८.
 लोम्ना ४. १०, ५.
 लोम्नि-लोम्नि २. ३३, ७;
 २०. ६६, २३.
 लोहित-आस्यान् ८. ६, १२.
 लोहित-क्षीराः १६. ६, ८.
 लोहितम् ६. ७, १७; १०.
 ६, १८; ११. ३, ७२; ५,
 २५; १४. २, ४८; १५.
 १, ७.
 लोहित-वाससः १. १७, १.
 लोहितस्य ६. १२७, १.
 लोहितेन ६. १४१, २; १५.
 १, ८.
 लोहिनी १२. ३, ५४.
 लोहिनीः १०. २, ११.
 लोहिनीनाम् ७. ७४, १.
 लोहिनीम् १२. ३, २१.
 लौक्याः ११. ७, ३; १५. ६,
 १७.
 लौक्यानाम् १५. ६, १८.
 व
 वंश ३. १२, ६.
 वंशानाम् ६. ३, ४,

वंशिणीय ६. १, १४; १६.
 ६, ४.
 वंसगः १८. ३, ३६; २०.
 ५२, २; ५७, १५; ७०,
 १४,
 वृः १. ५, २; ३; १७, ४; ३०,
 २२; ४२; २. २, ४; १४;
 २२; ६; २३, १; २; ३;
 ४; ५; २४. १२; २२; ३२
 ४२; ५२; ६२; ७२; ८२;
 ३२, ३; ३. २, २२; ८,
 ४२; ५२; ६; १३, १; २;
 ३२; ४; ६; ७२; १४,
 १२; २; ४; ५२; ६२;
 १६, ७; २६, १२; २३;
 ३३; ४३; ५३; ६३; २७;
 १; २; ३; ४; ५; ६; ३०,
 १; ४; ५; ६२; ७२; ४.
 १, १; ७; ७२; १५, ७;
 ६; २१, ६; ७२; ३७, ५;
 १२; ३८, ७; ५. ६, १;
 २२; ८, ४; १३, ७; २३,
 १०; २६, १; ६. २४,
 ३; २२, २३; ५५, २;
 ६४, १; २; ३४; ६६, २;
 ६७, २; ७३, २३; ३३;
 ७४, १३; २२; ८३, १;
 ६४, १२; २; १००, २;
 १०३, १; ११४, ३; १२२,
 ५; १२३, १; ७. १२,
 ४२; ७५, १२; ६७, ४;
 १०६, ६२; ८. ७, ५२;
 २१; ६, ३३२; ६. २,
 १४; ४, २४; ५, ११; १०.
 ५, १; २; ३; ४; ५; ७;
 ८; १०; ११; १२;

१३; १४; १५; १६;
 १७; १८; १९; २०; २१;
 २३; ६, २७; ११. १,
 ५२; १५२; १८; २७;
 ६, २; २५२; १०, २;
 ५; ६२. २, २४; ४७;
 ४८; ४, ४८; १३. १,
 ३; १४. १, ३२; ३३२;
 २, १४; १६; १६. १, ६;
 ८२; ६; १८. १, ५१;
 ५२; ३, १४; १६; ६४;
 ४, १; ४८; ६४२; ८१२;
 ८२२; ८३२; ८४२; ८५२;
 ८६; १६. १६, १२-
 ११२; २७, ६२; ५८,
 ४२; ५६, २; २०. ६, १;
 १३, २२; १४, ३; ३६, ७;
 ३६, १; ४६, ४; ५१, १;
 ५४, ३; ६२, ३; ६४,
 ६; ६७, २२; ७०, १६;
 ७३, ३; ७८, १; १०५,
 ३; १२६, १६; १३७,
 ४; ३८.
 वः २०. १३५, १०.
 वृत्तरि २. १, ४.
 वृत्तवे २०. १८, ५.
 वृत्ता ८. ४, ८.
 वृत्तः ७. ५६, ४.
 वृत्ता ७. ५६, ४.
 वृत्तात् ४. ६, ४.
 वृत्तवरी २०. ३६, ५.
 वृत्तः ११. १, ४.
 वृत्तणाः २. ५, ५.
 वृत्तणभ्यः ७. ११४, १;
 १४. २, १४.
 वृत्तणास्तु ६. ४, १; ८, १६.
 वृत्तत् १. ११, ३; १२. ३,
 ४७; ४८; २०. ३६, ७

वृत्तः—वृत्तसम्.

(४,६८६)

वृत्तः २०. २६, २.
 वृत्तः २. ३०, २.
 वृत्ति २०. ६७, ५; ८७, २.
 वृत्त्यतः ११. २, २६.
 वृत्त्यामि ४. ६, ७.
 वृत्ताः ६. २, २२.
 वृत्ता-पते ६. ५०, ३,
 वृत्तगुदस्य २०. २१, ८.
 वृत्तः १. २६, ५; ३. ८, २;
 २४, १; ४. ४, २; ६.
 २, १; ४, १; ७. १०५,
 १; १०. १, २८; १३. १,
 ४३; २०. १५, ४; २५,
 ३, ४५, १; ६५, २; ११३,
 १; १२८, २.
 वृत्तः—मिः ५. २, ५; १३, १;
 ८. ४, ८; १६. ३, ४;
 २०. ७७, ६; १०७, ८.
 वृत्तः—युजा २०. ३८, ५; ४७,
 ५; ७०, ८; १००, ३.
 वृत्तः—म. ७, ७; १६.
 वृत्तः—सा २, ३१, २; ४; ४. ७,
 ४; ५; ५. ८, ४; १३, ३;
 २३, २; ६. ८५, २; १०८,
 ५; ७. ६. ४; २१, १;
 ७४, ३; १६. २६, २;
 २०. १२७, १४२.
 वृत्तः—सी इति ८. ४, १२.
 वृत्तस्यम् १४. २, ६.
 वृत्तः—सि १६. ३२, ४; २०.
 १३, १.
 वृत्तः—स्व २०. १२७, ३.
 वृत्तः—स्व २०. १२७, ४.
 वृत्तः ४. ३१, ६; ३२, १; ६.
 १३४. ३.

वृत्तः २. ३, ६; ३. १, ४;
 ४. २४, ६; ६. १३४, १;
 १२. ५, १८; ५४; १६.
 ६६, १; २०. १५, २;
 ३०, ३; ४; ४७, ३; ६२,
 १७; ६४, २; १०५, ५;
 १३७, १४.
 वृत्तः—वाहुः २०. ३४, १३;
 १४.
 वृत्तः—वाहुम् ६. ६७, ३; १६.
 १३, ६; २०. १२, ६; ६४, ३.
 वृत्तः—वाहु इति वृत्तः—वाहु ७.
 ११०, २.
 वृत्तः—म २. ५, ६; ७; ४. २८,
 ६; ६. १२५, २; १३५, १;
 १०. ५, ५०; ६, १; ११.
 १०, १२; १३; २०. ३५,
 ६; १२; ३६, ६; ७०,
 १६; ७२, २; ७३, ४;
 ७५, १; ७७, ७; ६३,
 ७; १०६, १; १०६, २.
 वृत्तः—हस्त २०. ६६, ३.
 वृत्तः—हस्त २०. ३७, ५; ८०,
 १; ६८, २.
 वृत्तः—हस्तः २०. ३४, १४.
 वृत्तः—हस्तम् २०. ३६, ५.
 वृत्तः—त ३. १६, ४.
 वृत्तः—पवसाध्यः २०. ४८, ३.
 वृत्तः—णि २०. ७०, १३.
 वृत्तः—णिम् २०. ३१, १; ७०,
 ११; ६७, १.
 वृत्तः—णि १०. ४, १२.
 वृत्तः—णि ६. २, ३; १८. १,
 ३७; २०. २२, ६; ७१,
 १; ६२, ३.

वृत्तः—न २०. १८, २; ८१,
 ५; ६२, २१.
 वृत्तः—न ४. ३२, ६; ७. ७२,
 ३; २०. १५, ६; ३६,
 १०; ७२, ३; ८१, १;
 ६२, २०; १३७, ११.
 वृत्तः—न २. ५, ५; २०. १२,
 ७. ३८, ५; ४७, ५; ५५,
 १; ७०, ८.
 वृत्तः—ण १. ७, ७; २. १४,
 ४; ४. ३, ५; २८, ७;
 ५. २२, ६; २६, १०;
 ६. ६, २; १३४, २; ८.
 ५, १५; ११. १०, ३;
 २७; १२. २, ६; ५, ६६;
 १३. १, ३०; २०. १५,
 ६; ३५, १०; ११; १०७,
 ३; १३७, ११.
 वृत्तः—ति ४. १६, २.
 वृत्तः—ते २०. १३५, १२.
 वृत्तः—सि १०. ८, २७.
 वृत्तः—श्वसः २०. १३५, ३.
 वृत्तः—णिम् ३. १५, १.
 वृत्तः—सि ३. १२, ३; ७; १३,
 ७; ४. १८, २; ३६,
 २; ४; ३; ८; ८, २;
 १०(२), ५; १०(४), २;
 ६; १०; १४; १०(५),
 २; ६; १०; १४; ६. ४,
 ४; ६, ६; १०. ५, १७;
 १३. १, १०; ३३; २,
 १३; ३, २६; १८. ४,
 ३२; २०. १४०, १.
 वृत्तः—पः ८. ६, १.
 वृत्तः—स ३. १८, ६; ३०, १;
 ४. २, ८; ७. ७१, ८.

६. ६, १७; १०, ५; ६;
 १३. १, १०; ३३; ४१;
 २०. ६, १; २३, ५; ४८,
 १; ४६, ४; ६२, ८.
 वृत्तसंख्य २०. १३८, १; १३६,
 १.
 वृत्ताः १३. ४, ६; २०.
 १३४, २.
 वृत्तान् १२. ४, ७.
 वृत्तानाम् ६. ४, २; ४.
 वृत्ताम् ४. ३८, ६; ७२.
 वृत्ताय २०. १४१, ५.
 वृत्से ६. ७०, १; २; ३; ६.
 ६, ६.
 वृत्सेन ४. ३६, १; ४; ६;
 ८; १८. ४, ६.
 वृत्सौ ८. ६, १.
 वद ५. २१, १; ७. ३८, ४;
 ८, २, ३.
 वद १. १०, ४; ३. २०, २;
 ४. १५, १४; ५. २०, ६२;
 ११; २१, ३; ६. २६, ३.
 वदत ३. ३०, ३.
 वदतः ७. ५७, १.
 वदति ६. २६, १; १२. १,
 ४१; २०. २५, ६; १२७,
 ८.
 वदति ५. ३०, १६; ६. ६
 (५), ८; १२. २, ३८.
 वदतु ३. ३०, २; १४. १,
 ३१.
 वदन् १८. ३, ७०.
 वदन्तः ३. ३०, ५; ६. ४७,
 २; १८. १, ४.
 वदन्तम् ४. १६, ६; ८. ४.
 १३.

वदन्ति १०. ८, १७; ११. १,
 ७; १२. ४, ५१.
 वदन्ति ६. १०, २७; ३८;
 १०. ८, १७; ३३; ११.
 ३, २६; १५. १, ८.
 वदन्तीः १०. ८, ३३.
 वदन्तीम् ५. २०, ५.
 वदन्तु ४. १५, १२.
 वदन्तौ ४. १, ३१.
 वदाः १२. ३, ५२८.
 वदाति ५. २०, ८; १२. ३,
 १५.
 वदामि ७. १२, १.
 वदामसि १६. २, ३.
 वदामि ६. ६१, २; ३; १२.
 १, ५८. . . .
 वदामि १. ३४, ३; ४. ३०,
 ३; ४; ५. ३०, २; ३; ४;
 ७. ३८, ४; ८. ७, ४;
 १२. १, २६; ५८.
 वदासि ५. २०, ६; ८. १,
 ६; १२. ३, १८; १४.
 १, २०; २१.
 वदिष्यति १. ३२, १.
 वदेत् ११. ३, २५; ८, ३.
 वदेम १२. १, ५६; २, २२;
 ३०; १८. ३, २४; २०.
 ३४, १८.
 वधः १. २०, २; १०, १; ६.
 ६६, २.
 वधकः ८. ८, ३; ४.
 वधत्सना ६. ६, ३.
 वधवैः २०. १३७, ११.
 वधम् १. २०, ३२; २१,
 ४२; ४. १६, ७; ८. ४,
 ४; २०; २५; ८, १८;

११. १०, १०; १२; १३;
 १२. १, ३२; १६. २०,
 १; २०. ६६, ८; ६५, ४.
 वधाः ६. १३, १.
 वधात् ४. २८, ५; ६. ६३,
 ३; १०. ३, ७.
 वधानाम् ५. २०, ५; ११.
 १०, २५.
 वधाय ५. १४, ६; १७. १,
 २८.
 वधिषुः २. २८, ३.
 वधीः ७. ११, १२; ८. २,
 ५; १०. १, २६; २०.
 २१, ८.
 वधीत् ६. ५६, १; ११०, ३;
 ११२, १; १४२, १.
 वधु १४. १, ५८; २, ७.
 वधूः १. १४, २; ३. १०,
 ४; ८. ६, ११; ११. ८,
 १७; १४. २, २०; २८.
 वधूः-इव ४. २०, ३.
 वधू-वर्शाः १४. २, ७३.
 वधू-पथम् १४. १, ६३.
 वधूम-इव ६. ३, २४; १०.
 १, १.
 वधूमन्तः २०. १२७, २.
 वधू-युः १४. १, ६.
 वधू-योः १४. २, ४२.
 वधेन २. ३१, ३; ५. ३१,
 १२; ६. ६६, १; ८. ४,
 १६; १२. १, १४.
 वधेयम् १०. ५, १५; १६; १७;
 १८; १६; २०; २१.
 वधैः ८. ८, ३; ४; १०. ५,
 ४२.
 वध्यः १८. २, ३१.

वध्रयः—वपामि :

(४,६६१)

वध्रयः ४. ६, ७, ८; ५. २०,
२.

वध्रि ३. ६, २.

वध्रि-अश्वम् ४. २६, ४.

वध्रिः ४. ६, ७, ८; १६.
६, ११.वध्रिम् ३. ६, ३; ६. १३८,
३.

वध्रि ६. १३८, ३.

वध्र्यः ८. ६, १४; १४. १,
२७; २, १०; ४१; ४२.

वध्र्य १४. २, ६; ७३.

वध्रः २०. २२, २.

वध्रथः २०. १४३, २.

वध्रन्ति १२. १, ५८.

वध्रम् ६. ३३, १; ८. ४,
२१; २०. ७३, ५.

वध्रयन्तु ६. ६, ३.

वध्रगुभिः ४. ३६, ७.

वध्रस्पतयः ८. १०(३), १५.
६, २; १६. ६, १४.वध्रस्पतिः ४. ३, १; ५. १२,
१०; ६. ८५, १; ८. ७,
१६; १०. ३, ५; ८. ११;
११. ५, २०; १२. ३,
१५.वध्रस्पतिभ्यः ६. १०, १;
१२५, २; १६. ३, १.वध्रस्पतीन् १. १२, ३; २४,
१; ३. २१, १; ४. २६,
५; ६. २७, २; ८. ८, १४;
१२, १; ६. ३, ११; १०
३, १३; १४; ११. ५, १;
६, २४; २०. ११, १०.वध्रस्पतीनाम् १. ३५, ३; ४,
४; ५. २४, २; २५, ७;
८. १०(३), २; १२. १,
३६५७; १५. ६, ३; १६. ८,
१८.वध्रस्पते ५. २७, ११; ६.
१२५, १; १२. ३, ३३.

वध्रस्पते २०. १२६, ६; ७.

वध्रस्पते २. ६, १; ६. १२७,
१; १४. २, ५०; १८. ३,
७०; १६. ३१, ६; ३४, ६.वध्रस्पती ३. ५, ३; २०.
१३६, ५.

वध्रा १४. २, ७.

वध्राः १. ३४, ४.

वध्रात् २०. ७४, ६; १२७,
१४.वध्रानि ६. ३०, २; ४५, १;
२०. १६, १०; ११६, १.

वध्रिः ५. ७, ३.

वध्रिः १६. १०, ५; २०. ६,
७; ११८, ३.वध्रिम् ५. ७, २; ६; १२. ४,
१२.

वध्रिषत् २०. १३२, ६; ७.

वध्रिष्ठाः २०. १३१, ६.

वध्रिष्ठुः ६. ७, १२; १०. ६,
१७.वध्रिष्ठोः २. ३३, ४; २०.
६६, २०.

वध्रिताम् ४. १५, १०.

वध्रिते १२. २, ३६.

वध्रिते ७. १०३, १.

वध्रिध्वम् ४. १५, १५.

वध्रिषः २०. ३०, १.

वध्रिषे २०. १४३, ३.

वध्रिष्व १२. ३, ५३.

वध्रि ८. ६, ११; ११. २, ७४;
५५.१२. १, ४६; १८. १,
३६; २०. ७६, १.

वध्रिनेती २०. १३१, ८.

वध्रिषु २. ३१, ५; १८. ३,
३६; १६. ३, २; २०.

११, ३.

वध्रिोति २०. ६७, १.

वध्रिध्व्ये २०. ३५, ५.

वध्रिनाश्व ७. ११५, २.

वध्रिमानः ३. १५, ३; ७.
६०, १.

वध्रिामहे ३. १७, ८.

वध्रितः १. ७, १.

वध्रि १६. ४६, ३; ५.

वध्रिः ५. १२, ३; ६. ६८,
१.

वध्रिधुर-युः २०. १४३, १.

वध्रिष ६. २०, ३.

वध्रिताम् ६. १२६, १.

वध्रिानः ५. २०, ६.

वध्रि ६. ८२, १; ८. २, १३;
२०. ३०, १.वध्रि ११. १, २६; २६; ३२;
१६. ५७, ४.वध्रित ३. १७, २; ६. ६८,
१; ३; १४. २, १४.

वध्रितु ३. १७, ३; ६. ६८, २.

वध्रिते ६. १०, २६.

वध्रिति १४. २, ३८.

वध्रित्ति १६. ३२, २.

वध्रित्ति १८. १, ४०.

वध्रिसि ८. २, १७.

वध्रि-उदरः २०. ५, २.

वध्रिामि १२. ३, २२; १८. ४,
५५.

(४, ६६२)

वपुः—घरते.

वपुः २०. ६२, १०, १४३, २.

वपुः तमे ५. ५, ६.

वपुः सि ५. १, २, ८, ६; ६.

७२, १; १६. ४६, ८.

वपुः ८. २, १७.

वपुः २. १०, ३; ४. २१, ६;

२७, ५; ६. २, २; ३६,

३; ७. ६६, १; ८. ४,

१८, ६. ४, १०; ११. १,

१०; १२. ३, १; ४७; १८.

३, ७३; १६. ३७, १; २;

२०. १६, १; १२; १७,

३; ४; २५, ४; ३१, ५;

३३, ३; ३६, ४; ५३, १;

४७, ११.

वपुः २०. १२६, १५; १३६,

८.

वपुः-धसः ८. १, १६.

वपुः-धाः ५. ११, ११; ७.

४१, २; ६. १, ८; ४, २२;

१२. ३, १४; १३. २, ३३;

१८. ४, ३८; ५०; १६.

४६, ६.

वपुः-धै २०, ६१, ११.

वपुः-भ्यः ६. १०, २.

वपुः-वयः १. २२, ३; १२. ३,

४६; १६. १, ३.

वपुः-सु ३. २१, २.

वपुः-तः १०. ७, ४२.

वपुः-ति १०. ७, ४३; २०. १४,

४; ६२, ४.

वपुः-म १. १८, ३; २७, १;

३१, १; ३५, ४; २. ४,

१; ११, ३; १६, १; २; ३;

४; ५; २०, १; २; ३; ४;

५; २१, १; २; ३; ४; ५;

२२, १; २; ३; ४; ५; २३,

१; २; ३; ४; ५; ३३, ७;

३. ६, ४; १०, ५; ११, २;

१५, ७; १६, २; ४; ५;

२४, २; २७, १; २; ३; ४;

५; ६; ३१, ११; ४. ३, ४; ४,

१; ५, १; १७, ६; ७; १८,

८; ३१, ४; ३२, १; ३३,

४; ३७, २; ५. २, ५; ३,

१; ७, ३; १४, ७; ६; ६.

२६, २; ४१, १; २; ४७,

२; ५५, ३; ५८, २; ६२,

२; ८५, २; ६०, १; २;

११४, १; ११५, १; १३५,

२; ३; ७. ६. ३; १७, २;

२०, ३; ३४, १; ५०, ४;

७; ५३, ७; ६१, २; ६५,

३; ६८, २; ७१. १; ७३,

१; ११; ७४, ४; ७६, ४;

८०, २; ३; ८१, ५; ८३,

३; ६०, २; ६२, १; ६३,

१; १०६, ६; ८. ३, २२;

६, १८; ६. १०, २०; १०.

३, ८; ४, ६; ११; १२;

५, १५; १६; १७; १८;

१६; ३०; २१; २५; २६;

२७; २८; २९; ३०; ३१;

३२; ३३; ३४; ३५; ४२;

६, २७; १२. १, ६२; २,

१३; ३३; १३. १, २६;

५६; २, ४३; ४, ४७;

५०-५४; १४. २, ३६;

५०; ६६; ६७; ६८; १६;

१, ५; ६, १; ७, ५; १८.

१, ३६; ५८; २, ५६; ४,

६६; ८७; १६. १५, २;

५०, ३; ५५, ३; ५८, १;

२; ५६, २; २०. १, १;

३, ३; ६, १; १३, ३;

१४, १; १५, ४; १७, १०;

१८, १; ४; २३, ७; २७,

६; ३४, १८; ३८, ३;

४७, ६; ५२, १; ५७,

१४; ६२, १; ७०, ११;

१६; २०; ७६, २; ८८,

६; ८६, ६; १०; ६४,

१०; ६६, ५; २३; ६७,

१; १०२, ३; १०७, ८;

१२५, ७; १२७, १४;

१४३, १.

वपुः १२. १, ५.

वपुः ६. ५६, १.

वपुः ५. २, ५; ८. ७,

२४; ११. २, २४; १०,

८; १२. १, ५१; २०.

१०७, ८.

वपुः १३. २, ४६.

वपुः २०. ७७, ३.

वपुः २. २८, २; ४.

३६, १०; ५. २०, ६;

२०, ६४, ७.

वपुः २०. ६७, २.

वपुः १३. ४, ५३.

वपुः २. ३६, ५; ६.

वपुः १०. १, १६.

वपुः ६. ८५, १; १०. ३,

१; ३; ४; ५; ६; ७;

१०; ११; १३; १४; १५;

१७; १८; १९; २०; २१;

२२; २३; २४; २५.

वपुः १०. ३, १२.

वपुः-वत्याम् ४. ७, १.

वपुः १०. ३, २; ६.

वपुः २०. ७८, ३.

वपुः २०. ३६, ११.

वरुणाय—वरुणाय .

(४,६६३)

वरुणाय २०. १३५, १३.
 वरुणाः ३. १७, ६; ११. ३,
 १०.
 वरुणा १६. ७१, १.
 वरुणम् १२, ३; ६, २०. ६८,
 ४.
 वरुम् २. ३६, ६.
 वरुम्-वरुम् ३. १६, ८; ६.
 ६७, २; ११. ६, २०;
 १०, २१.
 वरा १४. १, ८; ६.
 वराः ११. १, १०.
 वराः ११. ८, १; २.
 वराः-इव २०. २५, २.
 वराञ्च १६. ६, १०.
 वराय ७. ३, १; २०. ७६,
 ६.
 वराहः ८. ७, २३.
 वराहम् २०. ३५, ७.
 वराह-युः २०. १२६, ४.
 वराहेण १२. १, ४८.
 वराहैः २०. ६१, ७.
 वरिमतः ६. ६६, १.
 वरिमन् २०. ७६, ७.
 वरिमा ४. २५, २.
 वरिमाणम् ७. १४, ३.
 वरिम्णः १२. ५, ७२.
 वरिम्णा ४. ६, २; ६. २,
 २०.
 वरिवः २०. ११, ७; १७;
 ११; ८७, ३; ६४, ११.
 वरिष्ठम् २०. ५४, १.
 वरीयः १. २, २; २०, ३;
 २१, ४; ३. ४, ७; ४. १६,

७; ५. १२, ४; ६. ५३,
 ३; ७. ५०, ४; ५१, १;
 ६५, १; ११६, १; ६.
 ४, १६; १२. १, ३२;
 १६. ७, ५; २०. ३४,
 २; ८६, ११.
 वरीवर्ज्यन्ती १२. ५, २२.
 वरीवर्ति ६. १०, ११; १०.
 २, ७.
 वरीवृतात् ८. ६, २२.
 वरुण ७. ८३, २; १६. ४४,
 ६.
 वरुण १. १०, २; २०, १;
 २. २८, ५; ४. १५,
 १२; १६, ६; ७; २६,
 ५; ५. १, ८; ११, १;
 ४; ५; ६; ७; १०; ११;
 ६. ६१, ३; ७. ८३, १;
 २३; ३; ४; १३. २, २१;
 १४. १, ६२; १८. ४,
 ६६; ७०; १६. ४४, ८;
 २०. ४७, १८; ६२, ६.
 वरुणः १. ६, १; १६, २;
 १८, २; ३३, २; २. २८,
 २; ३. ३, ३; ४, ५; ८,
 १; २२, २; २७, ३; ४.
 १६, २; ५; ८; ३१,
 ७; ३२, २; ५. १३, १;
 १७, २; १६, १०; २१,
 ११; २२, १; २४, ४;
 २५, ६; ६. ४, २; २१,
 २; ७३, १; ८८, २;
 ६३, ३; ७. ८१, ६;
 ११८, १; ६. ७, ७; १०.
 ४, १६; ६, १५; ११.
 ५, १४; १५; १२. २,

१६; ३, २४; १३. ३,
 १३; ४, ४; १५. १४,
 ५; १८. १, १८; ३६;
 १६. ६, ६; ७; १०, ६;
 १७, ४; २०, १; २६,
 ४; ३२, ६; ४४, १०;
 २०. ६२, ८; १०६, ३.
 वरुणः २०. १३१, १.
 वरुण-तेजाः १०. ५, ३३.
 वरुणम् १. ३, ३; ३. २१,
 ८; ४. ४०, ३; ५. १,
 ६; ७. २५, १; २; ६.
 १०, २८; ११. ६, २;
 १८. १, ५४; १६. १८,
 ४.
 वरुणस्य १. १०, १; २५,
 ३; २. १०, १; २; ३; ४;
 ५; ६; ७; ८; ९. १६,
 ३३; ४; ६. ३८, ३; ६८, ३;
 ८५, २; १२५, ३; १३२,
 १; २; ३; ४; ५; ७. ६०,
 २; ६. २, ६; ४, ८;
 १०. ४, १; ५, १०; ४४;
 १०; २२; २८; १३. २,
 ३५; १४. १, १६; ५७;
 ५८, २, ४६; १५. २,
 १८; १६. ८, २६; १८.
 १, ७; ३, ६६; १६. १३,
 १०; २०. १०७, १४;
 १२३, २.
 वरुणात् १. १०, ३.
 वरुणानी ६. ४६, १; ७.
 ४६, २.
 वरुणाय ४. ४, १; ६. २०,
 २; १२. ३, ५७; ४, २६;
 १४. २, ४६; १५. २,
 १७; १८. १, ३६.

वरुणेन २. २६, ४; ३. ५,
४; ६, २; १३, २; ७.
१०४, १; ६. ३, १८;
१६. ५६, ४.

वरुणैः ३. ४, ६.

वरुण्यात् ६. ६६, २; ७.
११२, २.

वरुथम् १. ६, ३; ५. ६,
१४.

वरुथैः २०. ३७, ७.

वरै ७. ८, १; २०. ५४, १.

वरैण्यः ७. १४, ४; ५३, ६;
७३, ६; १६. १५, ३.

वरैण्य-क्रतुः ६. २३, १.

वरैण्यम् २०. ६, ५; ११, ८;
७१, ११; १०६, १०.

वरे-यम् १४. १, १५; ३४.

वरेषु २. ३६, १.

वर्चैः १. ६, ४; १४, १; २.

२६, १; ३. २२, ४; ५.

३, १; १८, ४; ६. ६६,

३; १२४, ३; ७. १२, ३;

१३, १; २; ११४, १; ६.

१, ११; १२; १३; १६;

१७; १०. ५, ७; ८; ६;

१०; ११; १२; १३; १४;

३६; ६, ८; १२. १, ५;

२५; ५, ८; ५६; १४. १,

३५, २, २६; ५३; १६.

१, १३; ८, ४; ५; ६; ७;

८; ६; १०; ११; १२;

१३; १४; १५; १६; १७;

१८; १६; २०; २१; २२;

२३; २४; २५; २६; २७;

२८; २९; ३०; ३१; ३२;

३३; ३४; ३५; ३६; ३७; ३८; ३९; ४०; ४१; ४२; ४३; ४४; ४५; ४६; ४७; ४८; ४९; ५०; ५१; ५२; ५३; ५४; ५५; ५६; ५७; ५८; ५९; ६०; ६१; ६२; ६३; ६४; ६५; ६६; ६७; ६८; ६९; ७०; ७१; ७२; ७३; ७४; ७५; ७६; ७७; ७८; ७९; ८०; ८१; ८२; ८३; ८४; ८५; ८६; ८७; ८८; ८९; ९०; ९१; ९२; ९३; ९४; ९५; ९६; ९७; ९८; ९९; १००.

वर्चः-धसे ३. २१, ५.

वर्चः-धाः २. ११, ४.

वर्चसः १६. ५८, १; ३.

वर्चसा २. १३, २; ३. ४, १;

५, १; १३, ५; २०, १०;

२२, २; ३३, ६; ४. ८,

५; ६; ६. ५, १; ३८, १;

२; ३; ४; ५; ६; ७; ८; ९;

१०; ११; १२; १३; १४; १५;

१६; १७; १८; १९; २०;

२१; २२; २३; २४; २५;

२६; २७; २८; २९; ३०;

३१; ३२; ३३; ३४; ३५;

३६; ३७; ३८; ३९; ४०;

४१; ४२; ४३; ४४; ४५;

४६; ४७; ४८; ४९; ५०;

५१; ५२; ५३; ५४; ५५;

५६; ५७; ५८; ५९; ६०;

६१; ६२; ६३; ६४; ६५;

६६; ६७; ६८; ६९; ७०;

७१; ७२; ७३; ७४; ७५;

७६; ७७; ७८; ७९; ८०;

८१; ८२; ८३; ८४; ८५;

८६; ८७; ८८; ८९; ९०;

९१; ९२; ९३; ९४; ९५;

९६; ९७; ९८; ९९; १००.

वर्चसे १. ३५, १; २. २८,

५; ४. १०, ७; ५. २८,

१३; ६. ६२, ३; ६३, १;

१२. २, २८; १६. २६, ३;

४५, ६; ७; ८; ९; १०;

४६, १.

वर्चस्यम् १६. २६, ४.

वर्चस्वतीम् ६. १, १६.

वर्चस्विनम् २. २२, ३.

वर्चस्वी ५. २८, १०; १६.

४०, २.

वर्चासि ४. २२, ३.

वर्जय १०. ४, २५.

वर्गाः १. २३, २; १८. ३, ८.

वर्गम् ११. ८, १६; १७; २०.

११, ५; ६; ३४, ४.

वर्णेन १. २२, १.

वर्णैः १. २२, २.

वर्णक २०. १३१, ६.

वर्तताम् ५. १४, ५; १३; ६.

१०२, १; १०. १, १६;

११. ६, २१.

वर्तते ६. १०२, १.

वर्तते १०. ८, ७; ११. ४,

२२; १२. २, ५२; १६.

४७, १.

वर्तनिः ७. २१, १.

वर्तनिम् १६. १२, १.

वर्तनी २०. २१, ८.

वर्तय ६. ७७, ३; ८. ४, १६;

११. २, २१.

वर्तयतम् ८. ४, ४; ५.

वर्तयति १६. १२, १.

वर्तयामसि ७. १२, ४; २०.

१६, १.

वर्त्ता २०. २७, ४.

वर्तिः २०. १४१, १; १४२, ३.

वर्त्म १२. १, ४७.

वर्त्मन् २०. १३५, २.

वर्त्मानि ६. ६७, १.

वर्त्रम् १. ३, ७.

वर्धतः २०. १३६, २.

वर्धताम् २. २८, १; ६. ३६,

१; ७२, २; ३, ७८, १;

२३; १०१, १; ७. ५३;

५, ७३, ८; ८२, ३; ६.

१०, ५.

वर्धति २०. १०६, २.

वर्धनम् १६. ३०, ४; २०.
 ३४, १५; ८५, ३.
 वर्धना २०. ७३, १.
 वर्धन्ताम् ५. २६, १२; ६.
 १३७, १; ३.
 वर्धन्ति २०. १७, ७; १००, २.
 वर्धन्ति २०. १७, ३.
 वर्धन्तु २०. ६६, ६; ११०,
 ३.
 वर्धन्ते ८. २, २२.
 वर्धमानः ३. ११, ४; ५, १,
 १; ६. ११०, ३; ७. ५३,
 २; २०. ६६, ६.
 वर्धमानम् २. १३, ५.
 वर्धमाना १२. १, १३.
 वर्धय ६. ३, ३; ७. १६, १.
 वर्धय १. ६, ३; २६, १; २.
 ६, २; ३. २०. १; ५;
 ४. २२, १; ५. २८, ४;
 ६. ५, ३; ३६. १; ५४,
 १; ११. १, २१; १६.
 ६३, १; ६४, २; २०.
 ५५, २.
 वर्धयत् १२. १, १३.
 वर्धयत १. १५, २; १६. १,
 १; २.
 वर्धयन् ४. २१, २; १६. २७,
 ५.
 वर्धयन्तः १७. १, १४; २०.
 ६१, ६; १०.
 वर्धयन्ति ५. २, ६; २०.
 १०७, १२.
 वर्धयन्ति १३. १, ३३.
 वर्धयन्ती १८. ५८, १.
 वर्धयन्तु २. ६, १; १४. १,
 ५४; २, १३; १८. ३,
 १२; १२; १६. १, ३.

वर्धयन्तौ ५. २६, १२.
 वर्धयाथ १४. १, ३२.
 वर्धयामसि १६, ६४, २.
 वर्धयामहे १६. ३२, ३,
 वर्धयामि ३. १६, ५.
 वर्धसे ५. १, ६.
 वर्धस्व ६. १०१, १;
 वर्धस्व २०. ३३, १; ११५,
 ३.
 वर्धाम २०. ६४, २.
 वर्धाय १८. १, ३१.
 वर्धान् १४. १, ६०.
 वर्ष-नीतिः २०. ११, ३.
 वर्ष १. १६, ४; ५. ६; १३; ८.
 २, १०; ५, १०; १४;
 १८; १६; ६. २, १६; ५,
 २६; १०. ६; २; १४. २,
 २१; १८. २, ५८; ४, ६;
 १६. १६, २; १६, १; २;
 ३; ४; ५; ६; ७; ८; ६;
 १०; ११; २०, ३; ४;
 २७, १५; ३०, १; ३; ५८,
 ४; २०. १८, ५.
 वर्मणा ७. ११८, १; १७. १,
 २७; २८; १६. ४६, ४.
 वर्म-सु १६. ३०, १.
 वर्माणि ५. ८, ६; ८. ५, ७;
 ११. १०, १७; १६. २०,
 २; ३०, २.
 वर्मिणः ११. १०, २३.
 वर्मिणम् १६. ३०, १.
 वर्मे १६. ४६, ३.
 वर्वर्ति ६. ६, १३.
 वर्ष-आज्यौ, १३. १, ४७.

वर्षतः ४. १५, ४.
 वर्षति ५. १६, १५.
 वर्षते ११. ४, २.
 वर्षन् ६. ६(५), ७.
 वर्षन्ति ६. १, ६.
 वर्षन्तु ४. १५, ४; ७.
 वर्षन्तु ८. १, ५,
 वर्षम् ३. २७, ६; ४. १५, ६;
 ६; १०; १४; १५; ५. १६,
 १५; ११. ५, १३; १०, २१;
 १२. ३, ५३; १३. १, ५३;
 १५. ७, २; ३.
 वर्ष-मैदसे १२. १, ४२.
 वर्षयन्ति ४. २७, ५.
 वर्षयन्ति ६. १, ६.
 वर्ष-वृद्धम् १२. ३, १६.
 वर्ष-वृद्धे ६. ३०, ३.
 वर्षसि १३. ४, ४३.
 वर्षस्य ४. १५, २; ३; ४; ६,
 ७; १४.
 वर्षाः ६. ५५, २; १५. ३, ४.
 वर्षाणि ८. २, २२; १२. १,
 ३६.
 वर्षाय १२. ३, ६०.
 वर्षिष्ठः ४. ६, ८.
 वर्षिष्ठम् १६. ४६, २; २०.
 ७०, १७.
 वर्षीयसः ६. १३६, २.
 वर्षीयांसम् ६. ६(२), २; १५.
 ११, ५.
 वर्षेण ६. ४, ५; १७. १२;
 १, ५२; १३. १, ५५; १८.
 २, २२.

वृष्म ४. २२, २.
 वृष्मणा ४. ३०, ७.
 वृष्मन् ३. ४, २.
 वृष्मन् ५. २, ७; २०. १०७,
 १०.
 वृष्मा २०. १२७, २.
 वृष्माणम् ७. १४, ३.
 वृष्याः १६. २, १.
 वृलः २०. १६, १०.
 वृलगः १२. ५, ३६.
 वृलगम् ५. ३१, ४; १०. १,
 १८.
 वृलगिनः १. १, ३१.
 वृलगिनम् ५. ३१, १२.
 वृलम् २. ५, ३; २०. ११,
 १०; २८, १; २; ३६, २;
 ३; ८८, ५; ६१, ६.
 वृलस्य २०. १६, ५; ६; ६;
 ३४, ३.
 वृलान्ति १२. ३, २६.
 वृल्गाः १६. ६, ६.
 वृल्यु ३. ३०, ५; १२. ३,
 १८; ३२.
 वृल्युः २. ३६, १.
 वृवत्ते २०. ४७, ३; ७७, ५;
 १३७, १४.
 वृवत्ते २६. ३५, ६.
 वृवर्तत् २०. ५५, १.
 वृवर्तत् २०. १४३, ३.
 वृवर्ध १८. ३, ६५.
 वृवृत्तुः ५. १६; १३.
 वृवृत्ते १६. ३५, ५;
 वृवृत्ते ७. २१, १; ६. ६, १४.
 वृवृत्ताम् १८. १, १.
 वृवृत्स्व ४. ३२, ६.

वृवृध्व्यै २०. ३५, ३.
 वृवृध्वन्तः १८. ३, २२.
 वृवृध्वस्व २०. ८, १.
 वृवृध्वस्व २०. ३७, ११.
 वृवृध्वानः १. ८, ४; ५. २,
 २; २८, ४; १३. १. ६;
 १७. १, १२; १८. १,
 ४७; २०, ११, १; १०७,
 ५.
 वृवृध्वानम् ८. ४, ४; १६.
 ४५, ३; २०. ३६, ६.
 वृवृध्वानस्य २०. २७, ६,
 वृवृध्वानाः ७. १, १.
 वृवृध्वानाम् १२. १, २६.
 वृवृध्वानौ ७. २६, २, १३.
 १, ४६.
 वृवृधुः १८. १, ४७.
 वृवृधे १४. १, ३७; २०.
 ७३, ६.
 वृवृधे ७. ४, २; २०. ६, ७;
 ५६, १; ७६, ७; ६६, २;
 १३८, १,
 वृवृधेत इति ५. १, ५.
 वृवृधेन्यम् २०. ६४, ६.
 वृवृध्वासम् २०. १००, २.
 वृवृमहे २०. १४, २; ६२, २.
 वृवृन् २०. ३५, १५.
 वृवृम् ८. ४, १७.
 वृवृम् ६. ६, ५; १०, ७.
 वृवृम्-वासम् २०. ७७, ७.
 वृवृम्-वाससम् ८. ६, २.
 वृवृरिति वृवृः २०. ७७, ६.

वृवृन् ४. ४, ३.
 वृवृन् ३. ४, ७.
 वृवृन् १५. ११, २; ८; ६.
 वृवृन्-तमा १२. ४, ४२.
 वृवृन्-नीः १८. २, ५.
 वृवृन् ४. ३१, ३; ५. १६,
 १५; ८. ६, २४; ६. ४,
 २१; १५. ११, ८; १६.
 २७, ८.
 वृवृन्स्व ११. ८, १७.
 वृवृन् १. १०, १.
 वृवृन् १०. १०, ६; १२; १३;
 १४; १५; १७; १८; २३;
 २४; २५; २६; २८;
 ३०; ३४; १२. ४, १०;
 ११; १४; २२; २५; २६;
 ३०; ३३; ३५; ३६; ३७;
 ३६; ४२; ४४; ४५; ४६;
 ४७; २०. १३६, १३.
 वृवृन्-श्रमाय ३. २१, ६;
 २०. १, ३.
 वृवृन्-इव ७. ११३, २.
 वृवृन् १२. ४, ४१; ४३.
 वृवृन्-जातानि १२. ४, ४७.
 वृवृन् ६. ७२, १; ६. ४, २४.
 वृवृन्नाम् १२. ४, ४२.
 वृवृन्-भोगः १२. ४, १३.
 वृवृन् १०. १०, २; ४; ५;
 २६; २७; ३२; ३३;
 ३४; १२. ४, १; १५;
 १६; १८; २०; २१; २२;
 २३; २४; ३१; ३४; ३८;
 ४८; ४९; ५०; ५३.
 वृवृन्-शयाः १०. १०, १८; २६;
 ३७; ३१; १२. ४, ४;
 ३२; ४०; ५१; २०. १३०,
 १५.

वशायां—वसु'नः.

(४,६६७)

वशायां १०. १०, २५.
 वशासः ४. २४, ४.
 वशिनाम् १५. ११, ६.
 वशिनी' १४. १, २०.
 वशी' १. २१, १, ४. १७, ८;
 २४, ७; ३१, ३; ५. २२,
 ६; ६. ५, २; २६, १;
 ३६, २; ८६, २; ८. ५,
 ४; ७; २२; १०. १०,
 २४; ११. ५, १६; ६,
 २१; १५. ११, ६; १६.
 १३, ४; ४६, ७.
 वशी'यः १८. ४, ४६.
 वशे' १. ८, २; ३. २५, ६;
 ६. १०, २४; ११. ४,
 १; १०, ४; १३. ४, २८;
 २०. ११२, १.
 वशे' १०. १०, ७; ८; ६;
 १०; ११; १६; १६; २०;
 २१; २२.
 वशे'षु ३. ८, ६; ६. ६४, २.
 वर्षट् १. ११, १; ७. ६७,
 ७; ८. १०(१), ६.
 वर्षट्-कारः ११. ७, ६; १३.
 १, १५; ४, २६.
 वर्षट्-कारम् १५. १४, १७.
 वर्षट्-कारे १०. ३, २२.
 वर्षट्-कारेण ५. २६, १२;
 ६. ६(२), ५; १५. १४,
 १८.
 वर्षट्-कृतम् ६. ५, १३; ११.
 १०, १४.
 वृष्टि' १२. १, २; १३; २०.
 ६७, ३; ८६, ४.
 वसः १६. ३६, ६.
 वसति ५. १७, १८; १५. ११,
 १; ३; ५; ७; ६.

वसति १०. ८, १५.
 वसतिम् ७. ६६, १.
 वसत् १०. ६, ४.
 वसते १६. २०, २.
 वसते-इव ६. ८३, २.
 वसन्तः ६. ५५, २; १२. १,
 ३६; १५. ३, ४; १६. ६,
 १०.
 वसन्तम् २०. १३६, १६.
 वसन्तान् २. ११, ४; २०. ६६,
 ६.
 वसन्ताय ८. २, २२.
 वसन्ति ७. ७६, २.
 वसन्तु ४. १, ५.
 वसवः १. ६, १; २०, १, ३.
 १, २; ५. २७, ६; ६. ६८,
 १; ८. १, १६; ८, १२;
 १०. ७, २२; ६, ८; १०,
 ३०; ३१; ११. ६, १३;
 १२. २, ६; १६. ६, ११;
 ६, १२; ११, ४.
 वसवः २०. १३५, ६.
 वसवः ४. २७, ६, ७. ७७,
 २; ६७, १.
 वसव्यैः ७. २६, ८.
 वसानः ४. ८, ३; ६. ४, ७;
 १०, ११; १०. २, ७;
 ११. ५, ५; ७; १४. २,
 ४४; १८. २, १०; ४,
 ३१.
 वसाना ३. १२, ५; ६. ३,
 १७.
 वसानाः ६. २२, १; ७. ४०,
 २; ६. ६; ५; १०, २२;
 १३. ३, ६.
 वसानाम् ६. १, १.

वसाने इति १३. २, ३२;
 ३, ११.
 वसामसि १६. ४७, ६.
 वसिष्ठ १८. ३, १६.
 वसिष्ठः २.
 वसिष्ठः २.
 ५३, २; २०.
 वसिष्ठम् ४. २६, ३, ६.
 २; ४४, २.
 वसिष्ठाः १८. ३, ४६.
 वसिष्ठासः २०. १२, ६.
 वसु १. ६, १; ३. १४, २;
 ६, ७६, २; ७. ४१, २;
 ७६, ३; ६०, २; ११५,
 २; १०. ८, २०; १२. १,
 ४४; १४. १, २५; २, ८;
 १६. ६, ४; १८. २,
 ६०; १६. ५०, ६; २०.
 ५, ४; २१, ३; ४३, १;
 २; ३; ५१, ३; ५६, २;
 ४; ६३, ४; ६५, ४; १२४,
 २; १२६, १.
 वसुः २०. ७८, २.
 वसु-जित् ५. १०, १०.
 वसु-जिति १३. १, १०.
 वसु-दाः १२. १, ४४.
 वसु-दानः ६. ८२, ३; १६.
 ५५, ३; ४.
 वसु-दाम् २०. ५८, २.
 वसु-देयाय ३. ४, ४.
 वसु-देये १३. ४, २६.
 वसु-धातरः ५. २७, ६.
 वसु-धानः ११. २, ११.
 वसु-धानी १२. १, ६.
 वसुनः २०. २१, २.

वसु'ना ५. २८, ७. ६८, १;
 २०. २५, १; ८६, २.
 वसु'-नीतिः १२. २, ६.
 वसु'-पतिम् २०. ७१, १५.
 वसु-पत्नी ७. ७३, ८; ६. १०,
 ५.
 वसु'-भिः २. १२, ४; ४. ३०,
 १; ५. १२, ३; ६. ७३,
 १; ७४, ३; १६. १०, ६;
 १७, १.
 वसु'-भ्यः ८. ३, ६.
 वसु'म् ७. ६७, ४; २०. ६७,
 ३.
 वसु'-मन्तम् १८. १, २६.
 वसु मान् १६. ६, ४.
 वसु-या ४. ३३, २.
 वसु-युम् २०, १४३, १.
 वसु'-रुचिः ८. १० (५), ७.
 वसु-वनिः ७. ६०, १; १३.
 ४, २६.
 वसुवनिम् २०. १३५, ११.
 वसु-वन्तम् १६. १८, १.
 वसु-वित् १८. ४, ४८.
 वसुविदम् २०. १२७, ६.
 वसु-विदम् ३. १६, ६; २०.
 ८६, ३; ११८, १.
 वसु'ताम् ४. २६, १; २; ३०,
 २; ७. ७३, ८; ७६, ६;
 ७६, ३; ६. १, ४; १०,
 ५; १०. ८, ४२; २०.
 ७०, १५.
 वसु'नि २. ३५, १; ३. ४,
 २; ४; ४, ३२, ३. ५.
 ७, ६; ६. ६३, ४; ७.
 ४८, २; ६७, ३; ४; १२.

१, ४४; १६. ५, १; २४,
 ०६; २०. ५८, १; ६०, ३;
 ६४, ५.
 वसु'त् १२. ४, २७.
 वसु' इति २०. ५२, २; ५७,
 १५.
 वसु' इति ७. ५५, १; २०.
 १८, ४; २३, ७; ८०,
 २; १०८, २.
 वसु'ः १. १, २; ६. ४, ३;
 १२. ३, ४१; १६. ५५,
 २; २०. ६, १; ४६, ४;
 ७१, १५.
 वसु'ः-वसुः १६. ५५, ३;
 ४.
 वसु' २०. ५६, ३.
 वसुताम् ७. २७, १; ११८, १.
 वसुति-विलम् १. ३, ८.
 वसु' १०. ८, ३६; १३. ३, १.
 वसु' ११. ४, १०; १३. १,
 १६२; ११.
 वसु'ः ५. १२, ४; ६. ३१, ३;
 २०. ४८, ६; ७७, ५.
 वसु' १. ३, ६.
 वसु'म् १४. २, ४१; ४२.
 वसु' ६. ५, २५; ११. ३, २१.
 वसु'णि ५. १, ३.
 वसु'ण १८. २, २५.
 वसु'नं १२. २, ३६.
 वसु'ः ६. ४७, ३; ७. १०३,
 १; २०. १४, ३; ४६, १;
 ६२, ३; ८२, २.
 वसु'ः-भूयाय १६. ६, ४.
 वसु'या २०. १३६, २.
 वसु'ः १८. ३, ४३; २०. १७,
 ३; १२; २७, १; ८७, ६;
 ७.

वसु'भिः २०. १३१, ३.
 वसु'ः २०, १०६, १; २; ३.
 वसु' ५. १२, १; १८. १, ३०;
 २०. १३५, ११.
 वसु' १. ७, १; ७; २. ५, १;
 ४. २३, २; ५. ४, ६; ८,
 १; २६, १; ६. ४८, १;
 २; ३; ७. १०६, २; ६.
 ५, १७; १०. ६, २५; १२.
 २, ४२; १४. १, ६२; १६.
 ६, ३२; १८. १, २५; ५६;
 ५७; २, ८; ३४; २०. १३,
 ४; १०१, ३.
 वसु' २०. १२८, १५.
 वसु' ४. ११, ८; ६. ७, ३.
 वसु' १. ८, १.
 वसु' ५. २६, ४; ७. ८६, ३;
 १८. ३, २७.
 वसु'तः २०. ७३, ४.
 वसु'तः २०. ३१, १.
 वसु'तम् १. २७, ४.
 वसु'तम् ३. ११, ६.
 वसु'तात् ६. ८२, २.
 वसु'ताम् २०. ३, २; २३, ६;
 ३८, २; ४७, ८.
 वसु'ताम् ३. २४, ७; १४. १,
 २०.
 वसु'ति १३. १, २१; २०. १४३,
 १.
 वसु'ति ६. ६, २; १०. २, ६;
 ८, ८; १३. ३, १८; १६;
 १६. ५३, १; २; २०. ८६,
 ८.
 वसु'तु ६. ४, ३; १२. २, ८;
 १६. ४, १.
 वसु'तुः १४. १, १३.

बहुतुना—वाचः.

(४,६६६)

बहुतुना १४. २, १.
 बहुतुम् ३. ३१, ५; १४. १,
 १४; ६१२; २, ६; १०;
 १२; ७३; १८. १, ५३.
 बहुतौ १०. १, १; १४. २,
 ६६.
 बहुन्तम् ११. २, २६.
 बहुन्ति १३. २, ४; ६; ७; २३;
 २०. ४७, २०; १४३, २.
 बहुन्ति ४. २७, ४; ८. ६, १६;
 ६. ६, ३; १४; १६; १३.
 १, २४; ३६२; ४३२; २,
 ११; १६; ३; १६; १८.
 ४, ४४; २०. ४७, १३.
 बहुन्तु ३. १६, ६; ७. ५३, ४;
 ८२, ६; ६. २, ११; १०.
 ४, २०; ५, २४; १४. २,
 ७४; १६. १, ११२; ६, ७;
 ११; १८. १, ६०; २, २२;
 १६. ७, ४; ५; २०. १३,
 २; ३२, २; ६४, ३.
 बहुमानः १८. १, २४.
 बहुमानाः ७. ६७, ४.
 बहुसि ४. २३, २; ६. ४, १७.
 बहुसे ७. ४, १.
 बहुत् १६. ३१. १०.
 बहुति ६. ५५, १; १८. २,
 ५३.
 बहुथ १. ३०, २; १८. ४,
 १०.
 बहुष्ठम् ४. २३, ३.
 बहुष्ठाः १३. २, ६; ७.
 बहुन ४. ११, ७.
 बहुयः २०. १३८, २.
 बहिः ५. २७, ४; १३. ३, १६;
 १८. १, २३.

बहि-भिः २०. ७०, १.
 बहिम् १२. २, ४७.
 बही इति १८. २, ५६.
 बह्यम् ४. २०, ३; १४. २, ३०
 बह्य-शीवरीः ४. ५, ३.
 वा २०. १३३, ४.
 वा १. ४, २; ६, २; १८, ३२;
 २५, २२; ३२; ३०, १;
 ४; ३२, २; २. १२, ६;
 १४; ५; २८, २; ३; ३.
 ११, २; १३, ६; ४. ८, ५;
 ६, १०; १२, ७; १८, ५;
 २६, ७; २७, ५; ३८, ५;
 ५. १, ७२; ५, ४; १४, ६;
 ७२; १६, ३; २२, २; ७;
 २५, ६; ३१, २; ४; ८; ६.
 ७, १; २६, १; २; २०६,
 १२; ११३, २; ११६, २;
 ३; १२०, १; ७. १, १२;
 १२, ४२; २६, ८; ३८, ५२;
 ५०, ७; ६५, २; ६६, १;
 १०८, १; २२; ८, ३, ५;
 ५, ६३; १४२; १५; १६;
 १८; ६, १८; ६. ६(३),
 ६२; ८, २०; १०, १२;
 १०. १, ४; ११; १८२; ८,
 १७; २७; २८२; ६, २६२;
 १२. २, ४; ३, १३; ३६;
 ५२; १३. १, ६; ५१, २,
 ७; ४, ४२२; ४३२; ४४;
 १४. १, ३६; २, ६२; ६५;
 १८. १, १६२; २२; ४६;
 २, ७; १७; २६; ३१; ३,
 ५५; १६. ३८, २; ३६,
 ६२; २०. १३, ४; २५,
 ६२; ६४, ४; ७०, ५; ६३
 ७१, २२; ७६, १; ८७, ४;

८६, १०; ६६, ७; ११२,
 १२; २; ३२; ११२, २;
 १२०, १; २; १२६, ३;
 १०; १३१, ४; २४०, २;
 ४; १४१, २२; १४२, ४;
 ६; १४३, ३३.
 वा २०. १३२, १५.
 वा ३. १३, ३; ४. ७, १;
 १०. ४, ३; ४; १८. १,
 १२; २०. १००, २; १३५,
 १२.
 वा-इव ३. १८, ६.
 वाक् २. १२, ८; ३. १३,
 ६; ५. १८, ८; ६. ३१,
 ३; ८. ८, २४; ६. १,
 १०; २०; १०, २४; २७;
 ११. ८; ४; २६; १२.
 ५, ७; १६. २; १; ६,
 ५; १६. ६, ३; ६०, १;
 २०. ४८, ६;
 वाकम् ६. १०, २२.
 वाकाः ६. २५, १; २; ३.
 वाकेन ६. १०, २.
 वाकैः १६. ३, ४.
 वाक्षीत् ५. ८, १.
 वाग्वी-इव ५. २०, ११.
 वाघतः २०. १६, २; ८४, २.
 वाचः ७. ४३, १; १०. ८;
 ३३; १३. १, १७; १८;
 १६.
 वाचः १. १, १; ४२; ४.
 १३, ७; ७. १, १; ८,
 ३, १२; ६. १०, १३;
 १४; १५; २७; १०. ५,
 ४८; १२. १, १६; ३;
 ५; १६. ६, ६२; १७,

१, २६; १६. ४०, १;
 २०. १३७, ५.
 वाचः १. १, २.
 वाचम् ३. २०, १०; ३०,
 २; ३; ४. ६, २; १५,
 १३; ५. १, २; ७, ४;
 ६; १०; ८; २०, १; ४;
 ५; ६; ८; ११; ६. ३४,
 १; ४६, ३; ६१, २;
 ६६, २; ११८, ३; ८. ६,
 ३; ६. १, १६; २, ५;
 ६, १०; १०. २, ७;
 ११. १, २; ५, ३४; १२.
 ३, १५; १४. १, ३१;
 १६. २, २; १६. ४, ४;
 २०. ११, २; २१, १;
 ४२, १; ८६, १; ११७,
 ३; १२७, ६.
 वाचम् २०. ४६, १; २; ३.
 वाचम्-इव २. १, ४.
 वाचम्-ईह्वयः २०. १३७,
 ६.
 वाचा १. १८, ३; ३४, ३;
 २. ३१, ३; ३५, ५; ५.
 ७, ५; ३०, २; ३; ४;
 ६; ६. ८५, २; ६६, ३;
 १२१, २; ७. ७०, १;
 ८. १, ३; ३, ६; ६.
 ३, २; १०. ७, ३६; १३.
 १, १३; १६. ६, ५; १८.
 १, ३०; १६. ५८, ५;
 २०. ७३, ६; ८६, १;
 १४२, १.
 वाचा-स्तेनम् ८. ३, १७.
 वाचि ५. १२, ११.
 वाजः ११. ७, ३; १३. १,

२; १८. १, ३३.
 वाज-पेर्यम् ११. ७, ७.
 वाजम् ४. २७, १; १४. २,
 ७०; १८. १, २२; १६.
 १२, १; २०. ६, २;
 ३१, ५; ३४, १८; ३७,
 ६; ४६, ५; ५२, ३; ५७,
 १६; ६३, ३; ६६, ७;
 ७७, ८; ८५, ४; ६१,
 १०; ६८, २; १२४, ६.
 वाजयं २०. १६, २.
 वाजयन्त-भिः ७. ५०, ३.
 वाजयन्तः २०. ३६, २; ६६,
 ५; १२५, ३.
 वाज-यन्तः २०. १०, १;
 ५६, १.
 वाज-यन्तम् २०. १०८, ३.
 वाजयन्ति ६. १०१, २.
 वाजयामः २०. ६८, ६.
 वाजयामसि २०. ४७, १;
 १३७, १२.
 वाज-रत्ना २०. १४३, ७.
 वाज-रत्नाम् २०. ८६, ७.
 वाज-वत् २०. ७१, १३.
 वाज-सातये ५. ६, ४; ७. ४६,
 १; १४. २, ७२; २०. १६,
 ५; १३७, २; १४१, ३.
 वाज-साते ४. २७, १.
 वाज-सातौ १६. १०, १;
 २०. ११, ११.
 वाजस्य ३. २०, ८; ७. ६, ४;
 २०. ७३, ४; ७८, २; ६८,
 १.
 वाजाः ४. ४, ८; १६. ३१,
 ११.
 वाजान् १२. २, २६; २७; १३.

१, २२; २०. १२, ४; ३७,
 ११.
 वाजानाम् २०. ६४, ६.
 वाजानाम् २०. ६०, ३; ७४,
 २.
 वाजाय २०. ३१, ४.
 वाजिन् ४. ३८, ६; ७; ६.
 ६२, १; २; ३; १३. १, १.
 वाजिनः १. ४, ४; ३. १६,
 ६; ६. ७२, ३; १६. २,
 ४; २०. १२१, २; १३७,
 ३.
 वाजिनम् ३. २०, ७; ७. ८०,
 २; ८५, १; ८. ३, १;
 १०. ६, ११; १३. २, ७;
 २०. ४४, ३; ६६, १; ६८,
 ८; ६.
 वाजिना ४. ४, २; ८. ४, ६;
 ११. २, ७.
 वाजिनानि ३. १६, ६; १२.
 ३, २.
 वाजिनि १६. ४७, ४.
 वाजिनीः १. ४, ४.
 वाजिनी-वतः ८. ८, ६; १०.
 ४, ७.
 वाजिनी-वते १८. ३, ५४.
 वाजिनी-वन् ४. ३८, ६; ७.
 वाजिनी-वसुः २०. ३१, ३.
 वाजिनीवसू इति वाजिनी-
 वसू १४. २, ५; २०.
 १३६, ४.
 वाजिनीवसो इति वाजिनी-
 वसो २०. २४, ५.
 वाजिनी-वान् ४. ३८, ५.
 वाजिमिः १६. २७, १.
 वाजी ५. २६, १०; ८. ५, ३

६. २, ७; १६. १३, ५;
 २०. ६७, १.
 वाजें ६. ३८, ३; ४; २०. १४,
 १; ४५. ३; ६२, १.
 वाजेंभिः २०. २१, ५; २६,
 २; ४६, ३; ६६, ४.
 वाजें-वाजे १६. २४, ७; २०.
 २६, १.
 वाजेंषु २०. १६, ६; २४, ६;
 ५६, १; ६८, ८; ६; ७०,
 १०.
 वाञ्छ ६. ६, १.
 वाञ्छन्तु ४. ८, ४; ६. ८७,
 १.
 वाणीः ६. १०, २; २०. ३८,
 ४; ४७, ४; ७०, ७; १४२,
 ४.
 वाणीभिः २०. १४०, ४.
 वात ४. १३, ३.
 वातः १. ११, ६; २. १०, ३;
 ३०, १; ३. २१, १०; २६,
 ४; ४. ५, २; १५, १६;
 ५. ३, ३; ५, ७; ६, ७;
 ६. ६२, १; ६१, २; ७.
 ६६, १; ८. १, ५; २,
 १४; ६, १६; ६. २, २४;
 १०. १, १३, ३, १३;
 १४; ७, १२; ३४; ३७;
 ८, ३५; ६, २६; ११. ३,
 ४; ४, १५; ७, २; ८,
 ३१; १२. १, ५१; १३.
 १, ५१; १५. ५, ७; १४;
 २०; २७; १६. ८, ६;
 १०, ४; २७, १; ७; ४४,
 ५; ५४, ४; ५५, २; २०.
 १६, ५२; ७३, ५; ७४,
 ६.

वातः ४. १३, २.
 वातः २०. १३२, ४.
 वातः-वज ४. ३०, ८; १०. १,
 १७.
 वात-गोपम् २. १२, १.
 वात-जाः १. १२, ३.
 वात-जूतानि ४. १५, १.
 वात-तेजाः १०. ५, २६.
 वात-पत्नीः २. १०, ४.
 वात-पुः १८. ३, ३७.
 वात-भ्रजाः १. १२, १.
 वातम् ३. २०, ७; ६. ८६, २;
 ११. ६, १८, २, ७.
 वातम्-आयाः १३. २, ४२.
 वात-रंहसः ११. १०, ३.
 वात-रंहाः ६. ६२, १.
 वातवे १०. ७, ४४.
 वातस्य ३. १, ५; २, ३; ६.
 ४, १३; १२. १, ५१.
 वाताः १. १५, १; ४, १५, ८;
 १२. ३, १३; १३. ३, २;
 १८. १; १७; ३६; २, २१;
 १६. १, १.
 वातात् ४. १०, १; ८. ३, ३;
 ६. १, १; ३; १०.
 वातापज्जन्ययोः ६. ६३, ३.
 वातापज्जन्या १०. ४, १६.
 वाताय १०. ६, ११; १२; १३;
 १४; १५, १६; १७.
 वाति ४. ५, २; ६. ६१, २;
 १२. १, ५१.
 वाती-कारस्य ६. ८, २०.
 वातीकृत-नाशनी ६. ४४, ३.
 वाती-कृतस्य ६. १०६, ३.
 वातु ४. १५, १६.

वातु ४. १३, २; ७. ६६, १;
 ८. २, १४; १६. १०, ४.
 वाते ३. २१, ७; ६. ३८, ३;
 ६२, २; ७. ६६, १; ६७,
 ८.
 वातेन ६. ७२, २; १०. ३,
 १५; १०, १४.
 वातौ ४. १३, २.
 वादिषः ६. ४२, ३; ४३, ३.
 वादिषुः ६. ११८, ३.
 वाधू-यम् १४. १, २६; २,
 ४१; ४२.
 वानस्पत्यः ५. २०, १; २१,
 ३; १२. ३, १८.
 वानस्पत्याः ३. १०, ५; १२.
 १, २७; १५. ६, २.
 वानस्पत्यान् ३. ६, ६; ८, ८;
 १४; ११. ६, २४.
 वानस्पत्यानाम् १५. ६, ३;
 १६. ८, १६.
 वानस्पत्येषु १४. २, ६.
 वान्तु ४. १५, ८; १२. ३, १२;
 १८. १, ३६; २, २१.
 वापय १८. ३, ६.
 वापयामसि ६. १८, १.
 वापीनाम् १६. २४, ६.
 वाम् २. २६, ४; ३०, २; ४;
 २६, १; ५; २८, १; २६,
 १; ६, ७८, ३; १२२, ३;
 १४०, २; ३; ७. ३६, १;
 २; ५८, २; ७३, १; २;
 ४; ५२; ८. ४, ३; ६; ६.
 १०, २३; ११. २, १;
 १२. ३, १; २; ३; ४; ५;
 ७; ८; ३६; १४. १, १४;
 १५; २, ५; ३६; ४०; १८.
 १, ३१; ३, ३८; ३६; ४,

४६; १६, ६, ४; २०, १३,
 १; ७६, १; १३६, ३; ४;
 १४०, १; ३; ४; ५^३;
 १४१, ४^३; १४३, १; २;
 ३; ५^३; ६; ७; ६.
 वाम-देव १८. ३, १६.
 वाम-देवः १८. ३, १४.
 वाम-देव्यम् ४. ३४, १; ८,
 १०(२), ६; १०; १५, २,
 १०; ३, ५; ४, ५; ६.
 वाम-देव्यस्य १५. २, १२.
 वाम-देव्याय १५. २, ११.
 वाम-देव्येन ८. १०(२), ८.
 वामम् ४. २२, ४; ६. ६२, ३;
 ७. ८४, २; १४. १, ४६;
 २, ६; २०. ८६, ८.
 वामस्य २०. १४०, २.
 वामस्य ४. २५, ६; ६. ६,
 १; ५.
 वामि ४. ३०, ८.
 वामेन ७. ६०, २.
 वायवे ४. ३६, ३२; ६. १०,
 २; १६. ४३, २.
 वायव्यान् १६. ६, १४.
 वायव्यानि ६. ६(१), १७.
 वायुः २. २६, १; ३४, ४; ३.
 ८, १; १२, ४; २०, १०;
 ४. २५, ५; ३६, ४; ५,
 २४, ८; ६. ५३, १; १२४,
 २; १४१, १; ८. १, १५;
 ६. ७, ४; ८; ११. १०,
 १६, १२. ५, ७२; १३. ४,
 ६; ३२; १४. १, ४; १६.
 ४, ४; १६. ६, ७; १०, ६;
 १७, २; १६, २; २७, १;
 ४३, ३^३; २०. १२, ४.

वायु-तेजाः १०. ५, २६.
 वायुना ४. ३६, ४; २०.
 १४१, २.
 वायुम् ४. २५, ७; ४०, ६;
 १८. ४, २६; १६. १८, २.
 वायुमत्-भिः १२. २, २६.
 वायो इति २. २०, १; २; ३;
 ४; ५; ४. २५, ३; ४; ६.
 वायो इति ६. ६८, १; ७,
 ४, १.
 वायोः ४. २५, १; ६. ५१,
 १; ६. ४, १०; १३. ४,
 ३२.
 वारः १०. ४, २२; २०. १२६,
 १८.
 वारणाः २०. ५३, २; ५७,
 १२; ६७, २.
 वारुणी ५. १४, ११.
 वारुण्य ११. ६, ५; १०, १६.
 वारुणात् ४. ७, १; ६. ८५,
 १; १०. ३, ५.
 वारुणामह ६. ८५, २.
 वारुण्यते १०. ३, ४; ६;
 ७; ८.
 वारुणे ४. ७, १; ६. १२, १;
 २; ८५, ३; १६. ३६, ६.
 वारुस्मा २०. १३५, १२.
 वारुणाः ६. १३१, १; ७,
 ८३, ४.
 वार्त्र-हत्याय २०. १६, १.
 वार्त्रम् १८. १, ४१; ४, ४५;
 २०. ५६, ६; ६५, ३.
 वार्या ७. १७, ३.
 वार्याणाम् १. ५, ४, २०.
 ६८, १२.
 वार्याणि ७. १०, १; १४, ३.

वार्षिकम् ४. १६, १; ५. २२,
 १३.
 वार्षिकीः १. ६, ४.
 वार्षिकौ १५. ४, ८; ६.
 वावदतः २०. १६, १.
 वावदत्-भिः २०. ६१, ३.
 वावदीति २२. १३५, १३.
 वावदीतु ६. १२६, ३.
 वावशतीः २०, ८८, ५.
 वाववाना ६. १, ८; १०, ६.
 वावाता २०, १२८, ११.
 वाश्यमाना १२. ५, २०.
 वाश्रा-इव १२. ३, ३७.
 वाश्राः ४. १५, १; ५.
 वाश्राः-इव २. ५, ६.
 वासः २. १३, २; ३; ५; ८.
 २, १६; ६. ५, १४; २६;
 १०. २, १५; १२. ३,
 ५१; १४. १, ७; ३०;
 ४५; ५३; २, ४१; ४२;
 ५१; १४. २, ५; १३;
 १६; २५; १८. ७, ५७;
 ४, ३१; १६. २४, ४; ५;
 ६; ५०, ५; २०. १२३,
 १.
 वासतेयः ८. १०(१), ७.
 वासन्तिकम्-इव २०. १३६,
 ३.
 वासन्ती १५. ४, २; ३.
 वासयातः १२. ३, ३५.
 वासये १५. १३, १३.
 वासवस्य ६. ८२, १.
 वाससः ६. १२४, २; १४, १,
 २७; २, ५०.
 वाससा ७. ३७, १; १८, २,
 ५१.

वासंसि ६. ५, २६.

वासिताम् ५. २०, १.

वास्तु ७. १०८, १.

वास्तुषु १२. ५, ४६.

वास्तुनि ६. २, ४; ६.

वास्त्यीः ११, ८, २८.

वास्तोः ६. ७३, ३.

वास्या १०. ६, ३.

वाहः २०. ७६, ३.

वाहः ६. १०२, १.

वाहसा २०. १३८, २.

वाहाः ३. १७, ६.

वाहान् ३. १७, ५.

वाहि ४. १३, ३२.

वाहिनी १०, १, १५.

वि १. १, ३; ४; ७, २; ३; ६;

८, २; १०, १; ११, १; २;

३२; ५५; १६; २; ३; २०,

३; २१, २; ३४; ४; २८,

४२; २. ८, १; २७, ४;

३३, १; २; ३; ४; ५; ६;

७; ३६, ३; ३९, १, ५, २,

२; ३; ४; ३, १; ४, १;

२; ४; ७, २; ४; १०, १;

१२; ११, ५; ७; १७, १;

२; ५; २५, ६; २६, ८;

३०, ५; ३१, १४; २४;

३४; ४५; ५५; ६२; ७२;

८२; ६२; १०२; ११२;

४. १, १२; ४; ५; २, ७२;

७, २; ४; ८, ४; ६, ४;

१०, २; ११, २२; १३,

२; ३; १५, ८; १६, ५;

१६, ५; २१, ४; ३०, २;

७; ३१, २२; ३२, ३; ३७,

६; ८; ६; ५. ३, २; ४,

८; ६; १२; ७, ६; ७;

१२, ४; ५; ११; १३, ६;

१७, ४; १७; १८, ४; २०,

४; ६; २२, ६; २५, ६;

२७, १०; २६, ६; ७; ८;

६; ६. २, २; २२, १; ३०,

२; २१, २; ३; ३६, ३;

४३, ३२; ४६, २; ५६,

१; ६३, १; २; ६६, ३;

८१, २; ८४, ३; ६०, १;

६८, २; ११२, १; २; ३;

११३, २; १२१, १; ४;

१२७; ३; १३३, १; १३७,

३; ७. ४, १; १८, १;

२५, २; २६, ३; ४; ५;

४२, १; ४३, १; ४४, १;

५०, ३; ६; ५६ ७; ६६,

१; ७२, २; ७३, ६; ७४,

३; ७८, १४; ८१, २;

८२, ३; ८४, ३२; ६०,

२; ११७, १; ८. १,

६; २१; २, १८; ३, ४;

२४; २५; ४, १५; १८;

२५, ५, ७; ८; १३; ६,

१०; ७; ६; ८, २४; ६,

७; २०; ६. १, ५; ३, १;

२; ३; ४; ५; ८; १३; १४;

१८; २०; ५, ४; ८;

२०; २७; ६, ६; ७;

१४; १५; १०, १५; १६;

२१; २२; २६; १०, १,

१६; २, ४; ६; ११;

३, ११; ४, ६; ८; १६; ५,

२५; २६; २७; २८; २९;

३०; ३१; ३२; ३३; ३४;

३५; ६, १८; २१; ३३;

७, २; ४३; ८, ५;

१३; १६; ३०; ४१; ११.

१, ५; १२; २२; ३१;

२, १; १६; २१; ४, ३;

२१; ५, १६; १७; ८,

३१; ३३; ६, २३; २६;

१०, १६; १२. १, १०;

४८; ५७; २, २२; ३२;

५५; ३, ५; १८; २८;

३६; ५४; ४, २; ५, ५५;

६८; ७१; १३. १, ५; ८;

११; १४; १६; २७;

४२; २, ६; १०; १८;

२२; २७; २८; ३०;

४१; ३, १६; २२; २५;

४, ७; ११; १६; ४१;

१४. १, १३; २२; २४;

२६; ४६; ५६; ५७;

६४; २, २५; ६४; १५.

२, १; ६; १५; २१;

६, १; ४; ७; १०; १३;

१६; १६; २२; २४; ६,

१; १७. १, १६; १८;

१८. १, ८; १७; १६;

३३; ३६; ५५; २, ४;

४१; ५३; ३, ६; १८; २६;

५३; ४, ३; ६६; १६. ६,

२; ५२; १५, १२; २; २४;

६; २८, ४; ४४, ७; ४६;

२; ४७, १; ५३, ५; ६;

५५, ६; ६८, १; २०, ४;

२; ११, १; १२, ३; ४;

१६, ४; ६; १७, ५; ६;

२२, १; २३, ८; २७, ५;

२८, १; ४; २६, ५; ३४,

१६; ३५, १०; १२; २६,

४; ६; ६; ३७, ६; ३८,

६; ३६, २; ५; ४७, ६;

१५; १६; ४८, ५; ४९, २;

६; ६१, २; ६६, १; ७०,
६; ७२, २; ७३, ४; ७५,
१; ७६, ३; ८; ७७, ५;
६; ८५, १; ४; ८८, १; ४;
८६, ४; ६; ८०, २; ८१,
४; ६; ७२; १२; ८३, ६;
८४, ८; ८५, ४; ८६, १;
१७; १८; १९; २०; २१;
२२; २३; १०७, ३; १२५,
५; १२६, १; ५; २०;
१२७, ६; ११; १२८, ५;
१३, १४; १३४, ३; १३५,
४; ७; १४२. १२.

वि २०. १२८, १२; १४२;
१३६, ५.

वि-असम् २०. ११, १.

वि-अकल्पयन् ६. ४, १५.

वि-अक्तम् १८. १, ५५.

वि-अक्ता २०. १२६, ५.

वि-अङ्ग ५. २२, ६.

वि-अङ्गः ७. ५६, ६.

वि-अर्चन्ति ४. २७, २.

वि-अर्चलत् १५. १४, १;

३; ५; ७; ६; ११; १३;

१५; १७; १८; २१; २३.

वि-अच्यमानम् १८. ४, ३६.

वि-अर्तणत् ११, ८, १८.

वि-अर्तुरा ६. ५०, ३२.

वि-अद्वरी ३, २८, २.

वि-अधूनुत् ५. १८, १२;
१६, ११.

वि-अध्वरम् २. ३१, ४.

वि-अध्वे १३. २, ३१.

वि-अनत् ५. २, २; २०. १०७,
५.

वि-अलकशा १८. ३, ६.

वि-अवर्तयत् १०. ७, २६.

वि-अश्वः २०. १४०, ५.

वि-असर्पः १२. १, ५५.

वि-अस्यन् २०. ६१, ३.

वि-आकरम् ७. ११५, ४.

वि-आकरोमि १२. २, ३२.

वि-आत्तम् ६. ५६, १; १०.

४, ८.

वि-आत्ते १०. ५, ४२.

वि-आध्यः ७. ११४, २.

वि-आनः १४. १, १२; १५.

१७, १; २; ३; ४; ५; ६;

७; १८. २, ४६; १६.

५१, १.

वि-आनम् १०. २, १३; ११.

५, २४.

वि-आनशे ३. ७, ६; ५. ७, ६.

वि-आनाः १५. १५, १.

वि-आनाय ५. ४, ७; ६. ४१,

२.

वि-आपिथ १७. १, १३.

वि-आप्तिः ११. ७, २२.

वि-आप्तिम् ६. ५, १२.

वि-आप्ते १८. ४, ७०.

वि-आप्तेन ६. १३७, २.

वि-आम्यः ४. १६, ८.

वि-आयामे २. ४, ४.

वि-आल ५. २२, ६.

वि-आवर्तने ६. २६, २.

वि-आवृत्तः १०. ७, ४०.

वि-इव ५. २२, ७; २०.
१२६, ७.

वि-ईसन्ती ५. ७, ८.

वि-ईत्सार्थ ५. ७, १.

वि-उच्छन्तीः १७. १, ३०;
१६. ४६, ६.

वि-उन्दती १८. ३, ७२. ४,

५७.

वि-उषः १३. ३, २१.

वि-उष्टीः ८. ६, १०; १५.

वि-आदयः १४. २, ४६.

वि-आद्धिः ८. ८, ६; १२.

५, २६.

वि-एनसौ १४. २, १६.

वि-ऐलबाः १२. १, ४१.

वि-ओम ६. १०, १३; १४;

११. १, ३०.

वि-ओमन् ५. १७, ६; ६;

१२३, १; २; ७. ५, ३;

८. ६, ८; ६. १०, १८;

१२. १, ८; १३. १, ४४;

१७. १, ६; ७; ८; ६;

१०; ११; १२; १३; १४;

१५; १६; १७; १८; १९;

२४; १८. ३; ५८; ४;

३०; १६. ५३, ३; २०.

८८, ४.

वि-ओषया ३. २५, ४.

वि-ओषा ३. २५, ३.

वि-ओच्छत् ३. १०, ४; ८.

६, ११.

वि-श्रुतिः ५. १५, २; ६. ६,

१३; १६. २३, १७; ४७,

५.

वि-श्रुतिम् ४. ३, ३; २०.

१२६, १४; २३.

वि-श्रुत्या ७. ४, १.

विः १८. १; २१.

विकङ्कती-मुखाः ११. १०,

३.

वि-कृणः ५. १७, १३.

वि-कसुकः १२. २, १४.

वि-कुर्वते १२. १, ४३.

विकृता—वित्तौ.

(५,००५)

वि-कृता १२. ३, २२.	वि-चक्रिरे १२. १, ५.	विजन्ताम् ४. १५, ३; ११. ६, १२.
वि-कृतानि १. ६, १६.	वि-चक्षुणः १८. ४, ५८.	विजन्ते ८. ७, १५२.
वि-कृत्य २०. १६, ८.	वि-चक्षुणम् १०. २, १६;	विजमाना १२. १, ३७.
वि-कृत्यमाना १२. ५, २८.	१०, ३; १३. २, २३;	वि-जयन्ते २०. ३४, ६.
वि-केशः ६. ३०, २.	१८. १, २१; २०. ४७,	वि-जयस्य १०. २, ६.
वि-केशी ५. १७, ४; ११. ६, ७; १४. २, ६०.	२०.	वि-जयाय ४. ३१, ४.
वि-केश्यः १. २८, ४; ११. २, ११; ६, १४.	वि-चक्षणे ६. ६, १२.	वि-जनता १२. ५, १७.
वि-क्रमणम् १८. १, ४६.	वि-चक्षे २०. ७७, ४.	वि-जानन् ४. ११, ३.
वि-क्रमणेषु ७. २६, ३; २०. १४१, २.	वि-चर्षणिः २०. २०, ५; ७; ५७, ८, १०.	वि-जानात् ६. ६, १५.
वि-क्रमान् ६. ६ (२), १२.	वि-चर्षणे २०. ५, १; ५२, ३; ५७, १६; १०८, १.	वि-जानिः ५. १७, १८.
वि-क्रयः ३. १५, ४.	वि-चर्षे २. १०, ४; ७. ८१, १; १३. २, ११; १४. १, २३.	वि-जान्ति ७. ७६, २.
वि-क्रान्ता ८. १० (२), १.	वि-चाकंशत् २०. १२६, १६.	वि-जायते ३. २८, १; ६. १, १३.
वि-क्लिन्दुः १२. ४. ५.	वि-चाकंशीति १३. ३, १.	विजा-यति ६. १, १६; १४.
वि-क्लेशदीयसीः ७. ७६, १.	वि-चित्तः १३. २, ३१.	वि-जृम्भते २०. १२६, १६; १७.
वि-क्षरन्ति १३. ३, २.	वि-चिन्वतीम् ४. ३८, २.	विजेष-कृत् ४. ३१, ५.
वि-क्षरम् ६. १०५, ३.	वि-चिन्वन् १०. ८, १२; २०. १२६, १६.	वि-ज्ञानम् ७. १२, ३; १५, २, ५; १३; १६; २५.
वि-क्षु २. २, १; ८. ३, १०; ४, १८; ६. ५, १६.	वि-क्षुभे ७. ५७, १.	विद्-भ्यः ३. ३, ३.
वि-खनामि १२. १, ३५.	वि-चृतम् ६. ११७, १; ११६, २.	विद्धि २. ५, ४.
वि-गते ५. २१, १०.	वि-चृतामसि ६. ३, १०.	वित्त-अध्वरः ६. ६ (२), १०.
वि-गृह्य ४. १५, १४.	वि-चृतौः ६. ११०, २.	वि-ततः ४. २, ४; ३४, ५; ६. ६ (२), ११; २३. २, १४; १८, ४, १३.
विग्रम् २०. ६८, ४.	वि-चृतौ २. ८, १; ३. ७, ४; ६. १२१, ३.	वि-ततम् २. १, ५; ३५, ५; ६. २, १६; ३, ८; १०. ८, १२; ३७; ३८; १६. ५८, ५; २०. २५, २; १३३, १.
वि-ग्रीवान् ४. १८, ४.	वि-चैतसः २०. २५, १.	वि-तता ६. १२४, ३.
वि-ग्रीवासः ८. ४, २४.	वि-च्यध्वम् ११. १, १२.	वित्तौ २०. १३३, १.
वि-घसे ११. २, २.	वि-क्षिद्य ६. १३६, ५.	
वि-घ्नानाः ६. ३२, ३; ८, ८, २१.	वि-क्षिन्नम् ६. १३६, ५.	
वि-चक्रमाणः ७. २६. १.	विजः-इव २०. ३४, ५.	
वि-चक्रमे १. १२, १; १२. १, १०.	वि-जङ्गहे ५. १६, ४.	

(५,००६)

वि-तताम्—विद्वस्य-इव .

वि-तताम् १०. ३, ४.
 वि-तन्वते २०. १०७, १५.
 वि-तर्पन १२. २, ४५.
 वि-तरम् ५. १२, ४.
 वि-तस्थिरे ४. ६, २.
 वि-तावति १२. २, ३८; ५२.
 वि-तुदायसि २. ३२, ६.
 वि-तूर्य २०. १६, ३.
 वि-तृतीयम् ५. २२, १३.
 वि-तेनिरे ४. १४, ४.
 वि-त्त-काम्या १४. ३, ५२.
 वि-त्तम् १८. ४, ८६.
 वि-त्तम् ४. २८, १.
 वि-त्ता १२. ५, १.
 वि-त्ते १६. ४८, ६.
 वि-त्तपति २०. १३६, ३.
 वि-त्त्वा ७. ६७, ७; ६. ५,
 २७; १८. २, २५.
 वि-त्स्य ८. ३, ३.
 वि-थुरः १६. ६, ११.
 वि-थुरा २०. ८०, २.
 वि-थुरौ ७. ६५, १.
 वि-द ६. १२३, २.
 वि-द-गणेश्यः १६. २२, १८.
 वि-दत् २०. १६, ११; १७,
 ४; २२; ६; ३५, ६; ६२,
 ३.
 वि-दत् १. २०, १२; ५. ३,
 ६२; ८. १, १६; २०.
 ४१, २; १२६, १८.
 वि-दत् १८. २, ३१.
 वि-दत्-वसुः २०. ११, १.

वि-दत्-वसुम् २०. ७०, २.
 वि-दथ १. ३२, १.
 वि-दथम् ८. १, ६; १२. २,
 २२; ३०; १४. १, २०;
 २१; १७. १, १५; २०.
 ३४, १८.
 वि-दथस्य ७. ७३, ४.
 वि-दथा ५. २०, १२; ६. ६,
 २२; १८. ३, ७०.
 वि-दथानि ४. २५, १; २०.
 ७७, ३.
 वि-दथाय १८. १, २०.
 वि-दथे १. १३, ४; १८. १,
 ३५; ३, १६; २४; २०.
 ३०, १.
 वि-दथेषु ५. १२, ७.
 वि-दथ्यः २०. १२८, १.
 वि-दधत् १८. ४, ५३.
 वि-दधत् ७. ८१, १; १४.
 १, २३.
 वि-दन् १. १६, १२; १२. १,
 ३२; १४. २, ११.
 वि-दन् २०. १३०, १४.
 वि-दन्त ६. ३२, ३; ८. ८,
 २१; ११. २, २.
 वि-दयते २०. ६३, ४.
 वि-दानः ५. २०, ३.
 वि-दाने इति १८. ३, ३८.
 वि-दाम् ५. ३०, १३.
 वि-दाह्य २०. १३६, ८.
 वि-दितम् ४. २७, ७; ६.
 १२, २.
 वि-दितौ ४. २८, २.
 वि-दुः १. ३२, २; ५. ४, २;

६. १०८, ३३; ४; ८.
 ७, २३; २४३; २६; ६.
 १०, १; १८; १०. ७,
 १०; १७२; ११. ८, ७;
 १४. १, ३; १६; १६. ६,
 १३; २०. ७५, २.
 वि-दुः ४. ११, ६; १६, १;
 ५. १८, १४; ६. १०,
 २७; १०. २, ३२; ७,
 १७; २१; २७; २८; ८,
 १४; ४३; १०, ५; १२.
 ३, ५०; १३. १, ४०;
 २, १३; १४. १, १६;
 १६. ३४, ६; ५६, ४.
 वि-दुग्धान् ८. ६, १०.
 वि-दुषः ११. ३, ५४; १२.
 ४, २२; ५, ४६.
 वि-दुषा १५. १२, ४; ७; ८;
 ११.
 वि-दुषाम् १६. ६६, २.
 वि-दुषी ११. १, २४.
 वि-दुषे ८. १०(६), १; १०.
 १०, ३२; १२. ४, २३;
 ४५.
 वि-दे १२. ३, ५४; २०. २२,
 ४; ५१, १; ६२, १.
 वि-दे ४. ३६, ५.
 वि-दे-म १०. ६, ३५.
 वि-दे-यम् १६. ४, २.
 वि-दे-वः २०. १३६, १४.
 वि-दे-वम् १२. ३, ४३.
 वि-दे-श्याः ४. १६, ८.
 वि-दे-ष्ट २. ३६, ३.
 वि-द्वः २. २६, ७.
 वि-द्वस्य ११. ३, १३.
 वि-द्वस्य-इव १०. १; ३६.

विद्या ३. २५, ४.

विद्धि ५. २६, १; ६. १२३,
५; २०. १८, ४.

विद्धि ११. १, ३०; १४.
२, ३३.

विद्या १. २, १; ३, १; २;
३; ४; ५; १३, ३; ४.
३१, ५; ५. १३, ७; ६.
४६, २; ७. १२, २; ७६,
५; ८. ७; १८; १०. १,
२०; १३. ३, २१; १६.
५, १; ४; ५; ६; ७; ८;
१६. ५६, ६२; २०. २४,
६; ५६, ५; १३६, १०.

विद्या ४. ११, १२; ६. ४६,
२; ११. १, २६; १३. ३,
२१; १६. ५, ३; ४; ५;
६; ७; १०; १८. १, ३६;
१६. ५७, ४.

विद्याना-अपसम् ७. ४७, १.

विद्यो इति १. २, १.

विद्यते १६. ४६, ७०.

विद्यया ६. ११६, १; ११. ७,
१०.

विद्याः ११. ८, २३.

विद्यात् ६. ६(१), १; १०.
७, २४; ८, २०; ३७०;
१०, २३; २७; ११. ३,
२३; ८, ३; ७; १२. ४,
१६.

विद्यात् ७. ८६, २; ८. ६, ३;
६. १, १५; १०. ५, ४७;
८, २०; ३७; १२. ४, २४.

विद्याम् २०. ५७, ३; ६८, ३.

विद्याम् १०. ८, २६.

विद्युः ७. ८६, २; ६. १, १५;
१०. ५, ४७.

विद्युत् ४. १५, ६; ६. १,
२१; २, १५; ७, ३; १०,
७; ११. ३, ४०; १५. २,
२५; २०. १३५, ३.

विद्युतः ४. १०, १; ६. २,
१४; १०. ४, २३; १०. ७;
११. ७, २१.

विद्युतः १८. ४, ८६.

विद्युतम् ३. २१, ७; १०. १,
२३; ११. २, २६.

विद्युता ७. ११, १; ५६, १;
८. १, ११; १६. ३०, ५.

विद्युताम् १६. ४४, ५.

विद्युते १. १३, १; ११. ४, २.

विद्युतमानः ६. ६(५), ७.

विद्युधम् ६. १२७, ३.

विद्युधस्य ६. १२७, १; ६.
८, २०.

विद्युनः ६. ६, ७.

विद्युलाः १०. १, ६.

विद्युसं ६. ११५, १.

विद्युसं ६. ६, ४; १०. ८,
१७; १२. ४, ४३; १३.
३, १; २; ३; ४; ५; ६;
७; ८; ९; १०; ११; १२;
१३; १४; १५; १६; १७;
१८; १९; २०; २१; २२;
२३; २४; २५; १५. २,
३; ११; १७; २३.

विद्युन् २. १, २; २८, २;
३५, ३; ३. १, १; २२,
१; ४. १, ३; ६, ७; ३६,
१०; ५. ११, ६; १२, ६;

२०, ६; २६, ५; ३०, ७;
६. ६८, ३; ७६, ४; १११,
२; ३; १२२, १; ७. ७३,
६; १०८, १; ६. ३, ३;
६(२), ७; ६(४), १; ३;
५; ७; ६; १०; ६, ७;
१०. ५, ५०; ८, १२;
२०; ४४; ११. १, ४; ५,
१०; ८; २२; १२. २, ६;
३६; १४. १, ५६; १५.
१०, १; ११, १; १२, १;
१३, १; ३; ५; ७; ६; १७.
१, १६; १८. २, ५४; ५७;
१६. १५, ४; ५६, १; ५६,
२; ३; २०. ७७, ६; ८६,
१; ६१, ३; ६६; २.

विद्युषते ३. ३७, ४.

विद्युषणम् २०. ८५, २.

विद्युषम् ५. २१, १.

विद्युन् १८. २, ५८.

विद्युतः २०. ५८, २.

विद्युते २०. १४३, ४.

विद्युत्ता १६. ५८, २.

विद्युमाम् १. १८, ४.

विद्युषणी ६. ७, ४.

विद्युर्ता २०. ६२, १७;
१०५, ५.

विद्युर्ता ३. १६, २; १०. ८,
३६; १३. ४, ३.

विद्युर्मणा १६. ३, ६.

विद्युर्मणि ७. २२, १; ६. १०;
१७.

विद्युर्मा १६. ३, २.

विद्युन्मा ५. ३, ६.

वि-धात्रे ३. १०, १०; १६.

३७, ४.

वि-धुः ६. ८, २२.

वि-धुम् ६. १०, ६.

वि-धूपायत् ४. १६, ६.

वि-धूय १३. २, ८.

वि-धृतिः ४. ३५, १.

वि-धृतीः १६. ५४, ५.

वि-धेम १. ३१, १; ६. ४१,
१; २.वि-धेम १. १२, २३; ४. २,
१; २; ३; ४; ५; ६; ७;
८; ९. ३६, २; ८०, १;
३; ६७, १; ७. ७६, ३;
१०६, ६; १०. ४, २३;
१८. २, ४६; २०. १, ३;
८८, ६.वि-ध्य ५. १४, ६; ११. ६, १२;
१६. २८, १०४.वि-ध्य ३. २, ५; ५. ८, ६;
२०, ३; २६, ४३; ८. ३,
५; ६; १२; १७; ६, १७;
१०. ५; ४८.

वि-ध्यत् २०. ३५, ७.

वि-ध्यत् १. १६, २; ३. २, ६.

वि-ध्यतम् १. ८, २; ८. ४, ३;
५.वि-ध्यताम् ८. ६, २४; ११.
६, २३.वि-ध्यति ५. १८, ८; १५; १५.
१, ८.वि-ध्यतु १. १६, ३; ३. २५,
२; ५. ३१, १२.

वि-ध्यामः १. १६, ४.

वि-ध्यामि ७. ७४, २२.

वि-ध्यामि ३. २५, १; ३; ७.

७४, १; १६. ७, १६.

वि-नक्तु १२. ३, १६, १६.

३४, २.

वि-नद्धा १०. १, १४.

वि-निद्वे ८. ३, २४.

वि-निर्हते ७. ५२, २.

वि-न्दति १२. ४, ४; ५; ८.

वि-न्दतु ५. ७, ५.

वि-न्दते ६. ५, २७; १२. २,
१६; १४. २, ८; २२.

वि-न्तते ११. ५, १८.

वि-न्दन्ति १८. ४, ८६.

वि-न्दन्ते ४. ३६, ६.

वि-न्दसि २०. १२६, २.

वि-न्दसे २०. ११४, २.

वि-न्दस्व ३. २३, ५.

वि-न्दस्व ३. २३, ४.

वि-न्धते २०. १४०, १.

वि-न्धे २०. ७०, १३.

वि-पः २०. ८५, ४.

वि-पः-चित् ८. ६, ३; ६. ५,
१३; १३. २, ३१; १४.
१, ५६.वि-पः-चितः ६. १०, १७;
१६. ५३, १; २०. ८५,
४; १०४, १.वि-पः-चितम् ६. ५२, ३; ६.
४, २१; ११. २, १७;
१३. १, ३६; २, ४; २०.
६८, ४.

वि-पः-चिता ६. ६७, २.

वि-पः-चिते २०. ६२, ५.

वि-पञ्चवे ५. २६, ६.

वि-पक्षसा २०. २६, ५; ४७,
११; ६६, १०.वि-पथम् १५. २, ६; १४;
२०; २६.वि-पथ-वाहौ १५. २, ७; १४;
२०; २७.

वि-परुः ७. ५६. ४.

वि-परेतन १४. २, २८; २६.

वि-पश्यति ४. ५, ५; ३०,
४; ६. ३४, ४; १०. १०,
३४.

वि-पश्यते १६. ३२, ८.

वि-पश्यन् ६. ५, ३.

वि-पश्यामि १२. १, ३३.

वि-पिपानः २०. ७७, ३.

वि-पिपाना २०. १२५, ४.

वि-पे-ततुः २०. ३१, ४.

वि-प्र २०. ६७. ५.

वि-प्रः ५. ११, ११; ६. २७,
२; ६. ५, १३; २०. ५०,
२.

वि-प्रः २०. १२८, ३.

वि-प्र-जूतः २०. ८४, २.

वि-प्रम् ३. ३, २; ७. ७१, १;
८. ३, २२; १६. ४४, १;
२०. ६७, ३; ६१, २.

वि-प्र-राज्ये २०. १०४, २.

वि-प्रस्य ६. ५, १३; १८. १,
२२.वि-प्राः ४. १, ५; ५. २, ४;
६. १०, २८; १८. ४,
६१; १६. २, ३; २०.
११, ७; १७, ७; ५४, ३;
८८, १; १०७, ७; १२५,
३; १३८, २.

विप्राः २०. ८६, १.	वि-मिनत्ति २०. ५३, १; ५७, ११.	वि-मिते १०. ७, ३६.
विप्राय ५. ११, ११; २०. ६२, ५; १३५, ११.	वि-मिन्दुती ४. १६, ५.	वि-मिमानः १३. २, ५.
विप्रासः १४. १, ३७; २०. ३६, २; ७१, ३; ११६, २; १३६, ३.	वि-मिन्दन ४. १६, ५.	वि-मुक्तः ६. ७, २४.
वि-प्रुषः ६. ५, १६.	वि-भु २०. ५८, ४; ७१, ११ १३५, ६.	वि-मुचः ६. ११२, ३.
वि-वद्धः ५. २०, २; ६. ११२, ३.	वि-भुः १६. ५२, २.	वि-मृग्वरि १२. १, ३५.
वि-वन्धुषु १८. २, ५७.	वि-भु-कृतम् २०. ६२, १२.	वि-मृग्वरी १२. १, ३७.
वि-वज्राघ्रे ८. ६, ६.	वि-भुम् ४. २३, ४.	वि-मृग्वरीम् १२. १, २६.
वि-वर्हेण २. ३३, ७; २०. ६६, २३.	वि-भुमत्-भ्यः २०. १३७, १०.	वि-मृधः १. २१, १; ८. ५, ४; २२.
वि-वाधः १६. ३४, ७.	वि-भूः ७. २१, १; १३. ४, ४७; १५. १५, ६.	वि-मोकः १६. ३, ४.
वि-वाधते २०. १३६, १४.	वि-भूतयः २०. ६०, ५; ७१, ५.	वि-यंतौ १०. ८, १८; १३. २, ३८; ३, १४.
वि-संकाः १. ३०, ४; ११. २, ६.	वि-भूतिः २०. ४५, २.	वि-यन्ता ६. १०, १६.
वि-भजन्ति १६. ५०, ६.	वि-भृतः १६. ३, १.	वि-यन्ति ३. ३०, ४.
वि-भजन्ते ३. २६, १.	वि-भोजिरे १०. ७, २७.	वियुक्-मिः ७. ४, १.
वि-भजासि १८. १, २६.	वि-भ्राजन् १३. २, ३३; ४५; २०. ६२, ७.	वि-गुनक्ति ८. ६, ३.
वि-भवः २०. १३, ४.	वि-भ्राष्टिम् २०. ६७, ३.	वि-यूयं २०. १२५, २.
वि-भाज्यं ११. १, १३.	वि-भ्रम् १८. १, २१.	वि-रपशम् २०. ८८, ३.
वि-भाज्यमाना १२. ५, २८.	वि-भ्वीः १८. ३, ६६.	वि-रप्तिन् ६. २, २.
वि-भार्ति १३. २, ४२; ३, १७.	वि-भू ७. ११७, १.	वि-रप्तिन् २०. ३६, ६.
वि-भाती १०. ८, ३०; १६. ४६, ४.	वि-भदन् २०. ४६, ३.	वि-रप्तिन् ५. २६, १३.
वि-भातीः १४. २, ४३; ४४; १८. ३, २४; १६. १०, १०.	वि-भदम् ४. २६, ४.	वि-रप्ती २०. ६०, ४; ७१, ४.
वि-भावरि १६. ४८, २; ४; ४६, ६; ५०, ७.	वि-भदायं २०. १४१, ५.	वि-रवेण २०. १६, ८.
वि-भावा १६. ५२, २.	वि-भन्युकः ६. ४३, १.	वि-राजः ३. १७, २; ८. ६, १; २; १०; १३. १, ३३; १५. ६, २३; १६. ६, ६.
वि-भासासि ११. २६, ३.	वि-भन्युकस्य ६. ४३, १.	वि-राजन् ३. १२, ६.
वि-भिद्यं २०. ६१, ५.	वि-भमे ७. २६, १; २०. ३४, २.	वि-राजन्तम् १६. ४२, ४.
	वि-महसः २०. १, २.	वि-राजम् ८. ६, ७; ६; ६. २, ५; १०. ७, १६; ११. ५, ७; १५. १४, ६.
	वि-मानः ४. २, ३; १०. ८, ३; ४०.	वि-राजा १५. १४, १०.
	वि-मानम् ६. ४, १५.	वि-राजानि १, २६, ६.
	वि-मितम् १३. ३, ७.	वि-राजं १७. १, २२; २३.
	वि-मिता १३. १, ७.	

वि-राट् ४. ११; ७; ७. ८४,
 १; ८. ५, १०; ८, २३;
 ६, ८; ६; १०(१), १;
 ६. ५, २१; १०, २४५;
 ११. ४, १२; ५, १६;
 ८, ३०; १२. ३, ११;
 १३. ३, ५; १४. २, १५;
 ७४; १५. ६, २२; १६.
 ६, ६.
 वि-राधनम् ११. १०, २७.
 वि-रिष्टम् ६. ५३, ३; ७.
 ५७, १.
 वि-रुज्ज १६. २८, ३.
 वि-रुज्जन्ति ६. ८, १३; १८.
 वि-रूपः १०. १२८, १२.
 वि-रूपम् ६. ७१, १.
 वि-रूपाः २. २४, ४; ३. ४,
 ७; १८. ४, ३३.
 विरूपे इति वि-रूपे १०. ७,
 ६; ४२.
 वि-रूपौ ५. २३, ४.
 वि-रोचते ४. २३, ७; २८, १;
 ७. २५, २; १३. १, ५५.
 वि-रोचनः ८. १०(४), २.
 वि-रोहतः ४. ४, ३.
 वि-लपन् ६. २०, १.
 वि-लिङ्गी ४. १३, ७.
 वि-लिङ्गी १२. ४, ४६; ४७.
 वि-लिप्त्यम् १२. ४, ४१.
 वि-लिप्त्याः १२. ४, ४४.
 वि-लीढ्यम् १. १८, ४.
 वि-लोहितः १२. ४, ४.
 वि-लोहितम् ६. ८, १.
 विवक्ति १८. १, २३.
 विवक्ति २. २८, २; ४. १,
 ३.

विवक्षवः २. ३०, ३२.
 विवक्षत् ३. ३, ६.
 वि-वक्षणाः ८. ७, १०.
 विवस्वतः १८. १, ५३.
 विवस्वतः १८. १, ३५; २०.
 ११, ७; २१, १.
 विवस्वते १८. २, ३३.
 विवस्वन्तम् ११. ६, २; १८.
 १, ५६.
 विवस्वान् १८. २, ३२२.
 विवस्वान् १८. ३, ६१; ६२;
 १६. ६, ७.
 वि-वाचः २०. ११, १०; ७३,
 ६.
 वि-वाचसम् १२. १, ४५.
 वि-वाचि २०. १२, २.
 वि-वाचदत् २. ४, ११.
 वि-वासत् २०. ६१, ४; ६२,
 ८.
 वि-वासे २०. ४४, ३.
 वि-वाहान् १२. ५, ४४.
 वि-वाहे १२. १, २४; १४.
 २, ६५; ६६.
 वि-विदे २०. १२५, ३.
 वि-विद्धः ६. ६६, १.
 वि-विद्धा ११. १०, २५.
 वि-विश्याः १८. १, ३.
 वि-वृहात् १८. १, १०.
 वि-वेच ६. ६१, २.
 वि-वेद १४. १, ५६; १८.
 १, ५०; १६. ३२, ६;
 २०. ६१, ५.
 वि-वेदिथ २०. ६१, २.
 वि-वेश ३. २६, ७; ४. ११,
 १; ३०, ५; ३४, ५; ५.
 १, २; ७. ८२, ४; ६.

६, २२; १०, १०; १०.
 २, ३३; ७, ८; ६२; ३५;
 ८, ३; ४०; ११. ४, २०;
 १२. २, ४३; १३. १,
 २४; १८. १, २७; २०.
 ११, ५.
 वि-व्यचत् २०. ३०, ४.
 वि-व्याधिनः १. १६, १.
 वि-व्रताः ३. ८, ५; ६. ६४,
 १.
 विश ६. ११३, २; ७. ११०,
 ३; १३. १, १; १४. २,
 २६; ४०.
 विशः ३. ३, ३; ४, २; ६; ४.
 ८, ४; २२, ७; ३२, २;
 ५. १, ३; ६. ६१, २;
 ८७, १; ६८, २; ७. ६४,
 १; ६. ४, ६; १०. २,
 २२; २३; १२. ५, ८;
 १३. १, २; १०; २, २०;
 १५. ८, २; ६, १; १८.
 १, २१; १६. ५४, ४;
 २०. ४७, १७; ७३, ३;
 १०७, १; १३७, ६.
 विश-विशः ४, २३, १.
 विशत् ११. १, १८; १६.
 १६, १२; २२, ३२; ४२;
 ५२; ६२; ७२; ८२; ६२;
 १०२; ११२.
 विशत्तम् ३. ११, ५; ७. ५३,
 ५.
 विशत्ताम् १. २३, २.
 विशत्ति ७. ७६, ४.
 विशत्तु १५. १०, ४.
 विशत्ते १४. १, २५; १६.
 ४७, २; ५४, १.
 विशथः ४. २५, १.

विश्वध्वम् १२. ३, ४.
 विश्वन्ति ६. २, २.
 विश्वन्तु २. ५, ४; १२. ३,
 ३२, १३. १, १०; १८.
 २, २६; २०. १३, १;
 ३०, १; ६६, ५.
 विश्वन्ते ४. २५, ३.
 विश्वफस्य ३. ६, १.
 विश्वम्-विश्वम् ४. ३१, ४;
 २०. १७, ६.
 विश्वरात् २. ४, २.
 विश्वरीकम् १६. ३४, १०.
 विश्वसन्तम् १४. १, २८.
 विश्वस्तः ६. ५, ४.
 विश्वस्व १८. ३, ७; १६. २४,
 ८.
 विश्वस्त्राः ८. ७, ४.
 विश्वस्त्रे १६. ७, ३.
 विश्वति १२. ३, ४८.
 विश्वत्थ १४. १, ३३,
 विश्वम् १. २१, १; ३. ४,
 १; ४. २२, १; ३; ६.
 ८८, १; ७. ५०, २; ८.
 ५, २२; १५. ८, ३; २०.
 ११, २.
 विश्वम् ३. २०, २.
 विश्वामि ५. ६, ११; १२;
 १३; १४.
 विश्वच्च १५. १०, ३.
 विश्वि ३. ३, ५; १३. १, ६.
 विश्विखान् ४. १८, ४.
 विश्विषः ११. ८, २७.
 विश्वे १४. २, २७.
 विश्वे म ३. १०, ११.
 विश्वपतिः ४. ५, ६; २३, ३.

विश्वपतिम् ६. ६, १; २०.
 १०१, २.
 विश्वपते २०. ६, ३.
 विश्वपत्नी ७. ४६, ३.
 विश्वपत्न्यै ७. ४६, २.
 विश्वयानाम् ६. १३, १.
 विश्वयति १४. २, ३८.
 विश्वतम् १५. २, २६.
 विश्व-अङ्गैः १२. ३, १०.
 विश्व-अङ्ग्यम् ६. ८, ५.
 विश्व-अत् ३. २१, ४; १८.
 ३, ५५; १६. ५६, २.
 विश्व-अक्षम् ६. ३, १६.
 विश्व-आयु २०. १५, १.
 विश्व-आयुः १८. २, ५५;
 २०. ७१, १३.
 विश्व-कर्मणा २. ३५, ५;
 १६. ५८, ५.
 विश्व-कर्मणे १३. १, १४.
 विश्व-कर्मन् २. ३५, ४; ६.
 १२२, १.
 विश्व-कर्मन् २. ३५, ३.
 विश्व-कर्मा २. ३४, ३; ३५,
 १; २; ४. ११, ५; १२.
 १, ६०; १६. १७, ७; २०.
 ६२, ६.
 विश्व-कर्माणः १२. १, १३.
 विश्व-कर्माणम् १६. १८, ७.
 विश्व-कृत ६. ४७, ८.
 विश्व-गर्भाम् १२. १, ४३.
 विश्व-गूर्तः २०. ३५, ६.
 विश्व-गूर्तम् २०. ६२, १८.
 विश्व-गोत्र्यः ५. ११, ३.
 विश्व-चक्षणम् १८. १, १७.
 विश्व-चक्षसे १३. २, १७;
 २०. ४७. १४.

विश्व-चयाः १६. ५६, २.
 विश्व-चर्षणिः ४. ३२, ४;
 १३. २, २६; १६. ३३,
 ४.
 विश्व-चर्षणे २०. ७१, ६.
 विश्व-जनीनस्य २०. १२७,
 ७.
 विश्व-जनीनात् ७. ४५, ५.
 विश्व-जन्मनः ११. ४, २३.
 विश्व-जन्यः २०. ६१, १.
 विश्व-जित् ६. १०७; १; २;
 ३.
 विश्व-जित् ४. ११, ५; ११.
 ७, १२, १७. १, ११.
 विश्व-जितम् ४. ३५, ७,
 विश्व-जित् ६. १०७, २.
 विश्वतः २. ४, २; ७, ३; ३.
 १६, ७; ४. ३३, ५; ६;
 ५. ३, २; ७. ५०, २;
 ५३, ६; ८. ४, ६; ५,
 २२; ६. १०, १७; १०.
 ८, १०; ११. २, ८; १७.
 १, ३०; १६. ६, १; २०,
 ३; ३२, १०; ३३, १; ३४,
 ५; ४४, ६; २०. ३६,
 ८; ३६, १; ६४; १; ७०,
 १६.
 विश्वतः-धारम् ४. १४, ४.
 विश्वतः-पाणिः १३. २, २६.
 विश्वतः-पृथः १३. २, २६.
 विश्वतः-मुख ४. ३३, ६; ७;
 ७. ६५, २.
 विश्वतः-मुखः १०. ८, २७;
 १३. २, २६.
 विश्वतः-वीर्यम् ३. ३१, ७.
 विश्वतः-वीर्या ६. ३३, २.

विश्व-तुः २०. १०५, १.

विश्व-दर्शतः १३. २, १६;
२०. ४७, १६.विश्व-दानीम् ७. ७३, ११;
६. १०, २०; १२. १,
७; १८. ३, ५४.

विश्व-दावन् ४. ३२, ६.

विश्व-दाव्यः ३. २१, ३; ६;
१०. ८, ३६.विश्व-दृष्टः ५. २३, ६; ६.
५२, १.

विश्व-देवः २०. ६२, ६.

विश्वदेव-वन्तम् १६. १८,
१०.

विश्व-देवाः १६. ११, २.

विश्व-देवाय २०. ८८, ६.

विश्व-देवेभिः ७. ६८, १.

विश्व-देवेभ्यः १६. ३६, ५.

विश्व-देवैः ४. ३६, १.

विश्व-धा ६. ८५, ३; २०.
७३, १.

विश्व-धायसः ३. २२, २.

विश्व-धायसम् १२. १, २७.

विश्व-धा-वीर्यं ५. २२, ३;
१६. ३६, १०.

विश्व-नाम्नीः ७. ७५, २.

विश्व-पैशसम् २०. ३५, १६.

विश्व-मृत ४. ११, ५; ५.
२८, ५.

विश्व-भेषज ४. १३, ३.

विश्व-भेषजः २. ४, ३; ४.
१०, ३; १३, ६; १०. ३,
३; १६. ३५, ५; ३६; ५;
६; ७; ८; ६.

विश्व-भेषजीः ८. ७, २६.

विश्व-भेषजीम् ६. ५२, ३.

विश्व-भेषज्या ६. १३६, ३.

विश्व-भोजसम् ४. ३५, ३;
१८. ४, ६.

विश्वम् १. १०, २; ३१, ४;

३२, ४; २. १, १; ३.

३१, ५; ४. २, ६; ११,

१; ३२, १; ५. २, ८;

११, ८; ६. ४४, १; ५१,

२; ५७, ३; ७७, १; ८८,

१; ७. १, २; ११, १;

२०, ६; ५५, १; ८. ६,

६; ६. ३, २०; ५, २१;

७, ४; १०, १६; २६;

१०. ६, १७; ७, ३५;

८, ७; १३; ११. ४, २२;

७, १, २; १३. १, ६;

५२; २, ३; १६; २०;

३१; ४४; ३, १५; १४.

१, २३; २, ६४; १८. १,

१८; ५३; ३, २४; १६.

४७, ३; ५५, ६; २०.

१०, २; १५, २; ६; ३०,

५; ४७, १६; १७; ५६,

६; ५६, २; ६५, ३; ८७,

६; ६५, ३; १०७, ११.

विश्व-मानुषः २०. ४३, ३.

विश्व-मित्राः १८. ३, ६३;

४, ५४.

विश्वम्-इन्वम् २०. ३५, ४.

विश्वम्-इन्वाः ५. १२, ५.

विश्वमिन्वे इति विश्वम्-

इन्वे २०. ६१, ११.

विश्वन्-भर २. १६, ५.

विश्वम्-भरा १२. १, ६.

विश्व-राधसः ७. १७, २.

विश्व-रूपः ४. ८, ३; ६. १,

५; ४, २२; १८. १, ५.

विश्व-रूपम् २. ३२, २; ४.

१४, ६; ६. १, २; ६ (६).

७; ८; ६; १०; ११; ७,
२५; १०. ७, ८; ८, ६;
११; १३. १, ८; १४. १,
६१; २, १२; २०. ६१,
१०.

विश्व-रूपा ४, ३४, ८; ६.

५, १०; १०. १, २; १५,

२४; १४. २, ३२.

विश्व-रूपाः २. ३४, ४, ३.

१०, ६; २८, १; ४. १५,

२; ३; ३५, ६; ५. २३, ५;

६. ७, २६.

विश्व-रूपाणाम् २. २०, ४.

विश्व-रूपान् १३. १, २२.

विश्व-रूपाम् ६. ५६, ३;

१०. १, १; १२. १, ११.

विश्व-रूपैः १७. १, ६; ७;

८; ६; १०; ११; १२;

१३; १४; १५; १६; १७;

१८; १६; २४.

विश्व-रूप्यम् ६. ६, ६.

विश्व-वसुम् २. २, ४.

विश्व-वसो इति विश्व-वसो

१४. २, ३५.

विश्व-वसो इति विश्व-वसो

१४. २, ३३.

विश्व-वारः ५. २७, ३.

विश्व-वारम् ७. ४७, १.

विश्व-वारामिः २०. ३६, ११.

विश्व-वाराम् ७. १५, १.

विश्व-वारायाः ६. ३, १.

विश्व-वारे ७. २०, ४; ७६,

१; ६. ३, २; ४; १२. ३,

११.

विश्व-विदः ६. ६, १०.

विश्व-वैदसः ३. ३, १; ६.

६२, १; १६. २७, ६.

विश्व-वेदसूत्रः—विश्वे.

(५,०१३)

विश्व-वेदसूत्रः द. ६३, ३.
 विश्व-वेदसूत्रम् २०. १०१, १.
 विश्व-वेदसे १. ३२, ४.
 विश्व-वेदाः ७. ६१, १; २०.
 १२५, ६.
 विश्व-व्याचाः ६. ७, १५;
 १२. ३, १६; ५३.
 विश्व-शंभुवम् १. ६, २.
 विश्व-शंभूः ६. ४७, १.
 विश्व-शाखम् ६. ८, ६; १६.
 ३४, १०.
 विश्व-सृजः ११. ७, ४.
 विश्वस्मात् ६. ६६, २; ७.
 ११२, २; ८. ७, २८; १४.
 २, ४४; २०. १२६, १; २;
 ३; ४; ५; ६; ७; ८; ९; १०;
 ११; १२; १३; १४; १५;
 १६; १७; १८; १९; २०;
 २१; २२; २३.
 विश्वस्य २. ३१, १; ३. ७, ५;
 ११, ३; ४. २५, १; ५.
 २५, ७; ६. ३६, ३; ५८,
 ३; ६६, १; ६१, ३; ६५,
 ३; ८. ३. १४; ४, १६; ६.
 ६, २२; १०, १३; १४;
 ११. ४, २३; ७, १५; १६;
 २०. ५, ३; ३४, ६; ६६,
 २; ८; १३७, ५.
 विश्व-स्वम् १२. १, १७.
 विश्वहं २०. ३४, १८.
 विश्वहा ५. २७, ७; ६. २,
 १६; २०; २१; २२; २३;
 २४; १२. १, १७; २७;
 १६. ५०, २.
 विश्वा १. १, १; १६, ३; २६, ३;
 २. १, ३; ५, ६, ५; २८,
 २; ३. २०, ८; ४. १, ३;
 १३, ४; २६, ५; ३०, ७;

८; ३२, ३; ५. ११, ४;
 ५, १२, ६; २८, ८; ६.
 १६, १; २०, ३; ३४, ४;
 ३६, २; ५३, २; ८०, १;
 ११०, २; १४२, १; ७,
 १०, १; १७, ३; २६, ३;
 ४२, २; ६०, ७; ६३, १;
 ७६, ४; ८०, ३; ८१, १;
 ८७, १; ११०, २; ६. १,
 ५; ४, १; ६, २; ११;
 १४; १०. ८, १८; ११.
 २, ११; ५, ६; १३. १,
 ११; २, ६; १०; ११; १२;
 ३२; ३४; ३८; ३, ३; १४;
 १८; १४. १, २३; २, ३०;
 १७. १, १६; १६. ६, ३;
 ५३, १; २; ३; ६; २०.
 २७, ६; ३१, ३; ३४, ४;
 १७; ५५, १; ५८, १; ७३,
 १; ७७, ५; ८०, २; ८१,
 २; ८५, ३; ८२, २१; ८३,
 ८; ८४, १; १०७, १३;
 ११८, ४.
 विश्वाः २. ६, १; ५. ७, ६;
 २३, २; ६. ३२, ३; ६७,
 १; ७. ७३, ६; ८४, १; ८.
 ४, ११; १०. ५, ३६; ८,
 ३६; १३. १, २२; २, २८;
 ३३; १६. ६, १; १८. २,
 ५६; २०. १७, १; २६, ३;
 ३६, ६; ३७, १; ४३, १;
 ४६, २; ५४, १; ६५, १;
 ६१, ११; ६२, ११; ६३,
 ८; ६५, ४; १०५, १; २;
 १०७, १; ११०, २.
 विश्वान् ३. ८, ३; २१, ८; ५.
 २२, २; ७. ३८, ३; ११.

६, ५; १६.
 विश्वानरे ४. ११, ७.
 विश्वानि १. ६, २; ४. ३६,
 १०; ६. ४५, २; ६३, ४;
 ७. ४१, १; ८. ३, २४;
 १०. ५, ६; १५. ३, १०;
 ११; १६. ४६, २; २०.
 १२, १; ३६, ७; ४४, २;
 ६६, ७; ७१, ८; ७७, ६.
 विश्वामिः ११. ६, १६; २०.
 १६, ३; २५, ७; ३३, २;
 ३७, ३; ११८, १.
 विश्वाम् २०. १७, १०; ६४,
 १०.
 विश्वामित्र १८. ३, १५.
 विश्वामित्रः १८. ३, १५.
 विश्वामित्रम् ४. २६, ५.
 विश्वाय १३. २, १६; २०.
 ४७, १३.
 विश्वाषाट् १२. १, ५४; १३.
 १. २८.
 विश्वासाम् २०. ६२, १६;
 १०५, ४.
 विश्वासु ५. ११, ८; ६; १६.
 ४६, ५; २०. १०४, ३.
 विश्वाहा ३. १५, ८; ७. ५०,
 १; ७४, ४; १८. ३, ५१;
 ४, ३४; २०. ८७, १.
 विश्वे १. ६, १; १३, ४; ३०,
 १; ३५, ४; २. ६, ४;
 १२, ५; १३, ४; ५; २८,
 ५; २६, ५; ३. ३, ५; ४,
 ४; ८; ४; १६, ५; २२,
 १; ४. २, १; ५; ८, ३;
 ५. २, १; ३, ४; ६; २७,
 ७; १२; ६. ४७, २; ६१,
 १; ६३, ३; १११, ४;

११२, १; ११५, १; ३;
 १३२, २; ७. ६, १; १६,
 १; १७, ३; २१, १; २४,
 १; ३५, १; ५०, ७; ७३, ३;
 म. १, ७; २, २१; ५, १६;
 म. १३; ६. २, ७; ४, १८;
 ६(५), २; ६, २१; १०,
 १८; १०. ५, ५०; ११.
 १, ३३; ५, २४; ६, १८;
 १२. १, ५३; १३. ३, २४;
 १४. १, १५; ३२; २, ५३;
 ५४; ५५; ५६; ५७; ५८;
 १५. २, २; १८. १, ३२;
 ५२; ३, ११; ३६; १६. ६,
 १२; १४; २०, ४; ३०,
 २; २०. ३४, ७; ६३, १;
 ८६, १०; ६२, म; १०७,
 ४; १२४, ४.
 विश्वे ६. ११४. ३.
 विश्वेन २. १६, ५; १७. १,
 २४.
 विश्वेभिः ४. ६, १; ५. २६,
 २; ३; ७. १०५, १; २०.
 ६, ३; ६०, २; ७१, ७.
 विश्वेभ्यः १५. २, ३.
 विश्वेषाम् ४. १, ७; १५. २,
 ४.
 विश्वेषु ७. ५८, २; २०. ७२,
 १.
 विश्वैः २. १६, ४; ३. १७, ६;
 १२. ३, १०; १८. ३, २८;
 १६. १७, १०; ४०, १.
 विश्वं ४. ६, ३.
 विश्वः ५. १७, ५.
 विश्व-गिरिः ४. ६, ७.
 विश्व-दूर्पणम् ६. १००, १;
 १०. ४, २४.

विश्व-दूर्पणीः म. ७, १०.
 विश्व-धानः २. ३२, ६.
 विश्वम् ४. ६, १; ४; ५२; ६;
 म; ७, १; २; ५. १३,
 १२; १; ४३; म; ६; १०;
 ११; १६; १०; ६. १२,
 १; २; १००, २; ३; ७.
 ५६, १; ३; ५; ७; म; मम,
 १२, म. ३, १६; १०(५),
 १५; १६; १०(६), ३; ४;
 ६. म, १०; ११; १२; १६;
 २०; १०. ४, ३; ४; १६;
 २०; २१; २२; २६४;
 १२. ४, ३६; ५, ३१.
 विश्व-वत् १४. १, २६.
 विश्व-वति म. १०(५), १३.
 विश्वस्य ४. ६, २; ५. १८,
 ४; १०. ४, २५.
 विश्वा ७. ११३, २.
 विश्वाणि ६. ६०, २.
 विश्वातकी ७. ११३, २.
 विष्णु २०. १३७, म.
 विष्णु-रूपम् १६. ५, १.
 विष्णु-रूपा १८. १, २; ३४.
 विष्णु-वतः २०. १०६, १.
 विष्णु-वता ६. १०, २५.
 विष्णु-वति ६. ३, म.
 विष्णु-वन्तम् ११. ७, १५.
 विष्णु-वृत् २०. १७, ३.
 विष्णु-वृत्तः १०. २, ११.
 विष्णु-चः ३. १, ५; २, ३.
 विष्णु-ची १. २७, २.
 विष्णु-चीः १. १६, १; ६. २,
 २१; १०, ११; १६. म,
 ६; १५, २.

विष्णुचीनम् ३. ७, १.
 विष्णुचीना ६. १०, १६.
 विष्णुचीनाम् ८. ६, १०.
 विष्णु-जीम् ६. ६०, १; ७.
 ४२, १; २०. २६, ५.
 विष्णे ५. १३, ५; ७. मम,
 १; १०. ४, २६.
 विष्णो ५. १३, ४; म. ३,
 २३; ११. २, २६.
 विष्टः १६. ४६, म.
 विष्टपम् ११. १, ७; ३, ५०;
 २०. ६२, ४.
 विष्टपि १०. १०, ३१; ११.
 ३, ५१; १३. १, १६;
 १८. ४, ४.
 विष्टम्भाः १३. ४, १०.
 विष्टारिणम् ४. ३४, ३; ४;
 ५; म.
 विष्टारी ४. ३४, १.
 विष्टीमे न २०. १३५, ५.
 विष्टा-मिनम् २०. १३६, ४.
 विष्णवि २०. ६६, २; १११,
 १.
 विष्णवे १२. ३, ५६.
 विष्णुः ३. २७, ५; ५. ३,
 ३; २५, ५; २६, ७; ६.
 ३, १; ७. १७, ४; २६,
 २; ४, ५; म. ५, १०;
 १०. १०, ३०; १२. १,
 १०; १३. २, ३१; १५.
 १४, ६; १८. ३, ११;
 १६. ६, ६; १०, ६; २०.
 ३५, ७; १०६, ३.
 विष्णुः-इव १४. २, १५.
 विष्णु-जा २०. ६५, १.
 विष्णु-म ३. २०, ४; ७;
 २५, १; २; ११. ६, २.

विष्णो इति ८. २६, ३; ८. ४४, १; १७. १, ६; ७; ८; १०; ११; १२; १३; १४; १५; १६; १७; १८; १९; २०.	वि-सितम् १. ३, ८. वि-सित-स्तुपः ६. ६०, १. वि-सिताः ४. १६; ६. वि-सिते ४. १. ६. वि-सृज्यमानायै ६. ६०, ३. वि-सृष्टाः २. ३, ६; ४. १५; १६. वि-स्कन्ध-दूषणम् २. ४, १; ३. ६, ६; १६. ३५, १. वि-स्कन्धम् १. १६, ३; २. ४. ३; ४; ३. ६, २; ४. ६, ५; १६. ३४, ५. वि-स्कन्धात् २. ४, २; ५. वि-स्कन्धानि ३. ६, ६. वि-स्तमितः ११. २, २३. वि-स्तमिते इति वि-स्तमिते १०. ८; २. वि-स्तुति १३. १, २५. वि-स्था ७. ३, १; १२. १, ५. वि-स्थाः ४. १, १; ५. १, ८; ६; १; १८. ४, ४. वि-स्थितम् ६. १७, ४; १२६; १. वि-स्थिता ३. ६, ६. वि-स्थिताः ६. ६०, २. वि-स्थिताः-इव ७. ११५, ४. वि-स्रसः १६. ३४; ३. वि-स्रस्तम् ४. १२, ३. वि-हत्य ७. ७३, ६. वि-हरन्ति २०. ६६; १४. वि-हरन्ते ८. ४, ६. वि-हवे ५. ३, ३; ११. वि-हवेपु ५. ३, १. वि-हव्यः २. ६, ४. वि-हव्येन ७. ५, ४. वि-हहः ६. १६, २.	वि-हाय ३. २८, ५; ६. १२४, ३. वि-हाथाः १७. १, २७. वि-हितः १८. ४, ११. वि-हितस्य १८. ४, ८. वि-हिता १०. २, २४; २५; ११. १, २३. वि-हिताः १२. १, ३६. वि-हितानि ६. ६, १६. विहिते इति वि-हिते १२. २, ५२. वि-हृतम् ५. २६, ५. वि-हृदयम् ५. २१, १. वि-हृतम् १४. २, ४७. वि-हृतस्य ७. ५६, २. वि-हृत्ये इति वि-हृत्ये २०. ३४, ८. वीच्या १८. १, ७. वीडयस्व ६. १२५, १; १२६, २. वीड-अङ्गः ६. १२५, १. वीडः १. २, २. वीड-हराः ५. १७, १. वीत-पृष्ठाः ६. ६२, २. वीतम् ७. ७३, ४. वीतये २०-६६; ३. वीत-हव्यः ६. १३७; १. वृत्त-हव्यम् २०. ३७, ३. वातात् १८. १, २६. वाथाः ७. २६, २. वाध्रे ४. २०, ७; ६. १, २४. वीयन्ते ११. ४, ३. वीर ११. १, १०; २०. ४५, ३; ५६, २. वीरः ३. २, ८; २३, २; ५. १६, ४; ६. ११, ३; ८.
--	--	--

५, १; २; १३. २, ६;
 १४. २, ८; १६. ३१,
 १४; २०. ६४, ४.
 वीरःस्तारम् २०. १२७, ६.
 वीर-ज्जीः ६. १३३, २.
 वीर-तमा ७. २५, १.
 वीर-पोषम् १३. १, १२.
 वीरम् ६. ६७, ३; ७. ४७,
 १; ४६, १; ४८, १; १६.
 १३, ६; २०. ३५, ५;
 १०८, १.
 वीर्यध्वम् १२. २, २६.
 वीर्यस्व ४. २५, ८.
 वीर-युः २०. ६०, १.
 वीर-वत् २०. १२, ६.
 वीर-वतीः ३. १६, ७.
 वीर-वन्तः १०. ८८, ६.
 वीर-वित् ११. १, १५.
 वीर-शुष्मया २०. २१, ५.
 वीर-सूः १४. २, १७; १८.
 वीराः २. २६, ४; ५; ५.
 १७, ७; ६. ५, २; १०,
 २५; १२. २, २१; १६.
 ८, १; ५; ६; ७; ८; ६;
 १०; ११; १२; १३; १४;
 १५; १६; १७; १८;
 १९; २०; २१; २२; २३;
 २४; २५; २६; २७; २८;
 २९; ३०; १८ १, २; ३,
 ६३; १६. १३, ११; २०.
 ६१, २.
 वीराणाम् १. २६, ६; ३.
 १६, ६.
 वीरान् ४. ७, ७; ५. ६, २;
 ६. ६३, १; १६. ३६, ४.
 वीराय ८. ५, १; १६. ३१,
 १४.

वीरिणी २०. १२६, ६; १०.
 वीरुत् १. ३४, १; २. ७,
 १; ८, २; ३; ४; ५; ६.
 ३२, २; ७. ५६, १; २.
 वीरुत्-भिः ५. २८, ५; ८.
 ७, १५.
 वीरुत्-भ्यः १६. ३५, ४.
 वीरुधः १. ३२, १; २. ६,
 ३; ४; ३. २७, ५; ४.
 १५, ३; ७. ८७, १; ८.
 ७, ४; ११; १८; ८, १४;
 १०. १, १२; १०, २१;
 ११. ४, १७; ६, १; ७,
 २१; ६, २४; १२. ३,
 ३१; १५. ६, २.
 वीरुधम् ६. ५२, ३; ८. ७,
 २३.
 वीरुधा ६. १३६, ३.
 वीरुधानाम् ६. २१, २.
 वीरुधाम् ३. १८, १; २३, ६;
 ४. ३७, ६; ५. ४, १; २४,
 ७; ६. १३८, १; ८. ७,
 २; १२; १४; २०; ११.
 ६, १५; १५. ६, ३; १६.
 ३३, १.
 वीरुधाम् ४. १६, ८.
 वीरेण ३. ५, ८.
 वीरेभिः २०. १६, १२.
 वीरेषु १२. १, २५; २, १५.
 वीरैः ८. ४, १५.
 वीर्यम् १. ७, ५; ३. १६, १;
 २; ४. २४, ६; ५. ८, २;
 ८. ७, ५; ६. ४, २३; १०.
 २, ५; ५, १; २; ३; ४; ५;
 ६; ११. ७, १७; १२. ५,
 ६; १६. ३४, ८; २०. १५,
 ५; १७, ५; ७३, २.

वीर्य-वता ४. ३७, ११; १०.
 १, १४.
 वीर्य-वृत्ति ६. १३६, ५.
 वीर्य-वती ४. ३७, ६.
 वीर्यवत्-तरः १८. ४, ३८.
 वीर्यवान् ८. ५, १; १४. १,
 ३७.
 वीर्यस्य २०. ७५, २; ३.
 वीर्या २०. ६५, ३,
 वीर्याणि १. ३५, ३; २. ५,
 ५; ५. २६, ११; ७. २६,
 १; २; ११. ६, १; १२.
 ३, २; १२. २, ३२; १७.
 १, ६; ७; ८; ६; १०; ११;
 १२; १३; १४; १५; १६;
 १७; १८; १९; २४; १६.
 २२, २१; २३, ३०; २७,
 १०३; ३०, २; ३३, ५;
 ३७, १; ४६, ५.
 वीर्याय १०. ६, ७; ११. १,
 ३; ७; २, १४; १६. ३७,
 २; ४६, १; २०. ३५, १४;
 वीर्येण ५. २८, ४; ६. २,
 १; १०. १, १२; १६.
 १६, ६; ७२, १; २०.
 ३३, ३.
 वीर्यैः ७. २५, १; १६. ३०, १.
 वीलिता २०. ३६, ६.
 वीलु २०. ७०, १.
 वीलौ २०. ४३, २.
 वीहि ६. ८३, ४; २०. २३,
 ३.
 वीहि १६. ५२, ५; २०. ६७,
 ५.
 वृकः ४. ३, १; २; ७. ५०,
 ५; १२. ४, ७; १६. ४७,
 ६; २०. ६७, २.

वृकाः-इव ५. ८, ४; ६. ३७,
 १.
 वृकम् ४. ३, ४; १२. १, ४६.
 वृकस्य १६. ४७, ८; ५०, १.
 वृकाः १२. ५, ४६.
 वृकात् ५. २१, ५.
 वृकौ-इव ७. ६५, २.
 वृकौ ७. ६६, १; ६. ७, १३.
 वृक्कणम् ८. १०(३), २.
 वृक्त-वर्हिषः २०. ५१, १; ५५,
 २; ५७, १४; ६२, १५.
 वृक्त-वर्हिषे २०. १०१, ३.
 वृक्तः १८. २, २५.
 वृक्तः-इव ४. ७, ५; ७. ५६,
 १.
 वृक्तम् १. २, ३; २. १२, ३;
 ६. २, २; ८, १; ७. ५०,
 १; ११५, २; ६. ६, २०;
 १८. १, १५; १६; २०.
 १७, ४.
 वृक्तम्-इव ६. ३७, २; ७.
 १०६, ४.
 वृक्तम्-वृक्तम् ५. ५, ३.
 वृक्त-स्यः ६. २, २२.
 वृक्तस्य ३. ६, ८; ४. ६, ६;
 १०. ७, ३८.
 वृक्तस्य २०. १३६, ६.
 वृक्ताः ५. १६, ६; ६. १५,
 १; ४४, १; १०. ३, १५;
 ८, ३१; १२. १, २७;
 २०. १३६, ११.
 वृक्ताणाम्-इव ६. १५, २;
 ३.
 वृक्तात् ६. १२४, २; २०.
 १६, ८.
 वृक्तात्-इव १. १४, १; ८.
 ६, २६.

वृक्षान् ५. ५, ६; ६. ४५,
 १; १२६, २; १०. १,
 १७; ३, १३; १४; १२.
 १, ५१.
 वृक्षि ६. ३०, २.
 वृक्षे ६. ६, २१; २०. १२७,
 ४.
 वृक्षेषु ६. १२६, ३; ७. ६६,
 १.
 वृक्षत्वं ३. १२, ६.
 वृक्षि १. २५, १; २; ३;
 ५. २२, १०; ६. ३७,
 २; ६. २, ५; १६; ११.
 २, २०.
 वृक्षनाः २०. ७६, २.
 वृक्षनीभिः ७. ५०, ७; २०.
 ८६, १०.
 वृक्षनीषु ६. ६, ६.
 वृक्षनेन २०. ११, ६; १७,
 १०; ६४, १०.
 वृक्षिनम् १. १०, ३; ८. ३,
 १४; ४; १३; ११. ८, २०.
 वृक्षिना १. २०; १; ५. ३,
 ६; ७. ५६, ४.
 वृक्षिनान् २०. ११, ६.
 वृक्षिनानि २. १२, ६.
 वृक्ष्यते २०. २५, ६.
 वृक्ष्यते ५. १२, ४.
 वृक्ष्यन्तु ६. ६३, १.
 वृक्ष्यते इति १०. ७, ४२.
 वृक्ष्यक्तु १. ३०, ३; ४. २१,
 ७; ६. २७, २; ७. ७५,
 १; ८. २, ६; ६. २, ५;
 १६; ११. २, ८२.
 वृक्ष्यताम् ३. ४, २.
 वृक्ष्यते १८. १, २१.

वृक्ष्यते २. ६, १.
 वृक्ष्यान् २. १३, १; ७. १०५,
 १.
 वृक्ष्याना १२. १, ३७; १८.
 १, १.
 वृक्ष्यानाः १२. २, २४.
 वृक्ष्यामहे २०. २७, ६; १०१,
 १; १०३, २; १०४, ४.
 वृक्ष्याषे ६. २, २५.
 वृक्ष्याषे ११. १, १०.
 वृक्ष्याष्व २०. ३७, ६.
 वृक्ष्ये ७. १५, १; १०. ४,
 २१; २०. २०, २; ५७,
 ५.
 वृक्ष्यते २०. ६६, २.
 वृक्ष्यते २०. ८७, ४.
 वृक्ष्यते ८. ६, ३.
 वृक्ष्यते ७. ५०, ४.
 वृक्ष्यता १२. १, ५२; २०.
 १२४, १.
 वृक्ष्यः ६. ८५, ३.
 वृक्ष्य-क्तः ४. २४, १. ६.
 ८२, १.
 वृक्ष्य-क्ता ३. ६, २.
 वृक्ष्यम् २. ५, ३; ८, ५, ३;
 १२. १, ३७; २०. ११,
 ३; ३५, १०; ३७, ५;
 ७७, ७; ८६, ५; १०५,
 २; १३६, ४.
 वृक्ष्यस्य १. २१, ३; २०. ३५,
 ६; १०७, ३.
 वृक्ष्यस्य २०. १२८, १३.
 वृक्ष्यस्य-इव ६. १३४, १;
 १३५, १.
 वृक्ष्य-हर्त्ये २०. ३७, १०.
 वृक्ष्य-हर्त्येन १८. १, १८.

वृत्र-हर्त्येषु २०. २१, ६; ३७,
३.

वृत्र-हन् १. २१, ३; ३. १,
३; ५. ८, ७; ६. ६८,
३; ११. ६, २३; २०. ५,
३; ६. ८; १८, ६; २३,
४; ५२, १; ५७, १४;
११२, १; ११६, २.

वृत्र-हन्ता ४. २८, ३; ७.
११०, २.

वृत्र-हन्-तमा ७. ११०, १.

वृत्र-हा १. २१, १; ४. ३२,
३; ५. २५, ६; ६. ७५,
२; ७. ७६, ६; ८. ५,
३२; १०. १०, १०; ११.
१०, २७; १८. १, ३८;
१६. १५, ३; २६, ४;
२७, २; २०. ७, २; १२,
७; ५६, १; ६२, १६;
६३, ६; ६५, २; ६७, ३;
१०४, ३; १०५, ४.

वृत्र-हा २०. १२८, १४,

वृत्रा २०. ३६, १०; ३७, ४;
७०, १८.

वृत्राणाम् २०. ६८, ८.

वृत्राणि ४. ३२, ७; ५. ६,
४; ७. ६३, १; ११०,
१; २०. ५. २; ३. ११,
११; १२, ३; २१, ६;
४१, १; ५१, ३; ६१, ६;
६२, १०; ६०, ३; ११७,
४.

वृत्रात् ४. १०, ५.

वृत्राय २०. १६, ५; ६; ३५,
१२; ४७, १; १३७, १२.

वृत्रे ३. २१, १,

वृत्रेषु २०. ५०, ११; ६८, १.

वृत्वा १६. ६, १.

वृद्धः २०. ६६, ४.

वृद्ध-वृष्णः ७. ६२, १.

वृद्धासु ११. ८, ३४.

वृद्धः २०. ५६, २; ६४, ३;
३; १११, ३.

वृधाम् ५. १, ६.

वृधि २०. ७०, १२.

वृधे ११. २, २४; १८. ३,
२३; २०. ५४, २; ६४, ४.

वृन्तात् ८. ६, २२.

वृश्च १२. ५, ६३; १६. २८,
७४.

वृश्च ७. ६०, १; ८. ३, १०;
१५; १२. ५, ६२२.

वृश्चत् २०. ३५, १०.

वृश्चति १२. ५, ४२.

वृश्चत् १. ७, ७.

वृश्चते ६. १३६, ३; ८. १०
(३), २.

वृश्चते १२. ४, ६; १२;
२६; ३४; १५. २, ३;
११; १७; २३; १०, ३२;
१२, ६; १०.

वृश्चन्ताम् ८. ३, १६.

वृश्चन्ति ७. ५६, ७; १२.
४, ३८.

वृश्चन्ते १२. २, ५०; ४,
५१.

वृश्चामि २. १२, ३; ३. १६,
२; ६. ६५, २.

वृश्चामि २. १२, ७; १५,
२; ३२, ३; ५. २३, ६;
१०. ६, १; १३. १, ५६;
५७.

वृश्चिकः १२. १, ४६.

वृश्चिकम् १०. ४, ६.

वृश्चिकस्य १०. ४, १५.

वृष्णः ११. ३, २३; २०.
१०२, ३.

वृष्णः ११. १, ३; २०. १३७,
८.

वृष्णम् २०. १२, ६; ६१, १;
७३, ३; ७५; १; ८५, १;
६१, ६; १०; १०२, ३;
१२५, ३.

वृष्णा ७. ११०, २; २०.
३७, ६.

वृष्णा ७. ५८, २; ७३, १;
२; ८. ४, १.

वृष्णयतः ६. ७०, १; २; ३;

वृष्णयन्ती-इव ५. ५, ३.

वृष्णयन्त्याः ६. ६, १.

वृष्णवसू इति वृष्ण-वसू
२०. १३, १.

वृष-त्वना २०. ६१, ४; ६२,
६.

वृष-दतीम् १. १८, ४.

वृषन् ६. ६३, ४; २०. १८,
४; ३२, ३; ३६, ८; ७०,
१२; ७५, ३; ८१, २;
६२, २१; ६३, ५; १०२,
३.

वृष-पत्नीः २०. ६१, ३.

वृषम् ७. ८४, ३; २०. २२,
१.

वृषमः ४. ५, १; २४, ३; ६.
६८, ३; १०. ५, १८;
११. १, ३५; १३. १,
१२; २५; ३३; १६. १,
१; १८. ३, ६५; १६.
१३, २; २०. १२, ७;
३४, १३; ३६, १; ३७;

१; ४७, १; ६०, १; १२६,
 १५; १३७, १३; १४३, ६.
 वृषभम् ७. ३६, १; ८०, २;
 १६. ४२, ४; २०. १, १;
 ६, १; ७, १; ७१, १०;
 ८५, २; ६४, ३; ११३, २.
 वृषभस्य १२. २, ४१; २०.
 १७, ३.
 वृषभाः ६. १, ६.
 वृषभाय ६. ३४, १; १२. १,
 ३७; १८. १; ११; २०,
 ८७, १.
 वृषभिः २०. २४, ७; ६१,
 ७.
 वृषभौ १६. १३, १.
 वृष-मन्यवः २०. ७२, १.
 वृष-यमानः २. ५, ७.
 वृष-यस्ते २०. ६४, ४.
 वृष-यस्व ६. १०१, १.
 वृष-स-वासः २०. ८६, ८.
 वृषस्व ७. ७६, ६; २०. ६, २;
 ७, ४; ८, २; ३२, ३.
 वृषा १. १२, १; २१, १; २६,
 ६; ३. ७, २; ४. ४, २;
 ३६, १; ५. १३, ३; १६,
 ४; २०, २; २५, ८; ६.
 ४८, ३; ६७, ३; ८६, १४;
 ८. ५, १२; २२; ६. १,
 १०; २०; १०. ३, १; ११,
 ७, १६; १४. १, ४३; १८.
 १, १८; ४, ५८; १६. २७,
 १; ३१, ३; ११; २०. १७,
 ६; ८; ४७, १; ४६, १;
 ७०, १४; ७२, ३; ७७,
 ३; ६३, ५; १०२, १;
 १३७, १३.

वृषाः २०. १२७, ५,
 वृषा २०. १२८, १३,
 वृषा-इव ५. २०, ३,
 वृषाकपाधि २०. १२६, १३.
 वृषाकपिः २०. १२६, १; ३;
 १८.
 वृषाकपिम् २०. १२६, ४; ८.
 वृषाकपे २०. १२६, २४;
 २१; २२.
 वृषाकपेः २०. १२६, २; १२.
 वृषाणौ १६. १३, १.
 वृषेथाम् ७. ५८, २.
 वृषो इति २०. १०२, २,
 वृष्टिः ६. २२, ३; २०. १७,
 ७; ७३, ५.
 वृष्टि-इव ६. ५४, १.
 वृष्टिमान-इव २०. १३८, १.
 वृष्टे ३. २४, ३.
 वृष्ट्या १. १२, १; ३. ३१,
 ११; ५. २४, ५; ७. ३६,
 १.
 वृष्ट्वा ८. ३, २.
 वृष्ट्याः ४. ८, ३; १५, ११; ७.
 ५८, २; ६. १०, १३; १४;
 १६. १३, १०; २०. ६४,
 ८.
 वृष्ट्या १६. १३, ३; २०. १०६,
 १.
 वृष्ट्या २०. ६, ४; ४६, ७.
 वृष्ट्यानां २०. १०७, ३.
 वृष्ट्यो १२. १, ३७; १८. १,
 १८; २०. २५, ७; ३३,
 २; ३७, ६; ८८, ६.
 वृष्ट्यम् ४. ४, ४; ५. ५,
 १०; ६. ८६, १; १३८, ४;
 २०. ६६, २; ११६, २.

वृष्ट्या-वृत् ५. २५, ८.
 वृष्ट्या-वान् २०. ३६, १.
 वृष्ट्या ७. ५०, ४; २०. २१,
 ६; ८१, २; ६२, २१.
 वृष्ट्यानि २०. ६४, २.
 वृष्ट्येन २०. ६४, १.
 वृह १२. ५, ६६; १८, १, ६.
 वृहतम् ७. ४२, १.
 वृहाम् ६. १२७, ३.
 वृहामसि २. ३३, ३; ७; ६.
 ६०, १; २०. ६६, १६;
 २३.
 वृहामि २. ३३, १; २; ४; ५;
 ६; २०. ६६, १७; १८;
 २०; २१; २२.
 वृहव १८. १, ८.
 वेः ६. ६, ५,
 वेगः १२. १, १८,
 वेगासः ४. १५, ३.
 वेणोः १. २७, ३.
 वेतसम् १०. ७, ४१; १५. ३,
 ५.
 वेति २०. १७, २; ७३, ५.
 वेत्तवे २. ३६, ७.
 वेत्तु १२. ३, १२.
 वेत्थ १. ८, ४; ५. ११, ५;
 ३०, १४; १२. ४, ४३;
 २०, ६६, ३.
 वेत्थ ४. ६, ३; ५. ११; ४;
 ६. ११७, १; १३. १, ३६;
 १८. २, ३५.
 वेद २. १, २; २६, १; ३. ७,
 ६; २४, ३; ४. ११, ६;
 ११; ५. ७, ७; ११, १०;
 २५, ६; ३०, १३; ६.
 ७६, ३; १२७, २; ८. ७,

१८; १०(१), ३; ५; ७;
 ६; ११; १३; १०(२),
 १०; १०(३), २; ४; ६;
 ८; १०(४), ४; ८; १२;
 १६; १०(५), ४; ८; १२;
 १६; १०(६), ४; ६. १,
 २२; २३; २४; ५, ३१;
 ३२; ३३; ३४; ३५; ३६;
 ६(५), ३; ५; ७; १०;
 ६(६), १४; ७, २६; ६,
 ५; १८; २१; १०, १८;
 १०. २, २८; २६; ३०;
 ७, १७; ४१; ८, ३८;
 १०, ३; ११. ३, ३२-
 ४६; ५१; ४, १८; ६, २३
 १२. ४, १८; १३. १, ४४;
 ४, १५-२२; २४; १४. १,
 २६; १५. २, ८; १४; २०;
 २८; ३, ११; ४, ३; ६; ६;
 १२; १५; १८; ५, ३; १६;
 ६, ३; ६; ६; १२; १५;
 १८; २१; २३; २६; ७,
 ३; ५; ८, ३; ६, ३; १०,
 ६; ११; ११, ७; ६; ११;
 १३, १४; १४, २; ४; ६;
 ८; १०; १२; १४; १६;
 १८; २०; २२; २४; १८.
 १, ५; १६. २६, ६; ४१;
 ४८, ६.

वेद २. १, ३; ४. १६, २;
 ६. ८४, १; ११६, २; ७.
 १, २; ६, २; ८. ७, २३२;
 ६, १०; १०(२); २; ६.
 १, ६; ७; १०, १०; १०.
 ७, २३; २६; ३०; ८, ३८;
 १०, ३३; ११. १०, २;
 १८. १, ७; १८; ३३; ४,

४१; १६. ३६, ६; ४८, ६;
 २०. ३४, १६; ५३, १;
 ५७, ११.

वेदः ४. ३१, २; ५. २०, ४;
 १०; ७. ५४, २; १५. ३,
 ७; २०. ३७, १; ५६, ६२.

वेदः ७. २८, १.

वेदत् १४. १, ५७.

वेदति २०. ४३, ३.

वेदनम् ६. ११, १; २.

वेदम् १०. ८, १७; १६. ६८,
 १; ७२, १.

वेद-माता १६. ७१, १.

वेदयामि ६. ११६, २; १२.
 ३, ४४.

वेदांसि ६. ६६, ३.

वेदाः ४. ३५, ६.

वेदाः १६. ६, १२.

वेदि २०. ७७, ४.

वेदिः ५. २२, १; ७. २८, १;
 ६. १०, १४; १०. ६, २;
 ११. १, २३; १३. १, ४६;
 ५३; १६. १०, ७; ४२, २.

वेदिता १०. ७, २४.

वेदिम् ७. ६६, १; ११, १, २१;
 १२. १, १३; १३. ६, ५२.

वेदीयान् २०. ८७, १.

वेद्याम् ११. १. २४; १२. ३,
 २३; १६. ३३, ३.

वेद्याय १६. ३, ४.

वेधः २०, ३६, ११.

वेधसः १. ३२, २; ३. ६, ३; ५.
 १८, १४; ७. ७३, २; १२.
 १, ३६; २०. ७२, ३.

वेधसां १६. ३१, १.

वेधसाम् ५. २८, ६.

वेधसं ३, २१, ६; २०. १,
 ३.

वेधाः १. ११, १; ५. २०,
 ४; १८. १, १; २०.
 ७७, २; १२६, १०.

वेनः २. १, १; ४. १, १;
 ५. ६, १; १६. ३, २;
 २०. २५, ५.

वेनः ४. ८, २.

वेनन्तः १८. ३, ६६.

वेनस्य २०. ३५, १४.

वेपते १८. १, २३.

वेपथुः १२. १, १८.

वेपथु ११. ६, १२; १८; १३.
 ३. १; २; ३; ४; ५; ६; ७;

८; ९; १०; ११; १२; १३;

१४; १५; १६; १७; १८;

१९; २०; २१; २२; २३;

२४; २५.

वेपथ्यन्तम् २०. ६३, ८.

वेपी २०. ३६, ५.

वेप्यमाना १६. ६, ८.

वेविषत् ५. १७, ५.

वेविष्यात् १५. १३, १३.

वेवेष्टु २. १२, ८.

वेवेष्मि १५. १३, १३.

वेशन्ता २०. १२८, ८; ६.

वेशन्ताः ११. ६, १०.

वेशन्त्याः-इव १. २, ७.

वेशय २. २५, ४; ६. २, २५.
 १३. १, २.

वेशयन्तु १८. २. २६.

वेशयामासि ६. १०८, ३.

वेशयामहे ६. १०८, ५.

वेशयामि ३. १३, ७.

वेशयामि ७. ५३, ३; १२.
 ३, २२; १८. ४, ४८.

वैशयेत्—वैश्वानरस्य.

(५,०२१)

वैशयेत् ६. ५, २३.

वैशसः २, ३२, ५; ५. २३,
१२.वैश्मनि ५. १७, १३; ६.
६(२), १३.

वैष्टताम् ६. १०२, २.

वैष्टय १२. ५, ६८.

वैष्टयामि १०. ५, ३६; १६.
८, ४; ५; ६; ७; ८; ९;
१०; ११; १२; १३; १४;
१५; १६; १७; १८; १९;
२०; २१; २२; २३; २४;
२५; २६; २७; २८; २९;
३३.

वैहत् ३. २३, १.

वैहर्तम् १२. ४, ३७; ३८.

वै ३. ७, ५; ४. ११, ११२;
१६, ६; ५. ५, १; ३; ६;
१७, ६; १०; १८, ४; १४;
१६, ५; ८; १२; १३; १४;
२२, ८; ६. ११, १; २३;
४४, ३; ४६, २; ५७, १;
६१, ३; ७. १२, २; ७६,
५; ८१, ३; ८८, १२; ८.
२, २४; २५; ४, १३; ५,
१६; १०(१), १; ६. १,
२२; २, २४; ५, २०; २१;
३१२; ३२२; ३३२; ३४३;
३५२; ३६२; ६(१), ३;
६(२), १; ६; ८; ९; १०;
११; १२; ६(३), १; २; ३;
४; ५; ६; ७; ८; ६(६),
५; ७, ३५; १०. १, २६;
२, २७; २६; ३०; ३२; ४,
१५; २४; ७, २४; २७;
४१; ८, २०; ३१, ४३;१०, ३१; ११. ३, ३१२—
४६२; ५०; ५२; ४, ५; ६;
६, ११; ८, ३२; ४; ७;
१६; २१—२३; ३२; १२.
२, ५१; ४, ४७; ४६; ५,
१७; ४७—५०; १२. ४,
२६—३६; १५. २, ३;
४; ११; १२; १७; १८;
२३; २४; ६, ३; ६; ६;
१२; १५; १८; २१; २३;
२६; ८, ३; ६, ३; १०,
३; ४२; ५; ६; ७; १७, ८;
१८. १, १४; २, ५०; ५१;
४. ३२; ६०; १६. १४, १;
४८, ६२; ५३, ३; ४; २०.
१३६, १३; १५.वै २०. १३३, १; २; ३; ४; ५;
६; १३४, ४.

वैकङ्कतेन ५. ८, १.

वैत-हव्याः ५. १८, १०;
१६, १.

वैत-हव्यान् ५. १८, ११.

वैन्यः २०. १४०, ४.

वैन्यः ८. १०(४), ११.

वैबाध-दोषतः ३. ६, २.

वैबाध-प्रभुत्तानाम् ३. ६,
७.

वैमनस्यम् ५. २१, १.

वैयश्च २०. ६६, २.

वैयाघ्रः ८. ७, १५.

वैयाघ्रे ४. ८, ४.

वैरम् १०. १, १६; १२. ५,
२८.वैराजम् १५. २, १६; ४,
८; ६.

वैराजस्य १५. २, १८.

वैराजाः ३. २६, ३.

वैराजाय १५. २, १७.

वैरूपम् १५. २, १६; ४, ८;
६.

वैरूपस्य १५. २, १८.

वैरूपाय १५. २, १७.

वैरूपैः १८. १, ५६.

वैवस्वतः ६. ११६, १; ८.
१०(४), १०.वैवस्वतम् १८. १, ४६; १,
१३.

वैवस्वते ६. ११६, १.

वैवस्वतेन ८. २, ११.

वैशालेयः ८. १०(५), १४.

वैश्यः ५. १७, ६; १६. ६, ६.

वैश्रवणः ८. १४, १०.

वैश्व-कर्मणाः १३. १, १८.

वैश्वदेवः ६. ७, २४.

वैश्वदेवो ७. २७, १; १२.
५, ५३.

वैश्वदेवीः ८. ७, ४.

वैश्वदेवीम् १२. २, २८.

वैश्वानर २. १६, ४; ३.
१५, ७.वैश्वानरः ३. २१, ३; ४.
३६, १; ६. ३५, १; २;
३; ४७, १; ५३, २; ६२,
१; ११६, १; ३; ८. १,
११; ५, १०; १०. ७,
१८; १२. ५, १८; १३.
३, ५.वैश्वानर-ज्येष्ठेभ्यः ३. २१,
६.वैश्वानरम् ४. २३, ४; ६.
३६, १; १२. १, ६.वैश्वानरस्य ४. २६, २; ६.
७१, ३; ८. ६, ६; १०.
५, ४१; १६. ७, १.

वैश्वानरात् २०. १३७, ७.
 वैश्वानरात् १. १०, ४; ८.
 २, २७; ७; १६.
 वैश्वानराय ६. ११६, २.
 वैश्वानरीम् ६. ६२, २; ३.
 वैश्वानरे ४. ११, ७; १८.
 ४, ३५.
 वैश्वानरेण ६. ८५, ३; ७.
 १०८, २.
 वैष्टपान् १६. २७, ४.
 वोचः ७. २, १; ५, ५; ७८,
 २; २०. ३६, ४.
 वोचत् ७. ७३, ७; ६. ६,
 १८; १०, ४; १८. १, ७;
 ३६.
 वोचत् ६. ७, २; २०. ६५,
 २; ११६, १.
 वोचति १८. १, १६.
 वोचन् ५. ११, ७; ८.
 वोचम् २. ५, ५; ७. २६,
 १; २०. ८७, ५.
 वोचेत् २. १, २.
 वोचेयम् १३. १, १४; ३७.
 वोचेयुः २०. ६८, ६.
 वोढवे १८. २, ५६.
 व्यचः ४. १६, ६; ६. ६१,
 १; ८. १० (२), ७; ६;
 ६. ३, १५; १०. २, २४;
 २५; १२. १, ५३; १३.
 ४, ५३.
 व्यचंसः ११. ६८, १.
 व्यचंसा ११. ३, ३६२.
 व्यचस्वतीः ५. १२, ५.
 व्यतीन् २०. ६२, १०.
 व्यथन्ताम् ४. ४०, १; २;
 ३; ४; ५; ६; ७; ८.

व्यथमानाम् २०. ३४, २.
 व्यथय १३. १, ३१.
 व्यथयोः ५. ७, २.
 वृत्तिः २०. १२६, ३.
 व्यथिः ४. २१, ३; ६. ३३;
 २.
 व्यतिष्ठः १२. ३; २३; १४.
 १, ४८; १६. ३३, ५.
 व्यथिष्महि १२. १, २८.
 व्यन्तु ७. ४६, २; २०. ३७;
 ६.
 व्यन्तु ७. ४६, २.
 व्ययन्तु ७. १७; ३; १४. १,
 ४५.
 व्ययस्व १८. २, ५८.
 व्ययामसि १. २७, १; ६.
 १०६, ३.
 व्यये ६. ६१, १.
 व्यश्व-वत् २०. ६६, १.
 व्यस्त-केशयः ८. २, १६.
 व्याघ्र ४. ३, ३.
 व्याघ्रः ४. ३, १; ८; ४;
 ३६, ६; ८. ५, ११; १२;
 १२. २, ४; १६. ३६;
 ४; ४६, ५.
 व्याघ्र-जम्भेनम् ४. ३, ७.
 व्याघ्र-प्रतीकः ४. २२, ७.
 व्याघ्रम् ४. ३, ४; ८; ७.
 व्याघ्रस्य १६. ४६, ४.
 व्याघ्राः १२. १, ४६.
 व्याघ्रे ६. ३८, १; ११०, ३.
 व्याघ्री ६. १४०, १; १२.
 २, ४३.
 व्यान्-उदानी ११. ८, ४;
 २६.
 व्याप २०. १३१, १७.

व्यास्यः २०. १२८, १३.
 वः ११. ७, ३.
 वजः ४. ३८, ७.
 वज्रत १६. ७१, १.
 वज्रम् ३. ११, ५; ७. ५३;
 ५; १६. ५८, ४; २०.
 ७७, ६; ७८, ३.
 वज्रस्य २०. ७२, २; ७५, १.
 वज्रान् २०. ६०, ३.
 वज्रे २०. ८१, २; ६२, २१.
 वतः ५. १, ७.
 व्रत-चारिणः ४. १५, १३.
 व्रतते-इव ७. ६०, १.
 व्रत-पते ७. ७४, ४.
 व्रत-पाः १६. ५६, १; २०.
 २५, ५.
 व्रतम् ४. ११, ११; ५. ११;
 ३; २७, ७; ६. ६४, २;
 ७. ४०, १; ६. १, ८;
 ६(३); ८; ७; ११; १०.
 ७; १; ११; ११. ७, ६;
 १८. १, ३३.
 व्रतस्य ६. १३३, २.
 व्रता २. ३०, २; ३. ८, ५;
 ६. ७४, १; ६४, १; २०.
 ३४, १६.
 व्रतानि ४. ११, २; ७. २६;
 ६; १८. १, ५; १६.
 ५६, २; २०. १०६, ३.
 व्रते ४. २५, ३; ७. ६, ३;
 ४०, १२; ४६, १; ८३;
 ३; ८. ६, ८; १८. ४;
 ६६; २०. २५, ३.
 व्रतेन ४. ११, ६; ७. २७;
 १; ७४, ४; ६०, २; १८.
 ३, ४०.

वृत्तेभिः—शुद्धि.

(५,०२३)

वृत्तेभिः १६. १०, ६.
 वृत्तेषु ७. ६८, १.
 वृत्त्याः ४. ११, ११.
 वृन् १८. ३. २१.
 व्राः २. १, १.
 व्राज-पतिम् ७. ७२, २.
 व्राजम् १. १६, १.
 व्राणाः २०. ३५, १०.
 व्रातम् २. ६, २.
 व्रात्य १५. ३, १; ११, २६; ३;
 ४; ५; ६; ८; १०; १२, २०.
 व्रात्यः १५. १, १; ३, ६; १०,
 १; ११, १; १२, १; १३,
 १; ३; ५; ७; ६; १८, ५.
 व्रात्य-ब्रुवः १५. १३, ११.
 व्रात्यम् १५. २, ३; ११; १७;
 २, २३; १७, ८.
 व्रात्यस्य १५. १५, १; ३;
 ४; ५; ६; ७; ८; ६; १६,
 १; २; ३; ४; ५; ६; ७;
 १७, १; २; ३; ४; ५; ६;
 ७; ८; ६; १०; १८, १.
 व्रात्याभ्याम् १६. २३, २५.
 व्रात्याय १५. ३, ३; १८, ५.
 व्रात्येन १५. १२, ४; ७; ८;
 ११.
 ब्रीहयः १. ६(१), १४.
 ब्रीहिः ८. ७, २०; ६. १, २२;
 ११. ४, १३.
 ब्रीहिम् ६. १४०, २.
 ब्रीहि-यवाभ्याम् १०. ६, २४.
 ब्रीहि-यवौ ८. २, १८; ११.
 ४, १३; १२. १, ४२.

श

शंसः १६. १०, २३.
 शंसत् २०. ८५, १२.

शंसति २. १२, २; २०. ६४,
 ८.
 शंसन् २०. ६१, १.
 लंसन्तः २०. ६१, २.
 शंसन्तम् २०. ३४, १५.
 शंसन्ति २०. ३७, ६.
 शंसन्तीम् १४. १, ६.
 शंसम् २०. ८६, ६.
 शंस्य २०. ७४, १; २; ३; ४;
 ५; ६; ७.
 शंससि ६. ४५, १.
 शंसाः २०. १४३, ६.
 शंसाति २०. ७७, २.
 शंसिषम् २०. ६४, २.
 शंसिषम् २०. ३०, १.
 शंस्यम् २०. ३७, ८.
 शंस्या २०. ६०, ६; ७१, ६.
 शक २०. १३१, १.
 शकत् २०. १७, ५.
 शक-धूम ६. १२८, ३; ४.
 शक-धूम-जाः ८. ६, १५.
 शक-धूमम् ६. १२८, १.
 शकन् ८. ८, २०; ११. १०,
 १६.
 शक-मयम् ६. १०, २५.
 शकम्-भरस्य ५. २२, ४.
 शकल्य-एषि १. २५, २.
 शको-इव ३. १४, ४.
 शकुनः ६. २७. २; १२. ३,
 १३; १८. ३, ५५.
 शकुनः २०. १२७, ४.
 शकनम् १८. ३, ६६.
 शकुन्यः ११. ६, ६.
 शकुनस्य २०. १६, ७.
 शकुनाः ११. २, २४; १२. १,
 ५१.
 शकुनिः ७. ६४, १; २.

शकुनेः १०. ३, ६.
 शकुने-इव २. २५, २.
 शकुन्तान् ११. ६, ८.
 शकुलौ-इव २०. १३६, १.
 शकत् १२. ४, ६.
 शकेम् ५. ८, २; १८. २, २६.
 शक्तिः २०. २५, ३.
 शक्ति-काननाः २०. १३६, ५.
 शक्ति-भिः २. २७, ७; ३.
 १३, ३.
 शक्तः १२. ४, ४.
 शक्तवाम ११. ५६, ३.
 शक्तवन्ति ४. २६, ६.
 शक्नोति ५. १८, ७.
 शक्नोमि ४. ३६, ४.
 शक्याम् २०. ७६, ३.
 शक्र २. ५, ४; २०. २०, ४;
 ५७, ७; ८६, ३; १११. २.
 शक्रः ३. २१, ४; ३१, २; ४.
 ११, २; ५. १. ७; ८.
 ४, २०; २१; ८, १; ५;
 ७; ६. ४, ५; २०. १७,
 ७; ४६, २; ३; ७७, ६;
 ६२, ११.
 शक्रम् ७. ७६, १; २०. ५१,
 ३.
 शक्रस्य ८. ८, ६; ८.
 शक्राः ५. २८, ८; ११. ६,
 १२; १८; २०. ४६, १.
 शक्राय १२. १, ३७.
 शकरी ७. २७, १.
 शकरीः १६. ४, ७.
 शकरीः ३. १३, ७.
 शकरीभिः ११. २, २३; १३.
 १, ५.
 शुद्धि १६. १५, १; २०.
 ११८, १.

शुग्मः १८. ४, ८.
 शुग्मा १४. २, १७.
 शुग्माः ४. २७, ३; १८. २,
 २१.
 शुग्मानि १६. ८, २.
 शुग्मियम् ५. १, ६.
 शुङ्कवः १०. ८, ४.
 शुङ्खः ४. १०, १; ३; ४.
 शुङ्खेन ४. १०, २; ३२.
 शुङ्गेभ्यः १६. २२, ८; ६; १०.
 शुचिष्ठया २०. १२४, १.
 शुचिपतिः ३. १०, १२; ६.
 १३४, १; १३५, १; ११.
 ६, २०; १२. १, १०; १६.
 १६, १; २७, १४.
 शुचीपते २०. २७, २.
 शुचीपते ६. ८२, ३; ७.
 ५४, २. ११. ६, २३;
 २०. ११८, १.
 शुचीभिः ५. ११, ८; ७. २५,
 २; ५३, १; ६. १०, २६;
 ११. ४, २०; २०. ६३, ३;
 ७८, ३; १२२, ३; १२४,
 ६; १२५, ५; १४३, २.
 शुचीवः २०. २१, ३; ७४,
 २.
 शुचीवः २०. ३३, ३.
 शुच्या २०. २५, ७; ३३, २;
 १३७, ७; ११.
 शुच्याः १३. ४, ४७.
 शुणः २. ४, ५.
 शुत-अनीकाः २०. ५१, ४.
 शुत-अनीकाय १. ३५, १.
 शुत-अपाठाम् ५. १८, ७.
 शुत-अरित्राम् १७. १, २५;
 २६.

शुत-आयुषा ३. ११, ३; ४;
 २०. ६६, ८; ६.
 शुत-ओदना १०. ६, १.
 शुत-ओदनाम् १०. ६, ४; ५;
 ६; १०.
 शुत-ओदने १०. ६, ३; ७;
 ११; २४.
 शुत-काण्डः १६. ३२, १; १०;
 ३३, १.
 शुत-क्रतुः ६. ३०, १.
 शुतक्रतो इति शत-क्रतो १०.
 १, ४१; २०. १६, २; ३;
 ६; २०, १; २; २४, ५;
 ४५, ३; ५७, ४; ५; ६८,
 ८; ६; ६६, ६; १०८, १;
 २; ३; १२२, ३.
 शुत-क्रतोः ६. ८२, १.
 शुत-तमा २०. ३७, ५.
 शुत-तर्हम् १. ८, ४.
 शुत-दक्षिण १०. ६, ३४.
 शुत-दक्ष १४. २, ६८.
 शुत-दायम् ७. ४७, १; ४८,
 १.
 शुत-धारः ११. १, २०; १२.
 ३, ५.
 शुत-धारम् ३. २४, ४; १८.
 ४, २६; ३५; ३६.
 शुत-धारा १८. ३, ७२.
 शुत-पर्वणा ८. ५, १५; १२.
 ५, ६६; २०. १०७, ३.
 शुत-पवित्राः १४. १, ४०.
 शुत-भिषक् १६. ७, ५.
 शुतम् १. १०, २; ३०, ३;
 २. ३, २; ६, ३; १३, ३;
 ४; २८, १; ४; २६, २;
 ३. ११, ४^४; ५; ७; १२,
 ६; ४. ३७, ८; ६; ५.

१५, १०; ११; ३०, १६;
 ६. ४४, २; ७७, ३; ६०,
 २; १३६, १; ७. ३५, २;
 ५३, २; ८. २, २१; ८,
 ७; १०. ८, २४; १०,
 ५३; १२. २, २३; २८,
 ४, २२, १३. २, ६; ७;
 ४, ४४; १४. १, ५२; २,
 २; ६३; १६. १३, ३;
 २४, ५; ६; ३०, १; २;
 ३४, २; ३६, ४^२; ६^४;
 ४६, ३; ६७, १; २; ३;
 ४; ५; ६; ७; २०. १४,
 ४; ६२, ४; ७६, २; ८१,
 १२; ६२, २०^२; ६६,
 ६४; १२४, ३; १२७, ३;
 १३१, ४; ५^४.
 शुत-मन्युः १६. १३, ७.
 शुतम्-हिमाः १६. ५५, ४.
 शुत-याजम् ६. ४, १८.
 शुत-यामना १८. ४, ६०.
 शुत-योनिः ७. ४१, २; १६.
 ४६, ६.
 शुत-वधम् ११. २, १२.
 शुत-वधा १२. ५, १६.
 शुत-वलशा ६. ३०, २.
 शुत-वारः १६. २६, १; ३.
 शुत-वरिण १६. ३६, ६.
 शुत-वाही ५. १७, १२.
 शुत-विचक्षणाः ६. ६६, १.
 शुत-वीर्यस्य ८. ८, ७.
 शुत-वीर्येण ३. ११, ३; २०.
 ६६, ८.
 शुत-वृण्यम् १. ३, १; २; ३;
 ४; ५.
 शुत-शः ६. ६६, ३.
 शुत-शल्याम् ६. ५७, १.

शत-शाखा ४. १६, ५.
 शत-शरदः १०. ३, १२.
 शत-शरदाय १. ३५, १; ३.
 ५, ४; ११, २; ४. १०,
 ७; ५. २८, १; ६. ११०,
 २; ८. २, २; ५, २१; १२.
 २, ६; १४. २, ७५; १८.
 ४, ५३; १६. ३७, २; ३;
 २०. ६६, ७.
 शत-सेयाय ३. १५, ३.
 शतस्य १. १७, ३.
 शत-हस्त ३. २४, ५.
 शत-हायनः ८. २, ८; ७, २२.
 शत-हिमाः १६. १२, १; २०.
 ६३, ३; १२४, ६.
 शता २०. ४१, ८; ५६, ४.
 शतात् १६. ६७, ८.
 शतानि ६. ६, १३; १०. ८,
 ४; १८. ४, ७०.
 शतानि २०. ११७, ३.
 शतानीका-द्व २०. ५१, २.
 शतिर्नम् २०. ६, २; ४६, ५.
 शते १८. २, ३८; ३६; ४०;
 ४१; ४२; ४३; ४४; ४५.
 शतेन ४. १६, ७; १६, ८;
 २०. १६, ४.
 शत्रवः ४. ३, १; ३१, ७; ५.
 २०, ३; ६. ६६, ३; २०.
 ६६, २; १३७, १.
 शत्रवः ६. ६६, २.
 शत्रवे २०. ६५, ४.
 शत्रुः २. २७, १; ५. २, २;
 ६. ६६, १; २०. ८६, ६;
 १०७, ५; १३७, १०.
 शत्रु-तृतीय २०. ३६, १०.
 शत्रुम् ४. २२, २; ३; ६. ४, २;
 २०. ८३, २; ८६. ७.

शत्रु-यतः ६. ८८, ३,
 शत्रु-यताम् ४. २२, ६; ७;
 ७, ७३, ६; १०.
 शत्रु-यतीम् ३. १, ३.
 शत्रु-हः १, २६, ५; ६. ६८,
 ३.
 शत्रूणाम् ३. १६, २; ५. २०,
 ४; ६. ६५, २; ७. ५०.४;
 १६. २८, २.
 शत्रून् २. ५, ३; २७, ५; ३.
 १, १; ४; २, ५; ६, १;
 २, ५; १०, १२; १२, ६;
 ४. २२, ७; ३१, २; ३;
 ३२, ३; ५. २, १; २१,
 ११; ६. ८८, ३; १२६,
 १; ७. ८४, ३; ८. ८, ६;
 १०. ३, १; ३; ११; १३.
 १, ३; १६. १३, ८; ४६,
 २; ५; २०. ८, १; ११, १;
 २०, ७; ३५, १३; ५७,
 १०; ८६, ५; ६०, २;
 १०७, ४.
 शत्रूणाद् ५. २०, ११.
 शत्रोः ३. ६, ६.
 शत्रुप्रति ११. ३, ३७.
 शन्ति-वा १२. १, ५६.
 शन्ति-वाम् ३. ३०, २.
 शपतः ६. ३७, ३; ७. ५६, १.
 शपते १६. ६, ३.
 शपथ ६. ३७, २.
 शपथः २. ७, २; ५; ४. ६,
 ५; १८, ७; ५. १४, ५;
 ६. ३७, १; १०. १, ५;
 ११. १, २२; १६. ३८, १.
 शपथ-यार्वनीम् ४. १७, २.
 शपथ-योपनी २. ७, १.

शपथाः ८. ३, १४.
 शपथान् २. ७, १; ४. १६,
 ७; ७. ६५, १.
 शपथि-यते ५. १४, ५; १०.
 १, ५.
 शपथेभिः ३. ६, ५.
 शपथेभ्यम् ५. ३७, १२.
 शपथ्यात् ६. ६६, २; ७.
 ११२, २; ११. ६, ७.
 शपनेन १. २८, ३; ४. १७,
 ३.
 शपात् २. ७, २; ६. ३७,
 ३; ७. ५६, १.
 शपातः ८. ३, १२; १०. ५,
 ४८.
 शपाति १. १६, ४.
 शपारम् २. ७, ५; ६. ३७,
 १; २.
 शफ-आरुजः ८. ३, २१;
 २०. ६४, ६.
 शफम् ६. ४६, ३; १६. ५७,
 १.
 शफाः ८. ८, २२; ६. ७,
 १०; १०. ६, २३.
 शफान् १२. ५, १६; ६. ४,
 १६.
 शफेन २०. १३१, ७.
 शफेभ्यः १०. १०, १.
 शफैः ६. ५, १.
 शबलः ८. १, ६.
 शबले ५. २६, ६.
 शबलौ १८. २, ११.
 शब्दिनः १६. ३६, ३.
 शम् १-३, १; २; ३; ४; ५;
 ६, १२; ४२, १२, ४४,
 ३३, १. २; ३; ४; २. ३,
 ६; १०, २; ३; ३५,

१, ३, २३, ५२; ६. १२,
३२; २३, ३; २७, १२;
५७, ३; १२०, २; ७.
२०, २; ६६, १५; ८. १,
५; २, १४२; ७, १७;
१४. १, ४०६; २, ४०२;
१८. १, ५१; २, ३६; ३,
६०६; ४, ६२; ११४;
१२; १६. २, १५; २४;
७, २; ६, २; ६६; ७५;
८४; ६६; १०४; ११७;
१३२; १४२; १०, १५;
२६; ३६; ४५; ५४; ६४;
७५; ८५; ६६; १०४;
११, १५; २६; ३५; ६;
४०, ३; ४४, १; २०. ४,
३; ६६, ५; ७८, १;
१२६, १५.

शमय ७. ४५, २; १८. ३,
६०.

शमयत् ६. ५२, ३.

शमयत्तु ६. १११, २.

शमयन्तु ३. २१, ८.

शमयामसि ७. ७४, ३.

शमलम् ७. ६५, २; १२. २,
४०; ३, ५२; १३. १,
५८; १४. २, ६६.

शमलात् ४. ६, ६; १२. ३,
५.

शमि ६. ३०, २; ३.

शमिता ५. १२, १०; २७,
११.

शमितार्थ १६. ४२, २.

शमितारः १०. ६, ७.

शमितारः ६. ५, ५.

शमीम् ६. ११, १.

शम्-तमः १७. १, १०.

शम्-तमां ७. ६८, ३.

शम्-तमानि ६. ६८; २.

शम्-तमाभिः १८. ४, १०.

शम्-तमेन १८. १, ५१.

शंताति-भिः ४. १३, ५.

शम्-तात्ते १६. ४४, १.

शम्बः २०. ८६, ७.

शम्बरम् २०. ३४, ११; १२;
१६; १७.

शम्बी-इव ६. २, ६.

शम्-भु १०. १, ६.

शम्-भुः १६. १०, १०.

शम्-भुवम् १०. ६, १५; १७.

शम्-भूः १४. २, २६; १६.
४६, ६.

शम्यया ६. १३८, ४.

शम्यया २०. १३६, १०.

शम्या १६. ४६, ७; २०. २५,
४.

शम्याः १४. २, १६.

शयः २०. १३१, १६.

शयथा २०. ६१, ५.

शयने ३. २५, १; ५. २६,
८; ६; १८. १, १४.

शयात्ते इति ८. ४, १३.

शयानः ८. ६, २; १२. १,
३४.

शयानम् ५. २६, ८; ६; ११.
१०, २६; २०. ३४, ११.

शयानाम् ७. ६६, १.

शयानाय २०. १३३, ४.

शयाम् ५. २५, ६; ६. १३४,
२; ११. ६, १६; १०,
२२.

शयीय १८. १, १४.

शयै १०. ८, २६; १२. १,
४६; २०. ६६, १४.

शये ५. १७, १२; ६. ३, २१;
१०, ८; १२. ४, १६.

शरः ११. ३, ६.

शरः-इव ८. ८, ४.

शरणम् २०. ८३, १.

शरणा ३. १२, ५; १६. १५, ४.

शरणाः १८. ३, ५१.

शरणिम् ३. १५, ४; ६. ४३,
३.

शरणे ६. ५५, २; २०. ३७,
८.

शरत् ६. ५५, २; १२. १,
३६; १५. ३, ४; १६. ६,
१०.

शरत्-सु १२. ३, ३४; ४१;
१८. २, ३८; ३६; ४०;
४१; ४२; ४३; ४४; ४५.

शरदः १. १०, २; २. १३,
३; ४; २६, २; ७; ३.
११, ३; ४; १२, ६; ७.
५३, २; १२. २, २३;
१४. १, ५२; २, २; ६३;
१८. २, २६; १६. २४,
५; ६; ६७, १; २; ३;
४; ५; ६; ७; ८; २०.
६६, ८; ६,

शरदम् १८. ४, ७०.

शरदि २०. ३४, ११.

शरदे ८. २, ६२.

शरभः ६. ५, ६,

शरम् १. २, ३.

शरम्-इव ४. ७, ४.

शरवः १. १६, २; ८. ३, १४७

शरवे ४. ३०, ५.

शरव्यया १. १६, ३.

शरव्या ८. ३, १२; १०. ५,
४८; ११. १०, ६; १२.
५, २५; ५६.

श्रव्याः १. १६. १.
 श्रव्याम् ५. १८, ६.
 श्रव्ये ३. १६, ८,
 श्रव्य १. २, १; ३, १; २;
 ३; ४; ५.
 श्रावः २०. १२६, ६.
 श्रावीः १२. ३, १८.
 श्रावीरम् २. १२, ८; ३, ११,
 ६; ४. ११, ६; ५. ६,
 ७; १०, ८; ३०, १३;
 ७. ५३, २; ८. २, २६;
 २८; ६. ४, ५; ११. ८,
 ११; १६; १६-२५; २७;
 ३०; ३४; १२. ३, २;
 १८. २, ४; ३, ६; ७१.
 शरीराणि ११. २, २.
 शरीरे ५. २६, ५; ११. ८, ३०.
 शरीरेण ११. ८, २६.
 शरीरैः २. ३४, ५; १८. २, ७.
 शरम् १. २, ३; ६. ६५, २;
 १२. २, ४७.
 शर्कराः ११. ७, २१.
 शकुम् ८. ६, २.
 शकोटस्य ७. ५६, ५.
 शर्दिः १८. ३, १६.
 शर्ध ७. ७३, १०.
 शर्धः ४. २७, ७; १५. १४, १;
 १६. १३, १०; २०. १०६,
 ३.
 शर्धते २०. ३४, १०.
 शर्धनीतिः २०. ११, ३.
 शर्म १. २०, ३; २१, ४; २६,
 ३; २. २८, ५; ५. ३, ७;
 ८; ६, १२; ६. ७, ३; ५६,
 १; २; ६२, ३; ७. ६, ४;
 ४६, १; ८. २, ७; ३, १;
 ७, २५; ६. २, १६; १२.

३, ८; १४; १४. २, २१;
 ७३; १७. १, १२; १३;
 १८. २, १६; ४, ६; १६.
 ६, १२; १६, २; १६,
 १; २; ३; ४; ५; ६; ७; ८;
 ६; १०; ११; २७, १५;
 ३२, २; ४७, ६.
 शर्म २०. १३५, ११.
 शर्मणि २०. ६८, ६.
 शर्मणे २०. १४२, ५.
 शर्मन् २०. १२५, १.
 शर्मणा-वति २०. ४१, २.
 शर्व ६. ८, १७; १७.
 शर्वः ८. ६३, १; १२, ५, ३६;
 १५. ५, २; ५२; ७; ६;
 ११; १३; १५.
 शर्वम् १५. ५, ४.
 शर्वा ८. ३, ५; २०. ३४, १०.
 शर्वाय ६. ६३, २; ११. २,
 १६.
 शल् २०. १३५, १.
 शलित्ययक्रान्तः २०. १३५, १.
 शलुनान् २. ३१, २.
 शल्यः ४. ६, ६.
 शल्यः-इव २. ३०, ३,
 शल्यम् ७. १०७, १.
 शल्यात् ४. ६, ४; ५.
 शल्यान् ८. ३, ६.
 शवः ६. ३३, २; ८. ४, ३;
 ११. ८, ३४; २०. ६, ४;
 ४६, ७; ६३, ६; ७१, १;
 ७३; ६; ६६, २; १०४, २;
 ११८, ४; ११६, २; १३१,
 ४.
 शवसः २०. २३, ५; १०४, ४.
 शवसः २०. ७५, २.
 शवसा ५. २, २; ७; ६; २७,

४; १३. २, ३१; १८. १,
 ३८; २०. १२, १; १७,
 ४; ३५, १०; ६४, ५; ७७,
 ७; ८१, २; ६२, २१;
 १०७, ५; १०; १७.
 शवसे २०. १५, १; १६, १;
 ५६, १; ५; १४२, ६.
 शवांसि २०. ५५, १.
 शविष्ठ ७. ६७, १; २०. ६३,
 ७; ८१, २; ६२, २१.
 शविष्ठः २०. ११३, १.
 शविष्ठम् २०. ३६, २; ७.
 शविष्ठा ७. २५, १.
 शशः ५. १७, ४.
 शशमानः १८. १, २२.
 शशमानम् २. ३४, २; १२.
 २, १०; २०. ३४, १५.
 शशमानाः १८. २, ४७.
 शशयानाः ४. १५, १३.
 शशयुः ४. ३, ६; ७. १०,
 १.
 शशाक ४. १८, ६; ५. ३१,
 ११.
 शशाप १. २८, ३; ४. १७,
 ३.
 शाश्वे ४. १८, ६; ५. ३१, ११.
 शश्वत् ४. २४, १; १६. ३२,
 ७.
 शश्वतः १६. ३२, ७; २०.
 ३४, १०; ३७, १.
 शश्वताम् ५. ५, २; २०.
 १२८, ४.
 शश्वतीः २०. ७६, २.
 शश्वतीनाम् २०. ६४, ३.
 शश्वतीभ्यः ५. ८, ८; ६.
 ७५, २; ३.
 शश्वन्ता ६. १०, १६.

श_श्वन-वतीनाम् १६. ३६,
 ६.
 श_स्तम् १६. ११, ६.
 श_स्ता-इव ६. ३, ३.
 श_स्यते २०. २१, १.
 श_श_पेन ६. १२६, १.
 श_किने २०. ७८, १.
 श_क्र_राः ६. १, ६.
 शाखया ३. ६, ८.
 शाखा २०. ६०, ४; ७१, १.
 शाखाः १०. ७, ३८.
 शाखाम् १. ३४, ४; १०. ७,
 २१; ११. २, १६.
 श_ङ्कुरस्य ७. ६०, ३.
 श_चिगो इति शाचि-गो
 २०. ५, ६.
 शाचि-पूजन २०. ५, ६.
 श_ण्ड-दूर्वा १८. ३, ६.
 श_तय १२. ५, ६६; १६.
 ३४, ३.
 श_तयन ६. १३५, १.
 श_त-वाराः १६. ३६, ५.
 श_न्तः ३. ३१, ६.
 श_न्तम् १६. ६, १; २३; १४.
 श_न्ता १६. ६, १.
 श_न्ताः १६. १, १.
 श_न्तानि १६. ६, २; १३.
 श_न्तिः १६. ६, ३; ४; ५,
 १४.
 श_न्ति-भिः १६. ६, १४.
 श_पम् ३. २४, ३.
 श_मुल्यम् १४. १, २५.
 शास्त्र-भ्यः १६. ३६, ५.
 श_म्याकः १६. ५०, ४.
 श_यय ४. १८, ४.
 श_रुदम् ५. २२, १३.
 शारदीः २०. ७५, २.

श_रुदौ १५. ४, ११, १२.
 श_रिशाका-इव ३. १४, ५.
 शाकौटम् ७. ५६, ७.
 शाला ६. ३, १७.
 शालाः ८. ६, १०.
 शाला-पतये ६. ३, १२.
 शालाम् ३. १२, १; ४; ६. ३,
 १५; १६; २१.
 शालायाः ६. ३, १; २५; २६;
 २७; २८; २९; ३०; ३१;
 १४. १, ६३.
 शालायाम् ५. ३१, ५; ६. ३,
 १३.
 शालुडम् ८. ६, १७.
 शाले ६. १०६, ३; ६. ३,
 २२.
 श_ल्ले ३. १२, १; २; ३; ६;
 ६. ३, ७; ६; ११; १६;
 २४.
 शाशदानः १. १०, १.
 शाशदानान् २०. ८७, ४.
 शाशदानाम् ८. ४, २४.
 श_श_बहे ५. २, ५; २०.
 १०७, ८.
 शासः २०. ७५, २.
 श_स्तः १. २०, ४.
 श_स्मि १२. २, ६.
 शिंश_पाः २०. १२६, ७.
 शिंशुमाराः ११. २, २५.
 शि_क्या-कृतः १३. ४. ८.
 शि_क्यानि ६. ३, ६.
 शिकः १०. ६, ३.
 शिक्त १८. ३, ६७; २०. ७६,
 १.
 शि_क्त २०. ८६, २.
 शिक्तति २०. ५१, १.
 शिक्तते ४. २१, २.

शिक्तन् ६. ४, १; २०. ३७,
 २.
 शिक्तन्तः ६. ११४, २; ३.
 शिक्तन्तीः १२. ३, २७.
 शि_क्त_सि २०. ५६, २.
 शि_क्त_त् ७. १२, १.
 शिक्तान् ६. १२२, २.
 शि_क्त_नरः २०. २१, २.
 शि_क्त_मि ७. १०६, १; ६.
 २, १.
 शिक्तयम् २०. २७, २; ८२,
 २.
 शि_खरिडन् ११, २, १२.
 शि_खरिडनः ४. ३७, ४; ७.
 शि_खि-भ्यः १६. २२, १५.
 शि_ङ्क्ते ६. १०, ७.
 शि_ति-कक्षाः ५. २३, ५.
 शि_तिङ्गः ११. ५, १२.
 शि_ति-पदी ११. १०, ६;
 २०.
 शि_ति-पात् ३. २६. १; २;
 ६.
 शि_ति-पादम् ३. २६, ३;
 ४; ५.
 शि_ति-बाहवः ५. २३, ५.
 शि_थिरम् १०. २, ३.
 शि_पविलुकाः ५. २३, ७.
 शिप्रिन् २०. ७४, २.
 शि_प्रिन् २०. ४, १.
 शि_प्रो २०. ५३, १; ५७, ११.
 शिप्र इति २०. ३१, ४; ४२,
 ३.
 शि_भ्रम् ७. ६०, २.
 शिमिदा १२. ५, ३६.
 शिमिदाम् ४. २५, ४.
 शिमी-वतः १८. १, ६.
 शिरः २. २५, २; ३२, २; ४,

१४, ७; ५. २३, ६; १३;
 २६, १०; ६. ४६, २;
 ५०, १; ८६, १; ६. ५,
 २१; ७, १; १०. २, २७;
 ४, ५; ६, १; ७, १८; ६,
 १३; १०, २; ३; ११.
 ३, १; ८, १४; १५; १२.
 ५, ६०; ६७; १३. ४,
 ४०; १५. १८, ४; १६.
 २८, ४; ३६, ८; ४६, ६;
 ५०, ५; २०. २६, ३;
 ४१, २; १०७, ३; १२६,
 ५; ७; १२८, १३.
 शि_ला १२. १, २६.
 शि_व-अपरम् १२. २, ४३.
 शि_व-अभिर्मर्शनः ४. १३, ६.
 शि_वः २. ६, ३; ३. १४, ५;
 ६. २७, २; ३; ११६, ३;
 ७. ४१, १; ८. ६, २२;
 ६. ४, ७; ५, १२; २०.
 ७, ३; ३७, १०.
 शि_व-तमः १. ५, २.
 शि_व-तमाः १६. ८, ६; २०.
 २१, ११.
 शि_व-तमाभिः १८. २, ६.
 शि_व-तमाम् १४. २, ३८.
 शि_वम् ६. ७१, ३; ७. १०१,
 १; ८. २, १६; १०. ६,
 ३०; ३४; १२, १, ४६;
 ४७; १८. ४, ८४; १६.
 ६, १४; ६४, ३.
 शि_वया १. ३३, ४; १६. १,
 १२.
 शि_वा ३. २८, २; ३४, ७.
 ६८, ३; ६. ३, ६; १२.
 ३, ११; १४. १, ६४;

२, १३; १८; १६. ७. ३;
 ८, ५.
 शि_वाः १. ६, ४; २. ३, ६;
 ६. ३. २; २२, २; २३,
 ३; ७. ४३, १; ११५, ३;
 ८. २, १४; १५; ७, १७;
 ६. २, २५; ४, ६; ११.
 ६, ६; २२; १२. ३, १२;
 १८. २, ८; १६. २, ५;
 ४०, ३३; ४५, ३.
 शि_वान् १२. २, २७; १६.
 १, १३.
 शि_वानि १६. ८, १; २.
 शि_वाभिः २. २६, ६; ७.
 ८४, १; १७. १, १०;
 २०. ६१, ६;
 शि_वाम् १२. १, १७; १६.
 ४६, ५.
 शि_वे इति २. १०, १; २;
 ३; ४; ५; ६; ७; ८; ३.
 ४, ५; ८. २, १४; १६.
 १४, १.
 शि_वेन १. ३३, ४; ६. ५३,
 ३; १३. १, १०; १४.
 २, ६; १६. १, १२.
 शि_वौ ६. १४०, १; ८. २.
 १८.
 शि_श_यम् २०. ८६, ३.
 शिश_वः १२. ३, ४०.
 शिश_वः २०. १३२, १५.
 शिश_वे ७. ५७, २०.
 शि_श_ति २०. १०६, १.
 शि_श_धि ४. ३१, ३; ७.
 १६, १; ८. ४, १६.
 शिशानः ८. ३, १; ३; ५;
 १३. २, ३३; १६. १३,
 २; २०. ६३, ७.

शि_श_मि ५. २, ५; २०.
 १०७, ८.
 शिशि_रः ६. ५५, २; १२.
 १, ३६.
 शि_शीतम् ८. ४, १.
 शि_शीताम् १८. १, ३१.
 शिशि_ते ८. ३, २४; ४, २०.
 शि_शीमहि ६. १४, ६.
 शि_शीहि २०. ५६, ४; ८६,
 ३.
 शि_शीहि २०. ३७, ८.
 शि_लु_कः ६. १४, ३.
 शिशु_म् २०. १०५, २.
 शिश_इति ७. ८१, १; १३.
 २. ११; १४. १, २३.
 शि_शनम् ४. ३४, २.
 शि_श्र_व २०. १७, २.
 शि_श्राय २०. ८६, ६.
 शि_श्राय १०. २, ७; १३.
 शि_श्रियाणः १२. १, ३१.
 शि_श्रियाणम् १. १२, २;
 २. ५, ६.
 शि_श्रिये ४. २४, ५,
 शि_श्रिये १३. १, ६.
 शि_षः ६. १२७. १; १०. १,
 १७; ३१.
 शि_षामहे १८. १, ३७.
 शि_ष्टः २. २६, ४; ३. ५, ४;
 शि_ष्टाः ५. २६, ४.
 शि_ष्टान् २. ३१, ३.
 शि_ष्यते १५. १२, ७; ११.
 शी_तः ५. २२, १०.
 शी_तम् ५. २२, १३; १८.
 २, २२.
 शी_त-ह_वा ६. १०६, ३.
 शी_तान् ८. ६, १७.

श्रीताय १. २५. ४; ७. ११६,
१.

श्रीतिका-वति १८. ३, ६०.

श्रीतिके १८. ३, ६०.

श्रीपालम्-इव २०. १६, ६.

श्रीपाला ६. १२, ३.

श्रीमम् ३. १३, २; ५. २०,
७; १२; १३. २, ३; ५;
२०. ६४, २.

श्रीयताम् १८. ३, ६०.

श्रीर-शोचिषम् २०. १०३,
१.

श्रीर्यन्ते १२. ४, ३; ५.

श्रीर्ष-श्रामयम् ५. ४, १०;
६. ८, १.

श्रीर्षकपाले इति श्रीर्ष-
कपाले १५. १८, ४.

श्रीर्षक्तिः १२. ५, २३.

श्रीर्षक्तिम् ६. ८, १; १२.
२, १६; २०.

श्रीर्षक्त्याः १. १२, ३.

श्रीर्षणि ३. ७, १; ६. १३८,
३; १०. २, ६.

श्रीर्षण्यम् २. ३१, ४; ३३,
१; ६. ८, १; २; ३; ४;
५; १४. २, ६८; २०.
६६, १७.

श्रीर्षण्वती १०. १, २.

श्रीर्षतः ६. १३१, १; १०.
१, २६.

श्रीर्ष-मिद्याय १०. ५, ५०.

श्रीर्षम् ४. ३४, १.

श्रीर्ष-लोकम् १६. ३६, १०.

श्रीर्षाणि १. ७, ७; ८. ३,
१५; १०. ४, १६.

श्रीर्षे ७, ५६, ६; १४. १,
५५.

श्रीर्षाः १. १४, ३; ६. १३७.
३; ३; ६. ८, २१; २२;
६, ५; १६. ६, ८.

श्रीर्षा ६. ४६, २; ११. ३,
३२२; २०. १३६, १०.

शुक् १२. ५, ३४.

शुक्रः २. ११, ५; ४. २४, ४;
६. ३४, ५; ५३, १; १३.
२, ८; ३४; ४२; १७. १,
२०; १८. ४, ५६; २०.
१०७, १३.

शुक्र-पिशम् ५. १२, ६.

शुक्र-पृष्ठः १३. १, ६.

शुक्रम् ४. १, ५; १०. ५, ७;
८; ६; १०; ११; १२; १३;
१४; १३. ३, १६; २०.
११, ५; १७, ६.

शुक्र-शोचिः ८. ३, २६.

शुक्रा ५. २७, १.

शुक्राः ८. ७, १; ११. ८, २८;
१२. १, १३; ३, २७; १३.
२, १.

शुक्रौ १४. १, १०.

शुक्रानि १. २३, २.

शुचैः ७. १००, १.

शुचत्-मिः २०. ६१, ७.

शुचन्तः १८. ३, २२.

शुचम् ४. ३८, ४.

शुचयः १. ३३, १; ४; ४. ३४,
२; ५. १, २; ६. ६२, ३;
१०. ६, ३; १२. २, ११;
२८; ३, २७; २८; २०.
६६, ३; १०४, १.

शुचये ३. ११, ६.

शुचा ३. २५, ४; ५. २०, ३.

शुचि १८. ३, २१.

शुचिः २. ६, ५; ६. ५१, २;
७. ७३, ३; ८. ३, २६;
४, १६; ११. १, १६; २०.
१७, ६; ७६, १.

शुचि-त्वम् १२. ३, २८.

शुचिम् ४. ३४, २-१०. ६,
३.

शुची इति १४. १, १२.

शुद्धम् २०. १३६, १६.

शुद्धम् ७. ७३, ११; ६. १०,
२०.

शुद्ध-हस्तौ १२. ३, ४४.

शुद्धा १०. ६, ३.

शुद्धाः ४. २१, ७; ३४, २;
६. ६२, ३. १२२, ५;
७. ७५, १; ११. १, १७;
१८; २७; १२. १, ३०;
२, ११; १३; २०; २८;
३, २६; १४. २, ६७.

शुद्धाम् ११. १, २३.

शुद्धैः ६. ५, ३.

शुनः ४. ५, २; ६. ८०, १; ३.

शुनम् ३. १५, ४२; १७,
५२; ६५; २०. ११, ११;
६६, ५.

शुना ७. ५, ५.

शुनाम् ३. ६, ४.

शुनासीरा ३. १७, ५; ७.

शुने १. ११, ४; ६. ३७, ३;
११. २, २,

शुन्ध्युः २०. ६६, ३.

शुन्ध्युम् २०. १७, १.

शुन्ध्युवः १३. २, २४; २०.
४७; २१.

शुन्याः ४. २०, ७;
 शुभः ६. ३, ३.
 शुभः ६. ६६, २; ६. १, १६;
 १४. १, १५; २, ५; ६;
 २०. १३५, ४.
 शुभम् ८. १, १७; १४. १;
 ३२.
 शुभा १३. १, २१;
 शुभे ७. १०६, १; १४. १;
 ५३.
 शुभाः ११. १, १७;
 शुभासः २०. ६७, ४;
 शुभ्रियः २०. ४८, २.
 शुभ्रिषु २०. ७४, १; २, ३;
 ४; ५; ६; ७.
 शुभ्रे २०. १५, ३.
 शुभ्रम् २०. ६२, १७; १०५,
 ५.
 शुभ्रतु १२. ३, १३;
 शुभ्रताम् १८. ४, ६७;
 शुभ्रति १४. १, २८.
 शुभ्रतु १८. ३, ५६;
 शुभ्रनो इति ७. ११२, १;
 १४. ३, ४५.
 शुभ्रन्तु ६. ११५, ३; १२.
 २, ४०;
 शुभ्रन्ते १२. ३, ६६.
 शुभ्रमानाः ५. १२, ५; ११.
 १, १४.
 शुभ्रमति १२. ३, २१.
 शुभ्रमामि ६. ५४, १; २०.
 ११५, २.
 शूरधः २०. १२, २.
 शूरकः ३. २६; ३.

शूरकम् ५. १६, ३;
 शूरुधि ४. ३३, १.
 शूरुचीत २०, १७, ६.
 शूरुलक-धातुम् ८. ४; २२.
 शूरुवत् २०. ६३, ५;
 शूरुवाव ११. ४, २५;
 शूरुश्रुम् ७. ७४; १; ८. ६;
 १८; ११. १, २६.
 शूरुश्रुम् २०. १२८, ४.
 शूरुश्रुवे २०. ६७, ३.
 शूरुषमाणः २०; ३७, २.
 शूरुषन्तम् २०. ३५, १०.
 शूरुष्य ५; १, ४.
 शूरुक्-आस्या ३. २५, ४; ६.
 १३६, २; ४.
 शूरुक् १६. ४६, १०.
 शूरुणाम् २०. ३४, १७; ३७,
 २.
 शूरुणस्य २०. १३७, ११.
 शूरुम् ५. १, ६.
 शूरुः १. १२, ३; ५. २०, २;
 ६. ७३, २; ६. ४, २५;
 १८. २, ३६.
 शूरुम् ३. ६, ३; ६. ६५,
 १; ६. १; १०; २०; २०;
 २०, ३; ५७, ६; १०५,
 २; १०६, १; ११५, २.
 शूरुवत्-तरम् ४. ४, ३.
 शूरुमा ४. ४, ४.
 शूरुमात् २०. ३४, १; १४.
 शूरुमिणः ६. २०; १; २०.
 १७, ३.
 शूरुमिणम् २०. १२, ५.

शूरुमिन् ५. २, ४; २०. १०७,
 ७; १०८, ३.
 शूरुमिन्-तमम् २०. २०, १;
 ५७, ४.
 शूरुमी २०. १२, ७.
 शूरुमी ५. ५, ७; ६. ३८, ३.
 शूरुमीण ४. ४, २.
 शूरुष्य ६. १३६, २; ४.
 शूरुष्यतु ६. १३६, २.
 शूरुष्यतु ६. १३६, २; ७. ५६,
 १; ८. ४, ११.
 शूरुष्यन्तु ६. ६, १.
 शूरुः ४. २०, ४; १६. ६, ६.
 शूरु-कृता १०. १, ३.
 शूरुम् ४. २०, ८.
 शूरुम् ५. २२, ७.
 शूरुय १६. ३२, ८.
 शूरु १६. ६२, १.
 शूरु-पृषी १४. २, १६;
 शूरु २. ५, १; ७. ३१, १;
 ७६, ६; ८. ५; १७; ८; ७;
 १८. १, ३८; २०. १२, ५;
 २३, ३; ३७, ११; ५६;
 ५; ७३, १; ७४, ४; ७७,
 २; ७; ७६, २; १००, २;
 ११६, २; ११८; १; १२१,
 १; १२५, १.
 शूरुः ८. ८, १; २०. ३७, १०;
 ६०, १; ८६, ४.
 शूरु-पृषी २०. १६६, ८.
 शूरु-पुत्रा ११. १, ११.
 शूरु-पुत्राम् ३. ८, २.
 शूरुम् ७. ८६, १; २०. ८६,
 २.

शूर-वीरः ङ. ५, १.
 शूर-सातौ २०. ६१, ६.
 शूर-सः १८. २, १७.
 शूर-भिः २०. ७०, २०.
 शूर्प-ग्राही ११. ३, ४.
 शूर्पम् ६. ६(१), ६; ११. ३,
 ४; १२. ३, १६; २०.
 शूर्पम् २०. १३६, ६.
 शूर्पे १०. ६, २६; २०. १३६,
 ६.
 शूशुचः १८. २, ४.
 शूषम् ५. २, ८; २०. ३०, २;
 ७१, १६; ६५, ६; १०७,
 ११.
 शूषस्य २०. ७२, १.
 शूङ्गाः २०. १३०, १३.
 शूङ्गाम् २०. १२६, १०.
 शूङ्ग-वृषः २०. ५, ७;
 शूङ्गाणि ८. ६, १४.
 शूङ्गात् ४. ६, ५.
 शूङ्गाभ्याम् ६. ४, १७; १६.
 ३६, २.
 शूङ्गे इति २. ३२, ६; ८.
 ३, २४; २५; ६. ७, १;
 १०. ६, २४.
 शूण १६. ४५, १.
 शूणान्त ८. ३, १४.
 शूणवत् ६. २, १; ११. ४,
 १६; २०. ५३, ३; ५७,
 १३; ११३, १.
 शूणवत् १३. १, ३.
 शूणात् ६. १३४, १.
 शूणात् ६. ३२, २; १३४, १;
 १०. ५, ५०. ५.
 शूणामि २. ३२, २; ५. २३.
 ६.

शूणामि २. ३२, ६.
 शूणीतम् ६. ५०; १; ८. ४,
 १.
 शूणीमसि २. ७, ५.
 शूणीहि ३. ६, २; ५. ३६,
 ४; ८. ३, ४; १०. ३, २; ५,
 ४६; १३, ३, १७; १६.
 ७, १२.
 शूणु १०. १, २८.
 शूणु ५. ८, २; २०. ३, २;
 ३८, २; ४७, ८.
 शूणुत् १. ३०, २; २. १२,
 २; ५. १३, ५; १४. २,
 ६.
 शूणुतम् १६. १, ३१.
 शूणुतम् २०. ६१, ११.
 शूणुहि २. १२, ३; २०. ८,
 २.
 शूणोत् ६. ५०, ३; १६. ३,
 १६.
 शूणोति ४. ३०, ४; ६. ४,
 १७.
 शूणोत्तु ७. ४७, २; ४८, १.
 शूणोत्तु ५. ३, ११; ७. ४६,
 २; १३. २, ४४; ४५; १६.
 १०, ६.
 शूणोमि ३. १३, ६; २०.
 ८६, ३.
 शूणवत्ते १२. २, २१.
 शूणवन् १४. १, ५.
 शूणवन्तः ७. ६१, २.
 शूणवन्तम् २०. ११, ११.
 शूणवन्तु ४. ३५, ७; १८. ३,
 ३६; १६. ११, ४.
 शूणवे १८. १, २४.
 शूतः ६. ५, ५.

शूतम् १. १४, ६; ११. १,
 २५; १८. २, ४; ५; ६; ४,
 १२; १३.
 शूतया ४. १४, ६.
 शूध्याम् २०. ३४, १०.
 शूकिम् ६. ११४, ३.
 शूकुः २०. ६४, ६.
 शूताम् ११. १०, २५.
 शूपः ४. ३७, ७; ५. २५, १;
 ६. ७२, १; १०१, १;
 १३८, ५; ७. ६०, ३; ६.
 ७, १३; ११. ५, १२; १४.
 ३, ३८.
 शूपः-हर्षणीम् ४. ४, १.
 शूपिषे ५. ३०, ३.
 शूपे ७. ८६, ४.
 शूप्या-वन्ते ७. ११३, १.
 शूर्भ २. २४, १.
 शूर्भक २. २४, १.
 शूर् १०. ३, १५.
 शूव-धिः ७. ५३, ५; १२. ४,
 १४.
 शूव-धि-भ्यः ६. ३, १५.
 शूव-धिम ५. २२, १४; ६.
 १२३, १; १२. ३. ४६.
 शूवलम् १. ११, ४.
 शूवा ८. ६, २२.
 शूवृध २. २४, २.
 शूवृधक २. २४, २.
 शूषः १८. २, १०.
 शूषणम् ७. १०६, ५.
 शूषि ११. ६, १३.
 शूषे ५. ३०, ४.
 शूषे १८. ३, २.
 शूशिरौ १५. ४, १७; १८.
 शूकः १. २५, ३.

शोकम् ६. १८, १; १८, १,
३६.

शोकात् ४. १४, १; ६. ५,
१३.

शोकाय ५. १, ३.

शोकैः ३. १, ५.

शोच २. १६, ४; २०, ४;
२१; ४; २२, ४.

शोचत २. २३, ४.

शोचता २. १२, ३.

शोचतु ६. १३०, १; २; ३;
४; १३१, १; २.

शोचय २०. ३६, ८.

शोचयः १८. २, ६.

शोचयामसि ६. ८६, २.

शोचयामसि ६. ८६, १.

शाचिः १. २५, २; २. १६,
४; २०, ४; २१, ४; २२,
४; २३, ४; १०. ४, २;
१८. २, ८.

शोचिः-केशम् १३. २, २३;
२०. ४७, २०.

शोचिषा १. १२, २; ६. ३४,
२; ८. ३, २३; १७. १,
१६; २०. ३६, ८; ६७, ३.

शोचिर्ब १. २५, ४.

शोचीर्वि ५. २७, १.

शोणा २०. २६, ५; ४७, ११;
६६, १०.

शोभयामसि १४. १, ५५.

शोभसे २०. १०६, १.

शोशुचत् ४. १३, १३; २;
३; ४; ५; ६; ७; ८.

शोशुचतः ८. ३, १३; १६;
१०. ५, ४६.

शोशुचानः ४. ११, ३; ८.
३, ७.

शोशुचानम् ६. १३२, १; २;
३; ४; ५; ८. ३, ६.

शोशुचानाः ५. २२, १.

शोषयति ३. २५, ३.

शोषयामि ६. १३६, १.

शौष्क-आस्यम् ११. ६, २१.

श्चोतन्ति २०. ८८, ३.

श्चथयन्त २०. १०५, २.

श्नयिना २०. १५, २.

श्नुष्टिः २. १७, २.

श्नुष्टिम् ८. २, १.

श्मशाने ५. ३१, ८; १०. १,
१८.

श्मश्रु ६. ६८, २.

श्मश्रूणि ५. १६, १४; २०.
७३, ५.

श्यामः ८. १, ६.

श्यामम् ११. ३, ७.

श्यामा १. २४, ४.

श्यामाकम् २०. १३५, १२.

श्यामेन ६. ५, ४.

श्याव-अश्वः १८. ३, १५.

श्याव-अश्वम् ४. २६, ४;
११. २, १८.

श्यावः ५. ५, ८.

श्यावके २०. १२०, २.

श्याव-वतः ११. ६, १७.

श्याव-वता ७. ६५, ३.

श्यावम् २०. १६, ११.

श्यावौ ७. ६५, १.

श्येनः ३. ३, ३; ४; ६. ४८,
१; ७. ४१, १; ३; ६. ७,
५; १८. १, २१.

श्येन-इव ५. ३०, ६.

श्येनाः ११. ६, ६; १०, २४.

श्येनात् ५. २१, ६.

श्येनी ६. ८३, २.

श्येनीः १८. ४, ३३; ३४.

श्येनीपत्नी २०. १२६, १६.

श्येने ६. ६२, २.

श्येनौ ७. ७०, ३.

श्येतम् १५. २, २२; ४, ११;
१२.

श्यैतस्य १५. २, २४.

श्यैतार्य १५. २, २३.

श्रंशयित्वा ४. १६, ७.

श्रत् २०. ३४, ५.

श्रत्-वधाति ११. २, २८.

श्रत्-वधानस्य ४. ३५, ६.

श्रत्-वधानाः ६. १२२, ३;
१२. ३, ७.

श्रत्-वधानेन ६. ५, ७; ११.

श्रत्-धेयम् ४. ३०, ४.

श्रथय १. ११, ३.

श्रथय ७. ८३, ३; १२. ५,
७१; १८. ४, ६६.

श्रथानः १४. १, ५७.

श्रथ्या १२. ५, ३.

श्रद्धा ५. ७, ५; ६. ५, २१;
१०. ७, १; ११; ११.

७, ६; ८. २३; १३. ४,
२३; १५. २, ५; ७, २३

४; ५; १६, ४.

श्रद्धाम् १०. २, १६; ६, ४;
१६. ६४, १.

श्रद्धायाः ६. १३३, ४.

श्रपयन् ११. १, ४.

श्रमः ८. ८, ६; ११. ७, १७.

श्रमात् १०. ७, ३६.

श्रमेण ४. ११, १०; ३५, २;
६. १३३, ३; ११. ५, ४;
१२. ५, १.

अथ ६. ५, ४.

अथत्ताम् ५. २८, ४,

अथत्ते ११. ३, ५१.

अथत्ताम् १८. ३, ५१.

अथत्ताम् ५. १२, ३२,

३२,

अथन्ते १०. ७, ३८; ११. ५,

११,

अथस्व ३. ४, ३; १२, १; ६.

१४२, १; ३; ६. ५, ८;

१८. ४, ३.

अथ्याते १२. ३, १५; ३.

अथ्यामि ६. ५, ५.

अथ्ये १६. १७, १; ३; ३; ४;

५; ६; ७; ८; ९; १०.

अथ्येथाम् ६. १२२, ३; १२.

३; ६; ७; ८.

अथः ६. २८, २; ३३, २; १३.

३, ३; २०. २०, ३; ३५,

१०; ५७, ६; ७१, १३;

१४; ८०, १; १०६, २;

१२५, ३; १४२, २.

अथः-सु २०. १६,

अथणः १६. ७, ४.

अथत् २०. २६, २; १८, २.

अथत्ता २०. ५८, ४.

अथत्से २०. १५, ३.

अथत्स्यन्तः २०. ७५, ३.

अथत्स्यवः २०. ६४, ६.

अथत्स्यवः ३. ६, ४.

अथत्स्या २०. १२, १; ३५, ५.

अथत्स्या २०. ४४, २; ६१,

६; ६२, १०.

अथत्स्यानि २०. ६४,

अथत्स्युः ६. ६८, २.

अथत्स्युम् ३. ६, ३; ७. ४०,

३.

अथिष्ठाः १६. ७, ४; ४६, २.

अथितम् ७. ७२, १; २; ३२.

अथितम् ६. ७४, २.

अथित्सदाम्-इव १. ३२, १.

अथित्सदा-इव ७. ६५, २.

अथिता ४. २०, ३.

अथित्यतः ११. १, ३०.

अथित्यन्तः-इव २०. ५८, १.

अथित्यति ६. ११, १.

अथितः ७. ७६, ३; १२. २,

४४; १३. ३, ५; १४. १,

१; २०. १४३, ७.

अथितम् १, ३२, ४; ६. १८,

३; १०. ८, १६; १३. २,

१४.

अथिता ६. १०, ७; ११. ७,

२१; १२. ५, १.

अथिताः ६. ८०, २; १०. ८,

३४; ११. ३, २०; ६,

१२; ७, ४; १४; १३. ३,

६; १८. ४, ४.

अथिते इति १३. १, ३७.

अथित्यः २०. ११०, २.

अथित्यम् ४. ८, ३; ५. १२, ६;

६. ५४, १; ७३, १; ६.

५, ३१; ३२; ३३; ३४;

३५; ३६; ६(३), ६;

१०. ६, १०; २०. १४३,

२.

अथिया १०. ६, २६; ११. १,

१२; २१; १२. ५, २.

अथियाम् १२. १, ६३.

अथीः ११. ७, ३; १२. ५, ७.

अथीणन्ति २०. १०६, २.

अथीणन्तु ४. १, २.

अथीणीहि २०. १२७, ६.

अथुत ४. ३०, ४.

अथुत २०. १२७, १.

अथुतः १८. १, ३८; २०. ३१,

६.

अथुतम् १. १, ३; ३; १५. २,

२६; १८. १, ४०; २०.

५१, ३; ७७, २; १०३, १;

अथुतम् २०. १२७, ६.

अथुत-मघम् २०. ७, १.

अथुतस्य ७. ६१, १.

अथुतानि ७. ६१, २.

अथुताम् ६. ५२, ३.

अथुताय ६. ४१, १.

अथुतिः ११. ७, २०.

अथुते २०. ६७, १.

अथुतेन १. १, ४.

अथुत-कर्णाय १६. ३, ४.

अथुत्वा ५. ४, २; १२. ४, २७.

अथुधि २. ५, ४; ४. ३०, ४;

१८. १, २५; २०. ८, १.

अथुधि २०. ७२, ३.

अथुन्तु १८. ३, ४५.

अथुत्सम् १६. २, ४.

अथुयः ५. २०, ६; ७. ८, १८.

६, ३२.

अथुयः-कोतः ५. २०, १०.

अथुय-अथुयः १०. ६, ५.

अथुयसीम् १२. ३, ४५.

अथुयसीम् २. ११. १; २; ३;

४; ५; १५. १०, २.

अथुष्ट-तमा ६. १३८, १.

अथुष्टम् ६. २१, ३; ४४, २; ७.

७३, ७; ६. १०, ४; २०.

१४१, ३.

श्रेष्ठाः ४. २५, ७; १८. ४,
८६; ८७,

श्रेष्ठेन ५. २५, १०; ११; १२;
१३,

श्रेष्ठ्याय १०. ६, ३१; ३२;
३४.

श्रेष्ठ्यै १. ६, ३.

श्रोणि-भूतोदिनः ८. ६, १३.

श्रोणि-भ्याम् २. ३३, ५; ६.
८, २१; २०. ६६, २१.

श्रोणी इति ६. ४, १३; ७, ६;
१०. २, ३; ६, २१.

श्रोत्रम् २. १७, ५१; ५. १०,
८; ११. ५, २५; ७, २५;
८, ४; २६; १२. ५, ६;
१६. ५१, १; ५५, १; ६०,
१.

श्रोत्रात् १६. ६. ८.

श्रोत्राभ्याम् ११. ३, ३३२.

श्रोत्राय ६. १०, १; १०. ६,
८; १६. २४, ३.

श्रोत्रियः ६. ६(३), ७.

श्रोत्रियम् १०. २, २०; २१.

श्रोत्रे १६. २४, ३.

श्रोत्रे इति १६. ३, २; १४. १,
११.

श्रोत्रेण २. ३५, ५; १०. ७,
३६; १३. १, १३; १८. २,
५६; १६. ५८, ५.

श्रोमतेन २०. ६७, ३.

श्लक्ष्णाम् २०. १३३, ५.

श्लक्ष्णायां २०. १३३, ५.

श्लोकाः १८. १, ३३; ३, ३६.

श्लोक-कृत् ५. २०, ७.

श्लोकम् १६. २, ४; २०. २५,
६.

श्लोकी २०. ४, २; १३७,
१३.

श्लोण्या १२. ४, ३.

श्वः ५. १८, २; ११. ४, २१.

श्वः-श्वः १०. ३, २; ६, ५;
६; ७; ८; १०; ११;
१२; १३; १४; १५; १६;
१७.

श्व-किष्किणः ८. ६, ६.

श्व-घ्नी ४. १६, ५; ७. ५०,
६; २०. १७, ५; ८६, ६.

श्व-घ्नी-इव २०. ३४, ४.

श्व-ञ्चस्व १८. ३, ५०.

श्वन्-वतीः ११. ६, १५.

श्वपदाम्-इव ८. ५, ११;
१६. ३६, ४.

श्व-भ्यः ११. २, ३०.

श्व-यातवः ८. ४, २०.

श्व-यातुम् ८. ४, २२.

श्व-वर्तेभ्यः ६. ४, १६.

श्वशूरः १४. १, ३६.

श्वसुरात् ८. ६, २४.

श्वशराय १४. २, २६.

श्वशुरेभ्यः १४. २, २७.

श्वशुरेषु १४. १, ४४.

श्व-श्रवाः १४. १, ४४.

श्व-श्रवै १४. २, २६.

श्व-सन्तु ४. १५, १२.

श्व-सिद्धि ६. १०१, १.

श्वा ४, ५, ६; २०. १३६, ४;
१३०, १६.

श्वा-इव ४. ३७, ११.

श्वाण्याः २०. ६६, २.

श्वानः ४. ३६, ६; ११. २,
११; १०, २३.

श्वानौ ८. १, ६; १८. २, ११;
१२.

श्वार्पदः ११. १०, ८; १८. ३,
५५.

श्वार्पदम् ११. ६, १०.

श्वारिवत् ५. १३, ६.

श्वशूरः २०. १२८, १०.

श्वारस्य ६. १२६, १.

श्वित्रः ३. २७, ६.

श्वित्रम् १०. ४, ५; १३.

श्वित्राय १२. ३, ६०.

श्वेत १०. ४, ३.

श्वेतः ५. १७, १५.

श्वेतः २०. १३५, ८.

श्वेतम् १. २३, ४.

श्वेताः २०. १२८, १६.

ष

षट् ४. ११, १; २०, २; ५.
१५, ६; ८. ६, ७; १६४;
१७२; २३; ६. २, ११;
६, ७; १६; १०. ७, ३५;
८, ५; ११. ३, २१; ७,
१८; १३. १, ४; ३, १;
६; १८. २, ६; १६. ४७,
४.

षट् ५. ३, ६.

षट्-अरे ६. ६, १२.

षट्-अहम् ८. ६, १६.

षट्-अवेभ्यः १६. २३, ३.

षट्-पक्षा ६. ३, २१.

षट्-पदः १३. २, २७.

षट्-भिः १२. २, ४८.

षट्-मयूखम् १०. ७, ४२.

षट्-योगम् ८. ६, १६.

षट्-योगेभिः ६. ६१, १.

षट्-रात्रः ११. ७, ११.

षट्-वृषः ५. १६, ६.

षट्-सहस्राः ११. ५, २.

षष्टिः ५. १५, ६; १०. ८,

४; १६. ४७, ४.

षष्टिम् २०. २१, ६; १२७, १.

षष्ट्याम् १२. ३, ३४; ४१.

षष्ठः १३. ४, १७; १५. १५,

८; १६, ६; १७, ६.

षष्ठम् ८. ६, ६.

षष्ठात् ८. ६, ४; ६.

षष्ठाय १६. २२, २.

षोडश-ऋचेभ्यः १६. २३, १३.

षोडशम् ३. २६, १.

षोडशी ११. ७, ११.

स

स-अज्ञात् १२. ५, १२.

स-अज्ञाः १८. ४, ६४.

स-अन्तर्देशाः ६. ५, ३७.

संयती इति सम्-यती २०.

३४, ८.

संयतीम्-संयतीम् ६. ५, ३३.

संयत्-वसुः १३. ४, ५४.

संविदाने इति सम्-विदाने

२. १८, ४; ७, १२, १;

१०. ७, ६.

संशिश्वरीः-इव २०. ६२, ८.

संसृष्ट-जित् १६. १३, ४.

संस्कृतः २०. ५३, ३; ५७,

१३.

संस्कृतम् ११. १, ३५.

संस्कृत्यम् ४. २१, ४.

संहित-अल्लम् १०. २, ३.

संहिते इति सम्-हिते १२.

१, ५२.

सः १. ८, १; १२, १; १६, १;

२५, १; २; ३; ३१, ३;

३५, २; २. १, २; ३३, ६;

५३; १२, २; ३४, १; ३.

१, १; २, १; ४, ५; ६; १;

६, १; ७, १; १५, १; ७;

१६, ५; २६, ३; ४. १, १;

४३; ५; २, ७; ३, ५; ६,

११; ८; ७, ३; ८, १३;

१०, १; ४; ५; ११, २; ३;

७२; १२, ६; १४, १; ६;

१५, १०; १६, ४; १८, ६;

२१, ५; २३, १; २; ३; ४;

५; ६; ७; २४, १; २; ३;

४; ५; ६; ७; ३०, ४; ३३,

८; ३४, ८; ३६, १०; ३८,

५; ३६, १; ३; ५; ७; १०;

५. ३, ८; ४, ७; ८; ६,

१; ८, ४; ५; ६, ७; १०,

१; २; ३; ४; ५; ६; ७;

११, ४; १२, ३; १६, ११;

१७, ५; ८; १८, २; ४;

१३; २३, ६; २४, १; २;

४; ७; ८; ६; १०; ११;

१२; १३; १४; २५, ७;

२७, ५; २६, २; ३; ३०,

१७; ६. १, ३; २, ३; ६,

२; १५, १; १६, २; ३३,

३; ३४, १; ३; ३; ४;

५; ३६, २; ३६, २; ४६,

३; ४७, १; ६३, ४; ७६,

३; ८३, ३; १०६, २;

११०, ३; ११२, १; २;

११६, ३; १२२, २; ५;

१२३, ३; ४४; ५; १२४,

२; १२५, ३; १२६, १;

१३३, १; ७. १, २; ३,

१३; ५, २; ६, १२; ६,

२; १२, १; १७, १; २१,

१; ३१, १; ४१, ३; ६३,

१; ७३, ४; ७६, ४; ७७,

२; ८०, २; ८२, १; १०६,

१; ५; ८, २, २३; २४;

३, १२; ८; ४, १०, ११;

१५; ५, ४; १२; २२; ६,

१; २; २२; २५; ६. १,

५; ६; ७; ४, ७; ६; १८;

१६; ५, ६; १२; ६ (१),

६; ६ (२), ७; १३;

६ (४), १; ३; ५; ७; ६;

६ (६), ७; ८; ६; १०;

११; १२; ६; १५; २२;

१०, ७; ६; १०; ११;

२४; २८; १०. १, २६; २,

७; ८; ३, ३; ११; १३;

४, १५; ५, २५; २६; २७;

२८; २६; ३०; ३१; ३२;

३३; ३४; ३५; ४४; ५०;

६, ५; ६; ७; ८; १०;

११; १२; १३; १४; १५;

१६; १७; २१; २२; २३;

२४; २५; २६; २७; २८;

३१; ३२; ७, ४; ५; ६; ७;

१०; ११; १२; १३; १४;

१५; १६; १८; १९; २०;

२२; २४; २६; २८; ४०; ४१;

८, १३; १८; २०; २१;

२६; २८; ३७; ६, ४; ५;

६; १०; १०, २; २२; २३;

२७; ११. १, ५; २७; २,

८; ११; ३, २३; ५४; ४,

१४; २०; २१; २२; ५,

१२; २; ६; २६; ७, १६;
 म, ३; ७; १२; १, १२; २;
 ४; ७; १८; ३३; ४७; ४८;
 ३, ५; १५; २६; ४, २; ६;
 १२; १३; ४७; ४६; १३.
 १, १; १३; ५५; २; ६;
 १२; २५; ३७; ३८; ३;
 १३; १४; १५; २६; ४;
 १; ३; ४; ५; ५; ८; ११;
 १२; १६; २०; २५; २६;
 ४६-३६; ४०; ४१; १४.
 १, २६; ३०; २, १; ३३;
 ३६; ४१; १५. १, १; २;
 ४; ५; ६; ७; ८; १२; ३;
 ४; ६; ११; १२; १५;
 १७; १८; २१; २३; २४;
 ३, १; २; ६, १; ३; ४; ६;
 ७; ६; १०; १२; १३; १५;
 १६; १८; १६; २१; २२;
 २३; २४; २६; ७, १; ८;
 १; २; ३; ६, १; ३; १२;
 ३; ४; १४, १; ३; ५; ७;
 ६; ११; १३; १५; १७;
 १६; २१; २३; १५; ३; ४;
 ५; ६; १६; ६; १७, ७;
 १८, २; ३; १६. १,
 ८; ५, ३; ४; ५; ६; ७;
 १०; ७, ५; १३; ८, ३;
 ५; ६; ७; ८; ६; १०; ११;
 १२; १३; १४; १५; १६;
 १७; १८; १६; २०; २१;
 २२; २३; २४; २५; २६;
 २७; २८; २६; ३२, १७.
 १, ८; ११; १२; २०; २१;
 १८. १, ६; १६; १८;
 २४; २, ३; ३१; ५४;
 ३; ६३; ४, ३५; ४१;

५४; १६. ४, ४; ६;
 १; ६; १३, ४; १५;
 ३; १७, १२, २२;
 ४; ४; ५; ७; ८;
 ६; १०; २६, १; ३१;
 २; ११; १३; १४; ३२,
 ६; १०; ३३, १; ३४, ५;
 ३५, २; ३६, ५; ६; ७;
 ८; ४६, ५; ४६, १०;
 ५२, १; ५३, २; ३;
 ४; ५४, ५; ५७, ३; ४;
 ५८, ४; ५६, ३; ६४,
 १; २०. १, १; २; ६, १;
 ७, ३; ६; ४; १२, ६;
 १४, २; ४; १६, ६;
 १२; १७, ३; ६; ८, २०,
 ५; २३, ६; ३०, ३; ३१,
 २; ३४, १; २; ३; ४;
 ५; ६; ७; ८; ६; १०;
 ११; १२; १३; १४; १५;
 १६; १७; १८; ३६, ७;
 ११; ४६, २; ३; ४७, १;
 २; ४६, ७; ५६, १;
 ५७, ८; ५८, २; ६१, ६;
 ६२, २; ४; १०; ६७,
 ७; ६६, १; ७०, १२;
 ७; ७७, ८; ८८, ५;
 ६१, ७; ६२, १२; ६३,
 ८; ६४, ५; ६५, १; ६८,
 २; १०४, २; १०८, ३;
 ११७, २; १२५, ७; १२६,
 १६; १७; १२७, १०;
 १२६, १२; १३४, ४;
 १३७; १२; १३१.

सुका १०. ४, १४.

सुकुली २०. १३६, ४.

सुकुत २०. ११६, २.

सुकुतौ ११. १, १०.

सुकुतम् ५. १३, १.

सुकु २०. १३६, ५.

सुकिथ २०. १२६, ६; ७.

सुकिथ-भ्याम् १०. १०, २१.

सुक्थ्या २०. १२६, १६; १७.

सुक्थ्यौ ६. ६, १.

सुक्षणिः ५. ६, ४.

सुक्षति ५. २; ७; २०. १०७,
१०.

सुक्षन्तः २०. ७२, २; ७५, १.

सुखा १. २०, ४; २६, २;

५. ४, ७; ११, ६; १०;

११; ६. ५१, १; ७. २६;

६; ५१, १; ८. ३; ३०;

१८. १, २; ४, ६०; २०.

७, ३; १७, ११; २१, २;

३७, १०; ६८, १०; ८६,

११; ६४, १२; १२४, १;

१३०, १४; १३७, ६.

सुखायाः ७. ६०, ४; ७२, २;

१४. १, ३४; १८. १,

३७; १६. २४, ७; २०.

१४, २; ६; १८, १; २१,

११; २६, १; ३७, ८;

६२, २; ३; ६५, १; ६८,

११; ८५, १.

सुखायः ६. ६७, ३; ११. १,

२; १२. २, २६; २७;

१६. १३, ६.

सुखायम् ५. १, ६; ८. ३,

२०; १८. १, १; २०.

८६, २.

सुखायम् २०. १२८, २.

सुखाया ६. ६१, १; ६. ६,

२०; २०. ८६, १.

सुखायौ-इव ६. ४२, १; २.

संवि-भिः ७. १०५, १; १४.

१, ५६; २०: ७७; ६।
६१, ३; ७.

संवि-भ्यः ७. ५१, १; १०६;
१, ८. ६, ७; २०. १७,
११, २१, २, ६८, ४; ८६,
११; ६४, ११.

सिंखि-यता २०. ७५, ३.

सखीन् ५. २२, ११.

सखीनाम् २०. १२४, ३.

सखीयते १६. ५२, २.

सखे १६. ५२, २.

सख्यम् १८. १, २; २०. ८६,
४.

सख्यम् ७. १०४, १.

सख्या ७. ४१, १; २०. ३१,
७.

सख्या १८. १, १.

सख्याय ३. ३, २; २०. ६२;
७; ७६, ८; ११४, २;
१२५, ३.

सख्युः ५. १३, ५; १८. ४,
६०; २०. ६२, ४; १२६,
१२.

सख्ये ८. ६, २२; १३. १, १७;
१८; १६; २०. १३, ३.

स-गणः २०. ६३, २; १२४,
५.

स-गणाः ७. ७७, ३.

सघत् २०. १५, ४.

सघाघते २०. १२६, १२.

सघाघत २०. १२६, १३.

सकृत्प-कुलमलाम् ३. २५,
२.

सचताम् १. १२, ३; ६. ४,
२२.

सचते ५. १, ७; १२. ३, ५०.

सचते ७. २१, ३; ३४, ३;
३७, ११; १२. ३, २.

सचध्वम् ३. १४, ६; ४. ३७,
१२; ६. ४१, ३; ६. ४,
२४; १८. ३, १६; ४, ६२.

सचध्वे २. २, ४.

सचस्त ७. ५, १.

सचन्ताम् २. ३४, १; ४. १५,
२; ८. ४, १४; १२. ३,
४३.

सचन्ते ६. ११६, ३; १२. ३,
४०; १८. ४, ४०.

सचन्ते ६. १२२, ३; १२. ३,
७; १६; २६, २; २८; २०.
६, ७; १४३, २.

सचसे ५. ७, ८.

सचस्व १२. २, ५३.

सचा २०. २५, ५; ३८, ५;
४७, ५; ५३, १; ५६, ५;
५७, ११; ६०, २; ६८,
१२; ७०, ८; ७१, ६; ७३,
५; ७८, १; ८५, १; १२०,
२; १२५, ४.

सचा-भुवम् २०. ७२, २;
७५, १२.

सचावहै ६. ४२, १.

सचावहै ६. ४२, २.

सचिन्ताः ६. १००, १.

सचैतसः १. ३०, २; ५. २१,
१२; ६. ६८, १; ७. २२,
२.

सचैतसम् २०. ६४, ४.

सचैतसौ २. २६, ३; ४. २६,
१; २६, १; २.

सचैताः २०. ३५, १०; ७७,
७.

सचेथाम् १२. ३, ६.

सचेवहि १४. २, ७२; २०.
६२, ४; १३.

सजन्तु ५. २१, १०; ११;
१०, ३.

स-जातैः १. १६, ३; ३. ३,
६.

स-जातम् १३. १, ३१.

स-जातोः ३. ४, ३; ६. ७३,
१.

स-जाताः ३. ३, ४; ६. ७३,
२; १८. ४, ३७.

स-जातान् १. १०, ४; ११.
१, ६.

स-जातानाम् १. ६, ३; २.
६; ४; ३. ८, २; ६. ५,
२; १६. ४६, ७.

स-जातैः ३. ८, ३; ११. १,
७.

सजामसि ७. १५, १.

सजामि १४. २, ४८.

स-जित्वानम् २०. ७०, १७.

स-जूः ६. ३५, २; १२६, १;
८. २, १३; २०. ५४, १.

स-जोषसः ६. ११५, १.

स-जोषसम् २०. ६३, ७.

स-जोषसा २०. १४१, २.

स-जोषाः ३. २२, १; ४. १४,
५; ३२, २; ५. १३, ३;
२८, ५; ७. १७, ३; १०८,
२; १२. २, २४.

सत् ५. १६, ६; ८. ४, १३;
६. १०, २८; १०. २,
२२; २३; ७, १०; २१; ८,
६; १७. १, १६; २०. २०,
५; ५७, ८.

सुतः—सर्वः—सर्वः .

(५,०३६)

सुतः ४. १, १; ५. ६, १; ८.
४, २१, २०. ५८, ३.
सुताम् १. ८, ४.
सुति १७. १, १६.
सुती ११. ८, १७; १२. ४,
१६.
सुतीः ६. ६, १५; १२. ३,
२६; २०. २८, ४; ३६, ३.
सुतोकात् ६. ५६, १.
सुत्तः २०. २३, २.
सुत्तम् १७. १, १४.
सुत्र-सर्वः १. ३०, ४.
सुत्र-सद्येन ६. ६(४), ६.
सुत्ताणि ११. ७, ८.
सुत्तेण १२. १, ३६.
सुत्-पतिः ७. ६२, १; २०.
११, ७; १७, ६.
सुत्-पतिम् २०. १४, ४; २२,
४; ६२, ४; ६२, १; ६८,
१.
सुत्पत्नी इति सुत्-पत्नी ७.
७३, ४.
सुत्-पत्ने २०. ६, ४; २१, ६;
१११, ३; ११२, २.
सुत्य २०. ६४, २; ७४, १.
सुत्य-श्रौजाः ४. ३६, १.
सुत्यः २०. ३४, १८; ३६, १;
७६, ४; ७७, १; ६५, १;
१०४, २; ४; १२४, २.
सुत्य-जितम् ४. १७, २.
सुत्य-धर्मणः १. १०, ३.
सुत्य-धर्मा ७. २४, १; १०.
८, ४२.
सुत्यम् २. १५, ५; ३५, ४;
३. १. ४; ४. ६, ७; १८,
१; ३४, १; ५. ११, ३;

१७, १०; ६. ६१, २; ३;
७. ७०, २; ८. ३, २१;
४, १२; ६. २, २५; ५,
२१२; १०. २, १४; ३;
२५; ६, १५; ७, १; ३७;
११. ७, १७; ८, २०;
१२. १, १; ३, १२; ५,
१०; १५. १, ३; ६, ५;
२०. ६५, १; ११२, २.
सुत्य-राधः ३. १६, ३.
सुत्य-राधाः २०. ७६, ७.
सुत्य-वर्त्मा ४. २६, ७.
सुत्य-वाचा ५. १, ६; १८. १,
२६.
सुत्य-वादिनम् ११. ४, ११.
सुत्त-वादी ४. १६, ६.
सुत्य-वानम् ४. २६, १; २.
सुत्य-शुष्मम् २०. ६४, ३.
सुत्य-शुष्माय २०. १५, १.
सुत्य-सन्धान ११. ६, १६;
२०.
सुत्य-संवम् ७. १४, १.
सुत्य-संवा ७. १५, १.
सुत्यस्य ३. ११, ८; ६. १, २;
१५. ६, ६; १६. १०, २;
११, १; २०. २२, ४; ६२,
१; १३६, ४.
सुत्या १. १०, १; २. ६, १;
५. ३, ४.
सुत्याः १२. ४, ८; १६. ४२,
३.
सुत्यात् ७. ७०, १.
सुत्यानृते इति सुत्य-अनृते
१. ३३, २.
सुत्याम् २०. २५, ७; ३३, २;
६१, ११.

सुत्याय १२. ३, ४६.-
सुत्यासः १८. ३, ४८.
सुत्ये ११. ३, ४६; १३. १,
५०.
सुत्येन २. ३६, २; १०. ८,
१६; ११. ३, ४२; १२.
१, ८; ५, २; १४. १, १;
२०. ६१, ८.
सुत्येभिः २०. ६१, ७.
सुत्यैः १८. ३, ४७.
सुत्रा १७. १, २५; २६; २०.
१५, ६; ३२, ३; ५५, १;
५८, ४; ६८, २.
सुत्रात्त्या २०. ११३, १.
सुत्रा-जित् २०. ६४, १.
सुत्र-जितः २०. १०, १; ५६,
१.
सुत्रा-दावन २०. ७०, १२.
सुत्रा-सहम् २०. ११, ८.
सत्वनः ५. २०, ८.
सत्वनाम् ५. २०, ८.
सत्वनान्-यन् ५. २०, १.
सत्वने २०. ७८, १.
सत्वा २०. ३६, १.
सत्वानः ६. ६५, ३; ११. ५,
१४.
सुत्सि ६. ११०, १; २०. ६४,
५.
सुत् २०. ६७, ५.
सर्वः ७. ७५, १; ६. ३, ७२;
१६; १३. १, २३; २०.
१३, २; ३०, २.
सुर्वः २०. ३, १; १७, २; ३८,
१; ४७, ७.
सर्वः-सर्वः ५. १, ४; १८. १,
४४.

सदा-हविर्धानानि ६. ६(१),
७.

सदत १८. ३, ४४.

सदताम् ५. १२, ६.

सदतम् २. ३, ३; १२, ७; ७.
४०, २; ६. ३, ७; ११.

१, ३४; १८. २, ५६.

सदना ७. ६७, ४; १८. ३,
५२.

सदनात् ६. २२, १; ६. १०,
२२; १३. ३, ६.

सदनाय १६. ११, ६.

सदने ७. ६६, ४; १८. १, २५;
३५; ३, ७०; २०. ११, ७;
१६, ७; १७, ७; २१, १.

सदनेषु २०. १४०, ५.

सदन्ताम् ५. १२, ६; २७, ६.

सदम् १. १५, ३; ३. १५, ८;
१६, ७; ७. १८, २; ११.
१, ३४; १३. ३, ११.

सदम्-दिः १६. ३६, १०.

सदम्-दिम् ५. २२, १३.

सदसि ७. ५४, १.

सदा २. ४, १; ३. १६, ७; ४.

४, ७; २७, २; ६. १०१,

३; १२८, ४; ७. २६, ७;

१०. ६, १४; ७, ३६; ११.

६, ६; २२; १३. १, १४;

१८. १, २२; १६. ११, ५;

२०. १२, ६; १७, १२;

३७, ११; ८७, ७; १०१, २.

सदासि १६. ४७, १.

सदान्वाः २. १४, १; ४; ५;

६; ४. १०, ३; १६. ६, ७.

सदान्वा-क्षरणम् २. १८, ५.

सदान्वा-चातनम् २. १८, ५.

सदा-वृधः २०. ६४, ४;
१२४, १.

सदा-वृधम् २०. ६२, १८.

सदा-सहम् २०. ७०, १७.

सदे-म ३. १४, ६; ७. ७४,
४; ११. १, ३४.

सदे-वा १६. ५८, १.

सदोहविर्धानि इति सदः-
हविर्धानि १२. १, ३८.

सदा ४. १, ४; २०. ३१, ५;
६१, १०.

सदानि ५. ३१, ८.

सदाः २. १, ४; २, ३; ४.
३८, ५; ५. २, १; १२,

११; ६. ८, ३; २२, २;

८. १० (३), ७; ११. २,

२५; ५, ६; १३. २, ६;

२०. ६, ४; ३५, ७; १४;

३७, ५; ६; ४६, ७; ६०,

५; ६६, ४; ७१, ५;

१०७, ४.

सदाः-क्रीः ११. ७, १०.

सदुः १५. ७, १.

सध-मादः २०. ६४, ३.

सध-मादम् ६. ६२, ३; १२२.

४; ७. १०६, ३; ५; १४.

२, ३४; १८. २, ११; ४,

१०.

सध-मादे २०. ३२, २; ८६,

१; ११७, ३; १२२, १.

सध-मादेषु ६. ६२, २; ७.

७३, १.

सध-माद्यासः २०. ३३, ३.

सधे-स्तुतिम् २०. १४३, ६.

सध-स्थम् २. २, १; ६. ८०,

३; ७. २६, १; १२. १,
१८; १३. १, ४४; १४.

२, ३६.

सध-स्थाः ६. १२३, २.

सध-स्थाः ६. १२३, १.

सध-स्थात् ७. ६३, १; २०.

१२३, १.

सध-स्थे ३. ४, ६; ७. ८२,
६; ६७, ३; १२. २, ७;

३०; १८. १, २५; ३, ७;

८; २०. ६१, ६.

सध-स्थे इति सध-स्थे ७.
६, १.

सधु-राः ३. ३०, ५.

सध्रीची इति १३. ३, १२.

सध्रीचीः ६. ८८, ३; ६. ५,

३७; १०, ११; १०. ८,

३५; १६. ८, ६; २०. १७, १.

सध्रीचीनान् ३. ३०, ५; ७.

सध्र्यङ् ६. ८६, २.

सन् ४. ११, ३; ५. ८, ३;

२२, ६; ६. २६, १; ८.

२, ७, ११. ७, ३; १३.

१, ३६; १७. १, १२;

१८. ४, ५६; १६. ५३,

४; २०. ५३, ३; ५७,

१३; ८६, ६.

सन् १०. ८, ३०.

सन् १०. ८, ३०.

सन्वाति १६. ३३, ७.

सन्-श्रुतः २०. ७३, ४.

सना २०. ३७, ६; ६७, ३;

सनात् ५. २६, ११; ६. ११०,

१; ८. ३, १८; ६. ६,

११; २०. ११४, १.

सनातनम् १०. ८, २३; ३३.

स-नाभिः १. ३०, १; ६. ६,
३; ६. ६, ११.
स-निंतौ २०. ७१, २.
स-नि-भ्यः २०. ४४, ३.
स-निम् १६. ३१, १४.
स-निषन् ५. ३, ५.
स-निष्णत् २०. ७५, ३.
स-निष्यवः २०. ७२, १.
स-निष्यदाः १६. २, १.
स-निस्त्र स-अन्नेभ्यः २. ८,
५.
स-निस्त्र सः ५. ६, ४.
स-निस्त्रन्त् २०. ६२, ६.
स-नीडाः १८. २, २६.
स-नुतः ७. ६२, १; २०. १२५,
७.
स-नुहि १४. २, ७०.
स-नेत् २०. ६६, ७.
स-नेम ५. २६, १; १६. १२,
१; २०. ६३, ३; १२४,
६.
स-नेमि ६. ६, १४.
स-नेयम् ४. ६, ७.
स-न्तः २. ३४, ४; ६. ११७,
२; २०. ६१, १०.
स-न्तः १६. ५३, ३.
स-न्तम् ३. ३, २; ६. १०, ६;
१०. १; १८. ८, ३२२;
१३. १, ३३.
स-न्ति ६. १०४, २; ११२,
३; ७. ५, १; ११. २,
२८; १६. ४७, ३; २०.
६०, ५; ७१, ५; ६४, ७.
स-न्ति ५. ६, ३; १०. १, २०.

स-न्तु १. ६, ४२; २. ६,
२; १२, ६; १४, ३; ३.
१६, ७; ४. १८, १; ५.
३, ३; ६, ६; १४, ५;
६. ६६, ३; ७७, ३; १४२,
३१; ७. १२, २; ७३,
१०; ८. २, १५; ६, १६;
७, ८; १७; ६. २, १०;
४, ६; २०२; १०. ६, ३;
११. ६, ६; २२; ६, २;
१०, ७; १२. १, ६२;
३, ४१; १४. १, ३४;
४०; १८. २, २०; ३, ५१;
६८; ६६; ४, २५; २६;
३४; ४२; ४३; १६. २,
१२; २; ८, १; ६, १; ६;
१०, २; ३; ४; ७; ८;
११, १; १६, २; २०, २;
२७, १५; ४०, ३; ४२,
३; २०. ६६, ५; ६४, ७;
१२२, १.
स-न्नान् ६. ७६, ४.
स-पत्तः १. १६, ४; ६. ७५,
१.
स-पत्त-कशीनः ८. ५, १२.
स-पत्त-क्षयणः १. २६, ४; ६;
१०. ३; १.
स-पत्त-क्षयणम् २. १८, २;
१६. ३०, ४.
स-पत्त-चातनम् २. १८, २.
स-पत्त-दम्भनम् १०, ६, २६;
१६. २८, १.
स-पत्तम् ७. १०६, ३.
स-पत्त-हनम् ६. २, १.
स-पत्त-हा १. २६, ५; २. ६,
३; ४. ८, २; ८. २, २८;

५, १; २; १०. ५, २५;
२६; २७; २८; २६; ३०;
३१; ३२; ३३; ३४; ३५;
६, ३०; १६. ३१, ८; ३२,
१०; ४६, ७.
स-पत्ताः १. ६, २; ४; ४.
२२, ६; ३५, ७; ५. ३,
१०; २०, २; ६. २, ४;
१०; ११; १७; १८.
स-पत्तान् १. २६, २; २.
२६, ३; ३. ५, १; ६,
४; ५. २०, १; २८, १४;
७. ३४, १; ३५, १; ६.
२, १; ५; ६; ६; १४; १५;
१६; १०. ३, १३; १४;
१५; ६, ३०; ११. १, ६;
१२. १, ४१; २, ४६; १३.
१, २८; ३०; ३१; ३२;
६, २६; १७. १, २४;
१६. २८, ५; ६; ७; ८;
६; १०; २६, १; २; ३;
४; ५; ६; ७; ८; ६; ३०,
१; ३२, ५; ३३, २; ६६,
१.
स-पत्तानाम् ७. १३, २; १६.
२८, ३; ४.
स-पत्ती ३. १८, ४.
स-पत्तीम् ३. १८, १; २; ३;
५.
स-पत्ती ६. २, २.
स-पत्तीभ्यः १. २६, ४.
स-पत्तीषु १०. ६, १.
स-पर्य १४. २, १८.
स-पर्यत् ३. ३०, ६; १८. १,
४६; ३, १३.
स-पर्यतः २०. २५, ३.
स-पर्यंतु १४. २, २३.

सुपयन्ति २०. १०६, ३.
 सुपयोमि १६. ७, १.
 सुप्त २. १२, ७; ४. ६, २;
 ११, ६; ३६, १०; ५. १,
 ६; १५, ७; ६. ३, १, २५,
 २; ६१, १; ३; ७; २६,
 १; ५७, २; १०७, १;
 ११२, १; ८. ६, १७३;
 १८१; १६; २३; ६. १,
 २२; ६, २; ३५; ६; १३;
 १०, २; १७; १०. २, ६,
 ८, ६; १०, २; ३२; ११.
 ६, ६; १२. १. ३६; २,
 २६; ३, १६; १३. १, ३७;
 २, ४; ६; ७; ८; २३;
 २४; ३, १०; १८; १४.
 २, ४५; १५. १५, २१;
 १८, ४, २८; १६. ६,
 १५२; १६; ३४, ३; ४७,
 ३; ५३, २२; २०. १७, ३;
 ३४, ३; १३; ३६, २; ४७,
 २०; २१; ७७, ३; ६१,
 १२; ६२, ४; ६; ११०, २.
 सुप्त-आस्यः २०. ८८, ४.
 सुप्त-ऋचेभ्यः १६. २३, ४.
 सुप्त-ऋषयः ४. ११, ६; ५.
 १७, ६; ८. १०(४), १३;
 १६; ११. १, १; ३; २४;
 १, २; १५. २, २२; १६.
 ६, १२; १३.
 सुप्त-ऋषि-भिः १६. १७, ७.
 सुप्त-ऋषि-वन्तम् १६. १८,
 ७.
 सुप्त-ऋषीणाम् ६. ४०, १;
 १५. २, २४.
 सुप्त-ऋषीन् ८. १०(४), १३;

१०. ५, ३६; ११. ६,
 ११.
 सुप्त-गृध्राः ८. ६, १८.
 सुप्त-चक्रम् ६. ६, ३.
 सुप्त-चक्रे ६. ६, १२.
 सुप्ततिः ५. १५, ७; ६. २५,
 २; १६. ४७, ३.
 सुप्ततीः १६. ६, १६.
 सुप्तथम् ६. ६, १६.
 सुप्तदश-ऋचेभ्यः १६. २३,
 १४.
 सुप्त-धा ८. ६, २३.
 सुप्त-नामा ६. ६, २; १३. ३,
 १८.
 सुप्त-पदः ५. ११, ६; १०.
 सुप्त-पुत्रम् ६. ६, १.
 सुप्त-भ्यः २०. १३७, १०.
 सुप्तम-अष्टमाभ्याम् १६. २२,
 ३.
 सुप्तमः १३. ४, १७; १५.
 १५, ६; १६, ७; १७, ७.
 सुप्तमम् ६. १, २२.
 सुप्त-मातरम् १८. ४, २६.
 सुप्तयः २०. १३, २.
 सुप्त-रश्मिः १६. ५३, १;
 २०. ३४, १३; ८८, ४.
 सुप्त-रश्मौ ६. ५, १५; ११.
 १, ३६.
 सुप्त-रात्रः ११. ७, ११.
 सुप्त-र्वि-भिः ११. ३, ३८;
 १५. १४, ७.
 सुप्त-र्वि-भ्यः ७. ५३, ४; १५.
 २, २३.
 सुप्त-वधिम ४. २६, ४.
 सुप्त-वृषः ५. १६, ७.

सुप्त-शीर्ष्णिम् २०. ६१, १.
 सुप्तसप्त ४. १६, ६.
 सुप्त-होता ४. २४, ३.
 सुप्तानाम् ३. १०, ६.
 सप्तिम्-इव २०. ३५, ५.
 सु-प्रथः २०. १८, ६.
 सु-प्रथाः १. २६, ३; १८.
 २, १६.
 स-बन्धवः १०. ३, ६.
 स-बन्धुः ६. २५, २; ५४, ३.
 सर्वन्धु-भ्यः ८. २, २६.
 सर्वन्धु इति स-बन्धू १०. १,
 १०.
 स-बन्धून् १५. ८, २.
 स-वलः २०. ४७, ३; १३७,
 १४.
 सबले इति स-बले १३. ३,
 १२.
 सु-बाधः २०. १३७, २.
 स-ब्राह्मणान् १२. ४, १०;
 ५३.
 स-भराः ३. १७, २.
 सुभा ७. १०, १; १५. ६, २.
 सुभाः १२. १, ५६.
 सुभागयति ६. ६ (६), ६.
 सुभागयति ६. ६ (६), ६.
 सुभाम् ८. १० ६; १६. ५५,
 ५.
 सुभायाः १५. ६, ३.
 सुभायाम् ५. ३१, ६; ७.
 ३८, ४; ८. १० (१), ८.
 सुभा-सदः ३. २६, १; ७. १२,
 २; १६. ५५, ५.
 सुभासु ४. २१, ६.
 सुमे ७. १२, २.

सुभेयः २०. १२८, १.

सम्भ्यः ८. १० (१), ६.

सुभ्यः १६. ५५, ५.

सुभ्याः १६. ५५, ५.

सम् १. १, ४; ११, २; १५,

१४; ३; ४; २७, ३; २८,

२; २. २, ३; ६, १; २;

४; २६, २; ३१; ५२; ३०,

२४; ३१, १; ३२, ३;

३५, २; ३. ४, ३; ६; ८,

५४; १०. ३; ८; ११;

१२, १; ८; १४, १४;

२४; ५; १५, ८; १६, ६;

१६. २२; ५; २०, ८;

२२, १; २४, ५; २८, १;

२; ३१, १; २; ३; ४; ५;

६२; ७२; ८; ६; १०२;

११; ४. २, ७; ८; ४, ४;

५, ५; १२, २; ३४; ४;

५४; ७; १५, १; २; ३;

६; ७; ८; ६; १७, २;

१६, ६; २४, १; २५,

४२, २८, ७; ३०, ८;

३१, ४; ३२, ५; ३४,

३; ४; ३६, ४; ५; ७;

३६, १; ३२; ५२; ७२; ५.

२, २; ३; ५; ७; ६, ३;

८, २; ११, २; १४, ६;

१८, ५; २२, ६; २३, १०;

२८, १; ४२; ३०, १३;

१४२; ३१, १०; ६. ४,

३; ५, १; २; ६, ३; २१,

१; ३२, २; ३४, ४; ४५,

१; ४६, २; ३; ४८, १; २;

३; ४६, २; ५३, ३; ५६,

१; ३२; ६३, ४; ६४, १४;

६६, १; ७४, १४; ८६,

३; ६४, १४; ६७, ३;

१०२, १२; १०३, २४;

३; १०४, १; १०६, १;

२; ११६, २; ११६,

२; १२२, १; ३; १२४,

१; १२६, ३; १३१, २;

१३५, २२; ३२; १३६,

३२; ५; ७. ६, ४; १६,

१; १७, ३; २२, २; ३३,

१४; ५०, ६; ६; ५२, २२;

५३, २; ५६, ४; ७०, २;

७३, १०; ७५, २; ७६,

२; ८०, १; १; ८२, ६;

८६, १२; २२; ४; ६७,

२४; ६८, १४; १०६, ३;

८. १, १६; २, ३; ४; ५;

१३; ३, ३; ४, २; ४; १८;

१६; ५, १४; ६, ३; ७,

१५; ८, २१२; २४; ६,

१२२; २२; १०(३), १३;

५; ७; ६. १, १४; १५२;

३, ३; ४, ११; ५, ६; १४;

२४; ८, २२; ६, ३; ८;

१०, ६; १८; १०. २, ५;

३, १७८; १८२; १६२;

२०२; २१२; २२२; २३२;

२४२; २५२; ४, ५; ८;

१६; ५, ४३; ४६२; ४७२;

८, २१; ६, ३; ६; २७;

१०, १३२; १४२; १५२;

१७; २४; ३३; ११. १, ४;

२, ७; २०; २६; ३, १७;

३२-४६; ४, ६; ८, ८;

१४; १५; ६, २; ११२;

१२२; १४; २६; १०, १;

६; ७; ८; १२; २०; १२.

१, १६; १५; ५३; २, ११;

२६; ३१; ३२; ३६; ५५;

३, २; ३२; ४; ६; ७; ६;

१०; १२; १७; २१; २३;

२४; २६; ३०; ३६; ३६;

४५; ५०; ५१; ५५; ५६;

५७; ५८; ५६; ६०; ४, ३;

५; ६६; ३१; ११, ५,

६२२; ६८; ६६; १३. १,

८; ३४; ४८; ५०; २, १३;

१५; २६२; २७; ४०; ३,

४१; १४. १. २१२; ३१;

३३; ३४२; ४०; ४२; ४५;

५३; ५५; २, १२; १७;

२६; ३२२; ३७; ४०;

५३; ५४; ५५; ५६; ५७;

५८; ६४; ७०२; ७१; १५.

१, १; ३, २; ३; १६. ५,

३; ४; ५; ६; ७; १०; ६,

३; १८. १, १२; १३; १४;

५३; ५६; ५७; २, ६; १०;

२१२; २५; २६; ४४; ५८;

३, २; ७; ८२; ६; ११;

१८; ४०; ५७; ५८२; ७१;

४, १; ४१; ४८; ५२; ६०;

१६. १, १४; ३, २; ६,

८; ६; १२, १; १३, ६;

२४, ८; २६, २; २७, ५;

७; ३१, १३; ३२, १०;

३३. १; ४०, १; ५२, १;

५; ५३, ४२; ५४, १; ३;

४; ५५, १; २; ५७, १;

२४; ४; ५८, ३२; ६६,

३; २०. ८, ३; ११, ६;

१३, ३; १५. ३; १६, २;

२१, ४; ५४; ७; २५, ४;

२६, ६; ३५, ४; ५; ४०,

१; ४५. १; ३; ४७, १२;

४६, १; ५४, २; ३; ५६,
 ४; ६६, ११; ७०, ३; ५;
 १६; ७१, ११; १३; ७४,
 ५; ८६, ६; ६०, ३; ६२,
 १६; ६४, ४; ६८, २; ६६,
 १; १०२, १; २; ३; १०७,
 १; ५; ६; ८; १०; १११,
 १; २; ३; ११४, २; १२३,
 १; २; १४२, ३; १४३, ५.
 सम्-अन्तः ७. ७४, ४; १८.
 ३, १४.
 सम्-अन्तम् ५. २८, १४.
 सम्-अन्ता ३. १७, ६.
 सम्-अन्तम् ५. १४, ४; ८.
 ३, ११.
 सम्-अन्तरम् २०. १७, ६.
 सम्-अन्तः ७. ८१, ४.
 सम्-अन्ताः ८. ७, १६; १२.
 १, १६.
 सम्-अन्तम् ६. ५०, १.
 सम्-अन्तान् १. १२, २.
 सम्-अन्तः ८. ३, १५; १२.
 ३, १३.
 सम्-अन्तः १८. ४, ८.
 सम्-अन्तम् ५. १२, २, १०.
 सम्-अन्तम् ७. ३६, १.
 सम्-अन्तम् २०. ११, ११; ३४,
 ३; ४६, १; ६६, २; ६५,
 २; १०४, ३.
 सम्-अन्तः ५. २०, १२.
 सम्-अन्तम् ४. ३०, ५; ११. १,
 ३२.
 सम्-अन्तः १८. ३, ६.
 सम्-अन्तः ११. १०, ६.
 सम्-अन्तम् ६. ६०, २; २०.
 १२६, १०.

सम्-अन्तम् ४. ३६, १; ३;
 ५; ७.
 सम्-अन्तः १४. २, ५६; ६१.
 सम्-अन्ता १६. ५८, १.
 सम्-अन्ता २०. ६७, १; १४३,
 ७.
 सम्-अन्ते ६. ६२, २.
 सम्-अन्ते २. ३६, १.
 सम्-अन्तः ७. ८१, ४.
 सम्-अन्तम् ६. ८, १; ६६, २;
 ३.
 सम्-अन्ताः ४. ३४, ५; ६;
 ७.
 सम्-अन्ते इति सम्-अन्ते १०.
 ८, १२.
 सम्-अन्तरः १. ६, ३.
 सम्-अन्तरम् ११. ८, १४.
 सम्-अन्तम् २. ११, १; २; ३; ४;
 ५; ४. १८, १; १२. १,
 २.
 सम्-अन्तमानः १२. ३, ४८.
 सम्-अन्ते २. ३५, ३.
 सम्-अन्ते ५. २०, ५; ७. ७६,
 ६; १०. ८, ४२; ११.
 १०, २५.
 सम्-अन्ते २०. १२, १; ३७, २.
 सम्-अन्ते ४. १८, १.
 सम्-अन्तम् २०. १०७, २.
 सम्-अन्तम् ३. १३, २.
 सम्-अन्तम् २०. १५, २.
 सम्-अन्तम् ३. २२, ५.
 सम्-अन्तम् २०. ७६, ४.
 सम्-अन्तम् १२. ४, ६.
 सम्-अन्तम् २०. ३०, २.
 सम्-अन्तम् ५. ४, १०; ६. २४,
 १.
 सम्-अन्तम् ५. ११, १०.

सम्-अन्तः २. ६, १; ३. १०, ६;
 ११. ६, १७.
 सम्-अन्तम् ६. १४१, १.
 सम्-अन्तम् १३. १, ८.
 सम्-अन्तम् ४. ३१, ७.
 सम्-अन्ताः १२. ३, ३६.
 सम्-अन्तम् १८. २, ६०.
 सम्-अन्तम् ११. १, ३६.
 सम्-अन्तम् ६. ७६, १.
 सम्-अन्तम् ६. ५, २३.
 सम्-अन्तः ६. ६४, २.
 सम्-अन्तम् ८. ६, २२.
 सम्-अन्तम् ६. ६४, २; ३;
 १३६, ३; ८. ६, १२; ६.
 ६, २०; १२. ३, १; ५२;
 १३. १, ४०; १५. १७,
 ८; १८. ४, २८; २०. ३४,
 ८; ७२, १.
 सम्-अन्तम् १०. २, १३.
 सम्-अन्तम् ६. ५, २८.
 सम्-अन्तम् २०. ४०, १;
 ७०, ३.
 सम्-अन्तम् १०. ७, ३६.
 सम्-अन्ता ६. ६४, ३.
 सम्-अन्तम् ११. १, १२; २१;
 १५. ५, ३; १६.
 सम्-अन्तम् १६. ३, १; ४,
 १; १७. १, ५.
 सम्-अन्तम् १. ३५, ४; १४.
 १, ४.
 सम्-अन्तम् ३. ३०, ६; ६. ६४,
 २; ३; १२. ३, २२.
 सम्-अन्तम् १२. १, ६;
 सम्-अन्तम् २. १, ५; ३. ३०,
 ६; १८. १, ८.
 सम्-अन्तम् ६. ६४, २.
 सम्-अन्तम् ८. २, २६.

सम्-आप १२. ३, ४६.
 सम्-आतिः ११. ७, २२.
 सम्-आप्याः ११. ३, १६.
 सम्-आभृतम् ५. २५, १.
 समाभ्यः ५. ८, ८; ६. ७५,
 २; ३.
 समाम् ३. १०, १; १७, ४;
 १२. १, ३३.
 सम्-आमे १८. ४, ७०.
 सम्-आम्यः ४. १६, ८.
 सम्-आयान् १२. ३, ४०.
 सम्-आवह ३. २४, ५.
 सम्-आवहान् ३. २४, १.
 सम्-आसते १२. २, ५१.
 सम्-आसीनानाम् ७. १२,
 ३.
 सम्-आहर ३. २४, ५; ५.
 २६, १२.
 सम्-आहितः ४. ११, ८;
 १३. १, ५०.
 सम्-आहितम् १०. ६, ३५;
 ७, २६; ११. ७, १; २;
 १६. ५३, ७; ८.
 सम्-आहिताः १०. ७, ११;
 १३; १५; २२; ११. ७,
 ८; ६.
 सम्-आहिताम् ६. ७६, ३.
 समाहिते इति सम्-आहिते
 १०. ७, १५.
 सम्-इत् ७. ८६, ४; १०.
 ४, ४३; ११. ५, ४; १८.
 ४, ८८; १६. ६४, ४.
 सत्-इतयः १२. १, ५६.
 सम्-इतिः ५. १६, १५; ६.
 ६४, २; ८८, ३; ७. १२,
 १; १५. ६, २; १८. १,
 २६.

सम्-इतिम् ८. १०(१), ११.
 सम्-इतोः १८. २, ५६.
 सम्-इतेः १५. ६, ३.
 सम्-इतौ ८. १०(१), १०.
 सम्-इत्याम् १२. ३, ४६; ५२.
 सम्-इद्धः ५. १२, १; ७. ७३,
 १; २; ८. ३, १; २; ८,
 १७; ११. १, ४; ५, ६;
 १२. २, ११; १८; १३.
 १, २८; ३, २३.
 सम्-इद्धम् ७. ७४, ४.
 सम्-इद्धाः १८. ४, १२.
 सम्-इद्धे २. १२, ८; १०. ६,
 ३५.
 सम्-इधः ५. २२, १; २६, १;
 २७, १; २६, १४; १५;
 ८. ६, १८; ६. १०, ३;
 १६. ६, १५; ६४, ४.
 सम्-इधम् ६. ७६, ३; ११.
 ५, १३; ८, २६; १६.
 ६४, १०.
 सम्-इधा ८. ३, ८; ११. १;
 ४; ५, ४३; ६; १३. २,
 ४६; १८. १, ३०; १६.
 ६४, २.
 सम्-इधानः १३. १, २८.
 सम्-इधौ ११. ५, ६.
 सम्-इषः २०. ५१, ४.
 सम्-ई के २०. ८६, ४; ११८,
 ३.
 सम्-ई लयन् ११. ६, ६; ६;
 ११; २५.
 समीचीः ७. २२, २.
 सम्-ई चितासः २०. ६६,
 १.
 समीचीने इति सम्-ई चीने
 १०. ६४, ८.

सम्-ई रिरे १४. १, ४६.
 सम्-उत्पलन्तु ४. १५, १.
 सध्-उदे ८. १, १५.
 समुद्रः ३. २३, ६; ६. ८६,
 २; ८. ७, २; १०. ७,
 १५; १०, १६; ११. ३,
 २०; ७, २; १२. १, ३;
 १५. ७, १; १६. ३, ६;
 १६. ११, ३; १६, ७;
 ३०, ५; २०. १३७, ६.
 समुद्रः इव ३. २६, ६; ६.
 १३५, २, ३; १४२, २;
 २०. ७१, ३; १०४, २.
 समुद्र-जः ४. १०, ४.
 समुद्रतः ४. १५, ५.
 समुद्रम् २. ५, ६; ३. २६,
 ७; ४. ८, ७; ६. ४३, २;
 १०. ५, २३; १०, १३;
 १५; ११. ५, ६; १३. १,
 ३६; २, १४; ४०; ४१;
 ४५; ३, २२; १६. १, ६;
 २०. ६, ४; ४६, ७; ६३;
 ८.
 समुद्रस्य १. ३, ८; ६. १०५,
 ३; १०६, २; ६. १, २;
 १३. ३, ४.
 समुद्रस्य-इव १. ३२, ३.
 समुद्राः ६. १०, २१; ११. ६,
 १०; ७, १४; १३. १, ४२;
 ३, २.
 समुद्रात् २. ३, ४; ४. ४, १;
 १०, ३; ५; १५, ११; २७,
 ४; ६. १, १; २, २३.
 समुद्रान् १६. २७, ३; ४.
 समुद्राय-इव २०. १०७, १.

समुद्रियम् ७. ७, १; १६.
३८, २.
समुद्रियाः ७. १०७, १.
समुद्रियाणि २०. ७७, ७.
समुद्रे १. १३, ३; २. २, ३;
४. २, ५; ३०, ७; ६.
८०, ३; १०. १०, १४;
११. २, २५; ५, २६; २०.
४४, २; १११, २.
समुद्रेण ११. ४, १२.
समुद्रौ ४. १६, ३; ६. ५, २०;
१३. २, १०; ३०.
सम्-उब्जितः ६. ३, २०;
१०. २, २७.
सम्-उब्जिताम् ६. ३, १८.
सम्-उष्पला ६. १३६, ३.
सम्-ऊढम् ७. २६, ४.
सम्-ूलः ६. १३६, ३.
सम्-ऊहः ३. २४, ७.
सम्-ऊहसि १. १३, २; २०.
७२, २; ७५, १.
सम्-ऋतेषु १६. १३, ११.
सम्-ऋडम् १४. १, ३१.
सम्-ऋद्धिः ६. १२४, ३;
१०. २, १०; ११. ७,
१८.
सम्-ऋद्धीः ११. १, १०.
सम्-ऋद्ध्या १२. ३, २१.
सम्-ऋधे ३. १०, १०; १६.
३७, ५.
सम्-यत ७. २१, १; १४. २,
२८.
सम्-यतः ११. ५, ११.
सम्-यतम् १२. ३, ३.
सम्-यत्य ११. ६, १८; १२.
३, ४.

सम्-ययथुः १२. ३, १.
सम्-येषु ८. ७, १७.
सम्-येति ६. १०२, १.
सम्-येतु ३. २२, ५; ६. १०२,
१; ७. ५०, २.
सम्-ओकसा २०. १४१, २.
सम्-ओताः ११. ५, २४.
सम्-ओप्यात् १. १४, ३.
सम्-ओषन्ती १२. ५, ५४.
सम्-ओहे २०. ७१, २.
सम्-कर्षन्ती २०. ६, ८.
सम्-कल्पस्य ११. ८, १.
सम्-कल्पाः ११. ८, २७;
१५. ३, १०.
सम्-कल्पान् १६. ६, १०.
सम्-कसुकः १२. २, १२; १४.
सम्-कसुकम् १२. २, ११.
सम्-कसुकात् ८. १, १२;
१२. २, ४०.
सम्-कसुके ५. ३१, ६; १२.
२, १३; १६.
सम्-काशात् ७. ११४, १.
सम्-कन्दनः ५. २०, ६; १६.
१३, २.
सम्-कन्दनेन १६. १३, ३.
सम्-ख्याता ४. २५, २.
सम्-ख्याताः ४. १६, ५; १२.
३, २८.
सम्-गच्छे ७. १२, १.
सम्-गतानि ६. ४४, २.
सम्-गतिम् २०. १४३, १.
सम्-गतेषु ७. १२, १.
सम्-गत्य ४. ४, ७; ६. ४,
१५; ११. ६, २१; १८.
२, २६.
सम्-गत्याम् ३. २०, ६.

सम्-गमः ६. २४, १.
सम्-गमनः १०. ८, ४२.
सम्-गमनम् १८. १, ४६;
३, १३.
सम्-गमनी ४. ३०, २; ७.
७६, ३.
सम्-गमने ६. ५, १६.
सम्-गमेषु २०. १२४, ३.
सम्-गरः ६. ११६, २.
सम्-गरम् ६. ११६, ३.
सम्-गवः ६. ६(५), ४.
सम्-गिरः ६. १३५, ३; १८.
४, ६०.
सम्-गीर्य ६. १३५, ३.
सम्-गृणामि ६. ७१, ३;
११६, १.
सम्-गृभीताः ८. ४, ८.
सम्-गृभ्य ११. ५, ६; २०.
२१, ३.
सम्-गो २०. ६५, २.
सम्-ग्रहणी इति सम्-ग्रहणी
१६. ५८, ३.
सम्-ग्राम-जित् ५. २०, १०.
सम्-ग्रामम् ११. ६, २६.
सम्-ग्रामस्य ५. २१, ७.
सम्-ग्रामाः १२. १, ५६.
सम्-ग्रामान् ४. २४, ७.
सम्-घोरम् १६. ३५, ३.
सम्-चरन्तिम् १८. ४, २८,
सम्-चरन्ति ३. १५, २; ४.
३८, ५; ६. ५५, १; १२.
१, ४७; १८, १, ३६.
सम्-जग्मानः २०. ४०, १;
७०, ३.
सम्-जग्मानाः ३. १४, ३.
सम्-जभार ६. २, ११;

सम्-जम्भुः—सम्-भारान् :

(५,०४७)

सम्-जम्भुः १२. १, २४.
 सम्-जयः ८. ५, १६.
 सम्-जयन् ५. २०, ४.
 सम्-जयन्तीम् ४. ३८, १.
 सम्-जालानाः ६. ६४, १; ७.
 १६, १.
 सम्-जितम् २०. ११, ११.
 सम्-जित्य ११. ६, २६.
 सम्-जीवाः १६. ६६, ३.
 सम्-क्षपनम् ६. ७४, २.
 सम्-क्षपयामि ६. ७४, २.
 सम्-क्षानम् ३. १४, ४; ३०,
 ४; ७. ५२, १; ११. १,
 २६.
 सम्-तन्वृतीः ८. ७, १६.
 सम्-तुरम् ७. १६, १.
 सम्-तस्थानाः २०. ८६, ४.
 सम्-तापयन् १६. २८, २.
 सम्-तोदिनौ ७. ६५, ३.
 सम्-दंशानाम् ६. ३, ५.
 सम्-दधाति ६. १३६, ५.
 सम्-दधौ १०. १, ८.
 सम्-दानम् ६. १०२, १०.
 सम्-दानेन ६. १०४, १.
 सम्-द्विताः ८. ८, ४.
 सम्-दृशः ७. ६८, ३; ८. १,
 ४.
 सम्-दृशि १२. १, १८.
 सम्-दृशे ११. २, ५.
 सम्-दृष्टा ११. ६, २.
 सम्-देश्यः ४. १६, ८.
 सम्-देश्यात् १०. १, ११;
 १२.

सम्-देश्येभ्यः २. ८, ५.
 संधन-जित् ५. २०, ३.
 संधन-जितम् १७. १; २; ३;
 ४; ५.
 संधन-जिति १३. १, ३७.
 सम्-धया ११. ८, १६.
 सम्-धा ११. ८, १५.
 सम्-धाता १४. २, ४७.
 सम्-धाम् ११. १०, ६; १५.
 सम्-धिम १४. २, ४७.
 संधी इति सम्-धौ १०. २,
 २.
 सम्-धृता १२. १, २६.
 सम्-नतिः ११. ७, १३.
 सम्-नद्धः ६. १२५, १; ६.
 १०, १५.
 सम्-नद्धा १४. २, ७०.
 सम्-ननाह ६. ११३, १.
 सम्-नमः ४, ३६, १; ३; ५;
 ७.
 सम्-नममानः ८. ३, ६.
 सम्-नयन् १६. ४५, १.
 सम्-नयन्ति ६. ४६, ३; १६.
 ५७, १.
 सम्-नवामहे २०. २२, ५;
 ६२, २.
 सम्-नशे २०. ६, ४; ४६, ७.
 सम्-निषद्य ४. १६, २.
 सम्-पतन्ति १२. १, ५१.
 सम्-पतिता ५. ५, ६.
 सम्-पत्नी १४. २, २५.
 सम्-पत्न्यै १४. २, ७३.

सम्-परिवृताम् १०. २, ३४.
 सम्-पश्यन् १०. ८, १८; १३.
 २, ३८; ४४; ४५, १, १४;
 २५.
 संपातिनौ-इव ७. ७०, १.
 सम्-पादयन्ती १२. ३, ३६.
 सम्-पाय ६. १३५, २.
 सम्-पिबन्ति १४. १, ३.
 सम्-पिबः ६. १३५, २.
 सम्-पिष्टः ४. ३, ५; ६. ६,
 २; १६. ४६, १०.
 सम्-प्रयच्छ १०. ५, ४५.
 सम्-प्रयतीः ३. १३, १.
 सम्-प्रश्नम् २. १, ३.
 सम्-प्रिया २. ३६, ४.
 सम्-प्रेक्षः ६. ७६, १.
 सम्-बभूव ३. २२, १; ३;
 ४. ३५, ६; १०. ७, ३१;
 १२. १, २३; ३, ३.
 सम्-बभूविथ ४. १६, ७.
 सम्-बभूवुः ६. ७४, ३; १२.
 १, ३; ४; १२. ३, ५०;
 १३. १, १०; १८. १६.
 ४, ४.
 संवाध-तनद्वयः १०. १, ६.
 सम्-भक्ताः ८. ७, १२.]]
 सम्-भरन्ति ६. १, १६.
 सम्-भलः २. ३६, १; १४.
 १, ३१.
 सम्-भलल्य १४. २, ६६.
 सम्-भले १४. २, ६७.
 सम्-भाराः ६. ६ (१), १;
 सम्-भारान् ११. ८, १३.

सम्-भुज्जती ३. १०, ७.
 सम्-भुज्जतीभ्यः ११. २, ३१.
 सम्-भूतम् १२. ४, ३३.
 सम्-भूता ६. १००, ३.
 सम्-भूय १०. ८, ११.
 सम्-भूतः ५. २०, १; २१,
 ३; २०. ४७, ३; १३७,
 १४.
 सम्-भूतम् २. ३६, २; ४.
 १४, ६; ७. ५६, १; ६०,
 २; ८. ७, १८; ६. ४, ८;
 १०. २, १; १६. ६, १४.
 सम्-भूतश्रीः १६. ४६, १.
 सम्-भूता १०. १, २; २४;
 १६. २२, २१; २३, ३०.
 सम्-भूताम् ३. १२, ८.
 सम्-भूते १०. ३, २०.
 सम्-भूत्वा ३. २४, २.
 सम्-भनसः ३. ३०, ५; ७;
 ६. ७३, १; ७४, ३; ८८,
 ३; ७. १६, १६४, १; ६.
 ५, ३७; ११. ५, १; ८,
 सम्-भनसौ ६. ४२, १.
 सम्-भनाः ३. ३०, २.
 सम्-मातरः-इव ८. ७, २७.
 सम्-मातरौ-इव १३. २, १३.
 सम्-माता १३. १, १०.
 सम्-मितः १२. ३, ३३.
 सम्-मितम् ३. २६, ३; ४;
 ५.
 संमिता २०. १२८, ६; ७;
 ८; ६; १०; ११.
 सम्-मिताः १२. ३, २०; २८.
 सम्-मितासः १२. ३, २७.

सम्-मिश्रः २०. ३८, ५; ४७,
 ५; ७०, ८.
 सम्-मिश्राः २०. ६७, ४.
 सम्यक् १८. ४, ११.
 सम्यञ्चः ३. ३०, ३; ६.
 सम्यञ्चम् १३. ३, २०.
 सम्यञ्चौ ५. १, ५.
 सम्-यतम् ६. ५६, १; १०.
 ४, ८.
 सम्-यतम् २०. ३६, १०.
 सम्-यतोः १६. ८, २५.
 सम्-यन् ६. ५, ३३.
 सम्-यन्तम् ६. ५, ३३.
 सम्-यन्ति ४. ११, १२; ६.
 २५, १; ३; ३.
 सम्-यमः ४. ३, ७९.
 सम्-युतम् ६. ३०, १.
 सम्-रब्धम् १३. १, ४.
 सम्-रभ्य १६. १, ३.
 सम्-रराणः २. ३४, ३; ४;
 ७. १७, ४; १८. ३, ४६.
 सम्-राजम् २०. ४४, १.
 सम्-राजो १७. १, २२; २३.
 सम्-राज्ञी १४. १, ४३; ४४.
 सम्-राट् ४. १, ५; ६. ३६,
 ३; ८६, ३.
 सम्-राधयन्तः ३. ३०, ५.
 सम्-रुधम् ७. ५०, ५.
 सम्-लिखितम् ७. ५०, ५.
 सम्-लुप्य १०. १, ३०.
 सम्-लोभयन्तः ६. २८, १.
 सम्-वतम् ६. २६, ३; १०५,
 २.

सम्-वत्सरः ३. १०, ८; ४.
 ३५, ४; ८. ८, २३; १०.
 ६, १८; ११. ५, २०; ७,
 १८; १५. १७, ७; १८, ४.
 सम्-वत्सरम् ४. १५, १३;
 १०. २, २०; २१; १५. ३,
 १; १७, ८; १६. ५८, १.
 सम्-वत्सरस्य १. ३५, ४; ३.
 ५, ८; १०, २; ३; ५. २८,
 १३; ११. ६, २२.
 सम्-वत्सराः २. ६, १.
 सम्-वत्सराज ३. १०, ६;
 ११. ६, १७.
 सम्-वत्सराय ६. ५५, ३.
 सम्-वत्सरीणम् ८. ३, १७.
 सम्-वत्सरीणाः ७. ७७, ३.
 सम्-वत्सरे ८. १०(३), १;
 २; ६. १०, २६.
 सम्-वत्सरेण १०. ७, ५.
 सम्-वत्सरेभ्यः ३. १०, १०;
 १६. ३७, ४.
 सम्-वदन्ति ४. ३७, ५.
 सम्-वननम् ६. ६, ३.
 सम्-वनना २०. ८५, ३.
 सम्-वननी ६. १३६, ३.
 सम्-वननेन ३. ३०, ७.
 सम्-वरणे २. ६, ३.
 सम्-वर्गम् २०. १७, ५.
 सम्-वसन्तः ७. ७६, १; ८०;
 १.
 सम्-वसवः ७. १०६, ६.
 सम्-वसानौ १२. ३, ५२.
 सम्-वहन्ति १३. ३, १७.
 सम्-विजन्ते ५. २१, ४; ६.

सम्-विदः ३. ५, ५.	सम्-शितः ५. ३०, १०.	सम्-स्त्रवन्ति १. १५, ३; ४
सम्-विदम् ६. ६(३), ६;	सम्-शितम् ३. १६, ११; ६.	सम्-स्त्राष्टा १६. १३, ४.
१८. १, १६.	१०४, ३; ७. १६, १;	सम्-स्त्रावृणाः १. १५, २;
सम्-विद्वानः ३. ४, ६; ४.	१२. १, २१.	१६. १, २.
१५, १०; ५. २६, २; ३;	सम्-शितानि १६. ६, ५.	सम्-स्त्रावृणैः १, १५, ३; ४.
६. ६३, ३; ८४, ४; १२.	सम्-शिशानाः ४. ३१, १.	सम्-स्त्रावृण्येण १. १५, १; २.
६, ८; १३. १, ३५; १६.	सम्-शिषः ११. ८, २७.	२६, ३; १६. १; २; ३.
६, ६३; १८. १, ६०; ३,	सम्-श्रिता ११. ७, ३१.	सम्-हनु ५. २८, १३.
८; १६. ४०, १; २०. ६६,	सम्-श्रुतम् १. ३, ६.	सम्-हनुः ८. १, १६.
११.	सम्-श्रेष्ठिणे ८. ५, १४.	सम्-हितः ३. ३१, ६; १३.
सम्-विद्वानम् ५. २८, ५.	सम्-सर्वः ७. १२, ३; २०.	४, २६; १६. २७, ७.
सम्-विद्वाना ६. ३८, १; २;	११०, २.	सम्-हितम् ११. ८, १६.
३; ४; ७. ७०, १; १२.	सम्-सर्वम् २०. २६, ५.	सम्-हितम् १३. १, १०.
१, ४८; ६३, १६. ६, ५१.	सम्-सर्वि २०. १३, ३.	सम्-हिताः ७. ७५, २.
सम्-विद्वानाः ३. ४, ७; ५.	सम्-सम् ६. ६३, ४.	सम्-होत्रम् २०. १२६, १०.
२८, २; १०. ७, ५.	सम्-समकम् ६. ७२, १.	सम्-यावरीः २०. १०६, १.
सम्-विद्वानौ २. २८, २; ३.	सम्-सिक्ताः २. २६, ४.	सम्-युजा ५. १४, ७; ७. १०८,
१५, ४, ११. २, १४.	सम्-सिक्ताः ११. ८, १३.	२; ६. ६, २०; ११. १,
सम्-विदुः ३. २१, ५; १०.	सम्-सिन्धु ११. ८, १३.	६; २, १४.
८, ४१.	सम्-सिन्धु १०. २, २६.	सम्-युजौ ६. १४०, ३; ७.
सम्-विद्म ११. ६, ६.	सम्-सुदे २०. ४, ३.	५३, २.
सम्-विद्यम् १२. ४, ४.	सम्-सृजति ४. २४, ७.	सम्-योनयः ७. १६, १.
सम्-विद्वान् १, ३५, १; ३;	सम्-सृजन्ति ४. २७, ५.	सम्-योनिः ३. ५, ८; ६. १२२,
३.	सम्-सृजि ४. ३१, ६.	४; ६. १०, ८; १६; १२.
सम्-विन्दते ३. १८, १.	सम्-सृष्टम् ४. ३१, ७.	३, १६; ५३; १६. ५५,
सम्-विवृत्सति ८. ६, १६.	सम्-स्कन्धम् १६. ३४, ५.	१.
सम्-वृक् २०. ३४, ३.	सम्-स्थितः १८. ४, १५.	सर्वः २०. २२, १.
सम्-वृत्तः २०. ५, १.	सम्-स्थे २०. ६६, २.	सर्वः १८. १, ३१.
सम्-वृत्तः १८. ३, ३०; ३१;	सम्-स्पर्श ८. २, १६.	सर्वम् ३. २१, १; ४. ३१,
३२; ३३; ३४; ३५.	सम्-स्फान ६. ७६, १.	१; ६. २, ६; १८. १,
सम्-वृत्तम् ८. ६, ४.	सम्-स्फानः ६. ७६, १.	४३; ३, ४८; ४, ४७;
सम्-वेश्मि १८. ३, ७.	सम्-स्फानः ६. ७६, १.	१६. ५६, १; २०. ११,
सम्-वेश्मन् ३. ८, १.	सम्-स्फानः ६. ७६, १.	४; १४१, २.
सम्-शब्दे ४. १२, ७.	सम्-स्फानः ६. ७६, १.	सर्वम् २०. ७७, ८.
सम्-शाय ७. ८४, ३.		

सर्वमयै ६. ४, १६.

सर्वस्वति ७. १०, १; ६८,
१; १८. १, ४३, ४, ४७.

सर्वस्वति ४. ४, ६; ५. २५,
३; ६. ६४, ३; ७. ६८,
२; ३; १४. २, १५.

सर्वस्वती ५. २३, १; २५, ६;
२७, ६; ६. ३, २; ८६,
३; ६४, ३; ७. ५७, १;
१६. ४, ४; १८. १, ४१,
४, ४५; १६. १६, २; ३१,
६; १०; ४०, १; २०.
१२५, ५५

सर्वस्वतीः ५. १२, ८; ६.
१००, १.

सर्वस्वतीम् ३. २०, ७; ५.
७, ४; १८. १, ४११;
४३; ४, ४५१; ४६.

सर्वस्वत्या ५. ७, ५; १०, ८.

सर्वस्वत्याम् ६. ३०, १.

सर्वस्वत्यै ६. ४१, २; १४.
२, २०.

सर्वस्वन्तम् ७. ४०, १; २;
६. ४, ६.

सुरा ५. ५, ६.

सुरितः १२. २, ४१.

सुरिष्यथ २. ६, ५.

सुरीसपम् ३. १०, ६; १६.
४६, ३; २०. ६६, १३.

सुरीसुपाणि १६. ७, १.

स-रूपः १. २४, ३.

स-रूप-कृत् १. २४, ३.

स-रूपम् १. २४, ३.

स-रूप-कर्णी १. २४, ४.

स-रूपा १. २४, २.

स-रूपाः १८. ४, ३३.

स-रूपाम् १. २४, २.

स-रूपौ ५. २१, ४.

सुरौ ५. २५, १.

सर्गाः ४. १५, २; ३; ४.

सर्जितः ५. ३०, ५.

सर्तवे २०. ३४, १३.

सर्तवै २०. १५, ६.

सर्प २. २४, ४.

सर्प ३. २५, ४; १८. ३, ४६.

सर्पः ११. ३, ४७; १२. १,
४६; १८. ३, ५५.

सर्पत् १२. १, ४६.

सर्पत् १८. १, ५५.

सर्पत्तु २०. ५, १.

सर्पन्तम् ४. २०, ७.

सर्पन्तु ५. ११, ६; ११. १,
१७.

सर्पम् १२. १, ३७.

सर्पाः ११. १०, १.

सर्पाः ८. ७, २३; १०(५),
१३; १६; ११. ६, १६.

सर्पान् ८. ८, १५; १०(५),
१३; ११. ६, १६; ६, २४.

सर्पिः ६. ६(४), ३; १०. ६,
१२; १३; १४; १५; १६;
१७; १८; १६; २०; २१;
२२; २३; २४; १२. ३,
४५.

सर्पिषः १. १५, ४; २०. ६७,
३.

सर्पिषा १२. २, ३१; १८. ३,
५७.

सर्पेभ्यः १०. ४, २१.

सर्व १६. ६, १४.

सर्व २०. १२७, ११.

सर्व-अङ्ग ८. १, २०; २०. ६६,
१०.

सर्व-अङ्गः ८. २, ८; ११. ३,
३२-४६.

सर्व-आत्मा ५. ६, ११; १२;

१३; १४.

सर्वः १. ७, ४; १५, २; ३.
१६, ५; २०, ६; ८. २,

२५; ६. ६(२), ८; ६;
१६. ४, ६; १८. ४, ८;
१६. ५१, १.

सर्व-कम् १. ३, ६; ७; ८; ६.

सर्व-केशकः ४. ३७, ११.

सर्व-गणः १६. ४, ६.

सर्व-गुः ५, ६, ११; १२; १३;
१४.

सर्व-जन्मनः ११. ४, २४.

सर्व-ज्यानिः १२. ५, २२.

सर्व-ज्यानिम् ११. ३, ५५;
५६.

सर्वतः ३. २, २; २०, १०;
४. १०, ५; ५. १३, ७;

२८, १०; ६. ६७, १; ८४,
१; ८. ५, ४; १६; २२;

१०. ८, १०; ११. ७, ४;
१४. १, ६४; १६. १६,
२; २७, १५.

सर्व-तनूः ५. ६, ११; १२; १३;
१४; ११. ३, ३२-४६.

सर्व-सातये ६. ३, ३.

सर्व-वा १. ३२, ३; ६. ६(२),
१०; १०. ६, ३२; ७, २३;

६, १२; १२. २, ५०; ५१;
१८. ४, २६.

सर्व-परुः ११. ३, ३२-
४६.

सर्व-पात् १०. १०, २७.

सर्व-पुरुषः ६. ६, ११; १३;
१३, १४; १०. ३, १०.

सर्वम् १. १८, ३; २. ७, २;
३१, ५; ३६, ६; ३. ७,

३; ७; ४. ५, ७; १६,

१; ५; १७, ६; ७; १८,
 ८; २०, १; ४; ८; २२,
 २; ५. ४, ६; १०; ८, ६;
 १८, ४; ६. ६, १; १४,
 १, २४, २; ४६, ३, ५४,
 ३; ५७, ३; १०७, १;
 २; ३; ४; ७. २०, ६;
 ६५, ३; ७६, ३; १०१,
 १; ११४, १; ८. १,
 २०२; २, १२; १६; १०
 (१), १; १२ (५), १२;
 ६. ४, २०; ५, १६; २३;
 ७, २४; ८, १; २; ३; ४;
 ५; १०. १, १०; १३;
 २५; ३२; ६, १८; ७,
 २६; ३०; ८, १; २; ६;
 २१; ३०; ६, २७; १०,
 २६; ३४; ११. २, १०;
 ४, १२; ४; १५; ८, १३;
 १५; ६, १; १०; १०,
 १७; १२. २, २; २४;
 २६; ३, २८; ५२; १३.
 १. ५४; ५५; २, ४१;
 ४५; १६. ६, ४; ६, २;
 १४; ३४, १; ३६, १; ५;
 ६; ७; ८; ४४, २; ५२,
 ५; ५७, १; ५; ६१, १;
 ६४, ३; ६६, १; २; ३;
 ४; ७०, १; २०. २५,
 ४; ७४, ७; ६६, १०२,
 ११२, १.

सर्व-रथा २०. ६६, १.

सर्व-रूपम् १. ७, २५.

सर्व-रूपाः ६. ७, २६.

सर्व-वित् ६. १०७, ४.

सर्व-वित् १७. १, ११.

सर्व-विदे ६. १०७, ४.

सर्व-वीरः ७. ६, २.

सर्व-वीरम् ३. २०, ८; ७.

८. १; ११. १, ३; ११;

१४. २, ६; १८. ३, १४;

४४; ४, ४०; १६. ३१,

१३; १४; २०. १३, १.

सर्व-वीराः ३. १२, १; ६;

१२. २, २८; १६. ४६,

६.

सर्व-वेदसः १६. ४६, ६.

सर्व-वेदसम् ६. ५, १७.

सर्वस्मात् ७. ६४, १; १०. १,

११; ३, ४; ५, २२.

सर्वस्मै ३. २८, १; ४. १७,

१; ६. ४, २; ११. ४, ८;

१३. ४, १६; १६. ३२, ८;

२०. १२८, १२.

सर्वस्य ११. ४, १; १०; २४;

१२. १, ३४; १६. ५३,

८; ६२, १.

सर्वस्याः ७. १२, ३.

सर्वस्यै १४. २, २७.

सर्व-हायसः १०. ५, २३.

सर्व-हायाः ८. २, ७.

सर्व-हुतः १६. ६, १३; १४.

सर्व-हुतम् १८. ४, १३.

सर्व-हृदा २०. ६६, ३.

सर्वी २. १, ३; ४, ४; ४. ५,

४; ११, २; २०, २; ६.

१२४, ३; ७. ८३, १; ८.

७, १४; १०. ५, ५०; ११.

१, ३१; ६, २१; १२. १,

५०; ५, ४२; ७१; १३.

४, २८; १४. २, २४; १८.

२, ६; १६, ३१, ११;
 ६०, २.

सर्वीः २. १४, १; ३; ३. ४,

१; ७२; २०, ६; ४. ५,

२; ३; ८, ४; ६, ६; १७,

२; ५; १८, ५; ७; ८;

२२, ७; ३४, ५; ६; ७;

३५, ५; ६. २४, ३; २५,

१; २; ३; ८७, १; ८८,

३; ७. ६, २; २३, १;

४३, १; ७४, १; ८. ५,

८; १३; ७, १; १६; ६,

२२; ६. १, १; ५, ३७;

१०. १, ४; ३०; २, २८;

११. ४, ६; १६; ६, ६;

८, २१; ३२; ६, १५;

१२. ३, ३१; १३. १,

३०; २६; २, २; ४१; ३,

१६; २०; १५. ६, २२;

१८. ४, ६; १६. ३, २;

१५, ६; ३४, ६; ३६, १;

५; ६; ७; ८; ४४, ७;

४५, ४; ५३, ७; ५६, ६.

सर्वीणि १०. ७, ४०; १२. ५,

११; १३; १४; १६. ८,

१; ६, १३.

सर्वीन् २. ७, १; १४, ६; ३१,

२; ३. ५, ६; ७; ६, ३;

१०, ७; २६, २; ३०, ७;

४. ३, ३; ६, ६; १६, ६;

१६, ७; २०, ६; २२, १;

३६, ३; ४; ३७, २; १०;

३८, ५; ५. ०३, ६; ८;

६. ५०, ३; ८०, २; ११२,

२; ११७, १; ३; ११६, २;

१२६, ४; ७. ६५, १; ८३,

४; ८. २, ११; ८, ६; ८;

६; ६. २, २५; १०. ६,

१६; ७, ७, ३६; ८, १८;
 ६, १०; १०, ३३; ११.
 १, १२; २१; २, २५; ५,
 २; २२; ६, २०; ६, २२;
 २४; १०, ६; १२; २३;
 २४; १२, २, ४६; ३, १५,
 ३६; ४०; ४, ३५; ३६;
 ५, ४४; १३. २, १०;
 ३८; ३, १४; १४. २, ६६,
 १५. ६, २४; १४, २३; १८.
 २, ३४; ७, ७०; १६. २८,
 २; ५; ६; ७; ८; ६; १०;
 २६; १; २; ३; ४; ५; ६;
 ७; ८; ६; ३२, ६; ३४,
 २; ३५, ५; ३६, ३; ४;
 ५; ४६, २; ५; ४८, ५;
 ५०, ७; ५४, ५; २०.
 ११२, ३; १४३, ६.
 सर्वविभिः १०. ६, २८; ११.
 ६, २०.
 सर्वविभ्यः ४. ४०, ८; २०. २०,
 ७; ५८, १०.
 सर्वविषाम् ४. ८, ५; १७, ८;
 ५. १३, ८; २३, १३; ६.
 ८३, २; ६०, २; ७. ३५,
 २; १५. ६, २३.
 सर्वे १. ७, ५; १६, ४; २.
 ३२, ५; ३. २२, १; ४. ६,
 ७; १६, ६; ५. ३, ३; ७,
 ६; ८, १; २१, ७; २३,
 १२; ६. ५५, १; ७३, १;
 ७. ४०, १; ५६, ७; ७४,
 ४; ७६, २; ८. ५, १०;
 १६; ७, २४; ६. १, २०;
 २, ७; १०; ४, १५; १०.
 ७, १३; २२; ८, १४२;
 १७; ६, ४; ७; ६; १०,

२३; ११. १, ३३; ३, १६;
 ४, १२; १८; ५, २; ५;
 २२; २३; ७, ११; १३;
 २३-२७; ८, १७; २५;
 २७; १०, १४; १५; १२.
 ३, ५१; ५, १३; १४; १३.
 ४, २१; २७; १४. १, ३३;
 १५. ६, २२; १६. ६, १२;
 १४; ४६, ४; २०. १३७,
 १.
 सर्वेण ३. ३१, १; २; ३; ४;
 ५; ६; ७; ८; ६; १०;
 ११; ५. ३०, ६; १०.
 १०, १३; १५.
 सर्वेभ्यः १. ३०, २; १५. ५,
 १४; १५; १६. २२, १८.
 सर्वेषाम् ५. २३, १३; ६.
 ८५, २; ११६, ३; ६. ८,
 १०; ११; १२; १६; २०;
 १०. ४, २०; ११. ६,
 २६; १२. ४, २०; १५.
 ६, २३; १६. ३१, १.
 सर्वेषु ६. ५८, २.
 सर्वैः १. १५, ३; ४; ४. १४,
 ६; १६, ६; १०. १०,
 १४; ११. ६, ६; १७, १,
 २६; १६. ८, ४.
 सर्वत ४. ११, ३.
 सत्त्वमा १८. १, २; ३४.
 सलिलः ५. १७, १.
 सलिलम् ८. ६, २; १२. १,
 ८.
 सलिलस्य ६. १०, ६; १०.
 ७, ३८; ११. ५, २६;
 १८. ४, ३६.
 सलिलात् ४. १५, ११; ८.
 ६, १; ११. ४, २३.

सलिलानि ६. १०, २१;
 १०. ८, ४०.
 सलिले १०. ७, ४१; १७.
 १, ८; १८. ३, ८.
 सलिलेन १७. १, २६.
 सलनम् ६. ४७, ३; २०. ३२,
 ३; ६६, २.
 सलनस्य ७. ७२, ३.
 सलना २०. १५, २; ५७, २;
 ६८, २; ७३, १.
 सलनानि २०. ३१, १; १०४,
 ३.
 सलने ६. ४७, २; ७. ७६,
 ६; ६७, ४; ६. १, १२;
 १३; २०. १२, ५; ७;
 ७७, २; ६४, ६.
 सलनेषु २०. १७, ६; २३,
 ४; ३५, ७, ७१, ६; ७२,
 १.
 सलम् ७. ७३, ७; ६. १०, ४.
 सलनम् १८. २, ३३.
 सलचसः ७. १२, २.
 सलचिनौ २. २६, ६.
 सलचिनौ-इव ३. २६, ६.
 सलचिताः ५. २५, १२; ७. १६,
 १.
 सलचितः २. २६, २; ४. ४,
 ६; २५, ६; ६. १६, ३;
 ६६, ३; ७. १४, ३; १५,
 १; ११५, २; १०. ८, ५;
 १४. १, ६२; १६. ८, ४.
 सलचितवे ६. १७, १; २. ३;
 ४.
 सलचिता १. १८, १; १; २६,
 २; २६, ३; ३३, १; ३.
 २६, १; ३६, ८; ३. ८,
 २; १३, ४; १२, ४; १५,

६; ४. म, ६; २५, ३;
 ४; ५; ५. ३, ६; २४,
 १; २६, २; २७, ३; ६.
 १, ३; ४०, १; २; ५३,
 १; ५८, १; ६१, १; ६८,
 १; ३; १०३, १; ७. १४,
 ४; १७, ४; २४, १; ३०,
 १; ७३, ६; ७; म, १,
 १५; ३, १६; ५, ५; १०;
 १० (५), ३; ६. ४, १०;
 ६ (५), १; ७, १०; २१;
 १०, ४; १०. ६, १३; म,
 ४२; १३. १, २०; ३,
 १३; ४, १; १४. १, ६;
 १३; १६; ३३; ४७; ४६;
 ५०; ५१; ५३; ५८; २,
 १२; ३६; ५६; ६०; ६१;
 ६२; ७५; १८. १, ५;
 ३६; २, ५५; ३, १२;
 २६; ४, ३१; १६. १०,
 १०; १६, १; २०, १;
 २४, म; २७, १४; ३१,
 १; ५; ४६, ७; २०. ६६,
 ६.

सविता-इव १३. १, ३८; १६.
 ४५, ४.

सवितारम् ३. म, ३; २०, ७;
 २१, म; ४. २५, ७; ६. १,
 १; ७. १४, १; ११. ६,
 ३; १३. २, ३६; १६. २४,
 १.

सवितुः ४. २५, १; ६. २३,
 ३; ६. २, ६; १०. ५, १४;
 ११. ३, ४७; १२. २, ४८;
 १६. ४६, १; ५१, २.

सविद्युतम् ४. १५, १६.

सर्वीमनि ७. १४, २.

सवे ६. १३, ३;

सवेदसः १२. २, १४.

सवेन ६. १६, ३; ६. २, ६.

सव्यः १५. १८, ३.

सव्यम् १२. १, ३४; १५. १८,
 १.

सव्य-स्थाः म. म, २३.

सव्यात् ७. २६, म.

सव्ये ७. ५०, म.

स-व्रताः ३. ३०, ३.

सश्चत् २०. ६५, १.

सश्चिरे २०. १०६, ३.

ससताम्-इव २०. २१, १.

ससद्यात् ६. २६, २.

ससन् ४. १, ६.

ससन्तु २०. ७४, ४.

सस-वांसम् २०. ११, म.

सस-वान् १८. १, २२, २०.
 ७६, २.

ससह १६. ३४, ५.

ससहानः २०. ७५, २.

ससहानः-इव ३. ६, ४.

ससहानम् १७. १, १; २;
 ३; ४; ५.

ससहिः ३. १८, ५; १६.

५२, २; २०. १६, ६.

ससहिम् ३. २१, ३; २०.

६१, १; ६२, १६.

ससहे १. १६, ३; २. ५,
 ३; २०. १३७, ६.

ससह्याम् २०. ७०, २०.

सस-ह्रांसम् २०. ४६, १.

ससाद ५. १; २.

ससान २०. ११, म; ६.

ससान् २०. ११, ६१.

ससुतुः ५. २७, १.

ससूव १०. १०, २३.

ससूव २०. १२६, २३.

ससृजे १०. ७, म; १६. ६,
 ३; ४; ५.

ससृजे २. २६, ७.

ससृज्महे २०. ५६, ५; १००,
 १.

ससृजिरे २०. २२, २.

ससृजिरे २०. ६२, २.

सस्ताम् २०. ७४, ३.

सस्त्रि ५. २, २; २०. १०७,
 ५.

सस्यम् ७. ११, १; म, १०
 (४), ११; १२.

सस्रतुः ६. ६७, १.

सस्रुर्षीः ६. २३, १२.

सस्वजाते इति ६. ६, २०.

सह १. १, २; ४, २. ७; ५;
 १०, २३; ३०, ५; ३६,

१; ३. ४, १; ५, ३; १२,
 ७; ६; १३, ५; ३०, ६२;

४. २१, ३; ३१, ६; ३८,
 ५; ६; ७; ५. ६, ११; १२;

१३; १४; २१, म; २२,
 १०; १२३; २६, ३; ३;

३०, ६; ६. ५६, २; ६४,
 २; ११६, २३; १३२, १;

२; ३; ४; ५; ७. ३६, १;
 ६०, ७; ६२, ३; म२, २;

म६, २; १०५, १; म. १,
 १; ११; म, २१; ६. ६,

१५; ३, १४; २३; १०. ५,
 ४७; ६, २; २२; २३२;

२५; २६२; २७२; २८;
 ३०; ७, ५; १०, १३; २५;

११. १, १; ७; २२; ५,
 २०; ६, १६; २०; ७, ८;
 ११; २०; २४; ८, ३०; ६,
 ५; १०, १, २; ५; ६, १२.
 १, ३६; ५६; ३, १०; १५;
 १७; ३२; ३६; ५५; ५६;
 ५७; ५८; ५६; ६०; ४,
 २४; १३. १, १५. ३, ५;
 ४, २८; १४. १, ४८; २,
 १२; २; १७. १, २४; १८.
 २, ५६; ६०; ३, ५६; १६.
 ६, ४; ८, २; ११, २; १७,
 ६; ३०, ५; ३१, ७; ६;
 ३६, १; ४०, १; ४३, १;
 २; ३; ४; ५; ६; ७; ८;
 ५८, ६; २०. १७, ६; ४२,
 ३; ६३, १; ६६, १२;
 १२४, ४; २२८, १२;
 १३१, ११.
 सहः २. १७, २२; ३. ५, ४;
 ४. ३१, ६; ३२, १; ३६,
 ८; ४, १; १२५, २; ८.
 ७, ५; १०. ५, १; २; ३;
 ४; ५; ६; ११. ६, १५; ७,
 १३; १२. ५, ७; १३. ४,
 १२; २०; ५०; ५१; १८.
 ४, ५३; १६. ३७, १; २;
 ५२, २; २०. १५, ६; ६१,
 ५; ६२, ६; ६७, ६; १०६,
 ३; १४१, ३.
 सहः-कृतः २०. १०४, २.
 सहः-कृतम् ६. ३६, १.
 सहः-कृतेन ४. ३२, १.
 सहः-जित् १६. १३, ५.
 सहः-जितम् १७. १, १; २;
 ३; ४; ५.
 सहः-दाम् २०. ११, ८.

सहः-भिः ७. २५. १; २.
 सहः-वानम् ७. ८५, १.
 सहः-कण्ठिका १०. ६, १५.
 सहः-चारम् २. २६, १.
 सहः-जाः ४. ३१, ६.
 सहः-ताम् ८. ६, ७.
 सहः-ते १. १६, ३; २. ४, ३;
 ५. १७, १८; ८. ३, २४;
 १३. २, ३१; १८. १, ४८;
 २०. १७, ६.
 सहः-देवता १२. ४, २३.
 सहः-ध्वम् ३. १, २.
 सहः-ध्वम् १६. १३, ३.
 सहः-न् २०. ६०, २.
 सहः-न्ते १. ३५, २.
 सहः-पल्लयै १४. १, ५८.
 सहः-पुरुषान् ६. ५६, १.
 सहः-भक्षाः ६. ४७, १.
 सहः-भूते ४. ३१, ६.
 सहः-मानः ३. ६, ४; ५. २०,
 ११; ८. ५, २; १२. १,
 ५४; २; ४६; १३. २,
 २८; १६. १३, ५; ३२, ५.
 सहः-मानम् ७. ६३, १; १७.
 १, १२; २२; ३२; ४२;
 ५२.
 सहः-माना २. २५, २; २७,
 १; ३. १८, ५.
 सहः-मानाः ८. ७, ५.
 सहः-मानाम् ३. १८, ६; ४.
 १७, २; ८. २, ६.
 सहः-मूरान् ५. २६, ११; ८.
 ३, १८.
 सहः-वीरम् २. ६, ५; ३.
 १२, ५.

सहः-शेय्याय १८. १, ८.
 सहः-संभलायै १४. १, १६.
 सहः-लः ६. ५, १३; १८. १,
 २४; २०. ६७, ३; ६३, ५.
 सहः-सः २०. १०३, ३.
 सहः-सा २. २६, ३; ४. ३२,
 १; ३६, ३; ४; ५. २०,
 ३; ६. ७२, १; ७. ३५,
 १; १६. १३, ७; ५२, २;
 २०. ८८, १.
 सहः-सा-यन् २०. ३७, ७.
 सहः-सूक्तवाकः ७. ६७, ६.
 सहः-से ८. ४, ३; १६. ३७,
 ३; २०. ८७, ३.
 सहः-स्य ७. ७१, १; ८. ३, २२.
 सहः-स्येन ४. ५, १.
 सहः-स्र-अक्षः ४. २०, ४;
 ६. २६, ३; ३७, १;
 १०. ३, ३; १६. ६, १;
 ५३, १.
 सहः-स्र-अक्षम् ६. ३, ८;
 ११. २, १७.
 सहः-स्र-अक्षरम् १०. ८, ७;
 ११. ४, २२.
 सहः-स्र-अक्षरा ६. १०, २१;
 १३. १, ४२.
 सहः-स्र-अक्षः ४. १६, ४.
 सहः-स्र-अक्षाय ११. २, ३.
 सहः-स्र-अक्षरा ३. ११, ३;
 ११. २, ७; २०. ६६,
 ८.
 सहः-स्र-अक्षौ ४. २८, ३.
 सहः-स्र-अर्घः १६. ३३, १.
 सहः-स्र-अर्घम् १८. १, ४३;
 ४, ४७.
 सहः-स्र-अर्घस्य ८. ८, ७.

सहस्र-अवयवम् १०. म.
 १म; १३. २, ३म; ३, १४.
 सहस्र-आयुः १७. १, २७.
 सहस्र-ऋषिः १६. ६६, १.
 सहस्र-काण्डेन २. ७, ३;
 १६. ३२, ३.
 सहस्र-कुण्ठा ११. १०;
 २५.
 सहस्र-क्षि ११, २, १२.
 सहस्र-चक्षो इति सहस्र-
 चक्षो ४. २०; ५; १६;
 ३५, २.
 सहस्र-दक्षिणः २०. १३७,
 १२.
 सहस्र-दक्षिणाः १६. २,
 १७.
 सहस्र-धा १०. ७, ६.
 सहस्र-धामेन ४, १म, ४.
 सहस्र-धारः २०. १३७, ६.
 सहस्र-धारम् ३. २४, ४२;
 १७. १, १५; १म. ४;
 ३६.
 सहस्र-धाराम् ७. १५, १;
 १०. १०, ४.
 सहस्र-धारे ५. ६, ३.
 सहस्र-धारौ ६. १, ७.
 सहस्र-नाम्नीः म. ७, म.
 सहस्र-नीथाः १म. २, १म.
 सहस्र-पर्णाः १६. ३२, १.
 सहस्र-पर्याः म. ७, १३.
 सहस्र-पर्या ६. १३६, १.
 सहस्र-पात् ७. ४१, २; १६.
 ६, १.
 सहस्र-पावम् २०. ६२, १३.
 सहस्र-पृष्ठः ११. १, १६; २०.
 सहस्र-पोषम् ७. ४म, २.

सहस्र-पोषस्य ३. ७६, ३.
 सहस्र-पोषाय ६. १४१, ३.
 सहस्र-प्रधनेषु २०. ७०,
 १०.
 सहस्र-प्राणः १६. ४६, ६.
 सहस्र-बाहुः १६. ६, १.
 सहस्रम् १. १०, २; २. ६,
 १; ५. १५, ११; १म, १०;
 ६. ४४, २; ६३, ३; ७७,
 ३; ७म, ३; म४, ४; ७.
 २२, १; ३५, २; ४४, १;
 म. म. ७; ६. ४, ६; ५,
 १७; १०. म, २४; १०,
 ६; १२. १, ४५; १३. १;
 ३७; १७. १, ३०; १म.
 ३, ४७; ५१; १६. ३०,
 २; ४६, ५; २०. म१, १;
 ६२, ३०; १०४, २; १४३,
 ६.
 सहस्र-मूलः १३. ३; १५.
 सहस्र-वर्चसा ६. ७म, ३.
 सहस्र-वीर्यं १६. ४४, म, ६.
 सहस्र-वीर्यः २. ४, २.
 सहस्र-वीर्यम् ४. १७, १; ६.
 ३६, १; म. ५, १४.
 सहस्र-वीर्येण म. १, १म.
 सहस्र-शः ३. २४, १; म. म,
 १; १६; ११. ६, २३.
 सहस्र-शृङ्गः ४. ५, १; १३.
 १, १२.
 सहस्र-शोकाः २०. ३०, ४.
 सहस्र-सातमम् २०. ७१,
 १४.
 सहस्र-सातमा ३. २म, ४.
 सहस्र-स्तुका ७. ४६, ३.
 सहस्र-स्य १. १७, ३.

सहस्र-हः म. म, १७.
 सहस्र-हस्त ३. २४, ५.
 सहस्रा २०. २१, ६; ६७, १;
 ७३, ६; १२७, १.
 सहस्रा २०. १२७, ३.
 सहस्राणि २०. २१, ६.
 सहस्रिणाम् २०. ६, २; ४६,
 ५; ५२, ३; ५७, १६;
 ६६, ७.
 सहस्रिणीभिः २०. २६, २.
 सहस्रिण ४. १६, म.
 सहस्रिण-इव २०. ५१, १; ३.
 सहस्रिषु २०. ७४, १; ३; ३;
 ४; ५; ६; ७.
 सहस्रैः २०. १३७, ७.
 सहस्रं २. २५, ३; ३. ६, ६;
 ४. ३१, ३; ३७, १०; ७.
 ३५, १; १६. ३२, ६३.
 सहस्व ४. ३१, २; ५. १४,
 म; १६. ३१, ११; ४६, २.
 सहस्वत् ४. २७, ७; २०. ४०,
 १; ७०, ४.
 सहस्वतः ४. ३३, ५.
 सहस्वता ४. ३२, १.
 सहस्वति ३. १म, २.
 सहस्वती इति ३. १म, ५.
 सहस्वतीम् २. २५, १; म,
 २, ६.
 सहस्वन्तौ १६. ३२, ५.
 सहस्वान् २. ४, ६; म. ५, २;
 ६. २, १५; ११. १, ६;
 १६. १३, ५; ३२, ५; १०;
 ३४, ४; २०. ३६, १.
 संहसि २०. ६४, १.
 संहामहे २. ४, ४; ४. १०,
 २.

सहाय्य ३. १८, ५.
 सहिषीमहि ३. ६, ४, १६.
 ३२, ५.
 सहीयसी १०. ५, ४३.
 सहीयसीः ८. ७, ११.
 सहीयसीम् ३. १८, ६.
 सहीयांसम् १७. १, १, २, ३;
 ४, १.
 सहीयान् ४. ३२, ४, ५, २०,
 १०; २०. ३५, ७.
 सहुरिः ४. ३२, ४.
 सहुरे ४. ३१, २, ५; ३२, ६.
 सहृदयम् ३. ३०, १.
 सहै ४. ३६, ४.
 सहै ४. ३६, ३; १६. ६१, १.
 सह्याम् ४. ३२, १.
 सा १. १३, ४; १४, २; २४,
 ३; २८, ३; ३४, १; २.
 २६, ७; ३. १०, १२; २;
 ३; ४; ८; १७, ४; ६; १८,
 ४; २३, ४; २८, १; ५;
 ६; ४. १७, ३; २०, ३;
 ३८, ३२; ३६, २; ४; ६;
 ५. ५, १; ४; ५; ६; १४,
 १२; १७, ४; १८, ३; ६;
 १५; १६, ४; ७; ६. १५,
 २; ३८, १; २; ३; ४; ५६;
 ३; १००, ३२; १२४, ३;
 १३३, ४; ५; ७. ६, ४;
 २०, ५; ४७, १; ५६, २;
 ७३, ८; ८. ४, १७; ६,
 ८; ११; १०(१), २२; ४२;
 ६२; ८२; १०२; १२२;
 १०(२), १२; १०(३), १२;
 ३३; ५३; ७३; १०(४),
 ११; ५२; ६२; १३२; १०
 (५), १२; ५२; ६२; १३२;

६. १, २०; २, ५; ६, ८;
 १७; १०, ५; ७; २१; १०.
 १, १; २; २४; ५, ३७;
 ८, १०; २५; ३०; ६, ८;
 ६; २५; १०, २८; ११. १;
 २४; ८, १७; १२. १, १;
 ३; ४; ७; ८; १०; १३;
 १८; २२; २६; ४०; ४१;
 ५२; ३, ११; ४, ३५; ५,
 १२; १५; १६; १३. १,
 ४१; ४२; १४. १, ६०; २,
 ६; १४; ५०; ७०; ७१;
 १५. १६, १; २; ३; ४;
 ५; १७, १; ३; १६. ७,
 ४; १८. १, ४; २, ५२;
 ४, ८८; १६. ४, २; १६,
 १; २; ३; ४; ५; ६; ७;
 ८; १०; ११; ४८, ४३;
 ६; ४६, २; ५५, २; २०.
 ६७, २; १२६, १६; १४३,
 ७.
 साकम् १. १०, २; ११, ६;
 १७, ३; ४. १, ६; २८,
 ४; ५. २८, ८; ६. ६१,
 २; १२६, १; ७. ११५,
 ३; १०. ८, ६; ११. १,
 ७; ५, ५; २३; ८, ३; १२.
 २, १; २५; १३. ३, १०;
 १४. २, ४१; ४२; १८. ४,
 ६; १६. ७, १; १२, २;
 ३६, ५; ६; ७; ८, २०.
 ६१, ५; १२६; १४; २३;
 १४२, १.
 साकम्-जानीम् ६. ६, १६.
 साक्षीम् २०. ८७, ४.
 साक्षीय १६. ३२, १०.
 साक्षे २. २७, ५.

साक्ष्व २०. १६, ७.
 साद्धः ५. ३०, ६.
 सात्-घ्नः ३. १५, ५;
 सांतये २०. ६८, ६; ११८, ३;
 साता २०. ७२, २; ७५, १;
 ६८, १;
 सातिम् २०. ७०, ६.
 सात्म्-त्वाय ६. ६(३), ८;
 सात्रा-सहस्य ५. १३, ६;
 सादय ११. १, २३.
 सादयति ६. ६(२), ३;
 सादयाथः १२. ३, ५२;
 सादयामि ६. १२२, ५; १०.
 ६; २७; ११. १; २७; १४;
 २, ४६; १८. ४, ६७.
 सादयित्वा १२. २, २०;
 १४. २, ६७.
 सादये १०. ५, ७; ८; ६;
 १०; १६; १२; १३; १४.
 सादिनः ११. १०, २४.
 साधन् २०. ७७, ३.
 साधनम् २०. १३८, ३.
 साधय १. २४, ४.
 साधु ११. १, ६; १८. ४, ३.
 साधु २०. १३६, १२; १४;
 १५.
 साधुः १६. ६, ११.
 साधु-अर्याः २०. १६, ३.
 साधु-द्विनीम् ४. ३८, १;
 २.
 साधुना १८. २, ११.
 साधुम् २०. १२६, ५.
 साधु-या १०. ४, २१.
 साध्याः ७. ५, १; ७६, २; ८.
 ८, १२; १०. १०, ३०;
 ३१; १६. ६, ११.
 साध्यानीम् ६. १०, २४.

सानुसिम्—सिनामि .

(५,०५७)

सानुसिम् २०. १४, २; ६२, २; ७०, १७.	सायम् ३. १२, ३; ४. ११, १२; ६. १०८, ५; १२८, २; ४; ८. ६, १०; ११. २, १६; १३. ३, १३; १८. ४, ६५.	सिंहस्य ५. २१, ६; १६. ४६, ४.
सानुषु १०. ४, १४.		सिंहस्य-इव ८. ७, १५.
सानौ ११. ५, १२.		सिंहाः १२. १, ४६.
सापलः २. ७, २.		सिंहे ६. ३८, १.
साम ७. ५४, १; २; ६. १०, २; १०. ७, १४; ८, ४१, ११. ७, ५; ८, २३; १४. २, ७१; १५. ३, ८; २०. ६२, ५.	सायम्-प्रातः ३. ३०, ७; १६. ३६, २; ३; ४.	सिकताः ७. १०६, २; ११. ३, १२; ७, २१.
साम-गेभिः २. १२, ४.	सायम्-भवम् १०. २, १६.	सिकता-वती १. १७, ४.
साम-तेजाः १०. ५, ३०.	सायम्-सायम् १६. ५५, ३; ४.	सिकतासु २०. १३६, २.
सामनौ १४. १, ११.	सारघेण ६. ६६, २; ६. १, १६.	सिचः ११. ६, १८; १०, २०; १४. २, ५६.
साम-साम ८. ६, १६.	सारङ्गम् २. ३२, २; ५. २३, ६.	सिचा १८. २, ५०; ३, ५०.
सामानि ८. ६, ४; १६; ६. ६(१), २; १०. ७, २०; ४४; १०, १४; ११. ६, १४; ७, २४; १५. ६, ८; १६. ६, १३.	सारथिः ८. ८, २३; १५. २, ७; १४; २०; २७.	सिच्यते ५. १६, ६; ६. ११, २; १०. ८, २६; २०. १३६, ४.
साम-इत्यः ८. १०(१), ११.	सारमेयौ १८. २, ११.	सिच्यमानायाम् ६. ६६, १; ६. १, १८.
साम-इत्यै १३. १, १३.	सारा ४. ४, ४.	सिञ्च २०. ६४, ४.
सांग्राम-जित्याय ५. २०, ११.	सालावुकान्-इव २. २७, ५.	सिञ्च ४. १५, १६; ७. ७३, ६; ६. ५, ५; १२. ३, ४५; १६. ३१, १२.
साम-तपनस्थ ६. ७६, २.	सायित्री १४. २, ३०.	सिञ्चत ६. ५७, २२.
साम-तपनाः ७. ७७, १.	सायित्रीम् ६. ८२, २.	सिञ्चतम् ३. १७, ७.
साम-तपनाः ७. ७७, ३.	साविषक् १. १८, २.	सिञ्चति ११. ५, १२.
साम्नः ११. ७, ५.	साविषत् ६. १, ३; ७. ७३, ७; ६. १०, ४.	सिञ्चतु ५. २५, ५; ७. ३३, १.
साम्ना १०. ८, ४१; ११. ३, १५; १२. १, ३८.	सार्वीः ७. १४, ३.	सिञ्चर्थ ६. २२, २.
साम्नाम् १५. ६, ६.	साहन्त्य ६. ७, २.	सिञ्चन्तीः २०. ४८, १.
साम-मनस्यम् ३. ३०, १.	साहस्रः ६. ४, १; ७.	सिञ्चन्तु ७. ३३, १२.
साम-राज्यम् १४. १, ४३.	साहस्रम् १८. ४, ३५.	सिञ्चात् २०. १४०, २.
सायक ४. ३१, ६; ३२, १.	साहस्रे ६. ४, २.	सिञ्चामि २. ३६, ४; ३. २२, ६; ४. ८, ५; ६. १३६, ३; २०. ४, २.
सायक-प्रनुत्तानाम् ६. २, १२.	साह-अतिरिचौ ११. ७, १२.	सिञ्चेत् १६. १, ६.
सायकम् २. ५, ७; २०. १०६, २.	सिंहः ८. ५, १२.	सिताः ८. ८, १०.
	सिंह-इव ५. २०, १; २.	सिनातु ३. ६, ५.
	सिंह-प्रतीकः ४. २२, ७.	सिनामि ६. १३३, ३.
	सिंहम् ४. ८, ७.	
	सिंहम्-इव ४. ३६, ६; २०. ६१, ६.	

(५,०५८)

सिनीवालि—सु-श्रुङ्गुरिः.

सिनीवालि ७. ४६, १; १४.

२, १५; २१.

सिनीवालि ५. २५, ३.

सिनीवाली २. २६, २; ६.

११, ३; १६. ३१, १०.

सिनीवाल्याः ६. ४, १४.

सिनीवाल्यैः ७. ४६, २,

सिन्धवः १. १५, १; ४. ३,

१; ६, २; २४, २; १०.

४, २०; १६. १०, ८;

२०. १७, ३; ३५, ११;

६२, ६; १०७, १.

सिन्धुवः ३. ११, १; ६. ३,

१.

सिन्धुः १२. १, ३; १४. १,

४३.

सिन्धुतः ४. १०, ४; ७. ४५,

१.

सिन्धु-पत्नीः ६. २४, ३.

सिन्धु-भ्यः १. ४, ३.

सिन्धुम् ६. १०, ३; २०.

१७, ७; २५, १; ६३, ६.

सिन्धु-इव ४. ३३, ८.

सिन्धु-राज्ञीः ६. २४, ३.

सिन्धु-सृत्याय १०. २, ११.

सिन्धु-न ६. ६१, ३; १२. ३,

४०; २०. ३४, ३; १३;

६१, १२; ६५, ३.

सिन्धु-नाम् १८. ४, ५८.

सिन्धोः ४. १३, २; १०. ४,

१६; १८. ३, १८; १६.

४४, ५.

सिन्धी ६. १, २; २४, १.

सिम २०. १२०, १.

सिमस्मै २०. १२३, १.

सिलावी ५. ५, १; ८.

सिलाजाला ६. १६, ५.

सिषासति १३. ३, १४; २०.

६७, १.

सिषासथः २०. ४६, १.

सिषासथः ६. २१, ३.

सिषासन् २०. ६०, ३.

सिषासवः ६. २१, ३.

सिषिचे २०. ८, ३.

सिष्यदुः ६. २, २०.

सिष्यदे ५. ५, ६.

सिस्ताम् १. ११, १.

सिस्तते १३. २, ४६.

सीता ३. १७, ६.

सीताः ११. ३, १२.

सीताम् ३. १७, ४.

सीते ३. १७, ८.

सीते ३. १७, ६.

सीदु ११. १, २४; ३५; १२.

३, ३३; १४, २, २४;

२५, १६. ६१, १; २०.

२३, ३.

सीदत् १८. १, २६.

सीदत् २०. १३, २.

सीदत् ११. १, १२; २०.

६८, ११.

सीदत्तः १२. ३, ३०.

सीदताम् १८. ३, ३८.

सीदति २०. १२७, १२.

सीदतु १८. ४, १६; १७;

१८; १६; २०; २१; २२;

२३; २४.

सीदन्तु ४. २१, १.

सीदन्तु ११. १, २५.

सीदसि १६. ३३, ३, २०.

१३३, २.

सीदामि ३. १२, ६; ६. ३,

२३.

सीदेम् १२. १, २६.

सीम् २०. २२, ६; ३५, ११;

७८, २; ६२, ६.

सीसत्तः ४. १, १; ५. ६, १.

सीमन्तम् ६. १३४, ३.

सीमानम् ६. ८, १३.

सीर-पतिः ६. ३०, १.

सीरम् ८. ६, १६.

सीरा ३. १७, १; २.

सीवयामि ६. ७३, २.

सीव्यतु ७. ४८, १.

सीव्यध्वम् १६. ५८, ४.

सीषती ४. ३८, ३.

सीसधाम् २०. ६३, १; १२४,

४.

सीसम् १. १६, २; १२. २,

१; ५३.

सीसाय १. १६, २.

सीसे १२. २, १६; २०.

सीसेन १. १६, ४.

सु १. २, १; १७, ४; २४,

४; ५. १, ५; २, ३; ६,

४; ५; ६; ७; ११, ७;

६. ३२, १; ८४, ३; ७.

६, २; ७२, २; ७३, ७;

८४, १; ६. १०, ४; १४.

२, ६; १८. १, १६, ३७;

३, ५१; ६०, ६२; १६.

२४, ५; २०. ४, १; १७,

२; १६, २; ५१, ३;

६०, ३; ६७, २; ७१,

१२; ८०, २; ८६, १;

६४, ६; ६५, २; ४;

१०७, ६; ११६, २; ११७,

३; ११८, १; १२४, १.

सु-श्रुङ्गुरिः ७. ४६, २.

सु-अङ्गुरे २०. १२६, ८.
 सु-अध्वरः १८. १, २२; २०.
 ६७, ३.
 सु-अपत्याय २०. २५, ६.
 सु-अपसः ५. १२, ८; १८.
 ३, २४.
 सु-अपस्यते १८. १, २३.
 सु-अपायति ११. ४६, १०.
 सु-अरंक्रता १०. १, २५.
 सु-अरिः २०. ३५, ६.
 सु-अरित्राम् ७. ६, ३.
 सु-अर्काः ७. २४, १; ७७,
 ३; १६. १०, ६.
 सु-अर्कात् २०. २, १; २;
 ३; ४.
 सु-अर्धी ५. २०, ७.
 सु-अर्धान् २०. ८६, ५.
 सु-अस्तकौ १४. १; २२, २,
 ६४.
 सु-आकर्तम् ७. ३०, १४.
 सु-आभुवः २०. १३, १.
 सु-आयसाः १०. १, २०.
 सु-आशवः १६. ५०, २.
 सु-आशिर्षम् २०. ६४, ५.
 सु-आसत् १६. ४, २.
 सु-इते ६. ५५, २.
 सु-इष्टये ५. २७, ६.
 सु-इष्टिम् २. ३५, १; ६.
 ४७, ३.
 सु-उपसर्पणा १८. ३, ५०.
 सु-उपायना १८. ३, ५०.
 सु-उषाः १६. ४, २.
 सु-ओजः २०. ३६, ६.
 सु-ओजाः २०. ७६, ८.
 सु-कर्मीणः १८. ३, २२.
 सु-कल्पम् १२. २, ५.

सु-किंशुकम् १४. १, ६१.
 सु-कृत् ५. २७, ३.
 सु-कृतः १७. १, २७.
 सु-कृतः ३. २८, ५; ४. २४,
 १; ६. १२०, ३; ७. ७६,
 २; ८०, ४; १२. ३, ६;
 १८. १, ४१; २. ५५; ३,
 २०; ४, ३; ७; ४५; १६.
 ११, १; ५६, ५.
 सु-कृतम् १२. ३, ३३; २०.
 ६४, ६.
 सु-कृतम् ७. ४७, १.
 सु-कृतस्य २. १०, ७; ४.
 ११, ४; ६; १४, ६; ६.
 ११६, १; १२०, १; १२१,
 १; २; ७. ८३, ५; ६. ५,
 १६; ११. १, ८; १६;
 ३७; १४. १, १६; १६.
 ६, २; १८. ३, ५४.
 सु-कृता २०. ११, ६.
 सु-कृतानि १६. १०, ४.
 सु-कृताम् ३. २८, ६; ६.
 १२४, १; ६. ५, १; ५;
 ८; ६; १२; ११. १, १७;
 १८; ३५; १८. २, ८; १,
 ७१; ४, १; ११; ४४; १६.
 १०, ४.
 सु-कृते १८. ४, १४.
 सु-कृते १८. १, ५६.
 सु-कृतैः ११. १, ३६.
 सु-कृतौ १२. ३, ४४.
 सु-कृत्या २०. २५, ४.
 सु-कृषु १. २२, ४.
 सु-कृतः ७. १४, २.
 सु-कृतम् २०. १०१, १.

सु-कृतो इति सु-कृतो २०.
 ६६, ४.
 सु-कृतस्य ७. ७६, ४.
 सु-कृतम् २०. ७३, ५.
 सु-कृत्रिण्यै ७. २०, ५.
 सु-कृत्रिया ४. ३३, २.
 सु-कृतः ५. १४, ५; १३; १६.
 ७, ३.
 सु-कृतम् ८. १, ६; १३. १,
 २४; २, ७; २०. ८६, १.
 सु-कृते २०. २३, ६.
 सु-कृतम् ३. ३, ४; ७. ५०, ४;
 ८. ४, ७; १४. १, ५८;
 २, ६; ८; २०. १२६, ५.
 सु-गा ७. ६७, ४.
 सु-गातवे ६. १, ३.
 सु-गान्ताया ४. ३३, ४.
 सु-गार्हपत्यः १२. २, ४५.
 सु-गृ इति सु-गृ १४. २, ४३.
 सु-गृहौ १४. २, ४३.
 सु-गोने १४. २, ११.
 सु-गोपातमः २०. १, २.
 सु-चक्रः ४. १२, ६.
 सु-चक्रम् १४. १, ६१.
 सु-चित्राम् ७. १५, १.
 सु-चैतनम् २०. १३५, १०.
 सु-जनिमा १२. २, २४.
 सु-जन्मा ५. १, १.
 सु-जातता १६. १२, १.
 सु-जातम् २. १३, ५; ४. २३,
 ४; ७. २०, ५.
 सु-जाते १६. ४६, ३.
 सु-जिह्व ५. १२, २.
 सु-ज्यैष्ठ्यः १४. २, २४.
 सुतः २०. ५, ६; ८, २; ६७,
 ६.

सु-तपसौ ४. २६, ३.
 सु-त-पावने २०. ६६, ३.
 सु-त-पेयाय २०. १४३, ३.
 सु-त-पौ ७. ५८, १.
 सु-तम् ४. २६, २; ७, ५८, १;
 २०. ६, २; ५; ६; ७, ४;
 २२, १; २४, १; २; ७;
 ४२, ३; ५२, २; ५७, १५१
 ६५, १; ६७, १; ११०, १.
 सु-त-वतः २०. ४, १; ८४, २.
 सु-त-वन्तः २०. ३, ३; ३८,
 ३, ४७, ६; ५२, १; ५७, १४.
 सु-त-वान् २०. ६३, ६.
 सु-त-सोमम् २०. ८७, १.
 सु-त-सोमस्य २०. ३४, ६,
 सु-तस्य २. ५, १; २; ७; १८.
 १, ४५; २०. २४, ६; २५,
 ७; ३३, १; २; ३४, १२;
 ६०, ३; ६६, ४; ६६, २.
 सु-ताः २०. ६, ४; २४, ५; ५१,
 ४; ६६, ३; ८४, १; ६६,
 १.
 सु-तानाम् २०. ३२, ३; ६३,
 ३.
 सु-तार्सः २. ५, ४; २०. ७६,
 ६; ६६, १; १३७, ४.
 सु-तुका २०. ३६, १०.
 सु-तुकाञ्च २०. ८६, ५.
 सु-ते २०. १, १; ६, १; २२, १;
 ५२, २; ५३, १; २; ५६;
 ५; ५७, ११; १२; १५; ६८,
 १२; ७१, ८; ७३, ५; ७८,
 १; ८४, ३; ८५, १; ६४,
 ६; ११०, २; १११, २.
 सु-तेजसा ८. २, १७.
 सु-वे-सुते २०. ७२, १६.
 सु-त्रामा ७. ६१, १; ६२, १;

१६. ३, ६१; २०. १२५,
 ६; ७.
 सु-त्रामाणम् ७. ६, ३.
 सु-त्रावने १६. ४२, ३.
 सु-त्वन्म २०. १२६, २.
 सु-त्वा २०. १२८, १.
 सु-दक्षम् २०. ७७, १.
 सु-दक्षः ७. १०, १.
 सु-दानवः ४. १५, २; ७; ६;
 ६. ३०, १; १४. २, ७२.
 सु-दानवः १३. १, ३.
 सु-दानु ७. २०, ४.
 सु-दानुः १८. ३, ६१.
 सु-दानुम् २०. ६, २; ४६, ५.
 सु-दालम् २०. ३७, ३.
 सु-दासे २०. ३७, ६.
 सु-दिने १७. १, १७.
 सु-दिवम् १६. ८, ३.
 सु-दीतयः २०. ५४, ३.
 सु-दीतये २०. १०३, १.
 सु-दुघा १२. ४, ३५; १८,
 ४, ५०; २०. १७, ६.
 सु-दुघाः २०. ६२, ७.
 सु-दुघाम् ७. ७३, ७; १०४,
 १; ६. ४, २१; १०, ४.
 सु-दुघाम्-इव २०. ५७, १;
 ६८, १.
 सु-दृढम् १०. २, ३.
 सु-दृशीकम् २०. ७७, ४.
 सु-देवः २०. ६२, ६.
 सु-देवः २०. १३६, १२.
 सु-धार्याम् १७. १, ६; ७; ८;
 ६; १०; ११; १२; १३;
 १४; १५; १६; १७; १८;
 २४.

सु-धितम् २०. ५६, ४; ६२,
 १४.
 सु-धृतः १३. २, १२.
 सु-नक्षत्रम् १६. ७, ३.
 सु-नाथाः १२. ३, २७.
 सु-नाभिः ४. १२, ६.
 सु-नाभा ६. ६, ४२.
 सु-नोत ६. २, १; ३; २०.
 १२७, ७.
 सु-नोति २०. ६६, ३; ४;
 १२६, १५.
 सु-न्वतः ११. १, ३०; २०.
 ५०, २; ६४, २; ६८,
 १०; १११, ३.
 सु-न्वति २०. ५५, ३.
 सु-न्वते ४. ३०, ६; ६. ६, १;
 ५४, ३; ७. ११०, ३;
 २०. ५, ४; १७, ८; २५,
 ३; २७, ३; ३४, १८; ५१,
 ३; ५६, २; ८६, ८.
 सु-न्वन् २०. ६७, १.
 सु-न्वन्तम् २०. १८, ३; ३४,
 १५.
 सु-स्त्रानः २०. ६७, १२.
 सु-स्त्रानाय २०. ६७, १.
 सु-न्विरे २०. ११२, ३.
 सु-पक्वे ५. २६, ६.
 सु-पक्षम् १३. २, २.
 सु-पत्नी ११. १, १४.
 सु-पत्नीः १२. २, ३१; १८;
 ३, ५७.
 सु-पथा २०. ५५, १; ६४, २.
 सु-पुणः १, २४, १; २. २७,
 २; ४; ६, ३; ५. १४, १;
 ६. ८, २; ८३, १; ७;
 ४१, ३; ६. १०, २८; १२.

३, ३८; १३. ३, ६; ३२;
 १८. ४, ८६; १६. ६५;
 १.
 सु-पूर्णम् ४. १४, ६; ७, ३६;
 १; १३. २, ३६; ३७;
 १८. ३, ६६.
 सुपूर्ण-यातुम् ८. ४, २२.
 सुपूर्ण-सुवने ५. ४, २.
 सु-पूर्णस्य ४. २०, ३.
 सु-पूर्णा ६. ६, २०.
 सु-पूर्णाः २. ३०, ३; ५. २८,
 ८; ६. २२, १; ४६, ३;
 ८. ७, २४; ६. १७; ६.
 ६, २१; २२; १०, २२;
 ११. २, २४; १२. १,
 ५१; १३. ३, ६; १८. ४,
 ४.
 सु-पूर्णैः ११. १०, २६.
 सु-पलाशम् २०, १७, ४.
 सु-पविः ४. १२, ६.
 सु-पारः २०. ६८, १०.
 सु-पाशया ३. ११, ८.
 सु-पिप्पलाः ३. १७, ५.
 सु-पुत्रा १४. १, १८.
 सुपुत्रे २०. १२६, १३.
 सु-पुत्रौ १४. ५, ४३.
 सु-पुना १२. २, ११.
 सु-पुष्टिम् १६. ७, ४.
 सु-पूर्ण ३. १०, ७.
 सु-पेशसः ७. ४८, २.
 सु-पेशसम् २०. ५६, ४.
 सु-तः १६. ७, १०.
 सु-तम् ११. ४, २५.
 सु-तान् ७. १०८, २.
 सु-तानाम् ७. १३, २.
 सु-तेषु ११. ४, २५.

सु-प्त्वा १०. ३, ६.
 सु-प्र-अधीः २०. २५, १.
 सु-प्र-अध्या ४. ३०, ६.
 सु-प्रकेतम् २०. ८८, २.
 सु-प्रजलः ३. १०, ५; १८.
 ४, ६३.
 सु-प्रजसम् १४. १, ४६.
 सु-प्रजाः ४. ११, १; १४,
 ३, २२; २३; ७४; २०.
 ८८, ६.
 सुप्रतिदिश्यवः २०. १२८,
 ६.
 सु-प्रतिस्थितम् १२. १, ६३.
 सु-प्रतीकः ५. २७, १.
 सु-प्रतीकम् ४. २१, ६.
 सु-प्रतीकाः १०. ५, २४.
 सु-प्रनोतयः १८. ३, ४४.
 सु-प्रनीताः १६. ४, ४.
 सु-प्रनीतिम् ७. ६, २; ६, ३.
 सु-प्रनोत ५. ११, ५; ७.
 २०, ४.
 सुप्रपाणा २०. १२८, ६.
 सु-प्रपानम् १४. २, ६.
 सु-प्रपाने ४. २१, ७; ७.
 ७५, १.
 सु-प्रशस्तिम् ५. ११, ११.
 सु-प्रातः १६. ८, ३.
 सु-प्रायनाः ५. १२, ५.
 सु-प्रिया ७. ३८, २.
 सु-फला ३. १७, ८.
 सु-फालाः ३. १७, ५.
 सु-बद्धाम् १४. १, १८.
 सु-बन्धुम् १४. १, १७.
 सु-बाहुः ७. ४६, २; २०, ५,
 २.
 सु-बाहो इति सु-बाहो २०.
 १२६, ८.

सु-बुधा १४. २, ११; ७५.
 सुब्रह्मा २०. १२८; ७.
 सु-ब्राह्मणाः ११. १, २६.
 सु-भगम्-करणी ६. १३६;
 १.
 सु-भगा २. ३६, ३; ५. ७,
 १०; ६. ३, २; ३८, १;
 २; ३; ४; ७. ४८, १;
 १०. ६, ११; १४, १;
 १८.
 सु-भगाः ७. ६०, ६.
 सु-भगान् २०. ६८, ६.
 सु-भगाम् २. ३६, ३; ६;
 ५६, ३; १४. १, ४६;
 १६. ४, २; २०. १२६,
 ११.
 सु-भगे ३. १८, २; ५. ५,
 ६; ७; ६. ३०, ३; १६.
 ४६, ३.
 सु-भगे ३. १७, ८; ७. २०,
 ४; ४८, २; ७६, १;
 १८, १, ११; १३; १६;
 ४६, ५; ५०, ६.
 सुभगे इति सु-भगे ३. ७,
 ४.
 सुभगे इति सु-भगे ४.
 २६, २.
 सु-भद्राम् १८. १, १६.
 सुभसत्-तरा २०. १२६, ६.
 सु-भागाः ६. ४, २४.
 सुभिषक्-तमः २. ६, ५.
 सुभिषक्-तमाः ६. २४, २.
 सु-भुवः ४. ८, ७.
 सु-भूः १३. ४, ५३.
 सु-भूतम् १. ११, ३; ४; ६.
 ४०, २; १२. १, ५५.
 सु-भूतयः १६. ४५, ६; ७; ८;
 ६; १०.

(५,०६२)

सु-भूत्या—सु-राधसम्.

सु-भूत्या ३. १४, १.
 सु-भूतम् ६. ३६, १; १३.
 सु-भूतम् १. १.
 सु-भोजम् २. ३, १.
 सु-भोजसौ ४. २६, १.
 सु-भूयक्तः २०. १२८, ७.
 सु-मङ्गलः ८. ५, १; १६;
 १६. ३४, ७.
 सु-मङ्गलम् १४. १, ३०.
 सु-मङ्गली ३. १०, २; १४.
 १, ६०; २, २५; २६.
 सु-मङ्गलीः १४. २, २८.
 सु-मङ्गली ६. १४०, ३.
 सुमणिः २०. १२८, ७.
 सु-मृतयः ७. ४८, २.
 सु-मृतिः १४. २, ५; २०.
 १४३, ७.
 सु-मृतिम् २. ३६, १; ४. २३,
 २; २५, ६; ६. २२, २;
 ७. १५, १; १७, २; १०.
 ६, ३५; १७. १, ७; १८.
 १, २४; १६. ७, १; ४२,
 ३; २०. ७३, ३.
 सु-मृतीनाम् २०. ५७, ३;
 ६८, ३.
 सु-मृतौ ३. १०, ७; १६, ४;
 ५. ८, ६; ६. ४७, २;
 ४५, ३; ६३, ३; ७. २०,
 ३; ६; ६२, १; ६७, २;
 १३. २, ३७; १४. २, १५;
 २१; १७. १, ८, ११;
 १८. १, ५८; २०. ६६,
 ५; १२५, ७.
 सुमृत्-गुः ५. १, ७.
 सु-मृत्या २०. ७६, ८.
 सु-मृत्यै ६. १३, २.

सु-मनसः ३. ४, ३; १२. २,
 ४६; १४. २, ३६.
 सु-मनसम् ६. ६६, ३.
 सु-मनस्यमानः ७. १६, १;
 ४३, १; १३. १, ३५;
 १४. २, ३६;
 सु-मनस्यमानम् ५. २८, ५.
 सु-मनस्यमाना ११. १, ८;
 १२. १, ४४; १४. २,
 १७; ३१.
 सु-मनस्यमानाः १. ३५, १;
 २. ३५, ५; १३. १, १३;
 १६. ५८, ५.
 सु-मनाः ३. ४, ७; १२, ५;
 १७, ८; २०, २; ६; ६.
 १२३, ५; ७. ४८, २;
 ६७; १; ७४, ४; १६.
 ४६, ३; २०. २१, ४.
 सु-मन्तु १८. १, ३४.
 सुमिते इति सु-मिते २०.
 ७६, ६.
 सु-मृगम् १६. ८, ३.
 सु-मृडीकाः ७. ६१, १; २०.
 १२५, ६.
 सु-मृडीका ७. ६८, ३.
 सु-मृडीके ७. २०, ३.
 सु-मेधसः ७. ६१, १; २.
 सु-मेधाः १६. ४०, २.
 सु-मेधाः ५. ११, ११; ७. ६०,
 १; ६. १, ६.
 सु-मेधाम् ४. ३०, ३.
 सुम्रम् २०. २६, ६; ३६, ४;
 ४६, ३; १०८, २.
 सुम्र-या ७. ५५, १,
 सुम्र-यि १६. ४७, ४.

सुम्र-युः ७. १०, १.
 सुम्र-यौ ३. १७, १.
 सुम्रेभिः २०. १४२, ३.
 सु-यतः ६. १११, १; २०.
 १३७, १.
 सुयभ्या २०. १२८, ६.
 सु-यमम् ७. ७३, १०; ८२,
 ३.
 सु-यमस्य १६. १०, २.
 सु-यमा १४. २, १७; १८,
 २०. ६४, २.
 सु-यमान ४. २७, १.
 सुयवस-अत् ७. ७३, ११;
 ६. १०, २०.
 सु-यवसे ४. २१, ७; ७. ७५,
 १.
 सु-यामन् १६. ७, ७.
 सुयाश-तरा २०. १२६, ६.
 सु-युक्तान् २०. ६२, १०.
 सु-युजः ५. २६, ३; ७; ८;
 ६; १०; ११.
 सु-रत्नाः १२. २, ३१; १८;
 ३, ५७.
 सुरभयः १८. ३, १७.
 सुरभि ६. १२४, ३; २०.
 १३७, ३.
 सुरभिः १२. १, ५६; १४. २,
 ४४; १६. ३८, १.
 सुरभिम् १२. १, २३; २४.
 सुरभीः ११. ४, ६.
 सुरभीणि १८. ३, ४२.
 सुरा ६. ७७, १; १४. १;
 ३६; १५. ६, २.
 सुरा-उदकाः ४. ३४, ६.
 सु-राधसम् २०. २६, ३; ५१,
 १; ३.

सुराम्—सु-शेवा.

(५,०६३)

सुराम् १०. ६, ५.
 सु-रामम् २०. १२५, ४; ५.
 सुरायाः १५. ६, ३.
 सुरायाम् ६. ६६, १; ६. १,
 १८; १४. १, ३५.
 सुराश्वः २०. ११४, २.
 सु-रुक्मे इति सु-रुक्मे ५.
 १२, ६.
 सु-रुचः ४. १, १; ५. ६, १;
 १८. २, २२.
 सु-रुचम् ४. १, २.
 सुरूप-कृत्तम् २०. ५७, १;
 ६८, १.
 सुलामिके २०. १२६, ७.
 सुव २. २६, २; ५. २२, ३;
 ७. १४, ३; १६. ८, ८;
 ३६, १०.
 सुवहाम् ४. २५, ५.
 सुवते ६. ६, २१.
 सु-वर्चाः २. २६, ६; ७; १३.
 १, २२; १४. १, ४७; २,
 १८; १८. २, १०; ३,
 ५८.
 सु-वर्णम् १५. १, २; १६.
 २६, २.
 सु-वर्णा १३. १, २२.
 सु-वर्णाः १. ३३, १; २; ३;
 १२. ३, २८; २०. १६,
 ३.
 सु-वर्णैः १३. ३, १६.
 सु-वर्णिम् १३. २, ७.
 सु-वर्हा २०. ३६, ७.
 सु-वाचः २. ५, २.
 सु-वाचा ५. १२, ७.
 सघाति १४. १, ३३.

सुवांना २. ३६, ३.
 सुवानासः २०. ११८, ४;
 ११६, २.
 सुवाम् १६. ५७, २.
 सुवामसि १. १८, १; ६.
 १२७, ३; ७. ५३, ६;
 १२. २, ३.
 सुवामि १. १०, २; ४. ३३,
 ५; ६. ११६, ३; ७. ५३,
 ६.
 सु-वासाः १४. २, ४४.
 सु-विज्ञानम् ८. ४, १२.
 सुविता २०. १२६, ३१.
 सुविताय १६. १०, १.
 सु-विदत्रः १३. ३, ४४; ४५.
 सु-विदत्रम् १. ३१, ४.
 सु-विदत्राः १८. ३, १६.
 सु-विदत्रान् १८. १, ४५; २,
 ११.
 सु-विदत्रेभ्यः १८. २, ५४.
 सु-विदत्रेभिः १८. ३, ४८.
 सु-विद्वांसः ४. १४, ४.
 सु-विद्वांसम् २०. ६६, २.
 सु-वीरः ६. ११०, ३; १२५,
 १; ८. ५, २; ११. १, २;
 १२. २, ४६; १३. १,
 १२; १६. २४, ८.
 सु-वीरतायै ६. २६, ३; ७;
 २०, ५.
 सु-वीरम् ४. १६, ५.
 सु-वीरम् ७. २०, ४; ७६, १.
 सु-वीराः ३. १०, ५; १२, १;
 ५. ३, ५; १८. २, ५६;
 ३, २४; ४, ६३; १६, १२,

१; २०, २१, ११; ६३,
 ३; १२४, ६.
 सु-वीरासः १२. २, २२, २०.
 ३४, १८.
 सु-वीर्यः ७. ६७, ६.
 सु-वीर्यम् २०. ६, ३; ४६, ६;
 ६३, ४; १०८, ३.
 सु-वीर्यस्य ७. ६१, १; २०.
 १२५, ६.
 सु-वृत्ति २०. ३५, २; ४; १६.
 सु-वृत्ति-भिः २०. ३५, ३.
 सु-वृजनासु १८. १, ४६.
 सु-वृत्तम् १४. १, ६१.
 सु-वृत्ता २०. १४३, ५.
 सु-वृथा २. १३, ५.
 सुवे ४. ३०, ७.
 सु-व्रतानाम् ७. ६, २.
 सु-शंसः १६. १०, ६.
 सु-शंसिनः ६. ६, २.
 सु-शकुनम् १६. ८, ३.
 सु-शर्म १६. ७, ५.
 सु-शर्माणम् ७. ६, २; ६; ३.
 सु-शिप्र २०. ७१, ६; ८०,
 १; ६२, १३.
 सु-शिप्रः २०. ३०, ३; ३४,
 ६.
 सु-शीर्मम् ३. १५, ३.
 सु-श्रुतम् ७. ७२, ३.
 सु-शेवम् ४. २५, ५; ६. १,
 २.
 सु-शेवा १३. १, १७; १४.
 २, १७; २६; १८. २, ३१.
 सु-शेवा ३. २, ३; १४, १,
 १६; ५८.

सु-शेवाम् १७. ३, ४६.
 सु-शेवौ ५. ६, ५; ६; ७.
 सु-श्रवः ११. ४, १६.
 सु-श्रवसम् २०. २१, १०.
 सु-श्रवसा २०. २१, ६.
 सु-श्रुत् ८. २, ८.
 सु-श्रुतिः १६. २, ५.
 सु-श्रुतौ १६. २, ४.
 सुषिराम् इव २०. ६२, ६.
 सुष्टुतिमा २०. १२७, ७.
 सु-संनता ३. २५, ३.
 सु-संनताम् ३. २५, २.
 सु-संशासः १८. ३, १६.
 सु-संशितः ६. १०५, २.
 सु-सत्यम् २०. १३५, ४.
 सु-सदा ३. १४, १.
 सु-सदाः २. ३६, ४.
 सु-सदाम् ३. २२, ६.
 सु-समृद्धेन ६. ६(४), २; ४;
 ६; ८.
 सु-सह ६. ६४, ३.
 सु-सहान् २०. ८०, २.
 सु-सायम् १६. ८, ३.
 सु-साव २०. ११७, १.
 सुसुम् २०. ३, १; ३८, १; ४७,
 ७.
 सुसुम् २०. ७७, १.
 सुसुवे १४. १, ४३.
 सुसुवत १. २६, ४.
 सु-सुमा ७. ४६, २.
 सु-स्तुतः २०. ११५, ३.
 सु-स्तुतिम् ७. ८२, १; २०.
 ७०, १३.

सु-स्तुती ७. ४८, १.
 सु-स्तुती इति सु-स्तुती ६. १,
 १.
 सु-स्तुतोः ६. ३५, १; २०.
 ४, १.
 सु-स्तुत्या ७. २६, २; २०.
 ४४, ३.
 सु-स्तुमः २०. २, १; २; ३;
 ४.
 सु-स्तुभा २०. ८८, ५.
 सु-स्थामा २०. ६४, २.
 सु-स्तुषे २०. १२६, १३.
 सु-स्यदाः १६. ४०, २.
 सु-स्यसः ७. ७६, १२.
 सुसजम् २०. १२८, १५.
 सुसुबुः ७. ११२, १; १४.
 २, ४५.
 सुसोः १२. ३, २२.
 सुसोत् २. २६, ७; १६. ५८,
 ४.
 सुस्वयन्ती इति ५. १२, ६;
 २७, ८.
 सुस्वि-तराय २०. ३७, १.
 सुस्विम् २०. ३५, १५.
 सु-हन्तु २०. ३७, ४.
 सु-हवः ७. १०, १; १६. ४,
 ३.
 सु-हवम् ७. ३०, ४; ५६, १;
 १७. १, ११; १६. ७, २;
 ८, ३.
 सु-हवा ३. २०, ६; ७. ४७,
 १; ४८, १; ११. १, २६;
 १६. ४, २; ७, ३; ४६,
 १; ५.
 सु-हवाः ७. ४६, १.

सु-हवानि १६. १०, ३.
 सु-हस्तः ७. ७३, ७; ६. १०,
 ४.
 सु-हस्ताः १६. ११, १.
 सु-हात् २. ७, ५.
 सु-हादः ३. २८, ५; ६. १२०,
 ३; १६. ३२, ६.
 सु-हादाम् ३. २८, ६.
 सु-हिता ११. १०, ४.
 सुहिरण्यवः २०. १२८, ७.
 सु-हुतम् ६. ७१, १; २; १०.
 ६, २६.
 सु-हुते ७. ४, १.
 सुकरः २. २७, २; ५. १४, १.
 सुकराय १२. १, ४८.
 सुकर्तेन २०. १२७, १४.
 सुची-मुखाः ११. १०, ३.
 सुच्या ७. ४८, १.
 सुत-वंशा १२. ४, ४४; ४६;
 ४७.
 सुतवे १. ११, २; ५. २५,
 १०; ११; १२; १३.
 सुतवे १. ११, १.
 सुताः ३. ५, ७.
 सुतिकाः ८. ६, १६.
 सुतम् ६. १७, १; २; ३; ४.
 सुते ६. ६, १७; १३. १,
 ४१.
 सुतौ १. ११, १.
 सुत्रम् १०. ८, ३७, ३८;
 सुत्रस्य १०. ७, ३७; ३८.
 सुत्री ६. ७, १४.
 सुत्रे ३. ६, ३.
 सुदयन्तु १. १८, ३.
 सुदयन्तु ६. ५१, २.

सूनुवः २०. ६७, ४.	सूरिम् ३. १६, ३; ६. ५, २; २०. ३५, ३.	१; २०. २५, ५; ६२, १७; १०५, ५; १०७, १३; १५; १२३, २.
सनाताम् ५, १७, १४.	सूरिष् २०. ३७, ७.	सूर्यः २०. १२८, ५.
सनाम् २०. १२६, १८.	सूर्यम् २०. ६२, ६.	सूर्यः-इव ७. १३, २; ८. ५, ७; १६. ३३, ५; २०. ११५, १.
सूनुः ७. ३५, ३.	सूर्य २. १६, ३; २१, १; २; ३; ४; ५; १३. २, ७; १२; १७. १, २६; १६. ७०, १.	सूर्य-केतवः ५. २१, १२.
सनुः ६. १, २; ७. १, २.	सूर्य १३. १, ३२, ५८; २, ५; ६; १६; २२; २३; २६; ३७; १७. १, ६; ७; १६. ६५, १; २०. ७, १; ४७, १६; १६; २०; ५८, ३; ४; ११२, १.	सूर्य-तेजाः १०. ५, २७.
सूनुम् १२. ३, २३; २०. २२, ४; ६७, ३; ६२, १.		सूर्य-त्वक् २. २, २, सूर्य-त्वचम् १४. १, ४१.
सूनृता ३. २०, ३; ११. ७, १३; १२. ५, ६; १६. ७, २; २०. २७, ३; ४५, २; ६०, ४; ७१, ४.		सूर्य-त्वचसः १. २६, ३.
सूनृताम् ६. ६२, २; १०. ६, १३.		सूर्यपत्नी इति सूर्य-पत्नी ८. ६, १२.
सूनृता-वत् ५, २०, ६; १३. १, १; २०.	सूर्यः १. ४, २; ६, २; २६, ५; २. १०, ४; १५, ३; २६, १; ४. ४, २; ५. ६, ७; १३, ३; १७, ६; २३, ६; २४, ६; २८, २; ३०, ११; १५; ६. ८, ३; १२, १; ५२, १; ७५, ३; ८३, १; ६१, २; १००, १; ७. १३, १; ६६, १; ८२, ४; ८. १, ५; १२, २, १४; ५, १८; ६, ८; ६. २, २४; ६(५); ४; १०. १, ३२; ३, १७; ६, ६; ७, १२; ३३; ८. १६; १०, ३४; ११. ४, १२; ७, १४; ८, ३१; १२. १, १५; ५३; ५, ७३; १३. १, ४५; १, ८; १४; ३४; ३५; ४; ५; १५. ६, ५; १६. ४, ४; १७. १, ३०; १८. १, २७; ११. ६, ७; १०, ८; १७, ५; १६, ३; २०, ४; २७, २; ४३, ३२; ४४, ५; ५३, ६; ५४,	सूर्यम् १. ३, ५; ६, ३; २२, १; ३१, ४; २. १०, ८; ३. २०, ४; ३१, ७; ४. ४०, ७; ६. ६०, ३; ६२, ३; ७. ३८, ३; ५३, ७; १०६, ३; ८. ४, २४; ५, ६; ६, १२; ६. १०, ३; १०. १०, २५; ११. ६, १; १२. २, १८; १३. १, २५; ३५; ३६; ५६; २, २; १६; ३२; ४३; १४. २, ३४; १८. २, ७; १८; ५०; १६. १८, ५; २७, ७; २०, ८, १; ११, ६; १७, ५; ३४, ७; ३८. ६; ४७, ६; १३; ५८, १; ६२, ६; ७०, ६; ६१, ५; ११८, ४.
सूनृता-वती ३. १२, २.		सूर्यम् २०. १२८, १.
सूनृता-वते ३. २१, ५.		सूर्यम्-इव ४. २०, ७.
सूनृता-वन्तः ७. ६०, ६.		सूर्य-वतः ६. ५, १८.
सूनृते ८. १०(२), ४.		सूर्य-वर्णः ५. ५, ६.
सूनृते २०. १४२, २.		
सूनो इति १८. १, २४; २०. १०३, ३.		
सूरः ४. २, ४; ६. ६१, १; ७. ७२, २; १३. २, २४; १८. ४, ५८; ५६; २०. ४७, २१; ७६, ५.		
सूर्यः ४. ३३, ३; ४; ७. २६, ७.		
सूराय १३. २, १७; २०. ४७, १४.		
सूरि २. ११, ४; १३. १, २२; १८. ३, ३६; २०. ३४, १७.		
सूरि-भिः ७. ६७, २; २०. ७३, ४.		

सूर्य-श्रुतिः ६. ४६, ३.
 सूर्यस्य ३. १६, ४; २२, ४; ४.
 ३८, ५; ६, १०५, ३;
 १०८, १; ५; ७. ५, ३;
 ११, १; ८२, ५; १०७,
 १; ८. १, १; ४; ६. ६,
 १४; १०. ५, ३७; १३.
 १, २४; १५. ६, ६; १६.
 ६, ३; १८. १, १०; २८;
 १६. २७, ५; २०. ८७,
 ६; १२३, १.
 संख्या १४. १, ६; १०; १२;
 २, ३०.
 सूर्या-इव १४. २, ३३.
 सूर्याः १३. ३, १०; २०. ८१,
 १; ६२, २०.
 सूर्याः-इव २०. १०, २; ५६,
 २.
 सूर्याचिन्द्रमसाभ्याम् ६.
 १२८, ३.
 सूर्याचिन्द्रमसाभ्याम् ११.
 ३, ३४.
 सूर्याचिन्द्रमसौ ८. २, १५;
 ११. ३, २; ६, ५.
 सूर्यात् ५. १२, ८; ८. २, ३;
 ६, २४; १०. ७, ३१.
 सूर्यान् ११. २७, ४.
 सूर्यास्याम् १६. २३, २४.
 सूर्याम् ६. ८३, २; १४. १,
 ६; १५; २६; २, १; २०.
 १४३, १.
 सूर्यामासयोः ३. २६, ५.
 सूर्यामासा २०. १६, १०.
 सूर्याम्-इव १४. १, ५३.
 सूर्याय ६. १०, ३; १८. २,

१३; ४६; १६. ४३, ३;
 २०. ३२, १.
 सूर्यायाः ६. ४, १४; १२. १,
 २४; १४. १, ७; ८; १३;
 १४; २८; ५५.
 सूर्याय १४. २; ४६.
 सूर्ये १. ४, २; ६. ३८, १;
 १०. ४, २२; ११. ५, १३;
 १४. १, १६; १८. १,
 ३५; २०. ३५, १५.
 सूर्ये १४. १, ६१,
 सूर्येण ४. १८, १; ३६, ५;
 १०. १०, १५; १२. १,
 ३३; १४. १, १; १६,
 २६, २; २०. १४२, ३.
 सूर्यणे १. ११, ३.
 सूर्या १. ११, ३.
 सूकम् ७. ८४, ३.
 सूक्ताणाम् ६. १०, ६.
 सूज ५. १६, १; २; ३; ४;
 ५; ६; ७; ८; १०;
 ८. २, ७.
 सूज १. ११, ३; ३. १०, ३;
 ८; ४. १५, ३२; ५. २,
 ३; २७, ११; २८, ४;
 ३०, १४; ६. ५, १; २;
 २६, १; ७. ८६, १; २;
 ६. १, १४; १५; १०.
 ५, ४६; ४७; ११. ६,
 १२; १२. १, २५; १५.
 १२, २; १८. २, १०;
 २०. १०७, ६.
 सूजत् ८. ४, २०.
 सूजत् १२. ३, ४६; २०.
 ७१, ८.

सूजतम् ४. २८, ७.
 सूजताम् १२. १, १०.
 सूजति ७. ५०, ६; १०. १०,
 २४; १६. २६, २; २७,
 ७; २०. ८६, ६.
 सूजतु २. ३५, २; ३. १४,
 २; १४. १, ३४; १६.
 ३१, २.
 सूजत् ६. ६६, २.
 सूजयः ४. २५, ४.
 सूजन्ति ४. २७, ४.
 सूजन्तु ४. १६, ६; ७. १०६,
 ३.
 सूजन्ते १३. १, २५.
 सूजाति ६. ११६, २; १६.
 ३३, १.
 सूजामसि ३. १४, १; ५;
 ७. १२०, १; १४. २,
 ५३; ५४; ५५; ५६; ५७;
 ५८.
 सूजामि १०. ५, १५; १६;
 १७; १८; १६; २०; २१;
 १२. २, ३२; ५५; १६.
 १, ४; ७; २०. २२, १.
 सूजेयाम् १२. ३, ३६;
 १४. २, ३७.
 सूज्यन्ते १२. २, ३६.
 सूगयः ३. १७, २.
 सूतिम् १०. ३, ६.
 सूधः २. ६, ५.
 सून्-जयाः ५. १६, ११.
 सूप् ८. ६, ३३.
 सूपत् ६. १३४, २; १३. १,
 ४६.
 सूप्रम् २०. ८८, २.

सृष्टम् ४. १५, ६.
 सृष्टा १२. ५, १.
 सृष्टाः न. ३, १४.
 सृष्टाः १०. २, २८.
 सृष्टीः १३. १, २५.
 सृष्ट्या ३. २८, १.
 सेकम् २०. ७७, ३.
 सेक्ता-इव २०. न, १.
 सेवते २०. ३०, १.
 सेचिरे न. ६, २३.
 सेतवे ५. ६, ३.
 सेतौ २०. ६१, ४.
 सेदिः न. न, ६.
 सेदिः २. १०, ३; १२. ५,
 २४.
 सेदिम् ४. ११, १०; न. न,
 १८.
 सेदुः १२. १, ३०.
 सेदुः न. ६, १७; १७. १,
 १४; २०. नन, ३.
 सेध ३. १५, ५; ६. १२६,
 १; २.
 सेधतम् ४. २५, ४.
 सेधति न. ३, २६; २०.
 १३५, १३.
 सेधन्ति ५. १६, ६.
 सेधसि ६. न१, १.
 सेधामि न. २, ११.
 सेनया ३. १६, ६; ६. ६३,
 १; न. न, ७; ११. ६, ४;
 ४; ५; ६; १६; १०, ५;
 ६; ७; १८; २१.
 सेना ३. २, ६; ११. १०, ४;
 ३५; १५. ६, २.
 सेना-इव ४. १६; २.

सेनाः ५. २१, ६; ६. ६७,
 १; न. न, १; ११. ६, ३;
 १०, २०; १६. १३, २;
 ७; १५. २.
 सेना-नीः ४. ३१, २.
 सेनाभिः ६. ६६, १.
 सेनाभ्यः ११. २, ३१.
 सेनाम् ३. १, १; ५; ६; न.
 न, २; ५; १३; १४; १५;
 १६; १७; १८; १९. ६,
 ५; १०, १३.
 सेनायाः न. न, १६; १५. ६,
 ३.
 सेनायाम् ५. ३१, ७.
 सेन्याः १. २०, २; ६. ६६, २;
 २०. ५६, २.
 सेन्याम् १८. १, ४०.
 सेवते ११. न, ३३.
 सेवस्व ५. ३०, ५.
 सेहोः ७. ७६, १.
 सैन्धवम् १६. ३८, २.
 सो इति १८. १, २०; २०.
 ७३, ५.
 सोनुः २०. ११७, १.
 सोतौः २०. १२६, १.
 सोत्वासः २०. ६६, २.
 सोमंरी १८. ३, १५.
 सोमं ६. ६६, ३; ११. १, २६.
 सोम १. २०, १; ५. ३, ७;
 ६. ६, २; ३; ७, १; २;
 न. ४, २५; ६. ६, १६;
 १४. १, ४; ५.
 सोमः १. ६, २; २६, ३; ३.
 १०, २; ३६, ३; ३. ३, ३;
 १५, ६; २७, ४; ५. १७,
 २; १८, ६; १४; २१, ११;
 २५, १; २४, ७; २६, १०;

२६, १०; ६. ३, २; ५,
 ३; १५, ३; २१, २; ३६,
 ३; ४०, १; ५१, १; ५३,
 १; ५८, ३; ७३, १; ८७,
 ३; ६६, ३; ६७, १; १०४,
 ३; ७. १८, २; ११४, २;
 ११८, १; न. १, २; ४, ६;
 १२; १३; ५, ५; ७, २०;
 १०(४), १४; ६. १, ११;
 १२; १३; २, १३; ७, २;
 २२; १०, १४; १०. १,
 २२; ४, २६; ६, न; १०.
 ७; १६. ५, १४; ६, ७;
 न, न; ६; १२. ३, ६;
 २४; २१; १४. १, १; २;
 ६; ४६; ५४; २, ४; १५.
 २, २२; १४, ७; १६. ६,
 २; १८. २, १; १४; ३,
 २८; ५५; ४, ६०; १६.
 १०, ७; १३, ६; १७, ३;
 १६, ५; २०, १; २४, न;
 २७, २; ४३, ५३; ४५,
 न; ५८, २; २०. ४, ३;
 ५, १; ५; ३४, १५; न७,
 ५; १३७, ६; १३६, ४.
 सोम-कामम् २०. न, २;
 ११३, २.
 सोम-कामः २०. ३४, १७.
 सोम-जाः ४. ३, ७.
 सोम-जुष्टम् २. २६, २.
 सोम-तेजाः १०. ५, ३२.
 सोम-धानः ७. १११, १;
 ६. १, ६.
 सोम-प १. न, ३; २. १२,
 ३.
 सोमपर्व-भिः २०. ७१, ७.

सोम-पाः १८. ३, ६४.
 सोम-पाः १. २१, १; ५. २५,
 ६; ८. ५, २२; १६. १३,
 ४; २०. २६, ५; ३४, १४.
 सोम-पाः २०. ५७, २; ६४,
 २; ६८, २; ७४, १.
 सोम-पातमः २०. ६३, ७;
 ७१, ३.
 सोम-पान् २. ३५, ३.
 सोम-पाम् २०. ३, ३; २३,
 ५; ३८, ३; ४७, ६.
 सोम-पायिनः १८. ३, ६४.
 सोम-पावा २०. १२, ७.
 सोम-पावर्न ६. २, ३.
 सोम-पीतये १७. १, १०;
 २०. २३, १; २४, ३;
 ६०, ६; ७१, ६; ११३,
 १; १२६, २; १३७, २.
 सोम-पीथम् १८. ३, ४६.
 सोम-पीथे १०. ३, २१.
 सोम-पुत्रे ३. १०, १३.
 सोम-पृष्ठः १३. १, १२.
 सोम-पृष्ठा ७. २७, १.
 सोम-पृष्ठाः ३. २१, १०.
 सोम-पृष्ठाय ३. २१, ६; २०.
 १, ३.
 सोम-पेयाय २०. २६, २.
 सोमम् २. ५, ७; ३. ८, ३;
 १६, १; २०, ४; ४. ६,
 १; ३०, ६; ४०, ४; ६.
 २, १; ३; ७. १४, २;
 ३८, ३; ५६, १; ७६, ६;
 ६४, १; ६७, १; १०. २,
 १६; ७, ३६; १०, ३; ६;
 १२; ३२, १२. १, ३८;
 १३. १, २; २७; १४. १,

३२; १६. १८, ३; २४, ३;
 २०. २, १; २; ३; ४; ३,
 १; ६, २; ५; ७, ४; १३, १;
 २०, १; २४, १; ८; ३२, २;
 ३८, १; ४२, ३; ४७, ७;
 ५७, ४; ६७, ४; ७; ८६,
 १; ८७, ३; ६२, ७; ६५,
 १; ६६, २; ३; ४; १०६,
 २; १११. १; ११७, १;
 १४०, २.
 सोम-योगैः १०. ५, ४.
 सोम-राज्ञीः ६. ६६, १; ८.
 १, १७.
 सोमवत्-भ्यः १८. ४, ७३.
 सोम-वर्चसः १४. १, ३२.
 सोम-शितम् ८. ४, १६.
 सोम-श्रेष्ठानि ११. ६. १५.
 सोमसत्-सर्व ३. १७, ३.
 सोमस्य २. ५, ३; ३. ५, ४;
 ४. ४, ५; २१, ५; ५. ४,
 ७; २८, ६; ६. ६८, १;
 ३; ७. ५८, २; ८१, ३;
 ६. ४, ५; १५; १०. ५,
 ६; ११. १, १८; १४. १,
 ४; २, ३; १५. २, २४;
 १६. ६, १६; ५६, २; २०.
 ६, ७; २४, ४; २८, १;
 ३६, २; ५४, २, ५७, २;
 ६८, २.
 सोमस्य-इव ५. २६, १३.
 सोमाः २०. ६, ४; २४, ५;
 ३१, १; ८६, ८; १३७,
 ४.
 सोमात् ४. १०, ६; ११. ८,
 ६.
 सोमान् २०. ८७, २; ८६, ५.

सोमाय २. १३, २; १२. ३,
 ५८; १५. २, २३; १८.
 ४, ७२, १६. २४, ४;
 ४३, ५.
 सोमान्द्रा ७. ४२, १; २.
 सोमान्द्रौ ५. ६, ५; ६; ७.
 सोमासः २०. ८, ३; १७, ४;
 ७; २१, ६; ६६, ३; ५;
 ११२, ३; १४१, ४.
 सोमिनः ४. २४, ५; १३. १,
 ५६; २०. ३, ३; ३८, ३;
 ४७, ६; ६४, ५.
 सोमिन २०. ५६, ३.
 सोमै ३. २१, २; २०. १, १;
 ६, १; १७, २; ६८, १२;
 ८६, १.
 सोमै ५. ७, ५; १७, ५; ६.
 ८६, १; ६. ४, ६; १०.
 १०, १३; ११. १, २५;
 १४. १, २१; १८. ३, ८;
 १६. ३६, ५; ६; ७; ८.
 सोमैः २०. १७, ६.
 सोम्यः २०. ४७, २; १३७,
 १३.
 सोम्यम् ३. १४, ३; ६. ३,
 १६; १८. ३, १६; २०.
 ६७, ५; ७.
 सोम्यस्य २०. १३४, ४.
 सोम्याः ६. ५, १५.
 सोम्यानाम् १८. ३, ५३.
 सोम्यासः २. १२, ५.
 सोम्यासः १८. १, ४४; ५८;
 ३, १०; ४५; ४, ६२; ६३.
 सोम्येभिः ४. ३४, ३.
 सौत्रामण्या ३. १, २.
 सौधन्वनाः ६. ४७, ३.

सौपर्याम्—स्ताम्.

(५,०६६)

सौपर्याम् १६. २, ५.
 सौप्रजाः-त्वम् २. २६, ३.
 सौभग-त्वाय १४. १, ५०.
 सौभगम् २. ३६, १; ६. ११०,
 १.
 सौभगाय १. १८, २; २. ६,
 २; ३. १२, २; ४. ८,
 ७; ५. २८, १४; ७. १६,
 १; ३५, १; ७३, ८; १०;
 ६. १०, ५; १४. २, ३०;
 १७. १, ६.
 सौभाष्यम् १४. १, ४२; २,
 २८.
 सौमनसः ३. ३०, ७; ७. ६०,
 ३.
 सौमनसम् १३. १, १६; १४.
 १, ४२.
 सौमनसस्य १६. ५५, ३;
 ४.
 सौमनसे ६. ५५, ३; ७. ६२,
 १; १८. १, ५८; २०.
 १२५, ७.
 सौम्येन १६. ४५, ८.
 सौय-वर्चसः ८. १०(५),
 ६; ७.
 सौवश्ये २०. ३५, १५.
 सौश्रवसम् २०. ८७, ४.
 स्कन्ध ५. २५, ८.
 स्कन्धः १०. ७, ३८.
 स्कन्धाः ६. ७, ३; १०. ६,
 २०.
 स्कन्धान् ६. १३५, १; १०.
 २, ४; १२. ५, ६७.
 स्कन्ध्याः ६. २५, ३.
 स्कभायति २०. ६४, ८.
 स्कमिता ७. २५, १.

स्कम् १०. ७, २६.
 स्कम्मः १. १, ६; १०. ७, ८;
 ६२; २६; २८; ३५.
 स्कम्मम् १०. ७, ४; ५; ६;
 ७; १०; ११; १२; १३;
 १४; १५; १६; १७; १८;
 १९; २०; २२; ३६; २०.
 ६४, ४.
 स्कम्मस्य १०. ७, २; २५;
 २६.
 स्कम्मे १०. ७, २६; ३०;
 ३५; ८, २.
 स्कम्मेन १०. ८, २.
 स्त ६. ७३, ३; ७. ६०, ४;
 ६; ७.
 स्त इति स्तः २०. ३५, ८.
 स्तन ६. १२६, २.
 स्तनः ७. १०, १.
 स्तनयोः ५. २१, ६; ८. ७,
 १५.
 स्तनय ४. १५, ६; ५. २०,
 ७.
 स्तनयति ८. ७, २१; ६. १,
 २४.
 स्तनयति १३. ४, ४१.
 स्तनयन् १. १२, १; ६. ६
 (५), ६; ११. ५, १२.
 स्तनयन्-इव २०. ६१, ५.
 स्तनयित्वे १. १३, १;
 ११. ४, २.
 स्तनयितुः ७. ११, १; ६.
 १, १०; २०; ७, १४;
 ११. ७, २०; १५. २,
 २५.
 स्तनयितुना ४. १५, ११;
 ११. ४, १.

स्तनयितुन् ६. २, १५.
 स्तनस्युम् १२. ३, ३७.
 स्तनाः ६. ७, २४; १०. ६,
 २२; १०, ७.
 स्तनान् १२. ४, १८.
 स्तनेभ्यः १०. १०, २०.
 स्तनौ ८. १०(२), ६; ६.
 १, ७; १०. २, ४.
 स्तब्ध १०. ७, ७.
 स्तभान ६. ५, १५.
 स्तभितम् १३. १, ७.
 स्तभामि १८. ३, ५२.
 स्तम् ३. ११, ६; ५. ६, ८; १४.
 १, २२.
 स्तम्ब-जः ८. ६, ५.
 स्तम्बिनीः ८. ७, ४.
 स्तम्बे ८. ६, १४,
 स्तम्मेन १६. ३२, ७.
 स्तरीतवे २. २७, ३; ४.
 स्तयः २०. १२, ४.
 स्तवते २०. ६४, ४.
 स्तवत् ७. २६, २.
 स्तवमानः २०. ३७, ११.
 स्तवान् २०. ६, ३.
 स्तवानः १८. १, ४०.
 स्तवानः २०. ६८, २.
 स्तवाम् १३. २, ३; २०.
 ६५, १.
 स्तविष्यमाणः २०. ३४, १६.
 स्तविष्यते २०. १२७, १.
 स्ताम् ६. ७८, २.
 स्ताम् २. १०, १; ३. ३; ४;
 ५; ६; ७; ८; ३. ४, ५;
 ७, ५३, २; ८. २, १४;
 १८; ६. ४, १०; १०. ६,
 २५.

स्तुमानम् ५. १३, ५.
 स्तोत्र २०. ३७, ११.
 स्तोमासु ११. ८, २४.
 स्तोर्म १२. ३, ३३.
 स्तुक्राम्-इव ७. ७४, २.
 स्तुतः १६. ३, १; २०. १२,
 ६; २७, ४.
 स्तुतम् ११. ७, ५.
 स्तुता १६. ७१, १.
 स्तुत्वा ६. २, २.
 स्तुतः १६. ४, १.
 स्तुमः ३. १५, ७.
 स्तुवतः २०. ५०, २.
 स्तुवताम् १. ८, १.
 स्तुवते २०. १३५, ११.
 स्तुवते ५. ११, ११; २०.
 १७, १२; ५१, १; ८७, ७.
 स्तुवन ४. २८, ३.
 स्तुवन्तः २०. ५०, २.
 स्तुवन्ति २०. ६१, ३; ६६,
 २.
 स्तुवानः १. ८, २.
 स्तुवानम् १. ७, १.
 स्तुवानस्य १. ८, ३.
 स्तुषे १८. १, ३७.
 स्तुषे २०. १४, ३; ६३, ३.
 स्तुष्य ५. २, ७; २०. १०७,
 १०.
 स्तुहि ६. १, १; १८. १,
 ४०; २०. ६६, १.
 स्तुहि ६. १, ३; २०. ५८,
 ३; ६६, २.
 स्तुण्वामह १०. ५, ४२.
 स्तुण्वामि १८. ४, ५१.
 स्तुणीत १२. ३, ३२.

स्तुण्णि ७. ६६, १; १२.
 ३, ३७; १४. २, २३.
 स्तुषीय १०. ५, १५; १६;
 १७; १८; १६; २०; २१.
 स्तेगः १८. १, ३६.
 स्तेनः ४. ३, ५; २१, ७;
 ७. ७५, १; ८. ४, १०;
 १६. ४७, ६; ७; ४६,
 ७; ६; २०. १२७, १३.
 स्तेनम् ४. ३, ४; १६. ५०,
 ५.
 स्तेनैः ४. ३६, ७.
 स्तुय-कृत् ८. ४, १०.
 स्तोयम् ११. ८, २०; १४. १,
 ५७.
 स्तोक्रः ६. १२४, १.
 स्तोक्राः ४. ३८, ६; १२. ३,
 २८.
 स्तोक्रान् २. ३५, २.
 स्तोत २०. ४४, १; ८५, १.
 स्तोता २०. २७, १.
 स्तोतारः ७. ६, ३; १६.
 ४८, ४; २०. ५२, १;
 ५७, १४.
 स्तोतारम् २०. २३, ६; ५५,
 १; ८२, १.
 स्तोतुः ६. २, १; २०. १५,
 ५; ५३, ३; ५७, १३;
 ११६, १.
 स्तोतृ-भ्यः १८. ४, ८८; २०.
 १४; ४; ६२, ४; १२२,
 २.
 स्तोतृणाम् २०. २६, १.
 स्तोत्रम् ५. ११, ८; २०.
 ४५, २.
 स्तोत्राणि ५. ११, ६.

स्तोमन्तु २०. ११०, १.
 स्तोमः २०. २८, ४; ३६, ५;
 ६०, ६; ७१, ६; ७६, १.
 स्तोम-तथासः १८. ३, ४७.
 स्तोमम् ६. ३५, ३; ७. ५०,
 ३; १७. १, ११; १६.
 २७, ३; २०. १३, ३;
 १८, २; ३५, १; ४; ८६,
 १; ६७, २; ११६, २;
 १४०, २; १४३, ६.
 स्तोम-वर्धनः २०. २६, १.
 स्तोम-वाहसः २०. ६८, ११;
 १२०, २.
 स्तोमस्य १६. ४६, ५; ६.
 स्तोमाः ४. २४, १; ८. ६, ६;
 १६; १४. १, ८; २०. ३७,
 १०; ६६, ६; ७०, १३;
 ६३, १; ११०, ३.
 स्तोमासः २०. १०, १; ५६,
 १.
 स्तोमेन २०. १३६, ४.
 स्तोमेभिः २०. १६, २; ५६,
 २; ७१, ६; ७२, १; ६६,
 १.
 स्तोमेषु ८. ६, १६; २०. २३,
 ४.
 स्तोमैः २०. १, ३; २४, ४;
 १०४, १; १३८, १; ३.
 स्तोम्यम् २०. ३१, १, ६५,
 १.
 स्तोषाम् २०. २१, ११.
 स्तोषति ६. ६(५), १; ४; ६;
 ८.
 स्तोतु ६. ४, ११; १३. १,
 २७.
 स्तौमि ४. ३३, ७; २४, ७

२५, ७; २६, ७; २७, ७; २८, ७; २९, ७.	१०; ११; १२; १३; १४; १६, २, २; ४, ७; १६. ६६, १; २; ३; ४.	स्थिरस्य १०. ४, ११. स्थिराणि २०. २८, ३; ३६, ४.
स्त्रियः ४. ५, २; ३६३७, ११; ६. १३८, ५; ६. ६, १५.	स्थान १. ३१, २; ३. ८, ५; ६. २४, ३; ६४, १.	स्थिराय २०. ३१, २. स्थिरे २०. ४३, २.
स्त्रियम् ८. ४; २४; ६, ६; १६; २५.	स्थान ३. १३, २; ६. ६६, २. स्थपतिः २. ३२, ४; ५. २३, ११.	स्थिरेण ६. ६५, ३. स्थिविभ्यः २०. १६, ३.
स्त्रियाः ५. १७, ८; १२. २, ३६.	स्वविरः ६. ४, ३; १६. १३, ५.	स्थुः ७. ५२, २; १३. १, ५६. स्थूणाम् ३. १२, ६; १८. ३, ५२.
स्त्रियाम् ६. ११, २; ७०, १; २, ३.	स्वविरस्य १६. १५, ४. स्वविरौ १६. १३, १.	स्थूणे इति १४. १, ६३. स्थूरम् २०. १४, १; ६२, १.
स्त्रियै ५. ३०, ३.	स्थाः ५. ७, १.	स्थूरि २०. १२५, ३.
स्त्री १. ८, १; ५. १४, ६; ७. ६५, ३; १०. ४, ८; ८, २७; २०. १२६, ६.	स्थाणुम् १०. ४, १; १४. २, ६.	स्थूलमम् ६. ७२, २. स्थूलम् २०. १३६, १.
स्त्रीकृता १०. १, ३.	स्थाणौ १५. २; ४८, ४६; ११. ४६, १०.	स्थूलाः ११. ८, २८.
स्त्रीणाम् ७. १३, १; ८. ६, १३.	स्थात ५. १३, ५.	स्थूलेन २०. १३६, २.
स्त्रीभागान् ८. ६, १६.	स्थातः २०. ६४, ५.	स्थेषुः १६. ४, ७.
स्त्रीषु ६. ११, १; ७. ६०, ३; १२. १, २५.	स्थात्रे ६. ६, १६.	स्तेपनीः १४. १, ३६.
स्त्रैणाम् ४. ४४, २; ८. ६, ४.	स्थापय १२. ३, ३०.	स्तेपयन्ति ५. १६, १४.
स्त्रैसूयम् ६. ११, ३.	स्थापयत ५. २, ६; २०. १०७, ६.	स्तेपयामसि १०. १, ६.
स्थ १. ५, १; ३०, ३; २. १२, २; १४, ५; २४, १; २; ३; ४; ५; ६; ७; ८; ३. २६, १; २; ३; ४; ५; ६; ६. २१, ३; ५०, ३; १०. १, ३०; १२. ३, २४; १८. ३, २०; २५; २६; २७; २८; २९; ३०; ३१; ३२; ३३; ३४; ३५; ४, १६; १७; १८; १९; २०; २१; २२; २३; २४; २६; १६. २७, ११; १२; १३.	स्थापयति ७. ३६, १. स्थापयामसि ४. ७, ४; ५; १०. १, २६.	स्तेपितः ११. ५, २६. स्तेपित्वा ६. ११५, ३. स्तेपि ११. ८, ११; १२. स्तेपिभ्यः २. ३३, ६; २०. ६६, २२.
स्थ ३. १, २; १३, १; ७. ७५, २; १०. ५, १; २; ३; ४; ४; ५; ६; ७; ८; ९; १०; ११; १२; १३.	स्थाम १. ३२, २; १२. ४, २६; ३०.	स्तेपानि १२. ५, ६६.
	स्थाभिः ४. ७, ५; ६. ७७, १; ७. ६६, १.	स्तेपान्-इव ७. ५०, ६.
	स्थालीपाकः २०. १३४, ३.	स्तेपिहि १६. ४५, ५.
	स्थालीम् ८. ६, १७.	स्तेपिषा-इव ८. ६, २४.
	स्थिरः २०. २०, ५; ५३, ३; ५७, ८; १३; ६०, १.	स्तेपितीः २०. १३७, ७.
	स्थिर-धाम्नः १०. ४, ११.	स्पन्दिता ८. ६, १७.
	स्थिरम् ५. २, ४; २०. ८६, १; १०७, ७.	स्पन्दम् २०. ८६, ५.
		स्पर्णी ५. ५, ३.
		स्पर्त ६. ५६, ३; १०. ४, ८.

(५,०७२)

स्पर्धमाना—स्योनाः.

स्पर्धमाना ३. २, ६.
 स्पर्धितुम् १६. २२, २१;
 २३, २०.
 स्पर्शः ४. १६, ४; ५. ६, ३;
 १८. १, ६.
 स्पर्शम् २०. ४३, १; २; ३.
 स्पर्शाः २०. १६, ३.
 स्पर्शहि ८. ३, ७.
 स्पर्धाः २०. २६, ३; ७०,
 १६; १०५, १; २.
 स्पर्श ८. ३, २.
 स्पर्शत् १. ३३, ४; १६. १,
 १२.
 स्पर्शन्ताम् १२. २, ३१; ३,
 ३०; १८. ३, ५७.
 स्पर्शस्य १३. १, ३४; १४.
 १, २१; ४०.
 स्पर्शात् १४. २, ५१.
 स्पर्शामि ४. ३०, ७.
 स्पर्ष्टः २. २, २.
 स्पर्ष्टयन्ति २०. १८, ३.
 स्फातिः २. २६, ३.
 स्फातिम् २. २५, ३; ३. २४,
 ३; ५; ७; ६. ६(३), ३;
 १६. ३१, १; ८; ६.
 स्फातिमत्तमा ३. २४, ६.
 स्फुरत् २०. ६३, ५.
 स्फुरतम् १. २७, ४.
 स्फुरति १३. १, ५६.
 स्फूर्जति १२. ५, २०.
 स्फूर्जयन् ८. ३, ११.
 स्फयो ११. ३, ६.
 स्म १. ८, २; ३. १७, ७; ४.
 ४, ३; १८, ४; ५. २२,
 १०; ११; ६. १२३, १;
 २१, ८. ३, २३; १०.

४, ६; १२. ३, ३; ४६;
 १८. १, ३३; २०. १४,
 ४; ३१, ५; ३४, ५; ६२,
 ४; ६७, १; ७६, ८; ८३,
 २; १२६, १०.
 स्मः १८. ४, ८७.
 स्मरः ६. १३०, १.
 स्मरतात् ६. १३०, २.
 स्मरम् ६. १३०, १; २; ३;
 १३१, १; २; १३२, १;
 २; ३; ४; ५.
 स्मरात् ६. १३०, ३.
 स्मरेथाम् ८. ४, ७.
 स्मसि २०. ७४, १.
 स्मसि ७. १०, ३; १६. ४८,
 ४; २०. १५, ५.
 स्य ३. ७, २; ५. २७, १०;
 ६. १२१, १; ७. १८, १;
 २०. ७७, २.
 स्यः २०. १२, ३; ६७, ६;
 १२६, २२.
 स्यतम् ७. ४२, २.
 स्यन्ति ६. २, १४.
 स्यन्दुते १२. २, २७.
 स्यन्ध्वम् ११. ४०, २.
 स्यन्दमानाः २. ५, ६; ३.
 १३, ३; ४.
 स्याः ८. १, १६; १८. १, २४;
 स्यात् ३. २८, २; १०. ७,
 २४; ८, २३; ११. ४,
 २१; १२. ४, १३; ४०;
 २०. २७, १.
 स्याम् २०. २७, २.
 स्याम् ६. ५८, १; १६. ४६,
 ३.
 स्याम ५. ८, ६; २०. ६८, ६.

स्याम् ३. १०, ५; ७; १६,
 ३; ४; ५; ५. ३, ५; ६.
 ३६, २; ४७, १; २; ५५,
 २; ३; ५८, २; ६२, २;
 ७६, ३; ६३, ३; ११७,
 ३; ७. २०, ३; ६; ३४,
 १; ६८, २; ७३, ११;
 ७६, ४; ८०, ३; ८३, ३;
 ६१, १; ६२, १; ६३, १;
 १०६, ६; ६. १०, २०;
 १०. ६, २७; ११. १, १२;
 २१; १२. १, ६२; ३,
 १७; १३. १, २२; २,
 ३७; १४. २, ३६; १७.
 १, ८; ११; १८. १, ५८;
 ३, १७; ४, ६६; २०. ३७,
 ७; ७६, २; ८८, ६; १२५,
 ६; ७.
 स्यामि ३. १६, २; ५; ४.
 १६, ६; ६. ६३, १; १४.
 १, ५७; १६. ६८, १.
 स्युः ४. २१, १.
 स्युरिति स्युः २०. ८१, १;
 ६२, २०.
 स्योनम् २. १०, ७; ५. १२,
 ४; ८; १२. १, ११; १३.
 २, ७; १४. १, १६; ३०;
 ४७; ६१; ६३; २, १२;
 ५१; १८. २, २६; ५३;
 ४, ८४; १६. ६१, १.
 स्योना ३. १२, ५; २८, २;
 १२. १, ५६; १३. १,
 १७; १४. १, ६४; २,
 १७; १८; २६; २७;
 १८. २, १६.
 स्योनाः १. ३३, १; ३; ४

छ. २७, ३; १२. १, ३१;
 १४. २, ६; १८. २, २१;
 ३, ११; ५१.
 स्योनात् १४. २, ४३.
 स्योनात् १२. २, २७.
 स्योनानि म. २, २२.
 स्योनाम् १२. १, १७.
 स्योने इति छ. २६, २; ३;
 ४; ५; ६.
 स्योनौ द. १४०, ३.
 स्युसयामि द. ३, २.
 स्युक्त्यः २. ११, २.
 स्युजः २०. १२७, ३.
 स्युजम् १. १४, १; म. ६,
 २६.
 स्युवताम् द. ७६, २.
 स्युवति प. १६, म.
 स्युवन्ति प. २४, १.
 स्युवन्तु १. ६, १; १५, १;
 २. २६, २; ३; १६. १,
 १.
 स्युः ११. २, १६; २६.
 स्युक्त्यः म. ५, ४.
 स्युक्त्यम् म. ५, ७.
 स्युक्त्येन म. ५, म.
 स्युमः ११. ३, ४५.
 स्युवयामसि १. १५, ३; ४.
 स्युष्टम् ११. २, १.
 स्युमाः म. ६, १०.
 स्युक् द. ६(१), १७.
 स्युक्-कारेण द. ६(२), ५.
 स्युचः प. २७, ५; १६. ४२,
 २, २०. १०३, ३.
 स्युचः १२. ४, ३४; १८. ४,
 २.
 स्युचम् ११. १, २४.

स्युचा द. ११४, ३, ६. ६
 (२), ५.
 स्युतात् १३. २, ४.
 स्युवा-इव २०. ३१, ४.
 स्युवेण १८. ४, ६.
 स्योतस्यानाम् १६. २, ४.
 स्योत्याः १. ३२, ३; ४. २६,
 ४; द. ६८, ३; म. ७,
 १५; १०. १, १६.
 स्यु द. १२१, १; ७. म३, ४.
 स्युः १. १६, ३; २३, २; प.
 ३०, २; ७. १०८, १.
 स्युः २. ५, २; ११, ५; ४. ११,
 ६; १४, २; ३; ४; ५; ६;
 २३, ६; प. २६, १२; द.
 ३१, १; २; ३३, १; ३५,
 ३; ४७, ३; ७. १, २;
 १४, २; ११०, २; म. ६,
 १४; द. ५, १७; १०. ६,
 १३; म. १; २१; ११. १,
 ३७; ५, १४; १६; १२.
 ३, ३४; १३. १, ७; १६;
 २, २०; ३६; ४, १; १६.
 म. १; ५; ६; ७; म. ६;
 १०; ११; १२; १३; १४;
 १५; १६; १७; १८; १९;
 २०; २१; २२; २३; २४;
 २५; २६; २७; २८; २९;
 ३०; ६, ३२; १८. २,
 १६; ४५; १६. १३, १;
 १५, ४; ५२, ३; ५६, ३;
 ५; २०. ११, म. १७, ४;
 ६; ४७, १७; ४८, ४; ५;
 ५०, १; ६१, ५; ६२, ७;
 ६; ७२, २; ७५, १; ७७,
 ४; ६०, ३.

स्वः-गाः द. १२२, २; द. ५,
 १६; ७, ४; १०. २, ३१;
 ११. १, ७; २०; २८; ३१;
 ३५; १२. ३, ५; ३८; ४१;
 ४२; ५४; १३. ४, २३;
 १८. ४, १४; १६. ३, ३.
 स्वः-गाम् २. ३४, ५; ४. ३४,
 म. ६, ५, २६; ६(१), ६;
 ६(२), ६; १०. म. १८;
 ६, ५; ११. १, ३०; १२.
 ३, १६; १७; २६; ३४;
 ४४; १३. २, ३८; ३, १४;
 १८. ३, ४; ४, २; ३, १०,
 १३; ५६.
 स्वः-गाः १२. ३. ६; १८. ४,
 ४; ५.
 स्वः-गान् १२. ३, ४२.
 स्वः-गो ४. ३४, २; ५; ६; ७;
 द. १२०, ३; द. ५, १८;
 १८. ४, ६४; १६. ६१,
 १.
 स्वः-जित् १३. २, ३०.
 स्वः-जितम् १७. १, १; २;
 ३; ४; ५.
 स्वः-वृशम् २०. १२१, १.
 स्वः-नरम् २०. ६३, म.
 स्वः-पतिम् २०. ५४, २.
 स्वः-वती १८. १, २०.
 स्वः-वान् २०. ३६, ३; ५५,
 २.
 स्वः-वित् ४. २४, २.
 स्वः-विदः २. १, १; १३. १,
 ४७; ४८; ४६; ५०; ५१;
 १६. ४१, १; २०. १७,
 १.
 स्वः-विदम् १७. १, १५; १८.
 ४, २६.

स्व-विधि १७. १, ११.
 स्व-विदे ४. २४, ४.
 स्व-साः ५. २, ८; २०. ११,
 ४; १०७, ११.
 स्व-साता २०. ७२, ३.
 स्व-साम् २०. ३५, ३.
 स्व-चमशकेम् २०. १३६, ५.
 स्व-जः ३. २७, ४.
 स्व-जः-इव ५. १४, १०.
 स्व-जन्ते २०. १७, १.
 स्व-जम् १०. ४, १७.
 स्व-जस्य १०. ४, १०; १५.
 स्व-जस्व ६. ८, १; १३३, ५;
 १२. ३, १२; १४. २,
 ३६.
 स्व-जातौ १८. १, १५; १६.
 स्व-जामहे २०. ६५, ३.
 स्व-जाय ६. ५६, २; १२. ३,
 ५८.
 स्व-जे १६. १, ३.
 स्व-तवः २०. ३६, ६.
 स्व-दन्तु ५. १२, १०.
 स्व-दय ५. १२, २.
 स्व-दयतु ५. २७, ११.
 स्व-धया ४. ३४, ८; ६. ६६,
 ३; ६. १०, १६; १२. १,
 २२; ५, ३; १३. २, ३;
 १८. १, ४५; ५४; २,
 ३५२; ३, ४२; ४, ६५.
 स्व-धा ३. २६, १; ६. ५३, १
 ६७, २; १०. १०, १७;
 ११. ७, १३; १३. ४,
 २३; १८. २, ५२; ४,
 ७१; ७२; ७३; ७४; ७५;
 ७६; ७७; ७८; ७९; ८०;
 ८५.

स्व-धाः ४. १, ३; १८. २,
 २०.
 स्व-धा-कारम् १५. १४, १३.
 स्व-धा-कारेण १२. ४, ३२;
 १५. १४, १४.
 स्व-धा-प्राणा १०. १०, ६.
 स्व-धामिः ७. ५०, ६; ८. ४,
 ६; ६. १०, ८; १८. १,
 ४३; ३, ८; ४, ३६; ४७;
 १६. १०, ३; ४६, २;
 २०. ८६, ६.
 स्व-धाम् २. २६, ७; ८. १०
 (४), ७; ८; १२. २, ३२;
 १८. ४, ३६; १६. ३१,
 ३; २०. ४०, ३; ६३, ३;
 ६६, १२; १२४, ६.
 स्व-धायाम् १८. ३, ३०; ३१;
 ३२; ३३; ३४; ३५.
 स्व-धा-वः १८. १, २६; २०.
 २३, ८.
 स्व-धा-वत् ७. ४१, २.
 स्व-धा-वतीः १८. ३, ६६;
 ४, २६; ४३.
 स्व-धा-वन् ५. ११, ४; ५;
 ११.
 स्व-धा-वन्तः १८. ३, ६८;
 ४, २५; ४२.
 स्व-धा-वन्तौ ५. ६, ८.
 स्व-धा-वान् ४. १, ७; १८.
 २, १०.
 स्व-धितिना ६. १४१, २.
 स्व-धितिम् १८. २, ३५.
 स्व-धिते ६. ४, ६.
 स्व-धित्या १२. ३, ३३.
 स्व-धे ८. १०(२), ४; १०(४),
 ५.

स्व-धे १०. १०, १८.
 स्व-धे-तमम् २०. ३५, ६.
 स्व-पतिः २०. ६४, १.
 स्व-पतिम् ८. ६, १६.
 स्व-पन् ६. ११५, २.
 स्व-पन्तः ६. ४५, २; ६६, ३.
 स्व-पन्तीम् ८. ६, ८.
 स्व-पन्तु ४. ५, ६.
 स्व-पाः ३. ३, १.
 स्व-पिण्यामसि १६. ४७, ६.
 स्व-प्त ४. ५, ६५.
 स्व-प्त ४. ५, ७.
 स्व-प्त ६. ४६, १; २३; १६.
 ५, १; ३२; ४३; ५३;
 ६३; ७३; ८; १०३; १६.
 ५६, २; ६; ५७, ३; ४३.
 स्व-प्त-अभिकरणेन ४. ५, ७.
 स्व-प्तः ११. ८, १६.
 स्व-प्त-नशतः २०. १२६, २१.
 स्व-प्तम् १०. २, ६; ३, ६;
 १६. ५६, १; ४.
 स्व-प्त-मुखाः ७. १००, १.
 स्व-प्त-या ५. ७, ८.
 स्व-प्ताय १६. ५६, ३; २०.
 १८, ३.
 स्व-प्ते ७. १०१, १; ८. ६, ७.
 स्व-प्ते-दुस्वप्नम् १६. ६, ६.
 स्व-प्तेन २०. ६६, १६.
 स्व-प्न्यात् ७. १००, १.
 स्व-प्दी-इव २०. ५२, २; ५७,
 १५.
 स्व-भानवः १८. ४, ६१.
 स्व-भ्यसाः ११. ६, १७.
 स्व-म् ४. २१, २; ६. ४६, १;
 ६२, ३; १०७, १; २; ४;
 १०. १, २५; ८, २५

१२. ४, ३; ६; १५; १४. १, २७; १८. २, २६; ३, ३८; २०. १२, २, स्वयम् ४. ३०, ३; १२. ४, २७; १४. १, ५७; १५. ११, २; १२, २.	स्वरीणाम् २०. १६, ७. स्वरूणाम् १६. १०, ७. स्व-रोचिः ४. ८, ३. स्वर्गे २०. १२६, ८. स्वयम् २. ५, ६; ८. ४, ४; २०. ३५, ६. स्वल्पिका २०. १२६, ३. स्व-वसुम् ७. ५०, ३. स्व-वान् ७. ६१, १; ६२, १; २०. १२५, ६; ७. स्वसरम् ७. ५८, १. स्वसरे ७. २२, २. स्वसरेषु २०. ६, १; ४६, ४. स्वसा ३. ३०, ३; ५. ५, १; ७; ६. १००, ३; १३३, ४; ७. ४६, १; १८. १, १२. स्वसा २०. १३६, ६. स्वसारः ६. ६, ३. स्वसारम् १. २८, ४; ३. ३०, ३; १८. १, १४. स्वसारौ ५. २, ६; २०. १०७, १२ स्वसुः १८. १, १४; १६. १२, १. स्वस्तये २. १३, ३; ३५, ३; ४. ३३, ८; ५. १, ८; ६. ६६, ३; ७. ६, ३; ८५, १; ८. १, २; १६; १२, २, ११; १७. १, १०; २५; २६; १८. ४; ३०; १६. २४, ६; ३३, ४; ४५, ६; ७; ८; १०. स्वस्ति १. ३०, २; ३१, ४; ४. १४, ५; ६. ४०, २; ४८, १; २; ३; १२३, १; २; ७. २८, १; ५३, ४; ८६, १; ८. २, ११;	१०. ६, ३५; ११. २, ३१; १२. १, ३२; १३. २, ५; ६; १६. ४, ६; १८. २, १२; १६. ८, ३; ७; १५, ४; २०. ४६, २; १२८, १५. स्वस्तिः ७. २८, २. स्वस्ति-गाम् २०. ६२, १३. स्वस्तिनम् १६. ८, ३. स्वस्ति-दाः १. २१, १; ७. ६, २; ८. ५, २२. स्वस्ति-भिः ३. १६, ७; १६. ११, ५; २०. १२, ६; १७, १२; ३७, ११; ८७, ७. स्वस्तिम् २०. ३६, १०. स्वस्ति-मत् २०. ८३, १. स्वस्ति-वाहनम् १४. २, ८. स्वस्त्यनम् १६. ६, १२. स्वस्त्या ७. ६७, २. स्वस्त्या २०. १२८, १०; ११. स्वस्त्यं १२. ४, १०. स्वस्त्रा ५. २२, १२. स्व-होता ७. ७३, ५. स्वा २. २४, १; २; ३; ४; ५; ६; ७; ८; ४. ३२, ५; ७. ६७, ४; २०. ७३, ५. स्वाः ५. १, ३; १०. ३, ८; १८. १, ५०; २, २६; ३, ७३. स्वात् १४. २, १६. स्वाति १६. ७, ३. स्वादीयः ५. २, ३; ६. ६(३), ६; २०. ६५, २; १०७, ६. स्वाद्यु ५. १८, ७; ६. ६, २०; २१.
--	---	---

स्वाङ्कः १८. १, ४८; २०. ४,
३.

स्वाङ्कना ५. २, ३; २०.
१०७, ६.

स्वाङ्क-संमुद्रः ७. ६०, ४.

स्वाङ्क-संमुद्रः १३. १, ३.

स्वाङ्कोः ५. २, ३; २०. १०७,
६; १०६, १.

स्वाङ्कान् २०. ७६, ६.

स्वान् ३. १६, ३; ११. ५,
१५; ६, ८; १८. २, २३.

स्वानाम् ६. २, १४.

स्वापर्य ४. ५, २; ७.

स्वापर्य ४. ५, ७; २०. ७४,
३.

स्वापर्यामसि ४. ५, १; ३.

स्वापर्याशकः २०. १३५, ३.

स्वाम् ५. २, ६; ६. ८३, ४;
११०, १; ७. ६७, ५;
१०. ५, २३; ११. २,
२६; २०. १०७, १२.

स्वाय ६. ४३, १.

स्वायाः ३. २८, ५; ६. १२०,
३.

स्वायुक् १८. १, ३२.

स्वायुरः २०. १२८, ११.

स्वासस्थे इति सु-आसस्थे
१८. १, ३६.

स्वाहा २. १६, १; ३; ३; ४;
५; १७, १; २; ३; ४; ५;
६; ७; १८, १; २; ३;
४; ५; ३. २६, १; २; ३;
४; ५; ६; ७. ३८, ७;
३६, २; ४; ६; ८; ५. ६,
५; ६; ७; १०; ६, १; २;
३; ४; ५; ६; २१, १२;

२४, १; २; ३; ५; ५; ६;
७; ८; ९; १०; ११; १२;
१३; १४; १५; १६; १७;
२६, १; २; ३; ४; ५; ६;
७; ८; ९; १०; ११; १२;
२७, १२; ६. १०, १; २;
३; ४८, १; २; ३; ८३,
४; ८४, २; ७. ८२, २;
६७, ५; ६; ८; ६८, १;
८. १, १४; ८, २४; ६.
३, २५; २६; २७; २८;
२९; ३०; ३१; १४. २,
५२; १६. ४, १; १७, १;
२; ३; ४; ५; ६; ७; ८;
९; १०; २२, १; २; ३;
४; ५; ६; ७; ८; ९; १०;
११; १२; १३; १४; १५;
१६; १७; १८; १९; २०;
२३, १; २; ३; ४; ५; ६;
७; ८; ९; १०; ११; १२;
१३; १४; १५; १६; १७;
१८; १९; २०; २१; २२;
२३; २४; २५; २६; २७;
२८; २९; ४२, २; ४३,
१; २; ३; ४; ५; ६; ७;
८; ४५, ६; ७; ८; ९; १०;
५२, ५; २०. ८, ३.

स्वाहा-कारम् १५. १४, १५.

स्वाहा-कारेण १५. १४, १६.

स्वाहा-कृतः ७. ७३, ३.

स्वाहा-कृतम् ५. १२, ११.

स्वाहोभ्यः ६. ३, २५; २६;
२७; २८; २९; ३०; ३१.

स्वित् ६. ६, ४; ७; १७;
१०. २, २; ४, १८; ७,
४; ५; ६; ७; १०; ११;

१२; १३; १४; १५; १६;
१८; १९; २०; २२; ३६;
१३. १, ४२; १८. १,
३३; २०. ६१, १; १२६,
२०.

स्विन्नः ६. ११५, ३.

स्वे २. ६, ३; ३. ४, ६; २५,
१; ७. ६७, ३; ६. ४,
१६; ११. १, २२; २०.
२४, ८.

स्वेदाञ्जि-भिः २०. ६१, ६.

स्वेन २. ६, ४; ६. १४२, १.

स्वेभिः ७. ५२, १; २०. ६१,
११.

ह

ह २. २७, ३; ३. १०, १; ४.
२०, ३; ३४, ४; ५. १,
६; ५, ७; ८; ९. २१, १;
३; २४, १; ७. ५, १;
३८, ५; ७६, ५; ८. ६,
५; १८; १०. ७, ३१;
८, ३२; ५; २८; ४०;
११. ४, १०-१३; १५;
५, ७; १६; ८, ६; ९;
१२. ४, २२; ३०; ३१;
३४; ३६; १३. १, ५५;
२, २७; ३, २१; २६;
१७. १, १६; १८. १, ४;
२६; २, १; ४८; ३, २६;
१६. ६, १२; १३. ४८,
१; ४६, ७; ५३, ५; ६;
८; ९; ५४, ३; २०. १५,
२; ३६, ६; ३७, २; ७७,
४; ११८, १; १२६; २३;
१३७, १; १०; ११; १४;
३; १४३, ७.

ह २०. १३५, ६.
 ह २०. १३५, ६३, ७२.
 हंसः ११. ४, २१.
 हंसम् १०. म, १७.
 हंसस्य १०. म, १म; १३. २,
 ३म; ३, १४.
 हंसाः म. ७, २४; ११. २,
 २४; १२. १, ५१.
 हंसात् ६. १२, १.
 हंसि १. १६, ४; २०. ६३,
 ७; ११७, ४.
 हंसि ११. २, २५; २०. २१,
 ७; ३७, ४.
 हंसैः इव २०. ६१, ३.
 हत ३. १६, ७; ५. म, ४;
 १२. २, ४७.
 हतः २. ३२, ४३; ५. २३,
 म; ११३; ७. ५६, १;
 ११०, १; ११. ६, १६;
 २०. १३१, १६.
 हत-भ्राता २. ३२, ४; ५.
 २३, ११.
 हतम् ६. ५०, १; म. ४, १;
 ७; १०. ७, ४०; २०.
 १२६, १म.
 हतम् म. म, १७; १म, १४.
 २, ६.
 हत-माता २. ३२, ४; ५.
 २३, ११.
 हत-वर्चसः १. १७, १.
 हत-वर्चाः १२. २, ३७.
 हत-स्वसा २. ३२, ४; ५.
 २३, ११.
 हताः २. ३२; ५; ५. २३, २;
 ४; १२; १०. ४, १२; १३;
 २०; २०. १३७, १.

हतान् ११. १०, २३; २४.
 हताम् ७. ७०, ३.
 हतासः २. ३२, ५३; ५. २३,
 १२२.
 हते ३. १३, १; ११. ६, ७;
 १४.
 हत्वा ४. १०, २; १६. ३६,
 ४; २०. ३४, ३.
 हत्वाय ४. ३१, २; २०. ६३,
 २; १२४, ५.
 हत्वी २०. ११, ६.
 हनः २०. ५६, ३.
 हनः ७. ७६, ५.
 हनत् २०. १३२, ६; १०.
 हनत् २०. १३२, १०.
 हनत् २०. १३२, ११.
 हनत् ५. १४, ४; १०. १, ५.
 हनत् १६. ४६, ६.
 हनन् म. म, १४; १५.
 हनव्याम् ६. ४३, ३.
 हनाथ १४. १, ५६.
 हनाम म. म, १; ११. ६, २३.
 हनाव ४. ३२, ६.
 हनिष्यति ११. ३, ३६; ४०
 ४२; ४७.
 हनिष्यसि ११. ३, ४म.
 हनु इति १. २१, ३; ६. ५६,
 ३; १०. ६, १३; १६.
 ४७, म.
 हन्त ११. म, २२.
 हन्तु ७. ७७, २.
 हन्तवे २०. १६, ५; ६; ४७,
 १; ७२, ३; १३७, १२.
 हन्तुवै ४. ३०, ५.
 हन्ता १. ७, १; ३. १०, १२;
 ४. १६, ३; ५. १म, १४;

२०. ३४, १०; ६४, ३.
 हन्तारम् ७. ७१, १; म. ३,
 २२.
 हन्ति ५. १म, ४; ५; ७. ५०,
 १; म. ३, ११; ४, १२;
 १३३; १४. २, २४; २०.
 ५१, २; म. ५; ६०, ३;
 ६६, १३.
 हन्ति ५. १६, ४; म; ६. ४,
 १७; ५, ७; ११; १०. १,
 २७३; ४, ५; १४. २, ४१;
 २०. ६६, ४.
 हन्तु म. म, ३; ४; १०. १,
 १६; १३. १, २६.
 हन्तु २. ३, ६; ३२, १३; ३.
 ६, १; ४. ३, ५; ५. २६,
 १०; ३१, १२; ६. ६७,
 २; १३४, १; ७. ७०, १;
 ११४, २३; म. ३, ४; ४,
 १६; ७, १४; म, १६;
 ११. ६, २०; १०, २७;
 १२. ३, १४; १३. १,
 २म; १४. २, १६; १६.
 ४४, २.
 हन्मः १. १म, ३; म. ६, ४.
 हन्मसि म. २, १२; ६, ५.
 हन्मि २. ३१, ३; ५; ३२, ३;
 ४. ३६, ४; ४०, १; २;
 ३; ४; ५; ६; ७; म; ५.
 १३, ४३; २३, १०; ६.
 म, २; ५६, ३; म. ५, म;
 १०. ४, ६; ११. १०,
 १३; १२. २, ५म.
 हृन्त्यताम् ५. २३, ७.
 हृन्त्यताम् ५. २३, ७; ६. ७०,
 १; २; ३०

हृन्त्यते १. २०, ४.
 हृन्त्यन्ताम् ८. ८, ११.
 हृन्त्यन्ते १४. १, १३.
 हृन्त्यमाना ५. १८, ११; १२.
 ५, २५.
 हृन्त्या ६. ५६, ४.
 हृन्त्येः १०. २, ७; ८.
 हृन् २. १६, २; २०, २; २१,
 २; २२, २; ४. १४, ७;
 १८, ४; ५. २०, ६; ६.
 ६(२), २; १२. ३, ३१;
 ३६; १४. २, २१.
 हृन् २. १६, २; २०, २; २१,
 २; २२, २; २३, २; १८.
 २, ३६; ३, ७१; १६.
 २७, ६.
 हृन्णाय १. २८, ३; ४. १७,
 ३.
 हृन्त २. २३, २.
 हृन्ति ६. ६(२), ३; ६(५),
 २; ५; ७; ६२; १४. १,
 ३०.
 हृन्ति २०. १३६, १०.
 हृन्तः १६. ५५, ६.
 हृन्ति ८. १०(३), ८.
 हृन्तु १४. १, ३६; १६.
 ४५, ४.
 हृन्तः ६. २२, १; ६. १०,
 २२; १३. १, २४; ३६;
 ४३; ३, ६; १६; २०.
 २२, ५; ३१, १; २२;
 ७७, १; ६२, २.
 हृन्ते ५. ११, १; २०. ३२, १.
 हृन्तः २. २, २.
 हृन्ता २. १२, ४; ५. ५, ४;
 ६. ६३, २; ८. ३, ४;

१०; १३; १५; १०. ५,
 ४६; १८. २, ५८; १६.
 ६५, १; ६६, १.
 हृन्ति २०. १२७, ६.
 हृन्त ४. १८, २.
 हृन्त ११. ४, १८; १६.
 हृन्तः २. १३, ५.
 हृन्तः ६. ११७, २.
 हृन्तसि ५. १४, ८.
 हृन्ति २. २६, ५; ३. ११,
 २; ५. ३१, १; २; ३;
 ४; ५; ६; ७; ८; ६; ८.
 २, २; १०. ५, ५०; १२.
 २, ७; ६; ४३; २०.
 ६६, ७.
 हृन्ति-अश्व ५. ३, ८; ११;
 २०. २५, ७; ३३, २;
 ३७, ४; ११७, १; २.
 हृन्ति-अश्वः २०. ३४, १७.
 हृन्ति-अश्वम् २०. १४, ४;
 ६२, ४.
 हृन्तिः १६. ६५, १; २०. ३०,
 ३२.
 हृन्ति-केश २०. ३०, ५.
 हृन्ति-केशः २०. ३१, ३.
 हृन्तिकिका २०. १२६, ३.
 हृन्तिकिके २०. १२६, ४.
 हृन्ति-जात २०. ३०, ५.
 हृन्तिः ३. ७, २.
 हृन्तिः ३. ७, १; ५.
 २१, ७; ६. ६७, ३.
 हृन्तिणी हृत्ति २०. ३१, ४२.
 हृन्तिणीः १०. ८, ३; १८.
 ४, ३४.
 हृन्तिणीम् १०. २, ३३.
 हृन्तिः १०. ३, ३; ८, ३;
 २०. ३०, ३; ४; १२६,
 ३.

हृन्तिः १०. ८, ४०; १३.
 २, ४; ६; ७; ८; ११;
 २३; २८; ३, १७; २०.
 १५, ३; ४७, २०; १२३,
 १; २.
 हृन्ति-भे-षजम् ४. ६, ३.
 हृन्तिम् ५. २८, ६; ७. ६६,
 १; ११. २, १२; ३, ८.
 हृन्तिः १. २५, २; ३.
 हृन्ति-स्रजः १०. ८, ३१.
 हृन्तिता ६. २०, ३; २०.
 ३०, ३; ७३, ५.
 हृन्तिताः ४. ३७, ५; १०.
 ८, ३१.
 हृन्तिताम् ५. २२, २.
 हृन्ति ५. २८, १.
 हृन्तिने ५. २८, ५.
 हृन्तिनेभिः ६. ४६, २.
 हृन्तिनेभ्यः १६. २२, ५.
 हृन्तिनौ १५. २, ५; १३; १६;
 २५.
 हृन्ति-पाः २०. ३१, ३.
 हृन्ति-प्रिय २०. २३, ८.
 हृन्ति-भिः ७. ११७, १; २०.
 ३०, १; २; ३१, २; ३.
 हृन्ति-भ्याम् २. ५, १; ३.
 १, ४; २०. १२, ३; ७;
 २३, १; २४, १.
 हृन्तिम् २०. ३०, २.
 हृन्तिमन्यु-सायकः २०. ३०,
 ३.
 हृन्तिमा १. २२, १; १६.
 ४४, २.
 हृन्तिमार्गम् १. २२, ४२; ६.
 ८, ६.
 हृन्तिम्-भुरः २०. ३०, ४.

हरि-वः २०. ३२, ३; ३३,
१; ३६, ३; ३७, ७;
८४, ३.

हरि-वन्तम् ७. ६७, २.

हरि-वन्तम् २०. ३०, २;
३१, २.

हरि-वर्षसम् २०. ३०, १.

हरि-वान् २०. ३१, ५; ५६,
३.

हरि-शिप्रः २०. ३०, ४.

हरि-शिप्रम् २०. ३२, २.

हरि-श्मशारुः २०. ३१, ३.

हरि-श्रियम् २०. ६१, १.

हरी इति २०. ३, २; २६, ५;
२६, २; ३०, १, ३; ३१,
१; २; ३; ४; ३७, ६; ३८,
२; ४७, ८; ११; ५६, ३;
६६, २; १०; ७३, ४;
८६, १; ६४, २; ६६,
१; १००, ३.

हरीणाम् २०. ६४, ५.

हरेः १०. ८, १८; १३.
२, ३८; ३, १४.

हर्मि २०. ३५, १.

हर्म्यम् ४. ५, ५; १८. ४,
५८.

हृय १०. ६, ३५; २०. ६,
३; ७, ४; १५, ४.

हृयति १. ८, २; ३. ३०,
१; ५. ७, ६.

हृयतः १८. १, ३३; २०.
१५, २; ३०, ४; ३१, ५.

हृयतम् २०. ३०, १; ५;
३३, १.

हृयतम् १. ७, ३.

हृयतस्य २०. ३१, ४; ५.

हृयता २०. ३१, १.

हृयते २०. ३१, १.

हृयन् २०. ३२, २.

हृयन्तम् २०. ३२, २.

हृयन्तु ३. ८, १.

हृयमाणः २०. ३२, १.

हृयसि २०. ३०, ५; ३२,
१.

हृयसि १२. ३, २३.

हृयोः २०. ३८, ५; ४७,
५; ७०, ८.

हृयोः २०. १२८, १५.

हृष्वम् ६. ६७, ३; १६.
१३, ६.

हृष्वन्ताम् ३. १६, ३.

हृष्वमाणाः ४. ३१, १.

हृष्वय ५. २०. ८.

हृष्वीक्षणात् २. ३३, ३; २०.
६६, १६.

हृष्वन्त २०. १०१, २.

हृष्वन्ते ४. २४, ५; २०. ३४,
६; ८५, ३.

हृष्वन्ते १८. १, ४१; ४२;
४, ४५; ४६.

हृष्वम् १. १५, २; २. ५, ४;
३०, ३; ३. ३, ६; ४.

२४, १; ५. ८, १; २;
३२; ६. २, १; ६. २,

७; २०. २६, २; ५०,
२; ५३, ३; ५७, १३.

हृष्वामहे ७. ७३, १; २०.
३६, १; ७०, १६; ६६,

५; ६८, १.

हृष्वामहे ३. १५, १; २;
२०, ४; ६; २१, ८; २४,

२; ४. २३, ४; ५. ३,
११; ७, ४; ७. ६, २;

४०, १; ६३, १; १३.

२, ४३; १६. १, १३;

१६. १५, २; २४, ७;

५८, २; २०. १, १; ३,

३; ६, १; १४, १; २४,

४; ६; २६, १; ३८, ३;

४७, ६; ५६, १; ६२,

१; ७०, ११; ११०, २;

११८, ३; १२१, २.

हृविः १. ४, ३; ७, ३; ८,

१; ३. १०, ५; १३; ५.

१२, ११; २७, १२; ६.

५, ३; २७, ३; ३६, १;

५०, २; ६७, १; ७. ४६,

२; ५४, २; ६८, २; ७०,

४; ५; ७२, २; ७६, ५;

७७, १; ६८, १; १०६,

५; ८. ७, २०; ६. ५,

३८; ६(१), २; ११. १,

४, ७, १८; १२. २, ३७;

४, ४०; ४८; १८. १,

५३; २, १; ३; ३, ६४;

४, २; ३५; ६३; १६.

६, १०; २७, ११; १२;

१३; ४२, १; ५२, ५;

२०. १२६, १३; १३;

१३०, ११.

हृविः-अदः १८. ३, ४८.

हृविः-अदान ४. ३७, ८; ६.

हृविः-कृतः ७. २८, १; १६

४२, २.

हृविः-कृतम् ६. ६(१), १३.

हृविः-दाः ५. १, ७.

हृविः-दाम् ७. ७८, २.

हृविः-धानम् ७. १०६, १; ६.

३, ७; १४. २, ३४.

हृविः-पाः १८. ३, ४८.

(५,०८०)

हविः-भिः—हस्तिनि .

हविः-भिः १८. ३, ६३; ४,
५४; २०. ८८, ६.

हविः-मर्थीनाम् ८. ४, २१.

हविनः ३. ४, ३.

हविषः ७. ४७, २; १८. १,
६०; १६. ५२, ५; २०.
७२, ३.हविषा १. १२, २२; १५, १;
३१, १; ३; २. २६, ३;
३. ११, १; ३; ४; १५,
५; १७, ५; १६, २; ४.
१, १; २; ३; ४; ५; ६;
७; ८; ९. ४०, १; ४१,
१; २; ६४, २; ६५, २;
७३, २; ७५, १; ७८, १;
८०, १; ३; ८७, ३; १२५,
२; ७. ५, ३; ४; ७०, १;
७६, ३; ६४, १; ६८, १;
१०६, ६; ६. २, १; १२.
१, ६०; २, ३२; १८. १,
४६; २, २६; ३, १३;
१६. १, १; २; ३; ६,
१०; ५८, १; २०. ६६,
६; ८; ६.

हविषाम् ६. १५; ३.

हविषे १८. १, ५६; ५७; २,
३४.

हविष्मन्तः २०. १५, २.

हविष्मती ६. ८४, २, २०.
१३०, २.हविष्मते ४. ३०, ६; २०.
१७, ८.हविष्मन्तः २०. २३, ७;
१०२, २.हविष्मन्तम् ६. ३६, १; २०.
१४०, १.हविष्मान् २०. ८६, ४; ६०,
१.हवींषि ४. २६, ४; ५. १२,
१०; ७. ४६, ३; ६. ६,
(२), ३; १८. ३, ४२;
४४; ४६; ४, ६५.हवींम-भिः २०. ७२, ३२;
१०१, २.

हवे ५. ३, ८.

हवेते इति २०. ३४, ८.

हवेभिः २०. ३७, ६.

हवेषु १८. १, ४; ४७; १६.
११, १; १३, ११.

हवे-हवे ७. ८६, १.

हव्यः ६. ६८, ३; २०. ३६,
१; ६७, ७; ७३, १;
१०४, ३.हव्य-दातिम् ६. १२५, ३;
७. १०६, २.हव्यम् ३. ३, ४; १५, ३; ४;
४. २३, २; ३६, १०; ५.
८, ३; १२, १७; २७,
११; ७. २०, २; ४६, १;
६८, १; २; ८. ६, २१;
११. १, २५; १२. १,
२२; २, ८; ५३; १८. १,
३०; १६. ४, १२; ४२,
३; ५८, ६; २०. १३५,
११.

हव्य-वाहः १८. ४, १.

हव्य-वाहनः ७. २०, १.

हव्य-वाहम् ४. २३, ४; १२.
१, २०; १४. ४, ४१;
२०. १०१, २.

हव्य-सूतः २०. ८८, ५.

हव्या ७. ४७, २.

हव्या ३. १०, ६; ६. १२५,
३; ७. १०६, २; १८. १,
५१; ४, १.हव्यानि १८. ३, ४२; २०.
१४१, ४.

हसः १५. २, १६.

हसः ११. ८, २४.

हसामुदाः ७. ६०, ६.

हसामुदौ १४. २, ४३.

हसाय १२. २, २२.

हस्त-अवनेजनम् ११. ३,
१३.

हस्ताः ४. १३, ६; १६. ७, ३.

हस्त-कृताम् १०. १, १.

हस्त-गृह्य ५. २०, ५; १४,
४; १७, २; १४. १, २०.

हस्त-ग्राभस्य १८. ३, २.

हस्तम् ५. १७, ८; ७. ६, ४;
१२. ३, १७; १४. १,
४८; ४६; ५०; ५१;
२, ३६; १८. ४, ५६.हस्तयोः १. १८, २; १८. ३,
१२.

हस्तात् १८. २, ५६; ६०.

हस्ताभ्याम् ३. ११, ८; ४.
१३, ७; ६. १०२, ३;
११८, १; १०. ७, ३६;
११. ३, ४८; १६. ५१,
२.

हस्ताम् ११. १, २४.

हस्ताय २०. ६२, १७; १०५,
५.हस्तिनः ३. २२, ४; २०.
१३१, २०.

हस्तिनम् ४. ३६, ६.

हस्तिनि ६. ३८, २.

हस्तिनी-इव ६. ३, १७.
 हस्तिन्याः ६. ७०, २.
 हस्ति-वर्चसम् ३. २२, १,
 ५.
 हस्तिषु १२. १, २५.
 हस्ती ३. २२, ३; ६; ६. ७०,
 २.
 हस्ती-इव १०. १, ३२.
 हस्ते ४. २०, ४; ७. ५०, ८;
 ८. ६, १४; ११. १, १०;
 २०. ३६, ६.
 हस्तेन ५. १७, ३; ६. ६(२),
 ५; १०. ६, ३.
 हस्तेषु ४. १४, २; ६. १२२,
 ५; १०. ६, २७; ११. १,
 २७.
 हस्तौ ६. ८१, १; ७. २६, ८;
 १०६, ३; ८. १, ८; ११.
 ८, १४; १५; १६. ४६,
 १०.
 हाः ७. ७६, ३.
 हापयामसि १. ११, ३.
 हायनः ६. १४, ३; १६. ३६,
 १०.
 हायनान् ३. १०, ६; ८. २,
 २१; ११. ६, १७.
 हायनीः १२. १, ३६.
 हायि १८. ३, ६.
 हायिः २०. १२८, १६.
 हारिद्रवेषु १. २२, ४.
 हारि-योजन २०. ३५, १६.
 हारिम् ६. ८६, १; २; १४.
 ४, ५८.
 हासन्ते ४. ३६, ५.
 हासिषुः ६. ४१, ३; ८. २,
 २६.

हासिष्ट ६. ४, २४.
 हासिष्टम् १६. ४, ५.
 हासिष्टाम् १६. २, ५; ३,
 २२; ३२; ४३.
 हासीत् २. २८, ३; ७. ५३,
 ४; ८. १, १५; १३. १,
 १२; १६. ४, ३.
 हास्त १८. २, २४.
 हास्तिनम् ६. ७२, ३.
 हास्थाः १८. ३, ७३.
 हास्महि ५. ३, ७.
 हास्यन्ति ११. ३, २८; २६;
 ३, ३८.
 हि १. ५, १; ७, १; १०,
 १; २; ३५, २; २. ६, ५,
 ६, ३; २५, १; ३६,
 ३ ३. १, २; ४, ६; ६,
 ५; १३, ३; २२, ६; ४.
 १, ४; ३, १; १३, ३;
 १४, १; १६, ७; २५,
 ४; २६, १; २; ३२, ४;
 ३३, ६; ५. ४, २; ५,
 २; ११, ५; ७, ११;
 १३, १; १८, ६; २२,
 २२; ६. २७, २; ५१,
 २; १०६, ३; ११०, १;
 ११२, ३; १२५, १; ७.
 ३, १; ७, १; १४, ३;
 २०, ५; ६; ५६, ५;
 ६५, १; ७३, १; ११;
 १०६, ६; ११०, १; ८.
 १, ६; ८, ६; ६, ७;
 २४; ६. १, १; ३; १०;
 २, ६; ३, २२; ५, १३;
 ६, ८; १०, ७; २०; १०.
 १, २८; २, ७; ४, १६;
 ६, ४; १०, १३; १४;

१५; २२; २३, २७;
 ३३; ११. २, २८; ८,
 ३२; १२. २, ५५; ४,
 ४; ५, १६, ५३; १८.
 १, ३३; ३८; ६०; ३,
 १६; ५१; ४; ५६; ६१;
 १६. ५८, ४; २०. १,
 २; ३, १; १२, ४;
 ५; १३, ३; ४; १४,
 २; ४; १६, ७; १२; २०,
 ५; २१, १; २३, ६;
 २४, ६; २६, १; ३०,
 २; ३१, ५; ३८, १;
 ४०, १; ४७, ७; ५४,
 २; ५६, २; ४; ५; ६;
 ५७, ८; ६०, १; ४; ५;
 ६; ६२, २; ४; ६३, ६;
 ६४, २; ३; ४; ६६,
 ३; ६७, १; ७०, ३;
 ७१, ४; ५; ६; ७२,
 १; ३; ७४, १; ७६,
 ७; ७८, ३; ८५, ३;
 ८१, ४; ११; ८४, ५;
 ८८, १; १००, १; १०३,
 ३; १०८, १; ११३, २;
 ११५, १; ११८, १; २;
 १२६, १; २; १४; १४०,
 १.

हि सन्ति ५. १६, ८.
 हिंसितव्यः ५. १८, ६.
 हिंसितस्य ५. २८, ६.
 हिंसित्वा ५. १८, १२; १६,
 १; ११.
 हिंसिषु २. २८, १; ७.
 १०२, १; १४, २, ६.
 हिंसिष्ट १८. १, ५२.
 हिंसिष्टम् ५. ६, ८.

१४०, २; ३; ११. २,
 १; १४. १, ६३; १६.
 ४०, ३.
 हिंसीः ६. ३, १६; १०. ६,
 ११; ११. २, २०; २६;
 १२. १, ३४; १८. ४, ३०.
 हिंसीत् ३. २८, ५; ६; ६.
 २७, ३; ७. ५४, २.
 हिंस्ते १२. ४, १३.
 हिंस्त्रः ८. ३, ३.
 हिंस्त्रम् ८. ३, ६.
 हिंस्त्रा ८. ३, ४.
 हिङ् ६. ६(५), १; ४; ६; ८;
 १०, ६.
 हिङ्-करिकृती ६. १, ८.
 हिङ्-कारः ११. ७, ५.
 हिङ्-कृण्वती ७. ७३, ८; ६.
 १०, ५; १२. ५, २१.
 हिणुत् ६. १३०, १; २; ३;
 १३१, १; २; १८. ४, ४०.
 हिणोमि १०. ५, २३; १२.
 २, ४; ८; १०.
 हिणम् ७. ११५, ३; १०. १,
 १५; १६. ५७, ३.
 हिणम्सि ५. ३१, १०; १०.
 १, ३०.
 हितः ५. ४, ७; १३, ३, २३;
 २०. ४७, २; ६७, ६;
 १३७, १३.
 हित-प्रयसः २०. ६२, १५.
 हितम् ३. १३, ३; ८. ६, २०;
 १०. २, २४; २५; ८,
 ३४; ११. ८, ३४; १८.
 २, ७.
 हिता १०. २, २४; २५; ११.
 १, २३; ७, २२; २०.
 १४१, ४.

हिताः ११. २, २४; ७, ११;
 १५; १२. १, ४६; १३.
 ४, १०.
 हिते २०. ६, ३; ४६, ६.
 हित्वा ४. ११, ६; ५. २०,
 ३; ६. २८, १; १७. १,
 ८; १८. २, ४७; ३, ५८.
 हिन ६. १६, २.
 हिनस्ति २. १२, २; ३; ५.
 १८, १३.
 हिनस्ति ५. १७, ७; १५. ५,
 ३; १६.
 हिनुतात् १८. २, ४.
 हिनेति ४. १, ६; ८. ४, १३.
 हिनेमि ५. २२, ४; २०.
 ३५, ४.
 हिन्वन् २०. ३१, २.
 हिन्वन्तः २२. ३०, २.
 हिन्वन्ति ५. २, ६; ६. १०१,
 २; २०. १०७, १२.
 हिन्वन्ति ४. ८, ७; २०.
 १०६, २.
 हिन्वन्तु १. ४, २.
 हिन्विर २०. १०६, २.
 हिमः ७. १८, २; १३. १, ४८.
 हिमम् १३. १, ४६; ४७.
 हिम-वतः ४. ६, ६; ५. ४,
 २; ८; ८. २४, १; १६.
 ३६, १; ८.
 हिम-वताम् ६. ६५, ३.
 हिल-घन्तः ४. २, ५; १२. १,
 ११.
 हिमस्य ६. १०६, ३; १६.
 ४६, ५.
 हिमा-वत् २०. १६, १०.

हिमाः २. २८, ४; १२. २,
 २८.
 हिरण्यः २०. १३२, १४.
 हिरण्य-कशिपुः ५. ७, १०.
 हिरण्य-केश्यै ५. ७, ६.
 हिरण्य-गर्भः ४. २, ७; २०.
 ५, १६.
 हिरण्य-गर्भम् १०. ७, २८.
 हिरण्य-जाः ४. १०, १; ४.
 हिरण्य-जित् ७. ५०, ८.
 हिरण्य-ज्योतिषम् १०. ६,
 ६.
 हिरण्य-तेजसा १६. २६, ३.
 हिरण्य-त्वचसः १३. २, ८.
 हिरण्य-द्रापये ५. ७, १०.
 हिरण्य-नेमयः १८. ४, ८६.
 हिरण्य-पक्षम् १८. ३, ६६.
 हिरण्य-पाणिः ७. १४, २.
 हिरण्य-पाणिम् ३. २१, ८.
 हिरण्य-पावः १८. ३, १८.
 हिरण्य-बन्धना ५. ४, ४;
 ६. ६५, २; १६. ३६, ७.
 हिरण्यम् १. ६, २; ३५,
 १; २; ३; २. ३६, ७;
 ५. १, ३; २८, ६३;
 ११; ६. ७१, १; १२४,
 ३; ६. ५, १४; २६; १०.
 ७, २८; ११. १, २८;
 १२. १, ४४; ३, ५०;
 १४. १, ४०; १८. ४,
 ५६; १६. २६. १; २;
 २७, ६; १०; २०. ७३,
 ४.
 हिरण्ययः ४. २, ८; ६.
 ८२, ३; ७. ८३, १; ६.
 १, २१; १०. २, ३१;

३, ३; १६. ३०, ५; २०.
 १५, २; ३८, ५; ४७,
 ५; ७०, ८; ११८, २.
 हिरण्यम् ७. ६६, १; १०.
 ७, ४१; ११. २, १२;
 २०. ११, ६; ६२, १३.
 हिरण्यम् २०. १२६, ५.
 हिरण्ययाः ५. ४, ५.
 हिरण्याः ५. ४, ५.
 हिरण्ययाः २०. १३१, ५.
 हिरण्यया ५. ४, ४; ६.
 ६५, २; १६. ३६, ७.
 हिरण्ययाः ४. ३७, ६; ५.
 ४, ५; १०. ६, १०.
 हिरण्ययाभिः १०. ४, १४.
 हिरण्ययाम् १०. २, ३३.
 हिरण्यये १०. २, ३२; १०,
 १२; १७.
 हिरण्ययेन २०. १४३, ४;
 ५.
 हिरण्य-वक्षसे १२. १, २६.
 हिरण्य-वक्षाः १२. १, ६.
 हिरण्य-वर्णाः १६. २४, ८.
 हिरण्य-वर्णम् १४. १, ६१.
 हिरण्य-वर्णा ५. ७, १०; ६.
 १, ४.
 हिरण्य-वर्णाः १. ३३, १;
 ३. १३, ६.
 हिरण्य-वर्ण ५. ५, ६; ७.
 हिरण्य-शृङ्गः १६. ३६, ५.
 हिरण्यस्य-हृत् १२. १, १८.
 हिरण्य-स्रक् १०. ६, ४.
 हिरण्य-हस्तः ७. ११५, २.
 हिरण्यानाम् ४. १०, ६.
 हिरण्ये ६. ३८, २; ६६, १.

हिरण्येन १०. १०, १६.
 हिराः १. १७, १; ७. ३५, २.
 हिराणाम् १. १७, ३.
 हिरुक् ४. ३, १३; ६. १०,
 १०.
 हीडिताः १२. ४, २८; ४६.
 हीयताम् ८. ४, १०.
 हीयते १०. ८, १५.
 हुतः १८. ४, १५.
 हुत-भागाः १. ३०, ४; १८.
 ३, २५; २६; २७; २८;
 २६; ३०; ३१; ३२; ३३;
 ३४; ३५; ४, १६; १७;
 १८; १६; २०; २१; २२;
 २३; २४.
 हुतम् ३. २१, १; २; ३; ४;
 ५; ६; ७; ६. ७१, २; ६.
 ४, ३; १५. १२, ६; १३,
 १४.
 हुतानाम् १८. ४, १५.
 हुताम् १२. ४, ५३.
 हुते ५. २१, १; ११. ६, ६;
 १५. १४, ७.
 हुतेभ्यः ७. ६७, ७.
 हुवानः २०. २३, १.
 हुवे ३. ८, २; ३; ७. ८६, १;
 १०६, ७; २०. २६, ३२.
 हुवे ४. २६, ३; २८, ३; ३८,
 १; २; ४; ५. २५, २; ६.
 ७७, २; ६६, १; १०८, २;
 ७. ४८, १; ११०, २; ८.
 २, ६; ७, ६; २३; २४;
 ११. १०, ६; १८. १, ५६;
 १६, ४२, ४; २०. ६७,
 ७.
 हुवे म ७. ४०, २; ८५, १;

२०. ११, ११; ६६, ५;
 १४३, १.
 हुवेय २०, १४१, ३.
 हुतः ४. ३१, २.
 हुमहे २०. ८०, २.
 हुयमानः २०. ८, २.
 हुयमाना १०. १०, ६.
 हुयमानाः १८. ३, १६.
 हुयसे २०. ६, ६; १२०, १.
 हुयसे २०. ५, ६; ११४, २.
 हुणीषे ८. ४, १४.
 हुतम् ५. २६, ५; १२.
 हुता १२. ५, २६.
 हुतः १८. १, २३.
 हुत्-द्योतः १. २२, १.
 हुत्-द्योतनः ५. २०, १२.
 हुत्-वृत्तैः ५. १८, ८.
 हुत्-भिः ६. १, १.
 हुत्-सु ३. २, ५; ८. ८, २;
 १२. २, ३३; १४. २,
 ५.
 हुत्सु-असः १८. १, ६.
 हुदः ३. २५, ६; ६. ४२, १;
 ७४, २; ७. ६५, १; ६.
 १, ६; ८, ८; १२. ३,
 ३२, १८. १, १४; १६.
 २८, १; २; ३; ३०, ४.
 हुदय-आमयः ५. ३०, ६.
 हुदय-आमयम् ६. १५, १;
 १२७, ३.
 हुदयम् २. २६, ६; ३. १३,
 ७; ५. २०, ३; २६, ४;
 ६. १३६, १; २; ३; ६.
 ६(१), २; ७, ११; ८,
 १४; १०. २, २६; ४,
 २५; ६; १५; ११. ५.

२४; १२. १, ८; ३५;
१६. ३, ६; १८. १,
१५; १६. २८, ४; ५२,
४.

हृदय-श्रिषम द. ६, २.

हृदयस्य ६. ८, २२.

हृदयात् २. ३३, ३; ६. ७६,
१; ७. ११४, १; ६.
८, ८; १२; १६. ५२, ४;
२०. ६६, १६.

हृदयानि ३. ८, ६; ६. ६४,
३; ६४, २; ११. ६,
२१.

हृदयाय ६. ६०, १.

हृदयाविधम् ८. ६, १८.

हृदये ५. १८, ५; ८. ३, ६;
१२; ६, २४; १०. ५,
४८.

हृदयेन ३. २०, ६; ५. २१,
२.

हृदयेषु ४. ३१, ७; ६. ७३,
२.

हृदय्यम् ६. १८, १.

हृदा २. १२, ३; ४. २१, ५;
३६, १०; १८. ३, ६६;
२०. ३५, २; ४८, २;
८७, २.

हृदि ३. २, २; ४; ७, २;
२५, १; २; ३; ६. ६,
३; १८, ३; ७. ३६, १;
११. ६, १; १३; १६. ६,
५; २०. २४, ८.

हृदे ६. १२, ३; ८. २, १४;
७, १७; २०. ४, ३;
१२६, १५.

हृद्योत-भे-षजम् ६. २४, १.

हृद्यः १६. ३, ५.

हृदितासः ४. ३१, १.

हृद्यति २०. १२६, ७.

हृडः १६. ३, ४.

हृडम् १२. ४, २०; २१; ३२.

हृडलि ७. २०, ३.

हृत्तयः ३. २६, १; ४. ३७,
८; ६. ५. २२, १०; २०.
५१, ४.

हृत्तयै १. १३, ३.

हृत्तारम् २०. १०५, ३.

हृत्तिः १. २६, १; २. ११, १;
२४, १; २; ३; ४; ५; ६;
७; ८; ४. २१, ७; ६.
२७, २; ३; २६, १; ७.
७५, १; ८. २, ६; १०. ५,
४३; ११. २, २२; १२.
५, १६.

हृत्तिम् ५. ७, ७; ६. ५६, ३;
१२. ४, ५२.

हृत्ति-मन्तः ५. १८, ६.

हृत्ते ५. ५, ६५.

हृत्तोः ६. ८, ३.

हृत्त्याः २. ११, १; ४. १०, ५;
५. २६, ११; ८. ३, १८.

हृत्मन्तः ६. ५५, २; १२. १,
३६.

हृत्मन्त-जब्धः १२. १, ४६.

हृत्मन्तान् ३. ११, ४; २०.
६६, ६.

हृत्मन्ताय ८. २, २२.

हृत् ५०, २३; १८. ४, ६६.

हृत्मनौ १५. ४, १४; १५.

हृत्म-वृत्तीः १६. २, १.

हृत्तरयैः १३. २, ११.

हृत्तः ३. १५, ७; ७. ६७, १.

हृत्तः ५. १२, ६; २०. ६७,
५.

हृत्ता १. ११, १; २. २८, २;
४. ३२, २; ५. १२, ३;
१७, २; ६. ७१, १; २;
११०, १; १०. ६, २६;
१०, १६; १८. १, २६;
३०; ४, १५; १६. ४२,
१; ५६, ३; २०. २३, २;
७६, १; १०१, ३.

हृत्ता २०. १३५, ५.

हृत्तारः ५. ३, ५; २७, ६.

हृत्तारम् ३. २१, ५; १८. १,
२०; २१; २०. ६७, ३;
१०१, १; १०३, २.

हृत्तारा ५. १२, ७.

हृत्तुः ५. १२, ११; ६. ६,
१.

हृत्तु-सर्वनम् ७. ६६, १.

हृत्त्राः ११. ६, १४; ७,
१६; १८. ४, २८.

हृत्त्राभिः १८. १, २२.

हृत्त्राम् ८. ४, ६.

हृत्त्रा-विदः १८. ३, ४७.

हृत्त्रियम् २०. २५, २.

हृत्त्रेण ६. २, ६.

हृत्तम् २०. ७१, १५.

हृत्तः ८. ८, १७.

हृत्तम् ४. ३८, ५.

हृत्ताः ८. ६, १८; १६. १,
२.

हृत्तः ६. ६३, २; १०. ६,
३५.

हृत्ताभिः १५. १२, २.

हृत्तः ६. १०, ६; २०. ६७, १.

हृत्तः ६. १०६, १.

हृदम् ६. ३७, २; २०. १७,
७.
हृदस्य ४. १५, १४; ६.
१०६, २.
हृद्रे २०. १३३, ६.
हि यमाणा १२. ५, २६.
हृद्ः १. २५, २; ३.
हृदिका-वति १८. ३, ६०.
हृदिके १८. ३, ६०.
हृदताम् १. १, ४; १६. ५८,
२.

हृयन्ति ६. ६(६), १.
हृयन्तु ३. ३, ३३.
हृयन्ति ६. ६ (१), १३.
हृयन्ति ६. ६(१), १३; २०.
६६, २.
हृयन्तु ३. ३, ५.
हृयन्तु ३. ४, १; ४; ७.
हृयन्ते २०. ८६, ४.
हृयस्व ५. २०, ८; १२. ३, १.
हृयामसि ५. ३०. १७; ६.
६०, २; ७. ५६, ३; ८.
१, १५.

हृयामहे ५. १०, ८; ७. ६०,
३.
हृयामहे ८. १०(२), २.
हृयामि ६. ६६, १; ८. ७, ४;
१८. २, २१.
हृये १. ४, ३; ५. १०, ८; ६.
२३, १; ७. ७३, ७; ६.
५, ३०; १०, ४.
हृयेथाम् १२. ३, ३; ४०.
हृरम् ४. १, २.
हृ १७, १, १; २; ३; ४; ५.

इति पदसूचीपत्रम् ।

इत्यथर्ववेदभाष्यं च ।

इति श्रीमद्राजाधिराज प्रथितमहागुणमहिम श्रीसयाजी राव गायक-
वाङ्मयधित वङ्गोदे पुरीगत श्रावणसासदक्षिणापरीक्षायाम्
ऋक्सामाथर्ववेदभाष्येषु लब्धदक्षिणेन श्री पण्डित

लक्ष्मणदास त्रिवेदिना

कृते अथर्ववेदभाष्ये अथर्ववेदसंहितायाः पदसूचीपत्रं समाप्तम् ॥

इदं पदसूचीपत्रं प्रयाग नगरे फाल्गुन मासे शुक्लपक्षे पञ्चम्यां तिथौ १९७७तमे
(सप्तसप्तत्युत्तरेकोनविंशतिशतके) विक्रमीये संवत्सरे

धीर-वीर-चिरप्रतापि-महायशस्वि

श्री राजराजेश्वर पञ्चम जार्ज महोदयस्य

सुसाम्राज्ये सुसमाप्तिमगात् ॥

मुद्रितम्—पौष कृष्णा ७ संवत् १९७८ वि० तारीख २१ दिसंबर १९२१ ईस्वी ।

ओ३म्

पण्डित लक्ष्मणदास त्रिवेदी अथर्ववेद भाष्यकार की संक्षिप्त आत्मजीवनी ।

विषय	कण्डिका
१-जन्म और वंशावली	१-३
२-बालकपन और पढ़ाई	४-६
३-जीविका	१०-११
४-गृहस्थ कर्म, विवाह आदि	१२-१७
५-धर्म निष्ठा	१८
६-महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती से भेंट	१९-२७
७-संस्कृतविद्या, ग्राह्यपरीक्षा और वेदपरीक्षा	२८-३०
८-अथर्ववेद का भाष्य	३१
९-विघ्न	३२
१०-धन्यवाद	३३-३४

१-जन्म और वंशावली ।

१-मैं (पं० लक्ष्मणदास त्रिवेदी, कायस्थ सकसेने शमसावादी सेठ) तिथि कार्तिक शुक्ला सप्तमी संवत् १९०५ विक्रमीय (३ नोवेंबर १८४८ ईस्वी) को ग्राम शाहपुर-मंडराक, परगना कोल जिला अलीगढ़ में उत्पन्न हुआ था । मेरे पिता लाला फुन्दनलाल जी, दादे लाला अमरसिंह जी, परदादे लाला मोतीलाल जी, नगरदादे लाला सदाराम जी और महानगर दादे वा सगर दादे लाला किशोरीलाल जी थे ॥

२-मेरे दादे लाला अमरसिंह जी फारसी पढ़े थे, वे शाहपुर के पटवारी थे, और मेरे पिता लाला फुन्दन लाल जी हिन्दी जानते थे और वहां पर खेती करते थे । गाम और आनगाम वाले इस घराने को बड़ा मानते थे और उनसे सम्मति लेकर काम करते थे । लाला अमरसिंह जी के पाँछे मेरे बड़े भाई लाला गोपालराय जी, और उनके पीछे उनके पुत्र लाला भुव्नीलाल जी पटवारी हुये । वे, पटवारगरी छोड़कर अलीगढ़ जा रहे और नौकरी आदि से निर्वाह करके अपने पुत्र कान्ताप्रसाद को बी० ए० परीक्षा में उत्तीर्ण कराया । वह खेती हमारे घराने में मेरे और मेरे भाई भतीजे आदि के नाम से अभी चली आती है ॥

३-हम अपने माता पिता से अठारह भाई बहिन जन्मे थे । उनमें से चार भाई (लाला गोपालराय, मैं, लाला लेखराज, और लाला दीपचन्द) और चार बहिनों

के विवाह हुये । लाला लेखराज और लाला दीपचन्द विना सन्तान स्वर्गवास कर गये । लाला गोपालराय के पुत्र लाला मुकुन्दलाल और रघुबरदयाल थे । लाला मुकुन्दलाल का स्वर्गवास हो गया, उनके पुत्र लाला कान्ताप्रसाद बी० ए० हैं । लाला रघुबरदयाल अलीगढ़ रहते हैं । मेरे आठ सन्तान हुये जिनमें से तीन पुत्रियों और एक पुत्र का विवाह हुआ । पुत्र का नाम लाला विष्णुदयाल है और उनके दो पुत्र लाला शंकरदयाल सेठ बी० एससी० और इन्द्रदयाल सेठ हैं ॥

२-बालकपन और पढ़ाई ।

४-मैं दो तीन वर्ष का था, तब मेरे बहुत चेचक निकली, जिसके चिन्ह शरीर भर में हैं । हमारे घर पर अलीगढ़ के लाला हरसहाय मेरे बड़े भाई लाला गोपालराय जी और गाम के कुछ लड़कों को फ़ारसी पढ़ाते थे । जब मैं पांच छह वर्ष का हुआ, मेरा मक़ब (फ़ारसी पढ़ने का आरंभ) उनसे कराया गया, दो तीन वर्ष तक करीमा, ख़ालिक्बारी, आमदनामा आदि पुस्तक मैं पढ़ता रहा ॥

५-संवत् १६१४ विक्रमी (१० मई १८५७ ई०) में मेरठ से विद्रोह (चलवा वा ग़दर) आरंभ हुआ । देश में बड़ी गड़बड़ मची । गाम गाम में पुराने पुराने बैर निकाल कर लोग आपस में लूट मार करने लगे, भयानक दृश्य हो गया । हमारे दादे और पिता जी ने देखा कि गाम के सब कायस्थों की और हमारी भी अवश्य लूट मार होगी और जीवनाश का बड़ा भय है । उन्होंने घर का सब गहना पाता, और कागज़ों के बस्ते गाम के एक प्रतिष्ठित पुरुष ठाकुर जयरामसिंह को सौंप दिये । मैं और दादे जी पैदल दोपहर पीछे अलीगढ़ को भागे, मार्ग में लुटेरों ने हमारे कपड़े लूट लिये । यही दशा अलीगढ़ आदि को भागे हुये दूसरे कायस्थ लोगों की हुई । अलीगढ़ में बूआ फूपा के घर मेरे भाई गोपालराय जी फ़ारसी पढ़ते थे, मैं उनके पास रहा और दादे जी लाला हरसहाय के घर ठहरे । पिता जी दादी जी को घर छोड़ कर रात में सब स्त्रियों को घासीपुर गाम में ले गये । इसी प्रकार सब कायस्थ लोग जहां जिसका मुंह पड़ा, स्त्रियों को ले गये । दूसरे दिन आस पास के और गाम के ठाकुर लोगों ने हमारे पड़ोसी लाला मुकुन्दलाल और लाला छेदालाल कायस्थों के घरों को खोद खोद कर बुरी भांति लूटा । मुखिया लोगों ने हमारी दादी जी को छत पर चढ़ा दिया और कहा तुम निश्चिन्त रहो, तुम्हारी लूट नहीं होगी । तीसरे पहर अकेले पिता जी घर का समाचार लेने को घासीपुर से चले । इधर शाहपुर से कुछ लुटेरे भी उनके खोजमें निकले और पिता जी को मार्ग में पकड़ कर शाहपुर लाये और तलवारें नंगी करके घामुण्डा देवी के थान पर चढ़ाने ले गये । यह समाचार दादी जी ने सुन पाया और एक गड़ासा लेकर चलीं और घामुंडा के थान पर पिता जी के पास बैठ कर लुटेरों से बोलीं कि पहिले तुम मुझसे लड़ लो फिर इसे हाथ लगाओ । इसी अवसर पर ठाकुर जयरामसिंह आदि मुखिया लोग आ गये और लड़कों को लोह का हटा कर पिता जी को सकुशल दादी जी के साथ घर पहुंचा दिया । हम सब लोग भी अलीगढ़, घासीपुर आदि बाहिर से घर आ गये, तब से गाम में आपस की लूट

मार से शान्ति हो गयी, और सब मिलकर बाहर वालों की मार धाड़ से बचने का उपाय करने लगे और बंदूकों, तलवारों, परसा आदि हथियारों से सजकर पहरा देकर गाम की रक्षा में लग गये । मैं भी एक छोटी सी तलवार बांधता था और घर की तलवार आदि हथियारों को तेल आदि मलकर पैना करता था । लोग जब बाहिर वालों की चढ़ाई का समाचार पाते, स्त्रियों और बालकों को किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचा देते और आप सन्नद्ध होकर गाम में रहते थे । दो तीन बार बाहिर वालों ने चढ़ाई की, परन्तु आपस के मेल के कारण कुछ हानि न कर सके । इस प्रकार हमारा गाम बाहिरी लूट मार से बचा रहा ॥

६-उधर दिल्ली में अंग्रेजों और विद्रोहियों (वागियों) से लड़ाई ठन रही थी, इधर अलीगढ़ में हिन्दू और मुसलमानों में लूट मार होने लगी । लोगों ने अपनी स्त्रियों और बच्चों को जहां तहां भेज दिया । उस समय हमारे घर पर हमारी बूआ, बहिन, और दूसरे सम्बन्धी, उनकी ननदें, देवरानी, जेठानी आदि और बच्चे मिल कर चालीस पंचास स्त्री पुरुष अलीगढ़ से आकर रहे । जब अंग्रेजों ने दिल्ली जीत ली, वहां से मेरठ आदि नगरों में होते हुये आगरे होकर हाथरस पहुंचे और वहां से अलीगढ़ पर धावा किया । मुसलमानों ने अलीगढ़ से निकलकर मानसिंह के बाग के पास मैदान में सामना किया । कुछ देर लड़ाई हुई, कुछ अंग्रेज और बहुत से मुसलमान मारे गये । अंग्रेज जीत मनाकर उसी दिन हाथरस लौट गये और दूसरे दिन आकर अलीगढ़ पर अधिकार कर लिया । कुछ पकड़ मार के पीछे शान्ति हो गई । तब वे सब स्त्रियां और बालक जो हमारे घर आये थे, अपने २ घर अलीगढ़ चले गये । हम लोग अंग्रेजों की सेना का सड़क पर से आना जाना और उन क हथियारों का चमकना अपने घरों की छत से देखा करते थे ॥

७-एक अमीर खां मुसलमान सिपाही अलीगढ़ का हमारे पिता जी का मित्र था । वह वहां से दो सन्दूक कुछ विसातियों के माल से भरे लाया और अपना माल बताकर और ताले लगाकर हमारे घर धर गया । भेदिये (मुखविर) ने अलीगढ़ के साहिब कलक्टर को हमारे घर में लूट के माल होने की सूचना दी । उन्होंने दौड़ लेकर दूसरे दिन सवेरे आप ही जाने का प्रबन्ध किया । यह समाचार पिता जी को मिल गया । उन्होंने रात में दोनों सन्दूक तोड़ कर सब माल विश्वासी लोगों के हाथ बहुत दूर अन्धौवे कूओं में फिकवा दिया और सन्दूकों में कागज भर दिये । दूसरे दिन सवेरा होते ही तीन चार छकड़े और बीस पच्चीस सवार लेकर साहिब कलक्टर ने गाम घेर लिया । पहिले हमारे घर की तलाशी ली, लूट खसोटा का कुछ माल न मिला । साहिब कलक्टर तौ चले गये, उनके साथ वाले सब गाम की तलाशी तीसरे पहर तक करते रहे और दो तीन मनुष्यों को पकड़ ले गये, जिनमें से एक को एक वर्ष की कैद हुई और शेष सब छूट गये ॥

८-राज्य प्रबन्ध ठीक हो जाने और विद्रोह मिट जाने पर सब लोग अपने २ काम में लगे । मुझको मेरे मंजले बहनोई लाला अचलप्रसाद जी वकील अलीगढ़ ले गये और एक मकतब में फारसी पढ़वाने लगे । छह सात महीने पीछे बहनोई जहाँ

का और उनसे दो तीन महीने पीछे वहिन का भी स्वर्गवास हो गया और मुझे घर लौट आना पड़ा । मैं कुछ दिनों अपने बड़े आता लाला गोपालराय जी से और कुछ दिनों एक मौलवी साहिब मुहम्मदअली से घर पर फ़ारसी पढ़ता रहा । फिर मुझे बूआ जी ने अलीगढ़ बुला लिया और वहां मकतब मैं फ़ारसी के बड़े बड़े पुस्तक पढ़ कर मैं मुनशी हो गया ॥

६-अब मेरी आयु १५ वर्ष की थी, मुझे अंग्रेज़ी पढ़ने की चांट लगी, मैंने पिता जी से चर्चा किया । उन्होंने अपने मित्रों से पूछा । सब संमत हो गये परन्तु एक धनाढ्य पुरुष लाला भवानोप्रसाद जी कहने लगे कि बहुत से बड़े बड़े लोगों के लड़कों ने अंग्रेज़ी आरंभ की और थोड़े ही दिनों में छोड़ दी, आप से यह काम न हो सकेगा । पिता जी चुप हो गये । मैंने पिता जी से एकान्त में कहा कि आप परमेश्वर का नाम लेकर मुझे आज्ञा दें, परमात्मा बेड़ा पार लगा वेगा । पिता जी ने कुछ सोच विचार कर मुझे आज्ञा दे दी । मैं अलीगढ़ जाकर बूआ जी के घर रहकर अंग्रेज़ी स्कूल में गया । पंडित शोभाराम हेडमास्टर ने मुझे फ़ारसी में प्रवीण देख कर तुरन्त आदर से स्कूल में प्रविष्ट कर लिया । यद्यपि मैं छोटे मास्टरों से पढ़ता था, परन्तु पंडित जी मेरी विशेष सुधि रखते थे । जब मैं एन्ट्रेन्स क्लास में पढ़ता था, हेड मौलवी साहिब अपने घर पर मुझे अरबी कोर्स (सुल्लमुल अदब आदि) पढ़ाते थे । स्कूल में हिन्दी और संस्कृत नहीं पढ़ाई जाती थी, उन्हीं दिनों में राजा जयकृष्णदास साहिब बहादुर डिप्टी कलक्टर के उद्योग से एक पंडित नियत हुये । कोई विद्यार्थी नहीं मिला, मैंने पहिले हिन्दी और संस्कृत आरंभ कर दी । कुछ दिनों में बहुत विद्यार्थी हिन्दी और संस्कृत पढ़ने लगे । अन्त में एन्ट्रेन्स परीक्षा तौ मैंने उर्दू के साथ दी, क्योंकि उर्दू ही मेरे लिये उस समय सरल थी । सारांश यह है कि मैंने सन् १८६४ ईस्वी में अंग्रेज़ी आरंभ की और पारितोषिक और छात्र वृत्ति पाते हुये सन् १८७१ ईस्वी में कलकत्ता यूनीवर्सिटी की एन्ट्रेन्स परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया और आगरे कालिज में जाकर एफ़० ए० पढ़ने लगा ॥

३-जीविका ।

१०-चार पांच महीने पीछे आगरे कालिज से घर आया । घर की दशा डंवाडोल देख कर अलीगढ़ हाईस्कूल में एक जगह १०) मासिक मई सन् १८७२ ई० में स्वीकार करली । वहां से मेरी बदली ७ मई १८७३ को मुरादाबाद हाई स्कूल को २५) महीने पर हुई । वहां ७ जुलाई १८८४ तक रहा । मुरादाबाद में परिश्रम करके मई १८७७ ई० में रुड़की कालिज की एक्जामिनेट परीक्षा मैंने उत्तीर्ण की और सन् १८७८ में छह महीने की छुट्टी आधे वेतन पर लेकर आगरे जाकर अचनेरा-मथुरा रेलवे में नौकर हुआ । वहां ठीक जगह न मिलने से फिर मुरादाबाद लौट आया । सन् १८८४ में शाहजहांपुर हाई स्कूल को बदल जाने पर तारीख २३ जनवरी १८८५ से २२ सितंबर १८८६ तक २० महीने की छुट्टी बिना वेतन ली । और इलाहाबाद जाकर एंगज़ामिनर आफ़ ऐकौन्ट, इम्पीरियल स्टेट रेलवे के दफ़्तर में थोड़े दिन काम करके एंगज़ीक्यूटिव इनजिनियर, बिलासपुर-इटावा स्टेट रेलवे के दफ़्तर में २४ मार्च १८८५ से २४ मार्च

१८८६ तक ४०) मासिक पर रहा । उसके पीछे ६ जनवरी १८८६ तक एक हजार रुपये नक़द की ज़मानत देकर एकौन्टेन्ट और खज़ानची, डिसट्रिक्ट इनज़िनियर इन्डियन-मिडलैंड के दफ़तर बांदा में ६०) से ७०) तक महीने पर नौकर रहा । वहाँ से अपनी बीमारी के कारण नौकरी छोड़कर अपने घर शाहपुर खेती और कुछ गुड़ आदि का व्यापार करने लगा, परन्तु अनुभव न होने से उसमें टोटा पड़ा ॥

११—फिर तारीख १६ सितम्बर १८८१ से १५ मई १९०१ तक जोधपुर में दफ़तर मेनेजर साहिब जोधपुर बीकानेर रेलवे में, और १६ मई १९०१ से २१ जूलाई १९०७ तक वहाँ पर ही उसी रेलवे के आडिट आफ़िस में रहा । वहाँ से ५६ वर्ष की आयु में नौकरी छोड़दी । उस समय मुझे ८०) मासिक वेतन मिलता था । छोड़ते समय मेरे पास पांच छह हजार रुपये प्रोवीडेन्ट फ़ण्ड और बोनस और अपनी बचत के थे । चलते समय बाबू छोटमल रावत एसिस्टेन्ट आडिटर जोधपुर-बीकानेर रेलवे और शहर और दफ़तर के सब मित्र रेलवे स्टेशन पर पहुँचाने आये, और फूलों की मालायें पहना कर और वर्षा करके बड़े आदर और प्रेम से मुझे विदा किया । वहाँ से इलाहाबाद आकर अपने पुत्र लाला विष्णुदयाल के पास रहता हूँ ॥

४—गृहस्थ कर्म विवाह आदि ।

१२—संवत् १९२१ वि० (सन् १८६४ ई०) में जब मेरी आयु १६ वर्ष की थी, श्रीमती जानकी देवी जी (मुनशी बिहारीलाल जी की पुत्री) के साथ मेरा विवाह और तीसरे वर्ष में गौना हुआ । भादों संवत् १९२७ वि० (सन् १८७० ई०) में बड़ी पुत्री सुमित्रा देवी का जन्म हुआ और लगभग तीन तीन वर्ष के अन्तर से सब पुत्र पुत्रियाँ आठ बालक उत्पन्न हुये, चार छोटी आयु में मर गये । शेष चार अर्थात् पुत्र विष्णुदयाल का विवाह बाबू रामजी मल जी मुख्तार बदायूँ वाले की पुत्री से, बड़ी पुत्री सुमित्रा देवी का विवाह लाला गुरुचरण जी एम० ए० (मुनशी दुर्गाचरण जी मुरादाबाद वाले के पुत्र) से, पुत्री सत्यवती देवी का विवाह बाबू चंडीप्रसाद जी (मुनशी गणेशीलाल जी अलीगढ़ वाले के पुत्र) से, और पुत्री विद्यावती देवी का विवाह मुनशी ज्वालोप्राद जी बी ए०, एल एल० बी० वकील (मुनशी श्यामलाल जी वकील, रईस कानपुर के पुत्र) से हुआ ॥

१३—घर का प्रबन्ध सदा उत्तम रीति से रहा । आरंभ में स्कूल के वेतन के सिवाय कुछ दूसरी जगह पढ़ाई से और कुछ पुस्तकों की बिकरी से भी प्राप्ति होती जाती थी । आय के तीन भाग समझे जाते थे, एक भाग खाने पहनने आदि चालू खर्च के लिये, दूसरा सन्तानों की शिक्षा और विवाह आदि के लिये और तीसरा, स्थिर निधि अपने बुढ़ापे आदि के लिये । जब हम दोनों अलीगढ़ में थे, मैं ने पत्नी को रात्रि में हिन्दी पढ़ाना आरंभ करा दिया था । उस समय स्त्रियों के पढ़ने की रीति न थी, स्त्रियाँ कहती थीं कि पढ़ी लियाँ विधवा हो जाती हैं । परन्तु हम दोनों वृद्ध चित्त से पढ़ने पढ़ाने में लगे रहे । इसका फल यह हुआ कि हमारे सब पुत्र पुत्रियाँ हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, गणित आदि घर में ही पढ़ने लगे । विष्णु दयाल ने

कुछ दिन घर में पढ़कर मुरादाबाद, करवी, अलीगढ़ स्कूल, आगरा कालिज, और जोधपुर कालिज में अंग्रेजी बी० ए० तक पढ़ी और सन् १९०१ में इलाहाबाद एक्वॉन्टेन्ट जनरल के दफ्तर में नौकर होकर अब सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं ॥

१४-जब मैं मुरादाबाद में था, मेरे पास मेरी दादी, बहिन आदि मेरी पत्नी और बालकों की खबरगोरी के लिये रहती थी। मेरे छोटे भाई लाला लेखराज, भतीजे लाला भुव्नीलाल, और साले लाला भूपलराय, क्रम क्रम से स्कूल में मेरे पास पढ़ते रहे। मेरे पिता जी पर लोगों का ढ़ूँठ था, वह सन् १८८१ में रुपया देकर मैंने चुका दिया। उसके बदले में उन्होंने खेत का पट्टा १८ वर्ष के लिये मेरे नाम लिख दिया। उसका प्रबन्ध पिता जी करते रहे और उनके पीछे वह खेत अपने घराने में अब तक चला आता है, जिसके प्रबन्ध से अब संभले भाई लाला लेखराज जी की धर्मपत्नी निर्वाह करती हैं ॥

१५-जब मैं बाँदे से नौकरी छोड़कर आया, शाहपुर में नया मकान बनवाया, पिता जी के स्वर्गवास होने पर उनका मृतक संस्कार पहिली बार अपने गाम में वैदिक रीति से किया। बड़ी पुत्री का विवाह भी वैदिक रीति से किया। पुत्र विष्णुदयाल को अलीगढ़ हाई स्कूल में प्रविष्ट कराकर बोर्डिंग हाँस में रख दिया, और अपने साले लाला गंगा सहाय को अलीगढ़ के तहसीली स्कूल में प्रविष्ट कराकर बोर्डिंग हाँस में रक्खा, जहाँ पर वे मिडिल परीक्षा तक पढ़कर अपने घर चले गये। विष्णु दयाल ने अलीगढ़ से एन्ट्रेंस परीक्षा उत्तीर्ण करके, आगरा कालिज के बोर्डिंग हाँस में कुछ समय तक रहकर मेरे पास जोधपुर के जस-वन्त कालिज से एफ़ ए० परीक्षा में उत्तीर्ण होकर बी० ए० तक शिक्षा पाई और रुड़की कालिज में प्रविष्ट होने का प्रयत्न किया, परन्तु किसी कारण से न जासके। उन का विवाह और गौना हो चुका था। वे लग भग दो वर्ष तक अपने घर वालों सहित कानपुर कमसरियट के दफ्तर में काम करते रहे और स्थिर नौकरी मिलने पर सन् १९०१ से इलाहाबाद चले गये जहाँ मकान बनाकर अब रहते हैं।

१६-बज मैं जोधपुर के रेलवे दफ्तर में नौकर था मैंने माता, पत्नी और बच्चों को अपने पास बुला लिया। वहाँ पहिले मेरी माता जी का, फिर दो महीने पीछे छह छह महीने के दो युग्म पुत्रों का, और फिर उस से १५, २० दिन पीछे १५ नोवेंबर १८९२ को धर्म पत्नी का देहान्त हो गया। घर के कामों में बड़ी गड़बड़ पड़ी। पहिले मैं योगाभ्यास करने में लगा और जोधपुर के प्रसिद्ध योगी महात्मा देवी दीन आदि से मिला करता था। इस योगाभ्यास और सत्संग से मेरा मन संस्कृत विद्या के स्वाध्याय करने, बच्चों को शिक्षा देने और उनके विवाह आदि संस्कार करने में जम गया। उस समय मेरे तीन लड़कियाँ और एक पुत्र थे। लड़कियों को संस्कृत, उर्दू, गणित आदि, गृहस्त्री के काम, भोजन बनाने, सीने पिरोने आदि में विशेष शिक्षा दी। बड़ी पुत्री सुमित्रादेवी को पंजाब विश्वविद्यालय की प्राज्ञ परीक्षा तक पढ़ाया। उसका विवाह तो हो चुका था, गौना जून १८९३ में हुआ। २० जनवरी १८९६ को पुत्र विष्णुदयाल का, ३ फ़रवरी १८९७ को पुत्री सत्यवतीदेवी का और ५ मई १८९७ को पुत्री विद्यावती देवी का विवाह हुआ, और योग्य समय पर उनके गौने हो गये ॥

१७-फिर मुझे उचंग उठी कि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों में बाल विधवा विवाह नहीं होता, इस विपत्ति के उठाने के लिये कोई उदाहरण स्थिर करना चाहिये। यह ठान कर ३० अगस्त १८६८ ई० को एक विज्ञापन दिया कि मैं अपना सजातीय अर्थात् कायस्थ सकसेने दूसरे अच्छे घराने की बालविधवा स्त्री से विधवा विवाह करना चाहता हूँ, विद्वान् लोग पक्षपात छोड़ कर सम्मति दें। इस पर बहुत आन्दोलन हुआ, बिरादरी में नगर २ अनुकूल और प्रतिकूल सभायें हुईं, समाचार पत्रों में भी लिखा पढ़ा हुआ। पंडितों की अनुकूल व्यवस्थायें, और बिरादरी के और दूसरे २ बड़े सज्जनों की अनुकूल सम्मतियाँ एकत्र करके कार्तिक सुदी ११ (देवोत्थान) संवत् १२५३ ता० २४ नोवेंबर १८६८ को मेरा विधवा विवाह सजातीय बाल विधवा श्रीमती श्यामसुन्दरी देवी के साथ उनकी माता के हाथों से बड़ी धूम धाम से हुआ। पंडित जनों, इष्ट मित्रों, और बिरादरी के सज्जनों का भोजन आदि से सत्कार किया गया। जगह जगह से बधाई आने लगी (इस विधवा विवाह का पूरा वृत्तान्त मेरी उर्द पुस्तक विधवा मंगल में छपा है)।

५-धर्मनिष्ठा ।

१८-बचपन में मुझे कोई धर्मशिक्षा नहीं हुई थी, लोगों की देखा देखी स्नान करके शिवमूर्ति पर लोटा जल चढ़ा कर बकरे के समान मुंह बजा कर “बं बं बम और जय शिव जय” शिव कहता था। बलवे के पीछे अलीगढ़ के एक पंडित उदयराम जी हमारे गाम में तुलसीकृत रामायण बाँचा करते थे, मैं उसे चित्त देकर सुनता था। जब वे सायंकाल को प्रसन्न होकर बैठते, मैं उन से उसी रामायण पर कुछ प्रश्न करता जिन्हो वे प्रसन्न होकर समझा देते थे। मैं उन को कूप से जल लाकर पिलाता और भोजन बनाने में सहायता देता था। जब कभी गाम में सत्यनारायण की वा गरुड़ पुराण की कथा होती, उसे भी सुना करता था। जब मैं अलीगढ़ रहता था, प्रायः नियम से अचलेश्वर महादेव जी के दर्शन करता और दसहरे के दिनों में रामलीला देखता, और रात्रि में जब रामचन्द्र जी नगर को आते दर्शन करता था। एक समय दो चमार कमेरे (हमारे खेत के मज़दूर) आपस में विवाद कर रहे थे। वादी ने प्रतिवादी से कहा—“या को वेद न्यारो ही है”। यह वाक्य मेरे हृदय में जम गया। मैं सोचने लगा कि वेद कोई विचारने योग्य वस्तु है जिस का नाम यह अनपढ़ चमार भी जानता है। अंग्रेज़ी इतिहासों से भी वेद का नाम मैं जान गया था। जब मैं एन्ट्रेन्स क्लास में पढ़ता था, मेरे पास उर्दू-हिन्दी का एक मासिक पत्र आता था। उसमें संस्कृत अक्षरों में एक मन्त्र लिखा था, जिसे विवाह समय कन्या पढ़ती है। पं० कालीचरण जी हेड पंडित हमें संस्कृत में हितोपदेश पढ़ाया करते थे, मैंने उन से विनती करके उस मन्त्र का शब्दार्थ पूछा। वे क्रुद्ध होकर बोले—“तुम कायस्थ शूद्र हो, शूद्रों को वेदार्थ बताना निषेध है”। मैं चुप हो गया। सत्मत निरूपण आदि पादरियों की पुस्तकें भी देखा करता था, जिन में वेद और पुराणों की निन्दा भरी थी, जिनसे बड़ा सन्देह होता था ॥

६-महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती से भेंट ।

१६—संवत् १९३३ (सन् १८७७) में महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती मुरादाबाद पधारे । उन्होंने ने राजा जयकृष्णदास जी सी० आई० ई० की कोठी पर उतरकर लगातार पांच छह दिन तक सायंकाल को वैदिक धर्म पर व्याख्यान दिये । वे बैठकर व्याख्यान देते थे और अन्य वेद मन्त्रों के साथ (ओ३म् शन्नो' मित्रः शं वरुणः शन्नो' भवत्यर्यमा । शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुक्रमः । नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मं वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तन्मांमवतु तद्भुक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् । ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।) सत्यार्थ प्रकाश का आदि मन्त्र व्याख्यान के आरम्भ में और (ओ३म् शन्नो' मित्रः शं वरुणः शन्नो' भवत्यर्यमा । शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुक्रमः । नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम् । ऋतमवादिषम् । सत्यमवादिषम् । तन्मांमावीत् । तद्भुक्तारमावीत् । आवीन्माम् । आवीद्वक्तारम् । ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।) सत्यार्थ प्रकाश के अन्त का मन्त्र व्याख्यान के अन्त में स्पष्ट शब्दों में ऊँचे मधुर स्वर से बोलते थे और व्याख्यान भी बहुत शुद्ध, सरल और मधुर शब्दों में देते थे जिस को श्रोता लोग एक चित्त होकर सुनते थे । कैसी ही बात चीत वा कोलाहल हो उन के बोलते ही सब एक साथ बंद हो जाता था और शान्ति फैल जाती थी । व्याख्यान की समाप्ति पर वे लोगों की शंकाओं का समाधान करते थे । कुछ लोग रात्रि में दस ग्यारह बजे तक उन से सत्संग करते थे । मैं भी नंगे पैरों अङ्गा और भक्ति से दोनों समय व्याख्यान और सत्संग में जाता था और प्रातःकाल जब वे दण्डा लेकर नगर से बाहिर भ्रमण करते थे, मैं भी जाकर मार्ग में उन के दर्शन करता और “आनन्दित रहो” यह आशीर्वाद लेता । स्वामी जी का शरीर विशाल, पुष्ट गैहुँआ रंग था । उनकी बोल चाल में बुद्धिमत्ता गम्भीरता, बीरता, निष्पक्षता और परोपकारिता साक्षात् देखती थी । उन का दण्डा लेकर भ्रमण करना मेरी आंखों के सामने घूमा करता है ॥

२०—उन्हीं दिनों, मैं और मुनशी कालिका प्रसाद दो कायस्थों ने, लाला चन्द्रमणि और लाला द्वारिका प्रसाद दो वैश्यों ने स्वामी जी से यज्ञोपवीत और गायत्री मन्त्र लिया । मैंने स्वामी जी की आज्ञा से उन की पंचमहायज्ञ विधि पुस्तक को मुनशी इन्द्र-मणि जी से पढ़ा । मैं ने एक दिन स्वामी जी से पूछा कि यदि लोग आप से यज्ञोपवीत लेने में दोष लगावें और हमारा धर्म बूझें तो क्या उत्तर दिया जावे । उन्होंने ने कहा कि सन्यासी से यज्ञोपवीत लेना शास्त्रोक्त है, और अपना धर्म वैदिक धर्म बतलाया करो । तभी उन्होंने बड़े प्रेम से मेरी पीठ ठोककर कहा—“ईश्वर करे तू वेदों को पढ़कर उन का प्रचार करे ।” मैं स्वामी जी की पुस्तकों को बहुत रुचि से लेता और पढ़ता था । उनके मासिक पत्र वेद भाष्य के आहकों में मेरा नम्बर ६ था जिसको मैं अन्त तक १७ वर्ष तक लेता रहा ॥

२१—जब स्वामी जी सन् १८७७ में मुरादाबाद आये थे, एक आर्य समाज उक्त राजा साहिब की कोठी पर खोला गया था जो आपस का अनबन से टूट गया ।

स्वामी जी ३ जुलाई १८७६ को फिर मुरादाबाद आये और शहर में उन्हीं राजा साहिब की कोठी पर उतरे। इन दिनों स्वामी जी संग्रहणी (दस्तों) के रोग से पीड़ित थे, तीन ब्याखान दिये। २० जुलाई १८७६ को स्वामी जी की उपस्थिति में उन्हीं राजा साहिब की कोठी पर बड़ा हवन करने के लिये सामग्री मंगवाई गयी और मोहन भोग भी बनाया गया। उस दिन वर्षा बहुत हो रही थी, एक घर में थोड़ा सा हवन किया गया। सामग्री और मोहन भोग बच गया। लगभग पान सौ मनुष्य उपस्थित थे, देर हो जाने के कारण राजा साहिब ने सब को भोजन कराया और वह मोहनभोग भी बंटवा दिया। उसी दिन आर्यसमाज स्थापित होकर मुनशी इन्द्रमणि प्रधान, कुमर परमानन्द और ठाकुर शंकरसिंह मन्त्री, साहू श्यामसुन्दर कोशाध्यक्ष, लाला जगन्नाथ दास पुस्तकाध्यक्ष और अड़तीस सभासद हुए जिन में मैं भी था। इस अवसर पर धूर्तों ने गप उड़ाई कि स्वामीजी ने मोहन भोग में थूक दिया था, वह इन लोगों ने खाया है। बिरादरी में पंचायतें होने लगीं, कुछ लोग समाज से अलग हो गये और कुछ दृढ़ होकर कार्य करते रहे। मुझ से भी कुछ बिरादरी वालों ने खेँचा तानी की, मैं पक्का होकर समाज में बना रहा। दूसरे वर्ष चिरंजीव विष्णु-दयाल का यज्ञोपवीत कराया। सब भाई बन्धु, नातिदार और आर्यसमाजी भाई संस्कार में सम्मिलित हुये, मैं ने उस को यज्ञोपवीत और गायत्री मन्त्र दिया। आये हुये स्त्री पुरुषों का सत्कार मिष्टान्न और भोजन आदि से किया गया और कार्य बड़ी प्रसन्नता से पूरा हुआ ॥

२२-मुसलमानों ने कुछ पुस्तक हिन्दुओं के देवताओं और महात्माओं की निन्दा के निकाले थे। मुनशी इन्द्रमणि जी मुरादाबादी ने हिन्दू धर्म के अनुसार उन के उत्तर—“हमला हिन्दू, समसाम हिन्दू और सौलत हिन्दू”—तीन पुस्तकों में देकर हिन्दू धर्म को रक्षा की। मुसलमानों के अभियोग चलाने पर मजिस्ट्रेट मुरादाबाद ने मुनशी जी पर पाँच सौ रुपया जुर्माना किये और पुस्तक फड़वा डाले। अपील करने पर हाईकोर्ट इलाहाबाद और लाट साहिब के यहाँ से जुर्माना माफ़ हो गया ॥

२३-मु० इन्द्रमणि ने पुस्तकें रच कर हिन्दू धर्म की रक्षा की थी और अब मुरादाबाद आर्यसमाज के प्रधान थे, उनको प्रार्थना और स्वीकृति पर स्वामी जी की सम्मति से आर्य समाजों ने अपराध की सफ़ाई और जवाबदेही करने को मुनशी जी के लिये इस शर्त पर चन्दा किया कि जो चन्दा थोड़ा आवे, आर्य समाज मेरठ खर्च चला कर समाजों से ले लेवे, और जो अधिक आवे तो शेष धन का उपयोग समाजों की सम्मति से किया जावे, चन्दे का धन लाला रामशरणदासजी रईस मेरठ के पास एकत्र होवे और वहाँ से ही खर्च किया जावे। जो चन्दा मेरठ समाज में आया था, इस में से मुनशी जी को खर्च के लिये भेजा गया, और बहुत सा धन सीधा मुनशी जी के पास आया। आर्यसमाज मेरठ ने उनसे आय व्यय का हिसाब माँगा, उन्होंने ने और उनके शिष्य काला जगन्नाथदास ने हिसाब न दिया और प्रार्थना किया कि यह धन केवल मुनशी जी के लिये आया है, सब का सब उन को मिलना चाहिये। बहुत समझाने बुझाने पर भी वे दोनों स्वामी जी और आर्यसमाजियों को

दोष लगाने लगे और अलग आर्यसमाज करने लगे । तब आर्यसमाज मुरादाबाद ने श्री स्वामी जी महाराज की आज्ञा लेकर एक बहुत बड़ी सभा की । उस में सर्व-सम्मति से निश्चय हुआ कि मुनशी इन्द्रमणि जी और उनके शिष्य लाला जगन्नाथ दास जी न तो मुकुद्दमे का हिसाब देते हैं और न सफ़ाई करते हैं, और उल्टे स्वामी जी और आर्य समाजों को झूठा दोष लगाते और अलग समाज करते हैं, इस लिये दोनों महाशय आर्य समाज मुरादाबाद से अलग किये गये । तब निम्नलिखित पत्र समाजों और समाचार पत्रों को भेजा गया—

महाशय, नमस्ते । विदित हो कि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की आज्ञानुसार, आर्य समाज के नियमों से विरुद्ध आचरण के कारण मुनशी इन्द्रमणि प्रधान और लाला जगन्नाथ दास पुस्तकाध्यक्ष अपने अपने पद और सभासदी से इस आर्य समाज से २६ मई सन् १८८३ ई० से अलग किये गये और मुनशी दुर्गाचरण प्रधान नियत हुये । आगे को पत्र आदि मुनशी क्षेमकरणदास मन्त्री के नाम ठिकाना मकान साहू श्यामसुन्दर जी रईस मंडी बांस मुरादाबाद भेजे जावें । क्षेमकरणदास मन्त्री आर्य समाज मुरादाबाद, ३० मई १८८३ ।

इस के पीछे मुनशी इन्द्रमणि जी का समाज कुछ दिनों में टूट गया और पुराना समाज अधिक अधिक उन्नति करता हुआ चला आता है । मन्त्री पद के लिये मेरा निर्वाचन निरन्तर सन् १८८० से सन् १८८४ तक (जब तक मैं मुरादाबाद रहा) होता रहा । और बदली होजाने पर शाहजहाँ पुर, कटनी मुड़वारा, करवी, बांदा, जोधपुर इलाहाबाद आदि समाजों में कभी सभासद्, कभी मन्त्री और कभी प्रधान होकर सेवा करता रहा ॥

२४—महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जन्म गुजरात देश को मौर्वी नगर में संवत् १८८१ विक्रमीय (सन् १८२४ ई०) में हुआ था, वे ब्राह्मण थे और अपने को मथुरा के महर्षि स्वामी विरजानन्द सरस्वती का शिष्य मानते और पुस्तकों में लिखते थे । इन का स्वर्गवास दिवाली के दिन सायंकाल ६ बजे कार्तिक कृष्णा अमावस संवत् १८४० वि० (ता० ३० अक्तूबर १८८३) को अजमेर नगर में हुआ । वे अपने जीवित ही फागुन बदी ५ संवत् १८३६ वि० (२७ फ़रवरी १८८३ ई०) को राजधानी उदयपुर में अपना स्वीकार पत्र (वसियत नामा) अपने धन सम्पत्ति की रक्षा और वृद्धि करने और वैदिक धर्म प्रचार आदि परोपकार में लगाने के लिये श्रीमती परोपकारिणी सभा के नाम रजिस्टरी करा चुके थे सिजके सिभासद् इस प्रकार थे—

- १—श्रीमन्महाराजाधिराज-महेन्द्र-यावदार्थकुलदिवाकर महाराज जी श्री १०८ श्री सज्जन सिंह वर्मा, धीर वीर जी० सी० ऐस० आई० उदयपुर राज सभापति मेवाड़
- २—लाला मूलराज जी एम० ए० एक्सट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर प्रधान आर्य समाज लाहौर, (लुधियाना निवासी) उपसभापति
- ३—श्रीयुत कविराज श्यामल दास जी, उदय पुर, राजमेवाड़ मन्त्री
- ४—लाला रामशरण दास जी रईस, उपप्रधान आर्यसमाज मेरठ

भाष्यकार की आत्मजीवनी ।

(५, ०६७)

५-पं० मोहन लाल विष्णुलाल जी, उदयपुर (मथुरा निवासी)	उप मन्त्री
६-श्रीमन्नाराधिराज, श्री नाहरसिंह वर्मा शाहपुरा,	सभासद
७-श्रीयुत राव तखत सिंह जी वेदे, राज्य मेवाड़	"
८-श्रीमद्राजराणा श्री फतह सिंह जी वर्मा देलवाड़ा	"
९-श्रीमत् श्री अर्जुन सिंहजी वर्मा, आसीद	"
१०-श्रीमत् महाराज श्री गज सिंहजी वर्मा, उदयपुर	"
११-श्रीमत् राव श्री बहादुर सिंह जी वर्मा, मसूदा जिला अजमेर	"
१२-राय बहादुर पंडित सुन्दरलाल जी सुपरिन्टेन्डेन्ट वर्कशाप अलीगढ़ (आगरा निवासी)	"
१३-राजा जयकृष्ण दास जी सी० आई० ई० डिपटी कलक्टर बिजनौर (मुरादाबाद निवासी)	"
१४-बाबू दुर्गा प्रसाद जी कोषाध्यक्ष आर्य समाज फरुखाबाद	"
१५-लाला जगन्नाथ प्रसाद जी फरुखाबाद	"
१६-सेठ निर्भय राम जी प्रधान आर्य समाज फरुखाबाद, (विसावर राजपूताना निवासी)	"
१७-लाला कालीचरण जी मन्त्री आर्यसमाज फरुखाबाद	"
१८-बाबू छेशीलाला जी गुमाश्ते कमसरयेट छावनी मुरार (काहनपुर निवासी)	"
१९-लाला साईदास जी मन्त्री आर्यसमाज, लाहौर	"
२०-बाबू माधवदास जी मन्त्री आर्यसमाज, दानापुर	"
२१-राय बहादुर रा० रा० राजमान् राजेश्वरी पंडित गोपालराव हरि देशमुख, मेम्बर काँसिल गवर्नर बम्बई-प्रधान आर्यसमाज, बम्बई (पूना निवासी)	"
२२-राव बहादुर महादेव गोविन्द, रानडे, जज पूना	"
२३-पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा, संस्कृत प्रोफ़ सर ओक्सफ़ोर्ड यूनी- वर्सिटी इंग्लैंड (बम्बई निवासी)	"

यह परोपकारिणी सभा अधिकारियों और सभासदों की अदला बदली से अब तक अपना कार्य कर रही है। इस की पहिली बैठक संवत् १९४१ वि० में अजमेर नगर में हुई। उसमें सब आर्यसमाजों के प्रतिनिधि आये, मैं मुरादाबाद आर्यसमाज का प्रतिनिधि था। इस बैठक में वैदिक यन्त्रालय को प्रयाग से लाकर अजमेर में रखने और स्वामी जी कृत 'वेदभाष्य, सत्यार्थ प्रकाश आदि पुस्तकें छपवाने और प्रचार करने आदि कार्यों के लिये निश्चय हुआ ॥

२५-दिसंबर १८८४ बड़े दिन की छुट्टी में प्रयाग नगर में हिन्दू समाज की एक बड़ी बैठक हुई जिसमें समस्त भारतवर्ष के हिन्दुओं के प्रतिनिधि आये थे, मैं शाहजहांपुर आर्यसमाज का प्रतिनिधि होकर गया था। इस हिन्दू समाज का उद्देश्य था कि भारतवर्ष के सब हिन्दू लोग एकमत का अवलंबन करें और यथाशक्ति देशीय

वस्तु काम में लावें । मैं ने अपने मित्रों सहित प्रयाग के चौक बाज़ार में सब को वैदिक धर्म पर चलने, विदेशीय पख़ आदि छोड़ने और देशीय वस्त्र आदि धारण करने पर व्याख्यान दिया और इसी विषय का समर्थन हिन्दू समाज में किया । यह हिन्दू समाज तभी एक बार जुड़ा और फिर उसका पता न चला ॥

२६-जब महाशय रमाकान्त जी वी० ए० के विशेष उद्योग से प्रयाग नगर में दरयाबाद के पास दयानन्द ऐंगला वर्नेक्यूलर स्कूल (डी० ए० वी० स्कूल) बनना आरंभ हुआ, उस की कार्यकारिणी सभा ने रविवार बैशाख शुक्ला १२ संवत् १९७२ तारीख १४ मई १९१६ को प्रातःकाल हवन आदि वैदिक रीति करके बड़े समारोह के साथ उस पवित्र पाठशाला दयानन्द स्कूल की आधार शिला मेरे हाथ से रखवाई । परमात्मा की कृपा से इस स्कूल में अब संवत् १९७८ (सन् १९२१) में संस्कृत फ़ारसी, अंग्रेज़ी आदि के बड़े विद्वान्, आर्य समाज के मुख्य स्तम्भ महाशय गंगा-प्रसाद जी एम० ए० हेड मास्टर हैं और वैदिक धर्म शिक्षा सहित एंग्लो-वेस्ट परीक्षा तक अच्छे परिणाम के साथ पढ़ाई होती है ॥

२७-मैं ने सन् १८८५ ई० में शाहजहांपुर स्कूल की नौकरी छोड़कर इन्डियन मिडलैण्ड रेलवे में जो उस समय बन रही थी, तीन वर्ष नौकरी की, और कटनी मुड़वारा, कर्वी बांदा आदि स्थानों में सज्जनों के सम्मेलन से आर्य समाज स्थापित किये, और मुरादाबाद आदि से मंगाकर देशी कपड़े और वस्त्रों का प्रचार करता रहा । फिर वहां से नौकरी छोड़कर अपने माता पिता आदि के साथ अपने घर शाहपुर-मडराक में तीन वर्ष रहकर वैदिक धर्म का अंकुर जमाया, और गृहस्थी के कार्य करता रहा । इस के पीछे सन् १८९१ ई० से सन् १९०७ तक रेलवे के दफ़्तर में नौकर होकर जोधपुर आर्यसमाज में अपना कर्तव्य करता रहा । वहां से प्रयाग आकर पहिले कटरे समाज में सम्मिलित रहा, फिर वहां से लूकरगंज में आकर रहने पर प्रयाग के चौक समाज में सम्मिलित हूँ ॥

७-संस्कृत विद्या, प्राज्ञ परीक्षा और वेद परीक्षा ।

२८-जब जोधपुर में मेरी माता, दो छोटे पुत्र और धर्मपत्नी दो तीन महीने में स्वर्गवास कर गये, घर रीता होगया, घर के कामों से मेरा मन हटने लगा । मेरे बड़े पुत्र आगरे कालिज में पढ़ते थे, बड़ी पुत्री का गौना होने को था, दो छोटी पुत्रियां पढ़ती थीं और कुमारी थीं । पंडित ठाकुरप्रसाद शर्मा, आचार्य ग्राम हरीपुर डाकघर हनुमानगंज, ज़िले इलाहाबाद के रहने वाले, जोधपुर आर्यसमाज के मुख्या-पदेशक थे । वे मेरी दशा को जानते थे, उन्होंने निश्चय कराया कि घर में रहकर ही योगाभ्यास करके विद्या की वृद्धि करनी चाहिये और अनसमझ बच्चों को अपने हाते हुये किसी दूसरे के आश्रय में अनाथ करके छोड़ चला जाना बड़ी ही निर्दयता है, गृहस्थ कर्म निबाह कर कर्तव्य करते रहना परम तप है । तब मैं अपनी शिक्षा, बच्चों की शिक्षा और गृहस्थी के काम काज में लग गया । उक्त पंडित जी ने मेरे साथ बड़ा उपकार किया । उन्होंने अवकाश निकाल कर नौ दस बजे रात्रि को मुझे

संस्कृत पढ़ाकर पंजाब विश्वविद्यालय की प्राज्ञ परीक्षा में सन् १८६३ ई० में उत्तीर्ण करा दिया । मैं पंडित जी से पढ़ कर वही पढ़ाई अपनी बड़ी पुत्री को पढ़ाता था जिसने भी प्राज्ञपरीक्षा दी, पर अनुत्तीर्ण रही । उस के पीछे वे मुझे योगदर्शन आदि पढ़ाने रहे । जोधपुर से उनके चले जाने पर मैं पंडित भवानीदत्त शर्मा शास्त्री से पंजाब की शास्त्र परीक्षा के ग्रन्थ, विशेष करके ऋग्वेद पढ़ता रहा । इस के अतिरिक्त जोधपुर में जब जब अवकाश रहता, श्रीमान् स्वामी अच्युतानन्द सरस्वती, स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती, प्रज्ञाविभुः स्वामी गिरानन्द सरस्वती, बृहदकवि विद्याभास्कर वैयाकरण केशरि, पण्डित गुरु लाल चन्द्र शर्मा से व्याकरण, निरुक्त, वेदादि शास्त्र मैं विचारता था ॥

२६-जुलाई सन् १८०७ में जोधपुर से लौकरी छोड़ कर प्रयाग में अपने पुत्र विष्णुदयाल के पास रहा और अब तक रहता हूँ । घर में शान्ति और भोजन आदि का सुवीता देख कर वेदों के विचार करने की उत्कण्ठा और बढ़ी । ऋग्वेद में १०,५८६ (दस सहस्र पाँच सौ नवासी), अथर्ववेद में ५,६७७ (पाँच सहस्र नौ सौ सत्त हत्तर), यजुर्वेद में १६७५ (उत्तीस सौ पचपत्तर), और साम वेद में १८७३ (अठारह सौ तिहत्तर) मन्त्र हैं, अर्थात् सामवेद सब में छोटा वेद है । इस लिये मैं ने पण्डित तुलसी राम के और सायणाचार्य के भाष्य सहित पहिले सामवेद पढ़ा । इस समय पण्डित रामजी लाल शर्मा अध्यापक हिन्दी प्रेस प्रयाग बड़े प्रेम और परिश्रम से मुझे सामवेद और यजुर्वेद पढ़ाते रहे । संवत् १८६५ वि० (सन् १८०८) में बड़ौदा राजधानी जाकर श्रावण मास दक्षिणा परीक्षा देकर सामवेद भाष्य में उत्तीर्ण होकर राज्य से दक्षिणा और प्रमाण पत्र पाया । तब मैं सामवेदी कहलाया । वहाँ से आकर मैं ने स्वामी दयानन्द और महीधर के भाष्यों से यजुर्वेद पढ़ा । ऋग्वेद को मैं बहुत कुछ पहिले देख चुका था, उस को स्वामी दयानन्द और सायणाचार्य के भाष्यों और अन्य ग्रन्थों से पूरा किया । अथर्ववेद पर सायण भाष्य पूरा नहीं है, उस को भी कुछ उस भाष्य से और कुछ कोशों और अंग्रेजी अनुवाद आदि की सहायता से पढ़ डाला ॥

३०-दिसंबर सन् १८१० में प्रयाग की प्रदर्शनी पर महात्मा मुनशी राम जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी से भेंट हुई । उन्होंने गुरुकुल में स्थापित रहने और स्वाध्याय करने के लिये स्थान देने का वचन दिया । तब मैं माघ संवत् १८६७ वि० (जनवरी १८११ ई०) में गुरुकुल कांगड़ी गया । वहाँ मैं आचार्य जी की आज्ञा से उन की कुटी के पास गंगा तट पर एक पर्ण कुटी में रहा, भोजन गुरुकुल भंडार में बना हुआ अपने व्यय से खाता था । पं० काशी नाथ शर्मा आचार्य गुरुकुल में वेदाचार्य थे । मैं ने बड़ी नम्रता से विनती करके उनसे अपना अभिप्राय कहा । वे प्रसन्न होकर ऋग्वेद और अथर्ववेद के पदार्थ समझाने और मेरे किये हुये अर्थों के शोधने में बड़ी कृपा करते थे । और जब पण्डित शिव शंकर शर्मा काव्यतीर्थ उस विद्यालय में आये, वे भी मुझे सहायता देते रहे । वहाँ से ही मैंने ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद भाष्यों में श्रावण मास दक्षिणा परीक्षा देने की प्रार्थना पत्र बड़ौदा राजधानी भेजा, और आप भी महीने आषाढ़ संवत् १८६८ में बड़ौदा पहुँचा । वहाँ नियम ज्ञात हुआ कि एक वर्ष में दो से अधिक वेदों में परीक्षा नहीं हो सकती । तब मैं ने ऋग्वेद और अथर्ववेद

भाष्यों में परीक्षा दी, ऋग्वेद में उत्तमा और अथर्ववेद में मध्यमा कक्षा में उत्तीर्ण हुआ और प्रमाण पत्र और दक्षिणा लेकर भादों संवत् ११६८ वि० (सन् १८११) में प्रयाग लौट आया, और तीन वेदों में उत्तीर्ण होने से त्रिवेदी कहलाया । फिर मैं दूर स्थान होने और भाष्य आदि बनाने में लग जाने के बड़ोदा जाकर यजुर्वेद में परीक्षा न दे सका ॥

८-अथर्ववेद का भाष्य ।

३१-मुझे स्वाध्याय करते समय शब्दों की व्युत्पत्ति के साथ पदार्थ करने में सदा से रुचि है । उसी ढंग से मेरा पहिला पुस्तक रुद्राध्याय, यजुर्वेद अध्याय १६ (नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः . . .) शब्दों की व्युत्पत्ति के साथ ब्रह्म निरूपक अर्थ सहित संस्कृत, आर्यभाषा (हिन्दी) और अंग्रेजी में संवत् १८६३ वि० (सन् १८०६) में छपा । दूसरा पुस्तक हवनमन्त्राः चारो वेदों के संगृहीत मन्त्र, ईश्वर स्तुति, स्वस्तिवाचन, शान्ति करण आदि (जो मर्षिस्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने पुस्तक "संस्कार विधि" में संस्कारों और नित्य कर्म के लिये लिखे हैं) सरल आर्य भाषा (हिन्दी) में शब्दार्थ सहित संवत् १८६८ वि० (सन् १८१२ ई०) में छपा । इन पुस्तकों की व्याख्या शैली देखकर विद्वान् मित्रों ने आग्रह करके सम्मति दी कि छोटे छोटे ग्रन्थों का लिखना बन्द करके अथर्ववेद का हिन्दी अर्थ सहित भाष्य लिखना चाहिये । इस वेद का सायणाचार्यकृत संस्कृत भाष्य प्रायः अप्रामाणिक और बहुत अधूरा है । उसी का सहारा लेकर अंग्रेजी, जर्मनी आदि भाषाओं में अप्रामाणिक अनुवाद हुये हैं, और हमारी देश भाषा में कोई भी इस का अनुवाद नहीं है । मैं यह सुनकर बड़े सोच में पड़ गया कि मेरी आयु बहुत होगयी है, मैं बड़ा धनी और बड़ा विद्वान् भी नहीं हूँ, ऐसा बड़ा ग्रन्थ कैसे पूरा कर सकूंगा । फिर मैं ने स्वामी दयानन्द सरस्वती, सायणाचार्य, त्रिफुलिङ्ग साहिब आदि विद्वानों के रचे पुस्तकों के बड़े बड़े संग्रह पर ध्यान किया कि यह महाशय इतना-इतना बड़ा काम कर सके हैं, पुरुषार्थ मुख्य है । अन्त में यह निश्चय हुआ कि मनुष्य अपने तन, मन, धन को तीर्थ यात्रा आदि कामों में लगा देते हैं, मैं भी अपनी शक्ति भर अपना तन, मन, धन इस भाष्य के करने में लगाऊँ, अगाऊ धन ग्राहकों से न लिया जावे, एक एक काण्ड पूरा निकले और ग्राहक लोग उसे लेते रहें, जिस से जितना हो सके उतना तो होजावे, शेष और कोई आगे कर लेगा । पहिला काण्ड भाष्य १८६६ (दिसंबर १८१२) में निकला । विद्वानों ने उसे अंगीकार किया और आगे भाष्य करते रहने की अनुमति दी । मैं आप ही भाष्य करता, लिखता और प्रूफ़ शोधता था । स्थायी ग्राहक थोड़े थे, मूल्य लागत से बहुत थोड़ा आता था, छपाई, कागज़ आदि की त्रुटि को मैं अपने पास के पूरा करता था । इस प्रकार धीरे धीरे कुछ काण्ड निकल गये और मेरा धन भी समाप्ति पर आने लगा । पत्र व्यवहार करने पर जून १८१६ ई० से श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त ने १५) मासिक देना और परिवर्तन में भाष्य लेना स्वीकार किया । यह नियम चार वर्ष तक रहा । वैशाख संवत् १८७४ वि० (सन् १८१७ ई०) से श्रीमती आर्य प्रतिनिधि

सभा पंजाब ने २५) मासिक देना और परिवर्तन में भाष्य लेना स्वीकार किया जो नियम बत्तीस महीने तक चला। इस स्थिर आय के होने पर एक लेखक २५) मासिक पर लगभग भाष्य की समाप्ति तक रक्खा गया जिससे भाष्य निकलने में कुछ शीघ्रता हुई। श्रीमान् बड़ोदा महाराज कागड १ से ३ तक बीस बीस पुस्तक और फिर शेष भागों के चार चार पुस्तक लेते रहे। इस के अतिरिक्त लगभग २०० स्थायी ग्राहक रहे और कुछ भाष्य आदि फुटकर पुस्तक बिके। इस आय में प्रत्येक कागड की छपाई, कागज़ आदि के व्यय का पूरा न पड़ता था। शेष मेरे पास से लगता था और काम चलता रहा ॥

६-विधन ।

३२-धन का वृत्तान्त ऊपर लिख चुका हूँ, मेरे शरीर में ड्वर आदि साधारण रोग भी कभी कभी होते रहे, और भी बड़े बड़े विघ्न उपस्थित हुये—

(क) अपने कुटुम्बियों और सम्बन्धियों की मृत्यु ।

१-मेरी बड़ी पुत्री सुमित्रा देवी एक पुत्र और पुत्री होने पर गौने से चार पांच वर्ष में विधवा हो गई थी, उस का वह पुत्र महेश चरण अपने माता और बहिन के साथ मेरे पास रहता था और एफ० ए० क्लास में अंग्रेज़ी आदि पढ़ता था, वह होनहार लड़का चार पांच घंटे रुझ रहकर १८ वर्ष की आयु में अगस्त १९१२ में चल बसा ।

२-शिवदयाल-मेरा मंझला पौत्र, आयु १८ वर्ष, संस्कृत और अंग्रेज़ी आदि में बड़ा चतुर अकतूबर १९१८ में चल दिया ।

३-बाबू चंडीप्रसादजी, मेरे मंझले दामाद, सन् १९१९ में स्वर्गवास कर गये ।

४-लाला भुशीलाल, मेरे बड़े भतीजे अलीगढ़ वाले, सन् १९१९ में स्वर्गवासी हुये ।

५-सुमित्रा देवी मेरी बड़ी पुत्री ने ५१ वर्ष की आयु में स्वर्गवास किया । उस का जन्म भादों संवत् १९२७ वि० (सन् १८७० ई०) में हुआ था, और उस ने भादों सुदी ७ संवत् १९७८ (तारीख ८ सितंबर १९२१) को शरीर छोड़ा । वह यहाँ पर क्रायवेट गर्ल्स स्कूल व कालिज में मुख्य संस्कृत अध्यापिका थी ।

(ख) कुछ देशहितैषी पुरुषों की मृत्यु—

१-पं० तुलसीराम स्वामी मेरठ-सामवेद भाष्यकार और सम्पादक वेद-प्रकाश ।

२-पं० भीमसेन शर्मा-इटावा, सम्पादक ब्राह्मण सर्वस्व, वेद व्याख्याता कलकत्ता यूनिवर्सिटी ॥

३-महाशय कालिकाप्रसाद, सिल्क मर्चेन्ट बनारस ।

४-ठाकुर गदाधर सिंह, मन्त्री श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा, संयुक्तप्रान्त ।

यह चारो महाशय अथर्ववेद के कठिन मन्त्रों पर बात चीत, भाष्य पूरा करने की प्रेरणा, और प्रचार के लिये प्रयत्न करते थे ।

(५, १०२)

५-पं० ओंकारनाथ वाजपेयी-अध्यक्ष ओंकार प्रेस प्रयाग ।

अथर्ववेद भाष्य आरंभ से मन्त्र सूची तक इस प्रेस में छपा, पं० ओंकारनाथ की मृत्यु के पीछे गड़ बड़ पड़गयी, काम देर से होने लगा, घर वालों के बीच परस्पर झगड़ा उठा और अन्त में वह प्रेस बन्द हो गया। अन्तिम भाग पद सूची को पंडित बद्रीप्रसाद पाण्डेय अध्यक्ष नारायण प्रेस प्रयाग ने बहुत कष्ट उठा कर छपा है, जिस के लिये उन्हें धन्यवाद है।

(ग) जर्मन महायुद्ध जो अंग्रेजी सरकार और फ्रान्स राज्य की मित्रता में सन् १८१४ से सन् १८१८ ई० तक रहा, उसमें एक भय यह था कि यदि राज्य परिवर्तन हुआ तो भाष्य निकलने में बाधा पड़ेगी, परन्तु मित्र राज्यों की जीत हुई और कुशल रही। दूसरे इस महायुद्ध के समय से अब तक कागज़ आदि और अन्य सब वस्तुयें युद्ध से पहिली को अपेक्षा चौगुनी पचगुनी महंगी हैं। भाष्य में आरंभ से अन्त तक सब देशी कागज़ लगा है, परन्तु अन्त के भागों में सामर्थ्य से अधिक मूल्य बढ़ जाने और कभी कभी न मिलने के कारण कुछ हलका कागज़ लगाया गया, और छपाई चलती रही।

(घ) सन् १८१७ में तीन वर्ष के लिये ऐकौन्टेन्ट जनरल के दफ्तर से पुत्र विष्णुदयाल का जाना सिक्किम राज्य को हुआ और पौत्र शंकरदयाल सेठ सन् १८१८ में बी० एस सी० परीक्षा उत्तीर्ण करके बिजुली विद्या की शिक्षा पाने को तीन वर्ष के लिये बंगलौर चले गये। इन दोनों के बाहिर जाने से घर का सब काम काज मैं ही करता था।

(ङ) कभी कभी भाष्य बहुत कठिन आ जाता था, समझ में न बैठने से जी घबराने लगता था। तब मैं परमेश्वर से लज्जा रखने की प्रार्थना करता और स्वामी दयानन्द जी का स्मरण करता, रात्रि को स्वप्न में ऐसा जान पड़ता था कि स्वामी जी उस मन्त्र का भाष्य अपने लेखक को मेरे सामने लिखा रहे हैं, मेरी कठिनाई दूर हो जाती थी। कभी कभी विद्वानों से मिलते मिलते हुये, एकान्त में रात्रि को सोते हुये, प्रातःकाल शौच करते हुये, अथवा बाग आदि में घूमते हुये कठिन अर्थ ज्ञात हो जाते थे।

१०-धन्यवाद ।

३३-परमेश्वर ने वेद में कहा है कि मनुष्य इस प्रकार विचारता हुआ शुभ कर्म करके जय प्राप्त करे—

ओ३म् । कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयं मे सव्य आहितः ।

गोजिद् भूयासमश्वजिद् धनंजयो हिरण्यजित् ॥

अथर्ववेद ७।५०।८।

हे परमेश्वर ! (कृतम्) कर्म (मे) मेरे (दक्षिणे) दाहिने (हस्ते) हाथ में और (जयः) जीत (मे) मेरे (सव्ये) बायें में (आहितः) स्थित हो, मैं (गोजिद्) गौओं अर्थात् इन्द्रियों, भूमि और गौ आदि उपकारी प्राणियों का जीतने वाला,

(अश्वजित्) शीघ्रगामी घोड़े आदि का जीतने वाला, (धनंजयः) धन का जीतने वाला और (हिरण्यजित्) तेज का जीतने वाला (भूयासम्) रहूँ। अर्थात् जो मनुष्य परमात्मा को ध्यान में रख कर वेदविहित कर्म करते रहते हैं, वे सब प्रकार की सिद्धि पाते हैं। किसी विद्वान् ने इस वैदिक सिद्धान्त को यों दर्शाया है—

धरि लात विघ्न अनेक पै निरभय न उद्यम तैं टरें ।

जै पुरुष उत्तम अन्त में ते सिद्ध सब कारज करें ॥

३४—उस सर्वशक्तिमान् परमपिता जगदीश्वर परमात्मा को सब से पहिले मेरा बारंबार धन्यवाद है, जिस ने अपनी अनन्त महिमा और कृपा से एक किसान के पुत्र, मुझ तुच्छ गंवार, निपट अज्ञान, निर्बल, निर्धन को पवित्र वैदिक उपदेश से शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक बल दिया और मुझे दृढ़चित्त रख कर मेरा संकल्प पूरा कराया। दूसरे भगवान् महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को मेरा अत्यन्त धन्यवाद है जिन के पवित्र दर्शन और सद्गुपदेश से वेदों की ओर मेरा ध्यान हुआ। तीसरे उन विद्वान् गुरुजन महोशयों का कृतकृत्य हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर मुझे स्वाध्याय कराया। चौथे उन सब महानुभवी महात्माओं का कृतज्ञ हूँ जो मुझे मानसिक, वाचिक और आर्थिक सहायता देकर इस भाष्य के करने में मेरा उत्साह बढ़ाते रहे और विघ्नों से बचाते रहे। सारांश यह है कि यह अथर्ववेद भाष्य संवत् १९६६ वि० (सन् १९१२ ई०) में आरंभ हुआ और संवत् १९७८ वि० (सन् १९२१) में सब प्रकार निर्विघ्न समाप्त होकर छप गया। परमात्मा करे कि भवगद्गीता आदि ग्रन्थों के समान वेदों के अनेक भाष्य बनें और उस का प्रचार नित्य नित्य होता रहे जिस से संसार में प्रीति और आनन्द बढ़े।

ओ३म् । यां मे धां देवगणाः पितरश्चोपासते ।

तया मामद्य मे धयाग्ने मे धाविनं कुरु ॥

यजुर्वेद ३१। १४ ॥

(याम्) जिस (मेधाम्) धाणावती निश्चल बुद्धि को (देवगणाः) देवता, विद्वान् जन (च) और (पितरः) पालन करने वाले पितर लोग (उपासते) सेवते हैं, (तया) उस (मेधया) निश्चल बुद्धि से, (अग्ने) हे सर्वव्यापक प्रकाशस्वरूप परमेश्वर ! (माम्) मुझ को (अद्य) आज अर्थात् प्रत्येक समय (मेधाविनम्) निश्चल बुद्धि वाला (कुरु) कर ॥

ओ३म् । शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ॥

५२ लूकरगंज, प्रयाग,
पौषकृष्णा ११ संवत् १९७८ वि०
२५ दिसंबर १९२१ ।

ल्लेमकरणदास त्रिवेदी

अथर्ववेद भाष्यकार ।

अथर्ववेदभाष्य सम्मतियां ॥

श्रीमती आर्य प्रतिनिधिसभा, पंजाब, गुरुदत्ता भवन लाहौर अन्तरंग सभा के प्रस्ताव संख्या ३ तिथि ६-१२-७३ की प्रति ।

ला० दीवान चन्द प्रतिनिधि आर्य समाज बटाला का प्रस्ताव, कि पं० होम-करणदास को अथर्ववेद भाष्य के लिये ४०) मासिक की सहायता दी जावे, उपस्थित हुआ । निश्चय हुआ कि २५) मासिक की सहायता एक वर्ष के लिये दी जावे और उसके परिवर्तन में उतने मूल्य की पुस्तकें उन से स्वीकार की जावें ॥

टिप्पणी—यह नियम बत्तीस महीने तक रहा ॥

श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रदेश आगरा और अचध, स्थान बुलन्दशहर, अन्तरंग सभा ला० ४ जन १९१६ ई० के निश्चय संख्या १३ (अ) और (ब) की लिपि ।

(अ) समाजों में गश्ती चिट्ठी भेजी जावे कि वे इस भाष्य के ग्राहक बनें तथा अन्यो को बनावें ।

(ब) सभा सम्प्रति १ वर्ष पर्यन्त १५) मासिक एक क्लर्क के लिये पं० होम-करणदास जी को देवे, जिस का बिल उक्त पंडित जी कार्यालय सभा में भेजते रहें । इस धन के बदले में पंडित जी उतने धन की पुस्तकें सभा को देंगे ।

टिप्पणी—यह नियम चार वर्ष तक रहा ॥

लिपि गश्ती चिट्ठी श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा जो पूर्वोक्त निश्चय के अनुसार समाजों को भेजी गयी (संख्या ५६७६ प्राप्त २० जुलाई १९१६ ई०)

॥ ओ३म ॥

मान्यवर, नमस्ते !

आप को ज्ञात होगा कि आर्यसमाज के अनुभवी वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं० होम-करणदास त्रिवेदी गत कई वर्षों से बड़ी योग्यता पूर्वक अथर्ववेद का भाष्य कर रहे हैं । आपने महर्षि दयानन्द के अनुसार ही इस भाष्य को करने का प्रयत्न किया है । भाष्य काण्डों में निकलता है अब तक ६ कांड निकल चुके हैं । आर्यसमाज के वैदिक साहित्य सम्बन्ध में वस्तुतः यह बड़ा महत्वपूर्ण कार्य हो रहा है । त्रिवेदी महाशय के भाष्य की जानकारों ने खूब प्रशंसा की है । परन्तु खेद है कि अभी आर्यसमाज में उच्च कोटि के साहित्य को पढ़ने की ओर लोगों की बहुत कम रुचि है । जिसके कारण त्रिवेदी जी अर्थ हानि उठा रहे हैं । भाष्य के ग्राहक बहुत कम हैं । लागत तक वसूल नहीं होती । वेदों का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना आर्यमात्र का प्रधान कर्त्तव्य है । अतएव सविनय निवेदन है कि वैदिक धर्मीमात्र श्री त्रिवेदी जी को उन के महत्वपूर्ण गुरुतर कार्य में साहस प्रदान करें । स्वयम् ग्राहक बनें और दूसरों को बनावें । ऐसा करने से भाष्यकार महाशय उसे छापने की अर्थ सम्बन्धिनी चिन्ताओं से मुक्त होकर भाष्य को और भी अधिक उत्तमता से सम्पादन करने की ओर प्रवृत्त होंगे । आशा है कि वेदों के प्रेमी उक्त प्रार्थना पर ध्यान दे इस ओर अपना कुछ कर्त्तव्य समझेंगे । प्रत्येक आर्य के घर में वेदों के भाष्य होने चाहिये ।

समाज के पुस्तकालयों में तो उनका रखना बहुत ही ज़रूरी है। भाष्य के प्रत्येक कांड का मूल्य त्रिवेदी जी ने बहुत ही थोड़ा रक्खा है।

त्रिवेदी जी से पत्र व्यवहार ५२ लूकरगंज, प्रयाग के पते पर कीजिये। जल्दी से भाष्य भंगाइये।
भवदीय—

नन्दलाल सिंह, बी० एससी० एलएल० बी० उपमन्त्री।

चिट्ठी संख्या २७० तिथि १०—१२—१५१४। कार्यालय श्रीमती आर्यप्रति-

निधि सभा, संयुक्तप्रान्त आगरा व अवध, बुलन्दशहर।

आपका पत्र संख्या १०१ तथा अथर्ववेद भाष्य का तृतीय कांड मिला। इस कृपा के लिये अनेक धन्यवाद है। वास्तव में आप आर्यसमाज के साहित्य को समृद्धि शाली बनाने में बड़ा कार्य कर रहे हैं, आपकी विद्वत्ता और कृपा के लिये आर्य संसार ही नहीं, प्रत्युत प्रत्येक शिखा सूत्र धारी को आभारी होना चाहिये। ईश्वर आप को उत्तरोत्तर उस महत्त्व पूर्ण कार्य के सम्पादन और समाप्त करने के लिये शक्ति प्रदान करे, ऐसे उपयोगी ग्रन्थ प्रकाशन को आप सदैव जारी रखें यही प्रार्थना है।

भवदीय

मदनमोहन सेठ

(एम० ए० एलएल० बी०) मन्त्री सभा।

श्रीमान् पंडित तुलसीरामस्वामी—प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त-
प्रान्त, सामवेद भाष्यकार, सम्पादक वेदप्रकाश, मेरठ—१६१३।

ऋग्यजुर्वेद का भाष्य श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने संस्कृत और भाषा में किया है, सामवेद का श्री पं० तुलसीराम स्वामी ने किया है, अथर्ववेद के भाष्य की बड़ी आवश्यकता थी। पं० क्षेमकरणदास जी प्रयाग निवासी ने इस अभाव को दूर करना आरम्भ कर दिया है। भाष्य का क्रम अच्छा है। यदि इसी प्रकार समस्त भाष्य बन गया, जो हमारी समझ में कठिन है, तो चारों वेदों के भाषा भाष्य मिलने लगेंगे, आर्यों का उपकार होगा।

श्रीयुत महाशय नारायणप्रसाद जी—मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल वृन्दावन
मथुरा—उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, संयुक्तप्रान्त। आर्यमित्र आगरा, २४ जन-
वरी १६१३।

श्री० पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी प्रयाग निवासी, ऋक् साम तथा अथर्ववेद सम्बन्धी परीक्षोत्तीर्ण अथर्ववेद का भाषा भाष्य करते हैं, मैं ने सम्पूर्ण [प्रथम] कांड का पाठ किया। त्रिवेदी जी का भाष्य ऋषि दयानन्द जी की शैली के अनुसार भाव-पूर्ण संक्षिप्त और स्पष्टतया प्रकट करने वाला है कि मन्त्र के किस शब्द के स्थान में भाषा का कौनसा शब्द आया, फिर नोटों में व्याकरण तथा निरुक्त के प्रमाण, प्रारम्भ

में एक उपयोगी भूमिका दे देने से भाष्य की उपयोगिता और भी बढ़ गई है, निदान भाष्य अत्युत्तम, आर्यसमाज का पक्षपोषक और इस योग्य है कि प्रत्येक आर्यसमाज उस की एक २ पोथी (कम्पी) अपने पुस्तकालय में रखे ।

त्रिवेदी जी ने इस भाष्य का आरम्भ करके एक बड़ी कमी के पूर्ण करने का उद्योग किया है । ईश्वर उन को बल तथा वेद सम्बन्धी आवश्यक सहायता प्रदान करें निर्विघ्नता के साथ वह शुभ कार्य पूरा हों... छपाई और कागज़ भी अच्छा है

श्री युत महाशय मुन्शीराम जी—जिज्ञासु-मुख्याधिष्ठाता कुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार—पत्र संख्या ६४ तिथि २७-१०-१९६६ ।

अथर्ववेद भाष्य आप का दिया व किया हुआ अबकाशानुसार तीसरे हिस्से के लगभग देख चुका हूँ आप का परिश्रम सराहनीय है ।

तथा—पत्र संख्या ११४ तिथि २२-१२-१९६६ ।

अवलोकन करसे से भाष्य उत्तम प्रतीत हुआ ।

श्रीयुत प० शिव शंकर शर्मा काव्यतीर्थ—छान्दोग्योपनिषद् भाष्यकार, वेदतत्त्वादि ग्रन्थकर्ता वेदाध्यापक कांगड़ी गुरुकुल महाविद्यालय, आदि आदि, सम्पादक आर्यमित्र— ८ फ़रवरी १९१३ ।

अथर्ववेद भाष्य । श्री पं० क्षेमकरण दास त्रिवेदी जी का यह परिश्रम प्रशंसनीय है ।आप बहुत दिनों तक सरकारी नौकरी कर और अब वहाँ से पेन्शन पाके अपना सम्पूर्ण समय संस्कृत पढ़ने में लगाने लगे । अन्ततः आपने वेदों में विशेष परिश्रम कर बड़ौड़ा राजधानी में वेदों की परीक्षा दी और उनमें उत्तीर्ण हो त्रिवेदी बने हैं । आप परिश्रमी और अनुभवी वृद्ध पुरुष हैं । आप का अथर्ववेदीय भाष्य पढ़ने योग्य है ।

श्रीयुत पंडित भीमसेन शर्मा इटावा—उपनिषद्, गीतादि भाष्यकर्ता वेदव्याख्याता कलकत्ता यूनीवर्सिटी, सम्पादक ब्राह्मण सर्वस्व इटावा, फ़रवरी १९१३ ॥

अथर्ववेदभाष्य—इसे प्रयाग के पण्डित क्षेमकरणदास त्रिवेदी ने प्रकाशित किया है । इसका क्रम ऐसा रक्खा गया है कि प्रथम तो प्रत्येक सूक्त के आरम्भ में.....अभिप्राय यह है कि भाष्य का ढंग अच्छा है...भाष्यकर्ता के मानसिक विचारों का सुकाव आर्यसामाजिक सिद्धान्तों की तरफ़ है अतएव भाष्य भी आर्यसामाजिक शैली का हुआ है । तब भी कई अंशों में स्वामी दयानन्द के भाष्य से अच्छा है । और यह प्रणाली-तो बहुत ठीक है ।

श्रीमती पंडिता शिवप्यारी देवी जी, ठिकाना हकीम देवी प्रसाद जी, १३७ अतरसुइया, प्रयाग, पत्र ता० २१-१०-१९१५ ॥

श्रीयुत पण्डित जी नमस्ते,

महेबा के पते से आप का भेजा हुआ पत्र और अथर्ववेद भाष्य चौथा कांड मिला, मैं ने चारों कांड पढ़े, पढ़कर अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ । आप ने हम सभी पर अत्यन्त कृपा की है आपको अनेकों धन्यवाद हैं । आशा है कि पांचवां कांड भी शीघ्र तैयार होकर वी० पी० द्वारा मुझे मिलेगा ।

दो पुस्तक हवनमन्त्राः की जिसका मूल्य १॥ है कृपाकर भेज दीजिये मेरी एक बहिन को आवश्यकता है।

श्रीयुत पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी—कानपुर, सम्पादक सरस्वती प्रयाग, फरवरी १९१३।

अथर्ववेद भाष्य—श्रीयुत दोमकरणदास त्रिवेदी जी के वेदार्थज्ञान और श्रम का यह फल है, कि आप ने अथर्ववेद का भाष्य लिखना और क्रम क्रम से प्रकाशित करना आरम्भ किया है...बड़ी विधि से आप भाष्य की रचना कर रहे हैं। स्वर सहित मूलमन्त्र, पद पाठ, हिन्दी में सान्वय अर्थ, भावार्थ, पाठान्तर टिप्पणी आदि से आप ने अपने भाष्य को अलंकृत किया है आप की राय है कि “वेदों में सार्वभौम विज्ञान का उपदेश है”। आप का भाष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती के वेद भाष्य के ढंग का है।

श्रीयुत पण्डित गणेश प्रसाद शर्मा—संपाक भारतसुदृशाप्रवर्तक फतहगढ़, ता० १२ अप्रैल १९१३।

हर्ष की बात है कि जिस वेद भाष्य की बड़ी आवश्यकता थी, उस की पूर्ति का आरम्भ होगया। वेद भाष्य बड़ी उत्तम शैली से निकलता है। प्रथम मन्त्र पुनः पदार्थ युक्त भाषार्थ उपरान्त भावार्थ, और नोट में सन्देह निवृत्ति के लिये धात्वार्थ भी व्याकरण व निरुक्त के आधार पर किया गया है वैदिक धर्म के प्रेमियों को कम से कम यह समझ कर भी ग्राहक होना चाहिये कि उन के मान्य ग्रन्थ का अनुवाद है और काम पड़े पर उस से कार्य लिया जा सकता है।

बाबू कालिकाप्रसाद जी—सिल्क मर्चेन्ट कमनगढ़ा, बनारस सिटी संख्या ५८६ तार २७-३-१३।

आप का भेजा अथर्ववेदभाष्य का वी० पी० मिला, मैं आप का भाष्य देखकर बहुत प्रसन्न हुआ, परमेश्वर सहाय करे कि आप इसे इसी प्रकार पूर्ण करें। आप बहुत काम एक साथ न छेड़कर इसी की तरफ समाधि लगाकर पूर्ण करेंगे। मेरा नाम ग्राहकों में लिख लीजिये, जब २ अङ्क छपें मेरे पास भेज देना। श्रीयुत महाशय रावत हरप्रसाद सिंहजी वर्मा, मु० एकडला पोस्ट किशुनपुर, जिला फतेहपुर हसवा, पत्र ६ दिसम्बर १९१३।

वास्तव में आप का किया हुआ “अथर्ववेद भाष्य निष्पक्षता का आश्रय लिया चाहता है। आप ने यह साहस दिखाकर साहित्य भण्डार की एक बड़ी भारी न्यूनता को पूर्ण कर दिया है। ईश्वर आप को वेद भण्डारे के आवश्यकीय कार्यों के सम्पादन करने का बल प्रदान करें।

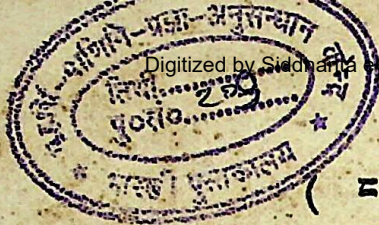
श्रीयुत महाशय पण्डित अधिर पाठक जी (सभापति हिन्दी साहित्य सम्मेलन लखनऊ)—मनोविनोद आदि अनेक ग्रन्थों के कर्ता, सुपरिन्डेन्डेन्ट गवर्नमेंट सेक्रेट्रियट, पी० डब्ल्यू डी० श्री प्रयागराज, पत्र ता० १७-६-१३।

(७)

आप का अथर्ववेद भाष्य अवलोकन कर चित्त अत्यन्त सन्तुष्ट हुआ। आप की यह पाण्डित्य-पूर्ण कृति वेदार्थ जिज्ञासुओं को बहुत हितकारिणी होगी। आप का व्याख्याक्रम परम मनोरम तथा प्रांजल है, और ग्रन्थ सर्वथा उपादेय है।

प्रकाश लाहौर १२ आषाढ़ संवत् १९७३ (२५ जून १९१६-
लेखक श्रीयुक्त पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी)

हम पण्डित ज्ञेयकरणदास जी का धन्यवाद करने से नहीं रह सकते -- स्वामी (दयानन्द) जी ने लिखा है -- कि वेद का पढ़ना पढ़ाना आर्यों का परम धर्म है -- इस के अनुकूल श्री पण्डितजी अपना समय वेद अध्ययन में लगाते हैं और आर्यों के लिये परम उपयोगी पुस्तक प्रकाशित करने में पुरुषार्थ करते रहते हैं -- पण्डित जी ने इस समय तक हवन मन्त्रों तथा रुद्राध्याय का भाषा में अर्थ प्रसिद्ध किया है -- जो कि आर्यों के लिये पठन पाठन में उपयोगी हैं। इस सम्बन्ध में यह अथर्ववेद के पांच कांड छुपा कर निःसन्देह बड़ा लाभ पहुंचाया है। आर्यों की जो शिक्षा प्रणाली थी उसको दूधे आज पांच हजार वर्ष हो चुके हैं। ऐसे अंधेरे के समय में स्वामी जी ने वेद के ऊपर लोगों के भीतर दृढ़ विश्वास उत्पन्न करके एक धर्म का दीपक प्रकाशित किया। परन्तु हमें शोक यह है वेद के पढ़ने पढ़ाने में आर्य लोग इतना समय नहीं लगाते जितना वे प्रबन्ध सम्बन्धी झगड़ों की बातों में लगाते हैं। हमारा विश्वास है कि जब तक पं० ज्ञेयकरणदास जी जैसे वेदाभ्यासी पुरुषार्थी लोग अपना समय वेदों के खोज में न लगावेंगे तब तक आर्य समाज का कोई गौरव नहीं बढ़ सकता। अथर्ववेद के अर्थ खोजने में बड़ी कठिनता है। इसके ऊपर सायण भाष्य उपलब्ध नहीं होता, जो इस समय तक छपा हुआ है वह बड़ी अधूरी दशा में है, सूक्त के सूक्त ऐसे हैं कि जिनके ऊपर अब तक कोई टीका नहीं हुई।..... इस समय जो पांच कांडों का भाष्य पण्डित जी ने प्रकाशित किया है उस के लिखने का ढंग बड़ा अच्छा और सुगम है। प्रथम उन्होंने सूक्त के तथा मन्त्रों के देवता दिये हैं -- पश्चात् छन्द ... विद्वानों का यही काम है कि वह जैसे जैसे साधन उन के पास हों वैसा वैसा सोचकर वेद मन्त्रों का अर्थ प्रकाशित करें। ऐसे सैकड़ों प्रयत्न जब होंगे तब सच्चे अर्थ खोज करना आगामी विद्वानों को सरल होगा। परन्तु अब बड़ी भारी कठिनाई यह है कि प्रकाशित पुस्तकों के लिये पर्याप्त संख्या में नहीं मिलते हैं और विद्वानों के पास सम्पत्ति का अभाव होने के कारण हानि से पुस्तकों का प्रकाशित करना बन्द होता है इसलिये सब आर्यों को परम है कि पण्डित ज्ञेयकरणदास जी जैसे विद्वान् पुरुषार्थी के ग्रन्थ मोल लेकर उन-ग्रन्थ प्रकाशित करने की आशा देते रहें। त्रिवेदी जी कोई धनाढ्य पुरुष नहीं अपनी सारी सम्पत्ति जो कुछ उन के पास है लगा दी है..... त्रिवेदी जी किया है वह वैदिक धर्म के प्रेम से प्रवृत्त होकर -- इसलिये न केवल सब आर्यों का यह कर्तव्य है कि इस भाष्य को मोल लेकर त्रिवेदी जी को उत्साहित करें -- धनाढ्य आर्य पुरुषों का यह भी कर्तव्य है कि उनकी आर्थिक सहायता करें।



The VIDYADHIKARI (Minister of Education), Baroda State, letter No 624 dated 6th February 1913.

.....It has been decided to purchase 20 copies of your book entitled अथर्ववेद भाष्यम् It has been sanctioned for use of the library and the prize distribution. Please send them...also add on the address label "For Encouragement Fund."

Rai Thakur Datta, Retired District Judge, Dera Ismail Khan Letter dated March 25th, 1914.

The Atharva Veda Bhashya:—It is a gigantic task and speaks volumes for your energies and perseverance that you should have undertaken at an advanced age. I wish I had a portion of your will power.

Letter dated 30th April 1914.

I very much admire your labour of lore and hope...the venture will not fail for want of pecuniary support.

THE MAGISTRATE OF ALLAHABAD,

Letter No. 912 dated 21st May 1915.

Has the honour to request him to be so good as to send a copy each of the 1st and 3rd Kandas of Atharva Veda Bhashya to this office for transmission to the India Office, London.

THE ARYA PATRIKA, LAHORE, APRIL 18, 1914.

The Atharva Veda Bhashya or commentary on the Atharva Veda which is being published in parts by Pandit Khem Karan Das Trivedi, does great credit to his energy, perseverance and scholarship. The first part contains the Introduction and the First Kanda or Book. There is a learned disquisition on the origin of the Vedas and the pre-eminent position in Sanskrit literature ...The arrangement is good, the original Mantra is followed by a literal translation and their bhavarth or purport in Arya Bhasha. The footnotes are copious; they give the derivation and meaning in Sanskrit of the various words quoting the authority of Ashtadhyayi of Panini, Unadikosha of Dayananda, Nirukta of Yaska, Yoga Darshana of Patatanjali and other standard ancient works.....The pandit appears to have laboured very hard and the Book before us does credit to his erudition; scholars may not agree with certain of his renderings, but like a true Arya, who venerates the Vedas, he has made an honest attempt to find in the Vedic verses something which will elevate and ennoble mankind. Cross references to verses where the word has already occurred in this Veda are also given to enable the reader to compare notes. There can be no finality in Vedic interpretation, but honest attempts like these which shall render the task easy to others are commendable. We are glad to call public attention to this scholarly work and hope that Pandit Khem Karan Das Trivedi will get the encouragement which he so richly deserves.....Our earnest request is that the revered Pandit will go on with this noble work and try to finish the whole before he is called to eternal rest ..

N.B.—The printing and paper are good, price is moderate.

श्री गङ्गा

